राजस्थांनी सबद कोस

—: राजस्थानी हिन्दी बृहद् कोश :—

चतुर्थ खण्ड

(तृतीय जिल्द)

सम्पादक

(संग्राहक, परिवर्द्धक एवं संशोधनकर्ता)

प्रो० सीताराम लाळस

— प्रकाशक —

चौपासणी शिक्षा समिति

जोधपुर

पृष्ठ ५११६ से ५८०२ (स) (स एवं ह) शब्द संख्या ३१२

१ से २३४ (ह)

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(तृतीय जिल्द)



सम्पादक

(संपादन, परिवर्द्धन एवं संशोधनकर्ता)

मनीषी, साहित्य भूषण, डॉ० सीताराम लालस डी. लिट्. (मानद)

व्युत्पत्ति आदि द्वारा परिष्कारक

स्व० पं० नित्यानन्द शास्त्री दाधीच

[आयुर्वेद, कविभूषण, व्याकरण, साहित्य, काव्यादि तीर्थ

श्रीरामचरिताब्धि रत्नम् महाकाव्य आदि के प्रणेता]

कर्ता

डॉ० सीताराम लालस डी. लिट्. (मानद)

स्व० उदयराज उज्ज्वल

प्रकाशक

चौपासनी शिक्षा समिति

जोधपुर.

प्रकाशक :
चौपासनी-शिक्षासमिति
जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय
द्वारा संचालित प्रादेशिक भाषाओं के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

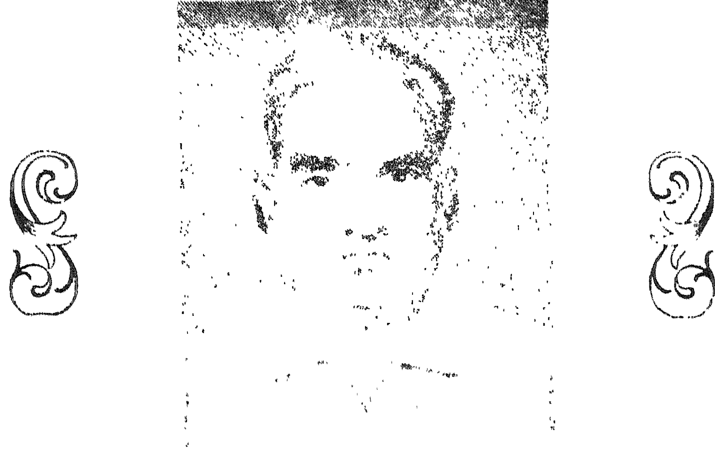
मूल्य रुपये १५०)

प्रथम संस्करण

मुद्रक :
हरिदत्त थानवी,
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस,
जोधपुर.

अब्दुल गफार,
भारत प्रिण्टर्स,
जोधपुर.

श्रद्धांजलि



ठा० गोरधनसिंहजी मेड़तिया (खानपुर) आई. ए. एस. !

जन्म : वि० सं० १९६६ चैत्र शुक्ल सप्तमी रविवार

निधन : वि० सं० २०३४ भाद्रपद शुक्ल ६ रविवार

दोहा :

मित्र मनोरथ पूरणा, कवि जंपै जग जीह,
इक तो गोरधन धारणा, दुजा गोरधन सीह ।

-सीताराम लालस

—: दूहा :—

सांई तूं वड्डा धरणी, तूझ न वड्डा कोय।
तूं जिन्नां सिर हत्थ दे, से जग वड्डा होय।।
सांई सूं सब कुछ हुवै, बंदा सूं कुछ नांहि।
राई सूं परबत हुवै, परबत राई मांहि।।

—महात्मा ईसरदास



प्रधान मंत्री भवन
नई दिल्ली

सन्देश

शव्द संस्कृति के परिचायक होते हैं। व्यक्ति और समाज के विकास की प्रक्रिया में शब्द बनते हैं और प्रयोग की कसौटी पर उनकी परख होती है। ' शब्द कोष ' में सांस्कृतिक इतिहास का स्पन्दन सुनाई देता है और उसकी अनुभूतियों का आभास मिलता है। इस दृष्टि से डा० सीताराम लालस का राजस्थानी सबद कोस एक अपूर्व एवं अत्यन्त उपयोगी सांस्कृतिक उपलब्धि है। इस सबद कोस में न केवल संख्या की दृष्टि से विपुल शब्द भंडार है बल्कि उसमें व्युत्पत्ति, उदाहरण एवं अर्थवैविध्य की व्याख्या का भी समावेश हुआ है।

' सबद कोस ' डा० लालस के अध्यवसाय और निष्ठा तथा साधना का फल है। मैं साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में डा० लालस की लगन और तपस्या की सराहना करता हूं और आशा करता हूं कि हमारे देश की नई पीढ़ी उनके कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त करेगा।

' सबद कोस ' के लिए एवं डा० लालस के लिए मेरी शुभकामनाएं।

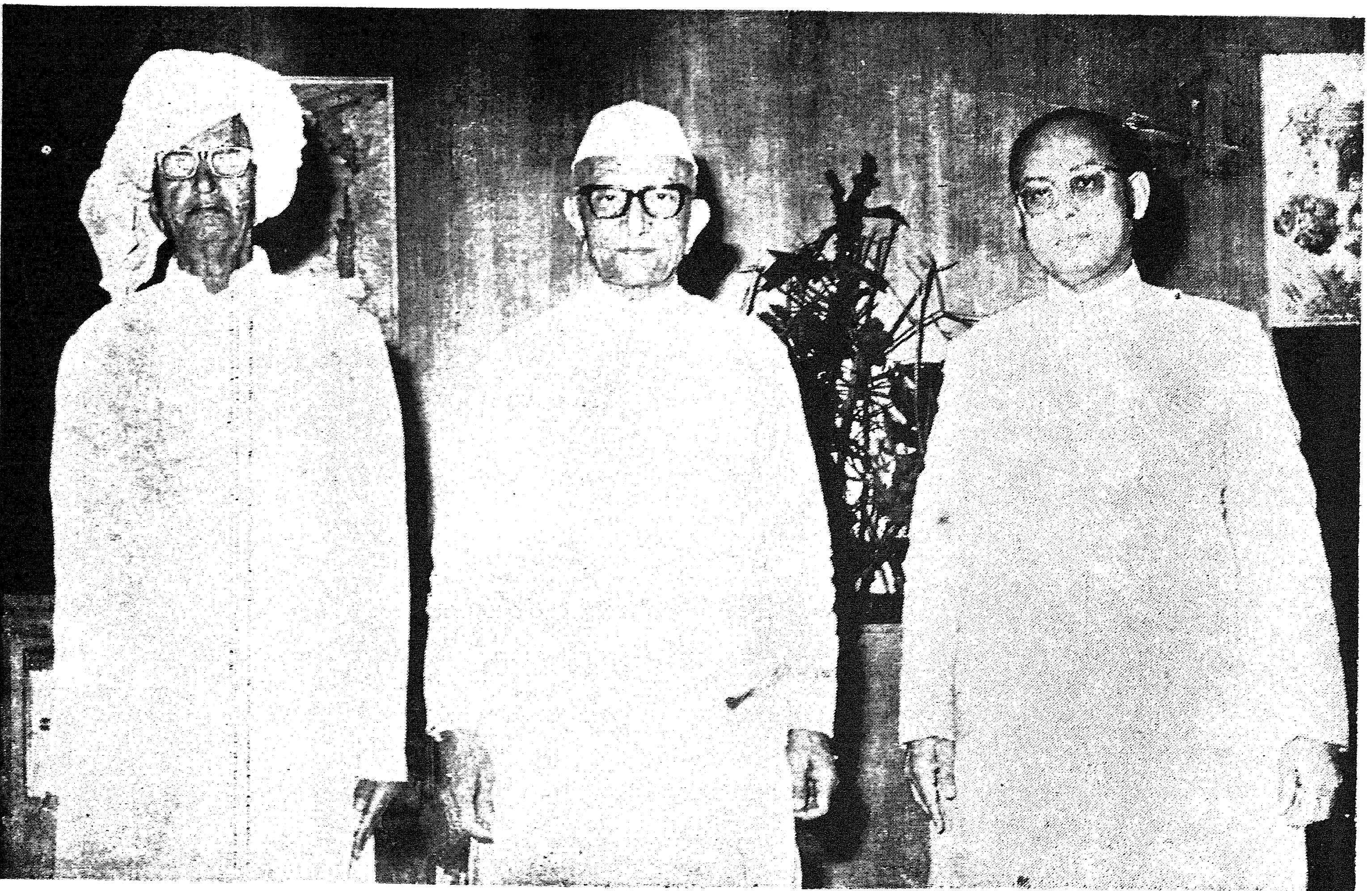
मोरारजी देसाई

(मोरारजी देसाई)

नई दिल्ली,
अक्तूबर २२, १९७८



प्रधान मंत्री श्री मोरारजी भाई देसाई, कोशकर्त्ता व संपादक डॉ० सीताराम लाल्स, डॉ० लक्ष्मीमल्लजी सिंघवी के साथ "राजस्थानी सबद कोस" का अवलोकन करते हुए।



कोशकर्त्ता व संपादक डॉ० सीताराम लाल्स, प्रधान मंत्री श्री मोरारजी भाई देसाई व डॉ० लक्ष्मीमल्लजी सिंघवी



राज भ
जयपु

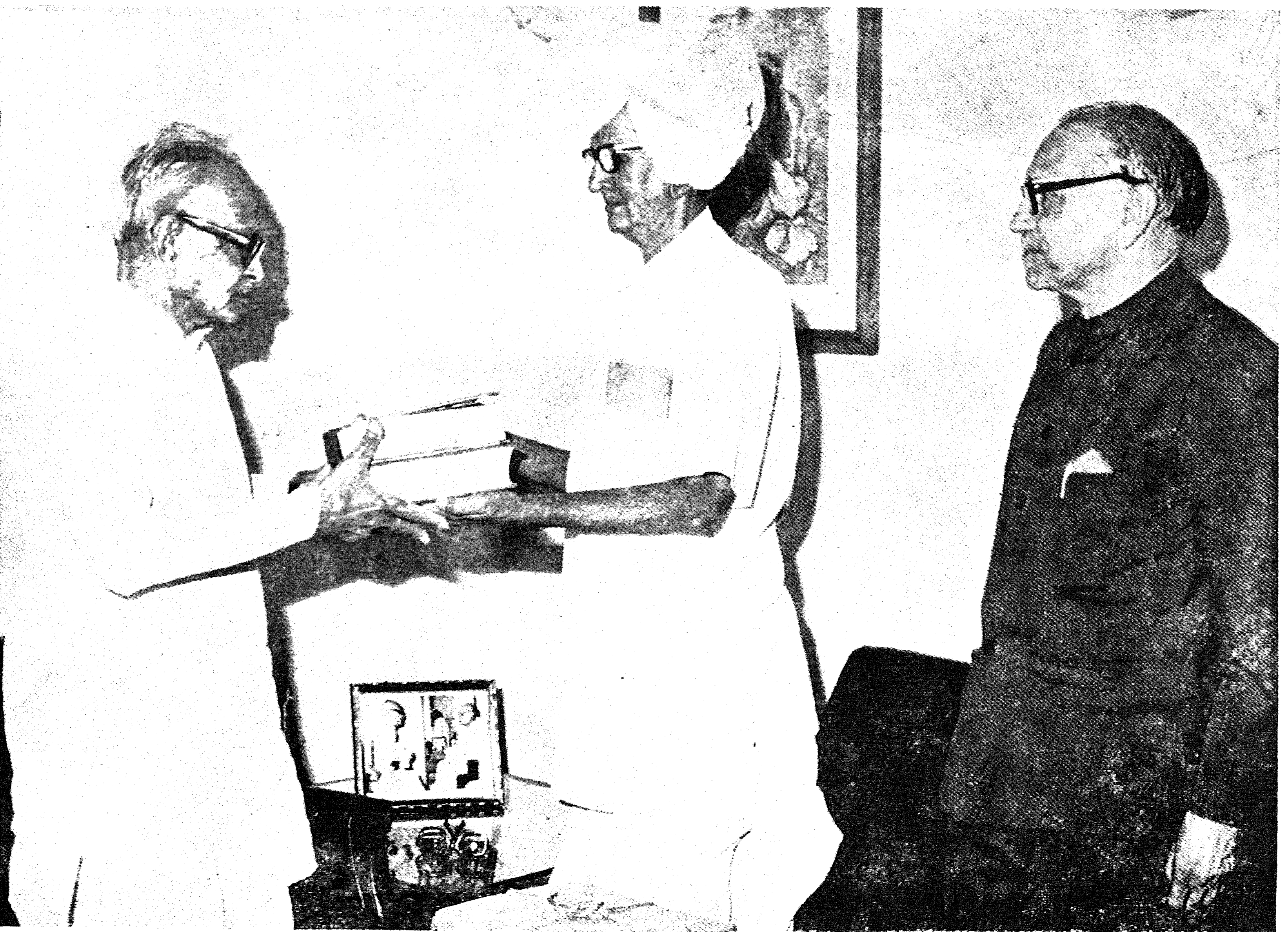
दिनांक दिसम्बर ५, १९

राजस्थान के वयोवृद्ध विद्वान श्री सीताराम लालस द्वारा ९ जिल्दों में लिखे हुए राजस्थानी कोश को मैं ने देखा। मुझे इस बात से अत्यन्त हर्ष तथा आश्चर्य हुआ कि इस विद्वान ने गरीबी की परिस्थितियों में भी अपने परिश्रम और लगन से कितना बड़ा काम सम्पादित किया।

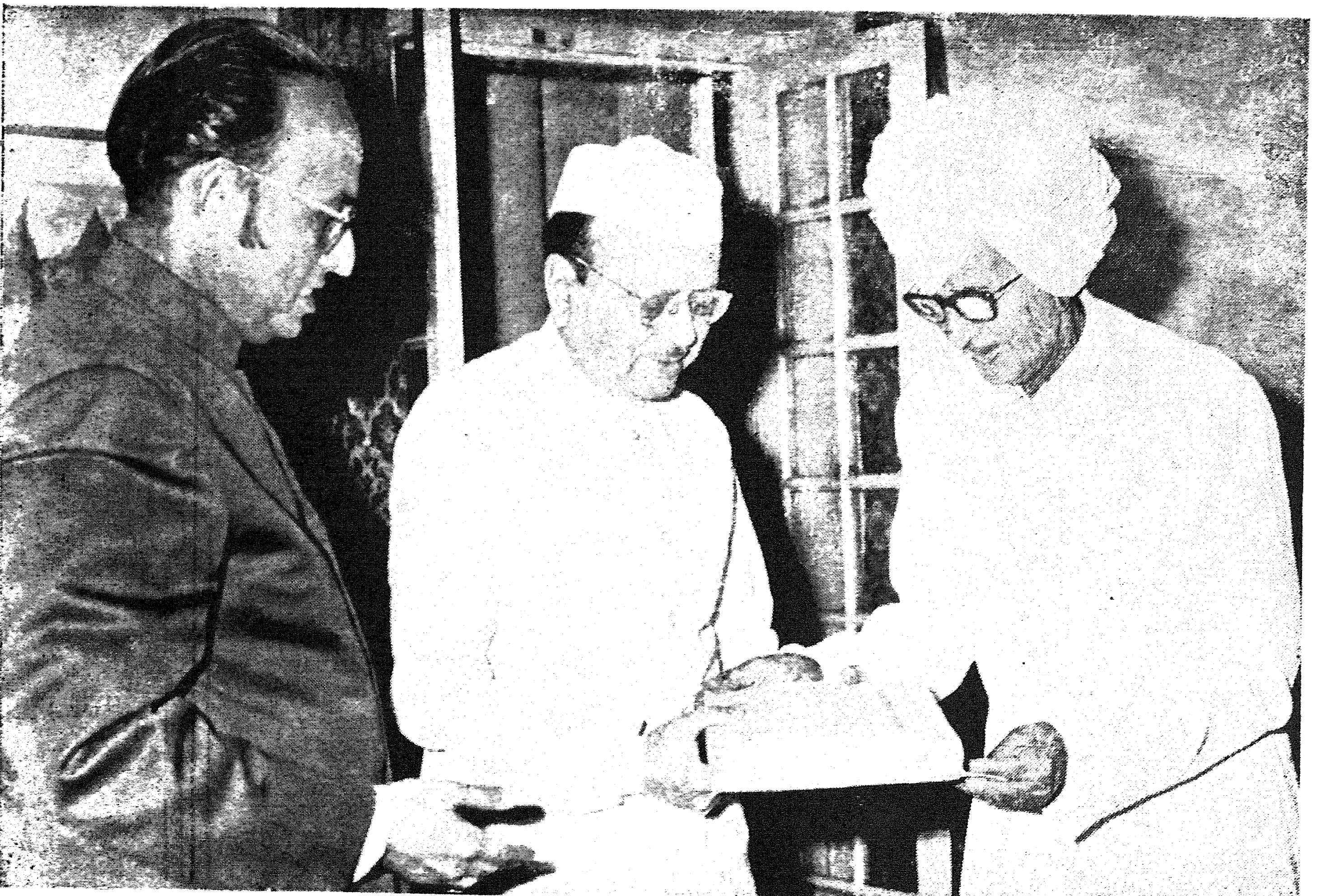
श्री लालस प्रचार के कृत्रिम प्रकाश से दूर रहने वाले कर्मठ साहित्यकार हैं। इन्होंने जो कोश तैयार किया है वह राजस्थानी भाषा और साहित्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है ही। हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए भी यह एक बहुत उपयोगी सन्दर्भ-ग्रन्थ है।

मैं चाहता हूं कि राजस्थान और भारत के विद्वान लोग इस कोश को देखें। राजस्थानी में और हिन्दी में इस प्रकार के महत्वपूर्ण सन्दर्भ ग्रन्थों की कमी है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि श्री लालस का यह परिश्रम विद्वानों द्वारा मान्य और प्रशंसित होगा।

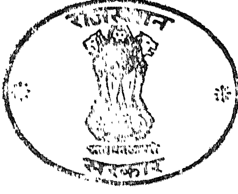
(रघुकुल तिलक)



राज्यपाल रघुकुल तिलक को कोश कर्त्ता : डॉ० सीताराम लाल़स राजस्थानी सबद कोस भेंट कर रहे हैं।



डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, श्री प्रताप चंद्र चंदर, शिक्षा मंत्री (भारत) एवम् डॉ० सीताराम लालस



493/C.M.O. G/79

प्रिय श्री लालस,

आपका पत्र प्राप्त हुआ। आपने राजस्थानी शब्द कोष को पूरा कर लिया है, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। शब्द कोष के बारे में जो जानकारी आपने मुझे भेजी है उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि आपने राजस्थानी साहित्य को एक सुदृढ़ आधार देने का ऐतिहासिक कार्य किया है। आपने न केवल इस प्रदेश के विभिन्न अंचलों में फैले हुए शब्दों को ढूँढा है बल्कि उनके अर्थ और वैज्ञानिक व्याख्या के साथ उनके प्रयोगों को जिस प्रकार संकलित किया है उसने सचमुच में इस कोष को राजस्थानी जन-जीवन के विश्व कोष के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है।

मैं आशा करता हूँ कि आपकी अनवरत तपस्या और सतत् साधना ने राजस्थानी साहित्य के निर्माण और आधुनिकरण की दिशा में एक बुनियादी आधार खड़ा किया है और मुझे विश्वास है कि भविष्य में इसी आधार पर राजस्थानी भाषा का भवन खड़ा होगा। आपका यह प्रयत्न सचमुच में सराहनीय है और इसके माध्यम से न केवल राजस्थानी साहित्य की श्रीवृद्धि होगी बल्कि इससे हिन्दी भाषा के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान मिलेगा। मैं आपकी कठोर तपस्या और साधना के प्रतिफल के रूप में प्राप्त इस सफलता के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आपका यह योगदान राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के लिए न केवल संजीवनी प्रदान करेगा बल्कि इस क्षेत्र में सदियों से व्याप्त अंधकार को दूर कर एक नई आभा और एक नये प्राण का संचार करेगा। मैं आपको इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धी के लिए पुनः बधाई देता हूँ।

आपने मुझसे मिलने के लिए समय चाहा है। मार्च में बजट सत्र के दौरान मैं अधिकांशतः जयपुर में ही रहूँगा, आप जानकारी करके अवश्य पधारें मैं आपका स्वागत करूंगा।

आपका,

(भैरोंसिंह शेखावत

इस अवसर पर कोश कार्यालय में समय-समय पर कार्यरत उन सभी कर्मचारियों को भी मैं उनकी कर्त्तव्यनिष्ठता और सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

यहाँ कोश के मुद्रण व प्रकाशन में सहयोग देने वाले साधना प्रेस के मालिक हरिप्रसादजी पारीक और सुमेर प्रेस के मैनेजर रामदत्तजी थानवी साहिब को भी नहीं भुलाया जा सकता जिन्होंने इस विशिष्ट कार्य में अपना पूरा सहयोग दिया।

इतने बड़े राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य में बहुत बड़ी राशि का खर्च होना स्वाभाविक ही है। चौपासनी शिक्षा समिति जहाँ अपने साधनों से यह कार्य करने में यथाशक्य सक्रिय रही है, वहाँ इस मामले में अपने आपको बड़ी भाग्यशाली मानती है कि राजस्थान राज्य सरकार और भारत सरकार दोनों ने ही इस कार्य के लिए समुचित अनुदान की राशि समय-समय पर प्रदान कर हमारे इस कार्य को सुगम बनाया। एतदर्थ हम दोनों ही सरकारों के प्रति विशेष कृतज्ञता ज्ञापित करते है।

इस कोश यज्ञ की पूर्णाहुति पर शिक्षा समिति के समस्त सदस्य और शुभचिंतक तथा योगदान देने वाले सज्जन प्रसन्नचित्त हैं पर सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य तो यह है कि इस कोश के निर्माता डा० सीताराम जी लाळस की सम्पूर्ण जीवन-साधना का प्रतिफल मातृभाषा के लिए अमृत-घट की तरह निकल कर बाहर आ गया है अतः उनके असीम आनन्द की थाह लेना जितना कठिन है उतना ही कठिन है शब्दों में उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना। शिक्षा समिति ही क्या, भविष्य में में आने वाली विद्वानों की पीढ़ियाँ और साहित्य प्रेमी उनके चिर कृतज्ञ रहेंगे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
२५ अगस्त, १९७८

डॉ० गोविन्दसिंह
मन्त्री
चौपासनी शिक्षा समिति
जोधपुर

।। श्री ।।

❀ निवेदन ❀

—: दूहा सोरठा :—

नारायण भूले नहीं, अपणी माया, ईश । रोग पैल ओखद रचै, जगवाळा जगदीश ।।१।।
साच न बूढ़ो होय, साच अमर संसार में । कैतौ धोवो कोय, ओ सेवट प्रकटे 'उदय' ।।२।।
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम । इण सूं पूरै आस सकल मनोरथ सांवरो ।।३।।
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईशर किरपा सूं उदय ।।४।।
खत ऊजळा संदेश, उदयराज ऊजल अखै । दीपै वांरा देश, ज्यांरा साहित जगमगै ।।५।।

भारत संसद में सन् १६५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्तां री भसावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानी तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरु हुवो ।

राजस्थानी रै विरोध में अक्सर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो । ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं सीतारामजी लाळस ने कयो क्योंकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा संग्रह रो उण ने काफी अनुभव है । श्री सीताराम जी इण काम सारु तैयार हो गया ने म्हें दोनुं सामिल होय ने पूरा सहयोग सूं मैनत सूं कोश रो काम शुरु कियो ने इण में खर्च री मदत री जरुरत हुई तो उण बाबत म्हैं स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब बार एटला पोकरण ने अरज की । इणां कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूं रुपीया री मदत देणी चालू कर दीवी । सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपियां लिखावण रो चालू कर दीयो और म्हैं दोनुं तारीख १-५-५१ सूं सन् १६५२ रा आखिर तक सामिल कांम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बद हो गई, इण सूं सन् १६५३ लगायत सन् १६५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बंद रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनुं री लगन ही । म्हैं करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १६५६ में कोश में सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जबाब उणां तारीख २६-६-५६ रा कागद में म्हने लिखियो के कोश सारु मावार रु. ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला । परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे में देरी हुई । उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में नवम्बर रा अन्त में ने दिसम्बर रा शुरू में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणां री सहायता सूं सन् १६५७ री जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दियो क्यूं कि जद उणां रो तबादलो जोधपुर में हो गयो हो जो एक लाख तेरह हजार शब्दों की स्लिप कोपियां पेली बणी हुई ही । इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां अक्षरवार रजिस्टर में लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १६५८ री माह मई तक पूरो हो गयो । म्हैं पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोश करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया री सहायता सूं पूरो हुवो ।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो । उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सूं श्री नीबांज ठाकुर साहब सूं रुपियां री सहायता लेने करायो ने तरे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासनी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११-३-५६ ने सीतारामजी ने इण सोध संस्थान शिक्षा विभाग सूं लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर री घणी मदद ही इण वास्ते बैकूंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां । तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो :—

चांद बावड़ी

ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यंत्र श्री उदयराजजी उज्जवल यंत्रों (मेंकेनिकल) के बल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जांचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्यभार उठाया है। बीच-बीच में हर समय मेरे साथ विचार-विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से संतुष्ठ होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सूँ डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाओं रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान संबन्धी जांच वो शोध रो काम सारू सन् १९५२ में राजस्थान आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है :—

Thinity College Cambridge **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguisbed Sponsors. I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani Language can no Longer be denied.

Sd. W. S. Allen M. A., P. H. D.
Professor Comprative Philology
in the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपया री मदत सूं शुरू होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियौ ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इण में दोनूं सरदारां रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी में

कोम मरू बाणरो सुणो बण्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे बडो लेखो गया भूपात, कवराज गुण गावता; दियो नह ध्यान इण हेत देखो ।।१।।
खूटगा खजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पंथ धन छोड़ लाडा ।।२।।
मेव साहित्य ही रहे संसार में, सुजसफल लगावे घणी सरसे । गिले सुखलाघ हितकर चित समाजां, दिनों दिन कितां सनमान दरसै ।।३।।
पांण भरू बांन है प्रांत रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊंचो । रखी नह पढण में भावखां प्रांत री, निरखतां जाय है प्रांत नीचो ।।४।।
वणई चारणों व्याकरण विधोवित्र, बणेगौ कोश ही लाखसबदो । 'सीत'रो परिश्रम अथग फलियों सिरे, रेटियो'उदय' मिल सकल सबदो ।।५।।
पोकरण भवानीसीह चांपे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कियो । पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले कांम सीधो ।।६।।
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण, क्रमधज आज अखियाज कीधी । वार विपरीति में हजारों खरचवौ, दाद उजल 'उदे' देस दीधी ।।७।।
चारणों दोय मिल व्याकरण कोश रचि, बण्या नह बडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह बीस मिलियो।।८।।

कवित

सूर्यमल मिशण ने बनाया वंस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके ।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योही उदीयापुर रान के कोष बल घर के ।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके ।
पोकरण भवानीसिह स्यामसिह रोडला के कोष हित कोष बने दानी धन घर के ।
प्रांत को प्रबल भाषा प्रतिष्ठत परम्परा बिबुधन दीनमाल वीरपद वाला है ।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूँ में रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है ।
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित बिदाजा है ।
जीवित उट्टेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके बनेगे जिशाला है ।

Compared by
Sd. Bhawar Singh
Sd. **लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता**

Sd. ह० उदयराज उज्जवल
Sd. Nami Chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

—— भूमिका ——

लेखक : डॉ० हीरालाल माहेश्वरी,
एम.ए., एल्-एल् बी., डी.फिल्., डी.-लिट्.
प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

राजस्थानी-हिन्दी के बृहत् कोश—'राजस्थानी सबद कोस,' जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की इस अन्तिम जिल्द में भूमिका लिखना मानों सूर्य को दीपक दिखाना है। अद्यावधि प्रकाशित आधुनिक भारतीय भाषाओं के कोशों में सामान्यतः और नागरी अक्षरों में प्रकाशित कोशों में विशेषतः इस कोश का अन्यतम स्थान है, यह निःसंकोच कहा जा सकता है।

साधारण पाठक को भी सरसरी तौर से देखने पर इसके महत्त्व का पता चल जाता है, तथापि श्री सीतारामजी लाळस का स्नेहानुरोध है कि मैं इस सम्बन्ध में कुछ लिखूँ। सो, इसका अधिकारी न होते हुए भी, इस भाषा और साहित्य के एक विद्यार्थी के नाते अपनी कृतज्ञता ज्ञापन स्वरूप ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ। श्री सीतारामजी लाळस की सतत दीर्घ साधना के साकार रूप इस कोश के महत्त्व-दिग्दर्शन के लिए राजस्थानी भाषा और साहित्य पर दो शब्द कहने आवश्यक हैं।

राजस्थानी साहित्य अत्यन्त समृद्ध और विशाल है। इसकी अधिकांश महत्त्वपूर्ण रचनाएँ अभी तक हस्तलिखित प्रतियों के रूप में ही प्राप्त हैं। इन रचनाओं की प्राप्ति और अध्ययन अत्यन्त श्रमसाध्य है। अनेक पण्डितों के प्रयासों के फलस्वरूप कुछ रचनाएँ पुस्तक रूप में सामने आई हैं और अनेक छोटी-छोटी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाश में आई और आ रही हैं। साधनों के अभाव में आधुनिक लेखकों की बहुत सी कृतियाँ भी प्रकाशित नहीं हो पा रही हैं। जो रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं, उनकी प्राप्ति में भी काफी प्रयास करने पड़ते हैं। कुल मिलाकर स्थिति संतोषजनक नहीं है। एक सर्वांगपूर्ण मानक शब्द कोश के लिए उस भाषा की सभी महत्त्वपूर्ण कृतियों का सुसम्पादित रूप में प्रकाशित होना आवश्यक है। राजस्थानी के लिए यह बात अल्पांश में ही सत्य है। श्री सीतारामजी को कोश के शब्द चयन में कतिपय हस्तलिखित ग्रन्थों के अतिरिक्त अधिकतर ऐसी पुस्तकों पर निर्भर रहना पड़ा है। शब्द-चयन और रूप में इसी अनुपात से कोश की काया का निर्माण हुआ है। शब्द के अर्थ, उसके प्रयोग, व्याकरणिक परिचय, रूप-भेद, तत्सम्बन्धी मुहावरों और कहावतों तथा सम्बन्धित टिप्पणियाँ कर्ता की हैं जो इस विषय में उसके गहन पाण्डित्य की द्योतक हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के विकास-क्रम में राजस्थानी का सम्बन्ध शौरसेनी प्राकृत से है। शौरसेनी प्राकृत से शौरसेनी अपभ्रंश और गुर्जर या गौर्जरी अपभ्रंश का विकास हुआ है। शौरसेनी अपभ्रंश का क्षेत्र मुख्यतः मथुरा-मण्डल तथा उसके आसपास का प्रदेश था। गुर्जर अपभ्रंश का क्षेत्र गुर्जर-प्रदेश था जिसके अन्तर्गत वर्तमान राजस्थान, गुजरात तथा पंजाब, सिन्ध और मध्यप्रदेश के कुछ क्षेत्र सम्मिलित हैं। प्राप्त अपभ्रंश साहित्य के आधार पर अपभ्रंश को पूर्वी, पश्चिमी और उत्तरी रूपों में विभाजित किया जा सकता है। यहाँ यह भी लक्ष्यनीय है कि किसी समय अपभ्रंश पूरे उत्तर भारत में साहित्यिक भाषा की मर्यादा ग्रहण कर चुकी थी। उसका एक ऐसा सामान्य रूप था जिसका मूलाधार पश्चिमी अपभ्रंश था। पुनः, प्राप्त अपभ्रंश साहित्य का बहुलांश पश्चिमी अपभ्रंश में है। इस पश्चिमी अपभ्रंश अथवा गुर्जरी अपभ्रंश की अनेक विशेषताएँ पुरानी राजस्थानी में पाई जाती हैं।

विक्रम संवत् 1100 के लगभग गुर्जरी अपभ्रंश से जिस भाषा का विकास हुआ उसके कई नाम दिये गए हैं, यथा—मरु-गुर्जर, पुरानी पश्चिमी राजस्थानी, मरु-सोरठ, जूनी गुजराती, पुरानी राजस्थानी आदि। इनमें मरु-गुर्जर नाम सर्वाधिक संगत लगता है जिससे गुजरात और मरु प्रदेश—दोनों की भाषाओं का बोध होता है। अपने उद्भव-काल से लेकर लगभग संवत् 1500 तक गुजराती और राजस्थानी एक ही थी। भाषिक दृष्टि से दोनों का इतिहास इसके पश्चात् पृथक्-पृथक् होता है।

मरु-गुर्जर या पुरानी राजस्थानी के उद्भव-काल—संवत् 1100 से लेकर वर्तमान समय तक राजस्थानी में विभिन्न शैलियों में प्रभूत परिमाण में साहित्य-रचना होती रही है। विक्रम की उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक 5–6 दशकों में अंग्रेजों के फैलते और सुदृढ़ होते राजनैतिक प्रभुत्व, तद्जन्य परिस्थितियों, वैचारिक परिवर्तनों आदि के कारण साहित्य की धारा मंद तो पड़ीं, पर किसी न किसी रूप में वह प्रवाहित अवश्य होती रही। वर्तमान शताब्दी में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के आसपास से राजस्थानी में साहित्य-निर्माण की गति पुनः तेज हुई और उसका क्षेत्र-विस्तार हुआ। यह परम्परा अब पूरे जोर से चालू है।

मोटे रूप से इन साढ़े नौ सौ सालों के राजस्थानी-साहित्य के इतिहास को इन तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है :—

(1) आरम्भिक काल—संवत् 1100 से संवत् 1500,
(2) मध्यकाल—संवत् 1500 से संवत् 1900,
(3) आधुनिक काल—संवत् 1900 से वर्तमान समय तक।

आरम्भिक काल में तीन मुख्य धाराएँ प्रवाहित मिलती हैं :—

(1) जैन काव्य (2) चारण काव्य और (3) लौकिक काव्य। तीनों की रचनाएँ प्रबन्ध और मुक्तक—दोनों रूपों में प्राप्त हैं।

मध्यकाल में इनके अतिरिक्त दो और काव्य-धाराएँ इस प्रवाह में मिलीं :—

(4) सन्त-काव्य और (5) आख्यान-काव्य। इस काल में इन पाँचों ही प्रकार की उत्कृष्ट कोटि की प्रभूतशः रचनाएँ लिखी गईं। गुणवत्ता और परिमाण-बाहुल्य, दोनों ही दृष्टियों से इस काल का साहित्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। चारण-काव्य मुख्यतः तीन अन्तर्धाराओं में विभाजित किया जा सकता है :—

(1) पौराणिक और धार्मिक (2) ऐतिहासिक और वीर-रसात्मक तथा (3) नीति परक।

आधुनिक काल में परम्परागत रचनाओं के साथ नवीन शैली की रचनाएँ भी लिखी जाने लगीं। सन् 1949–50 तक उनमें शिल्पगत भिन्नता विशेष न होते हुए भी, देश, काल और वातावरण के अनुसार कथ्य में नवीनता है। इसके पश्चात् का राजस्थानी साहित्य समसामयिक चेतना, बदलते जीवन-मूल्यों और विभिन्न परिवर्तनशील परिस्थितियों का अंकन भी करता है।

यहाँ यह भी उल्लेख्य है कि राजस्थानी गद्य की परम्परा आरम्भिक काल से लेकर वर्तमान समय तक चलती आई है।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि इतने विशाल और वैविध्यपूर्ण साहित्य तथा ज्ञान के अन्य क्षेत्रों से शब्दों का आकलन, चयन और उनका प्रयोग-पुष्ट अर्थ कितना दुष्कर कार्य है। इस कोशकर्ता ने इसको सफलतापूर्वक सम्पन्न किया है।

विक्रम् की 19 वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों से यूरोप के विद्वानों ने भारतीय विद्या से सम्बन्धित अनेक विषयों पर काम करना आरम्भ किया था। राजस्थान के महिमामय और गौरवशाली इतिहास का सर्वप्रथम परिचय कर्नल टॉड ने अपने बहुचर्चित ग्रन्थ "एनल्स् एण्ड एन्टीक्वीटीज आफ राजस्थान" में दिया। इसका प्रथम संस्करण संवत् 1886 (सन् 1829) में प्रकाशित हुआ था। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसके कारण विद्वानों का ध्यान राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति की ओर भी आकर्षित हुआ था। अनेक ऐतिहासिक भूलों के बावजूद, देश के पुनर्जागरण में इसका अनुपम स्थान रहा है। स्वाधीनता को लक्ष्य में रख, देश की अनेक भाषाओं के साहित्यों में, इसमें वर्णित ओजस्वी-कथाओं और घटनाओं के आधार पर अनेकानेक रचनाएँ लिखी गईं। इस परम्परा में कविराजा श्यामलदास, पं० रामकर्ण आसोपा, पं० गौरीशंकर, हीराचन्द ओझा प्रभृति इतिहासकारों ने राजस्थान के इतिहास से सम्बन्धित अपने-अपने ग्रन्थ लिखे राजस्थानी-साहित्य के विद्यार्थी के लिए भी इनके ग्रन्थ अत्यन्त मूल्यवान हैं। समग्रता में पूर्व-आधुनिक (सन् 1527 से 1947 ईस्वी) राजस्थान का इतिहास पहली बार डॉ० रघुबीरसिंहजी ने लिखा जो सन् 1949 में प्रकाशित हुआ था। अब तो राजस्थान के इतिहास-विषयक अनेक ग्रन्थ सामने आ रहे हैं।

इतिहास की भाँति राजस्थानी भाषा विषयक कार्य भी पश्चिमी पण्डितों ने आरम्भ किया। उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध मे बाइबिल के द्वितीय खण्ड—'नए नियम' का श्रीरामपुर के बाप्तिस्त मिशन द्वारा राजस्थानी बोलियों में अनुवाद प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात् भारतीय आर्य भाषाओं विषयक जॉन बीम्स, रुडोल्फ ह्योर्नले, मण्डारकर प्रभृति विद्वानों ने अपने-अपने ग्रन्थ लिखे पर उनमें राजस्थानी भाषा विषयक कोई विशेष बात नहीं कही गई। कैलाग के हिन्दी व्याकरण में कहीं-कहीं मारवाड़ी, मेवाड़ी और जयपुरी बोलियों का उल्लेख अवश्य है। राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम वर्णनात्मक परिचय जार्ज ग्रियर्सन ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'भ षा सर्वे' में दिया। ग्रियर्सन से कुछ पूर्व मैकालिस्टर ने जयपुरी बोली विषयक एक पुस्तक लिखी थी। ग्रियर्सन के पश्चात् सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य डॉ० टैसीटरी ने किया। उन्होंने इंडियन एंटीक्वरी (सन 1914 से 1916) में पुरानी पश्चिमी राजस्थानी का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रकाशित करवाया। इसके अतिरिक्त उन्होंने एतद् विषयक कुछ टिप्पणियाँ भी लिखी थीं। इसके बाद डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'ओरिजिन एण्ड डैवलपमैन्ट ऑफ बंगाली लैंग्वेज' तथा अन्य पुस्तकों और निबन्धों में प्रासंगिक रूप से राजस्थानी की भी चर्चा की। उनकी 'राजस्थानी भाषा' नामक एक छोटी सी पुस्तिका भी पहली बार सन् 1949 में प्रकाशित हुई। तब से कई विद्वान् राजस्थानी भाषा और उसकी विभिन्न बोलियों पर विभिन्न दृष्टियों से प्रकाश डालते रहे हैं।

राजस्थान के इतिहास से सम्बन्धित साहित्यिक ग्रन्थों में सर्वाधिक चर्चा पिंगल में रचित पृथ्वीराज रासौ की हुई है। कर्नल टाड से लेकर अद्य पर्यन्त इस पर कुछ न कुछ लिखा जाता ही रहा है। विभिन्न पहलुओं को लेकर इस पर लिखा गया साहित्य इतना विशाल है कि वह अपने आप में एक स्वतन्त्र शोध और अध्ययन का विषय है। आधुनिक काल में राजस्थान से सम्बन्धित साहित्य और राजस्थानी साहित्य के अध्ययन में मनोरंजन, ज्ञानवर्द्धन, जिज्ञासा-पूर्ति तथा रसास्वादन के अतिरिक्त छः और उद्देश्य भी थे :—

(1) देश के इतिहास की, विशेषतः राजपूत-युग और उसके पश्चात् की टूटी कड़ियाँ जोड़ने, तद् विषयक नवीन जानकारी प्राप्त करने तथा राजस्थान के इतिहास के लिए,

(2) भारतीय आर्य भाषाओं और राजस्थानी के विकास-क्रम, तुलनात्मक अध्ययन आदि के लिए,

(3) पुनर्जागरण, शौर्य-गाथाओं, उदात्त चरित्रों और राष्ट्र-प्रेम की भावनाओं के प्रकटीकरण हेतु, प्रेरणा-स्रोत के रूप में,

(4) राष्ट्रीय साहित्य की अनुपम धरोहर समझ कर,
(5) भारतीय विद्या के एक सुदृढ़ अंग के रूप में तथा
(6) प्रशासन की दृष्टि से—लोक-मानस, परम्पराओं, मान्यताओं आदि की जानकारी के लिए। तत्कालीन गजेटियरों में ऐसे संकेत-उल्लेख मिलते हैं।

चाहे कोई भी उद्देश्य रहा हो, उसकी प्राप्ति के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अनिवार्य था और अब भी है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। लगभग साढ़े नौ सौ सालों के विशाल राजस्थानी साहित्य को सम्यक्‌रूपेण समझने के लिए आधुनिक पद्धति पर लिखे एक सुसम्पादित, वैज्ञानिक और सर्वांगपूर्ण बृहत् कोश की नितान्त आवश्यकता थी क्योंकि शब्दों की ईंटों से निर्मित भाषा ही वह दीवार है जिसको पार कर इस साहित्य तक पहुँचा जा सकता है। श्री सीतारामजी लाळस ने सर्वप्रथम साहित्य जगत को ऐसा कोश, इस—राजस्थानी हिन्दी-कोश के रूप में दिया है। इतना ही नहीं यह शब्द कोश राजस्थान की संस्कृति और सांस्कृतिक परम्पराओं को भी सुष्ठुरूपेण संकेतित करता है।

सन् ईस्वी की बीसवीं सदी के आरम्भिक वर्षों से अनेक विद्वानों ने राजस्थानी साहित्य विषयक कार्य आरम्भ किए और वे तथा अनेक परवर्ती विद्वान् इस परम्परा को आगे बढ़ाते रहे। इनमें कतिपय उल्लेख्य नाम ये हैं :—

सर्वश्री पं० रामकर्ण आसोपा, पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, मुंशी देवीप्रसाद, हरप्रसाद शास्त्री, डॉ० टैसी टरी, भूरसिंह शेखावत, पुरोहित हरिनारायण, मुनि जिनविजय, सूर्यकरण पारीक, रामसिंह, नरोत्तमदास स्वामी डॉ० मोतीलाल मेनारिया आदि। सम्भवतः अनेक विद्वान् शब्द कोश के अभाव में चाह कर भी राजस्थानी साहित्य के अध्ययन से विरत हो गये हों तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

किसी भी साहित्य के स्थायित्व के लिये ये तीन आधारभूत आवश्यकताएँ हैं :—

(1) उसकी भाषा का इतिहास और व्याकरण,
(2) उसका सुसम्पादित, सर्वांगपूर्ण शब्द कोश तथा
(3) उसके साहित्य का इतिहास।

ऐसी बात नहीं है कि इन बातों की ओर विशेषतः राजस्थानी के शब्द कोश के निर्माण की ओर विद्वानों का ध्यान ही न गया हो। आधुनिक काल—पुनरुत्थान काल में इस ओर सर्वप्रथम ध्यान पण्डित रामकर्ण आसोपा का गया था और उन्होंने इसकी पूर्ति के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास भी किए थे। वैज्ञानिक पद्धति पर रचित उनका मारवाड़ी व्याकरण प्रथम बार सन् 1886 (संवत् 1953) में प्रकाशित हुआ था। इस कोटि के उत्कृष्ट व्याकरण उस समय अनेक भारतीय भाषाओं में भी नहीं लिखे गए थे। और तो और, उनका ऐसा ही एक उत्कृष्ट 'हिन्दी व्याकरण' ग्रन्थ श्री कामताप्रसाद गुरु के सुप्रसिद्ध 'हिन्दी व्याकरण' (प्रथम संस्करण—संवत् 1977) से नौ वर्ष पूर्व (संवत् 1968 में) प्रकाशित हो चुका था। यही नहीं, उन्होंने काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अनुरोध पर एक विस्तृत हिन्दी व्याकरण भी बना कर उसको भेजा था। वह व्याकरण तो नहीं छपा; हाँ, उसकी 'अधिकांश उपयोगिता,' का उल्लेख श्री कामताप्रसाद गुरु ने अपने व्याकरण की भूमिका में किया है, अस्तु। आसोपाजी ने रतनू वीरभांण कृत 'राजरूपक', 'बाँकीदास ग्रन्थावली', भाग—एक और कविया करणीदान कृत 'सूरजप्रकास' का सम्पादन भी किया था। इनमें प्रथम दो ग्रन्थ और तीसरे का कुछ आरम्भिक अंश प्रकाशित हुआ है। उन्होंने राजस्थानी बच्चों की आरम्भिक पढ़ाई के लिए 'मारवाड़ी पैली', 'दूजी' और 'तीजी' पोथियाँ भी लिखी थीं। राजस्थानी भाषा और साहित्य के पुनरुत्थान के लिए आसोपाजी के प्रयास चिर स्मरणीय रहेंगे। प्रस्तुत सन्दर्भ में आसोपाजी का महत्त्वपूर्ण कार्य राजस्थानी कोश विषयक है। जोधपुर के प्राइम मिनिस्टर सर शुकदेव प्रसाद काक के प्रोत्साहन पर उन्होंने ६० हजार शब्दों का एक सर्वांगपूर्ण राजस्थानी शब्द कोश तैयार किया तथा इसी आधार पर 20 हजार शब्दों का एक और संक्षिप्त कोश भी उन्होंने बनाया था। दुर्भाग्य से आसोपाजी के जीवन-काल में कोई कोश नहीं छप सका। सर शुकदेवप्रसादजी के देहावसान के पश्चात् उनके सुपुत्र श्री धर्मनारायण काक ने तद् विषयक उपलब्ध सामग्री सादूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर को सौंप दी। 'कोश' वहाँ से भी प्रकाशित नहीं हो सका। वर्तमान में वह सामग्री कहाँ है इसके विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार, आसोपाजी का एक विद्वत्तापूर्ण महान् कार्य बिना फलीभूत हुए ही काल-कवलित हो गया। वे अनेक विषयों और भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित थे। उनका बृहत् कोश निश्चय ही माँ भारती का गौरव ग्रन्थ सिद्ध होता। इधर कोश की आवश्यकता तो दिनोंदिन तीव्रतर रूप में अनुभव की जाती रही।

इसी बिन्दु से प्रस्तुत कोश के कर्ता श्री सीतारामजी लाळस का कार्य आरम्भ होता है।

यह भी एक सुखद आश्चर्य की बात है कि श्री सीतारामजी ने भी आसोपाजी की भाँति एक 'राजस्थानी व्याकरण' (प्रकाशन काल—सन् 1954) भी लिखा है तथा कविया करणीदान कृत 'सूरज प्रकास' (तीन भागों में), आढा किसना कृत छन्द शास्त्रीय ग्रन्थ रघुवरजसप्रकास' तथा गाडण केसौदास कृत 'गजगुणरूपकबन्ध' का सुसम्पादन कर उन्हें प्रकाशित करवाया है।

श्री सीतारामजी ने पहली जिल्द की भूमिका में बताया है कि कोश-निर्माण का मेरा विचार सन् 1932 में जयपुर के पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण की उत्प्रेरणा से दृढ़ हुआ। तब से लेकर प्रथम जिल्द के प्रकाशन समय – सन् 1962— लगभग 30 वर्ष तक वे यह कार्य करते रहे और जिसका नैरन्तर्य इस अन्तिम जिल्द के प्रकाशन काल—सन 1978 तक रहा है। उनकी लगभग 46 वर्षों की निरन्तर साधना का सुफल है—यह राजस्थानी शब्द कोश। सतत

साधना से ही महान् कार्य सम्पन्न होते हैं, यह कोश इसका उत्कृष्ट प्रमाण है।

इससे यह न समझा जाय कि इससे पूर्व राजस्थानी के किसी प्रकार के शब्द कोश थे ही नहीं। छोटे-मोटे लगभग एक दर्जन कोशों का पता चलता है किन्तु वे विभिन्न भाषाओं के प्राचीन कोशों की भांति छन्दोबद्ध हैं। ये मुख्यतः तीन प्रकार के हैं :—

(१) पर्यायवाची कोश (यथा—डिंगळ नाम-माला, नागराज डिंगळ कोश, हमीर नाम-माला, अवधान माला, नाम माला; डिंगळ कोश (कविराजा मुरारीदान कृत) आदि।
(२) अनेकार्थी कोश, जैसे—उदयराम कृत 'अनेकारथी कोश' तथा
(३) एकाक्षरी कोश, जैसे –वीरभाण रतनू तथा उदयराम रचित एकाक्षरी नाम मालाएँ।

प्राचीन काल में ऐसे शब्द कोशों का महत्त्व था जो अनेक दृष्टियों से किसी अंश तक अब भी है पर आज के पाठक और उपयोगकर्ता के सामने उनकी उपयोगिता अत्यन्त सीमित और प्रयोग-विधि जटिल है, यह लिखने की आवश्यकता नहीं है। श्री सीतारामजी ने इनका यथोचित उपयोग किया है। कहा जा चुका है कि राजस्थानी का सम्बन्ध एक ओर तो गुजराती से है और दूसरी ओर हिन्दी से। ऐतिहासिक विकास-क्रम की दृष्टि से अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की भाँति उमका सम्बन्ध वैदिक संस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रंश से है ही। इस प्रकार, इनके सन्दर्भ में राजस्थानी का संबंध त्रिकोणात्मक है। अतः राजस्थानी शब्द कोश के निर्माण में इनमें रचित शब्द कोशों से भी सहायता मिलती है। संस्कृत के अमर कोश के अतिरिक्त राजा राधाकान्त देव बहादुर (शब्द कल्पद्रुम), तर्कवाचस्पति तारानाथ भट्टाचार्य (वाचस्पत्यम्) विल्सन, मैक्डानल, मोनियर विलियम्म्, तथा आप्टे आदि के संस्कृत शब्द कोश; प्राकृत-अपभ्रंश के धनपाल कृत पाइयलच्छीनाममाला, हेमचन्द्र कृत देशी नाम माला, विजय राजेंद्र सूरि कृत अभिधान राजेन्द्र तथा हरगोविन्द त्रिकमचन्द शेठ कृत पाइय सद्द महण्णवो; उर्दू–हिन्दी के मुहम्मद मुस्तफा खां मद्दाह कृत उर्दू–हिन्दी शब्द कोश, केदारनाथ भट्ट कृत उर्दू–हिन्दी कोश, रामचन्द्र वर्मा कृत उर्दू-हिन्दी कोश आदि; हिन्दी के बृहत् हिन्दी कोश, (ज्ञानमण्डल वाराणसी), हिन्दी शब्द सागर (नागरी प्रचारिणी सभा), मानक हिन्दी कोश (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, अंतिम जिल्द सन् 1966 में प्रकाशित), ब्रज भाषा सूर कोश, अवधी कोश, मानस शब्द सागर तथा गुजराती के 'जोडणी कोश', गुजराती-इंग्लिश डिक्शनरी (मेहता तथा मेहता) आदि कोश अपने-अपने क्षेत्रों में अत्यन्त प्रसिद्ध रहे हैं। इसी प्रकार, अंग्रेजी के अतिरिक्त कई भारतीय भाषाओं में 'ज्ञान कोश' भी प्रकाशित हो चुके हैं। श्री सीतारामजी ने इनसे तथा ऐसे ही अन्य कोशों से यथोचित सहायता ली है। इससे प्रस्तुत कोश की प्रामाणिकता में वृद्धि ही हुई है।

मोटे रूप से यह कोश हिन्दी शब्द सागर की पद्धति पर निर्मित हुआ है तथापि प्रत्येक शब्द और उसके प्रचलित रूप-भेद सहित शब्द के अर्थ देकर उनकी पुष्टि सम्बन्धित शब्द-प्रयोग के उदाहरणों से करने में, यौगिक शब्दों के सन्दर्भ में भी यही पद्धति अपनाने एवं कतिपय स्थलों पर पूर्ववर्ती कोशों की भूल सुधार करने में इसका समुत्कर्ष देखा जा सकता है। कोश को अधिकाधिक पूर्ण बनाने हेतु, सभी स्रोतों से शब्द-चयन का प्रयास भी किया गया है। इस संबंध में चार उदाहरण दिए जा रहे हैं।

प्रस्तुत कोश की प्रथम जिल्द के पृष्ठ 444 पर 'कल्हार' शब्द को संज्ञा पुल्लिग बताते हुए उसके अर्थ—१ पुष्प २ श्वेत कमल और ३ सुगंधित कमल बताए हैं पर उदाहरण एक भी नहीं है। 'पुष्प' के लिए हमीर नाम माला का संदर्भ दिया है। प्रश्न है कि शेष अर्थ कहाँ से मिले ? हिन्दी शब्द सागर की दूसरी जिल्द के पृष्ठ 859 पर 'कल्हार' को संज्ञा पु० सं० बताते हुए उसके अर्थ सफेद कोईं, श्वेत कमलिनी दिए हैं और उदाहरण से भी इसकी पुष्टि की है। मानक हिन्दी कोश की प्रथम जिल्द के पृष्ठ 485 पर इसके अर्थ-एक प्रकार का पौधा और उसके फूल तथा २ कमल दिए हैं किन्तु इस कोश में शब्द-प्रयोग के उदाहरण नहीं हैं। 'कल्हार' का प्रयोग अध्यात्म रामायण के अरण्य-काण्ड में इस प्रकार है :—

इत्येवं भाषमाणौ तौ जग्मतुः सार्धयोजनम्।
तत्रैका पुष्करिण्यास्ते कह्लार कुमुदोत्पलैः ॥१५॥

(इस प्रकार आपस में बातचीत करते हुए वे डेढ़ योजन (६ कोश) निकल गए। वहाँ कुमुद, कह्लार और कमलादि से सुशोभित एक पुष्करिणी (तलाई) थी।

मेहोजी रचित राजस्थानी 'रामायण' में इसका प्रयोग है :—

लख चवरासी जीव सिरया, वंणी अठारा भार।
सातूं सायर जिणि सिरया, नवसै नदी कल्हार।

इसका रचनाकाल संवत् 1572 के आसपास है। कवि गणपति रचित 'माधवानल-कामकन्दल-प्रबन्ध' (गायकवाड़ ओरियंटल सिरीज, बड़ौदा, सन् 1942) में भी इसका प्रयोग हुआ है–पृष्ठ २८५, छन्द ३१२ तथा पृष्ठ ३१८, छन्द ६१। शब्द प्रयोग के उदाहरण देने की प्रतिज्ञा सी करके भी श्री सीतारामजी यहाँ ऐसा नहीं कर पाए। इस कारण यदि वे चाहते तो इस शब्द को छोड़ भी सकते थे। किन्तु उदाहरण न देकर भी उन्होंने इसको लिया। इस एक उदाहरण से उनकी बौद्धिक ईमानदारी का पता चलता है। हमीर नाम माला के साक्ष्य पर उन्होंने यह शब्द ग्रहण किया तथा प्राप्त कोशों और इतर सामग्री के आधार पर उसके अर्थ दिए।

दूसरा उदाहरण 'दिसा' विषयक है। अनेक ग्रंथों का मन्थन कर दिशा संबंधी उन्होंने जो टिप्पणियाँ और दिग्चक्र दिए हैं, वे उनके गहन पाण्डित्य के साथ-साथ राजस्थानी भाषा की समृद्धि के भी परिचायक हैं। इस विवेचन की तुलना परिवर्तित, संशोधित हिन्दी शब्द सागर के नवीन संस्करण के पाँचवें भाग के पृष्ठ 2288–89 पर 'दिशा' के अन्तर्गत दी गई टिप्पणियों से करने पर स्पष्टतः पता

चलता हैं कि श्री सीतारामजी ने कितनी सांगोपांग अतिरिक्त जानकारी देकर 'दिशा' को स्पष्ट किया है।

तीसरा उदाहरण 'दिक्शूल' संबंधी है। हिन्दी शब्द सागर की इसी जिल्द के पृष्ठ 2270 पर इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है :— फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास जो कुछ विशेष योगिनियों के योग के कारण माना जाता है। जिस दिन जिस दिशा में कुछ विशिष्ट योगिनियों के योग के कारण इस प्रकार का वास और दिक्शूल माना जाता है, उस दिन उस दिशा की ओर यात्रा करना बहुत ही अशुभ और हानिकारक माना जाता है।' श्री सीतारामजी ने 'दिसासूळ' (सं० दिक्शूल) की यह परिभाषा दी है :—फलित ज्योतिष के अनुसार यात्रा मुहूर्त देखने में शूल की वह उपस्थिति जो विशिष्ट बार व नक्षत्र के कारण विशिष्ट दिशाओं में रहती है....आदि। फिर हिन्दी शब्द सागर की उल्लिखित पंक्तियों को बिना उसका नामोल्लेख किए वे लिखते हैं :—किन्तु उपर्युक्त मत भ्रमपूर्ण है। दिशाशूल काल एवं योगिनियों से पूर्णतः पृथक् है। दिशाशूल विशिष्ट बारों और नक्षत्रों के कारण केवल मुख्य दिशाओं में ही लागू होता है जबकि काल विशिष्ट बार के कारण मुख्य दिशाओं एवं उप दिशाओं पर भी लागू होता है। दिशा-शूल एवं काल की गति एक दूसरे के विपरीत होती है। दिशाशूल एवं योगिनियों में भी कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि योगिनियाँ तिथियों पर आधारित रहती हैं, उनका बारों और नक्षत्रों से कोई संबंध नहीं होता। काल व योगिनियाँ भी परस्पर पृथक् हैं क्योंकि काल विशिष्ट बार के कारण विशिष्ट दिशा अथवा उप दिशा में रहता है जबकि योगिनी की उपस्थिति विशिष्ट तिथि के कारण विशिष्ट दिशा में रहती है।

इस टिप्पणी से ही पता चलता है कि उन्होंने एक-एक शब्द पर कितना सूक्ष्म विचार किया है तथा यह कोश इस क्षेत्र में अन्य कोशों से कितना आगे है।

इसी प्रकार, 'दुगड़ियो' (पृष्ठ 1757) पर दी गई सीतारामजी की टिप्पणी और 'होरा' के अन्तर्गत दी गई हिन्दी शब्द सागर (11 वाँ भाग, पृ० 5564) की टिप्पणी से मिलाने पर भी इस बात की पुष्टि होती है। ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

कोशकर्ता से 'डिंगळ' या 'डिंगल' शब्द पर भी ऐसी ही विस्तृत टिप्पणी की अपेक्षा थी क्योंकि इस विषय में परस्पर विरुद्ध अनेक धारणाएँ व्यक्त की गई हैं।

हिन्दी शब्दसागर के संशोधित नवीन संस्करण (सन् 1968) में 'डिंगल' को 'राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली आदि लिखते चले आते हैं' बताया है (पृष्ठ 1950)। 'मानक हिन्दी कोश' में इसके लिए 'मध्ययुग में राजस्थान में बोली जाने वाली एक भाषा जिसमें यथेष्ट स हित्य मिलता है, लिखा है (दूसरा खण्ड, पृ० 470)। 'शब्दसागर' का कथन तो बिल्कुल गलत है, 'मानक' का कथन सर्वांश में गलत न होकर आंशिक रूप में सत्य है।

अतः यहाँ 'डिंगल' पर भी दो शब्द कहने आवश्यक हैं। इस कोशकर्ता ने इसको 'राजस्थानी भाषा का एक नाम' या 'मरुभाषा' बताया है। 'राजस्थानी' शब्द के अन्तर्गत उसके दो भाषिक अर्थ दिए गए हैं :—'राजस्थान प्रदेश की मरु या डिंगल भाषा' तथा 'इस प्रदेश की बोली'। ये अर्थ संगत हैं।

सन् 1913 में प्रकाशित श्री हरप्रसाद शास्त्री की 'प्रिलिमिनरी रिपोर्ट ऑन दि ऑपरेशन—इन-सर्च ऑफ मैन्यूस्क्रिप्टस् ऑफ बार्डिक क्रानिकल्स्' तथा उसके पश्चात् डॉ० टैसीटरी प्रभृति बहुत से विद्वानों ने 'डिंगल', 'डिंगळ' या 'डींगळ' शब्द की (साथ ही 'पिंगल' शब्द की भी) व्युत्पत्ति और उसके अर्थ को लेकर अनेक कल्पनाएँ की हैं किन्तु उनका परिणाम कुछ भी नहीं निकला, वे सभी अभी तक अनिर्णयात्मक ही हैं। (ऐसे विभिन्न मतों के लिए इन पंक्तियों के लेखक का राजस्थानी भाषा और साहित्य नामक ग्रंथ द्रष्टव्य है)। डिंगल को भाषा भी माना गया है और शैली भी। भाषा मानने वालों में भी मतैक्य नहीं है, इसकी किंचित् झलक 'शब्दसागर' और 'मानक-कोश' में दिए उल्लिखित अर्थों में भी मिलती है। इस विषय के विस्तार में न जाकर इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि डिंगल, मरुभाषा या राजस्थानी का ही पर्याय है, चाहे वह साहित्यिक हो या बोलचाल की। डिंगल के छन्दशास्त्र रचयिताओं और साहित्यकारों ने ऐसा ही समझा और माना है। पिंगळ सिरोमणी (अथ पिंगळ सिरोमणि मारवाड़ी भाषा लिख्यते), रघुनाथ रूपक गीताँ रो (मरुभूम भाषा तणो मारग, मुरभूम पाठ पिंगळ मता) तथा रघुवरजस प्रकास (मुरधर भाखा जिण निमंत, अथ भाखा पिंगळ तथा डिंगळ का रूपग गीत कवित, दूहा गाहा·····') में आई अनेकशः उक्तियों से मरुभाषा (जिसको कई नामों से सम्बोधित किया गया है) के स्वरूप, उसकी व्याप्ति और उसके आभोग में आने वाली सामग्री के संकेत मिलते हैं जिनसे उपर्युक्त बात सिद्ध होती है। ऐसा ही साहित्यकारों ने समझा था। इसके दो उदाहरण पर्याप्त होंगे।

१. पदम भगत ने संवत् 1545 के आसपास विभिन्न लोक-प्रचलित राग-रागिनियों में गेय 'रुकमणी मंगळ' या 'हरजी रो व्यांवलो' काव्य की रचना की थी। यह राजस्थानी के प्राचीनतम पौराणिक आख्यान काव्यों में से एक है। मेहोजी कृत रामायण, डेल्हजी कृत कथा अहमनी आदि अन्य आख्यान काव्यों की भाँति इसकी भाषा भी बोलचाल की मरुभाषा या राजस्थानी है। इसकी अनेकशः प्रतियाँ मिलती हैं, जिनमें प्राचीनतम प्रति संवत् 1669 की लिपिबद्ध है। इसमें तो नहीं पर इसके बाद में लिपिबद्ध बहुत सी प्रतियों में रचना के पुष्पिका स्वरूप यह दोहा मिलता है :—

कविता मेरी डींगळी, नहीं व्याकरण ग्यान।
छन्द प्रबन्ध कविता नहीं, केवल हर को ध्यान।

(पाठान्तर-मोरी)

इससे इतना तो स्पष्ट ही है कि ये लिपिकार (और अगर यह अंश मूल का सिद्ध हो, तो स्वयं रचयिता भी) 'मंगळ' को 'डींगळी' रचना समझते हैं। तात्पर्य यह कि बोलचाल की राजस्थानी और डिंगल में अभेद है।

2. चारण स्वरूपदासजी दादूपंथी (समय—संवत् 1860–1925) ने अपने सुप्रसिद्ध काव्य पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका में इसकी भाषा के लिए कहा है :—

डिंगल पिंगल संस्कृत, सब समझन के काज।
मिश्रित सी भाषा करी, क्षमा करहु कविराज।।

स्पष्ट है कि डिंगल भाषा है और यह 'सब समझन के काज' स्वरूप भाषा भी है। सबके समझने लायक भाषा तो बोलचाल की ही हो सकती है। अतः बोलचाल की मरुभाषा और डिंगल एक ही है।

सूर्यमल्ल मिश्रण ने डिंगल उपनाम वाली मरुभाषा (डिंगल उपनामक कहूं मरुवाणी ही विधेय) का भी प्रयोग वंशभास्कर में किया है। उनके अनुसार मरुभाषा को कई लोग डिंगल भाषा भी कहते हैं (मरुभाषा डिंगलभाषा त्येके)। निष्कर्ष यह है कि 'डिंगल' का आशय राजस्थानी या मरुभाषा ही है।

जहाँ तक डिंगल शब्द के सर्व प्रथम प्रयोग का प्रश्न है, उसका श्रेय आसिया बाँकीदास को नहीं दिया जा सकता, जैसा कि विद्वान् अब तक मानते आए हैं। इस सम्बन्ध में ऐतिहासिक दृष्टि से छन्दशास्त्रीय ग्रन्थ 'पिंगळ सिरोमणि' ('परम्परा', भाग 13, सन् 1961–62, राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी, जोधपुर) में एतद् विषयक उल्लेखों की चर्चा आवश्यक है। इसमें 'डिंगळ' (बारहट सुंदरसणउ डिंगळ थी कहै, पृष्ठ 110; अथउ डिंगळ नांममाळा लिख्यते पृ० 145) तथा 'उडिंगळ' (पिंगळ सिरोमणे उडिंगळ नांम माळा···· पृ० 150) दोनों शब्द छपे मिलते हैं। ऊपर के प्रथम दो उदाहरणों में 'सुन्दरसणउ' और 'अथउ' के अन्तिम 'उ' का 'डिंगळ' के साथ जुड़कर 'उडिंगळ' शब्द होना अपेक्षाकृत अधिक संगत लगता है। इसके दो कारण हैं। एक तो इस 'नांम माळा' की पुष्पिका में स्वतंत्र रूप से 'उडिंगळ' शब्द प्रयुक्त है। दूसरे, इसी ग्रन्थ में अन्यत्र प्रयुक्त अकारान्त संज्ञा शब्दों यथा—चंद, गंग, संकर, नागराज, कासीरांम, केसव, भोज, मरह, हरराज आदि के अन्त में 'उ' नहीं जुड़ा हुआ है। पर 'उडिंगळ' का भाव स्पष्ट नहीं है; इसको 'डिंगळ का पूर्व रूप या मूल बताने में और विचार और प्रमाणों की आवश्यकता है। इसके सम्पादक श्री नारायणसिंह भाटी ने इसकी अन्तरंग परीक्षा किए बिना ही इसको जैसलमेर के कुंवर हरराज द्वारा रचित तथा रचनाकाल लगभग संवत् 1610 और 1618 के बीच मान लिया है (सम्पादकीय, पृ० 10) जो भूल है। इसके कई कारण हैं। एक कारण तो यही है कि अधिकांश विद्वान् इसको कुशललाभ की रचना मानते हैं, कुंवर हरराज की नहीं। इस पर आगे विचार किया गया है। दूसरे, इसमें कुंवर हरराज के 'कँवरपने' (संवत् 1618) के पश्चात् प्रसिद्ध हुए कवियों की भी रचनाएँ संकलित हैं। इसमें बारहट ईसरदास और दुरसा आढ़ा के गीत दिए हुए हैं। बारहट ईसरदास का समय संवत् 1595 से 1675 है। उनके आरम्भिक 40 साल जामनगर में बीते थे। दुरसा आढ़ा का काल संवत् 1595 से 1708 है। उनकी विशेष प्रसिद्धि 34 साल की आयु में संवत् 1629 के आसपास हुई थी जब राजा रायसिंह कल्याणमलोत ने जोधपुर पर अधिकार के समय अन्य चारणों के साथ इनको भी एक हाथी, एक करोड़ पसाव और चार गाँव दिए थे। किन्तु जिस ढंग से इसमें इन कवियों का उल्लेख हुआ है, उससे यह हरराज के 'कँवरपने' की रचना तो दूर, उनके पूरे जीवनकाल—(संवत् 1634 तक) में भी रचित हुई सभव नहीं लगती। नथमलजी कृत तवारीख जैसलमेर, हरिदत्त गोविंद व्यास कृत जैसलमेर का इतिहास तथा गहलोत कृत जैसलमेर राज्य का इतिहास के अनुसार रावळ हरराज का देहावसान संवत् 1634 में हुआ था। तीसरे, इसमें हरराज के पुत्र भाटी भीम की प्रशंसा में माधवदास द्वारा रचित एक गीत दिया हुआ है (पृ० 155)। यह गीत भीम के रावळ बनने के बाद का रचा प्रतीत होता है। भीम अत्यन्त साहसी और वीर थे। उनके विषय में यह दोहा बहु-प्रचलित है :—

दूजा राजा शाह रे, कर में ले दारी।
भाटी भीम छोड़ायवी, नव रोजै नारी।।

चौथे, समग्र रचना में जिस रूप में कुंवर हरराज का उल्लेख हुआ है उससे यह उनकी रचना सिद्ध नहीं हो सकती। श्री अगरचन्द नाहटा प्रभृति अधिकांश लोग इसको जैन कवि कुशललाभ की रचना मानते हैं। कुशललाभ का समय लगभग संवत् 1580 से 1650 है। इस सम्बन्ध में दो बातें विचारणीय हैं। एक तो इसमें जिस ढंग से कुंवर हरराज और कुशललाभ के प्रश्नोत्तर दिए हैं उनसे यह शंका होनी स्वाभाविक है कि यह कितनी और किस रूप में कुशललाभ की रचना है। दूसरे इसमें गंग भट्ट के कथन का भूतकालिक उल्लेख है (पृष्ठ 98)। गंग भट्ट तो कुशललाभ के बाद भी 12–15 साल तक जीवित रहे थे। उनकी मृत्यु संवत् 1662–1665 के बीच हुई थी (द्रष्टव्य—गंग कबित्त, भूमिका, पृष्ठ 10; ना. प्र स., काशी)। वर्तमान में यह जिस रूप में प्राप्त है, उस रूप में इसको कुशललाभ की रचना मानने में भी संकोच होता है। यदि यह किसी अंश तक कुशललाभ की रचना मान भी ली जाए तो यह तो निश्चित ही है किसी परवर्ती लेखक ने इसमें संशोधन, संवर्द्धन करके इसका सम्पादन किया है। अतः वैज्ञानिक पद्धति पर इसके सुसम्पादन की नितान्त आवश्यकता बनी हुई है। ऐसा सम्पादन होने पर ही हम 'डिंगळ' या 'उडिंगळ' शब्दों और उनकी व्याप्ति पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार कर सकने की स्थिति में होंगे। कोशकर्ता ने 'उडिंगळ' को संदिग्ध समझकर सम्भवतः कोश में स्थान नहीं दिया जो ठीक ही किया है। असल में राजस्थानी और हिन्दी में भी सम्पादन की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। 'सम्पादन' के नाम पर अधिकांशतः या तो एक प्रति का हूबहू पाठ छपा दिया जाता है अथवा प्रति-विशेष के

पाठ को मूल का मान कर फुटनोट में शेष उपलब्ध प्रतियों के रूपान्तर और पाठान्तर दे दिए जाते हैं। यह दृष्टिकोण एकांगी है। सम्पादन की वैज्ञानिक पद्धति इससे भिन्न है, कदाचित् यह बताने की आवश्यकता नहीं है।

पिंगळ-सिरोमणि के अतिरिक्त 'डिंगळ' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सुरजनदास पूनिया (संवत् 1640–1748) के एक कवित्त में मिलता है। विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों में प्राप्त पाठ इस प्रकार है :—

कोक पढ्यां का होय, दुंनी करतूत पिछांणै।
गीता का सुध ग्यांन, ग्यांन का ग्यांन न जांणै।।
अमर पढ्यां क्या होय, अमर तैं अमर न होई।
पींगळ डींगळ प्रीति, दीन घरि दीठा दोई।।
साखी सबदी तंत रस, नाद वेद गुण जांण।
सुरजन सुमत गुण उच्चरै, संमरत सुणौ बखांण।।

सुरजनजी के 'कवित्तों' और 'रामरासौ' का रचनाकाल संवत् 1700 के लगभग है (द्रष्टव्य—इन पंक्तियों के लेखक का जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य नामक ग्रन्थ का दूसरा भाग)। कदाचित् 'डिंगळ' शब्द प्रयोग की परम्परा संवत् 1700 से भी पुरानी रही हो, तो आश्चर्य की बात नहीं होगी। बाँकीदास के आश्रयदाता जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी ने भी डिंगळ का भाषा के रूप में प्रयोग किया है, यथा :—

डिंगळ पिंगळ संस्कृत, सब्यौ न एकौ सोध।
अखर अखर अवतारचित, पूरो मोहि प्रबोध।।

मुंशी देवीप्रसाद कृत चारण-चमत्कार (अप्रकाशित) में यह दोहा दिया गया है—(श्री सीताराम लाळस के सौजन्य से प्राप्त)। कोशकर्ता 'डिंगळ' और 'राजस्थानी' शब्दों पर अधिक प्रकाश डालता तो स्थिति और अधिक स्पष्ट होती।

राजस्थानी–शब्द कोश निर्माण में कतिपय विशेष प्रकार की कठिनाइयाँ और भी हैं, जैसे :—

(1) शब्दों के मानक रूप के स्थिरीकरण की। तद्भव और देशज शब्दों के अनेक रूप, शब्दार्थ-नियोजन में भी कठिनाई पैदा करते हैं।

(2) राजस्थानी के ध्वनि-परिवर्तनों, उदात्त, अनुदात्त ध्वनियों, अनुस्वार तथा 'ल' और 'ळ' वर्णों आदि विषयक।

कोशकर्ता ने इनका ध्यान रखते हुए शब्द-रूप और अर्थ दिए हैं तथापि कतिपय शब्दों का छूट जाना असम्भव बात नहीं है। राजस्थानी में 'र' का आगम और लोप प्राय: होता है। इसी प्रकार 'ऋ' का 'रु', 'र' और लोप, 'क्ष' का 'ख', 'क्ख' आदि, छ। कश्यप ऋषि का एक नाम तृक्ष है। तृक्ष का राजस्थानी में तिखिया, तीख, तिरख, त्रख आदि रूपों में प्रयोग किया गया मिलता है, यथा :—

(1) **होतिब काज हठवाद करि, वीण विरोध विचखिया।**
एक एक तंन तीनि करि, तिणि सराप सुर तिखिया।।
(—सुरजनदासजी पुनिया कृत रामरासौ)

(2) **तांम कोड़ि तेतीस, तीख रिख तामस आया।**
वंनवासौ तंन तीनि, रीछ कपि धारै काया।
(—वही)

(3) **पूरब दिशा अपूरब वातू, रंग रळी जहाँ होय प्रभातू।**
तहाँ तिरख रिख किरिया सारू, जोग ध्यान बैठे अवधारू।
(—सुरजनदासजी पूनिया कृत भोगळ पुराण)

(4) **बग दाळ ब सींगी रिख सुणी, गुर गंगेव गोतम रिख गिणी।**
कपला रिख त्रख सुर सार, मारकुंड तंवर तत सार।
(केसौदासजी कृत कथा विगतावळी)

किन्तु जहाँ तक ज्ञात है, इस कोश में इस अर्थ में ऐसे शब्द नहीं दिए गए हैं। राजस्थानी के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सुसम्पादित रूप में सामने न आना भी इसका एक मुख्य कारण है। पूर्वी राजस्थानी में क्रियान्त 'णो', 'णौ' के स्थान पर 'बो', 'बौ' का प्रयोग किया जाता है। अत: इस कोश में प्रत्येक क्रिया और उसका रूप जिसके अन्त में 'णो', 'णौ' होते हैं, को इस दूसरे 'बो, 'बौ' अन्त के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। शब्द के अनेक रूप भेदों का एक कारण यह भी है। श्री सीत रामजी ने यथासम्भव शब्द के रूप भेदों को भलीभाँति दर्शाया है। कोश में कतिपय शब्दों के रूप भेद देखने से ही इसके कर्ता के तद् विषयक प्रयास का पता चलता है। कई-कई शब्द तो ऐसे हैं जिनके 46-47 तक रूप-भेद दिए गए हैं, जैसे पहुंचाणो (पृ० 24-25) बोलाणौ (पृ० 5059) आदि। दस-दस बारह-बारह रूप तो साधारण बात है।

उदाहरणार्थ ऐसे कुछ शब्द नीचे दिए जाते हैं :—

छाब, जुधिष्ठिर, झूंबो, दिनंद, दीयौ, पाइयौ, पहरणौ, पछताणौ, बहस, बहणो, विसम, विरुदाणौ, विकसाईजणौ, वरती, समरणौ आदि।

कोशकर्ता ने शब्द-विशेष के अनेकश: उदाहरण एकत्र कर उनके उपलब्ध सभी अर्थों को सोदाहरण देने का प्रयास किया है। साथ ही मुख्य शब्द के अन्तर्गत उसके पर्यायवाची, उससे सम्बन्धित यथा सम्भव मुहावरे और कहावतें भी दी हैं। इससे पता चलता है कि कोशकर्ता ने कोश को सर्वांगपूर्ण बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। 'सारंग' शब्द के 89 और 'वीर' शब्द के 72 अर्थ दिए गए हैं और इस कोश को ज्ञान कोशीय रूप देते हुए राजस्थानी साहित्य में बहु प्रयुक्त 52 वीरों की नामावली भी दी है। अनेकश: अर्थों के लिए इन कतिपय शब्दों पर दृष्टिपात करना उचित होगा :—

कागलौ, चढणौ, जोग, बैठणौ, बहियोड़ौ, वाट, निकालियोड़ौ, दिन, लागणौ, विसम, संख, संभाळणौ, सत, सजियोड़ौ, सर, सरभ, सरस, सहज, साजियोड़ौ, सारंग, सार, सिद्ध, कुत्तौ आदि।

इतना होने पर भी अनेक ऐसे शब्द होंगे जिनके सभी अर्थ सम्भवत: नहीं दिए जा सके हों। एक उदाहरण द्रष्टव्य है। सतारा का अर्थ सप्तऋषि तथा सतारौ का एक प्रकार का वाद्य यन्त्र बताते हुए उस

पर पूरी टिप्पणी दी है। सतारौ (सं० सत्वर) का अन्य अर्थ द्रुतगामी या तेज चलने वाला भी होता है। जैसे :—माता ऊट'र घणा सतारा (—वील्होजी कृत कथा जैसलमेर की)। सतारा सतारौ का बहुवचन है। यह अर्थ कोश में नहीं है।

अर्थों के साथ मुहावरों और कहावतों का ठाठ पदे-पदे लक्षित होता है। 'बात' पर·······, तथा 'हाथ' पर 171 मुहावरे दिए गए हैं। 'पग' और 'हाथ' शब्दों के अन्तर्गत 67 कहावतें दी गई हैं। इनका नमूना निम्नलिखित शब्दों के अन्तर्गत देखा जा सकता है :—

आँख, आंधौ, आणौ, ऊँट, एक कण, करम, चक्कर, छाती, जीव, टको, दिन, सास पाणी, तरवार, आदि।

मुख्य शब्दों के पर्यायवाची शब्द देकर कोश को समृद्ध किया गया है। सूरज के 127 पर्यायवाची दिए हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा, जुध, तरवार, दाता, समुद्र, सत्रु, सिंघ, परबत, पाणी आदि के अनेक पर्यायवाची देखे जा सकते हैं।

शब्दों की यथासम्भव व्युत्पतियाँ दी गई हैं। कोशकर्ता ने इस सम्बन्ध में पं० नित्यानन्दजी शास्त्री के प्रति विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए ठीक ही स्वीकार किया है कि नित्य नवीन खोजों के फलस्वरूप व्युत्पतियों में मतभेद हो सकता है। शब्द की व्युत्पति से उसके ऐतिहासिक विकास-क्रम, तुलनात्मक अध्ययन और अर्थ में भी पर्याप्त सहायता मिलती है। इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मतों का विवेचन कर सही निर्णयों पर पहुँचना सुधी जनों का कार्य है।

शब्द-विशेष की व्युत्पति विषयक कितना मतभेद हो सकता है यह एक उदाहरण से स्पष्ट होगा। इस कोश में 'खोट' (पृ० 649) शब्द को संस्कृत 'क्षोट' से व्युत्पन्न बताया है। हिन्दी शब्दसागर (पृ० 1184) में सं० खोट=खोडा (दूषित) अंकित है। संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में इसको संस्कृत 'खोट्', से, मानक हिन्दी कोश में संस्कृत 'कूट' से तथा ब्रजभाषा सूर कोश में संस्कृत 'खोट' से निष्पन्न बताया है।

प्रस्तुत कोश यत्र-तत्र ज्ञान कोश की सीमा भी छूता है। अनेक ऐतिहासिक और पौराणिक प्रसंगों पर यथोचित टिप्पणियाँ दी गई हैं। संकराचारज, हड़बू, सरस्वती, साख, जैमती, जोगणी, साज, सिद्धौ, सक्ति आदि अनेकश: शब्दों पर दी गई टिप्पणियाँ तथा इसके अतिरिक्त 'सोळै कांकरी, 'हींयोड़ी' जैसे शब्दों के अन्तर्गत बनाए गए नक्शे इस कोश को ज्ञान कोशीय रूप भी प्रदान करते हैं।

संक्षेप में कोश का मूल ढांचा इस प्रकार है :— (विशेष द्रष्टव्य— पहली जिल्द में कोशकर्ता की भूमिका)

(1) शब्द के व्याकरणिक रूप और व्युत्पत्ति दी गई है।

(2) अप्रयुक्त या अल्प प्रयुक्त शब्द भी लिए गए हैं।

(3) अर्थ की स्पष्टता और प्रामाणिकता के लिए शब्द-प्रयोगों के अनेकश: उदाहरण दिए गए हैं।

(4) पर्यायवाची और यौगिक शब्दों के अतिरिक्त मुख्य शब्द के साथ यथा सम्भव रूप-भेद, अल्पार्थ, महत्त्ववाची, विलोम शब्द तथा क्रिया प्रयोग भी तुरन्त बाद ही दिए गए हैं।

(5) शब्द-क्रम में देवनागरी लिपि में प्रकाशित कोशों के अनुसार अनुस्वार प्रधान प्रणाली अपनाई गई है।

(6) अनुस्वार और चन्द्र बिन्दु के स्थान पर अनुस्वार लिया गया है। ध्यातव्य है कि पुरानी हस्तलिखित प्रतियों में चन्द्र बिन्दु का द्योतक चिन्ह नहीं मिलता। राजस्थानी में विशेष ध्वनियों को प्रकट करने वाले विशेष वर्ण हैं, यथा :—व—व़, ल—ळ, स—स़। इनमें नीचे बिन्दी वाले वर्ण पहले लिए गए हैं, जैसे—आळ के बाद आल। व़ और स़ से सम्बन्धित शब्दों को क्रमश: व और स के अन्तर्गत दिया है। छपाई में व़ और स़ वर्णों की व्यवस्था न होने से ऐसा किया गया है।

(7) शब्द कोशों में अर्थों का महत्त्व सर्वाधिक होता है। उनका उपयोग मुख्यत: अर्थ, परिभाषा मानक रूप, बर्तनी या व्याकरण के लिए किया जाता है। इसमें शब्द के विभिन्न अर्थों की संख्या देकर, पर्याय एवं व्याख्या दोनों विधियाँ अपनाई गई हैं। उसको (शब्द को) अलग-अलग वर्गों में बाँटा गया है; साथ ही विवरण भी दिया गया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—तर, दाय, धजर, धू आदि।

यहाँ यह संकेत करना भी अनावश्यक न होगा कि इसमें 'ड' और 'ड़' वर्णों के क्रम में हिन्दी कोशों से कुछ भिन्नता है। इसमें 'ड़' वर्ण को 'क' वर्ग के अन्तर्गत लेकर उसी अनुसार वर्णानुक्रम रखा है, जबकि हिन्दी में 'ट' वर्ग के वर्ण 'ड' के पश्चात् 'ड़' रखा जाता है। तदनुसार इस कोश में 'खग्रास' के पश्चात् 'खड़' शब्द है, जबकि हिन्दी शब्द सागर में इसके पश्चात् 'च' वर्ग का 'खचन' शब्द है। 'सागर' में 'खड़' शब्द 'ट' वर्ग के अन्तर्गत 'खड़ंगा' के बाद आया है (पृ० 1122)।

कोश की काया का निर्माण जिन रचनाओं के शब्दों को लेकर हुआ है उनका उल्लेख कोशकर्ता ने अपनी भूमिका में किया है। राजस्थानी साहित्य की चारण शैली के काव्य की शब्दावली अपेक्षया कठिन है। इसको सम्यक् रूपेण समझने वाले विद्वान् इने-गिने ही हैं और उनकी संख्या भी कम होती जा रही है। इस प्रकार की शब्दावली के अर्थों की तो अति शीघ्र बहुत ही आवश्यकता थी। यह भी विचित्र संयोग की बात है कि श्री सीतारामजी लाळस स्वयं एक चारण हैं तथा इस शैली की काव्य-परम्पराओं और शब्दावली से सुपरिचित हैं। इस कोश का यह सर्वाधिक सबल पक्ष कहा जा सकता है।

चारण शैली का एक बड़ा भाग ऐतिहासिक और वीर रसात्मक काव्य के रूप में है, यह लिख आए हैं। योद्धा, युद्ध, उसके विभिन्न उपकरण आदि आदि से सम्बन्धित सभी शब्दों का सूक्ष्म परिचय इस कोश में मिलता है। शस्त्र विशेष के पृथक् पृथक् अंगों के नामों के लिए बानगी के तौर पर तलवार के विभिन्न अंगों से सम्बन्धित ये शब्द

द्रष्टव्य हैं :—कंठी, कलसियौ, खजानो, नळ, पेटा, पीपळो, टोंक, मोगरौ, बतासौ, थेलौ आदि। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न बनावटों के आधार पर शस्त्र-विशेष के अनेक नाम राजस्थानी में प्रचलित हैं। इनका सम्यक् परिचय भी कोशकर्ता ने दिया है; यथा—तलवार के विभिन्न नाम रूमीसूरा, सोसनपता, मगरेव, लालूवाड़, देवीकवच, हुसैनी, हलवी, सिरोही, माड आदि।

कोश में पूर्व लिखित शेष चार शैलियों की रचनाओं के शब्दों को भी स्थान मिला है। यह भी प्रशंसनीय है कि ज्यों-ज्यों कोशकर्ता को अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्राप्त होती गईं, वह उनका उपयोग भी यथा स्थान करता गया पर कतिपय महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का जो इस कोश से पूर्व प्रकाशित थे, उपयोग किया जाना आवश्यक था। इनमें से कतिपय का नामोल्लेख किया जा सकता है:—श्री रामचरणजी महाराज की अणभैवाणी तथा आचार्य भीखणजी की पद्य-रचनाओं का संकलन—भिक्षु ग्रन्थ रत्नाकर (2 भागों में)। ये दोनों बृहत् ग्रन्थ क्रमशः सन्त और जैन काव्यो की शब्दावली के महत्त्वपूर्ण भण्डार हैं। संत संप्रदायों में विष्णोई, जसनाथी साहित्य के और निम्बार्क सम्प्रदाय के परशुराम-देवाचार्य को (परशुराम रचनाओं के शब्दों को लेने का यत्न भी करना चाहिए था। इसी प्रकार जैन साहित्य तथा लोक साहित्य विषयक शब्दावली पर और अधिक ध्यान दिया जाता जो अच्छा ही होता। ये तो मात्र सुझाव हैं। वैसे इन शैलियों की रचनाओं में प्रयुक्त अनेक शब्द किसी न किसी रूप में कोश में आ ही गए हैं।

राजस्थानी के अतिरिक्त यहाँ के साहित्यकारों ने राजस्थानी मिश्रित ब्रज और राजस्थानी मिश्रित खड़ी बोली में भी प्रभूतशः रचनाएँ लिखी हैं। पिंगल का तात्पर्य छन्दशास्त्र से है पर यह राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का नाम भी 'पिंगळ' है। सामान्यतः पिंगळ का व्याकरणिक ढाँचा ब्रजभाषा के आधार पर होता है पर उसमें राजस्थानी शब्दों और राजस्थानी-ध्वनि-परिवर्तनों के आधार पर बने शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। एक उदाहरण लें।

राजस्थानी कड़ (संस्कृत-कटि) शब्द का अर्थ कमर है। 'ड़' ध्वनि 'र' में परिवर्तित हो जाती है। उसके आधार पर 'कड़' से शब्द बना 'कर'। साधारणतः 'कर' का अर्थ हाथ होता है पर यहाँ 'कर' का अर्थ कमर भी होगा। बृहत् पृथ्वीराज रासौ में इस तरह के अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इस कोश में इनका संकेत-उल्लेख होना अतिरिक्त महत्त्व की बात होती। यों पिंगल का शब्दकोश-निर्माण एक पृथक् कार्य है। ध्यातव्य है कि पिंगल केवल काव्य भाषा के रूप में ही समादृत रही है। पृथ्वीराज रासौ, वंशभास्कर (अधिकांश में) पिंगल की रचनाएँ हैं। कतिपय संतों ने भी पिंगल में रचनाएँ की हैं पर उनमें भाषायी स्तर भेद काफी पाया जाता है। नीसाणी, झूलणा, चान्द्रायण आदि छन्दों में रचित रचनाएँ तथा कतिपय संतों और नाथों की वाणियों की भाषा राजस्थानी मिश्रित खड़ी बोली है। दोनों ही प्रकार की कतिपय रचनाओं का प्रयोग श्री सीतारामजी ने किसी न किसी रूप में किया है। इसी प्रकार मुख्य-मुख्य आधुनिक लेखकों की रचनाओं और प्राचीन गद्य रचनाओं को भी शब्द-चयन में ग्रहण किया गया है।

इस शब्दकोश में दिए गए विभिन्न शब्दार्थों में मतभेद सम्भव है। यह अपने ढंग का पहला कार्य है। इस प्रकार के कार्यों में अनेक कारणों से भूल-चूक और त्रुटियाँ रह जाना बहुत स्वाभाविक है। आशा की जाती है कि विद्वान् इसकी 'चूक' पर दृष्टिपात करते समय इसकी 'कूक' पर विशेष ध्यान देंगे।

श्री सीतारामजी के वैदुष्य का साकार रूप—यह कोश राजस्थानी का गौरव ग्रन्थ है। उनका यह कार्य भारतीय मनीषा के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

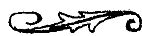
यदि कोश में प्रयुक्त शब्द-संख्या देखी जाए, तो वह लगभग दो लाख होगी। इसमें आए मुहावरों की संख्या हजारों में है।

यह कोश पिछले अठारह सालों से शनैः शनैः प्रकाशित होता रहा है। इसकी इस अन्तिम जिल्द का इस वर्ष प्रकाशित होना एक घटना है। इस महान् कार्य को सम्पन्न हुआ देखकर प्रत्येक विद्या-प्रेमी गौरव का अनुभव करेगा, इसमें संदेह नहीं।

कोशकर्ता श्री सीतारामजी लाळस राजस्थानी भाषा और साहित्य के तथा भारतीय विद्या के प्रेमियों की ओर से हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

कोश के निर्माण कार्य में समय-समय पर जिन सज्जनों ने इसके महत्त्व को समझकर तन, मन, धन और विचार-विमर्श से सहयोग दिया है, वे सब बधाई के पात्र हैं। चौपासनी शिक्षा समिति और उप-समिति 'राजस्थांनी सबद कोस' के अधिकारी गण तथा कार्यकर्ता तो विशेष रूपेण बधाई के पात्र हैं। 'समिति' ने साहित्य जगत् के सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत किया है जो ऐसी अन्य संस्थाओं के लिए स्पर्धा का विषय होना चाहिए।

भाषा एक सामाजिक दाय है। सभी जीवंत भाषाओं का शब्द-भंडार निरन्तर बढ़ता ही रहता है। वर्तमान में राजस्थानी साहित्य की दोहरी प्रगति हो रही है। एक ओर तो उसके प्राचीन ग्रन्थों का सुसम्पादन किया जा रहा है और दूसरी ओर अनेक लेखक साहित्य-सर्जना कर उसकी श्रीवृद्धि कर रहे हैं। अत. राजस्थानी शब्द कोश का कार्य ऐसा है जो इसके पश्चात् भी सतत रूप से चालू रहना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि 'समिति' इस ओर भी ध्यान देगी। मैं कोशकर्ता के स्वास्थ्य और शतायु होने की कामना करता हूँ।



सम्पादकीय निवेदन

भाषा की प्रामाणिकता एवं उसके संवर्द्धन के लिए शब्द कोश की अपनी महत्ता है। विश्व की समृद्ध भाषाओं के अपने-अपने सुसम्पादित कोश हैं। राजस्थानी भाषा के पूर्व के प्रकाशित जो शब्द कोश उपलब्ध हैं, वे प्रायः अपूर्ण हैं और उनमें वैज्ञानिकता का अभाव है। राजस्थानी भाषा एवं उसके समृद्ध साहित्य के अनुरूप उपयोगी एवं उच्चस्तरीय शब्द कोश की नितान्त आवश्यकता थी। यह एक सुयोग था कि सुहृदजन से कोश सम्पादन की प्रेरणा से मेरे अन्तर की अभिलाषा बलवती हुई जिसके परिणामस्वरूप 46 वर्ष पूर्व बृहद् राजस्थानी शब्द कोश के आकार एवं स्वरूप के प्रारूप का आकलन किया गया। इसी के अनुसार अभावों एवं बाधाओं की नानाविध घाटियों को पार करते हुए यह शब्द कोश 4 खण्डों की कुल 9 जिल्दों में सम्पूर्ण हुआ। अन्तिम खण्ड की इस अन्तिम जिल्द की संप्रस्तुति के साथ कोश की सम्पूर्णता हो रही है, यह आत्मसन्तोष की एक सुखद स्थिति है। 46 वर्षों की अनवरत श्रम साधना की यह सफलता साहित्य मर्मज्ञों एवं भाषाविदों की सद्भावनाओं का ही परिणाम है।

शब्द कोश की निर्मिति कितनी श्रम-साध्य, समय-साध्य और व्यय-साध्य है, भाषा प्रेमियों को बताने की आवश्यकता नहीं। राजस्थानी शब्द कोश सम्पादन के विचार का अंकुरण जिस सहज भाव से हो गया था उसके विपरीत इसकी क्रियान्विति उतनी ही कठिन एवं दुस्साध्य हो गई थी। इस कोश के सम्पादन कार्यकाल का जो एक दीर्घकालीन इतिहास बना है उसमें अर्थाभाव की अनुभूत विकलताओं और सुहृदसहयोगीजन की सद्भावनाओं का सुन्दर समन्वय हुआ है।

राजस्थानी बृहद् शब्द कोश सम्पादन-कथा एक स्वतन्त्र प्रकरण है, उसकी अभिव्यक्ति सम्प्रति उचित नहीं होगी। कोश का यह बृहद् आकार किसी एक व्यक्ति की शक्ति की परिसीमा का कार्य नहीं है। प्रारम्भिक अर्थाभाव की चपेट में ही कोस निर्माण कार्य में जो व्यवधान उपस्थित हुआ और जिस विकट परिस्थिति की अनुभूति हुई उस आधार पर कोश की सम्पूर्णता असम्भव ही प्रतीत हो रही थी। धीरे-धीरे यही तथ्य उजागर हुआ कि सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग के अभाव में कोश निर्माण जैसे अनुष्ठान की सम्पूर्ति कदापि सम्भव नहीं।

साहित्य संवर्द्धन के लिए सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग देना सरकार का दायित्व भले ही हो, लेकिन इसकी उपलब्धि के लिए सुयोग्य जन की कड़ी की आवश्यकता होती है। कोश निर्माण का प्रारम्भिक कार्य तो सद्भावी साहित्य प्रेमियों के सहयोग से आरम्भ तो हो गया, लेकिन प्रकाशन और व्यय-साध्य कार्य बिना समुचित अर्थोपलब्धि के अभाव में कैसे सम्पन्न हो सकता था। विकट अर्थाभाव में जब कोश प्रकाशन की कोई आशा नहीं रही उस समय स्व० ठाकुर कर्नल श्यामसिंहजी रोड़ला और स्व० श्री गोवर्द्धनसिंहजी मेड़तिया (खानपुर) आई० ए० एस० कोश के लिए ऐसे दृढ़ अवलम्ब बनकर आए कि इनके सान्निध्य और संरक्षण में कोश की सम्पूर्ति की आशा बंधने लगी।

श्रद्धेय स्व० ठाकुर कर्नल श्यामसिंहजी रोडला साहित्य प्रेमी ही नहीं साहित्य सेवी भी थे। साहित्य संकलन एवं संवर्द्धन के प्रति उनकी विशिष्ट रूचि थी। इस कोश कार्य की प्रारम्भिक स्थिति में ही मुझे आपका सान्निध्य प्राप्त हुआ। कोश निर्मिति के लिए अपेक्षित साहित्य की उपलब्धि में आपका विशेष सहयोग रहा। अर्थाभाव के कारण जब-जब प्रकाशन कार्य में शैथिल्य आया आपने अपने स्तर पर ही अर्थ व्यवस्था कर कोश कार्य को गति दी। बाधाओं से उत्पन्न, नैराश्य से घिरा और परिस्थितियों से थकित जब भी मैं आपके पास पहुँचा आपने आत्मीय भाव से मेरी परिस्थितियों को समझा और अपनी उदारता का परिचय दिया। यह सत्य है कि कोश का वर्तमान स्वरूप आपके ही सहयोग का प्रतिफल है। स्व० ठाकुर साहब कर्नल श्यामसिंहजी ने इस कोश के प्रति जिस निष्ठा और उदारता का परिचय दिया उसे यहाँ शब्दों में सीमित नहीं किया जा सकता। मैं इस पुण्यात्मा का ऋणी हूँ और कोश के प्रति आपने जो सहज स्नेहपूर्ण सहयोग प्रदान किया उनके लिए मैं हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस कोश के प्रारम्भिक कार्य को जब स्व० श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया (खानपुर) ने देखा तो अनायास ही उनका लगाव इस कोश के प्रति हो गया। इनके हृदय में साहित्य के प्रति सेवा भावना थी अतः इस कोश की सम्पूर्णता उनके जीवन की एक अभीप्सा बन गई। कोश सम्बन्धी कार्य में चाहे वह अर्थ सम्बन्धी था या व्यवस्था सम्बन्धी आपने सदैव पूर्ण उदारता दर्शायी। मैंने स्व० श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया में औदार्य, सौजन्य एवं सारल्य से परिपूर्ण जो व्यक्तित्व देखा उसके आधार पर यही कह सकता हूँ कि ऐसे सरल, सौम्य साहित्य प्रेमी इस धरा पर यदा-कदा ही अवतरित होते हैं। आप कोश के लिए सच्चे अर्थों में गोवर्द्धन बने और समय पर उसको विकट परिस्थितियों के वज्रपात से उबारा।

कोश के प्रति अपनत्व प्रकट करने वाले ऐसे आत्मीय-जन के लिए आभार-दर्शन को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। स्व० श्री गोरधन-सिंहजी मेड़तिया (खानपुर) के सौजन्यपूर्ण सहयोग के लिए यह हृदय चिर ऋणि है और ऋणत्व भावना की मूक-स्थिति जितनी सत्य और निष्ठायुक्त है वह मुखर होकर नहीं रह सकती। मेरे लिए यह अपार दु:ख की बात है कि राजस्थानी कोश का सच्चा हितैषी, दृढ़ समर्थक उसकी पूर्णता न देख सका। कोश का अन्तिम खण्ड प्रकाशनाधीन था कि 18 सितम्बर, 1977 को वह दिव्यात्मा इहलोक छोड़ गई। स्व० श्रीगोरधनसिंहजी मेड़तिया का पार्थिव शरीर भले ही कोश के स्थूल स्वरूप को न देख सके, परन्तु यह मेरी धारणा है कि उनकी आत्मा इस कोश के साथ आत्मसात् हो चुकी है। सृष्टि पर जब तक कोश की विद्यमानता है, उसकी उपयोगिता है, उस पावन आत्मा की स्मृति स्थिर है।

कोश के दूसरे खण्ड की पूर्णता के समय व्यय भार बढ़ने से पुन: अर्थाभाव का संकट उपस्थित हुआ। इस समय केन्द्रीय सरकार से आर्थिक सहयोग प्राप्त कराने में तत्कालीन संसद सदस्य डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने नि:स्वार्थ भाव से सहयोग प्रदान किया। डॉ० सिंघवी एक अच्छे विचारक और लेखक हैं। साहित्य के प्रति अनुराग उनकी पैतृक विरासत है। प्रकाशित कोश जिल्दों को देखकर आप बड़े प्रभावित हुए। आप ही के सहयोग से मैं भू० पू० प्रधान मन्त्री स्व० श्री लाल-बहादुर शास्त्रीजी से साक्षात्कार कर उन्हें कोश के प्रकाशित खण्डों का अवलोकन कराते हुए इसकी सम्पूर्णता की मेरी एकमात्र अभिलाषा से परिचित कराया। अभी पुन: वर्तमान प्रधान मन्त्री मान्यवर श्री मोरारजी देसाई से भी साक्षात्कार करने में आपने सहयोग प्रदान किया। आपके सौजन्य के फलस्वरूप ही मैं मान्यवर मोरारजी देसाई को राजस्थानी शब्द कोश की रचना से परिचित करा सका। डॉ० सिंघवी के समयानुकूल समुचित सहयोग के लिए मैं हृदय से उनका आभार स्वीकार करता हूँ।

कोश की प्रकाशित जिल्दों को देखकर सहज भाव से प्रेरित हो कोश कार्य हेतु सहयोग प्रकट करने वालों में स्थानीय साहित्य प्रेमी एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रतिष्ठित अभिभाषक श्री मरुधर मृदुल को भुलाया नहीं जा सकता। सरल स्नेहभाव से ओतप्रोत श्री मरुधर मृदुल ने सदैव मेरी समस्याओं को सुना और उनके निवारण में अपना पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया। कोश कार्य के सम्बन्ध में आपने जो सौजन्य प्रकट किया उसके लिए मैं हृदय से उनका पूर्ण आभार मानता हूँ।

स्थानीय साहित्य प्रेमियों में विशेषकर राजस्थानी भाषा में रूचि रखने वालों की सद्भावना मुझे कोश निर्माण कार्य के आरम्भ से ही प्राप्त होती रही। इनमें श्री कोमल कोठारी और श्री विजयदान देथा का प्रमुख स्थान है। रूपायन संस्थान बोरून्दा की स्थापना कर आपने लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति के प्रति अपनी परिष्कृत रुचि का परिचय दिया है। आप दोनों ने कोश निर्माण के कार्य को निकट से देखा और प्रकाशित खण्डों का अध्ययन कर इसे युग की आवश्यकता बताते हुए राजस्थानी भाषा की समृद्धि के लिए अनिवार्य कृति बताया। कोश सम्बन्धी कार्यों के लिए आपने सदैव प्राथमिकता के आधार पर सहयोग प्रदान किया। आप दोनों के इस सौहार्द्रभाव के लिए मैं हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कोश सम्पादन कार्य जिस लम्बी अवधि में सम्पन्न हुआ उसके अनुसार सम्पादन तथा प्रकाशन व्यवस्था का अनेक स्थितियों से गुजरना सहज स्वाभाविक था। सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग प्राप्त करना नितान्त आवश्यक था अतः नियमानुसार वैधानिक प्रकाशन समिति की देखरेख में कोश कार्य होना वाँछनीय था। द्वितीय खण्ड के प्रकाशन कार्य से ही कोश प्रकाशन कार्य "चौपासनी शिक्षा समिति" द्वारा गठित "उप-समिति राजस्थानी शब्द कोश" की देखरेख में होने लगा। इस उप-समिति के प्रथम अध्यक्ष के रूप में स्व० भाद्राजून राजा साहब श्री देवीसिंहजी ने कार्य करते हुए कोश कार्य को गति प्रदान की। कुछ ही समय पश्चात् ब्रिगेडियर "आपजी" श्री रणधीरसिंहजी ने अध्यक्ष पद ग्रहण किया। आपकी हार्दिक चाहना रही कि इस कोश का प्रकाशन सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो। अपनी निजी व्यस्तता के होते हुए भी कोश के प्रकाशन कार्य में आने वाले व्यवधानों का निवारण करने के लिए व्यक्तिगत रूप से रुचि ली। द्वितीय एवं तृतीय खण्ड आपकी अध्यक्षता में ही प्रकाशित हुए। इस अवधि में आपका जो स्नेह-सिक्त संरक्षण एवं हितैषीजन्य मार्गदर्शन मिला उसके लिए आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना अपना दायित्व समझता हूँ।

कोश के चतुर्थ खण्ड के प्रकाशन का कार्य जब प्रारम्भ हुआ तब माननीय महाराज श्री प्रह्लादसिंहजी ने उप-समिति राजस्थानी शब्द कोश के अध्यक्ष पद को ग्रहण किया। राजस्थानी भाषा एवं उसके साहित्य के लिए कोश की अनिवार्यता को आपने समझा और अपने सद्प्रयत्नों से इसे सम्पूर्ण कराने की स्थिति की ओर अग्रसर हुए। मुझे अनेक बार आपसे मिलने का अवसर मिला। आपने कोश सम्बन्धी कार्य निष्पादन में पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया। आपके सामयिक सहयोग के लिए आभार प्रदर्शित करता हूँ।

कोश कार्य हेतु नि:स्वार्थ भाव से समय देने वालों में डॉ० हीरा-लालजी माहेश्वरी, प्राध्यापक राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर का नाम भी उल्लेखनीय है, कोश की अन्तिम जिल्द में आपने भूमिका लिखकर साहित्य प्रेमियों के लिए कोश के स्वरूप का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है इस सहयोग के लिए डॉ० माहेश्वरी निश्चय ही धन्यवाद के पात्र हैं।

उदार महानुभावों के सद्प्रयत्नों से सरकार की ओर से कोश प्रकाशन के लिए समय-समय पर आर्थिक सहयोग प्राप्त होता रहा। इस कार्य हेतु वांछित पत्रों की प्रस्तुति के लिए शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों से मेरा सम्पर्क हुआ। तत्कालीन शिक्षा आयुक्त श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता एवं भूतपूर्व शिक्षा निदेशक श्री अनिल बोर्डिया

ने कोश जैसे कार्य की महत्ता को पहिचाना और मुझे कोश कार्य हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान किया। जोधपुर में जिलाधीश के पद पर कार्य करते हुए श्री कृष्णकुमारजी भटनागर एवं श्री नरेन्द्रसिंहजी सिसोदिया ने भी मेरी समस्याओं के निवारण में सहयोग का हाथ बढ़ाया। आप सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

स्थानीय सहयोगियों में श्री सतीशचन्द्र गोयल, भूतपूर्व उपकुलपति जोधपुर विश्वविद्यालय, श्री जहूरखाँ मेहर प्रवक्ता विश्वविद्यालय, जोधपुर, श्री रामनिवास शर्मा, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, श्री ओमप्रकाश शर्मा एवं श्री शान्तिलाल आदि का नाम उल्लेखनीय है। कोश सम्बन्धी कार्य के लिए आप सभी का सहयोग मुझे मिला इसके लिए मैं आपके प्रति धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

इस कोश के सम्पादन में लगभग अर्द्ध शताब्दी की अवधि व्यतीत हुई इस अवधि में कोश सम्बन्धित कार्य वैविध्य के कारण अनेक महानुभावों के सहयोग की अपेक्षा होना नितान्त आवश्यक बात थी। कोश कार्य को लेकर मैं जिन महानुभावों से मिला उन्होंने मुझे यथा समय पूर्ण सहयोग प्रदान किया। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मेरे प्रति सच्ची सहानुभूति रखने वाले एवं हृदय से कोश कार्य में सहयोग देने वाले सभी महानुभावों के नामों का उल्लेख यहाँ नहीं हो पाया है। आवश्यकतानुसार प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड की प्रथम जिल्द के प्रकाशन के अवसर पर मैं आभार प्रदर्शित कर चुका हूँ फिर भी उन सभी महानुभावों से क्षमा चाहते हुए उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने परोक्ष या अपरोक्ष रूप से कोश सामग्री सग्रह करने प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग देने तथा अन्य स्रोत से उपयोगी साहित्य सामग्री उपलब्ध कराने में सहयोग प्रदान किया है।

इस खण्ड के प्रकाशन के साथ "राजस्थानी शब्द कोश" का पूर्ण स्वरूप जिसमें लगभग दो लाख शब्दों का संग्रह है, विद्वज्जन के समक्ष है। उपादेयता की कसौटी साहित्यिक समाज है। मुझ अकिंचन से जो प्रयास सध सका वही संप्रस्तुत है। न्यूनताओं और त्रुटियों के लिए विज्ञसमाज मुझे क्षमा करते हुए उपयोगी सुझाव प्रेषित कर अनुगृहीत करेगा ऐसी मेरी हार्दिक अभिलाषा है।

धन्यवाद

शास्त्री नगर,
जोधपुर
संवत् २०३५
दिपावली

सीताराम लालस

संकेत और चिन्ह

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा	भू० का०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इब्र०	इब्रानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म० वा० रू०	कर्मवाच्य रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमानकाल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	सं०	संस्कृत
गो० रा०	गोरादि	सं० उ०	संज्ञा उभयलिंग
ची०	चीनी भाषा	सं० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	सं० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डिं०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त्त०	पुर्त्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जग्गौ खिड़ियौ
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बंधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फ्रां०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भा० वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान		प्रयोजन
❀	शब्द के आगे	....	यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
'	शब्द के अक्षरों के बीच में सिर पर	....	यह ध्वनि-लोपक चिन्ह हैं, जहाँ 'ह' की ध्वनि लोप होती है वहां आता है।
—	शब्द के नीचे	....	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
'....'	शब्द के दोनों ओर सिरों पर	....	व्यक्ति वाचक संज्ञा का सूचक (इनवर्टेड कॉमाज)

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक० अनेका०	अनेकार्थी कोश	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधांन माळा	उदयरांम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमरकाव्य	ऊमरदांन लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नांम माळा	वीरभांण रतनू, उदयरांम बारहठ
ऐ० जै० का० सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपा. अगरचन्द बारहठ
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयरांम बारहठ
कां० दे० प्र०	कान्हड़दे प्रबन्ध	पद्मनाभ
गी० रां०	गीत रांमायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० बं०	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाड़खां आढौ
चितरांम	राजस्थानी संस्कृति रा चितरांम	जहूरखां मेहर
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० नां० मा०	डिंगल नांम माला	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तँवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
जां० वि० सं० सा०	जांभोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य	डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
जां० स०	जाभोजी की सबदवांणी	डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
द० दा०	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवि०	देवियांण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्रं०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	संपा० अगरचन्द नाहटा
नां० मा०	नांम माला	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगल कोश	नागराज पिंगल
ना० द०	नागदमण	साइयां झूला
नी० प्र०	नीति प्रकाश	सगरांमसिंह मुहणोत
नैणसी	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
पं० पं० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकाश	मोडजी आसियौ
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकाश	हमीरदांन रतनूं
पी० ग्रं०	पीरदांन ग्रन्थावळि	पीरदांन लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदांन गाडण
बां० दा०	बांकीदास ग्रन्थावळि	बांकीदास
बां० दा० ख्यात	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ० मा०	भक्तमाल	ब्रह्मदास
भिक्खु०, भि० द्र०	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
मा० कां० प्र०	माधवानल कांम कंदला प्रबंध	कवि गणपति

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
मा० म०	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी देवीप्रसाद
मा० वचनिका	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरां	मीरां बाई	मीरां
मे० म०	मेहाई महिमा	हिंगळाजदांन कवियौ
र० ज० प्र०	रघुवर जसप्रकाश	किसनौ आढौ
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मंछारांम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोतरी वचनिका	जग्गौ खिड़ियौ
र० हमीर	रतनाहमीर री वारता	महाराजा मानसिंह
रा० जै० रासौ	राउ जैतसी रौ रासौ	अज्ञात
रा० जै० छंद	राउ जैतसी रौ छंद	वीठू सूजौ नगराजोत
रां० रा०	रांम रासौ	माधोदास दधवाड़ियौ
रा० रू०	राज रूपक	वीर भांण रतनू
रा० वं० वि०	राठौड़ वंस री बिगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य संग्रह I	सम्पादक स्वामी नरोतमदास
ल० पिं०	लखपत पिंगल	हमीरदांन रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपालदांन कवियौ
लो० गी०	राजस्थानी लोक गीत	अज्ञात
वं० भा०	वंश भास्कर	सूर्यमल मिसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	संपादक भोगीलाल सांडेसरा
वि० कु०	विनयकुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचन्द्र
वि० स०	विड़द सिणगार	कविराजा करणीदांन कवियौ
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मिसण
वी० स० टी०	वीर सतसई री टीका	किसोरदांन बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
वेलि टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
बृस्त०	बृहत्स्तवनावली	संग्रह
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० वं०	शिखर वंशोत्पति	गोपालदांन कवियौ
शि० सु० रू०	शिवदांन सुजस रूपक	लालदांन बारहठ
स० कु०	समयसुंदर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समयसुंदर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश I, II, III	कविराजा करणीदांन
ह० नां० मा०	हमीर नांम माला	हमीरदांन रतनू
ह० पु० वां०	श्रीहरिपुरुष की वांणी	श्री हरिपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा० भा०	हाला भाला रा कुंडळिया	ईसरदास बारहठ

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(तृतीय जिल्द)

स

स-सं. पु. [सं.] नागरी या संस्कृत वर्णमाला का बत्तीसवां व्यञ्जन जिसका उच्चारण-स्थान दन्त होने के कारण दन्त्य कहा जाता है। वि० वि०—संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में यह वर्ण उच्चारण भेद से तालव्य, मूर्धन्य एवं दन्त्य तीन प्रकार का माना गया है, जिनके रूप क्रमशः 'श', 'ष' तथा 'स' हैं। परन्तु प्राकृत, अपभ्रंश एवं राजस्थानी भाषा की लिखावट में दन्त्य 'स' का ही प्रयोग किया जाता है जो तीनों रूपों का प्रतिनिधित्व करता है। संस्कृत वैयाकरणों के मतानुसार इसका उच्चारण स्थान दन्त, आभ्यन्तर प्रयत्न ईषद्विवृत व बाह्य प्रयत्न महाप्राण, और अघोष हैं। आधुनिक वैयाकरणों के अनुसार यह वर्त्स्य संघर्षी अघोष ध्वनि है इसका उच्चारण जीभ की नोक से वर्त्स्य स्थान को रगड़ के साथ छूकर किया जाता है।

सं-सं. पु. [सं. शं.] १ सुख, आनन्द, हर्ष। (एका.)
२ कल्याण। (एका.)
उ०—सं कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया। ओहं सोंहं अखया अभया, आई अजया विजया उमया।—देवि.
३ वैराग्य। ४ शान्ति।
५ शिव, शंकर। (एका.)
६ विष्णु। ७ षड्ज।
[सं. स] ८ आकाश। ९ इन्द्रिय।
१० कारण। (एका.)
११ धार। १२ पक्षी। १३ मधु।
१४ रक्षक। (एका.)
१५ रोग। १६ शनिश्चर।
१७ शरण। (एका.)
१८ शरीर। (एका.)
१९ सर्प, सांप। २० स्मरण।
२१ पवन, हवा। (एका.)
२२ प्रकाश। (नां. मा.)
वि.—१ शुभ। २ सर्वोत्तम।
३ रक्षक। (एका.)
अव्य. [सं. सम्] समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरन्तरता, औचित्य आदि सूचित करने का एक अव्यय या उपसर्ग।

संई—१ देखो 'सखी' (रू. भे.)
उ०—आयी रे आयी मारू सांवणियै री तीज। राय संइयां नै कसूंबौ रे म्हारा गाढा मारू ओढियौ।—लो. गी.
२ देखो 'सांमी' (रू. भे.)
उ०—मस्तक मेरै पांव धर, मंदिर मांहीं आव। संइयां सोवै सेज पर, दादू चंपै पांव।—दादूबांणी
३ देखो 'सांई' (रू. भे.)

संईयार—देखो 'सांईआर' (रू. भे.)

संक—देखो 'संका' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)
उ०—१ धणी सूंपां सरण मरण संक धारियां, लाज मन धरै जैसांणगढ लारियां।—जसजी आढौ
उ०—२ सुर नर नाग नमै सह कोय, करै नह संक असंक न कोय।—रांमरासौ
उ०—३ नारायण देवां मंही, ज्यूं तारायण चंद। कमळा पगचंपी करै, 'बंक' संक तज बंद।—बां. दा.
उ०—४ ओटहि बैठा पड़िगनौ लै दांम उग्राही, मोटै खोंदाळम तणी, मन संक न काही।—मालौ सांदू

संकड़ाई-सं. स्त्री.—देखो 'सांकड़ीलौ' (रू. भे.)
उ०—१ कुसळौ तिलोक संकड़ाई में चालवा लागा। अनै मन मैं जांणै भीखणजी रा स्रावकां नें फेरां। परुपणां सांकड़ी करवा लागा—साधु ने तीजा पहर नीं गोचरी करणी।—भि. द्र.
उ०—२ स्वांमी भीखण जी वीलाड़ै पधारचा। गांम में लोक लुगाई द्वेस घणौ करै। आहार पांणी री संकड़ाई।—भि. द्र.

संकड़ेलौ—देखो 'सांकड़ीलौ' (रू. भे.)

संकड़ै—देखो 'सांकड़ै' (रू. भे.)
उ०—भड़ां रूप चाढण घड़ा बेहड़ा भावसिंघ, कळह रा थंभ न्याहै कहावै। सदालग चाड जोधां तणी संकड़ै, आवियौ जेम रिणमाल आवै।—राठौड़ भावसिंघ कूंपावत रौ गीत

संकड़ौ—देखो 'सांकड़ौ' (रू. भे.)
उ०—१ कांम पताका काय, उदै जै अंकड़ा। राजस तजि चित रोस क, सोक्यां संकड़ा।—बां. दा.
उ०—२ अव्वल संकड़ी कोठरी, दूजी मांझळ-रात। तीजां संकड़ौ ढोलियौ, मतवाळै कौ साथ।—लो. गी.
उ०—३ सुज दास टालण संकड़ा, लहरेक आपण लंक। भूपाळ सिध धन भूपती, रिझवार कीरत बड रती।—र. ज. प्र.
क्रि. प्र.—करणौ, पड़णौ, होणौ।
(स्त्री. संकड़ी)

संकज-सं. स्त्री.—केसर। (अ. मा.)

संकट-सं. पु. [सं.] १ दुख, मुसीबत।
उ०—करता मांचा दै जांचा कूतरिया, उतरत्ता आसाढां मूंढा ऊनरिया। सैणां संकट में बंकट सब राया, घांटा घुटियोड़ा घूंघट घबराया।—ऊ. का.
२ पीड़ा, तकलीफ, कष्ट।
उ०—बिना कळदार बुद्धि नहिं बंसा, पुनि या बिन नहिं होत प्रसंसा। संकट हरण भट्टु बेसंसा, येह नर नारि जक्त अवतंसा।
—ऊ. का.
३ बाधा, अड़चन, रोड़ा।
उ०—रोम रोम आंमय रहै, पग पग संकट पूर। दुनियां सूं नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दूर।—बां. दा.

४ आफत, विपत्ति, आपत्ति ।

उ०—१ 'बांका' मेहासद्यू म बीसरै, संकट हरै सांभळै साद। गडवाड़ा गढ ओलै गाजै, मढ रै ओळै गढां अजाद ।—बां. दा.

उ०—२ नरेस कहियौ पहली मऊ रौ फरमांण आयौ जरै ही म्हैं तौ जांणि लीधौ अब साहरै म्हारा माथा सूं कांम पड़ियौ । अर इण संकट सूं भी बिसेस अब किसौ कांम रहियौ जिण री रीझ माथै बळा रौ देबौ तेवड़ियौ ।—वं. भा.

क्रि. प्र.—करणौ, देणौ, पड़णौ, लागणौ, होणौ ।

५ रोग, बीमारी । (अ. मा.)

क्रि. प्र.—लागणौ, होणौ ।

५ चौसठ भैरवों में से एक ।

६ धर्म एव कुकुम के पुत्रों में से एक ।

रू. भे.—संगट, संगठ ।

संकटगीर–वि. [सं. संकट+फा. गीर] १ दुःखी, पीड़ित ।

२ रोगी, बीमार ।

संकटचौथ–सं. स्त्री. यौ. [सं. संकट+चतुर्थी] १ प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि । (ज्योतिष)

२ माघ मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि ।

संकटणौ, संकटबौ–क्रि. अ.—संकट में पड़ना, पीड़ित होना, संकटयुक्त होना।

उ०—'चालक' नै मढ़ हूंता चावर, झांझरियाळ सदोमत झूलर। काछ-पंचाळ लगै छै डाकर, आई आवजै व्रन संकटियै ऊपर।

—प्रथ्वीराज राठौड़

संकटणहार, हारौ (हारी), संकटणियौ—वि० ।

संकटिओड़ौ, संकटियोड़ौ, संकट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संकटीजणौ, संकटीजबौ—भाव वा० ।

संगटणौ, संगटबौ, संगठणौ, संगठबौ—रू० भे० ।

संकटहर–वि. यौ. [सं. संकट+हर] संकट को हरण करने वाला, नाश करने वाला या दूर करने वाला ।

सं. पु.—ईश्वर । (नां. मा)

संकटा–सं. स्त्री. [सं. संङ्कटा] १ एक देवी विशेष जो संकटों को नाश करने वाली मानी जाती है और उसका मन्दिर काशी में है।

२ आठ योगनियों में से एक योगिनी विशेष ।

वि. वि.—ज्योतिषानुसार आठ योगनियों के नाम निम्नलिखित है :—

१ मंगला, २ पिंगला, ३ धन्या, ४ भ्रमरी, ५ संकटा, ६ भद्रिका, ७ उल्का और ८ सिद्धि ।

संकटियोड़ौ–भू. का. कृ.—संकट में पड़ा हुआ, पीड़ित हुवा हुआ, संकटयुक्त हुवा हुआ।

(स्त्री. संकटियोड़ी)

संकणौ, संकबौ–क्रि. अ. [सं. शंकनम्] १ शंका होना, सन्देह होना ।

उ०—मनि संकांणी मारूवी, खुणसउ राखइ कंत । हंगतां प्री सूं वीनवइ, सांभळि, प्री विरतंत ।—ढो. मा.

२ डरना, भयभीत होना, घबराना ।

उ०—मन माहि संकै सुभट, पदमणि दीधी राय । जो छूटै नहीं तौ रखै, दोन्यु स्वारथ जाय ।—प. च. चौ.

३ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना ।

उ०—संकै जावै संग सूं, अरध निसा मैं ऊठ । नर मूरख तौ गिण न दै, पातरिया नु पूठ ।—बां. दा.

उ०—२ धोळा खोसै, काच-नफ्चूंटी हरदम हाथां में ही राखै । देखणियां सूं संकतौ लकोवै है, पण ठोडी रै चिगदा चालतौ ही जावै है ।

— दमयंती

संकणहार, हारौ (हारी) संकणियौ—वि० ।

संकिओड़ौ, संकियोड़ौ, संक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संकीजणौ संकीजबौ—भाव वा० ।

संकाड़णौ, संकाड़बौ, संकाणौ, संकाबौ, संकावणौ, संकावबौ ।

—रू० भे०

संकदजणणी–सं. स्त्री. [सं. स्कंदजननी] पार्वती ।

संकपालिका–सं. स्त्री. एक प्रकार का आभूषण विशेष । (व. स.)

संकप्प—देखो 'संकल्प' (रू. भे.)

उ०—दोख लागै तिकौ च्यार परकार ना, धुर थकी नांम नै अरथ तै धारणा । किणहीं कारण बसै पाप जै कीजियै, प्रथम तै नांम संकप्प कहीजियै ।—र. ज. प्र.

संकमान–सं. पु. [सं. शंकमान] नागवंशीय प्रवीर राजा का पुत्र, एक राजा ।

संकर–सं. पु. [सं. शंकर] १ शिव, महादेव । (डिं. को; ना. डिं. को.)

उ०—पारस प्रासाद सेन संपेखै, जांणि मयंक कि जळहरी । मेरु पालती नखित्र माळा, ध्रू माळा सकर धरी ।—वेलि.

२ शंकराचार्य ।

३ सूरज, सूर्य । (ना. डिं. को.)

३ एक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में १६ व १० के विराम से २६ मात्राएं होती हैं तथा अन्त में लघु होता है । (क. कु. बो.)

३ संगीत में मेघ राग का पुत्र एक राग विशेष ।

५ भीमसेनी कपूर ।

[सं. संकर] ६ भिन्न वर्ण के माता-पिता से उत्पन्न सन्तान, दोगला ।

७ भिन्न वस्तुओं का मिश्रण ।

८ एक ही आश्रय से अनेक अभिप्राय देने वाली ध्वनि ।

(साहित्य)

९ दो अलंकारों के इस प्रकार शामिल रहने की अवस्था, कि वे दोनों अलग २ नहीं किये जा सकते हों । (साहित्य)

[सं. शंकर] १० पाण्डव देशाधिपति सुरुचि का पिता जिसने गलती से शाकल्प मुनि का पत्नी सहित वध कर डाला था ।
११ कश्यप एवं दनू का एक पुत्र, दानव ।
१२ एक सनातन विश्वदेव । १३ एक शिव भक्त ।
वि. [सं. शंकर] १ कल्याण करने वाला, कल्याणकारी ।
२ आनन्ददायक, आनन्दकारी ।
रू. भे.—संकरयं ।
अल्पा;—संकरियौ ।

संकरग्रास–सं. पु. [सं. शंकर+ग्रासः] धनुष । (अ. मा.)

संकरखण–सं. पु. [स. संकर्षण] १ श्रीकृष्ण के भाई बलराम । (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)
उ०—चढिया हरि सुणि **संकरखण** चढिया, कटबंध नह घणा, किध । एक उजाथर कळहि एहवा, साथी सहु आखाढसिध ।
—वेलि.
२ श्रीकृष्ण । (अ. मा.)
३ अपनी ओर खींचने की क्रिया ।
४ खेत में हलजोतने की क्रिया ।
५ संघर्षण । (४) ग्यारह रुद्रों में से एक । (७) एक वैष्णव सम्प्रदाय ।

संकरघरणि, संकरघरणी-सं. स्त्री. यौ. [सं. शंकर+गृहिणी] शिव की स्त्री पार्वती । (डिं. को.)

संकरण–सं. पु. [सं.] मिश्रित होने की क्रिया या भाव ।
वि. [सं. शंकरण] शिव का, शिव से सम्बन्धित ।
उ०—सघण री छटा किरि उपटा अणसरण, **संकरण** चुवड़ि पण धरण सीधौ । बंधव रौ ग्रहण करि उग्रहण अणसरण, 'करण' तण नळ बरण भखण कीधौ ।—पदमसिंघ राठौड़ रौ गीत

संकरणी–सं. स्त्री. १ हरड़, हरड़ै, हड़ । (नां. मा.)
२ दुर्गा, पार्वती, शिवा ।

संकरजटा–सं. स्त्री. यौ. [सं. शंकरजटा] १ रुद्रजटा ।
२ सागुदाना, साबूदाना ।

संकरता–सं. स्त्री. [सं. संकर+ता प्रत्य.] १ मिश्रित होने की अवस्था या भाव ।
२ दोगला होने की अवस्था या भाव, दोगलापन ।

संकरताळ–सं. स्त्री. [सं. शंकर ताल] संगीत का एक ताल विशेष ।

संकरतीरथ–सं. पु. यौ. [सं. शंकरतीर्थ] एक तीर्थ स्थान । (पुराण)

संकरप्रिय–सं. पु. यौ. [सं. शंकरप्रिय] १ अर्क, आक ।
२ भांग ।
३ धतूरा ।

संकरभास्य–सं. पु. यौ. [सं. शंकरभाष्य] शंकराचार्य द्वारा की गई श्रीमद् भगवत् गीता की टीका ।

संकरयं—देखो 'संकर' (रू. भे.)

संकरवांणी–सं. स्त्री. यौ. [सं. शंकर वाणी] जो सदा सत्य होता है, ब्रह्मवाक्य ।

संकरसैल–सं. पु. यौ. [सं. शंकर शैल] कैलाश पर्वत जो महादेव का निवास-स्थान माना जाता है ।

संकरस्वांमी – देखो 'संकराचारच' ।
उ०—बैसाखां में बिळखा बांमी, हुयगा सबळा जैन बिरांमी । आखातीजां धणी अमांमी, सिद्ध जन्मियौ **संकरस्वांमी** ।
—ऊ. का.

संकरांत, संकरांति, संकरांयत, संकरांयति–सं. स्त्री. [सं. संक्रान्ति] १ सूर्य अथवा किसी अन्य ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में जाने का समय ।
२ सूर्य या अन्य ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि में जाने की क्रिया ।
३ वह दिन, जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में गमन करता है । इस दिन को प्रायः पवित्र माना जाता है एवं लोग स्नान, दान, पूजा आदि करते हैं तथा उत्सव मनाते है ।
४ उक्त दिन मनाया जाने वाला उत्सव ।
५ मकर सक्रान्ति ।
उ०—१ पद वनरावन पांमियौ, दुरद दिखाळै दांत । सीह थयौ वन साहिबौ, ठींगां री **संकरांत** ।—बां. दा.
उ०—२ म्हैं तौ आं चार पांच दिनां में आछी तरै पतवांणी कै लाठी जिणरी भैंस । लाठां री **संकरायत** है । पइसां री खीर है ।
—फुलवाड़ी
वि० वि०—संक्रान्ति का अर्थ सूर्य का मकर राशि में संक्रमण करने से है । अन्य ग्रहों के किसी राशि में संक्रमण होने वाले समय को इतना महत्व तथा पुण्यकाल नहीं माना जाता है ।
मुहा०—ठींगां री संकरांत=बल के आधार पर जबरदस्ती कोई कार्य कर लेने वाले के प्रति ।
रू. भे.—संक्रांत, संक्रांति, संक्रांयत, सकरांत, सकरांति, सकरायंत, सकरायंति ।

संकरा–सं. स्त्री. [सं. शंकरा] १ पार्वती, भवानी ।
२ मजीठ ।
३ शमी वृक्ष ।
४ शंकर नामक राग । (संगीत)
वि. स्त्री.—कल्याण करने वाली ।

संकराचारज, संकराचारच, संकराचारिज, संकराचारी–सं. पु. [स. शंकराचार्य] एक प्रसिद्ध शैव आचार्य जो अद्वैत मत के प्रतिपादक तथा प्रवर्त्तक थे ।
उ०—वांम दखिण मति दुज वारिज, चवै प्रमांण **संकराचारिज** । उवै सास्त्र लखि दुज्ज उचारै, ध्यांन धरेस अखंडित धारै ।
—सू. प्र.

वि. वि.—इनका जन्म सन् ७८८ ई. में केरल देश में कालपी या कालटी नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम शिवगुरु व पितामह का नाम विद्याधर और माता का नाम सुभद्रा था। मतान्तर से इनका जन्म शिवगुरु और आर्याम्बा नामक जम्बूतरि दम्पति से हुवा था। शिवगुरु ने बहुत दिनों तक सपत्नीक शिव की आराधना करने के पश्चात् इन्हें पुत्र रत्न के रूप में पाया था अतः इनका नाम शंकर रखा था। इनके पिता का देहान्त इनकी तीन वर्ष की अवस्था में ही हो गया था। ये इतने विलक्षण मेधावी थे कि ये छः वर्ष की अवस्था में ही कठिन दार्शनिक समस्याओं की मीमांसा करने लगे थे और शीघ्र ही वेद-वेदांगों में पारंगत हो गये और आठ वर्ष की अवस्था में संन्यास ग्रहण कर लिया था। मतान्तर से इन्होंने संन्यास-ग्रहण ब्रह्मचर्यावस्था के पश्चात् किया था। इनके संन्यास ग्रहण करने की कथा बड़ी विचित्र है। कहते हैं कि माता अपने एक मात्र पुत्र को संन्यासी बनने की आज्ञा नहीं देती थी। एक दिन शंकर अपनी माता के साथ किसी आत्मीय के यहां से लौट रहे थे, तब नदी पार करने के लिए वे उसमें घुसे। गले तक पानी में पहुँच कर इन्होंने माता को संन्यास ग्रहण करने की आज्ञा न देने पर डूब मरने की धमकी दी। इससे इनकी माता ने भयभीत होकर तुरन्त संन्यासी होने की आज्ञा प्रदान इस शर्त पर की कि उसकी (शंकराचार्य की माता) की मृत्यु के समय वे पास रहें और अन्त्येष्टि क्रिया करें। इन्हें आज्ञा मिलते ही ये नर्मदा के तट पर श्री गौडपाद के शिष्य श्रीगोविन्द भगवत् पाद के शिष्य बने। पहले ये काशी रहे तत्पश्चात् इन्होंने विजिलबिदु के तालवन में मंडनमिश्र और उसकी विदुषी पत्नी भारती को शास्त्रार्थ में पराजित किया और मंडनमिश्र को अपना शिष्य बनाया। इन्होंने वैराग्य आत्मज्ञान और भक्ति को मुक्ति का साधन बताया। इन्होंने ही वैदिक धर्म को पुनरुज्जीवित किया था। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् इन्होंने समस्त भारत की यात्रा अपने मत के प्रचारार्थ की थी जिसका नाम 'शंकरदिग्विजय' है। इन्होंने जैन व बौद्ध धर्म का खण्डन किया था। उपनिषदों और वेदों पर इन्होंने कई टीकाएं लिखी थी। इन्होंने भारत वर्ष में चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते हैं और जिनके प्रबन्धक व गद्दी के अधिकारी शंकराचार्य कहे जाते हैं। वे चारों स्थान निम्नलिखित हैं—पूर्व में जगन्नाथ पुरी में गोवर्धन पीठ, पश्चिम में द्वारिका में शारदापीठ, उत्तर में बद्रिकाश्रम के पास, उससे २० मील दक्षिण की तरफ ज्योतिर्मठ जिसे आजकल जोशीमठ भी कहते हैं और दक्षिण में शृंगेरी (भूतपूर्व मैसूर राज्य में) प्रथम और मुख्य पीठ। शब्द सागर व मानक कोष आदि में शृंगेरी पीठ न लिखकर 'करवेरी मठ' लिखा है जो भ्रमित है। यह त्रुटि इस कारण हुई प्रतीत होती है कि इन चार पीठों या मठों के अतिरिक्त काशी के सुमेर और कांची कामकोठि भी आचार्य शंकर के पीठ कहे जाते हैं परन्तु अधिकांश विद्वान इस बात के समर्थक नहीं है और इन्हें अधिकार सम्पन्न मठ नहीं मानते इनमें से कामकोटि पीठ के विषय में लिखा मिलता है कि मुसलमानों के आक्रमण के कारण १७ वीं शताब्दी के उपरान्त इसका स्थानान्तरण तजोर और फिर कावेरी के किनारे कुंभ कोणम में कर दिया गया। इसी को 'करवीर' लिखा हैं।

ये शंकरावतार माने जाते हैं। ये भारतीय संस्कृति के प्रधान स्तम्भ हैं।

इन्होंने ब्रह्मसूत्र और उपनिषद, गीता आदि के भाष्य, सौन्दर्य लहरी, मोहमुद्गर, भजगोविन्दम, आत्मबोध ललिता त्रिशति, प्रबोध सुधाकर, अद्वैतानुभूति आदि कई विशिष्ट ग्रन्थ लिखे हैं।

ये सन् ८२२ ई० में केदारनाथ के समीप ३२ वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवासी हुवे थे।

संकराभरण—सं. पु. [सं. शंकराभरण] सम्पूर्ण जाति का एक राग विशेष। (संगीत)

संकरालय—सं. पु. यौ. [सं. शंकर+आलय] कैलाश पर्वत, जो शंकर का निवास स्थान माना जाता है।

संकरावास—सं. पु. यौ. [सं. शंकर+आवास] १ शंकर का वास-स्थान, कैलाश पर्वत।

२ श्मशान भूमि।

संकरियौ—सं. पु.—१ एक प्रकार का हाथी।

२ देखो 'संकर' (अल्पा; रू. भे.)

संकरी—सं स्त्री. [सं. शंकरी] १ पार्वती, गिरजा।

(अ. मा., डिं. को; ह. नां. मा.)

२ दुर्गा, भवानी।

उ०—तू होज उपावै ईसरी, मनछा आपांणी। फेर सघारै संकरी, मन दया न आंणी।—गज-उद्धार

३ एक महाविद्या।

उ०—······वारुणी, दारुणी, भास्करी, संकरी, जया, विजया, घोरा, कोबेरी, प्रवाही, मदनसेना, बलमथनी, गोदिनी, पंसांनी, बागेस्वरी, सिद्धाबी, अजरामरा इत्यादि महाविद्या। —व. स.

[सं. संकरी] मि. दोगला, वर्णसंकर।

संकरेचा—सं. स्त्री.—चौहान वंश की एक शाखा।

संकळ—देखो 'सांकळ' (रू. भे.) (व. स)

उ०—१ खळळ संकळ मद खळळ, मसत घूमंत मदगळ। मेघ डमर नीसांण, महीमुरतबां झळाहळ।—सू. प्र.

उ०—२ गहि चाढै मंडोवर जंगळ, सांकड़ा मिळिया दळ सब्बळ। समहर कुळ लज्या पै संकळ, गमां गयां वीटांणौ 'गोकळ'।

—राठौड़ गोकळ (सुजांनसिंहोत, ईसरोत) रौ गीत

उ०—३ 'सादूळै' संकळ सहै, तोडै लाज जंजीर। स्रोण सलौ-भौ चीतवै, गिणै निलौ-भौ नीर।—गु. रू. बं.

सकळजथा-सं. स्त्री.—डिंगळ साहित्य में गीत (छन्द) रचना का एक नियम विशेष जिसमें शृंखलाबद्ध विधानपूर्वक भावों का वर्णन किया जाता है।

संकलण-सं. पु. [सं. संकलन] १ संग्रह, ढेर।

२ एकत्रीकरण।

३ अनेक ग्रंथों से अच्छे विषय चुनने की क्रिया।

संकळणौ, संकळबौ-क्रि. स.—१ संकलित करना, संग्रह करना।

२ एकत्रीकरण करना।

३ विभिन्न ग्रंथों में से अच्छे विषयों को चुनना।

क्रि. अ.—४ शस्त्रों से सुसज्जित होना।

उ०—माहौ माहि तैं लसकर बै मिलिया, सनद्ध बद्ध संकळिया। टंकारव लागे नवि टलिया, भड़ सहु कोई भिलिया रे।—वि. कु.

संकळणहार, हारौ (हारी), संकळणियौ—वि०।

संकळिश्रोडौ, संकळियोड़ौ, संकळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकळाड़णौ, संकळाड़बौ, संकळाणौ, संकळाबौ, संकळावणौ, संक-ळावबौ—प्रे० रू०।

संकळीजणौ, संकळीजबौ—कर्म वा०।

संकळप—देखो 'संकल्प' (रू. भे.)

उ०—१ कमधजां छात जिग वात क्रत, लख विख्यात संकळप लियौ। रिखि वयण आद वासिस्ट ग्रग, कहिया तिम उद्यम कियौ।—रा. रू.

उ०—२ दो जणां सायरौ देय'र ऊभौ कियौ। परणावण री विधि वेगी-वेगी होवण लागी। चंदू रौ हाथ पकड़'र संकळप भरायौ।—वरसगांठ

संकळपणौ, संकळपबौ-क्रि स. [सं. संकल्पनं] १ किसी बात के लिए पक्का विचार करना, दृढ़ निश्चय करना।

उ०—'विहारी' दिन वंकड़ै, वंका सेर जुआंण। रहिया गढ जाळोर सूं, संकळपे आपांण।—गु. रू. बं.

२ धार्मिक कार्य के निमित्त हाथ में जल लेकर कुछ मंत्र पढ़ कर दान करना।

उ०—तद गोगेजी नूं बूड़ैजी री बेटी परणाई। ताहरां बाई रै दायजै री बखत किहि गायां संकळपी, किही क्युं ही संकळपियौ। ताहरां पाबूजी कह्यौ—बाई! हूं तोनूं दोदै सूंमरै री सांढां रा वग आंण देईस।—नैणसी

३ विचार करना, इरादा करना।

४ समर्पण करना।

संकळपणहार, हारौ (हारी), संकळपणियौ—वि०।

संकळपिश्रोड़ौ, संकळपियोड़ौ, संकळप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकळपीजणौ, संकळपीजबौ—कर्म वा०।

संकळप्पणौ, संकळप्पबौ, संकल्पणौ, संकल्पबौ—रू० भे०।

संकळपियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी बात के लिए पक्का विचार किया हुआ, दृढ़ निश्चय किया हुआ। २ धार्मिक कार्य के निमित्त हाथ में जल लेकर कुछ मंत्र पढ़ कर दान किया हुआ। ३ विचार किया हुआ, इरादा किया हुआ। ४ समर्पित।

(स्त्री. संकळपियोड़ी)

संकळप्पणौ, संकळप्पबौ—देखो 'संकळपणौ, संकळपबौ' (रू. भे.)

उ०—बळिवंत जोधं (बू) 'ढण' हरौ, सूर धीर साकौ करण। संकळप्पि प्रांण जाळोर सूं, नीमै रहिया निज मरण।—गु. रू. बं.

संकळप्पणहार, हारौ (हारी), संकळप्पणियौ—वि०।

संकळप्पिश्रोड़ौ, संकळप्पियोड़ौ, संकळप्प्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकळप्पीजणौ, संकळप्पीजबौ—कर्म वा०।

संकळप्पियोड़ौ—देखो 'संकळपियोड़ौ' (रू. भे.)

संकळि संकळिक, संकलिक—देखो 'सांकळ' (रू. भे.)

उ०—१ ......हेमजालक रत्नजालक मांनक गोपुच्छक उरस्त्रिक मगध वरणसर कदंबपुस्प कललभंगक अभ्रमेखक नुटक संकलिक स्रवणपीठ स्रवणपाल वैस्टिक...... —व. स.

उ०—२ आंखि और इंद्री छूटि २ पड़िया। हाड संकळि जुदी हुई —द. वि.

संकळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संकलित किया हुआ, संग्रह किया हुआ। २ एकत्रीकरण किया हुआ. ३ विभिन्न ग्रंथों में से अच्छे विषयों को चुना हुआ. ४ शस्त्रों से सुसज्जित हुवा हुआ।

(स्त्री. संकळियोड़ी)

संकळौ—देखो 'सांकळौ' (रू. भे.)

उ०—इण भांत सूं कुंवर मन मैं विचार नै पचास मोहरां रौ संकळौ दियौ न वरजै राखी खबरदार, कठहि जाब काढजै मतौ।—रिसालू री बात

संकल्प-सं. पु. [सं. संकल्प] १ दृढ़ निश्चय या विचार।

उ०—चालुक्य राज भीम आप रा बांम भुज नूं इच्छणी रा ताटंक रौ पीठ करण रौ संकल्प तजियौ।—वं. भा.

उ०—२ जिकी बात प्राची रा अधीस दूजा कुमार सुजासाह रा उर मै न माई। अर अनामय पूछण रौ व्याज करि पिता नूं बडा भाई समेत मारि साह होण रौ संकल्प करि दिल्ली माथै आपरी चतुरंग चमू चलाई।—वं. भा.

२ इच्छा, अभिलाषा।

उ०—अर कंठीरव कन्नह चालुक्य राज रै विजय रौ संकल्प वधावतौ निसंक थकौ एक महूरत लड़ियौ।—वं. भा.

३ इरादा, विचार।

उ०—१ अर रांमपुरै आपरौ सगपण हुवौ जिण रा विवाहण मैं दसोर रा फौजदार नूं नीड़ै जांणि केही बार संकल्प पाछौ पाड़ि तुरकां रा पेच मैं कैद होण रौ डर धारियौ।—वं.भा.

उ०—२ पद परम पून्य, संकल्प सून्य। निरबांण नित्य, अंतर अनित्य।—ऊ. का.

उ०—३ खीची कुमार नूं ओळखियौ जरै ही पाछौ आई कही इसडा संकट सूं बचावै जिकौ मारण री तौ संकल्प भी लावै नहीं। —वं. भा.

४ किसी देव पूजनादि अथवा धार्मिक कार्य के निमित्त चुल्लु में जल लेकर कोई नियत मंत्र पढ़कर दान देने या किसी दृढ़ विचार प्राकट्य की क्रिया।

क्रि. प्र.—करणौ, छोडणौ, भराणौ, लेणौ।

५ संकल्प के समय पढ़ा जाने वाला मंत्र।

६ सभा-समिति में किसी विषय में विचार पूर्वक किया हुआ पक्का निश्चय, (प्रस्ताव)।

७ मन, चित्त।

८ समर्पण।

९ धर्म एवं दक्ष-पुत्री संकल्पा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र का नाम।

रू. भे.—संकप्प, संकळप।

संकळपणौ, संकळपबौ—देखो 'संकळपणौ, संकळपबौ' (रू. भे.)

उ०—पछै आस्यां रा गाख, कानां रा मोर छांटिया, तीखा कुरळा, कीया, घड़ी एक अमळ नै पोढाड़ियो। पछै सिनांन संपाड़ौ करि पाघ बांधी, तुळसीदळ पाघ मांहै मेल्यौ, काया स्रीनारायण प्रीत संकळ्पी।—जैतसी ऊदावत री बात

संकळपणहार, हारौ (हारी), संकळपणियौ—वि०।

संकळिपयोड़ौ, संकळिपयोड़ौ, संकळप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकल्पीजणौ, संकल्पीजबौ—कर्म वा०।

संकल्पा—सं. स्त्री. [सं.] दक्ष की पुत्री एवं धर्म की पत्नी जो संकल्प की माता थी।

संकल्पित—वि. [सं.] १ संकल्प किया हुआ। २ जिस पर या जिसका संकल्प किया गया हो।

संकळिप्योड़ौ—देखो 'संकळपियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. संकल्पियोड़ी)

संकांण—देखो 'संका' (रू. भे.)

उ०—सीहां वित न देसड़ौ, सीह न चित्त संकांण। सीहां नित मुखबळ प्रसन, 'पातल' सीह प्रमांण।—जैतदांन बारहठ

संका—सं. स्त्री. [सं. शंका] १ मन में होने वाला अनिष्ट का भय, डर, खौफ।

उ०—विण त्रीठ रीठ उड्डं विखम, हमतम ऊधम हैमरां। सक फौज कीध संका सहित, जांण क लंका वन्नरां।—रा. रू.

२ किसी विषय की सत्यता या असत्यता के सम्बन्ध में होने वाला सन्देह, संशय, शक, अविश्वास।

उ०—कहै नव पदारथ में पांच जीव च्यार अजीव री सद्धा ही झूठी। एक जीव आठ अजीव है। जद स्वांमीजी खिमा कर विस्वासी आहार अवेर ने बोल्या —आ थारै संका है तौ चरचा करांला।—भि. द्र.

३ औचित्यपूर्ण विचार, परवाह।

उ०—करै न संका कोय, गांव धणी संभड़ गिणै। रैत बराबर होय, रोळदट्ट में राजिया।—किरपाराम

४ हाजत, उपेक्षा।

उ०—अर मासी ई चार-पांच महीनां में बेटा री सै रग-रग पिछांण ली। उणनै कणां तिरस लागै, कणां भूख लागै कणां मळ-मूत री संका व्है, वौ कणां रोवै, कणां सूवै अर कणां हंसै—मुळकै इत्याद सगळी बातां रै अेक अेक छिण री उणनै बेरौ है। —फुलवाड़ी

६ हिचकिचाहट, पेशोपेश।

७ अर्थ आदि के बारे में होने वाली उलझन, भ्रम।

८ आशा, विश्वास।

९ लाज, लज्जा, शर्म।

उ०—१ साफ खोल नै कै दूंला, संका री कांई बात, के भाईडा अकल री लड़ाई लड़णी व्है तौ अपां सूं लड़, नींतर अै हाथा-पायां अपांनै नीं सुहावै।—फुलवाड़ी

उ०—२ उण जबाब री तौ पै'ला किणी नै कांई ठा पड़ै, पण सेठ माथौ खुभळावता आपरी घरवाळी नै तौ तुरत जबाब देई दियौ—म्हारै सवालां रौ जबाब खुद भगवांन जेड़ौ देवैला, वैड़ौ जबाब म्हैं वांरै सवालां रौ देय दूंला, इण में लिहाज संका री कांई बात।—फुलवाड़ी

रू. भे.—संक, सकांण, सांक।

संकाअइयार—स. पु. यौ. [सं. शंकाअतिचार] जैनियों के अनुसार सर्वज्ञ भगवान द्वारा कथित तत्वों में शंका करने का दोष या पाप।

संकाड़णौ, संकाड़बौ—१ देखो 'संकाणौ, संकाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सकणौ, संकबौ' (रू. भे.)

संकाड़णहार, हारौ (हारी), संकाड़णियौ—वि०।

संकाड़िओड़ौ, संकाड़ियोड़ौ, संकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकाड़ीजणौ, संकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

संकाड़ियोड़ौ—१ देखो 'संकायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संकाड़ियोड़ी)

संकाणौ, संकाबौ—क्रि. स. [संकणौ क्रिया का प्रे. रू.] १ शंकित करना/कराना, सन्देहशील करना/कराना।

२ भयभीत करना/कराना, डराना।

३ परवाह करना/कराना, औचित्यपूर्ण विचार रखना/रखाना।

४ लज्जित करना/कराना, शर्मिन्दा करना/कराना।

५ देखो 'संकणौ, संकबौ' (रू. भे.)

उ०—अलावदी आरंभ कीध सोनागर ऊपर, हुवौ समर तलहटी जुड़े चहुवांण मछर भर। सकतीपुर चौ सांम प्रांण सुरतांण संकायौ, गाजै घड़ गज रूप चीत आलम चमकायौ।—अग्यात

संकाणहार, हारौ (हारी), संकाणियौ—वि०।
संकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
संकाईजणौ, संकाईजबौ—कर्म वा०।
संकाड़णौ, संकाड़बौ, संकावणौ, संकावबौ—रू० भे०।

संकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शंकित कराया या किया हुआ, सन्देहशील कराया या किया हुआ।

२ भयभीत किया या कराया हुआ, डराया हुआ। ३ परवाह किया या कराया हुआ, औचित्यपूर्ण विचार रखा हुआ या रखाया हुआ। ४ लज्जित किया या कराया हुआ, शर्मिन्दा किया या कराया हुआ।
५ देखो 'संकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संकायोड़ी)

संकाळ, सकाळू—वि. [सं. शंका+आलुच्] १ शंकित करने वाला, भयभीत करने वाला।

उ०—वाळौ बीर वाळौ सारौ, भूजाटां तुहाळै छाजै, कमधेस वाळौ हाकौ, अरिंदा संकाळ।—गुलाब सिंह महडू

२ शंकित होने वाला।
३ भयभीत होने वाला।
४ लज्जित होने वाला, शर्मिन्दा होने वाला।
रू. भे.—संकीलौ।

संकावणौ, संकावबौ—१ देखो 'संकाणौ, संकाबौ' (रू. भे.)
उ०—आदर देवण मीत, रंक ना रंच संकावै। परवत घण पौछाळ, प्रीतड़ी कही न जावै।—मेघ.

संकावणहार, हारौ (हारी), संकावणियौ—वि०।
संकाविओड़ो, संकावियोड़ो, संकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संकावीजणौ, संकावीजबौ—कर्म वा०।

संकावियोड़ौ—देखो 'संकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संकावियोड़ी)

संकित—वि. [सं. शंकित] १ भयभीत, खौफजदा।
उ०—वदै 'जसौ' जिणवार, कंवर अग्गळ जोड़ै कर। मीणां अधम गंमार, घणां छक अनड़ रहै घर। वीरां सम्मुह वेग, पूंछ पटकै मंडळ मित। एक खीची आइ सबळ, कीधा खळ संकित।
—वं. भा.

२ जिसके मन में शंका हुई हो।

संकिय, संकियदोस—सं. पु.—जैनियों के अनुसार साधु और गृहस्थ को आहार के विषय में शंका होने पर लगने वाला दोष।

संकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शंकित हुवा हुआ, सन्देहशील हुवा हुआ।
२ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ।
३ लज्जित हुवा हुआ, शर्मिन्दा हुवा हुआ।
(स्त्री. संकियोड़ी)

संकीरण—वि. [सं. संकीर्ण] १ तंग; संकुचित।
२ मिला हुता, मिश्रित।
३ नीच।
४ तुच्छ।
५ मदमस्त हाथी।
६ दो अन्य रागों या रागनियों को मिलाने पर बनने वाली एक रागनी। (संगीत)
३ साहित्य में एक प्रकार का मिश्रित गद्य।

सकीरणता—सं. स्त्री. [स. संकीर्णता] १ संकीर्ण होने का भाव।
२ संकरापन।
३ नीचता।
४ क्षुद्रता, ओछापन।

संकीरतन—सं. पु. [सं. संकीर्तन] १ किसी की कीर्ति का वर्णन करने की क्रिया या भाव।
२ देवताओं की उपासना।

संकीळ—स. पु. [सं. संकील] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

संकीलौ—वि. (स्त्री. संकीली] १ किसी विषय या बात की सत्यता या असत्यता के बारे में संशय या सन्देह करने वाला।
उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—ए पाली री चोथजी संकलेचो दरसन करवा आयो। घणो संकीलो तो औ छै पिण इण बात री संका तो उणरै ई न पड़ी। तौ थारै आ संका कठा सूं पड़ी।
—भि. द्र.

२ देखो 'संकाळू' (रू. भे.)

संकु—सं. पु. [सं. शंकु] १ कोई नुकीली वस्तु।
२ कील, मेख।
३ भाला, बरछा।
४ शंख (दस लाख कोटि के बराबर) नामक संख्या।
५ एक मछली।
६ कामदेव।
७ शिव, महादेव।
८ राक्षस, दैत्य।
९ हंस, बगुला। (१०) लिंग। (११) नुकीली वस्तु की नोक।
१२ बारह अंगुल के बराबर का नाप या उक्त नाप की खूंटी।
१३ विष, जहर। (१४) एक प्रकार का वाद्य विशेष।
१५ घड़ी की सुई। (१६) जलजन्तु विशेष। (१७) वसिष्ठ एवं ऊर्जा के पुत्रों में से एक पुत्र जो स्वयं ऋषि था।
१८ पाप; कलुष। (१९) हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम।

२० उग्रसेन का पुत्र एक यादव राजा। (२१) राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक।

२२ एक गंधर्व। (२३) कृष्ण व सत्या का एक पुत्र।

२४ द्रोपदी स्वयंवर में उपस्थित एक यादव।

रू. भे.—संकू

संकुकरण–सं. पु. यौ. [सं. शंकु+कर्ण] १ शंकु के समान नुकीले व लम्बे कान वाला, गधा। (ह. नां. मा.)

२ शिव का एक पार्षद। (३) स्वामी कार्तिकेय का पार्षद।

४ एक नाग का नाम। (५) अशोकवन में सीता के संरक्षणार्थ नियुक्त एक राक्षस। (६) दक्ष का अनुचर। (७) कश्यप व दनू के पुत्रों में से एक दानव। (८) जनमेजय व वपुष्टमा के पुत्रों में से एक राजा।

रू. भे.—संकूकरण।

संकुकरणेसर, संकुकरणेसुर, संकुकरणेस्वर–सं. पु [स. शङ्कुकर्णेश्वर] एक शिवमूर्त्ति जिसके पूजन से अश्वमेध यज्ञ का दसगुना फल प्राप्त होता है।

संकुड़ण—देखो 'सिकुड़ण' (रू. भे.)

संकुड़णौ, सकुड़बौ—देखो 'सिकुड़णौ, सिकुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ दिन जेहो रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा संकुड़िणि। नीठि छुड़ै आकास पोस निसि, प्रोढा करखणि पंगुरिणि।
—वेलि.

उ०—२ सूरजवंसी कमळ, तुरक हिंदू संकुड़िया। गड्ढ द्रुग्ग परसाद, तीह लै ताळा जड़िया।—गु. रू. बं.

संकुड़णहार, हारौ (हारी), संकुड़णियौ—वि०।

संकुड़िग्रोड़ौ, संकुड़ियोड़ौ, संकुड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

संकुड़ीजणौ, संकुड़ीजबौ—भाव वा०।

संकुड़ित–वि. [सं. संकुचित] १ सिकुड़ा हुवा, संकुचित।

२ लज्जित, शर्मिन्दा।

उ०—संकुड़ित समसमा संध्या समयै, रति वंछित रुखमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पंख पंखियां, कमळ पत्र सूरिज किरणि।
—वेलि.

३ तंग, संकड़ा।

संकुड़ियोड़ौ—देखो 'सिकुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संकुड़ियोड़ी)

संकुचण–सं. स्त्री. [सं. संकुचन] संकुचित होने की क्रिया, अवस्था या भाव।

रू. भे.—सुकचण।

संकुचणि–सं. स्त्री.—संकोच, लज्जा।

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सरपच। चितवणि हंसणि लसणि गति संकुचणि, सुंदरी द्वारि देहरा संच।—वेलि.

वि. स्त्री.—संकोच करने वाली, लजवन्ती, लज्जावान।

संकुचणौ, संकुचबौ–क्रि. अ.—१ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

उ०—अंग विस्फोटता कीयौ। जंभाई आई पाछै क्यों थोड़ा थोड़ा चाल्या गति दिखाई। पाछै क्यों एक संकुच्या। ए पांचों बांण सेनां नें लागा।—वेलि टी.

२ सिमटना, छोटा होना।

उ०—दिन तौ यै सें संकुचिवा लागौ जैसें रिणाई कौ देखें दांम कौ देणहार संकुचै। क्रमि क्रमि यों दिन संकुचै छै अर पोस कै विखै रात्रि छै सु आकास कों निठि छोडै छै।—वेलि टी.

३ सिकुड़ना, सलवट पड़ना, झुर्रियां पड़ना।

४ बन्द होना। (पुष्प, पत्ता)

संकुचणहार, हारौ (हारी), संकुचणियौ—वि०।

संकुचिग्रोड़ौ, संकुचियोड़ौ, संकुच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकुचीजणौ, संकुचीजबौ—भाव वा०।

संकुचाणौ, सकुचावौ, सकुचणौ, सकुचबौ सकुछणौ, सकुछबौ, सुकचाणौ, सुकचाबौ, सुकजाणौ सुकजाबौ—रू० भे०।

संकुचाणौ संकुचाबौ—देखो 'सकुचणौ, संकुचबौ' (रू. भे.)

सकुचाणहार, हारौ (हारी), संकुचाणियौ—वि०।

सकुचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सकुचाईजणौ, संकुचाईजबौ—भाव वा०।

सकुचायोड़ौ— देखो संकुचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संकुचायोड़ी)

संकुचित–वि.—१ संकुचन युक्त। (२) लज्जित, शर्मिन्दा। (३) बिना विस्तार का। (४) अव्यापक।

सं. स्त्री.—कली। (डिं. को.)

संकुचियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लजित हवा हुआ, शर्मिन्दा हुवा हुआ। (२) सिमटा हुआ, छोटा हुवा हुआ. (३) सिकुड़ा हुआ, सलवट पड़ा हुआ, झुर्रियां पड़ा हुआ. (४) बन्द हुवा हुआ. (पुष्प, पत्ता)
(स्त्री. संकुचियोड़ी)

संकुडणौ, संकुडबौ—देखो 'सिकुड़णौ, सिकुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—गोम डमर हुवै बोम गाहीजियै, अंत रै बोम गरदोम आगा। सोनरा ऊधड़ै धोम रा संकुडै, गयण गजगाह दळ राह लागा।
—कल्याणदास महडू

संकुडणहार, हारौ (हारी), संकुडणियौ—वि०।

संकुडिग्रोड़ौ, संकुडियोड़ौ, संकुड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सकुडीजणौ, संकुडीजबौ – भाव वा०।

संकुडियोड़ौ—देखो 'सिकुड़ियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. संकुडियोड़ी)

संकुद्वार–सं. पु. [सं. शंकुद्वारा] गुजरात के निकटस्थ छोटा टापू जहां नारायण की मूर्त्ति है।

संकुर–सं. पु. [सं. शंकुर] एक दानव। (पुराण)

संकुरथ–सं. पु. [सं. शंकुरथ] कश्यप व दनु के पुत्रो में से एक पुत्र, दानव।

संकुरोम, संकुरोमन-सं. पु. [सं. शंकुरोमन्] कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक सहस्रशीर्ष नाग।

संकुळ-वि. [सं. संकुल] १ परिपूर्ण, भरा हुआ।
उ०—ऊजळ मळ संकुळ पीठी उबटांणी, करड़े लौ' साथै अरण कूटांणी। कळियां कूंलां री कादै में कळणी, विसहर संगत सूं पीपळियां बळणी।—ऊ. का.
२ घना।
३ पूर्ण, पूरा।
४ अस्त-व्यस्त।
सं. पु.—१ झुंड, समूह।
२ भीड़।
३ जनता।
४ तुमुल युद्ध।
उ०—सेल भचक्कै संकुळै अति घाव डबक्कै।—वं. भा.
५ परस्पर विरोधी वाक्य।

संकुळि, संकुळित-वि. [सं. संकुलित] १ परिपूर्ण, भरा हुआ।
उ०—१ उम्मेद भूपति अंग में, रस बीर संकुळि रंग में। बर बीर बारह से प्रबीरन चक्क लै चहुवांण।—वं. भा.
उ०—२ पांन संकुळित डाळ, तावड़ौ किसांण टाळै। बारै मासां सतत, जिनावर सरणौ भाळै।—दसदेव
२ अस्त-व्यस्त। (३) एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ।

संकुळी-सं. स्त्री. [सं. संकुली] १ रीढ़ की हड्डी।
उ०—फटी पन्नग संकुळी, फन पलटि फिराया। खुल्लै नैन महेस कै, नव माळ लुभाया।—वं भा.
वि. [संकुलित] परिपूर्ण, भरा हुआ।

संकुळौ, संकुलौ-सं. पु. [सं. शंकुला] १ सुपारी काटने का सरौता।
२ एक प्रकार का नश्तर या छुरी।
३ सरौते से काटा गया सुपारी का टुकड़ा।

संकुसिरा-स. पु. [सं. शंकुसिरा] कश्यप व दनु के संसर्ग से उत्पन्न ६१ दानवों में से एक।

संकू—देखो 'संकु' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

संकूकरण—देखो 'संकुकरण' (रू. भे.) (अ. मा.)

सकेत-सं. पु. [सं. संकेतः] १ घर, भवन। (अ. मा; ह. नां. मा.)
२ नाम। (अ. मा.)
३ इशारा।
४ चिन्ह, निशान।
५ वह चीज जो किसी को किसी प्रकार की निशानी या पहचान के लिए दी जाय। (टोकन, अंगूठी)
६ ऐसी शारीरिक चेष्टा, जिससे किसी पर अपना उद्देश्य, भाव या विचार प्रकट किया जाय।
७ किसी घटना, प्रसंग आदि पर प्रकाश डालने वाली कोई बात।
८ किसी प्रेमी एवं प्रेमिका के मिलने हेतु पूर्व निश्चितस्थान।
९ कोई श्रृंगारिक चेष्टा।

संकोड़णौ, संकोड़बौ-क्रि. अ.—१ संकुचित होना, लज्जित होना।
उ०—गय गमणी गूजर धरा, आंणां दखणी चीर। मन संकोड़ी माळवी, सोहइ तुज्झ सरीर।—ढो. मा.
२ भयभीत होना, डरना।
उ०—सुर सुणंतां उर सत्रां संकोड़ै, राजू खांन नगारौ रोड़ै। सुख अप करण धरा फिरि साजा, रूठै जम सारीखौ राजा।
—रा. रू.
३ संकुड़ित होना, बंद होना।
४ सलवट पड़ना, सिकुड़ना।
क्रि. स.—५ सिकोड़ना, संकुचित करना।
६ भयभीत करना, डराना, आतंकित करना।
उ०—अन अन्न देस धर गिर अवर संकोड़ौ संसार सहि। चहुवांण पिथम सूं चापड़ै 'गज्जणवै' सुरतांण गहि।—नैणसी
७ संकुचित करना, लज्जित करना।
८ लिहाज की दृष्टि से दबाव डालना, दबाना।
९ सलवट डालना, सिकोड़ना।
संकोड़णहार, हारौ (हारी), संकोड़णियौ—वि०।
संकोड़िओड़ौ, संकोड़ियोड़ौ, संकोड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
संकोड़ीजणौ, संकोड़ीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
संकोडणौ, संकोडबौ—रू० भे०।

संकोड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ संकुचित हुवा हुआ/संकुचित किया हुआ, लज्जित हुवा हुआ/लज्जित किया हुआ. (२) भयभीत हुवा हुआ/भयभीत किया हुआ, डरा हुआ/डराया हुआ. (३) संकुड़ित हुवा हुआ/संकुड़ित किया हुआ, बन्द हुवा हुआ/बन्द किया हुआ. (४) सलवट पड़ा हुआ/सलवट डाला हुआ, सिकुड़ा हुआ. (५) लिहाज की दृष्टि से दबाव डाला हुआ, दबाया हुआ।
(स्त्री. संकोड़ियोड़ी)

संकोच-सं. पु. [सं. सं. संकोचः] १ वह मानसिक स्थिति जिसमें भय, लज्जा अथवा साहस के अभाव के कारण कुछ करने को जी नहीं चाहता।
२ असमंजस, झिझक, हिचकिचाहट।
३ सिकुड़ने की क्रिया या भाव।
६ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार।
५ एक प्रकार की मछली।
६ केसर। (नां. मा; ह. नां. मा.)
७ लिहाज, प्रभाव।
उ०—आसव रौ उतार हुवां समुद्रसिंह नूं तौ उण रा पुरोहित

मोतीसर प्रमुख संकोच रा लोकां बीच में आइ पाछौ मोड़ियौ।
—वं. भा.

८ शर्म, लज्जा। (डिं. को.)

क्रि. प्र.—आणौ, करणौ, पड़णौ, होणौ।

९ प्राचीनकालीन राक्षस जो पृथ्वी का शासक था।

रू. भे.—संकोज, संकुच।

संकोचणौ, संकोचबौ—क्रि. अ.—१ संकुचित होना, भयातुर होना।

उ०—माळवणी सिणगार सझि, आई वालंभ पास। मन संकोचौ पदमिणी, प्रीतम देखि उदास।—ढो. मा.

२ असमंजस, झिझक या हिचकिचाहट होना।

उ०—जो देसंतर ऊतरै, बाधीजै दळ संग। हर संकोचै मीरजां, तौ सोचै 'अवरंग'।—रा. रू.

३ कम होना, घटना।

उ०—पाछै रचा सात वरस तिण में दिन रा त्याग है। थारै लारै साढे तीन बरस रह्या तिकां में पांचू तिथ्यां रा थारै त्याग है। बाकी दोय बरस नै चार महीना आसरै रह्या। इम संकोचतां संकोचता पोहर रौ लेखौ करतां पछै घड़ियां रै लेखै छै।
—भि. द्र.

४ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना।

संकोचणहार, हारौ (हारी), संकोचणियौ—वि०।

संकोचिओड़ौ, सकोचियोड़ौ, सकोच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकोचीजणौ, संकोचीजबौ—भाव वा०।

संकोचित—वि. [सं. संकुचित] १ सिकुड़ा हुआ, तंग।

२ संकोच-युक्त, जिसमें संकोच हो।

३ लज्जित, शर्मिन्दा।

४ जिसमें उदारता का अभाव हो, अनुदार।

संकोचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संकुचित हुवा हुआ, भयातुर हुवा हुआ। २ असमंजस, झिझक या हिचकिचाहट में पड़ा हुआ। ३ कम हुवा हुआ, घटा हुआ। ४ लज्जित हुवा हुआ, शर्मिन्दा हुवा हुआ।

(स्त्री. संकोचियोड़ी)

संकोचौ—सं. पु.—एक प्रकार का रेगिस्तानी जन्तु विशेष जिसके शरीर पर छोटे छोटे कांटे या सूलें होती है। यह अपने शरीर को आवश्यकता पड़ने पर सिकोड़ कर गेंद के आकार का बना लेता है।
(डिं. को.)

संकोज—देखो 'संकोच' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—रतनां मद में मत्त निसंक हुई थी तिण रा संकोज हूं रुकण लागी, लाज रै भार आंखियां झुकण लागी।—र. हमीर

संकोडणौ, संकोडबौ—देखो 'संकोड़णौ, संकोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—तेज रोस तांमस, सत्त सूरातन छोडै। सबळ पणौ मेल्हियौ, नहीं लाह थळ संकोडै।—गु. रू. बं.

संकोडणहार, हारौ (हारी), संकोडणियौ—वि०।

संकोडिओड़ौ, संकोडियोड़ौ, सकोड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकोडीजणौ, संकोडीजबौ—भाव वा०।

संकोडियोड़ौ—देखो 'सकोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संकोडियोड़ी)

संकौ—सं. पु. [सं. शका] १ सन्देह, शका, भ्रम।

उ०—राजा कह्यौ—बावळी, थनै इण मैं संकौ करण री कांई वात! अपां रौ कंवर है, फोड़ा नीं खावैला तौ दूजौ कुण खावैला थूं बतावै जकी बात कर। थनै साजी सूरी देखूं उण दिन म्हारौ जमारौ सुफळ होवै।—फुलवाड़ी

२ भय, डर, आतंक।

उ०—१ लोक जठै रंकौ नहीं, नंह संकौ पर थाट। सोढां जस डंकौ घुरै, पाधर बंकौ धाट।—बां. दा.

उ०—२ अर खागां घमसांण असंकौ, समजतियां नांखण उर संकौ।—क. कु. बौ.

३ लज्जा, शर्म।

उ०—काली मासी उणनै घड़ी घड़ी पूछती कै जद कदेई अठक पड़ै, मुळकणी हालै के अण-भावण व्है तौ सुभट बताय दे, मां सूं किण भात री संकौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ इत्ती बात सरू करदी तौ अबै कैड़ी लाज। म्हारै माथै इत्तौ भरोसौ करनै आया तौ पछै बोलण में कांई संकौ।
—फुलवाड़ी

४ भेद-भाव, छिपाव।

उ०—नगर सेठ बोल्या—बतावौ, बतावौ, अंदाता सूं कैड़ौ चोज, कांई संकौ।—फुलवाड़ी

५ चिन्ता, खयाल।

उ०—टाट रौ सैलांण मिट जावै तौ नवौ जमारौ मिळ्यौ। थूं मन में किणी बात रौ संकौ मती राखजै, मूंडै मांग्यौ इनांम देवाला।—फुलवाड़ी

६ लिहाज, परवाह।

उ०—हूं तौ किण जोगौ, पण म्हारै लायक कोई कांम व्है तौ आधी रा ई भुळावण मैं संकौ मत करज्यौ।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—आणौ, करणौ, लागणौ, होणौ।

रू. भे.—सांक।

संक्रंदन—सं. पु. [सं.] १ इन्द्र। (अ. मा.)

२ विदर्भ देशाधिपति वपुष्मान् का पिता।

३ श्रीकृष्ण का एक नाम।

४ भौत्य मनु का एक पुत्र। (पुराण)

संक्रति, संक्रती—सं. पु. [सं. संकृती] १ यम। (अ. मा.)

२ महारथी जय जो अनेन के वंशज जयसेन का पुत्र था।

३ रन्तिदेव के पिता एक प्राचीन नरेश।

संक्रम–सं. पु. [सं. संक्रमः] १ दुःख, कष्ट या कठिनाई से बढ़ने की क्रिया।

२ पुल, सेतु।

३ ग्रह का किसी राशि से निकल कर दूसरी राशि में प्रवेश करने की क्रिया।

४ चलने या गमन करने का कार्य।

५ अवस्था में परिवर्तन।

६ दुर्गम मार्ग, सकरा रास्ता।

७ वस्तु प्राप्ति का साधन।

८ स्कन्ददेव का एक पार्षद।

संक्रमण–सं. पु. [सं.] १ गमन, चलने या आगे की ओर बढ़ने की क्रिया या भाव।

उ०—भ्रण जांण विगत ऊपर अडांह। संक्रमण प्रबळ किय सोह-डांह।—पा. प्र.

२ अतिक्रमण।

३ सूर्य या किसी अन्य ग्रह का एक राशि से निकल कर दूसरी राशि में प्रवेश करने की क्रिया या भाव।

४ सूर्य के उत्तरायण या दक्षिणायण में होने वाला दिन।

५ घूमने या फिरने की क्रिया या भाव।

६ परिवर्त्तन।

रू. भे.—संक्रांमण।

संक्रमणकाळ–सं. पु. यौ. [सं. संक्रमणकाल] १ एक रूप से बदल कर दूसरे रूप में आने का समय।

२ अंतरण, हस्तांतरण।

३ सूर्य या अन्य किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने का समय।

संक्रमणौ, संक्रमबौ–क्रि. अ.—१ गमन करना, जाना, आगे की ओर बढ़ना।

उ०—प्रफूलंत थइ फूलां चोसरा वणावै परी, वणौ दिनां जोसरा चोसटी गीत गात। भालां ओघ खवंतां संक्रम्यौ भूरै लोक भेळौ, भिड़ज्जां ताखड़ां हूंता 'जसा' हरौ भ्रात। —पाबूदांन आसियौ

२ अतिक्रमण करना।

३ घूमना, फिरना।

उ०—इम आवै इक ऊपरां, हाटी लोप हटक्क। सलभ मुआं सिर संक्रमै, कोड़ी जेम कटक।—बां. दा.

४ किटाणु, रोग आदि का फैलते हुए एक से दूसरे में होना।

५ प्रवेश करना, पहुँचना।

उ०—घर थळी धीरा धूंधळा, खड़ तणा जाया खूर। साथ कोळू सीम में, संक्रम्या ऊगां सूर। —पा. प्र.

६ सूर्य या किसी अन्य ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना।

संक्रमणहार, हारौ (हारी), संक्रमणियौ—वि०।

संक्रमिओड़ौ, संक्रमियोड़ौ, संक्रम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संक्रमीजणौ, संक्रमीजबौ—भाव वा०।

संक्रमियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ गमन किया हुआ, गया हुआ, आगे की ओर बढा हुआ. २ अतिक्रमण किया हुआ. ३ घूमा हुआ, फिरा हुआ. ४ प्रवेश किया हुआ, पहुंचा हुआ. ५ किटाणु, रोग आदि फैला हुआ. ६ सूर्य या अन्य किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश किया हुआ।

संक्रांत, संक्रांति—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

उ०—व्यतीपात वैध्रति वली, सूरिज नी संक्रांति। ब्राह्मण हुंतु ब्राह्मणीं, नवि आवइ अेकांति। —मा. कां. प्र.

संक्रांतिचक्र–सं. पु. [सं.] मनुष्य के आकार का नक्षत्रों के राशि संचार से अंकित एक प्रकार का चक्र जो मनुष्यों के शुभाशुभ फल जानने के लिए बनाया जाता है। (फलित ज्योतिष)

संक्रांतिव्रत–सं. पु. [सं.] संक्रांति के दिन किया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—इस दिन स्नानादि करके अक्षत का अष्टकमलदल बना सूर्य की स्थापना कर पूजन किया जाता है। यह निराहार, साहार, अयाचित, नक्त या एकमुक्त किया जा सकता है।

संक्रांमक–वि. [सं. संक्रामक] संसर्ग या छूत से फैलने वाला।

सं. पु.—संसर्ग या छूत से फैलने वाला रोग।

संक्रांमण—देखो 'संक्रमण' (रू. भे.)

उ०—१ अे संक्रांमण सुंदरी, वहितइ विलसइ वार। जिम्म तिम्म यौवन पछइ, लाभइ नहीं लगार।—मा. कां. प्र.

उ०—सही अे सक्रांमण वहिउ, कइ माया अग जाळ। कइ समणूं कइ सुन्य सर, इंद्र जाळ कइं आळ।—मा. कां. प्र.

संक्रांमि, संक्रांमी–सं. पु. [सं संक्रामिन्] संक्रमण कराने वाला।

संक्रांयत—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

संक्षिप्त–वि. [सं.] १ जो छोटे रूप में कहा या लिखा गया हो, मुख्तसर।

२ लघु।

३ जिसे घटा कर छोटा रूप दे दिया गया हो।

संक्षिप्तता–सं. स्त्री.—संक्षिप्त होने की अवस्था, भाव या स्थिति।

संक्षिप्ता–सं. स्त्री. [सं.] बुधग्रह की सात प्रकार की गतियों में से एक गति। (ज्योतिष)

संक्षेप–सं. पु. [सं.] १ कोई बात थोड़े में कहना या लिखना, मुख्तसर।

उ०—संक्षेप माफक भाव ए कह्या, सूत्र अनुसार जोय।

—जयवांणी

२ संकोचन।

३ समास। ४ सार संग्रह।

रू. भे.—संखेप, संखेव, संख्यप, संछेप।

संख–सं. पु. [सं. शंख] १ समुद्र में पाया जाने वाला एक बड़े मृत घोंघे का कलेवर जो फूंक देकर बजाया जाता है।

उ०—१ संख समंदां नीपजै। ज्यां हूं न्यारी न्यारी जात।
—मीरां

उ०—२ श्रो नांव उणरै कांना मैं संख ज्यूं गूंजियौ। मरण वाळा रौ नांव श्रमरौ! नांव तौ ठीक-ठाक है, पण मरण वाळा मिनख रौ नांव श्रमरौ कांई जांणनै राख्यौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ संख नगारा तुरही बाजा, श्रनहद की नहिं जांणै वाजा।
—श्रनुभववांणी

उ०—४ संख मुखइ जिणि पूरिय, भूरिय हरि मनि जंपु। टोल टलक्कइ रैवत, दैवत मनि श्राकंपु।—जयसेखर सूरि

पर्याय०—कंबू, खोड़, त्रिरेख, दधसुत, दर, मध्यत्ररेख, रतन, वारिज, विसद, ससिसहोवर, सावरत।

क्रि. प्र.—पूरणौ बजांणौ, बाजणौ।

२ एक सौ खरब की संख्या।

३ हाथ या पैर की श्रंगुलियों पर शंख की श्राकृति का चिन्ह विशेष जो सामुद्रिक विद्या के श्रनुसार शुभ या श्रशुभ माना जाता है।

उ०—श्रसि खड़ग सकति तोरण उदार, श्रंकुसां संख चक्र सुभ श्रपार।—सू. प्र.

४ कनपुटी या कनपटी की हड्डी।

५ शिर में होने वाला दर्द विशेष जो प्रायः कान के पास होता है। (श्रमरत)

६ हाथी का गंडस्थल। (७) शिर की हड्डी।

७ एक राक्षस जिसका वेदों को चुरा ले जाने के कारण विष्णु ने वध किया था।

उ०—कैटभ मधु कुंभ, कबंध कचरिया, संख संभ सारीसै। खळ श्रवगाढ श्रनेकां खाया, दाढ पीसतौ दीसै।—र. ज. प्र.

८ कुबेर की निधि के देवता।

९ कुबेर की नव निधियों में से एक। (डिं. को; नां. मा.)

१० नर सूश्रर के मुंह के ऊपरि भाग में से निकल कर तुंड के पास तक श्राने वाला शंखाकृति दांत विशेष। कोधावस्था में सूश्रर इसको नीचे वाले नुकीले दांत से घिस कर उसे श्रौर श्रधिक पैना करता है। यह मूंछ के स्थान पर होता है।

उ०—१ लोग सगळा घूमरौ कियां ऊभा राव रौ डील संभाळै छै श्रौर डाढाळौ निलोह थकियौ परलै पासै जाय ऊभौ खैरू करै छै। छटा घुणै छै संख सूं खग लगाय फौज सांम्हौ जोवै छै।
—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ घोड़ौ तौ कोई लंघाय सकियौ नहीं, ऊभां ही उलाळ बिछूटी बरछी बाही, केही तीर बाह्या सौ डाढाळै रा डील मैं लागिया पण परलै पासै जाय सागी बरछी ऊपर श्राय खड़ौ रहियौ। घुगघुगौ देय भाला तीर उछाळ दिया। केही श्रेक मुंह सूं पकड़ काढ नांखिया। ऊभौ ऊभौ संख सूं खेह लगावै छै।
—डाढाळा सूर री बात

११ छत्तीस प्रकार के शस्त्रों में से एक शस्त्र।

उ०—चक्र, धनुष, वज्र, खड्ग, कृपांण, तोमर, कुंत, त्रिसूल, शक्ति, पासु मुग्दर, मखिका, भल्ल, भिंडपाळ गुरूज, लुंठि, गदा, संख, परसु, पटसु, यस्टि, सपन, मटमु, हल, मूसळ, कुलिस, कातर, करपत्र, तरवारि, कुद्दाल, यंत्र, गोफल, डाहणि, संागिका, कुहाडी, हिपुस इति छत्तीस दंडायुधांनि।—व. स.

१२ विष्णु का एक शस्त्र।

उ०—जाके सिर मोर मुकट, मेरै पति वोई। संख चक्र गदा पद्म कंठ माळा सोई।—मीरां

१३ छप्पय छन्द का ६९ वां भेद विशेष जिसमें १४२ लघु व ३ गुरु श्रर्थात् १४८ मात्राऐं मतान्तर से २ गुरु व १४८ लघु श्रर्थात् १५२ मात्राऐं होती हैं।

१४ दो लघु मात्रा के 'नगण' के द्वितीय भेद का नाम। (डिं. को.)

१५ दंडक वृत्त के श्रन्तर्गत एक वर्ण वृत्त जिसमें दो नगण श्रौर १४ रगण होते हैं।

१६ कपाल। १७ राजा विराट का पुत्र। १८ चरण-चिन्ह।

१९ ललाट। २० कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र, नाग।

२१ स्वरोचिष मनु का एक पुत्र।

२२ वायु के जोर से चलने से उत्पन्न शब्द।

२३ धारानरेश गंधर्वसेन का ज्येष्ट पुत्र व विक्रमादित्य का श्रग्रज जिसका वध करके विक्रमादित्य राजा बना था।

२४ हैहयवंशीय राजा श्रुताभिधान जो विष्णुभक्त थे तथा वेंकटेश पर्वत पर श्रगस्त्य ऋषि के साथ तपस्या की थी।

२५ मणिभद्र व पुण्यजनी के एक पुत्र का नाम जो यक्ष था।

२६ जैगीषव्य ऋषि का पुत्र, एक ऋषि।

२७ कुबेर सभा का एक यक्ष।

२८ पाण्डवपक्षीय रथी, केकयराजकुमार।

२९ जैनियों के ८८ ग्रहों में से उन्नीसवें ग्रह का नाम।

वि.—१ मूर्ख।

उ०—संखां ढिग संखा श्रधम श्रसंका, फूड़ फूड़ फूकंदा है।
—ऊ. का.

यौ.—डफोळसंख।

२ बाह्य श्राडंबर रचने वाला।

३ रूखा-सूखा।

४ कठोर।

५ श्वेत, सफेद। * (डिं. को.)

६ उदासीन।

७ देखो 'संख्या' (रू. भे.)

उ०—नह संख्या कुंजरा, न का संख्यां केकांणां। नह संख्या हिंदुवां, सख नह मुस्सळमांणां।—गु. रू. बं.

रू. भे.—संखु।

अल्पा.—संखियौ, संखोलियौ, सांकलियौ, सांकळ्यौ, सांकल्यौ, सांकूळ्यौ, सांकूल्यौ, सांखूल्यौ।

मह.—संखौ।

संखकार-सं. पु. [सं. शंखकार] विश्वकर्मा पिता व शूद्रा माता के संसर्ग से उत्पन्न एक जाति विशेष। (पुराण)

सखकूट-सं. पु. [स. शखकूट] एक पर्वत। (पुराण)

संखचूड़-सं. पु. [स. शंखचूड़] १ कृष्ण द्वारा मारा जाने वाला एक राक्षस।

२ कुबेर का एक दूत और सखा।

३ एक यक्ष।

४ द्वारिका निवासी एक गृहस्थ। (पौराणिक)

५ एक प्रकार का भयंकर विषेला सर्प, शंखचूर।

उ०—वांडी काळा गोहिरा, सरळक अर संखचूड़। परवा में गैं'ळीजिया, लिट लिट ठंडी धूड़।—बादळी

६ राम सेना का एक वानर।

७ एक विष्णु-भक्त राक्षस जिसका, अत्याचारी हो जाने पर, शिव ने वध किया।

८ नागवंशी क्षत्रियों की वंशावली में एक नाग का नाम।

उ०—दक्ष प्रजापति राजा तिण रै तेरह पुत्री हुई तिकै राजा कासिप नै परणाई तिण रो विस्तार कहै छै।······तीजी रांणी कद्रु नांमा तिण रा नव कुळी नाग हुवा। नागां रा नांम—तक्ष-नाग, पदमनाग, महापदम नाग, संखचूड़ नाग, पुलस्तनाग···।
—रा. वं.

९ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

संखण-सं. पु. [सं. शंखण] इक्ष्वाकुवंशीय खगण राजा का नामांतर।

संखणी-सं. स्त्री. [सं. शंखिनी] १ शिवलिंगी के समान फलों वाली एक वनौषधि।

२ कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से चौथे भेद की स्त्री।

उ०—हसि के साही कहै इसौ, क्युं बे खोजा खूब। हम महलै सब संखणी, नहिं पदमणि महबूब।—प. च. चौ.

वि. वि.—यह न अधिक मोटी व न अधिक पतली होती है। इसका शिर व स्तन छोटे एवं इसके पैर व बाहें लम्बी होती है। इसका स्वभाव कर्कश व चुगलखोर होता है। यह काम से अत्यधिक पीड़ित व परपुरुष-गमनी होती है।

३ गुदा द्वार की एक नस।

४ एक देवी।

५ एक अप्सरा।

६ मुंह की नाड़ी। ७ सीप।

८ कलहप्रिय नारी।

९ एक शक्ति जिसकी बौद्ध लोग पूजा करते हैं।

१० घोड़े के दोनों नेत्रों के बीच में होने वाली एक अशुभ भंवरी। (चक्र)। (शा. हो.)

११ वह गाथा छन्द जिसमें सकार की बाहुल्यता हो। (पिंगल)

उ०—विण सकार पदमणी विसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत। च्यार सकार हसतणी चावी, बहु सकार संखणी बतावी।
—र. ज. प्र.

रू. भे.—संखनी, संखिणी, संखिनी, सुंखणी, सुंखनी, सुँखिणी, सुँखिनी।

संखतीरथ-सं. पु. यौ. [सं. शंखतीर्थ] सरस्वती नदी के निकटस्थ का एक पुण्य तीर्थ।

संखद्राव-सं. पु. [सं. शंखद्राव] एक प्रकार का अर्क। (वैद्यक)

वि. वि.—इसका प्रयोग उदर रोग के उन्मूलनार्थ किया जाता है। यह इतना तेज होता हे कि धातुओं को भी गला देता है अतः इसे कांच या चीनी में रखा जाता है।

संखधर-सं. पु. [सं. शंखधर] १ शंख को धारण करने वाला, विष्णु।

उ०—कंठ पोत कपोत कि कहूं नीळकंठ, वडगिरि कालिंद्री वळी। समै भागि किरि संख संखधर, एकण ग्रहियौं अंगुली।—वेलि.

२ ईश्वर, परमेश्वर। (नां. मा.)

रू. भे.—संखधार।

संखधार-सं. पु. [सं. संखधारिन्] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

२ देखो 'संखधर' (रू. भे.)

संखन-सं. पु. [स. शंखन] १ अयोध्यापति कल्माषपाद के पुत्र तथा सुदर्शन के पिता का नाम।

२ वज्रनाभ के पुत्र का नाम।

संखनख-सं. पु. [सं. संखनख] एक नाग जो वरुण की सभा में रहकर वरुण की उपासना करता था।

संखनाद-सं. पु. यौ. [सं. शंख+नाद] शंख ध्वनि।

संखनाभ-सं. पु. [सं. शखनाभ] जैनियों के ८८ ग्रहों में से बीसवां ग्रह।

संखनारी-सं. स्त्री. [सं. शंख नारी] १ प्रत्येक पद में दो यगण का एक छन्द विशेष।

सं. पु.—२ सोमराजी नामक एक वृक्ष का नाम।

संखनी—देखो 'संखणी' (रू. भे.)

उ०—पढै जैत देवी सबै देत नासै, भजै कंकनी संखनी काळ फासै।
—ज्वाळामुखी री स्तुति

संखपद-सं पु. [सं. शंखपद] १ स्वारोचिष मनु का पुत्र, एक राजा।

२ कर्दम प्रजापति एवं श्रुति के पुत्रों में से एक पुत्र, राजा।

संखपरवत-सं. पु. [सं. शंखपर्वत] मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।

संखपाखांण–सं. पु. [सं. शंखपाषाण] संखिया, सोमल ।
रू. भे.—संखपासांण ।

संखपांणि, संखपांणी–सं. पु. यौ. [सं. शंखपाणि] १ जिसके हाथ में शंख हो, विष्णु ।
२ योद्धा ।
३ संन्यासी ।
४ विष्णु का पुजारी ।
वि.—जिसके हाथ में शंख हो ।

संखपाळ–सं. पु. [सं. शंखपाल] कर्दम ऋषि के पुत्र का नाम ।

संखपासांण—देखो 'संखपाखांण' (रू. भे.)

संखपिंड–सं. पु. [सं. शंखपिंड] कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र, नाग ।

संखपुस्पी–सं. स्त्री. [सं. शंख पुष्पी] १ सफेद अपराजिता । २ जुही ३ सखाहुली ।

संखप्रधांन–सं. पु. यौ. [सं. शंख+प्रधान] किसी विशेष उद्देश्य से रखा हुआ शंख ।
उ०—तसु बंधन भवभंजन, अंजनपुंज समांन । नमियइ नाथ स चेतनि, केतनि संखप्रधांन ।—जयसेखर सूरि

संखभ्रत–सं. पु. [सं. शंख भृत] विष्णु ।

संखमुख–सं. पु. [सं. शंखमुख] एक नाग का नाम ।

संखमेखल–सं. पु. [स. शंखमेखल] सर्पदंश से मृत प्रमद्वरा को देखने हेतु स्थूलकेश के आश्रम में उपस्थित ऋषियों में से एक ।

संखरोम–सं. पु. [सं. शंखरोमन्] कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र, नाग ।

संखवात–सं. पु. [सं. शंखवात] १ वैद्यक के अनुसार कनपटी में दाह सहित लाल रंग की एक गिल्टी निकल आने का रोग, जिसमें शिर और गला जकड़ जाता है ।
२ शिर की पीड़ा । (अमरत)

संखसबदी संखसब्दी–सं. पु. यौ. [सं. शंख+शब्द+रा. प्र. ई] गधा । (अ. मा; ह. नां. मा.)

संखसर, संखसिर–सं. पु. [सं. शंखशिर] वृत्रासुर का अनुचर एक राक्षस ।

संखा—देखो 'संख्या' (रू. भे.)
उ०—ब्रह्मपुरी राजन विचै, सोभा अधक अपार । ताकी संखा जांणियौ, जोजन दस्स हजार ।—गज-उद्धार

संखाई–सं. स्त्री.—१ धूर्तता । २ कपट । ३ आडंबर ।

संखात–सं. पु. [सं. संख्यं] युद्ध । (अ. मा.)
रू. भे.—संखि ।

संखाळ–सं. पु. [सं. शंख+आलुच्] १ बड़ा सूअर या वाराह जिसके ऊपर के होठ पर मूंछ के स्थान पर बड़े शंखाकृति दांत हो ।
२ विष्णु ।

संखावळी–सं. स्त्री.—देखो 'संखाहुळी' (रू. भे.)

संखासर, संखासुर—देखो 'संख' (७) (रू. भे.)
उ०—मच्छ रूप हुय अवतरै, संखासुर सधार । वेद आंण ब्रह्मा दिया, धरै सबर अवतार ।— गज-उद्धार

संखाहुळी, संखाहूळी, संखाहोळी–सं. स्त्री.—भूमि पर छितराने वाला एक पौधा, जो प्रायः ऊसर भूमि में होता है । इसके पत्ते छोटे और धूसर रंग के होते हैं फूल भेद से इसके तीन भेद होते हैं । सफेद, लाल और नीला । सफेद कोयल, शंखपुष्पी ।
उ०—१ ऊधाहूळी ऊजळी, संखाहूळी स्यांम । आंणइ अंधारी मिसां, कांमिनि करवा कांम ।—मा. कां. प्र.
उ०—२ संखाहूळी सताउरी, खस्टिवेलि नइं सोम । साथरि सारस सींगड़ी, पूरीसह-परि रोम ।—मा. कां. प्र.
रू. भे.—संखावळी, सांकाहुळी, सांखाहुळी सांखोहोळी ।

संखि—देखो 'संखात' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

संखिणी, संखिनी—देखो 'संखणी' (रू. भे.)
उ०—पदमिनी स्वेत स्निगारा, रक्त स्निगारा चित्रणी । हस्तिनी नील स्निगारा, क्रस्ण स्निगारा संखिणी ।—प. च. चौ.

संखिनीडंकिणी–सं. स्त्री. यौ. [सं. शंखिनीडंकिनी] एक प्रकार का उन्माद रोग ।

संखियौ–सं. पु. [सं. शृंक] १ एक प्रकार की सफेद पत्थर जैसी उपधातु जो बहुत विषैली होती है, सोमल ।
उ०—१ बाप नै तौ रांम-जांणै कांई सुमत सूझी जकौ जांनियां सूं तीन दिन पैंला मौत नै निंवत दी । संखियौ घोटनै पीयग्यौ । तड़कै मूंडा माथै माखियां भिणभिणावण लागी ।—फुलवाड़ी
उ०—२ दुखां रौ फंद कटण री आखरी आस मौत ही जकौई निरफळ गी । बेटी कांनी सूं आंख्यां फेर घरवाळी सांम्ही देखतौ बोल्यौ—इत्तौ संखियौ पीयौ तौ ई कार नीं करचौ ।—फुलवाड़ी
२ उक्त उप-धातु की भस्म (मल्ल भस्म) ।
३ एक प्रकार का छोटा घोंघा ।
४ देखो 'संख' (अल्पा; रू. भे.)
रू. भे.—संखोलियौ, सांकलियौ, सांकल्यौ, सांकुल्यौ, सांकूल्यौ, सांखूल्यौ ।

संखी–स. पु. [स. शंखिन्] १ विष्णु ।
२ समुद्र ।
३ शंख । (अ. मा.)
सं. स्त्री. [सं. शंखिनी] ४ शिवलिंगी से मिलती-जुलती एक प्रकार की लता विशेष ।

संखु—देखो 'संख' (रू. भे.)
उ०—रिसह लंछणि धोरिउ उल्लसइ, सु भवपंकि पड्या जन तारिसिइ । अवरु संखु धरइ रलियांमणउ, ध्वनि करी सिवपंथि सुहांमणउ ।—जयसेखर सूरि

संखेप, संखेव—देखो 'संक्षेप' (रू. भे.)

उ०—१ तिण समै जोधपुर राव मालदै राज करै छै। विस्तार आगै लिखीजसी। पिण संखेप थोड़ौ सौ लिखियै छै।—द. वि.

उ०—२ सकरसै बीहै तरतकरका सवाद। ऐसी विध रस आई। राजेस्वरू की भूंजाई। कविराजूं नै संखेप सी कही। सब कहिणै में ना आई।—सू. प्र.

उ०—३ सगळा वरत तणउ संखेव, निरारंभ रहइ नितमेव। जां लगि अटकळ कीजइ जेह, दसमउ देसावगासिक तेह।—स. कु.

संखेवि–क्रि. वि. [सं. संक्षेप] संक्षेप में, संक्षेप से।

उ०—सेतुज वंदिम्र तीरथराउ, गुरुया गणहर करउ पसाउ। वाग वांणि हउ सांमरउ देवि, चिहुँ गति गमण कहउ संखेवि।

—वस्तिग

संखेसर, संखेसरउ, संखेस्वर–सं. पु. [सं. शंखेस्वर] १ पार्श्वनाथ का एक नाम विशेष।

उ०—१ सेरीसरउ संखेसरउ, पंचासरउ रे। फलोधी थंभण पास, तीरथ तै नमुं रे।—स. कु.

उ०—२ महिमा मोटी त्रिभुवन मांहै, आवैं यात्रा जग उमाहै। कल्पतरु फलियौ हितकांमी, सुखदायक संखेस्वर स्वांमी।

—ध. व. ग्रं.

२ जैनियों के तीर्थस्थान का नाम।

उ०—संखेस्वर सहिजि जड, करतु कुरकुट ईस। आज वली उज्जंतगिरि, सिधसारण नमि सीस।—मा. कां. प्र.

संखोढाळ–सं. पु.—तांबे के पात्र में दूध, तिल, जौ आदि मिला जल संख में लेकर की जाने वाली पितृतर्पण विधि।

संखोदक–सं. पु. यौ. [सं. शंख+उदक] विष्णु की सेवा के शंख का जल जो सेवा निवृत्ति के उपरान्त उपस्थित जनों पर छिड़का जाता है।

उ०—उठै लोकांरी भीड़, सौ ठाकुरद्वारै जाय सघीया नहीं भीतर। उभा रहा। इतरै आरती हुई, संखोदक फेर ने वाह्यौ। तद लोक सरव आपोआप गया।—ठाकुरै साह री वात

संखोद्धार, संखोधार–सं. पु. यौ. [सं. शख+उद्दार] १ नाथ सम्प्रदाय में मृत्यु के पश्चात् मृतक की मोक्ष प्राप्ति के लिए किया जाने वाला योगमाया का पूजन।

२ द्वारिका के पास का एक प्रसिद्ध स्थान।

उ०—१ ईडर संखोधार ऊपरा, आंण वधारै येती।-नवकोटी मार-वाड खगां नर, सीहै लीध सहेती।—राव आसथांन रौ गीत

उ०—२ सत्रु वाढि सीस पूजै सकत्ति, वाढेल कहाया इण विगत्ति। इम लीध मंडळ ओखौ उदार, धर समंद वीटि संखोधार।—सू. प्र.

३ द्वारिका के पास का एक तीर्थ स्थान। (जैन)

उ०—.........लक्षणवंती दिली, नवकोटी मारू आडि, संघु सवालक्ष, ऊच मलतांन हींदूस्थांन, देवकूं पाटण, चीण महाचीण भोट माहाभोट संखोद्धार, एतला संचिगत अह्यारा देसदेसाउर वरणवीता सोभइ, अहो सीआलक बोलि।—व. स.

[सं. शंख+धारिन्] ३ विष्णु।

४ श्रीकृष्ण।

५ संन्यासी।

६ विष्णु का पुजारी।

संखोलियौ—१ देखो 'संख' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सखियौ' (३) (रू. भे.)

संखौ—देखो 'संख' (मह; रू. भे.)

उ०—धारणौ गदा चक्रो:, संखौ पदम पांणि सारंगौ। कमळा कंत कनौ:, तस्मै नाराइण नमौ।—गु. रू. बं.

संख्यप—देखो 'संक्षेप' (रू. भे.)

सख्या–सं. स्त्री. [सं.] १ गणना, गिनती, तादाद।

उ०—ओरंगसाह छत्री सह आयौ, उर राव रांण लगौ असहायौ। संख्या विण लीधां दळ साथै, मारग पड़ै पहाड़ां माथै।—रा. रू.

उ०—२ दूतां आखी बत्तड़ी, आयौ तहवरखांन। नर हैंवर संख्या किसी, कोई गैंवरां न ग्यांन।—रा. रू.

२ उपाय, युक्ति। ३ हेतु, कारण।

४ हिंदसा अंक।

५ समझ, बुद्धि।

६ विचार, खयाल।

७ ढग, तौर, तरीका।

रू. भे.—संख, संखा।

संख्यात–वि. [सं.] १ वह जिसकी संख्या की जाय, गिनती की जाय।

[सं. संख्यात] २ गिनती किया हुआ, गिना हुआ।

सं. पु. [सं. संख्यातम्] संख्या, अंक।

उ०—पांच स्थावर तीन विकलेंद्रिय गयौ, संख्यात असंख्यात काल रयौ।—जयवांणी

रू. भे.—सख्याता।

संख्याता–सं. स्त्री. [सं.] १ पहेली विशेष।

२ देखो 'संख्यात' (रू. भे.)

उ०—१ तो पिण जीव न देखियौ, जब खंडवा कीधा चार। आठ सोलै संख्याता किया, पिण जीव दीठौ न्यार।—जयवांणी

उ०—२ दस ठांणा अति दीपतां रे जिनजी, गुण परयाय प्रयोग। पस्ति जेहनी वाचना रे जिनजी, संख्याता अनुयोग।—वि. कु.

संख्याति–वि.—१ मूर्तिमान, साकार।

२ असंख्य, अपार, असीम।

उ०—देवी मात जांनेसुरी ब्रन्न मेहा। देवी देव चामुंड संख्याति देहा।—देवि.

सं. पु.—मुलाकात, भेंट।

क्रि. वि.—प्रत्यक्ष, सम्मुख, सामने।

संख्यालिपि—सं. स्त्री. [सं.] वर्णों के स्थान पर संख्या सूचक चिन्ह या अंक लिखने की एक प्रकार की लेखन प्रणाली ।

संग—सं पु. [सं.] १ संगम, मिलन, मेल ।
२ संसर्ग, स्पर्श।
उ०—जिण महाभक्त रौ अंग संग होतां ही आपरौ कोढ गमियौ जांणि । —वं. भा.
३ संगत, सोहबत ।
उ०—१ मांस अहारी मिनख कै, कदे न कांठै जाय । हरीया संग न कीजियै, जै कोई पारि वसाय ।—अनुभववांणी
उ०—२ ब्रज बनिता कौ संग छांडिकै, कुबज्या संग लाई । मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, चरणां लिपट रही ।—मीरां
४ संयोग ।
५ सहवास ।
उ०—सोवै अळगी सायधण, सुपनै ही नंह संग । गनका सूं राखै गुसट, रसिया तोनूं रंग ।—बां. दा.
६ आसक्ति, वासना ।
७ साथ ।
उ०—१ दस पांच मांणस कुंवरजी कन्है राखौ बाकी कांम रा लोग सगळा संग हालौ ।—गोपालदास गोड़ री वारता
उ०—२ हरणीमन हरियाळियां, उर हालिया उमंग । तीज परब रंग त्यारियां, सांवण लायौ संग ।—बां. दा.
उ०—३ बूंदी ऊपर हल्लियौ, हाडौ दुरजणसल्ल । दुंद सजोड़ अरोड़ दळ, संग राठौड़ दुभल्ल ।—रा. रू.
उ०—४ कुण बेली संसार मैं, जीव एकलौ जाय । हरीया हरि बिन दूसरा, संग न कोई थाय ।—अनुभववाणी
उ०—५ देसरा 'माल' संग लियां चतुरंग दळ, यर हरां मार सेणां ऊबारै । रणचंडां सहल जूंभा गहल राठवड, सहल रमतां पडै दहल सारै ।—कल्यांणदास महडू
८ सहित ।
उ०—मणि कंकण अंगद, अमूल्य पद हाटक नूपर । नवळासी नवरंग, संग भुज बंसी सुंदर ।—रा. रू.
[फा.] ९ पत्थर, पाषाण ।
१० देखो 'संघ' (रू. भे.)
११ देखो 'सांग' (रू. भे.)
अल्पा;—संगड़ौ, संगडौ ।

संगअसब, संगअसम—देखो 'संगयसब' (रू. भे.)
उ०—१ मंडि जाब ज्वाब मतंग, संगअसम सरवर संग । तै वीच सरवर तत्र, छजि तखत जवहर छत्र ।—सू. प्र.
उ०—२ संगअसम सगमरवर कस्मीर बिलवर सूनै रूपे के मौरियां नूं जड़ाऊ के प्याले फिरतें हैं । जिस प्यालूं के वीच ही अनार दाळ चीनी परतकाळी अंगुरी गले कुलाब ऐसी भांति भांति के फूल ऐराक भरतै हैं ।—सू. प्र.

संगअसवद—सं. पु. [फा. अ. संगेअस्वद] वह काला पत्थर जो काबे की एक दीवार में लगा है और जिसे देखने के लिए मुसलमान मक्का जाते हैं, जिसे हज कहते हैं ।

संगइ—देखो 'संगति' (रू. भे.) (जैन)

सगखारौ—सं. पु. [फा. संगेखारा] एक प्रकार का खुरदरा और लाली लिए हुए पत्थर जो बहुत कड़ा होता है ।

सगड़ौ—देखो 'संग' (अल्पा; रू. भे.)

संगजराहत—सं. पु. [फा. अ. सगेजराहत] एक सफेद और कोमल पत्थर जो घाव भरने के काम आता है, सिघा ।

संगट—देखो 'संकट' (रू. भे.) (ह नां. मा.)
उ०—रूज उपताप व्यथा पीड़ा रूग आमय आंम मांद आतंक । व्याध रोग असमाधि अपाटव, संगट गद मेटण हरि संक ।
—ह. नां. मा.

संगटण—देखो 'संघटण' (रू. भे.)

संगटणौ, संगटबौ—देखो 'संकटणौ, संकटबौ' (रू. भे.)
संगटणहार, हारौ (हारी), संगटणियौ—वि० ।
संगटिओड़ौ, संगटियोड़ौ, संगट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
संगटीजणौ, संगटीजबौ—भाव वा० ।

संगटियोड़ौ—देखो 'संकटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संगटियोड़ी)

संगटीयौ—वि.—१ संकटापन्न ।
२ दुःखी, पीड़ित ।

संगट्टण—देखो 'संघटण' (रू. भे.)
उ०—सज्जौ अेक संगट्टण, पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज बढौ । मन में मिनखापण नैण सुरापण, खांधै खांपण मेल कढौ ।
—चेतमांनखौ

संगठ—१ देखो 'संकट' (रू. भे.)
उ०—१ सुपखाळ अमीणाय पीर सुणौ, गढवाडां में संगठ आज घणौ । पित 'धांधल' अंस रू देव प्रभा, यम आखत चाळ अहै ओळभा ।
—पा. प्र.
उ०—२ रांम नांम है पतित उधारी, आयै संगठ लीयां उबारी । रांम नांम भगतिन का भीरी, सौ सिवरै ताही का सीरी ।
—अनुभववांणी
२ देखो 'संघटण' (रू. भे.)
उ०—१ बड़ौ जस खाटियौ संगठ दांणव वहे, त्रिणावत त्रोडियौ कंस आधी कहे ।—पी. ग्रं.
उ०—२ साहिजादा अनै रायजादां संगठ, बांधियौ वळै दिखणाद वाळौ । ऊजळौ 'सुभौ' अजमेर रौ आभरण, कांमि आयौ बड़ै काजि काळौ ।—सुभरांम गौड़ बलिरांमोत रौ गीत

संगठण—देखो 'संघटण' (रू. भे.)

संगठणौ, संगठबौ—क्रि. अ. [सं. संघटनम्] १ संगठित होना, किसी वर्ग का एकमत होना, संगठन बनाना।
२ देखो 'संकटणौ, संकटबौ' (रू. भे.)
संगठणहार, हारौ (हारी), संगठणियौ—वि०।
संगठिअोड़ौ, संगठियोड़ौ, संगठ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संगठीजणौ संगठीजबौ—भाव वा०।

संगठासुर—देखो 'सकटासुर' (रू. भे.)
उ०—ग्वाळा बिच ऊभौ ऊभौ गाज, सहीं संगठासुर बैठौ साभि। त्रणावत त्रोड़ि बंछासुर बांहि, अहौ अविगत तुहारी आहि।
—पी. ग्रं.

संगठित—वि. [सं. संघटित] भलि-भांति व्यवस्था करके विभिन्न इकाईयों का एक में मिला हुआ।

संगठियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संगठित हुवा हुआ, किसी वर्ग का एकमत हुवा हुआ, संगठन बनाया हुआ।
२ देखो 'संकटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संगठियोड़ी)

संगडौ—देखो 'संग' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—पहली पेम न चखीया, पीछे क्या पछताय। पे बिनां सौ संगडौ, जनहरीया विख भाय। —अनुभववांणी

संगत—सं. स्त्री. [सं.] १ साथ, सोहबत।
उ०—१ साधां की संगत दुख भारी, मांनौ बात हमारी। छापा तिलक गळ माळा उतारौ, पहिरौ हार हजारी।—मीरां
उ०—२ हरि भगति न की संगत करीये, पलक घड़ी दिन पाव रे। जन हरि रांम कहै निस दिन मैं, जपता वेर न लाव रे।
—अनुभववांणी
उ०—३ ऊजळ मळ संकुळ पीढी उबटांणी, करड़ै लो' साथै ग्रैरण कूटांणी। कळियां कूळां री कादे में कळगी, विसहर संगत सूं पीपळियां बळगी।—ऊ. का.
मुहा०—(१) संगत करणी=साथ में रहना, साधुओं की मंडली में बैठना। भक्तों को भोजन कराना।
(२) संगत जिसौ असर=जैसी सोहबत होती है वैसा ही प्रभाव पड़ता है।
(३) संगत जिसौ फळ=अच्छे या बुरे जैसों की सोहबत होती वैसा ही परिणाम निकलता है।
(४) संगत जेड़ी रंगत=देखो 'संगत जिसौ असर'।
२ उपयुक्त या युक्तियुक्त कथन।
३ संग रहने या होने का भाव, एक्य, मेल।
४ मैत्री, घनिष्ठता।
उ०—सिंघणी रै भक्सण रा जांदा पड़ण लागा। केई वेळा लांघण रे'जाता। अेकर तौ वा लगती तीन दिनां तांई भूखी रै'गी। भूख आगे उणनें कीं चेतौ रह्यौ नीं। नीं धरम बैन रै गना रौ अर नीं दिनां री संगत रौ।—फुलवाड़ी
५ ऐसा लगाव या सम्बन्ध जो पास या साथ रहने से उत्पन्न होता है, संसर्ग।
उ०—मळियागिरां मंझार, हर कौ तर चंदण हुवै। संगत लियै सुधार, रूखां ई नै राजिया।—किरपारांम
६ साथ रहने वालों का दल या मंडली।
उ०—विदवांनां अर धनमांनां री संगत, साथै देस सेवा भी। मार'जा तौ सैः चीजां छोड'र हिरावड़ै पसुरौ सौ लक्कड़, गळै में वैर बांध लियौ है।—दसदोख
७ सहवास, मैथुन, संभोग।
८ वेश्याओं या भांडों के साथ रहने वाला या तबला व सारंगी आदि बजाने वाला पुरुष या पुरुषों का समूह।
९ हरि (ईश्वर) के भजन करते समय वाद्य बजाने वालों की मण्डली।
१० शालिशूक राजा का पिता एवं सुयशयस् राजा का पुत्र एक मौर्यवंशीय राजा।
११ हरिभजन में सम्मिलित जनसमूह।
उ०—अेकर किणी गांव मैं अेक रमतौ संत चौमासी करचौ। सिंझ्या रा ब्याळू करनें बस्ती रा लोग भेळा व्है जाता। संत भगती व ग्यांन री बातां सुणावतौ। गांव मैं अेक ही राईका रौ घर हौ। वौ घणां दिनां तांई संगत मैं नीं आयौ तौ बस्ती रा बूड-बड़ेरा उणनें ओळबौ दियौ।—फुलवाड़ी
१२ उदासी व निर्मल साधुओं के रहने का मठ।
वि.—१ जुड़ा हुआ, लगा हुआ, मिला हुआ।
२ इकट्ठा किया या हुवा हुआ, एकत्रित।
३ उपयुक्त, उचित, मुनासिब।
४ अनैतिक सम्बन्धयुक्त हुवा हुआ।
५ संकुचित, सिकुड़ा हुआ।
६ दाम्पत्य या वैवाहिक बन्धन में बंधा हुआ।
७ समान वर्ग या जाति का।
८ देखो 'संगति' (रू. भे.)
रू. भे.—संगीति, संगीती।

संगतरास—सं. पु. यौ. [फा.संग+तराश] पत्थर काटने वाला।

संगति—सं. स्त्री. १ ताल-मेल, सामंजस्य।
२ संयोग, इत्तिफाकिया।
३ संगत होने की अवस्था, क्रिया या भाव।
४ मेल-मिलाप।
५ ज्ञान।
६ ज्ञानप्राप्ति हेतु पूछे गये प्रश्न।
७ समाज।
८ देखो 'संगत' (रू. भे.)

उ०—१ स्याळां संगति पाय, करक छंछेड़ै केहरो। हाय कुसंगति हाय, रीस न आवैं राजिया।—किरपारांम

उ०—२ अयौ वैकूंठ हुंता सु विमांण, अयौ सनकादिक ले अवसांण। वढै वैकुंठ विमांण चलाय, परी उधरी जिण संगति पाय।
—सू. प्र.

उ०—३ जिण री संगति रैं प्रभाव स्वरगलोक रौ मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रौ निवास भाळियौ।—वं. भा.

उ०—४ जन हरीया संगति करी, खळि सूं नागर वेल। ता सेती निरफळ रही; अै कुसंगति खेल।—अनुभववांणी

रू. भे.—संगई, संगीति, संगीती।

संगतियौ-सं. पु.—१ नाचने या गाने वाले के साथ रह कर तबला या सारंगी बजाने वाला, साजिंदा।

२ संगत करने वाला व्यक्ति।

सगन, संगना—देखो 'संग्या' (रू. भे.) (अ. मा.)

संगम-सं. पु. [सं.] १ दो पदार्थों के आपस में मिलने की क्रिया या भाव, मिश्रण।

२ वह स्थान जहां पर दो नदियां, धारायें या रेखाएं आकर आपस में मिलती है।

३ मैथुन, संभोग, सुहबत।

४ संग, साथ।

५ संसर्ग, संस्पर्श।

उ०—दाळद्द पाप संताप दह, पारस संगम लोह पर। निज नांम नमौ तौ नारियण, हंस नमौ सिरताज हर।—ह. र.

६ सम्पर्क।

७ ज्योतिष में ग्रहों का संयोग या उनका एक स्थान पर एकत्रित होने की क्रिया।

संगमरमर, संगमरवर-सं. पु. [फा. सग+अ. मर्मर] एक प्रकार का प्रसिद्ध सफेद व चिकना पत्थर।

उ०—संगअसम संगमरवर कस्मीर बिलवर सूने रूपे के मोरियां नूं जड़ाऊ के प्याले फिरते हैं।—सू. प्र.

संगमूसौ-स. पु. [फा. संगे+अ. मूसा] एक प्रकार का काले रंग का चिकना एवं बहुमूल्य पत्थर।

संगयसब, संगयसम, संगयस्ब, संगयस्म-सं. पु. [फा. संग+यशब] एक प्रकार का हरे नीले, सफेद आदि रंगों का पत्थर जो दवा में काम आता है।

रू. भे.—संगअसब, संगअसम।

संगर-सं. पु. [सं. सम्+गृ] १ युद्ध, समर, संग्राम। (डि. को.)

उ०—हाथ कटतां ही निद्रा निवारि सस्त्रादिक संगर सामग्री में सज्ज होइ।—वं. भा.

२ सौदा, व्यवहार। ३ भोजन, भक्षण। ४ विष, जहर।

[फा.] ५ रक्षा के लिए सेना के चारों ओर बनाई हुई खाई या दीवार।

६ संगठन।

उ०—फिरि करचौ गाढ संगर लगाय, जो मारचौ चहत सो निकट जाय।—ला. रा.

७ विपत्ति, आपत्ति, संकट।

८ प्रण, प्रतिज्ञा।

रू. भे.—संगरि, संघर।

संगरण—देखो 'सग्रहण' (रू. भे.)

संगरणबणौ, संगरणबबौ—देखो 'संघरणौ, संघरबौ' (रू. भे.)

संगरणबणहार, हारौ (हारी), संगरणबणियौ—वि०।

संगरणविग्रोड़ौ, संगरणवियोड़ौ, संगरणब्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सगरणवीजणौ, सगरणवीजबौ—कर्म वा०।

संगरणवियोड़ौ—देखो 'संघरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संगरणवियोड़ी)

संगरणी—देखो 'संग्रहणी' (रू. भे.)

संगरणौ, संगरबौ—१ देखो 'संघरणौ, सघरबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संग्रहणौ, संग्रहबौ' (रू. भे.)

संगरणहार, हारौ (हारी), संगरणियौ—वि०।

संगरिग्रोड़ौ, संगरियोड़ौ, संगरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

संगरीजणौ, संगरीजबौ—कर्म वा०।

संगरांम—देखो 'संग्रांम' (रू. भे.)

संगरि—देखो 'संगर' (रू. भे.)

उ०—धड पडइ धड ऊपरी नाचतां, रडवडइ सिर संगरि झूझतां। रथ भरी हथीयार समा भिड्या, अप सुसरम विराट बेऊ जड्या।
—सालिभद्रसूरि

संगरियोड़ौ—१ देखो 'संघरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संग्रहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संगरियोड़ी)

संगरोध-सं. पु. [सं.] संक्रामक रोग को रोकने के लिए की गई व्यवस्था।

संगल-सं. पु [सं.] एक प्रकार का रेशम।

स. स्त्री.—लोहे की शृंखला।

२ अपराधियों के पैरों में डाली जाने वाली लोहशृंखला।

संगव-सं पु. [सं.] प्रातःकाल का वह समय जब चरवाहा गायों का दूध निकाल कर उन्हें चराने के लिए ले जाता है।

संगवी-सं. पु —१ साथ रहने वाला, संगी, साथी।

उ०— संगवी 'कांन्हौ' धर पड़ियौ चित विकार। संगवी सहौ भागा तज संभार।—करणी रूपक

२ देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

संगसार-सं. पु. [सं.] प्राचीनकालीन दण्ड विशेष जिसमें अपराधी को दीवार में चुनवा दिया जाता था।

संगसुरमा-सं. पु. [फा. संगे+अ. सुर्मः] सुरमा बनाने की उपधातु ।

संगसुलेमानी-सं. पु. [फा. संग+अ. सुलेमानी] एक प्रकार के धारीदार या दुरंगे पत्थर के नग जिनकी माला बनाई जाती है ।

संगह—देखो 'संग्रह' (रू. भे.) (जैन)

संगहसंपया-सं. स्त्री.—ऐसी वस्तुओं का पहले से किया गया संग्रह जो कि साधुओं के उपयोगार्थ होती है । (जैन)

संगहिया-वि.—संग्रहित ।

उ०—अजीवा जीव **संगहिया**, जीवा कंम्म संगहिया तास । आठ बोल थित लोक नी, ठाणायंग इम भास ।—जयवांणी

संगांम—देखो 'संग्रांम' (रू. भे.) (जैन)

संगा-वि. स्त्री.—साथ रहने वाली ।

उ०—भवांनी नमौ स्वच्छ स्रंगार अंगा, भवांनी नमौ सुंदरी सिंभु **संगा** । भवांनी नमौ कासरिद्रारि हंता, भवांनी नमौ आसि आभा अनंता ।—मे. म.

संगाति, संगाती-सं. पु.—१ वह जो साथ रहता हो, सगी, साथी ।

उ०—१ नमि विनमी राजा विद्याधर, बि बि कोडि **संगाति** रे । फागुण सुदि दसमी दिन सीधा, तिण प्रणमूं परभाति रे ।
—स. कु.

उ०—२ संगी सोई कीजियै, सुख दुख का साथी । दादू जीवन मरण का, सो सदा **संगाती** ।—दादूबांणी

उ०—३ पीहर बसूं न बसूं मास घर, सतगुरू सब्द **संगाती** । ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरां हरि रंग राती ।—मीरां

२ प्रेमी ।

उ०—१ बैणां रा रसीला रैणां रा सवादी ! रसराज सैंणां रा **संगाती** प्रांण सूं प्यारा म्हारा राज ।—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ ऊधोजी हमारै रांम **संगाती**, उस लोभी ने भेजी है पाती । आप तो जाय वहां पर छाये, हमको भेजी जोग की पाती ।
—मीरां

३ वह जो सहायता करे, सहायक ।

उ०—परदा अंतर कर रहै, हम जोवै किहि आधार । सदा **संगाती** प्रीतमा, अबकै लेहु उबार ।—दादूबांणी

रू. भे.—संगाथी, संघाति, संघाती ।

संगाथी—देखो 'सगाती' (रू. भे.)

संगार—देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

उ०—ससक्कै नगार बंध लटक्कै नाग रा सीस, आग रा अंगार तोपां भटक्कै अबाज । राखियौ खंगार दूजा खाग रा पांण सूं रघू, रांण वाळौ वाघ रा **संगार** जेम राज ।
—भीमसिंह चूंडावत रौ गीत

संगि—१ देखो 'संगी' (रू. भे.)

उ०—१ हुइ हरख घणौ सिसुपाळ हालियौ, अथै गायौ जेणि गति । कुण जांणौ **संगि** हुआ केतला, देस देस चा देसपति ।—वेलि

उ०—२ सिसु वै मित्ती वित्ती, उदभौ पौगंड मंड सिंगारौ । ज्यौं व्रंदारक तरयं, प्रांमै डाळ **संगि** पत्तेणम् ।—रा. रू.

उ०—३ अण चपळ नैण लघु जोम अत्ति, **संगि** अहूं विदिसि चेतन सकत्ति । दीपंत जुगळ कळ अमळ दत, सुत अरक पांणि लखि जांणि संत ।—रा. रू.

२ देखो 'सांग' (रू. भे.)

उ०—सुरतेस सीस हकिय संजोर, मांनहु लखि जिलग मत्त मोर । इक जवण आंणि इहि बिच उमाही, बेध्यौ प्रयाग **संगि** बाहि ।
—वं. भा.

संगियौ—देखो 'संगी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ जोगी तपै जिकाय, आंगण बिच आतौ रहै । तोमें पड़ी तिकाय, जुड़ै न **संगिया** जेठवा ।—जेठवा

उ०—२ गोत्य गुसांई व्है रहै, अब काहे न परकट होइ । रांम सनेही **संगिया**, दूजा नांही कोइ ।—दादूबांणी

संगी-सं. पु. [सं. संग+राज. प्र. ई] (स्त्री. संगिनी) १ वह जो सदा साथ रहता है, साथी ।

उ०—१ आवौ जी गिरधारी थां सूं मैं बोलै । थें तौ म्हारा जनम जनम रा **संगी**, थांरै लारां संग में डोलै ।—मीरां

उ०—मिमता माया मोह मन, संगा सोग सरीर । हरीया जब **संगी** ईता, हरि सुख लहै न सीर ।—अनुभववांणी

मुहा.—तंगी में कुण संगी=कठिनाई में कोई साथ नहीं देता ।

२ वह जो किसी का साथ करे, साथ चलने वाला ।

उ०—१ हरीया छळ बळ नां रहै, रहै न किनकै जोर । मन का **संगी** सबळ है, पांचपचीसूं चोर ।—अनुभववांणी

उ०—२ समज मन सदा धरम एक **संगी**, तेरै कबहू न आवै तंगी । जन्मै जीव अकेलो जग में, नित व्है काया नंगी ।—ऊ. का.

३ सहायता करने वाला, सहायक ।

उ०—१ दादू पारब्रह्म पैंडा दिया, सहज सुरति लै सार । मन का मारग मांहि घर, **संगी** सिरजनहार ।—दादूबांणी

उ०—२ हरीया **संगी** रांम विन, या कलि मांहि न कोय । काळ पकड़ि लै जावसी, ऊभा देखै लोय ।—अनुभववांणी

४ साथ रहने से लगने वाला रोग ।

५ साथ ।

उ०—हिलै संप हैथाट, चलै बांना वहरगी । इळ जळनिध उल्लटै, जांण बड़वांनळ **संगी** ।—रा. रू.

[सं. सञ्ज्ञी] ६ वें जीव जिनके मन हो । (जैन)

रू. भे.—सगि ।

अल्पा;—सगियौ ।

संगीत-सं. स्त्री. [सं. संगीत] १ गायन, वादन व नृत्य ।

उ०—चवसठ मझि बावन चिरताळा, मदछकिया रमै मतवाळा । धड़ बह जठै ऊठि व्रत धारै, ऊघट **संगीत** सीस उचारै ।—सू. प्र.

२ विशिष्ट नियमों व लयानुसार मधर ध्वनियों व स्वरों का होने वाला प्रस्फुटन ।

वि. वि.—यह दो प्रकार का होता है—(१) कंठ्य संगीत और (२) वाद्य संगीत ।

३ वह गाना जो कई लोगों द्वारा मिल कर गाया जाय ।

४ गाने बजाने की कला ।

५ वह गान जो वाद्य यंत्रों के साथ लय एवं ताल से गाया जाय ।

उ०—धूधूकट ध्रकट ध्रकट धम धपमप, बाजा विविध बजाड़ै । थेई थेई अंग अंग अत थावत, गीत संगीत गवाड़ै ।—मे. म.

संगीतविद्या–सं. स्त्री. यौ. [सं.] १ गाने बजाने की कला का विवेचन ।

२ गाने-बजाने की कला ।

संगीति, संगीती–सं. स्त्री. [सं. संगीत] १ संगीत विद्या ।

उ०—लहलहती नाचै लता, पवन **संगीती** पाय । पंखा बरदारी करै, रंभ विचै वणराय ।—बां. दा.

२ संगीतज्ञ, संगीत विद्या का पंडित ।

उ०—ज्योतिसी वैद पौरांणिक जोगी, **संगीती** तारकिक, सहि । चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकटा तौ अरथ कहि ।
—वेलि

३ देखो 'संगति' (रू. भे.)

४ देखो 'संगत' (रू. भे.)

संगीन–सं. स्त्री. [फा.] बन्दूक की नाल के सिरे पर लगाया जाने वाला एक तिपहला और तीखा शस्त्र ।

उ०—१ लखि तोपां सालुळी, पुळी पलटण्यां पटैतां । **संगीनां** साबळां, आभ छायौ अखड़ैतां ।—मे. म.

उ०—२ ढळकती ढाल बंध लांमचोजर धकै, चमक **संगीन** वड सूर पोरस छकै । थरर उर कायरां होय ढीला थकै, बियौ 'वखतेस' धर कोप किण सिरकै ।—पाबूदांन आसियौ

वि. [फा. संग+प्र. ई.+न] १ पत्थर का बना हुआ ।

२ विकट, मजबूत ।

३ असाधारण ।

संग्यक–वि. [सं. संज्ञक] संज्ञा वाला, जिसकी संज्ञा हो ।

संग्या–सं. स्त्री. [सं. संज्ञा] १ होश, सुधि, चेतना शक्ति ।

उ०—सहु सेना मूरछित हुई । देखतां ही कहूँ ने **संग्या** रही नहीं ।
—वेलि टी.

२ अवस्था, दशा, हालत ।

उ०—१ बुढापै **संग्या** होवै बुरी, जग में भूंडो जीवणौ । हजारां मांय औगुण हुवै, पण मी होकौ पीवणौ ।—ऊ. का.

उ०—२ राजकंवार नीमरांणां की, बांधरवाड़ै ब्याई । परतख होय पांगळी पावां, थावर **संग्या** थाई ।—मे. म.

३ बुद्धि, अक्ल ।

४ ध्यान । (अमरत)

५ नाम । (ह. नां. मा.)

उ०—सुरजन सुत बूंदी सदन, **संग्या** दुरजणसाल । ब्याहण हूं बलभद्र नूं, हुवौ सहायक हाल ।—वं. भा.

६ किसी पदार्थ आदि का बोधक शब्द ।

७ विश्वकर्मा की कन्या व सूर्य की पत्नी इसके मनु व यम नामक पुत्र व यमी या यमुना नामक पुत्री थी । संज्ञा जब घर गई तो अपनी बहन छाया सूर्य की सेवा के लिए छोड़ गई । सूर्य यह नहीं जानते थे अतः छाया से शनैःश्चर: मनु, तपती नामक तीन संतान हुई । संज्ञा सूर्य-तेज को सह नहीं सकती थी अतः विश्वकर्मा ने सूर्य के कुछ तेज कणों को निकाल कर विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशूल, कुबेर का पुष्पक विमान व स्कन्द देव की शक्ति बनाई ।

८ किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु के बोध होने का व्याकरण विकारी शब्द ।

९ गायत्री मंत्र ।

१० ज्ञान ।

रू. भे.—संगन, संगना, सिंग्या ।

संग्याकरणरस–सं. पु. यौ. [स. संज्ञाकरणरस] होश में लाने वाली एक औषधि विशेष । (वैद्यक)

संग्यापुतरी, संग्यापुत्री–सं. स्त्री. यौ. [सं. संज्ञापुत्री] विश्वकर्मा की पुत्री और सूर्य की धर्म पत्नी के संसर्ग से उत्पन्न पुत्री का नाम ।

संग्यासुत–सं. पु. यौ. [सं. संज्ञासुत] सूर्य एवं संज्ञा के संसर्ग से उत्पन्न पुत्र, यम एवं शनि ।

संग्याहीण–वि. यौ. [सं. संज्ञाहीन] १ बेहोश, चेतना रहित ।

२ मैला, कुचेला, गंदा ।

३ घृणित ।

४ मूर्ख ।

रू. भे.—सिंग्याहीण ।

संग्येय–सं. पु [सं. संज्ञेय] सोमवंशीय संहत राजा का नामांतर ।

संग्रह–सं. पु. [सं.] १ एकत्र करने की क्रिया या भाव ।

२ संग्रहीत वस्तुओं का ढेर ।

३ भोजन, पान, औषध खाने की क्रिया ।

४ वह मंत्रबल जिसके द्वारा कोई फेंका हुआ अस्त्र वापिस प्राप्त किया जा सकता है ।

५ ग्रहण करने की क्रिया ।

६ समूह, जमघट ।

७ धारण करने की क्रिया ।

८ विवाह, शादी ।

९ मैथुन, संभोग ।

१० स्वागत, सम्मान ।

११ निग्रह, संयम ।

१२ रक्षा, हिफाजत।
१३ तालिका, सूची।
१४ योग, जोड़।
१५ शिवजी का नाम।
१६ स्कन्द के पार्षद का नाम।
रू. भे.—संगह, संघर।

संग्रहण-सं. पु. [सं.] १ ग्रहण करना, लेना।
२ प्राप्ति, लाभ।
३ गहनों में नग आदि जड़ना।
४ अपहरण।
५ व्यभिचार।
६ मैथुन, संभोग।
७ संहार, नाश।
उ०—जद धर पर जोवती, देख मन मांह डरंती। गायत्री संग्रहण द्रस्ट नागोर धरंती। सुर तेतीसूं कोट, आंण नीरंता चारौ। नह खावत नह चरत, मनै करती हुंहकारौ। कुंभेण रांण हणिया कलम, आजस उर डर उत्तरिय। तिण दीह द्वार संकर तणै, कांम धेनु तंडव करिय।—महारांणा कुंभा रौ छप्पय
८ युद्ध।
रू. भे.—संगरण संघरण।

संग्रहणि, संग्रहणी-सं. स्त्री. [सं. संग्रहणी] एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें पाचन क्रिया के विकार के कारण बराबर और बार बार पतले दस्त होते रहते हैं।
रू. भे.—संगरणी, संग्रहांणि, संग्रहांणी।

संग्रहणौ, संग्रहबौ-क्रि. स. [सं. संग्रहणम्] १ संग्रह करना, संचय करना, जमा करना।
उ०—१ 'सळखा' हरा तणा तिण समहर, थाटां बिहुं आचंभ थियौ। महादेव संग्रहि महि माथौ, किरि वरि हार सिंगार कियौ।
—कचरा जसराजोत सळखावत रौ गीत
उ०—२ करणु दुजोहणु बेई मित्र, पंचह पंडव केरा सत्र। तसु दीधुं सउकूयरं राजौ, सौ संग्रहीइ जिणि हुइ काजो।
—सालिभद्र सूरि
२ पकड़ना, लेना, ग्रहण करना।
उ०—१ विळकुळियौ बदन जेम आकारचौ, संग्रहि धनुख पुणच सर संधि। क्रिसन रूकम आउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि बंधि।—वेलि
उ०—२ सुंदरि चोरै संग्रही, सब लीयां सिणगार। नक फूली लीधी नहीं, कहि सखि, कवण विचार।—ढो. मा.
उ०—३ पर उपकारी पुरस, औ जुध बार न डोलै। सांच बात संग्रहै, काछ पर नारि न खोलै।—सूरजमल मीसण
उ०—४ उद्धत संग्रहि कलाप हठि दंत निकारै, सुंडादंडन खंड खेरि अहि रूप उतारै। सेकिम माळाकार सोम अति जोर उपारै, आघोंरन घुम्मैं अचेत कपि ज्यौं द्रुम कारै—वं. भा.
३ धारण करना, पहिनना।
उ०—अंग सनाहां संग्रहै, साफ दुबाहां सार। मज कुंभां रिण गंजवा, चढ ऊभा तिणवार।—रा. रू.
४ हिफाजत या पालन करना।
५ रक्षा करना।
उ०—१ पण राखण दास गदापांणी, मंझ सौ कथ जाहर भूमांणी। अपखी प्रहळाद जिसा आतुर, संग्रहिया निज हाथ सूं।
—र. ज. प्र.
उ०—२ सूर सरम संग्रहै, भरम छंडै कमधज्जां। मेळ कियौ मेछ सूं, सूर सांमंत सकज्जां।—रा. रू.
६ स्थापित करना।
उ०—अम्ह कजि तुम्ह छंडि अवर वर आंणै, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगरांम सूद्र ग्रहि संग्रहि, वेद मंत्र म्लेच्छां वदनि।
—वेलि
७ कैद करना।
उ०—सत्थ न कौ बळ हत्थ कै, नां जीपै छळ मत्त। जै पांमै रिप संग्रहै, तप हूंता छत्रपत्त।—रा. रू.
८ प्राप्त करना।
उ०—कीधी बहु पहिरावणी, राजवीयां नै रंग। रस राख्यौ जस संग्रह्यौ, वाध्यौ प्रेम अभंग।—स्रीपालरास
९ युद्ध करना।
उ०—बैरियां काज पलांण बाजिद, कांधोधर अहो 'मोहोकमो'। बित घेरै मेरां बतळावै, संग्रहै रवि ऊगां समौ।
—मोहकमसिंघ राठौड़ रौ गीत
१० रोकना, थामना, ठहराना।
उ०—संग्रहियौ रथ सूर, पेखण नभ समहर 'पता'। खोभ दळां खेड़ूर, कूंत कनोजा भळकिया।—पाबूदांन आसियौ
११ धारण करना।
उ०—१ मच्छर और न संग्रहै, आ मछरीकां आद। अड़ै कमधां अग्गळी, विचत्रां हूंता बाद।—रा. रू.
उ०—२ केइक पुण्यवंत प्रांणिया रे, चेत कियौ धरम सार। साधु स्रावक व्रत संग्रह्या, समकित सेंठी धार रे।—जयवांणी
संग्रहणहार, हारौ (हारी), संग्रहणियौ—वि०।
संग्रहिओड़ौ संग्रहियोड़ौ, संग्रह्योड़ौ - भू० का० कृ०।
संग्रहीजणौ संग्रहीजबौ—कर्म वा०।
संगरणौ, संगरबौ, संघरणौ, संघरबौ—रू० भे०।

संग्रहांणि, संग्रहांणी—देखो 'संग्रहणी' (रू. भे.)
उ०—ताप सन्निपात जांणी अनीसार संग्रहांणि, फीहौ विष दाल पांडु गोला सूल खैंन है। हीयारोग खास खास रुधिर प्रवाह रूप,

सीस पीड रोग ग्रह जेतै रोग नैन हैं ।—ध. व. ग्रं.

संग्रहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संग्रह किया हुआ, संचय किया हुआ, जमा किया हुआ. २ पकड़ा हुआ, लिया हुआ, ग्रहण किया हुआ. ३ धारण किया हुआ, पहिना हुआ. ४ हिफाजत या पालन किया हुआ. ५ रक्षा किया हुआ. ६ स्थापित किया हुआ. ७ कैद किया हुआ. ८ प्राप्त किया हुआ. ९ युद्ध किया हुआ. १० रोका हुआ, ठहराया हुआ. ११ धारण किया हुआ ।

(स्त्री. संग्रहियोड़ी)

संग्रही—वि. [सं.] संग्रह करने वाला, एकत्र करने वाला ।

संग्रांम—सं. पु. [सं. संग्राम] युद्ध, लड़ाई, समर । (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ वजंत घाव जूसणै, निहाव उट्ठवेणियं । संग्रांम पंड कैरवै, कि, खंड बांण सेणियं ।—रा. रू.

उ०—२ उबरै वचना हीण टाळौ देर हुवौ आघौ, साचौ सारौ मेळणौ संग्रांम हैके साथ । सोढी काज लपेटौ भालाळै सताबी सूंप्यौ, विचारी सुरंद्रा लोक बणी आ विख्यात ।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ जद स्वांमीजी बोल्या—रजपूत रौ बेटौ संग्रांम करतां न्हांस जावै तौ सूर किम कहीयै । तिण नै राजा पटौ किम खावा दै ।—भि. द्र.

उ०—४ सुजड वहंतां 'रयण' समोभ्रम, अंतर किम दीसै अकळ । कुळ छळ थायां हमैं केवियां, छांडैवा संग्रांम छळ ।

—महम्मदजी बारहठ

रू. भे.— संगरांम, संगांम, सगरांम ।

संग्रांमजित—सं. पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण व भद्रा के संसर्ग से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक ।

२ कृष्ण व शैवकन्या सुदेवी का एक पुत्र ।

३ कर्ण का भाई जो अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

४ युधिष्ठर की सभा का एक राजा ।

संग्रांमसाही—सं. पु.—महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय द्वारा चलाया हुआ मेवाड़ राज्य का एक सिक्का ।

संग्रांमांगण—सं. पु. [सं. संग्राम+अंगण] युद्ध भूमि, रणक्षेत्र, रण-स्थल ।

उ०—सग्रांमांगण नै विखै जीतौ उत्तम राय । बीरसेन नै जीवतौ, बांधि लियौ तिण ठाय ।—वि. कु.

संग्राह—सं. पु. [सं.] १ ओजार या हथियार का दस्ता या मूठ ।

२ ढाल पकड़ने का हत्था विशेष । (डिं. को.)

३ मुक्का, मुष्ठिका । (डिं. को.)

संग्राहक—वि. [सं.] संग्रह करने वाला ।

संग्राही—सं. पु. [सं. संग्राहिन्] १ कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थों को खींचने वाला पदार्थ ।

२ कब्ज करने वाली वस्तु ।

संघ—सं. पु. [सं.] १ लोगों का समुदाय या समूह ।

उ०—देवी संभ निसुंभ दरपांध छळिया, देवी देव खग धारिया देत दळिया । देवी सघ सुरां तणा काज सीधा, देवी कोड़ तेतीस उच्छाह कीधा ।—देवि.

२ साधु साध्वी, श्रावक श्राविका का समुदाय ।

उ०—१ सुध मन सेव गुरुदेव री साचवे, सगर समभै अरथ सूत्र सिद्धंत । दियै बहु दांन मन सुद्ध पालइ दया, भलौ नित संघ रौ करौ भगवंत ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ संवत्त सतरैं बरस बीसैं मास मिगसार जांण ए । चद्रापुरी थी संघ चाल्यौ, चढी जात्र प्रमांण ए ।—ध. व. ग्रं.

३ समूह, झुण्ड ।

उ०—कवहु करै न अटक उल्लघन, साहु दाग न धरै हय संघ न । बंब मुख्य तोरन लग बज्जै, ध्रज्ज अनुगच्छै संग न सज्जै ।

— व. भा.

३ तीर्थाटन के लिए जाने वाला यात्री दल । (जैन)

उ०—संघ करइ वधांमणा मन मोह्यउ रे । तोरण नैण निहालि, लाल मन मोह्यउ रे —स. कु.

४ साधुओं का मठ ।

५ संगठित रहने या होने की अवस्था, भाव ।

६ प्राचीन भारत में एक प्रकार का लोकतंत्रीय राज्य या शासन जिसकी व्यवस्था जनता के चुने हुए प्रतिनिधि करते थे, सघ-राज्य ।

७ राष्ट्रों का एक संगठन, जैसे राष्ट्र-संघ ।

८ देखो 'सिंह' (रू. भे.)

उ०—ए कागळ का समाचार रुक्मणीजी वीनती करै छै । जु बाळ वंधण इहौ जु संघ की बलि छै । सु स्याळ खासी । जौ मुनै बीजौ कोई परणस्यै ।—वेलि टी.

९ देखो 'सग' (रू. भे.)

संघट—सं. पु. [सं.] १ समूह, समुदाय ।

उ०—सुख लाधै केलि स्यांम स्योमा संगि, सखिए सनरखिए संघट । चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियौ कहकहाहट ।—वेलि

२ देखो 'संकट' (रू. भे.)

उ०—बंधग्राह दरीयाव बीच, पड़ संघट फील पुकारियां । ईस ऊबाहणा पाय आय, धर हत्थूं सूंड उधारियां ।—र. ज. प्र.

संघटण—सं. पु. [सं. सघटन] १ अपने हित रक्षार्थ किसी विशिष्ट वर्ग या कार्यक्षेत्र के लोगों का मिलकर धारण किया गया एक इकाई का रूप ।

२ बिखरी हुई शक्तियों को एक में मिला कर उन्हें किसी काम के लिए तैयार करने की क्रिया ।

३ किसी विशेष उद्देश्य के लिए बिखरी हुई शक्तियों को मिलाकर दिया गया रूप ।

४ इस उद्देश्य से बनाई गई संस्था ।

५ किसी वस्तु विशेष के विभिन्न अवयवों को जोड़कर उसे प्रतिष्ठित करने या रचने का ढंग या क्रिया ।

६ व्यक्तियों के मिल कर एक होने की क्रिया ।

७ स्वरों या शब्दों का संयोग ।

रू. भे.—संगटण, संगट्टण, संगठ, संगठण, संघट्टण ।

संघटा-सं. पु.—संसर्ग, संस्पर्श ।

उ०—बुद्धि सूं विचारचौ इण रौ सील भागौ दीसै छै, पछै तै मिल्यौ जद स्वामीजी पूछ्यौ—'थारौ सील घर री स्त्री सूं भागौ कै और स्त्री सूं भागौ' । जद तै बोल्यौ—पर स्त्री सूं तौ न भागौ घर स्त्री सूं पिण सघटा रूप हुवौ ।—भि. द्र.

संघट्टचक्र-सं. पु. [सं.] फलित ज्योतिष के अन्तर्गत युद्ध-फल विचारने का नक्षत्रों का एक चक्र ।

संघट्टण—देखो 'संघटण' (रू. भे.)

उ०—सज्जौ अेक संघट्टण पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज बढौ । मन में मिनखापण नैण सुरापण, खांधैं खांपण मेल कढौ ।

—चेतमांनखौ

संघपत, संघपति-सं. पु. [सं. संघपति] किसी संघ या समूह का प्रधान, दलपति, नायक ।

उ०—१ संघपति सोम तणउ जस सगळइ, वरण अठारह करइ वखांण । मूयउ कहइ तिकै नर मूरिख, जीवइ जगि जोगी सुत जांण ।—स. कु.

उ०—२ संघपति भरतेरु जात्रा करू रे । थाव्या प्रथम प्रासाद, जय जय गिरनार गिरै ।—स. कु.

संघर—१ देखो 'संगर' (रू. भे.)

उ०—१ सुजड़ां मुंहि संघर लड़िया लमकर, डिगमिग काइर कळह डरैं । खारां पळ खंडर कटि सिर कूपर, स्रोणी खप्पर सकति भरै ।—गु. रू. बं.

उ०—२ जुध राज तणा धारै जतन, सारै वज्जां साह सूं । केवियां छेड़ संघर करां, औ निवेड़ निरवाह सूं ।—रा. रू.

२ देखो 'संग्रह' (रू. भे.)

उ०—कर नवल किसोरी संघर सोरी, मरियादा मेटंदा है । बिस-फळ बैरागी त्रिभवन त्यागी, भोगी भुज मेटंदा है ।—ऊ. का.

संघरण-वि.—१ संहार करने वाला, नाश करने वाला ।

उ०—कौसळ्या, सुख करण, नेत बंध दसरथ नंदण । व्रत खिन्नवट निरवहण, दुमट ताड़का निकंदण । रिण सुबाहु संघरण, असुर मारीच उडावण । रज पै अहल्या तरण, संत जम त्रास छुडावण ।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'संग्रहण' (रू. भे.)

संघरणौ, संघरबौ-क्रि. स.—१ संहार करना, मारना ।

उ०—१ विहित सुणौ अत वांणि, एम चहुवांण उचारै । सकौ काळ संघरै, न कौ रहियौ वीसारै ।—रा. रू.

उ०—२ बोलंत सकति मो वळि हुई, सुभट असंखां संघरै । स्रोण इक आज खप्पर भरसि, तई एक खप्पर भरै ।—गु. रू. बं.

उ०—३ सबळा सत्र संघरै, छळै सबळै पडि-गिरिया । जेथ भिड़ै दळि पड़ै, तेथ आडा भुज धरिया ।—गु. रू. बं.

२ युद्ध करना ।

३ देखो 'संग्रहणौ, संग्रहबौ' (रू. भे.)

संघरणहार, हारौ (हारी), संघरणियौ—वि० ।

संघरिओड़ौ, संघरियोड़ौ, संघरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

संघरीजणौ, संघरीजबौ—कर्म वा० ।

संगरणवणौ, संगरणवबौ, संगरणौ, संगरबौ, सहरणौ, संहरबौ

—रू० भे० ।

संघरस, संघरसण-सं. पु. [सं. सघर्ष, संघर्षण] १ रगड़ने, घिसने या घोटने की क्रिया ।

२ किन्ही दो विरोधी दलों या पक्षों में एक दूसरे को दबाने के लिए चलने वाला झगड़ा ।

३ किसी अभाव या कष्ट से बचने के लिए किया जाने वाला प्रयत्न ।

४ प्रतियोगिता, स्पर्धा ।

५ द्वेष, वैर ।

६ टक्कर, भिड़ंत ।

७ डाट, ढक्कन ।

८ बाधा, रुकावट ।

संघरसी-वि. [स. संघर्षिन्] संघर्ष करने वाला, संघर्षरत ।

संघरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ. २ युद्ध किया हुआ ।

३ देखो 'संग्रहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संघरियोड़ी)

संघल, संघलदीप, संघलद्वीप, संघलि, संघलिदीप, संघलिद्वीप, संघली, संघलीदीप, संघलीद्वीप—देखो 'सिंहलद्वीप' (रू. भे.)

उ०—धरि मछर संघलि सांचरयउ, नेव जीत कन्या वरी । पद्मनी ज आंणि पयज करि, राय रत्नसेन अइसी करी ।—प. च. चौ.

संघवाहणी—देखो 'सिंहवाहणी' (रू. भे.)

उ०—मतीभ्रोध दावा दुग्दाहणी असंतमाडां, संत चाडां आवै सग्रचाहणी सादेस । बुडती जेहाजां सघ थाहणी अथाह बाहां, ऊग्राहणी साहां संघवाहणी आदेस ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

संघवी—देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

उ०—१ भरत तणइ पाटि आठमइ, दंडवीरज थयउ रायौ जी । भरत तणी परि संघ कियउ, सेत्रुंज संघवी कहायौ जी ।—स. कु.

उ०—२ पींपार मैं बखांण में घणा लोक सुणता ताराचंद संघवी बोल्यौ—थै वखांण सुणौ थांरै दाहौ लाग जावैला।—भि. द्र.

संघाड़—देखो 'संघाड' (रू. भे.)

संघाट—देखो 'संघात' (रू. भे.)

उ०—१ उरै पित आगळ बाज अपाळ, लड़ै तदि 'रैण' तणौ नंदलाल। जवज्जव कीध संघाट जवन्न, तिलत्तिल कीध सिलेह खळ तन्न।—सू. प्र.

उ०—२ तितरइ तउ बात कहतां वार लागइ। अस्त्री जन सहस चाळीस करउ संघाट आइ संप्राप्ती हुवउ।—अ. वचनिका

संघाड-सं. पु.—दो की जोड़ी, युग्म।

उ०—वळि तै मुनिवर इम कहैजी, बाई! नगरी में बहु दातार। तीन संघाडै आविया जी, अमे छां छउ अणगार। देवकी लोभ नहीं छै कोय।—जयवांणी

रू. भे.—संघाड़।

संघाडि, संघाडी-सं. स्त्री. [सं. संघाटिका] १ वस्त्र के टुकड़े-टुकड़े जोड़ कर बनाया हुआ पहनने का वस्त्र, कंथा।

२ ओढने का वस्त्र।

३ जैन साध्वियों के पहनने का वस्त्र विशेष, साड़ी।

वि.—वस्त्र के छोटे छोटे टुकड़े जोड़ कर बनाये हुए वस्त्र (संघाडी) को धारण करने वाला। (जैन)

संघात-सं. पु. [सं.] १ साथ।

उ०—१ लसकर मांहि जाइ नै, लै आवूं छूं बात रे भाई। इम कहि नै अस्वै चढ्या, साहस एक संघात रे भाई।—प. च. चौ.

उ०—२ साक न खाऊं तौ फूल फूल नवि भखुं, न जावुं जीमण काज। सखीय संघातै हौ हूं हिण नवि रमुं, राखूं माहरी लाज। —वि. कु.

२ एक्य, संयोग, मिलाप।

उ०—जिण बळी मेर बिना माथै चहुवांण रा केही सिपाहां रा प्रांण रौ संघात छुडायौ।—वं. भा.

३ समुदाय, समूह।

उ०—१ जिकण में छ हाथी, अनेक कनिस्क, विविध, जवाहर, नांना वस्त्र रौ संघात निवेदन किधौ।—वं. भा.

उ०—२ भवांनी नमौ धारनी सूलधारा, भवांनी नमौ तेज संघात तारा। भवांनी नमौ मोहनी मुंडमाळी, भवांनी नमौ काळ ऋव्यादि काळी।—मे. म.

४ हत्या, वध।

उ०—कीरतिधर नउ कियउ घात रै, सहदेवी पापिणी मात रै। सुकोसलइ जांणी बात रे, नइ मलउ तात संघात रे।—स. कु

५ संहार, ध्वंस।

६ कफ, श्लेष्मा।

७ इक्कीस नरकों में से एक नरक का नाम। (जैन)

८ शरीर।

वि.—साथ, सहित।

उ०—राज देईसि जौ मुझ भणी, तौ आगै कहिस्युं बात। कहि कहि देइस तुझ भणी, कन्या राज संघात।—वि. कु.

रू. भे.—संघाट, संघातइ।

संघातइ—देखो 'संघात' (रू. भे.)

उ०—१ कंठ ग्रहण करी रहिउ, हईडइ दीधउ हेलि। तै संघातइ स्या-थिकी, खेलतां नर खेलि?—मा. कां. प्र.

उ०—२ इम सुणि बात घणुं हरखित थयौ, कुमार विचारइ रे एम। सनेही सांयात्रिक संघातइं तै भणी, पूछि चढ़ुं तिहां खेम। —वि. कु.

संघातक-वि. [सं.] १ घात करने वाला, प्राण लेने वाला।

२ नष्ट या बरबाद करने वाला।

३ मारने वाला।

संघाति, संघाती—देखो 'संगाती' (रू. भे.)

उ०—१ मुनिवर आव्या विहरता जी, भरती दीठी आंखि। जीभ संघाति काढियउ जी, तरणुं ततखिण नांखि।—सं. कु.

उ०—२ पापियउ आव्यउ पोख, स्यउ जीविला नउ गोस। दिन घट्या बाधी राति, तै गमुं केण संघाति।—स. कु.

उ०—३ जंप जीव नही आवतौ जांणौं, जोवण जावणहार जग। बहु विलखी वीछड़ती बळा, बाळ संघाती बाळपण।—वेलि

संघार—देखो संहार' (रू. भे.)

उ०—१ दाखी अरज 'दुरग' यां, सब खळ करां संघार। साहब मन खुसियाळ सूं, जीवै साल हजार।—रा. रू.

उ०—२ भीम भार झल्लियौ, खडग झल्लै खुमांणौ। कियौ सेन सघार, जांणि रूठै जमरांणौ।—गु. रू. बं.

उ०—३ भूपति लखप्पती भुजाळ, आदि रीति जादवां उजाळ। सूरधीर सात्रवां संघार, खागि त्यागि दूसरौ खंगार।—ल. पिं.

संघारक—देखो 'संहारक' (रू. भे.)

उ०—श्रीमहाराज ईस्वरा अवतार, कळिजुग समुद्र जाकै आगै पगार। सूरिज सरूप ओपै जग में प्रताप, मेघ अंधकार को संघारक अमाप।—रा. रू.

संघारकर-सं. पु. [सं. संहारकर] सुदर्शनचक्र। (अ. मा; नां. मा.)

संघारगेड़-सं. पु.—शकुन शास्त्र के अनुसार चक्की के परिभ्रमण की गति का नाम।

संघारण-सं. पु. [सं. संहारण] १ सुदर्शनचक्र। (नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम, बलभद्र। (ह. नां. मा.)

वि.—संहार करने वाला, नाश करने वाला।

उ०—१ बड़ौ देव वाराह, इला दढ्ढां ऊबारण। बड़ौ देव वाराह सबळ देतां संघारण।—ज. खि.

उ०—२ समहर दुयण पतंग संघारण, 'दीपा' हरा दीप गुण

दारण। लिखमीचंद हरौ त्यां लेखौ, बांकिम वीज ससी सम वेखौ।
—रा. रू.

उ०—३ तिण सुत संचय रघुकुळ तारण, साक्य संजय सुत दुसह संघारण। संभ्रम साक्य स्वधोद सकाजा, राजै जै सुत लायक राजा।—सू. प्र.

संघारणौ, संघारबौ—देखो 'संहारणौ, संहारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साह 'फरक' संघारतां, नास गयौ 'जैसाह'। औ कांपै आंबेर में, साळै 'सैद' सगाह।—रा. रू.

उ०—२ अड़ताळीस सहंस असवारां, खांनजिहां जिण हणे संघारां। धर पूरब्ब धीर छत्र धारै, साठि हजारां हूंत संघारै।—सू. प्र.

उ०—३ सिंभ निसंभ संघारिया, महिसासुर मारै। चंडमुंड साचारिया, के असुर अपारै।—गज-उद्धार

उ०—४ ओरै स हरवळां, सेल खळ खगां संघारूं। गज असवारां गोळ, धड़छि घण लोह संघारूं।—सू. प्र.

उ०—५ नवकोट धणी 'गाजी' नरेस, दाहिणी भुजा दीपै 'महेस'। 'सूरिजमल' पित्ता सत्रु संघारि, जिण लियौ मांन चहुवांण मारि।
—गु. रू. बं.

संघारणहार, हारौ (हारी), संघारणियौ—वि०।

संघारिओड़ौ, संघारियोड़ौ, संघारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

संघारीजणौ, संघारीजबौ—कर्म वा०।

संघारभैरव—देखो 'संहारभैरव' (रू. भे.)

संघाळौ—देखो 'सिंघाळौ' (रू. भे.)

उ०—गळा गुद भकै मोस ऊडै के अंत्राळा ग्रहै, कराळा पंखाळा झाळा सेलाळा करद। संघाळा छोगाळा वाळा भड़ाळा ऊंधमै सार, दंताळा मदाळा खावै तमाळा दुरद।—पहाड़खां आढौ

संघासण—देखो 'सिंहासन' (रू. भे.)

उ०—चडे संघासण तांम, करह करि कमल उधारचउ। जीहां गोरउ वादल, पाउ पदमिणी तांहां धारचउ।—प. च. चौ.

संच—देखो 'संचय' (रू. भे.)

उ०—१ मुग्धलोक ठगवा भणी जी, करूं अनेक प्रपंच। कूड़ कपट बहु केलवीजी, पाप तणौ करूं संच रे जिनजी।—वृस्त.

उ०—२ किल कंचन कांमनि त्याग करै, धन संच प्रपंच न रंच धरै। तज स्वाद फिरै महि तारन कां, निरखै नहि नैंनन नारन कौं।—ऊ. का.

संचक, संचकर—स. पु.—वह जो संचय करे, कंजूस, कृपण।

रू. भे.—संचग, संचगर।

संचकार—सं. पु. [सं. सत्यंकार] १ सौदा तय होने पर कुछ पेशगी दी जाने वाली रकम, साई, मुद्दा।

उ०—कहदै घर आगम केसर रौ, संचकार उणौं दिन सूं सिर रौ। लख आंणिय केसर खेंग लखी, धांधळां खिचियां फिर वैर धुको।
—पा. प्र.

२ खुला स्थान।

उ०—'स्रीवयराट' सुणि कीचक चीनउ, माहरउं मन पराभवि भीनउं। काल नइ मुहि एणइ कर घालिउ, संचकार यम नइ घरि घालिउ।—सालिसूरि

रू. भे.—संचगार, सचकार।

संचग, संचगर—देखो 'संचकर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सुत रायपाल कहै दिसि संचगां, सिर साजै सौभाग सुणौ। गरथ बडै जस बोलै गुणियण, गरथ तणौ कांइ लोभ गिणौ।
—खंगार रायपालोत सिंधला

उ०—२ वीसळदै खाधी नह विलसी; संची घणा दिन देख संताप। माया गडी रही धर मांहै, संचगर हुआ ऊपरै साप।
—गोरधन खीची

संचगार—देखो 'संचकार' (रू. भे.)

संचणलूण—सं. पु. यौ.—एक प्रकार का लवण विशेष।

संचणौ, संचबौ—क्रि. स. [सं. सम्+चि] १ संचय करना, एकत्र करना।

उ०—१ रस संचै माखी जुंही, कीड़ी ज्यूं कणरास। धरै भेस जिम जीरवै, बैस दुकानां बास।—बां. दा.

उ०—२ हाथां सचियोड़ा धन सूं ई वौ कम प्रीत नीं करतौ हौ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ लुगाई नित मौसा देवती कै जद इण पौच रा धणी हातौ मुलकां रा डाळा गळा में क्यूं लिया। बाप रौ संच्योड़ौ धन उडावतां कांई जोर पड़चौ! हाथां कमाय अेक कौड़ी नगरौ ई सींचै तौ जांणै।—फुलवाड़ी

२ देख-भाल करना।

क्रि. अ. [सं. सम्+चर] ३ प्रविष्ट होना।

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर पंच। चितवणि हसणि लसणि गति संकुचणि, सुंदरी द्वारि देहुरा संच।—वेलि

४ तैयार होना, कटिबद्ध होना।

संचणहार, हारौ (हारी), संचणियौ—वि.।

संचिओड़ौ, संचियोड़ौ, संच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संचीजणौ, संचीजबौ—कर्म वा०. भाव वा०।

संचवणौ, संचवबौ सचणौ सचबौ,—रू. भे.।

संचत—देखो 'संचित' (रू. भे.)

संचत-करम—देखो 'संचित-करम' (रू. भे.)

उ०—धड़ड़ै लाग धियाग, आग फैली मध अंबर। राती झाळ कराळ, कहर विकराळ भयंकर। सतियां कियौ सिनांन, विखम दुरभख वैसुंधर। मांनव देह प्रजाळ, दिव्य देही धर सुंदर। कर होम जीत सचत-करम, निकसी जोत निरम्मळी। हिम में विमांण त्यारी हुई, इतै आंण मूंह आगळी।—साहिबौ सुरतांणियौ

संचय–सं. पु. [सं.] १ समूह, झुण्ड ।

उ०—१ अंत्रावळि अलगरद्ध रूप संचय संचारै । जळ नीली निभ सिचय जाळ इत तिरत अपारै ।—वं. भा.

उ०—२ जत्थ जलौका जूहकी सु धमनी छवि धारै । गंडक संचय अंगुलीन, बनि चपळ विहारै ।—वं. भा.

२ चीजें इकट्ठी करने की क्रिया या भाव ।

३ जमा करना, संकलन ।

४ इकट्ठी की हुई चीजों व रुपयों आदि का ढेर या राशि । (ह. नां. मा.)

उ०—१ वरस एक फौज घेरै रही भीतर नूं संचय खूटौ ।
—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—२ अर बूंदी रा ही अमल में जैतौ कहै जिण ठांम सामग्री रा संचय करि बरात बुलावण धारी ।—वं. भा.

उ०—३ आढौ रण गळियार उठायौ, लागि त्रजांन अप्प पुर लायौ । करि उपचार अगद वपु कीधौ, दुलभ वित्त संचय त्रप दीधौ ।—वं. भा.

५ अधिकता, बाहुल्य ।

रू. भे.—संच ।

[सं. संचयनं] ६ शव या मृत्य शरीर की भस्म बन जाने के पश्चात् अस्थि बीनने की क्रिया ।

रू. भे.—संच, संचै ।

संचर–सं. पु. [सं.] १ गमन, चलन ।

२ ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में गमन ।

३ मार्ग, पथ, रास्ता । (डि. को.)

४ शरीर, देह । (डि. को.)

५ संचित कर्म ।

उ०—जन हरिदास हरि सुमरतां, संचर रहै न सेख । कहा दिखावै और कूं, उलटि आप कूं देख ।—ह. पु. वां.

६ संचार, प्रवेश मार्ग ।

उ०—मैं न्यारी घरि आव जागि, देखै नहिं लोई । अरस परस रस एक, और संचर नहिं कोई ।—ह. पु. वां.

७ देखो 'संचळ' (रू. भे.)

संचरण–सं. पु. [सं.] १ संचार करने की क्रिया या भाव, चलन, गमन ।

२ पसरने, फैलने की क्रिया ।

३ कांपने की क्रिया या भाव ।

४ मार्ग, रास्ता, पथ । (ह. नां. मा.)

५ पैर, चरण, पग । (ह. नां. मा.)

संचरणौ, संचरबौ–क्रि अ. [सं. सम्+चर] १ गमन करना, जाना ।

उ०—१ के सूरा बर कज्ज है, के सूरा पर कज्ज । सुरपुर दोहूं संचरै, रूकां व्है रज-रज्ज ।—बां. दा.

उ०—२ धन देणौ जिण अंगड़ै हेकौ पुरस न होय । सुपनै ही नहिं संचरै, लोभी मंगण लोय ।—बां. दा.

उ०—३ गिरिजा पूजणजी सियाजी संचरी, कोई सुभग सहेल्यां संग ।—गी. रां.

उ०—४ पय पणमीय निय ताय, कुंभी मद्री पय नमीय । सच्च वयण निरवाहु, करिवा कांणणि संचरइं ।—सालिभद्र सूरि

२ घूमना, विचरण करना, परिभ्रमण करना ।

उ०—हाथळ बळ निरभै हियौ, सरभर न कौ समत्थ । सीह अकेला संचरै, सीहां केहा सत्थ ।—बां. दा.

३ आना, आगमन करना ।

उ०—१ परखण पांण 'प्रतापसी' बहसंतां बांहाळ । सम्मुख थारै संचरै, कवण जुहारै काळ ।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ काका बाबा भ्रात कवि, हुवै दूर रुख हेर । संत महंत न संचरै, पातर रै पग फेर ।—बां. दा.

उ०—३ राय तणी तै सेवा करइ, राति दिवस तीरइं संचरइ । राय तणइ मनि वसिउ अपार, निरलोभी नइ निर हंकार ।
-- हीराणंद सूरि

उ०—४ सही तिहां तै आवी कहिउं, मुहता नुं मन अति गहग-हिउं । गढ बाहिरि देवी देहरइ, राजा लोक तिहां संचरइ ।
—हीराणंद सूरि

४ अनुसरण करना ।

उ०—कइं तप तपुं हुं बांणारसी, कइ जाय भैरव पडण पड़ास । कइं पंडव पंथ संचरूं, कइ जाय सेवसूं गंग दवार ।—बी. दे.

५ प्रविष्ट होना, पहुँचना ।

उ०—१ मारू महलां संचरी, कनक वरण्णै तास । पुंगळ मांहे ऊपनी, नरवर हुऔ उजास ।—ढो. मा.

उ०—२ पंडु नरेस रौ सइंवरि जाइ, हथिणाउरपुर संचरए । राइं दलै सरिसा कूयर लेउ, तारै मुं भिम चांदुलउ ए ।
—सालिभद्र सूरि

६ अंकुरित होना, उभरना ।

उ०—सींगां पुळी न संचरी, पगां न ठेठर बंध । दूध पियंतै बाछड़ै, दियौ महाभड़ कंध ।—महाराजा मांनसिंह

७ उत्पन्न होना, पैदा होना ।

उ०—१ माग मुरद्धर देस रौ, लियौ उरद्धर ज्यास । घाट अनेकन संचरै, एक प्रभू री आस ।—रा. रू.

उ०—जा मति पीछै संचरै, सौ जै पहली होय । काज न विणसै आपणौ, दुरजण हंसै न कोय ।—पंचदंडी री वारता

८ भाग जाना, पलायन कर जाना ।

उ०—१ पुळिया पुंडरीक सुपह संचरिया, वागी हाक न कोय वळै । बाळा चंद ऊठ अतुळी बळ, भोजराज गढ तूझ भळै ।
—भोजराज रूपावत रौ गीत

उ०—२ आयौ असमांनां ऊतरियौ, घुरै दमांम क घणहर घुरियौ। धारण धूम्र धड़ै मन धरियौ, सहजादौ विमूंह न संचरियौ।
—गु. रू. बं.

९ फैलना, प्रसारित होना।

१० चल निकलना, व्यवहृत होना।

११ प्रस्थान करना, रवाना होना।

उ०—बेग करी नइं विलंब न कीज्यौ, रांमइं रथ जोतरियां। हरि जोसी हाकेवा बइट्ठा सीबेगइं संचरिया।—रुकमणी मंगळ

१२ आक्रमण करना।

१३ होना।

उ०—रवि मकर रासि निवास राजत, उतर मगहर अनुसरै। दिन वधत अनुक्रम किरण दीपति, रैण लघुपण आदरै। मिळि अंब साख प्रसाख रसमय, अमिति मंजुर अंजुरै। रसहीन अनितर मरब रैणा, सीत छळ क्रति संचरै।—रा. रू.

१४ उच्चरित होना, निकलना।

उ०—हरीया पछमि देस की, वाट विखम घर दूरि। सुरित सबद जांह संचरै, ताप त्रिगढ कुं चूरि।—अनुभववांणी

१५ प्राप्त होना, मिलना।

संचरणहार, हारौ (हारी), **संचरणियौ**—वि०।

संचरिओड़ौ, **संचरियोड़ौ**, **संचरयोड़ौ**—भू० का० कृ०।

संचरीजणौ, **संचरीजबौ**—भाव वा०।

सांचरणौ, **सांचरबौ**—रू० भे०।

संचरलूण—सं. पु.—एक प्रकार का नमक विशेष। (अमरत)

संचरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ गमन किया हुआ, गया हुआ। २ घूमा हुआ, विचरण किया हुआ, परिभ्रमण किया हुआ। ३ आया हुआ, आगमन किया हुआ। ४ अनुसरण किया हुआ। ५ प्रविष्ट हुवा हुआ, पहूंचा हुआ। ६ अंकुरित हुवा हुआ, उभरा हुआ। ७ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ। ८ भागा हुआ, पलायित हुवा हुआ। ९ फैला हुआ, प्रसारित हुवा हुआ। १० प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुवा हुआ। ११ आक्रमण किया हुआ। १२ चला हुआ, व्यवहृत हुवा हुआ। १३ हुवा हुआ। १४ उच्चरित हुवा हुआ, निकला हुआ। १५ प्राप्त हुवा हुआ।
(स्त्री. संचरियोड़ी)

संचळ, संचल—सं. पु.—१ एक प्रकार का लवण। (डिं. को.)

२ कंपन, आहट।

उ०—बाघ आय निसरियौ, मिनख रौ संचळ देखनै गाजियौ।
—पंचदंडी री वारता

३ छूने की क्रिया, स्पर्श करने की क्रिया।

४ टटोलने की क्रिया।

उ०—अंगुलि नौ संचल कीध, टपोरै कपाट दीध।—धर्म प.

संचवणौ, संचवबौ—क्रि. स.—१ जड़ना, बन्द करना।

उ०—सरै न ताळौ संचव्यां, मति नूं केम सताय। खळ जद लग ताळा खुळै, तौ ताळौ की ताय।—रैवतसिंह भाटी

२ देखो 'संचणौ, संचबौ' (रू. भे.)

संचवणहार, हारौ (हारी), **संचवणियौ**—वि०।

संचविओड़ौ, **संचवियोड़ौ**, **संचव्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

संचवीजणौ, **संचवीजबौ**—कर्म वा०।

संचवियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ जड़ा हुआ, बन्द किया हुआ।
२ देखो 'संचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संचवियोड़ी)

संचांण, संचांणौ—देखो 'सिचांण' (रू. भे.)

उ०—जस वांण संचांण संचांण सहवाचै, परदेस प्रवेस कीरत केतौ। नर नार उच्छाव करै व्हौ वारद ज्यू इधकार भत्तौ।
—ऐ. जै. का. सं.

संचांन—देखो 'सिचांन' (रू. भे.)

संचाड़णौ, संचाड़बौ—देखो 'संचाणौ, संचावौ' (रू. भे.)

संचाड़णहार, हारौ (हारी), **संचाड़णियौ**—वि०।

संचाड़िओड़ौ, **संचाड़ियोड़ौ**, **संचाड़्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

संचाड़ीजणौ, **संचाड़ीजबौ**—कर्म वा०।

संचाड़ियोड़ौ—देखो 'संचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संचाड़ियोड़ी)

संचाणौ, संचाबौ—क्रि. स.—१ संचय कराना, एकत्र कराना।

२ देखभाल कराना।

३ प्रवेश कराना।

४ तैयार करना/कराना।

५ कटिबद्ध करना/कराना।

६ चूर्णादि को हाथों से दबा कर पिंड रूप में करना/कराना।

संचाणहार, हारौ (हारी), **संचाणियौ**—वि०।

संचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संचाईजणौ, **संचाईजबौ**—कर्म वा०।

संचाड़णौ, **संचाड़बौ**, **संचावणौ**, **संचावबौ**—रू० भे०।

संचायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संचय कराया हुआ, एकत्र कराया हुआ। २ देखभाल कराया हुआ। ३ प्रवेश कराया हुआ। ४ तैयार किया/कराया हुआ, कटिबद्ध किया/कराया हुआ। ५ पिंडरूप में बांधा हुआ। (लड्डु)
(स्त्री. संचायोड़ी)

संचार—सं. पु [सं. संचार:] १ गमन, चलन।

उ०—कुळवंती सूं क्रीत रौ, उळटौ है आचार। वा न तजै घर आपरौ, जग इण रौ संचार।—बां. दा.

उ०—२ अर वौ बाळ कन्हैयौ भटियांणी नै मां अर काली मासी नै नांनी-मां कैय बतळातौ जणा तीनूं लोकां रौ हरख अर उछाव

वांरै कांनां में गूंजती, रू-रू में इमरत रो संचार व्हे तो।

—फुलवाड़ी

२ ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि में गमन करने की क्रिया या भाव।

३ आवागमन।

४ मार्ग, पथ, रास्ता।

५ दुरूह मार्ग, कठिन मार्ग।

६ रास्ता दिखाने की क्रिया, मार्ग प्रदर्शन।

७ सांप के फन में मिली हुई मणि।

रू. भे.—संचारि।

संचारक-वि. [स्त्री. संचारिका] १ वह जो संचार करे।

२ नेता।

३ मुखिया, प्रधान।

४ चलाने वाला।

५ अन्वेषक।

सं. पु.—स्वामी कार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

संचारणौ, संचारबौ-क्रि. स.—१ संचार करना।

२ फैलाना।

३ चलना।

उ०—मंत्रावळि अलगरद्ध रूप संचय संचारै। जळ नीली निभ सिचय जाळ इत तिरत अपारै।—वं. भा.

संचारणहार, हारौ (हारी), संचारणियौ—वि०।

संचारिग्रोड़ौ, संचारियोड़ौ, संचारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संचारीजणौ, संचारीजबौ—कर्म वा०।

संचारि—१ देखो 'संचार' (रू. भे.)

उ०—पाडल परिमल पूजती, धूजती पवन संचारि। नव रंगिइं वनि विकसती, असती जिम न विचारि।—जयसेखर सूरि

२ देखो 'संचारी' (रू. भे.)

संचारिक—देखो 'संचारी' (रू. भे.)

उ०—बांह चंदन सुगम सेव्यइ, भाव संचारिक वधइ। तेत्रीस ग्रति मति स्मरण लज्जा, सोक निद्रादिक सधइ।—वि. कु.

संचारिका-सं. स्त्री.—१ दूती, कुटनी।

२ नाक।

३ बू, गंध।

संचारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ संचार किया हुआ। २ फैलाया हुआ।

३ चला हुआ।

(स्त्री. संचारियोड़ी)

संचारी-सं. पु. [सं. संचारिन्] १ साहित्य के अन्तर्गत वह भाव जो रस का उपयोगी होकर उसमें संचार करता है।

वि. वि.—भरत नें संचारी भावों की संख्या ३३ मानी है उनके नाम निम्नलिखित हैं:

(१) निर्वेद, (२) ग्रावेग, (३) दैन्य, (४) श्रम, (५) मद, (५) जडता, (७) ग्रौग्रय् (८) मोह, (९) विबोध, (१०) स्वप्न, (११) अपस्मार, (१२) गर्व, (१३) मरण, (१४) अलसता, (१५) ग्रमर्ष, (१६) निद्रा, (१७) ग्रवहित्था, (१८) ग्रौत्सुक्य, (१९) उन्माद, (२०) शंका, (२१) स्मृति, (२२) मति, (२३) व्याधि, (२४) सन्त्रास, (२५) लज्जा, (२६) हर्ष, (२७) ग्रसूया, (२८) विषाद, (२९) धृति, (३०) चपलता, (३१) ग्लानि, (३२) चिन्ता ग्रौर (३३) वितर्क।

उपर्युक्त संख्या शास्त्र-चर्चा सुविधा के कारण ही परिमित की गयी है। यदि ग्राठ स्थायी भावों को, जो संचारी भी होते हैं उनमें जोड़ दिया जाय तो इनकी परिमित संख्या को बढ़ाना पड़ेगा। पर ग्राठ स्थायी भावों के उनमें जोड़ दिये जाने पर कुछ संचारी ग्रपने-ग्राप व्यर्थ हो जायेंगे। शोक के संचारी होने पर विषाद भय के संचारी होने पर त्रास, क्रोध के संचारी होने पर ग्रमर्ष को ३३ संचारियों में से पृथक करना पड़ेगा। कभी २ तो ग्रनुभाव, नायिकाग्रों के २० ग्रलंकार, भाव, हाव ग्रादि सात्विक भाव, ग्रलाद, ग्रादि, दस कामावस्थाएं, सभी को संचारी के ग्रन्तर्गत गिना जाता हैं।

२ पद या गीत का तीसरा भाग। प्रायः यह मुख्य रूप में ध्रुपद में होता है। इसमें ग्रस्थायी ग्रौर ग्रंतरा के दोनों ही स्वरों का प्रयोग होता है।

३ हवा, वायु।

वि.—१ संचरण या संचार करने वाला।

२ ग्राया हुग्रा, ग्रागन्तुक।

उ०—तुलसी बन कुंजन संचारी! गिरधरलाल नवल नटनागर, मीरां बळिहारी।—मीरां

रू. भे.—संचारि, संचारिक।

संचाळ, संचाल-सं. पु. [सं. संचलन्] १ कंपन, कम्पकम्पाहट।

२ चलन, गमन।

संचालक-वि. [सं.] संचालन करने वाला, परिचालक।

संचालण-सं. पु. [सं. संचालनं] १ चलाने की क्रिया या भाव, परिचालन।

२ व्यवस्था करने या नियंत्रण रखने की क्रिया या भाव।

३ कार्य जारी रखने की क्रिया या भाव।

संचावणौ, संचावबौ—देखो 'संचाणौ, संचाबौ' (रू. भे.)

उ०—मीठै कौ मंडकौ, मळसी कौ तेल, बौ यारी जच्चा रांणी पथ लियो, राज। राय कंदोई के ने वेग बुलाय, जच्चा रांणी नें लाड्डा संचावो, जी राज।—लो. गी.

संचावणहार, हारौ (हारी), संचावणियौ—वि०।

संचाविग्रोड़ौ, संचावियोड़ौ, संचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संचावीजणौ, संचावीजबौ—कर्म वा० ।

संचावियोड़ौ—देखो 'संचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संचावियोड़ी)

संचित–वि. [सं. संचित] १ संचय या एकत्रित किया हुआ ।
२ देखो 'संचितकरम'
उ०—कूड़ो किण नें रे ! आपूं अब ओळभौ, कोई उघड़्या संचित पाप ।—गी. रां.
रू. भे.—संचत, संचिद ।

संचितकरम–सं. पु. यौ. [सं. संचितकर्म] १ वैदिक युग में यज्ञ की अग्नि संचित कर लेने पर किया जाने वाला एक विशिष्ट कर्म ।
२ आधुनिक मान्यतानुसार वे समस्त कर्म जो पूर्व जन्म में किये गये थे, जिनका फल इस जन्म में अथवा आने वाले जन्मों में भोगना पड़ता है ।
रू. भे.—संचतकरम ।

संचिद—देखो 'संचित' (रू. भे.)
उ०—आस्चरच रघुनाथ भूप महदं, त्वनांममुच्चारणम् । जन्म संचिद घोर घोर कळुसं, नासं तमेकं-छिनम् ।—र. ज. प्र.

संचियार—देखो 'सचियार' (रू. भे.)
उ०—केसवदास आदमी बड़ौ संचियार थौ, जलाल थौ, मरद मोटियार थौ ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

संचियोड़ौ–भू. का. कृ.—एकत्र किया हुआ, संचय किया हुआ ।
२ देख-भाल किया हुआ ।
(स्त्री. सचियोड़ी)

संची—देखो 'साची' (रू. भे.)
उ०—सारां मार परक्खै संची, खांन तहव्वर वागां खंची । हेकण दिस था सार हिलोळौ, आहाडां कीधौ दळ ओळौ ।—रा. रू.

संचीत–वि.—चिंतित, दुःखी ।
उ०—आगै आंबां रो दुख हुतौ हीज, ऊपरा भाई ए संचीत कियौ ।
—द. वि.

संचीताई–सं. पु. [सं. स+चिन्ता] चिन्ता, दुख ।
उ०—ताहरां कुंवरी बोली—मुंहता रा बेटा राति च्यार पहर मारिग चालीया पिण बोलिया काहेर नहीं सु किसी संचीताई ।
—चौबोली

संचै - देखो 'संचय' (रू. भे.)

संचौ–स. पु.—१ वह उपकरण जिसमें कोई तरल पदार्थ डाल कर अथवा गीली चीज रख कर किसी विशिष्ट आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती हो, फरमा ।
ज्यूं—ईंटां रौ सचौ, टाइप रौ संचौ ।
उ०—जिण संचै सोरठ घड़ी, घड़ियौ राव खेंगार । कै तौ संचौ गळ गयौ, कै लाद वुहा लव्हार ।—अज्ञात
२ संग्रह, संचय, जमा ।
उ०—१ तिण गढ मांहै बावड़ी, कुआ, तालाब, जळ, बहळ, धांन, घ्रित, तेल, लूण, खड़, ईंधण, अमल, कपड़ौ घणौ अपार संचौ कियौ छै ।—रा. सा. सं.
उ०—२ केई कहै छै, भीम दै, आदमी मेल कहाड़ियौ—'गढ रौ संचौ तूटौ छै, औ दूध दीठौ जिको भंडसूरियां रौ छै, थें पाछा आय उतरौ। दिन २ तथा ३ नै रावळ गढ रा किंवाड़ नांखसी ।
—नैणसी
३ तरह, प्रकार ।
उ०—राजा रांणी रै हरख रौ पार नीं । हिवड़ा रै हरख हरख रौ संचौ न्यारौ व्हिया करै । कोई हार देय राजी व्है तौ कोई हार पाय राजी व्है । जित्ता हिवड़ा उत्ताई हरख ।—फुलवाड़ी
रू. भे.—सांचौ ।

संछरदण–सं. पु. [सं. संछर्दन] ग्रहण में एक प्रकार का मोक्ष जो शुभ माना जाता है । (फलित ज्योतिष)

संछेप—देखो संक्षेप' (रू. भे.)

सज, संज–सं. पु.—१ एक देश का नाम ।
[फा.] २ कांसे की दो कटोरियां जो बजायी जाती है, झांझ, मजीरा ।
३ शिव, महादेव ।
४ ब्रह्मा ।
५ वह मुख्य वस्तु, उपकरण या वाहन जिसपर उससे सम्बन्धित अन्य उपकरण, सामान या साधन संलग्न किये जाय ।
उ०—हरी संज साजतां दला रै सहायक, बराबर खवां पर अगर बोली ।—कुंभकरण सांदू
यौ.—संज-साज ।
६ देखो 'साज' (रू. भे.)
उ०—१ पकड़ौ पकड़ौ री हाक मचावता च्यारूं भाई बिना संज ई घोड़ां माथै बैठा अर लारै रा लारै घोड़ा दाविया—बड़गड़ां, बड़गड़ां ।—फुलवाड़ी
उ०—२ हाळी भला भला संज सगळा, एक मतै व्है लागा । ब्रह्म साखि यूं निपजी आई, घर का टोटा भागा ।—ह. पु. वां.
उ०—३ अठ दीह करार करै भड़ आया, मांहमां संज मंत्रियां फुरमाया । सू. प्र.
उ०—४ दीवांण तौ खुद ग्रैड़ाई आदेस री बाट न्हाळतौ हौ । उण री तौ मन जांणी व्ही । काळा घोडा, काळौ ई संज अर काळा गाभा देय चरवादार नै सांम्ही भेज्यौ । सगळी बातां समझाय दी ।
—फुलवाड़ी
उ०—५ रूपाळी लुगाई रौ झालौ बिरथा गियौ तौ वा अेक नवौ चाळौ करचौ । सांयड बणनै मारग में चरण लागी । संज सजियोड़ी । पण माथै असवार नीं । सातूं बेली अठी-उठी भाळियौ । कठैई ओठी निगै नीं आयौ ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—संझ।

७ देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—हलकारां सारां मिळै, दाखी **संज** सलाह। रही कमंधां फौज घर, नहीं अकब्बर साह।—रा. रू.

संजड़ी—देखो 'सुजड़ी' (रू. भे.)

उ०—आगै सूर न काढिया, तुंगम काढी आय। जै मिस रांणै **संजड़ी**, लेई रिणमल राय।—नैणसी

संजण—देखो 'सज्जण' (रू. भे.)

उ०—जळद नीळ देह जेह तड़िया पट पीत तेह, गोव्यंद सत क्रत गेह सीत नेह **संजणं**। राखण मिथळेसराज लाखांवात अघट लाज, करि अमाप सबळ करग भरग चाप भजणं।—र. ज. प्र.

संजणौ, संजबौ—क्रि. अ.—१ सकुचाना, शर्माना।

२ ईर्ष्यायुक्त होना।

उ०—मोटा री ध्रम कांम मैं, अधिकौ करै अदेख। दसारण री रिधि देखनै, सक्र **सज्यौ** सुविसेख।—ध. व. ग्रं.

३ प्रभावित होना।

४ देखो 'सजणौ, सजबौ' (रू. भे.)

उ०—तोपां रा अग्राजां माहै **संजिया** न कोट कितां, महावीर साजां मांहै भंजिया अमाव। मारहठौ कहै मैं गांजिया लोक पाजां मांहै, राजां मांहै अगंजी रंजियौ मारुराव।

—महाराजा बहादरसिंघ किसनगढ रौ गीत

संजणहार, हारौ (हारी), संजणियौ—वि०।

संजिओड़ौ, संजियोड़ौ, संज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संजीजणौ, संजीजबौ—भाव वा०।

संजत—सं. पु.—१ सामान, सामग्री।

२ सजावट।

३ प्रबन्ध, व्यवस्था।

उ०—ती नूं देखतां ही लुगाई ऊठी, गरम जळ सूं हाथ पग धुवाया, आगत स्वागत करण लागी। सोमेसर अपणै घर री **सजत** देखनै राजी हुवौ।—जैसौ खाय तैसी बुद्धि री वात

४ देखो 'संजुत' (रू. भे.)

उ०—दुत केसर आड भभून दीध, कंथा नवरंगी सिलह कीध। जट आडबंध सेली जड़ाव, आवधां वीर **संजत** अड़ाव।—वि. सं.

५ देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

संजनि—सं. स्त्री. [सं. शिञ्जनी] प्रत्यंचा। (डिं. को.)

संजब—देखो 'संजाफी' (रू. भे.)

उ०—घोड़ा सातसौ अबलख, समदा भंवर, गंगाजळ, **संजब**, कुम्मेद और गुलदारी फुलवारी तयार कराया त्यांरै सुनहरी, रूपहरी सागै सखत साज सजाया।—जलाल बूबना री बात

संजम—वि.—१ अंधा।

उ०—१ टूंक चावड़ौ रावराज नै कंवर वीज नांमै राज करै छै। तिकौ राव राज तौ आंख्यां **संजम** छै, पिण हीया रा नेत्र खुल्या छै। आख्यां देखतां सूं घणौ सूझै।—जगदेव पंवार री वात

उ०—२ तद रांणौ वैणीदास रै एक बेटी, वरस पनरै मांहै। सौ रूप री ऐसी, जैसी प्रथी में नहीं। सरग री परी, आभै री वीज, मांन-सरोवर रौ हंस, केळ रौ गरभ। सो रूपगुणाकर निपट अवल पण आंख्यां **संजम** मोतीयाबंध।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—संजमि, संजिमि।

२ देखो 'संयम' (रू. भे.)

उ०—१ सौ पति मरत सद्धि दुख **संजम**। रहि सु पुस्कर गहन मनोहरम।—वं. भा.

उ०—२ **संजम** जप तप सांतरत, व्रत जुत जोग विनांण। आंख तरच्छी ईखतां, जीता संमधा जांण।—बां. दा.

उ०—३ भोग तणउं अंतराइ इण परि बांधी **संजम** लेवि। निम्मल विपुल कीया तप गाढा, हिअरूइ भाव धरेवि।—हीरांणद सूरि

उ०—४ द्वंद वाद किन हूं नहीं करीयै, आपा सेती अजराजरीयै। राग न धेख हरख नहीं धोखा, सीलादिक **संजम** संतोखा।

—अनुभववांणी

संजमणौ—वि.—संयम धारण करने वाला।

संजमणौ, संजमबौ—क्रि. स.—संयम ग्रहण करना, संयम धारण करना।

उ०—असत्री पीहर नर सासरै, **सजमीयां** सहवास। अेना हामै अळखांमणा, जौ मांडै घर वास।—ढो. मा.

संजमणहार, हारौ (हारी), संजमणियौ—वि०।

संजमिओड़ौ, सजमियोड़ौ, संजम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संजमीजणौ, संजमीजबौ—कर्म वा०।

संजमनी—सं. स्त्री. [सं. संयमनी] यमराज की नगरी का नाम।

(नां. मा.)

संजमनीपत, संजमनीपति, संजमनीपती—सं. पु. [सं. संयमनीपति] यम-राज, काल। (डिं. को; नां. मा.)

संजमभार—सं. स्त्री. यौ. [सं. संयम+राज. भार] दीक्षा।

उ०—१ जोवन ऊलट्यउ जाइ प्रियु बिण क्यूं रहाइ, जादव गयउ रिमाइ, अब कैसी आस रे। जगति राजुल नारि जाऊंगी हूं गिर-नारि, लेउंगी **संजमभार** सुंदर कहकै पास रे।—स. कु.

उ०—२ मात पिता नै, पूछनै, लेसूं **संजमभार**। वलि तै मुनिवर इम कहै, म करौ ढील लिगार।—जयवांणी

उ०—३ निस्चइं तरिसिइं तै संसार जै पुण लेसइं **संजमभार**। पंच महाव्रत सूधां धरइं मुगति सिरी तै जाई नय वरइं।—वस्तिग

संजमि—१ देखो 'संजम' (रू. भे.)

२ देखो 'संयमी' (रू. भे.)

३ देखो 'संयम' (रू. भे.)

उ०—गयणंगणि वांणीपडीय, खमि दमि **संजमि** एकु। धरमपूतु

जगि ऊपनउ, सत्यसोलि सुविवेक ।—सालिभद्र सूरि

संजमियोड़ौ–भू. का. कृ.—संयम ग्रहण किया हुआ, संयम धारण किया हुआ ।

(स्त्री. सजमियोड़ी)

संजमी—देखो 'संयमी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—अण मिळ तैं सै संजमी, तैं संसार अनेक । नारी मिळै जौ संजमी, जांणहु कोइ एक ।—पंचदंडी री वारता

संजय–सं. पु. [सं.] १ महाभारत के समय धृतराष्ट्र को युद्ध का वर्णन सुनाने वाला एक मंत्री ।

२ सौवीर देशीय राजकुमार जिसने युद्ध से पलायन किया था किन्तु माता विदुला के भर्त्सना एवं उत्तेजनायुक्त शब्दों से प्रभावित होकर वापिस युद्ध क्षेत्र में युद्धार्थ गया ।

३ पुरुरवा के वंशज प्रति के पुत्र का नाम ।

४ पुरुवंशीय भर्म्यश्वि के पांचाल कहलाने वाले पुत्र ।

५ एक सूर्यवंशी राजा ।

उ०—तिण सुत संजय रघुकुळ तारण, साक्य संजय सुत दुसह संघारण । संभ्रम साक्य स्वधोद सकाजा, राजै जै सुत सायक राजा ।—सू. प्र.

६ ब्रह्मा का नाम ।

७ शिव, महादेव ।

८ विदेह देशाधिपति सुपार्श्व का पुत्र, एक राजा ।

९ सिंधुनरेश वृद्धक्षत्र का पुत्र, जो अपने भाई जयद्रथ के द्वारा किये द्रौपदी हरण के समय अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

१० धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।

११ एक व्यास का नाम ।

वि.—सुसज्जित, तैयार ।

संजरामौ–सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—नागवटां सारनाला खासटां अगिहिल कबीच संजरामां मदवी फूलपगरीयां सारीपी तिलवास गरब्भसूत्र राजिउ वयराजीउं महि-दव्ररउं तीतत्रागिउ कचीयउं पीठ समुसी पीठ देवगिरू मंदील होलीउं तलपकाउ नरम्म हरीफ प्रभ्रति वस्त्रजाति ।—व. स.

संजरी–सं. पु.—संज देश का व्यक्ति ।

उ०—सांमी रूपी संजरी, गोरी कासगरीह । ईरांनी यमनी अडर, सीराजी रण सीह ।—बां. दा.

संजवारी–सं. स्त्री.—झाड़ू । (डि. को.)

संजाफ–स. स्त्री. [फा संजाफ़] १ गोट, झालर, किनारा, हाशिया । (मा. म.)

२ देखौ 'संजाफी' (रू. भे.)

रू. भे.—संजाब ।

संजाफी–सं. पु. [सं. संजाफ+रा. ई] वह घोड़ा जिसका रंग संजाफी (आधा लाल व आधा हरा) हो । (शा. हो.)

रू. भे.—संजब, संजाफ, संजाब ।

संजाब–सं. पु. [फा.] १ चूहे के आकार का एक जन्तु जो प्राय: तुर्किस्तान में होता है ।

२ देखो 'सजाफ' (रू. भे.)

३ देखो 'संजाफी' (रू. भे.)

उ०—१ कुमेत नीला समंदा मकड़ा सेली समंद, भूवर बोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केळा महुवा धूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्यांण पवण गुरड़ संजाब संदली सीहा चकवा अबलख सिराजी ।—रा. सा. सं.

उ०—२ बह अब्बरस मुसकी अर संजाब, बौरता केहरी पेसब ब । कासनी ताफता पंच-कल्यांण, सूलहरी चंपा पट सिचांण ।

—सू. प्र.

संजावणौ, **संजवबौ**—देखो 'संजोणौ, संजोबौ' (रू. भे.)

उ०—आंमा जी सांमा दीवला संजावौ साहिब जी रे, विच ऊभी रंभा रांणी रे, हांजी रे रंभा रांणी रा ढोला वेगा रे पधारौ रे ।

—लो. गी.

संजावणहार, हारौ (हारी), **संजावणियौ**—वि० ।

संजाविओड़ौ, संजावियोड़ौ, संजाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संजावीजणौ, संजावीजबौ—कर्म वा० ।

संजावियोड़ौ—देखो 'संजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संजावियोड़ी)

संजिगत–वि. [स. संयुक्त] सहित, संयुक्त ।

उ०—·········नवकोटी मारू आडि, संधु सवालक्ष. ऊच मलतांन हींदूस्थांन, देव कूं पाटण, चीण महाचीण भोट महाभोट संखोद्वार, एतला संजिगत अम्हारा देसदेसाउर वरणवीता सोभइ, अहो सीआ-लक बोलि ।—व. स.

संजिम–सं. पु.—१ दीक्षा ।

उ०—धिन धिन स्रीवासपूज्य, फाग रमतइ थी बूझ्य, संजिम आदरइ ए, सिवरमणी वरइ ए ।—कल्यांण

२ देखो 'संजम' (रू. भे.)

३ देखो 'संयम' (रू. भे.)

संजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ सकुचाया हुआ, शर्माया हुआ । २ ईर्ष्या-युक्त हुवा हुआ । ३ प्रभावित हुवा हुआ ।

४ देखो 'सजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संजियोड़ी)

संजीदगी–सं. स्त्री. [फा.] १ आचरण, विचार व्यवहार आदि की दृष्टि से गंभीर होने की अवस्था या भाव ।

२ संजीदा होने की अवस्था या भाव ।

३ स्वाभाविक शिष्टता तथा सौम्यता ।

संजीदौ–वि. [फा. संजीदः] जिसके विचार व व्यवहार में गम्भीरता हो ।

उ०—गोपाळदास बडौ सरदार कांम रौ मांणस संजीदौ छै सो इहां नूं हर भांत कर राखणा।—गौपाळदास गौड़ री वारता

संजीरौ—सं. पु.—१ रसोई की सामग्री।

२ भोजन सामग्री।

३ रसोई की सामग्री को समेटने की क्रिया।

४ रसोई का कार्य।

संजीव—सं. पु. [सं.] १ मृतक को पुनः जीवन दान देने की क्रिया।

२ वह जो पुनः जीवनदान दे।

३ एक नरक का नाम। (बोद्धमत)

रू. भे.—सजीव।

संजीवण—देखो 'संजीवन' (रू. भे.)

उ०—तेथी बीजौ कुटी निवासी मिळियौ। इयै अपणी संजीवणी-बिद्या कर मंदारवती नूं जिवाड़ी। मंदारवती संजीवण होय जी ऊठी छै।—बैताळ पच्चीसी

संजीवणविद्या—देखो 'संजीवनविद्या' (रू. भे.)

संजीवणी—देखो 'संजीवनी' (रू. भे.)

संजीवणीविद्या—देखो 'संजीवनविद्या' (रू. भे.)

उ०—तेथी बीजौ कुटी निवासी मिळियो। इयै अपणी संजवणी-बिद्या कर मंदारवती नूं जिवाड़ी। मंदारवती संजीवण होय जी ऊठी छै।—बैताळ पच्चीसी

संजीवणी बूंटी—देखो 'संजीवनी'।

संजीवणीविद्या—देखो 'संजीवनविद्या' (रू. भे.)

उ०—डाकण सूं बदळौ नीं लेय बेलियां नै पाछा जीवता नीं करूं जित्तै गांव सांम्ही मूंडौ ई नीं करूंला। इत्ता बरसां मैं वौ केई केई संजीवणीविद्यावां सीखी। केई मंतर-जंतर सीख्या। भूत-प्रेतां री लीला सीखी। डाकणिरां री भासा सीखी।—फुलवाड़ी

संजीवन—सं. पु. [सं.] १ पुनर्जीवित करने की क्रिया, नया जीवन देने की क्रिया।

उ०—बेरा बेरागर सागर सम सोभा, रीती गागर लै नागर तिय रोभा। धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै, जीवन संजीवन जीवन धन जोवै।—ऊ. का.

२ एक प्रकार की जड़ी विशेष जिससे मृत व्यक्ति के जीवित हो जाने की मान्यता है।

उ०—वेद पतूसतूसू लंका वस, सो आवै धारक सुरत। जिकौ बतावै जड़ी संजीवन, तौ लिखमण उठै तुरत।—र. रू.

वि.—जीवित, जिन्दा।

रू. भे.—संजीवण, सजीवण, सजीवन, सजीवन, सरजीवन।

संजीवनबूंटी—देखो 'संजीवनी'।

संजीवनमणि, संजीवनमणी—सं. स्त्री. [सं. सञ्जीवनमणि] सर्पश्रेष्ठ के शिर में पाई जाने वाली एक प्रकार की मणि विशेष।

संजीवनमूळी—देखो 'संजीवनी'।

संजीवनविद्या—सं. स्त्री. यौ.— मृत प्राणी को जिलाने की एक विद्या।

उ०—तद फूलमती विचारी औ कुंवर रौ ब्राह्मण आसै तौ उवै पासै संजीवनविद्या छै। सु जीवाउसी। तद फूलमती उठै कुंवर नुं महलायत मांहै अरंड रौ रूंख हुतौ तैरै पांनां मांहै लपेट अर अरंड रै रूख ऊपर राखीयौ।—चौबोली

रू. भे.—संजीवणविद्या, संजीवणीबिद्या, संजीवणीविद्या, संजीवनिविद्या, संजीवनीविद्या।

संजीवनि, संजीवनी—सं. स्त्री. [सं. संजीवनी] १ पुनः जीवन देने वाली।

२ मृत प्राणी को जीवित करने वाली एक बूंटी।

उ०—१ जंघाळस वंदण चित्र जास, किरि जळद इंद्र धांनुख प्रकास। अति नग जड़ाव सब साजि अंग, संजीवनि किरि द्रोण संग।—रा. रू.

उ०—२ सुरां भंत्र रूपौ तरां अंब सोभैं, लखै पारिजाती तजै मार लोभै। प्रभा संप चंपै कळी जाळ पेखै, लजै भोण संजीवनी द्रोण लेखै।—रा. रू.

३ वैद्यक के अनुसार एक औषधि का नाम, संजीवनी वटी।

४ एक मंत्र विशेष।

रू. भे.—संजीवणी।

संजीवनिविद्या, संजीवनीविद्या—देखो 'संजीवनविद्या' (रू. भे.)

संजुक्त—देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—अरु सूरसिंघजी नूं मा'राज रायसिंघजी फळौधी गांम ८४ सूं पटै दीनी ही जिण सूं सूरसिंघजी सिरकार संजुक्त फळौधी विराजता अरु दळपतसिंघजी आगै मुसायबी रौ कांम प्रोहित मांन महेस करै है।—द. दा.

संजुग—सं. पु. [सं. संयुगः] युद्ध, लड़ाई। (अ. मा; ह. नां. मा.)

संजुगत, संजुगता, संजुगति, संजुगुत, संजुगुता—वि. [सं. संयुक्ति] १ युक्तिपूर्वक।

उ०—अनि सुकवि कोइक पूछै अभास, किण अरथ नांम सूरिज प्रकास। जिण जतन काजि साचौ जबाब, संजुगत अरथ दाखूं सताब।—सू. प्र.

२ देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—१ सहुअै लखणां संजुगत, सुकलीणी सब जांण। घरण तकां कलियांण री, चत्र भाखा चहुवांण।

—कल्यांणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

उ०—२ तिसी समन्नै कै बीचि में कनक सिंघासन छत्र मसंद गावतकियै। तकियौ संजुगत विराजमांन कियै। मांनूं इंद्र सूं जंग कर जीत कै लियै।—सू. प्र.

उ०—३ काळी घड पावस कंवळयं, बग पंकति दीप दंतूसळयं। हिळिया भद्र जातिय हींडुळता, परबत्त क पंखिय संजुगता।

—गु. रू. बं.

उ०—४ प्राचीष करम सुभए पुरखा, पाइत उत्तमा महिला।

कुळ दीप पुत्र जिणयै, कुळवधू बिनै रूप संजुगता।—गु. रू. बं.

उ०—५ सप्त सुर तीन ग्रांम इकवीस मूरछना अस्ट ताळ गुनचास कोटि तांनूं संजुगति छ राग छतीस रागणी का भेदग जिनूंनै बखत प्रमांण उचार कियै।—सू. प्र.

उ०—६ दीरघ मिटि वधिम्रा लुघू दोइ, जिणिहूंत प्रघटिम्रा नांम जोइ। संजुगुत जगण एकणि सरूप, म्रौ गाहा कुळवंती अनूप।

—ल. पिं.

संजुगम, संजुग्म—वि. [सं. स+युग्म] सहित।

उ०—अरोगि नै चळू कीजै छे। ऊपरा कपूर, पांन, बीड़ा, सोपारी, केसरि, नाडां, लौंग, डोडा, काथा, चूना, **संजुगम**, मुखवास, मूंहछण दीजै छै।—रा. सा. सं.

संजुत—सं. पु. [सं. संयुक्त] १ युद्ध, लड़ाई। (ह. नां. मा.)

वि.—२ सुसज्जित।

उ०—सहनाय सुर विचि सोह, व्रति अच्छर लेत विमोह। सब सस्त्र **संजुत** सूर, पयदात झुंड सपूर।—रा. रू.

रू. भे.—संजत, संजुति, संजुत्त, संजुत्ता, संजुत्तु, संजूत।

३ देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—१ स्यांम नदी कांठै सघण, तरवर स्यांम तमाळ। **संजुत** स्यांमा सायधण, साहब स्यांम समाळ।—बां. दा.

उ०—२ कुवजा नारद विदर री, विवरां **संजुत** बात। हरि रा दासां ज्यूं हुए, दासां नूं सुख दात।—बां. दा.

उ०—३ अंब हिम विध सुस्रत अचवावै, पूरण हुय चूरण सुध पावै। **संजुत** वसत वांणरस सोखां, नागलता मघई पत्र नोखां।

—सू. प्र.

संजुकत—सं. स्त्री. [सं. संयुक्तता] एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसमें प्रथम सगण, फिर दो जगण तथा अंत में एक गुरु के अनुसार कुल १० वर्ण होते हैं। (र. ज. प्र.)

संजुता—१ देखो 'संयोगिता' (रू. भे.)

२ देखो संयुक्ता' (रू. भे.)

संजुति, संजुत्त, संजुत्ता, संजुत्तु, संजूत—१ देखो 'संजुत' (रू. भे.)

२ देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—१ आबदार ऊजळ बडवार मुकताफळ सोव्रन लाल **संजुति** रूपवंत स्रवणूं बीच राजै। सौ कैसैं, मांनूं च्यार नक्षत्र दोइ रूपधरि मंगळ बाळ-अवस्था धरि व्रहस्पति की बाहू कुंडळी कीलां करंत छाजै।—सू. प्र.

उ०—२ मनु **संजुति** लोकेस, कना रवि हूंत प्रजापति। कै रघुवीर कुंवार, लियां अवधेस प्रभाजुति।—रा. रू.

उ०—३ तळा तळै राजस करै, मै दांनव अदभुत्त। महातळै वासग वसै, सह सरपां **संजुत्त**।—गज-उद्धार

उ०—४ सगण एक दुजगण सूं, कुरु अंति इम गांन। **संजुत्ता** आखर दसै, मांन चरण अनमांन।—पिं. प्र.

उ०—५ वक्खांणियइ त परम तत्तु जिण पाउ पणासइ। आरहियइ त 'वीरनाहु' कइ 'पल्हु' पयासइ। धम्मु तु दय **संजुत्तु** जेण वरगइ पाविज्जइ, चाउ त अणखंडियउ जु बंदिणु सलहिज्जइ।

—कविपल्ह

उ०—६ बूड़ै पाबू रा विनै, देवळ ऊजळ दूत। कमधज सिंह कराड़िया, सोव्रन कळस **संजूत**।—पा. प्र.

संजोग—देखो 'संयोग' (रू. भे.)

उ०—१ सोधी दाता पलक में, तिरै तिरावण जोग। दादू ऐसा परम गुरु, पाया किंहि **संजोग**।—दादूबांणी

उ०—२ कोइक पूरब भव संबंध सं रे, आइ मिल्यौ **संजोग**। भविंतव्यता रइ जोग मिलइ इस्यौ रे, वणियौ एम वियोग।

—प. च. चौ.

उ०—३ पींजारौ इचरज मं कांन देय पूरी बात सुणी। औ तौ नांमी **संजोग** सजियौ। लाधोड़ी चीज वास्तै चोरी रो बजौ कीकर आय सकै।—फुलवाड़ी

उ०—४ त्रिपदी लहि गणपति रचै, सूत्र अरथ **संजोग**। अक्षर रूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग।—वृस्त.

उ०—५ जद स्वांमीजी बोल्या—इस संसार नां सुख काचा। **संजोग** रौ विजोग पड़ जावै। सारीरिक मांनसिक दुख ऊपजै।

—भि. द्र.

उ०—६ कांमी तै कूकर भलौ, रूति बिन रहै विजोग। कांमी नर कै कांम को, हरीया सदा संजोग।—अनुभववांणी

उ०—७ रांणी बणियां गरीब-गुरबां रौ भलौ करण सारू **संजोग** सजियौ हौ, पण म्हैं तौ उणरै ठोकर मारदी। परजा रौ भलौ करणौ तौ अळगौ म्हैं तौ खुदनै दुखां रै, अताळ-पताळ मैं थरकायदी।—फुलवाड़ी

उ०—८ सरद हिमंतह रिति सिसिर, की कीला सुख भोग। धूना मिंदर धौहरै, सिसि बदनी **संजोग**।—गु. रू. बं.

उ०—९ भांणजो री आटी गूंथतां मासी पूछ्यो—म्हैं थनै अेक साव मांमूली बात पूछूं, जिणरौ जबाब दीजे बेटी के जद आपांरै जलम ई संजोग सूं व्है तौ पछै उणरी नींव माथै चिणियोड़ी जीवण कीकर **संजोग** बिना आपरौ गुजारौ कर सकै।

—फुलवाड़ी

उ०—१० सबदां रै **संजोग** सूं ई बात बणै, सार ऊपनै।

—फुलवाड़ी

उ०—११ इणनैं आप पूरबभव रा संस्कार समझौ अथवा कोई **संजोग** री वात के सूरज म्हारा सूं थोड़ौ दबतौ जरूर हो।

—अमर चूंनड़ी

उ०—१२ विखम खीज जिण बार, 'जैत' भूपति उर जग्गी। सुरा घिरत **संजोग**, ज्वाळ जांणै जगमग्गी।—मे. म.

संजोगमंत्र—देखो 'संयोगमंत्र' (रू. भे.)

संजोगि—देखो 'संयोगी' (रू. भे.)

उ०—मकरध्वज वाहणि चढ्यौ अहिमकर, उत्तर बाउ वाए अवर। कमळ बाळि विरहिणी वदन किय, अंब पाळि संजोगि उर।—वेलि

संजोगिता—देखो 'संयोगिता' (रू. भे.)

संजोगी—१ मिला हुआ, संयुक्त, दीर्घ।

उ०—गण संजोगी आद गुरु, संजुत व्यंदु गुरेण। गुरु फिर बक्र दुमत्त गणि, लघु सुद्ध एक कळेण।—र. ज. प्र.

२ देखो 'संयोगी' (रू. भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि। संजोगणि सोहांमणइ, विजोगि अंग दाधि।—ढो. मा.

उ०—२ सरद वीती पछै ससि रुत आई, संजोगण्यां हरखी। हर व्रहण्यां थरराइ। मुग्धा नायकां रै ऊपरै जोवन की दसा आवै ज्युं ज्यु कडि तौ खीण होती जाय।—पनां

उ०—३ संजोगिणि चोर रई कैरव स्त्री, धग्हट ताळ भमर गोघोख। दिणयर ऊगि एतला दीधा, मोखियां बध बंधियां मोख।—वेलि

उ०—४ तिण वाउ कमळ था सु बाळि इसा कीया जु जिसौ विरहणी कौ मुख। आंब था सु इसा किया जिसौ संजोगणी को उरस्थल।—वेलि टी.

३ देखो 'सयोग'(रू.भे.)

उ०—राजा माहइ उछव हुवउ, ब्राह्मण दीयउ बहुत पसाव। जीपा संजोगी सुणावीयउ, सूणी वचन हरख्यौ मनि राव।—बी. दे.

(स्त्री. संजोगण, संजोगणी, संजोगन, संजोगिणि, संजोगिणी, संजोगिनी)

संजोगै-क्रि. वि.—संयोग से, दैवयोग से।

उ०—१ पूगळि पिंगल राऊ, नळ राजा नरवरै नयरै। अदिठा दूरिट्ठा यै, सगाई दईय संजोगै।—ढो. मा.

उ०—२ भवसागर भमतां थकां जी, दीठा दुख अनंत। भाग संजोगै भेटिया जी, भय भंजण भगवंत।—स. कु.

संजोगौ—१ देखो 'संयोग' (रू. भे.)

उ०—१ विरह संजोगा य्यांन का, सुधि बुधि गुणां गंभीर। जन-हरीया प्रम्यांन कूं, काढि निकासै तीर।—अनुभववांणी

उ०—२ कुंवर महलां सूं उतरयौ, विलसै संसार ना भोगो रे। पुण्य जोग आवी मिल्यौ, साध तणौ संजोगौ रे।—जयवांणी

२ देखो 'संयोगी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—लुटै साथ जांणै अमीद्दार लीधौ, किणौ बेणनाद सजीवन्न कीधौ बिजोगी संजोगी वडै वेणवायौ, प्रभू आपरी जांण अंम्रत पायौ।—ना. द.

संजोड़णौ, संजोड़बौ-क्रि. स.—१ मिलाना, संयुक्त करना।

२ तैयार करना।

उ०—हळिया हळ संजोड़िया, गळियौ ग्रीखम गाढ। आळसुंवां उद्म कियौ, आयौ धुर आसाढ।—पा. प्र.

संजोड़णहार, हारौ (हारी), संजोड़णियौ—वि०।

संजोड़िओड़ौ, संजोड़ियोड़ौ, संजोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संजोड़ीजणौ, संजोड़ीजबौ—कर्म वा०।

संजोड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ मिलाया हुआ, संयुक्त किया हुआ।

२ तैयार किया हुआ।

(स्त्री. संजोड़ियोड़ी)

संजोणौ, संजोबौ-क्रि. स. [सं. संयोजनम्] १ जलाना, प्रज्वलित करना। (दीपक)

उ०—१ सुरत निरत का दिउड़ा संजोलै, मनसा की कर लै बाती। प्रेम हाट का तेल मंगालै, जग रह्या दिन तैं राती।—मीरां

उ०—२ लिखमी घर में दीया संजोया। पूजन सारू चावळ कूंकूं काढिया और तौ लायणा कनै हो-ई कांई? इत्तै मैं ही हीरु आयौ। लिखमी कयौ—पूजन री सांमगरी त्यार है।—वरसगांठ

२ सजाना, सुसज्जित करना।

उ०—१ अंतर नीलंबर अबळ आभरण, अंगि अंगि नग नग उदित। जांणौं सदनि सदनि संजोई मदन दीपमाळा मुदित।—वेलि

उ०—२ पमंगां हुआ पिलांण भूप 'बूडा' चढ भेळौ, वण चांदै वागेल ठहै संग सारो ठेलौ। वहै ढाल वीटियां जगै जांमकियां ढोया, दरकां सर दीवड़ा सोर भाथड़ा संजोया।—पा. प्र.

३ तैयार करना, बनाना।

उ०—तो कर लाडा उगठणौ, थारा उगठणा में बास घणी। थारी दादूयां संजोयौ उगठणौ, थारी मांय संजोयौ उगठणौ।—लो. गी.

४ इकट्ठा करना, एकत्र करना।

उ०—राजा कनक सिखर सांमग्री संजोय कन्या आप री राजा विक्रमादित्य नूं परणाई।—पंचदंडी री वारता

५ पिरोना।

उ०—सरी नोसरहार मोती संजोया, पड़े खेणता हीराता सुक पोया। परीखै सरीकंठ में हीर पूरौ, सभै सूर आकास जांणौं सनूरौ।—रा. रू.

६ लगाना, करना।

उ०—जोगी कहै 'पतीव्रता' सुणेस हुइ नच्यंत, प्रीव थारो आव्यौ छइ मास बसंत। मांणिक मोती लै वळ्यौ, उठि नै गोरी तीलक संजोई।—बी. दे.

७ देखना, निहारना।

उ०—तडफड साकुर हिंजु तुंड, रड़वड़ ऊड गडां जिम रूंड। हड़-वड़ जोगण खेतल होय, सड़वड़ कायर पंथ संजोय।—गो. रू.

८ संजीवित करना, हरा-भरा करना, पल्लवित करना।

उ०—सूखे काठ संजोइयौ, भुज माट मही भर। नीळौ तर व्है

नेहड़ी, बणियौ गह डंबर।—ठाकुर जुंझारसिंह मेड़तियौ

संजोणहार, हारौ (हारी) संजोणियौ वि०।

संजोयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संजोईजणौ, संजोईजबौ – कर्म वा०।

संजावणो, संजावबौ, संजोइणौ, संजोइबौ, संजोवणो, संजोवबौ; सजोणौ, सजोबौ, सजोवणौ, सजोवबौ—रू० भे०।

संजोत, संजोति–सं. स्त्री.—ज्योति, लौ।

उ०—सती लै अरधंगा संग जळेवा में महासूर। जीव मारू राव मिळै, मोक्ष में **संजोत**।—अग्यात

२ चमक।

उ०—नासिका सुक चंच सरिखी, मुगतफळ **संजोति**। अहिर विद्रम ओपमां, जेहा डसण हीरा जोति।—रुकमणी मंगळ

संजोयणादोस–सं. पु.—भिक्षा लेने के उपरान्त स्वाद के लिए उसमें कुछ मिलाने पर लगाने वाला दोष। (जैन)

संजोयोड़ौ–भू. का. कृ.—१ जलाया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ. २ तैयार किया हुआ. ३ सजाया हुआ, सुसज्जित किया हुआ. ४ इकट्ठा किया हुआ, एकत्र किया हुआ. ५ पिरोया हुआ. ७ लगाया हुआ, किया हुआ. ७ देखा हुआ, निहारा हुआ. ८ संजीवित किया हुआ, हरा-भरा किया हुआ, पल्लवित किया हुआ।

(स्त्री. संजोयोड़ी)

संजोवणौ, संजोवबो—देखो 'संजोणौ, संजोबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिणरा झड़िया पांख, पळकती किरणां सोवै। उमा पूत रै कोड, कंवळ ज्यूं करण **संजोवै**।—मेघ

उ०—२ गोखै गोखै दिवला **संजोव** राजिदा ढोला, दीयां रै चांनणियै ढाळूं ढोलियौ।—लो. गी.

उ०—३ सखी **संजोवै** दीवला, पूजै लक्ष्मी मात। रळ-मिळ पोढै कांमणी, लै प्रीतम नै साथ।—लो. गी.

संजोवणहार, हारौ (हारी), संजोवणियौ—वि०।

संजोविश्रोड़ौ, संजोवियोड़ौ, संजोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संजोवीजणौ संजोवीजबौ—कर्म वा०।

संजोवियोड़ौ—देखो 'संजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संजोवियोड़ी)

संजोह–सं. पु. [सं. सं+फा. जोशन] **१ कवच**।

उ०—ताहरां ओथि घोड़ा ठांमिया। ओथि राघवदास **संजोह** पहिरियौ हुतौ अर अफीण खाधौ हुतौ ताहरां तलछर ऊपर छाल विहुं हुई।—द. वि.

२ कपड़ा बुनते समय जुलाहे द्वारा छत से लटकाया गया **लकड़ी** का चौखटा जिसमें राछ या कंघी लटकी रहती है।

संज्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—सुवारै संज्या अठै आवौ सौ करजै।

—कूंवरसी सांखला री वारता

संज्वर-सं. पु. [सं.] **१** तीव्र बुखार। २ क्रोध, आवेश।

संझ—१ देखो 'साज' (रू. भे.)

उ०—तरै रुपीया १०,०००) खरची नै रखत रा दीना। तिणां सूं **संझ** कराय नै दिली नै चढिया।—नैणसी

२ देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—१ करहा काछी काळिया, चाली गइ किरणांह। **संझ** बळंतइ दीवळइ, धण जागंती जांह।—ढो. मा.

उ०—२ ओपै गज सांमळा अनैसा, जपि गुण डौळ तिमंगळ जैसा। अरुण अंबाड़ी झूळ अरोहै, सांवण **संझ** की अंबुद सोहै।

—रा. रू.

उ०—३ बीती ग्रीखम एण विध, सिर लग्गे वरसात। सरस वरस गुणियासियौ, सोहै **संझ** प्रभात।—रा. रू.

३ देखो 'संज' (रू. भे.)

संझया, संझा—देखो 'संध्या' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ मांणस थिकि पंखी भला, अळगा चूण चणंति। तरुवर भमि **संझा** समइ, माळइ आवि मिळंति।—अग्यात

उ०—२ सउच न्हांण मुख साधि सब, राचै राजस राह। क्रम बैठौ **संझा** करण, 'दूदौ' कंवर दुवाह।—वं. भा.

उ०—३ करि **संझा** जप आदि क्रम, पूजि इस्ट गोपाळ। स्वकरां करि भोजन सदा, करी निवेदण काळ।—वं. भा.

संझाड़ौ—देखो 'सझाड़ौ' (रू. भे.)

संझाबळ–सं. पु. [सं. संध्याबल] राक्षस, निशाचर। (डिं. को.)

संझारावउं–सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—·········मदव गजवडि, सुव्रणपडि, पंचव्रणपडि, क्रसण-पडि, माठउं, जादर, भातीगलूं, जादरपोति, परेवउं, पटसउल, मेघाडंबर, **संझारावउ**, रावेटउं, कणवीर, सोवन्नच्छतेउं······।

—व. स.

संझि, संझ्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ लगनि थकी पहिलइ इक मासि, मांणस मूंकेस्यां तुम्हि पासि। छांनी वातविमासी बहू, **संझि** सहू की आविसी सहू।

—ढो. मा.

उ०—२ दौड़िया साह दिस डाकदार, **संझ्यां** सुं वरस आडी सवार।—रा. रू.

उ०—३ **संझ्यां** चलै उतावळा, बटाउ बनखंड मांहि। बरिया नाहीं ढलिकी, दादू वेगि घर जांहि।—दादूबांणी

उ०—४ **संझ्यां** समै रावजी महिलां पधारिया तरै अपछरा मुजरौ करै नै सीख मांगी। अबै तौ साहिबजी मोनै लोकां दीठी। राज पीण हकीगत कीही सौ म्हैं तौ जावसुं।

—वीरमदे सोनगरा री वात

संठ—देखो 'सठ' (रू. भे.)

उ०—निनाद बंध अंध कै, दुकंध त्रोटतै नदें। महांन लंठ **संठ** कै,

कुकंठ घोटतै मदें। —ऊ. का.

संठणौ, संठबौ—क्रि. अ.—१ धनी होना, सम्पन्न होना, वैभवयुक्त होना।
२ जुड़ना, संयुक्त होना।
३ संस्थापित होना।
संठणहार हारौ (हारी), **संठणियौ**—वि०।
संठिअोड़ौ, संठियोड़ौ, संठ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संठीजणौ, संठीजबौ—भाव वा०।
संठवणौ, संठवबौ—रू० भे०।

संठवणौ, संठवबौ—देखो 'संठणौ, संठबौ' (रू. भे.)
उ०—इणि परि ए गुरु आएसि, सुहगुरु पाटिहि **संठविउ**। तिहुयणि ए मंगलचारु, जय जयकारु समुच्छलिउ।
—कवि ग्यांन कलस
संठवणहार, हारौ (हारी), **संठवणियौ**—वि०।
संठविअोड़ौ, संठवियोड़ौ संठव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संठवीजणौ संठवीजबौ भाव वा०।

संठवा—देखो 'संठाव' (रू. भे.)

संठवाड़ौ—सं. पु.—वह खेत जिसमें घास-फूस तथा छोटे-छोटे झाड़-झखाड़ अधिक हो।
२ खेत में होने वाला घास-फूस व झाड़-झंखाड़।
३ हल्की एवं नन्हीं-नन्हीं बूंदों की निरन्तर होने वाली वर्षा, वर्षा की झड़ी।

संठवाणौ, संठवाबौ—देखो 'संठाणौ, संठाबौ' (रू. भे.)
संठवाणहार, हारौ (हारी), **संठवाणियौ**—वि०।
संठवायोड़ौ—भू० का० कृ०।
संठवाईजणौ संठवाईजबौ— कर्म वा०।

संठवायोड़ौ—देखो 'संठायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संठवायोड़ी)

संठवियोड़ौ—देखो 'संठियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संठियोड़ी)

संठाणौ, संठाबौ—क्रि. स.—१ संस्थापित करना/कराना।
२ जुड़ाना या जोड़ना।
संठाणहार, हारौ (हारी), **संठाणियौ**—वि०।
संठायोड़ौ—भू० का० कृ०।
संठाईजणौ, संठाईजबौ—कर्म वा०।
संठवाणौ, संठवाबौ, संठावणौ, संठावबौ—रू० भे०।

संठायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संस्थापित किया हुआ/कराया हुआ।
२ जुड़ाया हुआ, जोड़ा हुआ।
(स्त्री. संठायोड़ी)

संठाव—सं. पु.—उर्वरा शक्ति प्राप्त करने हेतु दो-तीन वर्ष बिना जोते पड़ी रही भूमि, पड़त भूमि।
रू. भे.—संठवा।

संठावणौ, संठावबौ—देखो 'संठाणौ, संठाबौ' (रू. भे.)
संठावणहार, हारौ (हारी), **संठावणियौ**—वि०।
संठाविअोड़ौ, संठावियोड़ौ, संठाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संठावीजणौ, संठावीजबौ—कर्म वा०।

संठावियोड़ौ—देखो 'संठायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संठावियोड़ी)

संठियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ धनी हुवा हुआ, सम्पन्न हुवा हुआ, वैभवयुक्त हुवा हुआ। २ जुड़ा हुआ, संयुक्त हुवा हुआ।
३ संस्थापित हुवा हुआ।
(स्त्री. संठियोड़ी)

संठीर—वि.—दृढ़, मजबूत।
उ०—१ तूटियो अथाप वेग हौफरैल रातांखियौ, साप पांखियौ क धाप डांकियौ संठीर। ताप खाई मैंगळां अळा हूं अमाप तेज, कुमारां सिंगार आप बूलायौ कंठीर।—प्रतापसिंह राठौड़ रौ गीत
उ०—२ लागाळौ इण चाह, अणियाळा अलता जिहि। सड संठीर थयाह, जड़िया पिंजर जेठवा।—जेठवा

संठौ—देखो 'सोंठौ' (रू. भे.)
उ०—पदमणि पुरखारै पंगरण नह पूरा, भूखा सूतोड़ा संगरणवै भूरा। रोजा निसबासर संठा में साजै, बेंकति कंठां में अलगोजा बाजै।—ऊ. का.

संड—सं. पु. [सं. शंड या षंड] १ नपुंसक, हिंजड़ा।
२ वह पुरुष जिसके सन्तान न हो।
३ देखो 'सांड' (रू. भे.)
उ०—१ अभीति बीति कूंड देय, चंड-मुंड ज्यौं अरें। अकाळ चंड चंडिका, त्रखड संड लौ तरें।—ऊ. का.
उ०—२ 'मांडण' 'सीहौ' वहै, संड गजै 'सिंघल' हर। अकबरि मांगी कुंअरि, तांम मुख दीनौ उत्तर।—गु. रू. बं.
उ०—३ हिंदूवै सुरतांण तूं, तूं सुरतांणां संड। तूं सुरतांणां चींतगर, तूं सुरतांणां चंड।—गु. रू. बं.
४ देखो 'सूंड' (रू. भे.)
उ०—खगां धार खूटै, तई संड तूटै। परां नाग जाए, जांणै उड़ु जाए।—सू. प्र.

संडजोनि—देखो 'संडयोनि' (रू. भे.)

संडता—सं. स्त्री. [सं. षंडता] १ नपुंसकत्व, हिंजड़ापन।
२ मूर्खता; बेवकूफी।

संडमुसंड, संडमुसंडौ, संडमुस्टंड, संडमुस्तंड—देखो 'सुंडमुस्तंड' (रू. भे.)

संडजोनि—सं. स्त्री. यौ. [सं. षंड+योनि] पुरुष समागम के अयोग्य वह स्त्री जिसके मासिक धर्म न होता हो व जिसके स्तन न हो।
रू. भे.—संडजोनि।

संडसी—देखो 'संडासी' (रू. भे.)

संडसो—देखो 'संडासौ' (रू. भे.)

संडा-सं. पु. [सं. शंडा] १ एक यक्ष का नाम।

२ दैत्यगुरु शुक्राचार्य के पुत्र का नाम।

संडाई-सं. स्त्री.—१ मशक की तरह का भेंस आदि का वह हवा से भरा हुआ चमड़ा जो पानी में तैरने के काम में लिया जाता है।

२ देखो 'सांडाई' (रू. भे.)

३ देखो 'संडासी' (रू. भे.)

संडावौ—देखो 'संडासौ' (रू. भे.)

संडास-सं. पु.—पाखाना, शौच-कूप।

संडासी-सं. स्त्री.—१ लोहारों व स्वर्णकारों का गर्म लोहे या सोने चांदी को पकड़ने का एक औजार या उपकरण।

उ०—१ सांजत समहर डाव **संडासी**, चख धिखतां थहियां रंग चोळ। अहरण अकस 'लाल' तिण ऊपर, घण त्रिजड़ां बाहै धम-रौळ।—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—२ जैसे लोहार लोहा घड़ै छै। जब आगि माहै लोह पकड़ि नैं **संडासी** देई तब तौ बहुत तप आवै। अरु ढिग पांणी कौ वासण राखै छै। तिहि मांहि दै संडासी ताढी करै।—वेलि टी.

२ लकड़ी का बना लम्बा उपकरण विशेष जो सर्प पकड़ने के काम आता है।

उ०—अर झिल्या तो पछै इसा झिल्या के बांणौ **संडासी** में सांप।
—अमरचूनड़ी

३ रसोई में काम आने वाला वह उपकरण जो चूल्हे, अंगीठी आदि पर से चाय, सब्जी आदि के गर्म बर्तन उतारने के काम में आता है।

रू. भे.—संडसी, संडाई।

संडासौ-सं. पु.—संडासी के आकार का बड़ा औजार या उपकरण।

रू. भे.—संडसौ, संडावौ।

संडिल, संडिल्ल-सं. पु.—आर्यों के एक जनपद का नाम।

उ०—मगधमंडल अंग वंग कलिंग कासी (कोसल कुरु) कुसट्ट पंचाल जांगल [सुरास्ट्र] बिदेह **संडिल्ल** मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भंग [वट्टा] कुणाल लाट केकयमंड-लारद्ध इत्यरद्ध पंचविसंति जनपदा आरया।—व. स.

संडी—देखो 'संडयोनि'।

संडेव-सं. पु.—१ नंदी।

उ०—महाराग छंडेव छंडेव व्है न दे न गूंड, बजंडेव डम्मरु चंडेव हत्तीबीस। **संडेव** छंडेव मेख पाथ बांण पाय साच, उमंडेव मंडेव तंडेव नाच ईस।—बद्रीदास खिड़ियौ

२ वृषभ।

संडौ-सं. पु.—१ असुरों के पुरोहित शुकराचार्य का एक पुत्र।

२ ऊंट।

३ देखो 'ल्हास'।

४ देखो 'सांडौ' (रू. भे.)

संणकणौ, संणकबौ—१ देखो 'संणक्कणौ, संणक्कबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

संणकणहार, हारौ (हारी), संणकणियौ—वि०।

संणकिओड़ौ, संणकियोड़ौ, संणक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संणकीजणौ, संणकीजबौ—भाव वा०।

संणकियोड़ौ—१ देखो 'संणक्कियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संणकियोड़ी)

संणक्कणौ, संणक्कबौ-क्रि. अ. (अनु.) तीर, गोली, तलवार आदि के तेज गति से चलने से ध्वनि उत्पन्न होना।

उ०—रत्ता पी गणक्कै कै भणंक्कै यै बीमांण रंभा, लोयणां भणंक्क डंड मणंक्का लेवांण। हुवै पंखां भड़प्फा ग्रीधांण वीर है हणक्कै, कैमरां **संणक्कै** बाजै खड़क्का केवांण।
—प्रभूदांन मोतीसर

उ०—२ खोपरां खणंक्कै बांण बिछूटै अनेकां खळां, **संणक्कै** अंग मैं सार बहंतां सधीर। तड़च्छै द्रोयणां टूक घड़च्छै भुजाटां तेगां, कड़क्कै खीचियां माथै रड़क्कै कंठीर।—बादरदांन दधवाड़ियौ

२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

संणक्कणहार, हारौ (हारी), संणक्कणियौ—वि०।

संणक्किओड़ौ, संणक्कियोड़ौ, संणक्कचोड़ौ—भू० का० कृ०।

संणक्कीजणौ, संणक्कीजबौ—भाव वा०।

संणकणौ, संणकबौ, सणंकणौ, सणंकबौ, सणकणौ, सणकबौ, सनंकणौ, सनंकबौ, सनकणौ, सनकबौ—रू० भे०।

संणक्कियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ तीर, गोली, तलवार आदि के तेज गति से चलने से तेज शब्द उत्पन्न हुवा हुआ।

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संणक्कियोड़ी)

संणकौ, संणक्कौ-सं. पु.—तीर, गोली, तलवार आदि के तेज गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि।

संणगार—१ देखो 'सिणगार' (रू. भे.)

२ देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

संणगारणौ, संणगारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ (रू. भे.)

संणगारणहार, हारौ (हारी), संणगारणियौ—वि०।

संणगारिओड़ौ, संणगारियोड़ौ, संणगारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

संणगारीजणौ, संणगारीजबौ—कर्म वा०।

संणगारियोड़ौ—देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संणगारियोड़ी)

संणियौ—देखो 'सिणियौ' (रू. भे.)

संत-सं. पु. [सं. सत्] १ साधु, संन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष, महात्मा।

उ०—१ भावै कोई निंदौ आवै कोई बिंदौ, म्हैं तौ गुण गोविंदजी

का गास्यां। जीं मारग वै संत गया छै, जीं मारग म्हैं जास्यां।
—मीरां

उ०—२ काका बाबा भ्रात कवि, हुवै दूर रुख हेर। संत महंत न संचरै, पातर रै पग फेर।—बां. दा.

२ सज्जन।

३ परम धार्मिक व्यक्ति, साधु।

उ०—हरीया अैसा कौ मिळै, रांम सनेही संत। अपना औगन दूरि करि, औरन का मेटंत।—अनुभववांणी

४ भक्त।

उ०—१ निरखंत संत सनमुख निजर, करण पुनीत सु प्रीत कर। गुण मांन दांन चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यांन औ ध्यांन कर।
—रा. रू.

उ०—२ भवांनी नमौ सत्य आलाप बाळा, भवांनी नमौ व्रंद विद्या विसाळा। भवांनी नमौ देव हेरंभ माता, भवांनी नमौ नम्रमौ संत त्राता।—मे. म.

५ प्रत्येक चरण में २१ मात्राओं का एक प्रकार का छन्द विशेष।

६ [सं. सन्] होने या रहने की क्रिया।

उ०—सींगण कांई न सिरजियां, प्रीतम हाथ करंत। काठी साहंत मूठि मां, कोड़ी कासी संत।—ढो. मा.

वि.—बहुत निर्मल और पवित्र।

रू. भे.—संतण, संतणु, संतन, संतु, संतू, सणत।

संतण, संतणु—देखो 'संत' (रू. भे.)

२ देखो 'सांतनु' (रू. भे.)

उ०—१ विद्याधरि अपहरीय जात मात्र तडि जमण मिल्हीय इसीय वाच महणय पडी तउ मइं लिद्ध कुमारि। सत्यवती नांमि हुसिए संतण घर नारि।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ हथिणाउरि पुरि कुर नरिंद, केरौ कुल मंडणु। सहजिहि संतु सुहागसीलु, हुउ नरवरु संतणु।—सालिभद्र सूरि

संतत—वि. [सं.] १ निरन्तर, लगातार।

उ०—आयन त्रिहायन लौ संतत समर मंडि, राखि रनथंभ राज सौंपन समाह्यौ नां। साह्यौ हठ बप्पवंस बिरुद बढावन कौं, रावन कौं रौढा दै सिटावन कौ साह्यौ नां।—सूरजमल मीसण

२ बढ़ाया हुआ, फैलाया हुआ।

३ अत्यधिक।

४ देखो 'संततज्वर'।

संततज्वर—सं. पु. यौ. [सं.] सदा बना रहने वाला ज्वर।

संतति—सं. स्त्री. [सं.] १ संतान, औलाद। (डि. को)

उ०—१ संभरीक खिच्ची जिण संतति, भुजबळ अनड़ हुवा भूपति। —वं. भा.

उ०—२ मुहुक्करमा रौ अनुज लालसिंह १३५२ मद्रदेश में आपरौ अमल जमाय महीस हुऔ जिणरी संतति समस्त माद्रेचा १/२ चहुवांण कहीजै।—वं. भा.

२ प्रजा, रिआया।

३ अवली, पंक्ति।

४ वंश, कुल।

संततिपथ—सं. पु. यौ. [सं.] जिस राह से सन्तान उत्पन्न हो, योनि। (डि. को.)

संततिमांण, संततिमांन—सं. पु. [सं. सन्ततिमान] भरतवंशीय राजा कृति के पिता एवं सुमति का पुत्र, एक राजा।

संततेय संततेयु—सं. पु. [सं.] १ पुरुवंशीय रौद्राश्व का एक पुत्र जो घृताची नामक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

२ रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

संतदासोतरांमावत—सं. पु.—रामावत साधुओं की एक शाखा।

संतन—१ देखो 'संत' (रू. भे.)

उ०—१ किनक कांमणी कारणै, हरीया करै कळाप। कांमी वंछै आप कुं, संतन कै संताप।—अनुभववांणी

उ०—२ संतन की गति संत कुं, दुनियन की दुनीयांह। जनहरीया अवगति की, गति न कौ लहीयांह।—अनुभववांणी

२ देखो 'सांतनु' (रू. भे.)

उ०—सुत 'अखैराज' मुवौ चढि सारै, गहणि गोपि अनै गऊ ग्रहणि। रणि संतन हरौ न चढियौ रूकै, 'रयण' कळोधर चढै रणि।
—रतनू भरमौ

संतनु—सं. पु. [सं.] १ राधिका के साथ रहने वाला एक बालक। (पुराण)

२ देखो 'सांतनु' (रू. भे.)

संतनुसुत, संतनुसुतन—देखो सांतनुसुत' (रू. भे.) (डि. को.)

संतप—१ देखो 'संतप्त' (रू. भे.)

उ०—झूरइ पूरइ हेज स्युं जी, मांडइ मरण उपाय। प्रियु बिरहा-गति झालस्युं जी, देही संतप थाय।—बि. कु.

२ देखो 'संताप' (रू. भे.)

संतप्त—वि. [सं.] १ अधिक तपा हुआ।

२ दग्ध, जला हुआ।

३ दुःखी, पीड़ित।

रू. भे.—संतप।

संतमन—वि.—१ श्वेत, सफेद। * (डि. को.)

२ निश्चल, अटल, दृढ़। * (डि. को.)

संतमस—सं. पु. [सं. संतमस् अथवा संतमस] अंधकार, अंधेरा। (अ. मा; डि. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

संतर—देखो 'सत्र' (रू. भे.)

उ०—कियै संतर भोम अचो करड़ो, बळ आंगम सांक मनै वरड़ो। दोयणो घर धांधळ चाल दखै, इभड़ा सवनी घर संक अखै।
—पा. प्र.

संतरजण, संतरजन-सं. पु. [सं. संतर्जन] कुमार कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।
संतरदण, संतरदन-सं. पु. [सं. संतर्दन] केकयदेशाधिपति धृष्टकेतु व श्रुतकीर्ति के पांच पुत्रों में से एक।
संतरदा—देखो 'संतरिदा' (रू. भे.) (अ. मा.)
संतरपण-सं. पु. [सं. संतर्पण] १ अच्छी तरह तृप्त करने की क्रिया या भाव।
२ तृप्त करने वाला व्यक्ति।
संतरिदा-सं. स्त्री. [सं. शतह्रदा] विद्युत, बिजली। (ह. नां. मा.)
रू. भे.—संतरदा।
संतरी-सं. पु. [अं. सेंटरी] पहरेदार, द्वारपाल, सिपाही। (अ. मा.)
उ०—'पाल' छाड जाय पागड़ो, राख कोट सम रात। संतरी पारधियां सेंहत, 'चांदो' 'ढेंमो' साथ।—पा. प्र.
रू. भे.—संत्री।
संतरो-सं. पु. [पुर्त. संगतरा] नारंगी।
संतांन-सं. पु. [सं. संतान] १ वंश। (डि. को.)
२ संतति, औलाद। (डि. को.)
उ०—भूप हुआ जिण कुळ भला, थिर अटेर मुख थांन। भाखै सुकवि भदोड़िया, सब जिणरा संतान।—वं. भा.
[सं. संतान:] ३ कल्पवृक्ष। (अ. मा, डि. को; नां. मा.)
उ०—कलपवृक्ष संतांन, पारिजाती हरिचंदण। तर मंदार दुवार, आंण ऊगा सुख अप्पण।—रा. रू.
४ एक प्रकार का अस्त्र विशेष।
संतांनक-सं. पु [सं. संतानक] १ कल्पवृक्ष। (सभा)
२ ब्रह्मलोक से परे एक लोक। (पौराणिक)
संतांनगणपति-सं. पु. [सं.] एक विशिष्ट गणपति जो संतान देने वाले कहे गये हैं।
संतांनास्टमी, सतांनाटम-सं. स्त्री. [सं. संतानाष्टमी] चैत्रकृष्णाष्टमी को होने वाला व्रत विशेष जिसमें श्रीकृष्ण व देवकी की पूजा की जाती है।
संतांनिका-स. स्त्री. [सं. संतानिका] १ फेन, झाग।
२ मलाई।
३ एक प्रकार का घास, मर्कटजाल।
४ छुरी या तलवार की धार।
५ कुमार कार्तिकेय की एक अनुचरी एवं मातृका।
संतांपाळ-सं. पु. [सं. संतपालक] परमेश्वर, ईश्वर। (नां. मा.)
संताड़णो, संताड़बो—देखो 'संतापणो, संतापबो' (रू. भे.)
उ०—मुझ संताड़ि हिवै नहि, बीजी काइ टाप। तीजै घर घालि दीयो, तालो टाल संताप।—ध. व. ग्रं.
संताड़णहार, हारो (हारी), संताड़णियो—वि०।
संताड़ओड़ो, संताड़ियोड़ो, संताड़्योड़ो—भू० का० कृ०।
संताड़ीजणो, संताड़ीजबो—कर्म वा०।
संताड़ियोड़ो—देखो 'संतापियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. संताड़ियोड़ी)
संताणो, संताबो—देखो 'संतापणो, संतापबो' (रू. भे.)
उ०—१ विरहा तूं संताय नां, मना दंधावो धीर। हरीया सांई कारणै, मैं दुख सहूं सरीर।—अनुभववांणी
उ०—२ चोरी करणी तौ किणी लांठा धींग री घर ई फाड़णी खासी भली मता तौ हाथ लागै। दूबळां नै संतायां तौ फगत हाय पांनै पड़ै।—फुलवाड़ी
संताणहार, हारो (हारी), संताणियो—वि०।
संतायोड़ो—भू० का० कृ०।
संताईजणो, संताईजबो—कर्म वा०।
संताप-सं. पु. [सं.] १ अग्नि, धूप आदि का तीव्र ताप या आंच। (डि. को.)
२ तीव्र मानसिक क्लेश या पीड़ा।
उ०—१ कूंडै मेळा बैस करि, जपै सकति कौ जाप। हरीया अंतर ऊपजै, सांसा सोग संताप।—अनुभववांणी
उ०—२ सांसा सोग संताप तज्य, आपा होय अबीह। सुंन्य सहज मैं पाईया, हरीया अभिनासीह।—अनुभववांणी
उ०—३ संभरियां संताप, वीसरियां न वीसरइ। काळेजा बिचि काप, परहर तूं फाटइ नहीं।—ढो. मा.
३ चिन्ता, दुःख।
उ०—१ पोता रै जलमियां सेठ नै हरख नीं होय अणूंतौ संताप व्हियौ। इत्ता दिन तौ खावणिया दोय हा तौ कमावणिया ई दोय हा। पण पोता रै जलमतां ई खावणिया तीन व्हैगा अर कमावणिया फगत दोय रा दोय।—फुलवाड़ी
उ०—२ ब्याव रा घर में उच्छव री ठौड़ संताप वापरग्यो। बेटी किण नै कांई कैवती। मांय री मांय गोटीजती। उण रै आ बात समझ में नीं आवती कै जकी मां नौ महीना देह रो रगत पाय उदर मैं पोसण करचो, सोळै वरसां तांई घर मैं राखी, कांइ वळै नीं राख सकै।—फुलवाड़ी
४ शरीर में होने वाली दाह या जलन।
५ पाप आदि बुरे कृत्य करने पर मन में होने वाला अनुताप।
६ दुःख, कष्ट।
उ०—१ किम आविउ कहि रे चतुर, कांई कांइ संताप। माहरइ माधव बंभ विण, अवर पुरुस तै बाप।—मा. कां. प्र.
उ०—२ किण रै हीयै वत्ती बळत ही, इणरो म्यांनो खुद अंतरजांमी सूं ई अछांनो हो। हरया-भरया सपना बळे जणां अेड़ो ई विकट संताप व्हिया करै।—फुलवाड़ी
उ०—३ व्है ठाढो गिर गिर पड़ै, मुख तै करै विलाप। राधा-वर किरपा करो, तो सह मिटै संताप।—गज-उद्धार

उ०—४ रस घर तरवर फळ तरह, सिर निज धर संताप। वसन लाज सर नीर विध, पर सुख दियण 'प्रताप'।
—जैतदांन बारहठ

७ पीड़ा।

उ०—१ उण वगत म्हैं थारा सूं कांई कम बेचेतै ही बेटी जिण विखा री वेळा माथा में फगत थोथी सुन्याड़ घरणावै, उण सूं वत्तौ कीं दुख कै संताप नीं व्है।—फुलवाड़ी

उ०—२ दाळद्द पाप संताप दह, पारस संगम लोह पर। निज नांम नमौ तौ नारियण, हंस नमौ सिरताज हर।—ह. र.

उ०—३ पण विस्वास रा बळ आगै उण रा अखूट विखा नै ई हार मांनणी पड़ी। विस्वास रा बळ रै सांमी बापड़ा दुख, कळस अर संताप रौ कांई गाढ।—फुलवाड़ी

८ ज्वर; बुखार।

९ शत्रु, दुश्मन।

१० रोग, बीमारी।

वि.—तप्त। * (डि. को.)

रू. भे.—संतप, संतापु, संताव।

संतापण—सं. पु. [सं. संतापन] १ संताप देने या संतप्त करने की क्रिया या भाव।

२ कामदेव के पांच बाणों में से एक।

३ एक प्रकार का अस्त्र। (पुराण)

रू. भे.—संतापन।

वि.—संतप्त करने वाला।

संतापणौ, संतापबौ—क्रि. स.—१ सताना; दुख देना, कष्ट पहुँचाना।

उ०—१ दंताळां दड़काप, मोताहळ विखरै मही। स्याळां मती संताप, लंकाळां गज भख 'लछा'।—भगवांनजी रतनू

उ०—२ जीव संताप्या मइं घणा, पर आसायें बींध। चालि रात्रि भोजन करघा, काज अकारज कीध।—वि. कु.

क्रि. अ.—२ पीड़ित होना, दुःखी होना।

उ०—रतिपति रयणि दिवस संतापति, व्यापति विरह दुक्ख दियु दियु रे। राजुल कहइ सखि सांमि सुंदर विण, कइसइ ठौर रहइ जियु जियु रे।—स. कु.

संतापणहार, हारौ (हारी), **संतापणियौ**—वि०।

संताप्योड़ौ, संतापियोड़ौ, संताप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संतापीजणौ, संतापीजबौ—कर्म वा०।

संतावणौ, संतावबौ, सताड़णौ, सताड़बौ, सताणौ, सताबौ, सतावणौ, सतावबौ—रू० भे०।

संतापन—देखो 'संतापण' (रू. भे.)

संतापित—वि. [सं.] जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो, पीड़ित, संतप्त।

संतापियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सताया हुआ, पीड़ित किया हुआ, कष्ट पहुँचाया हुआ. २ पीड़ित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ।

(स्त्री. संतापियोड़ी)

संतापु—देखो 'संताप' (रू. भे.)

उ०—संतापु सुयणह करई, पुण्यहीन जिम राय रोलई। दारिद्र दुक्खु केई भरई तणा, कज्जि गिरि सिहरु ढोलई।
—सालिभद्र सूरि

संतायोड़ौ—देखो संतापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संतायोड़ी)

संताव—देखो 'संताप' (रू. भे)

उ०—चउगइ भय-भंजण पवर, उपसांमिअ दुहदाह। रोग सोग संताव हर, जय जिण तिहु अण नाह।—स. कु.

संतावणौ, संतावबौ—देखो संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—१ संतावै मदन अपार रे, तन वाध्यौ मदन विकार रे। मिलवौ तोसुं इकवार रे, मैं कीधौ एह विचार रे।—वि. कु.

उ०—२ मासी रीस में धुरकारती बोली—थूक थारै मूंडै सूं। म्हारै जैड़ौ बुढापौ तौ भगवांन म्हनै संतावण वाळा पापियां नै ई नीं बगसै।—फुलवाड़ी

उ०—३ खीजइ मूंझइ रडइ बाल जिम सयरु संतावइ। कमलिणि कांणणि मरण समाधि, सा किमइ न पांमइ।—सालिभद्र सूरि

संति—सं पु.—१ सोलहवें तीर्थंकर का नाम, शान्तिनाथस्वामी।

उ०—१ इम थुण्यउ जिणवर संति दिणयर, भविय तिमिर विहंडणो। अणहिल्ल पाटण मांहि स्त्री, त्रबाड़वाड़ा मंडणो।
—स. कु

उ०—२ मित्तह ए रईस मणिचूड राय, रहइं सभा रयणम ए। राइहिं ए संति जिणंद, नवउ प्रासादु करावीउ ए।
—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'सांति' (रू. भे.)

रू. भे.—संती।

संतिकरउ—वि. [सं. शान्तिकर] शान्ति करने वाला।

उ०—तिणि पुरि हूंउ संति जिणेसरु, संघह संतिकरउ परमेसरू। चक्कवट्टि किरि पंचमउ।—सालिभद्र सूरि

संती—१ देखो 'संति' (रू. भे.)

उ०—जन सांकल जड़ीयौ पड़ीयौ बंदीखांण, भय आठैं भांजै न रहै पलक प्रमांण। सिर संती जिणेसर सेवत ही सुख खांण, इण-भव लहै लीला परभव पद निरवांण।—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'सांति' (रू. भे.)

संतीसर—सं. पु.—सोलहवें तीर्थंकर का नाम, शान्तिनाथ स्वामी, शान्ति-स्वर।

उ०—१ खरतर वसही वांदिया मन मोह्यउ रे, संतीसर सुखकंद लाल मन मोह्यउ रे। राइणि तल पगला नम्या मन मोह्यउ रे, अदबुद आदि जिणंद लाल मन मोह्यउ रे।—स. कु.

उ०—२ जग नायक जिनवर पुहवी मांहि प्रत्यक्ष, सोलम संतीसर सुखदायक कल्पव्रक्ष। जसु यात्र करे वा लोक मिले तिहां लक्ष, दरसण देखत ही आणंद पावै अक्ष।—ध. व. ग्रं.

संतु–वि.—१ अच्छा।

२ शान्त।

३ देखो 'संत' (रू. भे.)

उ०—हथिणाउरि पुरि कुरनरिंद केरौ कुलमंडणु। सहजिहि संतु सुहागसीलु, हुउ नरवरु संतणु।—सालिभद्र सूरि

रू. भे.—संतू।

संतुख–सं. स्त्री.—१ सिंह के अगले स्कन्ध के पास की एक हड्डी, जिसे चाट कर वह भूख शान्त करता है।

उ०—तण दुख भूलै ताखड़ी, मुछ मरड़े जद मूक। संतुख नूं जिम चाट सिंघ, भगाय निज री भूक।—रैवतसिंह भाटी

२ देखो 'संतोस' (रू. भे.)

संतुखित–सं. पु. [सं. संतुषित] एक देव पुत्र का नाम।

संतुट्ठ—देखो 'संतुस्ट' (रू. भे.) (जैन)

संतुलन–सं. पु. [सं. सन्तुलनम्] १ वह क्रिया जिससे तौल अच्छी तरह होता है।

२ तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर या ठीक करने की क्रिया या भाव।

३ लाक्षणिक अर्थ में सभी अंगों या पक्षों के बराबर या यथास्थान होने की स्थिति।

संतुलित–वि.—१ किसी का संतुलन हुवा हुआ होना।

२ दोनों पक्षों का बल या प्रभाव का समान होना।

संतुस्ट–वि. [सं. संतुष्ट] १ जिसे सन्तोष हो गया हो, सन्तुष्ट, तृप्त।

उ०—तरै राजा जिग आरंभ नै रिख तेडाया। तिका अठ्यासी हजार रखेस्वर आया, तेतीस कोडि देवता आया। राजा मनछा भोजन रखेस्वरां नै पोख्या, देवतां नै संतुस्ट कीया।

—राठोड़ां री वंसावळी

२ तुष्टमान, महरबान।

उ०—तठा पछै रांणी नै बुलाय नै आंबौ दीधौ नै कह्यौ—हे रांणी! रातै स्रीगौरखनाथजी संतुस्ट हुवा। तै फळ दीधौ। औ थें फळ खावौ, ज्यूं थांरै पुत्र होवै।—रिसाळू री बात

३ जो राजी हो गया हो, कोई बात मान गया हो, रजामंद।

४ प्रसन्न, खुश।

रू. भे.—संतुट्ठ, संतुस्ठ।

संतुस्टि, संतुस्टी–सं. स्त्री.—१ संतुष्ट होने की क्रिया या भाव।

२ संतोष।

३ प्रसन्नता।

संतुस्ठ—देखो 'संतुस्ट' (रू. भे.)

संतू—१ देखो 'संत' (रू. भे.)

२ देखो 'संतु' (रू. भे.)

उ०—मिळिया मनमेळूं माती मुसकाती, डुसका भरतोड़ी आती डुसकाती। सासू सकुळीणी संतू सुर सांनी, ऊजळ दंती नैं उर में उर लीनी।—ऊ. का.

संतोक, संतोख—देखो 'संतोस' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. कों; ह. नां. मा.)

उ०—१ हरीया जब सीतळ भया, सब तें एक सभाय। राग दोख अंतर नहीं, सुख संतोख समाय।—अनुभववांणी

उ०—२ किण सुख री आस में लारै आई, किण अदीठ हरख अर संतोख रै भरोसै पराई ठोड़ री बासौ कबूल करचौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ लालचियां संतोख ज्यूं, मन हींजड़ा मनोज। ऊमर में नंह ऊपजै, इम मावड़ियां मोज।—बां. दा.

उ०—४ मैं राव कल्यांणमल सूं संतोख छै सु हूं राव कल्यांणमल नूं थांहरो अरदास करि आउं छूं।—द. वि.

उ०—५ माता कर मक्र लहै चक्र मोंख, तिलत्तिल अंग न जंग संतोख। चटच्चट पत्र रगत्र चठट्टि, समै अनुसार रमै चवसट्टि।

—मे. म.

संतोखड़ौ—देखो 'संतोस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—साथै सील संतोखड़ौ, वेली ग्यांन विग्यांन। जनहरीया दलमां फिरी, नांव निरप की आंन।—अनुभववांणी

संतोखणौ, संतोखबौ–क्रि. स. [सं. संतोषनम्] १ संतोष दिलाना, सन्तुष्ट करना।

उ०—तिण कांमना जाचियौ तिसड़ी, जिण पांमियौ सु इंछा जिसड़ी। संतोखियौ भूप जग सारौ, जस ध्रम करि जीतौ जमवारौ।

—सू. प्र.

उ०—३ काहे कौ दुख दीजियै, घट घट आतम रांम। दादू सब संतोखियै, यह साधु का कांम।—दादूबांणी

उ०—३ जोसी नै राजा कहै रे, कांइ परणै कुमरी मुझ रे। दिवस लगन करि रूवड़ो रे, कांइ हुं संतोखिस तुझ रे।—वि. कु.

उ०—४ बाजा बाजै अति भला, वरत्या मंगल-माल। संतोखै याचक सुहासणी, हरख्या बाल गोपाल।—जयवांणी

२ राजी करना, खुश करना।

उ०—इतै विचवाळौ सूर अपाळ, मिणधर आयौ रावळ 'माल'। संतोखै वातां वागां साय, जुदा दळ कीधां बहू जाय।—गो. रू.

क्रि. अ.—१ संतुष्ट होना।

२ राजी होना, खुश होना।

संतोखणहार, हारौ (हारी), संतोखणियौ—वि०।

संखोखिओड़ौ संतोखियोड़ौ, संतोख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संतोखीजणौ, संतोखीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

संतोसणौ, संतोसबौ, सतोखणौ, सतोखबौ—रू० भे०।

संतोखियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ संतोष दिलाया हुआ, संतुष्ट किया हुआ. (२) राजी किया हुआ, खुश किया हुआ. (३) संतुष्ट हुवा हुआ.

(४) राजी हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ।
(स्त्री. संतोखियोड़ी)

संतोखी—देखो 'संतोसी' (रू. भे.)

उ०—१ भाव भगति का खाणा पीणा, सील संतोखी पत रा। सुरति नरति की सेली सींगी, लीया लंगोटा जत रा।
—अनुभववांणी

उ०—२ साध न आंणै आपदा, सील संतोखी थाय। हरीया राग न धेखता, सब सु एक सभाय।—अनुभववांणी

संतोखौ—देखो 'संतोस' (रू. भे.)

उ०—१ चारित्र लै टालिस सरव दोखौ, तप करि करमां नै सोसौ जी। सीझ बूझ नै जासी मोखौ, सुणियां ही हुवै संतोखौ जी।
—जयवांणी

उ०—२ द्वंदवाद किन हूं नहीं करीयै, आपा सेती अजरा जरीयै। राग न धेख हरख नहीं धोखा, सीलादिक संजम संतोखा।
—अनुभववांणी

संतोगुण—देखो 'सतोगुण' (रू. भे.)

संतोपणौ, संतोपबौ—क्रि. स.—संतुष्ट करना।

उ०—परण कर कदी नहीं संतोप्या, जाय कर गढां पग रोप्या।
—लो. गी.

संतोल—देखो 'सतोल' (रू. भे.)

उ०—सोनजी सुनार, गांव रौ सुनार, बीभै री बेटी, आज कालै री आसांमी. गोत री कड़ोळ, तोल में संतोल।—बगदोख

संतोस—सं. पु. [सं. सन्तोष] १ वह मानसिक अवस्था जिसमें व्यक्ति प्राप्य वस्तु को यथेष्ट समझता है और इससे अधिक की कामना नहीं करता, सब्र तृप्ति।

उ०—कृपण संतोस करै नहीं, लालच आड़ै अंक। सुपण बभीखण सूं मिळै, लिए अजा रै लंक —बां. दा.

२ वह अवस्था जिसमें अभीष्ट कार्य होने या वांछित वस्तु के प्राप्त हो जाने पर क्षोभ मिट जाता है।

३ हर्ष, आनंद, प्रसन्नता, खुशी।

४ विश्वास, भरोसा।

५ धैर्य, शान्ति।

उ०—१ ओलंभा दीजइ कुणइ रइ रे कुण हिं दीजइं दोस। हीरणंद इम ऊचरइ रे कीजइ मन संतोस।—हीराणंद सूरि

उ०—२ सील संतोस सूरता सारा, तूटण लग दिवस में तारा। खूटा नीर निवांणां खारा, चौपायां घर मिळै न चारा।—ऊ. का.

६ प्रेम, प्यार।

७ स्नेह।

पर्याय०—धीरज, धीरोज, धती।

क्रि. प्र.—आणौ, करणौ, धरणौ, राखणौ, होणौ।

८ यज्ञ ऐवं दक्षिणा के बारह पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

रू. भे.—संतुख, संतोक, संतोख।

अल्पा.—संतोखड़ौ।

मह.—संतोखौ।

संतोसणौ—वि.—१ सन्तुष्ट होने वाला।

२ सन्तुष्ट करने वाला।

उ०—जांमणां जोय गोचर गिरह जांणियां, दिया रळियांमणां दरस देवी। नेस संतोसणां भूपत्यां निवाजै, खोसणां ऊपरै रहै खीजी।—मे. म.

संतोसणौ, संतोसबौ—देखो 'संतोखणौ, संतोखबौ' (रू. भे.)

उ०—बीवाहै विलसतां, दुजण जड़ काढण दावै। संतोसतां सैण, कविय मुख सुजस कहावै।—ध. व. ग्रं.

संतोसणहार, हारौ (हारी), संतोसणियौ—वि०।

संतोसिओड़ौ, संतोसियोड़ौ, संतोस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संतोसीजणौ, सतोसीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

संतोसन—सं. पु.—संतोष, सतुष्टि, तृप्ति।

संतोसियोड़ौ—देखो 'संतोखियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संतोसियोड़ी)

संतोसी—वि. पु. (स्त्री. संतोसण) १ संतोष धारण करने वाला, सब्र करने वाला।

२ संतोष का, संतोष संबंधी।

रू. भे.—संतोखी।

संतोसीमाता—सं. स्त्री.—एक लोक देवी जिसकी पूजा मनोकामना की सिद्धि के लिए की जाती है।

संत्य—सं. पु. [सं.] अग्नि देवता का नाम।

संत्री—देखो 'संतरी' (रू. भे.)

संथ—क्रि. वि. [सं. सन्ति] हैं, हुए हैं।

उ०—सुकदेव व्यास जैदेव सारिखा, सुकवि अनेक ते एक संथ। त्री वरणण पहिलौ कीजै तिणि, गूंथियै जेणि सिंगार ग्रंथ।—वेलि

संथइ, संथउ—सं. पु. [स. सीमन्तकः] स्त्रियों के पहनने का एक अलंकार विशेष।

उ०—१ काजळि अंजिवि नयणजुय, सिरि संथउ फाडेई। बोरियावडि कांचुलिय पुण उर मंडळि ताडेइ।—जिन् पद्म सूरि

उ०—२ केसर कुमकुम ऊगटि, उलटि करि सुविसाल। सिरि संथइ उद्योतीय, मोतीय तिलक झमाल।—प्राचीन फागु-संग्रह

संथगर—वि. [स. सस्त्यानं] संग्रह करने वाला, संग्रहकर्त्ता।

संथणौ, संथबौ—क्रि. स. [सं. सस्त्यानम्] संचय करना, सग्रह करना।

संथर—देखो 'साथरौ' (रू. भे.)

संथरइ—सं. स्त्री.—१ बिछौना।

२ सोने की क्रिया।

उ०—पाप अठारइ परिहरै रे, चित धरइ सरणा च्यारि। डाभ संथारइ सथरइ रे, ध्यांन धरइ सुविचारी रे।—स. कु.

संथरौ—देखो 'साथरौ' (रू. भे.)

संथव-सं. पु. [सं. संस्तवः] स्तुति, गुणगान । (जैन)

संथा-सं. स्त्री. [सं. संहिता, प्रा. संइता, संता, संथा] १ गुरु के द्वारा एक बार में पढ़ा या पढ़ाया हुआ अंश, सबक, पाठ ।

उ०—रमता रावळिया रळियारत रोवैं, धुन में धुन लागी पुन में सत सोधै । कमंडळ कापरदा कंबळ गळ कंथा, खोखा बांहारी खुद सीखी **संथा** ।—ऊ. का.

२ विद्या, ज्ञान ।

उ०—१ तिण ठांम **संथा** दांन रै समय गुरु छात्र रै । अंतर एक गजराज अचांणक आय कढियौ ।—वं. भा.

उ०—२ **संथा** साच तताई पणा री गाई गवै सारै, अनमाई राई-तनां जणाई औसाप ।—पूरजी भादौ

३ वेदों का मंत्र भाग ।

उ०—माता गणाधीस री पढादै वेद **संथा** मंत्र, ईसुरी बढादै साता अनता अमाप मूझ ।—देवी री गीत

४ धर्म शास्त्र ।

५ शिक्षा, उपदेश ।

क्रि. प्र.—लैणौ, घोखणौ ।

६ वह ग्रन्थ जिसमें पद, पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो ।

७ ईश्वर, परमात्मा ।

८ इतिहास, हाल, इतिवृत ।

उ०—**संथा** अहुं जुगां तणी सुण, कवियण सरब प्रकास करै । परै हुआ सोई रया पागतै, अब होसी सो तूझ ऊरै ।

—महादांन महडू

संथार, संथारउ—देखो 'संथारौ' (रू. भे.)

उ०—१ वन-पालक नै इम कहै, जौ आवै केसीकुमार । दीजै थांनक री आगन्या, पाट पाटला **संथार** ।—जयवांणी

उ०—२ नारी तजि नीचउ उतरयउ, संवेग मारग सूधउ धरयउ । सिला ऊपरि **संथारउ** करयउ, वेगइ सुरसुंदरि नइ वरयउ ।

—स. कु.

उ०—३ पाप अठारइ परिहरै रे, चित धरइ सरणा चारि । डाभ **संथारइ** संथरइ रे, ध्यांन धरइ सुविचारो रे ।—स. कु.

संथारड़उ—देखो 'संथारौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सेज तलाइ में पउढतउ, वर पट कूल विछाइ रे । आज तउ भूमि **संथारड़उ**, बइठड़ां रयणी विहाइ रे ।—स. कु.

संथारणौ, संथारबौ-क्रि. स.—बिछाना ।

संथारपयन्न-सं. पु. [सं. संस्तार प्रकीर्णक] वह ग्रन्थ विशेष जिसमें संथारा करने की विधि का विवेचन हो ।

उ०—देवेद त्थुय नवमौ होइ, दाखौ तिहां गाथा सय दोइ । दसम **संथारपयन्न** सवासौ, दसै सतावीससै परकासौ ।—ध. व. ग्रं.

संथारियोड़ौ-भू. का. कृ.—बिछाया हुआ ।

(स्त्री. संथारियोड़ी)

संथारौ-सं. पु. [सं. संस्तारक] १ जैनियों का शरीर त्यागने हेतु लिया जाने वाला व्रत विशेष जिसमें वे अन्न, जल आदि का त्याग कर देते हैं ।

उ०—१ बहु पडिवन्ना खोरसी रे, वांदइ देव उल्लास । **संथारा** गाथा सुणइ रे, खांमइ जीवनी रासी रे ।—स. कु.

उ०—२ सीतळजी रा साध **संथारौ** करै त्यांनै कांई सरधौ ? जद बोल्यौ —उणां रौ अकांम मरण ।—भि. द्र.

उ०—३ सुध मन **संथारौ** करी, करम खपाय गया मोखौ रे । रायं केसी डबोई आतमा, जांमा लगायां दोखौ रे ।—जयवांणी

क्रि. प्र.—करणौ, पचकणौ, पचकाणौ, लैणौ ।

मुहा.—संथारौ सीजणौ=संथारा व्रत में शरीर त्यागना ।

[सं. संस्तरः] २ डाभ, तृणादि का बिछौना । (जैन)

उ०—मन रौ जोस करी नै वेग सूं रे, आयौ पौसध-साला रै मांय रे । जायगा पड़ि लेही लघु बडी नीत नी रे, डाभादिक **संथारौ** दियौ ठाय रे ।—जयवांणी

३ बिछौना, बिछाने का कपड़ा ।

४ बिछाने हेतु लाया गया घास । (जैन)

५ सोने की क्रिया ।

रू. भे.—संथार, संथारउ ।

संथियोड़ौ-भू. का. कृ.—संचय किया हुआ, संग्रह किया हुआ ।

(स्त्री. संथियोड़ी)

संथुणणौ, संथुणबौ, संथूणणौ, संथूणबौ-क्रि. स. [सं. संस्तुत] गुण-गान करना, स्तुति करना ।

उ०—१ इय स्रीजिनचंद्रसूरि गुरु, **संथूणिउ** गुणि पुन्न । 'स्रीपुण्य-सागर' वीनवइ, सहगुरु होउ सुप्रसन्न ।—पुण्यसागर

उ०—२ जिनचंद्रसूरि सुसिस्य पंडित, सकलचंद मुनीस ए । तसु सिस्य वाचक समयसुंदर, **संथुण्योसु** जगीस ए ।—स. कु.

संथुणियोड़ौ, संथूणियोड़ौ-भू. का. कृ.—गुणगान किया हुआ, स्तुति किया हुआ ।

(स्त्री. संथुणियोड़ी, संथूणियोड़ी)

संद-सं. स्त्री. [सं. स्यन्द] १ बरसात या बरसाती हवा से उत्पन्न नमी या आर्द्रता ।

२ धूलि, रेत । (अ. मा; ह. नां. मा.)

संदइ, संदउ-वि.—१ आर्द्र, नमीयुक्त ।

उ०—लहरी सायर संदिया, वूठउ **संदउ** वाव । वीछुड़ियां साजण मिळइ, वळि किउं ताढव ताव ।—ढो. मा.

२ देखो 'हंदै' (रू. भे.)

उ०—आडा डूंगर दूरि घर वणइ न जांणइ भत्त । सज्जण **संदइ** कारणइ, हियउ हिलूसइ नित्त ।—ढो. मा.

संदक-सं. स्त्री.—गहरी निद्रा।
उ०—संदक सूती सुहिणौ लाधौ लंका लाखण आयौ। लाखण आयो लंका लीवी सायर सेत बंधायौ।—मेहोजी गोदारै
२ आर्द्रता, नमी।
३ देखो 'संदूक' (रू. भे.)

संदग्ध-सं. पु. [सं. संदिग्धत्व] १ काव्य का एक दोष विशेष।
उ०—ईछतै अरथ न कहै अवाचक, सौ संदग्ध रहै संदेह। अप्रतीत निज थांन ऊघडै, ग्राम्य गवार वचन मति ग्रेह।—बां दा.
२ देखो 'संदिग्ध' (रू. भे.)

संदण—देखो 'स्यंदन' (रू. भे.)
उ०—नमौ नर सदण हांकणहार, सबै दळ कौरव करण संघार।
—ह. र.

संदणौ, संदबौ-क्रि. अ.—१ पानी से किसी मकान, दीवार या वस्तु में नमी, आर्द्रता या सीड़ बैठ जाना, समाजाना।
२ देखो 'संधणौ, संधबौ' (रू. भे.)
उ०—लहरी सायर संदियां, वूठउ संदउ वाव। वीछुड़ियां साजण मिळइ, वळि किउं ताढव ताव।—ढो. मा.
संदणहार, हारौ (हारी), संदणियौ—वि०।
संदिग्रोड़ो, संदियोड़ो, संदयोड़ौ—भू० का० कृ०।
संदीजणौ, संदीजबौ—भाव वा०।

संदन—देखो 'स्यंदन' (रू. भे.)
उ०—कळण अथाग नदी कळजुग मैं, अन तारां पग कळै अथाग। संदन खांच 'अभनमा' 'सांगा', मह सींगाळ करै तु माग।
—किसनो आढो

संदरभ-सं. पु. [सं. सन्दर्भ] १ पूर्व वर्णित विषय।
२ पूर्व वर्णित विषय से सम्बन्धित सूचना।
३ बनावट, रचना।
४ ग्रन्थ रचना।
५ निबन्ध, लेख।
६ वह विवेचनात्मक ग्रन्थ जो किसी गूढ़ विषय पर लिखा हो।
७ कोई छोटा ग्रन्थ।
८ अध्याय।
रू. भे.—संद्रब, संद्रभ।

संदरसण, संदरसन-सं. पु. [सं. संदर्शन] एक द्वीप का नाम।

संदळ, संदल-सं. पु. [फा. संदल] चन्दन।
उ०—१ चित उज्जळ संदळ मलय चूर, कंटक हित कंटक तरु करूर। तन त्रसित धांख अगमद त्रसींग, हठ अरिन अमल व्है जात हींग।—ऊ. का.
उ०—२ मांस चांमड़ी सीरख सेती लागी हीज रही। संदळ लूगै नूं लागै तिम लागी हीज रहिबौ।—द. वि.

संदळी, संदली-वि.—१ चन्दन का, चन्दन के रंग का।
सं. पु.—१ चन्दन के रंग से मिलते-जुलते रंग का घोड़ा।
(शा. हो.)
उ०—१ लाखीरी सुरंग अजूब लंत, किसमसी साह ज्यांनूं कुमैत। तेलिया मुहा संदळी तुरंग, सोसनी सबज हंसा सुरंग।—सू. प्र.
उ०—२ कुमेत नीला समंदा मकड़ा सेली समंद, भूबर बोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केळा महुवा धूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्यांण पवण गुरड़ संजाब संदळी सीहा चकवा अबलख सिराजी। फेर ही अनेक रंग रा घोड़ा तयार कीजै छै।
—रा. सा. सं.
३ एक प्रकार का शराब विशेष जिसमें चंदन की गंध दी गई हो।
३ एक प्रकार का शराब विशेष।
उ०—तठा उपरायंत दारु रा घड़ा मंगायजे छै। सू दारू किण भांत रौ छै? अैराक रौ वैराक, संदली रौ कंदली, फूल रौ अतर, बाती बळै धुंवांधोर तिवारा रौ काढियौ, बोदी बाड़ में नाखियां जग उठै।—रा. सा. सं.
४ ख्वाजासरों का एक भेद विशेष जो पुरुषाकार (अण्डकोष) को जड़ सहित ही काट डालते हैं। (मा. म.)
५ वह हाथी जिसके बाहरी दांत नहीं होते हों।
६ मकान के अन्दर सामान रखने के निमित्त लगाया जाने वाला बड़ा और सीधा लम्बा चोड़ा पत्थर जिसका एक किनार दीवार मे संलग्न होता है।
उ०—इतरो आया हीज। आइ नै करहो बांधि नै ऊपर पधारीया। देखै तो संदली ऊपर रबाब पड़ीयो छै। पीतांबर धरती ऊपर बिछायो छै।—लाखै फूलांणी री वात

संदळो-सं. पु.—फर्श या छत पर चूने आदि के लेप को घिस कर सफाई के साथ बराबर करने की क्रिया।

संदा—देखो 'हंदा' (रू. भे.)

संदाणौ, संदाबौ—देखो 'संधाणौ, संधाबौ' (रू. भे.)
उ०—अब म्हानै लाडूड़ा संदायद्यो बालमा, एजी ए जचा आवै म्हांनै लाज, लाडूड़ा संदावै म्हारी माऊजी गोरियां।—लो. गी.
संदाणहार, हारौ (हारी), संदाणियौ—वि०।
संदायोड़ो—भू० का० कृ०।
संदाईजणौ, संदाईजबौ—कर्म वा०।

संदानित-वि. [सं.] बंधा हुआ। (डि. को.)

संदायोड़ो—देखो 'संधायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. संदायोड़ी)

संदावणौ, संदावबौ—देखो 'संधाणौ, संधाबौ' (रू. भे.)
उ०—अब म्हांनै लाडूड़ा संदायद्यो बालमा, एजी ए जचा आवै म्हांनै लाज, लाडूड़ा संदाबै म्हारी माऊजी गोरियां।—लो. गी.
संदावणहार, हारौ (हारी), संदावणियौ—वि०।
संदाविग्रोड़ो, संदावियोड़ो, संदाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

संदावीजणौ, संदावीजबौ—कर्म वा०।
संदावियोड़ौ—देखो 'संधायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संदावियोड़ी)
संदावेस–सं. पु. [सं संदेश] सन्देश, समाचार।
उ०—जिण धण कारण ऊमह्यउ, तिण धण संदावेस। तिण मारु रा तन खिस्या, पंडर हुवा ज केस।—ढो. मा.
संदि—देखो 'स्यंदन' (रू. भे.)
संदिग्ध–वि. [सं.] १ सन्देहपूर्ण, जिसमें सन्देह हो, जिस पर सन्देह हो।
२ देखो 'संदग्ध' (रू. भे.)
संदिपति–सं. पु. यौ. [सं. स्यन्दनः+पति] रथ हाँकने वाला, रथी।
संदियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ पानी से किसी मकान, दीवार या वस्तु में नमी, आर्द्रता या सीड बैठी हुई, समाई हुई।
२ देखो 'संधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संदियोड़ी)
संदी—१ देखो 'हुंदी' (रू. भे.)
उ०—१ बाळउं बाबा देसड़उ, पांणी संदी ताति। पांणी केरड कारणइ, प्री छंडइ अधराति।—ढो. मा.
उ०—२ पीहर संदी डूंमणी, 'ऊमर' हुंदइ सथ्थ। मारवणी नूं तंत मई, कहि समझावइ कथ्थ।—ढो. मा.
२ देखो 'स्यंदन' (रू. भे.)
संदीणौ, संदीणौ, संदीनौ–सं. पु. [सं. सन्धान] शारीरिक पुष्टता बढ़ाने के लिए खाया जाने वाला पौष्टिक खाद्य पदार्थ जो विशेषतया इसी उद्देश्य से तैयार किया जाता है।
रू. भे.—संधाणौ, संधिणौ, संदांणौ, सदांणौ।
संदीपन–सं. पु. [सं. संदीपनः] १ श्रीकृष्ण के गुरु का नाम।
२ कामदेव के पांच बाणों में से एक।
[सं. संदीपनं] ३ उद्दीपन या उत्तेजित करने की क्रिया या भाव।
वि.—उद्दीप्त या उत्तेजित करने वाला।
रू. भे.—संदीपनी।
संदीपनी–सं. स्त्री.—१ पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से तीसरी। (संगीत)
२ देखो 'संदीपन' (रू. भे.)
संदूक–सं. स्त्री. [अ. संदूक़] कपड़ा, आभूषण, नकद आदि वस्तुएँ रखने का लोहे, काठ या चमड़े का आधान, बक्स, पेटी।
उ०—एक एक चीज दो-दो जगां मंडाय दीनी। मांही मां केई बिकणौ ही लागगी। चढी रा पिलांण, दुन्नाळी बंदूकां, कुड़ अर कडावां, सतोली संदूकां, लोग ऐकेक ले लग्या।—दसदोख
रू. भे.—संदक, संदूख, सिंदूक, सुंदूक।
अल्पा.—संदूकड़ियौ, संदूकड़ी, संदूकड़ौ, संदूकची, संदूकचौ।
संदूकड़ियौ–सं. पु.—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)
संदूकड़ी—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)
संदूकड़ौ–सं. पु.—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)
संदूकची—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)
संदूकचौ–सं. पु.—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)
संदूख—देखो 'संदूक' (रू. भे.)
संदूर—देखो 'सिंदूर' (रू. भे.)
उ०—सिमरूं देवी सारदा, गणपत्त गणेसर। एक रदन गजवदन ओप, संदूर बणौ सिर।—ठा. जुंझारसिंह मेड़तियौ
संदूरतळका संदूरतिलका—देखो 'सिंदूरतिलका' (रू. भे.)
संदे—देखो 'संदेह' (रू. भे.)
उ०—सांमा कहि 'केसिनी', सुणु, रूप तणु संदे ज घणु। पासि रही परीक्षा करूं, भोजन नी सजाई धरु।—नळाख्यांन
संदेड़ौ–सं. पु. - बहुत कम पत्तों वाला सदा हरा रहने वाला एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
उ०—जाडी जाळां में संदेड़ा झुकिया, राखै बावोजी सगळां री रिखिया।—सादूळजी बोगसौ
संदेव–सं. पु. [सं.] देवक के एक पुत्र का नाम।
संदेवा–सं स्त्री.—वसुदेव की स्त्री देवकी का एक नाम, जो देवक की सात पुत्रियों में से एक थी।
संदेस–सं. पु. [सं. सन्देश] १ खबर, समाचार, सूचना।
उ०—१ जब का बिछड़्या फेर न मिळिया, बहोरि न दियौ संदेस। या तन ऊपर भसम रमाऊं, खार करूं सिर केस।—मीरां
उ०—२ मेरै चाकर तौ जिसा, 'दुरग' तुमारै देस। जतन हमारी सरम को, लिखियौ वेग संदेस।—रा रू.
२ प्रेम।
उ०—गिणतां गिणतां घिस गई उंगळी, घिस गई उंगळी की रेख। मैं बैरागण आद की, थारै म्हारै कद कौ संदेस।—मीरां
रू. भे.—संदेसौ, संनेसौ, सन्नेसौ।
अल्पा.—संदेसउ, संसदेड़उ, संदेसड़ौ, संनेसड़ौ, सनेसड़ौ।
संदेसउ, संदेसड़उ, संदेसड़ौ—देखो 'संदेस' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ सीता जी मोकल्यउ रे, कांइ मुंदरड़ी दे मूंक्यउ हनुमत वीर रे। जइ नइ संदेसउ कहिज्यौ माहरउ रे, तुम्है हियड़इ हुइज्यौ साहस धीर रे।—स. कु.
उ०—२ ढोला ढीली हर कियां, मूंक्या मनह विसारि। संदेसउ न पाठवइ, जीवां किसइ अधारि।—ढो. मा.
उ०—३ पंथी एक संदेसड़उ, कहिज्यउ सात सलांम। जब थी हम तुम बीछड़ै, नयणै नींद हरांम।—ढो. मा.
उ०—४ पंथी हाथ संदेसड़इ, धण विललंती देह। पग सूं काढइ लीहटी, उर आंसुआं भरेह।—ढो. मा.
उ०—५ संदेसडै न जिवाय, जा नयणै हि न दीस। नेड़ौ तीर न तिस हरै, जा हियड़ै नहिं पीस।—पंचदंडी री वारता

संदेसी—वि. पु. [सं. संदेशिन्] (स्त्री. संदेसण) सन्देश-वाहक।

संदेसौ—देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—१ आज उणमणा हौ रया जी, रह्यौ कै संदेसौ आय। कै चित आयौ थांरौ देसड़ौ जी, कै चित आया माई-बाप।
—लो. गी.

उ०—२ मात-पिता सुण सखी सहेल्यां, लिख कर दूत पठाऊं। किण गुन्हैं मोय तजी पियाजी, मैं भी संदेसौ पाऊं।—जयवांणी

उ०—३ स्यांम संदेसौ कछू न दीनौ, जांणि बूझि गुझि बाती। डगर बुहारूं पंथ सुधारूं, जोइ जोइ अंखियां राती।—मीरां

संदेह—सं. पु. [सं.] १ मन की अनिश्चयात्मक अवस्था, संशय, शंका, शक, भ्रम। (डिं. को.)

उ०—१ पावन तू हरि पाय करि, कै तौ करि हरि पाय। ह्वै पावन औ मूझ हिय, मात संदेह मिटाय।—बां. दा.

उ०—२ जनहरिरांम जहां घर पाया, जनम मरण संदेह मिटाया। विन गुरगम देखै नर दूरा, ब्रह्म बताया आप हजुरा।
—अनुभववांणी

पर्याय.—आरेक, द्वापर, भरम, विचिकितसा, वैं'म, संसय।

क्रि. प्र.—आणौ, करणौ, पड़णौ, राखणौ, होणौ।

२ खतरा, भय।

३ वास्तविकता या सत्यता के अनिश्चय के आधार पर साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार; जिसमें किसी चीज को देख कर या बात को सुन कर उस की यथार्थता या वास्तविकता के सम्बन्ध में शंका व संशय बना रहता है।

रू. भे.—संदे'।

अल्पा.—संदेहौ।

संदेहाल—सं. पु.—१ जो संदेह में पड़ा हो, संदेहशील। (डिं. को.)

२ वहमी, शकी।

संदेहौ—देखो 'संदेह' (रू. भे.)

उ०—आडी फिर नै देवकी, लुल लुल नीची थाय। एक संदेहौ ऊपनौ दीजै मोहि बताय।—जयवांणी

उ०—२ जीव जिकै सुरवीआ हुवा रे, वलि हुस्यइ छइ जेह। तैं जिणवर ना धरम थी रे, मति कौ करज्यौ संदेहौ रे।—स. कु.

संदै—देखो 'हूंदै' (रू. भे.)

संदोल—सं. पु. [सं.] एक प्रकार का कान का आभूषण विशेष।

संदोह—सं. पु. [सं.] १ समूह, झुण्ड। (अ. मा.)

उ०—भवांनी नमौ मेदनी भार भंगा, भवांनी नमौ भारती नील रंगा। भवांनी नमौ नाग बेधि अरोहा, भवांनी नमौ दैत्य संदोह द्रोहा।—मे. म.

२ दुहने की क्रिया, दोहन।

रू. भे.—संधोह।

संधौ—देखो 'हूंदौ' (रू. भे.)

संद्रब, संद्रभ—देखो संदरभ' (रू. भे.) (डिं. को.)

संद्राव—सं. पु. [सं.] युद्ध से भागने की क्रिया या भाव। (डिं. को.)

संध—सं. पु.—१ दूरी, पृथकता।

उ०—हैंवर ऊभै पायगै, द्वारै हसती बंध। हरीया हेकै पलक मैं, सब सुं पड़िगी संध।—अनुभववांणी

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—१ पांण पाक संध पह, पासौ पिसण पवंग। एता न हुवै आपणा, महिला इळा भुयंग।—मूळवै सांगावत री वात

उ०—हेलां अगस्त संध ज्यु हेकै हात हुंत हीलोळिया, धीम खगां हेकै ज्युं बोळिया नाग धींग। सुरांपती हेकै बज्र रोळिया पाहाड़ सारा, सारा खळां हेकै ऊंतोळिया 'चांदसींग'।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

३ देखो 'संधि' (रू. भे.)

उ०—१ तद आलम्म 'दुरंग' सूं बांधै संध बिचार। धार दिलागा मोकळी, मोहरां आठ हजार।—रा. रू.

उ०—२ जन हरिया मैं राम का, चाकर कुरसीबंध। अब तोड़ी तूटै नहीं, सतगुरु देग्या संध।—अनुभववांणी

उ०—३ चांदणी चवदस री दिन छै। सनि आदित्यवार री संध छै। ऊपर झड़ मंडियौ छै।—नैणसी

उ०—४ बड जीव जळ थळ विकळ वळ, संध मेर सळ-सळ हुए सकळ। दुहुं ओर हूकळ कळळ दळ, बंध वहै बीजूजळ विमळ।
—र. रू.

उ०—५ कदंमां करगां घाव दाव व्है अभूतकारा, उडै फूतकारा विखां फुणां रा अमाव। जंद हरी बंध काळी संघणा जोड़िया जकै, संध संध विछौड़िया नंद रै सुजाव।—र. ज. प्र.

उ०—६ इंदर खोटौ हुवै जदी, बादळ कुण दोसां, हाथी खोटौ हुवै, किसा मावतां भरोसा। सागर लोपै संध, जीव जळ केहा सारा, वागां दहै पवंन दोस कुण सींचणहारा।—अरजुणजी बारहठ

४ देखो 'संधा' (रू. भे.)

उ०—जिम थारौ खूनी जिकौ, किर बळभद्र कबंध। अठै विवाहण आंणियौ, सरणैं मैं बळ संध।—वं. भा.

संधक—सं. पु. [सं. संध्यक] पुष्प, फूल। (नां. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—सिंधक।

संधणौ, संधबौ—क्रि. अ.—१ जुड़ना, बंधना।

उ०—१ चींथड़ ईंतां बुगदोळा चैंठोड़ा, आंणी झोळी में टुकड़ा अैंठोड़ा। धोती धड़चाळी संधियोड़ा धागा, तुबियां तुणियोड़ा बंधियोड़ा बागा।—ऊ. का.

उ०—२ सगपण हांमै संधियौ, बीखै सो बय बात। गैणोली 'खेतल' गयौ, बरबरणि विदित बरात।—वं. भा.

३ संयुक्त होना, मिलना।

उ०—बेठौ सूर नखत्र 'गजबंधी', सोम जितै सांमंद्रा संधी। सार कियावर उरे सकोयी, क्रत सम विक्रम भोज न कोयी।—रा. रू.

क्रि. स.—३ धारण करना, सांधना।

उ०—पतसाह रहै गह पूरियौ, सुर निराहरण संधियौ। खित गई ठौड़ ठौड़ां खबर, बळ राठौड़ां बंधियौ।—रा. रू.

४ ठानना, तय करना।

उ०—बोल नवाब सरस द्रढ बंधै, सुत पितु हूँत महाछळ संधै। यूं रिम सूरत प्रबंधै, नेम लियौ विधि जेम निमंधै।—रा. रू.

५ करना।

उ०—गुण कांमणि छंदौ वयण, नमि नमि संधै नेह। पी रौ कहियौ धण करै, धण रौ कांमणि ग्रेह।—रा. सा. सं.

६ देखो 'सांधणौ, सांधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ थां सहिजादै आखियौ, सहित विनै हित संध। मेरै काज निवाह की, लाज कमंधा कंध।—रा. रू.

उ०—२ जोधौ 'हरियंद' 'मांन' तण, साथै 'धाल' सकाज। संधी प्रीत नरिंद कज, गढ ची बंधी लाज।—रा. रू.

उ०—३ बंद इरादित बोल मैं, हैदुरकुळी नवाब। संधी प्रीत 'अजीत' सूं, बंधी नीत सिताब।—रा. रू.

उ०—४ तालि चरंती कुंजड़ी, सर संधियउ गंमार। कोइक आखर मनि बस्यउ, ऊडी पंख संमार।—ढो. मा.

उ०—५ विळकुळियौ वदन जेम वाकारचौ, संग्रहि धनुख पुणच सर संधि। क्रिसन रुकम आउध छेदण कजि, बेलखि अणी मूठि द्रिठि बंधि।—वेलि

संधणहार, हारौ (हारी), संधणियौ—वि०।

संधिओड़ौ, संधियोड़ौ, संध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संधीजणौ, संधीजबौ—कर्म वा०।

संदणौ, संदबौ—रू० भे०।

संधव, संधवौ-वि.—सम्बन्ध रखने वाला, सम्बन्धी।

सं. पु.—१ रिश्तेदार, भाई-बन्धु।

उ०—'पालह' पीरां पीर 'पाल' अण बंधवां बंधव। 'पाल' अमीरां मीर, 'पाल' पित मात संधव।—पा. प्र.

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

३ देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

४ देखो 'सिंधुराग' (रू. भे.)

उ०—डाढ धर सांगि घण गारड़ू बिखंतो, कहर काळौ असौ कोप कीयौ। अनड़ रण संधवा ऊपरै आवियौ, बाचबंध जेम हदमाल बीयौ।—भींवसिंघ हरदावत रौ गीत

संधांण, संधांणु, संधांन—सं. पु. [सं. संधानं] १ निशाना लगाने के लिए धनुष पर बाण चढाने की क्रिया, निशाना बैठाने की क्रिया।

उ०—१ पड़ै प्रांण संधांण बांणै बटक्कै, हुकै केइ हाथाल रोसैं हटक्कै। झला झाल गोलेहु नालै भटक्कै, तुटै तुंड मुंडां प्रचंडां तटक्कै। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ आव्यउ मलिक सरोवरि देखइ, हींदू करइ सनांन। फेरी वीटि ऊडव्या हाथी, कीधां बांण संधांण।—कां. दे. प्र.

उ०—३ सूयर देखी मेल्हिउं बांणु, अरजुन सिउं कुणु करइ संधांणु। तिणि खिणि मेल्हिउं वणचरि बांणु, ऊडिउं गयणि हूउं अप्रमांणु।—सालिभद्र सूरि

२ शरीर के जोड़, सन्धिस्थल।

उ०—१ ढोलउ चाल्यउ है सखी, वाज्या विरह निसांण। हाथै चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुवा संधांण।—ढो. मा.

उ०—२ हाड हाड संधांण हुआ जू जुआ जड़ालै। ढळतौ धड़ ऊपरा, सीस संकर उद्दाळै।—गु. रू. बं.

उ०—३ खळहळै रत्त परनाळ खाळ, डोलियां पड़ै धड़ जूह डाळ। करडकै कध संधांण घट्ट, फरडकै फीफरां आळ फट्ट।—गु. रू. बं.

उ०—४ तिणि कीधुं ति किम कहुँ ? संभळि, चतुर सुजांण। अबळा अंग देखाडिउ, संधि संधि संधांण।—मा. कां. प्र.

३ चिकित्सा, उपचार।

उ०—राखउ करहउ डांभस्यउ, रे मूरखां अजांण। नरवर कउ जांणै नहीं, करहा तणु संधांण।—ढो. मा.

४ अन्वेषण, खोज।

५ सीमा, हद।

६ संयोग, संमिश्रण।

७ संधि, मैत्री।

८ एकाग्रता।

९ समर्थन।

१० मदिरा आदि मादक वस्तु।

११ व्यंजन जिससे प्यास बढ़े।

१२ मुरब्बा आदि बनाने की विधि।

१३ गांठ, जोड़, सन्धिस्थल।

उ०—नैण नख नासिका दुरसि नीकां वणी, सीस संधांण सुधि बुधि सारी। रांम ही पढण कुं रीझ रसनां करी, निस दिन ध्यायलौ, पुरख नारी।—अनुभववांणी

संधांणौ-सं. पु.—देखो 'संदीणौ' (रू. भे.)

उ०—संधांणौ लाड़्ड़ा बांधिया ओ राज, किसमिस घाल बिदांम। —लो. गी.

संधा—सं. स्त्री. [सं.] १ प्रतिज्ञा, प्रण।

उ०—१ मूंछां कर देणहार नै मारण री कन्ह पूरव काळ में संधा लीधी तिकण नै इण रीति नम्रता सूं कुमार प्रथ्वीराज कन्ह रा लोयणां पट्टी लगाई।—वं. भा.

उ०—२ आयौ बूंदी भाखि इम, संधा लडण समाहि। करण बिजै दूदै कंवर, चुणिया भड अड चाहि।—वं. भा.

२ सीमा, हद, मर्यादा।

३ घनिष्ट सम्बन्ध।

४ दृढ़ता, मजबूती।

५ स्वीकार, अंगीकार। (डिं. को.)

६ देखो 'संधि' (रू. भे.)

उ०—मिळ थाट कमंधां दळ अनमंधां, बंधक संधा ऊबंधां। अति वेध विरुद्धां परस उरद्धां किलंब दगंधां अधुकदां।—रा. रू.

रू. भे.—संध।

संधाणौ, संधाबौ–क्रि. स. [सं. संधानम्] १ धनुष पर बाण चढाना, निशाना साधना।

२ जोड़ना, संयुक्त करना।

उ०—खाती कूप बचायौ अहि बण, तूटी लाव संधांणो। हाकड़िया री हेक चळू कर, पीगी आवड़ पांणी।—राघवदास भादौ

३ चिकित्सा करना, उपचार करना।

४ संयुक्त करना, मिलाना।

५ प्रतिज्ञा करना, प्रण करना।

६ करना, जोड़ना।

७ संधि करना।

८ धारण करना।

९ नमी लाना, आर्द्र करना।

संधाणहार, हारौ (हारी), संधारणियौ—वि०।

संधायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संधाईजणौ, संधाईजबौ—कर्म वा०।

संदाणौ, संदाबौ, संदावणौ, संदावबौ—रू० भे०।

संधाता–सं. पु. [सं.] भगवान् विष्णु।

संधायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ धनुष पर बांण चढाया हुआ, निशाना साधा हुआ. (२) जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ. (३) चिकित्सा किया हुआ, उपचार किया हुआ. (४) सयुक्त किया हुआ, मिलाया हुआ. (५) प्रतिज्ञा किया हुआ, प्रण किया हुआ. (६) किया हुआ, जोड़ा हुआ. (७) संधि किया हुआ. (८) धारण किया हुआ. (९) नमी लाया हुआ, आर्द्र किया हुआ।

(स्त्री. संधायोड़ी)

संधारण–वि. [सं.] १ धारण करने वाला।

उ०—सबै रूप चौ रूप, सबै संसार संधारण। सबै संत चौ स्याय, सबै दैतां संघारण।—ज. खि.

२ पार लगाने वाला।

३ सुधार करने वाला।

संधि–सं. स्त्री. [सं.] १ दो वस्तुओं का मेल, संयोग, जोड़, मिलाप।

२ मिलने का स्थान, जोड़।

३ गांठ, जोड़।

४ शारीरिक संधि-स्थल।

उ०—तिणि कींधुं ति किम कहूं ? संभलि, चतुर सुजांण ! अबला अंग देखाडिउ, संधि संधि संधांण।—मा. कां. प्र.

५ व्याकरणानुसार शब्दों का वह विकार जो पास-पास आने या मिलने मे उत्पन्न होता है।

६ मनुष्य की दो अवस्थाओं का मध्यकाल, वयः संधि।

उ०—सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस संधि सुहिणा सु वरि। हिव पळ-पळ चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि।—वेलि

७ दो राज्यों में परस्पर होने वाला अहद, करार।

८ वह स्थिति जब दो विरोधी पक्ष परस्पर विरोध भाव छोड़कर मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करते हैं, मेल, सुलह, समझौता।

उ०—कळ वीछुड़ि एक वसै गिरि कंदरि, मंदिर भाळक एक मरै। अहि त्याग झुरै धन एक गमाय रू, कै रिध आदरि संधि करै।—रा. रू.

९ दोस्ती, मित्रता।

१० दिन और रात दोनों के मिलने का समय, कालसंधि।

उ०—दिवस न रयणी संधि त्रय, तिथि न पर्वणि पंच। कांमिनि सिउं क्रीडा करइ, अहनिसि स्रेह प्रपंच।- मा. कां. प्र.

११ युगान्तकाल।

१२ कुशवंशीय राजा प्रसुश्रुत के पुत्र एवं अमर्षण के पिता, एक राजा।

१३ देखो 'सुसंधि' (रू. भे.)

उ०—जै सुत हुवौ सधि हत दुजण, मरखण संधि सुतण कुळ मंडण। मरखण सुत सिहसांन भूप मणि, भूप विस्वासा द्वै तै सुत भणि।

—सू. प्र.

१४ देखो 'सेंध' (रू. भे.)

रू. भे.—संध, संधा, संधी।

संधिक–सं. पु. [सं.] एक प्रकार का वातरोग विशेष जिससे शारीरिक सन्धियों में दर्द होता है। (वैद्यक)

संधिचोर, संधिचौर–सं. पु.—वह व्यक्ति जो सेंध लगाकर चोरी करता हो।

संधिणी–सं. स्त्री.—वह गाय या भैंस जिसका दूध न निकाला गया हो।

रू. भे.—संधीणी, सैंधणी।

संधिणौ—देखो 'संदीणौ' (रू. भे.)

संधिपत्र–सं. पु. [सं.] वह पत्र जिस पर सन्धि होने पर आपसी शर्तें लिखी जाती हैं।

संधिभग्न–सं. पु. [सं.] वह रोग जिसमें शारीरिक संधियों में दर्द होता है।

संधियास—देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—सिन्नांन प्रात मधि संधियास, उचरत मंत्र गायत्रि अभ्यास। आस्रम चत्र अरु चत्र त्रण उदार, क्रत करत दांन खोडस प्रकार।

—सू. प्र.

संधियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ जुड़ा हुआ, बंधा हुआ. (२) संयुक्त हुवा

हुआ, मिला हुआ. (३) किया हुआ. (४) धारण किया हुआ. (५) ठाना हुआ, तय किया हुआ.

६ देखो 'सांधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संधियोड़ी)

संधिरेहु, संधिरेहौ—सं. पु. [सं. संधिलेखक] संधि लेखक।

उ०—कथाकथक पीठ मरदक जिहा, संधिरेहा दूत पालक तिहा। एहवी सभाई बइठु राव, नरवर लक्ष सेवइ तस पाय।

—नळदवदंती रास

संधिला—सं. स्त्री. [सं.] १ शराब, मदिरा।

२ दीवार में लगाई गई सेंध।

३ नदी।

४ सुरंग।

संधिवात, संधिवाय—सं. पु. [सं. संधिवात] शरीर की गांठों अर्थात् जोड़ों में होने वाला एव वात विकार, गठिया-रोग।

उ०—जाफर नूं संधिवाय रोग थौ सौ हाल नहीं सकै थौ। बुरज रै झरोखै में बैठियौ थौ। उठै बारी सूं रण नै कोट री खाई दीसै थी।—नी. प्र.

संधिविग्रहक, संधिविग्रहिक, संधिविग्रही—सं. पु.—प्राचीन भारत का वह राजकीय अधिकारी जो दूसरे देशों के साथ युद्ध या संधि का निर्माण करता था।

उ०—१ ....कोस्टाकारिक पारिग्रहिक प्रतिहार चतुद्वरिक कास्टिक राजद्वारिक संधिविग्रहिक भांडपति स्रेस्टि महाजनिक दूत.......... ।—व. स.

उ०—२ ....प्रमांणीक सेनापति मंत्रि महामंत्रि रांणा स्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा देवगरणा नायक दंडनायक, अंगलेखक भांडागारिक संधिविग्रही.......... ।—व. स.

संधिविच्छेद—सं. स्त्री. [सं.] १ आपसी समझौते को तोड़ने की क्रिया।

२ व्याकरण में शब्द के संधि स्थान को तोड़ कर अलग-अलग करने की क्रिया।

संधिहार, संधिहारक—सं. स्त्री. [सं.] सेंध लगाने वाला।

संधी—देखो 'संधि' (रू. भे.)

उ०—खंड देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनबंधी। सारां मिळै तूझ सूं संधी, बळ दाखै किण सिर 'गजबंधी'।

—चतुरौ मोतीसर

संधीणी—देखो 'संधिणी' (रू. भे.)

संधु—देखो 'सिंध' (रू. भे.)

उ०—अम्हारा देसदेसाउर वरणवु..........जंबुद्वीप, भरतखेत्र, कुमारिकाखेत्र, कासी, कांती, ऊजेणी, अजोध्यां, अमया, मथुरां, कंनोज, मालवु, स्रीरंग, गाजणु, लक्षणवंती, दिली, नवकोटि, मारू आडि, संधु सवालक्ष,.......... ।—व. स.

संधुर, संधूर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे.)

संधेसरा—सं. पु.—एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—सेवंत्री संवेसरा, सूकडि सरकडि साय। सीमंतक सोहइ भला, सरव सदाफल खाय।—मा. कां. प्र.

संधोळियौ—देखो 'संधोळी' (अल्पा; रू. भे.)

संधोळी—सं. स्त्री. [सं. संधितूलिका] कपड़ा बुनने के ताने के धागों को मिलाने व पृथक करने वाला सरकडों की तूलियों का एक उपकरण।

अल्पा.—संधोळियौ।

संधोह—देखो 'संदोह' (रू. भे.)

संधौ—देखो 'सांधौ' (रू. भे.)

उ०—तद नापै कही, नव पोढी नूरिया जमालिया पूछीजसै। राज खुससी पण मांहै संधौ लागसै।—नापै सांखलै री वारता

संध्या—सं. स्त्री. [सं.] १ दिन व रात का संधिकाल।

२ सूर्यास्त का समय, सायंकाल, शाम। (अ. मा; डिं. को)

उ०—१ संकुड़ित समसमा संध्या समयै, रति वांछिति रुखमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पंख पंखियां, कमळ पत्र सूरिज किरणि।

—वेलि

उ०—२ अधुरां डसणां सूं उदै, विमळ हास दुतिवंत। सौ संध्या सूं चंद्रिका, फैली जांण फबंत। फैली जांण फबंत, चकोरां चाहरी। उड्डी रज घणसार, अनंत उछाहरी।—बां. दा.

उ०—३ नमौ सुक्र संध्या घणौ स्रेस्ट सम्मौ, नखित्रां तणौ पातिसा स्वाति नम्मौ। महा लक्षमी मात 'धापां' नमांमी, नमौ मात रौ तात सामुद्रनांमी।—मे म.

उ०—४ समतसर बिक्रम छत्तीस कम बै सहस, मास आसाढ तिथि सुकल नौमी। बार सुक्कर नखत स्वांति संध्या बखत, भवांनी ओतरया खुड्द भोमी।—मे. म.

पर्याय०—आसुरी, उत्तसूर, तमचरपाल, निसामुख, पित्रीप्रसू, प्रदोख।

३ प्रातः का समय।

४ तड़का, भोर।

५ सन्ध्याकालीन मेघ जिसमें लाल आभा होती है।

मुहा.—संध्या फूलणी=संध्या के समय लालिमायुक्त बादल आना।

५ मध्यान्ह और सांय सन्ध्योपासन कृत्य।

७ एक नदी का नाम।

८ एक वर्षीय बालिका।

९ सन्ध्या स्वरूपिणी देवी।

१० ब्रह्मा की मानस कन्या अरून्धति का पूर्व जन्म।

११ मेल, सन्धि, जोड़।

१२ युग सन्धि।

१३ ब्राह्मण की पत्नी, ब्राह्मणी।

१४ सीमा, हद।

१५ ध्यान, विचार।

२६ कौलकरार, इकरार।

१७ लाल रक्त। * (डिं. को.)

१८ देखो 'संध्योपासन, संध्योपासना।

रू. भे.—संज, संज्या, संझ, सझया, संझा, संझि, संझ्या, संधियास, सांज, सांजड़ली, सांझ।

संध्यापत, संध्यापति, संध्यापती–सं. पु. [सं. संध्यापति] शिव, महादेव। (अ. मा; नां. मा.)

संध्याव्रत–सं. पु.—१ शिव, महादेव। (अ. मा.)

२ एक देवजाति विशेष। (अ. मा.)

संध्याराग–सं. पु. [सं.] १ संगीत में श्याम कल्याण राग।

२ संध्या के समय नभोमण्डल में दिखाई देने वाली लालिमा।

संध्योपासन, संध्योपासना–सं. स्त्री. यौ. [स. सन्ध्या+उपासना] भारतीय आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना जो प्रातः, मध्यान्ह व सायं-काल में की जाती है, अतः इसे त्रिकालसन्ध्या भी कहते हैं।

उ०—**संध्योपासन** तजि बांग साज, निस दिवस वुजू रोजा निवाज। सांमरत्थ सिह हम नहि सगाळ, गौ मांस नांम पै देत गाळि।

—ऊ. का.

संध्रीच–सं. पु. [सं. सध्र्यञ्च, सध्र्यञ्च] १ सखा, मित्र। (अ. मा.)

२ पति, खाविंद।

संनबंध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—झूठै झांमरझोळ मैं, ऊळझि रहै नर अंध। साचो सबद न मांनियौ, बांधि विखै **संनबंध**।—अनुभववांणी

संनबंधी—देखो 'संबंधी' (रू. भे.)

संनाह, संनाहु—देखो 'सन्नाह' (रू. भे.)

उ०—राइ **सनाहु** समोपीयउ, भीमिहिं सुं भिडेउ। गदापहारि हणीय जांघ, मनि सालु सु फेडिउ।—सालिभद्र सूरि

संनिचय–सं. पु. [सं.] संग्रह।

संनिधांन–क्रि. वि.—पास, निकट, नजदीक। (डिं. को.)

संनिपात—देखो 'सन्निपात' (रू. भे.)

उ०—अंग **संनिपात** ज्यंहीं हुय आळस, आठूं पहर रहै घर अंदर। विरहा अगनि जळै चंदवदनी, हुरमां कदै न आवै हाजर।—सू. प्र

संनिवेस–सं. पु. [सं. सन्निवेशः] निवास स्थान, रहने की जगह। (सभा)

उ०—.........८४ लक्ष रथ, १४ सहस्र जल पथ, २१ सहस्र **संनिवेस**, २८ सहस्स देस, ५६ अंतरद्वीप.........इति चक्रवरति रितु।—व. स.

संनेसड़ौ—देखो 'संदेस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—रतन करूं नेवछावरी, लै आरती साजूं हो। पिया का दिया **संनेसड़ा**, ताहि बहोत निवाजूं हो।—मीरां

संनेसौ—देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—ध्यांन ध्यांन सारा करि देख्या, सतगुर दीया **संनेसा**। एको रांम कह्यां मुख सेती, अंतर मेट अनेसा।—अनुभववांणी

संनेह—देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—१ व्रिह की मारी विरहनी, देह सुं भई वदेह। जनहरीया किन स करै, सांई विना **संनेह**।—अनुभववांणी

उ०—२ विरह भालि सुं मरि गई, हिवड़ै रहो खटक। हरीया रांम सनेह कुं, जीवड़ौ रह्यौ अटक।—अनुभववांणी

उ०—३ तीन लोक फिर देखिया, घर घर ठांणौ ठांम। हरीया रांम **संनेह** विन, किधू नही विसरांम।—अनुभववांणी

संनेही—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—१ तूं सरवर की माछळी, कौंण पिता कुण माय। अलंप **संनेही** कारणै, हाटो हाट बिकाय।—अनुभववांणी

उ०—२ हरिया अैसा को मिळै, रांम **सनेही** संत। अपना औगन दूरि करि, औरन का मेटत।—अनुभववांणी

उ०—३ मात पिता सब जूंनन मांही, आयै उदर बसेरा। सकल कुटंब सुत बारि **संनेही**, नदियां नाव मलेरा।—अनुभववांणी

उ०—४ सैणां सेती रोसणौ, असैंणा सूं गुझ। सांम **संनेही** ना किया, औरां रह्या अळूझ।—अनुभववांणी

संन्नांन—देखो 'स्नांन' (रू. भे.)

उ०—सिरी गंग रौ नीर **संन्नांन** सारू, दसत्तूर सिंदूर कप्पूर दारू। हुवै होम आसावरी धूप हूंमै, घणां सांघणां दीव सामीप घूंमै।

—मे. म.

संन्नाह—देखो 'सन्नाह' (रू. भे.)

संन्नाही–सं. पु.—वीर योद्धा।

उ०—त्रिहूं पासइ चांभर ढळइ, छत्र धरि अेकवीस **संन्नाही** सेवा करइ, राजकुळी छत्रीस।—मा. कां. प्र.

संन्यास–सं. पु. [सं.] १ भारतीय आर्य धर्म में आयु के अनुसार विभाजित चार आश्रमों में से चौथा आश्रम।

वि. वि.—इस आश्रम में मनुष्य गृहस्थाश्रम का पूर्ण त्याग कर देता है और संसार से विरक्त हो कर सभी कार्य निष्काम भाव से करता है।

उ०—रात रा सेठ मतै ई बात छेड़ी। कैवण लागा—**अबै संन्यास** लेलूं तौ सावळ है। फगत थांरो ध्यांन आयां मन डिगमगै।

—फुलवाड़ी

२ वैद्यक के अनुसार मूर्च्छा रोग का एक भेद जो बहुत भयानक होता है।

रू. भे.—सनीयास, सन्यास, सिनियास, सिन्यास।

संन्यासी–सं. पु. [सं.] १ संन्यास आश्रम का पालन करने वाला, त्यागी, वैरागी।

उ०—१ सेवक रिख मुनि भगत **संन्यासी**, अरज करै हुय दीन उदासी। त्रिभवणनाथ जगत निसारण, धरम वेद कीजै सुधारण।

—रा. रू.

२ फकीर संन्यासी ।

उ०—१ जगत सूत मागध बंदीजण, आसावंत किया ऋप ऊरण । जोगी जगत संन्यासी जेता, अनग्रत अमित लहै पुर एता ।

—रा. रू.

उ०—२ संन्यासिए जोगिए तपसि तापसिए, कांइ इवड़ा हठ निग्रह किया । प्रांणी भवसागर वेलि पढंता, थिया पार तरि पारि थिया ।—वेलि

२ साधुओं का एक पंथ जिसके दंडी और अवधूत दो भेद हैं।

वि. वि.—कहा जाता है कि संन्यास को मत या पंथ रूप दत्तात्रेय ने उस समय दिया जब कि गोरखनाथ ने योगियों का पंथ चलाया। गोरखनाथ को शिव का और दत्तात्रेय को नारायण का अवतार मानते हैं। दत्तात्रेय के अनुयायी दंडी और गोरखनाथ के अनुयायी अवधूत कहलाते हैं। दंडी सिर मुंडाते हैं और हाथ में दंड धारण करते हैं तथा अवधूत सिर पर जटा रखते हैं और हठ योग की क्रियाएं करते हैं। शास्त्रोक्त संन्यास के दंडी संन्यासी अधिक नजदीक पड़ते हैं।

रू. भे.—सन्यासी, सनीयासी, सिनियासी, सिन्यासी ।

संप-सं. पु.—१ एकता, मेल, संगठन।

उ०—१ बडभागी दीना विविद, संपत हित सनमांन। संप राखणौ सीखियौ, थिर चित राजसथांन ।—ऊ. का.

उ०—२ लोगां री राड़ मैं बांणिया री लिछमी वास करै । लोग यूं संप राखण लाग जावै तो बांणियां री संपत कीकर वधै ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ राखै संप जिका धन राखै, 'बांकौ' दाखै सांच विध। न्याय नीमड़ै जित्तै नीमड़ै, राज चढै ज्यां तणी रिध।—बां. दा.

मुहा.—संप राखणौ=एकता रखना ।

२ स्नेह, प्रेम ।

[स. सर्प] ३ शेषनाग ।

उ०—१ हिलै संप हैथाट, चलै बांना बहरंगी, इळ जळनिध उल्लटै जांण बडवानळ संगी । गिर छीजै खुरताळ पहवि थळ सिखर पलट्टै, पड़ै अपंथै पथ, त्रणह तुट्टै सर खुट्टै ।—रा. रू.

उ०—२ हलीलां हिलै संप फौजां हसत्ती, प्रथी संगि लागा केई देसपत्ती ।—वचनिका

४ देखो 'संपा' (रू. भे.)

उ०—सिणगार सिरौमण साकुर रौ, तस बोड़िय रूप खुलै तुररौ। करती नभ सी किर संप किया, वळती फुरणां व्रत वाळकियां।

—पा. प्र.

५ देखो 'साप' (रू भे.)

उ०—आकां दतुण न कीजियै, संपां न खाजै मांस । जला जेथ न जायजै, जेठां जंद विनांस ।—जलाल बूबनां री बात

संपड़-वि.—१ संभव ।

(विलो. 'असंपड़')

सं. पु.—२ कोई प्राप्य वस्तु ।

२ देखो 'संपाड़ौ' (रू. भे.)

संपड़णौ, संपड़बौ-क्रि. अ. [सं. सम्प्रापणम्] १ प्राप्त होना, मिलना ।

उ०—पग पगां संपड़ै आंख संपड़ै क अंधै। भूखै भख संपड़ै जेम लोभी द्रब लद्धै।—ज. खि.

२ सम्भव होना ।

उ०—सेवग सधार असरण सरण, पार न कोई पुन्न रौ। संसार असंपड़ संपड़ै, 'जगा' नांम जगदीस रौ।—ज. खि.

[सं. समाप्लवनम् या सम्प्लवनम्] ३ स्नान करना, नहाना ।

४ सम्भव करना ।

संपड़णहार, हारौ (हारी), संपड़णियौ—वि० ।

संपड़िग्रोड़ौ, संपड़ियोड़ौ, संपड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संपड़ीजणौ, संपड़ीजबौ—भाव वा०; कर्म वा० ।

संपडणौ, संपडबौ, सांपड़णौ, सांपड़बौ—रू० भे० ।

संपड़ाणौ, संपड़ाबौ-क्रि. स.—स्नान कराना, नहलाना ।

उ०—१ सहेलियां भेळी कर भेख उतरायौ, संपड़ायौ, बागौ पहरायौ ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ मनजांणिया हथियार-पोसाख लीजै छै। फेर उजळै पांणी नहाइजै छै। घोड़ा दही कटोळां सूं संपाड़ाइजै छै।

—रा. सां. सं.

संपड़ाणहार, हारौ (हारी), संपड़ाणियौ—वि० ।

संपड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

संपड़ाईजणौ, संपड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

संपड़ावणौ, संपड़ावबौ, संपडाणौ, संपडाबौ, संपडावणौ, संपडावबौ, संपलाणौ, संपलाबौ, सपड़ाणौ, सपड़ाबौ, सपड़ावणौ, सपड़ावबौ, सांपड़ाणौ, सांपड़ाबौ, सांपड़ावणौ, सांपड़ावबौ—रू० भे० ।

संपड़ायोड़ौ-भू. का. कृ.—स्नान कराया हुआ, नहलाया हुआ ।

(स्त्री. संपड़ायोड़ी)

संपड़ावणौ, संपड़ावबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चोर चुगल वाचाळ, ज्यांरी मांनीजै नहीं। संपड़ावै घसकाळ, रीतो नाड्यां राजिया।—किरपारांम

उ०—खंख मैं भखभूर व्हिया दाळदनै डावड़ियां संपड़ावण लागी तद वौ वांनै पालतां कह्यौ—म्हैं आसंग बायरौ अर मांदौ कोनीं, हाथां सींचनै सिनांन करूंला। डील सूं धुड़ियां बिनां म्हनै रंजत नीं व्है।—फुलवाड़ी

संपड़ावणहार, हारौ (हारी), संपड़ावणियौ—वि० ।

संपड़ाविग्रोड़ौ, संपड़ावियोड़ौ, संपड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संपड़ावीजणौ, संपड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

संपड़ावियोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपड़ावियोड़ी)

संपड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ प्राप्त हुवा हुआ. (२) सम्भव हुवा हुआ. (३) स्नान किया हुआ. (४) सम्भव किया हुआ।

(स्त्री. संपड़ियोड़ी)

संपचूड–सं. पु.—सर्प के फन के आकार का एक अस्त्र विशेष।

उ०—अरजुन संगति भूझतां, **संपचूड** सांनिद्ध। मागीउ आवी तुम्ह पय, पंचइ विद्या सिद्ध।—सालिभद्र सूरि

संपजणौ, संपजबौ–क्रि. प्र. [सं. संपदनम्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना।

उ०—१ ज्यांरी रिच्छया देवता, सेवा पीर प्रधांन। त्यां अणचीती **संपजै**, मुसकळ मैं आसांन।—रा. रू.

उ०—२ विण स्वभाव नवि **संपजै** जी, किमह पदारथ कोय। अंब न लागै नींब कै जी, बाग बसंतै जोय।—वृ. स्ता

उ०—३ समरण वरद **संपजै**, सबद तैसा वाजंतां। मुख विरद मंगिणां, इसा जै सद्ध कवित्तां।—रा. रू.

उ०—४ बहु धंधाळु अख धरि, कासूं करइ विदेस। संपत सघळी **संपजै**, अै दिन कदी लेहस।—ढो. मा.

२ होना।

उ०—१ चिंतामणि पारस पोरसौ, सुधा सरोवर कांमगा। **संपजै** तांम सुत संपनै, ग्रह सुर धांम विरांमगा।—रा. रू.

उ०—२ सुसराजी सो वार, सयण घणांई **संपजै**। मिळै न दूजी वार, नाग सरीखौ नाहलौ।—नागजी नागवंती री बात

३ संचित होना, एकत्रित होना।

उ०—जो लाखां धन **संपजै**, अधप तोई न धापि। हरीया टुक संतोस बिन, मिमता किंनी न मापि।—अनुभववांणी

४ प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ केहरिया 'करनेस' का, तौ हाथां बळि जाव। जिन्हां खेत न **संपजै** तिन्हां दीन्हां गांव।—कुंभौ सांदू

उ०—२ नमणी खमणी, बहुगुणी, सगुणी अनइ सियाइ। जे धण एही **संपजइ**, तउ किम ठल्लउ जाइ। ढो. मा

संपजणहार, हारौ (हारी), संपजणियौ—वि०।

संपजिओड़ौ, संपजियोड़ौ, संपज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपजीजणौ, संपजीजबौ—भाव वा०।

सांपजणौ, सांपजबौ रू० भे०।

संपजाड़णौ, संपजाड़बौ—देखो 'संपजाणौ, संपजाबौ' (रू. भे.)

संपजाड़णहार, हारौ (हारी), संपजाड़णियौ—वि०।

संपजाड़िओड़ौ, संपजाड़ियोड़ौ, संपजाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपजाड़ीजणौ, संपजाड़ीजबौ—भाव वा०।

संपजाणौ संपजाबौ–प्रे. रू.—१ उत्पन्न करना, कराना, पैदा करना, कराना।

२ संचित करना/कराना, एकत्रित करना/कराना।

३ प्राप्त करना/कराना।

४ करना/कराना।

संपजाणहार, हारौ (हारी), संपजाणियौ—वि०।

संपजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संपजाईजणौ, संपजाईजबौ—भाव वा०।

संपजाड़णौ, संपजाड़बौ, संपजावणौ, संपजावबौ—रू० भे०।

संपजायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ/कराया हुआ, पैदा किया हुआ/करवाया हुआ. (२) संचित किया या कराया हुआ। (३) प्राप्त किया हुआ या करवाया हुआ, मिला या मिलाया हुआ। (४) किया या कराया हुआ।

(स्त्री. संपजायोड़ी)

संपजावणौ, संपजावबौ देखो 'संपजाणौ, संपजाबौ' (रू. भे.)

संपजावणहार, हारौ (हारी), संपजावणियौ—वि०।

संपजाविओड़ौ, संपजावियोड़ौ, संपजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपजावीजणौ, संपजावीजबौ—भाव वा०।

संपजावियोड़ौ—देखो 'संपजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपजावियोड़ी)

संपजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ. (२) प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ. (३) संचित हुवा हुआ, एकत्रित हुवा हुआ. (४) हुवा हुआ।

(स्त्री. संपजियोड़ी)

संपट–वि.—१ समाप्त, लुप्त।

उ०—**संपट** हुयगौ थळ जळ साई, लंपट हुयगा लोग लुगाई। कंपत लीली डाळ भुकाई, चंपत हुयगी सब चतुराई।—ऊ. का.

२ मूर्ख, अज्ञानी।

सं. पु [सं. संपुटक] १ अवसर, मौका।

२ संयोग, मिलन।

उ०—झिलमाझिल आधी रात। झीणी ठारी। सून्याड़ पंथ। तीजौ कोई आदमी पाखती कोनीं। अैड़ी निरजण खुली ठौड़ मैं असैंधी लुगाई रै अणचींत्या संपट रौ नसौ कुजरबौ घणौ व्है।—फुलवाड़ी

३ देखो 'संपुट' (रू. भे.)

उ०—१ त्यारू पंचक्षोहणी परवरि नइ, सुहड़ निज भड़ टाळि। कर करीय करपट धरीय **संपट**, कठि टोडरमाळ।—रूकमणि मंगळ

उ०—२ पड़िदा मैं छिपियौ रहै, सौ सांई नहिं थाय। हरिया हरि तिह लोक मैं, **संपट** मांहि न माय।—अनुभववांणी

संपटपाट–सं. पु.—१ सीधा एवं खुला मैदान।

२ बरबादी, नाश, ध्वंस।

उ०—सबळा **संपटपाट**, करता नह राखै कसर। निबळां एक निराट रांम तणौ बळ राजिया।—किरपारांम

संपडणौ, संपडबौ—देखो 'संपड़णौ, संपड़बौ' (रू. भे.)

उ०—तिथि वार नखत्र उत्तम करण, पण महूरत अप चडै।

किल्यांण हुवै सिध कांमना, तांमह अस्सड संपडै ।—गु. रू. बं.

संपडणहार, हारौ (हारी), संपडणियौ—वि० ।

संपडिओड़ौ, संपडियोड़ौ, संपड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संपडीजणौ, **संपडीजबौ**—भाव वा० ।

संपडाणौ, संपडाबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)

संपडाणहार, हारौ (हारी), संपडाणियौ – वि० ।

संपाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संपडाईजणौ, संपडाईजबौ—कर्म वा० ।

संपडायोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपडायोड़ी)

संपडावणौ, संपडावबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपडाबौ' (रू. भे.)

संपडावणहार, हारौ (हारी), सपडावणियौ – वि० ।

संपडाविओड़ौ, संपडावियोड़ौ, संपडाव्योड़ौ भू० का० कृ० ।

संपडावीजणौ संपडावीजबौ –कर्म वा० ।

संपडावियोड़ौ—देखो 'सपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपडावियोड़ी)

संपडियोड़ौ—देखो 'संपड़ियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. संपडियोड़ी)

संपणौ, संपबौ-क्रि, स.—१ एकता रखना या करना, मेल रखना या करना ।

२ प्रेम करना, प्यार करना ।

३ देखो 'सूंपणौ, सूंपबौ' (रू. भे.)

उ०—वणवीर आंणि अर मुंहतै अचळै नूं अर नाई लखमण लाहोरी नूं संपियौ ।—द. वि.

संपणहार, हारौ (हारी), संपणियौ—वि० ।

संपिओड़ौ, संपियोड़ौ, संप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संपीजणौ, संपीजबौ—कर्म वा० ।

संपत-सं. स्त्री. [सं. संपद्] १ धन, दौलत ।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ मियां-बीबी दोनूं ई मस्त । अपांरै लाखां री संपत है, पण म्हनैं तौ वौ आं बिचै घणौ सुखी लागै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ लोगां री राड़ में बांणिया री लिछमी वास करै । लोग यूं संप राखण लाग जावै तौ बांणियां री संपत कीकर बधै ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ अर उठीनै मगरै ढळतां ई असवार री मन विटळियौ सोच्यौ—कैड़ो अबूझपणौ करियो । हाथै आयोड़ी संपत नै ठुकराय दी ।—फुलवाड़ी

उ०—४ बोहरां रौ खेरौ मिट्यौ इज नीं हो । तद कीकर ऊपरलौ पांनौ आंवतौ । संपत रा नांव माथै इण राजपूत रै फगत बीस-पचीसे'क गायां, साठे'क बीघा करसणी जमीं अर सौ-अेक बीघा कांकरियौ मगरौ हाथै लागौ ।—फुलवाड़ी

२ संपन्नता, समृद्धि, खुशहाली ।

उ०—१ ज्यारां पासै धन घणौ, बीजळ खिवै अकास । हरियाळी रुत तौ भली, घर संपत पिव पास ।—अग्यात

उ०—२ कूकर लाय जळै नहीं, जुड़ै न कायर जंग । विदर न ठहरै विपत में, संपत में हिज संग ।—बां. दा.

३ ऐक्यता, मेल ।

उ०—आप पधारौ तौ आपरी इंछा, पण इण घर में सदा संपत बणी रेवै, म्हनै औ वरदांन दिरावौ । किणी भांत घरवाळां री भेळप नीं टूटै ।—फुलवाड़ी

मुहा.—संपत में लिछमी रौ बासौ=ऐक्यता में ही स्मृद्धि, वैभव का निवास होता है ।

४ प्रेम, स्नेह ।

उ०–पहली राज पधारजै, हूँ भाळूं कर हैत । वेगाह वळजो वलहा, संपत लछी सहेत ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

५ वैभव, ऐश्वर्य ।

उ०—१ वधै राज सुख विहद, वधै हित संपत वधायक । अवर वधै दिन इतौ, वधै पल पल वरदायक ।—सू. प्र.

उ०—२ बरखा रित सुख बोळवी, आवी सरद अनोप । नवकोटी नेपत निपट, ओपत संपत ओप ।—रा. रू.

६ लाभ, फायदा ।

संपतणौ, संपतबौ-क्रि. अ. [संपदनम्] १ पहुँचना ।

२ उत्पन्न होना ।

३ सम्पन्न होना, सफलीभूत होना ।

संपतणहार, हारौ (हारी), संपतणियौ—वि० ।

संपतिओड़ौ सपतियोड़ौ, संपत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संपतीजणौ, संपतीजबौ—भाव वा० ।

संपत्तणौ, संपत्तबौ—रू० भे० ।

संपति, संपती-सं. स्त्री. [सं. संपत्ति] १ धन, दौलत ।

(अ. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा;)

उ०—१ अदतारां घर आय, जे क्रोड़ां संपति जुड़ै । मौज देण मन मांय, रती न सूझै 'राजिया' ।—किरपारांम

उ०—२ आवैस धकै अमास, उडि जाय गढ असि हास । लूटंत संपति लाख, सरदांण ह्वै घण साख ।—सू. प्र.

उ०—३ घर घरणी पहती घरबारि, चिंता पडिउ सूयल थाइ । ईंधण तउणि तणीअ संपति, कारणि भमइ दीह नइ राति ।

—वस्तिग

२ वैभव, ऐश्वर्य ।

उ०—१ वड विना क्रांमति न कौ वीरति, पिंड हुई मत जाय संपति । हमै इण भति धरौ हिम्मति, पुळौ पर खिति रहौ नरपति ।—रा. रू.

उ०—२ आसोज पूरण जगत आसा भोम अन अति भार ए। सोभंतु जंतु अनंत सुखमय सुखद **संपति** सार ए।—रा. रू.

३ कोई ऐसी चीज जो महत्त्व की हो और स्वामी के लिए लाभदायक हो।

४ खुशहाली, सम्पन्नता।

उ०—१ अस्ट करम मल पंक पयोधर, सेवक सुख **संपति** करणं। सुर नर किन्नर कोटि निसेवित, समयसुंदर प्रणमति चरणं। —स. कु.

उ०—२ राड़द्रह महावीर विराजै, भय सगला दूरें भांजे रे। सहु विधि सुख **संपति** साजै, नित सेवक काज निवाजै रे। —ध. व. ग्रं.

उ०—३ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख **संपति**, व्यापत नांहि विपत्ती।—मे. म.

५ लक्ष्मी।

उ०—साफल्य स्वप्न **संपति** समान, पांनी मंथन में घ्रत प्रमांन। —ऊ. का.

६ लाभ, सिद्धि।

७ प्रेम, स्नेह।

७ ऐक्यता।

रू. भे.—संपत्त, संपत्ति, संपत्ती।

संपतियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ पहुँचा हुआ. २ उत्पन्न हुवा हुआ. ३ सम्पन्न हुवा हुआ, सफलीभूत हुवा हुआ।

(स्त्री. संपतियोड़ी)

संपत्त–वि. [सं. संप्राप्त] १ समस्त कर्मों को क्षय करके जो सिद्धि को प्राप्त हुआ हो।

२ देखो 'संपति' (रू. भे.)

संपत्तणौ, संपत्तबौ—देखो 'संपतणौ, संपतबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कोड़ प्रवाड़ा करै, सरग 'अखई' **संपत्तौ**। रायसिंघ तिण पाट, अरक बंदै ऊगंतो।—मालो आसियौ

उ०—२ खंभनयरि **संपत्तु** तत्थ, गुरु वयणु सरेई। गच्छ सिक्ख नियपट्ट, सिक्ख आयरि याह देई।—ग्यांनकलस

उ०—३ किसन तणौ साम्हौ क्रमै, चढतौ बांकिम वींद। नींदवतै नवतै नरां, अणभंग रहै अनींद। अभंग अणनींद भुजि खाग आवाहतौ, पिसण धड़ पाड़तौ पूजवै **संपत्तौ**।—हा. झा.

संपत्तणहार, हारौ (हारी), संपत्तणियौ—वि०।

संपत्तिओड़ौ, संपत्तियोड़ौ, संपत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपत्तीजणौ, संपत्तीजबौ—भाव वा०।

संपत्ति, संपत्ती—देखो 'संपति' (रू. भे.)

उ०—१ इगुणहत्तरि सागर कोडाकोडि, मोहनी करम लाख नी जोडि। बोधिलाभ नी हुइ **संपत्ति**, स्रावक तणइ कुलि तउ उतपत्ति। —वस्तिग

उ०—२ अखिल जहांन सरन तकि आवत, चरन कमळ रजसीस चढावत। पावत रिद्धि सिद्धि **संपत्ती**, स्रीकरनी जग जयति सकत्ती।—मे. म.

संपद,संपदा–सं. स्त्री. [सं. संपद्] १ सुखद। (डिं. को.)

२ देखो 'संपत'।

उ०—१ उण दिनां मारग में चोर लुटेरां री बडो उत्पात हो। धवळै दिन धाड़ा पड़ता अर हजारां री **संपदा** खोसीज जावती। —रातवासौ

उ०—२ बहुली **संपद** हूंती छांडि नइ रे, कहौ किम कीजइ वीर। स्त्रीधन रै, भोला भोगवी रे, पछइ व्रत लेज्यौ तुमे धीर। —स. कु.

उ०—३ रांम नांम नहीं जांणीयौ, कीया और कळाप। हरीया जे धरि **संपदा**, होसी सांडा साप।—अनुभववांणी

उ०—४ लेर बीड़ौ लीधी जिका पूंनारी **संपदा** लूट, फरकाबाद नै कीधी खाख साख फेर। तकां लेवीयै देर हलौ न कीधी वजाड़ तासा, 'उदांरा' 'पता'रौ कोट दूसरौ आसेर।—बां. दा.

संपनणौ, संपनबौ–क्रि. अ. [सं. सम्पन्नः] १ जन्म लेना, उत्पन्न होना।

ऊ०—१ चिंतामणि पारस पौर सौ, सुधा सरोवर कांमगा। संपजै तांम सुत **संपनै**, ग्रह सुर धांम विरामगा।—रा. रू.

उ०—२ मन तेण थियौ मारीच मुनि, उणथी कासिप ऊपनौ। धर नूर प्रकासी प्रीत धर, सूर तेण घर **संपनौ**।—रा. रू.

२ प्राप्त होना।

उ०–वंस उपरि हो चढ्यां केवल त्यांन कि, इला पुत्र नइ ऊपनउ। संसार नउ हो नाटक निरखंत कि, संवेग सहु नइ **संपनउ**। —स. कु.

३ पूर्ण होना, सिद्ध होना।

४ समृद्ध होना, समृद्धिवान होना।

५ होना।

६ युक्त होना।

संपनणहार, हारौ (हारी), संपनणियौ—वि०।

सपनणिओड़ौ, संपनणियोड़ौ, संपन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपनणीजणौ, संपनणीजबौ–भाव वा०, कर्म वा०।

संपन्नणौ, संपन्नबौ—रू० भे०।

संपनियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ जन्म लिया हुआ. २ प्राप्त हुवा हुआ, पाया हुआ. ३ पूर्ण हुवा हुआ. ४ युक्त हुवा हुआ. ५ समृद्ध हुवा हुआ, समृद्धिवान हुवा हुआ. ६ हुवा हुआ।

(स्त्री. संपनियोड़ी)

संपन्न, संपन्नउ–वि.—समृद्धिशाली, समृद्ध।

२ भरापूरा, परिपूर्ण।

३ पूर्ण, पूरा।

४ युक्त, सहित।

उ०—पहिउलउ बेटउ करमदोसि, बालप्पणि विवनउ। विचित्र-विरधु बीजउ कुमारु, बहुगुण संपन्नउ।—सालिभद्र सूरि

५ पाया हुआ, प्राप्त।

६ हुवा हुआ।

संपन्नणो, संपन्नबो—देखो 'संपनणो, संपनबो' (रू. भे.)

संपन्नणहार, हारो (हारी), संपन्नणियो—वि०।

संपन्निओड़ो, संपन्नियोड़ो, संपन्न्योड़ो—भू० का० कृ०।

संपन्नीजणो, संपन्नीजबो—भाव वा०।

संपन्नियोड़ो—देखो 'संपनियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संपन्नियोड़ी)

संपन्नो-वि.—१ संपन्न होने वाला।

२ उत्पन्न होने वाला।

संपय-क्रि. वि. [सं. संप्रत्ति] अभी, इस समय।

उ०—जिणकुसल सूरि जिणपउम गुरु, जिणलद्धी जिणचंद गुरु। जिणउदय पट्टि जिणराजवर, संपय सिरि जिणभद्द गुरु।

—अभययतिक यति

संपरदांन—देखो 'संप्रदांन' (रू. भे.)

संपरदाय—देखो 'सप्रदाय' (रू. भे.)

संपराय-सं. पु. [सं. संपराय:] १ लड़ाई, युद्ध। (डिं. को.)

उ०—सरिता भो वह संपराय जळ सोंनित धारें। बूंदी जंपुर तट बिलंद घट विकट किनारें। फुल्लि कुसेसय हृदय फांक छबि अतुळ अपारें। उतपल गन लोचन अनूप हुव बिकच हजारें।—वं. भा.

२ संकट, आपत्ति।

३ भावी दशा।

४ पुत्र।

संपरायक-सं. पु. [सं. संपरायकं] १ मुठभेड़, २ लड़ाई, संग्राम, जंग। (अ. मा; ह. नां. मा.)

संपहुतणो, संपहुतबो—देखो 'पहुँचणो, पहुँचबो' (रू. भे.)

उ०—संपहुता सज्जण मिल्या, हूंता मुझ हीयाह। आजूणइं दिन ऊपरइ, बीजा वळि कियाह।—ढो. मा.

संपहुतणहार, हारो (हारी), संपहुतणियो—वि०।

संपहुतिओड़ो, संपहुतियोड़ो, संपहुत्योड़ो—भू० का० कृ०।

संपहुतीजणो, संपहुतीजबो—भाव वा०।

संपहुतियोड़ो—देखो 'पहुँचियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संपहुतियोड़ी)

संपलाणो, सपलाबो—देखो 'संपड़ाणो, संपड़ाबो' (रू. भे.)

उ०—कळां जळां संपलाय, तेल आंमळां चढावा। कळां जड़ै काटियां, कळां बांधिया कलावा।—सू. प्र.

संपलाणहार, हारो (हारी), संपलाणियो—वि०।

संपलायोड़ो—भू० का० कृ०।

संपलाईजणो, संपलाईजबो—कर्म वा०।

संपळायोड़ो—देखो 'संपड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संपलायोड़ी)

संपसुज-सं. पु. [सं. संपसुज] युद्ध। (अ. मा)

संपा-सं. स्त्री [सं.] बिजली, विद्युत। (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ जठै स्यांम धाराधर री लहर लेती संपा रा सळावां री सोभा चढण लागी।—वं. भा.

उ०—२ ऊधरी जांनि संपा जळद, चुवत स्रोन रंग चढ्ढियो। मांनहु कुमरि जावक सहित, कर बातायन कढ्ढियौ।—ला. रा.

रू. भे.—संप, सिंपा।

संपाक-सं. पु. [सं. शम्पाक] भीष्म का गुरुतुल्य स्नेही एक हस्तिनापुर निवासी जीवनमुक्त त्यागी ब्राह्मण।

संपाड़णो, संपाड़बो-क्रि. स.—स्नान कराना।

संपाड़णहार, हारो (हारी), संपाड़णियो—वि०।

संपाड़िओड़ो, संपाड़ियोड़ो, संपाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

संपाड़ीजणो, संपाड़ीजबो—कर्म वा०।

संपाडणो, संपाडबो—रू० भे०।

संपाड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—स्नान कराया हुआ।

(स्त्री. संपाड़ियोड़ी)

संपाड़ो-सं. पु. [सं. सम्प्लावतम्] १ स्नान।

उ०—१ बोली : खबरदार, म्हारै हाथ लगायौ तो, पाछो संपाड़ो करणो पड़ैला। सिवजी रा मिंदर में अधराती बोलवां बोल्योड़ी। मौड़ो व्है, म्हनै जावण दौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ आपनै प्रथीराजजी सूं रांमरांम कहायौ। हूं संपाड़ो करूं छूं, हुंई दरबार में आवूं छूं।—द. दा.

उ०—३ आप संपाड़ै बिराजिया, भीजै गढ री भींत। सोढां हुंदै देस मैं, पाग लेवण री रीत।—लो. गी.

रू. भे.—संपड़, संपाड़ौ, सांपाड़ो।

संपाट-सं. पु.—संहार, नाश।

संपाठ्य-स. पु.—चौसठ कलाओं में से एक।

संपाडणो, संपाडबो—देखो 'संपाड़णो, संपाड़बो' (रू. भे.)

उ०—अम्रत संचारइं, देव पंच धात्री वधारइं, यौवनि जं जोइइं तं सपाडइं, सहू काज कीधउं जि दिखाडइ।—व. स.

संपाडियोड़ो—देखो 'संपाड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संपाडियोड़ी)

संपाडो—देखो 'संपाड़ौ' (रू. भे.)

संपात-सं. पु. [सं सम्पातः] १ एक साथ प्रहार, बौछार।

उ०—१ अर सस्त्रां रै संपात जीवां री यात्रा र माथां रा ब्यापार मंडिया।—वं. भा.

उ०—२ जठै दो ही फौजां रै दूजे ही दिवस काळ कोप तोपां री घोर घमसांण राचियो। अर बीच बीच बेंडी रा बेंहड़ा बजवेग वांनैत बीरां रै सस्त्रां री संपात माचियो।—वं. भा.

२ प्रहार, वार।

उ०—१ अर दोही वीरां आप आपरौ स्वांमिधरम ऊजळौ दिखायौ। दोही सांमंतां रा सस्त्रां रा संपात सां दोही तुरंगां रा सीस झड़िया।—वं. भा.

उ०—२ निसीथरै समय धाटी रै संपात दिवाय आपरा गहणहार गुजरात रा अधीस सूं सांमंत मंत्री अमरसिंह समेत जठी तठी पलायन कियौ।—वं. भा.

३ मुठभेड़।

उ०—जतरै इण रा साथियां तुरकां रौ संपात नीठि रोकियौ अर कंवर भी आरूढ होतां ही त्रिभागौ तोमर भुजादंड थी भमाइ सत्रुवां रै सांम्हे आप रौ वाह झोकियौ।—वं. भा.

४ युद्ध, लड़ाई। (डि. को.)

५ समागम, संगम।

६ संसर्ग, मेल।

७ एक्यता, एकता।

८ देखो 'संपाति' (रू. भे.)

उ०—१ सुणै रांम रौ नांम उच्छाह साई, उठै ग्रीध संपात रै पंखि आई।—सू. प्र.

उ०—२ गढपत हूं संपात तणी गत, पावां आयौ जगपत। हर 'माहेस' तणा कव हंसा, 'मान' सरोवर ठेल मत।

— रिववदांन महडू

संपाति, संपाती—सं. पु. [सं. सम्पातिः] १ जटायु का बड़ा भाई व गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र।

२ माली नामक राक्षक एवं उसकी पत्नी वसुदा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो विभीषण का मंत्री था।

३ राम-रावण युद्ध का राम पक्षीय एक वीर वानर।

४ एक रावण पक्षीय राक्षस।

५ एक राक्षस जो रावण की माता कैकसी की बहिन कुंम्भीनसी का पुत्र था।

६ कौरव-पांडव युद्ध में द्रोण द्वारा निर्मित गरुड़ व्यूह के मध्यस्थान में खड़े होने वाले योद्धा का नाम।

७ देखो 'संपात' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

संपादक—वि० [सं.] १ किसी कार्य को सम्पन्न या उसका सम्पादन करने वाला।

२ किसी समाचार-पत्र या पुस्तक आदि को ठीक से तैयार करके प्रकाशन योग्य बनाने वाला।

३ तैयार करने वाला।

संपादन—सं. पु. [सं. संपादनम्] १ ठीक या दुरुस्त करने का कार्य।

२ काट-छांट कर किसी रचना को प्रकाशन के लिए अंतिम रूप देने का कार्य।

३ तैयार करने की क्रिया।

उ०—सूरसज्जा सोवणरौ साधन संपादन करतै बांणवै बरस रौ बय बांसै बाळिगौ'र अनेक आंटा रा अवमरद आसंगिया।

—वं. भा.

४ प्राप्ति, उपलब्धि।

उ०—१ बिनां ही परिस्रम वडाह रै सुवरण रासि सदा ही संपादन होय, यौ ही वर चंडिका सूं पाय प्रच्छन्न ही आपरै नगर गियौ।—व. भा.

उ०—२ जरै बडाह भी जिण तरह प्रतिदिन अरज करतौ तिण रीति अरथी जनांनू देण काज आप रै द्वार सुबरण रासि संपादन होण रौ ही प्रसाद मांगि············।—वं. भा.

संपादित—वि. [सं.] १ सम्पादन किया हुआ।

२ पूर्ण किया हुआ।

३ तैयार किया हुआ, तैयार।

उ०—पाछैसूं वडाह भी तठै ही पूगौ जठै आकास सरस्वती कहियौ, अ'वतीरै' अधीस विक्रम विभाकर थारौ दुक्ख निरस्त कीधौ तिण सूं अब थारै द्वारा बिनांही परिस्रम सदा सुवरण रौ मनय संपादित पावसी।—वं. भा.

३ कोई पत्रिका, समाचार पत्र, पुस्तक आदि ठीक करके प्रकाशन योग्य बनाया हुआ।

संपार—सं. पु.—समर राजा का पुत्र, एक राजा।

संपियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ एकता रखा या किया हुआ, मेल रखा या किया हुआ. २ प्रेम किया हुआ, प्यार किया हुआ।

३ देखो 'सूंपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपियोड़ी)

संपीड़ण, संपीड़न—सं. स्त्री. [सं. सम्पीडनम्] १ दबाने की क्रिया।

२ निचोड़ने की क्रिया।

३ दुख देने की क्रिया या भाव।

संपुट—सं. पु.—१ पत्तों का बना दोना।

उ०—१ जल निरमल ल्यावै नदीयां तणौ रे, पांन तणां संपुट करी सार रे। सरस रसाफल आंणिनै रे, तै करै कुमर तणी मनुहार रे।—वि. कु.

उ०—२ महा कलपव्रक्ष उल्हस पांम्यां, आव्या मांडी क्षत्रि वराह। वाळ मात्र वट संपुट पोढ्या, लीलाती लिक्ष्मी नाह।

—रुकमणी मंगळ

२ विचारधारा, भावना, नियत।

उ०—संक्रम सुभ स्रष्टी द्रष्टी लुभलती, लंपुट संपुट लख घूंघट पट लेती। लुळकर लकुटी लै त्रकुटी सळ लाती, मुखी बाघण सी भ्रकुटी भळकाती।—ऊ. का.

३ मुलम्मा, कलई।

उ०—स्री जी री तरफ सुं सूत सुं लपेटियौ नारेळ स सोना रा संपुट

रौ नारेळ हुवै। सु पछै ही जतनां सूं राखीजै कोठार मांही।
—नैणसी

४ गोद, अंक।

उ०—अवर स्त्री नी ओपमां तै, किस्ण ल्यावा साथी। पुत्र संपुट परइ मुंक्यउ, चांपीयौ वळिमात्र।—रुकमणि मंगळ

५ औषद पकाने या रस बनाने के समय किसी पात्र को दिया जाने वाला वह रूप जिसका गीली मिट्टी से मुंह बंद करके चारों तरफ मिट्टी लपेट देते हैं।

उ०—भाग त्रगुण पंकज पर मेळै, मघइ पांन छगुण रस मेळै। पाव भाग घरि लवंग प्रमांणै, आधै भाग अगाअंक आंणै। इतरी वसत कनक घट आंणैं, संपुट दियै कियै सहनांणैं। बाळ जती पतिवरता बैवै, सपत निसा जाग्रण करि सेवै।—सू. प्र.

६ अंजलि।

७ कपाल, खोपड़ी।

८ खड्डा, गर्त।

९ सन्दूक, पेटी।

१० उधार पर दिया गया धन।

रू. भे.—संपट।

संपुटी-सं. स्त्री. [सं. संपुट] कोई छोटी कटोरी या तश्तरी।

संपुत्त-वि. [सं. सम्प्राप्त] सम्प्राप्त, प्राप्त।

संपूरण-वि. [सं. संपूर्ण] १ समस्त, आदि से अन्त तक पूर्ण।

उ०—१ कुंजर ज्यूं जै केहरी, तूं लेतौ तालीम। कळ मैं रखवाळत कवण, संपूरण वन सीम।—बां. दा.

उ०—२ आसण गूढ़ करूं पण आसुर ज्याग विधुंसै जावैं। रिख्या बाट करै जो राघव थाट संपूरण थावै।—र. रू.

२ खत्म, समाप्त।

उ०—१ अेड़ौ नाच तौ आज पैं'ली कदै ई नीं देख्यौ। घूघरां री छमछम कांनां में इमरत घोळती ही। नाच संपूरण व्हैतां ई कंवर जांणै नसा में व्है ज्यूं ई बोल्यौ—छौ व्ही कबूड़ी, म्हैं तौ इण सूं ई ब्याव करूं'ला।—फुलवाड़ी

उ०—२ भाई री सीख संपूरण नीं व्ही, उण पैला फुफकारा भरती नागण आई। उणरै लारै टळवळ टळवळ करता अठोत्तर बिचिया अड़थड़ता आवता हा।—फुलवाड़ी

३ पूरा, पूर्ण।

उ०—१ वा जिण कांम नै आपरै हाथां झाल्यौ हौ, वौ समाध रै उंचलै पगोतियै पूग्यां बिनां संपूरण व्हैतौ ई नीं।—फुलवाड़ी

उ०—२ आणंद अर सुख सूं चांनणी अर सूरज रा उजास में दोनां रा दिन घुळण लागा, जांणै वांरा सुख वास्तै ई चंदरमा अर सूरज ऊगै। पण सुख-दुख, हरख-विसाद, अर संजोग-विजोग री अटूट सांठो। अेक दूजा बिना कोई संपूरण नीं।—फुलवाड़ी

४ युक्त, सहित।

उ०—सेवक को सेवक यह स्वांमी, जग सबकौ हैं अंतरजांमी। सोळह कळा संपूरण सकांमी, निकट निवास करहुँ घणनांमी।
—ऊ. का.

५ व्यतीत, समाप्त।

उ०—धणी रा अै बोल सुणियां सेठांणी धकै कीकर बात चलावती। बात तौ अधूरी ई रैं'गी, पण रात नै तौ संपूरण व्हैणौ इज हौ। सेठांणी वास्तै वा रात भाखर बणगी।—फुलवाड़ी

सं. पु.—१ विष्णु।

२ विसर्जन।

उ०—राज दरबार संपूरण व्हियां खवासजी पाधरा आपरी गवाड़ी आया। व्ही जकी बात बादळ नै सगळी बतायदी।—फुलवाड़ी

३ सात स्वरों का राग विशेष।

रू. भे.—संमपूरण, सपूरण।

संपूरित, संपूरिय-वि. [सं. संपूरित] पूर्ण व भरा हुआ।

उ०—त्रिलोचना कुमरी तिणवार, दुख संपूरित हृदय मंझार। दुखणी दुख भरि करै विलाप, प्रीय विरहागनि तन संताप।
—वि. कु.

उ०—धनदिहि सइं हथि थाप्पिय, वापी अ वर आरांमि। मणि कण धण संपूरिय, पूरिय द्वारका नांमि।—जयसेखर सूरि

संपेखणौ, संपेखबौ-क्रि. सं. [सं+प्र+ईक्षणं] १ देखना। (डिं. को.)

उ०—१ अफल रूंख अटकलै, परा उड जायै पंखी। सर सूकौ संपेख, कोई न हुवै तरू कंखी।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ जळै सहर पुर जास, निसा औजास निहारै। साह प्रळै संपेखि, सोच मद मोच संभारै।—रा. रू.

उ०—३ बतीस लखण चौसट कळा, आंबेरी उत्तम सहज। कूरम संपेखै मुख कमळ, सरद इंद पावंत लज।—गु. रू. बं.

२ विचारना, सोचना।

उ०—१ लछीरूप सीता प्रभू रांमलीला, कवीपुत्र दाखै नहीं जेण कीला। अगै बाळमीकां जिसा गाय आया, गुणां तास संपेखि अदोख पाया।—सू. प्र.

उ०—२ आगम संपेखै अंगद माया विसतारै। पीसोधरि अरि फेरि पूठि, सिल सभा सझारै।—सू. प्र.

३ स्वागत करना, अगवानी करना (सम्मान करना)।

उ०—इण दिस थी राजा 'अजन', सझ आवतां सिताब। सांम्हौ पाय संपेखवा, मिळियौ आय नबाब।—रा. रू.

४ दर्शन करना।

उ०—पेखियौ साह जोधांणपत, सब जण धणी संपेखियौ। वप आभ परख च्यारूं वरण, लाभ नहण पण लेखियौ।—रा. रू.

५ समझना, जानना।

उ०—१ सहू भीमरा भीच आखाड-सिध्धं, मरण प्रब्ब संपेख मंगळीक क्रिद्धं।—गु. रू. बं.

उ०—२ निरखै संग्रांम सिव नच्चियौ, प्रळय जांम संपेखियौ। वढ पड़ै तुरंगम नाथ सम, हत्थां सात विसेखियौ।—रा. रू.

६ ढूंढना, खोजना।

क्रि. अ.—७ दिखाई देना, दिखना।

उ०—आइस्यै जाइ साथि सु चढि चढि आया, तुरी लोग लै ताकि तिम। सिलह मांहि गरकाब संपेखी; जोध मुकुर प्रतिबिंब जिम। —वेलि.

संपेखणहार, हारौ (हारी), संपेखणियौ—वि०।

संपेखिग्रोड़ौ, संपेखियोड़ौ, संपेख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपेखीजणौ, संपेखीजबौ—कर्म वा०; भाव वा०।

संपेखियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ देखा हुआ. २ विचारा हुआ, सोचा हुआ. ३ स्वागत किया हुआ, सम्मान किया हुआ. ४ दर्शन किया हुआ. ५ समझा हुआ. ६ ढूंढा हुआ, खोजा हुआ. ७ दिखाई दिया हुआ, दिखा हुआ।

(स्त्री. संपेखियोड़ी)

संप्रक्षाल—सं. पु. [सं.] एक ऋषि जो प्रजापति के चरणोदक से उत्पन्न हुआ था।

संप्रत, संप्रति, संप्रती—देखो 'सांप्रत' (रू. भे.)

उ०—१ सिद्धपुरादिक ठिकांणां नेमीस्वर विहारादिक जिन मंदिर संप्रति कराया गजधर, अस्वधर नरधर मंडित।—बां. दा. ख्यां.

उ०—२ पह सेव देव हळचळ प्रबळ, अति मंगळ अमरावती। निस अगनि चरित दीठौ निजर, पड़ै न झूठौ संप्रती।—रा. रू.

उ०—३ संप्रति ए किना किना ए सुहिणौ, आयौ कि हूँ अमरावती। जाइ पूछियौ तिणि इमि जंपियौ, देव सु आ दुआरामती। —वेलि

उ०—४ कमनीय करै कूंकूं चौ निज करि, कळंक धूम काढै बैकाट। संप्रति कियौ आप मुख स्यांमा, नेत्र तिलक हर तिलक निलाट।—वेलि

उ०—५ पयठा हवइं पांडव आज आभइ, किमइ करी संप्रति सुद्धि लाभइ। तउ तेह नी ओधि ज एह भाजइ, सुखिइं थिका कौरव राज छाजइ।—सालि सूरि

उ०—६ विसमिउं कटक कौरव केरउं, दैव चक्र किम कांइं फेरिउं। नारि सइरि सर संप्रति आवइं, कइ अगास पडतां एउ भावइ।—सालि सूरि

संप्रदांन—सं. पु. [सं. सम्प्रदान] १ दान देने की क्रिया या भाव।

२ उपहार, भेंट।

३ दीक्षा देने के अवसर पर शिष्य को गुरु का मंत्र देना।

४ किसी की वस्तु को उसे देना या उसके पास पहुँचाना।

५ व्याकरण में एक कारक जिसकी विभक्ति 'को' तथा 'के लिए' है।

७ विवाह, शादी।

८ विवाह के पूर्व अदा की जाने वाली एक प्रकार की रस्म।

वि. वि.—उक्त रस्म में बरात का, 'सांमेळा', लेते समय बरात में उपस्थित दुल्हे के पिता, चाचा, नाना आदि के साथ वधु पक्ष के मुख्य व्यक्ति अंकमाल के रूप में मिलते हैं एवं मिलने के बाद अपने सामर्थ्य के अनुसार वधु पक्ष वाले वर पक्ष वालों को कुछ नकद देते हैं। इसी क्रिया को संप्रदान या पैसारा कहते हैं।

पुष्करणा ब्राह्मणों में यह रस्म अदा करने के लिए वधु पक्ष वाले दुल्हे के घर जाकर वर की पूजा करते हैं एवं दोनों पक्षों के ननिहाल सहित गोत्रोच्चारण करने के बाद कन्या-पक्ष की ओर से शास्त्रोक्त रीति से कन्या का वाकदान संकल्प किया जाता है। इस अवसर पर वर पक्ष के 'दादांणौं', 'नांनांणौं' के मुखियाओं को मिलणी देते हैं।

रू. भे.—संपरदांन।

संप्रदा—देखो 'संप्रदाय' (रू. भे.)

उ०—१ चार संप्रदा ठग चोरां री छार न छांणी रे। ऊमरदांन ग्यांन बिन ऊमर, अंत उडांणी रे।—ऊ. का.

उ०—२ च्यार संप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यूं भांभी पाली। महिला नीर भरण नें म्हाली, खारौ जळ ऊंडौ तळ खाली। —ऊ. का.

संप्रदातन—सं. [सं.] एक नरक का नाम।

संप्रदाय—वि. [सं. सम्प्रदाय] देने वाला।

सं. पु.—१ किसी धर्म में कोई विशिष्ट मत या सिद्धान्त।

२ उक्त प्रकार का मत या सिद्धान्त माननेवालों का वर्ग या समूह।

३ कोई विशिष्ट धार्मिक मत या सिद्धान्त।

४ परिपाटी, प्रथा।

रू. भे.—संपरदाय, संप्रदा।

संप्रदायी—वि. [सं. सम्प्रदायिन्] १ देने वाला।

२ किसी धर्म, सम्प्रदाय का अनुयायी।

संप्रहार—सं. पु. [सं. सम्प्रहारः] संग्राम, युद्ध। (अ. मा; ह. नां. मा.)

संप्रापत, संप्राप्त—वि. [सं. सम्प्राप्त] प्राप्त किया हुआ।

उ०—सूरजमल संभ्रम राज संप्रापत, मंडत ताखत मंड ए। सिंघासण बैस छत्र तांणै सिरि, दीपति कन्न (क) मंडए। —गु. रू. बं.

संप्रापति, संप्रापती, संप्राप्ति, संप्राप्ती—सं. स्त्री. [सं. संप्राप्ति] १ घटना आदि का उपस्थित या घटित होने की क्रिया, भाव या अवस्था।

२ उपस्थित होने की क्रिया।

उ०—१ तितरइ वात कहतां वार लागइ। अस्त्री जन सहस चाळीसकउ संघाट आइ संप्राप्ती हुवउ छइ।—अ. वचनिका

उ०—२ इसी परि त्यां लड़तां लागतां मरतां मारतां महा अस्टमी भारथ जुध मातउ थउ, त्यां दूसरी अस्टमी आइ संप्राप्ती हुयी।

जत्र-तत्र ग्रिद्ध मसांण करक की वाडि ।—ग्र. वचनिका

३ लगना ।

उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति रितिराज वसंत वैसाख मासरा मंगळाचार विमांहूरा सुख विलास करतां सरद रित ग्राई छै। ग्रासोज मास ग्राइ संप्रापति हूग्रै छै।—रा. सा. सं.

४ उपलब्धि, प्राप्ति ।

संप्रिया-सं. स्त्री. [सं.] मगधराज की कन्या व विदूरथ राजा की पत्नी।

संप्रेक्षण-सं. पु. [सं.] १ अनुसन्धान, खोज ।

२ अन्वेषण ।

३ अवलोकन ।

संप्रेसण-सं. पु. [सं. सम्प्रेषण] १ भेजने की क्रिया ।

२ सुरक्षित पहुँचाने की क्रिया ।

३ सेवाच्युत करने की क्रिया ।

संबं, संबंध-सं. पु. [सं. सम्बन्ध] १ रिश्ता, नाता ।

उ०—१ तिकां रांणा री सभा मैं जाइ समता रा संबंध रा सूचक पत्र दिया ।—वं. भा.

उ०—२ परंतु जैतौ ग्रबही सौं मीणां री चाल छोडि रजपूतां री राह मैं रहण रौ लेख करि सूंपै तौ यौ संबंध करण मैं ग्रावै ।
—वं. भा.

२ घनिष्ठ मित्रता, दोस्ती ।

३ विवाह, ब्याह, शादी ।

४ लगाव, सम्पर्क ।

५ सगाई ।

उ०—१ रांणौ समांन बय रा बिबाह रौ नरम कीधौ सुणि कुमार चूंडै वडा प्रसन्न रै प्रमांण पिता रौ संबंध करवाई ग्राप चीतौड़ री गादी छोडण रौ लेख करि मारवाड़ां रै ग्रधीन कीधौ। ग्रर तिकी ही मांग पिता नूं परणाइ तटस्थ भाव धारि ग्रपूरब जस लीधौ।
—वं. भा.

उ०—२ ग्रठी चीतोड़ रा ग्रधीस रांणा लाखा रा पट्टपकुमार चूंडा थी पुत्री रौ संबंध करण रै काज मंडोउर रै नरेस राठोड़ रणमाल ग्रापरा पोळिपात्र भेजिया ।—वं. भा.

६ व्याकरण के अनुसार एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध या लगाव सूचित होता है।

७ एक साथ बंधने या जुड़ने की क्रिया ।

८ विवरण, हवाला ।

रू. भे.—संनबंध, संमंध, सनबंध, सनमंद, सनमंध, सनमन, सनमुधि, सबंध, समंध, समध ।

संबंधी-वि.—१ सम्बन्ध रखने वाला, लगाव रखने वाला ।

सं. पु.—२ रिश्तेदार, नातेदार ।

उ०—१ जिण थी हाडां रा समग्र ही पांच सौ सिपाहां तिकां नूं बाढण काज ग्राप री समस्त सेना पेलीजै तौ बिस्वंभर बिव्राहिणि बिवाही बिहूं संबंधियां रौ वचन निबाहै ।—वं. भा.

उ०—२ ग्रर ग्रापां रा सगोत्र गोळवाळ जसराज नूं समता रौ संबंधी करण ढूका ।—वं. भा.

उ०—३ देवसिंह रौ इसडौ हुकम सुणतां ही गंवारां जांणियौ कहिया जिकां दहियादिकां रा संबंधियां जिम म्हांनूं संबंधी करण रौ राजकुमार रा मन में निस्चय थियौ तौ म्है तौ ग्राज ही सौं मीणां री राह छोडि ग्रधीस रा उपदेस मैं रहणौं ग्रंगीकार कीधौ।—वं. भा.

३ स्वजातीय बन्धु ।

उ०—साहूकार नें न मारूं साहूकार रा बेटा, पोता, सगा, संबंध्यां ने पिण न मारूं ।—भि. द्र.

रू. भे.—सनबंधी, सनमंधी, सांमधी ।

संब-सं. पु. [सं. शंब] १ इन्द्र का वज्र । (ग्र. मा; नां. मा.)

उ०—भुलंब ग्रंब-खास कै प्रबंब बंब की भरैं, प्रलंब लंब थंब पैं प्रपत्त संब सी परैं ।—ऊ. का.

२ पाताललोक में रहनेवाले द्वय राक्षसों में से एक । चंडिका देवी ने इसका वध किया ।

उ०—केवड़ुं राज्य वासुदेव तणउं, जिहां समुद्र विजय प्रमुख दस दसार, परजुनप्रमुख ग्रउठ कोडि कुमार, संब प्रमुख एक सहस्त्र दुरदात कुमार ।—व. स.

३ लोहे की नोंक वाला दस्ता ।

रू. भे.—संभू ।

४ कमर के चारों ग्रोर पहनी जाने वाली लोह शृंखला ।

संबच्छर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

संबच्छरी—देखो 'संवत्सरी' (रू. भे.)

संबत—देखो 'संवत' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सतियास वरस संबत सत्रास । महमंत सरद ग्रासोज मास ।—वि. सं.

उ०—२ निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं, परहर संसय भय बुद्धी वर पाऊं । संबत छपनै रौ केवण सिरलोकौ, लौकिक लैवण नै सांभळज्यौ लोकौ ।—ऊ. का.

संबतग्राद-सं. पु.—मार्गशीर्षमास । (डिं. को.)

संबतसरी—देखो 'संवत्सरी' (रू. भे.)

संबर-सं. पु. [सं. शंबर, शंवरः] १ युद्ध, संग्राम ।

उ०—मेघाडंबर ज्यूं मचै, धूम्रां डंबर धियाग । रस संबर 'पातल' रचै, खित ग्रविरळ भड़ खाग ।—जैतदांन बारहठ

[सं. शवरम्] २ जल, पानी । (ग्र. मा.)

उ०—थोथा गेडंबर संबर बिण थाया । छपनैं सूमां सा ग्राडंबर छाया ।—ऊ. का.

३ मेघ, बादल ।

उ०—१ धुरधर ग्रसाढां ग्रंबर धर-हरियौ । धोरा डंबर मैं संबर धर हरियौ ।—ऊ. का.

उ०—२ अंबर संबर बिण संबर अकुळावै, जळहर बळियां बिन जळियां जिय जावै।—ऊ का.

४ एक प्रकार की बड़ी मछली।

५ मच्छी। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

६ एक राक्षस जिसका शिव ने वध किया।

उ०—करि सारत अस दब्बि, ईख नरपत्ति आडंबर। सिर संकर दौड़ियौ, जांण कोपे रिपु संबर।—रा. रू.

७ एक राक्षस जो कृष्ण-पुत्र प्रद्युम्न द्वारा मारा गया था।

८ हिरण्याक्ष का पुत्र, एक दानव।

९ इंद्र-बलि युद्ध में बलि पक्षीय एक असुर।

१० मृग, हिरन।

११ अर्जुन नामक वृक्ष।

१२ एक पर्वत का नाम।

१३ दिवोदास, कामदेव आदि का शत्रु, एक दैत्य जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था तथा इंद्र के द्वारा मारा गया था।

[सं. शंबरारि] १४ कामदेव।

उ०—झवां खंजरीटां अगां, संबर हतक सरांह। जैतवार ज्यांरा नयण, सरोरूहां सुथरांह।—बां. दा.

१५ पशु चौपाया।

उ०—अंबर संबर बिण संबर अकुळावै, जळहर बळियां बिन जळियां जिय जावै।—ऊ. का.

१६ एक पर्वत।

१७ देखो 'सांबर' (रू. भे.)

उ०—१ गरदां धर अंबर गुंधळियौ, धमळागिर डूंगर धुंधुळियौ। कटकां त्रिच मीर सिकार करै, अिघ नाहर संबर रोझ भरै।

—गु. रू. बं.

उ०—२ सुअर संबर ससा सीआल. फिरइं आहेडी तीह ना काल। हरिण रोझ जइ दीठउं किमइ, आगलि मरण ति पांमइं तिमइ।

—वस्तिग

संबरकंद-सं. पु.—एक प्रकार का कंद विशेष, गेंठी।

संबरत, संबरत्तक-सं. पु. [सं. संवर्त्त, संवर्त्तक] प्रलय। (डिं. को.)

संबरनास-सं. पु. [सं. शंबरनाश] कामदेव।

उ०—ताळी लागी तिणि समइ, वनि ग्या वेदव्यास। आवाहन करी आण्यउ, सहिजइ संबरनास।—मा. कां. प्र.

संबरमाया-सं. स्त्री. [सं. शंबरमाया] १ इन्द्रजाल, जादू।

संबरसूदन-सं. पु. [सं. शंबरसूदन] १ प्रद्युम्न की उपाधी विशेष।

२ कामदेव।

संबरा-सं. पु. [सं. स्वयंम्वर] स्वयंम्वर।

उ०—सात जनम साथइं सांमळिया, त्रीकम ताहरी तरुणी रे। संबरा मंडप सुर देखंतां, सीता ल्याया परणी रे।—रुकमणि मंगळ

संबरारि-सं. पु. यौ. [सं. शंबर+अरि] १ कामदेव।

(डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—दरपक कंदरप कांम कुसुमायुध, संबरारि रति पति तनुसार। समर मनोज अनंग पंचसर, मनमथ मदन मकरध्वज मार।

—वेलि

२ प्रद्युम्न की उपाधी विशेष।

रू. भे.—समरार।

संबरियौ, संबरी—देखो 'संभरी' (रू. भे)

संबळ संबल-सं. पु. [सं. संबल] १ यात्रा में जाते समय रास्ते के लिए साथ में रखी जाने वाली खाद्यसामग्री।

उ०—१ सवि दिन सरिखा न लेखीइ, रे हुई आस्यूं तूं जोइ। संबल करि न तूं हुअइ, पुण्य पाप रे साथिइ होइ।

—नळदवदंती रास

उ०—२ इधन पांणी पकान्न संग्रहियां, खांडिया पीसिया संबळ सिढ ताडिउ —व. स.

२ भोजन।

उ०—पंथी एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहुच्चाइ। सावज संबळ तोड़स्यइ, बैसासणइ न जाइ।—ढो. मा.

३ सहारा, आश्रय।

उ०—अलिय विघन सब दूर पुलायइ, दांनइ दउलति होइ रे। इह भवि सुजस कीरति बाधइ, पर भवि संबल सोइ।—स. कु.

३ पूर्व की तेज हवा चलने से गेहूँ की फसल में होने वाला रोग विशेष।

४ सेमल का वृक्ष।

वि.—बलवान्, शक्तिशाली।

संबळी-वि.—१ बलवान्, शक्तिशाली।

उ०—सत्र पेठा बनै मनै सक संबळी, दियै वरस डंड अेकरा दोय। भग गंजियौ नह रहियौ अेकौ, कोट छत्र तौ आगळ कोय।

—राव धूहड़ रौ गीत

२ देखो 'संवळी' (रू. भे.)

उ०—अठै कतार खोसण नूं दौड़िया नै इण असवारां पचीसां ही लै ईस्वर रौ नांम संबळी गूंद म थै पड़े तिम तूट पड़ीया।

—वरसै तिलोकसी भाटी री वात

संबसादन-सं. पु [सं] केशरी नामक वानर के द्वारा मारा गया एक दैत्य।

संबाध-सं. पु [सं.] १ बाधा, अड़चन

२ भीड़, समुह।

३ संघर्ष, झगडा।

४ भग, योनि।

५ कष्ट, पीड़ा।

६ नरक का मार्ग।

संबारणौ, संबारबौ-१ स्मरण करना, याद करना।

२ भजन करना, स्तुति करना।

उ०—पकड़नीतत अनीत परहर, एहै गीत उचार। रीत विरियां चीत राघव, सीताबर संबार।—र. ज. प्र.

३ देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू भे.)

संबारणहार, हारौ (हारी), संबारणियौ—वि०।

संबारिग्रोड़ौ संबारियोड़ौ, संबारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संबारीजणौ, संबारीजबौ—कर्म वा०।

संबारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ.

२ भजन किया हुआ, स्तुति किया हुआ।

३ देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संबारियौडी)

संबाहणौ, संबाहबौ—देखो 'संभाणौ, संभाबौ' (रू. भे.)

उ०—सू मोनूं ऊंट मेकिनै उतारै। ज्यू हूं कपड़ौ लूंगड़ौ संबाहूं काजळ टीकौ करूं।—कांवळै जोइयै नै तीडी खरळ री वात

उ०—२ जिसड़ै ही रामसिंघ जी कुंवरजी री कारी दीठी विपरीति तिसड़ै ही मूरछा ग्राइ पड़िया। तिसडै गोवलजी संबाह्या।
—द. वि.

उ०—३ इसडौ विलंद संबाहै ग्राजा, मोटौ भाग तूझ महाराजा।
—सू. प्र.

उ०—४ ग्रागै मरद बैठौ दीठौ। तद कटारी हाथ में थी सो संभाह भीतर ग्राय हाथ भाल लीयौ। कहौ. 'तूं कुण छै ? संबाहि, म्हारौ चोर छै।'—कुंवरसी सांखला री वारता

संबाहणहार, हारौ (हारी), संबाहणियौ—वि०।

संबाहिग्रोड़ौ, संबाहियोड़ौ, संबाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संबाहीजणौ, संबाहीजबौ—भाव वा० कर्म वा०।

संबाहियोड़ौ—देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संबाहियोड़ी)

संबी—सं.स्त्री. [स. शिंबा] फली। (डि. को.)

संबुक—सं. पु. [सं. शंबुकः] १ घोंघा। (डि. को.)

२ शंख।

३ हाथी के सूंड की नोक।

४ हाथी का कुंभ।

५ एक तपस्वी जिसकी तपस्या से एक ब्राह्मण पुत्र मर गया था। इसी पाप के कारण श्रीराम ने इसका वध किया था।

६ स्कन्द का एक सैनिक।

७ एक शिवावतार का शिष्य।

८ कश्यप एवं दिति के पुत्रों में से एक पुत्र।

रू. भे.—संबूक।

संबुकावरत—सं. पु [सं. शंबुकावर्त्त] घोंघे की भंवरी के सदृश घूमा हुआ भगंदर रोग का एक रूप।

संबुद्ध—वि. [सं.] १ जागृत २ सं.पु.—चेतन्य।

२ ज्ञानी।

३ गौतम बुद्ध।

४ जिनदेव। (जैन)

संबुद्धि—सं. स्त्री. [सं.] १ समझदारी. बुद्धिमता।

२ ग्राह्वान, पुकार।

संबूक—देखो 'संबुक' (रू. भे.) (डि. को.)

संबेसर—सं. पु. [सं. शंवेसरू] नींद, निद्रा, शयन। (डि. को.)

संबोध—सं. पु. [सं.] १ पूर्ण बोध।

२ सांत्वना, ढाढस।

३ पूरी ग्रौर ग्रच्छी जानकारी।

संबोधन—सं. पु. [सं.] १ ग्राह्वान करने या पुकारने की क्रिया।

२ ज्ञान कराने या जानकारी देने की क्रिया।

३ समझाने की क्रिया।

४ व्याकरण म एक कारक।

संबोधित—वि [सं.] १ जिसको संबोधन किया गया हो।

२ जिसका ध्यान ग्राकृष्ट किया गया हो।

३ जिसको बोध कराया गया हो।

संब्बाहणौ, संब्बाहबौ—देखो 'संभाणौ, संभाबौ' (रू. भे.)

उ०—ढड्डि महाभर कंध, भार भनपण संब्बाहै। बेगड वांमी वहण, प्रथी प्राभौ पतिसाहे।—गु. रू. बं.

संब्बाहणहार, हारौ (हारी), संब्बाहणियौ—वि०।

संब्बाहिग्रोड़ौ, संब्बाहियोड़ौ संब्बाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संब्बाहीजणौ, संब्बाहीजबौ—कर्म वा०।

संब्बाहियोड़ौ—देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संब्बाहियोड़ी)

संभ—सं पु. [सं. शभ] १ प्रसन्न एवं हंसमुख पुरुष।

२ इन्द्र का वज्र।

३ शंभासुर नामक एक दैत्य।

उ०—१ कना रांम कटृतैं रसा रांमण सिर छाई, संभ सेन साळुळे कना माथै महामाई।—रा. रू.

उ०—२ कंटभ मधु कुंभ कबंध कचरिया संख संभ सारीसै। खळ ग्रवगाढ ग्रनेकां खाया, दाढ पीसतौ दीसै।—र. ज. प्र.

४ सृष्टि, ससार।

उ०—उतपति कुण लहइ तो ईसर, ए मांनवियां हुवइ ग्रचंभ। ग्राद ग्रनाद तणां तूं ग्राछई, संभनाथ नीसरइ संभ।
—महादेव पारवती री वेलि

वि.—१ महान, जबरदस्त, प्रचंड।

उ०—ऊगती मोसरां दहायक ग्रभावां, सीतवर सियाग्रक गात रा संभ। 'मांन' रा वाळिया वचन वेडीमणा, खळां रा गाळिया गरब गजखंभ।—बारठ राजूरांम

२ देखो 'संभु' (रू. भे)

उ०—रिखराज ब्रह्म संभ सेस मोद भांण रेह, मेर तुरीबंध यंद दुडंब मयंक्क। पंड नूत रांमचंद कप्प थळी जूह पांणं, तेईसां दीरघ साख चौईसां तिलक्क।—राव बखतसिंघ चुवांण री गीत

संभग्न-सं. पु. [सं.] शिव, महादेव।

वि.—१ खंडित, टूटा हुआ।

२ पराजित।

संभजीवत—देखो 'जीवतसंभ' (रू. भे.)

उ०—भाट नाराजियां व्हंतां झेलतौ, जोरवर 'बुधा' री बेळ जोपै। संभजीवत हुवौ साजि खळ सैंफळै, अवळ 'दोळी' कमळ लोह ओपै।
—दौलतसिंघ हाडा रौ गीत

संभड़-वि.—नगण्य, तुच्छ।

उ०—करे न संका कोय, गांव धणी संभड़ गिणै। रैत बराबर होय, रोळदट्ट मैं राजिया।—किरपारांम

संभणौ, संभबौ—क्रि. अ.—१ कटिबद्ध या तैयार होना, उद्यत होना।

उ०—१ सु राव खेतसी साथ आवतौ दीठौ तरै ढोल दिरायौ। तरै राव प्रथीराज अखैराज ही संभिया तितरै साथ उणांरौ आगै पाछै आवतौ गयौ सूं अै बेढ करता गया।—नैणसी

उ०—२ म्हाटता मिनख रा हाथ मैं नागी तरवार ही। लारौ करता मिनख साव ठाली हाथ हा। रळियारणी करतां हाथोहाथ अपड़ीजगी तौ लोग उणनै कूटण संभिया। तद वौ नागी तरवार लेय कायर री गळाइ भाग छूटौ।—फुलवाड़ी

२ छाना, उमड़ना। (बादल)

उ०—ढळतौ मास असाढ अजूणौ सांवण संभियौ। धण रै जीवण लोभ यक्ष रौ हिवड़ौ भरियौ।—मेघ

३ सुसज्जित होना।

उ०—धारै ऊहड़ धांघलां, सांम तणै छळ सार। तेरह साखां संभ मिळै, लाखां गंजणहार।—रा. रू.

४ देखो 'संभळणौ, संभळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वांणियै इसौ ज्वांन कियौ, सो वरस दो २ तांई तो राव गांगोजी संभ ही नहीं सकियो।—नैणसी

उ०—२ एक सेठां रौ चोखळां मैं वारौ-तारौ। पीढियां सूं घर संभियोड़ौ।—फुलवाड़ी

संभणहार, हारौ (हारी), **संभणियौ**—वि०।

संभिग्रोड़ौ, संभियोड़ौ, संम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संभीजणौ, संभीजबौ—भाव वा०।

संमहणौ, संमहबौ, संमुहणौ, संमुहबौ—रू० भे०।

संभनाथ—देखो 'संभूनाथ' (रू. भे.)

उ०—उतपति कूण लहइ तो ईसर, ए मांनवियां हुवइ अचंभ। आद अनाद तणउ तूं आछइ, संभनाथ नीसरइ संभ।
—महादेव पारवती री वेलि

संमम-सं. पु.—१ संतति, सन्तान।

उ०—तीणइं अवसरि मथुरापुरी, अवतरीउ कंसारि। वसुदेव देवकी संभम, निरुपम देव मुरारि।—धनदेव गणि

२ देखो 'संभ्रम' (रू. भे)

संभर-सं. पु.—१ महादेव, शिव।

उ०—'ईदौ' इंद्र जिही पण आदर, सुर सुर धरम रहावण संभर।
—रा. रू.

२ देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—१ आगेंही वडे महाराज 'अजमाल' सें संभर के खेत हमारे विरादर हसनखां गिरदखां हुसैनखां ने जंग कर सच्चे दिल से सिर दिया।—सू. प्र.

उ०—२ आसथांनोत कियां बळ असमर, धर 'धूहड़' करतै धक-चाळ। पोहै जैसांण सोनगर पहली, रसै पेस कस संभर साळ।
—राव धूहड़ री गीत

३ देखो 'सांभरियौ' (रू भे.)

उ०—पत्र पढतां ही हड्डाधिराज रै पंचम अनुज मुहक्कमसिंह आपरा अधीस अग्रज रा आदेस रै अनुसार भावी रा भरोसा मैं भ्रम देखि प्राची रा पति सुजासाहू नूं तनि आपरै देस आइ अनुगत भाव दिखाइ संभर सिरोमणि सत्रु साल रै पगां मैं प्रणांम कीधो।
—वं. भा.

संभरण-सं. पु.—पालन-पोषण।

२ संचय, परिग्रह।

३ तैयारी।

४ सामान।

संभरणौ, संभरबौ—क्रि. स.—१ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीहर परहर अवरनूं, मत संभरै अयांण। तरु छंडे लागी लता, पत्थर चे गळ जांण।—ह. र.

उ०—२ सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिठा तोई। खिण खिण अंतर संभरइ, नहीं विसारइ सोइ।—ढो. मा.

उ०—३ कूंझड़ियां करळव कियउ, घरि पाछिले वरोहि। सूती साजण संभरया द्रह भरिया नयरोहि।—ढो. मा.

२ देखो 'सांभळणौ, सांभळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ यो 'गोगो' लछुसर उतरियो, स्रवणै सत्र नेड़ोय संभरियो।
—गो. रू.

उ०—३ राठोड़ विचारै ता परम, आप आप मत उच्चरै। 'सोनंग' 'दुरग' अणसंक मो, संक न कांई संभरै—रा रू.

संभरणहार, हारौ (हारी), **संभरणियौ**—वि०।

संभरिग्रोड़ौ, संभरियोड़ौ, संभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संभरीजणौ, संभरीजबौ—कर्म वा०।

संभरथळ-सं. पु.—वह स्थान जहाँ विश्नोई संप्रदाय का प्रवर्तन जांभोजी द्वारा किया गया था।

उ०—संभरथळ रळि आंवणौ, जित देव तणौ दीवांण। परगटियै

पगड़ौ हुवौ, निस अंधियारी भांण।—वील्हौजी

रू. भे.—संभराथळ।

संभरथळसांमी-सं. पु.—जांभाजी के लिए उनके भक्तों द्वारा प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

रू. भे.—संभराथळसांमी।

संभरपुर-सं. पु.—सांभर नगर।

उ०—इम ईस्वर दुलही उभय, आयौ परणि उदार। संभरपुर कीधा सतत, वितरण रण मख वार।—वं. भा.

संभरराज-सं. पु.—चौहान वंशी क्षत्रिय।

संभरवाळ-सं. पु.—सांभर नगर का, चौहान राजपूत।

उ०—विडै चहुवांण जठै विकराळ, उजाळत संभर संभरवाळ।
—सू. प्र.

संभरा-सं. पु.—१ चौहान क्षत्रिय।

उ०—गौरां धू करेगौ मेवाडंमरां पंड रै घाव, पाटारांणी गूमरां हरेगौ पैलै पार। चम्मरां ढुळतां हाडौ गल्लां उवरेगौ चंगी, साजोत संभरा खेती तरेगौ संसार।—जसो आढौ

सं. स्त्री.—२ शाकंभरी देवी।

उ०—तुही सिध आसापुरा रूप तापै, तुही आंबिका मात अंबात आपै। तुही अरबुदा अद्र आबू अग्राजै, तुही बैचरा संभरा मात बाजै।—मे. म.

संभरांणिव्रत-सं. पु. यौ.—एक व्रत विशेष।

उ०—मनुस्य तणी छइ घणी तो जाति, पाप करइ इकु दीह नइ राति संभरांणीव्रत सिम धाइ, पाछइ वली निगोदह माहि।
—वस्तिग

संभराथळ—देखो 'संभरथळ' (रू. भे.)

उ०—खोड़ौ ऊंट भिरै जंगळ मैं, सरण आयौ संभराथळ कै। हिम्मतराय हरी गुण गावत, कट गयौ पाप रजा करकै।
—हिम्मतराय

संभराथळसांमी—देखो 'संभरथळसांमी' (रू. भे.)

उ०—आयौ गुर 'जंभ' अचंभ अजोनी, धरम धुराऊ दाखवियौ। संभराथळसांमी अंतरजांमी, वोहनांमी हरि खेत कियौ।
—गोकळजी

संभरिय, संभरियौ, संभरी, संभरीक, संभरीनरेस-सं. पु.—चौहान वंश के क्षत्रिय (राजपूत) के लिए प्रयुक्त विशेषण शब्द।

उ०—१ चहूं छत्रधारी सुण बाखांणियां रायथांनां, हुंका बंका फटै संका उजक्कै हठेल। लेवा आयौ छाक जकै पाछौ माग लागौ, ऊभौ जेत-खंभ हुआं संभरी अठेल।—रावत जोधसिंह रौ गीत

उ०—२ भखियौ ज लूण भूपाळ रौ, घण रिजक सांभल घणौ। कहि संभरीक ऊजळ करां, तिकौ लूण सांभर तणौ।—सू. प्र.

उ०—राजै सुरां में सुरेस रूप खगां में खगेस राजा, समाजै द्वीजेस गणां मुन्यां में मुनेस। ग्रहां में ग्रहेस छाजै वसू में गोलोक नांमी, नरां में बिराजै असो संभरीनरेस।
—महाराजा भगतरांम हाडा रौ गीत

वि. वि.—सांभर प्रान्त पर प्राचीन काल से चौहानों का आधिपत्य रहने के कारण इनको संभरीनरेश तथा संभरीराव आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। इनका जातीय विरुद भी 'संभरीराव' ही है। इनकी कुलदेवी शाकंबरी देवी है जिनका प्राचीन मंदिर आज भी सांभर के पास विद्यमान है।

रू. भे.—सइंभरि, सबरियौ, संबरी।

संभळणौ, संभळबौ-क्रि. अ.—१ सचेत होना, सावधान होना।

उ०—१ नर मूढ संभळै नहीं, खित पर ठोकर खाय। भुगतै दुख निसदिन भमै, इण में संसय नाय।—नारायणसिंह सांदू

उ०—२ संभळ संभळ पग दीज्यौ साधां अै मारग अवधूतां रा।
—अग्यात

उ०—३ जिण वरत रै सहारै वौ वेरा में उतरियोड़ो हो, उणनैं कियां बाढतौ। म्हैं थोड़ो संभळनैं कह्यौ।—अमर चूंनड़ी

२ ठीक स्थिति में आना, हालत सुधरना।

३ देखो 'सांभळणौ, सांभळबौ' (रू. भे.)

उ०—रांम सजीवण-मंत्र रट, बयणां रांम बिचार। स्रवणां हर गुण संभळै, नैणां रांम निहार।—ह. र.

उ०—२ घण घणा थाट भांजण घड़ण, बिस्व-ईस संभळ बयण। 'ईसरौ' कहै असरण सरण, नमौ नाथ तौ नारियण।—ह. र.

उ०—३ संभळत धवळ सर साहुळि संभळि, आळूदा ठाकुर अलळ। पिंड बहुरूप कि भेख पालटे, केसरिया ठाहे किगल।—वेलि

उ०—४ पंडव तणउं चरीतु जो पढए जो गुणइ संभळए। पाप तणउ विणासु तसु रहइ ए हेलां होइसि ए।—सालिभद्र सूरि

संभळणहार, हारौ (हारी), संभळणियौ—वि०।

संभळिओड़ौ, संभळियोड़ौ, संभळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संभळीजणौ, संभळीजबौ—भाव वा०।

संभळांमणी—१ देखो 'सुणावणी'।

२ देखो 'भोळावण'।

संभळाणौ, संभळाबौ-क्रि. स.—१ सौंपना, देना।

उ०—१ नाच रौ नसौ उतरतां ई इंदर-भगवांन सोच्यौ के इत्ता में ई लार छूटी। अजेज जूंन्यौ-सरप संभळाय वींदणी री मांग पूरी।—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हैं थनै ठाया-पताया बताय देवूं थूं बेवतौ आ पोटळी उठै संभळाय जाजै।—फुलवाड़ी

उ०—३ तीन दिन अर तीन रात तांई वै उठै ई ढबिया। धणी आवै तौ सांयड संभळाय दै। कठै ई ऊजड़ ढळगी तौ बापड़ौ बिरथा डाफा खावैला। देखां मेळा में कोई धणी-धोरी आवै तौ उठै ई हाथौ हाथ सूंप दै आ सोच वै सांयड नै साथै लै ली।
—फुलवाड़ी

२ प्राप्त कराना।

उ०—डाढाळौ कीं पडुत्तर देवैं उण पें'ला ईं चीलहरा हेज छळ-कावता कैवण लागा—जलम देय पगां आपौ संभळायां पछै आप दोनां रौ फरजन तौ पूरौ व्हियौ।—फुलवाड़ी

३ सुनाना।

४ कहना।

५ चोट या हानि से बचाव कराना।

६ हालत सुधारना।

७ काम का भार उठाना।

८ बतलाना, समझाना।

उ०—ब्याव रै खरचा रौ सगळौ हिसाब संभळाय म्हनैं तीज रै सैं दिन दिसावर बिणज सारू सिधावणौ है।—फुलवाड़ी

संभळाणहार, हारौ (हारी), संभळाणियौ—वि०।

संभळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संभळाईजणौ संभळाईजबौ—कर्म वा०।

संभळावणौ संभळावबौ—रू० भे०।

संभळावण, संभळावणि, संभळावणी-सं. स्त्री.—१ देखो 'भोळावण, भोळावणी'।

उ०—हरमा समरथ मोभी रे बाई री संभळावण दीनी सूंप। म्हारा समरथ मोभी बाई रे सिर पर छाया रे राखियौ।

—जीणमाता री गीत

२ देखो 'सुणावणी'।

सभळावणौ, संभावबौ—देखो 'संभळाणौ, संभळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ घड़णौ दियौ हौ जकांरौ पाछौ घेरचौ नहीं, मढणौ लियौ जकांरौ ओठौ मोड़चौ नहीं। ईं हाथ लियौ वीं हाथ डकारचौ संभळावण री सार नहीं जांणी।—दसदोख

उ०—२ सउदतार पेखी पेखी सुख लहइ मारू नइं संभळावी कहइ।—ढो. मा.

संभळावणहार, हारौ (हारी), संभळावणियौ—वि०।

संभळाविओड़ौ, संभळावियोड़ौ, संभळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संभळावीजणौ, संभळावीजबौ—कर्म वा०।

संभळि—देखो 'संवळी' (रू. भे.)

उ०—१ काढ्यौ तुरकां कैद सूं, सेखारी कर साय। संभळि वाळौ रूप सज, पूंगळ दीध पुगाय।—पदमजी बारहठ

उ०—सेखौ लाई कैद सूं संभळि रूप सजाय। मेहाई कीधी मया, अवखी बिरियां आय।—पदमजी बारहठ

उ०—३ जुलम ग्रह मांहि रै जकड़ जादम जुड़ै, लै कवण असन जळ तणौ लेखौ। संभळौ साजकर सिंधू पूगा सकत, संभाळै भकत निज राव सेखौ।—बालाबक्स बारहठ

संभळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सचेत हुवा हुआ, सावधान हुवा हुआ।

२ ठीक स्थिति में आया हुआ, हालत सुधरा हुआ।

३ देखो 'सांभळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संभळियोड़ी)

संभळी—देखो संवळी' (रू. भे.)

संभव-सं. पु. [सं.] १ उत्पत्ति, आविर्भाव।

उ०—१ सिव भवन कन्या हूंत संभव अगनि जोति अनोप ए। सुभ द्रस्ट भूप निहारी प्रज सहि अघट किरि सुख ओपए।

—रा. रू.

उ०—२ सीहा कै कुळ संभव सदीव, जोवका हेत हसि देत जीव।

—ऊ. का.

२ मुमकिन।

उ०—रचना ईस्वररी ईस्वरता रोचै, संमदम स्रद्धा बिण संभव नहि सोचै।—ऊ का.

३ संयोग।

४ प्रमाण।

उ०—जठै और कोई गति न जांणियां चालुक वंस री तेवीस ही पीढियां मैं घणां रै अंकस्थ पुत्र हुवा होई इसड़ा ही संभव रा विचार थी खटावें।—वं. भा.

५ स्त्री प्रसंग, सहवास, मैथुन।

६ कारण, हेतु।

उ०—१ जिण थी स्वतंत्र संभव मैं एक आपरा आलग हूं कहि देण रौ उपकार करि जिकण रा सीलणा में सहियौ न जाइ इसड़ा अनेक अनरथ कुमाइ मनमत्तै बहै तिकण रौ अंत इसड़ौही खटावै।

—वं. भा.

उ०—२ सातवाहन रा चरित्र नूं आदि लेर अस्थियाळ बीसळदेव बल्लभाचारच रा चरित्र परयंत इसा ही प्रमांणिकां रै लिखियौ कही गई तथा कही जावसी तिण कारण करि कोई उदंत रा संभव मैं संदेह ही दीसै तथापि समरथां रौ लेख बलात्कार ही खटावसी।

—वं. भा.

७ किसी काम या बात के घटित होने की अवस्था।

८ सर्व राजा का पुत्र, एक राजा।

९ शंकर का पुत्र, गजानन।

उ०—सिव संभव सिव रूप सुरेसर सिव गुण दियण प्रणांम कथै सुर।—रा. रू.

वि.—१ जो किये जा सकने के योग्य हो।

२ जिसकी संभावना हो, संभावित।

संभवणौ, संभवबौ-कि स.—संभव होना।

उ०—१ सीहां विपत न संभवै, ठाळी जाय न ठाळ। हाथळ सूं पल हेक में, सीहां हुवै सुगाळ।—बां. दा.

उ०—२ बंकचूलीया मैं कह्यौ संवत अठारै तेपनैं पछै धरम रौ उद्योत होसी। इण वचन रै लेखै तौ तेपनां पहिली साध नहीं इम संभवै।—भि. द्र.

संभवनाथ-सं. पु.—जैन धर्म के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे

तीर्थंकर।

उ०—समय सुंदर कहै ते तीर्थंकर, **संभवनाथ** अनाथ को पीहर।
—स. कु.

संभा–सं. स्त्री.—शिवा, पार्वती।

संभाऊ–सं. पु.—१ भाटी वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

२ इस शाखा का व्यक्ति।

वि.—स्वाभाविक।

उ०—किसनूं रै घर में भूवाजी फिरियोड़ी ही। लाई लाई-खाई करती हौ। भाग सूं **संभाऊ** आंख्यां दूखणी आयी।—वरसगांठ

संभाखण—देखो 'संभासण' (रू. भे.)

उ०—भरथ रौ कवसल्या जी सूं **संभाखण**।—र. रू.

संभाग, संभागि–सं. पु. [सं. सम्भाग] दान।

उ०—गय भवि भगतिइं अति **संभागि** मइ मुनि वहिराव्या। साहमीयवच्छल संघ सहित मइ गुरु पहिराव्या।—नळदवदंती रास

संभागियौ, संभागी—देखो 'सभागियौ' (रू. भे.)

उ०—भाटा तूं **संभागियौ**, पीछोळा री टग्ग। गुललंजा पानी भरै, ऊपर दै दै पग्ग।—अग्यात

संभाणौ, संभाबौ–क्रि. स.—१ कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व, कार्य भार आदि अपने ऊपर लेकर उसका ठीक तरह से निर्वाह करना, पालन करना।

उ०—राव मंडळीक तो गैहलौ हुवौ। तरै 'जेसौ' मंडळीक रौ लोहड़ौ भाई, तिण सारी धरती रौ भार **संभायौ**। धरती रा सारा राजपूत लेनै भाखरै पैठौ।—नैणसी

२ लेना, उठाना।

उ०—च्यारूं ठकरांणियां पूरी सावचेत होय ऊभी ही। सिंध रा डाकियां माथै निजर पड़तां ई हाथां में कोपरिया **संभाया**। जोसी री बात तौ साव साची निकळी।—फुलवाड़ी

३ सम्भालना।

उ०—मोती-मांणक झाली नुं दीया, सो **संभाय** उचा राख्या। आप सिनांन कर जीमण जीमीयौ। रात खींवसी भी पौढण पधारीया, खुस्याळ रहा।—कुंवरसी सांखला री वारता

३ धारण करना।

उ०—हरीया कळि में आयकै, सांमीपणौ **संभाय**। ग्यांन गरीबी ना गही, आपा अहूं उठाय।—अनुभववांणी

४ पड़ते या गिरते हुए को बीच में रोकना।

५ सुसज्जित करना।

६ सन्नद्ध करना, तैयार करना।

७ युद्धार्थ गढ या किले को सजाना, तैयार करना।

उ०—इण दिस 'अजन' लियां दळ आयौ, सांभर वाळै कोट **संभायौ**। क्यौं मुहमेळ प्रथम दिन कीधौ, लुड़ मुड़ गयौ कोट निठ लीधौ।
—रा. रू.

संभाणहार, हारौ (हारी), संभाणियौ—वि०।

संभायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संभाईजणौ, संभाईजबौ—कर्म वा०।

संबाहणौ, संबाहबौ, संब्बाहणौ, संब्बाहबौ, संभावणौ, संभावबौ, समाणौ, समावौ, संमावणौ, संमावबौ, संमाहणौ, संमाहबौ,
—रू० भे०।

संभायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ उत्तरदायित्व निभाया हुआ. २ लिया हुआ, उठाया हुआ. ३ धारण किया हुआ. ४ सुसज्जित किया हुआ. ५ तैयार किया हुआ. ६ युद्धार्थ किले आदि को सजाया हुआ, तैयार किया हुआ. ७ सम्भाला हुआ।

(स्त्री. संभायोड़ी)

संभार–सं. पु. [सं.] १ भार, वजन।

उ०—आ सुणतां ही अणहिलपुर रौ अधीस सेना रा **संभार** सूं मही रै मचोळा देतौ गजनवी रौ वेग झेलण रै काज जवनेस रौ राह रोकि सांभति सहर आडौ आय पड़ियौ।—वं. भा.

२ पालन-पोषण।

३ संचय, संग्रह।

४ सामग्री, सामान।

५ धन, सम्पति।

६ अधिकता, बाहुल्यता।

७ समूह, ढेर।

८ देखो 'संभाळ' (रू. भे.)

उ०—१ रांमनांम निज मूळ है, और सकळ बिसतार। जन हरीया फळ मुगति कूं, लीजै सार **संभार**।—अनुभववांणी

उ०—२ हां है तौ ही वौ नहिं भूलणहार। हां है हरि सबरी करण **संभार**।—अग्यात

संभारणौ, संभारबौ–क्रि. स.—१ मूंदना, पलक बंद करना या झपकाना।

उ०—सारद गणेश नारद सनक भूला पलक **संभारणं**। रह व्योम अलह आहट रथां, कळह संपेखण कारणं।—रा. रू.

२ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आय नृपति पूछी विध एही, सावधांन हुय धरम सनेही। विखै अग्यांन धरम वीसारौ, सूरजकुळचौ धरम **संभारौ**।—सू. प्र.

उ०—२ गउखै बइठा एकठा, माळवणी नइ ढोल। अबर दीठउ ऊनयउ, तिम **संभारचउ** बोल।—ढो. मा.

उ०—३ **संभरियां** संताप, वीसारियां न वीसरइ। काळेजा बिचि काप, परहर तूं फाटइ नहीं।—ढो. मा.

उ०—४ मरण जनम चौ सळ मिटण सौ सलभ व्है **संभार**। जम यौ सळ भंजै जिसौ, कोसळ राज कंवार।—र. ज. प्र.

३ देखो 'संभाळणौ, संभाळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सज्जणिया सावण हुया, धड़ि उलटी भंडार। विरह–

महारस ऊमटइ. के ताकहूं **संभार** ।—ढो. मा.

उ०—२ दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारै । सकत वांम सुरराय, सोम दाहिणौ संभारै ।—रा. रू.

संभारणहार, हारौ (हारी), **संभारणियौ** —वि० ।

संभारिग्रोड़ौ, संभारियोड़ौ, संभारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

संभारीजणौ, संभारीजबौ - कर्म वा० ।

संभारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ मूंदा हुआ, पलक बन्द किया हुआ ।

२ देखो 'समरियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो संभाळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संभारियोड़ी)

संभाळ-सं. स्त्री.—१ विशेष अवसरों पर अपने संबंधियों एवं रिश्तेदारों को भेंट या उपहार-स्वरूप भेजी जाने वाली खाद्य सामग्री ।

उ०—१ सेवट वांनै मांडांणी वहीर करिया । साथै कोई संभाळ घाली नीं कोई बींदड़ी । ग्राया ज्यूं ई पाछा नगड़िया । कोई जूतौ ई सूंठ बाई सूं मिलण नै नीं ग्रायौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सांवण री तीज ग्रर राखी माथै छवूं बवां रै पीवर सूं भांत भांत री संभाळां ग्रावती । ग्रोढणा, खोपरा, नाळेर, मगद, ग्रर मातृ इत्याद । पण छोटकी बींदणी रै कोई न्है तौ भेजै —फुलवाड़ी

उ०—३ वो ग्रादमी डरतौ डरतौ जबाब दियौ के कटोरदांन मैं पड़्दीं ग्रर सांकळियां है । सासरै संभाळ लै जावै । तद सांप ग्राखतौ होय बोल्यौ—ग्रा संभाळ खेसला रै पल्लै बांधलै । —फुलवाड़ी

२ हिफाजत देखभाल ।

उ०—१ उणनै इण भांत रोवतां देखने ठाकरसा री मन ई ग्रजेज चळ-विचळ व्हैगौ । पूछ्यौ—चोधरी, बात कांई व्ही । म्हारी भींपरी कुत्ती तौ राजी खुसी है । म्हारै बिना उणरी संभाळ कुण करतौ व्हैला ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सह घर री संभाळ दूजां रै हाथां दिवै । भला भला भोपाळ, रूळता दीठा राजिया ।—किरपारांम

३ सुपुर्दगी ।

४ निरीक्षण, परीक्षण, जांच ।

उ०—ग्राखी बनराय जाणै पालणै भूलण लागी । पांन-पांन ग्रर कूंपळ-कूंपळ री सावळ संभाळ व्हैगी । मोटा पंछियां रै भपीड़ लागण लागा । छोटा पंछी डाळां सूं चापळ नै बैठग्या । —फुलवाड़ी

रू. भे.—संभार, संभाळ ।

संभाळणौ, संभाळबौ-क्रि. स.—१ हिफाजत करना, देखरेख करना ।

उ०—१ ग्रापरै हाथ सूं कतरै, रंग लगावै । टाकर चौपड़ै, धूंवौ देवै तथा धुवांणी सूकाइनै पूरी संभाळै है । एवड़ र लाड-कोड सूं ही राजी रै'वै ग्रर धाप र खावै ।—दसदोख

उ०—२ दोनूं राजकंवर कह्यौ—रमण-खेलण रा दिन है, जकौ धूळ मैं रमा । म्हांरी मंसा तौ भूंडी है कोनीं । ग्रर गादी रौ सूंप्यौ राज तौ कैड़ा गैला-गूंगा संभाळ लेवै । नवौ राज थरपां तौ मरदाई । - फुलवाड़ी

उ०—३ पण राजकंवर तौ बरजतां बरजतां वहीर व्हैगौ । बाप इण भांत मांदगी मैं तळीजै ग्रर वो राज-काज संभाळण री बात सोचै तौ इण सोवणा मैं धूड़ है ।—फुलवाड़ी

उ०—४ बांधउं बड़ री छांहड़ी, नीरूं नागर बेल । डांभ संभाळूं करहला, चोपीड़ सूं चंपेल ।—ढो. मा.

२ बनाये रखना, विद्यमान रखना ।

उ०—घर मैं घणी माल-मता तौ नहीं, पण बडेरां रै जमांनै सूं चाली ग्रावती इज्जत ग्राबरू नैं बियां, जियां-कियां संभाळ राखी ही ।—दसदोख

३ सुपर्दगी लेना ।

उ०—१ ऊमर में कदै ई माया रौ परस नीं कर्‌यौ जकौ थारै गियां पछै हाथ लगाय भिस्ट व्हैणौ पड़सी । ग्रबै वा ई जोखम संभाळ लै । फुलवाड़ी

उ०—२ नीतर म्हैं तौ सुगनचिड़ी बणनैं ग्रा कांकड़ में उडी । संभाळौ थांरो डंडकमंडळ । पछै थांमै फोड़ा पड़िया तौ म्हैं नीं जांणूं ।—फुलवाड़ी

४ लेना, रखना ।

उ०—सेठांणी थूं ग्राज सूं ई ग्रै कूंचियां संभाळ । जरुरत वाळां वास्तै सगळा भंवारा उघाड़ दै ।—फुलवाड़ी

५ देखना, सुधि लेना ।

उ०—१ ऊपर ग्राया तरै गांगै ठाकुरां री पालखी संभाळी तरै पालखी नहीं तरै पाछा वळिया ।—नैणसी

उ०—२ ठंडा होणै रौ थोड़ो-घणौ ही भौ नीं है, बेटी नै घड़ी-घड़ी संभाळै, मूंढौ ढकै है ।—दसदोख

उ०—३ मेलौ कोटण रै तळाव गयौ । प्रभात हूवौ ताहरां पोतौ संभाळियौ । देखै तौ पोतौ नीं ।—ऊदै ऊगमणावत री बात

उ०—४ जीवण बचावण नै कोई कोठा कोठियां में वळियौ, कोई घास री वागर मैं घुस्यौ तौ कोई राली गूदड़ां मैं वड़ग्यौ । किणै ई रैबारियां रै बाड़ां री सरण लीवी, किणै ई भीलां रा भूंपा संभाळ्या तौ कोई रा पग थेट खेतां री बाजरियां मैं जावता ठंभिया ।—ग्रमर चूंनड़ी

उ०—५ स्यांणा पंडित ग्रावै भाड़ांला काजी जावै । पंडित जाप करै पूजारी माळा फेरै । जोतकी टीपणै में गिरै-गोचर संभाळै जोतकी धूप खेवतां थकां जोत करै ।—दसदोख

६ जांच पड़ताल करना, निरीक्षण करना, परखना ।

उ०—१ बादसाह कही ऐसा कोई ग्रादमी नहीं मैं सब संभाळिया ।
—ग्रांमेर रा धणी री वारता

उ०—२ ठाकरसा घोड़ा सूं हेटै उतर बेटा नै संभाळियौ तौ वा माटी। ठाकरसा नै रीस अणूंती आई, दुख ई अणूंतौ व्हियौ। अेकाअेक कंवर इण भांत धोखौ देय जावेला, अेड़ी बात तौ सपना मैं ई नीं जांणी ही।—फुलवाड़ी

७ प्रबंध करना, व्यवस्था करना।

८ पालन-पोषण करना।

९ ढूंढना, तलाश करना।

उ०—बेऊ फोजां जुद्ध सौं धापिनै उवै उवै कांनी ऊभी छै। वीरमदे घायल आपरा संभाळै छै।—नैणसी

१० गिरते हुए को बीच में रोकना, थामना।

११ आश्रय देना।

उ०—जामण रा रे जाया, अंबर तो पटकी नैं धरती संभाळी। —जीणमाता रौ गीत

१२ उत्तरदायित्व लेना या वहन करना।

१३ संचालन करना, चलाना।

उ०—सीत मैं केड़ी-केड़ी काली बातां करै। आं नै तौ कीं चेतौई कोनीं, बेटा थारा भाय जी अबै संसार में नीं रैवेला। सगळौ धंधौ थनै संभाळणौ है।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै टाबर मोट्यार व्हियां घर रौ धंधौ संभाळै जद बौ बांमे खोड़ां काढै, बांनै बात बात माथै टोकै।—फुलवाड़ी

१४ वृद्धि प्राप्त करना।

उ०—भला खात अर पांणी बिनांई खेत में कद साख आपौ संभाळै।—फुलवाड़ी

१५ यह देखना कि कोई चीज जितनी या जैसी होनी चाहिए उतनी या वैसी है या नहीं।

उ०—अपनी रिद्ध संभाळ सब, करै दरक्कां पीठ। आवध बंधै उठिया, आकारीठ गरीठ।—रा. रू.

१६ अधिकार करना, कब्जा करना।

उ०—सुलै हुई सुख ऊपनो, भागी दळां दुवाळि। सीमां नींमां गड मुलक, सगळै लिया संभाळि।—गु. रू. बं.

१७ सामाजिक व्यवहार आदि में परंपरा संबंध आदि का निर्वाह या पालन करना। बिगड़ने न देना।

उ०—सेवट वा तौ सुभट कै दियौ—थांरा घर विचै म्हनें म्हारौ गै'णौ घणौ वाल्हौ लागै। थें सगळा साख नें संभाळौ अर म्हांनै तो न्यारा कर दो।—फुलवाड़ी

१८ रोकना, थामना।

१९ ठीक ठाक करना, ठीक करना।

उ०—चौथे प्रहरै रैण के, कूकड़ मेल्ही राळि। धण संभाळै कंचुवौ, प्री मूंछां रा वाळि।

२० देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दादू रावत राजा रांमका, कदै न विसारी नांव। आतम रांम संभाळियै, तोसु बस काया गांव।—दादू बांणी

उ०—२ ए वाड़ी, ए वावड़ी, ए सर केरी पाळ। वै साजण वे दीहड़ां, रही संभाळ संभाळ।—ढो. मा.

संभाळणहार, हारौ (हारी), संभाळणियौ—वि०।

संभाळिओड़ौ, संभाळियोड़ौ, संभाळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संभाळीजणौ संभाळीजबौ—कर्म वा०।

संभारणौ, संभारबौ संभारणौ, संभारबौ, सम्ह'ळणौ, सम्हाळबौ —रू. भे.।

संभळाय-सं. स्त्री.—नदी। (ह. नां मा.)

संभाळियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हिफाजत या देखरेख किया हुआ. २ सुपुर्दगी लिया हुआ. ३ रखा हुआ, लिया हुआ. ४ देखा हुआ, सुधि लिया हुआ. ५ जांच-पड़ताल किया हुआ, परखा हुआ. ६ प्रबंध किया हुआ, व्यवस्था किया हुआ. ७ पालन-पोषण किया हुआ. ८ ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ. ९ गिरते हुए को बीच में रोका हुआ, थामा हुआ. १० उत्तरदायित्व लिया हुआ, वहन किया हुआ. ११ आश्रय दिया हुआ. १२ अधिकार या कब्जा किया हुआ. १३ वयता को प्राप्त हुवा हुआ, वृद्धि को प्राप्त हुवा हुआ. १४ यह देखा हुआ कि कोई वस्तु जितनी या जैसी होनी चाहिए उतनी या वैसी है या नहीं. १५ रोका हुआ, थामा हुआ. १६ सामाजिक व्यवहार आदि में परंपरा संबंध आदि का निर्वाह या पालन किया हुआ. १७ ठीक-ठाक किया हुआ, ठीक किया हुआ. १८ संचालन किया हुआ, चलाया हुआ. १९ बनाये रखा हुआ, विद्यमान रखा हुआ।

२० देखो 'समरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संभाळियोड़ी)

संभाळौ-सं. पु. [सं. संभालन, संभाल] १ संभालने की क्रिया या भाव।

२ चैतन्यता।

३ तलाशी, खोज।

४ जांच-पड़ताल।

क्रि. प्र.—देणौ, लेणौ।

संभाव-सं. पु.—चिन्ह, निशान।

उ०—प्रभात हुवौ सु गूंदळ राव रै पगां रौ जोड़ौ उठै रह्यौ सु प्रथीराज दीठौ नै बीजा पग मांळिया रा संभाव अटकळिया। तरै सुहवदै नूं प्रथीराज कह्यौ औ जूतौ किण रौ छै।—नैणसी

संभावण, संभावणौ-वि.—१ संभालने वाला, धारण करने वाला।

उ०—मारू रायांमालहर सारू खळां अगड्ड। मोटा चींत संभावण, जे नवकोटां चड्ड।—रा. रू.

२ सहायता करने वाला, सहायक।

३ तैयार करने वाला, उद्यत करने वाला।

संभावणौ, संभावबौ—देखो 'संभाणौ, संभाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद सांगैजी राव जैतसी जी सूं मदत री वीनती करी। तरां राव जैतसी जी कही, 'बाबा, म्हारै घर में जमीयत है सो थांरीज है, आंवेर जिसी जागा है सूं संभावो।—द दा.

उ०—२ तरै कूंभैजी कह्यौ—नांनाजी ! बैसण नै तौ ठौड़ नहीं नैं राजि म्हांरी बांह संभावो चीतौड़ बैसांणो तौ बैसूं, नहीं तौ धरती भाल्यौ आकास नांख्यौ।—राव रिणमल री बात

उ०—३ अर सेज विछावण संभावण री खिदमत मोनूं दीजै इतरी इनायत करो।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ आह मनमाहि नरिंदो पारथि संभावइ। सइं दलि रमलि करंतउ गंगातडि आवइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—५ अनु कठि कुसुमह माल किरि, सुं मयणि आपणि आवीइ। कोइ इंदु चंदु नरिंदु सइंवरि, पहुतु इम संभावियइ।

—सालिभद्र सूरि

संभावणहार, हारौ (हारी), संभावणियौ—वि०।

संभाविप्रोड़ौ, संभावियोड़ौ, संभाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संभावीजणौ, संभावीजबौ—कर्म वा०।

संभावन—सं. स्त्री. [सं. संभावनं] १ कल्पना, अनुमान।

२ आदर, सम्मान।

३ मुमकिन।

संभावना—सं. स्त्री. [सं. संभावना] १ विचार, मनन।

२ कल्पना।

३ आशा।

४ सम्मान, प्रतिष्ठा।

५ मुमकिन।

६ सन्देह।

७ साहित्य में प्रयुक्त वह अलंकार जिसमें इस बात का उल्लेख होता है कि अमुक बात हो जाय तो अमुक बात हो सकती है।

संभावित—वि. [सं.] १ कल्पित।

२ अनुमानित।

३ पूजित।

४ संभव, मुमकिन।

संभावियोड़ौ—देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संभावियोड़ी)

संभास, संभासण—सं. पु. [सं. सम्भाषणं] १ बातचीत, संभाषण।

२ कथन, वार्तालाप।

उ०—सुणि भूंडण कही—मोनूं आज बारह बरस तपस्या करतां हुआ, आज तक मरद सूं संभासण नहीं कियौ।

—डाढाळा सूर री बात

रू. भे.—संभाखण।

संभासुर—सं. पु.—एक दैत्य का नाम जो दुर्गा द्वारा मारा गया था।

उ०—बध्या चंडी चंडासुर महिख मुंडासुर बळी, बताई निर वीजा अचि रकत बीजासुर-अली। क्रुधाग्नी निस्संभासुर भसम संभासुर कती, अई इंदू अंबा जयति जगदंबा भगवती।—मे. म.

संभाहणौ, संभाहबौ—देखो 'संभाणौ, संभाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ खूंदालम जपै तूं खुरम, सुकरि खग्ग संभाहियौ। भर भार भळावैं भोम छळि, पिता पूत पडिगाहियौ।—गु. रू. बं.

उ०—२ कह्यौ—'मा ! म्हैं हथियार युं ही बांधां ? डंड जाट-गूजरां दाई भरां ! ताहरां मा बोली—'बेटा ! हथियार नांख नां, हथियार संभाहि।—नैणसी

संभियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सुसज्जित हुवा हुआ. २ छाया हुआ, उमड़ा हुआ. ३ कटिबद्ध हुवा हुआ, तैयार हुवा हुआ, उद्यत हुवा हुआ. ६ देखो 'संभळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संभियोड़ी)

संभु—सं. पु. [सं. शंभुः] १ शिव, महादेव। (ना. डिं. को; डिं. को.)

उ०—गळ मुंडमाळ मसांण ग्रह, संग पिसाच समाज। पावन तूझ प्रभावसूं, संभु अपावन साज।—बां. दा.

२ एक रूद्र का नाम।

३ भैरव। (डिं. को.)

४ एक दैत्य। (रामायण)

५ ब्रह्मा, विधाता। (डिं. को.)

६ सिद्ध एवं पुज्य पुरुष।

७ ऋषि, मुनि।

८ अंबरीख महाराजा के पुत्र का नाम।

९ कश्यप एवं सुरभि का एक पुत्र।

१० तप नामक अग्नि के पुत्र का नाम।

११ कृष्ण एवं रुखमणी के पुत्रों में से एक।

१२ विष्वकसेन का मित्र, ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर का इन्द्र।

१३ शुक एवं पीवरी के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

१४ श्रीराम को श्राद्धविधि, शिव पूजाविधि आदि बताने वाला ऋषि।

१५ सुख देवों में से एक।

१६ सत्यदेवों में से एक।

१७ राजाज का पिता एवं संह्लाद राक्षस का पुत्र एक राक्षस।

१८ विरोचन दैत्य का पुत्र।

१९ सगण तगण यगण भगण और सात गुरु वर्णों के क्रम से प्रत्येक चरण में १९ वर्णों वाले एक वृत्त का नाम।

वि.—१ आनन्ददायी, हर्षकारी।

२ श्वेत। * (डिं. को.)

३ पीला। * (डिं. को.)

रू. भे.—संभ, संभू, सिंभु, सिंभू, सिंभौ।

संभुगिरि—सं. पु. यौ. [सं. शंभुः+गिरि] कैलाश पर्वत।

संभुतेज—सं. पु. [सं. शभु+तेज] पारद, पारा।

संभुनाथ—देखो 'संभूनाथ' (रू. भे.)

संभुबीज–सं. पु. [सं. शंभुबीज] पारद, पारा।

संभुभूसण–सं. पु. [सं. शंभुभूषण] १ शिव का आभूषण।

२ सर्प।

३ चंद्रमा।

संभुमनु; संभुमुनी, संभूमन, संभूमुनी—देखो 'स्वयंभुव' (रू. भे.)

संभुलोक–सं. पु. [सं. शंभुलोक] कैलाश पर्वत।

संभुवा–सं. स्त्री. [सं. शंभुवा] गंधाररराज सुबल की कन्या, धृतराष्ट्र की पत्नी व गांधारी की बहन।

संभुसुत–सं. पु. [सं. शंभुसुत] १ स्कन्द देव।

२ गजानन, गणेश।

संभू–सं. पु.—देखो 'संभु' (रू. भे.) (डिं. को; डिं. नां मा.)

उ०—चूका वयण मंदार चाढतां, सुर नर साहौ मांन असत्त। भोळै भाव आवियौ भूरौ, भोळा संभू तणौ भत्त।

—चतुरौ मोतीसर

संभूत–वि. (स्त्री. संभूता) १ एक साथ उत्पन्न।

२ उत्पन्न।

उ०—स्वक्रोधा सुसुक्षा धगधगित दक्षाधिप-सुता, सिलोचै संभूता धजर अवधूता अदभुता। भुलांनी भीलांनी प्रगट न पिछांनी पसुपती, अई इंदू अंबा जयति जगदंबा भगवती।—मे. म.

३ पुराणों के अनुसार राजा पुरुकुत्स के पुत्र त्रसद्दस्यु के पुत्र का नाम।

उ०—पुरुक्रुसीमांन सुत वंस रूप। पुरक्रुस्समु तणै संभूत भूप।

—सू. प्र.

संभूति; संभूती–सं. स्त्री. [सं. सम्भूति] १ अंगवंशीय विजय की माता व जयद्रथ की पत्नी।

२ पौर्णमास की माता एवं ब्रह्म पुत्र मरीचि की पत्नी का नाम।

३ वैराज की पत्नी व चाक्षुष मन्वन्तर के अजित, नामक अवतार की माता।

सं. पु.—वसुदा का पुत्र।

संभूनाथ–सं. पु. [सं. शभुनाथ] शिव, महादेव।

उ०—आवा लोमंच दधीच दावा उपावा बिरंच अेम, संभूनाथ सुभावां सहावां जेम सेस। जंग जीतबा धावां दनेस तेज तावां जेम, बेदां सांमबेद गावां रावां 'बखतेस'।—राव बगतसिंघ रौ गीत

रू. भे.—संभनाथ, संभुनाथ।

संभूभेख, संभूभेस–सं. पु. [सं. शंभुभेष] दशनामी संन्यासियों द्वारा मृतक के पीछे किया जाने वाला वृहद भोज जिसमें दशनामियों के अतिरिक्त नाथ, जोगी, साधु, फकीर व ब्राह्मण भी आते हैं।

(मा. म.)

संभूम–सं. पु.—एक चक्रवर्ती राजा।

उ०—जोयउ चक्रवर्ती आठमउ, संभूम तउ जीव। सातमियर नरकइ गयउ, करतउ मुख रीव।—स. कु.

संभूमन, संभूमनु—देखो 'स्वयंभुव' (रू. भे.)

उ०—संभूमन त्रप दसरथ्थ समथ्थी, कोसल्या सतरूपा कथ्थी।

—रांमरासौ

संभेदतीरथ–सं. पु. [सं. संभेदतीर्थ] तिलोदकी व सरयू नदी के संगम पर स्थित एक तीर्थ।

संभेदन–स. पु.—जुटाने, भिड़ाने, मिलाने की क्रिया।

संभेरी–सं. पु.—एक राजा का नाम।

उ०—सिवभूत राजा ४ रौ संभेरी राजा जिण सांभर बसायौ।

—रा. वं. वि.

संभेळौ—देखो 'सांभेळौ' (रू. भे.)

उ०—उजणीपुर आविया, संभेळौ सिणगार बे। बांह पासावै सहु मिल्या, सगळी धरी मनवार वै।—रिसाळू री बात

संभोग–सं. पु. [सं. सम्भोग] १ किसी वस्तु का भली भांति किया जाने वाला उपयोग।

२ रति-क्रीड़ा, मैथुन।

उ०—वात न कहुं प्रगट करै, संभोगे अनुकूल। जन्म न ऐड़ा पुरस रौ, प्रिया न विसरै मूळ।—वैताल पच्चीसी

३ साहित्य में श्रृंगार-रस का एक भेद, संयोग श्रृंगार।

४ वह पुरुष जो गुदा मैथुन का आदि हो गया हो।

५ व्यवहार।

उ०—पन्नां नें दीक्षा देवा री आग्या नहीं। अनें जो दीक्षा दीधी तो आपां रे आहार पांणी रौ संभोग भेळौ नहीं।—भि. द्र.

वि. वि.—जैन साधुओं के आपस में बारह प्रकार के व्यवहार (बर्ताव) होते हैं। उनमें से एक साथ बैठकर भोजन पान करने का भी व्यवहार होता है। सो यदि 'पन्ना' के बिना आज्ञा दिक्षा दे दी गई हो तो एक साथ बैठकर भोजन करने का व्यवहार शामिल न होगा।

६ हाथी के कुम्भस्थल या मस्तिक का एक भाग।

संभोगी–वि. [सं. संभोगिन्] १ संभोग करने वाला।

२ उपभोग करने वाला।

संभोग्य–वि.—१ जो उपयोग या उपभोग के लिए हो।

२ जो संभोग किये जाने के लिए योग्य हो।

संभोज–सं. पु. [सं.] १ भोजन, खाना।

२ खाद्य सामग्री।

संभोजक–वि. [स.] भोजन करने वाला एवं खाने वाला।

संभोजन–सं. पु. [सं.] १ भोज, दावत।

२ भोजन की सामग्री।

संभोज्य–वि. [सं.] खाने योग्य, खाने की।

संभ्रत–वि. [सं.] आश्चर्यान्वित, अचंभित।

उ०—व्रत सदन पीत पताक फरकत वरण चहुं सुखवेस। मध

जनकपुर सुर असुर मांनव, पडे संभ्रत पेख ।—र. रू.

संभ्रम–सं. पु. [सं. सम+भ्रम] १ पुत्र, लड़का ।

उ०—१ खगां झट वाहन रौद्रव खूर, सझै जुध 'भारथ' 'संभ्रम' 'मूर' । हुई दळ मूगळ चाढत हीक, महाबळ राड़ करै मछरीक ।
—सू. प्र.

उ०—२ 'वाघ' 'सुत' 'गोपाळ' खेत 'चांपा' हर ओपम । लखमण संभ्रम 'प्राग' 'माल' 'सुरतांण' समोभ्रम ।—गु. रू. बं.

२ पौत्र, पोता ।

३ युद्ध, संग्राम ।

उ०—सुतन 'सुजांण' 'अनौ' प्रिय संभ्रम, 'अखौ' बिन्है आया जम ओपम । 'अनै' तणौ करि कोप अकारौ, 'गजन' आवियौ चाळागारौ ।—रा. रू.

४ आतुरता, घबराहट ।

५ गलती, भूल । ६ मान, आदर, सम्मान ।

७ चारों ओर घूमने या चक्कर लगाने की किया ।

८ भ्रम, भ्रांति ।

उ०—सोभा अति सागर तणी, जो नहीं वरणी जात । देखि भरघौ मंजार दधि, पय भोळै पी जाय । पय भोळै पी जाय, भलौ इण भांत सूं । हूंसां संभ्रम होय, क्षीरसिंधु-खांत सूं । वणियौ ताळ विहद, 'वखत' नृप वार रौ । उण पर अधिक आरांम, 'वखत' नृप वार रौ ।—सिवबख्स पाल्हावत

८ एक शिवगण का नाम ।

वि.—१ भ्रमित ।

उ०—उपवन मुनि मेल्है सिख इतरै, जवन सक्रोध आविया जितरै । संभ्रम दिल आसमां सिकारां, पीड़त मुनि कीधा अणपारां ।
—सू. प्र.

२ प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

उ०—देसपति संभ्रम घणी दौलति प्रकति मति प्रघलं नखत्रैत जोध निरेहणं वड खत्री सारिख वेहण एकल्लं मल्ल दुभल्ल आंकल कहि कलहि अकलं ।—ल. पि.

३ तुल्य, समान, बराबर ।

रू. भे.—संभम, समोभ्रम, संभ्रमी, सभ्रम, समभ्रम, समोभरम, समोभ्रम, समोभ्रमी ।

संभ्रमणौ, संभ्रमबौ–क्रि. स.—१ आश्चर्य करना, अचम्भा करना ।

२ गलती करना, भूल करना ।

३ भ्रम करना, शंका करना ।

४ युद्ध करना, संग्राम करना ।

क्रि. अ.—५ आश्चर्यान्वित होना, अचम्भित होना ।

उ०—कह कारखानां गिणत कुण कुण, संभ्रमें तिहुंलोक सुण सुण । विसद जग उजवाळ विरदां, सत्रा सांभण सूर ।—र. रू.

६ गलती होना, भूल होना ।

७ भ्रमित होना, शंकित होना ।

उ०—लोहां लोड बोड जल लागै, सूर आवरत्त संभ्रमिया । काळै थाट तणा कलमायण, काळै वार आहार किया ।—नाथौ सांदू

८ युद्ध होना, संग्राम होना ।

९ आतुर होना, घबराना ।

संभ्रमणहार, हारौ (हारी), संभ्रमणियौ – वि० ।

संभ्रमिओड़ौ, संभ्रमियोड़ौ संभ्रम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संभ्रमीजणौ, संभ्रमीजबौ —कर्म वा०; भाव वा० ।

संभ्रमियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ आश्चर्य किया हुआ; अचंभा किया हुआ. २ गलती किया हुआ, भूल किया हुआ. ३ भ्रम किया हुआ, शंका किया हुआ. ४ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. ५ अचंभित हुवा हुआ, आश्चर्यान्वित हुवा हुआ. ६ गलती हुवा हुआ भूल हुवा हुआ. ७ भ्रमित हुवा हुआ, शंकित हुवा हुआ. ८ युद्ध हुवा हुआ, संग्राम हुवा हुआ. ९ आतुर हुवा हुआ, घबराया हुआ ।

(स्त्री. संभ्रमियोड़ी)

संभ्रमी—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

उ०—१ सेतरांम संभ्रमी इळा ऊठियै कनूजा । जगत जात रिण-छोड़, कीध वेदोगत पूजा ।—गु. रू. बं.

उ०—२ बांध नेत रिण खेत सैंद अल्ली मेंहमूंदह । हैफखांन संभ्रमी पडै पोरस्स मयंदह ।—गु. रू. बं.

संभ्रांणी–सं. स्त्री.—१ घोड़े की एक जाति विशेष ।

सं. पु.—२ उक्त जाति का घोडा ।

संभ्रांत–वि. [सं. सम्भ्रान्त] चारों ओर घुमाया हुआ ।

२ क्षुब्ध ।

३ सम्मानित, प्रतिष्ठित ।

संभ्रांति–सं. स्त्री.—१ संभ्रान्त होने की अवस्था या भाव ।

२ आतुरता, घबराहट ।

संमंद—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

संमध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

संम—देखो 'सम' (रू. भे.)

उ०—रचनां ईस्वर री ईस्वरता रोचै, संम दम स्त्रद्धा विण संभव नहीं सोचै ।—ऊ. का.

संमत, संमति, संमत्त—१ देखो 'संवत' (रू. भे.)

उ०—१ सतरै संमत पोस पैंत्रीसैं, दसमी वार ब्रहस्पत दीसैं । सुरधर छत्र जिसौ महाराजा, सुरपुर गयौ लियां ब्रद साजा ।—रा. रू.

उ०—२ इति स्री राजरूपक मैं रूपसी कुंभकरणोत कांम आयौ । संमत १७ सै ३६ छतीस चतुरथ प्रकास ।—रा. रू.

२ देखो 'समिति' (रू. भे.) (अ. मा.)

३ देखो 'सम्मत' (रू. भे.)

संमद–सं. स्त्री. [सम्मदः] १ खुशी, प्रसन्नता । (डिं. को.)

उ०—'दूदा' सुणि मांनै अदेल, **संमद** तौ मो साखि। मारै नंहं मिळियां मुगळ, राज धरा धन राखि।—वं. भा.

२ देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

ऊ०—परणावौ जद फेर मनें नोंतहार बोलाया। ज्युं क्युं ई बाई नं वेस-वागौ मेल्हां। अर मांणक दोय, मोती च्यार दीया। सो देय **संमद** घरां गयौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

संमधणौ, संमधबौ—देखो 'समभणौ, समभबौ' (रू. भे.)

उ०—सतरि वरस लग **संमधौ** नांहीं, असियां विसंन न ध्यायो। चलण थक्या अब जीभ चलावै, नीवें कही दाय न आयो।

—परमांनंद वणियाळ

संमधणहार, हारौ (हारी), संमधणियौ—वि०।

संमधिओड़ौ, संमधियोड़ौ, संमध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संमधीजणौ, संमधीजबौ—भाव वा०।

संमधि-वि.—**१** सम्बन्धित।

उ०—हरिया सबद **संमधि** का, कह्यां सुण्यां क्या होय। जब नैंणां नहीं देखियौ, अंतर मिटै न दोय।—अनुभववांणी

२ देखो 'संमधी' (रू. भे.)

संमधियोड़ौ—देखो 'समभियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमधियोड़ी)

संमपणौ, संमपबौ-देखो 'समपणौ, समपबौ' (रू. भे.)

उ०—एक सहै दुख भूख, एक उपगार पयंपै। एक चढ़ै सुखपाल, एक सिर भार **संमपै**।—सुरजनदास पूनियौ

संमपणहार, हारौ (हारी), संमपणियौ—वि०।

संमपिओड़ौ, संमपियोड़ौ, संमप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संमपीजणौ, संमपीजबौ--कर्म वा०।

संमपियोड़ौ—देखो 'समपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमपियोड़ी)

संमपूरण—देखो 'संपूरण' (रू. भे.)

उ०—जैपौळ रै कोट रौ कमठौ अदुरौ थौ सौ **संमपूरण** करायो। पौळ रै पठै ऊपर साळां आदम्यां रै रैवण नै कराई।

—मारवाड़ री ख्यात

संमर—देखो 'समर' (रू. भे.)

उ०—हेवै दळां अमंगळ हूवौ, मुवौ सेख मिरजौ पण मूवौ। आसू वद वारसै दिन आसुर, मौत अचिंत गया कर **संमर**।—रा. रू.

संमरणौ, संमरबौ—देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

संमरणहार, हारौ (हारी), संमरणियौ—वि०।

संमरिओड़ौ, संमरियोड़ौ, संमरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संमरीजणौ, संमरीजबौ—कर्म वा०।

संमरदण, संमरदन-सं. पु. [सं. सम्मर्दन] वसुदेव व देवकी के एक पुत्र का नाम।

संमरियोड़ौ—देखो 'समरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमरियोड़ी)

संमळ—देखो 'समळ' (रू. भे.)

उ०—आतसूं कै धमकै बांणूकी चोट, **संमळ** चीतळ पाठै केतै लोट-पोट। ऐसी आखेट करि नौबत बाजतूं आए। दुसमणूं कूं दाह साजणूं के मन भाए।—सू. प्र.

३ देखो 'संवळौ' (मह; रू. भे.)

उ०—१ ग्रीध हळवळ **संमळ** गळगळ पळ गळ गरां। त्रिसळ सळ वळोवळ कळळ हूंकळ तुरां।—जैतसिंघ बदनोर रा धणी री बात

उ०—२ हुआ ग्रीध सममांण बाढ करिकां कूंबुअळ, नय हय गय पळ खीण। मत्त पळ जंबु **संमळ**।—गु. रू. बं.

४ देखो 'सिंवल' (रू. भे.)

५ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

संमळी-सं. स्त्री.—देखो 'संवळी' (रू. भे.)

उ०—ईयै ऊपरि **संमळी** छाया कीधी। नाग आय माथै छत्र करीयौ।—देवजी वगड़ावत री बात

संमळौ—१ देखो संवळौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

संमहणौ, संमहबौ—देखो 'संभणौ, संभबौ' (रू. भे.)

उ०—पाल्हणसी पुहविहि रह्यउ अनि **समह्या** सरग्गि। तिणि वेळा होया भरी, राइ राइ रोवण लग्गि।—अ. वचनिका

संमहणहार, हारौ (हारी), संमहणियौ—वि०।

संमहिओड़ौ, समहियोड़ौ, संमह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संमहीजणौ, संमहीजबौ—भाव वा०।

संमहियोड़ौ—देखो 'संभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमहियोड़ी)

संमाद—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—१ आयसजी देवनाथ जी रै ऊपर **संमाद** कराई।

—मारवाड़ री ख्यात

संमाणौ, संमाबौ—देखो 'समाणौ, समाबौ' (रू. भे.)

संमाणहार, हारौ (हारी), संमाणियौ—वि०।

संमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संमाईजणौ, संमाईजबौ—भाव।

संमायोड़ौ—देखो 'समायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमायोड़ी)

संमापित, संमापिता, संमापीत, संमापीता—देखो 'समापत' (रू. भे.)

उ०—स्रीविसनजी रा ग्रंथ ग्यांन सासत्र पुसगत नांम पोथौ संपुरण **संमापीता** लीखतुं परयागंद संत।—अग्यात

संमार-देखो 'संवार'(रू. भे.)

ऊ०—ताहरां भुंजाई मोहिल सारै कीवी छै। ताहरां मोहिल पांच सेर घिरत भुंजाई लागै छै। रावजी सूं कह्यौ—म्हूं थांहरै वडी **संमार** कीवी छै।—नैणसी

२ देखो 'संभाळ' (रू. भे.)

संमारजणी, संमारजनी-सं. स्त्री. [सं. संमार्जनी] झाड़ू, बुहारी। (डिं. को.)

रू. भे.—ममारजणी, समारजनी।

संमारणौ, संमारबौ—१ देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)

उ०—तालि चरंती कुंभड़ी, सर संधियउ संमार। कोइक आखर मनि बस्यउ, ऊडी पंख संमार।—ढो. मा.

२ देखो 'संभाळणौ, संभाळबौ' (रू. भे.)

उ०—ऊंडै जळ में लै चल्यौ, गज कूं विकटौ ग्राह। तब ततकार समारियौ, राधा नागर नाह।—गज-उद्धार

संमारणहार, हारौ (हारी), समारणियौ - वि०।

संमारिश्रोड़ौ, संमारियोड़ौ, संमारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संमारीजणौ, संमारीजबौ—कर्म वा०।

संमारियोड़ौ—१ देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संभाळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमारियोड़ी)

संमाळ—देखो 'संभाळ' (रू. भे.)

संमावणौ, संमावबौ—देखो 'संभावणौ, संभावबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'समाणौ, समाबौ'।

संमावणहार, हारौ (हारी), संमावणियौ – वि०।

संमाविश्रोड़ौ, संमावियोड़ौ, संमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संमावीजणौ, संमावीजबौ—भाव वा०।

संमावियोड़ौ—१ देखो 'संभावियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'समावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमावियोड़ी)

संमित-सं पु. [सं.] मरुतों के छठे गण का मरुत।

संमिति-सं. पु. [सं.] उत्तम मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक ऋषि।

संमिरणौ, संमिरबौ-क्रि. अ.—१ परस्पर टकराना, भिड़ना।

उ०—दिन राति न जांणइ दूसरी, नींद भूख त्रिस बीसरी। खंड-दाळि खीची खरी, सेन विन्है इम संमिरी।—अ. वचनिका

२ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

संमिरणहार, हारौ (हारी), संमिरणियौ – वि०।

संमिरिश्रोड़ौ, समिरियोड़ौ, संमिरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संमिरीजणौ, संमिरीजबौ—कर्म वा, भाव वा०।

संमिरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ परस्पर टकराया हुआ।

२ देखो 'समरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमिरियोड़ी)

संमिळणौ, संमिळबौ-क्रि. अ.—१ शामिल होना, सम्मिलित होना, मिलना।

उ०—१ दळां मिळण मुख आखै दूऔ, होळी खेल नगारौ हूऔ। सुण डेरां बारै भड़ सारा, अति बळ दळ संमिळै अपारा। —रा. रू.

उ०—२ रुधिर धर रळतळी, बहु नाचइ कमंध महाबळी आळू-झइ आंत्रावळी। आलम अचळेसरि अड्यां सेन विन्है इस संमिळी। —अ. वचनिका

२ मिलाप होना।

३ संम्मिश्रण होना।

संमिळणहार, हारौ (हारी), संमिळणियौ—वि०।

संमिळिश्रोड़ौ, संमिळयोड़ौ, संमिळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संमिळीजणौ, संमिळीजबौ—भाव वा०।

संमिळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ शामिल हुवा हुआ, सम्मिलित हुवा हुआ, मिला हुआ. २ मिला हुवा हुआ. ३ सम्मिश्रण हुवा हुआ। (स्त्री. संमिळियोड़ी)

संमी—देखो 'समी' (रू. भे.)

संमीपत्य—देखो 'सांमीपत्य' (रू. भे.)

उ०—हरि कौ भै उर धारि कै, भगति भंजन कर सोय। सालोक साजज सारूप, सोई संमीपत्य होय।—परमानंद वणियाळ

संमुखी-सं. पु. [सं. सम्मुखिन्] शीशा, दर्पण। (डिं. को.)

संमुखीन-वि. [सं. सम्मुखीन] १ सामने का, सम्मुख का। (डिं. को.)

२ आमने-सामने।

क्रि. वि.—सामने, सम्मुख।

संमुद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

संमुद्राव-सं. पु. [सं.] १ युद्ध में भागने की क्रिया। (डिं. को.)

समुह, संमुहउ—देखो 'समूह' (रू. भे.)

उ०—जउ पहिलाउं बेटी जाई, माई बाप काल मुहां थाई, जसु घरि बेटी आवी, पूठि लागि चिंता आवी, बेटी घर संमुहउ पाउ चालइ दारिद्र वाट देखावइ।—व. स.

संमुहणौ, संमुहबौ—देखो 'संभणौ, संभबौ' (रू. भे.)

संमुहा—देखो 'समुहा' (रू. भे.)

उ०—ज्यूं ए डूंगर संमुहा, त्यूं जइ सज्जण हुंति। चंपावड़ी भमर ज्यउं, नयण लगाइ रहंति।—ढो. मा.

संमूह—देखो 'समूह' (रू. भे.)

उ०—संमूह सेन असंख सफां, भ्रिगग मुज्झै मंझळी। मल्हपति फौजां मुहरि मैंगळ, सूंड डोहै सिघळी।—गु. रू. बं.

संमेहळौ—देखो 'सांमेळौ' (रू. भे.)

उ०—सुरति करि आरती निरत नेता लीयां, सांम संमेहळै मिळै सारा। ब्रह्म वर बींदणी खैरवंटी खरी, इंद ज्यूं ओवड़ै इमी धारा।—अनुभववांणी

संमोभ्रम—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

संमोय-सं. पु.—संयम।

उ०—काया निरमळ जल्य मांजंणौ, वाचा अमल सति बोलणौ। मन निरमळो ग्यांन सूं होय, पांचूं इंद्री रहै संमोय।—वील्होजी

संमोवणौ संमोवबौ—१ देखो 'संवारणौ, संवारबौ'।
२ देखो 'संमोहणौ, संमोहबौ' (रू. भे.)
संमोवणहार, हारौ (हारी), **संमोवणियौ**—वि०।
संमोविश्रोड़ौ, संमोवियोड़ौ, संमोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संमोवीजणौ, संमोवीजबौ—कर्म वा०।

संमोवियोड़ौ—१ देखो सवारियोड़ौ'।
२ देखो 'संमोहियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संमोवियोड़ी)

संमोहण—सं. पु. [सं. सम्मोहनः] १ कामदेव के पांच बाणों में से एक।
[सम्मोहन] २ मोहित करने की क्रिया, वशीकरण।

संमोहणौ, संमोहबौ—क्रि. अ.—१ आकर्षित होना, मोहित होना।
क्रि. स.—२ आकर्षित करना, मोहित करना।
संमोहणहार, हारौ (हारी), **संमोहणियौ**—वि०।
संमोहिश्रोड़ौ, संमोहियोड़ौ, संमोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संमोहीजणौ, संमोहीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।
संमोवणौ, संमोवबौ, समोवणौ, समोवबौ, समोहणौ, समोहबौ, सम्मोहणौ, सम्मोहबौ—रू० भे०।

संमोहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ आकर्षित हुवा हुआ, मोहित हुवा हुआ.
२ आकर्षित किया हुआ, मोहित किया हुआ।
(स्त्री. संमोहियोडी)

संमौ—देखो 'समौ' (रू. भे.)

संम्य—देखो 'सम' (रू. भे.)
उ०—दिसा विमम्य संम्य हा अगम्य गम्य है नहीं। रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नहीं।—ऊ. का.

संम्रत—वि.—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ।
२ देखो स्म्रति' (रू. भे.)
उ०—१ तिणदी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै सब कच्चा है। बोलै स्रुत संम्रत स्यंभ अज वायक, सीतानायक सच्चा है।—र. ज. प्र.
उ०—२ संम्रत पुरांन वेद आगम अनेक पढ़ै, विरद तिहारौ नाथ तारन तरन कौ। मंछ कवि कहैं पुन सरन सधार ब्रिद याही तै सरन लयौ रावरै चरन कौ।—र. रू.
३ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

संम्रति, संम्रती, संम्रित—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)
उ०—१ जगत प्रसिध जैसाह, रचे वीमाह सुरंगम। स्रुति संम्रति व्रत सार, ग्रंथ पूछै निगमागम।—रा. रू.
उ०—२ संम्रित साख पुरान कु, सींख'रि भया सुजांन। हरीया अछर हेक विन, चतुराई सैं मांन।—अनुभववांणी

संम्रथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)
उ०—तूं मेरे संम्रथ धणी, असी करि धणियाप। तैं करतां क्या न हुवै, जळ मैं थळ नइयाप।—अनुभववांणी

संम्हा—सं. स्त्री. [सं. संमहाः] अग्नि-ज्वाला। (डिं. को.)

संयत—वि. [सं.] १ कैद या बंद किया हुआ। (डिं. को.)
२ बंधा या जकड़ा हुआ।
३ रोका हुआ।
४ मर्यादित।
५ व्यवस्थित, नियमबद्ध।
६ हद या सीमा में रखा हुआ।
७ वह जिसने पंचेंद्रियों पर काबू पा लिया हो।
सं. पु.—१ कैद।
२ युद्ध, संग्राम।
३ योगी, संन्यासी।
४ शिव, महादेव।

संयद्वसी—स. स्त्री. [सं.] सूर्य की सात किरणों में से एक किरण का नाम।

संयम—स. पु. [सं. संयमः] १ रोक, दमन।
उ०—सरीर सरोवर रांम जळ, मांही संयम सार। दादू सहजैं सब गये, मन के मेल विकार।—दादूवांणी
२ चित्त की अनुचित वृतियों का निरोध, इंद्रिय-निग्रह।
उ०—संयम सहाय, अल अंतराय। परहरहु पीर, तुरीयाब्धि तीर। त्रहुं ताप तोर, घननाद घोर। आस्चर्य एह, दुधवि विदेह।
—ऊ. का.
३ क्रोधादि में न आने की क्रिया, शान्त रहने की क्रिया या भाव।
४ धार्मिक व्रत।
उ०—१ घड़ै चीकणौ छांट, रवै ना तिसळै नीचै। घट काचै पट रचै, जचै रंग सोणौ सीचै। बाळक पण रौ पाठ सकळ उपदेसां सांचौ। पढ लिख सीखो संयम, बाळकां थे घट काचौ।—दसदेव
उ०—२ पइसौ पांणी में मेल्यां डूबै अनै उण ही पइसा ने ताप लगाय कूट-कूट नै बाटकी कीधी ते तिरै। उण बाटकी में पइसौ मेलै तो पइसौ पण तिरै। तिम जीव तप, संयम आदि करि आतमा हळकी कीधां तिरै।—भि. द्र.
५ स्वास्थ्य की दृष्टि से शरीर को हानिकारक कार्यों या बातो से बचते हुए अलग या दूर रहने की क्रिया या भाव, परहेज।
६ अनुचित कार्यों या बातों से अपने आपको रोकना।
७ धूम्राक्ष का एक पुत्र।
८ मन की एकाग्रता एवं योग के धारणा, ध्यान व समाधि।
९ व्यवस्थित रूप से बांधने या बंद करने की क्रिया या भाव।
१० महाराजा अम्बरीख के सेनापति सुदेव द्वारा मारा गया एक शतमृंग नामक राक्षस।
११ राजर्षि कृशाश्व के पिता।
रू. भे.—संजम, संजमि, संजिम।

संयमन—सं. पु.—१ संयम करने की क्रिया या भाव।

२ अनुचित या बुरी बातों व कार्यों से मन को रोकने की क्रिया।

३ आत्म निग्रह।

४ शृंगार में एक प्रकार का आसन।

५ दुर्योधन पक्षीय एक राजा।

संयमनी, संयिमनी-सं. स्त्री. [सं. संयमिनी] यमपुरी।

उ०—क्षिणि क्षिणि दक्षिण पवन ! तूं, अंगि म करइ आकूत। संयिमनी थई संचरिया, जांणै करि जिम-दूत।—मा. कां. प्र.

संयमी-वि. [सं. संयमिन्] संयम से रहने वाला, मन को वश में रखने वाला।

उ०—भय ध्वंस संयमी बक्र प्रसंसा भारी। मुख आगै छिपतै फिरतै मांसाहारी।—ऊ. का.

सं. पु.—१ तपस्वी।

२ ऋषि।

३ साधु।

वि.—जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, जितेंद्रिय।

रू. भे.–संजमि, संजमी।

संयाति, संयाती-सं. पु. [सं. संयाति] १ आयु के वंशज नहुष के छः पुत्रों में से एक जो ययाति का भाई था।

२ पुरुवंशीय अहंयाति का पिता एवं प्राचिष्वन का पुत्र जो दृषद्वान की पुत्री वरांगी का पति था।

संयार, संयारड़ी-सं. स्त्री.—बढई के काम आने वाला एक औजार विशेष जो लकड़ी के छेद करने के काम आता है।

संयु-सं. पु. [सं. शंयु] १ वृहस्पति-पुत्र एक अग्नि जो धर्मदेव की पुत्री सत्या का पति था।

२ यज्ञ की विशिष्ट पद्धति के ज्ञाता एक आचार्य।

संयुक्त-सं. पु. [सं] १ सहित।

उ०—१ लखण बत्रीस संयुक्त बाललीला माहै राजकुआरि दूलडिया रमै छइ।—वेलि. टी.

उ०—१ वाणारसी नगरी भणी नांम चार प्रिया संयुक्त प्रकांम। —वि. कु.

२ बराबर।

३ सम्मिलित, शामिल।

४ जुड़ा हुआ, संलग्न।

५ जिसका विघटन न हुआ हो।

६ साथ मिल कर काम करने वाले।

रू. भे.—संजत, संजुक्त, सजुगत, संजुगता, संजुगति, संजुगुत, संजुगुता, संजुत, संजुति, सजुत्त, संजुत्ता, संजुत्तु, संजूत, संयुगत, संयुत।

संयुक्ता-सं. स्त्री. [सं.] प्रत्येक चरण में स, ज, न, ग वाला एक प्रकार का छन्द विशेष।

रू. भे.—सजुता।

संयुग-सं. पु. [सं] १ मिलाप, संयोग।

२ भिड़न्त, टक्कर।

३ युद्ध, लड़ाई।

संयुगत, संयुत—देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—मणि मांणिक हीर पन्ने सोव्रन संयुगत मीने के कांम पाघ पर जंवहरी किलंगी धरी।—सू. प्र.

संयुप-सं. पु. [सं.] सूर राजा का एक पुत्र यादव।

संयोग-सं. पु. [सं.] १ मिलन, मेल।

उ०—१ गुण गंध ग्रहित गिळि गरळ ऊगळित, पवण वाद ए उभय पख। स्रीखंड सेळ संयोग संयोगिणि, भणि विरहिणी भुयंग भख।—वेलि

उ०—२ दूसम काले दोहिलउ जी, सूधउ गुरु संयोग। परमारथ प्रीछइ नहीं जी, गडर प्रवाही लोग।—स. कु.

उ०—३ प्रगट करेवा पुरुखनइ, राइं तेडि गोग। कुण तै ? कुण कारणि दुखि ? सरसिइ किम संयोग ?—मा. कां. प्र.

२ समागम।

३ वैशैषिक दर्शन के चौबीस गुणों में से एक गुण।

४ बराबर, समान।

५ समान उद्देश्यार्थ की गई सन्धि।

६ प्रेमी और प्रेमिका का मिलन।

७ व्याकरण में व्यञ्जनों का मेल।

८ रति क्रीड़ा, मैथुन।

९ दो ग्रहों का समागम।

१० आकस्मिक रूप से आने वाली वह स्थिति जिसमें एक घटना के साथ ही कोई दूसरी घटना भी घटित हो, इत्तफाक।

११ शिव, महादेव।

१२ मिलावट, मिश्रण।

१३ वैवाहिक सम्बन्ध।

१४ योग, जोड़।

रू. भे.—संजोग, संजोगी।

संयोगमंत्र-सं. पु. [सं.] वह वेद मंत्र जो विवाह के समय पढ़ा जाय।

रू. भे.—सजोगमंत्र

संयोगविरुद्ध-सं. पु. [सं.] कुछ पदार्थ विशेष जो परस्पर मिल जाने पर यदि खाये जाय तो रोग उत्पन्न कर देते हैं।

संयोगिता-सं. स्त्री.—राजा जयचंद की पुत्री तथा हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की पत्नी का नाम।

रू. भे.—संजुता, संजोगिता।

संयोगी-वि. [सं.] (स्त्री. संयोगण, संयोगणी, संयोगन, संयोगिण, संयोगिणि, संयोगिणी, संयोगिन, संयोगिनी) जिसका मिलन या मिलाप हो चुका हो।

उ०—१ संयोगिनी कौ वेस देखइ, तब उवेख्यउ कंत। स्रंगार

सोभित सहल अंगइ, महल दीप दीपंत ।—वि. कु.

उ०—२ गुण गंध ग्रहित गिळि ऊगळित, पवण वाद ए उभय पख । स्रीखंड सैल संयोग संयोगिणि, भणि विरहणी भुयंग भख ।

—वेलि

२ विवाहित ।

३ जो संयोग के फलस्वरूप हुआ हो ।

रू. भे.—संजोगि, संजोगी ।

अल्पा; —संजोगो

संयोजक—सं. पु. [सं] मिलाने वाला, संयोजन करने वाला ।

संयोजन—स. पु. [सं] १ मेल-मिलाप ।

२ सम्मिश्रण ।

३ मैथुन, रतिक्रीड़ा ।

४ कार्य-व्यवस्था ।

संयोजित—वि. [सं.] जिसका संयोजन किया गया हो ।

संयोधकंटक—सं. पु. [सं.] कुबेर के एक अनुचर का नाम ।

संरंभ—सं. पु. [सं.] १ क्रोध, गुस्सा ।

२ आरंभ, शुरुआत ।

३ उत्पात, हंगामा ।

४ गर्व, घमण्ड ।

५ उत्साह, उमंग ।

संरक्षक—स. पु [सं.] १ आश्रय दाता ।

२ पालन-पोषण करने वाला ।

३ रक्षक ।

४ अभिभावक ।

संरक्षण—सं. पु. [सं.] १ देख-रेख, निगरानी ।

२ अधिकार, कब्जा ।

३ हिफाजत ।

संरक्षी—वि. [सं. संरक्षिन्] देख रेख करने वाला ।

संराधन—सं. पु. [सं.] १ जय जयकार ।

२ ध्यान, मग्नता ।

३ पूजा, अर्चना ।

संरुढ—वि. [सं.] १ अच्छी तरह चढा हुआ या जमा हुआ ।

२ साथ-साथ उत्पन्न हुवा हुआ ।

३ धृष्ट ।

संरोध—सं. पु. [सं.] १ रोक, रुकावट ।

२ बाधा, अड़चन ।

३ नाकेबंधी ।

४ घेरा ।

संलग्न—वि. [सं.] १ सटा हुआ, जुड़ा हुआ, निकटस्थ ।

२ भिड़ा हुआ ।

३ लीन, मग्न ।

संलपन—सं. पु.—प्रलाप ।

२ गपशप, बातचीत ।

संलय—सं. पु. [सं.] १ नींद, निद्रा । (डि. को.)

२ घुलाव, लीनता ।

संलाप—सं. पु. [सं.] बातचीत, वार्तालाप ।

उ०—जिणरा बीरपण हूँ रीझिये थके रणमस्त खांन भी उर हूं लगाइ हितरौ संलाप घड़ियौं ।—वं. भा.

संलापक—सं. पु. [सं. संलापकः] १ नाटक में एक प्रकार का संवाद ।

२ एक प्रकार का उपरूपक ।

वि.—वार्तालाप करने वाला ।

संलिप्त—वि. [सं.] १ लीन, लगा हुआ ।

२ घुला-मिला हुआ ।

संलीण, संलीन—वि. [सं.] १ आच्छादित, ढका हुआ ।

२ अच्छी तरह लगा या सटा हुआ ।

३ संकुचित, सिकुड़ित ।

संलीणया—सं. स्त्री.—पचेंद्रियों को वश में करके मन, वचन, काया आदि के अशुभ योगों को रोकने की क्रिया ।

संलीयणाव्रत—सं. पु.—एक प्रकार का व्रत विशेष जिसमें पंचेंद्रियों को वश में करके मन, वचन, काया आदि के अशुभ योगों को रोका जाता है ।

संलेखणा, संलेहण, संलेहणा—१ संथारा के पूर्व अनशन करने की क्रिया ।

उ०—संलेहण पचखांण पादपोपगमनताजी, स्वरगगमन सुभकुल उतपत्ति प्रधान हो ।—वि. कु.

२ एक प्रकार की तपस्चर्या विशेष । (जैन)

३ शरीर को आगमोक्त विधि से पतला, दुर्बल व क्षीण बनाने की क्रिया ।

वि. वि.—आगमोक्त विधि में तीन तरह से शरीर को पतला व दुर्बल बनाया जाता है :—

१ जघन्य—यह ६ माह तक किया जाता है ।

२ मध्यम—यह एक वर्ष तक किया जाता है ।

३ उत्कृष्ट—यह १२ वर्ष तक किया जाता है ।

उक्त १२ वर्षों में प्रथम ४ वर्षों में घी, तेल, मिठाई आदि का त्याग कर देते हैं । दूसरे ४ वर्षों में विचित्र तप करते हैं । फिर दो वर्षों तक एकान्तर उपवास किया जाता है । फिर ६ माह तक अतिविकृष्ट तप आदि किये जाते हैं । फिर ६ माह तक बेला, तेला आदि उपवास किये जाते हैं । इस तरह बढाते-बढाते १२ वर्ष तक उपवास किया जाता है एवं अन्तिम महिने या दो महीनों तक अनशन किया जाता हैं ।

रू. भे.—सल्लेहणा ।

संलोडण—१ झकझोरना, हिलाना ।

२ मथना, इधर-उधर करना।

३ उथल-पुथल करना।

संवच्छर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

उ०—संख्याता संवच्छर विगल आपांणी देह, सात आठ भव पंचिंद्री तिरि मणुआ जेह।—वृ. स्त.

संवच्छरी—देखो 'संवत्सरी' (रू. भे.)

उ०—संवच्छरी आयां कपूर जी कह्यौ—भीखणजी ! बायां सूं बोलचाली हुइ सो खमावा ने जाऊं हूं।—भि. द्र.

संवटणौ, संवटबौ—१ देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

उ०—म्हारा बीत्योड़ा बरस तौ म्हैं पाछा संवट नें म्हारै काबू कर लिया।—फुलवाड़ी

संवटणहार, हारौ (हारी), संवटणियौ—वि०।

संवटिओड़ौ, संवटियोड़ौ, संवट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संवटीजणौ, संवटीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

संवटियोड़ौ—१ देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'समेटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संवटियोडी)

संवत—अव्य. [स. सवत्] १ ईसा से ५६ वर्ष पूर्व प्रारंभ विक्रमादित्य वर्ष।

२ वर्ष, साल।

उ०—१ हरख अर उछाव रौ निवास ठारी सूं ई वत्तो हो। संवत अर तिथ सूं हिसाब लगायां जाच व्ही कै बादळ गूंगी री बेटी सूं फगत चाळीस दिन मोटौ हो।—फुलवाड़ी

उ०—२ पखवाड़ा दौ ए प्रगट, मुणू सदा हिक मास। बारै मासां सैं बळै, जांणू संवत जास।—डि. को.

३ किसी विशिष्ट गणनाक्रम वाली काल गणना।

उ०—१ संवत १७१५ रा वेसाख वदि १ रा राजा जैसिंघ बाहादर खांन सैंणं डेरा किया।—नैणसी

उ०—२ वरसि अचळ गुण अंग ससी संवति, तवियौ जस करि स्रीभरतार। करि स्रवणं दिन रात कंठ करि, पांमै स्रीफळ भगति अपार।—वेलि

उ०—३ प्रथवी तणउ ऊतारिउ भार, म्लेछ तणउ कीधउ संहार। संवत तेर भणीजइ जिसइ, अठसठउ संवत्सर तिसइ।

—कां. दे. प्र.

रू. भे.—संबत, संमत, संमत्त, संमति, समत, सम्मत।

संवतसर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

संवतसरी—देखो 'संवत्सरी' (रू. भे.)

संवत्सर—सं. पु.—१ वर्ष, साल।

उ०—प्रथवी तणउ ऊतारिउ भार, म्लेछ तणउ कीधउ संहार। संवत तेर भणीजइ जिसइ, अठसठउ संवत्सर तिसइ।

—कां. दे. प्र.

२ फलित ज्योतिष में पाँच पाँच वर्षों के युग में से प्रत्येक का प्रथम वर्ष जिसका देवता अग्नि होता है।

३ शिव, महादेव।

४ विष्णु।

५ विक्रमादित्य वर्ष।

६ वर्ष के अधिष्ठाता।

रू. भे.—संवच्छर, संवतसर, समंछर, ममतसर, समत्सर।

संवत्सरी—सं. स्त्री. [सं.] १ आषाढ शुक्ला चतुर्दशी से भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी तक कुछ कुछ अन्तर देकर किया जाने वाला व्रत।

२ मृत्यु दिवस या दाग तिथि के पश्चात् आने वाला वार्षिक दिन या इस दिन पर किया जाने वाला श्राद्ध।

रू. भे.—संबच्छसरी, संबतसरी, सवच्छरी, संवतसरी।

संवदण, संवदन—सं. पु. [सं. संवदन] १ बातचीत, वार्तालाप

२ मंत्र द्वारा वशीभूत करने की क्रिया।

३ परीक्षा।

४ मंत्र।

संवर—सं. पु. [सं.] १ जैन धर्मानुसार इन्द्रिय और योगों की अशुभ प्रवृत्तियों से आते हुए कर्मों को रोकने की क्रिया या ढंग।

उ०—१ जीव अजीव पुन्य पाप ही आस्रव संवर धार। निरजरा बंध मोक्ष रौ, जांण पणौ छै सार।—जयवांणी

उ०—२ इन्द्रिय पांचे आप मुराहिदा, अधिक करे उन्माद। संवर भाव न आवै सर्वथा, पड़चौ जे प्रमाद।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ जद स्वांमीजी बोल्या—एक मुहुरत नौ संवर कर। इम कही संवर कराय पछै उणसूं चरचा कर भिन भिन भेद बताय उण री संका मेटने पगां लगाय दियो।—भि. द्र.

वि. वि.—इसके संक्षिप्त भेद निम्न है :—

१ श्रोत्रेन्द्रिय संवर. २ चक्षुरिन्द्रिय संवर. ३ घ्राणेन्द्रिय संवर. ४ रसनेन्द्रिय संवर ५ स्पर्शनेन्द्रिय संवर ६ मनसंवर ७ वचन संवर ८ काय संवर ९ उपकरण संवर १० सूवी-कुशाग्र संवर।

इसके बीस संक्षिप्त भेद निम्न है :—

(एक से पांच) अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह उक्त पांचों व्रतों का पालन करना।

(छः से दस) श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय उक्त पांचों इन्द्रियों को वश में रखना।

(दस से पन्द्रह) सम्यकत्व, प्रत्याख्यान, कषाय का त्याग, प्रमाद का त्याग व शुभयोगों की प्रवृत्ति।

(सोलह से अठारह) मन, वचन और काया उक्त योगों को वश में रखना।

१९ भेद, उपकरणादि को यतनों से लेना रखना।

२० सूई, कुशाग्र मात्र को यतनों से लेना व रखना।

इसके विशेष भेद सत्तावन हैं जो निम्न प्रकार हैं :—

पांच समिति, तीन गुप्ति, बाईस परीखह, दस यतिधर्म बारह भावना और पांच चरित्र।

[सं. संवरं] १ दुराव छिपाव।

२ सहनशील होने की अवस्था।

३ जल, पानी।

[सं. संवरः] ४ सिकुड़न।

५ पुल, सेतु।

६ एक प्रकार का हरिन।

७ एक दैत्य का नाम।

८ देखो 'संबर' (रू. भे.)

संवरण–सं. पु. [सं] कुरुक्षेत्र के पिता एवं भारतवंशीय राजा ऋक्ष के पुत्र जो सूर्य पुत्री तपती के पति थे।

संवरत–सं. पु. [सं. संवर्त्त] १ वर्ष।

२ अंगिरा ऋषि के आठ पुत्रों में से एक।

३ संसार का नैमित्तिक प्रलय।

४ धर्मशास्त्र के लेखक का नाम।

संवरतक–सं. पु. [सं. संवर्त्तक] १ प्रलयाग्नि।

२ प्रलयकालीन बादल।

३ कश्यप एवं कद्रू का पुत्र एक नाग।

४ बलराम का नाम।

५ बलराम के हल का नाम।

६ महर्षि अंगीरा के पुत्र का नाम।

७ माल्यवान पर्वत पर के अग्निदेव जो सदैव प्रज्वलित रहते है।

८ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के पुत्रों में से एक।

संवरत्तकास्य–सं. पु.—एक शास्त्र विशेष। (व. स.)

संवरद्धन–सं. पु. [सं. संवर्द्धन] १ बढने की क्रिया या अवस्था, बढोतरी।

२ बढाना या उन्नत करने का कार्य।

संवरद्धित–वि. [सं. संवर्द्धित] १ बढाया हुआ।

२ पाला-पोषा हुआ।

संवरनाथ–सं. पु.—भविष्यत् काल के अट्ठारवें तीर्थंकर का नाम।

संवरणौ संवरबौ–क्रि. अ.—१ संवारा जाना।

२ देखो 'संवारणौ, संवराबौ' (रू. भे.)

उ०—पछै पातसाह जी आपरी अंगरह थी तठै ठौड़ संवराई।
—नैणसी

३ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

उ०—साइ सारदा मनि संवरि बांधउं ग्रंथ अपार। सूरति राखउं अचल-कउ, खउंदालिम्म सिकार।
—अचलदास खीची री वचनिका

संवरणहार, हारौ (हारी), **संवरणियौ** – वि०।

संवरिओड़ौ, संवरियोड़ौ, संवरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संवरीजणौ, संवरीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सुंवरणौ, सुंवरबौ—रू० भे०।

संवराणौ, संवराबौ–क्रि. स.—१ जीर्णोद्धार कराना, मरम्मत कराना।

उ०—१ जोधपुर गढ ऊपर राव जोधाजी रै करायोड़ौ कोट संवरायौ।—नैणसी

उ०—२ पछै वळै महाजनै महेसरीयां भूतड़ै फेर संवरायौ छै।
—नैणसी

उ०—३ श्री वाराहजी रौ देहुरौ पोकर मांथै सगर संवरायौ।
—नैणसी

२ साफ कराना, समतल कराना।

३ सजाना, अलंकृत कराना।

उ०—इतरी धरती हुई-पाट श्रीजोधपुर गढ। सोह राव मालदै संवरायौ। पहली गढ सहल थौ।—राव मालदै री बात

४ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह सुंदर जान पड़ें।

५ सुचारु रूप से कोई कार्य सम्पन्न कराना।

संवराणहार, हारौ (हारी), **संवराणियौ**—वि०।

संवरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संवराईजणौ, संवराईजबौ—कर्म वा०।

संवरणौ, संवरबौ, संवरावणौ, संवरावबौ, समराणौ, समराबौ, सवराणौ, सवराबौ, सुंवराड़णौ, सुंवराड़बौ, सुंवराणौ, सुंवराबौ, सुंवरावणौ, सुंवरावबौ—रू० भे०।

संवरायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ जीर्णोद्धार कराया हुआ, मरम्मत कराया हुआ. २ साफ कराया हुआ. ३ सजाया हुआ. ४ ठीक ठाक कराया हुआ. ५ सुचारू रूप से सम्पन्न कराया हुआ। (स्त्री. संवरायोड़ी)

संवरावणौ, संवरावबौ—देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)

संवरावणहार, हारौ (हारी), **संवरावणियौ**—वि०।

संवराविओड़ौ, संवरावियोड़ौ, संवराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संवरावीजणौ, संवरावीजबौ— कर्म वा०।

संवरावियोड़ौ—देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संवरावियोड़ी)

संवरियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ संवारा गया।

२ देखो 'संमरियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संवरियोडी)

संवळ–सं. स्त्री.—एक प्रकार की मछली विशेष जिसमें कांटे नहीं होते है।

२ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

३ देखो 'सिवळ' (रू. भे.)

४ देखो 'संबळ' (रू. भे.)

उ०—संवळ सिरावण सहु करी, मुकळावइ ऊमा देवडी । सपरिवार मिल्या सहु कोइ, करहूउ वळे पलांण्यउ सोइ ।—ढो. मा.

संवळी–सं. स्त्री.—१ चील पक्षी ।

उ०—कोई वीर पुरख री वीर स्त्री रा वचन है—संवळी प्रतै आपरौ पती जुद्ध में मारीज नें पड़ियौ ओर आप अंत री समै पती रा दरसण करण नें गई है तठै पती रा सव उपरै संवळी नें बैठी देख कहै है ।—वी. स. टी.

रू. भे.—समळी, सांवळी ।

२ देखो 'संवळौ' (पु.)

३ देखो 'सांवळौ' (पु.)

रू. भे.—संबळी, संभळि, संभळी, संमळ, संमळी, समळी, सवली, सांमळी, सांवळी ।

संवळौ–सं. पु.—श्याम रंग का कौए से बड़ा मांसाहारी पक्षी ।

वि. (स्त्री. संवळी) १ अनुकूल, पक्ष में ।

उ०—नारायण भज रे नरा, अंतरजामी एक । सांई जो संवळौ हुवै, अंवळा हुवौ अनेक ।—ह. र.

३ सीधा, सरल ।

४ उत्तम, श्रेष्ठ, बढिया ।

उ०—किन्या नें वर मिळ जाय अर पिंडतजी नै खासौ-भलो धन मिळ जाय अैड़ो हथळेवौ जोड़णो हो । रबड़तां-रबड़तां पगां में पांणी पड़ग्यौ, पण अैड़ो संवळौ जोग नीं सजियौ ।—फुलवाड़ी

५ सम्मुख, सामने ।

उ०—माथौ संवौ हुतौ सौ फिरनें अपूठौ हुवो, तरै साहजादी पूरव जनम री बात कही, तरै माथो अपूठो हुतौ सु फिरनें संवळौ हुवौ ।
—नैणसी

रू. भे.—संमळौ, समळौ, संवळौ ।

मह.—संमळ ।

६ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

संवह–सं. पु. [सं.] १ एक वायुमार्ग ।

२ देवताओं के विमानों का चालक वायु ।

३ अग्नि देव की जिह्वा का नाम ।

संवाद–सं. पु. [सं.] १ वार्तालाप, बात-चीत ।

उ०—दोनूं मां-बेटियां रा संवाद बादळ सुण्या तो अवस पण वांनै समझ्यौ कोनीं ।—फुलवाड़ी

२ खबर, समाचार ।

उ०—क्षेत्रपाल जी बोल्या कुसल संवाद छै पण राजा विक्रम गाढो सचितो छै ।—पंचदंडी री वारता

३ प्रसंग ।

४ सहमति, अनुमति ।

५ बहस, वाद-विवाद ।

रू. भे.—संवादौ, समंवाद, समवाद ।

संवादक–वि. [सं.] १ संवाद करने वाला, बातचीत करने वाला ।

२ समाचार देने वाला ।

संवादन–सं. पु. [सं.] १ भाषण ।

२ बातचीत, संवाद ।

संवादी–वि. [सं.] १ सहमत होने वाला ।

२ बातचीत करने वाला ।

३ बराबर, सदृश ।

४ समान, बराबर ।

उ०—तुम पातसाहां के संवादी सूर तैं सूर । तुमारी सिहाय आवै मेरे मुख नूर ।—रा. रू.

सं. पु.—जो स्वर राग के वादी स्वर का निर्वाह करे । (संगीत)

रू. भे.—समवादी ।

संवादौ–सं. पु.—१ लघु काव्य ।

२ देखो 'संवाद' (रू. भे.)

संवार–सं. स्त्री.—१ कृषि योग्य भूमि को समतल करने तथा मिट्टी के ढेलों को तोड़ने के लिए लकड़ी का बना एक उपकरण विशेष, भूमि समतल करने का पाटा, हेंगा ।

[सं.] ३ प्रातः काल, सुबह ।

उ०—१ कवेसरां मुखे वांणी कहांणी रहांणी क्रीत, सहेनांणी जेणी सांची वाखांणीजे संवार ।—नाथौ बारहठ

४ संवारने की क्रिया या भाव ।

५ बचत ।

मुहा.—घर हुवै संवार तो झख मारो गवार=घर में लाभ होता हो तो अन्य लोगों की बदनामी से नहीं डरना चाहिए ।

६ हजामत ।

रू. भे.—सुंवार, सुआर, सुवार ।

संवारण–स. स्त्री.—१ हटाने या दूर करने की क्रिया या भाव ।

२ निषेध करने का भाव ।

३ संवारने की क्रिया या भाव ।

वि.—सुधारने वाला ।

उ०—हरि पावक पावक पख जारण पारब्रह्म अध मेटण कारण । जळ थळ बास अरि आस निवारण, नाव निरुप घट घाट संवारण
— ह. पु. वा.

रू. भे.—सुंवारण ।

संवारणौ, संवारबौ–क्रि. स.—१ अलंकृत करना, सजाना ।

उ०—१ क्यांनै तौ रांमजी घोड़ा सिणगारौ क्यांनै पाखर कसिया । चुण चुण कळियां सेज संवारूं ऊपर गादी तकिया ।—मीरां

उ०—२ गाल बजावै गोलणां, गोल संवारै गात । सदा नचीता संचरै, सदा सुहागण मात ।—बां. दा.

उ०—३ जतन जतन कर पंथ निहारूं, पिव भावै त्यों आप संवारूं । अब सुख दीजै जाउं बलिहारी, कहै दादू सुन विपति

हमारी। —दादूबांणी

उ०—४ काजळ तो भरियौ ए जच्चा रांणी रै कूंपलौ ए बहू संग-गार दे नैण संवारै। — लो. गी.

२ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह सुंदर जान पड़े।

उ०—सांपड़ि खीर समंद दुरग संवारिया। धारा फेंण कलिंद तनूंजा धारिया। —बां. दा.

३ रचना, बनाना।

उ०—स्यांमा पातळ दसण दमकणा अधरे बिंबां। झुकती पीण कुचां धण चालै धीर नितंबां। नाभि उंडाळी छीण कटि चळ मिरगा नैणी। विधना रूप-गुमेज संवारी पेल सेलांणी। —मेघ

४ व्यवस्थित या ठीक रूप देना।

उ०—सील की वाड़ संवार चहुं दिस, पेम की फांसी डारै रे। जनहरिरांम मारि मन मिरघा, सब ही कांम सुधारै रे।

—अनुभववांणी

५ तैयार करना, सजाना।

उ०—सोधन पीवजी साज संवारी, अब वेगि मिळौ तन जाइ वनवारी। साज स्र'गार कीया मनमांही. अजहूं पीव पतीजै नांही।

—दादुबांणी

६ संभालना, ठीक करना।

उ०—१ डिग मती रे सरवरा लांबी छौळ न देय। आपै ही उड जावसां, पंख संवारण देय। —अग्यात

उ०—२ पांख संवारै पत्र करै, डाळा रंग भरेह। उडण वाळौ हंसलौ, बन बन डोय करेह। —अग्यात

७ सुधारना।

उ०—१ हुसंगसाह री सीख में कही छै रैयत व सिपाही रा कांम संवारणै में उतावळ अन्याय छै। —नी. प्र.

उ०—२ जापै में चाहै सूंठ यौ साग सवारै जीरो। सेजां में चाहै यै भोळी भावज म्हारौ बीरौ। —लो. गी.

उ०—३ जिको कांम बणै सौ बुद्धि रा जोर सूं संवारै।

—नी. प्र.

उ०—४ आपम सूरति चल्लणं, नंह मांणा संसारै। ओको अचळ दूंरगमा, बहु कांम संवारै। —मालौ सांदू

८ साफ करना, बुहारना।

उ०—बंधिया सील पोथी कथा, सुपह पंथ संवारियौ। सीभत आठ साका किया, वील्ह वैकुंठ सिधारियौ। —वील्होजी

९ अन्त स्पर्श करना, अन्तिम रूप देना।

उ०—म्हारै गळाई टांगड़ा छीदा करनै जद वै कूंद माथै मूळेट धरनै पाउट लेवण लागा, पाउट लियां पछै संवारण लागा अर संवारियां पछै न्यारा न्यारा भेलां में वासण धरिया तो म्हनै अैड़ौ लखायौ के ब्रिरमाजी म्हारी नकल काढै है। —फुलवाड़ी

१० तेज करना, तीक्ष्ण करना।

उ०—१ खुदा तालारी कृपा सूं बीरबळ मोनूं मिळियौ हौ। म्हारा दिल मांहली बात बाहर आंणतौ दारू ज्यूं। म्हारा सुखनबांण संवारण नूं खुरासांण हुतौ। —बां. दा. ख्यात

उ०—२ दुजड़ बांण जमदाढ, सेल दे बाढ संवारचा। अणियां धार उपेत, नेतबंध 'जेत' निहारचा। —मे. म.

११ ठीक करना, जीर्णोद्धार करना।

उ०—जैमल कोट फेर संवरायौ सहर रौ मंडांण निपट सखरौ छै।

—नैणसी

१२ सुचारू रूप से किसी कार्य को करना।

१३ ठीक करना।

संवारणहार, हारौ (हारी), संवारणियौ—वि०।

संवारिग्रोड़ौ, संवारियोड़ौ, संवारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

संवारीजणौ, संवारीजबौ—कर्म वा०।

संमारणौ, संमारबौ, संबारणौ, संबारबौ, समारणौ, समारबौ, सवारणौ, सवारबौ, सुंवारणौ, सुंवारबौ—रू० भे०।

संवारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सजाया हुआ. २ किसी चीज को ऐसा रूप दिया हुआ कि उससे वह सुंदर व अच्छी जान पड़े. ३ रचाया हुआ, बनाया हुआ. ४ व्यवस्थित या ठीक रूप दिया हुआ. ५ संभाला हुआ, तैयार किया हुआ, ठीक किया हुआ. ६ सुधार किया हुआ. ७ साफ किया हुआ, बुहारा हुआ. ८ अन्तस्पर्श किया हुआ, अन्तिम रूप दिया हुआ. ९ तेज या तीक्ष्ण किया हुआ. १० जीर्णोद्धार किया हुआ, ठीक किया हुआ. ११ सुचारू रूप से कार्य सम्पन्न किया हुआ।

(स्त्री. संवारियोड़ी)

संवारै—अव्य. [सं. श्वः] १ आने वाला दिन।

उ०—तरै सबळसिंघ कहाड़ीयौ-संवारै हूं जायनै परो काढीस।

—नैणसी

उ०—२ आथण रौ वळै मूळराज सीहाजी रै डेरै आयौ, वीनती घणी कीवी। संवारै मुकांम कीजै। म्हारौ घर पवीत्र कीजै।

—नैणसी

उ०—३ आथणी बीसमी किसौ अब अवरचौ, समी घर सेख रै बणी सादी। मिंध मुलतांण री सुध लै सिधाया, दूध तूं संवारै पियै दादी। —गोपीनाथ गाडण

२ प्रातः काल, तड़के।

उ०—१ चतुर होय कोई चेला चेली, ऊठ संवारै आवै। दरसण कर साधां रै दड़कै, पावां में पड़ जावै। —ऊ. का.

उ०—२ भली आकृति भाळ, धणी बणियां थुथकारै। राखै घणी धिणाय, पेट भर सांझ संवारै। —दसदेव

रू. भे.—सुंवारै, सुंवारो।

संवाळौ—देखो 'सुंवाळौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संवाळी)

संवास-सं. पु. [सं.] १ साथ बसना या रहना।
२ पारस्परिक सम्बन्ध।
३ सभा, समाज।
४ घर, मकान।
५ जन-साधारण के उपयोग के लिए नियत खुला स्थान।
६ स्त्री संभोग, मैथुन।

संवाहक-वि. [सं.] १ ले जाने वाला।
२ पहुँचाने वाला।

संवाहन-वि. [सं.] १ चलाने की क्रिया, परिचालन।
२ ढोना, उठाकर ले चलने की क्रिया।

संविग्य-वि. [सं. संविज्ञ] पूरी तरह से जानकार।

संविग्यांन-सं. [सं. संविज्ञान] १ पूर्ण ज्ञान।
२ सहमत, समर्थन।
३ मंजूरी, स्वीकृति।

संवित-सं. स्त्री. [स. संविद्] अंगीकार, स्वीकृत। (डिं. को.)

संवीत्पत्र-सं. पु.—वह पत्र जिसमें दो ग्रामों या प्रदेशों के बीच किसी बात के लिए प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हो।

संवी—देखो 'समी' (रू. भे.)
उ०—माथै नाळौ ऊंचौ राख **संवी** आंवळ धर दी। गुळ खोपरा अर आखां रैं भेळी आंवळ नैं बूर दी।—फुलवाड़ी
उ०—२ जे आप **संवी** सिध्या थकै वहीर व्हिया तौ म्हे अेक ई टुकड़ौ नीं तोड़ांला।—फुलवाड़ी
उ०—३ तरै कह्यौ—आंबारी आंबली हुवौ। सुवचन कहतां **संवी** आंबां री आंवली हुई, सु आंबली अजेस छै।—नैणसी
उ०—४ मंनसा भोजन मन **संवी**, हरि दीदार मिलाय। फुलौ हळवी पाटौ कुंबळी, बीजक इधक खिवाय।—वील्होजी
उ०—५ **संवी** सिध्या फोज कूच कीधौ। खंख रा गोट इण विध आभै चढ्या के ढळतौ गुलाबी उजास मगसौ पड़ग्यौ।—फुलवाड़ी

संवेग-सं. पु. [सं. संवेग] १ पूर्ण वेग, गति की तीव्रता, तेजी।
२ उत्तेजना, क्षोभ।
३ मोक्ष की अभिलाषा, इच्छा।
उ०—**संवेग** सुधारस नीर सबल सरवर भरया रे, पंच महाव्रत मित्र संजोगइ संचर्या रे।—ऐ. जै. का. सं.
३ विषय वासनाओं का त्याग, निवृत्ति, संयम।
उ०—१ वाद भणी विद्या भणीजी पर रंजण उपदेस। मन **संवेग** धरयउ नहीं, किम संसार तरेस।—स. कु.
४ वैराग्य भाव।
उ०—१ धन्नउ सालिभद्र बेहुं, भगवंत आदेस ले जी हो। **संवेग** सुद्ध धरेइ, वैभार गिरि ऊपरि चढ्या जी हो।—स. कु.
उ०—२ नारी तजि नीचउ उतरचउ **संवेग** मारग सूधउ धरचउ। सिला ऊपरि संथारउ करचउ वेगइ सुरसुंदरि नइ वरचउ।—स. कु.
५ सम्यकत्व के पांच अंगों में से एक अंग। (जैन)

संवेगी-वि.—१ वे जैनी साधू जो प्रायः पीली धोती व पीली चादर धारण करते हैं एवं २७ दिनों से अधिक किसी एक स्थान पर नहीं ठहरते, जैनी। (मा. म.)
२ सम्यकत्व को धारण करने वाला। (जैन)
उ०—जस नांमी 'सिवचंद' जी, चावुं चिहुं खंड नांम। **संवेगी** सिर सेहरौ, कीधा उत्तम कांम।—ऐ. जै. का. सं.
२ चरित्रवान, निष्ठावान।
३ वैरागी।
४ त्यागी।
उ०—छोडी रिद्ध छती ए **संवेगी** सुद्ध यती ए। पाप न लगावै रती ए।—जयवांणी
रू. भे.—समेगी

संवेटणौ, संवेटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)
उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—थांरै बाप हूंढ्यां लीखी, थांरै दादै हूंढ्यां लिखी, पाटा पाटी थेई संवेट्या कोइ नहीं।—भि. द्र.
संवेटणहार, हारौ (हारी), संवेटणियौ—वि०।
संवेटिओड़ौ, संवेटियोड़ौ, संवेट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संवेटीजणौ, संवेटीजबौ—कर्म वा०।

संवेटियोड़ौ—देखो 'समेटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संवेटियोड़ी)

संवेद-सं. पु. [सं.] १ सुख दुःख का बोध।
२ ज्ञान।

संवेदन-सं. पु. [सं.] १ सुख दुःख आदि का बोध, अनुभव।
२ प्रकट करने की क्रिया।

संवेदित-वि. [सं.] अनुभव या बोध कराया हुआ, बताया हुआ।

संवेद्य-वि. [सं.] १ अनुभव करने योग्य।
२ बताने योग्य।
सं. पु.—एक पुण्य स्थल।

संवेस-सं. पु. [सं. संवेश] १ पहुँचने की क्रिया।
२ प्रवेश करने या घुसने की क्रिया।
३ बैठने की क्रिया।
४ एक प्रकार का रतिबंध।
५ निद्रा, नींद।
६ स्वप्न।

संवेसक-स. पु. वि. [सं. संवेशक] चीजों को क्रम से रखने वाला।

संवेसण-सं. स्त्री. [सं. संवेशन] शय्या। (अ. मा.)

संवेस्टण-सं. स्त्री. [सं. संवेष्टन] १ घेरने या लपेटने की क्रिया।
२ ढाँकने की क्रिया।

संवौ—देखो 'समौ' (रू. भे.)

उ०—१ सु माथौ संवौ हुंतौ सो फिरनै अपूठौ हुवौ तरै साहजादी पूरव जनम री वात कही।—नैणसी

उ०—२ रांवण संवौ न राजवी लंका संवौ न थांन। कही पराई जे सुणै, जां सिर नांही कांन।—मेहोजी गोदारौ

संव्रत–सं. पु.—१ वरुण का एक नाम। (डिं. को.)

२ कश्यप कुल में उत्पन्न एक काद्रवेय नाग का नाम।

३ भगवान श्रीविष्णु का नाम।

संव्रति–सं. स्त्री. [सं. संवृत्ति] ब्रह्मा की सभा में रहने वाली उनकी उपासिका एक देवी।

संस–सं. पु. [सं. संशय] १ आशंका, शक।

२ शपथ।

उ०—पुनह राग्रै सब पसु अखै, सरेह कैम वन-मंस। कहौ तेम जिम हम करै, सो सलुक सोइ संस।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

संसकार—देखो 'संस्कार' (रू. भे.)

उ०—१ संसकार स्तुतिवांण सुणि, कूरम कै सक्कार। परणावै पधरावियौ, महलै राजकंवार।—रा. रू.

उ०—२ सरीर संसकार सार नीर छीर से सनैं। विध्वंस वेरि वंस कौ प्रसंसनीय तै बनैं।—ऊ. का.

उ०—३ राजा जैसाह कन्यावळ कौ संकळप लियौ। सो वेदोकति संसकार, करि पार कियौ।—रा. रू.

संसकिरत, **संसक्रत**—१ देखो 'संस्कृत' (रू. भे.) (अ. मा; नां. मा.)

उ०—१ कांनां नै सबद न भावै स्तुत कटु, सवदन सुधगत संस-किरत। अप्रयुक्त सुध सदन आख्यौ, अरथ कहण असमरथ अत।

—बां. दा.

उ०—२ पढ खट भाख संसक्रत पिंगळ, सुकवि वगौ समभ गुण सांम। प्रांणी रांम नांम विण पढियां, निज पढ पसु धरायौ नांम।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'संसक्रित' (रू. भे.)

उ०—मंदिरन्तरि किया खिणन्तरि मिळिवा विचित्रै सखिए समाव्रत। कीधै तिणि वीवाह संसक्रित करण सु तणु रति संसक्रत।

—वेलि

संसक्रती–सं. पु. [सं. संस्कृतः] १ संस्कृत भाषा का पंडित।

उ०—डिंगळियां मिळियां करै, पिंगळ तणौ प्रकास। संसक्रती व्है कपट सज, पिंगळ पढियां पास।—बां. दा.

२ देखो 'संस्कृति' (रू. भे.)

संसक्रित–सं पु.—संस्कार-विधि।

उ०—मंदिरंतरि किया खिणंतरि मिळिवा, विचित्रै सखिए समाव्रत। कीधं तिणि वीवाह संसक्रित, करण सु तणु रति संसक्रत।

—वेलि

२ देखो 'संस्कृत' (रू. भे.)

उ०—किसूं व्याकरण अवर भाखा अनै पराक्रत, संसक्रित तणौं क्यूं फिरै सागै। लाखरा ठाकरां तणा माथा लुळै। आखरां तणा गजबोह आगै।—नवलजी लाळस

संसत—१ समाज।

२ देखो 'ससद' (रू. भे.)

संसतउ–सं. पु.—शिथिल आचार।

उ०—विहुँ भेद कह्यउ संसतउ सुभ असुभ प्रकृति संपतउ।

—वि. कु.

संसतन–सं. पु. [सं. संस्तवन] यज्ञ, हवन। (अ. मा.)

संसतर–सं. पु. [सं. संस्तरः] यज्ञ, हवन। (अ. मा; ह. नां मा.)

संसति, संसती–सं. स्त्री. [सं. संशति] पवमान नामक अग्नि की पत्नी जो सभ्य एवं आवसथ्य की माता थी।

संसद–सं. स्त्री. [सं.] राजसभा, सभा।

उ०—स्वांमी संसद सुबरन समांन, जालम न कोह पै लोह जांन।

—ऊ. का.

२ लोक सभा।

३ मंडली।

रू. भे.—संसत।

संसप्त–वि. [सं. संशप्त] १ शापग्रस्त।

२ वचनबद्ध।

संसप्तक–सं. पु. [सं. संशप्तकः] १ वह योद्धा जिसने विजय प्राप्त किए बिना रणक्षेत्र छोड़ने की शपथ ले रखी हो।

२ वह योद्ध जिसने विपक्षी या शत्रु को मारे बिना युद्धक्षेत्र से हटने की प्रतिज्ञा ली हो।

३ षड्यन्त्रकारी जिसने किसी का हनन करने का बीड़ा उठाया हो।

४ चुना हुआ योद्धा।

संसफोट—देखो 'संस्फोट' (रू. भे.) (अ. मा.)

संसमन–सं. पु. [सं. संशमन] १ शांत करने की क्रिया।

२ नष्ट करने की क्रिया।

३ दोषों को बिना घटाये-बढाये शोधन करने वाली औषधि।

संसय–सं. पु. [सं. संशय] १ संदेह, शक। (डिं. को.)

उ०—१ सो भूमि भइ साथरी, कहियै कारण कूण। यह संतां संसय हरौ, क्रग करौ सुख भूण।—गोविंदरांमजी

उ०—२ मुकुंदसिंघ, मोहणसिंघ, कन्हीरांम, जूझारसिंघ च्यारि ही भाई पैलां नूं जय संसय जणाइ खागां रा खेल्ह मैं खंडबिहंड होइ विमांण बैठा नारियां रै साथ गलबांह कीवां सुरलोक पुगा।

—वं. भा.

२ भ्रम।

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं, परहर संसय भय बुद्धी बर पाऊं।—ऊ. का.

३ अनिश्चयात्मक ज्ञान ।
४ दुविधा ।
५ खतरा, संकट ।
रू. भे.—संसै ।

संसयात्मक–वि. [सं. संशयात्मक] १ जिसमें संदेह हो, संदिग्ध ।
२ अनिश्चित ।

संसयात्मा–सं. स्त्री. [सं. संशयात्मा] संदेहवादी ।

संसरग–सं. पु. [सं. संसर्गः] १ सम्पर्क, लगाव ।
२ मेल, मिलाप ।
३ मैथुन, संभोग ।
४ सहवास ।
५ निकटतम संबंध ।

संसरगदोस–सं. पु. [सं. संसर्गदोष] किसी के साथ रहने से उत्पन्न होने वाला दोष, बुराई ।

संसरगी–वि. [सं. संसर्गिन्] सम्पर्क, संसर्ग या लगाव रखने वाला ।

संसरण, संसरणौ–सं. पु. [सं. संसरणं] सांसारिक ।
उ०—बंध गिणइ संसरण सुख, चरण करण गुण लीण । अति-सय सुध जसु आचरण, क्रिया धरण सुप्रवीण ।—वि. कु.
२ राजपथ, राज्यमार्ग । (डि. को.)
३ नगर के समीपस्थ धर्मशाला ।
४ एक जन्म से दूसरा जन्म, पुनर्जन्म ।

संसरप–सं. पु. [सं. संसर्पः] ज्योतिष में चन्द्र-गणना के अनुसार वह अधिक भाग जो किसी क्षय मास वाले वर्ष में पड़ता है, अधिक मास ।

संसलभ–सं. पु.—छप्पय छंद का ३१ वां भेद जिसमें ४० गुरु ७२ लघु से ११२ वर्ण या १५२ मात्राएं होती है । इसे सरभ भी कहते हैं ।

संसाक्रित—देखो 'संस्कृत' (रू. भे.)
उ०—अध्यातम परम बिसतार बावन अखर, संसाक्रित प्राकृति विगति सूझै । पाड़गति गीत संगीत समझण पौंहचि, बहतर कळा खट भाख बूझै —ल. पिं.

संसाधक–वि. [सं.] १ सम्पन्न करने वाला ।
२ जीतने वाला ।

संसाधन–सं. पु.—१ कार्य की तैयारी, आयोजन ।
२ दमन, जीतना, दबाना ।

संसाधिनी–सं. स्त्री.—एक प्रकार की विद्या विशेष ।
उ०—खगरूपिणी तमोरूपणी विघातकारिणी गिरिदारणी गरुड-वाहिनी संसाधिनी ।—व. स.

संसार–सं. पु. [सं.] १ वह जगत या दुनिया, जिसमें प्राणी आते-जाते रहते हैं, मृत्युलोक (डि. को.)
उ०—१ जनहरीया संसार मैं, देख-पाखि मत भूल । तेरा सजन कौ नहीं, रांम नांम सें तूल ।—अनुभववांणी
उ०—२ संसार में वांणिया ही पैलांतर विगाड़णियां वडा माड़ा मांणस है । बोरा वांणिया तौ खोटा कलम कसाई हुवै है ।
—दसदोख
उ०—३ म्है भगवांन रा गुण बतावां छां । संसार नै मोक्ष रौ मारग बतावां छां ।—भि. द्र.
२ सांसारिक झंझट, प्रपंच ।
उ०—१ जग अवतार नमौ जगदीसर, अनत रूप धारण तन ईसर । तवां ज हरि अवतार तुहारा, सदगत प्रांमै छुटै संसारा ।
—ह. र.
उ०—२ जन हरीया संसार की, संगति करै न कोय । या संगति सुं उपजै, कळह कलपना दोय ।—अनुभववांणी
३ माया जाल ।
उ०—सनेही संसार कौ, हरि जन सेतौ नांहि । हरीया मकड़ी जाळ ज्यूं, मन बिंध्या ता मांहि ।—अनुभववांणी
४ सृष्टि, रचना ।
उ०—धरै इक पाप धरै इक ध्रम्म, करै इक जीव करै इक क्रम्म सरज्जै आप त्रिधा संसार, हुवौ मझ आप ही रम्मणहार ।
—ह. र.
५ आवागमन, भव-चक्र, पुनर्जन्म ।
६ मार्ग, रास्ता ।
७ घर-गृहस्थी और उसका जीवन ।
उ०—ओऊंकार ऊपरै, काठ चाढूं जळ कमळ । धरूं विसन रौ ध्यांन, लेऊ परवाह गंग जळ । वसूं जाय वनवास, हाड गाळूं हेमाळै । तापूं धूमर ताप, अगन झाळां ऊनाळै । परवार सहित छोडूं परौ, सारौ नेह संसार रौ । पण देह मिळै मोनूं अभंग, सेर-सींग 'सरदार' रौ ।—पहाड़खां आढौ
मुहा०—१ संसार छोडणौ=संन्यासी होना, मर जाना ।
२ संसार री हवा खांणी=सांसारिक व्यवहार में अनुभव प्राप्त करना ।
३ संसार री हवा लागणी=सांसारिक रंग चढ जाना, व्यवहार में चतुर होना, छली या धूर्त होना ।
४ संसार सूं अंजळ ऊठणौ=मर जाना ।
५ संसार सूं ऊठणौ=मर जाना, समाप्त होना ।
६ संसार सूं नातौ तोड़णौ=वैराग्य धारण करना ।
७ संसारी व्हैणौ=गृहस्थ होना ।
रू. भे.—सिसार, सैंसार ।
अल्पा;—संसारौ ।

संसारगुर, संसारगुरू–सं. पु. [सं. संसार-गुरु] १ जगद्गुरू ।
२ कामदेव ।

संसारचकर, संसारचक्र–सं. पु. यौ. [सं. संसारचक्र] १ सांसारिक झंझट, प्रपंच ।

२ सांसारिक परिवर्तन ।

३ आवागमन का चक्र, भवचक्र ।

संसारजन, संसारजुन—देखो 'सहस्रारजुन' (रू. भे.) (अनेका)

संसारि, संसारी–वि. [सं. संसारिन्] १ संसार में आकर बार-बार जन्म लेने और मरने वाला ।

उ०—काया कोट दसूं दरवाजा, ताक भरम का भारी। कांम करम की भोगळ मारी, खसि खसि ग्या संसारी ।—अनुभववांणी

२ दुनियादार, गृहस्थी ।

उ०—१ संसारी सगळा मोसूं गया, म्हारौ कियौ हूं भोगती थी, पण तूं कठै आयौ ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ लख चौरासी बाळिद केरौ, नायक अगम अपारी । वाकी गम विरळा जन जांणै, क्या जांणत संसारी ।—अनुभववांणी

सं. पु.—जीवधारी, जीवात्मा ।

सं. स्त्री.—दुनियादारी ।

रू. भे.—सैंसारी ।

संसारिक, संसारी, संसारीक—देखो 'सांसारिक' (रू. भे.)

उ०—भांमणि सेती भोगवै होजी, जै सुख संसारिक । अवसर आपणी, सुत कारण सहु, अवगिणी होजी मांणै लछि अलीक ।

—वि. कु.

संसारौ—देखो 'संसार' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ भाई मारि भूंडउ कियउ, हुयउ हाहाकारौ जी । सील राखण नारी सती, सील वड़उ संसारौ जी ।—स. कु.

उ०—२ जस फेल्यौ सहू संसारौ सुध दांन थकी खेवो पारौ।

—जयवांणी

उ०—३ जेसलगिर चाढ संसारौ जांणै, सोहड तुरंगम करे सज उदयासीह भला ओहटिया, रिम गढ कटकां तणी रज ।

—महारांणा उदयसिंह रौ गीत

संसालण–सं. स्त्री—कढी से मिलता-जुलता तरल खाद्य पदार्थ ।

उ०—भागां वदन संसालणं, सालणं बांधी पालि । पीजइ पांणी परिमल निरमल बहुल विचालि ।—जयसेखर सूरि

संसि–वि. [सं. शंसि] घोषणाकर्त्ता ।

संसिद्ध, संसिद्धि, संसिध संसिधि–स. स्त्री. [सं. संसिद्धि] १ स्वभाव ।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

२ लक्षण ।

३ प्रकृति ।

४ मदमस्त स्त्री ।

५ सम्यकपूर्ति, मोक्ष, मुक्ति ।

वि. [सं. संसिद्धि] १ पूर्णतया सम्पन्न ।

२ योगसिद्ध ।

संसीत–सं. पु.—ठंड से जमा, ठंडा ।

संसुत–सं. पु. [सं. संश्रुत] विश्वामित्र का एक पुत्र ।

संसुद्ध–वि. [सं. संशुद्ध] प्रायश्चित के द्वारा संशोधित ।

संसै—देखो 'संसय' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—पत्र लिखावै प्रीतसूं, आप धरम ची आंण । डर संसै यूं छेदियौ, कर कर बीच कुरांण ।—रा. रू.

संसोधक–वि. [सं. संशोधक] १ सुधार करने वाला, ठीक करने वाला ।

२ संस्कार करने वाला ।

३ दायित्वों को चुकाने वाला ।

संसोधण, संसोधन–सं. पु. [सं. संशोधन] १ त्रुटि, दोष आदि हटाने की क्रिया या भाव ।

२ सुधारने की क्रिया या भाव ।

३ शुद्ध एवं साफ करना ।

४ दायित्वों को चुकाने की क्रिया या भाव ।

संसोधनीय–वि. [सं. संशोधनीय] १ जो संशोधन करने के लिए हो ।

२ जो संशोधन के योग्य हो ।

संसोधित–वि. [सं. संशोधित] जिसमें संशोधन किया गया हो ।

संसोधी–वि. [सं. संशोधी] संशोधन करने वाला, सुधारने वाला ।

संसोभित–वि.—सुशोभित ।

उ०—दुरग चित्तोड़ संसोभित ठाई, ततखीण राय पहुंतौ जाई ।

—बी. दे.

संसोसण–सं. पु. [सं. संशोषण] सोखने या शोषण करने की क्रिया ।

संसौ—देखो 'सांसौ' (रू. भे.)

उ०—१ संका छऊं अणगार नीं मुझ मन उपनी सोय । नेम जिणंद नै पूछ नें संसौ भांजु मोय ।—जयवांणी

उ०—जांण मती वय संसौ राजिंद, तात कहूं विध तोनूं ।

—र. रू.

उ०—३ घाट सुरंगौ गोरियां, आदू कहवत ऐह । पदमणियां हमरोट है, राख म संसौ रेह ।—बां. दा.

उ०—४ लाजाळू बागां मही, कायर कटकां मांहि । परसै नरक रौ पवन, सकुचौ संसौ नांहि ।—बां. दा.

उ०—५ संसा रोग'र दोख, जीप गुर गम सूं । हरिहां दास कहै हरिरांम, राज मुंहकंम सुं ।—अनुभववांणी

उ०—६ निरधन के चिंत्या जौ धन की, धनवंत फिरत अघाया । या दोऊं का मिटै न संसा, जब संतोस न आया ।—अनुभववांणी

उ०—७ दादू संसा जीव का, सिख साखा का साल । दोनौं को भारी पड़ै, होगा कौन हवाल ।—दादूबांणी

संस्करण–सं. पु. [सं.] १ दुरुस्त या ठीक करने की क्रिया ।

२ संस्कार करने की क्रिया या भाव ।

३ पुस्तक, पत्रिका आदि की एक बार की छपाई ।

संस्कार–सं. पु. [सं.] १ सुधार, दुरुस्ती ।

२ शुद्धि, संशोधन ।

३ संगत, शिक्षा, उपदेश आदि से मन पर पड़ा प्रभाव ।

४ पूर्व जन्म की वासना ।

५ धार्मिक दृष्टि से पवित्र करने की क्रिया ।

६ जन्म से लेकर मृत्यु तक द्विजातियों में होने वाले आवश्यक कृत्य ।

७ मृतक की क्रिया ।

८ इन्द्रियों के विषयों के ग्रहण से मन पर जमने वाला प्रभाव ।

९ धार्मिक अनुष्ठान ।

रू. भे.—संसकार, संहसकार, सैंसकार ।

संस्कारक–वि.[सं.] संस्कार करने वाला, शुद्ध करने वाला ।

संस्कारहीण–वि. यौ. [सं. संस्कारहीन] वह व्यक्ति जिसका धर्म-शास्त्र के अनुसार संस्कार न हुआ हो ।

संस्कत–सं. स्त्री. [सं. संस्कृतं] १ आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा, देववांणी ।

२ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक ।

वि. [संस्कृत] १ सस्कार किया हुआ, परिमार्जित, परीष्कृत ।

२ जो धो मांज कर शुद्ध किया गया हो, निखारा हुआ ।

३ सुधारा हुआ, ठीक किया हुआ, दुरुस्त किया हुआ ।

४ विवाहित ।

रू. भे.—संसकिरत, संसकत, सैंसकत ।

संस्कतजल्प–सं. स्त्री.—स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक कला विशेष । (व. स.)

संस्क्रति, संस्क्रती–सं. पु. [सं. संस्कृति] १ संस्कार करने या संस्कृत रूप देने की क्रिया या भाव ।

२ वे सब सामाजिक बातें जिनके द्वारा मानव जीवन तथा व्यक्तित्व को मापा जा सकता है ।

वि. वि.—इसमें चिन्तन तथा कलात्मक सर्जन की वे क्रियाएँ भी सम्मिलित हैं जो मानव व्यक्तित्व व जीवन के लिए साक्षात् उपयोगी न होते हुए भी उसे समृद्ध बनाने वाली हैं अर्थात शास्त्र, दर्शन आदि में होने वाले चिन्तन, साहित्य, चित्रांकन, एवं परहित साधन आदि नैतिक आदर्श ही संस्कृति है ।

३ जयसेन राजा का पुत्र, एक राजा ।

रू. भे.—संस्क्रती ।

संस्तव–सं. पु. [सं.] १ प्रशंसा, तारीफ ।

२ स्तुति, गुणगान ।

३ परिचय, पहचान ।

संस्तवणौ, संस्तवबौ–क्रि. स. [सं. संस्तवं] गुणगान करना, कीर्तिगान करना, स्तुति करना ।

उ०—१ तीरथंकर रे चौवीसे मैं संस्तव्या रे, हां रे रिखभादिक जिनराय, इणि परि वीनव्या रे ।—स. कु.

उ०—२ प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपर, सुणी सहु अधिकार ए । संस्तव्यौ खास जिणंद पाठक, धरम वरधन धार ए ।—वृ. स्त

संस्तवणहार, हारौ (हारी), संस्तवणियौ—वि० ।

संस्तविश्रोड़ौ, संस्तवियोड़ौ, संस्तव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संस्तवीजणौ, संस्तवीजबौ—कर्म वा० ।

संस्तवियोड़ौ–भू. का. कृ.—गुणगान किया हुआ, कीर्तिगान किया हुआ, स्तुति किया हुआ ।

(स्त्री. संस्तावियोड़ी)

संस्तूत–सं. पु.—स्तुति, गुणगान ।

उ०—सुणनै हेठौ ऊतरी, करी वंदना संस्तूत । रथ बेसी वंदन गयौ, देवण मुक्ति रा सूत ।—जयवांणी

संस्थांन–सं. पु. [सं. संस्थान] १ ठहरने की क्रिया या भाव ।

२ ठहरने का स्थान ।

३ किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से बना हुआ मंडल ।

४ सभा ।

संस्था–सं. स्त्री. [सं.] १ ठहरने की क्रिया या भाव ।

२ सभा, मंडल ।

३ व्यवस्था, मर्यादा ।

४ विधि, तरीका ।

संस्थापक–वि. [सं.] १ स्थापित करने वाला ।

२ आरम्भ करने वाला, शुरूआत करने वाला ।

संस्थापन–स. पु. [सं.] १ स्थापना करने का कार्य ।

२ निर्माण, बैठाने या जमाने की क्रिया ।

संस्थापित–वि. [सं.] १ जमाया हुआ, स्थापित ।

२ शुरू या जारी किया हुआ ।

संस्थाप्य–वि. [सं.] जो संस्थापन के योग्य हो ।

संस्परद्धा–सं. स्त्री. [सं. सस्पर्द्धा] १ ईर्ष्या, द्वेष ।

२ किसी के बराबर या समान होने की इच्छा ।

संस्परस–सं. पु. [सं. संस्पर्श] १ अच्छी तरह स्पर्श होने का भाव ।

२ संगम, संयोग ।

३ संसर्ग, मैथुन ।

संस्थल–सं. पु.—एक प्रकार का शस्त्र । (व. स.)

संस्फोट, संस्फोट–सं. पु. [सं. संस्फोटः] युद्ध, समर । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—संसफोट ।

संस्मरण–सं. पु. [सं.] १ अच्छी तरह या पूरी तरह याद, स्मरण ।

२ संस्कारजन्य ज्ञान ।

संस्त्रत, संस्त्रति–सं. स्त्री. [सं. संसृतिः] १ जन्म । (अ. मा.)

२ आवागमन, भवचक्र ।

३ आने जाने का मार्ग ।

उ०—संस्त्रति सत्तम मान, पोळ दरवाजा दुकानां । मेड़ी मोड़ा मैं'ल मनोहर वडा मुकानां ।—दसदेव

४ संसार, जगत ।

उ०—कायर खग खेटक कस्यां, बणै न सुहड़ सुभाव । सुण्यौ न संस्त्रति सोभतौ, गधी परै गजगाव ।—रैवतसिंह भाटी

५ याददाश्त ।

संस्रय–सं. पु. [सं. संश्रय] १ शरण, आश्रय ।

उ०—सबळां संस्रय पायकर, आंगे मूढ अनीत । हिरणाकुस लंकापति, भवन किया भयभीत ।—नारायणसिंह सांदू

२ अभिसंधि, मेल, सुलह ।

३ शरणस्थल, घर ।

संस्रस्ठ–सं. पु. [सं. संसृष्ट] एक पर्वत का नाम । (पुराण)

संस्रस्टि–सं. स्त्री. [सं. संसृष्टि:] १ मिलावट, मिश्रण ।

२ परस्पर सम्बन्ध, लगाव ।

३ घनिष्ठता ।

४ एक से अधिक काव्यालंकारों का ऐसा समन्वय (मेल) जिसमें सब परस्पर स्वतंत्र हों, एक दूसरे के आश्रित न हों ।

संस्रुत–वि. [सं. संश्रुत] स्वीकृत, अंगीकृत । (डि. को.)

संस्रुत्य–सं. पु. [सं. संश्रुत्य] विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्रों में से एक ।

संहंस—देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

संहंसकर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

उ०—कळामेर सांमंद्र लोपै न उगै संहंसकर, धू चळै प्रळै व्है जाय धरनी । सुमरियां जेज किम थाय छै सुंदरी, जाय छै बिरद कर साय जननी ।—भोपाळदांन सांदू

संहंसदोयचख–सं. पु. [सं. द्विसहस्रचक्षु] शेषनाग । (डि. को.)

संहंसदोयस्रवण–सं. पु. यौ. [सं. द्विसहस्रश्रवण:] शेषनाग । (डि. को.)

संहट–सं. पु. [सं. संघट प्रा० सहंड] बैठक ।

उ०—कांमालय अटुमी तणी, सांभइ संहट भणेवि । राजकुंअरि नीय घरि, गई ऊलट अंग धरेवि ।—हीराणंद सूरि

संहतागद–सं. पु. [सं.] ऐरावत कुलोत्पन्न एक नाग ।

संहतापन–सं. पु. [सं.] जनमेजय के सर्पसत्र में जलमरा एक ऐरावत कुलीन नाग ।

संहतासव, संहतास्व–सं. पु. [सं. संहताश्व] इक्ष्वाकुवंशीय बर्हणाश्व राजा ।

संहति–सं. पु. [सं.] समूह । (डि. को.)

संहन, संहनन–सं. पु. [सं.] मनस्यु व सौवीरी के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, पुरुवंशीय एक राजा ।

संहरण–सं. पु. [सं.] १ पूर्णता ।

उ०—मोह तिमिर भर संहरण भा मंडल प्रभु पूठि । झर-झब तेज-कइ छबकनउए, जिम रवि जलधर बूठि ।—स. कु.

२ एकत्र करना, संग्रह करना ।

३ नाश; संहार ।

संहरणौ संहरबौ—देखो 'संघरणौ, संघरबौ' (रू. भे.)

उ०—इंह घरि अछइ मंत्रु लाख तणउ छइ धवलहरों । माहि पउ-ढाडउ सत्र एकसरा, सवि संहरउ ।—सालिभद्र सूरि

संहरणहार हारौ (हारी), संहरणियौ—वि० ।

संहरिओड़ौ, संहरियोड़ौ, संहरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

संहरीजणौ, संहरीजबौ—कर्म वा० ।

संहरता–वि. [सं. संहर्त्ता] नाश करने वाला, संहारकर्त्ता ।

उ०—देवी जगत करतार भरता संहरता देवी चराचर जगत सब में विचरता ।—देवि.

संहरस–सं. पु. [सं. संहर्ष] १ रोमांञ्च, पुलक ।

२ प्रतिस्पर्धा ।

३ रगड़, मसलन ।

४ हर्ष, आनन्द ।

संहसपात–सं. पु. [सं. सहस्र+पत्र] कमल । (डि. को.)

संहसफण–सं. पु. [सं. सहस्र+फन] शेषनाग ।

संहार–सं. पु. [सं.] १ नाश, ध्वंस ।

२ प्रलय । (डि. को.)

३ संहार करने या मारने की क्रिया ।

उ०—आकासे वार किता तैं आय, विधूसे त्रिपुरा, अम्रत पाय । वेदां री वाहर केती वार, सभे जुध कीध दईत संहार ।—ह. र.

४ संचय, संग्रह ।

५ एक नरक का नाम ।

६ एक भैरव का नाम ।

वि.—१ नाश करने वाला, विध्वंसक ।

उ०—नमौ कुंभेण तणां भुज काळ, नमौ कुळ राकस बंस खेंगाळ । नमौ मकराख्य इन्द्रजीत मार, नमौ सब राकस बंस-संहार ।

—ह. र.

रू. भे.—संघार, सिंहार, संहारु ।

संहारक, संहारकारी–वि. [सं.] विध्वंस करने वाला, संहार करने वाला, नाशक ।

रू. भे.—संघारक ।

संहारण–सं. पु. [सं.] सिंह, शेर । (ना. डि. को.)

संहारकाळ–सं. पु. [सं. संहारकाल] सृष्टि के विनाश का समय, प्रलय-काल ।

संहारणौ, संहारबौ–क्रि. स. [सं. संहारणं] १ मारना, संहार करना ।

उ०—१ मत्रां दळ मूगळ सैचद सेख, बणै ग्रह बाज कबूतर बेख । सरां अप्रमांण पठांण संहारि, लिया कर सेल, नरां ललकारि ।

—मे. म.

उ०—२ धरमीं नर ऊपर कोमळ कर धारै, पापी पुरुसां नें सदव्रत संहारै । तदऽनुग्रह बिन हा ग्रह ग्रह तूती, जिण तिण बिग्रह में निग्रह दी जूती ।—ऊ. का.

उ०—३ लोयण धूम्र लुळाय, सुंभ निसुंभ संहारचा । रकत बीज आरोगि, मुंड चंडारिक मारचा ।—मे. म.

२ नाश करना, ध्वंस करना ।

संहारणहार, हारौ (हारी), संहारणियौ—वि० ।

संहारिप्रोड़ो, संहारियोड़ो, संहारचोड़ो—भू० का० कृ० ।

संहारीजणो, संहारीजबो—कर्म वा० ।

संघारणो, संघारबो—रू० भे० ।

संहारभैरव–सं. पु. [सं.] १ भैरव के आठ रूपों में से एक रूप, काल रूप, काल भैरव ।

२ चौसठ भैरव के अन्तर्गत एक भैरव ।

रू. भे.—संघारभैरव ।

संहारियोड़ो–भू. का. कृ.—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ नाश किया हुआ, ध्वंस किया हुआ ।

(स्त्री. संहारियोड़ी)

संहारू–वि·—देखो 'संहार' (रू. भे.)

उ०—थलचर नी कुण करिसइ सार, दवि दाझइं पुण तै सवि वार । पंख जाति जीव न लाभइं पार, अनवरतु तीहं नउ हूइ संहारू ।

—जयसेखर सूरि

संहित—देखो 'सहित' (रू. भे.)

संहिता–सं. स्त्री. [सं.] १ वह प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ जिसका पाठ प्राचीन काल से चला आ रहा हो ।

२ राजकीय अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत किया हुआ नियमों, विधियों आदि का संग्रह जैसे—भारतीय दंड संहिता ।

३ वेदों का वह मंत्र (ब्राह्मण नामक भाग से भिन्न) जिसके पद, पाठ आदि निश्चित हैं ।

४ धृतराष्ट्र की पत्नी जो सुबल राजा की कन्या थी ।

संहिताकल्प–सं. पु. [सं.] अथर्ववेद का एक संहिता विभाग ।

संहितासव, संहितास्व–सं. पु. [सं. संहिताश्व] जमदग्नि महर्षि की पत्नी रेणुका का पिता एक भृगुवंशीय राजा ।

संह्लाद–सं. पु. [सं.] १ हिरण्यकशिपु व कयाधु के पुत्रों में से एक ।

२ सुमालि एवं केतुमती के पुत्रों में से एक पुत्र, राक्षस ।

स–सं. पु. [सं. श] १ भोजन, खाना । (एका.)

[सं. शः] २ शिव, महादेव । (,,)

३ हिमालय पर्वत । (,,)

४ रंग । (,,)

५ संदेह, शक । (,,)

६ कल्याण-मंगल । (,,)

७ तालाब, सरोवर । (,,)

८ तीर, बाण । (,,)

९ सूर्य, सूरज । (,,)

१० पैर, पद । (,,)

सं. पु. [सं. ष] १२ नाश, संहार ।

१३ मोक्ष, मुक्ति ।

१३ शेष, बाकी ।

१४ अवसान ।

१५ आकाश, नभ । (एका.)

१६ विष्णु का नाम । (,,)

१७ इंद्र । (नां. मा.)

[सं. स] १८ सर्प, सांप । (एका.)

१९ पक्षी । (एका.)

२० पवन, वायु । (,,)

२१ छन्द शास्त्र में सगण गण का सूचक शब्द ।

सं. स्त्री.—२२ पार्वती, दुर्गा । (एका.)

२३ सरस्वती नदी । (,,)

२४ लक्ष्मी । (,,)

२५ शिक्षा ।

२६ शिखा । (,,)

२७ वाणी । (,,)

२८ आवाज, ध्वनि । (,,)

२९ दीप्ति, चमक । (,,)

३० जीवात्मा ।

सर्व.—१ उस ।

२ सब ।

३ वह ।

उ०—१ जउ साहिब तूं नाविया, मेहां पहलइ पूर । विचइ वहेसी वाहळा, दूर स दूरै दूर ।- ढो. मा.

उ०—२ इम भणी गुटि दिउ सारदामंत्र पच्छइ स परिणिवा चालीउ ए । मुहतानंदन परिरीय वेस मयणह मंदिरि मंदिरि आवीउ ए ।—हीराणंद सूरि

उ०—३ स भणइ सुणि प्रयोजन भोजन लीहीसइ लोक । तुज्झ उत्सवि ईंट आंमिख स्वांमि खपइ तउ सोक ।

—जयसेखर सूरि

वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम ।

२ अदृष्ट ।

अव्यय—१ एक निरर्थक अव्यय जो जोर देने के लिए या पाद-पूर्ति के अर्थ में प्रयोग होता है । गाने वाले कभी कभी छंद के बीच में इसे जोड़ देते है ।

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरइ, पड़सी वाहळियांह । अोलै प्रो राखियइ, सूंधा काहळियांह ।—ढो. मा.

उ०—२ जेठ महीनौ लागियो स ढोला ।—लो. गी.

उ०—३ मारू नूं आखइ सखी, आज स कांइ उदास । कांम चित्रांम जु दिट्ठ मइं, रूप न भूलइ तास ।—ढो. मा.

उ०—४ हरीया बंदा क्या करै, सांई करै स होय । जीव जिंद जिन सिरजीया, तिन्ह का कीया जोय ।—अनुभववांणी

२ तक, पर्यन्त ।

उ०—पिंगळ पूगळ आवियउ, देसै थयउ सुगाळ । तेणि न राखी

सासरइ, अजै स मारू बाळ।—ढो. मा.

उ०—२ रीसाविउ तै मेल्हइ भाल, सिर धूणइ मुखि पडइं लाल। खूणइ पाडिउ खूंखु करइ, अजी स डोकर कहीग्रं मरइं।—वस्तिग

३ शब्दों के आरंभ में कुछ विशिष्ट या सहित का अर्थ उत्पन्न करने के लिए आने वाला एक उपसर्ग जैसे सकाम, सवेग, सजीव सस्नेह आदि।

सई-सं. पु. [सं. शतं] निन्यानवे के बाद आने वाली संख्या, सौ।

उ०—१ वाहण जेहनें पांचसै, वलीय पांच सइं हाट। घर गोकुल पिण पांच सै, तितला सकट सुघाट।—वि. कु.

उ०—२ तुरीय सहइस पचास दोय सइं महगळ मंता। राजकुली छत्तीस सोहड भड सेव करंता।—प. च. चौ.

सर्व.—१ सब, समस्त।

उ०—१ इण भांति सइं सखि आयउ वरखाकाल, सउ तउ वरनत कवि सुविसाल।—वि. कु.

उ०—२ विरह सइं पीरी अति अधीरी, डरत विरहनि जोर। उल्लसित हीयरौ करि पपीयरौ, करत प्रियु प्रियु जोर।—वि. कु.

२ स्वयं, खुद।

उ०—१ आडंबर मोटइ करी, राजा लीधी दीख, मुनिवर। स्रीवीर सइं हथि दीखियउ, सूधी पालइ सीख, मुनिवर।—स. कु.

उ०—२ सांभळि सांमी अम्ह घरसूत्तौ, तुम्ह घरि अछइ गंगापूत्तौ। मइं बेटी जउ तुम्ह देवी, तउ सइं हथि दूख भरेवी।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ धनदिहिं सइं हथि थापिय, वापी अ वर आरांमि। मणि कण धण संपूरिय, पूरिय द्वारका नांमि।—जयसेखर सूरि

उ०—४ राइं तै तिहां कंचण लही, तै लिपि मांनी साची सही। विद्याविलास कीउ परधांन, राजा सइं हथि दिइ बहु मांन।

—हीराणंद सूरि

रू. भे.—सइ।

सइंण—देखो 'सैंण' (रू. भे.)

उ०—सहज सुरंगा हौ चंगा जिनजी, सांभली विनय तणा जै वयण। हूं तुझ चरणै हो आयौ ध्यायौ, हेज सुं साचौ जांणी सइंण।

—वि. कु.

सइंथु-सं पु.—सिर का आभूषण विशेष।

उ०—सइंथु सिरि सिंदूरिउ, बांधिउ मणि बत्रीस। बयठा जांणै सूर ससि, सहस्र फूल छइ सीस।—मा. कां. प्र.

सइंफळउ—देखो 'सैंफळौ' (रू. भे.)

सइंभरि—१ देखो 'संभरी' (रू. भे.)

२ देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—गोल्हण भणइ पातिसाह सुणउ, मांनइ नहीं बोल आपणउ। सांम दांम विधि च्यारि उपाय मइ साभल्यउ सइंभरि नउराय।

—कां. दे. प्र.

सइंवर, सइंवरि—देखो 'स्वयंवर' (रू. भे.)

उ०—१ पंडु नरेसरो सइंवरि जाइ हथिणाउपुर संचरए। राइं दलै सरिसा कूंयर लेउ तारै सुं जिम चांदुलउ ए।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ अनु कंठि कुसुमह माल किरि सुं मयणि आपणि आवीइ। कोइ इंदु चंदु नरिंदु सइंवरि पहुतु इम संभावीयइ।

—सालिभद्र सूरि

सइंवल-सं. पु.—एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—अंतर सइंवल कुसुम कमल दल अमृत वेल विख बेली। ईवडौ अंतर हरि सिसिपालइ, भणइं पदंमीयौ तेली।

—रुकमणी मंगळ

सइंहणौ, सइंहबौ—देखो 'सहणौ, सहबौ' (रू. भे.)

उ०—सूनी सेज विदेस पीव, दोई दुख 'नल्ह' क्यूं सइंहणां जाई।

—बी. दे.

सइ—१ देखो 'सइं' (रू. भे.)

उ०—१ सिद्धि जेहिं सइ वर वरिय त तित्थयर नमेवी, फागुबंधी पहुनेमिजिणगुण गाएसउं केवी।—राजसेखर सूरि

उ०—२ तसु पुत्री ऊमा देवड़ी जांणि विधाता सइ हथि घड़ी।

—ढो. मा.

उ०—३ बीजा दिवसइ दिणयर उदइ, ध्यांन प्रभावि आव्या सइ। अछइ सोवन्नीकांवज हाथि, एकु पुरुखु आविउ छइ साथि।

—सालिभद्र सूरि

उ०—४ द्रुपदीवसन ना सइ काढ्यां, माहरा मद तणां वन वाढ्यां। पाधरै नृप तणै घरि कीधउं, कीम मूं पुरुख नांम ज दीधउं।

—सालिभद्र सूरि

उ०—५ मारूवणी सइ मुखि कह्या, दूहा मिसि संदेस। मन मारू मेळावा करइ, पधारउ उणि देसि।—ढो. मा.

२ देखो 'सती' (रू. भे.)

उ०—गत प्रभायियौ ससि रयणि गळतौ, वर मंदा सइ वदन वरि। दीपक परजळतौ इ न दीपै, नासफरिम सूं रतनि नरि।—वेलि

सइकौ-सं. पु.—देखो 'सईकौ' (रू. भे.)

उ०—सत्रासै सइकै समै नर दांण काजै सिर दीयौ। मुकती पहुतौ कह केसौ, संसारि वड साकौ कियौ।—केसौ कवि

सइड-सं. पु.—१ सांड।

२ बैल।

३ प्रहार, चोट।

रू. भे.—सईड।

सइण—देखो 'सैण' (रू. भे.)

सइद—देखो 'सैयद' (रू. भे.)

सइमुक्ख, सइमुखि—क्रि. वि.—सम्मुख, सामने।

सइयण, सइयणि-सं. स्त्री.—१ दर्जी जाति की स्त्री, दरजन।

उ०—भणइ भीम, 'दवदंती' वछि नलसिउं नेह पालै। सइयणि

धोबणि अधम जाति मालणि संग टालैं ।—नळदवदंती रास

२ देखो 'सैण' (रू. भे.)

सइयद, सइयद्—देखो 'सैयद' (रू. भे.)

उ०—१ सिंध में लकारी **सइयदां** री मांनता विसेस है।

—बां. दा. ख्यात

उ०—२ अबदुल्ला आरत हियैं, पीड़ांणो सइयद् । महाराजा 'अजमाल' नूं, दाखैं वेध दरद् ।—रा. रू.

उ०—३ भोपत जी पातिसाह जी रै साथि । राजि साथि सइयद हासिम कासिम नूं जोधपुर दे अर राजि साथि विदा किया ।

—द. वि.

सइयर—देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—राई वेगइ चढि आवौ विलम न करौ वार । सोल सइयर रूकमणी सरीखी लेज्यौ साथ ।—रूकमणी मंगळ

सइर, सइरि, सइरू—देखो 'सरीर' (रू. भे.)

उ०—१ कूटियइ ए अणाह पुरिंद्री, उवली सिथिल सइर सलिंद्री। विप्र भूपति सभा परि दिठी; देवि कीचक तणा कुळ रूठी ।

—रुकमणी मंगळ

उ०—२ किमइ निगोदह जीव नीसरइ, ववहार रासि तै जाई नय वरइ । असंख सइर तणउ करइ संहार, जीवइ जीव करइ आहार।

—वस्तिग

उ०—३ सघण सूकडि सइरि सु सींचीइ, पवण पूरिहिं वींजण वींझीइ । कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ मिलीउ जरसिंधु जायववइरि, सह लगउं एस हूइ सइरि। दुरयोधनु अति मत्सरि चडीउ, जाई जरासिंध पाए पडीउ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—५ सोसइ सइरू महातपि, आतपि रहइ गंभीर । मोह तणा जगबंधव बंध वछोडइ धीरू ।—जयसेखर सूरि

सइलोट—देखो 'सैलोट' (रू. भे.)

सइस—देखो 'सईस' (रू. भे.) (डि. को.)

सई—१ देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—१ अब मीरां मांन लीज्यौ म्हारी हांजी थांनै सइयां बरजै सारी ।—मीरां

उ०—२ सइयां म्हांरी ए हरियाळी बरसाईजै, अज बरसाइजै कल बरसाइजै, इयूं म्हांरा साजन इचूं ।—लो. गी.

उ०—३ बनड़ो उतरचौ बाग में ए सइयां मोरी, कै मिस निरखण जाम्यां ।—लो. गी.

२ देखो 'सती' (रू. भे.)

सईक—वि.—सौ के लगभग ।

सं. स्त्री.—सौ की संख्या ।

सईकड़ो—देखो 'सैंकड़ो' (अल्पा; रू. भे.)

सईको—सं. पु.—सौवां वर्ष ।

उ०—हरीया संमत सतर से वरस सईके जांन । तिथ तेरस आसाढ वदि सतगुर परी पिछांन ।—अनुभववांणी

रू. भे.—सइको, सैंको ।

सईड—देखो 'सडड़' (रू. भे.)

सईद, सईयत, सईयद—सं. पु.—१ चाकर, टहलुआ ।

उ०—दरबार री सईयत तुरक था तिण री डाढी सुंवरावता, कांनां में मोती घालता ।—पदमसिंहजी री बात

२ देखो 'सैयद' (रू. भे.)

उ०—ऐसै सबूंका सिरपोस सईद आबद अलीखांन सो आवधअली-खांन कैसा । दिलावर खांन का फरजन दिलावर खांन जैसा ।

—सू. प्र.

सईल—देखो 'सैल' (रू. भे.) (अनेका.)

सईस—सं. पु. [अ. साईस] घोड़े की देखभाल व सेवा करने वाला व्यक्ति जो घोड़े को घास दाना आदि देता है ।

उ०—भांणू रावळै आप सईस नै उण घोड़ी री पूरी पूरी भुळावण दे दी । बारै महीनां सूं घोड़ी ठांण दियौ तौ भांणू रै सिवाय किणी नै जाच कोनीं ही कै बछेरी सूरजमुखी है । वौ उण रौ आपरा जीव बिचै ई घणौ वत्तौ ध्यांन राखतौ ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सईस, सहीस, सांईस ।

सईह—देखो 'सही' (रू. भे.)

उ०—रच सदन चित्र सरूप, अति रंग रंग अनूप । जस वांणि वंदण जीह, उचरंत विरद सईह ।—रा. रू.

सउं, सउ—सर्व.—१ वह ।

उ०—१ मारू नूं आखइ सखी, एह हमारी बुझ । साल्हकुंवर सुहिणइ मिल्यउ सुंदरि सउ वर तुझ ।—ढो. मा.

उ०—२ जळ मांहि वसइ कमोदणी, चंदउ वसइ अगासि । जउ ज्यांही कइ मन वसइ, सउ त्यांही कइ पासि । —ढो. मा.

२ देखो 'सहित' (रू. भे.)

उ०—१ चडीउ चंचलि नयणि निरखइं वयणु बोलइं सउं सही । पंच पंडव सहित पहुतु तउ पंडु नरवरू हइ सही ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ आंणीए सभांमिसेण पंडव पंचइ राह सउं ए । कूडिहिं ए दीजइं मान वयरिहिं मांडइ जूवटउ ए ।—सालिभद्र सूरि

३ देखो 'सौ' (रू. भे.)

उ०—१ इहां तउ सुयक्खंध एक अति भलउ रे, एक सउ एक अध्ययन उदार रे ।—वि. कु.

उ०—२ सिंधु परइ सउ जोयणां, खिवियां विजळियांह । ढोलउ नरवर सेरियां, धण पूगळ गळियांह ।—ढो. मा.

४ देखो 'सरब' (रू. भे.)

उ०—१ ते रसीया मन वसीया विनयचंद्र नइ जी, सउ मांहि मिलइ जोया एक कय दोय हो ।—वि. कु.

उ०—२ नाभिराय मरुदेवी नंदन युगलाधरम निवारण हार । सउ

बेटां नै राज सौंप करि, ग्राप लियौ संयम व्रत धार ।—स. कु.

उ०—३ लाधा लाख तुरीय सहिस, गयमर मदिमाता। मणि मांणिक सोवन्न ग्रसंख्य, सउ गांम वसंतां ।—नळदवदंती रास

उ०—४ बलि करी राज सौ आपीऊं ए, नलराजनइं भार सउ थापीउ ए। देइ सीखांमण निरवध तात, 'वत्स' बीसस्यां नर वर मकरी धात ।—नळदवदंती रास

सउकि, सउकी—देखो 'सौक' (रू. भे.)

उ०—१ कोइलि तूं काली बली, बालि म-बलतु ग्रंग। भूंडी तूं भाखि भणु, **सउकि**-सरिसा भंग ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ रूक्मिणी नइ सत्यभांमा राणी, **सउकी** नउ सबल संताप जी। खमत खांमणा किया खरै मन, व्रत लेवा प्रस्ताव जी।

—स. कु.

सउच—देखो 'सौच' (रू. भे.)

उ०—१ **सउच** न्हांण मुख साधि सब, राचै राजस राह। क्रम बैठो संझा करण, दूदा कंवर दुबाह ।—वं. भा.

उ०—२ **सउच** करी दंतधावन, स्नांन की तयारी। वस्त्र ग्रौर पुस्पमाळ, तुलसी ग्रति प्यारी ।—मीरां

सउण—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—चवदस वरत करई भूपाळ, सांमही छींक हणंइ कपाल। चउरास्यां सहू बोलाय, **सउण** विचारै वीसलराय ।—बी. दे.

सउणी—देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

सउत—देखो 'सौत' (रू. भे.)

सउतेलौ—देखो 'सौतेलौ' (रू. भे.)

सउथउ-सं. पु.—स्वस्तिक।

उ०—ग्रंगार तणी बेटी दाहज्वर तणी बहिनि, साप माथइ सउथउ फाडइ, जिसी केवलिहिं हालाहलि विखि जडी हुइ, इसी ढंढ स्त्री।

—व. स.

सउदागर—देखो 'सौदागर' (रू. भे.)

उ०—पिंगळ राजा नूं मिल्यउ; सउदागर तिणि वार। राज दुवारइ तेड़ियउ, ग्रादर करै ग्रपार ।—ढो. मा.

सउरी-सं. पु. [सं. शौरी, सौरी] यमराज। (ग्र. मा.)

सउलिय-सं. पु.—एक देश का नाम। (व. स.)

सउवांणी—देखो 'साउवांणी' (रू. भे.)

सउहाणौ, सउहाबौ-क्रि. ग्र.—देखो 'सुहाणौ, सुहाबौ' (रू. भे.)

उ०—पहिरनु चोळी नवरंगी, बावन चन्दन ग्रंग सउहाई।

—बी. दे.

सउहायोड़ौ-भू. का. कृ.—देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सउहायोड़ी)

सऊ—देखो 'साऊ' (रू. भे.)

उ०—कांधमल्लही सऊ जोध रिणमल तणै घरि। पिडि ग्रचल्ल ग्रणचल्ल ग्रणपल्ल ठल्ल गज ढाहण तणी परि ।—गु. रू. बं.

सऊकार—देखो 'साहूकार' (रू. भे.)

उ०—तद इतरा सिरदार वा कांमदार वा हजूरी सागै हुग्रा। त्यांरी याद—काका कांधल जी, काका रूपौ जी, काका मांडणजी, काका मंडळौ जी,·········कांमदारां में वैदलालौ लाखणसी कोठारी चौथमल वछावत वरसंघ प्रोहित विक्रमसी **सऊकार** राठी सातौ जी।—द. दा.

सऊर-सं. पु. [ग्र. शऊर] १ योग्यता।

२ ढंग, शिष्टता।

३ बुद्धि, ग्रक्ल।

उ०—पण सऊर वाळौ इसो हौ कै कदै-ई मेलौ गिन्दो को दीखतौ हौ नीं ।—बरसगांठ

रू. भे.—सहुर, सहूर।

सऊरदार-वि.—१ योग्यता वाला।

२ शिष्टता वाला।

रू. भे.—सहूरदार।

सऊवांणी—देखो 'साउवांणी' (रू. भे.)

सग्रोध, सग्रोधौ-वि. १—कुलीन, उच्च कुल वाला, कुलवान।

उ०—१ ग्रवर सको खीची रह ग्रग्गै, जुध कमधां ग्रागळ छळ जग्गै। जोध **सग्रोध** वंस जोगावत, राजी देख हुवै मन रावत।

—रा. रू.

उ०—२ त्यां डोळौ त्यारी कियौ, करै ग्रगाऊ वात। वींद **सग्रोधां** चींतियौ, जोधां हूंदौ छात ।—रा. रू.

२ खानदानी।

उ०—इंद्रभांण दळ रूप **सग्रोधां**, 'जोध' तणौ ग्रागळ छळ जोधां 'रूपै' जिसौ इसौ रिण वेळा, भुज किर मिळै गयण चै भेळा।

—रा. रू.

३ पद के ग्रनुसार।

उ०—मारू जोधां रिणमलां, भळे **सग्रोधां** भार। जांण हणू घावण मतै, द्रोण उठावण वार ।—रा. रू.

सकंद—देखो 'स्कंद' (रू. भे.) (ग्र. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

सकंदछट—देखो 'स्कंदसस्ठी' (रू. भे.)

सकंदमाता—देखो 'स्कंदमाता' (रू. भे.)

सकंदवार, सकंदावार; सकंधवार, सकंधावार—देखो 'स्कंधावार'

(रू. भे.) (ग्र. मा; ह. नां. मा.)

सक-सं. पु. [सं. शक] १ एक प्राचीन राजवंश।

२ एक प्राचीन राजा शालिवाहन का नाम।

३ शालिवाहन द्वारा चलाया गया शक संवत।

४ संवत।

उ०—गज नव बारह ग्रब्द गत, सक बिक्रम संबंध। दिन नवमी ग्रासाढ बदि, मीणां तेडि मदंध ।—वं. भा.

५ वर्ष।

उ०—सत्रहसै सतियास सक, ध्रुव ग्रहमदपुर धांम। वर कवि करण वखांणियौ, सुभटांतणौ संग्रांम।—वि. सं.

६ वीर, योद्धा।

उ०—१ साथै भाटी सूरमां, 'सबळै' जिसा सहास। 'सबळै' जोड़ भतीज सक, 'तेजौ' नारायणदास।—रा. रू.

उ०—२ 'केहर' साहां भंजणा, सक राखण कथ्था। बिहु वावळ खागां ग्रड़ै, भुज डंड समथ्था।—द. दा.

७ देवता।

उ०—सक कोड़ि तेतीस चरण राखे उर उपरि। लिखमी चाहै चरण परम रीजै इहिंडी परि।—पी. ग्रं.

८ तातार देश का पुराना नाम।

९ तातार देश की एक प्राचीन जाति।

१० मुसलमान, यवन।

उ०—विण त्रीट रीठ उडुं विखम, हुम तम उधम हैमरां। सक फौज कीध संका सहित, जांण क लंका बंदरां।—रा. रू.

११ भय, डर।

[ग्र. शक] १२ संदेह, भ्रम।

वि.—१ समर्थ, सामर्थ्यवान।

उ०—१ जग जनक धनक हर हरण करण जय, चत नरमळ नहचळ चरण। ग्रकरण करण समरण ग्रघ ग्रणघट, सक रघुबर ग्रसरण सरण।—र. ज. प्र.

उ०—२ सक मांगळियौ 'तेजसी', ग्रन 'साहबौ' ग्रबीह। सकळ निवड़ भड़ ग्राठ सौ, धावड़ ठाकुर सीह।—रा. रू.

२ साफ, निर्मल।

सर्व.—१ सब, समस्त।

उ०—१ सक भड़ वचन सूणेह, काहुळियौ वीरम कमंध। मयंद तणै सिर मेह, ग्रावै जांण ग्रग्राजियौ।—गो. रू.

उ०—२ पूरब पछम धरा दध पारू, दिखण तणौ खूटौ बळ दारू। सक उतराध धरा तौ सारु, मछर धरै किण उपर मारू।

—चतुरौ मोतीसर

रू. भे.—सक्क।

सकड़—वि.—जबरदस्त, शक्तिशाली। (नां. डि. को.)

सकज—देखो 'सकज्ज' (रू. भे.)

उ०—१ कुंग्रर किरणाळ सुपह सखाल विरद उजुग्राळ सकज कमंध।—ल. पिं.

उ०—२ साथै मेड़तिया सकज, 'ग्रखई' गोकळदास। पूरांणौ हर-नाथ पिड़, पूरे साथ प्रकास।—रा. रू.

उ०—३ सकज वाहतौ सेल ग्रणठेल नव साहसौ, खेलियै खेल खत्रवाट रौ खूब। छोह लागं 'जसं' ग्रोरियौ छत्रपति, मोकळा लोहरै बोह 'महबूब'।—महेसदास ग्राढौ

उ०—४ तोपां रणताळ रै, सकज भूपाळ संवारी। खं ग्रकाळ खाटणी, काळ थाटणी कटारी।—मे. म.

उ०—५ रै रेवारी रावला, कोईक रहौ सकज। घड़ी करै विजो-यण, मौ धण मेल्है ग्रज।—ढो. मा.

सकजापण, सकजापणौ—सं. पु.—शक्ति, पराक्रम, शौर्य।

उ०—भारथ पारथ ज्यूं भिड़ै, सकजापण री सीम। गुमर न दूजां चौ गिणै, एहौ स्यांम ग्रजीम।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

सकजौ—देखो 'सकज्ज'।

उ०—ग्रौरां कुं सकजा गिनै, ग्रापा होय निकज। हरीया हरिजन जांणियै, जिसी राह की रज।—ग्रनुभववांणी

सकज्ज—सं. पु.—हाथी, गज।

वि.—१ समर्थ, शक्तिशाली।

उ०—गोपाळौ सिवरांम रौ, साथै जोध सकज्ज। ऐ खींचो ऊंची धरण, करण जतन कमधज्ज।—रा. रू.

२ कार्यकर्त्ता।

उ०—१ हाथाळौ ऊहड़ 'हरी', गळ गढ हूंदी लज्ज। 'इंदौ' भोज महाबळी, 'सांमौ' 'देद' सकज्ज।—रा. रू.

३ कुशल कार्यकर्त्ता।

उ०—१ कमधज्ज सकज्जां कारणां, कळा भुजा मापै कवण। विचित्रांण धणी इम विग्रहै, गहियौ फिर पड़तौ गयण।—रा. रू.

उ०—२ 'रूपौ' कुंभकरन्न रौ, कुंडाद्रह कमधज्ज। रहै गुढौ कर सद्धरौ, 'ऊदा'हरौ सकज्ज।—रा. रू.

४ काम का।

उ०—लघुवेसां 'देवौ' 'दलौ' सुत जसकरण सकज्ज। ग्राप भळावण खेम' नै, नेम सियौ धर कज्ज।—रा. रू.

५ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—ग्रचळ जळंधर ध्यांन उर, कर गज दांन सकज्ज। मीठा साचा वयण मुख, लाहू लोयण लज्ज।—बां. दा.

६ वीर, बहादुर।

उ०—सुत 'कुसळ' ऊद' हरवळ सकज्ज। 'ग्रमरेस' तांम कीधी ग्ररज्ज।—सू. प्र.

क्रि. वि.—लिए, हेतु।

उ०—१ सीहै जाइ सँदेस, कथन कहियौ कमधज्जां। मार लियौ मारकां, किसा पूरदीप सकज्जां।—गु. रू. बं.

उ०—२ धनवंत कोड़ियधज्ज, सुजि दीप लाख सकज्ज। दुतिवंत दौलतिदार, पौसाक तास ग्रपार।—सू. प्र.

उ०—३ बहै दहुंवै बळ पेस कब्रज्ज, संग्रांम दहूं बळ स्यांम सकज्ज। दहूं बळ रट्टत रांम खुदाय, पलट्टत ग्रांत दहूं बळ पाय।—मे. म.

रू. भे.—सकज, सकजौ, सकाज, सकाजौ।

सकज्जाई—बहादुरी, वीरता।

उ०—धांनंक-धारी बळाकारी मालहारी मद्द ए। सूरा सिपाई तुंग तांई सकज्जाई हद्द ए।—गु. रू. बं.

सकट-सं. पु. [सं. शकट] १ गाड़ी, छकड़ा। (डिं. को.)

उ०—१ कोयक सकट कुसागड़ी, भार विसेस भरंत। धवळ पड–प्पण आपरै, खांधै ले निबहंत।—बां. दा.

उ०—२ कवी कहै छै—जिण दिन सूं धवळा धोरी रूपी वौ वीर पुरस मारीजियौ उणहीज दिन सूं अठारी आ धरती सूंनी होय गई अनै सकट (गाडौ) कीतरा बोझ रौ भरियोड़ौ तथा वीरता रौ दातारगीरौ........।—वी. स. टी.

उ०—३ धर भार अराबां अरण-धज, बेलां हमलां बारणां। धुर भार सकट कट्ठठ धमळ, भार बांण भारथ रणां।—सू. प्र.

२ रथ। (डिं. नां. मा.)

उ०—१ अठी बीरमदेव नूं जवनां रौ मारिया जांणि ग्रांम सेत्रावा हूं चलाइ राठोड़ गोगै बीरमदेवोत आपरा बापरा बाढणहार नूं बिसारि जिनांही अपराध भाजड़ मैं भीत सकट रै हेठै सपत्नीक सूता जोइया दला नूं जाइ हणियौ।—वं. भा.

उ०—२ करनी मुख सूं यूं कह्यौ, रख करंड सकट पर। करंड कियौ गिर मेर कह, ब्रह्मण्ड समोभर।

—ठाकुर जुंझारसिंह मेड़तियौ

३ शकटासुर दैत्य का नाम जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था।

४ एक प्रकार का सैनिक व्यूह।

५ एक तौल विशेष।

रू. भे.—सकट्ट, सगट, सग्गड।

सकटव्यूह-सं. पु. [सं.] एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना विशेष।

सकटभेद-सं. पु. [सं.] जन्म स्थान से छठे आठवें स्थान के पापग्रहों से सम्बंधित लग्नेश होता है तो जन्मपत्री में सकटभेद कहलाता है। यह अशुभ माना जाता है।

सकटहा-सं. पु. [सं. शकटहा] शकटासुर को मारने वाले श्रीकृष्ण।

सकटार-सं पु. [सं. शकटार] नंद वंश के राजा महानंद का प्रधानमंत्री जिसने चाणक्य के साथ मिलकर नंद वंश का नाश किया।

(ऐतिहासिक)

सकटारि-वि. [सं. शकटारि] शकटासुर को मारने वाले श्रीकृष्ण।

सकटासुर-सं. पु. [सं. शकटासुर] श्रीकृष्ण द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य।

रू. भे.—संगठासुर।

सकटिका, सकटी-सं. स्त्री. [सं. शकटिका] १ छोटी गाड़ी।

२ बग्घी।

३ गाड़ी। (डिं. को.)

सकट्ट—देखो 'सकट' (रू. भे.)

उ०—१ अगै अप्रवांणी वजै खग्गवांणी, कबाड़ी सकट्टां कटै जांण कट्टां।—रा. रू.

उ०—२ कमाळा लदै सब्ब त्यां द्रब्ब कोड़ी, सकट्टां लठां भार ज्यौं टांस जोड़ी।—रा. रू.

सकठस्थ-वि. [सं.] रथ या गाड़ी में बैठा हुआ।

सकणौ, सकबौ-क्रि. अ.—कोई कार्य करने में योग्य होना या समर्थ होना।

उ०—१ पातसाह राखै प्रसन, 'जेहा' तो घण जांण। मक्के मदीनै मारणां, ताठ सकै कुण तांण।—बां. दा.

उ०—२ तथापि रहै न हूं सकूं, बकूं तिण त्रिया अनैं प्रेम आतुरी। राजद्वरि द्वारिका विराजौ, दिन नेहड आइयौ दूरी।—वेलि

उ०—३ गोडा छाती मैं लियां थोड़ी निवास वापरी तौ उणैं पग पाछा लांबा कर लिया। वौ सोचण लाग्यौ—इण दीवाली री'ज बात, टाबरां रै नूंवा कपड़ा ई नीं आय सक्या।—अमरचूंनड़ी

सकणहार, हारौ (हारी), **सकणियौ**—वि०।

सकिओड़ौ, सकियोड़ौ, सक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सकीजणौ, सकीजबौ—भाव वा०।

सक्कणौ, सक्कबौ, सगणौ, सगबौ, **सघणौ, सघबौ**—रू. भे.

सकत—१ देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ समहर हिंदू दोय सौ, मेछ पड़ै सत च्यार। सकत गरज्जी रीझ सूं, यां वज्जी तरवार।—रा. रू.

उ०—२ जोहरी परखै जिण विध जुहार, दस चार परख विद्या उदार। बस सकत पाय ताळाविलंद, 'अवजीत' सुतन नरलोक इंद।

—वि. सं.

उ०—३ दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारै। सकत वांम सुरराय, सोम दाहिणैं संभारै।—रा. रू.

२ देखो 'सख्त' (रू. भे.)

उ०—प्रीतकर पुरहूत ऊपर, उठै रघुबर आप। सहस भग किय चसम सहसा, सकत मेटै स्राप।—र. रू.

सकतपुर - देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

सकतपुरौ - देखो 'सक्तिपुरौ' (रू. भे.)

सकतमंत्र—देखो 'सक्तिमंत्र' (रू. भे.)

उ०—बूझ व्यास प्रोहितां समर सूरां गुर सिक्षा। सकतमंत्र सिव-कवच, विष्णु-पंजर हरि-रक्षा।—रा रू.

सकति—देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ अनंत सकति कउ निवास, अनंत मुक्ति सुख विलास। अनंत वीरज अनंत धीरज, अनंत सुकल ध्यांन री।—स. कु.

उ०—२ असि खड़ग सकति तोरण उदार, आंकुसां संख चक्र सुभ अपार।—सू. प्र.

उ०—३ भांणउदीप विगत सुण भारी विधवत सकति पूजि विस–तारी।—सू. प्र.

उ०—४ सांई छोडि सकति का हूवा, इन कुं नहीं भगति का दूवा। चाडै जीभ उतारै सीसा, यां सुं अलग रह्या जगदीसा।

—अनुभववांणी

उ०—५ कूंडै भेळा बैस करि जपै सकति कौ जाप। हरीया अंतर ऊपजै, सांसा सोग संताप।—अनुभववांणी

उ०—६ सिंधव सरळ साभि सीरोही, सकति संभू चौ करिवा रोव। अरि लोही ओफड़ां उतबग, देखै हेत कमंध हरदेव।

—प्रतापसिंघ सत्रुसालोत रौ गीत

उ०—७ सुख प्रगट्यौ तूठां सकति, भड़ नवकोटां भाग। दिल पातां जागी दसा, असहां लागी आग।—रा. रू.

उ०—८ सिव नै सिसहर निलै, सकति नै सीह चड्न्नी। बांमण अनियै वळै. वाच बळ राजा दीनी। रामचंद नै भीच हणुं मुंह आगळ कीधौ। थावर नै बारमौ, अधड नै अम्रत पीधौ।

—गु. रू. ब.

उ०—९ जरख रीछ वड्डाख, सिवा सत लस्स मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।—गु. रू. बं.

उ०—१० सिव सकत्ती सम मुगती सिव मभि सकति सकति सिव मभै। आतम सकति सकति सिद्धी, सिव सकति पिंड ब्रहमंडी।

—गु. रू. बं

उ०—११ तउ आठमइ दिवसि कन्हु मन माहि विमासइ मेल्हीउ सिल्लहि सकति कुंअरु उत्तरु रणु पाडीउ। तांम तिखंडीय तणीय बुद्धि तउ कांन्हि दिखाडीउ।—सालिभद्र सूरि

सकतिपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

सकतिपुरौ—देखो 'सक्तिपुरौ' (रू. भे.)

सकतिभू-सं. पु. यौ. [सं. शक्ति+भू] कार्त्तिकेय, षड़ानन। (नां. मा.)

रू. भे.—सकतीभू।

सकतिवंत-वि.—शक्तिशाली, बलवान।

उ०—उलभाय तन मन आप आपमैं, विहुत सीत रुखमणी वरि। वांणि अरथ जिम सकति सकतिवंत पुहप गंद गुणगुणी परि।

—वेलि

सकतिहथौ-वि.—हाथ में शक्ति (सांग) नामक अस्त्र रखने वाला।

उ०—'पातल' तणौ 'जसौ' पूंचाळौ, 'भाखर' रिदै' तणौ भुर-जाळौ। 'मांन' सुजाव सवाई' मारु, सकतिहथौ जवनां पति सारू।

—रा. रू.

सकती—१ देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ अंध जीव री आंख, ओळखण सकती आयां। लख पनंग मणि लाभ, पांख गति पंछी पायां।—मुरारीदांन

उ०—२ सकत्यां लावौ साथ मैं, भाफा भूल भमेल। करि साजा इंदर कंवरि, खुद्द रचावौ खेल।—मे. म.

उ०—३ सागर सघू इंदरा सकती, जननी धापू जाई। उगणीसै चौसट्टा वाली, विपरां साल बताई।—मे. म.

२ देखो 'सख्त' (रू. भे.)

उ०—सकती बांधे वीटुली, ढीली मेल्है लज्ज। सरढी पेट न लेटियउ, मूंध व मेळउं अज्ज।—ढो. मा.

सकतीधरण, सकतीधारण, सकतीधारी-सं. पु. [सं. शक्तिधारिन्] गरुड़। (अ. मा.)

सकतीपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

उ०—भर सकतीपुर चै सांम प्रांण सुरतांण संकायौ। गांजै घड़ गज रूप चीत आलम चमकायौ।—नैणसी

सकतीपुरौ—देखो 'सक्तिपुरौ' (रू. भे.)

उ०—१ सकत त्रभागै तोलियां, सकतीपुरा 'मुरार'। बीज झड़ंदी सारखां, कै सिवहंदी रार।—रा. रू.

उ०—२ चतुर कहै सकतीपुरौ सुधरै तौ बळ स्यांम। ऊखेळौ वाघै इळा, भेळौ लियै संग्रांम।—रा. रू.

सकतीभू—देखो 'सकतिभू' (रू. भे.)

सकत्त—१ देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—गावै जस नित्त सकत्त गणेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह. र.

२ देखो 'सख्त'।

सकत्ति, सकत्ती—देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ बुझै कुण नाथ तुहाळा बंग सकत्ति रुद्र न मूरत्ति न लिंग।

—ह. र.

उ०—२ माया सारी सांवटी आपै आपांणं, संग रही अंको सकत्ति जोगमाया जांणं।—गज-उद्धार

उ०—३ मद मदिरा रस मत्ती, रत्ति आपांण अंग अहरत्ती। करत विलास सकत्ती चालराय मंढ चालकना।—किरपारांम

उ०—४ रगत पिद्ध बळि लिद्ध, जपै जैकार सकत्ती। कियौ संकर सिंगार, रूंडमाळा गळ गत्ती।—गु. रू. बं.

उ०—५ मंत्र सकत्ती मत्र सूं, ज्यौं तोडी लै जाय। अभंग दुआह दुरंग यूं, लेगौ साह धकाय।—रा. रू.

उ० —६ 'रूप' तणौ जोड़े 'रघुपत्ती', समहरि भीरी जेण सकत्ती।

—रा. रू.

सकन—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—अह्माळू सकन वरणवुं पणि किस्या छइ जे सकन। डावी देव जिमणी भइरव, डावु खइर डावु राजा।—व. स.

सकना-सं. स्त्री.—मुसलमानों की एक जाति विशेष जो सांचौर तहसील में आबाद है।

सकनकूर-सं. पु. [अ. सकन्कूर] गोह की तरह का एक जन्तु जिसका रंग लाल या पीला होता है। इसका मांस खारा और फीका होता है, पर बहुत बलवर्द्धक माना जाता है। इसे रेत की मछली या रेग मांही भी कहते हैं।

उ०—जंघ अलोम अनूप जुग, नाजुकपणौं निघात। केळि करी कर कळभ के, सकनकूर साखात।—बां. दा.

सकपकाणौ, सकपकाबौ-क्रि. अ.—१ आश्चर्यान्वित होना।

२ हिचकिचाना।

३ शरमाना।

४ प्रेम, लज्जा या शंका के कारण उत्पन्न होने वाली चेष्टा करना।

सकपकाणहार, हारौ (हारी), सकपकाणियौ —वि०।

सकपकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सकपकाईजणौ, सकपकाईजबौ—भाव वा०।

सकपकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ आश्चर्यान्वित हुवा हुआ. २ हिचकिचाया हुआ. ३ शरमाया हुआ. ४ प्रेम, लज्जा या शंका के कारण उत्पन्न होने वाली चेष्टा किया हुआ।

(स्त्री. सकपकायोड़ी)

सकपकाहट-सं. स्त्री.—सकपकाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

सकबंध, सकबंधी—देखो 'साकाबंध' (रू. भे.)

उ०—१ विविध धांमपुर ग्रांम वसाहै, मांझी राजस पूरब मांहै। सेतरांम **सकबंध** नरेसर, इळ (ण) लग राजस पूरब अंतर।

—रा. रू.

उ०—२ सितर खांन **सकबंध**, कटक अनमंध छिलेकर। असपत हद सामंद, कीध ऊबंध प्रमेसर।—रा. रू.

उ०—३ 'सूर' हर सूर **सकबंध** साहण, समंद तधि सामंद्र असमांण तोलै। अतग अणरेण अणभंग ऊंचासिरौ; वहळ खळ सार मैं छौळ बोळै।—अमरसिंघ रौ गीत

उ०—४ सुरसुत सुछळि दिल्लेस **सकबंध** सह, तेज बधि दळां हूं पैज तांणी। खाग झल खींद बळ छांडि खिसिया खळै, वधै जैकार सुर अखिल वांणी।—नरहरदास बारहठ

उ०—५ रिण घोधर 'बेणौ' प्रथीराज, भाटियां भुजै भाराथ लाज। अजमेर मुग्रौ 'गोइंद' तात, **सकबंधी** जांणै दीव सात।

—गु. रू. बं.

उ०—६ आछहियौ ईखवा साह दरगह **सकबंधी**। है गै दळ हल्लिया मिळै अणकळ अनमंधी।—रा. रू.

उ०—७ 'सांवळ' आद खांन **सकबंधी**, अै ऊदा मिळिया अनमंधी।

—रा. रू.

सकमळकर-सं. पु. यौ. [सं. सकमल+कर] विष्णु।

उ०—धराधीस धांनख गिरधारी, कमळ कंत **सकमळकर**।

—र. ज. प्र.

सकर—१ देखो 'सक्र' (रू. भे.)

उ०—१ आकुलत व्याकुलता चलत नह आवणै पीव किण भांत आरांम पांमै। सूकरदै **सकर** चा नैंण मूंदै संची, नागणी नाग सिर घडा नांमै।—महारांणा राजसिंह रौ गीत

उ०—२ कळह कराळौ अजन-सर **सकर** बज्र अकाळौ, उड़ण ग्रह पंखाळौ अगनि झळ ओप। सेल रौ उलाळौ सहसमल, काळ चाळौ-किनां जटाधर कोप।—सहसमल राठौड़ रौ गीत

२ देखो 'सक्कर' (रू. भे.)

उ०—बायक लवग मसाला बांटै, जीभ **सकर** मीठम जेम। सौहड़ां कज कौड़ां 'परसां' सुत, आखर तणौ रांमरस अेम।

—आईदांन गाडण रौ गीत

सं. पु.—संहार, नाश।

सकरकंद-सं. पु. [सं. शर्करा+कंद] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद जो खाने व सब्जी बनाने में काम आता है।

अल्प ;—सकरकंदी, सकरियौ।

सकरकंदी—देखो 'सकरकंद' (अल्पा; रू. भे.)

सकरड़-वि.—बलवान, शक्तिशाली, यौद्धा।

उ०—खीज चख चरड़ नख बरड़ अघकाव खग, भड़ां हड़वड़ ऊरड़ घाव भाराथ। भुजंग झोकायतां मुरड़ **सकरड़** भंजण, पुगीयौ गुरड़ समवड़ प्रथीनाथ।—सायपुरै अमरसिंह जी रौ गीत

सकरड़ौ—देखो 'सोकरड़ौ' (रू. भे.)

उ०—रण जोर अलेख लहै जोरावर, भिड़ै कायम खां छळि भरै। सैंहस अेक दस लिया **सकरड़ै**, कूरम तौ न संतोख धरै।

—सादूळसिंघ सेखावत रौ गीत

सकरण-सं. पु.—संहार, नाश।

वि. [सं. सकर्ण] १ जिसके कान हो।

२ जो सुनने में समर्थ हो।

सकरणौ, सकरबौ-क्रि. अ.—१ मंजूर होना, स्वीकृत होना।

२ भुनना, भुगतान होना।

सकरणहार, हारौ (हारी), सकरणियौ—वि०।

सकरिओड़ौ, सकरियोड़ौ, सकर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सकरीजणौ, सकरीजबौ—भाव वा०।

सकरपारौ-सं. पु. [सं. शर्करा+पार] १ एक प्रकार का व्यंजन विशेष।

उ०—१ वली सी सी वस्तु प्रीसाइ ? **सकरपारा** साकरीआ चिणा दूधपाक कोहलापाक सेलडीपाक········।—व. स.

उ०—२ सेव झीणी, फगफगती फीणी; अघतनी घारी, स्वादय्यं आहारी; साकरसयुं रूली, इमी प्रीसी तिलसांकुली; **सकरपारा** मांडो, कोइ न सकइ छांडी।—व. स.

वि. वि.—यह पकवान मीठा तथा नमकीन दोनों प्रकार का होता है। इसे बनाने के लिए पहले आटे को मोयन देकर दूध में सान लेते हैं और सानते समय यथारुचि मीठा या नमक मिला देते हैं। फिर मोटी रोटी बेलकर उसे छोटे चौकोर तिकोन लंबे खंडों या टुकड़ों के रूप में काट कर तेल या घी में सान लेते हैं। कोई कोई इसे सादे बनाकर चीनी में पाग लेते हैं।

२ एक प्रकार का फल जो नींबू से कुछ बड़ा होता है। इसका वृक्ष नींबू के वृक्ष के समान होता है, पर पत्ते नींबू से कुछ बड़े होते हैं। फूल लाल रंग के होते हैं। फल सुगंधित और खट्टा मीठा होता है।

३ स्त्रियों के सिर पर धारण किया जाने वाला इस शकरपारा के

आकृति का एक आभूषण विशेष।

४ रूईदार कपड़े पर की जाने वाली विशेष प्रकार की सिलाई।

सकरमक-वि. [सं. सकर्मक] कर्मकर्त्ता, कर्म करने वाला।

सकरमक क्रिया-सं. स्त्री. यौ.—व्याकरण की दो प्रकार की क्रियाओं में से एक जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त होता है।

सकरवाळ-सं. स्त्री.—राजपूत वंश की एक शाखा।

सकरांणी—१ शक्कर मिला भात।

२ देखो 'सुकराणी' (रू. भे.)

सकरांत, सकरांति—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

सकराणौ, सकराबौ-क्रि. स.—१ भुनवाना (चैक, ड्राफ्ट, बिल, आदि विपत्र)।

२ स्वीकृत कराना।

सकराणहार, हारौ (हारी); सकराणियौ—वि०।

सकरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सकराईजणौ, सकराईजबौ—कर्म वा०।

सकरायंत—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

सकरायमाता-सं. स्त्री.—एक देवी विशेष।

सकरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ भुनाया हुआ. २ स्वीकृत कराया हुआ। (स्त्री. सकरायोड़ी)

सकरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ स्वीकृत हुवा हुआ, मंजूर हुवा हुआ. २ भुना हुआ, भुगतान हुवा हुआ।

(स्त्री. सकरियोड़ी)

सकरियौ-सं. पु.—१ स्वर्णकारों का नक्काशी करने का लोहे का एक कीला विशेष।

२ देखो 'सकरकंद' (अल्पा; रू. भे.)

सकरोड़ौ—देखो 'सखरौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—खूब तो पीयौ हो कंवर जी **सकरोड़ौ** दारू श्रो आलीजा।

—लो. गी.

(स्त्री. सकरोड़ी)

सकरौ—१ देखो 'सखरौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सकरी)

२ देखो 'सिकरौ' (रू. भे.)

सकळंक, सकलंक, सकलंकी-सं. पु. [सं. सकलंकिन्] चंद्रमा, चांद।

(अ. मा; डि. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

वि.—वह जिसके कलंक हो।

सकलंकित-वि.—कलंक सहित, कलंकित।

उ०—पिण **सकलंकित** चंद्र कहावइ अकलंकित मुझ स्वामी। तै तउ अम्रत रस नइ धारइ प्रभु अनुभव रस धांमी।—वि. कु.

सकळ-सं. पु. [सं. सकल] १ निर्गुण ब्रह्म।

उ०—**सब** धरीया धारै मरै, सरै न एकौ कांम। हरीया धरीयै अधर कूं, एक **सकळ** विसरांम।—अनुभववांणी

२ प्रकृति।

३ घास या तृण।

[सं. शकलः] ४ खंड, टुकड़ा।

[सं. सकलः] ५ सेना, फौज। (अ. मा.)

वि.—सब, समस्त और सम्पूर्ण। (डि. को.)

उ०—१ भुजां खत्रीवट प्रगट 'चंद' सुत झळहळै, तुराटां चढै गढ बिकट तोड़ै। सतर घट सरप सम हुवै चळवळ **सकळ**, जनेबां गुरड़ री झपट जोड़ै।—राव देवीसिंघ रौ गीत

उ०—२ कहै मांनवी देव अणभेव चिरतां **सकळ**, जांण कुण सकै गोपाळ जीकौ। ऊधरै संत महिमा करै ऊजळी, निंद्या कर तिरै सिसपाळ नीकौ।—ब्रह्मदास दादूपंथी

उ०—३ जन लज रखण जरूरह दसरथ सुत **सकळ** सुजन सुख-दायक। सिरदस घायक समहर सत वायक, रांम सरसत सुभ।

—र. ज. प्र.

उ०—४ मुंड चंड महिसासुर मारै, सुंभ निसुंभ **सकळ** संहारै। जनमै रक्तबीज तन ज्यौं ज्यौं, तें निरबीज किये हनि त्यौं त्यौं।

—मे. म.

क्रि. वि.—सर्वत्र, सब जगह।

उ०—मोटा धणी अचंभौ मोटौ, घट सूरापण निपट घणोह। ठावौ **सकळ** सकळ रौ ठाकर, तूं चाकर चाकरां तणोह।

—ब्रह्मदास दादूपंथी

रू. भे.—सक्कळ, सिकळ।

सकल-सं. स्त्री. [फा. शक्ल] चेहरे की बनावट, आकृति।

मुहा.—१ सकल बणाणी=चित्र बनाना, रूप बनाना।

२ सकल बिगाड़णी=सूरत खराब करना, अत्यधिक पीटाई करना।

३ सकल उतारणी=उदास होना।

रू. भे.—सिकल।

सकळआतमा-सं. पु. यौ. [सं. सकल=आत्मा] कामदेव। (अ. मा.)

सकळकळ-वि.—सोलह कला युक्त। (चन्द्रमा)

सकळजगपाळक-सं. पु. [सं. सकलजगपालक] ईश्वर, परमेश्वर।

(ह. नां. मा.)

सकळजणणी, सकळजननी-सं. स्त्री.—१ प्रकृति।

२ देवी, दुर्गा, जगदम्बा।

सकळा, सकला-वि.—कला सहित, कलायुक्त।

उ०—दीरघा लघु वपु द्रढा, सबेही रूप विरुपा। वकला **सकळा** व्रजा, उपावण आप आपुपा।—देवि.

सकळाई-सं. स्त्री.—१ चमत्कार, करामात।

उ०—१ एक पीर आडौ नहिं आयौ, कछु नहीं **सकळाई** है। अला खैर सूं प्रांण ऊबरै पिछली पुन्याई है।

—हिंगलाजदांन जागावत

उ०—२ चलतौ ऊंट तूटतां खाती, बोल्यौ आरत बांणी। करणी

काठ तणी पग कीधी, जग सकळाई जांणी ।—मे. म.

उ०—३ खूब जातरी आवै जावै है। परचा उडे कोढियांरा कलंक झड़ै है। दुनियां उलट पड़ी है। सकळाई हुवै तो इसी हुवै।

—दसदोख

२ बल, शक्ति।

उ०—सोई खुद्द आज दिन सांप्रत, खीदुरगा सकळाई। मूरत अदुल भेख मरदांनी, सूरत हृदय समाई।—मे. म.

३ सिद्धि।

सकळात, सकलात–सं. पु.—१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—अदांण करमदांण कंतरांइणी गजकरणी पइठांणी सलहिती बारबती फरोदस्ती चूडाभाति सकलात पोतु।—व. स.

२ देखो 'सकळायत' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति अतरा मांहै तरकसांरा कुहटाऊ बीड़िया छै। सो किण भांति रा तरकस कंदील, जिर्क मुखमली ठाठी, प्रतिकाली सकलात, मैंण कपड़ री खोली सूं काढी, कलाबूत नीसरी सांठी, गिरमरी नीपनी, कांवड़ै गजबल रा भल,.. ...... ।—रा. सा. सं.

सकलाय–वि.—कलापूर्ण, कलायुक्त।

उ०—सदा सांमलउ रूप सकलाय सोहइ, मुख देखतां माहरू' मन मोहइ।—स. कु.

सकळायत–सं. पु.—१ एक प्रकार का बढिया लोह।

उ०—चीतेवांण नै हुकम हुवौ छै। चीता साथ लीजै छै, घोड़ां री पूठ तखतां ऊपर बैठा छै। आंख्यां आडी कुल्है छै। सकळायत रा पटा, रूपैरी भंवर कड़ी, रेसम री डोर।—रा. सा. सं.

२ देखो 'सकळाई' (रू. भे.)

रू. भे.—सकलात।

सकळी–सं. स्त्री.—१ पूर्णमासी।

[सं. शकलिन] २ मछली।

सकळीघर, सकलीगर—देखो 'सिकळीघर' (रू. भे.)

उ०—धोबी सवणीगर न्यारा रे नाई नीलगर पीनारा, सकलीगर गांछा नै घोसी रे कल्लाल तरमां मोची।—जयवांणी

सकलीण, सकलीणौ, सकलीन—देखो 'सुकुलीण' (रू. भे.)

सकळीव्रत–सं. पु. [सं. सकली+व्रत] चंद्रमा, चांद। (ना. डि. को.)

सकव, सकवि, सकवी—देखो 'सुकवि' (रू. भे.)

उ०—१ मेंगळ तणी समापण मौजां, सकवां रयौ नहीं संसार।

—महाराजा पदमसिंह जी रो गीत

उ०—२ कवि तद बोलै 'केहरी', सकवी सूर सुभट्ट। बोध समप्पण धूहडां, कुळ रोहड़ां मुगट्ट।—रा. रू.

सकस–सं. पु.—१ वीर पुरुष।

उ०—१ सकसै का जैतवार अकसै का वाई। अरिदळ समुद्र आए कुंभज के भाई।—रा. रू.

उ०—२ वीर तन छोह छकड़ाळ कस वीछड़ै, रूक सूं भिड़ै असपति सारीस। सीस देवळ तणी डिगण न दियै सकस, 'स्यांम' तण भुजा ऊभजतै सीस।—सुजांणसिंघ भोजराजोत रौ गीत

२ पति।

उ०—दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी। सियजीत पति गुण परखि चखि सुख सकस पखि जिम सुंदरी।

—रा. रू.

३ देखो 'सख्स' (रू. भे.)

उ०—हजूर अमीर खड़े नांमदार सकस। कमरदीखांन दोरां नुरराबाज वगस।—रा. रू.

सकसस्त्र–सं. पु. [सं. शक्यशस्त्र] लोहा। (अ. मा.)

सकसेना–सं. स्त्री.—कायस्थ जाति की बारह शाखाओं में से एक।

सकस्सा–वि.—मजबूत, दृढ़।

सकस्सी–सं. स्त्री.—एक प्रकार का हथियार विशेष।

सकांम–वि. [सं. सकाम] १ सफल-मनोरथ।

उ०—आ बात कंवर चूंडेजी सांभळि मन में विचार करि, उमरावां सुं मिसलत पूछी ज्यौ नाळेर आयौ सो खीदीवांण नै किसी तरैहीज दै तौ वडो सकांम हुवै।—राव रिणमल री बात

२ कामनायुक्त।

उ०—अब चढहुं जेज नह होय तांम, सुण उमंग सकळ आसुर सकांम।—रा. रू.

३ मैथुन की इच्छा रखने वाला व्यक्ति, कामी।

४ स्वार्थ, स्वहित भावना।

उ०—लख चौरासी जोनि में, मातौ मोह सकांम। हरीया असै जीव कुं, कहां नहीं विसरांम।—अनुभववांणी

५ इच्छित, अभीष्ट।

अल्पा;—सकांमौ

सकांमी–सं. पु. [सं. सकामिन्] १ विषयी व्यक्ति।

२ देखो 'सकांम'।

सकांमौ—देखो 'सकांम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सरस रजवाट तप अघट 'सूजा' सुतन, सार झट रचै तीरथ सकांमौ। करावै भगत अणभांवति केवियां, साख खट तीस रौ महत 'स्यांमौ'।—स्यांमसिंघ सेखावत रौ गीत

सका–सं. पु. [सं. शका] १ एक देश का नाम।

२ एक जाति विशेष।

सकाकुळ–सं. पु.—१ शतावर जाति का एक कंद विशेष।

स. स्त्री.—२ एक प्रकार की मछली विशेष।

सकाकोल–सं. पु. [सं सकाकोलः] एक नरक का नाम। (मनु)

सकाज—देखो 'सकज' (रू. भे.)

उ०—१ चांपा भुजबळ अग्गळा, कुळ अग्गळा सकाज। छत्रपति छळ अग्गळा, लियां धरत्ती लाज।—रा. रू.

उ०—२ सूर छतीसी सांभळै, सूरां तणौ **सकाज**। 'बांका' रा बायक सुणे, कायरड़ा किए काज।—बां. दा.

उ०—३ अमर प्रवाड़ा एण विध, कहिया सुकवि **सकाज**। इण आगळि वरणन अथग, राज तेज 'जसराज'।—सू. प्र.

उ०—४ विकट विहारी वंकड़ौ, जाळंधर 'गढराज'। सो राठौड़ां घेरियौ, जोड़ै सेन **सकाज**।—रा. रू.

उ०—५ महाराजा 'अजमाल' रै, नगर वधाई आज। नरपति मन भायौ थयौ, जायौ पुत्र **सकाज**। —रा. रू.

सकाजौ—देखो 'सकज' (रू. भे.)

उ०—१ आठ मिसल उमराव, सूर आविया **सकाजा**। दुज मंत्री कवि दुभ्फळ, मिळै दरगह महाराजा। - सू. प्र.

उ०—२ सुणी भड़ां 'अजमाल' रां, आयौ राव चलाय। भड़ां सकाजां मारकां, वणी गरजां आय।—रा. रू.

सकाब्द-सं. पु. [सं. शकाब्द] शालिवाहन द्वारा चलाया हुआ संवत्, शक संवत्।

सकार-सं. पु.—१ 'स' अक्षर।

२ 'स' वर्ण के समान ध्वनि।

[सं. शकारः] ३ पत्नी का भाई, साला।

उ०—उज्जइणीपुर उण समय, प्रतपै रेणु प्रमार। तिणरौ दूजौ नांम जग, आखै करण उदार। तिण रौ एक **सकार** तदि, जांमिप धन बय जोर। रूपाजीवा रूपरौ, सुणियौ जिण अति सोर।

—वं. भा.

वि. वि.—यह रखेल या बिना ब्याही स्त्री का भाई भी हो सकता है।

[रा.] ४ स्वार्थ, प्रयोजन।

सं. स्त्री.—५ सार्थकता।

उ०—म्हारा जीवणा मैं **सकार** कोई नहीं पिण म्हारौ जीव च्यार वातां मैं अटक्यौ छै।—जैतसी ऊदावत री बात

६ देखो 'सिकार' (रू. भे.)

उ०—नेहनी जाल नाखी अपार, खेलै ए खांतिस्यूं तै **सकार**। अग जिम पडै तिम राग वाह्यौ, मूढ जन मांननो रस उमाह्यौ।

—वृद्धि विजय

रू. भे.—सक्कार।

सकारि-सं. पु. [सं.] १ विक्रमादित्य की उपाधि।

रू. भे.—सकारी

सकारियोड़ो-भू. का. कृ.—१ भुनाया हुआ. २ स्वीकार किया हुआ। (स्त्री. सकारियोड़ी)

सकारो—१ देखो 'सिकारी' (रू. भे.)

उ०—सांभळी वात वीदै **सकारी**, थापि का जाति नियाती थारी।

—वि. सं. सा.

२ देखो 'सकारि' (रू. भे.)

सकारै-क्रि. वि. [सं. सकाल] प्रातः काल, सवेरे।

उ०—चरणांम्रित रौ नेम **सकारै**, नित उठ दरसण जास्यां।

—मीरां

सकाळ, सकालि-क्रि. वि. [सं. सकाल] प्रातः काल, तड़के।

उ०—नवभवनेहि ऊमाहिय नाहिय कुमर **सकालि**। सिरवरि सोवन वालिय जालिय तिलक निलाडि।—जयसेखर सूरि

सकियक—देखो 'सकैक' (रू. भे.)

उ०—भींकै भड़ धाराळ जंग, भंजै पिसणां भूर। **सकियक** सीस-संबंध हुंत, समभै निजरा सूर।—रैवतसिंह भाटी

सकी-वि. [फा. शकी] संदेह करने वाला, संदेहशील।

रू. भे.—सक्की।

सकीयारथ—देखो 'सुकयारथ' (रू. भे.)

सकुंच-वि.—संकुचित।

सकुंत-सं. पु. [सं. शकुंत] १ विश्वामित्र ऋषि के ब्रह्मवादी पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

२ एक प्रकार का पक्षी।

३ एक प्रकार का कीड़ा।

सकुंतक-सं. पु. [सं.] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

सकुंतला-सं. स्त्री. [सं. शकुंतला] कण्व ऋषि के आश्रम में पली हुई राजा दुष्यंत की पत्नी तथा मेनका के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र की पुत्री का नाम।

उ०—ई उभरै रूप बसंती मैं, ही फिरै **सकुंतळा** बणी ठणी। कानां मैं फूल भूमरिया हा, छाती पर आंगी तणी तणी।

— करणीदांन बारहठ

सकुच—देखो 'संकोच' (रू. भे.)

सकुचण-सं. स्त्री.—लज्जा, शर्म। (डिं. को.)

सकुचणौ, सकुचबौ—देखो 'संकुचणौ, संकुचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कोकन सिर खड़िया कटक, तै सिधराय अभंग। दिन **सकुचीजै** कोकनद, कोक न कोकी संग।—बां. दा.

उ०—२ सिध हसियौ न्रप चख **सकुचांणै**। आतमघात बात चित्त आंणै। - सू. प्र.

उ०—३ करै घुंघट पिण तिण च्यारै, **सकुचै** पिण नहीं किण हिक वारै रे।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ साधौं की संगत छोड़दै रे, सखियां सब **सकुचात**।

—मीर

उ०—५ सिध इम देखि न्रपति **सकुचांणै**। औ गुटकौ दीधौ न्रप आंणै।—सू. प्र.

सकुचणहार, हारौ (हारी), **सकुचणियौ**—वि०।

सकुचिओड़ो, सकुचियोड़ो, सकुच्योड़ो—भू० का० कृ०।

सकुचीजणौ, सकुचीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सकुचन—देखो 'सकुचण' (रू. भे.)

रोड़ां तुलै रै राजिया ।—किरपारांम

पर्याय.—खांड, चीणी, मधुधूळ ।

यौ.—सक्करकंद, सक्करखोरौ, सक्करपारौ ।

रू. भे.—सकर, साकर ।

सक्करखोर, सक्करखोरौ-सं. पु.—एक काल्पनिक कीटाणु ।

वि.—शक्कर खाने का शौकीन ।

रू. भे.—सकरखोर, सकरखोरौ, साकरखोर, साकरखोरौ ।

सक्करपारौ—देखो 'सकरपारौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रेकर वै खासी ग्रळगी भांय ग्रेक मेळा मैं जावण रौ मतौ करचौ । साकळियां, **सक्करपारां** रौ कढीयौ कढाय, निसैवार भातौ बंधाय नै पाळा ई मेळै वहीर व्हिया । —फुलवाड़ी

सक्कळ—देखो 'सकळ' (रू. भे.)

उ०—हुवै दऊ **सक्कळ** हूक हमल्ल, ढहै ढैवाळ सहेता ढल्ल ।
—गु. रू. बं.

सक्कळा—देखो 'सकळा' (रू. भे.)

उ०—देवी गौर रूपां ग्ररवां नळ निद्धि, देवी **सक्कळा** ग्रक्कळा सव्व सिद्धि ।—देवि.

सक्कवै-सं. पु.—१ स्वर्ग, देवलोक ।

उ०—दिन ग्रायां चक्कवै, गया **सक्कवै** समाए । दिन ग्रायां हरचंद, गयौ वारौ बरताय ।—रा. रू.

२ समर्थ; सामर्थ्यवान व्यक्ति ।

उ०—जुग पांणिग्रहण हुइ वार जिण, सोम महूरत **सक्कवै** । दुलही सजोड़ लीधा दुलह, च्यारूं फेरा चक्कवै ।—रा. रू.

सक्कस-वि. [फा. सरकश] १ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—बंद इरादत साथै बगस, संग जैसिंघ कूरमै **सक्कस** ।
—रा. रू.

२ घमण्डी ।

३ देखो 'सकौ' ।

सक्कार—देखो 'सत्कार' (रू. भे.)

उ०—संसकार स्रुतिवांण सुणि, कूरम कै **सक्कार** । परणावै पधरावियौ, महलै राजकंवार ।—रा. रू.

२ देखो 'सकार' (रू. भे.)

सक्काळ—देखो 'सुकाल' (रू. भे.)

सक्कियोड़ौ—देखो 'सकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सक्कियोड़ी)

सक्की—देखो 'सकी' (रू. भे.)

सक्कौ—देखो 'सकौ' (रू. भे.)

सक्ख—देखो 'साखा' (रू. भे.)

उ०—बल्लाळ लहै बिहूँ बांह लक्ख, राठौड रूप तेरहां **सक्ख** ।
—गु. रू. बं.

सक्खि-सं. स्त्री.—मित्रता, दोस्ती ।

उ०—इक्क महिली पंच जण तींहं मिलिउं तुं पक्खि । ए उग्रहांणउ सच्चुकिउ 'कूडउ कूडा सक्खि ।—सालिभद्र सूरि

सक्खर, सक्खरौ—देखो 'सखरौ' (रू. भे.)

उ०—सूभट्ट सख्ख **सक्खरं** लसंग लक्ख पक्खरं, धरा ग्रडोल डुल्लयं गजू निसांन खुल्लयं । —ला. रा.

सक्त-सं. पु. [सं. शक्त] पुरुवंशीय मनस्वी के पुत्र, इसकी माता का नाम सौवीरी था ।

वि. [सं. ग्रासक्त] १ ग्रासक्त ।

उ०—तब चंद्रमा किसौ दीसै छै । जिसौ भरतार ग्रसमाध्यां थकां सती कौ मुख देखिज्यै । जब पिउ वै माहै **सक्त** छै ।—वेलि टी.

२ देखो 'सख्त' (रू. भे.)

सक्ति-सं. पु.—१ वशिष्ठ के सौ पुत्रों में से ज्येष्ठ ।

२ सुब्रह्मण्य का ग्रायुध ।

३ पराशर ऋषि के पिता एक प्रसिद्ध ऋषि ।

४ एक शिवावतार का पिता ।

सं. स्त्री. [सं. शक्ति] ५ बल, ताकत, जोर ।

उ०—१ ग्रदभुत रूप **सक्ति** ग्रकळ, प्रेत दूत पाळंतियं । गहगहै वार डमरू डहक, महमाया ग्रावंतियं ।—देवि.

उ०—२ सिधि गुलिक वेग पर **सक्ति** पाव, धजराज मुकट खग-राज धाव ।—रा. रू.

६ दुर्गा, भवानी ।

उ०—देवी धरम रै रूप सिव **सक्ति** जाया, देवी सिव सक्ति रूपै सत्त माया ।—देवि.

७ सरस्वती ।

८ गिरिजा, पार्वती ।

९ देवताग्रों की विभिन्न शक्तियों में से कोई एक शक्ति ।

वि. वि.—ये शक्तियां भिन्न-भिन्न देवताग्रों की भिन्न-भिन्न होती है । जैसे—विष्णु की कांति, कीर्ति, तुष्टि, प्रीति, शांति ग्रादि, रुद्र की खेचरी, गुणोदरी, गोमुखी, ज्वालामुखी, मंजरी, लंबोदरी, देवी की इंद्राणी, कौमारी, ब्रह्माणी, माहेश्वरी, वाराही, वैष्णवी ग्रादि ।

१० दक्षकन्या सती का नाम, जो देवी पार्वती का ग्रवतार मानी जाती है ।

वि. वि.—पुराणों में शक्तियों की संख्या इक्कावन बतायी गयी है तथा इनके विभिन्न स्थानों को शक्तिपीठ कहा है । रुद्र-शिव एवं पार्वती के कथा का निर्देश उत्तरकालीन 'देवीभागवत' एवं 'कालिकापुराण' में पाया जाता है । इस कथा के ग्रनुसार, दक्षयज्ञ में ग्रपमानित होकर सती ने यज्ञकुंड में ग्रपने प्राणों की ग्राहुति दे दी । इस मृत शरीर को क्रोधित रुद्र-शिव ग्रपने कन्धे पर लेकर तीनों लोकों में नृत्य करता हुग्रा घूमने लगा । यह देख कर विष्णु ने ग्रपने चक्र से सती के मृत शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर

दिये। उक्त टुकड़े जहाँ-जहाँ गिरे वहाँ-वहाँ पर एक-एक शक्ति एवं एक-एक भैरव के रूप में अवतीर्ण हुए। यही स्थान आगे चल कर शक्ति पीठ बन गये। 'तंत्रचूड़ामणि' में प्राप्त ५२ शक्ति-पीठों, उक्त शक्तिपीठों में स्थित 'शक्तियों' तथा वहां गिरे हुए अंगों या आभूषणों के नाम निम्नलिखित हैं :—

शक्तिपीठ	शक्ति	अंग या आभूषण
१ अट्टहास	फुल्लरा	अधरोष्ठ
२ उज्जयिनी	मांगल्यचडिका	कूर्पर
३ करतोयातट	अपर्णा	वामतल्प
४ कन्याकाश्रम	शर्वाणी	पृष्ठ
५ करवीर	महिषमर्दिनी	तीनों नेत्र
६ कर्णाट	जयदुर्गा	दोनों कर्ण
७ कश्मीर	महामाया	कंठ
८ कांची	देवगर्भा	अस्थि
९ कालमाधव	काली	वामनितंब
१० कामगिरि	कामाख्या	योनि
११ कालीपीठ	कालिका	पादांगुलि
१२ कुरुक्षेत्र	सावित्री	दक्षिणगुल्फ
१३ गण्डकी	गण्डकी	दक्षिण गण्ड
१४ किरीट	विमला	किरीट
१५ गोदावरीतट	विश्वेशी	वामगण्ड
१६ चहल	भवानी	दक्षिण बाहु
१७ जनस्थान	भ्रामरी	चिबुक
१८ जयंती	जयंती	वामजंघ
१९ जालंधर	त्रिपुरमालिनी	वामस्तन
२० ज्वालामुखी	सिद्धिदा	जिव्हा
२१ त्रिपुरी	त्रिपुरसुंदरी	दक्षिणपाद
२२ त्रिस्रोता	भ्रामरी	वामपाद
२३ नलहारी	कालिका	उदरनलिका
२४ नन्दिपुर	नंदिनी	कंठहार
२५ नेपाल	महामाया	जानु
२६ पंचसागर	वाराही	अधोदंतपंक्ति
२७ प्रभास	चंद्रभागा	उदर
२८ प्रयाग	ललिता	हस्तांगुलि
२९ भैरवपर्वत	अवन्ती	ऊर्ध्वओष्ठ
३० मगध	सर्वानंदकरी	दक्षिणजंघ
३१ मणिवेदिका	गायत्री	मणिबंध
३२ मानस	दाक्षायणी	दक्षिणपाणि
३३ मिथिला	उमा	वामस्कंध
३४ युगाद्या	भूतधात्री	दक्षिणपदांगुष्ठ
३५ यशोर	यशोरेश्वरी	वामपाणि
३६ रामगिरि	शिवानी	दक्षिणस्तन
३७ रत्नावली	कुमारी	दक्षिणस्कंध
३८ बहुला	बहुला	वामबाहु
३९ लंका	इंद्राक्षी	नूपुर
४० वक्त्रेश्वर	महिषमर्दिनी	मन
४१ वाराणसी	विशालाक्षी	कर्णकुंडल
४२ वैद्यनाथ	जयदुर्गा	हृदय
४३ विभाष	कपालिनी	वामगुल्फ
४४ विराट	अंबिका	वामपदांगुष्ठ
४५ विरजाक्षेत्र	विमला	नाभि
४६ वृंदावन	उमा	केशकलाप
४७ श्रीपर्वत	श्रीसुंदरी	दक्षिणतल्प
४८ श्रीशैल	महालक्ष्मी	ग्रीवा
४९ शुचि	नारायणी	ऊर्ध्वदंतपंक्ति
५० शोण	शोणाक्षी	दक्षिणनितंब
५१ सुगंधा	सुनंदा	नासिका
५२ हिंगुला	कोटरी	ब्रह्मरंध्र

११ लक्ष्मी।
१२ बरछी या सांग नामक अस्त्र।
१३ तलवार, खड्ग।
१४ स्त्री की योनि।
१५ कोई बड़ा और शक्तिशाली राज्य।
१६ शाक्तों की किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी। (तंत्र)
१७ किसी देवता का बल पराक्रम।
१८ शब्दों का अर्थ बताने वाली शक्ति।
उ०—रूढ प्रयोजन सक्ति बिनारच, लछ अरथ नैं यारथ लेख।
क्रत विरुद्ध मति विरूद्ध मति क्रत, आरोपक आरोप असेख।
—बां. दा.

१९ तांत्रिकों के मतानुसार वह सुंदर रूपवती एवं सौभाग्यवती युवती जो नटी, कपालिका, वेश्या, धोबिन, नाइन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन या मालिन हो।
२० किसी पदार्थ और उसका बोध कराने वाले शब्द के बीच सम्बंध। (न्याय)
२१ प्रभाव डालने वाला बल, शक्ति।
२२ शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनें के लिए राज्यों के योद्धिक आदि साधन।

२३ शक्ति नामक शस्त्र के आकार का हथेली में होने वाला निशान, सामुद्रिक चिह्न विशेष।

२४ एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

२५ सामर्थ्य।

२६ ५२ की संख्या। *

२७ देखो 'सक्ती' (रू. भे.)

रू. भे.—सकत, सकति, सकती, सकत्त, सकत्ति, सकत्ती, सक्ती, सखती, सगत, सगति, सगती, सगत्त, सगत्ति, सगत्ती।

सक्तिग्रह-सं. पु. [सं. शक्तिग्रह] १ शिव, महादेव।

२ कार्तिकेय।

वि.—१ शक्ति को ग्रहण करने वाला।

२ भालाधारी।

सक्तिधर, सक्तिधरण, सक्तिधारी-सं. पु. [सं. शक्तिधर] १ स्वामी कार्तिकेय।

२ शिव, महादेव।

३ गरुड़। (नां. मा.)

रू. भे.—सक्तीधर

सक्तिपुर-सं. पु.—१ दिल्ली का एक नाम।

२ सिरोही नगर का एक नाम।

रू. भे.—सकतपुर, सकतिपुर, सकतीपुर, सगतपुर, सगतीपुर।

सक्तिपुरौ-सं. पु.—१ चौहान।

२ दिल्ली का बादशाह।

३ मुसलमान।

४ दिल्ली व सिरोही का निवासी।

रू. भे.—सकतपुरौ, सकतिपुरौ, सकतीपुरौ, सगतपुरौ, सगतिपुरौ, सगतीपुरौ।

सक्तिपूजक-सं. पु. [सं. शक्तिपूजक] शक्ति उपासक, शाक्त।

सक्तिपूजा-सं. स्त्री. [सं. शक्तिपूजा] शक्तिपूजन।

सक्तिबांण-सं. पु.—एक प्रकार का बाण विशेष। (रामकथा)

सक्तिबोध-सं. पु. [सं. शक्तिबोध] शब्द शक्ति का बोध व ज्ञान।

सक्तिमंत्र-सं. पु. [सं. शक्तिमंत्र] युद्ध में विजय प्राप्ति हेतु शक्ति की आराधना के लिए पढा जाने वाला मंत्र।

रू. भे.—सकतमंत्र।

सक्तिमत्ता-सं. स्त्री.—शक्तिवान होने का भाव।

सक्तिमांन-वि. [सं. शक्तिमन्] १ पराक्रमी, शक्तिशाली।

उ०—सरवग्य सेस आव्रति असेस, सब सक्तिमांन पूरन प्रधांन।

—ऊ. का.

२ सामर्थ्यवान।

सक्तिवन-सं. पु. [सं. शक्तिवन] एक वन जो तीर्थ स्थान माना जाता है। (पुराण)

सक्तिवादी-सं. पु.—शक्ति की उपासना करने वाला।

सक्तिवीर-सं. पु.—वाममार्गी, शाक्त।

सक्तिहसत, सक्तिहसति, सक्तिहस्त, सक्तिहस्ति-सं. पु. [सं. शक्तिहस्त]

१ जयंत के द्वारा मारा गया एक राक्षस।

२ देखो 'सक्तिहथौ' (रू. भे.)

सक्तिहीन-सं. पु. [सं. शक्तिहीन] १ निर्बल, कमजोर।

२ नामर्द।

३ असमर्थ।

सक्ती-सं. पु.—१ एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १८ मात्राएँ होती हैं।

२ देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

सक्तीधर—देखो 'सक्तिधर' (रू. भे.)

सक्थी—देखो 'सत्थी'

सक्रंतिमेख, सक्रंतिमेखि, सक्रंतिमेखी—देखो 'मेखसंक्राति'

उ०—मधि त्रेताजुग चैत्रमास सक्रंतिमेखि सरि।—सू. प्र.

सक्रंदन-सं. पु. [सं. संक्रंदन] १ इन्द्र। (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण।

सक्र-सं. पु. [सं. शक्र] १ इन्द्र।

(अ. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ अर्जुन वृक्ष।

३ टगण के चौथे भेद की संज्ञा (ऽ।।ऽ)।

३ ज्येष्ठा नक्षत्र।

४ उल्लू।

६ चौदह की संख्या। *

७ एक आदित्य का नाम।

[सं. शुक्र] ७ वीर्य।

रू. भे.—सकर, सक्क, सुक।

सक्रउत्सव-सं. पु. [सं. शक्र+उत्सव] भाद्र शुक्ला द्वादशी को मनाया जाने वाला उत्सव।

सक्रक्रीड़ाचळ-सं. पु. [सं. शक्रक्रीड़ाचल] सुमेरु पर्वत।

सक्रकेत, सक्रकेतु-सं. पु. [सं. शक्र+केतु] इन्द्रध्वज।

सक्रकोस, सक्रकोसाधिक्ष-सं. पु. [सं. शक्रकोशाधिक्ष] कुबेर।

(अ. मा; नां. मा.)

सक्रगोप-सं. पु. [सं. शक्रगोप] वीरबहूटी नामक कीड़ा।

सक्रघण-सं. पु [शक्र+घण] इन्द्र का वज्र। (डिं. को.)

सक्रचाप-सं. पु. [सं. शक्रचाप] इन्द्रधनुष।

सक्रजांन, सक्रजांनु-सं. पु. [सं. शक्रजानु] रामपक्षीय एक बन्दर का नाम।

सक्रजित-सं. पु. [सं. शक्रजित] इन्द्र को जीतने वाला, मेघनाद।

सक्रज्योत, सक्रज्योति-सं. पु. [सं. शक्रज्योति] मरुतों के एक गण का नाम।

सक्रतकर, सक्रतकरज-सं. पु. [सं. शक्रतकरि] बछड़ा, गौ-वत्स।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

सक्रतु–सं. पु. [सं. शक्र] इन्द्र, पुरंदर] । (ह. नां. मा.)

सक्रदिस, सक्रदिसा–सं. स्त्री. [सं. शक्रदिश] पूर्व दिशा जिसके स्वामी इन्द्र माने जाते हैं।

सक्रदेव–सं. पु. [सं. शक्रदेव] १ देवराज इन्द्र ।

२ महाभारत युद्ध में कौरवपक्षीय कलिंग राजा जो भीम द्वारा मारा गया था।

सक्रदेवत–सं. पु. [सं. शक्रदैवत] ज्येष्ठा नक्षत्र।

सक्रद्रुम–सं. पु. [सं. शक्रद्रुम] देवदारु ।

सक्रधनख, सक्रधनु, सक्रधनुख, सक्रधनुस–सं. पु. [सं. शक्रधनुस्] इन्द्र-धनुष।

सक्रधुज, सक्रध्वज–सं. पु. [सं. शक्रध्वज] इन्द्रोत्सव में इन्द्र के सम्मान में स्थापित ध्वज ।

सक्रनंद, सक्रनंदण, सक्रनंदन–सं. पु. [सं शक्रनंद] १ अर्जुन। (अ. मा; ह. नां. मा.)

२ जयंत।

सक्रनंदा, सक्रन्नंदा–सं. स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नदी का नाम।

सक्रपत, सक्रपति, सक्रपती–सं. पु. [सं. शक्रपति] विष्णु ।

सक्रपुर, सक्रपुरी, सक्रपुरौ–सं. पु. [सं. शक्रपुर] अमरावती ।

सक्रप्रस्थ–सं. पु. [सं. शक्रप्रस्थ] पांडवों द्वारा बसाया गया नगर, इंद्रप्रस्थ।

सक्रप्रिया–सं. स्त्री. [सं. शक्र+प्रिया] इंद्राणी, शची। (अ. मा.)

सक्रमात, सक्रमाता–सं. स्त्री. [सं. शक्र+मातृ] इंद्र की माता अदिति ।

सक्रमित्र–सं. पु. [सं. शक्रमित्र] मांधातृ राजा का कनिष्ठ पुत्र, एक राजा।

सक्रय–सं. स्त्री.—इन्द्राणी ।

उ०—आनूप रूप दुति सक्रय अंस, हालंत मधुर जिम थकित हंस। —सू. प्र.

सक्रवापी–सं. पु. [सं. शक्रवापी] एक नाग, जो गौतम ऋषि के आश्रम के पास रहता था।

सक्रवाह, सक्रवाहण, सक्रवाहन–सं. पु. [सं. शक्रवाहन] १ इन्द्र का हाथी। (नां. मा.)

२ हाथी, गज। (नां. डिं. को.)

३ बादल।

सक्रसरोवर–सं. पु. [सं. शक्र+सरोवर] व्रज में स्थित इन्द्रकुंड नामक स्थान।

सक्रसारथि–सं. पु. [सं. शक्र+सारथि] इंद्र के रथ को हांकने वाला सारथि, मातलि।

सक्रसाळा–सं. पु. [सं. शक्रशाला] इन्द्र के उद्देश्य से बलि दिये जाने का यज्ञ स्थान।

सक्रसुत–सं. पु. [सं. शक्रसुत] १ इन्द्र का पुत्र अर्जुन। (डिं. को.)

२ जयंत।

३ बालि।

सक्रहोम–सं. पु. [सं. शक्रहोम] यज्ञहोत्र का पुत्र एक राजा।

सक्रांयत—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

सक्रारि, सक्रारी–सं. पु. [सं. शक्र+अरि] मेघनाद।

उ०—देवी सक्रारी रूप हनमंत ढाळी, देवी रूप हनमंत लंका प्रजाळी।—देवि.

सक्रावरत–सं. पु. [सं. शक्रावर्त्त] एक प्राचीन तीर्थ स्थान।

सक्रासण, सक्रासन–सं. पु. [सं. शक्रासन] इन्द्रासन।

सक्रीत–वि.—कीर्ति सहित।

उ०—पधराय जोड़ सप्रीत किय पांणिग्रहण सक्रीत। जित पवित्र पंडित चार, अणपार वेद उचार।—रा. रू.

सक्रुद्ध, सक्रोध–वि.—क्रोधपूर्ण, क्रोधयुक्त।

उ०—१ जुरसिंध भीम तजि बाहु जुद्ध, किर सेन बंधि जूटा सक्रुद्ध।—रा. रू.

उ०—२ उच्चरै फतै जय पाठ अति, मारू आठ मसल्लरां। वीधौ सक्रोध आसर विकट, महा जोध 'अभमाल' रां।—रा. रू.

रू. भे.—सुक्रोध ।

सक्रुनिज—देखो 'सकुनि' (रू. भे.)

उ०—सुत विकुख सक्रुनिज सुत स्वसाद, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद।—सू. प्र.

सखंडी—देखो 'सिखंडी' (रू. भे.)

सख–सं. पु. [सं. सखि] १ मित्र, सखा।

[सं. शिष्य] २ शिष्य, चेला ।

३ देखो 'साखा' (रू. भे.)

उ०—१ अभपती जती गोरक्ख एम, तैरे सख बारह पंथ तेम।
—वि. सं.

उ०—२ पूंज तणै तेरह सुत दिव पख, सुजि त्यां हूंत कमंध तेरह सख।—सू. प्र.

उ०—३ दीपंदा 'अभमळ' दुडंद तूं सख तेरंदा। तेंडी नाल गुमां-ईया, सब आलम दंदा।—सू. प्र.

सखणौ, सखबौ–क्रि. स.—साक्षी देना, कहना।

उ०—१ जो रघुबर गावै सब सुख पावै, निभय जिकां जम ताप नहै। सर गिरवर तारै पदम अठारै, सेन उतारै जगत सखै।
—र. ज. प्र.

उ०—२ आद बार अट्ठार दुतीय अख, सुज तिय बार बीस चौथै सख।—र. ज. प्र.

उ०—३ वधर त्र्यंब सम अरुण, समह भुज नागरोज सख। सिल समांन उर समर, अथग सम स्यंध उदर अख।—र. ज. प्र.

सखणहार, हारौ (हारी), सखणियौ—वि०।

सखिओड़ौ, सखियोड़ौ, सख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सखीजणौ, सखीजबौ—भाव वा०।

सखत—देखो 'सख्त' (रू. भे.)
सखती—१ देखो 'सख्ती' (रू. भे.)
२ देखो 'सक्ति' (रू. भे.)
उ०—पछै दिली सुं भंडारी खीवसी जी नै बेलौ पातसाही नाहर खां आया। तरै नाहरखांन सखती रा जाव किया।—रा. वं. वि.
सखमदरा-सं. पु. [सं. मदारसखा] मदार का सखा, आम। (अ. मा.)
सुखर, सुखरउ—१ देखो 'सुखरौ' (मह; रू. भे.)
उ०—१ कृपा अमूलिक कांचली रे, नेमिजी तउ सुखर महाव्रत साडी रे।—स. कु.
उ०—२ भण्या नइ हुयइ भलउ विहरावणउ. सुखर वस्त्र पहिरण ओढणउ।—स. कु.
उ०—३ सूध मन सेव गुरू देव री साचवैं सुखर समझें अरथ सूत्र सिद्धंत। दियैं बहुदांन मन सुद्ध पालइ दया, भलौ नित संघ रौ करौ भगवंत।—ध. व. ग्रं.
उ०—४ स्री धरमसी कहै सुजस सगलें सुखर जतीसर जतीसर जतीसर।—ध. व. ग्रं.
उ०—५ संखै कीधउ पोसौ सुखरउ, पक्खुलि कीधी तात जी। मिच्छांमि दुक्कडं स्री महावीरै, दिवरायौ परभात जी।—स. कु.
२ देखो 'सिखर' (रू. भे.)
उ०—आज धरा दिस ऊनम्यउ, काळी घड़ सखरांह। उवा धण देसी ओळबा, कर कर लांबी बांह।—ढो. मा.
सखरण—देखो 'सिखरण' (रू. भे.)
सखराळौ—देखो सिखराळौ' (रू. भे.)
उ०—१ साळें दीधा सेहुरा वणि सखराळा विंद।—रांमरासौ
उ०—२ वीज सळाव मता वरसाळा, सर भरीया हरीया सखराळा।मद प्याला पीवण मतवाळा, वळण करौ भीमाजळ वाळा।
—किसनजी आढौ
सुखरी—१ देखो 'सखरौ' (पु.) (रू. भे.)
उ०—१ छापर द्रोणपुर अै रजपूत आया। आ ठोड़ सखरी दीठी। अर सहल हीज दीठी।—नैणसी
उ०—२ थोड़ा दिना पछै रांणी कीं जुगत विचार अेक दिन वळै कंवर नै कह्यौ—बेटा, थारी बहू नाचै तौ घणी सुखरी, पण ह्राथां री खांमचण कैड़ी है, आ तौ बता।—फुलवाड़ी
उ०—३ अेक दिन लाचार होय राजा बडोड़ी रांणी नै बुलाय कह्यौ कै वा नांनेरा सूं बडोड़ा राजकंवर नै बुलाय लावै तौ सुखरी बात।—फुलवाड़ी
उ०—४ थें भला मांणस छौ तौ च्यारि दिन थांहरै घरै आय रहियौ। थैं राखियौ तौ सुखरी कीवी। हमैं सागेई माईत पहोंता क्योंकर छोड़सी।—पलक दरियाव री बात
२ देखो 'सिखरी' (रू. भे.) (डिं. को.)
सुखरु—देखो 'सुखरौ' (रू. भे.)
सुखरौ-वि. (स्त्री. सुखरी) १ सुन्दर, मनोहर। (डिं. को.)
उ०—१ रावळिया रांमत समै, मावड़िया लौ मांग। तौ रतनां पतर तणूं, सुखरौ लावै सांग।—बां. दा.
उ०—२ तद काया हुय जोगी हुवा। मुद्रा घाती। गुजरात गया। अै प्रोहित दीदारू सुखरा पण। अर बीण आछी बजावै।
—नैणसी
२ बलवान, वीर, बहादुर।
उ०—१ सो दीवांण तौ छत्रपति छै। पण उणरा घर मांहै वो सुखरा सुखरा रजपूत छै जिके उणनै अकेलौ पैठ अर अंगो-अंग मारै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
उ०—२ जाहरां बाळसाद हुवै ताहरां तूं उठिनै उरहौ लेई। तूं पाळै थारौ बेटौ हुसी। सुखरौ हुसी। बैर लेसी।
—देवजी वगड़ावत री बात
३ उपजाऊ।
उ०—१ जैतारण था कोस ४, बडौ गांव। सीरवी बांणीया बांमण चारण बसै धरती हळवा २५० बरसाळी खेत सुखरा।—नैणसी
उ०—२ सींव घणी हळवा ३०० खेत सेंवज हुवै। निपट सुखरा खेत छै। अरट १० ढीबड़ा १२ चांच २० हुवै।—नैणसी
४ अच्छा, बढिया।
उ०—१ फरसरांम तूं फाबियौ, सुखरौ कियौ संग्रांम। हंसरांम अवतार हरि, तूं वांमण बिसरांम।—पी. ग्रं.
उ०—२ बारठ ईसर बोलिया, निकळंक साहिब नांम। किलंग दईत नां कूटतां, कीधौ सुखरौ कांम।—पी. ग्रं.
५ उत्तम, श्रेष्ठ।
उ०—१ सांई तूं सिरदारड़ौ, सुखरौ थारौ साथ। तूं देवां रौ दीवलौ, नव नाथां रौ नाथ।—पी. ग्रं.
उ०—२ अबै रावजी रजपूतां रौ साथ तेड़ीयौ। असवार हजार सुं चढीया। साथै सांमांन लीयौ सुखरौ महुरत साझ चालीया।
—राव रिणमल री बात
उ०—३ बैकुंठ सूं सुखरा लिखमीवर, पाव प्रवीत घणौ परमेसर। पगां सरिस सनकादिक पूजै, धरणीधर सूं पातक धूजै।—पी. ग्रं.
६ अनुकूलतम, पक्षीय।
७ स्वादिष्ट, जायकेदार।
उ०—१ पाका आंबानी कातली खाडसिऊं वादली, पाका केळा खांड सुं कीधा भेळा सुखरा करणां, ते वली पीला वरणा।
—व. स.
उ०—२ हिवइ दहीना घोळघोळ आवइ तै केहवा? गायनां दही भइंसिनां दही सुथरा दही काठां जाम्यां दही, मधुरा दही सुखरा सजीराला सलवणा जाडा दही ना घोळ।—व. स.
उ०—३ गाय रै तौ मरतां मरतां ई समझ मैं नीं आई कै आ कांई बात व्ही। डोळा भंवाय, तड़ाचां वावती वा तौ प्रांण मुगत

व्हैगी। सिंघणी रा पेट मैं जाय वासौ लियौ। भूखी सिंघणी नै धरम वैन रौ मांस अणूंतौ ई सुखरौ लागौ।—फुलवाड़ी

उ०—४ हांचळ मुळमुळावतां ई बाळक रै होठां अर मूंडा सूं अैड़ी ठा पड़ती के उणनै मासी बिचै मां रौ दूध तौ अवस सुखरौ लागतौ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सुकरौ, सुक्खर, सुक्खरौ, सुखरु, सुख्खर, सख्खरौ।

अल्पा.—सुकरोड़ौ।

मह.—सुखर, सुखरउ।

सखस—देखो 'सख्स' (रू. भे.)

उ०—१ सूतां सखस जात है, जांणै सौ जागै रे। जनहरिदास आछै मतैं, हरि सुमिरण लागै रे।—ह. पु. वां.

सखा—सं. पु. [सं. सखिन्] मित्र, साथी। (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—सुरमियां चरावौ संग लाखौ सखा, छैल आवौ कदम तणी छांही। पोख हित वेल गावौ चरित पेमरां, मुरळिका सुणावौ घोख मांही।—बां. दा.

सखाइ—स. पु.—एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हौ.)

सखाक्रस्न—सं. पु. [सं. कृष्णसखा] अर्जुन।

सखायौ—स. पु. (स्त्री. सखायण) विवाह के अवसर पर दूल्हे के साथ रहने वाला सखा, मित्र।

सखावत—सं. स्त्री. [अ.] उदारता, दानशीलता।

उ०—१ वेळावळ समौ सिंध में बडौ दातार हुवौ। समां रै जिसी सखावत किण में ही न हुयी।—बां. दा. ख्यात

उ०—२ सखावत नै अहसान सौ सखावत दातारी यस निमित्त देणौ।—नी. प्र.

सखाव्रख—सं. पु. [सं. शाखा+वृक्ष] बरगद, वट वृक्ष। (ह. नां. मा.)

सखासमीर—सं. स्त्री.—अग्नि, आग। (अ. मा.)

सखाहर—सं. पु. [सं. हरिसखा] इंद्र। (अ. मा.)

सखि, सखिए, सखी, सखीय—सं. स्त्री.—१ सहेली, सहचरी। (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ सखी भरोसौ नाह रौ, सूनौ सदन म जांण। फूल सुगंधी फौज मैं, आसी भंवर उडांण।—बी. स.

उ०—२ सखीय सहित तिहिं राजकुंआरि आवी ऊलटि आपणइ ए। सांधिइं आंणीआ तुरंगम त्रिण्णि आंणी कोडि कंचण तणी ए। —हीराणंद सूरि

उ०—३ सरी घटियाळ अरोहित सेर, सख्यां मवताहळ माळ सुमेर। किया सरजीवत तेड़ि कबंध, वूझै पितु मात कुसी धजबंध। —मे. म.

उ०—४ मींदरंतीर किया खिणंतरि मिळिवा, विचित्रै सखिए समाव्रत। कीधै तिणि वीवाह संसक्रित, करण सु तणु रति संसक्रत।—वेलि.

पर्याय.—आली, वयसा, सचैत, सध्रीची, सयण, सहचरी, सहेली, सुखदा, सुवंछक, हितू।

२ किसी नायिका के साथ रहने वाली स्त्री जिससे नायिका कोई बात न छुपावे। (साहित्य)

३ प्रत्येक चरण में १४ मात्राऐं व अंत में एक मगण या एक यगण का छंद।

[सं. शिखिन्] ४ अग्नि, आग। (डिं. को.)

वि. [फा.] ५ दानी, दातार, उदार।

रू. भे.—सइ, सइयर, सई, सयी, सहि, सहियर, सही।

सखीभाव—सं. पु.—१ भक्ति में एक प्रकार का भेद जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट देव की पत्नी या सखी मानकर उसकी उपासना करते हैं।

२ वदान्यता।

उ०—'देवा' आप सूं सेवागीर यूं निसाफ दखी, सखीभाव धारै घणा देख देख सूंब। रखी बाजी क्रीत री भू चाहे आयसां रूप, लखी घोड़ौ कीजै अखी करै लाबलूंब।—नवलजी लाळस

सखेद—सं. पु.—कष्ट, पीड़ा।

वि.—दुःख व खेद सहित।

सख्ख—देखो 'साखा' (रू. भे.)

उ०—सुभट्ट सख्ख सक्खरं लसंग लक्ख पक्खरं। धरा अडोल डुल्लयं गजूं निसांन खुल्लयं।—ला. रा.

२ देखो 'साक्षी' (रू. भे.)

उ०—झगड़उ भागउ गोरियां, ढोलइ पूरी सख्ख। मारू रळियाइत हुई, पांमी प्रीय परख्ख।—ढो. मा.

सख्खर, सख्खरौ—१ देखो 'सखरौ' (रू. भे.)

उ०—दै सुरसत मौ दांन चौजीलां अख्खरां, बाखाणूं बरहास सजीला सख्खरा।—पे. रू.

२ देखो 'सिखर' (रू. भे.)

उ०—देवी देव जळंधरी सप्त दीपै, देवी कंदरं सख्खरै वाव कूपै। —देवि.

सख्त—वि. [फा.] १ कठोर, कड़ा, मजबूत।

२ कठिन, मुश्किल।

३ दया ममता से रहित।

४ दृढ, पक्का।

रू. भे.—सकत, सकती, सकत्त, सक्त, सखत।

सख्ती—सं. स्त्री. [फा.] १ कड़ापन, ज्यादती।

उ०—सगळा समाचार कहिया जै आज महाराजा सूं असी सख्ती हुई खरा उदास छै।—जयसिंघ आंमेर रा धणी री वारता

२ कठोरता, कड़ाई।

सकुचाई-सं. स्त्री.—१ संकुचित होने का भाव, संकोच।

सकुचाणौ, सकुचाबौ—देखो 'संकुचणौ, संकुचबौ' (रू. भे.)

सकुचाणहार, हारौ (हारी), सकुचाणियौ—वि०।

सकुचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सकुचाईजणौ, सकुचाईजबौ—भाव वा०।

सकुचायोड़ौ—देखो 'संकुचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सकुचायोड़ी)

सकुचियोड़ौ—देखो 'संकुचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सकुचियोड़ी)

सकुटंब—परिवार सहित।

उ०—अन्न दिवसि बंभणु सकुटंब रल जिम विलवइ पाडइ बुंब। पूछइ भीमु करी एकंतु 'आविउं दूखु किमुं अचिंतु।

—सालिभद्र सूरि

सकुन-सं. पु. [सं. शकुन] १ पक्षी। (डि. को.)

२ हिरण्यकशिपु का अनुचर, एक दानव।

३ पृथक देवों में से एक।

४ देखो 'सकुनि' (१२) (रू. भे.)

उ०—मिथुन लगन सोभन मिळ जोगे, सकुन करण दुख हरण संजोगे।—रा. रू.

५ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—गांम जातां सकुन लेवै गधा तीतर बोलावै ज्यूं सुणै तै तो बात और अनैं निरजरा हेतै सुणै तौ बात और।—भि. द्र.

सकुनग्य—देखो 'सुगनग्य' (रू. भे.)

सकुनचिड़ी—देखो 'सुगनचिड़ी' (रू. भे.)

सकुनद्वार-सं. पु. [सं. शकुनद्वार] शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के एक साथ होने वाले शकुन जो यात्रा आदि के लिए शुभ माने जाते है।

सकुनभेंट—देखो 'सुकुनभेंट' (रू. भे.)

सकुनसार-सं. पु.—स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।

सकुनसासतर, सकुनसास्त्र-सं. पु. [सं. शकुनशास्त्र] वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभ-अशुभ फलों का विवेचन हो।

सकुनसुद्धि-सं. पु. [सं. शुकनशुद्धि] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

सकुनावळ, सकुनावळी-सं. पु.—शकुनशास्त्र की पुस्तक।

उ०—सावळ सुर साधक सुख सूं नह सोया, सकुनीं सकुनावळ रावळ बळरोया।—ऊ. का.

सकुनि-सं. पु. [सं. शकुनि] १ वृक का पिता तथा हिरण्याक्ष का पुत्र एक दैत्य।

२ गंधारी का भाई अर्थात् कौरवों का मामा तथा दुर्योधन का मंत्री जो सुबल राजा का पुत्र था।

३ पक्षी।

४ गिद्ध पक्षी।

५ चील पक्षी।

६ मुर्गा।

७ एक नाग का नाम।

८ इक्ष्वाकु राजा के सौ पुत्रों में से एक।

९ दुष्यंत के पुत्र भरतवंशीय राजा भीमरथ का पुत्र।

१० एक महर्षि।

११ सुतद्वाज राजा का पुत्र एवं स्वागत राजा का पिता एक राजा।

१२ बव आदि ग्यारह करणों में से आठवां करण।

(फलित ज्योतिष)

१३ यदुवंशीय राजा दशरथ के पुत्र एवं करभि के पिता।

१४ निर्मार्ष्ट व दुःसह के संसर्ग से उत्पन्न आठ पुत्रों में से एक।

१५ सूर्यवंशी राजा विकुक्षि का पुत्र।

१६ देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

रू. भे.—सकुन, सकुनिज, सकुनी, सुकनी, सुकुनि, सुकुनी।

सकुनिका-सं. स्त्री. [सं. शकुनिका] कार्तिकेय की एक मातृका।

सकुनिग्रह-सं. पु. [सं. शकुनिग्रह] कार्तिकेय का एक अनुचर।

सकुनिमित्र-सं. पु. [सं. शकुनिमित्र] विपश्चित पाराशर्य ऋषि का नामान्तर।

सकुनी—१ देखो 'सकुनि' (रू. भे.)

२ देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

सकुल-सं. पु. [सं.] अच्छा कुल, ऊंचा कुल।

सकुली-सं. स्त्री. [सं] एक नदी का नाम। (पुराण)

सकुलीण, सकुलीणौ, सकुलीन—देखो 'सुकुलीण' (रू. भे.)

उ०—सासू सकुलीणी संतू सुर सांनी, ऊजळ दंती नैं उर में उर लीनी।—ऊ. का.

(स्त्री. सकुलीणी, सकुलीनी)।

सकुसळ—क्रि. वि.—कुशलतापूर्वक, राजी-खुशी।

उ०—सकुसळ सबळ सदळ सिरिसांमळ पुहप बूंद लागी पड़ण।

—वेलि

सकूनत-सं. स्त्री. [अ. शकूनत] निवास स्थान।

सकूल—देखो 'स्कूल' (रू. भे.)

उ०—थांरी पो, सकूल अर धरमसाळ जठै तांई खड़ी रैसी, खड़ी ही नहीं पड़ भी जासी, एक भाठौ ढगळियौ तथा एक कांकरौ ही रैसी बठै तांई थारै नांव रौ आदर हूसी।—दमदोख

सकेलणी-सं. स्त्री.—तलवार की एक जाति।

उ०—प्रहार सेल पिंजरै, उभेल खेग पेलनी। सिळाव वेग जांण मेघ, दांमणी सकेलणी।—रा. रू.

सकेलौ-सं. पु.—अच्छी किस्म का लोहा।

रू. भे. सांकेळौ, सांकेलौ।

सकैक—क्रि. वि.—संभवतः, शायद।

उ०—१ कुसुम मौड़ केसर बसण, नेह न देह लसाय। भाभी कंत सकैक तौ, ल्योड़ी सोक बसाय।—वी. स.

उ०—२ तद लालमण वीचारी जो सकैक तो केरड़ा अणीं वावड़ी मांहै पांणी पीवानै पैठा सो अठै अणीं मांहै अलोप हुवा।
—लालमण कुंवर री वात

रू. भे.—सकियक।

सकोई—वि.—सब, समस्त, सब कोई।

उ०—१ पड़ै धाक देवड़ां, बाक फाटै सीरोई। दे दे द्रब डीकरी, पगां लागीया **सकोई**।—जग्गौ खिड़ियौ

उ०—२ सु लसकर रा सिपाइयां सगळां कबांण दीठी पिण किण ही था कबांण चढावण री प्रासंग पड़ै नहीं। **सकोई** कबांण सूं खसखस परा गया।—नैणसी

उ०—३ नदी किनारै आया रथी, लात सूं ढाय नाखी रतनमंजरी नूं लेयनै ऊभौ रहियौ **सकोई** बधाई बधाई जय जयकार कियौ।
—पंचदंडी री वारता

उ०—४ सकति गणेस नवै ग्रह सोई, सुर तेतीस सहाय **सकोई**।
—रा. रू.

रू. भे.—सकोय

सकोडौ—वि.—१ उत्साह सहित, उमंगयुक्त।

उ०—'सबळौ' 'हैबत' सकत सवाया, आद सबै जोधा अह आया। कुसळसिंघ 'कलियांण' सकोडै, उर 'जूंझार' 'विजौ' पण ओडै।
—रा. रू.

२ प्रसन्नता सहित।

सकोतरी—देखो 'सिकोतरी' (रू. भे.)

सकोप—सं. पु.—क्रोध, कोप।

वि.—क्रोध सहित, क्रोधित।

उ०—१ राजा दूजौ 'मूळरज', दिखणातां दळ लोप। अडर मळै-गिर आवियौ, सुरपत जेम **सकोप**।—वां. दा.

उ०—२ पटाळा हठाळा महागात पूरां, सुरंगा सगाहा **सकोपा** सनूरां।—रा. रू.

सकोमळ, सकोमल—वि.—१ कोमल, मुलायम।

उ०—हिंडोळाट सुघाट हद, कंचन मणि कौ कांम। सेज **सकोमळ** सूं जुगत, फूल रहै सब ठांम।—गज-उद्धार

२ विनम्र।

उ०—साध **सकोमळ** सुख करन, दंद निवारन दूर। हरीया अैसे साधको, नित भेटीजै नूर।—अनुभववांणी

सकोय—देखो सकोई' (रू. भे.)

उ०—हुवै प्रफुल्लत गात हद, सांभळ बात **सकोय**। गरक घटा उमंडी गरज, हरख सिखंडी होय।—रा. रू.

सकोरणौ, सकोरबौ—देखो 'सिकोड़णौ, सिकोड़बौ'।

सकोरौ—देखो 'सिकोरौ' (रू. भे.)

सकौ—सं. पु.—पानी भरने वाला भिस्ती। (मा. म.)

वि.—सब, समस्त।

उ०—१ कपी देव अैसी **सकौ** काय कांपौ, जिसौ हूं तिसौ आपरौ पांण जांपौ।—सू. प्र.

उ०—२ हरी मेल धांनंख धांनंख हाथै, **सकौ** पांण खेंचै लियौ हेक साथै।—सू. प्र.

उ०—३ साहजादै पाराथिया, **सकौ** कमंधां साथ। सूर तरस्सै बोलिया, मूछ परस्सै हाथ।—रा. रू.

उ०—४ आड़ गोळां पड़ै रीठ तरवारियां, लड़ंतै हाथ इण भांत लाया। पांचमैं महीनै कांम आयां पछै, आपरै ठीकांणै **सकौ** आया।—जालमसिंघ मेड़तिया रौ गीत

सर्व.—१ वही, वह।

उ०—१ सांग मूंड सहसी **सकौ**, समजस जहर सवाद। भड़ पीथल जीतौ भलां, बैंण तुरक सूं बाद।—महाराणा प्रताप

उ०—२ बिलूध्यौ निधी नीर स्त्रीहाथ बांमै, पुरी मैं **सकौ** सीर हन्नोज पांमै। सजा हूं छुड़ायौ आई राव सेखौ, लाई पुत्र पित्रेस रौ लोप लेखौ।—मे. म.

उ०—३ **सकौ** हिज आज अनेक सरूप, विधूंसत फोज सहायक भूप। तिका अग्र मौ भड़ कीट पतंग, जिका जुड़ जीत सकै नेह जंग।—मे. म.

२ उसे, उसको।

उ०—माथै सटै महीप, **सकौ** मत जांणौ सूंगी। मोल अस लीधी मूंगी।—बखतावर मोतीसर

रू. भे.—सक्कौ।

सक्क—स. पु.—१ देखो 'सक्र' (रू. भे.)

उ०—अधीस पए नख कोटि अरक्क, सअत्थ सिरज्जण भांजण **सक्क**।—ह. र.

२ देखो 'सक' (रू. भे.)

उ०—धांधलल भिड़ंत वाहंत धक्क। सांमरै कांम संग्राम **सक्क**।
—गु. रू. बं.

सक्कणी—देखो 'साकणी' (रू. भे.)

उ०—१ सीकोतरी **सक्कणी**, प्रेत डक्कणी अपारां। विवध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारां।—रा. रू.

उ०—२ हुय रौद्र हक्कं ग्रेह लक्कं जै किलक्कं जोगणी। वकां गरज्जै खड़ग वज्जै सक्ति रज्जै **सक्कणी**।—रा. रू.

सक्कणौ, सक्कबौ—देखो 'सकणौ, सकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बोलि न **सक्कूं** वीहतउ, हेकज वात हुई। राजि अपूठा वाहड़उ, माळवणी मुई।—ढो. मा.

उ०—२ आठ मिसल दिस आठ, धजां मुह कीजै धक्कै। राह वाह रूधियै, साह उकसै न **सक्कै**।—रा. रू.

सक्कणहार, हारौ (हारी), सक्कणियौ—वि०।

सक्किओड़ो, सक्कियोड़ो, सक्क्योड़ो—भू० का० कृ०।

सक्कीजणौ, सक्कीजबौ—भाव वा०।

सक्कर—सं. स्त्री. [सं. शर्करा] चीनी, खाँड, बूरा, शक्कर।

उ०—काळी घणी करूप, कसतूरी कांटा तुलै। **सक्कर** बड़ी सरूप,

सड़-क्रि. वि.—१ शीघ्र, जल्दी।
उ०—सांम्हा ल्हसकर मेलिया जाळंधर 'अगजीत'। **सड़** आयो इबरांम खां, मिळण जवन सज मीत।—रा. रू.
२ छः।

सड़क-सं. स्त्री.—१ यातायात के लिए बना मार्ग, राज्यपथ।
उ०—सहरां सुंदर लगै, बगीचां री वण सोभा। **सड़क** चालता मिनख, लेवता लोयण लोभा।—दसदेव
२ बोने से होने वाला नाज। (विलो. अड़क)
वि.—नशे में पूर्ण तृप्त।
उ०—सराबां बोतलां पियां छक छक **सड़क** किया निधड़क हिया हरावळ कोप।—कविराजा बांकीदास
२ असली, वास्तविक।
क्रि. वि.—सपाट से।
उ०—कंधड़क दड़क बड़क कड़ी सिधुड़क **सड़क** वहै सुजड़ी।
—गो. रू.

सड़कारणौ, सड़काबौ-क्रि. स.—चाबुक या छड़ी से मारना, पीटना।
उ०—१ है आली तोड़ी कांमड़ी जी **सड़कायो** दो'यर च्यार जाजो मरवो लै।—लो. गी.
उ०—२ राजा खुद घोड़ै चढ्यो सांप्रत आपरी निजरां राजकंवरां री निसंटापणो देख्यौ तो जांणै ओर नै तिणग बताइ। चार पांचेक कांबड़ियां **सड़काई**। गाळियां काढी। राजकंवर न्हास गिया।
—फुलवाड़ी
सड़कारणहार, हारौ (हारी), सड़कारिणयौ—वि०।
सड़कायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सड़काईजणौ, सड़काईजबौ—कर्म वा०।
सड़कावणौ, सड़कावबौ—रू० भे०।

सड़कायोड़ौ-भू. का. कृ.—छड़ी या चाबुक से मारा हुआ, पीटा हुआ। (स्त्री. सड़कायोड़ी)

सड़कावणौ, सड़कावबौ—देखो 'सड़कारणौ, सड़काबौ' (रू. भे.)
सड़कावणहार, हारौ (हारी), सड़कावणियौ—वि०।
सड़काविओड़ौ, सड़कावियोड़ौ, सड़काव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सड़कावीजणौ, सड़कावीजबौ कर्म वा०।

सड़कावियोड़ौ—देखो 'सड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सड़काविथोड़ी)

सड़गुण-सं. पु. [सं. षड्गुण] १ छः गुणों का समूह।
२ राजनीति की छः बातें—संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधी-भाव और संश्रय।
रू. भे.—सडगुण

सड़ज-सं. पु. [सं. षड्ज] संगीत के छः सप्तस्वरों में प्रथम स्वर।
रू. भे.—खड़ज, खडज, सडज।

सड़ण-सं. स्त्री.—सड़ने की क्रिया या भाव।
वि.—सड़ने वाला।

सड़णौ, सड़बौ-क्रि. अ.—१ किसी खाद्य पदार्थ एवं शरीर में विकार उत्पन्न होना जिससे उसके संयोजक तत्त्व अलग-अलग हो जाते हैं तथा उससे दुर्गंध आने लगती है। विकारयुक्त होना, बिगड़ जाना, खराब हो जाना।
उ०—१ रसिया रौ तन रोगसूं, **सड़** जावै नह सोच। हेम रजत खातर हुवै, पातर लोचपलोच।—बां. दा.
उ०—२ मुड़दा मड़हट में पड़िया नह मावै, **सड़िया** बासै सब विकरंद बभकावै। आडां खाडां में भोडक अड़वड़ता, संतां आसम जिम तूंबा तड़भडता।—ऊ. का.
उ०—३ पनग लड़ौ कीड़ा पड़ौ, **सड़ौ** झड़ौ दुख संग। जग चुगलां री जीभड़ी, वायस भखौ विहंग।—बां.दा.
२ हीनावस्था में पड़े रहना।
३ द्रव्य पदार्थों में खमीर उठना।
४ बहुत ही कष्टमय व बुरी दशा बिताना।
५ व्यर्थ पड़ा रहना, अनुपयोगी होना।
सड़णहार, हारौ (हारी), सड़णियौ—वि०।
सड़िओड़ौ, सड़ियोड़ौ, सड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सड़ीजणौ, सड़ीजबौ—भाव वा०।
सडणौ, सडबौ, सिड़णौ, सिड़बौ—रू० भे०।

सड़दरसण—देखो 'खटदरसन' (रू. भे.)

सड़बौ—देखो 'सड़वौ' (रू. भे.)
उ०—हिरणां नह मावै हियै, **सड़बौ** दीठां स्वास। वाघ घणां मिळ बीटियां, तौ पिण तिल नह त्रास।—बां. दा.
रू. भे.—सड़ौ

सड़रस—देखो 'खटरस' (रू. भे.)

सड़वड़णौ, सड़वड़बौ-क्रि. अ.—१ तेज गति से चलना।
उ०—'हाकडा' तणी सुण सुण हकाल, **सड़वड़ै** सत्र उर पड़ै साल।
—पे. रू.
२ भागना, दौड़ना।
उ०—हड़वड़ जोगण खेतल होय, **सड़वड़** कायर पंथ सजोय।
—गो. रू.

सड़वड़ियौ-सं. पु.—१ कायर।
२ गरीब, दीन।

सड़वदन-स. पु. [सं. षडवदनः] कार्तिकेय।
रू. भे.—सडवदन।

सड़वरग-सं. पु. [सं. षडवर्ग] १ छः वस्तुओं का समूह या वर्ग।
२ ज्योतिष के अन्तर्गत क्षेत्र, होरा, प्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश का समूह।
३ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर इन छः का समूह।
रू. भे.—सडवरग

सड़विदुतेल-सं. पु. [सं. षड्विदुतैल] सिर के दर्द दूर करने व आँख तथा दाँत को लाभ पहुँचाने वाला वैद्यक का एक तेल।

रू. भे.—सर्डविदुतेल।

सड़विकार-सं. पु. [सं. षड्विकार] १ प्राणी में होने वाले छः विकार उत्पत्ति, शरीर वृद्धि, बालपन, प्रौढता, वृद्धत्व और मृत्यु।

२ काम-क्रोध आदि छः प्रकार के विकार।

रू. भे.—सड्विकार।

सड़वौ-सं. पु.—फसल की रक्षा के लिए पशु-पक्षियों को डराने हेतु खेत में बनाया जाने वाला मानव आकृति का पुतला या उपकरण।

उ०—मोह वास मंडवै, विघन सड़वा विसतारै, कर हाका हाकंत जुरा कुत्ती हलकारै।—ज. खि.

रू. भे.—सड़बो।

सड़सठ—१ देखो 'सतसठ' (रू. भे.)

२ देखो 'छासठ' (रू. भे.)

सड़सठमौं, सड़सठवौं—देखो 'सतसठमौं' (रू. भे.)

सड़ांण, सड़ांध-सं. स्त्री.—१ सड़ने की क्रिया या भाव।

२ दुर्गन्ध, बदबू।

क्रि. प्र.—आणी, उठणी, मारणी, होणी।

सड़ाक-सं. पु. [अनु.] कोड़े या चाबुक के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

सड़ाको-सं. पु. [अनु.] कोड़े या चाबुक के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

सड़ागनी-सं. स्त्री. [सं. षडग्नि] कर्मकांडियों द्वारा मानी जाने वाली छः प्रकार की अग्नियां यथा—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सम्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि।

रू. भे.—सडागनी।

सड़ाणण—देखो 'सड़ानन' (रू. भे.)

सड़ाणौ, सड़ाबौ-क्रि. स.—किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।

सड़ाणहार, हारौ (हारी), सड़ाणियौ—वि०।

सड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सड़ाईजणौ, सड़ाईजबौ—कर्म वा०।

सड़ानन-सं. पु. [सं. षडानन] १ कार्तिकेय।

२ संगीत के स्वर साधन की एक प्रणाली विशेष।

रू. भे.—सड़ाणण, सडानन।

सड़ायंध-सं. स्त्री.—सड़ी हुई वस्तु से निकलने वाली दूषित गंध।

सड़ाव-सं. पु.—सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ासड़-क्रि. वि. [अनु.] १ सड़-सड़ शब्द से उत्पन्न ध्वनि।

२ शीघ्र, तेज गति से।

उ०—**सड़ासड़** पींजरा ढूकी जको ढबी ई नीं।—फुलवाड़ी

३ बिना रुके लगातार बहुत सीं बातें कहते जाना, झड़ी।

उ०—प्यालो भर म्यारांम जी खनै आई, मुजरां दी **सड़ासड़** लगाइ।—दरजी मयारांम री वात

क्रि. प्र.—लगाणी, बांधणी।

सड़िंद, सड़िंदौ-सं. पु. [अनु.] १ छड़ी, चाबुक आदि के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

२ प्रहार, चोट।

उ०—सड़िंदै रै सड़िंदै उणरै काळजा री दाझ ठरती ही।

—फुलवाड़ी

सड़ियल-वि.—१ सडा हुआ।

२ रद्दी, निकम्मा।

३ नीच, पतित।

सड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी पदार्थ, प्राणी आदि में विकार उत्पन्न हुवा हो, जिससे उसके संयोजक तत्व अलग हो गये हों तो उससे दुर्गन्ध आने लगी हो, विकार युक्त हुवा हुआ, खराब हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ. २ हीनावस्था में पड़ा हुवा हुआ. ३ द्रव्य पदार्थों में खमीर उठा हुआ. ४ कष्टमय व बुरी दशा बिताया हुआ।

(स्त्री. सड़ियोड़ी)

सड़ियौ-सं. पु.—१ घास-फूस की बुनी मोटी रस्सी।

२ ऊंट के अगले पैर बांधने का चमड़े का बंधन विशेष।

(मि. लड़ियौ)

सड़ी, सड़ी-सं. स्त्री.—भैंस के चमड़े की रस्सी।

सड़ौ, सड़ौ-सं. पु.—१ वह बड़ा चौक जिसके चारों तरफ कांटों की बाड़ हो।

उ०—१ बड़ा भील बड़ा सड़ा माहै बैसांणिया आदमी ४०० चाकर बांगर बीजा सड़ा मांहै बैसांणिया।—नैणसी

उ०—२ कूंपो जी तुरत चढीया सु रात थकां असवार पांचसौ सु पौहर दोय कुंभलमेर आया। रांणा जी रा कटक आडो सड़ो कियो थो, तिको कूंपौ जी दीठौ।—राव मालदे री बात

२ कुए के पास बनी कच्ची झोंपड़ी जो बैलों को सर्दी से बचाने के लिए बनाई जाती है।

३ मूली की परिपक्वावस्था की जड़ जो बेकार हो जाती है।

४ देखो 'सड़वौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सढौ, सढ्ढौ।

सचंग—देखो 'सुचंग' (रू. भे.)

उ०—इण वरण रूप उमंग, समियांन जरिय सचंग। बहु कासमीर बिलौर, अनि रंग छबि धर और।—सू. प्र.

सच—देखो 'सत्य'।

उ०—मधु बोल सच बोलणा, करणौ पर उपकार। नर जीवन पायौ नरां, समझौ कछु भव सार।—नारायणसिंह सांदू

सचकार—देखो 'संचकार' (रू. भे.)

सचकित-वि. [सं.] १ भड़का हुआ।

२ डरपोक, कायर।

३ कांपता हुआ।

सचणौ, सचबौ—देखो 'संचणौ, संचबौ' (रू. भे.)

३ क्रूरता ।

रू. भे.—सक्ति, सखती ।

सख्य–सं. पु. [सं. शख्यं] १ मित्रता, दोस्ती ।

[शख्य्] २ मित्र, दोस्त ।

उ०—हाट तै जै वस्तवंत, वचन तै जै सत्यवंत, **सख्य** तै जै विनय-वंत ।—व. स.

सख्यात—देखो 'साक्षात' (रू. भे.)

उ०—दधि कहतां समुद्र सु समुद्र सोधि । अर जु मोती लीयौ थौ । जु वणतौ देख्यौ **सख्यात** ।—वेलि टी.

सख्स–सं. पु. [अ. शख्श] १ व्यक्ति, आदमी ।

२ वीर, बहादुर ।

रू. भे.—सकस, सखस, सगस ।

सगंध–वि.—१ गंध युक्त ।

२ देखो 'सुगंध' (रू. भे.)

सग–सं. पु. [फा.] कुत्ता । (डूंगरपुर)

सगग–सं. पु. [अनु.] ध्वनि विशेष ।

उ०—आ सोच उणरी आंख्यां सांम्ही सगळी हरियाळी **सगग** सगग सिळगण लागी ।—फुलवाड़ी

सगगणौ, सगगबौ–क्रि. स.—पानी या किसी तरल पदार्थ का ध्वनि करते हुए वेग से बहना ।

सगगाट–सं. पु. [अनु.] १ एक साथ पक्षियों के उड़ने से होने वाली ध्वनि ।

२ तरल पदार्थ के उमड़ने की ध्वनि ।

३ शरीर में कंपन की अवस्था ।

सगजबांन–सं. पु. [फा.] कुत्ते के समान पतली और लम्बी जीभ वाला घोड़ा । (शा. हो.)

सगट—देखो ,मकट' (रू. भे.)

उ०—कोळू तणौ कणवारियै, देवड़ बतायौ बोल । डेरै में चौड़े **सगट**, द्रढ गोळूयां दीढौ गोळ ।—पा. प्र.

सगडी—देखो 'सिगड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ धगधगती **सगडी** भरी, आंणउ अति अंगार । मांहि मूकउं मांनिनी, सटक देई सिणगार ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ **सगडी** मन माहरा मांहि, भटकै बळती भालि । आवउ सही समांणीउ, टाढिकि जाउ टालि ।—मा. कां. प्र.

उ०—३ बावन चंदन बालि करि, सोविन **सगडी** आंणि । ससि-वयणी सज्जण तणां, सेवाकइ पय पांणि ।—मा. कां. प्र.

सगण–सं. पु.—प्रथम दो लघु और अंत मे एक गुरु अक्षर का छंदशास्त्र में एक गण विशेष । (।।S)

सगणौ, सगबौ—देखो 'सकणौ, सकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै हांसार रै फौजदार सारंगखांन रौ जोर आकरौ हुवौ ताहरां उठै ठहर **सगिया** नहीं ।—नैणसी

उ०—२ इणरा परसंगी आया तिकां उठै हीज कुवै ऊपर दाग दियौ । बोल कोई **सगीयौ** नहीं ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सगत—देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (डि. को; डि. नां. मा.)

उ०—१ सबर राख कुसमै समै, कासूं खबर करीस । खिण खिण लै जगची खबर, जबर **सगत** जगदीस ।—बां. दा.

उ०—२ कुंडळ वाळी करनला, **सगत** वडाळी सेव । सदा रूखाळी सेवगां, डाढी वाळी सेव ।—चैनकरण सांदु

उ०—३ खतम अवसांण खैंपांणरहिया थकत, रीझियौ भांण दइबांण राजी । सिव **सगत** सवाड़ा अखाड़ा सेल रा, गवाड़ै प्रवाड़ा सुतन 'गाजी' ।—नाथौ सांदू

उ०—४ सारसा 'दूद' सत्रसाल परत्रह सहत, जोध रा जोध अण-पाल जुडिया । सूर पड ऊपडै सरै आंन म **सगत**, मुग्गळां थाट दह-वाट मुड़िया ।—पातौ बारहठ

उ०—५ सुतन 'गजसाह' गज-गाह बंधै समर, **सगत** बळ जळ हळै तेग सार्थं । गांजवा खळां जस करण वांका गढां, हींदवां छात रै फतै हाथै ।—महाराजा जसवंतसिंघ रौ गीत

सगतपण, सगतपणौ–सं. पु.—शक्ति, सामर्थ्य ।

उ०—सिर धड़ भेळा सांधनै, **सगतपणां** तत सांच । देहूंए कर लोवड़ी ऊपर दीधी आंच ।—पा. प्र.

सगतपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

उ०—समर **सगतपुर** मंडोवर छतर धर समोसर, तकर कर बजर बर धजर तांजौ । उसर अगतर ऊअर बीरमांसर अतर,'गंग' हर कळोधर रकहर गांजौ ।—नाथौ सांदू

सगतपुरी—देखो 'सक्तिपुरी' (रू. भे.)

सगतभूत, सगतभ्रति–सं. पु. [सं. शक्तिभृत] स्वामी कार्तिकेय ।

रू. भे.—सगतिभूत, सगतिभ्रति ।

सगतसिंघोत–सं. स्त्री.—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सगतांणौ, सगतावत–सं. पु.—सीसोदिया वंश की एक उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति ।

सगति—देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—हंस मीन कूरम हरी, निरझर नदी निहार । काय ब्यूह निज **सगति** कर, तौ सेवै इकतार ।—बां. दा.

सगतिभूत, सगतिभ्रति—देखो 'सगतभूत' (रू. भे.)

सगतिविलंद–सं. पु —अर्जुन । (अ. मा.)

सगती—देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (डि. को)

उ०—१ लिछमण कै बांण लग्यौ **सगती**, जौ कोइ ऐसौ होवै जौ लिछमण कौ जीवावै ।—लो. गी.

उ०—२ चांद बिना किणरी **सगती** जको रात रा अंधारा नै उजाळै ।—फुलवाड़ी

सगतीपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

सगतीपुरी—देखो 'सक्तिपुरी' (रू. भे.)

उ०—नग हीर कनक निछरावळां, ओपै पग पग आरती। पायौ सज्यास सगतीपुरां, परणायौ जोधांपती।—रा. रू.

सगत्त, सगत्ति, सगत्ती—देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ बाहू चळी निरम्मळी, चख बींभळी सुरत्त। आजै करनल अक्कळी, संवळी रूप सगत्त।—राव सेखौ

उ०—२ समरौ प्रथम गुणेस सगत्ती, पाछै गुण गावां छत्रपत्ती।
—रा. रू.

सगन—देखो 'सघण' (रू. भे.)

उ०—पावस री सगन छोळां पड़ै छै।—पनां

सगपण-सं. पु.—१ सम्बंध, रिश्ता, नाता।

उ०—१ लोपै हिंदू लाज, सगपण रोपै तुरक सूं। आरज कुळ री आज, पूंजी राणा प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

उ०—२ भाई बेटउ बाप पणि, सगपण माई न मित्र। राजसभा नवि धीरीइ, लिखी चितारइ चित्र।—मा. कां. प्र.

उ०—३ चौथै दिन जांन नैं सीख दिरीजैला। अपां कनैतौ दौ टंक रौ ई सरतन कोनीं। अै गायां नीं व्है तौ भूखां मरां। नीं तौ इत्ता जांनियां री सरबरा व्है अर नीं औ सगपण बेठै।—फुलवाड़ी

२ सम्बन्ध, लगाव।

उ०—नेम न कोई नित सा, अलख समा नहीं खेल। सगपण ना कोई सबद सा, एक समी नहीं बेल।—अनुभववांणी

३ विवाह, ब्याह।

उ०—१ गढ बीकांण चीतगढ सगपण, 'कलौ' उदैसिंघ इळ आकास। 'जसमा' नार रायसिंघ जोड़ो, पमंग पांच सै हसत पचास।—महाराजा रायसिंह रौ गीत

उ०—२ बेटी इचरज भरचा सुर मैं बोली-बिरथा! म्हारै ई सगपण री बात सूं म्हारौ कीकर वास्तौ कोनीं मां! म्हैं अै बिरथा दपूचा लेवूं! मां रा कांन बेटी रा अै बोल सुणण सारू नीं हा। वा आंमनौ जतळावती तिड़कनैं कह्यौ—हां बिरथा, साव बिरथा! थनै ब्याव सूं तौ वास्तौ है, पण ब्याव री चरचा सूं कीं तल्लौ मल्लौ नीं।—फुलवाड़ी

४ देखो 'सगाई'।

उ०—१ अर रांमपुरै आपरौ सगपण हुवौ जिण रा विवाहणा मैं दसोर रा फोजदार नूं नीड़ै जांणि केही बार संकळप पाछौ पाड़ि तुरकां रा पेच मैं कैद होवण रौ डर धारियौ।—वं. भा.

उ०—२ खंड देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनबंधी सारां मिळै तूझ सुं संधी, बळ दाखै किण सिर 'गजबंधी'।
—चतुरौ मोतीसर

उ०—३ तद सेठ तड़कनै कह्यौ—थां लुगायां रै तौ ब्याव, सगपण मुकळावा, अर बाळूडा सिवाय दुनियां मैं दूजी कीं बातां है ई कोनीं, पण म्हारै तौ अलेखूं कांम है।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सग्गपण।

सगबग-वि. (अनु.) १ सराबोर, लथपथ।

२ भरा हुआ, परिपूर्ण।

क्रि. वि.—१ तेजी से, फुर्ति से।

२ झटपट, तुरन्त।

सगर-वि.—सब, समस्त।

उ०—गोमाय सगर पळचर गहणि, सार मेय नाहर समळ। अंग अंग भखै पळ आसुरां, कद पद धर तंडळ कमळ।—रा. रू.

सं. पु. [सं.] १ सूर्यवंशी राजा बाहुक के पुत्र जिनके साठ हजार पुत्र कपिल मुनि के शाप से भस्म हो गये थे। इन्ही के वंश में भगीरथ हुआ था।

उ०—१ राजा सगर नांमना राखण, जिगन करण पाताळ इसमेद जग। अस मेल्हियउ करै ताइ आरंभ, सरग नइ अत्य पाताळ लग।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ रायधण करण अनै बळराजा, प्रीछत 'धारु' 'जगड़' पंवार। 'भीमौ' 'नाहर' सगर भागीरत, सै नर अमर हुवा संसार।
—गोरधन खींची

वि. वि.—शत्रुओं द्वारा राज्य के छिन जाने पर अपनी पत्नी के साथ ये वन में चले गये और वहीं इनकी मृत्यु हो गई। इनकी सती व गर्भ-वती पत्नी को और्व ऋषि ने सती होने से रोका। ईर्ष्यावश सपत्नियों ने इसे गर (विष) पिलाया और गर पिलाने से बच्चे का जन्म हुआ। अतः बच्चे का नाम सगर रखा। जिसने अपने शत्रुओं को पराजित कर उन्हें विकलांग किया। इसको सुमती नामक पत्नी से साठ हजार व कोशिनी नामक पत्नी से एक पुत्र असमंजस प्राप्त हुआ। अश्वमेधीय यज्ञ के घोड़े के खोजाने पर इसके साठ हजार पुत्रों ने पृथ्वी को खोदा व पाताल में कपिल ऋषि के पास घोड़े को देख कर समाधिस्थ कपिल ऋषि को मारने लगे। किन्तु कपिल ऋषि के द्वारा आंख खोलते ही ये सभी भस्म हो गये। भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर लाकर इन सबका उद्धार किया।

२ एक चंद्रवंशी राजा।

३ राठौड़ों की उपशाखा।

रू. भे.—सग्गर, सग्र, सागर।

सगरब, सगरभ-वि. [सं. सगर्भ] १ सहोदर, सगाभाई।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ देखो 'सगरभा' (रू. भे.)

उ०—जांण सगरभ अवर दुख जांणै अटकण सकत नकूं मन आंणै।—रा. रू.

३ देखो 'सगरव (रू. भे.)

सगरभा-सं. स्त्री. [सं. सगर्भा] गर्भवती स्त्री।

रू. भे.—सगरभ।

वि. स्त्री.—सहोदरा। (डिं. को.)

सगरव-वि. [सं. सगर्व] १ गर्वयुक्त, गर्वीला।

२ देखो 'सगरभ' (रू. भे.) (अ. मा.)

सगरांम—देखो 'संग्रांम' (रू. भे.)

उ०—१ **सगरांम** बंब बागां सुणै, भ्रंवर भुज लागा अड़ण। उभळ्या समर काळां उछब, भालां खग ढालां भिड़ण।—मे. म.

उ०—२ बांमी बंध बांधळा, सूर **सगरांम** सधीरा। तेज जेठ तावड़ा आंखि धावड़ा अंगीरा।—मे. म.

सगरि-सं. पु.—राजा सगर के पुत्र।

उ०—**सगरि** हिं खणीय सुरंग, विदुरि दिवारीय दूर लगइ। हुं अगारउं अंग, ईण ऊपाइं पंडवह।—सालिभद्र सूरि

सगळाई-क्रि. वि.—सभी, सारे ही।

उ०—ओलै बैठी एकली, करै **सगलाइ** कांमो रे। राती रस भीनी रहै, छोडै नहीं निज ठांमो रे।—ध. व. ग्रं.

सगळीगर—देखो 'सिकळीगर' (रू. भे.) (डिं. को.)

सगळै-क्रि. वि.—सर्वत्र, सब जगह।

उ०—मुरधर देस मझार, सयळ धणधांन सयिद्धौ। नांमै पूंगळ नयर, पुहवि **सगळै** परसिद्धौ।—ढो. मा.

उ०—२ **सगळैई** कांम व्हाला है, चांम व्हाला कठैई कोनीं। पण थोड़ो घणो कांम तौ जेठांणी जी नैं ई करणौ चाहीजै।

—अमर चूंनड़ी

वि. [सं. सकल] सब, समस्त।

उ०—क्रत करण अकरण अन्नथा करणं, **सगळै** ही थोकै ससमत्थ। हालिया जाइ लगाया हूंता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ।—वेलि

रू. भे.—सिगळै।

सगळौ-वि. [सं. सकल] (स्त्री. सगळी) सब, समस्त। (डिं. को.)

उ०—१ खातां न लागै खांण, पांणी न लागै पीवतां। सयणां विण समसांण, जग **सगळौ** दीसै 'जसा'।—जसराज

उ०—२ तद जलाल कही—सात सो घोड़ा कंधारी इकमोला हजारी तिकी सुनहरी रूपहरी साखत दिरायजै और खजानां सूं रोकड़ा दिरायजै। बीजौ साथ सांमांन **सगळो** म्हारो छै हीज।

—जलाल बूबना री बात

उ०—३ गजबंधी तेडावियौ, **सगळौ** साऊ सत्थ। इळि नवकोटी मुरधरा, कुण कुण सुहड समत्थ।—गु. रू. बं.

उ०—४ कोटवाळ कांमातुर हुओ। पछै हकीकत पूछी नैं रजपूतांणी कांणा री सगळी हकीकत कही।—कांणा रजपूत री वात

रू. भे.—सघळउ, सघळू, सघळौ, सिगळउ, सिगळौ।

सगस-सं. पु.—१ भूत-प्रेत। (डिं. को.)

२ देखो 'सगाह' (रू. भे.)

उ०—रायसीह जसवंत रण, जांणै तजि कढि जांण। ले दारा क्रमिया लगस, फोजां सगस उफांण।—वं. भा.

३ देखो 'सल्स' (रू. भे.)

सगह-सं. पु.—१ सिंह, शेर। (अ. मा.)

२ देखो 'सगाह' (रू. भे.)

उ०—१ रिमसेन **सगह** बहिया जुध रासै, रूकां पांण कनोजै राय। पळ भखती राती पिड पंखण, तगसंती राता गिर ताय।

—धोळूजी बीठू

उ०—२ तूंवर पाटण मेलिया, अभै करै 'अभसाह'। सांभरि सिर आयौ **सगह**, नरपति विरुद निवाह।—रा. रू.

उ०—३ विघन वार गिरधर सधर वाधियै वीररस, पह सुछळि **सगह** आलम संपेखै। मरणमंगळ जिसो जांणियौ मोट मन, लाख खळ सबळ तिलमात लेखै।—गिरधरदास रौ गीत

उ०—४ विखम तबल वाजतां, गयंद गाजतां गरूरां। असि धमसतां अनेक, **सगह** बहसंतां सूरां।—सू. प्र.

सगांन-वि.—१ गायन सहित।

उ०—१ रजै मलार सारगं, रितंग रंग मारगं। रसाल ताल सोरठी, **सगांन** तांन सांमठी।—रा. रू.

उ०—२ कवि नव नव कायवकथै, गायब तांन **सगांन**। वाजित्रां लोभै अमर, नर सोभै दीवांन।—रा. रू.

सगा-वि. [ब. व.] स्वयं के, खुद के।

ज्यूं—सगा हाथां सूं, सगा मूंडा सूं।

सगाई-सं. स्त्री.—१ सम्बंध, रिश्ता।

उ०—१ सबळ **सगाई** नां गिणै, नां सबळां में सीर। खूरम अठारै मारिया, कै काका कै बीर।—अग्यात

उ०—२ स्वांग **सगाई** कुछ नहीं, रांम **सगाई** सांच। दादू नाता नांमका, दूजै अंग न रांच।—दादूवांणी

उ०—३ आगै 'कमो' वधै आफाळां, चौड़ै मार लियौ कळचाळां। सांमधरम लेखवै **सगाई**, भिळियौ खळां न लेखै भाई।—रा. रू.

२ विवाह के पूर्व की वह रस्म या प्रथा जिसके अनुसार पुत्र और कन्या का सम्बंध निश्चित होता है, मंगनी।

उ०—१ बैर अमल सूं बढै, **सगाई** अमलां सांधै। अमल गळीजै अवस, ब्याह में तोरण बांधै।—ऊ. का.

उ०—२ राजवीयां नैं ग्वाळां किसी ग्याति। कुण जाति कुण पांति। राजवीयां री **सगाई** तो राजवीयां सूं बूझै छै।—वेलि टी.

३ सम्बन्धी या रिश्तेदार होने की अवस्था या भाव।

४ विधवा व पुरुष का सम्बन्ध जो कई जातियों में विवाह ही समझा जाता है।

सगाचार-सं. पु.—१ बेटे या बेटी के ससुराल वाले, सम्बंधी।

२ रिश्ता, सम्बंध।

सगाढ़ौ-वि.—१ मजबूत, दृढ।

उ०—गिरधर रतन दळां विच गाढां, सकजां धुज 'धनरूप' **सगाढां**।

—रा. रू.

२ वीर, बहादुर।

सगातरौ-वि.—निकट, समीप।

सगातेड़ौ-सं. पु.—मृत्युपरांत मृतक के पीछे किया जाने वाला एक भोज जिसमें केवल सम्बंधीजन को ही बुलाया जाता है।

सगापण, सगापणौ-सं. पु.—सम्बंधी होने का भाव, आत्मीयता।

उ०—चढ जाय बूढौ चंचळां, मनरख **सगापण** मेळ। दारुआं अमलां दोपटां, खीचियां कमधां खेल।—पा. प्र.

सगार—देखो 'सागार' (रू. भे.)

सगारत, सगारथ-सं. पु.—सगा होने का भाव।

२ रिश्तेदारी, सम्बन्ध, रिश्ता।

उ०—१ जोधपुर ग्रौर ग्रामेर रै घर सूं तुम्हारै **सगारथ** किस तरह।—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—२ दोनू पख ऊजळौ है ग्रनै मलेछ मुसळमांनां रौ चाकर नहीं मुसळमांनां सूं **सगारथ** नहीं, जिणतरै महारांणा प्रतापसींहजी झूंपड़ां मैं वस नै हिंदू धरम राख दीधौ।—वी. स. टी.

३ सम्बंधी।

सगाळौ-सं. पु.—निकटतम रिश्तेदार, सम्बंधी।

सगावट-सं. पु.—सम्बंध, रिश्ता, नाता।

सगावळ-सं. पु.—सम्बंध, रिश्ता।

उ०—राव जी कह्यौ—पातिसाहं दीन दुनीरा छौ, हूं पाधरियौ घर रौ धणी रजपूत छूं। पातिसांहां **सगावळ** करौ रोम सूंम रा धणी छै।—वीरमदं सोनगरा री वात

सगाविध-सं. पु.—१ रिश्तेदार, सम्बंधी।

उ०—रावजी कह्यौ। कांनड़ दे जी पिण आया। जरै पातसाह जी रावजी नैं घणौ आदर सूं **सगाविध** सूं वतलावण कीधी।

—वीरमदे सोनगरा री वात

२ आत्मीयता।

सगाह, सगाहौ-वि.—१ मजबूत, दृढ।

उ०—१ मेड़तिया मोहकमसिंघ हिम्मत **सगाह**, जोधा उदैभांण मांण सिंधु सा अथाह।—रा. रू.

उ०—२ एम 'दूरग्गै' अक्खियौ, सुणतां कमंध **सगाह**। धरती रा जतनां करूं, पर तीरां पतसाह।—रा. रू.

उ०—३ 'दोलो' 'गोयंद' हरां दुबाहौ, सुत जैसिंघ विवाद **सगाहौ**।

—रा. रू.

२ जबरदस्त, बलवान।

उ०—१ ढैचाळ ढलां ढाहण **सगाह**, भड सिहर जोध आजान-बाह। चाचरै जिकै चाडंत देग, तेजरी तीह तूटंत तेग।

—गु. रू. बं.

उ०—२ धरपति लखधीर हेल हमीर, बावन वीर दुबाह। निरमळ मुखि नूर पहगह पूर, सांमंत सूर **सगाह**।—ल. पि.

३ गर्व सहित, सगर्व।

उ०—१ साह सुणै विध सोचियौ, गह मोचियौ **सगाह**। मन ठहराइ मेळ री, साह 'अजीत' सलाह।—रा. रू.

उ०—२ बोलै साह **सगाह** महाबळ, सेना तोछ तपस्या सब्बळ। सुणै चलायौ पूत सप्रांणौ, अकबर गंजसि कौ आपांणौ।—रा. रू.

४ आदर पूर्वक, प्रतिष्ठा पूर्वक।

उ०—मास वळै आसोज में, आपण मौज अथाह। कंवर **सगाह** बुलावियौ, फरकसाह पतसाह।—रा. रू.

५ क्रोध पूर्वक, सक्रोध।

रू. भे.—सगस, सगह, सग्गह।

सगुड—कवचधारी (हाथी)।

उ०—सगुड हात्थीया लूडइ, रथावली ऊथालवइ मउडधा मांकड जिम खेलावइं।—व. स.

सगुण-सं. पु.—१ परमात्मा का वह रूप जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त हो।

२ ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा.)

३ एक सम्प्रदाय विशेष जिसमें ईश्वर का सगुण साकार रूप मान कर पूजा की जाती है।

४ अच्छे गुण, श्रेष्ठ गुण।

५ धार्मिक साधु।

६ डोरी चढ़ा हुआ धनुष।

वि. (स्त्री. सगुणी) १ गुणवान, चतुर।

उ०—१ सारसड़ी मोती चुणइ, चुणइ त कुरळइ कांइ। **सगुण** पियारा जउ मिळइ, मिळइ त बिछुड़इ कांइ।—ढो. मा.

उ०—२ आवै हित आवै अवसि, परत न खोवै प्रीत। हौं जांणूं मो ज्यौं हुसी, मौ सगुणी रौ मीत।—र. हमीर

उ०—३ सूड़ा, **सगुण** ज पंखिया, म्हांकउ कहयउ करै ज। नव मण चंदण, मण अगर, माळवणी दागै ज।—ढो. मा.

उ०—४ माळव देस विखोड़िया, मारू किया वखांण। मारू सोहा-गिण थई, सुंदरि **सगुण** सुजांण।—ढो. मा.

२ परोपकारी।

उ०—१ दादू **सगुणा** गुण करै, निगुणा मांनै नांहि। निगुणा मर निस्फल गया, सुगुणा साहिब मांहि।—दादूबांणी

उ०—२ **सगुणा** गुण केतै करै, निगुणा न मांनै नीच। दादू साधू सब कहै, निगुणा कै सिर मीच।—दादूबांणी

३ कृतज्ञ।

उ०—१ दादू **सगुणा** लीजिये, निगुणा दीजै डार। सगुणा सन्मुख राखिये, निगुणा नेह निवार।—दादूबांणी

उ०—२ **सगुणा** गुण केतै करै, निगुणा न मांनै एक। दादू साधू सब कहै, निगुणा नरक अनेक।—दादूबांणी

४ अच्छी आदत वाला, अच्छे व्यवहार वाला।

५ सांसारिक।

६ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

रू. भे.—सगुन, सरगुण।

सगुणता-सं. स्त्री.—सगुण होने की अवस्था या भाव।

सगुन—१ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

२ देखो 'सगुण' (रू. भे.)

सगुनियौ—देखो 'सुगनी' (अल्पा, रू. भे.)

सगुर-वि. [सं. सगुरु] महान, जबरदस्त।

उ०—खुरसांणी रहमांन अखूंनी, सीदी हबस राफसी सूंनी। मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुन जसथांनी ताई।—रा. रू.

सगोड़ौ—देखो 'सगौ' (अल्पा; रू. भे.)

सगोडौ, सगोढौ—[सं. सम्+गोत्र] (स्त्री. सगोड़ी, सगोढी) १ निकटतम रिश्तेदार।

२ घनिष्ठ मित्र।

सगोत, सगोतरी, सगोती, सगोत्र, सगोत्री-वि. [सं. सगोत्रः] १ एक ही जाति का, सजातीय।

उ०—सगोत्री कन्या मीणा नूं देण में लग्न रौ विचार किसड़ौ कहावै।—वं. भा.

२ अपने वंश का, कुल का।

उ०—१ कुमार कहियौ मीणां तौ ठाकुर कहावणौं सहज रौ जांणि अब तौ रजपूतां री पुत्रियां नूं बरण ढूका। अर आपांरा सगोत्र गोळवाळ जसराज नूं समता रौ संबंधी करण ढूका।—वं. भा.

उ०—२ ब्राह्मण पत्नी जोय जौ, गरभवती पै जाय। गिणै न सगी सगोतरी, घोर नरक सौ पाय।—बैताळ पच्चीसी

३ सम्बंधी।

४ कुल, वंश।

५ उस वंश के जिसके साथ श्राद्ध और तर्पण का सम्बंध हो, दूर का नातेदार।

सगौ-सं. पु. (स्त्री. सगी) १ बेटी या बेटे के ससुराल का व्यक्ति।

उ०—१ कहै सगा भोळप करी, दीधी डावड़ियांह। राव सरीखै रंग हूं, मूंहडै मावड़ियांह।—बां. दा.

उ०—२ जै डर न होइ जांणौं जनक, प्रणत काल्हि लागूं पगां। सो जे न होइ दीजै सहज, सुत अपजस असगां सगां।—वं. भा.

उ०—३ भायां रा नांम लै कुसल पूछिया। कहै चहुआंणा रा हीज सगा हुआ हौ।—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

मुहा.—सगौ सगा री जड़ व्है=समधी समधी का सहायक व रक्षक होता है।

२ सम्बंधी, रिश्तेदार।

उ०—कोडी बिन कीमत नहीं, सगा न राखै साथ। हाजर नांणौ हाथमें, बैरी बूजै बात।—ऊ. का.

३ एक मां के उदर से उत्पन्न, सहोदर।

उ०—१ दोनूं मास्याई भाइयां मैं हेत अणूंतौ। साथै रमै, कूदै, मछरां करै। अेक दूजा बिना छिण ई आंवड़ै नीं। सगा भाइयां बिचै ई गाढौ हेत।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै दोनूं जणा हेटै आय पूछताछ करी। निरी ताळ तांई हाथा-जोड़ी रै उपरांत वा रोवती रोवती ई बतायौ कै देंतराज उण रौ सगौ भाई हौ।—फुलवाड़ी

४ निकटतम सम्बंधी या रिश्तेदार।

५ पिता, पितामह, मातामह (नाना) के वंश का कोई सदस्य या व्यक्ति।

ज्यूं=सगौ भाई, सगौ भतीजौ, सगौ काकौ, सगौ भांणजौ, सगी मासी, सगी भूवा।

६ प्यारा, दुलारा।

रू. भे.—सग्गौ।

अल्पा;—सगोड़ौ।

सग्ग—देखो 'सुक' (रू. भे.)

उ०—इखै नासिका सग्ग दीपक्क एरी, कळी चंप जांणौ लळी लंप केरी।—ना. द.

२ देखो 'स्वर्ग' (रू. भे.)

उ०—त्रिणि त्रिणि चिहु दिसि दीपइं, जीपइं बारइ सग्ग। मंडप ऊंचपणि घणइं गयणंगणिहिं विलग्ग।—अग्यात

सग्गड—देखो 'सकट' (रू. भे.)

सग्गपण—देखो 'सगपण' (रू. भे.)

उ०—वयणें वदवादन कायवली, टल सिद्ध सग्गपण मांमटली।
—पा. प्र.

सग्गर—१ देखो 'सागर' (रू. भे.)

उ०—हिलोळ जांण हूकळंक सद्द नद्द सग्गरं।—गु. रू. बं.

२ देखो 'सगर' (रू. भे.)

सग्गह—देखो 'सगाह' (रू. भे.)

उ०—ऐसौ पातिसाह कौ परगाह. सग्गहां तें अगाह।—रा. रू.

सग्गौ—देखो 'सगौ' (रू. भे.)

सग्यांन-सं. पु. [सं. सज्ञान] १ ज्ञानी व्यक्ति।

२ बुद्धिमान पुरुष।

३ प्रौढ़, वयस्क व्यक्ति।

वि.—१ चतुर।

२ सावधान, हौशियार।

सग्र—देखो 'सगर' (रू. भे.)

उ०—नमौ कपिलेसुर दिस्ट करूर, नमौ सुत सग्र जळावण सूर।
—ह. र.

सग्रांम—देखो 'संग्रांम' (रू. भे.)

उ०—१ आव्रत हुओ एकै घडी, हुआ सुभट्टां सत्थरा। सग्रांम चक्र व्रहा सत्रां, सूरसिंघ चक्रव्रत्तरा।—गु. रू. बं.

उ०—२ अंजसिया 'माल' सग्रांम 'उदा' उभै, धमळ 'गजबंध' रौ

आव घूरी। कारणां भूत चा नख चंपा कुसम, पियै रत दियै आसीस पूरी।—नाथौ रोहड़ियौ

सघट–वि.—दृढ़, मजबूत।

उ०—जै अणहलपुर पाटण? सघट घाट करी विचत्र चित्रांमें करी अभिरांम, महग्महोछवै भलां आरांम।—व. स.

सघण–सं. पु.—१ पहाड़, पर्वत। (अ. मा.)

२ वर्षा।

उ०—बजि थाल सकल वाजित्र बजे, कुसम सघण सुरयंद किया। वेखिया हीज आवै वर्णं, उण दिन तणी अजोधिया।—सू. प्र.

३ मेघ, बादल। (नां. मा.)

उ०—१ रिडै जांण आहज्ज, अगन धडहडती ऊपरि। सघण गाज सांभळै, जांण सादूळै केहरि।—गु. रू. बं.

उ०—२ सघण नीर सीतळ सु करत बिज्जण समीर कर। उदभिज भार-अढार, पुहप धर परिमळ ऊपर।—ह. र.

३ समूह, झुण्ड। (अ. मा.)

उ०—सुहड सघण सुर-छभा, सुकवि जण किता सुधाकर।

—गु. रू. बं.

४ घनघटा, मेघघटा।

उ०—१ सम्मूह चडै सुरतांणरा कटक बंध कोग्रण सघण। जांणियौ तांम तापी नदी, दै अण-मांन आयौ महण।—गु. रू. बं.

उ०—२ प्रगट्यौ वरस पंचोतरौ, सांवण सघण सराय। साह करंडव पंखि पर, दुमुखि रहै चख लाय।—रा. रू.

वि.—१ अधिक, बहुत।

उ०—१ भरै अन्न भंडार, सालि गोधूम सघण घण। घ्रित तेल गुळ लूंण, लगै अहिफेहण सांबण।—गु. रू. बं.

उ०—२ गर्जसिघज गैमर गोडिया, तीह कलेवर पंजरां। सावज सीह थ्याया सघण, रहि भोळै गिर कंदरां।—गु. रू. बं.

उ०—३ जिण समै गहरौ मुधरौ मुधरौ गाजै है, पवन सीतल मंद वाजै है, नौघण मेहरी सघण छोळां परताळां पड़ती जिकै जमी नीठ खमै है। बीज आमै न मावै है।—र. हमीर

२ घना, गहरा।

उ०—१ राति ज वादळ सघण घण, वीज-चमंकउ होइ। इण समईयइ हे सखी, साल्ह जगाई मोइ।—ढो. मा.

उ०—२ निगरभर तरुवर सघण छांह निसि, पुहपित अति दीपगर पळास। मौरित अंब रीझ रोमंचित, हरखि विकास कमळ क्रत हास।

—वेलि

उ०—३ उपवन सघण बहार अनूठी, छित हरियाळी छायी। अंग मरोड़ संग तरुवर व्है, लूम लता लहरायी।—लो. गी.

उ०—४ स्यांम नदी कांठै सघण, तरवर स्यांम तमाळ। संजुत स्यांमा सायघण, साहब स्यांम समाळ।—बां. दा.

३ स्थूल, मोटा।

उ०—सघण सूकडि सइरि सु सींचीइ, पवणपूरिहिं वींजण वींजीइ। कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ।

—सालिसूरि

रू. भे.—सघन।

सघणगाज–सं. पु.—भीम। (अ. मा.)

सघणवाह–सं. पु.—इन्द्र। (अ. मा.)

(मि. मेघवाहन)

सघणापौ–सं. पु.—१ अधिकता, बाहुल्य।

२ घना होने की अवस्था या भाव।

सघणौ, सघबौ—देखो 'सकणौ, सकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सबद मारकौ मारियौ, रीवै सास उसास। हरीया बाहिर बोलिकै, काढि न सघै वास।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया हंसौ जांह गयौ, सुन्य सरोवर तीर। पंछी कोय न पी सघै, सो हंसौ पीयै नीर।—अनुभववांणी

सघन—देखो 'सघण' (रू. भे.)

उ०—जाळ जांगड़ो-रूंख सघन गायड़मल गाढौ।—दसदेव

सघरौ–वि.—सपरिवार, कुटुम्ब सहित।

उ०—उठै एक ब्राह्मण रौ घर। उठै ब्राह्मण सघरौ ही रहै।

—चौबोली

सघळउ, सघलउ, सघळू, सघलू, सघळौ, सघलौ—देखो 'सगळौ'

(रू भे.)

उ०—१ कहीउ सघलउ तै अवदात, महुती हरखी निसुणी वात। सखीअ पाहिं वीनवीउ नरिंद, निसुणी राय हूउ आणंद।

—हीराणंद सूरि

उ०—२ बगतर तास लीयां ऊदाळी पड़घउ खजांनइ हाथ। तरकस तीर चीर हथियारइ, लूसइ सघळउ साथ।—कां. दे. प्र.

उ०—३ जण जण प्रति सघलूं कहइ, जारि जीव म हरि। कठिनपणइ तै काढयू, बांह धरीनइं बाहरि।—मा. कां. प्र.

उ०—४ सघळौ रावलह (लह) लहलै, साधन पोवती मोती की माळ।—बी. दे.

(स्त्री. सघळी)

सघाळौ—देखो 'सिघाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ गुड़ै पांच गजराज, गुड़ै धजराज सघाळा। केताइ गुड़ै कमाल, गुड़ै रावत रवताळा।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ चाळा लाग कुरंदां ठेलती नांणौ नदी चाली, सघाळा ठकांणां सोभा मेलती सुथांन। भुरावाळा हता मुठ ऊफेलती भलौ भाई, जांणै मेघमाळा आइ रेलती जेहांन।—महादांन मैहडू

सड़ंग–सं. पु. [सं. षड़ग] वेद में छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष।

रू. भे.—सडंग।

उ०—खित हूर अपच्छर वींद खटै, किरमाळ वहै वर-माळ कटै।
निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगे सिर-माळ सचै।
—रा. रू.

सचणहार, हारौ (हारी), सचणियौ—वि०।

सचिओड़ौ, सचियोड़ौ, सच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सचीजणौ, सचीजबौ—कर्म वा०।

सचतानंद, सचदानंद—देखो 'सच्चिदानंद' (रू. भे.)

सचबोलो—वि. (स्त्री. सचबोली) सत्यवादी, सत्य बोलने वाला।

उ०—जिकौ सांमधरजी रजपूत काछ वाच निकळंक सत्यवाळौ सचबोलौ जुध रे मांहै बिनां माथै तरवार वाहनै सत्रुवां रा दळ नै वाढण वाळौ और धणी रौ करज उतारनै जुध में पोढै।
—वी. स. टी.

सचमुच—देखो 'साचमाच' (रू. भे.)

सचराचर, सचराचरि, सचराचरी—वि. [सं. सचराचर] स्थावर और जंगम (सभी)।

उ०—१ सुरत-तणां सुख समवडि, मीडवि जोईइ जेह। सचराचरि सरजूं नहीं, सरजणहारइ तेह।—मा. कां. प्र.

उ०—२ साहु कही नइ गयणि पहूतउ, पंडु नराहिक हूयउ सयंतउ। अइहवि दीजइं मंगलचार, जगि सचराचरि जयजयकार।
—सालिभद्र सूरि

सं. पु.—चौसठ भैरवों में से एक भैरव।

सचळ—वि.—१ चलायमान, अस्थाई।

२ गतिशील।

३ अटल, पक्का।

उ०—निज सचळ सल्हा मजकूर नर नाहरां, धर अचळ थाहरां नूर धरतें। राज रजपूत आंबेर दोइ राहरां, वचन मुख ताहरां सूत बरतै।—स्यांमसिंघ रौ गीत

सचळियौ—देखो 'सचळौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रांम रै पाखती अेक खेजड़ी ही। उण माथै पंखेरूवां री हड़-बड़ सुणीजी। बळराजसिंघ सचळियौ नीं रह्यौ। यूं ई उण दिस सांम्ही खांचनै तीर वायौ। अेक जंगी गिरज लडीड़ करतौ हेटै पड्यौ।—फुलवाड़ी

सचळौ, सचळ्यौ—सं. पु. (स्त्री. सचळी) १ नटखट और चंचल।

२ चुप, शांत।

उ०—१ म्हैं सोच्यौ के गियां पछै आप लोगां नैं मतै ई ठा' पड़ जावैला। पछै पै'ला केवणा में कांई सार। पण मासी री जीभ सचळी नीं रैवै।—फुलवाड़ी

उ०—२ अंदाता धुराधुर इण पोहरा सूं काठा ग्रांती आयग्या। इण वास्तै म्हारी जीभ उण वेळा सचळी नीं री, आप थोड़ी-घणी ई कोप करचौ तौ म्हैं अपघात करनै मर जावूंला।—फुलवाड़ी

अल्पा;—सचळियौ।

सचव—देखो 'सचिव' (रू. भे.)

उ०—नृप मेळै आया नगर, दोड बधाई दार। कहि विगत विध विध करै, आनद भरै अपार। आनंद भरै अपार, अंतेवर आयनैं, सुभट सचव जग साथ, सु वैंग सुणायनैं।—र. रू.

सचवाणौ, सचवाबौ—क्रि. स.—जड़ना, लगाना।

उ०—हाट रै ताळा सचवाय नै घर रै वास्तै रवानां हुआ।
—पलक दरियाव री बात

२ जांच करना।

सचवाणहार, हारौ (हारी), सचवाणियौ—वि०।

सचवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सचवाईजणौ, सचवाईजबौ—कर्म वा०।

सचवादी—देखो 'सत्यवादी' (रू. भे.)

उ०—हे निरलज रांड! करलै पर-पुरस सूं बात, बणजा सचवादी। गैणौ म्हारौ है के थारै बाप रौ।—वरसगांठ

सचवायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ जड़ा हुआ, लगाया हुआ. २ जांच कराया हुआ।

(स्त्री. सचवायोड़ी)

सचवायौ—देखो 'सत्यवादी' (रू. भे.)

उ०—१ सांम्ही सेठ रौ माजनौ पाड़यौ कै बापड़ौ चोर घड़ी-घड़ी साची बात कही तौ ई वांनै भरोसौ क्यूं नीं व्हियौ। अैड़ा सचवाया चोर नै तौ कीं न कीं बगसीस मिळणी चाहीजै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ गरू री आ बात सुण रांणी वत्ती राजी व्ही। दीवांणजी रै सांम्ही देख कह्यौ—इण सचवाया चोर माथै वत्ती म्हैं जांणूं जित्ती राजी व्ही। अै पांचूं मोती इणनैं बगसीस में दे दौ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ रांणी कह्यौ—आज आपरी बातां सुण इत्ती राजी व्ही के किणी नैं उणरौ लेखौ बतायां ई समझ में नीं आवै। आप जैड़ा सचवाया मिनख नै सजा देवण सूं वत्तौ कीं अन्याव नीं।
—फुलवाड़ी

सचांण, सचांन—१ देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—अक्खै सूर कमधौ, सचांणै सोई सूर सापुरसो, जो लड़ै अवसांण, झल्लै खग्ग मग्ग रजवट्ट।—रा. रू.

२ देखो 'सिचांण' (रू. भे.)

सचांणी—देखो 'साचांणी' (रू. भे.)

उ०—असौ हुवै माथा उपहारो, माथै लियां सचांणी मौत। रिम आयां भींतां नह रहियौ, गीतां विच रहियौ गहलौत।
—बिहारीदास गहलौत रौ गीत

सचाई—सं. स्त्री.—सत्यता, सच्चापन।

सचाड़ौ—वि.—१ श्रेष्ठ।

२ जबरदस्त।

सचाडणौ, सचाडवौ-क्रि. स.—सहायता लेना ।
उ०—आया दूत खबर सह आई, विचित्र फौज लख दोय वताई ।
चढियौ 'अजन' त्रेख मन चाडै, सांम्हौ सुहड़ै भड़ै सचाडै ।
—रा. रू.

सचायौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

सचाळ—देखो 'सचाळौ' (रू. भे.)
उ०—वांध चाळां चौतरफां रोकियौ थाहरां बीच, चडै इंद्र अटा हूं विलोकियौ सचाळ । भीम नाद आगाजतौ तोकियौ गैणांग भुजां, लागै खेटै गयजादौ कोकियौ लंकाळ ।—प्रतापसिंघ राठोड़ रौ गीत

सचाळी-वि.—क्रीडा करने वाली । (देवी)
उ०—१ चोळ रूधर मद पियै सचाळी, विकट करै नाटक विकराळी ।—सू. प्र.
उ०—२ सवणै साह सुणै सचाळी, ताय मिळौ मुझ हेकण ताळी । 'पीथल' वाहर काछ पंचाळी, धावजै चारणि धाबळियाळी ।
—प्रथीराज राठौड़

सचाळौ-वि. (स्त्री. सचाळी) १ वीर, योद्धा ।
उ०—१ सूरां सीम 'दुजौ' 'सवळावत', राजा घंसि लगायौ रावत । बंधव जोड़ 'फतौ' बांहाळौ, साथै मुहकमसिंघ सचाळौ ।—रा. रू.
उ०—२ हरि गयण रत्थ तांण हत्थं, वाधि कत्थं वेणियं । वाजै सचाळौ कुंभवाळौ, रक्खवाळौ रैणयं ।—रा. रू.
उ०—३ डेरै हालोहळ हुई, हुआ सचाळा सत्थ । आज विहांणै रटुवड, करिसौ कौ भारत्थ ।—गु. रू. बं.
उ०—४ मारु भड़ चढिया मछर, करवा भारत्थ कत्थ । राग वडाळा वजिया, सकौ सचाळा सत्थ ।—वचनिका
२ तेजस्वी ।
उ०—पह निज हुकम प्रमांण, दीह नवमै विरदाळा । सराजांम करि समर, सकौ भड़ मिळै सचाळा ।—सू. प्र.
३ गतिमान, चलने वाला ।
उ०—दीयै खंभूठांणां मचौळा अचाळा झाट सूंडांडंडां, पै सचाळा देही काळा गिरंदां प्रमांण । यूं आंवळा-झूळ गजां टोळा प्रथीनाथ आळा, मेघमाळा इंदवाळा बादळा मंडाण ।—चैनकरण सांदू
४ खुशी व उमंग सहित ।
उ०—वनां बोलिया सचाळा मोर बीजां खिवै चहुवळां । सालुळै वादळां दळां आवियौ सुरेस ।—महाराजा वखतसिंघ रौ गीत
सं. पु.—युद्ध, संग्राम ।

सचावट-सं. स्त्री.—सच्चापन, सत्यता ।

सचाह-वि.—इच्छा सहित, इच्छुक ।
उ०—जांणक कीर जरूर महारस जांणियौ, वदन निहारै नाह सचाह बखांणियौ ।—बां. दा.

सचिंत-वि.—१ जिसे चिंता हो, चिन्तातुर ।
उ०—इसौ कहि महिलां सचिंतौ गयौ । तिसै गहलोतणी मैंहलां छै । तिणरै अनंतराय फूंफौ लागै छै ।
—कहवाट सरवहिया री बात
२ देखो 'सचींत' (रू. भे.)

सचि-सं. पु. [सं.] १ मित्र, दोस्त ।
२ मित्रता, दोस्ती ।
३ देखो 'सत्य' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
४ देखो 'सची' (रू. भे.)
उ०—कूरमी कमधज्ज सूं, ओपै वांमै अंग । रवि रांना ससि रोहणी, सुरपति सचि किर संग ।—रा. रू.

सचिक्कण-वि. [सं.] अत्यन्त चिकना, स्निग्ध ।
उ०—पतसाह सचिक्कण कुंभ पर, सघण बुंद वांणी सुजण । दुरबोध मांन रहियौ सद्रढ, कांन न कीधौ वयण कण ।—रा. रू.

सचित-वि. [सं. सचित्] जिसे ज्ञान हो या चेतना हो ।

सचितानंद—देखो 'सच्चिदानंद' (रू. भे.)
उ०—रांमकिसन हर नारियण, सचितानंद गोविंद । बासुदेव बीठळ विसन, नरहर गोकुळचंद ।—ह. र.

सचित्त-सं. स्त्री. [सं.] १ लगन वाला ।
२ बुद्धिमान, होशियार ।

सचित्राळी-सं. स्त्री.—देवी, दुर्गा ।

सचियादे सचियाय-सं. स्त्री.—१ चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।
२ ओसियां (जोधपुर) में स्थित एक देवी, जिसकी पूजा शाकद्वीपीय ब्राह्मण करते हैं ।

सचियार-सं. पु. [सं. सत्य] १ सच्चा, सत्य ।
उ०—सांई सचा सचियार कुडियारी दगै, वीर विचखण सेवड़ा, सै माया कुं ठगै ।—केसौदास गाडण
रू. भे.—संचियार, सचियार, सचियारौ, सचीयार, सचीयारौ ।

सचियोड़ौ—देखो 'संचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सचियोड़ी)

सचिव-सं. पु. [सं.] १ मंत्री, वजीर । (डिं. को; डिं. नां. मा.)
उ०—१ सदगुरु प्रणाम 'किसोर', सचिव 'अमरेस' सवाई । करै पिता जिमि क्रपा, तिकण गुण समझ बताई ।—र. रू.
उ०—२ सुणि नृप सचिव मेल्हिया साचा ।—सू. प्र.
२ मित्र, दोस्त ।
३ मददगार, सहायक ।
४ किसी विभाग या संस्था के संचालकों द्वारा नियुक्त व्यक्ति जो संचालकों के आदेशानुसार कार्य करवाता है ।
रू. भे.—सचव, सच्चव ।

सचिवता-सं. स्त्री. मंत्री होने का भाव ।

सचिवाळ-सं. पु. [सं. सचिव+रा. प्र. आळ] १ मंत्री, सचिव ।
(डिं. नां. मा.)
२ मित्र, दोस्त ।

सचिवालय-सं. पु. [सं.] मंत्रालय ।

सचींत-सं. स्त्री.—१ चिंता, क्लेश ।

उ०—यां महारांणी उच्चरै, सुहड़ां तजो **सचींत** । परवाहौं खग धारदै, जमणा धार प्रवीत ।—रा रू.

२ देखो 'सचित' (रू. भे.)

उ०—इसो कहि महिलां सचितो गयो । तिसै गहलोतणी मैहलां छै । तिणरै अनंतराय फूंको लागै छै । तिका हजूर आई, पिण ऊगो नहीं । रूसै ठांसणी ढाल री दीधां बैठो घणो **सचींत** दीठो ।

—कहवाट सरवहिया री बात

रू. भे.—सचीत ।

सची-सं. स्त्री. [सं. शची] १ देवराज इन्द्र की पत्नी तथा दानवराज पुलोमा की पुत्री, इन्द्राणी । (अ. मा.)

उ०—१ मदोमत्त गोखां चढी हंस मोहै, **सची** इंदरां मिंदरां जांण सोहै ।—सू. प्र.

उ०—२ सभि आवत पदमणि भूल संग, उरवसी **सची** रति लजत अंग ।—सू. प्र.

उ०—३ गांणा गीत साखी बेद ऊचारै गैणाग गाजै, राजै रूप आंगणै इन्द्र सो **सची** रूप । सोळाही कळा सूं सोम ऊगियौ प्रकास सारै, वळोवळी ऊचारै न आयो इसो भूप ।—पाबू राठौड़ रो गीत

२ अप्सरा ।

रू. भे.—सचि, सच्ची ।

सचीत—देखो 'सचींत' (रू. भे.)

उ०—जतन 'अजीत' भळाय सब, उतन **सचीत** मिटाय । एम 'दुरगाह' मारवां, किया सुरगै चाय ।—रा. रू.

सचीतीरथ-सं. पु. [सं. सत्यतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

सचीतो-वि.—१ चिंताग्रस्त, चितातुर ।

उ०—१ अरहरां घमोड़ा पाड़ धर अचीतो, वडम भुज रचीतो बरद बांनो । सेल थारै कमंध दखणपत **सचीतो**, महाबळ नचीतो भूप 'मांनो' ।—जोधसिंह राठौड़ रो गीत

उ०—२ ज्वाळ झळ जेम अस गांव अरि जाळवा, खागजुध जहर हूं कहर खारो । 'करण' भय **सचीतो** न्याय 'ओरंग' कहै, 'सिंघ' बळ नचीतो देस सारो ।—महाराजा करणसिंघ जी रो गीत

उ०—३ भींवो जी घरे आया, पिण घणां **सचीता** होयनै एकण तूटा सा ढोलिया ऊपर सूता ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

२ सतर्क, सावधान ।

सचीपत, सचीपति, सचीपती-सं. पु. यौ. [सं. शची+पति] १ इन्द्र । (ना. डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ अश्विनी कुमार ।

सचीयार, सचीयारो—देखो 'सचियार' (रू. भे.)

उ०—१ सपत चिरंजी रिख सपत सो भी **सचीयारा** ।

—केसौदास गाडण

उ०—२ हरीया अैसा को मिळै, साहिब का **सचीयार** । झूठ न वाकै कपट को, रंच नहीं वौहवार ।—अनुभववांणी

सचीराट-सं. पु. यौ. [सं. शची+राट्] इन्द्र । (ना. डिं. को.)

सचीस-सं पु. [सं. शचीश] इन्द्र, देवराज इन्द्र ।

उ०—अज संभ्रम दसरथ अवधि ईस, सिरताज राज सोभा **सचीस** ।

—सू. प्र.

सचीसुखदायक-सं. पु.—इन्द्र । (डिं. को.)

सचीसुत-सं. पु.[सं. शचीसुत] १ शची का पुत्र, जयन्त ।

२ चैतन्यदेव ।

सचीस्यांम-सं. पु. [सं. शचीस्वामी] इन्द्र । (अ. मा.)

सचूंप—वि.—१ चतुराई पूर्वक ।

उ०—तिल तिल जुध हुवो खगां मुंह तूटो, चूण न सकै दहूं करां **सचूंप** । रावत कपळ काज सिव रचियो, सहसाअरजुन तणो सरूप ।—रावत जगरामसिंह रो गीत

२ सुंदर ।

उ०—१ कट तट ओप निखग कोट छिब कांम की, रूप अनूप **सचूंप** यसी दुति रांम की ।—र. ज. प्र.

उ०—२ सज्जंत सोल सिंगार, आभरण दूण अढार । नव जरी वेलि अनूंप, चिग नोख गोख **सचूंप** ।—सू. प्र.

३ कुशल, चतुर ।

४ हास्यरस युक्त ।

सं. स्त्री.—सुंदरता । (मि. चूंप)

रू. भे.—सचोप ।

सचूंपो-वि. (स्त्री. सचूंपी) १ कुशल, निपुण ।

२ सुंदर, मनोहर ।

सचूप—देखो 'सचूंप' (रू. भे.)

सचूपो—देखो 'सचूंपो' (रू. भे.)

सचेत-वि. [सं. सचेतन] (स्त्री. सचेती) १ सावधान, सतर्क ।

उ०—१ जगजांमी 'जसवंत' रो, हुयो बड़ोदै हेत । प्रीत बधावण परसपर, सुपहां किया **सचेत** ।—ऊ. का.

उ०—२ चुगली विसतारत चुगल, सांप्रत होय **सचेत** । सो मुरदार सरीर री, लट मुख मांझत लेत ।—बां. दा.

उ०—३ वडारण धीरज बंधाय **सचेत** कराई ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

२ मूर्छा रहित, सचेतन ।

उ०—१ सो लोहां रो मेंड आवै जणां तो बेचेत हुइ जावै और **सचेत** हुवै जद कहै हां हां मेड़तै मैं बड़ जावो ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ इतरै मैं राजा आयो । रांणी बात पूछी । राजा बात कही । रांणी धरि ढाहि पड़ी । सहेलियां **सचेत** की । विलाप करणै लागी । राजा धीरज देन लागो हूणकार मिटै नहीं ।—चौबोली

उ०—३ ओर हजारां ही खेत सोधण रै समय सचेत अचेत प्रांण-धारी पाया तिकै सरब ही 'औरंग' रा आदेस रूप अनळ मैं दहिया। —वं. भा.

उ०—४ वेस्या जांणी पडिउ कोइ, ओळखीउ ए महतउ होइ। घरि आंणी जांणी संकेत, मणिजल पाई कीउ सचेत। —हीराणंद सूरि

[सं. सचेतस्] ३ बुद्धिमान, चतुर, दक्ष।

उ०—सांचौ मित्र सचेत, कह्यौ कांम न करै कसौ। हरि अरजण रै हेत, रथ कर हांक्यौ राजिया। —किरपारांम

४ संवेदनापूर्ण, दयालु,

रू. भे.—सचेति, सचेती।

सचेतन, सचेतनि—सं. पु. [सं. सचेतन्] चेतनायुक्त, विवेकयुक्त प्राणी।

उ०—तसु बंधव भवभंजन अंजनपुंज समांन, नमियइ नाथ सचेतनि केतनि संख प्रधांन। —जयसेखर सूरि

वि.—१ चैतन्य।

२ सतर्क, सावधान।

३ समझदार, बुद्धिमान।

सचेति, सचेती—सं. स्त्री.—१ सावधानी, समझदारी।

२ चेतना।

३ बुद्धिमानी, समझदारी।

४ देखो 'सचेत' (रू. भे.)

उ०—छांटी पांणी कुमकुमइं, वीभरण वीझ्या वाइ। हुई सचेती माळवी, प्री आगळि विलळाइ। —ढो. मा.

सचेळ, सचेळौ—वि.—१ शक्तिशाली, बलवान।

उ०—१ चमूं अकब्बर लोक सचेळौ, भिळियौ खांन तहव्वर भेळौ। ओपै जांण प्रळै अहनांणौं, एकठ महण थया दोय आंणौं। —रा. रू.

उ०—२ मगरै 'राजड़' 'जगड़' समेळा, सांमळ नाहरखांन सचेळा। वेली जोधाहरा महाबळ, 'भीम' 'सिवौ' रिण थया भुजागळ। —रा. रू.

२ गांभीर्यपूर्ण, गंभीर।

उ०—सझि बतीस नव सात, मिळै सुकिया जुथ मेळा। बांणि कोकिल विमळ, चवै चंदवदन सचेळा। —सू. प्र.

३ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—१ भडां प्रीत भारियौ, बिट हरि कीत सचेळौ। गुण मुक-तेसर गंग, मिळै फिर कातिक मेळौ। —रा. रू.

उ०—२ चिलतह झिलम चढाय, ससत्र अंग कसै सचेळा। चढि रैवंत पसाव 'वखत' आयौ जिण वेळा। —सू. प्र.

४ समर्थ, सामर्थ्यवान।

उ०—विढवा प्रथम अणी रसवाया, अै मछरीक वणी कळ आया। 'चूंडौ' 'मुकन' सुजाव सचेळौ, भूप तणौ छळि 'केहर' भेळौ। —रा. रू.

५ अद्भुत, अनोखा।

उ०—चमतकार जण हुवौ सचेळौ, भांण हुवौ जांणौं जळ भेळौ। छत्रपत लियै कांकण इम छाजै, बड़वानळ रवि चंद्र विराजै। —सू. प्र.

६ संख्या की दृष्टि से अधिक बड़ा।

उ०—आरंभे अजमेर, सेन असपत्त सचेळा, खुरासांण खट खंड मिळै नव खंड समेळा। —रा. रू.

७ खुश, प्रसन्न।

८ गुणों की दृष्टि से बड़ा, महान।

उ०—भ्रम आखेट न बांण अभ्यासी, व्रत संगीत न राग निवासी। मंत्री सुभट थंडत नह मेळा, चवै न नव रस सुकवि सचेळा। —सू. प्र.

९ वस्त्र धारण किए हुए।

उ०—मंगळीक नंदि महा, वजै नौबति जिण वेळा। मंगळ करै चंद्रमुखी चित्र अवछाड़ सचेळा। —सू. प्र.

सचेस्ट—वि. [सं. सचेष्ट] चेष्टा वान।

उ०—वना गतीज ब्योमसी रुसीत हेतु हीनसो, सदा गति सचेस्ट है रु ताप है दिनेस सौ। —पा. प्र.

सचैत—स. स्त्री.—१ सखी, सहेली।

२ प्रयत्नशील।

सं. पु.—आम का वृक्ष।

सचोक—सं. पु. [सं. सत्योक] सत्य। (ह. नां. मा.)

सचोज—वि.—उत्साही, उत्साहयुक्त।

उ०—मन भ्रमर मनोरथ विरथ मोज, चंपक वत चांपावत सचोज। —ऊ. का.

सचोप—१ वस्त्र विशेष।

उ०—दरीयाखानां कतनी भूंनां प्रताप सचोप पटणी कथीवुं फिरंगी कथीवु सानुबाफ जरबाफ खीबाफ। —वं. स.

२ देखो 'सचूंप' (रू. भे.)

उ०—असि आरूहियौ वंस उजागर, किरि रजनी प्रगटौ भासंकर। सोभै दुलह रूप सचोपै, इम सब जांन परम छबि ओपै। —रा. रू.

सचोपकाजी—सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—सावपट्ट पट्टहीर सूहवी चोपाच्छुडहुं सवाडी चंपावती स्वेत सिलाहट्टी सचोपकाजी मूलवटणी। —व. स.

सचोळ—सं. पु.—१ झोंका।

२ तरंग, लहर।

वि.—लाल।

उ०—१ चख मुख अरुण सचोळ, बिलकुलतौ बाकारतौ। धीब झड़ां धमरोळ, अरि दळ ढाहै हरिदउत। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ वणिया नैंण सचोळ, बोळ रंग तैं रंगांणं। —गज-उद्धार

सचोळौ-सं पु.—सुसज्जित योद्धा।

वि.—प्रसन्नचित्त।

उ॰—लोभांणी नवोढा नेह नसारा कचोळा लेती, भ्यासैं अंग अचोळा **सचोळा** लेती भाव। करां मक्रकेत रै लचोळा लेती तूंजी-किना, नक्र रैं मचोळा लेती नाव।—र. हमीर

सचौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ॰—१ **सचा** सांई याद करि, या बिन दूजा धंध। जनहरिया **साचै** मतैं, झूठ निवारौ फंध।—अनुभववांणी

उ॰—२ तिण वार वीरा रस संगम, ग्रीध चील्ह नभ छाए विहं-गम। कळह का आगम सौ विखमारिख, सारका कांटा **सचां** पारिख।—रा. रू.

सच्च—देखो 'सत्य' (रू. भे.)

उ॰—१ **सच्च** पियारा सांइया, सांई **सच्च** सिवाय। **सच्चा** अगन न जाळही, **सच्चा** सरप न खाय। ह. र.

उ॰—२ सुणि सुंदरि **सच्चउ** चवां, भांजइ मन चीभ्रांति। मो मारु मिळवा तणी, खरी विलग्गी खंति।—ढो. मा.

उ॰—**सच्च** कज्जिहिं **सच्च** कज्जिहिं अन्न दीहंमि, उल्लंछिउ गुरु-वयणु इंदपुत्तु वनवासि चल्लई।—सालिभद्र सूरि

सच्चरित, सच्चरितर, सच्चरित्र-वि. [सं. सच्चरित्र] १ जिसका चरित्र अच्छा हो।

२ सदाचारी।

सच्चव—देखो 'सचिव' (रू. भे.)

उ॰—सब सूर सुभट **सच्चव** सबंध, कर सिलह चढै पमंगां कमंध। चांपा कै कूंपा बडै चीत, जोधा सबंध मिळ समर जीत।—प्रे. रू.

सच्चवई—देखो 'सत्यवती' (रू. भे.)

उ॰—**सच्चवई** पिय माय अंबा अंबाली अंबिका कुंती मुद्री जाई वउलावेवा नंदणह।—सालिभद्र सूरि

सचाई-सं. स्त्री.—सत्यता, वास्तविकता, हकीकत।

उ॰—वीरता **सचाई** अर डिढता तौ इणरै आगै पांणी भरै।

—फुलवाड़ी

सचित-सं. पु. [सं.] सत् और चित् से युक्त, ब्रह्म।

सच्चितानंद, सच्चिदानंद-स. पु. [सं.] परमेश्वर।

उ॰—१ दाता वरन मोद री विराजैं जिका महादेवी, 'माला' कविंद री सेवी भदोरैं हमेस। आनंद री चखां वाळा **सच्चिदानंद** री इच्छा, आनंदी कंवारी बाळा सुंदरी आदेस।—कुंभकरण सांदू

उ॰—२ **सच्चिदानंद** व्यापक सरब, इच्छा तिण में ऊपजै। जग-दंब सकति त्रिसकति जिका, ब्रह्म प्रकृति माया बजै।—मे. म.

उ॰—३ जगत ब्रह्म परब्रह्म माई एसैं, जैसैं पेंप सुगन्धा रे। **सच्चिदानंद** आनंद अनंता, नहिं बंधण निरबंधा रे।

—सुखरांम जी महाराज

रू. भे.—सचतानंद, सचदानंद, सचितानंद।

सच्ची—देखो 'सची' (रू. भे.)

उ॰—१ सांम रै कांम नै घसै रिण सांमहा, केवियां पछाड़ै फतै करणौं। जीवता रहै तौ सुजस कानां सुणौं, प्रांण छूटैं तिकै **सच्ची** परणौं।—वीर रौ गीत

उ॰—२ सारधु सिखर महि-क्रन्त सुभ्र, रूप अनोपम वेरावळ रची। चहुवांण इंद्र कमधज्जरै, सांचौरी सुंदर **सच्ची**।

—गु. रू. बं.

२ देखो 'साची' (रू. भे.)

उ॰—दिइ दांन जिवणइं करइं, साहिब्ब सेव **सच्ची** करइ। कुरांण न्याइं पेखि चल्लइ, सौ मुसलमांन भस्त जि वरइ।—व. स.

सच्चु—देखो 'सत्य' (रू. भे.)

उ॰—१ वद्धावइ जणु सयलु, जीवनदांनु तइ देव दिद्धऊ। केव-लिवयणु जु **सच्चु** किउ, त्रिहुं भुयणि जसवाउ लिद्धउ।

—सालिभद्र सूरि

उ॰—२ करणु भणइ **सच्चु** कहउं पुणु छइ एकुवि नाणु। दुरयो-धन रहिं आपणा मइं कल्पा छइं प्रांण।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'साचौ' (रू. भे.)

सच्चौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ॰—सच्च पियारा सांइयां, सांई सच्च सिवाय। सच्चा अगन जाळही, **सच्चा** सरप न खाय।—ह. र.

सच्छंद—देखो 'स्वच्छंद' (रू. भे.)

सजंतौ-वि.—सुरक्षित।

सजकौ-वि. पु. (स्त्री. सजकी) १ सावधान, सतर्क।

उ॰—रात दिन मांमला किया **सजकौ** रहै, दोयणां जळा भंज इळाडाटी।—महादांन मेहड़ू

२ चंचल, चंचलता युक्त।

३ सुरक्षित।

उ॰—समापण दवाली बंध गजकांसरा, हुअै तजकां सत्रां सीस 'सांगण'हरा। पमंगां ऊडता फुकै कळां रजकां परा, धणी अजकां तणी रहै **सजकी** धरा।—महादांन मेहड़ू

सजग-वि.—१ सचेत, जाग्रत, चेतनायुक्त।

उ॰—इणी भांत आत्मा **सजग** रैवै जितै करम-अकरम रौ ग्यांन रैवै। आत्मा मरियां पछै मिनख नै भूंडा-भला रौ चेतौ को रैवै नीं।—फुलवाड़ी

२ सतर्क, सावधान।

३ शीघ्र जागने वाला।

४ चालाक, होशियार।

रू. भे.—सुजग।

सजगीर-वि.—बलवान, शक्तिशाली।

सजगीस-वि.—देखो 'जगीस' (रू. भे.)

उ॰—१ सुकलत ते **सजगीस** अनइ सुवर अेका खमौ। तपियउ

अचलेसर तणउ, अउ जउहर जगदीस ।—अ. वचनिका

उ०—२ सदा भाइ सजणीस कहि कहि अचलेसर कहइ । वड पह सूझ वखांणिस्यै सुणिया वंस छतीस ।—अ. वचनिका

सजड़–वि.—सुदृढ, मजबूत ।

उ०—**१** ताळा सजड़ जड़ेह, कूंची लै कांनै थयौ । ऊघड़सी आयेह, जड़िया रहसी जेठवा ।—जेठवा

उ०—२ टग टग महलां जी ऊमादै रांणी ऊतरी, जड़िया है सजड़ किवाड़ ।—लो. गी.

उ०—३ ढकियौ तौ फळसो खोल देख रांमूड़ा कोई खोलौ सजड़ किवाड़ आगळ खोलौ जी क बीजळ सारकी ओ जी ।—लो. गी.

२ घना, सघन ।

३ जड़ युक्त, जड़ सहित ।

रू. भे.—सज्झड़ ।

सजड़ी—देखो 'सुजड़ी' (रू. भे.)

उ०—कंधड़क्क कड़क्क कड़क्क कड़ी, संजड़क्क जड़क्क बहै सजड़ी ।
—गो. रू.

सजण–सं. पु.—**१** सेना की चढाई ।

२ सजने की क्रिया या भाव । (डिं. को.)

३ देखो 'सज्जण' (रू. भे.)

उ०—**१** सूप सजण घर आवियौ, दीजै नांही पूठ । आगा हुय मिळजौ अवस, आदर दीजै ऊठ ।—अग्यात

उ०—२ अहनिसि आनंदइ सरइ, अंगि न आवइ रोग । सजण तणी संख्या नहीं, भवि भवि पांमइ भोग ।—मा. कां. प्र.

(स्त्री. सजणी)

सजणौ, सजबौ–क्रि. अ; स.—**१** मिलना, प्राप्त होना ।

उ०—**१** पछै औ भरम कांई तौ भूंडौ अर कांई भलौ । थारै जीवण में जकौ संजोग सजियौ उणनें गाजां-बाजां रै साथ बधाव ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ लोगां नै कंवर रै मांनण री इत्ती वेगी आस नीं ही । वांनै तौ जांणै सांप्रत भगवांन ई मिळग्या । जोग सजै जद यूं सजियां करै । औ तौ बाई रै करमां रौ परताप है ।—फुलवाड़ी

उ०—३ आ सोचनै कै अबै कदै ई अेड़ौ अणचींत्यौ जोग सजियौ तौ वौ अेड़ी कालाई नीं करैला ।—फुलवाड़ी

२ संभव होना, बन पड़ना ।

उ०—**१** दुनियां थपियां पछै ई चेला-गुरु रौ औ नातौ तौ आज पैं'ली कठै ई नीं जुड़ियौ व्हैला, अै नाता तो आपांरै जैड़ा काला मिनखां सूं सज आवै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ भलांई सोनां री ठौड़ रूपा रौ ई टकौ दै । जै रूपा रौ ई सज नीं आवै तौ तांबा रौ ई दौ ।—फुलवाड़ी

३ तैयार होना ।

उ०—**१** कंवर रौ आदेस व्हैतांई हांकरतां सिकार रौ सगळौ सराजांम सरतन सजण ढूकौ । हाथी घोड़ा माथै साज कसीजिया ।
—फुलवाड़ी

४ असर होना ।

उ०—**१** राजाजी रा दरबार में तौ उणरी अकल रौ कोई पार ई नीं हौ, पण इण डोकरी री गवाड़ी में तौ उण री अकल सूं हींग री गरज ई नीं सजी ।—फुलवाड़ी

५ होना ।

उ०—**१** पण इण सूं कांई व्है ! कंवर रै हाथां तोरण रौ जोग सजणौ आ इज तौ सबसूं लांठी खुसी री बात है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ औ तौ साचांणी दूध ई निकळियौ । जे कोइ लफंगौ व्हैतौ तौ कैंडोक माहेरौ सजतौ । आज तौ भगवांन नांमी विळू रह्यौ । दोयती रा भाग हा ।—फुलवाड़ी

उ०—३ निजरांणा रौ औ संजोग नीं सजतौ तौ म्हैं भलां परणी-जण री बात कद मांनती ! म्हारौ औ इज खण कै परणीजूंला तौ इण दाळद नांव रा मोट्यार ई नै, नींतरअकन कंवारी जूंण पूरी करूंला ।—फुलवाड़ी

६ चलना, निभना ।

उ०—कैबण लागा—यूं अनाप-सनाप खरचौ करियां आ माया कित्ता दिन सजैला ।—फुलवाड़ी

ज्यूं—घी बिनां सज जावै पण अन्न बिनां नीं सजै ।

७ पर्याप्त होना, चलना, उपयुक्त होना ।

ज्यूं—म्हांरै दौ मण बाजरी छः महीना सजै ।

८ कटिबद्ध होना, सुसज्जित होना ।

उ०—**१** सुण मेछ खत्री जुध काज सजै, रस रुद्रस हासक वीर रजै ।—रा. रू.

उ०—२ बलखी हिलबी बाबरी, रूसी तूसी रोद । अै ले अकबर आवियौ, सज ऊभा सीसोद ।—बां. दा.

उ०—३ तद वीकैजी रै साथ रां मांनी नहीं । तिणां पर कल करण साथ मारै सूं सज कंवर वीकोजी पर आयौ । अर कंवर वीकोजी साथ सारै सूं सज सांमा गया ।—द. दा.

९ तेज करना, तीक्ष्ण करना ।

उ०—अणियाळा नयण बांण अणियाळा, सजि कुंडळ खुरसांण सिरि । वळै बाढ दै सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियौ किरि ।
—वेलि

१० प्रत्यंचा पर तीर चढाना ।

११ प्रयोग करना, काम में लेना ।

उ०—सगपण ची सनस रुखमणि सन्निधि अण मारिवा तणौ आलोजि । ए अखियात जु आउधि आउध सजै रूकम हरि छेदै सोजि ।—वेलि

१२ चारजामा व अंबारी कसना (हाथी, घोड़ा, ऊंट) ।

उ०—**१** सज साकुर जर साज, कमरबंध जांन कससी । हुय उंतावळ हल्ल, आया जिण पंथ उससी ।—बख्तावर जी मोतीसर

उ०—२ चौधरी आंख्यां पाछी मींचली। उणै देख्यौ—एक बरात जाय री है। एक सज्योड़ै ऊंठ पर आगै बींद अर लारै पूनमौ नाई बैठौ है।—रातवासौ

उ०—३ रूपाळी लुगाई रो झालौ बिरथा गियौ तौ वा अेक नवौ चाळौ करचौ। सांयड बणनै मारग मैं चरण लागी। संज सजियोड़ी। पण माथै असवार नीं।—फुलवाड़ी

१३ धारण करना, पहनना।

उ०—१ सज्या सिणगार उतारसूं, करसूं भगवां भेस। थारै कारण वन वन डोलूं, कर जोगण रो भेस।—मीरां

उ०—२ बिजै तू खजै आहवां बाह बीसां, सजै तू हियै हार झूझार सीसां। तुही हाथ लै सूल सादूळ हक्कै, तणां मात्र तू सुक्र रा छात्र तक्कै।—मे. म.

१४ एक शरीर को विद्यमान रखते हुए वैसे ही अधिक शरीर बनाना या धारण करना।

उ०—जिण दांणव जीतिया, महा दारूण रण मंड्या। सजि नौकोड़ सरीर, वीर रणधीर विहंड्या।—मे. म.

१५ अन्य प्राणियों के रूप धारण करना, रूप परिवर्तित करना।

उ०—काढ्यौ तुरकां कैद सूं सेखां री कर साय। संभळि वाळौ रूप सज, पूंगळ दीधी पुगाय।—अग्यात

१६ रक्षार्थ धारण करना।

१७ करना।

उ०—१ परगट धर सधर मांनसर ऊपर, सगत सकळ मिल रास सजै। जिय सगत सकळ मिळ रास सजै।—अग्यात

उ०—२ छजंत भूपति छमा सलांम भूपति सजै। कपूर पांन दांन करू राखि भूपति रजै।—सू. प्र.

१८ युद्धार्थ किले को सजाना, तैयार करना।

उ०—१ नरै ही कोट नुं पोळ रै कींवाड़ कराया गढ नुं सजियौ नैं नरौ राव सातल रै खोळै थौ सु सातल रै नांवै सातळमेर नवौ गढ उठै वसायौ छै।—नैणसी

उ०—२ पछै पातसा कनै सीख मांग किलांणदास जी सीवांणै आया नैं किलांणदास जी किलौ सजोयौ।—नैणसी

१९ वस चलना।

२० सफल होना।

२१ शोभित होना।

उ०—चरणै चांमीकर तणा चंदांगणि, सजनूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराइत, कमळ तणा मकरंद कजि।—वेलि

२२ पूरा होना, पूर्ण होना।

ज्यूं—काम सजणौ, हाजरी सजणी।

२३ जाना, गमन करना।

२४ देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)

उ०—कहूं वाह थूं मत करै, सजियौ म्हैं औ सूर। वाह हुवा सूं विगड़सी, 'जींदा' आज जरूर।—पा. प्र.

सजणहार, हारौ (हारी), सजणियौ—वि०।

सजिओड़ौ सजियोड़ौ, सज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सजीजणौ, सजीजबौ—कर्म, भाव वा०।

संजणौ, संजबौ, सज्जणौ, सज्जबौ, सज्झणौ, सज्झबौ, सझणौ, सझबौ—रू० भे०।

सजतनौ—वि. [सं. स+यत्न] सुरक्षित।

(स्त्री. सजतनी)

सजधज—सं. स्त्री.—सुसज्जित होने का भाव, सजावट।

सजन—देखो 'सज्जण' (रू. भे.) (अनेका; डिं. को)

उ०—१ पैंली कीन्ही प्रीत भूल गयौ वाल्हा सजन। मनमैं म्हांरै मीत, जीव बसै थूं जेठवा।—जेठवा

उ०—२ सत्यवाह मोकलावीय मनरंगि धनसागर पुर जोइ। सजन विहूणउं सहूइ सूनउं सुद्धि न पूछइ कोइ।—हीराणंद सूरि

उ०—३ चारा मिणतोड़ी सजनी चित चावै, तारा गिणतोड़ी रजनी बितवावै।—ऊ. का.

(स्त्री. सजनी)

सजनता—सं. स्त्री.—सज्जन होने की अवस्था या भाव।

उ०—१ गाळी ही मैं ग्यांन है, जो टुक अंग समाय। हरीया दुरजन कौ नहीं, सब सजनता थाय।—अनुभववांणी

उ०—२ ऊजळ घर आछापणौ, अरु सजनता अंग। इण सूं आढा आपनै, रयण 'खेत' घण रंग।—नारायणसिंह सांदू

रू. भे.—सज्जनता।

सजनी—सं. स्त्री. [सं.] सखी, सहेली।

सजप्पणौ, सजप्पबौ—देखो 'जपणौ, जपबौ' (रू. भे.)

उ०—नाग राग पेरियौ, प्रांण पैलां वसि थप्पै, दास हुकम पेरियौ, जास पति धरै सजप्पै।—रा. रू.

सजरा (रौ)—सं. पु. [अ. शजर:] १ वंश वृक्ष।

२ वृक्ष, पेड़।

३ पटवारी के खेतों का नक्शा।

सजळ, सजल—वि. [सं. स+ज्वलनम्] १ प्रकाशयुक्त, ज्योतियुक्त।

उ०—घर नीगुल दीवउ सजळ, छाजइ पुणग न माइ। मारू सूती नींद्र भरि, साल्ह जगाई आइ।—ढो. मा.

२ जाज्वल्यमान, तेजपूर्ण।

उ०—सुर नवाब दर मझ्झि, जाब बोलिया अतारा। कळा प्रांण काबली, जांण सजळा अंगारा।—रा. रू.

[सं. सजल] ३ जलयुक्त।

४ आंसुओं से युक्त।

५ तरलता युक्त।

उ०—देस निवांणू सजळ जळ, मीठा बोला लोइ। मारू कांमण दिखणि धर, हरि दीयइ तउ होइ।—ढो. मा.

६ इज्जतदार।
७ देखो 'सुजळ' (रू. भे.)
८ देखो 'सज्जळ' (रू. भे.)
अल्पा; रू. भे.—सजळौ।

सजळाई–सं. स्त्री. [सं. स+जलम्=रा. प्र. आई] १ नमी, आर्द्रता।
२ जल की प्रचुरता।
उ०—जिण नखै 'चंद्रसरोवर' है तिणरी **सजळाई** हूं इण मैं घणां सांघणा गुलम तरोवर है।—र. हमीर

सजळौ - देखो 'सजळ' (अल्पा; रू. भे.)

सजव–वि. [सं. सजव:] १ वेगवाले, गतिमान, तीव्रगति वाले।
उ०—१ मणि वाहण साहण मुकटि, रीत **सजव** नव रूप। किया साज महाराज कजि, ऐसा बाज अनूप।—रा. रू.
उ०—२ जह दुसह पाळ जन सांमरथ, रथ खगेस मारुत **सजव**। सज मख सिहाय भंजण सुभुतज, भज रघुबर तर उदध भव।
—र. ज. प्र.
सं. पु.—१ गरुड़ पक्षी। (अ. मा.)
२ पक्षी। (अ. मा.)
३ देखो 'सजीव' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सजवना–सं. स्त्री.—सजने की क्रिया या भाव, तैयारी।

सजवाई-सं. स्त्री.—सुसज्जित करने की क्रिया।

सजवाणौ, सजवाबौ—देखो 'सजाणौ, सजाबौ' (रू. भे.)
सजवाणहार, हारौ (हारी), सजवाणियौ—वि०।
सजवायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सजवाईजणौ, सजवाईजबौ—कर्म वा०।

सजवायोड़ौ—देखो 'सजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सजवायोड़ी)

सजांण, सजांन–वि. [सं. स+फा. जान] १ जिसमें प्राण हो, प्राणयुक्त।
२ देखो 'सुजांन' (रू. भे.)

सजा–सं. स्त्री. [फा. सज़ा] १ किसी अपराध के कारण दिया जाने वाला दंड।
उ०—१ डावड़ी री बात सुणतां ई राजा तौ हाक्यौ-बाक्यौ रैग्यौ। रांणी री **सजा** दूजा जीव नें क्यूं मिळै।—फुलवाड़ी
उ०—२ वछिभद्र जी कृस्ण जी नै कहै छै। जु या अयोग्य बात करी। तिहि नै इसी **सजा** दीनी।—वेलि
२ कारावास, कैद।
उ०—विलूंब्यौ निधी नीर स्रीहाथ बांमै, पुरी मैं सकौ सीर हन्नोज पांमै। **सजा** हूं छुड़ायौ आई राव सेखौ, लाई पुत्र पित्रेस रौ लोप लेखौ।—मे. म.
क्रि. प्र.—करणी, दैणी, पाणी, भुगतणी, मिळणी, सुणाणी, होणी।
रू. भे.—सज्जा, सज्या, सझ्या।

सजाई–सं. स्त्री.—१ सामग्री।
उ०—इम चित मांही विचार नै सज सोळै सिणगार। जिण वांदण जावां भली, करै **सजाई** त्यार।—जयवांणी
२ तैयारी।
उ०—१ जइतळदे भावळदे ऊमादे नइ कमळादे रांणी। जमहर तणी करी **सजाई**, बात हीया मांहि आंणी।—कां. दे. प्र.
उ०—२ अनेकि परि जै पूजा करइं, मुगति जावा नी **सजाई** धरइं। रास भास सांमी गुण गायंति, पंचमगति निस्चय पामंति।
—वस्तिग
उ०—३ लेख लिखांणा आयस दीधां, फिरइ दिसि ऊपह्लाणा। करी **सजाई** पुहर पाछिलइ, तेड्या राउत रांणा।—कां. दे. प्र.
३ चारजामा कसने की क्रिया।
उ०—मोटा मालिक सवे तेडाव्या, साहण करउ **सजाई**। सोन-गिरासूं विग्रह मांडउ, मारूआडि मांहि जाई।—कां. दे. प्र.
४ हाथी, घोड़ा आदि के चारजामा के उपकरण।
उ०—तेरा बीसी रौ तेलियौ जाखोड़ौ, नव बीसी **सजाई**। म्हारौ गोर बंध लूंबाळौ।—लो. गी.
वि.—सुसज्जित।
रू. भे.—सझाई।

सजाड़ौ—देखो 'सझाड़ौ' (रू भे.)

सजाणौ, सजाबौ–क्रि. स.—१ किसी चीज या वस्तु को इस प्रकार लगाना या रखना की वह दिखने में सुंदर जान पड़े।
उ०—फाजल कोटड़ी बुहारी, गाभा **सजाया** अर सगळा बरतण भांडा भगाया।—दसदोख
२ रक्षार्थ धारण करना।
उ०—नाई भोळौ बणनै पूछ्यौ—तौ बापजी अेकण सागै इत्ता सस्तर क्यूं **सजाया**। मेळा में बेचण पधारौ कांई।—फुलवाड़ी
३ व्यवस्थित करना, यथाक्रम करना।
४ सुसज्जित करना।
५ तैयार करना।
उ०—१ लिगन्ना नारेळ लेर देर सावौ नकौ लीधौ, **सजायै** ठीकांणां बेहूं ब्याव का सांमांन।—बादरदांन दधवाड़ियौ
उ०—२ दिन उग्यौ, सिनांन-पांणी करचा अर बींन-बींनणी रै मौड़ बांध्या। हाजरिया-हवालदार एका तांगा तथा बैल्यां री कतार **सजाई**।—दसदोख
६ संवारना।
७ ऊंट, घोड़े आदि का चारजामा कसना।
सजाणहार, हारौ (हारी), सजाणियौ—वि०।
सजायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सजाईजणौ, सजाईजबौ—कर्म वा०।

सजवाणौ, सजवाबौ, सजावणौ, सजावबौ, सझाणौ, सझाबौ —रू० भे०।

सजाती, सजातीय–वि. [सं. सजाति, सजातीय] एक ही गोत्र या जाति का।

उ०—१ चंपल चंपक कोरक चोर कहउं जि न चींति, तउ परिहरियइं खटपदि सपदि **सजाती** प्रीति।—जयसेखर सूरि

उ०—२ पंली तीर आपरा **सजातीय** नूं जळ पीवतौ देख तिण ऊपर चालियौ।—वं. भा.

२ एक ही किस्म का।

३ एक ही जाति के माता-पिता से उत्पन्न।

सजायाफतौ, सजायाफ्तौ–सं. पु. [फा. सजायाफ्त] वह जो सजा भुगत चुका हो।

सजायाब–वि. [फा. सज़ायाब] १ दंडनीय।

२ जिसे कानून के अनुसार सजा मिल चुकी हो।

सजायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ सजाया हुआ, सुसज्जित किया हुआ. २ संवारा हुआ. ३ तैयार किया हुआ. ४ व्यवस्थित किया हुआ. ५ ऊँट घोड़े आदि का चारजामा कसा हुआ. ६ रक्षार्थ धारण किया हुआ।

(स्त्री. सजायोड़ी)

सजाव, सजावट–सं. स्त्री.—१ सजाने की क्रिया या भाव।

२ श्रृंगार।

उ०—नोटांरी गड्डी गैणां अर गिन्नी गाभांरै नीचै संदूकां में दिराया। **सजावट** री चीजां सिणगार पेटी अर तेल साबण जिसी सांमगरी रौ एक मोटौ बकसौ भरायौ।—दसदोख

३ तैयारी।

४ सजा हुआ होने की अवस्था या भाव।

रू. भे.—सझावट।

सजावणौ, सजावबौ—देखो 'सजाणौ, सजाबौ' (रू. भे.)

उ०—जाळ गळियां संच, जचावां उछव सावां। जन्मास्टमी परब सिंहासण मह्न **सजावां**।—दसदेव

सजावणहार, हारौ (हारी), सजावणियौ—वि०।

सजाविओड़ौ, सजावियोड़ौ, सजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सजावीजणौ, सजावीजबौ—कर्म वा०।

सजावन–सं. पु.—सजाने या सुरक्षित करने की क्रिया या भाव।

सजावार–वि.—दंडनीय, दंड का भागी।

उ०—१ तठै प्रथीराज जी मालम करी जौ हजरत आप सूं बेमुख है, सु **सजावार** करणौ जोग्य है।—द. दा.

उ०—२ तद कुंवर रायसिंह जी नूं कोटवाळी दे दीन्ही कही जैं, कोई अनीति करै तीनूं **सजावार** करि दै।—द. दा.

रू. भे.—सझावार, सझेवार।

सजावियोड़ौ—देखो 'सजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सजावियोड़ी)

सजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मिला हुआ, प्राप्त हुवा हुआ. २ संभव हुवा हुआ, बन पड़ा हुआ. ३ तैयार हुवा हुआ. ४ असर हुवा हुआ. ५ हुवा हुआ. ६ चला हुआ, निभा हुआ. ७ पर्याप्त हुवा हुआ, चला हुआ, उपयुक्त हुवा हुआ. ८ कटिबद्ध हुवा हुआ, सुसज्जित हुवा हुआ. ९ तेज किया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ. १० प्रत्यंचा पर तीर चढ़ाया हुआ. ११ प्रयोग में लिया हुआ, काम में लिया हुआ. १२ हाथी, घोड़े, ऊंट आदि पर चारजामा कसा हुआ. १३ शोभार्थ धारण किया हुआ. १४ धारण किया हुआ, पहना हुआ. १५ एक रूप को विद्यमान रखते हुए वैसे ही अनेक रूप बनाया हुआ, या धारण किया हुआ. १६ अन्य प्राणियों के रूप धारण किया हुआ, रूप परिवर्तित किया हुआ. १७ रक्षार्थ धारण किया हुआ. १८ किया हुआ. १९ युद्धार्थ कोट को तैयार किया हुआ, सजाया हुआ. २० बस चला हुआ. २१ सफल हुवा हुवा. २२ शोभित हुवा हुआ. २३ पूरा हुवा हुआ, पूर्ण हुवा हुआ।

२४ देखो 'साजियोड़ौ' (रू. भे.)

सजीत–वि.—विजय सहित, जीत युक्त, सविजय।

उ०—आया वसियां आपणी, ग्रीखम थई वतीत। गुणचाळौ लागौ वरस, चाळौ सरस **सजीत**।—रा. रू.

सजीप, सजीपौ–वि.—१ जीतने वाला, विजयी।

उ०—१ आपकरन्न 'पिराग' तण, पड़ियौ खाग बजाड़। सुतन **सजीपै** 'भोज' सम, जळ भाटीपै चाड।—रा. रू.

उ०—२ मुहतौ बळ लीधां दळ समीप, जोधांण हूंत जीवण **सजीप**।—रा. रू.

उ०—३ टमंकि तबल्ल नफेरिय टीप, जूंभाऊ त्रंबक वाज **सजीप**। —रा. रू.

सजीलौ–वि. (स्त्री. सजीली) १ चंचल, फुर्तीला।

उ०—१ **सजीला** भड़ां प्रांण जोडे सुहावै, बहे झंप होदां कटारां बुहावै। खगां जीतणा धावमें दांव खेल्है, मलंगे तड़ां माकड़ां पीठ मेल्है।—वं. भा.

उ०—२ हळंब काचतौ देहकौ माचतौ हदोहद, साचतौ रागवागां **सजीलौ**। आज री बार 'संभमाल' धन आचतौ, नाचतौ दियौ दिलदार नीलौ।—महादांन मेहड़ू

२ विलास प्रिय, कामुक।

उ०—परम **सजीलौ** पीव नैं, निपट रसीली नार। सहियां सराहे साथ की, की जोड़ी किरतार।—अग्यात

३ सुंदर, सुडौल।

४ धारण करने वाला।

उ०—सील **सजीलौ** रूप रसीलौ छैल छबीलौ छावै नील जलज तन छटा निराली, लख, लख कांम लजावै रे।—गी. रां.

५ छैल छबीला, रसिक।

६ सुन्दर, आकर्षक ।

उ०—स्वस्ति स्री चंद्रगढ सुभ स्थांन अनेक ओपमा लाइक व्राजमांन प्यारी **सजीली**, लजीली, फबीली, छबीली, नसीली, रसीली, चकीली ककीली, अंगीली, रंगीली........।—र. हमीर

सजीव-वि. [सं.] १ जिसमें जीव हो, जीवयुक्त।

२ फुर्तीला, चंचल ।

३ ओजस्वी ।

४ पुनर्जीवित ।

उ०—१ इण रीति राजा बडाह रा अंग रौ समस्त पळ खाय तिण नूं पाछौ **सजीव** करि भगवति वर लेण रौ हुकम दीधौ ।

—वं. भा.

उ०—२ कळिजुग रा समय में प्रांण कढियां पछै **सजीव** होबा रौ सुभचित का मत में तौ असंभव ही आवै । —वं. भा.

सं. पु.—१ प्राणी, जीवधारी व्यक्ति ।

[सं. सजव] २ घोड़ा, अश्व । (अ. मा.)

रू. भे.—सजव, सुजीव ।

३ देखो 'संजीव' (रू. भे.)

रू. भे.—सरजीव, सरजीवत ।

सजीवण-वि.—जीवित, प्राणयुक्त ।

उ०—१ जद थूं जांणै वाली माटी, चीर काळजौ सूंपे । प्रांण **सजीवण** करै मिनख रा, झुक-झुक पगल्या चूंपै ।—चेतमांनखो

उ०—२ अमर लोक सूं अम्रत लाग सतगुरु पाय दीया । भया **सजीवण** संसय भागा, अतक जीव गीया ।

— स्री हरिरांम जी महाराज

सं. पु.—देखो 'संजीवन' (रू. भे.)

रू. भे.—सजीवन, सरजीवण ।

सजीवणमंत्र-सं. पु. [सं. संजीवन+मंत्र] १ मृत मनुष्य को जिलाने वाला एक मंत्र ।

२ मोक्ष देने वाला मंत्र ।

उ०—रांम **सजीवणमंत्र** रट, बयणां रांम बिचार । स्रवणां हर गुण सांभळै, नेणां रांम निहार ।—ह. र.

रू. भे.—सजीवनमंत्र ।

सजीवित-वि.—जीवित ।

उ०—कथ सुण दुजन गिणै तिल काचौ, सूर धरम जांणै अप साचौ । वात **सजीवत** करण वताए, आप करण सनमुधि कजि आए ।—सू. प्र.

सजीवता-सं. स्त्री. —सजीव होने की अवस्था या भाव ।

सजीवन-वि.—१ नहीं मरने वाला, अमर ।

२ जीवित करने वाला ।

उ०—पाहाडै 'सादूळ' भाजि चढियौ भिडवायौ । चीतौडौ चतुरंग, 'भीम' दळ मेलै आयौ । बाळि बोलै सीसोद, मूंछ वळ घाळै मच्छरि । अभै-दांन आपियौ, आव पैलालि विनौ करि । सोभाग **सजीवन** ओखधी, तिण कारण तुडि बत्थ भरि । अजमेर उपाडिस काइ अनड, पवै द्रोण हणमंत परि ।—गु. रू. बं.

सं. पु.—१ मुक्ति, मोक्ष ।

२ जीवित, जिन्दा ।

उ०—दादू नांम निमित्त रांमहि भजै, भक्ति निमित्त भज सोइ । सेवा निमित्त सांई भजै, सदा **सजीवन** होई ।—दादूबांणी

३ देखो 'संजीवन' (रू. भे.) (अ. मा.)

४ देखो 'सजीवण' (रू. भे.)

सजीवनबूंटी, सजीवन-मूळ, सजीवनी—देखो 'संजीवणी' (३) (अ. मा.)

सजीवन मंत्र—देखो 'सजीवणमंत्र' (रू. भे.)

सजीवन्न—देखो 'संजीवन' (रू. भे.)

उ०—लुटै साथ जांणै अमीद्वार लीधौ, किणौ वेणनादं **सजीवन्न** कीधौ ।—ना. द.

सजुजौ, सजूंझौ-वि. [सं. स+युद्ध] १ लड़ने वाला, जूझने वाला ।

उ०—१ खाग **सजूंझा** 'प्राग' जौ, 'अमरौ' नाहरखांन । दिन दिन खंभै साह दळ, भुज थंभै असमांन ।—रा. रू.

उ०—२ कळि वणियां 'मुकनो' कचरावत, रिण रावतां **सजुझौ** रावत ।—रा. रू.

२ वीर, योद्धा ।

उ०—१ हांम घणी हरदास रै जोड़ै रांम' दुझल्ल । 'हरी' **सजूंझा** माड़ पह, सूजा दुरजणसल्ल ।—रा. रू.

उ०—२ पिड़ जुड़वा भड़ पांच सौ, रहिया अडिग अरेस । कमंध **सजूझा** कांम छळ, दूजा आया देस ।—रा. रू.

सजूटणौ, सजूटबौ—देखो 'जूटणौ' जूटबौ' (रू. भे.)

उ०—उमगै रढ़ाळा छूटै सोहड़ां काकुस्थवाळा, अताळा **सजूटै** तेण सांमूहां अडील ।—र. रू.

सजूटणहार, हारौ हारी), सजूटणियौ—वि० ।

सजूटिओड़ौ, सजूटियोड़ौ, सजूट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सजूटीजणौ, सजूटीजबौ—भाव वा० ।

सजूटिओड़ौ—देखो 'जूटियौड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सजूटियोडी)

सजूद-सं. स्त्री. पु. [फा.] विनय, प्रार्थना ।

उ०—मौजूद खबर माबूद खबर अरवाह खबर वजूद । मकांम चै चीज हस्त दादनी **सजूद** ।—दादूबांणी

सजेत-वि.—१ जीवित ।

उ०—सिध सहत सकल सिंधी समेत, सांमद्र माह न्हाखूं **सजेत** ।

—सि. सु. रू.

२ विजयपूर्वक ।

सजोड़, सजोड़ौ-वि.—१ सदृश, समान ।

उ०—१ सुत जैदेव **सजोड़**, खळां रिणछोड़ अभायौ । अंग स्रोण

द्रोण किर भारथ ग्रायौ।—रा. रू.
उ०—२ जैतहथां 'जैता' हरा, सांम्हा 'जैत' सजोड़। पूगा हाथी खांन रे, देता कुंत धमोड़।—रा. रू.
२ प्रबल।
उ०—बूंदी ऊपर हल्लियौ, हाडौ दुरजणसल्ल। दुंद सजोड़ अरोड़ दळ, संग राठौड़ दुभल्ल।—रा. रू.
३ साथ, पास।
उ०—भुंग्र सजोड़ै दीपै, वांकड़ी कबांण नै जीपै हो। मांहो मांहि न छीपै, ते भाल विसाल समीपै हो।—वि. कु.
४ जोड़े सहित।
उ०—घणां भीलां अमल कीयौ छै। तिसै सजोड़ै जखड़ौ आवतौ दीठौ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात
उ०—२ हिवै बेहूं सजोड़ै निरभै थकां घोड़ा खड़ियां जायै छै। तरै चावड़ी नै कह्यौ, डावी जीमणी घास मांहै निजर राखता जावौ।—जगदेव पंवार री बात
५ हमउम्र, समवयस्क।
उ०—पुरी अवध परवेस सजोड़ा साथियां। चमर करै चोफेर हलै हाथियां।—र. रू.
सं. पु.—दम्पत्ति।
उ०—परगत इम आत चहुं परणीजै, मांण किता चा मारिया। डांणां हूंत सजोड़ा डेरा, पाछा बींद पधारिया।—र. रू.
सजोड़णौ, सजोड़बौ—देखो 'जोड़णौ, जोड़बौ' (रू. भे.)
उ०—करि सलांम सजोड़ि कर, इम बोलिया स वजीर। हुकम माफक होवसी, वरियांम हित चित वीर।—सू. प्र.
सजोड़णहार, हारौ (हारी), सजोड़णियौ—वि०।
सजोड़िग्रोड़ौ, सजोड़ियोड़ौ, सजोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सजोड़ीजणौ, सजोड़ीजबौ—कर्म वा०।
सजोड़ियोड़ौ—देखो 'जोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री सजोड़ियोड़ी)
सजोणौ, सजोबौ—देखो 'संजोणौ, संजोबौ' (रू. भे.)
उ०—करणी रफड-रफड मल-मल न्हायौ-धोयौ अर मिळणै खातर मन री दीयौ सजोयौ।—दसदोख
सजोणहार, हारौ (हारी), सजोणियौ—वि०।
सजोयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सजोईजणौ, सजोईजबौ—कर्म वा०।
सजोत-सं. स्त्री—देखो 'साजोत' (रू. भे.) (ग्र. मा.)
सजोम-वि.—जोशपूर्ण, जोशयुक्त।
उ०—१ अड़ै भुज बोम सजोम अपार, खड़ै भड़ धोम चखासु तुसार।—पे. रू.
उ०—२ अड़ै सिर बोम सजोम अरोड़, रिमां सूं आपड़ियौ राठौड़। —गो. रू.
रू. भे.—साजोम।
सजोयोड़ौ—देखो 'संजोयोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सजोयोड़ी)
सजोर, सजोरौ-वि. (स्त्री. सजोरी) १ बलवान, शक्तिशाली।
उ०—१ पड़दल खां असुर गह पूरै, गयौ सिवांणै साथ गरूरै। और वळे नाहर उतपाती, महा सजोर खगै मेवाती।—रा. रू.
उ०—२ 'जूझावत' 'सगरांम' सजोरौ, तिसड़ोई 'भगवांन' सतोरौ। 'तेजौ' 'मुकन' महाबळ तैसा, अरि दळ भांजण प्रांण अनैसा।
—रा. रू.
२ जबरदस्त, जोरदार।
उ०—१ हवै कि हाक हक्कयं, तवै क्रतंत तक्कियं। धड़ै अनंत धारयं, सजोर घाव सारियं।—रा. रू.
उ०—२ जाजळी फौज मुगळी सजोर, कर दिली सिलीं दस्तूर कोर। इम हले खेत सनमुख असाध, विख नदी उज्जली हूंत बाध।—वि. स.
३ असर डालने वाली, प्रभावशाली।
ज्यूं—छंद सजोरा है, कविता सजोरी है।
सजोवणौ, सजोवबौ—देखो 'संजोवणौ, संजोवबौ' (रू. भे.)
सजोवणहार, हारौ (हारी), सजोवणियौ—वि०।
सजोविग्रोड़ौ, सजोवियोड़ौ, सजोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सजोवीजणौ, सजोवीजबौ—कर्म वा०।
सजोवियोड़ौ—देखो 'संजोयोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सजोवियोड़ी)
सजोस-वि.—जोशयुक्त, जोशीला।
उ०—१ समड़ै मुड़ै मुड़ै समड़ावै, असुर सजोस रोस उफणावै।
—रा. रू.
उ०—२ जिण पेख जवन सजोस, सुज गयौ तजि गढ सोस।
—रा. रू.
उ०—३ जिण जिण सथांन फौजां सजोस, सुण खबर थया पण विण सरोस।—रा. रू.
रू. भे.—सजोसौ।
सजोसणियौ-वि.—कवचधारी।
उ०—आगै मिरजै रा असवार सजोसणिया होइ अर ऊभा रहिया छै।—द. वि.
सजोसौ—देखो 'सजोस' (रू. भे.)
उ०—१ ऊहड़ भड़ गढ ऊपरां, जोड़ 'हरी' वड जांण। मांनि सजोसौ मेलियौ, 'अभै' भरोसो आंण।—रा. रू.
उ०—२ जीवण हरनाथौत सजोसौ, आसुर व्याधि हरण किर ग्रोसौ।—रा. रू.
सज्झगीस—देखो 'जग्गीस' (रू. भे.)

उ०—सीसोद कमधज सज्जगीस, आरांण चडै किरि त्रिपुर ईस।
—गु. रू. बं.

सज्ज–वि. [सं.] १ तैयार।
२ सम्भाला हुआ।
३ संवारा हुआ।
४ हथियार आदि से लैस।

सज्जण–सं. पु. [सं. सज्जन] १ भला व शरीफ मनुष्य, सज्जन।
२ कुलीन वर्ग का व्यक्ति।
३ स्वजन, बंधु।
उ०—१ तप तेज परख हिंदू तुरक, सदा हरक मन सज्जणां। कोमळ किसोर तौ ही कमंध, दुति कठोर उर दुज्जणां।—रा. रू.
उ०—२ तर मंजर फळ माळा तोरण, सोहै द्वार मेळ अत सज्जण।
—रा. रू.
उ०—३ जुरा झंप जोवन खिसै, घटै ज नवलौ नेह। अेक दिहाड़ै सज्जणां, जम करमी जुथ अेह।—अग्यात
उ०—४ वारू दुरजण ऊपरां, सौ सज्जण की भेंट। रजनी रा मेळा किया, विधि का अच्छर मेट।—प्रथ्वीराज राठौड़
४ पति, प्रियतम।
उ०—१ हूं बळिहारी सज्जणां, सज्जण मौ बळिहार। हूं सज्जण पग पांनही, सज्जण मौ गळहार।—ढो. मा.
उ०—२ जिण दिस सज्जण थै वसौ, सोही बाजै बाव। थां लागां मुझ लागसी, सोही लाखपसाव।—ढो. मा.
५ प्रिय, प्रेमी।
६ मित्र, दोस्त।
७ हितैषी, शुभचिंतक।
८ उत्तम, श्रेष्ठ।
९ देखो 'सजण' (रू. भे.) (डिं. को.)
रू. भे.—संजण, सजन, सज्जन, साजण, साजन, सुजन।
अल्पा, रू. भे.—सज्जणियौ, साजणियौ, साजनियौ

सज्जणियौ -देखो 'सज्जण' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—सज्जणिया वउळाइ कइ, मंदिर बइठी आइ। मंदिर काळउ नाग जिउ, हेलउ दै दै खाइ।—ढो. मा.

सज्जणौ, सज्जबौ—१ देखो 'सजणौ, सजबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हाथ कढतां ही निद्रा निवारी सस्त्रादिक संगर री सांमग्री में सज्ज हौ।—वं. भा.
उ०—२ निज आखे किव 'किसन' निरूपण, सुणौ गाहा गुण दोस सुलछण। सात चतुरकळ अंत गुरु सज्ज, देह छठे थळ जगण तथा दुज।—र. ज. प्र.
उ०—३ ज्यांरा सोवन थाल भलांई वज्जिया। 'पातल' जनम पर्खेत, सुमोरत सज्जिया।—प्र. प्र.
उ०—४ पुव्वहु सुरजन लगै पठावन, रतन भूप न गयै रढरांवन। करि बळ सज्ज मरन स्वीकृत किय, अटक गमन तन मन करि उज्झिय।—वं. भा.
उ०—५ भगैं भाळ सिंदूर ज्यौं ज्वाळ झाळा, मुद्राळी गळै हिंडुळै मुंडमाळा। फुजां भांमणा कंकणां सज्ज कीधां, लखै सूळ डैरू खड्गखप्र लीधां।—मे. म.
उ०—६ कबहुं करैं न अटक उल्लंघन, साह दाग न धरैं हय संघन। बंब मुख्य तोरन लग बज्जैं, अज्ज अनुगव्है संग न सज्जैं।
—वं. भा.
उ०—७ दुद्दुत्तणि डोह्लऊ कूड कलहि जण झुझि गज्जइ। पुरुस वेसि गइंवरि चडई सुहड जेम मनि समरू सज्जइ।
—सालिभद्र सूरि
उ०—८ गंगदेव रै खुरसांण खेत री अति बेग बाजी सुणियौ जिसड़ौ ही तुरंग सज्ज कराइ कुमार एकल ही असवार आखेट रौ व्याज करि........।—वं. भा.
२ देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)
सज्जणहार, हारौ (हारी), सज्जणियौ—वि०।
सज्जिअोड़ौ, सज्जियोड़ौ, सज्ज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सज्जीजणौ सज्जीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सज्जन—देखो 'सज्जण' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—१ गाळ न ऊठै गूमड़ौ, ऊठै झाळ अकत्थ। जिण नूं सज्जन बेंण जळ, सांत करण समरत्थ।—बां. दा.
उ०—२ बीठू सज्जन मन बस्या, जहं सूं लाग्यौ चित्त। सो ही घड़ी सुकारथी, जाय मिळै जै मित्त।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—३ तद उण कही बात सांची पण आंपां सज्जन तौ आज हुवा पर घर में आइयौ जणां किण रौ विस्वास भरोसौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ हा हा दुखदाई छपना हतियारा, सज्जन सुखदाई सावळ सथियारा।—ऊ. का.

सज्जनता, सज्जनताई—देखो 'सजनता' (रू. भे.)

सज्जनौ–सं. पु.—किसी नायक या सरदार के चढ़ने का हाथी।

सज्जळ–सं. पु.—१ हाथी, हस्ती।
उ०—कत्थ्या घण सज्जळ छज्जळ कांन, सिरगिर कज्जळ कूट समांन। ससूदित साथ समाकृत सुंड, दंतूसळ मूसळ रूप दुरंड।
—मे. म.
२ देखो 'सजळ' (रू. भे.)

सज्जा—१ देखो 'सय्या' (रू. भे.)
२ देखो 'सजा' (रू. भे.)

सज्जादानसीन–सं. पु. [सं. सज्जादा+फा. नशीन] वह जो किसी पीर या फकीर की गद्दी पर बैठा हो।

सज्जादी, सज्जादौ–सं. पु. [अ. सज्जादः] १ मुसलमानों द्वारा नमाज पढते समय बिछाने का कपड़ा, मुसल्ला।

२ किसी पीर या फकीर की गद्दी।

सज्जाय—देखो 'सभाय' (रू. भे.)

सज्जित-सं. पु.—युद्ध के लिए सजा हाथी। (डिं. को.)

वि.—१ सुशोभित।

२ आवश्यक वस्तुओं से युक्त।

३ तैयारी।

४ कटिबद्ध।

५ अलंकृत।

सज्जियोड़ौ—१ देखो 'सजियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'साजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सज्जियोड़ी)

सज्जीखार-सं. पु.—सफेदी लिए भूरे रंग का एक प्रकार का प्रसिद्ध क्षार, सज्जी।

सज्जीभूत-वि. [सं.] कटिबद्ध, तैयार।

उ०—१ अठी सूं म्हैं आवां जरै ही उठी सूं थे सज्जिभूत होय सांभळि आवौ।—वं. भा.

उ०—२ राउत चडीया सनाह लीधा किस्या किस्या सनाह जहर-जीण जीवणसाल जीवरखी अंगरखी करांगी वज्रांगी लोहबद्ध लुडि समस्त सनांह लीधा सज्जीभूत हुआ।—कां. दे. प्र.

सज्झणौ, सज्झबौ—१ देखो 'सजणौ, सजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साह बइठा सोहिया सभा मसंदी सज्झ। चंद दिपंदा वेखिया, जांण नखत्रां मज्झ।—गु. रू. बं.

उ०—२ 'सूरउत' सुकर करिमाळ सज्झि, मुळकियौ मछरि घण रोस मज्झि।—गु. रू. बं.

२ देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)

सज्झणहार, हारौ (हारी), सज्झणियौ—वि०।

सज्झिओड़ौ, सज्झियोड़ो, सज्झ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सज्झीजणौ, सज्झीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सज्झियोड़ौ—१ देखो 'सजियोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'साजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सज्झियोड़ी)

सज्य-वि.—सह्य, सहनीय।

उ०—सहियौ नह जैसिंघ दै, सज्य असज्य प्रताप। सबळां दळ रोकन सकै, दै कोकन तज दाप।—बां. दा.

सज्या—१ देखो 'सय्या' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी, नागेस सज्या क्रत सैन नांमी।—र. ज. प्र.

उ०—२ अति साच पतसाह अछांनै, खिण सज्या खिण तारत खांनै।—रा. रू.

२ देखो 'सजा' (रू. भे.)

उ०—समझ जाय तौ भलाई, नहीं तौ सज्या तौ पावै ही पावै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघोत री बात

सज्यास-सं. पु.—विश्वास, भरोसा।

उ०—१ महाराजा 'अजमाल', मेल कूरमां दिलासा। थया दाह मेटिया, आदि 'जैसाह' सज्यासा।—रा. रू.

उ०—२ नग हीर कनक निछरावळां ओपै पग जग आरती। पायौ सज्यास सगतीपुरां, परणायौ जोधांपती।—रा. रू.

सज्यासेसू-सं. पु. [सं. शेष+शय्या] १ ईश्वर, परमेश्वर। (नां. मा.)

२ विष्णु।

सझंड-सं. पु.—समूह, झुंड।

सझ-वि.—सज्जिभूत, कटिबद्ध। (डिं. को.)

सझण-सं. स्त्री. [सं. सज्ज] सेना को तैयार करने की क्रिया। (डिं. को.)

सझणौ, सझबौ—१ देखो 'सजणौ, सजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दुसमणां फौज ऊपरै सझतौ देख वीर स्त्री पती ने सरावे है।—वी. स. टी.

उ०—२ जगत छत्रदिस लिखै जबाबां, सझौ विमाह कि समर सताबां।—सू. प्र.

उ०—३ ऊगतां भांण 'अगजीत' रा, वेढक भड़ अरिघड़ वना। सांमुहा अया भारथ सझण, एक उतन रा ऊपना।—सू. प्र.

उ०—४ कोई वीर बाळक आपरै पिता रौ वैर लेण सारू सझियौ सौ उण बाळक वीर ने समझावै।—वी. स. टी.

उ०—५ सुंदरि दीठ स्रिंगार सोल सझि, मुरछा आय पड़े उपवन मझि।—सू. प्र.

उ०—६ दोनूं ठोड़ एकण जायगा हुवै तौ परगनौ सझ आवै।—नैणसी

उ०—७ ताहरां ईयै राजा सहर तौ उजाड़ कियौ अर कोट सझियौ।—नैणसी

उ०—८ सझिया पखराळ सझावट का, नखरा कुलटा कि बटा नटका। तरछी गति दीठ कटाक्ष तियां, मरमार बहादुर पीठ मियां।—मे. म.

२ देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे)

उ०—१ तठै सबळावत सूरतसींघ, सझै खळ दंगल मोहणसिंघ।—सू. प्र.

उ०—२ कंवर सझण थित दिल्ली केरी, फुरमायौ सुज वात न फेरी।—रा. रू.

सझा—देखो 'सजा' (रू. भे.)

उ०—१ असै चरित अनंत कै, कौ कह सकै अनंत। दुसटन कुं दीवी सझा, साहि करेवा संत।—गज-उद्धार

उ०—२ पहिली राजाजी कन्हा सझा दिराड़ी अर लोक देखतां वीच की छुडायौ।—द. वि.

सझाई—देखो 'सजाई' (रू. भे.)

उ०—सोमसी सांखलै सारी सझाई कीधी।

—वीरमदे सोनगरा री वात

सझाड़ौ-वि.—१ वह स्थान जहाँ घने वृक्ष हो।

उ०—भाखर निपट **सझाड़ौ** छै। थोहर बोर गूंदी गांगड़ी लोकस गूगळ निपट सझाड़ौ छै।—बां. दा. ख्यात

२ घना, गहरा।

३ अधिक, बहुत।

रू. भे.—संझाड़ौ; सजाड़ौ।

सझाणौ, सझाबौ—देखो 'सजाणौ, सजाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चढै लोक चल्लै मसीतां महल्लै, झरोखौ **सझायौ** उठी साह आयौ।—रा. रू.

उ०—२ सील सनाह सरीर **सझायौ** दयानंद सुभदाई।—ऊ. का.

सझाणहार, हारौ (हारी), **सझाणियौ**—वि०।

सझायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सझाईजणौ, सझाईजबौ—कर्म वा०।

सझाय-सं. स्त्री. [सं. स्वाध्याय] १ पढ़े हुए पाठ का पुनरपि चिन्तन व पठन करने की क्रिया।

उ०—जद स्वांमी जी पाछौ फुरमायौ पूंजनै खूणें ऊभा रहौ। इण रीतें उत्तराध्ययन री **सझाय** अनेक बार कीधी।—भि. द्र.

२ स्वाध्याय।

रू. भे.—सज्झाय।

सझायोड़ौ—देखो 'सजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सझायोड़ी)

सझावट—देखो 'सजावट' (रू. भे.)

उ०—सझिया पखराळ **सझावट** का नखरा कुलटा की बटा नटका।

—मे. म.

सझावार, सझैवार—देखो 'सजावार' (रू. भे.)

उ०—१ तद मुकनरांम अरज करी जौ मा'राज भाटी हजार तीन आदमी जबरदस्त छै जिणनूं फौज लै जाय **सझावार** जरूर करसूं पण खरच रौ बंदोबस्त कियौ चाहीजै।—द. दा.

उ०—२ सू इण दोनूं भायां मनसोभौ कियौ जौ राजा अनूपसिंघ जी अरु दलेल खां बेड़ो उठायर आया है, तिण सूं आपां इणां ऊपर हालौ, सु इणां नूं **सझैवार** कियां बिनां अपणा इस जिले में अमल हुवै नहीं।—द. दा.

सझोळौ-वि.—बहुत, अधिक।

उ०—लायौ जाय रोगहर लांगौ, पिलंग सहतौ सुण प्रबळ। देखे जाग रीछ कपि दोळा, दुसह **सझोळा** रांम दळ।—र. रू.

सझ्झडा—देखो 'सजड़' (रू. भे.)

उ०—वाजिया वेगडा त्रिक्ख भाजै थडा, ऊजडै **सझ्झडा** धूज प्रिथ्वी पुडा।—गु. रू. बं.

सझ्या—१ देखो 'सजा' (रू. भे.)

उ०—तद महाराज बिचारियौ कै इणनूं ज्यांन सूं मारां पण पातसाह जी री सुसरी छै, सूं क्यूंईक **सझ्या** तौ जरूर देणी।—द. दा.

२ देखो 'सय्या' (रू. भे.)

सट-सं. पु. [अं. शट] १ यात्रादि में भोजन साथ ले जाने के लिए धातु का बना कई खानों का डिब्बा विशेष।

[सं. षट] २ छः की संख्या।

३ खाडव जाति की एक राग। (संगीत)

४ जटा।

वि.—मूर्ख।

उ०—कम पोछां कायरां, ठहै **सट** ठीगा ठोळी। मैला घटा जवांन, तठै जिण सूरां टोळी।—पा. प्र.

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

उ०—जिण धांम नांम जंजाळ जै, सट मिट जाय संसाररा। तिण पर पाजां बंधियां, अै तिण नांमांतार रा।—डि. नां. मा.

२ देखो 'सटा' (रू. भे.)

सटक-सं. स्त्री.—१ सटकने की क्रिया या भाव।

२ पतली छड़ी, कोड़ा।

[सं. षटक] ३ छः की संख्या।

४ छः वस्तुओं का समूह।

क्रि. वि.—शीघ्र, फौरन, तुरन्त।

उ०—१ बाज खग झटक बेहुवै कटक विचाळा, विखम घटफूट सिर **सटक** बहीया। लोथ हूंता पड़ै तूट माथा लटक, रटक बज दहूं दळ अटक रहीया।—गिरवरदांन सांदू

उ०—२ धगधगती सगड़ी भरी, आणउ अति अंगार। मांहि मूंकउ मांनिनी, **सटक** देई सिणगार।—मा. कां. प्र.

उ०—३ परणी ने परहरै गेर सुत गोदी धारै। जोबन मद में जोर **सटक** सुरलोक सिधारै।—ऊ. का.

सटकणौ, सटकबौ-क्रि अ.—१ खिसक जाना, चंपत होना, हटना।

उ०—सुख संपति के सब कोई साथी बिपत परै सब **सटकै**।

—मीरां

२ कायरता दिखा कर भाग जाना।

उ०—भळकीयौ साबळां बीर बागां भिळै, जेण विरिया घरां बळण जोवै। कांमणी नहीं वा कहूं कुकांमणी, **सटकीया** कंथ रै कनै सोवै।—कायर रौ गीत

सटकणहार, हारौ (हारी), **सटकणियौ** - वि०।

सटकिओड़ौ, सटकियोड़ौ, सटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सटकीजणौ, सटकीजबौ—भाव वा०।

सटकरम—देखो 'खटकरम' (रू. भे.)

सटकरमौ-सं. पु. [सं. षटकर्मा] यजन, याजन आदि नियत कर्मों को करने वाला ब्राह्मण, कर्मनिष्ठ ब्राह्मण।

सटकळ-सं. पु.—एक पतला व छोटा सर्प जो उछल-उछल कर चलता

है। (शेखावाटी)

(मि. पिपोड़ी परड़)

सटकळा–सं. स्त्री. [स. षटकला] संगीत के ब्रह्मताल के चार भेदों में से एक।

सटक संपत्ति–सं. स्त्री.—छः प्रकार के कर्म—शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान।

सटकाणौ, सटकाबौ–क्रि. अ.—१ सट-सट शब्द करते हुए छड़ी या कोड़े से मारा जाना।

२ छड़ी, कोड़े आदि से पीटते समय सट-सट की ध्वनि उत्पन्न होना।

सटकाणहार, हारौ (हारी), सटकाणियौ – वि०।

सटकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सटकाईजणौ, सटकाईजबौ – भाव वा०।

सटकारणौ, सटकारबौ— रू० भे०।

सटकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ सट-सट शब्द करते हुए कोड़े या छड़ी से मारा हुआ. २ छड़ी, कोड़े आदि से मारते वक्त सट-सट की ध्वनि उत्पन्न हुवी हुई।

(स्त्री. सटकायोड़ी)

सटकार–सं. पु.—१ सटकाने से उत्पन्न ध्वनि।

२ सटकाने की क्रिया।

सटकारणौ, सटकारबौ—देखो 'सटकाणौ, सटकाबौ' (रू. भे.)

सटकारणहार, हारौ (हारी), सटकारणियौ—वि०।

सटकारिओड़ौ, सटकारियोड़ौ, सटकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सटकारीजणौ, सटकारीजबौ – भाव वा०।

सटकारियोड़ौ—देखो 'सटकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सटकारियोड़ी)

सटकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ खिसका हुआ, चंपत हुवा हुआ, हटा हुआ. २ डर कर भागा हुआ।

(स्त्री. सटकियोड़ी)

सटकै, सटक्कै, सटकै–क्रि. वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—१ माच क्रोध सटकै मुख मोड़ै, पटकै आच पसार। पुण गुण नाच कुवाच प्रकासै, नटकौ काच निहार।—ऊ का.

उ०—२ एक बोलै करड़ा बोल ए, खेद उपजाय सटकै दे खोल ए।
—जयवांणी

उ०—३ असवारै असवार अटक्कै, लल बल लुंबि लटक्कै। संभावै समसेर सटक्कै, तोड़ै तुंड तटक्कै हो।—वि. कु.

सटकोण–सं. पु. [सं. षटकोण] वह जिसके छः कोने हो।

सटकौ–सं. पु.—१ कुर्त्ता, कमीज आदि में बटनों की जगह सोने की जंजीर में लगाये जाने वाले 'स्वर्ण बटन'।

२ हुक्कै की निगाली के स्थान पर लगाई जाने वाली लम्बी नलिका।

३ अवसर, मौका।

सटचक्र–सं. पु. [सं. षटचक्र] कुंडलिनी के ऊपर पड़ने वाले छः चक्र (योग) अनाहत, आज्ञाचक्र, ब्रह्मरंध्र, मणिपुर, मूलाधार और स्वाधिस्ठान।

२ षड़यंत्र।

सटचरण–सं. पु. [सं.] भौंरा।

सटणौ, सटबौ–क्रि. अ.—१ दो वस्तुओं का इस प्रकार मिलना जिससे उसके पार्श्व आपस में लग जाय, चिपकना, सटना।

२ चिपकना, लगना।

३ मारपीट होना।

४ मैथुन करना।

सटणहार, हारौ (हारी), सटणियौ—वि०।

सटिओड़ौ, सटियोड़ौ, सट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सटीजणौ, सटीबजौ—भाव वा०।

सटताळ–सं. स्त्री. [सं. षटताल] आठ मात्राओं का मृदंग की ताल विशेष। (संगीत)

सटतिलाइगियारस, सटतिलाइग्यारस, सटतिलाएकादस, सटतिलाएकादसी–सं. स्त्री.—माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

रू. भे.—सठतिलाइगियारस, सठतिलाइग्यारस, सठतिलाएकादस, सठतिलाएकादसी।

सटपट–सं. स्त्री.—१ गुप्त मंत्रणा।

२ कान के समीप कही जाने वाली बात, कानाफूसी।

३ प्रसंग, सहवास।

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

सटपटाणौ, सटपटाबौ—देखो 'सिटपिटाणौ, सिटपिटाबौ' (रू. भे.)

सटपटाणहार, हारौ (हारी), सटपटाणियौ—वि०।

सटपटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सटपटाईजणौ, सटपटाईजबौ—भाव वा०।

सटपटायोड़ौ—देखो 'सिटपिटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सटपटायोड़ी)

सटपदप्रिय–सं. पु. यौ. [सं. षट्पदप्रिय] १ कमल।

२ नाग केसर का पौधा।

सटपितापुत्रक–सं. पु. [सं. षट्पितापुत्रक] संगीत के १२ मात्राओं के ताल का एक भेद।

सटमुख–सं. पु. [सं. षट्मुख] कार्तिकेय।

वि.—जिसके छः मुख हो, छः मुखों वाला।

सटरस–सं. पु. [सं. षट्रस] १ छः प्रकार के स्वाद या रस।

२ देखो 'सड़ज'।

सटराग–सं. पु.—संगीतशास्त्र के मुख्य छः राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक।

सटरिपु–सं. पु. [सं. षड्रिज] मनुष्य के छः विकार—काम, क्रोध, लोभ,

मोह, मद, मत्सर।

सटवटियौ–वि.—१ निर्लज्ज, बेशर्म।

२ कायर।

सटसास्त्र–सं. पु. [सं. षट्शास्त्र] हिन्दुओं के छः दर्शन—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा और उत्तरमीमांसा।

सटसास्त्री–वि. [सं. षट्शास्त्री] हिन्दुओं के छः शास्त्रों का ज्ञाता, पंडित।

सटांमण, सटांवण–सं. पु.—रोटी बेलते समय लोई पर लपेटने का वह सूखा आटा जिससे बेलन द्वारा रोटी फैलाने पर वह लोई या चकले पर न चिपके।

सटा–सं. स्त्री. [सं. शटा] १ शेर या घोड़े के गर्दन के बाल, अयाल।

उ०—१ **सटा** न मावै बाथ में, फलंग अटा गरकाब। पेख छटा सूकै पटा, सिंधुर घटा सताब।—बां. दा.

उ०—२ जाजुळी धाराळ नारसिंघ री **सटा रौ** जायौ, प्रळै काळ घटा री छटा रौ जायौ पूत। रिमांधू उथाळो चंडी रीस री रटा री जायौ; भालौ किनां ईस री जटा रौ जायौ भूत।

—सूरजमल मीसण

२ साधु-संन्यासियों के शिर के बाल। (डिं. को.)

३ बालों की चोटी।

४ देखो 'छटा' (रू. भे.)

उ०—लटा लूंब द्रुम बन लता, कुस **सटा** चहुंकोर। उदीपण भूखण अटा, घटा मोर घण घोर।—क. कु. बो.

रू. भे.—सट।

सटाक–क्रि. वि. [अनु.] शीघ्र, जल्दी।

सं. पु.—छड़ी या चाबुक से उत्पन्न शब्द या ध्वनि।

सटाणौ, सटाबौ–क्रि. स.—१ दो वस्तुओं को इस प्रकार मिलाना जिससे वह आपस में परस्पर मिल जाय, मिलाना, चिपकाना।

३ मार-पीट कराना।

४ चिपकाना, लगाना।

सटाणहार, हारौ (हारी), सटाणियौ—वि०।

सटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सटाईजणौ, सटाईजबौ—कर्म वा०।

सटायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चिपकाया हुआ, लगाया हुआ. २ मैथुन कराया हुआ. ३ मारपीट कराया हुआ. ४ दो वस्तुओं का इस प्रकार मिलाया हुआ होना कि वे आपस में मिल गई हों, मिलाया हुआ, चिपकाया हुआ।

(स्त्री. सटायोड़ी)

सटियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ दो वस्तुओं का इस प्रकार मिली हुई होना कि उनके पार्श्व आपस में मिल गये हों, चिपका हुआ, सटा हुआ। २ चिपका हुआ, लगा हुआ. ३ मैथुन या संभोग किया हुआ. ४ मारपीट हुवी हुई।

(स्त्री. सटियोड़ी)

सटीक–वि.—व्याख्या या टीका सहित।

सटीड़, सटीड़ौ–सं. पु. [अनु.] १ चोट, प्रहार।

उ०—किणी भाव नीं मांन्या तौ म्हैं गोफण रा **सटीड़** उडाया। दौ असवारां रै ढिगली व्हियां पछै अे रांगै आया।—फुलवाड़ी

२ प्रहार करते समय होने वाली ध्वनि विशेष।

सटै–क्रि. वि.—देखो 'साटै' (रू. भे.)

उ०—१ तेण दिन गाळियौ खगां बळ तोलियौ, बोलियौ साच ऊजवाळ वा बोल। पाळवा वचन सिर अमर राखै प्रथी, काळवी **सटै** वित वाळवा कोल।—गिरवरदांन सांदू

उ०—२ प्रांण **सटै** ही प्रीत, जुड़ती जो दीसै जसा। आदरि रूड़ि रीत, मति छोड़ै मतवंत तूं।—जसराज

उ०—३ ओथै तेरस ऊजळी, माह ऊजाळै पक्ख। ईदावत ईजत **सटै**, गौ वासटै, परक्ख।—रा. रू.

सट्टबाज–सं. पु.—जो सट्टा और भाव की तेजी मंदी के हिसाब से मौखिक व्यापार करता है।

सटोरियौ–सं. पु.—वह जो सट्टा खेलता हो और जो सट्टा खेलने का शौकीन हो।

सटौ, सट्टौ–सं. पु.—१ किसी कार्य या शर्तें पूरी करने के लिए दो पक्षों में हुआ अनुबन्ध विशेष।

२ एक प्रकार का कल्पित क्रय-विक्रय जिसमें लाभ-हानि निश्चित भाव के उतार-चढाव से होता है।

३ सौदा।

सट्ठ, सठ–वि. [सं. षठ] १ मूर्ख, बेवकूफ।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ **सठ** सनेह जीरण वसन, जतन करंतां जाय। चतर प्रीत रेसम लछा, घुळत घुळत घुळ जाय।—अग्यात

उ०—२ **सट्ठ** सभा मैं बैठतां, पत पंडित री जाय। एकण वाड़ै किम वड़ै, रोफ़ गधेड़ो गाय।—अग्यात

उ०—३ हरीया दुरमति **सठ** की, पिंड प्रांण लग होय। भावै स्यांणा बौह मिळौ, **सठ** न समझै कोय।—अनुभववांणी

२ पागल।

३ आलसी।

४ धूर्त, चालाक। (डिं. को.)

५ कपटी। (डिं. को.)

६ लुच्चा, बदमाश।

७ दुष्ट।

सं. पु.—१ साहित्य के पांच प्रकार के नायकों में से एक जो अपना अपराध छिपाने में चतुर हो।

२ वसुदेव व रोहिणी का एक पुत्र।

३ कश्यप व दनु के सौ पुत्रों में से एक।

४ एक राक्षस जिसके घर पर हनुमान ने लंकादहन के समय

छलांग मारी थी ।

५ राम की सेना के एक बंदर का नाम ।

६ श्वान, कुत्ता । (अ. मा.)

७ निस्तब्धता, मौन, शांति ।

८ पंच, मध्यस्थ ।

९ कलई, रांगा । (डिं. को.)

रू. भे.—संठ ।

सठता-सं. स्त्री.—१ धूर्तता, चालाकी ।

२ बदमाशी, लुच्चाई ।

३ मूर्खता, बेवकूफी ।

वि.—१ दुखद । * (डिं. को.)

उ०—सठता धूरतता सहित छंद रचै मद छाय । निपट लियां निरलजता, कुकवी जिको कहाय ।—बां. दा.

४ पागलपन ।

५ आलसीपन ।

सठतिलाइगियारस, सठतिलाइग्यारस, सठतिलाएकादस, सठतिलाएकादसी देखो 'सटतिलाएकादसी' (रू. भे.)

सठमठ-वि.—कृपण, कंजूस ।

उ०—चुरू आतसूं के झळपट जग्गे अथाह, दूसरे सठमठ राजूंकै हियै परदाह ।—सू. प्र.

सठवा-सं. स्त्री.—एक प्रकार की सोंठ, जिसमें तन्तु अधिक होते हैं ।

सठि—देखो 'साठ' (रू. भे.)

सठिक—देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

उ०—सठिक अकूंण कर चहू न सम्म, पै उरध-रेख जळहळ पदम्म ।—सू. प्र.

सठियाणौ, सठियाबौ-क्रि. अ.—१. '६० वर्ष की उम्र प्राप्त होना ।'

२. ६० वर्ष की उम्र के बाद बुद्धि का ह्रास होना ।

उ०—१ साठ बरसां पैली ई म्हनै थारी अकल तौ सठियाईजगी दीसै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ साठां पछै आंरी अकल अंगेई सठियायगी दीसै ।

—फुलवाड़ी

सठियाणहार, हारौ (हारी), सठियाणियौ—वि० ।

सठियायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सठियाईजणौ, सठियाईजबौ—भाव वा० ।

सठियायोड़ौ-भू. का. कृ.-१. ६० वर्ष की उम्र प्राप्त हुवा हुआ. २. ६० वर्ष की उम्र के बाद बुद्धि का ह्रास हुवा हुआ ।

(स्त्री. सठियायोड़ी)

सठौ-देखो 'सैंठौ' (रू. भे.)

उ०—नांनकड़ी नीमड़ली सठी डार, अति ऊंचा चढणै री ठोड़ न सांपजी ।—किसोरसिंह

(स्त्री. सठी)

सडंग—देखो 'सड़ंग' (रू. भे.)

सडंबर—देखो 'डंबर' (रू. भे.)

उ०—१ असमांण बांण आर्च लिया, सेन सडंबर सालळै । कोटांण कोटि कोअण कटक, आया दळ वद्दळ मिळै ।—गु. रू. बं.

उ०—२ सर सरिता बहु बाग सडंबर, मझि तिण सिंगी कांम चित्र मंदिर ।—सू. प्र.

उ०—३ रूड़ा अति रमणीक, भला हित वाहिक भमंर । काइम अनै कपूर, सहित सिणगार सडंबर ।—ल. पि.

सडगुण—देखो 'सड़गुण' (रू. भे.)

सडज—देखो 'सड़ज' (रू. भे.)

सडणौ, सडबौ—देखो 'सड़णौ, सड़बौ' (रू. भे.)

उ०—आकास धडहडइ, खोलउ खडहडइ, पंखि तडफडइ, वडा मांणस अडबडइ, कास्टखंड सडइ ।—व. स.

सडणहार हारौ (हारी), सडणियौ—वि० ।

सडिओड़ौ, सडियोड़ौ, सड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सडीजणौ, सडीजबौ—भाव वा० ।

सडदरसन—देखो 'खटदरसण' (रू. भे.)

सडरस—देखो 'खटरस' (रू. भे.)

सडवदन—देखो 'सड़वदन' (रू. भे.)

सडवरग—देखो 'सड़वरग' (रू. भे.)

सडविंदुतेल—देखो 'सड़विंदुतेल' (रू. भे.)

सडविकार—देखो सड़विकार' (रू. भे.)

सडागनी—देखो 'सड़ागनी' (रू. भे.)

सडानन—देखो 'सड़ानन' (रू. भे.)

सडुक-सं. पु.—श्वान, कुत्ता । (ह. नां. मा.)

सडौ—देखो 'सढौ' (रू. भे.)

सढांण—सन्नद्ध, कटिबद्ध, तैयार ।

उ०—काहल कलयल ढक्क बूक त्रंबक नीसांणा । तउ मेल्हीउ भगदत्ति राइ गजु करीउ सढांणा ।—सालिभद्र सूरि

सढौ, सढौ-सं. पु.—ऊंट । (डिं. को.)

रू. भे.—सड्ढौ, सढ्ढौ ।

अल्पा;—सांढियौ ।

२ देखो 'सड़ौ' (रू. भे.)

उ०—कूंभौ घोड़ै चढि नाठौ । पाछै चाचौ मेर चढियौ नै कह्यौ जांण न पावै । आगै गूजरी रौ एक तिण रै सढौ सबलौ ।

—राव रिणमल री बात

सढ्ढौ—१ देखो 'सढौ' (रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'सड़ौ' (रू. भे.)

सणंक-वि.—१ साफ, स्पष्ट ।

२ निश्चित ।

सं. स्त्री.—एक प्रकार की ध्वनि विशेष ।

४ बिल्कुल ।

उ०—१ थाट घोड़ां भड़ां ग्रांण हाजर ठहै, गढपति समजती घणां सरणा गहै। वैरहर ग्रणंक तज सणंक सुधा वहै, गयहर पागड़ै ग्राय नमीया रहै।—बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—२ वंका भड़ मुरधर विचै, विळैलळै तज वंक। 'पातल' ताय तपायनै, सीधा किया सणंक।—चिमनदांन रतनू

रू. भे.—सणक।

सणंकणौ, सणंकबौ—१ देखो 'संणक्कणौ, संणक्कबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

सणंकणहार, हारौ (हारी), सणंकणियौ—वि०।

सणंकिग्रोड़ौ, सणंकियोड़ौ, सणंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सणंकीजणौ सणंकीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सणंकियोड़ौ—देखो 'संणक्कियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सणंकियोड़ी)

सण–सं. पु.—१ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशों की रस्सियां बनती है। इसके बीज खाद एवं ग्रौषधि बनाने मे काम ग्राते है।

उ०—चन्नण नीरू वण चरै, वण नीरू सण खाय। ग्रेहर ढीलौ करहलौ, जित वरजूं तित जाय।—ग्रग्यात

२ सन की डोरी, सूतली।

३ सन का बना जाल।

रू. भे.—सिण, सिंण।

सणक–सं. स्त्री.—१ सहसा मन में उत्पन्न होने वाली कोई उमंग या भावना।

२ देखो 'सणंक' (रू. भे.)

रू. भे.—सनक, सिनक।

सणकणौ, सणकबौ—१ देखो 'संणक्कणौ, संणक्कबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

सणकणहार, हारौ (हारी), सणकणियौ—वि०।

सणकिग्रोड़ौ, सणकियोड़ौ, सणक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सणकीजणौ सणकीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सणकार, सणकारी, सणकारी–सं. स्त्री. [देशज] १ बैल, ऊंट, घोड़े ग्रादि पशुग्रों की राश या लगाम द्वारा उसे ग्रभिष्ट मार्ग या दिशा की ग्रोर चलाने के लिए दिया जाने वाला झटका।

२ इशारा, संकेत।

३ बैल, घोड़े ग्रादि पशुग्रों के सांस लेने से उत्पन्न ध्वनि।

रू. भे.—सनकारी।

ग्रल्पा;—सणकारौ, सणकारौ।

सणकारौ, सणकारौ—देखो 'सणकारी' (ग्रल्पा; रू भे.)

सणकारणौ, सणकारबौ–क्रि. स.—१ इशारा करना, संकेत करना।

उ०—कुंवर सुंदरदास ग्रपणै साथ सारै नूं सणकार कर घोड़ां चढ नै धावौ बोल्यौ।—भाटी सुंदरदास वीकमपुरी री वारता

२ नाक से ध्वनि करना।

उ०—सूतल नाथां सर नासां सणकारी, फुरणीं दूंबातां रासां फणकारी।—ऊ. का.

३ बैल, ऊंट ग्रादि सवारी योग्य पशुग्रों को रस्सी का झटका देकर मुड़ने, ठहरने, चलने ग्रादि का संकेत देना।

सणकारणहार, हारौ (हारी), सणकारणियौ—वि०।

सणकारिग्रोड़ौ, सणकारियोड़ौ, सणकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सणकारीजणौ, सणकारीजबौ—कर्म वा०।

सनकारणौ, सनकारबौ—रू० भे०।

सणकारियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ इशारा किया हुग्रा, संकेत किया हुग्रा. २ नाक से ध्वनि किया हुग्रा. ३ बैल, ऊंट ग्रादि सवारी योग्य पशुग्रों को रस्सी का झटका देकर मुड़ने, ठहरने, चलने ग्रादि का संकेत दिया हुग्रा।

(स्त्री. सणकारियोड़ी)

सणकावणौ, सणकावबौ–क्रि. ग्र.—साँस लेना।

उ०—सासा सणकावै नासां निरतावै, जीता मरिया जुग भिभरौ भररावै।—ऊ. का.

सणकावणहार, हारौ (हारी), सणकावणियौ—वि०।

सणकाविग्रोड़ौ, सणकावियोड़ौ, सणकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सणकावीजणौ, सणकावीजबौ—भाव वा०।

सणकावियोड़ौ–भू. का. कृ.—साँस लिया हुग्रा।

(स्त्री. सणकावियोड़ी)

सणकियोड़ौ—१ देखो 'संणक्कियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सणकियोड़ी)

सणकी–सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष। (व. स.)

वि.—मन की तरंग या मौज के ग्रनुसार कार्य करने वाला।

रू. भे.—सनकी, सिनकी।

सणगार—देखो 'स्रंगार' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—चुग रण खेत मेड़तै चौसर, लाल नगां जिम पोय लियौ। वर गिरजा सणगार न वणियौ। कंठ गिरजा चद्रहार कियौ।

—महेसदास कूंपावत रौ गीत

सणगारज–सं. पु—कामदेव। (डिं. को.)

सणगारणौ, सणगारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे.)

सणगारणहार, हारौ (हारी), सणगारणियौ—वि०।

सणगारिग्रोड़ौ, सणगारियोड़ौ, सणगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सणगारीजणौ, सणगारीजबौ—कर्म वा०।

सणगारदै—देखो 'सिणगारदै' (रू. भे.)

सणगाररस—देखो 'स्रंगाररस' (रू. भे.)

सणगारहाट–सं. स्त्री.—१ श्रृंगार का बाजार।

२ वेश्याओं का मुहल्ला।

सणगारियोड़ौ—देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सणगारियोड़ी)

सणणंकणौ, सणणंकबौ—क्रि. अ. [अनु.] सन सन की ध्वनि उत्पन्न होना।

उ०—१ **सणणंकै** खुरसांण, खाग धारां खणणंकै। रणणंकै रणराग, भलम पाखर झणणंकै।—वं. भा.

उ०—२ जिका **सणणंकि** भणणंकिय जेह, सुवा भड़भुम्मि हुआ धड़ सेह।—मे. म.

सणणंकणहार, हारौ (हारी), सणणंकणियौ—वि०।

सणणंकिओड़ो, सणणंकियोडो, सणणंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सणणंकीजणौ, सणणंकीजबौ—भाव वा०।

सणणंकियोड़ौ—भू. का. कृ.—सन-सन की ध्वनि उत्पन्न हुवी हुई।

(स्त्री. सणणंकियोड़ी)

सणण—सं. स्त्री. [अनु.] हवा आदि के तेज चलने से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—१ सौ राजकंवर नै पूछ्यां-ताछ्यां बिनाई वा **उडण-खटौळी** सीखण सारू भूवा रै अड़ी-अड़ पाखती बैठगी। भूवा तौ बिनां पांखां अर बिनां उडण खटौळै उडण वाळी दूती ही, सौ उडण खटौळा मैं बैठ्यां पछै कांई ढील। वा तौ **सणण सणण** करती ऊंची चडगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण आंख्यां खुलतां ई जकौ **रासौ** वौ आपरी निजरां देख्यौ तौ उणरी पूतळियां अेकण ठौड़ ई चिपगी। सांम हौ जठै ई ठमग्यौ। **सणण** करता रूंगता ऊभा व्हैगा। पाखती रा बेली नै सांयड ऊभी बगळ बगळ मठोठै।—फुलवाड़ी

सणणाटौ—स. पु.—देखो 'सन्नाटौ' (रू. भे.)

उ०—गोटमगोट दियौ गणणाटौ **सणणाटौ** समसाणं।—ऊ का.

सणणाट—देखो 'सणणाहट' (रू. भे.)

सणणाणौ, सणणाबौ—क्रि. अ. [अनु.] १ ध्वनि विशेष होना।

२ सनसनाना।

सणणाहट—सं. स्त्री. [अनु.] ध्वनि विशेष।

उ०—कोतक हारां कळळ अवर सुणजै नह आहट। **सणणाहट** चरखियां, वीर घंटां ठणणाहट।—सू. प्र.

रू. भे.—सणणाट।

सणपद—सं. पु.—पंञ्जे वाले जानवर, जैसे—सिंह, चीता, बन्दर, बिल्ली इत्यादि।

सणफ—सं. स्त्री.—वात विकार का दर्द विशेष।

सणमणौ—सं. पु.—१ रुग्ण, बीमार।

२ शून्य, जड़वत्।

सणमांण—देखो 'सनमांन' (रू. भे.)

उ०—जोग्यां-जत्यां ज्यूं निरमोही, कींरोही गुण-गाळ नीं, पण जगती तौ इसी स्यांणप अर उदारता रौ उळटौ **सणमांण** आखै।—दसदोख

सणसणाणौ, सणसणाबौ—क्रि. अ.—ध्वनि उत्पन्न होना।

सणसणाणहार, हारौ (हारी), सणसणाणियौ—वि०।

सणसणायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सणसणाईजणौ, सणसणाईजबौ—भाव वा०।

सणसणायोड़ौ—भू. का. कृ.—ध्वनि उत्पन्न हुवी हुई।

(स्त्री. सणसणायोड़ी)

सणसर—सं. स्त्री.—कानाफूसी।

उ०—कंस तणैइ घरि **क्रस्ण** चतुरभुज चालणहार। **सणसर** सांभळी सांमानइ रांमांनइ करइ विचार।—चतुरभुज

सणसूत्र—सं पु. [सं. शणसूत्र] श्राद्ध, तर्पण आदि कृत्यों के समय कनिष्ठिका की बगल वाली अंगुली में पहनने को कुश की बनी हुई पवित्री।

सणांइ, सणांई—देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

उ०—जांगी ढोल अणइं **सणांई**, रिण काहल रिण तूर। वाजा वाजइं अंबर गाजइं, खुर रजि छायौ सूर।—रुकमणी मंगळ

सणियौ—१ देखो 'सींणौ' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सिणतरौ' (रू. भे.)

उ०—**सणिया** काट भरूंटा काट्या **दोरौ दोरौ** खेत निनांण्यौ। टीडी उड जी ए खेत परायौ।—लो. गी.

सणीओ—स. पु.—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार वस्त्र आपइ, गुडीअ **सणीआं** कस्तूरीआ, प्रतापीआ, कुसंभीआ मोलीआ।—व. स.

२ देखो 'सिणतरौ' (अल्पा; रू. भे.)

सणु—सं. पु. [सं] एक भारतीय जनपद।

सतंग—सं. पु.—शरीर के सात अंग।

उ०—लोडा तो लाग्या पण गोडा टूटग्या। सूना हुयग्या, सित्या निसरगी अर **सतंगा** टूटग्या।—दसदोख

सत—सं. पु. [सं. सत्] १ ब्रह्मा, विरंचि।

उ०—**सत** सनंदन सुक सनक, नारद अवर असेस। ब्रह्म मारग जे ब्रह्मनु, तुंथी लहइ लवलेस।—मा. कां. प्र.

२ सत्य। (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ **सत** हरिचंद समांन, प्रगट दरियाव अथघपण। सुर तर आस सपूर, जांण पारस सेवक जण।—र. ज. प्र.

उ०—२ समंद हूंत किरि सोम सोम हूंता सिद्धांणह। **सत** हूंत किरि धरम, ध्रम्म हूंता किल्यांणह।—गु. रू. बं.

उ०—३ चोट लगी **सत** सबद की, खूल्हा ब्रह्म कपाट। मेवा सा सब जीत कै, वस्या नगर **वैराट**।—अनुभववांणी

३ सतीत्व, पातिव्रत्य।

उ०—१ **सत** छोडै सीता सती, जत लिछमण सूं जावै। महा-जोध हणमंत, कळा बळ हीण कहावै।—चौथो बीठू

उ०—२ सेठ उठा सूं बहीर व्हैती वगत अेक डंक भळै मारियौ—थारी सीता सतवती रै सत रौ भरम जित्ता दिन बणियौ रैवै उत्तोई सावळ है।—फुलवाड़ी

उ०—३ वौ री वौ रंग-रूप। वा री वा निजर। वा री वा बोली। तुरत समझणी कै धणी उणरै सत री परख करणी चावै।

—फुलवाड़ी

उ०—४ भतीजी कह्यौ—अै तौ परतख फूंफोजी। आपरा सत रा जोर सूं फुंफकारौई नीं करै। सांप री जूण मिळी सो वांरै हाथ री बात कोनीं।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—गमणौ, जाणौ, टूटणौ, राखणौ लूटणौ।

मुहा.—(१) सत छोडणौ=सतीत्व छोड़ना।

(२) सत राखणौ=सतीत्व रखना।

(३) सत लूटणौ=सतीत्व लूटना।

४ सती होने के कारण आने वाला जोश, उमंग व बल।

उ०—१ सूरातन सूरां चढै, सत सतियां सम होय। आडी धारां ऊतरै, गिणै अनळ नूं तोय।—बां. दा.

उ०—२ इण तरह कहि भूंडण अरबद सूं उतरी और विचारी—जै मोनूं तौ डाढाळै रौ साथ बार-बार मिळै नहीं, तींसूं इब ही हाल वींरौ साथ करणौ छै। जाती वेळा तौ च्यार घड़ी लागी थी, पण इब सत चढी अेक ही घड़ी मांही आय पहुंची। उठै सारा साथ रा रावजी रै पांतै बैठा छै। तद रजपूतां कही—रावजी भूंडण आई। रावजी कही—सावधांन रहौ, देखां भूंडण कासूं करै। तुरत घाव मतां घालौ। इतरै मैं भूंडण चाली सो जठै डाढाळा नूं दाग दियौ तीं ठांव आई। पाखती सूरजकुंड आई, स्नांन कियौ, सूरजनारायण नूं प्रणांम करि, आय उण चिता दोळी च्यार प्रदक्षिणा कर सूरजजी नूं मुख ऊंचौ कर अरघ देय कही—बार-बार डाढाळौ पति पाऊं। इतरी कहि चिता मांही गरक हुई। रावजी देखनै घणी प्रसंसा करणै लागिया।

—डाढाळा सूर री बात

क्रि. प्र.—आणौ, चढणौ।

५ स्त्री द्वारा पति या पुत्र की लाश लेकर चितारूढ होने की क्रिया या भाव, उसके साथ सती होने की क्रिया या भाव।

उ०—१ हे सखी देख म्हांरै बिनां एकलौ हीज रिण में सूतौ है पण सेझ री रीत नहीं छोडं छै सो अठै ही सेझ री रीत नहीं भूलौ और ओधां सूं कांम लियौ तौ सायत सुरग मैं अपछरा वरली तौ म्हांरै सोक होय जायला सो चाल सीस ले ताकीद सत कर हाजरी मैं जाऊं।—वी. स. टी.

उ०—२ ताहरा भोज लारै सेढू सती होवण आई। सत कियौ हुतौ।—देवजी बगड़ावत री बात

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ।

६ वात्सल्य, स्नेह।

उ०—थारी काली मासी रा अंतस में हालतांई इत्तौ सत है कै किणी मरियोड़ा टाबर नै खोळा में लेय मूंडै हांचळ लगावै तौ वौ उणी सायत पाछौ जीवतौ व्है जावै।—फुलवाड़ी

७ उदारता, दयालुता।

उ०—१ जस री गत अदभूत जका, सत धारियां सुहाय। नर जीवै नरलोक में, जस अमरापुर जाय।—बां. दा.

उ०—२ पीवता अमल तीजै पोहर, विरखा रित तीजै वरस। सत हीण घणा देखिस सुपह, सेरसिंघ जद संभरिस।—पहाड़खां आढौ

८ धैर्य, साहस, हिम्मत।

उ०—रांणा डूंगर सी गढ झालीयौ। मास ८ गढ घेरियौ। पछै डूंगरसी रौ सत छूटौ।—नैणसी

क्रि. प्र.—छूटणौ, राखणौ।

मुहा.—सत राखणौ=हिम्मत रखना।

सत छोडणौ=साहस छोड़ना।

१० किसी पदार्थ का सार तत्त्व। (अनेका.)

क्रि. प्र.—काढणौ, निकाळणौ।

११ नदी।

१२ धर्म। (अ. मा.)

१३ सतयुग।

१४ मार्ग, रास्ता। (ह. नां. मा.)

१५ तीन गुणों में से एक गुण, सतोगुण।

उ०—सत रज तम रस पांच रहत रस, ता रस सूं मन लागा।

—ह. पु. वां.

१६ जोश, उमंग।

१७ बल, शक्ति।

उ०—१ सत पराक्रम सूरमां, मन्न य हुआ उदमाद। रोस फुणिंदा रंढ त्रिया, हम्मीरां हठ वाद।—गु. रू. बं.

उ०—२ जा 'अगजीत' आंणीकै जो सत तेज लहै हग। पीठ पूठ ना फिरै, मेर माथै मंडे तम।—अ. वचनिका

उ०—३ पण साहरा पग घरां नै बहै नहीं साह रा सत खोळा होय गया। घरै आय सूतौ पण नींद नहीं आवै।

—पलक दरियाव री बात

१८ परब्रह्म।

उ०—अतिसय अगाध, ईस्वर अराध, सत सिवर सद्य, अपवरग अद्य। मंतव्य मांन, गंतव्य ग्यांन, वेश्क विधांन, धर देय ध्यांन।

—ऊ. का.

१९ किसी विशिष्ट गणनाक्रम वाली काल-गणना, संवत्।

उ०—ऊमर सत उगणीस मैं, बरस छनीसै बीच। फागण अथवा फरवरी, निरख्या सतगुरु नीच।—ऊ. का.

२० शौर्य, पराक्रम।

२१ वीरता, बहादुरी।

२२ ब्रह्म।
२३ धर्मात्मा पुरुष।
वि.—१ ठीक, सही, उचित, सच।
उ०—तद पातसाह जी हंस नै फुरमायौ—जो तुम अरज करी सौ सत है पण तुम दोय सकस कूं दीन में लियै सें हमारा दीन क्या वडा होयगा।—द. दा.
२ सज्जन, साधु।
३ दृढ, मजबूत।
उ०—बहरी अमंख हित पंख बळ, गहै कुलंक असंक गत। 'सोनंग' 'दुरंग' अकबर सहित, सझौ एम धर नेम सत।—रा. रू.
४ विद्यमान, उपस्थित।
५ असली, सत्य।
६ प्रतिष्ठित, सम्माननीय।
७ मनोहर, सुन्दर।
८ श्रेष्ठ, उत्तम।
उ०—सत कूर सनातन दोय सही, सत पंथ बहै सौ महंत सही।
—ऊ. का.
९ अमिट, स्थायी।
उ०—सत कूर सनातन दोय सही। सत पंथ वहै सो महंत सही।
—ऊ. का.
१० विद्वान, पंडित।
११ बुद्धिमान, चतुर।
१२ धीर, धैर्यवान।
१३ अटल, स्थिर।
१४ पवित्र, निष्पाप।
उ०—कटि तक पांणी जा कूद पड़ी, ढळतै सूरज री किरण जोव। कर पदम लियां देवै अरपण, सत भावां री मूरत पिरोय।
—सकुंतला
[सं. शत्] १५ सौ।
उ०—सिंधु परइ सत जोअणौं, खिवियां बीजळियांह। सुरहउ लोद्र महक्कियां, भीनी ठोवड़ियांह।—ढो. मा.
[सं. सप्त] १६ सात, सप्त। (डिं. को.)
उ०—सत बार जरासंध आगळ स्रीरंग, बिमहा टीकम दीध बग। मेलि घात मारै मधुसूदन, असुर घात नांखै अळग।
—रांणा सांगा रौ गीत
१७ पुण्यात्मा, धर्मात्मा।
उ०—मिटै दांन सनमांन, उरड़ रीझां आडंबर। मिटै लाड मांगणा, करम धरम सत क्यावर।—पहाड़खां आढौ
१८ संख्या की दृष्टि से बड़ा, अधिक।
१९ देखो 'सत्रु' (रू. भे.)
उ०—धमक धमचक मचे सोर गोळा धमक, वीर डक त्रंक वक तेण वेळा। साकुरां धमक सुरतांण तण सतां, सिर चमक आकास अक कहक चपळा।—अग्यात
२० देखो 'सत्य' (रू. भे.) (डिं. को.)
रू. भे.—सत्त।

सतअंगौ—सं. पु. [सं. शत+अंग:] १ रथ। (डिं. नां. मा.)
२ युद्ध का रथ।

सतअक्षी—सं. स्त्री. [सं. शताक्षी] १ देवी, दुर्गा।
२ रात्रि, रात।

सतक—सं. पु. [सं. शतक] १ सौ का समूह, शतक।
२ शताब्दी।
३ सौ श्लोकों का संग्रह।
वि.—सौ वाला।

सतकरम—स. पु. [सं. सत्कर्म] श्रेष्ठ कार्य, पुण्य कार्य।

सतकरमी—वि. [सं. सत्कर्मिन्] श्रेष्ठ और पुण्य कर्म करने वाला।

सतकार—देखो 'सत्कार' (रू. भे.)
उ०—१ भाव सहित तुमनै वहरावसी असनादिक चार आहार हो। वस्त्र पात्र वंदना भाव सूं, करसी पूजा सतकार हो।
—जयवांणी
उ०—२ दिल्लीस भी राजा, नवाब रहिया तिकां नूं बुलावण रा फुरमांण दिया। अर बडा सतकार रै साथ बुलाइ सारा ही आगरै एकत्र किया।—वं. भा.

सतकारणौ, सतकारबौ—क्रि. स. [सं. सत्कारणम्] १ आदर करना।
उ०—ते सवि हरि सतकारिय धारिय जिम धूमंत। तांइ त्रोडिय कमलिनी रयलि नीसंक भ्रमंत।—जयसेखर सूरि
२ स्वीकार करना, मंजूर करना।
उ०—जद उवै कहै जी थारी वंदना म्हैं सतकारी थांनै वंदणा रौ धरम होय चूकौ। कोई कहै जी कहिणौ कठै चाल्यौ है।
—भि. द्र.
४ इज्जत करना।
उ०—पिता पितामह थी प्रणत, लिखि सलेम जयलाह। कलह जई सतकारिया, पटा दिवाइ सिपाह।—वं. भा.

सतकाळी—देखो 'सातकाळी' (रू. भे.)

सतकुंभ—सं. पु. [सं. शत+कुम्भ] १ एक पर्वत विशेष जहाँ सोना पाया जाता है।
[सं. शतकुम्भम्] २ स्वर्ण, सोना।

सतकुंभा—सं. स्त्री. [सं. शतकुंभा] एक पुण्य नदी का नाम।

सतकेतु—स. पु. [सं. शतक्रतु] देवराज इन्द्र।
उ०—सुत बीस हुआ जिण रै प्रसिद्ध अनुजात गुणा सतकेतु इद्ध।
—वं. भा.

सतकेसर—सं. पु. [सं. शतकेसर] शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम।

सतकोट, सतकोटि, सतकोटी–सं. पु. [सं. शतकोटिः] १ इन्द्र का वज्र। (अ. मा; नां. मा.)

उ०—छटा सतकोट कचोट छड़ाल, विसारत चेतन नेत बिडाल। चढै अंग फूटि अणी रंगचोळ, बिलोकत जज्रक जीह तंबोळ। —मे. म.

सं. स्त्री.—२ सौ करोड़ की संख्या।

वि. [सं. शतकोटि] १ सौ धार वाला, जिसके सौ धार हों।

२ सौ करोड़।

सतक्रत–सं. पु. [सं. सत्कृतम्] १ श्रेष्ठ कार्य, उत्तम कार्य।

२ आदर, सत्कार।

[स. शत+क्रतुः] ३ देवराज इन्द्र। (नां. मा.)

४ ध्वजा, पताका। (अ. मा.)

५ धर्म, पुण्य। (अ. मा.)

[सं. सत्कृतः] ६ शिव, महादेव।

वि. [सं. सत्कृत] १ सम्मान या आदर दिया हुआ।

२ स्वागत किया हुआ।

३ देखो 'सतक्रति' (रू. भे.)

रू. भे.—सतक्रित।

सतक्रतचहन–सं. स्त्री.—ध्वजा, पताका।

सतक्रति, सतक्रती–स. पु. [सं. सत+क्रतं] १ ऋषि, मुनि। (अ. मा.)

२ यम, धर्मराज। (अ. मा.)

३ देखो 'सतक्रत' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सतक्रतु–सं. पु. [सं. शतक्रतुः] सौ अस्वमेघ यज्ञ करने वाला, इन्द्र।

सतक्रित—देखो 'सतक्रत' (ह. नां. मा.)

सतक्रिया–सं. स्त्री. [सं.] १ पुण्य कार्य, धर्म का कार्य।

२ सम्मान करने की क्रिया।

३ नमस्कार, प्रणाम।

४ अन्त्येष्टि क्रिया।

५ प्रायश्चित का कार्य।

सतखंड–सं. पु. [सं. शतखंड] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

२ सोने की बनी हुई कोई वस्तु।

३ सौ खंड, टुकड़े।

उ०—एकि ना रथ हुआं सतखड बेलि बाढी रहिया बलबंड। एकि ना रथ तणा हय आठा, तीह नां मिसु एकि नाठा।—सालिसूरि

सतखंडियौ, सतखंडौ–वि.—सात खण्डों या सात मंजिल वाला।

उ०—१ थारै बाई री रोग है सौ सतखंडिया महिल थी पड्यां थारी बाई मिटै।—भि. द्र.

उ०—२ मिंदर रै साम्हौ-सांम खासी भांय माथै अेक वेंडौ ई टापू। उण माथै सोना री सतखंडियौ महल। सूरज री किरणां री परस पाय पळक-पळक करै।—फुलवाड़ी

उ०—३ डावड़ियां दौड़ी दौड़ी जाय सतखंडियै मैं'ल पूगी। कंवरांणी सूं बधाई मांग्या बिना ई बधाई री बात सुणायदी। —फुलवाड़ी

सतखणियौ, सतखणौ–वि.—१ सतखंडा, सात खंडों या मंजिल वाला।

२ देखो 'सतखंडियौ'

उ०—भोजन कर राजा नगर मांहै गयौ छै। सो वेंरै मांहै सतखणिया रेवास छै। पन्ना मांणक जड़्या छै।—पंचदंडी री वारता

सं पु.—डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष, जिसके आरंभ में जांगड़ा (मतांतर से छोटा सांणोर) गीत के द्वाले होते हैं। इसके ऊपर आठ मात्राओं का पद होता है जिसके आरंभ में संबोधनवाची शब्द कहा जाता है। इस पद को दुहराया जाता है। इसके बाद नौ मात्राओं का पद और होता है।

रू. भे.—सातखणौ।

सतगांमि, सतगांमी–सं. पु. [सं. शतगामिन्] जटायु के एक पुत्र का नाम।

सतगु वि. [सं. शत+गु] सौ गायें रखने वाला।

सतगुण–सं. पु. [सं. शतगुण] १ कश्यप व क्रोधा के पुत्रों में से एक।

२ देखो 'सतोगुण' (रू. भे.)

सतगुणौ–वि. [सं. शत+गुणित] (स्त्री. सतगुणी) १ सौगुना।

उ०—से इणां प्रीत कर जाच्या सू सतगुणी लक्ष्मी दीवी सू इणां रौ नांम स्रीपरमेस्वर री वखत आवै।—द दा.

२ सातगुना।

सतगुर, सतगुरु–सं. पु. [सं. सत्+गुरु] १ सद्गुरु, श्रेष्ठ गुरु।

उ०—तौ सतगुरु ताया अरथ न आया, गरथ ही व्यरथ गमंदा है। पीछै पिछताया ठीक ठगाया, भाया भूरि भमंदा है। —ऊ. का.

२ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—१ हरीया जो सतगुर मिळै, जो चाहै सो देत। सिवरण सौदा सहज का, विण समझ्यां नहीं लेत।—अनुभववांणी

उ०—२ पराब्रह्म सतगुर प्रणम्य, पुन्य सब संत नमो। हरिरांमा मुर भवन मैं, या पद समौ न को।—अनुभववांणी

सतग्रीव–सं. पु. [सं. शतग्रीव] कश्यप व दनु के पुत्रों में से एक पुत्र, दानव।

सतघंटा–सं. स्त्री. [सं. शतघंटा] स्वामिकार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

सतघ्नी–सं. स्त्री. [सं. शतघ्नी] १ प्राचीन काल का एक शस्त्र विशेष।

२ गले में होने वाला रोग विशेष।

सतचंद्र–सं. पु. [सं. शतचंद्र] १ महाविष्णु का एक कवच।

१ भीमसेन द्वारा मारा गया एक कौरव-पक्षीय राजा, जो शकुनि का भाई था।

सतजित–सं. पु. [सं. शतजित] १ भरतवंशीय एक राजा जो विरज व विषूचि के सौ पुत्रों में से एक।

२ एक प्रकार का यज्ञ ।
३ श्रीकृष्ण व जांबवती के एक पुत्र का नाम ।
४ विष्णु का नामान्तर ।
५ यदुवंशीय सहस्त्रजित के पुत्र का नाम ।
६ आश्विन माह में सूर्य के साथ भ्रमणकर्त्ता एक यक्ष ।

सतजिव्ह, सतजिव्हा, सतजिह, सतजिहा–सं. पु. [सं. सप्तजिह्वा] १ शिव, महादेव ।
सं. स्त्री.—आग, अग्नि ।
उ०—मिरा हेड़रा अहि मत्थ हुत, करसरा सिह कनमूळ । **सतजिह** सुलगरा सोरमें, भड़ तूं तळणौ भूल ।—रेवतसिंह भाटी

सतजुग–सं. पु. [सं. सत्ययुग] १ पौराणिक गणना के अनुसार चार युगों में से पहला युग जो १७२८००० वर्ष का माना गया है ।
उ०—१ 'मुकनावत' कुळजुग नै मुकै, **सतजुग** तेथ गयौ ततसार । पूरब पंचम उदध न परसै, अनड़ परसियौ जको उदार ।—बां. दा.
उ०—२ भूप कहै धनि धनि भाई, कलजुग मझ **सतजुग** अधिकाई ।
—सू. प्र.
२ श्वेत, सफेद । (डिं. को.)
रू. भे.—सत्यजुग, सत्ययुग ।

सत्यज्योति–सं. पु. [सं. शतज्योति] शतज्योति के एक लाख पुत्रों में से एक ।

सतजुगी–वि. [सं. सतयुगी] १ सत्य युगका, सत्ययुग सम्बन्धी ।
२ सज्जन, भला ।
उ०—निरधनियां धनवांन सरिसा, राखै मंदर बारणा । समता सार भाव **सतजुगी**, नीति न्याव है खारणरा ।—दसदेव

सतणधय–सं. पु. [सं. स्तनधय] दूध पीता बच्चा । (ह. नां. मा.)

सततंत्री–सं. पु. [सं. शततंत्री] १ सौ तारों वाला वीणा ।
२ कुरूक्षेत्र में स्थित एक तीर्थ का नाम ।

सतत–सं. पु. [सं.] कुशल क्षेम । (ह. नां. मा.)
वि. [सं.] सदा, सर्वदा, हमेशा, निरंतर ।
उ०—पांन संकुलित डाळ, तावड़ौ किसांण टाळै । बारै मासां **सतत**, जिनावर सरणौ भाळै ।—दसदेव
२ सदैव, हमेशा ।
उ०—करि उपचार अगद वपु कीधौ, दुलभ वित्त संचय नप दीधौ, पौळि व्राति 'दुरसै' जिण पाई, बढी **सतत** 'सुरतांण' बडाई ।
—वं. भा.

सततगति–सं. स्त्री. [सं.] हवा, पवन ।

सततरूप–सं. पु.—स्वभाव, आदत । (अ. मा; ह. नां. मा.)

सततज्वर–सं. पु. [सं.] लगातार बना रहने वाला ज्वर ।

सततारका–सं. पु. [सं शत+तारका] सत्ताईस नक्षत्रों में से चौबीसवां नक्षत्र विशेष ।
२ सोम की सत्ताईस पत्नियों में से एक ।

सततौ–वि.—तेज, शीघ्रगामी ।

सतदळ–सं. पु.—कमल । (डिं. को.)

सतदला–सं. स्त्री. [सं. शत+दला] सफेद गुलाब । (डिं. को.)

सतदुंदुभि–सं. पु. [सं. शतदुंदुभि] जंभासुर के पुत्रों में से एक ।

सतदेव–सं. पु. [सं. सत्यदेव] सूर्य, सूरज ।

सतद्युमन, सतद्युम्न–सं. पु. [सं. शतद्युम्न] जनकवंशीय भनुमान का पुत्र व शचि के पिता का नाम ।

सतद्रंस्ट्र–सं. पु. [सं. शतद्रंष्ट्र] कश्यप एवं खशा के पुत्रों में से एक राक्षस ।

सतद्रु–सं. स्त्री [सं. शतद्रु] १ सतलज नदी का नाम ।
२ गंगा नदी का नाम ।

सतधरम–सं. पु.—कर्तव्य परायणता, स्वामिभक्ति ।
रू. भे.—सतध्रम ।

सतधांमा–सं. पु. [सं. शतधामा] भगवान श्रीविष्णु का नाम ।

सतधा–क्रि. वि. [सं. शतधा] १ सौ प्रकार से ।
२ सौ हिस्सों में ।
वि.—१ सौ गुना ।
२ सौ तरह का ।

सतधन्वा–सं. पु. [सं. शतधन्वा] १ श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया एक योद्धा जिसने श्रीकृष्ण के श्वसुर सत्राजित् को मारा था ।
२ एक प्राचीन ऋषि ।
३ शैव्या नाम की स्त्री का पति, एक विष्णु भक्त राजा ।
४ मौर्यवंशी राजा ।

सतधार–सं. पु. [सं. शतधार] १ वज्र ।
२ इन्द्र का वज्र ।
वि.—सौ धारों वाला ।

सतधारवन–सं. पु. [सं. शतधारवन] एक तीर्थ का नाम ।

सतधारी–वि. [सं. सत्त्वधारी] १ वीर, बहादुर, शक्तिशाली ।
उ०—तरै महेची कयौ—रांमदास वेरावत माहरै भाई छै, बडौ रजपूत छै, तिणनै चौरासी आखड़ी छै, उगणीस विरद छै, बडौ **सतधारी** रजपुत छै ।—रा. सा. सं.
उ०—२ **सतधारी** 'करनेस' का ऊवांणै खग्गं, जूटौ वहतां गैमरां जनु केहर जग्गै ।—लूणकरण कवियौ
२ उदार, दातार ।
उ०—जस री गत अद्भुत जिका, **सतधारिया** सुहाय । नर जीवै नरलोक में, जस अमरापुर जाय ।—बां. दा.
३ सत्य का पालन करने वाला, सत्य को धारण करने वाला ।
उ०—पंचइंद्री कूं जीत न मांनत पाखंड साध मुनिंद बड़ा **सतधारी** ।—भि. द्र.
रू. भे.—सतिधारी ।

४ सत्ताधारी।

५ सुशील, शीलवान, सच्चरित्र।

उ०—सुंदर सब नर-नारी हांरे, वै तौ सीलवंत सतधारी रै रांमैया रा राज मैं।—गी. रां.

सं. पु. [सं. शतधार] इन्द्र।

सतध्रत–सं. पु. [सं. शतध्रति] १ इन्द्र। (डि. को.)

२ ब्रह्मा। (डि. को.)

३ वह जो सत्य को धारण करे।

४ ब्राह्मण।

५ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

रू. भे.—सतध्रति, सतध्रती।

सतध्रतसुत–सं. पु. यौ. [सं. शतध्रति+सुत] १ नारद मुनि। (डि. को.)

२ जयंत।

सतध्रति, सतध्रती—देखो 'सतध्रत' (रू. भे.)

सतध्रम—देखो 'सतधरम' (रू. भे.)

सतन–सं. पु. [सं. स्तन्य] १ दुग्ध, दूध। (अ. मा; ह. नां. मा.)

[सं. स्तन] २ कुच, स्तन। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सतनहावण, सतनहावणौ–सं. पु.—माथुर कायस्थों में मृत्यु के पश्चात् सातवें दिन किया जाने वाला स्नान। (मा. म.)

सतनारायण—देखो 'सत्यनारायण' (रू. भे.)

सतनी–सं. पु. [सं. स+स्तन्य] स्तन में उत्पन्न होने वाला पदार्थ, दूध। (ह. नां. मा.)

सतप–सं. पु. [सं.] १ गर्मी, उष्णता।

२ तीक्ष्ण प्रकाश।

उ०—'पूना' हरौ मुवौदळ पलटै, दीपावै जांगळ वो देस। सुर-गिर सधिर कार बध सायर, सूरज सतप भार भळ सेस।

—कल्यांणमळौत रौ गीत

वि.—१ तापवाला, उष्णता वाला।

२ प्रकाशमान, तेजपुंज।

सतपण–सं. पु.—सतीत्व, सत्यव्रत।

उ०—जो मैं मांहरौ सतपण राख्यो अर ठाकुरां री बेटी गुवाळचा नै परणाई छै।—गांव रा धणी री बात

सतपत, सतपत्र–सं. पु. [सं. शतपत्र] १ कमल। (अ. मा; डि. को; ह नां. मा.)

उ०—छत्र छांह सतपत्र बदन छबि, करत ध्यांन हिंगळाज दांन कवि। मैं तव पुत्र मात तू मेरी, त्राहि त्राहि सरनागत तेरी।

—मे. म.

२ सेवती।

३ मोर पक्षी।

४ सारस पक्षी।

५ तोता,।

रू. भे.—सतपात।

सतपत्रक–सं. पु. [सं. शतपत्रक] पुराणानुसार एक ग्रंथ का नाम।

सतपत्रवन–सं. पु. [सं. शतपत्रवन] द्वारका के पश्चिम में सुकक्ष पर्वत के चारों ओर स्थित एक वन।

सतपथ–सं. पु. [सं. सत्+पथ] १ अच्छा मार्ग।

२ कर्तव्य पालन का मार्ग, सच्चाई का मार्ग।

३ उत्तम सम्प्रदाय।

सतपथब्राह्मण–सं. पु.—यजुर्वेद का एक ब्राह्मण जिसके कर्त्ता याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।

सतपद–सं. पु [सं. शतपद] १ कनखजूरा।

२ चिउंटी।

सतपदचक्र–सं. पु. [सं. शतपद चक्र] सौ कोष्ठोंवाला एक प्रकार का चक्र। (ज्योतिष)

सतपदी—देखो 'सप्तपदी' (रू. भे.)

सतपदम–सं. पु. [सं. शत+पद्म] एक प्रकार का सफेद कमल विशेष।

सतपरब–सं. पु [सं. शतपर्वन्] बाँस। (अ. मा; ह. नां. मा)

रू. भे.—सतपरव, सतपरवा।

सतपरबीका–सं. स्त्री. [सं. शतपरविका] दूब, दूर्वा। (डि. को.)

सतपरव, सतपरवा—१ गन्ना।

२ दूब। ३ आश्विन मास की पूर्णिमा।

४ शुक्राचार्य की एक पत्नी का नाम।

५ देखो 'सतपरब' (रू. भे.) (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

सतपात—देखो 'सतपात्र' (रू. भे.)

सतपुड़ौ–सं. पु.—१ एक पर्वत का नाम।

२ हथेली या तलुवे में होने वाला एक फोड़ा विशेष।

३ वृक्षों में रस विकार के फलस्वरूप निकलने वाला कोमल पुष्प जैसा एक पदार्थ विशेष। (क्षेत्रीय)

उ०—अमल सुपारी सतपड़ां रम, अमर गोळियां ग्रेवड़ा। खेजड़ां री खपत हुया है, वीर सती अर खेंवड़ा।—दसदेव

४ एक प्रकार का व्यंजन। (रा. सा. सं.)

सतपुठौ–सं. पु.—छकड़े के नीचे लगे मोटी लकड़ी का मजबूत डंडा।

सतपुतर, सतपुत्र–सं. पु. [सं. सतपुत्र] सपूत, सुपात्र बेटा।

सतपुरस–सं. पु. [सं. सत्पुरुष] १ सज्जन व्यक्ति।

२ धर्मात्मा या पुण्यात्मा व्यक्ति।

३ महान्, श्रेष्ठ।

उ०—सतपुरसां की साख सुनि, सीखत ग्यांनी होय। हरीया गुर का सबद बिन, ध्यांनी भया न कोय।—अनुभववांणी

४ सुशील व्यक्ति।

रू. भे.—सतपुरुस, सत्पुरस, सत्पुरुस।

सतपुरी–सं. स्त्री.—पति के साथ सती होने वाली स्त्रियों को प्राप्त होने

वाला लोक।

उ०—सुरलोक **सतपुरी** ग्रता धांमिका धरां ग्रति। इंद्रपुरी सुख ग्रधिक, उमा उमला विमला रति।—सू. प्र.

सतपुरुस—देखो 'सतपुरस' (रू. भे.)

सतपोतक-सं. पु.—भगंदर रोग का एक भेद विशेष। (ग्रमरत)

सतफेरा—देखो 'सप्तपदी' (रू. भे.)

सतबळ, सतबलि, सतबळी-सं. पु. [सं. शतबलि] राम की सेना का एक बंदर। (रामकथा)

उ०—जांमवंत क्रुध झल जलहळी, सुक्खेण मयदंह **सतबळी**।

—सू. प्र.

वि.—सात जगह से मुड़ी हुई, बल खाई हुवी।

सतबाह, सतबाहु-सं. पु. [सं. शतबाहु] एक ग्रसुर का नाम।

सतभइयौ-सं. पु.—जिसके सात भाई हों।

सतभांम, सतभांमा-सं. स्त्री. [सं. सत्यभामा] कृष्ण की ग्राठ पटरानियों में से एक।

उ०—राधा रुकमण ग्रर **सतभांमा**, पगल्या चांपै जी हर मिंदर में।

—लो. गी.

रू. भे.—सत्यभांमा।

सतभाव-सं. पु. [सं. सद्भाव] १ सद्‌विचार, ग्रच्छे विचार।

उ०—सांई सूं सांचा रहौ, बंदा सूं **सतभाव**। भावै लांबा केस रख, भावै घोट मुंडाव।—ग्रग्यात

२ विद्यमानता।

३ ग्रच्छा भाव।

सतभिख, सतभिखा, सतमिस, सतभिसा, सतभीखा-सं. स्त्री. [सं. शतभिषा] सत्ताईस नक्षत्रों में से चौबीसवां नक्षत्र।

(ग्र. मा; नां. मा.)

सतभूमियौ, सतभोमियौ-सं. पु.—सात मंजिल का।

उ०—१ इण भांत देखतां देखतां राज भुवन में गया। तठै **सतभूमियै** ग्रवासै चढीया।—रीसाळू री बात

उ०—२ नगर मैं गांछी रा घरां कन्है ग्रायौ, ऊंचा महल दीठा **सतभूमिया** ग्रवास छै।—पंचदंडी री वारता

उ०—३ रात ग्राधी रा पातसाह पिण **सतभोमिया** हेटै ग्रायौ। हिरण पातसाहनै देख नै छिप बेठौ नै पातसाह जोवै छै।

—रीसाळू री बात

सतमंजली-सं. स्त्री.—देखो 'सतमंजलौ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

सतमंजलौ-सं. पु. [सं. शत+ग्र. मंजिल] सात मंजिल का, सात खण्डों का। (भवन)

उ०—गळी हडवळी, गडां, गुड़कै, वैर भाव सो वीसरै। खांण छोड **सतमंजलां** सजै, कांण धड़ै में नीसरै।—दसदेव

ग्रल्पा;—सतमंजली।

सतम-सं. पु. [फा. सितम] गजब, ग्रनर्थ।

सतमख-सं. पु. [सं. शतमख] १ वह व्यक्ति जिसने सौ यज्ञ किये हों।

२ देवराज, इन्द्र।

३ उल्लू।

४ कौशिक।

सतमत-सं. पु.—सती होने का भाव।

उ०—सती **सतमत** साहिकै, जळी मड़ै कै साथि। हरीया मन मूवा बिनां, कछु न ग्रावै हाथि।—ग्रनुभववांणी

सतमन, सतमनू सतमन्यु-सं. पु. [सं. शतमन्यु] १ इन्द्र।

(नां. मा, ना. डिं. को.)

२ उल्लू।

सतमयुख-सं. पु. [सं. शतमयूख] चंद्रमा, चाँद।

सतमाय-सं. स्त्री.—सोतेली माँ।

सतमा'यौ, सतमासियौ, सतमाहियौ-सं. पु.—वह नवजात शिशु जो गर्भधारण के नौ मास की बजाय सात मास बाद ही जन्मा हो।

सतमिण-सं. स्त्री.—१ वेश्या, रंडी।

उ०—सांई सूं दिल दूसरा, सो **सतमिण** सी नारि। हरीया उर इकतार बिन, वांकु ठाकुर मारि।—ग्रनुभववांणी

२ व्यभिचारिणी, बदचलन स्त्री।

सतमुख-वि. [सं. शत्+मुख] १ सौ मुखों वाला।

२ सौ द्वारों वाला।

सं. पु.—एक ग्रसुर का नाम।

सतमेव—निश्चय ही, जरूर ही।

उ०—सरै छै कांम तियां **सतमेव**, दीयै सुख वंछित रिखभदेव।

—ध. व. ग्रं.

सतयुग—देखो 'सतजुग' (रू. भे.)

सतरंग-सं. पु. [सं. सप्तरंग] ग्राकाश, गगन। (ना. डिं. को.)

वि.—जिसमें सात रंग हो।

सतरंगी-सं. स्त्री. [सं. श्वेतरंगी] यश, कीर्ति।

वि.—सात रंगों वाला, सप्तरंगी।

उ०—भेळी ग्रबकै बीज पुरदर री परी, **सतरंगी** पोसाक जगमग है जरी।—लो. गी.

उ०—२ हवेली सूं कड़ाजूड होय नै ग्राया ई हा। कड़प दियोड़ौ **सतरंगी** मोळियौ। लांबौ छिणगौ।—फुलवाड़ी

सतरंज-सं. स्त्री. [फा. शत्रंज] प्रसिद्ध भारतीय खेल जो चौंसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है, चतुरंग।

उ०—नांनेरै सगळाई उण रौ लाड राखता। कबड्डी, भुरणी, खत्ता दड़ी, सोळै सारी, **सतरंज**, चौपड़-पासा रौ बाजिंदौ खिलाड़ी। तिरणा में ई साईनां-साथियां नै लारै राखतौ।—फुलवाड़ी

वि. वि.-इस खेल के उत्पत्ति स्थान को लेकर विद्वानों में विभिन्न मत हैं। कोई इसे चीन देश से निकला हुग्रा बतलाते हैं कोई मिश्र देश से ग्रौर कुछ के मतानुसार यह यूनान की देन है। परन्तु

अधिकांश विद्वान यह मानते हैं कि शतरंज का प्रारम्भ सर्व प्रथम भारत से ही हुआ तथा इसकी उत्पत्ति स्थान भारत को स्वीकार करते हैं। यहाँ से यह खेल फारस गया, फारस से अरब और अरब से यह खेल यूरोपीय देशों में पहुँचा। फारसी में इसे शत्रंज कहते हैं पर अरबवासी इसे शातरंज, शतरंज आदि नामों से पुकारने लगे। फारस में ऐसा प्रवाद है कि यह नौशेरवाँ के समय में हिन्दुस्तान से फारस को गया और इसका निकालने वाला राहिर का बेटा कोई सस्सा नामक व्यक्ति था। ये दोनों नाम किसी भारतीय नाम से अपभ्रंश हैं। इसके आविष्कार का कारण फारसी पुस्तकों में यह लिखा है कि भारत का कोई युद्ध प्रिय सम्राट नौशेरवां का समकालीन था वह किसी रोग से अशक्त हो गया था उसके मन बहलाव के लिए मनोरंजनार्थ सस्सा नामक व्यक्ति ने चतुरंग नामक खेल का अविष्कार किया। यह प्रवाद भारतीय प्रवादों से मिलता जुलता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार यह खेल मंदोदरी ने अपने पति को बहुत युद्धरत देखकर निकाला। इस प्रकार यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि भारत में इस खेल का प्रचार नौशेरवाँ से बहुत पहले हो चुका था।

चतुरग के संस्कृत में विभिन्न अर्थ मिलते हैं। चतुरंग पर संस्कृत में अनेक ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें चतुरंग केरली, चतुरंग क्रीड़न, चतुरंग प्रकाश और चतुरंग विनोद मुख्य हैं। करीब सात सौ वर्ष हुए त्रिभंगाचार्य नामक एक दक्षिणी विद्वान इस खेल में बड़ा निपुण एवं दक्ष था। उसके अनेक उपदेश इस क्रीड़ा के सम्बन्ध में हैं। इस खेल में चार रंगों का व्यवहार होता था। हाथी, घोड़ा, नौका और बट्टू (पैदल)। छठी शताब्दी में जब यह खेल फारस में पहुँचा और वहाँ से अरब गया तब से ऊंट और वजीर आदि बढ गये हैं। तथा खेल पद्धति में भी काफी फेर बदल हुआ है। 'तिथि तत्त्व' नामक ग्रन्थ में वेदव्यास ने युधिष्ठिर को इस खेल का जो परिचयात्मक विवरण दिया वह इस प्रकार है—चार व्यक्ति मिल कर यह खेल खेलते थे। इसका चित्रपट (बिसात) ६४ घरों का होता था जिसके चारों तरफ खेलने वाले बैठते थे। पूर्व और पश्चिम में बैठने वाले एक दल में तथा उत्तर-दक्षिण में बैठने वाले दूसरे दल में होते थे। प्रत्येक खिलाड़ी के पास एक राजा, एक हाथी, एक घोड़ा, एक नौका और एक बट्टू या पैदल होते थे। पूर्व के ओर की गोटियाँ लाल, पश्चिम की पीली, दक्षिण की हरी, उत्तर की काली होती थी। खेल पद्धति प्रायः आजकल जैसी ही थी। राजा चारों तरफ एक घर चल सकता था। बट्टा या पैदल यों तो एक घर सीधे चल सकता था पर दूसरी गोट मारने पर एक घर आगे तिरछे भी जा सकते थे। हाथी चारों ओर (तिरछे नहीं) चल सकते थे। घोड़ा तीन घर तिरछे जा सकता था। नौका दो घर तिरछे जा सकती थी। मोहरें आदि बनाने का काम वैसा ही था जैसा आजकल है। हार जीत कई प्रकार की होती थी जैसे—सिंहासन चतुराजी, नृपाक्रस्ट, षटपद, वृन्नाक आदि।

सतरंजबाज—सं. पु. [फा. शत्रंजबाज] शतरंज का खिलाड़ी।
२ शतरंज का शौकीन।
३ शतरंज का अच्छा खिलाड़ी।

सतरंजबाजी—सं. पु. [फा. शत्रंज+बाज+ई] शतरंज का खेल खेलने का कार्य या व्यसन।

सतरंजी—सं. स्त्री.—१ विभिन्न रंगों से बुनी बिछाने की दरी।
२ शतरंज खेलने की बिसात।

सतर—सं. स्त्री. [अ. सत्र] १ पंक्ति, कतार।
२ रेखा, लकीर।
३ देखो 'सतरन' (रू. भे.)
४ देखो 'सत्रु' (रू. भे.)
उ०—'जेतहर' आभरण सतर घड़, जीपणां, वरै कुण घणां दिवराय वाजा।—दुरसौ आढौ
५ देखो 'सतरै' (रू. भे.)
उ०—१ भाव भलै भगवंत री, पूजा सतर प्रकार। परसिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठै अधिकार।—ध. व. ग्रं.
उ०—२ बार भेद तप तपइ गति पांमइ जी, संजम सतर प्रकार देवगति पांमइ जी।—स. कु.
६ देखो 'सितर' (रू. भे.)

सतरक—वि. [सं. सतर्क] १ सावधान, सचेत।
२ तर्कशील।

सतरकता—सं. स्त्री. [सं. सतर्कता] सावधानी, होशियारी।

सतरथ—सं. पु. [सं. शतरथ] यम की सभा में रहकर यम की उपासना करने वाला एक राजा।

सतरदा—देखो 'सतहृदा' (रू. भे.) (अ. मा.)

सतरन—सं. पु.—गुजरात प्रदेश का एक नाम।
उ०—दुजड़ चूर दुरवेस, देस अपणावै सतरन। रवी सेस अवनेस, बंधु 'बखतेस' सरोतर।—रा. रू.
रू. भे.—सतर, सतरि।

सतरमाळियौ—सं. पु.—आकस्मिक मृत्यु अथवा युद्ध में वीरगति प्राप्त व्यक्ति का श्राद्ध जो आश्विन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को किया जाता है।

सतरमौं—सं. स्त्री.—१ प्रायः साधुओं में प्रचलित किसी की मृत्यु के उद्देश्य से सत्रहवें दिन किया जाने वाला एक संस्कार विशेष। (रामस्नेही)
२ इस संस्कार के अवसर पर किया जाने वाला भोज।
रू. भे.—सतरवौं।

सतरमौं—वि.—जो क्रम से सोलह के बाद हो।
रू. भे.—सतरवौं, सत्तरमौं।

सतरवौं—देखो 'सतरमौं' (रू. भे.)

सतरवौं - देखो 'सतरमौं' (रू. भे.)

सतरांम-सं. पु.—१ शव को श्मशान भूमि में ले जाते समय की जाने वाली ध्वनि ।

२ दादू मतावलंबियों द्वारा परस्पर मिलने पर किया जाने वाला अभिवादन ।

उ०—छूटौ नीर चखां सतरांम ऊचरंता छेला, सरूपदास री छाती उभेला समंद । जांमी ग्राज म्हांनै छोड अकेला कठीनै जावौ, कोयलां विरंगा हेला दे रही कमंध ।—महात्मा सरूपदास

सतरात्र, सत्ररात्रि-सं. पु. [सं. शतरात्रि] एक प्रकार का यज्ञ विशेष, जो सौ रातों में पूरा होता है ।

सतरि—१ देखो 'सित्तर' (रू. भे.)

उ०—सतरि खांन बहुत्तर उमराव हजूर तेड़ लिया ।—रा. रू.

२ देखो सतरन' (रू. भे.)

उ०—१ नरइद 'अभौ' नवकोट नाथ सरि करण सतरि धरवर समाथ । अहमंद नगर खाटण अनूप, रसवीर प्रगट घट विकट रूप ।

—रा. रू.

उ०—२ महि लियण सतरि अरिमळण मांण, सज्जै पयांण गज्जै निसांण ।— रा. रू.

सतरिदा— देखो 'सतद्रुदा' (रू. भे.)

सतरुद्र-सं. पु. [सं. शतरुद्र] १ एक तपस्वी मुनि जो इच्छित रूप ले सकते थे । (रामकथा)

२ सौ मुंह वाला रुद्र का एक रूप ।

३ एक शक्ति ।

४ वेद का शतरुद्रिय प्रकरण जिसमें रुद्रदेव के १०० नामों का उल्लेख है ।

सतरुघ्न—देखो 'सत्रुघण' (रू. भे.)

सतरूप-सं. पु. [स. शतरूप] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

२ शिवावतार का एक शिष्य ।

सतरूपा-सं. स्त्री. [सं. शतरूपा] ब्रह्मा की मानस कन्या तथा स्वायंभुव मनु की पत्नी का नाम ।

उ०—संभूमन त्रप दसरथ्थ समथ्थी, कोसळचा सतरूपा कथ्थी ।

—र. ज. प्र.

वि. वि.—मतान्तर से ब्रह्मा से ही इसे स्वायंभुवमनु आदि सात पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

रू. भे.—सत्रूपा ।

सतरे'क-वि.—सत्रह के लगभग, सत्रह के करीब ।

रू. भे.—सत्तरे'क ।

सतरै-वि. [सं. सप्तदशन् प्रा. सत्तरस अप. सत्तरह] सोलह और एक का योग, सत्रह ।

सं. पु.—सतरह की संख्या या अंक ।

रू. भे.—सतर, सत्तर, सत्रह ।

सतरौ-सं. पु —सत्रह की संख्या का वर्ष या साल ।

उ०—१ पांचौ आठौ दस पनरौ खूपड़िया, सतरै बीसै हय खतरै में पड़िया ।—ऊ. का.

उ०—२ खळ इतरा पड़िया खगं, रिण नाडूल तरस्स । सैंतीसै सतरै संमत, आसु सुद चवदस्स ।—रा. रू.

रू. भे.—सतरौ ।

सतलड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का सात लड़ों का आभूषण विशेष ।

सतलड़ौ-वि. (स्त्री. सतलड़ी) १ सात तह का, सात परत का ।

२ सात लड़ों का ।

सं. पु.—एक प्रकार का हार ।

सतळज, सतळज्ज-सं. स्त्री.—पंजाब की पाँच नदियों में से एक ।

उ०—देवी कावेरी तापी क्रस्ना कपीला । देवी सोण सतळज्ज भीमा सुसीला ।—देवि.

सतलस, सतलस्स-सं. पु.—एक हिंसक जानवर ।

उ०—जरख रींछ वड़ाख, सिवा सतलस्स मलक्का । साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का ।—गु. रू. बं.

सतलुंदी-सं. स्त्री.—सतलज नदी का एक नाम । (द. दा.)

सतलोक—१ देखो 'सतीलोक' (रू. भे.)

उ०—१ मुह लखि सीस तजेवा सुर-मुख, सती हुवै सतलोक लहां सुख ।—सू. प्र.

उ०—२ पातरां पांच नाजर उभै, भल बाइ मीतभाइयौ । सिघवत पुरस 'अजन' सतीयां सहत, यूं सतलोक सीधाइयौ ।—रा. वं. वि.

उ०—३ हथळेवौ नरलोक, पइसारौ परलोक में, सुख विलसण सतलोक, जांन सहीता जावस्यां ।—रांमनाथ कवियौ

२ देखो 'सत्यलोक' (रू. भे.)

उ०— चढ विमांण चलाविया, सकौ कमधज सिरदारै । सूरलोक सतलोक, जाइ 'अमरेस' जुहारै ।—सू. प्र.

सतलोचण, सतलोचन-सं. पु. [सं. शतलोचन] १ स्कन्द का एक सैनिक अनुचर ।

२ एक असुर । (पुराण)

सतवंती-वि. स्त्री.—पतिव्रता, सतीत्व वाली ।

उ०—१ कह्यौ—भूवाजी आप जैड़ी सीता सतवंती तौ दुनियां थपियां पछै ई नीं जलमी व्हैला ।—फुलवाड़ी

उ०—२ कै तौ जीवावै सीता सतवंती, कै'स जीवावै हड़मांन जती ।—लो. गी.

उ०—३ पणवंती पारणी सीळवंती सतवंती, अति मुगती हालियौ, कियां साथै कुळवंती ।—रा. रू.

उ०—४ सौ आपरी सतवंती लुगाई रौ आदेस मांन बांमण बेटियां रै सगपण सारू आपरी टपरी अर गांव छोड वहीर व्हियौ ।

—फुलवाड़ी

सं. स्त्री.—जानकी, सीता । (डिं. को.)

सतवत्सल-सं. पु. [सं. शतवत्सल] एक वटवृक्ष जो कुमुद पर्वत पर स्थित है।

वि. वि.—इसकी सौ शाखाएँ हैं जिनसे दूध, दही, शहद, गुड़, घी, अन्न आदि पदार्थों की नदियां, अम्बर, शय्या, आसन, आभूषण आदि कुमुद पर्वत पर गिरते हैं, जो उक्त पर्वत के उत्तर में स्थित इलव्रत वासियों के लिए लाभदायक है। (पुराण)

सतवन—देखो 'स्तवन' (रू. भे.) (डि. को.)

सतवर—देखो 'सत्वर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सतवाड़ो-सं. पु. [सं. सप्त=वाटक] १ सप्ताह।

उ०—दोसती-मितराई मोटी चाल, कितौ ही तुलावौ चावै मंडी सूं माल मारजारौ मन सतवाड़ै हरियौ हुयग्यौ।—दसदोख

२ प्रसव के सातवें दिन प्रसूता स्त्री को विधिवत करवाया जाने वाला स्नान, सतोला।

क्रि. प्र.—पूजणौ।

सतवाची-वि.—सत्य बोलने वाला, सत्यभाषी।

सं. पु.—युधिष्ठिर। (अ. मा.)

सतवादि, सतवादी—देखो 'सत्यवादी' (रू. भे.)

उ०—१ अभमांनव जुद्ध भीमैंण इसा, सतवादि जुधिस्टर द्रोण जिसा।—शि. सु. रू.

उ०—२ राव बीकोजी वडो राज बांधियो अरु वडी जमीयत रा धणी हुवा नै वडा तपस्वी हुआ। वडा दातार, वडा तरवारिया हुवा। वडा सतवादी सिरदार हुवा।—द. दा.

उ०—३ सतवादी हरिचंद सै राजा, नीच घर नीर भरै। पांच पांडू अरु कुंती, द्रोपदी, हाड हिमाळै गरै।—लो. गी.

सतवार—देखो 'सत्वर' (रू. भे.)

उ०—बिकसो भाता लै भतवारां वाली, चंगी चोधरण्यां सतवारां चाली।—ऊ. का.

सतवाळ-सं. स्त्री.—चौहान वंश की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सतवी-सं. स्त्री.—सूंठ। (अ. मा.)

सतवेध-सं. पु. [सं. शतवेधिन्] १ अमलवेंत।

२ चूका या चुक्रि नामक सब्जी।

सतव्रत—देखो 'सत्यव्रत' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरीया जांह जाइयै, जा घरि सतव्रत होय। अधरम असती अंगनै, हरिजन जाय न कोय।—अनुभववांणी

उ०—२ त्रिधनासुत त्रिय्यारुण तपीस, सतव्रत हुवौ जिणसूं प्रथीस।—सू. प्र.

सतसंग, सतसंगत, सतसंगति—देखो 'सत्संग' (रू. भे.)

उ०—१ सुणै पढै नह सासतर, सेवै नह सतसंग। सुखदायक किम सांपजै, उर संतोस अभंग।—बां. दा.

उ०—२ रात-नैं बै सगळचां नैं रांमायण री कथा सुणाती। चोखा-चोखा पद गाती। गळी-में चोखी सतसंग हुवण लागगी।
—वरसगांठ

उ०—३ कनक दांन कुरखेत, विरधि गुणि वासुर वासुर। सुबुध वधै सतसंग, ग्यांन गुर वांणि उजागर।—रा. रू.

उ०—४ सफल जिनांदा जीवीया सदा साध सुं संग। हरीया सतसंगति बिनां, करि करि मूवा कुसंग।—अनुभववांणी

सतसंगी—देखो 'सत्संगी' (रू. भे.)

सतसंध-वि. [सं. सत्यसंध] सत्यप्रतिज्ञ, अपने वचन को पूरा करने वाला।

सं. पु.—१ रामचंद्र।

२ जनमेजय।

३ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

सतसई-स. स्त्री. [सं. सप्तशती] वह ग्रंन्थ जिसमें सात सौ पद्य हों।

सतसठ-वि.—सात और साठ का योग।

रू. भे.—सड़सठ।

सतसठमौं, सतसठवौं-वि.—जो क्रम में छासठ के बाद हो।

रू. भे.—सड़सठमौं, सड़सठवौं।

सतसठे'क-वि.—सड़सठ के लगभग।

सतसठौ-सं. पु.—सड़सठ की संख्या का वर्ष।

उ०—स्नावण आगम सतसठै, आयो पुर 'अगजीत'। मुरधर थया बधांमणा, सत्रहर थया सभीत।—रा. रू.

सतसत, सतसत्त-सं. पु. [सं. शतसप्त (तंतु)] इन्द्र।

उ०—ज्यौं जंभासुर जंग पै सतसत्त सुहाया। कै द्रोणाचळ लैनै कौ कपिराज कसाया।—वं. भा.

सतसहस्त्र-सं. पु. [सं. शतसहस्त्र] कुरुक्षेत्र के एक पुण्य स्थान का नाम।

सतसाद-सं. [शतशाद] कश्यप व दनु के पुत्रों में से एक, दानव।

सतसीरस, सतसीरसा-सं. पु. [सं. शतशीर्ष, शतशीर्षा] १ मंत्र बल से चलाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

२ भगवान् श्रीविष्णु।

सं. स्त्री.—३ नागराज वासु की पत्नी।

सतस्रंग-सं. पु. [सं. शतशृंग] १ पाण्डुओं का जन्मस्थान एक पर्वत।

२ पाण्डु को शाप देने वाला एक मुनि।

३ एक राक्षस का नाम।

सतह-सं. स्त्री. [फा.] किसी वस्तु का ऊपरी भाग, तल।

सतहत्तर—देखो 'सितहत्तर' (रू. भे.)

सतहय-सं. पु. [सं. शतहय] तामसमनु के पुत्रों में से एक।

सतहर-सं. पु. [सं. शत्रु+हर] शत्रु का वंशज।

उ०—भारथ भीम भुजाळ, भयंकर इन भड़ां। सतहर सारि संघारि, उपाड़ण अन्नड़ां।—महाराजा करणसिंघ रौ गीत

सतहीण, सतहीणौ-वि.—दुर्बल, कमजोर।

उ०—किण सरणैं जाऊं रे, दीन भाख सुणाउं रे। सत हीण न थाउं मन कीज्यै खरौ रे।—प. च. चौ.

सतह्लद–सं. पु. [सं. शतह्लद] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

२ कश्यप व दनु के पुत्रों में से एक।

सतह्लदा–सं. स्त्री. [सं. शतह्लदा] १ विराध नामक राक्षस की माता व जय की पत्नी का नाम।

२ दक्ष की एक कन्या जो बाहुपुत्र को ब्याही थी।

३ बिजली, विद्युत।

सं. पु.—४ इन्द्र का वज्र।

रू. भे.—सतरदा।

सतांगत, सतांगति, सतांगती–सं. स्त्री. [सं. सतांगति] सत्पुरुषों को प्राप्य स्थान, मोक्ष।

सतांणमौं, सतांणवौं–सं. पु.—सत्तानवें की संख्या का वर्ष।

वि.—जो क्रम में छियानवें के बाद पड़ता है।

रू. भे.—सतांणूमौं, सतांणूवौं, सितांणमौं, सितांणवौं।

सतांणू–वि.—नब्बे और सात का योग।

रू. भे.–सितांणू।

सतांणूक–वि.—सत्तानवें के लगभग।

सतांणूमौं, सतांणूवौं–वि.—देखो 'सतांणमौ' (रू. भे.)

सतांम—देखो 'सिताब' (रू. भे.)

उ०—तौ वेग लिखि फुरमांण तेड़ौ, सूर जोध सकाज। वरि त्रिण सलांम सतांम कहियौ जो हुकम महाराज।—सू. प्र.

सतांस–सं. पु. [सं. शतांश] सौंवा हिस्सा।

सता–सं. पु.—१ सत्य।

२ कला।

३ भक्ति।

४ चमत्कारपूर्ण कृत्य, सिद्धि।

उ०—करामात री बात साखात कैई। सता मातरी चंद्र कूपादि सैई।—मे. म.

५ प्रकृति।

६ माया, लीला।

७ अस्तित्व।

उ०—१ ज्यूं नभ माथै रवी अरु रजनी, आवै अरु जावेरी। तम प्रकास दोनूं दिखलावै, यूं सम सता रहैरी।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

उ०—२ ज्यूं दरपण के अंतर, बाहिर मुखा भास विचारी। अंतर सूक्ष्म बाहिर स्थूला, ता मध सता हमारी।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

८ वास्तविक अस्तित्व।

९ संयोग, इत्तफाक।

उ०—जे सता थांरौ कैणौ मांन जातौ तौ तिजोरी रै मूंडागै दोनूं चोरां री ढिगली कीकर व्हैती।—फुलवाड़ी

१० बल, शक्ति।

११ भगवान् श्रीविष्णु।

१२ देखो 'सत्ता' (रू. भे.)

सताईस–वि. [सं. सप्तविंशति, प्रा. सत्तवीस, अप. सत्तावीस] बीस और सात का योग।

रू. भे.—सतावीस, सत्ताईस।

सताईसमौं, सताईसवौं–वि.—जो क्रम में छाईस के बाद आता हो।

रू. भे.—सत्ताईसमौं, सत्ताईसवौं।

सताईसे'क–वि.—सत्ताईस के लगभग।

रू भे.—सत्ताईसैक।

सताईसौ–सं. पु.—सताईस की संख्या का वर्ष या साल।

रू. भे.—सताईसौ।

२ दो हजार सातमौ की संख्या, २७००।

सताउर, सताउरी – देखो 'सतावर' (रू. भे.)

उ०—संखाहूली सताउरी, त्रस्टिवेलि नइं सोम। साथरि सारस सींगडी, पूरीसह परि रोम।—मा. कां. प्र.

सताक्ष–सं. पु. [सं. शताक्ष] एक दानव। (पुराण)

सताक्षी–सं. स्त्री. [सं. शत+अक्षी] १ रात, रात्रि।

२ सौंफ।

३ दुर्गा देवी।

४ पार्वती।

सताड़णौ, सताड़बौ—देखो 'संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—थरकै कोट सहत पुर थांणा, भार सताड़ै पड़ै भगांणा।

—रा. रू.

सताड़णहार, हारौ (हारी), सताड़णियौ—वि०।

सताड़िओड़ौ, सताड़ियोड़ौ, सताड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सताड़ीजणौ, सताड़ीजबौ—कर्म वा०।

सताड़ियोड़ौ—देखो 'संतापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सताड़ियोड़ी)

सताजोग—इत्तफाक।

उ०—१ सताजोग री बात के आपरी बोरगत उगावण सारू बांमण रौ बेटौ उणीज गांव में आयोड़ौ हौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सताजोग री बात के उणी इज खेजड़ी में अेक भूत रौ वासौ।—फुलवाड़ी

सताणौ, सताबौ—देखो 'संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—गुळवाड़ गोहूं जव चिणांरौ, जुवार रौ चरणहार छै। मयमत छै सू चर चर फरणियां आया छै। माछुरां रा सताया।

—रा. सा. सं.

सताणहार, हारौ (हारी), सताणियौ—वि०।

सतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सताईजणौ, सताईजबौ—कर्म वा० ।

सतानंद-सं. पु. [सं. शतानदः] १ ब्रह्मा । (डि. को.)

२ विष्णु ।

३ कृष्ण का नाम ।

४ जनक के पुरोहित का नाम जो गौतम के पुत्र थे ।

५ विष्णु के रथ का नाम ।

६ गौतम ऋषि ।

७ सार्वणि मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक ।

रू. भे. - सत्यानंद ।

सतानंदा-सं. स्त्री. [सं. शतानंदा] १ एक पौराणिक नदी का नाम ।

२ कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम ।

सतानन-सं. पु. [सं. शतानन] शिव का एक नाम ।

सतानना-सं. स्त्री. [सं.] एक देवी का नाम ।

सतानीक-सं. पु. [सं] १ द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न नकुल का पुत्र जिसे अश्वथामा ने मारा था ।

२ ययातिवंशीय बृहद्रथ के पुत्र व दुर्मद के पिता का नाम ।

३ एक असुर का नाम ।

४ कुरुवंशीय राजर्षि का नाम ।

५ राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय का पुत्र ।

६ सुदास राजा के पुत्र का नाम ।

७ मत्स्यनरेश विराट का भाई एवं सेनापति ।

[सं. शतानीक] ८ बुढ़ा व्यक्ति ।

९ ब्रह्मसावर्णि के मनु के पुत्रों में से एक ।

सताब, सताबी—१ देखो 'सिताब' (रू. भे.)

उ०—१ आप सताब सवार हुइजै । तमामौ नौ देखौ है काहू चापड़ै खेत चलाय देवां ।—मारवाड रा अमरावां री वारता

उ०—२ पत्र जेण लिखौ इण विध प्रियोग; भेजौ सताब खुरसांण भोग ।—सू. प्र.

उ०—३ सभि बाळक सिरपोस, नांम किस्ताब निबाबां । साह बाल दळ सबळ, सभै भेजंत सताबां ।—सू. प्र.

उ०—४ दुजन सताबी देरया, निमंक धीर धर नाय । कंवरी ज दुलण त्यार कर, मेलौ चंवरयां मांय ।—बख्तावर मोतीसर

उ०—५ हाथी तुरंग सबै लै हालौ, साह हिजूर सताबी चालौ ।
—रा. रू.

उ०—६ दूत सताबी दौड़िया, लियां बधाई हाथ । सुणियौ सुर वंदै जिसौ, मुरधर हंदै माथ ।—रा. रू.

उ०—७ पण सूरोजी खड़ा रहिया कहियौ - सताबी करौ पाघ बेगी बांधौ ।—सूरे खींबै कांधलोत री बात

उ०—८ असि धावक आविया, सस्त्र मांजिया सताबी । सांगां चढिया सुक्र, फूल झड़िया हद फाबी ।—मे. म.

सताब्द-सं. पु.—शताब्दी, सौ वर्ष ।

वि. [सं. शताब्द] सौ वर्ष का ।

सताब्दी-सं. स्त्री. [सं. शताब्दी] सौ साल की अवधि की सूचक संज्ञा ।

उ०—अठारवीं सताब्दी री बात । सियाळा रौ मौसम । प्रभात री वेळा ।—अमर चूंनड़ी

सताभिधांन-वि. [सं. शतावधान] सौ बातों को एक साथ याद रखकर ज्यों का त्यों वापिस उत्तर देकर बताने वाला, यथार्थ उत्तर देने वाला ।

उ०—सुधा समाज ताज सै बुधा बिराजतै नहीं । सताभिधांन स्राव्य कै सुकाव्य साजतै नहीं ।—ऊ. का.

रू. भे.—सतावधांन ।

सतायु, सतायुस-वि. [सं. शतायुस्] सौ वर्ष का ।

उ०—दफ्तर सब दहयू इसौ, कियौ सतायु सिताब । आयौ पाछौ वणक इक, जमपुर सूं कर जाब ।—बां. दा.

सं. पु.—१ पुरुरवा व उर्वशी के पुत्रों में से एक ।

२ बुध व इला के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

सतायोड़ौ—देखो 'संतापियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. सतायोड़ी)

सतार-स. पु. [सं.] १ ग्यारहवां स्वर्ग । (जैन)

२ देखो 'सितार' (रू. भे)

सतारथ-वि. [सं. सत्यार्थ] १ सत्य, यथार्थ ।

उ०—त्रकुटबंध तिण गीत नै, कहै सरब कवियांण । राघव जस जिण मझ रटै, बळै सतारथ बांण ।—र. ज. प्र.

२ देखो 'सत्यारथ' (रू. भे.)

सतारा, सतारा-सं. पु. (ब. व.) सात सितारे जो उत्तर दिशा में उदय होते हैं, सप्तऋषि ।

पहेली—सात सतारा नवलख तारा, इण धरती में दो बिणजारा ।

सतारौ-सं. पु.—१ एक प्रकार का सुषिर वाद्य यंत्र ।

वि० वि०—वह वाद्य जिसमें दो बांसुरियां होती हैं । किन्तु जो अलगोझे से भिन्न प्रकार से बजाया जाता है । इस वाद्य में एक बाँसुरी के छः पेंरवे या छेदों पर छहों अंगुलियाँ रहती है । दूसरी बाँसुरी को केवल श्रुति स्वर अथवा आधार स्वर के रूप में बजाया जाता है । होठों के बीच में दोनों बाँसुरियों के मुंह रहते है जिनमें से एक केवल श्रुति स्वर देता रहता है जो फूंक द्वारा निरन्तर बजाया जाता है । दूसरी बांसुरी को गीत अथवा मन के अनुसार विभिन्न फूंकों से बजाया जाता है । इस वाद्य में एक विशिष्टता यह है कि स्वरों की मूर्च्छनाओं के बदलने के लिए आधार स्वर देने वाली बाँसुरी के छेदों को मोम से बंद करते रहते हैं, जिससे एक ही प्रकार से अंगुलियाँ चलाने से भी विभिन्न स्वरावलियां मिल जाती हैं । यह वाद्य मुख्यतया जैसलमेर की एक चरवाहे जाति-जतों द्वारा बजाया जाता है । इस जाति के पीछे इसका नाम 'जतारा' भी है । यों अन्य चरवाहों का कार्य करने वालों ने भी इस वाद्य को अपना लिया है ।

२ देखो 'सितारौ' (रू. भे.)

सतालंक-सं. पु. [सं. शताऽऽलक] बलराम। (ह. नां. मा.)

सतावणौ-वि. (स्त्री. सतावणी) सताने वाला, कष्ट देनेवाला।

उ०—खरै अराति खेत चेत हेत कौ खतावणी, सदा अगोध बोध बोध सोध कौ **सतावणी**।—ऊ. का.

सतावणौ, सताववौ—देखो 'संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—गोतम सुता तास सुत नागर धीरज सुचिता ध्यावै। प्रभु वैमुख जिणरौ रिपु प्रांणी, ताह न कदै **सतावै**।—र. रू.

सतावणहार, हारौ (हारी), सतावणियौ—वि०।

सताविग्रोड़ौ, सतावियोड़ौ, सताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सतावीजणौ, सतावीजबौ—कर्म वा०।

सतावत-सं. पु.—राठौड़ों की एक उप शाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति।

सतावधांन—देखो 'सताभिधांन' (रू. भे.)

सतावधांनी-वि. [सं. शतावधान] शतावधान की क्रिया को साधने वाला।

सतावन-वि. [सं. सप्तपञ्चाशत, प्रा. सत्तावण्ण, अप. सत्तावन] पचास और सात का योग।

रू. भे.—सत्तावन।

सतावने'क-वि.—सत्तावन के आसपास, लगभग।

रू. भे.—सत्तावने'क।

सतावनौ-सं. पु.—सत्तावन की संख्या का वर्ष या साल।

रू. भे.—सत्तावनौ।

वि.—जो क्रम में छप्पन के बाद पड़ता हो।

सतावर, सतावरी-सं. स्त्री. [सं. शतावरी] १ एक प्रकार की झाड़नुमा लता जिसके बीज व जड़ औषधि के काम आते हैं। शतमूली, सफेद मूसली।

वि. वि.—सतावर शीतल, कड़वी, मधुर, पित्तनाशक और रसायन कर्म में श्रेष्ठ है।

२ इन्द्राणी।

रू. भे.—सताउर, सताउरि।

सतावियोड़ौ—देखो 'संतापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सतावियोड़ी)

सतावी—देखो 'सिताब' (रू. भे.)

उ०—साहब लिखै सुजात सूं, करै **सतावी** काज। हुकम धरूं सिर सांम रौ, मैं फिर करूं इलाज।—रा. रू.

सतावरत-सं. पु. [स. शतावर्त] १ एक पवित्र वन का नाम।

२ शंकर, महादेव।

सतावीस—देखो 'सताईस' (रू. भे.)

उ०—गांव मांहै **सतावीस** वीमाह, रजपूत जाट वांणियां रै हुता सु जांनां आवती छी।—नैणसी

सतावौ-सं. पु.—प्रथमवार प्रसव देने वाली गाय के गर्भ के सातवें मास में स्तनों में होने वाला उभार।

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ

सति-क्रि.—१ अस्ति, है।

उ०—घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊंच छिछ ऊछळै अति। पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाली, सिरा हंस नीसरै **सति**।—वेलि

२ देखो 'सती' (रू. भे.)

उ०—१ सिध रीझै इम वयण कहै सति, मझि गंगा करि धार महीपति।—सू. प्र

उ०—२ अकल वधै मंत्रियां धरा सति वधै सांमध्रम। सरस वधै अरिन साख, पांण भड़ वधै पराक्रम।—सू. प्र.

उ०—३ मुदै एह खट महल सहल अत गिणै सुपावन। पड़दायत हित प्रिया अवट सति मिळी अठावन।—रा. रू.

उ०—४ वडै बोल सति वांणि, एम चहुवांण उचारै। आज चाड आपणी, धणी सुरलोक सिधारै।—रा. रू.

सतिक्ख—अति तीक्ष्ण।

उ०—वदै रांम हूं रांम वायक त्रिक्खं, तिकै रांम रा बांण जांणै **सतिक्खं**।—सू. प्र.

सतिधारी—देखो 'सतधारी' (रू. भे.)

उ०—अगन वरण जै सुत आचारी, सीघ्र नृपति जिण सुत **सति-धारी**।—सू. प्र.

सतियास, सतियासी—१ देखो 'सितियासियौ' (रू. भे.)

उ०—१ जग तोप झाल असमांन जाय, उठता भमंग धर पड़ै आय। **सतियास** वरस संवत सत्रास, महमंत सरद आसोज मास।—वि. सं.

उ०—२ सत्रहरस **सतियास** सक, ध्रुव अहमदपुर धांम। वर कवि 'करण' बखांण कर, सुभटां तणौ संग्राम।—वि. सं.

२ देखो 'सितियासी' (रू. भे.)

सतियौ-सं. पु.—देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

सती-सं. पु.—१ कुबेर। (ह. नां. मा.)

[सं शतिन्] २ सौ का समूह।

सं. स्त्री. [सं.] ३ दक्ष प्रजापति की पुत्री जो भगवान शंकर को ब्याही गई थी।

उ०—छती तू सती भूपति दच्छछोणी, गती मत्त मातंग तू हंस-गोणी। तुही चंद्रमा तुंड चामुंड चंडी, अपरणा अजा ईस्वरी तू अखंडी।—मे. म.

४ अंगिरस ऋषि की पत्नी।

५ गिरिजा, पार्वती। (अ. मा; डिं. को.)

६ विश्वामित्र ऋषि की पत्नियों में से एक।

७ सीता। (नां. मा; अ. मा.)

८ द्रौपदी। (अ. मा.)

[सं. क्षिति] ६ पृथ्वी, भूमि।

उ०—ससि सूर पवन पांणी सती, मुगती की अजांमण मरण। त्रैलोकनाथ 'जगियो' तवै, सरण राख असरण सरण।—ज. खि.

[सं. सती] वह स्त्री जो पातिव्रत्य का पूर्ण पालन करती हो। पतिव्रता, साध्वी। (अ. मा; डि. को.)

उ०—१ सत छोड़ै सीता सती, जत लिछमण सूं जावै। महा जोध हणमंत, कळा बळ हींण कहावै।—चोथो बीठू

उ०—२ आप जैड़ी सती रै जोग आ बात है। आपरा सत आगै तो म्हारी अकल कह्यौ इ नीं करै।—फुलवाड़ी

उ०—३ जननी तूझ हस्त मस्तक जिह, त्रिदसालय सुख बसत निलय तिहं। अस्ट सिद्धि नव निद्धि अखंडित, परम सती जुवती, सुत पंडित।—मे. म.

१२ वह स्त्री जो अपने मृतक पति या पुत्र की लाश के साथ चितारूढ हो भस्म होती है।

उ०—सती बळै जूंझै सुभट, करै ग्रंथ कविराज। दाता माया ऊधमै, नांम ऊबारण काज।—बां. दा.

उ०—२ सूर सती जब जांणीयै, आपा ऊपर खेल। हरीया सूरा लड़ मरै, सती आगि तन भेल।—अनुभववांणी

उ०—३ मुह लखि सीस तजेवा सुर-मुख, सती हुवै सतलोक लहां सुख।—सू. प्र.

उ०—४ सूरातन सूरां चढै, सत सतियां सम दोय। आडी-धारां ऊतरै, गिणै अनळ नूं तोय।—बां. दा.

१३ स्त्री, महिला, औरत। (अ. मा.)

१४ जैन साध्वी स्त्री।

वि. [सं. सत्] १ सत्य, यथार्थ। (ह. नां. मा.)

२ सत्य पर अटल रहने वाला, सत्यवादी।

३ वीर, बहादुर। (मि. 'असती' (३))

उ०—हूं कंकाळी भट्ट, सती; असतौ नर पेखूं। सरग मरत्य पाताळ देव, नर नाग परेखूं।—जगदेव पंवार री बात

मुहा.—सौ सती नें एक जती=एक जितेन्द्रिय व्यक्ति सौ बहादुरों के बराबर होता है।

४ दातार, दानी।

उ०—१ पाखंडी बड नग्न पंथ पर, घूमै लेकर घोटा। सती मरद होवै जो सच्चा, लाव भरादै लोटा।—ऊ. का.

उ०—२ भलौ समौ जोयनै धाररा मुंहता नूं रावळ सूं मिळायो। बात एकंत मिळ सकी कीवी। आगला राजा सती हुता। अचड़ां बोल उबारण री घणी वात मन मां राखता। तरै देवराज कांमदारां नूं कह्यौ—औ वडो मुंहतो वडे दरबार रौ परधांन इतरा राईतन छोडनै मोनूं जांणनें इतरी भूंय आयौ, तौ इणरो जरूर अरथ सारणौ। तरै हाथी सौ दिया। मुंहता नूं घोड़ो सिरपाव दे सीख दी।—नैणसी

मुहा.—एक सती नै नगर सारौ=एक दातार व्यक्ति सारे नगर के लोगों से अच्छा होता है।

५ निश्चल, दृढ़। * (डि. को.)

रू. भे.—सइ, सई, सति, सतीय, सत्ती।

सतीअमावस, सतीअमावस्या—सं. स्त्री. [सं. सतीअमावस्या] ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या का एक नाम। इसी दिन सावित्री व्रत भी किया जाता है।

सतीक्षण, सतीखण—वि. [सं. सतीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण, तेज।

२ नुकीला।

उ०—व्रति कांन सतीखण अणिय वंक, फिर कलम जुगल नभ करत अंक।—रा. रू.

रू. भे.—सतीखौ।

सतीखौ—१ विशेष, अधिक।

उ०—भट चारण गुण भणौ, तिकां रीझणौ सतीखौ। माया ऊधांमणौ सघण वरसणौ सरीखौ।—सू. प्र.

२ देखो 'सतीखण' (रू. भे.)

सतीचौरौ—सं. पु.—सती स्त्री के सती होने की जगह पर बनाया जाने वाला चबूतरा।

सतीतफौ—देखो 'इस्तिफौ' (रू. भे.)

उ०—अंब नयर उथपतां थाट 'जैमाह' थपाए। देह सतीतफा दिली जेण जेजियौ छुडाए।—सू. प्र.

सतीत्व—सं. पु. [सं.] सती होने की अवस्था या भाव।

सतीपुर—देखो 'सतीलोक' (रू. भे.)

उ०—'हरा' रौ सती संग सतीपुर हालियौ, माल्हियौ 'सेर' अम जोत मांहि।—पहाड़खां आढौ

सतीमाता—सं. स्त्री.—१ पति या पुत्र की लाश के साथ जलने वाली वह स्त्री जो लोक देवी के रूप में पूजी जाती हो।

सतीय—देखो 'सती' (रू. भे.)

उ०—सतीय बेउ छइं कसगि रही, इंद्रह आइसु तु तम्ह कही। मेल्हउ पंडव वडइ वछेदि, विणु हथियारह बांधा भेदि।

—सालिभद्र सूरि

सतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

सतीरांणी—सं. स्त्री.—एक प्रसिद्ध मारवाड़ी लोक गीत।

सतीलोक—सं. पु.—सती स्त्रियों के ृत्यु उपरांत मिलने वाला लोक, स्वर्ग।

रू. भे.—सतलोक।

सतीवरि—सं. पु [सं. सीता+वर] सीतापति श्रीरामचंद्र।

सतीवांम—सं. स्त्री [सतीवामा] सीता, जानकी। (अ. मा.)

सतुआसंकरांत, सतुआसंकरांति, सतुआसंकरायंत, सतुआसंकरायंति, सतुआसंक्रांति—सं. स्त्री. [सं. सक्तुकसंक्रांति] वैशाख मास में होने वाली मेघ संक्रांति।

सतुआसूंठ, सतुआसोंठ-सं. स्त्री.—एक प्रकार की सोंठ जिसके अन्दर रेसे निकलते हैं।

सतुक-सं. पु.—अवसर, मौका।

उ०—तरै वचारिश्रो ज हैमार अेहड़ौ **सतुक** नहीं जौ आंटौ लीजै। —कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

सतुतकीरत-सं. स्त्री.—श्रुतकीर्ति जो शत्रुघ्न को व्याही गई थी। (रामकथा)

सतुर—देखो 'सत्वर' (रू. भे.) (अ. मा.)

सतुरमुरग—देखो 'सुतरमुरग' (रू. भे.)

सतुळौ-सं. पु.—एक प्रकार का जांघिया, जो प्रायः घुटनों तक होता था। (प्राचीन)

सतूआरा-सं. पु.—बढई, सुथार।

उ०—१ मोची गांछा नइ **सतूआरा** साथइ चालइ माळी। दरजी बाबर ऊड चालीया, च्यार सहस तंबोळी।—कां. दे. प्र.

उ०—२ छीपा परियटा सूई ताई तेली मोची **सतूआरा** बंधारा चीतारा नूतारा कोली पंचोली।—व. स.

सतूति, सतूती—देखो 'स्तुति' (रू. भे.)

उ०—हिरणाखी हंसहाली चरचा उचारै मां चरचा उचारै। सेवक पढत **सतूती** देवळ निज द्वारै।—मे. म.

सतूरण-सं. स्त्री.—शीघ्रता। (ह. नां. मा.)

क्रि. वि. [सं. सत्वरण] शीघ्र, तुरंत।

सतेज, सतेजौ-सं. पु.—१ वेग। (अ. मा.)

२ आग, अग्नि। (अ. मा.)

क्रि. वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—सुणियां साद **सतेज**, आई आगळ आवता। जगदंब अबकै जेज, करी इती तैं करनला।—अग्यात

वि.—२ वेगपूर्ण, तेजपूर्ण।

उ०—१ अत **सतेज** ओरियौ, मधी अण जेज मुगल्लां। सेल्ह भोक सायक्क, तेग साबळ कर तंडळा।—रा. रू.

उ०—२ छट सुंदर बीख **सतेज** घणा, तन ओप वधै गढ रूप तणा।—रा. रू.

३ शक्तिशाली, बलवान।

उ०—ऊंनै राव सेखा को **सतेजौ** लोग आयौ।—शि. वं.

(स्त्री. सतेजी)

सतोखणौ, सतोखबौ—देखो 'संतोखणौ, संतोखबौ' (रू. भे.)

सतोखणहार, हारौ (हारी), **सतोखणियौ**—वि०।

सतोखिओड़ौ, सतोखियोड़ौ, सतोख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सतोखीजणौ, सतोखीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सतोखियोड़ौ—देखो 'संतोखियोड़ौ' (रू. भे.)

सतोगुण-सं. पु. [सं. सत्त्वगुण] तीन गुणों में से प्रथम गुण जो मनुष्य को सुकर्म की ओर प्रेरित करने वाला माना जाता है, सत्वगुण।

उ०—१ अग जळ नीर सींग ससियै का, ज्यूं वंझ्या का बारा। दुख सुख जरा मरण सुपनां मैं, यूं **सतोगुण** वरतारा।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ चंमाळौ चाळै गयौ, पैंताळौ इण भांन। खांन सुजायत कांगलां, लिखै **सतोगुण** स्वांत।—रा. रू.

वि.—श्वेत, सफेद। * (डिं. को.)

रू. भे.—संतोगुण, सत्वगुण।

सतोगुणी—देखो 'सत्वगुणी' (रू. भे.)

सतोतरौ-सं. पु.—सितहत्तर की संख्या का वर्ष।

उ०—संवत अटारै **सतोतरै** रै वदि तेरस आसाढ।—जयवांणी

सतोदर-सं. पु. [सं. शतोदर, शातोदर] १ शिव का एक नाम।

२ शिव का एक गण।

३ रामायण के अनुसार एक अस्त्र का नाम।

४ देखो 'सितोदर' (रू. भे.)

सतोदरी-सं. स्त्री. [सं. शतोदरी] कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सतोम, सतोमी—देखो 'स्तोम' (रू. भे.) (अ. मा.)

सतोरौ—वि. (स्त्री. सतोरी) पराक्रमी, बलशाली, शक्तिशाली।

उ०—'जूंझावत' 'सगरांम' सजोरौ, तिसड़ोई 'भगवांन' **सतोरौ**।

—रा. रू.

सतोल-वि. (स्त्री. सतोली) १ असर करने वाला, प्रभावशाली।

उ०—सुणिया वचन **सतोल**, तौ मुख नीसरिया तिकै। बीठू तैं बिन मोल, मोल लियौ 'बांका' म्हनै।—भोपाळदांन सांदू

२ दृढ़, पक्का।

उ०—मूवां गाढै हुवै, दीनौ वचन **सतोल**। क्यूं पाळीस कमालदी बंधव, तणरा बोल।—नैणसी

३ भारी, वजनदार।

उ०—१ चढीरी पिलांण दुन्नाली बंदूकां कुड अर कडावां **सतोली** संदूकां लोग, लोग ऐकेक लेग्या।—दसदोख

उ०—२ ब्याह री तलड़ी री पैली कडी सोनै-चांदी अर मोहरां सूं **सतोल** हुणी चाहीजै।—दसदोख

४ बहुत, खूब, अधिक।

उ०—हरियौ भरियौ धांन, ऊतरै सदा **सतोलौ**। ढिगला लगै ललांम, धोर धन देवण पोलौ।—दसदेव

५ बराबर, समान।

रू. भे.—संतोल, सत्तोल।

सतोळियौ, सतोलियौ, सतोळ्यौ, सतोल्यौ-स. पु.—एक देशी खेल।

वि० वि०—इस खेल में एक गेंद व सात पत्थर के गोलाकार चपटे टुकड़े होते हैं, जो क्रमशः (ढाल उतार) रखे जाते हैं। इसे खेलने के लिए खिलाड़ी दो दलों में विभक्त हो जाते हैं। जब एक दल खेलता है तो दूसरा दल क्षेत्र-रक्षण करता है। पारी २ से यह क्रम चलता रहता है। इसमें खिलाड़ी एक निश्चित दूरी से उन

मात गोलाकार चपटे टुकड़ों (सतोळिये) को गिराने का प्रयास करता है और ऐसा करने के लिए उसे तीन मौके दिए जाते हैं। अगर वह तीनों वार सतोळियों को नहीं गिरा सकता है या सतोळिया नहीं बना सकता है तो वह आउट घोषित कर दिया जाता है। जब वह सतोळिये गिरा देता है और सतोळिया बना देता है तो उसे फिर तीन मौके मिलते हैं और इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है। खिलाड़ी जब सतोळिये को गिराने का प्रयास करता है तब प्रतिपक्ष का एक खिलाड़ी जो सतोळियों के पीछे और गेंद फेंकने वाले खिलाड़ी के सामने खड़ा रहता है, वह अगर गेंद लपक लेता है तो वह खिलाडी आउट हो जाता है। अगर वह एक हाथ से गेंद लपक लेता है तो गेंद फेंकने वाले खिलाड़ी का पूरा दल आउट घोषित हो जाता है।

अगर गेंद फेंकने वाला खिलाड़ी गेंद फेंक कर सतोळिये को गिराने में सफल हो जाता हैं और गेंद लपकी नहीं जाती है, तब प्रति पक्षी खिलाड़ी गेंद लेकर खेलने वाले दल के खिलाडियों को मारने का प्रयास करते हैं। खेलने वाला दल एक तरफ तो गेंद से बचने का प्रयास करता है और दूसरी तरफ गिरे हुए सतोळियों को वापस जमाने का भी, अगर वे सतोळियों को जमा कर 'सतोळियो' की आवाज कर देते हैं तो उनका एक सतोळिया बन जाता है अगर इस बीच उनके गेंद लग जाती है या उनके पक्ष का कोई खिलाड़ी बीच में ही सतोळिया बोल देता या सतोळिया जमाने के बाद या सतोळिया बोलने के बाद वह वापस गिर जाता है तो वह खिलाड़ी जिसने सतोळिया बनाने के लिए गेंद फेंकी थी, आउट घोषित कर दिया जाता है। अगर कोई खिलाड़ी सात सतोळिये एक साथ बना लेता है तो उसे अपना पिठू (किसी खिलाड़ी के रूप में या खुद पिठू की जगह खेल सकता हैं।) बनाने का अधिकार हो जाता है। पिठू जितने भी चाहे बना सकते हैं। यह खेल बच्चों का है। कहीं २ सतोळिया पत्थर का एक ही थोड़ा बड़ा टुकड़े का होता है जो जमीन पर सीधा टिका रह सके।

२ देखो 'भड़भोल्यो'

सत्करता—वि. [सं. सत्कर्त्ता] १ सत्कर्म करने वाला।

२ आदर सत्कार करने वाला।

सत्करम—सं. पु. [सं. सत्कर्म] १ अच्छा कार्य, पुण्य कार्य।

२ अच्छा संस्कार।

३ मनुवंशीय अधिरथ का पिता व धृतव्रत का पुत्र एक राजा।

सत्कार—सं. पु. [सं.] आदर, सम्मान।

उ०—अधिस आमार राज सलख सूं सत्कार पायो अर आपरी ममता उपेन भीम री लिखाई प्रसंसा पूरबक बरणदूत रौ समस्त व्रतांत कहियौ।—वं. भा.

रू. भे.—सक्कार, सतकार।

सत्कीरत्ति—सं. स्त्री. [सं. सत्कीर्त्ति] उत्तम कीर्ति, यश।

सत्क्रत—सं. पु.—१ आदर, सत्कार।

२ सत्कर्म।

वि. [सं. सत्कृत] १ अच्छी तरह किया हुआ।

२ जिसका आदर सत्कार किया गया हो।

सत्क्रति—सं. पु. [सं. सत्कृति] १ भगवान विष्णु का नामान्तर।

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

सत्त—सं. पु. [सं. सत्व] १ किसी पदार्थ का सार तत्त्व।

२ देखो 'सत' (रू. भे.)

उ०—१ सीळ सत्त साहंस अंस निज वंस उजाळी, उर विहसी उल्लसी हसी सू हत्थौ ताळी।—रा. रू.

उ०—२ जत्त सत्त गरू-अत्त, तजै पौरस आपांणौ। अडप छाडि अहंकार, हुए बळ-हीण निमांणौ।—गु. रू. बं.

उ०—३ तेज रोस तांमंस सत्त सूरातन छोडै, सबळ-पणौ मेल्हियौ नहीं लाह थळ संकोडै।—गु. रू. बं.

३ देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—आया जेथ प्रसन्न ह्वै, वधै घटै नह वत्त। प्रभू राखै वण पांखड़ी, सदा अमीणौ सत्त।—बां. दा.

४ देखो 'सात' (रू. भे.)

उ०—झलहलीय सायर सत्त सुरगिरि, खंगु खंगि खडखडी। खणु एकु असरणु हूउं तिहूंयणु, राय सयल वि धरहडी।

—सालिभद्र सूरि

५ देखो 'सत्य' (रू. भे.)

उ०—देवी सत्त रै रूप हरचंद सिद्धी।—देवि.

६ देखो 'सत्रू' (रू. भे.)

उ०—खेतसी खाग खेळंत खत्त, 'गोपाळ' सुत्त गोडंत सत्त।

—गु. रू. बं.

सत्तम—वि.—१ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—संप्रति सत्तम मांन, पोळ दरवाजा दुकांनां। मेड़ी, मोड़ा, मैल, मनोहर वडा मकांनां।—दसदेव

२ देखो 'सप्तम' (रू. भे.)

उ०—सत्तम प्रहरै दिवस कै, धण जु वाडियां जाइ। आंणै द्राख-विजोरियां, धण छोलइ प्रिउ खाइ।—ढो. मा.

सत्तमी—देखो 'सप्तमी' (रू. भे.)

सत्तर—१ देखो 'सित्तर' (रू. भे.)

२ देखो 'सतरै' (रू. भे.)

सत्तरमौ—१ देखो 'सित्तरमौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सतरमौ' (रू. भे.)

सत्तरह—देखो 'सतरै' (रू. भे.)

सत्तरि—देखो 'सितर' (रू. भे.)

सत्तरै'क—१ देखो सतरै'क' (रू. भे.)

२ देखो 'सित्तरै'क' (रू. भे.)

सत्तरौ—देखो 'सतरौ' (रू. भे.)
सत्तवती—देखो 'सत्यवती' (रू. भे.) (डिं. को.)
सत्तसाहिब-सं. पु—कबीर पंथियों द्वारा किया जाने वाला अभिवादन। (मा. म.)
सत्ता-सं. स्त्री.—१ वह आधिपत्य या शासन-शक्ति जो शासन चलाती है, राज-सत्ता।
२ सर्वोपरि अधिकार जो कानूनों द्वारा नियन्त्रित नहीं होता, प्रभु-सत्ता।
३ देखो 'सता' (रू. भे.)
उ०—जौ उपज्या सो माया बिनासी, सत **सत्ता** अविनासी। योई है अनुभव ग्यांन हमारा, नांम रूप नहि पासी।
—स्री सुखरांम जी महाराज
सत्ताईस—देखो 'सताईस' (रू. भे.)
सत्ताईसमौं, सत्ताईसवौं—देखो 'सताईसमौं' (रू. भे.)
सत्ताईसेंक—देखो 'सताईसेंक' (रू. भे.)
सत्ताईसौ—देखो 'सताईसौ' (रू. भे.)
सत्ताधारी-सं. पु. [सं. सत्ताधारिन्] १ शासक वर्ग।
२ अधिकारी, अफसर।
सत्तावत-सं. पु.—राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
सत्तावन—देखो 'सतावन' (रू. भे.)
सत्तावनेंक—देखो 'सतावनेंक' (रू. भे.)
सत्तावनौ—देखो 'सतावनौ' (रू. भे.)
सत्तासी—देखो 'सित्तियासी' (रू. भे.)
सत्ती-सं. स्त्री.—१ सात बूंटियों वाला ताश का पत्ता।
२ देखो 'सती' (रू. भे.)
सत्तु, सत्तू—१ देखो 'सातु' (रू. भे.)
२ देखो 'सत्रु' (रू. भे.)
उ०—सेंण हुवै सहु **सत्तु**, फिरै जायै मन फट्टै। सुणे सेंण धरमसीख, राखिजै रीस दबट्टै।—ध. व. ग्रं.
सत्तुकार, सत्तूकार-सं. पु. [सं. सक्तु व+अगार] वह स्थान जहाँ निःशुल्क भोजन व विश्राम मिलता हो।
उ०—गढ गढ मंदिर पोलि पगार, थांनकि थांनकि **सत्तूकार**।
—हीराणंद सूरि
सत्तौ-सं. पु.—१ स्त्री के शव के साथ जल कर भस्म होने वाला पुरुष।
२ स्त्री की मृत्यु के पश्चात उसके विरह में मरने वाला व्यक्ति।
सत्तोल—देखो 'सतोल' (रू. भे.)
उ०—**सत्तोल** बोल मुक्खं दक्खै, खेलेवा खत्रं-धौड़। साहिजादै माथै विढ़ा हुऔ, हिंदू पत्ती राठौड़।—गु. रू. बं.
सत्थ—देखो 'साथ' (रू. भे.)
उ०—१ सत्थ नको बळ हत्थ के, नां जीपै छळ मत्त। जे पांमै रिप संग्रहै, जप हूंता छत्रपत्त।—रा. रू.
उ०—२ अत्थ जिकां दी आपणी, हरक गरीबां हत्थ। गवरीजै जस गीतड़ा, तात तणांकां **सत्थ**।—बां. दा.
उ०—३ जमडड्ढां तरवारियां, सेल्ह बंदूकां **सत्थ**। आगै धूप उखेविया, पाछै झाली हत्थ।—रा. रू.
उ०—४ डेरै हाळोहळ हुई, हुआ सचाळा **सत्थ**। आज विहांणै रट्ठवड, करिसी कौ भारत्थ।—गु. रू. बं.
उ०—५ राजा कांम भळावियौ, राखै विकळी सत्थ। कह्यौ वजीरां 'गजपती', तेडौ साउ **सत्थ**।—गु रू. बं.
सत्थर-सं. पु.—सुरंग जिसमें बारूद बिछा हुआ हो।
उ०—सोर उड्यौ लग **सत्थरां**, उड़िया सूर अनेक। फुळस पड़चा पिण भींकबा, कण हूंत मंड्या केक।—रैवतसिंह भाटी
उ०—२ लगि सोर **सत्थर** भू थरत्थर टूट पत्थर बित्थुरै।
—सूरजमल्ल मिस्रण
२ देखो 'साथरवाड़ौ' (रू. भे.)
उ०—**सत्थरां** सोय सारा सुखी चवरी ढुलतां चोमरां। तन लगन तीसरां री तिकां, मंगत ध्यांन मन मोसरां।—ऊ का.
सत्थरौ—देखो 'साथरौ' (रू. भे.)
उ०—आव्रत्त हुऔ एकै घड़ी, हुआ सुभट्टां **सत्थरां**। संग्रांम चक्र वूहा सत्रां, सूरसिंघ चक्रव्रत्तरा।—गु. रू. बं.
सत्थळ, सत्थल-सं पु.—१ शस्त्र विशेष। (व. स.)
२ देखो 'साथळ' (रू. भे.)
उ०—रंगावळि **सत्थळ** हत्थै हत्थळ, भूलरियाळा घू टोप। जडिया लै जूसण बंधै कस्सण, सिद्धक जांणै सक्कोप।—गु. रू. बं.
सत्थवाह, सत्थवाहौ—देखो 'सारथवाह' (रू. भे.)
उ०—१ **सत्थवाह** जय सायर दीठउ चालतउ तिणि वार। तिहि जाई ते पूछिउ तीणइ पहिलउं करीय जुहार।—हीराणंद सूरि
उ०—२ बली धन राईसर मांडव जाव कौटुंबी **सत्थवाहो** रे।
—जयवांणी
सत्थि, सत्थी—१ देखो 'साथ' (रू. भे.)
उ०—भड़ां दुबाहां वंकड़ां, हुई सनाहां **सत्थि**। सेध निवाहां सूरमां, राहां वेध अरत्थि।—रा. रू.
२ देखो 'साथळ' (रू. भे.)
उ०—कटि जंघा **सत्थी** कटै हत्थी हवि हक्कै।—वं भा.
३ देखो 'साथी' (रू. भे.)
सत्थु, सत्थै, सथ्थ, सथ्थी—देखो 'साथ' (रू. भे.)
उ०—१ इसुं सुणी नइं धायउ पत्थु, भूझइ भीम मिलिउ भड **सत्थु**।—सालिभद्र सूरि
उ०—२ अजमेर आयौ साहजादौ, 'करन' **सत्थै** आंणए। परबतां पासै लाल पंडर, गयण गूडरा तांण ए।—गु. रू. बं.
उ०—३ 'परेरज' साह **सत्थै** दै, कमधज लज भूडंडै। सुरतांण

खुरम मत्यैं दै. वीडो कीध फुरमांण ।—गु. रू. बं.

उ०—४ मीर अमीर सतरि धरि मत्यैं, सभि बावीस चढौ इस सत्यै ।—रा. रू.

सत्पथ-सं. पु.—१ सदाचार ।

२ उत्तम सम्प्रदाय ।

३ उत्तम सिद्धान्त ।

४ उत्तम मार्ग, सही रास्ता ।

सत्पुरस, सत्पुरुस—देखो 'सतपुरस' (रू. भे.)

सत्यंमरा-सं. स्त्री. [सं. सत्यम्भरा] प्लक्षद्वीप की एक नदी का नाम ।

सत्यमूर्ति-सं. पु. [सं.] भगवान् विष्णु ।

सत्य-वि. [सं.] १ ठीक, यथार्थ, वास्तविक ।

उ०—जो रचना जगपत्ती, लोतै आठ भ्रमे त्रयलोकं । सोई सत्य सद्रढं, रेखा सार अंक रजपत्ती ।—रा. रू.

२ असली, शुद्ध, खरा ।

३ ईमानदार, सच्चा ।

४ पुण्यात्मा, धर्मात्मा ।

५ सत् का, सत् से सम्बन्धित ।

६ जो झूठ या मिथ्या से परे हो ।

७ दृढ, पक्का, अटल ।

८ नहीं मिटने वाला, अमिट ।

९ छल-कपट से रहित, निष्कपट ।

१० अजर-अमर ।

उ०—भवांनी नमौ सत्य आलाप बाळा । भवांनी नमौ व्रंद विद्या विसाळा । भवांनी नमौ देव हेरंभ माता । भवांनी नमौ तन्नमौ संत त्राता ।—मे. म.

[सं. शत्य] १ सौ से बना हुआ ।

२ सौ से सम्बन्धित ।

३ सौ के हिसाब से ब्याज, टेक्स आदि देने वाला ।

४ सौ का सूचक ।

सं. पु. [सं. सत्यं] १ वास्तविक बात, यथार्थ तत्व । (ह. नां. मा.)

२ उचित पक्ष, न्याय व धर्म का पक्ष ।

३ सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक । (पुराण)

४ भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

५ भगवान् रामचन्द्र का नाम ।

६ पारमार्थिक सत्ता जो सदा अविकारी रहती है ।

७ एक विश्वदेव का नाम ।

८ बल, शक्ति ।

९ एक ऋषि जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित थे ।

१० निश्च्यवन नामक अग्नि के एक पुत्र का नाम, एक प्रकार की अग्नि जो निष्पाप व कुलधर्म के प्रवर्त्तक हैं ।

११ तीसरे व उत्तम मन्वन्तर के एक देव विशेष ।

१२ नन्दीमुख श्राद्ध के अधिष्ठाता का नाम ।

१३ पृथुवंशीय हविर्धान व हविर्धानी के पुत्रों में से एक पुत्र, राजा ।

१४ वीतहव्यवंशीय एक राजा जो वितत्य राजा का पुत्र व संत का पिता था ।

१५ विदर्भदेश के एक तपस्वी का नाम ।

१६ भीम द्वारा मारा गया कलिंग देश का एक योद्धा ।

१७ अंगिरस एवं सुरूपा के पुत्रों में से एक पुत्र देव ।

१८ ब्रह्मसावर्णि के सप्तर्षियों में से एक ।

१९ दक्षसावर्णि के सप्तर्षियों में से एक ।

२० सत्या के एक पुत्र का नाम जो अवतार माना जाता है ।

२१ अट्ठाईस व्यासों में से एक व्यास का नाम ।

२२ सुधामन्, अमिताभ, आभूतरजस्, तामसमन्वन्तर आदि देवों में से प्रत्येक का एक-एक देव का नाम ।

२३ सच्चाई ।

२४ भलाई ।

२५ शपथ ।

२६ जल, पानी ।

२७ चार युगों में से प्रथम युग, स्वर्णयुग ।

रू. भे.—सच, सच्च, सच्चु, सत, सांच, साच ।

सत्यक-सं. पु. [सं.] १ यदुवंशीय एक राजा जो शिनि का पुत्र व सत्यकि का पिता था ।

वि. वि.—इसका विवाह काशिराज की कन्या से हुआ था जिससे इसे ककुद, भजमांन, शमी एवं कंबल बर्हिष नामक पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

२ कृष्ण व भद्रा के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रों में से एक ।

३ तामस मन्वन्तर का एक देव ।

४ रैवत मनु के पुत्रों में से एक ।

रू. भे.—सत्यकु ।

सत्यकरमा-सं. पु. [सं. सत्यकर्मन्, सत्यकर्मा] १ धृतव्रत राजा का पुत्र एवं अतिरथ या अनुरथ राजा का पिता ।

२ त्रिगर्त्त राजा सुशर्मा का भाई जो अर्जुन के द्वारा मारा गया था ।

सत्यकांम-सं. पु. [सं. सत्यकाम] एक श्रेष्ठ महर्षि जो जाबाला के पुत्र थे ।

वि. वि.—इनके पिता का नाम व गोत्र इनसे और इनकी माता से गुप्त था । ये गौतम गौत्रीय महर्षि हारिद्रुम के शिष्य थे । एक बार ये गुरु की आज्ञा से चार सौ गायें लेकर वन में गये और संकल्प किया कि जब तक ये गायें एक हजार नहीं हो जाएगी वापिस नहीं लौटूंगा । जब ये गायों के एक हजार हो जाने पर वापिस लौट रहे थे तब इन्हें ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हुई ।

सत्यकांमा-सं. स्त्री. [सं. सत्यकामा] श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम

जो भंगकार राजा की पुत्री थी।

सत्यकीरति, सत्यकीरती-पं. पु. [सं. सत्यकीर्त्ति] १ मंत्र बल से चलाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

२ देखो 'सत्यक्रता' (रू. भे.)

सत्यकु—देखो 'सत्यक' (रू. भे.)

उ०—सत्यकु छेदिउ बलिहिं सीसु तसु दिणि चऊदमइ। रातिहिं झूझइ विसम झूझि गुरु पड़इ कीमइ।—सालिभद्र सूरि

सत्यकेतु-सं. पु. [सं.] १ उग्रसेन राजा की पत्नी पद्मावती का हरण-कर्त्ता एक यक्ष।

२ कृष्ण के चाचा अक्रूर के गांदिनी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

३ पुरूरवा के वंश में उत्पन्न धर्मकेतु के पुत्र तथा विभु के पिता एक राजा।

सत्यजित-सं. पु.—१ द्रोणाचार्य द्वारा मारा गया पांचाल के राजा द्रुपद का भाई। (पौराणिक)

२ सत्यभामा के पिता जो कृष्ण के श्वसुर थे।

३ तीसरे मन्वंन्तर के इन्द्र का नाम।

४ कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र, नाग।

५ एक यक्ष जो कार्तिक माह में विष्णु के साथ भ्रमण करता है।

६ क्षेम के पिता व सुनीथ के पुत्र एक ययातिवंशीय राजा का पुत्र।

७ एक यादव राजा जो आनक एवं कंका का पुत्र था।

रू. भे.—सत्राजित।

सत्यजुग—देखो 'सतजुग' (रू. भे.)

सत्यतप-सं. पु. [सं.] १ एक ऋषि जिसने अपने तप भंग करने के लिए आई हुई अप्सरा को बेर का वृक्ष बनने का शाप दिया था।

२ एक कृष्णभक्त ऋषि।

सत्यता-सं. स्त्री. [सं.] १ सत्य होने की अवस्था या भाव।

२ वास्तविकता, यथार्थता।

सत्यदेव-सं. पु. [सं.] भारतीय युद्ध में भीम द्वारा मारा गया कलिंग देश का योद्धा।

सत्यदेवी-सं. स्त्री. [सं.] वसुदेव की सात पत्नियों में से एक पत्नी का नाम।

सत्यद्युमन, सत्यद्युम्न-सं. पु. [सं. सत्यद्युम्न] १ जनकवंशीय समर्थ के पुत्र एवं उपगुर के पिता एक राजा।

२ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई।

३ विदर्भनरेश का नाम।

सत्यधज—देखो 'सत्यध्वज' (रू. भे.)

सत्यधरम, सत्यधरमा-सं. पु. [सं. सत्यधर्मा] १ चंद्रवंशी राजा का नाम।

२ भगवान् विष्णु का नामान्तर।

३ त्रिगर्तराजा सुशर्मा का भाई।

सत्यध्रुज—देखो 'सत्यध्वज' (रू. भे.)

सत्यध्रत, सत्यध्रति-सं. पु. [सं. सत्यधृति] १ पुरुवंशीय एक राजा जो कीर्तिमान का पुत्र था।

२ गौतम पुत्र शतानन्द के एक पुत्र का नाम जो धनुर्वेद विशारद थे।

३ पाण्डव-पक्षीय एक राजा जो द्रोणाचार्य द्वारा मारा गया था।

४ बलराज के एक पुत्र का नाम।

५ सत्यधृ राजा का नामान्तर।

सत्यध्वज-सं. पु. [सं.] ऊर्जवह राजा का पुत्र एवं शकुनि का पिता, विदेह देशाधिपति।

सत्यनांमी-सं. पु. [सं. सत्यनामी] वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा या इस शाखा का अनुयायी।

सत्यनारायण-सं. पु. [सं.] परमेश्वर, ईश्वर।

रू. भे.—सतनारायण।

सत्यनेत, सत्यनेतर, सत्यनेत्र-सं. पु. [सं. सत्यनेत्र] वैवस्त मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

सत्यपद-सं. पु. [सं.] एक प्रमुख तीर्थ स्थान।

सत्यपाल-सं. पु. [सं.] युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक ऋषि।

सत्यभांमा—देखो 'सतभांमा' (रू. भे.)

उ०—रुक्मिणी नइ सत्यभांमा रांणी, सउकी नउ सबल संताप जी। खमत खांमणा किया खरै मन, व्रत लेवा प्रस्ताव जी।

—स. कु.

सत्ययुग—देखो 'सतजुग' (रू. भे.)

सत्यरता-सं. स्त्री. [सं.] अयोध्या के सत्यव्रत त्रिशंकु की पत्नी का नाम जो केकय-राजकन्या थी।

सत्यरथ-सं. पु. [सं.] १ जनकवंशीय समर्थ के पुत्र एवं उपगुर के पिता एक राजा।

२ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई।

३ चित्ररथ राजा का पुत्र, एक राजा।

४ विदर्भनरेश का नाम, सत्यसंध।

५ सत्यव्रत राजा का पुत्र।

सत्यरूपा-सं. स्त्री. [सं.] एक देवी का नाम।

सत्यलोक-सं. पु. [सं.] सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा निवास करते हैं।

रू. भे.—सतलोक।

सत्यलोकईस, सत्यलोकेस-सं. पु. यौ. [सं. सत्यलोक+ईश] ब्रह्मा।

(डिं. को.)

सत्यवंत-वि. [सं.] सत्य को धारण करने वाला।

उ०—क्षमावंत सत्यवंत छै रे, चवदं पूरवधार। चउनांणी गुरु साथै मुनिवर पखरचा रे, पंच सयां अणगार।—जयवांणी

सत्यवचन-सं. पु.—१ यथार्थ कथन।

२ प्रतिज्ञा, प्रण।

सत्यवत–सं. पु. [सं.] १ सावित्री के पति का नाम।

२ यादववंशीय सत्यक राजा का नाम।

३ ऋतंभर राजा का पुत्र, एक राजा।

सत्यवती–वि. स्त्री.—१ पतिव्रता, सती।

२ सत्य का आचरण और पालन करने वाली।

सं. स्त्री.—१ शांतनु राजा की पत्नी जो चित्रांगद एवं विचित्रवीर्य की माता थी। वेदव्यास इसी के पुत्र थे। इसे काली, मत्स्यगंधा, गंधवती, योजनगंधा, गंधकाली आदि नामों से पुकारते हैं।

उ०—१ इसीय वाच गयणह पडी, तउ मइं लिद्ध कुमारि। **सत्यवती** नांमि हुसिए, संतणघर नारि।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ **सत्यवती** छइ अवर नारि तसु नंदण दुन्नि। सवै सलक्खण रूपवंत अनु कंचणवन्नि।—सालिभद्र सूरि

२ गाधि राजा की कन्या एवं जमदग्नि ऋषि की माता जो विश्वामित्र की बहिन थी।

३ अगस्त्य पत्नी लोपामुद्रा का नामांतर।

४ सुबाहु राजा की पत्नी।

५ त्रिशंकु की पत्नी व हरिश्चन्द्र की माता केकय राजकुमारी।

६ एक प्राचीन नदी का नाम।

रू. भे.—सच्चवई, सत्तवती।

सत्यवरमा–सं. पु. [सं. सत्यवर्मा] अर्जुन के द्वारा मारा गया त्रिगर्तनरेश का भाई।

सत्यवसु–सं. पु. [सं.] दक्ष प्रजापति की कन्या विश्वा व धर्म के योग से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक।

सत्यवांन–सं. पु. [सं. सत्यवत्] १ सती सावित्री के पति का नाम, जो साल्वदेशाधिपति द्युमत्सेन का पुत्र था।

२ चाक्षुष मनु और नड्वला के पुत्र का नाम।

वि. पु. [सं. सत्यवत्] सत्य बोलने वाला, सत्यवक्ता।

सत्यवाक–सं. पु. [सं.] गन्धर्व जो कश्यप एवं मनु के पुत्रों में से एक था।

सत्यवाच–सं. पु. [सं. सत्यवाच्] १ प्रतिज्ञा, वादा।

२ सत्यवचन, सत्यकथन।

३ रैवत मनु के पुत्रों में से एक।

४ सावर्णि मनु के पुत्रों में से एक।

५ सत्यवत नामक राजा का नामान्तर।

६ कश्यप एवं मुनि के पुत्रों में से एक।

सत्यवादिणी, सत्यवादिनी–सं. स्त्री. [सं. सत्यवादिनी] १ बोधिद्रुम की एक देवी का नाम।

वि. स्त्री.—सत्य बोलने वाली।

सत्यवादी–वि. [सं. सत्यवादिन्] (स्त्री. सत्यवादण, सत्यवादिणी, सत्यवादिनी) १ सत्य कहने वाला।

उ०—आदर पर उपगार **सत्यवादी** संतोखी, न करैं निंदा नेट, चलैं निज कुलवट चोखी।—ध. व. ग्रं.

२ धर्म या प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला।

रू. भे.—सचवादी, सचवायौ, सतवादि, सतवादी।

सत्यव्रत–सं. पु.—१ सूर्यवंश के राजा त्रिबन्धन के पुत्र जो त्रिशंकु के नाम से प्रसिद्ध हुए।

२ सातवें मनु का नाम।

३ त्रिगर्त्तराजा सुशर्मा के भाई का नाम।

४ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक महारथी पुत्र, सत्यसंध का नाम।

५ एक चन्द्रवंशी राजा का नाम।

६ एक महर्षि का नाम जो कोसल देश के देवदत्त ब्राह्मण के पुत्र थे।

७ एक देवगण।

८ सत्य बोलने का नियम या प्रतिज्ञा।

वि.—सत्य का पालन करने वाला।

रू. भे.—सतव्रत।

सत्यव्रता–सं. स्त्री. [सं.] गांधारराज सुबल की कन्या जो धृतराष्ट्र को ब्याही गई थी और जो गांधारी की छोटी बहन थी।

सत्यसंध–सं. पु. [सं.] १ श्री रामचंद्र का नाम। (रामायण)

२ भरत का एक नाम।

३ राजा जनमेजय का एक नाम।

४ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

५ धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम जो अर्जुन के द्वारा, मतान्तर से भीम के द्वारा, मारा गया था।

६ विदर्भ नरेश सत्यरथ का नामान्तर।

७ सत्य प्रतिज्ञा पर अटल रहने वाला।

उ०—अर जीवण री आस ह्वै तो मरणीक हुवा, **सत्यसंध** अग्रज रै साथ जावण री न धारौ।—वं. भा.

सत्यसंधा–सं. स्त्री. [सं.] १ द्रौपदी का एक नाम।

२ देवी का विशेषण।

सत्यसिंधु–सं. पु. [सं.] ईश्वर, परमात्मा।

उ०—राज के विहीन **सत्यसिंधु** तें रह्यौ, भाजके अधीन दीनबन्धु के भयौ।—ऊ. का.

सत्यसेन–सं. पु. [सं.] १ अंगराज कर्ण के एक पुत्र का नाम जो नकुल द्वारा मारा गया था।

२ अर्जुन द्वारा मारा गया त्रिगर्त देशाधिपति सुशर्मा के भाई का नाम।

३ तीसरे मन्वन्तर में धर्मदेव व सुनृता के पुत्र का नाम जिन्हें विष्णु का अवतार मानते हैं।

४ धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक जो भीम द्वारा मारा गया था।

सत्यसेना—सं. स्त्री. [सं.] धृतराष्ट्र-पत्नी सत्यवृता का नामान्तर, जो गांधारी की कनिष्ठ बहन थी।

सत्यस्रवस—सं. पु. [सं. सत्यश्रवस्] १ वीतिहोत्र राजा का पुत्र एवं उरुश्रवस् का पिता, एक राजा।

२ अभिमन्यु द्वारा मारा गया कौरव पक्षीय एक योद्धा।

३ मार्कंडेय ऋषि का पुत्र, एक आचार्य।

सत्यहित—सं. पु. [सं.] १ पुरूवंशीय राजा ऋषयक के पुत्र एवं पुष्पवान के पिता का नाम।

२ ब्रहद्रथ वंशोत्पन्न एक चंद्रवंशीय राजा का नाम, जो जरासंध का परदादा था।

३ ऋक्षवंशीय सत्यधृत राजा का नाम।

४ सत्यस्रवस आचार्य का पुत्र।

सत्या—सं. स्त्री. [सं.] १ दुर्गा का एक नाम।

२ सीता का नामान्तर।

३ द्रौपदी का एक नाम।

४ सत्यभामा।

५ भारद्वाज की माता का नाम, आयु नामक अग्नि का नाम।

६ व्यासजी की माता का नाम।

७ मगध देश के ब्रहद्रथ राजा की पत्नी, जो जरासंध की माता थी।

८ कोसल देश के नग्नजित राजा की कन्या, जो कृष्ण की पटरानी थी।

९ भरतवंशीय राजा मन्यु की पत्नी जिसका पुत्र यौवन था।

सत्याग्रह—सं. पु. [सं.] १ किसी सत्य के लिए किया जाने वाला आग्रह।

२ किसी शासन सत्ता के निर्णय व्यवहार आदि के प्रति अपना असंतोष, विरोध आदि प्रकट करने के लिए किया जाने वाला अहिंसात्मक आन्दोलन या कार्यवाही।

सत्याग्रही—वि. [सं.] सत्य के पालन के लिए आग्रह करने वाला।

सं. पु.—वह व्यक्ति जो सत्याग्रह करता है।

सत्यानंद—देखो 'सतानंद' (रू. भे.)

उ०—**सत्यानंद** नालेर दीधा समत्थं, हुकम्म पिता धारिया रांम हत्थं।—सू. प्र.

सत्यानास—सं. पु.—ध्वंस, मटियामेट, तहस-नहस।

उ०—घर में बड़ग्या तौ घर रौ **सत्यानास** कर देवैला। छातां माथै कोपरियां री ढिगलियां खिड़कलौ। देखतां ईं बणाबट बोलाजो। अंडी नीं व्हे के हुरड़ी देय रावळां में बड़ जावै।—फुलवाड़ी

२ सर्वनाश।

उ०—सिवहरै सिवहरै **सत्यानास** जाएला उण हरांमी रौ, कोढ उघड़ नें रूं रूं में कीड़ा पड़ैला उण दुस्टी रै।—अमरचूंनड़ी

क्रि. प्र.—करणौ, जाणौ, व्हैणौ।

मुहा०—सत्यानास जाणौ=सर्वनाश की कामना करना। (गाली)

रू. भे.—सत्यानासी, सित्यानास।

सत्यानासी—सं. स्त्री.—१ पीले रंग के फूलों वाला एक कंटीला पौधा जो प्रायः खंडहरों और उजाड़ स्थान पर होता है। इसके बीज काले रंग के होते हैं जिनसे तेल निकाला जाता है। वैद्यक में इसका तेल चर्म रोगों को मिटाने वाला माना गया है।

२ देखो 'सत्यानास' (रू. भे.)

उ०—१ सोचै बोरां सिर भरियोड़ा रीसां, **सत्यानासी** री देता दुरसीसां।—ऊ. का.

उ०—२ वासी नरकां रा बिदर, ग्यासी रा गैसोत। **सत्यानासी** रा सुगुन, दासी रा दैसोत।—ऊ. का.

रू. भे.—सित्यानासी।

सत्यायु—सं. पु. [सं.] पुरुरवा व उर्वशी के पुत्र, श्रुतज्जय के पिता।

सत्यारथ, सत्यारथप्रकास—सं. पु. [सं. सत्यार्थप्रकाश] १ स्वामी दयानंद द्वारा रचित एक ग्रन्थ। (आर्यसमाजी)

उ०—भगळ भागवत पेट भरण री, कुटिल कहांणी रे। **सत्यारथ** सुणियां बिन सांप्रत होसी हांणी रे।—ऊ. का.

२ वास्तविक अर्थ, सत्य अर्थ।

सत्यासियौ—देखो 'सितियासियौ' (रू. भे.)

उ०—जाळंधर जोधापुरौ, नृप रहियौ सुभ नीत। सिर आयौ **सत्यासियौ**, ग्रीखम थई वितीत।—रा. रू.

सत्यासी—देखो 'सितियासी' (रू. भे.)

सत्यासीक—देखो 'सितियासीक' (रू. भे.)

सत्यासीमौं—देखो 'सितियासीमौं' (रू. भे.)

सत्यासीयौ—देखो 'सितियासियौ' (रू. भे.)

उ०—खलक लोक सहु खलभल्या, जीवइं किम जलबहिरा। 'समयसुंदर' कहइ **सत्यासीया**, तें 'क्रतूत' सहू ताहरा।—स. कु.

सत्येयु—सं. पु. [सं.] पुरुवंशीय राजा रौद्राश्व और धृताची के पुत्रों में से एक।

सत्योत्तर, सत्योत्तरइ—१ देखो 'सितंतरौ' (रू. भे.)

उ०—१ संवत बार **सत्योतरइ**, पहिलो सेत्रुञ्ज जात्र। कीधी सबल पड्डर सुं, तें कहियइ लव मात्र।—स. कु.

उ०—२ सद्गुरु जिनचंद सूरि जी, सघलै गुण देखि सुघाट। सुभ महोरत **सत्योत्तरै**, पाटण में दीधौ पाट।—ध. वं. ग्रं.

२ देखो 'सितंतर'।

सत्योपपावन—सं. पु. [सं.] एक प्रकार का पेड़, जो शरदंडा नदी के पास पाया जाता है।

सत्रंघण—देखो 'सत्रघण' (रू. भे.)

उ०—भरत्थ **सत्रंघण** सेस सुभेवै, त्रिए है भ्रात नालेर बंदै सत्रेवे।
—सू. प्र.

सत्र—सं. पु. [सं. सत्त्रं, सत्र] १ यज्ञ, हवन। (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—अर दैव रै परतंत्र प्रतापसिंघ अरिसिंघ दो ही गइंदां रै बीच आया—एक तरफ तट दुरगम एक तरफ द्रह अगाध देखि दोही वीरां मूंछां रा अग्र भुंहारां री कोटि लिया अर अस्वमेघ सत्र रा फळ देणहार दो ही गजां रै सांम्है पैंड दिया।—वं. भा.

२ घर, मकान।

उ०—विग्रह सीस विलुंबियौ, सूरा गह समसीर। ओ न सत्र जणि रो अठै, खावण बटिया खीर।—रैवतसिंह भाटी

३ वह स्थान जहाँ असहाय व गरीबों को मुफ्त भोजन दिया जाता हो।

४ पुण्य, धर्म।

५ सोम यज्ञ का काल जो १३ से १०० दिनों में पूरा होता है।

६ भेंट, नैवेद्य।

७ पर्दा, चादर।

८ सम्पत्ति, धन, दौलत।

९ आश्रय स्थान।

१० धर्मशाला।

११ जंगल, वन।

१२ विष्णु भगवान्।

१३ देखो 'सत्रु' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ ग्रीभणि कांइ उतावळी, हय पलांणत धीर। काय वेसांणू सत्र सिर, काय आपणौ सरीर।—हा. झा.

उ०—२ सत्रां दळ ऊपर धोम सरूप, रचै जुध 'पोम' तणौ धन-रूप।—सू. प्र.

उ०—३ सबळा सत्र संघरै, छळै सबळै पडि-गिरिया। जेथ भिडै दळि पडै, तेथ आडा भुज धरिया।—गु. रू. बं.

उ०—४ सत्रां दळ मूगळ सैयद सेख, बणै ग्रह बाज कबूतर वेख। सरां अप्रमांण पठांण संहारि, लिया कर सेल नरां ललकारि।

—मे. म.

सत्रअजात—देखो 'अजातसत्रु'।

सत्रकार—१ देखो 'सत्रूकार' (रू. भे.)

२ देखो 'सत्राकार' (रू. भे.)

सत्रघण, सत्रघन, सत्रघन्न, सत्रघ्न, सत्रघ्नु—देखो 'सत्रुघण' (रू. भे.)

उ०—धन्य सत्रघण धन्य लखण भरथ धनि जै हर भाई। धन त्रेतायुग सुघनि वांणि बालमीक वणाई।—सू. प्र.

सत्रडौ—देखो 'सत्रु' (अल्पा; रू. भे.)

सत्रब, सत्रव—देखो 'सात्रव' (रू. भे.)

उ०—जठै आपरौ अकंटक अमल जमाइ नरेस भी बुंदी आइ विजय रौ सुजस सत्रवां समेत दिसा दिसा डुसायौ।—वं. भा.

सत्रह—देखो 'सतरै' (रू. भे.)

सत्रहरस-वि.—सत्रह सौ।

उ०—सत्रहरस सतियास सक, धुव अहमदपुर धांम। वर कवि, 'करण' बखांण क्रर, सुभटां तणौ संग्रांम।—वि. सं.

सत्रांजीत-सं. पु. [सं. शत्रुजीत] भीम। (अ. मा.)

वि.—शत्रुओं को जीतने वाला।

सत्रांण—देखो 'सत्रु' (रू. भे.)

उ०—१ सत्रांण सूं भूंसर क्रोध चितै, परगेह जूत भुरय कोट प्रितै।

—पा. प्र.

उ०—२ सह सुभट्ट अविभट्ट बंधि रिणवट्ट सत्रांणा। लोह मरट्ट विकट, दियै, किरच.........कबांणां।—गु. रू. बं.

सत्रांम—देखो 'सुत्रांमा' (रू. भे.) (ना. डिं. को; नां. मा.)

सत्रांसंघार-सं. पु.—लोह। (ह. नां. मा.)

सत्राकार, सत्रागार-सं. पु. [सं. सत्र=पुण्य, धर्म, यज्ञ+करण आगार] गरीबों व असहायों को मुफ्त भोजन देने का स्थान।

उ०—१........साकंटिक तणा संवाद लोकतणा प्रवाद सुविसाल पथिकसाल। निरुपवाद प्रासाद नांनाप्रकार सत्राकार तिरस्कृतत्रि-विस्टख........।—व. स.

उ०—२ कीजइ खट दरसन विचार परमारथि आत्मग्यांन अधि-कार। चिहुँ दिसि च्यारि प्रतोलीद्वार, अनिवार सत्रागार।—सभा

उ०—३........देवकरण सभा पंडितसभा लेखकसभा भांडागां-रिक कोस्टाकार सत्राकार मठ विहार प्रपामंडप देसमंडप त्रिक चतुस्क चत्वर........।—व. स.

उ०—४ तालाव आरांम गढ देहरा विहार सत्रागार कोस्टागार भांडागार।—सभा

रू. भे.—सत्रुकार, सत्रूकार।

सत्राजित, सत्राजिति, सत्राजिती—देखो 'सत्यजित' (रू. भे.)

सत्राट—देखो 'सत्रु' (मह; रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ पाथ थाटां जंग रूपी कुबांणा नवाई पांणां, सत्राटां बेढियो थाटां सवाई सौभाग।—सूरजमल्ल मिस्रण

उ०—२ सत्राटां देवाळौ दाह ओज में उजाळौ सूर, लडंतां काळ रौ चाळौ पैलां अंत लाग। पंखाळौ भुयंग काळौ धणी री बजाळौ फतै, राव वाळौ दीसै इसौ छड़ाळौ अजाग।—सूरजमल्ल मिस्रण

सत्राटांकरणीसरद-सं. स्त्री. यौ.—तलवार। (डिं. को.)

सत्राटौ—देखो 'सत्रु' (रू. भे.)

सत्राव—देखो 'सत्रु' (रू. भे.)

सत्रास-वि. [सं.] भयभीत, संकटपूर्ण, दुःखी।

उ०—१ त्रइलोक कीध रांमण सत्रास, सहाय करौ हरि जग निवास।—सू. प्र.

उ०—२ तद समर गयौ आसुर सत्रास, जुध जैत जैत कह 'ऊभौ' जास।—शि. सु. रू.

सत्रि, सत्री-सं. पु. [सं. सत्रि] १ राजदूत।

२ हाथी, हस्ती।

वि. [सं. सत्रिन] यज्ञ करने वाला।

सत्रुंजय—सं. पु. [सं. शत्रुंजय] १ काठियावाड़ का एक पर्वत जो जैनों का तीर्थ स्थल माना जाता है। (डिं. को.)
२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम के द्वारा मारा गया था।
३ हाथी, हस्ती।
४ कौरवपक्षीय एक योद्धा जो कर्ण का भाई था, जिसे अर्जुन ने मारा था।
५ परमेश्वर।
६ द्रुपद राजा का पुत्र जो अश्वथामा के द्वारा मारा गया था।
७ श्रीविष्णु।
८ कौरवपक्षीय योद्धा जो अभिमन्यु के द्वारा मारा गया था।
वि.—शत्रु को जीतने वाला।

सत्रुंजया—सं. स्त्री. [सं. शत्रुंजया] स्वामी कार्त्तिकेय की एक अनुचरी का नाम।

सत्रु—सं. पु. [सं. शत्रु] १ वैरी, दुश्मन। (अ. मा; ह. नां. मा.)
उ०—१ थिरा आवड़ा नांम विख्यात थायौ, छिपा सत्रु सौ तेमड़ै छत्र छायौ। सकौ सोखियौ हाकड़ौ नांम सिंधू, बहूंतौ थकौ रोकियौ लोकबंधू।—मे. म.
उ०—२ लखीजै असी भांति आकास लागौ, भवांनी खड़ा पांण लीधां अभागौ। हमेसा रहै सत्रु रौ सीस हाथै, मुखे रत्र रौतासळौ छत्र माथै।—मे. म.
पर्याय.—अंचित, अणवंछक, अणवंछकी, अबजात, अभभाती, अभमांनी, अभीत, अमंत्र, अयार, अरंद, अरहर, अराती, अरिंद, अरि, अरियण, अवजीत, असहन, असुहर, अहिति, कुरख, कुवादी-बाट, केबी, खळ, घातक, घातू, दसू, दुखदायक, दुजण, दुनड, दुयण, दुरंत, दुरहित, दुरी, दुसह, दुसमण, दुस्ट, दोखी, दोयण, घेखी, पंथकपंथक, पर, पिसण, प्रतपखी, प्रसण, बियौ, बैरी, रिपु, रिम, रिसाघाती, विखम, विघनकरण, विड, विपख, विरोधी, वेधी, वैरहर, वैरी, सत्र, सत्राट, सपतन, हांणक।
२ राजनैतिक प्रतिद्वन्दी।
३ नाशकर्त्ता, संहारकर्त्ता।
४ विजयी।
रू. भे.—संत्तर, सत, सत्त, सत्तु, सत्तू, सत्र, सत्रांण, सत्राव, सत्रू, सत्रौ।
मह.—सत्राट, सत्राटौ।
अल्पा;—सत्रड़ौ।

सत्रुघण—सं. पु. [सं. शत्रुघ्न] राजा दशरथ के सबसे छोटे पुत्र का नाम, शत्रुघ्न।
रू. भे.—सत्रघण, सत्रघन, सत्रघन्न, सत्रुघ्न, सत्रुहण।

सत्रुघाती·सं. पु. [सं. शत्रुघाती] शत्रुघ्न के पुत्र का नाम।
वि.—शत्रु का नाश करने वाला।

सत्रुघ्न—देखो 'सत्रुघण' (रू. भे.)

सत्रुजित, सत्रुजीत—सं. पु. [सं. शत्रुजित] १ भगवान् श्रीविष्णु।
२ द्रुपद-पुत्र जिसे अश्वथामा ने मारा था।
३ कौरवपक्षीय एक योद्धा जो सौवीरदेशीय था।
४ ध्रुवसन्धि व लीलावती के एक पुत्र का नाम।
५ पुरुरवावंशीय दिवोदास के पुत्र द्युमन का नाम।
६ प्रतर्दन राजा का नामान्तर।
७ कुवलयाश्व राजा का नामान्तर।

सत्रुट—वि.—थोड़ा, कम, अल्प।
उ०—यदि सरस्वती संदेह न भंजयति तदा को भंजयति यदि लक्ष्मी भांडागारै द्रव्यं सत्रुट करोति तदा को पूरयिस्मति।—व. स.
रू. भे.—सत्रोट।

सत्रुतपन—सं. पु. [सं. शत्रुतपन] कश्यप ऋषि व कद्रू के पुत्रों में से एक।

सत्रुता, सत्रुताई—सं. स्त्री. [सं. शत्रुता, शत्रुता+ई. प्र.] वैरभाव, शत्रुता।
उ०—म्हारां कंवरा नूं तेड़ौ जठै सत्रुता री संका हुवै इण कारण आपरा बारहठ हरसूर नूं प्रतिभू करि अठै भेजि·········।
—वं. भा.

सत्रुदमण, सत्रुदमन—वि. [सं. शत्रुदमन] शत्रुओं के नाशकर्त्ता।

सत्रुमरदण, सत्रुमरदन—वि. [सं. शत्रुमर्दन] शत्रुओं का नाश करने वाला।

सत्रुहण—देखो 'सत्रुघण' (रू. भे.) (डिं. को.)

सत्रू—देखो 'सत्रु' (रू. भे.) (डिं. को.)

सत्रूकार—वि.—१ सदाव्रत बांटने वाला।
उ०—दया धरम रा राखणहार देह-साभनारा करणहार बैठा तप करै छै। अनेक सत्रूकार सत धरम रा राखणहार खैराइतांरा करणहार········।—रा. सा. सं.
२ देखो 'सत्राकार' (रू. भे.)
उ०—१ तै नगरीमांहि सत्रूकार कण केरा बहुला कोठार चउवीस प्रकारिइ मिलइ तिहा धान्य परिपरिना अपूरवपांन।
—नळदवदंती रास
उ०—२ राजसभाथी ऊठीउ रे, जाइ नगर मभारि। चिंत्तिइ चिंता अति घणी रे, आविउ जिहां सत्रूकार।—नळदवदंती रास
रू. भे.—सत्रकार।

सत्रूपा—देखो 'सतरूपा' (रू. भे.)
उ०—सत्रूपा नार स्वयंभू भूप, रहिस्स बिचार न दीठौ रूप।
—ह. र.

सत्रेख—क्रि. वि.—तीक्ष्णता के साथ, तीक्ष्णता से।
उ०—बोलै भोज महाबळी बंधव जेत सत्रेख। ईंदां आदू रौ, करां निवाह विसेख।—रा. रू.

सत्रोट—देखो 'सत्रुट' (रू. भे.)

सत्रौ—देखो 'सत्रु' (रू. भे.)

उ०—पहिलुं सरमइ घरमह पूत्रौ, जेह रहइं नवि कोई **सत्रौ** ।

—सालिभद्र सूरि

सत्व-सं. पु.—१ सत्ता ।

२ सार, मूल, तत्व ।

३ वास्तविकता ।

४ चित्त की प्रवृति ।

५ प्रकृति के तीन गुणों में से एक । (सांख्य)

६ प्रकृति ।

७ जीवन-शक्ति ।

८ मन, ज्ञान ।

९ अधूरा गर्भ ।

१० भूत-प्रेत ।

११ सात्विक भाव ।

१२ धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम ।

१३ सात्वत राजा का पिता एक यादव राजा ।

१४ रैवत मनु के एक पुत्र का नाम ।

सत्वगुण—देखो 'सतोगुण' (रू. भे.)

उ०—१ सील संतोख दया सत भक्ती स्वधरम ग्यांन वैरागी । **सत्वगुण** का पायक सब साथै, गुरु वचना का पागी ।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

उ०—२ रज तम गुण का वेग प्रचंडा **सत्वगुण** ग्यांन नसाया । मोह लोभ सायक रज तम कै, नगर अग्यांन वसाया ।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

सत्वगुणी-वि. [सं. सत्वगुणिन्] जिसमें सतोगुण हो ।

२ साधु, विवेकी ।

रू. भे.—सतोगुणी ।

सत्ववंत-सं. पु. [सं.] वसुदेव एवं भद्रा के पुत्रों में से एक, यादव राजकुमार ।

सत्वधांम-सं. पु. [सं. सत्वधाम] भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

सत्वर-क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी ।

उ०—साथ करै सिवदत्त री, धन चंदरा सुरधांम । गुण सीता **सत्वर** गई, लै गळबांह ललांम ।—वं. भा.

रू. भे.—सतवर, सतावर, सतुर ।

सत्वसील-वि. [सं. सत्वशील] १ सदाचारी ।

२ सात्विक प्रकृति का ।

३ धर्मात्मा, पुण्यात्मा ।

सत्वाधिक-वि.—बढ़कर, श्रेष्ठ ।

उ०—तद राजा री रूप देख नायिका मोहित हुई । हाथ जोड़ कही—महाराज ! आग्या देय सो करूं । राजा कही—ई राजपूत नै वर, नायिका कही—म्हारी प्रीत तौ थांसूं छै । राजा कही—म्हारौ मन राजी राखै तौ इयै नूं वर । तद राजा री आग्या सेती वरियौ । राजपूत नूं परणाय, महल आय, राजपूत री मांन बढाय प्रसन्न करियौ । बैताळ कही—राजा ! इयां दोनूं मांही कुण **सत्वाधिक** हुवौ ?—बैताळ पचीसी

सत्संग, सत्संगति-सं. स्त्री. [सं.] १ अच्छा साथ, अच्छी सोहबत ।

उ०—सद्गुरु चंदन वावना, लागै रहै भुवंग । दादू विख छाडै नहीं, कहा करै **सत्संग** ।—दादूबांणी

२ संत जनों के साथ धार्मिक चर्चा ।

३ वह जनसमूह जिसमें धार्मिक चर्चा, व्याख्यान या राम-नाम का जप या पाठ होता हो ।

क्रि. प्र.—करणी, व्हेणी, होणी ।

रू. भे.—सतसंग, सतसंगत, सतसंगति, ।

सत्संगी-वि.—१ अच्छा साथ या अच्छी सोहबत करने वाला ।

२ संतजनों के साथ धार्मिक चर्चा करने वाला ।

रू. भे.—सतसंगी ।

सथ-सं. पु.—देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—१ **सथ** ऊठ नकीबां सरळ सद्द, रवि उदय आद सझिया रवद्द ।—रा. रू.

उ०—२ इतरै अस खड़ आविया, **सथ** वावसू सताब । अकबर कहियौ आवतै, वहियौ साह निबाब ।—रा. रू.

उ०—३ चाहत जोबन अधिक चित्त, मदन भई ऊनमत्त । हींरां डोलत हंसगत, सुघड़ सहेली **सथ** ।—बगसीरांम प्रोहित री बात

उ०—४ 'खेम' तणौ **सथ** दूसरौ, कायथ 'चंद' 'गुलाल' । वाकै पत्र लिखिया इता, साचा जिता सवाल ।—रा. रू.

सथप्पणौ, सथप्पबौ-क्रि. स.—१ नियुक्त करना ।

उ०—सिसु उथापि इक साह, साह सिसु अबर **सथप्पै** । मिसु सुभड़ां हित सझै, पटै गढ देस समप्पै ।—सू. प्र.

२ स्थापित करना ।

सथप्पणहार, हारौ (हारी), सथप्पणियौ—वि० ।

सथप्पिओड़ौ, सथप्पियोड़ौ, सथप्प्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सथप्पीजणौ, सथप्पीजबौ—कर्म वा० ।

सथप्पियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ नियुक्त किया हुआ. २ स्थापित किया हुआ ।

(स्त्री. सथप्पियोड़ी)

सथर-सं. स्त्री. [सं. स्थरा] पृथ्वी, भूमि । (डि. को)

२ देखो 'स्थिर' (रू. भे.)

उ०—१ परम अवतंस धन वंस 'कूपांपती', दळ सुद्रढ भुजाबळ गुमर दाखै । रेण थर राख राजा **सथर** राखीयौ, राज जम सांम-ध्रम भलां राखै ।—जादूरांम आढौ

उ०—२ थपै दास कर **सथर**, रघुवर किता अरोड़ । बिरद पीत

'सागर' बियै, मीत तणौ कुळ मोड़ ।—र. ज. प्र.

सथळ-सं. स्त्री.—१ रोमावलि । (अ. मा.)

२ देखो 'साथळ' (रू. भे.)

सथांन—देखो 'स्थांन' (रू. भे.)

उ०—१ इण कजि सूझ नवौ पुर आपौ, सिव **सथांन** मौ राजस थापौ ।—सू. प्र.

उ०—२ रनवां सहित सिकार रमांणौ, नकट **सथांन** गयौ नांनांणौ ।

—सू. प्र.

सथांनक, सथांनिक—देखो 'सुथांनक' (रू. भे.)

उ०—पोह निज रंगमहल पधराए, ऊप्रमि वीर **सथांनक** आए ।

—सू. प्र.

सथाप-सं. स्त्री.—तमाचा, थप्पड़, चांटा ।

उ०—अंवा सिर सूदत कूदत एम, तजै गिरि स्रंग प्लवंगम तेम । थावै गज कायल खाय **सथाप**, फुकै घट घायल आय फुवाफ ।

—मे. म.

सथापणौ, सथापबौ—देखो 'स्थापणौ, स्थापबौ' (रू. भे.)

उ०—थळवट थांन **सथाप्यौ** कुळवट किनियांणी मा कुळवट किनियांणीं । धर जंगळ धिनियांणी, जग सारौ जांणी, जय मात करनी, जय करनी अंबै मा जय करनी अंबै ।—मे. म.

सथापणहार, हारौ (हारी), सथापणियौ—वि० ।

सथापिओड़ौ, सथापियोड़ौ, सथाप्योड़ौ—भू० का० कृ ।

सथापीजणौ, सथापीजबौ—कर्म वा० ।

सथापियोड़ौ—देखो 'स्थापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सथापियोड़ी)

सथिति-सं. स्त्री. [सं. स्थिति] १ धरती, भूमि, पृथ्वी । (ह. नां. मा.)

२ देखो 'स्थिति' (रू. भे.)

सथियारौ-वि.—साथ रहने वाला ।

उ०—हा हा दुखदाई छपनां हतियारा, सज्जन सुखदाई सावल **सथियारा** ।—ऊ. का.

२ कुटुंब का, कुटुंब से सम्बन्धित, कुटुंबी ।

सथियौ—देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

उ०—ढोला बाईजी ने बेग बुलावौ, म्हांरी चत्रसालां **सथिया** दिरावौ ।—लो. गी.

सथिर-सं. पु.—१ हाथी । (ना. डिं. को.)

२ देखो 'स्थिर' (रू. भे.)

उ०—१ पुत्रवती सोहागवति, पतिवरता पिण सोय । स्त्रीरांणी चूड़ी **सथिर**, बांणी भणै सकोय ।—रा. रू.

उ०—२ धन्य धन्य वह जंगळ धरनी, किल्ला जहां बनायौ करनी । **सथिर** नींव पाताल सपरसत, घन भुरजाळ धुजा नभ घरसत ।

—मे. म.

सथी—१ देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—**सथी** करि मेछ घणा समराथ, भटी भड़तांम पड़ै भाराथ ।

—सू. प्र.

२ देखो 'साथी' (रू. भे.)

सथूळ—देखो 'स्थूल' (रू. भे.)

उ०—झडप्फड पंखणि सावज झूळ, गुडंत गयाघण गात्र **सथूळ** ।

—गु. रू. ब.

सथ्थ—देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—१ पंथ असेंदै पूगणौ, अळगौ घणौ अकथ्थ । ब्हे विण जांण्यौ हालणौ, संबल (जा.) विण **सथ्थ** ।—बां. दा.

उ०—२ कहि सूवा किम आवियउ, किहीक कारण कथ्थ । तु माळवणी मेल्हियउ, किनां अम्हीणइ **सथ्थ** ।—ढो. मा.

सथ्थल-क्रि. वि.—साथ में ।

उ०—पूरया हे सखी पूरचा हे **सथ्थल** जीहाज, बैठा हे सखी बैठा दोन्यूं राजा रंगस्यु जी ।—प. च. चौ.

२ देखो 'साथळ' (रू. भे.)

सथ्थी—१ देखो 'साथी' (रू. भे.)

२ देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—भवांनी नमौ जोगनी जुथ्थ **सथ्थी**, भवांनी नमौ भेखी बीस हथ्थी ।—मे. म.

सदंका-वि.—सरल, आसान ।

सदंत-वि. [सं. स+दंत] दांतयुक्त दांतों वाला ।

उ०—वरस तणौ बाळक हुऔ, औ अरि हरा अदंत । तद नांनी कड तेडनैं सुत लै गई **सदंत** ।—पा. प्र.

सदंभ-वि. [सं.] कपटपूर्वक ।

उ०—करां जोड़ रूपकीस, सांम पाय नांम सीस, बाघ चाल महा-वीर, कूदियौ किसीस । निसाचरां काळनेम पतीलंक तणौ पेम, माग बीच बणै रह्यौ **सदंभां** मुनीस ।—र. रू.

सद-सं. पु. [सं. सदस्] १ सभा । (डिं. को.)

२ चंद्रमा, चांद । (अ. मा; डिं. को.)

३ दान, पुण्य ।

उ०—देख तमासा डरपिया, कई साध सयांणां, सूरापूरा **सद** किया दिल ताक खुलाणां, जो दीना सो उबरीया, अै आदु अवखाणां ।

—केसवदास गाडण

४ परमेश्वर ।

५ ज्ञानी ।

६ ब्रह्म ।

७ साधु, संत ।

८ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।

९ अंगिरा एवं सुरूपा के पुत्रों में से एक ।

१० सत्य, सच । (ह. नां. मा.)

सं. स्त्री.—११ प्रकृति ।

१२ रुकावट, बाधा ।

उ०—हफत हजारी हफत, सझै हक सद जै सायत। श्राय हफत ईसफां मिळौ, हफतम सझि हिम्मत ।—सू. प्र.

वि.—१ ताजा ।

उ०—१ महीलां सुरंगी जाळीयां, मारू हद मजेज। रस चादर कस ढोलड़ी, सद फूलां री सेज ।—पनां

उ०—२ पांणी सद पाताळ का, हरीया पीयौ आंणि। बासी पांणी विख सा, पीयैं'स परळै जांणि ।—अनुभववांणी

२ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया ।

उ०—१ सद विद्या बिन राह न सूझै, उर अंतर में जीव अमूजै। बीजां नें फिर फिर मग बूजै, दुजा घालै मारग दूजै ।—ऊ. का.

उ०—२ गिणजै सद ज्यांरी जिदगांणी, उभै विरद धरियां अखत। प्रारंभै दौलत पुन पांणा, पुणै सुवांणां सीतपत ।—र. रू.

३ कल्याणकारी, शुभ, मंगलमय ।

उ०—वेद धरम सद सुकन बतायौ, अमल नयौ वेदांत अचायौ ।
—ऊ. का.

४ सही, सत्य या पूर्ण ।

उ०—१ हुआ दळ राजथांनां दकत रायहर, जठै प्रीछत बखत वहै जांणौ। स्रीहतां लिखत लखीया जिकै सद करै, रद करै नांज पत भगत रांणौ ।—जवांनजी आढौ

उ०—२ वायक सतगुर वेद रो, घणौ करै हित घोस। रे इण लालच रोग रो, सद ओखद संतोस ।—बां. दा.

५ ठंडा, शीतल ।

उ०—आ बूढली सासड़ यूं कहै, म्हांनै सद पांणीड़ौ पाव ववड़िया सरवणती ।—लो. गी.

६ मनोहर, सुन्दर ।

७ न मिटने वाला, अमिट ।

६ देखो 'साद' (रू. भे.)

उ०—१ घुरत सद नगारां सझै हिक साथ घण, सेहरौ बांधि बे बर सनेही। चाव करि कुनणपुर एम चवरी चढै, 'जगा' रौ किसनगढ जोध जेही ।—महारांणा राजसिंह रौ गीत

उ०—२ असि भीम चडै, असमांन अडै। दम्मांम सदं, नीसांण नदं ।—गु. रू. बं.

उ०—३ बळबळ प्रथी सुजस सद बोलत, सूरज तड़ दासरथी सूरज ।—र. ज. प्र.

११ देखो 'सदा' (रू. भे.)

उ०—आ धरती सद ऊनमती, फिरती करनी फैल। भालां बळ राखी भिरड 'बळवंत' छैल बकैल ।—अग्यात

सदक-सं. पु.—पानी, जल। (अ. मा.)

सदकौ-सं. पु. [अ. सदकः] १ दान, खैरात ।

उ०—१ सुकर घणां खजांना जवाहिर रौ-सदका रोजीना दांन ठोड़ जोग करणौ ।—नी. प्र.

उ०—२ सदका सिरजनहार का, केता आवै जाइ। दादू धन संचय नहीं, बैठ खुलावै खाइ ।—दादूबांणी

२ न्यौछावर, बलिहारी ।

उ०—१ भर-भर प्याला प्रेम रस, अपनै हाथ पिलाइ। सद्गुरु कै सदकै किया, दादू बळि-बळि जाइ ।—दादूबांणी

उ०—२ जिकै डूबेंगे सु पातिसाह रै सिर सदकै अर जिकै तिर निकळसी सु पातिसाह जी कै वखत तैं निकलेंगे ।—द. वि.

उ०—३ तुम हौ तैसी कीजियै, तौ छूटेंगे जीव। हम है ऐसी जनि करौ, मैं सदकै जाऊं पीव ।—दादूबांणी

क्रि. प्र.—लेवणा, राखणा ।

३ खुशामद, चापलूसी ।

४ मान, प्रतिष्ठा ।

वि.—उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—आपा मार मरै जो सदका, बिन आपै मूवा सो रदका ।
—अनुभववांणी

सदगत—सं. स्त्री. [सं. सद्गति] मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—१ सारा सुभावां मैं बडौ सुभाव माता पिता नैं राजी राखणौ ही बडौ गुण छै, जिण सूं ई लोक में जस, परलोक में सदगत होय ।
—नी. प्र.

उ०—२ यह गुण अत अदभुत बण्यौ, आ सम अवर न कोय। पढै सुणै चित लायकै, ताकी सदगत होय ।—गज-उद्धार

उ०—३ तवां ज हरि अवतार तुहारा, सदगत प्रांमै छुटै संसारा ।
—ह. र.

रू. भे.—सदगति, सदोगति ।

सदगतनाथ-सं. पु.—१ विष्णु। (डिं. को.)

२ ईश्वर, परमेश्वर ।

सदगति—देखो 'सदगत' (रू. भे.)

सदगुटकौ—देखो 'सिद्धगुटकौ' (रू भे.)

उ०—चटपट समट वरत नट चाकत, ऊलट पलट झट हाकत ईख। वहवै दुपट नभ वटका, साकुर सदगुटका सारीख ।
— देवोजी धधवाड़ियो

सदगुण-सं. पु. यौ.—१ ईश्वर, परमेश्वर। (नां. मा.)

२ अच्छे गुण ।

उ०—निरगुण अणविद्या छाई जग जिष्णु, विद्या बिसरगो सदगुण बस विष्णु ।—ऊ. का.

२ उत्तम लक्षण ।

सदगुणी-वि.—१ अच्छे गुणों वाला ।

२ उत्तम लक्षणों वाला ।

सदगुरु-सं. पु.—१ उत्तम आचार्य, गुरु या शिक्षक ।

उ०—सदगुरु प्रणम 'किसोर' सचिव 'अमरेस' सवाई। करै पिता

जिमि क्रिया, तिकण गुण समझ बताई।—र. रू.

२ धर्म गुरु।

रू. भे.—सद्गुरु

सदग्रंथ-सं. पु.—उत्तम ग्रंथ।

सदघटा-सं. स्त्री.—सभा। (ह. नां. मा.)

सदणौ, सदबौ-क्रि. अ.—१ अनुकूल होना, मुआफिक होना।

उ०—न जांनांमी नांमी विहस वर बांमी बळ बदै। अनादी स्रस्टी यै सुगम यह ब्रस्टी कम सदै।—ऊ. का.

२ शब्द होना, ध्वनि होना।

उ०—सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै, जिम वाग डंडेहड़ फाग जदै।—रा. रू.

४ जिम्मेवार होना, उत्तरदायित्व लेना।

४ सहन होना या करना।

ज्यूं—अचपळा टाबर नै कह्यौ सदै कोनीं।

सदणहार, हारौ (हारी), **सदणियौ**—वि०।

सदिओड़ौ, सदियोड़ौ, सद्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सदीजणौ, सदीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सधणौ, सधबौ—रू० भे०।

सदन-सं. पु. [सं.] १ घर, मकान। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ मन मूरति सूरति मदन, सुभ गुण सदन सिंगार। असवारी कजि आंणियौ, ऊपरि लूंण उतार।—रा. रू.

उ०—२ सदन संवारचौ सांतरौ, नर उद्यम कर नेक। खित पर सोभा 'खेतसी', आखै मिनख अनेक।—नारायणसिंह सांदू

उ०—३ गाडा भरिया गोलणां, सूनौ सदन सुरंग। कंथ घणां ही कायरां, जांणी जे इम जंग।—बां. दा.

२ राशि, समूह।

उ०—चहुवांण इण मीणां रै प्रधांन हुतौ। तिकण रै दोइ दुहिता रूप री सदन जांणि जैता रै पुत्र बिग्रह राज·········बिबाहण री विचारी।—वं. भा.

३ जल, पानी।

४ यज्ञमण्डप।

५ यमराज का आवास-स्थान।

६ रहने का स्थान।

७ खान।

सदनांमी-सं. स्त्री.—यश, कीर्ति।

उ०—सरती सदनांमी चाहत नहिं चोरी, डरती बदनांमी गावत नहिं डोरी।—ऊ. का.

सदम-सं. पु. [सं. सद्म] घर, मकान। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

सदमौ-सं. पु. [अ. सद्म] १ मानसिक आघात।

२ धक्का, आघात, चोट।

३ हानि, नुकसान।

सदय-वि. [सं.] दयायुक्त, दयालु।

उ०—थियौ सदय सुण निज थुई, टीटभ हूंत कसांन। उण रा वाळ उबारिया, महामंत्र जस मांन।—बां. दा.

रू. भे.—सदृय।

सदर-वि. [अ. सद्र] १ मुख्य, खास।

उ०—दरगाह सदर दोलत दराज, ताळा बुलंद इस्लांम ताज।—ऊ. का.

२ बड़ा, महान।

३ भययुक्त और डरा हुआ।

सं. पु. [अ. सद्र] १ छाती, वक्षःस्थल, सीना।

२ सभापति, अध्यक्ष।

३ प्रधान सभापति के बैठने का स्थान।

४ किसी उच्च पदाधिकारी का मुख्य कार्यालय।

५ केन्द्रीय स्थान।

६ मुगलकालीन शासन-व्यस्था में एक पदाधिकारी विशेष।

वि० वि०—यह पदाधिकारी प्रान्त और केन्द्र में अलग-अलग होता था। प्रान्तीय सदर का कर्त्तव्य था कि वह केन्द्रिय सदर को उन व्यक्तियों के नाम भेजे जो वजीफे व जागीर प्राप्त करने के अधिकारी हैं। प्रायः काजी और सदर दोनों पदों के लिए एक ही अधिकारी नियुक्त कर दिया जाता था। अतः इसे काजी के अधिकार भी मिल जाते थे। काजी प्रान्तीय न्याय विभाग का अध्यक्ष होता था। एवं न्याय करता था। वह जिलों व कस्बों के काजियों के कार्य का निरीक्षण करता था।

[अ. सदर] ७ आँखों की धुन्ध।

८ देखो 'सधर' (रू. भे.)

उ०—जैनगर लिखावै सदर कागज जिता, सिखावै तुंहिज अवसांण 'स्यांमा'।—स्यांमसिंघ सेखावत रौ गीत

रू. भे.—सद्र।

सदरआला-सं. पु. [अ. सद्र आला] अदालत में जज के नीचे का हाकिम, छोटा जज।

सदरबाजार-सं. पु. यौ. [अ. फा. सद्र+बाजार] १ खास बाजार, मुख्य बाजार।

२ छावनी के पास का बाजार।

सदरी-सं. स्त्री. [अ.] १ कमीज या चोले के ऊपर पहना जाने वाला बिना आस्तीन का वस्त्र विशेष जो रूई से भरा होता है।

उ०—पछै सेठांणी कांनी देखनै बोल्या—मजूस मांय सूं सदरी अर बगतरी काढ दौ।—फुलवाड़ी

सदरुससदर, सदरुससुदर; सदरुस्ससदर, सदरुस्ससुदर-सं. पु. [अ. सद्रुस्सुदूर] १ शाही हरमसरा का संरक्षक, अंतःपुरिक।

२ मुख्य न्यायाधिपति।

३ मुगलकालीन शासन व्यवस्था में एक विशिष्ट मंत्री।

वि० वि०—यह मुख्य सदर होता था। उसे तीन प्रकार के कार्य सम्पन्न करने पड़ते थे—(१) सम्राट के धार्मिक सलाहकार के रूप में, (२) विभिन्न व्यक्तियों व संस्थाओं में शाही दान-पुण्य के वितरक के रूप में, एवं (३) साम्राज्य के प्रधान न्यायाधीश के रूप में। अकबर के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में उसे व्यापक अधिकार व यथेष्ट मान-प्रतिष्ठा प्राप्त थी। प्रमुख धार्मिक सलाहकार होने के नाते 'शरा' के परस्पर विरोधी निष्कर्षों पर उसे अपनी अधिकारपूर्ण आज्ञा देनी पड़ती थी। उसे यह भी देखना पड़ता था कि सम्राट व सरकार कुरान की आज्ञा-आदेशों के विरुद्ध तो आचरण नहीं कर रहे हैं और क्या इस्लाम के गौरव की रक्षा कर रहे हैं। इसका महत्वपूर्ण कर्तव्य इस्लामी विद्याओं को प्रोत्साहित करना था। उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु वह विद्वान-मुसलमानों से सम्पर्क रखता था तथा उन्हें वजीफे आदि देकर प्रोत्साहित करता था। प्रमुख काजी की हैसियत से इसका सम्राट के बाद न्याय-सत्ता में दूसरा दर्जा था। यह प्रान्तों, जिलों व शहरों के लिए काजियों की नियुक्ति के लिए उम्मीदवारों की सिफारिश करता था। अकबर के द्वारा अपना शासन-प्रबंध पुनर्संगठित कर लिए जाने से इसके पास सामान्य अधिकार ही रह गये थे। अन्न वृत्तियाँ प्राप्त करने के लिए अधिकारी-विद्वानों, भले आदमियों और जरूरतमंदों की केवल सिफारिश कर सकता था, इस सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय सम्राट का होता था।

रू. भे.—सद्रससदर, सद्रससुदूर, सद्रस्सदर, सद्रस्ससदर, सद्रस-सुदर, सद्रस्ससुदूर, सद्रस्सुदर, सद्रुस्सुदूर।

सदरूप—देखो 'सैंदरूप' (रू. भे.)

उ०—मदमोख जूह महाबळी, सदरूप मेघक सिंघळी।—गु. रू. बं.

सदळ, सदल—सं. पु. [सं. सदल] १ वृक्ष, पेड़। (अ. मा.)

वि.—१ दलदार, मोटा, पुष्ट।

उ०—१ नीपनां सतपुडां खाजां तुरत कीधां ताजां सदला नें साजा मोटा जांणं प्रासाद ना छाजा।—व. स.

उ०—२ सोहती मन मोहती पुंहच उ सदल सुरंग। अंगुली मूंगुनी फळी समस्त तीखा नख सुरंग।—रुकमणी मंगळ

२ सेना सहित।

उ०—धवळहरे धवळ दियै जस धवळित, धण नागर देखे सधण। सकुसळ सबळ सदळ सिरि सांमळ, पुहप बूंद लागी पड़ण।

—वेलि

३ अत्यधिक, बहुत ज्यादा।

उ०—१ झळकंति कंठळ गोदरी, लहरीआ मोती सार। मांणिक मयण तें सदळ सोहइ, ऊरि एकावळ हार।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ 'जसै' पाड़िया खेत भड नेत-बंधा जिके, लगे परमळ सदळ लोह लागै। सबळ पत्र भरै रत्र पी न सकै सकति, अलिअळां तणा गुंजार आगै।—नाथौ रोहड़ियौ

रू. भे.—सद्दळ।

सदवरत, सदव्रत—सं. पु. [सं. शतवृत्त] १ अच्छे आचरण वाला व्यक्ति।

उ०—धरमीं नर ऊपर कोमल कर धारै, पापी पुरसां नें सदव्रत संहारै।—ऊ. का.

२ देखो 'सदावरत' (रू. भे.)

उ०—सदव्रत करतोड़ी बरणाश्रम सेवा, काढै मरतोड़ी रेवा तट केवा।—ऊ. का.

सदस्य—सं. पु. [सं.] सभासद, मेम्बर।

उ०—मा'रजा, सेवा लाईबेरी रा मिंत्री, सनातन धरम रा सभापति, ग्रांम सेवा संघ रा उपाध्यक्ष अर आरयसमाज रा सदा सूं सदस्य है।—दसदोख

सदांणौ, सदांणौ—देखो 'संदीणौ' (रू. भे.)

सदांनौ—देखो 'सांदियांनौ' (रू. भे.)

उ०—चादर हौज फुंहार, जळां भरि अतर खजांनां। रचि चिग पड़दा जरी, सरब वजजवै सदांनां।—सू. प्र.

सदांम—देखो 'सुदांमौ' (रू. भे.)

सदांमापुरी—देखो 'सुदांमापुरी' (रू. भे.)

सदांमौ—देखो 'सुदांमौ' (रू. भे.)

उ०—तैं मुख कमळ सदांमा तंदुळ, पाया बिळकुळ भरै पुसी। बिदुर तणी भगती हित बाधा, खाधा केळा छोत खुसी।

—र. ज. प्र.

सदा—क्रि. वि. [सं.] १ सदैव, नित्य, हमेशा। (डिं. को.)

उ०—१ आज गुरुजी काळी अंधारी रात है, पाळै रौ घणौ जोर है। सदा सूं पेल्यां घरां पधारौ। दसदोख

उ०—२ हुवै चम्मरां झाटका जोति हूवै, सदा ऊतरै आरती मांझ सूबै। तकै भादवी माह ऊगांत तित्थी, पड़ै मायरै पाय प्रत्थीप प्रत्थी।—मे. म.

उ०—३ धनौ धन्य मा आवड़ा धाड़ धाड़ा, अखीजै किसी जीह थारा अखाड़ा। सदा तूं रमै रास नौ कोड़ साथै, महामोड़ नू कोड़ तेतीस माथै।—मे. म.

मुहा०—सदा दिवाळी संत रै आठूं पहर आणंद=संत सदा खुश रहते हैं।

२ हर समय, हर वक्त।

उ०—१ खत्रवट सरम सदा थां खोळै, औ हिंदवांण वचावौ ओळै।

—रा. रू.

उ०—२ उठै झाड़ कंटीर पाहाड अंडा, बणै मंथरां हालणौ पंथ बेंडा। खळक्कै सदा नीझरां नीर खोळा, छळै कुंड अल्लील सल्लील छोळां।—मे. म.

उ०—३ दिलीवै कहर पतसाह रा भांज दळां, सोहियां दळां बिच वीर साजा। सदा जोरावरां तणा नव-साहसौ, राह सिर ऊपरै हुअै राजा।—देवराज रतनू

उ०—४ रातौ रहै सदा विख रस मैं, पेम भगति नही भाय। लोक लाज काज कुळ मांही, हरि पूज्यौ न सुहाय।—अनुभववांणी

३ निरन्तर, लगातार।

रू. भे.—सद, सदाई, सदाय।

सदाई—देखो 'सदा' (रू. भे.)

उ०—१ रावत जी नु आवणौ छै तौ वेगा कीजै असवारी। भली भांत मनवार करस्यां। अठै तौ सदाई रहै छै जिण सूं गोठ री तयारी।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ कांम करै नहीं काज करै कछु सीरौ चरै सदाई।

—ऊ. का.

उ०—३ राव उदैसिंघ जी महाराज सूं कयौ—जोधपुर सदाई थांरै नहीं रहसी।—द. दा.

सदागत, सदागति-सं. पु. [सं. सदागतिः] १ पवन, हवा।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ ब्रह्म।

३ सूरज, सूर्य।

सदाचरण—देखो 'सदाचार' (रू. भे.)

उ०—पेट सूं ई रौ पति, साधसी सुमत्ति ल्यावै, सदाचरण री सरण संतती उत्तम पावै।—नांनूरांम

सदाचार-सं. पु. [सं.] १ भलमनसाहतता।

२ धर्म नीति आदि की दृष्टि से किया जाने वाला शुभ और उत्तम व्यवहार।

उ०—१ आई उमड़ अविद्या आंधी, च्यार वरण चडगी चक चांधी। विरचां धजा तूटगी बांधी, सदाचार री संधै न सांधी।

—ऊ. का.

उ०—२ एक रस रहबौ कठिन, कठिन सज्जनता पारन। सदाचार अति कठिन, कठिन कांमदिक जारन।—स्वांमी ईस्वराचंद गिरि

३ शिष्ट व्यवहार।

रू. भे.—सदाचरण।

सदाचारि, सदाचारी-वि. [सं. सदाचारिन्] सदाचार धारण करने वाला, सदाचार से रहने वाला।

उ०—ससांक नी दीधति दिव्य वस्त्र, सदा सदाचारि करी पवित्र। सुवरणवेदी अहिनांणि जांणि, सरद्वतीसूनु कृपांणपांणि।

—सालि सूरि

सदाजित-सं. पु. [सं.] भरतवंशीय एक राजा जो कुन्ति का पुत्र एवं माहिष्मान का पिता था।

सदाणौ, सदाबौ-क्रि स.—उत्तरदायी या जिम्मेवार बनाना।

सदाणहार, हारौ (हारी), सदाणियौ—वि०।

सदायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सदाईजणौ, सदाईजबौ—कर्म वा०।

सदावणौ, सदावबौ—रू० भे०।

सदादांन-सं. पु. [सं. सदादान] १ ऐसा हाथी जिसका मद हमेशा बहता रहता है।

२ ऐरावत।

३ गणेशजी।

सदानंद-सं. पु. [सं.] १ शिव, महादेव।

२ श्रीविष्णु।

३ ईश्वर, परमात्मा।

सदानीरा-सं. स्त्री.—१ करतोया नदी का नाम जिसे कर्मनाशा भी कहते हैं। (डि. को.)

उ०—देवी नरमदा सारजू सदानीरा, देवी गल्लका तुंगभद्रा गंभीरा।

—देवि.

२ वह नदी जिसमें हर वक्त पानी रहता है।

सदापुसप, सदापुस्प-सं. पु. [सं. सदापुष्प] १ आक, मदार।

२ कपास।

३ रोहितक वृक्ष।

सदाफळ-सं. पु. [सं. सदाफल] १ नारियल। (अ. मा.)

उ०—वलि संतोख सदाफळ सदली, करुणा रूप सुकोमल कदली। नारंगी तं प्रभू निरागइं, जंभीरी युगतैं करि जागइं।—वि. कु.

२ एक प्रकार का नींबू।

उ०—उतंग चिहुंरै ओपमा सइहइति अधिक अपार। सदाफळ जंबोर नारंगि, बीलफळ उणिहार।—रुकमणी मंगळ

३ बेल का वृक्ष।

४ गूलर का वृक्ष।

उ०—सदाफळांणि निंबुआंणि राइणी महूअडा। कल्हार जंबई नारंग-रंग वाग रूअडा।—गु. रू. बं.

५ वटवृक्ष।

वि.—सदा फलने वाला।

सदाबरत—देखो 'सदावरत' (रू. भे.)

उ०—और सदाबरत भूखां निमित्त अन्न काचौ पाकौ देय तौ तिण सूं प्रताप बधै।—नी. प्र.

सदामंद, सदामद-क्रि. वि.—१ परम्परागत, परम्परा से।

उ०—१ अमरावां नूं दीवांन मुत्सद्धियां नूं सदामद सिरोपाव हुवता सो हूवा।—राजसिंघ कूंपावत री वारता

उ०—२ तरै कान्हड़दे जी कह्यौ—एक वार जेंसलमेर पोहचावणी सदामद रीत छै।—वीरमदे सोनगरा री वात

२ पहले से, हमेशा से।

उ०—जाट थकां पुकारै छै पुकारू आया छै मांहांरै सदामद लेता सू लं छै।—नैणसी

३ सदैव के माफिक, हमेशा के अनुसार।

उ०—डावड़ी गाय दुही तद सदामद जितरौ दूध हुवौ।—नी. प्र.

सदामरस-सं. पु. [सं॰ सदामर्ष] भगवान् श्रीविष्णु ।
सदाय—देखो 'सदा' (रू. भे.)
सदायोड़ौ-भू. का. कृ.—उत्तरदायी या जिम्मेवार बनाया हुआ।
(स्त्री. सदायोड़ी)
सदावंत—देखो 'सदामंद' ।
उ०—बाबौ मोबी बेटा नैं गोगा रा जीमण सारू पूछ्यौ तौ वौ कह्यौ कै इण बात सारू इत्ता गोता खावण री कांई जरूरत। सदावंत जीमण बणै ज्यूं बणाय देवणौ हौ । —फुलवाड़ी
सदावणौ, सदावबो—देखो सदाणौ, सदाबौ' (रू. भे.)
सदावणहार, हारौ (हारी), सदावणियौ—वि० ।
सदाविग्रोड़ौ, सदावियोड़ौ, सदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सदावीजणौ, सदावीजबौ—भाव वा० ।
सदावयच-सं. पु.—दोस्त, मित्र । (अ. मा.)
सदावरत-सं. पु. [सं. सदाव्रत] १ हमेशा भूखों और गरीबों को भोजन देने का कार्य ।
उ०—उठै फूलमती सदावरत मांडियौ जिकोई आवै तैनुं सीधौ दीजै।—चौबोली
२ नित्य गरीबों को निःशुल्क बांटा जाने वाला अन्न, भोजन ।
उ०—ध्रम सासत्र मारग दिढ़ धारै, सदावरत समपै जग सारै ।
—सू. प्र.
३ दान ।
रू. भे.—सदवरत, सदव्रत, सदाबरत, सदाव्रत ।
सदावरती-वि.—सदाव्रत देने वाला ।
सदावियोड़ौ—देखो 'सदायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सदावियोड़ी)
सदाव्रत—देखो 'सदावरत' (रू. भे.)
उ०—१ दत मौ पछै अभै अप दीजै, कासीवास सदाव्रत कीजै ।
—सू. प्र.
उ०—२ भिखुक अरज भूपति मन भाए, पुर हरवास सदाव्रत पाए।—सू. प्र.
उ०—३ चतुरा चंद्रायण चरइ, करइ सदाव्रत नेम। परमेस्वर परि-परि जपइ, माधव ऊपरि प्रेम ।—मा. कां. प्र.
सदासवागण—देखो 'सदासुवागण' (रू. भे.)
सदासिव-सं. पु. [सं. सदाशिव] शिव, महादेव। (अ. मा.)
उ०—ईसपुरी ईसांन मैं, राजत अतह अनूप। गिरजा सम गोरी सबै, पुरख सदासिव रूप ।—भोपाळदांन सांदू
सदासुख-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)
सदासुखी-सं. स्त्री.—जाति विशेष ।
सदासुवागण, सदासुहागण-सं. स्त्री.—वेश्या, रंडी ।
वि.—जिसका सुहाग अमर हो।
रू. भे.—सदासवागण।

सदि—१ देखो 'सबद' (रू. भे.)
२ देखो 'सदी' (रू. भे.)
३ देखो 'साद' (रू. भे.)
सदियै, सदियैं-सं. पु.—१ सूर्यास्त के पूर्व का सायंकालीन समय।
उ०—वौ सिझ्यां रा सदियै-सदियै ब्याळू करनै ढेंचा माथै सूतौ-सूतौ होकौ गुड़गुड़ावतौ हौ कै घरवाळी पगांतियै ऊभी क्रंवण लागी—पूरी इक्कीस रातां उपरांत काले ई तौ पाछा बावड़िया अर भांभरकै ई चोधरी-बाबा रै बेटा री जांन मैं जावण रौ हूंकारौ भर लियौ ।—फुलवाड़ी
२ प्रातः काल ।
वि. [सं. सद्य] शीघ्र, जल्दी ।
रू. भे.—सधियै ।
सदियोड़ौ-भू. का. कृ —१ अनुकूल हुवा हुआ, मुआफिक हुवा हुआ. २ शब्द हुवा हुआ, ध्वनि हुवी हुई. ३ जिम्मेवार हुवा हुआ, उत्तर-दायित्व लिया हुआ. ४ सहन हुवा या किया हुआ ।
(स्त्री. सदियोड़ी)
सदी-सं. स्त्री.—१ शताब्दी ।
उ०—१ उगणीसवीं सदी रै पैलां मिनख सूं मिनख रा कंठ नैं आपरा साचेला रूप मैं बोली रै सेंदरूप अळगौ करण री जुगत नीं बणी ही फगत लिखावट रा आखरां रै जरियै उणरो कंठ सगळा देस मैं घूमतौ फिरतौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ पण सेठ (फूळचंदजी) ! थांरलै कांमां री होड कदैही नहीं हुवै। बेटां-पोतां रै पल्लै भूख नीं, अमर जस नांव है। पीढ्यां बीतसी, सदी लद जासी पण लोग थांरौ नांवौ सदा लेता रैसी।
—दसदोख
२ सौ वर्षों का समूह ।
३ सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०० ।
वि.—१ अच्छा ।
उ०—बद सदी बदी नेकी निहार, देखेगैं दोजख बस्ति द्वार ।
—ऊ. का.
२ सौ।
उ०—१ हाडौ कांनीरांम तीन सवौ साठ असवार ।—नैणसी
उ०—२ सतावीस दी कवण संभारै, सदी स कवण वधै संग्रांम। पंच हजारी किता पड़िया, किता हजारी आया कांम ।—नैणसी
उ०—३ संवत १६४२ असाढ वद १२ अकबर पातसाह टीकौ सात सदी रो मुनसब जोधपुर, सोजत, सीवांणौ दीधौ।
—महाराज सूरसिंहजी रै राज री वात
रू. भे.—सदि ।
सदीठ-सं. स्त्री. [सं. सुदृष्टि] सुदृष्टि, अच्छी नजर ।
सदीनौ-वि.—सैंकड़ों वर्षों का।
उ०—मूंगी छम लोवड़ियां लियां, विच विच चुन्नी चींवटा। खोढ

मदीना खड़ा मांहै; सकड़ सदीनां मींवटा ।—दसदेव

सदीव, सदीवत—देखो 'सदैव' (रू. भे.)

उ०—१ भिलै सिध गिर भंगरां, सौ एकलौ सदीव । रच टोळा फिरता रहै; जठै तठै वन जीव ।—बां. दा.

उ०—२ सीहा कै कुल संभव सदीव, जीवका हेत हंसि देत जीव । —ऊ. का.

सदुपदेस—सं. पु. [सं. सदुपदेश] १ उत्तम उपदेश ।

२ अच्छी सलाह ।

सदू—देखो 'सधू' (रू. भे.)

उ०—मांणक सदू 'महप' हर माता सती देवड़ी सूरज साख । पनरै संमत पोह वद पांचम, पोहती परव छयाळै पाख ।—रा. रू.

सदूर—क्रि. वि.—जो नजदीक न हो, दूर ।

उ०—वाको भूठो अखियौ, दक्खण गयौ सदूर । आप वडाई आपरी, आपी साह हजूर ।—रा. रू.

सदेव, सदेवत—वि.—देव दुल्य देवसमान ।

उ०—सुण सुत समय सदेवत सूरह, पाबू समर वीर रस पूरह । दूजा देव कळू प्रत दूरह, है धांधळ हाजर रा हजूरह ।—पा. प्र.

२ देखो 'सदैव' (रू. भे.)

उ०—चवदस खेलै चांनणी, सुखिया लोग सदेव । हूँ तौ ऊमण दूमणी, सिवरूं साजन देव ।—अग्यात

सदेह—वि. [सं.] शरीर सहित ।

सदै—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै, जिम वाग डंडेहड़ फाग जदै । —रा. रू.

सदैव—१ नित्य, हमेशा, सर्वदा ।

२ निरन्तर, लगातार ।

रू. भे.—सदीव, सदीवत, सदेव, सदेवत ।

सदोख—वि. [सं. सदोष] दोष पूर्ण, दोष युक्त ।

उ०—१ मन दुमह दुहूँ विध माहरै, असह बार लग्गै इसी । मुख लियां कठण नागेंद्र मनु, जग सदोख मूखक जिसी । —रा. रू.

उ०—२ हरिजस रस साहस करै हालिया, मौ पंडिता वीनती मोख । अम्हीणा तम्हीणौ आया तवण, तीरथै वयण सदोख ।—वेलि

सदोगति—देखो 'सदगत' (रू. भे.)

सदोमत, सदोमत्त—वि.—१ प्रसन्नचित्त ।

उ०—चालक नै मढ हूंता चाचर, भांभरियाळ सदोमत भूलर । काछ पंचाळ लगै छै डाकर, आई आवजै व्रन संकटियै ऊपर । —राजबाई रौ गीत

२ उन्मत्त, मस्त ।

उ०—मद गळत जूह मैंगळ मसत्त, सिणगार खडा किय सदोमत्त । —गु. रू. बं.

रू. भे.—सद्दोमत ।

सदोरौ—वि.—मदोन्मत्त, मदमस्त, नशे में उन्मत्त ।

उ०—१ घणी महिमांनी करी, भांग, अमल, दारू, गाढा सदोरा किया । साहा री वेळा हुई ।—नैणसी

उ०—२ सहेलियां दोय बैठी पगां हाथ देवै छै अमलां मैं सदोरा छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ दूजै दिन गोठ ठहराई । राव जी जोधा जी नै अमलां दारू में घणा सदौरा किया ।—राव रिड़मल री वात

सद्द—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—१ खेतासर रवि ऊगतां, छायौ व्योम गरद्द । वांना देठाळै भया, थया नगारै सद्द ।—रा. रू.

उ०—२ त्रिया आकुळै संभलै रांम सद्दं । जती धाय वेगौ कहै सीत जद्दं ।—सू. प्र.

उ०—३ रोड़ि द्रुमति ढोल रवद, सहनाई भेर सद्द, निफेरी भेरी निनद नीसांण धुवै । पंचसद दमांम पूर, रूडै डूड रिणतूर, प्रमांण मेघ पडूर हैरांन हुवै ।—गु. रू. बं.

२ देखो 'सद' (रू. भे.)

उ०—रिति वरखा सरद्द हैमंत सेसर हद, वसंत ग्रीखम सद्द सुख सगळै ।—गु. रू. बं.

३ देखो 'स्वाद' (रू. भे.)

उ०—हंसा कहै रे डेडरा, सायर लिया न सद्द । ओछै जळ मैं रेंविया, ओछी होवै बुद्ध ।—अग्यात

४ देखो 'साद' (रू. भे.)

सद्दणौ, सद्दबौ—क्रि. अ.—१ बोलना, दहाड़ना, गर्जन करना ।

उ०—१ वडै क्रोध विसतार, रींछ सांवर धर रौण । जठै सिंघ सद्दता, तठै गरजंत बिलौण ।—रा. रू.

उ०—२ सद्दै मेघ क पंच-सबद्दा, भेर दमांम क भाहर सद्दा । —गु. रू. बं.

२ देखो 'सदणौ, सदबौ' (रू. भे.)

उ०—लग्गो सायत चाव, घाव वग्गौ निसांणां । किर सघोर सद्दियौ, खीर सामंद मथांणां ।—रा. रू.

सद्दणहार, हारौ (हारी), सद्दणियौ—वि० ।

सद्दिग्रोड़ौ, सद्दियोड़ौ, सद्द्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सद्दीजणौ, सद्दीजबौ—भाव वा० ।

सद्दय—देखो 'सदय' (रू. भे.) (डि. को.)

२ देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—उर कोप आंणै अप्रमांणं, सिद्ध जांणै सद्दयं । ओपै अखाड़ै गै उडाड़ै, रूक भाड़ै रद्दयं ।—रा. रू.

सद्दळ—देखो 'सदळ' (रू. भे.)

उ०—आरूहै गयंद अबदल अली, सैद महाबळ सद्दळां । हाहूळि असंख मिळि हल्लिया, जांणक वावळ वद्दळां ।—रा रू.

सद्दहणा - देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)

उ०—१ स्रुत सुणतां अति दोहिलौ, राखैं तिण मां चित्त। सद्दहण वलि साचवौ, संयम धरि सुपवित्त।—वि. कु.

उ०—२ मुझ आधार छइ एतलउ जी, सद्दहणां छइ सुद्ध। जिन ग्रम मीठउ मनगमइ जी, जिम साकार नइ दूध।—स. कु

उ०—३ पारस्वनाथ हौ तुझ प्रसाद थी, सद्दहणा मुझ एह। भव भव हौ जो हौ समयसुंदर कहइ, जिन प्रतिमा सुं नेह।—स. कु.

सद्दा—सं. पु. [अ. शद्द:] १ मुहर्रम से तीन दिन पहले मनाया जाने वाला पर्व।

२ उक्त पर्व का दिन।

सद्दियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ गरजा हुआ, दहाड़ा हुआ।

२ देखो 'सदियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सद्दियोड़ी)

सद्दूळ - देखो 'सारदूळ' (रू. भे.)

उ०—पिक्खि मत्तंगज थूळ कै सद्दूळ चलाया।—वं. भा.

सद्दोमत—देखो 'सदोमत' (रू. भे.)

उ०—सज्जोड घोडा तेजी तत्ता, सद्दोमता सूंडाळं। खज्जानां ग्यांनां लक्खां कोडी, आंणै दीनां अच्चाळं।—गु. रू. बं.

सद्धर—१ देखो 'सधर' (रू. भे.)

उ०—१ ईस सीस संग्रहै रुंड-माळा किउ सद्धर, अमख ग्रीध उग्रजे भूत वैताळ निसाचर।—गु. रू. बं.

उ०—२ भाटी 'रुघपत' साथ भयंकर, संग कायथ 'केहर' मत सद्धर।—रा. रू.

उ०—३ सांमळ 'विजौ' सांमपण सद्धर, 'नरहर' 'आणंद' तणौ निर्भै-नर।—रा. रू.

उ०—४ फौज तहव्वर खांन री, आवी ऊगै सूर। वखत तणौ रिण सद्धरां, नरां खरां मुख नूर।—रा. रू.

उ०—५ उल्लसै जोस सुणतां उवरि, सगह दरग्गह सद्धरां। कवि वांण असह बरड़ी कितां, करड़ी लग्गै कायरां।—रा. रू.

सद्धरौ—देखो 'सधरौ' (रू. भे.)

उ०—'रूपौ' कुंभकरन्न रौ, कुंडाग्रह कमधज्ज। रह गुढौ कर सद्धरौ, 'ऊदा' हरौ सकज्ज।—रा. रू.

सद्धा—देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)

सद्धेसर, सद्धेसवर, सद्धेसुर, सद्धेस्वर—देखो 'सिद्धेस्वर' (रू. भे.)

सद्म—सं. पु. [सं. सद्मन्] १ घर, मकान।

२ स्थान, जगह।

उ०—देवी प्रेत आरूढ पद्मं, देवीसागरं सुमेरू गूढ सद्मं।—देवि.

२ युद्ध।

रू. भे.—सदम।

सद्मिनी—सं. स्त्री. [सं.] १ बड़ा मकान।

२ प्रासाद, महल।

सद्य—क्रि. वि. [सं. सद्यस्] १ आज ही, अब ही।

२ तुरन्त, शीघ्र।

उ०—अतिसय अगाध, ईस्वर अराध। सत सिवर सद्य, अपवरग अद्य।—ऊ. का.

सद्योजात—सं. पु. [सं.] भगवान शंकर का प्रथमावतार जो श्वेत लोहित-कल्प में हुआ था।

सद्र—देखो 'सदर' (रू. भे.)

सद्रड्ढ, सद्रड्ढौ, सद्रढ, सद्रढौ—वि. [सं. सुद्दढ] १ सुद्दढ, मजबूत।

उ०—१ खत्री धार खड़ग्गौ तै खुरसांण बांण कवि ईदौ। थप्पै गाढ सद्रड्ढौ अप्पै बोध बाढ विसतारं।—रा. रू.

उ०—२ गांव महेव निकट नवगड्ढा, दुजड़ तणौ छळ वणौ सद्रड्ढा।—रा. रू.

२ अविचल, अटल, स्थिर।

उ०—१ जो रचना जगपत्ती, लोतै आळ भ्रमै त्रयलोकं। सोइ सत्यं सद्रढं, रेखा सार अंक रजपत्ती।—रा. रू.

उ०—२ पतसाह सचिक्कण कुंभ पर, सघण बूंद वांणी सुजण। दुरबोध मांन रहियौ सद्रढ, कांन न कीधौ वयण कण।—रा. रू.

सद्रव—सं. पु. [सं. सद्रव्य] १ धनाढ्य व्यक्ति, पूंजीपति।

उ०—सौडि विचि सूइजै तापिजै सिगडिए, सबल सी मांहि पिण सद्रव सोरा। एतिण वार मैं पांणती ओजगी, दोजगी भरै निस-दिस दोरा।—ध. व. ग्रं.

२ द्रव्य, दौलत, धन। (अनेका.)

सद्रस—वि. [सं. सदृश] समान, तुल्य, बराबर।

उ०—१ परम्मळ कम्मळ सद्रस पग्ग, निधांन परम्म निवारण नग्ग।—ह. र.

उ०—२ सौ समै गई सुपना सद्रस, सोचाई सब सुकबियां। बिण खबरी रंग दै-दै ब्रथा, कतल करौ मत कुकबियां।—ऊ का.

सद्रससदर, सद्रससुदूर, सद्रस्सवर, सद्रस्ससवर, सद्रस्ससुदर, सद्रस्ससुदूर, सद्रस्सुदर, सद्रस्सुदूर—देखो 'सदरुससदर' (रू. भे.)

सद्रि, सद्री—सं. पु. [सं. शद्रि] १ हाथी, हस्ती।

२ बादल, मेघ।

३ अर्जुन का नाम।

४ बिजली।

सद्रीची—देखो 'सध्रीची' (रू. भे.) (अ. मा.)

सद्वती—सं. स्त्री. [सं.] पुलस्त्य ऋषि की एक पुत्री का नाम जो अग्नि-देव को ब्याही गई थी।

सधण—वि.—पत्नी-सहित, सपत्नीक।

उ०—धवळ हरै धवळ दियै जस धवळित, घण नागर देखै सधण। सकुसळ सबळ सदळ सिरि सांमळ, पुहप बूंद लागी पड़ण।—वेलि

सधणौ, सधबौ—क्रि. अ.—१ सिद्ध होना।

उ०—१ वपु दस गुणौ जोर त्रप वधियौ, सौ गुण अनंत पराक्रम

सधियौ। आगा हूंत खुधा त्रीखण अति, भोजन करै दसगुणौ भूपति।—सू. प्र.

उ०—२ सूरापण मसलत बळ सधतौ, 'विलंद' निजांम हूंत पणि वधतौ।—सू. प्र.

२ सफल होना।

उ०—१ सब विधि को सेवा सधी, आदर भयो अमाप। मांनवीय गुरु मांनियौ, परतापी 'परताप'।—ऊ. का.

उ०—२ इतरी धीरज सूं अरथ सधियौ।—नी. प्र.

३ काम चलना।

४ अभ्यस्त होना, मँजना।

५ निशाना ठीक होना।

६ पूर्ण होना।

७ पालन होना।

उ०—जिण थी म्हारा भाई काका भीम रा पुत्र नूं भेजीजै तौ सुजस रै साथ हुकम सधसी।—व. भा.

सधणहार, हारौ (हारी), सधणियौ—वि०।

सधिओड़ौ, सधियोड़ौ, सध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सधीजणौ, सधीजबौ—भाव वा०।

सधप-वि.—तृप्त।

उ०—तमासा सिध पइखै समर मारतुंड, उमापत सधप तोड़ै कमळ आप। बड बडां सत्रां अणियां सधप विहडंतौ, 'मांन' तण तणौ खग अधप अणमाप।—राघवदास झाला रौ गीत

सधर-वि.—१ श्रेष्ठ, बढ़िया, उत्तम।

उ०—१ जैचंद हुऔ दळ पांगुळौ, असि लक्ख साहण सधर। छत्तीस वंस राजा कुळी, वडौ वंस राठौड हर।—गु. रू. बं.

उ०—२ सधर जोड हथिआर सार समरंगणि सज्जिय, पंचसबद वाजित्र घाइ नीसांणं वज्जिअ।—व. स.

२ मजबूत।

उ०—१ गढ कैलास जिम ऊंचउ, गरूई पौलि, सधर कपाट, लोह मय भोगल।—व. स.

उ०—२ जोधपुर भीड़ पड़ियां थकां जोधरै, लड़ण भुज नीम उरस लागौ। रूक हथ राव 'सूजै' सधर राखियौ, भिड़ै दूजौ 'बीकम' राव भागौ।—मालौ सांदू

३ प्रबल, सशक्त।

उ०—साह तणा सोबा सधर, जोधांणं अजमेर। फौजां जोड़ै रात दिन, दोड़ै बेर अबेर।—रा. रू.

४ दयालु, कृपालु।

उ०—लछवर सधर अमर नर रख लज, महपत समरत हरत मळ। छजत बयण पथ सरस मयण छब, कमळ नयण रव तरण कळ।

—र. ज. प्र.

५ दृढ, मजबूत।

उ०—रंग देऊं वां नरा सधर छाती रा सूरा, रंग देऊं वां नरा प्रगट वातां रा पूरा।—ऊ. का.

६ आश्रय देने वाला, शरण देने वाला।

उ०—अह मत तज भज ईसर, करणाकर सधर सुतन दसरथ को, यक छिन तन ऊधारण, रत कर चित्त चरण रघुबर रे।

—र. ज. प्र.

७ सख्त, कठोर।

उ०—घरधर स्रंग सधर सुपीन पयोधर, घणीं खीण कटि अति सुघट। पदमणि नाभि तणि परि, त्रिवळि त्रिवेणी त्रोणि तट।

—वेलि

८ जबरदस्त, शक्तिशाली, बलवान।

उ०—१ जीती जीतीय पवाडा कोडि किहांइ न आंणी खोडि, सेव करइ कर जोडि भूपत भरो। गज तुरिय न लाभइ पार, सधर सुहड सार, छाजाति अवनिसार तुज्झ करो।—व. स.

उ०—२ खत्रियां खत्रो तिलक खेड़ेचौ, सह दन विधि असिमर सधर। सु करै बिरद धारिया सबळा, हरै 'दूद' जिम रांमहर।

—गोरधन चांदावत रौ गीत

९ प्रभावशाली, गहरा।

उ०—चलतां चेत बांम मग चाल्यौ, घाव सधर वेदां पर घाल्यौ। अस्वालंब गवालंब आल्यौ, झटकै गधौ सीतळा झाल्यौ।—ऊ. का.

१० तेज और जोशपूर्ण।

उ०—फबै दळ कुंजरां सीस झंडा फरक, तुरंगां हांफरड सधर त्रंबक त्रहक। थयौ रज तिमर दिगपाळ पबै थरक, रीस री झाळ किण माथ कमधां अरक।—विसनदांन बारहठ

११ धैर्यवान, धैर्यशाली।

उ०—१ कायर किरकिरइं, सधर धारमिक होइ धरमध्यांन छरइं........।—व. स.

उ०—२ मनसिउं तिरइं पवनमिउं चालइ। कीरति विस्तरइ, परनारी सहोदर संग्रांम सधर।—कां. दे. प्र.

१२ अटल, स्थिर।

उ०—१........गिरि सिखर खडहडइ लागा, सधर धरा पातालि प्रवेस करइं लगी, मत्स्यगिलागिलि हुइ लागी, आपोपरि थाइ लगी, असमंजस कांई नीपजइ लगु, इसउ प्रलय समांन होइं प्रस्थानउं करइं।—व. स.

उ०—२ मंत्री तहां मयण वसंत महीपति, सिला सिंघासण सधर। माथै अंब छत्र मंडाणां, चलि वाइ मंजरि ढलि चमर।—वेलि

१३ अटल, अडिग।

उ०—प्रवाड़ा जीत साकौ कर मांनपुर, सधर गिरमेर दीठौ सबांही।

—दळपतसिंघ सेखावत रौ गीत

१४ तैयार।

१५ सावधान।

उ०—कस कमर बडफर गहर कर, धर धजर आवध सधर धर।
चढ चले रथ पर ढुर चमर, भड अवर निसचर रिण भंवर।
—र. रू.

१६ आधार व सहारे सहित।

सं. पु.—१ वाद्य।

उ०—गढ कै पलट गाहटै गिरवर, धूपटिया धकधूण धर। 'रासै' तणां सुजसरा रूड़िया, समियांणै ऊपर सधर।—रामसिंह रौ गीत

२ ऊपर का होठ। ३ धीरज, धैर्य।

४ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में पहले तीन यगण और फिर एक जगण होता है। (ल. पिं.)

रू. भे.—सदर, सद्धर, सध्धर।

सधरम—वि. [सं. सधर्म] १ समान धर्म का।

२ समान गुणों वाला।

३ समान जाति या सम्प्रदाय का।

४ समान, तुल्य।

सधराव—देखो 'सिद्धराज' (रू. भे.)

सधरौ—वि. (स्त्री. सधरी) १ अटल, अडिग।

२ दृढ, मजबूत।

३ वीर, बहादुर।

४ आधार सहित, सहारे सहित।

रू. भे.—सद्धरौ।

सधव, सधवा—सं. स्त्री. [सं. सधवा] सुहागिन औरत।

उ०—१ कोतिल घोड़ा आगलि करघा रे, सधव धरघा सिर कूंभ। इण परि राय मिल्यौ निज सुत भणी रे, चित थी टलीयौ दंभ।
—वि. कु.

उ०—२ काजल टीकी बिन फीकी द्रग कोरां, सधवा विधवा बिच बिवरौ नहीं सोरां।—ऊ. का.

रू. भे.—सिधवा।

सधवाद—सं. पु. [सं. साधुवाद] १ यश, कीर्ति। (ह. नां मा.)

२ शाबाशी, धन्यवादी।

सधाणौ, सधाबौ—क्रि. स.—१ निभाना, बनाये रखना।

उ०—किम कटै पाप दुख सुख कियां, सार्च ज्यूंहिज सधायलूं इण भंवर हूंत अबदं अलख, विधवापणूं बधायलूं।—ऊ. का.

२ देखो 'सिधाणौ, सिधाबौ' (रू. भे.)

उ०—वहाकां अखावु हुवै वेढाक बाजतां तंबि, रुकै रथां भांण थमी भ्रमी गैण राह। पाथजेम लूबबत्थां सधायौ 'हरा' रा परा, 'मदा' रो अघायौ राड़ि आयौ सेरसाह।
—कुसळसिंह चांपावत मेड़तिया अर सेरसिंघ रौ गीत

सधाणहार, हारौ (हारी), सधाणियौ—वि०।

सधायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सधाईजणौ, सधाईजबौ—भाव वा०।

सधार—सं. पु.—१ आधार, आश्रय।

उ०—१ पूरण पुरस पुरांण प्रमेसर, सुकवि सधार वार अग्रेस्वर।
—रा. रू.

उ०—२ सत सूरित सहत सेवा प्रथमी सिरि, वित देणां अठारह बरण। जगत सधार राजि राजां रा, रिण कटकां आडा करण।
—राव सिवसिंघ सेखावत रौ गीत

२ सहायता, मदद।

३ भरोसा, विश्वास।

[सं. सद्धार] ४ घी, घृत। (अ. मा.)

५ देखो 'साधार' (रू. भे.)

उ०—१ स्री क्रस्ण जेम गिरवर सधार, असमांन डिग तोलै अधार।—वि. सं.

उ०—२ 'जगडू' जग जीवाड़ियौ, भांजे भै भैकार। कीधौ जे जैकार अन, बागौ राय सधार।—बां. दा.

उ०—३ औघट घाटी चूरि करि, पाया पीतम यार। हरीया जांमण मरण का, सांसा मेट सधार।—अनुभववांणी

सधारण—वि.—उद्धार करने वाला।

उ०—१ पहतउ किलास तणइ जाइ परबत, माता कन्हा आगिया मांग। तप पिण ऊहिज तीरथ, जगत सधारण ऊहिज जाग।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ नायक है जग रांम नरेसर, ते कर लायक देवतरेसर। सीत तणौ पत संत सधारण, चाव करै भज तूं धिन चारण।
—र. ज. प्र.

सधारणौ, सधारबौ—देखो 'सिधाणौ, सिधाबौ' (रू. भे.)

उ०—मेरे पास साह फुरमांणौ, जोधांपत हाजर जोधांणौ। सब घर हुवै तुमारो साणै, एक बेर अजमेर सधारौ।—रा. रू.

२ देखो 'धारणौ, धारबौ' (रू. भे.)

उ०—प्रभू पद वादं जोड़ पांण, अग्र मुकट अधारै। स्रीपति बंभी-खणह सिर, सो मुकट सधारै।—सू. प्र.

सधवार—सं. स्त्री.—गर्भवती स्त्री को सातवें महीने में दिया जाने वाला उपहार।

सधायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ निभाया हुआ, बनाये रखा हुआ।

२ देखो 'सिधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सधायोड़ी)

सधारियोड़ौ—१ देखो 'सिधायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'धारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सधारियोड़ी)

सधियै, सधियै—देखो 'सदियै' (रू. भे.)

उ०—पछै अणछक जांणै कांई सोचनै बोल्यौ—म्हैं गांव रै टाबरां भेळौ रमण नै जावूंला। सधियै सधियै पाछौ नीं आवूं तो थारी दाय पड़ै ज्यूं करज्यै।—फुलवाड़ी

सधियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सिद्ध हुवा हुआ. २ सफल हुवा हुआ. ३ काम चला हुआ. ४ अभ्यस्त हुवा हुआ, मंजा हुआ. ५ निशाना ठीक हुवा हुआ. ६ पूर्ण हुवा हुआ. ७ पालन हुवा हुआ। (स्त्री. सधियोड़ी)

सधींग-वि.—१ प्रबल, जबरदस्त।

उ०—तनै झोक लागै जागा छटी पराई सुधारा काजै, सभावां आथगां भार धीरदां **सधींग**। पंथा आचार रैं सारा महीप न लागै पलै, भुरा थारा रकैवां वीजा भीमसिंग।

—रांणा भीमसिंग रौ गीत

२ वीर, साहसी।

सधीर-सं. पु.—१ सिंह, शेर। (अ. मा.)

२ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

३ पृथ्वी, भूमि। (अ. मा.)

४ घोड़ा, अश्व। (ह. नां. मा.)

५ लक्ष्मण। (अ. मा.)

वि.—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ सुज तेज देखि **सधीर**, अड़ियौ न कोय अमीर। सझि तांम 'अजण' सलाह, सा' थियौ दौलासाह।—सू. प्र.

उ०—२ विवांणा अच्छरां सोक बाजी हाक डाक बीरां, बींटियौ **सधीरां** घणां धारिया विसन। पांणी अड़ै पाथरै कुबांण बांणा रीठ पड़ै, केवांणा बागै जुवांणां किसन।

—किसनसिंघ राठौड़ रौ गीत

उ०—३ खोपरां खणंक्कै बांण बिछूटै अनेकां खळां, सणंक्कै अंग मैं सार बहंतां **सधीर**। तड़च्छै द्रोयणां टूक धड़च्छै भुजाटां तेगां, कड़क्कै खोचियां माथै रड़क्कै कंठीर।—बादरदांन दधवाड़ियौ

२ जिसकी थाह न मिले, गंभीर, गहरा।

उ०—पुत्र दोय 'गजपति' रै, सूर दातार **सधीर**। वडौ 'अमर' लहुड़ौ 'जसौ', वडौ नरवर नरवीर।—सू. प्र.

३ धैर्ययुक्त, धैर्यवान।

उ०—१ रहौ **सधीरा** राजवण, नैण न नांखौ नीर। रंगौ मत इण रंग मैं, चंगौ भीजै चीर।—अग्यात

उ०—२ धांधळां आचार धरै पधारै सरूप धारै, धारै मनां घोड़ी काज बीचारै **सधीर**। आसती सगती थारै ओपमां बछेरी आछी, क्रांमती सांमळां साथै आवियौ कंठीर।—बादरदांन दधवड़ियौ

उ०—३ बांमी बंध बांधला, सूर सगरांम **सधीरा**। तेज जेठ तावड़ा, आंखि धावड़ा अंगीरा।—मे. म.

४ अटल, स्थिर।

उ०—डिग मती रे तरवरा, मन मैं रहै **सधीर**। पाव पलक रौ बैठणौ, घड़ी पलक रौ सीर।—अग्यात

५ व्यग्र, उतावला।

उ०—१ सजै साकुरां पाखरां नरां कांमरां साथै, बाजतां नगारां बधै बीराधमै वीर। मारकां हजारां सीस धावियौ अठेल मारू, 'सूर' रौ आखरां बेल आवियौ **सधीर**।

—किसनसिंघ राठौड़ रौ गीत

उ०—२ वांकड़ा कमंध वीर, सांकड़ा आया **सधीर**। तांम सोढि देखि ताव, पालटै कुरंग पाव।—सू. प्र.

उ०—३ वाजतां त्रंबाळ वीर, सांमुहौ आयौ **सधीर**। वीर तै त्रंबाळ वाज, गोम धोम बोम गाज।—सू. प्र.

६ सुन्दर, मनोहर।

उ०—हट्ट अटा हेम नग जटित हीर, धज कोटि कोटि ऊपर **सधीर**। हिम हीर गोरव जाळी हजार, दमकंत जोति अति जिलहदार।

—सू. प्र.

७ दक्ष, चतुर।

उ०—सास्त्र सिलप संजोय, सिलावट्टां स **सधीरां**। सीस असम संमेल, नीम परठी मझि नीरां।—सू. प्र.

८ उत्तम, श्रेष्ठ।

९ निरोग, स्वस्थ।

उ०—आलिंगन देई करी पूछै कुसल सरीर, माता तुझ परसाद थी, हूं थयौ आज **सधीर**।—स्रीपाल रास

१० दान देने वाला, दातार।

उ०—जिण लखै अवनि बह थाट जीत, कोड़ेस बगसि बहु लीध क्रीत। सलिता सिणगारी जे **सधीर**, बाहर सूरह री चढै वीर।

—सू. प्र.

सधीरांसधीर-वि. यौ.—महावीर।

उ०—सोबा खरीदै अपारु बापौ वखांणै जीहांन सारी, धीनौ 'अना' छत्रधारी **सधीरांसधीर**। बातां कै अख्यातां थारी न थावै मयंद बीजा, भारी गुणां आद चाळा वीलाळा सुवीर।

—जसकरण खिड़ियौ

सधु-सं. स्त्री.—पुत्री, बेटी।

रू. भे.—सद्दू, सधू, सिधु।

सधुरंधर-सं. पु.—बैल। (ह. नां. मा.)

सधू—देखो 'सधु' (रू. भे.)

उ०—१ देवी थारी दाय, राजी व्है ज्यूं राखजै। मोटौ सरणौ माय, म्हैं लीधौ 'मेहा' **सधू**।—अग्यात

उ०—२ 'सागर' **सधू** 'इंदरा' सकती, जननी धापू जाई। उगणीसै चोसट्टा वाळी, बिपरां साल बताई।—मे. म.

उ०—३ 'चंद्रभांण' **सधू** चंद्रा वदनि, चंद्रावत सीसोदणी। रूपक चडावण रांम-पुरी, इधक रूप चंद्रायणी।—गु. रू. बं.

सधूमवरणा-सं. स्त्री. [सं. सधूमवर्णा] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सधेस-सं. पु.—१ सिद्ध महात्मा।

उ०—मुखां भळकै सहंस भांण समीप रळकै मुद्रा, बांण में मेखळी

कंठ पळकै बसेस । चळकै अगेस चाळा भभूत मोहणी चढी, सरीर मोहणी कंथा रळकै सधेस ।—जळंधर नाथजी रौ गीत

२ महादेव, शिव, शंकर ।

सध्घर—देखो 'सधर' (रू. भे.)

उ०—उडि वैस्नरं सामठा सध्घरं, सुब्भटां भूलरं फौज घांसाहरं ।

—गु. रू. बं.

सध्रीच-सं. पु. [सं.] मित्र, दोस्त (अ. मा.)

सध्रीची-सं. स्त्री. [सं. सध्रीची] सखी, सहेली । (डिं. को.)

रू. भे.—सद्रीची ।

सनंकणौ, सनंकबौ—१ देखो 'संणक्कणौ, संणक्कबौ' (रू. भे.)

उ०—गजघंट ठनंकिय भेरि भनंकीय रंग रनंकीय कोचकरी । पखरांन भनंकीय वांन सनंकिय चाप तनंकिय तापपरी ।

—सूरजमल मिसण

उ०—२ खग धार खनक्किय तीर छनक्किय, प्रोथ सनंकिय होफ हयं इम घंट ठनक्किय नद्द रनक्किय भेरि भनक्किय सद्द भयं ।—ला. रा.

२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

सनंकणहार, हारौ (हारी), सनंकणियौ—वि० ।

सनंकिओड़ौ, सनंकियोड़ौ, सनंकयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सनंकीजणौ, सनंकीजबौ—कर्म वा० ।

सनंकियोड़ौ—१ देखो 'संणक्कियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सनंकियोड़ी)

सनंद, सनंदण, सनंदन-सं. पु. [सं. सनंदन] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक ।

उ०—सत सनंदन सुक सनक, नारद अवर असेस । ब्रह्म मारग जै ब्रह्मनु, तुंथी लहइ लवलेस ।—मा. कां. प्र.

सन-सं. पु. [अ. सन्] संवत् ।

उ०—सन उन्नीसौ चाळीस छोह छक छायौ, इत जेठ महीनै जेठ तिमर हर आयौ ।—ऊ. का.

२ एक पौधा विशेष जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है ।

अव्यय.—१ तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिह्न, से ।

उ०—बरात चलूंगी प्यारे नई दुलही कैसी लावोगे, वेसक ब्याहौ मितवा में राजी, मोहि सन मिलके सिधावोगे ।

—रसीले राज रा गीत

२ देखो 'सनि' (रू. भे.)

उ०—१ राजभवन दसमै सन राजै, छित इक छत्र करै सुख छाजै ।

—रा. रू.

उ०—२ माह मंगळ जेठ रवि, भादरवै सन होय । डंक कहै हे भडुली, बिरळै जीवै कोय ।—वर्षा विज्ञान

सनक-सं. पु. [सं. शनक] १ ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक मानस पुत्र ।

उ०—१ सत सनंदन सुक सनक, नारद अवर असेस । ब्रह्म मारग जे ब्रह्मनु, तुंथी लहइ लवलेस ।—मा. कां. प्र.

२ शंबर के एक पुत्र का नाम ।

३ देखो 'सणक' (रू. भे.)

सनकणौ, सनकबौ—१ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संणक्कणौ, संणक्कबौ' (रू. भे.)

सनकणहार, हारौ (हारी), सनकणियौ—वि० ।

सनकिओड़ौ, सनकियोड़ौ, सनक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सनकीजणौ, सनकीजबौ—कर्म वा० ।

सनकादक, सनकादि, सनकादिक-सं. पु.—१ ब्रह्मा के सनक आदि चार मासन पुत्र—सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार । (अ. मा.)

उ०—१ सिरै इता अवसांण, बहल मौ बाधि भगतबळ । अय अरथ लै जाय, आय सनकादिक ऊजळ ।—पू. प्र.

उ०—२ कयौ वैकूंठ हूंता सु विमांण, अयौ सनकादिक लै अव-सांण ।—सू. प्र.

उ०—३ सूक सनकादिक तेड़ौ जक्ष किंनर नै कहावौ रे । देव दांणव सहु तेड़ौ मंडप भीतर आवौ रे ।—रुकमणी मंगळ

सनकारणौ, सनकारबौ—देखो 'सणकारणौ, सणकारबौ' (रू भे.)

सनकारणहार, हारौ (हारी), सनकारणियौ—वि० ।

सनकारिओड़ौ, सनकारियोड़ौ, सनकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सनकारीजणौ, सनकारीजबौ—कर्म वा० ।

सनकारियोड़ौ—देखो 'सणकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सनकारियोड़ी)

सनकारी—देखो 'सणकारी' (रू. भे.)

उ०—कूंडै मन आदर करै, तेह सजाई लीध । दासी नै सनकारी सिखावी, सगलौ सिधौ दीध ।—ध व. ग्रं.

सनकियोड़ौ—१ देखो 'संणक्कियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सनकियोड़ी)

सनकी—देखो 'सणकी' (रू. भे.)

सनडोरयौ-सं. पु.—वह रस्सी जिससे चरस की 'सूंड' और 'पंजाली' बंधी रहती है ।

सनढ-वि.—१ वीर, यौद्धा, बहादुर ।

उ०—१ जोधपुर तखत पर रायसिंघ जोवतां, समवड़ व्है सारीख सनढ । गढ गढ समा पांमिया गढपत, गढपत गात प्रमांण गढ ।

—महाराजा रायसिंघ रौ गीत

उ०—२ संग्रांम लोह वाहै सनढ, विपरीत वाउ ऊखळा वढ ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ कह वात सनढ भीड़ै कडांह, हयग्रीव रूप कीनौ हुडांह ।

—पा. प्र.

२ सुसज्जित, कटिबद्ध, तैयार ।

उ०—हैदळ कळळ पायदळ हूंकळ, सीसोदै खड़तै सनढ। गहकै हो बीजां गढपतियां, गंजै अगंजी त्रिकूट-गढ।
—महाराणा लाखा रो गीत

३ दृढ, मजबूत।

उ०—१ बनै सबळ भुज अकळ सहंस बळ, खळ दळ खेरू करण-खग। 'गजपत' सुतन सनढ गढ ढाहण, कोय न तोय सरीखौ करग।—सादूळौ खिड़ियौ

उ०—२ भिड़णि जेम भगवांन असमांन अड़ियै भ्रिगुट, भार धरि भुजै गढ सनढ भेळै। दळां रा तिकै रखपाळ न्याइ दाखिजै, महरि वधि भड़ां हूं सार भेळै।—भगवांनदास राठौड़ रो गीत

४ बलवान, शक्तिशाली।

उ०—मोटा जळ चाढण मंडोवरि, समहरि गज गूडण सनढ। 'ऊदै' खळ सौं आफळतौ, गढपति होवै फतै गढ।
—प्रथ्वीराज राठौड़ रो गीत

५ शुभ, मंगलमय।

उ०—पनरेसै समत पनरोतड़ै, सुदी जेठ ग्यारस सनढ। अवगाढ जोध रचियौ इसो, गाढपूर जोधांण गढ।—सू. प्र.

रू. भे.—सन्नड्ढ।

सनणौ, सनबौ–क्रि. अ.—१ लथपथ होना, युक्त होना।

उ०—सरीर संसकार सार नीर छीर सैं सनैं, विध्वंस बेरि वंस कौ प्रसंसनीय तै बनै।—ऊ. का.

२ भीगना, तरबतर होना।

उ०—राजा पांडवां भी आसमेधी धारि लीनां, लोही की सन्योड़ी भूमिका मैं पिंड दीनां।—शि. वं.

सनणहार, हारौ (हारी), सनणियौ—वि०।

सनिओड़ौ, सनियोड़ौ, सन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सनीजणौ, सनीजबौ—भाव वा०।

सनत–सं. पु. [सं. सनत्] ब्रह्मा। (डि. को.)

सनतक, सनतकुमार, सनत्कुमार–सं. पु. [सं. सनत्कुमार] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

सनत्सुजात, सनत्सुजान–सं. पु.—ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक।

सनद–सं. स्त्री. [अ.] १ प्रमाण, सबूत।

२ विश्वास।

३ प्रमाण-पत्र।

रू. भे.—सनद्द, सनध, सनध्ध, सिधन।

सनदयाफ्ता–वि. [अ. सनद+याफ्त:] जिसे प्रमाण-पत्र मिला हो।

सनद्द–वि.—१ ध्वनि सहित।

उ०—तुरही सुर भेर भणंकत ही (ई), जद सद्द सनद्द दमांम जई।
—रा. रू.

२ देखो 'सनद' (रू. भे.)

सनद्वाज–सं. पु. [सं.] शुचि राजा के पुत्र एवं ऊर्ध्वकेतु राजा के पिता का नाम।

सनध, सनध्ध—देखो 'सनद' (रू. भे.)

उ०—इसी विचार आलमगीर करणसिंघ जी नूं बुलाय कर कयो, 'तुम औरंगाबाद रै सूबै जावो' अर करणपुरो पनवाड़ी री सनधां कर दीनी।—द. दा.

वि. [सं. सन्नद्ध] तैयार, सन्नद्ध।

सनधुज, सनध्वज–स. पु. [सं. सनध्वज] जनकवंशीय शुचि राजा का पुत्र एवं ऊर्ध्वकेतु राजा के पिता का नाम।

सनबंध, सनमंद, सनमंध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—१ रांम सहोदर रांम गुर, रांम पिता सनबंध। जिण दिन रांम न जप्पियो, वौ दिन अंधोधुंध।—ह. र.

उ०—२ तरै केलहण कहाड़ियौ—'इसड़ी बात कदै न हुई सूं क्यूं कीजे। सवारै संसार मांहै सगा सोई सकौ हंसै। पछै कोई आंपा सूं सनमंध करै नहीं, नै राव रै बेटो को न छै।'—नैणसी

उ०—३ सनमंध साच संसार सुख, पलट आज अणथाह पर। बरण-खट तणी तुटी बरत, 'सेर' आज पड़ियौ समर।
—पहाड़खां आढौ

उ०—४ कुण माता कुण पिता, कमण त्रिय कुण कुण भाई। कमण पुत्र परवार, कमण सनमंध सगाई।—ज. खि.

सनबंधी, सनमंधी—देखो 'संबंधी' (रू. भे.)

उ०—१ खंड देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनबंधी। सारां मिळै तूझ सूं संधी, बळ दाखै किण सिर गजबंधी'।
—चतुरौ मोतीसर

उ०—२ 'मांन' सुत अनै 'किसनेस' सुत मारका, सारका कोट अरगेज सारां। थापिया अेक छत्र अेक उथापिया, थापिया सनमंधी फूल-धारां।—रांमसिंघ हाडा नै राजसिंघ राठौड़ रो गीत

सनम–सं. स्त्री.—१ इज्जत, मर्यादा।

उ०—जद रजपूत कही सेबास थारी मात-पिता नै तैं मारी पाग री सनम राखी।—कांणौ राजपूत री बात

२ प्रेमपात्र। ३ लज्जा।

सनमन, सनमन—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—१ दूजो कह्यौ—बाई री तो राड़ ई है अर थें बाई रै साथै सनमन री बात करौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ घरवाळी थोड़ी ताल सोच-विचारनै कह्यौ—सावौ तो भेजणो ई है। औ सनमन नीं छोड़ां। गायां, मगरो बेचांला, वळै बोहरो करांला, भाईयां सूं मदत मांगांला।—फुलवाड़ी

उ०—३ बोली—आपांरै जोड़ री गवाड़ी सूं सनमन व्हियां आज औ दिन क्यूं देखणो पड़तो।—फुलवाड़ी

उ०—४ थें निरांत सूं सोवो म्हैं इण सनमन मैं कीं रांभो नीं पटकूंला।—फुलवाड़ी

सनमांन, सनमांनउ–सं पु. [सं. सम्मान] १ आदर सत्कार।

उ०—१ सदा करै सनमांन, मीठा बोलै हंस मिळै। दिए धरा धन दांन, जस खाटै ठाकर जिकै।—बां. दा.

उ०—२ बडभागी दीना विवध, संपत हित सनमांन। संप राखणौ सीखियौ, थिर चित राजस्थांन।—ऊ. का.

उ०—३ चित दे बातां चुगल री, सुणजै कर सनमांन। ऊमर मैं नह ऊपजै, कीड़ां रौ दुख कांन।—बां. दा.

उ०—४ तेण तेडावी सेठि धनावह, श्रांण्यु राजदूआरि। राजा ऊठी श्रालिगन दीघउ, सनमांनउ सुविचार।—हीराणंद सूरि

२ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—१ साह मिळे 'अभसाह' सूं, सिरै दियौ सनमांन। छात नचीतौ लेख छति, जांणै वात जहांन।—रा. रू.

उ०—२ बावळ आगै बीभणौ, की पावै सनमांन। तूभ रीभ आगै तिसौ, 'देवा' जग चौ दांन।—बां. दा.

उ०—३ पंजू नै निबै घणौ आदर सनमांन देनै बीजै दिन चढीया सौ लग्न रै दिन जालोर आया।—वीरमदे सोनगरा री वात

रू. भे.—सणमांण, सन्मांण, सन्मांन।

सनमांनणौ, सनमांनबौ—क्रि. स.—सम्मान करना, आदर करना।

उ०—१ खत्रीवट प्रगट करि जैत चाढी खवां, कुळ तिलक काढियौ कोट लियौ। सपूताचार पतिसाह सनमांनियौ, वाळतै पोकरण अंक वळियौ।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ साह कहियौ म्हारा अनांमय री उद्देस करि आवै तिकां नूं सांम्है जाइ हूं ही समझाइ पाछा मोडि आऊं। तिकौ भी तात रौ निदेस सनमांनि दारा कहियौ पिता रा पधारण मैं हूं भी पाट रौ पुत्र प्रतिस्ठा नूं पाऊं।—वं भा.

सनमांनणहार, हारौ (हारी), सनमांनणियौ—वि.।

सनमांनिओड़ौ, सनमांनियोड़ौ, सनमांन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सनमांनीजणौ, सनमांनीजबौ—कर्म वा०।

सनमांनियोड़ौ—भू. का. कृ.—सम्मान किया हुआ, आदर किया हुआ। (स्त्री. सनमांनियोड़ी)

सनमुक्ख, सनमुख—क्रि. वि. [सं. सम्मुख] सम्मुख, सामने।

उ०—१ पै हिण सिल फेरै प्रचंड, सनमुक्ख सभारै। रहिया यक अंग साच रांण, मिटिया माया रै।—सू. प्र.

उ०—२ निरखंत संत सनमुख निजर, करुण पुनीत सु प्रीत कर। गुण मांन दांन चाहै सु ग्रहि, कवि सुध्यांन औ ध्यांन कर।

—रा. रू.

उ०—३ सनमुख भत मीठा सबद, मेह समै रौ मोर। उगळै विख परपूठ औ, चुगल दई रौ चोर।—बां. दा.

उ०—४ गजगमणि सोल सिंगार, झतकास भूंब प्रकार। अति रंग उच्छव गाइ, 'अभमाल' सनमुख आइ।—सू. प्र.

वि. वि.—सम्मुख शब्द के रू. भे. की तरह सन्मुख का प्रयोग अशुद्ध है। पुरानी कविताओं में 'सनमुख' मिलने के कारण ही इसका प्रचलन हो गया है। शुद्ध रूप 'सम्मुख' है तथा 'सन्मुख' से इसका कोई अर्थ साम्य एवं सम्बन्ध नहीं है।

रू. भे.—सन्मुख, सैंमुख, सैंमुख, सैंमुखि, सैंमुखी।

सनमुख-भाला-सहण—सं. पु.—१ वीर, योद्धा।

२ सिंह, शेर। (नां. डिं. को.)

सनमुधि—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—वात सजीवत करण वताए, आप करण सनमुधि कजि आए।

—सू. प्र.

सनवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

उ०—१ अठतीसै आसोज मैं, सित सातम सनवार। गौ 'सोनगिर' धांम हरि, नांम करै संसार।—रा. रू.

उ०—२ तिथ चतुरदसी सनवार तव, तव रयण पहर बीतां अरध। 'अणजीत' ग्रेह जनम्यौ 'अभौ', बांण वेद हरखे विबुध।

—रा. रू.

सनस—सं. पु.—१ लिहाज, ख्याल, ध्यान।

उ०—१ सगपण चौ सनस रुखमणी सन्निधी, अण मारिवा तणौ आलोजि। ए अखियात जु आउधि आयुध, सजै रुकम हरि छेदै सोजि।—वेलि

उ०—२ वरजै सनस ठांमि व्यापार, चालै अपणौ कुल आचार। माइतां री आंण म खंडै, मोटां सेती हठ म मंडै।—ध. व. ग्रं.

२ इज्जत, मर्यादा।

उ०—बल परहरै बना बध बोलै, सनस असा राखै धरसूत। रांण तुहाली पोळ रायमल, राजधणी सेवै रजपूत।

—महारांणा रायमल्ल रौ गीत

३ चीज, वस्तु।

४ शंका, लज्जा।

उ०—हमे चौपड़ खेलै है प्रेममगन हुवा कठी री कठी सारि गोट मेलै है। बाजी बुलावै है, सनस खुलावै है, प्यारी री लालड़ी प्रीतम रौ हीरौ, प्यारी री चूंदड़ी प्रीतम रौ चीरौ।—र. हमीर

५ सनद, साक्षी।

६ कीर्ति, यश।

उ०—घाट पालट करै नाट रावत घणां, मेळि ऊभा रहै क मेळा। ऊजळी सनस संसार सोहौ ऊपरै, चालियौ भोज खत्रीवाट चेळा।

—राव भोज हाडा रौ गीत

वि.—समान, तुल्य।

उ०—भड़ां किमाड़ निरव है भुवब्बळि, सार सु दनि 'ऊदा' सनस। जुध आचारि अभनिमा 'जसवंत', जग दीपै ऊजळौ जस।

—राठौड़ प्रथ्वीराज भीमोत रौ गीत

सनसनी—सं. स्त्री.—१ सन्नाटा, स्तब्धता।

२ घबराहट, खलबली।

सनसणौ, सनसबौ—क्रि. अ.—जोशयुक्त होना।

सनसणहार, हारौ (हारी), सनसणियौ—वि० ।
सनसिओड़ौ, सनसियोड़ौ, सनस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सनसीजणौ, सनसीजबौ—भाव वा० ।
सनसियोड़ौ—भू. का. कृ.—जोशयुक्त हुवा हुआ ।
(स्त्री. सनसियोड़ी)
सनस्सणौ, सनस्सबौ—देखो 'सनसणौ, सनसबौ' (रू. भे.)
उ०—वीरम्मं वेताळं, खिळं खेतपाळं । कटक्कां कसस्सं, सुभट्टं सनस्सै ।—गु. रू. बं.
सनस्सणहार, हारौ (हारी), सनस्सणियौ—वि० ।
सनस्सिओड़ौ, सनस्सियोड़ौ, सनस्स्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सनस्सीजणौ, सनस्सीजबौ – भाव वा० ।
सनस्सियोड़ौ—देखो 'सनसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सनस्सियोड़ी)
सनांण –१ देखो 'सेनांण' (रू. भे.)
उ०—सोमेश्वर ब्राह्मण घणां छै पण थांहरै किसा सोमेस्वर सूँ कांम छै सो तिण री सनांण कहौ ।—पंचदंडी री वारता
२ देखो 'स्नांन' (रू. भे.)
सनांन—देखो 'स्नांन' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—१ सनांन कै खत्री सभंत तै करंत तरपण, दुजंस दांन गाय दांन आय देत अरपणं ।—सू. प्र.
उ०—२ जात पांत सपनें सम जांणूं, पाप पुण्य नहिं एक पिछांणूं। वपू तौ म्यांन समांन वखांणूं, सार सनांन जीव सेनांणूं ।
—ऊ. का.
सनांनघर—देखो 'स्नांनघर' (रू. भे.)
सनांनजात्रा, सनांनयात्रा—देखो 'स्नांनयात्रा' (रू. भे.)
सनांनी—देखो 'सिनांनी' (रू. भे.)
सनाकत, सनाखत, सनागत—देखो 'सिनाख्त' (रू. भे.)
उ०—१ बादसाह औरंगजेब सनाखत हुवौ । महाराजा अनूपसिंघ जी बीकानेर रा राजा हुवा ।—महाराजा पदमसिंह री बात
उ०—२ नाई कह्यौ—हां अंदाता, जिणरौ ई तौ नांम अेलम । गांव वाला सनागत नीं कर सकेला कै म्हारै टाट ही ।—फुलवाड़ी
सनाढ—१ देखो 'सनढ' (रू. भे.)
उ०—अतुळी बळ अमर न सहियौ ओकर, साहि आलम आगळै सनाढ । मुगळ कुबोल बोलियो मोड़ौ, जड़ियौ तै वेगौ जमढाढ ।
—केसोदास गाडण
२ देखो 'सनाढ्य' (रू. भे.)
सनाढ्य-सं. पु.—गोड़ों के अन्तर्गत कही जाने वाली ब्राह्मणों की एक शाखा ।
रू. भे.—सनाढ ।
सनातन-सं. पु. [सं.] प्राचीन काल ।
२ परम्परा ।
३ धार्मिक परम्परा ।
४ सम्बन्ध, रिश्ता ।
ज्यूं—थांरै न म्हांरै पीढियां रौ सनातन है ।
[सं. सनातनः] ५ ब्रह्मा ।
६ विष्णु ।
७ शिव, महादेव ।
८ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र ।
९ सनकादि ऋषियों में से एक ।
वि.—१ आदि काल का, प्राचीन ।
उ०—१ वप घणस्यांम नेत्र दुति वारज, कत अवतार सुरांचै कारज । ग्रत वप उग्र सनातन धारै, वेद अजाद धरम विसतारै ।
—सू. प्र.
उ०—२ सत बात कहै जग मैं सुकबी, कथ कूर कथै ठग सो कुकबी । सत कूर सनातन दोय सही, सत पंथ बहै सो महत सही ।
—ऊ. का.
२ निरन्तर, बराबर ।
३ स्थाई, दृढ़ ।
४ दृढ़, निश्चित ।
५ अनादि, अनंत ।
६ नित्य, शाश्वत ।
७ परम्परागत ।
उ०—मारि सकळ इम पाइ मधु, राखि सनातन राह। धकि लीधी बूंदी धरा, 'देवै' कंवर दुबाह ।—वं. भा.
८ परम्परानिष्ठ ।
रू. भे.—सुनातन ।
सनातनधरम-सं. पु. [सं. सनातनधर्म] १ अनादि या प्राचीन धर्म ।
२ परम्परागत धर्म ।
उ०—१ रीत सनातनधरम, किया ध्रम करै अणंकल । राजतिलक सिर धारि, तखत बैठौ अतुळीबळ ।—सू. प्र.
उ०—२ कुमार कहियौ जे प्रजा नूं पीडित करै तिकां री पूठि लागणौ तौ क्षत्रियां रौ ही सनातनधरम जांणीजै ।—वं. भा.
३ हिन्दू धर्म ।
वि० वि०—इसके मुख्य अंग हैं—बहुत से देवी-देवताओं की उपासना, मूर्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा, श्राद्ध, तर्पण आदि ।
रू. भे.—सुनातनधर्म ।
सनातनपुरस, सनातनपुरुस-सं. पु. [सं. सनातनपुरुष] विष्णु।
सनातनी-वि. [सं.] १ सनातन धर्म का, सनातन धर्म से सम्बन्धित ।
२ जो बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा हो ।
सं. पु.—१ सनातन धर्म का अनुयायी ।
सं. स्त्री.—२ दुर्गा, पार्वती ।
३ सरस्वती ।

४ लक्ष्मी ।

सनाती-वि.—१ सम्बन्धी, रिश्तेदार ।

उ०—तारत रौ निज तनय, नारदौ ओर **सनाती** । मार अमोलक मित्र, सदा उलटी संगाती ।—ऊ. का.

२ स्वजातीय ।

सनाथ-वि. [सं.] १ जिसका रक्षक या मालिक हो ।

उ०—तूं छत्री वौ विप्र थौ, जिकरण लियौ पित वैर । वौ अनाथ **सनाथ** तूं, माछंदर सिर मेर ।—पा. प्र.

२ कृतकृत्य ।

उ०—माठा दिन मिटिया हवै, सेवक थया **सनाथ** । सफळी सेवा चाकरी, आज थई अमनाथ ।—ढो. मा.

रू. भे.—सनाह, सुनात, सुनाथ ।

सनाद-वि.—कुल, वंश ।

उ०—अच्छा वैराट उपाया जै नमस्तै नमौ आदेस्वरी, समस्तै रचाया रूप अनेकां **सनाद** । गणांपति सारदा ब्रह्मा बिष्णु रुद्र गाया, अंबा महमाया जयौ सकत्ती अनाद ।—चैनकरण सांदू

रू. भे.—सुनाद ।

सनाभ, सनाभि-वि. [सं.] १ एक ही गर्भ का, सहोदर ।

२ सजातीय ।

३ अनुरूप, सदृश ।

४ स्नेहान्वित ।

सं. पु.—१ सहोदर, भाई ।

२ नजदीक का रिश्तेदार ।

सनाय-सं. स्त्री. [अ. सना] १ एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियों का गुण दस्तावर होता है, सोनामुखी ।

२ देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

उ०—हाथी चड खड़ हल्लियौ; सुर नौबतै **सनाय** । बांधपुरा मग्गां तुरक, मिळै लड़ंगां आय ।—रा. रू.

सनायु—[सं. स्नायु] १ स्पर्श ज्ञान कराने या वेदना का ज्ञान एक स्थान से दूसरे स्थान या मस्तिष्क तक पहुँचाने वाली शरीर के अन्दर की वायुवाहिनी नाड़ियाँ ।

२ नहरुआ नामक रोग विशेष ।

सनासन-सं. पु. [अनु.] वायु के झोंके से उत्पन्न शब्द ध्वनि ।

क्रि. वि.—१ लगातार, निरन्तर ।

२ शीघ्रतापूर्वक, तेज गति से ।

सनाह—देखो 'सन्नाह' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ बैनांणी ढीलौ घड़ै, मौ कंथ तणौ **सनाह** । विकसै पोइण फूल जिम, परदळ दीठां नाह ।—हा. झा.

उ०—२ लोपै नियती ची अजा, कोपै 'अवरंग' साह । पड़ी तुरंगै पक्खरां, अंगै जड़ी **सनाह** ।—रा. रू.

उ०—३ मूछ कै रोम व्योम कूं उट्ठं, रांन कै आए जम रांन सै रुट्ठं । एक हजार मुगळ सूर तें सूर, सहजादै की **सनाह** निरवाह कै पूर ।—रा. रू.

उ०—४ 'भगवांन' 'भांण' वैवत्र बाह, सुरतांण तणा समहर **सनाह** । 'रांमेण' कळोधर रूपरेण, सारखा अरज्जण भीमसेण ।

—गु. रू. बं.

उ०—५ अै 'करनोत' अभंग चित, आरंभ ज्यौं अोछाह । जतन घणौ साथै हुवा, 'दुरगा' तणां **सनाह** ।—रा. रू.

उ०—६ सुत 'रांम' रूप निज दळ **सनाह**, 'गोरधन' तणौ 'नाहर' दुगाह ।—रा. रू.

२ देखो 'सनाथ' (रू. भे.)

सनाहवांन, सनाहियौ, सनाही, सनाहीयौ, सनाहै-वि.—कवच वाले, कवचधारी ।

उ०—१ **सनाहवांन** सांघणां, घटा की ऊमड़ी घणां । खिवंत सेल खेह मैं, मिटै छटा न मेह मैं ।—रा. रू.

उ०—२ सूरां सेर **सनाहियां** बिरदैत बाहादर ।

—लूणकरण कवियौ

उ०—३ स्रीक्रस्ण लीधी जइत रे रे. सिसपाल बोल्या बोल । बिहूं दळि सूरा सुहड **सनाहीया** रे, बिहुं दळ बाज्या जंगी ढोल ।

—रुकमणी मंगळ

उ०—४ सेख रहै भड़ मेछ **सनाहै**, नूरअली जैतारण माहै ।

—रा. रू.

सनाह्य-सं. पु. [सं.] युद्ध के योग्य हाथी । (डिं. को.)

सनि-सं. पु. [सं. शनि] सौर जगत का सातवाँ ग्रह । (नां. मा.)

उ०—१ अंकुस सीस वणै गुण ऐसौ, जग वेधियौ मथा **सनि** जैसौ ।

—रा. रू.

उ०—२ आव सुमत खग सकत अमांमी, **सनि** गुण हुवै जगत चौ सांमी ।—रा. रू.

पर्याय.—अंतक, कोणस्त, क्रस्न, छनीछर, जम, पिंगल, मंद, मुनंद, रुद्र, वभ्रु पिप्पळा, सवरी ।

मुहा.—सनि री दसा आणी=बुरे दिन आना, आफत आना ।

२ शनिवार ।

उ०—चांदणी चवदस रो दिन छै । **सनि** आदित्यवार री संध छै ।

—नैणसी

३ शिव, महादेव ।

४ सूर्य व छाया का एक पुत्र ।

रू. भे.—सन, सनी, सन्नि, सन्नी ।

सनिकादिक—देखो 'सनकादिक' (रू. भे.)

सनिगध-सं. पु. [सं. स्निग्ध] मित्र, दोस्त । (ह. नां. मा.)

वि.—चिकना, स्निग्ध ।

उ०—सपत दसह भोजन घ्रत **सनिगध** । साग छतीसां वांन सध ।

—सू. प्र.

सनिचकर, सनिचक्र-सं. पु.—शुभाशुभ फल जानने का मनुष्य के शरीर के आकार का एक प्रकार का चक्र। (फलित ज्योतिष)

सनिचर—देखो 'सनेसर' (रू. भे.)

सनिचरया सनिचरिया, सनिचरचा-सं. स्त्री.—डंक ऋषि से उत्पन्न डाकोत नामक जाति विशेष।

रू. भे.—सनीचरया, सनीचरिया, सनीचरचा, सनीसरया, सनीसरिया, सनीसरचा।

सनिचरियौ—देखो 'सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनिद्धि, सनिध, सनिधि—देखो 'सन्निद्धि' (रू. भे.)

उ०—**सनिद्धि** स्वांमि कै सदा विनिद्ध पां परचा करै। लरै नहीं सुलोक तें कुलोक तें लरचा करैं।—ऊ. का.

सनिपित, सनिपिता-सं. पु.—सूर्य, सूरज। (अ. मा; डि. को.)

सनिप्रदोख, सनिप्रदोस-सं. पु. [सं. शनिप्रदोष] वह प्रदोष व्रत जो किसी मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी के शनिवार के दिन हो।

सनिप्रसू-सं. स्त्री. [सं. शनि प्रसू] सूर्य की पत्नी और शनि की माता।

सनिबाबौ, सनिम'राज, सनिमहाराज, सनिमा'राज—देखो 'सनि'।

उ०—कह्यौ कै इण मिनख रो उणियारौ तो वे खुद पैली वार देख्यौ। इण माया री तौ थां सगळा जेड़ी म्हनें ई ठा है। म्हारौ कीं थोड़ो-घणौ ई कसूर व्है तौ म्हनें **सनिमा'राज** पूगें।—फुलवाड़ी

सनियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लतपत हुवा हुआ, युक्त हुवा हुआ. २ भीगा हुआ, तरबतर हुवा हुआ।

(स्त्री. सनियोड़ी)

सनिवार-सं. पु. [सं. शनिवार] शुक्रवार के बाद तथा रविवार से पहले आने वाला दिन।

उ०—तसु आग्रह करी संवत सतर सतोतरे रे, चैत्री पूनम **सनिवार**। नवरस सहित सरस संबंध रच्यौ रे, निज बुद्धि कै अनुसार। —प. च. चौ.

रू. भे.—सनवार, सनिसरवार, सनीवार, सनीसरवार, सनैवार, सनैसरवार, सनैस्चरवार।

सनिव्रत-सं. पु. [सं. शनिव्रत] शनिश्चरवार को किया जाने वाला व्रत विशेष।

सनिसर—देखो 'सनेसर' (रू. भे.)

सनिसरवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

सनिसरियौ—देखो 'सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनिस्चर-सं. पु. [सं. शनिश्चर] १ जैनियों के ८८ ग्रहों में से चौथा ग्रह।

२ देखो 'सनेसर' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—घडीयालउं सुक्र मंत्रि बइसइ **सनिस्चर** पूठि पाग दइ खाट बइसइ ....।—व. स.

सनी-वि.—१ लतपत, सराबोर, युक्त।

उ०—रस माधुरं पी जंभीरी बिजोरा, झुकै साख फूलां फलां भारि जोरा। **सनी** सी मधू दाख अनार सेवा, दियौ आंणि लंचै सुधा जांणि देवा।—रा. रू.

२ देखो 'सनि' (रू. भे.) (अ. मा.)

सनीड़-क्रि. वि.—पास, समीप। (डि. को.)

सनीचर—देखो 'सनेसर' (रू. भे.)

उ०—१ सुक्रवारी बादळी, रहै **सनीचर** छाय। डंक कहै सुण भड्डली, बरस्या बिनां न जाय।—वर्षा विज्ञान

उ०—२ पण आप लोगां रै तौ आज सूं ई ढाई बरस रौ **सनीचर** लागौ।—फुलवाड़ी

सनीचरया, सनीचरिया, सनीचरचा—देखो 'सनिचरिया' (रू. भे.)

सनीचरियौ—देखो 'सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनीचरी-सं. स्त्री.—शनि का एक राशि पर रहने का समय। (ज्योतिष)

रू. भे.—सनैंचरी।

सनीचरौ—१ बदकिस्मत, हतभाग्य।

२ देखो 'सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनीतात-सं. पु.—सूर्य। (नां. मा.)

सनीपात—देखो 'सन्निपात' (रू. भे.)

उ०—जकै सूं सैः भूतणी रो वैं'म करै है, **सनीपात** नै कुण समझै? कोई जिंद बतावै, कोई चूड़ावण रौ नांव लेवै है। —दसदोख

सनीम-सं. पु. [सं. स+नियम] नियमानुसार।

उ०—अति उच्छव कीधौ 'अजन', निरखै सुतन **सनीम**। 'गजन' जिहीं सूतां सगह, सरब सपूतां सीम।—रा. रू.

रू. भे.—सनेम।

सनीयास—देखो 'संन्यास' (रू. भे.)

सनीयासी—देखो 'संन्यासी' (रू. भे.)

उ०—तिण ऊपर चोतरौ छै समाद री **सनीयासी** परसादगी रौ। —नैणसी

सनीवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

उ०—जेठ सुद ४ **सनीवार** मु. नैणसी दिन घड़ी ४ चढता पोकरण चालीयौ।—नैणसी

सनीसर—देखो 'सनेसर' (रू. भे.)

उ०—अब कहूं **सनीसर** गुण अनेक, अन्नेक तणो तत वचन एक। —सू. प्र.

सनीसरया, सनीसरिया, सनीसरचा—देखो 'सनिचरया' (रू. भे.)

सनीसरयौ, सनीसरियौ, सनीसरचौ—देखो सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनीसरवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

उ०—१ मुड़चौ तजि खेत पुळ्यौ प्रतमाग, खड़ौ अप जैत' दळै करि खाग। अथी ग्रह पंद्रह साल पंवार, बदी सह चौथ **सनीसरवार**।—मे. म.

उ०—२ माह ऊजळी सपतमी, वेढ सनीसरवार—रा. रू.

सनूरौ-वि. (स्त्री. सनूरी) १ सुंदर, खूबसूरत।

उ०—१ पटाळा हठाळा महागात पूरा, सुरंगा सगाहा सकोगा सनूरा।—रा. रू.

उ०—२ नव नव ग्रह ग्रह ग्रह चित्र सनूरा, पुर सुर धांम जिसा सुख पूरा।—रा. रू.

२ अधिक, बहुत।

उ०—मचि केसर कुमकुमं कीच अंबर कसतूरी, सुभ चंदरा घरा सार नीर सोरंभ सनूरी।—रा. रू.

३ प्रकाशपूर्ण, ज्योति सहित।

उ०—परीखं सरीकंठ मैं हीर पूरौ, सुभं सूर आकास जांणं सनूरौ।
—रा. रू.

४ तेजस्वी, कांतिमान।

उ०—१ अठी सं अछाया उठी खेंप आया, नगारा निहस्सं सनूरा तरस्सं।—रा. रू.

उ०—२ तुरग भल पाखरचा सस्त्र हाथै धरचा, नाचता माचता रण सनूरा।—स्रीपाल रास

५ जोश व उमंगपूर्ण।

रू. भे.—ससनूर, ससनूरौ।

सनेगद-सं. पु. [सं. स्निग्ध] मित्र, दोस्त। (ह. नां. मा.)

सनेपत-सं. पु.—वह खेत जिसमें फसल खडी हो।

उ०—आप ऊभौ रहचौ। कनारै एक बाजरी सनेपत खेत हुतौ तीयं मांहि जाइ पेठौ।—कांवळौ जोइयौ नै तीडी खरळ री बात

सनेपातवाय-सं. पु.—घोडे का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के पेट पर सूजन आ जाती है। (शा. हो.)

सनेपी-वि.—हितैषी, शुभचिंतक।

उ०—मुरधर ओखद मूळ, सनेपी सांचौ सारौ। ऊपर खारौ खूब, मांय सूं मीठौ न्यारौ।—दसदेव

सनेम—देखो 'सनीम' (रू. भे.)

उ०—नरनाथ रमणि सनेम, परखंत कमधज प्रेम।—रा. रू.

सनेयक-सं. पु. [सं.] भद्राश्व राजा का पुत्र, एक राजा।

सनेस, सनेसड़ौ—१ देखो 'संदेस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—दुख सुख कै कागज लिखूं, मांहै बोत सनेस। थैं तौ मन मांनी नहीं, करसू भगवां भेस।—स्रीहरिरांमजी महाराज

२ देखो 'स्नेह' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—तेल तिलां सूं उतरचां खळ सूं कांई सनेस।—अग्यात

सनेसर-सं. पु. [सं. शनैस्+चर] १ शनि ग्रह।

२ शनिवार।

रू. भे.—सनिचर, सनिसर, सनिस्चर, सनीचर, सनीसर।

सनेसरियौ-सं. पु.—शनिश्चर की पूजा करके उनके नाम से दान लेने वाली जाति विशेष का व्यक्ति।

रू. भे.—सनिचरियौ, सनिसरियौ, सनीचरियौ, सनीचरौ, सनीसरयौ, सनीसरियौ, सनीसरचौ।

सनेसी—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—रांम सनेसी एक रांम है, मेरै मन भाया हो। और सनेसी छोडकै, वासूं मन लाया हो।—स्रीहरिरांमजी महाराज

सनेसौ—देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—मेरै प्रीतम प्यारै रांम नै, लिख भेजूं री पाती। स्यांम सनेसौ कबहु न दीनो, जांण बुझ गुझ बाती।—मीरां

उ०—२ सुण सनेसा गुरुदेव का, निज मारग पावै हो। खांणी वांणी पलटकै उण देस समावौ हो।—स्रीहरिरांमजी महाराज

सनेह-सं. पु. [सं. स्नेह] १ प्रेम, प्यार। (डिं. को.)

उ०—१ बीजळियां अंबर चढी, महीज वूठा मेह। बोलण लागा दादरा, सालण लगो सनेह।—अग्यात

उ०—२ साध समागम ना कीया, नांव न किया सनेह। हरीया मरि मरि ओतरै, लख चौरासी देह।—अनुभववांणी

२ आस्था, श्रद्धा।

उ०—कोई ········ नै छोड़नै साची स्रद्धा लीधी। गुरु कीधा। पिण उणां रो परचौ छूटै नहीं वार २ जावै। जद स्वांमी जी पूछ्यौ यांरो परचौ क्यूं राखै। जद तै बोल्यौ—म्हारो आगलो सनेह है।—भि. द्र.

३ दर्शन।

४ कृपा, दया।

५ देखो 'स्नेह' (रू. भे.)

रू. भे.—नेह, संनेह, सन्नेह।

अल्पा.—नेहड़ली, नेहड़लौ, नेहलउ, नेहलु, नेहलौ, नेहू, नेहौ, सनेहड़ौ, सनेहौ।

६ देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—तै विरहणि किम जीवसै, ज्यारा दूर सनेह।—ढो. मा.

सनेहड़ौ—देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—हरीया सहज सनेहड़ौ, जन कोई जांणंत। दुनीयां लोकाचार मैं, वहि वहि वीच मरंत।—अनुभववांणी

सनेही-सं. पु. [सं. स्नेहिन्] १ मित्र, दोस्त, साथी। (डिं. को.)

२ भक्त।

३ चित्रकार।

४ लेप आदि करने वाला चिकित्सक।

५ प्रेमी, प्रिय।

उ०—सुरति सुहागनी सुंदरी, दुलहो सबद सुजांन। सदा सनेही ऊपरै, वारूं मन अर प्रांण।—अनुभववांणी

वि.—१ प्रेम करने वाला, प्रिय।

उ०—प्रांण छंडतै तन छंडे, तन छाडंतै जीव। जन हरीया मत छाडिजै, परम सनेही पीव।—अनुभववांणी

उ०—१ ईखै सुपन त्रिया छिब एही, सुपह दाखियौ वचन सनेही।
—सू. प्र.

उ०—२ क्रपा-धांम नव कंज नयरा, अभिरांम सनेही। रुचि कपोळ ग्रीवा त्रिरेख, छबि वेस अछेही।—रा. रू.

उ०—३ सुपह भड़ा कथ कहै सनेही, उतन करां राजस घर एही।
—सू. प्र.

रू. भे.—नेही, संनेही, सनेह, सनेही, सनैई, ससनेही, स्नेही।

अल्पा;—नेहौ, सनेहौ।

सनेहौ—१ प्यारा, प्रिय।

उ०—जोड़ै कुंवर अनो पित जेहौ, सत्रां अनेही दळां सनेहौ।
—रा. रू.

२ सावधान, सतर्क।

३ देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—सिघल सौ कीधौ सनेहौ रे, मांन दई मूक्या तेहौ रे। समारी सह राघव वातौ रे, जिम तिम वरणी आवै धातौ रे।—प. च. चौ.

४ देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—उत्तम कुल तैं पांमिस्यइ, परिण नहीं करइ सनेहौ रे।
—स. कु.

५ देखो 'सनेही' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—ईंदा आद लगै पण एहौ, सांम धरम नित रहै सनेहौ। भोज महाबल आगळ भारथ, परब परब जांणै जुध पारथ।—रा. रू.

सनै—क्रि. वि. [सं. शनैः] १ धीरे-धीरे।

उ०—१ मिळ पर नार नजारा मारण, संपत हरण सनै सनै। करतब हीरण विपत रा कारण, कव चारण किम रहै कनै।
— ऊमरदांन लाळस

उ०—२ रोळ बिगाड़ै राजनूं, मोल बिगाड़ै माल। सनै सनै सिरदार री, चुगल बिगाड़ै चाल।—बां. दा.

उ०—३ सुणौ निरदई साहिबा, काहै कुं दुख देह। थोड़ै घणौ सुवाद छै, सनै सनै रस लेह।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ थोड़ा-थोड़ा।

३ सिलसिलेवार, क्रमशः।

सनैई—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—तठै आबै वीछडतां आपरा सनैई कुंवरजी नै कहै छै।
—रीसालू री बात

सनैचरी—देखो 'सनीचरी' (रू. भे.)

सनैवार, सनैसरवार, सनैस्वरवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

उ०—माह सुदि १३ सनैस्वरवार दीक्षा रौ मुहुरत ठहरायौ।
—भि. द्र.

सन्न—देखो 'सुन्न' (रू. भे.)

सन्नक—देखो 'सनकादिक' (रू. भे.)

उ०—सेवै पग सन्नक जन्नक सूर, अरज्जुण उद्धव औ अक्रूर।
—ह. र.

सन्नड्ड, सन्नढ—देखो 'सनढ' (रू. भे.)

उ०—खंडा खुरसांणी तेगां पांणी, सींगी नेजा सन्नड्ड।
—गु. रू. बं.

सन्नत—सं. पु.—राम की सेना का एक बंदर। (रामकथा)

वि.—१ उदास, खिन्नचित्त।

२ सिकुड़ा हुआ।

३ झुका हुआ।

सन्नति, सन्नती—सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार का यज्ञ विशेष।

२ सुनीथ का पिता तथा प्रतर्दन व मदालसा के पुत्र अलर्क के पुत्र का नाम।

सं. स्त्री.—३ पुलह मुनि के पुत्र ऋतु की पत्नी एवं बालखिल्य की माता का नाम जो दक्ष की कन्या थी।

४ विनम्रता।

सन्नतेयु—सं. पु. [सं.] १ कुशवंशीय रौद्राश्व एवं घृताची के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

२ पुरुवंशीय रौद्राश्व एवं मित्रकेशी के पुत्रों में से एक।

सन्नद्ध—वि. [सं.] १ तैयार, कटिबद्ध।

उ०—सोहो स्वीकार करि प्रांमार केमास रा मंत्र रै अनुसार सन्नद्ध होय नागौर रहियौ।—वं. भा.

२ कवच धारण किया हुआ।

३ किसी वस्तु या गुण से परिपूर्ण।

४ व्याप्त।

सन्नद्धबद्ध—वि. [सं.] १ अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित।

उ०........न जांणीअ आत्मदल न जांणीअ परदल न जांणीअ भूतल न जांणीअ भोमंडल, न जांणीअ रात्रि न जांणीअ दीस, न जांणीअ पूरव न जांणीअ पस्चिम, सहू एकाकार हुइं, इसिइ समय पर दलइ वरतमांनि राजा सन्नद्धबद्ध लोह चूरणा हुइ सुहुउ सुहडइ, सगुड हात्थीया लूडइ, रथावली ऊथलावइ.........।
—व. स.

२ वीर, बहादुर।

उ०—सोमाडा सवे वस कीधा, सवे गढ लीधा, गढवइ सवि निरद्धाटिया, दुरग सवं आपणा कीधा, समुद्र लगि आपणी आंण फेरि, निस्कंटक राज्य प्रतिपालता संग्रांम विखय कदाचित उपजइ, बि पखा ब्रहत्पुरुखा साचरिया, क्षेत्र मूडाविउं, बिहुं गमी सन्नद्धबद्ध नीगना,.........।—व. स.

३ कवच धारण किया हुआ।

सन्नांन—देखो 'स्नांन' (रू. भे.)

उ०—दुतिवंत करै सन्नांन दांन, विध राज रीत सासत्र विधांन।
—सू. प्र.

सन्ना—देखो 'सन्नाह' (रू. भे.)

सन्नाटौ-सं. पु.—१ निस्तब्धता, नीरवता।

२ भय या आश्चर्य के कारण व्याप्त मौन या चुप्पी।

उ०—राजाजी री बात सुण आखा दरबार मैं सन्नाटौ छायगौ।
—फुलवाड़ी

२ निर्जनता।

रू. भे.—सणणाटौ।

सन्नादन-सं. पु.—राम की सेना का एक बंदर। (रांमकथा)

सन्नादी-सं. पु. [सं.] स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण, व्यंजन।

सन्नाह-सं. पु.—१ जिरह, कवच, बख्तर।

उ०—१ सिणगारी सन्नाह मूं, बिस कांमणि वरियांम। वरि आई हाला वरण, करण महा जुध कांम।—हा. झा.

उ०—२ लीया वरियांमें 'अंबर' आंमें सूरै पूरै सन्नाह।
—गु. रू. बं.

उ०—३ तूटै सन्नाहै तलवार उडइ तिणगा अगन सुझाळ।
—प. च. चौ.

२ अस्त्र-शस्त्र।

३ वीर, योद्धा।

४ मालिक, स्वामी।

५ अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होने की क्रिया।

६ युद्ध में जाने हेतु की गई तैयारी।

वि.—१ सहायक, मददगार।

२ बचाने वाला, रक्षा करने वाला, रक्षक।

३ कवच धारण किया हुआ।

उ०—सन्नाहै भड सुहड जिकै, असवार अचग्गळ। परि पध्धर पाइक्क सेत, बांबल पाए दळ।—गु. रू. बं.

रू. भे.—संनाह, संनाहु, संन्नाह, सनाह, सन्ना।

सन्नि—देखो 'सनि' (रू. भे.)

उ०—अग्रपत्ती इनि आसनां, महिपति द्रोहै मन्नि। निजर दियै नव साहसौ, फिरि बारहमौ सन्नि।—गु. रू. बं.

सन्निद्धि, सन्निधि-क्रि. वि. [सं. सन्निधिः] समीप, निकट, पास।

उ०—१ सन्निद्धि सुभट समरन समींक, इक्क तें इक्क उद्धत अनीक। दुरयोधनपुर देसक दरोळ, हे दुरगदास बेसक हरोळ।—ऊ. का.

उ०—२ सगपण ची सनस रुखमणि सन्निधि. अण मारिवा तणी अलोजि। ए अखियात जु आउधि आउध, सजै रुकम हरि छेदै सोजि।—वेलि

रू. भे.—सनिद्धि, सनिध।

सन्निनांण-सं. स्त्री. [सं. संज्ञिज्ञान] पूर्वजन्म की स्मृति। (जैन)

सन्निपात-सं. पु. [सं. सन्निपातः] १ कफ वात और पित के एक साथ बिगड़ने पर उत्पन्न होने वाली अवस्था जिसमें रोगी का चित्त भ्रांत हो जाता है, वह बकने लगता है तथा उछलता-कूदता है। आयुर्वेद के अनुसार यह तेरह प्रकार का होता है।

२ कफ, वात, पित तीनों का एक साथ बिगड़ना, त्रिदोष।

३ प्रहार, चोट।

उ०—अर कहियौ नरसिंह देवरा सस्त्रां रां सन्निपात हूं प्रांण हीण होय पड़ता।—वं. भा.

४ देखो 'सन्निपातज्वर'।

उ०—ताप सन्निपात जांणी अतिसार संग्रहांणि, फीहो विध राल पांडु गोला सूल खैंण है।—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—संनिपात, सनीपात।

सन्निपातजुर, सन्निपातजुवर, सन्निपातज्वर-सं. पु. [सं सन्निपातः+ज्वरः] त्रिदोषज ज्वर।

सन्निवास-सं. पु. [सं.] भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

सन्निहीत-सं. पु. [सं.] मनु-पुत्र एक अग्नि का नाम।

सन्नी-वि. [सं. संज्ञी] भविष्य के हित-अहित को समझने वाला, पंचेंद्रिय।

उ०—जद स्वांमीजी कह्यौ थे सन्नी कै असन्नी। तै बोल्यौ हूं सन्नी।—भि. द्र.

सन्नेस—देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—म्हारा बिछड़्या फेर न मिळिया, भेज्या ना एक सन्नेस।
—मीरां

सन्नेह—देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—लाज सीळ सन्नेह, लाज पतिवरत न मूकै। लाज मांण रक्खणी, लाज अवसांण न चूकै।—रा. रू.

सन्मांण, सन्मांन—देखो 'सनमांन' (रू. भे.)

उ०—१ दायजै जिसी पुरांणी कमीणी प्रथावां री विनासकारी चुगली चेस्टावां करतौ आवै। जकैसूं कसबै मैं घणौ सन्मांन पावै।
—दसदोख

उ०—२ निरधणियां रै आगै हौ परौ'र नाजम-तहसीलदार नै ही ललकार नाखै। जकां वास्तै गांव रा मिनख लाधू रौ सन्मांन राखै। रांम-रमी राखै।—दसदोख

सन्मुख—देखो 'सनमुख' (रू. भे.)

उ०—१ दादू जिसका साहिब जागणा, सेवक सदा सचेत। सावधांन सन्मुख रहै, गिर गिर पड़ै अचेत।—दादूबांणी

उ०—२ पीछै कंवर बीकोजी साथ कर सिहांण जोइयै मिलक ऊपर गया, तद मिलक सन्मुख आय सीबीकै जी रौ पायनांमौ हुवौ।
—द. दा.

सन्यास—देखो 'संन्यास' (रू. भे.)

सन्यासास्रम-सं. पु. [सं. संन्यासाश्रम] मनुष्य-जीवन को चार भागों में विभाजित करने वाले चार आश्रमों में से अन्तिमाश्रम।

सन्यासी—देखो 'संन्यासी' (रू. भे.)

उ०—१ तरै कह्यौ -बेटी इतरी मोटी हुई, नै इण रै वर री

खबर ही नहीं। न जांणां मुवौ, किना कठी ही जोगी सन्यासी हुय गयौ।—नैणसी

उ०—२ उदर ब्रांमणी अवतरयौ, पद सन्यासी पाय। चतुर नरां चित मैं चढ्यौ, दयानंद गुर दाय।—ऊ. का.

सव्रत—सं. पु. [सं. ऋत] सत्य। (ह. नां. मा.)

सन्हद्द—[सं. सन्नद्ध] बन्धा हुआ। (घोड़े या ऊंट गधे की पीठ पर)

उ०—दुहूं दिस सद्द सन्हद्द दमांम, उडै कळ जंत्र अनंत अमांम।

—रा. रू.

सपंखरौ—देखो 'सुपंखरौ' (रू. भे.)

सपंदण, सपंदन—देखो 'स्पंदन' (रू. भे.)

सपंपाट—वि.—नष्ट-भ्रष्ट, तहस-नहस।

सप—सं. स्त्री. [अनु.] १ शपथ, दुहाई। (डिं. को.)

२ तेज या तीव्र गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि।

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

सपक—क्रि. वि.—झट, शीघ्र।

उ०—छिणियां तौ छिणमिण चलै, सपक हथोड़ा साथ। एक घड़ी में काढ्या 'लोटियै', बंधव पूरा साठ।

—डूंगजी जवारजी री छावली

ज्यूं—सपक सपक हालणौ।

सपक्खर—वि.—१ कवच सहित।

उ०—सिलह-पोस लख असी, पमंग असवार सपक्खर। कोड़ि तीन पायक्क, धोम धांनंख फरसधर।—सू. प्र.

२ (युद्ध में रक्षार्थ हाथी या घोड़े पर डाली जाने वाली) लोहे की झूल सहित।

उ०—पडै जोध जरदंत, पडै बरहास सपक्खर। पडै बांण एक लक्ख सीस 'जिहंगीर' लसक्कर।—गु. रू. बं.

रू. भे.—सपख्खर (रू. भे.)

सपखाळ, सपखाळौ—वि. [सं. स्व+पक्ष] १ अपने पक्ष वाला, तरफदार।

उ०—'सुंदर' नै 'माहेस' सिघाळा, खूंमांणां सगळा सपखाळा।

—रा. रू.

२ वीर, बहादुर।

३ श्रेष्ठ एवं कुलीन।

उ०—मन मोट गाहडि कोट माझी, चाल पह कलिचाल। सपखाळ विरद विसाळ मालिम, भड़ां किमाड़ भुजाळ।—ल. पिं.

सपख्खर—देखो 'सपक्खर' (रू. भे.)

उ०—करि जीण सपख्खर बाज कटे, दहोडे खळ एम तुरी दबटे।

—सू. प्र.

सपगाई—सं. स्त्री.—सावधानी व सतर्कता।

उ०—१ सपगाई सब बातां मैं चाहियै कांम संवारण मैं बैंरी मारण मैं।—नी. प्र.

उ०—२ गप्प मारै दावा करै तिण रौ भरोसौ न करौ इतरै उण नूं धीरज सूं परखौ सपगाई सूं परखौ।—नी प्र.

सपगौ, सपग्गौ—वि. (स्त्री. सपगी) १ अटल व अडिग।

उ०—१ साहजादौ मुहसन साह वेस तरवारिया छै जिण री सारै धाक छै। खेत मैं पहाड़ री ज्यूं सपगा छै।—नी. प्र.

उ०—२ सरम सांमध्रम हूंत सपग्गौ, अधरम हूंत रहै अळग्गौ।

—रा. रू.

२ दृढ़, मजबूत।

उ०—१ जिको बादसाहां मैं सूरौ मनगरौ होय घणी भीड पडियां पगां सपगौ रहै तिको प्रथ्वी बेगी जीतै।—नी. प्र.

उ०—२ मरद सपगौ ऊ छै राह रीत आपसी सूं किणी रा भय उस्वास सूं फिरै नहीं।—नी. प्र.

३ विश्वासपात्र।

क्रि. वि.—होश में, चेतनावस्था में।

उ०—तिसै दूजौ प्यालौ चावड़ी वळै भरियौ जांणियौ गोलौ अजै सपगां छै।—जगदेव पंवार री बात

सपड़ाणौ, सपड़ाबौ—देखो 'संपड़ाबौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रावत झाटक रजां, गजां म्हावत गरदाया। सपड़ाया जळ सींच, वळै चितरांम वणाया।—मे. म.

उ०—२ ढोला जी रै राहै का तेड़ावै ढोला जो सपड़ासी मोकलावौ।—लो. गी.

सपड़ाणहार, हारौ (हारी) सपड़ाणियौ—वि०।

सपड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सपड़ाईजणौ, सपड़ाईजबौ—कर्म वा०।

सपड़ायोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सपड़ायोड़ी)

सपड़ावणौ, सपड़ावबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)

सपड़ावणहार, हारौ (हारी), सपड़ावणियौ—वि०।

सपड़ाविओड़ौ, सपड़ावियोड़ौ, सपड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सपड़ावीजणौ, सपड़ावीजबौ—कर्म वा०।

सपड़ावियोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सपड़ावियोड़ी)

सपट—सं. स्त्री.—अवसर, मौका।

ज्यूं—आयोड़ी सपट चूकणौ।

२ झपट, टक्कर।

ज्यूं - बतूळिया री सपट सूं पायां कण कण री व्हैगी।

३ नाश, ध्वंस।

उ०—रळिया चढता मेघ, उचक्कै पवन हिंडोळै। सपट करै चित्रांम, फुहारां रंग उजोळै।—मेघदूत

सपणि, सपणि, सपणी, सपणी—सं. स्त्री. [सं. सर्पिणी] १ नागिन, साँपिन। (डिं. को.)

उ०—सुंदर सुकलीणी झीणीं साड़ी मैं, जुलफां सपणीं जिम अपणी आड़ी मैं।—ऊ. का.

२ पीठ या गरदन पर होने वाली रोमों की लंबी भौंरी। (अशुभ)

सपणौ—देखो 'सपनौ' (रू. भे.)

उ०—संसारी दा भगळ खेल जांणौ जिम सपणां।—र. ज. प्र.

सपतंग-सं. पु.—१ राज्य के सात अंग।

उ०—मिळै सगरांम सगरांम जुध मसळियौ, ग्रजड़ बळ खांन खंधार तूटौ। ग्रास भडार सपतंग लै सरबगळ, छोडियां साह महमंद छूटौ।—महारांणा संग्रामसिंह रौ गीत

२ इज्जत, प्रतिष्ठा, कीर्ति, प्रसिद्धी।

उ०—सो मरणौ जीवणौ तौ परमेसुर जी रै हाथै छै। नाळेर फेरीयां म्हारौ सपतंग जासी। मुलक मैं फतीज होऊं।

—कुंवरसी सांखला री वारता

सपत—देखो 'सप्त' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ सपत कोस कनवज हूँ सोहत, मदन विनोद वाग मन मोहत।—सू. प्र.

उ०—२ सपत दसह भोजन व्रत सनिगध, साग छतीमां वांन वांन सध।—सू. प्र.

उ०—३ रांम धांम 'जसराज', गयौ हिंदू ध्रम आगळ। मास सपत 'अजमाल', मात ग्रभ वास महाबळ।—रा. रू.

२ देखो 'सपथ' (रू. भे.) (डि. को.)

३ देखो 'सपदी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सपततंतु—देखो 'सप्ततंतु' (रू. भे.) (डि. को.)

सपततुरंग—देखो 'सपतास'।

उ०—विभ्रम विमोह चित्तं, सपततुरंग तांणियं सविता। वासर विसाळ लहियं. चक-वांणं मंगळ भवण।—गु. रू. बं.

सपतदीप—देखो 'सप्तदीप' (रू. भे.)

उ०—गुरु गोबिंद बताइया जी, जिम थरप्या ब्रह्ममंड। तीन लोक चौदह भवन जी, सपतदीप नव खंड।—रुकमणि मंगळ

सपतन-सं. पु. [सं. सपत्नः] शत्रु। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सपतपुरी—देखो 'सप्तपुरी' (रू. भे.) (अ. मा.)

सपतम—देखो 'सप्तम' (रू. भे.)

उ०—लख छठौ 'खेम' धधवाड़ लहि, रांण जगत्त सेवा रहण। धधवाड़ लाख सपतम धरै, स्यांमदास 'माधव' सुतण।—सू. प्र.

सपतमी—देखो 'सप्तमी' (रू. भे.)

उ०—१ सपतमी क्रस्ण नवकोट सांम, गढ घेर दिया डेरा संग्रांम।

—रा. रू.

उ०—२ पड़िया आसुर पांच सौ, घायल हुवा हजार। माह उजाळी सपतमी, वेढ सनीसर वार।—रा. रू.

सपतमौं-वि. (स्त्री. सपतमी) जो क्रम से छः के बाद आता हो, सातवां।

उ०—संमत दह सपतमैं सरस पचसठै समंछर।—रा. रू.

रू. भे.—सपतवौं, सपतौ।

सपतम्मी—देखो 'सप्तमी' (रू. भे.)

उ०—मिळियौ 'अजमाल' सूं, आइ उजळ सपतम्मी।—रा. रू.

सपतरिख, सपतरिखी, सपतरिसी—देखो 'सप्तरिसी' (रू. भे.)

उ०—लाख इग्यारै जोजनां, तासूं ऊंचौ ओर। तांह रहै आनंद सूं, सपतरिसन की ठौर।—गज-उद्धार

सपतवौं—देखो 'सपतमौं' (रू. भे.)

उ०—दध मंडोदक सस्ठमौं, लाख बत्तीस बखांन। सुधोदक कहै सपतवौं, चोसठ लाख प्रमांन।—गज-उद्धार

सपतसपती-सं. पु [सं. सप्त+सप्तीः] सूर्य, भानु। (डि. को.)

सपतसुर—देखो 'सप्तस्वर' (रू. भे.)

उ०—१ आगं हुवंत नट औसर, संगीत सपतसुर।—गु. रू. बं.

उ०—२ गीत संगीत सपतसुर गाए, आगळि पात्र अखाडो थाए।

—गु. रू. बं.

सपतहर, सपतहरि-सं. पु. [सं. सप्त+हरि=अश्व] सूर्य, भानु।

(ना. डि. को.)

सपतारचि, सपतारची-सं. स्त्री. [सं. सप्तार्चिः] अग्नि, आग।

(ह. नां. मा.)

सपतारिख—देखो 'सप्तरिसी'

सपताळू-सं. पु.—एक प्रकार का रंग विशेष।

उ०—१ जरद कसूंबल नारंग्या सपताळू सौहंत।—पनां

उ०—२ तठा उपरांत गंगेव नीबावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां करै छै। कसूमल केसरिया हरी सब्ज सपताळू सोसनिया नारंगिया सपेत।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सप्ताळू, सफताळू।

सपतास, सपतासव—देखो 'सप्तास्व' (रू. भे.)

उ०—१ विढे जुध 'धांधिल' ओरि अहास, पेखै हथ वाग कसे सपतास।—सू. प्र.

उ०—२ सपतास नही इण सारिखौ, जोय सूर इम जांणियौ। सूरजपसाव साकति सजे, इण विध हाजर आंणियौ।—सू. प्र.

उ०—३ अस सपतास आलमां ऊपर, खळ दळ राकस वाहै खग्ग। कमंधां घर ऊजळौ कळहण, जगचख जिम पेखियौ जग्ग।

—चांवंडदांन बारहठ

उ०—४ छाजां मेर खंग रूप बाजां सपतास छतौ, पाजां सेतबंध बाजां दुंदभी प्रमांण।—बखतसिंघ चुवांण रौ गीत

उ०—५ तिलमातर भीत न बीत तणी, थंभि हालत अग्रकियां हथणी। कुसमालय लेत सुबास कटां, झझकै सपतास करां झपटां।

—मे. म.

सपती, सपत्ती-सं. स्त्री.—१ आग, अग्नि। (अ. मा.)

[सं. सप्तिः] २ घोड़ा, अश्व। (अ. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—सपत्ती।

सपतौ, सपतौ–सं. पु. [सं. सप्ताह] १ सात दिनों का समूह।
२ सात दिन का समय।
३ सात दिन तक बांची जाने वाली कथा।
क्रि. प्र.—बंचणा, बांचणा, बैठणा, बैठाणा।
सपत्त—देखो 'सप्त' (रू. भे.)
उ०—१ सपत्त मैं खणा आंमास ओपि असमांण ए।—गु. रू. बं.
उ०—२ पडिहार भीम भुज दांन भत्त, प्रिथमी दीप जांणै सपत्त।
—गु. रू. बं.
सपत्ती—देखो 'सपती' (रू. भे.)
उ०—छक बढियौ अणछेह, पमंग चढियौ भुवपत्ती। जांण चढचौ जेठ रौ, सूरज सपतास सपत्ती।—मे. म.
सपत्तौ–वि.—कामयाब, सफल।
उ०—हुसनअली सइयद्द, छत्र थापै मद छायौ, इण दुख ईरांनियां, तपत तन मन मुख तायौ। बात घात बेखतां, दाव देखतां सपत्तौ, सैंद चूक कर समर, मार लीधौ गहमत्तौ। विसतरी वात दिस दिस विदिस, क्रित अभूत पखां किया। जोधपुर दूत जैसिंघ रा, आंणी खबर अचितिया।—रा रू.
२ देखो 'सप्ताह'
सपत्नजित–सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण व सुदत्ता के पुत्रों में से एक।
सपत्नी–सं. स्त्री. [सं.] सौत, सौतिन।
सपथ–सं. पु. [सं. शपथ] १ कसम, सौगन्ध। (डिं. को.)
उ०—पैला रण जिण छूटि पग, पुळियौ डेरा पाइ। जरै कहाइ जनक हूं, दूरै सपथ दिवाइ।—वं. भा.
पर्याय०—आंण, सप, समौ, सोगन।
२ वचन, कौल।
उ०—पांणि जोड़ि दै घण सपथ, पुणियौ तदि रोपाल।—वं. भा.
रू. भे.–सपत।
सपथतंतू—देखो 'सप्ततंतु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
सपद, सपदि–क्रि. वि. [सं. सपदि] शीघ्र। (अ. मा; ह. नां. मा.)
सपनंतर–सं. पु.—स्वप्न। क्रि. वि.—स्वप्न में।
उ०—१ नाजर राखै 'नथू' प्रगट सपनंतर पायौ, नारद इंद कुबेर हेत दाखवै सवायौ।—रा. रू.
उ०—२ आज सखी सपनंतर दीठ, राग चूरै राजा पलंगै बईठ।
—बी. दे.
सपनाअवस्था, सपनावस्था–सं. स्त्री. [सं. स्वप्नावस्था] १ वह निद्रावस्था जिसमें स्वप्न दिखाई देते हैं।
२ सांसारिक जीवन की अवस्था जो स्वप्न के समान अवास्तविक व निस्सार मानी गई है।
सपनौ, सपनौं—देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)
उ०—१ सूता सपनै लूटसी, जागंता सेंदेह। जनहरीया तिह लोक में, नारी जांण न देह।—अनुभववांणी
उ०—२ कुचमादी वाळी बात अेक सपनौ हो सपनौ, आयौ ज्यूं ई पाछौ मिटग्यौ।—फुलवाड़ी
उ०—३ सूती सपनै ओदकी, बोली अटपट बैन। जनहरीया घरि आंगनै, सही पधारै सैन।—अनुभववांणी
उ०—४ जे तूं सपना साच है, साचा सैन मिळाय। जब नहीं देखूं नैन भरी, तब कैसे पतिआय।—अनुभववांणी
उ०—५ आप दोनां माथै सपनां मैं ई बजौ नीं आवेला। आप किणी बात री चिंता मत करौ।—फुलवाड़ो
उ०—६ भटियांणी अर काली मासी रै जलम-जलम रौ सपनौ जागती आंख्यां सूरज रै चांनणै बधतौ-बधतौ पांच बरस रौ व्हैगौ।
—फुलवाड़ी
उ०—७ कुमार मोदीज नै कैवण लागो—पछै बिरमा जी रै माथै किसौ छोगौ बांधोड़ौ है। थूं जांणै कै म्हारौ सपनौ कदै ई कूड़ौ नीं व्है।—फुलवाड़ी
उ०—८ जगत भोग सपनां सम जोऊं, हमही गाय सिंघ मैं होऊं।
—ऊ. का.
उ०—९ सत भाव कहूं जग या सपनां, अधि अंतर दाव करै अपना।—ऊ. का.
सपनदोख, सपनदोस—देखो 'स्वप्नदोस' (रू. भे.)
सपमपाट—१ समतल, सपाट।
२ नाश, संहार।
सपरदांन—देखो 'संप्रदांन' (रू. भे.)
सपरस—देखो 'स्परस' (रू. भे.)
उ०—१ नभवांणी सपरस पवन, अगन रूप रस आव।
—जेतदांन बारहठ
उ०—२ अरस लगि पड़ि निहस अधस, सूर अदरस धूम सपरस।
—रा. रू.
सपरसणौ, सपरसबौ–क्रि. स.—छूना, स्पर्श करना।
उ०—धन्य धन्य वह जंगळ धरनी, किल्ला जहां बणायौ करनी। सथिर नींव पाताळ सपरसत, धन भूरजाळ धुजा नभ धरजत।
—मे. म.
सपरसणहार, हारौ (हारी), **सपरसणियौ**—वि०।
सपरसिओड़ौ, सपरसियोड़ौ, सपरस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सपरसीजणौ, सपरसीजबौ—कर्म वा०।
सपरसदिसा–सं. स्त्री. [सं. स्पर्श+दिशा] वह दिशा जिस ओर से (सूर्य या चंद्र) ग्रहण लगना आरम्भ हुआ हो।
सपरसन–सं. पु. [सं. स्पर्शनः] वायु, हवा। (ह. नां. मा.)
रू. भे —सुपरसन।
सपरसमणि–सं. स्त्री. [सं. स्पर्श+मणि] पारस नामक कल्पित पत्थर, जिसके स्पर्श मात्र से लोहा भी सोना बन जाता है।
सपरसरेखा–सं. स्त्री. [सं. स्पर्श+रेखा] वृत्त की परिधि के किसी एक

बिन्दु को स्पर्श करती हुई खींची जाने वाली गणित में सीधी रेखा।

सपरसियोड़ौ-भू. का. कृ.—छूवा हुआ, स्पर्श किया हुआ ।
(स्त्री. सपरसियोड़ी)

सपरस्स—देखो 'स्परस' (रू. भे.)
उ०—सोर आग सपरस्स, किनां वडवाग अकारी । मांग हूंत सामंद्र, ध्याग वरतण उर धारी ।—रा. रू.

सपरांणी-सं. स्त्री. [सं. स्पर्शनम्] लेप करना ।
उ०—मोगरेल माथइ वली, मरदन अंगि अपार । सपरांणी खीखंड खलि, सोइ ऊतारइ सार ।—मा. कां. प्र.

सपरांणु—देखो 'सपरांणी' (रू. भे.)
उ०—नलरायनी हूं छउं सुंदरी, भीमराय तमैं जांणु । तेह तणी बेटी दवदंती, माहरु पति सपरांणु ।—नळदवदती रास

सपरांणौ-वि. [सं. सप्राण+क] वीर, योद्धा ।
उ०—सपरांणा सींगिणि गुण गाजइ, तीन्हा नीर विछूटइ । जर-हजीण आंगा विधिनइ, अंगि सूंसरा फूटइ ।—कां. दे. प्र.
२ बलवान, शक्तिशाली ।
उ०—१ आवि पाद्रि सइंफलउं मांड्यउं, लीधा चउपट घाउ । सोर-ठिया राउत सपरांणा, न दीइ पाछा पाउ ।—कां. दे. प्र.
उ०—२ पांच पांडव रह्या इम नासी, द्रूपदी रही थाईय दासी । देव दांणव न राय न रांणउ, दैव आगलि न कोइ सपरांणउ ।
—सालिसूरि
उ०—३ राज करइ जगनीक नरेसर, न्यायवंत सुविचार । सूर वीर नइ अति सपरांणउ, अरि दल गंजणहार ।—हीराणंद सूरि
रू. भे.—सपरांणु ।

सपरि-वि.—१ शुभ, मांगलिक ।
उ०—मालणि आवि मोगरा, तंबोली दिइ पांन । सपरि समप्पिउं सूंडलैं, साहमुं आवइ धांन ।—मा. कां. प्र.
२ देखो 'सिपर' (रू. भे.)
उ०—सभि अलीबंध सिलहट सपरि, धिख चख गिड़कंध धांखियां । पाघड़ाबंध ओळा प्रचंड, अंध जेम उपड़ांखियां ।—सू. प्र.

सपलांणियौ, सपलांणौ-वि.—चारजामा कसा हुआ । (सवारी का ऊंट या घोड़ा)
उ०—१ चरवादार प्रत कहै, करौ तुरंग तइयार । हुकम सुणी आंण्यौ तुरी, सपलांणौ तिण वार ।—ढोपालरास
उ०—२ पांघळ करौ सपलांणियौ, दौ मुझ हाथ बंदूक । अरि अवनी पर आवतां, कर देसूं दौ टूक ।—नारायणसिंह सांदू

सपलाणौ, सपलाबौ-क्रि. स. [सं. सम्प्लावनम्] १ स्नान करना, नहाना ।
२ देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)
सपलाणहार, हारौ (हारी), सपलाणियौ—वि० ।
सपलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सपलाईजणौ, सपलाईबबौ—कर्म वा० ।

सपलायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ स्नान किया हुआ, नहाया हुआ ।
२ देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सपलायोड़ी)

सपलावणौ, सपलावबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)
सपलावणहार, हारौ (हारी), सपलावणियौ—वि० ।
सपलाविओड़ौ, सपलावियोड़ौ, सपलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सपलावीजणौ, सपलावीजबौ—कर्म वा० ।

सपलावियोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सपलावियोड़ी)

सपळोटियौ-सं. पु.—१ छोटा सर्प ।
उ०—डील तौ रांती व्है जैंड़ो तखतूळी रै उनमांन हौ, पण कुबद सूं हाथी नै ई सात गुळाचां खवाड़ै जैंड़ौ अटकळां आल व्है जैड़ा तीखा अर मोडा मैं खड़बड़ती । फूल्योड़ी आंटींली नसां आखा डील मैं सपळोटियां रै उनमांन पळेटीजियोड़ी ही ।—फुलवाड़ी
२ सर्प का बच्चा ।
उ०—सपळोटियां नै कुण डसणौ सिखावै अर कागलां नै कुण टूंच मारणौ । करणी रा फळ भुगतणा ई पड़ेला ।—फुलवाड़ी
वि.—सर्प के आकार का ।

सपसप-सं. स्त्री. [अनु.] १ गुपचुप, कानाफूसी ।
ज्यूं—आजकलै इण बात री गांव में सपसप सुणीजै ।
२ चलने से होने वाली ध्वनि विशेष ।

सपस्ट-वि. [सं. स्पष्ट] १ बिलकुल साफ, स्पष्ट ।
उ०—उण वेळा रावतां रा पग खरड़ै डिगण ढूक जावै हळवळ न्हासण री आगत लाग जावै नै घणा जणां बरड़ै कायरता सूं कहै मारै रै मारै गळबळ बोल मूंडा मांय सपस्ट वांणी नहीं नीसरै गळबळ बोल निकळै ।—वी. स. टी.
२ साफ दिखाई देने वाला ।
उ०—जिकां जगि जोति छिपा छिप जात, इगां मग भीत सपस्ट दिखात ।—मे. म.

सपस्टक्रिया-सं. स्त्री. यौ. [सं. स्पष्टी क्रिया] ज्योतिष के अन्तर्गत किसी विशिष्ट समय में ग्रहों के किसी राशि, अंश, कला, विकला आदि में अवस्थान जानने की क्रिया ।

सपस्टता-सं. स्त्री. [सं. स्पष्टता] स्पष्ट होने की क्रिया या भाव ।

सपस्टवकता, सपस्टवक्ता-सं. पु. [सं. स्पष्टवक्ता] साफ-साफ एवं सत्य बात कहने वाला ।

सपस्टवादी-वि. [सं. स्पष्टवादिन्] साफ-साफ कहने वाला, स्पष्टवक्ता ।

सपस्टीकरण-सं. पु. [सं. स्पष्टीकरण] किसी बात को स्पष्ट व्यक्त करने की क्रिया ।

सपांण, सपांणौ-वि.—१ सबल, शक्तिशाली ।
उ०—१ सहस त्रीस दळ देख सपांणै, रळी करै मन जैसिंघ रांणै ।
—रा. रू.

उ०—२ मुहकमसिंघ वळै मा'रांणी, साह तणौ दळ थयौ सपांणौ।
—रा. रू.

२ देखो 'पांण'।

सपाक—क्रि. वि.—जल्दी, शीघ्रता से।

उ०—पाधरौ मूठ माथै हाथ पड़्यौ। चिणां में खसोलियोड़ी नागी तरवार सपाक बारै निकळी।—फुलवाड़ी

सं. स्त्री.—तेजी से प्रहार करने पर उत्पन्न ध्वनि।

उ०—पाधरौ हाथ मूठ माथै गियौ। सपाक करती वाढाली बारै काढी।—फुलवाड़ी

सपाकौ—सं. पु.—१ झटका।

उ०—१ अेक सपाका मैं बीनणी रौ माथौ कलम कर दियौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ कै इत्ता मैं थोरी नागी तरवार लेय हप्प करती रौ मांय वड़्यौ। अेक ही सपाका मैं पिलंग माथै पोढ्या वींदराजा रौ माथौ वाढ न्हाकियौ।—फुलवाड़ी

२ तरवार के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

३ लाभप्रद, लाभदायक।

क्रि. प्र.—साझणौ।

सपाट—वि.—जो ऊबड़-खाबड़ न हो, जिसकी सतह पर कोई चीज उभरी, खड़ी या जमी हुई न हो समतल, बराबर।

उ०—खारौ लालांणा सूं लगाय नै राखी तक पांच कोस री भुंइ मैं फैल्योड़ी है। बिल्कुल सपाट तालर उडण खटली रै मैदान व्है जिसौ।—रातवासौ

सपाटौ—सं. पु. [सं. सर्पण] १ चलने, उड़ने, दौड़ने आदि का वेग।

२ मस्त चाल या उससे उत्पन्न ध्वनि।

सपात—वि.—पत्र सहित।

उ०—साह तणौ दळ दूत सपातां, विचित्र हुए मिळ वातोवातां।
—रा. रू.

२ सुपात्र।

सपातौ—वि.—१ अधिकारी व्यक्ति।

उ०—प्राग तणौ कुळ लाज सपातौ, तुलछीदास अगन सम तातौ।
—रा. रू.

२ रक्षा करने वाला, रक्षक।

सपापौ—वि.—पापी, दोषी।

सपाल्य, सपाल्यौ—वि. [सं. स+पालन्] १ सुरक्षा सहित, सुरक्षित।

२ बेरोकटोक, स्वतंत्र।

उ०—...... कोटि ध्वज लहलहइ जसु तणइ रूपइं कौ लूंबहइं सोना ना मयूर ऊडइ, सा नवै फुलैं राति विहाइ, सपाल्य सोना पहिरियइ............। —व. स.

सपाह—सं. पु. [सं. सुप्रभु] राजा, नृप।

उ०—सेखराब नूं मुळतांण सपाहां, लड़ियौ सांकळ जाळी। पाछौ जिकौ आंणियौ पूंगळ, देवी थै दाढाळी।—बां. दा.

सपिंड—सं. पु.—धर्म-शास्त्र के अनुसार वह व्यक्ति जो एक ही कुल का हो तथा एक ही पितरों को पिण्डदान करता हो।

सपिंडी—सं. स्त्री.—किसी मृतक के संबंध में किया जाने वाला वह कर्म जिसमें वह परिवारों के मृत प्राणियों के साथ पिण्डदान द्वारा मिलाया जाता है।

सपिंडीकरण—सं. पु. [सं.] मृत रिश्तेदार के उद्देश्य के लिए किया जाने वाला श्राद्ध।

सपिंडीस्राद्ध—सं. पु. [सं सपिंडीश्राद्ध] पिंडदान करते हुए श्राद्ध का एक प्रकार जिससे प्रेत पितृ योनि में प्रवेश पाता है।

सपीड़, सपीड़ौ—सं. पु. [अनु.] १ दौड़ने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

२ पीटने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

क्रि. प्र.—उडणौ।

वि.—दर्द सहित, दर्दपूर्ण।

सपीटी, सपीठी—वि.—चिकनी, मुलायम।

उ०—जांघड़ली मूमल री देवलियै रै थंभ ज्यौं हांजी रे, साथड़ली सपीटी पींडी पातळी रंगभीनी ए मूमल।—लो. गी.

२ मांसल।

सपीठ—वि.—१ मजबूत।

उ०—नाळ-काय सिर भूण, खूड़िया भुज दौ भारी। पूठी-पेट सपीठ, नीम चक नाड़ां सारी।—दसदेव

२ समतल।

अल्पा;—सपीठौ।

सपीठौ—देखो 'सपीठ' (अल्पा; रू. भे.)

सपुत, सपुतर, सपुत्र, सपूत—सं. पु. [सं. सुपुत्र] १ वह पुत्र जो आज्ञाकारी हो।

उ०—१ पछै कह्यौ—'भाटी च्यार बूढा म्हां कनै मेलौ, राज थे भोगवौ। हूं तौ इण वात गाढौ राजी छूं। म्हारै थे सपूत छौ। लूणकरण करमसी वै कपूत छै, सु परा गया। बळाय चूकी।—नैणसी

उ०—२ सपूत हुवै सौ तौ पिण माता रा यत्न करै अनै कपूत हुवै तै ऊंधा अंवला बोलै।—भि. द्र.

२ भला, सरीफ।

उ०—पटवारी सपूत स्यांणौ, ओसथ्या ही ठीक-ठीक सुणा'र किसन जी आखा देई देवता नै धोक मारी।—दसदोख

३ वीर, योद्धा।

उ०—'अजब' सुजाव गुणां अदभूतां, समहर 'नाथौ' धुजा सपूतां। वदौ दनावत वाबै सूरां, हेवै दळै वरावण हूरां।—रा. रू.

वि.—१ योग्य, बुद्धिमान, समझदार।

उ०—'राव जी सूं कह्यौ, भूंडा दीसस्यौ। राठोड़ां सूं बीहता कितराइक दिन रहस्यौ? हूं मोहिल परणीस। ताहरां राव कासूं

करै ? बेटौ न रहै । टीकायत बेटौ सपूत ।—नैणसी

उ०—पूत सपूत ह्वौ तौ क्यूं धन संचै ।
पूत कपूत ह्वौ तौ क्यूं धन संचै ।—अज्ञात

२ पुत्र के साथ, पुत्र सहित।

रू. भे.—सुपूत ।

सपूतपण, सपूतपणौ–सं. पु.—सपुत्र या आज्ञाकारी होने का भाव।

सपूताचार–सं. पु.—श्रेष्ठ कर्तव्य।

उ०—१ खत्रीवट प्रगट करि जेत चाढी खवां, कुळ तिलक काढियौ कोट लियौ। सपूताचार पतिसाह सनमांनियौ, वाळतै पोकरन अंक वळियौ।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ बारठ केसरसिंघ सूं, अक्खी 'सोनग साह'। खत्रि सपूताचार रौ, थां हूंता निरवाह।—रा. रू.

उ०—३ लाख वारी सीसोद करणां थारां भोक लागै, सपूताचार री विद्या अपारां साजंद्र। छाजै भारी दूजां सारा सत्रां बंदूक छोगो, राजै तीरंदाजां छोगौ सरा रा राजंद्र।

—महाराजाधिराज माधौसिंह जी रौ गीत

सपूती–सं. स्त्री.—१ सपूत होने की अवस्था या भाव।

उ०—१ मात पिछांणै उदर मझ, 'पता' सपूती पाय। पिता पिछांणै पाळणै, इण सुत अंजस आय।—जेतदांन बारहठ

उ०—२ इण ग्रंथ मैं छट्टौ रासि पहली निरमांण हुवौ जिकण मैं भी प्रसंग पाइ कुमार चूंडा री सपूती विसेस जणाई।—वं. भा.

उ०—३ अर निदाघ काळ रा पवन रै प्रमांण सपूती री सुजस चौतरफ ही चलायौ।—वं. भा.

उ०—४ लेवती ठेकांण बाजी सै घू पयाळ लांबी, वैंनतेय खसै वेग वर्णं न विचार। क्रांमती सपूती लीधां कोळूमंड कीत काज, ओपै करां परांपरी बुध री आचार।—बादरदांन दधवाड़ियौ

२ वह स्त्री जिसके पुत्र सपूत हों।

उ०—१ गोरी ऐ सुसरैजी लगाया म्हारा पेड़, सासू सपूती म्हांनै सींचियौ।—लो. गी.

उ०—२ पीळौ तौ ओढ म्हारी जच्चा महलां पधारी जी, तौ कोई है सपूती नीजर लबाई गाढा मारूजी।—लो. गी.

रू. भे.—सुपूती।

सपूतीचार—देखो 'सपूताचार' (रू. भे.)

उ०—अड़ियौ बहै असंसांन सूं, इण ही भांत अभंग। 'तेज' सपूतीचार रौ, आडौ ई वळगौ अंग।—तेजसिंह सांदू

सपूर–क्रि. वि.—बलपूर्वक।

उ०—सुण हुकम दौड़िया महासूर, पांच दस बीस भीळगा सपूर।

—सू. प्र.

वि.—पूर्ण, पूरा, समस्त।

उ०—सह्नाय सुर विचि सोह, व्रति अच्छर लेत विमोह। सब सस्त्र संजुत सूर, पयदात भुंड सपूर।—रा. रू.

सपूरण—देखो 'संपूरण' (रू. भे.)

उ०—जिग हुवै सपूरण एम जाप, प्रतेस्ट वधै अति अप प्रताप।

—सू. प्र.

सपेखणौ, सपेखबौ—देखो 'सप्रेखणौ, सप्रेखबौ' (रू. भे.)

सपेखणहार, हारौ (हारी), सपेखणियौ—वि०।

सपेखिओड़ौ, सपेखियोड़ौ, सपेख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सपेखीजणौ, सपेखीजबौ—कर्म वा०।

सपेखियोड़ौ—देखो 'सप्रेखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सपेखियोड़ी)

सपेत—देखो 'सफेद' (रू. भे.)

उ०—१ मारू मजलसिया भला, घोड़ा भला कमेत। नारी तौ निबळी भली, कपड़ौ भलौ सपेत।—लो. गी.

उ०—२ उतंग चंग भीत चीत, मंड चंड मंदरं। कळी सपेत जांणि सेत धार धम्मळागिरं।—गु. रू. बं.

उ०—३ सुंदर बैल बणै सींगाळौ, काळौ तुरंग सपेत करै।

—भगतमाळ

उ०—४ झाली रौ मुंह उतर सपेत हुइ गयौ। सो दूर जाय ऊभी रही।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—५ तठा उपरायत गंगेव नींबावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां करै छै। कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया, नारंगिया सपेत।—रा. सा. सं.

सपेती—देखो 'सफेदी' (रू. भे.)

उ०—१ आपड़ै दाव मत देर ओट, चापड़ै आव समसेर चोट। वर हूर गरक कर जंग बाज, आवती सपेती रंग आज।—वि. सं.

उ०—२ जिकै सूरवां अजरायल था, त्यांरौ तौ रंग लाल हुवण लागौ। अर जिकै स्यांणा काचा था, त्यांरौ रंग सपेती पकड़ण लागौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सपेतौ—देखो 'सफेदौ' (रू. भे.)

उ०—म्हांनी सी एक टोपसी, माहैं घाल्यौ सपेतौ। जतन घणा कर राखजो, नहीं तौ पड़ैला रेतौ।—भि. द्र.

सपेद—देखो 'सफेद' (रू. भे.)

सपेरौ–सं. पु.—सर्प पकड़ने या पालने वाला, सपेरा।

सपेलड़ौ–वि. (स्त्री. सपेलड़ी) सबसे पहले वाला, सर्वप्रथम।

सपैलौ–वि. (स्त्री. सपैली) सर्वप्रथम, सबसे पहला।

सपोतरौ–सं. पु.—१ सुपुत्र।

२ वंशज।

उ०—सुजांणसिंघ रौ पोतौ राजसिंघ जिण सपोतरां रा ठिकांणा जूनिया महरू वगैरा केकड़ी री चमोळी सीमैं सुजांणसिंघोत जोधा ज्यांरा मुहड़ा आगै आद खांप रा राठौड़ है।—बां. दा. ख्यात

सपोसय–वि.—पुष्ट।

उ०—सरी सरी सपोसयं सुताळ मालकोसयं। मिठास आस मंजरी,

गरी गरी सगुज्जरी ।—रा. रू.

सपोड़ो-सं. पु.—१ घोड़ा, अश्व ।

२ गधा ।

३ खच्चर, टट्टू ।

सपोचौ-वि. (स्त्री. सपोची) १ शक्तिशाली ।

२ साहसी ।

३ हिम्मत वाला, सामर्थ्यवान ।

सप्त-वि. [सं.] सात ।

उ०—देवी जाळंधरी सप्त दीपै, देवी कंदरै सख्खरै वाव कूपै ।
—देवि.

रू. भे.—सपत, सपत्त ।

सप्तक-सं. पु. [सं.] १ संगीत के अन्तर्गत सात स्वरों का समूह ।

२ सात वस्तुओं का समूह ।

सप्तकी-सं. स्त्री. [सं.] १ स्त्री की करधनी ।

२ सात लड़ों वाली करधनी ।

सप्तकेतु-सं. पु. [सं.] सप्तर्षियों में से एक सप्तर्षि का नाम ।

सप्तकोसी-सं. स्त्री. [सं. सप्तकोशी] नेपाल की एक नदी जो हिमालय पर्वत की एवरेस्ट चोटी के पश्चिम से निकलती है ।

वि. वि.—इसमें सात नदियों का समूह है यथा—मिलमूची, भोटे-कोशी, तांबाकोशी, लिखू, दूधकोशी, अरुण और तमोर या तोमर । उक्त सातों नदियों के संगम से बनने के कारण इसका नाम सप्त-कोशी पड़ा है ।

सप्तगंगा-सं. स्त्री. [सं.] एक पुण्यस्थल का नाम जहाँ स्वर्ग प्राप्ति हेतु देवताओं आदि की पूजा की जाती है ।

सप्तगोदावर-सं. पु. [सं.] एक पुण्यस्थल का नाम ।

सप्तजनास्रम-सं. पु. [सं. सप्तजनाश्रम] वह पुण्य स्थल जहाँ सप्तजन नामक सात ऋषियों ने पानी के अन्दर शीर्षासन पर तपस्या कर स्वर्ग प्राप्त किया था ।

सप्तजित-सं. पु. [सं.] कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक पुत्र, दानव ।

सप्तजिह्व, सप्तजिह्वा-सं. स्त्री. [सं.] १ अग्नि की सात जिह्वाएँ ।

वि. वि.—सातों जिह्वाओं के नाम निम्न हैं ।—

काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगनी और विश्वरुचि ।

२ उक्त सात जिह्वाओं वाली अग्नि ।

सप्ततंतु-सं. पु. [सं. सप्ततंतुः] यज्ञ, हवन । (अ. मा.)

रू. भे.—सपततंतु, सपथतंतु ।

सप्ततंत्री-सं. स्त्री. [सं.] सात तारों वाला वीणा ।

सप्तदीप-सं. पु.—पृथ्वी के सात बड़े व मुख्य विभाग । (पौराणिक)

उक्त सात विभागों के नाम व विवरण निम्नलिखित हैं—

(१) जंबूद्वीप—यह आठ लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौड़े क्षीरसागर से घिरा हुआ है । भारत इसी द्वीप में स्थित है ।

(२) प्लक्षद्वीप—यह सोलह लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौड़े इक्षुरस से वेष्टित है ।

(३) शालभक्तिद्वीप—यह बत्तीस लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही सुरोद से घिरा हुआ ।

(४) कुसद्वीप—यह चौसठ लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौड़े घृतसागर से घिरा हुआ है ।

(५) क्रौंचद्वीप—यह एक करोड़ अट्ठाइस लाख मील चौड़ा है व इतने ही चौड़े क्षीरसागर से घिरा हुआ है ।

(६) शाकद्वीप—यह दो करोड़ छप्पन लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौड़े दधिमण्डोद से घिरा हुआ है ।

(७) पुष्करद्वीप—यह पाँच करोड़ बारह लाख मील चौड़ा है व इतने ही चौड़े शुद्ध जलोद से घिरा हुआ है ।

उपर्युक्त प्रत्येक द्वीप के अधिपति ने अपने पुत्रों के नाम पर द्वीप को अलग-अलग खण्डों या देशों में विभाजित किया ।

रू. भे.—सपतदीप ।

सप्तद्वीपा-सं. स्त्री. [सं.] पृथ्वी का नाम ।

सप्तधातु-सं. पु.—१ शरीर के सात संयोजक द्रव्य—रक्त, पित्त, माँस, वसा, मज्जा, अस्थि और वीर्य ।

२ सात प्रकार के खनिज पदार्थ—सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, सीसा, वंग और जस्ता ।

सप्तधान्य-सं. पु. [सं.] सात-नाज जो पूजा के काम आता है ।

सप्तनाग-सं. पु. [सं.] सात नागों के समूह का नाम ।

वि. वि.—उक्त समूह में अनंत, कर्क, महापद्‌म, पदम, शंख एवं कुलिक नाग सम्मिलित हैं ।

सप्तनाड़ीचक्र-सं. पु.—वर्षा के आगमन की सूचना देने वाला वह सात टेढी रेखाओं का चक्र जिसमें सब नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं ।
(ज्योतिष)

सप्तपदी-सं. स्त्री. [सं.] हिंदुओं के विवाह में वर व वधू के द्वारा अग्नि के सात परिकमा देने की रीति या रश्म तथा उसी समय वर वधू द्वारा परस्पर प्रतिज्ञा के पढे जाने वाले सात पद ।

उ०—अर सप्तपदी रै अनंतर दांन रो उदक जांमाता पांणि मैं लेर पिसाच राज रै काज स्वरग रो द्वार खुलायो ।—वं. भा.

रू. भे.—सतपदी, सतफेरा ।

सप्तपदीपूजन, सप्तपदीपूजा-सं. पु.—विवाह के अवसर पर होने वाला एक पूजन विशेष ।

सं. पु.—बांस । (नां. मा.)

सप्तपरव, सप्तपाव-सं. पु. [सं. सप्तपर्वन्] बांस । (नां. मा.)

सप्तपाताळ-सं. पु.—पृथ्वी के नीचे के सात लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल ।

सप्तपुरी-सं. स्त्री.—सात पवित्र तीर्थ स्थान—अयोध्या, मथुरा, हरि-द्वार, काशी, कांची, उज्जैन और द्वारिका ।

उ०—सप्तपुरी सिरताजं, श्रत श्रपवरग हूंत समकारण । उत्तम धांम श्रजोध्या, श्रोपै नांम ग्रांम पुर ऊपर ।—रा. रू.

रू. भे.—पुरसपत, पुरीसपत, सपतपुरी, सातपुरी ।

सप्तभुवन—देखो 'सातलोक'

सप्तभोमियौ—वि.—सात मंजिल वाला, सप्तखंड का ।

उ०—सप्तभोमिया वणिया श्रावास, नारी मिली तरुणी बहु तास ।
—जयवांणी

सप्तम—वि.—सातवाँ ।

उ०—पहली लाखैरी सहर रै समीप गोबधरै निमित्त बंबावदा थी चलाइ दिल्ली रा श्रधीस सप्तम पातसाह नासुरुद्दीन महमूद रा भडां नूं भांजि चमूरा मालिक मुस्तुफाश्रली नूं मारि श्रापरा पिता मह रौ पितामह हड्डाधिराज कोल्हण खेत पडियौ ।—वं. भा.

रू. भे.—सत्तम, सपतम ।

सप्तमात्रका, सप्तमात्रिका—सं. स्त्री.—१ देखो 'मात्रका'

२ देखो 'मायां'

सप्तमी—सं. स्त्री. [सं.] मास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि ।

उ०—देवी सप्तमी श्रस्टमी नोम नूजा, देवी चौथ चौदस्स पूनम पूजा ।—देवि.

रू. भे.—सत्तमी, सपतमी, सपतम्मी ।

सप्तमुख—सं. पु. [सं.] यज्ञ, हवन । (श्र. मा.)

सप्तमौं—वि. (स्त्री. सप्तमीं) जो क्रम में छः के बाद श्राता हो, सातवां ।

सप्तरथा—सं. स्त्री. [सं.] कैकयवंशीय कन्या जो सत्यवादी हरिश्चन्द्र की माता व सूर्यवंशीय राजा सत्यव्रत की पत्नी थी ।

सप्तरसि, सप्तरसी—सं. पु. [सं. सप्तर्षि] १ सात ऋषियों का समूह—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप श्रौर श्रत्रि । महाभारत में इनके नाम इस प्रकार मिलते हैं—मरिचि, श्रत्रि, श्रंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य श्रौर वशिष्ठ ।

२ उत्तरी ध्रुव के सात तारों के समूह का नाम ।

रू. भे.—सपतरिख, सपतरिखी, सपतरिसी, सप्तरिसी ।

सप्तरसिकुंड—सं. पु. [सं. सप्तर्षिकुण्ड] कुरुक्षेत्र में स्थित एक कुण्ड ।

सप्तराव—सं. पु. [सं.] गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक ।

सप्तरिसी—देखो 'सप्तरसि' (रू. भे.)

सप्तवध्रि—सं. पु [सं. सप्तवध्रु] प्रसिद्ध ऋषि का नाम ।

सप्तवाहरण, सप्तवाहन—सं. पु. [सं. सप्तवाहन] सात घोड़ों वाले या सातमुखों के घोडे वाले भगवान् सूर्य ।

सप्तसती—सं. स्त्री. [सं. सप्तशती] सात सौ पदों का समूह ।

सप्तसप्तमी—सं. स्त्री. [सं.] वार श्रादि के योग से माघ शुक्ला सप्तमी के भेद—जया, विजया, महाजया, जयंती, श्रपराजिता, नंदा व भद्रा ।

सप्तसागरदांन—सं. पु. [सं. सप्तसागरदान] सात पात्रों में घी, दूध, मधु, दही श्रादि रखकर ब्राह्मणों को देने का एक दान ।

सप्तसिंधु—सं. स्त्री. [सं.] सात नदियों का समूह जो शिव जटा से गिरते ही गंगा के सात भागों से बनी थी ।

सप्तसूरच—सं. पु. [सं. सप्तसूर्य] सात ग्रहों का एक समूह विशेष ।

सप्तसुर, सप्तस्वर—सं. पु. [सं. सप्तस्वर] संगीत के सात स्वर—सा, रे, ग, म, प, ध, नि ।

उ०—१ सप्तसुरन मुरली बजी, कहुं कालिंदी कै तीर । स्रवण सुणत सुध नां रही, मेरी कित गागर कित चीर ।—मीरां

उ०—२ जिस बखत बेबाहबाज गुणी जणूं नें सुरूं का श्रलाप किया । सप्तसुर तीन ग्रांम इकवीस मूरछना श्रस्ट ताल गुनचास कोटि तांनूं संजुगति छ राग छत्रीस रागणी का भेदग जिनूं नें बखत प्रमांण उचार किये । —सू. प्र.

रू. भे.—सपतसुर ।

सप्तात्मा—सं. पु. [सं.] ब्रह्मा का नामान्तर ।

सप्ताळू—देखो 'सपताळू' (रू. भे.)

सप्तास, सप्तासव, सप्तास्व—सं. पु. [सं. सप्ताश्वः] १ सूर्य, सूरज ।

२ रैवत मन्वन्तर के एक सप्तर्षि का नाम ।

३ सूर्य के रथ के सात घोड़ों का समूह, मतान्तर से सूर्य भगवान् का सात मुखों वाला घोड़ा ।

रू. भे.—सपतास, सपतासव ।

सप्ताह—सं. पु. [सं. सप्त+अहन्] १ सात दिनों की श्रवधि, हफ्ता ।

२ कोई एसा कृत्य या श्रनुष्ठान जो सात दिन तक चलता रहे ।

क्रि. प्र.—उठणौ, चालणौ, बैठणौ, व्हैणौ ।

सप्तैधा—सं. पु. [सं.] भगवान् विष्णु का नाम ।

सप्पणी—देखो 'सरपणी' (रू. भे.)

उ०—चलण सहाई धम्मैं, थिर संठांण श्रधम्म, श्रवगाहैं पूरण गलणैं नभ पुग्गळ धम्म । समया वलिय महुत्त दीह वख मास नैं साल, पल्योपम सागर उस्सप्पणी सप्पणी काल ।—वृ. स्त.

सप्पनपाट, सप्पमपाट—वि.—१ साफ, समतल ।

२ नाश, संहार ।

३ दरिद्र, निर्धन ।

४ मूर्ख, श्रज्ञानी ।

सप्रद—सं. पु. [सं. क्षिप्र] वेग । (श्र. मा.)

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी ।

सप्रवीत—सं. पु.—एक वर्णिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम तीन रगण पश्चात् गुरु लघु होता है । (ल. पिं.)

वि.—१ पवित्र, उत्तम ।

२ श्रेष्ठ ।

सप्रस—सं. पु.—सूर्य, सूरज । (श्र. मा; नां. मा.)

सप्रसन—वि.—खुश, प्रसन्न ।

सप्रांण, सप्रांणो—वि. [सं. सप्राण] बलवान, शक्तिशालो ।

उ०—१ सांम धरम्मी सांम भुज, सांम सनाह सप्रांण । साथी

सुभटां सीम सुज, भीम तणौ इंद्रभांण ।—रा. रू.

उ०—२ सुणं चलायौ पूत सप्रांणौ, अकबर गंजसि कौ आपांणौ ।—रा. रू.

सप्रीत-वि.—१ सस्नेह, प्रेमसहित, सप्रेम ।

उ०—सात हजारी सांम तौ, जाकौ नांम 'अजीत'। दाखौ फेर विरादरी, सह आदरी सप्रीत ।—रा. रू.

२ हर्ष, आनंद, खुशी ।

उ०—सीयाळै पाधारिया, गढ महाराज 'अजीत'। अवतारी मिळियौ 'अभौ', सूरज तेज सप्रीत ।—रा. रू.

सप्रेखणौ, सप्रेखबौ—क्रि. स. [सं. संप्रेक्षणम्] देखना ।

उ०—मिळ कूरम सांमुहै, पेख सुख लहै अपंपर । पधरायौ तोरण सप्रेख, दुति जेम दिनंकर ।—रा. रू.

२ निरीक्षण करना ।

सप्रेखणहार, हारौ (हारी), सप्रेखणियौ—वि० ।

सप्रेखिओड़ौ, सप्रेखियोड़ौ, सप्रेख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सप्रेखीजणौ, सप्रेखीजबौ—कर्म वा० ।

सपेखणौ, सपेखबौ—रू० भे० ।

सप्रेखियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ देखा हुआ. २ निरीक्षण किया हुआ । (स्त्री. सप्रेखियोड़ी)

सफ-सं. पु.—पंक्ति, कतार ।

उ०—संमूह सेन असंख सफां, अिग मुज्झै मंझली । मल्हपति फौजां मुहर मैंगल, सूंड डोहै सिंघळी ।—गु. रू. बं.

[सं. सफः] खुर, टाप । (डि. को.)

उ०—हयं सफ बज्र हरगिगर खिज्ज, खिवैं खुरतार मनौ घन बिज्ज ।—ला. रा.

सफक-सं. स्त्री. [अ. शफक] सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल में क्षितिज पर दृष्टिगोचर होने वाली लाली ।

सफकत-सं. स्त्री. [अ. शफकत] १ अनुग्रह, मेहरबानी ।

२ प्रेम, मुहब्बत ।

सफटिक, सफटीक—देखो 'स्फटिक' (रू. भे.)

सफताळू—देखो 'सपताळू' (रू. भे.)

सफर-वि.—भयंकर, घोर ।

सं. पु. [अ.] १ इस्लामी दूसरा महीना ।

सं. स्त्री.—२ यात्रा, प्रस्थान ।

३ देखो 'सफरी' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—सफर चक्र भमर साबळ धजर वेल सज, पमंग जुध मेळ धर उमंग पसरां । अभनमौ 'गजण' खळ खहण घण ऊमळै, 'अजण' तण महण रण वहण असुरां ।—पीथौ सांदू

सफरजंग-सं. पु.—१ भयंकर युद्ध, घोर संग्राम ।

उ०—१ आप रखी रा वरदायक हुता । सो मछ री दया वास्तै घणा सेहर रा लोक मछ ऊपरा तरवारिया वाढिआ । सारा ही नै लोह पांण हारविआ । महा सफरजंग कीधौ । आप रै पण घणा लोह लागा । पण फतै पाई ।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ तकण ऊपरा हेकण दीहाड़ै सिधराय जैसिंघ रौ कैड़ायत सोलंकी अजबसीह खड़ै ऊपर आयौ । तेण दीहाड़ै अजबसिंह रा आंगड़िआ मारिआ हुता । तकण रै आंटै, तदी महा सफरजंग हुआ । नगराज कांम आयौ ।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ मुगल बादशाहों के समय में प्रचलित होने वाला शतरंज से मिलता-जुलता खेल विशेष ।

वि. वि.—शतरंज में जहाँ प्रत्येक पंक्ति में ८-८ घर के हिसाब से कुल ६४ घर होते हैं, वहां पर सफरजंग में १६-१६ के हिसाब से कुल २५६ घर होते हैं । शतरंज में बादशाह, वजीर, हाथी, घोड़े ऊंट और पैदल रुपे होते हैं, वहाँ सफरजंग में उपरोक्त रुपों के अतिरिक्त हुड़दंग और हुड़दंगी दो प्रकार के रुपे विशेष होते हैं ।

सफरनांमौ-सं. पु.—वह पुस्तक जिसमें किसी यात्रा के संस्मरणों का वर्णन हो ।

सफरा—देखो 'सिप्रा' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—पिंड री होती प्रतीत, साखधड़ै जांणी सरब । इण घर आई-ज रीत, 'दुरगौ' ई सफरा दागियौ ।—ठाकुर करणसिंघ

सफरारौ-सं. पु.—खिला-पिला कर बलि के निमित्त मोटा ताजा किया हुआ बलि का बकरा ।

उ०—धर लेवण वीरम धरै, बकवाद वधारा । खाधा खोसै खाजरू, साऊ सफरारा ।—वी. मा.

रू. भे.—सफरौ ।

सफरिम-सं. पु.—वीर, बहादुर ।

उ०—सेन सनाह वींटियौ सफरिम, सयल सपेखै करै सराह । भांणा जिसौ गज फौज भयंकर, नरपाळ दे जिसौ नरनाह ।

—चत्रभुज नरहरदासौत रौ गीत

सफरी-सं. स्त्री. [अ. शफरी] मछली । (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—सफरी पकड़ण रौ सांतरौ, बैठौ ढब बुगलांह । कथा बुरी करबा तणौ, चौखौ ढब चुगलांह ।—बां. दा.

रू. भे.—सफर, सुफर ।

सफरीपति-सं. पु.—मगरमच्छ ।

सफरौ—देखो 'सफरारौ' (रू. भे.)

सफळ, सफल-सं. पु.—शस्त्र ।

वि. [सं. सफल] १ सार्थक, कामयाब ।

उ०—१ देव हरी हर दिखण मैं, पूजे परम प्रवीत । कीधौ आछौ 'करन' रा, जनम सफळ जगजीत ।—बां. दा.

उ०—२ सिव सकति तणी वेलि वरणविसु, सफळ जनम करिवा संसार ।—महादेव पारवती री वेलि

२ उत्तीर्ण।
३ पूर्ण।
४ फलयुक्त, फलवाला।
उ०—तरवर नमे तिकोज, साखि फल फूलैं सफळ।—ध. व. ग्रं.
५ फैलने वाला, बढने वाला।
६ धारदार, नुकीला (छुरी, तलवार आदि)।
७ आनंद पूर्वक।
उ०—न मरी सु प्रबळ सबसौ नियति, दिन किताक अंतर दिया। सह विप्र वळै विलसै सफळ, कांम बयस जुब्बन किया।—वं. भा.
रू. भे.—सुफळ।

सफळणौ, सफळबौ—देखो 'सफलणौ, सफलबौ' (रू. भे.)
सफळणहार, हारौ (हारी), सफळणियौ—वि०।
सफळिग्रोड़ौ, सफळियोड़ौ, सफळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सफळीजणौ, सफळीजबौ—भाव वा०।

सफलणौ, सफलबौ—क्रि. अ.—सफल होना, सफलीभूत होना।
उ०—रांणौ हे सखि रांणौ हे अति रंढाल, घरणी हे सखि घरणी मनहरणी वरी जी। मननी हे सखि मननी हे पुगी आस, सफली हे सखि सफली परतंग्या करीजी।—प. च. चौ.
सफलणहार, हारौ (हारी), सफलणियौ—वि०।
सफलिग्रोड़ौ, सफलियोड़ौ, सफल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सफलीजणौ, सफलीजबौ—भाव वा०।

सफळता—सं. स्त्री.—१ सफल होने की अवस्था या भाव।
२ पूर्णता।

सफळाइग्यारस, सफळाएकादसी—सं. स्त्री. [सं. सफलाएकादशी] पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

सफळियोड़ौ, सफलियोड़ौ—भू. का. कृ.—सफल या सफलीभूत हुवा हुआ।
(स्त्री. सफळियोड़ी, सफलियोड़ी)

सफळी, सफळीभूत—वि.—जिसने सफलता हासिल की हो, सफलीभूत।

सफळौ, सफलौ—देखो 'सफळ' (रू. भे.)
उ०—१ खोड़उहउं तउ डांभिज्यउं, बंधियउ भूख मरूंह। जाउं ढोला रइ सासरइ, सफळा मूंग चरूंह।—ढो. मा.
उ०—२ बंधव भव सफलौ कियौ रे, तोड़्या मोह ना फंद। हूं पापण किम छूट सूं रे, इम बेनड़ करै आक्रंदो रे।—जयवांणी
उ०—३ स्रीयुग प्रधांन यतीस्वरु, देखतां हौ हुवै सफलो दीह। नित विजयहरख वंछित दीयै, धरि आवै हौ गावै धरमसीह।
—ध. व. ग्रं.

सफा—वि.—बिलकुल।
उ०—१ सफा कूड़ बोलै नकटा, वै थनें यूं ई चिड़ावै।
—अमरचूंनड़ी
उ०—२ ए मा! मास्तर रै तौ डाढी मूंछ ई कोनीं सफा टाबर इज दीसै।—अमरचूंनड़ी
उ०—३ बाई हाल मांदी है भाई, वा सफा ठीक नीं व्हे जितरै उणनें सफाखांना सूं छुट्टी मिळै कोनीं।—अमरचूंनड़ी
२ पवित्र, निर्मल।
३ साफ, सपष्ट।
४ साफ, स्वच्छ।
५ चिकना, बराबर।
६ खाली, रिक्त।
७ स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती।

सफाई—सं. स्त्री.—१ स्वच्छता, निर्मलता।
ऊ०—म्हैं कह्यौ देख भांणू, यूं सफाई सूं रैवणौ, जिणसूं बाई थारौ घणौ लाड राखैला।—अमर चूंनड़ी
२ बिल्कुल, कत्तई।
३ मैल या कूड़ा-करकट हटाने की क्रिया।
४ कपट या कुटिलता का अभाव।
५ स्पष्टता।
६ साफ होने की अवस्था या भाव।

सफाखांनौ, सफाखांनौ—सं. पु. [अ. शफा+फा. खाना] चिकित्सालय, अस्पताल।
उ०—१ बाई हाल मांदी है भाई, वा सफा ठीक नीं व्है जितरै उणनें सफाखांना सूं छुट्टी मिळै कोनीं।—अमर चूंनड़ी
उ०—२ सफाखांनै गियां जोग री बात अैड़ी बणी के म्हनै खासो मोड़ौ व्हैगो।—फुलवाड़ी

सफाचट—वि.—१ एकदम स्वच्छ, बिलकुल साफ।
उ०—आभौ सफाचट टाटिया रौ माथौ व्है जिसौ।—रातवासौ
२ बिलकुल, खाली।
३ स्निग्ध, चिकना।
४ समतल, सपाट।
५ जिसका कुछ भी अंश शेष न रहा हो।
क्रि. प्र.—करणौ, व्हेणौ, होणौ।

सफायौ—सं. पु.—१ नाश, संहार।
उ०—हनुमत दुसटां रौ करदै सफायौ रे, म्हारौ हित करवा नै।
—गो. रां.
२ खतम, समाप्त।

सफीट, सफीठ—वि.—साफ, चिकना।
उ०—१ थूक गिटता पूछ्यौ—तौ पैं'ला थारौ माथौ साव चांयलौ हो। हथाळी रै उनमांन सफीट।—फुलवाड़ी
उ०—२ आछी खुटाई। मींडका अर ऊंदरा कुदावण री सफीट ठोड़ रौ जबरौ पोखाळौ करवायौ।—फुलवाड़ी
उ०—३ मिन्नी वांनै समझाइस करी। आ अेक चपटी चीज व्है। बिलकुल सफीट, गजब री सफीट, कमाल री सफीट।—फुलवाड़ी

सफील-सं. स्त्री.—परकोटा, प्राचीर ।

उ०—१ जाडी किलै सफील, मांय ज नर निबळा वसै । ढूंढौ ढहतां ढील, रति न लागै राजिया ।—किरपाराम

उ०—२ केइक लथोब्रथ हुवा थका कटारियां सुं सफीलां उपरा लोटण कबूतर री नाई लोटता नजर प्रावै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—३ केइक गिरैबाज कबूतर री नांई गिरह खाता नै पळचर पंखिया ज्यूं फड़फड़ाता सफीलां सुं धरती पड़ता पहली दोय दोय तीन तीन कटारियां लगावै छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

२ दीवार ।

सफुब्बी-सं. स्त्री.—बादशाह की लड़की, शाहजादी ।

सफूरति, सफूरती—देखो 'स्फूरति' (रू. भे.)

२ चंचलपन ।

सफेत—देखो 'सफेद' (रू. भे.)

उ०—विरछां-वढ किरकांट विराजै, स्याह सफेत लाल रंग साजै ।

—वर्षा विज्ञान

सफेद-वि. [फा. सफ़ेद] १ श्वेत ।

पर्याय.—अरजुण, अवदात, गोर, धवल, धोळ, पांडुर, पांडू, बिसद, सित, सुकळ, सुचि, सेत ।

उ०—मोटी-मोटी आंख्यां सफेद-सफेद कोयां में नैनी-नैनी कीकियां, गालां माथै आंसूवां रा टेरा सूखोड़ा ।—अमर चूंनड़ी

२ साफ, स्पष्ट ।

३ निष्प्रभ, कान्तिहीन, निस्तेज ।

४ जिस पर कुछ लिखा न हो, कोरा ।

५ साफ, स्वच्छ ।

रू. भे.—सपेत, सपेद, सफेत, सुपेत, सुपेद ।

सफेदअंजनी-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा जिसके सम्पूर्ण शरीर पर एकरंग होता है किन्तु बीच बीच में सफेद धब्बे होते हैं ।

सफेदचंदन-सं. पु. [सं. श्वेतचंदन] श्वेत चंदन । (अमरत)

रू. भे.—सुपेतचंदन ।

सफेदपोस-वि. [फा. सफेद-पोश] स्वच्छ कपड़े पहनने वाला ।

सफेदहाथी-सं. पु.—भद्र जाति का हाथी जो पवित्र समझा जाता है ।

सफेदाई-सं. स्त्री.—श्वेतता, सफेदी ।

रू. भे.—सुपेदाई ।

सफेदी-सं. स्त्री.—१ वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

२ श्वेतता, धवलता ।

३ भय, आतंक आदि के कारण रंग के द्वारा पाण्डुरता पकड़ने की क्रिया ।

४ कान्तिहीनता, निष्तेजता ।

५ दीवार छत आदि को चूने के घोल से सफेद पोतने की क्रिया ।

रू. भे.—सपेती, सुपेती, सुपेदी ।

सफेदौ-सं. पु.—१ लोह, लकड़ी आदि पर रंगाई के काम आने वाला जस्ते का चूर्ण । यह दवाईयों में भी काम आता है ।

२ चप्पल जूते आदि बनाने के काम आने वाला सफेद चमड़ा ।

३ मकान की पुताई में काम आने वाली सफेद मिट्टी ।

४ श्वेतप्रदर नामक स्त्री रोग में योनि मार्ग से बहने वाला श्वेत रंग का स्राव ।

५ जस्ते का चूर्ण या भस्म जो गुलाब जल में घोट कर आँख में आंजते है, आँख की दवा विशेष ।

रू. भे.—सपेतौ, सुपेदौ ।

सफै—१ आसूदगी, सम्पन्नता, वृद्धि ।

उ०—घररा राजस करै हा । कमाई में सफै अर बरकत ही ।

—दसदोख

२ तन्दुरुस्ती ।

सफ्फळियौ-सं. पु.—हिंदवानी नामक फल का छोटा खंड जिसका अवशिष्ट सार भाग दाँतों से खाते हैं ।

सबंगह—देखो 'सरबंगी' (रू. भे.)

उ०—असरण-सरण अभंग, ब्रहम मुरारि सबंगह । संकर पवन सकत्ति, अवनि भ्रम लच्छि अनंगह ।—ह. र.

सबंध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—नहीं तौ जांण पिछांण जमार, नहीं तौ साख सबंध संसार ।

—ह. र.

सब-वि.—१ समस्त, कुल ।

उ०—१ अखिल जगत मैं सकति अखारै, तै सब है अवतार तिहारै । चारन तूझ चरन कै चेरै, तिन मैं जन्म लियै बहु तेरै ।

—मे. म.

उ०—२ अस्वीन चैत्र मास पख ऊजळ, थित सब सकति होत मंडळ थळ । तांन गांन ततकार बजंत्रन, ध्वांन सिसर ततधन आंनद्धन ।—मे. म.

उ०—३ पण सब सूं छोटकी रांणी रै हाल जापौ नीं व्हियौ हो । उण वास्तै उण नै बारै राखी ।—फुलवाड़ी

२ अवधि, मात्रा, विस्तार आदि के विचार से जितना है वह कुल, सर्व ।

उ०—कागां केरी चांच ज्यूं, चुगलां केरी जीह । विसटा ज्यूं परची बुरी, चूंथै सब ही दीह ।—बां. दा.

सं. स्त्री. [फा. शब] रात, रात्रि ।

रू. भे.—सबै, सब्ब, सब्बा, सब्बी, सब्बै, सब्भ, सब्भै, सभ, सभी, सम्भ, सवि, सवै ।

सबक-सं. पु. [फा.] १ वह अंश जो एक बार में पढाया जा सके, पाठ ।

२ शिक्षा, नसीहत ।

क्रि. प्र.—सीखणौ, देणौ, मिळणौ ।

सबकणौ, **सबकबौ**-क्रि. अ.—धूप या गर्म जगह पर बंधा रहने से पशु का रोग ग्रस्त होना।

सबकणहार, हारौ (हारी), **सबकणियौ**—वि०।

सबकिग्रोड़ो, सबकियोड़ौ, सबक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सबकीजणौ, सबकीजबौ—भाव वा०।

सबकियोड़ौ-भू. का. कृ.—किसी गर्म स्थान या धूप में बंधा रहने से रोगग्रस्त हुवा हुआ। (पशु)

(स्त्री. सबकियोड़ी)

सबखौ, सबखौ,-वि.—१ सरल, आसान।

२ छोटा।

३ उपयुक्त, अनुकूल।

४ सुगम।

५ आचरणशील।

६ समझदार, बुद्धिमान।

सबड़, सबड़, सबड़क, सबड़क, सबड़कौ, सबड़कौ-सं. पु. [अनु.] १ किसी गाढ़े तरल पदार्थ को हाथ से खाने या चाटने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

ज्यूं—राब रोटी सूं सबड़ सबड़ जीमलै।

उ०—खदबद बोलै खीचड़ो, सबड़क बोलै राबड़ी।—लो. गी.

२ हाथ से किसी गाढ़े तरल पदार्थ की एक ही बार में खाई जा सकने वाली मात्रा।

उ०—१ औरां नै दही रौ सबड़कौ, कोई म्हांनै दोय र चार। औरां नै छाछ री टोकसी, कोई म्हांनै टोकस चार।—लो. गी.

उ०—२ ताती ताती खिचड़ी, ऊपर गावौ घी। एक सबड़कौ ऐड़ो लियौ, जांणै म्हांरौ जी।—लो. गी.

उ०—३ खीर रौ एक सबड़कौ लेयनैं जड़ाव मासी बीनणियां माथै चिड़ती थकी बोली।—फुलवाड़ी

३ किसी गाढ़े तरल पदार्थ को हाथ से खाने या चाटने की क्रिया।

उ०—१ जद म्है थाळ लगाय, खीर अक पुरसी सा जी पुरसी सा। वनैं लियौ सबड़कौ मार, राब आ मीठी सा जी मीठी सा।

—लो. गी.

उ०—२ खुद तौ घी रा सबड़का मारै अर म्हारै सांमी लूखी खीचड़ी सिरकाय दी।—फुलवाड़ी

सबछी-सं. स्त्री. [सं. स+वत्सा] वह गाय जिसके साथ बछिया हो, बछड़े सहित।

उ०—दीधौ सोनौ सोलहौ, दीधी सुरह सबछी गाई।—बी. दे.

सबज-वि. [फा. सब्ज] १ हरा। (डि. को.)

उ०—१ फौजां डेरां फाबिया, दीसै हद्द विहद्द। सबज वरना स्याह व्रन, लाल सपेत जरद्द।—गु. रू. बं.

उ०—२ सेत सूआ, सबज सूआ, सारौं मैंनां कोइल तीतुर……।

—रा. सा. सं.

उ०—३ तठा उपरांयत गंगेव नींबावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां करै छै। कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया नारंगिया सपेत।—रा. सा. सं.

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

सं. पु.—१ एक प्रकार के रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—लाखोरी सुरंग अजूब लैंत, किसमसी साह ज्यांनूं कुमैंत। तेलिया मुहा संदळी तुरंग, सोसनी सबज हंसा सुरंग।—सू. प्र.

सं. स्त्री.—२ भांग, भंग।

रू. भे.—सबजौ, सबज्ज, सब्ज।

सबजी—देखो 'सब्जी' (रू. भे.)

उ०—मच्छां रै जळ जीव जिम, सबजी तरां सदीव। अदतारां धन जीव इम, जस दातारां जीव।—बां. दा.

सबजीमंडी—देखो 'सब्जीमंडी' (रू. भे.)

सबजौ—देखो 'सबज' (रू. भे.)

सबज्ज—देखो 'सबज' (रू. भे.)

उ०—धज स्याह वरन्नह धम्मळियं, परिलाल सबज्जह पीयळयं।

—गु. रू. बं.

सबणीगर—देखो 'सबनीगर' (रू. भे.)

सबति, सबती—देखो 'सवती' (रू. भे.) (अ. मा.)

सबद-सं.पु. [सं. शब्द] किसी पदार्थ पर आघात करने या दोनों ओर खींच कर बांधी हुई रस्सी आदि को बीच में से पकड़ कर एक दम वापिस छोड़ने से या किसी पदार्थ के टूटने-फूटने से उत्पन्न ध्वनि, तरंग या कम्पन जो हमारे कान व श्रवणेन्द्रिय तक पहुंचती है, आवाज। (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ घूघरां तणा झणणाट हुय घमाघम, बीण रा तंत्र तण-णाट बाजै। नकीबां बोल हणणाट हुय नोबतां, गयण धर सबद गणणाट गाजै।—खेतसी बारहठ

उ०—२ कळह रचै दसकंध, नवग्रह बंध निवारियौ। हुआ धनुस गुण सबद व्है, गतमद जग मदगंध।—बां. दा.

उ०—३ ढम ढम ढोल घूघरा छम छम, क्रम क्रम कदम क्रमाड़ै। झांझर सबद वजत पद झम झम, रमझम रास रचाड़ै।

—मे. म.

२ पशु-पक्षियों की बोली, आवाज।

उ०—१ जंबक सबद नचींत कर, डर कर तूं मत भाज। सादूळौ खीजे सुणै, जळहर हंदौ गाज।—बां. दा.

उ०—२ सिखर गिरां मोरां सबद नाच सरसाविया, पाविया जळ तरां त्रखा पाली। आविया उमड़ घणस्यांम वीति अवध, आविया नहीं घणस्यांम आली।—बां. दा.

३ एक या अधिक वर्णों के संयोग से कंठ और तालू आदि के द्वारा उत्पन्न होने वाली स्वतंत्र व्यक्त और सार्थक ध्वनि।

उ०—१ वौ एक सबद ई नीं बोल्यौ, चुपचाप म्हारै लारै आयग्यौ।

—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—२ संसार मैं 'मा' सबद कांई इतरौ हल्कौ व्हैग्यौ है के उणरा यूं ग्रपमांन कियौ जावै।—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—३ सोफी सबद सुणाय, चोर रंग देत चिगाड़ै। बैरागी नै जगत, जगत नें भेख बिगाड़ै।—ऊ. का.

उ०—४ राजगरू तौ कांनां मैं सबद पड़णा री ई छूत पाळता। उण दिन चिंता रै कारण वै ग्रजांण ई चेतौ बिसरग्या कह्यौ—थैं ग्रोछी जात वाळा ग्रां मोटी बातां मैं नीं समझौ।—फुलवाड़ी

४ लिखा जाने वाला वर्ण जो किसी बात या भाव का बोधक हो, लफ़्ज।

५ वचन।

उ०—जादमण ग्राद करि भेट भणिया जठै, ग्रापरा ग्रठै परताप ग्राछा। ऊगिया मदां सुप्रसन्न सबदां इसां, पूगिया भवण विसरांम पाछा।—मे. म.

पर्याय—ग्रारव, ग्रावाज, कुण, कुणत, कुणद, घुकार, घोख, घोर, घोस, टेर, धुनि, ध्रवांन, ध्वांन, नद, नाद, निनंद, निनाद, निरा-वर, निसिमांन, निहकुंण, निहघोख, निरह्राद, पुकार, बिराव, रव, राव, रुत. रूंण, सुर, सुनि, सोर, स्रवसार, स्वांन ह्राद।

६ उपदेश।

उ०—१ हरीया पासौ हाथ कौ, तौई न ग्रपनैं हाथि। सतगुर केरै सबद बिन, मन किन कै नहीं हाथि।—ग्रनुभववांणी

उ०—२ सतगुर वाह्या सबद-सर, सनमुख लगा ग्राय। हरीया सुगरा चेतसी, निगुरां गम न काय।—ग्रनुभववांणी

७ सुयश, कीर्ति।

८ निर्गुण सम्प्रदाय के साधु महात्माग्रों द्वारा रचित पद ग्रादि।

उ०—प्रेमामगन रांमरस पूरण, सागै सबद सुणावै। सनमुख हुय सरधा सूं सुमरण, सासौ सास समावै।—ऊ. का.

९ छप्पय छंद का ७१ वां भेद जिसमें १५२ लघु वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। इसका दूसरा नाम 'मुनी' भी है।

१० दो लघु के गगण के दूसरे भेद का नाम। (डिं. को.)

रू. भे.—सद, सदि, सदै, सद्द, सद्दय, सबद्द, सब्द, सब्दु, सवद, साद।

सबदगुर, सबदगुरु—सं. पु. [सं. शब्दगुरु] वह गुरु जिसके उपदेश से प्रभावित होकर व्यक्ति उसका शिष्य बन जाय (मा. म.)

रू. भे.—सब्दगुर, सब्दगुरु।

सबदग्रह—सं. पु. [सं. शब्दग्रह] शब्दों को ग्रहण करने वाला, कान। (डिं. को.)

रू. भे.—सब्दग्रह।

सबदबेध—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

सबदबोध—सं. पु. [सं. शब्द+बोध] १ ग्रक्षर-ज्ञान।

२ जबानी गवाही से प्राप्त होने वाला ज्ञान।

रू. भे.—सब्दबोध।

सबदब्रह्म—सं. पु. [सं. शब्द+ब्रह्म] १ वेद।

२ सृष्टि की रचना करने वाला, ब्रह्म।

३ ग्रोंकार, प्रणव।

४ कुंडलिनी से ऊपर उठने वाले नाद का वह रूप जो निरुपाधि दशा में रहता है। (योगसाधना)

रू. भे.—सब्दब्रम।

सबदभेदी—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.)

सबदमहेसर, सबदमहेस्वर—सं. पु. [सं. शब्द+महेश्वर] शिव, महादेव।

रू. भे.—सब्दमहेसर, सब्दमहेस्वर।

सबदवेध, सबदवेधी—सं. पु. [सं. शब्दवेधी] १ ग्रर्जुन। (ग्र. मा.)

२ दशरथ।

३ पृथ्वीराज चौहान।

वि.—शब्द की ध्वनि सुनकर निशाना मारने वाला।

रू. भे.—सबदबेध, सबदभेदी, सबैदी, सब्दभेदी, सब्दवेधी, सब्द-वेधी।

सबदसकत, सबदसकति, सबदसकती, सबदसक्ति, सबदसगत, सबद-सगति, सबदसगती—सं. स्त्री. [सं. सब्द+शक्ति] शब्द की वह शक्ति जो उसका ग्रर्थ उद्घाटित करती है। यह तीन प्रकार की मानी गई है ग्रभिधा, लक्षणा ग्रौर व्यंजना।

रू. भे.—सब्दसक्ति।

सबदसाधन—सं. पु. [सं. शब्द+साधन] व्याकरण का वह ग्रंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, रूपान्तर ग्रादि का विवेचन किया गया हो।

रू. भे.—सब्दसाधन।

सबदसासतर, सबदसास्त्र—सं. पु. [सं. शब्दशास्त्र] वह शास्त्र जिसमें भाषा के विभिन्न ग्रंगों व रूपों का विवेचन किया जाता हो, व्या-करण।

रू. भे.—सब्दसासतर, सदब्सास्त्र।

सबदाडंबर—सं. पु. [सं. शब्दाडंबर] साधारण बात कहने के लिए जटिल एवं क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग, शब्द-जाल, शब्दों का ग्राडम्-बर।

रू. भे.—सब्दाडंबर।

सबदालंकार—सं. पु. [सं. शब्दालंकार] ग्रलंकारों के दो मुख्य भेदों में से एक जिसमें शब्द व वर्णों का चमत्कार प्रधान होता है।

रू. भे,—सब्दालंकार।

सबदावेधी—देखो 'सबदवेधी'

सबदी—सं. पु.—१ कवि।

उ०—१ 'चूंडा' हरा तुहारा चेला, वंस छत्तीस वखंतै वांन। सुरां गुर गाढां गुर सबदी, महाराजा रायां गुर मांन।

—महाराजा मांनसिंह

उ०—२ सरणाई सरण बखांणै सबदी, मनजोगी जीहा ग्रमर

रांमा वदन वखांणै रांमा, हाय बखांणै वैर-हर ।
—प्रथीराज राठौड़

उ०—३ तोय न विरचै पंछियां तरवर, डहै डील पर भंजै डाळ ।
सेवग राचै वाचै सबदी, पाळग किम विरचै 'विजपाळ' ।
—आसौ बारठ

२ यश, कीर्ति ।

३ निर्गुण आराधकों का गेय पद, भजन ।

उ०—१ साखी सबदी सीख कर, गावै सारी रात । आत्म तौ परच्या नहीं, करै बिरांणी बात ।—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ ओउं सोउं सबदी की, तीन लोक लग सोय । एक सबद ररंकार का, हरीया पार न कोय ।—अनुभववांणी

४ राजस्थानी भाषा का गेयात्मक छंद विशेष ।

सबद्द—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—१ अभाए सबद्द बजैं अप्रमांणं, कळां सोर प्रांण सबांण कबांण ।—रा. रू.

उ०—२ घूघरी रोळ घंटा सबद्द, मोखत्त पटै तळ जोड मद्द ।
—गु. रू. बं.

सबनीगर-वि.—वह जो साबुन बनाता है, साबुन बनाने वाला ।

उ०—कंकट टोपां कट्टि कैं, कटि जात अधाया । ज्यौं सबनीगर सब्बु मैं, चहि तंत्र चलाया ।—वं. भा.

रू. भे.—सबणीगर, सवणीगर ।

सबब-सं. पु. [अ.] १ कारण, वजह, हेतु ।

उ०—१ जद या बोली हूं फलांणां गांम रा धणी री वेन छूं अर एक सबब सौ हो ।—गांम रा धणी री बात

उ०—२ सो कोई सबब सूं चुगलां रा चित्त मैं खांत पड़ी ।
—नी. प्र.

२ द्वार ।

३ साधन ।

सबबरात-सं. स्त्री. [अ.] मुसलमानों का एक पवित्र त्योहार । इस दिन मुसलमान अपने पूर्वजों के उद्देश्य से गरीबों को भोजन, वस्त्र आदि दान में देते हैं तथा दीपक जलाकर उत्सव मनाते हैं।

सबय-सं. पु. [सं. स+वयस] १ मित्र, दोस्त, सखा । (डि. को.)

२ शिव ।

३ हाथ ।

४ जल ।

५ मीमांसा शास्त्र के भाष्यकार ।

६ पतिव्रता, सौभाग्यवती ।

७ एक मलेच्छ जाति जो वशिष्ठ ऋषि की गाय के मल-मूत्र से उत्पन्न हुई थी । (डि. को.)

सबर—देखो 'सब्र' (रू. भे.)

उ०—१ सिघ साधक राखै सबर, सबर तजै मत मंद । सबर काज सुधरै सहू, सांई सबर पसंद ।—बां. दा.

उ०—२ छबर छबर आंसू धर छिडकी, उर मैं सबर न आई । जबर पयांणै गौ जगपाळक, पाछी खबर न पाई ।—ऊ. का.

उ०—३ सबर राख कुसमै समै, कासूं घबर करीस । खिण खिण ले जगची खबर, जबर सगत जगदीस ।—बां. दा.

सबरित-सं. पु. [सं. सर्वरत:] श्रीकृष्ण, गोपाल । (अ. मा.)

सबरी-सं. स्त्री. [सं. शबरी] श्रवणा नामक शबर जाति की स्त्री जो रामभक्त थी । (रामकथा)

२ शबर जाति की स्त्री ।

रू. भे.—सवरी ।

सबळ-सं. पु. [सं. शबल] १ सुमेरू पर्वत । (ह. नां. मा.)

२ वायु, पवन । (अ. मा.)

३ घोड़ा, अश्व । (ना. डि. को.)

४ बलराम, बलभद्र । (मि. बळवंत)

५ भीम, वृकोदर । (मि. किरमीर) (ह. नां. मा.)

६ भौत्य मनु के एक पुत्र का नाम ।

७ कश्यप द्वारा कद्रू के गर्भ से उत्पन्न एक नाग का नाम ।

८ दक्ष एवं पांचजन्य की कन्या असिक्नी के हजार पुत्रों में से एक ।

९ घी, घृत । (ह. नां. मा.)

१० एक श्वान जो सरमा का पुत्र एवं यम वैवस्व का अनुचर था ।

११ सप्तर्षियों में से एक का नाम ।

वि. (स्त्री. सबळा, सबळी) १ बलवान, शक्तिशाली । (डि. को.)

उ०—१ बिधन बार गिरधर सधर वाधियौ वीररस, पह सुछळि सगह आलम संपेखै । मरण मंगळ जिसौ जांणियौ मोट मनि, लाख दळ सबळ तिलमात लेखै ।—गिरधरदास केसोदासोत रौ गीत

उ०—२ सबळ लूंबिया आंणि दळ साहिपुर सांवठा, बळोबळ वीर-रस भड़ां बसियौ । चळविचळ हुवै मत दुरग 'मोबत' चवै, कमळ मणि नाग जिम कमळ कसियौ ।—महोबतसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—३ सुत 'जैत' अथाह लड़ै सबळां, खग वाह करै 'सुभसाह' खळां । धज सोभ विहारियदास धजां, गहतंत हणै असवार गजां ।
—सू. प्र.

२ पराक्रमी, वीर ।

उ०—१ झळ क्रोध 'लखावत' क्रोध झळां, सबळां चमराळ हणै सबळां । भिड़ काज सुधारत भूप तणौ, तदि 'जोध' लडै 'जगरूप' तणौ ।—सू. प्र.

उ०—२ सुत 'रांम' खत्रीवट कांम सचै, रघुनाथ समाथ भराथ रचै । सुत सांमत मेछ हणै सबळा, कमधज्ज 'जवांन' भयांन कळा ।
—सू. प्र.

उ०—३ हदड़ै खगि मेछ हकां दखतौ, बधि 'सांमळ 'ऊत' लड़ै 'बखतौ' । सुत 'जोग' भयांण हणै सबळां, खग झाट 'गुमांन' अमांन खळा ।—सू. प्र.

३ बड़ा, विशाल ।

उ०—१ कळळ मांच दळ अकळ कांठळ सबळ कूंजरां, चंचळ उछळ सरळ धसळ चाळौ । जवन दळ ऊपरां खिमै बिजळ ज्यंही, 'अभा' साबळ भळळ तूझ वाळौ ।—बखतौ खिड़ियौ

उ०—२ 'अभमल' जयचंद अेम, सबळ दळ लियां सकाजा । सहर नदी उपरास, मंडे डेरा महाराजा ।—सू. प्र.

४ भयंकर, भीषण ।

उ०—१ महाराज 'जैसाह' भारथ सबळ मांडतै, जुड़ किया गज कमळ उलट जोया । निमख री ठौड़ सहर बिचाळै निरंतर, हमरकै जवाहर ढेर होया ।—दळपत सांदू

उ०—२ ऐं ठाकुर भांगेसर रै थांणै झूंबिया । घणां मुगळ मारिया । सबळी बेढ हुई ।—राव मालदै री बात

५ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—१ साह तणा खूंनी सबळ, आय बचै इण ठौड़ । औ सातूं अकलीम मैं, चावौ गढ चितौड़ ।—बां. दा.

उ०—२ किलम उतराध दिखणाध दळ क्रोधतां, छत्र धरण रोधतां मांण छीजा । कहर खूंनी सबळ साल राखै कवण, वीर तौ बिना रायसाल बीजा ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

६ प्रचंड ।

उ०—बंस उजवाळ भुज भारी सारी बसू; भिड़ै ज्यां अतुळ अन चमू भिरड़ै । तेज धर सबळ पहळाद रा तात सम, अगासुर खळां चा कंध मुरड़ै ।—नरसिंघदास सेखावत रौ गीत

७ गहरा, घना ।

उ०—पनरै दिन हूं जागती, प्री सूं प्रेम करंत । एक दिवस निद्रा सबळ, सूती जांण निचंत ।—ढो. मा.

८ सब, समस्त ।

उ०—१ बळिहारी तूझ तणइ बहुनांमी, महि पालिग ताइ अचळ महि । वांक सबळ टाळियउ विसंभरि, सुर नर सुख भोगवइ सहि ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ बैसाखां में बिलखा बांमी, हुयगा सबळा जैन बिरांमी । आखातीजां घणी अमांमी, सिद्ध जन्मियौ संकर स्वांमी ।
—ऊ. का.

९ महान, बड़ा ।

उ०—पड गाहै पट्टण आप बळ, दोमझि भंजै कच्छ दळ । पूरब्ब हूंत आवै पछिम, सीह प्रवाडौ किय सबळ ।—गु. रू. बं.

१० गूढ़, जटिल, दुरूह ।

११ चितकबरा । (डिं. को.)

१२ बल सहित ।

१३ ज्यादा, अत्यधिक ।

उ०—विभाड़ै जादवां-कोट धर कीध वस, सबळ ब्रद खाटिया भवां सारू । तप-बळी अभनमा 'माल' 'गंगेव' तौ, ममारक पोकरण राव मारू ।—महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

१४ कठिन, टेढा और मुश्किल ।

१५ दृढ़, मजबूत ।

१६ तेज प्रकाश युक्त ।

उ०—भडज वादळ सबळ वीज साबळ भळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा । वार 'सुरतांण' दळ अकळ खूटा वरस, 'माल' हर सीस सुर-गरंद-माळा ।—अजबौ बारहठ

१७ अच्छा, बढिया ।

रू. भे.—सब्बळ ।

अल्पा.—सबळौ, सब्बळौ ।

सबळदळगाहणौ—सं. पु.—योद्धा, सिपाही । (डिं. नां. मा.)

सबळवाय—सं. पु.—नेत्रों का रोग विशेष । (अमरत)

सबलाक्ष—सं. पु. [सं. शबलाक्ष] एक प्राचीन ऋषि ।

सबलास्व—सं. पु. [सं. शबलाश्व] १ पंचजन्य कन्या दक्ष की पत्नी असिक्नी के गर्भ से उत्पन्न १०० पुत्रों का नाम ।

२ अविक्षित के पुत्र व कुरु के पौत्र का नाम ।

सबला, सबळि, सबळी—सं. स्त्री. [सं. शबली, सबलिः] १ संध्या, सायंकाल । (डिं. को.)

२ कामधेनु ।

३ चितकबरी गाय ।

उ०—बुरी सीणी सुर झीणी बतलावै, माड़ी काजळ लख प्राजळ मतळावै । अबळी सबळी नै सबळी उर आंणै, गोरी गुणवंती गोरी गुण गावै ।—ऊ. का.

२ देखो 'सबळ' (रू. भे.)

उ०—१ राठौड़ सबळा, मोहिलां री ठकुराई सबळी पण भाई बंधै मेळ घणौ काई नहीं ।—नैणसी

उ०—२ कळहेवा जिका वडा कुदरत मे, हांम सबळि खळ वहण हियै । त्रिजडां मुहि जिकै वरै त्रिविधि घड, देखै जम मुंहि पूठ दियै ।
—गु. रू. बं.

उ०—३ पछै यां विचारियौ-म्हांसू धरती छूटी । सबळी ठौड़ आंणी ।—नैणसी

सबळौ—देखो 'सबळ' (अल्पा; रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ कै डेरांधारी सुकव, सबळै तोल सहास । समहर सारां आगली, कै सिरदारां पास ।—रा. रू.

उ०—२ सबळौ ताळौ दीधौ सरब रहीमन हूंस ।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ ताहरां अरजण जी कह्यौ-राज ! म्हारै पटौ सबळौ छै हूं ऊभौ रहीस ।—नैणसी

उ०—४ जौ पातसाह जी री वंदगी करां तौ घणी आछी वात है । अरु पातसाहजी री वंदगी बिना राज सबळौ होय नही ।—द. दा.

उ०—५ सबळा सत्र संघरै, छळै सबळै पडि-गिरिया । जेथ भिडै दळ पडै, तेथ आडा भुज धरिया ।—गु. रू. बं.

उ०—६ राव जोधाजी 'अजीत' नूं मार पाछा वळिया। मंडोवर पधारिया। बाई राजां 'अजीत' वांसै सती हुई। हमैं राठौड़ां नै मोहिलां मांहोमांही सबळौ वेर पड़ियौ।—नैणसी

उ०—७ राठौड़ सबळा, मोहिलां री ठकुराई सबळी, पण भाई-बंदै मेळ घणौ काई नहीं।—नैणसी

उ०—८ पछै रांणी भांणमती नै राजा भोज पूछी आज तौ म्हांरै एक सबळौ झगड़ौ आयौ है जणी रौ थैं न्याव करौ।
—साहूकार री वात

उ०—९ वैसाख वदि १५ डेरौ वालरवैं। इण डेरै असवार २०० पाळा छे, नै मेह सबळौ वूठौ तळाव मैं पांणी मास ८ रौ आयौ।
—नैणसी

उ०—१० देवगिरि 'अन्नै' जोगणिपुरां, सबळौ भारथ सूत्रियौ। महिरांण महिक्कर मत्यतां, च्यार मास विग्रह कियौ।—गु. रू. बं.

उ०—११ पछै आपरौ परधांन हुतौ तिण सूं कहियौ—'एक तौ सबळौ सोच हुवौ।' तरै प्रधांन बोलिया जौ कांसूं सोच सोच हुवौ।
—गु. रू. बं.

(स्त्री. सबळी)

सबाब-सं. पु. [अ. सवाब] १ सत्कर्म करने पर परलोक में मिलने वाला पुण्यफल।

उ०—१ ऊख गिरी धर ऊपरै, यत्र खांडामय आब। तूंबा मीठम होय तौ, सूबां होय सबाब।—बां. दा.

उ०—२ नीत रीत सूमां नहीं, सूमां नहीं सबाब। सूमां घरै सुगाळ में, रंधै रसोड़ै राब।—बां. दा.

उ०—३ तद बादसाह फरमाइयो जैं आ न बणै तौ किण भांत सबाब हज मक्का री मात्रा रो पाऊं।—नी. प्र.

[अ. असबाब] १ सामान, सामग्री।

उ०—सारौ खोय सबाब, पडि फीटौ पावां पड़्यौ। निहुरा खाय नबाब, नारि छुडाई निठुसैं।—ला. रा.

३ युद्ध सामग्री।

उ०—करहुं बंध चतुरंगनी, सीसा सोर सबाब। कल बनास उत-रहि कटक, यम दिय हुकम नबाब।—ला. रा.

[अ. शबाब] ४ युवावस्था।

५ उठती जवानी।

६ युवावस्था का सौंदर्य।

७ सौन्दर्य।

८ वास्तविकता, हकीकत।

वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम।

२ पवित्र।

३ सुन्दर।

४ यथार्थ, सत्य।

५ वास्तविक।

६ दुरुस्त, ठीक।

रू. भे.—सबाव, सब्बाब, सवाब।

सबारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे.)

सबाव—१ देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—हाथी घण घरां हीडळसी, 'सूर' हरा इसा सबाव। दूण पटा वदारा देसी, आप जिसा करसी अमराव।—केसरीसिंह बारहठ

२ देखो 'सबाब' (रू. भे.)

उ०—सब मीरखांन मम सुणउ जाब, हुय हुस्यार रह मिळ सबाव।
—शि. सु. रू.

सबासन-सं. पु.—डिंगल का एक छंद विशेष जिसमें चार लघु एवं भगण या फिर क्रम से नगण जगण और लघु होते हैं।

सबाहुत्र-सं. पु. [सं.] भुजा का कवच।

उ०—सजै ओपरा टोप सोभा सिंघाळी, जिकै भीड़िया दंस नागोद जाळी। सबाहुत्र ऊरुत्र जंघात्र संगी, चहै बंस चील्हा रहै एक रंगी।
—वं. भा.

सबिका - देखो 'सिविका' (रू. भे.)

उ०—सजाई कोधी घणी, सबिका करि वाहन। सेन्य साथि अति घणी, तै चालवी राजन।—नलाख्यांन

सबी-सं. स्त्री. [अ. तसबीह] १ माला, हार।

उ०—सुत परताप टुक जोड़ै सिर, सुकरां गूंथी अजब सबी। रूण्ड-माळ उर ऊपर रुद्रचै, फूलमाळ अद्भूत फबी।
—पत्तौ चूंडावत रौ गीत

२ शक्ल, आकृति।

उ०—१ तरै छांनैं छै विडां मांहे दोठौ, बाइजी रै वररी सबी दीसै छै, नाकरी डांडी, आंख्यां, निलाड़ डील रोमछर देखि सही कवर जी ही छै।—जगदेव पंवार री वात

उ०—२ चाकर झाली नैं आय नैं कह्यौ, चारण नैं बाटी करनैं आपज्यो। तिसै झाली मुखड़ा री सबी देख रोवण लागी। तरै मुखड़ै पूछियौ वेदल क्यूं हुवै।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

३ शोभा, सुन्दरता।

४ वक्षस्थल पर धारण करने का आभूषण विशेष।

५ तस्वीर, मूर्ति।

उ०—अर पछै आपरी सबी मंगाय दीवी, जो इण रौ दरसण कर-ज्यो जतरै हूं आऊं छूं।—कुंवरसी सांखला री वारता

६ देखो 'सिबि' (रू. भे.)

रू. भे.—सिब, सिवि।

सबीता—देखो 'सविता' (रू. भे.)

सबील-सं. स्त्री.—प्यासों को धमार्थ जल पिलाने का स्थान, प्याऊ।

सबुज्ज-सं. स्त्री.—बुर्जों सहित।

उ०—भिरै अभित्ति भित्ति को सबुज्ज कै भवावनी। बिनां प्रस्वेद वित्तकौं कुरोर हां कमावनी।—ऊ. का.

सबुध–वि.–वि.—बुद्धिमान, विद्वान् ।
उ०—ससिसुत भवन पंचमैं सोहै, महा **सबुध** लख जगत विमोहै ।
—रा. रू.

सबूत–सं. पु. [अ. सुबूत] प्रमाण ।
उ०—सेठ कह्यौ—पाळियोड़ी मिन्नी रौ कांई **सबूत** ।—फुलवाड़ी
वि.—अखंड, पूरा ।
रू. भे.—साबूत ।

सबूब, सबूबौ–वि.—सुन्दर, श्रेष्ठ ।
उ०—कीमखाप तकिया कसमंदा खूब है, संजीवण की जडी क जोत **सबूब** है ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

सबूरी—देखो 'सब्र' (रू. भे.)
उ०—१ सील संतोस सति दया **सबूरी**, धण अवसर यम कीजै । जन हरिदास सति मनसा वाचा, रसना रांम रटीजै ।—ह. पु. वां.
उ०—२ सिदक **सबूरी** बाहिरौ, हरीया साच न एह । मुलां बांग पुकारियां, सांई साद न देह ।—अनुभववांणी
उ०—३ बधाई री भूखी धणी नै लुकाय पैला आई जकौ तौ सखरी बात पण अबै जल्दी उणरौ उणियारौ बतावै जकी बात कर । म्हारा सूं **सबूरी** नीं व्है ।—फुलवाड़ी
उ०—४ दो चूंधै जित्तै च्यारूं ई लारला चूं चूं करै । घणौ ई मन तरसै पण जोर कांई करूं । ओळियाकड़ा थोड़ी घणी ई **सबूरी** नीं राखै ।—फुलवाड़ी

सबूरौ–सं. पु.—काठ या चमड़े का वह लम्बा खंड या टुकड़ा जिससे विधवा या पतिहीना स्त्रियां प्रायः अपनी कामवासना तृप्त करती हैं । (मुसलमान)

सबै—देखो 'सब' (रू. भे.)
उ०—१ तठै आगवौ खाग हूं छाग तोड़ै, चंडी काळिका मातरै स्रोण चोड़ै । लगावै **सबै** सेस बिंदी ललाटां, करै फेर विस्रांम पाखै कपाटां ।—मे. म.
उ०—२ **सबै** मनोरथ पूरिया, सब्बै पूरी आस । जांण कमोदणि सिस उदै, तन मन हुआ विकास ।—गु. रू. बं.
उ०—३ **सबै** छांडि सब्बाब, नब्बाब भग्गै, सुभट्ट फतैसिंह कै लैर लग्गै ।—ला. रा.

सबैदी—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.)

सबोड़णौ, सबोड़बौ–क्रि. स. [सं. संपुटनम्] १ किसी गाढ़े द्रव्य पदार्थ को इस प्रकार खाना या चाटना कि सबड़-सबड़ की ध्वनि उत्पन्न हो ।
उ०—म्हैं हाथां ई चौकी माथै बोरी बिछायली । सावळ जमनै माथै बेठ्यो जित्तै जड़ाव मासी सगळी खीर **सबोड़ली** । तबरा नै आंगळियां सूं पूरौ चाटनै मांज्यौ ।—फुलवाड़ी
२ खाना ।
उ०—२ अस्सी नैड़ा लिया है, दस बारै सोगरा तौ राब अर ऊंनी छा मैं चूरनै आज ई **सबोड़** जाऊं ।—फुलवाड़ी
२ जिह्वा पान करना, चाटना ।
उ०—रणकारा रै समचै ई सगळा बिचिया दौड़्या आवता । लपौ-लप परातां मांयली दूध **सबोड़** जाता । मन व्हैतौ जणां दूध रै मांय किलोळां करता ।—फुलवाड़ी
सबोड़णहार, हारौ (हारी), सबोड़णियौ—वि० ।
सबोड़िग्रोड़ौ, सबोड़ियोड़ौ, सबौड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सबोड़ीजणौ, सबोड़ीजबौ—कर्म वा० ।

सबोड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी गाढ़े द्रव्य पदार्थ को इस प्रकार खाया हुआ या चाटा हुआ कि उससे सबड़-सबड़ की ध्वनि उत्पन्न हुई हो. २ खाया हुआ, जिव्हा पान किया हुआ ।
(स्त्री. सबोड़ियोड़ी)

सबोभ, सबोभौ–वि.—गौरवयुक्त ।
उ०—श्रै भाटी दळ आगळा, खळ गंजण दळ ढाल । मिसल **सबोभा** मेळ सूं, यां हूंता रिणमाल ।—रा. रू.

सबोध–वि. [सं.] जानकारी युक्त ।
सं. पु.—१ उत्तम ज्ञान, बुद्धि ।
२ ज्ञान, बुद्धि ।
३ जानकारी ।

सबोधौ–वि.—१ ज्ञानी, बुद्धिमान ।
२ जानकारी रखने वाला ।

सबोल–सं. पु.—बोलबाला, दबदबा ।
उ०—लाखेरी रौ राजारांम जी, तिणरौ प्रोहित हरदेव जी छै, बाई सारू सवागौ ल्याया छै । तिण ऊपरां थांनै मांहै लेसी नै अठै थांरौ **सबोल** होय तौ म्हारौ फूटरौ दीसै ।
—जैतसी ऊदावत री बात

सबोळौ–वि. (स्त्री. सबोळी) १ खुश, प्रसन्न ।
उ०—करतां त्याग **सबोळा** कीधा, सुज पातां संसार सुधार । जावै नहीं बोल जुग जातां, डेरा तूज तणां दातार ।
—भगूंत सिंघ रौ गीत
२ बहुत, अधिक, ज्यादा ।
उ०—घणी आछी रंगरळी सूं राजस कीवी । लोग सगळौ खुसहाल **सबोळौ** राखियौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता
३ सराबोर, गरक ।
उ०—अमित गुलालां अरगजां, केसर अतर फुलेल । हुवै **सबोळी** मंडळी, होळी हंदा खेल ।—रा. रू.
४ महान, श्रेष्ठ ।
५ जबरदस्त, पराक्रमी ।
६ नहीं मिटने वाला, अमिट ।
उ०—आई फौज चाल तौ ऊपर, रे जसबोल **सबोळा** रह्ला । साहै दळां मछरीक हमैं स्रम, गाहै दळां खग बोट गह्ला ।

—सूरतसिंघ चहुवांण रौ गीत

सब्ज—देखो 'सबज' (रू. भे.)

सब्जी-सं. स्त्री. [फा.] १ हरियाली।

२ हरी वनस्पति या तरकारी जो खाने के काम आती है।

३ पकाया हुआ शाक।

रू. भे.—सबजी।

सब्जीमंडी-सं. स्त्री.—सब्जी के क्रय-विक्रय का स्थान।

रू. भे.—सबजीमंडी।

सब्द—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—१ देख सरप व्है दादुरां, सब्द कळा कर सून। पुरख असेंदो पेख व्है, मावड़ियां मुख मून।—बां. दा.

उ०—२ वीरांण सब्द सुणिया विहद्, नीसांण तूर अनहद् नद्। जोयणां सरीरां जोत जाग, लोयणां पार रां ध्यांन लाग।

—वि. सं.

सब्दगुर, सब्दगुरु—देखो 'सबदगुरु' (रू. भे.)

सब्दग्रह—देखो 'सबदग्रह' (रू. भे.)

सब्दबोध—देखो 'सबदबोध' (रू. भे.)

सब्दब्रह्म—देखो 'सबदब्रह्म' (रू. भे.)

सब्दभेदी—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.)

सब्दमहेसर, सब्दमहेस्वर—देखो 'सबदमहेसर' (रू. भे.)

सब्दलक्खण, सब्दलक्षण, सब्दलखण, सब्दलख्खण-सं. स्त्री. [सं. शब्द-लक्षण] ७२ कलाओं में से एक। (व. स.)

सब्दवेधी, सब्बदवेधी, सब्बदावेध—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.)

उ०—चढं सब्बदावेध लूधां सिंघांणं, चडं तूणमैं घातिआं भूल बांणं। चडं पंच हज्जारियां पंच सट्टी, चडे मल्ल पायक्क बगसी अहट्टी।—गु. रू. बं.

सब्दसक्ति—देखो 'सबदसक्ति' (रू. भे.)

सब्दसाधन—देखो 'सबदसाधन' (रू. भे.)

सब्दसासतर, सब्दसास्त्र—देखो 'सबदसासतर' (रू. भे.)

सब्दाडंबर—देखो 'सबदाडंबर' (रू. भे.)

सब्दारथ-सं. पु. [सं. शब्दार्थ] शब्द का अर्थ।

उ०—दूभर द्रोहायन श्रीयाहन दोरी, सूभर चतुरब्दा सब्दारथ सोरी। इक नहि आक्रांता क्रांतातुर आडी, डाई अवतोका सोकाकुल डाडी।—ऊ. का.

सब्दालंकार—देखो 'सबदालंकार' (रू. भे.)

सब्दु—देखो 'सबद' (रू. भे.) (उ. र.)

सब्ब—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—१ अहूंनिस भज तेनूं, आव संसार ओछी। छ-दरस यम आखै, जे बिना सब्ब छोछी।—र. ज. प्र.

उ०—२ मारत एक सब्ब घात केळवै रसायणं। अगाध वैदराज राज ओखदी विचारणं।—गु. रू. बं.

सब्बदयं—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—आंमना चत्र वेद ब्रहंमांणयं विप्रयं, रुघ जुज्जर सांम अथर वणयं जपयं। वेदौ धुनि जै जै सब्बदयं वणयं, गुंजार रव भेर पडं-सदयं घणय।—गु. रू. बं.

सब्बळ—देखो 'सबळ' (रू. भे.)

उ०—१ आप आय अजमेर, मिळै दळ सब्बळ महाबळ। कागद भेजे सकळ, आय मिळळै दळ दळ सब्बळ।—सू. प्र.

उ०—२ पाड़ सब्बळ देत पाड़्यौ करण अद्भुत कत्थ, तो समरत्थ जी समरत्थ सारी बात हर समरत्थ।—भगतमाळ

उ०—३ बोलै साह सगाह महाबळ, सेन तोछ तपस्या सब्बळ। सुणै चलायौ पूत सप्रांणौ, अकबर गंजसि कौ आपांणौ।—रा. रू.

उ०—४ जोड़ अरोड़ वळै 'भीमाजळ', सुत रुघनाथ पाथ जिम सब्बळ। ईसरौत 'रांमौ' अतुळीबळ, करवा गढां 'बिजावत' कंदळ।

—रा. रू.

उ०—५ निडर भूप नागौर, समर झोकै दळ सब्बळ। क्रोध धूप कळकळै, तूप सीचै किर मंगळ।—सू. प्र.

सब्बळौ—देखो 'सबळ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ देवी मंगळा बीजळा रूप मघ्घै, देवी अब्बळा सब्बळा वोम अघ्घै।—देवि.

उ०—२ गिगन्न गोमं गुधळां, गिरंद मेर मेखळां। बहौत सेत बंबळां, समूळ सब्बळा दळां।—गु. रू. बं.

उ०—३ ओपियै बैरकां कुजरां ऊपरै, गुड्डियं उड्डियं जांण पब्बै गिरै। सांमठो हल्लको मैंगळां सब्बळौ, वाट ऊभी वहै जांण आडौ वळौ।—गु. रू. बं.

(स्त्री. सबळी)

सब्बा—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—१ सुहडां करि जुहार सब्बां ही, राज महेल राज धू आंही। राजा पधारै रळियांही, मुख हसतै राव लगन माही।—गु. रू. बं.

उ०—२ देवी जम्मघंटा बदीजै जडंबा, देवी साकणी डाकणी रूढ सब्बा।—देवि.

सब्बाब—देखो 'सबाब' (रू. भे.)

उ०—सबै छांडि सब्बाळ नब्बाब भग्गै, सुभट्ट फतैसिह कै लैर लग्गै।—ला. रा.

सब्बाल—देखो 'सव्वाल' (रू. भे.)

सब्बी—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—कै तुम किल्लै तोरियौ, कै मरियौ सब्बी। देखौ नब्बी क्या करै, कर नाख तसब्बी।—ला. रा.

सब्बु, सब्बुन—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

उ०—१ कंकट टोपां कट्टि कै, कढि जात अघाया। ज्यौं सबनीगर सब्बु मैं, चहि तंत्र चलाया।—वं. भा.

उ०—२ अज्ज धरम रच्छक इतै रु जवनिस्ट ते, घाट हलदी रन

अमावे भट भालौं कौं। वीर दोरदंडन उदग्ग मच्छ लग्गनतें, सब्बुन ज्यौं तांति चीर देत गजढालौं कौं।—बालाबक्स बारहठ

सब्बू-सं. पु.—रजनीगंधा नामक पौधा या उसका फूल।

उ०—तिस बगीचूं कै दरम्यांन वरणं जेतें फलफुलू का विस्तार। सब्बू कै सिरपोस अनारू का अधिकार।—सू. प्र.

सब्बै—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—सवै मनोरथ पूरिया, सब्बै पूरी आस। जांण कमोदणी सिस उदै, तन मन हुआ विकास।—गु. रू. बं.

सब्भ, सब्भै—देखो सब' (रू. भे.)

उ०—सभै अभै थंभ दै, सब्भै ही खत्र-धोड। सब्भां ही दिन पद्धरी, सभ वंका राठोड।—गु. रू. बं.

उ०—२ सहइ कुण सब्भ री, अेक अेकप्परी। लागि लागइ खरी, ठांइ नह ठाठरी।—अ. वचनिका

सब्र-सं. स्त्री. [अ.] १ धैर्य, धीरज।

उ०—इस्क अजब अवदाळ है, दरदवंद दरवेस। दादू सिक्का सब्र है, अक्ल पीर उपदेस।—दादूबांणी

२ सन्तोष।

मुहा.—सब्र रा फळ मीठा व्है—धैर्य रखना श्रेष्ठ है।

रू. भे.—सबर, सबूरी।

सभ—देखो 'सभ्य' (रू. भे.)

उ०—प्रधांनां बात सुहांणी प्रभ, सु वेस्याराइ बुलाया सभ।
—रांमरासौ

२ देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—अेक इसिइ आविउ तिहां ऊजेणीनु बंभ। मिळया माहांमाहां बिन्है, सभयां काज सुलंभ।—मा. कां. प्र.

सभद्र-सं. पु.—१ एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

२ देखो 'सुभद्रा' (रू. भे.)

सभर-वि.—१ भारी।

२ अत्यधिक।

उ०—आब अमोलक ऊजळा, सभर गुणां ततसार। न्याय इसा नग नीपजै, माजी कूख मझार।—बां. दा.

३ श्रेष्ठ, बढ़िया।

सभांनर-सं. पु. [सं. सभानर] ययाति वंशीय अनु के पुत्र का नाम।

सभा-सं. स्त्री. [सं] १ वह स्थान जहाँ पर बहुत से लोग बैठते हों, परिषद, समिति, मजलिस। (उ. र.) (डिं. को.)

पर्याय.—आसता, आसथांन, गोठि, परखद, परसत, संसत, सद, सदघटा, समाज, समिजा, समिति।

२ दरबार।

उ०—१ सभा वरणनं, राय रांणा मंडलीक आखंडलीक सांमंत महासांमंत लघुसांमंत, स्रीगरणा वयगरणा धरम्माधिगरणा अमात्य महामात्य सुहासोला उचितबोला.........। —व. स.

उ०—२ महुतउ वेग सभा आविउ, राजा रंगइं बोलावीउ। डाहा भूलइं केती वार, तुह्म सरिखा नु किसिउ विचार।—हीराणंद सूरि

३ धर्मशाला।

उ०—१ एहवूं कहीनि नीसरचां एकि वस्त्रि लग्न, सभा सुंदर आगली आवी ऊतरया थई मग्न।—नळाख्यांन

उ०—२ थाकां भूख्यां रज-भरचां एकि वस्त्रि बेह। सभा आवि धरातलि तव सूतां दुरबल देह।—नळाख्यांन

४ किसी एक विषय पर विचार करने के लिए बहुत से व्यक्तियों के एकत्र होने का स्थान।

५ उक्त स्थान पर एकत्रित हुए व्यक्तियों का समूह।

६ अथाइ।

७ कोई विशिष्ट कार्यार्थ नियुक्त व्यक्तियों का समूह।

८ द्यूत गृह, जुआड़खाना।

९ न्यायालय।

१० घर, मकान।

सभाइ—देखो 'स्वभाव'

उ०—लुघ सतावीस वैसी लखाइ, सहि सेख लेख सुद्रणि सभाइ।
—ल. पि.

सभाकार-वि. [सं.] १ सभा करने वाला।

२ सभा-सदस्य।

सभाग—देखो 'सौभाग्य' (रू. भे.)

उ०—१ दौळी चौकी साह री, विच दळ अकळ सभाग। सोहै किर सामुद्र मैं, ज्वाळवती बड़भाग।—रा. रू.

उ०—२ दोनां री निजर काळिंदर माथै पड़ी तौ ई वै नीं डरी अर नीं चिमकी। कांई आस, आकरसण कै हरख बाकी बच्यो जकै वैं मोत सूं डरै। वांरा अेड़ा सभाग कठै कै मौत आ जावै।
—फुलवाड़ी

सभागियौ, सभागी, सभागौ-सं. पु. [सं. सभाग्य] १ भाग्यशाली व्यक्ति।

उ०—वीठू वारै अप्पणौ, सभागियौ करीर। उर चंपै नखवीणवै, चंपै सौ सरीर।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ सम्पन्न, धनवान व्यक्ति।

मुहा.—सभागियां री जीभ नै अभागियां रा पग=सम्पन्न व्यक्तियों की आज्ञानुसार गरीब कार्य करते हैं।

वि॰—१ भाग्यशाली, खुश-किस्मत।

उ०—१ कुरबक अच्छां बाड़, माधवी कुंज सुरागी। लूंबै लाल असोक, भूमै बकुळ सभागी।—मेघदूत

उ०—२ क्षमावंत सबका हितकारी, कोमळ वचन अलागी। कह सुखरांम साधू लछ ऐसा वरतै संत सभागी।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ औ वींद कितरौ सभागियौ! कितरौ सुखी! भूत रा रूं रूं मैं जांणै सूळां खूबण लागी।—फुलवाड़ी

२ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—डावड़ी बोली—व्यास जी, मौत आयां बिनां कोई नीं मरै । पण ऐड़ी सभागी मौत रौ थांरै जोग कठै ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—संभागियौ, संभागी ।

सभाघर-सं. पु. [सं. सभागृह] किसी सभा समिति के बैठने या अधिवेशन बुलाने का स्थान ।

सभापति-सं. पु. [सं.] १ किसी सभा का मुखिया, प्रधान ।

उ०—मा'राजा सेवा लाईबेरी रा मित्री, सनातन धरम रा सभापति, ग्रांमसेवा संघ रा उपाध्यक्ष अर आरय-समाज रा सदा सूं सदस्य है ।—दसदोख

२ कौरवपक्षीय योद्धा जो कृष्ण द्वारा मारा गया था ।

सभामंडप-सं. पु. [सं.] १ निज मंदिर के सम्मुख देवदर्शनार्थियों के देव दर्शन हेतु बैठने का स्थान ।

२ वह स्थान जहाँ पर सभा की जाती है, सभाभवन ।

उ०—१ हमार दफ्तर है जठै सभामंडप रौ महल करायौ, गढ में । वाड़ी रा महल कराया जठै हमार जनांनी दोढी है । जठी मांयै है नै वाड़ी कराई थी जिण सूं वाड़ी रा महल बाजता था ।

—मारवाड़ री ख्यात

उ०—२ सभामंडप ऊपर कछवाई जी रौ मैंल करायौ । लोवा-पोळ हेटै गोळ री घाटी कांनी भुरजां तीन कराई । तिकै अदूरी रही । तिकौ कमठौ मा'राज तखतसिंघजी सरू करायौ सौ पार पड़ियौ नहीं ।—मारवाड़ री ख्यात

सभाय—देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया जब सीतळ भया, सब तैं एक सभाय । राग दोख अंतर नहीं, सुख संतोस सभाय ।—अनुभववांणी

उ०—२ साध न आंणै आपदा, सील संतोखी थाय । हरीया राग न वेसता, सब कुं एक सभाय ।—अनुभववांणी

सभाव—१ चिह्न, खोज ।

उ०—परभात हुवौ, सु गूंदळराव रै पगां री जोड़ौ उठै रह्यौ सु प्रथीराज दीठौ, नै बीजा पण माळियारा सभाव अटकळिया ।

—नैणसी

२ देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—१ दीनदयाळ छेह नहि देता, सदा अछेह सभावां । पण तज देह अवेह पधारौ, एह अनेह अभावां ।—ऊ. का.

उ०—२ ज्यांरा पड़्या सभाव, जासी जीवसू । नीम न मीठा होय, सींचो गुळ घीव सूं ।—अग्यात

उ०—३ बावहिया नै विरहणी, यां बिउ हेक सभाव । जब ही बरसै घन घणौ, तबहि कहै पिव आव ।—अग्यात

उ०—४ दिसि दिसि सीकिरि, डांमर चांमर ढलइं समावि । वाजइ तूर अनाहत नाह तणइं अनुभावि ।—जयसेखर सूरि

सभावाळा-सं. पु.—सभा का सदस्य, सभासद । (डिं. को.)

सभाविक—देखो 'स्वाभाविक' (रू. भे.)

सभासद-सं. पु. [सं.] किसी सभा में सम्मानित होने वाला सदस्य, पार्षद ।

२ किसी सभा में भाग लेने वाला व्यक्ति ।

सभासरवण-सं. पु. [सं. सभाशिरोमणि] उदयपुर राज्यभवन अन्तर्गत वह स्थान जहाँ पर जन्मोत्सव व राज्याभिषेक के समय दरबार लगाया जाता था ।

सभिन्न-वि.—भीगा हुआ ।

उ०—सबळ जळ सभिन्न सुगंध भेट सजि, डिगमिगि पाउ वाउ क्रोध डर हालियौ मळयाचळ हूँत हिमाचळ, कांम दूत हर प्रसन्न कर ।—वेलि

सभी—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—गिरधारी आया चाव बळराव का पूत, साहै वेध चाह साह्यौ राज रजपूत । 'कमा' 'जैता' सांमी कांमी कूंन जांणै, जम की सहाय वंकै सभी पहचांणै ।—रा. रू.

सभीड़ौ-वि.—१ दुष्कर, कठिन ।

उ०—१ राजा बीड़ौ आपियौ, कांम सभीड़ौ पेख । ज्वाळ गुवांळा क्रिसन ज्यूं, दीनौ आयौ देख ।—रा. रू.

उ०—ततखिण 'अजण' 'अभौ' तेड़ायौ, बीजै 'गजण' हजूर बुलायौ । विकट समै बीड़ौ नप वेखै, दीन्हौ काज सभीड़ौ देखै ।

—रा. रू.

सं. पु.—२ समूह, झुण्ड, भीड़ ।

उ०—जै बड़ां सिरदारां सू अरड़ै री जाबतौ राखजो, मुहौ झालियां रहौ, लोग सभीड़ौ देख फेर आंण पड़सी ।—डाढाळा सूअर री वात

३ दृढ़, मजबूत । (कपाट के लिए)

सभीत-वि.—भयभीत, भययुक्त ।

उ०—उर आसुर तायां सबद अभायां, उझकै पायां असुहायां । सत्रु बारस बीतां उवरि सभीता, वाचै गीतां दिन वीतां ।—रा. रू.

सभूमौ, सभोमौ-वि. (स्त्री. सभूमी, सभोमी) कार्यकुशल, होशियार । (विलो. अभोमौ)

सभोभरम, सभोभ्रम—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

उ०—१ सभोभ्रम 'पाळ' ज नंदण, जोर महा त्रस आत्रस जांणै । 'कांन' उभै अह कालंग केवी, येह अरी दळ खेबर आंणै ।

—राव कनपाळ रौ गीत

उ०—२ सुजड वहंता 'रयण' सभोभ्रम, अंतर किम दीसे अकळ । कुळ छळ थायां हमै केवियां, छांडैवा संग्रांम छळ ।

—महम्मदजी बारहठ

सभौ-वि.—भययुक्त, डर सहित । (डर के, भय के)

उ०—असपति सोच मेटण उवरि, दीसै और दूसरौ । दिल्लेस सभौ आडौ दियण, एक 'अभौ' 'अजयल्ल' रौ ।—रा. रू.

सम्भ—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—१ तेता मारू मांहि गुण, जेता तारा अभ्भ । उच्चळचिता साजणा, कहि क्यउं दाखउं सम्भ ।—ढो. मा.

उ०—२ सब्बां थी तुम्ह तुम्हां थी सम्भ ।—ह्. र.

सभ्य–वि. [सं.] १ सभा से सम्बन्धित, सभा का ।

२ उत्तम आचार-विचार वाला, सुसंस्कृत ।

उ०—सुसील सम्य साच्छरं स्तुति प्रमांन सोहनै ।—ऊ. का.

सं. पु.—१ पवमान अग्नि एवं संशप्ति के पुत्रों में से एक पुत्र अग्नि ।

२ सभासद ।

उ०—सिक्ख भई बलि सब भट सभ्य न, भनिय साह सुभ बिधि विनु लभ्यन । तव सहाय बुंदीपति तावहु, अप्प सिबिर दारा लेजावहु ।—वं. भा.

सभ्यता–सं. स्त्री. [सं.] सभ्य होने का भाव, शिष्टता ।

सभ्रम—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

उ०—'गजसाह' वडै 'गजसाह' छळि, अगनि बांण आतस सहै । पडिहार एक पांचा सभ्रम, रायसिंघ रिण भूंइ रहै ।—गु. रू. बं.

समंक-सं. पु.—१ चन्द्रमा, सोम ।

उ०—माया बादळ बीजळी, मारै चमंक चमंक । हरीया हरिजन ऊबरै, राता रैण समंक ।—अनुभववांणी

१ आंकड़ों का समूह ।

समंगा-सं. स्त्री. [सं.] एक पुण्य नदी जिसमें स्नान करने से अष्टावक्र ऋषि की वक्रता चली गई थी ।

समंचार—देखो 'समाचार' (रू. भे.)

उ०—१ वौ सिंह्या रा बडोड़ी बेटी रै घरै गियौ । उणरा माथा माथै हाथ फेर, सुख सांयत रा समंचार पूछ्या ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै वीरमदे समंचार कहाड़िया मालदेव जी नूं । ताहरां राव मालदेवजी रै मन मैं हुई । खबर कराई, सु अमरावां रै डेरै सवाया रुपिया हुआ ।—नैणसी

समंछर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

उ०—संमत दह सपतमैं, सरस पचसठै समंछर । स्रांवण रित घण सुखद, अयन रवि दक्खण अंतर ।—रा. रू.

समंजण-सं. पु.—१ नहाने की क्रिया, स्नान ।

समंजणौ, समंजबौ–क्रि. स. [सं. संमार्जनम्] १ स्नान करना, नहाना।

उ०—वांणी सुण चहुवांण, आंण ऊभी रायअंगण । सखी हूंत नव सपत, मांगि सुख आदि समंजण ।—रा. रू.

२ देखो 'समभ्रणौ, समभ्रबौ' (रू. भे.)

समंजणहार, हारौ (हारी), समंजणियौ—वि० ।

समंजिओड़ौ, समंजियोड़ौ, समंज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समंजीजणौ, समंजीजबौ—कर्म वा० ।

समंजर–वि.—मंजरी सहित, मंजरीयुक्त ।

उ०—कै धरि दंभ सुलब्भ, अब्भ आछादि रहै धर । तर तमाळ वन तरळ, मिळै किर डाळ समंजर ।—रा. रू.

समंजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्नान किया हुआ, नहाया हुआ।

२ देखो 'समभ्रियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समंजियोड़ी)

समंडळ-सं. पु. [सं. समण्डल] सूर्य, भानु । (ना. डि. को.)

समंत—देखो 'सामंत' (रू. भे.)

उ०—रथां परी जथांमाळ अवरी समंतां राळै, लुथबथां हुवै ईस मथां सूर लेण । भाग्तां राखवा कथा पथा जेम वाग भूरौ, स्री हथां आछटै खाग दूजौ चंद्रसेण ।—पहाड़ खां आढौ

समंतपंचक-सं. पु.—कुरुक्षेत्र का एक नाम।

समंतर-सं. पु. [सं.] १ एक प्राचीन देश का नाम।

२ उक्त देश का निवासी ।

समंद-सं. पु.—१ एक प्रकार का फूल । (अ. मा.)

[सं. संमद, सम्मद] २ हर्ष, आनंद (अ. मा.)

३ घोड़ा, अश्व ।

४ बढ़िया घोड़ा ।

५ बादामी रंग का घोड़ा जिसका अयाल, दुम, पुट्ठे आदि काले रंग के होते हैं।

६ देखो 'समुद्र' (रू. भे.) (डि. को; ना. डि. को.)

उ०—१ किर रघु हुकम मतै विकराळै, अंगद समंद मभि गिरंद उछाळै । कवचधार गौड़व जुध केकां, ऊडावै पखरैत अनेकां ।

—सू. प्र.

उ०—२ हरीया सीप समंद मैं, यु साधु जुग मांहि । सीपां मोती नीपजै, साध साध विन नाहि ।—अनुभववांणी

उ०—३ तू पारस तू कळपतर, चिंतामण घण चाव । 'सांमा' इंद समंद तू, 'भारहमाल' सुजाव ।—बां. दा.

उ०—४ यिडै थिडंव थट्ट ऐं, समंद जांण फट्ट ऐं । ढलक्कि ढाल गैमरां, पुऊर रोळ पक्खरां ।—गु. रू. बं.

समंदकण-सं. पु. [सं. समुद्र+कणः] मोती, मुक्ता ।

उ०—केम कळंक लागै कुळ निकळक, जालम तूझ तणा रव जेम । कंदवाळा न हुवै समंदकण, हुवै न दागल अंग हेम ।

—चतुरभुज बारहठ

समंदफेण—देखो 'समुद्रफेण' (रू. भे.)

समंदमेखळा-सं. स्त्री. [सं. समुद्रमेखला] पृथ्वी, भूमि ।

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

समंदर—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ हो म्हांरा सुखडा रा समंदर हो, हो म्हांरा दया रा दिसावर हो ।—गी. रां.

उ०—२ सगळी बातां सुण्यां सेठांणी रै अंतस मैं जांणै हरख रो समंदर थावा मारण लागो । बोली—पिंडतजी थे म्हारै कहै इत्ता फोड़ा भुगतिया । थांरो ओ ओसांण जीवूं जित्ते नीं भूलूं ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ बेटी ग्रांमनौ जतळावती रीस खाय बोली—भख हाथै नीं ग्रायौ तौ दूजा ग्रोळावा क्यूं लेवौ। म्हनै खाय पूरी करौ तौ जिद छूटै। नित री देण तौ मिटै समंदर मैं मंच्छियां ई नीं छोडी, जकौ ग्रठै मिनख रौ तौ सांढौ ई कांई।—फुलवाड़ी

समंदरी—सं. स्त्री.—१ नैऋत्य कोण से ग्राने वाली वायु।

(मि. ऊनाळू)

२ एक विशेष रंग का घोड़ा।

ग्रल्पा, रू. भे.—समदरियौ।

समंदव्यूह—देखो 'समुद्रव्यूह' (रू. भे.)

उ०—जांणै कळिपंत काळरौ समंद उलटीग्रौ छै। तिण भांतिरी समंदव्यूह सेन्यां कीग्रां चाली ग्रावै छै। कांही जळजात व्यूह सेन्या कीधी छै। —रा. सा. सं.

समंदसुत, समंदसुतन—सं. पु. [सं. समुद्र+सुत] १ चंद्रमा, चांद। (ह. नां. मा.)

२ ग्रमृत। (ह. नां. मा.)

३ समुद्र से निकाले गये चौदह रत्नों में से कोई एक।

रू. भे.—समुद्रासुतक, समुद्रासुतन।

समंदहुलास—सं. पु.—हर्ष, ग्रानंद।

समंदौ, समंद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ धारां तीरथ समंदौ स्रोणी, सलिल सुरभं भरए। परि पहुत्ता सुरी, बैसे ग्रीध उडीयं हसा।—गु. रू. बं.

उ०—२ सणै परणै समवाद, नंदनंदन ग्रहि नारी। समंद्र पार संसार, होय गोपद ग्रनुहारी।—ना. द.

समंध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

समंवाद—देखो 'संवाद' (रू. भे.)

उ०—१ रस्समै समथ्थ कह्यौ सन्नमख्खै, समंवाद गातां ग्रहै पारस रख्खै। समंवाद काळी तणौ एह सारौ, चवै दास दासांन सांमी चितारौ।—ना. द.

उ०—२ धणी रौ ऊजाळां लूंण ग्राऊग्रा ग्रासोप धणी, वणीवार ज्यांसु कुण पुछै समंवाद। साज ग्रणी सरीरा ग्रग्राजै बेहु माहासूर, मारू भुजां छाजै धणी धरा री ग्रजाद।—जवांन जी ग्राढौ

समंसणौ, समंसबौ—क्रि. ग्र.—१ चिंता करना।

२ पश्चाताप करना।

सम—वि.—समान, सदृश।

उ०—१ सुंदर तन स्यांम स्यांम वारद सम, कौटक भा रद कांम सकांम। नायक सिया दासरथ नंदण, विमळ पाय सुरराजा वंदण, रीझ वजै महराजा रांम।—र. ज. प्र.

उ०—२ सुंदर भाळ विसाळ, ग्रलक सम माळ ग्रनोपम। हित प्रकास ग्रदु हास, ग्ररुण वारिज मुख ग्रोपम।—रा. रू.

२ बराबर, तुल्य। (डि. को.)

उ०—१ सूरातन सूरां चढै, सत सतियां सम दोय। ग्राडी धारां ऊतरै, गणै ग्रनळ नूं तोय।—बां. दा.

उ०—२ नारायण तौ सम कौ नांही, मुर ही भवण हुकम चै मांही।—ह. र.

३ बराबर, समान।

उ०—१ सम वय रा सुहड़ां सहित, वोळै कुंकुम बास। पग रण-लंगर पहरिया, भूखण उडुगण भास।—वं. भा.

उ०—२ दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि ग्रनुक्रमि सर-वरी। स्रिय जीत पति गुण परखि चखि सुख, सकस पखि जिम सुंदरी।—रा. रू.

४ जिसका तल समतल हो।

५ जो शुरू से ग्रन्त तक एकसा चले, उतार-चढ़ाव रहित, तेजी-मन्दी रहित।

उ०—विजय रा लोभी रजपूत चाहै किण समय ग्राइ सम विसम जुद्ध करै। ग्रर जनकादिक गुरूजनां नूं टाळि तिकां रै सांम्है तौ ग्रनुगत भाव धरै —वं. भा.

सं. पु. [सं. शम] १ शांति।

२ मोक्ष।

३ शमन, निवृत्ति।

उ०—सिव रमणी बरी ए, छकाय रक्षा करी ए। खम दम सम धरी ए। —जयवांणी

४ वह संख्या जो समसंख्या (२, ४, ६, ८) पर पड़े या जिसमें दो का भाग पूरा-पूरा जावे।

५ तीन प्रकार की वयणसगाई (वर्णमैत्री) में से एक।

६ वर्गमूल निकालने के संकेत स्वरूप किसी ग्रंक के ऊपर दी जाने वाली सीधी रेखा। (गणित)

७ ताल के ग्रनुसार संगीत में वह निश्चित स्थान जहां बजाने वाले का सिर या हाथ ग्रपने ग्राप हिल जाता है। संगीत में ताल की निश्चित ग्रावृत्ति का प्रथम माप।

८ हाथ में रखी जाने वाली छड़ी व हाथी के दांतों की शोभा वृद्धि के लिए लगाया जाने वाला छल्ला।

उ०—जरै सब पीतर तें सम दंत, बसी हिम के मनु भोन बसंत। —ला. रा.

९ वर्ष, साल। (डि. को.)

१० धर्म प्रजापति के पुत्र एवं प्राप्ति के पति, एक राजा।

११ ग्रहः नामक वसु का एक पुत्र।

१२ ग्रायु राजा के एक पुत्र का नाम।

१३ ग्रभिताब देवों में से एक।

१४ भीमसेन के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र-पुत्र।

१५ हंसध्वज राजा का पुत्र जो चंपक नगरी का राजा था।

१६ धर्मसूत्र राजा का पुत्र व द्युमत्सेन राजा के पिता का नाम।

१७ भगवान् विष्णु का नाम ।

रू. भे.—संम, संम्य, समी, समैं ।

समग्रर—देखो 'समर' (रू. भे.)

उ०—इण भांत लड़ै **समग्रर** अभंग, राठोडव खीची रुद्र रंग ।

—पा. प्र.

समइ, समइयै, समंइयौ, समईयइ, समईयौ—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ बीकानेर वळै राव कल्यांणमल आइ राज विराजण लागौ । इण **समइयै** पातिसाह सेरसाह वरस आठ दिली राज करि अर कालिजर गयौ हुतौ ।—द. वि.

उ०—२ दादुरा डहिडहै, सांवण आवण री सिध कहै, इसो **समइयौ** वण रह्यौ छै ।—रा. सा. सं.

उ०—३ जेठ मास मांहै प्रोहित पण हैरौ करण आयौ, इसैं **समइयै** आंबली पण फळी हुती ।—नैणसी

समउण-सं. पु. [सं. समन] ब्रह्मा । (ह. नां. मा.)

समकणौ, समकबौ—देखो 'चमकणौ, चमकबौ' (रू. भे.)

उ०—बीजुळियां जाळउं मिळ्या, ढोला हूं न सहेसि । जउ आसाढि न आवियउ, सावण **समकि** मरेसि ।—ढो. मा.

समकणहार, हारौ (हारी), समकणियौ—वि० ।

समकिओड़ौ, समकियोड़ौ, समक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समकीजणौ, समकीजबौ—भाव वा० ।

समकत—देखो 'सम्यकत्व' (रू. भे.)

उ०—सावद्यदांन मैं पुन सरधै तिणसूं **समकत** चारित्र एक ही नहीं ।—भि. द्र.

समकारणौ, समकारबौ–क्रि. स.—बजाना ।

उ०—घूघरां तणी घमकार कर गहर सी, डाक डमकार **समकार** डेरूं । तावरौ सांधियौ केहरौ तवै छै, भाव रौ बांधियौ आव भेरूं ।

—केसरौ

समकारणहार, हारौ (हारी), समकारणियौ - वि० ।

समकारिओड़ौ, समकारियोड़ौ, समकारचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

समकारीजणौ, समकारीजबौ—कर्म वा० ।

समकारियोड़ौ–भू. का. कृ.—बजाया हुआ ।

(स्त्री. समकारियोड़ी)

समकालीन–वि. [सं.] १ एक ही समय से सम्बन्धित ।

२ उत्पत्ति आदि के हिसाब से एक ही समय में होने वाला ।

समकित—देखो 'सम्यकत्व' (रू. भे.)

उ०—१ आगार नै अणगारनी जी, धरम तणा दोय भेद । **समकित** सहित व्रत आदरौ जी, राखौ मुगति उम्मेद ।—जयवांणी

उ०—२ तिम ए धोवण उन्हो पांणी पीवै पिण **समकित** चरित्र रहित तिण सूं बणी बणाइ ब्राह्मणी रा साथी है ।—भि. द्र.

उ०—३ तीरथंकर आवै तिहां, त्रिगडौ करै तयार । **समकित** करणी साचवैं, एह कहुं अधिकार ।—वृस्त.

उ०—४ परभाग रंग अदंग गूंजइं, सत्व ताल विसाल ए । **समकित** तंत्री तंत झणकइ, सुमति सुमनस भाल ए ।—वि. कु.

समकिती–वि.—श्रद्धान की क्रिया करने वाला, सम्यकत्व का पालन करने वाला ।

उ०—१ सनत्कुमार ए **समकिती** इत्यादिक पावै बोल हो ।

—जयवांणी

उ०—२ करै प्रसंसा **समकिती**, मिथ्यात्वी होवैं मूक । सूरय देखै हरखै सह, घणौं अंधारै घूक ।—वृस्त.

समकियोड़ौ—देखो 'चमकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समकियोड़ी)

समकोस–सं. पु. [सं. समकोष] एक प्राचीन देश का नाम ।

समकोर–वि.—एक समान, बराबर ।

उ०—करी **समकोर** करीन की पंति, उठी बरखा मनु ग्रीखम अंति ।

—ला. रा.

समखणौ, समखबौ—देखो 'चमकणौ, चमकबौ' (रू. भे.)

समखणहार, हारौ (हारी), समखणियौ—वि० ।

समखिओड़ौ, समखियोड़ौ, समख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समखीजणौ, समखीजबौ—भाव वा० ।

समखियोड़ौ—देखो 'चमकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समखियोड़ी)

समखी–सं. स्त्री—बात, तर्क-वितर्क ।

उ०—कीजो कोड़ी **समखियां**, सुखइ इण जोड़ न अब्ब । दीनौ गोरखदांन नूं, ऊठण तणौ कुरब्ब ।—रा. रू.

समग—देखो समिग' (रू. भे.) (अ. मा.)

समगत—देखो 'सम्यकत्व' (रू. भे.)

उ०—सेंठी नहीं **समगत** री नींव, नहीं सरधै छहकाय जीव ।

—जयवांणी

उ०—२ जद तैं पाछौ आय नैं बोल्यौ—थांरी **समगत** पाछी उरही ल्यौ ।—भि. द्र.

समगना–सं. स्त्री. [सं. समज्ञा] यश, कीर्ति । (ह. नां. मा.)

समगि–सं. पु. [सं. सम्यक] सत्य, साँच । (ह. नां. मा.)

समगिना–सं. स्त्री. [सं. समज्ञा] यश, कीर्ति । (ह. नां. मा.)

समग्ग, समग्र, समग्रि–वि. [सं. समग्र] तमाम, सब, समूचा, सम्पूर्ण ।

उ०—१ उडै तुरंग तैं रजी, **समग्ग** धावती अटै । छकै छकांन छावती, छिता विछावती छटै ।—ऊ. का.

उ०—२ जिण थी हाडां रा **समग्र** ही पांच सै सिपाहां तिकांनूं बाढण काज आपरी समस्त ही सेना पेलोजै तो बिस्वंभर बिबाहिणि बिबाही बेहूं संबंधिया रौ बचन निबाहै ।—वं. भा.

उ०—३ **समग्रि** भार धर गुणां सवायां, ओडै कंध धमळ थळ आयां ।—रा. रू.

समड़—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

समड़णो, समड़बो–क्रि. स.—चलना ।

उ०—१ वरखा छूर गोळियां वाळै, वणियो मेघ जांण वरसाळै । समड़ै मुड़ै मुड़ै समड़ावै, असुर सजोस रोस उफणावै ।—रा. रू.

उ०—२ सिर गुजर करवा समर, 'अभो' हुवो असवार । फिर घू ऊपरि गुम्हिकां, समड़ै करण सिघार ।—रा. रू.

समड़णहार, हारौ (हारी), समड़ियोड़ो—वि० ।

समड़िओड़ो, समड़ियोड़ो, समड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

समड़ीजणो, समड़ीजबो—कर्म वा० ।

समड़ाणो, समड़ाबो–क्रि. स.—चलाना ।

समड़ाणहार, हारौ (हारी), समड़ायोड़ो—वि० ।

समड़ायोड़ो—भू० का० कृ० ।

समड़ाईजणो, समड़ाईजबो—कर्म वा० ।

समड़ावणो, समड़ावबो—रू० भे० ।

समड़ायोड़ो–भू. का. कृ.—चलाया हुआ ।

(स्त्री. समड़ायोड़ी)

समड़ावणो, समड़ावबो—देखो 'समड़ाणो, समड़ाबो' (रू. भे.)

उ०—वरखा छूर गोळियां वाळै, वणियो मेघ जांण वरसाळै । समड़ै मुड़ै मुड़ै समड़ावे, असुर सजोस रोस उफणावै ।—रा. रू.

समड़ावणहार, हारौ (हारी), समड़ावणियो—वि० ।

समड़ाविओड़ो, समड़ावियोड़ो, समड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

समड़ावीजणो, समड़ावीजबो—कर्म वा० ।

समड़ावियोड़ो—देखो 'समड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. समड़ावियोड़ी)

समड़ियोड़ो–भू. का. कृ.—चला हुआ ।

(स्त्री. समड़ियोड़ी)

समचइ—देखो 'समचेई' (रू. भे.)

उ०—ताल कई समचइ घूघरी, मांहिली मांड़ली छीदा होइ ।
—वी. दे.

समचार—देखो 'समाचार' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सुणि बेगम समचार, बेग पतसाह बुलायो । खांन आंम–खास हूं, उठि अंतःपुर आयो ।—मे. म.

उ०—२ कठळ्यो घमसांण प्रमांण किसा, दहळ्यौ हिंदवांण दिसा विदिसा । त्रिदशालय चाव चढ्या तरुण्यां, समचार थळी छत्रधार सुण्या ।—मे. म.

समचेइ, समचै–वि.—सब, समस्त ।

उ०—१ दूर कराई दाढियां, मोहरां दे दे हाथ । माळा कंठी मोळवी, समचै एकण साथ ।—रा. रू.

उ०—२ मिरजा दोनूं मेड़तै, मिळिया बंध समाथ । उण दिस यां 'बाले' 'अखै', समचै कीधौ साथ ।—रा. रू.

क्रि. वि.—१ ठीक उसी समय, तत्काल ।

उ०—१ तद मूर्णसिघ जी कह्यो—भाभा हथवाहो जीवतो जावै है । तारां समचेइ इणरै लारै उतरिया सू तरवार बहती रै साठै हाथ पग भेळा कर कूद गयो ।—द. दा.

उ०—२ जठै अेक दिखणी मा'राज रै बराबर हय माथै में तरवार वाही सू कानां तांई घाव हुवो । अरु समचै मा'राज वाह करी सू उणरा दोय धड़ हुवा ।—द. दा.

उ०—३ जिसै नबाब री तरवार केसरीसिंघ जी ऊपर बूही । सु ढाल सूं टाली । समचै केसरीसिंघ जी वाही ।—द. दा.

२ एक साथ, एक ही साथ ।

३ साथ ।

उ०—१ हेला समचै आवता मां अब क्यूं करो अबेर ।
—आसकरण सांदू

उ०—२ पछै साहारै दिन बारैमो १२०० असवार जीनसाळिया करि ऊपरि ढीला वागा पैहर केसरिया करनै बारै वींद'रै माथै मोड़ बांधनै बारै' जांन करनै एकण समचै बारां ही प्रोळि मांही पैठा ।
—नैणसी

उ०—३ मुळक रै समचै मासी रै बोखा मूंडा सूं जांणै सूरज भळकियो । मुळकती मुळकनी ई बोली इत्ता दिन तो लोगां रै मूंडै सुख रो फगत नांव ई सुण्यो हो ।—फुलवाड़ी

उ०—४ पण आं बोलां रै समचै काली मासी रा रूं रूं में जांणै सिंघ गरजण लागा । दाई ने धक्को देय उण री ठोड़ बैठगी । वा तीन चार कस्टियोड़ी लुगायां रा जापा देख्योड़ी ही ।—फुलवाड़ी

उ०—५ तीर बिंधण रै समचै ई हिवड़ा विस री पोटाळी फूटगी ही ।—फुलवाड़ी

४ होते ही ।

उ०—१ पण दीया रै चांनणै अंधारा नै विणसतां कोई जेज थोड़ी ई लागै । चांनणा रै समचै ई अंधारो विणस जावै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ नाहरसिंघ तो बात रै समचै ई म्यांन सूं पळपळाती तर–वार काढी । धमधम बावड़ी री नाळ उतरयो । वाढाळी नैं सात वळा पांणी मैं खोळी । देंत रै आवण री निसंक बाट जोवण लागो ।—फुलवाड़ी

उ०—३ राजकंवरी कागला री बोली रै समचै ई थरथर धूजती । मेंहदी लगावती वेळा वो छाजा माथै बैठ कांव कांव करतो बोल्यो–मेंहदी लगावो तो भलांई राजकंवरी है तो म्हारी ।—फुलवाड़ी

उ०—४ अंधारा री ओरड़ी सूं बारै आवतांई वो सूरज तो कैं कैं करनै रोयो । उण बाळ-साद रै समचै ई गिगन मैं नवा अणगिण तारा जुड़ग्या ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—समचइ ।

समचोरस–वि. [सं. समचतुरस्र] जिसकी चारों भुजाएं समान हों, चौकोर ।

समचो—१ सूचना, संदेश, खबर ।

उ०—१ मासी कित्ती बरजनै आई के उणरो समचो मिळियां बिनां

समंचार ई किणी रै साथै पूगता नीं करै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जे काले ई **समचो** आयग्यो तौ कांई जबाब देवांला। महारांणी जी नै जावण सारू ग्रोड़ौ देवै तौ गिरै', अर ग्रोड़ौ नीं देवै तौ उण सूं ई वत्ती गिरै' ।—फुलवाड़ी

उ०—३ थूं तौ गूजरी रै घरै जाय म्हारै पूगण रौ **समचौ** देदै । म्हैं रथ में बैठ घड़ी ग्राध घड़ी पछै ग्रावूं । – फुलवाड़ी

उ०—४ दिन मैं सात सात वेळा ग्रमूंझणी ग्रावण लागगी । उण **समचा** रै सागै ई नींद तौ पांखा लगाय रांम जांणै किण दिस सांम्ही उडी सो पाछी उठीनै हर ई नीं करी ।—फुलवाड़ी

ग्रवसर, मौका, समय ।

उ०—इण रौ कांको भाइयां में मिळण सारू गयौ छै, इसा **समचा** में दुसमण ऊपर चढ ग्राया ।—वी. स. टी.

समज—देखो 'समझ' (रू. भे.)

उ०—**समज** रै साथ निज धणी री संक सूं, दवारै हरी रै चाढ दीनौ ।—ऊमरदांन लाळस

समजण-सं. पु.—समझना, मानना । (डिं. को.)

समजणौ, समजबौ—देखो 'समझणौ, समझबौ' (रू. भे.)

उ०—१ **समज** तमाकू सूंगली, कुत्तो न खावै काग । ऊंट टाट खावै न ग्रा, ग्रपणी जांण ग्रभाग ।—ऊ. का.

उ०—२ जब लोक कहै —भीखण जी जगू जी **समजतां** बीजां नै इ दोरौ लागौ पिण खेतसीजी लुणावत नें तौ दोरौ घणौ इज लागौ ।
—भि. द्र.

समजणहार, हारौ (**हारी**), **समजणियौ**—वि० ।

समजिग्रोड़ौ, समजियोड़ौ, समज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समजीजणौ, समजीजबौ—भाव वा० ।

समजत, समजतियौ, समजती, समजत्ती-वि.—समान शक्ति या बल वाला ।

उ०—ग्रांण ग्रांण धुरताळ ग्रोडविया, **समजत** ग्रोछंडिया सकळ । जूना धमळ ग्रोड भुज झूंसर, बोहळियां छांडियौ बळ ।
—चतुरभुज बारहठ

२ जो वैभव तथा बल में समान हो, समानता वाला ।

उ०—चडियौ 'गजन' हरौ चक्रवत्ती, संकै देस जिता **समजत्ती** । 'केहर' गोड़ हरख उर कीधौ, दिन जिग लगन तणौ लिख दीधौ ।
—रा. रू.

उ०—२ ज्यां ग्रागै कर जोड़ रहै ऊभा **समजत्ती** । ज्यां ग्रागै गड़ि पड़ै महा मैमंत हसती ।—ज. खि.

उ०—३ सुतन जगनाथ कहै **समजतियां**, उर भीड़ी वाली कर ग्राथ । हालै साथ खरचियां हाथां, संचिया किणीं न चाली साथ ।
—गोरधन खीची

३ पंडित, विद्वान ।

४ उदार, दातार ।

समजया-सं. स्त्री.—डिंगल गीतों की रचना का एक नियम विशेष जिसमें जिसका प्रसंग चल रहा हो उसमें रूपक ग्रलंकार लाया जाता है ।

समजाणौ, समजाबौ—देखो 'समझाणौ, समझाबौ' (रू. भे.)

उ०—सौ केवली थया पछै राज किम करै । ग्रा बात बांचण वाला मैं तौ सम्यक्त्व प्रत्यक्ष न दीसै । पिण थां सुणवा वालां री पिण संका पड़ै है । इम कहै समजाय दिया ।—भि. द्र.

समजाणहार, हारौ (**हारी**), **समजाणियौ**—वि० ।

समजायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

समजाईजणौ, समजाईजबौ—कर्म वा० ।

समजायता–[सं. समज्या] सभा । (ग्र. मा.)

समजायस—देखो 'समझायस' (रू. भे.)

समजायोड़ौ—देखो 'समझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समजायोड़ी)

समजियोड़ौ—देखो 'समझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समजियोड़ी)

समजोत-सं. स्त्री. [सं. सज्योति] पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति । (ग्र. मा.)

समज्जणौ—देखो 'समझणौ' (रू. भे.)

समज्जणौ, समज्जबौ—देखो 'समझणौ, समझबौ' (रू. भे.)

उ०—कुळ देवां जात्रा करण, मात दरस्सण कज्जि । ग्ररज हुई 'ग्रजमाल' सूं, मांनी भूप समज्जि ।—ज. खि.

समज्जणहार, हारौ (**हारी**), **समज्जणियौ**—वि० ।

समज्जिग्रोड़ौ, समज्जियोड़ौ, समज्जयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

समज्जीजणौ, समज्जीजबौ—भाव वा० ।

समज्जि, समज्या – देखो 'समिजा' (रू. भे.)

उ०— गुणपती ग्राग्या सांहणी, ग्रस्व ग्ररोहण कज्जि । वाजि किया साजां विविध सिधि करण **समज्जि** ।—रा. रू.

समज्जियोड़ौ—देखो 'समझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समज्जियोड़ी)

समझ, समझण-सं. स्त्री. [सं. संबुद्धि] १ ग्रक्ल, बुद्धि, विवेक ।
(ग्र. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ म्हारी **समझ** मैं थांरी बेटी दूध दही मैं'लां पुगाय दे तौ सावळ रैवैला । मां तड़कनै जबाब दियौ—भाया, थारी इण **समझ** नै राजमैं'लां मैं ई कांम लिया कर म्हारी गवाड़ी थारी **समझ** कांम नीं देवै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रा **समझ** नीं हाट-बजारां बिकै, नीं खेतां में ऊगै ग्रर नीं बाग-बगेच्यां फळै । म्हारी **समझ** कम है तौ म्हैं ग्रापरी पगरखियां री ठोड़ बैठूं ।—फुलवाड़ी

उ०—३ सहज चाल संगत **समझ**, वांणी सिकल वणाव । इता प्रकारां ग्रवस है, गोलां तणौ जणाव ।—बां. दा.

उ०—४ पढै कवियण वयण बडपण, ग्रोप गिण सम करण ।
अरि जण स्रवण कुवयण तजै, समझण दियण लघुपण दाव ।
—रा. रू.

सं. पु.—२ बुद्धिमान, समझदार व्यक्ति।

उ०—समझण हुवै तै देवै दंणी मिल्यौ। पछैई देणा पड़ता तौ पं'लांइ टंटौ मिल्यौ ।—भि. द्र.

३ होश-हवाश ।

उ०—म्हैं म्हारी समझ समझायां पछै ई ग्रेड़ी बात नीं सूणी ।
—फुलवाड़ी

४ बुद्धिमानी ।

उ०—पातियां पड़ंती देख ग्रणपार री, लूट में बीजैसिंघ उरौ लीदौ । समझ रै साथ निज धणी री संक सूं, दवारै हरी रै चाढ दीदौ ।—ऊमरदांन लाळस

रू. भे.—समज, समझि, समझ्झ।

समझणदार—देखो 'समझदार' (रू. भे.)

उ०—ग्राखर थे पिण समझणदार सनेहा, नवि दाखविस्यौ छेहा हो ।—वि. कु.

समझणियौ—वि.—समझने वाला, मानने वाला, जानने वाला ।

उ०—सगळी बात सुण्यां राजकंवरी तौ हाक-बाक व्हैगी । कांई ग्रेड़ा ग्रमोलक हीरा-मोत्यां नै ई गिळगिचियां रै, उनमांन नाकुछ समझणिया मिनख ई इण धरती माथै बसै ! सुण्यांई विस्वास नीं व्है जैड़ी बात ।—फुलवाड़ी

समझणौ—वि.—१ (स्त्री. समझणी) बुद्धिमान, समझदार।

उ०—१ पीवै तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल । सालै निस दिन समझणां, चालै चाल कुचाल ।—ऊ. का.

उ०—२ जद स्वांमीजी बोल्या—इसा समझणा ग्रागैड हुवैला । डेरौ मिल्यां किसौ ग्यांन ग्राय जावै ।—भि. द्र.

उ०—३ लाड मोह ग्रर प्रीत मैं ग्रबूझ नादांन छोटौ टाबर जित्तौ समझ, उत्तौ स्यांणौ समझणौ ग्रर लांठौ मोट्यार ई नीं समझै।
—फुलवाड़ी

२ शरीफ, सयाना ।

उ०—उणरै गियां पछै सासू बीनणी नै पूछ्यौ—ग्रांरौ कांइ नांव है, ग्रादमी तौ ग्रणूंतौ भलौ ग्रर समझणौ लागै ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—समजणौ, समज्जणौ ।

समझणौ, समझबौ—क्रि. स.—१ जानना।

उ०—१ मारण मारण समझै मूरख, तारण लखै न ताई नै । रात दिवस हिंसा सूं राजी, कर दै मात कसाई नै ।—ऊ. का.

उ०—२ बेटा जी म्हनै कांई डोका चरावौ, म्हैं थारी सै' चालां समझूं हूं। थारा लखण तौ है जैड़ा है, पण कांई करूं, थारी मां री कांण मांनूं ।—फुलवाड़ी

उ०—३ राजा तुरत समझग्यौ । उणरी ग्रांख्यां सै लारली बातां रौ चांनणौ व्हैगौ । पण ग्रबै समझ्यां कांई कारी लागै ।
—फुलवाड़ी

उ०—४ भोळौ ठाकर समझ्यौ कै धणी रै जोखा री बात सुणनै सुलखणी नार सुध-बुध पांतरगी । पण वा तौ कांळिंदर री सुणावणी सूं बेचेतै व्ही ।—फुलवाड़ी

२ ध्यान में लाना ।

३ सीखना ।

समझणहार, हारौ (हारी), समझणियौ—वि० ।

समझिग्रोड़ौ, समझियोड़ौ, समझ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समझीजणौ, समझीजबौ—भाव वा० ।

संमधणौ, संमधबौ, समंजणौ, समंजबौ, समजणौ, समजबौ, समज्जणौ, समज्जबौ, समधणौ, समधबौ; समुझणौ, समुझबौ
—रू० भे० ।

समझदार—वि.—बुद्धिमान, ग्रक्लमंद ।

उ०—१ ग्रमल री ग्रास मांही उळज, समझदार निस दिन सिड़ौ । ग्रा बात ग्रजब उलटी ग्रकल, बिन बिगड़्यां क्यूं बीगड़ौ ।
—ऊ. का.

उ०—२ सेठ कह्यौ—'थूं तौ खुद डोढ समझदार है, थोड़ा में समझण वाळौ है ।—फुलवाड़ी

उ०—३ प्रोहित निपट राजी हुवौ । साथ रै लोक नुं कहण लागौ, 'जो वीहा कुंवरजी रै ग्रागै ही घणा छै पिण समझदार दातार तौ लाडीजी सारखौ कोई नहीं । बड़ी सिरदार जांणियौ विसेख ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

समझदारी—सं. स्त्री.—१ समझदार होने के गुण या भाव, बुद्धिमता ।

उ०—१ उण नै ढाबण सारू दूजोड़ौ चोर एक समझदारी री बात करी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ उणरै देखादेखी उणसूं दो बरस मोटौ पप्पू ई जोर सूं रोवण लाग्यौ ग्रर घर मैं जांणै महाभारत मचग्यौ । म्हैं कह्यौ—ए भली मिनख टाबर नैं यूं मांरै ? ग्रा कठारी समझदारी है ?
—ग्रमर चूंनड़ी

समझवांन, समझवार—वि.—१ बुद्धिमान, ग्रक्लमंद ।

उ०—१ राजाजी चिपतां ई पूछ्यौ—दीवांण जी थै इत्ता समझवांन हौ तो म्हनै एक बात रौ तौ जबाब दौ कै लुगायां सारू जात-पांत रा धांदा नीं व्हैता तौ कैड़ौ उम्दा कांम रैवतौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रो नैनौ पुटियौ तौ ग्रणूंतौ समझवांन है । कदैई वगत मिळै तौ म्हारै गोडै वंतळ करण नैं निसंक ग्राया कर ।—फुलवाड़ी

उ०—३ ग्रपछरा उणनै मारण री घणी ई ग्रटकळां रची पण उण री दाळ नीं गळी । कंवर ग्रणूंतौ समझवांन, निडर ग्रर हीमतवार हौ । मौकौ मिळतां ई वौ नवी रांणी नै चिड़ावतौ ।
—फुलवाड़ी

२ कुशल, चतुर ।

उ०—१ सेठ बोल्या—अां वरदांनां मैं म्हैं तौ समझूं कोनीं। म्हारी बींनणी अणूंती गुणवंती अर **समझवांन** है।—फुलवाड़ी

उ०—२ सगपण जोग व्हेतां ई सेठ अेक गरीब बांणिया री **समझवांन** बेटी सूं उणरौ ब्याव कर दियौ।—फुलवाड़ी

३ विवेकशील।

समझांण-सं. स्त्री.—१ जानकारी।

२ संकेत, इशारा।

वि.—बुद्धिमान।

समझाइस—देखो 'समझायस' (रू. भे.)

उ०—१ दीवांण तौ राजकंवरा री बातां सुण सुणनै इचरज करतौ रह्यौ। राजकवर तौ इत्ती **समझाइस** करि पछै ई कुबांण छोडी नीं। दिन ऊगतां पांण राजमैं'ल सूं ढळग्या।—फुलवाड़ी

उ०—२ धणी **समझाइस** करी कै वा क्यूं विरथा कळपै, सेवट तौ हाथां री कमाई कांम आवैला। बाप रौ लेणौ ई तौ बेटा उतारचा करै।—फुलवाड़ी

उ०—३ बांव्यौ नाग घणी ई **समझाइस** करी, पण नागण नीं मांनी। तद वौ मूंडौ लेय हमेसां रै वास्तै बारै जावण री बात करी तौ उणनै माडांणी माठ झेलणी पड़ी।—फुलवाड़ी

समझाणौ, समझाबौ-क्रि. स.—१ शिक्षा देना, उपदेश देना।

उ०—१ इम **समझायनैं** चोरी नां त्याग कराया।—भि. द्र.

उ०—२ जनहरीया **समझाय** कै, गरू बताया भेव। रांम नांम तुल्य दूसरा, देव न कोई सेव।—अनुभववांणी

२ सिखाना, बताना।

उ०—१ हरीया हम कुं आयकै, गुझि कहै **समझाय**। अैसा बंदा रांम का, जा सुं चित्त लगाय।—अनुभववांणी

उ०—२ बिनां ग्यांन गुन बूझिबौ, बिना सीख **समझाय**। बिनां दिस्ट जांह देखबौ, हरीया ध्यांन लगाय।—अनुभववांणी

उ०—३ राजा खुद तौ ग्यांनी नीं हौ, पण ग्यांनियां रौ आदर अवस करतौ। **समझायां** ग्यांन री बात समझ में आय जाती। —फुलवाड़ी

३ बोध कराना, ज्ञान कराना।

उ०—या अपती संसार कुं, वार वार **समझाय**। हरीया हेक न आदरै, दूजी धरै उठाय।—अनुभववांणी

४ कोई बात किसी के मन में बैठाना।

उ०—१ आडी रै अरथ री तिथ छोड ठाकर तौ कौल री झाटी अपड़ली। आखी परधै **समझाय** समझाय हार थाकी पण ठाकर अंजळ नीं लियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वींदणी ज्यूं त्यूं आप रा मन नै **समझाय**, धणी री सेवा बंदगी करण लागी। गिरस्ती रौ अरटियौ गणण गणण घूमण लागौ।—फुलवाड़ी

समझाणहार, हारौ (हारी), **समझाणियौ**—वि०।

समझायोड़ौ—भू० का० कृ०।

समझाईजणौ, समझाईजबौ—कर्म वा०।

समजाणौ, समजाबौ, समझावणौ, समझावबौ, समुझाणौ, समुझाबौ, समुझावणौ, समुझावबौ—रू० भे०।

समझायत, समझायस-सं. स्त्री.—१ बुद्धी।

२ समझाने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—समजायस, समझाइस, समझास।

समझायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ शिक्षा या उपदेश दिया हुआ. २ सिखाया हुआ, बताया हुआ. ३ बोध कराया हुआ. ४ कोई बात किसी के मन में बेठाई हुई।

(स्त्री. समझायोड़ी)

समझावणौ, समझावबौ—देखो 'समझाणौ, समझाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नैणसिंह जी कह्यौ महाराज यांनै **समझावौ**। जद स्वांमी जी समझावा लागा।—भि. द्र.

उ०—२ आतां ई वींदणी नै सीख री अमोलक बातां **समझावण** लागौ कै वा घर री इज्जत रौ सावळ जाब्तौ राखै।—फुलवाड़ी

उ०—३ सतगुरु सेनी में **समझावै**—ऊ. का.

उ०—४ खासा दिनां तांई सेठ री वीणती साव अैळी गी तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड आपरा मन नै **समझावणौ** ई सावळ जांणियौ।—फुलवाड़ी

उ०—५ वींदणी सांनीं सूं कीं **समझावै** उण पै'ला ई कांमेती रै सागै आठ-दसेक आदमी उणनैं माडांणी हाकां-धाकां रथी माथै थरकाय दी।—फुलवाड़ी

उ०—६ बेटा, म्हैं तौ पै'ला ई अै परवांणा जांणतौ हौ। पण थारौ मन राखण सारू ओड़ौ नीं दियौ। बापड़ी वींदणी रौ चूक व्है तौ उणनै **समझावूं** ई।—फुलवाड़ी

समझावणहार, हारौ (हारी), **समझावणियौ**—वि०।

समझाविओड़ौ, समझावियोड़ौ, समझाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समझावीजणौ, समझावीजबौ—कर्म वा०।

समझावियोड़ौ—देखो 'समझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समझावियोड़ी)

समझास—देखो 'समझायस' (रू. भे.)

उ०—अेक कोई सूरवीर री स्त्री आपरै पती नै **समझास** करण सारू कोई पंथी ने पूछै है।—वी. स. टी.

समझि—देखो 'समझ' (रू. भे.) (नां. मा.)

समझियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सीखा हुआ, जाना हुआ. २ समझा हुआ।

(स्त्री. समझियोड़ी)

समझीयांण, समझू-वि.—१ बुद्धिमान।

२ समझदार।

समझोतरी-सं. स्त्री.—इशारा, संकेत। (मा. म.)

समझौतो–सं. पु.—१ राजीनामा, सुलह।
२ संधि।
समझ्झ—देखो 'समझ' (रू. भे.)
उ०—कहण सुणण हय चढ क्रमण, साहंस धरण समझ्झ। 'पता' छिहंतर वरस पण, हेकण नको हरज।—जैतदांन बारहठ
समटणौ, समटबौ—१ देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)
उ०—१ ग्रधर कळी मैं बंस करि, भंवरौ रह्यौ लपटि। जन हरीया जब चीवको, सांसो गयो समटि।—अनुभववांणी
२ देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)
समटणहार, हारौ (हारी), समटणियौ—वि०।
समटिग्रोड़ौ, समटियोड़ौ, समट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
समटीजणौ, समटीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
समटांणी, समटावणी—देखो 'समठावणी' (रू. भे.)
समठांणी, समठावणी, समठुणी, समठूणी–सं. स्त्री. [सं. समुत्थानम्] दहेज।
उ०—१ तीसरे दिन समठुणी कर जांन नै विदा कीनीं छै। हीरां नै रथ मैं बैठांण केसरी बडारण नैं साथ दीनी छै। जांन ग्रहमदाबाद ग्राई छै। कपूरचंद घण हेत सु बधाई छै।
—बगसीरांम प्रोहित री बात
उ०—२ चंवरी मांहे देखियौ, धावां रा सहनांण। या समठूणी मेलियौ, पांणपखौ पाखांण।—नाथूसिंह महियारियौ
रू. भे.—समटांणी, समटावणी।
समडी–सं. स्त्री.—शमी वृक्ष।
उ०—पुहवि समडी पींपली, परणावइ परि कोडि। महिला मनसिधि माधवड, वर मागइ कर जोडि।—मा. कां. प्र.
समण–सं. पु. [सं. श्रमण] १ जोश, उत्साह उमंग।
उ०—समण वरद संपजै सबद तैसा वाजंतां। मुख विरद्द मंगिणां इसा जे सद्द कवित्तां।—रा. रू.
२ श्रद्धा या भक्ति भाव से किसी को दान देना। (ह. नां. मा.)
वि. [सं. सहमन] १ समान, बराबर।
उ०—मग्गण वित्तद सरण, मरण सरणद सरणागत। सुणि सेवक फत सुपहु, गदी गद समण जांणि गत।—वं. भा.
२ देखो 'सुमन' (रू. भे.)
उ०—तीकम पाळगर जन देवतरौ सौ शत दिनां मुख नांम ररौ सो। समण त्रास कीनास सरो सो, भारी राघवतणौ भरोसौ।
—र. ज. प्र.
समणउ, समणौ—देखो 'सपनौ' (रू. भे.)
उ०—१ ग्रेक वार उलट भरि, मा-सिउं कीधी राव। कांई कूड न राखीइ, कहिउ समणां ना।—मा. कां. प्र.
उ०—२ वलतु वचन माधव कहइ, ग्रे तु प्रेम न होइ। सिउ समणउ सपेल लहिउ, जांण न जागिउ कोइ।—मा. कां. प्र.
समत–सं. स्त्री. [सं. सम्मति] राय, सम्मति, सलाह।
वि. [सं. सम्मत] समर्थित, अनुकूल।
उ०—मेल्हि अचेत सचेत करै मन। वेद समत 'हमीर' भजे हरि।
—पिं. प्र.
२ देखो 'संवत' (रू. भे.)
समतळ–वि.—जिसकी सतह बराबर हो, समतल।
समतसर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)
उ०—समतसर विक्रम छत्तीस कम बै सहस, मास ग्रासाढ तिथि सुकल नोमी। बार सुक्कर नखत स्वांति संध्या बखत, भवांनी ग्रोतरया खुड़द भोमी।—मे. म.
समता–सं. स्त्री. [सं.] १ समानता, बराबरी, तुल्यता।
उ०—१ तिका रांणा री सभा मैं जादू समता रा संबंध रा सूचक पत्र दिया।—वं. भा.
उ०—२ चाचक देव री सूचना नूं ग्रामारा पराक्रम री समता मैं गिराहि मुहम्मद साह जाइ खेत सम्हाळियौ।—वं. भा.
२ उतथ्य ऋषि की पत्नी का नाम।
समति–सं. स्त्री. [सं. समिति] १ सभा। (नां. मा.)
२ देखो 'सम्मति' (रू. भे.)
समतूळ–वि. [सं. समतुल्य] समकक्ष, समान, बराबर।
उ०—१ हत्यौ महराबण तेण हकारि, बध्यौ महिखासुर बीर बकारि। घणा करि दाणव पत्र बधूळ, तक्या चंड मुंड त्रणा समतूळ।—मे. म.
उ०—२ फेर पिण गुलाब रो खुलतौ सो फूल, हुवै तो हुवै इण रै समतूळ। कांई पीळी नै कांई राती इण री छाती नूं ग्रोपमा दै इसी किण री छाती।—र. हमीर
उ०—३ बांघळौ विकट सादूळ बाहण बणौं, डांखियौ सीस समतूळ डालै। ग्ररौहै मूळ दुस्टां तणां उखाड़ण, भाड़क्या ढखाळण सूळ भालै।—मे. म.
समत्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)
उ०—१ वेह समत्थ वणावियौ, वाघ डाच जम बत्थ। जिण मांझल लग जाड़ियां, माय जाय गज मत्थ।—बां. दा.
उ०—२ कहूं भटा समत्थ कै दया समत्थ सत्थ दै, समत्थ ग्रत्थ साधनै समत्थ मैं समत्थ जै।—ऊ. का.
उ०—३ जगमाल महेवै जेतहत्थं, 'माले' तिलवक रावळ समत्थं। 'दूदा' सु-नंद दूसरौ 'मेघ', राठौड़ वहै व्रतत्याग तेग।
—गु. रू. बं.
उ०—४ हाथळ बळ निरभै हियौ, सरभर न को समत्थ। सीह ग्रकेला संचरै, सीहां केहा सत्थ।—बां. दा.
उ०—५ तन प्रथक नरां गण तुरंग तुंड, मट जेम फुटै गज कितां मुंड। रह थरकि रह्यौ थकि ग्ररक रत्थ, सपेख ग्रेक कंदळ समत्थ।
—रा. रू.

२ देखो 'समस्त' (रू. भे.)

उ०—१ बिसाद तोप साद मैं वहै न हत्थि हत्थ तें। इसें समत्थ काम देय हत्थि को स्व हत्थ तें।—ऊ. का.

उ०—२ हठ बादसाह नहिं परहिं हत्थ, मरुधराधीस रनवास मत्थ। सो असंभावना है समत्थ, बद कांड भरत ब्रह्मांड बत्थ।

—ऊ. का.

समत्सर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

उ०—आसाढाऊ सुद नवमि, गुण आगै रिख लेख। जिकै समत्सर जोधपुर, समहर थयौ विसेख।—रा. रू.

समथ, समथ्थ—१ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ मथ रिण उदध मांण दसमाथका, आपण सरण भभीखण अथक। सोव्रन गढ जस ओप समथ का, क्रपा कोप आखै दसरथ का।—र. ज. प्र.

उ०—२ रवि कुळ रूपरा रे, समथ सरूप रा, प्रगट अनूपरा रे, भुज रघु भूप।—र. ज. प्र.

उ०—३ जोगिण जोगी सूं कहइ, सांभळि नाथ समथ्थ। का जीवाड़उ मारूवी, हूं पिण इणहिज सथ्थ।—ढो. मा.

२ देखो 'समस्त' (रू. भे.)

उ०—पय मिथुला पथ्थं साभ समथ्थं, हण धनु हथ्थं पह पांणै। सिय परण सिधायै दुजपत आयै, गरब गमायै जग जांणै।

—र. ज. प्र.

समद—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ है थट समद जांण हिलोळ, पमगां हमस पक्खर रोळ।

—गु. रू. बं.

उ०—२ सात समद मरजाद, नहिं गिरि भार अठारा। चौरासी लख जाति, नहिं जद मंडळ तारा।—ह. पु. वां.

उ०—३ चींटी कै मुख मेर समांना, मूंसै गिली मजारी। दादुर सरप समद मैं डारघा, लौंकी परि असवारी।—ह. पु. वां.

समदकप, समदकफ—सं. पु.—फेन, भाग। (डिं. को.)

समदड़ा—सं. पु.—भाटी वंश की एक शाखा।

समदड़ो—सं. पु.—भाटी वंश की समदड़ा नामक शाखा का व्यक्ति।

समदम—सं. पु. [सं. शमदम] ऋषि। (अ. मा.)

समदर—देखो 'समुद्र' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ कूवौ तौ हुवै तौ ढोला डाक लूं जी, कोई समदर डाक्यौ नां जाय।—लो. गी.

उ०—२ डूबत नाव तारि डाढाली, उदधि किरांणै आंणी। समदर नीर सीर देसांणै, सहर अजै सहनांणी।—मे. म.

समदरसी—वि. [सं. समदर्शिन्] सब को समान देखने या समझने वाला, समदर्शी।

उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जांण्या, दुतियै कास्ट दागी। जीवन मुक्ति सदा सुखदाई, समदरसी वीतरागी।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

समदरसुत, समदरसुतन—सं. पु. [सं. समुद्रसुत] १ चंद्रमा, चांद।

(ह. नां. मा.)

२ मद्य, शराब (डिं. को.)

रू. भे.—समदसुत, समदसुतन।

समदरियौ—सं पु.—१ स्त्रियों के ओढ़ने की लहरदार ओढनी तथा पुरुषों के सिर की पाग विशेष।

२ देखो 'समुद्र' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हरसा वीर म्हारा रै मन रौ बांध्योड़ौ धीरज ना बंधै उभळे छे समदरियै री पाळ।—जीणमाता रौ गीत

३ देखो 'समंदरी' (अल्पा; रू. भे.)

समदरी—देखो 'समंदरी' (रू. भे.)

समदसुत, समदसुतन—देखो 'समदरसुत' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

समदाभंवर—सं. पु.—एक प्रकार के रंग विशेष का घोड़ा।

समदाय—देखो 'समुदाय' (रू. भे.)

समदाव—सं. पु.—समृद्धि, वैभवता।

उ०—खोहण कटक मिळै 'खेतावत', साकुर सुभट इसै समदाव। लागणहार होय तौ लेवै, राकस रखं मेवाड़ौ, राव।

—महारांणा लाखा रौ गीत

समदिस्टि, समद्रसटी, समद्रस्टी—वि. [सं. समदृष्टिन्] १ सब पर समान निगाह रखने वाला, समदृष्टा।

उ०—समदिस्टि ज्यूं सूर पवन ज्यूं लिपै न लोई। वसुधा ज्यूं मनधीर परम संगी गुर सोई।—ह. पु. वां.

सं. स्त्री. [सं. समदृष्टि] ऐसी दृष्टि जो सब को देखने में समान हो।

उ०—समद्रसटी सारा पर राखै क्या मित्र क्या द्रोही, मन रे ऐसा सतगरु जोई।—ह पु. वां.

समद्द, समद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—चतुरंग सेन असंख्यां चल्लै हेमाचळ परबत किरि हल्लै। दम दग्गै सेन रवद्दं, किरि ऊलटिया सात समद्दं।—गु. रू. बं.

उ०—२ सुरतांण दळ मेघांण वहळं, सपत समद्र पांणिय सयळं। उडियण रयणी गयणं, कुण संख्या मांनव करए।—गु. रू. बं.

समध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—कुंअर उभै कुसधज री, सत्रघन भरत समध। सधु जनक सिरहर सुवर, लखमण रावव समध।—रांमरासौ

समधणो, समधवौ—देखो 'समभणौ, समभवौ' (रू. भे.)

उ०—१ पाबूजी कह्यौ—रे! थें कहता सांढ खाधी। ताहरां थोरियां कह्यौ—राज समधा म्हांनू राज परचौ दिखायौ।—नैणसी

उ०—२ तितरै पहसोनै वागै वेसूर फळसै मैं पेसतां दीठो। ताहरां समधड़ौ समधौ, जु डांइण भली नही। समधड़ौ ऊठि नै सांम्हौ गयौ।—पीठवै चारण री वात

उ०—३ सत्र सारत समधा सब कोई, जड़लग वह गई संग

जिनोर्ड। मुहकम रुख चख जांग कमाळी, सिर चलतै केवांग संभाळी।—रा. रू.

उ०—४ ताहरां पीठवौ समधौ, ऐ तौ मोतीसर नहीं। ताहरां पीठवै कह्यौ, यै कुण छै? यै कह्यौ।—पीठवै चारण री वात

उ०—५ तद रांणौ समधौ। सताब चवरी भीतर बंधाय जांन बुलाई। सौ साथ रौ घूमरौ कुंवरसी दोळौ कीयां आवै छै। वीच कुंवरसी मोड़ बांध्यां आवै छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

समधणहार, हारौ (हारी), समधणियौ—वि०।

समधिओड़ौ, समधियोड़ौ, समध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समधीजणौ, समधीजबौ—भाव वा०।

समधरणौ, समधरबौ–क्रि. स.—१ मानना।

उ०—सीह वयण समधरै खडग ऊपाडै हत्थळ। सीहैरा सींधळी सीह ऊठ्यिा सहस बळ।—गु. रू बं.

२ धारण करना।

उ०—जे नितु रोजु करइ, नितह निम्माज गुजारइ। पंच वखत समधरइ धणी जै एक संभारइ।—व. स.

समधरणहार, हारौ (हारी), समधरणियौ—वि०।

समधरिओड़ौ, समधरियोड़ौ, समधरघोड़ौ—भू० का० कृ०।

समधरीजणौ, समधरीजबौ—कर्म वा०।

समधरियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ माना हुआ. २ धारण किया हुआ।

(स्त्री. समधरियोड़ी)

समधियोड़ौ—देखो 'समझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समधियोड़ी)

समधी–सं. स्त्री. [सं. समिध्] १ आग जलाने की लकड़ी, ईंधन।

उ०—चुण राखी चिता, काठ मळियागर केरै। पींपळ समधी प्रघळ, निच अगन घनेरै।—बी. दे.

सं. पु.—२ लड़के या लड़की के ससुराल वाले, सगे।

रू. भे.—समधि।

समधौ–वि.—१ साधारण, मामूली।

उ०—तद वीरमदै जी कयौ—रायसल रै तौ घाव समधा सा लागा है, सू हमैं आछी तरह है।—द. दा.

२ सरल, आसान।

उ०—संजम जप तप सांपरत, व्रत जुत जोग बिनांण। आंख तरच्छी इखतां, जीता समधा जांण।—बां. दा.

समन–सं. पु. [सं. शमन] १ शांति, शमन।

२ दमन।

३ काल, मृत्यु।

४ यमराज।

५ सावर्णि मनु-पुत्र।

६ दाम, कीमत।

७ चमेली का फूल।

८ यज्ञ हेतु पशु की बलि।

वि.—१ शांत।

२ जितेन्द्रिय। (डिं. को.)

उ०—तन घण बरण धरण दसरथ तण, सदय समन गरवत सहज।—र. ज. प्र.

३ देखो 'सुमन' (रू. भे.)

उ०—सुभ दिवस समन ससोह, मिट रयण संध विमोह। रवि किरण अनुक्रम रेख, बाधंत तेज विसेख।—रा. रू.

समनौ–वि.—१ उत्साह वाला, जोशीला।

उ०—रिण कमेड उठी समना रवद्द, सूरमा अठी बड़ छड़ सबद्द। सामंत रूप सामंतसीह, अजमाल सुछळ चांपौ अबीह।—रा. रू.

२ अनुकूल, पक्षधर।

उ०—कळ नावै नेड़ो कह 'किसन', आव थरु सुख आमत आथ। दख नांखे जैरै दन अदनां, नाथ थया समना रघुनाथ —र. ज. प्र.

समपण, समपणौ–सं. पु.—दान। (ह. नां. मा.)

वि—१ दानी उदार। (अ. मा.)

२ देने वाला, समर्पित करने वाला।

उ०—सूंडाळा सुख समपणा उर मैं करण उजास। मंद ग्यांन मेटै सदा, परमनंद रख पास।—नारायणसिंह सांदू

रू. भे.—समप्पण, समाप, समापण।

समपणौ, समपबौ–क्रि. स.—१ प्रदान करना देना।

उ०—१ जांमण मरण मरण फिर जांमण, जग नट गौटौ जांणौ। सौ दुख मेट अखै पद समपण, केसव नांम कहांणौ।—र. ज. प्र.

उ०—२ नवनाथ अनंत मिधांणवै, भैरव अट्ट संभरै। सुर बळ सु जोग क्रम समपिया, इस्ट नांम आदिह करै।—गु. रू. बं.

२ अर्पित करना।

३ सौंपना।

४ दान देना। (डिं. को.)

समपणहार, हारौ (हारी), समपणियौ—वि०।

समपिओड़ौ, समपियोड़ौ, समप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समपीजणौ, समपीजबौ—कर्म वा०।

संमपणौ, संमपबौ, समप्पणौ, समप्पबौ, समापणौ, समापबौ, समोपणौ, समोपबौ—रू० भे०।

समपियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ प्रदान किया हुआ, दिया हुआ. २ अर्पित किया हुआ. ३. सौंपा हुआ. ४ दान दिया हुआ।

(स्त्री. समपियोड़ी)

समप्पण—देखो 'समपण' (रू. भे.)

उ०—नमौ बिध वेद समप्पण बिद्ध, नमौ सुर काज करै हर सिद्ध।
—ह. र.

२ देखो 'समरपण' (रू. भे.)

समप्पणौ, समप्पबौ—देखो 'समपणौ, समपबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कवि तद बोलै 'केहरी' सकवी सूर सुभट्ट। बोध **समप्पण** धूहड़ां, कुळ रोहड़ां मुगट्ट।—रा. रू.

उ०—२ बांण अनै केवांण री, वेळ **समप्पण** काज। करण सनेहा सूर कुळ, तौ जेहा कवराज।—रा. रू.

समप्पणहार, हारौ (हारी), समप्पणियौ—वि०।

समप्पिओड़ौ, समप्पियोड़ौ, समप्प्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समप्पीजणौ, समप्पीजबौ—कर्म वा०।

समप्पियोड़ौ—देखो 'समपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समप्पियोड़ी)

समबरती, समब्रती, समब्रत्री–सं. पु. [सं. समवर्ती] यमराज, धर्मराज। (अ. मा; डिं. को; नां. मा.)

समभ्रम—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

समय–सं. पु. [सं.] १ वक्त, काल (ह. नां. मा.)

उ०—१ कमनैत तीरन तानिकै पखरैत बेधत पांनि कैं 'बुध' तनय हित जय प्रणय नय बय छपय रन सुभ अभय अतिसय विसय चय भुव बलय विसमय प्रलयमय भय **समय** निरदय उदय रवि नयनिलय अतिरय अजय खयकर अखय जय अय उभट सय पय हृदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।—वं. भा.

उ०—२ मास आसाढ सुकल पख मांही, तिथि नोमी बरताई। स्वांत नखत्र **समय** संध्यारी, महर करी महमाई।—मे. म.

२ अवसर, मौका।

उ०—सुणौ ठाकुरां सिरदारां, आय वणी महासूरां की वारां। औ तौ अप्रबळ थळ पायौ, वंस कै धमळ तकौ **समय** आयौ। —रा. रू.

३ फुर्सत।

४ मान, गर्व, अभिमान। (अ. मा; ह. नां. मा.)

५ रैवत मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक सप्तर्षि का नाम।

६ अजित देवों में से एक।

७ हृदयाकाश में चक्रों का ध्यान।

रू. भे.—समइ, समइयै, समइयौ, समईइ, समईयौ, समयौ, समां, समा, समिअै, समिय, समियै, समियौ, समीयौ, समें, समे, समै, समैयौ, सम्मै।

समयति, समयती–वि. स्त्री. [सं.] १ देखते ही मन में समा जाने वाली, मनमोहक; सुन्दर।

उ०—...... ..रूपपात्र गुणपात्र प्रसिद्धपात्र सौभाग्यवती प्रस्त्रति-प्रमांण लोचन विकसित मुखकमल, निरलोम एणी जंघ, समऊर युग्म कूरमोन्नतचरण अल्पमांम निरलोम दाक्षिण्यपर दयापर मया-पर क्षमापर साचाबोली हितबोली मितबोली ऊपजावकि लावकि द्रावकि **समयती** मांनयती सतीमिती अनुरक्ती सक्ती........। —व. स.

२ साध्वी स्त्री।

समया–वि.—कृपालु, दयालु।

उ०—सं कालिका सारदा **समया,** त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया। ओहं सोहं अखया अभया, आइ अजया विजया उमया।—देवि.

सं. स्त्री.—एक देवी का नाम।

समयानंद–सं. पु. [सं.] भैरव की एक मूर्ति।

समयौ—१ देखो 'समय' (रू. भे.)

२ देखो 'समो' (रू. भे.)

उ०—कुरु पिंड वेध वसुधा, अपण मंझेण झुज्झयौ उभए। कुरखेत जुद्ध **समयौ,** विणसिण काळ बुद्ध विपरीती।—गु. रू. बं.

समरंगण, समरंगणि—देखो 'समरांगण' (रू. भे.)

उ०—कुच-मरदन कप्पड़ अधर, लीइ चुरासी लाग। सुहड यथा **समरंगणि,** भडतां कोइ न भाग।—मा. कां. प्र.

समर–सं. पु. [सं. समरः] १ युद्ध, संग्राम। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सुतण दासरथ रूप लसवांन कौटक समर, **समर** जसवांन भ्रप सियासांमी।—र. ज. प्र.

उ०—२ सूर न पूछै टीपणौ, सुकन न देखै सूर। मरणां नूं मंगळ गिणै, **समर** चढै मुख नूर।—बां. दा.

उ०—३ सामंतां मौ'र चौधार यर साजतौ, **समर** बाणौ बिनै गतसाही। मारबै राव तोखार वद मेलियौ, मार सारां गजां भार माही।—नाथौ सांदू

३ लोहारशाला।

४ बेहड़ा। (अ. मा; डिं. को.)

५ युद्ध-स्थल, रणभूमि।

उ०—सनमध साच संसार सुख, पलट आज अणथाह पर। वरन खट तणी तूटी वरत, सेर आज पड़ियौ **समर**।—पहाड़खां आढौ

६ भरतवंशीय राजा पृथुसैन के सौ पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

७ बल, शक्ति, सामर्थ्य।

८ वैभव, धन-दौलत।

[अ.] ९ कथा, कहानी, किस्सा।

१० फल, मेवा।

११ बदला, प्रतिकार।

१२ परिणाम, नतीजा।

१३ देखो 'स्मर' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ अलक डोर तिल चड़स वौ, निरमळ चिबुक निवांण। सींचै नित माळी **समर,** प्रेम बाग पहचांण।—बां. दा.

उ०—२ सुतण दासरथ रूप लसवांन कौटक **समर,** समर जसवांन भ्रप सियासांमी।—र. ज. प्र.

समरअभंगी–सं. पु.—बलराम। (नां. मा.)

समरइ—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.) (उ. र.)

समरक—देखो 'समर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

समरकूप-सं. स्त्री. [सं. स्मरकूप] योनि, भग ।

समरट-वि.—योद्धा, वीर ।

उ०—पड़ै घट कटि उलट पालट गरट **समरट**, पहट गाहट विचत्र खंड खट तणां दहवट ।—ल. पिं.

समरण—देखो 'स्मरण' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सासौ सास सम्हांता **समरण**, तन मन खूब तपावै । लोह लुहार तणी गत लागै, मारोमार मचावै ।—ऊ. का.

उ०—२ माधौ राधौ केसौ ऐहो, **समरण** कर छिन छिन सुख मूळं । जाडा पापां दाहै जेही, तिलकण दहण अगण-मल तूळं ।
—र. ज. प्र.

उ०—३ हरि **समरण** रस समझण हरिणाखी, चात्रण खळ खगि खेत्र चढि । वेसै सभा पारकी बोलण, प्राणी वंछइ त वेलि पढि ।
—वेलि.

समरणा, समरणी-सं. स्त्री. [सं. स्मरण] जपमाला, माला ।

उ०—१ नायक री डबी नायक नै देवौ । हरड़ै १। सेर, **समरणा** एकमुखी रुद्राक्ष री छै, सौ हरड़े तौ कारखांनै रखायजौ समरणा देपाळ नें देजौ ।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ काया सोहइ कंचण वरणी, सोहइ हाथै सखर **समरणी** ।
—ऐ. जै. का. सं.

समरणौ, समरबौ-क्रि. स. [सं. स्मरणम्] १ स्मरण करना, याद करना ।

उ०—१ साह दरगाह बूझियै, भळै सकळ भर भार । 'केहर' ज्यूं पत छळ करै, **समरै** तिकां संसार ।—रा. रू.

उ०—२ गाड पडंतै गजपती, पूठी जोध अडूर । तूं साह आलम **समरियौ**, छौक अमूझी सूर ।—गु. रू. बं.

उ०—३ सज्जण ज्यूं ज्यूं संभरइ, देख्या आहीठांण । झुरि झुरि नइ पंजर हुई, **समर** समर सहिनांण ।—ढो. मा.

२ भजन करना ।

उ०—तास कटक मेलै दसरथ तणा, लोपि समंद लीधौ गढ लंक । मम करि ढील म धरि मन माया, **समरि** समरि स्रीरांम निसंक ।
—ह. नां. मा.

२ युद्ध करना, संग्राम करना ।

समरणहार, हारो (हारी), समरणियौ—वि० ।

समरिओड़ो, समरियोड़ौ, समरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

समरीजणौ, समरीजबौ—कर्म वा० ।

संभरणौ, संभरबौ, संभारणौ, संभारबौ, संमरणौ, संमरबौ, संमिरणौ, संमिरबौ, संवरणौ, संवरबौ, सिंवरणौ, सिंवरबौ, सिमरणौ, सिमरबौ, सिवरणौ, सिवरबौ, सुंमरणौ, सुंमरबौ, सुंवरणौ, सुंवरबौ—रू० भे० ।

समरत-सं. पु.—१ एक प्रकार का रतिबंध । (कामशास्त्र)

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

समरति—देखो 'स्मृति' (रू. भे.)

समरतिकार—देखो 'स्मृतिकार' (रू. भे.)

समरती—देखो 'स्मृति' (रू. भे.)

उ०—अस्ति **समरती** जग की जांनी, सत ब्रह्म थित थाइ । जीवन मुक्ती ऐसी जुगती, दोऊं ग्यांन दिखाई ।—स्री सुखरांमजी महाराज

समरत्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, सूर धीर **समरत्थ** । जुध मैं वांमण डंड जिम, हेली बाधै हत्थ ।—बां. दा.

उ०—२ गजपत्ती दातार गुर, सहि कांमै **समरत्थ** । रिण डोहण रिणमल जिसौ, जोध किसौ कळिमत्थ ।—गु. रू. बं.

उ०—३ नांम गोत सुण्यां लाभ घणौ कह्यौ रे, तिरण तारण **समरत्थ** ।—जयवांणी

उ०—४ सांम कांम **समरत्थ**, हत्थ दन बत्थ सवाई । अरि समत्थ गंजवा, पत्थ जैसौ वरदाई ।—रा. रू.

उ०—५ नांम राख नव खंड, प्रसिध चाडै दहुं पक्खे । साथि सांमि **समरत्थ**, रथै बैठी कथ रक्खै ।—रा. रू.

उ०—६ प्रसण हुय प्रहळाद ऊपर, हर दिखायै हत्थ । पाड़ सब्बळ देत्य पाड़चौ, करण अदभुत कत्थ । तौ समरत्थ जी समरत्थ, सारी वात हर **समरत्थ** ।—भगतमाळ

समरथंभ-वि. [सं. समरस्तम्भ] योद्धा, वीर ।

समरथ-सं. पु.—१ शिव, महादेव ।

२ क्षेमधि राजा का पुत्र, एक राजा ।

३ मत्स्यराज विराट के एक भाई का नाम ।

वि, [सं. समर्थ] १ आर्थिक,. मानसिक या शारीरिक बल पर कुछ कर सकने की योग्यता वाला, योग्य, समर्थ ।

२ बलवान, शक्तिशाली ।

उ०—१ **समरथ** सरण तुम्हारी सांइयां, सरब सुधारण काज । भव सागर संसार अपरबळ, जांमै तुम्ही जहाज ।—मीरां

उ०—२ हैदल पैदल प्रबळ हैडतौ, नीजोड़तौ कितां नर नाह । **समरथ** कही न सकूं 'सूरावत'' गुण म्हारा थारा गजगाह ।
—केसोदास गाडण

३ योग्य, सक्षम ।

उ०—थांरे लेखे नरक जावणहार थांरा गुरु ठहरया । जब घणी कस्ट हुवौ । जाब देवा **समरथ** नहीं ।—भि. द्र.

४ योग्य, ठीक, उचित ।

५ गूढार्थ प्रकाशक ।

६ जबरदस्त, जोरदार ।

७ दृढ़, मज़बूत ।

८ वीर, बहादुर ।

९ निष्णात, योग्यता-सम्पन्न ।

१० समृद्ध, धनाढ्य ।

११ बड़ा, विशाल ।

१२ सामर्थ्यवान, सक्षम ।

उ०—**समरथ** सह बात करेबा सरखौ, मोटी देव देवतां मोड़ । संकट मौ पड़ियां नवसहसा, राज तणी ऊपर राठोड़ ।

—बख्तौ ग्रासियौ

सं. पु.—शक्ति, बल ।

रू. भे.—संम्रत, संम्रथ, समत्थ, समथ, समथ्थ, समरत, समरत्थ, समरथीक, समरथ्थ, समराथ, समाथ, समारथ, सम्रत्थ, सम्रथ, ससमत्थ, ससमाथ, सांमरत्थ, सांमरथ, सांमरथि, सांमरथीक, सांमरथ्थ, सांमाथ, सिमरथ, सिमरथ्थ, सुसमाथ ।

समरथक–वि. [सं. समर्थक] समर्थन करने वाला, जो समर्थन करे ।

समरथन–सं. पु. [सं. समर्थन] किसी के मत का ग्रनुमोदन करने की क्रिया ।

उ०—साची भूठी सुणां ग्रर सहवां, पड़े **समरथन** करणौ पूर ।

—चंडीदांन सांदू

समरथा—देखो 'सामरथ्य' ।

उ०—बासें थोरी सौ पण पांणी रै विनां तिसायां मरतौ हालै पोहचण री **समरथा** नहीं ।—साह रांमदत्त री वारता

उ०—२ हरीया सांई एक है, सबै **समरथा** जांन । ऊ जळ मांही थळ करै, थळ तांह नदी निवांन ।—ग्रनुभववांणी

उ०—३ दुनीयां दुसट बुधिता होसी, मनमुख ग्यांन **समरथा** । धरता कुं करता करि जांणै, ग्ररथुं करै ग्रनरथा ।—ग्रनुभववांणी

समरथीक—देखो 'समरथ' (रू. भे)

उ०—ग्रम्हैं छां बाळा-भोळा राज छौ सबैं बात सयांणा, सबै बात पयांणा, सबै बात **समरथीक** ।—ग्र. वचनिका

समरथ्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—पैदलां हैदलां हतय प्राण, गैदलां उडावै ग्रासमांन । त्रास पड़ ग्रसुरदळ भगय तांम, **समरथ्थ** सिवौ रणजीत सांम ।

—शि. सु. रू.

समरद–सं. पु.—१ राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

[सं. समर्द] २ युद्ध । (ग्र. मा.)

समरधुका–सं. स्त्री. [सं. समर्धिका] बेटी, पुत्री । (डि. को.)

समरपण–सं. पु [सं. समर्पण] १ श्रद्धापूर्वक ग्रर्पित करने की क्रिया या भाव ।

२ ग्रादरपूर्वक भेंट या नजर करने की क्रिया या भाव ।

३ युद्ध ग्रादि में ग्रपने ग्राप को विपक्षी के हाथों सौंपने की क्रिया भाव या ग्रवस्था, हार स्वीकार करने की क्रिया ।

४ ग्रपना ग्रधिकार, स्वामित्व ग्रादि की ग्रन्य को सौंपने की क्रिया या भाव ।

५ भगवान् के विग्रह के समक्ष खड़ा करके भक्त को ग्राचारवान् वैष्णव बनाने की क्रिया । (वैष्णव)

रू. भे.—समप्पण ।

समरपणमंत्र–सं. पु. [सं. समर्पणमंत्र] गोकुलिया गोंसाईं सम्प्रदाय का प्रमुख गुरुमंत्र जो कुछ विशेष व्यक्तियों को ही सुनाया जाता है एवं जिसके ग्रनुसार शिष्य ग्रत्यधिक पवित्रता से ग्रपना जीवन व्यतीत करता है ।

समरपणी–वि.—गोकुलिया गोंसाईं सम्प्रदाय का 'समरपणमंत्र' सुनने वाला ।

उ०—सो कासू तारीफ की जावै बडौ धरमात्मा गुंसाई जी रौ सिस्य **समरपणी** हुवौ ।—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

समरपित—१ दिया हुग्रा ।

२ धारण किया हुग्रा ।

उ०—स्यांमा कटि कटि मेखला **समरपित**, क्रिसा ग्रंग मापित करळ । भावी सूचक थिया कि भेळा, सिंघरासि ग्रहगण सकळ ।

—वेलि

३ देवता को ग्रर्पित किया हुग्रा ।

४ समर्पण किया हुग्रा ।

समरपणौ, समरपबौ—क्रि. स.—१ श्रद्धापूर्वक ग्रर्पित करना ।

२ ग्रादरपूर्वक भेंट या नजर करना ।

३ युद्ध ग्रादि में ग्रपने ग्राप को विपक्षी के हाथों सौंपना, हार स्वीकार करना ।

४ ग्रपना ग्रधिकार, स्वामित्व ग्रादि ग्रन्य को सौंपना ।

५ भगवान के विग्रह के समक्ष खड़ा करके भक्त को ग्राचारवान् वैष्णव बनाना ।

समरपणहार, **हारौ** (**हारी**), **समरपणियौ**—वि० ।

समरपिग्रोड़ौ, **समरपियोड़ौ**, **समरप्योड़ौ**—भू० का० कृ० ।

समरपीजणौ, **समरपीजबौ**—कर्म वा० ।

समरपियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ श्रद्धापूर्वक ग्रर्पित किया हुग्रा. २ ग्रादरपूर्वक भेंट या नजर किया हुग्रा. ३ युद्ध ग्रादि में ग्रपने ग्राप को विपक्षी के हाथों सौंपा हुग्रा या हार स्वीकार किया हुग्रा. ४ ग्रपना ग्रधिकार, स्वामित्व ग्रादि ग्रन्य को सौंपा हुग्रा. ५ भगवान के विग्रह के समक्ष खड़ा कर भक्त को ग्राचारवान् वैष्णव बनाया हुग्रा ।

(स्त्री. समरपियोड़ी)

समरभूमि–सं. स्त्री. [सं.] युद्धस्थल ।

समरम–सं. पु. [सं. सम+रमण] समान रूप से क्रीड़ा करने का भाव ।

उ०—सेस कूरम जिर्त **समरम**, इळा सुर ध्रम निगम ग्रागम । सुखि तपोग्रण भरम प्रभ सम, मरम निध जिम माल ।—रा. रू.

समरव, **समरवी**–सं. स्त्री. [सं. रव+सम] बिजली ।

(ना. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—समरिव ।

समरस, समरसि–वि.—समान रस वाला।

सं. पु. [सं. शमरस] शान्तिपूर्ण मनोभाव।

उ०—जिणि जगि जीतउ **समरसि**, अमर सिरोमणि कांमु। विलसइ सिद्ध सयंबर, संवरगुणि अभिरांमु।—जयसेखर सूरि

समरांगण–सं. पु. [सं. समर+अंगण] १ युद्ध, लड़ाई।

२ युद्धस्थल, रणक्षेत्र।

उ०—१ करसण सेही स्याळ बिल, गिरत्रिय बांभण गाय। **समरांगण** मंह सांघणा, चाहै चित्त चलाय।—बां. दा.

उ०—२ पड़े हुवै मन संभ्रम पेख हवाल; **समरांगण** हेकल 'पाल'।
—पा. प्र.

रू. भे.—समरंगण, समरंगणि।

समराट—१ वीर, पराक्रमी।

उ०—खगां झाट **समराट** लोहलाट भांजण खळां, तीख खत्रवाट घर वाट तोरा। जणातो नह रजवाट वट 'जोधड़ा', गणाता जमी नरवीज गोरा।—जोधसिंह रावत रो गीत

२ अनाज।

३ राजा, नृप।

उ०—सुख देणो **समराट**, तोटो रोटी रो न तो। आठां पोर उचाट, जावै नह जिय री 'जसा'।—ऊ. का.

४ देखो 'सम्राट' (रू. भे.)

उ०—१ अकबर हियै उचाट, रात दिवस लागी रहै। रजवट वट **समराट**, पाटप रांण प्रतापसी।—दुरसो आढो

उ०—२ **समराटां** उछळ अड़तो 'सोदा', तू विग्रहा खड़तो रण ताळ। गाढां आरख भड़ां गई छी, पारख तो सातमैं पयाळ।
—उम्मेद जी बारहठ रो गीत

समराणौ, समराबौ—देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पांचा दिनां पछै महलां मांह दाढी **समराइ** अर बाहिर पधारिया।—द. वि.

उ०—२ ताहरां लोके सगळां दाढी **समराई**।—द. वि.

समराणहार, हारौ (हारी), **समराणियौ**—वि०।

समरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

समराईजणौ, समराईजबौ—कर्म वा०।

समराथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीमहिपति 'मांन' रीजवै गुणस्रज, कवि **समराथ** इसो नहि, कोय। 'मांन' समापै लाख मांगणां, 'जसा' 'गजन' रा विरदां जोय।—बां. दा.

उ०—२ मेछां आगळ माथ, निवै नहीं नर नाथ रो। सौ करतब **समराथ**, पाळै रांण 'प्रतापसी'।—दुरसो आढो

उ०—३ हथकोड़ो ऊंचो हुवै, सुपह चिरमियों साथ। त्रप 'जसवंत' नीचो निमै, सोनै ज्यूं **समराथ**।—ऊ. का.

उ०—४ वेचै सुकवि बडां व्योपारी, दरसण जिहाज भरे **समराथ**। किमति करि असा वायक कण, नितप्रत लिअै दूसरो आथ।
—महाराज छतरसिंघ रो गीत

उ०—५ सफै खग वाह खळां **समराथ**, नरां सिणगार 'अजावत' 'नाथ'। रिमां सिर आछट खाग रंगेस, मंडै जुध 'सूर' तणो 'मुकंदेस'।—सू. प्र.

समरायोड़ौ—देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समरायोड़ी)

समरार—देखो 'संबरारि' (रू. भे.) (अ. मा.)

समरारि–सं. पु. [सं. स्मरारि] शिव, महादेव (नां. मा.)

समरियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ. २ भजन किया हुआ. ३ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ।

(स्त्री. समरियोड़ी)

समरिव—देखो 'समरव' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

समरूप–वि.—१ समान, तुल्य।

उ०—साहजादां **समरूप**, 'भोपत' सुत चढती भरण। रावजादां रो रूप, सारंग दे कंवरां सिरै।—पा. प्र.

२ समान रूप या समान चेहरे वाला।

समळ–सं. पु. [सं. श्यामलः] १ कृष्ण हरिण।

[सं. शमलं] २ मल, विष्ठा। (डिं. को.)

वि. [सं. समल] १ खराब, गन्दा, मैला, अपवित्र।

उ०—**समळ** हुवा कपड़ा सकळ, भमळ हुवो घट भंग। कमळ बदन कुम्हलायगो, अमल खायगो अंग।—ऊ. का.

२ पापी, दुष्ट।

३ दोषपूर्ण।

उ०—सुपनै ही साभाय, न्यायव्रत चाय न चूकै। राज काज चित राग, माग अनि **समळ** प्रमूकै।—रा. रू.

४ देखो 'सिंवळ' (रू. भे.)

५ देखो 'सांमिळ' (रू. भे.)

उ०—साकणि डाकणी सकति, सकति चवसठी समोसरि। **समळ** महासिध सकति, सकति वायणी सिकोतरि।—सू. प्र.

६ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

७ देखो 'संवळौ' (रू. भे.)

उ०—१ आपड़ नोहरां अंत सूरां, धड़ ऊडै **समळ**। सोहै गुड्डी डोर सूं, उड्डी जांण अनंत।—रा. रू.

उ०—२ संग्रांम पडै ग्रीधण **समळ**. रगत पूज रेणा चडै। 'जसवंत' समोभ्रम खाट जस, प्रिथीराज भाटी पडै।—गु. रू. बं.

उ०—३ वैताल वीर मिळिया विहद, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ **समळ** ग्रीध आंमंख भक्ख, जंब्रक्क रींछ वड्डाक जक्ख।
—गु. रू. बं.

रू. भे.—संमळ।

समळा—देखो 'सम्मळा' (रू. भे.)

समळी—देखो 'संवळी' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ ग्रीभ्रणि दीयै दुड़बड़ी, **समळी** चंपै सीस। पंख झपेटां पिउ सुवै, हूं बळिहारी थईस।—हा. झा.

उ०—२ सींचांण **समळी** वळी, ग्रीध्रणि गयणि भयंति। सारसडी सायर-परि, खिणि खिणि जाइ रवंति।—मा. कां. प्र.

समळो—१ देखो 'संवळो' (रू. भे.)

उ०—१ मोती का आखा किया, कूं कूं चंदन पाका पांन। अमळी **समळी** आरती, जाइ बधेरइ दियौ मिळांण।—वी. दे.

उ०—२ उडै रजी अपार, ग्रीभ्रण **समळा** ग्रहग्रहै। सामैं छतीसह सार, दळ हालै 'गोगा' दिसी।—गो. रू.

उ०—३ खळदळां कंकळ सबळ खंड, वीर तंडै भुजवळी। सुज गळां समयं ग्रीध **समळां**, पळां भोजन परघळी।—र. ज. प्र.

२ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समळी)

समवंता—वि.—समान, बराबर, तुल्य।

उ०—हरख सोक दुख सुख तहां, नाहिं सुसुप्ति **समवंता**। द्रस्य अद्रस्य लीन हिरदा मैं, प्राग्य जीव सायंता।

—श्रीसुखरामजी महाराज

समवड़—वि. [सं. समवृति] १ समान, बराबर। (डिं. को.)

उ०—१ राजा रीत न छांडिजे, **समवड़** करौ सनेह। समवड़ सूं सुख पायजे, नीचां केहौ नेह।—जसमा ओडणी री वात

उ०—२ बूर पड़ि जंबूर बिहुं घड़, भुरज बीछड़ि पड़ै खड़भड़। विढण धरि अड़ सुहड़, **समवड़** वड़वड़े पिंड चार।—रा. रू.

सं. स्त्री.—१ समानता, बराबरी। (डिं. को.)

२ देखो 'समोवड़ियौ' (रू. भे.)

रू. भे.—समड़, समवड़ि, समवडी, समवड, समवडी, समवण, समवळ, समावड़, समीवड़, समीवड, समंबड़, समोवड़ियौ, समोभर, समोवड़, समोवण, समोवर।

समवड़णौ, समवड़बौ—क्रि. स.—सामना करना, मुकावला करना।

उ०—ढहै ढींचाळ रत खाळ खळकै धरा, जुड़ै धड़ पड़ै भड़दड़ जड़ालै। 'सता' विण अवर कुण साह सूं **समवड़ै**, पाधरै पेज मैदांन पाळै।—भरमौ आढौ

समवड़णहार, हारौ (हारी), समवड़णियौ—वि.।

समवड़िओड़ौ, समवड़ियोड़ौ, समवड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समवड़ीजणौ, समवड़ीजबौ—कर्म वा०।

समवड़ि—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—वंदता वंछित होइ अहनिसि, देखतां चित हींस ए। श्रीपूज्य जिनचंद सूरि, **समवड़ि** अवर कोइ न दीस ए।—ऐ. जै. का. सं.

समवड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—सामना किया हुआ, मुकाबला किया हुआ।

(स्त्री. समवड़ियोड़ी)

समवड़ियौ—वि.—बराबर का; बराबर वाला। (डिं. को.)

समवड़ी—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

समवड, समवडी—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—१ अकळ तुहिंज कै कोइ अवर, बोहौनांमी बूझब्ब। लिखमीवर लेखै नहीं, **समवड़** प्रांणी सब्ब।—ह. र.

उ०—२ राठौड कुंअर पक्खर रवंद, कवण (झ) **समवड** करै। जमदाढ छोड विज्जै लई, कना राउ अरबद्द रै।—गु. रू. बं.

उ०—३ जोधार अहोनिस जाळवै, जींण-साल डीलै जडी। तिण वार हुवौ हिंदू तूरक, कोई गजसिंघ **समवडी**।—गु. रू. बं.

उ०—४ संजम सिरि उर हार सोहइ, पूरव रिसि **समवडी** धरइ।

—ऐ. जै. कां. सं.

समवण—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—है नह को हिंदवांण मैं, **समवण** तो समराथ। पाळग सजन प्रताप सौ, पणधर साचौ पाथ।—ठा. मेहरदांन

समवती—सं. स्त्री.—वह घोड़ी जिसके मूंछों के स्थान पर कुछ बाल उगे हुए हों। (शा. हो.)

समवरती—देखो 'समवरती' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

समवळ—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—वधि जोर सेर विलंद दळ, साह **समवळ** दूंद। मन जोस लग ब्रहमंड, खग दाबि गुजर खंड।—रा. रू.

समवसरण, समवसरन—सं. पु—जैन तीर्थंकर जिनेश्वर के उपदेश देने का स्थान, उपदेशशाला।

उ०—१ प्रभू तेरै वयण सुपियारै, सरस सुधा हुं तैं सारै। **समवसरण** मधि सुणि मधुर, ध्वनि बूझति परसद बारै।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ **समवसरण** मां बइसी नइ, जिनवर नी वांणी। सांभलसुं साचै मनइ, परमारथ जांणी।—स. कु.

उ०—३ आप अरिहंत भलै आवियाजी, गावै अपछरह गंधरव्व। **समवसरण** रचै सुरवरा जी, संखेपै तै कहुं सरव।—वृस्त.

वि० वि०—उक्त उपदेशशाला सौधर्म इन्द्र की आज्ञानुसार कोषाध्यक्ष कुबेर ने बनवाया था। जैनमतावलंबियों के अनुसार जिनेश्वर उपदेशशाला का प्रथम कोट चाँदी का बना और कंगूरे स्वर्ण निर्मित हो। उसके भीतर १३० धनुष (४ हाथ का एक धनुष माना जाता है) की दूरी छोड़ कर दूसरा दुर्ग स्वर्णनिर्मित तथा कंगूरे रत्नजड़ित हो। इसके अन्दर १३० धनुष का फासला छोड़ कर तीसरा किला रत्नों का बनाकर कंगूरे मणि-माणिक्य के बने हो। ऐसे सुन्दर दुर्ग के मध्य भाग में ऊंची तीन कटनी वाली वेदिका (गंधकुटी) पर तीर्थंकर भगवान अष्ट प्रतिहार्य युक्त विराजते हैं। उक्त वेदिका के चारों ओर १२ विशाल कक्ष बने हैं। तीर्थंकर के ईशानकूण में १ श्रावक और दो श्राविका तथा तीन वैमानिक देव बैठते हैं। अग्निकूण में चार साधु और पांच साध्वियों तथा छः वैमानिक देव की देवियां बैठती हैं। वायुकूण में सात भुवनपति देव और वाणव्यंतर देव तथा नौ ज्योतिषी देव बैठते हैं। नैऋत्यकूण में दस

भुवनपतियों की देवियां, एकादश वाणव्यंतर देव की देवियां और बारह ज्योतिषी देवों की देवियां बैठती हैं। इस प्रकार १२ जाति की परिषदा भराती है उसे समवसरण कहते हैं।

रू. भे.—समोसरण।

समवाद—देखो 'संवाद' (रू. भे.)

उ०—**समवाद** रिखीकेस पाधरौ संभारियो क, सिवा देण गाथ रौ उचारियो सरस्स। बीछड़ेबौ साथ रौ प्रमाद भू विचारियौ क, दूजा गोपीनाथ रौ जुहारियौ दरस्स।—साहिबौ सुरतांणियौ

समवादी—देखो 'संवादी' (रू. भे.)

उ०—१ दिन दिन जोर वधै बळ दाखै, आंण 'अजीत' तणी मुख आखै। वादै सो हारै **समवादी**, सोबै सोबै वधै फिसादी।

—रा. रू.

उ०—२ गह धरती रिणमल जिण गादी, विग्रहिया खागै **सम-वादी**।—रा. रू.

उ०—३ रज रूधा रिख खेत मैं, सुरलड़ै **समवादि**।

—अनुभववांणी

समवायंग, समवायांग—सं. पु.—जैन धर्म के ३२ सूत्रों में से चौथे सूत्र का नाम।

उ०—१ सूत्र **समवायंग** मांहै निचोड़ए, तिण अनुसारै रिख 'जय-मलजी' कीनी जोड़ ए।—जयवांणी

उ०—२ चउथउ **समवायांग सुणौ** स्रोता गुणी हो लाल।

—ध. व. ग्रं.

समवायु—सं. पु. [सं. समवायः] १ समूह, समुदाय। (उ. र.)

२ घनिष्ठ सम्बन्ध।

समवेग—सं. पु.—श्रीकृष्ण के एक घोड़े का नाम।

उ०—सुग्रीवसेन नै मेघपुहप **समवेग** बळाहक इसै वहन्ति।—वेलि.

समवेत—वि.—१ अटूट सम्बन्ध युक्त।

उ०—ढोल रौ धम्मीड़ो डांडियां रौ कड़ाको अर चूड़ियां री खणक **समवेत** सुर सुं एक अनोखो रस पैदा कर री ही।—रातवासौ

२ बहुसंख्यक।

३ एक साथ मिला हुआ, एकत्र।

उ०—लुगायां रा **समवेत** सुर मैं ई सुसीला रौ तीखो सुर छांनो नीं रह्यौ। वौ कांन लगाय नै सुणण लाग्यौ हो।—अमरचूंनड़ी

समसत, समसत्त, समसथ—देखो 'समस्त' (रू. भे.)

उ०—१ आखो आजमसाह सूं, साह विरत्तै वत्त। प्रथम अकब्बर बंधिया, पाछै ए **समसत्त**।—रा. रू.

उ०—२ जाय धरै हळवद्द सूं, राज लोग **समसत्त**। नाथदवारै पर-सवा, आवी धार वरत्त।—रा. रू.

समसमा समसमी—वि.—बराबर, समान।

उ०—१ संकुड़ित **समसमा** संध्या समयै, रति वांछिति रुकमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पंख पंखियां, कमळ पत्र सूरिज किरणि।

—वेलि.

उ०—२ राति विढियौ इसी भांति नरवै रयण, **समसमी** मार देतौ सबांही। तेण उदमादियौ चंद कमधां तिलक, मांत मांदौ थियौ सूर मांही।—किसनौ आढौ

समसर, समसरि—सं. पु.—महादेव, शिव। (अ. मा.)

वि.—बराबर, तुल्य।

उ०—१ सोभन अवास सोभा सुमेर, कोटक भंडार **समसर** कुमेर।

—सू. प्र.

उ०—२ धरि जै सुत प्रतव्योम धुरंधर, सुत प्रतव्योम भांण राजे-स्वर। भांण सु जादव दिवा (क) तेज भर, सुत सहदेव हुवौ इंद्र **समसर**।—सू. प्र.

उ०—३ बे हरि हर भजै अतारू बोलै, तै अव भागीरथी म तूं। एक देस वाहणी न आंणां, सुरसरि **समसरि** सूं।—वेलि.

समसांण—सं. पु. [सं. श्मशान] १ वह स्थान जहाँ मृत शव की अंत्येष्टि क्रिया की जाती है। (डिं. को.)

उ०—१ रुत प्रति चंदण कपूर, सभै **समसांण** सफाई। विविध अमित सुचि वसत, चेहग्नि नियमि चलाई।—रा. रू.

उ०—२ हुआ ग्रीध **समसांण**, वाढ करिकां कूंबूअळ। नर हय गय पळ खीण, मत्त पळ जंबू संभळ।—गु. रू. बं.

२ कब्रिस्तान।

रू. भे.—स्मसांण।

समसांणकाळिका—सं. स्त्री. [सं. श्मशानकालिका] एक देवी जिसका पूजन उपासक माँस-मछली खाकर, मद्य पीकर और नग्न होकर श्मशान में करता है। (तांत्रिक)

रू. भे.—स्मसांणकाळिका।

समसांणपति—सं. पु. यौ. [सं. श्मशानपति] शिव, महादेव।

रू. भे.—स्मसांणपति।

समसांणपाळ—सं. पु. यौ. [सं. श्मशानपाल] श्मशान का रक्षक, चांडाल।

रू. भे.—स्मसांणपाळ।

समसांणभैरवी—सं. स्त्री. [सं. श्मशानभैरवी] श्मशान में रहने वाली देवी। (तांत्रिक)

रू. भे.—स्मसांणभैरवी।

समसांणवासणी, समसांणवासिणी [सं. श्मशानवासिनी] काली।

रू. भे.—स्मसांणवासणी।

समसांणवासी—सं. पु. [सं. श्मशान+वासी] १ शिव, महादेव।

२ चांडाल।

रू. भे.—स्मसांणवासी।

समसिउ—सं. पु.—समस्या।

उ०—किहां घटइ पारथ रहिया ति नासी, गंगेउ बोलइ **समसिउ** विमासी।—सालिसूरि

समसेर—सं. स्त्री. [फा. शमशेर] तलवार, खड्ग।

(डिं. को; ना. डिं. को.)

उ०—१ **समसेर** बांण छूटै समर, श्रा श्रोपम इण नाचनै। परियांण जांण छूटै पतंग, जावै चंदण बावनै।—सू. प्र.

उ०—२ सोढा ऊमरकोटरा, सिर कटियां **समसेर**। बाहै हणिया बैरहर, 'बांका' भारथ वेर।—बां. दा.

उ०—३ सुभट्ट विढंत वहै **समसेर**, भराळ वढीवै सूळा भेर।
—गु. रू. बं.

रू. भे.—समस्सेर, सम्मसेर।

समसेरी—सं. पु.—खड्गधारी।

उ०—हवस तिलंगा मरहटा, सूरा **समसेरी**। कोकनडां भडखंड, खग लग छेड़ा फेरी।—द. दा.

समस्टी—सं. स्त्री. [सं. समष्टि] सबका समूह, एक साथ।

उ०—निकाई छाई तें प्रकट प्रभूताई सिख नखा। **समस्टी** व्यस्टी तें सजन दिव द्रस्टी रिसी।—ऊ. का.

समस्त—वि. [सं.] १ सब, कुल, समग्र।

उ०—१ तीरथ जात **समस्त**, सकळ साधां मिळ संगा। रास तमासा रमै, हुळस नाचै हुड़दंगा।—ऊ. का.

उ०—२ मुहकम री श्रनुज लालसिंह मद्रदेस मैं श्राप री श्रमल जमाय महीस हुवौ जिणरी संतति **समस्त** माद्रेचा चहुवांण कहीजै।
—वं. भा.

२ समास द्वारा मिलाया गया, संयुक्त।

रू. भे.—समत्थ, समथ, समथ्थ, समसत, समसत्त, समसथ।

समस्नु—सं. स्त्री. [सं. शमश्रु] मूंछ।

उ०—भ्रमैं प्रत्यूह व्यूह पैं, **समस्नु** भ्रूह लौं भिरी। क्रमैं प्रत्यूह श्रोपमा, दुरूह दंत ली किरी।—ऊ. का.

समस्या—सं. स्त्री. [सं.] १ सलाह, मशविरा, विचार।

उ०—१ ताहरां थोरियां श्रा **समस्या** कीवी जु 'श्रौ छोकरौ ऊभौ छै, श्रापां श्रा सांढ लै जावां, तौ श्रापां श्राजरी वळ करां।'
—नैणसी

उ०—२ श्रै समंचार सुण ठाकुरसी जी साथ सारै सूं चढिया। सु तेली रै घर दिसा श्राया नै **समस्या** करी।—द. दा.

२ कठिन व विकट प्रसंग, उलझन।

उ०—बीतां पहर कंवर विग्रहियौ, करि बहु रुदन हेक भ्रत कहियौ। ध्रपति सुणि तिल सोच न धारै, विध करि पांण **समस्या** बारै।
—सू. प्र.

३ छंद बनाने के लिए दिया जाने वाला एक पद जिसके श्राधार पर पूरे छंद का निर्माण किया जाता है।

४ संकेत, इशारा।

उ०—१ राक्षस श्रद्रस्ट हुवौ श्रायौ सेवा मांहे बैठौ तहां राजकुंवरि राजा नूं **समस्या** कीवी।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ थै राजा रै पाइगह रा घोड़ा २ जय विजय नांम छै सु लै मरदांनो वागौ पहर खरची लै नै बाग मैं श्रायौ। मुरिखे नूं मेल्हि **समस्या** कराविज्यौ।—चौबोली

उ०—३ तहां कुळ की मरजादा छोडि लाज सौं बाहर होय, सीळ किनारै धर, **समस्या** कर संकेत स्थांन कहियौ।—बैताळ पच्चीसी

उ०—४ प्रधांन रा पुत्र नूं कहियौ—तैं दीठी? उवै कहियौ—दीठी पण थांसूं कै **समस्या** कर गई। राजपुत्र कही—श्रेक कमळ हाथ हतौ सु माथै लगाइ, कांनै लगाय, दांतै लगाइ, पगै लगाय फेर हियै थापियौ।—बैताळ पच्चीसी

समस्सेर—देखो 'समसेर' (रू. भे.)

उ०—लुग्धा सिघांणी काळ बांणी पंख वांणी बोळ ए। परबत्त मेरं जुध पेरं **समस्सेरं** तोल ए।—गु. रू. बं.

समहदी—वि.—सीमा का, सरहद का।

उ०—हुरम्मजि केची मुकरांणी, खंधार हरेबी खुरसांणी। श्रारब्बी रूमी उजबक्का, **समहदी** संभर-कंदक्का।—गु. रू. बं.

समहर, समहरि—सं. पु.—१ तलवार। (ना. डिं. को.)

उ०—केई वार निकल्यौ कंवारी घड़ामैं काढि। **समहर** भड़ां सूं बढि।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ देखो 'समर' (रू. भे.) (श्र. मा; डिं. को.)

उ०—१ खत्रवट सरम सदा थां खोळै, श्रौ हिंदवांण वचावौ श्रोलै **समहर** मौ दळ लियौ समेळा, 'भीम' सहत खूमांणा भेळा।
—रा. रू.

उ०—२ रांम प्रधांनौ राजिरो, रांमण नह धारै, **समहर** मांडौ सूरिमां, इम वयण उचारै।—सू. प्र.

समहौ—देखो 'सांम्हौ' (रू. भे.)

उ०—श्रसुर कहै मिळबा नह श्रावां, पड़ै श्राप **समहौ** निज पावां।
—सू. प्र.

समां—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—श्रायौ घणौ ऊंताळ, सरियादै हेला **समां**। बणै ठा हेकम बाळ, मिनड़ी जायां मोतिया।—रायसिंह सांदू

२ देखो 'समौ' (रू. भे.)

समांजोग—देखो 'समाजोग' (रू. भे.)

समांण—१ देखो 'समांन' (रू. भे.)

उ०—१ 'जगपत्ती' उण जोस मैं, रत्ती श्राग **समांण**। वनसपत्ती खळ जाळवा, कर तत्ती केवांण।—रा. रू.

उ०—२ सेजां मैं घर घर सखी, श्रांणी धजर श्रजांण। धारां मैं राखै धजर, सौ कुण कंत **समांण**।—वी. स.

उ०—३ धर जंगळ ऊपर फौज धिकी, जमरांण जमात **समांण** जिकी। श्रसमांणक मेह घटा उनई, दधि जांणक छोड श्रजाद दई।
—मे. म.

उ०—४ हद डांण श्रगां श्रभिमांण हरै, प्रळंबी कुरबांण उडांण परै। घट सुंदर ग्रीव कबांण घटी, पवमांण विमांण **समांण** पटी।

—मे. म.

२ देखो 'सम्मांन' (रू. भे.)

समांणी-सं. स्त्री. वि.—१ हमउम्र, समवयस्का।

उ०—१ सही **समांणी** साथि करि, मंदिरकूं मल्हवंत। सउदागर नेड़ी बहइ, सुणिवा प्रीतम-वत्त।—ढो. मा.

उ०—२ दीधा मणि मंदिरै कातिग दीपक, सुत्री **समांणियां** माहि सुख। भीतर थकां बाहिर इम भाखै, मनि लाजती सुहाग मुख।

—वेलि

उ०—३ रमा सारखी हे सखी धन्य रेखा, ब्रहीमंड बाळा लहै कोण लेखां। सहस्सां लखी सोळ एरैं **समांणी**, पचास अभेचत्र दो पट्ट-रांणी।—ना. द.

उ०—४ संग सखी सोळ कुळ वेस **समांणी**, पेखि कळी पदिमणी परि। राजीत राजकुंअरि रायअगण, उडीयण वीरज अंब हरि।

—वेलि

२ समान, बराबर, तुल्य।

उ०—मेहा मोटी खोड, मांणसनै मरवा तणी। बीजी छै लख कोड, अे **समांणी** अेकौ नहीं।—ढो मा.

३ पूरा, सम्पूर्ण।

रू. भे.—सांमिण, सांमिणी।

समांन-सं. पु. [सं. समानः] नाभिस्थित शरीर के अन्तर्गत दश वायुओं में से एक जो नाभि के पास रहती है।

वि. [सं. समान] १ बराबर, तुल्य। (डि. को.)

उ०—१ कोई काहू पावही, देही काहू दांन। सुणिया ऊनड़ सूध कवि, सुकवि उदार **समांन**।—बां. दा.

उ०—२ साहिब चुगल **समांन** है, सौ इज बुरी सुणंत। स्रोता वकता होत सम, भणिया लोक भणंत।—बां. दा.

उ०—३ सूरां ताहि न मारियै, मूवां मिटी **समांन**। जनहरिया मन मारियै, अंतर भरचा गुमांन।—अनुभववांणी

उ०—४ हाथ जोड़'र वीन रै बाप सूं बोल्यौ—सगा मिनख री दिन दसा है, सै दिन **समांन** नीं हुवै।—दसदोख

उ०—५ मसक **समांन** कांन्ह कूं मारचौ, उदनवांन जळजांन उबारचौ। निरभय किय बीकांण नरेसुर, पुनि देसांण बसायौ निजपुर।

—मे. म.

२ अनुसार, मुताबिक।

उ०—अठी दूजै साहजादै सुजासाह भी पहली री सूचना **समांन** दिल्ली रै अभिमुख प्रयांण कीधौ।—वं. भा.

३ जैसा, समान, अनुरूप।

उ०—१ द्वितीय पुत्र महाराजकुंवार स्रीचिरजीवौ घू आयु र बळ अरि मूळ उपाड़ण गरीब निवाज प्रतापीक स्रीसूरय **समांन** कुंवर स्रीदळपत जी रौ जनम हुवौ।—द. वि.

उ०—२ कटधा घण सजळ छजळ कांन, सिरगिर कज्जळ कूट **समांन**। सवूदित साप समाक्रत सुंड, दंतूसळ मूसळ रूप दुरंड।

—मे. म.

क्रि. वि.—१ ही।

उ०—इतरा मांही सारां री नजर काळ-रूप दीठौ। देखतां **समांन** कायरां रा प्रांण घुटणै लागिया।—डाढाळा सूर री बात

२ देखो 'सम्मांन' (रू. भे.)

३ देखो 'सांमांन' (रू. भे.)

उ०—मारग मैं बात करी, पूजा री **समांन** डूमां री सन्मांण अर कळस भळै इक्कीस तथा इग्यारै घालसी।—दसदोख

रू. भे.—समांण।

समांनता-सं. स्त्री. [सं. समानता] समान होने का भाव, समानता।

समांनाधिकरण-सं. पु. [सं. समानाधिकरण] किसी वाक्यांश में किसी समानार्थी शब्द को स्पष्ट करने के लिए आने वाला शब्द।

(व्याकरण)

समांनासन-सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक आसन विशेष, जिसमें स्वस्तिकासन की तरह बैठ कर दोनों हाथों की तर्जनी और अंगूठे के बीच में प्रदेश से कटि को दबाना होता है और तर्जनियों के अग्र भाग में नाभिप्रदेश को जोर से दबाना पड़ता है। इससे समानवायु बलवान होता है।

समांनिका-सं. स्त्री.—एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण, एक जगण तथा अन्त में एक गुरु होता है।

समांनोदरज-सं. पु. [सं. समानः+उदर्यः] सगा भ्राता, सहोदर।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

समांम-सं. स्त्री. [अ. शमाम] सुगंध, महक।

समांमी-सं. स्त्री. [सं. सामान्य] वैभव, एश्वर्य।

उ०—जोइयौ दूलजी लक्खी जंगळ मैं रहै। सारी बस्ती कन्है रहै बडौ **समांमी** रौ सरदार।—दूलजी जोइया री वारता

समांमौ-वि. (स्त्री. समांमी) १ वीर, बहादुर।

उ०—नरां नाह पतसाह छोडाड सकियौ नहीं, **समांमौ** कमंध जोय निमांमी सिंध। आपरां वडेरां खाटिया अखाड़ा, 'करण' ग्यौ पवाड़ा बांधिया कंध।—करणसिंघजी रौ गीत

२ बढिया, उत्तम।

उ०—१ सभै **समांमा** सूर वै, साज बाज संग्रांम। आपो मेटै हरि भजै, हरीया भेटै रांम।—अनुभववांणी

उ०—२ सुत 'जगरूप' व्रजागि **समांम**, रिमां खग फाग रमै भड़ 'रांम'। वधै हरिनाथ समोभ्रम 'वांन', खळां खग भाटत साहिब-खांन।—सू. प्र.

३ अनुकूल, पक्षीय।

उ०—बांदि बांदि फुरमांण, सिलह पाखर करि सांमा। आय सबै उमराव, सूर बहु मिळै **समांमां**।—सू. प्र.

४ मिलनसार।

उ०—घरां हरख खुस्याली सुं सोकां सुं इसौ सुख लीयां हालै सु कोई इव न जांणै जौ ऊंचा बोलजै। जौ कही री छोकरी-सहेली क्युं टुग्टुराटौ करै तौ आप डेरै जाय ललोपतौ मुनहारां कर आवै। मन-खांत कही सुं पड़ न देवै। ऐसी स्यांणी समांमी सौ सारौ राहणौ राजी।—कुंवरसी सांखला री वारता

४ अनुरूप, समान।

उ०—जांमौ दोयसै हाथरौ अंगा सौ हाथरौ पायजांमौ, समांमौ त्रिखग वेटौ लपेटौ सकाज। आफाळियौ राळियौ सांकड़ै तुरी सदा न चालै, उजाळियौ वांकड़ै वांकड़ापणौ आज।—करणीदांन कवियौ

५ समान प्रतिष्ठा वाला।

उ०—दहुवै दळां वाजिया दमांमा, सूर समांमा बै सुभट। रामां'रा माथै सरिस रण, 'परसा' रा माथै प्रगट।

—मदनसिंघ नैं सूरसिंघ रौ गीत

समा—सं. स्त्री. [फा. शमा] १ मौमबत्ती।

२ लहंगा जाति की एक शाखा जो पहले यादववंशीय क्षत्रिय थे। प्राचीन समय में इनका राज्य जामनगर, भुज आदि प्रदेशों में था।

३ यादववंश (भाटीवंश) की एक शाखा।

सं. पु. [अ.] ४ आकाश, गगन।

५ दृश्य, नजारा।

क्रि. वि—१ ही।

उ०—१ समाचार सुणतां समा, उर अति जोस अमीर। दिया नगारा सांमुहा, सर्भ अकारा मीर।—रा. रू.

उ०—२ चडतां नृपति समा भड़चडिया, जोपै रूप सनाहां जड़िया। खह रूकि गरद वधे अस खड़िया, नीरधबंध जांणि नीमड़िया।

—रा. रू.

२ देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—समा बिगडसी सेंग, नीत बिगड़सी न्यारी। देस बिगड़सी, दसा, क्यारी सूं पीगी क्यारी।—ऊ. का.

समाइ, समाई—वि. [सं. समाधि] समाधिस्थ, ध्यानमग्न। (जैन)

सं. स्त्री. [सं. सामायिक] १ समाधिस्थ या ध्यानमग्न होने की क्रिया।

२ वह क्रिया जिसके द्वारा आत्मा में सम भाव रखा जाय।

उ०—१ एक गोचरी महाजनां री करावै। सौ स्वांमीजी गोचरी ऊठ्या पिण लोकां रै बंदौवस्ती, भीखणजी नै एक रोटी देवै तौ इग्यारै समाइ दंड री। जठै जाय जठै आहार पांणी री जोगवाइ पूछयां कहै म्है तौ थांनक मांह समाइ करां।—भि. द्र.

उ०—२ सौ स्वांमीजी गोचरी ऊठ्या पिण लोकां रै बंदोबस्ती, भीखणजी नै एक रोटी देवै तौ इग्यारै समाइ दंड री। जठै जाय जठै आहार पांणी री जोगवाइ पूछयां कहै म्है तौ थांनक मांहै समाइ करां।—भि. द्र.

३ क्षमा करने की क्रिया।

उ०—दादू बहुत बुरा किया, तुम्हैं न करना रोख। साहिब समाई का धनी, बंदे कौ सब दोख।—दादूवांणी

रू. भे.—समाही।

समाक—सं. पु. [अ.] वह अत्यन्त कठोर पत्थर जिसकी खरल बनाई जाती है।

समाक्रत—वि. [सं. समाकृति] १ समान आकृति का।

उ०—कट्या घण सजळ छजळ कांन, सिरीगिर कजळ कूट समांन। ससूदित साप समाक्रत सूंड, दंतूसळ मूसळ रूप दुरंड।—मे. म.

२ एक समान, अनुरूप।

समागम—सं. पु. [सं.] १ आगमन, मिलन।

२ मुठभेड़, भिड़ंत।

उ०—गढ जंगम जंग समागम का, जुलमी अतिकाय धका जमका। सुघटा घट घाट घटा सरसै, रसतारव डांण पटा बरसै।—मे. म.

३ मैथुन, संभोग।

उ०—१ तहां भुंइ गोरी छै। कहां ठै पांणी झलकै छै। जैसैं प्रथम समागम कै विखै। नाइका का वस्त्र उतारि लिया हुइ।—वेलि

उ०—२ निहसै वूठौ घण विणु नीळांणी, वसुधा थळि थळि जळ वसइ। प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीधे किरि ग्रहणा लसइ।

—वेलि

उ०—३ छेहड़ै री राति गांठि छूटी छै। सु जांणै मन री गांठि छूटी छै। राजांन कुमार घणैं हरख सूं आणंद सूं उछाह सूं नवल रंग, नवल नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम सुख सेझ री वात उहां हीज जांणी पिण बीजौ उण सुख उण वातां कुण जांणै।—रा. सा. सं.

३ अवसर, संयोग।

उ०—तठां उपरांति करि नै राजांन सिलांमति वीमाह रै समागम प्रथम दूलह दूलहणी मिळण रौ कोड रंगरळी बधांमण कीजै छै। रंग महलैं धवळहरै पधरावीजे छै।—रा सा. सं.

४ मिलन।

५ सत्संगत।

६ बहुत से लोगों के एकत्र होने की क्रिया।

समाचरण, समाचार—सं. पु. [सं. समचरणं, समाचार:] १ भली भांति आचरण करना।

२ संदेश, खबर। (डि. को.)

उ०—१ पण नंदलाल गै'णौ गळा लेणौरो समाचार खुदो खुद सुणा देवै, जद सेठां रै जी में जी आवै है अर केवै—वांणिया रै बेटां री आ ही बात।—दसदोख

उ०—२ तै किम भैंस व्यायां एक महिनां तांइ दूध, दही, वाबर देवै पिण विलोवै नहीं। तै देवी रै टांणै पधारज्यौ। जद स्वांमीजी कह्यौ—थांरै कद भैंस व्यावै नै कद देवी हुवै। म्हांनै कद समाचार हुवै नै म्हैं आवां।—भि. द्र.

उ०—३ कुंदणपुर हुंता वसां कुंदणपुरि, कागळ दीधौ एम कहि। राज लगै मेल्हियौ रुखमणी, समाचार इण माहि सहि।—वेलि

२ सामान्य बात। (डिं. को.)

३ हाल, ब्यौरा।

उ०—चोर पिण घणौ राजी हुवौ। साहजी म्हां सूं वणौ उपकार कीधौ। पछै चोर पोता रै ठिकांणै आय चोरां रै न्यातिला में समाचार कह्या। तै सुणनै द्वेष चढ्या।—भि. द्र.

रू. भे.—समंचार, समचार, समिचार, सामाचार।

समाचारपत्र-सं. पु. [सं.] वह पत्र जिसमें समाचार प्रकाशित होते हों। अखबार।

समाज, समाजि-सं. पु. [सं. समाजः] १ बहुत से लोगों का समूह या झुण्ड। (अ. मा.)

उ०—बिना सुधार मानव समाज मैं इयै सूं कोई नहीं बच सकैलौ। आज हमां तौ काल तमां।—दसदोख

२ एक जगह रहकर एक प्रकार का कार्य करने वाले लोगों का वर्ग, दल या समुदाय।

उ०—चित चाह उछाह पथा चुणियै, सब संत समाज कथा सुणियै।—ऊ. का.

३ समूह, दल।

उ०—१ गलमुंडमाळ मसांण-ग्रह, संग पिसाच समाज। पावन तूझ प्रभावसू, संभु अपावन साज।—बां. दा.

उ०—२ सोहै अंगिया ओट, हरी रंग साज मैं। दुड़िया चकवा दोय, सिवाल समाज मैं।—बां. दा.

उ०—३ दिती सुत सुंभ निसुंभ बिदारि, कई रतबीज गई अड-कारि। मुणी जिण कीरत पीर समाज, रजा जिण सीस धरी जमराज।—मे. म.

३ साथी, संगी।

उ०—आहुड़ै आरांण बीच गहलौत उमंदा अठी, बाखांण धांधलां दूण पैंतीस विचार। पाबू साथ तेरा-बीसी प्रलोक समाज पायौ, सूर चंद मही जितै कीरत्ती संसार।—बादरदांन दधवाड़ियौ

४ हस्ती, हाथी। (डिं. नां. मा.)

उ०—जुग जुग भीर हरौ भक्तन की, दीनी मोक्ष समाज। मीरां सरण गही चरनन की, पैज रखौ महाराज।—मीरां

५ सभा। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

६ सामान, सामग्री।

उ०—प्रभातै संवार होय सांडियां ठिकांणै पूगी, पायौ सोढां घरै सारी वात रौ प्रमांण। सांभळी प्रभत्ती कानां टीका रौ समाज साज्यौ, ओपै कोळमंड पाबू अगंजी दीवांण।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

७ परिग्रह।

उ०—बड तप भूप 'बनेस' विभव अति विलसियौ, करि गुणवांनां कदर हियै घण हुलसियौ। संपत राज समाज विसेस वधावियौ, अलवर गढ आंमेर जिसै छक छावियौ।—सिवबक्स पाल्हावत

रू. भे.—सांमाज।

समाजोग-सं. पु.—१ मेल, मिलाप।

२ संसर्ग, सम्बन्ध।

३ शुभ योग।

४ कोई आकस्मिक घटना।

५ किसी कार्य के लिए कुछ लोगों का होने वाला मेल-मिलाप।

६ समय का ऐसा योग जिसमें कोई एक या एक से अधिक घटना साथ-साथ घटित हो, संयोग, इत्तिफाक।

उ०—१ इण भांत छमरक छमरक झमरक झमरक डोकरी रा दिन सुख सूं रळकता हा कै समाजोगरी बात अैड़ी बणी कै अेक दिन अेक राजकंवर डोकरी री उण टपरी रै गळाकर सिकार करण सारु निकळियौ तौ टपरी रै मांय किणी नै बोलतौ सुण वौ अणछक ढब्यौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ डोकरी नै मारग काटणौ भारी व्हैगौ। बिसाई खावती खावती टुळक टुळक पग ठिरड़ती चालती ही। समाजोग री बात कै अेक असवार घोड़ै चढ्यां उण इज मारग धकै निकळियौ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ इकदा समाजोग रै विखै एक गायां रै एवाळौ आयनै पुकार घाली—जो माहार गायां चरावा जावां, जिण रोही मैं सूर एक हाल्यौ छै, सू गायां नै दुख देवै छै, तीण रौ जावतौ कीजौ, ज्यूं गायांन सुख होवै।—रीसालू री बात

७ भीड़, जनसमूह।

८ देवयोग।

उ०—अेक दिन समाजोग री बात अैड़ी बणी कै आधी ढळियां चार बावरी वां इज सेठां री हवेली चोरी करण सारू आया।

—फुलवाड़ी

९ दोस्ती, मैत्री।

१० कारण, हेतु।

११ सम्भावना।

१२ अवसर, मौका।

उ०—१ हिवै हिरण इकदा समाजोगै अगलौ नै कुंवरजी वातां करता अगलौ बोलियौ—स्रीमहाराजकुंवार! म्हारा जतन आप घणा करौ छौ, खांण दांणा री कुंमी काई न छै।

—रीसालू री बात

उ०—२ ताहरां एक दिन रौ समाजोग छै। राव चवंडौ साथ कर नै नागोर माहै जाय पैठौ। रोज आवतौ। अपरचौ कोई न हुंतौ। जायनै खोखर नूं मारियौ।—नैणसी

उ०—३ यूं रहतां थकां, एक दिन रौ समाजोग। सांवत संढायच चारण थटै रै पातसाह रै घोड़ै दरियाई ऊपर चरवादार हुंतौ। एक दिन सांवत घोड़ौ लेनै नीसरियौ।—नैणसी

१३ भाग्य, तकदीर।

उ०—१ पण अेक दिन समाजोग री बात अैड़ी बणी कै किणी अेक मूंजी रै खूंटै घणा दिनां तांई फगत राहड़ी रा जोर माथै गाय बध्योड़ी नीं री। पेट री भूख रौ खूंटा री राहड़ी सूं करार वत्तौ हौ। खाली ठांण सूं कित्ताक दिन तांई माथौ फोड़ती। हूचटौ देय खूंटै बंधी राहड़ी तोड़ न्हाकी। पूंछड़ौ पाधरौ करनै दीठ री सोय सोकड़ मनाई जकौ पाछौ खाली ठांण सांम्ही मुड़नै ई नीं जोयौ। जोग री बात कै न्हाटी न्हाटी इण इज विकट जंगळ मैं आय बाजी। अनाप चरणोई। अनाप चारौ। गाय रै भाग रौ तौ भगवांन तूठौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ बांमणी इण विध कूकती कूकती ऊजड़ निंदरोही मैं मन करै उठीनै ई दौड़ती जावती। समाजोग री बात कै गिगन मैं उण वगत संकर पारवती उड्या जावता हा।—फुलवाड़ी

रू. भे.—समायोग, समेजोग।

समाणौ, समाबौ—क्रि. अ.—१ अवसान होना, मृत्यु होना।

उ०—१ महाराज गजसिंघजी समाया सौ मरती वार उमराव मुत्सद्दियां नूं जसवंत सिंघ जी री भोळावण दीन्ही।

—अमरसिंघ री बात

उ०—२ पीछै करमचंद तौ समायौ। तद महाराज फेर मातमपोसी नूं उणांरी हवेली पधारिया। तथा लखमीचंद, भागचंद नूं वडी खातरी फुरमायी। अर पाछा डेरां पधारिया।—द. दा.

२ व्याप्त होना, विद्यमान होना।

उ०—१ सुसुप्ती मैं सुख घर करलै, सुंन बिच सहज समायगा रे। त्वं पद तत पद असी पद ऊपरै, वां कोई विरळा जायगा रे।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ पण उण असेंधी ठौड़ मैं ई जांणै जलम जलम री पिछांण घुळियोड़ी है। पांणी मैं जिण भांत निवास अर ठंडक समायोड़ी रैवै उणी भांत सासरा रा नाता रिस्ता मैं उमंग, कोड अर हरख अेक-मेख समायोड़ा रैवै।—फुलवाड़ी

३ व्याप्त होना, फैलना।

उ०—प्रथी अंबु तेज वायु आकास समाणी प्रभा, बडाबडी कहांणी अनंता प्रळै वार। रुद्रांणी ब्रह्मांणी महारांणी स्री जांनकी राधा, देवी त्रिहूं लोक प्रांणी बांधा माया द्वार।—मालौ सांदू

४ फैलना।

उ०—इळा नभ भाळ पाताळ खप उपावण, कपावण काळ विकराळ केवी। सुकर प्रतमाळ किरमाळ जग समांणी, दिपै डाढाळ घटियाळ देवी।—खेतसी बारहठ

५ एक रूप होना।

उ०—१ दादू मीठा रांम रस, एक घंट कर जाउं। पुणग न पीछै कौ रहै, सब हिरदै मांहि समाउं।—दादूबांणी

उ०—२ समांणौ तूझ मही घणस्यांम, राघव्व अम्हीणौ आतमरांम। सेवग्ग पयंपै तेजस मौ ह, बिसंस रखै हिव थाय बिछोह।

—ह. र.

६ मिलना, विलीन होना।

उ०—सम माई क्रिया सब थांकी, ज्यूं सलीता सिंधु समाई। पांच पचीस लीन कर सबही, साक्षी स्वरूप रहाई।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

७ विलीन होना।

उ०—पित पौत्र पितामह पाधरि, मित देवळ ऊतरिया मरि मरि। पोत्रै धज चाढीतां ऊपरि, सुजहरि जोत समांणा समहरि।

—अखैसिंह चांपावत रौ गीत

८ समाहित होना।

९ धंसना, गड़ना।

उ०—लुहारी थारा पीव रा हाथ नहीं पूजूं, नहीं बखांणूं। बगतर इसौ काठौ घड़ियौ सौ जुध्ध री समै पती पहरियौ सौ काठौ हुवौ नै टोपरी कड़ी समांणी बैस गई।—वी. स. टी.

१० मिल जाना।

उ०—१ हरीया हेरत हेरतौ, हेरत ही रह्यौ हेर। बूंद समांणी समंद मैं, हेरी जाहि न फेर।—अनुभववांणी

उ०—२ पांणी तैं पाळा हुवा, पाळा फिर पांणी। यूं सिव हु तै जीव हुय, जीव सीव समांणी।—अनुभववांणी

११ अदृश्य होना, ओझल होना, लुप्त होना।

उ०—हरख रा ढोल घुरीजण लागा अर निछरावळां व्ही जित्तै बीज रौ चांद धरती मैं उंडौ समायग्यौ।—फुलवाड़ी

१२ लीन होना।

उ०—१ दादू भावें भाव समाइ लै, भक्तै भक्ति समांन प्रेमैं प्रेम समाइ लै, प्रीतैं प्रीति रस पांन।—दादूबांणी

उ०—२ जहां रांम तहं मन गया, मन तहं नैंना जाइ। जहं नैंना तहं आतमा, दादू सहज समाइ।—दादूबांणी

१३ समाधिस्थ होना, अन्तर्ध्यान होना।

उ०—पउढिया पांन प्रियाग तणाइ प्रभु, कोळी यतरउ रूप कर। जुग केतै एकै जागविया, धुरा समाया ध्यांन धर।

—महादेव पारवती री वेलि

१४ स्थित होना।

उ०—ऊजळै अदरसणि निसि उजुयाळी, घणूं किसूं वाखांण घणौ। सोळह कळा समाइ गयौ ससि, ऊजासहि आप आपणौ।

—वेलि

१५ धारण करना।

उ०—लिछमन जती सीलव्रत लेकै, सांम्रत अंग समाई। बरख चतुर दस बन रघुवर की, करी कठिन सिवकाई।—ऊ. का.

१६ मिटना, अंत होना।

१७ स्थिर होना।

उ०—दादू सुरतैं सुरति समाइ रहु, अरु बैनहुं सौं बैन। मन हीं सौं मन लाइ रहु, अरु नैनहुं सौं नैन।—दादूबांणी

१८ निवास होना।

१९ प्रविष्ट होना।

उ०—सोई खुड़द आज दिन सांप्रत, स्रीदुरगा सकळाई। मूरत अतुल भेख मरदांनूं, सूरत ह्रदय समाई।—मे. म.

२० होना।

उ०—पांणी मैं जिण भांत निवास अर ठंडक समायोड़ी रैवै उणी भांत सासरा रा नाता-रिस्ता मैं उमंग, कोड अर हरख अेक-मेख समायोड़ा रैवै।—फुलवाड़ी

२१ अनुरक्त होना।

उ०—१ गंगी री बेटी खासी मोड़ी सूती ही। दो-तीन घड़ी दिन चढ्यौ जितै ई ऊठी नीं। जित्तै बादळ रा मन माथै उणरै उणियारा री चित्रांम कुरग्यौ। मांचा माथै सूती जकी बाळ-अपछरा उणरै हिवड़ा मैं समायगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ सोना रा कचोळा मैं केसर घोळ्योड़ौ दूध पावती। खुद उणरै अेंठवाड़ौ दूध पीवती। सिझ्या रौ अंधारौ व्हैतांईं उण मोव्यार रा हिवड़ा मैं समाय जाती।—फुलवाड़ी

२२ देखो 'संभाणौ, संभावौ' (रू. भे.)

२३ देखो 'मावणौ, मावबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हूं हेली अचरज कहूं, घर मैं बाथ समाय। हाकौ सुणतां हूलसै, मरणौ कोच न माय।—वी. स.

उ०—२ प्यारा वै दिन बीत या, बिच न समातौ हार। अबतौ मिळबौ कठण है, पड़ै ज बीच पहार।—अग्यात

उ०—३ वरसतै दड़ड़ नड़ वाजिया, सघण गाजियौ गुहिर सदि। जळनिधि ही सामाइ नहीं जळ, जळबाळा न समाइ जळदि।
—वेलि

समाणहार, हारौ (हारी), समाणियौ—वि०।

समायोड़ौ—भू० का० कृ०।

समाईजणौ, समाईजबौ—भाव वा०।

संमाणौ, संमाबौ, संमावणौ, संमावबौ, समावणौ, समावबौ
—रू० भे०।

समातार-सं. पु.—सदस्य, सभासद। (डि. को.)

समाथ-वि.—१ ऊपर किये हुए, उठाए हुए।

उ०—खागां सेलां डोरियां बीरता मत्ता बीर खेत, मांझी दत्ता जांनकूं अजार जांणी मींच। उभै मेक मलां हूं समाथ हाथ कियां आयौ, भाराथ रौ पाथ राव अेका अेक भीच।
—ऊमेदसिंघ हाडा रौ गीत

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ भोज भुजां बळ थंभणां, मुड़तां गयण समाथ। सांम बगबत सीम बळ, जोड़ै भीम कि पाथ।—रा. रू.

उ०—२ कळह घणां ही कटक नूं, सुछम गिणै समाथ। नवहत्था वाळी नरां, है छाती सौ हाथ।—बां. दा.

उ०—३ दीनां पाळगर धन सुतन दसरथ, सकज सूर समाथ। रिणखेत भंजण सकुळ रांवण, नेतबंध रघुनाथ।—र. ज. प्र.

उ०—४ चंपा चौरंग अग्गळा, कांन्ह अनै हरनाथ। सोजत ऊपर हल्लिया, बांधै फौज समाथ।—रा. रू.

उ०—५ नरइंद अभौ नवकोट नाथ, सरि करण सतरि धरवर समाथ। अहमंद नगर खाटण अनूप, रस वीर प्रगट घट विकट रूप।—रा. रू.

उ०—६ मांनसिंघ कमधज्ज, मऊ सीतापति साथै। चंद्रावत गोपाळ, राव भड़ लियै समाथै।—रा. रू.

समाद—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—देवी चांवंड रै थांन आगै जरब छै सु राजा सूरसिंघजी री वार मैं सोनारै खिणाई। तिण ऊपर चोतरौ छै समाद रौ सनीयासी परसाद गिरी रौ पंचोळी नैंना रा घर आगै सं. १६६०करायौ।—मारवाड़ री ख्यात

समादांन-सं. पु. [फा. शमादान] १ प्रायः धातु या शीशे का वह पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है।

[सं. शमऽऽदान] २ जैनियों का आह्निक कृत्य विशेष। (जैन)

३ क्षमादान।

समादियौ—देखो 'समाधियौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां लिखमी निसासौ मूंकियौ। ताहरां नरौ बोलियौ—मा! निसासौ क्यूं मूकियौ? थांहरै बाघै नरै सरीखा बेटा, अर रावजी पण समादिया। थां रांणीपदौ पायौ।—नैंणसी

समाध-वि.—स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

उ०—उठै कंवर गजसिंघ नूं सीतळा नीसरी। कंवरजी रौ डील रुड़ौ नहीं, तरै भाटी गोयंददास मोहणदास नूं कंवरजी ऊपर वारियौ। कंवरजी रै डील समाध हुई, मोहणदास रांम कह्यौ।
—नैंणसी

सं. स्त्री.—१ तन्दुरुस्ती, स्वस्थता।

२ देखो 'समाधियौ' (अल्पा; रू. भे.)

३ देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—१ माठा पांव देतौ आयौ बाबरैल डाळामथौ, जांठौ भू समाध लेतौ जगायौ जोगंद। दूबारै जमायौ प्यालौ जवांनी जोसैल दोला, मांटीपणै बातळायौ गोसैल मयंद।—दौलतसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ भूवा रै सांमी धरनै कंवरा लागौ—कारीगर किसा अेक सारीखा व्है। फगत अेक जीव री खांमी है। फूफौजी तौ अेड़ा लागै कै जांणै अतुट समाध मैं बिराजिया।—फुलवाड़ी

उ०—३ जलमता बाळक रौ रोवणौ दुनियां री सगळी हंसी रौ सार, उणरौ बीज रूप। हाथ मांयला टाबर री कैं कैं सुणतां ईं मासी री समाध तूटी।—फुलवाड़ी

समाधांन–सं. पु. [सं. समाधान] १ चित्त को एकाग्र कर ब्रह्म में लगाने की क्रिया या भाव। (डिं. को.)

२ किसी प्रश्नकर्त्ता को ऐसा उत्तर देने की क्रिया जिससे उसकी जिज्ञासा पूर्ण रूप से हल हो सके।

३ वह युक्ति जिससे किसी समस्या को हल किया जा सके।

४ संतोष, धैर्य।

उ०—अर गुजरात छूटां केड़ै सोलंखियां री केही पीढी अजमेरा मैं रहियां पछै उगां रै पाटवी गोइंदराज इण ही समय रै समीप टोडा रा अधीस गोळवाळ चहुवांण सातू पातू दो ही भाइयां नूं मारि टोडा रौ राजा हुवौ।

जिकण नूं मीणां रा मारण रौ निस्चय जणाइ उणरौ बडौ पुत्र कुंभराज निणहूं छोटौ कन्हड़ यां दो ही बंधवा नूं बडी बरात रै साथ बरण नूं बुलाई मीणां रै मावण जिसड़ौ एक बाड़ौ जुदौ ही बणायौ।

गोईंदराज कहाई म्है गोळवाळां नूं मारि टोडौ लीधौ अर आप गोळवाळ री पुत्रियां नूं बिबाहण रै काज म्हारा कंवरां नूं तेड़ौ जठै सत्रुता री संका हुवै इण कारण आपरा बारहठ हरसूर नूं प्रतिभू करि अठै भेजि उण रा धरम रौ वचन दिवाइ आपरी पुत्रियां करि बिबाहौ जरै बरात आवै।

सोही स्वीकार करि कुंभराज, कन्हड़ दो ही कुमरा नूं बुलाया जांणि जसराज भी याही अरज कीधी जठै कुमार कहियौ मीणां ही प्रसभ पूरबक बळ ही सौं बर बणता जिण बीच टोडा रा राजा समता रा संबंधी सोलंखी रा सुत सत्रु भी उचित खटावै। इसडी कहि अंत्यजां रै उचित बाडा मैं बारूद बिछाइ जिकण मैं बरात हूं एक प्रहर पहली संबंधियां समेत समग्र ही मीणां नूं बुलाइ आसव मैं अति मत्त कीधा।

अर बरात न पूगै जिण पहली बारूद मैं दमंग देर उडाइ दीधा।

बरात रा **समाधांन** पर आपरा सुभट सचिव राखि तत्काळ ही बूंदी आइ अमल कीधौ।

जठै आपरौ थांणौ राखि पाछौ ऊमर थूणें जाइ आसाढ क्रस्ण नवमी कुज बार रा लग्न पर गोळवाळ री दो ही पुत्रियां रौ बिबाह चालुकराज रा दो ही कंवरा रै साथै कर दीधौ।—वं. भा.

५ सयोग।

उ०—१ सातल जोधावत जोधपुर रहै। एक दिन रौ **समाधांन** छै, सातल मंडोहर रीयां वाड़ीयां गयौ। तठै माळी कह्यौ, 'राज, अजांण वाड़ी मांहै मतां वड़ौ। औरां वाड़ीयां जावौ।

—सातल जोधावत री वात

उ०—२ एक दिन रौ **समाधांन** छै। चेजौ कर दोनै पाछियां आवै छै। बीच पांणी रौ वाहळौ छै। सु नाहरी तौ डाक मार पार हुई। अगी जिजकाय अर ऊभी रही।

—नाहरी हरणी धरमैकै सांवता री वात

समाधायौ—देखो 'समाधियौ' (रू. भे.)

उ०—तितरै दिन ऊगौ। लाखोजी बैठा छै। मनभोळियै आइ आसीस दीधी। लाखोजी कहै, 'मनभोळिया', **समाधायौ** छै रे? कह्यौ, 'जी जीवै लाखो लाखवरीस।—लाखौ फुलांणी री वात

समाधि–सं. पु.—१ देवि भक्त एक वैश्य का नाम।

सं. स्त्री. [सं. समाधिः] २ योग के आठ अंगों में से एक मुख्य अंग जो योग का चरम फल माना जाता है। इसके चार भेद माने गये हैं—संप्रज्ञात, सुवितर्क, सविचार और सानन्द।

उ०—सुतण सुरथ अप सुमित्र सरूपति, तपसी हुवौ राज तजि भूपति। आसणि गलिका तीर अधारै, ध्यांन **समाधि** जोगमय धारै।—सू. प्र.

३ वह स्थान जहाँ शव या अस्थियाँ दफनाई गई हों।

४ साधु-संन्यासियों को दफनाने की क्रिया विशेष।

५ किसी साधु विशेष का जीवितावस्था में ध्यानावस्थित होकर भूमिगत होने की क्रिया।

क्रि. प्र.—लेवणी।

६ चित्त को एकाग्र करने की क्रिया।

उ०-१ पूरब अर पछिम मिळै, मिळै उत्तर दिखणाधि। हरीया इन ऊपर मिळै, जीव सीव **समाधि**।—अनुभववांणी

उ०—२ हुं छुं अपराधी, मइ सेव लाधी तुम्ह तणी। करउ सहज **समाधि**, कीरति वाधी अति घणी।—वि. कु.

७ कुशलक्षेम पूछने की क्रिया।

उ०—१ कथाकार मैं आंण्यौ एहवौ रे, रखै जीवेलौ करी उपाय रे। सुख **समाधि** पूछण नैं मिसै राजा नै गलै टूंपौ दीधौ जायरे।

—जयवांणी

उ०—२ आप कहियौ—आवौ नहीं रीड़ा। कहियौ रावजी **समाधि** पूछावै कहौ। कहियौ गाढा सहोराहां।

—प्रतापमल देवड़ा री बात

उ०—३ अर सीपो मुंहतौ तिणहीज आथुणि जीमि, वागौ पहिर मोचड़ी अर कुंवरजी री **समाधि** पूछण आवै हुतौ।—द. वि.

८ पूर्णता।

उ०—विहंडियौ सिवर मगरूर वाधि, ससि नांम आदि अंतरिख **समाधि**। जुड़ि करै नास मंवास जंग, ईडरगढ लीधौ इम अभंग।

—सू. प्र.

९ ध्यान।

उ०—१ सिरि वंदि पगतळि धरिउ, सेठ **समाधि** म चूक। पाडउ अ पदमिनि-तणउ, धन आपी तिहां ढूक।—मा. कां. प्र.

उ०—२ चढि आभ छड़ाल चमंक चुभी, खुरताळ धमंक पताळ खुभी। बढि हाक त्रमागळ डाक बजी, त्रिपुरासुर सत्रु **समाधि** तजी।—मे. म.

१० श्रुत चारित्र रूप धर्म। (जैन)

उ०—सातसै वरस सह्या असातारा इंद्र वखांण्यौ वळै दृढ आचारा।

सुर कहै वेस करै सधुआरा, साधु समाधि करू तुझ सारा।
—ध. व. ग्रं.

११ शांति, आराम।

उ०—बहु राजवैद्य बोलाविया, कीधला कोड़ि उपाय। बावना चंदन लावीया, पणि तउ रे समाधि न थाय।—स. कु.

वि.—स्वस्थ, ठीक।

उ०—१ पणि क्याल तेजसी वडौ वैद छै, आज धनंतर छै, तिण कन्हां मूंग हेक हेक जीवड़ा राखा च्यारि दिराड़ीजै तौ समाधि हुवै।—द. वि.

उ०—२ पांणी मंत्री नइ छांटियउ रे कांइ, कुमरी थईय समाधि रे। उठै रे आलस मोड़ि नै रे कांइ, दूर गई सहु व्याधि रे।
—वि. कु.

११ देखो 'समाधिजिन'। (जैन)

रू. भे.—संमाद, संमाधि, समाद, समाध, समाधी।

समाधिक्षेत्र-सं. पु. [सं.] १ वह स्थान जहाँ योगी, साधु, संन्यासी आदि के शव को जलाया या दफनाया जाता है एवं जिस पर चबूतरा बना दिया जाता है।

२ उक्त स्थान पर बनाया गया चबूतरा।

समाधिजिन-सं. पु. [सं.] जैनधर्मानुसार भविष्यकाल में होने वाले सतर हवें तीरथंकर का नाम, श्रीसमाधि।

समाधिदसा-सं. स्त्री. [सं. समाधिदशा] समाधिस्थ होने की दशा।

समाधियौ-वि.—१ सम्बन्धि, रिश्तेदार।

उ०—क्षेत्रपाल जी नूं घणौ आदर सनमांन दीनूं कहियौ थै सदा रा समाधिया छौ।—पंच दंडी री वारता

२ स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

उ०—१ पणि केसवराय जो रख्या करि समाधिया हीज रहिया।
—द. वि.

उ०—२ कहै थें हालौ जाहरां भोपतिजी समाधियौ होइसी ताहरां पधारसी।—द. वि.

३ अन्तरङ्गित।

रू. भे.—समादियौ, समाधायौ।

समाधी—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—१ सुरत निरत सूं पाव धरोरी, पल पल हिरदा मांही। अरध उरध बिच प्रेम झरत है, रोम रोम छक जाई समाधी अखंड लगाई।—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ अठी साह रे समाधी हुवां केडै दारासाह नै अधिकार रौ कांम भी छोडि दीधौ।—वं. भा.

उ०—३ देवी गाजता दैत ता वंस गमिया, देवी नवै खंड त्रिभुवन तुझ नमिया। देवी वन्न मैं समाधी सुरथ वन्नी, देवी पूजतै आसपूरणा प्रसन्नी,—देवि.

समानोदरज-सं. पु. [समानः+उदर्यः] सगाभाई, भ्राता, सहोदर।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

समाप-सं. पु. [सं. समर्पण] १ उत्सर्ग, दान। (डि. को.)

२ समर्पण।

समापक-वि. [सं.] (स्त्री. समापिका) १ समाप्त करने वाला।

२ पूर्ण करने वाला।

३ समर्पण करने वाला।

समापण—१ देखो 'समपण, समपणौ' (रू. भे.)

उ०—१ मन रा महरांण समापण मोजां, कापण दीनां तणा कुरंद। दीजै किसौ समोबड़ दूजौ, पेखे चक्रत रहै पुरंद।
—र. रू.

उ०—२ वीत समापण क्रीत तणौ वर, ढाहण फौज अरी दळ ढुकौ। 'नाथ' तणौ 'सुरतेस' त्रभे-नर, चीत नथी ठकरीत न चुकौ।
—सुरतांण सिंघ चवांण

समापणौ, समापबौ—१ देखो 'समपणौ, समपबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जरीतारां जरीबाफां नीलंकां जड़ाव मांगां, दांमां पार पावै नकौ देतौ चित्त दत्ति। कहां खोटी बार बिचै मोटी रीझां 'सेवौ' करै, सासणां सोव्रन्नां कड़ा समापै हसत्ति। —नाथौ बारहठ

उ०—२ कूच थयौ पाछै ततकाळै, सांभर फिर मारोठ संभाळै। थांणा दहूँ ठिकांणां थापै, सीख देस दिस वियां समापै। —रा. रू.

उ०—३ उगत सुरराय मौ समापौ ईसरी, गुण परमेस्वरी सुजस गावै। भदोरै विराजै भुजाई बीसरी, आप आदेसरी मढ आवै।
—बस्तीराम

उ०—४ महाराज नूं राज रीझै समाप्यौ, थिरू राज रौ राज देसांण थाप्यौ। जठै झाड़ियां खंड स्रीखंड जेड़ी, नगां पुंजरी मंजरी रूप नेड़ी।—मे म.

समापणहार, हारौ (हारी), समापणियौ—वि०।

समापिओड़ौ, समापियोड़ौ, समाप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समापीजणौ, समापीजबौ—कर्म वा०।

समापत-वि. [सं. समाप्त] जो सम्पूर्ण हो गया हो, खत्म हो गया हो।

उ०—नियम मंगळाचरण नह, काव्य समापत काज। काव्य उचारण कुकवि सूं, करै महाकवराज।—बां. दा.

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ।

रू. भे.—संमापित, संमापीत, समापित, समाप्त।

समापिका-सं. स्त्री.—व्याकरण की दो प्रकार की क्रियाओं में से एक जो कार्य के समाप्त हो जाने को सूचित करती है।

समापित—देखो 'समापत' (रू. भे.)

उ०—दस मास समापित गरभ दीध रितु, मन व्याकुळ मधुकर मुणगंति। कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपती प्रसवती वसंति।—वेलि

समाप्त—देखो 'समापत' (रू. भे.)

समाप्ति-सं. स्त्री.—किसी कार्य के समाप्त होने की क्रिया या भाव।

समायोग—देखो 'समाजोग' (रू. भे.)

उ०—एक दिन रौ **समायोग** छै। बलसीसर तळाव सिखरै उगमणावत गोठ कीवी छै। —उदै उगमणावत री वात

समायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ अवसान हुवा हुआ, मृत हुवा हुआ. २ व्याप्त हुवा हुआ, विद्यमान हुवा हुआ. ३ व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ. ४ फैला हुआ, विस्तीर्ण हुवा हुआ. ५ एकरूप हुवा हुआ. ६ मिला हुआ, विलीन हुवा हुआ. ७ विलीन हुवा हुआ. ८ समाहित हुवा हुआ. ९ धंसा हुआ, गड़ा हुआ. १० मिला हुआ हुआ. ११ अदृश्य हुवा हुआ, ओझल हुवा हुआ, लुप्त हुवा हुआ. १२ लीन हुवा हुआ. १३ समाधिस्थ हुवा हुआ, अन्तर्ध्यान हुवा हुआ. १४ स्थित हुवा हुआ. १५ धारण किया हुआ. १६ मिटा हुआ, अस्त हुवा हुआ. १७ स्थिर हुवा हुआ. १८ निवास हुवा हुआ. १९ प्रविष्ट हुवा हुआ. २० हुवा हुआ. २१ अनुरक्त हुवा हुआ।

२२ देखो 'संभायोड़ो' (रू. भे.)

२३ देखो 'मावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समायोड़ी)

समार-सं. पु.—१ अधिकार, कब्जा।

उ०—जाळोर रै कांकड़ सींवै गांव सीरोही रा डोढीयाळा रै पड़गनै रा पांच-दस गांव राव तीडै री फौज राव तीडौ आय पड़ियौ। सु इतरा गांव **समार** कीधा। सो वन मोर उडीयौ। कटके-कटक धाया।
—तीडै छाडावत री वात

वि.—२ घावों से परिपूर्ण।

उ०—घावां बडौ धरम छै और म्हारौ सरीर सूं **समार** छै। काल्ह पगपसार थै-म्है मरीस तौ अगत जायसै, मौनै अगत होयसी, थांनूं बडौ महणौ होसी।—डाढाळा सूर री वात

समारक—देखो 'स्मारक' (रू. भे.)

समारजणी, समारजनी—देखो 'संमारजनी' (रू. भे.)

समारणौ, समारबौ—देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दुख भंजन तूं दाखि मुझ, नहीं तरि छंडसि देह। अगिग कि अबला श्रेह घरि, सेजि **समारइ** बेह।—मा. कां. प्र.

उ०—२ तीरां गोळीयां रै मारक पड़तै जिमावर पांख **समारण** न पावै छै।—रा. सां. सं.

उ०—३ उतमंग किरि अंबर आधौ, अधि मांग **समारि** कुंआर मग।
—वेलि

उ०—४ ऊडण पंख **समारि** रहै, अलि कंठ समारि रहे कळकंठ।
—वेलि

उ०—५ पार पखै असवार पाइदळ, पंख **समारिक** चल्लै मेहळ।
—गु. रू. बं.

उ०—६ सोळा सोहिता धांधुसी पुलाब चकतालौ जळचर मांस, थळचर मांस, उडणां पंखिआं रा मांस, भांति भांति रां जुदा जुदा **समार** समार नै वणाया छै। प्याला मांहि परुसीजै छै। हाजर कीजै छै।—रा. सा. सं.

उ०—७ इण भांत नख-सिख सूधा सोळै सिणगार कियां बारै आभूखण विराजिया छै। जाणै इंदलोक री अपछरा, रूपरी रंभा, आसमांन सूं ऊतर पड़ी। चित्रांम री पूतळी, विधाता हाथ सूं समारी।—रा. सा. सं.

समारणहार, हारौ (हारी), समारणियौ—वि०।

समारिओड़ौ, समारियोड़ौ, समारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

समारीजणौ, समारीजबौ—कर्म वा०।

समारत-सं. पु. [सं. स्मार्त] स्मृतियों में लिखे अनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति।

समारथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

समारियोड़ौ—देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समारियोड़ी)

समारोह-सं. पु.—कोई ऐसा शुभ आयोजन जिसमें चहल-पहल तथा धूमधाम हो, उत्सव।

समाळिया-सं. स्त्री.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

समाळियौ-सं. पु.—राठौड़ वंश की समाळिया उपशाखा का व्यक्ति।

समालोचक-सं. पु.– समालोचना करने वाला व्यक्ति।

समालोचना-सं. स्त्री. [सं.] १ अच्छी तरह देखना, परखना।

२ किसी कृति के गुण-दोषों का किया जाने वाला विवेचन।

३ साहित्य में किसी कृति के गुण-दोषों के सम्बन्ध में किसीने अपने विचार प्रकट किए हो।

४ साहित्यिक कृतियों के गुण-दोष विवेचन करने की कला या विद्या।

समालोची—देखो 'समालोचक' (रू. भे.)

समावंत-वि. [सं. समा+वंत] समयानुसार या ठीक समय पर होने वाले।

उ०—सांभळउ—वन तै वणवीइ जै व्रक्षवंत, नदी तै जे नीरवंत, कटक तै जै वीरवंत, सरोवर तै जै कमळवंत, मेघ तै जै **समावंत**, महात्मा तै जै क्षमावंत, प्रसाद तै जै धजावंत, धरमी तै जै दयावंत आदि।—रा. सा. सं.

समावड़—देखो 'समवड़' (रू. भे.) (डिं. को.)

समावण-सं. पु.—१ मृत्यु, नाश। (डिं. को.)

२ मृत्युसदेश। (डिं. को.)

समावणौ, समावबौ—१ देखो 'समाणौ, समाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुण सनेसा गुरुदेव का, निज मारग पावै हौ। खाणौ पांणी पलटकै, उण देस **समावै** हौ।—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ मागइ मात व धांमणी, धव धव धाया लोक। ताहरू माधव आवीउ, आज **समाविन** सोक।—मा. कां. प्र.

उ०—३ वरखारितु लागी, विरहणी जागी। आभा झरहरै, बीजां आवास करै। नदी डेवां खावै, समुद्रै न **समावै**।—रा. सा. सं.

उ०—४ अर साच छै, जौ महीनां छह तांई छांना राखिया, नहीं तौ लुगाई रै पेट मैं इतरी वात समावै ? पहलै दिन जाहर कर सिर चढावै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—५ जरै चढीयो, सु राव मालदे री छाती माहै मेड़तौ पारकै घर समावै नहीं । राव मालदे धाव घणी ही करै पिण राव जैता कूंपा राव जसो राव खींवो इण बात मांहै आवै नहीं ।—नैणसी

उ०—६ सु समुद्र माहै पांणी समावै नहीं । इतरां जळ हुआ छै । बीजुळी सहरां मांहै समावै नहीं छै । सहरां बाहरि झब झबाट करि रही छै ।—वेलि टी.

उ०—७ ज्यां हूंदा क्रत जोय, दोजग नहं बासौ दियौ । तै न्हावै तुय तोय, जोत समावै जहांनमी ।—बां. दा.

२ देखो 'संभाणौ, संभाबौ' (रू. भे.)

उ०—क्यूं रजपूती छै तौ तरवार समावौ । आ वात सुणतांइ कवर वीरमदे नै इसौ जोस चढ्यौ जांणै दारु रा गंज मैं आग री दूंग पड़्यो ।—पनां

समावणहार, हारौ (हारी), समावणियौ—वि० ।

समाविओड़ौ, समावियोड़ौ, समाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समावीजणौ, समावीजबौ—भाव वा० ।

समावरत—देखो 'समाव्रत' (रू. भे.)

समावियोड़ौ—१ देखो 'मावियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संमायोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'समायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समावियोड़ी)

समावेस—सं. पु. [सं. समावेश] एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अन्तर्गत होना, समाविष्ट होना ।

समाव्रत—सं. पु. [सं. समावर्त] भगवान् विष्णु का नामान्तर ।

वि.—आवृत्त, घिरा हुआ, आवेष्टित ।

उ०—मंदिरंतरि किया खिणंतरि मिळिवा, विचित्रे सखिए समाव्रत । कीधै तिणि वीवाह संसक्रित, करण सु तणु रति संसक्रत ।—वेलि

समास—सं. पु. [सं. समास:] १ धैर्य ।

उ०—१ असपत बीड़ौ अप्पियौ, उर थप्पियौ समास । विदा कियौ वरसात मैं, प्रगटी वात प्रकास ।—रा. रू.

२ कम या थोड़ा होने का भाव ।

उ०—एकौ समंद इसौ ओल्हरियौ, सात समंद जण हुवा समास । देसी तौ आसीस घणा दिन, सूरज देव तणौ सपतास ।

—महाराणा राजसिंह रो गीत

[सं. समाऽश] ३ वर्षाकाल ।

उ०—साहजादा तौ पाउसकाळ माळव में ही कीधौ तिकां समास रै अंतर थोहड़ा थोहड़ा कूच करि आप आपरा अनीकां नूं आगै आवण रौ आदेस दीधौ ।—वं. भा.

४ संक्षिप्त । (डिं. को.)

उ०—रनिवहै आरंभी रचना नहि, वल समास पुनरात विचार । संपूरण कर फेर सराहै, अरधांतरै कवचक उचार ।—बां. दा.

५ व्याकरण के कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार शब्दों का आपस में मिल कर एक होना, दो या अधिक शब्दों का योग ।

[सं. समाश्वन] ६ सांत्वना, तसल्ली ।

उ०—भूप हुकम 'भगवांन' तण, मुहतौ जीवणदास । दिल्ली रहियौ साह दळ, साहां करण समास ।—रा. रू.

समासम—वि.—१ समान, बराबर का ।

उ०—समासम मेल धमाधम सेल, अनातम आतम ठेल उठेल ।

—रा. रू.

समास्रित—वि. [सं. समाश्रित] जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय ग्रहण किया हो, भली प्रकार आश्रित ।

उ०—ऊभी सहु सखिए प्रसंसिता प्रति, कितारथी प्री मिळण क्रत । अटत सेज द्वार विचि आहुटि, स्तुति देहरि घरि समास्रित ।

—वेलि

समाहणौ, समाहबौ—देखो 'संभाणौ, संभाबौ' (रू. भे.)

उ०—जोध वळै 'राजांन' रौ भळै खवां कुळ भार । आभ समाहै ऊंडळौ, दीठै दळै करार ।—रा. रू.

समाहार—सं. पु. [सं.] १ संग्रह ।

२ समूह, राशि ।

३ मिलाप, मिलन ।

समाहित—वि. [सं.] १ समाधिस्थ ।

२ स्थिर, अटल ।

३ शांत ।

उ०—अर जम नियम आसण प्राणायांम प्रत्याहार धारणा ध्यांन सातूं ही अंगां रौ जप करि असटम अंग समाहित भाव में निस्चळ होय आप ही रौ रूप धार लीधौ ।—वं. भा.

४ सावधान, निरुपाधिक ध्येय ।

समाही—देखो 'समाई' (रू. भे.)

समाह्वा—सं. स्त्री.—एक प्रकार की घास जिसे वनगोभी कहते है ।

समिग्रै—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—तकण समिग्रै तरवार बूही ।—मारवाड़ री ख्यात

समिउ—वि.—शान्त । (उ. र.)

समिग—वि. [सं. सम्यक्] सत्य, असल । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—समग ।

समिचार—देखो 'समाचार' (रू. भे.)

समिजा—सं. स्त्री. [सं. समज्या] सभा । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—समज्जि, समज्या ।

समित—सं. पु. [सं. समित्] युद्ध, लड़ाई । (ह. नां. मा.)

समितिजय—सं. पु. [सं.] १ कृपाचार्य का शिष्य जो धनुर्वेदाचार्य, वीर

था ।

२ युद्ध में विजयी व्यक्ति ।

समिति-सं. स्त्री. [सं.] १ सभा । (ह. नां. मा.)

२ मजलिस ।

३ युद्ध, समर ।

रू. भे.—संमत ।

समिद्धउ, समिद्धह, समिद्धौ-वि. [सं. समृद्ध] समृद्धिशाली, ऐश्वर्यशाली ।

उ०—मरुधर देस मझार, सयळ धरा धांन **समिद्धौ** । नांमै पूगळ नयर, पुहवि सग्ळै परिसद्धौ ।—ढो. मा.

समिध, समिधा, समिधि-सं. स्त्री. [सं. समिध्] १ यज्ञकुंड में जलाने की लकड़ी । (डि. को.)

[सं. समीधः] २ आग, अग्नि ।

समिय—देखो 'समय' (रू. भे.)

समियांण, समियांणौ, समियांन, समियांनौ-सं. पु —मारवाड़ के सिवाना नामक कस्बे का किला ।

रू. भे.—समीयांण, समीयांणौ ।

२ देखो 'सांमियांणौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिसड़ै **समियांणौ** उठायौ । ताहरां समियांणै री झालरि नदरि पड़ी ।—द. वि.

उ०—२ सजै इसी सुख रास जिलह अरु जाळियां, कंचन कळस पताक महल अरू माळियां । **समियांन** साइवांन क बेस बिछायत्यां, गदरा गंज गिलम्म मांझ महलायत्यां ।—सिवबख्स पाल्हावत

समियौ—१ देखो 'समय' (रू. भे.)

२ देखो 'समौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—गोल तणौ कहियौ गुणी, संपूरण **समियौ** ।—पा. प्र.

समींक-सं. पु. [सं. समिकं] १ भाला, बरछा, बल्लम ।

उ०—सन्निद्धि सुभट समरन **समींक**, डक्कतें इक्क उद्धत अनीक । दुरयोधन देसक दरोळ, हैं दुरगदास बेमक हरोळ ।—ऊ. का.

२ देखो 'समीक' (रू. भे.)

समी-सं. स्त्री. [सं. शमि, शमी] १ राजस्थान, गुजरात और पंजाब में प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला वृक्ष विशेष । इसके पत्ते ऊंट, भेड़, बकरियों आदि पशुओं को चराने के काम आते हैं ।

उ०—वट तमाळ पींपळ विरख, अरुजन **समी** अपार । ईढ तजै पत्र एक री, सुरत पांचेई सार ।—रा. रू.

[सं. शमी, शमि] २ फली । (डि. को.)

क्रि. वि.—१ होते ही ।

उ०—विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लखावै अनै **समी** सांझ मनुख मूंया तै दुख री रात्रि घणी मोटी लखावै ।—भि. द्र.

२ ही ।

उ०—सक्खड़ा सिन्धू कांनो चवै, जेण सुजस छायौ जमी । विरवड़ी ये पातां बळां, मूरज ऊगतां **समी** ।—कांनूजी

३ देखो 'सम' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—राजा तूझ **समी** अन राजां, होड़ कियां अप विया हसै । पांणी-हंड पहरै दोहुं पासां, नासा नार जिहुंइ नकसै ।

—सांइयौ झूलौ

४ देखो 'समोवड़ियौ' (डि. को.)

५ देखो 'समौ' (रू. भे.)

रू. भे.—संमी, संवी ।

समीक-सं. पु. [सं. शमीक] १ एक प्रसिद्ध धर्मनिष्ठ और दयालू ऋषि ।

२ शूर राजा एवं मारिषा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो सुदामिनी का पति एवं प्रतिक्षत्र राजा का पिता था ।

३ कौरव पक्षीय एक यादव जो द्रौपदी के स्वयंवर में शामिल था ।

४ एक ऋषि जो शक्र-सभा में उपस्थित था ।

[सं. समीकं] ५ युद्ध, संग्राम । (अ. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—समींक ।

समीकरण-सं. पु. [सं.] १ दर्शन शास्त्र की सांख्य पद्धति ।

२ असम को सम करना ।

३ बीज गणित में अनजानी संख्याओं को जानने के लिए प्रक्रिया विशेष ।

समीक्षक-वि. [सं.] समीक्षा करने वाला, समालोचक ।

उ०—सत बक्ता स्त्रद्धासील **समीक्षक** सूरौ, पुरुसारथ पूरण प्रेम प्रतिज्ञा पूरौ । दुरव्यसन दुराग्रह दूसण सौं द्रढ दूरौ, अनभंग उतंग उमंग न अंग अधूरौ ।—ऊ. का.

समीक्षा-सं. स्त्री. [सं.] १ समालोचना ।

२ दर्शन शास्त्र की मीमांसा पद्धति ।

समीगरभ, समीग्रब, समीग्रभ, समीग्रभब, समीग्रभवा-सं. स्त्री. [सं. शमीगर्भः] १ अग्नि, आग । (अ. मा; डि. को; ना. डि. को; ह. ना. मा.)

२ अग्निहोत्री ब्राह्मण ।

समीची-सं. स्त्री. [सं.] वर्गा नामक अप्सरा की सखी, यम सभा की एक अप्सरा ।

समीचीन-वि. [सं. समीचीनः] १ उचित, ठीक । (ह. नां. मा.)

२ न्यायसंगत ।

स. पु. [सं. समीचीनम्] ३ सत्य, सच्चो ।

(अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

समीत-सं. पु. [सं. समित] १ युद्ध, दंगल । (ह. नां. मा.)

२ सभा, गोष्ठी ।

समीप-क्रि. वि. [सं.] १ निकट, नजदीक, आस-पास ।

(अ. मा; डि. को.)

उ०—मिळि पधराय सवाय हित, डेरा दिया **समीप** । छत्रपति छाजे ऊधरै, राजै जोड़ महीप ।—रा. रू.

२ पास, सम्मुख।

उ०—मुख वचन बहु मनुहार, कहि भांत भांत प्रकार। मेल्हिया 'जसे' महीप, आविया 'अजण' समीप।—सू. प्र.

३ पास।

उ०—अर जवनेस रा आगम रै निमित्त प्रथ्वीराज कुमार पिता सूं प्रच्छन्न आपरौ परिकर कैमासरै समीप भेजि खुरसांण री फौजां विरोळण रौ निदेस कहियौ।—वं. भा.

पर्याय.—अवदूर, उप, ढिग, तट, नजीक, निकट, नेड़ौ, पारसव, पास।

रू. भे.—समीपि, समीपी, सांमीप।

समीपता-सं. स्त्री.—समीप होने का भाव, निकटता।

समीपमुकत्ति—देखो 'सांमीपमुकत्ति' (रू. भे.)

उ०—वंदै पग लच्छि सहेत विसन्न। समीपमुकत्ति ज 'देव' सुतन्न। अखे प्रथमी जस एम अथाग। भूरा धनि तूझ तणौ अत भाग।—सू. प्र.

समीपि, समीपी-सं. पु. [सं. समीप+ई] १ निकटवर्ती, नजदीकी।

उ०—१ पद मैं बैठौ के निघात बाज कीनां। मुरतज्जां खांन का समीपी मार लीनां।—शि. वं.

उ०—२ सीमा रा समीपी नरेसां हूं उपहार लेर तिकांनूं आपरै अधीन बणाइ सूबादारी रौ अनादर करि पातसाही पद नूं बहण ढूका।—वं. भा.

वि.—२ समीपवर्ती, निकट का, समीप का।

३ देखो 'समीप' (रू. भे.)

समीम-सं. पु. [अ. शमीम] सुगन्धित पदार्थ।

समीयांण, समीयांणौ—१ देखो 'समियांणौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सांमियांनौ' (रू. भे.)

समीयै, समीयौ—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ एक समीयै विजै मनमैं जांणियौ जू नाडूल वडी जायगा अर नाडूल कदे चोरी न की।—चौबोली

उ०—२ एकै समीयै दरियाव गाज्यौ। तरै अनंतराय भायां-भतीजां रै विचै दरबार बैठौ।—कहवाट सरवहिया री बात

उ०—३ तिकौ रात आधी रौ समीयौ थौ, तिसै चौकीदार चौकी देता आय निकळिया।—जगदेव पंवार री बात

समीर, समीरण, समीरल-सं. पु. [सं. समीरः, समीरणः] १ वायु, हवा। (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ वन याहर नाहर वसै, बाहर थाट विडार। तरवर गुलम समीर विण, नकौ नमावणहार।—बां. दा.

उ०—२ मल्हपै किर गिर चढि हेमाळै, चंद्रकुमार खेल्ह नह चाळै। तिण उपवनि झोलै नदि तीरां, सीतळ मंद सुगंध समीरां।—सू. प्र.

उ०—३ काळ तणइ कालिजि वसी, गरळ तणा गुण लेय। स्वांमि समीरण स्या-थिकी, डीलि अम्हारइ देय।—मा. कां. प्र.

उ०—४ वात समीरण चालवै, सुरभि सीतल नै मंद। गगन वस्त्र जास कहियै, तजै तिमिरनौ फंद।—वि. कु.

२ भगवान् विष्णु।

रू. भे.—सांमीर।

समीवड़, समीवड—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—१ इंद्र प्रभत इंद्रह विभौ, इंद्र छभा ग्रेनांण। इंद्र समीवड रट्ठवड, हिंदूवै सुरतांण।—गु. रू. बं.

उ०—२ दड-ड्ड सीस पडंत दडाक, बडीयण बंध असंध बडाक। समीवड आहुडिया सुरतांण, खुटै खर-हंड तणा खुरसांण।—गु. रू. बं.

समीसर-सं. स्त्री.—बराबरी, समानता।

उ०—लीण हीण ज्यां सौं गज लागै, ए कोइ बळ सादूळै आगै। सेवै छत्रपति छोड समीसर, ओपै धजा जगत चै ऊपर।—रा. रू.

वि.—समान, तुल्य।

उ०—रवि समान खद्योत सेस जळ साप समीसर।—पा. प्र.

रू. भे.—समोसर, समोसरि।

समीह-सं. स्त्री. [सं. समीहा] श्रेष्ठ अभिलाषा, सुकामना।

उ०—जीतै रण पै'ला जरै, सुरपुर बसण समीह। किम सेवा वणणी कहौ, दासी बिण चउ दीह।—वं. भा.

समुंद, समुंदर, समुंद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ दिनकर बाहण देह, पाहण फूटै पोड़ सूं। 'जेहल' साहण जेह, साहण समुंद समपिया।—बां. दा.

उ०—२ सेवै तौ पाव समुंदर सात, निरंजन गात नमौ निरगात।—ह. र.

उ०—३ पंथी एक संदेसड़उ, लग ढोलइ पौहच्याइ। जोबन खीर समुंद्र हुइ, रतन ज काढइ आइ।—ढो. मा.

समुंदौ—पूरा, समस्त।

उ०—बसी समुंदौ रजपूत बांणीया बसै।—नैणसी

समु—देखो 'समौ' (रू. भे.) (उ. र.)

समुक्ख, समुख, समुखौ-क्रि. वि.—१ सामने, सम्मुख।

उ०—१ हुय हक्क किलक्क समुक्ख हलां, भयकार घड़ी वण वार भलां। सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै, जिम वाग डंडेहड़ फाग जदै।—रा. रू.

उ०—२ अर प्रामारां रा बैर माथै अब चहुवाणां रौ चक्र अरबुदा-चळ री सरणी रै समुख पाधरौ ही धकावै छै।—वं. भा.

सं. स्त्री.—२ एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में दो लघु और तीन सगण अथवा एक नगण दो जगण और लघु गुरु का क्रम होता है।

समुचित-वि. [सं.] १ वाजिब, उचित।

उ०—पिंड दहण जिण थी प्रिया, भावी प्रथम भलो न। है समुचित भावी हुवां, सही बिफळ व्है सो न।—वं. भा.

२ उपयुक्त, योग्य ।

समुच्चय-सं. पु. [सं.] १ समूह, राशि, ढेर। (डिं. को.)

२ साहित्य का एक अलंकार विशेष जहाँ अनेक पदार्थों का समूह एक समय में एक साथ होना वर्णित हो।

समुच्चयबोधक-सं. पु.—व्याकरण के अन्तर्गत अव्यय का एक भेद जो दो शब्दों या उपवाक्यों को जोड़ता है ।

समुझणौ, समुझबौ—देखो 'समझणौ, समझबौ' (रू. भे.)

उ०—किता हुआ दिग्गज कवि, **समुझणहार** सु अंसेस ।

—अग्यात

समुझणहार, हारौ (हारी), **समुझणियौ** – वि० ।

समुझिओड़ौ, समुझियोड़ौ, समुझ्योड़ौ – भू० का० कृ० ।

समुझीजणौ, समुझीजबौ—कर्म वा० ।

समुझाणौ, समुझाबौ—देखो 'समझाणौ, समझाबौ' (रू. भे.)

उ०—फेर आहीज स्त्री आपरै पती नै **समुझाय** नै कहै छै ।

—वी. स. टी.

समुझाणहार हारौ (हारी), **समुझाणियौ**—वि० ।

समुझायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

समुझाईजणौ, समुझाईजबौ—कर्म वा० ।

समुझायोड़ौ—देखो 'समझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समुझायोड़ी)

समुझावणौ, समुझावबौ —देखो 'समझाणौ, समझाबौ' (रू. भे.)

उ०—प्राची मैं पुत्र नूं भेजि आवाची कूं आवतां दो ही पुत्रां नूं **समुझावण** सांम्हैं जावता पातसाह नूं पेलि तिण रौ बडौ पुत्र साहस रै सहाय पहली कहिया कटक रै साथ दरकूंचां दक्खिण रै अभिमुख चलायौ ।—वं. भा.

समुझावणहार, हारौ (हारी), **समुझावणियौ**—वि० ।

समुझाविओड़ौ, समुझावियोड़ौ, समुझाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समुझावीजणौ, समुझावीजबौ—कर्म वा० ।

समुझावियोड़ौ—देखो 'समझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समुझावियोड़ी)

समुझियोड़ौ—देखो 'समझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समुझियोड़ी)

समुदय, समुदाय-सं. पु. [सं. समुदयः, समुदायः] १ समूह, झुंड ।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ गया स्राद्ध तीरथ ग्रहण, सरब परब **समुदाय** । है सारा इण हाथ मैं, हलै तौ हाथ हलाय ।—ऊ. का.

उ०—२ जग मैं बांछै जीवणौ, सब प्रांणी **समुदाय** । हर कर नर उणनूं हरै, जुलम कह्यौ नहीं जाय ।—बां. दा.

२ युद्ध, संग्राम । (ह. नां. मा.)

समुद्द, समुद्र-सं. पु. [सं. समुद्रः] १ पृथ्वी पर स्थल भाग को घेरने वाली विशाल जल राशि, समुद्र, सागर । (ड. र.)

उ०—१ सजण गुणाँ **समुद्द** तूं, तर तर थकी तेण, अवगुण एक न सांभरइ, रहूं विलंबी जेण ।—ढो. मा.

उ०—२ अकबर **समुद्र** पर आवियौ, साह सहंसां आठ सिर । जीपणौ पांण जगपत्तरै, और मांण सोई अथिर ।—रा. रू.

उ०—३ मणुयजनमि सावदकुल सार, भव **समुद्द** जिणि लाभइ पार ।—जयसेखर सूरि

पर्याय०—अंब, अंबधि, अंबहर, अकुपार, अचळ, अणथाग, अण-थाह, अतहर, अतेरुइब्बवण, अतीर, अथग, अमोघ, अरणव, अळियळ, अलील, अहिलांळ, आच, उदधि, उधारण,कमळ, खीर-दधि, गंभीर, गौडीरव, चडवत, जळधि, जळनिधि, जळपति, जळराट जादपति, दरियाव, नदीईसबर, निधूवर, नीरोवर, पतिजळ, पदमापित, पदमालय, पयध, पयोधर, पयोनध, पाथोद, पारावार, बानरधी, बारध, बारहर, वोहत, मकराकर, मगरघर, मछपति, मथण, महण, महरांण, महासर, महोदर, रतनकर, रतनागर, रेणायर, लखमीतात, लवणोद, लहरीरव, वारनिधि, वेळावळ, व्याकुळ, सफरीभंडार, सर, सरतअधीस, सरवर, सरसवांन, सरि-तापति, सागर, सिंधु, स्रोतपत, हीलोहळ ।

रू. भे.—संमंद, संमद, संमुद्र, समंद, समंदर, समंदौ, समंद्र, समद, समदर, समद्ध, समद्र, समुंद, समुंद्र, समुदर, समुद्र, सम्मद, सांमंद, सामंद्र ।

अल्पा.—समदरियौ, समुदरियौ ।

२ शुभ रंग का घोड़ा ।

समुद्रक-सं. पु.—शृंगार में एक आसन विशेष ।

समुद्रकांता-सं. स्त्री. [सं] नदी, सरिता ।

समुद्रचुलुक-सं. पु. [सं.] अगस्त्य ऋषि का नाम ।

समुद्रजा-सं. स्त्री. [सं.] लक्ष्मी ।

समुद्रजात्रा-सं. स्त्री. [सं. समुद्रयात्रा] समुद्र मार्ग से जहाज द्वारा किया जाने वाला आवागमन ।

समुद्रनेमि-सं. स्त्री. [सं.] पृथ्वी ।

समुद्रफीण, समुद्रफेण, समुद्रफेन-सं. पु.—समुद्र की लहरों का झाग जो औषधि में काम लाया जाता है । (अमरत)

रू. भे.—समंदफेण ।

समुद्रमथन-सं. पु. [सं.] एक दानव का नाम । (पुराण)

समुद्रमेखळा-सं. स्त्री. [सं. यौ. समुद्रमेखला] पृथ्वी, भूमि ।

समुद्रलवण-सं. पु.—समुद्र के जल से तैयार किया जाने वाला करकच नामक लवण ।

समुद्रवेग-सं. पु. [सं.] स्वामी कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर ।

समुद्रव्यूह-सं. पु.—सेना का एक प्रकार का व्यूह ।

रू. भे.—समंदव्यूह ।

समुद्रसुत, समुद्रसुतन-सं. पु. [सं.] १ चंद्रमा, चाँद ।

२ अमृत ।

३ मोती, मौक्तिक।

रू. भे.—समंदसुत, समंदसुतन।

समुद्रसेण, समुद्रसेन—सं. पु. [सं. समुद्रसेन] १ पांडवपक्षीय एक राजा जो चंद्रसेन नामक राजा का पिता था।

२ कौरव पक्षीय एक राजा जो कालेय नामक दैत्य का वंशज था।

समुद्रस्थळी—सं. पु. [सं. समुद्रस्थली] समुद्रतट पर स्थित एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

समुद्राभिसारणी, समुद्राभिसारिणी—सं. स्त्री. [सं. समुद्राभिसारिणी] समुद्र की सहचरी एक देवबाला।

समुद्राव—[सं. समुद्राव] युद्ध से पलायन, लड़ाई से भागने का भाव या क्रिया। (डिं. को.)

समुद्रोमादन—सं. पु. [सं.] स्वामी कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

समुल्लन—सं. पु. [सं.] सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाओं से उल्लास प्रकट करने की क्रिया, अवस्था या भाव।

उ०—लीन भ्रमण समुल्लन त्रिपदी आस्फालन बाहुसंस्फोट गलि गरजित साहसिक, रणरसिक ससरंभ सोच्छेक।—व. स.

समुह, समुहा, समुहै—क्रि. वि. [सं. सम्मुख] १ सामने, सम्मुख। (डिं. को.)

उ०—१ लसकर खां हइयात खां, नौरंगखांन पठांण। एता समुहा आविया, चिसती आद जवांण।—रा. रू.

उ०—२ कठठी बे घटा करे, काळाहणि समुहै आंमहो सांमुहै। जोगिणि आवी आडंग जांणे, वरसे रत बेपुड़ी वहै।—वेलि

२ देखो 'समूह' (रू. भे.)

समूंचौ, समूंधौ-वि. (स्त्री. समूची, समूंधी) १ पूरा, समस्त, कुल।

उ०—१ अरण भांजू गज गिळूं, समूंचौ वौ लुवार। घोड़ो पाड़ू पाखरचो, सूं बरछी असवार।—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ रायांसाल राजा कै समूंचा पूत वारा, ना ओलाद रैगा पांच सातां का पसारा।—शि. वं.

उ०—३ मरै न्याय सांभलरै मूरख, सह तौ वाला लखण समूंचा। थां अत हिमैं जेज नह थावै, कठठ खडी आवै दर कूचां।—र. रू.

उ०—४ सूबा बादिसाही का समूंचा भोमि दीनी। दोनूं दीन रायां साल दीनी सो न लीनी।—शि. वं.

उ०—५ सरब गैहणा तोडै चावड़ां पिण दीधा। सो महाराजा विणनै समूधा दीधा नै म्हारा बेटा नै एक ही रीझ दीधी नहीं।—जगदेव पंवार री बात

समूंह—देखो 'समूह' (रू. भे.)

समूतनी—सं. स्त्री. [सं. सीमन्तिनी] स्त्री। (अ. मा.)

समूरत, समूरतौ, समूरथ, समूरथौ—सं. पु. [सं. स+मुहूर्त+रा. प्र. औ.] श्रेष्ठ मुहूर्त, अच्छा समय।

उ०—१ तिण दिन ढोलो जी रै चढण रो समूरतो तो टळगयो तद कंवरजी महल पधारिया।—ढो. मा.

उ०—२ विरध वधाई नांव, समूरथ साख सगाई। व्याह विनायक वेळ, महोछव मेळ विदाई।—दसदेव

समूळ, समूल—वि. [सं. समूल] १ सब, समस्त।

उ०—१ सूरज किरणां चाव में, फूटी कळी समूळ। लूआं दीसी सामनैं, लागी हिवड़ै सूळ।—लू

उ०—२ बाबरैल बाजूपुरी सौनेरी सादूळ, (और) केसरी ऊंठिया मिल्र पटैत (समूळ)।—अ. मा.

२ पूरा, अखंड।

वि.—१ जड़ सहित, जड़मूल सहित।

उ०—१ अद्द भू मद्द समूळ उपाडता, भद्रजाती गुडै सूंड भंमाडता।—गु. रू. बं.

उ०—२ जिह घर निंदा साधकी, सो 'घर गयै' समूळ। तिनकी नींव न पाइयै, नांम न ठांव न धूळ।—दादूबांणी

उ०—३ काबलीए आताळीया अनंगै अैराकी, अख समूळा ऊपड़ै कुछ रहै न बाकी।—मालो सांदू

२ कारण सहित।

३ सब का, सभी का।

रू. भे.—सम्मूळ।

मह;—समूळौ।

समूळौ—देखो 'समूळ' (मह; रू. भे)

उ०—१ आ बात कैय सेठ वळै जोर सूं हंसिया। जांणै इण बोखा मूंडा रै पांण तो समूळा सूरज नै ई गपाक करता गिट जावैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ भूम चाळ दिसां भाळ, महावणी दीपमाळ, समूलो उठाय बह्यो, ओसधी समेत।—र. रू.

उ० – ३ रूंख समूळो काटीयो, काट कियो निरलंग। हरीया इन अपराधीयैं, कसक न आंनी अंग।—अनुभववांणी

उ०—४ पछै थोड़ो आपो संभाळ वा आपरै पगां मैं लुटता बाळ कन्हैया नै देख्यो तो दुनिया रो वो समूळो सुख अर हरख कांनां रो सरणो छोड, आंख्यां रै सरणै आयो।—फुलवाड़ी

उ० – ५ चौमासा रो भरपूर आड़ंग। जांणै समूळी धरती किणी लांठी भट्टी माथै उकळै।—फुलवाड़ी

उ० — ६ भूठ तौ अजगर रै आंटां री गळाई उणरी समूळी देह माथै पळेटीजग्यो।—फुलवाड़ी

उ०—७ दाळद घणो ई नट्यो पण राजा नीं मांन्यो सो नीं मांन्यो। कह्यो कै अैड़ी राजकंवरी रै हथळेवै समूळो राज सूंपै तो ई थोड़ो।—फुलवा

(स्त्री. समूळी)

समूह, समूहु—सं. पु. [सं. समूह] १ सेना, फौज, दल। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ समूहं सुभट्टं गुडै गज्ज थट्टं, दळाकार दौडं तुरां वाज

पौडं।—गु. रू. बं.

उ०—२ जिकौ सुणि सांखलै वीरमदेव आपरा स्वामी नूं पयादौ जांणि चांमुडराज सिहदेव प्रमुख सांमंतां रौ समूह रोकण रै काज आडौ आय बाजी रा बेग रौ चक्रवाळ तांणियौ।—वं. भा.

२ ढेर, राशि। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—अर अरबुद रा दुरग रै माथै संगर री सांमग्री रौ समूह चाढियौ।—वं. भा.

३ झुंड। (अ. मा; उ. र; डि. को.)

उ०—तुरां उखरंब, उडंत दिडंब, अंधार उधोळ, धारा धमरोळ। कटक्क कांधार, समूह सेलार, पयांण करंत, मेल्हांण दियंत।

—गु. रू. बं.

४ बाहुल्य, आधिक्य।

उ०—लखमी जु रुखमणी जी स्रीक्रस्ण जी का हरख आणंद का समूह माहै मगन होय रहै छै।—वेलि टी.

५ सनातन विश्वदेव का नाम।

पर्याय.—अनंत, अपार, ओघ, कंदळ, कटक, कदंब, कनिचय, कलाप, कुरंभ, कुल, गण, ग्रांम, घणां, चक्र, चय, जाळ, जूथ, जूह, झुंड, झूळ, झूल, तोम, थाट, थोक, निकरंब, निकर, पटळ, पटल, पूग, पूर, प्रकर, प्रकार, फतूह, बहु, बहू, बौहळ, ब्रज, विध, व्यूह, व्रज, संघात, संचय, संदोह, संहति, सघण, समाज, समुदय।

रू. भे.—संमुह, संमूह, समुह, समुहै, समुहौ, समूंह, सम्मूह।

समें, समे—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ तिण काळै नै तिण समें रे पारस्व संतानिया साध।

—जयवांणी

उ०—२ तैण समै सोक घणां आदर सूंनमान सूं मळै, सांछा सा समीचार पूछिआ।—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

समेगी—देखो 'संवेगी' (रू. भे.)

समेजोग—देखो 'समाजोग' (रू. भे.)

उ०—एक दिन रै समेजोग रावत प्रतापसिंघ कनै एक पंडित पुरांणिक आयौ बडा बडा ग्रंथा रौ समुद्र सो पार दरसायौ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

समेटणौ, समेटबौ—क्रि. स.—१ मारना, संहार करना।

उ०—आयौ गढ हूंतां अमर, सत्र हर करै सिंघार। सात हजार समेटिया, घायल आठ हजार।—रा. रू.

२ कम करना, थोड़ा करना।

उ०—लखि अचरज्जै कोप अप, वरण कुबेर सुरिंद। लाज समेटै सोर की, आज मुरद्धर इंद।—रा. रू.

३ बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। (उ. र.)

४ क्रम या तरतीब से लगाना।

५ काम पूरा या समाप्त करना।

समेटणहार, हारौ (हारी), समेटणियौ—वि०।

समेटिओड़ौ, समेटियोड़ौ, समेट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समेटीजणौ, समेटीजबौ—कर्म वा०।

संवटणौ, संवटबौ, संवेटणौ, संवेटबौ, समटणौ, समटबौ, सांमटणौ, सांमटबौ, सांवटणौ, सांवटबौ, सिमटणौ, सिमटबौ—रू० भे०।

समेटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २ कम किया हुआ, थोड़ा किया हुआ. ३ बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा किया हुआ. ४ क्रम या तरतीब से लगाया हुआ. ५ काम पूरा या समाप्त किया हुआ।

(स्त्री. समेटियोड़ी)

समेडी—सं. स्त्री.—स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।

समेत, समेति, समेती—सं. पु. [सं. समेत] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

वि.—१ संयुक्त।

२ साथ, सहित।

उ०—१ सेठां सूं तौ पाछौ चुस्कारौ ई नीं व्हियौ। लप बिछा-वणां समेत गांठड़ी करनै खाडाबूच कर दियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ होय कै निकासी बनौ बंधवां समेत हल्यौ, ऊझल्यौ सांमुद्र सेनां हलोतौ उदार।—बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ टूंक समेती भूमि गढ लूटन का दाया, करि संमझासि नबाब को सबनै समझाया।—ला. रा.

उ०—४ सो उठारै अधीस दलै नांमै जोइयै आपरा बैभव समेत आधी अवंनी दै।—वं. भा.

उ०—५ अर अनामय पूछण रौ व्याज करि पिता नूं बडा भाई दो समेत मारि साह होण रौ संकल्प करि दिल्ली माथै आपरी चतुरंग चमू चलाई।—व. भा.

समेध—सं. पु. [सं.] मेरु पर्वत का एक भाग।

समेर—देखो सुमेर' (रू. भे.)

उ०—रसविलास का यंद, वचन का हरचंद, समेर का भार, कुमेर का भंडार।—बगसीरांम प्रोहित री वात

समेळ—वि.—१ मिश्रित।

२ युक्त, सहित।

उ०—जवनां समेळ दळ तुरंग जुंग, तिण वार मिळै नह टळै तुंग।

—रा. रू.

३ साथ।

४ एकत्रित।

५ देखो 'सिवळ' (रू. भे.)

समेळण—देखो 'सम्मेलन' (रू. भे.)

समेळौ—वि.—१ साथ, शामिल।

उ०—१ मगरै 'राजड़' 'जगड़' समेळा, 'सांमळ' नाहरखांन सचेळा।—रा. रू.

उ०—२ साख साख सुर असुर समेळा, अवधगिर साहै अडर।

तिण ततखरा लिया रासावत, धूणै सायर ग्रमर घर ।
—महाराजा करणसिंघ

२ एकत्रित, इकट्ठा ।

उ०—इम पतसाह सुणै अकुळायौ, अहि जांणै जूवळ तळ ग्रायौ । भिळिया जांण सुरा विख भेळा, सोर ग्रगन किर थया समेळा ।
—रा. रू.

३ मेल रखने वाला, मित्रता रखने वाला ।

उ०—१ है उमत्त गज मत्त सुभट पण रत्त समेळा, देस देस देसोत साथ कमधज्ज सचेळा ।—रा. रू.

उ०—२ वडी लाज धांधल्ल संग्राम वेळा, महाराज रै काज खीची समेळा । हुग्रां राड़ ग्रागै वधै पाड़िहारं, वधारै संभारै धणी वार वारं ।—रा. रू.

उ०—३ भाटी पिण ग्राया दळ भेळा, मांण घणै चहुवांण समेळा । सरसौ जोर हुवौ पतसाहै, मंद विखौ पडियौ धर मांहै ।—रा. रू.

४ युक्त, सहित ।

उ०—नसतर धर नायकां, मिळै पायकां समेळा । मेवा जेसळ मिळै, ऊर रूपा सचेळा ।—सू. प्र.

५ बराबर, तुल्य ।

६ देखो 'सांमेळौ' (रू. भे.)

समै—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ तिण समै पंवारै गायां लीवी । तरै पड़िहार गोहिल भेळा हुय वाहर चढिया ।—नैणसी

उ०—२ सींगड़ियां ऊगण समै, बाछडुवां री वंक । खबर पड़ै धुर खेंचसी, ग्रौ तौ ग्राडै ग्रंक ।—बां. दा.

उ०—३ ग्राधी रात री समै हुती ।—नैणसी

उ०—५ संध्या समै रावजी महिलां पधारिया तरै ग्रपछरा मुजरो करनै सीख मांगी ।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—५ मनछा परब्रह्म हिंगोळ माता, समै सात पोरां रमै दीप साता । जंबू दीप मैं जांम एको जिकांरो, दिसा पच्छमी दूर प्रासाद द्वारो ।—मे. म.

२ देखो 'सम' (रू. भे.)

उ०—कंठ पोत कपोत कि कहुं नीळकंठ, वडगिरि कालिंद्री वळी । समै भाग किरि संख संखधर, एकणि ग्रहियौ ग्रंगुळी ।—वेलि

समैकत-वि.—एकत्रित ।

उ०—बिध बिध सहेली बाडियां छाजै छै । ग्रांबा, खजूरि, केळा नारेल राजै छै । पिसता छुहारा दाख बिदांमां समैकत की छै ।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

समैयौ—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—ह्वाचौ म्हारी सहियां ए जांभोजी रा मेळा मैं । ग्राज रो समैयौ म्हारा जंमेसर री मेळे चालौ ।—लो. गी.

समोद-वि.—हर्ष सहित ।

रू. भे.—सम्मोद ।

समोदनी-सं. स्त्री. [सं. समुदायिनी] सेना, फौज (ह. नां. मा.)

समोपणौ, समोपबौ—१ देखो समपणौ, समपबौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक स्थाल विसाल वाटुली सीप कचोलां भ्रंगारादिक भाजन सरवै समोपइं........।—व. स.

उ०—२ पुत्ति भतारिहिं देवी ग्रति घणुं मनावी, पुत्तु समोपीउ सय ग्रापणि नवि ग्रावी ।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ हारू समोपीउ नरवरह्न सतीय रेसि ग्रनु कमलु लिद्धऊ ।
—सालिभद्र सूरि

समोपणहार, हारौ (हारी), समोपणियौ—वि० ।

समोपिग्रोड़ौ, समोपियोड़ौ, समोप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समोपीजणौ, समोपीजबौ—कर्म वा० ।

समोपियोड़ो—देखो 'समपियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. समोपियोड़ी)

समोबड़, समोबड़्यो, समोभर—१ देखो 'समवड़' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—मन महरांण समापण मोजां, कापण दीनां चा कुरंद । दीजै किसौ समोबड़ दूजां, पेखै चकत रहै पुरंद ।—र. रू.

२ देखो 'समोवड़ियौ' (रू. भे.)

उ०—करनी मुख सूं यूं कह्यौ, रख करंड सकट पर । करंड कियौ गिर मेरू कह, ब्रह्मांड समोभर ।—जुझारसिंह मेड़तियौ

समोभरम, समोभ्रम, समोभ्रमी—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

उ०—१ 'खेम' समोभ्रम 'थांनसी', भंडारी 'विजराज' । सकतसिंघ 'चांपा'हरौ, कमधज मुदै सकाज ।—रा. रू.

उ०—२ मांनसिंघ धिन धिन मेवाड़ा, ग्रत प्रब्र भीम तणौ ग्रवसांण । जोळा हुवै घणा नर जीवा, भेळौ हुवौ समोभ्रम 'भांण' ।
—दुरसौ ग्राढौ

उ०—३ धारूं जळ 'जोध' समोभ्रम धींग, सूरां खळ चूर करै रायसींघ ।—सू. प्र.

उ०—४ दांनै लख कोडी दियण, जुडि जीपण रिण जंग । सूरजसिंघ समोभ्रमी, दूजो 'गंग' ग्रभंग ।—गु. रू. बं.

उ०—५ मरद पवसाव भूसण कड़ा मूंदड़ी, कंठ डोरौ मुरति लवंग कांनां । तेमड़ा समोभ्रम खुड़द गेढा तणौ, थांन जाहर थयौ राज थांनां ।—मे. म.

समोयोड़ौ—देखो 'संमोह्यियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. समोयोड़ी)

समोवड़—देखो 'समवड़' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ तां मैं एक गयंद है, मेर समोवड़ गात । रिण वेळा रावत विहद, गिणै ग्ररि तिलमात ।—गज-उद्धार

उ०—२ सूर समोवड़ सूर री, सकै न कर संसार । तू न कटै समहर तिया, लगन परजळै लार ।—रैवतसिंह भाटी

२ देखो 'समोवड़ियौ' (रू. भे.)

समोवड़ियौ–वि.—१ समानता वाला बराबर का। (डिं. को.)
२ देखो 'समवड़' (रू भे.)
रू. भे.—समोवड़ियौ, समवड।

समोवण, समोवर—देखो 'समवड़' (रू. भे.)
उ०—१ कोड तेतीस सुर आय केळां करै, अमिरा मारमैं फुल आणंद। सोहियौ गाज करतौ असौ राजसर; **समोवण** हुआ जण सात सांमंद।—जोगीदास कवारियौ
उ०—२ इंद्र **समोवर** जांणीयै, रिद्धि करी राजांनौ रे। गुनह खमैं निज प्रजा तणौ, दिन दिन वधतै वांनौ रे।—वि. कु.

समोवणौ, समोवबौ—देखो 'संमोहणौ, संमोहबौ' (रू. भे.)
समोवणहार, हारौ (हारी), समोवणियौ—वि०।
समोविओड़ौ, समोवियोड़ौ, समोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
समोवीजणौ, समोवीजबौ—कर्म वा०।

समोवियोड़ौ—देखो 'संमोहियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. समोवियोड़ी)

समोवसरण—देखो 'समवसरण' (रू. भे.)
उ०—धन क्रतारथ तै नर नारि, जे वरतइं जिणधरम मझारि। **समोवसरणि** प्रभ करइं वखांण, तीह नी प्रसंसा महाविदे जांण।
—वस्तिग

समोसर, समोसरि–सं. पु.—१ श्रेष्ठ अवसर, मांगलिक अवसर।
उ०—सुंडादंड अहेस. राग रीझेस **समोसर**। वणि सिंदूर चित्रवेस, धार मदवेस पडै धर।—सू. प्र.
२ देखो 'समीसर' (रू. भे.)
उ०—१ अयौ रथ बैसि **समोसर** इंद, वसै सुरधांम अपच्छर वींद।
—सू. प्र.
उ०—२ चांपावत 'रांम' 'हरी' धर चोख, **समोसर** नाहरखांन सरोख।—रा. रू.
उ०—३ सहस तेर असवार, सीह सादूळ **समोसर**। बीस गयंद वेछाड़, निहंस पावस गिर नीझर।—सू. प्र.
उ०—४ सांकणी डाकणी सकति, सकति चवसठी **समोसरि**। समळ महासिध सकति, सकति वायणी सिकोतरि।—सू. प्र.

समोसरणौ, समोसरबौ–क्रि. अ.—आना, पधारना।
उ०—१ 'वीत-भय' पाटण **समोसरै**, भगवंत स्रीमहावीर। भाव सहित सेवा करूं, रहूं जिणां रै तीर।—जयवांणी
उ०—२ नेमि जिणिंद **समोसरचा**, वांदिवौ गयउ वासुदेवौ जी। दंढण कुमर साथि गयउ, सहुवांदी करइ सेवौ जी।—स. कु.
उ०—३ **समोसरचा** स्वांमी सेत्रुंज गिरि, जिनवर पूरव निवांणु वार। समयसुंदर कहै प्रथम तीरथंकर, आदि नाथ सेवौ सुखकार।
—स. कु.
उ०—४ इण प्रस्तावै **समोसरचा** केवलधार मुणिंद।—वि. कु.
उ०—५ नगर नै समीपै वन मैं **समोसरचा** रे, हौ साधु सहित भरपूर।—वि. कु.
समोसरणहार, हारौ (हारी), समोसरणियौ—वि०।
समोसरिओड़ौ, समोसरियोड़ौ, समोसरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
समोसरीजणौ, समोसरीजबौ—भाव वा०।

समोसरियोड़ौ–भू. का. कृ.—आया हुआ, पधारा हुआ।
(स्त्री. समोसरियोड़ी)

समोसी–सं. स्त्री.—बलवती।
उ०—जपै जनम गुण पूरण जोसी, सुर पुजा हव थई **समोसी**।
—रा. रू.

समोसौ–सं. पु.—१ मैदे की रोटी छुने हुए मांस के छोटे टुकड़ों को मसालों के साथ डालकर तेल में तल कर बनाया जाने वाला मांस जो नमकीन एवं स्वादिष्ट होता है।
उ०—१ सावडदी **समोसा** मांस सूळा भांति न्यारी, दारू पीय बैठा थाळ आबा की तयारी।—शि. वं.
उ०—२ नान्हौ छुनियौ मांस मंदी आंच कढाई मैं तळजै छै। वेसवार मसाला घात उहां मांडां मैं घातजै छै। तठा पछै मांडा गूंथ **समोसा** बणाय तळजै छै।—रा. सा. सं.
२ मैदे की छोटी पतली रोटी में मसालों के साथ प्याज आलू आदि डाल कर बनाया जाने वाला त्रिकोणात्मक नमकीन खाद्य पदार्थ।

समोह–सं. पु. [सं.] युद्ध, संग्राम।
वि.—१ मोहित।
२ मूर्छित,।
उ०—घडी बिच्यारी घणउं दल, थोभ्यउं वीर वावरइ लोह। तुरक बचा मूंगल कर कटीया, ऊपर पड्या **समोह**।—कां. दे. प्र.
रू भे.—सम्मोह।

समोहणौ, समोहबौ—देखो 'संमोहणौ, संमोहबौ' (रू. भे.)
समोहणहार, हारौ (हारी), समोहणियौ—वि०।
समोहिओड़ौ, समोहियोड़ौ, समोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
समोहीजणौ, समोहीजबौ—कर्म वा०।

समोहा–सं. पु.—एक वर्णिक व्रत विशेष जिसके प्रत्येक चरण में पांच गुरु वर्ण होते हैं।

समोहियोड़ौ—देखो 'संमोहियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. समोहियोड़ी)

समौ–सं. पु. [सं. समा] १ वर्ष, साल।
उ०—१ नमौ देस मारू धरा कोट नोवां, नमौ द्रंग गेढां कलां खुरद दोवां। प्रणम्मौ **समौ** च्यार छै नौ पहोमी, नमौ मास आसाढ री सुक्ल नोमि।—मे. म.
उ०—२ सक चव्वदह सत्र हू **समा**, लागौ इम जय लेर। मारि खळां लीधी महू, दळां पराभव देर।—वं. भा.
२ अध्याय, प्रकरण।

३ समय ।
४ यादव (भाटी) वंश की समा शाखा का व्यक्ति ।
५ अवसर, मौका ।
उ०—तरै आपरी वात मांड कही । नै देवराज रा हुजदार पिण वडा मांणस हुता तिण भलौ **समौ** जोय नै धार रा मुंहता नूं रावळ सूं मिळायौ ।—नैणसी
वि. (स्त्री. समी) १ समान, तुल्य, बराबर ।
उ०—१ मोती समौ न ऊजळो, चंनण समो न काठ । देवी समो न देवता, गीता **समो** न पाठ । —अग्यात
उ०—२ पय-तलि पद्म-प्रभा करि, रत्त कमल परि रंग । नख निरमल पाहनी **समी**, अंगुली अै सम संग ।—मा. कां. प्र.
उ०—३ जग मैं वंस उग्र गुण जोई, क्रत रवि वंस **समो** नह कोई ।
—रा. रू.
२ सीधा, सरल ।
उ०—सीख द्यो लाख न हुवै समा, खोटी जड रा खुंढीया । पारको निंद करता पगट, धरमी किहां थी ढूंढिया ।—ध. व. ग्रं
३ जो विरुद्ध न हो, अनुकूल ।
उ०—अई लघु वेस आदेस तौ आगळी, मन **समी** कयां अप राखवै मेळा ।—द्वारकादास दधवाड़ियौ
४ जैसा ।
उ०—सरव जगत रा जीव मारयां एक **समौ** संसार बधै नहीं । सरव जीव नीं दया पाल्यां एक समौ संसार घटै नहीं ।—भि. द्र.
५ जिसमें फेर या घुमाव न हो, अवक्र, सीधा ।
उ०—सहज मिटै न सदीव, टेव थी जाइ न टलीयै । स्वांन पुंछ न व्है **समी**, नित भरि राखौ नलीयै ।—ध. व. ग्रं.
क्रि. वि.—१ होते ही ।
उ०—१ कर हाक रीठ देतौ कहर, वीर डाक वगां **समौ** । अण-संक जोम रवहियौ अनड़, कूद बीच पड़ियौ 'कमो' ।
— प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ बूठौ क असण रुठौ संकर, सीह विछूटौ हुक **समौ** । फूटौ क सिंधु तुटौ मयण, कोट कूद जूटौ 'कमो' ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
२ ऊपर, पर ।
उ०—ताहरां रांमचंद ईंदै कहियो—तू म्हारै माथै **समो** है तूं भलाई नूं आव ।—नैणसी
३ ही, पर ।
उ०—१ अकबर सूं मिळतां **समौ** कहियौ तहवर खांन । आज न कौ जग आरंभै, 'सोनग' 'दुरग' समांन ।—रा. रू.
उ०—२ इतरै मांहै तीतर उपर करौ बोलीयौ, सु आकरौ बोलीयौ । बोलतां **समौ** कह्यो, 'कायजो मतां ढाळौ । तीतर कठै बोलीयौ छै, खबर करौ ।'—भाटी वरसै तिलोकसी री वात
उ०—३ सनमांन प्रथम मिळतां **समौ**, और गिणं कुण अप्पियौ । असपती गात परखै 'अभौ', सब गुजरात समप्पियौ ।—रा. रू.
उ०—४ इम कहतां **समौ** रायपाल कह्यौ, 'ठाकुरै अमल करौ' ।
—भाटी वरसै तिलोकसी री वात
४ तक, पर्यन्त ।
उ०—ऊ खेजड़ौ मरद री ताळ **समौ** छै ।—नैणसी
५ सामने, सम्मुख ।
उ०—जदूनाथ काळी **समी** बाथ जोडै, घणी भोम चाली चडी वात घोडै ।—ना. द.
६ ज्यौं ही ।
उ०—मिळै चोट सामौ **समी** दोट माथै, हुइ दुद्ध मल्लां तणी हेल हाथै ।—ना. द.
७ देखो 'समय' (रू. भे.)
उ०—१ इणी समै तिको रात आधी री **समो** छै तिको राजा रै कांन सुर पड्यौ । - जगदेव पंवार री बात
उ०—२ प्रळै समौ किर अंतक पायौ । वाघ अचिंत किणहि वत-ळायौ ।—रा. रू.
रू. भे.—संमौ, संवौ, समां, समु, सुंवौ ।
अल्पा.—समयौ, समियौ ।

सम्म—वि. [सं. श्याम] काला, श्याम ।
उ०—बिनै जड़ाव बाजुबंध, **सम्म** पाट सोहिया । खिखंड साखि जांणि सप्प, मैण धार मोहिया ।—सू. प्र.

सम्मत—स. पु. [सं. सम्मतं] १ इकरारनामा, कौल, करार ।
२ राय, सम्मति ।
उ०—१ स्वांमी रा **सम्मत** बिहूण भी जोईयां तिकण नूं मारण चहै ।—वं. भा.
उ०—२ सो स्वांमी रै **सम्मत** हुवां तो इसड़ौ कवण सो मोनूं जाति रै बहिरगत करै इण कारण एक आपरो ही आतंक आंणि डरूं ।—वं. भा.
३ विचार ।
उ०—इसड़ौ **सम्मत** करि काळ रा खैंचियां प्रेतपति री पुरी रा पाहुणां होइ हुकम रै प्रमांण तत्काळ ही लेख करि भिळाई दीधो ।
—वं. भा.

सम्मति—सं. स्त्री.—१ सलाह, राय ।
२ अनुमति ।
३ अभिप्राय ।
रू. भे.—समति ।

सम्मद—सं. पु. [सं.] १ एक बहुत बड़ा मत्स्य रत्न जो अपने विशाल परिवार सहित जल में रहता था । इसी पारिवारिक सुख को देख कर सोभरि ऋषी विवाह करने के लिए उत्सुक हुए थे ।
२ देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—पित्थल इम आयौ परणि **सम्मद** पायौ सोम। —रा. रू.

सम्मन–सं. पु. [अ. समन] एक प्रलेख जिसमें न्यायालय किसी व्यक्ति के नाम आदेश जारी करता है कि वह न्यायालय में उपस्थित हो।

क्रि. प्र.—**आणौ, भेजणौ, मिळणौ**।

रू. भे.—समन।

सम्मर–सं. पु.—१ वैभव, ऐश्वर्य।

उ०—वप सोच कंप **सम्मर** विरह, करै संकोच फकीर रौ। कारण अथाह वरणै कमण, उर दुख दाह अमीर रौ।—रा. रू.

२ देखो 'समर' (रू. भे.)

उ०—१ असुरां दिस लिख एम, करै दळ सबळ भयंकर। पवंग पूर पाखरां, सूर सिलहां बळ **सम्मर**।—सू. प्र.

उ०—२ देवौ सेवै सकति दिनंकर, सांमि कांमि चाहंतां **सम्मर**। —रा. रू.

३ देखो 'स्मर' (रू. भे.)

सम्मरदण, सम्मरदन–सं. पु. [सं. सम्मर्दन] वसुदेव व देवकी के पुत्रों में से एक।

सम्मळा–सं. स्त्री.—देवी विशेष।

उ०—देवी काळिका कूबजा कांम कांमा, देवी रेणुका **सम्मळा** रांम रामा।—देवि.

२ चील।

उ०—जंबक जख प्रघळ मिळिया **सम्मळ**, होऊं हूकळ रत हिळै। डाइणि भख डळ डळ चूंपै चळबळ, पळ भैंरव वळ वळ भूत भिळै। —गु. रू. बं.

३ यमुना।

वि.—श्यामवर्ण का।

रू. भे.—समळा।

सम्मवणौ, सम्मवबौ—देखो 'समाणौ, समाबौ' (रू. भे.)

उ०—काळउ कोटा कारणइ, विढिवा वीरति वाइ। ससमथ जरदि न **सम्मवइ**, असुराइ थट्टि न माइ।—रा. ज. सी.

सम्मसेर—देखो 'समसेर' (रू. भे.)

उ०—वहै **सम्मसेरं**, झरै झट्ट झेरं। कटै आच ओणं, रडै रत्त सोणं।—गु. रू. बं.

सम्मांण, सम्मांन–सं. पु. [सं. सम्मान] आदर, प्रतिष्ठा।

रू. भे.—समांण, समांन।

सम्मा–वि.—१ समान, तुल्य।

उ०—देवी सावित्री गायत्री ब्रम्म ब्रम्मा, देवी साच तणा मेळिया जोग **सम्मा**।—देवि.

२ देखो 'समा' (रू. भे.)

सम्मास–वि. [अ. शम्मास] सूर्य के पुजारी, सूर्य-पूजक।

सम्मुख, सम्मुह–वि. [सं. सम्मुख] सम्मुख, समक्ष।

उ०—१ बीरां **सम्मुह** बेग, पूंछ पटकै मंडळ मित। एकण खीची आइ सबळ, कीधा खळ संकित।—वं. भा.

उ०—२ बधव विजो पलटि खळ बणियौ, अकबरदळ, **सम्मुह** ऊफणियौ। सो 'सुरतांण' हणै फौजां सह, अब्बू विदित कियौ रण आग्रह।—वं. भा.

सम्मूढ–वि. [सं.] १ मोह युक्त।

२ टूटा हुआ, भग्न।

३ ढेर लगा हुआ।

सम्मूळ—देखो 'समूळ' (रू. भे.)

उ०—हुवै हैमरां हूह **सम्मूळ** हल्लै, चली फौज गै-जूह पाहाड चल्लै। —गु. रू. बं.

सम्मूह—देखो 'समूह' (रू. भे.)

उ०—वाराह धडक्कै दाढ खडक्कै, कंध कडक्कै कूरम्मं। **सम्मूह** सळक्कै कूंत वळक्कै, खेंग खळक्कै कंजम्मं।—गु. रू. बं.

सम्मेटणौ, सम्मेटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

उ०—दियौ कंत वेगौ हवै वेग दीधौ, काळी नागरि नारि उच्छाह कीधौ। आगै नागणी भेट **सम्मेट** आंणै, जदूनाथ लीजै जको राज जांणै।—ना. द.

सम्मेलन–सं. पु. [सं.] १ किसी विशेष उद्देश्य से अथवा किसी विशेष विषय पर विचार करने हेतु एकत्र होने वाला मनुष्यों का समूह।

२ मिलाप, संगम।

३ जमाव, जमघट।

४ कोई बहुत बड़ी संस्था।

ज्यूं—हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

सम्मै—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—बड़ा अमीर बुलाय, साह भेजे तिण **सम्मै**। 'अजा' 'जसा' दिस असुर, मुहम नहं को आंगम्मै।—सू. प्र.

सम्मोद—देखो 'समोद' (रू. भे.)

सम्मोह—देखो 'समोह' (रू. भे.)

सम्मोहणौ, सम्मोहबौ—देखो 'समोहणौ, समोहबौ' (रू. भे.)

सम्मोहणहार, हारौ (हारी), सम्मोहणियौ—वि०।

सम्मोहिओड़ौ, सम्मोहियोड़ौ, सम्मोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सम्मोहीजणौ, सम्मोहीजबौ—कर्म वा०।

सम्मोहियोड़ौ—देखो 'समोहणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सम्मोहियोड़ी)

सम्मोहण, सम्मोहन–सं. पु. [सं. सम्मोहन] कामदेव के पांच बाणों में से एक।

सम्मौ—देखो 'समौ' (रू. भे.)

उ०—नमो सुक्र संध्या घणौ स्रेस्ट **सम्मौ**, नखित्रां तणौ पातिसा स्वाति नम्मौ। महालक्ष्मी मात धापां नमांमी, नमो मात रौ तात सामुद्र नांमी।—मे. म.

सम्यक–वि. [सं. सम्यक्] १ पूरा, समस्त।

२ यथार्थ, विशुद्ध ।

उ०—मूलतें सात मिटात है घातक आवत **सम्यक भाव** अलेखें ।
—ध. व. ग्रं.

सम्यकचरित्र–सं. पु. यौ. [सं.] अत्यन्त शुद्धतापूर्वक व धर्म के अनुसार आचरण । (जैन)

सम्यकग्यांन–सं. पु. यौ. [सं. सम्यकज्ञान] जैनियों के धर्म्मत्रय में से एक । (जैन)

सम्यकदरसण, सम्यकदरसन–सं. पु. यौ. [सं. सम्यकदर्शन] सातों तत्वों एवं आत्मा आदि में पूरी पूरी श्रद्धा होना । (जैन)

सम्यकदरसी–सं. पु. यौ. [सं. सम्यकदर्शिन] वह व्यक्ति जिसे 'सम्यक-दर्शन' प्राप्त हो । (जैन)

सम्यकसंबुद्ध–सं. पु. [सं. सम्यकसंबुद्ध] १ वह व्यक्ति जिसे सब बातों का ठीक व पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया हो । (जैन)

२ गौतमबुद्ध का एक नाम ।

सम्यकत्व–सं. पु. [सं.] १ नव तत्व और छः द्रव्यों में दृढ श्रद्धा होने का भाव । (जैन)

उ०—१ किसिउ धर्मः, अहिंसालक्षण, सत्याधिस्ठित, स्तेनरहित ब्रह्मचर्य गुप्त, संतोषपरम एवं विध, अथवा यथाशक्ति दान दीजिइ, शील पालीयई, तप तपियइ, भावना भवियइ, **सम्यकत्व** परिपालियं देव पूजियइ........। —व. स.

उ०—२ जब स्वांमीजी अखर बताय दिया अनें बोल्या : गूजरमलजी थांरै **सम्यकत्व** रहणी कठिण है आसता कची तिण सूं । —भि. द्र.

उ०—३ कीड़ी नें कीड़ी सरधै सो **सम्यकत्व** के कीड़ी सम्यकत्व जद तै बोल्यौ : कीड़ी नें कीड़ी सरधै तै सम्यकत्व ।—भि. द्र.

रू. भे.—समकत, समकित, समगत ।

सम्यौ—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—अर आटौ ल्याय रोटा कीधा गौल ल्याया घरत ल्यायौ । अर रात रौ **सम्यौ** थौ । जो ओखळी माहै ठंड सूं कर साप आय बैठौ ।
—पंचमार री बात

सम्रत—१ देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

उ०—भाखै वेद पुरांण भख, अरु **सम्रत** की साख । पावै हरिगुण पार कुण, पच पच हारै लाख ।—गज-उद्धार

२ देखो 'समरथ' ।

सम्रतवेता—देखो 'स्म्रतिवेता' (रू. भे.)

उ०—कीधा माजो न्याव किल, जग मांभल जेताह । काजी सुण धिन धिन कहै. विप्र **सम्रतवेताह** ।—बां. दा.

सम्रति—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

सम्रतीयंद–सं. पु.—कवि । (अ. मा.)

सम्रतिवेता, सम्रतीवेता—देखो 'स्म्रतिवेता' (रू. भे.)

सम्रत्थ, सम्रथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ अधीस पऐं नख कोटि मरक्क, **सम्रत्थ** सिरज्जण भांजण सक्क ।—ह. र.

उ०—२ कही कथ राव धकै कवराज, सबै कर **सम्रथ** सोध समाज ।—पा. प्र.

उ०—३ हरीया गुर **सम्रथ** मिळै, तौ सिख ही सम्रथ होय । सांम खड़ै युं सूंरिवा, भाजि न जावै कोय ।—अनुभववांणी

सम्रद्ध–सं. पु. [सं. समृद्ध] सर्पसत्र में दग्ध धृतराष्ट्र के कुल में उत्पन्न एक नाग ।

वि.—सम्पन्न, वैभवशाली ।

सम्रद्धि, सम्रद्धी–सं. स्त्री. [सं. समृद्धि] अत्यधिक सम्पन्नता ।

उ०—वैरागवृद्धि सुख बळ **सम्रद्धि**, निरभय निसांन निरधन निधांन ।—ऊ. का.

सम्रधीक–वि.—समृद्धिशाली, वैभवशाली ।

उ०—क्रांति ग्रहांपति कळा अमीधार तणी कहै, ओप सेख भार पणां बीर कोध आरीख । बांणां कोवंतेस जेम रूकां सत्रसाल बळी, सिंध डांण **सम्रधीक** कुबेर सारीख ।—भगतरांम हाडा रौ गीत

सम्रागी, सम्राग्यी–सं. स्त्री. [सं. सम्राज्ञी] सम्राट की पत्नी ।

सम्राज–सं. पु. [सं.] १ चक्रवर्त्ति राजा की उपाधि या चक्रवर्ति राजा ।

२ चित्ररथ एवं ऊर्णा का पुत्र एक राजा जो मरीची का पिता व उत्कला का पति था ।

सम्राट–सं. पु. [सं. सम्राट] १ वह बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन कई छोटे बड़े राजा-महाराजा हो ।

२ भरतवंशीय राजा चित्ररथ एवं ऊर्णा का पुत्र, उत्कला का पति एवं मरीचि के पिता का नाम ।

रू. भे.—समराट, सांमराट ।

सम्रिति—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

सम्रत्यमुद्रा–क्रि. वि. [सं. समृत्यमुद्रा] मृत्यु की मुद्रा के साथ, मृत्यु की निशानी सहित ।

उ०—इसिउं विमासी मनि पारथ निद्रा, मेल्हि नरेंद्रै सु **सम्रत्य-मुद्रा** । निद्रा ति घूमिइं हथियार छांडइ, कोई किही सिउं नवि भूझ मांडइ ।—सालि सूरि

सम्स–सं. पु. [सं. शम्स] १ रोशनदान ।

२ सूरज, सूर्य ।

सम्हाळणौ, सम्हाळबौ—देखो 'संभाळणौ, संभाळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ महाराजा सूरसींघ रौ दखण मैं जांणौ तथा महाराज कुमार गजसिंघ रौ सासण भार **सम्हाळणौ** ।—गु. रू. बं.

उ०—२ मगसर ठंड बहोंती पड़ै, मोहि वेग **सम्हाळो** हौ ।
—मीरां

उ०—३ बूंदी आइ **सम्हाळि** बळ, सावधांन करि सरब । दूदौ मुड़ि रह्यौ दुसह, पावण रण जस परब ।—वं. भा.

सयंकळ—देखो 'सांकळ' (रू. भे.)

उ०—गरज्जंत नाग फिरै गयणाग । **सयंकळ** तोड करै तळ-जोड ।
—गु. रू. बं.

सयंगार—देखो 'सिणगार' (रू. भे.)

उ॰—तीजें घरि घरि मंगळचार, चहुं दिसी कांमनी करई हो **सयं-गार**।—वी. दे.

सयंतउ-वि. [सं. सचिंतक] उतावला, उत्तेजक, व्याकुल।

उ॰—एहु न कोईय करउ विचार, द्रूपदरांणीय पच भतार। साहु कही नइ गयणि पहूतउ, पंडु नराहिवु हूयउ **सयंतउ**।

—सालिभद्र सूरि

सयंद-सं. पु.—१ स्वर्ण, सोना।

२ शयन।

सयंबर, सयंवर, सयंवरु—देखो 'स्वयंबर' (रू. भे.)

उ॰—१ धरियौ पण जनक इसी मन धारै, धनक पिनांक चढाय धरै। महपत आय **सयंबर** मांहैं, वसुदा कुमरी तिकौ वरै।

—र. रू.

उ॰—२ **सयंवर** मंडप मंडाउं, सहु देसाधिप तेडाउं। इण सरिखौ जो वर पाउं तो बेटी ने परणाउ हो लाल।—स्रीपालरास

उ॰—३ परिणावेवा तींह बाल **सयंवरु** मंडाविउ। गंगानंदणु चडीउ रोसि अणतेडिउ आव्यौ।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'स्वेतांबर' (रू. भे.)

उ॰—जिणि जगि जीतउ समरसि अमर सिरोमणि कांसु। विलसइ सिद्ध **मयबर** संवरगुणि अभिरांमु।—जयसेखर सूरि

सयंमी-वि. [सं. संयमिन्] १ मन और इन्द्रियों को वश में रखने वाला, जितेन्द्रिय।

सं. पु.—२ बुरी व हानिकारक वस्तुओं से परहेज रखने वाला, साधु, संन्यासी।

सयंभू—देखो 'स्वयंभू' (रू. भे.)

सय-सं. पु. [सं. शयः] १ हाथ। (डिं. को.)

उ॰—१ यों मद्दल भुजबंध सों **सय** सज्ज सुहाया।—वं. भा.

उ॰—२ कमनैत तीरन तांनिकै पखरैत बेधत पांनि कैं बुधतनय हित जय प्रणय नय बय छपय रन सुम अभय अतिसय विसय चय भुव बलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नयनिलय अतिरच अजय खयकर अखय जय अग्र उभय **सय** पय हृदय अप-चय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।—वं. भा.

२ निद्रा, नींद।

३ शय्या, सेज, खाट।

४ सांप विशेष।

वि.—१ सब, समस्त।

२ देखो 'सौ' (रू. भे.)

उ॰—१ पनरम धरम तयालीस गणि चौसठ हजार। साहु साहुणी बासठ सहस अनें **सय** चार।—ध. व. ग्रं.

उ॰—२ चउथउ हूइ एक कोडाकोडि, बइतालीस वरस नी ओटि। पंच **सय** धनुस देह परिमांण, दूअ कोडि आउखउं जांणि।

—वस्तिग

३ देखो 'सै' (रू. भे.)

४ देखो 'स्वयं' (रू. भे.)

उ॰—१ पांचमइ दूसमि वरती आंण वरिस तै एकवीस जांणि। सात हाथ देह सुकुमाल **सय** वरिस माहि पहुचइ काल।—वस्तिग

उ॰—२ थांनकि थ्या सांमी नितु ध्याइं, सहस पल्योपम करम खजी जाइं। जे नर नारि अभिग्रह लिति, **सय** गुण पापकरम खिपंति।

—वस्तिग

सयगहीदोस—ग्रहस्थी के घर से अपने आप उठाकर आहार लेने से होने वाला पाप। (जैन)

सयण-सं. स्त्री.—१ सखी, सहेली। (अ. मा.)

२ देखो 'सयन' (रू. भे.)

उ॰—बणि बंगळा बहु केल्यां, कुसुम लता कितान। मानहु मदन महीप रा, तणिया **सयण** बितान।—सिवबक्स पाल्हावत

३ देखो 'सैण' (रू. भे.)

उ॰—१ पर भोम पंचायण **सयणां** रो सेहरो, दुसमणां रो नाट-साळ, वडो झोकाइत।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ॰—२ छोटी वीख न आंपड़ां, लांबी लाज मरेह। **सयण** बटाऊ वाळरै, लंबउ साद करेह।—ढो. मा.

उ॰—३ धिन दीहाड़ो धिन घड़ी, धिन वेळा धिन वास। नयणे **सयण** निहाग्यिा, पूरी मन री आस।—अग्यात

उ॰—४ मांन गहेली मांननी, विरुअउ बोल्यौ बयण। विण आदर न रहै कदे, सिंह सूर नै **सयण**।—प. च. चौ.

उ॰—५ साचा रा **सयण** हुवै घणा ए, साचा रै न बंधै बैर कै। छल छिद्र नहीं हुवै ए, सांच सूं उतरै जहर कै।—जयवांणी

उ॰—६ मनड़ो आज उमाहियो, देख घटा घनघोर। **सयणां** सांई दै मिळू, अलजौ 'जसा' सजोर।—जसराज

सयणआरती—देखो 'सयनआरती' (रू. भे.)

सयणबोधिनी—देखो 'सयनबोधिनी' (रू. भे.)

सयणमंदिर—देखो 'सयनमंदिर' (रू. भे.)

सयणाचार-स. पु. [सं. स्वजनाचार] १ अपनों का सा व्यवहार।

(उ. र.)

२ भला व शिष्ट व्यवहार।

सयणी—देखो 'सैणी' (रू. भे.)

सयद—देखो 'सैयद' (रू. भे.)

उ॰—**सयद** पठांणां सिरे पमंग झोकूं पखराळो।—सू. प्र.

सयधण—देखो 'सायधण' (रू. भे.)

सयन-सं. पु. [सं. सयन] विश्वामित्र के पुत्र तथा गाधि के पौत्र का नाम।

सं. स्त्री. [सं. शयनं] १ निद्रा, नींद। (डिं. को.)

२ शय्या, सेज। (अ. मा; डिं. को.)

३ संभोग, मैथुन।

रू. भे.—सयण, सैण।

सयनआरती-सं. स्त्री. यौ. [सं. शयनआरती] वह आरती जो रात्रि के समय देवताओं को सुलाने के लिए की जाती है।

रू. भे.—सयणआरती।

सयनघर-सं. पु. यौ. [सं. शयनगृह] शयनागार।

सयनपुन-सं. पु. [सं. शयन+पुण्यं] खाट, पलंग आदि के दान से होने वाला पुण्य। (जैन)

सयनबोधिनी-सं. स्त्री. यौ. [सं. शयनबोधिनी] मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

रू. भे.—सयणबोधिनी।

सयनमंदिर-सं. पु. यौ. [सं. शयनमंदिर] सोने का स्थान, शयनगृह।

रू. भे.—सयणमंदिर।

सयना-सं. स्त्री.—अग्नि, आग। (नां. मा.)

सयनागार-सं. पु यौ. [सं. शयनागार] शयनगृह।

सयनीय-सं. स्त्री.—शय्या, सेज। (अ. मा.)

सयनैकादसी-सं. स्त्री. [शयनैकादशी] आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

वि. वि.—इस दिन से भगवान् विष्णु सोते हैं एवं हरिप्रबोधिनि एकादशी को पुनः उठते हैं।

सयमंत-सं. पु. [सं. स्यमंतक] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि।

सयमंतपंचक-सं. पु. [सं. स्यमंतपंचक] भागवत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

सयमुखि-क्रि. वि.—सम्मुख, प्रत्यक्ष।

उ०—**सयमुखि** करता करइ बखांण, जीवित जनम आज परियांण —ढो. मा.

सयरइ, सयर, सयरि, सयरु—१ देखो 'सिर' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—कुणहू हल खेड़ि **सयर** ठाउ फेडी धन ऊपारजइ, कुणहू हाट मांडी आपणउं सर खांडि द्रव्य... .....।—व. स.

२ देखो 'सरीर' (रू. भे.)

उ०—१ निरंतर जु रमइ, आपणउ **सयर** दमइ। सकल धन गमइ, भीख भमइ।—व. स.

उ०—२ देवि सूरयवर लाधउ आगइ, देवि **सयरु** तिणि दैवति जागइ।—सालिसूरि

उ०—३ कवण काजि विनडिउ तइ **सयर**, कवण भूपति सिउं तुझ वयर।—सालिसूरि

उ०—४ जोड जींण भड भीखण भाला, वीर ना **सयर** केसर-याला।—सालिसूरि

उ०—५ समय घणउं स्रम स्रांत थ्यां, **सयरि** विछूटी स्वेद। घडप घणी अलगां थयां, सांसइ पडिया सुभेद।—मा. कां. प्र.

सयळ-वि. [सं. सकल] १ सब, समस्त।

उ०—१ सासू दादी सासुआं, राजी **सयल** रहंत। माजी नूं मीरां कहै, मोटा संत महंत।—बां. दा.

उ०—२ चिंता बांध्यो **सयळ** जग, चिंता किणहि न बध्ध। जे नर चिंता वस करइ, तें मांणस नहि सिध्ध।—ढो. मा.

उ०—३ गिळै गूंद सादडी, **सयळ** सावज मन रंजे। कोलर तोडि करंक, गूह गरजी खत भंजे।—गु. रू. बं.

उ०—४ कटकां विध दाखै राव कमधज, पौरिस खळ ईढगरां प्रमांण। **सयळ** वखांण करै नव सहंसा, कित धिन धिन अभनिमा 'कल्यांण'।—प्रथ्वीराज ऊदावत रो गीत

२ संसार।

उ०—विजमल तुझ दीठै वीसरिया, **सयळ** तणां भूपति सिगळेय। दूजां तीह भजै किम डूंगर, निरख्यो ज्यां सुरगिरि नयणेह।

—ईसरदास बारहठ

३ देखो 'सैल' (रू. भे.)

उ०—१ किता दिवस रहनै करुणाकर, इल सिवरी चोकरे उधार। **सयळ** सयळ वन जोवण सीता, हाले आगळ फेर हरि।—र. रू.

उ०—२ जिण **सयल** तणां नदी नीर जिम जीता सेन असंख जिण। लखधीर तणो सुरतांण लग, ताप न खिम्मै रोद्र तण।

— मालो आसियो

उ०—३ सा पुरसां संतोखियां, खाणां जवहर खांण। बेलां चित्रां बेलड़ी, पारस **सयळ** पखांण।—बां. दा.

सयांण, सयांणउ—देखो 'सयांणो' (रू. भे.)

उ०—१ रांम कहतां रे ह्रिदा. सहजां होय **सयांण**। जे तूं गुण जांणै नहीं, पूछव बेद पुरांण।—ह. र.

उ०—२ सखि किम रहै **सयांण**, दाहक रूपी दरसवै। पावस पीव पयांण, हुवो सकार ककार हिव।—र. हमीर

सयांणप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

उ०—१ कांम क्रोध तृस्णा तजो, त्रिविध ताप गुण देह। सांई का सुमरण करो, परम **सयांणप** ओह।—ह. पु. वां.

उ०—२ लाख **सयांणप** कोड़ बुध, कर देखो सह कोय। अणहूंणी व्हैणी नहीं, हूंणी हो सो होय।—राव रिणमल री वात

उ०—३ **सयांणप** थी सो सब गई, जदि जीय उपज्यो पेम। लाज मिटी निरभै भयो, मन्यसा वाचा नेम।—परमानंदजी वणियाळ

सयांणो-वि. (स्त्री. सयांणी) १ तत्त्वज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी।

उ०—देख तमासा डरपिया कई साध **सयांणा** —केसोदास गाडण

२ समझदार, बुद्धिमान।

उ०—१ सुण समझै कोई सुघड़ **सयांणो** भोंदू सुण भम जावै।

—ऊ. का.

उ०—२ वयण सुणी रावत्त रोस, करि खरा रीसांणा। दोय चढिया अति कोप, दोय अति चतुर **सयांणा**।—प. च. चौ.

उ०—३ समझावै बहुधीत **सयांणां**, वाचक नीत विनीत। संख सेत

ह्वं रीत सदारी, पांडुर पीत प्रतीत ।—ऊ. का.

३ चतुर, होशियार ।

उ०—१ सखी **सयांणी** मोरी हंसत है, हंस हंस देवै ताळी ग्रे माय ।
—लो. गी.

उ०—२ सो एक दिन बादसाह रै दादी पोती बेगम थी सो पण **सयांणी** थी बादसाह री महरवांनगी थी ।
—जयसिंह ग्रांमेर रा धणी री बात

४ सरल स्वभाव वाला, सीधा ।

उ०—इतरै में सेखावत करणसिंह महाराज रै चाकर थौ भलौ **सयांणौ**ठाकुर सौ हजूर मैं बैठो थौ ।
—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

५ कपटी, धूर्त ।

६ पूर्णयुवा, वयस्क ।

उ०—बादसाह दोनां री बात सुणी थी तींसू कही—छोटी हमारै होवै तो ग्राछी । तरै काजी ग्ररज करी—जलाल सुघड़ छेल छै नै बूबना पण **सयांणी** छै ।—जलाल बूबना री बात

७ जानकार, विज्ञ ।

उ०—जोधपुर रै धणी रौ बडो बेटो, फेर ग्राप बातां **सयांणो** सो ग्राछी तरह सूं रहै । नकदी खरची पावै ।
—राठौड़ ग्रमरसिंह गजसिंहोत री बात

८ जादू टोने जानने वाला ।

९ चिकित्सक, वैद्य ।

१० वृद्ध, बूढा ।

रू. भे.—सयांण, सयांणउ, सयांनौ, स्यांणौ ।

सयांनक—सं. पु.—गिरगिट । (डि. को.)

सयांनप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

उ०—दादू एक सूं लै लीन होना, सबै **सयांनप** येह । सद्गुरु साधू कहत है, परम तत्व जप लेह ।—दादूबांणी

सयांनौ—देखो 'सयांणौ' (रू. भे.)

सयी—देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—उवो कोई सैण मिलावै **सयां** जो मारूड़ो देवै मिळाय ।
—रसीलैराज

सय्या—सं. स्त्री. [सं. शय्या] १ पलंग पर बिछा हुग्रा बिछौना
(डि. को.)

२ पलंग, चारपाई ।

रू. भे.—सइया, सज़्जा, सज्या, सझ्या, सयण, सयन, सिज्या, सिजिया, सेइया, सेज, सेझ ।

सय्यातर—सं. पु. [सं.] वह व्यक्ति जो जैन महात्माग्रों व मुनियों को ग्रपने यहाँ ठहरने का स्थान देता है ।

रू. भे.—सिज्यातर, सिज्यातरी, सेज्यातर ।

सय्यातर-पिंड—सं. पु. [सं.] वह ग्राहार जो जैन मुनियों को ग्रपने यहाँ ठहराने वाला व्यक्ति ही उन्हें भोजन-रूप में देता है जो कि मुनियों के लेने योग्य नहीं है । (जैन)

उ०—**सय्यातरपिंड** न खाय, मांचदिक नहीं वेसाय घर ग्रही तणे ए, वैसै नहीं सुपने ए ।—जयवांणी

सय्यापाळ—सं. पु. [सं. शय्यापाल] राजा के शयनागर का प्रबन्धक ।

सरंगौ—१ देखो 'सुरंगौ' (रू. भे.)

उ०—गुलजार बौज ग्रबलक्ख गात, सिंदळी ग्रने **सरंगा** सुभात ।
—सू. प्र.

२ देखो 'सारंग' (रू. भे.)

सरंजांम—देखो 'सराजांम' (रू. भे.)

उ०—ग्ररु पातसाह जी गुनामाफ कर फेर मुनसब दियौ । तथा मुहीम का हुकम दिया सूं **सरंजाम** हुवौ नहीं ।—द. दा.

सरंभर—वि.—सराबोर, तरबतर ।

सर—सं. पु. [सं. शरः, सरः] १ बाण, तीर ।
(ग्र. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ ताळ चरंती कूंझड़ी, **सर** संधियउ गंमार । कोइक ग्राखर मनि वस्यउ, उडी पंख समार ।—ढो. मा.

उ०—२ पछै कुंवर स्त्री दळपतजी ग्रापरै हाथ **सर** मारिया । ताहरां कुंवर स्त्रीबाळक हुता तिण **सर** ग्रंगुळ च्यार मार की ।
—द. वि.

उ०—३ ग्ररजुनु पूठि सिखंडडीयाह बइसी **सर** मूंकइ, पडीउ पीयामहु समर माहि किम ग्ररजुनु चूकइ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ चिहु पखे ग्ररजन बांण छूटइ, सन्नाह माहिइ **सर** सीघ्र फूटइ ।—सालिसूरि

२ दुग्ध, दूध । (डि. को.)

३ दूध की मलाई ।

४ पाँच की संख्या । * (डि. को.)

५ लड़ियों वाला हार, माला, कंठी ।

उ०—चंपा केरी पांखड़ी, गूंथूं नव **सर** हार । जउ गळ पहरूं पीव बिन, तउ लागै ग्रंगार ।—ढो. मा.

६ गति, गमन ।

७ जुलाब लगाने वाला पदार्थ ।

८ सिरा, छोर ।

९ सामुद्रिक शास्त्र के ग्रनुसार व्यक्ति की हथेली में होने वाला तीर का सा निशान जो शुभ फल का सूचक होता है ।

[सं. शरं, सरं] १० समुद्र, सागर । (डि. को.)

उ०—१ **सर** गिरवर तारै पदम ग्रठारै, सेन उतारै जगत सखै । भिड़ रांवण भंजै गढहिम गंजै, ग्रमरां रंजै ब्रहम ग्रखै ।
—र. ज. प्र.

उ०—२ ग्राथां भरै बाथां हाथां भोज ज्यूं लुटावै इळा, ठावी **सरां** सातांइ कीरती थटा थेट । बातां ग्रे न जावै बापौ घरै बैठां

पातां साढा सातबीसी पौचाया पाकेट ।

—मूळसिंघ करमसोत री गीत

११ तालाब, जलाशय । (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ घूंघट खोलंदी नहीं, बोलंदी पिक बैण । गजपत जावै गोरियां, लांबै सर जळ लेण ।—बां. दा.

उ०—२ लांबे सर पांणी भरै, गोरी गात अनूप । ज्यां आगै पांणी भरै, रंभ अलौकिक रूप ।—बां. दा.

१२ पानी, जल । (ह. नां. मा.)

१३ कूप, कुआ ।

उ०—थेट्ट घर संबर ऊंडा सर थागै, आंरै माळागर मूंढा रै आगै । सारी कीमत है करियोड़ा सारै, हीमत भरियोड़ा हीमत नह हारै ।

—ऊ. का.

१४ सात की संख्या । * (डिं. को.)

१५ जलप्रपात, झरना ।

१६ वह नीची भूमि जहाँ वर्षा का जल इकट्ठा हो जाता हो व सूखने पर ऐसी भूमि पर प्रायः गेहूं, ज्वार, चने आदि बोये जाते हों।

उ०—इण तरफ गांव केरिया, एक साख, खेती-बाजरी री, मूंग, मोठ, तिल । कूवै पांणी पुरसै २० मीठौ । बीजी तरफ कुछ दिसा, धरती कालार, तठै सर भरीजै, तठै ज्वार, गोहूं ।—नैणसी

१७ पक्ष । (मि. पखौ)

१८ सरपत की जाति का एक पौधा विशेष जिसमें गांठ वाली छड़ी होती हैं, सरकंडा । (डिं. को.)

१९ दो मात्रा के दो लघु का नाम । (डिं. को.)

२० छप्पय छंद का ३५ वां भेद जिसमें ३६ गुरु और ८० लघु से ११६ वर्ण या १५२ मात्राऐं होती हैं ।

२१ प्रशंसात्मक काव्य । (सर काव्य)

[फा. सर] २२ सिर, मस्तक । (डिं. को.)

उ०—१ एतलइ सुसरमा ढलि ढोल वाजइं, जांणे आसाढू किरि मेह गाजइ । हीया थ्र सूकइं सर सेस सूकइं, भय बीहता कायर जीव मूंकइ ।—सालिसूरि

उ०—२ भरम करम इनका हैं संगी, जे कोई दूरि विडारै रे । निसदिन नांव करत रुखवाळी, ग्यांन ध्यांन सर धारै रे ।

—अनुभववांणी

उ०—३ सूतळ नाथां सर नासां सणकारी, फुरणी दूधातां रासां फणकारी । भूसर धायां गळ आवढ कढ झांखै, नम नम सावढ नै नायां कण नाखै ।—ऊ. का.

२३ एक प्रकार अस्त्र विशेष ।

२४ हिमपात, पाला ।

उ०—पीतल परिकर पर चीतळ कर परसै, बेहद महितळ सिर सीतळ सर बरसै । खळ भळ खावण नै अगसिर खळ खेचै, बावळ बरफांरी तरफां सूं बेचै ।—ऊ. का.

२५ ताश के खेल में ऐसे रंग का पत्ता जो काट माना जाता हो ।

सं. स्त्री.—२६ उक्त खेल में जीती जाने वाले बाजी ।

ज्यूं—म्हांरी सात सरां बणी (बण्या) है ।

२७ रस्सी, डोरी ।

२८ जीत, विजय ।

उ०—१ तरै रावळ वजीर लाडक नूं कह्यौ–बीजूं तो सर पावां नहीं, तूं बूढौ पण हुवौ छै । तूं मरण तेवड़ नै खंगार नूं मारै तो पोहचां ।

—नैणसी

उ०—२ जद जलाल कही—सरंजांम पाऊं सो सर कर आंण मुजरौ करूं कै कागदां मैं ही लपेटियौ आऊं ।

—जलाल बूबना री बात

[अं.] २९ ब्रिटिश सरकार की एक सम्मानित उपाधि । महाशय, महोदय ।

ज्यूं—सर प्रताप ।

वि.—१ दबाया हुआ ।

उ०—कपट कोठारियां तणां इम किताई, जिकै सारा कया नहीं जावै । इणांनै सर करै जिसा जग आज दिन, आप बिन और नह निजर आवै ।—ऊमरदांन लाळस

२ हराया हुआ, पराजित ।

उ०—काळै सार बडै कारीगर, जीजरियां रण जुवा जुआ । पर लोहार किया सर पाधर, हालै सात्रव जेर हुवा ।—तेजसी सांदू

३ जीता हुआ, विजित ।

४ विजय प्राप्त किया हुआ, जीता हुआ ।

५ प्रमुख, प्रधान ।

६ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—बाल अवस्था बुध कछु नाई, चंचळ अति मलीना । सारासर सर मोसर न जांणै, पराधीन बळहीना ।—स्रीसुखरांम महाराज

७ तीक्ष्ण, तीखा । * (डिं. को.)

८ समाप्त किया हुआ ।

प्रत्यय—१ एक प्रकार का प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अन्त में लगकर अनुसार, मुताबिक, पर, ऊपर, सा, से अर्थ प्रकट करता है ।

उ०—मारण वाळै दुस्टी टाबर रै सरीर माथै सूं तीब री तीब उतार लीवी ही । कायदेसर पुलिस नैं इतला देवणी पड़ी । लास रो पोस्ट-मारटम हुयो अर तीजै दिन जावतां लास नैं दाग पड़्यौ ।

—अमरचूंनड़ी

ज्यूं—धंधसेर, कांमसर, नौकरीसर, बगतसर, ढंगसर, ठीकसर ।

२ पूर्व कालिक क्रिया के साथ जुड़ने वाला शब्द ।

उ०—तद बाकरखां भड़ाकदेसर घोड़े सूं उतर आप रै बेटै री हाथ झालि पकड़ घोड़े ऊपर चढियौ ।—ठाकुर जैतसी री वारता

३ देखो 'स्वर' (रू. भे.)

उ०—१ डींभू लंक, मराळि गय, पिक-सर पुहौ बांणि । ढोला,

एही मारुई, जेहा हूंभ निवांणि ।—ढो. मा.

उ०—२ बग रिखि राजांन सु पावसि बैठा; सुर सूता थिउ मोर सर । चातक रटै बलाहकि चंचळ, हरि सिणगारै अंबहर ।

—वेलि

सरअंगना–सं. स्त्री.—द्रौपदी । (अ. मा.)

सरअजीत–सं. पु.—अर्जुन । (अ. मा.)

सरक–सं. पु.—१ सरकंडा ।

उ०—टोटै सरकां भींतड़ा, घातै ऊपर घास । वारीजै भड़ झूंपड़ा अधपतियां आवास ।—वी. स.

२ शराब की प्याली, चुसकी । (डि. को.)

३ युद्ध के समय योद्धाओं के मस्तक पर पहने जाने वाले टोप का ऊपरी व नुकीला भाग ।

उ०—दंतादंति, मुस्टामुस्टि, एक अंगी लोहमइ आंगी करी, मस्तकि सरक करी हुआ युद्धोद्यत ।—व. स.

सरकड–सं. पु. [सं. शरः+काण्डः] १ नरकुल ।

२ बाण की लकड़ी । (उ. र.)

सरकडि–सं. स्त्री.—सरकंडा ।

उ०—सेवंत्री संधेसरा सूकडि सरकडि साय । सीमंतक सोहइ भला सरव सदाफल खाय ।—मा. कां. प्र.

सरकणौ, सरकबौ—देखो 'सिरकणौ, सिरकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बस्ती पांत रौही सुहांमणी लागै कुदरत रा सिणगार नैं आंख्यां फाड़-फाड़ ने देखताइज जाओ पण जीव तिरपत नीं व्है । मन ठालौ भूलौ धापै इज नीं । उठा सूं सरकण री मंसा ई नीं व्है ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ कर सूं ऐन दियौ किलौ, ऊभा पगां अभंग । किलौ लियौ विणहूं कठै, सरकूं लसकर संग ।—बां. दा.

उ०—३ उण छिण पछै दिन नीठ धकै सरकिया, जांणै किणी अदीठ खूंटै पेंखड़ीजग्या व्है ।—फुलवाड़ी

उ०—४ मरियां पछै जचै ज्यूं व्हौ पण हाल तौ दौ च्यार नैं मार नैं मरूंला । इण बोल रैं सागै वांरौ हाथ चाल्यौ अर सांम्हां ऊभा टणकचंद आमा सरकग्या ।—अमरचूंनड़ी

उ०—५ लागी रहती लोयणां, करतां काज अकाज । सरकी समर समाज मैं, लाज न राखी लाज ।—र. हमीर

उ०—६ इम सुण बाबेचा तौ सरक गया ।—भि. द्र.

उ०—७ नांम लियां थी मांनवां सरकै कलुस विसाळ । मह जेंसे मेटै तिमिर, रसम परस किरमाळ ।—र. रू.

सरकणहार, हारौ (हारी), सरकणियौ—वि० ।

सरकिओड़ौ, सरकियोड़ौ, सरक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरकीजणौ, सरकीजबौ—भाव वा० ।

सरकर–सं. स्त्री. [सं. शर्करा] १ बालू रेत । (अ. मा

उ०—पड़ती पुल पुल पर भुल भुल भरभूंजै, स गिरवर दर गूंजै ।—ऊ. का.

२ शक्कर ।

३ सूर्य, भानु । (अ. मा; नां. मा.)

सरकरा–सं. स्त्री.—शक्कर ।

सरकराचळ–सं. पु. [सं. शर्कराचल] दान करने के लिए बनाया जाने वाला शक्कर का पहाड़नुमा ढेर जिसका पुराणों में महत्व माना जाता है ।

सरकराचूरण–सं. पु. [सं. शर्कराचूर्ण] आयुर्वेदिक औषधि विशेष ।

सरकराधेनु–सं. स्त्री. [सं. शर्कराधेनु] दान के लिए बनाई जाने वाली शक्कर की गाय । (पौराणिक)

सरकराप्रभात–स. पु. [सं. शर्कराप्रभा] जैन मतानुसार एक नरक का नाम ।

सरकराप्रमेह–सं. पु. [सं. शर्कराप्रमेह] एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें मूत्र के साथ शक्कर आने लगती है, मधुमेह ।

सरकरासप्तमी–सं. स्त्री. [सं. शर्करासप्तमी] वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी ।

सरकस–सं. पु. [अं. सर्कस] वह खेल या तमाशा जिसमें तरह तरह की कलाबाजियाँ और जानवरों के करतब दिखाये जाते है ।

२ मनुष्यों की वह मण्डली जो जानवरों के साथ साहसपूर्ण कलाबाजियों का प्रदर्शन करते हैं ।

३ वह स्थान जहाँ जानवरों व मनुष्यों की नाना प्रकार की कलाबाजियों का प्रदर्शन किया जाता है ।

[फा. सरकश] ४ बागी, डाकू ।

वि.—१ विद्रोही ।

२ अशिष्ट ।

३ स्वेच्छाचारी ।

४ खुदराय ।

५ अवज्ञाकारी ।

६ मुंहफट ।

७ देखो 'सिरकस' (रू. भे.)

सरकसी–सं. स्त्री. [फा. सरकशी] १ उद्दंडता ।

२ बागी होने का भाव ।

सरकाणौ, सरकाबौ—देखो 'सिरकाणौ, सिरकाबौ' (रू. भे.)

सरकाणहार, हारौ (हारी), सरकाणियौ—वि० ।

सरकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरकाईजणौ, सरकाईजबौ—कर्म वा० ।

सरकायल–वि.—आवारा घूमने वाला, निठल्ला ।

उ०—कैणौ मांनै ना सीख सुवावै, ब्या'री नीची-नीची निजू निगै करै अर खुली फिरै है । सींगायल तथा सरकायल, सौ सौ जागा रचै है, वाजेगारी अर तेराताली नौ नौ ताल नाचै है । बाप नैं मोकळौ सोचै लागै, मूळी रै वर रौ कठै भाग जागै है ।—दसदोख

सरकायोड़ौ—देखो 'सिरकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरकायोड़ी)

सरकार-सं. स्त्री. [फा.] १ राज्यसत्ता, शासनसत्ता।
२ राज्यसभा, दरबार।
३ रियासत।
सं. पु.—४ ईश्वर, प्रभु।
५ मालिक, स्वामी।
६ बड़े व प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए संबोधन का आदर सूचक शब्द।
रू. भे.—सिरकार।

सरकारी-सं. स्त्री.—१ शासन सम्बन्धी, राजकीय।
२ सरकार सम्बन्धी।

सरकावणौ, सरकावबौ—देखो 'सिरकाणौ, सिरकाबौ' (रू. भे.)
सरकावणहार, हारौ (हारी), सरकावणियौ—वि०।
सरकावियोड़ौ—भू० का० कृ०।
सरकावीजणौ, सरकावीजबौ—कर्म वा०।

सरकियोड़ौ—देखो 'सिरकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरकियोड़ी)

सरकिल-सं. पु. [अं.] कई गाँव कस्बों आदि का क्षेत्र।
ज्यूं—जोधपुर सरकिल।

सरकेल-वि.—१ खिसकने वाला।
२ डरपोक, कायर।
३ सनकी।
४ जिद्दी, हठी।
५ उद्दंड।

सरको-सं. पु.—लज्जित होने की बात।
उ०—प्रथम मुवौ भरतार सुत एक मरगौ पछै, संक तज चोज री करै सरका। बोज री ठौड़ विदरां कनै लाजविम, जोजरी हमेसां लियै जरका।—बांकीदास आसियौ

सरक्कणौ, सरक्कबौ—देखो 'सिरकणौ, सिरकबौ' (रू. भे.)
उ०—१ वीस कोस दिस वांम, वीस दाहणै तरक्कै। जाळंधर सांमहौ करै बेमुहौं सरक्कै।—रा. रू.
उ०—२ ऊड़े लोहां बूर मल, सूर न जाय सरक्क। चढै गजां दांतू सळां, रण रीझवै अरक्क।—बां. दा.
सरक्कणहार, हारौ (हारी), सरक्कणियौ—वि०।
सरक्किओड़ौ, सरक्कियोड़ौ सरक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सरक्कीजणौ, सरक्कीजबौ—भाव वा०।

सरक्कियोड़ौ—देखो 'सिरकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरक्कियोड़ी)

सरक्यूलर-सं. पु. [अं.] सब जगह घुमाया जाने वाला प्रपत्र।

सरख, सरखउ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)
उ०—आप परायउ सरखउ गिणइ, साचुं थोडुं गमतूं भणइ।
—स. कु.

सरखरू-क्रि. वि.—सामने, सम्मुख।
उ०—तीन गुण नाप मन वचन निरदोस रहि, सांम सुं सरखरू संत साचै।—अनुभववांणी

सरखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)
उ०—१ जइ मझ सरखी सोलह नारि आपु आंणी भलै सिणगारि तु हुं जि राउ जिमाडेसु रंगि नव नव भोजन नव नव भंगि।
—हीराणंद सूरि
उ०—२ बिनै सबळ भुज अकळ सहंस बळ, खळ दळ खेरू करण खग। 'गजपत' सुतन सनढ गढ गाहण, कोय न तौ सरखौ करग।—सादूळजी खिड़ियौ

सरग-सं. पु. [सं. सर्ग] १ स्वभाव, प्रकृति। (अ. मा; ह. नां. मा.)
२ किसी ग्रंथ का अध्याय, सर्ग।
३ शिव का एक नाम।
४ बाण, तीर। (अनेका)
५ देखो 'स्वरग' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—१ सौ रूप री एसी, जेसी प्रथी मैं नहीं सरग री परी, आभै री वीज, मांनसरोवर रो हंस।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ जां चढ सती माता जोवियौ, हरजी सूं हेत लग्यौ। बायां! सरग नेड़ौ घर दूर, हरजी सूं हेत लग्यौ।—लो. गी.
उ०—३ मुनि घालै तप जोग बळ, सरग कपाटां हत्थ। वेही क्रपण कपाट नूं, ऊघाड़ण असमत्थ।—बां. दा.

सरगट-सं. पु.—घूंघट।
उ०—फरगट मारै फूटरा, कर सूं सरगट काढ। सठ दाखै भाळौ सरस, गिनका वाळौ गाढ।—बां. दा.

सरगणौ-सं. पु. [फा. सर्गनः] १ सरदार, अगुआ। (डूंगरपुर)
२ डींग हाँकना, शेखी बघारना।

सरगतरंगण-सं. स्त्री. [सं. स्वर्ग+तरंगणी] गंगा। (अ. मा.)

सरगदुवार, सरगदुवारौ-सं. पु.—स्वर्ग-द्वार, बैकुण्ठ का रास्ता।

सरगनदी—देखो 'स्वरगनदी' (रू. भे.)

सरगपत, सरगपति, सरगपती—देखो 'स्वरगपति' (रू. भे.)
उ०—सिंघासणौ वा इंद्रासणौ वा, प्रिथीपती वा सरगपती वा।
—गु. रू. बं.

सरगपुर, सरगपुरी—देखो 'स्वरगपुरी' (रू. भे.)

सरगपूज-सं. पु. [सं. स्वर्गपूज्य] वृहस्पति। (अ. मा.)

सरगम-सं. पु. [सं.] १ संगीत में सात स्वरों का एक समूह, थाट जो प्रत्येक राग के लिए अलग अलग होता है। इसमें षडज से निषाद तक के स्वर होते हैं।
२ वह प्रणाली जिससे उक्त स्वरों को साधा जाता है।
३ गीत, तान या राग में लगने वाले स्वरों का क्रमिक गायन।
रू. भे.—सरगम।

सरगरा-सं. स्त्री.—एक अनुसूचित जाति विशेष ।

सरगराजान-सं. पु. [सं. स्वर्ग+राज] स्वर्ग का राजा, इन्द्र ।

(ह. नां. मा.)

सरगरो-सं. पु (स्त्री. सरगरी) सरगरा जाति का व्यक्ति ।

सरगळ-वि.—तरबतर, शराबोर ।

उ०—हाथां रै राच्योड़ी मैंदी हींगळू री टीकी, गज गज लांबा वांसवाळी सूं सरगळ बाल ।—दसदोख

सरगलोक—देखो 'स्वर्गलोक' (रू. भे.)

उ०—१ प्रिथु वेलि कि पंचविध प्रसिध प्रणाली, आगम निगम कजि अखिळ । मुगति तणी नीसरणी मंडी, सरगलोक सोपांन इळ ।

—वेलि

उ०—२ राउ पहूतउ सरगलोकि गंगेय कुमारि, तउ लघु बंधवु ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि ।—सालिभद्र सूरि

सरगवट-सं. पु. यौ. [सं. स्वर्ग+वाटः] स्वर्ग का मार्ग, बैकुण्ठ का मार्ग ।

सरगवास—देखो 'स्वर्गवास' (रू. भे.)

सरगाजळ-सं. पु.—स्वर्ग ।

सरगापर, सरगापुर, सरगापुरि, सरगापुरी—देखो 'स्वरगपुरी' (रू. भे.)

उ०—१ आभपरै थी उछळ्या, जळ मा दीधौ झोक । सरगापर नै चोक, भेळा थासुं भांगना ।—जेठवा

उ०—२ मिटसी न धोखोय जूंझ मुएं, जावसां सरगापुर पंथ जुएं ।—पा. प्र.

उ०—३ जयजयकार हूउ सरगापुरि वइसी गयउ विमांनि ।

—कां. दे. प्र.

उ०—४ धरमी कूं बैठे तहां, धरमराज दरसाय । धरै देह कीधौ धरम, सौ सरगापुर जाय ।—गज-उद्धार

सरगि—देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

उ०—१ सुत नेह पंडु पहुंतै सरगि, पिंड राखै लालचपणै । रिध काज साथ कूंता रहिय, जिण हूंता धिक जीवणै ।—रा. रू.

उ०—२ चहुवांण न औसर चूकता, ऐं जुगतौ जगि थयौ । बालोत 'पंचाइण' 'सोनगिरि' चढै सरगि ऊतरि गयौ ।—गु. रू. बं.

उ०—३ सुख जिके इंद्र भुगतै सरगि, जिकै सुक्ख स्त्रब भोगवै ।

—गु. रू. बं.

उ०—४ प्रीय पासि पहुचउ मद मेल्ही, जाइसिइ सरगि मइं पगि ठेली । प्रीय आगलि किमइ जइ जाऊं, माहरा प्रीय तउ हउं सुहाऊं ।

—सालिसूरि

सरगिका-सं. स्त्री.—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण और सगण के क्रम से कुल नौ वर्ण होते हैं ।

सरगुजस्त, सरगुजस्थ-सं. स्त्री. [फा. सर+गुजश्त] १ स्वयं पर बीती हुई बात ।

२ जीवन-चरित्र ।

३ वर्णन ।

सरगुण—देखो 'सगुण' (रू. भे.)

उ०—निरगुण थी सरगुण हुआ क्या जांणै रंडा ।

—केसोदास गाडण

सरगुणियौ-वि.—सगुण ब्रह्म-उपासक ।

सरगुणौ - १ देखो 'सगुण' (रू. भे.)

२ देखो 'सगणौ' (रू. भे.)

सरगुलम, सरगुल्म-सं. पु. [सं. शरगुल्म] राम-रावण युद्ध में राम की सेना का एक सेनानायक बन्दर ।

सरगूड़ौ-सं. पु.—एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते पीपल के पत्तों से मिलते-जुलते होते हैं । यह प्रायः तीन प्रकार का पाया जाता है—कड़ुआ, खारा और मीठा । इसका उपयोग औषधियों में किया जाता है ।

सरगोसी-सं. स्त्री. [फा. सरगोशी] १ कान में बात करने की क्रिया, कानाफूसी ।

उ०—सेजां जाय निसंक पत सोसी, जो निज रूप नीजर भर जोसी । गात भीड़ उर मैं सरगोसी, हेली वौ मौसर कद होसी ।

—अज्ञात

२ पीठ पीछे शिकायत या आलोचना करने की क्रिया ।

सरगौ-सं. पु.—शुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो.)

सरग्ग—देखो 'स्वरग' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—यह तन जारी मसि करूं, धूंआ जाहि सरग्गि । मुझ प्रिय बद्दल होइ करि, वरसि बुझावइ अग्गि ।—ढो. मा.

सरग्गम—देखो 'सरगम' (रू. भे.)

उ०—अछै पग छांह जिसा कुळ सात, प्रेणम्मैं पग्ग सरग्गम सात ।

—ह. र.

सरग्गौ—देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

सरग्रह, सरघर-सं. पु. यौ. [सं. सर+गृह] १ जल, पानी ।

(अ. मा.)

[सं. शर+गृह] २ तूणीर, तरकस ।

सरघा-सं. स्त्री. [सं.] १ मधुमक्खी । (डिं. को.)

२ भौंरा ।

सरघात-सं. पु. [सं. शरः+घातः] तीरंदाजी ।

सरड़-सं. स्त्री.—पतली बेंत से पीटने पर उत्पन्न ध्वनि, आवाज ।

क्रि. वि.—शीघ्र, झट ।

रू. भे.—सुरड़ ।

सरड़को-सं. पु.—१ किन्हीं दो वस्तुओं, अंगों या अंग पर किसी वस्तु का होने वाला घर्षण, स्पर्श ।

२ उक्त घर्षण से पड़ने वाला निशान, चिन्ह ।

३ ऊंट की चाल विशेष ।

उ०—सो दो पोहर दिन पाछलै थकां उठा सूं नीसरिया सो ऊंचे सरड़कै ऊंठ नूं उडायां वहै छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

४ पतली बेंत से पीटने पर उत्पन्न ध्वनि ।

सरड़ाट, सरड़ाटो–सं. पु.—१ तेजी से दौड़ने या गतिमान होने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—१ लारा सूं एक मोटर **सरड़ाट** करती आई अर चौधरी रा कपड़ा लथपथ कर चालती बणी ।—रातवासो

उ०—२ अकरमी अर अन्याई राजा सूं बदळो लेवण सारू अर बिरखा सूं मिळण री उमायो बादळ अेक ई **सरड़ाटै** घोड़ा माथै बैठो उडियो जावतो हो ।—फुलवाड़ी

२ मुख या नाक से वायु को अन्दर खेंचने की क्रिया ।

उ०—किरियो तौ सौरम रा चार **सरड़ाटा** खांचिया अर मस्त व्हैगो ।—फुलवाड़ी

३ मुख या नाक से वायु को अन्दर खेंचने से उत्पन्न ध्वनि ।

सरचणौ, सरचबौ–क्रि. अ.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए राजी होना, सौदा पटना ।

२ जंचना ।

क्रि. स.—३ पीटना, सजा देना ।

सरचणहार, हारौ (हारी), सरचणियौ—वि० ।

सरचिओड़ौ, सरचियोड़ौ, सरच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरचीजणौ, सरचीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

सरचाणौ, सरचाबौ–क्रि. स.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए सहमत करना, सौदा पटाना ।

२ जंचाना, निपटाना ।

उ०—पूगळ रा गांवां रा बंट करणसिंघ जी कराय **सरचाया** ।
—द. दा.

३ पीटाना, सजा दिलाना ।

सरचाणहार, हारौ (हारी), सरचाणियौ—वि० ।

सरचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरचाईजणौ, सरचाईजबौ—कर्म वा० ।

सरचायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए सहमत किया हुआ, सौदा पटाया हुआ. २ जंचाया हुआ, निपटाया हुआ. ३ पीटा हुआ, सजा दिलाया हुआ ।

(स्त्री. सरचायोड़ी)

सरचियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए सहमत हुवा हुआ, सौदा पटाया हुआ. २ जंचा हुआ. ३ पीटा हुआ, सजा दिलाया हुआ ।

(स्त्री. सरचियोड़ी)

सरच्चंद्र, सरच्चंद्रमा–सं. पु. [सं. शरच्चन्द्र, शरच्चन्द्रमा] शरत् ऋतु का या शरत् ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा ।

सरज–सं. पु.—१ एक प्रकार का ऊनी कपड़ा ।

[सं. सर्ज] २ मक्खन नवनीत । (डिं. को; ह. नां. मा.)

३ साल नामक वृक्ष ।

सं. स्त्री.—४ माला ।

वि.—सृजन करने वाला ।

सरजक–सं. पु. [सं. सर्जक] मठा डाल कर फाड़ा हुआ दूध ।

सरजण–सं. पु. [सं. सृजण] १ सृष्टि, रचना, निर्माण ।

[अं. सर्जन] २ ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत शल्य चिकित्सा करने वाला व्यक्ति, जर्राह ।

सं. स्त्री.—३ सृष्टि करने की क्रिया, रचना करने की क्रिया ।

रू. भे.—सिरजण, सिरज्जण ।

सरजणहार–वि. [सं. सृजणम्] १ सृजन करने वाला ।

२ ईश्वर, विधाता ।

उ०—१ खींचो खींचणहार, मन धोखो राखो मती । समर्थ **सरजणहार**, सही बजाजी सांवरो ।—रांमनाथ कवियो

उ०—२ सोहड़ सहु भेळा किया, तिण वेळा तिण वार । मर नारी सहु बिलबिलइ, हय हय **सरजणहार** ।—ढो. मा.

रू. भे.—सिरजणहार, सिरजणहारो, सिरजनहार ।

सरजणौ, सरजबौ–क्रि. स. [सं. सृज] १ सृष्टि करना, सृजन करना ।
(उ. र.)

उ०—१ जिण हर **सरजत** नर जनम, सुजदी रसण समाथ । कर भटपट कवियण 'किसन', नितप्रत रट रघुनाथ ।—र. ज. प्र.

उ०—२ देव किसी उपमा देऊं, तें **सिरज्या** सहकोय । तूं सरीखो तुंहि ज तूं, अवर न दूजो कोय ।—ह. र.

२ तय करना, निश्चित करना ।

उ०—बीच बजारां वांणिया, भांजै **सरजै** भाव । पावां रा लेखा करै, दावां रा दरयाव ।—बां. दा.

३ बनाना, निर्मित करना ।

उ०—पग पग लगै सरीखी पायल, हाथ हाथ प्रत कंकण होय । **सरज्या** नहीं अभनमा 'सलखा', दो पासा नासां नग दोय ।
—सांयो भूलो

सरजणहार, हारौ (हारी), सरजणियौ—वि० ।

सरजिओड़ौ, सरजियोड़ौ, सरज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरजीजणौ, सरजीजबौ—कर्म वा० ।

सरज्जणौ, सरज्जबौ, सिरजणौ, सिरजबौ, सिरज्जणौ, सिरज्जबौ, स्रजणौ, स्रजबौ—रू० भे० ।

सरजथा–सं. स्त्री.—डिंगल का एक अलंकार विशेष जिसमें यथा संख्यालंकार का युक्ति से शृंखलायुक्त वर्णन किया जाता है ।

सरजनमा, सरजन्म–सं. पु. [सं. सरजन्म] १ कमल ।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

[सं. शरजन्मन्] २ कार्तिकेय, स्कन्द ।

सरजळ–सं पु —१ तीरों का जाल ।

२ माया जाल ।

३ देखो 'सजळ' (रू. भे.)

सरजळाइग्यारस-सं. स्त्री.—आषाढ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।
रू. भे.—सिरजळाइग्यारस।

सरजस, सरजसका-सं. स्त्री. [सं. सरजस्, सरजस्का] रजस्वला स्त्री।

सरजांम—देखो 'सराजांम' (रू. भे.)
उ०—घर मैं जाय'र देखँतौ पांच सेर आटै रौ **सरजांम** नहीं।
—दसदोख

सरजा-सं. पु. [फा. शरजाह्] १ श्रेष्ठ व्यक्ति।
२ सरदार।
३ सिंह, शेर।
सं. स्त्री. [सं.] ४ ऋतुमती स्त्री।

सरजित, सरजित्त, सरजीत-वि.—१ सरस, हराभरा।
२ आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न, खुश।
उ०—डील ऊकळै वभकी उठै, मरद श्रंवाळा आ गिरै। जाळ झालौ देय बुलावै, सुखद छांय **सरजित** करै।—दसदेव
३ सजीवित।
उ०—१ पहुर हुवउ ज पधारियां, मौ चाहंती चित्त। डेडरिया खिण-मइ हुमइ, घण बूठइ **सरजित्त**।—ढो. मा.
उ०—२ गुडियंत जूह गडाड ए, **सरजीत** जांणि पहाड ए।
—गु. रू. बं.
उ०—३ मौ साथै वडा वडा गढपति छत्रपति कांमि आया। हाडा मुकुंदसिंह सारीखा। गौड़ अरजन सारीखा सीसोदिया सुजांणसिंघ सारीखा। झाला दळथंभ सारीखा। और ही छत्रीस वंस हिंदू **सरजीत** कीजै।—र. वचनिका
४ रचित।
उ०—वांणि अनादह फुड वयण, सुभ भाखा **सरजित्त**। गाहां करई वर रसाउला, दूहा छंद कवित्त।—गु. रू. बं.
५ विजयी।
उ०—'केसव' अजीत **सरजीत** कोट, 'वाघउत' वरण अरि घड अबोट।—गु. रू. बं.
६ सचेतन।
उ०—ताहरां जमलै कह्यौ 'ठाकुरै जै कंही रै वडकुमार बेटी हवै तौ भेळी सुवांणौ ऊवैरी बाफ सूं **सरजीत** हवैं।
—लाखै फूलांणी री बात
रू. भे.—सिरजीत।

सरजीव—देखो 'सजीव' (रू. भे.)
उ०—१ थळ कज्जळ **सरजीव**, कना असताचळ अग्रज। कना सेव कारणं देव सुत, आया दिग्गज।—रा. रू.
उ०—२ सूर धरम परखण अह साखै, इक **सरजीव** करण नह आखै।—सू. प्र.

सरजीवण—देखो 'सजीवण' (रू. भे.)
उ०—तैंहीज कीधा सात दीप, नवखंड प्रथमी। तैंहीज कीधा विविध विख, **सरजीवण** आंमी।—गज-उद्धार

सरजीवत—देखो 'सजीव' (रू. भे.)
उ०—१ सात वीस सांवला करूं पाछा **सरजीवत**। तोनूं केसर चाढ देवूं रिध सिध दोनूं दत।—पा. प्र.
उ०—२ सिरी घटियाल अरोहित सेर, सख्यां मवताहल माळ सुमेर। किया **सरजीवत** तेड़ि कबंध, बूझै पितु मात कुसी धजबंध।
—मे. म.

सरजीवन—देखो 'संजीवन' (रू. भे.)

सरजु, सरजू, सरज्यु—देखो 'सरयू' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—प्रिय कोटि कोटि इम **सरजु** तीर, नग झटित भरत घट हेम नीर। चत्र वर बजार चित्रकांम चार, दुतिवंत वेलि गुल-रंगदार।
—सू. प्र.

सरजोड़, सरजोर—देखो 'सिरजोर' (रू. भे.)
उ०—१ राजा जोधपुर का साथि सावल राठोड़। ऊनै बंस कूरम की फोज **सरजोड़**।—शि. वं.
उ०—२ साकुरा मेळसी इसौ **सरजोर** रौ, नजर आवै इसौ नाथ बदनोर।—महादांन मेहड़ू

सरजोरी—देखो 'सिरजोरी' (रू. भे.)

सरज्जणौ, सरज्जबौ—देखो 'सरजणौ, सरजबौ' (रू. भे.) (ह. र.)
उ०—सरज्जै आप त्रिधा संतार, हुवौ मझ आप ही रम्मणहार।
—ह. र.
सरज्जणहार, हारौ (हारी), **सरज्जणियौ**—वि०।
सरज्जिओड़ौ, सरज्जियोड़ौ, सरज्ज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सरज्जीजणौ, सरज्जीजबौ—कर्म वा०।

सरज्जियोड़ौ—देखो 'सरजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरज्जियोड़ी)

सरट-सं. पु [सं. शरटः] १ गिरगिट। (डि. को.)
२ कुसुम।
सं. स्त्री.—३ निशाना लगाने की क्रिया या भाव।
४ वायु, पवन।
५ धागा।
६ देखो 'सरठ' (रू. भे.)

सरटि, सरटी-सं. पु [सं. सरटिः] १ पवन, हवा।
२ बादल, मेघ।
३ छिपकली।
सं. स्त्री.—४ लाजवंती स्त्री।

सरटिफिकेट-सं. पु. [अं.] प्रमाण-पत्र, सनद।

सरठ-सं. पु. यौ.—१ अनाज का सरकार द्वारा निश्चित किया हुआ भाव।
२ माल क्रय या विक्रय की निश्चित अवधि का वह नियम जिसके अनुसार अगर माल ग्राहक को पसन्द न आया तो उस निश्चित

अवधि के भीतर खरीदा हुआ माल वापिस दिया जा सकता है।
३ निशाना, लक्ष्य।
रू. भे.—सरट।

सरठबंदियौ, सरठबांधियौ—वि.—१ राज्य सरकार द्वारा निश्चित भाव पर बिकने वाला सामान।
२ 'कंट्रोल रेट' से क्रय-विक्रय होने वाली वस्तुएँ।

सरडौ, सरढौ—सं. पु. (स्त्री. सरडी, सरढी) ऊंट। (अ. मा.)
उ०—सुणि ढोला करहउ कहइ, सांमि तणउ मो काज। **सरढी** पेट न लेटियइ, मूंध न मेळूं आज।—ढो. मा.

सरण—सं. स्त्री. [सं. शरण] १ आश्रय, पनाह।
उ०—१ सिव संभव सिव रूप सुरेसुर, सिव गुण दियण प्रणम कथै सुर। अति लघु तिको **सरण** तक आवै, पात्र गुणै सुज बडपण पावै।—रा. रू.
उ०—२ त्रिभुवण मांहि न तोसूं तोळै, **सरण** राख मो 'ईसर' बोलै।—ह. र.
उ०—३ किणीई रैबारियां रै वाड़ां री **सरण** लीवी, किणीई भीलां रा भूंपा संभाळ्या तौ कोई रा पग थेट खेतां री बाजरियां मैं जावता ठमिया।—अमर चूंनड़ी
२ ओट, आड़।
उ०—वालंभ दीपक पवन भय, अंचळ-**सरण** पयट्ठ। कर हीणउ घूणइ कमळ, जांण पयोहर दिट्ठ।—ढो. मा.
३ सहारा।
४ वात-विकार के कारण शरीर में विशेषतः हाथों-पैरों में होने वाला रोग विशेष।
उ०—१ पींडिया में **सरणां** चालै, सीयाळै पाहळियां में चटीड़ा ऊठै।—फुलवाड़ी
उ०—२ कड़ियां चीस, पगां **सरणां** मतवाय ऊबका, उछाटां, रूं रूं तूटणौ अर हाडकां री कुळणौ।—फुलवाड़ी
५ घर, मकान। (अ. मा.)
६ रास्ता, पथ।
७ आश्रयस्थल, बचावस्थान।
८ विश्रामस्थान।
९ कोठरी, कमरा।
१० भगवान् विष्णु का नाम।
[सं. सरणं] ११ आगे गमन करने की क्रिया।
१२ लोहे का जंग।
वि.—१ शरण में आया हुआ, शरणागत।
उ०—१ धणी सूंपां **सरण** मरण संक धारियां, लाज मन धरै 'जेसांण' गढ लारियां।—जसौ आढौ
उ०—२ सेरसाह दिल्ली तखत, बैठौ बळ निज बाह। उमरांणै जद आवियो, **सरण** हुमाऊ साह।—बां. दा.
२ गमन करने वाला, गतिशील।
रू. भे.—सरणि, सरणी, सरन, सरिण।

सरणईसाधार—देखो 'सरणायांसाधार' (रू. भे.)

सरणमंत्र—सं. पु.—गोकुलियां गोसाई संप्रदाय का गुरु मंत्र जो प्रायः सर्व साधारण को भी सुनाया जा सकता है।

सरणसधार, सरणसाधार—देखो 'सरणायांसाधार' (रू. भे.)
उ०—१ जनपाळ स्रीदयाळ सुलख जियगत जांमी, **सरणसधार** बिरदधार हणूंमांन सांमी।—र. ज. प्र.
उ०—२ विध त्रिपुरार रिख पाय बंद, **सरणसधार** करण समंद। कह गुण गाथ 'किसन' किवंद, नाथ अनाथ दसरथनंद।
—र. ज. प्र.
उ०—३ धनुस धरण अवगुण नंह धारै, **सरणसधार** कहै जग सारै।—र. रू.
उ०—४ आदि लगि **सरणसाधार** लाखा हिमें, भलौ सतसाल इम भलां भावां। मांगि पातसाह मा मांग मुध मीरजां, आव मैदांन मैदांन आवां।—जांम सत्ता रौ गीत

सरणांट—देखो 'सरणाट' (रू. भे.)
उ०—खमैं **सरणांट** तुपकां सरां है खुरां, बीजड़ भड़ै ऊपाटां पाट बूठौ। पांव बिमुहां खड़ै धड़हड़ै असुर पिंड, राव अहराव रै भाव रूठौ।—भीमसिंघ हाडा रौ गीत

सरणाई—वि.—१ शरणागत, शरण में आने वाला।
उ०—१ केहरि केस भमंग मणि, **सरणाई** सुहडांह। सती पयोहर क्रपण धन, पड़सी हाथ मुवांह।—हा. झा.
उ०—२ थांन सवाई थापिवा, मांन अरज महाराज। चढियौ कज **सरणाइयां**, सझि दळ प्रबळ समाज।—रा. रू.
उ०—३ बस्यौ लिलाट राहु विग्रहतै, संकर मयंक न राखि सकेह। **सरणाई** 'खेता' सीसोदा, 'लाल' केणी नह कीयौ लेह।
—लाला हाडा रौ गीत
२ देखो 'सहनाई' (रू. भे.)
उ०—अलंब नेजा, माहामरातप ढोल, ददांमां नीसांण **सरणाई** रणतूर रणकाहल नफेरी तबल।—व. स.

सरणाईराय—वि.—राजा, महाराजाओं को शरण देने वाला।
उ०—सरणाई साधार **सरणाईराय** विजै पंजर रूपका अनंग आजांनबाह। खटव्रन सुरतर हिंदूसथांन का पातिसाह।—सू. प्र.

सरणाईसधार, सरणाईसधीर, सरणाईसाधार, सरणाईसोहड़, सरणाईसोहड—देखो 'सरणायांसाधार' (रू. भे.)
उ०—१ बीराधि बीर, आजांनबाह, **सरणाईसधीर** नरां रौ नाह।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
उ०—२ दूदौ कंवर **सरणाईसाधार** सुणतां ही सहाइ देर लार हुवौ। जिकण आपरा अनादर रै आंटै अकबर जिसड़ा पातसाह थी तोड़ी तिण री प्रतीकार दिखावण रै काज केवल वीरभाव री जस

चाहियौ ।—वं. भा.

उ०—३ सरणाईसाधार सरणाईराय विजै पंजर रूप का अनंग आजांनवाह . खटव्रन सुरतर हिंदुसथांन का पातिसाह ।—सू प्र.

उ०—४ पांचमौ परनारी सहोदर । छठौ चहचुगाळ । सातमौ सुखी । आठमौ सरणाईसोहड । नवमौ विरद अणभंग ।

—रा. सा. सं.

सरणागत-सं. पु. [सं. शरणागत] शरण में आया हुआ जीव या व्यक्ति ।

उ०—१ अवधि नगर रै ईसरा, एहा हाथ उदार । यण सरणागत वासतै, दीध लंक सुदतार ।—र. ज. प्र.

उ०—२ समै कुसमै सुर सारत सार, पुकारत आरत वंत पुकार । सुखी करियै अति आप समांन, दुखी सरणागत ऊमरदांन ।

—ऊ. का.

उ०—३ सरणागत सुख करन कुं, तुमरौ विड़द विराज । अपनौ ही जन जांन कै, क्रपा करौ महाराज ।—परमानंद वणियाळ

रू. भे.—सरणागति, सरणागती, सरणाय, सरणायत, सरनांगत ।

सरणागति, सरणागती-सं. स्त्री. [सं. शरणागति] १ शरणागत होने का भाव ।

२ देखो 'सरणागत' (रू. भे.)

उ०—चित रहै जां मन रहै कहर, कहर हाथि बोह मांण करि । एकळा पिसण लागू अवर, हूँ सरणागति नांव हरि ।

—सुरजनदास पूनियौ

सरणाट-सं. पु.—फूंक वाद्यों (शुषिर) से उत्पन्न ध्वनि, आवाज ।

२ तीव्र गति से उत्पन्न ध्वनि, सनसनाहट ।

३ बेंत, कामड़ी आदि लचीली छड़ी के प्रहार और आघात से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—बेंतां रा सरणाट उडै सड़ंद सड़ंद ।—रातवासौ

४ अस्त्रों के तीव्र वेग से चलने व छूटने पर होने वाली ध्वनि ।

उ०—गोफणियां रा सरणाट उड़ै । सूंतमी चांमडपोस गोफण गोळ गोळ एक माप रा गोफणिया अर चौधरी रै बाहुड़ां रौ करार ।

—अमर चूंनड़ी

५ पक्षियों के तेज उड़ने से होने वाली ध्वनि ।

क्रि. वि.—तीव्रता से, वेग से ।

उ०—१ पांचू साथी मांय जावण सारू त्यार व्हिया इज हा कै वांरै माथाकर सूंसाड़ करतौ गोफणियौ सरणाट नीसरियौ ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ पही सरणाट बहतां रथां पूर रथ, गिरद गरणाट पड़ साद गाजै । निहंग छणणाट बाजै पगां नूपरां, विमांणां घाट भणणाट वाजै ।—भोपाळदांन सांदू

रू. भे.—सरणांट ।

सरणाटै-क्रि. वि —तेजी से, वेग से ।

उ०—घांटी तौ सरणाटै बधती ई गी । जांणै आभा सूं तारौ तूटौ ।—फुलवाड़ी

सरणाटौ-सं. पु. [सं. सनष्ट] १ निस्तब्धता, सुनसान व शान्त वातावरण, सन्नाटा ।

उ०—१ अंधारी रा सरणाटा मैं जिण वेळा दुनिया सुख री नींद सोवै, नाथू किसन जी रै घर रै व्याहूं मेर आंटा देवतौ ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ सोपौ पड़ग्यौ सरणाटौ छायौ । वत्ती काटी, लोटियौ बुझायौ ।—दसदोख

उ०—३ राजकंवर कमेड़ी री घांटी मरोड़ी तौ दंतराज है जठै ई लांबौ व्हैगौ । थोड़ी ताळ तांई लटपट करनै मरग्यौ । उणरै मरतां ई समंदर रौ तूफांन मिटग्यौ । सरणाटौ छायग्यौ ।—फुलवाड़ी

२ पवनाघात ।

उ०—१ कंवर सूरज-मुखी घोड़ा माथै पवन सूं होड़ लेतौ उडियौ घड़ीक तौ जांणै आकास मैं उड़ जावूं घड़ीक जांणै पाताळ मैं वड़ जावूं । सरणाटा रा थपीड़ सूं आंख्यां मैं फुहारा छूटण लागा ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ ए सगळी आवाजां आंधी रा सरणाटा मैं सुणीजै ज्यूं गांम रा इण खूंणां सूं उण खूंणां तांई एक सरीखौ सुणीजै ।

—अमर चूंनड़ी

२ मानसिक उत्तेजना या चित्त के क्षोभ के कारण होने वाली व्यग्रता या उत्कंठा का भाव, जोश ।

उ०—१ दो घड़ी दिन चढ्यां हणहणांट करतौ घोड़ौ हींसियौ । मां रा आखा डील मैं सरणाटौ दौड़ग्यौ । दुवारी छोड भचकै ऊभी व्ही ।—फुलवाड़ी

उ०—२ बेटी री नस नस मैं सरणाटौ दौड़ग्यौ । डील ठाडौ हेम पड़ग्यौ । ठाडा धूजता सुर में बोली—मां, वा बात याद नीं दिरावौ तौ सावळ ! याद करतां ई अबार बेचेतै व्हूं जेड़ी बात है ।—फुलवाड़ी

३ तेज वायु की ध्वनि ।

उ०—नीचौ नैणां सूं धोवां जळ धावै, ऊंचौ ईखण रौ अभलेखौ आवै । गाढी गयणांगण रज लै गरणांटा, सावण सूकोगौ देतौ सरणाटा ।—ऊ. का.

सरणाणौ, सरणाबौ-क्रि. स.—तेज ध्वनि व आवाज करना ।

उ०—कंवर रौ अेक साथी घोड़ा रै अेडी लगाय खेत री माठ लांघी ई ही कै हवा रा रेसा चीर सरणातौ अेक गोफणियौ उणरै सांम्ही लिलाड़ बटीड़ करतौ उडियौ ।—फुलवाड़ी

सरणाय, सरणायत—देखो 'सरणागत' (रू. भे.)

उ०—१ जुड़हाथ माथ नमाय जंपै, गुणां 'किसनौ' गाथ । सरणाय लंक समाथ समपण, निमौ स्रीरघुनाथ ।—र. ज. प्र.

उ०—२ दांम काचा न दे पाल मगवै परियां रे । वालै छूटा उतन

विखै सरणायत ज्यांरै।—पा. प्र.

२ देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

उ०—सरणाय-साद नीसांण सर, कूंपियै ढोलां रव किया। श्रूटती रात हरभम-तणै, जगमाल जगाविया।—जगमाल रौ गीत

सरणायांसाधार, सरणायांसोहड़, सरणायांसोहड—वि.—शरणागत वत्सल, शरणागत की रक्षा करने वाला।

उ०—१ किरतसिंघ कूंपाहरौ, सरणायांसाधार। कर आदर सरणै लियौ, श्रभै कियौ तिण वार।—रा. रू.

उ०—२ यण प्रकार रांणौ भीम, कीरति कौ कीम, मौजताळा बिंद, चित्त कौ समंद, आचार कौ ईंद, सरणायांसाधार, हींदुपति पातस्याह, यकलंक कौ अवतार महिमा अपार।

—बगसीराम प्रोहित री बात

रू. भे.—सरणाईसाधार, सरणसधार, सरणासाधर, सरणाईसधार, सरणाईसधीर, सरणाईसाधार, सरणाईसोहड़, सरणाईसोहड, सरणासधार।

सरणारथी—वि. [सं. शरणार्थिन्] जो किसी का आश्रय या शरण चाहता हो या जो किसी की शरण में हो।

सरणासधार—देखो 'सरणायांसाधार' (रू. भे.)

उ०—दसरथ कुमार धनुपांण धार, जुध असुर जार सरणासधार।

—र. ज. प्र.

सरणि, सरणी—वि.—शरणार्थी।

उ०—गरभ तणां दुक्ख नहीं कोइ सरणि, अहूठ कोडि सउ कीजइ आगिवरण।—वस्तिग

२ शरण देने वाला।

उ०—छाली बोकड गाडर जंति, खाटकी नै भइ छइं कांपंति। आरडता तै पांमइं मरण, नींह बापडां नही कोइ सरणि।

—वस्तिग

सं. स्त्री. [सं. सरणिः, सरणीः] १ दो पर्वत श्रेणियों के बीच का तंग संकरा मार्ग, घाटी।

उ०—अर प्रांमारां रा वैर माथै अब चहुवांणां रौ चक्र अरबुदाचळ री सरणी रै समुख पाधरौ ही धकावै छै।—वं. भा.

२ मार्ग, रास्ता। (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ वेद पुरांण कायबां बरणी, अघ हरणी जरणी अजर। सेवक जौ चाहै सुख सरणी, करणी करणी याद कर।

—बगतावर मोतीसर

उ०—२ सकळ राजधांनी सरम उदार भार भलाई। कहियौ कुळ सरणी कंवर, चलणौ नम न चलाइ।—वं. भा.

३ सीधी रेखा।

४ गले का रोग विशेष।

५ ढंग, तौर, तरीका।

६ भूमि, जमीन।

७ देखो 'सरण' (रू. भे.)

उ०—१ यौं सांभरि साहां 'अजन', कांण न रक्खै काय। बेटौ चूड़ांमणि तणौ, आयौ सरणि चलाय।—रा. रू.

उ०—२ जेती भुंइं राग्रौ तेती तूं सरणि, मुझ मनु कां इम दूमइ जीवह मरणि।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ हूं युधिस्ठर विप्र, तूं युधिस्ठर नरेस्वर मित्र। पांच पांडव वनांतरि नाठा, ताहरइं सरणि तु अम्हे पयठा।—सालिसूरि

सरणौ—सं. पु.—आश्रय, शरण।

उ०—दांमोदर दीजै मतौ, कायर कांठै वास। सरणै रखै सूर रै तेथ न व्यापै त्रास।—बां. दा.

उ०—२ छूटा सरणै पीर रै, मीर सबै तिण वार। मेल दियौ परचंड पण, डंड दियौ अणपार।—रा. रू.

उ०—३ खेत मैं पग दियौ तौ थैं थांरी जांणौ। म्हारै खेत मैं सरणै आया सूवर रै सांम्ही करड़ी निजर सूं ई जोयौ तौ आंख्यां रा कोया फोड़ न्हाकूंला।—फुलवाड़ी

उ०—४ कह्यौ—म्हारी मुगती अबै आपरै हाथ है। म्हारै हीयै अणचींत्यौ वैराग रौ गोटौ ऊठियौ—अबै आपरै सरणै हूं।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—सरनौ।

सरणौदेवी—सं. स्त्री.—बागड़िया शाखा के चौहानों की कुलदेवी का नाम।

सरणौ, सरबौ, सरणौ, सुरबौ—क्रि. अ.—१ सिद्ध होना, सफल होना। (उ. र.)

उ०—१ साहिब आया हे सखी, कज्जा सहु सरियाह। पूनिम केरै चंद ज्यूं, दिसि च्यारै फळियाह।—ढो. मा.

उ०—२ सात दीप नवखंड फिरै, कारिज सरै न कोय। जनहरीया कारज सरै, उलटि आप मैं होय।—अनुभववांणी

२ बनना, पूर्ण होना।

उ०—१ गोलां सूं न सरै गरज, गोला जात जबून। ऊखांणौ सायद भरै, सौ गोलां घर सून।—बां. दा.

उ०—२ थूं म्हारौ माथौ गूंथ दै तौ बातां रै साथै औ कांम ई सर जावै। नींतर म्हनै घरै जांणौ पड़ैला।—फुलवाड़ी

३ पार पड़ना।

उ०—१ अमीरां रै तौ कांई कोनीं, पण गरीबां रौ जीवणौ हरांम व्है जावैला। बस्ती सूं टळियां नीं सरै। कित्तोई माया रौ ठरकौ व्हौ, खांधिया भाड़ै नीं आवैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ लियां दियां बिनां कैड़ा ई मोटा सेठ रै सरै कोनी। सगळा ई लोग उणरी आदत जांणता हा। चौखळा मैं उण रै नांम री साख ही।—फुलवाड़ी

उ०—३ मां रै लारै दौड़ वळै पूछ्यौ—कांई, लुगाई रै वास्तै व्याव करणौ जरूरी है। जै व्याव करियां बिना सर जावै तौ।

—फुलवाड़ी
उ०—४ बोल्यौ—ग्रा ई कदै व्है कै म्हैं ग्रावूं कोनी। राजाजी नै खोटी करियां सरै भलां! सात समंदरां परली पंचायती निवेड़नै सीधौ ग्रायौ हूं।—फुलवाड़ी
४ शक्ति या सामर्थ्य के ग्रनुसार होना।
ज्यूं—म्हाऊं सरै जित्तौ चंदौ म्हैं ई देवूं।
५ कार्य ग्रादि का निर्वाह होना, पूरा होना।
ज्यूं—हजार रिपियां सूं ब्याव रौ कांम तौ सरगौ, ग्रागै फेर देखां।
उ०—वांरी भोळप ग्रर काली बातां सूं केई स्वारथी लोगां रौ मतलब सरतौ हौ। घर वाळा ग्रापरै नाता रै कारण साथै रेवणौ चावता ग्रर कुलालची ग्रापरै लालच सारू।—फुलवाड़ी
६ लक्ष्य सिद्ध होना।
ज्यूं—दोय झगड़ै जणां तीजा रौ कारज सरै।
उ०—ग्रा तौ ग्रबारू देखतां देखतां वहीर व्है जावैला। पछै नीं लाग्यां सरै ग्रर नीं छोडचां मन पतीजै। ग्रेड़ी तौ कदैई नीं पजी। तौ कांई वींद नै लाग जावूं।—फुलवाड़ी
७ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना।
८ पर्याप्त होना, काफी होना।
उ०—कह्यौ जी, माहरै तौ नव कोड़ चाहीजे ग्रेकै कोड़ न सरै।
—सयणी देवी री बात
ज्यूं—दस रिपिया सूं म्हारौ घर कोनीं सरै।
९ संभव होना।
१० होना।
उ०—पाबासर री पाज, हंसा हेरण हालिया। कोई न सरियौ काज, जागा सूंनी जेठवा।—जेठवा
११ ग्राकार-प्रकार, रूप रंग, गुणादि में शिशु संतान का किसी के ग्रनुरूप या ग्रनुसार होना।
१२ चलना, निभना, निभाव होना।
उ०—मां रै गळा सूं मतै ई बोल रळक पड़चा—नीं सरै, बेटी, नीं सरै। भगतण रा जमारा विचै ई ग्रण ब्याही लुगाई रौ जमारौ कावळ है।—फुलवाड़ी
उ०—२ पण तौ ई ग्रा दूजी बात ई इण सूं कम साची नीं है कै मिनख बिना लुगाई रौ जमारौ साव ग्रकारथ ग्रर बिरथा है। नीं मिनख रै लुगाई बिना ग्रेक पल ई सरै ग्ररनीं लुगाई रै मिनख बिना ग्रेक पल ई सरै।—फुलवाड़ी
उ०—३ थांकी जसां सरीखी उठै लाखां परणां, मांकी सौभा मैं कांइ वरणा, मांनै तौ ग्रनेका न्यौरा करै छै मांरै यण बिन कांई नहीं सरै छै।—मयारांम दरजी री बात
१३ घूमना-फिरना, विचरित होना।
उ०—माधव! मनि मा हारि तू, जै नर जांणइ तोलि तै। नर क्षिम सघलइ सरइ, बंभ! म बाली बोलि।—मा. कां. प्र.
१४ व्यतीत होना, बीतना।
उ०—तौ ई थारै जचगी है तौ इण नाकुछ बात सारू क्यूं बेराजी करूं। थूं कोई फूटरौ नांव बताय देजे। राख लूंला। पच्चीस बरस तौ 'लट्टूरा' नांव सूं सरग्या धकला बरस दूजा नांव सूं धकाय लूंला।—फुलवाड़ी
१५ पड़ना, विवश होना।
उ०—१ हथळेवा वाळौ छळ-छंद ग्रबै जावतां सुभट व्हियौ। सुभट व्हियां घणौ वत्तौ ग्रळूझणौ। इण भांत कपट रचण री कांई जरूरत ही। ग्रबै तौ झूठ नै साच ग्रर साच नै झूठ मांन्यां सरैला।
—फुलवाड़ी
उ०—२ म्हनै कह्यौ ग्रर भाटा नै कह्यौ बिरौबर है। पण पिरसूं म्हनै ठा नीं पड़ी तौ ग्रापनै बतायां ई सरैला, पैला कै दूं।
—फुलवाड़ी
१६ रहना, पड़ना।
उ०—१ बाप ग्राधा ग्रचंभा ग्रर ग्राधी रीस मैं कह्यौ—डीकरी थूं कठैई त्रिकाळ काली नीं व्हैगी। झूंपै ग्राया भाग रै ठोकर मारै। जोड़ी रौ रूपाळौ वर है। लाखां मैं टाळकौ। फेर बीकांणै रौ राजकंवर। ग्रेकर सीताजी नै ई ईसको व्हियां सरै। थूं हाल टाबर है।—फुलवाड़ी
उ०—२ हाथ माथै हाथ धरनै बैठ जावौ, करमां मैं कमाई लिखी है जकौ तौ व्हियां सरैला। पछै क्यूं माया जोड़ण सारू कूड़-साच करौ।—फुलवाड़ी
उ०—३ सगळा ग्रेक दूजा रै मूंडा सांम्ही देखता रह्या ग्रर महारांणी धम-धम करती मेड़ी चढगी। इण घर री लाज तौ ग्रबै भावी रै हाथां हैं। लिखी है जकौ तौ व्हियां ई सरैला।
—फुलवाड़ी
सरणहार, हारौ (हारी), सरणियौ—वि०।
सरिग्रोड़ौ, सरियोड़ौ, सरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सरीजणौ, सरीजबौ—भाव वा०।
सरण्य—वि. [सं.] १ शरणागत की रक्षा करने करने वाला।
२ जिसके भाग्य खराब हों, ग्रभागा।
सं. पु. [सं. शरण्यं] १ ग्राश्रयस्थल, ग्राश्रयस्थान।
२ रक्षा करने वाला व्यक्ति।
३ रक्षा, सुरक्षा।
४ ग्रनिष्ट, ग्रपकार।
[सं. शरण्यः] ६ शिव, महादेव।
सरण्या—सं. स्त्री. [सं. शरण्या] दुर्गा देवी का नाम।
सरण्यु—सं. पु. [सं. शरण्युः, सरण्युः] १ रक्षा करने वाला व्यक्ति।
२ बादल, मेघ।
३ पवन, हवा।
४ वसन्त ऋतु।

५ यमराज, धर्मराज।

६ आग, अग्नि।

७ जल, पानी।

सं. स्त्री.—८ सूर्य-पत्नी का नाम।

सरतंग, सरतंत—देखो 'सरतन' (रू. भे.)

उ०—१ सूत रूपयै री सेर बेचै, पाधां बणावै, 'जसो' बारीक कातै घर मैं आछी सरतंग।—जैसी खाय तैसी बुद्धी उपजै री बात

उ०—२ सौ राजा खरच रौ सरतंत करै मांणस एक लारै दक्षिणी कन्है मेल्हियौ थौ सौ उणरी बाट जोवै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ महाराज स्रीगजसिंह जी बीकानेर पधार खरच बरच रौ सरतंत कियौ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—४ तद कही—थें जावौ, गांवां रौ उतारौ कर सताब मेलज्यौ, तिण माफिक लोगां नूं पटौ मेल देस्यां, सौ सारौ सरतंत कर दियौ। आछी जमीरत कीवी।—अमरसिंह गजसिंहोत री बात

सरत—स. पु. [सं. शरद] १ संवत्, वर्ष, साल। (डिं. को.)

[सं. शर] २ तीर, बाण।

उ०—सुर सरत धर सिर भरत सत, पळ चरत फळचर अघत अत। मिळ अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत रत।

—र. रू.

३ सरोवर, तालाब।

उ०—तरत भरत सूकंत सरत दादर मरत दुरंत। प्रीतम घर नन पेखतां, वैरण बणी वसंत।—अग्यात

सं. स्त्री.—४ किसी काम या बात की सिद्धी के लिए अपेक्षित बातें, शर्तें।

उ०—कह्यौ—जु, धरती दीवी। अर सरत री वेढ करौ। आ वात दीवांण रा परधांनां कबूल कीवी।—नैणसी

५ दांव-पेंच, बाजी।

६ किसी बात, घटना आदि की सत्यता, असत्यता आदि के सम्बन्ध में दो पक्षों द्वारा दांव पर लगाया जाने वाला धन।

७ कर्त्तव्य।

उ०—चाक पहल चाढिया, जुड़ण चौगांन जमींरां। अबै कोट ले ओट, ग्रेह नह सरत अमीरां।—सू. प्र.

८ देखो 'सरिता' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—उर सेल धमोड़ै वेळ एम, जरदैत ढहै तर सरत जेम। ऊछळै खळै तज तुरंग एक, वासूळै पूळां सूं विसेख।—रा. रू.

सरतअधीस—सं. पु. यौ. [सं. सरिता+अधीश] समुद्र। (डिं. को.)

सरतकाळ—देखो 'सरदकाळ' (रू. भे.) (उ. र.)

सरतचंद, सरतचंद्र—सं. पु. [सं. शरत्चंद्र] शरत्कालीन चन्द्र जो सुंदर व शीतल होता है।

सरतज—देखो 'सरताज' (रू. भे.)

सरतन, सुरतन—सं. पु.—१ इंतजाम, बंदोबस्त, प्रबन्ध।

उ०—१ रांड री औ जलम तौ बिगड़ियौ जकौ बिगडियौ ई, धकलौ बिगाड़ण रौ ई सगळौ सरतन कर लियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ दोनूं एक ई मारग वहीर व्हैगा तौ रोट्यां रौ सरतन दोरौ सजैला।—फुलवाड़ी

उ०—३ अबै भूख लागी है खाणै-पीणै रौ सरतन करौ।

—वरसगांठ

२ सामान, सामग्री।

उ०— कंवर रौ आदेस व्हैतां ईं हांकरता सिकार रौ सगळौ सरजांम सरतन सजण ढूकौ।—फुलवाड़ी

३ साधन, उपाय।

उ०—१ धैड़ बीस पचीस हाथ ऊंडौ। गोळगट्ट। कोडी री जात चिकणौ, माखी पितळै। चढण रौ तौ कीं सरतन नीं।—फुलवाड़ी

उ०—२ ठिकांणा री रया उणरी जबराई आगै कळकळै चढगी तौ ई ठाया रौ खूंटौ छोडनै जावै तौ ई कठै! उण ठिकांणै जीवण री दाभ मौत सूं ईं वत्ती ही। मरियां बिना दुख, संताप अर विखा रौ फंद काटण रौ कीं सरतन नीं हौ।—फुलवाड़ी

४ वैभव, आर्थिक स्थिति।

ज्यूं—चौधरी रै घर रौ सरतन ठीक हौ।

५ ऐसा आचरण, बर्ताव या व्यवहार जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए उपयुक्त बनता हो, तालमेल।

उ०—म्हैं जात रौ नाग, देख्यां डरै, खाधां मरै। अर थूं जात री लुगाई। घरवास रौ कीं सरतन ई तौ नीं जुड़ै।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सरतंग, सरतंत।

सरतनाह, सरतपत, सरसपति, सरसपती—सं. पु. यौ. [सं. सरिता+नाथ, सरिता+पति] समुद्र, सागर।

उ०—१ सथ ऊठ नकीबां सरळ सद्द, रवि उदय आद सझिया रवद्द। आयुद्ध बांध आलम्मसाह, नव क्रत फिर पूनम सरतनाह।

—रा. रू.

उ०—२ बसु मांस कादम मचै, प्रसत परवत वणै, रुधिर मिळ सरतपत हुअौ रातौ। अजोध्यानाथ दस-माथ रांवण अडग, महा बेह ओर भाराथ मातौ।—र. रू.

सरतपूनम, सरतपूरणिमा—देखो 'सरदपूरणिमा' (रू. भे.)

सरतर—सं. पु. यौ. [सं. सुरतरु] १ कल्पवृक्ष। (अ. मा; नां. मा.)

[सं.] २ सरोवर, तालाब।

उ०—तरवर वन सिखर जोवतां सरतर, कर सारंग तुन्नीर कर।

—र. रू.

सरतवरा—देखो 'सरितवरा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सरतांपत, सरतांपति, सरतापती—देखो 'सरतपति' (रू. भे.)

सरता—सं. पु. [सं. सतृं] १ घोड़ा, अश्व। (डिं. को.)

सं. स्त्री. [सं. शरता] २ बाण-विद्या।

३ देखो 'सरिता' (रू. भे.) (डिं. को.)

सरताज–वि. [फा. सर+अ. ताज] १ श्रेष्ठ, शिरोमणि ।

उ०—१ सुहड़ां लिग्रा सकाज, दळ 'खुसाल' दरयाव तट । सोनगरो **सरताज**, आयो वध ग्रेहड़ी अभंग ।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ ततो झालियां बेग खगराज वाळी तरह, घाव माठा नरां आज घाले । कंवर **सरताज** जग चंदनांमी कीयो, लियो जस दियो गगराज लाले ।—जवांनजी आढो

२ मुकुट, छत्र ।

रू. भे.—सरतज, सिरताज ।

सरति—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—रांम समांन न कोई राजा, **सरति** न काइ सुरसरी समांन । सती न काइ समोवड सीता, गीता समोवड़ न को गिनांन ।

—ह. नां. मा.

सरतिया–क्रि. वि. [सं. शर्तिया] अवश्य ही ।

सरतिवरा—देखो 'सरितवरा' (रू. भे.) (अ. मा.)

सरती—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

सरत्काळ—देखो 'सरदकाळ' (रू. भे.) (उ. र.)

सरत्पूनम, सरत्पूरणिमा—देखो 'सरदपूरणिमा' (रू. भे.)

सरथ–स. पु. [सं.] एक ही रथ पर सवार योद्धा ।

सरदंड–सं. पु. [सं. शरदंड] १ चाबुक ।

२ सरकंडा ।

सरद–सं. स्त्री. [सं. शरद] १ शरद ऋतु, शरद का मौसम । (डिं. को.)

उ०—१ **सरद** घटा जिम ऊजळी, दिस दिस अटा बिलंद । नगर थटा रुख निरखियां, स्वरग छटां व्है मंद ।—बा. दा.

उ०—२ ग्रीखम पावस **सरद** गहाई, ए च्यारूं कळियुग मैं आई ।

—ऊ. का.

२ तरवार । (डिं. को.)

सं. पु.—३ तालाब, जलाशय ।

४ वर्ष, साल ।

[सं. सरद्] ५ पवन, वायु ।

६ बादल, मेघ ।

७ छिपकली ।

८ मधुमक्खी ।

वि.—१ आधीन, विजित, अधिकार में ।

उ०—१ 'सूरसाह' माहाराज घर 'करनेस' कहाया । सोळै सै इठियासियै, पुन टीका पाया । सरव जमी कीनी **सरद** इक हुकम मनाया ।—महेसदास सांदू

उ०—२ कुसल हरराज रै कांवळचां तणै कज, अरज कर फिर तलबां उठाई । स्यांमगढ चांग चीतार खेड़ै सहत, तिण कियो **सरद** मेवाड़ तांई ।—जोधजी सांदू

२ शीतल, ठंडा ।

उ०—सोनै रा, रूपैरा, विदरी, खाखोळ ठाढा पांणी सूं भरिजै छै । नीचै सुथरा विछायजै छै । ऊपर हुका मेल्हजे छै । नमचा **सरद** कीजै छै ।—रा. सा. सं.

३ नपुंसक, नामर्द ।

४ धीमा, मंद ।

५ सुस्त ।

६ छोटा खेमा ?

उ०—तांण **सरद** चवतरफ, करै तजवीज कनातां । कनक झळाहळ कळस, वर्णं बंगळा वनातां ।—सू. प्र.

५ देखो 'सरहद' (रू. भे.)

उ०—विग्रह चाळा वधे, खसै खुरसांणह धायो । दखण दमंगळ करै, **सरद** साहिजादो आयो ।—गु. रू. बं.

रू. भे.—सरद्द ।

सरदकांमी–सं. पु. [सं. शरद्+कामिन्] कुत्ता, श्वान ।

सरदकाळ–सं. पु. [सं. शरद्+कालः] शरद ऋतु, शरतकालीन वातावरण ।

उ०—जु इह आकास छै, कि चंद्रमा छै । **सरदकाळ** की इसी रात्रि उजळ छै ।—वेलि. टी.

रू. भे.—सरतकाळ, सरत्काळ ।

सरदणौ, सरदबौ–क्रि. अ.—१ सर्दी, नमी या आर्द्रतायुक्त होना ।

२ देखो 'सरधणौ, सरधबौ' (रू. भे.)

उ०—वांणी सुण सतगुरु तणी, कुमर जोड़चा दोनूं हाथ । वचन तुम्हारा **सरदह्या**, रूड़ा कह्या कृपानाथ ।—जयवांणी

सरदणहार, हारौ (हारी), सरदणियौ —वि० ।

सरदिग्रोड़ौ, सरदियोड़ौ, सरदयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरदीजणौ, सरदीजबौ—कर्म वा० ।

सरदपदम, सरदपद्म–सं. पु. [सं. शरद्+पद्म] सफेद कमल ।

सरदपूनम, सरदपूरणिमा–सं. स्त्री. [सं. शरदपूर्णिमा] आश्विन मास की पूर्णिमा ।

उ०—**सरदपूनम** री रात चांदणी चांदणी चांदो उगो वाल्होजी ।

—लो. गी.

रू. भे.—सरतपूनम, सरतपूरणिमा, सरत्पूनम, सरत्पूरणिमा ।

सरदमिजाज–वि. [सं. सर्दमिजाज] १ शील, संकोच रहित ।

२ ठंडे स्वभाव का ।

सरदरित, सरदरितु–सं. स्त्री. [सं. शरदऋतु] आश्विन व कार्तिक महीनों की ऋतु ।

उ०—पूनम थावर वार **सरदरित** है पालट्टी । वीर खेत पूरब्ब, रित्त हेमंत प्रघट्टी ।—गु. रू. बं.

सरदळ, सरदल–सं. पु.—मकान के दरवाजे के ऊपर आड़ा लगा हुआ पत्थर । (ढूंढाड़)

सरदवा, सरदवाई-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का वात रोग ।
२ हाथी का एक रोग विशेष जिसमें उसके पैर जकड़ जाते हैं ।
सरदा—सं. स्त्री. [सं.] १ शरद ऋतु ।
२ वर्ष, साल ।
३ देखो 'सरधा' (रू. भे.)
उ०—विप सिघज वीन थियौ वरधा, सगतां पिड़ मुज्ज नथी **सरदा** ।—पा. प्र.
सरदाइ, सरदाई-सं. स्त्री.—१ शीतलता, ठंडक ।
उ०—अत तपियै तन अर्वनि दियै परजन **सरदाई** । सुधा पाय ससि करै, जेम वणराय सवाई ।—रा. रू.
२ आर्द्रता, नमी ।
उ०—मैं सूतौ पिया अपने म्हेल मैं, सालूड़ा मैं आई सरदाई । मीरां के प्रभू गिरधर नागर, हरख निरख गुण गाई ।—मीरां
सरदाबौ-सं. पु. [सं. सर्दाब:] १ ठंडे जल से किया जाने वाला स्नान ।
२ तहखाना ।
३ समाधिस्थल ।
सरदार-वि.—उदार, दातार, दयालु ।
सं. पु. [फा.] १ किसी मंडली का मुखिया, नायक ।
२ अमीर, उमराव ।
३ पति ।
४ प्रेमी, प्रियतम ।
५ सिक्ख जाति का व्यक्ति ।
७ वीर, योद्धा ।
८ राजपूत जाति का व्यक्ति ।
८ मालिक, स्वामी ।
रू. भे.—सिरदार ।
अल्पा.—सरदारड़ौ, सिरदारड़ौ ।
सरदारड़ौ—देखो 'सरदार' (अल्पा; रू. भे.)
सरदारी-सं. स्त्री. [फा.] १ अध्यक्षता, स्वामित्व ।
उ०—१ **सरदारी** नूं निबळाई सियासत सूं बेखबर होय ।
—नी. प्र.
उ०—२ जिको जीव नूं प्यारौ राखै छै तिण नूं **सरदारी** देस पतियत सूं कांई कांम छै ।—नी. प्र.
२ सरदार होने का भाव ।
रू. भे.—सिरदारि, सिरदारी ।
सरदिंदमुखी-सं. स्त्री. [सं. शरदिंदुमुखी] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष । (संगीत)
सरदि—देखो 'सरदी' (रू. भे.)
सरदियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ आर्द्रता या नमी युक्त हुवा हुआ ।
२ देखो 'सरधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरदियोड़ी)

सरदी-सं. स्त्री. [फा. सर्दी] १ शरद ऋतु ।
२ ठंडक ।
उ०—१ पौ मिगसर पाळौ पड़ै, सूखै तरू तमांम । सूतां ऊंडी साळ मैं, सरदी लागै स्यांम ।—नारायणसिंह सांदू
उ०—२ **सरदी** मैं सह सूकगा, आक धतूरा नींम ।—अग्यात
३ जुकाम नामक रोग ।
रू. भे.—सरदि ।
सरदू, सरदौ-सं. पु. [फा. सर्द:] १ एक जलचर पक्षी विशेष ।
उ०—कमळां री घणी सांघणी मेळ है । तठै राजहंस कळहंस री इधकी केळ है । बतक **सरदा** घरट हंजा मुरगा पयां भट्टिया तरै है । सारसां रा टोळ जकै भंगोर करै है ।—र. हमीर
२ एक प्रकार का लम्बोतरा खरबूजा जो काबुल में अधिक होता है ।
उ०—अंजीरू के दरखत नागलता के वरेलि । अंगूर सरदूं सैंफळी अनेक बेलि ।—सू. प्र.
३ राजपूत एवं चारण जाति में स्त्रियों द्वारा अपने पति को किया जाने वाला सम्मानसूचक अभिवादन ।
उ०—१ स्री स्री १०५ स्री कंवर जी साहिब रसिया बालम चंद्रगढ़ सूं सदा हुकमी खिजमतदार वांदी रो **सरदौ** मालम आलीजा अलबेला अंगां रा उदार आपरै डीलां सारै मुदार ।
—र. हमीर
उ०—२ चांचां लिख दौ ओळबां पाखां **सरदौ** जवार । कागद अनवी राजा नै लिख भेजौ राज ।—लो. गी.
४ नमस्कार, प्रणाम ।
रू. भे.—सिरदौ ।
सरद्द-सं. पु.—१ एक वृक्ष विशेष । (सभा)
२ देखो 'सरद' (रू. भे.)
३ देखो 'सरहद' (रू. भे.)
सरद्दहणा—देखो 'सरधणा' (रू. भे.)
उ०—मिथ्यात नी मनि दूर निवारी, साची **सरद्दहणा** मन धारी । हिंसा दुरगति ना दुख खांणी, जीव दया साची करि जांणी ।
—स. कु.
सरद्वत-सं. पु. [सं. शरद्वत] १ सेतु राजा का पुत्र एक राजा ।
२ सावर्णि मन्वन्तर में सप्तर्षियों में से एक ।
३ गौतम ऋषि का नामान्तर ।
सरद्वतसुनु, सरद्वतिसुनु, सरद्वतिसूनु, सरद्वतीसूनु-सं. पु. [सं. शरद्वत्सूनु] शरद्वत का पुत्र, कृप ।
उ०—ससांक नी दीधति दिव्य वस्त्र, सदा सदाचारि करी पवित्र । सुवरण्णवेदी अहिनांणि जांणि, **सरद्वतीसूनु** कृपांणपांणि ।
—सालिसूरि
सरद्वांन-सं. पु. [सं. शरद्वान] गौतम पुत्र एक मुनि जिन्होंने तपस्या कर

अनेक दिव्यास्त्र प्राप्त किये थे। इनकी तपस्या जानपति या जानपदी नामक अप्सरा ने भंग की। इससे कृप और कृपी का जन्म हुआ।

सरध-सं. पु. [सं. शर्धः] १ दल, समूह।

२ बल, ताकत।

३ अपानवायु का त्याग।

सरधणा-सं. पु. [सं. श्रद्धान्] मान्यता, दृष्टिकोण।

उ०—इण लेखै सरधणा तौ एक। अनैं चोथा पांचमां वाला हिंसा करै है अनैं साधु रै हिंसा रा त्याग है। ए फरसणा जुदी है। पिण सरधणा जुदी नहीं।—भि. द्र.

रू. भे.—सरद्दणा।

सरधणौ, सरधबौ-क्रि. स.—१ मानना, स्वीकार करना।

उ०—१ हिवै स्वांमीजी गुलाब रिसी नैं पूछ्यौ—सीतल जी रा टोळा रा साधां नैं साध सरधौ के असाध? जद तै बोल्यौ असाध सरधूं छूं।—भि. द्र.

उ०—२ सांभल चित हरख्यौ घणौ, सरध्या तुमरा वेंण। भवि जीवां नां तारका, थें साचा मिलिया सेंण।—जयवांणी

उ०—३ थें म्हारा वचन सरधिया प्रतीतिया रुचिया जिण सूं त्याग करौ हौ का म्हांनै भांडवा नैं त्याग करौ हो।—भि. द्र.

२ विश्वास करना।

उ०—१ जद बोहत जी कह्यौ—उणां मैं तौ किहां थी हूंतौ मो मेंई न सरधूं।—भि. द्र.

उ०—२ ज्यूं सूत्र रौ वचन साधां रौ वचन सरध्यां, मिथ्यात्व रूप रोग जाय। पिण सरध्या बिना कोरौ सुणीया न जाय।—भि. द्र.

३ पूजना, आराधना करना।

४ मान्यता देना।

उ०—जीव खवाया पुन सरधै। सावद्यदांन मैं पुन सरधै तिण सूं समकत चारित्र एक ही नहीं।—भि. द्र.

सरधणहार, हारौ (हारी), सरधणियौ—वि०।

सरधिप्रोड़ौ, सरधियोड़ौ, सरध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरधीजणौ, सरधीजबौ—कर्म वा०।

सरदणौ सरदबौ—रू० भे०।

सरधनुधार, सरधनुधारी-सं. पु. [सं. शर+धनुष+धारी] अर्जुन। (अ. मा.)

सरधर-वि.—१ धनुर्धारी।

२ अर्जुन।

३ तरकस।

४ देखो 'सिरधर' (रू. भे.)

रू. भे.—सरध्धर।

सरधा-सं. स्त्री.—१ कोई कार्य सम्पादित करने की योग्यता, शक्ति, सामर्थ्य, यथाशक्ति।

उ०—ढोली ढोल घुरावण लागौ। सरधा जोग भूंपा मैं ब्याव री त्यारियां होवण लागी।—फुलवाड़ी

२ बल, शक्ति।

उ०—१ सरधा बांकी सूं झांकी सुखसेरी, ढूंढी ढूंढाहड़ हाडोती हेरी। जांणी जीवण नैं जिण तिण मिस जुळिया, पांणी पीवन नैं पूरब दिस पुळिया।—ऊ. का.

उ०—२ सरधा घटगी सेंग, वेग बिरधापण वळियौ। निकळण रौ रथ नहीं, कळण ऊंडी मैं कळियौ।—ऊ. का.

उ०—३ बोल गळा मैं फंसग्या व्है ज्यूं कैवण लागौ—रांणी, म्हारी तौ मिंदर तांई पूगै जित्ती सरधा कोनीं। अर पूग्यां सार ई कांई।—फुलवाड़ी

३ हैसियत, औकात, बिसात।

उ०—१ पण सरधा सूं ऊपर-कर कांम तौ नहीं करणौ जोयीजै।

—वरसगांठ

उ०—२ कोई तौ देवै रांमजी! साल-दुसाला, मेरी सरधा अेक गोछाकी। म्हांनै रांमजी मिल्या वनरावन मैं, म्हांनै किसनजी मिल्या वनरावन मैं।—लो. गी.

उ०—३ अपनी सरधा सम अन्नर, दांन देत सुदतार। इळ ऊपर होवै अमर, साख भरे संसार।—ऊ. का.

उ०—४ बापड़ौ दूध री आस करै तौ मन मैं क्यूं राखां। दूजौ कीं भलौ करण जोग वांरी सरधा ई नीं ही। दूध रौ कांइ, जांणै अेक गाय पावसी ई नीं।—फुलवाड़ी

ज्यूं—सरधा मुजब कांम करणौ चाहीजै।

४ हिम्मत, साहस।

उ०—१ हरीया पंखी पंख बिन, पड़ै रसातळि आय। ऊडण की सरधा नही, जीवत म्रितग थाय।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया बोलण बकण की, सरधा नही लगार।

—अनुभववांणी

मुहा.—सरधा सारू भगती=यथा शक्ति।

सं. पु.—५ प्रियव्रतवंशीय बिंदुमत राजा का नाम।

६ देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)

उ०—१ प्रेमामगन रांमरस पूरण, सागै सबद सुणावै। सनमुख हुय सरधा सूं सुमरण, सासौ सास समावै।—ऊ. का.

उ०—२ सरधा इण री छै इसी जुदा मांनै जीव नैं काया रे।

—जयवांणी

उ०—३ स्वांमी जी कह्यौ—जेसौ सिरोइना रावनौ पालखौ जिसौ यां नवौ साधपणौ पचख्यौ है। पिण सरधा खोटी। जीव खवाया पुन सरदौ।—भि. द्र.

उ०—४ भेखधारी चरचा करतां आचार सरधा री न्याय री चरचा छोडनै जीव बचावा रौ बेदौ घालै।—भि. द्र.

उ०—५ चोथा तेरमां गुणठांणावाली री सरधा एक छै। तेरमां

गुण ठाणावाला री सद्धा सूं फरक पड़्या चौथा गुणठांणा री पहलै गुणठांणै आय जावै ।—भि. द्र.

रू. भे.—सरदा ।

सरघाहीण—१ शक्तिहीन, बलहीन, अशक्त ।

उ०—प्याऊ तक आतां-आतां सेठांणी सरघाहीण व्हैगी ही ।

—फुलवाड़ी

सरधि-सं. पु. [सं. शरधि] भाथा, तरकस । (डिं. को.)

सरधियोड़ो-भू. का. कृ.—१ माना हुआ, स्वीकार किया हुआ. २ विश्वास किया हुआ. ३ पूजा किया हुआ, आराधना किया हुआ. ४ मान्यता दिया हुआ ।

(स्त्री. सरधियोड़ी)

सरध्धर—देखो 'सरधर' (रू. भे.)

उ०—पेख बणै जिण बाहु परध्धर, धींग भुजां निज चाप सरध्धर ।

—र. ज. प्र.

सरनंद-सं. पु. [सं.] कमल । (अ. मा.)

सरन—देखो 'सरण' (रू. भे.)

सरनांगत—देखो 'सरणागत' (रू. भे.)

उ०—मैं तव पुत्र मात तूं मेरी, त्राहि त्राहि सरनांगत तेरी ।

—मे. म.

सरनांम, सरनांमौ-वि.—१ प्रसिद्ध, विख्यात ।

२ श्रेष्ठ, मुख्य ।

सं. पु.—पत्र के ऊपरी भाग का लेख, शीर्षक, पता ।

रू. भे—सिरनांमौ ।

सरनौ—देखो 'सरणौ' (रू. भे.)

सरपंख, सरपंखौ-सं. पु. [सं. शरपुंखा] एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसके पत्ते, फूल आदि औषधियों के प्रयोग में लाये जाते हैं, शरपुंखा । (अमरत)

रू. भे.—सरपुंखा ।

सरपंच-सं. पु. [सं. शर+पंच] कामदेव । (अ. मा)

२ पंचायत का सभापति ।

उ०—कुटंबपाळ सरपंच आपरा पारका गिणै । गांव मैं पूरो भेद भाव पाळै ।—दसदोख

रू. भे.—सिरपंच, सिरैपंच ।

सरप-सं. पु. [सं. सर्प] १ सांप, नाग । (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

२ शेषनाग ।

उ०—रिड़मल हरा राळतै रैवंत, सात्रव घड़ा बिदुर स जगीस । पवंगां तणै धरा चळै पांवां, सरप पयाळ थरहरै सीस ।

—गेहौ मीसण

उ०—२ तद चोथोड़ौ पागौ पडूत्तर दियौ कै इण डावी पगरखी मैं डूंमी सरप चापळ नै गूंचळी मार बैठो हौ ।—फुलवाड़ी

उ०—३ कंवरांणी रै माथा मैं अणगिण सरप फुफकारा भरण लागा । राजकंवर सूं तौ सपना मैं ई मिळण रा फोड़ा पड़ैला ।

—फुलवाड़ी

३ ज्योतिष में एक बुरा व अशुभ योग ।

४ ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र का नाम ।

५ नागकेसर ।

६ त्वष्टा के एक पुत्र का नाम ।

७ कश्यप व सुरभि के पुत्रों में से एक ।

८ अबुद काद्रवेय नामक ऋषि ।

९ बह्मधान-पुत्र एक राक्षस ।

१० पृथ्वी, भूमि । (अ. मा.)

११ पक्षी ।

१२ मध्य लघु की पाँच मात्रा का नाम ऽ।ऽ । (डिं. को,)

१३ देखो 'सरपि' (रू. भे.) (अ. मा.)

रू. भे.—सरपक, सरपौ, सरप्पौ, स्रप, स्रप्प ।

अल्पा;—सरपड़ौ ।

सरपअरि-सं. पु. यौ. [सं. सर्प+अरि] १ गरुड़ । (अ. मा.)

२ मयूर, मोर ।

३ नेवला, न्योला ।

सरपक—देखो 'सरप' (रू. भे.)

उ०—डोहंत सूंडाडंड ए, स्रीखंड सरपक हिंडए ।—गु. रू. बं.

सरपकाळ, सरपकाल-स. पु. यौ. [सं. सर्प+काल] १ गरुड़ ।

२ मोर, मयूर ।

४ नेवला, न्योला ।

सरपख (ह)—देखो 'सरपिख' (रू. भे.)

सरपगंधा-सं. स्त्री. [सं. सर्पगंधा] नागदवन नामक एक जड़ी ।

(वैद्यक)

सरपगत, सरपगति, सरपगती-सं. स्त्री. [सं. सर्पगति] १ साँप के समान चाल, कपट की चाल ।

२ कुटिल प्रकृति ।

वि.—१ उक्त प्रकार की चाल चलने वाला ।

२ कुटिल प्रकृति का ।

सरपड़ौ—देखो 'सरप' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आड आरतौ करै, बतख विड़दावळ वांचे । भेंस भजन गुण फूंक, सरपड़ा स्रोता राचै ।—दसदेव

सरपजग, सरपजग्य, सरपजिग—देखो 'सरपयग्य' (रू. भे.)

सरपजीह-सं. स्त्री. [सं. सर्पजिह्वा] १ एक प्रकार की कटार ।

(डिं. नां. मा.)

२ कटार ।

सरपट-सं. स्त्री.—अगले दोनों पैरों को साथ साथ आगे फेंकने की घोड़े की एक बहुत तेज चाल ।

उ०—सरपट आवता घोड़ा नै देख नैं सूर-तारा री गळाई सांम्ही

तूटौ।—अमर चूंनड़ी

क्रि. वि.—बहुत तेज, शीघ्रता से (केवल चलने या दौड़ने के लिए)।

उ०—लांपौ देवण री जेज के अेक काळिदर पवन रै वेग सरपट दौड़तौ आयौ नै चिता में बड़ग्यौ।—फुलवाड़ी

सरपणी—सं. स्त्री. [सं. सर्पिणी] नागिन, साँपिन। (डि. को.)

रू. भे.—सप्पणी, सप्पणी, सरपिणि।

सरपदंस्ट्र—सं. पु. [सं. सर्पदंष्ट्र] १ साँप का विष दंत।

२ उक्त दाँत से लगने वाला घाव।

सरपदेवी—सं. पु. [सं. सर्पदेवी] कुरुक्षेत्र में स्थित एक तीर्थ स्थान का नाम।

सरपपति—सं. पु. [सं. सर्प+पति] शेषनाग। (डि. को.)

सरपप्रिय—सं. पु. [सं. सर्प+प्रिय] चंदन। (डि. को.)

सरपमाळी—सं. पु. [सं. सर्पमालिन्] १ शिव, महादेव। (नां. मा.)

२ एक महर्षि।

रू. भे.—सरपिमाळी।

सरपबगड़ तेज—सं. पु.—चिपटे नाक का घोड़ा जो अशुभ माना जाता है। (शा. हो.)

सरपभुज—सं. पु. [सं. सर्प+भुज] १ मयूर, मोर।

२ सारस।

३ बड़ा सर्प।

सरपयग्य—सं. पु. [सं. सर्पयज्ञ] जनमेजय द्वारा सर्पों के नाश हेतु किया गया यज्ञ।

रू. भे.—सरपजग, सरपजग्य, सरपजिग।

सरपराज—सं. पु. [सं. सर्पराज] १ शेषनाग।

२ वासुकी। (डि. को.)

सरपविद्या—सं. स्त्री. [सं. सर्पविद्या] सर्प को वश में करने या पकड़ने की विद्या।

सरपव्यूह—सं. पु. [सं. सर्पव्यूह] एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना।

सरपाकसी, सरपाक्षी, सरपाखी—सं. स्त्री. [सं. सर्पाक्षि] गधनाकुली, सरहूंटी, श्वेत अपराजिता। (अमरत)

सरपारि, सरपारी—सं. पु. [सं. सर्पारि] १ गरुड़।

२ मोर, मयूर।

३ नेवला।

सरपाव—देखो 'सिरपाव' (रू. भे.)

उ०—अर म्होकमसिंघ सुण नै पहरिया बैठौ थौ सौ सरपाव अर घोड़ौ घणौ धन खबरदार नूं दीधौ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

सरपासण, सरपासन—सं. पु. [सं. सर्प+आशन्] १ गरुड़।

२ मोर, मयूर।

३ नेवला।

[सं. सर्प+आशन] विष्णु भगवान्।

सरपास्य, सरपास्य—सं. पु. [सं. सर्पास्य] खर राक्षस का सेनापति जो भगवान् श्रीराम के द्वारा मारा गया था।

सरपाहार—सं. पु. [सं. सर्प+आहार] १ नेवला। (डि. को.)

२ मयूर, मोर।

३ गरुड़।

[सं. सर्पाहार] ४ शिव, महादेव (डि. को.)

सरपि, सरपिख, सरपिखि, सरपिखी—सं. पु. [सं. सर्पिष] घी, घृत। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सरप, सरपख(ह)।

सरपिणी—देखो 'सरपणी' (रू. भे.)

सरपिमाळी—देखो 'सरपमाळी' (रू. भे.)

सरपुंख—देखो 'सरपंख' (रू. भे.)

सरपेच—देखो 'सिरपेच' (रू. भे.)

उ०—सुभ खिल्लत पंच वसन सुरंगी, असि खंजर सरपेच किलंगी।

—रा. रू.

सरपोस—सं. पु. [फा. सर+पोश] थाल आदि ढकने का कपड़ा।

सरपौ, सरप्प—देखो 'सरप' (रू. भे.)

उ०—१ अरधगि हेम पुत्रीः सरपौ कठेंणि वाहणौ सांडौ। सिखा नेत भाल चंदौः तस्मै रुद्राय नमौ।—गु. रू. बं.

उ०—२ करंत एक राग रंग, मोहिए सरप्प ए।—गु. रू. बं.

सरफ—सं. पु. [अ. शरफ] १ बड़ाई।

२ सौभाग्य।

३ महत्व।

४ कपड़े धोने का एक प्रकार का पाउडर विशेष।

सरफणौ, सरफबौ—क्रि. अ.—हवा में फहराना, वायु में इधर उधर हिलना।

उ०—जरदोजनि हेम ध्वजा सरफै, तड़िता घन बीच मनौ तरफै।

—ला. रा.

सरफणहार, हारौ (हारी), सरफणियौ - वि०।

सरफिओड़ौ, सरफियोड़ौ, सरफ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरफीजणौ, सरफीजबौ—भाव वा०।

सरफल—सं. पु. [सं. शरः+फलं] तीर की पैनी नोंक जहाँ नुकीला लोहा लगा होता है।

सरफास—सं. स्त्री.—घासफूस तथा डंठल आदि का महीनतम नोंकदार तीक्ष्ण भाग। (शेखावाटी)

सरफियोड़ौ—भू. का. कृ.—हवा में फहराया हुआ, वायु में इधर उधर हिला हुआ।

(स्त्री. सरफियोड़ी)

सरफौ—स. पु.—१ औषधि के प्रयोग में आने वाला एक छोटा पौधा।

[सं. सर्फ] २ खर्च, व्यय।

३ मितव्ययता।

सरबंग-सं. पु. [सं. सर्वांग] १ सब देह, सब अंग।

उ०—१ **सरबंग** उदर उर वर सरूप, चत्रवदन रचै किर परम चूप।—रा. रू.

उ०—२ सुधा वाघ **सरबंग**, आरखै चित्रांम अंग। अंतरिक्ख वहै ओळ, अंभ गळै घातै गोळ।—गु. रू. बं.

२ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में मगण जगण और ह्रस्व गुरु सहित आठ वर्ण होते हैं। (ल. पि.)

३ संगमरमर या काले पत्थर का बना घोटा जो दवाईयों को बांटने या घोटने के काम आता है।

४ एक प्रकार का पत्थर विशेष जिससे उक्त घोटा बनाया जाता है।

उ०—तठा उपरांति करि नें राजांन सिलांमति तजारें री बाड़ी री नीपनी, नीली घणूं पाकी, पुरांणी, आगैं बखांणी तिण भांति री भांगि घणीं एलची, मिरचां, पांन, जांवत्री रैं मेळ सूं पाखांण री कूंडीआं **सरबंग** रा घोटा सूं ऊजळा आचां री धमोड़ी घणैं ऊजळैं मिसरी रैं भेळ ऊजळा गरणां सूं झारीजै छै।—रा. सा. सं.

क्रि. वि.—१ सर्वथा, पूर्ण रूप से।

२ देखो 'सरभंग' (रू. भे.)

सरबंगी-वि.—साम, दाम, दण्ड, भेद नीति के सब अंगों को जानने वाला।

उ०—मेळ तणौ कज मेलियौ, व्रत रज गत बुधिवांन। **सरबंगी** सेलौ सुमति, चेलौ नाहरखांन।—रा. रू.

२ देखो 'सरभंगी' (रू. भे.)

उ०—एको आतिम जांणिया, सै **सरबंगी** साध। हरीया आतिम रांम विन, सोई आंन उपाध।—अनुभववांणी

सरबंद, सरबंध-सं. पु. [सं. शरबंध] १ सिर पर बांधा जाने वाला वस्त्र विशेष, साफा, पगड़ी।

उ०—तनुबंध, **सरबंध** कमरबंध मगवनां कमलवनां।—व. स.

२ सिर पर धारण करने का स्त्रियों का एक आभूषण।

रू. भे.—सिरबंद, सिरबंध।

सरब—१ देखो 'सरभ' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

२ देखो 'सरव' (रू. भे.) (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ थट अो **सरब** तूझ कजि थटियौ, राजा आव वीर इम रटियौ।—सू. प्र.

उ०—२ कुळ **सरब** बळ बै कांम, रखवाळ सीतारांम।—रा. रू.

उ०—३ उणरी तौ रग रग मैं कदैई नीं बुझण वाळी लाय लाग्योड़ी ही। बोल्यौ—जै माया मैं ईं मिनख रा **सरब** सुख बसै तौ घर मैं इत्ती माया व्हैतां थकां ईं म्हारा मन मैं सुख उपजियौ तौ कोनीं।—फुलवाड़ी

उ०—४ मिंदर वाळी डूंगरी माथै कंवर तीजोड़ी पांख फेरी तौ **सरब** डूंगर सोना रौ बणग्यौ। संकर भगवांन रौ मिंदर ई सोना रौ बणग्यौ।—फुलवाड़ी

सरबगळ-वि.—१ सब को हजम करने वाला।

२ सब को स्वाहा करने वाला।

३ देखो 'सरवग्रास'।

उ०—हठी रणखेत सगरांम 'कुंभा' हरै, घडा दांणव तणी सफै रण घाय। घणौ तौ सूर ससि ग्रहण ह्वै दुयघड़ी, पख उभै **सरबगळ** कीध पतसाय।—महाराणा संग्रामसिंहजी बडा रौ गीत

सरबग्यांनी, सरबजांण—देखो 'सरवग्यांनी' (रू. भे.)

उ०—मां बोली—आ थारी भोळप है जकौ म्हनै **सरबग्यांनी** मांनै।—फुलवाड़ी

उ०—२ तरै मींवै आपरी तरवार काढिनै मेली नै कह्यौ आप **सरबजांण** छौ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

सरबजीत-वि. [सं. सर्वजित्] सब को जीतने वाला, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

सं पु.—१ काल या मृत्यु जो सबको जीत लेती है।

२. २१ वां संवत्सर।

३ एक प्रकार का यज्ञ।

सरबजीव-सं. पु. [सं. सर्वजीव] ब्रह्मा का एक नाम।

सरबत-सं. पु. [अ. शर्बत] १ गाढा रस जो चीनी आदि से पका कर तैयार किया गया होता है।

उ०—भरि कोठा परठा करि भारी, संभ्रम बिहारी जुड़ण असींग। सांम्हां अमल तिजारा सरबत, सत दळ मोकळिया गजसींग।

—गजसिंघ नाथावत कछवाहा रौ गीत

२ उक्त रस पानी में मिला कर बनाया गया पेय पदार्थ।

३ वह पेय पदार्थ जो चीनी या फलों का रस मिला कर बनाया गया हो।

४ मुसलमानों में सगाई की एक रस्म विशेष जिसमें विवाहोपरांत कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष वालों को शर्बत पिलाई जाती है।

५ उक्त अवसर पर वर पक्ष वालों को कन्या पक्ष वालों की ओर से दिया जाने वाला धन।

सरबती-सं. पु.—१ पीलापन लिए लालरंग का एक नगीना।

२ एक प्रकार का कपड़ा विशेष।

३ एक प्रकार का नींबू, जंबीरी नींबू।

४ एक प्रकार का आम।

५ एक प्रकार का बढिया कपड़ा।

वि.—१ शरबत सम्बन्धी।

२ साधारण ललाई लिए हलके पीले रंग का।

सरबतीनींबू, सरबतीनीबू-सं. पु.—जंबीरी नींबू, मीठा नींबू।

सरबथा—देखो 'सरवथा' (रू. भे.)

उ०—अर ऊणां रा बिबाहण रा लोभी अंत्यजां नूं एकठा बुलाइ **सरबथा** ही मारू।—वं. भा.

उ०—२ हूं आखू साची हमैं, तिण मैं झूठ न तार। सूर नहीं है **सरबथा**, अपत उठै काय नार।—पा. प्र.

सरबदा—देखो 'सरवदा' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—हथळेवै भेळी हुई, नह होसी न्यारीह। सोढी रहसी **सरबदा**, साथै सुपियारीह।—पा. प्र.

सरबनास—देखो 'सरवनास' (रू. भे.)

सरबमंगळा—स. स्त्री. [सं. सर्वमंगला] तांत्रिकों की एक देवी का नाम।

उ०—बीरबळ पूछी—तूं कुण छै, कींसूं दुखी थकी रोवै छै? उवा बोली—इं सुद्रसेण राजा री राजलक्ष्मी छूं। मैं राजा रै आसरै बहुत दिन विस्राम लियौ अब इयै रौ राज भंग हुसी। इयै रै घर सूं विजोग थाय जासूं, तींसूं रोवूं छूं। तठै बीरबळ कहियौ किणी प्रकार राज भंग न हुवै जीं सूं थारौ रहणौ होय। तद लक्ष्मी कही—अेक बात बड़ी कठिण छै। तूं आपरा पुत्र री भगवती **सरबमंगळा** नै बळि दे दै तौ राज थिर रहै।

—बैताळ पच्चीसी

सरबमुख—देखो 'सरवमुख' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सरबय्या—सं. स्त्री.—यादव वंश के अन्तर्गत एक शाखा।

सरबर—देखो 'सरोवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'सरोबर' (रू. भे.) (डिं. को.)

सरबरस—सं. पु. [सं. सर्व+रसः] ज्ञान।

वि. [सं. सर्व+रसं] खारा। (डिं. को.)

रू. भे.—सरवरस।

सरबरा, सरबराह—सं. स्त्री. [फा. सरबराह] १ खातिर, आवभगत।

उ०—१ म्हारी बेटी नै घरै आयोड़ा री **सरबरा** रौ ध्यांन है इज घणौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ इण रांभा मैं सेठजी जांन सारू नीं तौ कीं जीमण बणायौ अर नीं कीं दूजी ई **सरबरा** करी। कोई मिस लाध्यां चूकण री रात वै जलमिया ई कोनी हा।—फुलवाड़ी

उ०—३ बांड्यौ वीर मूंडा सूं इमरत बरसावतौ बोल्यौ—बाई री थोड़ा दिनां तांई **सरबरा** करूंला। डरण री जरूरत कोनीं, म्हारै लारै री लारै निसंक बांबी में वड़ जाजै।—फुलवाड़ी

२ आवभगत करने की सामग्री।

उ०—सौ रांणै वांच सुण खुस्याळ हुवौ। तुरत ओठी नूं पाछी सीख दीवी, कागद लिख दियौ—जौ थै कुंवर नूं हर भांत टिकावज्यौ। म्है सारी **सरबरा** लेय आवां छां।

—कुंवरसी सांखला री वारता

३ प्रबन्ध, इन्तजाम।

उ०—उण दिन सारी **सरबरा** कराय बखतसिंहजी महाराज गजसिंहजी रा डेरां पाछलै पहर पधारिया।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

४ सजा, दण्ड आदि देने का भाव।

वि.—१ प्रबन्धक, व्यवस्थापक।

२ आवभगत करने वाला।

३ मजदूरों आदि का सरदार, मुखिया।

रू. भे.—सरभरा, सरभरि, सरभरी, सरवरा।

सरबराकार—सं. पु. [फा. सरबराह] व्यवस्थापक, प्रबंधकर्त्ता।

सरबरित—सं. पु. [सं. सर्वरतः] १ शिव, महादेव। (अ. मा; नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

३ ईश्वर। (नां. मा.)

रू. भे.—सरबरत, सरवरित।

सरबरी—देखो 'सरवरी' (रू. भे.) (डिं. को.)

सरबलील—वि.—सब पदार्थ खाने वाला, सर्वभक्षी। (मा. म.)

सरबस—देखो 'सरवस्व' (रू. भे.)

उ०—१ दाता जग मातापिता, दाना सांप्रत देव। दाता **सरबस** दांन दै, ऊत्तर एक अदेह।—बां. दा.

उ०—२ सूतां **सरबस** जात है, जागि 'र करौ बिचार। हरि परम सनेही परमसुख, अगमवार नहीं पार।—ह. पु. वा.

सरबसहा—देखो 'सरवसहा' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

सरबसुख—सं. पु. यौ. [सं. सर्व+सुख] १ पानी, जल। (ह. नां. मा.)

सरबसुहागण—सं. स्त्री.—सधवा, सौभाग्यवती।

उ०—एक भरचौ ऐ वतूळौ आवौ, विनायक बिणजारां कै बैल ज्यूं। एक मांड्यौ चूंड्यौ आवौ, **सरबसुहागण** कै सीस ज्यूं।

—लो. गी.

सरबस्व—देखो 'सरवस्व' (रू. भे.)

उ०—बळी दीनबंधू घरै बंसबांनां, अकूपार गंभीर रोळै अरांना। दियै मेय राधेय **सरबस्व** दांनी, महाकस्ट भी मांगवै भूप मांनी।

—वं. भा.

सरबांणी—देखो 'सरवांणी' (रू. भे.) (डिं. को.)

सरबूद—सं. पु.—खेमा, तम्बू।

उ०—तांणियौ आज **सरबूद** ताय जांणियौ आज अरबूद जाय। कदमां लग निजर सलांम कीध, डमडोळ राव 'ऊमेद' दीध।

—वि. सं.

सरबेण, सरबेत—वि. [सं. सर्व] सब, सम्पूर्ण, समस्त।

सरबेस, सरबेसर, सरबेस्वर—देखो 'सरवेस्वर' (रू. भे.)

सरबोर—देखो 'सराबोर' (रू. भे.)

सरब्ब—देखो 'सरव' (रू. भे.)

उ०—अघकारी असुरां तणां, सुव धूजिया **सरब्ब**। अप चौ सोच निवारियौ, उर धारियौ गरब्ब।—रा. रू.

सरभंग—सं. पु. [सं. शरभंग] १ श्रीरामचन्द्र के अनन्य भक्त एक महर्षि जिन्हें इन्द्र ने ब्रह्मलोक ले जाना चाहा मगर वे श्रीराम के दर्शनाकांक्षी होने के कारण उस समय ब्रह्मलोक न जाकर दर्शनोपरान्त गये थे।

२ एक परिगणित जाति विशेष ।

[सं. सरभंग] ३ अघोर पंथ का नाम ।

रू. भे.—सरबंग ।

सरभंगासरम, सरभंगाश्रम-सं. पु. [शरभंगाश्रम] शरभंग ऋषि का आश्रम ।

सरभंगी-वि. [सं. सरभंगी] अघोर पंथ का, अघोर पंथ से सम्बन्धित ।

सं. पु.—अघोर पंथ का व्यक्ति ।

रू. भे.—सरबंगी ।

सरभ-सं. पु. [सं. शरभः] १ राम की सेना का एक बन्दर । (रामकथा)

२ कश्यप एवं दनु के संसर्ग से उत्पन्न एक दानव ।

३ चेदी नरेश धृष्टकेतु के एक भाई का नाम ।

४ दनुज के एक पुत्र का नाम ।

५ शिव की क्रोधमूर्ति, वीरभद्र ।

६ कृष्ण-रुक्मिणी के एक पुत्र का नाम ।

७ यम के पाँच पुत्रों में से एक पुत्र का नाम ।

८ ऐरावत कुलोत्पन्न एक नाग ।

९ गान्धारराज सुबल के एक पुत्र का नाम ।

१० भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

११ हाथी का बच्चा । (डिं. को.)

१२ ऊंट ।

१३ एक विशेष प्रकार का मृग ।

उ०—गाज सुणंता पांण, सरभ थट फाळां आवै । भांगै डील अकज्ज, लांघवा जोर जतावै ।—मेघ

१४ सिंह, शेर । (ह. नां. मा.)

१५ आठ पैरों वाला एक प्रकार का जन्तु विशेष, जो शेर से बढ़ कर बलवान् व शक्तिशाली होता है । (डिं. को.)

उ०—१ सीह किसी साराह सरभ रव सुणै सळक्कै, एकळ की ओपमा लड़ै भागै थह लुक्कै । सूर खाग संग्रहै सुवपि संनाह सुधारै, अग्र ढाल ओडवै पीठ बेलियां पचारै ।—रा. रू.

उ०—२ जै जै सद् उचार डाक डमरू कर वाजै, मोर हंस अग-राज चडी खगराज गरज्जै । एक हस्ति आरुही अखभ अस उस्ट्र विगत्ती, सरभ चील सादूळ रीछ बंदर तर रत्ती । अदभूत रूप आक्रत अगम, किरलक्क हक्क रसणा करै । अण जैत कहै मुख आसुरां, जैत कमंधां उच्चरै ।—रा. रू.

१६ टिड्डी ।

१७ पतंगा, शलभ ।

१८ एक प्रकार का वृत्त (वर्णिक छंद) विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है ।

१९ बीस गुरु और आठ लघु मात्राओं के दोहे का एक भेद विशेष ।

२० आर्यागीति या खंधांण (स्कंधक) नामक गाथा या गाहा का भेद विशेष ।

२१ छप्पय छंद का ३१ वां भेद विशेष जिसमें ४० गुरु और ७२ लघु से ११२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं । (र. ज. प्र.)

२२ पीत, पीला । * (डिं. को.)

रू. भे.—सरब ।

सरभखड़ो-सं. पु.—अघोरी, औघड़ ।

सरभर-सं. स्त्री.—बराबरी, समानता ।

उ०—हाथळ बळ निरभै हियो, सरभर नको समत्थ । सीह अकेलो संचरै, सीहां केहा सत्थ ।—बां. दा.

वि.—समान, तुल्य, बराबर । (डिं. को.)

उ०—१ कायथ 'लाल' विसाल कुळ, सरभर बालकिसन्न । श्रै वधिया तीखै अणी, पेखै धणी प्रसन्न ।—रा. रू.

उ०—२ अंग सकोमळ पेम सरभर, चूंप सभै चतरंग चितारो । साध सती जत राग रसायन, सूर खिम्या कवि दास दतारो ।

—अनुभववांणी

उ०—३ कंज सरभर समुख कोमळ, कांन झगमग हरि कुंडळ ।

—र. ज. प्र.

उ०—४ म्हांरी सास सपूती सें म्है सरभर रहस्यां, जीभ के गुण आगलां । म्हांरी देरांण्यां जेठाण्यां बरोबर रहस्यां, कांम के गुण आगलां ।—लो. गी.

सरभरा—देखो 'सरबरा' (रू. भे.)

उ०—तद सरभरा करण नूं बाघोड़ 'तेजै' नूं मेलियौ ।—द. दा.

सरभरि, सरभरी—१ देखो 'सरबरा' (रू. भे.)

उ०—चाइमल्ल मेघ इं छोड़ाया, मांन भंग करी कढवाया । तपला कहइं सरभरि कीजइ, दुरि (इ) भेरि हुकम इन्ह दीजइ ।

—ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'सरवरी' (रू. भे.)

सरभि—देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

उ०—सरभि समीरण वायइ वाम्र, पाडल फूल खिरइ जलमाहि । तीरइ तीरइ सारंग फिरइ, सरोवर पांणी इह कांकरइ ।

—प्राचीन फागु-संग्रह

सरभू-सं. पु. [सं. शरभूः] स्वामी कार्तिकेय ।

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

सरभेस, सरभेसर, सरभेस्वर-सं. पु. [सं. शरभेस्वर] एक शिव लिंग का नाम ।

सरमंदगी-सं. स्त्री. [फा. शर्मंदगी] १ लज्जा, शर्म ।

उ०—घणां काचा क्रपणा नै तौ न उपजै चाव । उलटी पड़ै सर-मंदगी रै डाव ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

२ पश्चाताप, पछतावा ।

सरमंदो-वि.—लज्जित, शर्मिंदा ।

उ०—जांण्या हम जैसा, कहियै कैसा, कुछीयक मन सरमंदा।
—अनुभववांणी

सरम-सं. स्त्री. [फा. शर्म] १ लज्जा, शर्म। (डि. को.)

उ०—१ कूरम कहै अमर नर काया, पुळबा कारिण हुवा पोहौ। मोह बांधियां न जायै मरणि, सरम बांधिया मरै सोहौ।
—सुजांणसिंघ जगन्नाथोत री गीत

उ०—२ रजस्वला नारीह, कथा गोप किण सूं कहूं। समझौ हरि सारीह, सरम मरम री सांवरा।—रांमनाथ कवियौ

उ०—३ खांड अर घी मांगतां सरम को आवै नीं! घर में कमावू तौ थारै जैड़ो मोल्यौ भरतार है। घी खांड सूं मूंणां भरी है।
—फुलवाड़ी

२ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—१ खत्रवट सरम सदा थां खोळै, औ हिंदवांण बचावौ ओलै। समहर मौ दळ लियौ समेळा, भीम सह खूमांणा भेळा।
—रा. रू.

उ०—२ जांणै किसौ अजांण, तीन लोक तारण तरण। होवै द्रोपद हांण, सरम धरम री सांवरा।—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ सूर सरम संग्रहै, भरम छंडै कमधज्जां। मेळ कियौ मेछ सूं, सूर सांमंत सकज्जां।—रा. रू.

उ०—३ कियां सनाह किसन कूंभावत, वधै हरख जिण कळह विसावत। आया निजर धणी चै एहा, सांमि धरम कुळ सरम सनेहा।—रा. रू.

३ संकोच।

[सं. शर्मन्] ४ हर्ष, आनन्द। (डि. को.)

५ घर, मकान।

६ सुख।

७ विष्णु।

८ देखो 'स्रम' (रू. भे.)

रू. भे.—सरम्म।

सरमणौ, सरमबौ-क्रि. स.—१ युद्ध करना, झगड़ा करना।

२ प्रतियोगिता करना।

३ बहस करना।

४ प्रयत्न करना, कोशिश करना।

उ०—पहिलुं सरमई धरमह पूत्रो, जेह रहइं नवि कोई सत्रो। ऊठिउ भीमु गदा फेरंतउ, तउ दुरयोधन भिडइ तुरंतउ।
—सालिभद्र सूरि

सरमणहार, हारौ (हारी), सरमणियौ—वि०।

सरमिओड़ो, सरमियोड़ौ, सरम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरमीजणो, सरमीजबौ—कर्म वा०।

सरमधारी-वि.- शर्म को धारण करने वाला, शर्मीला।

उ०—देसपति संभ्रम दमण ऊदम, अंगम गम हींदुआं ओपम। सरमधारी करण सुधरम, ब्रहम वाचा दांनि विक्रम।—ल. पिं.

सरमर-सं. पु. [सं. शर्मरः] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

सरमल्ल-सं. पु. [सं. शरमल्लः] १ शारिका पक्षी, मैना।

२ तीर चलाने में दक्ष व्यक्ति, धनुर्धर।

सरमसार-वि. [फा.] १ लज्जाशील, लज्जावान।

२ लज्जित, शर्मिन्दा।

सरमांण-सं. पु. [सं. शरमाण] हिरण्यकशिपु का भतीजा एक सैंहिकेय असुर।

सरमांन—देखो 'मांनसरोवर'।

उ०—जांणै हंस मलपीयौ, सरमांन मझारां। हाथी जांण क हालीयौ, मद पीध बजारां।—मयारांम दरजी री बात

सरमा-सं. स्त्री. [सं.] १ देवताओं की एक कुतिया।

२ कुतिया।

३ दक्ष की एक कन्या व कश्यप ऋषी की पत्नी का नाम।

४ विभीषण की एक पत्नी।

सं. पु. [सं. शर्म्मन] ब्राह्मणों की एक उपाधि।

सरमाणौ, सरमाबौ-क्रि. अ., स.—१ लज्जित होना, शरमाना।

उ०—सांकड़ै मारगियै सरमाय, घूंघटै ओळूंड़ी अटकाय। गई धण सरवरियै री तीर, झुकी झट काळी लट छिटकाय।—सांझ

२ संकोच करना।

उ०—औरां के पिया परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजै पाती। मेरा पिया मेरै निकट बसत है, कह न सकूं सरमाती।—मीरां

३ खिसियाना।

उ०—भांमण भरमाया गुरु गरमाया, सरमाया सिरकंदा है। चेली रा चेला अजक अकेला, बेला बास बसंदा है।—ऊ. का.

४ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना।

सरमाणहार, हारौ (हारी), सरमाणियौ—वि०।

सरमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सरमाईजणौ, सरमाईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सरमावणौ, सरमावबौ, सरमाहणौ, सरमाहबौ—रू० भे०।

सरमायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ शरमाया हुआ, लज्जित हुवा हुआ. २ संकोच किया हुआ. ३ खिसियाया हुआ. ४ शर्मिन्दा किया हुआ, लज्जित किया हुआ।

(स्त्री. सरमायोड़ी)

सरमाळू, सरमालू-वि.—लज्जा व शर्म रखने वाला।

सरमावणौ, सरमावबौ—देखो 'सरमाणौ, सरमाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जीमण नै थें निति जावौ, विधवावां घर वारियां। साख होय मन नह सरमावौ, जग मैं करि करि जारियां।
—ऊ. का.

उ०—२ मतवाळौ उठ मोद सूं, लप गोदी में लीन। सरमावै धण सेज मैं, खिन खिन चित व्है खीन।—नारायणसिंह सांदू

उ०—३ आ तौ सुरगां नै सरमावै, इण पर देव रमण नै आवै। इण रौ जस नर नारी गावै, धरती धोरां री ....।—अज्ञात

उ०—४ कीं सरमावै फिर लुक ज्यावै, पग थांम पट सांम जप ज्यावै। जै दिख ज्यावै तौ हंस ज्यावै, जद विपन गुदगुदी बिख-रावै।—करणीदांन बारहठ

सरमावणहार, हारौ (हारी), सरमावणियौ—वि०।

सरमाविओड़ौ, सरमावियोड़ौ, सरमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरमावीजणौ, सरमावीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सरमावियोड़ौ—देखो 'सरमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सरमावियोड़ी)

सरमासरमी—सं. स्त्री.—परस्पर लज्जा करने का भाव।

सरमाहणौ, सरमाहबौ—देखो 'सरमाणौ, सरमाणौ' (रू. भे.)

उ०—आवी खबर लिखी अणचाहै, मगन नबाब सोच सरमाहै। कीधी फौज बळै कमधज्जां, सूधर सोधण प्रांण सकज्जां।

—रा. रू.

सरमाहणहार, हारौ (हारी), सरमाहणियौ—वि०।

सरमाहिओड़ौ, सरमाहियोड़ौ, सरमाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरमाहीजणौ, सरमाहीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सरमाहियोड़ौ—देखो 'सरमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सरमाहियोड़ी)

सरमिंदगी—सं. स्त्री.—१ निंदा, बदनामी।

उ०—जिकौ कांम गरमी हळकाई सूं आदरै तौ सहीआ छै। अरथ नहीं सुधरै आगलै दुख रौ कारण होय संसार सूं सरमिंदगी होय।

—नी. प्र.

२ लज्जा, शर्म।

उ०—फेर कदै ही उवौ रसोईदार इण सरमिंदगी रै कारण सूं कोई गलती नहीं कीवी।—नी. प्र.

सरमिंदौ—वि.—जिसे शर्म आती हो, लज्जित।

उ०—सु साथ रै ठाकुरै नीठ यूं कर नै पाछा आंणिया। सु प्रिथीराज जी तौ घणा सरमिंदा हुआ।—राव मालदे री बात

रू. भे.—सरम्मिदौ।

सरमियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ युद्ध किया हुआ, झगड़ा किया हुआ. २ प्रतियोगिता किया हुआ. ३ बहस किया हुआ. ४ प्रयत्न किया हुआ, कोशिश किया हुआ।

(स्त्री. सरमियोड़ी)

सरमिस्टा—सं. स्त्री. [सं. शर्मिष्ठा] असुरराज वृषपर्वा की पुत्री जो ययाति की पत्नी एव शुक्राचार्य की कन्या देवयानी की सखी थी।

वि. वि.—एक बार देवयानी और शर्मिष्ठा में साधारण सी बात पर झगड़ा हो गया और शर्मिष्ठा ने देवयानि को कुए में ढकेल दिया। राजा ययाति ने देवयानि को कुए से बाहर निकाला तथा उसी के साथ विवाह भी कर लिया। वृषपर्वा ने देवयानि के साथ शर्मिष्ठा को दासी बना कर साथ भेज दी। ययाति से शर्मिष्ठा का सम्बन्ध हो गया और उससे उसे द्रह्यु, अणु व पुरु तीन पुत्र हुए। शर्मिष्ठा से सम्बन्ध कर लेने के कारण शुक्राचार्य ने क्रुद्ध होकर ययाति को शीघ्र बूढ़ा होने का शाप दिया।

सरमीलौ—वि.—लज्जालु, लज्जावान।

सरमु—सं. पु. [सं. श्रम] १ युद्ध।

उ०—केवि दिखाडइं खांडा सरमु, केवि तुरंगम जांणइ मरमु। चक्र छुरी किवि साबल भालइं, किवि हथीयार पडंता झालइ।

—सालिभद्र सूरि

२ वाद बहस।

३ प्रतियोगिता।

४ प्रयत्न, कोशिश।

सरम्म—देखो 'सरम' (रू. भे.)

उ०—१ मारू कांम अडोल मन, सारू सांम धरम्म। डहौ खडग्गां धूंप कर, एवां गही सरम्म।—रा. रू.

उ०—२ खंध न फेरै धुर वहै, धवळा राह धरम्म। राघव ज्यांरी राखही, सींगां तणी सरम्म।—बां. दा.

सरम्मिदौ—देखो 'सरमिंदौ' (रू. भे.)

सरया—सं. स्त्री. [सं. शर्या] १ रात्रि, रात।

२ अंगुली।

सरयणात—सं. पु [सं. शर्यणायत्] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सरयाति—सं. पु. [सं. शर्याति] १ वैवस्तमनु एवं श्रद्धा के संसर्ग से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक जो च्यवन महर्षि की पत्नी सुकन्या के पिता थे।

२ प्राचीन्वत् राजा का पुत्र व अहयति राजा का पिता एक पुरु-वंशीय राजा का नाम।

सरयु, सरयू—सं. स्त्री. [सं. शरयु, शरयू] १ एक प्रसिद्ध नदी जिसके तट पर अयोध्या नगरी बसी है।

[सं. सरयुः] २ पवन, वायु, हवा।

३ वीर नामक अग्नि की पत्नी का नाम जिसके गर्भ से सिद्धी नामक पुत्र का जन्म हुआ था।

रू. भे.—सरजु, सरजू, सारजू।

सरर—सं. स्त्री.—१ ध्वनि विशेष।

सं. पु.—२ जुलाहों द्वारा ताना ठीक करने हेतु लगाई जाने वाली बाँस की छड़ी, सथिया।

सरराज—सं. पु. [सं.] समुद्र, सागर।

उ०—बाजराज अत बेव, करै नटराज तणी कळ। गजां राज घण गरज, गाज सरराज मदग्गळ।—सू. प्र.

सरराटौ—सं. पु.—हवा, मनुष्यादि के तेज गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि।

सरराणौ, सरराबौ—क्रि. अ.—वायु के तेज बहने या तीर, गोली,

पत्थर आदि के तीव्र गति से छूटने से ध्वनि उत्पन्न होना।

सरळ, सरल–सं. पु. [सं. सरल] १ बाल, केस। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ सरळ सच्चिकण स्यांम कच, मुकता मंग मभार। तरणि तनुजा मधि तसि, धसी सुरसरी धार।

—सिववक्स पाल्हावत

उ० —२ अंग भळकै आरसी, सरळ करळ सारसी।—पनां

उ०—३ ससि वदनी तौ सिर सरळ, मेचक केस म जांण। हिय कांम पावक हुवै, जास धुंग्रां मन जांण।—बां. दा.

२ चीड़ का वृक्ष।

३ एक प्रकार का पक्षी।

४ आग, अग्नि।

५ भाला।

उ०—मेलियौ 'जसै' वळ दिली-दळ मचकतां, प्रबळ भुज बळ सरळ तरळ पूगौ धुब्बै मुगळ अकळ कांठळां सरल धर, अरळ साबळ भरळ करळ ऊगौ।—नाथौ सांदू

६ बिजली, विद्युत।

वि.—१ जो टेढ़ा या वक्र न हो, सीधा।

२ तेज, तीव्र।

उ०—१ सथ ऊठ नकीबां सरळ सद्ध, रवि उदय आद सभिया रवद्ध।—रा. रू.

उ०—२ नीमरयौ पटम सारै कुटम, करै साद सरळा तरणि। रुघनाथ साथ वांसै रह्यौ, अनाथनाथ असरणि सरणि।

—सुरजनदास पूनियौ

३ सहज, आसान।

उ०—सुपह छतीसी दूहड़ा, सुपहां तणां छतीस। सरळ बणाया समभचित, 'बांकै' बिसवाबीस।—बां. दा.

४ छल, कपट आदि से रहित सीधा, भला।

उ०—१ सरळ तन सहज दन मुकत दायक सुमत, गजगमणी जांनकी भांम गुण ग्रांम है।—र. ज. प्र.

उ०—परठीसि हृवि पांचमा, अंग तणउ अधिकार। सरस अनइ सरला वचन, सारप आपै सार।—मा. कां. प्र.

५ ईमानदार।

सरलउ–वि.—१ दीर्घ। (उ. र.)

२ प्रलम्ब। (उ. र.)

सरळक–सं. पु.—१ एक प्रकार का सर्प विशेष।

[सं. शरलकं] २ जल, पानी।

सरलगतजथा–सं. स्त्री.—डिंगल गीतों की रचना का वह नियम जिसमें दृष्टांत अलंकार युक्त मालोपमा होता है।

सरळता, सरलता–सं. स्त्री.—१ टेढ़ा न होने की अवस्था, गुण या भाव, सीधापन।

२ निष्कपटता, भलाई।

३ सुगमता, सरलता।

४ ईमानदारी, सच्चाई।

सरळधर, सरलधर–सं. पु. [सं. सरलधर] बादल।

उ०—मेलियौ 'जसै' वळ दिली-दळ मचकतां, प्रबळ भूजबळ सरळ तरळ पूगौ। धुब्बै मुगळ अकळ कांठळा सरळधर, अरळ साबळ भरळ करळ ऊगौ।—नाथौ सांदू

सरळा, सरला–सं. स्त्री. [सं. सरला] १ काली तुलसी।

२ चीड़ का वृक्ष।

३ घोड़ों की एक नस्ल।

वि.—१ एक-दम सीधा।

उ०—तरु ताल पत्र ऊचा तड़ि तरळा, सरळा परसंता सरगि।

—वेलि

२ सहज एवं सुगम।

३ छल कपट रहित, निष्कपट, निष्छल।

सरली–सं. स्त्री.—एक प्रकार का आभूषण विशेष।

सरलोक—देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

उ०—खत गीता तैं सरलौक खांत, भागवत सलोकी चतुर भांत।

—वि. सं.

सरलोकौ—देखो 'सिलोकौ' (रू. भे.)

सरलोमा–सं. पु.—एक प्राचीन ऋषि।

सरव–सं. पु. [सं. शर्वः, सर्वः] १ शिव, महादेव।

१ विष्णु।

२ श्रीकृष्ण का एक नाम।

४ ग्यारह रुद्रों में से एक।

वि. [सं. सर्व] सब, समस्त।

रू. भे.—सउ, सब, सरब, सरब्ब, स्रव, स्रब, स्रब्ब, स्रव।

सरवइया–सं. स्त्री.—यादव वंश की एक शाखा।

रू. भे.—सरवहिया।

सरवइयौ–सं. पु.—यादवों की सरवइया शाखा का व्यक्ति।

रू. भे—सरवहियौ।

सरवकरणी–सं. स्त्री.—पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक।

सरवकरता–सं. पु. [सं. सर्वकर्त्ता] ब्रह्मा। (नां. मा.)

सरवकरमा–सं. पु.—१ एक सूर्य-वंशी राजा का नाम।

उ०—सनुदासतास पुत्र तप सधेज, तै पुत्र सरवकरमा सतेज।

—सू. प्र.

२ कल्माषपाद के पुत्र का नाम जो अनरण्य का पिता था।

सरवकांम–सं. पु. [सं. सर्वकाम] सूर्यवंशीय ऋतुपर्ण के पुत्र एवं सुदास के पिता का नाम।

सरवकांमद–सं. पु. [सं. सर्वकामद] भगवान् विष्णु।

सरवकांमदुका–सं. स्त्री. [सं. सर्वकामदुका] कामधेनु।

सरवकाळ–सं.पु. [सं. सर्वकाल] यमराज।

क्रि. वि.—हर समय, सर्वदा, सदैव।

सरवगंध-सं. पु. [सं. सर्वगंध] १ इलायची।

२ कपूर।

३ केशर।

४ दालचीनी।

५ अगर।

६ नागकेसर।

७ शिलारस।

८ लौंग।

सरवग-वि.—जिसकी गति सब जगह हो।

सं. पु. [सं. सर्वग] १ भीमसेन के एक पुत्र का नाम।

२ धर्मसावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

३ देखो 'सरवग्य' (रू. भे.)

सरवगति-वि.—जो सब को शरण व ग्राश्रय देता हो, परमेश्वर।

सरवगळ-सं. पु.—१ खग्रास।

वि.—२ पूर्ण रूप से ग्रस्त।

उ०—मिळै सगरांम सगरांम जुध मसळियौ, ग्रजड बळ खांन संधार तूटौ। ग्रास भंडार सपतंग लै सरवगळ, छोडियां साह महमंद छूटौ।—महाराणा संग्रामसिंह रौ गीत

सरवग्य-वि. [सं. सर्वज्ञ] सर्वज्ञ।

उ०—१ बातां विसतारै वणै, सठ ग्रागै सरवग्य (सरवज्ञ)। मून ग्रहै छांडै मछर, तीखौ मिळिया तग्य (तज्ञ)।—बां. दा.

उ०—२ ग्रनइच्छा सोई ब्रम्ह स्वरूपी, सरवग्य सकल पसारा। पाप पुण्य दुख सुख नहीं दरसै, नहीं कोई जीतण हारा।

—साधु जगदीसरांम

सं. पु.—१ ईश्वर।

२ शिव, महादेव।

३ चौसठ भैरवों के ग्रन्तर्गत एक भैरव।

४ देवता।

रू. भे.—सरवग।

सरवग्यता-सं. स्त्री. [सं. सर्वज्ञता] सर्वज्ञ होने का भाव या ग्रवस्था।

सरवग्यांनी-सं. पु. [सं. सर्वज्ञानी] सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञाता।

रू. भे.—सरवग्यांनी, सरवजांण।

सरवग्याता-सं. पु. [सं. सर्वज्ञाता] १ सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञाता।

२ ईश्वर।

३ शिव, महादेव।

सरवग्यात्मा-सं. पु. यौ. [सं. सर्वज्ञ+ग्रात्मा] ईश्वर।

उ०—नमांमी सरवेसा विलख लय सेसाक्षर नमौ। नमौ सरवग्यात्मा परम परमात्मा वर नमौ।—ऊ. का.

सरवजांण—देखो 'सरवग्यांनी' (रू. भे.)

सरवग्रास-सं. पु. [सं. सर्वग्रास] वह ग्रहण जिसमें सूर्य या चंद्र मंडल पूर्ण रूप से छिप जाता है।

सरवड़िया-सं. पु.—पंवार वंश की एक शाखा। (वं. भा.)

सरवड़ियौ-सं. पु.—पंवार वंश की सरवड़िया शाखा का व्यक्ति।

सरवड़ौ-वि.—मूसलाधार।

उ०—१ स्रावण वरसइ सरवड़ै, नयन न खंचइ धार। तिणइ तणांइं ताग-विण, स्वांमी सिं न करि सार।—मा. कां. प्र.

उ०—२ स्रावण वरसइ सरवड़ै, वडै वडेरै बूंद। वपु-पंजर माधव गुणौ, वेधी करिउं छछूंद।—मा. कां. प्र.

सरवचारी-वि. [सं. सर्वचारिन्] सब में विचरण करने वाला या रमने वाला।

सं. पु.—शिव, महादेव।

सरवचूड़-स. पु. [सं. सर्वचूड़] महादेव का चूड़, चंद्रमा।

उ०—रच्या रांम रा दोय चित्रांम रुड़ा, चखां सरव एकौ बियौ सरवचूड़ा।—मे. म.

सरवजित-सं. पु. [सं. सर्वजित] १. २१ वां संवत्सर का नाम।

२ कश्यप मुनि के एक पुत्र का नाम।

सरवण-सं. पु. [सं. शरवण] १ एक वन जहां स्कन्ददेव का जन्म हुग्रा था।

२ एक प्रकार की घास।

३ देखो 'स्रवण' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सोग्राखांना वेल सजि, वटां कहार बहाय। कावड़ सरवण धारि कंध, जांणौ तीरथ जाय।—सू. प्र.

उ०—२ सरवण न हुवै हियौ सिळावण, हियौ जळावण कंस हुवै। थोथै कांम कूटीजै थाळी, कळजुग राळी भांग हुवै।

—हिंगळाजदांन कवियौ

उ०—३ सरवणां री ग्रौर ग्रोपमा न वणसी, सीपमां नूं स्वांति बूंद भेली छै। जकौ मोती जणसी।—पनां

उ०—४ सरवण नैंणि जिह नासिका, सीख करि सेंणा सथै। घात हुई निरघात, वात हुई विड़ हथै।—सुरजनदास पूनियौ

सरवणति-सं. स्त्री.—वह स्त्री जो ग्रपने सास श्वसुर की खूब सेवा करती हो।

उ०—म्हांरी ग्रै ववड़िया सरवणती, ग्रा सासड़ रै हुकमां मैं हालै ववड़िया सरणवती।—लो. गी.

सरवणौ, सरवबौ-क्रि. ग्र. [सं. श्रवति] १ टपकना, चूवना। (उ. र.)

उ०—कामधेनु करतार है, ग्रम्रत सरवै सोय। दादू बछरा दूध कौं, पीवै तौ सुख होय।—दादूवांणी

२ तेजगति से दौड़ना, भागना।

उ०—इतरै मांहै प्रयागदास ग्रैराकी चढियौ थकौ ग्रायौ। घोड़ौ सरवरतां थकौ हीज 'जैमलजी' नूं सलांम कीधी।—नैणसी

३ शाप देना।

उ०—इम करि कंकण फोडए, त्रोडए नवसर हार । अंगि निरंतर सरवती करवती जिम जल धार।—जयसेखर सूरि

सरवणहार, हारौ (हारी), सरवणियो—वि०।

सरविश्रोड़ौ, सरवियोड़ौ, सरव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरवीजणौ, सरवीजबौ—भाव वा०।

सरवतापन–स. पु. [सं. सर्वतापन] १ सूर्य, सूरज ।

२ कामदेव ।

सरवतेज–सं. पु. [सं. सर्वतेजस्] व्युष्ट व पुष्करिणी के पुत्र एवं चाक्षुष मनु के पिता का नाम ।

सरवतोभद्र–सं. पु. [सं. सर्वतोभद्र] १ विष्णु के रथ का नाम ।

२ चारों ओर से खुला प्रासाद या भवन जिसकी परिक्रमा की जा जा सकती हो।

३ युद्ध में एक प्रकार का व्यूह ।

४ योग के अनुसार एक आसन या मुद्रा ।

५ चित्रकाव्य का एक प्रकार।

६ नीम का पेड़ ।

७ बाँस ।

८ जल के अधिष्ठाता वरुण का निवास स्थान ।

सरवतोमुख–सं स्त्री. [सं. सर्वतोमुख] एक प्रकार की व्यूह रचना ।

सं. पु.—१ शिव, महादेव।

२ अग्नि, आग ।

३ जल, पानी।

४ ब्रह्मा।

५ स्वर्ग ।

६ आकाश ।

सरवत्र–क्रि. वि. [सं. सर्वत्र] १ हर जगह, सब जगह, हर स्थान पर। उ०—वरिखा ज्यौ सरवत्र वरसै । अर चात्रिग मैं न चाहै त्यां वसंत रै विखै कोई भूख्यौ तिस्यौ न रहै छै।—वेलि टी.

२ हर समय ।

सरवत्रग–सं. पु. [सं. सर्वत्रग] १ वायु, पवन ।

२ एक मनु-पुत्र का नाम ।

३ भीम व बलंधारा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

सरवत्रगामी–सं. पु. [सं. सर्वत्रगामी] वायु, पवन ।

सरवथा–क्रि. वि. [सं. सर्वथा] १ सब प्रकार से, हर तरह से ।

२ बिल्कुल, निरा ।

३ सर्वत्र ।

रू. भे.—सरबथा ।

सरवदमन–सं. पु. [सं. सर्वदमन] दुष्यंत व शकुन्तला के संसर्ग से उत्पन्न भरत का बचपन का नाम ।

सरदेवमयरथ–सं. पु. [सं. सर्वदेवमयरथ] विश्वकर्मा द्वारा बनाया गया एक सुवर्णरथ विशेष जिसे त्रिपुरनाश करने के समय शिव ने बनवाया था।

वि. वि.—इस रथ के दाहिने चक्र में सूर्य और वामचक्र में चन्द्रमा तथा २७ नक्षत्र विराजते थे। दाहिनें पहिये में १२ अरे थे जिनमें बारहों सूर्य तथा वामचक्र में १६ अरे थे जिनमें चन्द्रमा की सोलहों कलाएँ थी। छहों ऋतुएँ दोनों पहियों की नेमि, अन्तरिक्ष रथ का अग्र भाग बना और मंदराचल ने रथ की बैठक का स्थान लिया। अस्ताचल और उदयाचल रथ के कूबर, महामेरू अधिष्ठान और शाखापर्वत आश्रय स्थान बने। संवत्सर रथ का वेग, उत्तरायण और दक्षिणायन दोनों लोहधारक, मुहूर्त बन्धुर (रस्सा) और चौसठ कलाएँ कीलें हुई। काष्ठाएँ रथ के नासिकारूप अग्रभाग, क्षण अक्षदण्ड, निमेष अनुकर्ष (नीचे का काठ) और लव ईषादण्ड, हुए। द्युलोक इस रथ का बरूथ (ऊपरी पर्दा), स्वर्ग और मोक्ष धजाएँ। ऐरावत की पत्नी अभ्रमु तथा कामधेनु जुए के अन्तिम छोर पर स्थापित की गयीं। अव्यक्त (प्रकृति) ईषादण्ड बुद्धि नड्वल, अहंकार कोना और पंचमहाभूत उसका बल। इन्द्रियां उसे चारों ओर से विभूषित कर रही थी और श्रद्धा रथ की चाल थी। वेद में छहों अंग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्दःशास्त्र और ज्योतिष) उसके भूषण। पुराण, न्याय, मिमांसा और धर्मशास्त्र उपभूषण हुए। शेषनाग बन्धनरज्जु दिशाएँ और उपदिशाएं रथ के पाद बनी। तीर्थों ने पताका का स्थान लिया और समुद्र आच्छादन वस्त्र बने। गंगादि नदियां उपचारिका, सातों वायु सोपान बने, मानस आदि सरोवर बाहरी विषम स्थान हुए। ब्रह्मा सारथि, ऊँकार चाबुक, अकार छत्र, हिमालय धनुष, शेषनाग प्रत्यंचा, सरस्वती देवी धनुष की घटा, विष्णु बाण, अग्नि उस बाण की नोंक। चारों वेद रथ के चार घोड़े, वायु बाजा बजाने वाला आदि-आदि संसार की सब वस्तुएं उस रथ में थी। (मत्स्य १३३. १५-४६)

सरवदेवेस–सं. पु.—१ चौसठ भैरवों में से एक ।

सरवधारी–सं. पु. [सं. सर्वधारी] १ शिव, महादेव।

२ साठ संवत्सरों में बाइसवां संवत्सर।

सरवनाम–सं. पु. [सं. सर्वनाम] संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला व्याकरण का शब्द ।

सरवनास–सं. पु. [सं. सर्वनाश] विध्वंस, सत्यानाश ।

सरवनासक–वि. [सं. सर्वनाशक] सर्वनाश करने वाला ।

सरवनासी–वि. [सं. सर्वनाशी] विध्वंसकारी, सर्वनाश करने वाला।

सरवनियंता–वि. [सं. सर्वनियन्तृ] सब को वश में करने वाला ।

सरवप–सं. [सं. सर्वपः] १ राई।

२ सरसों।

३ एक तोल विशेष।

४ एक प्रकार का विष विशेष ।

सरवपत्नी–सं. स्त्री. [सं. शर्वपत्नी] १ लक्ष्मी ।

२ पार्वती ।

सरवपरवत-सं. पु. [सं. शर्वपर्वत] कैलाश पर्वत ।

सरवपरि-अव्यय. [सं. सर्वथा] १ सब तरह से ।

२ बिल्कुल ।

३ सम्पूर्णतः ।

४ सर्वत्र, सब जगह । (उ. र.)

सरवपा-सं. स्त्री. [सं. सर्वपा] बलि की पत्नी का नाम ।

सरवपितरीअमावस-सं. स्त्री.—आश्विनी मास की अमावस्या ।

सरवपित्रीसराध-सं. पु. यौ.—आश्विन मास की अमावस्या को किया जाने वाला श्राद्ध ।

सरवप्रिय-वि. [सं. सर्वप्रिय] जो सबको प्रिय लगता हो ।

सरवभक्षा, सरवभखा-सं. स्त्री. [सं. सर्वभक्षा] १ बकरी ।

२ अग्नि, आग ।

सरवभूतहृदय-सं. पु. [सं. सर्वभूतहृदय] चौसठ भैरवों में से एक ।

सरवमंगळा-सं. स्त्री. [सं. सर्वमंगला] १ चौसठ योगनियों में से एक योगिनी ।

२ पार्वती ।

३ देखो 'सरवमंगळा' ।

वि.—सब का कल्याण करने वाली ।

सरवमुख-सं. पु. [सं. सर्वतोमुखम्] पानी, जल । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सरवमुख ।

सरवर-सं. पु. [सं. शर्वरं] १ अंधकार, अंधियारा ।

[सं. शर्वरः] २ कामदेव, मनोज ।

३ देखो 'सरोवर' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ टणकौ सिव मंदिर तठै, निरमळ नीर निराट । भादळपुर **सरवर** भलौ, घणां मनोहर घाट ।—धनदांन लाळस

उ०—२ आवड़ रूप पधारचा अंबा, बणि मांमड़ रा बाई । **सरवर** सोख रोकियौ सूरज, भाल कियौ निजभाई ।—मे. म.

सरवरत—देखो 'सरवरित' (रू. भे.)

सरवरस—देखो 'सरवरस' (रू. भे.)

सरवरा—देखो 'सरबरा' (रू. भे.)

सरवस—देखो 'सरवस्व' (रू. भे.)

सरवरि—१ देखो 'सरवरी' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—वधिया तनि **सरवरि** वेस वधंती, जोवण तणौ तणौ जळ जोर । कांमणि करग सु बांण कांम रा, दोर सु वरुण तणा किरि दोर ।—वेलि.

२ देखो 'सरोवर' (रू. भे.)

उ०—वनि नयरि घराघरि तरि तरि **सरवरि** पुरुख नारि नासिका पथि ।—वेलि.

सरवरित—देखो 'सरबरित' (रू. भे.)

सरवरियौ—देखो 'सरोवर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—डीगी रै **सरवरिया** थारी पाळ । पाळ चढूं नै पाछी उतरुं ।
—लो. गी.

सरवरी-सं. स्त्री. [सं. शर्वरी] १ रात्रि, निशा ।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि **सरवरी** । स्रिय जीत पति गुण परखि चखि सुख, सकस पखि जिम सुंदरी ।
—रा. रू.

२ दोष नामक वसु की पत्नी ।

३ वृहस्पति के साठ संवत्सरों में से चौतीसवां संवत्सर ।

४ हल्दी ।

५ स्त्री, औरत ।

रू. भे.—सरबरी, सरवरि, सरव्वरी, सव्वरिय, सव्वरी ।

सरवरीकर-सं. पु. [सं. शर्वरीकर] विष्णु ।

सरवरीदीप, सरवरीदीपक-सं. पु. [सं. शर्वरीदीपक] चन्द्रमा, चाँद ।

सरवरीपत, सरवरीपति, सरवरीपती-सं. पु. [सं. शर्वरीपति] १ शिव, महादेव ।

२ चन्द्रमा, चाँद ।

सरवरीस-सं. पु. [सं. शर्वरीश] चन्द्रमा, चाँद ।

सरवरूप-वि. [सं. सर्वरूप] सर्वस्वरूप ।

सरवलोकेस-सं. पु. [सं. सर्वलोकेश] १ ब्रह्मा ।

२ शिव ।

३ विष्णु ।

४ कृष्ण ।

सरवलोह-सं. पु [सं. सर्वलोह] तांबा, ताम्र ।

सरववरति-सं. स्त्री.—हिंसा आदि का सम्पूर्ण त्याग । (जैः

सरववलभा, सरववल्लभा-सं. स्त्री. [सं. सर्ववल्लभा] १ वैश्‍... .

२ कुलटानारी ।

सरवविद-सं. पु. [सं. सर्व+विद्] १ शिव, महादेव ।

२ बुद्धदेव ।

वि.—सर्वज्ञ, सब जानने वाला ।

सरवव्यापक-वि. [सं. सर्वव्यापक] सर्वव्यापी, परब्रह्म ।

सरवव्यापी-सं. पु. [सं. सर्वव्यापिन्] १ ईश्वर, परमेश्वर ।

२ शिव, महादेव, शंकर ।

३ विष्णु ।

वि.—जो हरेक में एवं हर जगह व्याप्त हो ।

रू. भे.—सब्बवियापी ।

सरवसंहार-सं. पु. यौ. [सं. सर्व+संहार] काल, मृत्यु ।

सरवस—देखो 'सरवस्व' (रू. भे.)

उ०—१ दै **सरवस** आसान न दिल मैं ।—चण्डीदांन सांदू

उ०—२ ऊजेणी नउ जीजी राजा लेई **सरवस** राज । इण पिर बाप तणां हूँ सारिसु, मनवंछित सवि काज ।—हीराणंद सूरि

२ देखो 'सरवसहा' (रू. भे.) (नां. मा.)

सरवसक्तिमांन-सं. पु. [सं. सर्वशक्तिमान] १ ईश्वर।

वि.—२ जिसमें सब कुछ करने की सामर्थ्य हो।

सरवसह, सरवसहा-सं. स्त्री. [सं. सर्वसह, सर्वसंहा] भूमि, धरा। (डिं. नां. मा.)

रू. भे.—सरबसहा।

सरवसाक्षी, सरवसाखी-सं. पु. [सं. सर्वसाक्षिन्] १ ईश्वर, परमात्मा।

२ अग्नि, आग।

३ वायु, पवन, हवा।

सरवसाधन-सं. पु. [सं. सर्वसाधन] १ सोना, स्वर्ण।

२ शिव, महादेव।

३ धन-दौलत।

सरवसारंग-सं. पु. [सं. सर्वसारंग] धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग का नाम।

सरवसिद्धा-सं. स्त्री. [सं. सर्वसिद्धा] ये तीन तिथियां—चतुर्थी, नवमी, और चतुर्दशी। मतांतर से ये तीन तिथियां भी मानी जाती है—तृतीया, नवमी और त्रयोदशी।

सरवसिद्धि-सं. स्त्री. [स. सर्वसिद्धि] सब इच्छाओं एवं कार्यों के पूरा होने की अवस्था या भाव।

सरवसेन-सं. पु. [सं. सर्वसेन] ब्रह्मदत्त राजा का पुत्र एवं भरत-पत्नी सुनंदा का पिता एक काशीनरेश।

सरवसौग्य-सं. पु. [सं. सर्वसौज्ञ] ग्यारह रुद्रों में से एक।

सरवस्री-सं. पु. [सं. सर्वश्री] एक आदरसूचक विशेषण। जब अनेक व्यक्तियों का नामोल्लेख किया जाए तब सब के आगे श्री न लगा कर पहले व्यक्ति के आगे यह लगा दिया जाता है।

सरवस्रेस्ठ-वि [सं. सर्वश्रेष्ठ] सबसे उत्तम।

सरवस्व-सं. पु. [सं. सर्वस्व] १ सब कुछ।

२ किसी की दृष्टि में वह सारी सम्पत्ति जिसका वह स्वामी हो। ज्यूं—लड़के री पढाई में उण सर्वस्व गँवा दियौ।

३ अमूल्य तथा महत्वपूर्ण पदार्थ जैसे—औही लड़कौ बुढ़िया रौ सर्वस्व हौ।

रू. भे.—सरबस, सरबस्व, सरवस।

सरवस्वी-सं. पु. [सं. सर्वस्वी] (स्त्री. सर्विस्वनी) गोप माता-पिता की संतान।

सरवहर-वि. [सं. सर्वहर] सर्वस्व हर लेने वाला।

सं. पु.—१ शिव, महादेव।

२ अग्नि, आग।

३ काल, मृत्यु।

४ धर्मराज, यमराज

सरवहार-सं. पु.—एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—हस्तकलिका पादसंकलिका उत्तरिका पादक ग्रैवेयक **सरवहार** मध्यनायक क्रष्णनायक नीलनायक........ ।—व. स.

सरवहिया—देखो 'सरवेइया' (रू. भे.)

सरवहियौ—देखो 'सरवेइयौ' (रू. भे.)

सरवांग-सं. पु. [सं. सर्वांग] १ सम्पूर्ण शरीर, सब अवयव।

२ शिव, महादेव।

सरवांगासन-सं. पु. [सं. सर्वाङ्गासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें सर्वप्रथम शवासन की तरह सोना चाहिए, फिर दोनों हाथों की कोहनियों को भूमि पर टिका कर हाथों के पंजों के आधार से पीठ को ऊपर करना और दोनों पैरों को आकाश की तरफ सीधा ऊँचा करके स्कंध और गरदन पर बोझ डाला जाता है।

हलासन नामक आसन इसका एक अवांतर भेद है।

सरवांगीण-वि. [सं सर्वांगीण] १ सम्पूर्ण, पूरा।

२ जो सभी अंगों से युक्त हो।

३ सभी अंगों से सम्बन्ध रखने या उनमें व्याप्त रहने वाला।

सरवांणी-सं. पु. [सं. शरः+वाणि] १ तीर का सिरा।

२ धनुर्धर, तीरंदाज।

३ तीर बनाने वाला।

४ पैदल सिपाही।

सं. स्त्री. [सं. शर्वाणी] ५ पार्वती, उमा। (अ. मा; ह. नां मा.)

६ दुर्गा, देवी।

रू. भे.—सरबांणी।

सरवाक-सं. पु. [सं. शरावक] १ प्याला।

२ दीपक।

सरवाक्ष-सं. पु. [स शर्वाक्ष] १ रुद्राक्ष। २ शिव।

सरवातीत-वि. [सं. सर्व+अतीत] सबसे परे, बाहर, दूर।

उ०—कहां ब्रह्म कहां ईस है, कहां जीव संसार। **सरवातीत** निरवांण में, निरमाया सुखसार।—स्रीसुखरांमजी महाराज

सरवात्मा-सं. पु. [सं. सर्वात्मा] १ शिव का एक नाम।

२ सब की आत्मा।

३ ईश्वर, परमात्मा।

सरवाधिक-वि. [सं. सर्वाधिक] सबसे अधिक।

सरवाधिकार-सं. पु. [सं. सर्वाधिकार] १ सब कुछ करने का अधिकार।

२ समस्त अधिकार।

सरवाधिकारी-वि. [सं. सर्वाधिकारी] १ जिसे सब कुछ करने का अधिकार हो।

२ सर्वाधिकार रखने वाला।

सरवानुभूति-सं. पु.—भूतकाल के छठे तीर्थंकर का नाम। (जैन)

सरवानुवाद-सं. पु. [सं. सर्वानुवाद] सम्पूर्ण अनुवाद।

उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद अरथानुवाद **सरवानुवाद** पंचावयवि दसावयवि वादीसिउं वाद लिइ।—व. स.

सरवारण-सं. स्त्री. [सं. शरवारण] वह ढाल जिससे तीरों की बौछार रोकी जाती हो।

सरवारतिहरव्रत-सं. पु. [सं. सर्वार्तिहिरव्रत] फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी को किया जाने वाला व्रत। इस दिन शुद्धमन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक करबद्ध सूर्य के सम्मुख खड़ा रहा जाता है व सूर्यास्त होने के बाद भगवान का पूजन निराहार रखा जाता है व दूसरे दिन भोजन किया जाता है।

सरवारथ-सं. पु. [सं. सर्वार्थ] १ एक प्रकार का मुहूर्त। (ज्योतिष)
२ पदार्थ व योग के विषय।

सरवारथसिद्धि-सं. पु. [सं. सर्वार्थसिद्धि] सबसे उपर का लोक, सर्वोच्च देवस्थान। (जैन)
उ०—ग्यांनमाहि केवल ग्यांन, विमांनमांहि **सरवारथसिद्धि** रिद्धि माहि सालिभद्रनी रिद्धि, गुरु ग्रामाहि गंगन, पवित्रमाहि पवन ....।—व. स.
२ गौतम बुद्ध।
३ समस्त अर्थों की सिद्धि।
४ तत्वार्थ सूत्र की टीका का नाम।

सरवारा, सरवारी-सं. स्त्री.—हरड़ै, हरीतकी।
(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

सरवालि-सं. पु.—बाण, तीर।

सरवाळै, सरवालै-क्रि. वि.—अंत में, आखिर में।

सरवावसु-सं. पु. [सं. सर्वावसु] सूर्य की एक किरण का नाम।

सरविद्या-सं. स्त्री.—धनुर्विद्या।

सरवियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ टपका हुआ, चूवा हुआ. २ तेज गति से दौडा हुआ, भागा हुआ. ३ शाप दिया हुआ।
(स्त्री. सरवियोड़ी)

सरविस, सरवीस-सं. स्त्री. [अं.] १ नौकरी, सेवा।
२ मरम्मत।

सरवेत-वि. [सं. सर्वः] १ सब, समस्त।
२ सर्वस्व।

सरवेस, सरवेस्वर-सं. पु. [सं. सर्वेश, सर्वेश्वर] १ ब्रह्मा। (नां. मा.)
२ ईश्वर।
३ शिव, महादेव।
४ विष्णु।
५ जो सबका स्वामी हो।
उ०—सूरज तेज पुंज **सरवेस्वर**, जोति सरुप नेत्र जगदीस्वर। जग रखवाळ जगत चौ जांमी, सुर नर इस्ट स्रस्ट चौ सांमी।—रा. रू.
रू. भे.—सरबेस, सरवेसर, सरबेस्वर।

सरवे-सरवा-वि. [सं. सर्वेसर्वा] जिसे सब कुछ करने का अधिकार हो।

सरवोड़ौ-सं. पु.—आवाज वापस देने वाला।
उ०—पुड़ी पुराणी नाळ, खारियै पाणी खोलै। वजै बेड़ियो बंब, सुणै सरवोड़ौ बोलै।—दसदेव

सरवोपरि-वि. [सं. सर्वोपरि] सर्वोच्च। (उ. र.)

सरवौ-सं. पु. [सं. स्रुवा] १ लकड़ी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी करछी जिसे हवनादि में घी की आहुती देने के लिए प्रयोग किया जाता है।
२ मटकी से पानी लेने के लिए पीतल, तांबे आदि का बना पात्र।
वि. [स्त्री. सरवी] शीघ्र सुनने वाला।

सरव्य-सं. पु. [सं. शरव्यं] १ लक्ष्य, निशाना।
२ तीरंदाज।

सरव्वर—देखो 'सरोवर' (रू. भे.)

सरव्वरी—देखो 'सरवरी' (रू. भे.)
उ०—ढैंचाळां सिर ढल्ल ढळक्कं हूहरी। खेहा मज्झि दुडिंद क चंद **सरव्वरी**।—गु. रू. बं.

सरस-सं. पु. [सं.] १ तालाब, जलाशय।
२ सिरस का वृक्ष विशेष।
[रा.] ३ रीति, रस्म।
४ छप्पय छंद का ३५ वां भेद जिसमें ३६ गुरु ८० लघु कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है।
५ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तीन सगण एवं लघु गुरु सहित ११ वर्ण होते हैं।
६ एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती है एवं सात मात्राओं पर विश्राम होता है। इसे मोहणी भी कहते हैं।
वि.—१ रसपूर्ण, रसीला।
उ०—परढीसि हवि पांचमा, अंग-तणउ अधिकार। **सरस** अनइ सरला वचन सारद आपै सार।—मा. कां. प्र.
२ समान, तुल्य।
उ०—१ सिंघ **सरस** रायसिंघ रै, रहियौ भूझै रांम। आड़ौ सर-वहियौ अछै, कळह तणौ धरि कांम।—हा. झा.
उ०—२ इंद्र हू **सरस** राजस अमास, प्रिय जूथ सात सै मुर पचास।—सू. प्र.
उ०—३ श्रीकम **सरस** लगावण ताळी, एकण ध्यांन रहउ पग एक। रहण इसा जोगेन्द्र रहंता, आछी जुग वउळिया अनेक।
—महादेव पारवती री वेलि
३ जोशपूर्ण, जोशीला।
उ०—१ आया वसिया आपणी, ग्रीखम थई वतीत। गुणचाळौ लागौ बरस, चाळौ **सरस** सजीत।—रा. रू.
उ०—२ **सरस** आप खग, तप **सरसांणै**। 'मुदफर' दळ भाग मुगलांणै। —सू. प्र.
४ प्रीति सहित, प्रेमपूर्ण।
उ०—बोल नवाब **सरस** द्रढ बंधै, सुत पितु हूंत महा छळ संधै।

—रा. रू.

५ पल्लवित, हरा-भरा।

उ०—पतळी केळू कांमड़ी है; सरस सुवांणी डाळियां। छांट छोल लै'रां लपेटां, करड़ पटीली बाछियां।—दसदेव

६ किसी की तुलना में अपेक्षाकृत अच्छा, बढ़कर।

उ०—१ ऊससै कमंध लागै उरसि, राजा चढियौ वीररस। उण वार लोह मुंहगौ हुवौ, सोना ही हूंता सरस।—सू. प्र.

उ०—२ असिवर कै तेज पुंज 'मधकर' के पोतै, प्रांण तें सरस पायौ अवसांण जोतै।—रा. रू.

७ सुंदर, मनोहर।

उ०—पतिव्रता नेह अपार, सभि सोल सरस सिंगार। बहु कळा लछण बतीस, सभि आभरण खटतीस।—सू. प्र.

८ गीला, सजल।

९ स्वादिष्ट, जायकेदार।

उ०—१ बीडां दीजइ वलि वलि, सुविमल सरस कपूरि। करइं जि आलस तै सवि, केसवि कीजइ दूरि।—जयसेखर सूरि

उ०—२ वडबोरां रा बोर, जूनोड़ा जांमफळ है। छोटकिया छिव-जोर, सरस ज्यूं इमीफळ है।—दसदेव

९ उत्तम, पवित्र।

उ०—सरस पुरांणां बीच सुणी थी, किसन सुदांमा तणी कथ। दतदेतै साख्यात दिखावी, सौ विध नवसहंसा समथ।—बां. दा.

१० ताजा।

११ मधुर, मीठा।

उ०—धोळी सुघड़ बत्तीसी, जांणै पळकता मोती ई खराद उत-रया। सरस सुहांणी बोली, जांणै गळा सूं बोलां रै बदळै फूल निसर निसर नै विकसै।—फुलवाड़ी

१२ भावपूर्ण।

१३ श्रेष्ठ, उत्कृष्ट।

१४ गुणदायक, लाभप्रद।

उ०—धनि श्रोह गुर साचै गुर कूं धनि, जीणि बूंटी सरस वताई रे। वा बूंटी जां संतां साधी, श्रंगि भई सितळाई रे।—वील्होजी

१५ आनन्दपूर्वक, प्रेमसहित।

उ०—हुआ धमळमंगळ हरिख, वधिया नेह नवल्ल। सूर 'रतन' सतिश्रां सरस, मिळिया जाइ महल्ल।—र. वचनिका

१६ आनन्ददायक।

उ०—१ चोथ चिहुँ दिस ऊनम्यौ, मेह रह्यौ झड़ लाय। प्रीतम प्यारी रंग रमै, सेझां सरस बणाय।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ सरवर खेलै कांमणी, वादळ खेलै वीज। प्यारी खेली पीव संग, सरस सांवण री तीज।—कुंवरसी सांखला री वारता

१७ बहुत अधिक, अत्यधिक।

उ०—१ ताव अलाजां तरस, सरस रण चाव सलाजां। बणैं न राजां बहिर, गहिर तोपां घण गाजां।—वं. भा.

उ०—२ लखि वेणी नागणि लजी, धुकि धर मांहि धसंत। सखी अंग सोभा सरस, बिलखी देख बसंत।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ सात्युं सरस सनेह सूं, मोहल बुलाई पीव। कर पकड़ै सेझां लई, कांपण लागौ जीव।—कुंवरसी सांखला री वारता

१८ देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

उ०—रमतां जगदीसर तणौ रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महे। सरसै रुखमणी तणी सहचरी, कहिया थूं मैं तेम कहे।

—वेलि

रू. भे.—सरस्स।

सरसइ, सरसई—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

उ०—पणमिय पासजिणंद पय, अनु सरसइ समरेवी। थूलिभद्द मुणिवइ भणिसु, फागुबंधि गुण केवी।—जिनपद्मसूरि

सरसउ—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.) (उ. र.)

सरसज्या-सं. स्त्री. [सं. शर+शय्या] तीरों की शय्या, सेज।

रू. भे.—सरसया, सरसय्या, सरसेज्या, सरसेजा।

सरसणौ, सरसबौ-क्रि. अ.—१ होना।

२ हराभरा होना।

३ रसपूर्ण होना, रसयुक्त होना।

४ प्रवाहित होना।

५ बरसना।

६ आनन्दित होना, प्रफुल्लित होना।

७ गुणदायक होना, लाभदायक होना।

उ०—पता समझ हिम्मत पखैं, जस कह थकै जीह। इधकै सूं सरसै इधक, दरसै दीहो दीह।—जेतदांन बारहठ

सरसणहार, हारौ (हारी), सरसणियौ—वि०।

सरसिओड़ौ, सरसियोड़ौ, सरस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरसीजणौ, सरसीजबौ—भाव वा०।

सरसवणौ, सरसवबौ—रू० भे०।

सरसत, सरसति, सरसती, सरसत्ति, सरसत्ती—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.) (अ. मा; उ. र.)

उ०—१ आज दांन ऊमणौ, आज सरसत दुचत्ती। आज तजै, अहवात, हार कांकण कीरत्ती।—पहाड़खां आढौ

उ०—२ हिवड़ो सांचै ढाळियौ, सायर उदर गंभीर। केहरि लंकी कांमणी, मन की सरसत नीर।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ कोप करण नूं काळका, सरसत करण सलाह। पूरण अन अंनपूरणा, भाखै लोक भलाह।—बां. दा.

उ०—४ परमेसर प्रणवि प्रणवि सरसति पुणि, सदगुरु प्रणवि त्रण्हे ततसार।—वेलि

उ०—५ सरसति जमना गंग त्रवेणी, अहुवै उलटी वदै त्रिवेणी।

—सू. प्र.

उ०—६ देवी सप्तमी अष्टमी नोम नूजा, देवी चौथ चौदस पूनम पूजा। देवी सरसती लख्खमी महाकाळी, देवी कन्त विस्णु ब्रहमा कमाळी।—देवि.

सरसतीसयन-सं. पु.—आश्विन माह के शुरू में मूल नक्षत्र स्रवण नक्षत्र के पर्यन्त की अवधि, समय।

सरसयण, सरसयन-सं. स्त्री. [सं. शरशयन] भीष्म द्वारा कुरुक्षेत्र में शरशय्या पर लेटने की क्रिया।

सरसया, सरसय्या—देखो 'सरसज्या' (रू. भे.)

सरसर, सरसराट-सं. पु. [अनु.] १ वायु के मंदगति से चलने पर उत्पन्न ध्वनि।

२ सर्प छिपकली आदि जंतुओं के चलने से उत्पन्न ध्वनि।

क्रि. वि.—धीरे-धीरे।

उ०—छिण छिण सोहै छांटड़ल्यां री छोळ, सूरज किरणां सरसर उतरै।—लो. गी.

रू. भे.—सरसराहट।

सरसराणौ, सरसराबौ-क्रि. अ.—१ सर-सर की ध्वनि होना।

२ सनसनाना।

सरसराहट—देखो 'सरसराट' (रू. भे.)

सरसरी-क्रि. वि. [फा. सरासरी] १ जल्दी।

२ साधारण ढग से, मोटे तौर पर।

सं. स्त्री. [सं. सुरसरी] गंगा।

सरसव, सरसवि—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

उ०—१ किहां मुत्ताहल गुंज किहां, किहां सरसव किहां मेर। माधव जोतां मांनिनी, महीयति अेतु फेर।—मा. कां. प्र.

उ०—२ फल मैं पड़ियौ फेर, मेर सरसव जिम मोटौ। स्वाति बिंदु सीप मैं, आई पड़चौ अण चोटौ।—ध. व. ग्रं.

सरसवणौ, सरसवबौ—देखो 'सरसणौ, सरसबौ' (रू. भे.)

उ०—जोरावर अरजुण जिसौ, सत्रां उर उर साल। सुपह प्रथू ज्यौं सरसवै, इंतजांम इकबाल।—सिवबक्स पाल्हावत

सरसवणहार, हारौ (हारी), **सरसवणियौ**—वि०।

सरसविग्रोडौ, सररविग्रोडौ, सरसव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरसवीजणौ, सरसवीजबौ—भाव वा०।

सरसवांन-सं. पु.—समुद्र, सागर। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सरसवियोड़ौ—देखो 'सरसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सरसवियोड़ी)

सरसवेल-सं. पु. [सं. सर्षपतैलम्] सरसों का तैल। (उ. र.)

सरसांणौ—देखो 'सरसावणौ' (रू. भे)

उ०—मनमैं मिळै संग संग डोलै, वचन रचै सरसांणा रे। हिय हरसै परसै पद पंकज, हरि रै हाथ बिकांणा रे।—मी. रा.

सरसा-वि.—१ स्वादिष्ट, रसपूर्ण।

उ०—पनरह सत पकवांन, पाक अड़तीस प्रमांणै। सरसा साग बतीस, जियां संख्या बहु जांणै।—सू. प्र.

२ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—सिवदांन 'अजन' सामंतसीह इळ भए भूप सरसा अवीह।
—रा. रू.

सरसाणौ, सरसाबौ-क्रि. अ.—१ हराभरा होना।

उ०—पवन फिरै छूटै परवाई, ऊठै घटा घटा चढि आई। धर छोळां गिरमेर धपाई, सगळा नाज हुवै सरसाई।—वर्षा विज्ञान

२ शोभित होना।

उ०—१ अस्त्र गुलाब अबीर उडायौ, सस्त्र पिचरका छिब सरसायौ। वीर नाद सोइ चग बजायौ, रंग फाग सम जंग रचायौ।
—ऊ. का.

उ०—२ दुनियां दातारां जूझारां देवै, लिपळा लोकां नै लेखै कुण लेवै। दत्तब करतब मैं दोढा दरसाता, सारी प्रथ्वी सिर सोढा सरसाता।—ऊ. का.

३ मालूम होना, प्रतीत होना।

उ०—सांमूं सियाळौ साकी सरसायौ, बाकी बंचियां नी डाकी दरसायौ।—ऊ. का.

४ खुश होना, प्रफुल्लित होना।

उ०—१ तहक नीसांण गिरवांण हरखांण तन, चितां सरसांण रंभगांण चाळै। निडर रिखरांण गणपांण बीणा नचै. भांण रथतांण घमसांण भाळै।—र. रू.

उ०—२ निज नारचां अनुकूल नर, सदा रहै सरसाय। इण पणघट पर आवियां, ज्यांरौ पणघट जाय।—सिवबक्स पाल्हावत

५ बढ़ना, फैलना।

उ०—सूजावेग उतारौ पायौ, इळ अजमेर सफीखां आयौ। सैंताळै चाळौ सरसांणौ, सत्रां अमावौ हियै सिवांणौ —रा. रू.

६ होना।

उ०—१ सुर झालर घंटा सरसाया, महजीतां सुरबांग मिटाया। सिव हरि सकत सेव सरसाई। मीर पीर त्यां पूज मिटाई।
—रा. रू.

उ०—३ दारा दुरद्दिन दुति दुगणित दरमाई, स्रावण आवण मैं गावण सरसाई। निकसी तीजणियां बणियां घड़न्हाळी, उपमां घड़ टाळी बरछी छड़वाळी।—ऊ का.

क्रि. स.—७ फैलाना, बढ़ाना।

उ०—१ अंत असाड दयानंद आयौ, छोणी ग्यांन घुमड घण छायौ। सावण हरि कर सुख सरसायौ, भादौ अम्भ्रत झड़ बरसायौ।—ऊ का.

उ०—२ अंग लाजंती उमंगती, चलती चसम चुराय। नेह भरी यूं निरखती, रही रंग सरसाय।—अग्यात

८ दिखाना, प्रकट करना, बतलाना।

उ०—पख रवि तेज अरक सम प्रांमै, नर नखत्र अनमी त्यां नांमै।

सनि गुण श्राव तणी सरसाई, थिति वस रहै लहै सरसाई ।
—रा. रू.

६ बजाना, ध्वनि करना ।

उ०—सुर झालर घटा सरसाया, महजीतां सुरबांग मिटाया । सिव हरि सकत सेव सरसाई, मीर पीर त्यां पुज मिटाई ।—रा. रू.

सरसाणहार, हारौ (हारी), **सरसाणियौ**—वि० ।

सरसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरसाईजणौ, सरसाईजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

सरसावणौ, सरसावबौ—रू० भे० ।

सरसायन-सं. पु.—भक्तिरस ।

सरसायोड़ौ-भू. का. कृ.—**१** हरा-भरा हुवा हुआ. २ शोभित हुवा हुआ. ३ मालुम हुवा हुआ, प्रतीत हुवा हुआ. ४. बढा हुआ, फैला हुआ. ५ हुवा हुआ. ६ खुश हुवा हुआ, प्रफुल्लित हुवा हुआ. ७ फैलाया हुआ, बढ़ाया हुआ. ८ दिखाया हुआ. ६ बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ ।

(स्त्री. सरसायोड़ी)

सरसाळ-वि.—**१** महत्वपूर्ण, महत्व की ।

उ०—तात हूंत इंद्रकी परतिग्या, सांभळ बात कहूं सरसाळ । तन मन धार भाल दसरथ तरण, मैं गळ राळ दई वरमाळ ।—र. रू.

२ फायदे की, फायदेमन्द, लाभप्रद ।

३ रसपूर्ण, रसयुक्त ।

४ आनन्ददायक ।

सरसावणौ-वि. (स्त्री. सरसावणी) **१** रसिक, रसीला ।

उ०—सरब त्रिया सुहांमणी, सरसावणी सदाह । है रसिका दिलरी हरण, वा क्यूही ग्रोर अदाह ।—र. हमीर

२ प्रकटित ।

३ शोभित ।

४ आनन्दायक।

५ मधुर, मीठा।

६ प्रकट करने वाला ।

उ०—श्राय सांवणी तीज, अब सरसावणी सनेह। ऊठि घटा उतराध सूं, छूटि घटा अणछेह ।—सिवबक्स पाल्हावत

रू. भे.—सरसांणौ ।

सरसावणौ, सरसावबौ—देखो 'सरसाणौ, सरसाबौ' रू. भे.)

उ०—**१** अवसांण आए छत्री पोरस सरसावै, यह लोक जीप परलोक मोख पावै ।—रा. रू.

उ०—२ अभरी थावै आथ सूं, चित सरसावै चाव । जावै दाता द्वार जै, पावै पांच पसाव ।—बां. दा.

उ०—३ महावीर महासूर तेज सरसावै, मंडण ज्यां जोस वंस मंडण कहावै ।—रा. रू.

उ०—४ सिखर गिरां मोरां सबद नाच सरसाविया, पाविया जळ तरां त्रखा पाली । आविया उमड़ घणस्यांम बीती अवध, आविया नहीं घणस्यांम आली ।—बां. दा.

उ०—५ इम लिखे साह दिस ऊंबरां, सुणि भूपति सरसाविया । 'अमरेस' मिळण कागद दिया, उदियापुर दिस आविया ।—सू. प्र.

उ०—६ रामांनुज रिद गुपत रखावै, सिड़ियौ नीर वास सरसावै ।
—ऊ. का.

उ०—७ आपणी आपणी जोस सरसावै, पातसाह की निजर सेर सै आवै ।—रा. रू.

सरसावणहार, हारौ (हारी), **सरसावणियौ**—वि० ।

सरसाविग्रोड़ौ सरसावियोड़ौ, सरसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरसावीजणौ, सरसावीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

सरसावियोड़ौ—देखो 'सरसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सरसावियोड़ी)

सरसि-वि.—मीठा, मधुर, रसपूर्ण ।

उ०—खड़ग रिखभ गंधार, मद्धि पंचहम निखादह । सरसि कंठ सुर-सपत, गीत संगीत अलापह ।—गु. रू. बं.

२ सुसज्जित ।

उ०—जुध सराजांम सझि सझि व्रजागि । लोह मैं सरसि भुज उरसि लाग ।—सू प्र.

सरसिज-वि.—१ ललाई लिए श्वेत रंग का ।

२ जो ताल में होता हो ।

३ काला, श्याम । * (डिं. को.)

४ रक्त, लाल । * (डिं. को.)

सं. पु.—कमल ।

रू. भे.—सरसीय, सिरजिस ।

सरसिजजौनि-सं. पु. यौ. [सं. सरसिजयोनि] कमल से उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा ।

रू. भे.—सरसिजयोनि ।

सरसिजयोनि—देखो 'सरसिजजौनि' (रू. भे.)

सरसियोड़ौ-भू. का. कृ.—**१** हुवा हुआ. २ हरा भरा हुवा हुआ. **३** रसपूर्ण हुवा हुआ. ४ प्रवाहित हुवा हुआ. ५ बरसा हुआ. ६ आनन्दित हुवा हुआ, प्रफुल्लित हुवा हुआ. ७ गुणदायक हुवा हुआ, लाभदायक हुवा हुआ ।

(स्त्री. सरसियोड़ी)

सरसिव—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

उ०—१ जेवडउ अंतर नेऊ अनइं सरसिव, जेवडउ अंतरयांम अनइं परिभव ।—व. स.

उ०—२ किहां सरसिव किहां मेरुगिरि, किहां खर किहां केकांण । किहां जादर, किहां खासरू, किहां मूरख किहां जांण ।
—हीराणंद सूरि

सरसी, सरसीऊ-सं. स्त्री. [सं. सरसी] तालाब, जलाशय ।
(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ बणि कांठळ वेख मतंग वहै, लगी संग पसंग मलंग लहै। तन चंचळ चाल तिकां तरसी, सुख पालक आड तरै सरसी।
—मे. म.

उ०—२ दवि दाभ्रति वनलता, हिमदग्ध जिसी कमलिनी सूकती। जिसी सरसी, यूथ भ्रष्ट जिसी हरणी.........।—व. स.

उ०—३ बेड खेलइं सरसी तलि, सीतलि लाखारांमि। नीरंगुं नेमि न भीजइ खीजइ नारी नांमि।—जयसेखर सूरि

उ०—४ फल पुण तर तर त्रोडए मोडइ ए तरुवर डालि। उज्जवल निरमल सरसीग्र, सरसीय लेयइ बाल।—जयसेखर सूरि

वि.—समान, बराबर।

उ०—१ अरजुन सरसी भेडि न कीजइ, नियकुल मांनि गरवु वहीजइ। इम ग्रापणपुं घणुं वखांण, बोलिन नीयकुल तणुं प्रमाणुं।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ भोजनु आंणइ मारगि वहइ करइ भगति सरसी दुक्ख सहइ। नवउ अवासु करीजइ रमइ, पचह पउव सरसी भमइ।
—सालिभद्र सूरि

सरसीय-वि.—१ समान, सदृश्य।

उ०—अम्हि किम ए जांणिसुं तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए। पडव ए लियइं वणवासु सरसीय छट्ठीय द्रूपदीय।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'सरसिज' (रू. भे.)

उ०—फल पुण तर तर त्रोडए मोडइ ए तरुवर डालि। उज्जवल निरमल सरसीग्र, सरसीय लेयइं बाल।—जयसेखर सूरि

सरसीरह, सरसीरुह-सं. पु. [सं. सरसीरुह] १ कमल।
(ग्र. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

२ कर्नाटकी पद्धति का राग। (संगीत)

सरसुति, सरसुती, सरसुत्ति, सरसुत्ती—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)
(ग्र. मा.)

उ०—१ मंत्र बसीकर मांनजै, बांणी रस बरसंत। सरसुति वीणा प्रगट सुर, कोयल लाज करंत। बां. दा.

उ०—२ मंदाकण-भांण-नंदा बह मंद, बहै सरसुति प्रवाह बलंद।
—मे. म.

सरसूं-सं. स्त्री. [सं. सर्षप] १ एक प्रकार का छोटा गोल बीजों वाला तिलहन। (डिं. को.)

रू. भे.—सरसव, सरसवि, सरसिव, सरसौं, सरस्यूं, सरिसव, सिरसूं, सिरस्यूं।

सरसूवण—देखो 'सूंथण' (नं. २)

उ०—सरसूवण पगां मोजा हथयार सरब बांधां छै। माथै घूघी टोप छै।—सातळ जौघावत री बात

सरसेज्या, सरसैजा—देखो 'सरसज्या' (रू. भे.)

उ०—प्रथी तणा सुणज्यौ रजपुतां, जुध रै रथ धोरी होय जूतौ। ग्रास्रम चौथौ परव ग्रछूतौ, सरसैजा भीसम जिम सूतौ।
—बरजू बाई

सरसेरौ-वि.—अधिक, ज्यादा।

उ०—१ सेर हजारां जोड़ै सेरौ, सिरदारौ ति कोपि सरसेरौ। जुध बंधव सूरजमल जोड़ै, अचळ जिही बळ लाखां ओडै।
—रा. रू.

उ०—२ सुण पतसाह कोप सरसेरौ, अजन मिलण चढियौ ग्रांबेरौ। हूंत नगीनै ग्रजमल हालै, चतुरंगी सेन्या संग चालै।
—रा. रू.

सरसै-वि.—समान, तुल्य, सदृश्य।

उ०—हाकी भड ऊठाडइ ग्रागला ति पाडइ, सरसै जंपउ ढाडइ राउत रूंसाडइ। बेटउ रूडु करंतउ जांणी, ताखणि ग्रावी गंगा-रांणी।—सालिभद्र सूरि

सरसैयौ-सं. पु.—ऊंट।

सरसौं—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

सरसौ-वि. [सं. सदृश्] (स्त्री. सरसी) समान, तुल्य।

सरस्तंब-सं. पु. [सं. शरस्तंब] एक प्राचीन तीर्थस्थान का नाम।

सरस्यूं—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

सरस्वत-वि. [सं. सरस्वत्] १ रसदार, रसीला।

२ सुन्दर, मनोहर।

३ भावपूर्ण।

सं. पु.—१ समुद्र, सागर।

२ झील।

३ नदी, सरिता।

४ वायु, पवन।

सरस्वती-सं. स्त्री. [सं.] १ सत्वगुणों से सम्पन्न, वाणी एवं ज्ञान की अधिष्ठात्री, एक देवी जो ब्रह्मा के मुंह से निकली थी।
(ह. नां. मा.)

उ०—१ उर भरम छेर लैणौ ग्रगम, ग्रसकत उद्यम उक्कती। कर भाव पार गुण सर करण, साचौ नांम सरस्वती।—रा. रू.

उ०—२.........विस्वकरम्मा स्रंगार करावइं, तेंतीस कोडि देव ग्रस्थांनिउ लगइं, गंगा यमुना चमर ढालइं, तुंबर गाइ, नारद नाद करइ, सरस्वती वीणा वाइ, रंभा नाचइ, ब्रहस्पति पुस्तक वांचइ, इंद्र माली, ब्रह्मा पुरोहित.........।—व. स.

उ०—३ सालि किसिउं खांडीइ, चोल किसिउं रंगीइ, गंगा किसिउं पवित्रीइ, मयूर किसिउं चित्रीइ, सरस्वती किसिउं पाढीइ, ग्रम्रत किसिउं कढीइ, सं किसिउं धउलीइ.........।—व. स.

उ०—४ सारदा सरस्वती वरणवू, पणि कमी एक छइ जै सारदा सरस्वती? कमल भू ब्रह्मा तणी बेटी, कमलमुखी, राजहंसवाहिनी, ग्रनेक वेद वेदांक सास्त्र धरती, ग्रायुरवेद धनुरवेद सांमवेद ग्रथरविणवेद विद्या ग्रलंकार छंद जोतिकसास्त्र,.........।—व. स.

पर्याय०—उजळ, कसमीरी, गिरा, गी, गौ, धमळागिरी, निधबांणी,

बच, बचन, बांणी, बाकबांणी, बागेसुरी, बुधदा, बेधाधी, ब्रहमसुता, ब्रह्मांणी, ब्राह्मी, भाखा, भारती, मयूरासणी, रंगी, रूपउदार वरदात, वरदायणी, वच वांणी, वाक, सारदा, सिंहवाहिनी, सुबांणी, सुरमाया, हंसबाहणी, हंसवाहनी, हंसासणी।

वि० वि०—इसे ब्रह्मा की पुत्री एवं पत्नी दोनों ही मानते हैं। मतान्तर से यह स्वायंभुव मनु की माता थी। कहीं-कहीं इसे प्रजापति की पुत्री भी मानते हैं।

इसके हाथ में वीणा व पुस्तक होती है। इसका वाहन हंस है। मतान्तर से इसका वाहन मयूर या बकरा है। बौद्ध इसे सिंहवाहिनी मानते हैं।

अन्य मतानुसार यह विष्णु की पत्नी है। इसमें व लक्ष्मी में सौतों का जगत्प्रसिद्ध बैर है। एक-दूसरी के उपासकों पर इन दोनों की कृपा नहीं होती है।

इसकी उपासना वैदिक धर्मावलम्बी हिन्दुओं के अतिरिक्त जैन, बौद्ध, चीनी आदि भी करते हैं। सत्यलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, राजलक्ष्मी, मोक्षलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, धैर्यलक्ष्मी व सौभाग्यलक्ष्मी ये नौ लक्ष्मियां इसकी सहचरियां है।

इसे शिवसहोदरी भी माना गया है।

२ वाणी, गिरा।

उ०—पाछै सूं वडाह भी उठै ही पूगो जठै आकास सरस्वती कहियौ, अवंती रै अधीस विक्रम विभाकर थारौ दुख निरस्त कीधौ।
—वं. भा.

३ भाषा।

उ०—जिम लवणहीण रसवती, व्याकरणरहित सरस्वति, गंधरहित चंदन, घ्रतरहित भोजन, खांडरहित पकवांन, मांनरहित दांन, छंदरहित कवित, तेजरहित रवि, विवेकरहित मनुस्य, वेदरहित ब्राह्मण... .....।—व. स.

४ भारत में बहने वाली एक प्रसिद्ध व प्राचीन नदी जो बिन्दुसर या ब्रह्मसर से निकल कर पश्चिम के समुद्र मे जाकर गिरती थी। (उ. र.)

उ०—१ जै इम किम यै रांणियां, इम किम आव्यौ न जाय। आडी ए राणियां आडा तौ गंगा जमना सरस्वती।—लो. गी.

उ०—२ मुगतफळ मांणिकूं की कंठी सोभै माळा का विसतार। सो कैसें, मांनू मिळ चली सरस्वती गंगा की धार। और भी भांति भांति कै सासत्र गाए जैसै राजूं का बणाव। जोति कै जहूंर दिनकर का दरसाव।—सू. प्र.

वि. वि.—नदी के रूप में सरस्वती की पहचान विवादास्पद बन गयी है। प्राचीन साहित्य में बिखरे विवरणों से प्रतीत होता है कि यह हिमालय में बिन्दुसर या ब्रह्मसर से निकल कर ब्रह्मावर्त और कुरुक्षेत्र आदि प्रदेशों को सींचती हुई विनशन नामक स्थान पर समुद्र में मिलती थी तथा वैदिककाल की प्रसिद्ध पांच अथवा सात नदियों में एक थी। शतपथ (१/४/१/१०-१७) तथा पुराणों में सरस्वती के स्रोतों को नष्ट होने अथवा अदृष्ट हो जाने के विवरण मिलते हैं, यद्यपि महाभारत काल में इसका उल्लेख वनयात्रा के समय, श्रीकृष्ण के उसके तट पर किये गये यज्ञानुष्ठान दधीची ऋषि के आश्रम का तटवर्ती होना एवं श्रीकृष्ण की १६,००० पत्नियों द्वारा इसमें डूब कर प्राणत्याग करना, आदि का विवरण मिलता है। उस समय की प्रसिद्ध सरस्वती का पर्यवसान पश्चिमी समुद्र में ही होता था।
(शल्य पर्व ३६–३३) जहां सोमनाथ और प्रभास क्षेत्र अवस्थित हैं (शल्य० २५–७७)। यों तो ऐरेकोसिमा प्रान्त की एक नदी 'हैल्मद' अथवा अवेस्ता में वर्णित अफगानिस्तान की 'हरकैती' या हरद्वैती नदी के भी सरस्वती के पर्याय होने के अनुमान विद्वानों ने लगाए हैं तथापि उक्त नदियों के विवरणों से सरस्वती क सामान्य न होने से ये मत मान्य नहीं हो सकते।

इसी प्रकार 'सरस्वती' शब्द को केवल सूर्य-किरणों का वाचक मात्र मान लेना भी अनुपयुक्त ही माना जा सकता है क्योंकि उस नाम वाली नदी के तट पर सम्पन्न, यज्ञयागादि एवं सत्रों का विपुल वर्णन साहित्य में सुरक्षित है।

हाँ, यह भौगोलिक सत्य अवश्य है कि भारत उपमहाद्वीप में अनेक भूवैज्ञानिक रूपान्तरण होते रहे हैं। फलस्वरूप प्राग्-ऐतिहासिक युग में पश्चिमी समुद्र की स्थिति तथा सरस्वती का प्रवाह प्रदेश का अभी सही-सही निर्णय किया जाना संभव नहीं हो सका है। फिर भी इतना तो उक्त विवरणों से स्पष्ट हो ही जाता है कि वर्तमान प्रयाग की त्रिवेणी की कल्पना में गंगा और यमुना के साथ सरस्वती की भौतिक विद्यमानता को स्वीकारना असंगत है। सम्भवत: घग्घर नदी भी सरस्वती का अवशिष्ट मार्ग नहीं है। प्राचीन काल का विपुल महिमामण्डित वर्णन सरस्वती के स्वरूप की भावुक उपकल्पना के प्रयासों के कारण ही प्रतीत होता है कि भारत में तथा संभवत: भारतेतर प्रांतों में अनेक सरिताओं अथवा सरोवरों में स्वयं सरस्वती के अथवा उसके सम्बन्धों के होने की मान्यता की गई है। फलतः अनेक स्थल भ्रामक रूप से 'सारस्वत' हो गए और मूल सरस्वती इतिहास और भूगोल की एक उलझी और जटिल प्रहेलिका बन कर रह गयी।

५ एक नदी जो गुजरात में अंबाभवानी के समीप कोटेश्वर के पर्वत से निकल कर कच्छ की खाड़ी में गिरती है।

६ एक नदी जो सौराष्ट्र प्रदेश में गिरनार के जंगलों से निकल कर सोमनाथ या प्रभास क्षेत्र में गिरती है।

७ लूनी नदी के पूर्वोत्तर नदी का नाम जो नाग पहाड़ से निकल कर गोविन्दगढ़ के पास सागरमति से संगम करके मारवाड़ में लूनी के नाम से बहती हुई कच्छ की खाड़ी में गिरती है।

८ साबरमती नदी का नाम।

उ०—कथ इम सासत्र कहै, उलट लहिजै पूरब दत। आज दोय अधिकार, मध्धि सरस्वति द्वारामति।—सू. प्र.

९ गौ, गाय।

१० स्वामी शंकर के शिष्य पृथ्वीधर के अनुयायी दशमानी संन्यासियों की एक शाखा।

११ उक्त शाखा का कोई व्यक्ति।

१२ चौसठ योगनियों के अन्तर्गत चालीसवीं योगिनी।

१३ हठयोग में सुषुम्ना नाड़ी।

१४ सोमलता।

१५ दुर्गादेवी का नाम।

१६ नदी, सरिता।

१७ उत्तमा स्त्री।

१८ बोद्धों की एक देवी।

१९ पुरुवंशीय अंतीनार राजा की पत्नी का नाम।

२० दधीचि ऋषि की पत्नी व सारस्वत की माता का नाम।

२१ रन्ति राजा की पत्नी।

२२ आदित्य की पत्नी व दनु एव दिति की माता का नाम।

२३ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

२४ एक प्रकार की संकर रागिनी विशेष। (संगीत)

रू. भे.—सरस, सरसइ, सरसत, सरसति, सरसती, सरसत्त, सरसत्ति, सरसत्ती, सरसुत, सरसुति, सरसुती, सरसुत्त, सरसुत्ति, सरसुत्ती, सरस्वत्या, सुरसत, सुरसति, सुरसती, सुरसत्त, सुरसत्ति, सुरसत्ती।

सरस्वतीकंठाभरण—सं. पु. [सं.] १ ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

२ वस्तुपाल का एक विरुद।

३ एक प्रसिद्ध प्राचीन पाठशाला जो धारनरेश भोज द्वारा स्थापित की हुई थी।

सरस्वतीपांचम—देखो 'बसंतपंचमी'।

सरस्वतीपूजा—सं. स्त्री. [सं.] १ प्रायः बसंतपंचमी के दिन मनाया जाने वाला उत्सव। कुछ लोग इसे आश्विन मास में मनाते हैं।

२ सरस्वती-पूजन का दिन, बसंतपंचमी।

३ सरस्वती-पूजन।

सरस्वतीसंगम—सं. पु. [सं.] एक पुण्य तीर्थ-स्थान।

वि. वि.—यहाँ ब्रह्मा आदि देवता, महर्षि व पुण्यात्मा-भक्त भगवान केशव की पूजा करते हैं। चैत्र शुक्ला चतुर्दशी को यहाँ के लिए की जाने वाली यात्रा विशेष महत्व की मानी जाती है।

सरस्वतीसयनसपतमी, सरस्वतीसयनसप्तमी—सं. स्त्री. यौ. [सं. सरस्वती-शयनसप्तमी] आश्विन शुक्ला ७ से ९ तक का समय जिसमें सरस्वती का शयनव्रत करते हैं।

वि. वि.—आश्विन शुक्ला सप्तमी को पुस्तक आदि का पूजन कर सरस्वती को शयन कराते हैं तथा इसी दिन से पठन-पाठन बंद रखते है तथा फिर दशमी को पूजन करते हैं।

सरस्वतीसागरसंगम—सं. पु यौ. [सं.] एक तीर्थ-स्थल।

वि. वि.—यहाँ सरस्वती सागर संगम हुआ था। यहीं पर रह कर चन्द्रमा ने महादेवजी की आराधना करके अपनी खोई हुई कांति पुनः प्राप्त की थी।

सरस्वत्या—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

सरस्स—देखो 'सरस' (रू. भे.)

उ०—१ सजी तूटतै बूंब ए ही सरस्स, पहाडां सुणी घोर बद्दी परस्सं।—सू. प्र.

उ०—२ 'इंद्रभांण' 'मुकनेस' रौ, ग्रह केवांण तरस्स। आसमांन छिब आखियौ, भाई, 'भांण' सरस्स।—रा. रू.

उ०—३ आयौ जाळंधर 'अजौ', सुख ऊपनौ सरस्स। सुज तिण ऊपर संपनौ, पंचावनौ वरस्स।—रा. रू.

सरहंग—सं. पु. [फा.] १ सेनापति।

२ पैदल सिपाही।

३ चौबदार।

४ कोतवाल।

५ पहलवान, मल्ल।

सरह—सं. स्त्री. [अ. शरह] १ किसी बात या वर्णन को स्पष्ट करने के लिए की जाने वाली टीका, व्याख्या।

२ दर, भाव।

३ ऋतु विशेष में उत्पन्न फलों का रसास्वादन।

मि. सरा (२)।

४ मौसम, समय।

ज्यूं—अबार होळां री सरह है।

५ स्थिर, अचल।

उ०—कौण स विनसै कौण सरह है, कौण अस्थांन मस उलटा जाय।—ह. पु. वां.

६ देखो 'सरभ' (रू. भे.)

७ देखो 'सरेव' (रू. भे.)

८ देखो 'सरहद' (रू. भे.)

उ०—उगवण नुं खेत कंवळा उनवड़ी री सरह हळवा ५० धरती आछी, मोठ-बाजरी रा खेत छै।—नैणसी

९ देखो 'सुरभि' (रू भे.)

उ०—मूक्यां नव नव परि सालणां, मूंक्यां सरहां घी अति घणां। मूंकी मांडी मुरकी सेव, मूंकी खीर खांड घ्रत हेव।

—हीराणंद सूरि

रू. भे.—सरै।

सरहद—सं. स्त्री. [अ.] १ किसी देश, राज्य आदि की सीमा।

उ०—हूं सोबौ साधूं नै सरहद बांधू।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ उक्त सीमा के समीपस्थ प्रदेश ।

रू. भे.—सरद, सरद्ध, सरह ।

सरहदी—वि. [अ.] १ सीमा का, सीमा सम्बन्धी ।

२ सीमा पर रहने वाला, सीमा रक्षक ।

रू. भे.—सलद्धी ।

सरहर, सरहरउ—देखो 'सिरहर' (रू. भे.)

उ०—गति गंगा मति सरसती, सीता सीळ सुभाइ । महिलां **सरहर** मारूई, अवर न दूजी काइ ।—ढो. मा.

सरहरति, सरहरै—वि. स्त्री.—लगातार समान व सीधी बहने वाली ।

उ०—१ बाखड़ी गाय नौ गिरत, **सरहरति** धार, संतोखियै जीमण हार ।—व. स.

उ०—२ **सरहरी** धार, प्रीणइ जिमणहार, सौभाग्य अजेय नासा-पटु पेउ ।—व. स.

सरहौ—सं. पु.—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १४ लघु और अन्त में एक गुरु कुल १५ वर्ण होते हैं ।

सरांई—सं. स्त्री.—विवाह में काम आने वाला मिट्टी का पात्र जो 'ढीबसियै' से बड़ा होता है ।

सरांणौ—देखो 'सिरहांणौ' (रू. भे.)

सरांपती—सं पु. [सं. सर+पति] १ समुद्र, सागर । (डिं. को.)

२ तालाब ।

सरांराज—सं. पु.—महासागर ।

उ०—**सरांराज** माथै ररा अंक सारै, तरां पत्र जेही गिरां जुत्थ तारै ।—सू. प्र.

सरा—सं. स्त्री.—१ प्रशंसा, आनन्द ।

२ किसी विशेष फल-फूल या फसलों का मौसम अथवा इस मौसम में उत्पन्न फल-फूलों आदि का रसास्वादन ।

३ भू-भाग ।

ज्यूं—काले एवड़ उतरादी सरा में जावैला ।

४ किला, दुर्ग ।

५ महल, प्रासाद ।

६ सराय ।

सराइ, सराई—सं. स्त्री.—१ बलोच कौम के अन्तर्गत एक मुसलमान जाति जिसके व्यक्ति प्राय: मारवाड़ में प्राचीन काल में लूट-मार किया करते थे ।

२ देखो 'सराय' (रू. भे.)

उ०—एक चलै एक आवही संसार **सराइ** ।—केसौदास गाडण

सराग, सरागी—वि.—१ राग सहित ।

२ मधुर आवाज ।

उ०—अत परमळ पसर पसरिया आंबा; सुक पिक बोलै सुखद **सराग** । रतिपति तांणै धनुस जठै रुच; बरसांणै देखण ज्यूं बाग ।—बां. दा.

३ रसपूर्ण, प्रेमसहित, सप्रेम ।

उ०—कहइ **सराग** कथा कदै नहीं, स्त्री सुं एकांत रे । बीजी बाड़ ए एम बोली, मांनइ लोक महांत रे ।—स. कु.

४ स्नेह करने वाला, प्रेमी ।

उ०—थयौ परम **सरागी** मिलिवा मनि जागी, ऊठाड़ी नै आपणै मंदिर लियौ ।—वि. कु.

सराड़, सराड़ौ—सं. पु—१ तेज गति से भागने की क्रिया या भाव ।

उ०—दत्त **सराड़ा** दोय, कीरत रा किनां 'कमे' । हमैं न दूसर होय माग न झेलै 'मूळियौ' ।—अग्यात

२ तेज दौड़ ।

३ घोडे के तेज भागने की क्रिया ।

४ तेज गति से दौड़ने पर उत्पन्न ध्वनि विशेष ।

रू. भे.—सिराड़ौ ।

सराजांम—सं. पु. [फा. सरंजाम] १ व्यवस्था, बंदोबस्त ।

उ०—ताहरां रावजी कह्यौ—दूदा जा मत, हूं **सराजांम** करि देस्यूं । यूं आगै मेघौ सींधल छै ।—दूदै जोधावत री वात

२ तैयारी ।

उ०—१ पह निज हुकम प्रमांण, दीह नवमै विरदाळा । **सराजांम** करि समर, सकौ भड़ मिळै सचाळा ।—सू. प्र.

उ०—२ जुध **सराजांम** सझि सझि व्रजागि, लोह मैं सरसि भुज उरसि लागि ।—सू. प्र.

३ सामान, सामग्री ।

उ०—१ जगूं के साज छत्तीस कारखांनूं के हवालगीरूं नै सब जगूंका **सराजांम** हाजर किया ।—सू. प्र.

उ०—२ हमैं तौ ताकीदी करतां रात पड़ जासी । हमार सारौ **सराजांम** तयार कर छोडसां ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ परभात उठि निछरावळ सारी भेळी कर ब्राह्मण नूं भोजन रौ **सराजांम** करायौ । बीजौ कारखांनै सूं देय रुपीयौ एक दिखणा दिराई ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ देस सूबा लिख दियौ, कथन स्रीमुखां कहै इम । **सराजांम** जंग सझै. किला, राखौ दहूँ कायम ।—सू. प्र.

४ वैभव ।

उ०—हिवै मीयां बुढण जालोर राज करै, पांच हजारी रौ मनसोबौ छै । साथ **सराजांम** बीजौ घणौ छै ।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सरंजांम, सरजांम ।

सरांसिया—सं. स्त्री.—एक जाति विशेष ।

सराणौ, सराबौ—क्रि. स.—१ प्रशंसा करना, सराहना करना ।

उ०—१ ज्यूं चीजां जसवंत री, चुण चुण चित सूं चाय । लोभी जस तज लै गयौ, 'सज्जन' रांण **सराय** ।—ऊ. का.

उ०—२ कौसल्या दसरथ नी कांता महिमा घर रांम तणी माता संसार **सराई** सीलवती ।—जयवांणी

उ०—३ किरण भोम सुखूल कळ हूंतां, घटै ग्रावटै लोह घणौ।
सगती सूं पयाळियौ सराणै, तेण राह रिड़मलोत तणौ।
—चांपा राठौड़ रौ गीत

कहा.—सराई खीचड़ी दांता रै चिपै=ग्रधिक तारीफ करने से व्यक्ति बिगड़ जाता है।

२ सम्पादित करना। (पिंड, श्राद्ध ग्रादि)

३ भोजन करना।

४ तीर्थ स्थानों में ग्रस्थि विसर्जन करना।

सराणहार, हारौ (हारी), सराणियौ—वि०।

सरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सराईजणौ, सराईजबौ—कर्म वा०।

सरावणौ, सराववौ; सराहणौ, सराहबौ, सिराणौ, सिराबौ
—रू० भे०।

सराद—देखो 'स्राद्ध' (रू. भे.)

सरादपक्ष, सरादपख—देखो 'स्राद्धपक्ष' (रू. भे.)

सरादपूनम—देखो 'स्राद्धपूनम' (रू. भे.)

सराध—देखो 'स्राद्ध' (रू. भे.)

उ०—वांणियां रौ धरम वधावै ग्रर विरमपुरी सराध खावै।
—दसदोख

सराधपक्ष, सराधपख—देखो 'स्राद्धपक्ष' (रू. भे.)

सरापंज—सं. पु.—तीरों से बनने वाला घेरा, शरकोटा। (वितान)

उ०—पूर सोक पंखाळ ग्ररस छायौ ग्राधंतरि। सरापंज किर पंथ जांण खंडी-वन ऊपरि।—गु. रू. बं.

सराप—सं. पु. [सं. शापः] १ ग्रहित कामनासूचक शब्द, शाप, बददुग्रा।

उ०—तेरै सोभल दौड़ दंड दबायौ, कह्यौ—थारी ग्रा कुण जायगा ग्रावण री। हूं सराप देउं, तेनूं बाळ देईस।—नैणसी

उ०—२ ग्रबही मेली हेकली, करही करइ कळाप। कहियउ लोपां सांमि-कउ, सुंदरी लहां सराप।—ढो. मा.

२ शपथ।

३ गाली।

४ निंदा, भर्त्सना।

५ दोष, कलंक।

उ०—मरणौ लाजम मांमलै, धार ग्रणी चड धाप। पड़णौ सांकळ पींजरै, सिंहा वडौ सराप।—बां. दा.

६ देखो 'सराफ' (रू. भे.)

उ०—परिपूर लच्छि प्रताप, सुजि लुटत हाट सराप।—सू. प्र.

रू. भे.—सरापु, साप, स्राप।

सरापणौ, सरापबौ—क्रि. स.—१ शाप देना, बददुग्रा देना।

२ धिक्कारना, निन्दा या भर्त्सना करना।

सरापणहार, हारौ (हारी), सरापणियौ—वि०।

सरापिग्रोड़ौ, सरापियोड़ौ, सराप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरापीजणौ, सरापीजबौ—भाव वा०।

स्रापणौ, स्रापबौ—रू० भे०।

सरापाबजार—देखो 'सराफाबजार' (रू. भे.)

सरापियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शाप दिया हुग्रा, बददुग्रा दिया हुग्रा। (स्त्री. सरापियोड़ी)

सरापु—देखो 'सराप' (रू. भे.)

उ०—इम भणी ए दियइ सरापु, रु हुजे तुं कुलि सऊं ए, कुपीउ ए काढवी चीरु ग्रट्ठोत्तर सउ साडीय ए।—सालिभद्र सूरि

सराफ—सं. पु. [ग्र. सर्राफ] वह व्यक्ति जो सोना-चांदी या सोना-चाँदी के बने ग्राभूषणों का व्यापार करता हो।

उ०—खोटौ दियै सराफां हाथि, करै ठगाई साहां साथि। पढ़ियां ठगण मत गिंवार, फिटा फिटा हुवै खुवार।—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—सराप, सराफी।

सराफत—सं. स्त्री. [ग्र. शराफत] १ कुलीन होने की ग्रवस्था या भाव, कुलीनता।

२ सुशील होने की ग्रवस्था या भाव।

३ सज्जनोचित्त व्यवहार।

४ शरीफ होने की ग्रवस्था या भाव।

सराफा—सं. पु.—१ सोने-चांदी का व्यापार।

२ वह स्थान जहाँ इस प्रकार का व्यापार होता हो।

सराफाबाजार—सं. पु.—वह स्थान जहाँ पर सोने-चाँदी के व्यापारियों की दुकानें ग्रधिक हो।

रू. भे.—सरापाबजार।

सराफी—वि.—१ सोना-चाँदी या सोना-चाँदी के गहनों का क्रय-विक्रय करने का व्यवसाय।

उ०—काची परख सराफी खोटी, तातें परदुख सहसीवै। रांमनांम निज भेद न जांण्यौ काळ चटा तै गहसीवै।—ह. पु. वां.

२ देखो 'सराफ' (रू. भे.)

उ०—१ बजाज हुवौ सराफी रे, दुख्यहारै पूंजी ग्रापी रे।
—जयवांणी

उ०—२ हीरा परखै जूंहरी, सुरति निज ही होय। सुधि सराफी बाहरचौ, पारिख लहैं न कोय।—वील्होजी

सराब—सं. पु. [ग्र. शराब] १ मदिरा, मद्य।

उ०—दसबीस सहस जुध भांज दीध, प्याले खग पांन सराब पीध।
—वि. सं.

सराबखानौ—सं. पु.—वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो, मदखाना।

सराबखार—देखो 'सराबख्वार' (रू. भे.)

सराबखोरी—सं. स्त्री. [फा. शराबखोरी] शराब पीने का व्यसन।

सराबखोरौ—सं. पु.—वह व्यक्ति जो शराबी हो, शराब पीने का व्यसनी हो।

सराबख्वार—सं. पु. [फा. शराबख्वार] मदिरा पीने वाला, शराबी।

रू. भे.—सराबखार।

सराबी–वि.—शराब पीने वाला, मद्यप।

सराबोर–वि.—१ तरबतर, लथपथ।
२ व्याप्त।
उ०—लुगाई री श्रौ रूप तौ दीवांणजी माथै श्रैड़ौ कांमण करयौ कै वांरौ रूं-रूं नसा में सराबोर व्हैगो।—फुलवाड़ी
रू. भे.—सरबोर।

सराय–सं. स्त्री. [फा.] १ मुसाफिरों के ठहरने का स्थान, धर्मशाला, मुसाफिरखाना।
उ०—राति बसै दिन ऊठि चलै, यौ संसार सराय —ह. पु. वा.
२ ठहरने का स्थान।
रू. भे.—सराइ, सराई।

सरायचौ—देखो 'सिरायचौ' (रू. भे.)
उ०—सो कुंवरसी रौ साथ चढियौ। सौ सर दिन एक मेहलां श्रायौ। श्रर भरमल डेरौ करै जठै रथ सरायचा भीतर राखे।
—कुंवरसी सांखला री वारता

सरायत–सं. पु.—मुखिया, प्रधान।
[श्र.] प्रवेश करने, घुसने की क्रिया।
रू. भे.—सिरायत।

सरायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ प्रशंसा किया हुश्रा, सराहना किया हुश्रा. २ सम्पादित किया हुश्रा (पिंड, श्राद्ध श्रादि). ३ भोजन किया हुश्रा. ४ तीर्थ स्थानों में श्रस्थि विसर्जन किया हुश्रा।
(स्त्री. सरायोड़ी)

सरारत–सं. स्त्री. [श्र. शरारत] १ दुष्टता, पाजीपन।
२ बदमाशी।

सरारती–वि.—शरारत करने वाला।

सरारि, सरारी–सं. पु.—१ राम की सेना का एक यूथपति बंदर।
२ टिटहरी नामक पक्षी।

सरारोप–सं. पु.—धनुष, कमान।

सरारौ–वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम। (डिं. को.)
२ बराबर, समान।

सरालउ–वि.—पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण।
उ०—इ कु श्ररजुनु श्रागलऊ, श्रनइ करणु हीयइ हरालउ। गुर-कूवइं विणयह लगइ धणुहवेदु दीधउ सरालउ।—सालिभद्र सूरि

सराव–सं. पु. [सं. शराव] १ मिट्टी का बना एक प्रकार का मद्यपात्र।
२ कटोरा।
३ दीपक।
श्रल्पा; रू. भे.—सरावौ।

सरावगी–सं. पु. [सं. श्रावक] १ जैन धर्म के श्रन्तर्गत एक जाति विशेष।
२ इस जाति का व्यक्ति।

सरावणौ, सरावबौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)
उ०—१ साध सरावै सो सती, जती जोखता जांण। 'रज्जब' सांचे सूरका, बेरी करै बखांण।—रज्जब
उ०—२ साथणियां उणरा भाग नै सरावती थाकती ई नीं। साथै दायजा में चालण सारु ई ताखड़ा तोड़ती ही।—फुलवाड़ी
उ०—३ जद धीरजी कह्यौ—न करावौ तौ उणां नै सरावौ क्यूं।
—भि. द्र.
उ०—४ खोपर ढकणी खिडा, वीर वनड़ौ वन ज्यावै। माटी मंगळकार, निरंतर काज सरावै।—दसदेव
सरावणहार, हारौ (हारी), सरावणियौ—वि०।
सराविश्रोड़ौ, सरावियोड़ौ, सराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सरावीजणौ, सरावीजबौ—कर्म वा०।

सरावती–सं. स्त्री. [सं. शरावती] १ भारतवर्ष की एक प्राचीन नदी का नाम।
२ लव की राजधानी का नाम।

सरावर, सरावरण–सं. पु. [स. शरावर] १ ढाल।
२ कवच। (डिं. को.)

सरावसंपुट–सं. पु. [सं. शराव+संपुट] मिट्टी के दो सकोरों का मुंह मिला कर बनाया हुश्रा एक बर्तन जो रसौषध-फूंकने के काम श्राता है।
रू. भे.—सरावासंपुट।

सरावाप–सं. स्त्री. [सं. शर+श्रावाप=थांवला] धनुष, कमान।

सरावौ—देखो 'सराव' (श्रल्पा; रू. भे.)

सरास, सरासण, सरासन–सं. पु. [सं. शरासन] १ धनुष, कमान।
(श्र. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)
उ०—१ तरै बांण बांदै गयौ देखि तासं, सुरांराज भल्लै न हल्लै सरासं।—सू. प्र.
उ०—२ श्रतुळ सरासण भंग लख, बधै श्रत उमंग उर। गहर दिन मुहूरत सतानंद पूछ गुर।—र रू.
२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।
रू. भे.—सारासण, सारासन, सारासुन।

सरासर–श्रव्यय. [फा.] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक, सर्वत्र।
२ पूर्णतया, बिल्कुल।
उ०—श्रदालतां सूं होय श्रागती, पिरजा रोय पुकारी रे। सूंक दुकानां मंडी सरासर, धोळै दिवस श्रंधारी रे।—ऊ. का.
३ साक्षात, प्रत्यक्ष।
रू. भे.—सरासरी।

सरासरी–सं. स्त्री.—१ शीघ्रता, तीव्रता।
२ स्थूलरूप से, श्रनुमानतः।
३ देखो 'सरासर' (रू. भे.)

सरासुन—देखो 'सरासन' (रू. भे.)

सराह-सं. स्त्री.—१ प्रशंसा, सराहना, तारीफ।

उ०—१ एकलिंग आयौ, 'अजन' मिळै रांण जयसाह। हुई रीत मनुहार री, सुर तिण करै सराह।—रा. रू.

उ०—२ सेन सनाह वींटियौ सफरिम, सयल संपेखै करै सराह। 'भांगा' जिसो गज फोज भयंकर, नगपाळदै जिसौ नरनाह।

—चत्रभुज चांपावत रौ गीत

२ कीर्ति, यश।

२ सराय, धर्मशाला।

रू. भे.—साराह, सिराह।

सराहणौ, सराहबौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ समोभ्रम 'नाथ' लड़ै समराथ, हुवै जुध भांण सराहत हाथ।—सू प्र.

उ०—२ लगी गांव मैं लाय, तकै तोई डूंम तिवारी। साध सराहै सती, निरथक व्है विधवा नारी।—ऊ. का.

उ०—३ कोटै सोहै कांगरा, भींतै सोहै चीत। रावळ देवळ टाल्य कै, कांय सराही सीत।—मेहोजी गोदारो थापन

सराहणहार, हारौ (हारी), सराहणियौ – वि०।

सराहिग्रोडौ, सराहियोड़ौ, सराह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सराहीजणौ, सराहीजबौ—कर्म वा०।

सराहियोड़ौ—देखो 'सरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सराहियोडी)

सरि-सं. पु.—१ आर्यागीति या खंधाण (स्कंधक) नामक गाहा का भेद विशेष। (पिं. प्र.)

२ ललाट पर सिंदूर, कुंकुमादि से की जाने वाली सीधी खड़ी रेखा, तिलक।

उ०—नलवटि करइ सरि सींदूर, ऊगटि केसर नइ कपूर। करणी वेलि अंबोडा भरइ, भमर गूंजारव सरवर करइ।

। प्राचीन-फागु संग्रह

सं. स्त्री, [सं. सरि:] २ नदी, सरिता।

उ०—१ सरि-धारां बहुणा सको, नहचै नरकां जाय। चढ धारां चंद्रहास री, सूरा सरग सिधाय।—रैवतसिंह भाटी

उ०—२ त्रिगवी सरु रहावियउ, सरि गंगा आंणी। कउतिगु दाखीउ कउरवांह, पीउ पायु पांणी।—सालिभद्र सूरि

वि.—१ समान, तुल्य।

उ०—१ ईखै पित मात एरिसा अवयव, विमळ विचार करै वीवाह। सुन्दर सूर सीळ कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूझै नाह।—वेलि

उ०—२ मावीत्र अजाद मेटि बोलै मुखि, सुवरन को सिसुपाळ सरि। अति अंबु कोपि कुंवर ऊफणियौ, वरसाळू वाहळा वरि।

—वेलि

२ देखो 'सरीर' (रू. भे.)

उ०—मुरधर थया वधांमणा, गौ सरि खार विकार। खटरस भोजन बांमणां, घर घर मंगळाचार।—रा. रू.

३ देखो 'सर' (रू. भे.)

उ०—१ खुंपु भराविउ जाइ कुसमि कसतूरी सारी, सीमंतइ सिंदूररेह मोती सरि सारि।—राजसेखर सूरि

उ०—२ तउ कुमर निच्छयं जणणि जांणेवि, ढणहण नयणि नीर झरंती। करिन तं वच्छ जं तुज्झ मण भावए, अज्छए गदगद सरि भणंती।—एं. जै. का. सं.

उ०—३ राति सखि इणि ताल मइं, काइज कुरळी पंखि। उवै सरि हूं घटि आपणइ, बिहूं न मेळी अंखि।—ढो. मा.

उ०—४ हरिणाखी कठ अंतरिख हूंती, बिंब रूप प्रगटी बहिरि। कळ मोतियां सु सरि हूरि कीरति, कंठ सरी सरसती किरि।

—वेलि

उ०—५ नरइद 'अभौ' नवकोट नाथ, सरि करण सतरि धरवर समाथ। अहमंद नयर खाटण अनूप, रस वीर प्रगट घट विकट रूप।—रा. रू.

रू. भे.—सरी, सरीस।

सरिका—सं. स्त्री. [सं.] १ मुक्ता, मोती।

२ मोतियों की माला।

३ रत्न।

४ ताल-तलैया।

सरिखउ, सरिखुं, सरिखौ—देखो 'सारीसौ' (रू. भे.)

उ०—१ निंदक सरिखउ पापीयउ, मुंड उकोइ न दीठ। वलि चंडाल समउ कह्यउ नंदक मुख अदीठ।—स. कु.

उ०—२ सरिखां सूं बळभद्र लोह साहियै, वडफरि उछजतै विरुधि। भला भली सति तांइज भंजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि।—वेलि.

सरिग—१ देखो 'सरग' (रू. भे.)

२ देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

सरिण—देखो 'सरण' (रू. भे.)

उ०—आयुत पराक्रम आपरै, सतपुरखां राखि सरिण। मांणी न मल्ल उभै मयण, सुर मुरधर वरत रिण।—राव मालदेव री बात

सरित—देखो 'सरिता' (रू. भे.) (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ नाजुक नवस निराट, उभै दिसि ओपवै। करण दरस तप काज लाज कुळ लोपवै। लखि छबि जो ललचात, चकोरी चंद ज्यौं। रही उमंग लखि रूप क, सरित समंद ज्यौं।—सिवबख्स पाल्हावत

उ०—२ किनां बियौ कैलास, अनड़ इण भांत रा। बारह मास बणाव, बणै बरसात रा। पाहण पाहण पूर, भरै गिर नीझरां। खोह खोह खरळाट, सरित पूगै सरां।—सिवबख्स पाल्हावत

उ०—३ सर सरित निरमळ नीर सुंदर, अमळ अंबर ओपयं। किरि सुबुधि वधि सतसंग कारण, लुबुध होत विलोपयं।

—रा. रू.

सरितपत, सरितपति, सरितपती-सं. पु. [सं. सरित्+पति] सागर, समुद्र।

रू. भे.—सरतापत, सरतापति, सरतापती, सरितांपति, सरितापत, सरितापति, सरितापती, सरित्पत, सरित्पति, सरित्पती।

सरितबरा, सरितवरा—देखो 'सरितिवरा' (रू. भे.)
(ग्र. मा; डि. को.)

सरिता-सं. स्त्री. [सं. सरित्] नदी, धारा।

उ०—१ धुरधर असाढां अंबर घरहरीयौ, धोरा डंबर मैं संबर घरहरियौ। साई सर सरिता ग्राई इकरारा, धोळा जळधर सूं धाई जळ धारा।—ऊ. का.

उ०—२ हे सरिता रा हंसला थें महर करौ, सीता नें बेग बताय ग्रौ उपकार करौ।—गी. रां.

रू. भे.—सरत, सरता, सरति, सरती, सरित, सरिति, सलत, सळत, सलता, सलिता, सलीता।

सरितांपति, सरितापत, सरितापति, सरितापती—देखो 'सरितपति' (रू. भे.) (डि. नां. मा.)

सरिति—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—मरजाद सर सर सरिति ग्रनुमिति, छुटि जात ग्रछेहयं। पड़ि खाळ थळ थळ ताळ पूरति, खह सरूप ग्रखेहयं।—रा. रू.

सरितिवरा-सं. स्त्री. [सं. सरतवरा, सरितावरा] गंगा नदी।
(ह. नां. मा.)

रू. भे.—सरतवरा, सरतिवरा, सरितबरा, सरितवरा।

सरित्पत, सरित्पति, सरित्पती—देखो 'सरितपति' (रू. भे.)

सरित्सुत-सं. पु. [सं] भीष्म, गांगेय।

सरिदिही-सं. स्त्री. [फा.] राजा महाराजाग्रों को दिया जाने वाला नजराना।

सरिद्वरा-सं. स्त्री. [सं.] पवित्र नदी, गंगा।

सरियंद-सं. पु. [सं. सुरेन्द्र] इंद्र, सुरेश।

सरियउ—देखो 'सरियौ' (रू. भे.)

उ०—ग्ररणी नउ सरियउ घसि लाकड़इ ग्रगनि पाड़ी तत्कालौ जी।—स. कु.

सरियत, सरियत्त-सं. पु. [ग्र.] १ ईश्वरीय नियम, धार्मिक कानून।

उ०—१ सो वा रीत सरियत छे तिण रीत री स्थापना प्रभू री ग्राग्या सूं होय।—नी. प्र.

उ०—२ सरियत ग्रक्ल री ग्राछै जै सक्ति भर देव प्रकृति नूं जोर पकड़ावै।—नी. प्र.

२ धर्मशास्त्र। (मुस्लिम)

उ०—एक साइयां कै एह, दिल ग्रवर न धरी देह। सरियत्त निमख सिपाह, सो गिणी नह पतसाह।—सू. प्र.

३ मार्ग, रास्ता।

उ०—जंग भोंकि जंगमां, ग्रसह खग वरंग उडावां। तैं सरियत्त कुळ तणी, करै कुळ विरद कहावां।—सू. प्र.

४ एवज, बदौलत।

उ०—जिल दिलावरखांन नें कल्हकै रोज दक्षन कै दरम्यांन निजांमन मुलकसेती जंग किया। च्यार हजार दुसमन कूं मार समसेरूं की धारसेती जंग किया निमककी सरियत पर दिया।—सू. प्र.

५ वफादारी, स्वामीधर्म।

६ चौड़ा रास्ता, राज-मार्ग।

रू. भे.—सरीग्रत, सरीत, सरीती, सरीयत।

सरियादै-सं. स्त्री.—राम की ग्रनन्य भक्त कुम्हारी।

सरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सिद्ध हुवा हुग्रा, सफल हुवा हुग्रा. २ बना हुग्रा, पूर्ण हुवा हुग्रा. ३ पार पड़ा हुग्रा. ४ शक्ति या सामर्थ्य के ग्रनुसार हुवा हुग्रा. ५ कार्यादि का निर्वाह हुवा हुग्रा, पूरा हुवा हुग्रा. ६ लक्ष्य सिद्ध हुवा हुग्रा. ७ परिपूर्ण हुवा हुग्रा, पूर्ण हुवा हुग्रा. ८ पर्याप्त हुवा हुग्रा, काफी हुवा हुग्रा. ९ सम्भव हुवा हुग्रा. १० ग्रनिवार्य या निश्चित रूप से हुवा हुग्रा. ११ ग्राकार-प्रकार रूप-रंग गुणादि में शिशु संतान का किसी के ग्रनुरूप या ग्रनुसार हुवा हुग्रा. १२ चला हुग्रा, निभा हुग्रा, निभाव हुवा हुग्रा. १३ पूर्ण रूप से हुवा हुग्रा. १४ घूमा हुग्रा, फिरा हुग्रा, विचरित हुवा हुग्रा. १५ व्यतीत हुवा हुग्रा, बीता हुग्रा. १६ पड़ा हुग्रा, विवश हुवा हुग्रा।

(स्त्री. सरियोड़ी)

सरियौ-सं. पु.—१ सरकंडे का पुग्राल जिसे कूट कूट कर मूंज बनाई जाती है एवं ये झोंपड़ी ग्रादि छाजने के काम ग्राते हैं।

२ लोहे की बनी लम्बी छड़।

३ देखो 'सर' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—दर न जुड़ावो भुरज दर, दुय री गळै न दाळ। भिद सरिया तन भातड़ा, भाभी लीज्यौ भाळ।—रेंवतसिंह भाटी

रू. भे.—सरियउ, सिरियौ।

सरिवरि-सं. स्त्री.—१ समानता, बराबरी।

२ पक्ष, विपक्ष।

ज्यूं—फलांणौ ग्रापरो कांम करै कोई री सरिवरि मैं कोनीं।

सरिस, सरिसउ, सरिसि-क्रि. वि.—साथ में, साथ।

उ०—१ वेदोगत धरम विचारि वेदविद, कंपित चित लागा कहण। हेकणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पांणिग्रहण।—वेलि

उ०—२ जुद करि पट्ठांणां सरिसि गढ जाळंधर लीय। 'गजपति' ग्रायौ जोधपुर, मंगळ धमळ हरीय।—गु. रू. बं.

उ०—३ ग्रतरी वात कुण ग्रांगमइ, काउण जम्म सरिसउ जुड़इ।
—ग्र. वचनिका

उ०—४ गुरु ऊठाडइ ग्ररजुनु कुमरौ, करणिहिं सरिसउ माडइ वयरौ।—सालिभद्र

२ देखो 'सारिखौ' (रू. भे.)

उ०—१ कुंडल सरिसउ लाधउ बालौ, रंकु लहइ जिम रयण झमालौ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ प्रळै काळ रणताळ, वडौ इक आव्रत वूहौ । सीसोदां सैफळां सरिस राठौड़ां हूऔ ।—गु. रू. बं.

उ०—३ सारंग बांणी सरिस बोलई नहीं तोलई कोई । करणेनि सोवन झाल झबकइ अवधि रंभा होई ।—रुकमणि मंगळ

सरिसव—देखो 'सरसूं' (रू. भे. (उ. र.)

सरिसु, सरिसौ—देखो 'सारिखौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऊपरि एकाउलि हार, सरिसु मोती तणु हार, झूमणां तणु झमकार ।—व. स.

उ०—२ तेह सरिसु हट नवि मांडीइ, कीजइ मेळ वेढि छांडीइ । एहवूं वचन कहिऊं सुरतांणि, मइ समीयांणउ लीधउ प्रांणि ।

—कां. दे. प्र.

उ०—३ सरसति न सूझै ताई तूं सोझै, वाउवा हुवौ कि वाउळौ । मन सरिसौ धावतौ मूढ मन, पहि किम पूजे पांगुळौ ।—वेलि.

उ०—४ तेहवां मांहि ताहरी, वेस्या सरिसी बात । कपट लिखंता कोडि करि, सायर सूकइ सात ।—मा. कां. प्र.

सरिस्ता-सं. पु. [फा.] किसी कार्यालय का विभाग, महकमा ।

सरिस्तेदार-सं. पु, [फा.] १ शासन के किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी।

२ अदालतों में वह व्यक्ति या कर्मचारी जो देशी भाषा में मिसलें लिखता है ।

सरी-सं. स्त्री.—१ पानी की वह नाली जिससे एक तरफ से क्यारियों में सिंचाई होती है । (कृषि)

२ एक अव्यय जो विशिष्ट प्रसंगों में वाक्य के अन्त में आकर ये अर्थ देते हैं —

अधिक नहीं तो इतना अवश्य ।

ज्यूं—आप जोधपुर पधारौ तौ सरी, आप पधारजो तौ सरी, थोड़ी खाई पर खाई तौ सरी ।

३ कुछ असंभावित बात होने पर कुछ जोर देते हुए आश्चर्य प्रकट करना ।

ज्यूं—तोई थूं बठै गयौ तौ सरी ।

४ देखो 'स्री' (रू. भे.)

५ देखो 'सरि' (रू. भे.)

उ०—१ देवी सरसती जम्मनां सरी सिद्धा, देवी त्रिवेणी त्रिस्थळी ताप रुद्धा ।—देवि.

उ०—२ भणंत स्री विनोदयं, कल्यांण केक मोदयं । खंभायची पटंगयं, वर्ग सरी विहंगयं ।—रा. रू.

उ०—३ सरी नोसरै हार मोती संजोया । पड़े सेणता हीणता सुक्र पोया ।—रा. रू.

उ०—४ देवी सरसती जम्मनां सरी सिद्धा । देवी त्रिवेणी त्रिस्थळी ताप रुद्धा ।—देवि.

५ देखो 'सिरी' (रू. भे.)

उ०—सांम हुइ तणी मांगे सरी एवा जो तोनें अपे । जद कांम हुवोड़ो जांणजे जळ सिद्ध गोरख जपे ।—पा. प्र.

रू. भे.—सरु, सरीस, सिरि ।

सरीअत—देखो 'सरियत' (रू. भे.)

सरीकंठ-सं. पु. [सं. श्रीकंठ] गले का आभूषण, कंठी ।

उ०—परीखै सरीकंठ मैं हीर पूरो, सुभै सुर आकास जांणे सनूरो ।

—रा. रू.

सरीक-सं. पु. [अ. शरीक] १ हिस्सेदार, साझीदार ।

२ साथी, दोस्त, संगी ।

३ सहायक, मददगार ।

वि.—१ शामिल, सम्मिलित ।

उ०—कीधौ विदा थिराट सूं, पुर पुगो मछरीक । कमध खगे चाकर किया, ठाकुर जिता सरीक ।—रा. रू.

२ देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद वीठू जाय कुंवर नूं कही "जो महाराज फुरमावै छै, औ नाळेर पाछौ देवौ, बीजा वीहा सूं जोव छै नौ एक दोय करौ ।" तद कुंवर कह्यौ "वीठू तूं अरज करै जो म्हारै तौ पण छै सरीक री नाळेर आयौ पाछौ न फेरूं ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ सौ रूप गुणाकर निपट अवल पण आरूयां संजम मोती-याबंध । सौ कुंवारी बेटी घर मांहे । तिण सुं सरीक तौ कोई लेवै नहीं अर बीजै नुं देवै नहीं । सौ रांणै नुं खरी फिकर ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—सरीख ।

सरीकत, सरीकता-सं. स्त्री [अ. शरीकत] १ शरीक होने का भाव ।

उ०—माघ वडै हालियौ सुणि मितर, सूधौ गुवण वितावौ सति । विच मांहे न लियौ विसरांमू, गिणियौ नहीं सरीकत गति ।

—सूरजनदास पूनियौ

२ साझा, हिस्सा ।

रू. भे.—सरीखत, सरीगत ।

सरीकी-वि.—१ साथ रहने वाला, साथी ।

उ०—१ तीजौ खलक सूं पण अहंकार आपरा सरीकियां सूं छै ।

—नी. प्र.

उ०—२ प्रथम अहंकार बादसाहां नूं आपरै सरीकियां सूं ।

—नी. प्र.

२ रिश्तेदार, सम्बन्धी ।

सरीकौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

सरीख—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—तै सुतन सीहृ दन खाग तीख, साभाव सुपह जैचंद सरीख ।
—सू. प्र.

२ देखो 'सरीक' (रू. भे.)

उ०—१ तुं रहिजे इण थांनकै, मुझ नैं दे हिव सीख । तदनंतर कुमरी वदै, हुं छूं तुझ सरीख ।—वि. कु.

उ०—२ तै पिण स्रेणिक राय नइ, तइं कीधा स्वांमी आप सरीख ।—स. कु.

सरीखइ, सरीखउ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ करहा देस सुहांमणउ, जे मूं सासरवाड़ि । आंब सरीखउ आक गिण, जाळि करीरां झाड़ि ।—ढो. मा.

उ०—२ भयण सरीखइ माधवइ, चिंति लगाडी चाख । वली विटंबन तूं करइ, वारु भई वैसाख ।—मा. कां. प्र.

सरीखत—देखो 'सरीकत' (रू. भे.)

सरीखु, सरीखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ रांम बिनां किस कांम का, नहि कौड़ी का जीव । सांई सरीखा व्है गया, दादू परसै पीव ।—दादूबांणी

उ०—२ चांदी रा ठांव डोकरी रै धकै करतौ बोल्यौ—जद सगळा मिनख एक सरीखा नीं व्है तौ थें सगळा नें एक सरीखा दूध सूं कीकर सल्टावौ !—फुलवाड़ी

उ०—३ सांई सरीखा सुमरिण कीजे, सांई सरीखा गावै । सांई सरीखी सेवा कीजे, तब सेवक सुख पावै ।—दादूबांणी

उ०—४ सातूं भैंस्यां रै एक सरीखी रूपाळी पाडियां । कुत्ता जांणै सिंघणियां रा इज बिचिया । भिड़तां ई ऊभनाळियां आवै । सगळा अेक इ सांचै ढळियोड़ा । सरीखा डीगा, सरीखा लांबा, सरीखै उणियारां ।—फुलवाड़ी

उ०—५ जद स्वांमीजी बोल्या—थांरै लेखै थांरी मां नै वैस्या सरीखी गिणी कांई ।—भि. द्र.

उ०—६ पग पग लगै सरीखी पायल, हाथ हाथ प्रत कांकण होय । सरज्या नहीं अभनमा 'सलखा', दौ पासा नासा नग दोय ।
—सांइयौ-झूलौ

उ०—७ थिरु मूरती सूर रै नूरथाई, तिका स्वप्न रै मांहि पिंडा बताई । सिरोरुह कोसेय काळा सरीखा, तियौ आंक भ्रू बांकड़ा नेत तीखा ।—मे. म.

(स्त्री. सरीखी)

सरीगत—देखो 'सरीकत' (रू. भे.)

उ०—१ काकियां जनमियां जिकां चाळा किया, टूट रजवट तिका हूंत दाखी । अबरकै रचै रणजीत फोजां अणी, रजकरी सरीगत धणी राखी ।—बां. दा.

उ०—२ करै सरब नजर रसद चालै किलै, धार सिर पर धणी मांण धूनौ । लूणरी सरीगत वहै कुळवट लियां, जूदौ न होवसी कमंध जूनौ ।—महेसदास कूंपावत रौ गीत

सरीगतनांमौ—सं. पु.—वह पत्र जिस पर साझे आदि की शर्तें लिखी जाय, शिर्कतनामा ।

सरीत, सरीतौ—क्रि. वि.—१ नियमानुसार, रीति से ।

उ०—पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जुटै रण सरीत ।
—वि. सं.

२ देखो 'सरीयत' (रू. भे.)

उ०—१ ज्यूं कोई बुराई आपरी स्त्रियां रै नरमी करै सो अक्ल मैं सरीत मैं भूंडी छै । मुरीत मैं पण भली नहीं ।—नी. प्र.

उ०—२ 'हाजरचा' नैं आपा दिखलाया, गलब के साथ बाहर कौ आया । हाजरचा ने जांन झोका, आफताब नैं विमांन रोका । निमक की सरीती पै सिर दिया, हूर के विमांन बैठि आसमांन कौ गया ।—ला. रा.

उ०—३ आवियौ खांन नाहर अडर, साझण दाव सरीत नूं । मगरूर सरा दरबार मझि, जाय मिळै 'अगजीत' नूं ।—सू. प्र.

उ०—४ गजां नेजां तूट तेग ताप सूं अयास गाज, जनेवां सरीत बाज बीती घोर जांम । 'हरा' वाळै राह भांण रामसिंघ ग्रह्यौ हूंतो, सेरसिंघ माथा साटै उग्रांह्यौ संग्रांम ।—करणीदांन कवियौ

सरीपाळ—सं. पु. [सं. सरीसृप+पाल] चंदन । (अ. मा.)

सरीफ—सं. पु. [अ. शरीफ] १ भला आदमी, शिष्ट व्यक्ति ।

२ कुलीन आदमी ।

वि.—पवित्र, उत्तम ।

(यौ. कुरानसरीफ, मिजाजसरीफ)

सरीफौ—सं. पु.—एक वृक्ष विशेष जिसके फल खाने के काम आते हैं । इस वृक्ष की लकड़ी कुछ मटमैलापन लिए सफेद रंग की होती है । तथा छाल पतली व खाकी रंग की होती है ।

सरीयत—देखो 'सरियत' (रू. भे.)

उ०—१ तद आलमगीर केसरीसिंघ जी वगैरै हाडां नूं और सारांई नूं कयौ—हमारा स्यांम धरम अरु लूणरी सरीयत रखते हो तो या वखत है ।—द. दा.

उ०—२ खावंद के हुकम पर जयसेती जंग करै । निमख की सरीयत पर ज्यांन कुरबांन करै ।—सू. प्र.

उ०—३ तमांम न्याय री रीति मैं विसेस फरयादी रा बचन सुणनें री सरीयत छै ।—नी. प्र.

सरीर—सं. पु. [सं. शरीर] १ किसी प्राणी के समस्त अंगों का समूह, देह, काया । (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ ओछै पांणी मछली, किसी जिंद की आस । हरीया सास सरीर मैं, वसै किता दिन वास ।—अनुभववांणी

उ०—२ नमौ सनकादिक स्यांम सरीर, नमौ बय-पंच अखे चत्र-बीर ।—ह. र

पर्याय.—अंग, अंगी, आतमजा, आतमा, करण, कलेवर, काया, गात, घट, डील, तनु, देह, देही, धूधर, पयगुण, पिंजर, पिंड, पींजरौ, पुदगल, पुर, बांध, बप, बिग्रह, बेर, मंड, मूरत, मूरति,

वपु, वरखम, संचर।
२ शव, मुर्दा शरीर।
३ शारीरिक शक्ति।
मुहा.—सरीर छूटणौ=मरना।
रू. भे.—सइर, सदरि, सइरू, सयर, सयरू, सरि।

सरीरक-स. पु. [सं. शरीरक] १ देह, शरीर।
२ छोटा शरीर।
[सं. शरीरकः] ३ जीवात्मा।

सरीरज-सं. पु. [सं. शरीरज] १ कामदेव, मनोज।
२ रोग, बीमारी।
३ पुत्र, बेटा।
सं. स्त्री.—४ विषयवासना, कामुकता।

सरीरभ्रत-स. पु. [सं. शरीरभृत] १ विष्णु भगवान् का नाम।
२ जो शरीर धारण किये हुए हो, जीवात्मा।

सरीररक्षक-वि. [सं. शरीररक्षक] वह जो शरीर की रक्षा करता हो, अंगरक्षक।

सरीरव्रति, -सं. स्त्री. [सं. शरीरवृत्ति] जीवन-यापन करने की वृत्ति, जीविका।

सरीरसास्त्र-सं. पु. यौ. [सं. शरीरशास्त्र] वह शास्त्र जो शरीर के अवयवों, नाड़ियों आदि का विवेचन करता हो।

सरीरसोधन-सं. पु. यौ. [सं. शरीरशोधन] कुपित मल पित्त तथा कफ को हटाकर उर्ध्व व अधोमार्ग से निकालने वाली औषधि।

सरीरसंस्कार-सं. पु. यौ. [सं. शरीरसंस्कार] १ गर्भाधान से लगा कर शरीर की अत्येंष्टि तक के वेद विहित सोलह संस्कार।
२ शरीर को स्वच्छ करने की क्रिया।

सरीरांत-स. पु. यौ. [सं. शरीरांत] १ शरीर का अंत, मृत्यु, देहात।

सरीस—१ देखो 'सरेस' (रू. भे.)
उ०—१ लागा कुसुम सरीस बप, ज्यारै पड़ै खरोट। हद नाजक हिरणछियां, है माभल हमरोट।—बां. दा.
उ०—२ खरबूजा सहजग जायरै, सौ असोक अमर सदै। सैमल सरीस तज ग्रांम सुण, दाख रामफळ सेव दै।—र. ज. प्र.
२ देखो 'सरी' (रू. भे.)
उ०—सरीस मोतिया सधार, कोर भाल केसरी। कला तमंस वीच कीध, चद जाणि चदरी।—सू. प्र.
३ देखो 'सीकंठ' (रू. भे.)
४ देखो 'सारीखो' (रू. भे.)
उ०—१ सझि किया इद्र धानख सरीस, सिंदूर जंगाळा तिलक सीस।—सू. प्र.
उ०—२ तिहा थी माया थावे मानवी रे, सुख दुख पुण्य सरीस।
—ध. व. ग्र.
५ देखो 'सरि' (रू. भे.)
उ०—खूमांणा सोनिगरा कर ऊधरा सरीस। आद पमारां सांम छळ, आया वस छतीस।—रा. रू.

सरीसप-सं. पु. [स. सरीसृप] सर्प, सांप। (ह. नां. मा.)

सरी-सरी—संगीत के सात स्वरो के आलाप का अनुकरण।
उ०—सरी-सरी सपोसयं, सुताळ मालकोसयं। मिठास आस मंजरी, गरीगरी स गुज्जरी।—रा. रू.

सरीसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)
उ०—१ काळी कांठळ सारसो, चपळ दामनी जेम। मेर सरीसो गात मैं, कहौ बखाणुं केम।—गज-उद्धार
उ०—२ रमै पग-छाह मधुकर रिक्ख। तवै पग नाग सरीसा तक्ख।—ह. र.
उ०—३ देवर जी सरीसौ डोघौ पातळौ ऐ म्हांरा सासुजी, नणदल बाईसा रै उणियार वाला जी।—लो. गी.
उ०—४ भीम भाण सारीख, करन सिवदास सरीसा। जोधा छळ जोधांण, बोल दळ वेळ वरीसा।—रा. रू.

सरु-क्रि. वि. [अ. शुरूअ] आरम्भ, शुरू, प्रारम्भ।
उ०—१ बिना मिरच मुसाला रै ई बात सरु करुं, थनै मुसाला घणा ई लगावणा आवै।—फुलवाड़ी
उ०—२ सोवनलाल सांवण री तीज सूं पैली ही सासरै आ बैठ्यौ मालम पड़्यौ जद घर मैं गीत सरु हुआ।—दसदोख
उ०—३ सुणि एम कीध नौबत सरु इम जबाब लिखिया उतर।
—सू. प्र.
उ०—४ हांकरता दौड़ सरु व्हैगी।—अमरचूंनड़ी
सं. पु. [सं. शरु] १ वज्र।
२ तीर, बांण।
३ अस्त्र, शस्त्र।
४ क्रोध, गुस्सा।
५ एक देव गंधर्व का नाम।
सं. स्त्री. [सं. शरुः] ६ तलवार की मूठ।
वि.—१ वास्तविक, यथार्थ, सही।
उ०—महाराज अभै मडोवरै, सकळ लाज परखै सरु। दृढ बात नेम लखि रक्खियौ, खूंद थान 'खेमंगरू'।—रा. रू.
२ देखो 'सरी' (रू. भे.)
उ०—'पदमसिंघजी' मा'राज तौ दातार है कोऊ निरधन जाय हाथ मांडै तिणनूं निहाल करै जौ तूं जातौ सरु।—द. दा.
३ देखो 'सारु' (रू. भे.)
उ०—१ मुदै 'अमर' 'खेमगरु', जिकण सरु सब ज्यास। वात करण सुरताण सूं अरि घरि करण अज्यास।—रा. रू.
उ०—२ इसड़ा पंचवीस किरोड अढंगा, फुझ सरु रीता जीतसा।
—र. रू.
रू. भे.—सिरु, सुरु, सुरू।

सरूठ-वि.—क्रोधपूर्ण, सक्रोध।

उ०—मद पूठ सरूठ नवाब महा, क्रत कोपित कालिय नाग कहा।

—रा. रू.

सरूप-सं. पु. [सं. स्वरुप] १ नाथ सम्प्रदाय के जोगियों द्वारा कानो में पहिना जाने वाला कुंडल नामक आभूषण विशेष।

२ हाल, वृतान्त।

उ०—पणि ए ग्रह छै केहनौ, केण करायौ कूप। वलि तूं ग्रद्धा कवण छै, तै सहु दाखि सरूप।—वि. कु.

३ तरह, प्रकार, भांति।

उ०—भूपाळ बीया सेवाळ तणी भत, कळिया सह संसार कहै। माया जळ कळजुग छै माही, राजा कमळ सरूप रहै।

—जगन्नाथ सांदू

वि.—१ सुन्दर, मनोहर। (अ. मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ इसडी वा कन्या छै सु काठ भखण करै छै, सरूप छै, गुणवती छै।—पचदडी री वारता

उ०—२ घाटा रूप मैं सरूप जिकै बाटा सूवा सीध घालै, थाटा घणा बीच सोभा बिरच्ची अथाह। दळा री दुबाह जोध नरा नाह 'सेवौ' दाखां, पाकेटा पमंगां चंगां माडियौ प्रवाह।—नाथौ बारहठ

२ समान, तुल्य।

उ०—१ झाळा धोम तेज झळहळियौ, अगन सरूप पनग ऊछळियौ। जभकै नही भयाणक जाणै, पनग जिकौ ग्रहियौ अप पांणै।—सू. प्र.

उ०—२ माया आगि सरूप है, जोग जुगति सु राखि। नहीं तौ तन जोखा घणा, हरीया हरिजन आखि।—अनुभववाणी

उ०—३ केस कळप तजियौ सकळ, भजियौ कजियौ भूप। बजियौ इण गुण ब्रद्धवय, सजियौ तरुण सरूप।—व. भा.

उ०—४ सखियां रै साथ इसी सोवै, ज्यूं चिरम्या मैं मोती अनूप। होठा पर हास इसौ मोहै, ज्यूं तारा री जोती सरूप।

—करणीदांन बारहठ

३ एक ही रूप का, समान शक्ल का।

४ देखो 'स्वरूप' (रू. भे.)

(अ. मा; डिं. को; नां. मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ किलनूं कळ कलनूं कळ कहै, रिख रूप री रूप। बिगड़ै कुकवि रसण बस सबदा तणौ सरूप।—बा. दा.

उ०—२ उणाने पोता रौ वौ फोटू याद आयौ जिकौ उणै ब्याव रै दूजी साल धणी-लुगाई दोन्यूं भेळा ऊभ नैं खेचायौ हौ। उण वखत सुसीला रौ किसोक फूटरौ सरूप हौ।—अमरचूनडी

उ०—३ इह सरूप जंगळ धर आई, मह्रा सकति दुरगा मेहाई। मसक समान 'कान्ह' कूं मारघौ, उदनवान जळजांन उबारघौ।

—मे. म.

उ०—४ गजा प्राहार हाथळा सिंह छूटौ 'कुसळेस' गाज, कायरा पराजै बोल भांहुरै करूप। अमामी जोधार खेत उछाह रै साजि आयौ, सूर रामसिंघ सांमौ राहु रै सरूप।—करणीदान कवियौ

उ०—५ मरजाद सर सर सरिति अनुमिति, छूटि जात अछेहय। पड़ि खाळ थाळ थळ थळ ताळ पूरति, खह सरूप अखेहयं।

—रा. रू.

उ०—६ सीसड़लौ मूमल रौ सरूप नारेळ ज्यूं, हां जी रे केसड़ला माडेंची रा वासग नाग ज्यूं, म्हाजो जुग वाल्ही मूमल! हालै नी ऐ अमरांणै रै देस।—लो. गी.

रू. भे.—सरूपी, सारूप।

सरूपमांन, सरूपवांन—देखो 'स्वरूपवान' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रैडौ सरूपवांन मोट्यार इण भांत विडरूप कीकर बणग्यौ। देखणवाळा लोगा री आंख्यां काळजा रै मांय बड़गी।

—फुलवाड़ी

उ०—२ बीदणी तौ जांणै कोई सपनौ देखै। ज्यूं कह्यौ—त्यूं करचौ। सातवी टीकी देवताई धरती धूजी, बीजळिया किडकी, आभौ हिलियौ। देखता देखतां काळिंदर तौ पच्चीस बरसां रौ सरूपवांन मोट्यार बणग्यौ।—फुलवाडी

उ०—३ फगत एक भंवारौ बाकी बच्यौ। वै हीमत करनै माय वड़ी। उठै एक अजब ई नजारौ निगै आयौ। सूळां री सेज माथै एक सरूपवांन मोट्यार सूतौ।—फुलवाडी

सरूपसाही-सं. पु.—महाराणा सरूपसिंह द्वारा चलाया हुआ मेवाड़ का एक सिक्का विशेष जो चादी और स्वर्ण दोनों का अलग-अलग होता था।

सरूपसी-स. पु.—१ भाटी वंश की एक शाखा।

२ उक्त शाखा का व्यक्ति।

सरूपांत, सरूपात—देखो 'सरूपोत' (रू. भे.)

उ०—सरूपांत मैं ठाकर दारू नैं पियौ बीच मैं दारू दारू नैं पीयौ, अर अबै दारू ठाकर नैं पीवतौ हौ।—रातवासौ

सरूपा-सं. स्त्री.—भूत ऋषी की पत्नी जो असंख्य रुद्रों की माता मानी जाती है।

सरूपाचारय-स पु. [सं. स्वरूपाचार्य] शंकर स्वामी का एक शिष्य जिन्होंने पश्चिम मे शारदा मठ की स्थापना की थी।

सरूपियौ—देखो 'सरूप' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हिवइ रितिराउ कहतां वसंत रिति सरूपियौ जोवन सु आपणा नाना प्रकार गुणगतिमति सहित यौ परिग्रह लै आयौ।

—वेलि

सरूपी—देखो 'स्वरूपी' (रू. भे.)

उ०—१ अकल सरूपी तू गुरु जीयउ एह अचभौ थाई।—स. कु.

उ०—२ जतहरीया चढी ग्यांन गज, जाजम अधर बिछाय। जगत सरूपी कूकरा, भूसलि मरौ भसि जाय।—अनुभववांणी

२ देखो 'सरूप' (रू. भे.)

उ०—जिन प्रतिमा जिन हीज सरूपी पौतें जिनज प्ररुपी। सेवैं तै सुद्ध समकित रूवी, अग्यानी ए उथूजी।—ध. व. ग्र.

सरूपोत–क्रि. वि.—१ प्रारम्भ मे।

उ०—१ नाई मन मैं सोचण लागौ कै इण भात रा सरूपोत ई अैड़ा माडणा उघडिया तौ पछै अत मैं राम जाणै काई व्हैला। —फुलवाडी

उ०—२ सरूपोत नी बोलण रै कारण म्है आ समझण री भूल करी कै थूं पिछतावौ करै है।—फुलवाडी

२ पहलेपहल, सर्वप्रथम।

उ०—१ जुग री जाणकारी राखतौ थकौ आपरै गवाड मै माडी रीत रिवाजां मिटावण नै जुवाना रौ सगठण करै है अर करडा विचार लिया आपरै घर सू ही तोड़ण रौ सरूपोत मतौ करै है। —फुलवाडी

उ०—२ सरूपोत दूध-दही रै मिस उठै बुलावण रौ जाळ रचियौ, सगळा दूध री साई करण री दातारी दरसाई।—फुलवाडी

३ पहल, शुरूआत।

ज्यूं—ई काम री सरूपोत तौ म्हूं ई करूला।

रू. भे.— सरूपात, सरूपात, सरूवात, सिरैपौत, सुरुपात, सुरूवात।

सरूपौ–सं. पु.—१ नजारा, आश्चर्यजनक बात।

उ०—धोखैं पडियौ घर धणी, सोचैं केहो सरूपौ रे। नर-नारी कुण नीकल्या, अदभुत रूप अनूपौ रे।—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'सरूप' (रू. भे.)

सरूभौ—देखो 'सलूभौ' (रू. भे.)

उ०—प्रळै देण दुसहां पयण पैण तीरा पडै, स्यांमरख बैण बीरां सरूभौ। निसा कोतक लगौ रैण जुध निरखवा, अैण रथ रोक चद्र गैण उभौ।—हुकमीचद खिडियौ

सरूवात—देखो 'सरूपोत' (रू. भे.)

सरेखंडौ–सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा (शा. हो.)

सरेज–वि.—श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—हलकार भडां ललकार हुवै, चगथां मुख तेज सरेज चुवै। —रा. रू.

सं. पु. [स. शरेज] स्वामी कार्तीकेय।

सरेबजार—देखो 'सिरैबाजार' (रू. भे.)

सरेव–सं. स्त्री.—प्रथा, रीति-रिवाज।

रू. भे.—सरह।

सरेस–सं. पु. [सं. शिरीष] १ एक वृक्ष विशेष।

२ एक लसदार पदार्थ जो लकड़ी चिपकाने के काम आता है।

रू. भे.—सरीस, सिरस।

सरै—१ देखो 'सिरै' (रू. भे.)

उ०—दीन्हा कर गोरख दहूं, तोर बडै कुल तांस। सह सतियां पेमां सरै, वसै अमरपुर वास।—पा. प्र.

२ देखो 'सरह' (रू. भे.)

उ०—असवार पचास कन्है रहै सौ रिपियौ आधौ घोड़ै री सरै पावै।—अमरसिंघ गजसिंघोत री बात

सरैबजार, सरैबाजार—देखो 'सिरैबाजार' (रू. भे.)

सरोकार–स. पु. [फा.] १ लगाव, मतलब।

२ परस्पर का सम्बन्ध।

सरोकारी–वि. [फा] १ सरोकार रखने वाला।

२ जिससे सरोकार रखा जाय।

सरोख—देखो 'सरोस' (रू. भे.)

उ०—१ चाहुता जादम रिण चाळो, दुयणा तणौ हुयौ देठाळौ। असुर सरोख डाखिया आया, आगै जादम राड अधाया। —रा. रू.

उ०—२ जगि सुमति आपत जांणि गुरजण रटत वयण सरोख। —रा. रू.

उ०—३ चापावत 'रांम' 'हरी' धर चोख, समोसर नाहरखान सरोख।—रा. रू.

सरोगय–स. पु.—एक असुर जिसने भीमसेन को भी परास्त कर दिया था।

सरोड़–वि.—सीधा-सादा, भला।

उ०—मा'रजा सूधौ भोळौ सरोड़ अर स्याणौ माणस, काम वेगी ढेढ-थोरी नैं ही नटै नीं।—दसदोख

सरोज–सं. पु. [स] १ कमल। (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—स्रीपत चरण सरोज रौ, गगाजळ मकरंद। अळियळ ज्यूं कर पांन अब, अधिकावण आणंद।—बां. दा.

२ श्वेत, सफेद। * (डि. को.)

३ लाल रक्त। * (डि. को.)

सरोजमुखौ–वि. [सं.] कमल के समान मुख वाला।

सरोजिनी–स. स्त्री. [सं.] वह तालाब जिसमें कमल हो।

वि [सं.] कमल का, कमल से सम्बन्धित।

स. पु.—१ ब्रह्मा।

२ गौतम बुद्ध।

सरोत—देखो स्रोत' (रू. भे.)

सरोतर, सरोतरि, सरोतरी–वि.—समान, बराबर।

उ०—१ राह भवन धन धन सुख राखै। दुनी कुबेर सरोतर दाखै।—रा रू.

उ०—२ रवि सेस अवनेस बधु 'बखतेस' सरोतर।—रा. रू.

उ०—३ सुलताण सरोतरि विलंद सेर, जिण भाण हरण जुड़ि करण जेर।—रा. रू.

सरोतौ–सं. पु.—१ सुपारी व केरी (कच्चा आम) काटने का एक उपकरण विशेष।

वि. वि.—सुपारी काटने का सरोता आकार में केरी काटने के

सरोते से छोटा होता है एव केरी काटने के सरोते में नीचे लकड़ी का मोटा तख्ता लगा होता है।

वि.—समान, बराबर।

रू. भे.—सरोतौ।

सरोद-वि.—१ एक प्रकार का तार वाद्य विशेष।

२ देखो 'सरोदौ' (मह; रू. भे)

उ०—सिखंति केक भेदसोए साधन **सरोद** रा। महामन्त्रेस अगम, मही अभ्यास मोद रा।—सू. प्र.

सरोदौ, सरोधौ-स पु. [सं. स्वरोदय] दायिने और बाए नथुने से निकलते हुए श्वासो को देखकर शुभ और अशुभ फल की भवि-ष्यवाणी करने की विद्या।

उ०—१ मनवा देव वसै हिरदा मैं, नाभि कमळ पग देला रे। चद्र सूर रा लिया **सरोदा**, सुखमण सीर चडेला रे।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ आंन कौ उपास नांह, **सरोधा** अभ्यास नाह। परम कौ ग्यान नाह न जांनू पचतत कूं।—ऊदोजी अड़ीग

रू. भे.—सरोद।

सरोबर, सरोबार-वि.—१ तरबतर।

२ समान, सदृश।

३ देखो 'सरोवर' (रू. भे.)

रू. भे.—सरबर।

सरोभर-वि.—समान, तुल्य।

उ०—१ राज द्वार उद्धार, इद्र आगार **सरोभर**।—ला. रा.

उ०—२ उजा गिड आकाय धर भुजां पौरस अफर, वीरवर निडर चित धीर बाधै। हेरता निजर भर मुरद्धर कूंपहर, **सरोभर** अवर नर कवण साधै।—जैनदान बारहठ

सरोमण, सरोमणि, सरोमणी—देखो 'सिरोमणी' (रू. भे.)

सरोरूह-स. पु [स. सरोरुह] कमल।

उ०—पतपच्छी जुग पाए, **सरोरूह** पल्लवा। नगजुत बलय अमोल दिया जै निध नवां।—बा. दा.

सरोवर-स. पु. [सं. सर+वर] १ सागर, समुद्र। (उ. र.)

२ तालाब, जलाशय। (डि को.)

उ०—१ 'सेर' भूखा माळवौ, 'सेर' प्यासियौ **सरोवर**।

—पहाडखां आढौ

उ०—२ सोवन मिरघ **सरोवरां**, सती फिरंतौ दीठ। असड़ा मिरघ न मारही, लखण कमावै भूठ।—मेहोजी गोदारौ थापन

३ झील।

वि.—समान, तुल्य, बराबर।

उ०—कटारधां सरालग सेल खंजर करद, अंग कट जरद पडिया अथांहा। जोध सुर असुर वै **सरोवर** जूटिया, बरोबर करै सरीख बाहां।—र. रू.

क्रि. वि.—साथ-साथ, परस्पर।

रू. भे.—सरबर, सरवर, सरवरि, सरव्वर, सरौवर।

अल्पा.—सरवरियौ।

सरोस-स. पु.—१ जोश, उमंग।

उ०—जिण जिण सथान फौजां सजोस। सुण खबर थया पण, विण **सरोस**।—रा. रू.

२ आवेग।

उ०—बडै **सरोस** जोस मैं भरोस अत्यनै बहै। रसा अरोस कोसलौं भरोस और कै रहै।—ऊ. का.

३ तेज।

उ०—अत कोप मुखां चख रोस अड़ै, झळ आग लगी फिर दूग झडै। जपतै रसणा रुख वाण जुई, हित बादळ बीज **सरोस** हुई।

—रा. रू.

वि.—४ जोशपूर्ण।

उ०—तोलै आभ भुजा बळी बोलै सूर **सरोस**।—रा. रू.

५ नाराज।

६ गुस्से से युक्त, क्रोधित।

रू. भे.—सरोख।

सरोसरि, सरोसरी-वि.—एक समान, बराबर।

उ०—पीठ प्रिथी सिरि सुन्दर जैपुर, रग बजार हजार बराबरि। सोभत चोपड़ बध **सरोसरि**, गोरव अटा महलां घड कंगरि।

—जैपुर नगर रो वरणन

सरौ, सुरौ-स. पु.—१ कृषि उपकरण दंताली का वह अग्र भाग जिसमें कघे के आकार के दांते लगे होते है।

२ प्रथा, परिपाटी।

उ०—पग तोकर हाकल माड पगं, विण छौत मिटै नह सूर वगं। सुप्रवीत महाजत सूर **सरौ**, कमधेस पडै अप्रवीत करौ।—पा. प्र.

वि.—३ सही, सत्य।

उ०—पहलोक अंधेरौ प्रिथमी, साहां राहा भागौ **सरौ**। 'सुरजन' सुमत गुण ऊचरै, घरै नही वड राजा गजसाह रौ।

—सुरजनदास पूनियौ

सरौतौ—देखो 'सरोतौ' (रू. भे.)

सरौवर—देखो 'सरोवर' (रू. भे)

उ०—आया पोहकर नेमलै, 'मधकर' हर कुळमौड। देवळ स्रीवाराह रै, मुगत **सरौवर** ठौड़।—रा. रू.

सलझ-सं. पु.—शामियाना खडा करने का खम्भा।

उ०—भूंडा भोज न जांणज्यै, मंदोवरि रा मंझ। सुदरि सोहै आंगणै, लंबी जिसि **सलंझ**।—मेहोजी गोदारौ

सळ, सल, सळ-सं. पु—१ किसी समतल तथा कोमल तल या पदार्थ के मुड़ने, दबने, सूखने या पिचकने के कारण उसमें उभरने वाली रेखाएं जो उसकी समतलता नष्ट करती है। यह वृद्धावस्था,

असंतोष, आवेग, क्रोध आदि के कारण भी पड़ जाते हैं। शिकन, सिलवट, सिकुड़न।

उ०—१ वागो मंगाइयो सो वडारण आण दियो सो क्यूक मैलो थो मेह सूं गीलो थो सो सळां मैं भरीज गयो थो।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ झाड़ बोरां जेडी छोटी आख्यां, लिलाड़ माथै सातेक आडा सळ, मूंडा माथै खत री ठौड़ कानी कानी तुरिगया ऊगोडी।

—फुलवाडी

उ०—३ मूंडो चढ्योडो लिलाड़ मैं सळ पडियोड़ा, अर पागडी रा आंटा ढीला पडियोडा।—अमरचूनडी

उ०—४ अेक वर देवर! सेजा मैं लै चाल, वैरी तो पाड़ां औ देवरिया! नारी मरद री। नारी होय तो फूल जावै मुरझाय, मरद मूंछाळा री सेजां औ देवरिया! सळ ना पड़ै।—लो. गी.

उ०—५ सूरज खांखळ रतन सळ, पोहमी रिण जळ पक। कायर कटक कळक इम, कुकवी सभा कलंक।—बां. दा.

२ प्रपंच, बंधन।

उ०—मरण जनमची सळ मिटण सो सलभ व्है संभार। जंम यो सळ भंजै जिसो, कौसल राजकंवार।—र. ज. प्र.

३ खलिहान में पड़े गेहूं की कटी फसल का ढेर।

४ नाश, संहार।

उ०—कहै ओरि केकाण सेल असुरांण करू सळ। वीसहथी हथवीस ओक पाऊ रत उजळ।—सू. प्र.

५ दुश्मनी, शत्रुता।

[सं. शल] ६ ऊंट। (डि. को.)

७ भाला, बर्छी।

८ कंस का एक अमात्य एवं मल्ल का नाम जो कृष्ण व बलराम से मल्लयुद्ध करते हुए मारा गया था।

९ धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक।

१० वासुकी कुलोत्पन्न एक नाग।

११ विप्रचित्ति एवं सिंहिका के पुत्रों में से एक असुर जो परशुराम द्वारा मारा गया था।

[सं. शल्य] १२ मद्र देश का राजा जो नकुल सहदेव का मामा था। यह महाभारत के युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया।

१३ भृंगी नामक शिव गण।

१४ कष्ट, शल्य, पीड़ा।

[सं. शल] १५ ब्रह्मा।

वि.—१ सीधा, सरल।

२ नोकदार, नुकीला, तीखा।

३ मारने वाला, वध करने वाला।

रू. भे.—सल्य, सल्ल।

सळइ—सं. पु. [सं. शल्लकी] शल्लकी नामक वृक्ष।

सळकणौ, सळकबौ—क्रि. अ.—१ खिसकना, भागना, चुपके से भाग जाना।

उ०—१ छळ न वळै सो अकसो छोडै, ईरानी नह को बळ ओडै। अरज 'अजीत' हूत गुदराई, सळक गयो जैसीघ सवाई।—रा. रू.

उ०—२ सळकिया कळह मझ झाट देखै सको, लोहडा नह कीधौ लोह भिळतौ। एक 'मा्हेस' जिमा हुता ऊमरा, भूप रौ कदै नह देस भिळतौ।—महेसदास कूंपावत री गीत

उ०—३ जीम्यो अरान्हायो जरै, सखरी करी न सेवा रे। सिव पारबती सळकिया, दोस् हुरतिख देवो रे।—ध व. ग्रं.

२ चमकना, दमकना। (बिजली आदि)

३ हिलना, चल-विचल होना।

उ०—१ दल दस देस तणा मिळि, घडीयालइ टमकारो। सळक्यौ मेर समुद्र झळहळियौ, अहि डोल्यौ महि भारो।—रुकमणि मंगळ

उ०—२ सळकै सेंस न ऊगै सूर।—अग्यात

४ बल खाते हुए चलना, वक्रगति से चलना।

सळकणहार, हारौ (हारी), सळकणियौ—वि०।

सळकिओड़ौ, सळकियोड़ौ, सळक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सळकीजणौ, सळकीजबौ—भाव वा०।

सळक्कणौ, सळक्कबौ, सिळकणौ, सिळकबौ—रू० भे०।

सलकर—सं. पु. [सं. शलकर] तक्षक कुलोत्पन्न एक नाग।

सळकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ खिसका हुआ, भागा हुआ, चला गया हुआ. २ चमका हुआ, दमका हुआ (बिजली आदि). ३ हिला हुआ, चल-विचल हुवा हुआ. ४ बल खाते हुए चला हुआ, वक्रगति से चला हुआ।

(स्त्री. सळकियोड़ी)

सळकी, सळकीजा—सं. स्त्री.—मछली। (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

सळक्कणौ, सळक्कबौ—देखो 'सळकणौ, सळकबौ' (रू. भे.)

उ०—आखियो हुकम ऊखेळ रौ, असपत मेळ अटक्कियौ। घर दिखण सीस ओछाह घर, साह सगाह सळक्कियौ।—रा. रू.

सळक्षण, सलक्षण—देखो 'सुलक्षण' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

सलखणोत—सं. स्त्री.—१ गहलोत क्षत्रियों की एक शाखा।

२ उक्त शाखा का एक व्यक्ति।

सलखणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सलखणी)

सळगणौ, सळगबौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगबौ' (रू. भे.)

सळगणहार, हारौ (हारी), सळगणियौ—वि०।

सळगिओड़ौ, सळगियोड़ौ, सळग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सळगीजणौ, सळगीजबौ—भाव वा०।

सळगाणौ, सळगाबौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगाबौ' (रू. भे.)

उ०—नारद होय वहीर, रति नगरी मैं आया। जैसै खेल बजार, गोड आंबा सळगाया।—अरजुणजी बारहठ

सळगाणहार, हारौ, (हारी), सळगाणियौ—वि० ।

सळगायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सळगाईजणौ, सळगाईजबौ—कर्म वा० ।

सळग्गणौ, सळग्गबौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगबौ' (रू. भे.)

उ०—उर लग्गी ज्वाळा विरह, जांणं सळग्गी लाय । भोम निहारै गयण तजि, वयण उचारै हाय ।—रा. रू.

सळग्गणहार, हारौ (हारी), सळग्गणियौ—वि० ।

सळग्गिओड़ौ, सळग्गियोड़ौ, सळग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सळग्गीजणौ, सळग्गीजबौ—भाव वा० ।

सलज—वि. [सं. सलज्ज] लज्जाशील, सुशील ।

रू. भे.—सलज्ज ।

सलजणौ, सलजबौ—क्रि. अ.—१ लज्जित होना, शर्माना ।

२ संकुचित होना, नीचा देखना ।

सलजणहार, हारौ (हारी), सलजणियौ—वि० ।

सलजिओड़ौ, सलजियोड़ौ, सलज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सलजीजणौ, सलजीजबौ—भाव वा० ।

सलज्जणौ, सलज्जबौ—रू० भे० ।

सलजम—स. पु. [फा. शलजम] प्रायः सारे भारत में सर्दी के दिनों में होने वाला एक प्रकार का कंदमूल विशेष ।

सलजियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लज्जित हुवा हुआ, शर्माया हुआ. २ नीचा देखा हुआ, सकुचित हुवा हुआ ।

(स्त्री सलजियोडी)

सलज्ज—देखो 'सलज' (रू. भे.)

उ०—कन्या कमधा रावरी, सूरज कवर सलज्ज । सेवा तौ इसरी करो, कीजै आदर कज्ज ।—रा. रू.

सलज्जणौ, सलज्जबौ—देखो 'सलजणौ, सलजबौ' (रू. भे.)

उ०—भोग्य चित भजै, ग्रीधणी गरज्जै । नीर धार निजै, सोहड़ै सलज्जै —रा. रू.

सलज्जियोड़ौ—देखो 'सलजियोड़ौ' (रू. भे.)

सलटणौ, सलटबौ—क्रि. अ.—१ समस्या की जटिलता पेंचीदगी आदि का दूर होना, सुलझना, हल होना ।

उ०—१ तद राव 'सूजैजी' आपरी माजी नू कयौ, 'माजी, थे वाभैजी वीकैजी खनै जावौ नै थां गयां बात सलटसी ।—द. दा

उ०—२ केई जणा गादी री हक जमायौ । सेवट राओ किणी भात नी सलटियौ तौ सगळा दीवाण मिळनै अेक सला विचारी ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ पण अकल री ठौड़ अकल इज कांम आवै । अकल री बाता रंघड़पणा सूं नी सलटै ।—फुलवाड़ी

उ०—४ बात तौ कराड़ा बारै व्हैगी । अबै कीकर सलटणी आवै । कुण जाणै कुण दाव-घाव करघो ।—फुलवाड़ी

२ निपटना ।

उ०—१ दूजा गांव मैं किसा ठाकर नी है कांई । अबै तौ बाणिया वाळी अकल सू ईं सलटणौ पड़ैला ।—फुलवाडी

उ०—२ आखा ठिकाणा री रया नै एक साथ सलटण री जोरावरी व्हैता थकां ईं खुदौखुद कंवरसा सूं कीकर सलटीजै ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ थूक उछाळना कैवण लागा—म्हारै घर री बात है, मतै ई सलट लेस्यां । बस्ती वाळा क्यू पचायती करै ।—फुलवाडी

उ०—४ धणकरौ डंड जूतां रै पांण ई सलट जातौ । बात बात मैं जूता अर पावडै पावडै जरबा । जूतौ ई उण ठिकांणै सिरै कांनून अर जूतौ ई सिरै न्याव हौ ।—फुलवाड़ी

३ होना, निकलना ।

उ०—१ मांदा मिनख नै तौ बतावै सौ ई औखद जचै । पछै अेक राजा रै तौ हुकम सूं सगळा कांम सलटै, उणनै हुकम देवतां कांई जोर पड़ै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ कदै ई कदै ई छोटा मिनख जको कांम सार सकै, वौ मोटा मिनखा सूं नी सलटै ।—फुलवाडी

उ०—३ पण पुटिया बिना उठै पचायती सलटै कोनी कांई ।
—फुलवाड़ी

४ छुटकारा पाना, मुक्त होना ।

उ०—सगण करता रूंगता ऊभा व्हैगा । पाखती रा बेली नै सायद ऊभी बगळ बगळ मठोठै । फगत माथौ माथौ बच्यौ । करै तौ काई करै । इण अणचीती माया सूं कीकर सलटणौ आवै ।
—फुलवाड़ी

सलटणहार, हारौ (हारी), सलटणियौ—वि० ।

सलटिओड़ौ, सलटियोड़ौ, सलट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सलटीजणौ, सलटीजबौ—भाव वा० ।

सलटाणौ, सलटाबौ—क्रि. स.—१ निपटाना ।

उ०—१ फूलचंदजी बेगराजजी रै घर री पूरी खोज खबर लीनी । मांगतोड़ा नै आंख दिखाळी । आघै-परघै नै सलटाया ।—दसदोख

उ०—२ मासी अेकली ई गवाड़ी री काम कणा सलटाय देती, जिणरो की पतौ ई नी पड़तौ ।—फुलवाड़ी

उ०—३ जापा रै पांच महीना पछै भटियांणी नै कांम करण री ना तौ नी ही, पण मासी धणकरौ काम खुद ई सलटाय देती ।
—फुलवाड़ी

२ सुलझाना ।

३ सुधारना ।

४ करना, निकालना । (काम)

५ मुक्ति दिलाना, छुटकारा दिलाना ।

सलटाणहार, हारौ, (हारी), सलटाणियौ—वि० ।

सलटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सलटाईजणौ, सलटाईजबौ—कर्म वा० ।

सलटावणी, सलटावबी—रू० भे० ।

सलटायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ निपटाया हुआ. २ सुलझाया हुआ. ३ सुधारा हुआ. ४ किया हुआ, निकाला हुआ. (काम) ५ मुक्ति दिलाया हुआ, छुटकारा दिलाया हुआ ।
(स्त्री. सलटायोडी)

सलटावणौ, सलटावबौ—देखो 'सलटाणौ, सलटाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ बखांण सारू फेर खपज्यौ, वणी कांई भुळावण देवूं । अबै थे जावौ, म्हनें केई जरूरी कांम सलटावणा है ।—फुलवाड़ी
उ०—२ पछी तौ आंसू ढुळकावता वा इज बात करी—अंदाता वौ तौ सात समंदरा पार पचायती सलटावण नै गियौ है । आतौ ई व्हैला । थोडी ताळ खटाव राखौ ।—फुलवाड़ी
उ०—३ थांरा चौखळा री तौ आछी पाखी परवारी । कोई दुथणी रौ जायौ औ न्याव सलटावणियौ लाधौ ई नीं । हुचा हुचा पाधरा राजाजी रै गोडै वहीर व्हैगा ।—फुलवाड़ी
सलटावणहार, हारौ (हारी), सलटावणियौ—वि० ।
सलटाविओड़ौ, सलटावियोड़ौ, सलटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सलटावीजणौ, सलटावीजबौ—कर्म वा० ।

सलटावियोड़ौ—देखो 'सलटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सलटावियोड़ी)

सलटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ समस्या की जटिलता, पेचीदगी आदि का हल निकला हुआ. २ निपटा हुआ. ३ हुवा हुआ, निकला हुआ. ४ सुधरा हुआ. ५ छुटकारा पाया हुआ, मुक्त हुवा हुआ ।
(स्त्री. सलटियोड़ी)

सळणौ, सळबौ—देखो 'सुळणौ, सुळबौ' (रू. भे.)
सळणहार, हारौ (हारी), सळणियौ—वि० ।
सळिओड़ौ, सळियोड़ौ, सळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सळीजणौ, सळीजबौ—भाव वा० ।

सळत—देखो 'सरिता' (रू भे)

सलतनत-सं. स्त्री. [अ.] १ सुलतान के अधीन रहने वाला राज्य, बादशाहत ।
२ शासन, हुकुमत ।
रू. भे.—सल्तनत ।

सलता—देखो 'सरिता' (रू. भे.)
उ०—भगति भाव भादू नदी, सभी उठी घहराय । सळता सोई जाणियै, जेठ मास ठहराय ।—अज्ञात

सळताळ-स. स्त्री —चमक-दमक ।
उ०—लखि एत घडूं सळताळ पटा, घण जोर वरै थळ सीस घटा ।
—पा. प्र.

सळदी, सळद्दी—देखो 'सरहदी' (रू. भे.)
उ०—तरियन खांन पठांण, सेख अलियार सळद्दी । मिळै सेख मुग्रदाह, मुगळ आगा मुतसद्दी ।—सू. प्र.

सलप-वि.—अल्प, थोडा ।

सळपळाट, सळपळाट, सळपळाहट, सळपळाहट, सळफळाट, सळफळाट, सळफळाहट, सळफळाहट-स. पु.—१ पौधों के समूह पर हवा के झोकों से उत्पन्न गति, ध्वनि, कम्पन्न ।
उ०—खेत पौन सूं खिल-खिलै खेलै, रात दिन रूखाळी मांग मेलै । धान धूजै, सळपळाट करै तथा बेळा, चिया-फूळा सागै झूला झुलै है ।—दसदोख
२ खिन्नचित्त होने की अवस्था या भाव ।

सलबै-क्रि. वि.—पास, निकट ।
उ०—१ मिनख रौ रूप धारचा आ मौत तौ साव सलबै आयगी दीसै ।—फुलवाड़ी
उ०—२ इण भात हरियळ धरती अर जच्चा-राणी रै बधावा रा मीठा गीत सुणती सुणती काली मासी गाव रै सलबै पूगगी ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ खेत रै सलबै पुगतां ई सगळा भावरिया उणरै ओळा-दोळा व्हैगा ।—फुलवाडी

सलबौ-वि. (स्त्री. सलबी) पास, करीब ।
उ०—सलबौ आयर सायधण, चित पिय लीनौ चोर । लोयण लागा निरखबा, (ज्यूं) चंदा दिसै चकोर ।—नारायणसिंह भाटी
रू. भे.—सलभौ,

सलभौ-वि.—१ लाभान्वित, लाभ प्राप्त ।
उ०—आवै केइक चीतिया, अणचीतिया अनेक । वळै सलभा होय सब उर अदतारा छेक ।—बां. दा.
२ देखो 'सलबौ' (रू. भे.)

सलभ-स. पु. [सं. शलभः] १ टिड्डी । (डिं. को.)
उ०—इम आवै इक ऊपरां, हाटी लोप हटक्क । सलभ मुआं सिर सक्कमै, कीडी जेम कटक्क ।—बा. दा.
२ पतंगा । (डिं.को.)
उ०—आसाढ मनहु बरखा समय, संमुख आनि सलभा गिरत ।
—ला. रा.
३ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक ।
४ पाण्डवपक्षीय योद्धा जो कर्ण द्वारा मारा गया ।
५ छप्पय का एक भेद जिसमें ४० गुरु और ७२ लघु कुल ११२ वर्ण १५२ मात्राएँ होती है ।
६ देखो 'सुलभ' (रू. भे.)
उ०—संसार माहि छइ सहू सलभ, जिण सासण एक छइ दुर-लभ ।—वस्तिग

सलभा-स. स्त्री. [सं. शलभा] अत्रि ऋषि की पत्नी का नाम ।

सलभासन-स. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक आसन जिसमें औंधा सोकर दोनो हाथों की हथेली छाती के नीचे दबाकर मुख को पृथ्वी से ऊचा रखना होता है ।

सलभी-स. स्त्री. [सं. शलभी] कुमार कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

सलभौ—देखो 'सलबौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सलभी)

सलमलदीप-सं. पु. [स. शाल्मलिद्वीप] १ पुराणानुसार पृथ्वी के सात खण्डो मे से एक खण्ड।

सलमौ-सं. पु.—टोपी, साडी आदि मे बेल-बूटे बनाने के काम आने वाला सोने या चादी का तार।

सलल—देखो 'सलिल' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—सिंघ अजा सामल सलल, पीवै इक थाळा। तसकर दवे उलूक ज्यूं, ऊगा किरणाला।—र. रू.

सलळणौ, सलळबौ, सललणौ, सललबौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळबौ' (रू. भे.)
उ०—बिहु छेह बाणावळी, सर पुडंग सळळी। अणी अणी अतुळी, खग खग्गा खळी।—अ. वचनिका
सललणहार, हारौ (हारी), सललणियौ—वि०।
सललिओड़ौ, सललियोड़ौ, सलल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सललीजणौ, सललीजबौ—भाव वा०।

सलळियोड़ौ, सललियोडौ—देखो 'सालुळियोडौ' (रू. भे.)

सळवट-स. स्त्री—१ शिकन, सिकुडन, सिलवट।
उ०—नारी होय तौ फूल जावै मुरझाय मरद मुंछाळै री सेजां औ देवरिया सळवट ना पड़ै।—लो. गी.
२ चाबुक, कोडा।
रू. भे.—सिलवट।

सळवळ-सं. स्त्री.—१ रेंगने वाले जीवों के चलने की क्रिया या चलने पर शरीर की बनावट।
उ०—अेडौ लखावै कै म्हारा माथा मे दस-बीस कानसळाव अठी-उठी सळवळ सळवळ करै है।—फुलवाड़ी
२ आहट, ध्वनि।
उ०—भीडी डाकनै चोरा रै आवण री सळवळ सुणी तौ दोनू ई जाणां जित्ता डरिया।—फुलवाडी
३ जनरव, कोलाहल।
उ०—खोडा रै ओळू-दोळू अड़थड़िया मिनख राजाजी रै पधारण री सळवळ सुणतां ई असवाडै पसवाड़ै ऊभग्या।—फूलवाड़ी
४ अफवाह।
५ स्फुरन, हलचल।
उ०—रूप रौ कोरौ हाकौ इज तौ नी हौ। निजरां देख्यां सावळ जाच व्है। राजाजी रा मन मै ई थोड़ी सळवळ माची।
—फुलवाडी
६ खातर, बदगी, सेवा।
उ०—ऊभा पगा अनेक, केता नर सळवळ करै। पड़ियां पूठी पेख, पत तू राखै 'पातला'।—ऊकजी बोगसौ

सळवळणौ, सळवळबौ, सळवळणौ, सळवळबौ-क्रि. अ.—१ रेंगना।
उ०—१ सळवळता कालिंदर नै ठाकर री आ बात खारी लागी।
—फुलवाड़ी
उ०—२ काळिंदर रै ई आ जुगत दाय आई। वौ सळवळतौ पिलग सूं हेटै उतरचौ।—फुलवाड़ी
२ पैदा होना, उत्पन्न होना।
उ०—१ मूंडा मैं राम-नाम रै बदळै लाळां सळवळण लागी। ठाकुरजी रौ औ परसाद तौ दैणौ सता रै हाथ हो।—फुलवाड़ी
उ०—२ अघोरी-बाबा रै मूंडै वानै खावण सारू लाळा सळवळण लागी ई ही कै कंवर खूजिया माय सू कागद काढनै साम्ही करचौ।
—फुलवाड़ी
३ गतिमान होना, हिलना-डुलना।
उ०—आज ई वौ उण चितराम रौ अणछक आणद लूटतौ हो कै मांचा रै नीचै कांई सळवळाट व्हियौ।—अमरचूंनड़ी
४ कम्पायमान होना।
उ०—धर धसकीय सलवलीय, सेस गिरिवर टलटलीया।
—सालिभद्र सूरि
सळवळणहार, हारौ (हारी), सळवळणियौ—वि०।
सळवळिओड़ौ, सळवळियोडौ, सळवळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सळवळीजणौ, सळवळीजबौ—भाव वा०।

सळवळाट-स. पु.—१ ध्वनि, आवाज।
उ०—आज ई वौ उण चितराम रौ अणछक आणंद लूटतौ हौ कै माचा रै नीचै कांई सळवळाट व्हियौ।—अमरचूनड़ी
२ रेंगने का ढंग।
३ विद्युत चमक।
(मि. सिळाव)

सळवळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ रेंगा हुआ. २ पैदा हुवा हुआ, उत्पन्न हुवा हुआ. ३ गतिमान हुवा हुआ, हिला-डुला हुआ. ४ कम्पायमान हुवा हुआ।
(स्त्री सळवळियोड़ी)

सळवाट—देखो 'सिलावट' (रू. भे.)
उ०—लख समपै जु तै मांडिया लाखा, घाट सुकवि सळवाट घडै प्रसिध तणा प्रासाद न पडही, पाखाणिवा प्रसाद पड़ै।
—लाखा फूलांणी री गीत

सलवार, सलवार-सं. स्त्री.—१ पाजामे की तरह पहना जाने वाला एक वस्त्र, जिसके नीचे का हिस्सा बहुत संकरा होता है तथा कमर का हिस्सा बहुत बड़ा होता है। पहनने पर इसमे बहुत सिलवटें रहती है।
२ वह मादा ऊँट जिसके साथ उसका छोटा बच्चा भी होता है।
ज्यूं—आ सायंड सलवार है।

सलवी–स. स्त्री—वह भेड़ जिसकी ऊन काटी नहीं गई हो।

सळवौ–सं पु.—१ संशय, शक, संदेह।

२ कपट, धोखा।

उ०—जन हरिदास गोविंद विमुख, तिन सिरि जम का हाथ। बाहरि मूंडत देखियै, भीतरि सलवा साथ।—ह पु. वा.

३ देखो 'सलबौ' (रू. भे.)

उ०—सिधराव जैसिंघ बातां सुणै छै। तिसा सळवा बैठा छै।
—जगदेव पवार री बात

सळसळणौ, सळसळबौ, सलसलणौ, सलसलबौ–क्रि अ.—१ हिलना-डुलना, हरकत करना।

उ०—१ झाबकि पइठी झाळि, सुदरी कांइ न सळसळइ। बोलाइ नही जा बाळ, धण धधूणी जोइयउ।—ढो. मा.

उ०—२ सळसळिया आपौ सहज, तन नींद मिटांणां। मन मैं मनवा ऊपनी, मंडण मंडाण।—गज-उद्धार

२ लचकना, डोलना।

उ०—१ सळसळै कमठ पीठ फण लचक सेसरा, दहल पड़ कक हकब कैदसूं देस रा। पांण तज सक अनमी भरै पेसरा........ किण सीस बंध कमर 'सगतेस'रा।—रामलाल बारहठ

उ०—२ हयदळ गयदल पयदल मिलियौ, चालता अहिपति सल-सलियौ। सात सायर नौ जल झलफलीयौ, जायै किण ही नहीं बल कलीयौ।—श्रीपालरास

३ तरंगित होना।

उ०—असंख्य साहणि चालतै हूंतै समुद्र सलिल सलसल्यां घाट घमघमी घाघरयाल वाजी।—व. स.

४ ढीला होना, खोखला होना।

उ०—जलचर जीव आवी प्रहवणि वाजइ, सुकाणना बध सलसल्यां पवनउ पूर, कुआथभउ डोलइ।—व. स.

सळसळणहार, हारौ (हारी), सळसळणियौ—वि०।

सळसळिओड़ौ, सळसळियोड़ौ सळसळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सळसळीजणौ, सळसळीजबौ—भाव वा०।

सळसळियोड़ौ, सलसलियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हिला डुला हुआ, हरकत किया हुआ. २ लचका हुआ, डोला हुआ. ३ तरंगित हुवा हुआ. ४ ढीला हुवा हुआ, खोखला हुवा हुआ।

(स्त्री. सळसळियोडी, सलसलियोडी)

सलसूत्र–सं. पु.—सलाह-सूत।

उ०—व्यवसाय व्यवहारिए वचन प्रतिष्ठासिउं कीजइ, दाणीसिउं पाठि सलसूत्र साचवीइ.........।—व. स.

सलह—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

उ०—१ सलह सोहउ सज अस पलांणां, 'जालण' जोगद्र कीध जुआंणां। आप तणै पहला धन आणै, वाका ढोवा थाट विनाणै।
—राव जलणसी रौ गीत

उ०—२ महवेचा वखौ करंतां 'मधकर', मछर तणा गढ अवली मांण। सोहड़ां गळै न ऊतरै सलहां, पमंगा नह ऊतरै पलांण।
—माधोसिह महेचा रौ गीत

उ०—३ धख-पंख धमळ धीर धारण, निहग तौ डर केळ वारण। दुखळ-पखी गुरड दारण, सलह खाग सधीर।
—महाराजा गजसिंह रौ गीत

सलहटी—देखो 'सिलहटी' (रू. भे.)

उ०—पीतल लोह दांतरा जड़िया लाल सलहटी गदरा बिछाया थका।—रा. सा. सं.

सलहदार—देखो 'सिलहदार' (रू. भे.)

सलहपुर, सलहपूर—देखो 'सिलहपुर' (रू. भे.)

सलहिदार, सलहीदार—देखो 'सिलहदार' (रू भे.)

उ०—सलहिदार हथियार लेइ आगई अवधारीय। संभाले सवि सेल माहि भेजे चित धारीय।—प. च. चौ.

सलांम–सं. पु. [अ. सलाम] १ वंदना, नमस्कार, अभिवादन।

उ०—१ एवड छेवड़ ओलभा सरै बिच सात सलांम।—लो. गी.

उ०—२ पथी एक संदेसडउ, कहिज्यउ सात सलांम। जब थी हम तुम बीछडै; नयणां नींद हरांम।—ढो. मा.

क्रि. प्र.—करणी, लेणी।

मुहा.—१ सलाम सटै मियाजी नै नाराज क्यूं करणा=छोटी-मोटी साधारण बातों से ही अगर कोई खुश रहता हो तो उसे नाराज क्यों किया जाय।

२ सलाम करणौ=नमस्कार करना।

रू. भे. सिलाम, सीलाम

सलांम कराई–स स्त्री.—कन्या-पक्ष द्वारा वर पक्ष के लोगों को मिलन के समय दिया जाने वाला धन। (मुसलमांन)

सलांमड़ी—देखो 'सलाम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—अरक तेल छोडिया छोला, हरख नीम दै चामड़ी। मुरधर दानी देव थानै, वरसा सात सलांमड़ी।—दसदेव

सलांमत–वि.—१ मांगलिक सम्बोधन।

उ०—१ पातसाह सलांमत! मोनूं नदी मांहै सूं बूडती नूं एकै सिसोदियै राणा रै भाई काढी छै।—नैणसी

उ०—२ तद नापै अरज करी—दीवाण सलांमत, राठोडां रै वैर रौ मामलौ खरौ जोरावर छै। अर वळै वैर ही राव रिणमल रौ।—नैणसी

२ जो कुशल पूर्वक हो।

३ सुरक्षित।

४ जीवित, जिन्दा।

उ०—मात सलांमत पित मुआ, आवै नह आपाण। धाम धूम मिजनूं घटा, जै मावड़िया जांण।—बा. दा.

५ पूर्ण, पूरा।

६ स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

सं. स्त्री.—७ मौजूदगी, उपस्थिति ।

रू. भे.—सलामति, सलाबत, सलाबति, सलाबती, सिलामति, सिलांमती ।

सलांमति-सं. स्त्री.—१ सलामत होने की अवस्था या भाव ।

२ अच्छी तन्दुरुस्ती, उत्तम स्वास्थ्य ।

३ देखो 'सलामत' (रू. भे.)

उ०—१ बीजै ठाकुरे बात विचारि अर राव भोज मेलियौ । कहाडियौ जु राजि पातिसाह जी सलांमति रावळो साथ आइ आपडियौ छै । पर पहैंचण दीजै ।—द. वि.

उ०—२ इण नूं ज्यूं कपडा पहिरावां त्यूं चहवचै माहै गिरि पडै । ताहरां इण रौ मामू कहै रमण दियौ इण नूं । हमारा दोस नहीं । पातिसाही सलांमति मामू आवण दिए नहीं ।—द. वि.

रू. भे.—सलाबति, सलाबती, सिलांमति ।

सलांमी-स. स्त्री [अ. सलम+ई] १ प्रणाम या नमस्कार करने की क्रिया ।

उ०—अठाहूं असवार हुआ सो विचमैं जिकै भोमिया हुता सरब सलांमी करी ।—नैणसी

२ सैनिक प्रणाली से अस्त्र-शस्त्रों से अभिवादन करने की क्रिया ।

३ नित्य सेवा-चाकरी करने वाला ।

४ किसी बडे माननीय व्यक्ति के आगमन पर बंदूकें या तोपें दागने की क्रिया या भाव ।

रू. भे. सिलामी

सला'—देखो 'सलाह' (रू. भे.)

उ०—१ इण बात सारू नीं तौ की सला' लेवणी अर नीं इण माथै कीं विचार करणौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ दीवाण जी तो पौहरै चढ्या, किण सूं सला' लेवै ।
—फुलवाड़ी

सलाई, सळाई-स. स्त्री. [स. शलाका] १ किसी धातु की बनी हुई कोई पतली छड ।

२ कपडा, जरसी आदि बुनने का उपकरण ।

३ दियासलाई की तीली ।

४ सालने की मजदूरी ।

५ पत्नी की बहिन, साली ।

उ०—लंबा गला री डावड़ी ढोला पडी जाजम रै मांय । ग्यांन हो तो ग्यांन करौ ढोला नही तौ सलाइयां नै करौ सलांम ।
—लो. गी.

६ स्वर्णकारों का लोहे का बना औजार जिससे सोने के आभूषणों पर छलने का काम होता है ।

रू. भे.—सिलाई ।

सळाउत-स. पु.—१ पवार वंश की एक शाखा ।

२ उक्त शाखा का कोई व्यक्ति ।

सळाक, सलाक-स. पु. [फा. सलाख] १ बाण, तीर ।

२ सर्प की गति के समान बिजली की चमक ।

उ०—१ सळाकां बीज मंगळा भळा सारिखौ, कहर जोगणिपुरां पडै कूटो । बूकडा मंजर हस काळिजा बेहरतौ, फोड़ि कूंवर पंजर सेल फूटौ ।—करण म्हेवा रो गीत

उ०—२ भड़ै सनाहां भडाला भाण उगा व्है भळांका भाला । तसां बीजूंजळाका सळांका बीज तेम ।
— रावत हिम्मतसिंह रौ गीत

३ मांस लगी वह हड्डी का टुकड़ा जो मास के साथ ही पकाया जाता है । (रा. सा. सं)

४ सुरमा डालने की सलाई ।

५ तिनका, तृण ।

६ रेखा, लकीर ।

रू. भे —सलाख, सिळाक, सिलाक ।

सलाकौ-सं. पु. [सं. शलाका] १ लोहे की या लकड़ी की सलाई ।

२ सुरमा लगाने की सीसे की सलाई ।

३ तीर, बाण ।

३ बर्छी, भाला ।

५ छाता की तीली ।

६ नली की हड्डी ।

७ कोयल ।

८ दांत साफ करने की कूंची ।

९ जूआ खेलने का पासा ।

सलाख—देखो 'सलाक' (रू. भे.)

सलाड़णौ, सलाड़बौ-क्रि. स.—१ मारना, पीटना ।

२ देखो 'सिलाड़णौ, सिलाड़बौ' (रू. भे.)

सलाड़णहार, हारौ (हारी), सलाड़णियौ—वि० ।

सलाड़िओड़ौ, सलाड़ियोड़ौ, सलाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सलाड़ीजणौ, सलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

सलाड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ मारा पीटा हुआ ।

२ देखो 'सिलाडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सलाडियोड़ी)

सलाज-वि —लज्जावान, लजालु ।

उ०—१ पाजां छलि ढळ प्रघळ, सघळ बरसाल समाजां । ताव अलाजां तरस, सरस रण चाव सलाजां ।—वं. भा.

उ०—२ वार वार ईम पूछता, कुमारी थई सलाज । मुख मुलकी कहै तातनै, पूछण सुं स्यौ काज ।—श्रीपालरास

सलाजीत—देखो 'सिलाजीत' (रू. भे.)

उ०—तेल साहब लगावै, बंग सलाजीत खावै अर गोटा पीवै है तौ ही बुढापौ-बैरी लुक्यौ नीं चावै ।—दसदोख

सलाट, सलाटु, सलाट्ट-सं. पु. [सं. शिलाघटक] १ दफन या जलाये जाने के स्थान पर बनाया जाने वाला चबूतरा या कोई इमारत।

२ सिलावट। (डूंगरपुर) (उ. र.)

उ०—टकारा कडीया वली, साथि घणां सलाट। आहीरा प्रतिधण मिल्या, गोहिलवाड़ा गाट।—मा. का. प्र.

३ बीम तुला के वजन का नाम। (डि. को.)

४ कच्चा फल। (डि. को.)

सलात-सं. स्त्री.—बिजली की चमक।

सलाथल-सं पु. [सं शलाथल] एक प्राचीन ऋषी।

सलाबत—देखो 'सलामत' (रू. भे.)

सलाबति, सलाबती—१ देखो 'सलामत' (रू. भे.)

उ०—तद गयौ साह तजि छत्र तखत, इम दहुं राह उचारियौ। असपती सलाबति मझि ऊमर, मीर सलाबत मारियौ।—सू. प्र.

२ देखो सलामति' (रू. भे.)

सला'बाज—देखो 'सलाहबाज' (रू. भे.)

सला'बाजी—देखो 'सलाहबाजी' (रू. भे.)

सलाभोलि-सं. पु. [स. शलाभोलि] ऊंट। (डि. को)

सळायलो—देखो 'साळाहेली' (रू. भे.)

सलाव—देखो 'सिळाव' (रू. भे.)

उ०—१ आभ बिलूंबै धरण सूं, बीज सळावा लेह। कंथौ कंकट हुय रह्यौ, घण बरसंतै मेह।—अग्यात

उ०—२ जठै स्यांम धाराधंर री लहर लेती संपा रा सळावां री सोभा चढण लागी।—वं. भा.

उ०—३ पळापळ करती बीजळियां सळावा मारण लागी।

—फुलवाड़ी

सलासूत-सं. पु. यौ.—१ राय, सलाह।

उ०—१ परधै रा आदमी भेळा बैठ माहोमाह सलासूत विचारण लागा।—फुलवाड़ी

उ०—२ तठा उपरांयत मरजी रा खासे खवास सूं सलासूत विचारनै राजाजी दरबार में आया।—फुलवाडी

उ०—३ अेक दिन चौखळा रा बाणिया भेळा होय सला-सूत विचारी।—फुलवाडी

२ विचार-विमर्श।

रू. भे.—सलाहसूत।

सलाह-सं. स्त्री. [अ.] १ राय, सम्मति।

उ०—१ सारौ साथ लेय बहता राड़ करौ सो आपरी सलाह कासूं छै।—मारवाड़ रा अमरावा री वारता

उ०—२ जै आवै तौ दूणौ रिजक देऊं नहीं तो सलाह लेय फौज ऊपर पड़नै मारूं।—जयसिंह आमेर रा धणी री बात

उ०—३ सेठजी सेवट काठा धापनै म्हारी सलाह सूं उणनै कोलेज छुडाय दी।—अमरचूंनड़ी

क्रि. प्र.—लेवणी, देवणी, पूछणी, बताणी।

२ विचार-विमर्श।

उ०—सयाणा ज होय सो सलाह करे छै।—नी. प्र.

[सं. श्लाघा] ३ प्रशंसा, सराहना। (उ. र.)

४ आत्माभिमान। (उ. र.)

५ चापलूसी। (उ. र.)

६ कामना, अभिलाषा। (उ. र.)

७ सेवा, परिचर्या। (उ. र.)

वि.—१ लाभ सहित, सलाभ।

उ०—१ खानाणं खंडै खडग बळ खाधौ, लाधौ औ ग्रद आज सलाह। काधल कहै रुधिया केहर, साथ किसौ तांह किसौ सनाह।

—राव काधल रौ गीत

उ०—२ गौ दिल्ली दूजौ 'गजन', 'अजन' हुकम 'अभसाह'। उच्छव मुरधर ऊपजै, सब पुर हुए सलाह।—रा. रू.

२ सुन्दर, अच्छा।

रू. भे.—सला', सल्ला'।

सलाहकार-स. पु. [अ. सलाह+फा. कार] परामर्शदाता, सलाह देने वाला।

सलाहबाज-सं. पु.—सलाहकार, परामर्शदाता।

रू. भे.—सला'बाज।

सलाहबाजी-स. स्त्री.—सलाह देने का कार्य, परामर्श।

रू. भे—सला'बाजी।

सलाहसूत—देखो 'सलासूत' (रू. भे.)

उ०—किला रै मांयनै सलाहसूत व्ही। तै व्हियौ कै एक माथौ वढैला ज्यूं तीन ई भेळा वढैला, कांइ फरक पड़ै सो तीनूं नै ई आवण दौ। तीनूं जणां किला रै मायनै पूग्या।—अमरचूंनड़ी

सलिता—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—१ सुरग पतालि समंद सलिता रौ, सिध तो हुकम माहि जळ सारौ।—सू. प्र.

उ०—२ सलिता सिणगारी जे सधीर, बाहर सूरज री चडै वीर।

—सू. प्र.

सलिताकंत-सं. पु. यौ—समुद्र।

उ०—सायर गुण गहीरं लहरि सुत लसत उजलै नीरं। मझि जळ जीय अनत नमो, नमो सलिताकंतं।—ऊमरदान लाळस

सलिमुख—देखो 'सिलीमुख' (रू. भे.)

सळियळ-वि.—१ सम्पूर्ण, पूर्णरूपेण।

उ०—कळियळ कूंपळ सारसी, नाजुक अळियळ नार। ऊभी फळियळ अंब तळि, सळियळ अंग सवार।—पनां

२ देखो 'सलिल' (रू. भे.)

उ०—ऐसै वगीचूं कै बीच मैं सळियळ सरोवर कैसै। महाराजा बसंत की, फौज कै नीसांण जैसै।—सू. प्र.

सळियोड़ौ—देखो 'सुळियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सळियोडी)

सळियौ, सळियौ (स्त्री. सळी) १ घास फूस कंकर-पत्थर आदि से साफ किया हुआ।
२ सीधा, सरल।

सलिल–स पु. [सं.] जल, पानी। (अ मा; ह. ना. मा.)
उ०—धारा तीरथ समंदौ, खोणी सलिल सुरंभ भरए।
—गु. रू. बं
रू. भे.—सलल, सल्लील, सळियळ, सलिल, सळीयळ, सिलल।

सलिलचर–स. पु [स.] जल मे विचरण करने वाले प्राणी, जलचर।

सलिलज–स. पु. [स.] कमल।

सलिलजन्मा–सं. पु यौ. [स. सलिलजन्मन्] १ कमल, जलज।
२ जलचर।
३ कीचड़।
४ सिघोड़ा।

सलिलनिध, सलिलनिधि–स. पु. [सं. सलिलनिधिः] समुद्र, सागर।
उ०—उलट धरि द्यै तें तजै, सलिलनिधि ससार।—वि. कु.

सलिलपत, सलिलपति, सलिलपती, सलिलराज–सं. पु. [स. सलिल-पति] १ समुद्र, सागर।
२ जल के देवता वरुण।

सलिलस्थलचर–स. पु. यौ [स.] जल व स्थल पर विचरण करने वाले जन्तु।

सलिलि—देखो 'सलिल' (रू. भे.)

सलिलह्रद, सलिलहृदय–स. पु. [स. सलिलहृद] एक पुण्य तीर्थस्थान का नाम।

सलिलेंदर, सलिलेंद्र–सं. पु. [स. सलिल+इन्द्र] १ जल के देवता, वरूण।

सलिलेस, सलिलेसर, सलिलेसुर, सलिलेस्वर–सं. पु. [सं. सलिल+ईश या ईश्वर] १ जल के देवता, वरूण।
२ समुद्र, सागर।

सलिवण–सं. स्त्री—एक प्रकार का पौधा जो डलिया बनाने के काम मे अधिक प्रयुक्त होता है।

सळी, सळी–स. स्त्री.—१ साही नामक जन्तु जिसके शरीर पर कांटे होते है।
२ घास, बांस अदि की नुकीली फास।
उ०—सारा डेरां मैं भुरट रा काटा खिडता तिण सूं गुरज-बरदार दोरा होवता। सळी लागती सौ पाकती तिणसूं दुखी होय तुरक विदा होवता।—महाराजा पदम सिंह री बात
३ देखो 'सिळी' (रू. भे.)
उ०—सार की सळियां दो सूवा पीजरौ बणाऊं रे। पीजरा मैं आव सुवा हाथ सू खिलाऊं रे।—लो गी.
४ देखो 'सळो' (पु.)
ज्यू—आ बाजरी सळी है।

सलीकाबंद, सलीकामद–वि.—शिष्ट, सभ्य।

सळीको–स. पु.—सहसा तथा रह-रहकर उठने वाली वह पीडा जो शरीर का भीतरी भाग चीरती हुई सी जान पड़े, टीस, चीस।
उ०—१ जच्चा रै पेट मैं सळीका हालता हा।—फुलवाड़ी
उ०—२ सळवळता कालिंदर नै ठाकर री आ बात खारी लागी देह रै माय सळीकौ उठ्यौ।—फुलवाड़ी
उ०—३ उणरा बोल जाणै विस बुझ्या तीर। सुणतां ई काळजा मै सळीका ऊठण लाग जाता। छवू रांणिया उणरी छीया देख्याई थर-थर धूजती।—फुलवाडी

सलीकौ–स. पु. [अ. सलीक] १ शिष्टता, सभ्यता।
२ हुनर, लियाकत।
३ प्रबध, व्यवस्था।
४ संधि, सुलह, समझौता।
५ आचरण, व्यवहार।
६ शऊर, तमीज।

सलीचौ—देखो 'सल्लीचौ' (रू. भे.)

सळींटौ, सळीटौ–सं. पु.—रेंग कर चलने वाला जन्तु विशेष।
उ०—१ सूर, खचर, खर, स्याळ, टोळ कुवां टट्टूडा। काग, कोचरी कुरभ, गिरभ, गुरसा गग्घूडा। चील, चिड़ी, चमचेड़, ऊंदरा, सांप सळीटा। चक चूदरिया चुळक, पियै जळ चंचळ चीटा।
—दसदेव
उ०—२ रात्री प्रचुर आरोग्य परिमळ, सोया पुळसूं पावणी। सांप सळींटा विच्छु काटा, माछर डकी न आवणी।—दसदेव

सलीण–वि.—मुग्ध, मोहित।
उ०—वीण अलापी देख ससि, रयणी नाद सलीण। ससहर-अग-रथ मोहियौ,. तिम हस मेल्ही वीण।—ढो. मा.

सलीता—देखो 'सरिता' (रू. भे.)
उ०—सम माई क्रिया सब थाकी, ज्यू सलीता सिंधु समाई।
—सुखरांमजी महाराज

सलीतौ–स पु.—ऊंट पर सामान लादने के लिए जूट का बना लम्बा बड़ा थेला।
उ०—१ सलीतां कन्है फेंकवै प्रांण साहै, लिया हाथ लट्ठी समा सेल ठाहै।—रा. रू.
उ०—२ सिल्हैखानौ सारौ गांठा कर सलीतां मैं घात लीयौ। सो खैलता करता सत्तासर आया।—कुवरसी साखला री वारता
उ०—३ सलीतै थड्डै, लद्दै ऊट चलाए गिड्डै। लारोलार कतारां हल्ली, काती जाण कुरज्झां चल्ली।—गु. रू. बं.

सलीपर–स पु. [अं स्लीपर] १ वह हल्के चप्पल जिनसे केवल पजा ढका रहता है व ऐड़ी खुली रहती है।

२ लकड़ी का बड़ा शहतीर।

३ रेल की पटरियों के नीचे बिछाया जाने वाला लकड़ी का लम्बा तख्ता।

सलीम-वि. [अ.] १ शांत, गम्भीर।

२ शांतिप्रिय, सहनशील।

सलीमकोट-सं. पु.—वह स्थान जहाँ प्रतिष्ठित सामंतों को नजरबन्द रखा जाता था। (जोधपुर)

रू. भे.—कोटसलम, कोटसलीम, सलेमकोट।

सलीमुख—देखो 'सिलीमुख' (रू. भे.)

सळीयळ—देखो 'सलिल' (रू. भे.)

सलील-वि [सं.] १ खिलाडी।

२ लंपट, कामुक।

सलुक—देखो 'सलूक' (रू. भे.)

उ०—पुनह रात्रै सब पसु अरवै, सरेह केम वन-मस। कहो तेम जिम हम करै, सौ सलुक सोइ सस।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

सलुणौ—देखो 'सलूणौ' (रू. भे.)

उ०—बिनां वचन सुनि बोलै बैंनां, गुझि सलुणै अपनै सैनां।

—अनुभववांणी

सलुळणौ, सलुळबौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळबौ' (रू. भे.)

सलुळणहार, हारौ (हारी), सलुळणियौ—वि०।

सलुळिग्रोड़ौ, सलुळियोड़ौ, सलुळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सलुळीजणौ, सलुळीजबौ—भाव वा०।

सलुळियोड़ौ—देखो 'सालुळियोड़ौ' (रू. भे.)

सलूंभणौ, सलूंभबौ-क्रि, अ.—१ लूमना, लटकना।

उ०—पड़ै विकट धकै चापां सुदि पळ गया, भडां थट छेक अड़वा सलूभै।—मोतीराम आसियो

सलूंभणहार, हारौ (हारी), सलूंभणियौ—वि०।

सलूंभिग्रोड़ौ, सलूंभियोडौ, सलूंभ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सलूंभीजणौ, सलूंभीजबौ—भाव वा०।

सलूंभियोड़ौ-भू. का. कृ.—लूमा हुआ, लटका हुआ।

(स्त्री. सलूभियोड़ी)

सलूंभौ-वि.—लाभयुक्त, सलाभ।

उ०—'जसवंत' मरण 'तेजसी' जुटै, लूटै बोल सलूंभौ। बाजी 'मोहकम' तणी डुबोई, 'अजन' धणी कर 'ऊभौ'।

—नवलजी लाळस

सळू-सं. पु.—१ गेहूँ, जौ आदि की बालि के ऊपर होने वाले तीक्ष्ण तिनके, बाल।

२ कोई नुकीले घास का तिनका।

३ कांटा।

उ०—बाळ बाळ लख बचन अव, प्रजळ पीव दूं प्रांण। मां जाई करजै मती, साळू सळू समाण।—रेंवतसिंह भाटी

४ देखो 'साळू' (रू. भे.)

सलूक-सं. पु. [अ.] १ लोगों के साथ रखा जाने वाला मेल-मिलाप।

उ०—बाका राखै बाणियौ, सारा हूंत सलूक। कदियक खीजै तौ करै, वयण विलोणै थूक।—बां. दा.

२ व्यवहार, बर्ताव।

उ०—१ म्हारौ काम बैरी सूं लड़ाई रौ बणै तौ किण भांत सलूक करूं। किण तरह अमल कर लड़णै री करूं।—नी. प्र.

उ०—२ तहकीक मोनूं मित्र प्रकट भाव सं तौ इणा सूं कांई सलूक करूं।—नी. प्र.

३ शिष्टता, सभ्यता, अदब।

उ०—तदै जगदेव दरबार आयौ तिको वो सटुक रौ बागो पहिरणै छै रूपीया १) री पाघ माथै छै काना हाथा माहै कड़ा सु इसै सलूक सू मुजरो कियो।—जगदेव पवार री बात

४ विचार।

उ०—चांचल्य चित्त सिद्धांत चूक, सब सेखसली के है सलूक।

—ऊ. का.

५ निभने या पार पडने का ढग।

उ०—तरै जैतसी जी नीसासो मेल नै कह्यौ—बहूजी साहिब काकौ सेखोजी कांम आया तरै राजा सूंडा रौ बैर पहिरियौ थौ। सो दसराहौ पिण दिन २० मे आयौ नै बोलरौ सलूक दीसै नहीं छै। भाया मैं हासौ होसी।—जैतसी ऊदावत री बात

६ प्रबन्ध, व्यवस्था।

उ०—धरती रौ वडौ सलूक कियौ। आपरी जमीयत खरी कीधी।

—नैणसी

७ ढग, तौर-तरीका।

रू. भे.—सलुक।

सळूझणौ, सळूझबौ—देखो 'सुळझणौ, सुळझबौ' (रू. भे.)

उ०—पाप क पाच एक रस रोकै, गोरख झड़ी सळूझै। जरणां झड़ी जोग जत, जांणै, सो या अरथ ही बूझै।—ह. पु. वा.

सळूझणहार, हारौ (हारी), सळूझणियौ—वि०।

सळूझिग्रोडौ, सळूझियोडौ, सळूझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सळूझीजणौ, सळूझीजबौ—भाव वा०।

सळूझाड—देखो 'सुळझाड' (रू. भे.)

सळूझाड़ौ—देखो 'सुळझाडौ' (रू. भे)

सळूझाणौ, सळूझाबौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझाबौ' (रू. भे.)

सळूझाणहार, हारौ (हारी), सळूझाणियौ—वि०।

सळूझायोडौ—भू० का० कृ०।

सळूझाईजणौ, सळूझाईजबौ—कर्म वा०।

सळूझायोड़ौ—देखो 'सुळझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सळूझायोड़ी)

सळूभावणौ, सळूभावबौ—देखो 'सुळभाणौ, सुळभावौ' (रू. भे.)

सळूभावणहार, हारौ (हारी), सळूभावणियौ—वि० ।

सळूभाविश्रोड़ौ, सळूभावियोड़ौ, सळूभाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सळूभावीजणौ, सळूभावीजबौ—कर्म वा० ।

सळूभावियोड़ौ—देखो 'सुळभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सळूभावियोड़ी)

सळूभियोड़ौ—देखो सुळभियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सळूभियोडी)

सलूणउ, सलूणड़ौ—देखो 'सलूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ पंचसद हुइ पेखणा ए, नाचइ नाटिक पात्र । गीत सगीत सलूणडा ए, सुणीइ स्वर सात ।—का. दे. प्र.

उ०—२ नयण सलूणउ लउसडतु जउ वीवाह मनावित ।

—राजसेखर सूरि

सलूणापण, सलूणापणौ—स. पु.—सुदर होने का भाव, मनोहरता, लावण्यता ।

सलूणौ—वि. (स्त्री. सलूणी) १ नमक सहित ।

उ०—हूं बलिहारी राणिया, जाया वंस छतीस । चून सलूणौ सेर लै, मोल समर्पै सीस ।—वी. स.

२ सुन्दर, मनोहर, सलोना ।

उ०—१ ऐक ऐक तै आगळी, निपट सलूणी नार । उदयापुर मैं सब यसी, अपछर कौ उणियार ।—बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ गळ बैजंतीमाळ, पीतांबर कट काछनी । हाथ लकुटिया लाल, सांम सलूणा सावरा ।—ऊदोजी अडीग

उ०—३ जनहरिराम सलूंणा साजन, देखुं दिल भीतर दीदारौ ।

—अनुभववाणी

३ अधिक, ज्यादा ।

उ०—कमधज कछवाहा धरै, आयौ अप 'अभसाह' । कोड सलूणा कूरमं, उर दूणा ओछाह ।—रा. रू.

४ कान्तिमय, आभायुक्त ।

उ०—खेतसीयोत 'विजौ' जुध खागै, सूर सामळौ दीठां सागै । 'लूणा' हर मुख जोस सलूंणै, देवावत 'अमरौ' बळ दूणै ।—रा. रू.

५ स्वादिष्ट, जायकेदार ।

६ प्रेमपूर्ण, प्यारयुक्त ।

उ०—की व्है आगा कियां, हेत विहूणा हात । नैण सलूणा न मिळै, बाळ अलूणी वात ।—अग्यात

७ मोहित करने वाला, मोहक ।

उ०—१ राम बन् छै रूपाळौ नैण सलूणा भाकत झ्योढौ, विच काजळ अणियाळौ । वय किसोर सब भात सुहावै, सहज सलूणौ काळौ ।—समांन बाई

उ०—२ लाग्यौ थांरै नैणा रै सलूंणौं, रग लाग्यौ महाराज ।

—मीरा

८ आसक्त, लीन ।

९ सम्पूर्ण, समस्त, पूरा ।

उ०—भद्रसाल लक्षण करि राजतउ भैटया भव दुख जाय सलूणा ।

—वि. कु.

१० पवित्र ।

उ०—सोवन वरणइ रे दीपइ देहड़ी सुमनस सेवित पाय सलूणा ।

—वि. कु.

रू. भे.—सलुणौ, सलूंणउ, सलूणड़ौ, सलूनौ, सलोणौ, सलोनौ ।

सलूधणौ, सलूधबौ—क्रि. अ.—समझना ।

उ०—बाबा सिख मिलै बाथा सू, थळ जाता स हरख थुवौ । सिख बातां सूं नहीं सलूधा, हाथां सूं परमोद हुवौ ।—बाकीदास वीठू

सलूधणहार, हारौ (हारी), सलूधणियौ—वि० ।

सलूधिश्रोड़ौ, सलूधियोड़ौ, सलूध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सलूधीजणौ, सलूधीजबौ—भाव वा० ।

सलुधियोड़ौ—भू. का. कृ.—समभा हुआ ।

(स्त्री. सलुधियोडी)

सलूधौ—वि.—समभवान, ज्ञानी ।

उ०—लागा चित सू कोई साध सलूधा ।—कैसोदास गाडण

सलूनौ—देखो 'सलूणौ' (रू. भे.)

सलूभौ—वि.—लालायित, इच्छुक ।

उ०—खागीबंध खळ गयंद खुराकी, नाकी नह मेल्ही नहराळ । सीह लड़ाकी लड़ण सलूभौ, डाकी व्है ऊभौ डाढाळ ।

—महादांन मेहडू

रू. भे.—सरूभौ ।

सलूर—सं. पु. [सं. सालूर] मेढक ।

उ०—जलासय नाद सलूरन जोर, मही पर गावत नाचत मोर ।

—हिंगलाजदांन

सलेक—स. पु. [सं.] एक आदित्य ।

सलेदार—देखो 'सिलहदार' (रू. भे.)

उ०—खान खोजा मलिक मीरूंबरा मलांणा सहणा सलेदार तेहि करी सेवायमांन ।—व. स.

सलेमकोट—देखो 'सलीमकोट' (रू. भे.)

सलेस—सं. पु. [सं. श्लेष] १ साहित्य का शब्दालकार जिसमे ऐसे शब्दों की रचना होती है जिनके अर्थ एक से अधिक होते हैं ।

२ मिलन, आलिंगन ।

सलेसमा—स. पु. [स. श्लेष्मा] शरीर का कफ नामक विकार जो शरीर की तीन धातुओं मे से एक माना गया है ।

सलेसी—सं. स्त्री.—एक प्रकार की घास ।

सलै'—१ देखो 'सिलह' (रू. भे.)

उ०—तिण काज आज बाहर तिकां, साजै घासाहर सलै' । गैमरां खुलै झडा गयण, घोड़ा पर पाखर घलै ।—मे. म.

२ देखो 'सुलह' (रू. भे.)

उ०—**सलै**' हुई सुख ऊपनी, भागी दळा दवाळि। सीमा तीमा गढ मुलक, सगळै लिया संभाळि।—गु. रू. बं.

सलोक—देखो 'स्लोक' (रू भे.) (अ. मा.)

सलोकता-स. स्त्री [स.] पाच प्रकार के मोक्षो में से एक।

सलोकी-वि.—श्लोक युक्त, श्लोक सम्बन्धी।

उ०—खत गीता तै सरलोक खात, भागवत **सलोकी** चतुर भात।
—वि. स.

सलोचौ-वि.—१ कोमल, लचीला।

२ लोचदार।

उ०—फळ भांत छीरै बाग लीधां भाग नाळा भड़ै, धुरै धड़ै कछी रै ऊपना खेवै धूप। मंडै रान लागां पाव बैबै बुरछी रै माथै, **सलोचा** तळफै मागां मछी रै सरूप।—महादान मेहडू

३ सुन्दर, मनोहर।

सं. पु.—घोड़े के चारजामे का एक उपकरण।

सलोणौ, सलोनौ-सं. पु.—१ श्रावण की पूर्णिमा को होने वाला पर्व, रक्षाबंधन।

२ देखो 'सलूणौ' (रू. भे.)

उ०—इसौ पिव जाण न दीजौ है। स्यांम **सलोणां** लोयणां, मुख देख्यां जीजौ है।—मीरां

सलोतर-सं. पु. [शालिहोत्री] घोड़ों की चिकित्सा करने वाला चिकित्सक, शालिहोत्री।

सलोभौ-वि.—१ लालच करने वाला, लालची।

२ इच्छुक, लालायित, इच्छावाला।

उ०—१ लहै जोत सोभा भड़ां मैं **सलोभा**, सदा खेत प्रांमै गैहल्लौत सोभा। सबै मत्री व्यास प्रोहित साथै; हकारै कवी वाहता खाग हाथै।—रा. रू.

उ०—२ लड़ खाटण रण विरुद **सलोभा**, सोभावत आया दळ सोभा। 'दलौ' भलौ रिण वियौ 'दयालौ', बाधै रिण 'रैणायर' कालौ।—रा. रू.

३ सरल, सुलभ।

उ०—नाम सुतीरथ नांम व्रत, नाम **सलोभौ** काम। एकौ अक्खर ततफळ, जप जीहा स्रीरांम।—ह. र.

सलोमधि-सं. पु. [सं.] चंद्रविज्ञ राजा का पुत्र, एक राजा।

सल्क, सल्कल-सं. पु. [सं. शल्क, शल्कलं] १ मछली का कांटा।

२ छाल।

३ भाग, हिस्सा।

सल्तनत—देखो 'सलतनत' (रू. भे.)

उ०—स्वति स्रीदिल्लीपुर सुथांन, **सल्तनत** मुगल कुळ सावधांन। दरगाह सदर दोलत दराज, ताळा बुलद इस्लाम ताज।—ऊ. का.

सल्य-स. पु. [सं. शल्यः] १ मद्रदेश का एक राजा जो माद्री का भाई व नकुल का मामा था। (महाभारत)

२ कंटीली झाड़ी।

३ शस्त्रचिकित्सा।

४ सीमा।

५ एक प्रकार की मछली विशेष।

[सं. शल्यं] ६ कांटा।

७ कील, खूंटी।

८ हड्डी, अस्थि।

९ संकट, विपत्ती।

१० पाप, जुर्म।

११ जहर, विष।

१२ छप्पय छंद का ५८ वां भेद जिसमें १३ गुरु और १२६ लघु से १३९ वर्ण या १५२ मात्राएें होती है, मतान्तर से।

१३ छप्पय छंद का ५६ वा भेद जिसमे १५ गुरु और १२२ लघु अर्थात् १३७ वर्ण या १५२ मात्राएें होती है।

१४ देखो, 'सल' (रू. भे.)

सल्यअरी-सं. पु. यौ. [सं. शल्य+अरि] १ युधिष्ठिर। (डि. को.)

२ भीम। (डि. को.)

सल्यकार-वि. [सं. शल्यकार] १ शल्य चिकित्सा का अच्छा जानकार।

२ शल्य चिकित्सा करने वाला।

सल्यकी-स. स्त्री.—वृक्ष लतादि। (सभा)

सल्यसुद्धि-सं. स्त्री.—पुरुषों की ७२ कलाओं मे से एक।

उ०—जलतरण देहकरण सल्यसुद्धि सकुनसुद्धि रसायनचवना कालवंचना।—व. स.

सल्ल-सं. पु.—१ घाव, जख्म।

२ चोट, प्रहार।

उ०—सेल घमोड़ा **सल्ल**, पड़ै मल्लां प्रति मल्लां। भल्लां भल्लां भणै, ऊगतां भडा अमल्लां।—ऊ. का.

३ फोड़े-फुन्सी या घाव आदि के ठीक होकर सूखने पर जमने वाली पपड़ी, खुरट।

उ०—सिंधु परइ सउ जोअणां, नीची खिवइ निहल्ल। उर भेदंती सज्जणा, ऊचेड़ती **सल्ल**।—ढो. मा.

४ दुर्विचार, दुष्ट विचार।

उ०—मल्लि जिनेसर तु महामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल। चिंता तणी पिण चिंता पल्ल, सगला दूर किया अरि **सल्ल**।
—ध. व. ग्रं.

५ छप्पय छद का ५६ वां भेद जिसमें १५ गुरु १२२ लघु कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएें होती है।

६ एक प्रकार का तीर।

७ पीडा, कसक, दुःख।

८ छाल।

६ मेढक।

वि.—१ क्षत-विक्षत।

उ०—मत्ता जूझ लत्थो बत्थां धारा धीम गोम मच्चै, धीर बाज खच्चै बौम नच्चै रुद्र धाड़। धाय सल्लां हौदा व्है छडाळा हूत वीर घूमैं, रायसल्ला रोदा व्है हमल्ला हल्ला राड़।

—हुकमीचंद खिडियौ

२ देखो 'सल' (रू. भे.)

उ०—१ नमो मुर-मेघ मरद्दण मल्ल, कसासुर काळ सखासुर सल्ल।—ह. र.

उ०—२ ढोलइ चलता परिठव्यउ, आगणि मोजा सल्ल। ढोलउ गयउ न वाहुड़इ, सुया मनावण चल्ल।—ढो. मा.

उ०—३ सुदतारां भावै सदा, सुदतारा री गल्ल। अदतारा भावै नहीं, सुणिया व्है उर सल्ल।—बा. दा.

उ०—४ दुद सुणै मगरै दिसा, सैंद तणौ अत सल्ल। नूरमली जोधाण सूं, चढियौ भीड कगल्ल।—रा. रू.

सल्लकी-स. पु. [स.] एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

सल्लणौ, सल्लबौ-क्रि. अ.—१ क्षत-विक्षत होना।

२ देखो 'सल्लळणौ, सल्लळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कुंभडिया कळिअळ कियउ, सरवर पइलइ तीर। निस भर सज्जण सल्लिया, नयणे वूहा नीर।—ढो. मा.

उ०—२ दुरजणसाल नाम ही, ज्या दुरजन कूं सल्लै। भाटी वीर अखाडै मैं, मुराडै सै भल्लै।—रा. रू.

सल्लणहार, हारौ (हारी), सल्लणियौ—वि०।

सल्लिओड़ौ, सल्लियोड़ौ, सल्ल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सल्लीजणौ, सल्लीजबौ—भाव वा०।

सल्लळणौ, सल्लळबौ-क्रि. अ.—१ सालना, खटकना, दर्द होना, कसकना।

२ निकलना।

उ०—हुई दौड हेमरां नरा ऊधरा करारां, सेख ज्वाळ सल्लळी कना सिव चक्ख विकारा।—रा. रू.

३ लूटना, उजाडना।

उ०—सहस ग्राम सल्लळै, जळै परजळै प्रलै जिम। धूम व्योम धूधळौ, तरणि भ्रम तोम सोम तिम।—रा. रू.

४ चलना, प्रस्थान करना।

उ०—१ आग्या पाय 'अजीत' री, लग्गा सूर धियागि। सिरि डेरा दळ सल्लळै जळै प्रळै किरि आगि।—रा. रू.

उ०—२ मेडतिया महाराज दळ, किया मुदै करतार। दुंद अमदी सल्लळै, ज्यां हूदी तरवार।—रा. रू.

५ फैलना, व्याप्त होना।

उ०—वग्गा भड मेवाड रा, सीसोद्या ग्रह सार। आठूं दिस कळ सल्लळी, चळाचळी ससार।—रा. रू.

६ छाना, मडराना।

उ०—गुडै गयद भल्ल ए, पहाड जाण चल्ल ऐं। हसत्त जूथ हीडळै क मेघ माळ सल्लळै।—गु. रू. ब.

सल्लळणहार, हारौ (हारी), सल्लळणियौ—वि०।

सल्लळिओड़ौ, सल्लळियोड़ौ, सल्लळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सल्लळीजणौ, सल्लळीजबौ—भाव वा०।

सल्लणौ, सल्लबौ, सल्हिणौ, सल्हिबौ—रू० भे०।

सल्लय-स. पु.—वृक्ष विशेष। (सभा)

सल्लळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ साला हुआ, खटका हुआ, दर्द हुवा हुआ, कसका हुआ. २ प्रवत हुवा हुआ, निकला हुआ. ३ लूटा हुआ उजाडा हुआ. ४ चला हुआ, प्रस्थान किया हुआ ५ फैला हुआ, व्याप्त हुवा हुआ. ६ छाया हुआ, मडराया हुआ।

(स्त्री सल्लळियोडी)

सल्ला'—देखो 'सलाह' (रू. भे.)

उ०—सल्ला स्याम जाया नै, दीनी बलराम। कासली खडेजो भूमि, काकड पै गाम।—शि. व.

सल्लियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ क्षत-विक्षत हुवा हुआ।

२ देखो 'सल्लळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री सल्लळियोडी)

सल्लीचौ-सं. पु.—सैनिक, घुडसवार।

उ०—१८७३ वज्रपात जेम पोढियौ गैमरा पाच, सल्लीचौ हजार पोढै हेमरा समाथ। सतारा उमीरां सात हजार पोढाय सत्रां, 'भाराथ' रौ बीरभोम पोढियौ भाराथ।—हुकमीचद खिडियौ

रू. भे.—सलीचौ।

सल्लील—देखो 'सलिल' (रू. भे.)

उ०—खळक्कै सदा नीझरा नीर खोळा, छळै कुंड अल्लील सल्लील छोळा।—मे म.

सल्लै'—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

सल्लेहणा—देखो 'सलेखणा' (रू. भे.)

सल्व-सं. पु. [सं. शल्वः] शाल्व देश का नाम।

सल्हिणौ, सल्हिबौ—देखो 'सल्लळणौ, सल्लळबौ' (रू. भे.)

उ०—कूंझडिया कुरळाइया, ओलइ बइसि करीर। सारहली जिउ सल्हिया, सज्जण मझ सरीर।—ढो. मा.

सवं—देखो 'स्वय' (रू. भे)

सवंकति-वि.—वक्रतायुक्त, टेढो।

उ०—अतिकध सवंकति याल अंग, सिव त्रिपुर मृतकि धनु व्याळ संग।—रा. रू.

सव-स. पु. [स. सव] १ धन, द्रव्य। (अ. मा; ह. ना. मा)

[स शव] २ लाश, मृतदेह।

उ०—आप अत री समै पति रा दरसण करण नै गई है तठै पति रा सव ऊपरै संवळी नै बैठी देख कहै है।—वी. स. टी.

[सं. शवः] ३ कफन ।
[स. शत्] ४ क्रमशः निन्नानवे के बाद आने वाली सख्या, सौ ।
उ०—१ सु एकै समचै ४०० बदूक ४ सव ही कमाण गोळी १ जणां माह नीसरी ।—राजा नरसिंघ री बात
उ०—२ तद राजा रूपिया पाच सव खरच—रै पगा उवै रै हाथा मेल्हिया । कह्यौ खरच सखरौ करज्यौ ।
—राजा भोज अर खापरे चोर री बात
[सं. मव] ५ फूल का शहद ।
[स. सव] ६ यज्ञ, हवन । (अ. मा; डि. को.)
७ चन्द्रमा, चाँद ।
८ जल, पानी ।
९ सूर्य, सूरज ।
१० नैवेद्य, भेट ।
११ सन्तान, औलाद ।
वि. [स. शत] १ सौ, शत ।
उ०—सुहिणा हू तइ दाहवी, तौ नइ दहियउ अगिग । सव जोयण साजण वसइ, सूती थी गळि लगि ।—ढो. मा.
२ निर्मल, स्वच्छ ।
उ०—आवी सव रत आमळी, त्रिया करइ सिणगार । जिका हियान फाटही, दूर गया भरतार ।—ढो. मा.
३ देखो 'सरव' (रू. भे.)
उ०—१.........केइ गोतहरि तडफडइ, केइ लोहडै खडइ, केइ दाति अगुठि लेइ अलगइ, केइ स्कधि कोठार घाती उलगइ कि बहुना जेण्णि सीमाडा सवं वसि कीधा, गढ सवै ढालिया रिपु सवै निरद्धाटिया.........।—व स.
उ०—२ वाहन बिसी आपणि, साचरि सव आकास । इंद्र केहि : ठाला पडि, अप्सरा करसि हास ।—नळाख्यान
उ०—३ तद सौदागर तौ उवै सवै ही सोने रीईटा ले वळै क्यौ ले अर रसाल लै नै ठकुरै रै बेटै रै घरै गयौ ।
— ठकुरै साह री बात
उ०—४ सेवंति नवं प्रति नवा सर्वसुख, जग चा मिसि वासी जगति । रुखमिणि रमण तणा जु सरद रितु, भुगति रासि निसि दिन भगति ।—वेलि.
रू. भे.—सवि ।

सवइवार, सवईवार–क्रि. वि.—सदैव, सर्वदा, हमेशा । (उ. र.)

सवकरण–स. पु.—शिवकरण नाम वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

सवक्क—टेढी, वक्र ।
उ०—वध वीर किलक्क हक्कोहक्कं, धूप सवक्क धमचक्क वण वार असक बाधा रंक, रूक भटक्कं रह चक्क ।—रा रू.

सवचक–सं. पु. [सं. सूचिक'] दरजी । (डि को.)

सवज—देखो 'सावक' (रू. भे.)

सवण—१ देखो 'सुगन' (रू. भे.)
उ०—१ आप असवार २०० सूं चढ खड़िया । बीच नाहरां ४ चार रौ सवण हुवौ ।—नैणसी
उ०—२ ताहरा पाबूजी कह्यौ—सवण किसा लेस्या ।—नैणसी
उ०—३ तद मारग मैं जावता नूं सवण हुवा ।—नैणसी
२ देखो 'स्रवण' (रू. भे.)

सवणी—देखो 'सुगनी' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरा सवणियां कह्यौ—जु था आ बुरी कीधी, प्रोळ खणी ।—नैणसी
उ०—२ तिसैं जेसलमेर रौ धणी भाटी राव लाखणसी एक दिन गोखै बेठौ थौ । तिसैं सवणी बोलियौ ।
— वीरमदै सोनगरा री बात
उ०—३ तरै नीबै सवणी नू पूछियौ तरै सवणी कह्यौ—औ सवण यूं कहै छै ।—नैणसी

सवणीगर—देखो 'सबनीगर' (रू. भे.)
उ०—धोबी सवणीगर न्यारारे नाई नीलगर पीनारा ।—जयवांणी

सवणौ, सवबौ–क्रि. स.—जन्म देना, उत्पन्न करना ।

सवती–सं. स्त्री.—माता, जननी ।
रू. भे.—सबती ।

सवत्स–वि.—बच्चे वाली, जिसके साथ बच्चा हो ।
उ०—जिमणी भइरव कलकलइ, डाबी दुरगा होइ । गौ सवत्स साहमी मिलइ, सुकवि जाती सोइ ।—मा. का प्र.

सवद—देखो 'सबद' (रू. भे.)
उ०—ग्यान सवद सति अरथ विचारै, मावस मन का मेल उतारै । सुरति संवाहि वसै निरदावै, साच न झाड़ै झूठ न भावै ।
— ह. पु. वा.

सवन–स. पु [सं] १ स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत व बर्हिष्मती के एक पुत्र का नाम ।
२ भृगु के सात पुत्रो में से एक ।
३ वशिष्ठ ऋषि के एक पुत्र का नाम ।
४ अग्निदेव का नाम ।
५ रोहित मनवन्तर के सप्तर्षियो में से एक ।
६ सूर्य, सूरज ।
७ दक्ष सावर्णि मनवन्तर के सप्तर्षियों मे से एक ।

सवपुरी—देखो 'सिवपुरी' (रू. भे.)

सवमंदिर–स पु यौ. [सं. शव+मदिर] १ श्मशान घाट ।
२ समाधि ।
३ देखो 'सिवमंदिर' (रू. भे.)

सवय–स. पु. [सं. सवयस्] साथी, मित्र । (अ. मा; डिं. को.)
वि.—समान उम्र का ।

सवयती–स. स्त्री. [स. सवित्री] माता, जननी । (अ. मा.)

सवयस, सवयस्क, सवयस्य-सं. पु. [सं. सवयस्] १ सखा, मित्र । (अ. मा.)
२ सहयोगी ।
वि.—एक ही उम्र का, हमउम्र ।
सवयांन सं. पु. [सं. शवयान] शव ले जाने वाली अरथी, टिकटी ।
सवर-सं. पु. [सं.] १ दानवीर राजा शिवि ।
२ पड़िहार वंश की एक शाखा ।
३ धन, दौलत ।
[सं. सवर:] ४ शिव, महादेव ।
५ जल, पानी ।
६ देखो 'सबर' (रू. भे.) (डिं. को.)
सवरण-वि. [सं. सवर्ण] १ समान वर्ण या जाति का ।
२ समान रंग का ।
३ समान रूप का ।
४ देखो 'स्वरण' (रू. भे.)
सवरणा-सं. स्त्री.—१ सूर्य की पत्नी का नाम ।
२ सागर एवं वेला के संसर्ग से उत्पन्न कन्या का नाम जो 'पचेतस' की माता थी ।
३ इन्द्रिय योगो आदि की अशुभ प्रवृत्तियो से आते हुए कर्मों को रोकने की क्रिया ।
उ०—त्रूटी नाड़ि न को काज सरणा, करि सकइ तउ करि पहिली **सवरणा** । मरण तणा मत आणे डरणा, ए जायइ देखि लघु वृद्ध तरणा ।—स. कु.
सवराणौ, सवराबौ—देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू भे)
सवराणहार, हारौ (हारी), सवराणियौ—वि० ।
सवरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सवराईजणौ, सवराईजबौ—कर्म वा० ।
सवरायोड़ौ—देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सवरायोडी)
सवरी-सं. पु. [सं. सौरि] १ शनैश्चर । (अ. मा.)
२ देखो 'सबरी' (रू. भे.)
सवळ-सं. पु. [सं. श्यामल] अंधेरा, अन्धकार । (अ. मा.)
वि.—१ सबल, जबरदस्त, जोरदार ।
२ भयंकर ।
उ०—सुरताण प्रिथीराज अमरौ ए भेळा हुसी । भाटी मडळौ ही रामसिंघ जी साथि भेळौ हुसी । ताहरां वेढ **सवळ** होसी । —द. वि.
३ बहुत, अधिक ।
सवळी—देखो 'संवळी' (रू. भे.)
उ०—बाहू चळी निरम्मळी, चख बीभळी सुरत्त । आजै करनल अक्कळी, सवळी रूप सगत ।—राव सेखौ

सवळौ-वि. (स्त्री. सवळी) १ पूरा, पूर्ण, समस्त ।
उ०—कोस तीन बीच पांणी सूं भरीजै, तद दस पनरै बांस पाणी चढै । पांणी निकळणरी ठौड़ को नही । **सवळौ** भरीजै तद हासळ इजाफा हुवै ।—नैणसी
२ देखो 'सवळौ' (रू. भे.)
सवसांन-सं. पु. [सं. शवसान:] १ यात्री, पथिक ।
२ मार्ग, रास्ता ।
[सं. शवसानं] ३ श्मशान ।
सवसाची—देखो 'सव्यसाची' (रू. भे.) (अ. मा.)
सवसाधन-सं. पु. [सं. शवसाधन] श्मशान मे किसी व्यक्ति के शव पर बैठकर अथवा उसे सामने रखकर किया जाने वाला साधन । (तान्त्रिक)
सवहेक-वि.—सौ के करीब, लगभग सौ ।
उ०—१ दस दिना रौ पीलू आसरौ छै । अर खरळा रा कुंवर असवार **सवहेक** घरां सूं चढीया ।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ घोडौ जिकौ ४०० सौरौ छै, तिकैरा माडै ४० छै । हजार रौ छै तेरौ **सवहेक** माडै छै ।—नैणसी
सवांण-सं. स्त्री.—वह गाय या भैंस जिसका दूध बिना कठिनाई के प्रत्येक व्यक्ति निकाल सके । (विलो. कुठार)
वि.—भला, सीधा ।
उ०—हाट बसै भूखौ हसै, हाथ धरै कण हाण । कमर कसै जर केवटण, नह तर सैंज **सवांण** ।—बां. दा.
सवांणी—१ देखो 'सवासणी' (रू. भे.)
२ देखो 'सवाणी' (रू. भे.)
सवा-सं. पु.—१ डिंगल का एक गीत विशेष । (क. कु. बो.)
२ सम्पूर्ण और एक के चतुर्थांश का योग ।
वि.—सम्पूर्ण और एक का चतुर्थांश ।
उ० —१ टाबर-टोळी **सवा** रूपियौ रोकड़ौ अर नाळेर लेय-लेय नै हाजर व्हिया ।—अमर चूंनड़ी
उ०—२ जेठ अर देवर मिळ नै म्हारा **सवा** पुरस लांबा केस उपाडिया तौ ई म्है नांव रौ भेद परगट नी करियौ ।—फुलवाडी
सवाई-सं. पु.—१ पुत्र, बेटा ।
उ०—'दूदा' हरौ 'विसन' वरदाई, समहर 'सूरजमाल' **सवाई** । चांपै सकतावत कळि चा'ळा, 'अभै' जतन आया आफाळा ।—रा. रू.
२ जयपुर महाराजाओ की उपाधि विशेष ।
३ किसानो को बुवाई के लिए अनाज देने की वह रीति या प्रथा जिसमें फसल पकने पर सवाया अनाज वापिस कर के रूप में देते है, ऊप ।
वि.—१ एक और चतुर्थांश के योग के समान, सवाया ।
उ०—१ अघोरी बाबा रौ अनूठौ गसकौ देख दोनूं जणा इचरज

सूं जोवण लागा। जटा डील सूं ई सवाई लांबी। जमी माथै टिरै।
—फुलवाडी

उ०—२ लियौ न देही फेरि लिखावै, सौरि दूणी सवाई। वांही कदै न भाजै भूख, दाळद की बोह मुकळाई।—ऊदौ नैण

२ बढकर, विशेष।

उ०—१ सैंकोतरि गण हूत सवाई, हुवै जिया हयभाल हवाई।
—सू. प्र.

उ०—२ नगर सेठ मन ई मन माळा फेरण लागा कै दीवाण जी मै वां सूं ई सवाई बीतै।—फुलवाडी-

उ०—३ राणी अेक कठी देखनै दूजी देखै—अेक अेक सूं सवाई। इचरज अर हरख रौ छेह नी रह्यौ।—फुलवाडी

उ०—४ जिकण नांम जैसींघ सवाई सोहियौ, निज द्विज रूप नराण देव जोतिख दियौ। पाळक प्रजा प्रथीप जनमनाई जाणियौ, अप रूपिया नव लाख करज माफी कियौ।—सिवबक्स पाल्हावत

३ अधिक, विशेष।

उ०—१ बावळिया रै सोनल वरणा पीळा फूला सूं गवाड़ी री छिब सवाई बधगी ही।—फुलवाडी

उ०—२ आसकरण धडै माभी नवन ऊधरै, सागडौ चैन बाजी सवाई। कलोडा कपूता तणा थट कैवटै, भलोडा सपूता तणा भाई।—चैनकरण सादू रौ गीत

रू. भे.—सिवाई।

सवाए—देखो 'सवायौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिण राणी चवदै सुत जाए, सो पित हूंत तेज सवाए।
—सू प्र

उ०—२ उरजनोत उरजन से अरि दळ के आए। सूरसिंघ महासूर सिंघ ते सवाए।—रा. रू.

सवाकीन—सं. पु—परद्वीप नाम। (सभा)

सवाग सुवाग—देखो 'सुहाग' (रू. भे)

सवागण, सुवागण—देखो 'सुहागण' (रू. भे.)

उ०—थे तौ ओढो नी सवागण भागण नार लायौ छूं बोरंग चूंदडी।—लो. गी.

सवागथाळ, सुवागथाळ—देखो 'सुहागथाळ' (रू. भे.)

सवागौ, सुवागौ—देखो 'सुहागौ' (रू. भे.)

उ०—१ तरै म्हानै सांमदान कह्यौ—थै बाई सूं बिगर मिळिया जावौ मती, क्यूं सवागा रौ सामान मेलियौ छै।—जैतसी री बात

उ०—२ आस्या नूं सिरपाव सवागा दै नै राजलोक विदा कीधी।
—स्यामसुंदर री बात

सवाड़, सवाड़—देखो 'सुवावड़' (रू. भे.)

सवाडौ, सवाडउ, सवाडौ—वि. [सं. सानुकूलः] १ अनुकूल। (उ. र.)

उ०—१ हुवै सवाड़ा साइया सब होय सलाह।—केसोदास गाडण

उ०—२ अस्ट-सिद्ध नव निध हुआ ग्रह नवैई सवाडा। भै भाजै-परठि, सदा साजा दीहाडा।—गु. रू. बं.

२ देखो 'सवायौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ उथापै दलौ ऊमेद थापै यळा, सवाड़ा पवाड़ा भाग साथै। आगि बूंदी धरा लियता ऊगडी, मुराड़ा भड़ै आमेर माथै।
—दुरजणसाल हाडा री गीत

उ०—२ गजा ढाल पाड़ै जुड़ै गवाड़ै सवाड़ा गीत, एकडा विभाड़ै रोदा अखाड़ै।—सारंगदेव रौ गीत

उ०—३ खतम अवसाण खेंपांण रहिया पकत, रीभियौ भाण दइवाण राजी। सिव सगत सवाडा अखाडा सेल रा, गवाड़ै प्रवाडा सुतन 'गाजी'।—नाथौ सांदू

सवाणी—सं. स्त्री—स्वर्णकारो का उपकरण विशेष।

रू. भे.—सवाणी।

सवाणौ, सवाणौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू. भे.)

उ०—बा'ला लागै हो जंवाई म्हांनै घणाई सवावै हो। अो म्हारी कवर बाई सा रा स्यांम जंवाई म्हांनै प्यारा लागो सा।—लो. गी.

सवाणहार, हारौ (हारी), सवाणियौ - वि०।

सवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

. **सवाईजणौ, सवाईजबौ**—भाव वा०।

सवाद—देखो 'स्वाद' (रू. भे.) (अ. मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ हिंसा न करणी जीव री, तजवौ अखा-वाद। अणदीधी वस्तु लेवै नही, तजणा सरस सवाद।—जयवाणी

उ०—२ मुरकी नै लाडू भला, पड़डा सखर सवाद। खाजा ताजा देखतां, हरइ क्षुधित विखवाद।—वि. कु

उ०—३ बित जिम बांटै तिम बधै, है रीत अनाद। कूवा हू जळ काढिया, सीरा बधै सवाद।—बा दा.

उ०—४ तरै राणी पण दीठी, बात माहै सवाद कौ नहीं। तरै राणी कह्यौ—भली बात म्हारै बैर वाळण सूं हीज काम हुतौ।
—नैणसी

उ०—५ कीं कहणौ प्रात ऊधरा करणां समभ्राण रूपग गुण सवाद। ओठमजग 'बळवत' आपरौ, प्रघळो जस कोतै प्रथमाद।
—महाराजा बळवन्तसिंह रौ गीत

उ०—६ बाबहियउ पिउ पिउ करइ, कोयल सुरंगइ साद। प्रिय तिण रुति आलिंग रह्यां, ताह सूं किसउ सवाद।—ढो. मा.

उ०—७ थानै दोसण नी दूं। अो सेजा रौ सवाद अेड़ौ ई व्हिया करै। म्है ई इण सारू कळपूं अर इण खातर ई थारा पग पाछा पाछा पड़ै।—फुलवाडी

उ०—८ कलग परज कन्हड़ा, सूरा सवाद सुगघड़ां। निवास सात नाळिय, त्रिग्राम मूळ ताळियं।—रा. रू.

उ०—९ काम कै घुघर जैसै जंत्र कै तार। पिनाकं का परवेज स्त्री मडळूका का सवाद। राग की बरखा अलगोजूं की नाद।
—सू. प्र.

सवादक-स. पु. [स. स्वादक] १ दूध। (ह. ना. मा)
२ अमृत। (ह. ना. मा.)
वि.—१ वह जो स्वाद लेता हो।
२ स्वादपूर्ण।
रू. भे.—स्वादक।

सवादी—देखो स्वादो' (रू. भे.)
उ०—१ सुणी कीरती छाकवाळै सवादी, बिना नारि हाले नथी कील वादि।—व भा.
उ०—२ मस्त महीनौ आवियौ रे जला, अब तौ खबर म्हारी लेह। तौ बिन घडिय न आवडे रे, छेला जीव उठै इत देह। जलौ म्हारी जोड रौ सेजा रौ सवादी रे।—लो. गी.
उ०—३ पांचू भोजन जूजवा चाहै, पाच पांच सवादी। निळजी नारी कह्यौ न मानै, अवरति आप मुरादी।—वील्होजी

सवादौ—देखो 'स्वाद' (रू भे.)
उ०—विढता घणी लगाई वेळा, समहर सूर सवादा। सुरभीया साद करै सांगावत, रथी आवौ रायजादा।
—जैसिंघ नरूका री गीत

सवाब—देखो 'सबाब' (रू भे)
उ०—संसार मैं आवणौ जावणौ री बारणौ पडचौ छै सही सवाब हज री उण सूं मोल लै लेवौ।—नी. प्र.

सवामोतीदाम-सं पु.—एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में पाच जगण होते है। (ल. पि.)

सवाय—१ देखो 'सवायौ' (रू. भे.)
उ०—१ दळ मारू मेवाड़ दळ, उवाळा सेस सवाय। खबर तहव्वर खान नूं दी हलकारै जाय।—रा. रू.
उ०—२ म्हारी मोहरां गी, म्हारौ मोबी बेटौ गियौ अर म्हैं भूठी बाजी जकौ सवाय मैं।—फुलवाड़ी
उ०—३ बस्ती अर काकड़ मैं वौ आपरै हाथा हजारूं रूंखडा लगाय दिया। थांणा बणाय वगत माथै सगळा रूंखा नै पाणी पावणौ मामूली बात नी ही। रूंख रूख री जाब्तौ अर रूखाळी सवाय मैं।—फुलवाडी
२ देखो 'सिवाय' (रू भे.)

सवायक-स. पु.—सखा, मित्र। (अ. मा.)
वि.—अधिक, बढकर।
उ०—वियौ सत्रघण सुजस सवायक, दीरघवाह वडौ वरदायक।
—र. रू.

सवायोड़ौ—देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सवायोडी)

सवायौ-वि.—१ अधिक, विशेष।
उ०—१ सखी री अब मिगसर महीनौ आयौ, सबही कौ नेह सवायौ।—ध. व. ग्र.
उ०—२ मर्भै अचड़ां दळ सवायौ इण विध जेमाण आयौ। सर्भै तोरण चित्र साजा, जैत आगम महाराजा।—सू. प्र
उ०—३ दोनां री आख्या तारा तारा री उजास सवायौ बधग्यौ।
—फुलवाड़ी
२ एक और चतुर्थांश के योग के बराबर।
उ०—नगरी को राजा हामल लेसी, कर गयौ कूंत सवायौ। टीडी! उडज्या ए खेत परायौ।—लो. गी.
३ विशेष, बढकर।
उ०—१ वा लुगाई भिरोखा रै साम्ही मूडौ करनै ऊभी तौ राजाजी री आख्या चूंधीजगी। बीजळी सूं ई सवायौ पळकौ पडचौ। पछै राजाजी सूं उठै बैठणी नी आयौ।—फुलवाडी
उ०—२ अर उठी जान रै डेरै अर मांडा मैं खुसिया री घमरोळ माची ही। जैडी बीदणी वैडी ई बीद। दोनूं अेक दूजा सूं सवाया रूपाळा।—फुलवाडी
सं. पु.—१ सवाये का पहाडा। (गणित)
२ एक एवं चतुर्थांश का योग।
रू. भे—सवाए, सवाय।
अल्पा;—सवाडौ, सवाडो।

सवार-स. पु.—१ वह व्यक्ति जो सवारी करने मे दक्ष हो।
२ वचत।
उ०—महलां भुजाई घी मण १२ लागतौ मोहिलणी घी सै २ तथा ३ मैं भुजाई आणी। एक दिन राव नुं कह्यौ—म्हैं थाहरै इनरी सवार कीधी।—राव रिणमल री बात
३ सैनिक, घुडसवार।
उ०—१ जोय कटक त्रप जैत, सहर दैसाण सिधायौ। साथ पचीस सवार, ईस्वरी कदमा आयौ।—मे. म.
उ०—२ पडचा रण जूझि सवार पचीस। वेळा उण आभ अडचा भुज बीस।—मे. म.
४ वह जो किसी वस्तु पर बैठा हो।
[स स्वः] ५ प्रातः, सुबह।
उ०—१ सुथार रौ बेटौ सूगी दुकांनदारी रै अलावा अेक काम वळै करतौ कै सवार सिझ्या दुकांन रौ सगळौ फूस वाईदौ भेळौ करनै मूणा मैं घाल माथै खाण देय देतौ।—फुलवाडी
उ०—२ सवार सिझ्यां उणरी आरती करै।—फुलवाडी
उ०—३ बीजै दिन बेपोहर तांइ वेढ हुई। तिण दिन सवार रा बाजिया थासु दिन घडी ४ रह्यौ तोही पाछा न वळे।—नैणसी
उ०—४ सवार हुवौ तरै रावळ आपरी साथ हलकनै तूट पडियौ।
—नैणसी
६ डिंगल का एक गीत (छद) जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते है।
७ हेगा, पटेला। (मि. चावर)

सवारणौ, सवारबौ—देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)

उ०—चुण्या सवारघा ढह पडै, ढहिया सवारै।—केसोदास गाडण

सवारणहार हारौ (हारी), **सवारणियौ** —वि०।

सवारिग्रोड़ौ, सवारियोड़ौ, सवारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

सवारीजणौ, सवारीजबौ—कर्म वा०।

सवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे.)

उ०—१ लाज बिहूणा लोकए, नीच निगुण निसनेह। आप सवारथ साधिनै, निस्चय दीधौ छेह।—वि. कु.

उ०—२ परमारथ कौ सब किया, आप सवारथ मांहि। परमेस्वर परमारथी, कै साधू कलि माहि।—दादूवाणी

सवारथी—देखो 'स्वारथी' (रू. भे)

उ०—राता विखै विकार सूं, आप सवारथी पर हुती। 'वील्ह' कहै एक वीनती, बिसन टाळि वेदाती।—वील्होजी

सवारियोड़ौ—देखो 'संवारियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सवारियोडी)

सवारी-सं. स्त्री.—१ सवार होने का साधन या पशु।

२ उक्त साधन पर सवार होने वाला व्यक्ति।

३ सवार होने की अवस्था या भाव।

४ यात्री, मुसाफिर।

५ ऐसा जुलूस जिसमें प्रतिष्ठित व्यक्ति कोई धर्मग्रन्थ या देवता की मूर्ति किसी यान पर कही ले जाई जाती हो।

क्रि. प्र.—आवणी, करणी, काढणी, निकळणी, होणी।

५ कुश्ती में विपक्षी को गिरा कर उसकी पीठ पर बैठने की क्रिया या दांव।

६ मैथुन के लिए स्त्री पर चढना। (बाजारू)

७ देखो 'सवारै' (रू. भे.)

उ०—च्यार घड़ी कै तडकै मैं उठी ग्रं, पीस्यौ धडी दोय चून। सासड़ आय विसराइयौ, बहुवड़! ग्रौ काई पीस्यौ चून। ऊठ सवारी दळियौ दळै, सासू सूधली लडै, फोग ग्रालड़ौ बळै।

—लो. गी.

सवारै, सवारै-क्रि. वि. [सं. श्वः] १ आज के बाद आने वाला दिन।

उ०—१ तितरै सहसा रै खबर आई कह्यौ—सवारै दिन ऊगता पेहली वीरमदे था ऊपर आवै छै।—राव मालदे री बात

उ०—२ तद खींवसी जी कह्यौ—जो सवारै आयौ, था मोनै बोलायौ, तो बात साची छै। नही तौ थाहरा लुगाया रा विरत छै।—कुंवरसी साखला री वारता

२ सवेरे, प्रातः।

रू. भे.—सवारी, सवेरै।

सवारौ, सवारौ—देखो सवेरौ' (रू. भे.)

उ०—१ भयौ हौ सवारौ बीसलराय, भोज कुंवर हइ चित्त लगाय।—बी. दे.

उ०—२ दध पाजा टळी कना छिळियौ दळ, ताजा भड़ साजा है तत। राजा आज सवारा रुडिया, बाजा कै ऊपर 'जसवंत'।

—रुघौ मुहतौ

सवाल-सं. पु. [अ.] १ वह जो कुछ पूछा जाय, प्रश्न।

उ०—१ ग्रेडा नाढ सवाल पूछणियां नै पाछा इण भांत कई सवाल करू तौ वै जबाब दे सकै काई।—फुलवाड़ी

उ०—२ नाई वळै सवाल करचौ—तौ बाप जी, आप रात रा इत्ता सस्तर पाती सजाय सिध पधारता।—फुलवाडी

उ०—३ कवर ही जकी बात बताय दी। पण वौ तपसी तौ खोद खोदनै सवालां माथै सवाल पूछण लागौ कै राजा इण रांणी सू कद परणीजियौ, कैडी है।—फुलवाड़ी

२ पूछने की क्रिया।

३ दरखास्त, माग।

४ निवेदन, प्रार्थना।

५ हल करने के लिए दिया गया गणितीय प्रश्न।

रू. भे—सुग्राल, स्वाल।

सवाळक, सवालख, सवाळख-सं. पु. [सं. सपादलक्ष] १ एक प्रदेश का नाम।

वि. वि.—प्राचीन समय में वह प्रदेश जो चौहान वशी क्षत्रियों के अधिकार मे था। इसके अन्तर्गत नागौर का प्रदेश, जयपुर का शेखावटी से लगाकर रणथम्भोर से कुछ दक्षिण तक का प्रदेश जिसमे कोटा विभाग का उत्तरी भाग भी है, मेवाड़ का मांडलगढ से लगाकर सारा पूर्वी हिस्सा, बूदी जिले का पश्चिमी अंश किशनगढ का राज्य तथा अजमेर का सारा प्रदेश था। आधुनिक समय मे प्रायः नागौर प्रदेश को ही सवाळख कहते है।

२ नागौर प्रदेश।

उ०—१ लड़वा चाव कमधजा लागो, भूप सवाळख चौडै भागो।

—रा. रू.

उ०—२ अति हित बोलायौ 'अभौ', तुरत अनुज 'बखतेस'। कमधां पति आदर कियौ, दियौ सवाळख देस।—रा. रू.

२ सवालाख की सख्या।

उ०—अपणी खाटी संपति जगत कू खुलावै, लख लहण सवालख विद्रवण का विरद बुलावै।—सू. प्र.

रू. भे.—सवालाख, सुवाळख, स्वाळक।

सवाळख-पट्टी-सं. स्त्री [स. सपादलक्षपाटकः] प्राचीन काल का प्रसिद्ध चौहान राज्य।

२ अर्वाचीन नागौर प्रदेश का नाम।

रू. भे.—सुवाळखपट्टी, स्वाळकपट्टी, स्वाळखपट्टी।

सवाल-जबाब, सवाल-जवाब-सं. पु. [अ.] विवाद, बहस, तर्क-वितर्क।

सवालाख—देखो 'सवालख' (रू. भे.)

उ०—म्हारी सवालाख री लूब गम गई ईंढांणी। इण ईंढांणी रै

कारणै म्हारो जेठ कूटै पेट, गम गई ईढांणी । —लो. गी.

सवावड़—देखो 'सुवावड' (रू. भे.)

उ०—सवावड़ तणी झूठी सरस, कूड़ी आळ न कीजियै । कर जोड़ अरज थासू करा, लेखा बिना न लीजियै ।—रमण प्रकाश

सवास—वि —१ सिर से पाव तक, सिरोपाव । (वस्त्र)

उ०—सौ हजार द्रब थेलियां, मोती कडा सवास । गाम सवायौ सासणी, पायौ गोरखदास ।—रा. रू.

२ देखो 'सुवास' (रू. भे.)

उ०—सुगध गवसार एणसार मेघसार ए । सवास अबरै लुबान डबरै निसार ए ।—रा. रू.

सवासक—सं. पु.—एक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे चार लघु और एक भगण सहित कुल सात वर्ण होते है । (र. ज. प्र.)

सवासण, सवासन—स. पु. [सं. शवासन] योग के चौरासी आसनों में से एक आसन जिसमे दोनों हाथो को सीधे पावो से सटाकर सीधे आकाश की तरफ मुह करके सोना होता है । इसका दूसरा नाम मृतासन भी है । इससे श्रम दूर होकर विश्राति प्राप्त होती है ।

सवासणी—सं. स्त्री. [सं सुवासनी, स्व+वासिनी] १ अपने पिता के घर रहने वाली विवाहिता या अविवाता स्त्री ।

उ०—जठै वडा नै बडाई देसी दूणी सौ मान सवासण्यां । जठै कुळ बहुवा नै आदर देसी, सासू नणद गुण मानसी ।—लो. गी.

२ वह अविवाहित लड़की जिसकी उम्र १०-११ वर्ष से कम हो ।

वि वि.—राजस्थान मे ये अत्यन्त पवित्र एव आदरणीय मानी जाती हैं तथा कई मागलिक कार्यो पर इनकी उपस्थिति शुभ एव मगलदायक समझी जाती है ।

उ०—१ आरती होवै । आरती री मोहर सवासणी नूं दीजै । पछै सगळा माणसां नुं पगा लगावे ।—नैणसी

उ०—२ पछै सीनागणेचीयांजी रै पाय लागै, आरती री मोर १ अेक सवासणी नै दीजै ।—नैणसी

३ पुत्री, बेटी ।

४ पुत्री की पुत्री, नवासी ।

५ बडे भाई की लडकी, भतीजी ।

६ बहन की लड़की, भाणजी ।

मुहा.—थूं किसी दूबळी सवासणी है=अत्यन्त दुर्बल एव निर्धन ।

रू. भे.—सव्वासणी, सवांणी, साउवांणी, सुआसणि, सुआसणी, सुआसिण, सुआसिणी, सुवासणी, सुवासिणी, स्वासणी ।

सवासणौ—सं. पु. (स्त्री. सवासणी) बहन-बेटी का पति या पुत्र ।

रू. भे.—सुआसणौ ।

सवासौ—सं. पु.—गणित मे एक सौ पच्चीस की संख्या ।

उ० —नंदसाल जै गैणा बेच नाखतौ तो सौ-सवासौ रै लालच मैं दोनवां री इज्जत जावती ।—दसदोख

सवि—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—१ भाद्रवडइं सवि सर भरिया, अेक निरंतर नीर । अह निसि अेकडली डरूं, धीर न दीइ को धरि ।—मा. का. प्र.

उ०—२ सुर नर पन्नग पणि वलो, लक्ष चउरासी लोय । ब्रह्मा हरि हर कुसुम-सरि, जिणि जीत्या सवि कोय ।—मा का. प्र.

उ०—३ मत्र तत्र मणि ओखधि, देव धरम गुरु सेव । भाव बिना तैं सुवि व्रथा, भाव फलइ नित मेव ।—स. कु.

२ देखो 'सव' (४) (रू. भे.) (ह ना. मा.)

सविकल्प—स. पु.—१ किसी आलंबन की सहायता से की जाने वाली एक प्रकार की समाधि ।

२ ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान । (वेदान्त)

वि.—१ ऐच्छिक, पसंद का ।

२ संदिग्ध ।

३ वैकल्पिक ।

सविकार—वि. [सं स+विकार] विकार सहित, दोषपूर्ण ।

उ०—ऐ ससार अनित्य, आदि सविकार उचारै, काळ अंत वस करै, धीर बळवंत न धारै ।—रा. रू.

सविचार—वि.—विचारपूर्वक, विचार सहित ।

उ०—वंदन अग उपासकै, बलि ठाणाग मझार अग्यांनी । रायपसेणी मई कह्यउ, सूरीयांम सविचार अग्यांनी । —वि. कु.

सवित—देखो 'सविता' (रू. भे.)

उ०—सामत सहस सहंस किरण, तेज पुंज पौरसि प्रभित । गजसिंघ तेथ तत्तौ थयौ, जेथ थाय सीतळ सवित ।—गु. रू. बं.

सविता, सविताब, सवित्ता—स. पु. [सं. सवितृ] १ सूर्य, सूरज ।

उ०—१ विभ्रम विमोह चित्तं, सपत तुरंग तांणिय सविता । वासर विसाळ लहिय, चक-वाणं मंगळ भवण ।—गु. रू. बं.

उ०—२ वैरागवृद्धि, सुख बळ सम्रद्धि, निरभय निसान, निरधन निधान । देवादिदेव, सुर असुर सेव, राजाधिराज, सविता समाज ।

—ऊ. का.

२ बारह की सख्या । * (डिं. को.)

३ पिता । (अ. मा; ह. ना. मा.)

४ विष्णु-भगवान् ।

५ बारह आदित्यो में से एक ।

स. स्त्री.—६ पृश्नि की पत्नी का नाम ।

वि.—उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला, उत्पादक ।

सवितापुत, सवितापुतर, सवितापुत्र—स. पु. [स. सवितापुत्र] सूर्य-पुत्र शनिश्चर, यमराज एव राजा कर्ण ।

सवितासुत—स. पु. [स.] सूर्य-पुत्र शनिश्चर, यमराज, एवं राजा कर्ण ।

सवित्रि, सवित्री—सं. स्त्री [सं. सवित्री] १ मां, माता ।

उ०—ब्रह्म हत्या रा बिलसणहार आपरा पुत्र नूं केड़ै करि म्हारा तो मत मै स्वांमी री सवित्री रो ही सासन समस्त रै सीस प्रमाणीजै ।

—व. भा.

२ गौ, गाय।
सं. पु. [सं. सवितृ] ३ सूर्य, सूरज।
४ शिव, महादेव।
५ इन्द्रदेव।
६ अर्क, मदार।
सवित्रीतनय-स. पु. [सं. सवितृतनय] सूर्य-पुत्र हरिण्यपाणिका का नाम।
सवित्रीदेवरा-सं. पु. [सं. सवितृदेवरा] जिसका स्वामी सूर्य है, हस्त नक्षत्र।
सविध-वि. [स.] १ पास, समीप। (डिं. को.)
२ एक ही प्रकार का, एक ही तरह का।
सविभास-स. पु. [स.] सूर्य, सूरज।
सवियोड़ी-वि स्त्री.—जिसने बच्चे को जन्म दिया हो।
सविवार, सविवारू-क्रि. वि. [स. सर्व+वार] हर दिन, हर समय।
उ०—१ जलचर जीव वसइं जल माहि, तै नवि छूटइ धीवर पाइ। थलचर नी कुण करिसइ सार, दवि दाभइ पुण तै सविवार।
उ०—२ घाचण घोलण सहइं अपारू, अगि परि करम खिपइं सविवार। दस द्रस्टांत वयण विचारि, आवइ कि नाखउं मनुस्य मझारि।—वस्तिग
उ०—३ चरित्र भणीइ खडगह धारू, पुण्यवंत पालइं सविवारू। महाव्रत नउ न धरइं मार, बारव्रत नउ करउ अंगीकार।
—वस्तिग
सवियांण-स. पु.—सिवाने का प्रदेश जो आजकल बाडमेर जिले के अन्तर्गत है। (ऐतिहासिक)
सविसाची—देखो 'सव्यसाची' (रू. भे.)
सविस्तर, सविस्तार-क्रि. वि. [सं. सविस्तार] बिस्तारपूर्वक, विस्तार से।
उ०—समाचार सविस्तर कह्या, पिंगळराय हीय गह गह्या। छांना नितु पुहचइ परधान, रळियात थ्या चिंति परधान।—ढो. मा.
सविहुं-अव्यय. [सं. सर्वतस्] १ सब ओर से, सब तरफ से। (उ. र.)
२ सर्वत्र, चारों ओर। (उ. र.)
३ सम्पूर्णतः। (उ. र.)
सवीर—देखो 'वीर' (४७)
उ०—बाणां बाण बाजै गोळा चोसठा सवीर वकै, वाहा हरां भील भाजै छाजै पखा बोल। जठी जठी भार पड़ै मीरजां ओहटै जठी, तठी-तठी राजा आडो ओडजै सतोल।—अमरदास बारठ
सवेगौ-वि.—१ जल्दी, शीघ्र।
वि. वि.—इसका प्रयोग प्राय. शत्रु से बदला लेने के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है।
उ०—१ वेर सवेगौ वाळियौ, कमधज जेज न कीन। खेड़ खपत बळ खागरै, चादी चारण कीन।—पा. प्र.
उ०—२ चापर करी सवेगा चालो।—रामरासौ
२ तेज गति वाला, स्फूर्ती वाला।
उ०—तुरगां सवेगां नरा जोस तैंसौ, जगै नाग रूठै प्रळै आगि जैसौ।—रा. रू.
क्रि. वि.—शीघ्रता से, जल्दी से, शीघ्रतापूर्वक।
उ०—पेख इसौ अवसर पदमसिंह वर साधारै। इसा सवेगा ऊठिया मनु आसमांन उभारै।—गोरधन चारण
सवेध—देखो 'सुवेध' (रू. भे.)
उ०—रसीया रसि वेध्या रहि, भमर भमी रस लेइ। रसक सवेध न जाणता, तै नर जीवइ काई।—प्राचीन फागु-संग्रह
सवेर, सवेरं-अव्य.—प्रातः काल, सवेरे।
उ०—१ आगं देवलियै तणौ, थौ ग्रहियौ नाळेर। परणैवा जोधा-पति, मागी सीख सवेर।—रा. रू.
उ०—२ सझ आयो दर कूच सू, असपत्ती अजमेर। गज गाजै नौबत गहर, वाजै सझ सवेर।—रा. रू.
सवेरियां-क्रि. वि.—१ ठीक समय पर, समय पर।
उ०—पिसंण पुहता आय इसकूं, कीजै चित सवेरियां। काम रूप कुलछमी, पीव तोउ साध ज तेरिया।—वाजिदजी
२ प्रातः होते ही, सवेरा होते ही।
उ०—थेह पुराणा छोडि अयाणा, बाळदि लादि सवेरियां। जमकै आए पकडि चलाए, बारी पूणी तेरिया।—रैदास धतरवाळ
सवेरी-स. स्त्री. [स. स्वयवृता] वह स्त्री जो पति की जीवितावस्था मे किसी के फुसलाने या बहकाने से किसी अन्य पुरुष के साथ चली जाय।
सवेरै-क्रि. वि.—१ प्रातः काल।
२ देखो 'सवारै' (रू. भे.)
सवेरोराग-सं. पु. [सं. सवीरोराग] १ सिंधु राग।
उ०—ईख नरा नींदवां बचायौ जीव दुहु ओरां, बारंगा बीदवां घोरा बचायौ बीराण। राटणी तबल्लां सोरा रचायौ सवेरोराग, पाटणी हिंदवा गोरा मचायौ पीठांण।—दुरगादत्त बारहठ
सवेरौ-स. पु.—१ प्रातः काल, सवेरा।
उ०—१ अमल री पिंक लागी अटल, सुख लूटै वै सुलखणा। सवेरा सांझ दोनुं समै काझकझनै कुलखणां।—ऊ. का.
उ०—२ निरखण रौ मोहै चाव घणौ रौ, कब मुख देखूं तेरा। पिया मिळण कूं हुई हू उदासी, मिळवू मित सवेरा।—मीरा
२ ऊषाकाल।
रू. भे.—सवारौ, सवेर, सवेळू, सवेळौ।
सवेळू, सवेळौ-वि.—१ ठीक समय पर आने वाला।
२ देखो 'सवेरौ' (रू. भे.)
उ०—तुरग सवेळा तंडियौ, हूं जाण्यौ जळ-हेत। पुणग न छूतां परखियौ, सुणियौ बब सचेत।—रैवतसिंह भाटी

सवेव-क्रि. वि.—वेग सहित, तेजी से ।
उ०—सिव त्रिपुर समर प्रगटै **सवेव,** देवेस कि मिथ्या वासुदेव ।
—रा. व. वि.

सवै—देखो 'सब' (रू. भे.)
उ०—दुरग **सवै** आपरा कीधा, समुद्रलीग आपणी आरा फेरि ।
—व. स.

सवैइयौ, सवैयौ-सं. पु.—१ एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे इकतीस मात्राएं होती है । चरण के अन्त मे भगण होता है ।
२ डिंगल का एक गीत जिसमे दो-दो सगण के चार पद होते है तथा पाचवां पद सोलह मात्राओ का होता है । तुक पांचो पदो (चरण) मे मिलती है ।
३ एक प्रकार का पिंगल या व्रज भाषा का वर्णिक छंद विशेष ।
४ गणित मे सवाया का पहाडा ।

सवोळी-वि.—श्रेष्ठ, उत्तम ।
उ०—सोभै मुरधर वार **सवोळी** हुवौ वसत जोधपुर होळी ।
—रा. रू.

सव्य-स. पु. [सं.] १ चद्रग्रहण या सूर्यग्रहण का एक प्रकार का ग्रास ।
२ बाया ।
३ अगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि ।
[सं. सव्य] ४ बाए कधे पर रखा हुआ यज्ञोपवीत ।
५ विष्णु ।
वि.—१ बाया ।
२ दक्षिणी, दक्षिण का ।
३ उलटा, विपरीत ।

सव्यचारी-स. पु. [स.] अर्जुन का एक नाम ।

सव्यभिचार-स पु. [स. सव्यभिचार:] न्यायदर्शन के पाच प्रकार के हेत्वाभासो मे से एक ।

सव्यसाची-स. पु. [स. सव्यसाचिन्] अर्जुन का एक नाम ।
(ह. ना. मा.)
वि. वि.—दोनो हाथो से समान रूप से बाण चलाने के कारण अर्जुन का यह नाम पड़ा ।
रू. भे.—सवसाची, सविसाची ।

सव्यसिंव्य-सं. पु. [सं.] विप्रचित्ति एव सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न एक सैहिकेय राक्षस ।

सव्याज-वि. [स.] चालाक, धूर्त ।

सव्यासव्य-वि.—बांये-दाये ।

सव्येस्ट-सं. पु. [सं. सव्येष्ट] सारथी ।

सव्व—देखो 'सरव' (रू. भे.)
उ०—१ **सव्वे** भला मासड़ा, परा वइसाह न तुल्ल । जे दवि दाधा रूंखड़ा, तीह माथइ फुल्ल ।—वाग्विलास
उ०—२ अनूप भूप चुंप धारि आइ पाइ लग्गए । पहू बहूं सुकित्ति नित्त सव्व, सोभा लायक ।—ध. व. ग्र.

सव्वरिय, सव्वरी—देखो 'सरवरी' (रू. भे.)
उ०—रयणि रमन रमणि पवेसु न्हवणु नहु निमहि । जिणेसर नं दिन दोसा समय बलि न सव्वरिय विसरूह ।—ए. जै का. सं.

सव्वाल-स पु. [स शव्वाल] १ अरबी महीनो मे दसवां महीना ।
२ देखो 'सवाल' (रू. भे.)
रू. भे.—सव्वाल ।

सव्वासणी—देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

सव्वोसही, सव्वोसहीलब्धि, सव्वोसहीलब्धी-स. स्त्री. [सं. सर्व] वह शक्ति जिसके धारणकर्ता के समस्त अगोपाग ओषधि-स्वरूप होकर ससारोपयोगी हो जाते है ।
उ०—केसनखरोम सहु अग फरसै सही, रहै नही रोग **सव्वोसही** तै कही ।—वृस्त.

ससंक-स. पु.—रोग, बिमारी । (अ. मा.)
वि. [सं. सशक] १ भयकारी ।
२ भयावह, डरावना ।
३ देखो 'ससाक' (रू. भे) (ह. ना. मा.)

ससंकणौ, ससंकबौ-क्रि. अ.—शकित होना, भयभीत होना, डरना ।
ससंकणहार, हारौ (हारी), ससंकणियौ—वि० ।
ससकिओड़ौ, ससकियोड़ौ, ससंक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
ससकीजणौ, ससकीजबौ—भाव वा० ।

ससकियोड़ौ-भू. का. कृ.—शकित हुवा हुआ, भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ ।
(स्त्री. ससकियोडी)

सस, ससउ-सं. पु. [सं. शश] १ खरगोश । (डि. को)
उ०—१ **सस** सिकार तीतर सुभट, कुरजां चिड़ी कबूतरा । भार्या सु नित उठ भिड़ै, परम धरम रजपूत रा ।—ऊ. का.
उ०—२ दव तौ लागौ छै राजाजी वन मधै, हिरण **ससादिक** बलै माय । ऊला माला रौ हो पंखी देखनै, मन मांहै हरसित थाय ।—जयवांणी
उ०—३ आडै फट वट पड़ै अपारां, आगै पाछै पार न आरां । अग मूझै साभर सस माहै, सिंघ न जाय सकै बळ साहै ।
—रा. रू.
रू. भे.—ससौ, सस्सौ ।
अल्पा;—ससलौ, ससियौ, ससिलउ, सुसकल्यौ, सुसलौ, सुसल्यौ, सुसियौ ।
२ कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदो मे से एक भेद ।
३ कुशलक्षेम । (ह. ना. मा.)
४ चन्द्रकलक ।
५ लोध्र वृक्ष ।
६ गन्धरस ।

७ छः की सख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—६।
वि.—१ अनुकूल, पक्षीय, पक्ष का।
उ०—इण तरह जबाब सवाल घणा हुवा सौ सगळा मुत्सद्दिया बैठा सुणी पण सस रूख किण री न कीवी, सारा डेरां आइया।
—मारवाड़ रा अमरावा री वारता
२ छः।
३ देखो 'सस्य' (रू. भे.)
उ०—धणि-सस जणि-यण धण वलय, हणे सुहड कर हाम। चौरंग मैं चद्रहास रौ, विरध होय बदनांम।—रैंवतसिंह भाटी
४ देखो 'ससि' (रू भे.) (डिं. को)
उ०—१ जै अतरजांमी वार नमामी, स्वामी जय साधार। जोडी चिरजीव पतनी पीयं, सुज सस दीवं सार।—र. ज. प्र.
उ०—२ वर्णं डसण तेज ब्रहमाणं, आतस नेत्र वर्णं सस भाणं। सज्या तेज भुहारा सोहै, मारुत तेज स्रवण मन मोहै।
—मा वचनिका
५ देखो 'सीसौ'
उ०—रव रथ पोहर थकत होय रहियौ, नमौ नमौ चतरंग नरेस। जुगा न जाय नांम सस जडियौ, पडियौ तौ चडियौ पंडवेस।
—महारांणा वडा अडसी रौ गीत
ससइ-सं. स्त्री. [सं. श्वसिति] १ सास लेने की क्रिया। (उ. र.)
२ आह भरने की क्रिया। (उ. र.)
ससक-सं. पु. [सं. शशक] खरगोश।
ससकणौ-वि. [सं. श्वासक्रांत] (स्त्री. ससकणी) श्वास रोग से पीडित।
ससकणौ, ससकबौ-क्रि. अ. [स श्वासक्रान्त] १ तेजगति से सास लेना, हांफना।
उ०—वे तरफ भड़ वेढिग रा, जूटा हगामी जगरा। धम मसक धरणी कसक कूरम, ससक नासा सेस।—र. रू.
२ तरसना, आह भरना।
३ असह्य वेदना या पीड़ा के कारण मुंह से आह निकलना, कराहना।
उ०—१ दादू तळफै पीड़ सौ, बिरही जन तेरा। ससकै साईं कारणै, मिळ साहिब मेरा।—दादूवाणी
उ०—२ आगै आई देखै तो घोड़ा कायजै किया फिरै छै अर असवार नही। जणा जणा ससकता लाधा।—नैणसी
उ०—३ सेखौ जो खेत मे ससकै छै।—नैणसी
४ श्वास रोग के कारण तेज श्वास लेना।
५ गहरी धूप के कारण जानवरों द्वारा जल्दी-जल्दी सास लेना, हांफना।
६ विरहावस्था मे सिसकना।
७ आनन्द या रति-क्रिड़ा के समय मुंह से सास खीचना।
ससकणहार, हारौ (हारी), ससकणियौ—वि०।
ससकिग्रोड़ौ, ससकियोडौ, ससक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
ससकीजणौ, ससकीजबौ—भाव वा०।
ससक्कणौ, ससक्कबौ, सिसकणौ, सिसकबौ—रू० भे०।
ससकारौ—देखो 'सिसकारी' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—दस दस पास खवासी दासी, चंगै वदन ओढियां चीर। ससवदनी नांखै ससकारा, मीरां कहा हमारा मीर।—सुदरदास बिहू
ससक्कणौ, ससक्कबौ—देखो 'ससकणौ, ससकबौ' (रू भे.)
उ०—ससक्कै नगारबध लटक्कै नागरा सीस, आगरा अगार तोपा भटक्कै अवाज।—भीमसिंघ चूडावत रौ गीत
ससक्कियोड़ौ—देखो 'ससकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. ससक्कियोडी)
ससगांणी-स. पु. [फा. शश] चांदी का एक सिक्का जो फिरोजशाह के समय मे प्रचलित था।
ससगोत, ससगोति, ससगोती, ससगोतौ—देखो 'ससिगोति' (रू. भे.)
(अ. मा.)
उ०—गज केकाण बड़ा ससगोती, रिध सांसण बगरौ भुजराज।
—क. कु. बौ.
ससटम, ससटमौ-वि. [सं. षष्ठम] छठा।
उ०—काळ पंचमौ जान, वटै ससटमौ वखांणै। सुरौ सपत मैं थान, असट काळंजर जाणै।—गज-उद्धार
ससणौ-सं. पु. [सं. श्वासक्रात] (स्त्री. ससणी) श्वास रोग से पीडित।
उ०—हांसी बांसी सी सूकी हिय हारै, ससणी लसणी लख द्वै दसणी सारै।—ऊ. का.
ससणौ, ससबौ-क्रि. अ. [सं. श्वसिति] १ श्वास लेना। (उ. र.)
२ आह भरना। (उ. र.)
ससणहार, हारौ (हारी), ससणियौ—वि०।
ससिग्रोड़ौ, ससियोड़ौ, सस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
ससीजणौ, ससीजबौ—भाव वा०।
ससत-क्रि. वि.—१ निःसदेह, सत्य ही।
उ०—दधि विणि लियौ जाइ वणतौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससत। नासा अग्रि मुताहळ निहसति, भजति किसुक मुख भागवत।—वेलि
२ कुशल, खैरियत। (ह. नां. मा.)
ससतर—देखो 'सस्त्र' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—१ पछै रावळजी ससतर सभ्र आदमी हजार पांच सूं गांव राजोवाई राव जी स्रीलूणकरण जी रा डेरां पर आया।—द. दा.
उ०—२ थांनै माहरी दुआइती है सौ थारा ससतर भलांई वाह्यलौ अनै औ हूं एकलौ थारै सामनै आयनै खड़ौ हूं।—वी. स. टी.
ससतरपाती—देखो 'सस्तरपाती' (रू. भे.)
ससतौ—देखो 'सस्तौ (रू. भे.)
उ०—१ मारवाड मलाणी मगरै, खोखौ चोखौ मेवड़ौ। सूकौ

ससतौ देवै सदा, मुरधर खेजड़ देंवडौ।—दसदेव

उ०—२ ससती मिळै पुनसूं पडै, देव वितरण करावणा। चिर-याचित अभिमत प्रसादी, मुरधर बाळक ल्यावणा।—दसदेव

(स्त्र. ससती)

ससत्र—देखो 'सस्त्र' (रू भे.) (डिं. को; ह. ना. मा.)

उ०—१ सालुळै विदळ कदळ ससत्र, रगसेल खगे न मिटै रगत्र। —रा. रू.

उ०—२ सणगार साजि मगै ससत्र महाराज मडोवरै।—रा. रू.

उ०—३ चतुरविध वेद प्रणीत चिकित्सा, ससत्र उखध मत्र तंत्र सुवि। काया कजि उपचार करंता, हुए वेलि जपती हुवि। —वेलि.

ससत्रअतोल—स. पु.—वज्र। (अ. मा.)

ससत्रक—देखो 'सस्त्रक' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

ससत्तरपाती—देखो 'सस्तरपाती' (रू. भे)

ससदळ—स. पु.—अर्द्ध चंद्रमा।

उ०—चदवदण अगलोयणी, भीसुर ससदळ भाळ। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभ सुकमाळ।—ढो. मा.

वि. वि.—प्राय· इसकी उपमा ललाट से दी जाती है।

ससधर—स. पु. [स. शशधर] १ चँद्रमा, चांद। (डिं. को)

२ कपूर। (डिं. को.)

रू. भे.—ससहर, ससियर, ससियळ, ससिहर, ससीहर, सिसहर, सिसहरि, सस्सिहर।

ससनूर, ससनूरौ—देखो 'सनूरौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रभूना गुण प्रबल पडूर रे कहै विनय चद्र ससनूरि। —वि. कु.

उ०—२ योगि ध्यावै युक्ति सूं, भक्ति कर भरपूर। संपै तेहनै व्यक्ति गुण, सक्ति सहित ससनूर।—वि. कु.

ससनेह—वि.—स्नेह-पूर्वक, प्रेमपूर्वक।

उ०—१ तै सुख विलसै दपती, विविध परै ससनेह। मास घड़ी सम लेखवै, जिम दोगधक देह।—वि. कु.

उ०—२ हिव तास प्रसगइ जेह, तै पिण कहीयइ ससनेह। उसन्नउ दुविध प्रकार, तसु अत पणइ व्यभचार।—वि. कु.

ससनेही—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—१ ससनेही समदा परै, बसत जु हियै मझार। कुसनेही घर आंगणै, जाण समदा पार।—अग्यात

उ०—२ ससनेही सज्जण मिल्या, रयण रहै रस लाइ। चिहु पहरे चटकउ कियउ, बैरण गई बिहाइ।—अग्यात

ससपाळ—देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे.)

ससप्रिया—देखो 'ससिप्रिया' (रू. भे.) (अ. मा.)

ससबिंद, ससबिंदु—सं. पु. [सं. शशबिन्दु] १ भगवान् विष्णु।

२ यदुवशीय राजा चित्ररथ के पुत्र का नाम जिनके पास दस हजार पत्नियां व चौदह अमूल्य रत्न थे। इनकी पुत्री बिंदुमती से अयोध्यापति माधाता का विवाह हुआ था।

ससभ्रत—स. पु. [स. शशभ्रत] १ चन्द्रमा, चाँद।

२ कपूर।

ससमत्थ, ससमाथ—१ देखो 'ससिमाथ' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ क्रत करण अकरण अन्नथा करण, सगळै ही थोकै सस-मत्थ। हालिया जाइ लगाया हूंता, हरि सालै सिरि थापै हत्थ। —वेलि.

उ०—२ मिळ 'जोधा' 'ऊदा' कमध, मेड़तिया ससमाथ। 'करनोता' चापा कनै, भल कूंपा भाराथ।—रा. रू.

उ०—३ मुगल तुग चढ़ै ससमाथां, सेन हड़ब्बड एकण साथा। —रा. रू.

उ०—४ सुदर तणौ साहिबौ साथै, मांगळियौ आगळ ससमाथै। —रा. रू.

ससमाद, ससमादचक, ससमादचकर, ससमादचक्र, ससमाधचक, सस-माधचकर, ससमाधचक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू भे.)

ससमौ—वि (स्त्री. ससमी) १ कटिबद्ध, सन्नद्ध या तैयार।

उ०—१ कह्यौ—अठा आगै नही जावां। फोज सू लड़ाई करस्या ताहरां साथ अपूठौ घिरियौ। राजपूत ससमा हुआ।—नैणसी

उ०—२ सुत नाथ समाथ धुजा ससमां, करगां बळ 'ऊदळ' रूप कमा।—रा. रू.

२ सहानुभूति।

३ देखो चसमौ' (रू. भे.)

ससमौलि—सं. पु. [सं. शशिमौलि] शिव, महादेव।

ससरंग—स. पु.—डिंगल का एक गीत (छंद) जिसके प्रत्येक चरण मे चार भगण होते हैं। (क. कु बो)

ससर, ससरत, ससरित—१ देखो 'सिसिर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—अजर जरण रण असह दन जद ससर सम वडरह। लख दन समपण लहर, कहर चत अघट अथध कह।—र. ज. प्र.

२ देखो 'ससि' (रू. भे.) (अनेका.)

ससरम, ससरमा—देखो 'सुसरमा' (रू. भे.)

ससरौ—देखो 'ससुर' (रू. भे.)

ससलौ—देखो 'सस' (अल्पा; रू. भे.)

ससवापण, ससवापणौ, सुसवापणौ—सं. पु.—१ कान्ति, ओज, आभा।

उ०—धीरै-धीरै हळकी ललाई अर ससवापणौ पाछो उणियारै ऊपर आयो।—वरसगाठ

२ स्वस्थता।

३ वैभवता।

ससबिंद, ससबिंदु—स. पु. [सं. शशः+बिन्दुः] १ चन्द्रमा, चाँद।

२ विष्णु।

ससचौ, ससचौ–वि.—१ स्वस्थ, निरोग ।
२ वैभवशाली ।
ससराजा–सं पु.—चन्द्रमा, शशि । (डि. को.)
(मि. ससाक)
सससिखर—देखो 'ससिसेखर' (रू. भे.) (अ. मा.)
ससुर–सं पु.—जीव, प्राण । (अनेका.)
ससस्थली–स. स्त्री. [सं. शशः+स्थली] गंगा और यमुना के मध्य का प्रदेश ।
ससहर—१ देखो 'ससिधर' (रू. भे.)
उ०—रवि ससहर लग नाम रहावै, इंद्र सभा मझ बैठो आवै ।
—लो. गी.
२ देखो 'ससधर' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—हंस गवण कदळी सुजघ, कटि केहर सम खीण । मुख ससहर खंजन नयण, कुच श्रीफळ कंठ वीण ।—अग्यात
ससांक–सं. पु. [स. शशाक] १ चन्द्रमा ।
उ०—भय कर करत निरास चित, लालच करत प्रवेस । आसुर जीव ससांक ज्यौं, बढ घटि होत हमेस ।—ला. रा.
२ कपूर ।
रू. भे.—ससंक ।
ससांकज–स. पु. [सं. शशाकुज] चन्द्रमा का पुत्र, बुध ।
ससांकसेखर–स. पु. [सं. शशांक शेखर] शिव, महादेव ।
ससांकसुत–सं पु. [स. शशांकसुत] चन्द्रमा का पुत्र, बुध ।
ससांनीडाढी, ससांनीदाढी—देखो 'सासीदाढी' (रू. भे.)
ससांम्हौ–क्रि. वि.—सम्मुख, सामने ।
उ०—केई तो आवरा बेटा नू कहै—दारिया कपूत अजूं ससांम्हा नही आवता, इयू नही जागता गोठै गया छै ।
—प्रतापमल देवड़ा री बात
ससा–सं. स्त्री [सं. स्वसा] बहिन, भगिनि ।
उ०—रावण ससा दिग्गज रूप दडकबन रमे, निरलज सुपनखा तिण नाम गरक अनंग मैं ।—र. रू.
रू. भे.—सिस ।
ससात–सं पु.—दुग्ध, दूध । (अ. मा.)
ससाद–सं. पु. [सं. शशः+अद] १ श्येन पक्षी, बाज । (डि. को.)
२ इक्ष्वाकु के ज्येष्ठ पुत्र का नाम ।
ससि–सं. पु. [स. शशिन्] १ चन्द्रमा, चाँद ।
(अ मा; ना. मा; डि को.)
उ०—१ विरह वियाणी रेणभर, प्रीतम बिन तण खीण । वीण अलापि देख ससि, किस गुण मेल्ही वीण ।—अग्यात
उ०—२ अगमद बींदी भाळ मझ, जाय कही छबि जोन । निस अस्टम सनि रो नखत, भयो उदै ससि भोन ।
—सिवबक्स पाल्हावत
२ कपूर ।
३ टगण की छः मात्रा के दसवें भेद का नाम ।।SI। (डि. को.)
४ टगण के छः मात्रा के दूसरे भेद का नाम ।।SS (पिंगल)
५ आर्यागीति या खंधाण (स्कंध) गाहा का भेद ।
६ झरना, श्रोत । (डि. को)
७ पथी, राही । (अनेका)
८ मोती ।
९ छप्पय का ५६ वा भेद जिसमे १५ गुरु १२२ लघु से १३७ वर्ण या १५२ मात्राएं होती है । (र. ज. प्र.)
१० छप्पय छद का ५४ वा भेद जिसमें १७ गुरु और ११८ लघु अर्थात कुल १३५ वर्ण या १५२ मात्राएं होती है ।
११ एक की संख्या सूचक शब्द । * (डि को)
१२ शीतल, ठडा । * (डि. को.)
१३ यादववंशीय शुची राजा का नाम ।
१४ देखो सिसु' (रू. भे.)
उ०—बीता इम केइक वरस, अति आणंद अवधेस । ऊगमणौ रवि रूप अंग, वर्णं कुंवर ससि वेस ।—सू. प्र.
१५ देखो 'सस' (रू. भे.)
उ०—बधन देख ससि अग सूकर सोक रसंत ।—जयसेखर सूरि
रू. भे.—सस, सषी, सिसि ।
ससिकत–स. पु —देखो 'ससिकांत' (रू. भे.)
उ०—सोम सरीखौ कथ थूं, हम ससिकंत समान । गिरा लाग्या बिऊ ससि, हंस नै मूकी मांण ।—अग्यात
ससिकर–स. पु [सं. शशिकर] १ चन्द्रमा, चाँद ।
उ०—बाणक ढुळै चमरा, बस इम बाखांणजै । जगमग सूर सीस जरूर ससिकर जाणजै ।—बा दा.
२ चन्द्रमा की किरण ।
ससिकळा–स. स्त्री. [स. शशिकला] १ चन्द्रमा की कला ।
२ अयोध्यानरेश सुदर्शन की पत्नी एवं काशिराज सुबाहू की कन्या का नाम ।
३ एक प्रकार का वर्णं वृत विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है ।
ससिकांत–सं. पु. [स. शशिकात] चन्द्रकातमणि ।
रू. भे.—ससिकत ।
ससिकुळ–सं. पु. [सं. शशिकुल] चन्द्रवश ।
ससिखंड–सं. पु. [स शशिखंड] १ चन्द्रमा की किरण ।
२ शिव, महादेव ।
ससिगोत, ससिगोति, ससिगोती–सं. पु. [सं. शशिगोत्रिन्] मोती, मुक्तक । (नां. मा; ह ना. मा.)
रू. भे.—ससगोत, ससगोति, ससगोती, ससगोतौ, सिसगोत, सिसगोति, सिसगोती, सिसिगोत, सिसिगोति, सिसिगोती ।

ससिज-स. पु. [सं. शशिन्+ज'] बुधग्रह ।
ससितिथ, ससितिथि-सं. स्त्री. [स. शशितिथि] पूर्णमासी ।
ससिदेव-स. पु. [स शशिदेव] मृगशिरा नक्षत्र ।
ससिधर-स. पु [स.] १ शिव, महादेव ।
रू. भे.—ससहर, ससिहर, ससीहर, सिसहर, सिसहरि, सिस्सिहर ।
२ देखो 'ससधर' (रू. भे.)
उ०—तेजै करि जाणुं सूर ससिधर परि सीतल पूर ।—वि. कु
ससिनंदण-सं. पु. [सं. शशिनंद] बुध ।
उ०—निरखै छठै रिपु ग्रह ससिनदण, कुळ मातुळ मुख ग्ररीनि-कदण ।—रा. रू.
ससिनांम-स. पु.—यश, कीर्ति ।
उ०—विहूडियौ सिवर मगरूर वाधि । ससिनांम ग्रादि ग्रतरिख समाधि ।—सू प्र.
ससिपख-स पु. [स शशि+पक्ष] शुक्ल पक्ष ।
ससिपाळ—देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे.)
ससिपुत ससिपुतर, ससिपुत्र-स पु. [स. शशि+पुत्र] बुध ।
ससिपोसक-सं. पु. यौ. [स शशिपोषक] चन्द्रमा का पोषण करने वाला, शुक्ल पक्ष ।
ससिप्रकासी-सं. स्त्री. [सं. शशिप्रकाशी] एक प्रकार की रागिनी विशेष। (सगीत)
ससिप्रभ-सं. पु. [स. शशिप्रभ] १ जिसकी प्रभा चन्द्र के समान हो, मोती, मुक्ता ।
२ कुमुद ।
ससिप्रभा-स. स्त्री [स. शशिप्रभा] चाँदनी, ज्योत्सना ।
ससिप्रिय-सं पु. [स. शशिप्रिय] मोती ।
ससिप्रिया-स स्त्री [स शशिप्रिया] रात्रि, निशा ।
रू भे.—ससप्रिया, ससीप्रिया, सिसप्रिया ।
ससिबाम-स॰ स्त्री. [स. शशिवाम] निशा, रात्रि । (डिं. को)
रू. भे.—ससिवाम ।
ससिभाळ-स. पु [स शशि-भाळ] शिव, महादेव । (डिं. को)
ससिभूसण-सं. पु. [स. शशिभूषण] १ शिव, महादेव ।
२ चौसठ भैरवो मे से एक ।
ससिभ्रत-सं. पु. [स. शशिभ्रत] शिव महादेव ।
ससिमंडळ-सं. पु. [सं. शशिमडल] चन्द्रमा का घेरा, चन्द्रमंडल ।
ससिमण, ससिमणि, ससिमणी-स. स्त्री. [सं शशिमणि] चन्द्रकातमणि ।
ससिमत्थ, ससिमथ, ससिमाथ-स पु. [स. शशि+मस्तक] महादेव, शिव ।
उ०—ग्रंथा जतिया लखमण गीता, मुनि विहंगा तारक ससिमाथ । सतिया नाम राम सूं सीता, नरपतियां ग्रोपम रघुनाथ ।—र. रू.
रू. भे.—ससमत्थ, ससमाथ, सिसमत्थ, सिसमथ, सिसमाथ ।
ससिमादचक, ससिमादचकर, ससिमारचक्र, ससिमारचकर, ससिमार-चक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू. भे.)
ससियर, ससियळ-स. पु.—चन्द्रमा ।
उ०—पावै ससियर पीड़, नभमडळ तारा न को । सुख दुख हुवै सरीर, मोटा पुरखा मोतिया ।—रायसिंह साद्
ससियौ, ससिलउ—देखो 'सस' (ग्रल्पा; रू. भे.)
उ०—१ नही हुवै पग नागरै, हिरण न थिरता होत । ससिया रै नही सीग ज्यू, गोला रै नह गोत ।—बां. दा.
उ०—२ गज भव ससिलउ राखियउ, करुणा कीधी सार स्रेणिक नइ घरि ग्रवतरचउ, ग्रगज मेघकुमार । -स. कु.
ससिर—देखो 'सिसिर' (रू. भे.)
उ०—१ सैसव जु बालकपणौ सोई तो ससिर रिति हुई ।
—वेलि टी.
उ०—२ हमैं ससिर रितरा वणाव कीजै छै ।—रा सा. स.
ससिरस-सं पु. [स. शशिरस] ग्रम्रत ।
ससिरेखा, ससिलेखा-स स्त्री [सं. शशिरेखा, शशिलेखा] चन्द्रमा की एक कला का नाम ।
ससिवदना-सं. स्त्री.—१ एक वर्णिक वृत जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण ग्रौर एक मगण होता है ।
२ चन्द्रमा के समान मुखवाली स्त्री ।
ससिवदनी-वि. [स. शशिवदनी] चन्द्रमुखी ।
रू. भे.—सिसिवदनी, सिसुवदनी ।
ससिवांम—देखो 'ससिबाम' (रू भे)
ससिवेस-स. पु [स शिशुवयस्] बाल्यावस्था ।
उ०—१ ताप वधियौ 'ग्रभमल' तणौ, इल ससिवेस ग्रभंग । तपधर मुगलाणा तणौ, ग्राथमियौ 'ग्रवरंग' ।—सू. प्र.
उ०—२ वणि ससिवेस रमैं माफल वन वै वलहनी वेल स्रोवन ।
—सू प्र.
ससिसुत-सं. पु [सं. शशिसुत] बुध । (ग्रनेका.)
उ०—ससिसुत भवन पचमै सोहै, महा सबुध लख जगत विमोहै ।
—रा. रू.
ससिसेखर-सं. पु. [स शशिशेखर] शिव, महादेव ।
उ०—करता हरता स्री हीकारी, काळी काळयण कौमारी । ससि-सेखरा सिधेसर नारी, जग नीमण जयौ जड धारी ।—देवि
रू. भे.—सससिखर ।
ससिसोसक-स. पु [सं. शशिशोषक] चन्द्रमा को क्षीण करने वाला कृष्ण पक्ष ।
ससिहर—१ देखो 'ससधर' (रू. भे.) (ना. डिं. को)
उ०—वीण ग्रलापी देखि ससि, रयणी नाद सलीण । ससिहर ग्रग रथ मोहिया, तिण हसि मेल्ही वीण ।—ग्रग्यात
२ देखो 'ससिधर' (रू. भे.)
ससी-सं. पु.—१ एक वृत विशेष जिसके प्रत्येक चरण में दो यगण

होते है। (र. ज. प्र.)

२ एक वृत विशेष जिसके प्रत्येक चरण में एक यगण होता है।

३ देखो 'ससि' (रू. भे.) (अ मा.)

ससीकर–स स्त्री. [स. शशिकर] चन्द्रकिरण।

ससीप्रिया–देखो 'ससिप्रिया' (रू. भे.)

ससीबार, ससीवार–स. पु. [सं. शशिवार] सोमवार।

उ०—समत १६०० रा आसोज वद तीज **ससीबार**। फरसरांमजी तन त्यागियौ भेळ्या बिसन दवार।—संतवांणी

ससीयसी–स. स्त्री. [स. शशीयसी] तरस राजा की पत्नी का नाम।

ससीस–स. पु. [सं. शशीश] १ शिव, महादेव।

२ स्वामी कार्तिकेय।

ससीहर—१ देखो 'ससधर' (रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'ससिधर' (रू. भे.) (डिं. को.)

ससुर–सं. पु. [सं श्वसुर] १ पति या पत्नी का पिता।

उ०—**ससुर** नही कोइ सास, अंध सभा अप अधरी। होणहार उपहास, देखौ भीखम द्रोण रौ।—रामनाथ कवियौ

रू. भे.—ससरौ, ससुरौ, सुसरौ।

२ देखो 'सुसिर' (रू. भे.)

उ०—वाजय **ससुर** बधावा वाजै, नरपत मंगण जणां निवाजै।
—रा. रू.

ससुराळ, ससुराल—देखो 'सासरौ' (रू. भे.)

ससुरौ—देखो 'ससुर' (रू. भे.)

ससुवाद–वि.—स्वादिष्ट, मीठा।

उ०—कूप तिहा तैं निरखि नें रे, जल पूरत **ससुवाद** सजन जी।
—वि. कु.

ससूक, ससूग–वि. [स. सशूकः] तीक्ष्णता सहित, तीक्ष्ण। (उ. र.)

ससूत–वि.—अत्यधिक, बहुत अधिक।

उ०—कहि सखि साची वात मौं, भरमल रूप अनूप। देखैं मुख कै चहत सब, मौ मन हरख **ससूत**।—कुंवरसी साखला री वारता

ससूंदित–वि.—१ मारा हुआ।

२ काटा हुआ।

उ०—कव्यां घण सज्जळ छज्जळ कांन, सिरगिर कज्जळ कूट समान। **ससूंदित** साप समाक्रत सुंड, दतूसळ मूसळ रूप दुरंड।
—मे म.

ससोकित–वि.—शोकाकुल, शोकपूर्ण।

उ०—सोच महंमद साह नूं, मोच थयौ मन मद्ध। प्रात **ससोकित** ज्यूं दिपइ, राति अनंद रवद्ध।—रा. रू.

ससोभ–वि.—शोभापूर्वक, शोभासहित।

उ०—१ **ससोभ** भूखणं स्तुतं, वणै जडाव बामरा। विराजमान जांणि वीर, कार बाधि कामरा।—सू. प्र.

उ०—२ सजंत कै चिकन्न साज, सुंदरा **ससोभ** रा। करंत कै मुकेस काम, भार कार चौभरा।—सू. प्र.

रू. भे.—ससोह।

ससोभित—देखो 'सुसोभित' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

ससोलूकमुखी–सं. स्त्री. [सं. शशोलूकमुखी] कुमार कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

ससोह—देखो 'ससोभ' (रू. भे.)

उ०—वणौ राग खंभायची, लग्गी केसर बोह। व्रंदावन बैसाख पर, सोहै जान **ससोह**।—रा. रू.

ससौ–सं पु.—१ 'स' वर्ण।

२ देखो 'सस' (रू. भे.)

उ०—१ ल्योकि कै सुत जागि, सिंघ वन माही मारया। महकी करै मलार, ससै फिर स्वांन संगारया।—ह. पु. वा.

उ०—२ सुअर संबर **ससा** सीआल, फिरइं आहेडी तीहना काल।
—वस्तिग

उ०—३ घेरै सिकार मांहि **ससा** लुंकड़ी सीह रोफ स्याळ रीछ अनेक हिरण आदि देअर भेळा हुआ छै।—द. वि.

सस्कुली–सं. स्त्री. [सं. शष्कुली] १ कान का छेद।

२ पूरी, पकवान आदि।

३ कान का रोग।

सस्ट, सस्ठ, सस्ठम–वि. [सं. षष्ठ] जो क्रम में पाँचवें के बाद आता हो छठा।

उ०—पचम क्रौंच स जांणियौ, **सस्टम** सक बखाण। नांम स सप्तम दीप कौ, पुस्कर जाण प्रमांण।—गज-उद्धार

सस्त–वि. [सं. शस्त] १ प्रशसित, सराहा हुआ।

२ मंगलकारी।

३ घायल।

सं. पु. [स. शस्त] १ प्रसन्नता, खुशी।

२ शरीर।

सस्तर—देखो 'सस्त्र' (रू. भे.)

उ०—१ घर मै **सस्तर** रै नांम पर फगत एक तरवार रौ खापटौ हौ। वै चुपचाप तरवार ले'र निकळता ईंज हा कै उणा री बैंन देख लिया।—रातवासौ

उ०—२ अनैं थैं कहौ कै थू वाह कर तौ म्हारौ **सस्तर** लागा पछै दूजी वेळा पाछौ वार करण रौ विवेक थांनै होसी नहीं।
—वी. स. टी.

सस्तरपाटी, सस्तरपाती–सं. स्त्री.—१ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—जमदूत ठाकर रै बिल्कुल सामनै ऊभा हा—**सस्तरपाटी** सूं लैस-मूंडारै बुकांनी दियोडा अर हाथां मैं नागी तरवारां लियोड़ा।
—रातवासौ

२ काम करने के उपकरण, औजार।

उ०— कांम करता-करतां बी छत्र बणी। मजूरां आप रा सस्त-

रपाती सांभणा सरू किया ।—वरसगांठ

रू. भे.—ससतरपाती, ससत्तरपाती, सस्त्रपाती ।

सस्तीवाड़ौ–सं. पु.—१ सस्तापन ।

२ वह समय जब वस्तुएँ सस्ती मिलती हो ।

सस्तै–वि.—समान, तुल्य ।

उ०—१ वै तौ इणनै खेल सस्तै ई जाण्यौ । खांधै तीर कबांण लटकाय पागड़ै पग देय टप घोडा माथै बैठगा ।—फुलवाडी

उ०—२ अैडौ अेकई मोती सात पीढी री दळिद्दर बुहार दै । इणरी भखारी मैं काकरा सस्तै पड्या । साचांणी आरौ मोल नी जांण्या तौ ऐ काकरा सस्तै काकरा ई है ।—फुलवाड़ी

क्रि. वि.—लिए, तरफ से ।

ज्यू—रामौ तुळछै नै कह्यौ कै थारै सस्तै तौ खेत सूनौ इज है ।

सस्तौ–वि. [स्त्री. सस्ती] १ जो महगा न हो ।

मुहा.—सस्तौ भाडौ पोकर जात=कम पैसो मे उत्तम या अधिक काम, कम परिश्रम अधिक लाभ ।

२ जिसका भाव, मूल्य कम हो गया हो ।

मुहा.—सस्तौ छूटणौ, सस्तौ निवड़णौ=जिस काम मे अधिक व्यय और परिश्रम न हो, आसानी से छूट जाना ।

३ सहज मे प्राप्त होने वाला ।

४ साधारण, घटिया ।

मुहा.—मूगौ रोवै एक बार, सस्तौ रोवै बार बार=सस्तापन देख कर घटिया वस्तु खरीदने की अपेक्षा बढिया वस्तु अधिक पैसे देकर खरीदना अच्छा है ।

रू. भे.—ससतौ ।

सस्त्र–स. पु. [सं. शस्त्र] १ हाथ से चलाया जाने वाला हथियार, शस्त्र ।

उ०—सस्त्र बाध हरि सुमर, देह धर प्रीत अदावै । समै तेण साहस, जेण मापियौ न जावै ।—रा रू.

पर्याय.—आयुध, आवध, प्रहरण, लोह, ससत्र, हथियार ।

२ लोहा ।

३ फौलाद ।

४ शल्य-चिकित्सा ।

रू. भे.—ससतर, ससत्र, सस्तर ।

सस्त्रअज–स. पु.—तीर, बाण । (अ. मा.)

सस्त्रक–स. पु. [स. शस्त्रक] १ लोहा ।

२ इस्पात ।

रू. भे.—ससत्रक ।

सस्त्रघर–स. पु यौ. [स. शस्त्रगृह] १ जहाँ शस्त्र आदि रखे जाते है, सिलहखाना ।

२ तलवार की म्यान । (डि. को.)

सस्त्रधर, सस्त्रधारी–स. पु. यौ. [स. शस्त्रधर] १ शस्त्र धारण करने वाला, योद्धा, वीर ।

२ सिपाही ।

सस्त्रपाती—देखो 'सस्तरपाती' (रू. भे.)

सस्त्रबध—१ शस्त्रो से सुसज्जित ।

उ०—बळ दाख दुहु दिस सस्त्रबंध, किलवाण पेख वळिया कमध ।—रा. रू.

२ योद्धा, वीर ।

उ०—१ सस्त्रबध अनिबंध सगाहा, सूरा पूरा धरी सनाहो ।—रा. रू.

उ०—२ धर हरि अस हुवै धरपत्ती, सस्त्रबध सामर्थ सकत्ती ।—रा. रू.

सस्त्रभ्रत–सं. पु. [स. शस्त्रभृत] १ शस्त्र धारण करने वाला, शस्त्र-धारी ।

२ हथियारबंध ।

सस्त्रविद्या–स. स्त्री. [स. शस्त्रविद्या] शस्त्र या हथियार चलाने की विद्या ।

उ०—सस्त्रविद्या के आचारज, जळ रूप क्षत्रिया के वारज ।—रा. रू.

सस्त्रव्रति, सस्त्रव्रत्ति–सं स्त्री यौ. [सं. शस्त्र+वृत्ति] शस्त्रो पर किया जाने वाला जीवन निर्वाह, सैनिक वृत्ति ।

सं. पु.—शस्त्र चलाकर निर्वाह करने वाला, योद्धा, वीर ।

सस्त्रसाळा, सस्त्रसाला–स. स्त्री. [स शस्त्रशाला] वह स्थान जहाँ शस्त्र रखे जाते हों, शस्त्रागार ।

सस्त्रसास्तर सस्त्रसास्त्र–स पु. [सं शस्त्रशास्त्र] १ हथियार चलाने आदि के विवेचन या निरूपण का एक शास्त्र विशेष ।

२ शस्त्र चलाने की विद्या ।

सस्त्रहतचतुरदसी, सस्त्रहतचौथ–स. स्त्री. [सं. शस्त्रहत+चतुर्दशी] कार्तिक मास व आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी । इस दिन शस्त्र द्वारा मारे गये व्यक्ति का श्राद्ध किया जाता है ।

सस्त्रागार–सं. पु [सं. शस्त्रागार] १ वह स्थान जहाँ शस्त्रादि रखे जाते है, शस्त्रशाला, सिलहखाना ।

२ वह स्थान जहाँ शस्त्रादि प्रदर्शित किये जाते है ।

सस्त्राजीव–स. पु. [स. शस्त्राजीव] योद्धा, सैनिक ।

सस्त्रायस–सं. पु. [स. शस्त्रायस] शस्त्र बनाने का लोहा ।

सस्त्रालय–सं. पु [स. शस्त्रालय] वह स्थान जहाँ शस्त्रादि सुरक्षित रखे या प्रदर्शित किये जाते है ।

सस्त्री–सं. पु. [स. शस्त्री] छोटा शस्त्र ।

वि.—१ शस्त्रादि चलाने का जानकार ।

२ शस्त्रधारी ।

सस्त्रीकरण–सं. पु. [सं. शस्त्रीकरण] सुरक्षा की दृष्टि से शस्त्रादि से सुसज्जित करना या होना ।

सस्म–स. पु.—रथ । (डिं. नां. मा.)

सस्यंकी, सस्यंगी–सं. पु —लोहा । (अ. मा.)

सस्य–सं. पु. [स. सस्य] १ सद्गुण ।

२ अनाज ।

३ किसी वृक्ष का फल ।

४ शस्त्र, हथियार ।

५ नई घास, कोमल तृण ।

उ०—फागण फोगा महक, केवडा मरवा वाळी । वरसाळै बंगाळ, सस्य स्यामल हरियाळी ।—दसदेव

रू. भे.—सस ।

सस्यक–वि [सं.] १ सद्गुणी ।

२ सम्पन्न ।

[सं. सस्यक·] १ एक प्रकार का रत्न विशेष ।

२ हथियार ।

३ तलवार ।

सस्वत–अव्य. [सं. शश्वत्] १ सदैव, हमेशा ।

२ लगातार, बारम्बार ।

सस्वेदा–सं. स्त्री. [स.] वह लडकी जिसका कौमार्य हाल ही मे नष्ट किया गया हो ।

सस्स—देखो 'देखो 'स्त्रास' (रू. भे.)

उ०—गयौ कुमर तज गुमर, समर छोडै इक सस्सै । लियौ प्रांण गुण सहरि, कियौ लसकर परवस्सै ।—रा. रू.

रू. भे.—सस ।

सस्सु, सस्सू—देखो 'सासु' (रू. भे)

उ०—बाल्हा बीरा कह सस्सू बतळाती, असूपाती हा छाती भरि आती ।—ऊ. का.

सस्सो–सं. पु.—१ 'स' वर्ण ।

२ देखो 'सस' (रू. भे)

सहंकारी—देखो 'सहकारी' (रू. भे)

सहंटौ, सहंठौ—देखो ,सैंठौ' (रू. भे)

उ०—सांई सन सहटौ करौ, करहौ मूफ निसक ।—गज-उद्धार

सहंडुक–स. पु.—एक प्रकार के मास का शोरबा ।

सहंदौ—देखो 'सेंदौ' (रू. भे.)

सहंस—देखो 'सहस्र' (रू भे)

उ०—१ अकबर लक्खां ऊबरा, कीधा साथ कमध । साह सहंसा आठ सूं, नीम अथाह निमध ।—रा. रू.

उ०—२ ऊपर वीस सहंस आखाडै, पाच सहंस हू वाग उपाडै ।

—सू. प्र.

सहंसकर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—कळामेर सामंद लोपै न उगै सहंसकर, धू चळै प्रळै व्है जाय धरती । सुमरिया जेज किम थाय छै सुंदरी, जाय छै विरद कर साय जननी ।—भोपाळदान सादू

सहंसकरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे)

सहसकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

उ०—कमधजां वस मभि सहंसकिर, निडर भूप अनुमांनमौ । 'अजमल' ग्रेह जनमै 'अभौ', पह अवतार पचीसमौं ।—सू. प्र.

सहंसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

उ०—मिणधरफण कीधा चित मोहै, सहंसकिरण बारह घण मोहै ।—सू. प्र.

सहंसकार—देखो 'सस्कार' (रू. भे.)

उ०—चतुर सखी छै त्या मिळिकै विवाह रौ सहंसकार समस्त पूरण कीयौ ।—वेलि टी.

सहसपतर, सहंसपत्र, सहंसपात—देखो 'सहस्रपत्र' (रू. भे.) (डिं. को.)

सहंसफण, सहंसफुण—देखो 'सहस्रफण' (रू. भे.)

उ०—मिणधर छत्रधर अवर गेल गन, ताइधर रजधर 'सीध'तण । पूगी दळ पतसाह पेरता, फेरै कमळ न सहंसफण ।

—महाराणा प्रतापसिंह रौ गीत

सहंसबळ, सहसबळी–वि.—बलवान, पराक्रमी ।

उ०—१ त्रिय सहस ताबीन, दीध महाराज पायदळ । उभै सहंस उमराव, बंधव जत्तनेत सहसबळ ।—सू. प्र.

उ०—२ निमौ साहिब खेड नरेस, आसति मति आदेस, पर राठा हूत पेस, मेल्है मंडळी । गढ जोधांण इसौ गहन, कुअर दूसरौ करन, सूरजिमाल सुतन सहंसबळी ।—गु. रू. बं.

सहंसा—देखो 'साहसाह (रू. भे.)

सहंसादस—देखो 'दससहस' (रू. भे.)

उ०—रज रज हुवौ 'जगौ' भरियौ रज, भिळवा मुकत जाणियौ भेव । सहसादस वाळा धू सारू, दस सत करग वाधिया देव ।

—महादान मैहडू

सहंसाह—देखो 'साहसाह' (रू. भे.)

सहंसाही—देखो 'साहसाही' (रू. भे.)

सह–वि.—१ सब, समस्त ।

उ०—१ सह बोलिया सकाज मतौ करै, बिहुंवै मिसल । मेन वाछित महाराज, ऐ मोहमदीय असपती ।—सू. प्र.

उ०—२ भूपती सकल नमै डंड भरै, कुळ खट त्रीस सेव सह करै ।

—सू. प्र.

उ०—३ करै सह संक असक न कोय ।—रांमरासौ

२ पूर्वक, सहित ।

उ०—१ कवि कौ असन कराइ, हल्लु अक्खिय सह सपथ । जुद्ध मरहिं कै जाइ, कै मंडोउर निज करहिं ।—वं. भा.

उ०—२ आदर सह डेरा तिन्ह दिवाइ, प्राघुन सनमांनै मोद पाइ । बनि सुनि सता हु सगपन बिचार, करि बिजन मत्र संगत कुमार ।

—वं. भा.

३ पूर्ण, पूरा।
४ सहित, युक्त।
उ०—सौ कहियत धारहु स्रवन, सभ्यन सह नरनाह। जिहि रन प्रभुकुळ मूळ जिम, लहिय सता दिवलाह।—व. भा.
स. पु. [स. सहः] १ मार्गशीर्ष का महीना। (डि. को.)
उ०—प्रथी ग्रह पद्रह साल पंवार, बदी सह चौथ सनीसरवार।
—मे. म.
२ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम।
३ श्रीकृष्ण का एक पुत्र।
४ भाई। (ग्र. मा.)
५ धन।
उ०—अधिप रह्यौ जदि हालि अब, सुत तू म्हारै साथ। मिळि पाछौ लै मह महर, अकबर सूं सह साथ।—व. भा.
६ [फा.] शतरज के खेल में कोई मोहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पडता हो।
क्रि. प्र.—दैणी, पडणी।
७ ताकत, शक्ति।
८ गुप्त रूप से भड़काने का भाव, उत्तेजित करने की क्रिया।
क्रि. प्र.—देवणी, राखणी।
९ पतंग आदि को ढील देकर धीरे-धीरे आगे बढाने की क्रिया।
१० धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक।
११ कृष्ण व लक्ष्मणा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र का नाम।
१२ एक अग्नि जो समुद्र मे छिप गया था।
१३ उत्तम मनु के पुत्रों मे से एक।
१४ स्वायभुवमनु के पुत्रों मे से एक।
क्रि. वि.—१ साथ।
उ०—१ किंकहिसु तासु जासु अहि थाकौ कहि, नारायण निरगुण निरलेप। कहि रुखमिणि प्रदुमन अनिरुध का, सह सहचरिए नाम संपेख।—वेलि
उ०—२ हूं जेर बळै सह हालिहू, कपट बिलब न खिण करू। नरनाह टाळिजै इम नही, तोतौ दळ नड्डौ तरू।—वं. भा.
२ देखो 'साह' (रू. भे.)
रू. भे.—से, से', सै।
सहकार—सं. पु.—१ आम। (अ. मा; डि. को)
२ आम का वृक्ष।
उ०—१ जिम मधुकर नइं केतकी, जिम कोइल सहकार। मारवणी मन हरखियउ, तिम ढोलइ भरतार।—ढो. मा.
उ०—२ केळी कदब करना असोक, सहकार बकुल लाख मिटत सोक। जातीफळ जाबूं नाळ केर, वट पीपर महि व्है हरत हेर।
—मयाराम दरजी री बात
३ सहयोग।
४ गाने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।
रू. भे.—सहिकार।
सहकारी—वि. [सं. सहकारिन्] १ साथ कार्य करने वाला, सहयोगी।
२ सहायक, मददगार।
सं. पु.—मित्र, दोस्त। (ह. ना. मा.)
सहकृतव—सं. पु. [स. सहकृत्वन्] सखा, मित्र। (अ. मा; ह. ना. मा.)
सहक्रमण, सहगति—सं. पु.—सहगमन।
उ०—१ अमरलोक पूगौ अठी, संभर न्प संग्राम। कीधौ राधा सहक्रमण, नव खंडा करि नाम।—वं. भा.
उ०—२ पाय समय तजियौ प्रथित, ईस्वर न्प निज अंग। नवनंदा रुचिरा निपुण, सहगति कीधौ संग।—वं. भा.
सहगमण, सहगमन—सं. पु. [सं. सहगमन] १ साथ पलायन करने की क्रिया।
२ पति के शव के साथ पत्नी के सती होने की क्रिया, अवस्था या भाव।
उ०—कंत कहता सहगमण, कीधा रहवौ साथ। छोडौ अच्छर छेड़्ड़ौ, सो धण झालै हाथ।—वी. स.
३ संभोग, मैथुन।
उ०—ईसतणी अणहाल विजोगण सेज सुवंती, पूरब दिस री चंद्र किरण सी खीण हुवती। सहगमणं ढळंती रात पला मैं कोढ करता, आज कटै जुग मान कपोळा नीर ढळंता।—मेघ
सहगामणी, सहगामिणी—सं. स्त्री.—१ पति के साथ सती होने वाली स्त्री, सहगमन करने वाली।
२ सहचरी, साथिन।
सहगामी—सं. पु.—१ जो साथ चले, साथी।
२ अनुयायी।
सहगुरु, सहगुरू—देखो 'सदगुरु' (रू. भे)
उ०—धन नगरी नइ धन देस, जहा सहगुरु करै निवेस।
—वि. कु.
सहड़—स. पु.—१ हाथी। (ना. डिं. को.)
२ देखो 'सुभट' (रू भे.)
उ०—सहड़ां तन पोरस सालुळिया, विडगा दिस जीण लए वळिया।—पा. प्र.
सहचर—सं. पु.—१ मित्र, दोस्त। (अ. मा; ह. नां. मा.)
२ सहायता करने वाला, सहायक।
३ सेवक, नौकर।
४ सलाह देने वाला।
वि. [स्त्री. सहचरी] १ साथ-साथ चलने वाला।
२ हर समय साथ रहने वाला, साथी।
३ देखो 'सहचरी' (रू. भे.)
उ०—एम गढ निज प्रौळ आवै, गान सहचर झूल गावै। कुंभ

सनमुख निजर कीधौ, लखै छत्रपति वाद लीधौ ।—सू प्र.

सहचरी, सहच्चरी-स. स्त्री.—१ सखी, सहेली । (ग्र. मा.)

उ०—१ सहचरी चतुर सबोह, मिळ रचत उच्छब मोह । वरत करत चोक वणाव, करि कुमकुमां छिड़काव ।—सू. प्र.

उ०—२ करत कै किलोहळ, महा उछाह मगळं । सभं इसी सहच्चरी, उरवसी न ग्रच्छरी ।—सू. प्र.

२ पत्नी, भार्या ।

रू. भे.—सहचर ।

सहचार-स. पु. [सं.] १ सहचारी होने की अवस्था या भाव, साहचर्य ।

२ अनुकूल होने की अवस्था या भाव, अनुकूलता ।

सहज-स. पु. [सं.] १ भाई, भ्राता, सहोदर । (ह. नां. मा.)

२ प्रकृति, स्वभाव । (डिं को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सहज पड्यउ मुझ आकरउ जी, न गमइ भूंडी बात । परनिंदा करतां थका जी, जायइ दिन नइ रात ।—स. कु

उ०—२ साहिब दिस्ट न मुस्ट मै, रूप न रेखा नाहि । हरीया साई सहज मैं, देख पाखि दिल माहि ।—अनुभववांणी

३ फलित ज्योतिष मे, जन्म लग्न से तृतीय स्थान जिसमे भाइयो, बहनो, मित्रो आदि का विचार किया जाता है।

४ तत्व ।

५ ज्ञान ।

उ०—१ हरीया जाणौ सहज कु, सहजां सब कुछि होय । सहजां साई पाईयै, सहजां विखिया खोय ।—अनुभववाणी

उ०—२ सहजां सुधि बुधि उपनी, हीरो चडियो हाथि । हरियो मगै कौन कुं, घट मैं पाई ग्राथि ।—अनुभववांणी

उ०—३ काछ वाच निकळक, भेख की लज्या राखै । सहज सील संतोख, जांणि मुख असत न भाखै ।—सुरजनदास पूनियौ

उ०—४ सहजां ताळा खूल्ही, सहजा कूंची लाय । हरिया ग्रैसै सहज कु, सहजां विनां न पाय ।—अनुभववांणी

६ ब्रह्मतत्व ।

उ०—सहजा ताळा खूल्ही, सहजा कूंची लाय । हरीया ग्रैसै सहज कु, सहजां विना न पाय ।—अनुभववांणी

७ स्मरण, याद ।

उ०—सहजा ताळा खूल्ही, सहजां कूची लाय । हरीया ग्रैसै सहज कु, सहजां विना न पाय ।—अनुभववांणी

८ परब्रह्म, ब्रह्म ।

उ०—१ नमो साहिब नमो सहजां, नमो काळ निकदन । दास हरिया नमो दाता, नमो तम निरदंदनं ।—अनुभववाणी

उ०—२ हरिया ग्रैसा कौ मिळै, सहजां रहै समाय । बाहरि वाजा वचन बोह, चित न विलगै जाय ।—अनुभववाणी

उ०—३ अति उतिम सिवरन सहज, नाभ कंवळ असथान । रोम रोम ररंकार हुय, भाग बडै का ज्ञान ।—अनुभववांणी

९ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—१ हरीया हक पिछाणीयै, अनहक सुं क्या काम । जो कुछि सहजां देत है रिजक रोटिया राम ।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया सहज सनेहड़ो, जन कोई जांणंत । दुनियां लोकाचार मैं, वहि वहि बीच मरंत ।—अनुभववाणी

उ०—३ सहज बिना कोई सरै न काजा, राम नाम की बंधी पाजा । एक नाव तै पाहन तिरिया, एक नाव तै गज ऊबरिया ।

—अनुभववांणी

१० अनहदनाद ।

उ०—१ ममकार का पाट मुख, उर अंतर ररंकार । हरीया सहज उचारता, नाम भयै निरकार ।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया सहजां राम रटि, रसना चटपट माहि । घट छूटंतै प्रांण लग, हटकि राखियै नाहि ।—अनुभववाणी

उ०—३ ढोल वजाया वजई, विण वाया अटकंत । हरीया रसना सबद कुं, सहजांई सिवरंत ।—अनुभववांणी

११ ब्रह्मसुख ।

उ०—रोम रोम ररंकार की, महमा कही न जाय । जनहरीया सुख सहज कुं, भाग विनां नही पाय ।—अनुभववांणी

१२ अजपाजाप ।

उ०—हठ पचि मरणा जोगिया, यु तौ जोग न होय । हरीया सहजां सबद बिन, पारि न पहुंचै कोय ।—अनुभववाणी

१३ स्वर्गलोक, बैकुंठ ।

उ०—१ सहजा सुख दै बस्य कीया, मन मोहादिक काम । जनहरीया गोरख जती, सहज कीया विसरांम ।—अनुभववाणी

उ०—२ सहजा मारग सहज का, सहज कीया विसराम । हरीया जीव'र सीव का, भया एक ही ठाम ।—अनुभववाणी

१४ मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—१ इला पिंगला बीच मैं, सुखमणि हंदा घाट । हरीया ब्रह्म समाधि की, सहजां पाई वाट ।—अनुभववाणी

उ०—२ धिज धरखत विरकत दसा, ध्यांन अधर का लाव । जनहरीया उन रूख का, जब सहजां फळ पाय ।—अनुभववांणी

१५ केवल्यज्ञान ।

उ०—सौ मैं केवल सहजां पाया, जब ही तै तन मन पतिआया । केवल कीया न केवल यारा, वेद कतेब सकल सू न्यारा ।

—अनुभववांणी

१६ ध्यानावस्था, समाधि ।

उ०—महारस मीठा पीजियै, अवगत अलख अनत । दादू निरमळ देखियै, सहजै सदा झरत ।—दादूवांणी

१७ वास्तविकता ।

उ०—जनहरीया सुख सहज मैं, लोक दिखावा नाहि । पड़पच कीया न पाईयै, सांई सहजां मांहि ।—अनुभववांणी

सर्व.—अपने-आप, स्वतः।
उ०—१ रसना रग रग वीच मैं, सहजां सिवरन होय। जनहरीया सब जीव का, संसा रह्या न कोय।—अनुभववाणी
उ०—२ हरीया माया जो भली, वाटै राम निवंत। आवै जावै सहज सुं, रहै निरासावंत।—अनुभववाणी
उ०—३ मन इंद्री कु मारनै, मतै करौ वेखास। हरीया सहजां होत है, कांम कलपना नास।—अनुभववाणी
वि.—१ अखण्ड।
उ०—हरीया लिव तूटै नही, सहज रही घर छाय। जाह सहजा साई रहै, लिव ता माहि समाय।—अनुभववाणी
२ स्वतः सिद्ध।
उ०—मोटा पह सहज रावमारू, रुद्र दूहत्यौ करै फिर रीझ। अम लोगा ऊपरा न रावै, खूंदाळमा हिलाई खीज।—चतुरौ मोतीसर
३ सरल, सुगम, आसान।
उ०—१ परउपगारी गुर मिल्या, भगति वताया भेव। यौ ही सिवरन हरि कथा, यौ ही सहजां सेव।—अनुभववाणी
उ०—२ जै कोई चीन्है सहज कुं, सहजा आतम राम। जनहरीया सहजां भया, मन इंद्री विसराम।—अनुभववाणी
उ०—३ दादू सदगुरु सहज मैं, किया बहुत उपकार। निरधन धनवत कर लिया, गुरु मिळिया दातार।—दादूबाणी
उ०—४ कुमार कहियौ मीणा तौ ठाकुर कहावणौ सहज रौ जाणि अब तौ रजपूता री पुत्रिया नू बरण ढूका। अर आपारा सगोत्र गोळवाळ जसराज नूं समता रौ सबधी करण ढूका।—व. भा.
४ परिपूर्ण।
उ०—हरीया लिव तूटै नही, सहज रही घर छाय। जाह सहजां साई रहै, लिव ता माहि समाय।—अनुभववांणी
५ अव्यक्त, अस्पष्ट।
उ०—ओउ सोउ सबद की, सहजां सुणी अवाज। जनहरीया इन ऊपरै, ररकार का राज।—अनुभववाणी
६ वास्तविक।
७ अनोखा, अद्भुत।
उ०—अगम काटि गम कीयहु, हौ रमैया राम। सहज कियहु वेपार, हौ रमैया रांम।—कबीरबीजक
८ व्यर्थ, बेकार।
उ०—सहज विचारै मूळ गवाई, लाभ तैं हानि होय रै भाई।
—कबीरबीजक
९ सरल, सीधा।
उ०—सुन्न सहज मन सुमिरतै, प्रगट भई एक जोति। ताहिपुर वलिहारि मैं, निरालंब जो होत।—कबीरबीजक
१० बिना यत्न, बिना परिश्रम।
उ०—हरीया पूरा गुर मिळै, अगम दाखवै ग्यान। पढिया गुणिया वाहिरी, सहज धराया ध्यान।—अनुभववाणी
११ प्राकृतिक, स्वाभाविक।
उ०—१ सहज ललाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पाय। निरखै भरमै नायणी, जावक दै मिळ जाय।—अग्यात
उ०—२ दादू सब्द अनाहत हम सुन्या, नख सिख सकल सरीर। सब घट हरि हरि होत है, सहजै ही मन थीर।—दादूबाणी
उ०—३ सहज चाल सगत समभ, वाणी सिकल वणाव। इता प्रकारा अवस है, गोला तणौं जणाव।—बा दा.
१२ जो हर दृष्टि से ठीक और आदर्शमय हो।
उ०—रंभ वरु सराहै हाथ रवि, अर पग सारा है उरगि। जोगेस कठण पावै जिकौ, सहज तिको पाऊ सरगि।—सू. प्र.
१३ यथार्थ, सत्य।
उ०—१ मन पवना मिळ एकठा, सुरित सबद सुं लाय। हरीया ब्रह्म समाधि का, जब सहजां घर पाय।—अनुभववाणी
उ०—२ हरीया ब्रह्म समाधि कौ, सहजां सुख अनत। काम कठण सुधि जांणिबौ, विध विरळा बूझंत।—अनुभववाणी
१४ जन्म से प्रकृति के साथ उत्पन्न होने वाला।
उ०—१ लोयण चचळ स्रवण लग, लांबा वेणी डड। महकै सहज सुबास बप, किर लायौ स्रीखड।—बा. दा.
उ०—२ औ सबद गुरु सुरत चेला, पाच तत्वर मैं है अकेला। सहजै जोगी सुन वास, पाच तत्त मै लियौ प्रकास।—वि. स. सा.
१५ मामूली, साधारण।
१६ परम्परागत, पुश्तैनी।
क्रि. वि.—१ धीरे-धीरे।
उ०—१ वे गुर परसादि पीवाहि, हीडोळै पणि बैसि कै। सहज सहज हिंडाय, 'ऊदौ' बोलै वीनती, आवा गुवणि चुकाय।
—ऊदौ नैण
उ०—२ हरीया जाणै सहज कु, सहजां सब कुछि होय। सहजा सांई पाईयै, सहजां विखिया खोय।—अनुभववाणी
२ स्वभावतः।
उ०—हरीया जाणै सहज कु, सहजां सब कुछि होय। सहजां साई पाईयै, सहजा विखिया खोय।—अनुभववाणी
३ अनायास, शीघ्र।
उ०—१ 'सुंदर' सतगुरु यूं कहै, मुक्ति सहज ही होई।
—सुंदरदास
उ०—२ दादू सदगुरु सू सहजै मिल्या, लीया कंठ लगाइ। दया भई दयाळ की, तब दीपक दिया जगाइ।—दादूबाणी
उ०—३ साचा सहजै लै मिळै, सब्द गुरु का ग्यांन। दादू हमकूं लै चल्या, जहं प्रीतम का स्थान।—दादूबांणी
उ०—४ दादू भक्ति निरंजन रांम की, अविचळ अविनासी। सदा सजीवन आतमा, सहजै परकासी।—दादूबांणी

४ सरलता से, आसानी से।

उ०—१ सब अच्छर सहजां पढै, पढि पढि मिथ्या सनेह। एक सबद रकार हुय, हरिया अगम अछेह।—अनुभववांणी

उ०—२ आगै आवतां एक खाळ बारह हाथ कौ चौडौ घणौ ऊंडौ आडै आयौ जठै कुमार दूदौ तौ सहज मै सांवळिया नै झगाइ खाळ रै वार आइ भालौ ऊभाइ सांम्हौ खड़ौ रहियौ।—वं. भा.

उ०—३ जै डर न होइ जाणौ जनक, प्रणत कालिह लागू पगा। सौ जै न होइ दीजै सहज, सुत अपजस असगां सगा।—व. भा.

५ निरन्तर, लगातार।

उ०—सहजां सांई सिंवरियै, आलस ऊघ न आनि। जनहरिया तन पेखणौ, ज्यु जळ पंडर जानि।—अनुभववांणी

रू. भे—सहिज, सहेज, सेज, सेझ, सेहज, सैहज, संज, सैझ।

सहजणौ-स. पु.—एक प्रकार का मध्य आकार का वृक्ष विशेष, सहिजन।

सहजन्य-सं. पु. [सं.] एक यक्ष का नाम जो आषाढ मास मे सूर्य के साथ भ्रमण करता है।

सहजन्या-सं. स्त्री. [सं.] विख्यात दस अप्सराओं मे से एक जिसने अर्जुन के जन्मोत्सव पर गायन किया था।

सहजपंथ, सहजपथ-सं. पु. [सं.] १ आसान रास्ता, सुगम रास्ता।

२ आसान तरीका।

सं. पु.—वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा।

रू. भे.—सेजपथ, सेजपथ।

सहजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सहजादी)

सहजिन्यु-सं. स्त्री.—हिरण्यकशिपु की प्रिय अप्सराओ मे से एक।

सहटौ—१ देखो 'सैठौ' (रू. भे.)

उ०—१ आसल खड़ै आय सूरणसर सहटा एकै पासै भीमसेन। एकै केवांस सहटा दोनां री फोजा देख चद भाट कह्यौ।

—हाहुल हमीर री बात

उ०—२ नट कछनी करि निहग, धरै अगरखा बहावर। जमदाढक गज वाग, कसै सहटौ कर कम्मर।—सू. प्र.

२ देखो 'साठौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सहटी)

सहट्टणौ, सहट्टबौ-क्रि. अ.—सम्मिलित, सहित।

उ०—इम दिल्ली उतपात, वात विपरीत प्रगट्टै। आई खबर अचीत, सैंद दळ प्रबळ सहट्टै।—रा. रू.

सहड-स. पु.—हाथी। (ना. डि. को.)

सहण-सं. पु.—१ मिट्टी का बना भोजन पात्र।

(मि. सिहनक)

२ एक प्रकार का शस्त्र, परशु। (डि. नां. मा.)

३ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—परिंद न सकै पहुंच, अनड़ इण भात रौ, रहियौ झुकि जिण रीत बदळ बरसात रौ। सहण पुरण सामान गुमर रिम गज रौ, अलख मदन आसेर प्रभू चो पजरौ।—सिवबक्स पाल्हावत

४ सहनशीलता।

उ०—वळि दाहकता पावक वसै, साधु जण सोहै सहण। ईसरौ भणै त्यू ही अवसि, मौ मन वसियौ महमहण।—ह. र.

५ देखो 'सहन' (रू. भे.)

उ०—डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय। मायड़ खाय दिखाय थण, धण पण वलय बताय।—वी. स.

६ देखो 'सैण' (रू. भे)

उ०—पछै बादसाह आपरै हजूरी सहणां सूं सलाह पूछी।

—नी. प्र.

सहणक—देखो 'सहनक' (रू. भे.)

सहणी-स. स्त्री.—१ सहन करने की क्रिया, सहन करने की शक्ति।

उ०—१ रहणी मै जोगेस्वर वहणी मैं जगदीस, ग्रहणी मैं सिव-नेत्र सहणी मैं अहीस।—वी. स.

उ०—२ सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उलटी दाह। दूध लजाणी पूत सम, वलय लजाणौ नाह।—वी. स.

२ सहन करने वाली।

वि.—सहनीय।

सहणौ-वि. [स्त्री. सहणी] १ सहन करने वाला, सहनशील।

२ सहनीय।

सहणौ, सहबौ-क्रि. स.—१ बरदास्त करना, सहन करना। (उ. र.)

उ०—१ सादूळौ आपा समौ, बियौ न कोय गिणंत। हाक बिडांणी किम सहै, घण गाजियै मरंत —हा. झा.

उ०—२ तद बूबना कही—जी हजरत सलामत मेरा बहनोई है। बहन कौ दुख होयगा सौ मुझ सै क्यौ सहा जायगा।

—जलाल बूबना री बात

उ०—३ जावौ हमे तकसीर माफ करी, खूब कांम किया, सिपाही इसी नहीं सह सकै।—जलाल बूबना री बात

उ०—४ उद्यम री आसा करै, सहै नही घणराव। घात करै गैवर घड़ा, सीहा जात सभाव।—बा. दा.

उ०—५ जरै स्वांमी रा सम्मत बिहणा भी जोद्या जिकण नूं मारण चलाया जठै जठै ही दलै उण रौ उपकार चीताइ रोकिया। केई आपरौ जामात मारि लीधौ तौ भी समस्त हूं सहणौ री भाखी —व. भा.

२ परिणाम भोगना, फल भोगना।

३ भुगतना।

४ झेलना।

५ किसी उत्तरदायित्व का निर्वाह वहन करना।

६ सज्जीभूत होना, सजना, तैयारी करना।

उ०—अर तिको भी यो बिसाळापुरी रो कजियो जीति आगरा माथै आवण रा आरभ मैं सहियो ।—व. भा.

सहणहार, हारौ (हारी), सहणियौ—वि० ।

सहिओड़ौ, सहियोड़ौ, सह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सहीजणौ, सहीजबौ—कर्म वा० ।

सइहणौ, सइहबौ, सहिणौ, सहिबौ, सेवणौ, सेवबौ, सेवणौ, सेवबौ, सै'णौ, से'बौ—रू० भे० ।

सहत—१ देखो 'सहित' (रू. भे.)

उ०-१ सहत नगारै मीरखा, सौ घोडा नीसाण । मारु राव 'तेजल' 'मुकन', वाधो रवळ बळवाण ।—रा. रू

उ०—२ सोहै नीलाबर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमांण । चपकला हरत चित्त, जुत भमरावळि जाण ।—अग्यात

उ०—३ अकबर लेख प्रमाणौ, तहवर सहत राज लोभांणौ । आवी चित अचीती, विणसण गा(का)ळ बुद्धि विपरीति ।—रा. रू.

२ देखो 'सहद' (रू. भे) (डिं. को)

सहतखांनौ—देखो 'सेतखानौ' (रू. भे.)

सहता-सं. स्त्री. [स.] एक होने का भाव, एकता, मेलजोल ।

सहतार-सं. पु.—एक प्रकार का तारवाद्य विशेष ।

उ०—१ छत्रधारी उर छोग बधै जिण वार मै, गहकै सारंग गान तान सहतार मैं । मधुर सुर मिरदग क बीणा बाजवै, इंद्र अखाडै अछर लखै छबि लाजवै ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—२ गोरचा करवै गोठ बाग निज निज बिचै, सहनाइया सहतार मलारा हद मचै ।—सिवबक्स पाल्हावत

सहति, सहती—१ देखो 'सहित' (रू. भे)

२ देखो 'सहद' (रू. भे.)

सहतीर-स. पु. [फा. शहतीर] १ लकड़ी का बड़ा लम्बा लट्ठा ।

२ प्राय. छत के नीचे लगाया जाने वाला पत्थर, लोहे या लकडी का शहतीर ।

रू भे —सतीर, सेंतीर, स'तीर, सेहतीर, सैतीर, स'तीर, सेहतीर ।

सहतूत-स. पु [फा. शहतूत] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल लबी लट के समान होता है । इस वृक्ष के पत्तो पर रेशम के कीडे पाले जाते हैं । (अ. मा.)

२ उक्त पेड का फल ।

३ देववृक्ष । (अ. मा.)

रू. भे.—सेतूत, सेहतूत, सैतूत ।

सहतौ—देखो 'सहित' (रू. भे)

उ०—बूकडा बटक गूधा गटक लिए बळ, सह कटक आचमै गजां सहतौ ।—अग्यात

सहद-सं. पु [अ. शहद] विशेषत: मधुमक्खियों के छत्तों मे पाया जाने वाला मीठा एव गाढा तरल पदार्थ ।

पर्याय.—मधु ।

रू. भे.—सहत, सहति, सहती, सहेद, सेत, से'त, सैत, सेद ।

सहदार-वि. [सं.] १ पत्नी सहित ।

२ विवाहित ।

सहदेई-सं. स्त्री. [सं. सहदेवा] पहाड़ी भूमि मे अधिक उपजने वाली क्षुप जाति की एक वनौषधि ।

रू. भे.—सहदेवा, सहदेवी, सहदोई ।

सहदेव-स. पु. [स.] १ माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारो के सयोग से उत्पन्न पाडु के पाच पुत्रो मे से सबसे छोटा पुत्र । (डिं. को.)

उ०—सीळ गगेव, दुरजोधन अहमेव, जुजठळ ज्यू साच, दुरवासा वाच, ग्यान रौ गोरख, सहदेव ज्यू सारी वात समरथ, अरजुन ज्यूं बाण, करण ज्यू दांन,......... ।—रा. सा. स.

२ ऐसा महात्मा जिसके वचनों में सिद्धि हो ।

३ पुररवावंशीय हर्यधन के पुत्र का नाम ।

४ इक्ष्वाकुवशीय दिवाकर के पुत्र व बृहदस्व के पिता का नाम ।

५ जरासंध के एक पुत्र का नाम ।

६ सुदास राजा का पुत्र व सोम का पिता एक राजा ।

७ वसुदेव व ताम्रा के पुत्रो मे से एक ।

वि.—भविष्यवक्ता ।

रू. भे —सेदेव, से'देव, स'देव, सैदेव, सै'देव, स'देव ।

सहदेवा, सहदेवी, सहदोई-सं. स्त्री.—१ वसुदेव की पत्नी तथा देवक राजा की कन्या ।

२ देखो 'सहदेई' (रू. भे.)

सहन-स. पु.—१ क्षमा ।

२ शाति ।

३ आज्ञा पालन करने की क्रिया ।

४ बरदास्त करने की क्रिया, सहिष्णुता ।

५ देखो 'सहनक' (रू. भे.)

रू. भे —सहण ।

सहनक-स. पु —मिट्टी की बनी एक प्रकार की छिछली रकाबी । (मुसलण)

उ०—सहनक तणां सुजाण, पारीसा पातल तणा । ते राहवियां राण, एकण हूता 'ऊदवत' ।—सूरायच टापरचौ

रू. भे.—सहणक ।

सहनता-स. स्त्री.—सहनशीलता ।

उ०—इणनै सहनता कहै—सो डाकी ठाकुर तौ सहनता कर रजपूता रा माथा लेवै । वा प्राण लेवै ।—वी स. टी

सहनसील-वि. [सं. सहनशील] १ सहिष्णु, बरदास्त करने वाला ।

२ सब्र करने वाला, सतोषी ।

रू. भे. —सै'नसील ।

सहनसीलता-स. स्त्री. [सं. सहनशीलता] १ सहनशील होने की अवस्था या भाव ।

२ सब्र, सन्तोष।

रू भे.—सैं'नसीलता।

सहनांण—देखो 'सैनाण' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ म्है कुंवरजी सूं मिळ बाता करि, ठावा समाचार लाया छा, सहनांण लाया छा।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ यूं कहि गुर चेलो रमिया नैं कह्यो—'तूं बात मानैंस नहीं, पण तिण बात रौ औ सहनांण छै।—नैणसी

उ०—३ नख चख सगळा निरखिया, विध सूं करै वखांण। लक नगर मा उण कह्या, राणी सती तणा सहनांण।—मेहोजी गोदारो

उ०—४ कुपह कुमारग वरजि करि, सुपह साच करणि कहै। सहनांण सुगुर तणा सुरता सुणो, प्रमन की प्रगट कहै।—वील्होजी

सहनांणी—देखो 'सैनाणी' (रू. भे.)

उ०—तद्दा राजा मृत्यु लोक मैं जाय नैं उठै चौपड़ रमता वैं नूं सहनांणी दिखालै।—पंचदडी

सहनाइन, सहनाई, सहनाय-स. स्त्री. [फा. शहनाई] एक प्रकार का वाद्य, नफीरी बाजा।

उ०—१ सबद उग्र करनाळ सवाई, सुर वरधू तुरही सहनाई। द्वार सुरेस नरेस दिनाई, वाधै साजै दीह वधाई।—रा. रू.

उ०—२ क्रमती सहनाय वजै कुरजी, खित बोलत मोर घणू खुरजी।—पा. प्र.

उ०—३ सहनायची सहनायां माहै सारंग वणायो छै।

—रा. सा. सं

रू. भे.—सणाइ, सणाई, सनाय, सरणाई, सरणाय, सुरणा, सुरणाइ, सुरणाई, सुरणाय, सुरणो।

सहनायची-सं. पु.—शहनाई बजाने वाला।

उ०—सहनायची सहनायां मांहै सारग वणायो छै।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सेनायची।

सहपाठी-त्रि —जो साथ पढा हो।

रू भे.—सैपाठी।

सहबास—१ देखो 'सहवास' (रू. भे.)

उ०—तिणस् दो ही राजावा रै ऊंची आवै इसा प्रपंच सूं तो घणां ग्रामां रा घर घूकारां रा घूरसाळा रो ही सहबास है।—व. भा.

२ देखो 'साबास' (रू. भे.)

सहभोज, सहभोजन-स. पु.—एक साथ भोजन करने की क्रिया।

सहभोजी-वि.—साथ बैठ कर भोजन करने वाला।

सहम-सं. पु —१ दण्ड, सजा।

उ०—राज पीपळै आदरिय, करवा सर धर काज। सहम दियण मेवासियां, मुहम हुकम महाराज।—रा रू.

[फा. सहम्] २ परशु नामक शस्त्र। (डिं. नां मा.)

३ तीर, बाण।

४ डर, भय।

उ०—औदरै मंदोवरि तास भैं, सपनंतर आया सहम। कोपिया राम रामण सरिस, दलै सलिस गमिस्यै दहम।—अल्लूजी कवियो

सहमणौ, सहमबौ-क्रि. अ. [फा. सहम+रा. प्र. णौ] १ भयभीत होना, डरना।

२ चौंकना।

सहमणहार, हारौ (हारी), सहमणियौ—वि०।

सहमिओड़ौ, सहमियोड़ौ, सहम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सहमीजणौ, सहमीजबौ—भाव वा०।

सहमत-वि. [स] जिसका मत दूसरे से मिलता हो, एकमत।

सहमति-सं. स्त्री. [सं.] सहमत होने की अवस्था या भाव।

सहमरण-सं. पु.—पति के साथ मरने या जलने की क्रिया, सती होने की क्रिया।

सहमियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ. २ चौंका हुआ।

(स्त्री. सहमियोडी)

सहयोग-सं पु.—१ साथ, संग।

२ सहायता, मदद।

रू. भे.—सैयोग।

सहयोगी-सं. पु.—१ मददगार, सहायक।

२ साथी।

रू. भे.—सैयोगी।

वि.—समकालीन।

सहर-सं पु. [अ. शहर] १ मनुष्यों की वह बड़ी बस्ती जो कस्बे से बड़ी हो तथा जहाँ पक्की इमारतें और बड़ा बाजार हो, नगर।

(डिं. को; ह. ना. मा.)

उ०—१ सहर अजेंपुर जोधपुर, सोबै राख जवन्न। पूठ अकब्बर वाहरा, थयौ विखधर मन्न।—रा. रू.

उ०—२ हुंकळै तुरा धंधिगरा हारहर, सहर पाधर करण काज साका। पाखरां घरर 'गजबंध' रा पाटपत, थरर गढपत गढां पांण थाका।—खेतसी लाळस

रू. भे.—सहैर, सैर, सैं'र।

अल्पा;—सेरडौ।

[अ.] २ प्रातःकाल, प्रभात।

३ देखो 'सेहर' (रू. भे.)

उ०—करै राड अध्रीयामणी 'अभै' जोगी किया, जकै नह सांमणी तीज जाणै। दमकती दांमणी देख सहरां दिसा, याद कर कांमणी सोच आंणै।—बखतौ खिडियौ

सहरकोट—देखो 'सहरपनाह'

सहरपना', सहरपनाह-सं. पु.—शहर की रक्षार्थ शहर के चारों ओर बनी दीवार।

वि.—शहर की रक्षा करने वाला।

उ०—गढ द्रढ परकोटौ गहर, परखा सहरपनाह। सुख रासी बासी सरब, सुद्रब सचेला साही।—सिवबक्स पाल्हावत

रू. भे.—सैरपनाह, सैरपना', सैरपनौ'।

सहरवांद-स. पु.—कैदी।

उ०—गागो वरजागोत। कूंपाजी रै वास थो। पछै सूर पातसाह कने परधान कूंपैजी मेलियौ। पछै पातसाह सहरवांद थकौ हीज आप कनै राखियौ थौ।—नैणसी

सहरि, सहरी-वि.—१ शहर का, शहर सम्बन्धी।

२ सदृश, समान।

उ०—ज्यूं सहरी भ्रूण नयण अग जूता, विसहर रासि कि अलक वक्र। वेलि.

३ देखो 'सरग्रही'।

रू. भे.—सैरियौ, सैरी।

सहरण-सं. पु. [स.] चन्द्रमा के एक घोडे का नाम।

सहरौ-वि. (स्त्री. सहरी) शीघ्र सुनने वाला।

उ०—कहरी सुण कूक ऊघाड़ै कोयण, नहरी जूंनी बात नइ। सुंदर मात हुती तूं सहरी, हमकै बहरी केम हुइ।

—देवी सुंदरबाई रौ गीत

सहल-स. पु.—१ घूमने-फिरने की क्रिया या भाव, परिभ्रमण।

उ०—१ हालिया फेर गजनेर करबा सहल, देखिया कोठिया महल देवी। भालि दोनूं सहर आय पूठा भलै, सहर देसांण दीवाण सेवी।—मे. म.

उ०—२ छिलती सलित न्याव नह छूटै, जेठी गयद कुरंग नह जूटै। मझि जळ क्रीड न सहल विमोहै, असं सिबका गज रथ न अरोहै।

—सू. प्र.

२ क्रीडा, खेल।

उ०—दूसरा 'माल' सग लिया चतुरग दळ, यर हरा मार सेणां ऊबारै। रण-चडां सहल जूझा गहल राठवड, सहल रमता पडै दहल सारै।—कल्यांणदास महडू

३ आनन्द, मस्ती, मौज।

उ०—रंगधण कहैज राठवड, मान पिया मनवार। सहल करीजै सासरै, चहरी चित दिन चार।—बख्तावर मोतीसर

४ काम, क्रीडा।

उ०—रसियौ नित सहलां रमै, महला मारै मौज। छबी अनूप छत्र धार री, मानहु रूप मनोज।—सिवबक्स पाल्हावत

५ काठ की मोगरी जो ऊपर से पतली तथा नीचे से मोटी होती है जिससे चूडे के पातो का बल निकाला जाता है।

वि.—१ सरल, आसान, सुगम, सहज, सीधा।

उ०—१ खडगधार पर काम, चालै तो चलबौ सहल। मुसकल जग रै माय, नेह निभावण नागजी।—नागजी नगवती री वात

उ०—२ अै जठा ताई जैसळमेर री धरती मै छै, तितरै म्हांनूं धरती री आस काई नही। तरै जगमाल कह्यौ—'इणां नूं मारण सहल छै, पण इणां सूं रावळजी मया करै छै। तरै घड़सी दिलगीर हुवौ।—नैणसी

उ०—३ दूसरा 'माल' सग लिया चतुरंग दळ, यर हरा मार सेणा ऊबारै। रण-चंडा सहल जूझा गहल राठवड, सहल रमता पडै दहल सारै।—कल्याणदास महडू

२ साधारण, मामूली।

उ०—वदै महल छतीस राजवस, कमध नगारा अहळ कियै। दहल पड़ै अवरां देसोता, थारै सहल सिकार थियै।—रुघौ मुहतौ

३ साक्षात, प्रत्यक्ष।

उ०—लुगाई नै कूख मंडिया पै'ली टाबर रै जलम री जित्तौ कोड नेह हरख मोद अर उछाव व्है उत्तौ टाबर व्हियां नी व्है। वा उण वेळा हरख अर उछाव री इज सहल पूतळी बण जावै।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सहल्ल, सैल।

अल्पा;—सहलडी।

सहलड़ी—१ देखो 'सेलडी' (रू. भे)

उ०—आगै अठै कुवौ थौ, तठै गांव थौ, बाग थौ, नरा री छत्र उठै छै। सहलडी हुवै। आबा आगै था।—नैणसी

२ देखो 'सहल' (अल्पा; रू. भे.)

सहलणौ, सहलबौ-क्रि. स.—१ सहलाना।

उ०—भोग कियां मौ हाथ, सहलता जिण जंघा नै। कदळी रूंख समाण, फड़कसी थां पूगा नै।—मेघ

२ परिभ्रमण, सहल करना, घूमना।

३ देखो 'सेलणौ, सेलबौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सालणौ, सालबौ' (रू. भे.)

सहलसौ-वि.—साधारण, मामूली।

उ०—राव राजसिंघ देवडौ भैरवदास समरावत नुं डूंगरोत नूं सहलसो पटौ दे इणरै हीज आटै राखियौ हुतौ।—नैणसी

सहलांणी—देखो 'सैनांणी' (रू. भे.)

उ०—आ भाइजी रा हाथ री सहलांणी है। जद लोगां जांण्यो औ पूरौ मूरख है।—भि. द्र.

सहलाणौ, सहलाबौ-क्रि. स —१ सहलाना।

२ परिभ्रमण कराना, घूमाना।

सहलियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सहलाया हुआ. २ परिभ्रमण किया हुआ।

३ देखो 'सेलियोड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सालियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सहलियोडी)

सहलौ-वि.—आसान, सरल।

(स्त्री. सहली)

सहळौ—देखो 'सैळौ' (रू. भे.)

सहलोट—देखो 'सेलोट' (रू. भे.)

उ०—सौ वीकांण धरा चै सांधे, बळ मेटियौ जु हूता बांधे।
केताई गाव थाणायत कोटा, लूटै देस किया **सहलोटा**।—रा. रू.

सहल्ल—देखो 'सहल' (रू. भे.)

उ०—आप अकब्बर साथ लै, गिण दुरपंथ **सहल्ल**। साथ लिया बळ आगळा, रूकहथा रिणमल्ल।—रा. रू.

सहल्लै-क्रि. वि.—आसानी से, सरलता से।

उ०—चलै राजकुमार पिताचौ, सासण पाय **सहल्लै**। रावण सहत घणां खळ राकस, दारुण दैन वहल्लै।—र. रू.

सहवयच, **सहवयस**-सं. पु. [सं. सहवयस्] सखा, मित्र। (अ. मा.)

सहवर-सं. पु—१ वीर, योद्धा।

उ०—सेन सुरतांण रा साथ **सहवर** सयळ, सुभट विमना सुनह चीतवी साक।—राव चंद्रसेण री गीत

२ सगा भाई।

उ०—दळ मेळै जगमाल पीड़ हमीर पहारै, विह लिखियो घर वेध तांम **सहवर** संघारै।—मालो आसियौ

सहवात-सं. पु—सौभाग्य, सुहाग।

उ०—ए सायण आज रौ वाहर रौ ढोल सुहावणो छै—पण म्हारा **सहवात** नै दाह देणवाळो छै।—वी. स. टी.

सहवाद-सं. पु.—वाद-विवाद, तर्क-वितर्क।

सहवास-सं. पु.—१ एक साथ रहने की क्रिया।

२ संभोग, मैथुन।

उ०—असत्री पीहर नर सासरै, संजमीया **सहवास**। एता होए अलखामणां, जो मांडै घरवास।—ढो. मा.

३ मित्र, दोस्त। (अ. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—सवास, सहबास।

सहवासी-वि.—साथ रहने वाला।

सहव्रता-सं. स्त्री. [सं.] पत्नी, भार्या।

सहस-स. पु. [सं सहस्] १ मार्गशीर्ष मास।

२ शरद् ऋतु।

३ शक्ति, ताकत।

४ प्रचण्डता, उग्रता।

५ विजय, जीत।

६ चमक, कांति।

७ देखो 'सहस्र' (रू. भे.) (ड. र.)

उ०—१ **सहस** इसा भड़ लीधा साथै, मेछ करार भार त्या माथै।
—रा. रू.

उ०—२ लेतां नाम विदाम न लागै, विगत जिका नह व्यापै। आछी त्रिया देख अवरा री, **सहसां** माल समापै।—र. रू.

उ०—३ समर उजैण रचै नव सहसो, सूर **सहस** भेदै नव थान। ख्याली चकर जही खेडेचै, अरक रथां भेदै असमान।
—जगनाग सांदू

८ देखो 'सहसा' (रू. भे.) (अ. मा.)

सहसकर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)
(अ. मा; ना. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—कहर करामत 'जसा' हिंदवाण चा **सहसकर**, झूझ कुण छातधर अवर झालै। तेज सुजडा तणौ ताप सत्र 'गजण' तण, हेम-अनडा ज्यूं ही गळै हालै।—महाराजा जसवंतसिंह रो गीत

सहसकरण - देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

सहसकार—देखो 'संस्कार' (रू. भे.)

उ०—अर अब **सहसकार** सासत्र किया। वर कन्या तहा बेठाडि सब विधि कीधि।—वेलि टी.

सहसकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

सहसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.) (ना. डि. को; ना. मा.)

उ०—**सहसकिरण** सर सुधि करि, देही वधारिसि दाहि। सूर धरइ नही सूर कौ अबला-ऊपरि आहि।—मा. का. प्र.

सहसक्कर, **सहसक्किर**—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

उ०—देखि 'अभैमल' तेज जिकै दिन, आलम एह कथै कथ उच्चर। सूरजवस 'अजीत' तणौ सुत, सूरजवंस तणौ **सहसक्किर**।
—सू. प्र.

सहसचक्ष, **सहसचक्षु**, **सहमचख**-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+चक्षु] देवराज इन्द्र। (ना. डि. को.)

सहसजीभ-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+जिह्वा] शेषनाग।

सहसदळ-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+दल] कमल। (ह. नां. मा.)

सहसदुजीह-सं. पु. [स. सहस्र+द्विजिह्वा] शेषनाग।

उ०—फण सहस सेस नाग **सहसदुजीह** जोग सोभाग।—गु. रू. बं.

सहसद्रग-सं. पु. यौ [स. सहस+दृग] देवराज इन्द्र। (अ. मा.)

सहसनयण-सं. पु. यौ [सं. सहस्र+नयन] इन्द्र।

सहसनाम-स. पु. यौ [स. सहस्रनाम] वह स्तोत्र जिसमे किसी देवता के हजार नाम हों।

रू. भे.—सहस्रनाम।

सहसनामी-सं. पु. यौ. [सं सहस्रनामिन्] वह जिसके हजार नाम हो, विष्णु, शिव आदि।

रू. भे.—सहस्रनामी।

सहसनेत, **सहसनेत्र**-स. पु यौ. [स. सहस+नेत्र] इन्द्र।
(नां. मा; ह. ना. मा)

सहसनैण-सं पु. यौ. [स. सहस्र+नयन] इन्द्र, देवराज। (नां. मा.)

सहसपत्र—देखो 'सहस्रपत्र' (रू. भे.) (अ. मा; ह नां. मा.)

सहसफण, **सहसफणि**, **सहसफणी**-सं. पु. यौ. [सं. सहस्रफण] शेषनाग।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ मणिधर छत्रधर अवर डुळै मन, ताई धर रज धर 'सीध'

तण। फणीधर पतसाह पैरता, फिरै कमळ तन सहसफण।
—राणा प्रतापसिंघ री गीत

उ०—२ माडि रहै चत्रवा तर्णमिसि, फण सहसेई महसफणि।
—वेलि

रू. भे.—फणसहस फुणसहस, सहसफण, सहसफुण, सहसफिण, सहस्त्रफण सहस्त्रफुण।

सहसफणधर, सहसफणधार, सहसफणधारी–स. पु [स सहस्त्रफनधारिन्] शेषनाग।

रू. भे.—फणसहसधार, सहसफिणधर, सहसफिणधार, सहसफिणधारि, सहसफिणधारी।

सहसफिण—देखो 'सहसफण' (रू. भे)

सहसफिणधार, सहसफिणधारि, सहसफिणधारी—देखो सहसफणधारी' (रू. भे.)

सहसफूल—देखो 'सीसफूल' (रू. भे.)

उ०–बहिइ बाध्या बहिरखा, करि मुद्रडी झलकति। सहसफूल नइ चुकडा, पदकडी चाक भजति।—नळदवदंति रास

सहसबदन–सं. पु. यौ. [स. सहस्त्रवदन] वह जिसके हजार मुख हो, शेषनाग।

रू. भे.—सहसवदन।

सहसबळ–स. पु. [सं. सहस्त्रबल[१ जिसमे हजार व्यक्तियो का बल हो।

२ सूर्य, सूरज।

सहसबवणि–स. पु. [स सहस्त्राभ्रवन] वह स्थान जहाँ पर नेमिनाथजी ने दीक्षा ली थी।

उ०—अरै रेवइया गिरि सहसबवणि जात न लागइ वार।
—समुधर

सहसबाह, सहसबाहु—देखो 'सहस्त्रबाहु' रू भे.)

सहसभग–स. पु.—इन्द्र।

सहसभाव–सं. स्त्री —१ सहिष्णुता।

२ क्षमा।

सहसमालोत— राठौड़ो की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सहसमुख–वि. [सं. सहस्त्र+मुख] वह जिसके हजार मुह हो, हजार मुह वाला।

सं. पु.—शेषनाग।

रू. भे.—सहसमुखो।

सहसमुखी–सं स्त्री. [स. सहस्रमुखा] १ गंगा। (ह ना. मा)

२ एक प्रकार का कंद विशेष।

उ०–सिगमंडी मीदूरिया, तिहा तूंबिणि पालि। सहसमुखी सजीवनी, वच्छनाग वेच्छाळ।—मा. का. प्र.

सहसमुखो—देखो 'सहसमुख' (रू. भे.)

सहसमौं–वि. [सं सहस्त्रतम.] क्रम में हजारवाँ, क्रम मे ९९९ के ठीक बाद आने वाला।

रू. भे.—सहसवौं।

सहसवदन—देखो 'सहसबदन' (रू. भे)

सहसवौं—देखो 'सहसमौं' (रू. भे.)

सहसान–स. पु. [स. सहसान] १ मोर, मयूर।

२ नैवेद्य, भेंट।

३ यज्ञ, हवन।

सहसा–अव्यय. [स] १ अकस्मात, अचानक। (ह. ना. मा.)

उ०—किलम गयद चढियौ हलकारै, अठी 'जगड़' भड धीर उचारै। खागा ढळै पड़ै हुय खेडा, अकस धसै सहसां ऊरेडा।—रा. रू.

२ बलपूर्वक, जबरदस्ती।

३ अविचारता पूर्वक।

रू भे.—सहस, सहसी।

सहसाअजण, सहसाअजणि, सहसाअरजण, सहसाअरजन, सहसाअरजुण, सहसाअरजुन—देखो 'सहस्त्रारजुन' (रू. भे.)

उ०—१ इक बाधौ सहसाअजणि, जळक्रीड मझारै। बामणि गदा विहंडियौ, दूजौ बळि द्वारै।—सू प्र

उ०—२ तिल तिल जुध हुऔ खगां मुंह तूटौ, चूण न सकै दहू करां सचूप। रावत कमळ काज सिव रचियौ, सहसाअरजुन तणौ सरूप।—महादान महड़ू

सहसात—देखो 'साक्षात' (रू. भे)

सहसातकार–अव्यय—१ सम्मुख, सामने, समक्ष।

उ०—१ वचन तणा दूखण दसं जी, जाणउ एणि प्रकार। कुवचन बोलइ लोकनइ जी, थइ दोस सहसातकार।—स. कु.

उ०—२ सहसातकार कलक थइ, वलि आप छदइ बोल ए। सखेप सूत्र कहइ आलावउ, करइ कलह निटोल ए।—स. कु.

२ देखो 'साक्षात्कार' (रू भे)

सहसाबाहु—देखो 'सहस्त्रबाहु' (रू. भे.)

सहसाह–सं. पु.—परशुराम के सारथि का नाम।

सहसी—देखो 'सहसा' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

सहसेई–सं. पु.—शेषनाग।

सहस्य–सं. पु. [सं. सहस्यः] पोष मास का नाम। (डिं. को.)

सहस्त्र–स. पु [स.] १ एक हजार की सख्या।

२ उक्त सख्या का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है १०००।

वि.—हजार।

उ०—देवी सहस्त्रं लखं कोटीक साथै, देवी मडणी जुध मेवास माथे।—देवि

रू. भे.—सहंस, सहस, सहस, सहस्स, सेस, सेंस, सेंहस।

सहस्त्रकर, सहस्त्रकिर–सं. पु. [सं. सहस्त्रकर] १ सूरज, सूर्य।

२ सहस्त्र हाथो वाला, सहस्त्रार्जुन।

३ बाणासुर।

रू. भे.—संहंसकर, महंसकर, सहमकिर, सहसकर, सहसकिर, सहसक्कर, सहसक्किर, सहस्सकर, सहस्सकिर, संहसकर, सेंहसकिर।

सहस्रकिरण-स. पु. [स. सहस्रकिरण] सूरज, सूर्य।

रू. भे.—सहंसकिरण, सहसकिरण, सहिसकिरण, सेहसकिरण।

सहस्रगु, सहस्रगो-स. पु. [सं सहस्रगो] सूरज, सूर्य।

सहस्रचक्ष, सहस्रचक्षु, सहस्रचख—देखो 'सहस्राक्ष'।

सहस्रचरण-स. पु. [स.] विष्णु।

सहस्रजित-सं. पु. [स.] १ विष्णु।

२ कस्तूरी।

३ जाबवती व कृष्ण के ससर्ग से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

४ केकय नरेश का नाम।

सहस्रणी-सं. पु. [स] जो हजार रथियों की रक्षा कर सके, भीष्म।

सहस्रत-वि. बहु.—हजारो।

उ०—सहस्रत जगत व्यापत सब्ब, दुवादस अंगुळ गात दुग्रब्ब।

—ह. र.

सहस्रदखण, सहस्रदखिण, सहस्रदक्खण, सहस्रदक्खिण-स. पु. यौ. [स. सहस्र+दक्षिण] एक प्रकार का यज्ञ विशेष जिसमे हजार गाये दान में दी जाती थी।

सहस्रधार, सहस्रधारा-स. स्त्री. [स. सहस्रधार:] १ हजार छेदों वाला एक पात्र विशेष जिसमें पानी भरने पर छिद्रों से निकलने वाले जल से देवताओं को स्नान कराया जाता है।

२ विष्णु भगवान् का चक्र।

३ अयोध्या में स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।

सहस्रनयण-सं पु. [स. सहस्रनयन] १ भगवान् विष्णु।

२ देवराज इन्द्र।

सहस्रनाम—देखो 'सहसनाम' (रू. भे.)

उ०—दातण कर संपाडो कर साह ठाकुरद्वारे जाय साथे दरसण किया, भेंट कीवी, परदक्षणा दीवी। देवीदास सहस्रनाम रो पाठ कियो।—पलक दरियाव री बात

सहस्रनामी—देखो 'सहसनामी' (रू भे.)

सहस्रपत्र-स. पु. [सं.] कमल, पंकज।

रू. भे—सहंसपतर, सहसपत्र, सहसपत्र, सहसपात।

सहस्रपाद-स. पु. [स] १ विष्णु।

२ शिव, महादेव।

३ सूर्य, सूरज।

सहस्रफण, सहस्रफुण—देखो 'सहसफण' (रू भे.)

सहस्रबाह, सहस्रबाहु-स. पु. [स. सहस्रबाहु] १ कृतवीर्य नामक क्षत्रीय राजा का एक पुत्र जिसका दूसरा नाम हैहय था। यह रावण का समकालीन था। परशुराम ने इसका वध किया था।

(मि. सहस्रारजुण)

२ बाणासुर।

३ शिव।

४ विष्णु।

५ राजा बलि का ज्येष्ठ पुत्र।

६ कार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

रू. भे.—सहसबाह, सहसबाहु, सहसाबाहु, सहस्राबाहु, सहस्राबाहू।

सहस्रभुजा-सं. स्त्री.—देवी का नाम। (मार्कण्ड. पु.)

सहस्ररस्मि-सं. पु. [स. सहस्ररश्मि] सूरज, सूर्य।

सहस्ररोमा-स. स्त्री. [सं. सहस्र+रोमन्] कम्बल।

सहस्रवाक-सं. पु. [स. सहस्रवाक्] धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों मे से एक।

सहस्रवीरया-स. स्त्री. [सं. सहस्र+वीर्या] हीग।

सहस्रसिखर-स. पु. [सं. सहस्र+शिखर:] विन्ध्याचल पर्वत।

सहस्रहयस्व-स. पु. [सं. सहस्रहर्यश्व] इन्द्र के रथ का नाम।

सहस्रांक-स. पु. [स.] सूरज, सूर्य।

सहस्राजुण, सहस्राजुन—१ देखो 'सहस्रबाहु'।

२ देखो 'सहस्रारजुण' (रू. भे.)

सहस्राक्ष-वि. [सं. सहस्र+अक्ष] १ जिसके हजार आँखें हो।

वि. वि.—महाभारत के अनुसार इन्द्र ने गौतम की पत्नी अहिल्या के साथ धोखे से गौतम ऋषि का रूप धारण करके उसके साथ रति प्रसंग किया था किन्तु गौतम के आ जाने पर इनका असली रूप प्रगट हुआ। इस पर गौतम ऋषि के शाप के कारण इन्द्र के शरीर पर सहस्र योनि के चिन्ह हो गए थे किन्तु बाद में इन्द्र के गिडगिडाने पर गौतम ऋषि ने उन योनियों को आँखों मे परिवर्तित कर दिया जिससे इनका नाम सहस्राक्ष हुआ।

२ देवी भागवत के अनुसार एक पीठ स्थान।

स. पु [स. सहस्र+अक्ष:] १ इन्द्र, देवराज।

२ पुरुष।

३ विष्णु।

सहस्राक्षी-सं. स्त्री. [सं.] चौसठ योगिनियों के अन्तर्गत पच्चीसवीं योगिनी।

सहस्रात्मा-स. पु. [सं.] ब्रह्मा।

सहस्राबाहु, सहस्राबाहू—देखो 'सहस्रबाहु' (रू. भे.)

उ०—आयो केई बार फरस्स उभार, सहस्राबाहू सेन सघार।

—ह. र.

सहस्रास्व-सं. पु. [सं. सहस्राश्व] अहिनग राजा का पुत्र व चंद्रावलोक का पिता एक राजा।

सहस्रारजुण, सहस्रारजुन-सं. पु. [सं. सहस्रार्जुन] कृतवीर्य नामक राजा का पुत्र जिसका दूसरा नाम हैहय था।

वि. वि.—इसकी राजधानी महिष्मती थी। इसे हैहयवंशीय मानते है। दत्तात्रेय ने इसे सहस्रबाहु व अपराजेय होने का वरदान दिया था। इसने ८५००० वर्षों तक राज्य किया था। इसने

रावण को भी युद्ध मे पराजित कर कैद किया था। एक बार इसने जमदग्नि के आश्रम से कामधेनु को लेना चाहा इसलिए परशुराम-जी ने इसका वध किया।

रू. भे.—संसारजुण, ससारजुन, सहसाश्रजणि, सहसाग्ररजण, सहसाग्ररजन, सहसाग्ररजुण, सहसाग्ररजुन, सहस्राजुण, सहस्रा-जुन।

सहस्त्रिन-वि. [स सहस्त्रिन] १ हजारपती, हजार वाला।

२ हजार के करीब।

सं. पु.—१ हजार आदमियों का समूह।

२ हजारो का अफसर, हजारी।

सहस्स—देखो 'सहस्र' (रू. भे)

उ०—हाडौ आडौ हल्लणौ, बूंदी हूंत अकस्स। सो आयौ राठोड तक, घोड़ा जोड़ सहस्स।—रा. रू

सहस्सकर, सहस्सकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

उ०—कामित संपय करण, तम भर हरणं सहस्सकर किरणं।
—ध. व. ग्र.

सहांणा-सं. पु.—फरोदस्त और कान्हड़ा को मिलाकर बनाया गया सम्पूर्ण जाति का राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सहांणी—देखो 'साहणी' (रू. भे)

उ०—१ तरै दरबार आया। आगै ठावा लायक सहांणी घोडां री पायगा बिचै बैठा छै। तिण सूं राम रांम कीधी।
—जगदेव पवार री बात

उ०—२ हिचै असि और खगां पडिहार, सहांणिय रामति मडत सार।—सू. प्र.

सहा-सं. स्त्री. [सं.] १ पृथ्वी, भूमि।

२ मेहदी।

३ अगहन मास।

४ हेमन्त ऋतु।

५ सर्पिणी।

६ ग्वारपाठा।

७ सत्यनाशी।

८ अर्जुन के स्वागतोत्सव मे इन्द्र-भवन मे नृत्य करने वाली एक अप्सरा का नाम।

सहाइ, सहाई—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—१ कवर सरणाई साधार सुणता ही सहाई देर लार हुवौ।
—वं. भा.

उ०—२ जिणि दीहे पाळउ पडइ, टापर तुरी सहाइ। तिणि रिति बुढी ही भुरइ, तरुणी केम रहाइ।—ढो. मा

उ०—३ अरजुन पगा की तरफ आइ बैठौ। जागता ही पहिलै द्रस्टि पड़ियौ। तब अरजुन का सहाइ हुआ।—वेलि टी.

उ०—४ गिरवाणां सहाई मनोज धेनु ग्यानगोभा, नाराज वरीस सोभा इसी प्रथीनाथ।—र. रू

उ०—५ तपस्या ठकुराई छीन थाई मिट दुहाई देस ए। चाकर दुआई पाप माई सुद्ध आई वेस ए। करुणा बढाई पुनि बुलाई जन सहाई आज ए।—करुणासागर

सहाज—देखो 'साज' (रू. भे.)

उ०—साजो हुवौ जद खेत काढ्यो। सहाज देणवाला नै पिण पाप लागो।—भि. द्र.

सहाजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

सहादत-सं. स्त्री. [अ शहादत] गवाह, साक्षी।

सहानदी-स. पु. [सं.] मगधनरेश महानंदी का नामान्तर।

सहानुभूति-सं. स्त्री. [सं.] हमदर्दी।

सहाब-सं. पु. [फा. शहाब] १ एक प्रकार का गहरा लाल रग।

२ किसी व्यक्ति के लिए आदरसूचक सम्बोधन।

३ देखो 'साहिब' (रू. भे.)

सहाबी-वि. [स. शहाबी] लाल रग का।

सहाय-सं पु [सं. सहाय.] १ सेना, फौज।

उ०—आपरा घायला रा जीवण रा जतन कराइ दक्खिन रा सहाय सहित दो ही साहजादा अवती रै उपकठ ही मुकाम किया।
—वं. भा.

२ रक्षा।

उ०—केतै संत निवाजियै, कहो न मोपै जाय। मोहि छुटावौ ग्राह सू, वेगी करो सहाय।—गज-उद्धार

३ सहायता, मदद।

उ०—१ जिकौ दुस्कर देखि परै ही रुकियै थकै जवन नाम पूछियौ जरै कुमार भी आपरा सहाय देण रौ सारौ ही उदत अभिधांन सहित कहियौ।—व. भा.

उ०—२ सोढ सारगदेव देवडै देव बाढैल बीरदेव प्रामारसिंह देव गाजी त्रसिंह इत्यादिक वीरा भी आय सहाय दियौ।—व. भा.

४ बल, शक्ति।

उ०—प्राची मैं पुत्र नूं भेजि आवाची कूं आवता दो ही पुत्रां नूं समुझावण साम्है जावता पातसाह नूं पेलि तिण रौ बडौ पुत्र साहस रै सहाय पहिली कहिया कटक रै साथ दरकूंचां दक्खिण रै अभिमुख चलायौ।—वं. भा.

वि —१ सहायता करने वाला, मददगार।

उ०—१ दातार सूर सील कै निवास, दीन कै सहाय द्विज गऊ कै दास।—सू. प्र.

उ०—२ तनि दरसांणी सीतळा, जुगराणी जगमाय। सरम ग्रही देवासुरां, सुख काज धरम सहाय।—रा. रू.

२ रक्षक।

रू. भे.—सहाइ, सहाई, सहाव, साय, सिहाय, स्याय।

सहायक-वि. [सं] १ मददगार, सहायक।

उ०—१ सको हिज आज अनेक सरूप, बिधूसत फोज सहायक भूप ।—मे. म.

उ०—२ मेड़तिया 'मधकर' हर मेडतै सहायक, साहस कै सादूळ वंस कै नायक ।—रा. रू.

उ०—३ सुरजन सुत बूंदी सदन, सत्या दुरजणसाल । व्याहुण हू बळभद्र नू, हुवौ सहायक हाल ।—व. भा.

२ मित्र, दोस्त । (अ. मा.)

३ रक्षा करने वाला, रक्षक ।

उ०—१ घण मांण वधंताय भीड़ घणी, तनभाण सहायक प्राण तणी । —रा. रू.

उ०—२ च्यारूं आकर जंतु चराचर, एक अनेक सहायक ईस्वर ।
—रा. रू.

उ०—३ सरण सहायक विरुदसिर, पहली ही कुळपाण । अकबर हूं मुडियौ अबै, त्रस्त करूं तुरकांण ।—वं भा.

४ अनुयायी ।

५ चाकर, नौकर ।

६ शिव, महादेव ।

रू. भे.—सहायत, सायक, सिहायक ।

सहायत—देखो 'सहायक' (रू. भे)

उ०—१ समहर गजबौळ रौळिग्रै साबळ, बंसर बंसर तोलतौ बळ। विली सहायत 'अचळ' दूसरौ, 'दूद' विरोळै दिखण दळ ।
—दूदा नगराजोत रौ गीत

उ०—२ रायाराय साथि रुघपत्ती, भडारी मति सागर भत्ती । मुहता मैं गोपाळ मुदायत, सुत कल्यांण सब भड़ा सहायत ।
—रा. रू.

सहायता-स. स्त्री.—कोई कार्य सम्पादन मे किसी को शारीरिक, आर्थिक या मानसिक किसी प्रकार का दिया जाने वाला योग, मदद ।

रू. भे.—सायता ।

सहारण-वि.—१ सहायता करने वाला ।

२ उद्धार करने वाला ।

उ०—कव रामचंद हरि नांव लीजै अंत चित रही जीय । जीवड़े सहारण विस्ण मिळियौ, मूधि धीरज कीजीय ।—वि. स. सा.

सहारौ-सं. पु.—१ मदद, सहायता ।

उ०—अब कळदार लियौ अवतारा, सब कळजुग कौ देण सहारा । तुरत रेल अरु तार उतारा, एक करन सबको आचारा ।—ऊ. का.

क्रि. प्र.—मिळणौ, देणौ, लगाणौ ।

२ आश्रय, अवलम्ब ।

उ०—ग्राह ग्रह्यौ गजराज उबारयौ, बूड न दियौ छै जांन । मीरां दासी अरज करत है, नहिं जी सहारौ आंन ।—मीरां

रू. भे.—साहरौ, सैंयारौ ।

सहालग-स. पु.—१ हिन्दु ज्योतिषियो के अनुसार शुभ माना जाने वाला वर्ष ।

२ वे दिन या मास जब व्याह-शादी के मुहूर्त अधिक हो ।

सहाव-सं. पु. [सं. स्वभाव प्रा. सहाव रा. सभाव] आदत, स्वभाव ।

उ०—बाबहियउ नइ विरहिणी, दुहुवा एक सहाव । जब ही बरसइ घण घणउ, तब कहई प्री आव ।—ढो. मा.

वि:—१ समान, तुल्य ।

उ०—हरराज हुवौ अरजुन सहाव, कळिजुग जिण कीरति थिर कहाव ।—वं भा.

२ देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—अरजण अर दुरजोधन सहाव मागिव कै काजि स्रीक्रसण कन्है आया ।—वेलि टी.

सहावणौ, सहावबौ-क्रि. स.—पकड़ाना ।

उ०—झाले झेलै झालिया, ढाबै गहै दबाव । (लखौ) झलाया झेलिया, साहै (फेर) सहाव ।—डिं. को.

सहावणहार, हारौ (हारी), सहावणियौ—वि० ।

सहाविग्रोड़ौ, सहावियोड़ौ, सहाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सहावीजणौ, सहावीजबौ—कर्म वा० ।

सहावळ—देखो 'स्यावळ' (रू. भे.)

सहावियोड़ौ-भू. का. कृ —पकडाया हुआ ।

(स्त्री. सहावियोड़ी)

सहावौ-वि.—१ धारण करने वाला या सहन करने वाला ।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावां विरंच जांणे, धूरजटी तावा ऊच भावा मेर धीग । आवा लोभ रिखी राम तम्मी ज्यूं दधोच हाड ऊंच, सामवेद वेदांगां वीरावी संभूसिंग ।
—रावत संभूसिंघ गोगावत रौ गीत

२ देखो 'सावौ' (रू. भे.)

सहास-वि.—साहसपूर्वक ।

उ०—१ के डेरांधारी सुकव, सबळै तोल सहास । समहर सारा आगळी, कै सिरदारा पास ।—रा. रू.

उ०—२ चारण कारण अग्गळा, सांदु जोगीदास । भीसण 'सूरा' भारमल, 'आसल' 'धना' सहास ।—रा. रू.

क्रि. वि.—१ खुशी से, हँस कर, हर्षपूर्वक ।

उ०—१ खगवाहो रिण खेलसी, भाटी जीवणदास । दुजड़ा हथ हरदास ज्यो, साथै हुवा सहास ।—रा. रू.

उ०—२ मचायौ सोण रौ कीच द्रोण सौ दिखायौ मांनू, तेगां सूं रचायौ ख्याल अनोखौ तमास । छकै छाक लोहां पूर आरबा विमाणां छायौ, हैकम्पै भूलोक आयौ मुनिंद्रा सहास ।
—बादरदान दधवाड़ियौ

२ देखो 'साहस' (रू. भे.)

सहासवंत—देखो 'साहसवंत' (रू. भे.)

सहि-वि.—सब, समस्त ।

उ०—१ बीजा लोक सहि आइ मिळिया । —द. वि.

उ०—२ ताहरा अठै बीजा ठाकुरां माहां बीकानेर कोई न हुतौ। सहि सिमाणै हुता । अठै कुंवर लीदलपतजी बीकानेर हुता ।
—द. वि.

स. स्त्री.—१ देखो 'सखी' (रू. भे.)

२ देखो 'सही' (रू. भे.)

उ०—वसुदेव देवकी सू ब्राह्मणै, कही परसपर एम कहि । हुए हरण हथळेवौ हुओ, संस ससकार हुवइ सहि ।—वेलि

सहिउ–वि. [स. सोढः] सहन किया हुआ । (उ. र)

सहिकार—देखो 'सहकार' (रू. भे.)

उ०—नालिकेर नीला भला, हाथी हरेवी द्राख । कदळी-फल सहिकार नी, करी कातळी लाख ।—मा. का. प्र.

सहिज—देखो 'सहज' (रू. भे)

उ०—तब एक अदभुत भए तमासा, आतम जोत हो गई अकासा । बहुरि क्रस्ण के माहि समाई, साजोत-मुक्त सहिज तिन पाई ।
—हरचद डोहोकियौ

सहिजन–सं. पु. [सं. शोभाजन] भारत के प्रायः सभी प्रान्तो में पाया जाने वाला एक प्रकार का बड़ा वृक्ष ।

सहिजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—एकाज टूस आडी नदी नेडौ सहिजादौ खुरम । अणकियँ जुद्ध आपां अप्रिय, महाजुद्ध कीयौ धरम ।—गु. रू. ब.

सहिणौ, सहिबौ—देखो 'सहणौ, सहबौ' (रू. भे)

उ०—तैं कस्ट सहिण री समरथाई नहीं, तिण सूं वस्त्रादिक पडिलेहीण भोगवे छै ।—भि. द्र.

सहिणहार, हारौ (हारी), सहिणियौ—वि० ।

सहिओड़ौ, सहियोड़ौ, सह्योडौ—भू० का० कृ० ।

सहीजणौ, सहीजबौ—कर्म वा० ।

सहित–स. पु. [स.] जैनियो के ८८ ग्रहो मे से तेरहवां ग्रह ।

अव्यय.—साथ, युक्त, समेत ।

उ०—१ सठता धूरतता सहित, छंद रचै मद छाय । निपट लिया निरलज्जता, कुकवी जिकौ कहाय ।—बा. दा.

उ०—२ आजे अर तिण बार सजै सुर राज राज सौं, सुभट दुजि सचिव समाज सो । भरिया हौदा बहुत क गहर गुलाल सौ, होवै सहद हगाम खूब इण ख्याल सो ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ मारु-घुघटि दिट्ठ मइं, एता सहित पुंणिद । कीर भमर कोकिल कमळ, चद मयंद गयद ।—ढो. मा

क्रि. वि.—साथ-साथ, साथ मे ।

रू. भे.—सहित, सउं, सउ, सहत, सहति, सहती, सहतौ, सहथ्यहि, सहीत, सहीतौ, सहेत, सहेती, सहेतौ ।

सहिनांण—देखो 'सैनांण' (रू. भे.)

उ०—१ सज्जण ज्यू ज्यू सभरइ, देख्या आहीठाण । झुरि झुरि नइ पजर हुई, समर समर सहिनांण ।—ढो. मा.

उ०—२ हू तेड़ाऊ ताहरा आवै, तीरा रौ सहिनांण मेल्हीस, तीन भळका मेल्हू ताहरां इयै सहिनाण आयै, भीवौ कोटड़ियौ मेल्हीस ।
—ऊमादे भटियाणी री वात

सहियर—देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—१ सहियर चाली साथइ करी, मारुवणी आधी संचरी । पखी हुवइ तौ उडी मिळइ, मारुवणी प्रीतम संभरइ ।—ढो. मा.

उ०—२ सहियर हे सहियर आवौ मिलो है उतावली सुंदर करि सिणगार ।—ध. व. ग्र.

सहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बरदास्त किया हुआ, सहन किया हुआ. २ परिणाम भोगा हुआ, फल भोगा हुआ. ३ भुगता हुआ. ४ सज्जीभूत हुवा हुआ, सजा हुआ, तैयारी किया हुआ ।

(स्त्री. सहियोडी)

सहिलाळी—देखो 'सोलाळी' (रू. भे) (डिं. ना. मा.)

सहिसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

उ०—सहिसकिरण सिर सचरइ, सहू सरया सर जेम । रातिल्लवर रुड्ड नही, अबळा पीडइ प्रेम ।—मा. का. प्र.

सहिसभुज, सहिसभुजा—देखो 'सहस्रबाहु' ।

सहिस्णु–वि. [सं. सहिष्णु] सह लेने वाला, बरदाश्त कर लेने वाला, सहनशील ।

स. पु.—१ विष्णु ।

२ प्रजापति पुलह व गति के एक पुत्र का नाम ।

सहिस्णुता, सहिस्णुत्व–स. स्त्री. [सं. सहिष्णुता, सहिष्णुत्व] १ सहन करने की शक्ति ।

२ सहन करने की क्रिया ।

३ सब्र, धैर्य ।

सहिस्रभुज, सहिस्रभुजा, सहिस्राभुज—देखो 'सहस्रबाहु' ।

उ०—किधौं सहिस्राभुज पै दुजराम, किधौ हनमत असोक अरांम ।
—ला. रा.

सही–वि. [अ. सहीह] १ जिसमे त्रुटि, दोष या भूल न हो, बिल्कुल ठीक ।

उ०—१ वौ दरबारिया नै नवा नवा सवाल पूछतौ । सही जबाब मिळियां मूडे माग्यौ इनांम देवतौ । सोचण सारु मोलगत देवतौ । अर मोलगत पछै सही जबाब नी मिळियां पूजतौ डड देतौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ करता करै स तु सही, मेरा किया न तूझ ।
—अनुभववाणी

उ०—३ कोई ऊचै घराणा रौ आदमी हिंदुस्तांन देखण नै आयौ दीसै । सेठ रौ अंदाज सोळूं आना सही निकळयौ ।—अमर-चूनड़ी

२ यथार्थ, वास्तविक ।

उ०—सत कूर सनातन दोय सही, सत पंथ बहै सौ महत सही।
—ऊ. का.

३ सत्य, सच।

उ०—१ सत कूर सनातन दोय सही, सत पंथ बहै सौ महत सही।
—ऊ. का.

उ०—२ बस केवल नाम सही है, बौ मोटौ राम सही है। जित्तौ तप मैं तपस्या, वित्तौ ही काम सही है।—करणीदांन बारहठ

४ सब, समस्त।

उ०—१ सरकै जुड़ भाभर मेछ सही, जुध मै धुजरेण पलाल जही।—रा. रू.

उ०—२ हिय मा करइ बधामणा, सही त सीधा काज। जे सुपनंतर दीखता, नयणें मिळिया ग्राज।—ढो. मा.

स. पु.—१ किसी बात वचन की सत्यता एवं यथार्थता के लिए साक्षी के रूप में किये जाने वाले हस्ताक्षर।

२ प्रामाणिकता एव मान्यता सूचक शब्द।

ज्यूं—खैर की कोनी थें मानो ज्यूं ई सही।

क्रि. वि.—१ अवश्य ही, निश्चय ही।

उ०—१ सत्र हरा नारि नह नीद भरि सोवसी, हल चला सही हालां घरे होवसी।—हा. झा.

उ०—२ हीया फूट हठ न करौ हूरां, नर हिंदू छै तुरक नही। बामीबंध केसरियै बागै, सूर सुहड़ राठौड़ सही।
—हठींसिंघ जोगावत री गीत

उ०—३ उत्तर ग्राज स उत्तरउ, सही पडेसी सीह। वालभ घरि किम छडियइ, जा नित चंगा दीह।—ढो. मा.

२ वास्तव मे।

उ०—नाक री डाडी, ग्रांख्यां, निलाड़ डील रोमछर देखि सही कंवरजी ही छै।—जगदेव पंवार री बात

३ देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—१ सही समांणी साथि करि, मंदिर कूं मल्हापत। सउदागर नेडी बहइ, सुणियां प्रीतम वत्त।—ढो. मा

उ०—२ सही भणइ सुणि सांमिणी ए किम होइ गमार। माय बाप बिछोउ, ग्रंदोह करइ ग्रपार।—हीराणंद सूरि

ग्रव्यय—१ एक ग्रव्यय जो विशिष्ट प्रसंगों में वाक्यों के ग्रन्त में ग्राकर ये ग्रर्थ देता है।

(क) ग्रधिक नही तो इतना ग्रवश्य।

ज्यूं—ग्राप ग्रठै पधारजो तो सही।

(ख) कोई ग्रसम्भावित बात होने पर कुछ जोर देते हुए ग्राश्चर्य प्रकट करना।

ज्यूं—तोई थूं बठै गयौ तौ सही।

रू. भे.—सइ, सईह, सहि।

सहीग्रड-सं. स्त्री.—सहेली या सखी मानने की क्रिया।

उ०—सारसडी सोहइ नहीं, खीजडी बईठी खेव। ईस तिजीनइ कौ करइ, सहीग्रड केरी सेव।—मा. कां. प्र.

सहीक-ग्रव्यय—ग्रवश्य ही, निश्चय ही।

उ०—घुडला रुधिर भिकोळिया, ढीला हुग्रा सनाह। रावतियां मुख भाखणा, सहीक मिळियौ नाह।—हा. झा.

सहीत, सहीतौ—देखो 'सहित' (रू. भे.)

उ०—१ महादिय मांन करी गुह मीत, तारै सह कीर कुटंब सहीत।—ह. र.

उ०—२ उनमन नेजा फहरै, ग्रनहुंदै धुरै नीसाण। सहीत भोम्या उपरै, चढियौ सबद दीवाण।—वि. सं. सा.

उ०—३ हथळेवौ नरलोक, पइसारौ परलोक मै। सुखविलसण सतलोक, जान सहीता जावस्यां।—रामनाथ कवियौ

सहीतोड़ोतरौ-सं. पु.—एक प्रकार का कर विशेष।

उ०—समत १७०८ राजा जसवतसिंघजी सहीतोड़ोतरा छूट किया, बाकी सहीतोड़ोतरा वाजै रकमां खरड़ां री साख बडै गांव।
—नैणसी

सहीद-स. पु. [ग्र. शहीद] वह व्यक्ति जो देश, धर्म या किसी लोकहित के लिए बलिदान होता हो।

सहीदी-वि.—जो शहीद होने के लिए तैयार हो।

सं. पु.—शहीद का पद, कार्य।

उ०—मोत सूं कोई इलाज नहीं छै। पण चाहीजै जीव म्हारौ किणी कांम लागतौ तो सहीदी पावतौ।—नी. प्र.

सहीनांण—देखो 'सैनांण' (रू. भे.)

उ०—तठै कुंवरजी ग्रापरा हाथ री सवालाख री मूंदड़ी सहीनांण वासतै रीझ दीवी।—रीसालू री वारता

सहीप—देखो 'सही' (रू. भे.)

उ०—ग्रड़ोथड़ी ग्राग बूढां धकावै वीरांण ग्राघा, महाबीर क्रोध चाळै लागा तौ महीप। किदीठी कराळी रीस जैद्रथी मिटाबा कोप्यौ, सत्रवा भुजाटा करी भीम ज्यूं सहीप।—पाबूजी रौ गीत

सहीली—देखो 'सहेली' (रू. भे.)

उ०—सहीली तेडीनि ग्रावी, सूति करूं प्रणांम। कर जोडी करि वीनती, ग्राग्या द्यु सूं कांम।—नळाख्यांन

सहीस—देखो 'सईस' (रू. भे.)

सहीसलांमत-वि.—१ स्वस्थ, भला चगा।

२ दोष रहित।

३ ग्रनुरूप।

सहुंगौ-वि.—१ सस्तौ।

२ बिना या कम परिश्रम का।

सहु, सहुग्रां, सहुए-वि.—सब, समस्त, सभी।

उ०—१ सती दीयै ग्रासीस सहु परवार सुहावै। तौ उभै गढ धंणी कमण बळ बीयौ कहावै।—ग्र. वचनिका

उ०—२ तारण तरण नही कौ तौ सारीखौ, पुहवि सहु सोभि नै ए लह्यौ पारिखौ।—ध. व ग्रं.

उ०—३ फिरियौ पछि वाउ ऊनर फरहरियौ, सहुए सूहव उर सरग।—वेलि

रू. भे.—सहू।

सहुरा—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

सहुर—देखो 'सऊर' (रू भे)

उ०—भाली बडी ठकुराणी, जिसौ ही रूप, जिसौ ही सहुर, जिसी ही सारी बात मै सुघड़। सौ खींवसी घणौ राजी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

सहू—देखो 'सहु' (रू. भे.)

उ०—१ छरा भयंकर छोह चख, डाढ भयंकर डाच। दीसै नाहर देखियां, सहू प्रवाडा साच।—बा. दा.

उ०—२ राजा तुम्ह रुड़ हुजौ, इम माहरी ग्रासीस। परिकर सहू परिवार-मिउ जीवै कोडि वरीस।—मा. का. प्र.

सहूर—देखो 'सऊर' (रू भे.)

उ०—तरै अग तमायची बादसाह महरबान होय मनसब दियौ। पण जलाल क्यूं ही सहूर मै निजर ग्रव्वल ग्राइयौ।

—जलाल बूबना री बात

सहूरदार—देखो 'सऊरदार' (रू. भे.)

उ०—तद ऊदै जी घणा राजी हुवा कही—छै तो बाळक सहूरदार।

—सूरै खीवै कांधलोत री बात

सहूलियत—स. स्त्री. [फा.] १ ग्रासानी, सुगमता।

२ कायदा, ग्रदब।

३ सुविधा।

सहूवर—देखो 'सहवर' (रू. भे)

उ०—धणी करै वाखांण सत्त करै मगळ धमळ, सहूवर साथ ग्रणवर सहोधा। मांडवै परणजै कमध गोपाळमल, जानिया साथ रिडमाल जोधा।—दुरसौ ग्राढौ

सहेज—देखो 'सहज' (रू. भे.)

उ०—तिहि गग हिलोलेह जाय, सतगुर चीन्है सहेजै न्हाय।

—वि. स. सा

सहेट—स. स्त्री.—सकेत-स्थल।

उ०—पूजा रै मिसि ग्रबिका रै देहरै नगर बाहिरि हू ग्रावु छू। इतनी सहेट बताई।—वेलि टी.

सहेत, सहेतौ, सहेतौ—देखो 'सहित' (रू भे.)

उ०—१ नमौ हैग्रीव निगम्म सहेत, नमौ खळ मार हयानन खेत।

—ह र.

उ०—२ सतिया ग्रान सहेत, दाग वेदोगति दीधा। केसरिया कमधजां, करै ग्रत उछव कीधा।—सू प्र.

उ०—३ कुटंबा सहेता हुती नाव कीर, वळे पाय रेणा तरी रघुवीर।—सू प्र.

सहेद—देखो 'सहद' (रू. भे.)

सहेरउ, सहेरौ—देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

उ०—तसु बंधव डूंगरसी ते पग दीपतउ रे भागचद कुलभाण। विनयवंत गुजवत सुभागी सहेरउ रे बडदाता गुण जाण।

—प. च. चौ

सहेल—सं. पु—चौक।

(मि चोवटौ)

सहेलड़ी, सहेली—स. स्त्री.—१ सखी, सगिनी। (ग्र. मा.)

उ०—१ सात सहेल्यां, रै झूलरै ग्रै पणिहारी ग्रै लो, पाणीडै नै चाली रे तळाव वाला जो।—लो. गी.

उ०—२ नणद भोजाई सरवर न्है गयी, सात सहेली म्हारै साथ।

—लो. गी.

उ०—३ सग री सहेली म्हारी रचणी लगावै, कइया लगाऊ सायेवां! थारै रे बिना? तीजां ग्रायी ढोलौ नही ग्रायौ, पल पल झूरू मेरा सायेबा! थारै रे बिना।—लो. गी.

उ०—४ दोळी फिरी दसेक कुसुम कर कामठी, जोवत गहळी जीव सहेली सामठी। निज निज मुख सा नाम कहावत कथ री, बढि इम हास विलास मदन महमत री।—सिवबख्स पाल्हावत

उ०—५ सावण री बड तीज, रुखमण झूलण चाली ग्रो। ग्रौर सहेल्यां झूलै इरा-तीरा रुखमण बीच पधारी ग्रो।—लो. गी.

उ०—६ बिदर सहेल्यां बीच मैं, हस हस मारै होड। चेली सू चूकै नही, मौकौ लागां मोड। – ऊ. का.

२ ग्रनुचरी, दासी।

उ०—सांखलां कही, वैहल छोड देवौ, ग्रापै चली ग्रासी। तर खरळा वहलवांन नु उतार रथ ऊपर सहेली नू चाढि वहीर कीवी वहला भारवरदारी सारी रथ रै पेडै लगाय दीया। ऊभा देखण लागा।—कुवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—सहीली।

सहेलौ—देखो 'सहल' (रू. भे.)

उ०—माल्हंतौ घरि ग्रावणौ, सखी सहेलौ कामि। जौ जाणूं पिय माल्हणौ, जै मल्है संग्रामि।—हा. भा.

सहैभर—देखो 'साभर' (रू. भे.)

उ०—पछै राव मालदै दिन-दिन जोर चढतौ गयौ। ग्रजमेर राठौड़ महेस घड़सीहोत नुं पटै दियौ। डीडवाणौ लीयौ। डीडवाणौ राठौड़ कूंपै महैराजोत नु पटै दीयौ। महैंभर लीवी। राव रा कामदार ग्राय-ग्राय सांभर बैठा।—नैणसी

सहैर—देखो 'सहर' (रू. भे.)

उ०—मेड़तौ गाव सोह पड़ायौ, रावळा घरा रा खेत कीया। सहैर नाडी दीरांणी कन्है वासवांणौ कीयौ थौ कहै छै वईक ढूढा हुवा था। सहैर रौ नाव नवौ नगर दीयौ थौ।—नैणसी

सहोकति, सहोक्ति-सं. स्त्री. [सं. सहोक्ति] 'सह', 'संग', 'साथ' आदि शब्दों को व्यवहार में लाने का एक प्रकार का काव्यालंकार विशेष।

सहोढ-सं. पु [सं.] अविवाहित कन्या के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

सहोदर-वि. [स.] (स्त्री. सहोदरा) जो एक ही माता के उदर से उत्पन्न हुआ हो।

सं. पु.—सगा भाई, भाई। (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ मुहक्करमा नै आपरा छट्टा सहोदर नूं जाळौर रौ दुरग दीधौ। जठै खंधावार जमाय मौक्तिराज नै पुरुरवा प्रियव्रत रै समान राज कीधौ।—वं. भा.

उ०—२ जाकै नथै माता नथै पिता, नथै कुटंब सहोदरं। जै नर करै ताकी सेवा, ताका पाप दोख क्यौ जायतै।—वि. स. सा.

रू. भे.—सोदर, सोदरज।

सहोदरलखण, सहोदरलखन, सहोदरलखमण-स. पु. [सं. सहोदर+लक्ष्मण] १ श्रीराम भगवान।

२ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

सहोधौ-वि.—१ कुलीन, अच्छे कुल का।

उ०—धणी करै वाखांण सत्त करै मंगळ धमळ, सहूवर साथ अणवर सहोधा। माडवै परणजै कमंध गोपाळमल, जानिया साथ रिणमाल जोधा।—दुरसौ आढौ

२ ओहदेधारी, पदाधिकारी।

सहोर-वि. [सं.] श्रेष्ठ, उत्तम।

स. पु. [स. सहोरा] ऋषि, मुनि।

सह्य-वि. [सं.] १ सहन करने योग्य, सहनीय।

२ मजबूत, ताकतवर।

सं. पु. [सं. सह्यं] १ तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य।

२ सहायता, मदद।

३ योग्यता।

[सं. सह्यः] ४ सह्याद्रि नामक पर्वत।

सह्यालु-सं. पु.—श्याम रंग के तने का एक पौधा विशेष जिसकी जड़ को निरगुंडी कहते हैं।

सह्याद्रि—सं. पु.—बम्बई प्रान्त का एक प्रसिद्ध पर्वत।

सहृदय-वि. [सं. सहृदय] १ कृपालु, दयालु, सुहृदय।

२ सच्चा।

वि. [सं. सहृदयः] १ विद्वान।

२ गुणग्राही।

३ सज्जन।

४ रसिक।

सां-सं. स्त्री.—शपथ, सौगन्ध।

सर्व.—क्यों।

उ०—रोक सां कर रिव परी केरी, भूभवातइ मेल्ही फेरी। तीणि वात मनि हउं लाजउ, सैन्य कौरव तणौं नवि भाजउं।

—सालिसूरि

अव्यय—सम्बन्धसूचक अव्यय, से।

उ०—१ ध्यान गंभीर गभीर सौ, उरळौ कोड़ि अनेक। पावक सां उन्हौ प्रघळ, कोड़ि थोक प्रभ एक।—पी. ग्रं.

उ०—२ हरि मिळिया बह हेत सां, सतगुरु नांमै सीस। उरा पधारौ एथियै, आवै बारह ईस।—पी. ग्र.

उ०—३ धरणीधर मोटौ धिणी, मोटां सा मोटोह। तूं नान्हा सां नान्हड़ौ, दै दईतां दोटोह।—पी. ग्र.

सांइंड—देखो 'साढ' (रू. भे.)

सांइणियौ-वि. [सं. शाकुनिक] शकुनशास्त्र का जानकार, शकुन बताने वाला।

स. पु.—१ शकुन बताने वाला व्यक्ति।

२ शकुन बताने वाला पक्षी।

सांइणौ, सांइणौ, सांइनौ, सांइनौ-वि. [सं. सहायन] (स्त्री. सांइणी)

१ समवयस्क, हमउम्र।

उ०—१ कुंवरसी नाव दियौ। सो मोटौ हुवौ। वडो सिरदार, कुंवरपदौ करै। लोक आप सांइना तावै कर दिया। सो उहा नूं कपड़ै पाड़ै पोसाख आछी राखै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ धनै सेठ वै नूं कहियौ तूं इण बात रै खयाल मत पड़। परणीजै तौ थारौ सांइणौ देख परण।—पंचदंडी री वारता

२ साथी, दोस्त, मित्र।

उ०—१ म्हारा मदवा मारू आया वै, रैण रा उनींदा म्हारै महैला। संग सांईनां रै सिकारां रमतां, बन बन करता सैलां।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ साजन आया है सखी, संग सांइणा लेर। पाई नवनिध नार अब, नगर बधाई फेर।—अग्यात

३ बुद्धिमान, चतुर, दक्ष।

रू. भे.—सांइणौ, सांइणौ, सांईनौ, सांमीणौ, सांमीनौ, सांयीनौ, सांयीनौ, सांइनौ, सांइनौ।

सांइ, सांई-सं. स्त्री. [सं. स्वागतम्] १ मिलने-भेंटने की क्रिया।

उ०—१ निरमल साधु तणा मन सरीखूं, सीतल सुत नूं सांई। जल जोई राजा मनि कल्पि, नवी ओपम कांई।—नळाख्यांन

उ०—२ अजिउ व्याघ्रिसिउं क्रीडा कीजइ, अजिउ सरप्पसिउं सांई दीजइ, अजिउ हालाहल पीजइ, अजिउ महाविखनउ कवल लीजइ, अजिउ अग्निमध्य प्रवेस कीजइ, अजीउ सत्रुसिउं वसीइ, पुण प्रमाद न कीजइ।—व. स.

सं. पु. [सं. स्वामी] २ मुसलमान फकीर। (सूफी) (मा. म.)

उ०—स्यांम ताज कफनी कमंडळ मैं नीर, डाढी सुपेत सेख सुवरण सरीर। मोकळ राव आतौ देखि माथा कौं नवायौ, सांई स्यौ भुरांनी सेखनामी पंथ पायौ।—शि. वं.

३ सिन्धियों के लिए आदरसूचक सम्बोधन।
४ सिन्धियों के लिए आदरपूर्ण सम्बोधनसूचक शब्द।
५ देखो 'सामी' (रू. भे.)
उ०—१ दादू तौ पिव पाइयै, कर सांई की सेव। काया माहि लखाइसी, घट ही भीतर देव।—दादूबाणी
उ०—२ समझाऊ सौ वार, समज रौ घाटौ साई। जगत कमावण जाय, मुरड़ बैठे घर माई।—ऊ का.
उ० ३ धू ग्रह ग्रास बाळपण धारै, सांई त्या ततकाळ सभारै।
—र. रू.
उ०—४ रति छह मेह अणछेह दूजौ 'रयण', तेह राखण जुगा चार ताई। धरा बर दीयौ बर मिल्यौ हुवै धरती, सुरपति जिसौ अधपती सांई।—छतरसिंघ हाडा रौ गीत
उ०—५ सांई सूं दिल दूसरा, सौ सतमिण सी नारि। हरिया उर इकतार बिन, बांकु ठाकुर मारि।—अनुभववाणी
उ०—६ कंवळौ सगळा साथ, नहीं करड़ौ किण ताई। वरसा मैं वण मौन, समाधी लेवै सांई।—दसदेव
उ०—७ सांई एहा भीचडा, मोलि महूगे वासि। ज्या आछन्ना दूरि भौ, दूरि थका भौ पासि।—हा. झा.
रू भे.—साइ।

सांईग्रार, सांईग्रार—स. पु—१ बधिया, खसी। (बैल)
२ बधिया करने की क्रिया।
रू भे - संईयार, साईयार, साईयार, साईवार, सांईवार, साईसार, सायार।

सांईणौ, सांईणौ, सांईनौ—देखो 'साइणौ' (रू भे.)
उ०—१ चैत महीनौ चैन रौ, हुवा ज हालणहार। तग खेचौ तुरियां तणा, सांईणां सिरदार।—अग्यात
उ०—२ तेज पुज ग्रप सुतण, हुवौ जस वेस झळाहळ। सांईनां साथिया, मिळ खेलै मझि मंडळ।—सू. प्र.
उ०—३ पुत्र रौ नाम जीमूतबाहन थरपियौ। जीमूनबाहन नू देख प्रजा खुस हुई। वडौ सांईणौ रिसी रौ पुत्र मधूकर तियै रै साथ खेलता रमता घोड़ै चढि मलयाचळ गया।—बैताळ पचवीसी
उ०—४ सादर सांईनी आदर उमगाई, उड़सी परिया सी बरियां घर आई। गोरी गज गामणि हसा गति हालै, चंपा डाळी सी राळी भुजचाळै —ऊ. का.
(स्त्री. साईणी, साईणी, साईनी)

सांईयार, साईयार सांईवार, सांईवार, सांईसार—देखो 'साईग्रार' (रू. भे.)

साऊ—स. पु. [सं. श्यामक] कगनी या चने की जाति का एक प्रकार का घटिया अन्न। (डिं को)

सांक—देखो 'सका' (रू. भे.)
उ०—१ साठि सहस्र वलि जेहनै, राक्षस पूरइं पूठि। सांक न राखै केहनी, दूरि किया जिण दूठि।—वि. कु.
उ०—२ पुण्य कतून किया अति परिघल, सुरपति सबल पडी मन सांक। पहुतउ सोम इंद्र परिचावा, वरम्यूं मुगति नही तुझ वाक।
—स. कु.
२ देखो 'सको' (रू. भे.)
उ०—१ छात ढलतै जसू हुइ नाका छिली। सांक तज साह सूं करै साका। दाव पाका कीया सुजस डाका दिया, जोध बांका करै नाम जाका।—घ व ग्रं.
उ०—२ सेल जमदाढ खाग बेबै धारी वाही सही, सजै भै दाई हरा गै अजारै खाई सांक। ग्रमी रेल ग्रमीराई पाई सौ दिखाई आछी, अडी राई धीठाई वळियौ आड़ै ग्राक।
—करणीदान कवियौ
उ०—३ गुण तीन दास पतिसाह गाइ. वेचिया प्रभु थारा विकाह्। राजिया केई दीवाण रांक, सुर कोडि तीस मुर करै सांक।
—पी. ग्र.

सांकड़—स पु [सं. सङ्कट] संकट, विपदा।
वि.—१ सकीर्ण, तग।
२ कष्टमय, दुखमय।

सांकड़णौ, सांकडबौ—क्रि ग्र.—१ सकीर्ण होना, सकुचित होना।
क्रि. स.—२ सकुचित करना, संकीर्ण करना।
३ बंद करना। (दरवाजा)
४ आक्रमण करना, हमला करना।
सांकड़णहार, हारौ (हारी), सांकड़णियौ—वि०।
सांकड़िग्रोड़ौ, सांकड़ियोड़ौ, सांकड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांकड़ीजणौ, सांकड़ीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सांकड़भीड़, सांकड़भीडौ—सं. पु.—सकरापन, तगी।
उ०—गुड़िया ढाहै मदधगज, ताता चाळ तुरंग। साकड़भीड़ौ सुरग व्है, जिकौ कहीजे जग।—बां. दा.

सांकड़ाई—देखो 'साकड़ीलौ' (रू. भे.)

सांकड़ाणौ, सांकड़ाबौ—क्रि. स.—१ संकुचित करवाना, सकीर्ण करवाना।
२ बन्द करवाना। (दरवाजा)
३ आक्रमण करवाना, हमला करवाना।
सांकड़ाणहार, हारौ (हारी), सांकड़ाणियौ—वि०।
सांकड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सांकड़ाईजणौ, सांकड़ाईजबौ—कर्म वा०।

सांकड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सकुचित करवाया हुआ, संकीर्ण करवाया हुआ। २ बन्द करवाया हुआ (दरवाजा). ३ आक्रमण करवाया हुआ, हमला करवाया हुआ।
(स्त्री. साकडायोडी)

सांकड़ियोड़ौ—भू. का. कृ—१ संकीर्ण हुवा हुआ, संकुचित हुवा हुआ.

२ संकुचित किया हुआ, संकीर्ण किया हुआ. ३ बन्द किया हुआ (दरवाजा). ४ आक्रमण किया हुआ, हमला किया हुआ।
(स्त्री. साकडियोडी)

सांकड़ीलौ, सांकड़ीलौ–सं. पु.—१ सकरापन, तंगी, स्थानाभाव।
२ कमी, अभाव।
३ संकट, आपत्ति।
४ दबाव, प्रभाव।
५ लिहाज।
रू. भे.—सकड़ाई, सांकड़ाई, सांकडेलौ।

सांकड़ै–क्रि. वि.—१ संकट में, आपत्ति में।
उ०—१ प्रिथमी की रत्ती सारी प्रचा तौ अनेकां पेखै, देखै देस देसा मैं प्रदेसा साथै देख। करै रोग प्रेत-चाळौ सांकड़ै ऊबेल करै, पेलै व्याध टाळौ इसौ दूसरौ न पेख।—बादरदान दधवाडियौ
उ०—२ बडाबडी सासणा की सांकड़ै उबेल करै, सेंस मुखा कीरती तौ गावै सेसराज। थानथाना 'पद्म' कहै सदा दिपै जोत थारी, माल धिनौ छत्रधारी मेहाई म्हाराज।—पदमजी बारहठ
मुहा.—सांकड़ै घालणौ, साकड़ै लेणौ=मुसीबत या संकट में फसाना या डालना।
२ अचानक, अकस्मात।
उ०—अणचीतिया पाहुणा सांकड़ै ही आय पूगा।—वं. भा.
३ पास में, नजदीक, समीप।
उ०—१ दौ ही बीर सांकडै मिळिया दाव करता बचता हाडौती कै मारग बहिया आवै। अर ओर भी दो ही तरफ रा प्रबीर जुदा-जुदा जुद्ध करता या दौ ही महाबीरां रै पाछै रहिया आवै।
—वं. भा.
उ०—२ ज्यू ज्यूं दिन सांकड़ै आया मासी रौ काळजौ धुक धुक करण लागौ। जै की अणहोणी कै अजोगती बात व्हैगी तौ......। उण सारू तौ आभा सू सूरज टूटनै खिर जावैला।—फुलवाडी
उ०—३ कोट घेरियौ पैला कटकां, अधिक सांकड़ै आयौ। कै वेळा माता तैं करनी, बीकानेर बचायौ।—बां. दा.
रू. भे.—सकड़ै।

सांकड़ैल–वि.—जबरदस्त, जोरदार, शक्तिशाली, बलवान्।
उ०—झडाया ओझाड़ां झाड़ कांकड़ेल पवै झूळा, सांकडैल भडां मूळा अड़ाया सधीर। बीफरैल गुसैल कदेई तोल न आ बीजा, कैई दातडैल जई गुडाया कंठीर।—करणी महियारियौ

सांकड़ौ–वि. [सं. संकट] (स्त्री. साकडी) १ निकट, पास, समीप।
उ०—कंत घणी ही सांकड़ौ, घेरौ घर रै दोळ। बाभी देवण हूलसै, सेला री घमरोळ।—वी. स.
२ संकरा, तग, समीप।
उ०—१ खातौड़ा रै अमल गिवार जोड़ी जोरावर ढोल्यौ सांकडौ।
—लो. गी.
उ०—२ किस विध आऊं ए मेरी मा की जाई जामण की जाई। हुम घर मंडी सांकड़ी राज बुलाऊं रे बीरा चेजारौ बुलाऊ।
—लो. गी.
३ संकुचित।
उ०—१ संजोग सूं ई अेक सांकड़ा दायरा मैं आपानै जीवण जीवणौ पड़ै। आरै जीवण री अदीठ मैं जका लोग बसै अर आपरौ जीवण साचरै, वारा सूं मिळाप नी व्हैणौ—आ ई तौ संजोग री बात है।—फुलवाडी
उ०—२ थारी मासी रौ ध्यान साव ई सांकड़ौ है बेटी! म्हारी सीख मानै तौ अेकर इण प्रण नै तौ पार पटकणौ इ है। औ प्रण पूरौ व्हियां ई थारै म्हारै बदळा री बात रौ जोग सजैला।
—फुलवाड़ी
उ०—३ गुमानजी रौ साध पेमजी, हेमजी स्वामी नै बोल्यौ—हेमजी तीन तूंबड़ा वधता हुंता तै आज फोड न्हाख्या। जद हेमजी स्वामी कह्यौ—उणा मांहि थी नीकलनै नवौ साधपणौ पचख्या नै तौ घना दिन थया, अनै तीन तूंबड़ा वधता परठ्या कहौ तै किण कारण? जद पेमजी कह्यौ—ढीला पड़चा था सौ सांकड़ा हुंता हुंता हुयां। पछै हेमजी स्वामी भीखणजी स्वामी नै कह्यौ—महाराज! आज पेमजी इसी बात कही—ढीला पड्या सो सांकड़ा हुंता हुंता हुस्या। जद स्वामीजी बोल्या—थैं यूं क्यूं नहीं कह्यौ। किणही जावजीव सील आदरचौ। छव महिना पछै बोल्यौ—एक स्त्री म्हैं आज छोडी। जद किण ही कह्यौ—थैं आदरयां नै तौ घणां महिना थया है नी! जद तै बोल्यौ—ढीला पड्या हा सौ सांकड़ा हुंता हुंता हुस्या।—भि. द्र.
४ कठिन, दुष्कर।
उ०—१ किणही पूछचौ आपरौ इसौ सांकड़ौ मारग किताक बरस चालतौ दीसै है।—भि. द्र.
५ भयभीत, डरयुक्त।
उ०—मासी रै मूंडा री बात संपूरण व्हियां पैली ई छवूं चीतरा न्यारा न्यारा होय भीड़ रै लारै गलापता गिया परा। लोग मर्तै ई सांकड़ा होय बोला बोला डरता धूजता गळियारा साम्ही वहीर होवण लागा।—फुलवाड़ी
६ विकट, विषम।
उ०—ऊथड़ी जरद्दा कड़ी खड़ी चंडी खेल ईलै, रथां चडी भाड़ी झड़ी वरै सूरा रंभ। सांकड़ी बणंता घडी बाकड़ी बजावै सार, खळां बडी बडी कीधी झालै अडीखंभ।—रांमसिंह झाला रौ गीत
७ संक्षिप्त, छोटा।
उ०—कुसलौ तिलोक सकडाइ मै चालवा लागा। अनै मन मैं जाणौ भीखणजी रा स्रावका नै फेरा। परुपणां सांकड़ी करवा लागा।—भि. द्र.
८ कमी और अभाव युक्त।

उ०—जद रुघनाथजी बोल्या—म्है तौ साध हा। म्हारै कठै कहणौ है रे ? म्हारै तौ मूंन है। जद रामचद बोल्यौ—थारै नहि कहणौ तौ उवै किम कहसी ? था विचै तौ उवै साकडा चालै। मोटा होयनै काइ लोकां नै लगावौ हौ। चरचा करणी ह्वं तौ न्याव री चरचा करौ।—भि. द्र

स. पु.—१ कष्ट, संकट, आपत्ति।

उ०—१ कमर बाधिया तूण सारग गहिश करा, सुकर खग दान जेहान ऊचासरा। सुचित थका जना निवारण सांकड़ा, वाह रघुनाथ लका लियण वाकड़ा।—र. ज. प्र

उ०—२ असपत इंद्र अवनि आहुडियां, धारा झड़िया सहै धका। घण पडिया सांकडियां घड़िया, ना छीहुडिया पढी नका।

—दुरसौ आढौ

२ संकट, भय।

रू. भे.—सकडौ, सकडौ।

सांकडउ, सांकडौ—देखो 'साकडौ' (रू. भे) (उ. र)

सांकणौ, सांकबौ—देखो 'संकणौ, सकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सांकिया राज राणा सकळ, अकळ पाण छिलियौ असुर। लहरीस जाण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर।—रा. रू.

उ०—२ हणियौ तै जमदाढ हथ, रौद सलावत रेस। साहजहा रौ सांकियौ, आबखास 'अमरेस'।—बा. दा.

उ०—३ सूरा रण सांकै नही, हुवै न काटल हेम। टूक करै तन आपणौ, काच कटोरा जेम।—बा. दा.

उ०—४ डावा कर ऊपर दुसट, कर जीमणौ करत। सौ लगाय मुख सांकतौ, मावड़ियौ कुचरंत।—बां. दा.

उ०—५ वधियौ ब्याज, सच सांकियौ, खुरासाण हुतां खडौ। तेत्रीस कोड वाडौ तुरै, चंचळ सेत ऊपर चडौ।—पी. ग्र.

सांकणहार, हारौ (हारी), सांकणियौ—वि०।

सांकिओड़ौ, साकियोडौ, सांक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साकीजणौ, साकीजबौ—भाव वा०।

सांकर—वि. [स. शाकर] १ शकर से सम्बन्धित।

२ शकराचार्य से सम्बन्धित।

सांकरि, सांकरी—स. पु. [स. शाकरि] १ शिव के पुत्र गणेश।

२ स्वामी कार्त्तिकेय।

३ अग्नि, आग।

४ एक मुनि।

५ शमीवृक्ष।

[सं. शाकरी] ६ शिव द्वारा निर्धारित अक्षरो का क्रम, शिवसूत्र।

सांकरय—सं. स्त्री. [सं सार्क्य] मिश्रण, मिलावट।

सांकळ, सांकळ, सांकल—स. स्त्री. [स शृंखला] १ जजीर, शृंखला। (डिं. को)

उ०—१ मारियौ घणा मिळ सीह मडोवरौ, लाज सांकळ सबळ पाय लागा। हाल सौ (ह) दिली उमराव आकल हुआ, ऊवरै राव जम राव आगा।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ जाणै वल्लभ जीवणौ, कायर नाणै कोह। लोपै सांकळ लोह री, लख रण नागौ लोह।—बा. दा.

उ०—३ अथ मदावर लोह नी सांकल त्रोडि, आलानस्तभ मोडि, हस्तिसाल भाजि, पउतार गाजइ, कमाड फाडइ, मठ मदिर पाडइ हस्तिनी यूथ स्मरइ, व्यध्य मनमाहि धरइ, वन माहि साचरइ।

—व. स.

२ शरीर की हड्डियो का ढाँचा, अस्थिपजर।

३ दरवाजे मे लगाने की सिकड़ी।

४ एक प्रकार का आभूषण विशेष।

वि. वि—यह कंठ, पैर और हाथ मे धारण करने का विभिन्न प्रकार की बनावट का होता है।

५ फोग की गठीली लकडी।

उ०—१ निकळै मिरडा लार गटेली सूकी सांकळ। धर कोटा रै ध्येय, पडी लद लकडयां बाखळ।—दसदेव

६ छप्पय का एक प्रकार का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे किसी शब्द की तीन बार आवृत्ति होती है।

रू. भे.—सकळ, संकळि, सकलिक, संकली, सयंकळ, साकळी, साकळी, सिकुल।

साकळउ, सांकलउ—देखो 'साकळौ' (रू. भे) (उ. र.)

साकळणौ, सांकलबौ—क्रि. स [सं. शृंखलनम्] साकल से बाधना।

उ०—१ गुडळियौ तोई गंग जळ, खाखळियौ तोई दीह। खरौ विखायत 'खीमड़ौ', सांकळियौ तोई सीह।

—आबळ खीमजी री बात

उ०—२ जौ नथियौ तोई नाग, लियौ दरसण तोइ सकर। सांकळियौ तोइ सीह, वाघ पीजरै भयकर।—मालौ आसियौ

उ०—३ तद फौजदार कही सगळा थारा सांकळिया छै, सौ तू मन मनाय।—ठाकुर जैतसी री वारता

सांकळणहार, हारौ (हारी), साकळणियौ—वि०।

सांकळिओड़ौ, सांकळियोड़ौ, सांकळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांकळीजणौ, साकळीजबौ—कर्म वा०।

सांकळियोडौ—भू. का. कृ.—साकल से बांधा हुआ।

(स्त्री. साकळियोड़ी)

सांकळियौ—स पु—१ वह दोहा जिसकी तुकबन्दी प्रथम चरण से अन्तिम चरण मे मिलती है। इसका दूसरा नाम 'अंतमेल' है।

२ देखो 'सख' (अल्पा; रू. भे.)

३ देखो 'सखियौ' (रू. भे.)

सांकळी, सांकळी, सांकली—स. स्त्री.—१ कान में पहनने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

२ वह आभूषण जो स्त्रिया 'बोरले' के नीचे तथा कनपटी के ऊपर

बांधती है।

उ०—लाडू पेडा री संभाळ रिपिया-खोपरां री मनुवार ! साळचा नै बीटी छल्ला अर साळैल्यां नै सूत सांकळी, ढाढी-ढोल्या नै साफा अर पाग, नाया-भाया नै दस-दस रा बध्या नोट।—दसदोख

३ हाथ मे पहनने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—१ कोस्या कर ग्रही आरसी, मृगमद तिलक वणावइ रे। हाथे सांकळी ए जांनु कांमि, कइ आण मनावइ रे।—मालदेव

उ०—२ नथ री काळी डोरी सदा तण्योडी रेवती अर काजळ री कूंपली चादी री सांकळी मैं पोयोडी डावा खाधा पर सूं छाती पर हरदम लटकती रैवती।—रातवासौ

४ पैर मे पहनने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—पछइ तली मुकट तिलक कुडल हार दोर वीरविलय अंगद बहिरखा नवग्रहा मुंद्रडी हथसाकलो पगनी सांकली प्रमुख पहिराया।
—व. स.

५ हिन्दु स्त्रियो द्वारा कार्तिक मास मे किया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—यह दो प्रकार का होता है—(१) कृष्ण साकली और (२) राम साकली। इस व्रत मे महिलाऐं पहले दिन निराहार उपवास तदन्तर दो दिन तक एक समय भोजन करती है। इसी क्रम से चतुर्दशी तक करती हैं एव पूर्णिमा स्नात की समाप्ति पर निराहार उपवास करती है।

६ [स. संकलिका] संग्रह।

७ जोड, योग। (उ. र.)

८ देखो 'सांकळ' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरायंत पताखा सूं बादळा छोडजै छै। सू किण भात रा बादळा छै ? हळवदरा, मोरवी रा, अजार रा, भरवछरा, हालोर रा छै। रूपै री टूंटी साकळी लागी छै।—रा. सा. सं.

९ देखो 'सांकळौ' (रू. भे.)

उ०—धरती उपरि धाम सडि, सांकळिया री सोक। जुगति पखौ जागर करै, मुख ता बोलै फोक।—बोल्होजी

सांकळौ-सं. पु.—१ पैरो मे पहिनने का एक आभूषण विशेष।

२ कंठ मे धारण करने का एक आभूषण विशेष।

३ बड़ा व मजबूत शृंखल।

रू. भे.—संकळौ, साकळउ, सांकलउ।

सांकल्यौ—१ देखो 'संख' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सखियौ' (रू. भे.)

सांकास्य-स. पु [सं. सांकाश्य] १ यम की सभा मे रहने वाला यम का उपासक एक राजा।

२ देखो 'सांकास्या' (रू. भे.)

सांकास्या-सं. स्त्री.—जनक के भाई कुशध्वज की राजधानी।

रू. भे.—सांकास्य।

सांकाहुळी, सांकाहुली—देखो 'सांखाहुळी' (रू. भे.)

सांकियोडौ—देखो 'संकियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साकियोड़ी)

सांकीचर-स. पु.—विषपेयी, शिव।

उ०—साकीचर सहसकर अभीअर सांभळी, राव कमंध भांजतै साथ रहियौ। दइत दळ आप दळ नकौ हर तर दाखियौ, कैरवै पडवै नकौ कहियौ।—दुरसौ आढौ

सांकुड़णौ, सांकुड़बौ—देखो 'संकुड़णौ, संकुडबौ' (रू. भे.)

सांकुडणहार, हारौ (हारी), सांकुड़णियौ—वि०।

सांकुडिओडौ सांकुड़ियोड़ौ, सांकुड्योडौ—भू० का० कृ०।

सांकुड़ीजणौ, सांकुड़ीजबौ—भाव वा०।

सांकुड़ियोडौ—देखो 'संकुड़ियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांकुडियोड़ी)

सांकुड़णौ, सांकुड़बौ—देखो 'संकुड़णौ, संकुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ कपोलविच्छाया नायका निश्वास मेल्हइं, नेत्र सांकुड्यां, नयन सजल हुआ, ओस्ठ मिलांणा, चित्त चचल हुउं, चंद्रमानी कला जिसी राहुइ ग्रसी हुइ, व्याघ्राकांता मृगी हुइ जिसी, दवि दाभती वनलता........।—व. स.

उ०—२ ....प्रलयकाल तउ नीपनी हुई, बीछीना आंकडानी परि वाकुडी, कूड कपट करी सांकुडी, कुलक्षण तणी आंकुडी, इसि सरवाधम स्त्रीजाति जाणवी, आवरत ससयांनामविनय।
—व. स.

उ०—३ ....दारिद्री लोक सीतइं कांपइ, सकल लोक अगीठै तापयइ, टाढि हडबां खडइं राति मरि जिम सांकुडइं स्वाननी परि कुणइ, हाथ पाय आगुली चणमणइं, हेमतै दधिदुग्ध-सरपिरसना।—व. स.

सांकुडणहार हारौ (हारी), सांकुडणियौ -वि०।

सांकुडिओडौ, सांकुडियोडौ, सांकुड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांकुडीजणौ, सांकुडीजबौ—भाव वा०।

सांकुडियोड़ौ—देखो 'संकुड़ियोड़ी' (रू. भे.)

(स्त्री. साकुडियोड़ी)

सांकुल्यौ, सांकुल्यौ, सांकूल्यौ, सांकूल्यौ—१ देखो 'संख' (अल्पा; रू. भे.)

मुहा.—गया तौ गंगाजी अर लाया साकुल्यौ=उपयुक्त स्थान पर जाकर भी उपयोगी वस्तु नही लाना।

२ देखो 'संखियौ' (रू. भे)

सांकेतिक-वि. [स.] संकेत या इशारे से सम्बन्धित।

सांकेळौ, सांकेलौ—देखो 'सकेळौ' (रू. भे.)

उ०—अस चालव धमण जागवी अहरण, सांजत कर असमर कर साप। साअव लोह ताप सांकेलौ, तै काटिया सूं हेकण ताप।
—तेजसी सादू

सांकौ—देखो 'संकौ' (रू. भे.)

उ०—पछै राणौ कूभौ, रिणमलजी माडवगढ ऊपर आया। ताहरा भीतरला पण सांकौ राखियौ। ताहरा महिपै पमार नूं वा कह्यौ—हमैं म्हां सूं राखियौ न जावै।—नैणसी

सांक्रति, सांक्रती—स. पु [स साक्रति] १ यम सभा मे उपस्थित यम का एक उपासक।

२ अत्रिवशीय एक ऋषि जिन्होने अपने शिष्यो को निर्गुण ब्रह्म का उपदेश दिया था।

३ विश्वामित्र ऋषि की पत्नी का नाम।

सांखडि, सांखडी—वि. [सं. सस्कृतिः] परिमार्जित, शुद्ध, साफ। (उ. र.)

सांखला—स. स्त्री—पंवार वश की एक शाखा।

सांखलौ—स. पु—पंवार वश की साखला शाखा का व्यक्ति।

सांखहडौ—स. पु.—चौहटा। (सभा)

सांखायन—सं पु, [स. शाखायन] एक प्रसिद्ध आचार्य जिसने साखायन ब्राह्मण की रचना की थी।

रू. भे.—साख्यायन।

सांखाहुली, सांखाहोळी—देखो 'सखाहुळी' (रू. भे.)

सांखिक—वि [सं. शाखिक] १ शंख सम्बन्धी।

२ शख का बना हुआ।

३ शंख बजाने वाला।

४ शख बेचने वाला।

सांखूल्यौ, सांखूल्यौ—१ देखो 'सख' (अल्पा, रू. भे.) (डि. को)

२ देखो 'संखियौ' (रू भे)

सांखोटा—१ देखो 'सख'।

२ देखो 'संखियौ'।

सांखौ—स. पु—चारपाई की बनावट में बान की लडियों का वह समूह जिसके मध्य मे होकर बुनावट के लिए लड़ी को खीचा जाता है।

उ०—घरा जाय लुगाई नै कहि, अजैगाळ गोटा च्यार-पांच लेय खाधा। झाझरकै झ'ड लागो सू माचै माहै ही ज मैंदाना बैठो सांखौ फाड राखियौ।—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

सांख्य—स पु. [सं] १ महर्षि कपिल द्वारा प्रतिपादित हिन्दुओ के छः दर्शनों मे से एक। इसमे प्रकृति को ही जगत का मूल कारण माना गया है।

उ०—कूवौ दरसण ग्यान, योग भक्ति है वारी। सांख्य नाळ गभीर, निरीस्वर सखेस्वर भारी।—दसदेव

२ अत्रि नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का एक नाम।

३ सख्याएं आदि गिनने की क्रिया।

वि.—१ सख्याओ से सम्बन्धित।

२ शंख सम्बन्धी, शख का।

सांख्यजोग, सांख्ययोग—स. पु. [स. साख्ययोग] ऐसा साख्य जो अच्छी तरह चित्त शुद्ध करके और पूरा ज्ञान प्राप्त करके सच्चे त्याग के आधार पर ग्रहण किया जाय।

उ०—सांख्यजोग निज ग्यान कहीजै, सार असार पिछाणं। मिथ्या त्याग सत्त की सग्रह, औ विहग राह निरवाणं।

—स्रीहरिरामजी महाराज

सांख्यायन—सं. पु. [सं.] १ सनत्कुमार ऋषि का शिष्य व पाराशर व बृहस्पति के गुरु का नाम।

२ गायत्री नामक वैदिक सूक्त द्रष्टा का पूर्वज एक ऋषि।

३ देखो 'साखायान' (रू भे.)

सांख्यिक—वि. [सं.] संख्या या गिनती से सम्बन्धित।

सांख्यिकी—स. स्त्री [सं.] १ एकत्रित सख्याओ के आधार पर निष्कर्ष निकालने की विद्या।

२ उक्त प्रकार का शास्त्र।

३ एकत्रित सख्याएं।

सांग—वि. [स.] १ अगों व अवयवो सहित।

२ परिपूर्ण।

स. पु.—१ हविर्धानि वशीय गय नरेश का एक नाम।

स. स्त्री. [सं शक्ति] २ भाले से मिलता-जुलता एक प्रकार का शस्त्र विशेष जो फेंक कर काम मे लाया जाता है, शक्ति।

(ना. डि. को.)

३ एक प्रकार का भाला विशेष जो ९ फुट ४ इच लबा होता है यह जोड़ रहित शुद्ध फौलाद का बना होता है। इसके ऊपरी भाग का नुकीला हिस्सा ९ इच लम्बा व १½ इच चौडा होता है।

(डि. को.)

उ०—१ औरां रा कर औरठै, पड़िया पाडै बांग। जीव पखै ऊभा जठै, सखी धणी री सांग।—वी. स.

उ०—२ इतरै इकौ घोडौ हजार पाच सु चढीयौ आयौ। हाथ में सांग मण एकरी लीया थका आण पोहतौ।—रा. सा. स.

४ लोहे की मोटी छड जो भार उठाने या पत्थर की भारी पट्टी को उथलने के काम आती है।

उ०—सांग हूंत सरकाय मर, भाटौ सौ मण भार। हस्ती किम नह डोलणौ, साग लेय सिरदार।—रेवतसिंह भाटी

५ एक प्रकार का शस्त्र विशेष। (अ. मा.)

६ देखो स्वांग' (रू. भे.)

उ०—१ रावळिया रामत रामत समै, मावडियौ लै माग। तौ रतना पातर तणौ, सखरौ लावै सांग।—बा. दा.

उ०—२ जिकै अलवेला ठाकुर जुवांन तिकै केसरिया वागा पहिरै बैठा था त्याह वेगिदै सघळा ही बगतर पहिरचा। ताकौ द्रस्टात जैसै बहुरूपिया सांग वदळै। त्यै सें साग बदळि गया।

—वेलि टी.

अल्पा, रू. भे.—सांगडौ।

क्रि. प्र—करणौ, बणणौ, सजणौ।

मुहा.—१ सांग करना=फितूर करना, पाखंड करना।
२ सांग बणाणौ=रूप बनाना, मजाक उडाना।
३ साग लावणौ=१ धोखा देने के लिए कोई रूप धारण करना।
२ मनोरजन हेतु किसी की नकल करना।

रू. भे.—संग, संगि, सागि, सागी।

सांगड़ी-सं. स्त्री.—बड़े पत्थर उठाने वाले चवालियों का डंडा।

सांगड़ौ-स पु.—१ लकडी का वह मजबूत डंडा जिसके बल बैलगाडी या छकडे को खडा करके उसकी धुरी मे घी तेल या अन्य स्निग्ध पदार्थ लगाया जाता है।
२ देखो 'साग' (अल्पा, रू. भे.)
उ०—जागडा झडां सत्र वीर सर गवीजै, ताप पड कागड़ा लक ताई। यर गढा सांगडा दयण आयौ उछज, नागध्रह लागडा वीर नांई।—बदरीदास खिडियौ

सांगणी-सं. स्त्री.—तिलहन के पौधो की फली।
रू. भे.—सुघणी, सुंघनी, सूघणी, सूंघनी।

सांगणौ-स. पु. (स्त्री. सागणी) १ शकुन शास्त्रानुसार तितर आदि पक्षियो का दाहिनी ओर बोलना एवं हिरण आदि जानवरो का दाहिनी तरफ होना।
२ दाहिनी ओर।
उ०—दासिया दौड आगू दखै, साथ बिराजौ सांगणै। कणडोर छोड पूजा करण, पाल पधारौ आगणै।—पा. प्र.
३ देखो 'साघणौ' (रू. भे.)

सांगतिक-वि [स.] १ सगति का, संगति सम्बन्धी।
२ समाज का, सामाजिक।
सं. पु [सं. सागतिक.] १ अतिथि, महमान।
२ अजनबी।

सांगम—देखो 'सगम' (रू. भे.)

सांगर-स. पु.—१ शमी वृक्ष।
२ देखो 'सागरी' (मह; रू. भे.)

सांगरी-सं. स्त्री. [स. सगर] शमी वृक्ष की फली जिसे उबाल कर प्रायः शाक बनाया जाता है।
उ०—१ चेत मैं कमनीय सागरी, लोग लगै कोडायता। ओथरण, अचार ओलवै, रळै रंगीला रायता।—दसदेव
उ०—२ सूनी काकड़। सूनी निंदरोही। जाडी खेजडी। जाडी छीया झूलती सांगरियां। कठै वीदणी? कठै उण रा डाबर नैण? कठै उण रौ रूपाळौ उणियारो? कठै उण रा गुलाबी होठ?
—फुलवाडी
मह; रू. भे.—सांगर।

सांगळणौ, सांगळबौ-क्रि. अ. [स. साकल्यम्] १ जख्म का भरना, ठीक होना।
२ कुए में 'सीर' द्वारा पानी का आगमन होना।
३ रुपये-पैसों की आमदनी होना।
सांगळणहार, हारौ (हारी), सांगळणियौ—वि०।
सांगळिओड़ौ, सांगळियोड़ौ, सांगळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांगळीजणौ, सांगळीजबौ—भाव वा०।

सांगळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ जख्म या घाव ठीक हुवा हुआ. २ कुए मे 'सीर' द्वारा पानी का आगमन हुवा हुआ. ३ रुपये-पैसों की आमदनी हुई हुई।
(स्त्री. सागळियोडी)

सांगवणौ—देखो 'सागणौ' (रू. भे.)
उ०—जीमणा हाथ कांनी सू डावा हाथ कानी आवै सावडू नै सांगवणौ कहीजै इण तरह सावडू ऊबेडा सांगवणा मालाळा जाणीजै।—रा. व वि.

सांगवौ-सं. पु—रथ, तांगा आदि सवारी पर रखी जाने वाली मसनद को गुडकने व पड़ने से रोकने के लिए लगाया जाने वाला उपकरण।
उ०—चरखा पीढा सांगवा, भल पेई पिलाण पाचरा। हलवै भरचा कडाव हालै, ओग भ्रूर री आचरा।—दसदेव

सांगि, सांगी-वि.—१ स्वाग लाने वाला, स्वागी।
२ ढोग व पाखण्ड रचने वाला, ढोंगी, पाखण्डी।
उ०—जनहरीया सांगी घणा, छाप तिल सिर केस। मसतग मूंछां मूंडीया, तन बदलाया वेस।—अनुभववाणी
३ बैलगाड़ी, रथ, तांगा आदि मे वह छीका जिसमे छोटी-छोटी वस्तुए रखी जाती है।
४ बैलगाड़ी, रथ, तागा आदि में गाड़ीवान के बैठने का स्थान।
५ देखो 'साग' (रू. भे.)
उ०—परठइ सांगि लागि लोहडानी, प्राण करेवा लागइ। हलहल करि बिहु पखि विलगई, मोटी मूरति नागइ।—का. दे. प्र.

सांगीआई—देखो 'सागीयाई' (रू. भे.)

सांगीत—देखो 'संगीत' (रू. भे.)
उ०—रजा ब्रह्म री रूप अन्नेकं रम्मै, घणा बाजणां घूघरा घम्मै घम्मै। घटा भद्द ज्यौं नद्ध आंनद्ध धोरै, धुबै ताळ कसाळ सांगीत धोरै।—मे. म.

सांगीयाई-स. स्त्री.—१ भाटियो द्वारा गले में धारण की जाने वाली सोने या चाँदी की मूर्ति जो उनकी ईष्टदेवी की छः बहिनों व एक भाई सहित है।
२ आवड माता का नाम।
वि. वि.—यह भाटियों की ईष्टदेवी है। भाटी आवड़ माता की, छः बहिनों व एक भाई सहित, सोने या चांदी की मूर्त्ति गले में धारण करते हैं।
काठियावाड के वल्लभीपुर नामक नगर के सावा शाखा के

चारण मादा के पुत्र मम्मट (मामड) की यह पुत्री थी। इसकी छः छोटी बहनों के नाम निम्नलिखित है—
इच्छा (ग्राछी), चर्चिका (चाची), हुली (होल), रेप्पली (रेपली), गुली (गहली) ग्रोर लछी (लांगी या खोड़ियार)।
सिन्ध के ग्रन्तिम राजा ऊमर सूमरा के ग्रत्याचारी, धर्मभ्रष्ट व दुराचारी होने के कारण उसके वध हेतु ग्रावड़ माता ने जाम लखियार की सेना के ग्रागे साग (शक्ति) लेकर युद्ध किया था। ग्रत: इसका नाम 'सागीयाई' पडा।
रू. भे —सागीग्राई।

सांगुस्ट, सांगुस्ठ-स. पु [सं. सांगुष्ठ] ग्रंगूठे सहित हाथ का पूरा पंजा।
उ०—ग्रागळै प्रिया प्री चौथै ग्रारंभि, फेरा त्रिण्हि इण भाति फिरि। कर सांगुस्ट ग्रहण कर सूं करि, करि कमळ चापियौ किरि।
—वेलि.

सांगूणौ—१ देखो 'सांगणौ' (रू. भे.)
उ०—बाहर पधारता नेकाल घणौ सखरी मनमानी माल्हाळी हुई। ऊपरां तुरत लाभ री सांगूणी हुई। पहलै डेरै सुई-साफ ठावा बोलिया। फाफरकै निवासी बोलिया।
—कुंवरसी सांखला री वारता
२ देखो 'सांघणौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सागूणी)

सांगेळ, सांगेळौ-स. पु. [सं. साकल्यम्] बाहुल्यता, ग्राधिक्य।

सांगोपांग-वि. [सं. साङ्गोपाङ्ग] १ सभी ग्रंगो ग्रौर उपांगों सहित, पूर्ण, पूरा।
उ०—सांगोपांग हि स्वर सहित, ग्रक्षर सुद्ध उचार। स्रोत स्मारत सुधार किये, ग्रारयावरत उधार।—ऊ. का.
२ सुन्दर, मनोहर।
उ०—उदरि थिकी उतपति करी, सांगोपांग सरीर। उदरि थिका पायू ग्रमी, ग्रादि ऊपायु खीर।—मा. का. प्र.
३ उत्तम, श्रेष्ठ।
४ भीड़-भड़ाके सहित।
उ०—सेवट फोड-फपाट करता करता मोची ई साथै टुळग्यौ। बादळ तौ सांगोपांग मेळा रै साथै राज-दरबार मैं जावणौ चावतौ हौ। उणरै तौ भरै पड़ती इज गी।—फुलवाडी
क्रि. वि.—भली प्रकार से, ग्रच्छी तरह से।
उ०—सावळ गढ रै च्यानणौ मैं सेठ-साहुकारा री माल-मता रौ सत्ता सरूप सांगोपांग ठा'पड रैयौ हौ। हाट बजार री ग्रर सुनारा रौ हटड़ै री सोभा देख'र वगता री ग्राख्या खुली री खुली रैवै ही।—दसदोख

सांगौ—देखो 'सागौ' (रू. भे.)
उ०—फटपट छोड जगत का कामा, लटपट चरणा लागौ। सिर पर तीर लागियौ चावौ, तौ कर सतगुरु जी रौ सांगौ।
—स्रीहरिरामजी महाराज

सांघणी—देखो 'सागणी' (रू. भे.)
उ०—ठाकरा मेर तिल खा ज्यावौ काई? तौ कै सांघण्या समेत कै कोरा।—ग्रग्यात

सांघणौ-वि. [सं. सघन] (स्त्री सांघणी) १ सघन, घना, गहरा।
उ०—इसी सांघणी वनसपती मिळनै रही छै। जाणै दूसरी घटा छै। दरखता ऊपर मोर कुहुक रह्या छै। सुवा केळ करै छै। तूती बोल रही छै लाल हाक मार रह्यौ छै।—रा. सा. स.
२ समीप, पास।
उ०—जका लोथियां रा पगथिया कर कर घणा हेतू भाई भतीजा बाप बेटा उपरां पग धरता ग्रर घणौ हरख करता कोट मै पडण नुं धावै छै। त्या ऊपरा ग्रपछरा रा विमाण घणा सांघणा ग्रड-बडै छै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
३ ग्रधिक, ज्यादा।
उ०—१ भड पूतारै ग्रापरा, धारै सामधरम्म। 'भांण' तणौ ग्रस भेळिया, दळ सांघणौ दुगम्म।—रा. रू.
उ०—२ दळा विच हुवौ होळी खळा निरदळै, सीस भाजै वहै साघणां सार। तेणि जुधिवार फूफार 'दूजण' तणौ, भड़ ग्रपड़ सौहियौ ग्रावरै भार।—सेखा दुरजणसालोत रौ गीत
४ एक साथ, इकट्ठा।
उ०—१ साथ घणै सांघणै, ग्रणी जीमणै जवन्नां। उतमातौ भाराथ, जाणि पाराथ करन्ना।—रा. रू.
उ०—२ सिरी गंग रौ नीर सन्नान साहू, दसत्तूर सिंदूर कप्पूर दारू। हुवै होम ग्रासावरी धूप हूमै, घणा सांवणां दीप सामीप घूमै।—मे. म.
५ जबरदस्त, जोरदार।
उ०—१ इसै जोस ग्रणभग दुहू तरफां दईवांणां। सजै मार सांघणौ, वाढि ग्रसमरां उडाणा।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ ग्रणी फूल ऊपरा, फोकि ऊडंड फळाहळ। सभंराड़ सांघणौ, वाहि सांबल वीजूजळ।—सू. प्र.
क्रि. वि.—६ ग्रादरपूर्वक, सम्मान के साथ।
ज्यू—ग्रठै तौ रांमौ सावळ बोलै पण घरै गया साघणौ नी मिळियौ।
७ देखो 'सांगणौ' (रू. भे.)
रू. भे.—सागूणौ, सांघुलौ, साघणौ।

सांघुलौ—१ देखो 'सांघणौ' (रू भे)
उ०—मोटइ सत महि माहि ग्रवलेमर ग्रायइ हुवइ। सीघण हरि हुइ सांघुली, बहुवा ति करि विवाहि।—ग्र. वचनिका
२ देखो 'सांगणौ' (रू. भे.)

सांच - देखो 'सत्य' (रू. भे.) (ग्र. मा; डिं. को.)
उ०—१ तिण नू मुवा रौ उपाव छै। तहां गुरु कहियौ सौ सांच

छै।—पचदडी री वारता

उ०—२ मिळ दुस्टी आज, पाळ अनादी पालटै। लाजै कुळरी लाज, सांच रखाज्यौ सांवरा।—रामनाथ कवियौ

उ०—३ वडा गुण मानी गई थूं, सबळ सक्ति सिरमौड है। नमा खमा आच बळिहारी, नारी सांच निचोड है।—नानूराम संस्करता

सांचभूंठकर, सांचभूठकर-सं. पु. यौ.—व्यापार, वाणिज्य। (डि. को.)

सांचणौ, सांचबौ-क्रि. स.—१ संचे बनाना।

२ सचे से कोई वस्तु ढालना।

३ देखो 'सचणौ, संचबौ' (रू. भे.)

उ०—.........परीक्षासुद्ध रत्नजाति लीजइं, परदेसी वस्तुना आथ पूछीइं, वाणुत्रना लेखना टीपणां सभालीइं, प्रदेसकारिणी वासण सांचीइं, लेख लिखीइ,.........।—व. स.

सांचणहार, हारौ (हारी), सांचणियौ—वि०।

साचिग्रोड़ौ, सांचियोडौ, सांच्योडौ—भू० का० कृ०।

सांचीजणौ, सांचीजबौ—कर्म वा०।

सांचरणौ, सांचरबौ—देखो 'सचरणौ, संचरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बप लोहा अपछर हम वरियौ, सिवमाळा खेचरि रत सरियौ। 'आसा'हरौ सुरा आचरियौ, सुज हरि जीत मुगति सांचरियौ।—गोकुल राठौड रौ गीत

उ०—२ चादा थारी निरमळ रात सइयां म्हांरी हो, चादा थारी निरमळ रात नणदल नै भोजाइ सैलां सांचरी।—लो. गी.

उ०—३ काळा निरजीव अर भुरगा कोयलां मैं वासदी रौ परस पाता ई जिण भांत जीवण सांचरै, वै जगामग करण लागै, उणी भात काली मासी इण बाळ कन्हैया रै जलम पछै जगमग जगमग करण लागी।—फुलवाडी

उ०—४ थारी देह री रगत पीय, नौ महीना कूख मैं लुटियौ, उण सारू अेकर ई दया कै नेह नी सांचरियौ। थूं इत्ती निरमोही कीकर व्हैगी।—फुलवाड़ी

उ०—५ सूरज रौ पंथ उजाळण सारू आखी दुनियां मैं मधरौ मधरौ उजास सांचरियौ अर बादळ रौ पंथ उजासण उगूण दिसा सूं परजळतो सूरज ऊगियौ।—फुलवाड़ी

सांचलौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—वा सापरत नी आती तो ई ठीक रैवतो। इण सांचली बाथा मांय आवण सूं तौ म्हारा संदेसडला ई चोखा हा।

—तिरसंकू

सांचव, सांचवट-सं. स्त्री.—सच्चाई, सत्यता।

उ०—तद वां देखनै कहियौ। गोळी री तो न देणी। इण लौंड री भी मजबूती देखणी। सांचवट सूं अंगो-अंग बाकार नैं मारणौ।

—प्रतापसिंघ म्होकंमसिंघ री बात

सांचाणी—देखो 'साचाणी' (रू. भे.)

उ०—१ साथणियां खिलखिलाहट सूं चावटा नै भर दियौ अर वा सांचांणी भेंपगी। एक साथण हसती हसती बोली—किण नै पाछौ भेजियौ अै धापू।—रातवासौ

उ०—२ सेसनाग री बेटौ बींनणी री बात सुण नै अणूंतौ राजी व्हियौ। कह्यौ—बींनणी री समझ तौ सांचाणी दुनिया मैं बखांणी जैडी ई है।—फुलवाडी

सांचाई—देखो 'सत्यता' (रू. भे.)

उ०—निस्कपटता स्रद्धा, सरलता अर सांचाई। विनयी सांत सुभाव, धीर वर अध्यवसाई।—टाबर सईकडौ

सांचारिक, सांचारी-वि. [सं. साचारिक] १ सचार सम्बन्धी।

२ सचार करने वाला।

सांचियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सचे बनाया हुआ. २ संचे में ढाल कर कोई वस्तु बनाया हुआ. ३ देखो 'सांचियोडौ' (रू. भे.)।

(स्त्री. साचियोड़ी)

सांचियौ-सं. पु.—१ साचे बनाने वाला कारीगर।

२ साचे मे ढालकर वस्तुएं बनाने वाला कारीगर।

सांचिलौ—देखो 'सांचौ' (रू. भे.)

साचेलौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—१ सेठ इण वरदांन रौ सांचेलौ सार नीं समझ सक्या तौ ई सेसनाग रै बेटा रा मूडा सूं आ बात सुणनै वै मनाग्यांना विचार करियौ कै म्हनै इण मैं जोखौ ई काई।—फुलवाड़ी

उ०—२ दलाल कैयौ—हां जागती जोणसी कै सांचेलौ मौबत अर हिरदै री हेत इसौ हुवै। आप अबै न्हावौ-धोवौ करल्यौ। फुरती सूं तेल-फुलेल लगायल्यौ। गैणा-गाभा पैरल्यौ अर वेगा सा नीचा पधारौ।—दसदोख

उ०—३ सांचेलौ गुरु धणी, दूसरा ठग पाखंडी। साधू महंत फकीर, वेस धर घाघ घमडी।—नारी सईकड़ौ

(स्त्री. साचेली)

सांचोड़ौ—देखो 'साचौ' (अल्पा; रू. भे.)

(स्त्री. साचोडी)

सांचोट-सं. स्त्री.—सच्चाई, सत्यता।

उ०—घणी भाजा-दोडी करी, पण मामलै री जीत तौ भुगाने री सांचोट मे रैयी।—दसदोख

सांचोरा-स पु.—१ एक जाति विशेष जो अधिकतर सांचोर में निवास करती है तथा अपने को पचद्राविड़ के अन्तर्गत ब्राह्मण कहती है।

१ चौहान वंश की एक शाखा।

सांचोरी—देखो 'साचोरी' (रू. भे.)

सांचोरौ-सं. पु.—सांचोरा जाति का व्यक्ति।

सांचौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—१ तक लीधौ सोना तिसौ, पातरवाळौ प्रेम। ज्यां सांचौ कर जांणियौ, कहौ न दे धन केम।—बा. दा.

उ०—२ गाहै सोदै ग्राहका, ढाहै जै गज ढल्ल। लाहौ लोटै वाणियौ, ग्रा है सांचौ गल्ज।—बा. दा.

(स्त्री. साची)

२ देखो 'सचौ' (रू. भे)

उ०—वेलण वेली बाह, लाल होठां रग भीनौ। सांचै ढळियो हीव, कंवळ चुग कर मै लीनौ।—नारी सईकडौ

सांज, सांजड़ली—देखो 'सध्या' (रू. भे.)

उ०—१ दळ बादळ बिच चमकै जी तारा सांज पड़ै पिव लागै प्यारा। काई रे जवाब करू रसिया काई रे मिजाज करू रसिया।—लो गी.

उ०—२ दिन दिन लेखण हाय म्हारी सुदर गोरी रे, सांजड़ली पड़ी रे रोकड सारता हो राज।—लो. गी.

सांजउ—वि.—सयत। (ड. र)

साजणी—स स्त्री. [स. साग्रही, सयतनिता] वह गाय या भैंस जो दूध देती हो किन्तु किसी कारणवश उसका दूध न निकाला गया हो।

रू. भे—सांभणी, सादणी, साधणी, सैनणी।

सांजत, सांजति, साजती—देखो 'साजत' (रू. भे)

उ०—१ ग्रस चालव धमण जागवी ग्रहरण, सांजत कर ग्रसमर कर साप। सात्रव लोह ताण साकेलौ, तै काटिया सूं हैकण ताप।—तेजसी साद्

उ०—२ सांजत समहर डाव सडासी, चख धिखता थहिया रग चौळ। ग्रहरण ग्रकस 'लाल' तिण ऊपर, घण त्रिजडा बाहै घम-रोळ।—लालसिंह राठौड री गीत

उ०—३ ताहरा दरबार ग्रागै रूख वाढण लागा, बुहरावण लागा। बिछावणा मोकळा मेल्हि मडना देखी कुवरजी गुमान कियौ। इतरी डेरा री सांजति घणी सो क्यू।—द. वि.

सांजवण—स. स्त्री. [सं. सयवन] १ परिवार, कुटुम्ब।

(वि. वि. देखो 'कबीलो')

२ रसोईघर।

सांझ—देखो 'सध्या' (रू भे.) (ग्र. मा; उ. र, डिं को.)

उ०—१ ग्रमल री विंक लागी ग्रटल, सुख लूटै वै सुलखणा। सवेरा सांझ दोनू समै, काझकंझ नै कुलखणा।—ऊ. का.

उ०—२ हुवै चम्मरा झाटका जोति हूबै, सदा ऊतरै ग्रारती साझ सूबै।—मे. म.

सांझड़ली, सांझड़ी—देखो 'सध्या' (ग्रल्पा; रू. भे.)

साझणी—देखो 'साजणी' (रू. भे.)

सांझनट—स. पु. [स. सध्यानाटी] शिव, महादेव।

सांझि, सांझी—सं. स्त्री.—१ विवाह के ग्रवसर पर घी पिलाने की रस्म से लेकर विनायक पूजा की रस्म तक नित्य सध्याकाल में गाये जाने वाले विवाह के गीत।

उ०—जैत बाम मचिया बडजोरा, गहरै सुर ग्राई गिणगोरां। छित पर मिळमिळ छोरचा छोरां, करदी सांझी च्यारू कोरा।—ऊ. का.

क्रि. प्र.—लेणी।

२ मांगलिक पर्व के कुछ दिन पूर्व नित्य संध्या के समय गाये जाने वाले मागलिक गीत।

उ०—सांझी रे गाई सांझी रे, म्हारी सांझी हुया रगरोल रे। सब सहु को हरखियउ, वारू दीधा नवल तबोल रे।—स. कु.

३ देखो 'सध्या' (रू. भे.)

उ०—धरलीली धण पुडरी, घरि गहु गहई गमार। मारू देस सुहामणऊ, सावणी साझी बार।—ढो. मा.

४ देखो 'साभी' (रू. भे.)

सांझेदार—देखो 'साझेदार' (रू. भे.)

सांझेदारी—देखो साझेदारी' (रू. भे.)

साझै—देखो सध्या' (रू भे.)

उ०—सांझै भूखा सोई, करै परभात वळोवळ। हाथऊ कूंत उगाड़ि, मार ढाहै मोताहळ।—राव रिणमल री वात

सांझौ—देखो 'साझौ' (रू. भे.)

उ०—दुख-सुख साझौ राख, साख साची भवावै। विमळ बुवारा वणी, धणी री धाक लखावै।—नारी सईकडौ

सांट—देखो 'साट' (रू. भे.)

उ०—जनहरीया कैसे मिळै, राम नाम की सांट। गह धनाली बाहिरौ, होय न सोदौ हाट।—ग्रनुभववाणी

सांटगांठ—देखो 'साठगाठ' (रू. भे.)

सांटै—देखो 'साटै' (रू भे.)

उ०—१ पाचू ही प्रमारा सीस रै सांटै दुरग दीधौ।—वं. भा.

उ०—२ सार्म रै साथ सत्कार हू मिळायौ थकौ सीस रै सांटै स्वामी रौ ही सासण प्रमांणै।—व. भा.

सांटौ—१ देखो 'साठौ' (रू. भे.)

२ देखो 'साटौ' (रू. भे.)

सांठ—देखो 'साट' (रू. भे.)

सांठगांठ—सं. स्त्री.—गुप्त एव दूषित सम्बन्ध युक्त षडयन्त्रकारी मेल मिलाप।

मुहा.—साठगाठ करणी=गुप्त एव गूढ उद्देश्यपूर्ण मेल जोल करना।

रू. भे.—साटगाठ।

सांठि, सांठी—स. स्त्री.—१ तीर की डंडी जहाँ तीर लगा रहता है।

उ०—१ सुग्रर घणा तीर बरछियां सूं पूर हुवौ। बरछिया रा फळ माहै टूट रहिया। तीरा री साठी टूटी, भालां री गास माही रही सौ लोहा सूं पूर हुवौ थकौ पार होय जा बरडी ऊपर खडौ रहियौ।—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ हरीया सांठी सूरति की, सबद भळका सध। तक धीरज करि ताणीयै, ताह मूकै मनबध।—ग्रनुभववाणी

उ०—३ मारचौ बाण सरीर मैं, विण सांठी विव भालि। जन-

हरीया मन मरि रह्यौ, हंस गयौ सर हालि ।—अनुभववांणी

२ खान ।

उ०—हरि हीरा मन जौहरी, हरीया हिरदौ गांठि । गाहक मिळीया सू मिळै, हरि हीरा की सांठि ।—अनुभववाणी

३ संधि ।

उ०—है जाळंधरबंध मैं मन पवना की गाठि । हरीया मिळै उतांन मैं, सुरति सबद की सांठि ।—अनुभववाणी

सांठौ, सांठौ–सं. पु. [सं. षाष्टिक] १ ईख, गन्ना ।

उ०—ओक रात गेहुआ रा खेत ग्रोर सांठां री बांड़ मैं रहियौ ।

—डाढाला सूर री बात

२ ज्वार के पौधे का डठल ।

३ ईख का डठल ।

मुहा.—साठै ताई चावणौ—अन्तिम स्थिति तक अनुभव करना ।

४ देखो 'सैंठौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सहटौ, सांटौ, सेटौ, सेठौ ।

साड–स. पु. [सं. षण्ड] १ वह बछड़ा जो नस्ल सुधार करने के उद्देश्य से बिना खसी रखा गया हो । (उ. र.)

उ०—वाह वाह बारठजी भली कही । मन री लही । हुकम किग्रा । जागडिग्रै वडा राग माहै दूहा दिग्रा । परिजाऊ दूहा । वेगड़ा सांड धवळ रा दूहा । ग्रेकलगिड वाराह रा दूहा ।

—र. वचनिका

२ वह बछड़ा जो हिंदुओ मे किसी मृतक की स्मृति मे गुरुड़ पुराण की समाप्ति पर दाग (चिन्हित) कर यों ही छोड दिया जाता है । वृषोत्सर्ग वाला बैल ।

उ०—समुद्रखारउ, बाउल कंटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन बोलणउ, सुणह भसणउ, ससउ नासणउ, रांणउ लेणउ, स्त्रीस्वभाव लाडणउ, सांड ग्राडणउ, कुमित्र फाडणउ, दुरजन दुस्ट, स्वजन सिस्ट, ग्रागि गाती, धाहु राती ।—व. स.

पर्याय.—ग्रांकल, जेगड़ौ, तरण, नौपत, मदक ।

मुहा.—१ साड सौ कोस जाय तोई ग्रांक धणी रौ=मालिक की वस्तु मालिक से कितनी ही दूर क्यों न हो उसका सम्बन्ध नही मिटता है ।

२ सांड किसा गोरा मैं रेवै=शूरवीर छिपे नहीं रहते ।

३ सांडां री लड़ाई मैं बाटा रा खोगाळ=शक्तिशाली या समर्थ व्यक्तियों के झगड़ों में गरीबों का नुकशान होता है ।

४ ताहूकौ क्यूं कै साड हा, पोठा क्यू करौ कै गउ रा जाया हा=थोथी डींगें हांकने वालों के प्रति व्यंगात्मक कथन ।

३ वह घोड़ा जो नस्ल-सुधार के लिए रखा जाता है ।

वि.—१ हृष्टपुष्ट, मोटाताजा ।

उ०—सांडां ज्यू ग्रै साधड़ा, भांडा ज्यू कर भेस । रांडां मैं रोता फिरै, लाज न ग्रावै लेस ।—ऊ का.

२ वीर, बहादुर ।

उ०—सांड सीमाड़ जग जेठ ऊवासिरौ, ग्रावळै थाटि 'दूदा' उजाळौ । वळा सौ ऊजळा वेध वीठळ' हारै, करै ऊगै समा मेळ काळौ ।—वनमालीदास रौ गीत

३ उन्मत्त, पागल ।

उ०—वेद न सुणियौ विमळ, खेद पाई तन खोयौ । सांड हुय रह्यौ सदा, रांड रांड हि कर रोयौ । न्याय न जांणै नितुर, निलज जांणी नहि नीती । निज नारी व्रत नेम, रूगड ग्राणी नहि रीती ।

—ऊ का.

४ बलवान, शक्तिशाली । (डिं. को.)

५ शिव-वाहन, नंदी ।

६ देखो 'साढ' (रू. भे.)

उ०—सांड्यां रै भाई जलदी सांड पिलांण वेग पधारा रांणी सीकरी रे देसमै जी म्हारा राज ।—लो. गी.

७ देखो 'साडौ' (मह; रू. भे.)

रू. भे.—सड ।

ग्रल्पा;—सांडियौ, सांढियौ, साढीउ, सांढीयौ ।

सा'ड—देखो 'सांढ' (रू. भे.)

सांडइकोसी–सं. स्त्री.—लडकी को दहेज मे दिया जाने वाला एक सांड सहित बीस गायों का समूह ।

सांडघेरौ–स. पु.—गेहूँ, बाजरी, ज्वार ग्रादि की फसल का वह भाग जो साड के लिए खेत के मध्य में फसल काटते समय छोड़ दिया जाता है ।

सांडणी—देखो 'साढ' (रू. भे.)

सांडसउ–सं. पु. [सं. सन्दशः, सन्दशकः] १ चिमटा, संडासी ।

(उ. र.)

२ जर्राही का एक ग्रोजार ।

३ एक नरक का नाम ।

सांडाई–सं. स्त्री.—ग्रकलड़पन, जबरदस्ती, जोरावरी ।

उ०—भुगानै री सगळी सांडाई उतरगी । ग्राखी ग्रकड़ाई निकळगी । सीधौ गजवरगौ हुयग्यौ ग्रर मिनख नै मिनख सौ जाणण लागग्यौ । बीस पावडा ग्रातरै सूं रांम-राम करै ।—दसदोख

रू. भे.—सडाई ।

सांडियौ–सं. पु.—१ संदेशवाहक, हरकारा ।

२ मादा ऊंट की सवारी करने वाला ।

३ देखो 'साड' (ग्रल्पा; रू. भे,)

रू. भे.—सांड्यौ, साढियौ, साढीउ, साढीयौ ।

सांडिल—देखो 'साडिल्य' (रू. भे.)

सांडिली–सं. स्त्री. [सं. शाडिली] १ दक्ष प्रजापति की पुत्री जो धर्म ऋषि की पत्नी व ग्रग्नि की माता थी ।

२ कौशिक ऋषि की पत्नी दीर्धिका का एक नाम ।

३ शांडिल्य ऋषि की स्वयंप्रभा नामक तपस्विनी कन्या।

वि. वि.—एक बार इसके आश्रम मे अतिथि स्वरूप गालव ऋषि एव पक्षिराज गरुड आये। इसने उनका यथोचित आदर सत्कार किया। सोते समय गरुड़ ने मन मे विचार किया कि इस तपस्विनी को अपने पखो पर बिठा कर विष्णुलोक ले जाना अति उत्तम रहेगा। इसी विचार के कारण एक ही रात मे गरुड के पंख गिर गये। तत्पश्चात दोनो इसकी शरण मे आये तो इसने अनेक वर दिये।

सांडिल्य-सं. पु. [स. शांडिल्य] १ एक देश का नाम।

२ शांडिल्य ऋषि के वशज।

३ विल्ववृक्ष, विल्वपत्र।

४ अग्नि का एक नाम।

५ एक ऋषि जिन्होने भक्ति एव विधि शास्त्र को बनाया था।

६ कश्यपवंशीय महर्षि देवल के पुत्र एक ऋषि जो अग्नि के पिता थे।

७ एक ऋषि जिसे अवैदिक मार्ग से विष्णु की उपासना करने के कारण नर्कवास की शिक्षा भुगतनी पड़ी थी।

८ अग्नि का ज्येष्ठ पुत्र एव कश्यप का ज्येष्ठ भ्राता।

९ ब्रह्मदेव के सारथि का नाम।

१० एक शिव भक्त राजा जो युवावस्था प्राप्ति के पश्चात् काम-वासना मे लिप्त हो कर अनेक स्त्रियो के साथ अत्याचार करने लगा था अतः शिव ने इसे एक हजार वर्ष तक कछुआ बनने का शाप दिया था।

रू भे.—सांडिल।

सांडौ-सं. पु. [स. शाडिक, प्रा. साडिअ] १ गोधा की आकृति का एक जगली जतु जिसका मास पौष्टिक एव स्वादिष्ट माना जाता है। इसकी चर्बी औषधियो मे काम आती है। इसका तेल भी निकाला जाता है।

उ०—१ धरती खारी जे'र निजर पूगै जितरै कठैई झाड-बोटकै नै घास-फूस रौ नाम ई नी। इण धरती मैं सांडा अर पीपूड़ी परडां घणी मिळै। बरसात रा दिना मे अठै पाणी भरीज जावै।

—रातवासौ

उ०—२ राम नाम नही जाणियो, कीया और कळाप। हरीया जै घरि सपदा, होसी सांडा आप।—अनुभववाणी

२ सग, साथ।

३ फसल की कटाई, बुवाई आदि के समय सामूहिक रूप से कार्य सलग्न व्यक्तियो को मजदूरी के साथ खिलाया जाने वाला भोजन।

४ देखो 'साड' (रू. भे.)

उ०—अरधंगी हेम-पुत्री, सरपो कठेणि वाहणो सांडो। सिखा-नेत भाल चदो, तस्मै रुद्राय नमो।—गु. रू. ब.

रू. भे.—संडो, साढो।

सांड्यौ—देखो 'साडियौ' (रू. भे.)

उ०—साड्या रै भाई जलदी साड पिलाण वेग पधारां, राणी सीकरी रै देस मैं जी म्हारा राज।—लो. गी.

सांढ, सांढ, सांढि—स. स्त्री.—मादा ऊँट, ऊटनी।

उ०—१ रावजी सलामत मवा पोहर दिन चढिया सोनिगरा कांन्हडदे नै विस होसी। इसो साभलै नै राव लाखणसी कागद लिखनै बीरा राइका नै कह्यो। बोलाई सांढ ताती छै। तिण चढनै जालोर जा। सवा पोहर दिन चढियां मोहर जाए। तोनै साबास देसा।—वीरमदै सोनिगरा री वात

उ०—२ सो इहा रै गाय भैस सांढा रा वरग घणा। सो साढा रै लारै रैबारी रहै। सो अति अटावरा रहै, अपजोरा हालै। कही नु खातर मैं न आणै।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ दिन दस-बीस आडा घात सैल-सिकार रौ नाव ले मत्ता-सर आया, असवार हजार-एक सुहडा सूँ। हेरा दोय मेलिया, जो खबर ल्यावौ वरग सांढा रौ कठै छै ?

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ एथ अमरै कल्याणमलोत पातसाही सांढि ली हुती। ताहरा कुवर स्री दळपतजी नूं राजाजी कहाडि मेल्हियो जु अै साढि घेराए।—द. वि.

रू. भे.—सढ, साइड, साड, साडणी, सा'ढ, सांयड, सायढ।

सांढियौ, सांढीड, सांढीयौ—१ देखो 'संढौ' (अल्पा, रू. भे.) (डि. को.)

२ देखो 'साड' (अल्प; रू. भे.)

३ देखो 'साडियो' (रू भे.)

उ०—१ तरा सांढियै उपरणी रौ फररौ कीयां आवतौ विरमदेजी री नीजर आयौ। तरै कह्यौ। ठाकुरै कोई ओठी ताती सांढ खडिया आवै छै। तिसै सांढीयौ पिण आय पोहतौ।

—वीरमदै सोनिगरा री वात

उ०—२ नितु नितु नवला सांढिया, नितु नितु नवला साजि। पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेड़ण काजि।—ढो मा.

सांढौ सांढौ—देखो 'साडौ' (रू भे)

उ०—आंणद अर सुख सू चानणी अर सूरज रा उजास मैं दोना रा दिन घुळण लागा, जाणै वारा सुख वास्तै ई चंदरमा अर सूरज ऊगै। पण सुख-दुख, हरख-बिसाद अर सजोग-विजोग रौ अतूट सांढौ। अेक दूजा बिना कोई सपूरण नी।—फुलवाडी

सांण-वि. [स. शाण] सन या पटसन का।

सं. पु. [स. श्राण, माडी, काजी] १ भोजन। (अ मा.)

२ कमल।

३ धनुष।

उ०—मोर मुगट सिर जास कान केरढी कुंडळ, वसन पीत तन स्याम गळै माळा गुजाहळ। भुज मुरळी चत्रभुज संख सांण चक्र-

गद, गोवरधन ऊधरण कमळ लोचन नंदन नंद ।—ज. खि.

[सं. शाणं] ४ सन का बना मोटा कपड़ा ।

[सं. शाण] ५ कसौटी का पत्थर।

६ आरा।

७ चार माशे के बराबर तोल विशेष ।

स. स्त्री. [सं. शान] ८ शस्त्रो की धार पैनी करने का एक प्रकार का उपकरण विशेष ।

उ०—असि धावक आविया, सस्त्र मांजिया सताबी । सांणां चढिया सुक, फूल जड़िया हद फाबी ।—मे. म.

९ उत्तेजित करने वाले शब्द ।

उ०—अर च्यारि ही भाया समेत 'माधाणी' हाडौ मुकुंदसिंह, गौड़ अरजुनसिंघ, राठोड रत्नसिंघ जिसड़ा जोधार काली रा कळस रणगळियार होइ हाथिया रै माथै हाथ करता साथिया रै सांण लगावता साहजादा रै समीप हालिया ।—व. भा.

मुहा.—साण लगावणौ=उत्तेजित करना, जोशयुक्त करना ।

१० गर्जन, ध्वनि।

उ०—पग पहरी सकत वाजणी पायल, नै प्राचइ आगळी नद । गोडीरव भाद्रवइ तणी गति, सेहरा ऊपरि सांण सद ।

—महादेव पारवती री वेलि

११ देखो 'सान' (रू. भे.)

सांणग्रह, सांणघर-स. पु. [सं. शान+गृह] १ वह स्थान जहाँ शस्त्रो की धार पैनी की जाती है।

२ देखो 'स्नानघर (रू. भे.)

सांणजी, सांणजीव-सं. पु [सं. शान+जीव] सिकलीघर। (डिं. को.)

सांणत—देखो 'सोणित' (रू. भे.)

सांणि-स. पु. [सं. शाणि:] सन या पटसन ।

साणी, सांणी-सं. पु. [सं. साधनिक:] १ घोड़ो की देख-रेख करने वाला, तबेले का अध्यक्ष ।

उ०—इतरौ कहायनै माहै आयो, सो आगै सांणी था हीज, तिसै घोडां पिलाण माड तयार हुवा । राजा मुंहनौ दोनूं असवार हुवा ।

—द दा.

मुहा.—सांण्या रा बगस्या किसा घोडा बगसीजै=कोई अधिकार से बाहर चीज कैसे दे सकता है या अनधिकृत व्यक्ति कार्य नहीं कर सकता ।

२ घोड़ों को शिक्षित करने वाला ।

उ०—.........सपतास कै सहोदर, लडा लूंबा मैं अथाग, तिलवागूं कै लीनै ल्यावै पवनूं की पाय, सांणियां नै भली विध सीरै खांत कै पुलग साज तिण निजरू गुजराय, धजराजू कै समाज अत जातू कै अनेक सज.........।—र. रू.

सं. स्त्री. [सं. शाणी] १ कसौटी ।

२ पटसन का वस्त्र ।

३ छोटी कनात या तम्बू ।

४ फटा कपड़ा ।

५ शान का पत्थर ।

रू. भे.—साहणी, साहणी, साहांणी, सोणी ।

सांणोर-स. पु.—डिंगल का एक मात्रिक (छंद) गीत विशेष ।

वि. वि.—उक्त गीत के कई प्रकार के भेद होते हैं । जिनमे से मुख्य निम्नलिखित है :—वडौ सांणोर, छोटौ सांणोर, शुद्ध साणोर, प्रहास साणोर, वेलियौ साणोर, खुड़द साणोर आदि।

उक्त सभी प्रकार के गीतों से सम्बन्धित विस्तृत विवरण यथास्थान वर्णानुक्रम में देखें ।

सांणौ, सांणो-स. पु.—१ नाज की कोठी से नाज निकालने का छेद, मोरी ।

२ उक्त मुंह को बंद करने का उपकरण ।

सांत-वि. [सं. शांत[१ जो दबा दिया गया हो, दबाया हुआ ।

२ मरा हुआ ।

३ जिसका पूर्णतः अन्त हो चुका हो ।

मुहा.—शांत होणौ=मृत्यु को प्राप्त होना ।

४ सन्तुष्ट, अघाया हुआ ।

५ जिसमे जोश या क्रोधादि वेग न रह गया हो, स्थिर ।

उ०—१ सीख सांत, कांत सुर मीठी, मायड़ री मन भावणी। हंसी अर असलील आवता, टाबर टग अणखावणी ।

— नारी सईकडौ

उ०—२ निस्कपटता स्रद्धा, सरलता अर साचाई । विनयी सांत सुभाव, धीर वर अध्यवसाई ।—टाबर सईकडौ

६ कोई मानसिक आवेग, रोग आदि का मिटना ।

उ०—गाळ न ऊठै गूमड़ौ, ऊठै झाळ अकरथ । जिणनूं सज्जन वैण जळ, सांत करण समरथ ।—बां. दा.

७ शिथिल, ढीला ।

८ अप्रभावित।

९ शुभ, मंगलकारी ।

१० जिसने इन्द्रियों को वश मे कर लिया हो, जितेन्द्रिय ।

(डिं. को.)

११ चुप, मौन।

१२ उत्साह, उमंगादि से रहित ।

१३ निस्तब्ध, निरव ।

उ०—दरवाजो ओढाळग्यौ । होस्टल रा लाबा बरामदा मांय सूं जाण-बूझ'र निकळ्यौ । सगळा कमरा सांत पड़्या हा ।

—तिरसकू

[सं. श्रान्त] १४ थका हुआ, श्रान्त ।

१५ सोम्य, गम्भीर ।

उ०—अद्‌भुत अमद सोभा समंद, स्तुति सकल सार वरजित विकार।

अज अमर ईस सब लोक सीस, सुभ सांत सुद्ध पावक प्रबुद्ध।
—ऊ. का.

१६ जिसका ताप व उष्णता नष्ट हो चुकी हो।

सं. पु [स.] १ सुख, आनन्द, हर्ष। (डिं. को.)

२ आप नामक वसु के चार पुत्रों मे से एक पुत्र का नाम।

३ प्लक्षद्वीप का एक वर्ष।

४ उक्त वर्ष पर शासक एक राजा जो प्रियव्रतपुत्र इध्मजिह्व राजा का पुत्र था।

५ आयु राजा के एक पुत्र का नाम।

६ तामस मनु के एक पुत्र का नाम।

७ दुर्दम राजा की पत्नी सुभद्रा का पिता, एक राजा।

८ काव्य के नौ रसों में से एक रस, जिसका स्थायी भाव निर्वेद अर्थात् काम, क्रोध आदि वेगों का शमन माना गया है।
(डिं को)

वि. वि.—चूंकि नाटक मे केवल अभिनय ही प्रमुख है अत. शान्त रस को जिसमे क्रिया, मनोविकार आदि की शांति रहती है, नाटक मे स्थान नहीं दिया गया है। अतः नाटक मे केवल आठ रस ही माने जाते हैं।

सांतकरण, सांतकरणि—सं. पु [स. शान्तकर्ण] शातकर्णि नामक एक राजा।

सांतकुंभ—देखो 'सातकुंभ' (रू. भे.) (ह नां. मा.)

सांतनव—सं. पु. [सं. शांतनव] शातनु के पुत्र भीष्म का नाम।
(डिं. को)

सांतनु—सं पु. [सं. शान्तनु] चन्द्रवंशीय इक्कीसवां राजा, जो प्रतीप एव सुनन्दा के संसर्ग से उत्पन्न हुआ था।

वि. वि.—भागवत के अनुसार इनके हस्तस्पर्श मात्र से वृद्ध व्यक्ति यौवनावस्था को प्राप्त करता था। इनकी पत्नी गंगा से भीष्म नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। वसुराज नामक धीवर की सत्यवती (मत्स्यगंधा) नामक कन्या इनकी दूसरी पत्नी थी। इसी विवाह हेतु भीष्मपितामह ने आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा की थी। दूसरी पत्नी सत्यवती के गर्भ से चित्रांगद व विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र हुए थे।

रू. भे.—सतण, सतणु, सतन, सतनु।

सांतनुसुत—स. पु. [स. शातनु+सुत] १ भीष्मपितामह।

२ शातनु के पुत्रों का नाम।

रू. भे.—सतनसुत, सतनुसुतन।

सांतपन—वि. [स] दो दिन मे पूरा होने वाला।

स. पु.—१ एक प्रकार का उपवास जो छः रात्रि तक किया जाता है।

२ पहले दिन सिर्फ पंचगव्य पीकर दूसरे दिन किया जाने वाला उपवास।

सांतपनकृच्छ, सांतपनकृच्छ्र—सं. पु. [सं. सातपनकृच्छ्र] एक प्रकार का व्रत विशेष।

वि. वि.—इस व्रत मे पहले दिन कुछ पीया जाता है व दूसरे दिन उपवास किया जाता है। इसमे पहले दिन गोमूत्र पीकर दूसरे दिन उपवास, फिर पहले दिन गोमय पीकर दूसरे दिन उपवास इसी क्रम से दूध, दही, घी, कुशोदक आदि पीकर प्रत्येक के दूसरे दिन उपवास किया जाता है।

सांतर, सांतर—सं. स्त्री.—सामग्री, सामान।

उ०—हीलाकर हिणके ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नहिं लाधा। ढाला ढालांतर सांतर ढळियोड़ा, वैठा नीगांतर आंतर बळियोडा।—ऊ. का.

वि.—जिसमे बीच मे अवकाश हो।

सांतरज—स. पु. [सं शान्तरज] एक काशीनरेश का नाम।

सांतरय—स. पु. [सं. शान्तरय] पुरुरवा वंशीय धर्मसारथि के पुत्र का नाम।

सांतरस—देखो 'सांत' (८) (रू. भे)

उ०—नव रस कहि दिखाइ। सरस बीरैं बीररस किअा। रौद्रैं रौद्ररस किआ। अपछरा सिंगारस किआ। नारद हासरस किआ। काइ रैं भैरस बीभच्छरस किआ। सुरैं सांतरस अदभुतरस किआ।
—र. वचनिका

सांतरौ, सांतरौ—वि [सं. सत्तरम्] (स्त्री. सातरी) १ उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया।

उ०—१ रे जाया इण मैं मत कर ढील, पडैं मत आंतरौ के हा। रे जाया राम सिया जी रौ संग, सारां सूं ही सातरौ के हा।
—गी. रा.

उ०—२ पण माया तौ दिन दूणी रात चौगणी बध्योड़ी इज घणी आछी। बाणियां रौ सिरै धरम बिणज ब्योपार। हाल तौ माया घणी बधावणी है। अंडौ सांतरौ मौरत टाळवौ कीकर पोसावै।—फुलवाडी

२ अच्छा, ठीक।

उ०—१ थनैं छोड कोई उपाव सोधणा बिचै तौ इण मारग री सोय नी व्हैणी ई सांतरी है।—फुलवाड़ी

उ०—२ कदैं ई तौ आ बात सांतरी लागै अर कदैं ई वा बात आछी लागै।—फुलवाडी

३ स्वादिष्ट, जायकेदार।

४ स्वस्थ, रोगमुक्त।

उ०—किणही खेत बायौ। खेत पाकौ इतलैं धणी रै बाळौ दुखणी आयौ। जद किणही ओखद देइ सांतरौ कीधौ।—भि. द्र.

५ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।

६ उचित, वाजिब, उपयुक्त।

उ०—उणनैं सावळ समझावता कैवण लागा—मा अबै आ भाईजो

री काई करां। आपरी आंट अर धत आगै किणी री सांतरी बात ई मानै कोनी।—फुलवाड़ी

७ उपयुक्त, बढिया।

उ०—सफरी पकडण सांतरौ, बैठौ ढब बुगलाह। कथा बुरी करवा तणौ, चोखौ ढब्र चुगलाह।—बा. दा.

८ तेज, तीक्ष्ण।

उ०—खीवरां हाथ बांणस खास, बहुनीक जाण रोकी बनास। सांतरा अती धाराक सेल, तारका झबझबै इणह तेल।—वि. स.

९ ठीक, व्यवस्थित।

उ०—घोडा सारां नूं रातब दियौ। ताजा करौ। हथियार सारा सांतरा करण लागा। बगतर, झिलम, जिरह-सूथण, जिरै जूता घोडा री पाखरा काढजै छै, सुवारजै छै।

—कुंवरसी साखला री वारता

१० सुन्दर, खूबसूरत।

ज्यूं—थारै हाथ री हथफूल कितौ सातरौ लागै।

सांता-सं. स्त्री. [स. शाता] १ राजा दशरथ की कन्या जो महर्षि ऋष्यश्रृंग को ब्याही गयी थी।

२ रेणुका।

३ शमी।

४ एक श्रुति। (संगीत)

५ दूब, दुर्वा।

६ देवी का नाम।

७ भारद्वाज ऋषि की माता का नाम।

रू. भे.—साअंता।

सांताकारी-वि. [स. शातिकारिन, शातिकारी] शांति प्रदान करने वाला।

उ०—नमौ सांताकारी अमर अघहारी हरी नमौ।—ऊ. का.

सांति-सं. स्त्री. [सं. शान्ति] १ वेग, क्षोभ, चिन्ता, दुख आदि से रहित अवस्था, शान्त होने की अवस्था।

उ०—दान योग यग दंभ, ध्यान, स्वाध्याय सरळता। सत्य अहिंसा त्याग, सांति ध्रति, खमा अदुलता।—टाबर सईकड़ौ

२ स्थिरता, अपरिवर्तशीलता।

३ आराम, चैन।

४ वह सामाजिक अवस्था जिसमें मार-पीट, लड़ाई-झगडा, उत्पात आदि का अभाव हो।

५ नीरवता, निस्तब्धता।

६ मृत्यु, मौत।

७ धीरज, धैर्य।

८ निष्कलक होने की अवस्था।

९ वासनाओं से मुक्ति, विराग।

१० सौभाग्य।

११ बचाव।

१२ अनिष्ट या अशुभ का निवारण।

१३ पीड़ा, रोग आदि से मुक्ति।

१४ युद्ध की समाप्ती।

१५ मेल, मिलाप।

१६ अघाने की अवस्था, सन्तुष्टी।

१७ दुर्गा देवी का नाम।

१८ दक्ष प्रजापति की कन्या व धर्म ऋषि की पत्नी का नाम।

१९ कर्दम प्रजापति एव देवहूति के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रियों मे से एक, जो अथर्वन ऋषि की पत्नी थी।

सं. पु.—२० श्रीकृष्ण और कालिन्दी के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रो में से एक पुत्र का नाम।

२१ वारुणि आगिरस ऋषि के एक पुत्र का नाम।

२२ शिविवंशीय राजा अजमीढ के पौत्र का नाम जो सुशान्ति का पिता था।

२३ तामस मनु के एक पुत्र का नाम।

२४ ब्रह्मसावर्णि के इन्द्र का नाम।

२५ भगवान् यज्ञ एवं दक्षिणा के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

रू. भे.—सति, सती, साती, सांयत, सायति।

सांतिक-वि. [स शान्तिक] शान्ति से सम्बन्धित।

सं. पु.—शान्ति के कारण होने वाला परिणाम।

सांतिकर-वि. [सं. शातिकर] शाति करने वाला।

सांतिकरम-स. पु. [स. शातिकर्म] प्रेत-बाधा, पाप, बुरे ग्रह आदि द्वारा अनिष्ट या अमगल की संभावना के निवारण का उपचार।

सांतिकुंभ—देखो 'सातकुंभ' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

सांतिगह, सांतिग्रह, सांतिघर-स. पु. [सं. शातिगृह] वह स्नानागार जहां यज्ञ के अन्त मे पाप तथा अशुभ आदि की शाति के लिए स्नान किया जाय।

सांतिजिन-स. पु.—वर्तमान काल के सोलहवें जैन तीर्थंकर, श्री शांति-जिन।

सांतिद, सांतिदाता सांतिदायक, सांतिदायी-वि. [सं. शांतिदातृ] १ शाति देने वाला।

२ विष्णु भगवान्।

सांतिदेवा, सांतिदेवी-स. स्त्री. [सं. शातिदेवा, शांतिदेवी] देवक राजा की कन्या का नाम जो वसुदेव की पत्नी थी।

सांतिनाथ—देखो 'सातिजिन'।

सांतिपंचमी-सं. स्त्री. [सं. शातिपंचमी] आश्विन शुक्ला पचमी।

वि. वि.—इस दिन इंद्राणी व कुश के बने १२ नागों की पूजा की जाती है। इससे नागो का भय जाता रहता है।

रू. भे.—सातिपाचम।

सांतिपरव-सं. पु. [सं. शातिपर्व] महाभारत का बारहवां पर्व जो सब

पर्वों मे सबसे बडा है। इसमे युधिष्ठिर के चित्त की शांति के लिए बहुत से उपदेश व ज्ञान चर्चा लिखी गई है।

सांतिपांचम—देखो 'सातिपंचमी' (रू. भे)

सांतिपात, सांतिपातर, सातिपात्र-स. पु [सं. शातिपात्र] ग्रह, पाप आदि की शाति के लिए जल रखने का पात्र।

सांतिप्रद-वि [स. शातिप्रद] शाति देने वाला।

सांतिवाचन-सं. पु [सं. शातिवाचन] वह मत्र पाठ जो प्रेत बाधा पाप आदि के अमगल को दूर करने के लिए किया जाय।

सांती—देखो 'साति' (रू. भे.)

उ०—प्रभू आया दीनी ग्रहन कर लीनी स्तुति पढी, विखै सांती साती कव उमर साती हियें बढी। नमै गीती जागी लगन धुन लागी जक नही, स्वयभू ध्याऊ मै परमपद पाऊ सक नही।
—ऊ. का.

सांतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

उ०—निकमाळै री रुता, कमनीय किरवा काढा। साळ तिवारा सफा, माथ सांतीरां चाढा।—दसदेव

सांतोम, सांतोमि—देखो 'स्तोम' (रू भे.) (ह. ना. मा.)

सांतौ, सांतौ-स पु.—चोरी के उद्देश्य से दीवार मे लगाई जाने वाली सेंध।

उ०—सांतौ देवता घर रौ धणी जागै तो चोर उणनै मन ई मन गाळिया काढै। चोर, ठग, धाडवी, ठाकर, साहूकार अर राजा आ सगळा रौ सुख दूजा रै दुख अर सताप मै।—फुलवाड़ी

२ मोट की सिंचाई के सब उपकरणो का समूह।

रू. भे—साथौ।

सांथर, सांथरउ—देखो 'साथरौ' (रू. भे)

सांथरवाड़ौ—देखो 'साथरवाडौ' (रू. भे.)

उ०—सांथरवाड़ै सी वाडै मै सोती, आनन अभोरू रंभोरू रोती। दोळै दूधाळू गळियोडी गेरी, ढोळै ढळियोडी रतना री ढेरी।
—ऊ. का.

सांथरौ—देखो 'साथरौ' (रू. भे)

उ०—१ भाग लल्ला प्रथ्वीराज आयौ, सिंह के सांथरै स्याळ व्यायौ।—अग्यात

उ०—२ सुभट अणगिणत सूना घणा सांथरै, भगा खळ तज बिया खेत भाराथ रै। मना नहचे लखी धरण दसमाथ रै, निज मरण आवियौ हाथ रघुनाथ रै।—र. रू.

सांथळ—देखो 'साथळ' (रू भे.)

उ०—गोळा दोय चैनसिंह रै लागिया सो एक तौ सांथळ रा पेडू रै सावै लागियौ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

सांथी-सं. स्त्री.—१ ताने के तागो को ठीक रखने हेतु करघे के ऊपर लगी लकडी।

२ बुनाई के समय ताने के सूतो के नीचे गिरने व ऊपर उठने की क्रिया।

सांथूग्रौ-सं पु.—चौहटे का नाम। (सभा)

साथौ—देखो 'सातौ' (रू. भे)

उ०—धाडौ पाडण सघुणा वेणां, ताकि जलावै ताद। सांथौ देता रात सरावै, चोर बुरावै चाद।—ऊ का.

सांथ्यौ-सं. पु—स्वस्तिक।

उ०—कुहाडि अढढ स्त्री दोलंती छउड ऊनारइ, द्रस्टि देखती मनुस्य मारइ, सरण माथइ सांथ्या फाडइ, चालती चुड्हि फाडइ, नवधायां ि.र पाडइ, वालि बाधि ग्राहणइ, आकास अहुता पखिया गणइ,........।—व. स.

सांदणी—देखो 'साजणी' (रू. भे.)

सांदीपन, सादीपनि, सांदीपनी—सं. पु. [स सान्दीपनि:] श्री कृष्ण एव बलराम के गुरु एक प्रसिद्ध ऋषि जो धनुर्विद्या मे प्रवीण एवं सकल शास्त्रो के ज्ञाता थे।

वि. वि—इनका आश्रम उज्जयिनी मे था। यहां सुदामा ने भी शिक्षा प्राप्त की थी। यहा केवल ६४ दिनो मे श्री कृष्ण व बलराम ने अस्त्रमंत्रोपनिषत्, अस्त्र-प्रयोग सहित सम्पूर्ण धनुर्वेद आदि विद्याऐ सीख ली थी। शिक्षा प्राप्ति के बाद इसने श्रीकृष्ण बलराम से गुरुदक्षिणा-स्वरूप अपने मृत पुत्र को मागा। पचजन असुर ऋषि के पुत्र को चुराकर पाताल मे ले गया था। अत: श्रीकृष्ण ने पाताल मे जाकर उक्त असुर को मारकर गुरु को पुत्र ला दिया व राक्षस की हड्डियो मे कृष्ण का 'पचजन्य' नामक शख बनाया गया था।

सांदौ—१ देखो 'साधौ' (रू. भे)

२ देखो 'सौधौ' (रू. भे.)

सांद्र-वि [सं.] १ गभीर, गहरा।

२ घना, घोर।

३ स्निग्ध, चिकना।

३ मृदु, मधुर।

५ मनोहर, सुन्दर।

६ विपुल, अत्यधिक।

स. पु.—गुच्छा।

सांद्रता-सं पु.—सांद्र होने की अवस्था या भाव।

सांद्रप्रसाद-स पु. [सं] एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें मूत्र का कुछ अंस गाढा व कुछ अश पतला निकलता है।

सांध—१ देखो सौधौ (रू. भे)

२ देखो 'संधि' (रू. भे.)

उ०—१ हमैं बरखा रित माहै साका नै भाद्रवै री साध बरखा रित मंडी। देह बीजां भड लायी। डाल-डाल अम्बर चमकिग्री छै। सेहरां पाखर पडी।—रा. सा. स.

उ०—२ वीक विदेसज चालियौ, विजड हथौ वळ बाध। मूळै तोड़ी

मुण सुगुर, साहि आलम सूं सांध।—नैणसी

उ०—३ सूर धीर साखैत मीर ते सोहै, कायर नर कपै सांध कू विमोहै। स्री महाराज कौ रूप असौ निजर आयौ, जाणें रोहिणी कौ संग विरोचन पायौ।—रा. रू.

सांधण-स. स्त्री. [सं. संधि] जोड, योग। (डिं. को)

सांधणी—देखो 'साजणी' (रू. भे)

सांधणौ सांधबौ-क्रि. स. [सं साधन] १ निशाना लगाना, संधान करना, तीर प्रत्यंचा पर चढाना।

उ०—१ लखमण बाणज सांधियौ गैणा भमर गुडाया।
—केसोदास गाडण

उ०—२ आसाराव, नाइळ सिकार रमतौ हुतौ सु वडौ दूठ राजवी हुवौ, तिणनूं देवी बीहाडण लागी सु आसराव बीहै नही नै बाण हिरण नू सांधियौ हुतौ सु बाह्यौ, तरै देवी खुस हुई।—नैणसी

उ०—३ काया कबज कमान कर, सार सबद कर तीर। दादू यह सर सांध कर, मारै मोटै मीर।—दादूबाणी

२ कपडो आदि मे जोड या टाका लगाना।

३ मेल करना, जोड़ना।

उ०—१ मिळ चापा कीधौ मुदै, 'ऊदौ' धीर' सुतन्न। बाधी फौज कमद्धजा, सांधी प्रीत 'अजन्न'।—रा. रू

उ०—२ हरि चलिणि हुति गगा हुई, साचा सा हिति सांधतौ। तू आप आप वाधौ त्रिगुण, बळिराजा ना बाधतौ।—पी ग्र

उ०—३ जाणें तोड़ जहान सू, सांध न जाणें सीह। निज बळ मू जुध नीमजै, ऊगै सूर अबीह।—बा. दा.

४ संधि करना, समझौता करना।

उ०—सबळा खळ सू सांधिया, निबळ जाय खळ नास। मूसौ मेळ मजार कर, वचियौ विपत विलास।—बा दा.

५ चूर्ण आदि को हाथों मे दबाकर पिण्ड के रूप मे करना।

उ०—गूंद रै सागै पूजती विदामा न्हाक ओकण सांचै ढळिया लाडू सांध्या, धाणां रै सागै कायफळ, कमरकस, काचा गोळा, काळी मिरचा रळाय लाडू बाध्या।—फुलवाड़ी

६ जोडना।

उ०—१ छिण मैं पीड छटाय, हाड टूटोडा सांधै। बूढौ बाळक वणै, रोर जच्चा नै रांधै।—दसदेव

उ०—२ आई उमड अविद्या आंधी, च्यार वरण चडगी चख चांधी। विरचां धजा तूटगी बाधी, सदाचार री संधै न सांधी।
— ऊ. का.

७ टूटी हुई रस्सी, मूर्ति आदि को जोडना।

८ शामिल करना, विलय करना।

उ०—दूसरा मान छळि लाडखां दूसरै, सार रै जोर दोइ धरा सांधी। बाहातरि लेय आंबेरि गळ बंधाणी, बाहातरि गळै मेवात बांधी।—राव राजा फतेसिंघ नरूका रौ गीत

९ तैयार करना।

उ०—सुत राम रूप निज दळ सनाह, गोरधन तणौ नाहर दुगाह। मुख एता 'ऊदा' महाबाह, सांधिया वेध सू पातसाह।—रा. रू.

१० बनाना, करना (बात कहावत आदि)।

उ०—पीसणिया पीसै, राधणिया रांधै, बखतसर न्हावौ-धोवौ अर सिड़यां सीखरी वाता सांधै।—दसदोख

११ पौष्टिक पदार्थ तैयार करना, बनाना।

उ०—पछै काली मासी तौ अगूंती उमाई होय आपरा हाथ सूं सुवावड सांधी।—फुलवाडी

१२ देखो 'साधणौ, साधबौ' (रू. भे)

सांधणहार, हारौ (हारी), सांधणियौ—वि०।

साधिओड़ौ, सांधियोड़ौ, सांध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांधीजणौ, साधीजबौ—भाव वा०।

संधणौ, संधबौ -रू० भे०।

सांधाखांनौ—देखो 'सौधाखांनौ' (रू. भे)

उ०—बागा रा वणाव कीजै छै। सांधाखांनै सूं आणी सांधा हाजर कीजै छै। भाति भांति रा सांधा लगाड़ीजै छै। सभा मजलिस कीजै छै।—रा सा सं.

सांधाणी-स. स्त्री.—कपडा बुनते समय ताने के धागों के टूटने पर जोडने की विधि, क्रिया।

सांधि—देखो 'संधि' (रू. भे.)

सांधिक-वि. [स. सान्धिक] १ शराब बनाने वाला।

२ सधि कराने वाला।

सांधिकै, सांधिकौ—१ सधि स्थान।

२ सीध।

सांधै-सं पु—संधि स्थान, जोड।

उ०—१ सोजत था कोस ६ दिखण खरक रै सांधै। सीरवी जाट बाणीया बसै।—नैणसी

उ०—२ सोजत थां कोस १० उगीण ईसांन रै सांधै। मेर बसै।
—नैणसी

सांधौ-स पु—१ आपस में होने वाला किसी प्रकार का लगाव, वास्ता संसर्ग व सम्पर्क।

उ०—उवा रितुमती हुई। स्नान करणें घर ऊपर चढी। एक ब्राह्मण जवान दीठौ। सौ मा नू बुलाय दिखाइयौ अर मा नू कही—इयै सू म्हारी मन छै। तूं इयै सूं सांधौ जोड़।—बैताळ पच्चीसी

२ जोड, संधि।

उ०—जच्चा-राणी रै हळद तेल गुज्जी रै आटा री पीठी करनै आखौ डील मसळियौ। बाटा उतारी। हाडका लुळाया। सांधौ साधौ दबायौ।—फुलवाड़ी

मुहा.—१ साधौ सांधौ तूटणौ=प्रत्येक अग मे दर्द होना।

२ साधौ साधौ खुलणौ=प्रत्येक अंग टूट जाना।

३ वश, उपाय।
उ०—१ अबै खुद री कडिया भाग्या रै पछै कळकळ करिया अर कूकणा सूं काई सांधौ लागै।—फुलवाडी
उ०—२ अर जे बाई रा भाग मैं ई वर री जोग ई नी है तौ पछै अस्टपौर तरळा तोड्या ई की सांधौ लागैला नी।—फुलवाडी
४ सहारा।
उ०—सेवट तौ बारी कमाई सूं ई पार पडैला, किणी रै दिया लियां सूं की सांधौ नी लागै।—फुलवाडी
५ देखो 'सौधौ' (रू. भे.)
उ०—१ उवै कामणी घणीं किसनागर कस्तूरी अंबर अतर सांध सूं गरकाब हुई थकी उवा राजा रा मलूकजादा रा मन राखती थकी लोटपोट हुई रही छै।—रा. सा. स.
उ०—२ हमामै गरम पाणी सूं नाहीजै छै। अंगोछौ कीजै छै। वागा रा बणाव कीजै छै। साधाखानै सूं आंणी सांधा हाजर कीजै छै। भांति भांति रा साधा लगाड़ीजै छै।—रा. सा. स.
रू. भे.—सधौ, सादौ।

सांन-स. स्त्री. [अ. शान] १ इज्जत, प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा।
उ०—१ म्हानै तौ विस्वास नी व्है कै इत्ती सांन गमियां पछै अै लोग निसंडा री गळाई जीवता बैठा।—फुलवाडी
उ०—२ दांत काढनै कैवण लागा—जै सांन रा साचाणी ई टका व्हैता व्है तौ चाहीजै ई काई।—फुलवाडी
४ ठाट-बाट, तडक-भडक।
उ०—भीड रै बिचाळै राजाजी रौ घोडौ सांन सूं चालतौ हौ। परचै रा मौतबिर लारै खाकां पिदावता खुचखुचियै चालता हा।
—फुलवाड़ी
५ वात रोग, लकवा।
उ०—पछै उठा थी छाडियौ। कौ दिन सीधलै जाय कवळै रह्यौ। सांन रौ झोलौ हुवौ।—नैणसी
[सं. संज्ञा] ६ पागलपन बावलापन। (उ र.)
उ०—पहिली तौ दारू पीवौ अर पछै सांनांया करौ अर नास जावौ।—बूढी ठग राजा री वात
७ निशान, झण्डा।
८ बुद्धि।
उ०—तेणि दिन बहुधन हारयूं, गई रानी सांन। वारी न सकि कामिनी, तु अवरि किन परधान।—नळाख्यांन
९ सन के रेशे से बना हुआ वस्त्र।
वि.—१ तीक्ष्ण, तेज। (अनेका.)
२ देखो 'सांण' (रू. भे.)
उ०—झडै बाहिर गड्डिकै, धुज डड झुकाया। फूल झराया सांन पै, असि बाढ चिराया।—व. भा.
रू भे.—स्यान।

सांनणौ, सांनबौ-क्रि स—१ भिगोना, गीला करना।
उ०—घायल असाद्धि डोलै न घुम्मि, सांनीन स्रोण तै रग भूम्मि।
—ला. रा.
२ पागलपन करना, बावलापन करना।

सांनदार-वि. [अ. शान+फा. दार] १ ठाट-बाट वाला।
२ प्रतिष्ठित, प्रतिष्ठावान।
३ सुंदर, मनमोहक, मनोहर।
४ चमकदार, तेज।

सांनपद, सांनपाद-सं. पु. [स. शानपाद] चदन घिसने का पत्थर।

सांनबाफ-सं. पु.—एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष।

सानमांन—देखो 'सांनुमान' (रू. भे.) (अ. मा, डिं: को; नां. मा.)

सानसौकत-स पु. [अ. शानशौकत] ठाट-बाट, सजावट।

सानिज—देखो 'सानुज' (रू. भे.) (ह. ना मा)

सांनिद्ध, सांनिध, सांनिधि, सांनिध्य-स पु. [स. सानिध्य] १ सामीप्य।
उ०—१ अधिकै भावै यात्री आवै, गुण जिनवर ना गावै। रागै बहु विधि पूज रचावै, प्रभु सांनिध सुख पावै।—ध व. ग्रं.
उ०—२ हसि हूं वाही, हो वाहला, कही तह्मारी प्रीति। वैस्वानर सांनिधि जै बोल्यूं का वीसारयूं स्वामीति।—नळाख्यान
२ मगल, अमन-चैन।
उ०—१ प्रसिद्ध जिण चद पाटै खरतर, गुरु सोभा खाटै हो। सांनिध करण सदाई, वड नामी गुरु वरदाई हो।—ध. व. ग्र.
उ०—२ सुलसा सखरी स्राविका, निदै पूरव करम निदान कि। सीलै सुर सांनिध करै, सुवै आंणि जीवत संतान कि।—ध. व. ग्रं.

सांनियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ भीगोया हुआ, गीला किया हुआ. २ पागलपन किया हुआ, बावलापन किया हुआ।
(स्त्री. सानियोडी)

सांनियौ-वि.—१ पागल, बावला।
२ चित्तभ्रम।
उ०—तू गहलौ तू सांनियौ, तू भोळौ भंवराळ। मूळ मघा मै तूं हुऔ, तातै सरस लबाळ।—गज-उद्धार

सांनी, सांनी-स स्त्री.—इशारा, सकेत।
उ०—दूजां नूं सांनी दियै, एक तणीं बस अक। किण किण नह दीधा कदम, पातर रै परजंक।—बां. दा.
वि. [अ. शानी] समान, तुल्य।
उ०—जपै सुकर जबानी, कुदरत कौन दी, बदु परवर सांनी सीता सांइयां।—र. ज. प्र.

सांनु-सं. पु. [सं.] १ पर्वत की चोटी, शिखर।
२ जगल, वन।
३ पर्वत के ऊपर की चौरस भूमि।
रू. भे.—सानू।

सांनुज-सं. पु. [सं. सहानुज] स्वभाव, आदत, प्रकृति। (अ. मा.)
रू भे.—सांनिज।
सांनुमांन, सांनूमान-सं. पु. [स. सानुमत्] पर्वत, पहाड।
(डिं. को; ह. ना. मा.)
रू. भे.—सानमान।
सांनू—देखो 'सानु' (रू. भे) (डिं. को.)
सांनूवाळ-स. पु. [सं. सानु+आलुच्] पर्वत, पहाड़। (डिं. को.)
सांप—देखो 'साप' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—भूखी पड़ी आंख्यां काढै, तिरमिरावै अर तारा गिणै। घड़ी घड़ी उठै अर नाड़ा छोड करै है। नैणां मैं वट नी पड़ै। सांप मरै लाठी नी टूटै जिसौ दाव अर उपाव सोचै है।—दसदोख
सांपड-सं. पु.—१ स्नान, मज्जन।
२ कच्चे मकान (झोपडियो आदि) की लकडियों को मजबूत करने के लिए लगाया जाने वाला पतली लकड़ियो का बन्ध।
सांपड़णौ, सांपड़बौ—देखो 'सपडणौ, सपड़बौ' (रू भे)
उ०—छांट सू छाट टकरीजण लागी। परनाळां पांणी ओसरियौ कुदरत सांपड़ै। उण रौ रू' रू' धुपग्यौ। नाळां-खाळां पाणी बहण लागो। जळबंब ई जळबंब।—फुलवाडी
सांपड़णहारो हारौ (हारी), सांपड़णियौ—वि०।
सांपड़िओड़ौ, सांपड़ियोड़ौ, सांपड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांपड़ीजणौ, सांपड़ीजबौ—कर्म वा०।
सांपड़ाणौ, सांपड़ाबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपडाबौ' (रू. भे.)
सांपड़ाणहार, हारौ (हारी), सांपड़ाणियौ—वि०।
सांपड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सांपड़ाईजणौ, सांपड़ाईजबौ—कर्म वा०।
सांपड़ायोड़ौ-देखो 'संपड़ायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. सांपड़ायोडी)
सांपड़ावणौ, सांपड़ावबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपडाबौ' (रू. भे.)
सांपडावणहार, हारौ (हारी), सांपड़ावणियौ - वि०।
सांपड़ाविओड़ौ, सांपड़ावियोड़ौ, सांपड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांपडावीजणौ, सांपडावीजबौ—कर्म वा०।
सांपड़ावियोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री सांपड़ावियोडी)
सांपड़ियोड़ौ-भू. का कृ—१ पृथक किया हुआ, अलग किया हुआ।
२ देखो 'संपड़ियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सांपड़ियोडी)
सांपजणौ, सांपजबौ—देखो 'संपजणौ, सपजबौ' (रू. भे.)
उ०—स्रम थोड़ै वोह नफौ सांपजै, बीसर मती अनोखी बात। रहै प्रसन्न ऐ आयस रीधै, छात सिधां नरपतियां छात।
—बां. दा.
उ०—२ सुणै पढै नह सासतर, सेवै नह सतसग। सुखदायक किम सांपजै उर सतोख अभंग।—बा. दा.
सांपजणहार हारौ (हारी), सांपजणियौ—वि०।
सांपजिओड़ौ, सांपजियोड़ौ, सांपज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांपजीजणौ, सांपजीजबौ—भाव वा०।
सांपजियोड़ौ—देखो 'संपजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सांपजियोडी)
सांपण, सांपणी—देखो 'सापणी' (रू. भे.)
सांपणौ, सांपबौ—देखो 'सूंपणौ, सूंपबौ' (रू. भे.)
उ०—१ उण राजा हून नै मी मित्राई हुती, सु मोनु तीस चरू मोहरां रा भरिया सांपिया छै।—नैणसी
उ०—२ पातिसाह फतै करि नै किलचखान नूं सूरति सांपिनै सीकरी फतेपुर नूं कूच कियौ।—द. वि.
सांपणहार, हारौ (हारी), सांपणियौ—वि०।
सांपिओड़ौ, सांपियोड़ौ, सांप्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांपीजणौ, सांपीजबौ—कर्म वा०।
सांपनणौ, सांपनबौ-क्रि. अ. [सं. संपदनम् या सम्प्रापण] १ प्राप्त होना, मिलना।
उ०—१ 'पदम' 'कुसळ' अवसाण सांपनै, हिचियौ खागां खडग हथ। कांमण सदा जिका कथ कहतौ, कीध जिका हिज साच कथ।
—कुसळसिंघ कछवाह रौ गीत
उ०—२ जिम जैमाल अभिनमौ जैमल, हालियै दलिदळ थंभ हुवौ। कोढणै जळ चाढै नवकोटै, मोटै अबि सांपनै मुवौ।
—अरजुनसिंह गोपाळदासोत रौ गीत
उ०—३ विसरि गडगड़ै तूर सूरा चढै वीर रसि, अछर वरिवा करै चित उमेखा। सांमि छळ देस छळ वेस छळ सांमठा, सांपना ताहरै भागि सेखा। -सेखा दुरजनसालौत पातावत रौ गीत
२ उत्पन्न होना, पैदा होना।
३ पूरा होना, सम्पन्न होना।
उ०—सैदां उच्छव सांपना, मुगळां वदन मलीण। दिल्ली अति चाळौ दरस, पुर सोचिया प्रवीण।—रा. रू.
सांपनणहार, हारौ (हारी), सांपनणियौ—वि०।
सांपनिओड़ौ, सांपनियोड़ौ, सांपन्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांपनीजणौ, सांपनीजबौ—भाव वा०।
सांपन्नणौ, सांपन्नबौ—रू० भे०।
सांपनियोड़ौ-भू का. कृ.—१ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ. २ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ. ३ पूरा हुवा हुआ, सम्पन्न हुवा हुआ।
(स्त्री. सांपनियोड़ी)
सांपन्नणौ, सांपन्नबौ—देखो 'सांपनणौ, सांपनबौ' (रू. भे.)
सांपन्नणहार, हारौ (हारी), सांपन्नणियौ—वि०।
सांपन्निओड़ौ सांपन्नियोड़ौ, सांपन्नयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सांपन्नीजणौ, सांपन्नीजबौ—भाव वा०।

सांपन्नियोड़ौ—देखो 'सापनियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. सांपन्नियोडी)

सांपरत, सांपरत—देखो 'साप्रत' (रू. भे.)
उ०—१ सहज ललाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पाय। निरखै भरमै नायणी, जावक दै मिळ जाय।—अग्यात
उ०—२ चद देखै जिसा परत मन धारै चंगा सांपरत गिणै तन काच सीसी। आवळाफूल पड़ै रण आविढा, बढै संग सावळा सात वीसी।—गिरवरदान सांदू
उ०—३ बाता गई विलाय, सुपनौ होकै सांपरत। कैता कई न जाय, जिय री जिय जाणै 'जसा'।—ऊ. का.
उ०—४ संजम जप तप सांपरत, व्रत जुत जोग बिनाण। आखि तरच्छी ईखता, जीता समधा जाण।—बा. दा

सांपरतक, सांपरतैक, सांपरथ—देखो 'साप्रत' (रू. भे.)
उ०—१ कई करो रे उस्तादां! सांपरतैक आख्या मीच'र अधारो किया तौ मत बैठा रैवो।—वरसगाठ
उ०—२ तद माणस बोली थें मोनें सांपरतक कह्यौ थौ सौ तू ठाकरां ने तेडं लै आवा।—राजा रा गुर रा बेटा री बात

सांपराय-सं. पु. [सं. साम्पराय, साम्परायः] युद्ध। (ह. ना. मा.)

सांपरायक, सांपरायिक, सांपरायिकी-वि. [स.] १ युद्ध मे काम आने वाला।
२ परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक।
३ विपत्तिजनक।
स. पु. [स. सापरायिक] १ युद्ध, समर। (ह. ना. मा.)
[सं. सापरायिकः] २ युद्ध का रथ।

सांपरीछतरी-सं. स्त्री—प्रायः वर्षा ऋतु मे उत्पन्न होने वाला एक पौधा जिसके डठल के ऊपर छतरी सी होती है।

सांप री मासी-स. पु.—एक जंतु विशेष।
उ०—जिण दिन लीली जळै जवासी, माडै राड़ सांप री मासी। बादळ रहै रात रा बासी, यूं जाणै चौकस मेह आसी।
—वर्षा विज्ञान

सांपाड़ौ—देखो 'संपाडो' (रू. भे.)
उ०—१ दोनू दिसा गया। पाछा घरै आया। दातण कर सांपाड़ौ कर साह ठाकुर द्वारै जाय साथै दरसण किया।
—पलक दरियाव री बात
उ०—२ तद भरमल उठ मुजरौ कर हुकम माथै चाढ लीयौ। सौ हमैं सांपाड़ै रै वखत वडारण दूध लै जाय आरोगायै।
—कुवरसी सांखला री वारता

सांपियोड़ौ—देखो 'सूंपियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सांपियोड़ी)

सांपोळौ-सं. पु.—नशे में मस्त होकर झूमने या डगमगाने की क्रिया।
उ०—जठै अक्काई भीला रौ फूल लीया त्यूं हीज बैठो छै। अमल गलणीयै बढियौ छै। कसूंभा बत्तीसा नीकळै छै। कैइक भाई अमला री झोका खावनै रह्या छै। कैइक सांपोळा करै छै। क्या इक अमल चिमठिए चढियौ छै।—जखड़ै मुखड़ै भाटी री बात

सांपौ, सांपौ-सं. पु.—गायो का समूह, झुण्ड।

सांप्रत, सांप्रत-अव्यय.—प्रत्यक्ष, सम्मुख। (उ र)
उ०—१ बीदणी रै काळजै तौ बीद री चित्राम हूबौहूब कुरयौ। आंख्या मीचनै ई वा सांप्रत धणी रौ उणियारौ निरख सकती।
—फुलवाड़ी
उ०—२ जीव-जिनावर धीज्या जगळ रौ वासौ करै, पण सांप्रत मौत रौ धीजौ किणनै व्है।—फुलवाडी
उ०—३ कुकडा रौ गुण कांम, काक गुण भक्षण कीन्हौ। जुध करण रौ जोध, स्वान गुण सांप्रत लीन्हौ।—ऊ. का.
२ साक्षात, हूबहू।
उ०—१ सोई खुदद आज दिन सांप्रत, खौदुरगा सकळाई। मूरत अदुल भेख मरदांनू, सूरत हृदय समाई।—मे. म
उ०—२ अेक दिन पाड़ौसण यूं ई बाता-वाता मै गीगली रै रूप री प्रस्ताव बात करी कै सेठां री गीगली तौ सांप्रत चांद रै उणियार है।—फुलवाड़ी
उ०—३ बापजी, कदै ई म्हारै घरै जीमण री मया करौ तौ म्हैं जाणू ला कै सांप्रत भगवान म्हारै घरै पधारिया।—फुलवाडी
३ सचमुच।
उ०—चुगली विसतारत चुगल, सांप्रत होय सचेत। सौ मुरदार सरीर री, लट मुख माफल लेत।—बा. दा
४ इस समय, अभी।
५ फिर, पुनः।
६ उचित, उपयुक्त।
७ वास्तव मे, हकीकत मे।
उ०—१ उणनै तौ विस्वास ई नी व्हियौ कै साचाणी अौ किणी लुगाई रौ परतख सांप्रत उणियारौ है।—फुलवाड़ी
उ०—२ सांप्रत कुबाण छोडै न सठ, पात कुलक्षण पालसी। संसार मांहि अवगुण सरब, होको ही सामळ हालसी।—ऊ. का.
८ उस समय।
उ०—बैरण रसणा बस त्रसणा तन ताई, आभा आगण री अन मागण आई। सांप्रत पूछी नह किण ही कुसळाता, अंन अन कर-तोडी मरगी अनदाता।—ऊ. का.
रू. भे.—सप्रत, सप्रति, संप्रती, सापरत, सांपरत, सापरतक, सापरतैक, सांपरथ, साप्रति, सांप्रती, सैप्रत, सैप्रत्त।

सांप्रति, सांप्रती—देखो 'साप्रत' (रू. भे)
उ०—१ हुं तुझ नै कहती सदा जी, विगडन हारी बात। तै सांप्रति साचौ थई जी, दुरजण खेली छात।—वि. कु.
उ०—२ नितर नौ नेह जिण सूं हुवै जी, वीछड्यां दुख न खमाय।

नेह सांप्रति किम नीसरै जी, जेहनौ जीवन प्राय।—वि. कु.

उ०—३ सुच्छम रोमावळि सुखद, बरणी उकति बिचार। सांप्रति रस सिणगार री, बेल कीयौ बिसतार।—बां. दा.

सांप्रदायिक-वि. [सं.] सम्प्रदाय का, सम्प्रदाय सम्बन्धी।

सांप्रदायिकता-स. स्त्री. [स.] साम्प्रदायिक होने की अवस्था या भाव।

सांफळ-सं. पु.—युद्ध, लडाई, झगडा।

उ०—१ ताहरां दूदौ कहै—मेघा जी! आपां परत री वेढ करस्या, रजपूतां नूं क्यूं मारूं? का दूदौ मेघै, का मेघौ दूदै। आपां हीज सांफळ हुसी।—नैणसी

उ०—२ बागी अखंगा काहुळा नाग करतकां सांफळै बही, गुड़ै सिंघू काहुळा जुझाऊ कै गाराज। लडै बहादरेस धूत मूहडा गैणाग लागौ, नत्रीठा बेकटी बागौ खळां धू नाराज।—प्रभुदांन मोतीसर

सांफळउ—देखो 'साफळी' (रू. भे.)

उ०—भिड्या कटक रिण काहल वाजइ, वाहइ खांडाधार। सात-लमीहि सांफळउ जीतूं, मारिया म्लेछ अपार।—कां. दे. प्र.

सांफळणौ, साफळबौ-क्रि. स.—१ युद्ध करना, लडाई करना, संग्राम करना।

उ०—१ सहमा दौ हूंत हेक सांफळियौ, त्रिहूं लोकै हैकार तवै। बीता पहर च्यारि खग बहतां, रावत पड़ै न खडै रिवै।

—जगतसिंघ सगतावत री गीत

उ०—२ साहिजादा जिण दिन सांफळिया, आफळिया तिण दिन आगाहि। गौड़ां धणी तणा त्रंब गुडिया, गौड़ां बिहुं तणै गज-गाहि।—मदनसिंघ नै सूरसिंघ गौड़ री गीत

२ टक्कर लेना, भिड़ना।

उ०—झाळा नाळा झळहळै, रिड़ै वहाळा रत्त। समहर जुड़ै 'सुमेर' रा, भड़ खाटण प्रभत्त। भड़ खाटण प्रभत्त, सकोहा सांफळै। लै जरमन परलोक रहच्चै रांफळै।—किसोरदांन बारहठ

सांफळणहार, हारौ (हारी), सांफळणियौ—वि०।

सांफळिओड़ौ, सांफळियोड़ौ, सांफळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांफळीजणौ, सांफळीजबौ—कर्म वा०।

सांफळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ युद्ध किया हुआ, लड़ाई किया हुआ, संग्राम किया हुआ. २ टक्कर लिया हुआ, भिड़ा हुआ।

(स्त्री. सांफळियोडी)

सांफळौ-स. पु.—१ युद्ध, लडाई, संग्राम।

उ०—तिमै रथ रै लारै साथ चढीयौ। आगै असवार दीठा। सात वीस असवारा सूं सांफळौ वागौ। राजडीयौ खवास वाजनै काम आयौ।—वीरमदै सोनगरा री वात

२ मोर्चा।

उ०—एक बादसाह अरब मैं थौ सो उणरै वैरी सू लड़ाई वणी। जद दोनूं लसकरां सांफळा बाधियौ।—नी. प्र.

३ टक्कर, मुठभेड़, झड़प।

उ०—१ आसकरण चढियौ हुतौ, जु नरबद जी अजूब आया। सु आसकरण सौ सीधळां सांफळौ हुवौ।—नैणसी

उ०—२ औ दूहौ कह्यौ। ताहरां मळ उपाड़ नै मूळवै सौ सांफळौ हुवौ। ताहरा मूळवै घोड़ौ तातौ कर नै बरछी री बूडी सौ मल नूं मार राखीयौ।—मूळवै सांगावत री बात

वि.—१ कटिबद्ध, तैयार।

२ अस्त्र-शस्त्र सहित।

उ०—इम वात कहता वार लागै, आय सांफळा हीज वाजीया। ताहरां वरसै रायपाल नूं कह्यौ, 'ओठी १ घरै मेलौ, घरै खबर देवै।'—वरसै तिलोकसी भाटी री वात

रू. भे.—साफळउ।

सांब-सं. पु. [सं.] १ शिव का नामान्तर।

२ जाम्बवती एव कृष्ण के ससर्ग से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

वि. वि.—मतान्तर से यह कृष्ण एवं रुक्मणी के संसर्ग से उत्पन्न हुआ था। यह अत्यन्त पराक्रमी था। इसने कई युद्ध किए थे। दुर्योधन-कन्या लक्ष्मणा व ब्रजनाभ-कन्या प्रभावती का इसने हरण किया था। श्वफल्क कन्या वसुन्धरा भी इसकी पत्नी थी। इसी के पेट से उत्पन्न लोहे के मूसल से ही समस्त यादवो का संहार हुआ था। यह अत्यन्त सुन्दर था अतः कृष्ण की कई पत्नियां इस पर अनुरक्त थी। इसकी सूचना कृष्ण को मिलने पर कृष्ण ने इसे कुष्ट रोगी होने का व पत्नियों को उनका चोरो द्वारा अपहरण किये जाने का शाप दिया। नारद की सलाह से इसने सूर्योपासना की। इससे यह कुष्ट रोग से मुक्त हुआ।

३ चक्रपाणि राजा के प्रधान का नाम।

[स. शाब] ४ आप नामक वसु के एक पुत्र का नाम।

५ देखो 'साम' (११) (रू. भे.)

उ०—.........खुरसाण रा उतारिया माठीरा तिलारिया, ऊपर रूपै रा सांबा छै, पीतळ तांबै रा छला छै, दात री चौकडी छै, तिलोर रा पसारा छै, दात रा सुफाळा छै। सोन्हैरी हळ लिखी छै, नचमूठ रा तीर छै।—रा. सा. सं.

सांबण—देखो 'साबण' (रू. भे.)

उ०—भरै अन्न भडार, सालि गोधूम सघण घण। घ्रित तेल गुळ लूण, लगै अहि फेणइ सांबण।—गु. रू. ब.

सांबपुर-स. पु. [स. साम्बीपुर] आधुनिक मुल्तान (पजाब) नगर का प्राचीन नाम। इसे श्रीकृष्ण के पुत्र साब ने बसाया था।

सांबपुरांण-सं. पु. [सं. साम्बपुराण] एक उपपुराण का नाम।

सांबर—देखो 'साभर' (रू. भे.)

उ०—सांबर सूर वाघ दरसाणा, बहुसै तियां संघारै बांणा। प्रेतालुध माया झळ पेखै, लखि आतसबाजी सम लेखै।—सू. प्र.

सांबरड़ी—देखो 'साबरी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—जमदाढ बामै अग भीड जडी, सुज ऊपर पेटीय सांवरड़ी । घण बजर काळ लुहार घडी, जगजीत बामै अग रूक जड़ी ।—गो. रू.

सांवरणी—सं. स्त्री,—अधिकार, कब्जा ।

सांवरथ—देखो 'समरथ' (रू भे.)

सांवरी—स. स्त्री. [स शाम्बरी] १ माया, इंद्रजाल, बाजीगरी । (डिं. को.)

[स. शाबरी, शाबरिन्] २ मायाविनी ।

३ मूषाकानी नामक लता ।

४ एक प्रकार का चदन ।

५ देखो सांबरौ' (पु.) (रू. भे.)

उ०—बरस दीहां कौ सेबलौ, घी घणौ खाज्यौ पगाह् पराण । पायँ पांणही सांबरी, चउघड्यां माह् दीई-मिलांण ।—बी. दे.

सांबरोट—स. पु.—सांभर प्रदेश का भू भाग या भूमि ।

उ०—सांबरोट धर दाब, प्राण जळ खाग पखाळै । गूंगा गेंहला गाळ, वचन देवळ रा वाळै ।—पा. प्र.

सांबरौ—वि.—१ साभर नामक पशु का ।

२ साभर नामक पशु के चमडे का ।

उ०........घणी पीतळ नै घणी दात माहै गरकाब हुआ थका, रेसमी पटाटा, सांबरा ठकटा, तगं अंग भीड़िग्रां थका, इण भाति रा सौ ऊंटां ऊपर सौ पलांणा मंडिग्रा छै ।—रा. सा. स.

अल्पा,—साबरडी, साबरी ।

सांबळ, सांबळउ—देखो 'सावळौ' (रू. भे.) (उ. र.)

सांबळणौ, सांबळबौ—देखो 'सांभळणौ, साभळबौ' (रू. भे.)

सांबळणहार, हारौ (हारी), सांबळणियौ—वि० ।

सांबळिग्रोड़ौ, सांबळियोडौ, सांबळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सांबळीजणौ, सांबळीजबौ—कर्म वा० ।

सांबळियोड़ौ—देखो 'साभळियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. साबळियोड़ी)

सांबविक—स पु. [स. शाम्बविकः] शंख बेचने वाला व्यक्ति ।

सांबहणौ, सांबहबौ—देखो 'संभाणौ, सभाबौ' (रू. भे.)

उ०—धन सबरी रौ धरम, प्रभु महाराज पधारै । बाळि बाण सांबहै, साध सुग्रीव सुधारै ।—पी ग्र.

सांबहणहार, हारौ (हारी), सांबहणियौ—वि० ।

सांबहिग्रोड़ौ साबहियोड़ौ, सांबह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सांबहीजणौ, सांबहीजबौ—कर्म वा० ।

सांबहियोड़ौ—देखो 'सभायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साबहियोडी)

सांबियोड़ौ—देखो 'संभायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साबियोड़ी)

सांबीलौ—स. पु. [सं. शबल] १ धानादि कूटने का एक प्रकार का उपकरण, मूमल ।

२ एक प्रकार का हथियार विशेष ।

सांभणौ, सांभबौ—देखो 'संभाणौ, सभाबौ' (रू. भे.)

उ०—जामण रा रे जाया, अबर तौ पटकी धरती सांभ ली । —लो. गी.

सांभणहार, हारौ (हारी), सांभणियौ—वि० ।

सांभिग्रोड़ौ, सांभियोड़ौ, सांभ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सांभीजणौ, सांभीजबौ—कर्म वा० ।

सांभर—स. पु.—१ एक झील का नाम जिसके पानी से नमक बनाया जाता है ।

२ राजस्थान का एक कस्बा जो प्राचीन समय में सपादलक्ष कहलाता था । इसमे सांभर नामक झील होने के कारण इसे भी साभर कहने लगे ।

मुहा०—१ साभर मैं लूण रौ टोटौ=किसी वस्तु के विशाल भण्डार के स्थान पर भी उस वस्तु की कमी अनुभव करना ।

२ सांभर मैं जाय अलूणौ खाय=किसी स्थान या वस्तु की उपयोगिता की आवश्यकता पड़ने पर भी उपयोग न करना ।

(मि.—तालाब री तीर तिरसौ रै'णौ)

३ सांभर मै पडै सौ लूण=संगत से भला भी बुरा हो जाता है ।

३ उक्त झील के पानी से बनाया गया नमक ।

४ साभर का सींग ।

५ भारतीय मृग की एक जाति विशेष ।

६ उक्त जाति का मृग, बारहसिंघा ।

रू. भे.—संबर, सबर, संभर, सभर, सइभरि, सहैंभर, सांबर, सामर, सामरू, सामरौ, सैंभर ।

सांभरणौ, सांभरबौ—१ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—हंसा सर सांभरियाह रे, तैं जन धरै मुगति नी चाह रे । तिहा दीसइ रतन घणाह रे, जांणैं नवल ममोला वाह रे । —स. कु.

२ देखो 'साभळणौ, सांभळबौ' (रू. भे.)

उ०—सज्जण सुणै समुद्द तू, तर तर थकी तेण । अवगुण अेक न सांभरइ, रहूं विलूंबी जेण ।—ढो. मा.

सांभरणहार, हारौ (हारी), सांभरणियौ—वि० ।

सांभरिग्रोड़ौ, सांभरियोड़ौ, सांभरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सांभरीजणौ, सांभरीजबौ—कर्म वा० ।

सांभरमति, सांभरमती—देखो 'साबरमती' (रू. भे)

उ०—झाली मारग मै आवती विचारियौ जै खांवंद परमेस्वर समांन छै । सौ पण आछौ छै । तौ हूं अे कामण लै जाय माथै करम क्यूं बाधू । तद कामण री गाठ थी सौ नदी सांभरमती मैं नाख दी ।—कुंवरसी साखला री वारता

सांभरियोड़ौ—देखो 'समरियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'साभळियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. साभरियोडी)

सांभरियौ, सांभरौ-सं. पु.—१ सांभर झील का नमक।

२ चौहान शाखा का व्यक्ति।

उ०—राज नीमराणौ रजत, सांभरियौ समराथ। सौ सामंता साख रा, सूर सुभड लै साथ।—केहर प्रकास

वि.—सांभर का, सांभर वाला।

रू. भे.—संभर, साभरचौ, सामरियौ, सामरचौ, सैंभर, सैंभरियौ, सैंभरी।

सांभरौलूण-सं. पु. यौ.—साभर झील का नमक। (ग्रमरत)

सांभरचौ—देखो 'साभरियौ' (रू. भे.)

सांभळण-सं. पु.—कान, श्रवण। (अ. मा; ह. ना. मा.)

सांभळणौ, सांभळबौ-क्रि. स.—१ सुनना। (उ. र.)

उ०—१ बाका मेहासधू म बीसरै, संकट हरै सांभळै साद। गढ-वाडा गढ ग्रोलै गाजै, मढरै ग्रोलै गढा ग्रजाद।—बा. दा.

उ०—२ कह्यौ-जु भाई! कोई घोड़ियां मे हुवै तौ सांभळज्यौ। घोड़ी नू थटै रै पातसाह रौ दरियाई घोडौ लागौ छै।—नैणसी

उ०—३ सांभळि अनुराग थयौ मनि स्यांमा, वर प्रापति वछती वर। हरि गुण भणि ऊपनी जिका हर, हर तिणि वंदै गवरि हर।—वेलि

२ ध्यान देना।

उ०—१ जोगीण जोगी सूं कहइ, सांभळी नाथ समथ्थ। का जीवाडउ मारुवी, हू पिण इण हिज सथ्थ।—ढो. मा.

३ समझना, जानना।

उ०—सारग सिळीमुख साथि सारथि, प्रोहित जाणणहार पथ। कागळ चौ ततकाळ कृपानिधि, रथ बैठा सांभळि ग्ररथ।—वेलि

सांभळणहार, हारौ (हारी), सांभळणियौ—वि०।

सांभळिग्रोड़ौ, सांभळियोड़ौ, सांभळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांभळीजणौ, सांभळीजबौ—कर्म वा०।

संभरणौ, संभरबौ, संभळणौ, संभळबौ, सांबळणौ, सांबळबौ, सांभरणौ, साभरबौ सांम्हळणौ, सांम्हळबौ, सांम्हळणौ, सांम्हळबौ
—रू० भे०।

सांभळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सुना हुग्रा. २ ध्यान दिया हुग्रा. ३ समझा हुग्रा, जाना हुग्रा।

(स्त्री. साभळियोड़ी)

सांभव-वि. [सं. शाभव] शिव का, शिव से सम्बन्धित।

स. पु. [सं. शाभव] १ देवदारु वृक्ष।

[सं. शांभवः] २ शिव-भक्त, शिव-उपासक।

३ कपूर।

४ शिव पुत्र।

५ विष, जहर।

सांभवी-सं. स्त्री. [सं. शाभवी] १ पार्वती, दुर्गा।

२ दूब।

सांभियोड़ौ—देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. सांभियोडी)

साभेळौ—देखो 'सामेळौ' (रू. भे.)

साम्हळणौ, सांम्हळबौ—देखो 'सांभळणौ, साभळबौ' (रू. भे.)

सांम्हळणहार, हारौ (हारी), सांम्हळणियौ—वि०।

सांम्हळिग्रोड़ौ, सांम्हळियोड़ौ, सांम्हळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांम्हळीजणौ, सांम्हळीजबौ—कर्म वा०।

सांम्हळियोड़ौ—देखो 'साभळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साम्हळियोड़ी)

सामंत-स. पु. [सं. सामंत] १ योद्धा। (डिं. ना. मा.)

उ०—पखरैता ध्वज पूर, सिलह ससत्रां रिण साजा। उभै सहस ग्रापरा, साथ सामंत सकाजा।—सू. प्र.

२ बड़ा सरदार, बड़ा ग्रमीर।

उ०—१ ग्रठी दूजा साहज़ादा नू ग्रापरै ऊपर चलायौ जाणि तिकण नूं पाछौ फेरण रै काज कुमार दारासाह रौ कुमार सलेमसाह विदा कियौ। तिकण रै साथ कछवाह जयसिंह, गौड़ ग्रनिरुद्धसिंह, नबाब दलेलखा तीन ही मुख्य सामंत देर ग्राप रौ उद्धत ग्रनीक दियौ।—व. भा.

उ०—२ जिकै रजपूत कैसा, जग मैं मजबूत, प्रथीराज का सामंत जैसा, ग्राकास की बीज, कना जमराज की खीज, ग्रापका सीस पर खेलै, पडता ग्रासमान कू झेलै।—बगसीराम प्रोहित री बात

३ छोटा राजा जो कर देता है।

उ०—घोख मद-घोख जस तणा वादित्र घुरै, जोध सामंत मैं थाट जोपै। चमर ढळतै त्रिगति ग्रभिनमौ 'चौंडरज', 'ग्रमर' मेघाडबर सीस ग्रोपै।—केसोदास गाडण

४ वीर, बहादुर। (डिं. को.)

५ देवराज इन्द्र। (ना. डिं. को.)

६ समीपवर्ती, पडोसी।

७ सार्वजनिक।

८ पड़ौसी राजा।

९ पंवार वंश की एक शाखा।

१० उक्त शाखा का व्यक्ति।

११ पडोस।

१२ देखो 'संवत' (रू. भे.)

उ०—उतर दिखण पूरब पछिम, कोई पाण न दक्खवै। सामंत एक एकांणवै, बापौ समौ न चक्कवै।—नैणसी

रू. भे.—समंत, साव, सांवत, सावत।

सामंतभारती-सं. स्त्री. [सं. सामतभारती] एक प्रकार का राग विशेष जो कि मल्लार व सारग के मेल से बनता है। (संगीत)

सांमंद-सं. पु.—१ बैलों की जोड़ी। (मेवाड़)

२ देखो 'समुद्र' (रू. भे.) (ना. डिं. को; ह. ना. मा.)

उ०—१ सु बरा राखि मुलक न सांमंद, दळ सामद मोड़ै दरबार। 'ग्रभमल' उभळ दळा सभि ग्रायौ, नर सिणगार जोगणी नगर।
—सू. प्र.

उ०—२ ग्रैसा वस छत्रीस दरग्गह उंबरा, सांमंद चंद दड़िदक ग्रारिख इंद रा। जोधा रा विवि जोध विराजै ज्यारका, पग्हिां खांगीबंध कमध मधाउत मारका।—र. वचनिका

सांमंदर, सांमंद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.) (ग्र. मा; ह ना. मा.)

उ०—१ इता देस पुर ज तूं दवावै, इतै मरी दुरभख नह ग्रावै। इम वर पाय सभै दळ ग्रेहा, जळ सांमंद्र ऊफळिया जेहा।
—सू. प्र.

उ०—२ हयं रथ्य गैंजूह पायक्क हल्लै, इळा जाणी सांमंद्र सातै उभल्लै। जिकै वार स्रीराम री जान जोई, कहै ग्रोपमा पार पावै न कोई।—सू. प्र.

सांम-स. पु. [सं. सामन्] १ प्राचीन काल मे यज्ञ ग्रादि के समय गाये जाने वाले वेद मंत्र।

२ चार वेदों मे से तीसरा वेद, सामवेद। (डिं को.)

उ०—पढंत जोतकी पुराण, तारकेस कै तवै। रघुंस सांम जुभ ग्रथ, च्यार वेद कै चवै।—सू. प्र.

३ राजनीति के चार ग्रगो मे से एक।

उ०—सांम दाम दड भेद ग्रादि नूं सांम रै साथ ग्राइ मिळण मैं ग्रनेक लाभ जणाया।—वं. भा.

४ प्रशंसात्मक गान या छन्द।

५ कोमलता, मृदुता।

६ मैत्री, दोस्ती।

[फा. शाम] ७ सायकाल, सध्या।

उ०—स्रीनारायणजी प्रतिग्या राखौ। हमैं कासूं होसी? ग्रापकी राखी प्रतिग्या रहसी। बहोत ग्रजीज करुणा कीवी। इण तरह सांम हुई।—पलक दरियाव री बात

८ हाथ मे रखने की लकडियों या हथियारों के मध्य भाग या दस्ते मे लगाया जाने वाला धातु का बंध विशेष।

[फा. साम] ९ मृत्यु, मरण, मौत।

१० दर्द, पीड़ा।

११ देखो 'सामी' (रू भे)

उ०—१ सबळ भीड सभळी, भूक ग्रहियौ भूभारै। सांम काम हणमत, कमध कुळ मग सभारै।—गु. रू. ब.

उ०—२ नमसकार सूरा नरां, विरद नरेस वरम्म। रिजक उजाळै सांम रौ, पाळै सामधरम्म।—बा. दा.

उ०—३ मेरै सांम सुहाग का, छाना रहै न नूर। विलखै वदन दुहागिनी, हरिया ऊगै सूर।—ग्रनुभववांणी

उ०—४ होतब सा जोतब नही, ग्ररथु सा न गरथ। वन न कौ वेहद सा' सांम सा न समरथ।—ग्रनुभववाणी

उ०—५ सैंणा सेती रोसणौ, ग्रसेणा सूं गूभ। सांम सनेही ना किया, ग्रोरा रह्या ग्रळूभ।—ग्रनुभववाणी

१२ देखो 'स्याम' (रू. भे.)

उ०—ग्रट्ठारसौ ग्रठतरौ, चैत बीज पख सांम। 'बांकै' ग्रंथ वणा-वियौ, नीत मंजरी नाम।—बा. दा.

१३ देखो 'स्यामक' (रू. भे.) (ज. र.)

रू. भे.—साब, ।

सांमक-वि. [स. सामक] सामवेद सम्बन्धी।

स. पु.—सामवेद का ग्रच्छा ज्ञाता।

सांमकरण—देखो 'स्यामकरण' (रू. भे.)

सांमख-वि.—१ पूरा, सम्पूर्ण।

उ०—ग्रा सांमख रात ग्रर ग्रा ग्रेकली लिखमी! कणै ग्री बापड़ी पग दाबती तौ कणै ग्री सरीर देखती कै ताव कितौ'क है।
—वरसगांठ

२ लम्बा, बडा।

सांमखोर, सांमखोरौ-वि.—१ स्वामी भक्त।

२ स्वामी के प्रति धर्म।

सांमग-स. पु. [स. सामन्+गः] १ वह ब्राह्मण जो सामवेद का गान कर सके।

२ भगवान् विष्णु का नाम।

सांमगरी, सामगिरी, सांमग्री-सं. स्त्री. [स. सामग्री] १ किसी कार्य में सामूहिक रूप से प्रयोग मे ग्राने वाली चीजे।

उ०—१ कयौ—मा, मा! तू मा होय'र पखपात किया करण लागगी। कठै ई सांमगरी रौ ठाठ ग्रर कठै ई सासौ निराठ।
—वरसगांठ

उ०—२ सांमगरी ग्रग्र धरै सुचारा, साजै सब साधन सेवा रा। हर पूजिया पछै ग्रप चित हित, खड्ग पात्र जळ पूर धरै खित।
—सू. प्र.

उ०—३ म्हारै पण कन्या नहीं जिण थी म्हारौ धन लगाई भाई जसराज री पुत्रिया रा कन्यादान रौ फळ लेण री म्है हीज बिचारी। ग्रर बूंदी रा ही ग्रमल मैं जैतौ कहै जिण ठाम सामग्री रा सचय करि बरात बुलावण री धारी।—व. भा.

उ०—५ ग्रापरी पुत्रिया रै समान धन भूखण बस्त्र दास दासी गज बाजि सिबिका रथ प्रमुख सांमग्री देर चौथै दिन बरात नूं बिदा करि फेर बूंदी ग्रायौ।—व भा.

२ घर-गृहस्थी का सामान।

३ सामान, साधन।

४ सामान, ग्रसबाब।

सामज—देखो 'स्यामज' (रू. भे.) (डिं. को; ह. ना. मा.)

सांमटणौ, सांमटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

उ०—सहि बाजी सांमटै, अमर नर नाग उधेड़ै। हुयै आप हेकलौ, फूंक सा अबर फोडै।—पी. ग्र.

सांमटणहार, हारौ (हारी), सांमटणियौ—वि०।

सांमटिप्रोड़ौ, सांमटियोड़ौ, सांमट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांमटीजणौ, सांमटीजबौ—कर्म वा०।

सांमटियोड़ौ—देखो 'समेटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री सामटियोड़ी)

सांमठौ—देखो 'सावठौ' (रू. भे.)

उ०—१ सांमठा लड़ै धड़ पडै सूर, हरखत वरै बह रंभ हूर। पड़ि पेसकबज खरड़क अपार, करड़क्क खाग झरड़क कटार।—सू. प्र.

उ०—२ 'अभमाल' छभा वणि दुभल इम, जगचख मुखि मुखि जोविया। सांमठा सिंघ नरसिंघ रै, आगळ जांणौ ओविया।

—सू. प्र.

उ०—३ थई बळिहारी झूझीरि, रोळण थटां। सेन रायसिंघ रा, सांमठा सुभटा।—हा झा.

उ०—४ विसरि गडगड़ै तूर सूरा चढै वीर रसि, अछर वरिबा करै चित उमेखा। सांमि छळ देस छळ वेस छळ सांमठां, सापना तांहरै भागि सेखा।—सेखा दुरजनसालोत पातावत री गीत

सांमण-स. स्त्री.—१ देवी का एक नाम।

२ दशनामी सन्यासियों की वह स्त्री जो गृहस्थी हो।

३ स्वामिनी, मालकिन।

उ०—सरसति सांमण वीनवूं, मांगू एकज सार। एक जीभै हु किम कहु, एहना तप नो नही पार।—स. कु.

४ देखो 'सावण' (रू. भे.)

उ०—जसिया कसियक छै, आपनै भी उधारै जसियक छै। पातियासी को कमळ, गगा सी बिमळ। भूभलिया नैणा की, अमरत सा वैणां की। मेह को ममोलो, वादळा की बीज, होळी की झाळ सांमण की तीज।—मयाराम दरजी री बात

सांमणी-स. स्त्री. [स. स्वामिनी] १ स्वामिनी, मालकिन।

उ०—१ सरसति सांमणी तूं जग जीण, हस चढी लटकावै वीण। उरि कमळां भमरा भमइं, कासमीरां मुख मडणी माइ।—बी. दे.

२ श्रावण मास की तृतीया।

उ०—या पण महावीर वचखण, अेक करतां सांमणी री दीहाड़ौ आवियो। तरै अचूकी सूंक-पाक दे राणिया नूं राजी कीधी। तरै राणिआं राजा रा वीडा झेलिया नही। कहाई-सो राज रै तौ वडौ अंधारखातौ छै। वड़ी रजपूताणी नू वरस अेक हुओ छै। रजपूत दरीखांनो सुअै छै।—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

३ फकीरन, सन्यासन।

उ०—बिडरी हिरणी सी फिरणी बिजकाती, मुखड़ो मुसकाती जोरो जतळाती। ओळे भक आटा कोळै जिम कुयिगी, हाबर भांमणिया सांमणियां हुयगी।—ऊ. का.

वि.—१ श्रावण मास की, श्रावण मास रो सम्बन्धित।

उ०—करै राड़ अधीयामणी 'अभै' जोगी किया, जकै मह सांमणी तीज जाणै। दमकती दामणी देख सहरा दिसा, आद कर कामणी सोच आणै।—प्रथीराज सांदू

२ भयकर, विनाशकारी, ध्वंस करने वाला।

उ०—दामणी मेह प्रगटै दयां, अधिक देह अधियांमणी। सांमणी कोट किला सको, गैवर टिल्ला गामणी।—मे. म.

रू. भे.—सामिण, सामिणी, सामिनी, स्यामणी।

सांमणू, सांमणू—देखो 'सांवणू' (रू. भे.)

सांमतसी-सं. स्त्री.—१ भाटीवश की एक शाखा।

स. पु.—२ उक्त शाखा का व्यक्ति।

सांमद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

सांमद्रोह—देखो 'स्वामीद्रोह' (रू. भे.)

उ०—अमरसी रीत 'अवरंग' तणी आदरी, चित्रगढ तणी आदू तजी चाल। सांमद्रोहां हुआ रांणवाळा सुपह, राण पाराथियौ बियौ रिडमाल।—दुरगादास राठौड़ री गीत

सांमद्रोही—देखो 'स्वामीद्रोही' (रू. भे.)

सांमधरम, सांमधरमाई—देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे)

उ०—१ आगै कमो बरै आभाळा, चोड़ै मार लियौ कळचाळां। सांमधरम लेखवै सगाई, मिळियौ खळां न लेखै भाई।—रा. रू.

उ०—२ याकूब फुरमायौ तू बधारणै लायक छै। स्याबास थारी सांमधरमाई नूं पछै उण नूं बधार मोटौ कियौ।—नी. प्र.

उ०—३ जोगणियां हंस हंस बोली, बरस ४८ रै राज री वर दैनै सीख दीधी। जगदे चाऊं सूं घरै पधारिया। राजा अो सत सांमधरमाई देखि नै निपट राजी हुवौ। महिल आया, पोढिया। धन्य जगदेव ४८ बरस रौ राज दिरायौ।—जगदेव पवार री बात

उ०—४ इण मैं प्रयोजन अै छै धणी रौ तौ वीरपणौ विनां सिर (कबंध) होय लडणौ, घोड़ा रौ सांमधरमौ रजपूता नै उपदेस पसू चारौ खाण वाळै ही सांमधरम पाळियौ।—वी. स. टी.

सांमधरमी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू. भे.)

उ०—सु कारी न हिंदुस्तान न खुरासाण माहै सुणी न दीठी। सटी रै पाखेडि कारी की। जितरा सांमधरमी हुता तिया रा जीव दोहरा हुवै हुता। अर हरामखोरै पूरी कारी की। आपरो मन मनायौ।

—द. वि.

उ०—२ जिको आदमी दुरगादास जिसा सांमधरमी नैं ई देसनिकाळौ देय सकै, उणनै मुकनसिह रौ माथो वढावता कांई जेज लागै। दोनूं जणा आपसरी मैं सलाह कीवी। खास भरोसा रा आदमी साथै लिया। अर रथ जोताय नै रातूंरात पाली कानी रवानै व्हिया।—अमरचूंनड़ी

सांमधरमौ—१ देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे.)

उ०—इण मैं प्रयोजन अै छै, धणी रौ तौ वीरपणौ विनां सिर

(कबंध) होय लडणौ, घोडा रा **सांमधरमौ** रजपूता नै उपदेस पसू चारौ खाणवाळै ही सामधरम पाळियौ ।—बी. स. टी.

२ देखो 'स्वामीधरमी' (रू. भे.)

सांमधरम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे.)

उ०—नमसकार सूरां नरा, बिरद नरेस वरम्म । रिजक उजाळै साम रौ, पाळै **सांमधरम्म** ।—बा दा.

सांमधरम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू. भे)

उ०—१ बोलै 'भाण' 'मुकन्न' तण, जोधौ भडां समेत । **सांमधरम्मी** जूझ मै, कमी न राखी खेत ।—रा. रू.

उ०—२ **सांमधरम्मी** साम छळ, दळ गजै तुडताण । गो 'रेणायर' जोतहर, कर दिल्ली घमसाण ।—रा. रू.

सामधी—देखो 'सबधी' (रू. भे.)

उ०—पुर पाटण थी चाल्यौ राव, बीसलपुर जाई दियौ मीलाण । कोटी कोटी कोठी **सांमधी**, पाली परिगह् अंत न पार ।—बी. दे.

सांमध्रम, सांमध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे.)

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, निरभै काळौ नाग । सिर राखै मिण **सांमध्रम**, रीझै सिंधू राग ।—बा. दा.

उ०—२ घोडा वीरत प्यार घण, साच प्यार इनसाफ । प्यार **सांमध्रम** धरण पुन, प्यार सुजस 'परताप' ।—जैतदान बारहठ

सांमध्रमी, सांमध्रम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू. भे.)

उ०—छळै ऊबरा बिहुवै कुंत बाण हुं केवाण छौळां, ठहै तोप दोळा चोळा दळा बै ताठौड़ । धरा थभ मुरधरा बरापूर **सांमध्रमी**, राडिगारा भलै उभै अनमी राठौड ।

—कुसळसिंघ चापावत अर सेरसिंघ मेड़तिया री गीत

सांमनै-क्रि. वि.—१ सम्मुख, अगाडी ।

२ प्रत्यक्ष ।

३ विरुद्ध ।

सांमनौ, सांमनौ-स. पु.—१ मुकाबला, भिडंत ।

उ०—१ धाडेनी आ बात आछी तरै सूं जाणै हा कै गांव मै लारै रह्योडा मिनख बौदा है अर इणां मै सूं कोई उणा रौ **सांमनौ** करण नै नहीं आवैला ।—रातवासौ

उ०—२ कुचमादी रै घडी घडी दौडण सूं राजाजी री हीमत बंधी । है तौ साव डरकण सुभाव रौ । सूरवीर व्हैतौ तौ **सांमनौ** करतौ । राजाजी लारौ करै अर वौ चापळ जावै । राजाजी री हूंस माय री मांय वथाला खावण लागी ।—फुलवाडी

२ किसी के विरुद्ध या विपक्ष मे खडे होने की अवस्था या भाव ।

३ किसी पदार्थ के आगे का भाग ।

४ भेट, मुलाकात ।

५ प्रतियोगिता ।

सांमपण, सांमपणौ-स. पु —स्वामित्व ।

उ०—धांधळ उदैकरण हित धारै, करतौ गयद मतै करारै । सांमळ 'बिजौ' **सांमपण** सद्धर, 'नरहर' 'आणंद' तणौ निभै नर ।

—रा. रू.

सांमबेद—देखो 'साम' (२) (रू. भे.)

सांमर—देखो 'साभर' (रू. भे.)

सांमरत, सांमरत्य, सांमरथ, सांमरथि—१ देखो 'सांमरथ्य' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—तूं म्हनै म्हारी जात कोनी पूछी । तूं म्हारी समाज माय किण तरिया री हालत है अर रुपिया-पीसां री **सामरथ** किसीक है अै बाता भी नई पूछी ।—तिरसकू

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ सध्योपासन तजि बाग साज, निम दिवस बुजू रोजा निवाज । **सामरत्थ** सिंह हम नहिं स्रगाळ, गो मास नाम पै देत गाळ ।—ऊ. का.

उ०—२ हजूर आप बड़ा हौ, **सांमरथ** हौ, इणनै कियाई बचाय दौ, म्हारौ एका एक छोरौ है । म्हू आपरी हर तरै सू सेवा करण नै तैयार हू । अबै मरण वाळौ तौ मरग्यौ, वौ तौ पाछौ आवै नी अर एक हत्या फेर व्है जाएला ।—अमरचूनडी

सांमरथीक—देखौ 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—रूप लखण गुण तणा रुखमिणी, कहिवा **सामरथीक** कुण । जाइ जांणिया तिसा मै जपिया, गोविंद राणी तणा गुण ।—वेलि.

सांमरथ्थ—१ देखो 'सामरथ्य' (रू. भे)

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

सांमरथ्य-स. पु. [सं सामर्थ्य] १ समर्थ होने की अवस्था या भाव ।

२ किसी कार्य को सम्पादित करने की शक्ति या योग्यता ।

३ शब्द की व्यंजना शक्ति । (साहित्य)

४ शब्दों का पारस्परिक सम्बन्ध ।

५ धन, दौलत ।

६ शक्ति, बल ।

रू भे.—सामरत, सामरत्थ, सामरथ, सामरथि, सामरथ्थ, साम्रत, सांम्रथ ।

सांमराट—देखो 'सम्राट' (रू. भे.)

उ०—वाढ फोजा डमरा कटाणौ हटै सींगवाळौ, **सांमराटा** नांम रटाणौ गुमरा सवाय । सौभाग रटाणौ जमी चमरा ढुळता सीस, मारु राव थटाणौ अमरा लोक माय ।—जवानजी आढौ

सांमरात-सं. पु.—युद्ध, सग्राम । (डिं. को.)

सांमराथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ नरेस अनाथ नाथ, अनाथिया घरै आथ । करै तू सुधारै काथ, रटा **सांमराथ** ।—र. ज. प्र.

उ०—२ दुनि पाळ इंद्र ढाळ, विरदाळ जै दयाळ । गुणी साथ **सांमराथ**, रटै क्रीत गाथ ।—र. ज. प्र.

सांमरियौ—देखो 'साभरियौ' (रू. भे.)

सांमरी–सं. स्त्री.—फूल व पत्तो से रहित एक प्रकार की बेल विशेष। (ग्रमरत)

सांमरू—देखो 'साभर' (रू. भे.)

उ०—एसै भयाणख एकलगिड वराह ढाए, एतै मै केतैक खिरगोस म्रिग सामरू कै जूथ आए। तिस पर चित्रु कूतूका थाव। सीह-गोसूं कै दाव। ऊछट झपट से मिळतै है। मोहरा जडाव करतै है।—सू. प्र.

सांमरोट–सं. पु—ऊमरकोट के दक्षिण की ओर की भूमि जहा पर प्राचीन काल मे समा यादवो का राज्य था। (पा. प्र.)

सांमरौ—देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—सिह व्याघ्र म्रग रीछ वानरा, सुहरा सांमरा घोर रे। ग्राहेडी को ग्रत्यज ग्रावि, म्लेच्छ भयंकर चोर रे।—नळाख्यान

सांमरचौ—देखो 'सांभरियौ' (रू. भे.)

उ०—गरब करि ऊभो छइ सांमरचौ राव, मो सरीखा नही ऊर भुवाल। म्हा घरि साभर ऊगहइ, चिहु दिस थाण जेसलमेर। लाख तुरी पाखर पडइ, राजिकउ थानिक गढ ग्रजमेर।—बी. दे.

सांमळ, सांमल–स. पु—१ सूर्य, सूरज। (ना. डिं. को.)

२ देखो 'सावळौ' (रू. भे.) (उ. र; डि. को; ह. ना. मा.)

उ०—१ गह गजै रै गह गंजे, भिड जग वडा खळ भजै। ग्रीधा सांमळ दीध पळागळ, मेंगळ खागति मजै।—र. ज. प्र.

उ०—२ ग्रलेख सलांम सलाम ग्रलेख, सतगुर सेज बलिभद्र सेख। देवापति सांमळ देव दुगम, ग्रईयौ ग्रनरज सकज ग्रगम।—पी. ग्रं.

उ०—३ प्रणमति नाग ग्रनेक पीर, साहिब्री नमौ सांमळ सरीर। डर करै दैत तूसां दईव, जौनिया दियै इनेक जीव।—पी. ग्रं.

३ देखो 'सांमिळ' (रू. भे.)

उ०—१ एकण री बळ घणौ एका रौ थोडौ ग्रौ थोडा बळ वाळा रै सांमळ सो इण मै भागणौ तथा छळ कर घणा बळ वाळा सूं मिळ जाणौ इणमै फायदो पण स्यामधरम ग्रौर वीरपणौ नही। —वी. स. टी.

उ०—२ तरै पडिहारै कह्यौ—थारै बेटी पदमणी बूट छै, तिका परणावौ तौ था सांमळ हुवां।—नैणसी

उ०—३ सवाई जयसिहजी जोधपुर ऊपर ग्राया जद मैं पण उणा रै सांमल था।—मारवाड रा ग्रमरावा री वारता

सांमलात, सांमलाति, सांमलाती–वि.—शामिल, सम्मिलित।

उ०—१ फोजा की तयारी साथि सेखा सीस ग्रायौ, सामूं राव सेखो चंद्रसेणी कै चलायौ। मोजाबादि कानी सू नरू का फोज ल्याया, सो भी राव सेखो सांमलाती फेरि ग्राया।—शि. व.

उ०—२ हौता गाव भूमि साबका नै जो बताया, भेरूसिंघ सारा सांमलाती यौं रखाया।—शि. वं.

रू. भे.—सामिलात।

सांमळियौ—देखो 'सावळौ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—१ समरै न जिकै नर सांमळियौ, क्रतग्रंत जिका सिर काहुळियौ। क्रतग्रत करै की काहुळियौ, समरत जिकै नर सांम-ळियौ।—र. ज. प्र.

उ०—२ गाफिल ग्राळ जंजाळ न गावै, भुज सांमळियौ सरम भळावै। 'किसन' कहू जमहूंत म कपै, जंपै रे मन राघव जंपै। —र. ज. प्र.

सांमळौ—देखो संवळौ' (रू. भे.)

उ०—सडफ्फै बीजू जळां हास मोहा बड्फ्फै सूर, सीसहार झड्फ्फै पडक्खै नथी संभ। ग्रीधणी हुडफ्फै पळा सांमळौ हुडफ्फै गूंद, रुड कई ग्रडफ्फै पडफ्फै बरा रभ।—बद्रीदान खिड़ियौ

सांमळू, सांमळौ—देखो 'सावळौ' (रू. भे.)

उ०—१ माथइ मोर पीछनी धडी, कांनै लोळि रतन सू जडी। देव तणउ सांमळू सरीर, कटि मेखळा सबद गंभीर।—का. दे. प्र.

उ०—२ विराजै नगा ग्रोप सूं रूप वीठौ, दळा नाथ स्रीनाथ रौ रूप दीठौ। वणै सांमळै गात भीणै वसन्नै, तिसौ भूखणै जोत मोती रतन्नै।—रा. रू.

उ०—३ ग्रोपै गज सांमळा ग्रनैसा, जपि गुण डौळ तिमंगळ जैसा। ग्ररुण ग्रबाडी झूळ ग्ररोहै, सावण कि ग्रबुद सोहै।—रा. रू.

उ०—४ भरै माग सिंदूर, मारग माळै, वहै सांमळौ ग्रज सेरी विचाळै।—ना. द.

उ०—५ ऐसै बराहूं के ऊपर बीजूजळां का घाव। सो कैसै सांमळै वदळूं पर वीजूजळा का सिलाव।—सू. प्र.

उ०—६ किसन ग्रनै लखमण कहै, करां महा जुध कांम। सीता वाहर सामळौ, रोस घणौ मां राम।—पी. ग्रं.

उ०—७ जगदीस जनक रै ज्याग मां, ग्रायौ उतांमळौ। भाजियौ धनख रुघनाथ भीड, सीत परणियौ सांमळौ।—पी. ग्रं.

सांमलौ–वि. (स्त्री. सामली) १ ग्रागे का, सामने का।

उ०—१ ग्रसवार कह्यो—म्है तौ इण सांमला मगरा सू ई दूजै मारग टळ जावूला। ग्रैडौ ई जरूरी काम है। ग्रबै तौ ग्रौ थारौ भार थनै ई उखणणौ पडसी।—फुलवाड़ी

उ०—२ जरै गौहरी ग्ररज कीधी, कह्यौ—रावजी सलामत! मोरचा तौ भुरज भुरज टणका छै। तिण मै सांमली भुरज दीसै तिका नाहरी भुरज कहीजै छै। तठै नाहरी बाधी रहै छै। —राव रिणमल री वात

२ प्रतिद्वन्दी, प्रतियोगी।

३ ग्राने वाला।

उ०—कदेही म्हैं भी ग्रां दाह भागवानी मैं टोरा ग्रर टिल्ला लगा-वतौ। सांमलै परसंगी नै टेंटवै कर लेतौ ग्रर टको ब्याज कढा-वतौ। पण मैणै पर मरचौ। ग्रम्मीणी सूं डरचौ। जैर पीयौ ग्रर बेर लियौ—दसदोख

ज्यूं—सांमली गाडी कणाक ग्रावैली।

सामला बरात किसीक लावेंला ।

रू. भे.—सामहळौ, सामहौ, साम्हळौ ।

सांमवेद—देखो साम (२) (रू भे.)

सांमहणौ, सांमहबौ—देखो 'सभणौ, संभबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वीरम्रदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर **सांमह्या**, ऋह-ऋहतै त्रंबक तणै ऋहऋहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरि भुगल तणै भुभूयाटि भूकिइ भिलकि फाटी, काहल तणै कोलाहलि कान कमकम्या,.........।—व स.

उ०—२ ....कातर डहडहइं, चिंध लहलहइ, मयराल गुड्या, तुरगम पाखरया, सूरा **सांमह्या**, लगि वाजइ, हस्ति मांचइ, कवध नाचइ, प्रहरण झलहलइ, वीर खलभलइं, प्रहारि उरज्जर कुजर पडइ, सूनासणा तुरगस लडफडइ, रथ धडहडइ ।—व. स.

सांमहणहार, हारौ (हारी), सांमहणियौ - वि० ।

सांमहिम्रोड़ौ, सांमहियोड़ौ, सांमह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सांमहीजणौ, सांमहीजबौ—भाव वा० ।

सांमहलौ—देखो 'सामलौ' (रू. भे.)

उ०—सामी वेळा **सांमहलि**, कठळि थई अगासि । ढोलइ करइ कंबाइयउ, आयउ पूगळ पासि ।—ढो. मा.

(स्त्री. सामहली)

सांमहियोड़ौ—देखो 'सभियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. सामहियोडी)

सांमहौ—देखो 'सांमलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'साम्हौ' (रू. भे.)

उ०—१ अमराव अमीरळ बळ अथाह, **सांमहा** मेलिया पातसाह । जिण करै सलामा दास जेम, आदाब बजायै साह एम ।—वि. स.

उ०—२ वदन तेज झळपत रौ वयळ वाडव वणै, ऊफणै क्रोध पौरस अमामौ । मंडाणौ हेक राजा घणौ मछर सू, साहजादां दूह तणौ **सांमहौ** ।—रूघौ मुहतौ

उ०—३ दोत घरि आव्यौ वीसलराई, राई भतीजो **सांमहौ** जाई । तुरीय पलाराय राव का, चाल्या चौरास्यौ अरु परधान ।—बी. दे.

उ०—४ दाखा तूझ नां निमौ नरसिंघ देह, निमौ ताहरौ कोप लिखमी सनेहं । किसन तूझना साद पहिळाद कीधौ, दीनानाथ तै **सांमहौ** साद दीधौ ।—पी ग्रं.

(स्त्री. सामही)

सांमहु—देखो 'साम्हौ' (रू. भे.) (उ र.)

सांमांन—स. पु. [फा. सामान] १ कार्य-साधन की आवश्यक वस्तुए,

उ०—१ वैसाख वदि ६ डेरौ सलावास हुवौ सु जोमनै आथण रा जोधपुर जाय रह्या । दिन ४ मु नैणसी जोधपुर रह्यौ, नै सुल सामांन कटक रौ कीयौ । चारू' तरफ साथ नु छड़ौ चढीयौ वैसाख वदि १३ डेरौ नैणसी चैनपुरै कीयौ ।—नैणसी

२ प्रबन्ध, व्यवस्था ।

३ वस्तुएं सामग्री ।

उ०—लिगन्ना नारेळ लेर देर सावौ नकौ लीधौ, सजायै ठीकाणां बेहू व्याव का **सांमांन** । हगांमा होकबा राग रंग रा हमेस हुवै, अठी जानवाळी सोभा बणावै अजान ।—बादरदांन दधवाड़ियौ

४ युद्ध-सामग्री, युद्ध का सामान ।

उ०—१ तरै रावजी मेवाड़ रा अमरावा नै कागद परवांना स्री-दीवाण रा नाम मोहर सु मेलिया । जिण मैं लिखियौ—जिण ही नै कुभा रा आटा रा पटा री चाहि होवै तिको वेगो आइ भेळौ होज्यौ तिकौ चाचा मेरा रा आटा री चाह करै तिको घरा वैठा रहज्यौ तथा चाचा कनै जावज्यौ, म्है पिण चाचा सु मिळण आवां हीज छां । तरै मोटा मोटा मेवाड मै उमराव था तिकै आप आपणौ **सांमान** साथ लै नै कुंभाजी रै पगै लागा ।—राव रिड़मल री बात

उ०—२ तरै उमरावा नै घोडा, हाथी, सिरपाव दे दे नै कह्यौ—थाहरै खोळै धरती नै कुभौ छै । चाचौ मेरौ ढाकणीयै गढ **सांमांन** करनै बैठौ छै । आपरा साथ सु स्रीदीवाण तौ चीतोड़ नै सिधाया, मेवाड़ मै कुभा री आंण फेरी ।—राव रिणमल री बात

५ गृहस्थी की उपयोगिता की वस्तुएं ।

७ धन, द्रव्य, दौलत ।

उ०—स्याम सुतन अभिनवा सवाई, दिन दिन वधियौ हेक ददै । गुण **सांमांन** मिळवै गढवा सूं, किलौ भिळै नह हूला कदै ।

—राणा कुसळसिंघ स्यामसिंघोत रौ गीत

रू भे.—समान, सेमान ।

सांमांन्य—वि. [स. सामान्य] १ साधारण, मामूली।

२ सार्वजनिक, आम ।

३ सब या बहुतों से सम्बन्धित ।

वि.—समान होने की अवस्था या भाव ।

सांमांन्यतया—क्रि. वि. [सं. सामान्यतया] सामान्य रूप से, सामान्यतः ।

सांमांन्यता—सं. स्त्री. [सं. सामान्यता] सामान्य होने की अवस्था या भाव ।

सांमांन्यभविस्यत—सं. पु. यौ. [सं. सामान्य भविष्यत्] एक प्रकार का भविष्यकाल विशेष जिससे भविष्य की घटनाओं का पता चलता है । (व्याकरण)

सांमांन्यभूत—सं. पु. यौ. [स. सामान्य भूत] एक प्रकार की भूतकालिक क्रिया, जिसमे किसी बीती हुई घटना का उल्लेख मात्र होता है । (व्याकरण)

सांमांन्यवरतमांण, सांमांन्यवरतमांन—सं. पु. यौ. [स. सामान्य वर्तमान] वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमे कर्त्ता का उसी समय कोई करते रहना सूचित होता है । (व्याकरण)

सांमांन्यविध, सांमांन्यविधि—सं. स्त्री. यौ. [सं. सामान्य विधि] साधारण आज्ञा, आम हुक्म ।

वि. वि.—सर्व साधारण के लिए सामान्य रूप से दिये गये आदेश

इसके अन्तर्गत आते है। यथा—सदा सत्य बोलो, दूसरों की भलाई करो इत्यादि। किन्तु यदि यह कहा जाय कि यज्ञ मे हिंसा की जा सकती है, किसी की प्राण रक्षा के लिए झूठ बोल सकते हो, तो इस तरह की विधि विशेष विधि होगी। यह सामान्य विधि की अपेक्षा अधिक मान्य होती है।

सांमान्या-स. स्त्री. [स. सामान्या] १ सर्वसाधारण को उपलब्ध स्त्री। २ धन लेकर किसी से प्रेम करने वाली नायिका। (साहित्य)

सांमा-सं. स्त्री.—१ विवाह के दिन होने वाली प्रातः कालीन एक रस्म विशेष जिसमे जनवासे में वर के सजधज के बैठने पर वधू-पक्षीय जन पुरोहित सहित आकर तिलक आदि लगाते है। (श्रीमाली)

२ भाटी एवं यादव वंशीय क्षत्रियों की एक शाखा।

सांमाइक, सांमाई—देखो 'सांमयिक' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—........सम्यकत्व परिपालिय, देव पूजियइ, गुरु परयुपस्ति कीजइ, सिद्धात सांभलियइ, तत्व अभ्यसीइ, विचार पूछियइ, पोसधसाला जाइई, वदन कीजइ, सांमाइक लीजइ, पूरवाधीत सास्त्र गुणियइ,........।—व. स.

सांमाचार, सांमाचारी—देखो 'समाचार' (रू. भे.)

उ०—........विलय रूपिया सरप्प तेह प्रति गुरुड प्राय, संसार समुद्र प्रति प्रवहण प्राय, जिन प्रवनालंकार, उग्रविहार, पचविधाचारपाल नैक पचांनन, दसविध चक्रवाल सांमाचारी प्रगल्भ......।
—व. स.

सांमाज—१ देखो 'समाज' (रू. भे.)

२ देखो 'स्यामज' (रू. भे.)

उ०—सार भरमार गुळजार पळ गूद सत्र, अलल गुंजार गोळा अलीजै। साज घर जरद सांमाज घर सांतरा, राजधर नरेसुर सुतन रीझै।—महाराजा बहादरसिंघ रौ गीत

सांमाजिक-सं. पु [सं. सामाजिकः] १ सभा का सदस्य, सभासद। (डिं. को.)

२ वह व्यक्ति जो तरह तरह के तमाशे करके धनोपार्जन से जीविका निर्वाह करता हो।

३ उक्त तमाशों को देखने हेतु एकत्रित जनसमूह।

४ काव्य एवं संगीत का अच्छा ज्ञाता। (साहित्य)

वि. [सं. सामाजिक] १ समाज का, समाज सम्बन्धी।

उ०—डागौ सांमाजिक नाटका-चेटका मैं ही धपाऊ भाग लेवै अर आप सागी धणी, पारट करै। काळू री नाटकसाळा रौ तौ जनक जांणीजै।—दसदोख

२ सुहृदय।

सांमाजिका-सं. पु —१ समाज में रहने वाले सदस्य। (डिं. को.)

२ सभा के सदस्य, सभासद।

सांमाथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ अवध रा धणी रिण सीह भजण असह, लीह संता तणी निकू लोपै, भणूं किव भेद मैं। तई सांमाथ प्रभ बधु दीना तणा, अनाथां नाथ भुज बिरद ओपै, वणूं कथ वेद मैं।—र. ज. प्र.

उ०—२ सांमाथ तूं सुरनाथ तूं, रिमघात तूं रघुनाथ। रघुनाथ तू दसमाथ रामण, भाजवा भाराथ।—र. ज. प्र.

सांमाधि, सांमांधी—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—सहज का आसण सहज आसा, सहज मैं खेलणा सहज पासा। सहज सब जानना खूब भाई, सहज सांमाधि सहजैं मिळाई।
—अनुभववांणी

सांमायक, सांमायिक-सं. स्त्री.—जैन मतानुसार वह एक घड़ी का समय जब समस्त सांसारिक क्रिया-कलापों को छोड़ कर प्रभु-स्मरण करते है।

उ०—१ दिवस प्रतै कोई दियइ सुजांण, सोना री कंडी लाख प्रयाण। तेहनउ पुण्य जेतलउ, सांमायक लीधै तेतलउ।—स. कु.

उ०—२ ढूंढार मैं एक भाया रै बीरभांणजी री संका पड़ी। पछै स्वांमीजी कनै आयौ। सांमायक नैं उपदेस दियौ। जद तै बोल्यौ—सामायक तौ न करूं कदायच सांमायक मैं थांनै स्वांमीजी महाराज कहिणी आय जावै तौ मोनै दोख लागै।—भि. द्र.

उ०—३ सांमायिक पोखह करै, वलै पड़िकमणौ विसेखौ रे। पांचू पद खमावता, सिद्ध 'उदाई' सूं ढ्रेखौ रे।—जयवांणी

सांमि—देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—१ ऊहड़ बळ दूणौ 'अभौ', दळ 'भीमोत' दुरंग। मांगळिया 'ऊदौ' 'रतन', सांमि कमध अभंग।—रा. रू.

उ०—२ एक अचभ्रम परखणूं, अति छति उकति अजेव। ज्यौ मनि आवि कै सांमि कै, पाय दिखावै वेव।—रा. रू.

उ०—३ अवसाण मरण खगधारा, सांमि कामि भंजियै देहा। सोचत चित नित नित्तं, प्रामीजै पुन्नरेहा ई।—र. वचनिका

उ०—४ नाम लियता नांम, सांमि सूझै सहि सूझै। रांम तणौ रस मांहि, सेस बूझै सिवि बूझै।—पी. ग्रं.

उ०—५ सांमि रै रुखम साळा काळा काळा जिकै कांन्ह, संघारै सिघाळा भाई कंसवाळा सेख। दीसता दीनदयाळ चिरिताळा निमो देव, अकरूर आळा भिळै तमासा अलेख।—पी. ग्रं.

सांमिण, सांमिणी—१ देखो 'साइणी' (पु.)

उ०—संमेळै सघण सहर नर साहण, सांमिण सहुवर चाढि सभीत। आरंभ कर अजमेर आवियौ, वरसाळ किनां विक्रमादीत।
—विक्रमादीत राठौड रौ गीत

२ देखो 'सामणी' (रू. भे)

उ०—सकळ सुरासुर सांमिणी, सुण माता सरसत्त। विनय करै नै बिनवूं, मुझ दौ अवरळ मत्त।—ढो. मा.

३ देखो 'समांणी' (रू. भे.)

सांमिधरम, सांमिधरम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

उ०—मुहता जोडे मेर अजादा, जुध जुध ईढगरां सूं ज्यादा।

गोकळ सांमिधरम पण ग्राहै, सुंदर सुत आयौ व्रत साहै।—रा. रू.

सांमिधरमी, सांमिधरम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू. भे.)

उ०—सांमिधरम्मी साम तरा, सुणि परा गुणें सपूत। मिळिया तै आथोमरा, राव तरा रजपूत।—रा. रू.

सांमिधेनी-सं. स्त्री. [सं. सामिधेनी] १ होम की अग्नि प्रज्वलित करते समय या अग्नि मे समिधाऐं छोडते समय बोला जाने वाला ऋक्मंत्र।

२ समिधा, ईधन।

सांमिध्रम, सांमिध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे.)

उ०—१ चद सूर लग नांम चढावै, करि जस समदा तरां कडै। सूरां मरण सांमिध्रम साटौ, वसुधा दोन्हीं भ्रिगुट वड़ै।

—महेस साखला रो गीत

उ०—२ तिणि वेळा नौबति नीसांण तोग झंडा सांमिध्रम सोबा हिंदुस्थांन री सरम भुजै आई। तिणि वेळा रा आइयौ काळा पहाड़ सोभा वरणी न जाई।—र. वचनिका

सांमिनी—१ देखो 'साइणी' (पु.) (रू. भे.)

२ देखो 'सामणी' (रू. भे.)

सांमिप्य—देखो 'सांमीप्य' (रू. भे.)

सांमिय—देखो 'सामी' (रू. भे.)

उ०—जदूकुळ-नायक सांमिय जग्ग, पदम्म-पताक अलंकृत पग्ग।

—ह. र.

सांमियांणौ, सांमियांनौ-स. पु [फा. शामियानः] एक प्रकार का तम्बू जिसमे ऊपर का कपड़ा बांसों पर रस्सियों की सहायता से तना रहता है।

रू. भे.—संमियाणौ, समियाण, समियाणौ, समीयाण, समीयांणौ, साइवांन, साईवांन, सायीवान।

सांमियौ—देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—दीह कितराइ लडियौ निमौ देवता, सबळ हरिणाख जिसा किसै भव सेवना। भगत रा सांमियै असुर कद रा भगत, राकसा न मारत घणौ तुना रगत।—पी. ग्र.

सांमिळ, सांमिल-वि. [फा शामिल] १ साथ, शामिल, सम्मिलित।

उ०—फौज सांमिल हुवौ मुदायत फौज रा, प्राण तन जुदायत ठीक पूगौ। भाग सुध तणौ सिरायत मेड़तै, अचड कथ उदायत भांण ऊगौ।—महेसदास कूंपावत रौ गीत

रू भे.—समळ, सामळ, सामिळि।

सांमिलात, सांमिलाति, सांमिलायत, सांमिलायती—देखो 'सामलात' (रू. भे.)

सांमिलि—देखो 'सामिल' (रू. भे.)

उ०—असि वर वाद अनाद अकापा, चूरण खळ आया सांमिलि चापा। सकतसिंघ निज दळा सहाई, दान सुजान भुजा बरदाई।

—रा. रू.

सांमी, सांमी-सं. पु. [सं. स्वामी] १ ईश्वर, परमात्मा, भगवान।

उ०—१ निरकार निरद्वार दईता सघार निमौ, आदेस अपार पार अवतार अंस। साधुआ सुधार सांमी आविस्ये निजारसाह, काइयौ नंदकुआर कस मार कंस।—पी. ग्रं.

उ०—२ सास सासि विखै थारो जस वास करा सांमी, तनाई न जाणौ जास तिकां थारी तास। अभवास टाळै परा जमवाळा प्रास थ्यान, आपरा पगा री राखै पीरदास आस।—पी. ग्रं.

२ भगवान विष्णु। (डिं. को.)

३ शिव, महादेव। (ह. नां. मा.)

४ स्वामिकार्त्तिकेय।

५ पक्षिराज गरुड।

६ राजा, नृप। (ह ना. मा.)

७ स्वामी, मालिक।

उ०—१ सूरज तेज पुंज सरवेस्वर, जोति सरूप नेत्र जगदीस्वर। जग रखवाळ जगत चौ जामी, सुर नर इस्ट ग्रस्ट चौ सामी।

—रा. रू.

उ०—२ महदीप छंद तेरहै दस मत पय जाणौ, यण जोड़ सुजस राम ग्रपत उर मझ्झ आणौ। जनपाळ स्त्रीदयाळ सुलख जियगत जामी। सरण सघार बिरदधार हणूमांन सांमी।—र. ज. प्र.

८ पति, स्वामी।

९ घर का प्रधान व्यक्ति।

१० सेनानायक, सेनापति।

११ श्याम देश का निवासी।

उ०—सांमी रूमी सजरी, गोरी कासगरीह। ईरानी, यमनी अडर, सीराजी रण सीह।—बां दा.

१२ स्वामी शकर के अनुयायी, दशनामी।

उ०—१ सांमी मडी मडाय कै, मन बिखिया कै माहि। सिख साखा धन बोहत की, खुधिया भाजै नाहि।—अनुभववांणी

उ०—२ सांमी सेवग वारणै, कथा सुणावै नित। अरथ दिखावै और कुं, आप ठगाई चित।—अनुभववाणी

१३ नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी।

१४ साधु, सन्यासी।

उ०—तद कुंवरसी कह्यौ—'जो मोनूं फेर बरजियो तो हू पेट मैं मार कटारी मरीस, का राव वात सांमी हुय जाईस।

—कुवरसी साखला री वारता

मुहा.—१ सामी कीसा साड मारै=साधु किसी को तकलीफ या हानि नहीं पहूँचाते।

२ सामीजी ससार कैड़ौ कै दिल जांणै जेड़ौ=अपने व्यवहार के अनुसार दूसरो का व्यवहार होगा। (मि.—आप भलौ तौ जुग भलौ।)

३ सांमीजी वाळा तिलक है, सूखा ऊगडै=चरित्र सम्बन्धी जानकारी का पता बाद मे चलता है।

४ सैदौ सांमी सूठ रौ गाठियौ=अति परिचय से प्रतिष्ठा नही रहती।

(मि. अति परिचय से होत है अरुचि अनादर भाय)

५ बाबाजी बाछडा वाळज्यौ, के बाछड़ा वाळता तौ सांमी क्यूं व्हैता=साधु परिश्रम नही करते, अगर कार्य करने की क्षमता या इच्छा होती तो साधु क्यो होते।

१५ देखो 'साम्ही' (रू भे)

उ०—१ अबै थे खेती करौ जो खेती सांमी आई तौ आपी धान बेच घोडौ लागां।—पचमार री बात

उ०—२ गोबर लीप्यौ-ढोळचौ आगणौ, सूरज सांमी पोळी जी। पोळ्यां मांय सुसरोजी बैठ्या, घाल चौधर री चौकी जी।

—लो. गी.

उ०—३ पूता री यू पूछ, कमाई सांमी सूझै। आंखी वाता आड, धीवड़्या नै कुण बूझै।—नारी सईकडौ

उ०—४ घणकरा बहादुरां नै हर देस मांय, दुस्मण रै सांमी समरपण करणै रै पाछै भी, उण देस रा सब सू ऊंचा मान सनमान रा पदक मिलै है। समरपण सूं साहस अर बहादरी री कहांणी खतम नीं समझी जा सकै।—तिरसंकू

उ०—५ घणै सनेह सू गदगद होय'र म्हैं कयौ—तू महान है सैल, म्हैं थारै सांमीं बहोत छोटौ जीव हू। तूं अठै निस्चित हो नै रात भर आरांम कर।—तिरसंकू

१६ देखो 'सांम' (रू.भे.)

रू. भे.—सई, सांइ, सांई, सामि, सांमिय, साम्य, सांयी, साइ, साई, साह्मी, सुआंमी, स्यांम, स्यांमी, स्वामि, स्वांमी।

अल्पा.—सांमियौ, सांमीड़ौ, सांमीड़ौ, स्वामीड़ौ।

सांमीकबाब-सं. पु. यौ.—एक प्रकार का कबाब विशेष।

सांमीकारतिक, सांमीकारतिकेय, सांमीकारतीक, सांमीकारतीकेय—देखो 'स्वांमीकारतिकेय' (रू. भे.)

सांमीड़ौ, सांमीडौ—देखो 'सांमी' (अल्पा, रू. भे)

सांमीद्रोह—देखो 'स्वांमीद्रोह' (रू. भे.)

सांमीद्रोही—देखो 'स्वांमीद्रोही' (रू भे.)

सांमीधरम, सांमीधरम्म, सांमीध्रम, सांमीध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे.)

सांमीनौ—देखो 'साइणौ' (रू. भे.)

उ०—रोजीना सागैई छाती कूटो झाडू-बुहारू, पाणी-लूंणी, पीसणौ-पोवणौ, दोवणौ-बिलोवणौ अर धोवणौ-धावणौ। सरीखी सांमीनी सायणियां मिळै तौ घड़ी-पलक मन राजी व्है जाए।

—अमर चूंनड़ी

(स्त्री. सामीनी)

सांमीप—१ देखो 'समीप' (रू. भे.)

उ०—१ सिरी गग री नीर संघांम साख, दसतूर सिंदूर कप्पूर दाख। हुवै होम आसावरी धूप हूंमै, घणा सांघणा दीप सांमीप घूमै।—मे. म.

उ०—२ गयंद वहतौ खग्री जाट जड़ तोड़णौ, चंद्रसिखर जोड़ सांमीप वहतौ। गरब पण छोड जहुंवार सहतौ गयौ, कथा रिण छोड रिण छोड वहतौ—हुकमीचद खिड़ियौ

२ देखो 'सामीप्य' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—१ मुकत ही पांच प्रकार की, सालोक ही सांमीप। सारूप हुंसा जाणियै, कौ पौहचै भव जीप।—गज-उद्धार

उ०—२ वरै न रहियौ अपछरै, निज सूर मंडळ नीसरै। सांमीप प्रांमै समसरै, भरपूर मुकति ज भरै।—मानसिंघ सगतावत रौ गीत

सांमीपत्य, सांमीपमुकति, सांमीपमुकत्ति, सांमीपमुक्ति, सांमीप्य, सांमीप्यमुक्ति-सं. स्त्री. [सं. सामीप्यं, सामीप्य] १ मुक्ति के पाँच भेदों में से एक मुक्ति का नाम, जिसमें मुक्तात्मा ईश्वर के सामीप्य का अनुभव करता है। (अ. मा.)

उ०—सालोक्य संगति रहै, सांमीप्य सन्मुख सोई। सारूप्य सारीखा भया, सायुज्य एकै होई।—दादूबांणी

रू. भे.—समीपत्य, समीपमुकत्ति, सांमिप्य, सांमीप।

२ निकटता, समीपता।

सांमीर—देखो 'समीर' (रू. भे.) (डि. को.)

सांमीरजायौ-सं. पु—१ पवनसुत, हनुमान।

उ०—सझै सोउ मैडांण ऊडांण सारा, पयोधार हूता न को होय पारां। पुणै ताम अज्जी कपी भेद पाया, जतूं काय बोलै न सांमीरजाया।—सू. प्र.

२ भीम, वृकोदर।

सांमीवच्छल, सांमीवछळ-सं. पु. [सं. साधर्म्यवात्सल्य, प्रा. साहम्मिवछळ] जैन सम्प्रदाय में समान धर्मियों का भोजनादि द्वारा किया जाने वाला आदर-सत्कार।

सांमुद, सांमुदर, सांमुद्र-वि. [स. सामुद्र] १ समुद्र में उत्पन्न।

२ समुद्र का, समुद्र से सम्बन्धी।

स. पु.—१ समुद्री नमक।

२ समुद्री फेन।

३ शारीरिक दाग या चिन्ह।

४ आनन्द, हर्ष। (ह. ना. मा.)

५ देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

सांमुद्रक, सांमुद्रिक-सं. पु. [स. सामुद्रिक] १ मनुष्य के शरीर के चिन्ह जिनके द्वारा शुभाशुभ फल बताये जाते है।

२ मनुष्य के शरीर के चिन्हों या लक्षणो आदि के शुभाशुभ फलो के विवेचन का ग्रन्थ। (फलित ज्योतिष)

३ मनुष्य के शरीर के चिन्ह या लक्षणों द्वारा शुभाशुभ फल बताने

वाला व्यक्ति ।

वि.—१ समुद्र का, समुद्र से सम्बन्धी ।

२ समुद्र मे उत्पन्न ।

सांमुद्रिकतीरथ-सं पु. [सं. सामुद्रिकतीर्थं] अरुन्धतीवट के समीपस्त एक पवित्र तीर्थ का नाम ।

वि. वि —इस तीर्थ में स्नान कर तीन रात तक ब्रह्मचर्यपालन पूर्वक उपवास करने से अश्वमेध यज्ञ एव सहस्र गौदान का फल प्राप्त होता है ।

सांमुह सांमुहउ, सांमुहु, सांमुहौ, सांमू—देखो 'साम्हौ' (रू. भे) (उ. र)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़िसी रीठ । दोंहागिण घट **सांमुहउ**, सोहागिण री पीठ ।—ढो. मा.

उ०—२ मूक्या लिखि 'दाराब' उतामळ 'खानाखान' **सांमुहा** कागळ । हुवा कटक्कै दखणी हाऊ, ब्राहनपुर आया वाहाऊ ।

—गु. रू बं.

उ०—३ सहिजादा बिऊं **सांमुहौ**, अेक 'जसौ' अणभग । माडण असपति माडिओ, जोध कळोधर जंग ।—र. वचनिका

उ०—४ गुज्जर तण गरूर, ताइ मिळै दिखणी तणा । सेंन उजेणी **सांमुहा**, सालुळिया दळमूर ।—र. वचनिका

उ०—५ काठी कुरळाता काती निस काळी, होळी हीयें मे दांता दीवाळी । **सांमुं** सीयाळी साकी सरसायौ, बाकी बचिया नै डाकी दरसायौ ।—ऊ. का.

उ०—६ फौजा की तयारी साथि सेखा सीस आयौ, **सांमूं** राव सेखौ चद्रसेण चलायौ ।—शि. व

(स्त्री. सांमुही)

सामूळ— देखो 'समूळ' (रू. भे.)

सांमूसांम—देखो 'साम्हौसांम' (रू. भे.)

उ०—सोनै री पीजरौ, मखमल री खोळी, रतन बाटका मै दाड़म 'र दाख, सिखावै सूवटै नै बोल मिट्ठू राधेस्याम । **सांमूसांम** गळी मैं बैठौ भूखौ सूरदास छोड़ दिया पिरांण रट रट'र नाम ।

—लीलटास

सांमेजा-स. पु —धाटी सिंधियौ का एक भेद जो पहिले भाटी राजपूत थे ।

सांमेळौ-स स्त्री. [स सामेयी] १ कन्या पक्ष वालो द्वारा नगर या गाव के प्रागण अथवा सीमा पर दुल्हे एव बारातियों का किया जाने वाला स्वागत, अगुवानी ।

उ०—१ उमराव केसरिया वागा वणाया । मडोवर परणीजण ने पधारिया तरै बारह कोस साम्है आया । धणी जलूस **सामेळा** री देख मेवाड़ा हैरान रह्या ।—राव रिणमल री बात

उ०—२ तारा नाळेर झालिया । परधान नै सीख दीधी । लगन जोयनै जान चढी । तरां सोढी कहियौ । **सांमेळौ** सोढां रौ वखाणज्यो । हथळेवौ सोढी रौ वखाणज्यौ ।

—वीरमदे सोनिगरा री बात

उ०—३ गाव रौ लोक तमासगीर देखण नुं गयौ । प्रोहित नु खरळां मेल्हियौ, 'जौ ऊनरौ, कुवारी भात भेळा, आरोगौ । जितरै **सांमेळौ** आमी । वीहा री तयारी छै ।

—कुवरसी सांखला री वारता

मुहा.—सामेळा में ई गधा=श्री गणेश ही अशुभ ।

(मि. सिधम्नी में ई खोट=सर्वप्रथम अपशकुन ।)

२ सौभाग्यवती स्त्रियो या कन्याओ द्वारा सिर पर कलश तथा उसमे नीम की टहनिया लगाकर राजा, दुल्हा, एव अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों का किया जाने वाला आदर, सत्कार ।

रू भे.—समेळौ, समेहळौ समेळौ, साभेळौ, सामेहळौ, साम्हेळौ, साम्हेलौ ।

सांमेव-सं. पु [सं. सायुज्य] अभेद के साथ मिलकर एक हो जाना, मुक्ति के पाच भेदों मे से वह भेद जब जीव या आत्मा ब्रह्मा या परमात्मा से मिलकर एक हो जाता है ।

सांमेहळौ—देखौ 'सामेळौ' (रू भे)

उ०—**सांमेहळौ** पिण आयौ साम्हा । इतरै मैं जेळू पिण दीठौ । भोज बावळी घोडी चढियौ दीठौ । ईया साथ दीठो ताहरा जेळू कहै । हु भोजै नु परणीजीस ।—देवजी बगडावता री बात

सांमै—देखो 'सांम्है' (रू. भे.)

उ०—१ दाधी दुखड़ै री फिरतोड़ी दोरी, गोरै मुखड़ै री गिरतोड़ी गोरी । चामीकर धांमै कामा कर चोड़ै, जांमी जामी कर **सांमै** कर जोडै ।—ऊ. का.

उ०—२ आडो अवळो क्यू फिरै, धवळौ बापूकार । ओहिज पार उतारही, थळ **सांमै** ओ भार ।—बा. दा

सांमेरी-स. स्त्री.—एक प्रकार की रागिणी विशेष जो दिन के तीसरे प्रहर मे गाया जाता है।

उ०—ब्रह्म-मूहुरत समै लाखौ फूलाणी गवीजै । दोय घड़ी दिन चढियां धनासरी मैं बाघौ कोटड़ियौ, तीसरै पोर **सांमेरी** मैं रिड़मल, रात रौ सोढौ महंदरौ गीत गवीजै ।—बा. दा ख्यात

सांमोद-वि—हर्ष एवं प्रसन्नता युक्त ।

सांमोर-सं. स्त्री.—१ पड़िहार वंशीय एक शाखा ।

स पु.—२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।

सांमौ सांमौ-देखो साम्हौ' (रू भे.)

उ०—१ 'गोगो' मोगौ होय 'गोरधा' गिरियौ, 'तेजौ' मोळौ पड़ि नेजौ लै तिरियौ । पीरा पतधीरा पेली धर धायौ, उण दिन 'रामौ' डर **सांमौ** नहिं आयौ ।—ऊ. का.

उ०—२ इण मै परमेस्वरजी री अेसी आग्या हुई, जो भरमल री आंख्यां रा पडळ दूर हुय गया । जिसी निरधूम दीया हुवै, जिसी

आख खुल पड़ी। सौ सारा सामौ जोय कुंवरसी सामौ दीठौ।
—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ ताहरां ऊदै अर काळै कह्यौ-म्हे सिखरै रै साथै नहीं जावां, भांडसी। हालौ, अपूठा जावा। जितरै पूतौ ऊठै सामौ आयौ।—नैणसी

(स्त्री. सामी)

सामौसाम—देखो 'साम्होसाम' (रू. भे.)

उ०—ऊपरला होठ रै पसवाडै मूंछ्यां रा मांमूली सेनांण। गळा रै **सामौसाम** लाठी भेद। लिलाड रै माथै आधी हथाळी जित्तौ वोरिया रौ सेनांण। कानां री दोनूं लोळा फाट्योडी।—फुलवाड़ी

साम्मुखी-स. स्त्री. [सं. साम्मुखी] वह तिथि जो सायंकाल तक रहती हो।

साम्य-स. पु. [स. साम्य] १ समानता।

२ देखो 'स्याम' (रू. भे.)

उ०—१ मधकर अबज सुवारै तू सुकरत पांखडिया। सोई दरसण म्हारै **साम्य** को, देखू आखडियां।—आलमजी

उ०—२ कै मुवौ कै मारियौ, कै सुपनै आयौ **साम्य**। स्री राम रौ मूदडौ, कुण रत या ल्यायौ राम।—मेहोजी गोदारौ

३ देखो 'सामी' (रू. भे.)

साम्यवाद-स. पु. [सं. साम्यवाद] कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित एवं लेनिन से सम्बन्धित एक विचारधारा।

वि. वि.—इसका उद्देश्य व्यक्ति के बदले सार्वजनिक उत्पादन, प्रबंध व उपयोग के सिद्धान्त पर समाज-व्यवस्था स्थिर करना एवं हर संभव प्रयासों से शोषित वर्ग को मजबूत बनाना है।

साम्यावस्था-सं. स्त्री. [स साम्यावस्था] किसी प्रकार के विकार या वैषम्य से रहित वह अवस्था जिसमे सत्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों, प्रकृति।

साम्रत, साम्रथ—१ देखो समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ **साम्रथ** यहै संसार मैं ,करणीगर सब विध करण। महाराज 'अजण' विनती करै, तूं केसव असरणसरण।
—गज-उद्धार

उ०—२ सुत 'सारग' साम्रथ वात सहूं, दखजं सिर गोरख हाथ दहूं।—पा. प्र.

२ देखो 'सामरथ्य' (रू. भे)

साम्राज्य-सं. पु. [सं. साम्राज्य] एक ही शासनसत्ता द्वारा शासित अनेक राज्य, प्रदेश या राष्ट्र, सल्तनत।

साम्राज्यवाद-स. पु. [सं. साम्राज्यवाद] वह सिद्धान्त जिसके अनुसार अपने अधिकृत क्षेत्रों की रक्षा के साथ-साथ वृद्धि की जाती है।

साम्राज्यवादी-वि. [सं. साम्राज्यवादी] साम्राज्यवाद के सिद्धान्त का अनुयायी एव अन्य सम्बन्धित तथ्य।

साम्हउ—देखो 'साम्हौ' (रू. भे.) (उ. र.)

साम्हनै—देखो 'सामनै' (रू. भे.)

उ०—पाण खग 'अजा' रै साम्हनै पसैला, तौ नसेला पतंग पड़ दीव म्हाळै।—रांमलाल आसियौ

साम्हळणौ साम्हळबौ—देखो 'सांभळणौ, सांभळबौ' (रू. भे.)

उ०—महाराज बखतसिंह जी रा डेरा लाडपुरै हुवां रा समाचार साम्हळ महाराज भी ताकीद सू कूच कियौ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

साम्हळणहार, हारौ (हारी), साम्हळणियौ—वि०।

साम्हळिओडौ, साम्हळियोड़ौ, साम्हळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साम्हळीजणौ, **साम्हळीजबौ**—कर्म वा०।

साम्हळियोड़ौ—देखो 'सांभळियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री साम्हळियोडी)

साम्हलौ—देखो 'सामलौ' (रू. भे.)

उ०—साम्हली सीट माथै एक बाबू सा' ब बिराज्या हा। करडा लट्ठ ब्हियोडा बदूक री खोळी व्है जिसौ काठौ मोरी री पेंट, ऊंचौ-ऊंचौ बुसरट, दिलिपकट बाल अर तलवारकट मूंछां।
—अमरचूंनड़ी

(स्त्री. साम्हली)

साम्ही-क्रि. वि.—१ सामने, सम्मुख।

उ०—१ ताहरा गांगै नूं जोसियै कह्यौ-राज सवारै तौ जोगणी आपा नूं साम्ही छै उवानू पूठ छै।—नैणसी

उ०—२ इणनै आप पूरब भव रा संस्कार समझौ अथवा कोई सजोग री वात कै सूरज म्हारा सूं थोडौ दबतौ जरूर हौ। उणरी कतरणी री गळाई चालण वाळी जीभ म्हारै साम्ही आयनै थोडी रुक जावती।—अमरचूनडी

उ०—३ कवर रै **साम्ही** वद वद नै प्रण करियौ जकौ तौ पार पटकणौ ई है। सांचांणी किणी राणी री कूख सूं जलम लेवणौ तौ सराप है। इण जलम मैं तौ औ सराप नीं फळियौ।
—फुलवाड़ी

२ उलटा, विपरीत।

उ०—१ नाई री तौ औ दाव ई खाली गियौ। भूठ मूठ डरावण री बात तौ **साम्ही** गळै बंधगी। पाछौ बदळणौ ई सारै बात नी री।—फुलवाडी

उ०—२ नाई बोल्यौ-अंनदाता, आपरै धारण करणा सूं तौ मुगट अर नौलखा हार री छिब ई निखरगी। **साम्ही** औ घणा फूठरा दीसै।—फुलवाडी

३ सामने।

उ०—१ कोई रै मोटर मैं बेठनैं आगै जावणौ व्हैला तौ कोई किणा रै ई **साम्ही** आयौ व्हैला।—अमरचूनड़ी

उ०—२ दीवाण तो खुद ग्रैड़ाई आदेस री बाट न्हाळतो हो। काळा घोड़ा, काळोई संज अर काळा गाभा देय चरवादार नै सांम्ही भेज्यो। सगळी बातां समझाय दी।—फुलवाड़ी

उ०—३ सासरा री मगरी ढळता ई उणनै मड़ो सांम्ही धकियो। सुगन तो भला व्हिया। वेल सूं हेटै उतर वा मुडदा नै हाथ जोड़िया। ग्रेक खाधिया नै होळै सीक पूछ्यो—वीरा कुण चलियो।
—फुलवाड़ी

उ०—४ बीदणी रो रथ कोट रै गळाकर निकळियो तो सांम्ही झिरोखा मैं बैठा कवरसा माथै उण री ग्रणछक मीट पड़ी। नस नस मैं सरणाटो दौड़ग्यो।—फुलवाड़ी

४ ओर, तरफ।

उ०—१ थोडी भांय गिया उणनै ग्रेक मिनख आपरै सांम्ही न्हाटतो निगै ग्रायो। आठ-दसेक आदमी उणरो लारो करता हा।
—फुलवाड़ी

उ०—२ नाच री वेळा टळचा इदर भगवान ग्रणूंतो कोप करैला। पैला ई नीठ मान्या। ग्रबै तो म्रितलोक सांम्ही झाकण ई नी देवैला। भूडी कळा पजी।—फुलवाडी

उ०—३ पण ग्रबकै पुजारी री रट सुणनै दो ग्रेक ग्राधड़क लुगाया एक दूजी रै सांम्ही देखनै हंसण लागी। वां सूं पुजारी रो चरित्तर ई छानो कोनीं हो।—ग्रमरचूंनड़ी

५ अनुकूल, पक्ष मे।

६ तुलना मे, अपेक्षाकृत।

उ०—१ नाचती-नाचती ई बोली—देवण रो ग्रेडो ई गुमेज है तो म्हनै जून्यो-सरप बगसावो। उणरै सांम्ही ग्रापरो इंदरलोक ई म्हनै फुनरका जित्तो लागै।—फुलवाड़ी

उ०—२ मुळकनै बोल्या—थूं काई गुमेज मैं आंटो-ग्रांटो चालै, म्हारी बीदणी री ग्राटी थारा सू वत्ती लांबी ग्रर वत्ती चीकणी। थारो सावळो रग तो उणरी ग्राटी सांम्ही साव मगसो लागै।
—फूलवाड़ी

७ समक्ष, ग्रगाडी।

उ०—१ ग्रै दोनूं चीजा पिंडतजी रै सांम्ही धरनै बोली—दारू, मास ग्ररोग्यां ग्रापनै ग्रै पच्चीस मोहरा सीख मैं मिलैला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ सेठ राजी व्हैगा तो सेठाणी ई ग्रणूंती राजी व्हैगी। ग्रेका ग्रेक बेटो ग्राख्यां रै सांम्ही रैवैला। ग्रर कमाई री ठौड़ कमाई रो जुगाड ई व्हैगो।—फुलवाड़ी

८ देखो 'सामी' (रू. भे.)

९ प्रतिकूल होना।

मुहा.—सांम्ही होणौ=(१) गाय, भैंस ग्रादि का गर्भ धारण करना। (२) अनुकूल होना। (३) परिपक्वावस्था मे होना।
(खेती, फसल)

सांम्हु—देखो 'साम्हौ' (रू. भे.) (उ. र.)

सांम्हेई-सं. स्त्री.—एक देवी का नाम।

उ०—सुभराज करै तनां सुर सांमिणी, ताहरै नाम सांम्हेई तरां। जयो निमो तुंनां जग जामिणी, कतियांणी ग्रादेस करां।—पी. ग्रं.

सांम्हेळौ—देखो 'सामेळौ' (रू. भे.)

उ०—१ कनक रतन तोरण सुभकारी, सुंदर चित्र पौळि सिणगारी। सुभ छवि माडह नयर सचेळौ, सुर ग्रति मिळण थयौ सांम्हेळौ।—रा. रू.

उ०—२ तद पदमावती परणीज नुं तयार हुई। बैठी झरोखै माहै देखै छै। इतरो जान रो सांम्हेळौ कर बीद नू तोरण लै ग्राया। तद पदमावती वर देख राजी हुई।—ठकुरै साह री वात

उ०—३ सूनम रै परभात ग्राभै मैं सोना रो सूरज ऊगियो ग्रर धरती माथै उण गांव रै गोरवै जान सूं सांम्हेळौ व्हियो।
—फुलवाडी

सांम्हेलो—देखो 'सामलो' (रू. भे.)

सांम्है-क्रि वि.—१ सामने, सम्मुख।

उ०—१ गोळा नाळ गुणजीन गावै, लसकर ऊमर जानिया लार। 'मांडण' हरी दिपतो मिळियो, सांम्है लै बीड़ो घणसार।
—बलू चापावत रो गीत

उ०—२ भीतर पधारिया जठै सूं महाराज नजर पड़िया। तठै सूं कुंवर तसलीम करतो-करतो जाजम रै छेहड़ै गयो। ताहरा राजा सांम्है ग्रायो। कुंवर जाय पावां मैं सिर दियो।
—पलक दरियाव री वात

उ०—३ जठा हूं दोइ हजार ग्रसवारा सुरथपुर ग्राइ कुमार बेढियो। ग्रर दूदै भी ग्रंबारा ग्ररचन रै ग्रनंतर ग्रापरा साथिया समेत सांम्है ग्राइ घोर घमसाण कियो।—वं. भा.

उ०—४ ग्रर दिल्लीस भी घणा साहस थी ग्रापरा जावण मैं ग्राडो होइ चलायो। इसड़ा बडा कुमार दारा नूं सांम्है पुगण रो निदेस देर बिदा कीधो। जतरै तापी नूं लांघि नरमदा नदी रै नजीक ग्राया।—व भा.

क्रि. प्र.—ग्राणौ, करणौ, बोलणौ, हालणौ, होणौ।

मुहा.—(१) साम्है ग्राणौ=ग्रागे ग्राना, प्रकट होना, ग्रवरोध डालना, मदद करना, संकटकालीन परिस्थिति में सहायता या स्वागतार्थ ग्रागे ग्राना, नजरों मे ग्राना। (२) सांम्है करणौ=रूबरू करना, ग्रागे करना, चुनाव, झगड़ा ग्रादि मे विरुद्ध खड़ा करना। (३) सांम्है खड़ौ होणौ=चुनाव, झगडा ग्रादि मे विरोध मे खड़ा होना। (४) सांम्है बोलणौ=विरोध मे बोलना, ग्रवज्ञा करना।

२ ओर, तरफ।

उ०—इसड़ी समय बादसाह मारवाड़ रा ग्रमरावा सांम्है देख फरमाई।—गर्जसिंह री वारता

३ उलटा, बिपरीत।

४ अनुकूल, पक्ष में।

रू. भे.—सामै।

सांम्हौ-वि. (स्त्री. साम्ही) १ सामने, सम्मुख।

उ०—१ पांच हजारां पाच, घडा जडि हुएं जमंधर। मुख साम्हा 'अमर' रै, नको आवै नर-नाहर।—सू. प्र.

उ०—२ उठै रावजी नागोर री कोट छोडनै बाहिर आया। भाटियां री फौज आई—ताहरा रावजी सांम्हा जायनै लडिया। रावजी काम आया।—नैणसी

उ०—३ सीधा मुंहडा भायां री राड छै सो भली तरह सांम्हा आवौ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—४ पछै जसवंतजी केइक दिन उठै रह्या। पछै ईडर रै राव घणौ आदर कर तेडाया। रावळ सांम्हौ आयनै लै गयौ। चौबीस गाव सुं वडौ पटौ दीयौ।—राव मालदेव री बात

मुहा०—१. सांम्हौ आणौ=आगे आना, मदद करना, ध्यान में आना, स्वागत करना या अगवानी हेतु सामने आना। २. साम्हौ जाणौ=सम्मान के लिए सामने जाना। ३. साम्हौ देखणौ (जोवणौ)=दया करना, ध्यान देना। ४. साम्हौ घिरणौ, फुरणौ=मुकाबला करना। ५. साम्हौ बोलणौ=झगड़ा करना, जिद्द, हठ आदि करना, सामने बोलना।

२ तरफ, ओर।

उ०—१ अेक रात गेहुआ रा खेत ओर साठां री बाड मैं रहियौ। घणा दिना री भूख काढ धाप नै अरबद सांम्हौ हालियौ। तीसरै दिन अरबद जा पहुचियौ।—ड़ाढाळा सूर री बात

उ०—२ इतरौ कहि आप खिड़की रै मारग हुयौ बजार माहि करि नै नैकाळ सहर सूं होई, तळाव रौ मारग लियौ। आगै राजा रौ साथ पण मारग सांम्हौ जोय रह्यौ थौ, जितरै आवतौ नजर पड़ियौ।—पलक दरियाव री बात

३ उल्टा, विपरीत।

उ०—१ व्यासजी कही—दिन कोई नही जावै-सांम्हौ आपा पाच माणस आपरा करस्या, क्यूं बादसाह कन्है मदत लेस्या।

—अमरसिंह राठौड गजसिंघोत री बात

उ०—२ ताहरां औ राजा अठै लड़ियौ सु वरस दो अथवा तीन लडियौ पण कोट भिळै नही। ताहरां राजा सेतरांमजी नूं कही—कोट तौ भिळै नही अर सांम्हौ लोक री ज्यान हुवै छै।—नैणसी

४ अनुकूल, पक्ष मे।

रू. भे.—समहौ, सामहु, सांमहौ, सांमुहउ, सामुह, सामुहौ, सांमु, सांमो, सांमो, साम्हउ, साम्हु, साहमो, साहमू, साहमो, सांहामो, साहांमो।

सांम्हौसांम-क्रि. वि.—बिलकुल सामने, आमने-सामने।

उ०—१ मिंदर रै सांम्हौसांम खासी भाय माथै अेक वैडो ई टापू। उण माथै सोना री सतखंडियौ महल। सूरज री किरणा रौ परस पाय पळक पळक करै।—फुलवाडी

उ०—२ भटियांणी बाथ भरचा चीपटा रा पूळा लेय नीरण नै जावती ही कै मासी सांम्ही धकी। टळण री मतौ करचौ तौ मासी आडी फिरनै सांम्हौसांम अडोअड ऊभगी।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सांमूसाम, सांमौसाम।

सांयंकाळ—देखो 'सायंकाळ' (रू. भे.)

उ०—पाछा आवतां राजा रा काका सारंगदेव रा बडा पुत्र प्रताप सिंह अरिसिंह वौ ही सहोदर एक नदी रै तीर उचित जळ देखि सांयंकाळ री बिधेयकरम करण पाळा ही चलाया।—वं. भा.

सांयड, सांयंढ, सांयंड, सांयंढ—देखो 'सांढ' (रू. भे.)

उ०—१ सांयंड भेरावै सेढा रै सारू, बेरै बेढाकर हेरै हथवारू। भेंग्या रिडकै रिड गाया रंभावै, प्राणी तिरखातुर पांणी कुण पावै।—ऊ का.

उ०—२ दिन बधग्यौ तौ वै मारग मैं ई रातवासौ लियौ। सांयंड नै नागर बेल री चारौ चारचौ।—फुलवाड़ी

सांय-सं. स्त्री.—१ तीर, गोली आदि के चलने से या उड़ते समय पक्षियो के पखों से उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की ध्वनि विशेष।

उ०—झरणें री तळाई रै च्यारू मेर चमगादड़ा हमलौ बोल दियौ अर उणा री चामडी री बडी पाखा सूं सांय साय री डरावणी आवाज सगळी घाटी माय फैलगी।—तिरसकू

२ सुनसान जगह मे वायु से या तेज वायु से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—म्हनै लखायौ कै उण काळी रात मैं काळी ऊंची-ऊंची डूंगरचा रै बीच सांय साय करतै सूनै जंगळ मैं वणनै किण री ईज डर कोनी हौ। उण रै अग-अंग माय मतवाळै जोबन री उमग नाच रयी ही।—तिरसंकू

सांयकाळ—देखो 'सायकाळ' (रू. भे.)

सांयत-स. स्त्री.—१ समय, वक्त।

उ०—फेर अवाज हुई जै आ भगवान री वात किणी नै कही तौ विण सांयत थांहरी देह छूटसी, तैं सूं खबरदार रहै। इतरौ सुण देवीदास दोपहरां रा घरै आइयौ।—पलक दरियाव री बात

२ देखो 'सांति' (रू. भे.)

उ०—१ आंख्यां री पीड रै कारण राजा री डील तरतर छीजतौ रह्यौ। नीं तौ मौत आवै अर नीं अेक छिण सांयत ई मिळै। राजकाज मैं अेकदम रुळियारौ मचग्यौ।—फुलवाडी

उ०—२ पण बेटी, बगत आयां आ सोजन ई मिट जावैला। म्हारा जीव नै तौ कठैई सांयत कोनीं।—फुलवाड़ी

रू. भे.—साइत, सायत।

सांयति, सांयती—देखो 'साति' (रू. भे.)

उ०—होस्टल रै च्यारू मेर घूम्यौ, बठै कोई भी कोनी हौ। मन रै माय सुरग री सांयती ज्यू भरगी। पुलिस नै सेल री काई खबर कोनी लागी है। किसीक साहसी है आ सैल। अबार खाणौ

खवातां उण सू 'क्रांतिदळ' रै कारयक्रम री बातां पूछूंला ।
—तिरसंकू

सांयरौ—सं पु.—किसी रास्ते को रोकने के लिए कांटेदार झाड़ी का बनाया जाने वाला अवरोध।

सायार—देखो 'साईग्रार' (रू. भे.)

सांयी—१ देखो 'सामी' (रू. भे.) (डिं को)
२ देखो 'साई' (रू. भे.)

सांयीनौ, सांयीनौ—देखो 'साइणौ' (रू. भे.)
उ०—भीनौ रंग जळ भीजता, सांयीनौ सिरदार। तै लीनौ धन मन तिया, वस कीनौ इण वार।—बा. दा.
(स्त्री. सायीनी, सायीनी)

सांरंग—देखो 'सारग' (रू. भे.)

सांर, सांर—सं. पु—गाय, बैल, भैंस आदि पशु।

सांव—देखो 'सांमत' (रू. भे.)
उ०—हाथ आवाहतौ सिंधु रागा थिया, सहै झूझा थयां बळि 'जसा'रा माथिया। साथि 'जसवत' रै सांव बहु सम चडौ, गाविजै नेतडै रोहडै गागडौ।—हा. झा.

सांवटणौ, सांवटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)
उ०—१ उणरै पगा कनै अेक कागद उडतौ आयौ तौ वौ सुथराई सूं सांवट नै पोत्या रा आटा मैं खसोल लियौ।—फुलवाडी
उ०—२ पछै थोड़ा दिनां मैं परवार गयौ। पाटा पाटी सांवट लिया।—भि. द्र.
सांवटणहार, हारौ (हारी), सांवटणियौ—वि०।
सांवटिओडौ, सांवटियोडौ, सांवट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांवटीजणौ, सांवटीजबौ—कर्म वा०।

सांवटियोड़ौ—देखो 'समेटियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सावटियोड़ी)

सांवठौ, सांवठौ, सांवठौ, सांवठौ—स. पु.—ऊंचा स्थान, चबूतरा।
उ०—१ घुघीदार चकमौ उढीयौ छै। सांवठै उपर आप उभी छै। दूध रा कळम भरीया मुहडै आगै पडीया छै। निजर आपरी कुंवरसी रै मारग साम्ही छै।—कुंवरसी साखला री वारता
उ०—२ अर भरमल सांवठै सूं उतर वडारण नु साथ लै साम्ही ऊतरी, सौ चोकी रै नीचै जाय मुजरौ कियौ। एक दोय लटका जमी सौ हाथ लगाय कीया।—कुंवरसी सांखला री वारता
वि. (स्त्री. सांवठी) १ अधिक, बहुत।
उ०—१ जीहौ यादव नारी सांवठी, लाला आवै गावै गीत। जीहौ चौक पुराणै माडणा लाला साचवियै सुमरीत।—जयवांणी
उ०—२ सू महिनावा पचास सब सांवठी ही लागी छै। जाणै जेठ री दोपहरी खुलियौ छै। इण भात रै चांदणै मैं जीमण ही होस मांणजै छै।—रा. सा. स.
उ०—३ गेहूं बाजर मोठ मुग, तुवर मटर चिणेह। साळ नीपजै सांवठी, अोरू मसूर अछेह।—गज-उद्धार
२ जबरदस्त, शक्तिशाली।
उ०—पगि पगि पउलि पउलि हिस्ती की गजघटा, ती ऊपरि-सात सात सइ घनक धर सांवठा।—अ. वचनिका
रू. भे.—सांमठौ।

सांवण—स. पु [स. श्रावण] १ हिन्दी वर्ष का पांचवा मास जो आपाढ मास के बाद तथा भाद्रपद के पहले आता है। (डिं. को.)
उ०—१ सांवण आयौ सायबा, बांधौ पाग सुरंग। घर बैठा राजस करो घास चरेला तुरंग।—अग्यात
उ०—२ सावण आयौ सायबा, लुळ लुळ वरसै लूर। गोख उडी-कै गोरडी, जोबन मैं भरपूर।—नारायणसिंह सांदू
मुहा.—सांवण रा आंधा नै हरचौ ई हरचौ सूझै=सावन मे अंधे हुए व्यक्ति को सदा हरा ही हरा दिखाई देता है। (मूर्ख एवं अनुभवहीन व्यक्तियो के लिए)
२ एक प्रसिद्ध लोकगीत।
३ वर्षा ऋतु मे गाये जाने वाले लोकगीत।
उ०—'जसवत' नै गिणगौर ज्यूं, मेलै तीरथ मझार। आया सांवण गावता, सांभरिया सिरदार।—दलौ महडू
रू. भे.—सवण, सामण, सावणि, सावन, सावण, स्रामण, स्रावण, स्रावण।
अल्पा;—सावणियौ, सावणियौ।
४ देखो 'सुगन' (रू. भे.)
उ०—१ आयण रौ पोहर १ दिन लै चालीया भुहरी कनै आवता सांवण री पाल हुई। जेठ सुद ७ सोमवार जोधपुर आय स्रीकंवर-जी रै पावै लागा।—नैणसी
उ०—२ चौबिस तौ आपरा राजपूत, पचवीसमौ राघवदे नै छवीसमा आप चढिया। तिकै आछा सांवण मांग्या। तरै हिरण मालाळा हुआ।—जैतसी ऊदावत री बात
उ०—३ रजपूतां कह्यौ, वाह वाह, निपट मोटी विचारी, सांवण सखरा लेनै पधारौ नै स्रीमाताजी करै तौ पठांणा नै भूंडा दिखाय नै घोडियां ल्यावा नै खुरी करा।—जखडै मुखड़ै भाटी री बात

सांवणडाढ, सांवणदाढ—स. पु.—भाला। (डिं. को.)

सांवण री डोकरी—सं. स्त्री.—वर्षा ऋतु में होने वाला गहरे मखमली लालरंग का एक प्रकार का कीड़ा, बीरबहूटी।
वि. वि.—देखो ममोलियौ'।

सांवणि, सांवणिक—१ देखो 'सावणी' (रू. भे.)
२ देखो 'सांवण' (रू. भे.)
उ०—घर नीली धण पुंडरी, धरि गहगहइ गमार। मारू देस सुहांमणउ, सांवणि साभी वार।—ढो. मा.

सांवणियौ—१ देखो 'सांवण' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ सांवणियां री रैण अंधेरी, चदौ बी छिप्यौ मुरझाय।

इण मारवण रै थै नेडा चाल जो, ज्यूं मारग सूज्यौ जाय ।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ घरा नै पधारो विदेसीडा, छोटी सी नाजक धण रा पीव।
यो सांवणियौ उमड रयौ छै, हरि नै सोहै छै दिस दिस सीव ।
—रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

सांवणी-सं. पु.—वे वस्त्र या खाद्य पदार्थ जो सावन मास मे वर पक्ष से वधु के यहां भेजे जाते हैं।
वि [सं. श्रावणी] १ श्रावण मास का, श्रावण मास सम्बन्धी ।
२ देखो 'सुगनी' (रू. भे)
उ०—तरा सांवणियां सांवण वेध्या नै कह्यौ या सावणां सूराचद री राजा तौ हाथ चढै नै श्रापां माहे कुसळ बरतै नै वेढ रौ मामलो छै ।—जैतसी ऊदावत री बात
३ देखो 'स्रावणी' (रू. भे.)
रू. भे.—सावणि, सांवणिक ।

सांवणीतीज-स. पु. यौ.—१ श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया जिस दिन कई सुहागिन स्त्रियां व्रत रखती हैं।
२ उक्त तिथि को स्त्रियों द्वारा मनाया जाने वाला उत्सव ।

सांवणीपूनम-सं. स्त्री.—श्रावण मास की पूर्णिमा, इसी दिन रक्षाबंधन का प्रसिद्ध त्यौंहार होता है ।

सांवणूं, सांवणू-सं. स्त्री.—खरीफ की फसल ।
वि.—श्रावण मास का, श्रावण मास सम्बन्धी।
रू. भे.—सामणूं, सांमणू, सावणूं ।

सांवणूबाव-सं. पु.—खरीफ की फसल पर प्रजा से लिया जाने वाला कर।

सांवणूसाण-सं. पु.—खरीफ की फसल पर किसानों से लिया जाने वाला एक प्रकार का कर।

सांवत-स स्त्री.—१ एक प्रकार की मुसलमान वेश्या, रंडी ।
(मा. म.)
२ देखो 'सांमत' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—१ भोम्या सूं मालम हुई । जो फलाणा रै एक रजपूत श्रायो छै । जो वडो सांवत छै ।—पचमार री वात
उ०—२ कमधेस दई वडक्रामतनै, सगता री भोळावण सांवत नै ।—पा. प्र.

सांवतई-सं. पु.—एक लोकगीत विशेष ।

सांवन-सं. पु.—१ एक प्रकार की राग विशेष । (संगीत)
२ देखो 'सावण' (रू. भे)

सांवनकल्यांण-सं. पु. यौ.—एक प्रकार की राग विशेष । (संगीत)

सांवरणौ, सांवरबौ—देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)
उ०—......वाढि वडइ, जेहे दीठे दुरजन नै हीए त्रासक पडइं, छांडइघाट, घोडा तणा कान सोरामाहि साट, सांवरिश्रा दीसइ, परसैन्य पइसइ, भालै ताडइं, सेर पाडइ. मुहि मारइ, राउत पचारइं,......।—व. स.
सांवरणहार, हारौ (हारी), सांवरणियौ—वि० ।
सांवरिश्रोडौ, सांवरियोड़ौ, सांवरयोडौ—भू० का० कृ० ।
सावरीजणौ, सांवरीजबौ—कर्म वा० ।

सांवरियोड़ौ—देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सावरियोडी)

सांवरियौ—देखो 'सावळौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ० —काई रेल रेल करै है बेटी रा बाप । श्रबकै सांवरियै राजीखुसी राख्या तौ भादवा मै जरूर रामदै बाबा रै जावणौ है ।
—रातवासौ

सांवरौ—देखो 'सावळौ' (रू. भे)
उ०—१ धरती पड़यौ ढिगास, अबर सूं अंबर अडयौ । श्रायौ पूरण श्रास, सही बजाजी सांवरौ ।—रांमनाथ कवियौ
उ०—२ सांवरौ वसै मेरौ परदेस, सयी होरी का सग खेलूं । विरह विथा जोबन की कथा कौ, सब दुख तन पर झेलू ।
—रसीलै राज रा गीत
उ०—३ सांवरौ छोड चल्यौ मोरै रांम, रसराज श्रागै तौ बाहिर सैं जांणती, श्रब तौ जाणत मैं अतर कौ बी स्यांम ।
—रसीलै राज रा गीत

सांवळ—देखो 'सांवळौ' (रू. भे) (डिं. को.)
उ०—सांवळ वरण सरीर विराजै, एक सहस्र श्राठ लक्षण छाजै । दिन दिन अधिकी ज्योत विराजै, दरसन दीठां दारिद्रय भाजै ।
—जयवांणी

सांवळड़ौ—देखो 'सावळौ' (अल्पा, रू. भे.)
उ०—१ सांवळडा री सौगन म्है देस्यां, सखिया पूछै मिळ कर सात । कह्यौ नै रसराज राधिकै, काई काई हुवै छी बात ।
—रसीलै राज रा गीत
उ० —२ गोरै गात कसूंबी श्रंगिया, सांवळड़ौ सिर सारी । निपट छबीली थांरी तय्यारी, अलवेलिया री रिझवारी ।
—रसीलै राज रा गीत
उ०—३ श्राजो म्हांरै सांवळड़ा थे मिजमांन श्राज ।
—रसीलै राज रा गीत
उ०—४ कै गोरी बामण बाप कौ, कै सांवळड़ौ सरीर ।
—लो. गी.

सांवळताई-स. स्त्री.—श्यामवर्ण होने का भाव, श्यामलता ।

सांवळपक्ख, सांवळपख, सांवलपख-सं. पु. यौ. [स. श्यामल+पक्ष] मास का वह पक्ष जिसमें चन्द्रमा की कलाएं क्रमशः घटती जाती हो, कृष्णपक्ष ।
उ०—१ आयां वरस चहोतरै, सावण सांवळपक्ख । श्रायौ धर मारु 'श्रजो', गुज्जर थांणा रक्ख ।—रा. रू.

उ०—२ नरहर डूंगरसीह रै, खळ भागा बळ दक्ख । चाळीसै वैसाख मैं, पाचम सांवळपक्ख ।—रा. रू.

सांवळियौ—देखो 'सांवळौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ दरद की मारी बन बन डोलू, वेद मिळ्या नहिं कोय । मीरां की प्रभू पीड़ मिटेगी, वैद सांवळियौ होय ।—मीरा

उ०—२ जाती तौ आवै थांरै दूर का, सांवळिया मोत्यार । बाबा वजरगजी कौ बगळौ हूद वण्यौ ।—लो. गी.

उ०—३ सिधा तीन लोका सांवळियौ, सूर कुळां छोगौ सांवळियौ । साहै चाप राम सांवळियौ, सीतावर सामी सांवळियौ ।—र. ज. प्र.

उ०—४ कान्ह कवर सौ वीरौ मांगा, राई सी भोजाई । सांवळियौ बहनोई मांगां, सुभद्रा सी बहनड मांगां ।—लो. गी.

उ०—५ लांबीजी डीवी सांवळियौ सिरदार ।—लो. गी.

सांवळी—देखो 'संवळी' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ सांवळी हुय देवळ आप चढी, महि ऊड रजी पुड गैण मढी ।—पा. प्र.

उ०—२ उवै जिन्है सांवळ्या हुई नै उडीया । उड़त्या उड़त्यां ऊवै गांम आया जेथ स्यामसुदर परणीज नै रह्यौ तौ, तेथ तियै घर ऊपरि आय वैठ्या ।—स्यादसुदर री वात

सांवळीसाड़ी—सं. स्त्री.—देव मन्दिर जाने पर दुल्हा व दुल्हन को गाया जाने वाला एक लोकगीत ।

सांवळौ, सांवलौ—स. पु. [सं. श्यामल] १ श्री कृष्ण ।

२ अर्जुन ।

३ श्रीराम ।

उ०—१ ह्रद भाळ सुसबद भळहळा, निज कदंम समहर नहचला । साधार सेवग सांवळा, अपराज दसरथ नद ।—र. ज. प्र.

उ०—२ अंग धार आरख ऊजळा, करतार चित चढती कळा । विसतार जस चहुवै वळा, साधार सेवग सांवळा ।—र. ज. प्र.

४ परमेस्वर, ईश्वर ।

५ विष्णु भगवान् । (डि. को)

उ०—त्याह न आवै ताप, हरजी चौ दरसण हुवौ । जनम जनम रा पाप, सार्थं मेटै सांवळौ ।—गज-उद्धार

६ बादल, मेघ ।

७ काला रग ।

८ एक मासाहारी पक्षी ।

उ०—रमंत जोम सांवळा, अमंत फूल रातडा । भराय नै कसाय कठ, पीठ सोर भातड़ा ।—पा. प्र.

९ शिकार करने वाला, शिकारी । (डि. को.)

१० भील ।

उ०—चद ढामै जिसा परत मन धारै चंगा सांपरत गिरौ तन कांच सीसी । आवळा भूळ पड़ै रण आविढा, बढै संग सांवळा सातवीसी ।

—गिरवरदांन सांदू

११ श्याम रग का हिरण, कृष्ण मृग ।

१२ अफीम, अमल । (डि. को.)

वि. (स्त्री. सांवळी) १ श्याम रंग का, कृष्ण, काला ।

उ०—सांवण री महीनौ सौ बाजरी निनाण आयोड़ी । नीली कच, सांवळी भंवर, डाफळ पानी । खेत जाणै उफण आयोड़ौ । सूरियौ वायरौ पूगी बजावै अर बाजरी लै'रां लेवै ।—रातवासौ

२ नीला, काला । * (डि. को.)

रू. भे—संमळ, संमळौ, संवळ, सवळौ, समळ, समळौ, साबळ, सामळ, सांमल, सामळू, सांमळौ, सावरौ, सावळ, ।

अल्पा;—सामळियौ, सावरियौ, सावळड़ौ, सांवळियौ ।

सांवीणौ—देखो 'सांईणौ' (रू. भे.)

उ०—सांवीणा जोडो सारीखो, वरदळ रउ स्यात रौ विचार । हसत लगन मेलियउ हथळेवउ, अवर करण लागा आचार ।

—महादेव पारवती री वेलि

(स्त्री. सावीणी)

सांवौ, सांवौ—सं. पु. [स. श्यामक] १ प्रायः सारे भारत मे बोये जाने वाले चने की जाति का अनाज विशेष जो चावल की भांति उबालकर खाया जाता है ।

उ०—मकी जवारी कोदरा, सांवौ उड़द कपास । चंवळा तिल चीणौ घणौ, अन सह निपजै जास ।—गज-उद्धार

२ घुटनों तक लम्बा घास जो जल मे अधिक होता है ।

३ देखो 'सवौ' (रू. भे.)

उ०—खोड़ा रै पाखती राजाजी री घोड़ौ आवतां ई अेक असवार नै हाथ री सांनी करी तौ वौ कुचमादी रै माथै ओढायोड़ौ कांबळा भटको देय आगी ली । ऊंधौ पड़्या कुचमादी नै थाल देय सांवौ करचौ तौ वौ जोर सू टसकियौ ।—फुलवाडी

सांस—१ देखो 'सास' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ सांस छतै जीवै सकळ, ऊमर रै आधार । जस सू जीवै जगत मैं, सांस पखै सुदतार ।—बा. दा.

उ०—२ साजन फूल गुलाब रौ, म्हे फूलन की बास । साजन म्हारा काळजा, म्हैं साजन री सास ।—अग्यात

२ देखो 'सूंस' (रू. भे.)

उ०—तद सारां कही आहीज वात छै तौ सांस करौ तद सारा मिळ सांस कवल किया ।—गजसिंह कूंपावत री वारता

सांसउ—१ देखो 'सासौ' (रू भे.)

उ०—१ तुझ मुरति हौ देखंता प्राय की, समोवसरण मुझ सांभरइ । जिन प्रतिमा हौ जिन सारिखी जाणकी, पुरखि जै सांसउ वरइ ।—स. कु.

उ०—२ अतेउर परिजालज्यौ जी, स्रेणिक दियउ रे आदेस । भगवंत सांसउ भागियउजी, चमक्यउ चित्त नरेस ।—स. कु.

सांसण—१ देखो 'सासन' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ घोड़ौ दरयाई हुतौ सु सावत चीत्रोड़ रै राणै नूं लै जायनै निजर कियौ। ताहरा राणै सावतसी नैं गांम १ सांसण दियौ।
—नैणसी

उ०—२ कोड-पसाव आगाहट कूंजर, हेतवां धन दै दाळद हरै। राजा सिरै तौ कलावत राजा, सांसणां माय सासण सिरै।
—मालौ सादू

उ०—३ दरक सताईस देर भार खजानै भरीयौ। नागफणी फर हेक, हेक सांसण ढाढरीयौ।—मालौ सादू

२ देखो 'सासी (पु.)

सांसणी, सांसणीक—स. पु.—१ वह व्यक्ति जिसको शासन की ओर से दान की भूमि मिली हुई हो।

सं. स्त्री.—२ भाट जाति की एक शाखा विशेष। (मा. म)

रू. भे.—सासनी।

सांसणौ—सं. पु.—१ दमा रोग से पीड़ित पशु।

२ देखो 'सासन' (मह; रू. भे.)

उ०—सौ हजार द्रब थेलिया, मोती कडा सवास। गांम सवायौ सांसणौ, पायौ गोरखदास।—रा. रू.

सांसणौ, सांसबौ—क्रि. स.—१ अभिलाषा करना, इच्छा करना।

२ शासन करना, हुकूमत करना।

क्रि. अ.—३ तरसना, बिलखना।

उ०—बाळक बरळावै आखा अभिलाखै, भू-भू बू-बू बिन भाखा नहि भाखै। सूपै सीरावण ब्याळू लै बासै, बेळा ब्याळू री सीरावण सासै।—ऊ का.

४ सहना, सहा जाना।

उ०—संमद सां न तूं सांसही, निमणि करै नवनाथ। इंदि उतारै आरती, सकति हुई ससमाथ।—पी. ग्र.

५ ठहरना, रुकना।

उ०—थई सांसतां माता परति, दमयति कहि वाणी। जु जांणु जै पुत्री जीवि, प्रीउ सोधावु जाणी।—नळाख्यान

सांसणहार, हारौ (हारी), सांसणियौ—वि०।

सांसिओड़ौ, सांसियोड़ौ, सांस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांसीजणौ, सांसीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सांसहणौ, सांसहबौ—रू० भे०।

सांसर—सं. पु.—पशुधन।

उ०—१ बौ एवड रै आगै घर-बार, लुगाई-टाबर अर दूजै धन सांसर नै सफा ही भूल बैठ्यौ। रात पड़तै ही गाव सूं बारै ऊंचै धोरै मायै एवड़ बैठाय'र सारै आप ही बैठ जावै। एवड़ सूं अळगौ होणै रौ बीरौ जी ही नीं करै।—दसदोख

उ०—२ ऊंट-डागरा अडाणै अडूल हुया, गाय-खोला चोरांणै चढ्या अर एवड़ बोपारया नै बेचणौ ही पड़यौ। मिनखा बिना धन-सांसर नै कुण संभाळै पीसै बिना खून रा मांमला किया दबै।
—दसदोख

सासारिक, सांसारी—वि. [सं सांसारिक] १ जिसका सम्बन्ध इस ससार के क्रिया-कलापों से हो, लौकिक।

२ जिसका सम्बन्ध जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं, विषय-भोगों आदि से हो।

रू. भे.—ससारिक, संसारीक।

सांसियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ अभिलाषा किया हुआ, इच्छा किया हुआ. २ शासन किया हुआ, हुकुमत किया हुआ. ३ तरसा हुआ, बिलखा हुआ. ४ सहा हुआ, सहा गया।

(स्त्री सासियोड़ी)

सांसि, सांसी—स पु. (स्त्री. सांसण) १ सदा इधर-उधर घूमने वाली राजस्थान की एक घुमक्कड़ जाति या उक्त जाति का व्यक्ति।
(मा. म.)

उ०—१ न्यात मेतरा मिळ निपुण, पामर सांसी परखिया। अमलिया देख भारी अधम, होका धारी हरखिया।—ऊ. का.

उ०—२ डूबगी बात सब देस री, खूब असुभगुण खाटियौ। पान रौ ध्यान धरिया पछै, सांसी गिणै न साटियौ।—ऊ. का.

वि० वि०—ये अक्सर घूमते रहते है। हरिजन लोग इन्हें नीच समझते है और इनको छूते भी नही है। हरिजन इनके जजमान हैं। इनके झगडे आदि भी हरिजन ही सुलझाते है। ये धोबी को अपने से नीचा समझते हैं।

२ देखो 'सचय' (रू. भे.)

उ०—वचन सुणी नल चिंता पाम्यु हईडा सू विमासि। सूं, मैं, साचूं कै ए जूठूं, राजा पडियु सांसि।—नळाख्यान

रू. भे.—संसी।

सांसु—१ देखो 'सासू' (रू. भे.)

२ देखो 'सास' (रू. भे)

उ०—काम की जौ दखिण दिसा हुती त्रिविध पवन सीतमंद सुगंध प्रगटै छै। त्यौं चतुर कौ नाम दक्षण कहावै छै। तौ रुखमणीजी छैं सु चतुर छै। तिन रउ जु ऊरध सांसु उहै पवन हुवौ।
—वेलि टी.

३ देखो 'संसय' (रू. भे.)

सांसौ—सं. पु. [स संशय] १ संदेह, शक, भ्रम। (डिं. को)

उ०—१ बाजारै विच विच थई, रथ पवन वेग चलाय। राणी सांसौ भांजवा, नेम जिणद पै जाय।—जयवाणी

उ०—२ स्रंगार मंजरी कहियौ राजा, थाहरा मन मैं सांसौ रहियौ छै।—पचदडी री वारता

उ०—३ काम न काई कलपना, सांसा गया नसाय। नेह लग्या रहमान सूं, दिल और न आवै दाय।—अनुभववाणी

उ०—४ सौ आप कहो हू कांम आवू नही जद म्हारौ बळण

बळणौ सती होवणौ एकली सूं कीकर वणें श्री जीव मैं ससय सांसौ छै।—बी. स. टी.

२ सोच, फिक्र, चिन्ता।

उ०—१ सांसा मत कर मूरखा, सिर पर है करतार। वौ ही सारै जगत का, सांसा मेटणहार।—अग्यात

उ०—२ श्रांण मिळ्यौ अनुरागी जोगियौ, श्राण मिळ्यौ अनुरागी। सांसौ सोच श्रंग नहिं अब तौ तिस्ना दुबध्या त्यागी।—मीरां

उ०—३ साभळ श्रात मतीकर सांसौ जोवत हुयग्या असुर जुवा। हेकण घाव विढूक सदा हवै, श्रेकण घाव छटूक हुआ।

—पदमसिंघ रौ गीत

उ०—४ नागौ ग्यौ निरधार, तागौ रह्यौ न तेण रै। लेगौ बीसल लार, माया सांसौ मोतिया।—रायसिंह् सादू

३ दुःख।

उ०—१ राजा मन मैं चिंतवै, एहवौ खून न कोय। साध मरण मन ऊपनौ, ए सांसौ छै मोय।—जयवाणी

उ०—२ श्राका-वाका भूलग्या, श्राफत मैं भूलग्या। सिपाईडा ज्यूं ही रायफला मैं रीझ्या, भुगानै रा एकला भाई त्यूं ही सांसै मैं सागीडा सिक्या अर सीझ्या। हथकडी देखता ही श्राकळ-वाकळ हुयग्या।—दसदोख

उ०—३ करौ केसव अरज हुता, ज्यूं गत म्हारी होय। सरग वसूं सुचितौ थकौ, रहै न सांसौ कोय।—गज-उद्धार

४ डर, भय।

उ०—१ मन सासौ जिण मरण रौ, सूण गिणें सो स्यांम।' मानै रण मरणौ मंगळ, वोहि वीर वरियाम।—रैवतसिंह भाटी

उ०—२ जिकै जपै हरि जाप, जिकै वैकुंठ सिधावै। जिकै जपै हरि जाप, उदर फिर कदै न श्रावै। जिकै जपै हरि जाप, जिया मन सांसौ भागै। जिकै जपै हरि जाप, जिणां मन लत्त न लग्गै। क्रमबंध पाप जावै कटै, उर परम धरतां अगा। ऐतौ प्रताप हरि जाप रौ, जाय जनि भूलै 'जगा'।—ज. खि.

उ०—३ धन सूं श्रावै मोद, विसै सूं विपता श्रावै। मोटा सू वोहार, घणा दिन नहीं खटावै। मौत बचे कद मिनख, मंगता नै कुण चावै। दुसटा रै सैवास, दुखा रौ सांसौ छावै।

—नारी सईकडौ

उ०—४ करण मुरडियौ कहै पतसा का सूं करस, समर चित धारियौ बिना सांसै। सरम मौ खत्र-ध्रम खाग मागै सदा, वीकपुर 'अना' रै भुजा वासै।—करणसिंघ रौ गीत

५ सम्भावना, श्राशका।

६ चक्कर।

उ०—श्रौघट घाटि चूरि करि, पाया पीतम यार। हरीया जनम मरण का, सांसा मेट सधार।—अनुभववाणी

७ कमी, अभाव।

उ०—१ गोधळूक वेळा हुई। हीरू लिखमीजी रौ पूजन करण बेठौ। क्यौ—मा, मा! तू मा हो'र पखपात कियां करण लागगी? कठै ई सामगरी रौ ठाठ अर कठै ई सांसौ निराठ?—वरसगाठ

उ०—२ रामजी घण देवाळ है। बाजरी-मिसी भावती नीं जकानै भगर रा ही सांसा पडग्या।—वरसगाठ

उ०—३ चूला पाछै रीती हाडी अन रा जी पड़ रया सांसा, हौ भगवान! थारी माया। दूध दही तौ घणा वुहेला, छाछिया नै तरसाया, हौ भगवान! थारी माया।—लो. गी.

८ रौब, श्रातक।

उ०—तदि हुवौ 'मानहर' अडिग 'माहव' तणौ, साह सेना तदि पड़ै सांसौ। कछव कछवाह वासै पलट करै किम, वसुह चौमाड बिहू भडा वासै।—पूरौ महियारियौ

९ धारणा।

उ०—सोची मन मैं श्रा जोगी, श्रौ कूडौ जग रौ बासौ। पडस्या पत्ता ज्यू जग मैं, श्रौ भूठौ सुख रौ सांसौ।—करणीदान बारहठ

१० सकट, विपत्ति।

उ०—१ तड़ उभै बदै 'नीबा' हरा भ्रिभेतण, सबळ खळ घातिया भला सांसै। दुनिपत तणैं वासै बहै सही दुनौ, वहै दुनियाण पति तूझ वासै।—दुरगादास राठौड रौ गीत

उ०—२ धोबा धोबां धूड बगावौ अमला बासै, मती लगावौ मैल सैल मन धरौ न सांसै। मिळै कटै मनवार किनारौ भेलौ काठौ, श्रौ तौ महा श्रभाग भाग मैं लौ मत भाटौ।—ऊ. का.

११ झझट, उलझन।

उ०—सुलटा कूं सांसा घणा, पेम न ऊपजै प्यास। अंदर चालै उलटि कै, हरीया हरी का दास।—अनुभववाणी

रू. भे.—ससौ, सांसउ।

सांहणौ, सांहणौ—१ अनुकूल।

२ देखो 'सागणौ' (रू. भे.)

उ०—जोवै वाटा जोय, साठां कोसा सांहणा। देखण रा अंग दोय, मन चित एकौ मोतिया।—रायसिंह् सादू

सांहण—देखो 'साहण' (रू. भे)

उ०—१ कमधज्ज कहै केविया काळ, सांहणी श्राण साहण उजाळ। सर बेग जग सरवेग चग, तेणगळ चचळ 'जै' तुरग।

—गु. रू. ब.

उ०—२ सांहण संख न को सूंडाळै, नेजै संख न को नेजाळै। खुरम प्रगट्टौ जडण जड़ाळै, श्राग न दब्बी रहै पराळै।—गु. रू. बं.

सांहणी—देखो 'सा'णी' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीगंगाजळ सरसि श्रादि मजण श्रोपावै, पट श्रगुछि घट परखि, वेद भट वदन वचावै। श्रगर धूप ऊखेवि। जंत्र रक्षा गळि धारै। साजि करै सांहणी, लूंण ऊपरि ऊतारै।—रा. रू.

उ०—२ रांमसिंहजी रा डेरा सोढावास जोधपुर श्राडा श्राय हुइया,

उठै बखतै सांहणी री मारफत बखतसिहजी सू बात उठराई।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—३ तरै पितसंघी घोडो सांहणी कना सूं मगाय पिलाण करि वागो पहिर हथियार बाधि नै सिंध नै चलाया। तिकै दिन ऊगतै पहली पोळ जाय ऊभी रही।—जखडै मुखडै री बात

उ०—४ ......सीहलो गुजराती फरासखानो करतो ईसर सांहणी इतरा भोपतजी रा आदमी भोपतजी कन्है राखिया।—द. वि.

सांहणो—१ देखो 'सागणो' (रू. भे.)
२ देखो साहणो' (रू. भे.)

सांहणौ, सांहबौ—देखो 'साहणौ, साहबौ' (रू. भे.)
उ०—परभोम धूंसे जिकै आप प्राण, वडा जुद्ध रा बध जाणै बिनाण। हणै मारि पाडै पंखी वोम हूता, सांहै चालि सू जागवै काळ सूता।—वचनिका
सांहणहार, हारौ (हारी), सांहणियौ—वि०।
सांहिग्रोड़ौ, सांहियोड़ौ, सांह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांहीजणौ, सांहीजबौ—कर्म वा०।

सांह्मौं—देखो 'साम्हौ' (रू. भे.)
(स्त्री. साह्मी)

सांहस—देखो 'साहस' (रू. भे.)
उ०—मेड़तिया 'मधकर' हर मेड़तै सहायक, सांहस कै सादूळ वंस कै नायक। जाको रीत को प्रमांण द्वापुर दरसावै, कहतै मैं विसमैसी देखै वन आवै।—रा. रू.

सांहसी, सांहसीक—देखो 'साहसी' (रू. भे.)

सांहस्स—देखो 'साहस' (रू. भे.)
उ०—ऊपर लाखा आवता, सुण साखा अयदस्स। खोड खळां दळ अप्पवा, कोड जिसो सांहस्स।—रा. रू.

सांहांमो—देखो 'साम्हो' (रू. भे.)
उ०—पछइ वली मुकट तिलक कुंडल हार दोर वीर विलय अंगद बहिरखा नवग्रहां मुंद्रडी कंदोरु हथसाकली पग नी सांकली, प्रमुख पहिराया। एहवी कुटब सांहांमी ग्यातिनी भगति कीधी सिद्धारथ राजाग्रहै।—व. स.
(स्त्री. साहांमी)

सांहियोड़ो—देखो 'साहियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. साहियोड़ी)

सा, सा'-सं. पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर।
२ मित्र, दोस्त।
३ वर्ष, साल। (एका.)
४ स्वाद, जायका।
५ संगीत मे षडज स्वर का सूचक शब्द या संक्षिप्त रूप।
ज्यूं—सा, रे, ग, म, प।
सं. स्त्री.—६ स्त्री, औरत। (एका.)
७ रज, धूल। (एका.)
८ साली। (,,)
९ लक्ष्मी, रमा। (,,)
१० गुफा। (,,)
११ टिड्डी। (,,)
१२ रेखा, पक्ति। (,,)
१३ पार्वती। (,,)

वि.—१ समान, तुल्य।
उ०—१ गरु गारडु कोय मिळावै, मेरै तन की तपति बुझावै। सतगुर सा समरथ नहीं कोई, विसीया लहरि मिटावै सोई।
—अनुभववांणी

उ०—२ सतगुरु सोई जांणीयै, कहै कहावै रांम। हरीया गुरु गोविंद सा, और न को विसराम।—अनुभववांणी

उ०—३ अइयो मोज जका नु आपै, साधां नै कविळास समापै। अनंत भगत तूं सा उधरिया, तुझ तणै ऊपरि सा तरिया।
—पी. ग्रं.

२ अच्छा, भला।
उ०—सा पुरसां संतोखियां, खाणां जवहर खाण। बेलां चित्रां बेलड़ी, पारस सयल पखांण।—बां. दा.
३ साथ।

सर्व. स्त्री.—वह।
उ०—१ ढाढी एक सदेसडउ, प्रीतम कहिया जाइ। सा धण बळि कुइळा भई, भसम ढढोळिसि आइ।—ढो. मा.
उ०—२ पुनरपि पधरावी कन्है प्राणपति, सहित लाज भय प्रीति सा। मुगतकेस त्रूटी मुगतावळि, कस छूटी छुद्रघटिका।—वेलि
उ०—३ सा धण कुंभि बचाह ज्यउ, लंबी थई तु कध। चीतारंती सज्जणां, नीहाळंती मग्ग।—ढो. मा.

अव्यय—एक सम्बन्ध-सूचक अव्यय जिसका प्रयोग कहीं क्रिया विशेषण की तरह और कहीं विशेषण की तरह नीचे लिखे आशय या भाव सूचित करने के लिए होता है:—
१ समान, तुल्य, सदृश।
२ समान होने पर भी किसी प्रकार की थोड़ी न्यूनता या हीनता का भाव सूचित करने के लिए।
उ०—परभात बाहर आया सो उदास सा रह्या। झाली तौ ना दातण, ना सिनान कीवी, न जीमी। रात घड़ी च्यार गयां समुद्र आयो। तद झाली खीवसीजी नुं बोलाया।
—कुंवरसी सांखला री वारता

ज्यूं—वो मेला सा कपडा पेरयां ऊबो हो।
बाळदिया कन्है तो मडा सा बळद च्है।
३ किसी अनिश्चित मात्रा या मान पर जोर देने के लिए।
ज्यूं—थोड़ा सा बोर दीज्यो, थोड़ा सा आदमी आया।

४ देखो 'साहिब' (रू. भे.)

५ देखो 'साह' (रू. भे.)

उ०—सुज तेज देखि सधीर, अडियौ न कोय अमीर। सभि ताम अजण सलाह, सा' थियौ दौलासाह।—सू. प्र.

रू. भे.—स्या।

सा—१ देखो 'सास' (रू. भे.)

२ देखो 'हा' (४) (रू. भे.)

साअंता—देखो 'साता' (रू. भे.)

उ०—साअंता कुमरि मागि समथ, दई रिखी आणि सध दसरथ।
—रामरासौ

साइ–सर्व. स्त्री.—१ वह।

२ देखो 'साई' (रू. भे.)

३ देखो 'सामी' (रू. भे.)

उ०—साइ सारदा मनि सवरि, बांधउ ग्रथ अपार। सूरति राखउ 'अचळ' कउ, खउदालिम्म सिकार।—अ. वचनिका

साइक—१ देखो 'सायक' (रू भे.)

उ०—१ लघु लघु धानख साइक लघु।—रामरासौ

उ०—२ बाळै घाव जागिया कुरांण बाच लगा वोम, रोस भीना दोवड़ा चळळा ऊडै रीठ। साइकां छड़ाळा धारा कटारा जवनां सेती, ताखा भड़ा बापूकारै मेलिया नतीठ।—बगतौ खिड़ियौ

२ देखो 'सहायक' (रू. भे.)

साइकल, साइकिल–सं. स्त्री. [अ. साइकिल] दो पहियों वाली गाड़ी जो पैरों से चलाई जाती है, बाइसिकल।

उ०—चारेक खेतवा ताई तौ मामूली छाटा छिडका व्हिया पण पछै तौ हरडाट माचग्यौ। म्हैं बरसात मैं ई साइकल दाबतौ रह्यौ।
—फुलवाड़ी

साइक्क—देखो 'सायक' (रू. भे.)

साइजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साइजादी)

साइणि, साइणी—१ देखो 'साकणी' (रू. भे.)

उ०—बावन वीर किये अपनै वस, चौसट्टि योगिनी पाय लगाइ डाइण साइणि व्यंतर, खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाइ।
—ध. व. ग्र.

२ देखो 'सांइणौ' (पु)

साइत—१ देखो 'सायंत' (रू. भे)

२ देखो 'सायत' (रू. भे.)

उ०—जै कोई बुद्धी उपाय सू जलाल नूं मारणौ। सौ उण साइत मजकूर करि नै कहियौ—बडौ डेरौ हमारै झरोखे सांम्हौ खड़ौ करौ और तणाव ढीलौ राखौ।—जलाल बूबना री वात

३ देखो 'सायद' (रू. भे.)

साइदार—देखो 'साईदार' (रू. भे.)

उ०—ब्राह्मण नै साइदार थाप्यौ। तै पिण बोल्यौ फाक जांणौ पछै रुघनाथ जी आचारंग काढ्यौ। जद खति विजय रुघनाथजी कनै सूं पानौ खोस नै फाड न्हाख्यौ।—भि. द्र.

साइधण—देखो 'सायधण' (रू भे.)

उ०—१ मारू देस उपन्निया, नड जिम नीसरियांह। साइधण ढोला एहवी, सरि जिम मध्धारियांह।—ढो. मा

उ०—२ साइधण हल्लण माभळइ, ऊभी आंगण छेह। काजळ जळ भेळा करी, नाखी नांव भरेह।—ढो मा.

साइनौ, साइनौ—देखो 'साइणौ' (रू. भे.)

उ०—१ कठोड़ै कहीजै कलाळी री पोळ ओ साइना सिरदारां, काई रे ऐनांणां कलाळी रौ आंगणौ, हो म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—२ परणी-पांती साईनी साथणिया नै ब्याव घणी अर सासरा री केई बातां पूछी, जकौ वा माईता सूं नी पूछ सकै। सहेलिया री बातां सुणनै उणरौ कोड तर-तर परसण लागौ।—फुलवाड़ी

(स्त्री. साइनी, साइनी)

साइर—१ देखो 'सागर' (रू. भे.)

उ०—१ हुठि चढ्यउ सुरताण, खंणवि धरणि तलि पिल्लउं। वेगि ल्यावौ पदमिणी, सेन सवि साइर घल्लउं।—प. च. चौ.

उ०—२ पातिसाह राघव, आय ऊभा तटि साइर। करउ मंत्र चेतन्न, कटक लचीइ रिणायर।—प. च. चौ.

२ देखो 'सायर' (रू. भे.)

साइवांण, साइवांन—१ देखो 'सामियानौ' (रू. भे)

उ०—अंबाडी गज्जां धज्जां नेजा, घोडै धत्त पल्लांण। कोठारं भारं ऊठा पूठी, डेरा तबू साइवांण।—गु. रू. बं.

२ देखो 'साईवान' (रू. भे.)

उ०—हिम हीर गोख जाळी हजार, दमकंत जोति अति जिलह-दार। जर तार चिगा साइवांन जास, परगटै जांण बहु रवि प्रकास।—सू. प्र.

साइस्तगी–सं. स्त्री. [फा. शाइस्तगी] शिष्टता, सभ्यता।

साई, साई–सं. स्त्री.—१ कीमत की रकम का वह अंश जो किसी वस्तु की खरीद के पहले सौदा तय करते समय वस्तु को सुरक्षित रखने हेतु लिया या दिया या जाय, पेशगी।

उ०—सरूपोत दूध दही रै मिस उठै बुलावण री जाळ रचियौ, सगळा दूध री साई करण री दातारी दरसाई, पछै भैंस्या देखण रै मिस अठै आवण री जुगत विचारी।—फुलवाड़ी

वि० वि०—यह रकम पूरी रकम देते समय विक्रय मूल्य में से कम कर दी जाती है। यह रकम देने से सौदा तय हो जाता है। निश्चित समय में क्रेता द्वारा वस्तु नहीं खरीदी जाने पर पर यह रकम क्रेता वापिस प्राप्त करने का अधिकारी नहीं होता है।

क्रि. प्र.—करणी, देणी, लैणी।

मुहा०—१. सतरा सायां नै तेरै बधायां=जो काम कम करता है

और बातें व डींगें अधिक हांकता हो उसके लिए प्रयुक्त कथन. २. साई दे दे रोणौ=खूब रोना, धाड मार कर रोना. ३. साई खाई होणौ=सौदा भंग होने पर पेशगी रकम वापिस प्राप्त करने का अधिकार खत्म होना।

२ रुदन, चीत्कार भरी आवाज।

उ०—साई दे दें सज्जना, रातइ इंणि परि रून। उरि ऊपरि आर ढळइ, जाणि प्रवाळी चून।—ढो. मा.

३ साक्षी।

उ०—धुरधुर असाढां अंबर धर हरीयौ, घोरा डबर में संबर घर हुरियो। साई सर सरिता आई इकरारा, धोळा जळधर सू धाई जळ धारा।—ऊ का.

४ इशारा, सकेत।

उ०—१ मनडौ आज उमाहियौ, देखि घटा घनघोर। सयणा साई दें मिळूं, अलजा 'जसा' जसोर।—जसराज

उ०—२ सूड़ा सुगुण ज पंखिया, म्हांकउ कह्यउ करेह। साई देज्यौ सज्जणा, म्हा साम्हा जोएह।—ढो. मा.

५ देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—गोपाळ व्रिजरा बाळ गोवाळ गति, छोगाळ छत्राळ साई प्रतिपाळ साच। जादवा उजाळ नमौ बिरदां विसाळ जूना, डांग धारी काळ माथै ससिपाळ डाच।—पी. ग्रं.

साईजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साईजादी)

साईदार, साईदार-स. पु.—साक्षी, गवाही।

वि.—१ साक्षी देने वाला।

उ०—जद साहूकार हुवै तै तौ पेतौ बतावै साईदार भरावै अमकड़ियै बजाज कनै लीधी अमकडियै रगरेज कनै रंगाई। अनै चोर नै ल्यायौ हुवै तिण सूं पेतौ बतावणौ आवै नहीं थोडा मै अटक जावै।—भि. द्र.

२ पेशगी देने वाला।

रू. भे.—साइदार।

साईनौ, साईनौ—देखो 'सांइणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साईनी)

साईवांण, साईवांन—१ 'छज्जा, छाजन।

उ०—१ साईवांन चिग्गा जरी तार सोहै, मंडै झालरी मोतिया हूंस मोहै। जड़ी हीरपन्ना नगां हेम जाळी, सफै चित्र कारीगरां चित्रसाळी।—सू. प्र.

उ०—२ तावदान कै जळूस अस्टपदी का भाव। अस्मूं की आब जं महताबूं का ताव। जाळियूं के बीच मैं प्रवाळियूं कै जाब। कलाबुतू का हूनर साईवांनू का काम, जरकस कै बगीचै लगै ठाम ठाम।—सू. प्र.

२ देखो 'सांमियानौ' (रू. भे.)

रू. भे.—साइवाण, साइवान।

साईस—देखो 'सईस' (रू. भे.)

साउ-स. पु.—१ स्वाद, जायका।

२ देखो 'साऊ' (रू. भे.)

साउचेती—देखो 'सावचेती' (रू. भे.)

उ०—और सारी तरै मजबूती जौ बणाई, साउचेती राखण नै या छप्पई जौ सुणाई।—केहर प्रकास

साउळ. साउल-सं. पु.—१ बढ़ई का एक प्रकार का औजार विशेष।

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—चीर दुरयोधन खाचीया, पाचाली सुं करीय उपाय कि। सौ अट्ठोतर साउला प्रगट्या, नवभव सील पसाय कि।—ध. व. ग्रं.

३ एक प्रकार की साडी।

४ देखो 'सावळ' (रू. भे.)

साउवांणी-स. स्त्री,—१ महारानी, रानी।

उ०—सौ संवत १६१६ कातीवद १२ रावजी दिली मांहै काळ कीयौ। सती हुई तिण री विगत, ६ साउवांणी १० खवास पात्रां ४ डावडियां ३ छोकरिया सरब २३ हुई।—रा. वं. वि.

२ ठकुरानी, सामंत की पत्नी।

३ बेटी, पुत्री।

उ०—इतरी लारे सती हुई—भटियाणी धनराजोत अजबदै जैसलमेरी सिणगारदै, बिकुंपुर री कोडमदै, मलणवासी मनसुख दै...... तंवर साहब दै सरुपसिंघ केसोदासोत री साउवांणी।—द. दा.

४ देखो 'सवासणी' (रू भे.)

रू. भे.—सउवांणी, सऊवांणी, साऊवांणी, साहुणि, साहुणी, साहूवांणी।

साऊ-सं. पु.—सुभट, सामंत, यौद्धा।

उ०—१ राजा काम भोळावियौ, राखै विकळी कत्थ। कह्यौ वजीरा 'गजपति', तेडौ साऊ सत्थ।—गु. रू. बं.

वि—१ सुन्दर, मनोहर।

उ०—सिरी सीस कुंभा मणी हेम साऊ, जथा नारि वक्षोज चोळी जडाऊ। उभै घट भारां दुपासां अरोहै, ससी सूर रै बीच ज्यूं मेरु सोहै।—वं. भा.

२ उत्तम, ठीक।

रू. भे.—साउ।

साऊ—देखो 'सासु' (रू. भे.)

साऊजम-वि.—कार्यरत, उद्यमशील।

उ०—सुणि आगम नगर सहू साऊजम, रुखमिणि क्रसन वधावण रेसि। लहरिउ लियै जांणि लहरीरव, राका दिन दरसण राकेसि।

—वेलि.

साऊवांणी—देखो 'साउवाणी' (रू. भे.)

उ०—अकळ थाट आसमांन अर ऊपरै आंणिया, दूहरी कुजरै ढाळ

ढळकाणियां । सिखर भुरजा चढी सखी साऊवांणियां, रायसिंघ सपेखे नंदगिर राणियां ।—रायसिंह री गीत

साकंप-वि.—कम्पनसहित, कम्पनयुक्त ।

उ०—१ जसवत विना जहान, पान चळ जाणै पवनै । कना केतु साकंप, यथामन हिद सथानै ।—रा. रू.

उ०—२ मिट आग तप मिट जाय, साकंप सीत सवाय । द्रढ पोत खेवट दाम, तट धरी गुदरी ताम —रा. रू.

साकंब, साकंबरी, साकंभ, साकभरी-सं स्त्री. [स. शाकभरी] १ दुर्गा देवी का नाम ।

२ अपने शरीर से उत्पन्न शाको से समस्त ससार का भरण-पोषण करने वाली एक देवी का नाम । (पुराण)

३ चौसठ योगिनियो के अतर्गत तीसरी योगिनी का नाम ।

४ साभर झील के आस-पास का प्रदेश ।

५ इस प्रदेश मे स्थित दुर्गा की एक मूर्ति ।

६ साभर का एक नाम ।

साकंबरीपूनम-स. स्त्री.—पोह सुद पूर्णिमा ।

साक-स. पु [स. शाक] १ एक वृक्ष जो शाकद्वीप पर पाया जाता है । इसी पेड के कारण उक्त द्वीप शाकद्वीप के नाम से पुकारा जाने लगा ।

२ देखो 'साग' (रू. भे.)

उ०—तीन दिनां सू साक मिळै तोई धोको हियै न धारौ ।

—ऊ. का.

३ देखो 'सक' (३) (रू. भे.)

उ०—सोलसै साक चववीस तास, मधि हिमरित वद अघण मास । सनि चतुरदसी वद पख सकाज, सिधजोग प्रगट उच्छब समाज ।

—सू. प्र.

साकट-सं. पु. [स. शाक्त] १ शाक्त मत को मानने वाला, शाक्त मत का अनुयायी ।

२ रथ, शकट ।

[स. शाकट:] ३ बैल ।

उ०—साकट कह कह बेसमझ, दीन हटावै दूर । साकट वेहिज समझणा, सीग बिना बेसूर ।—ऊ का.

वि.—१ दुष्ट, पाजी ।

उ०—१ हरीया कबू न कीजियै, साकट केरो सग । एता मिळ बैसै नही, गाय गदहडो अंग ।—अनुभववांणी

उ०—२ जन हरीया साकट सभा, साध न बैसै जाण ।

—अनुभववाणी

२ विधर्मी ।

उ०—सतगुरु विन सौदा किया, जनहरिया वेकाम । साकट ज्यूई सूकरा, हांढै घर घर जाम ।—अनुभववाणी

३ मूर्ख, नासमझ ।

रू. भे.—साकत, साकति, साकत्ति, साखत, सागट ।

साकटायण, साकटायन-सं. पु. [स. शाकटायन] एक प्राचीन व्याकरण रचयिता मुनि, एक प्राचीन वैयाकरण ।

साकणि साकणी-सं. स्त्री. [स. शाकिनी] १ दुर्गादेवी की एक सहचरी का नाम ।

२ युद्धप्रिय चडी ।

उ०—१ वैताळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द । मिळ समळ ग्रीध आमख भक्ख, जबक्ख रीछ वड्डाक जक्ख ।

—गु रू ब.

उ०—२ जरख रीछ वड्डाख, सिवा सत लख्ख मलक्का । साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का ।—गु. रू. ब

३ ६४ योगिनियो मे से ४५ वी योगिनी का नाम ।

उ०—१ देवी चद्रघटा महम्माय चडी, देवी वीहळा अन्नळा वड्डु वड्डी । देवी जम्मघटा वदीजै जडव्रा, देवी साकणी डाकणी रूढ सव्रा ।—देवि.

उ०—२ वीरै डाक वाया, विमाणै वोम छाया । साकणी डाकणी मिळि मगळ गाया । नौबति नीसाण रिणतूर वागा । देवासुर देखवा लागा ।—र. वचनिका

४ पिशाचिनी ।

उ०—तुही अज्जया अम्भया अख्विलवा, तुही अज्जरा अम्मरा अखिलवा । तुही साकणी डाकणी बाकसाळी, तुही भूचरी खेचरी भद्रकाळी ।—मे. म.

५ प्रेतिनी ।

उ०—सुभगा सिवा जया स्री अबा, परिया परंपार पालबा । पिसाचणि साकणि प्रेतिबंबा, अथ आराधिजै अवलबा ।—देवि.

रू. भे.—सक्कणी, साइणि, साइणी, साकिणी ।

साकत, साकति, साकत्ति—१ देखो 'साखत' (रू. भे.)

उ०—१ बिलाला लीलो लावजे, बंधियो न राखै टार । साकत माडै सोवनी, राव हुवै असवार ।—लो. गी.

उ०—२ सपतास नही इण सारिखो, जोय सूर इम जाणियो । सूरजपसाव साकति सजै, इण विध हाजर आंणियो ।—सू. प्र.

उ०—३ सिणगारै सरब हैम मैं साकति, गळै गज्जगाह बध ए । वेगागळ वाजराज वाहण, या दीपत सरल कध ए ।—गु. रू. बं.

२ देखो 'साकट' (रू. भे)

उ०—१ दादू सभा सत की, सुमति उपजै आय । साकत की सभा बैसता, ग्यान काया मैं जाय ।—दादूबांणी

उ०—२ दादू माया दासी संत की, साकत की सिरताज । साकत सेती मांड नी, संतौ सेती लाज ।—दादूबांणी

साकतिक-सं. पु. [सं. शाक्तिक] शाक्त मत का व्यक्ति या अनुयायी, शाक्त । (मा. म.)

साकदीप-सं. पु [स. शाकद्वीप] १ पुराणानुसार सात द्वीपो मे से एक

जो क्षीर-समुद्र से चारो ओर से घिरा हुआ है। यहां सुकुमारी व अनुतप्ता नामक सात नदियां हैं।

२ ईरान और तुर्किस्तान के बीच पड़ने वाला प्रदेश।

रू. भे.—साकद्वीप।

साकदीपी, साकदीपीय-सं. पु. [सं. शाकद्वीपीय] १ शाक द्वीप का निवासी।

२ ब्राह्मणों का एक भेद।

वि.—शाकद्वीप का, शाकद्वीप से सम्बन्धित।

रू. भे.—साकद्वीपी।

साकद्वीप—देखो 'साकदीप' (रू. भे.)

साकद्वीपी, साकद्वीपीय—देखो 'साकदीपीय' (रू. भे.)

साकर—१ देखो 'सक्कर' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ अेक सीह नइ पाखरयउ, सूर सिहाइति आवरयउ, पचाअत अमी परगरयउ, महादान आछइ घड़इ दूध माहि साकर पड़ई।
—अ. वचनिका

उ०—२ जेहनउ रूप अनुरुप निहाली, सुरनर सगला मोहइ। तिण सू मो मन मिलियउ राज, साकर दूध तणी परइ।—वि. कु.

२ देखो 'साकार' (रू. भे.)

उ०—अनाकर साकर आखर अत, भलो भव भाग भजै भगवत। भजै नहि मूरख जै भगवांन, सही नर सूकर स्वान समान।
—ऊ. का.

३ देखो 'साकुर' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

साकरखोर, साकरखोरौ—देखो 'सक्करखोरौ' (रू. भे.)

उ०—खग इण साकरखोर रै, संग न साकर गुण। सब दिन पूरै सांइया, चांच दई सौ चूंण।—बां. दा.

साकरलिंगा-सं. पु.—शक्कर या मिश्री से बनी लिंगाकार व कुजाकार वस्तु।

उ०—बीज अखोड बदामनां, पस्ता तणु न पार। चारुली नइं चारवी, साकरलिंगा सार।—मा कां प्र.

साकरियौ-सं. पु. [सं.] १ घोडे का एक प्रकार का रोग विशेष जिसके कारण घोडे के गले या जबडे के नीचे ग्रंथियां हो जाती है तथा सांस मुश्किल से आता है। (शा. हो.)

२ दानेदार शक्कर।

साकरियौ डोरौ-स पु.—मजबूत-धागा।

उ०—हुकम ओढावै अर घर रो कांम करावै है। पाली हाळा पेम, तन्नै नेंकारे रो नेम। साकरियै डोरै री नाक मैं नाथ घालली। कद टूटै अर कद पेमजी री पिंड छूटै।—दसदोख

साकळ साखा-सं. स्त्री. [सं. शाकलशाखा] शाकल्य ऋषि के गोत्रओ में चलने वाली ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता।

साकली-सं. स्त्री. [सं. शाकली] १ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

वि० वि०—यह प्रायः होली या शीतलाष्टमी पर बनाया जाता है। यह मीठा व नमकीन दोनो तरह का होता है। मीठा पदार्थ आटे व गुड़ के पानी के मिश्रण से पूड़ी के आकार का बनाकर तेल में तल कर बनाया जाता है एवं नमकीन पदार्थ बेसन में नमक मिर्च, हलदी, धाणा, जीरा आदि मिला कर पानी से गूंद कर पुडी के आकार का तेल मे तलकर बनाया जाता है।

२ देखो 'साकळी' (रू. भे.)

साकळै-अव्यय. [सं. सुकल्य] सुबह, प्रातःकाल।

उ०—म्हारै दुवारी री वेळा टळै, दो घड़ी दिन चढ्यां वहीर होवाला। आपनै की पूछताछ करणी है तो धकै आखी रात पड़ी है। म्है तो साकळै दो घडी दिन चढ्यां वहीर होवांला।
—फुलवाड़ी

साकल्य-सं. पु. [सं. शाकल्य] १ ऋग्वेद की एक शाखा के प्रचारक प्रसिद्ध ऋषि।

२ एक प्राचीनकालीन वैयाकरण।

(मि. साकलसाखा)

साकवक्त्र-सं. पु. [सं. शाकवक्त्र] कुमार कार्तिकेय के एक सैनिक अनुचर का नाम।

साकवर-स. पु. [सं. शाक्कर] बैल, वृषभ। (डिं. को.)

साकसप्तमी-स. पु. [सं. शाकसप्तमी] एक प्रकार का व्रत विशेष जो कि कार्तिक शुक्ला सप्तमी को किया जाता है।

साकाबंद, साकाबंध, साकाबंधी-स. पु.—१ युद्ध के इच्छुक, सुभट योद्धा।

उ०—१ धनि आखै सारी धरा, मनि कापै महमंद। साकाबंध कमंध रा, वाका हद्दि समंदी।—रा. रू.

उ०—२ नित कहतौ सुज बोल निवाहै, लोह चढै जस घणौ लियौ। साकाबंध कामण सांभळियौ, कथ सुरा विच वास कियौ।
—महाराजा पदमसिंघजी री बात

२ यशस्वी, प्रतापी।

३ ऐतिहासिक।

उ०—सु तीसरी सज महाभारत आगम कहता उजेणि खेत। अगनि सोर गाजसी। पवन वाजसी, गजबध छत्रबध गजराज गड़सी। हिंदू असुराइण लड़सी। तिका तो बात साकाबंध आइ सिरै पढी।—र. वचनिका

रू. भे.—सकबध, सकबंधी।

साकामिस-सं. पु.—कई प्रकार के शाक-सब्जियों का एक साथ सम्मिश्रण। (मेवाड़)

साकायत-वि.—१ युद्ध करने वाला।

२ प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला।

३ भयावह, डरावना।

साकायन, साकायनि-सं. पु. [सं. शाकायन] १ वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

२ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

साकार-वि.—१ जिसका कोई आकार हो, स्थूल।

२ ईश्वर का आकारयुक्त रूप।

साकारणौ, साकारबौ-क्रि. स.—दाह-संस्कार करना।

उ०—ताहरा ऊदौ बोलियौ, कह्यौ—ठाकुरा! आ मेळाजी री पाघ छै, मेळोजी काम आया। सिखरैजी रै हाथ रा घावा ठाकुर काम आयौ छै, साकारिया छै म्हा।—नैणसी

साकारणहार, हारौ (हारी), साकारणियौ—वि०।

साकारिओड़ौ, साकारियोड़ौ, साकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

साकारीजणौ, साकारीजबौ—कर्म वा०।

साकारता-स स्त्री—साकार होने का भाव।

साकारियोड़ौ-भू. का. कृ.—दाह-संस्कार किया हुआ, जलाया हुआ। (स्त्री साकारियोडी)

साकारी—देखो 'साकाहारी' (रू. भे.)

साकारोपासना-सं. स्त्री.—ईश्वर का आकार या मूर्ति मानकर की जाने वाली उपासना।

साकास्टका-स. स्त्री. [स शाकाष्टका] फाल्गुनकृष्णा अष्टमी, जिस दिन पितरो के लिए शाकदान किया जाता है।

साकाहार-सं. पु. [सं. शाकाहार] मास-रहित भोजन, अन्न या फल-फूलादि का भोजन।

साकाहारी-वि. [सं शाकाहारिन्] शाकाहार खाने वाला, मांस न खाने वाला, निरामिषभोजी।

साकिणि, साकिणी—देखो 'साकणी' (रू. भे.)

उ०—मणि मत्र तंत्र बळ जंत्र अमंगळ, थळि जळि नभसि न कोइ छलति। डाकिणी साकिणी भूत प्रेत डर, भाजै उपद्रव वेलि भणंति।—वेलि

साकिन-वि [अ.] १ निवासी, रहने वाला।

२ जिसमे हरकत न हो, स्थिर।

साकिनी-सं. स्त्री. [सं शाकिनी] १ दुर्गादेवी की परिचारिका का एक नाम।

२ शाक-सब्जी का खेत।

३ देखो 'साकणी' (रू. भे.)

साकी-सं. पु [अ] १ शराब पिलाने वाला।

२ जिसके साथ प्रेम किया जाय, माशूक, प्रेमी।

३ शिकायत करने वाला।

४ चुगली करने वाला, चुगलखोर।

५ शत्रु, दुश्मन।

उ०—काठी कुरळाता काती निस काळी, होळी हीयैं मैं दाता दीवाळी। सामू सीयाळौ साकी सरसायौ, बाकी बचियां नै डाकी दरसायौ।—ऊ. का.

साकुंतल-स. पु. [सं. शाकुंतलं] १ अभिज्ञान शकुन्तला नामक नाटक जो कि कालीदास द्वारा रचित है।

[स. शाकुतल:] २ शकुन्तला-पुत्र भरत।

साकुन-वि. [सं. शाकुन] १ शकुन सम्बन्धी।

२ शुभ।

३ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

साकुनि, साकुनी-सं. पु. [सं. शाकुनि] १ मधुवनवासी एक ऋषि जो नौ पुत्रो का पिता था।

वि. वि.—नौ पुत्रों के नाम हैं—ध्रुव, शील, बुध, तार, ज्योतिष्मत्, निर्मोह, जितकाम, ध्यानकेश एवं गुणाधीक। इनमे से पहले पाच गृहस्थाश्रमी व अग्निहोत्री थे तथा दूसरे चार विरक्त एवं सन्यस्त प्रवृत्ति के थे।

२ देखो 'सकुनि' (रू. भे.)

साकुर-स पु—घोड़ा, अश्व। (डि. को)

उ०—१ छळ मारू वाधै बळ छीजै, लीजै झड़प किता लूटीजै। मीरां गयौ डहोळी माहै, साकुर पगां तणौ बळ साहै।—रा. रू.

उ०—२ दाखै तांम 'कुसळजी' दूजौ सिरदारोत महाभड़ 'सूजौ'। साकुर पहल ओरकू, सारा धमरोळू हरवळ चौधारां।—सू. प्र.

रू. भे.—साकर।

साकुळी, साकुली-सं. स्त्री. [सं. शष्कुली] पुरी, पकवान आदि। (उ. र.)

उ०—......फगफगा फीणां, दुग्धवरण्ण दहीथरां घ्रतवरण्ण घारी, सुकुमाल साकुली, सेव साकुली, परीसणहारि नही आकुली अखंड मांडी,......।—व. स.

साकूतरौ, साकूतौ-सं पु. (स्त्री. साकूतरी, साकूती) सपत्नी-पुत्र।

रू. भे.—सौकूतरौ, सौकूतौ।

साकेत-सं. पु.—अयोध्या नगरी का एक नाम। (डि. को.)

उ०—साकेत नगर सुखकंद रे, सहदेवी माता नंद रे। गढ माहे कीधउ फदरे सुकोसलउ बाल नरिंद रे।—स. कु.

साकेती-वि.—अयोध्या से सम्बन्धी।

स. पु.—अयोध्यावासी।

साकौ-स. पु.—१ महायुद्ध।

उ०—१ 'दळथंभ' हरौ थयौ दुसासण, गहण अरिंदा सारगह। मोटापण वाळौ महाराजा, मोटौ साकौ कियौ मह।

—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—२ दुसमणां री फौज गढ घेरियौ तठै गढ रौ धणी साकौ कर मरण री विचारी।—वी. स. टी.

२ यश, कीर्ति, प्रसिद्धि।

उ०—१ पर भोम लई समंदां लगै, राठोड़ा साका रहै। गळहत्थ वंस गोहिलां तणौ, वेंड खडग ग्रहि संग्रहै।—गु. रू. बं.

उ०—२ पाकौ भत्तौ परठियौ, काकौ पासि कंठीर। साकौ राखण जग सिरै, वणौ वीर भद्र वीर।—विनयरासौ

३ अवसर, मोका।

४ महान कार्य जिससे कर्त्ता की कीर्ति हो।

५ संवत्, शाका।

६ धाक, रोब।

साक्त-स. पु. [सं. शाक्त] शक्ति का उपासक, शाक्त मत का अनुयायी।

वि.—१ शक्ति सम्बन्धी, बल सम्बन्धी।

२ दुर्गा सम्बन्धी।

साक्तिक-वि. [सं. शाक्तिक] १ शाक्त मत को मानने वाला, शाक्त मत का अनुयायी।

२ भाला धारी।

साक्तेय-वि. [सं. शाक्तेय] शक्ति का उपासक, शाक्त मत का अनुयायी।

साक्य-सं. पु. [स. शाक्य] १ नेपाल की तराई मे बसने वाली एक प्राचीन जाति। (ऐतिहासिक)

२ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो सञ्जय राजा का पुत्र एवं शुद्धोद राजा का पिता था।

साक्यमुनि-सं. पु. [स. शाक्यमुनि] १ गौतम बुद्ध का नाम।

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

उ०—तिण सुत सजय रघुकुल तारण, साक्य सजय सुत दुसह सधारण। सभ्रम साक्य स्वधोद सकाजा, राजै जै सुत लायक राजा।—सू. प्र.

साक्र-वि. [स. शाक्र] इन्द्र का, इन्द्र सम्बन्धी।

स. पु—ज्येष्ठा नक्षत्र।

साक्री-सं. स्त्री. [सं. शाक्री] १ शची, इन्द्राणी।

२ दुर्गादेवी।

साक्वर-स पु. [स. शाक्वर] १ इन्द्र, देवराज।

२ इन्द्र का वज्र।

३ सांड, बैल।

साक्षर-वि.—१—जिसे अक्षर-बोध हो, शिक्षित।

२ पंडित, ज्ञाता।

रू. भे—साखर।

साक्षात-वि.—साकार, मूर्तिमान।

अव्यय.—१ सामने, प्रत्यक्ष।

उ०—एक भायो चरखो लोढतो तिण रा हाथ सूं आहार वहिरचो। आगै रुघनाथजी बोल्या—भीखणजी संका पडी। जद स्वामीजी बोल्या—साक्षात असूजतो ईज बहिरचो। इण मैं फेर संका काई।—भि. द्र.

२ हूबहू।

उ०—१ अब विवाह को आरंभ भयो। ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आणि बैठा छै जिसा साक्षात मूरतिवतवेद। वेदी छै सु रतन जड़ित छै। नीला बास छै।—वेलि टी.

उ०—२ इण साक्षात सती रूपी धण रा कपड़ा रगतां आ आसत करण नै पोसाक मगावसी जद म्हांरा दाळद्र गमाय देसी।
—वी. स. टी.

रू. भे.—सख्यात, सहसात, साखात, साखिग्रात, साखियात, साख्यात।

साक्षातकार—देखो 'साक्षात्कार' (रू. भे.)

साक्षातकारी-स. पु. [स. साक्षात्कारिन्] भेंट या मुलाकात करने वाला।

साक्षात्कार-स. पु. [सं.] १ भेंट, मुलाकात।

२ इन्द्रियों द्वारा होने वाला पदार्थों का ज्ञान।

रू. भे.—सहसातकार, साक्षातकार।

साक्षि, साक्षी-सं. पु. [स. साक्षिन्] वह व्यक्ति जिसने कोई घटना अपनी आंखो से देखी हो, चश्मदीद गवाह।

रू भे.—सख्ख, साखि, साखिग्रात, साखियात, साखी।

अल्पा; —साखियौ।

साख-सं. स्त्री.—१ साक्षी, गवाही।

उ०—१ इण मुख माहै तौ जिसा, केई मावै लाख। मूढ म जांणै झूठ तू, सूरज चदौ साख।—गज-उद्धार

उ०—२ जो कोई खून हुवै मुझ अदर, तो दूं साख भराई। पिण कहो जुग मैं न्याय करै कुण, जो हुवै राय अन्याई।—जयवाणी

क्रि. प्र.—घालणी, दैणी, भरणी।

मुहा.—स्याळ री साख लाकी भरै=बदमाश या अपराधी की गवाही अपराधी ही देता है।

२ बाजार मे वह प्रतिष्ठा जिसके कारण उसका लेन देन तथा व्यापार कार्य अच्छा चलता हो, व्यापारिक ख्याति, प्रसिद्धि।

उ०—चौखळा मै उण रै नाव री साख ही। हजारू रिपिया उणनै बिना खाता रै मिळ जाता अर वौ खुद तो किणी नै लिखा-पढी री बात रिपिया देवती वगत करतौ ई नी हो।—फुलवाड़ी

३ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—२ बात सुणनै सेठ बोल्यौ—गै'णौ तौ उणनै सूंपणौ ई पड़ैला सात पीढियां री साख जावै। जायनै सायळ समझा। यू भोळप री बातां करियां घर री साख कीकर रेवैला।—फुलवाड़ी

४ आदर, सम्मान।

५ कीर्ति, यश।

उ०—वण जौहर री राख, साख राखी जग ऊंचै। रजपूती भगती, बधी कद कुळ रै पूचै।—नारी सईकडौ

६ भाग, हिस्सा।

७ रश्मी, किरण।

उ०—१ धीरौ रै ग्वाळा वीरा धीरज नूं लेय, सूरज री साखां मैं जास्यूं, रंग री कोटडी।—लो. गी.

उ०—२ जै बींदणिया रै सत चढ्यो है तो आप सती करावौ। रोळौ न हुवै। यो काम आप रै जिम्मै है। सगळी बीदणियां री

मन राखौ। सूरज री साख सती करायजौ।—नैणसी री ख्यात
८ नाता, सम्बन्ध, रिश्ता।
उ०—अर गढ री जोम होवै तौ फेर सांमान करौ। म्हारी फौज आवै छै। जिण सूं हाथ जोड़ज्यौ। अबरकै तौ छोडिया छै। जमींदारा की साख सूं हर अबरकै चूकस्यौ तौ मार हौज नाखस्यूं।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ जाटा माथै मे'र, रोटी-बेटी रौ साख पाळै, रूखाळी करै। जाटणी रै जायै नै हेत नी आणदर्च। हर बखत हिमरा चढतौ फिरै। लूंठा नै लोढै पर गरीबा रै मोढै लाग्यौ रैवै।
—दसदोख
मुहा.—(१) साख धोया घोड़ा ई धुपै=रिश्ता मिटाने से नहीं मिटता है। (२) समझै ज्यारौ साख नीतर की न काई=माने उसके लिए सम्बन्ध अन्यथा कुछ नहीं। (३) समझणा सू साख सगळा काढै=बुद्धिमान और समझदार व्यक्तियों से प्रायः सभी रिश्ता जतलाने के इच्छुक होते हैं एवं रिश्ता निकाल लेते हैं।
९ शिक्षा, उपदेश।
उ०—सतपुरसा री साख सुण, सीखत ग्यानी होय। हरीया गुर सबद बिन, ध्यानी भया न कोय।—अनुभववाणी
१० फसल, उपज, पैदावार।
उ०—१ दावौ पडयोडी कै झोलौ लाग्योड़ी साख लुगथुकी पडै ज्यूं 'बादळ' रौ डील लूवौ पड़ग्यौ। दीप दीप करतौ उणियारौ साव मगसौ पड़ग्यौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ झुकै धर हैमर सूर भूंझार, भयै किर साख तिडा दळ भार। इसी सरसौक नक्यूं अटकाय, आयौ 'अभपत्तिय' बाज उडाय।
—सू. प्र.
११ विवाह, शादी।
१२ सगाई, मंगनी।
उ०—छोटू मारजा रै तीन बेट्या, जका मैं सूं बडोड़ी री साख डूंगरगढ रै एक पावर हाउस रै मिस्तरी रै दसवीं पास बेटै सूं मड्यौ है।—दसदोख
उ०—कैयौ—थांरै घराणै री नांमून सुण'र आपरी बाई री साख करण नै पधारया है। थानै कुंवरजी वणावणा चावै है। मैरवांनी करावौ।—दसदोख
१३ पैढी।
उ०—अबार छोडूं तौ पचास रिपिया तौ म्हारी दुकान री साख रा ई आ जावै।—फुलवाड़ी
वि. वि.—देखो 'पेडी' (२)
[सं. शाखा] १४ वंश, गोत्र, शाखा।
उ०—१ मालदै नूं मुवां थोड़ा दिन हुवा था सु चद्रसेन कन्है साख साख रा सबळा रजपूत था।—राव चद्रसेण री बात
उ०—२ अमर सुजस दत खगि अधिकाई, साख 'पदम' री बधै सवाई।—सू. प्र.
उ०—३ तुरक घडा नव तेरहो, तेरह साख कमंध। इळ धूकळ कळि ऊपजै, ज्या कपि दळ दसकध।—रा. रू.
१५ दरवाजे मे कपाट के दोनो किनारों पर लगाई जाने वाली सीधी (खड़ी) लकडी।
१६ एक साल की आयु वाला बैल।
१७ किसी बड़ी जलधारा से निकली छोटी जलधारा।
१८ अग्निशिखा।
उ०—सपेख अगनग साख सी, रत रोस मारग राखसी। तिह नाक पांण विछेद ताडै, बाण इक रघुबीर।—र. रू.
१९ घोडे के चारजामे का एक भाग।
उ०—घोडा लोह चाब रह्या छै, जीणां री साखां जनाखा ऊंची नाखीजै छै। तंग खोळा कीजै छै।—रा. सा. सं.
२० प्रमाण, सबूत।
उ०—१ कठै साख इण विध कही, सुणि इम कहै सुजाण। माडै कायब माघ मधी, पडित माघ प्रमाण।—सू. प्र.
उ०—२ ऐसी भाति सें खटि भाखा कहि बताई। चातुरी कळा की भाति भाति चतुराई। जिसकी साख प्रथम भाखा ससक्रत सौ तौ अनुभूति कृत्य सारस्वत सौ पाई।—सू. प्र.
२१ स्वामी कार्तिकेय।
२२ अनलवसु का पुत्र जो कार्तिकेय का छोटा भाई था।
२३ देखो 'साखा' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—तुही भारती भाखणी सख भाखा, तुही सरव दातार मंदार साखा। हमाऊ परां तोकरा छाह हेकौ, नकौ पार ओतार थारा अनेकौ।—मे. म.
रू भे.—साक, साखि।
अल्पा;—साखडी।
साखइत–वि.—उच्च कुल का, कुलीन।
उ०—हेमाचळ नारद नूं हसिया, कुवरी आविया गोद कियइ। वर कोइ एक साखइत वतावउ, वही जियइ रइ भ्रगुटि दियइ।
—महादेव पारवती री वेलि
साखड़ी—देखो 'साख' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—आगी बाबौ फूटरा है, भळै लगायां राखड़ी। पावस रुत कूवौ सेवता, उजडै उणरी साखड़ी।—दसदेव
साखणौ, साखबौ–क्रि. स.—१ साक्षी देना, गवाही देना।
उ०—१ छत्रपत अनी माण छंडै, खत्र रख हर चाप खडै, जानकी-वर जेण। रायहर पण जनक राखै, सूर ससि रिख देव साखै, मुणै जस प्रथमेण।—र. ज. प्र
उ०—२ कहियौ सकति जेम दुज कहियौ, अति रीझै छत्रपति ऊमहियौ। सूर धरम परखण ना साखै, इक सरजीव करण नह आखै।—सू. प्र.
२ प्रमाण देना, सबूत देना।

३ शिक्षा देना, उपदेश देना ।
४ नाता या रिश्ता करना ।
साखणहार, हारौ (हारी), साखणियौ—वि० ।
साखिग्रोड़ौ, साखियोड़ौ, साख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
साखीजणौ, साखीजबौ—कर्म वा० ।

साखत, साखति, साखती–स. स्त्री.—१ घोड़े का चारजामा व उसकी सजावट की सामग्री ।
उ०—१ ग्राखत पग ऊठतां, पूठ साखत पखराळी । काच हुळम कोमाच, नाच पातर नखराळी ।—मे. म.
उ०—२ फेर ही ग्रनेक रंग रा घोड़ा तयार कीजै छै । साखत जीण काढीजै छै । तिकै जीण किण भात रा छै—गुजराती, कसमीरी, कसूरी, मारवाड़ी, दखणी, मिरजाई, भटनेरी........।
—रा. सा. स.
२ वह घोड़ा जो पूर्ण सजाया हुग्रा हो, सजावटयुक्त ।
३ चाबुक ।
उ०—साखत राड़ु मूंज को, भीनौ करै मरोड़ । हरीया गुर विन वहि गया, केता लाख करोड़ ।—ग्रनुभववांणी
४ शिष्य वर्ग ।
उ०—एक ग्राध घर साध को, ग्रोर साखती लोग । जनहरीया धिन गावड़ो, भाव भगती को जोग ।—ग्रनुभववाणी
वि.—१ सजावटयुक्त, सजावटसहित ।
उ०—पछै साखत रा घोड़ा चार ग्रोर बागा देय विदा किया ।
—ठाकुर जेतसिंह री वारता
२ बढिया, बहुमूल्य ।
उ०—हरिजन के सिर कंबळी, काळी कुटल कुरंग । हरीया तुलै न दूसरा, साखत चीर सुरंग ।—ग्रनुभववाणी
स. पु.—सजावट ।
उ०—मैंडी मिंदर माळिया, साखत कर घरबार । हरीया हरि की भगति बिन, वसती उफ्फड़बार ।—ग्रनुभववाणी
रू. भे.—साकत, साकति, साकती, साखित, सागत ।

साखदार–वि. [फा. शाखदार] १ जिसकी ग्रनेक शाखाएं हो ।
२ साक्षी, गवाह ।
३ श्रेष्ठ वंश का, कुलीन ।
उ०—तरै बादसाहजी हुंम तै फुरमान कियो—हपतहजारी मनसब रिपिया लाख रो छै । तरै जलाल जागीर मैं ग्रादमी भेज्या । भला सिपाही, साखदार खांप-खांप रा राखिया । हमेसां सुधा मे गरकाब रहै ।—जलाल बूबना री बात

साखमिरग, साखमिरघ साखम्रग—देखो 'साखाम्रग' (रू. भे.)

साखर—देखो 'साक्षर' (रू. भे.)
उ०—विजय हरस वाचक्क, सिस्य धरमवरद्धन साखर । कीधा बावन कवित्त, ग्रादि दे बावन ग्राखर ।—ध. व. ग्र.

साखसिणगार–सं. पु. यौ—वंश में श्रेष्ठ, कुलश्रेष्ठ ।

साखसीर–स. पु यौ.—रिश्ता, सम्बन्ध ।
उ०—निबाब लाचार हुवण मैं कमी राखी नहीं । ग्ररु वीदावत उदैकरण रै नै सेखावत रायमल रै साखसीर हो तिण सू उदैकरण रायमल सूं जाय मिळियौ ।—द. दा.

साखा–सं. स्त्री. [सं. शाखा] १ वृक्ष की टहनी, डाल-डाली ।
(डिं. को.)
उ०—सु गौरता ऊपरि स्यामता किसी सोभै छै । जैस्यै मणी मैं हीडोळै मन धरि हीडै छै । मणि को हीडोळो बांध्यौ छै । मणिधर सरप हीडै छै । ग्रर स्रीखंड चंदन की साखा हीडोळो बाध्यौ छै ।
—वेलि टी.
२ बाहु, बाजू ।
३ विभाग ।
४ हाथ-पैर ।
५ हाथ-पैरो की ग्रंगुलियां ।
६ वंश, कुल ।
उ०—साखा बियौ 'मयंक' पह सुभ्रम, मन ग्रणबछत तूझ मण । कलम कुराण पाण तज कूंभा, बाचण लागा हर बयण ।
—महारांणा कूंभा रो गीत
७ वटवृक्ष की भखड़ा जड़, शाखाशिफा ।
उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलांमति दारू री तूंगा लागी सूं ग्रोछाड़िग्रां घणै ठंडै ठाणी छांटि छांटि नै वडां री साखां सूं नागली थकी भूलै छै । पवन री हवा सूं टिप्पा खाइ नै रही छै ।
—रा. सा. सं.
८ किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद, हिस्से ।
९ किसी शास्त्र विद्या के ग्रन्तर्गत उसका कोई भेद ।
१० ऋषियो द्वारा ग्रपने गोत्र या शिष्य परम्परा में चलाये गये वेद की संहिताग्रों के पाठ ग्रोर क्रम भेद ।
११ किसी विषय या सिद्धान्त के बारे में एक ही तरह के विचार या मत रखने वाले लोग, सम्प्रदाय, ग्रनुयायी ।
उ०—१ ऊंच नीच फिर मंगै ग्रगवा, सग लीयां रहै ग्रपनी साखा । माग भीख ग्रर बधै पोटा, खालिक दिसीया खाया खोटा ।
—ग्रनुभववाणी
उ०—२ सांमी मडी मडाय कै, मन विलीया कै मांहि । सिख साखा घन बोहत की, खुधीया भाजै नांहि ।—ग्रनुभववांणी
रू. भे.—सक्ख, सख, सख्ख, साख ।

साखात—देखो 'साक्षात' (रू. भे.)
उ०—१ जंघ ग्रलोम ग्रनूप जुग, नाजुक पणै निघात । केळि करीकर कलभ कै, सकनकूर साखात ।—बां. दा.
उ०—२ मोनूं सुगंध सोनू मिल्या, बळिहारी इण बातरी । साखात सकति 'इन्दर' सुणै, महिमा करनल मातरी ।—मे म.

साखाम्रग, साखाम्रिग-सं. पु यौ. [सं. शाखामृग] बंदर, वानर ।
(डिं. को; ना. मा; ह. नां. मा.)
उ०—१ राखस भ्रख सूतौ नर रंक, साखाम्रग रावण कै ही संक ।—रामरासौ
उ०—२ किधू प्रेत बक्करचौ ताप मत्रादिक तच्यौ । परचौ प्रपंचय हृत्थ मनहु साखाम्रिग नच्यौ ।—ला. रा.
रू. भे —साखमिरघ, साखम्रिग ।
साखावात-स पु. यौ. [सं. शाखावात] हाथ-पैर मे होने वाला एक प्रकार का वात रोग विशेष ।
साखाव्रख, साखाव्रख, साखाव्रख्ख—देखो 'साखीव्रख' (रू. भे.)
साखासिफा-सं. पु. यौ. [स. शाखाशिफा] किसी वृक्ष की वह टहनी जो नीचे की ओर झुक कर पृथ्वी मे जड़ पकड़ले तथा एक अलग वृक्ष के तने के रूप मे हो जाय।
साखि—१ देखो 'साक्षी' (रू. भे)
उ०—पोह जिण साख नाम प्रगटाए, कमध अहरहूं अहर कहाए। इणची साखि रीत धरि आदव, जदु ग्रप हुँ वागा जिम जादव ।
—सू. प्र
२ देखो 'साख' (रू. भे.)
साखिआत, साखियात—१ देखो 'साक्षात' (रू. भे.)
उ०—१ सुरनाथ व्रतासुर साखियात, प्रगटै कि सस्त्र सरव वज्र-पात । सिव त्रिपुर समर प्रगटै सवेव, देवेस कि मिथ्या वासुदेव ।
—रा. रू.
उ०—२ दधि वीणि लियौ जाइ बणतौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससत । नासा अग्रि मुताहळ निहसति, भजति कि सुक मुख भागवत ।—वेलि
२ देखो 'साक्षी' (रू. भे.)
साखित—देखो 'साखत' (रू. भे.)
उ०—प्रेम प्रीत का पागडा, लिव की करूं लगाम। हरीया साखित सूरति की, कीया कीरत मुकाम ।—अनुभववाणी
साखियोडौ-भू. का कृ.—१ साक्षी दिया हुआ, गवाह दिया हुआ. २ शिक्षा दिया हुआ, उपदेश दिया हुआ. ३ प्रमाण दिया हुआ, सबूत दिया हुआ ४ नाता या रिश्ता किया हुआ ।
(स्त्री. साखियोडी)
साखियौ—१ देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)
उ०—राती धोळी लीक, बारणां कूंट कूंटाळी । पोळ साखिया गोळ, बिजोरा जांनां जाळी ।—दसदेव
२ देखो 'साक्षी' (रू. भे.)
उ०—१ ताइ सामता मुहर आडै तण भुज बळ तियै साखियौ भाण । पाखर रवद बळाउत पर भइ, पतसाहै पुजिजै प्रमांण ।
—प्रथ्वीराज राठौड़
उ०—२ कूरमा लाज उज्जळ करूं सूर करूं व्रत साखियौ । सुजि= लाज न भूलूं आज सति, इम सेखावत आखियौ ।—रा. रू.
साखी-सं. पु. [स. शाखिन्] १ वृक्ष, पेड़ ।
(अ. मा; डिं. को; ह नां. मा.)
२ वेद ।
सं स्त्री. [स. शाक्षिन्] ३ महात्माओं द्वारा रचित भक्ति एव ज्ञान सम्बन्धी दोहे या पद ।
उ०—साखी सबदी सीख कर, गावै सारी रात । आतम तौ परच्या नहीं, करै विराणी बात ।—स्रीहरिरांमजी महाराज
वि.—१ शाखाओ सहित ।
२ शाखा से सम्बन्धित ।
३ देखो 'साक्षी' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—१ आखी मुख राजा 'अजन', साखी तिण संसार। अवतरियौ म्हारै 'अभौ', भौ भंजण अवतार ।—रा. रू.
उ०—२ बीज उजाळी कारतिक, अड़तीसै कुज वार । अचळ कथा राखी 'अजै', साखी कियौ ससार ।—रा. रू.
साखीगोपाळ-स. पु.—एक तीर्थ स्थान का नाम ।
साखीचर-स. पु. [सं. शाखिन+चर्] बन्दर, वानर ।
(अ. मा; ना. मा.)
साखीजणौ, साखीजबौ-क्रि. अ.—गाय द्वारा गर्भ धारण किया जाना।
साखीजियोड़ी-वि. स्त्री.—गर्भवती गाय ।
साखीणौ-सं. पु (स्त्री. साखीणी) सम्बन्धी, रिश्तेदार ।
उ०—सासा नोळी मैं अटकायां सासै, बाळक झोळी मैं लटकायां बासै । माथै ओडी घर साखीणां माडै, छपनै लाखीणां अपणां घर छाडै ।—ऊ. का.
मुहा.—टका देय साखीणी क्यूं लाणी=रुपये खर्च करके अपयश का भागी न बनना ।
साखीय-वि. [सं. शाखीय] शाखा का, शाखा सम्बन्धी ।
साखीव्रख, साखीव्रखी-सं. पु. [सं. शाखीवृक्ष] बटवृक्ष ।
(अ. मा; नां. मा.)
रू भे.—साखाव्रक्ख, साखाव्रख, साखाव्रख्ख ।
साखेत, साखेतौ, साखैतौ-वि.—कुलीन, श्रेष्ठ वश का ।
उ०—१ चढ़ि आया सामहा, सुहड साखेत भुजाळा। कियौ सनमुख जुहार, आप आपै अकमाळा ।—गु. रू. ब.
उ०—२ चढै रावतां राउला राव राणा, चढै सुहड साखेत जोधा जुवांणा । चढै मीरजा-मीर मौया किलक्कं, चढ़ं खांन निव्वाब खाडा खाड्क्कं ।—गु. रू. बं.
उ०—३ सात अठी पड़िया साखैता, मारु जुध जीता नामेता । लूटै गांम वित्त धन लीधा, दिस च्यारुं पासरणा दीधा ।
—रा. रू.
सं. पु.—घोड़ा, अश्व ।
साखोचार, साखोचारन, साखोच्चार, साखोच्चारन-सं. पु. [सं. शाखो-

च्चार] १ विवाह के समय वर एव वधू के वश, गोत्रादि का ऊंची आवाज में पुरोहित द्वारा दिया जाने वाला परिचय।

२ पूर्वजों के नाम ले-ले कर उन पर कलक लगाने की क्रिया। (व्यंग)

साखोट-स. पु.—एक प्रकार का वृक्ष विशेष। (अमरत)

साख्यात—देखो 'साक्षात' (रू. भे.)

उ०—१ हीरा के वचन सुण केसरी ध्याई, बगसीराम की असवारी के नजीक आई। प्रोहित नें देख्यौ साख्यात कामदेव पेख्यौ।
—बगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ साख्यात देवागनां पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गगा सरसती री अवतार बारहै आभूसण विराजमांन हुआ छै।—रा. सा. स.

साग-स. पु. [स. शाक] १ वह पौधा जिसकी पत्ती, जड डठल, फल-फूल आदि पका कर भोजन के साथ खाने के काम ली जाती हो, सब्जी, शाक। (उ. र.)

उ०—१ रसोड़ा मैं धापू एकली बेठी साग बनारती ही, उण नैं पूछ्यौ तौ जाण पड़ी, खनला कमरा मैं सूती व्हैला।
—अमरचूनडी

उ०—२ सपत दसह भोजन अत सनिगध, साग छतीसा वांन वान सघ।—सू. प्र.

२ आग पर भून या पकाकर भोजन के साथ खाने योग्य बनाई हुई बडी, पापड, दाल आदि सूखी सब्जी।

उ०—ऊपर सूं हैजी-मोगर अर प्याज पापड़ा रा साग ल्हसण रै लाल झोळ मै फलका री मोळ मेटण जीमैं है।—दसदोख

३ सागवान का पेड। (अ मा)

उ०—रिख तेडो व्रक्ष आंणो, सयल भार अढार। प्रथम पीपळ साग सीसमइ, आमली अधिकार।—रुकमणी मगळ

४ देववृक्ष। (अ. मा.)

रू. भे.—साक।

सागउटी-स. पु.—वनस्पति, पत्तो आदि से मण्डप, कुटीया आदि बनाने वाला व्यक्ति।

उ०—अथ नगर, प्रासाद प्रतोली राजकुल देवकुल त्रिक चउक चच्चर राजमारगि गांधिकापण कणहट्ट सूपकारहट्ट फोफलहट्ट ताबूलिकहट्ट माली लडूयार सोवरणिक माणिकहट्ट कमारा सागउटी चरम्मकार.........।—व. स

सागड़द—देखो 'सागिरद' (रू. भे.)

उ०—२ राजा कह्यौ—डबा कठाऊं हाथ आया। खाफरै कही—महाराज रात चोरी रा सागड़द था तिकै भेळा किया सू पग हाथ आयो। पछै अमकडी डूंगरी मैं जाय लाभा सूं लै आयो छूं।
—राजा भोज अर खाफरै चोर री बात

सागड़दपेसौ—देखो 'सागिरदपैसौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिण रै एक सौ एक भाई-भतीजा छै। तिका भेळा गढ माहै रहै। हुकमी थका चाकरी करै। त्या कनै असवारी नै घोडौ एक नै खवास एक नैं सागड़दपेसा रा आदमी च्यार कनै रहै।
—वहवाट सरवहियै री बात

उ०—२ स्रीमहाराजाजी नै स्रीराणीजी बीजी हिसा री मेहल खवासिया माणस उमराव खवास पासवान कामदार सागड़दपेसौ बणाव करै, नै इतरौ स्रीजी री तरफ सू पावै-बागौ चूनड सूधौ आवै। बणाव नु बागा दौ।—मारवाड़ री ख्यात

सागड़ी-स. पु. [स. शाकटिक, प्रा. सागडिय] १ गाडी, रथ, हल आदि को हांकने वाला, चलाने वाला व्यक्ति।

उ०—१ चतुर बेसाणओ सागड़ी, ए ग्रहस्थ नौ आचार। लीधी साथै सहेलिया, राणी चाली मज्झ बाजार।—जयवाणी

उ०—२ बडकं ओधण बधिया, पैसै पई पताळ। सोच करै नह सागड़ी, धवळ तणी दिस भाळ।—बा. दा.

उ०—३ जो घण दीहौ सागडी, हूं विरदावणहार। सींगाळी बळ सौगुणी, जाणावै जिण वार।—बा. दा.

२ कृषक के पास कृषि सम्बन्धी कार्य करने वाला नौकर।

३ पति, स्वामी। (किसान)

रू. भे.—सागडी।

सागड़ौ-सं. पु —वह हल जिसके केवल एक ही फाल हो।

सागट—देखो 'साकट' (रू. भे.)

सागडी—देखो 'सागडी' (रू. भे.) (उ. र)

सागण-वि.—१ वास्तविक, असली।

उ०—तौ बोली—काइ तौ रै बीरा, मन जाणौं यूं ई किया ई व्हैग्यौ। सोच्यौ थू रोज बीरौ गवावै पण कुण जाणैं, सागण काम पडसी जद म्हू रैस्यूं कै नी।—अमरचूनडी

२ वही।

उ०—१ औ तौ सागण उण दिन खेत मैं आयौ जिकौ इज आदमी। चौधरी रा घै छिलग्या। भवळ सी आवण लागी।
—अमरचूंनडी

उ०—२ उणरै हाथ मै बा सागण छुरी ही, जिकण सू नरपत री खून करणो चावै हौ। भाठा सू भाठौ आफळै ज्यूं टक्कर हुई अर छुरी ठेट डाडा ताई सूर रै पेट मे घुसगी।—अमरचूंनड़ी

३ पच भौतिक।

४ उपर्युक्त, ऊपरवर्णित।

५ अपरिवर्तित।

क्रि. वि.—एक ही।

उ०—बरस दोय-तीन बितीत हुवा और जाग, बेरसी लोठा हुवा। आपरै मतै घोडा चढणै लागिया। सागण वार मैं सिकार खेलै। रीझ बकसीस करै।—सूरै खीवै काधळोत री बात

सागत—देखो 'साखत' (रू. भे.)

उ०—जिकै घोडा सोनै री सागत रा। रूपे री साजां मैं मढिया छै। आवळा पेच नाखिया थका। वावळा असवार चढिया छै। चोगान मैं घोडा दोडै छै।—पना

सागमंडी-सं. स्त्री. [सं. शाक+राज. मडी] वह स्थान जहाँ पर शाक व हरी तरकारी का क्रय-विक्रय होता है।

सागर-सं. पु [सं. सागरः] १ समुद्र, सरोवर।
(अ. मा; डिं. को; ना डिं. को; ह. ना. मा)

उ०—१ गुरण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण। बेळ निजर विदुमा, असह कवि भ्रमर अकारण।—रा. रू.

उ०—२ इक कहत मोद अथाह, गिण मच्छ कच्छप ग्राह। जळ गहर सागर जोर, तिरण बीच थाह न तोर।—रा. रू.

२ झील, जलाशय। (अ. मा, डिं. को.)

३ एक प्रकार का मृग विशेष।

४ पंवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

५ दशनामी सन्यासियों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

६ अतीतकाल के तृतीय तीर्थंकर का नाम। (जैन)

७ शालि नामक ऋषि का पैतृक नाम।

८ डिंगल मे एक प्रकार का गीत (छन्द) विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे प्रथम तीन सगरण तथा फिर दो गुरु होते है।
(क. कु. बो.)

९ चार की सख्या। * (डिं. को.)

१० सात की संख्या। * (डिं. को.)

११ देखो 'सगर' (रू. भे.)

१२ देखो 'सागरी' (रू. भे.)

उ०—रैबारिया री बासरणी। कसबै माहै रनियाकुवा तीरै सोभत था कोस २ कोहर सागर छै। माळी कलाळ खेत खडै।—नैणसी

१३ देखो 'सागरोपम' (रू. भे)

उ०—१ सूसम सूसम आरउ विचारि, कोडाकोडि सागर हुइ च्यारि। त्रिणि गाऊ पणि ऊचड देह, त्रिहु पल्योपमि आउखा छेह।—वस्तिग

उ०—२ बीजउ आरउ सूसम जोइ, त्रिणि कोडाकोडि सागर होइ। अरध जोयण देह ऊचउ जाणि, बिहु पल्योपमि आउखाहाणि।
—वस्तिग

रू. भे.—सग्गर, साइर, सागरु सायर।

सागरअंबर—देखो 'सागरांबरा' (रू. भे.) (डिं.ना. मा)

सागरक-सं. पु.—सागर जनपद का एक राजा जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे भेंट सहित उपस्थित हुआ था।

सागरगांमिरण, सागरगांमिणी, सागरगांमिन, सागरगांमिनी-सं. स्त्री.—[सं सागरगामिनी] १ गंगा नदी।

२ नदी, सरिता।

सागरगा-सं. स्त्री.—१ गगा नदी।

२ नदी, सरिता।

सागरद—देखो 'सागिरद' (रू. भे.)

उ०—तठै पाटण माहै पातरा रा पाचसै घर छै। तिण माहे एक जाबवंती पात्र छै। तिण रै सागरद सहेली घणी छै। छोकरी छोकरा घणा छै। माल री धणियाणी छै। तिण रै कोटवाळ रौ बेटौ आवै। तिण री सागरद सूं रमै।—जगदेव पवार री बात

सागरदपेसौ—देखो 'सागिरदपेसौ' (रू. भे.)

सागरधज, सागरधुज, सागरध्वज-सं. पु. [सं. सागरध्वज] पाड्यनरेश का नाम जो अस्त्र विद्या मै परशुराम, भीष्मादि का शिष्य था।

वि. वि.—इसके पिता व भाई को कृष्ण ने मारा था। महाभारत युद्ध मे यह पाडव-पक्ष मे था।

सागरनीमी सागरनेमि, सागरनेमी-सं. स्त्री [सं. सागरनेमि] धरती, पृथ्वी। (अ. मा; ना मा; ह. ना. मा.)

सागरमति, सागरमती-सं. स्त्री [सं. सागरमती] एक नदी का नाम जो अजमेर की परिक्रमा करती हुई गोविंदगढ के निकट सरस्वती से संगम करती हुई मारवाड़ मे लूनी नाम से प्रख्यात होकर कच्छ की खाडी में गिरती है।

सागरमुदरा सागरमुद्रा-सं. स्त्री. यौ. [सं. सागरमुद्रा] ध्यान लगाने या आराधना के समय धारण की जाने वाली एक प्रकार की मुद्रा।

सागरमेखळा-सं. स्त्री [सं. सागरमेखला] भूमि, पृथ्वी।

सागरवासी-वि. [सं. सागरवासिन्] समुद्र मे या समुद्र के किनारे रहने वाला।

सं. पु.—१ भगवान् विष्णु।

२ जलचर।

३ वरुणदेव।

सागरांबरा-सं. स्त्री. [सं.] पृथ्वी, भूमि, धरती।

रू. भे.—सागरअंबेर।

सागरालय-सं. पु. [सं] वरुणदेव का नामान्तर।

सागरी-सं. पु. [सं. सागरः] बहुत गहरा कुआ।

उ०—१ सगर खिणायौ सागरी, पय बधायौ पाल। वित्त पायौ सरवेगडै, देवळ तणौ दुकाल।—पा. प्र.

उ०—२ सोभत था कोस २ दिखण माहै, रनीया कुवा कनै। कसबा माहै खडीजै। कोहर सागरी छै। माळी कलाळ खेत खडे।
—नैणसी

वि वि.—कहा जाता है कि राजा सगर के साठ हजार पुत्र नित्य नया कुआ खोद कर पिता के पास जल पहुंचाया करते थे। ऐसा कुआ बहुत गहरा होता था तथा पानी भी खूब होता था। इसलिए गहरे कुए को भी प्रायः इसी नाम से पुकारते है।

सागरु, सागरू—देखो 'सागर' (रू. भे.)

उ०—करुण दया तणा सागरुजी, दियौ रे छ काया नै अभयदांन।

लिपै नही ससार सूं जी, मोटा है ज्वाज्वल्य मान ।—जयवांणी

सागरोदक–स. पु. [स.] समुद्र-जल ।

सागरोपम–स. पु.—दस क्रोडाक्रोडी पल्योपम काल का प्रमाण ।

उ०—१ सातै नरगै एग आचार, वरतइ तीह पण अभिनव सारू ।
पल्योपम सागरोपम जाइ, ईण परि जीवडा दुक्ख सहाई ।
—वस्तिग

वि वि.—देखो 'पल्योपम' ।

रू. भे.—सागर ।

सागवांन–सं. पु.—एक प्रसिद्ध वृक्ष का नाम जिसकी लकडी सुन्दर व मजबूत होती है ।

वि. वि.—यह वृक्ष हिमालय पर्वत पर सतलज से आसाम तक, मध्यभारत के पूर्वी प्रान्त, पश्चिमी बगाल की पहाडियों पर व छोटा नागपुर के जगलो में पाया जाता है । इसकी लकडी का इमारती उपकरण बनाने मे अधिक प्रयोग होता है ।

सागार–सं. पु. [सं. शाकाहार] उपवास के दिन अन्न एवं नमक रहित किया जाने वाला अल्पाहार ।

सागारवयंगादोख, सागारवयंगादोस–स. पु. यौ.—जैन साधु द्वारा गृहस्थ को काम करने का वचन देकर आहार आदि भोजन सामग्री लेने पर साधु को लगने वाला दोष । (जैन)

सागारीयनिस्सीयादोख, सागारीयनिस्सीयादोस–स. पु.—जैन साधु द्वारा गृहस्थी के साहाय्य से आहार, पानी आदि प्राप्त करने पर लगने वाला दोष । (जैन)

सागारी संथारौ–स. पु.—छूट सहित संथारा, रियायती संथारा ।

उ०—जद साधु बोल्या—सागारीसंथारा कर दें । इण उपसरग सू बच्यो जद तौ बात न्यारी, नहीं तौ च्यारूं इ आहार न त्याग । इम सागारी संथारौ कराय नवकार सिखायो च्यारूं सरणा दीधा परिणांम चोखा रखाया ।—भि. द्र.

सागि—देखो 'सागै' (रू. भे.)

उ०—दिल्लीनाथ बोल्यौ, एम दोनूं साथि जावौ । पीरू मित्रसेणी फौज, सागि लेर आवौ ।—शि. व.

सागिरद–स. पु. [फा. शागिर्द] १ कोई कला या विद्या सीखने वाला शिष्य, विद्यार्थी ।

उ०—१ खाजाजी रै चोरासी सागिरद ज्यां माहै तारकीनजी गिणीजै सारा सू छोटा ।—बा. दा. ख्यात

उ०—२ ओ भेद पाय खाजेजी सुलतान तारकीन नूं कह्यो—तुम हमको ठगै सौ हमकूं आपका सागिरद न किया तौ आप हमारै सागिरद होय ।—बा. दा ख्यात

रू. भे.—सागड़द, सागरद ।

सागिरदपैसो–स. पु. [फा: शागिर्दपेशः] सेवक, टहलुआ ।

उ०—१ सिपाहियां रौ हिसाब कर, सागिरदपेसा रौ हिसाब करा, टका देय, फारगती लिखाई । पछै दीवांण बकसिया रौ हिसाब कर, टका देय उणसूं फारगती लिखाई ।—महाराजा पदमसिंघ की बात

उ०—२ दूसरै महीना माहौ राव बीसळदै महला सू बाहर आयौ । अमरावा, हजूरिया, कामदारा, सागिरदपेसै सगळा आए मुजरौ कियौ । घोडा, हाथी, हवालदारा आंण नजर गुदराया ।
—डाढाळै सूर गी बात

सागिरदी–स. स्त्री. [स. शागिर्दी] शागिर्द होने की अवस्था या भाव ।

सागी—देखो सागै' (रू. भे.)

उ०—१ झाली नु कही, 'ओ कासु विरतात ?' तद झाली डर मारी वात सागी खीवसीजी नूं कहि दीवी—जिण तरै मा कामण कराया, इण नदी मैं नाखिया, सो सरब मालम कीवी ।
—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ कुसलसिंह कही था सरीखा भाई राजपूत उणरै ही घणा छै । तिका सारा ही नू छोड सागी आपही जै मोनूं बतळायौ तिण सू मोनूं ही जै जावणौ छै ।—मारवाड रै अमरावा री वारता

उ०—३ पण जंवाई तौ पिलाण ही हेठौ नीं उतारै, सागी पगा ही पाछौ मुड़णौ चावै है । बेटी आसूड़ा ढळकावै, मानै कळापति वेख'र कुढै है ।—दसदोख

उ०—४ हुं गुणरागी हौ सागी सेवक ताहरउ, साहिब सुगुण सुपास । भेद न राखइ हौ भाखइ कवियण भावसु, 'विनयचद' सुविलास ।—वि. कु.

उ०—५ सातिनाथ सोभागी हौ लाल, सोलम जिन सागी हौ ।
विनयचंद्र रागी हौ लाल, जयौ तुं वड़भागी हौ ।—वि कु.

उ०—६ पति रा पती है वडा, सास सुसरा दिक सारा । सागी सेवा पूज, धणी वाळी ही धारा ।—नारी सईकडौ

उ०—७ चोथौ रेढौ फिरियो सौ इसौ आफरौ आय फौज सूं भिळियो सौ सागी कुंअर कन्हा गयौ । घोडौ सवारी मैं छै तिण रै तूड री दीवी सौ उलट कर सवार घोड़ै समेत गिरियौ ।
—डाढाळै सूर री बात

उ०—८ ऊंट जिका नह ढूकता, पांणी पर दिन च्यार । सागी लूआ राज मैं, तीनां बखता त्यार ।—लू

उ०—९ तम तौ भवर वास वन वन का, मैं कीड़ा मद भागी ।
तौ सू लाग भया म्है तमसा, अब सागी का सागी । -अनुभववाणी

उ०—१० रात पड्यो जद आतरौ, भूल्यो सारा दोस । पीळापण मुख रौ गयौ, सूरज सागी रोस ।—लू

सागीडौ—देखो 'सागेडौ' (रू. भे.)

उ०—१ पिडत पिडत अर साधू साधू हुवै जद सागीडा लडै झगड़ै । पण कैदी भाई जेळ मैं कदै ही नीं रडभडे ।—दसदोख

उ०—२ मनसा पूरण होगी जद तौ केणौ ही कै ? ठाकर सागीड़ा आळादोळा है, मन मायली काढसी । रिपिया कांकरै अर कूंवै दाई कर देसी ।—दसदोख

उ०—३ बेमारी मैं वैद्य, हुवौ सागीड़ी नारी । ओखद अर परहेज,

चिकित्सा कर परवारी ।—नारी सईकड़ी
(स्त्री. सागीडी)

सागुटिग्रा, सागुटिया, सागुटीग्रा–सं. स्त्री.—एक जाति विशेष ।

सागुटियौ, सागुटीग्रौ, सागुटीयौ–सं. पु.—सागुटिया जाति का व्यक्ति ।
उ०—चूनीबेचा चूडघर, ग्रागरिया गमार । सागुटीग्रा सख्या नहीं, कदीई कुण पार ।—मा. का. प्र.

सागेड़ौ, सागेड़ौ–वि. (स्त्री. सागेड़ी) १ उत्तम, श्रेष्ठ ।
२ ग्रपार, ग्रत्यधिक ।
उ०—दीवाणजी सोच्यौ कै ग्रबै खोडा वाळी बात रौ घादौ मेट ग्रजेज मन री रळी पूरा तौ ग्राज रै पोहरा रौ सागेड़ौ ग्राणंद ग्रावै । वै दूजी वेळा फेर खोडा मैं पग घाल्यौ ।—फुलवाड़ी
३ ग्रच्छा, बढ़िया, ठाटदार ।
उ०—सेठाणी बिचाळै ई बोली—वा, सागेड़ौ उच्छब मनीजग्यौ । थूकौ थारा मूंडा सूं । जंडौ फूटरौ डोळ व्हैड़ी ई बात करौ ।
—फुलवाडी
४ रोचक, मनोरजक ।
उ०—सिनोमा ? सिनोमा फेर काई व्है ? ग्रचूभा सूं चौधरण बोली । हाथ सू कुचमाद करतौ चौधरी बोल्यौ - सिनोमा तौ सागेडौ घणौ व्है है ग्रै गेली ।—रातवासौ
५ स्वादिष्ट, जायकेदार ।
ज्यू—दाळ सागेड़ी बणी है ।
६ लाभप्रद, हितकर ।
ज्यू—वेदराजजी री दवा सागेडी देवै है ।
७ मजबूत ।
उ०—घर सू सागेड़ौ नोड़ियौ काढनै चौधरी घडी दिन चढ्यां वहीर व्हियौ । ग्रणू तौ खायौ खायौ हालियौ । सिङ्या रा कड़कड़ाट करती भूख लागी ।—फुलवाडी
८ सुन्दर, ग्राकर्षक ।
९ खूब, ग्रच्छी तरह ।
उ०—१ कोई ग्राध घडी रै उपरांत नाड़ देखतौ-देखतौ वेदराज डोकरिया रा माथा मै ग्रावेस लिखतरा री जतराई । पछै हाथ मायला चिटिया सूं सागेड़ौ भाग्यौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ कारण कै चोवटियौ तौ दो-तीन वार गाम मैं बाड़ कूदतौ पकडीजग्यौ जद कानजी इण नै भाल नै सागेड़ौ बजायौ हौ ग्रर पुजारीजी महाराज ई कई वार लपेटा मैं ग्राया हा ग्रर दाता तिरणा लेय नै छूटा हा ।—ग्रमरचूंनड़ी
रू. भे.—सागीड़ौ, सागोड़ौ ।

सागेजा–स. स्त्री.—भाटी वश की एक शाखा । (बां. दा. ख्यात)

सागेजौ–सं. पु.—भाटी वंश की 'सागेजा' शाखा का व्यक्ति ।

सागेस्वर–सं. पु. [स. सागेश्वर] एक तीर्थस्थान का नाम ।

सागै–वि. (स्त्री. सागण) १ वास्तविक, ग्रसली ।
उ०—प्रेमागमन रामरस पूरण, सागै सबद सुणावै । सनमुख हुय सरधा सू सुमरण, सासौसास समावै ।—ऊ. का.
२ उत्तम, श्रेष्ठ ।
उ०—साग्रन मिळ्या मिळै सुख सागै, धुनि मैं ध्यान धरावै । कुलबै लगै गुरा की कूंची, खट ताळा खुल जावै ।—ऊ. का.
३ पूर्ववत् वही ।
४ साक्षात, हूबहू ।
५ साथ ।
उ०—१ वौ घोड़ां रै पाखती ग्रायौ तौ च्यारू सिरदार ग्रेकण सागै भाला धकै करचा । बोल्या—ग्रागै ग्रेक पावंडौ ई दियौ तौ भालां मैं पोय न्हाकांला ।—फुलवाडी
उ०—२ चादणी रै सागै चांद ठारी बरसावणी चालू कर दी । मटकियां मैं पाणी जम जातौ । पानां माथै पडी ग्रोस री कथीरियौ बण जातौ ।—फुलवाड़ी
सर्व —वही, उसी ।
क्रि. वि.—१ साथ मे, संग मे ।
उ०—१ भोगै सागै भाम, ग्रम्रत लागै ऊमरा । ग्रकबर तळ ग्राराम, पेखै जहर 'प्रतापसी' ।—दुरसौ ग्राढौ
उ०—२ वा रूस'र कमरै माय चली गई । सागै खाणौ भी कोनी खायौ । खाणौ तौ पछै छोटा ठाकुर कुंवराणी ग्रापरै सागै खायौ हौ ।—तिरसकू
२ साक्षात, वास्तव मे ।
३ मार्फत ।
उ०—म्हारै सागै ग्रौ भरोसौ भी दिरवायौ कै ग्रब लीना बैजू रै सागै सुच्छंद घूम-फिर सकै है ।—तिरसंकू
रू. भे.—सागि, सागी ।

सागौ–सं. पु.— साथ, संग ।
उ०—ग्रौ तौ थै चार सरदार कजियौ हाथ सभाळ खडा रहौ छै । तिण सूं था सामळ ऊभौ रहस्यूं नहीं तौ पण मोसूं इण खाविंद रो सागो छूटै ।—ग्रमरसिंह री बात
रू. भे.—सागौ ।

सागोन–स. पु.—शालवृक्ष या उक्त वृक्ष की लकडी जो बहुत मजबूत व सुन्दर होती है ।

सागौसाग–वि.— वास्तविक, हूबहू ।

साघणौ —देखो 'सांघणौ' (रू. भे.)
उ०—तिसै भीवैजी राम राम कहि नै कह्यौ, म्हां चाकर ऊपरै इतरी इतराजी फुरमाई, हूँ तौ निपट ऊडौ, साघणौ जमारीक भेळा रहण रौ प्यार करण मतू छूं, मोनै चाकर करौ ।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

साड़–सं. पु.—सड़ा हुग्रा पदार्थ या गन्दगी ।
उ०—रात दिन पडी-पड़ी खल्लू-खल्लू करै । थूक-थूक नै सगळौ

घर खराब कर दियौ । आ मरै तौ इण घर री साड़ निकळै।

—अमरचूंनड़ी

साड़व–स. पु. [सं. षाड़व] एक प्रकार का राग विशेष जिसमे छः स्वर लगते है।

साड़ियौ, साड़ियौ–स. पु.—१ जाट, विश्नोई, कुम्हार आदि जातियों मे विवाह के अवसर पर 'बरी' के साथ दिया जाने वाला मोटे कपड़े का लहगा जो विवाहित लड़की शादी के बाद साधारण दिनो मे पहनती है। कुवारी कन्याएँ यह परिधान नही पहनती।

(बीकानेर)

२ देखो 'साडौ' (अल्पा; रू. भे.)

साड़ी, साड़ी–सं. स्त्री. [सं. शाटिका] १ स्त्रियो के पहनने-ओढने की धोती।

उ०—१ होसी जग मैं हास, द्रोपद नागी देखता। साड़ी पहला सास, सटकै लै लै सावरा।—रामनाथ कवियौ

उ०—२ मौ मन पड़ियौ मोच, आव किया आयौ नही। साड़ी रौ नह सोच, सोच विड़द रौ सावरा।—रामनाथ कवियौ

२ स्त्रियो के ओढ़ने का वस्त्र विशेष।

३ ताकले (सलाको) के मध्य भाग मैं लपेटे हुए सूत के धागे।

(बुनकर)

४ शासकों द्वारा विवाह के समय प्रजा से लिया जाने वाला एक लगान विशेष।

(मि. साडीचवरी)

[सं. संघाटिका] ५ जैन साध्वियों के पहनने का वस्त्र विशेष, सघाटिका।

६ देखो 'साडौ' (अल्पा; रू. भे.)

साड़ौ, साड़ौ–सं. पु.—१ प्रायः जाट, कुम्हार आदि जातियों की स्त्रियो द्वारा लहगे के स्थान पर पहनने का सूती या ऊनी घाघरा विशेष।

उ०—लोई ओढण नै साड़ौ लूमाळौ, फूटर लटकतौ नाड़ौ फूंदाळौ। पावा पचडोरी पगरखिया पैरै, सूरत सिंघण सी बन जगळ बैरै।

—ऊ. का.

२ पुकार, आवाज।

अल्पा; रू. भे.—साड़ियौ, साड़ी, साडलौ।

साच, साचइ–स. पु.—सारवान या पौष्टिक वस्तु।

क्रि. वि.—१ सचमुच।

उ०—कर जोडै भाऊ कवर, नटियौ साच निराट। साहै हठ तोभी 'सतै', पांणै धरियौ पाट।—व. भा.

२ देखो 'सत्य' (रू. भे.)

उ०—१ थांरै कैणा मुजब कलम री बात तौ व्हैगी साच अर जबांन अर हाथ री बात व्हैगी भूठ। किणी दूजा रै मूडागै अैडी विलळी बात करज्यौ मती, लोग हंसैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ अला बाप मेघां घरै मोड़ बांध्यौ, अला परी कालीग सा वेढ प्रांधौ। अला लाछिवर पहिलड़ौ साच लीधौ, अला किसौ सिरै कोप कीधौ।—पी. ग्रं.

मुहा.—१. साच कहणौ सुखी रहणौ=सत्य बोलने वाला हमेशा सुखी रहता है। २. साच नै आव कोनी=सत्यभाषी को कोई डर नही होता है। ३ साच कंवै जणै मा ई माथै मे देवै=खरी एव सही कहने पर सभी नाराज होते है। ४. साच कूड़ मै चार आगळ रौ फरक है=आंखो से देखी हुई बात सत्य एवं कानों से सुनी हुई बात प्रायः झूठी हो सकती है।

साचउ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—घणी भलामण तेहनइ कही, तूं साचउ मित्र माहरउ सही।

—ढो. मा.

साचक—विवाह की एक रश्म या प्रथा जिसके अनुसार वर पक्ष द्वारा कन्या पक्ष के यहाँ मेंहदी, मेवे फल आदि भेजे जाते है।

(मुसलमान)

साचण–सं. पु.—सत्य।

साचमई–वि. स्त्री.—सत्यमयी।

उ०—जय जय राघव दैत जई, महपत मूरत साचमई। हरण अनेक विघन हरी, कमळ करं प्रतपाळ करी।—र. ज. प्र.

साचमाच–क्रि. वि.—सचमुच मे, वास्तव मे।

रू. भे.—सचमुच।

साचरी–स. स्त्री.—भैरव राग की पत्नी एक रागिनी। (संगीत)

साचलौ, साचल्लौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—तौ उण सुख सूं थारी आख्या बद क्यूं होयगी। साचल्लौ सुख जद सापरत थारी बाध्यां माय परस रौ आनद देय रयौ हौ तौ थारौ मन किण नै ढूढ रयौ हौ।—तिरसंकू

(स्त्री. साचली, साचल्ली)

साचवणौ, साचवबौ–क्रि. स.—१ मारना, पीटना, प्रहार करना।

उ०—१ जमडाढां साचवै हकालै बळा जोध, नीहसै बांणसा बाढ गाजियौ निहाव। अघायौ उमेद रोळै गाढ थंभ रहै ऊभौ, रोळै धाप हालियौ गाढै मारू राव।—हरदान भादौ

उ०—२ वह छूटै कैंवर सोक नलीसर, सीधणि संचर साचवियं। धुबि जाण धराहर सालुळि, सेहर मेन महाभर माचवियं।

—गु. रू. बं.

२ धारण करना।

उ०—१ इक नीरोगी अग, वळै गुण बुद्धि बखाणौ। वळि साचविजै विनय, अधिक गुण उद्यम आणौ।—ध व. ग्र.

उ०—२ ....इसी परि जलमारग स्थलमारग तलपद त्रिहुं स्थांनकि नाव्या व्यवसाय व्यवहारिए वचन प्रतिस्ठासिउ कीजइ, दाणीसिउ पाठि सलसूत्र साचवीइ, पाठ वणीया पाठवी आयतरा साधीइ।—व. स.

३ सुरक्षित रखना।

उ०—बाहुक वलतु वांणी वदि, गद गद कंठ दुख अति रदि। सती साचवि सील सुजात, कस्ट पडि करि सी वात।—नळाख्यान

४ करना।

उ०—सूध मन सेव गुरुदेव री साचवै, सखर समझै अरथ सूत्र सिद्धत। दियै बहुदान मन सुद्ध पालइ दया, भलौ नित सघ रौ करौ भगवत।—ध. व. ग्रं.

५ पालन करना, मानना।

उ०—१ ध्यांन जिनवर तणौ मन धरै जी, साचवै जे खट करम। ईति उपद्रव दहवटै जौ, जेम छाया घन करम।—वि. कु.

उ०—२ दिली रा भर भारथ भुजै दिग्रा। कमधज मुदै किग्रा। वेद सासत्र वताया सु अवसाण आया। उजेणि खेतधारा तीरथ धणी रौ काम खित्री रौ धरम साचवीजै।—र. वचनिका

साचवणहार, हारौ (हारी), **साचवणियौ**—वि०।

साचविग्रोड़ौ, साचवियोड़ौ, साचव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साचवीजणौ, साचवीजबौ—कर्म वा०।

साचवियोड़ौ–भू का. कृ.—१ मारा हुआ, पीटा हुआ, प्रहार किया हुआ. २ धारण किया हुआ. ३ सुरक्षित रखा हुआ. ४ किया हुआ. ५ पालन किया हुआ, माना हुआ।

(स्त्री. साचवियोड़ी)

साचांणी, साचांणी–क्रि. वि.—सचमुच मे, वास्तव में।

उ०—१ क्यू कै भागणौ आपरौ सुहावै नहीं जौ आप कहौ साचांणी कायर वणू तौ वै दिन दोय दिन म्हनै पीहर मेल दौ।

—वी. स. टी.

उ०—२ चाकरी पर जावती बखत सोढी मोटी-मोटी आंख्यां मैं आंसूडा भर'र कह्यौ हो पाछा वेगा पधारज्यौ। अर ठाकर साचांणी पनरवै दिन ईज चाकरी छोड'र घरा आयग्यौ हौ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सचाणी, सांचाणी।

साची, साची–वि. स्त्री.—१ शुद्ध, विशुद्ध।

ज्यू—साची चीज।

२ पवित्र, निष्कपट।

ज्यूं—साची सेवा।

३ पतिव्रता, निष्कलंक।

४ बढिया, श्रेष्ठ।

ज्यू—साची किताब।

रू. भे.—सच्ची।

साचूं—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—प्रसन्न करीनि मन आपणूं, सुणौ युधिस्ठिर साचूं। सुख दुख देहि साथि सरज्या छि, चित न कीजि काचूं।—नळाख्यान

साचेलौ, साचेलौ—देखो 'साचौ' (रू. भे)

उ०—१ अबूझ आदमी आपरी बै-अकली रै कारण दुख अर चिंता री बात नै ई साचेलौ सुख जाणै।—फुलवाड़ी

उ०—२ कोई बाळलियां तौ घड़ीजै भुरजाळा रै साचैला हेमरी म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—३ जलमणा मै तौ दौ बरसा री लोड़-बड़ाई, पण मरिया साथै। साचेला हित्यारा झूठ बोल नै आज दिन तांई मौज मांणै है। बेटां रै मरियां पछै नित अेक वेळा तौ म्हनै आ बात सुणाणी ई पड़ै।—फुलवाड़ी

(स्त्री. साचेली, साचेली)

साचोड़ौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—सीसड़ी मूमल रौ लूंबड़ियौ नारेळ, हाजी रे वैणी तौ मूमल री बासग नाग ज्यूं म्हारी साचोड़ी ए मूमल हालौ नी अमरांणै रै देस।—लो. गी.

(स्त्री. साचोड़ी)

साचोरा–सं पु.—१ ब्राह्मणों की एक जाति।

२ राजपूतो मे चौहान वंश की एक शाखा।

रू. भे.—साचौरा।

साचोरी–सं. स्त्री.—गायो की एक नस्ल जो राजस्थान के साचोर इलाके में होती है।

वि.—साचोर का, साचोर सम्बन्धी।

साचोरौ–सं. पु (स्त्री. साचोरी) १ साचोरा जाति का ब्राह्मण।

२ चौहानवशीय साचोरी शाखा का व्यक्ति।

रू भे—साचौरौ।

साचौ, साचौ–वि. [स. सत्य] (स्त्री. साची) १ सत्य, सच्च, यथार्थ।

२ कर्त्तव्यपरायण।

उ०—ना कीजो सैणां नरां, काचौ बीजौ कांम। राखै लाजा सत री, राजा साचौ रांम।—र. ज. प्र.

३ सत्यवादी।

उ०—साचा हरचद अबरीख गा उतरै पारा।—केसोदास गाडण

४ दृढ, पक्का, अटल।

उ०—धड सीस पग धरि खग धरै, कमधज्ज साचौ पण करै। तन पड़ै दुं हुवै खळ तठै, जळ दीध मोकल नूं जठै।—सू. प्र.

५ सही, वास्तविक।

उ०—१ सौ सबद सतगुर कह्या, सोई साची वाच। जनहरिया लीजै नहीं, कचन बदळै काच।—अनुभववांणी

उ०—२ लक्खी विणजारौ तौ वां गिळगिचियां रौ साचौ मोल जाणतौ हौ। दाळद नै पोटावण में की जोर पड्यौ नीं। जवार री सौ गूंणतियां साटै काढ्योड़ा सगळा गिळगिचिया, बच्योड़ा मतीरा अर सगळी काकड़ियां लक्खी विणजारा नै राजी-राजी संभळाय दी।—फुलवाड़ी

६ घनिष्ठ।

उ०—साचौ मित सचेत, कयौ कांम न करै किसौ। हरि अरजन रै हेत, रथ कर हाक्यौ राजिया।—किरपारांम

७ जिसमे कोई कपट या छल न हो, निष्कपट, पवित्र।

उ०—१ इण रौ तौ की लेखौ ई कोनी, पण गूजरी री प्रीत हीयै आज साचरिया पछै म्हनै ग्रेडो लखायो कै म्हे ग्रैंडी साची प्रीत आज पै'ली किणी सूं नी करी।—फुलवाडी

उ०—२ हरिया गुर का सत सबद, साचै मन सु धारि। भवसागर मैं डूबता, लेसी पार उतारि।—अनुभववाणी

८ खूब, अधिक।

ज्यूं—जे थूं नी पळ्यौ तौ साचो ठोकूला।

९ तेज, तीव्र।

ज्यूं—ठाकर री घोडी दौड़ मैं साची दौडी।

१० बढिया, श्रेष्ठ, सुन्दर।

ज्यूं—आ चीज तौ साची है।

११ पक्का, शुद्ध, खरा, असली।

उ०—कोई बाळचा तौ घडावौ साचौड़ा हेम री म्हारा लोटण करवा।—लो. गी.

१२ दृढ़, मजबूत।

ज्यूं—साचौ किलौ।

१३ कुशल, निपुण, दक्ष।

१४ सही, ठीक।

उ०—जनम न हूतौ जोधपुर, 'पातल' समर उछाह। अब साचौ कुण समझतौ, रजपूती रौ राह।—कविराजा मुरारीदांन

१५ साक्षात।

उ०—है नह कौ हिंदवांण मैं, समवण तौ समराथ। पाळग सजन 'प्रतापसी', पणधर साचौ पाथ।—मेहरदान

१६ सत्य बोलने वाला, सत्यभाषी।

रू. भे.—सचाण, सचान, सचायौ, सच्चौ, साचलौ, सांचिलौ, साचेलौ, साचोड़ौ, सांचौ, साचउ, साचलौ, साचल्लौ, साचूं, साचेलौ, साचोड़ौ।

साचौट-स स्त्री.—दक्षता, निपुणता।

उ०—तरां पछै पठांणा रै बेटा साथै तिरंदाजी सीखै। खाकदाज मांहे हाथ री साचौट सफाई सीखै, सौ कागडौ तीर सूं पाच सै पांवडां रै आंतरै आदमी जिनावर उठाय लेतौ नै पिउसंधी हजार पावडां ऊपर चोट करै, तिका जांणीजै पावडा दस सूं कीधी।

—जखडा मुखडा भाटी री बात

साचौरा—देखो 'साचोरा' (रू. भे.)

उ०—महाराज रा मनोरथ स्रीमहाराज पूरै। अखिआति ऊबरै। महाराज रा मुंहुडा आगै लड़ां। टूक टूक हुइ पडा। इतरा माहै साचौरा मछरीक।—र. वचनिका

साचौरौ—देखो 'साचोरौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साचौरी)

साच्छर, साछर—देखो 'साक्षर' (रू. भे.)

उ०—सुसील सभ्य साच्छर स्रुति प्रमांन सोहनै।—ऊ. का.

साज, साज-सं. [फा. साज] १ उपकरण, सामान।

उ०—साज लोहा रा सातरा, ताळा कर तयार। किसबी सारा काम रौ, लीजै इसौ लवार।—रमणप्रकास

ज्यूं—हळ रा साज, कुळी रा साज, लडाई रा साज, संगीत रा साज आदि।

२ वह साधन, सामग्री या उपकरण जिन्हें किसी वस्तु को पूर्णता देने के लिए उससे सम्बद्ध किये जाते है।

उ०—१ जवह(र) कै साज सूं जमदढ खग कसी। बुलगारं की उदागर चौतरफ कू बसी।—सू. प्र.

उ०—२ धणी सोनै रूपै मै जड़ी थकी, घणी बुलगार रै साज मै लपेटी थकी उण हीज ढाला रा गड़गड्रा मै बेलजै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—३ भीड ससत्र भळहळां, साज बुलगार सकाजा। आए वाहर अभंग, मसत गज महाराजा।—सू. प्र.

३ सामान, सामग्री, साधन।

उ०—१ साचा सदगुरु जे मिळे, सब साज सवारै। दादू नाव चढाय कर, लै पार उतारै।—दादूबाणी

उ०—२ गळ मुंडमाळ मसाण ग्रह, संग पिसाच समाज। पावन तूझ प्रभाव सू, संभू अपावन साज।—बा. दा.

उ०—३ लाजै पीहर सासरौ, और लाजै म्हारौ साज। गोपीचंदण तुलसी की माळा, भीख मागण रौ साज।—मीरा

उ०—४ इसा इसा अघविसवासा रा काड देख-देख'र म्हारै तौ डील रा रुंकोटा खडा हुय ज्यावै है कै—जकी मायड जात आपरै तप त्याग रै बळ-बूतै माथै फूसरै झूपड़ै मैं सुरग रा साज सजा देवै है।—दसदोख

५ हाथी की अबारी तथा घोडे व ऊट के चारजामे का सामान।

उ०—१ तदि वणं साज गयंदा तुरा वीर अबाळा ब्रीह वजि। सुरताण साह मुदफर दिसी, सूर चढे दळ पूरि सजि।—सू. प्र.

उ०—२ भळहळ साजां गज भिड़ज, मफा इका सुखपाळ। घोड़-वहळ खासा घणा, दरगह मुहर दुभाळ।—सू. प्र.

उ०—३ करि पौसाक ससत्र कसि, साजां तुरग सिगार। इम चढि चढि भड आविया, दळ बह राजदुवार।—सू. प्र.

उ०—४ इव अठै खरळ तौ तयारी करण लागा अर अठै कुवरसी घोडा रा साज सभाळ नवा कराया। घोडा सारा नुं रातब कर दीयौ, ताजा करौ। हथियार सारा सातरा करण लागा।

—कुवरसी साखला री वारता

६ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—१ जकडि छुरा खंजरा, कसै वह साज बंदूका। ढळक अली-बध ढाल, अरण मुख वणिक अचूका।—सू. प्र.

उ०—२ बुगलार भीड़ वाढौ बहसि, जमदढ खग साजां जकड़ि।

भूथाग कसै भुद मुंछ भिड़ि, पांग तांग साकळ पकड़ि ।—सू. प्र.
७ युद्ध सामग्री ।
उ०—पखरैतां ध्वज पूर, सिलह ससत्रा रिण साजा । उभै सहंस आपरा, साथि सांमत सकाजा ।—सू. प्र.
८ घोड़े की काठी, जीन ।
उ०—१ लोह डाच धरि लीण, मळै हाथळ दुसमाळां । फिरग साज भड़फियौ, पडव छोडिया अपाला ।—सू. प्र.
उ०—२ तहदार गादिया धरै ताम, जग जोतिम दाखल जूळ जाम । कळबूत रजत सोव्रन सकाज, सिकळात मुखम्मल फिरग साज ।
—सू. प्र.

९ सजावट, सजाने के उपकरण ।
उ०—१ इम निसि सुकळ बाग त्रप आए, विमळ चद्रका साज वणाए ।—सू. प्र.
उ०—२ सभै तोरण चित्र साजा, जेंत आगम महाराजा ।
—सू. प्र.

१० शृगार के उपकरण ।
उ०—आठम हुआ ज आठ दिन, पिव बिन सूना साज । आण हुवै जै पाहुंणा, नजर कळेजौ आज ।—अग्यात
११ वेशभूषा, पहनावा ।
उ०—१ लाजै मीरा पीहर सासरौ, और लाजै म्हारौ साज । गोपीचंदण तुलसी की माळा, भीख मांगण रौ साज ।—मीरां
उ०—२ तुररौस धारि औरं तुरग, हुई सेल खागां हुणं । सुभराज करूं महाराज सूं, वीर साज इण विध वणं ।—सू प्र.
१२ आभूषण, गहने । (डिं. को.)
१३ चमड़ा, चर्म ।
१४ वाद्य यन्त्र, बाजा ।
उ०—गीत, संगीत, ताळबध, म्रदग, वीणा, सारंगी, तबूरा रा साज लागि नै रहिआ छै । इण भांति री आखाड़ै रंभा पात्र निरत कारणि सोलै सिणगार किआं थकां कान रा भाभर वाजि नै रहिआ छै ।—रा. सा. स.
१५ व्यवस्था, प्रबन्ध ।
१६ आधार, अवलब ।
उ०—रावळि होय कै किन रै जाऊं, तुम हो हिवडा कौ साज । मीरा कै प्रभू और न कोई, राखो अब की लाज ।—मीरां
१७ कार्य, काम ।
उ०—पडती साझ दिवलौ संजोयौ, सहू कर राख्या छै साज । रसीलाराज जोरी जुगळ किसोर की, लिखी छै विधाता लिलाट ।
—रसीलै राज रा गीत

१८ तैयारी ।
उ०—तेड्या प्रथ्वीपति तैं घणा, आव्या साज करी आपणा । राजि राजांनी मडली, मुख जाणे उडुमाला म्यळी ।—नळाख्यान

वि.—बनाने वाला, ठीक करने वाला ।
ज्यू—घडीसाज, जिल्दसाज ।
(यौ. साजबाज)
रू. भे.—सज, संभ, सहाज, साजि, साभ ।
साजज—देखो 'सायुज्य' (रू. भे.)
उ०—हरि कौ भै उर धारि कै, भगती भजन कर सोय । सालोक साजज सारूप, सोई समीपत्य होय ।—परमानद बणियाळ
साजण—देखो 'सज्जण' (रू. भे.)
उ०—१ तेता मारू माही गुण, जेता तारा अम्भ । उज्जळ चित्ता साजणां, कहि क्यउ दाखउ सम्भ ।—ढो. मा.
उ०—२ कूंभड़िया करवळ कियउ, धरि पाछिलै वणेहि । सूती साजण सभरचा, द्रह भरिया नयणेहि ।—ढो. मा.
साजणियौ—देखो 'सज्जण' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—काळी पीळी बादळी, बरसत भीज्यौ गात । ताजणिया लागा तिका, साजणिया बिन साथ ।—अग्यात
साजणी-स. स्त्री.—१ बढई का एक औजार जिससे वह लकड़ी की समतलता देखता है ।
२ दीवार बनाते समय उसकी सीधाई तथा समानता देखने का एक उपकरण विशेष ।
रू. भे.—साधनी ।
साजणौ—देखो 'साभणौ' (रू भे.)
साजणौ, साजबौ-क्रि. स.—१ मारना, संहार करना ।
उ०—१ कीधौ तैं कोप साजियौ 'कांनो', रिड़मल नैं दीधौ तैं राज । चारणवाडा तणी चारणी, लोक मही तूं राखैं लाज ।
—बां. दा.
उ०—२ सैद मुगळ साजतां, अमी महमद वचाए । राण मंत्री कर अरज दरस वड प्राग कराए ।—सू प्र.
२ तैयार करना, संवारना ।
३ परिवर्तित करना ।
उ०—बिरछा चढ किरकांट बिराजै, स्याह सफेद लाल रंग साजै । विजनस वाव सूरियौ बाजै, घडी पलक माय मेहा गाजै ।
—वर्षा विज्ञान

४ धारण करना ।
उ०—सौ थिर राखण काज, क भूसण साजिया । जड़िया रच्छया जंत्र, मनोज मुनी दिया ।—बा. दा.
५ अस्त्र-शस्त्र धारण करना ।
उ०—१ सादूळ सीह गाजइ, कायर ना हिया भाजई । सूरा हथियार साजइ, उद्दंड वाय वाजइ ।—सभा
उ०—२ साजै सार छत्रीस सिपाई, त्यार हुया रण मंडण ताई । पाखर तुरां गयदां पाखर, भूम परा सम जाणं भाखर ।—रा. रू.
६ व्यवस्था करना, देना । (रुपये)

उ०—मोतीलालजी सगळां रै हिडक्यां रै हाथ लगाता फिरै पण रुपिया कुण साजै। सगाई सूं पैला तो नातै-गिन्नै वाळा कैता हा म्हासूं वरासी जकै मैं म्हे किसा न्यारा हां। पण मोकै ऊपर सगळै नाको काढ ग्या।—वरसगांठ

६ देना।

उ०—दुरबिध घमडी दै सणकारी साजी, भारी भमडीलै घर मै भूबाजी। चिलमी ग्रमली कै जुलमी चितचाया, दासी बेस्या रा मदवा रै दावा।—ऊ का.

७ निकालना।

उ०—ग्राधी ढळयां बछराजगिंघ मतैई जाग्यौ। पोहरा री बारी साजरा सारू। दैत री मौत ग्रर उरारा रगत सूं बिरथा ग्रोक्या नी बैठ जावै, इरा वास्तै नाहरसिंह तडकै सगळी बात बतावरा री सोची।—फुलवाडी

८ करना।

उ०—१ ग्रभग 'पदम' बोलियौ, ग्रगन पौरस ऊघाडै। साजूं जुध सहदेव, एम कुरखेत ग्रखाड़े।—सू. प्र.

उ०—२ राणी ग्रापरा ग्रंकाग्रेक कवर रै साथै न्यारी रैवरा लागी। उरारी हाजरी साजण सारू फगत ग्रेक डावडी ही।—फुलवाड़ी

मुहा०—हाजरी साजरणी=सेवा करना, कार्य करना।

९ विचार करना, विचार बनाना।

१० मारना, पीटना।

ज्यूं—जै छागलाया करै तो दो-तीनेक थप्पड़ साज दीज्यै।

११ सजा देना, दण्डित करना।

१२ प्राप्त करना।

उ०—पिलगि महारिरा पौढियो, काळो भला कहाय। जस जोबरा साजै 'जसो', मरिणमथ फौज मलहाय।—हा. झा.

१३ बदला लेना, प्रतिशोध लेना।

उ०—बेर साज निज बापरै, जबर लियो जस जीत।

—नारायणसिंह सादू

मुहा.—ग्राटो साजरणौ=बदला लेना, प्रतिशोध लेना।

१४ दम या सांस रोकने का अभ्यास रकना।

ज्यूं—दम साजरणौ=सांस को रोकने का प्रयास करना।

१५ योग साधना करना।

१६ बनाना, निकालना।

ज्यूं—म्हैं थारा घणां ग्रड़िया काम साज्या है।

१७ साधना, लगाना।

उ०—यू नित बोछरडायां पछै ग्रेक दिन वानै नवी ई कुबद सूझी। विणघट सूं पाछी वळती पिरिणयारयां रा घडां माथै ताक-ताक नै गिलोलां रा निसांरा साजता।—फुलवाड़ी

१८ तैयार करना।

उ०—तातारी दळ ग्रतुळ, साजि रमजान कुतुब सह। मुगळ साह तैमूर, ग्राइ दिल्ली जय ग्राग्रह।—व भा

क्रि. ग्र.—१९ उपस्थित होना, हाजिर होना।

उ०—भगतां री भाजी संगत साजी, बाबाजी बोलंदा है। रथ मै सूं राळी बेवरा वाळी, हाळी रथ हाकंदा है।—ऊ. का.

ज्यूं–म्हनै घणा ब्याव साजणा है।

मुहा.—मौरत साजणौ—ग्रवसर पर उपस्थित होना।

२० होना।

२१ सुसज्जित होना।

साजणहार, हारौ (हारी), साजणियौ—वि०।

साजिग्रोड़ौ, साजियोडौ, साज्योडौ—भू० का० कृ०।

साजीजणौ, साजीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सजणौ, सजबौ, सज्जणौ, सज्जबौ, सभ्रणौ, सभ्रबौ, साजवरणौ, साजवबौ, साभ्रणौ, साभ्रबौ—रू० भे०।

साजत, साजति, साजति—सं स्त्री.—१ सजावट, सज्जा।

उ०—तिसै दासी फूल लेती लेती ग्रसवार दीठौ। घोडौ रुपया हजार दो-तीन रै मोल रौ दीसै छै। पिलाण साजत ऊंची दीठी।

—जगदेव पवार री बात

२ तैयारी।

उ०—१ तुजियां जेब कीजै तई, धांनखी चिल्ला धरै। इण भांत थटां 'ग्रभमाल' रा, कुळ छतीस साजत करै।—सू. प्र.

उ०—२ कह कामेतया जी हुकम सह कारखांना होय, ग्रवर जनेतिया जी साजत कीजियौ सहकोय।—र. रू.

रू. भे.—सांजत, साजति, साजती।

साजन—देखो 'सज्जण' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ साजन साजन हूं करूं, साजन जीव जड़ीह। साजन लिखलूं चुडलै, निरखूं घडी घडीह।—ग्रग्यात

उ०—२ साजन सेरी साकडी, साम्हा मिळिया सेण। वतळायां बोल्या नहीं, नीचा करग्या नैण।—ग्रग्यात

साजनियौ—देखो 'सज्जण' (ग्रल्पा; रू. भे)

उ०—१ साजनिया थांसूं लगी या चटकीली ग्रांख। निस दिन पंथ निहारतां, रही झरोखै झाख।—ग्रग्यात

उ०—२ ग्रा नित दीसै साजना, रीस रखूं की रौक। साजनिया सालै नहीं, सालै ल्होड़ी सौक।—ग्रग्यात

साजबाज—सं. पु. यौ—१ ग्रस्त्र-शस्त्र।

उ०—१ सझै समांमा सूरवं, साजबाज सग्रांम। ग्रापो मेटै हरि भजै, हरीया भेटै राम।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ रागरंग हुवै छै, छडबडा खिलबत रा साथ सुं बैठा छै तिण समै चाचो मेर ग्रापरो साथ लै साजबाज सुं चढीया।

—राव रिणमल री बात

२ संगीत के वाद्ययंत्र।

३ सजावट की सामग्री।

४ हाथी की अबारी तथा घोडे, ऊट आदि के चारजामे के उपकरण ।

५ ठाट-बाट, वैभव ।

साजवणी—देखो 'साभणी' (रू. भे.)

साजवणौ, साजवबौ—देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)

साजवणहार, हारौ (हारी), साजवणियौ—वि० ।

साजविश्रोड़ौ, साजवियोड़ौ, साजव्योडौ—भू० का० कृ० ।

साजवीजणौ, साजवीजबौ—कर्म वा० ।

साजवियोड़ौ—देखो 'साजियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साजवियोडी)

साजस—देखो 'साजिस' (रू. भे)

उ०—१ जै खोजौ नाजर देख लेसी तौ बादसाह नूं कर देसी तौ फिसाद होयसी। बादसाहां रा माणस देखीजै छै इसी साजस कीवी ।—जलाल बूबना री बात

उ०—२ पछै पताई रावळ रै साळो सइयौ बाकलियौ तिकै रौ वडो मामलौ वडो इतबार गढ री कूंची वस तद पातसाह सूं साजस कीवी जू मनै सगळा ऊपर करौ कूंची देवौ ।

—पताइ रावळ री बात

उ०—३ बेटौ मनोहरदास रै न थौ। तरै राजलोग सूं साजस करनै, कै भाटी पण भीर करनै एक वार टीकौ लियौ। सु सीहड़ रुघनाथ भांणोत तिण वेळा हाजर न हुंतौ ।—नैणसी

उ०—४ सामधरम्मी सेव मैं, कै मेवासा प्राण । केतां साजस साह सूं, राजस राणौ राण ।—रा रू.

साजसींग-सं. पु. यौ.—बदूक चलाने के काम आने वाली सामग्री, उपकरण ।

साजा-सं. पु.—चन्द्र, चाँद । (डिं. को.)

साजांणी, सा'जांणी, साजांनी-सं. पु.—बादशाह द्वारा चलाया गया एक तोल विशेष ।

रू. भे.—साहजानी ।

साजादौ, सा'जादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूटै रण सरीत । सूरमा लड़ै चवड़ै सभाळ, वेगना धसै पडदै विचाळ ।—वि. स.

साजाबोल-सं. पु यौ.—अपने वचन का सच्चा, सत्यवादी ।

उ०—किसनसिंघ नाथावत पोकर की राड, 'राजड़' सूं आगै वगा नग्गी खाग झाड़ । चद कै गरब राखै सूर चद साखी, राजा छळ काम आया साजाबोल साखी ।—रा. रू.

साजारी-सं. स्त्री.—रहट के पानी को फैलने या छितर जाने से रोकने के लिए लकड़ी या पत्थर की आड़ ।

साजि—देखो 'साज' (रू भे)

उ०—नितु नितु नवला साढिया, नितु नितु नवला साजि । पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेडण काजि ।—ढो. मा.

साजियोडौ-भू का. कृ.—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २ तैयार किया हुआ, सवारा हुआ. ३ धारण किया हुआ. ४ अस्त्र-शस्त्र धारण किया हुआ ५ व्यवस्था किया हुआ. ६ दिया हुआ. ७ निकाला हुआ. ८ किया हुआ. ९ विचार किया हुआ, विचार बनाया हुआ. १० मारा हुआ, पीटा हुआ ११ सजा दिया हुआ, दण्डित किया हुआ. १२ प्राप्त किया हुआ. १३ बदला लिया हुआ, प्रतिशोध लिया हुआ. १४ दम या सांस रोकने का प्रयास किया हुआ. १५ योगसाधना किया हुआ. १६ बनाया हुआ, निकाला हुआ. १७ साधा हुआ, लगाया हुआ १८ तैयार किया हुआ. १९ उपस्थित हुवा हुआ, हाजर हुवा हुआ. २० हुवा हुआ. २१ सुसज्जित हुवा हुआ ।

(स्त्री साजियोडी)

साजिस-स. स्त्री. [फा साजिश] १ षड्यन्त्र, कुचक्र ।

२ विचार-विमर्श ।

३ मेल-मिलाप ।

रू. भे.—साजस, स्याजस ।

साजी, साजी-सं. स्त्री. [स सर्जिका] १ जवासे से मिलता-जुलता कुछ बडा और बिना काटो का क्षुप या पौधा विशेष ।

उ०—जिकौ थे किसा नही जाणौ हौ फोग है जिती धरती थारी है, अरु साजी बा लई है जिती धरती म्हारी है, तथा इण सोतर री धरती मैं आगै हुवा है तिणरा नांम कह्या ।—द दा.

२ एक प्रकार का क्षार विशेष जो अधिकतर पापड बनाने के काम आता है एव यह औषधि मे भी काम आता है ।

वि. वि.—इसका एक क्षुप होता है जिसकी टहनिया कोमल होती है, पत्ते छोटे-छोटे और तिकोने होते हैं। इसी क्षुप के डंठलो व पत्तो को एक खड्डे में जला कर दबा दिया जाता है इससे जो कोयले बनते हैं वह सज्जी या साजी होती है। इस सज्जी को जमीन मे बनी किसी कुडी या पात्र मे डाल कर गर्म किया जाता है। इससे सफेद रसनुमा एक तरल पदार्थ तैयार हो जाता है जिसे उक्त कुंडी या पात्र मे सूराख करके किसी दूसरे पात्र में ले लिया जाता है तदन्तर जम कर जो क्षार तैयार होता है उसे चौवा साजी कहते है। इसको पापड़ बनाने के काम मे लिया जाता है। यह साजी कपड़े धोने या साबुन बनाने के काम भी आती है ।

मतान्तर से—शालिग्राम निघंटु मे साजी तैयार करने की अन्य विधि बताई है उसके अनुसार—मालाबार प्रान्त में वृक्षों के पंचागों के टुकडे करके एक बडी खाई मे भर दिये जाते हैं और फिर उसमें आग लगादी जाती है। बाद में वह जलकर स्वत: जम जाते है और साजी या खारी तैयार हो जाती है ।

साजीखार-सं. पु. यौ. [स. सज्जीक्षार] सज्जी के पौधे से निकला सार ।

साजीश्रो, साजीयो-सं. पु.—साजी मिला कर बनाया हुआ खाद्य

पदार्थ।

उ०—........मेथीनी भाजी, फांगीनी भाजी, अडदनी भाजी, कली पापड, लागना पापड, मगना पापड, चोखानी पापडी, जारिनी पापडी, मालनी पापडी, तेहनां **साजीआं**।—व. स.

साजुज्य, साजोजमुकत, साजोजमुकति, साजोजमुक्त, साजोजमुक्ति, साजोजमुगत, साजोजमुगति—देखो 'सायुज्य' (रू. भे.)

उ०—१ तब एक अद्भुत भए तमासा, आत्म जोत हो गई अकासा। बहुरि क्रस्ण कै माहि समाई, **साजोजमुक्त** सहित तिन पाई।

—हरचद डोहोकियौ

उ०—२ **साजोजमुगतं**, इण जुगत, प्रभु मेलै पावंदा है। गण गध्रप आवै, हरि गुण गावै, वीणा ग्रदग बजंदा है।—गज-उद्धार

साजोत, साजोति, साजोती-वि. [सं. स+ज्योतिः] ज्योति सहित, देदीप्यमान।

उ०—१ मिळै छत्र छत्रा धसै भीड़ माचै, रैणा हीर मोती झड़े रूप राचै। ओपै जोति नौलाख हूता अपारा, तिकै जाण **साजोत** रै भोमि तारा।—सू. प्र.

उ०—२ छौगा पाघ जवाहर छाजै, रवि सिर किर **साजोति** विराजै।—सू. प्र.

स. पु.—१ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—अवध पनरोतडै समत पनरै इळा, बाघ चढणोत रै वेद बरनी। गेह बड भाग किनिया तणै गोतरै, कळा **साजोत** रै रूप करनी।—खेतसी बारहठ

२ परब्रह्म, ब्रह्म। (मोक्ष)

उ०—१ गौरा धू करेगो मेघाडंमरा पड रै घाव, पाट रांणी गूमरां हरेगो पेलै पार। चम्मरा ढुळतां हाडो गल्लां उबरैगो चगी, **साजोत** 'संभरां' खेती तरेगो संसार।—जसौ आढौ

उ०—२ नाराजां कै झड़ै सूर अच्छरा लगावै नेह, छेह पेलै केही सूर आभड़े न छोत। देह त्यागै केही सूर जीरणां वसत्रा दाय, सैदेह बेमाणा बैठे जावै कै **साजोत**।—बद्रीदास खिड़ियौ

३ पाच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति विशेष।

रू. भे.—सजोत।

साजोम—देखो 'सजोम' (रू. भे.)

उ०—**साजोम** कमधां सूरमा, पूछिस भोम परायणा। अणसोम गुणां कोपै 'अभो', करण माम किलवायणा।—रा. रू.

साजौ-वि. (स्त्री. साजी) १ स्वस्थ, निरोग।

उ०—१ तिया नूं मानसिंघजी कहियौ—आओ जु इण नुं जोवां। जै घावै **साजौ** हुवै तौ घाव बांधौ।—द. वि.

उ०—२ जद किणही ओखद देइ सांतरौ कीधौ। **साजौ** हुवौ जद खेत काट्यौ। सहाज देवण वाळा नै पिण पाप लागौ। ज्यूं पापी रै साता कीधा धरम कठा सूं।—भि. द्र.

२ पक्का, दृढ।

उ०—बेसण नाहि बुलावणी, नही वचन रौ **साजौ** रे। माहरी माया की राखी नही, हूं दीन दुखी कौ राजौ रे।—जयवाणी

३ अच्छा, श्रेष्ठ।

उ०—आव्यौ मास वसंत रै रसीया रौ राजा, सुख द्यै **साजा** तरु होई ताजा। जेहनै तूठां रै मौज लहीजियै रे, अधिकपण ओपत रे, मदन तणौ रै मित्र कहीजियै रे।—वि. कु.

४ अनुकूल, लाभदायक।

उ०—प्रमेसर बाधिसै पाजा, लोपसै दधि तणी लाजा। साधुआं रा दीह, **साजा** वजाडौ वाजा।—पी. ग्रं.

उ०—२ 'अजन' विराजै जोधपुर, दिन **साजै** कमधज्ज। अन राजा लाजै अकस, धू सम राजै धज्ज।—रा. रू.

५ ठीक, कुशल, अच्छा।

६ साधारण, सामान्य।

७ पूर्ण, अखण्ड, बिना टूटा हुआ।

उ०—१ ....एकी अंगि बाईं, ऊपरि गुलरेख लाई, जिसा अम्रत तणां, पुणि टलवाडइ घणा रूपोज्वल, काविलउ घाट, जिसउ ढाकइ आन, इसा **साजां** सातपुडा खाजा, वरनारि परीसइ, जइ लीला विलास तूसइ।—व. स.

८ प्रबल, शक्तिशाली।

उ०—सुतन 'भीम' 'पातल' पति साथै, भीम 'अजन' जामल भाराथै। 'राजड' 'किसन' तणौ संग राजै, साझण सबळ लियै दळ साजै।—रा रू.

९ स्वादिष्ट, जायकेदार।

साझ—देखो 'साज' (रू. भे.)

साझणौ-वि.—१ मारने वाला, सहार करने वाला।

उ०—अरि परदेसा **साझणौ**, अतरवणौ अपार। विण चांपा विण भाटिया, भुज कुण झेलै भार।—रा. रू.

२ देने वाला, प्रदान करने वाला।

रू. भे.—साजणौ, साजवणौ।

साझणौ, साझबौ—देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सारौ कुटंब सधीर, दाखै तोनूं नित 'दळा'। वळै अप्राजै वीर, सकज जवाई **साझियौ**।—गो रू.

उ०—२ ऊठै बै दळ जोध अकारा, साझ सरीर तणा ध्रम सारा। कहि गगा तन मंजन कीधा, दांन वितान मान करि दीधा।

—रा रू.

उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजान सिलांमति देवळा री पाखती धरमसाळा, दानसाळा मडीजै छै। माहै जोगेसर पवन रा **साझण**-हार त्रिकुटी रा चडावणहार धूम्र पानरा करणहार उरधबाहू ठाढेसरी दिगंबर सेतंबर निरजनी आकास मुनी।—रा. सा. सं.

उ०—४ जड़भरत अतीत समरस रा छाकिआ रांमरस प्याले रा पीअणहार दया धरम रा पाळणहार करमजाळ रा भोडणहार

तापस अस्टाग जोग रा साझणहार सांतरस माहै गलतांण होइ नै रहिया छै।—रा. सा. स.

उ०—५ मैं कब लुध दीरघता जानि, का मुझि मान वडाई ठानि। मैं कब साझै असट जोग, मैं कब नांना करत भोग।

—अनुभववाणी

उ०—६ 'करनाजळ' काकळ पेखि करा, प्रगटौ रिख प्रामिय सिंधु परा। करनौत 'अभौ' तिण वार किसौ, जवनादळ साझण काळ जिसौ।—रा. रू.

उ०—७ पति इण सत्रु (पाहुँणा) री पात फौज मैं पहसणौ करायोड़ो है पात फौज मैं सो दुभात सू भूलै नही अरथात किण विना लोहा रहण दै नही अरथात मारा नै साझ लेमी।

—वी. स. टी.

उ०—८ गहकंत इसो 'लाखो' गरूर, सीहो इज साझै महासूर। जात्रा सझि दारण जिपै जंग, आवियो नयर व नवज अभग।

—सू. प्र.

उ०—९ भेत गुणा गाथ भेव, आभडै न अहमेव। ईदसा सुरा अजेव, साझ तास सेव।—र ज. प्र.

उ—१० उरस छिबै रस वीर उछाहा, साझण काज दिलो पतिसाहा। तपत बाण कीधो हर ताणिक, वांमीबध एरसै वाणिक।

—सू प्र.

उ०—११ प्रजळै उर पतिसाह दाह औ रिस अति दाझै। मनै न हुकम अमीर साह मनसूबा साझै।—सू. प्र.

उ०—१२ हुय विदा सझै दळ हालियौ, साझण कज सुरताण रौ। जोधाण अयौ जोधाणपति, जगै भाग जोधाण रौ।—सू प्र.

उ०—१३ सु दुर्दै तिलोकसी रै साको करण री मन मैं हुती जिण सूं दुर्दै तिलोकसी गढ साझियौ।—नैणसी

साझणहार, हारौ (हारी), साझणियौ—वि०।

साझिओड़ो, साझियोड़ौ, साझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साझीजणौ, साझीजबौ—कर्म वा०।

साझियोड़ौ—देखो 'साजियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. साझियोडी)

साझी-स. पु.—हिस्सेदार, साझेदार।

रू. भे—साझि, साझी।

साझेदार-स पु—हिस्सेदार, साझी।

रू भे—साझेदार।

साझेदारी-स. स्त्री.—साझेदार होने की अवस्था या भाव, हिस्सेदारी।

रू. भे.—साझेदारी।

साझौ-स. पु.—१ हिस्सा, भाग।

२ साझे के लिए हुआ समझौता।

३ हिस्सेदारी, भागीदारी।

मुहा—१. साझौ तो बाद री ई खोटौ—साझे का व्यापार अच्छा नही होता। २ साझै री हाडी चौराए फूटै—सामुहिक उत्तरदायित्व मे कोई भी उत्तरदायी नही होता।

रू. भे.—सांझौ।

साट-स. स्त्री.—१ सूअर की चर्बी जिसे पका कर खाने के काम में लेते है।

उ०—दासी फिरै उतावळी, साटां लेवणहार। गोखा वैठी गोरड़ी, बाटै सिल वेसवार।—डाढाळा सूर री बात

२ सोने या चांदी के तारो का गूंथा हुआ स्त्री के पैर का आभूषण विशेष। (मा. म.)

उ०—बाजूबंद मूंदड़ी अगुली, नखसिख गहणौ साटां। पहर कूबडी न्हावण चाली, जब जमुना कै घाटा।—मीरा

३ चाबुक।

उ०—१ पहिली तुरक तणी ऊठवणी, रणि वाउला विछूटा। घोड़ै साट देई हीदूनी, फौज माहि जई फूटा।—का. दे प्र.

उ०—२ तेजवत नवि मानइ साट, वाहर चालइ ऊभट वाट। दल दीपता घणा असवार, पायदळ तणउ न जाणउ पार।

—का. दे. प्र.

४ छिलका, भूसी।

स. पु.—५ स्वर्ण या रौप्य की चपटी पत्ती पर बेल की खुदाई करने का एक औजार।

६ झुड, समूह।

७ खेत मे चिडियो को उडाने का रस्सा विशेष जिसे घुमा कर शब्द उत्पन्न किया जा सकता है। (शेखावाटी)

८ इस प्रकार से चिडियो को उड़ाने की क्रिया। (मि. टाट)

९ अपेक्षा, वास्ता।

उ०—निज थाट खोय फीटा निलज, साट न बूझै सार री। आट बाट भागै अकल, चाट लगै विभचार री।—ऊ. का.

१० एवज, बदला।

उ०—चटडा हाट हाट चुगलाला, साट खडग ताय सोचरिया। बहियौ नही वै न तत बहिया, अनंत कह्यौ तै ऊगरिया।

—महाराणा कुभा री गीत

१२ घोडे के कान मे बालो की बनी आकृति जो पैर मे पहनने के गहने के आकार की होती है।

उ०—.........जेहै दीठै दुरजन नै हीए ध्रासक पडइ, छांडइ घाट, घोडा तणा कानसोरा माहि साट सावरिया दीसइ, परसैन्य पइसइ, भालै ताडइ सेर पाडइं, मुहि मारइ, राउत पचारइ......।

—व. स.

१३ सम्बन्ध।

उ०—अैसी सगती साधकी, ज्यु बौपारी हाट। जनहरीया जब गाहकु, सबद मिळावै साट।—अनुभववाणी

१४ ज्ञान, व्यवहार।

उ०—माया सोदै मानवी, केता वौहरे हाट । हरीया हरि सोदै तणी, ताहि न जांणै साट ।—अनुभववांणी

१५ खेती, कृषि ।

उ०—जनहरीया हरि नाव की, वणी वणाई साट । बूठै ऊपरि कवळी, लेतां कितीयेक नाट ।—अनुभववांणी

१६ अभाव, कमी ।

उ०—गुंडा रौ नह घाट, साट नह है सूमा रौ । चोखो मेळो चलै, डार भेळौ डूमा रौ ।—अनुभववांणी

१७ बिक्री, विक्रय ।

१८ व्यापार ।

१९ देखो 'साटौ' (रू. भे.)

रू. भे.—साट ।

साटई-क्रि वि.—बदले मे, एवज में ।

साटक-स. पु.—१ एक प्रकार का छंद विशेष ।

२ पुरुषो की बहत्तर कलाओं मे से एक ।

३ भूसी, छिलका ।

४ प्राकृत मे रचा एक छोटा नाटक, रूपक । (व स.)

साटकी-स. स्त्री.—छड़ी, बेंत ।

उ०—१ देवरियौ छिनगारो तोड़ै सोवन साटकी जी राज ।

—लो. गी.

उ०—२ साथणियां साटक्यां वावे छै हूर नाव लीरावै छै । हीडै चडी जिको बोली थे कवावो छो पीण मैं हि कवावस्या साटकी मति वावो ।—पनां

साटकौ-सं. पु.—१ चाबुक ।

२ एक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ होती है आदि व अन्त मे गुरु होता है तथा प्रत्येक चरण मे १९ वर्ण होते हैं और क्रमश: ११, ७, ७, व ५ मात्रा पर यति होती है ।

३ प्रहार, चोट ।

क्रि. वि.—चलाणो, बावणो ।

साटण-स. स्त्री.—१ एक प्रकार का बढिया रेशमी वस्त्र विशेष ।

२ साटिया जाति की औरत ।

३ आक्रमण, हमला ।

उ०—तत अमरसिंघ जी कयो कै श्री सिरदार जोधपुर री उमेद ऊपर संचिया हा सू पैहली साटण मारणा गया ।—द. दा.

साटमार-सं. पु. यौ.—वे आदमी जो हाथो मे भाले लिए हुए मस्त हाथी के चारों तरफ चलते हैं ।

वि.—१ चाबुक मारने वाला ।

२ चाबुकधारी ।

साटवणौ, साटवबौ-क्रि. स.—१ विनिमय करना ।

२ खरीदना, क्रय करना ।

उ०—सहसै लाखे साटविसु, परिघळ आणा वेसि । भरि बइठा ही प्रीतमा, पट्टोळा पहिरेसि ।—ढो. मा.

साटवणहार, हारौ (हारी), साटवणियौ—वि० ।

साटविओड़ौ, साटवियोड़ौ, साटव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

साटवीजणौ, साटवीजबौ—कर्म वा० ।

साटवियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विनिमय किया हुआ. २ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ ।

(स्त्री. साटवियोडी)

साटिका-सं. स्त्री. [सं.] साडी । (डि. को.)

साटिया-स. स्त्री.—राजस्थान की अनुसूचित जाति जो बेलों का सौदा करती है ।

साटियौ-सं. पु. (स्त्री. साटण) साटिया जाति का व्यक्ति ।

साटी. साटी-सं स्त्री.—१ जमीन पर फैलने वाला क्षुप विशेष इसके चार भेद होते हैं ।

वि वि.—इसकी चार जातिया होती है, फूल लाल, सफेद आदि भिन्न-भिन्न रग के होते है । इन में श्वेत रंग के फूल वाले को विषखपरा कहते हैं और लाल रग के फूल वाले को गदहपूर्णा कहते है । यह औषधियो मे प्रयुक्त होती है ।

२ एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसका तना सफेद और पत्ते गोल एवं छोटे होते है । फूल इसके फलीनुमा होते है जो दस्ते बंद करने के लिए काम मे लिए जाते हैं ।

साटुक-स. पु.—एक प्रकार का सस्ता मोटा कपडा ।

उ०—तदै जगदेव दरबार आयो, तिको वो साटुक रो बागो पहिरणै छै, रुपीया १) री पाघ माथै छै, कानां हाथा माहै कड़ा । सु इसै सलूक सू मुजरो कियो ।—जगदेव पंवार री बात

साटै-क्रि. वि.—१ बदले में, एवज मे ।

उ०—१ इसा तो मेडतिया नही छै जै बाता साटै घोडै कना बैठ रहै ।—मारवाड रा अमरावा री बात

उ०—२ देवराज नामसाद इसड़ो जु सको जांणै मुंहडा बारै काढी छै तो करसी विण क्यू सो, सो हाथो वाता साटै दिया जाय नहीं ।

—नैणसी

२ साथ ।

उ०—सुणता ही बूबना री जीव हकारै साटै निसर गयौ । ऊभी थी सो ढह पडी । नेत्रा खवास नै बीजी सारी सखियां सहेलियां रोवणै लागी ।—जलाल बूबनां री बात

रू. भे.—सटै, साटै ।

साटौ-स पु.—१ पुनर्नवा से मिलता-जुलता एक प्रकार का क्षुप जो जमीन पर फैलता है ।

२ सुगंधित सफेद फूलों वाला पौधा जो बगीचों मे लगाया जाता है ।

३ अदला-बदली ।

उ०—पछै दूजी रामत बळै माडी तठै राजा अगरजीत बोलीयो—

तठै सीरपाव रौ साटौ कीयौ। तठै वळै कुंवरजी हारीया।

—रीसाळू री बात

४ वह वैवाहिक व्यवस्था जिसमे पुत्र के लिए वधू प्राप्त करने हेतु बदले मे वधू पक्ष वालों के पुत्र के लिए कन्या देने की व्यवस्था हो।

रू. भे.—सटौ, सट्टौ, साट।

साठ, साठ–वि. [स. षष्ठि, अप. सट्ठि] पचास व दस के योग के समान।

स पु —१ पचास व दस का योग।

२ वक्त की सूचक सख्या।

उ०—पहिरण ओढण कबळा, साठै पुरसै नीर। आपण लोक उभाखरा, गाडर छाळी खीर।—ढो मा.

३ इस प्रकार लिखी जाने वाली संख्या—६०।

रू. भे.—सठि, साटौ।

साठमौ, साठवौं–वि.—जो क्रम मे ६० वें स्थान पर आता हो या ६० वें स्थान पर हो।

साठि, साठी, साठी–सं. पु.—१ चांवलों की एक प्रकार की किस्म विशेप।

२ साठ की संख्या।

उ०—साठि वरस वावरतां पुहुचइ, धांन तणा कोठार। समीयांणी 'सातल' सपरांणउ, माहि भला भूंभार।—का. दे. प्र.

३ साठ वर्ष की आयु का व्यक्ति।

साठि'क, साठिहेक—देखो 'साठेक' (रू. भे.)

उ०—......बीदौ, भानौ, सादूळियौ, वीठलौ, दूदौ धावड, पालिहयौ थोरी बीजा ही सगडिदपेसै समेत सहि लांबां भला आदमी साठिहेक उठा खडि अर राजडवाळै आइ ऊतरिया।—द. वि.

साठीक, साठीकड़–वि.—साठ वर्ष की आयु का।

वि.—साठ पुरुष गहरा।

साठीकौ, साठीकौ–स. पु —साठ पुरुष गहरा कुआ।

उ०—१ लूआं थां लारौ लियौ, छांणी सा घर आय। सीतळता लीधी सरण, साठीकां मैं जाय।—लू

उ०—२— ......कूंटा काढिआं, भूखै मयद ज्यौं हूकार करता, मद वहना, हाथी ज्यौं जोहा खाता भाद्रवै री गाज ज्यौं आवाज करता, साठीक रै भमण ज्यू चसळका करता, भागै गाडै ज्यौं बठठाट करता,......इण भांति रा सौ ऊंठां ऊपर सौ पलांणा मडिआ छै।

—रा. सा. स.

मुहा०—साठीकौ किसौ चाख नै खोदै=किसी कार्य का परिणाम पहले मालुम थोडे ही होता है।

साठेक, साठे'क, साठेक–वि.—साठ के लगभग, करीब साठ के योग के बराबर।

रू. भे.—साठि'क, साठिहेक।

साठै, साठौ–स. पु.—१ साठवां वर्ष।

२ साठ की सख्या।

वि.—१ साठवा।

२ साठ गुना।

उ०—सबळी भरीजै तद हासल इजाफा हुवै। काठा गेहूं मण १५००० बीज बावै तिकै साठा निपजै।—नैणसी

साड–स. स्त्री.—१ शब्द, ध्वनि, आवाज।

उ०—गढ लियत गहलोत प्राणगुर, साइयै सोगत पख सह। बाया बळण अवळणा बाया, गोविंद गोविंद साड गह।

—महारांणा कुंभा रौ गीत

२ देखो 'आसाढ' (रू. भे.)

उ०—साड उतरियौ रै सावण लाग्यौ, काळी काळी घटा उमड़ आयी। रुत आयी रै पपइया, तेरै बोलण की रुत आयी।

—लो. गी.

साडलउ, साडलौ—देखो 'साडी' (मह, रू. भे.)

उ०—चीर दुरयोधन खांचिया, पांचाली सुं करीय उपाय कि। सौ अट्ठोत्तर साडला, प्रगट्या नवनव सीस पसाय कि।—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'साडौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०........माकुण मांचा भिरिया, जु भरिया गोदडां, कान मिलि भरिया, रालडा फुहडा, पग भरिउ साडलउ, घरसाला भरिउ घुटण, हाथि पाणी नही, पग पांणी नही, मलमलिन सरीर, दोठइ ओकारा आवइ, इसी फुहडी सुगामणी घरनारि कालिकालि घणी।

—व. स.

साडा—देखो 'साढी'(२) (रू. भे.)

साडी–सं. स्त्री.—१ रबि की फसल।

२ देखो 'साडी' (रू. भे.)

३ देखो 'साढी' (रू. भे.)

साडू—देखो 'साढू' (रू. भे.)

साडै—देखो 'साढी'(२) (रू. भे)

उ०—मैनेजर घणौ मोटौ मूंडौ करनै बोल्यौ—'तीन, साडै छै, अर साडै नौ बज्या रा सो साय बिना नागा करचा आवणौ पड़ैलो।

—तिरसंकू

साडौ—देखो 'साडो' (रू. भे.)

उ०—टोकणी, लोटी, थाळी, वाटली सरब वासण मगाया। सीधौ मगायौ। साडौ मगायौ। आप सनान करि साडौ पहिर रसोई वणाई। पाक तयार हूवौ आप जीमी। भद्रा नुं, छोकरी नु जीमाया।—स्यामसुंदर री बात

साढ—देखो 'आसाढ' (रू. भे.)

उ०—१ जेठ न आवै साढ न आवै सावण अलबत आई रे, सूरचा बीर बदळी ल्याइ रे।—लो. गी.

उ०—२ जेठ उतरियौ साढ उतरियौ तौ सांवण उतरियौ, मारूजी रै खेजा जावौ बदळी।—लो गी.

२ देखो 'साद' (रू. भे.)

उ०—सेखोजी उठै हीज ऊभा रह्या। साढ करनै उग्रसेन रा साथ सूं कह्यौ—म्है म्हारा धणी री मारण हारो मारियो छै।

३ देखो साढी' (२) (रू. भे.)

उ०—मोती किसिउ ग्रोपीइ, संख किसिउं धउलीइ, प्रवालां किसिउ रंगीइं, साढ सोलउं सोनउं किसिउं सोधीइ, दूधि किसी चोपडाई कीजइ, इक्षुरसि किसिउ माधुरय कीजसिइ, सुमांणस किसउ सीखवीसइ ?—व. स.

साढसती, साढसाती-सं. स्त्री.—१ शनि ग्रह की साढे सात वर्ष, साढे सात मास या साढे सात दिन की दशा विशेष जिसका फल बहुत बुरा या शुभ होता है। (फलित ज्योतिष)

वि. वि.—देखो 'पनोती'।

रू. भे.—साढासाती।

साढा-सं. स्त्री.—१ पवार राजपूतो की एक शाखा।

२ देखो 'साढी' (२) (रू. भे.)

उ०—तनु तोलता टाक कौ, गुण-मणि गणित न थाइ। साढा पन्नर वरसनी, सोल समीपि जाइ।—मा. का. प्र,

साढाचिमोतर, साढाचोतर, साढाचोमोतर, साढाचोहत्तर, साढाचोहोत्तर-देखो 'साढैचोमोत्तर' (रू. भे.)

उ०—ताहरा कागळ एक लं नै लिखियो। कागज सावटि नै माथै **साढाचोहत्तर** दे नै कागळ सांवटि दियो।

—सत री बांधी लिखमी री बात

साढाळी-सं. स्त्री.—देवी।

वि० वि०—साड़ी (लोवडी) नामक ऊन का श्याम वस्त्र ओढने के कारण इनका यह नाम पड़ गया है।

साढासाती—देखो 'साढसती' (रू. भे.)

साढी-सं. स्त्री.—१ दूध के ऊपर जमने वाली मलाई।

२ तीन और तीन से अधिक समस्त सख्यावाची शब्दों के आगे लगने वाला शब्द जिसका अर्थ आधा होता है।

रू. भे.—साडा, साडो, साडे, साढ, साढा, साढे।

साढू-सं. पु. [सं. सह+ऊढ, श्याली+ऊढा] पत्नी की बहिन का पति साली का पति।

साढै—देखो 'साढी'(२) (रू. भे.)

साढैचो'तर, साढैचोमोतर, साढैचोहतर-सं. पु.—विशेष अर्थ प्रकट करने वाले अक।

वि० वि०—**किसी गुप्त पत्र या आलेख पर लगाया जाने वाला ७४॥ का अंक जिसका अर्थ है कि यह गुप्त है। अनधिकृत व्यक्ति** द्वारा पढे जाने पर पढ़ने वाले को पाप लगेगा। ऐसी जनश्रुति है कि अल्लाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध चित्तौड़-युद्ध में इतने हिन्दू मारे गये थे कि उनकी जनेऊ का तौल ७४॥ मन हुआ। इसी आधार पर इस संख्या का विशिष्ट अर्थ हो गया जिसके अनुसार अनधिकृत व्यक्ति द्वारा पढ़े जाने पर इन ७४॥ मन जनेऊ वालों की हत्या के बराबर पाप उसे लगेगा।

रू. भे.—साढाचिमोतर, साढाचोतर, साढाचोमोतर, साढाचोहोतर।

साढौ-स. पु.—१ सत्तर पांजेसूत के धागों का समूह (एक पांजा पाच धागों का होता है), बुनकर।

२ देखो 'साड़ी' (रू. भे.)

उ०—तठै राजा साहू री बेटी पूछियौ, कही, 'थारी सपेत साढौ परणी थी, तिको मगाय।' तद औ साढौ मंगाय देखै तौ कासूं ? औ दूहौ माडियौ छै।—ठकुरै साह री बात

सात-स. पु [स. सप्त] १ पाच और दो का योग।

२ पाच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७

उ०—दोय प्रकार का काइब रूप च्यार प्रकार की बाणी। सात प्रकार का सर च्यार सूं लेकै चढावै। आठमै सरकी झपट पर वै चौरासी बध रूपकौ के सरिजणहार।—सू. प्र.

वि.—१ पांच और दो के योग के समान।

२ सत्य, सच।

उ०—धरण एक धारणा, पार परमोद अपंपर। सात बाच संजमी, बाहन करै भागलपर।—पा. प्र.

रू. भे.—सत्त।

सातकाळी-सं. स्त्री. यौ.—वे सात वर्ष जिसमें निरंतर दुर्भिक्ष रहा हो।

रू. भे.—सतकाळी।

सातकुंभ-सं. पु. यौ [सं. शात+कुंभ] स्वर्ण, सोना। (अ. मा.)

रू. भे.—सांतकुंभ, सातिकुंभ।

सातकुळ-सं. पु. यौ.—पर्वतो के सात कुल जो निम्न माने जाते है—(१) हिमालय, (२) विषध या पार्श्वनाथ, (३) विंध्याचल, (४) माल्यवांन (पूर्वीघाट), (५) परियात्रिक (अरावली), (७) गंधमादन (पश्चिमी घाट) और (७) हेमकूट (सतपुड़ा)।

सातखणो—देखो 'सतखणो' (रू. भे.)

सातणौ, सातबौ-क्रि. स.—१ स्वीकार करना, लेना।

उ०—१.........जउ मुक्ताफल तणी मोट बाधी तु चिणउठी किसिउ कीजसिइ लाधी, इद्रनीलमणि पामइ तु काच कवण सातइ, जइ अम्रतपांन पीजइ तु काजीइ किसिउं कीजइ, जउ द्राक्षाफल दीसइ तउ मह कवण नउ वीसरइ ?—व. स.

उ०—.........गौरी सण कातइ, लाछि वस्तु सातइ; नारद हेरउ करइ, नव खडि फिरइ, धनद यक्ष भंडारउं करइं, इसिउ रावण नरेस्वर।—व. स.

२ आदर करना, सत्कार करना।

सातणहार, हारो (हारी), सातणियौ—वि०।

सातिओड़ौ, सातियोड़ौ, सात्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सातीजणौ, सातीजबो—कर्म वा०।

सातरवाड़ौ—देखो 'साथरवाड़ौ' (रू. भे)

उ०—छुटभाई रा सातरवाड़ा मैं ईं ठाकर खोड़ीलायां करचा विनां नी मान्यौ।—फुलवाड़ी

सातळमेर-स. पु.—नरावत राठोडों का बनवाया हुआ पोकरण नगर का प्राचीन गढ जिसको राव मालदेव ने गिरवा दिया था।

सातळियौ-स. पु.—वह बैल जिसके सात दांत आ गये हों। (अशुभ)

सातळौ-स. पु. [स सप्तला] एक प्रकार का थूहर जिसके डालों से पीले रंग का दूध निकलता है।

सातवत-स पु.—श्रीबलराम का एक नाम। (ना. मा.)

सातवाहण, सातवाहन-स. पु. [सं. शातवाहन] शालिवाहन के राजा का एक नाम।

सातवौं—देखो 'सप्तमौ' (रू. भे)

सातसती-सं. स्त्री. यौ.—सात प्रसिद्ध सतियां—सीता, कुंती, द्रौपदी, अनुसुया, अहिल्या, तारा और मंदोदरी।

सातहजारी—देखो 'हफ्तहजारी'।

उ०—सातहजारी साम तौ, जाकौ नाम 'अजीत'। दाखौ फेर बिरादरी, सह आदरी सप्रीत।—रा. रू.

साता-सं. स्त्री.—१ परिस्थिति, स्थिति, दशा।

उ०—सम्मन साता पुरम री, रहै न एकी सार। तिल डूबै पथ्थर तिरै, अपणी अपणी वार।—सम्मन

२ आराम, सुख, आनन्द।

उ०—१ साईं तेरी सेवा सच्ची, दूजी काया मायकच्ची। साता दाता माता भ्राता, तूं हीं दूजा दभा है।—ध. व ग्र

उ०—२ जन मीरा कूं गिरधर मिळिया, दुख मेटण सुख दै री। रूम रूम साता भई उर मैं, मिटि गई फेरा फेरी।—मीरां

३ रक्षा, सुरक्षा।

उ०—रेणायर मथण मथण रेणायर, भर धर टाळण समर भर। कर जन साता जगत अभै कर, वरदाता जांनकी वर।

—र. ज. प्र.

४ दिनदशा, दिनमान।

उ०—पण म्हारौ आज दिन पळट्योडौ है। सोनै नै हाथ घाल्या लो' हुवै। मोरडी हार गिटै, म्हारी साता खोटी है जद सोनै री आस क्यूं राखूं।—दमदोख

५ भला, कल्याण।

उ०—१ खेत पाकौ इतलै धणी रै बाळौ दुखणौ आयौ। जद किण ही ओखद देइ सातरो कीधौ। साजौ हुवौ जद खेत काट्यौ। सहाज देणवाळा नैं पिण पाप लागौ। ज्यूं पापी रै साता कीधां धरम कठा सूं।—भि. द्र.

उ०—२ जस री पग तुल पग दै ललका लै जावै, हीरा मांणक सब हळका हूं जावै। धिन धिन दाता जग साता मग धाया, जननी जसधारी बारी जिण जाया।—ऊ. का.

६ कुशलक्षेम।

उ०—कुदरत री कण कण उण री साता पूछतौ जद डोकरी मुळकनै कैवती कै अबै उणरै सुख रौ कांईं पार, वा इण दुनिया मैं सब सूं सुखी है। घड़ी घडी काईं साता पूछौ।—फुलवाड़ी

७ धन, दौलत, वैभव।

उ०—लाखां लोका रौ लाखा भर लीनौ, दुरलभ वेला मै चेळा भरि दीनौ। धिन धिन दातारां साता रा धणिया, आगळ खुलियोड़ी तुलियोड़ी अणिया।—ऊ का

८ सुपारी, सिंघोड़ा, खारक आदि की पाच-पाच अथवा सात-सात की संख्या, जो विवाह के समय कन्या या वर पक्ष मे दी, ली जाती है।

सातादूतौ-वि. (स्त्री. सातादूती) चुगलखोर।

सातिक, सातिग—देखो 'सात्विक' (रू. भे.)

उ०—पाणी ल्यावै डोर करि, हाथै भात पचाय। राजस तामस रचि रह्यौ, सातिग नावै दाय।—अनुभववाणी

सातिम—देखो 'सातम' (रू. भे.)

सातियोडौ-भू. का कृ.—१ स्वीकार किया हुआ, लिया हुआ. २ आदर-सत्कार किया हुआ।

(स्त्री. सातियोडी)

सातु, सातू-सं. पु. [स. सक्तुक] १ गेहूं, चना, चावल आदि के आटे का बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

२ भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया (कजलीतीज) पर बनाया जाने वाला एक मिष्ठान्न जो चावल, गेहू, चने आदि के आटे को घी मे भून कर शक्कर मिला कर बनाया जाता है।

३ जौ, चावल, चने, आदि का भूना हुआ चूर्ण, आटा।

रू. भे.—सत्तु, सत्तू।

सातेक, सातेक—सात के लगभग।

रू. भे.—स्यातेक, स्यातेक।

सातौ, सातौं-स. पु—१ सात का अंक।

२ सात की संख्या का वर्ष।

सात्यकि, सात्यकी-स. पु.—यदुवंशी राजा सत्यक का पुत्र, जिसका दूसरा नाम युयुधान भी था। यह बडा वीर एवं पराक्रमी था। कुरुक्षेत्र मे यह पाडवो के पक्ष मे लडा था।

सात्यदूत-सं पु. [सं] देवी-देवताओं को प्रसन्न रखने के लिए किया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ विशेष।

सात्यरथि, सात्यरथी-सं. पु.—सत्यरथ राजा का पुत्र एक राजा।

सात्यवत-स. पु. [स.] सत्यवती-पुत्र वेदव्यास।

सात्यहव्य-स. पु. [स.] वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक ऋषि का नाम।

सात्यूं—देखो 'सातम' (रू. भे.)

सात्रव-सं. पु. [स. शात्रवः] १ शत्रु, दुश्मन।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ घण सात्रव दळ घेरि दुसह् आघात दबाया। —व भा.

उ०—२ सोदर इम सादूळ रौ पूरण राज बळ पूर। राज भदा-वड जिण रचै, सात्रव दळ दळि सूर।—व. भा

उ०—घण अहिरण घण घाउ, साम्हे चाचरि सात्रवां। वाहे साहै 'वीठलौ', खाडौ खाडेराउ।—र वचनिका

सात्राजित-सं. पु. [स] सात्राजित् के वंशज राजा शतानीक का नाम।

सात्राजिती-सं पु. [स.] सात्राजित्-पुत्री सत्यभामा का एक नामान्तर।

सात्रुन, सात्रुहर—देखो 'सात्रव'।

उ०—सर्क बका सात्रुहर, सूर पराक्रम सेर। 'अवरंग' साह अव-लिया, जग सह कीधौ जेर।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

सात्वक—१ देखो 'सात्विक' (रू. भे.)

२ देखो 'सात्यकि' (रू. भे.)

सात्वत-स. पु. [सं.] १ भगवान् विष्णु का एक पार्षद।

२ यादवकुलोत्पन्न एक राजा जो सत्व राजा का पुत्र था।

३ भगवान् श्रीकृष्ण का नाम।

४ बलराम, बलभद्र।

सात्वति, सात्वती-स स्त्री. [सं सात्वती] १ शिशुपाल की माता का नाम जो वसुदेव की बहन थी।

२ बलभद्र की सहोदरा सुभद्रा का नाम जो कि पाण्डव-पुत्र अर्जुन की पत्नी थी।

सात्विक, सात्विक-वि. [सं. सात्विकः] १ सतोगुणी, सत्वगुणी।

उ०—दादू राजस कर उत्पत्ति करै, सात्विक कर प्रतिपाल। तामस कर परळै करै, निर्गुण कौतिक हार।—दादूबाणी

२ सत्वगुण से सम्बन्ध रखने वाला।

३ प्राकृतिक, वास्तविक।

स पु.—१ सात्विक भावों को प्रदर्शित करने के चार प्रकार के अभिनयों मे से एक।

२ विष्णु भगवान्। ३ ब्रह्मा।

रू. भे.—सातिग, सात्वक।

सात्विकभाव-स. पु.—१ तीन लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम। (डिं. को)

२ शुद्ध एवं पवित्र भाव।

साथ-स. पु.—१ संग रहने का भाव, सगत, सहचार। (डिं. को)

उ०—तेंह्नि हूं जोती हीडूं छूं, वन वन परवत ठाम। मन स्थिर राखु, हूं छूं दुखिणी साथ तणा ठह्यो स्वामि।—नळ ख्यान

क्रि. प्र.—करणौ, राखणौ, व्हैणौ।

मुहा॰—१ साथ छूटणौ=अलग होना, जुदा होना। २ साथ देणौ=मदद करना, सहायता करना। ३ साथ सोवणौ=सभोग करना।

२ सग रहने वाला, साथी।

उ०—साथ तो छत्र्या उतरीयौ छै। कवर वीरमदे मरजीदांन खवास नै लै पना के म्हैल आयौ।—पनां

३ परिग्रह।

उ०—१ साथ झुरै 'जसवंत' सह, दुखी अनाथ दयाळ। हाथ न आवै हे हरी, कमधा नाथ क्रपाळ।—ऊ. का.

उ०—२ आइ नै रांणैजी री मुजरौ कियौ। सु ईयै भात आया सु राणा री साथ छिप गयौ नजर आवै नहीं।

—देवजी बगडावत री बता

४ सेना, फौज। (अ. मा; ह नां. मा.)

उ०—१ हाडा अखैराज समेत अल्प साथ सूं राजा भीम रै माथै प्रस्थान कियौ।—व भा.

उ०—२ राः राजसिंघ सुरजमलोत मुः नैणसी राः सबळसिंघ प्रागदासोत नु पोकरण री मदत वासतै घणा साथ सूं विदा किया। —नैणसी

उ०—३ जामरा घोडा हजार १०००० आजमखांन कनै निपट सखरौ साथ।—नैणसी

उ०—४ उठै सारंग खान नु मारियौ और ही सारग खान रौ घणौ साथ मारियौ।—नैणसी

५ समूह, झुण्ड।

उ०—१ रीधौ साथां रेणवा, जस गाथा जेहल्ल। भारांणी बाथां भरै, आथा दिए अपल्ल।—बा. दा.

उ०—२ सुचि नामि विणजारौ बौलि, चेदि रायनि देस। साथ सहू ए विणजि जासि, सुबाहु याहा नरेस।—नळाख्यान

६ सग, साथ।

उ०—१ आठ हजार फौज साथ लीन्ही भलौ चुणावौ साथ सागै लियौ।—मारवाड़ रा अमरावा री वारता

उ०—२ लूबा झड नदिया लहर, बक पंगत भर बाथ। मोरा सोर ममोळिया, सावण लायौ साथ।—बा. दा.

७ सरक्षकता, मदद।

उ०—विस रौ प्यालो राणाजी भेज्यौ, दीज्यौ मेड़तणी रै हाथ। कर चरणाम्रत पी गई, म्हारै सबळ धणी रौ साथ।—मीरा

८ घनिष्ठता, मेल-मिलाप।

९ वश, जाति।

वि.—१ सहित, पूर्वक।

उ०—१ नबाब कासिमखान, करीमखान प्रमुख आपरा मुख्य सामंत सहायक करि बडा बरूथ रै साथ जूझण रा साहसी कुमार दारा साह नू औरग, मुराद रै साम्हौ विदा कीधौ।—वं. भा.

उ०—२ भाटी समुद्रसिंह आपरी सीमा मैं बसी रा लोकां सहित मीसणा नू गोळ दिवाइ गिनायता नूं आदर रै साथ राखिया।

—वं. भा.

२ शामिल, सम्मिलित, शरीक।

उ०—मुहम्मदसाह बादसाह पठांण सांम्हो चढियो कमरुद्दीन खां

नुं लेय चढियौ जद ईस्वरीसिंह जयसिंहजी री पण साथ थौ।
—मारवाड रा ग्रमरावा री वारता

रू. भे.—सत्त, सत्थ, सत्थि, सत्थी, सत्यु, सत्थै, सथ, सथी, सथ्थ, सथ्थी।

मह;—साथौ।

साथइ-क्रि. वि.—साथ में, संग मे।

उ०—साथइ सुंदरी जोगणी, मारवणी मूं प्यार। तिण जोगी ओळखिया, ढोलउ मारू नार।—ढो. मा.

साथगत, साथगति, साथगती—देखो 'सहगमन'।

साथड़ली—देखो 'साथळ' (ग्रल्पा; रू. भे)

उ०—हा जी रे साथड़ली सपीठी पीडी पातळी, हां जी जाडेची मूमल हालै नी ए रसीलै रै देस।—लो गी.

साथण-सं. स्त्री.—१ सखी, सहेली।

उ०—१ फजरां हथणी सी दधि मथणीं फुरती, माटा घर घर मैं घणहरसी घुरती। खूनी आथणियां साथणियां खाती, फूली-फूली फिर फूद्याळी गाती।—ऊ. का.

उ०—२ ठमकै जांभर रणकार साथण देखै, म्हारा घणा हेनाळू सरदार सलगत आछी लागै सा।—लो. गी.

उ०—३ चालो ए साथणिया आपां कांमडिया नै जावा, ऐ तौ कांमड़िया चोखी म्हारी सूंडकियौ गूंथाऊ।—लो गी.

२ साथ रहने वाली, संग रहने वाली।

रू. भे.—साथणी।

साथणकिरोध, साथणक्रोध-स. स्त्री. यौ.—ग्रग्नि, ग्राग।
(ना. डि. को.)

साथणसमीर-सं. स्त्री यौ.—ग्रग्नि, ग्राग। (ना. डि को)
(मि. वायुसखा)

साथणी—देखो 'साथण' (रू. भे.)

साथरउ-देखो साथरौ' (रू. भे.)

उ०—जइ नाचिवा पइठी तउ घूघटउ काइ, जइ ग्राखि काणी तउ काजल काइ, जइ भीख तउ भूख काइ, जइ साथरउ तउ साकडउ कांइ, जइ भिखिवा पइठा तउ लाज काइ, जइ संयम लीजइ तउ विलब कांइ?—व. स.

साथरवाड़ौ-सं. पु [स. सस्तर-वत, सस्तर-वाट] १ किसी की मृत्यु के उपरात समवेदना प्रकट करने के लिए जाने का स्थान या उस स्थान पर बिछाया जाने वाला बिछौना।

उ०—१ साथरवाडो सुणै, जठै ऊठ बेगा जावै। खूब देर तक बैठ, खाती उबास्या खावै।—धनदांन लाळस

उ०—२ ताकत डोलै तीसरा, साथरवाड़ा सोद। पैला घर पटकी पड़े, माखा रै मन मोद।—ऊ. का.

२ उपर्युक्त स्थान पर समवेदना निमित्त बैठने की क्रिया या भाव।

उ०—ताहरा कुंवर स्री दळपतजी खुसी सूं वधाई लै ग्रर डेरै पधारिया। ग्रागै ग्राइ देखै तौ कुंवरजी रा परधान मदनै रै डेरै साथरवाड़ै घातियै बैठा छै।—द. वि.

३ मृत्यु के पश्चात् द्वादशी क्रिया तक मृतक के सम्बन्धियों का जमीन पर शयन करने की क्रिया।

रू भे—सत्थर, साथरवाड़ौ।

साथरि, साथरी-सं. स्त्री.—१ घास का छिछला (छोटा सा) ढेर।

२ विश्नोई सम्प्रदाय का पीठ।

वि. वि.—जाम्भोजी ने उनके साथ वाले ग्रादमियों सहित जहां कहीं ठहर कर कई दिनों तक ज्ञानोपदेश दिया, वे सभी स्थान 'साथरी' कहलाये। वैसे 'साथरी' शब्द मे साथ के ग्रादमी, स्थान विशेष व सेज तीनो का भाव निहित है।

३ देखो 'साथरौ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—१ घणौ हेत पित मात, रह्या घरि वैसि मया करि। सुखम सेभ परहरी, ग्राय सूतौ तिणि साथरि।—सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ परहरै सेभ पाटबरी, साथरि सूळ न ग्रडियै। सपजै गंग ग्रमळ सुवळ, छार नीर घर छडियै।—सुरजनदास पूनियौ

साथरौ-सं. पु. [सं. सस्तर:] १ बिस्तर, बिछौना।

उ०—१ सो मरणै रै समय पछतावै सूं ग्रासू नाखै थौ ग्रर कहै थौ कि इतरी लडाइया मैं मोंटीपणौ कियौ। कितरा घाव सहिया पण हमार तौ साथरै ऊपर बूढी रांड दाई मरूं छूं।—नी. प्र.

उ०—२ जोगायत वडो प्रळै दातार हुवौ। वडा-वडा दान दिया। पछै साथरै री मौत मुवौ।—नैणसी

२ विशेषत: कुश की बनी चटाई, तृण-शय्या।

उ०—१ 'केहर' राजा 'करण' कै, निरधन किया निहाल। सौ सोवंता साथरा तै पोढै सुखपाळ।—कुभकरण सांदू

उ०—२ सरस नीरस ग्राहार, करणौ वछ पातरै। ए सुख सेज्या छोड, सूवणौ साथरै।—जयवाणी

३ नाश, संहार, खातमा।

उ०—१ इतरौ पिउसंधी साभळि नै कह्यौ, ग्रब खबरदार हुवो, य्यौ मेरा तीर ग्रावता है। तिण तीर सू पठाण १०/२० वीध्या नै मुदी पाडियी। इसा तीर वेळा ५/७ बाह्या, पठाण सौ-दोढ रो साथरौ हुवो।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

उ०—२ कलो वीदावत काम ग्रायो। ५० रजपूता सू माडण रो साथ काम ग्रायो। मांडण घावै पडियौ। रजपूता हेठै कर लियौ इसो रजपूता री साथरौ हुवो उवै सावता ऊभा छै।—नैणसी

४ ढेर, राशि, समूह।

उ०—१ खालिकि ऊभौ खेत मा, सबळा दईत संघार। सतगुरु कीधौ साथरौ, मोटा दाणव मार।—पी. ग्र.

उ०—२ मेछाण करि घाण हुग्रा छै। चाळीस कोस रिण साथरै पजा हजार पडिया छै। करका री बाड़ि हुइ नै रही छै। विणजारा

री वाळद पड़ै तिण भांति घोडा भडा हाथीग्रा रा गरा पडीग्रा छै।—रा. सा. स.

५ घास-फूस, मूग, मोठ, गवार, जवार ग्रादि को उखेड कर या काट कर बनाया हुग्रा छोटा ढेर।

उ०—तरै पोटा मूधी मारि ढाल खडग काढि नै ऊपर पडिया निकै जाणै जवार री कड़ब बाढै ज्यूं साथरा कीना नै राजा ग्रनतराय साखला नै ढाल्या री ऊट देनै जीवतौ पकड लीधौ।

—कहवाट सरवहियै री बात

६ देखो 'सथारौ' (रू. भे.)

७ देखो 'साथरवाडौ'।

रू. भे.—सथ, सथर, संथरौ, सत्थरौ, साथर, साथरौ, साथरउ, साथरि, साथरी।

साथळ-सं. स्त्री. [सं. सक्थि] जांघ, ऊरू। (डिं. को)

उ०—ताहरा लडाई मडी। भाटी नै जोईया राठोडा सूं वाजिया। गोगादेजी घावै पड़िया। साथळां वेहु वढी। बेटौ ऊदौ पण पस-वाडै पडियौ।—नैणसी

मुहा.—साथळ उगाडियां घर री लाज जावै=ग्रपने घर की बात बाहर बताने से घर की इज्जत जाती है।

रू. भे.—सत्थ, सत्थळ, सथ्यि, सत्थी, सथ्थळ, सांथळ।

ग्रल्पा;—साथडली, साथळडी।

साथळडी—देखो 'साथळ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

साथलौ-वि. (स्त्री. साथली) साथ में रहने वाला, साथ वाला, साथी।

साथि—१ देखो 'साथी' (रू. भे.)

२ देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—१ सारंग सिळीमुख साथि सारथी, प्रोहित जांणणहार पथ। कागळ चौ ततकाळ क्रपानिधि, रथ बैठा सांभळ ग्ररथ।

—वेलि

उ०—२ कूंग्रर पयंदै 'केहरि', करि मोसू रिणताळ। 'गोइंद' हूंतौ साथि मौ, मैं वुहौ गोपाळ।—गु. रू. ब.

उ०—३ सिंधु थकी सर ग्रधिकूं ग्रतिसि मि मन साथि दीठूं। येह नूं जल काई ग्ररथि न ग्रावि, ग्रा तौ ग्रम्रत मीठूं।

—नळाख्यान

साथियौ—१ देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

उ०—१ साथियौ सुंदर विचै सोहै, मोहै सगला मन्न। संसार इम सफलौ करै, धन ग्रम्मका दे धन्न।—ध व. ग्रं.

उ०—२ ग्रास्थांनसभां काच ढालिउ, कूंकूं तणा छडा छाबडा, कस्तूरी तणा स्तबक, बावनाचदन तणी गूहली, काचा कपूर तणा साथिया, ग्रवींध्या मोती चउक पूरिया,''''''।—व. स

२ देखो 'साथी' (ग्रल्पा; रू. भे.)

साथी-सं. पु. [सं. सार्थी] (स्त्री. साथण) १ मित्र, दोस्त। (डिं. को.)

उ०—साथी सघला इ घरि जासि, माता पाहाडी जोसि। विरहि प्राण छाडसि, त्याहारि ग्रबला पासि रोसि।—नळाख्यान

२ साथ रहने वाला, संगी।

३ हमउम्र, हमजोली।

४ सहायक, मददगार।

उ०—१ कंता फिरज्यौ एकला, किसा विडांणा साथ। थारा साथी तीन जण, हियौ कटारी हाथ।—ग्रग्यात

उ०—२ रहिस निरालंब एकलौ, तज काया मझ वास। साथी तै दिन सखधर, सुरग तणौ पथ सास।—ह. र.

५ प्रेमी।

उ०—१ तुम देख्या बिन कळ न परत है, हियौ फटत मोरी छाती। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, पूरब जनम कै साथी।—मीरां

उ०—२ ग्यानी तन गोरा ठोरम-ठोरा, चादर मैं चिलकदा है। है मदवा हाथी साथण साथी, खाथी चाल चलदा है।—ऊ. का.

रू. भे.—सत्थि, सत्थी, सथी, सथ्थी, साथि।

ग्रल्पा;—साथियौ, साथीडौ।

साथीडौ—देखो 'साथी' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—१ साथीड़ा रा डेरा हरिया बाग, जंवाई रा डेरा मोतीमहल मै। साथीड़ा रै दातण बोर जवाई रै काची केळ रौ।—लो. गी.

उ०—२ जाबा दौ छिणगारी नार जाबा दौ ना ए। म्हारा साथीड़ा उभा दरबार, जाबा दौ ना ए।—लो. गी.

उ०—३ किसोक है ग्रौ सरदार? किसाक है इणरा साथीड़ा? वै च्यार घोडा माथै निडर हुया इण जगळ मैं रमता फिरता हा। जियां ग्रौ सगळौ जगळ वा रौ राज हुवै।—तिरसकू

साथीपो, साथीपौ-सं. पु.—मित्रता, दोस्ती।

साथै-सं. पु.—वह ग्रवस्था जिसमे दो या ग्रधिक जीव एक दूसरे के निकट सम्पर्क मे रहते हो। (डिं को.)

ज्यू—म्है ग्रर खेतजी एक साल ताई बोर्डिंग मै साथै रह्या।

क्रि. वि.—१ एक सम्बन्ध सूचक ग्रव्यय जो प्रायः सहचार या सग रहने का भाव या स्थिति सूचित करता है।

ज्यू—थूं खेतजो रै साथै जा।

२ प्रति, से।

ज्यू—टाबरां साथै कोगतां करणी ठीक नीं व्है।

क्रि. वि.—साथ मे, सग मे।

उ०—१ जोगौ ग्रासावत जोधपुर गढ ग्रासा साथै काम ग्रायौ।

—नैणसी

उ०—२ ग्रोरंगसाह छत्रीसै ग्रायौ, उर राव रांण लगौ ग्रसहायौ। संख्या विण लीधां दळ साथै, मारग पडै पहाडा माथै।—रा. रू.

साथौ—देखो 'साथ' (मह; रू. भे.)

साद, साद-सं. पु. [सं. शब्द] १ ग्राही-ग्राही की ग्रावाज, पुकार।

उ०—१ तपसी रौ रूप धरै ग्रतताई, ग्रडंग कुटी गइ सीत उठाई। सिथळ पुकारी साद सुणीजै, कीजै हौ हरि बाहर कीजै।—रा. रू.

उ०—२ सहियौ पलौ सुकर दुसासण, ऊपर न हुवै भीम अरि-जण। किसन प्रकार करूं बिये किण, सत द्रौपदी तणौ साद सुण।
—द्रौपदी री पुकार रौ गीत

२ शब्द।

उ०—सिधं निध अठं नव स, सच्चयं धर धरै। इको-स नाम आखतं, अनेक साद उच्चरै।—सू. प्र.

३ आवाज पुकार।

उ०—वांसै फौज आई। लड़ाई हुई। कितराएक ठाकुर कांम आया। चरड़ौ चंद्रावत कांम आयौ। सिवराज, पूनौ, ईंदौ, भाटी, विजौ। चरडै साद कियौ।——नैणसी

४ बोली, आवाज। (ह. नां. मा.)

उ०—ताहरा कांधळ एकल असवारै घोड़ै पावतां नूं वतळायौ। ताहरां जोधै कांधळ रौ साद ओळखियौ। ताहरां जोधै कांधल नूं बोलायौ। बेऊं भाई एकठा हुआ।—नैणसी

५ आवाज, ध्वनि।

उ०—१ हुइ साद नकीब सिताब हला, इम होदाय जीण वर्ण अलला। मिळ अग बगत्तर पक्खर मैं, सज सार खड़ा लख इक्क समैं।—रा. रू.

उ०—२ कई जातरा तत्र पत्राळ कूजै, गहक्कै सिवा साद सादूळ गूजै। जिका दाकलै जातरी पोढ जावै, गुसाईं रहै जागता राग गावै।—मे. म.

मुहा.—साद बैठणौ=गला बैठना, आवाज खराब होना।

६ बात, यश, कीर्ति।

उ०—घणां दिन आवसी असुरा घरै, राज मैं घणा दिन साद रहसी। वाद कीधां बिनां सयदि क्यूं करि बहै, वाद कीधां थका सयद बहसी।—कुंवर नरपाळ देवळ रौ गीत

७ आज्ञा, आदेश, हुक्म।

उ०—पुस्करि साद पडावियु, यै नलसूं करसि वात। आन्नम देसि रहिवांनि, हूं करीस तेहनु घात।—नळाख्यान

८ देखो 'स्वाद' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

९ देखो 'साध' (रू. भे.)

रू. भे.—सद, सद्दि, सद्द, साढ।

१० देखो 'स्राद्ध' (रू. भे.)

११ देखो 'साधु' (रू. भे.)

सादगी—सं. स्त्री.—सादा होने का भाव या अवस्था, सीधापन, सरलता।

उ०—१ नरेस भी दूदा रा आवण री जणाइ रणमस्त खां बुलायौ तिकण भी आइ दूदौ सादगी रै साथ न पहिचाणियौ।—व. भा.

उ०—२ इण वास्तै म्हारै कमरै मैं म्हारी बिना फानूस री नागी छात म्हनै सादगी आळी अर सोवणी लागती। उण माथै म्है छत-पंखौ भी कोनी लगवायौ हौ।—तिरसकू

सादणौ, सादबौ—क्रि. स.—१ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी लेना।

२ पुकार करना, आर्तनाद करना।

उ०—सह रांचै जन सादियां, मत बहरी कर मान। कीड़ी नग नेवर भणक, भणक सुणै भगवांन।—र. ज. प्र.

३ शब्द करना, ध्वनि करना।

४ आवाज देना, पुकारना।

५ आज्ञा देना, आदेश देना।

सादणहार, हारौ (हारी), सादणियौ—वि०।

सादिओड़ौ, सादियोड़ौ, साद्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सादीजणौ, सादीजबौ—कर्म वा०।

सादवणौ, सादवबौ—रू० भे०।

सादत—देखो 'सहादत' (रू. भे.)

साददेव—देखो 'स्राद्धदेव' (रू. भे.)

सादपख—देखो 'स्राद्धपख' (रू. भे.)

सादर—आदर सहित, सम्मानपूर्वक।

उ०—१ विधिजा सारद वीनवूं, सादर करौ पसाय। पावाडौ पनगा सिरै, जदुपति कीनौ जाय।—ना. द.

उ०—२ सादर साईंनी आदर उमगाई, उडनी परियां सी बरियां घर आई।—ऊ का.

सादळ, सादल—वि.—१ वीरहाक करने वाला।

उ०—१ घोडा हाथी ऊंट पोठिया, सवि ऊदाली लीधा। सादळ सीह मलिक बि मोटा, बदि जीवता कीधा।—का. दे. प्र.

उ०—२ सादळ सीह मलिक जै हूता, प्रांणइ बंदि करच्या जीवता। दीठउं इस्यूं अम्हार इ नेत्रि, सादी मलिक पडिउ रिणखेत्रि।
—का. दे. प्र.

२ दल सहित।

३ देखो 'सारदूळ' (रू. भे.)

सादवणौ, सादवबौ—देखो 'सादणौ, सादबौ' (रू. भे.)

उ०—समरथ विरुद लोक अहुं सांमी, पुणां भांमी समथ्थपणौ। जन सादवियां अंतरजांमी, घणनांमी आसनौ घणौ।—र. ज. प्र.

सादवणहार, हारौ (हारी), सादवणियौ—वि०।

सादविओड़ौ, सादवियोड़ौ, सादव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सादवीजणौ, सादवीजबौ—कर्म वा०।

सादवियोड़ौ—देखो 'सादियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सादवियोड़ी)

सादापण, सादापणौ—स पु.—सादगी, सरलता।

सादाळौ—स. पु. [स. स्यंदनः] रथ। (डिं. ना. मा.)

सादिन—स. पु. [फा. शादिन] १ पशु, जानवर।

उ०—धुबी चराका हा दिन धोळै, सादिन सोर मचायौ। नाद सुवाद्यन पत्ति निसा दिन, सादिन नहीं सुवायौ :—ऊ. का.

२ मृग-शावक, हिरन का बच्चा।

सादियांण, सादियांणौ, सादियांनौ-सं. पु [फा. शादियानः] मांगलिक अवसरों व आनन्द मंगल के समय बजने वाले वाद्य, बाजे।

उ०—१ बादसाह राजी हुवौ सादियांना बजवाया सताब हजूर बुलवाया जयसिंह जी जाय सलाम कीवी।

—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री बात

उ०—२ इतरै सूजै री फौज भागी। बादसाह रै सादियांना बाज्या। सूजौ तौ उण दिन रौ भागियौ फेर जाहिर नहीं हुवौ।

—महाराजा पदमसिंघ री वारता

रू. भे.—सदांनौ, सायदांणौ, सायदानौ, सुदानौ, सेंदाण, सेंदांणौ, सेंदांन, सेंदांनौ, सेंवांणी, सेंदांन, सेंदानौ, सेंदानौ।

सादियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ उत्तरदायित्व लिया हुआ, जिम्मेदारी लिया हुआ. २ पुकार किया हुआ, आर्तनाद किया हुआ. ३ शब्द किया हुआ, ध्वनि किया हुआ. ४ आवाज दिया हुआ, पुकारा हुआ. ५ आज्ञा दिया हुआ, आदेश दिया हुआ।

(स्त्री सादियोड़ी)

सादी-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की छोटी चिड़िया का नाम।

[फा. शादी] २ ब्याह, विवाह।

३ घोड़ा, अश्व।

४ शिकार करने वाला व्यक्ति, शिकारी।

५ सवारी करने वाला व्यक्ति, सवार। (डिं को)

६ देखो 'सादौ' (पु.) (रू. भे)

उ०—पछै तळाव रै बांह नै उठै बस्ती कीवी। उठै सादी सी आपरै रहण नूं हवेली वणाई।—नैणसी

सादीत-सं. पु —विकसित।

उ०—अति सुंदर कवळ मांडिया ऊपर, सोभा अति पांमइ सादीत चदवदनी मुख दिसइ चाहतां, ऊगा किरि बारह आदीत।

—महादेव पारवती री वेलि

सादुळ, सादुळउ, सादूर, सादूळ, सादूळउ, सादूळौ—देखो 'सारदूळ' (रू. भे.) (डिं. को; ना. डिं. को; ह. नां मा.)

उ०—१ गाज हतै ऊखेड़ गज, माफ़ल वन तरमूळ। जागै नह थह मैं जितै, सफ्र हाथळ सादूळ।—बां दा.

उ०—२ सादूळउ एक अनेक सिंहली, घूमर कियइ फेरतउ घस। बंधां हुँता ऊबडे बगतर, हाक समाती उडियइ हंस।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ सादूळौ आपा समौ, बियौ न कोय गिणंत। हाक बिडांणी किम सहै, घण गाजियै मरंत।—हा. झा.

उ०—४ सघण गाज जिम सुणे, गाज मदमसत गयंदां। सादूळौ सिर पटकि, मरै संगार मयंदां।—सू. प्र.

सादौ-वि. [फा सादः] (स्त्री. सादी) १ जिसमें एक ही प्रकार के तत्व हों।

२ जिसमे किसी प्रकार का घुमाव या उलझन न हो, सरल, सीधा।

३ जिस पर किसी प्रकार के बेल-बूंटे, सजावट आदि का काम किया हुआ न हो, किसी प्रकार के अंकन रहित।

४ छल-कपट से रहित, सीधा, सरल, भला।

५ मूर्ख, बेवकूफ।

६ निर्मल, बेदाग।

७ बिना मिलावट का, मिश्रण रहित।

८ समझने में सरल, आसान।

९ सफेद, श्वेत।

१० जिसकी बनावट मे कोई विशेष कौशल न हो।

११ जिसमें कोई विशेषता न हो।

१२ तड़क-भड़क रहित।

सं. पु.—१ एक प्रकार का हाथी विशेष।

२ कागज, कपड़ा आदि, जिस पर बेल-बूंटे, सजावट आदि न हो।

सादौ सरोपाव-सं. पु.—एक प्रकार का सरोपाव (पुरस्कार)।

वि. वि.—इस सरोपाव के प्रथम दर्जे में साधारण समय पर १४० रुपये और विवाह आदि के समय पर २४० रुपये दिये जाते थे। परन्तु दूसरे दर्जे में १०० रुपये और तीसरे दर्जे में ७१ रुपये दिये जाते थे।

साद्यस्क-सं. पु [सं] एक ही दिन पूर्ण हो जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ विशेष।

साध-सं. स्त्री. [सं. श्रद्धा] १ इच्छा, अभिलाषा।

उ०—१ मेली तदि साध सुरमण कोक मनि, रमण कोक मनि साध रही। फूलै छडी वास प्रफूलै, ग्रहणै सीतळना इ ग्रही।

—वेलि

उ०—२ धनजी-भीमजी पाछा हवेली पूगा तौ ठा' पड़ी कै भावी तौ भरीजगी गजब व्हैग्या। ठकरांणी नें कीकर मूंडौ बतावांला? उण री अमरचूनड़ी वाळी साध नें कीकर पूरी करांला?

—अमरचूंनड़ी

मुहा.—साध पुरणौ; साध पुराणौ=गर्भाधान से सातवें महीने में गर्भिणी स्त्री की 'दोहद सम्बन्धित' इच्छाओं की पूर्ति करना।

२ देखो 'साधु' (रू. भे) (अ. मा.)

उ०—१ तेत्रीसइ वलि वादी भट्ट, सातसइ आचारिज गह गट्ट। इग्यारह सइ दिगंबर साध, एकवीस सेतंबर बाध।—स. कु.

उ०—२ साध सुमारग ना लिया, फस्या जगत कै मांहि। जन हरीया उन जीवका, करम न का जाहि।—अनुभववांणी

उ०—३ रांम रांम रसना रटै, सोई जुग मैं साध। हरीया सिवरन सहज का, वाका मता अगाध।—अनुभववाणी

उ०—४ धन सबरी रौ धरम, प्रभु महाराज पधारै। बाळि बाण सावहे, साध सुग्रीव सुधारै।—पी. ग्रं.

३ देखो 'साद' (रू. भे.)
४ देखो 'साद्ध' (रू. भे.)
रू. भे.—साध्र।

साधक–स. पु —१ साधना करने वाला योगी, तपस्वी।
उ०—१ सिध साधक राखै सबर, सबर तजै मतमद। सबर काज सुधरै सहु, साई सबर पसद।—बा दा.
उ०—२ देवी काळिका मा नमौ भद्रकाळी, देवी दुरगा लाघवं चारिताळी। देवी दानवा काळ सुरपाळ देवी, देवी साधकं चारणं सिध सेवी।—देवि.
२ भूत, प्रेत आदि को वश मे करने वाला व्यक्ति।
३ पाच प्रकार के पित्तों में से एक।
४ सहयोगी व्यक्ति।
उ०—आयउ राजांन सिंहासण ऊतर, सिध साधक तेडिया सिध। पारंभ कीध कुंवरि परणावण, वेहू बाधी भली विधि।
—महादेव पारवती री वेलि
५ हिरण्याक्ष से हुए देवासुर युद्ध मे वायु के द्वारा मारा गया एक राक्षस।
रू. भे.—साधिक।

साधका–स. स्त्री.—दुर्गा देवी का एक नाम।

साधणौ, साधबौ–क्रि. स.—१ ठीक एवं निश्चित समय पर कार्य को पूर्ण करना, पूरा करना।
उ०—१ नीराजन मुख विधि नियम, साधि लगन पळ साच। 'कन्ह' कवरी लाल सुकनी, आपी 'खेतल' आच।—वं. भा.
उ०—२ जेठां सब मंडप रचियो थो तहा बर बठै लगन साधियौ।
—पचदंडी री वारता
मुहा.—१ मो'रत साधणौ=ठीक व सुनिश्चित समय पर कार्य करना २ अवसांण साधणौ=अवसर का लाभ उठाना।
२ करना।
उ०—१ उण ही दिन पाछौ गागरोणि जाइ देह री नित्यचरचा साधै तिकण नै सुणता ही मीणा अोद्राव धरै —व. भा.
उ०—२ तीरथराज राजबेता तत, सुख निज राज करै धरिया सत। सिध मुनिराव सेव इम साधै, इम रितराज समै आराधै।
—सू. प्र.
उ०—३ सीसु सिखंडी तणऊं तांमु छेदीउ छलु साधीउ। पाप पराभव नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ।—सालिभद्र सूरि
उ०—४ प्रिय विण चंगि नारग, रंग न आवइं आजु। द्विव मइं हत्या साधवी, माधवी वेलि न काजु।—जयसेखर सूरि
३ सहज व स्वाभाविक रूप से कार्य को करने के लिए अभ्यास करना।
ज्यूं—दम साधणौ।
४ किसी कार्य मे सिद्ध व पारंगत होने के लिए विशेष परिश्रम व प्रयत्न करना।
उ०—मोसूं कोई मोह मत करौ। मैं जोग मत्र साधियां। मोसूं इसड़ौ भाव राखियौ। इतरौ कहि फेर सौ जोगी पास गयौ। जाय गुरु सूं नमस्कार कर अग्नि-प्रवेस कियौ। विद्या साधी अरु जक्षिणी रौ अराधन कियौ।—बैताळ पच्चीसी
मुहा.—देखत सीखत साधै जोग, छीजत काया बढत रोग=बिना सोचे विचारे किसी की नकल करने पर दुःख व कष्ट होता है।
५ किसी वस्तु को ठीक व संतुलित रूप से अपने स्थान पर रह कर पूरा कार्य करने योग्य बनाने हेतु उपयुक्त स्थिति में लाना।
उ०—'चेंबर माय छै कारतूस घाल दिया है। अौ देखौ 'लॉक' अठै है, अठीनैं घुमातां ई 'रिलीज' हुवै है।' म्है बंदूक कांधै माथै साध'र देखी।—तिरसकू
६ निशाना लगाना, संधान करना।
उ०—१ 'निसाणौ तौ साधणौ आवै है?' 'जी, हां।' 'कठै सीख्यौ?' 'रायफल क्लब मैं इमरजेंसी कोरस कियौ है।'
—तिरसंकू
उ०—२ बा ईज बोली—निसांनौ साधणैं री इसौ मोकौ सब नैं कोनी मिळै पवन! रांम धनुस इण वास्तै तोड़ सक्यौ, क्यूं कै सीता सांमी खड़ी उण रै मन माय उमंग भर रयी ही।
—तिरसंकू
उ०—३ जळै आप रै रोस अैसा जुअन्नं, त्रिणा मात्र जाणैं घणी कांमि तन्नं। सबद्दा जिकै वेध धानंख साधी, बळट्ठी हणैं बंगड़ी बाळ बांधी।—र. वचनिका
७ मारना, वध करना।
उ०—सुत बगसी साधियौ, आप सुत सुणै डरायौ। मण हजार सोर मैं, जाणि सुरमुक्ख जगायौ।—सू. प्र.
८ उपासना करना, साधना करना।
९ भरना, मारना। (छलाग)
उ०—ठोडी आळी ठौड मैं, गोडी सांमी पाळ। अब किण विध पाछौ फिरै, किण विध साधै छाळ।—लू
१० शिक्षित करना, सीखाना।
उ०—इसड़ी कहाइ दूजै ही दिन कुमार दुरजणसाल आखेट रा रमणाहूँ परभारो ही घोडा रा चाकरां नूं बरजाइ दोड़ा रा साधिया घोडां रा पचास ही छड़ा असवार साथ लेर पिता रै पगै लागण नूं दिल्ली री फोज रै समीप आयौ।—व. भा.
११ सीखना, अभ्यास करना।
उ०—उरां धारि बदूक मोती उतारै, सरां मारि जाता खगा गैण सारै। बळी तोमरां दावकै चाव बाधै, समग्रा गुणा खग्ग रा मग्ग साधै। व. भा.
१२ पूर्ण करना पूरा करना।
उ०—भाईय वयणिहिं राधावेधु, नखर साधइं सवि भला ए।

कुणिहि न साधीउ पडु आएसि, अरजुनु ऊठइ नरनरीउ ए।
—सालिभद्र सूरि

१३ व्यवस्थित करना, सुधारना।

उ०—थै तकरार करो छौ पिण कैदी पातसाह वा कैदी स्याहजादा रो दसतूर छै। हूँ सोबौ साधूं नै सरहद बांधू। तिणरी दोढी पर तकरार न खटावै। अठै तौ केई तरै का जूवाब सा'ल आवै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

क्रि. अ.—१४ विशेष परिश्रम व प्रयत्न से किसी कार्य मे सिद्धहस्त होना, पारगत होना।

१५ निभना, निभाव होना।

उ०—किम कटै पाप दुख सुख किया, साधै ज्यूं हिज सधायलूं। इण भंवर हूंत अब दे अलख, विधवापणूं बधायलूं।—ऊ. का.

१६ निकलना, भाग जाना।

उ०—१ साधीउ पच्छेबाणु, भीमि पुरोहितु लाखहरँ, मेल्हीउ दीधु पीयाणु केडइ आवी पुणु मिलए।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ करसण सेहो स्याळ बिल, गिर त्रिय बामण गाय। सम-रागण मंह साधणा, चाहै चित्त चलाय।—बा. दा.

साधणहार, हारौ (हारी), साधणियौ—वि०।

साधिग्रोड़ौ, साधियोड़ौ, साध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साधीजणौ, साधीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

संधणौ, संधबौ, सांधणौ, सांधबौ—रू० भे०।

साधदेव—देखो 'स्राद्धदेव' (रू. भे.) (अ. मा; ना मा, ह ना. मा.)

साधन—सं. पु. [स.] १ किसी कार्य को पूरा करने की क्रिया।

२ कार्य को पूरा करने का माध्यम, सहायक उपकरण।

उ०—आभोग ऊरध, मग जगत मूरध, साधन समग्र अखिलेस अग्र। सिव सक्ति सीम, अनुभव असीम, सिद्धात सार, निन निराकार।—ऊ का.

३ किसी वस्तु को तैयार करने मे प्रयुक्त होने वाला सामान, सामग्री।

४ किसी कार्य को सम्पादित करने मे प्रयुक्त होने वाला, सामान, सामग्री।

ज्यूं—हवन तौ करावो पण साधन है कै नी।

५ क्षति, त्रुटि, दोष आदि दूर करने वाली बात, उपचार।

६ कोई तत्व या वस्तु जिसकी सहायता से कार्य पूरा होता है।

७ जिसकी सहायता से युद्ध हो।

८ सेना, फौज। (ह. ना. मा.)

९ उपाय, तरकीब।

१० उपासना, साधना।

११ मदद, सहायता।

१२ धन-दौलत।

१३ संधान।

वि.—धनाढ्य, मालदार।

उ०—झाड उन्हाल री झाड ह्वै झाखरा, जल तजै पालि पाताल जावै। साधन बैठा पियै मालिए सरबता, निधन नइ पिण नीर हाथ नावै।—ध. व. ग्र.

रू. भे.—साहण।

साधना—सं. स्त्री. [स] १ किसी कार्य को सम्पन्न करने की क्रिया।

२ आराधना या उपासना।

साधनी—देखो 'साजणी' (रू भे.)

साधबाद—देखो 'साधुवाद' (रू. भे.)

साधवी—स. स्त्री. [सं. साध्वी] १ भली तथा शुद्ध आचरण वाली स्त्री।

उ०—ऋद्धघणूं, माता माहारी बाल साधवी नारी। बेहूनू जीवन तौ हूँ छू, मूकावौ मोरारी।—नळाख्यान

२ पतिव्रता, पतिपरायण स्त्री।

उ०—सती स्याम सेती सुरग जै, उतम गुण अमरा सजै। जुग जुग जगत साधवी वजै, सपनै ना पर नर भजै।—नारी सईकड़ौ

३ साधु स्त्री, आर्या।

उ०—१ प्रीतम पुत्र, तिन रिध तजी जी, मुझ नै किसौ घरवास। दीक्षा लै व्रत आदरू जी, हू जासूं साधवियां कै पास।—जयवाणी

उ०—२ साहू इकलख वदौ भवियां, त्रिण लख वीस सहस साधवियां।—ध. व. ग्र

रू. भे.—साध्वी, साहुणि, साहुणी।

साधस-स. पु. [सं साध्वस] भय, डर। (ह. नां. मा.)

साधार-वि.—१ रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—अंग धार आरख ऊजळा, करतार चित चढती कळा। विसतार जस चहूवैवळा, साधार सेवग सांवळा।—र. ज. प्र.

उ०—२ तरा कितराहेक तौ विचार सोच कीधौ। अर म्होकमसिंघ सुणनै पहरिया बैठौ थौ सौ सरपाव अर घोडौ घणौ धन खबरदार नू दीधौ सौ औ तौ म्होकमसिंघ उधारा आटा रौ लेणहार। सरणै आया रौ साधार।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ पनाह व आश्रय देने वाला।

उ०—सरणायां साधार, 'दला' जिसौ न दूसरौ। वीरम रा अणपार, जबर गुना जिण जारियां।—वी. मा.

३ आधार, सहारा।

उ०—१ अलख तूं हीज आदेस, अमर नर-नाग उपावण। सत जती साधार, चार ही खांणि चलावण।—ह. र.

उ०—२ वणक सहोदर परत्रिया, वणक राय साधार। चौपग चिंतामण वणक, वेढभ क्यावर वार।—बां. दा.

४ भरण-पोषण करने वाला, पालन-पोषणकर्त्ता।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति तीसरै हुकम दूत अरज कीधी जु राजान राजेस रौ तपतेज परमेसर परब्रम, अजनम, निरजण, निराकार, ससार सिरोमणि, ससार साधार, ईस्वरा

अवतार ।—रा. सा. सं.

५ सहायक, मददगार ।

उ०—मिलियौ दुखिया साधार रे, जौ आय चढ़ै घर बार उतरे । सफल गिणु अवतार रे, थायै मन माहि करार रे ।—वि. कु.

६ करने वाला, देने वाला ।

उ०—जै अंतरजामी वार नमामी, स्वामी जय साधार । जोड़ी चिरंजीव पतनी पीयं, सुज सस दीवं सार ।—र. ज. प्र.

रू. भे.—सधार ।

साधारण–वि. [स.] १ जिसमें कोई विशेषता न हो, सामान्य ।

२ जो सर्वसाधारण के समझने योग्य हो, सरल, सहज ।

३ रक्षक, आश्रयदाता ।

उ०—१ धर अंबर ढक्कियण, वेद ब्रह्मा विसतारण । त्रिभुवन तारण तरण, सरण असरण साधारण ।—ह. र.

उ०—२ राज भभीखण लाज राखण, सरणागत साधारण । धनख सायक भुजा धारण, मह असुर खळ मारण ।—र. ज. प्र.

४ रुद्रवीसी का चौथा वर्ष । (ज्योतिष)

साधारणगांधार–स. पु.—वज्रिका नामक श्रुति से आरम्भ होने वाला एक प्रकार का विकृत स्वर ।

साधारणत, साधारणतया–क्रि. वि. [सं. साधारणत., साधारणतया] सामान्य रूप से, साधारण तौर पर, सामान्यत: ।

साधारणता–स. स्त्री.—साधारण होने का भाव या अवस्था ।

साधारणधरम–स. पु. यौ. [स. साधारणधर्म] १ वह धर्म जो एक ही प्रकार के सब पदार्थों मे पाया जाय ।

२ सार्वजनिक धर्म ।

साधारणी–सं. स्त्री. [स] एक अप्सरा ।

साधारणौ, साधारबौ–क्रि. स [सं. साऽऽधारम्, साऽऽधारीकरणम्]

१ बचाना, रक्षा करना ।

२ आश्रय देना, शरण देना ।

३ सहायता करना, मदद करना ।

४ भरण-पोषण या पालन-पोषण करना ।

साधारणहार, हारौ (हारी), साधारणियौ –वि० ।

साधारिओड़ौ, साधारियोड़ौ, साधारयोड़ौ - भू० का० कृ० ।

साधारीजणौ, साधारीजबौ —कर्म वा० ।

साधारियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बचाया हुआ, रक्षा किया हुआ. २ शरण दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ ३ सहायता दिया हुआ, मदद किया हुआ. ४ भरण-पोषण या पालन-पोषण किया हुआ । (स्त्री साधारियोड़ी)

साधि—देखो 'साध्य' (रू. भे.)

उ०—येहनि मरण जरा नि व्याधि, एकै सुख नहीं ता साधि । करम तणै वसिथी जै भमि, तै मानव मूरख निगमि ।

—नळाख्यांन

साधिक—देखो 'साधक' (रू. भे.)

उ०—तिण समै कोई कहै छै । रजपूती रा साधिक नै इस्ट रा अराधिक ठाकुरै पहली कही थकी तौ और सी लागै ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

साधिका–स. स्त्री. [स.] दुर्गादेवी का एक नाम ।

साधित–वि [सं. साधित] १ सिद्ध किया हुआ ।

२ तैयार किया हुआ ।

३ प्राप्त किया हुआ ।

४ धुला हुआ । (डिं. को.)

साधियोड़ौ–भू का. कृ.—१ ठीक एवं निश्चित समय पर कार्य को पूर्ण किया हुआ, पूरा किया हुआ. २ किया हुआ. ३ सहज एव स्वाभाविक रूप से कार्य करने के लिए अभ्यास किया हुआ. ४ किसी कार्य में सिद्ध व पारंगत होने के लिए विशेष परिश्रम किया हुआ, प्रयत्न किया हुआ. ५ किसी वस्तु को ठीक व संतुलित रूप से अपने स्थान पर रह कर पूरा कार्य करने योग्य बनाने हेतु उपयुक्त स्थिति मे लाया हुआ. ६ निशाना लगाया हुआ, संधान किया हुआ. ७ मारा हुआ, वध किया हुआ ८ उपासना किया हुआ. साधना किया हुआ. ९ भरा हुआ, मारा हुआ (छलांग). १० शिक्षित किया हुआ, सीखाया हुआ. ११ सीखा हुआ, अभ्यास किया हुआ. १२ पूर्ण किया हुआ, पूरा किया हुआ. १३ विशेष परिश्रम व प्रयत्न से किसी कार्य मे सिद्धहस्त हुवा हुआ. १४ निभा· हुआ, निभाव हुवा हुआ. १५ निकला हुआ, भागा हुआ. १६ व्यवस्थित किया हुआ, सुधारा हुआ ।

(स्त्री. साधियोड़ी)

साधु–स. पु [स] १ श्रेष्ठ कुल का व्यक्ति, कुलीन व्यक्ति ।

२ सज्जन व्यक्ति ।

३ संत, महात्मा ।

उ०—हरीया हरि दरगाह, जांह साधु जन संचरै । और न जाणै राह, पाव विहूंणौ चालिबौ ।—अनुभववांणी

४ धार्मिक, परोपकारी या सद्गुणी पुरुष ।

५ वह जो सासारिक प्रपच छोड कर विरक्त हो गया हो, वैरागी ।

६ व्यापारी, वणिक ।

७ एक वैश्य का नाम जिसका वर्णन 'सत्यनारायण-व्रत कथा' में मिलता हे ।

८ जैन यति, साधु ।

९ भक्त ।

उ०—साधुआं सुधारै सही पापियां विसारै परा, सभारै चीतारै तिका तारै सिरताज । जवनां उधारै मारै जुध मान हारै जद, पसारै समद माथै परवारै पाज ।—पी. ग्र.

१० जिसकी साधना पूरी हो गयी हो ।

वि —१ सुंदर, मनोहर । (ह. नां. मा.)

२ श्रेष्ठ कुल का, कुलीन ।
३ सज्जन ।
रू. भे.—साद, साध, साधुव, साधू, साधौ ।
अल्पा;—साधुड़ौ ।

साधुड़ौ—देखो 'साधु' (अल्पा; रू. भे.)

साधुता-सं. स्त्री.—१ साधु होने का भाव ।
२ भलमानसता, सज्जनता ।
३ साधुओं का या साधुओं जैसा आचरण ।

साधुधरम-सं. पु यौ. [सं. साधु+धर्म] साधुओं का धर्म, यति धर्म (जैन)

साधुमति साधुमती-सं स्त्री.—तांत्रिकों की एक देवी ।

साधुव देखो 'साधु' (रू भे.)
उ०—हळधर बंधव गोकुळ बाळ, खिमावत साधुव दुस्ट खंगाळ । तवै जे नाम अहोनिस तुझ, जरांतक काळ न व्यापै जम्म ।
—ह. र.

साधुवाद-सं. पु. [सं. साधुवादः] १ उत्तम कार्य करने पर किसी की 'साधु साधु' कहते हुए प्रशंसा करने की क्रिया, धन्यवाद ।
२ उक्त रूप में की हुई प्रशंसा या बात ।
३ यश, प्रशंसा । (अ. मा)
रू. भे.—साधवाद ।

साधू, साधौ—देखो 'साधु' (रू. भे.)
उ०—जग अप्प वादू कौन साधू, मिट मरजादू काढ ए जन कह्यौ आदू राम साधू; इच्छा तादू छाड ए ।—करुणासागर

साध्य-सं पु. [सं.] १ एक प्रकार के गण देवता जिनकी संख्या बारह है—मन, मंता, प्राण, नर, अपान्, वीर्यवान, विनिर्भय, नय, दंस, नारायण, वृष और प्रभुंच ।
वि. वि.—पुराणानुसार ये दक्ष प्रजापति की पुत्री साध्या व धर्म के संसर्ग से उत्पन्न हुए थे ।
२ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों मे से एक । (ज्योतिष)
३ एक सद्गुण जिसमें तीन नेत्रों वाले ८४ करोड़ रुद्रोपासक समाविष्ट थे ।
४ गुरु से लिए जाने वाले चार प्रकार के मंत्रों मे से एक । (तंत्र)
५ देवता ।
६ चाक्षुक मनु के पुत्रों में से एक ।
वि.—१ सिद्ध करने योग्य ।
२ जिसकी चिकित्सा की जा सके ।
३ सहज, सरल ।
रू. भे.—साधि ।

साध्यता-सं. स्त्री. [सं.] साध्य होने की अवस्था या भाव ।

साध्या-सं स्त्री [सं.] दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म को ब्याही गई थी ।

साध्र—देखो 'साध' (रू. भे.)
उ०—मेली तदि साध सुमरण कोक मनि, रमण कोक मनि साध्र रही । फूलै छडी वास प्रफुलै, ग्रहणै सीतळता इ ग्रही ।—वेलि

साध्वी—देखो 'साधवी' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—१ कांमी कूड़ प्रपंच घणाकर, भूड़ करै तन भेर । ऊ साध्वी दिस धूड़ उडायर, फूड बतावैं फेर ।—ऊ. का.
उ०—२ मुगधा मध्यांनै मोडा मिळ जावै, पढ पढ प्रारथनां प्रोढा पिल जावै । हीयागम आगम उलटा पण होवै, साध्वी दुख देखे कुलटा सुख सोवै ।—ऊ. का.

सानंद-वि.—आनन्दपूर्वक, आनन्द सहित ।
उ०—परा केतकी केवडा वात पावै, अनेका जाण दूर सौरभ आवै । लसै वृंद सानंद कुंदं गुलाबं, निरक्खै हुवै इंद्रवाड़ी निराब ।
—रा. रू.

साप-सं. पु. [सं. सर्प प्रा. सप्प] (स्त्री. सापण, सापणी) एक प्रसिद्ध रेंगने वाला विषैला जन्तु, नाग, सर्प ।
उ०—१ साप नां नाथि आयौ घरै छोकरा, दही री दांण लै नंद रा डीकरा । तै हीज कस राऊ रा दईत सहि त्रोड़िया, छाछि रै काजि छीका घणा छोडिया ।—पी. ग्र.
उ०—२ कव्या घण सज्जळ छज्जळ कान, सिरगिर कज्जळ कूट समांन । ससूदित साप समाकृत सुंड, दतूसळ मूसळ रूप दुरड ।
—मे. म.

पर्याय.—अहि, आसीविख, उरग, कचुकी, काकोदर, काळ, काळिंदर, कुंडळी, कुंभीनस, क्रतकाळ, गरळस, गूढपग, गूढपद, चक्री, चखस्रवा, चील, जिह्मग, जैहरी, दंदसूख, दरवीकर, दीरघपिस्ट, धंधींगर, नसदरवी, नाग, पनंग, पवनासण, पवनासनी, प्रदाक, फकारौ, फणी, भमंग, भुजंग, भुजीस, भोगी, लेलहान, वक्रगति, विखधर, विखहर, विलेसय, विलेसरी, विसधर, व्याळ, सगेखप, सारंग ।

मुहा.—१ छाती माथै साप फिरणौ=सदमा बैठना, अत्यधिक दुख होना. २ बंबी में बडतां तौ साप ही सीधौ व्है=समय आने पर धूर्त व कपटी को भी सरल व सीधा होना पड़ता है. ३ भोळायोडी तौ साप ई नीं खावै=जिम्मेदारी का पालन करने के लिए त्याग करना पड़ता है. ४ मरचौ साप गळा मे घाल्या फिरणौ=किसी बात को व्यर्थ में पकड़े रहना. ५ साप अंगूठा वाळौ मेळ व्हैणौ, साप आंगळी आळौ मेळ व्हैणौ=संयोगवश होना. ६ साप ई मर जाय अर लाठी ई नी भागै=बिना हानि या नुकसान के कार्य सफल होना. ७ साप कद बिल खोदै=बलवान लोग गरीब व निर्बल का माल हड़पते हैं. ८ साप खायौ नै पुरवाई चाली=कठिन कार्य मे और कठिनाइयां आना. ९ साप खाया नै अदीतवार कद आवै=उचित समय पर किसी चीज का न मिलना. १० साप गया लीक कूटणी=परम्परावादी होना,

रूढ़ीवादी होना. ११ साप छछूंदर री गत व्हैणी=दुविधा में पड़ना. १२ साप नै दूध पावणौ=दुष्ट व शत्रु का पालन करना. १३ साप रा पग पेट मे व्है=बुरे व्यक्ति की बुराइयां गुप्त होती है. १४ साप रा मूंडा मैं पडणौ=खतरे मे पडना. १५ साप री चाल चालणी=कपटपूर्ण व्यवहार करना १६ साप रौ काई छोटौ ग्रर कांई बडौ=दुश्मन चाहे छोटा या दुर्बल हो उसकी कभी उपेक्षा नही करनी चाहिये. १७ साप रौ खायोड़ौ बिछ्या सूं कांई डरै=बड़ी बड़ी मुसीबतों का सामना किया हुआ व्यक्ति छोटी मुसीबतों से नहीं डरता. १८ साप सळोव्या तौ केई देख्या पण इजगर तौ ग्रबै इज देख्या=कई साधारण दुष्टों से सामना होने के बाद किसी भयंकर दुष्ट से सामना होना. १९ साप सूं रमणौ=खतरनाक व्यक्ति से सम्पर्क करना, ग्रत्यन्त खतरे का कार्य करना. २० सापा रै किसी सेंद ग्रर ठगां किसी मितराई=दुष्ट ग्रपनी दुष्टता नही छोड़ता वह तो हर किसी के साथ दुष्टता ही करता है. २१ सापा रा ब्याव में जीभां रा लपळका=प्रभावग्रस्त से कुछ प्राप्त करने की उम्मीद करना. २२ सापा रै किसा साख=दुष्ट व्यक्ति रिश्ते का लिहाज नही करते।

वि.—१ काला, श्याम। * (डिं. को.)

२ क्रूर। * (डिं. को.)

३ देखो 'सराप' (रू. भे.)

रू. भे.—सप, सांप।

ग्रल्पा;—सपळोटियौ।

सापग्रसत सापग्रस्त—वि. [सं. शापग्रस्त] १ शाप से पीडित या जिसे शाप दिया गया हो।

[सं. सर्पग्रस्त] २ सांप का काटा हुग्रा, सर्पदंस।

सापचेत देखो 'सावचेत' (रू. भे.)

उ०—सिधराज नै कह्यौ, उठ बैठा हुवौ नै भैरू' सूं दाकळ कीधी। पर-घर पेसण चोरटा, सापचेत हुइ, हूं जगदेव ग्रायौ। तिसै भैरू' नै जगदेव बथोबथ हुवा।—जगदेव पंवार री बात

सापण, सापणी, सापिण, सापिणी—स. स्त्री.—१ ग्राग, ग्रग्नि।

२ नागिन, सर्पिनी।

३ बरछी, भाला। (ना. डिं. को.)

४ देखो 'नागण' (४, ५)

रू. भे.—सांपण, सापणी।

सापणौ, सापबौ—क्रि. स.—शाप देना, बददुग्रा देना।

उ०—सिवि सकर ना सापियौ, दीयौ ब्रह्म नां दान। नांम तुहारौ नारीयण, भुजग दीयौ भगवान।—पी ग्र.

सापणहार, हारौ (हारी), सापणियौ—वि०।

सापिग्रोड़ौ, सापियोड़ौ, साप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सापीजणौ, सापीजबौ—कर्म वा०।

सापतेयक—स. पु. [स. स्वापतेयक] धन-दौलत। (ह. नां. मा.)

सापतौ—देखो 'साबतौ' (रू. भे.)

उ०—जणां च्यार तौ हमीर ग्रापरै माथै सापता पाड़ीया, पांचवौ इकै बाहदर हमीर नुं बाही। वडौ बाहदर रै हाथ री, तिकौ सामत रै हाथ री लागी, तिकौ हमीर रौ माथौ वढीयौ।

—ग्ररजन हमीर भीमोत री बात

साप री छतरी, साप री ढाल—स. स्त्री. यौ.—प्रायः वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का जंगली पौधा, जिसमें केवल डंठल होता है तथा डंठल के ऊपर छतरी सी होती है।

साप री मासी—सं स्त्री. यौ.—एक प्रकार का जन्तु विशेष।

सापियोड़ौ—भू. का. कृ.—शाप दिया हुग्रा, बददुग्रा दिया हुग्रा।

(स्त्री. सापियोड़ी)

सापुरख, सापुरस—सं. पु. [सं. सत्पुरुष] सत्पुरुष, सज्जन।

उ०—१ विरतंत सहु कमरै कह्यौ, जिम थयौ घुर थी मांडि। सापुरस झूठ कहै नही, नेह न नांखै छांडि।—वि. कु.

उ०—२ जेह काचा हुवै तन तणा जी, बात मांनै नहिं साच। पिण तुमै सगुण सापुरुस छौ जी, मांनज्यौ ग्रवचल वाच।

—वि. कु.

२ वीर एव बहादुर पुरुष।

उ०—१ मरदा मरणौ हक्क है, ऊबरसी गल्लाह। सापुरसां रा जीवणा, थोड़ा ही भल्लाह।—हा. झा.

उ०—२ ग्रंग न छूटै ग्राखडी, सीहा सापुरसांह। ग्रावड़ियां ग्रळगी रहै, कुतरा कापुरसाह।—बां. दा.

३ भला, सज्जन।

उ०—१ लाखा धन दै लोक नै, म मरोड़ै मूंछ। सापुरसां रै सीग नहिं, पामर रै नहिं पूछ।—ऊ. का.

उ०—२ पियै तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल। सालै निस दिन समझणां, चालै चाल कुचाल।—ऊ. का.

सापुरसाई—स. स्त्री.—१ सज्जनता, भलमानसता।

२ वीरता, बहादुरी।

सापूर—देखो 'सेंपूर' (रू. भे.)

उ०—वधै लूर सापूर फौजा वखाणं, जळानिद्धि उच्छेदियौ बंध जाणं। महाराज सेन्या वहै राज मग्गं, वधै बाजुवां लोल हिल्लोल वग्गं।—रा. रू.

सापेक्ष—वि. [सं.] १ किसी ग्रन्य तत्व, विचार, दृष्टिकोण ग्रादि से सम्बद्ध होने के कारण उसकी ग्रपेक्षा रखने वाला।

२ किसी की ग्रपेक्षा करने वाला।

३ ग्रपेक्षित, ग्रपेक्षा रखने वाला।

सापेक्षता—सं. स्त्री.—१ सापेक्ष होने की ग्रवस्था या भाव।

२ सुप्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक ग्राइन्स्टीन का सिद्धान्त जिसमें विश्व सम्बन्धी पुराने गुरुत्वाकर्षण ग्रादि के सिद्धान्तों का खण्डन करके यह सिद्ध किया गया है कि विश्व की सारी गति सापेक्ष है।

उ०—क्यूंकै जिनसां एक दूजै कानी झुकाव राखै । ई नै ई 'न्यूटन' आकरसण कैवै है अर 'आइन्स्टीन' वीं नै सापेक्षता कैवै है ।
—तिरसकू

साप्‍पो, साप्‍पो–सं. पु.—१ मृतक के पीछे भूमि पर बारह दिन तक सोने की एक रस्म विशेष ।
(मि. साथरवाड़ौ)
२ देखो 'साफौ' (रू भे.)

साफ–वि. [अ.] १ गन्दगीरहित, स्वच्छ, निर्मल ।
उ०—मळ-मूतर रा अंग, साफ जळ सू कर धोवै । घर आ दातण करै, नाकरा लोयरा न लकोवै ।—टाबर सईकडौ
ज्यूं—साफ कपडौ ।
२ दोष, विकार आदि से रहित ।
ज्यूं—वौ साफ दिल रौ आदमी है ।
३ शुद्ध, खालिस ।
ज्यूं—साफ सोनौ ।
४ जिसका तल ऊबड-खाबड, गाठ या शाखा से रहित हो ।
ज्यूं—खेत साफ है ।
५ जिसकी रचना में दोष, त्रुटि आदि न हो ।
ज्यूं—वा री लिखावट साफ है ।
६ नैतिक दृष्टि से बिलकुल ठीक, शुद्ध, छल-कपट से रहित ।
ज्यूं—वौ साफ नीति रौ आदमी है ।
७ जिसमें किसी प्रकार का अंधकार या धुन्धलापन न हो, देखने मे निर्मल, स्वच्छ ।
ज्यूं—१ रोसनदान सूं घर मैं साफ रोसनी आवै । २ बिरखा पछै आभौ साफ व्हियोड़ो चोखौ ।
८ स्पष्ट ।
उ०—१ नाहर आगळ न्हासतां, सुणता वाता साफ भ'ळघो नाहर भागतौ, तौ आगळ 'परताप' ।—महादान बरणसूर
उ०—२ सुणियौ कांना साफ, पारस किरणी न पेखियौ ।
—महादान बरणसूर
उ०—३ कूंजड़ो जोर जतावतौ कैवण लागौ—सेठ होय यूं डरौ भलां ! ओ तौ धंधौ है । पण म्हनै काच मैं दीखै ज्यूं साफ दीखै है कै काले तेजी आय जावैला ।—फुलवाड़ी
मुहा.—(१) साफ कैणौ=स्पष्ट कहना । (२) साफ छूटणौ, साफ बचणौ=निर्दोष प्रमाणित होकर बच जाना । (३) साफ साफ कैणौ, साफ साफ सुणाणौ= खरी खरी कहना, स्पष्ट कहना ।
९ समाप्त, खत्म ।
ज्यूं—माल साफ कर दियौ ।
मुहा.—साफ करणौ=नष्ट करना, मारना, वध करना, खत्म करना, समाप्त करना ।
१० चुकाया हुआ, चुकता ।
ज्यूं—उणरौ हिसाब साफ कर दियौ ।
११ जिसमें किसी प्रकार की बाधा या विघ्न न हो, सहज, सरल, निर्विघ्न ।
उ०—म्है खुस हो नै बोल्यौ—लीना, तूं म्हारो भार हळको कर दियौ । एक बात जिकी मन मांय व्याधा बण रई ही वा साफ होयगी । ठीक है, म्हैं घोड़ो अर गांठड़ी काले दोनूं पुगा दूंला ।
—तिरसंकू
१२ जो अनुचित या नियम विरुद्ध न हो । (कार्य)
ज्यूं—उण री खेल साफ हो ।
१३ जिसके सुनने या समझने मे कठिनाई न हो ।
ज्यूं—बी० बी० सी० री खबरां साफ आवै ।
१४ जिस पर कुछ अंकित न हो, कोरा ।
ज्यूं—साफ कागद ।
१५ बिलकुल ।
उ०—१ म्है भी साफ रूखो जबाब दियौ—मैनेजर री इजाजत लियावौ । अब तांणी म्हैं सोफै सूं उठ'र दरवाजै कनै ऊभो हो ।
—तिरसकू
उ०—२ मां, इण रांमत सूं तौ म्हारो जीव साफ फाटग्यौ । थारै आगै म्हारो बस नीं चालै, नीतर म्है तौ कदेई न्हाय छूटती ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ जै अळगै दिसावर ग्रैड़ौ जोगौ टाबर साथै चालै परौ तौ कैड़ो नांमी काम बणै । सेठ कुमार नै आपरै मन री बात दरसाई । पैला तौ कुमार साफ नटग्यौ ।—फुलवाड़ी
उ०—४ म्हैं दूजी कानी मूंडो फेर लियौ पण आडी निजर सूं देख्यौ तौ वै दोन्यूं जणा म्हारै कानी ईज आवता हा । एक जणौ साफ नजीक आय'र बोल्यौ—बाबू तुमी इकडे रहणार आए ।
—रातवासौ

साफ-चट–वि.—बिलकुल साफ, पूर्ण साफ ।
ज्यूं—थाळी नै चाट'र साफचट कर दी ।

साफळ—देखो 'सफल' (रू. भे.)
उ०—असमेध कोट कीधां इसा, भव्व जनम साफळ भया । जग कही कथा वेदै 'जगा', गया गया प्रेता गया ।—ज. खि.

साफल्य–स. स्त्री.—सफलता ।
उ०—साफल्य स्वप्न संपति समांन, पानी मंथन मैं घ्रत प्रमान । चाचल्य चित्त सिद्धांत चूक, सब सेखसली कै हैं सलूक ।—ऊ. का.

साफी–स. स्त्री.—१ 'चिलम' से धूम्रपान करते समय 'चिलम' के नीचे लपेटा जाने वाला वस्त्र का टुकड़ा ।
२ भाग छानने का कपड़ा ।
३ मुह का स्वाद, जायका ।
४ सफाई का भाव, सफाई ।

क्रि. प्र.—देंणी।

सं. पु —५ वह बैल जिसकी जिह्वा सफेद हो।

रू. भे.—स्याफी।

साफीरंदौ–स. पु. यौ.—लकडी को साफ व समल करने का एक औजार विशेष।

साफौ–सं. पु —सिर पर लपेट कर बाघने का एक प्रकार का वस्त्र जो पगड़ी से ज्यादा चौडा व कम लम्बा होता है।

उ०—१ करणी आटै पर्गा रौ बाखड जुवान। माथै ऊपर गोळ साफौ, दाड़ी माथै कस्योड़ौ जाड़ियाळौ काठौ धाटौ। चौडौ चपाट मूढौ, लाबौ लिलाड़ ज्यूं कूंडौ।—दसदोख

उ०—२ पूरी मरदानी औरत ही। वा कह्या करती कै साफौ बाधै जितरा सगळाई आदमी नी व्है अर ओरणौ ओढै जितरी सगळी ई लुगाया नी व्है।—अमरचूनडी

रू भे.—सापौ।

सा'ब, साब—देखो 'साहिब' (रू. भे.)

उ०—१ ठाकर सा'ब थोडी दूर सैल करणै गया तौ सरी पण मन बिना ही। जी डगू-पचू करै। मनसा पाछौ फुरै। पग-पग माथै घोडी नै ठामै अर लारनै झांकै है।—दसदोख

उ०—२ सिपाई नीचै चक्कर काटनै आयग्यौ अर बोल्यौ, 'मैनेजर घरा चल्यौ गयौ साब। इस्पेक्टर भूंभळ खा'र म्हनै बोल्यौ—दरवाजै सैं परै हटै है कै धक्कौ मारनै तनै दूर करूं।—तिरसंकू

साबक–वि.—सब, समस्त।

उ०—साबक राज देसां मैं दुहाई सू जमाया, पाछे राव सेखापाट, थानक फेरि आया।—शि. व.

साबकियौ—देखो 'साबकौ' (अल्पा, रू. भे)

साबकै–वि.—साधारण, मामूली।

उ०—घडै साबकै जोर सू खाग धारा, हुवै चोट बारी हजारै हजारां। वडा वीर वीराध वाकार वाहै, सु तौ सामुहै चाचरै वाहि साहै।—रा. रू.

साबकौ–सं पु.—चाबुक, कोडा।

अल्पा;—साबकियौ, साबटियौ।

मह;—साबक।

साबज—देखो 'सावक' (रू. भे.)

साबटियौ—देखो 'साबकौ' (अल्पा; रू. भे.)

साबण, साबरण—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

उ०—१ सौच सदा निमट नर आवै, हाथ साफ सारा करै। ऊजळा धोरा धूड़ आगै, साबण तौ पाणी भरै।—दसदेव

उ०—२ तेल-फुलेल, अतर-सेंट रा कटर अर साबण-सोडै रा गोडै-गोडै सूणा सिंदूक राजा-मा'राजा रा सा पडचा दीखै। पटवारी है, कै तैसीलदार? किसनजी की कूत नी सक्यौ।—दसदोख

उ०—३ खुटै जरदैत जिकै इम खाति, तुट्टै तिम साबण दाबण ताति। मंडै कट तेग हुवै मसतांन, खंडै अंगरेज रू नाहरखान।

—सू. प्र.

साबणघर—देखो 'साबुनघर' (रू. भे.)

साबत, साबतौ–वि. [फा. साबित] (स्त्री. साबती) १ स्थिर, कायम।

उ०—१ सुरह दुज देव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तलक तुलसी नरजरण जाप। राह हींदू धरम तणौ साबत रहै, प्रगट मुरधर धणी तणौ परताप।—महाराजा जसवंतसिंह प्रथम रौ गीत

उ०—२ नाव तिरै नह नीर मैं, निबळां नावड़ियाह। राजस नंह साबत रहै मिनखा मावड़ियांह।—बां. दा.

उ०—३ अजै सूर भळहळै, अजै प्राजळै हुतासण, अजै गग खळहळै, अजै साबत इद्रासरण।—कमौ नाई

२ सही सलामत, अखण्डित।

उ०—१ आदमी पचास था तिकां माही अेक ही नही नीसरियौ। पुरजो-पुरजौ होय पडिया। घोडा सारा रा बढ गया। साबतौ अेक नही रहियौ।—सूरै खीवै कांधलोत री बात

उ०—२ मूछ नाक सिर रौ मुकुट, ससतर सांम सनाह। साबत लायौ समर सूं, कै नह लायौ नाह।—बा. दा.

३ जिसका क्रम बीच मे न टूटे, निरन्तर चलने वाला।

उ०—१ तिण ऊपर स्वांमी जी द्रस्टात दियौ—एक जरणै तौ तीन एकासणा किया। एकेक टक मै छै-छै रोटी खाधी। एक जणौ तेलौ करनै आधी आधी रोटी खाधी। या मै भागल कुण नै साबत कुण? तेला वालौ भागल खोटौ अनै एकासणा वालौ साबत चोखौ।—भि. द्र.

४ पूर्ण एक इकाई।

उ०—१ हरीया रोटी साबती, चाहे चौपड़ीयांह। चोपड़ियां चाळौ करै, सारी भठि पड़ीयाह।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया रोटी अरस की, आधी मिळै हसाब। जौ चाहै लौ साबती, तौ तुझि नही सबाब।—अनुभववांणी

५ पूरा, समस्त, सब।

उ०—जौ नरसिंघजी की बाजी साबूत रहसी, थे साबता लोकां नूं लै नीसरसौ तौ। पठांण नुं वेगौ धकौ देसां। विवत देख दुसमण कन्है नीसरै, विवंत देख लडै, तिकां धरती रहै।

—राजा नरसिंघ री बात

६ दुरुस्त, ठीक।

उ०—१ जोम छरा साबत जिते, साबत गात सुभाव। इळ पुड भल जीबौ इतै, बादीला वनराव।—बा. दा.

उ०—२ हरीया घाव न एक, सब तन सारा साबता। अंदर छेक अनेक, चोट सबद की वह गई।—अनुभववाणी

७ प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाणित।

उ०—ई रे सागै चुनाव रै विरोध हाळी दरखास्त जकी म्हैं अगर-

वालां रै कैरणं सूं फाड़ दी जकै रौ ही जिकर करचो अर मनै दोसी **साबत** कर दियो ।—दसदोख

८ जो टुकडे टुकड़े या खण्ड खण्ड न हुआ हो, अक्षय, अखण्ड, पूरा ।

उ०—१ पड़तौ जोगी कहै छै मैं तौ तोनूं घात घाली हुती पिरा तू समधो पिरा म्हारौ माथौ **साबतौ** राखै ।

—देवजी बगडावत री बात

उ०—२ न लाभत साबत सीस नत्रीठ, देतौ चक्र दड फिरै त्रण-दीठ । बळोबळ मैंगळ बाहु दुबाह, प्रळै लखि हाथ मळै पतिसाह ।

—मे. म.

६ स्वस्थ, कुशल ।

रू. भे.—सापतौ, साबित, साबून, सावतौ ।

सावतपग–वि यौ. [अ. साबित+सं. पदक, अ साबितकदम] दृढनिश्चय, दृढ-प्रतिज्ञ ।

उ०—केइक **साबतापगां** आगै जाय जाय कोट सूं लागा छै । तिकानै चौप जिलावं छै देखौ ताता खडौ हर कोट मैं जाय पडौ ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

साबन—१ देखो 'साबान' (रू. भे.)

२ देखो 'साबुन' (रू. भे.)

साबर, साबरमंत्र–सं. पु. यौ. [स. शाबरमत्र] शिव कृत माना जाने वाला एक प्रसिद्ध मंत्र । (अमरत)

रू. भे.—सावर, सावरमत्र, सावरीमत्र ।

साबरमती–सं. स्त्री.—१ इडर की एक नदी का नाम जो मेवाड के पहाडों से निकल कर उत्तर की तरफ बहने के बाद दक्षिण को जाती है और ईडर रियासत की सीमा बनाती है ।

(वीरविनोद)

रू. भे.—साभरमती, साभ्रती, साभरमती ।

साबळ–सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का भाला । (डिं को; ना. डि. को.)

उ०—१ अत सतेज मोरियौ, मधौ अरणजेज मुगल्लां । सेल्ह झोक सायक्क तेग **साबळ** क तडळा । –रा. रू.

उ०—२ पोवतौ **साबळां** बाहां-प्रलंब, जोवतौ सूरमा जूभवी जाति । जोगणी तरणा भरिया पत्तर जांमिया, भमै मधुकर भवर अनोखी भांति ।– नाथौ रोहड़ियौ

उ० – ३ आंठुआ चाढतां धकै **साबळ** अणी, खेलतां धसळ खत्रवाट आखेट । विढता सेस मणगयण लागा वधै, नग भिडज करग राजा तणा नेट ।—नाथौ सांदू

२ देखो 'सांग' (रू. भे.)

साबळौ—देखो 'सबळौ' (रू. भे.)

उ०—पीछै हंसार रै खान रौ जोर **साबळौ** हुवौ । नद आपरा वसी सूधा गाडा जोड़नै रावळ कांधळजी सारणां रै गाव राजासर आय रया ।—द. दा.

साबस्त–सं. पु. [स. शाबस्त] युवनाश्व राजा का पुत्र व बृहदश्व राजा का पिता एक राजा, जिसने शाबस्ती नगर बसाया था ।

साबांण–स. पु.—१ छोटा तम्बू, खेमा ।

उ०—ठामि ठामि **साबांण** सिराचा, डहिली नइ एक चोई । ऊचे थाभै बारगइ दीधी, तेह तणी परि जोई ।—का. दे. प्र.

२ देखो 'साबान' (रू. भे.)

साबांणी–वि.—साबुन का, साबुन सम्बन्धी ।

साबांन–स. पु. [अ. शाबान] १ इस्लामी आठवां महीना ।

२ देखो 'साबाण (रू. भे.)

साबात–सं. स्त्री.—१ बारूद की सुरंग ।

उ०—१ समत १६१८ रा फागण बद ७ कोट घेरीयौ छै । भुरज एक पिरा **साबात** था उडीयौ छै । सु राठौड देवीदास मुगळ था बात करनै निसरीया छै ।—नैणसी

उ०—२ भूरज नूं **साबात** लागी तरै सुणीजै छै, तीन जरगा उडिया । तिरा तरवार उडतां काढी, सु तिका मैं एक उरजन ।

—नैणसी

उ०—३ घटा काळ सी डंकाळ सी तोपा यौ **साबात** धक्की, मेंगळा है खुरां जम्मी मचक्की प्रमांण । वीर चडां लीधा साथ चड़का किलक्की बक्की, आमेरनाथ री सेना यौं हुक्की आरांण ।

—सिवदान कवियौ

२ बारूद का भण्डार ।

उ०—जुडै थडा जाडावाळी धोम जाळा री **साबात** जागी, खडां आडावाळा री लागी हाला री खुलास । जोम गाडावाळी प्रळय काळा री ठनागी जठै, वागी हाडावाळी नराताळी री बांणास ।

—दुरगादत्त बारहठ

३ शत्रुओं द्वारा किले की दीवार तक पहुँचने हेतु किले की दीवार से भी ऊचा, किन्तु ढका हुआ, बनाया गया एक प्रकार का मार्ग विशेष, जिसमे किले के भीतर वालों की मार से सुरक्षित रह कर हमलेवर किले के पास पहुंच जाते है ।

वि. वि.—चित्तोड-विजय के समय अकबर ने ऐसे ही दो रास्ते बनवाये थे जो बादशाही डेरे के सामने थे । ये रास्ते इतने चौडे थे कि उनमें दो हाथी व दो घोड़े साथ-साथ चले जा सकते थे एव ऊचे इतने थे कि हाथी पर बैठा हुआ आदमी भाला खडा किये इसके अन्दर से जा सकता था । साबात बनाते समय राणा के सात-आठ हजार सैनिको व कई गोलंदाजों ने उन पर हमला किया था । कारीगरो की सुरक्षा हेतु गाय-भैस के मोटे चमडे की छावन थी तो भी वे इतने मरे कि ईंटो एव पत्थरों की जगह शवों को चुना गया था । बादशाह ने कारीगरो को प्रचुर मात्रा मे मजदूरी दी । किसी से किसी प्रकार की बेगार नही ली गई बल्कि मजदूरों मे रुपयों पैसो की वर्षा कर दी । एक रास्ता किले की दीवार तक पहुँच गया और वह इतना ऊचा था कि दीवार उससे नीचे दिखाई देती थी । इस

रास्ते की चमड़े से बनी छत पर पर बादशाह की बैठक थी जिस पर बैठ कर बादशाह अपने वीरों का करतब देखता एवं स्वय भी बन्दूक लेकर बैठना था एवं युद्ध मे भाग लेता था। इधर सुरंग लगाई जा रही थी और किले की दीवारो के पत्थर काट-काट कर सेंध लग रही थी।

किले के दोनो ओर पाँच हजार कारीगर व खातियो द्वारा साबात बनाये जा रहे थे। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि साबात एक प्रकार का दीवार मार्ग था जो किले से गोली की मार की दूरी पर खडी की जाती थी और उसके तखते बिना कमाये चमड़े से ढके होते थे। उनकी रक्षा मे किले तक कूचा सा बन जाता था। फिर दीवारो को तोपो से उडाते है और सेंध लगने पर बहादुर भीतर घुस जाते है।

मत न्तर से यह ऊंची टेकरी का सा भी होता था जिस पर से किले पर गरगज (ऊचे स्थान) की तरह मार की जा सकती थी।

साबास-सं. पु. [फा. शाबास] एक प्रशसा सूचक शब्द, वाह-वाह।

उ०—१ खुसी रहो सुख भोगवो, बसो खेरवे बास। यू कै ठाकर तेजसी, सारगा साबास। -तेजसी सादू

उ०—२ बोलाई साढ तातो छै। तिण चढ नै जालोर जा। सवा पोहर दिन चढियां मोह्ल जाए। तोनै साबास देमा।

—वीरमदे सोनगरा री बात

उ०—३ हाजीखांन तेजसी नू कह्यो—साबास तोनूं भलीभात आयो, हिमैं हुं ई आऊ छू, बुरो मत बोल। तरा पछै हाजीखान पिण हाथी उतरियो नै घोडै चढियो।—राव मालदेव री बात

रू. भे.—छैबास, सहबास, सैबास, स्याबास।

साबासणौ साबासबौ-क्रि. स.—शाबासी देना।

साबासणहार हारौ (हारी), **साबासणियौ**—वि०।

साबासिग्रोड़ौ, साबासियोड़ौ साबास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साबासीजणौ, साबासीजबौ—कर्म वा०।

स्याबासणौ, स्याबासबौ—रू० भे०।

साबासियोड़ौ-भू. का. कृ.— शाबासी दिया हुआ।

(स्त्री. साबासियोड़ी)

साबासी-स. स्त्री [फा शाबासी] वाह-वाही, शाबासी।

उ०—१ रावजी रेढा न्याळ देख बडा राजी हुवा। कुंअर नूं घणी साबासी दाद दीवी। निवाजस कीवी। कुंवर रौ साथ और लोग रजपूत थौ तिण नूं अलग-अलग दिलासा दीवी।

—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ पछै सरब कांम आय चूका अर सरब आग माहै पडिया, तद पातसाह सइयै वाकलियै नूं साबासी दीवी।

—पताई रावळ री बात

रू. भे—छैबासी. सैबासी, स्याबासी।

साबिण—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

उ०—संग्रांम खडग्ग वाहत सनड्ढ, वपै पळ तडळ ऊबळ वड्ढ। वढै जरदैत जडाळ वहति, तुटत गडा किरि साबिण तति।

—गु. रू. बं.

साबित—देखो 'साबत' (रू. भे.)

उ०—फेर धीरैसीक म्हारै माथै हुस'र बोल्या—'वेल पवन, इण गरीबी रै कारण माय सू काई साबित करणी चावै है कै इण माय सू किसी फेक्टर कारखानौ लगावण मै मदद देवैलो।—तिरसकू

साबियांणी—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

उ०—मागळियांणी वीरमा धण ऊभी पलै, आज पडपण आपरै धण लीधा दलै। समाध नखै पखरी चगी केकाणी, वीरम पहरै धोयै साबियांणी।—वी. मा

साबी-स. स्त्री.— जयपुर रियासत मे जैतगढ और मनोहरपुर के पास की पहाड़ियो मे से निकल कर नाभा रियासत मे दाखिल होने वाली नदी। (वीर विनोद)

२ अलवर की मशहूर नदी जो रेतीले भूभाग से गुजरती है। इसकी कोई खास उपज नही होती। (वीर विनोद)

साबु, साबु, साबुण, साबुन-स. पु [पु.] रासायनिक क्रिया द्वारा बनाया हुआ एक पदार्थ जो वस्त्र, शरीर आदि को स्वच्छ करने के काम आता है।

रू. भे—सब्बु, सब्बुन, साबण, साबन, साबिण, साबियाणी, साबू, साबू।

साबुणघर, साबुनघर-स पु.—१ वह स्थान जहां साबुन बनाया या रखा जाता है।

२ प्लास्टिक की बनी डब्बी जिसमे साबुन रखा जाता है।

रू. भे.—साबणघर, साबूगर, साबूघर।

साबू, साबू—देखो 'साबुन' (रू भे)

साबूगर—साबुन बनाने वाला।

साबूणी—देखो 'साबूनी' (रू भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति भांति-भांति रा मास जाति-जाति रा पकवांन जिलेबी, लाडू, खाजा, मोतीचूर, सीरो, पूरी, साबूणी खेरा, पचाम्रत।—रा. सा. स.

साबूत—१ देखो साबत' (रू. भे.)

उ०—१ राज री हकीकत हुई, सु तो सही पण लोक आजूं ताई साबूत छै। जो नरसिंघजी की वाजी साबूत रहसी।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ इम करता जैत सामधीयौ हुवौ। ताहरा वैदा आय गुदरायो, 'महाराज जैत साबूत हुवौ छै।—जैतमाल पुमार री बात

उ०—३ चूंडा झोक थारी आडी लीह री बाखाण चवा, ताई होय गया तारा दीह रा तावूत। रधू अबीहरा पणै राणैराव वाळौ राज सीहरा बणाव जेम राखियौ साबूत।—भीमसिंह चूडावत रौ गीत

२ देखो 'सबूत' (रू भे)

साबूदांणौ, साबूदांनौ–स. पु.—सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो कूटकर दानो के रूप मे सुखा लिया जाता है, सागूदाना ।

साबूनी–स. स्त्री.—एक प्रकार की मिठाई ।

उ०—१ बादामी साबूनी सरेसं जुडी, भांति भांति सिखरणी भांति भांति पुडी मेवै की खीर नमक की दोइ, करवा छूंदा करार जीमैं सहकोई ।—सू. प्र.

उ०—२ सीरा फीणी सुहालीया रे, लाल साबूनी सुखकार । इंद्रसा नै दइथडा रे लाल, रोटी दाल मसूर ।—जयवाणी

रू. भे.—साबूणी ।

साब्रती, साभरमती—देखो 'साबरमती' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

उ०—·········तस्या एक भला कूंग्रा, जै दीठइ हुइ मनोहर, तस्या भला-भला सरोवर, जै दीठइ पामीइ उहलास, तुस्या भला ग्रावास, साभरमती तणूं नीर········· ।—व. स.

साभाय, साभाव—देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—१ सपनै ही साभाय, न्यायव्रत चाय न चूकै । राज काज चित राग, माग ग्रनि समळ प्रमूकै ।—रा. रू.

उ०—२ तै सुतन सीह दन खाग तीख, साभाव सुपह जैचंद सरीख । कनवज्ज हूंत सीहौ सकाज, सभि चलै पूर दळबळ समाज ।—सू. प्र.

सायंकाळ–सं. पु [स सायंकाल] संध्या, शाम । (ग्र मा.)

उ०—१ लग्गी हाम विलास, वित्ती ग्रग्यात प्रात मध्याय । सायंकाळ निसीतं, रत भूप चूप मदनाय ।—रा. रू.

उ०—२ सिकार रा रमणा मैं पाच ही दिन बिताइ एक एक मइद दोइ बाराह गाडा घलाइ चाह करि सायकाळ रै समय बूंदी ग्रायौ ।—व. भा.

रू. भे.—सायंकाळ, सायकाळ ।

सायंत—देखो 'सांयत' (रू. भे)

उ०—सुणि दुजराज वयण तिण सायंत, हरखै ग्रपत दाखियौ चित हित । एक वार नयणां ईखीजै, दीठां पछै ईस सिर दीजै ।

—सू. प्र.

सायंसंध्यादेवता–सं. स्त्री. [स.] सरस्वती देवी का नाम ।

साय–स. पु. [स. सायः] १ दिन का ग्रन्त, सन्ध्याकाल । (डिं. को.)

२ वक्त, समय, वार ।

उ०—सूरातन कै सो भलो, साई भलो मनाय । हरीया ग्रागै क्या पछै, मरणो एकर साय ।—ग्रनुभववाणी

३ देखो 'सहाय' (रू. भे)

उ०—१ न्याव निवेडणो पचा रै हाथ हौ, पण उणनै पार घालणो तो म्हारै हाथ है । मासा रत्ती सू जवार काई वाधलै । लिछमीजी म्हारी साय करै, म्है किणी रै सारै कोनी ।

—फुलवाडी

उ०—२ दुसटां रचियौ दाव, द्रोपद नागी देखवा । ग्रब तौ बेगौ ग्राव, साय करण नै सावरा ।—रामनाथ कवियौ

४ देखो 'साइ' (रू. भे.)

सायक, सायक्क–सं. पु. [स सायक] १ बाण, तीर ।

(ग्र. मा; डिं. को; ह. ना. मा.)

उ०—१ धनु सायक पांण सुभायक धारै, रघुनायक लायक संत सु तारै ।—र ज. प्र

उ०—धर सुकर सायक धानुखं, लड समर रहचण लाखं । दुजराज गरब विभज दसत, सरब जग सरण ।—र. ज. प्र.

२ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

३ देखो 'सहायक' (रू. भे.)

रू भे.—साइक, साइक्क ।

सायगवेसण–वि.—सुख की गवेषणा करने वाला । (जैन)

सायजद्दौ – देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ० –तूझ भरोसै केहरी, ग्रोपम राजंदा । राजा जसवत सिंघ सूं, दहूंवै सायजद्दां ।—लूणकरण कवियौ

सायजा.पण, सायजादापणौ–स. पु.—शौकीन रहने का भाव, ग्रमीरता ।

सायजादी–स स्त्री. [फा.] १ बादशाह की पुत्री ।

२ शाहजादे की बेगम ।

उ०—१ झूरै रै ग्रग-नैणी झूलर, मेह तणी परि मोरा । जोगण पीठ दियां सायजादी, घूमरि ऊपरि घोरा ।

—ग्रमरसिंह राठोड़ रौ गीत

उ०—२ हूरम सायजादी चै हिंदू रौ घोड्यौ कोनी देव । दिल ज्यानी बेगम चुग चुग तौ ढाया यें मिंहर देवरा ।—लो गी.

सायजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे)

उ०—१ सायजादा हुता सरस कर सैफळै, मिटी राखी भुजा जांण माजा । साज सकिया नही खळा दळा साजता, रण ग्रकळ जीवतांसभ राजा ।—नाथौ सादू

उ०—२ वाहता तेग ग्रनमध कध वीछडै, हसत बंध हसत दोय टूक होवै । सायजादा दळै हिंदवा-पातसाह, 'जसा' ग्रवसर ग्रच्छर तूझ जोवै ।—महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

(स्त्री. सायजादी)

सायज्यादौ –देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—पातसाह साजिहानजी रै ग्रागै ए सायज्यादा च्यारूं ई हाजर था ।—द. दा.

सायडू–क्रि. वि.—बायी ग्रोर । (शकुन)

(मि. मालाळौ)

सायण–सं. पु.—१ वेदो का उत्तम भाष्य लिखने वाले एक प्रसिद्ध ग्राचार्य ।

२ देखो 'सैण' (रू भे.)

उ०—काहि भाय कूकसी, सयण सायण सुत नारी । काया हूसी

अकज, सबै माया दुखियारी ।—ज. खि.

सायणवाद-सं. पु.—सायण का सिद्धान्त या मत ।

सायत-सं. स्त्री.—१ समय, वक्त।

उ०—१ जिणा दिनां गुजरात रै सोवै मैं गाव हजार सतर रो मालक अमदसाय छै, पाय-तखत अमदाबाद रहै। सू फौज रो कूच हुवो । जिण सायत रो गीत ।—द. दा.

उ०—२ जिस सायत परदल के बिगारू निज दल के किवाड जंगू कै जैतवार अगू के अोनाड ।—र. रू.

२ थोड़ा समय, क्षण, घड़ी ।

उ०—१ विश्व के तुम नायक और सब के मुदायत। सो जग की ढील मैं बरस जैसी सायत ।—रा. रू.

उ०—२ बड़ा कही छै एक सायत न्याय री बादसाह नूं तोल मैं साठ वर्ष री बदगी जूं खरी छै।—नी. प्र.

३ देखो 'सायद' (रू भे.)

उ०—१ म्हनै सत करणो है सो उण वेळा रो नाळेर सायत मिळै क नही मिळै इण सारू गहणा रै भेळो नाळेर राखियो ।

—वी. स. टी.

उ०—२ उठ दामी कस ढोलियो, गहरा दीपक जोय दडबड । माची देहरां, सायत साजन होय ।—लो. गी.

रू. भे —साइत ।

सायता—देखो 'सहायता' (रू. भे.)

उ०—दुसट तथा दः णोगै मिनख नै मार देणै री सेः लोग सला देवै पण मारचा पछै कोई ही सैय अर सायता नी करै। पैली बे· बिहाल की बातनै डाढी चोखी बतावै, जिका ही पछै बी बात री माडी चुगली करण लाग ज्यावै ।—दसदोख

सायतौ—देखो 'सासतौ' (रू भे.)

उ०—नबाब रो बेटो एक बरसां पनरै सोळे रो बाहर रमण नै सायतो आवै सु अवैरगज भदावत रजपूत दूजा ही हुता तिकै तो सारां कह्यो—अठै तो जबाब नही, आपा ह्याळो परा जावां ।

—नैणसी

सायद-स. स्त्री.—साक्षी, सबूत ।

उ०—१ गोलां सूं न सरै गरज, गोला जात जबून । ऊभांणी सायद भरै, सौ गोलां घर सून ।—बां. दा.

उ०—२ बांका वेद पुराण बिच, सायद आ छै सून । सुख संतोस सराहियो, आपदत्त अवधून ।—बां. दा.

अव्यय—कदाचित, सम्भवत ।

उ०—१ सरदार सायद आपरी बडाई सूं पिघळग्यो । म्हनै उम्मीद कोनी ही इसी बात बोल्या—तनै घणा-घणा धिनवाद है। तूं मोरचो छोडनै म्हारै कनै आ सकै है।—तिरसंकू

उ०—२ असली सिद्धांन उणानै नोकरी देवणिया वांनै समझावै भी कोनी। समझा देवै तो सायद इणां मायला घणकरा लिख्या पढ्या बगावत कर देवै ।—तिरसंकू

रू. भे.—साइत, सायत ।

सायदांणो, सायदांनो—देखो 'सादियानो' (रू. भे.)

उ०—कुंवर विचित्र परणीज घरा आइयो। गाजै बाजै सायदांना बजावता बधाय भीतर लियो । घणो हरख राजा रै पचास बरस सूं हुवो ।—पलक दरियाव री बात

सायदी-वि.—साक्षी देने वाला, साक्षी । (डिं. को.)

सायधण-सं स्त्री.—१ पत्नी, सहधर्मिणी।

उ०—१ पंचम पहरै दिवस कै, सायधण करै बुहार। रिमझिम रिमझिम हुय रही, पायल री झणकार ।—अग्यात

उ०—२ सोवै अळगी सायधण, सुपनै ही नह संग। गिनका सूं राखै गुसट, रसिया तोनूं रग ।—बा. दा.

उ०—३ साच कहूँ तो सायधण, महळ छोड मिजाज। सजण प्रमोदण सेज मैं, करो लाज बेकाज ।—नारायणसिंह सादू

२ प्रेयसी, प्रेमिका ।

उ०—स्याम नदी काठै सघण, तरवर स्याम तमाळ । सजुत स्यामा सायधण, साहब स्यांम समाळ ।—बां. दा.

रू. भे.—सयधण, साइधण ।

सायब—देखो 'साहिब' (रू. भे.)

उ०—१ हलकार भडां थट 'पाल' हसै, कमरांबंध मांझिय साथ कसै। 'अमराण' मैं वाजिय डाक अड़ै, सुखियारी रो सायब आज चढै ।—पा. प्र.

उ०—२ महपाळ सिधा कुळ मितारो, पह पाळक संतां पीसारो। जग जाय जमारो जीतारो, सुज संभर सायब सीतारो ।

—र. ज. प्र.

उ०—३ भूधर तू ही हारिया भीरू, आपण तुंही अनाथां नाथ। केसव तुंही साथ कुसाथा, सायब तुंही न साथा साथ ।

—ओपो आढो

उ०—४ मैं जपती नाव मेरै सायब का, आण मिळो नदलाल रे।

—मीरां

उ०—५ सायबां फिरंगा धकै जंगळ सोहड, घात नज दुख पवै सोच गाढै। जुडै मुसायब जैपुर तणा जिला सूं, किला सूं मांन माहराज काढै ।—बां. दा.

उ०—६ सायब लोक बखांणै सारा, दाद दुनी सह दीधी। 'चिमनै' जिसी मरण जुध सूरां, किणी अचड नह कीधी ।

—बुधजी आसियो

(स्त्री. सायबणी, मायबांणी)

सायबणी, सायबांणी-सं. स्त्री.—पत्नी ।

उ०—१ महला मांयलो दिवलो बो कत तुम्हारो जी राज दिवला री जोत सायबणी ।—लो. गी.

उ०—२ म्हां रो सायब सिर रो सेवरो, सायबांणी म्हैं तो सेजां रो सिणगार।—लो. गी.

सायबी—देखो 'साहिबी' (रू. भे.)

उ०—१ इसडो मामलो हुवो। जिकरा दिन सूं हीज कलै री सायबी तूट गई। ताहरा सीवळां सू वेढ करी तद 'कलो' पनरै वरस रो हुतो।—नैणसी

उ०—२ जदी अण्यां सहर माहै हवेली लै डेरो कीधो अवै घणा कपड़ा कराया। घणा गेहणा कराया है। यो सायबी करै छै।
—पचमार री बात

उ०—३ पीछै वीरमदैजी उठै सूं सीख कर विदा हुवा सू गाव बुगली लीवो। नै वणहटो वरवाडो लियो। नै अठै बैस रया। तद राव मालदे सुणी कै वीरमदै री सायबी इधकी हुई।
—द. दा.

उ०—४ 'चांपाहरो' सामहो जै आवतो चोड़ै, जीवनो नाखतो लाग भेर। जोध 'सवळेम' रो पावतो फनै जाडा थंडा, खाय जातो अमीरां देतो सायबी बिखेर।—नवलजी लाळस

उ०—५ इण तरै मलूकदास रै तो मास्तरी फाचरै आई पण आई। कठै तो वै बो. डी. ओ. रा ऐंठा-चूठा बासण मांजनै लूखा-सूखा टुकडा खावणा अर कठै आ सायबी भोगणी।—अमरचूनडी

सायबो—देखो 'साहिब' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ सावण आयो सायबा, लुळ लुळ बरसै लूर। गोख उडिकै गोरडी, जोबन मे भरपूर।—नारायणसिंह साटू

उ०—२ गह घूमी लूमो घटा, पावस उलट्या पूर। सांवण महीनै सायबा, क्दै न राखू दूर।—अज्ञात

सायर-सं. पु. [फा. शायरी] १ कविता रचने वाला, कवि।

[अ. सायर] २ जगात विभाग, कस्टम विभाग।

३ वह भूमि जिस पर किसी प्रकार का कर न हो।

वि.—१ सज्जन, भला सीधा।

उ०—१ स्यांम मिळे जं सूर, कामणी रवै न कायर। कायर कर्थ तणी, वणी सूरवळ सायर।—नागी सईकडो

उ०—२ सायरां साची केयी है जै सो दिन नहीं आवै।
—दसदोख

उ०—३ सायर सुरग्यानी प्यारा अवलेखा आवै थारा।
—लो. गी

२ समझदार, बुद्धिमान।

४ गम्भीर।

४ जो चंचल न हो।

५ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—त्रिख वसती सी काय, पाय ईमीं परभातां। विमळ विकासां मही, सबै सायर गुण ग्याता।—टाबर सईकडो

६ देखो 'सागर' (रू. भे.)

रू. भे.—साइर।

सायरकण-स. पु. [स. सागर+कण] मोती, मुक्ता।

उ०—जेहवा विरद तुहाळा 'जालम' सायरकण कुनण सारीख।
—चतुरभुज बारहठ

सायरसोहो-सं. पु.—दामाद के आने पर गाया जाने वाला एक प्रसिद्ध लोक गीत।

सायरी-स. स्त्री. [अ. शायरी] १ कविता बनाने का कार्य, काव्य रचना।

२ कविता।

सायरो—देखो 'सहारो' (रू भे.)

उ०—१ लारै छोटा-छोटा कीडा है, हूं लुगाई रो आलम हूं। चारा कानी तिणखै रो ई सायरो को है नी।—वरसगांठ

उ०—२ कई रो थोडो सायरो हो तो मोवन रो, जको बै मैं बुचकारतो, लाड करतो अर गोदी मै बैठावतो।—वरसगाठ

सायळ सायल-स. पु. [अ. सायल] प्रश्नकर्त्ता।

२ भिखारी, भीख मागने वाला।

उ०—जो सायल मागणै वाळो उण री पोळ सूं निरास जाय तो मोटा मन मे सरम खाय।—नी. प्र.

३ प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।

४ उम्मीदवार, आवेदनकर्त्ता।

५ पीतल तथा लोह का बना भारी लट्टू जिसमें ऊपर की ओर रस्सी बांधी रहती है जो ईंट पत्थर व दीवार की सीध देखने में काम आता है।

सायस्या-स. पु.—पवार वंश के क्षत्रियो की एक शाखा।

साया-वि. [अ. शाया] १ प्रकट, जाहिर।

२ प्रकाशित।

३ छाया, प्रतिबिम्ब।

सायाबंदी-स. स्त्री.—विवाह के अवसर पर मण्डप बनाने की क्रिया।
(मुसलमान)

सायीवांन—देखो 'सामियानो' (रू. भे) (डि. को.)

सायीसेख, सायीसेस-सं. पु. [सं. शय्याशेष] भगवान् विष्णु।

उ०—नमो सिव सागर सायीसेस, नमो व्रज बाळ नमो नट वेस। नमो गोविंद नमो गोपाळ, नमो गिरध रिय नद गवाळ।—ह. र.

सायुज, सायुज्य-सं. पु. [स. सायुज्य] १ पाच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति या मोक्ष। इसमें जीवात्मा का परमात्मा में लीना माना जाता है।

उ०—सालोक्य सगति रहै, सामीप्य सन्मुख सोइ। सारूप सारीखा भया, सायुज्य एकै होइ।—दादूवांणी

२ किसी मे इस प्रकार मिलने की क्रिया कि भेद न रहे।

३ समानता, सादृश्यता।

रू. भे.—साजज, साजुज्य, साजोजमुकत, साजोजमुकति, साजोज-मुक्त, साजोजमुक्ति, साजोजमुगत, साजोजमुगति।

सायुज्यता-स. स्त्री.—सायुज्य का गुण या भाव, सायुज्यत्व।

सायौ-सं. पु. [फा. सायः] प्रभाव, असर।

उ०—दूजो बादसाह देस में जीव जोखै छै। जद आपरो सायौ रैयत रै माथा सूं अळगो होय तरै फिसद होय। ससार में खराबी होय।—नी. प्र.

२ सहारा, मदद।

उ०—महाराजा गजसिंहजी कन्है मूमारखी बधाई मेली और कहियो कांम सारो आपरै सायै सू पेस चढियो छै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ बड़ां कही छै बादसाह नूं अदल सायौ प्रभू क्रपा रो छै।

—नी. प्र.

३ प्रतिबिम्ब, छाया।

४ आश्रय, शरण।

सारंग-स. पु. [स.] १ हंस। (डिं. को.)

२ सर्प, साप। (डिं. को.)

उ०—सारंग लै सारंग उड्यो, सारंग बोल्यो आय। जै सारंग सारग कहै, तो मुख रो सारंगा जाय।—अग्यात

३ वीणा। (डिं को.)

४ हरिण, मृग। (अ. मा; डिं. को)

उ०—१ सारंग नैना सारग बैना, सारग लै चली सारंग को। सारंग नै झकझोर दियो, सारग पुचकारै सारंग को।—अग्यात

उ०—२ सारंग हण आया अवधेसर, सेस हूंता पूछै राजेस्वर। किण विध न दीसै सीत सूनी कुटी।—र. ज. प्र.

५ मोती, मुक्ता। (डिं. को.)

६ मयूर, मोर। (अ. मा; डिं. को; नां मा; ह. नां. मा.)

उ०—सारग लै सारंग उड्यो, सारंग बोल्यो आय। जै सारंग सारंग कहै, तो मुख रो सारग जाय।—अग्यात

७ बन्दर, वानर। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

८ शीशा। (अ. मा; डिं. को.)

९ नाद, ध्वनि। (डिं को.)

उ०—सारंग लै सारंग उड्यो, सारग बोल्यो आय। जै सारंग सारंग कहै, तो मुख रो सारंग जाय।—अग्यात

१० आकाश, गगन। (डिं को.)

११ तोता, सुक। (डिं. को)

१२ कोयल, कोकिल। डिं. को.)

उ०—सारंग नैना सारंग बैना, सारंग लै चली सारंग को। सारंग नै झकझोर दियो, सारंग पुचकारै सारग को।—अग्यात

१३ कमल, वारिज। (डिं. को.)

१४ वस्त्र। (,,)

१५ वृक्ष, पेड़। (डिं. को.)

१६ नारियल। (,,)

१७ केसर। (,,)

१८ मेह, वर्षा। (,,)

१९ सिंह, शेर। (डिं. को; ना. डिं. को.)

२० चन्द्रमा, चाद। (अ. मा; डिं. को.)

२१ सूरज, सूर्य। (डिं. को.)

२२ तलवार, खड्ग। (,,)

२३ दीपक, दीया। (अ मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ सारंग लै सारंग चली, दै सारग री ओट। सारंग सांम्हो आवियो, सारग करगो चोट।—अग्यात

उ०—२ सारग नैना सारंग बैना, सारंग लै चली सारंग को। सारंग नै झकझोर दियो, सारग पुचकारै सारग को।—अग्यात

२४ पर्वत, पहाड़ (डिं. को.)

२५ हस्ती, हाथी। (अ. मा; डिं. को; ना. डिं. को; ह. नां. मा.)

२६ पक्षी। (डिं. को)

२७ चन्दन। (,,)

२८ चिन्ह, निशान। (,,)

२९ अग्नि, आग। (,,)

३० जल, पानी। (,,)

उ०—सारग लै सारंग चली, सारग पौंहच्यो आय। सारग मैं सारग धरघो, सारग सारग माय।—अग्यात

३१ बादल, मेघ। (डिं. को)

उ०—१ सारंग पाण बाण तन सारंग, धरणसुता धव खग धरण। वारण जम भै तारण वारण, करण प्रसुण अघ सुख करण।

—र. ज. प्र.

उ०—२ सारंग लै सारंग चली, सारंग पौंहच्यो आय। सारंग मैं सारंग धरघो, सारंग सारंग माय।—अग्यात

३२ भ्रमर, भौरा। (अ. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा,)

३३ धनुष। (डिं. को.)

उ०—१ कमर बाधिया तूण सारग गहिया करां, सुकर खग दांन जेहान ऊचासरा। सुचित धंका जना निवारण सांकडा, वाह रघुनाथ लका लिपण बाकड़ा।—र. ज. प्र.

उ०—२ सारंग पांण बांण तन सारंग, धरण सुता धव खग धरण। वारण जम भै तारण वारण, करण प्रसुण अघ सुख करण।—र. ज. प्र.

३४ प्रकाश, ज्योति। (अ. मा; डिं. को.)

३५ स्वर्ण, सोना। (डिं. को.)

३६ गरुड़। (,,)

३७ शंख। (,,)

३८ चातक, पपहिया। (अ. मा; डिं. को.)

३९ घोड़ा, अश्व। (डिं. को.)
४० एक प्रकार का घोडा।
४१ विष्णु के धनुष का नाम।
उ०—१ वदत भुज कथ वेद-वाणा, सघर पांणा साहणौ। सारंग बांणां, जुध सफांणौ, पण मुड़ाणां पूठ।—र. ज. प्र.
उ०—२ सारंग सिळीमुख साथि सारथी, प्रेहित जाणणहार पथ। कागळ चौ ततकाळ कृपानिधि, रथ बैठा साभळि अरथ।
—वेलि.
४२ विष्णु भगवान्।
४३ कामदेव।
४४ शिव, महादेव।
४५ श्रीकृष्ण का एक नाम।
४६ विद्युत, बिजली।
४७ समुद्र, सागर।
४८ भूमि, जमीन।
४९ कबूतर।
५० तालाब, जलाशय।
उ०—सारंग लै सारंग चली, सारंग पौंहच्यौ आय। सारंग मैं सारग धरचौ' सारंग सारंग माय।—अग्यात
५१ बाज, श्येन।
५२ कौआ।
५३ मेंढक।
५४ आभूषण, गहने।
५५ दिन, दिवस।
५६ रात, रात्रि।
५७ कपूर।
५८ हाथ, हस्त।
५९ कुच, स्तन।
६० हल।
६१ काजल।
६२ छाता।
६३ सिर के बाल।
६४ नक्षत्र, ग्रह।
६५ लता।
६६ शोभा, सुन्दरता।
६७ चीतल हिरन।
६८ बाहुरसिंगा।
६९ बगुला, बक।
७० तिनका, फूस।
७१ सारंगी नामक वाद्य।
७२ एक प्रकार की मधुमक्खी।
७३ चितकबरा रंग।
७४ कान्ति, दीप्ति।
७५ ईश्वर, भगवान्।
७६ परब्रह्म।
७७ घडा, कुम्भ।
उ०—सारंग लै सारंग चली, सारंग पौंचच्यौ आय। सारंग मैं सारंग धरचौ, सारंग सारंग माय।—अग्यात
७८ वायु, पवन।
उ०—१ पहाडां पाखर पडी, घटा ऊपड़ी। मोर सोर मंडै, इंद्रधार न खंडै। आभो गाजै, सारंग वाजै। द्वादस मेघ नै दुवो हुवो, सू दुखियारी री आंख हुवो।—रा. सा सं.
उ०—२ सारंग लै सारंग चली, दै सारंग की ओट। सारंग साम्हो आवियौ, सारंग करगो चोट।—अग्यात
७९ वस्त्र, कपडा।
उ०—सारग लै सारग चली, दै सारंग की ओट। सारंग साम्हो आवियौ सारग करगो चोट।—अग्यात
८० सोनचिडी, खजन।
८१ स्त्री, औरत।
उ०—१ सारंग लै सारग चली, दै सारग की ओट। सारंग साम्हो आवियौ, सारंग करगो चोट।—अग्यात
उ०—२ सारग नैना सारंग बैना, सारंग लै चली सारग को। सारंग नै झकझोर दियौ, सारग पुचकारै सारग को।—अग्यात
उ०—३ सारंग लै सारंग चली, सारंग पौंहच्यौ आय। सारंग मैं सारंग धरचौ, सारग सारंग माय।—अग्यात
८२ लक्ष्मी, रमा।
८३ शुद्ध स्वरों का सम्पूर्ण जाति का एक राग। (सगीत)
उ०—तठा उपरायत जांगड़ियां नै हुकम हुवौ छै। सु भजन ख्याल गावै छै। माता हाथी गजराज पटाभर ज्यूं झोला खावै छै। सहनायां माहै सारंग वणायौ छै।—रा सा. स.
८४ दर्पण, काच। (डिं. को.)
८५ पुष्प, फूल।
८६ आर्या गीतिका या खधाण का एक भेद।
८७ चार तगण के योग से बनने वाला छद विशेष। (डिं. को.)
८८ एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार तगण होते है। (पिं. सि.)
८९ छप्पय छन्द का २६ वा भेद जिसमे ४५ गुरु, ६२ लघु कुल १०७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा ४५ गुरु व ५८ लघु वर्ण सहित कुल १०३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।
वि.—१ रंगीन, चमकदार।
२ सुन्दर, सुहावना।
३ रसीला, सरस।

रू. भे.—सारग ।

अल्पा;—सारगडो ।

सारंगक–स. पु. [स.] दर्पण, शीशा ।

सारंगका–स. पु —एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे १५ गुरु वर्ण होते हैं ।

सारंगड़ो—देखो 'सारग' (अल्पा; रू. भे.)

सारंगदेओत–सं. पु —सीसोदिया वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सारंगधर, सारगधरण–स पु. [सं.] १ विष्णु भगवान । (डिं. को)

उ०—अला तूझ उवारण जयो, जगदीस जुरारी । नरहर गुरु हरनाथ निमो, निक्ळक त्रिजारी । कन्हैया कान्हुआ निमो निकळक नरेसर, ग्वाळ निमो ग्वाळिया साच साथै सारंगधर ।—पी. ग्र.

२ ईस्वर, परमेस्वर । (ह. ना. मा.)

३ श्रीकृष्ण ।

वि.—सारग को धारण करने वाला ।

सारंगनट–स. पु —सारग व नट के योग से बना एक प्रकार का सकर राग विशेष । (संगीत)

सारंगपांण, सारंगपांणि, सारंगपांणी, सारंगपांनि–वि. [सं. सारगपाणि]

१ जिसके हाथ में धनुष हो ।

२ जिसके हाथ मे शस्त्र हो ।

सं पु.—विष्णु-ईस्वर ।

उ०—१ रिध सिध दियण कोयला राणी, बाळा बीजमत्र ब्रहमाणी । बयण दियै यो अविरळ वाणी, पूरणं कीन जिम सारंगपांणी ।

—ह र.

उ०—२ रिधू गोत कनवज्ज रहायौ, आप चमू संग दरसण आयौ । प्रसन करै जिण सारंगपांणी, एकण छत्र धरा धर आंणी ।

—रा रू

३ रामचंद्र ।

उ०—सीता सी राणी, वेद वखाणी, सारंगपांणी साम । मीढ न मघवाणी बल ब्रहमाणी, नहि रूद्रांणी राम ।—र. ज. प्र

४ श्री कृष्ण ।

सारंगभरत, सारंगभ्रत–स, पु. [सं. सारगभृत] विष्णु भगवान् का नाम ।

सारंगभ्रमरी–सं. स्त्री.—कर्नाटक पद्धति की एक प्रकार की रागिनी विशेष । (सगीत)

सारंगा–सं स्त्री.—अप्सरा । (नां. मा)

२ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी विशेष (संगीत)

सारंगिक–सं. पु. [स. सारंगिक] १ बहेलिया, चिड़ीमार ।

२ एक प्रकार का वृत विशेष ।

सारंगिया–स. पु —राजस्थान मे निवास करने वाली एक जाति विशेष ।

सारंगियौ–सं. पु.—१ उक्त जाति का व्यक्ति ।

२ सारंगी बजाने वाला ।

सारंगी–स. स्त्री. [सं. सारग] १ एक प्रकार का प्रसिद्ध तार वाद्य जिसका स्वर बहुत ही मधुर एवं प्रिय होता है ।

२ ईस्वर, परमेस्वर । (ना. मा; ह. नां. मा.)

३ विष्णु । (डिं. को.)

४ धनुष । (अ. मा.)

५ पाँच भगण से बनने वाला एक प्रकार छद विशेष ।

सार–स पु. [सं. सार] १ तत्व, सत्त, मुख्य तत्व ।

उ०—१ परमेसर प्रणवि प्रणवि सरसति पुणि, सदगुरु, प्रणवि त्रिण्हे तत सार । मंगळरूप गाइजै माहव, चार सु ही मगळचार ।

—वेलि

उ०—२ तूं जुग नारी जुग री सोभा, जुग री आभा जुग धरम सार । जुग जुग स्यूं जागी अटळ जोत, मा, बहन नार री अमर प्यार ।—करणीदान बारहठ

उ०—३ तत्पर सास्त्र अमरथिवा रे, सार अनेक विचार । वली कलिविका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार ।—वि. कु.

कि. प्र.—काढणौ, खोजणौ, निकाळणौ ।

२ महत्व, महत्ता ।

उ०—१ नायकां सूं नेह. मुसळमाना सूं मेळ, मीट भावना री सारछै नी जाणै अर पांणी-पीसणौ करावै है । नूंवा-पुरांणा गाभा अर ऊबर-साबर अडोई देवै-घालै है ।—दसदोख

उ०—२ हरि हीरा तन हेटडी, निज मन परखणहार । जनहरीया जब जाणसी, तोल मोल की सार ।—अनुभववांणी

३ आवश्यकता, जरूरत ।

उ०—घड़णौ दियौ हौ जकां री पाछौ घेरचौ नहीं, मढणौ लियौ जकां री ओठौ मोडचौ नहीं । ईं हाथ लियौ वी हाथ डकारचौ । संभळावण री सार नहीं जाणी ।—दसदोख

४ तथ्य, सच्चाई, यथार्थ ।

उ०—१ हरीया जुग जाणै नहीं, सत सबदन की सार । पूजै पाहण पूतळी, का आचार विचार ।—अनुभववांणी

उ०—२ गवाडी आम धणी नै सगळी बात बताई । कह्यौ—साचांणी नांव मैं तौ कीं सार नीं । अबै तौ थांरो नांव म्हनै मिसरी ज्यूं मीठौ लागै ।—फुलवाड़ी

५ कीमत, मूल्य ।

उ०—हरीया हीरौ हाथ करि, गए बटावण हार । पारिख विना ना पाइयै, हरि हीरां की सार ।—अनुभववांणी

६ हिफाजत, देखभाल, देखरेख ।

उ०—१ कुंभ काचौ काया कारवी, जिण री करतौ सार । जतन करंता जावसी, विणसत नांही वार ।—दीन महमंद

उ०—२ इणनै तपस्या थोड़ी करावजौ, घणी कीजौ सार सभाळौ

रे। हिवें कुंवर कनै माता ग्रायनै, एतौ देवै सीख रसाळी रे।
—जयवाणी

७ पालन-पोषण, भरण-पोषण।

उ०—१ भूख त्रिखा तन कारणें, कहा दुखी नर होय। जनहरीया जीव सिरजिया, सार करेगा सोय।—अनुभववाणी

उ०—२ दोइ मयणा कर जोडिनै, भाखै विनय वसेण। सार करी माता तुम्हे, विसमैं ग्रवसर ऐण।—श्रीपालरास

८ सुख-साता, कुशलता।

उ०—पाप तणा फल देखो रे प्रांणी, पाप सब दुख होई रे। हीणा दीणा दीसैं दुमना, सार न पूछै कोई रे।—जयवाणी

९ सेवा, सत्कार।

उ०—१ तूं ग्रम राज्य तणो ग्राधार, करिजै माता पिता नी सार। तुझनैं दुहवियौ कहि केण, पहुंतो तू परदेसैं जेण।—वि कु.

उ०—२ लोभ रहित जे मुनिवरा रे, निरमल निरहंकार। बाल वृद्ध गीतारथ नो रे, वेयावच करै सार।—वि. कु.

१० सुधि, खबर।

उ०—१ जनहरिया सुंदरि कहै, करो हमारी सार। तो विन मिळिया सजना, जीयूं किन परकार।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ बापड़ी डोकरी इणरी ग्रास माथै रडापौ गाळ्यौ ग्रर सेवट थाका पगा बापड़ी री ग्रा दुरगत व्ही। ग्रबै तौ सावरियौ सार करै तौ खोळियौ छूटै।—ग्रमरचूंनडी

उ०—३ परतख कुदरत नार, जगत की सार संभाळै। पैदा करणी ग्राप, ताप सूं पाळै गाळै।—नारी सईकडौ

क्रि. प्र०—करणी, राखणी, लेणी।

११ रक्षा, सहायता।

उ०—१ हर विण ग्रैसी कुण करै, तुरत सांकड़ै सार। निरधन कै धन राम है, निरधारा ग्राधार।—गज-उद्धार

उ०—२ ऊंचै हाथि धाहि पोकारइ, बौलावइ किरतार। ग्राणीवार किम्हइ ऊवेलइ, करइ ग्रम्हारी सार।—का. दे प्र.

उ०—३ पंखी हूं पीउ पीउ जपूं, तु जपि जगदाधार। जपतां बापडा ग्रापणी, स्वांमी करस्यइ सार।—मा. कां. प्र.

१२ निर्यास, ग्रर्क।

क्रि. प्र—काढणौ, निकाळणौ।

[सं.] १३ पानी, जल।

[सं.] १४ गूदा।

१५ फल, नतीजा, परिणाम।

१६ मक्खन। (ग्र. मा.)

१७ मज्जा।

१८ हड्डी। (डि. को.)

१९ ग्रमृत।

२० शक्ति, पौरुष।

२१ चन्दन। (ग्र. मा.)

२२ वीर्य, बीज,

२३ धैर्य, धीरज।

२४ धर्म।

२५ सत्य।

२६ जुग्रा खेलने का पासा।

२७ धन, दौलत। (ग्रनेका; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

२८ लोह, भस्म। (ग्रमरत)

२९ घी।

३० युद्ध, सग्राम।

३१ पीपल का वृक्ष।

३२ सजीवन नामक बूंटी, सजीवनी। (ग्र. मा.)

३३ कटार। (डि. नां. मा.)

३४ भूमि, जमीन। (ग्र. मा)

३५ जल के देवता, वरुण। (ग्रनेका.)

३६ तलवार, खड्ग।

(ग्र. मा; डिं. को; डिं. नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ कीध तै तिका राव जाणै कमध, रहावण वात सिर दूवै राहा। 'जसा' ग्रविग्रात ग्रै साहि सूं जूटता, सार बळ लूटता पातसाहा।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ रण ग्रामगळ रोडि, जोडि ग्रछरा गठजोडौ। सेल घमोड़ा सार, मार मुगळा दळ मोडा।—मे. म.

उ०—३ झालिया सार मोसर झलैं, झूझ भार भुज झालियौ। भूगाळ 'जैत' उणहीज भुज, हय कध थापल हालियौ।—मे. म.

उ०—४ एक महूरत सार झड़, मातौ तातौ बाण। लग्गा हत्थी भग्गणै, यां बग्गा ग्राराण।—रा. रू.

३६ ग्रस्त्र-शस्त्र, हथियार।

उ०—१ सार छत्रीस छडी साहिया, जोग ग्रसौ जिण ग्रजर जरै। 'पाताल' तणा रूप सपेखै, केवी तणां ग्रादेस करै।
—गोपीनाथ रौ गीत

उ०—२ सुरातन सुजळ सार करि साबू, धोवण लागौ सिवौ सधीर। पिड़ भुंई सिला ऊपरै पटकै, मरै डरै पैट काटै मीर।
—सिवा सीसोदिया रौ गीत

उ०—३ भुज चोळ चखा सौ पाच भिडै, जम रूपीय सार छतीस जडै।—गो. रू.

३८ ग्राध्यात्मिक साधकों के ग्रनुसार भाषा या वाणी के चार भेदों में से एक भेद जो भ्रम को दूर करने वाली तथा सरल एव स्पष्ट होती है।

उ०—१ परठी सि हवि पांचमां, ग्रंग तणउ ग्रधिकार। सरस भनइ सरला वचन, सारद ग्रापै सार।—मा. कां. प्र.

उ०—२ गणपति गिरा निवासी सुरगण, मगळ करण ग्रमंगळ

मेटण, करौ दया मौ सीस दयाकर, थापौ सार चार गुण अर कर।
—रा. रू.

३९ अनार का वृक्ष।

उ०—आस पास सायर तणैं, आंबा केळि अपार। चपा ताड खिजूरियां, सीसुम चदण सार।—गज-उद्धार

४० लोह। (अ. मा, ह. नां. मा.)

उ०—१ हरीया अपनी इस्ट मैं, सब कोई हुसीयार। इस्ट इस्ट मैं आंतरौ, यूं पारस अर सार।—अनुभववाणी

उ०—२ बीहतइ इंद्र कपिल रइ अस बाधउ, अतर आप रह्यौ ग्रह अोट। छोडण सह आविया छछोहा, कळहण जिकै सार रा कोट।—महादेव पारवती री वेलि

४१ अन्तर, भेद या भिन्नता।

उ०—एकण चाक उतारीया, एकण ही कूंभार। हरीया माटी हेक है, फेर न कोई सार।—अनुभववाणी

४२ वीरता, बहादुरी।

उ०—सो इण री तौ सार नै आचार घणी घणी तिका कठा ताई कह्यौ जावै। जिण रा प्रवाडा रौ कुण पार पावै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

४३ बढई का छेद करने का एक अोजार विशेष, वर्मा।
(डिं. को.)

४४ बैल हाकने के डडे के नीचे लगी हुई लोह की महीनतम नोक।

रू. भे.—सयार, सारि, सीयार, स्यार।

अल्पा;—सायारंइ।

४५ पिंगल का एक मात्रिक समछद जिसके प्रत्येक चरण मे २८ मात्राएं होती है। अन्त मे दो गुरु होते है तथा १६, १२ मात्राओ पर यति होती है।

४६ पिंगल मे एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक गुरु अौर एक लघु क्रम से आठ वर्ण होते हैं।

४७ शतरंज चौपड आदि की गोट या मोहरा।

उ०—म्हैं चौपड थै सार, अेकण जाजम ढाळिया। हाजर पासौ हाथ, खेलौ क्यू नी खीवजी।—अज्ञात

४८ लाभ, फायदा।

उ०—१ पण अबै जकी बात हाथ सूं निकळगी, उणरौ सोच करणा मैं काई सार।—फुलवाडी

उ०—२ बीदणी आंसू राळती बोली—तौ अबै म्हारा जीवणा मैं ई की सार नी। मरघा की सार निगै आवै तौ ध्यांन राखजो।
—फुलवाडी

उ०—३ बिछावणा करनै है ज्यूं ई गाडी माथै सुवाण दां। अबै घणौ अबेळौ करणा में की सार नी।—फुलवाडी

४९ मतलब।

उ०—१ खासा दिना ताई सेठ री बीणती सांव अैळी गी. तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड आपरा मन नै समझावणौ ई सावळ जांणियौ। जणा जणां री हाजरी साजिया कांई सार।
—फुलवाड़ी

उ०—२ वौ साळस भतीजौ तौ सोनौ लेय सीधौ आपरै गाव ढळियौ। पछै उठै ढबणा मैं सार ई काई। घर मैं सोनौ आवता ई सै वातां रा ठाट व्हैगा।—फुलवाडी

५० सार्थकता।

उ०—१ अेक बांणिया रै मीठौ पांणी पीया सरै भला, खरच री अैडी आदत पडिया पछै जीवण मे ई काई सार।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजा रै मूडै अोसौ लावण री बात सुणी तौ छोटकी रांणी घणा ई कळझळ करघा पण कवर तुरत मानग्यौ। बाप रौ कणौ नी मानै तौ जीवण मै सार ई काई।—फुलवाड़ी

५१ निष्कर्ष, परिणाम।

उ०—१ तद कांमदार कह्यौ—जुम्मा! दाई सू पेट लुकायां की सार निकळै नी म्हनै तो व्ही जकी साची वात बता।—फुलवाड़ी

वि.—१ मुख्य, प्रमुख, प्रधान।

उ०—१ गौरी नदन गणपती, सकळ देव मा सार।—धरमपत्र

उ०—२ एक सबद मैं कहि समझाऊं, सुणि हो सब ससारा। राम नाम सौ सार सबद है, अौर कथन है छारा।—अनुभववाणी

उ०—३ ऊदा जुध आधिया, वाध विढिया वरदाई। माझी भारमलोत, सार गोयद सवाई।—रा. रू.

२ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ चिंतातुर थयौ तात निहालि नैं जी, केहनै ए दीजै कन्या सार हो। ए सरिखौ रूपैं गुण विद्या आगलौ जी, पुण्यैं लहियै एहवौ वर सार हो।—वि. कु.

उ०—२ कनक सिंहासन सुर रचिय, प्रभु बइसण अति सार। धरम प्रकासइ पास जिण, बइठी परखदा बार।—स. कु.

३ सब, समस्त, समग्र।

उ०—विरहन मारी विरह की, सुध बुध बिसरी सार। हरीया सिर सूं डारिया, हीर चीर सिणगार।—अनुभववांणी

४ उत्तम, बढिया।

रू भे.—स्यार।

सा'र, सा'रै—देखो 'सहारै' (रू. भे.)

उ०—अचाणचकां ही गांव रा ठाकर सैल वेगी जावता, घोड़ी चढ्या सा'र कर नीकळणैं लाग्या।—दसदोख

सारउ—देखो 'सारौ' (रू. भे.)

उ०—सुंदरियौ सारउ नहीं, कुअर वहेसी मग्ग। साहिब चित्त उपाड़ियउ, जिम केकाणा वग्ग।—ढो. मा.

सारकौ, सारखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ रावण गुणै सुरार, हार सारखौ बभीखण। अमी बट

ग्रासुरां, जोर ग्रत कमी सुरज्जरा।—रा. रू.

उ०—२ सो बादसाह ग्रौरंगजेब सारखौ दिवाण पण जयसिंह इसो जबर।—ग्रामेर रा धणी री बात

उ०—४ माणस दस एक काम ग्राया विसेस कहण सारखौ कोई नही।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—५ सारखो रूप सपदा जी बाई सारिखै उणिहार। साथै सजम ग्रादरचौ जी, बाई सारिखौ तपधार।—जयवाणी

(स्त्री. सारीखी)

सारगंध-सं. पु.—१ चन्दन। (ना. मा.)

उ०—चद ग्राघ्राण सारगंध क्रिसनागर, कसतूरी उपट्ट ए। सोरंभ ग्रबीर कमकमौ केसर, परिमळ जाणक हट्ट ए।—गु. रू. ब.

२ डिंगल का एक गीत (छद) विशेष जिसके प्रत्येक द्वाले मे ३२ वर्ण होते है।

सारगत-स. स्त्री.—घोडे की चाल विशेष।

सारघण-सं. पु.—कपूर।

उ०—मृगमद ग्रबर सारघण, गधसार ग्रगरेल। कुमकुमादि केसर ग्रतर, विहति सुगंधी रेल।—रा. रू.

सारड़ि, सारड़ी—देखो 'सारी' (ग्रल्पा; रू. भे.)

सारड़ो-स. पु.—लट्टू।

वि. वि.—देखो 'लट्टू'।

सारज-सं. पु.—१ मक्खन। (ह ना. मा.)

[सं. सऽर] २ सुदर्शन चक्र। (ग्र. मा; ह. ना मा.)

सारजग-सं पु.—चाँदी, रौप्य। (ह. ना. मा.)

सारजाळो, सारजालो-स. स्त्री.—कवच।

उ०—खिलै जंत्रधार काळी सिधो वज्रताळी खूटै, सारजाळी तूटै सिध फूटै स्रोण सीर। 'जाळमो' ग्रतूटै खेध इसै वेध लागो जूटै, बाणासा विछूटै घाट छूटै नथी वीर।—हुकमीचद खिडियौ

सारजू—देखो 'सरजू' (रू. भे.)

उ०—देवी सिंधु गोदावरी मही सगा, देवी गोमती ग्रम्मळा बाण गगा। देवी नरमदा सारजू सदा नीरा, देवी गल्लका तुगभद्रा गभीरा।—देवि.

सारझकोळ, सारझकोळौ-स. पु.—युद्ध, सग्राम। (ग्र. मा.)

सारटिफिकट, सारटिफिकेट, सारटीफिकट, सारटीफिकेट—देखो 'सरटिफिकेट' (रू. भे.)

उ०—'सोरो' ग्रापां रो भगवान बणग्यौ है। उण रो सुमरण, ग्रापा नै समाज माय, बिरादरी माय, जगळ माय, सूनेड माय, सगळी जगां ऊंची बिरादरी माय बेठण जोगा करण रो सारटीफिकट है।—तिरसकू

सारण-सं. पु [सं. सारण=बहाने वाला] १ कुए पर चरस खीचने वाले बैलो द्वारा चरस खींचते समय चलने हेतु बना हुग्रा ढलुग्रा मार्ग।

उ०—मोरणौ वड़ विरख रदीनौ, जूंता जबरौ सुख गिणा। सारण तोरै टूडी खुदी, बैल दडूकै दुख विणा।—दसदेव

२ चरखे के नीचे की लम्बी लकड़ी, जिसके एक तरफ 'तलगटी' व दूसरी तरफ 'पाटड़ी' रहती है।

३ पारा ग्रादि रसो का सस्कार।

४ रोग, बीमारी।

उ०—देखि जेठाणी लागौ छइ जेठ, मुखी कुमलाणौ ग्ररि सूकइ छइ होठ। सनेहा सारण वहुई, धरती पाई न देणउं जाई।—बी. दे.

५ एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।

६ तालाब से निकली हुई छोटी नहर। (मेवाड)

७ खेत की क्यारियो तक पानी पहुँचाने की नाली। (डि. को.)

८ रावण के एक मंत्री एवं गुप्तचर का नाम।

९ वसुदेवजी व रोहिणी के ससर्ग से उत्पन्न बलराम ग्रादि ग्राठ पुत्रो मे से एक।

१० मणिवर एव देवजनी के पुत्रों मे से एक पुत्र, यक्ष।

वि.—१ पूर्ण करने वाला, पूरा करने वाला।

२ सफलता प्राप्त, सफल।

३ सिद्ध।

सारणि, सारणी-सं. स्त्री. [स.] १ नाला या छोटी नहर।

२ छोटी नदी।

३ तलहटी।

उ०—डूंगर तै पसु ऊतरै, सारणि दोड़ै ग्राय। जनहरिदास नारी मतै, मिळै स खोटा खाय।—ह. पु. वा.

४ बडा भोज।

यौ.—सैर-सारणी।

५ मत्र-तत्रो से खींचने वाली स्त्री।

ज्यूं—सारणी घी सार लियौ।

सारणेसर, सारणेसुर, सारणेस्वर-स. पु.—ग्राबू पर्वत पर स्थित शिव की एक मूर्ति व मन्दिर।

रू. भे.—सारनेसर, सारनेसुर, सारनेस्वर।

सारणौ-सं. पु.—१ मास, सब्जी ग्रादि।

उ०—सूसा केरा सारणा, ग्रद्रक ग्रौर प्याज। टुकियक नीबू डालदौ, क्या दिल्ली का राज।—ग्रग्यात

२ व्यंजन, पकवान।

वि.—१ सफल करने वाला, सिद्ध करने वाला।

उ०— सीवर सारणौ जी केता निवळ संता काम। महपत मारणौ जो मह जुध फरसधर सां माम।—र. ज. प्र.

२ करने वाला।

सारणौ, सारबौ-क्रि. स.—१ पूर्ण करना, पूरा करना।

उ०—१ गरज सारणां ग्राप बिन कवण सारै गरज, तवै यम ग्ररज

भांणेज तोरा। सुण कहूं बात आगालगू माख, गुण कहूं तिकण सुण आव गोरा।—कैसरोजी

उ०—२ हाथ-वसू देह विना फगत रूप रा कोरा वखाण काई गरज सारै। ठाकरसा नै थोडी भळकी आयगी। डावडी नै आडै हाथा लेवता वोल्या—कोरा-मोरा वखाण मू म्हनै की तह्णी-मह्णी नी।

—फुलवाडी

उ०—३ तद देवराज कामदारा नूं कह्यौ—औ वडो मुहतौ वडै दरवार रौ परधान इतरा राईतना नै छोड मोनूं जाण नै इतरी भूय आयो तौ इणरौ जरूर अरथ सारणौ।—नैणसी

२ सिद्ध करना, सफल करना।

उ०—१ तुही वध डूवता जिहाजा तारिया, धारिया बिलद ब्रद तुरत धाई। पूत रिड़माल रै भाग पधारिया, अनेकां सारिया काज आई।—खेतसी बारहठ

उ०—२ प्रभू विराजै परमपद, तहा आपणौ धाम। लखमीवर लखमी सहित, सारै सता काम।—गज-उद्धार

उ०—३ वरण नाग नतुवौ हुवौ चढियो रण सग्रामौ रे। सत्य काढी नै सेठो हुवौ, सारचा आतम कामो रे।—जयवांणी

३ खीचना, कसना।

उ०—तद कांधळजी आपरा वेटा नू अरू साथ सारैई नू कयौ कै थै फौज रौ मूडौ भालो जितरै हू तग सारलूं। तद कांधळजी तग सारण नूं घोडै सू ऊतरिया।—द. दा.

४ खीचना।

उ०—तव वलतौ हरि भुवियौ रे, सारचौ 'नेम' नौ हाथौ। हिंडोला जिम हीचियौ रे, गोप्या तणौ इज नाथौ।—जयवाणी

५ (आंखो मे काजल, सुरमा आदि) लगाना।

उ०—१ इसडी आखडियाह, किया अग वाग्णै, सर मनमथ गा हारि क' अजण सारणै। खूबी न रही काय खतगा खजना, नेही ह्वै मुनिराज विसारि निरजना।—बा. दा.

उ०—२ इण भांति री तूंजी, हलका ज्यौ लचकती, रतनाळा लोचना, अणिआळा काजळ सारीजै छै। जोहर काचू जडिजै छै। भमर लंक, क्षीण लक ऊपरा चालहरा घाघरा वासिजै छै।

—रा. सा. सं.

६ करना, पार पटकना।

उ०—१ बेलिया वापूकारतौ आधारतौ भुजै आभ, वाकारतौ वैरीहरा साभतौ सनाह। वारणां घड़ा वारतौ मारतौ मसद मेछा साह रा काम सारतौ राजा 'करणमाह'।—दूदौ बीठू

उ०—२ करहा तो वेसासडउ, मौ विण सारचा काज। अतरि जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळइ आज।—ढो. मा.

उ०—३ लोग तौ भगतरांम रा बारा मै अठा तक चरचावा करता कै भगवांन उण रा बस मैं है। वौ जिण काम वास्तै हठ भेललै, वौ कांम तौ भगवान नैं सारणी ई पडै।—फुलवाडी

७ करना।

उ०—१ सर पहर अठ जुध सारियौ, मेघनाद लछमण मारियौ। सभि असंख दळ बळ सबळ दससिर, आवियौ अवनाड़।—सू. प्र.

उ०—२ साहपुर राज महाराज ऊमेदसी, समापण बाज रीझां सकोनै। अहू ही नरेसा काज सारण तूंही, अहूं देसां तणी लाज तोनै।—उम्मेदसिंह सिसोदिया री गीत

८ बनाना, निकालना।

उ०—वा ई राजगरू री मेहतरांणी ही। मुळक री सान चढावती बोली—कमळ कादा मैं इज विकसै। कदै ई कदै ई छोटा मिनख जको काम सार सकै, वो मोटा मिनखां सूं नी सलटै।—फुलवाडी

९ सुन्दर बनाना, सजाना, सुशोभित करना।

१० भेजना, प्रेषित करना।

उ०—विस्वामित्र तणा सुण बैणां, आनंद अंग उमंगै। महपत वदै पाव मुनी रा, सार दिया सुत संगै।—र. रू.

११ पिरोना।

उ०—१ पछै ऊमाजी सोळै सिणगार करनै बैठा छै। बाळ बाळ मोती सार नै इण जुगत महल पधारिया।

—लाली मेवाड़ी री बात

उ०—२ तठै आगै बखाणी तिण भांति री रायजादी गोरंगीआं सोल सिणगार ठविया बाळ बाळ मोती सारियां तोरण कळस बदावै छै। मोतियै वधावै छै। पाखै छै।—रा. सा. सं.

१२ शतरंज या चौसर मे गोटी रखना।

१३ सुधारना, पार लगाना।

१४ देखरेख करना।

१५ मन्त्र-तंत्र द्वारा खीचना, प्राप्त करना, लेना।

ज्यूं—घी सारणो।

१६ साफ करना, निर्मल करना।

१७ चलाना, सवारी करना (फेरना)।

१८ सहायता करना, मदद करना।

१९ धारण करना।

२० अनुभव करना।

२१ उत्पन्न करना, पैदा करना।

उ०—ईडौ कनक अछेह, देह धरि हरि तिण द्वारै। रचै नाभ नीरज्ज, रज्ज अज प्रज गुण सारै।—रा. रू.

२२ प्रशिक्षित करना (ऊंट, घोडा आदि)।

उ०—अठै पिउसधी कागड़े री असवारी रौ घोडौ तिण ऊपर घोडा री असवारी सीखै। बरस एक माहै घोड़ौ सारियौ नै पक्की असवार हुई।—जखड़ा मुखडा भाटी री बात

२३ काटना।

उ०—सहजै जीव जिद कुं छाडै, ता कु कहत हरामा। काजी करद गळ सिर सारै, बिना दोस बेकामा।—अनुभववाणी

२४ ध्यान देना, सुनना।

उ०—घणी अंधारी घुरत घण, रे तिय आधी रात। सुणै न कोई सारसी, बिलकुल झूठी बात।—सगुणा सत्रसाळ री बात

२५ मिलाना।

उ०—दिन दिन लेखण हाथ म्हारी सुंदर गोरी रे, साजड़ली पडी रे रोकड सारता औ राज।—लो. गी.

२६ छेदना छेदन करना।

२७ मारना, सहार करना।

उ०—उगां धारि बदूक मोती उतारै, सरां मारि जाता खगां गैण सारै। बळी तोमरा दाव कै चाव बाधै, समग्रा गुणा खग्ग रा मग्ग साधै।—वं. भा.

२८ छोडना (बारुद, बाण, चरखी आदि)।

उ०—एक चित्त ऊजळा चलै सुभ नीत रसत्तै एक खून छलवान वहै कोळाहळ मत्तै। एक सोर सारत्ति घोर धूवा रवि डंबर, ज्यौं वावळि वादळ विसाळ ओपै मग अबर।—रा. रू.

सारणहार, हारौ (हारी), सारणियौ—वि०।

सारिओड़ौ, सारियोड़ौ, सारघोडौ भू० का० कृ०।

सारीजणौ, सारीजबौ—कर्म वा०।

सारत सारत्त-सं. स्त्री.—१ किसी कार्य के करने से पूर्व उसके बारे में गुप्त बातचीत, समझौता।

उ०—१ कोट नीचै जाय ऊभौ रह्यौ। तेली सूं सारत हुती। तद तेली हेठै लाव नाखी। तद ठाकुरसी सारा साथ सूं ऊपर चढियौ। भीतर गयौ। लडाई हुई। पीरोज काम आयौ।—नैणसी

उ०—२ आधी रात का भटनेर जाय पहुचिया उठै तेली रै आदमी मेल सारत कराई।—ठाकुर जेतसी री वात

उ०—३ अै वी गैला उपरै ऊभा छै। सारत विलाग रही छै। मनमाहे चोपची जाग रही छै।—पन्ना

२ घोड़े की तेज चाल।

उ०—अन वन वरत लियौ पति आरत, साथै पथ हुवा धरि सारत। छत्रपति तुग गमामग छूटा, तिकरि गयण सूं नाखत्र खूटा।—रा. रू.

वि.—लाल, रक्तवर्ण।

उ०—वीर महारस वयण, नयण सारत्त वरग्गै। जाणि कमळ दळ जोड, वणं जळ जावग लग्गै।—रा. रू.

सारत्ति, सारत्ती-सं. स्त्री.—आसक्ति।

उ०—व्रदं फूल सुगध बधं, सारत्ति पांन मादिक। रत्त चक्ख सहासं, अोमासं पासि रमणीय।—रा. रू.

सारत्रण, सारत्रिण-स. पु. [स सार+तृण] बांस। (ह. ना. मा)

सारथक-वि. [सं. सार्थ+कन्, सार्थक] १ सफल, सिद्ध।

उ०—१ चांद रै उनमान पळकतौ उणियारौ। आपरै आपै इण रूप नै पळकाय दुनिया री सगळी अंधारौ सारथक व्हियौ।

—फुलवाडी

उ०—२ भूत रौ जमारौ सारथक व्हियौ। बींदणी नै लागण रौ विचार आता ई भूत नै पाछो चेतौ व्हियौ। लाग्या तौ आ दुख पावेला। अेडा रूप नै दुख देवणौ कीकर आवै।—फुलवाडी

२ लाभदायक, उपयोगी।

उ०—आ अकरमिया सू बदळौ लिया बिना विरखा री प्रीत रौ कीं सार नीं। उण रै बिछोव रौ कीं अरथ नीं। बदळौ लियां ई उण री प्रीत फळेला, बिछोव सारथक व्हैला।—फुलवाड़ी

सारथकता-सं. स्त्री—१ सार्थक होने का भाव।

२ उपयोगिता, लाभदायकता।

उ०—मिनख रै मन रा तोख उठावण मै ई काई लुगाई रै जमारा री सारथकता है कै आपरै मन री हाजरी साजणी उणारी अत-नेम है।—फुलवाडी

सारथवाह सारथवाही-स पु—१ कुबेर।

२ धनाढ्य व्यक्ति।

३ व्यापारी, साहुकार।

रू. भे.—सत्थवाह, सत्थवाहौ।

सारथि, सारथी-वि. [सं. सारथि] रथ चलाने वाला।

सं. पु.—रथ चलाने वाला व्यक्ति।

उ०—१ सारंग सिलीमुख साथि सारथी, प्रोहित जांणणहार पथ। कागळ चौ ततकाळ क्रपानिधि, रथ बैठा सांभळि अरथ।—वेलि

उ०—२ रथ थाभि सारथी विप्र छाडि रथ, औ पुर हरि बोलिया इम। आयौ कहि कहि नाम अम्हीणौ, जा सुख दे स्यामा नै जिम।

—वेलि

उ०—३ इण रीति रतळांम रै राजा राठोड़ रत्नसिंह सारथी समेत तरणी नूं तमासै लगाइ केही गजदंता सहित सुंडादड सूना करि दीठा दोयणा रै सोणित भद्रकाळि रौ खप्पर भराइ बीर बेताळा नूं गूद रा गाळा जिमाइ बिना माथै भी साहजादा नूं सकाइ लोहछक घूमता गजा री घडा मैं सूरसज्जा सूतै इच्छा रै अनुमार परलोक लियौ।—व. भा.

रू. भे—सारही, स्वारथी।

सारदंडायनि, सारदंडायनी-स. पु. [स. शारदंडायनि] कुंती की बहन श्रुतसेना का पति एक केकय राजा का नाम।

सारद-वि. [स शारदः] १ शरद ऋतु का।

उ०—१ इण रीति देवी रा वरदांन जिसडी दुरलभ चीज ब्राह्मण नूं दिवाय हरि रौ अनुज उज्जैणि आयौ। अर सारद ससी री चद्रिका नूं आपरी छाया रौ करणहार चौतरफ चारु जस चलायौ।

—व. भा.

उ०—२ सारद सनि सारद बदन, सारद कविता सुद्ध। अदसारद पारद उकति, करण विसारद बुद्ध।—रा. रू.

उ०—३ नरपति पेखि गुणांगं, उच्छत्र इयजेण तेण कामित्त। रयणी सारद महणी, पूरण निसीत परखि चंद्रेण।—रा. रू.
२ दोषरहित, निर्दूषण, निर्दोष।
उ०—सारद ससि सारद बदन, सारद कविता सुद्ध। अदसारद पारद उकति, करण विसारद बुद्ध।—रा. रू.
स. पु.—१ चन्द्रमा, चाँद।
उ०—१ सारद वदन सोहामणौ, ह्रदय कमल सोभत है। रूपं मदन थकी रूयड़ो, गोर वरण गुणवत है।—वि कु.
२ छप्पय छन्द का ३६ वा भेद जिसमे ३२ गुरु ८८ लघु से १२० वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं।
३ देखो 'सारदा' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—१ सारद ससि सारद वदन, सारद कविता सुद्ध। अदसारद पारद उकति, करण विसारद बुद्ध।—रा. रू.
उ०—२ इमाणद गुरु चित्त मा आंणा, वेद व्यास ना पर्छ वखाणा। समरां प्रथिमि प्रथिमि सारद ना, निमिस्कार ब्रह्मा नारद ना।
—पी ग्रं

सारदा–स. स्त्री. [सं शारदा] १ सरस्वती। (अ. मा; ह. ना. मा.)
उ०—१ थई जै इसा रूप अन्नेक थारा, सको सारदा के सके नाहि सारा। जपूं जीह सोभाग मौ भाग जागो, लुळै आय स्रीमाय रै पाय लागो।—मे. म.
उ०—२ सारदा सरस्वती वरणवू, पणि कसी एक छइ जे सारदा सरस्वती? कमलभू ब्रंह्मा तणी बेटी, कमलमुखी, राजहसवाहिनी, अनेक वेदवेदांकसास्त्र धरती,·········।—व. स.
२ एक नदी का नाम।
उ०—........ सहिमल्यंग सरोवर, खान सरोवर, अ्रसिइ माहा-काव्यि करी, कीरतिथभि करी, सारदा सरस्वती नदी ए करी, देसदेसाउर वदी तूं विक्षातमान छइ,·········।—व. स.
३ देवी का नाम।
उ०—१ तुही सारदा नारदा कासमेरी, तुही कालिका भास मद्रास केरी। कपाळी तुही किल्लकत्तै किल्लक्कै, जिलै उत्तराखड तू ज्वाळ जक्कै।—मे. म.
उ०—२ सं कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया। ओह सोह अखया अभया, आई अजया विजया उमया।—देवि.
४ पार्वती देवी का नामान्तर।
५ प्राचीन समय की एक लिपि।
६ श्रीरामकृष्ण परमहंस की पत्नी का नाम।
७ सफेद रंग, श्वेत रग। *
वि.—१ अभिष्ट फल देने वाली।
२ श्वेत, सफेद। * (डि. को.)
रू. भे.—सारद।

सारदातीरथ–सं. पु. यौ.—एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सारदाभरण–सं. पु. [स. शारदाभरण] कर्नाटकी पद्धति का एक राग। (सगीत)

सारदासुंदरी–सं. स्त्र. यौ—दुर्गा देवी का एक नाम।

सारदूळ–स. पु. [स. शार्दूल] १ सिंह, शेर। (अ. मा, डि. को.)
उ०—चखचोळ मूंछ भूहा चढी, तामस उठी तमोगुणी। मेहरी गाज जाणं मरद, सारदूळ कांना सुणी।—मे. म.
२ बब्बर शेर, केसरी सिंह।
३ बाघ।
४ रावणपक्षीय एक गुप्तचर दल का प्रमुख एक राक्षस।
५ दोहे का एक भेद जिसमे ६ गुरु और ३६ लघु मात्रायें होती हैं।
६ छप्पय छन्द का १७ वा भेद जिसमे ५४ गुरु ४४ लघु से ९८ वर्ण या १५२ मात्राऐं होती है।
वि.—श्रेष्ठ।
रू भे.—सद्दूळ, सादळ, सादुळ, सादुळउ, सादूर, सदूळ, सादूळउ, सदूळौ, सारदूळौ।

सारदूलकरण–स पु [स. शार्दूलकर्ण] त्रिशकु नामक एक महाराजा।

सारदूललित–सं पु. [स शार्दूलललित] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक पद मे अठारह अक्षर होते है।

सारदूलवाहण, सारदूलवाहन–स. पु. यौ. [सं. शार्दूलवाहन] १ जैन मतानुसार पच्चीस पूर्व जिनो मे से एक जिन।
२ दुर्गा, देवी।

सारदूळसटा–स. पु. यौ—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमशः भगण सगण जगण सगण दो तगण और अत मे एक गुरु होता है तथा १२ व ७ पर यति होती है। (रि. प्र.)

सारदूली–स. स्त्री. [सं. शार्दूली] कश्यप एव क्रोधा की कन्या का नाम।

सारदूळौ—देखो 'सारदूळ' (रू. भे.)

सारद्वती–सं. स्त्री [स. शारद्वती] १ अर्जुन के जन्मोत्सव पर उपस्थित एक अप्सरा का नाम।
२ शरद्वत गौतम ऋषि की पुत्री व द्रोणाचार्य की पत्नी कृपी का नामान्तर।

सारधार–सं. पु.—१ खड़गधारी व्यक्ति।
उ०—फड़क्कै फीफरा रैणा, धडक्कै केविया फौज। धकै चाढ भाजै, उरा घणा सारधार।—बुधसिंह सिढायच
२ तलवार।
उ०—वगतरा ऊपरा तरवारीआ रा वाड भूटि नै रहीआ छै। जाणै वादळां माहे वीजळिआ रा सिला उपडिआ पाखरा ऊपरै सारधारां फूलधारा वाजी सु ठणणणणण जाणै परभात री झालर ठणकी।
—रा. सा. सं.

सारखू–सं. स्त्री.—लड़की, पुत्री। (डि. को.)

उ०—१ सूरत धन जेसिंघ सारधू, भली भली त्रिहुँ भुवण भणी। मा केरवां तणी न कियौ अत, तौ जेही पांडवा तणी।
—गोरधन बोगसौ

उ०—२ कासूं मा भोळप करै, हूं वाजू सुरताण। सूरजमल री सारधू, यौ पूठै अमराण।—पा. प्र.

उ०—३ सूं जमदढ्ढां तेग, जोड चौधार बडप्फर। सहित 'भाण' सारधू, सोळ सिणगार निरंतर।—गु. रू. बं.

सारनाल, सारनालौ—स. पु. - बिना मिलाई किया हुआ वस्त्र।

उ०—अथ वस्त्र, देवदूष्य, चीनासुक······सिलहटी कपूरीया चव-कपडीया पोतिमा वक्कोटा नागवटा सारनालां खासटा आगिहिल कबीच संजरांमा मदवी फूलपगरीया मागीपी······।—व. स.

सारनी—सं. स्त्री—गायिका।

उ०—सदा प्रियासु प्रीति रीति गीत सारनी नहीं। निसास रोज आननी उरोज धारनी नही।—ऊ का.

सारनेसर, सारनेसुर सारनेस्वर—देखो 'सारणेस्वर' (रू. भे.)

सारबभू, सारबभूम, सारबभोम—देखो 'सारवभोम' (रू. भे.)

सारबांड—सं. स्त्री.—१ तलवार।

२ देखो 'सारभाड' (रू भे.)

सारबांण, सारबांन—देखो सारवान' (रू भे) (आइने अकबरी)

सारबायरौ—वि. यौ.—तत्वरहित, निरर्थक।

(मि. तंतबायरौ)

सारभांड—सं. पु.—१ व्यापार की दृष्टि से कीमती वस्तु।

२ देखो 'सारबाड' (रू. भे.)

सारभाटौ—सं. पु.—ज्वारभाटा से बिल्कुल विपरीत अवस्था अर्थात ज्वार आने के बाद की स्थिति जब कि पानी वापिस लौटने लगता है।

सारमणी, सारमणौ—सं. स्त्री. पु.—बुहारी, झाड़ू।

रू. भे.—सारवणी।

सारमय—स पु [स] १ श्वफल्क व गादिनी के संसर्ग से उत्पन्न अक्रूरादि तेरह पुत्रों मे से एक पुत्र का नाम।

२ कश्यप ऋषि एव सरमा के पुत्रों मे से एक पुत्र का नाम।

सारमरण—स. पु. यौ.—तलवार के प्रहार से वीरगति पाने की क्रिया।

उ०—'पीथल' तणौ म करि दुख पछि पछि, दिढ गा तजि करि ताह दुख। आ रीत यह अखा घरि आगै, सारमरण घण घणौ सुख —प्रिथीराज जैतावत रौ गीत

वि.—तलवार के प्रहार से वीरगति पाने वाला।

सारमति, सारमती—स. स्त्री. —कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

(संगीत)

सारमेय—सं. पु. [सं. सारमेय.] १ श्वान, कुत्ता।

(अ. मा; ह. ना. मा.)

उ०—गोमाय सगर पळचर गहणि, सारमेय नाहर समळ। अंग-अंग भखै पळ आसुरां, कर पद धर तंडळ कमळ।—रा. रू.

सारमेयादन—सं. पु. [स.] २८ प्रकार के नरकों में से एक नरक का नाम।

सारमोजा—सं. पु. यौ —लोहे के बने दस्ताने, मौजे जो युद्ध करते समय तीर-तलवार आदि के प्रहार से बचने हेतु पहने जाते थे।

उ०—१ पहरै नरामा पचठामा अग जांमा ओप ए। सोहै सकाजा सीस ताजा सारमोजां जोप ए।—गु. रू. बं.

उ०—२ झालरी टोप सिर झळहळेय, किरि भाण उदै गिरि कळकळेय। बळवत जडै हाथाळा बेय, पेहरिया सारमोजा पगेय।
—गु रू. बं.

सारवंग—स. पु.—घोडा, अश्व।

उ०—तुरी त्यार कीआ कसै जीण तगं। वणावै सिरी पाखरा सारवंग। सफै वंस छत्रीस हिंदू समत्थ करेवा महासूर भारत्थ कत्थ।—र. वचनिका

सारवट—स पु.—१ लोहू की जजीरनुमा मोजा।

उ०—१ वण टोप सिरै पग सारवटं, घट मेघ कि मेघ उचार घटं। कडिया खग खजर तूण कसै, तद पांण कबाण लई तरसै।
—रा. रू.

२ जजीरनुमा युद्ध मे धारण करने का पायजामा।

उ०—सारवट सूथण मोजा सार, जुड़ै छकड़ा लक्कड़ा जोधार।
—गो रू.

सारवणी—देखो 'सारमणी' (रू. भे.)

सारवणौ, सारवबौ—देखो 'सारणौ, सारबौ' (रू. भे)

उ०—१ सत्र आठ अनै दस सारविया।—पा. प्र.

उ०—२ बोल ज बापी काह, हमीरै वसीया हीयै। तै सारवीयू साच, भागै काचै भीमवुत।—हमीर भीमोत री बात

सारवणहार हारौ (हारो), सारवणियौ वि०।

सारविओड़ौ, सारवियोडौ, सारव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सारवीजणौ, सारवीजबौ—कर्म वा०।

सारवति, सारपती—सं. स्त्री.—एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे तीन भगण और एक गुरु सहित कुल १० वर्ण होते हैं।

सारवभू सारवभूम—वि. [सं. सार्वभौम] समस्त भूमि सम्बन्धी, सम्पूर्ण भूमि का।

सारवभोम—स. पु [सं. सार्वभौमः] १ चक्रवती राजा, सम्राट।

२ अहयाति के भानुमती के संसर्ग से उत्पन्न पुत्र जो सुनन्दा का पति व जयत्सेन का पिता था।

३ विदूरथ का पुत्र।

४ आठ दिग्विजयों मे से एक।

रू. भे.—सारबभू, सारबभूम, सारबभोम।

सारवभौतिक—वि —जो सब भूतों से सम्बन्धित हो।

सारवभौमव्रत–स पु. [सं. सार्वभौमव्रत] कार्तिक शुक्ला दशमी को किया जाने वाला व्रत विशेष।

सारवरी-सं स्त्री. [स. शार्वरी] १ रात, रात्रि।
२ विष्णुवीसी का चौदहवा वर्ष। (ज्योतिष)

सारवांण, सारवांन-सं पु.—ऊट सवार, सुतर सवार।
उ०—धिखतै ग्रारण सै लोयण जमराज सै ग्रसवार काळीनाग ज्यू करतै फुरणूं का फूंकार ऐसै सारवांन के हाकल सै विमरीर वाधू परि धाए।—सू. प्र.
उ०—१ घसलकै जेम लावा चडम, जिकै ग्रपारा जूंगला। कज भार सारवांनां कठठ, ग्रहियां नुखतां गुगलां।—बखतौ खिडियौ
उ०—२ सिर वदि हुकम तिण हिज समै, दिया कारखांना दुवा। कतार भार वरदार कजि, हुकम सारवांनां हुवा।—सू. प्र.
उ०—३ महारोस रोसा इळा ताव मानै, वडा जुग त्यारी किया सारवांनै।—रा. रू.
वि.—१ सार या तत्व से युक्त।
२ ऊंट रखने वाला।
३ उंट पर सवारी करने वाला।
४ ऊटो को चराने वाला।
रू. भे.—सारबांण, सारबान।

सारविद-स. पु [स.] शिव, महादेव। (डि. नां. मा.)

सारविद्या-स. स्त्री. [सं.] ग्रस्त्र-शस्त्र चलाने की विद्या।

सारवियोड़ौ—देखो 'सारियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सारवियोड़ी)

सारसंगीत—देखो 'वडौसाणोर' (र. ज. प्र.)

सारस-सं. पु. [स] (स्त्री. सारसणी) १ एक सुंदर पक्षी जो क्रौंच से बड़ा एव सदैव जोड़े से रहता है। इसकी गर्दन लम्बी होती है। इसकी ग्रावाज बडी तेज होती है।
उ०—सारस मरतौ जोय, सारसणी मरसी सही। लाखीणी ग्रा लोय, जग मे रहसी जेठवा।—जेठवा
२ गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक।
३ यदु राजा के एक पुत्र का नाम।
४ चन्द्रमा, चांद।
५ छप्पय छन्द का ३८ वां (मतान्तर से ३० वां) भेद जिसमे ३३ गुरु ग्रौर ८६ लघु सहित ११६ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र)
६ २४ मात्राग्रों का एक मात्रिक छन्द विशेष जिसमें १२, १२ पर यति होती है।
ग्रल्पा; रू. भे.—सारसडौ, सारसणौ।

सारसड़ौ—देखो 'सारस' (ग्रल्पा; रू. भे.)
उ०—१ सारसड़ा मोती चुगै, चुगै तो कुरळैं काय। सगुण पियारा जै मिळै, मिळै तो बिछुड़ै काय।—ग्रग्यात
उ०—२ सारस मरतौ जोय, सारसणी मरसी सही। लाखीणी ग्रा लोय, जग मैं रहसी जेठवा।—जेठवा
(स्त्री. सारसडी, सारसणी)

सारसत, सारसत्त—१ देखो 'सारस्वत' (रू भे.)
२ देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)
उ०—देवांण विद्या दत्तावरी, देवी धन दाता वरी। चहुवाणा वंस रूपक चवां, सारसत्त भुवनेस्वरी।—मालौ ग्रासियौ

सारसप्रिय–स पु.—कर्नाटकी पद्धति का एक राग। (संगीत)

सारससीस–वि —लाल, रक्तवर्ण। * (डि. को.)

सारसियाळ-स. पु.—सिंह, शेर।

सारसी-सं. स्त्री.—१ शेर, हाथी, ऊंट ग्रादि की मस्ती।
उ०—१ छिलता पहाड पहाड पाखती, ग्रधर झरता चरण धरइ। ग्रब तणा ग्रग लुब ग्राविया, कुंजर विच सारसी करइ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ ········भमण मथा सालीग्रै सिंह ज्यौ सारसें करता सीधोडा सा, कूंटा काढिग्रां, भूखे मयद ज्यौ हूकार करता, मद वहता, हाथी ज्यौ जोहा खाता, भाद्रवै री गाज ज्यौं ग्रावाज करता,······ ।—रा. सा. स.
उ०—३ ·········इसु मूरतिमतउ क्रतातु, महाकाय परवतप्राय, सप्तांग मदप्रतिस्ठितु, देवताधिस्ठतु, त्रिदडगलितु, सारसी करतु, मदप्रवाह झरतु हस्तिराजु निरव्याजु, क्रसणवरणु·········।
—व. स.
२ मस्त हाथी द्वारा चिंघाडते हुए सूंड को ऊपर-नीचे करने की क्रिया।
उ०—१ ·········मदवारि झरता, तिहा भमरा रणझणता, सारसी मूकता, कल्लोल करता, इस्या एक जात्य हस्ती,·········।
—व. स.
उ०—२ हस्तिवरणन, फोफलवरण प्राणबद्धकरण, उज्जवल—दंत, युद्धपात्र, निरमलगात्र, ग्रासणि ऊचा, नेत्रि नीचा, दर्पि दलइं कोपि ज्वलइ, मदि रेलइं, सारसी मेल्हइं, मूंक्या माडइ, ··।
—व. स.
उ०—३ डग बेडिया दुलठु लगा चहुवा पग लगर। ग्राकासी सारसी, करै ग्रग्राज भभकर।—सू. प्र.
क्रि. प्र.—करणी।
३ ग्रट्ठाईस मात्राग्रों का एक छद विशेष जिसके मध्य मे तीन बार यमक की ग्रावृत्ति होती है तथा चरण के ग्रत में दीर्घ होता है। इसमे १६, १४ पर यति होती है।
४ ग्रार्या या गाहा छद का एक भेद विशेष जिसके चारो चरणों में मिलाकर ५ गुरु ग्रौर ४७ लघु सहित ५२ वर्ण या ५७ मात्राएँ हो।

सारसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ खळ अनमंद अखू-ी खूनै, दीह रात सारसो डर। कोटां दहूं विचै राव कमधज, नेसा पेम लियंत नर।—गु. रू. बं.

उ०—२ 'अमरै' 'मदनै' सारसा, 'हेरी' जिसा हणवंत। साथ सक्रोधा साम छळ, ऐं-जोधा बळवंत।—रा. रू.

उ०—३ मदभागण मो सारसी, राज छै लैंली राय। कोइक पुर री कांमणी, राखैली बिलमाय।—पना

(स्त्री. सारसी)

सारस्टि, सारस्टिता-सं. स्त्री. [स. सार्ष्टि, सार्ष्टिता] पांच प्रकार की मुक्तियों मे से एक जिसमे उपासक पद या अधिकार मे ईश्वर के समान होता है।

सारस्वत-वि. [स] १ सरस्वती का, सरस्वती से सम्बन्धी।

२ सरस्वती नदी का, सरस्वती नदी से सम्बन्धी।

३ सास्वत देश से सम्बन्धी।

सं. पु.—१ सरस्वती नदी के तट पर बसा प्रदेश।

२ दधिचि ऋषि व सरस्वती नदी के गर्भ से उत्पन्न एक ऋषि।

३ अधिकांशतः पंजाब में मिलने वाले पञ्चविध गौड ब्राह्मण जो पहले सरस्वती नदी के आसपास के देश मे रहते थे।

४ एक व्याकरण।

उ०—ऐसी भांति सै खटि भाखा कहि बताई। चातुरी कला को भांति भांति चतुराई। जिसकी साख प्रथम भाखा ससक्रत सो तौ अनुभूति कृत्य सारस्वत सो पाई।—सू. प्र.

५ रविवार या प्रत्येक पंचमी को किया जाने वाला सरस्वती माता का व्रत विशेष जिसको करने वाला व्यक्ति भाग्यवान व विद्वान बन जाता है।

रू. भे.—सारसत, सारसत्त।

सारस्वती-सं. स्त्री [स.] लूनी नदी का एक नाम जो उसके उद्गम से कुछ दूरी पर गोविंदगढ़ के पास पुकारा जाता है। (वीरविनोद)

सारस्वतोत्सव-स. पु. [स] बसन्तपचमी को किया जाने वाला सरस्वती-पूजन।

सारहटा-सं. पु.—शस्त्र-प्रहार।

सारहली-सं. स्त्री.—१ लकड़ी में छेद करने का बढ़ई का एक प्रकार का औजार विशेष।

२ मादा ऊँट।

३ देखो 'सार'।

उ०—तन डोळिया पछै डूंगर तणा, सूतै नींद जु तै संभुवै। सारहली चिहुं ठोड साचवी, हेकण जिण वाखांण हुवै।

—प्रिथीराज राठौड़

सारही—देखो 'सारथी' (रू. भे.)

उ०—पड़ी धरातलि ऊपर भागूं रोसि चड्यउ चहूआण। सातल भणइ सारही तेडउ, जेह न चूकइ बांण।—कां. दे. प्र.

सार्द्धोयदोस, सार्द्धीयदोस-सं. पु.—जैन मतानुसार संचित वस्तुओं के मध्य रखी अचित वस्तु को लेने पर होने वाला दोष।

सारांस-स पु. [स. साराश] १ सक्षेप, सार, निचोड।

२ अभिप्राय, तात्पर्य।

३ परिणाम, नतीजा।

४ उपसहार।

सारावती-सं. स्त्री.—एक प्रकार का छद विशेष।

सारासण, सारासन-सं. पु.—१ परशुराम के समकालीन एक प्राचीन ऋषि। (मा. म.)

२ देखो 'सरासन' (रू. भे.)

सारासार-स. पु.—१ सत्यासत्य का विवेचन।

२ सार-असार की व्याख्या।

साराह—देखो सराह' (रू. भे.)

उ०—१ त्यां हूंत अती वाधू तरणि, अगन कंत हित आंगमै। साराह तेज दीठा सती, सीह वराह न सूरमै।—रा. रू.

उ०—२ एकोतर बंस उधारै रे, निज लोक उभै निसतारै। साराह जिका जग सारै रे, अवधेसर जीह उचारै।—र. ज. प्र.

साराहणौ, साराहबौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बाहि चौधार अरि ढोहिया पार बिण, रूक साराहियौ दहूं राहा। गवाडै पवाड़ा 'जेसौ' धरियां घुमर, समर गाजै व्हौ पातसाहा।—सूजो

उ०—२ जमा गोरजा घणौ साराहियौ, अलख ना भलाई भला आराहियौ। पीरि रासै धिणी पाटि बैठा परम, धरिणि नीली हुई घणौ वधियौ धरम।—पी. ग्रं.

सारि—१ देखो 'सारी' (रू. भे.)

उ०—हमै चौपड़ खेलै है प्रेममगन हुवा कठी री कठी सारि गोट मेलै है। बाजी बुलावै है, सनस खुलावै है प्यारी री लीलड़ी प्रीतम री हीरौ, प्यारी री चूनडी प्रीतम रौ चीरो।—र. हमीर

२ देखो 'सार' (रू. भे.)

उ०—वीवाह करण तेथ बैठा ब्राह्मण, समधा अगिनि सीचतइ सारि। नवग्रह दस दिग्पाळ निजीकौ, अथवा बरइ करइ आचार।

—महादेव पारवती री वेलि

सारिक-सं. पु. [स.] युधिष्ठिर की सभा में विराजित एक ऋषि का नाम।

सारिका-सं. स्त्री. [सं. शारिका] १ मैना पक्षी। (डि. को.)

उ०—और सुर सुदरी आवास थकी आपरी पाळतू मदनमंजरी सारिका, तीनूं पूछियो कै तूं जाणै तो बताव मो लायक वींद कुण होसी ? सारिका कही—भोगवती नगरी रो राजा रूपसेन, सो नांम सकळ गुण जाण अति सरूप सो थारै भरतार होसी।

—बैताळ पच्चीसी

२ अप्सरा, रंभा।

सारिकाकवच-सं. पु. यौ. [स. शारिकाकवच] दुर्गा का एक कवच

(स्तोत्र) जो रुद्रयामल तंत्र में है।

सारिख, सारिखउ, सारिखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ क्रपा करै सरजीवत करसी, विध इण कीत सुंदरी वरसी। इम दिन व्रती सु सारिख आंणी, जिम सब कियौ कहै जिखयांणी। —सू. प्र.

उ०—२ आलोच करै परवार आखियउ, अवर नको राजान इसउ। दीद नको सारिखउ विसंभर, सिहर नको कैलास जिसउ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ साह कुलीखान बीजो अलहदी सु विहाण कुली सारिखा नइ खंजरी मारिखा घणां माणिस पच-भइया मनसफदार, राजा जगतमणि सारिखा घणा माणस साथै दिया।—द वि.

उ०—४ सक सीनाइ साड नवसहसा, वै विधि अजुव'ळण कुळ-वाट। वप वाडिम सारिखौ वेगड़, मान कळोधर लोह मराट। —ईसरदास बारहठ

उ०—५ सेभै रभा सारिखो रे, दासी ग्रह नै काम। माता नी परै नेहलो, पाले टाले दुख ठाम।—वि. कु

(स्त्री. सारीखी)

सारित-स. पु.—श्रृंगार में एक प्रकार का प्रासन विशेष।

सारिमेजय-स. पु—द्रोपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा का नाम।

सारियोड़ौ-भू. का क.—१ पूर्ण किया हुआ, पूरा किया हुआ. २ सिद्ध किया हुआ, सफल किया हुआ. ३ खींचा हुआ, कसा हुआ ४ खींचा हुआ. ५ (आखो मे काजल, सुरमा आदि) लगाया हुआ. ६ किया हुआ, पार पटका हुआ. ७ किया हुआ. ८ बनाया हुआ, निकाला हुआ. ९ सुन्दर बनाया हुआ, सजाया हुआ सुशोभित किया हुआ. १० भेजा हुआ, प्रेषित किया हुआ. ११ गिरोया हुआ. १२ शतरंज या चौसर मे गोटी रखा हुआ. १३ सुधारा हुआ, पार लगाया हुआ. १४ देखरेख किया हुआ. १५ मंत्र तंत्र द्वारा खींचा हुआ, प्राप्त किया हुआ, लिया हुआ. १६ साफ किया हुआ, निर्मल किया हुआ. १७ चलाया हुआ, सवारी किया हुआ (फेरा हुआ). १८ सहायता किया हुआ, मदद किया हुआ. १९ धारण किया हुआ. २० अनुभव किया हुआ. २१ उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ. २२ शिक्षित किया हुआ (ऊंट, घोड़ा आदि) २३ काटा हुआ. २४ ध्यान दिया हुआ, सुना हुआ. २५ मिलाया हुआ. २६ छेदा हुआ, छेदन किया हुआ. २७ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २८ छोड़ा हुआ (बाण, चरखी, बारूद आदि)।

(स्त्री. सारियोड़ी)

सारिवा-स. पु.—जवासा, धमासा नामक पौधा।

रू. भे.—सारीवा।

सारिसूकत, सारिसुक्त-स. पु. [सं. सारिसुक्त] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सारिसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—हितू न सतगुर सारिसा, ताहि दीया गुभि ग्यांन। मन की मैं तैं मेट करि, अधर धराया ध्यांन।—अनुभववाणी

(स्त्री. सारिसी)

सारी, सारी-सं स्त्री.—१ रहट के चक्र को खडा रखने में सहारा देने वाले लम्बे लट्ठे को अपने स्थान पर स्थिर रखने के लिये काम में लाया जाने वाला वह लकड़ी का डंडा जो चक्र के बाहरी किनारे पर खड़ा किया जाता है।

२ एक प्रकार का पक्षी, मैना।

उ०—सारी सुक रव करै जी म्हारा रांम, हांजी रांम जी प्रगट्यौ प्रेम प्रभाव स्वामीजी रौ स्तव करैजी म्हारा रांम। हांजी रांमजी। सरवर किया है सिनांन।—गी रा.

३ चौसर, कैरम आदि खेलने की गोटी।

उ०—पुरस नारि मै तै मती, नहिं पासा नहिं सारी। डाव नहीं चौपड नहीं, नहीं जीति नहिं हारी।—ह. पु. वा.

४ दाँव या शर्त के साथ आदि से अन्त तक पूरा खेल, बाजी।

उ०—काया बन राखिबा बाड़ी, सील सन्तोस लै पहरै जागिबा। गगन अस्थान मिलि खेलिबा सारी।—ह. पु. वा.

वि. स्त्री.—१ प्रत्येक, हरेक।

उ०—भाली बडी ठकुराणी, जिसौ ही रूप, जिसौ ही सहुर, जिसी ही सारी बात मै सुघड, सो खीवसी घणी राजी। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ सम्पूर्ण, सब, तमाम।

उ०—१ बाकाण पाट वाळी बळू, घंटाळी बैडी घणी कहि अति बात सारी कथा, तवी राव सेखा तणी।—मे म.

उ०—२ राव मालदे पाखती री धरती सारी लीवी बवली, मलाणी सुधी हद कीवी। रायधनपुर सुधी गुजरात दिसली। —नैणसी

उ०—३ सिरहर भार्या वादि सिधायौ, उदियौ भाण हजूर रहायौ। सुणे नबाब इनायत सारी, औरंग दिस लिख अरज अफारी। —रा. रू.

३ देखो 'स्यारी' (रू. भे)

रू भे.—सारि।

अल्पा, —सारडि, सारडी।

सारीक, सारीख, सारीखउ सारीखौ-वि. [सं. सदृश] (स्त्री. सारीखी)

१ समान, सदृश।

उ०—१ धज चमर छत्र कर रेख धन्न, चक्रवती तणा साचा चहन्न। उजळग आरकत छिब अनंग, ऊगता भाण सारीख अंग। —सू. प्र.

उ०—२ दाखै 'कांन' तणौ यम दूजां, आमेरौ ग्रै वड आरीख। प्रसिधि तणा भूखण जोहौ पहरै, सोवन ज्या दूवण सारीख। —गोरधन कल्याणोत रौ गीत

उ०—३ पटराणी प्रतिपाळ, सील सहिजै सारीखे। मुद रुखमणी मात, आठ प्रभ सांमे ईखै।—पी. ग्र.

२ बराबरी वाला, समानता वाला, बराबर का।

उ०—१ बिया गिरमेर यौ हारबौ जीतबौ, सारीखां तणौ करतार सारै। हारिका तणी तौ जीत मारै नही, मारिका तणी तौ हार मारै।—धीरतसिंह खीची री गीत

उ०—२ ब्रह्मादिक सारीखा ब्राह्मण, नवग्रह कन्हइ अनाथानाथ। बेई जोडी देखता बराबर, हथळेवइ लै दीधउ हाथ।

महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ सावीणा जोड़ी सारीखी, वरदळ रउ त्यात रौ विचार। हसत लगन मेलियउ हथळवउ, अवर करण लागा आचार।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ राजी हुयां कांम मैं रगड़ै, नराजिया करै नुकसाण। छोटकिया मोटोडां छोडौ, मिळौ सारीखां चाहौ माण।

—चंडीदांन सादू

३ जो आकार, तोल, मात्रा, माप, परिणाम आदि में बराबर हो, समान।

उ०—१ अमलां रै वांटणहार नै कह्यौ—सारीखौ भागौ करै अर अमल नूं माथौ मत कौ घूणौ, महादेवजी बुरौ मांनसी।

—प्रतापसिंह देवड़ा री बात

उ०—२ ज्यूं ग्रहस्थ लियां व्रत चोखा पालै तौ तौ एकासणावाला सारीखौ अनै साधुपणौ लेइनै दोस सेवै तौ तेला मैं रोटी खाधी तौ सरीखौ।—भि. द्र.

उ०—३ उर ढाल सारीख चोडा अलल्ला, भिड़ज्जा बाहू जघ बै पक्ख भल्ला। पुडच्छी जिआ तोछ पै कध पूरा, सग्रांम विखै हाम पूरंत सूरा।—र. वचनिका

४ जो निरन्तर चलता रहे, निरन्तर चलने वाला।

उ०—तुरक खेड़ सहर घेरियौ गोहिल पिण तद जोर था दिन चार सारीखी वेढ हुई।—नैणसी

५ जैसा।

उ०—१ ताहरा राव मालदेजी जोधपुर सौ कहाडियौ। जैमल नूं कह्यौ—मो सारीखा थारै दुसमण छै, अर तूं चाकरां नूं सोह पड-गनौ मतां दै। थ्यु ही खालसै ही राख।—नैणसी

उ०—२ तरै कितरौहेक साथ वासै वाहर चढियौ। सु साढ वाहर अपड़ावण सारीखी नहीं।—नैणसी

उ०—३ पगरण प्रीत वसदेव पूत, समिल काहि मैं जणस्यै पूत। कमळ रा नैण कमळाकंत, सुरजेठ आप सारीख संत।—पी. ग्रं.

उ०—४ उण वखत भुजाई मैं छप्पन भोग, छत्तीस व्यंजन सगळी साथ अेक सारीखौ भोजन हुवै। जिणनूं कठै ही मिळै नही सो उण वखत भुंजाई मैं जलाल री रहवास आवै सौ मनमानिया भोजन जीमै।—जलाल बूबना री बात

उ०—५ जग सारौ जांणै जोधपुरा, चौरंग तणी वार अणचूक। जुड़ता लाख दोयणा जाळै, रुद्रकड़ां सारीखौ रूक।

—जगन्नाथ सादू

रू. भे.—सरख, सरखउ, सरखौ, सरिकौ, सरिखउ, सरिखु, सरिखौ सरिस, सरिसउ, सरिसौ, सरिसु, सरिसौ, सरीक, सरीकौ, सरीख, सरीखउ, सरीखु, सरीखौ, सरीस, सरीसौ, सारकौ, सारखौ, सारिख, सारिखउ, सारिखौ, सारिसौ, सारीस, सारीसौ, सिरखौ, सिरसौ, सिरीखौ, सिरीसौ, सीरखौ।

सारीबारी–क्रि. वि.—पारी-अनुसार।

उ०—तद राईकौ सारी-बारी दोना रा मूडा निरख्या। सागै अेक ई उणियारै। हुवा जित्ती ई फरक नी। अचपळी वेमाता ई कैड़ी कुबद करी।—फुलवाड़ी

सारीमेर–क्रि. वि.—चारो तरफ, सर्वत्र।

उ०—सु किण ही कारीगर सूं गोळो चढै नही, राजा सासतौ मोह-रत थापै, आपरै मन कोई कारीगर मांनै नही, तरै मोहरत आघा वेलै सु आ वात सारीमेर ही हुई रही छै।—नैणसी

सारीरकभास्य, सारीरिकभास्य–स. पु. गौ. [सं. शारीरिकभाष्य] शंकराचार्य द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

सारीवा—देखो 'सारिवा' (रू. भे.)

सारीस–वि.—१ क्रोधपूर्ण, क्रोधसहित।

उ०—वीरतन छोह छकडाल कस वोलडै, रूक सूं भिडै असपति सारीस। सीस देवळ तणौ डिगण न दियै सकस, स्याम तण भुजा ऊपजतै सीस।—सुजाणसिंघ सेखावत रौ गीत

२ देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—विडंगां वर्णै द्रूमची केसवाळी, भडा भूप राजी हुअै रूप भाळी। जंगम्म पसम्मं मुखमल्ल जेही, दिपै जाणि आरीस सारीस देही।—र. वचनिक

सारीसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ आंबेर अमरसर रा सदा दांई आट, सारीसौ सवाई करै दिखाई असंभ। राजां दळा भांजतौ अछूनी फतै पाई राव, खागा पाण मेदनी दबाई जेतखंभ।

—नाथूसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—२ जोगणपुर सारीसौ जामौ, बणियौ नौरंगजेब बणाव। दूजा 'मांन' हाथि करि दीधौ, सारा सिरि ऊपर सरपाव।

—राजा जयसिंघ कछवाह रौ गीत

उ०—३ समर सिरै चढियां सारीसौ, आज कंकण केहौ आरीसौ।

—सू. प्र.

(स्त्री. सारीखी)

साऊ, साऊ–स. स्त्री.—मैना। (डिं. को.)

क्रि. वि.—१ लिए, वास्ते।

उ०—१ धड़ चील्हा ग्रीधण्यां, कमळ संकर उपकाऊ। हस परचां

पति होए, स्रोण चंडी पत्र साख ।—मे. म.

उ०—२ राजा रै तबेला रा घोड़ां साख चिणा दळै । तीन दिनां ताई उणरी इज बारी । घर मैं अेकाअेक कंवारो बेटो । पछै दूजो कुण बेगार काढै । जात री भांवणा ।—फुलवाड़ी

२ अनुसार, मुताबिक ।

उ०—१ मो मत साख मैं कियो, आरभ गावण ईस । सरसत गणपत समर कै, चरण नवावूं सीस ।—गज-उद्धार

उ०—२ वूडा जै कर कर जस वूबा, सूंमां ऊपर सारो । बुध साख गायो सीताबर, जीता जिकै जमारो ।—र ज. प्र.

उ०—३ मांमो खुसी हूवो कह्यो—तूठो भाणेज क्यू मांग म्है म्हारा घर साख दां ।—नैणसी

३ वशीभूत, अधिकृत ।

उ०—१ ढोलीजी ऊमर री पाखती जाजम ऊपरै जाय बैठा । तारै ऊमर जाणियो ढोलीजी हिवै माहरै साख छै ।—ढो. मा.

उ०—२ पूरब पछम धरा दध पाख, दिखण तणो खूटो बळ दाख । सक उतराध धरा तो साख, मछर धरै किण ऊपर माख ।

—चतुरो मोतीसर

उ०—३ विवनै 'वाघ' धरै मूछा बळ, बैठो गादी 'गग' महाबळ । 'माल' 'गग' गादी राव माख, सबळा किया आपरै साख ।

—रा. रू.

४ पर ।

उ०—अर म्है तो उठा सो रांमजी माथै घात चढिया छां । पेहलो कै तो म्हारो ऊपर सोलंखियां कयो छै । हेडोकी बाजी थां साख छै । इम कहि नै सीघळां कन्है नरसघ आदमी मेलियो ।

रू. भे.—सरू, साहरू ।

साख्आर, साख्आरु, साख्यार, साख्यारु—वि.—वढिया, श्रेष्ठ, सुन्दर ।

उ०—१ ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, वारू मंडप नीपाईए, पोइणिनै पानि छाइउ, ककू ना छाबडा, मोती ना चउक, तेहमाहि साख्आर घाट, मेल्हाव्या पाट, चाउरि चाकुला,.........।

—व. स.

उ०—२ ....साख्आरु घाट, नीपनु पाट, गाइ तणि गोमइ, गंगा तणि नीरि, अहिवु स्त्री पांहइ गूहली देवरावु, ऊपरि मोती तणू चुक पूरावू, अह्म वरराजेंद्र आव थिका हूता इस्या मागलिक बरतारु, अह्मो सीआलक बोलि ।—व. स.

उ०—३ ....मालवी गोधूम हाथि मल्या, घोई दल्या, एनी पडसूधी, खइ सविवार सूधी, आलै वालइ वाकु, अहिठाणउ आकु, तीणइ वाली, माहि थूली टाली, घोइं मोईं, डाहीयारइं जोईं, एकल्ल पाट साख्यार घाट,..........।—व. स.

साख्प—१ देखो 'सरूप' (रू. भे.)

उ०—कनक करग घातां हिम करगा, रीति-पति गरुड़ खयां साख्प । दधां विधांता दुजां खीर-दध, भूपां सिधां जांनुकी भूप ।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'स्वरूप' (रू. भे.)

३ देखो 'सारूप्य' (रू. भे.)

उ०—भाग तणा भांमणा, ल्या भूधर दुख भंजण । विहलां ना वीठला, मुगति साख्प समपण ।—पी. प्र.

सारूपता—स. स्त्री.—सारूप्य होने की अवस्था या भाव ।

सारूप्य—स पु. [सं. सारूप्यं] पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति विशेष, जिसमे उपासक अपने उपास्य देव के रूप में रहता है अन्त मे उसी उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है ।

उ०—सालोक्य सगति रहै सामीप्य सन्मुख सोइ । सारूप्य सारीखा भया, सायुज्य एकै होइ —दादूबांणी

रू. भे.—साख्प ।

सारै, स्'रै—क्रि. वि —अधिकार मे, वश में ।

उ०—दुवारी रै सागै किणी नै दूध घालणो थारै सारै है कै नी । जै सारै व्है तो भ्रो गोवणियो भर दै ।—फुलवाडी

सा'रै, सा'रै—देखो 'सहारै' (रू. भे.)

उ०—रात पडतै ही गांव सू बारै ऊचै धोरै माथै एवड़ बैठाय'र सा'रै आप ही बैठ जावै । एवड सू अळगो होणै रो वीरो जी ही नी करै । एवड़ बिना जियारो कठै ?—दमदोळ

उ०—२ सूकी सुदरांणी झाडां रे सा'रै, लाधी बिदरांणी बाड़ा रै लारै । सदव्रत करतोड़ी बरणासम सेवा, काढै मरतोड़ी रेवा तट केवा ।—ऊ. का.

सारोखणो, सारोखबो—क्रि. अ. [सं. स+रोष] क्रुद्ध होना, कुपित होना ।

उ०—उर लागी असुहावणी, किर दांमणी सिळाव । सुण वांणी सारोखियो, जोगांणी जमराव ।—रा. रू.

सारोखणहार, हारो (हारी), सारोखणियो—वि० ।

सारोखिओड़ो, सारोखियोड़ो, सारोख्योड़ो—भू० का० कृ० ।

सारोखीजणो, सारोखीजबो—भाव वा० ।

सारोखियोड़ो—भू. का. कृ.—क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ ।

(स्त्री. सारोखियोड़ी)

सारोडो—देखो 'सारो' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—रमिया तो भंवर जी सारोड़ो रात भ्रो कोडीला कवर जी, कोई सेजां मैं रमिया सायबा हो म्हारा राज ।—लो. गी.

(स्त्री. सारोड़ी)

सारोट—स. पु.—कवच, बख्तर ।

उ०—झिलम काट ओडणा, कटै सारोट ईजारा । तिलक तूट छकड़ो, लूट ससतरा सिंगारा ।—बखतो खिड़ियो

सारोपा—सं. स्त्री.—साहित्य के अन्तर्गत एक लक्षणा ।

वि. वि.—यह उस स्थान पर होती है जहां एक पदार्थ में दूसरे

का आरोप होने पर कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है।

सारौ, सारौ—स. पु.—१ हुकम, आज्ञा।

उ०—साहिबा रे सहि थांरो सारौ, वडा धणी जम प्रासैं वारौ। खोटी बात ससारोइ खारौ, आतिमा मुना पारि उतारौ। —पी. ग्र.

२ वश, चलन।

उ०—१ सठाणी नै जित्तो राजी व्हैणौ हो, व्हैगी। इण सूं घकै उण रो सारौ ई काई हो। पण अबै सेठजी नै सगळी बाता बतावण मैं काई डर।—फुलवाड़ी

उ०—२ आसू ढळकावती ठकराणी कैवण लागी—वै अठै आयग्या सो तौ म्हारै ई सारै री बात कोनी। पण हीमत हारघा थारी-म्हारी प्रीत नीं निभै।—फुलवाडी

उ०—३ तद मा'राज कयौ—हजरत, आपरी तपस्या जोरावर है, आदमी रो काई सारौ है। पीछै महाराज सीख कर डेरा आया। —द. दा.

३ जोर, शक्ति।

उ०—१ क्रोध कियौ नरक पडै, जिहा तौ दुख आपरौ रे। छेदन भेदन वेदना, तिहां नहीं किण री सारौ रे।—जयवाणी

उ०—२ सेठाणी अर बेटी सारू औ अँडौ ई विखौ हौ। पण अणहोणी, अणचीती, अजोगती अर निजोरी बात सू पड़पणौ किसी सारै री बात।—फुलवाडी

४ अधिकार, आधिपत्य।

उ०—मेरै पास साह फुरमाणी, जोधापत हाजर जोधाणौ। सब धर हूवै तुमारौ सारौ, एक बेर अजमेर सधारौ।—रा. रू.

(स्त्री. सारी) १ समस्त, सब। (डि को.)

उ०—१ परम तणौ रस पीयै, सदा सिनिकादिक सारा। ब्रहम तणौ रस ब्रहम, ल्यै कै ब्रहम विचारा।—पी ग्रं.

उ०—२ ठगी माथै कमर बाधी, सोखीनाई नैं धोखा-धडी सूं साधी। सौंसी अर मैं'तर ताई मागै विना नही छोड्या। अधेरै-च्यानणै गाव रा सारा दवारा जा देख्या।—दसदोख

उ०—३ सुरताण नुं खबर हुई नही ता पैहली नवाब नुं खबर हुई। जगो किणी हीदू मारियौ। नबाब आप चढ उठै आयौ। सारौ सूबा रो साथ चढ आयौ।—नैणसी

२ कुल, तमाम।

उ०—१ तद यै पुरसता गया अर गोरखनाथजी जीमता गया। तद सारौ ही जीमियौ। तद देपाळ पूछियौ—आयसजी धापिया। तद गोरख कही—बाबा अतीत का क्या धापैगा।

—देपाळ धध री बात

उ०—२ धर सारी पड़ि धाक, पुर तर गिर कीजै पहट। हैकंप उर नागिंद्र हुआ, चक च्याऊं चढि चाक।—र. वचनिका

३ पूरा, पूर्ण, सम्पूर्ण।

उ०—१ तळाव महाराजा स्री जसवतसिघजी री वार मैं खाजी फाजुलाखाजी रा कांम मैं सरू हुवौ थौ सो सारौ खुदियौ नही। —मारवाड़ री ख्यात

उ०—२ मोकळी चोरी अर सागीडौ माण। काम मैं काठा अर बातां मैं ढाण। सारौ दिन घड़े, गप्पा नाखै अर सागै-सागै आया-गया री रोळ-रिगटोळी तथा खि-खि ही करता नी संकै।—दसदोख

उ०—३ थई जै इसा रूप अन्नेक थारा, सकौ सारदा कै सकै नाहि सारा। जपू जीह सोभाग मोभाग जागौ, लुळै आय स्रीमाय रै पाय लागौ।—मे. म.

उ०—४ अठी नबाब कासिमखान दारासाह रै साथ दरकूंचा लाखेरी रै दरै कढि आगरै आयौ। अर साह री हजूर आप भी बणियौ उदत सारौ ही सुणायौ।—व. भा.

रू. भे.—सारउ साहरू, साहरौ।

अल्पा;—सारोडौ।

सा'रौ, सा'रौ—१ देखो महारौ' (रू भे)

उ०—पीहर पतळा रा सैणां रा प्यारा, तारक तूग रा नैणा रा तारा। सीरी सिटिया रा सूल्हा रा सा'रा, भीड़ी भूखा रा फूला रा भारा।—ऊ. का.

२ देखो 'सासरौ' (रू. भे.)

सारौ-वारौ—स. पु.—१ वश, चलन।

२ प्राथमिकता।

उ०—न्हाण धोण सूं निमट, पाठ न घणौ चितारौ। वधकी विद्या आण, मदरसै सारौ-वारौ।—टाबर नईकडौ

सालंक—स पु.—एक प्रकार का राग विशेष, जो बिलकुल शुद्ध हो एवं जिसमे किसी और राग का मेल न हो, फिर भी किसी राग का आभास जान पड़ता हो। (संगीत)

सालंकायन—सं पु [स शालंकायन] विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

सालंकायनजा स. स्त्री. [सं. शालंकायनजा] शालंकायन ऋषि की पुत्री व जमदग्नि की माता का नाम, सत्यवती

साळ—सं. स्त्री. [स. शाला] १ मकान के अन्दर का वह कमरा जिसके रोशनदान, खिड़की आदि न हो, यह मकान में सबसे बड़ा कमरा होता है।

उ०—१ पिडत जी रा बोल सुणतां ई अजेज पाछल फोर सेठा रो ध्यांन पाखती साळ रै माय गौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ मां साळ रै माय बड आडौ जड दियौ।—फुलवाडी

२ मकान का वह कमरा जिसके दरवाजे एक से अधिक दिशाओ मे खुलते हो।

३ चडस खीचने के लिए बैलों के चलने का मार्ग।

४ हाथ से कपडा बुनने वाले के लिए कपडा बुनते समय बैठने का स्थान व उस स्थान पर बना खड्डा।

वि. वि.—प्राचीन समय मे कुर्सियो के अभाव में आंगन में

खड्डा खोद लिया जाता था उसी मे पैर लटका कर कपड़ा बुनने वाला, कपड़ा बुनते समय बैठ जाता था। इस खड्डे को 'साळ' कहते थे।

५ मुख्य दरवाजे पर बना हुआ खुला कमरा।

रू. भे.—साल, माळि, सालि।

अल्पा;—साळकी।

साल-सं. पु. [फा. शाल] १ बारह महिनों का समय, वर्ष।

उ०—१ दाखी अरज 'दुरग' या, सब खळ करां सधार। साहब मन खुसियाळ सू, जीवै साल हजार।—रा. रू.

उ०—२ अठी-उठी सोध-सोधाय नवलखो हार लेयनै आयो। सेठ देखता ई पिछाणग्या। आपरै हाथां परार री साल ई औ हार बणवायो हो। तीनू चीजा सागै री सागै।—फुलवाडी

उ०—३ तू बहोत भूंडो करचो, छोटा ठाकुर। साल भर सूं जंगळ छाणतां-छाणतां मोको हाथ लाग्यो हो। तू सब चोपट कर दियो। —तिरसकू

२ एक प्रकार का वृक्ष विशेष। (अ मा.)

वि. वि.—इसके बडे-बड़े वृक्ष होते हैं। इसके पत्ते भी बडे होते हैं व फूल कुमखों में आते हैं। इसके गोंद को राल कहते हैं। अश्वकर्ण, अजकर्ण आदि इसके भेद हैं।

३ वृक्ष, पेड। (डि को.)

४ अश्वकर्ण नामक वृक्ष।

उ०—ताल साल मालिका, बकुल कुवजक खरजूरी। बोलसरी माधुरी, निगर भर हरी सनूरी।—रा. रू.

५ एक प्रकार का पुष्प, फूल। (अ. मा.)

६ वह स्थान जहा सिक्के ढाले जाते हैं, टकसाल।

उ०—एक सिको इक साल को, घडियो एकण घाट। हरिया कहिंद्यै पारखु, जैसो पेट'र थाट।—अनुभववांणी

[स. शल्य] ७ दुःख, दर्द।

उ०—१ पियै तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल। सालै निसदिन समभणा, चालै चाल कुचाल।—ऊ. का

उ०—२ लांबी कांब चटक्कडा, गय लबावइ जाळ। ढोलउ अजे न बाहुड़इ, प्रीतम मो मन साल।—ढो मा.

उ०—३ रजनी तुं जाजै निज थांनक, दिवसै करिस्या ख्याल। ताहरै मिलियो माहरा मन नौ, टलियो सबलो साल।—वि. कु.

८ शल्य, कांटा।

उ०—१ ते तो प्रमनै कीया निरास, नांखंतां दिन जाय नीसास। साम तणीपरि आवै चीति, साल तणी परि सालै प्रीति।
—वि कु

उ०—२ केई फेरा पियै तुंहिज इमिरिति कुम्भो, हेक दइतां तणौ साल तूं हिज हुम्रो। घणो बळ तुझ माह कहा कामुं घणो, तूं हीज दसरथ तण दईत दईता तणो।—पी. ग्रं.

उ०—३ सत्रु री साल काढि आवता कुमार नू मीणा सहित बूंदी रै लोक बधावणौ करि आणियौ। अर आप-आप रै उचित उपदारी भेट करि राडि रौ रसिक जोरदार रक्षक जाणियौ।—वं. भा.

९ प्रहार, घाव।

उ०—अठी पाचमौ भाई किसोरसिंघ केही हाथिया नूं हठाइ बरबीर नूं अग्रजा रा तथा आपरा साथी बणाइ धरा रौ कंवाड़ होण करवाळ रूप ककचा मैं अग रा फाचरा उडाइ सेला रा सालां करि पाछौ जुड़ाइ खेत पडियौ।—वं. भा.

१० घाटा, हानि, नुकसान।

उ०—बोल कै कुबोल भगौ टोल तू भयौ, माल तोल ब्याज साल पोल मै सह्यौ। राजकै विहीन सत्यसिंधु तै रह्यौ, भाजकै अधीन दीनबंधु कै भयौ।—ऊ. का.

११ पलग, खाट आदि के 'पाये' के वे छेद जिनमें 'पाटी' लगायी जाती है व उन छेदों के अन्दर रहने वाले 'पाटी' के भाग।

उ०—जीयै घडी उदैराव रौ जनम हुवौ तीयै घडी प्रोळि रा कागरा गिड पड्या। ढोलियै रा साल भागा। ताहरां रांणी पूछियौ। औ किसो उपद्रव।—देवजी बगड़ावता री बात

१२ स्वर्ण, सोना। (अ. मा.)

[स. शाल] १३ जैनियों के ८८ ग्रहों मे से ७७ वां ग्रह।

स. स्त्री.—१४ एक प्राचीन नदी का नाम जिसके ककरों की पूजा विष्णु के रूप मे की जाती है।

१५ अस्त्र-चिकित्सा।

[फा. शाल] १६ एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर।

उ०—१ एक साल लौ आप, आठ दस अवर लिरावौ। भळै लिरावौ बीस, तीस चाळीस ढळावौ।—रमण प्रकास

उ०—२ पाग सुरगी पीव री, साल प्रिया सुरग। केसर भीनां कुमकुमै, पसवा भरचो पिलंग।—अग्यात

१७ देखो सगाळ' (रू. भे)

उ०—किहा सायर किहा छिल्लरू, किहां केसरि किहा साल। किहां कायर किहा वर सुहड, किहा वण किहा सुरसाल।
—हीराणद सूरि

१८ देखो साली' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ पसवाड़ै साल रा खेत छै।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ महिपत मुंहतौ तेडियौ ओडा नूं घन देह। ओरां ज्वारी बाजरो, जसमल साल सू प्रेह।—जसमा ओडणी री बात

उ०—३ गेहूँ बाजर मोठ मूँग, तुंवर मटर चिरोह। साल नीपजै सावठी, ओरू मसूर अछेह।—गज-उद्धार

१९ देखो 'साळ' (रू. भे.)

उ०—१ पएसी राजा हिवै, मोटी साल कराय। असनादिक निपजाय नै, दुरबल दांन दिराय।—जयवांणी

उ०—२ माहण स्रमण सावयादिकै, मांडी मोटी साल। असनादिक निपजाय नै, दान देऊं द्रग चाल।—जयवाणी

२० देखो 'स्याल' (रू. भे.)

सा'ल—देखो 'सवाल' (रू. भे.)

उ०—१ थे तकरार करो छो पिण कदी पातसाह वा कदी स्याहजादां रो दसतूर छै। हूं सोबो साधूं नै सरहद बाधू। तिणरी दोढी पर तकरार न खटावै। अठै तो केई तरै का जुवाब सा'ल आवै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ पनां अर अपछरा जुवाब सा'ल करै छै। पना कहै छै—कवर नै तो मैं वरचौ, तूं अबै क्यूं वरै छै। जठै अपछरा दूसरी बोली। कवरजी नै वरबा कै वास्तै अपछरा सारी ही ताकै छै।
—पनां

साळउ—देखो 'साळो' (रू. भे.)

उ०—साळउ दइ हाथ तपै तप शकर, ब्रहम तियइ रउ करइ विचार। बीजी दुनी राखडी बाधइ, संभूनाथ अचळ संसार।
—महादेव पारवती री वेलि

सालकंटक-स पु.—घटोत्कच द्वारा मारा जाने वाला एक राक्षस।
(महाभारत)

सालक-स. पु —१ एक प्रकार का मेवा विशेष जो तालाबों मे जमीन के नीचे होता है। (आइने-अकबरी)

२ देखो 'स्यालक' (रू. भे.)

सालकटंका-स. स्त्री. [सं] विद्युतकेश की पुत्री एव सुकेशी की माता एक राक्षसी।

साळकटार, साळकटारी-सं. स्त्री.—विवाह में अग्नि की परिक्रमा करने के पश्चात् दुल्हिन के भाई द्वारा दूल्हे से लिया जाने वाला एक नेग जो तलवार अथवा कटारी पकड़ कर लिया जाता है।
(चारण, राजपूत)

उ०—तद कुंवर कही, 'राणीजी आया वात देखां, किसै ढाळै उतरै? जो हिणा छै त्युं रस रह्यो तो ऊ घोड़ो साळकटारी मैं माग लेईस।—कुंवरसी साखला री वारता

रू. भे.—साळकटारी, साळाकटार, साळाकटारी, साळाकटारो।

साळकटारो—देखो 'साळकटारी' (रू. भे.)

साळकी—देखो 'साळ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—गंगलै अेकलियै नै साळकी मैं नाखियो। डोकरी पूरा पहला सांभण लागी। नीठ दौ-तीन सेर आटो लाधियो जिको बडै जतन सूं गोथळी मैं घाल लियो।—वरसगाठ

साळगणो, साळगबो—देखो 'सिळगणो, सिळगबो' (रू. भे.)

साळगणहार, हारो (हारी), साळगणियो—वि०।

साळगिओड़ो, साळगियोड़ो, साळग्योड़ो—भू० का० कृ०।

साळगीजणो, साळगीजबो—भाव वा०।

सालगणो, सालगबो—देखो 'सिळगणो, सिळगबो' (रू. भे)

सालगणहार, हारो (हारी), सालगणियो—वि०।

सालगिओड़ो, सालगियोड़ो, सालग्योड़ो—भू० का० कृ०।

सालगीजणो, सालगीजबो—भाव वा०।

साळगराम, सालगराम-सं. पु. [सं. शालग्राम] १ गंडक (शाल) नदी मे मिलने वाले गोलाकार पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़े जिनको विष्णु का प्रतीक मान कर पूजा जाता है।

उ०—कर सोहत कुकड कंहमय, मखतूल रोमावळ बंधमयूं। चख साळगराम सुलछणसी, छवि पूंछ मयोर कि पुछन सी।
—बगसीरांम प्रोहित री बात

२ गडक नदी के किनारे का वन जहा शाल के वृक्ष अधिक होते है।

रू. भे.—सालगाराम, सालग्रांम, साळिगराम, सालिग्राम।

सालगाणो, सालगाबो—देखो 'सिळगाणो, सिळगाबो' (रू. भे.)

सालगाणहार, हारो (हारी), सालगाणियो—वि०।

सालगायोड़ो—भू० का० कृ०।

सालगाईजणो, सालगाईजबो—कर्म वा०।

सालगायोडो—देखो 'सिळगायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सालगायोड़ी)

साळगारांम—देखो 'साळगराम' (रू. भे.)

उ०—अंजुळी नीर पीवै स आय, मुखकळी सुघड ताकै कहाय। आखियां ओप पावै अनूप, साळगारांम सरखै सरूप।—पे. रू.

साळगियोड़ो, सालगियोड़ो—देखो 'सिळगियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री साळगियोडी, सालगियोड़ी)

सालगिरह, सालगिरै-सं. पु. [फा. सालगिरह] वर्षगाठ, जन्मदिन।

उ०—संवत १७१० रा माह वदि १३ पातसाहजी सालगिरै रै दिन महाराजा रो खिताब दीयो साहजहांनजी, मुनसब छव हजारी जात, असवार हजार ६ तामें हजार पांच दो सपै नै एक हजार इक सपै।
—नैणसी

सालग्रांम—देखो 'सालगरांम' (रू. भे.)

सालग्रांमक्षेत्र-सं. पु. [सं.] पुलह ऋषि का आश्रम।

सालग्रांमगिर, सालग्रांमगिरि-सं. पु. यौ. [सं. शालग्रामगिरि] एक पर्वत का नाम जहा शालग्राम की मूर्तिया मिलती है। (भागवत)

सालग्रांमि, सालग्रांमी-स. स्त्री.—१ गडक नदी का एक नाम।

२ उक्त नदी के निर्गम स्थान के निकट का एक पुण्य स्थल।

सालण-सं. स्त्री.—१ पंवार वंशोत्पन्न एक देवी का नाम।

२ एक प्रकार का तरल खाद्य पदार्थ।

उ०—१ मूक्यां नव नव परि सालणां, मूक्यां सरहां घी अतिघणा। मूंकी मांडी मुरकी सेव, मूंकी खीर खांड घ्रत हेव।
—हीराणंद सूरि

उ०—२ जरै जीमण नै पचधारी लापसी मोकळी मंगळीक कीधी। घणा दाळभात बणाया। घणा बेसवारां रांधिया सालणा बणाया। जीमण तयार हुवो।—जैंतसी ऊदावत री बात

३ मसालेदार साग-सब्जी, मास आदि नमकीन खाद्य पदार्थ।

उ०—........पछी चारु पुरसिया सालणां, तै कीसा कीसा ? मुंगिया केरडा वाहलोल, काचा केला, चोलांनि फली, नीला चीणां, ग्रंबोल काचली, बावलिया करेला, वळी सूंठ नी पलेव, हिंग वघारी कढी, पातला तलिया पापड, तलीया नागवेलना पांन जीमता बीमणा भावै धांन ।—व. स.

उ०—१ तीखां तमतमा राईता, मीठा मधुरा गल्या तल्यां मच-मचां इस्यां सालणा तणी युगति, सुगंधी दालि तणा चोखा, बिहू आणी ए आखा,.........।—व. स

सालणि, सालणी—सं. स्त्री.—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक मगण, दो तगण तथा दो दो गुरु सहित ग्यारह वर्ण होते है। (पिं प्र)

वि.—चावल का ।

उ०—खलखंती ज चूडी, लहिकतइ ज हाथि, खाड प्रीसती ज वादइ, जमु सहू को सवादि, भलभला भावता भीना वडा, सालणि सालेवडा,.........।—व स.

सालणौ, सालबौ—क्रि. अ; स.—१ खटकना, कसकना ।

उ०—१ गोरी पीडी पर ऊघड़ता गोडा, लम्बी बीखा दं लेतोडी लोडा। सेणां साजनियां ऊमर भर सालै, घूमर देतोडी केता घर घालै ।—ऊ का.

उ०—२ पियै तम.खू कापुरस, सापुरसा हिय साल। सालै निस-दिन समझणा, चालै चाल कुचाल ।—ऊ. का.

उ०—३ पण मार खाय-खाय नै ज्यारा डील सूज्योडा हा वारै मन मैं तौ भ्रौ भी तीर री गळाई सालतौ हौ कै जै खूनी री पतौ नी लाग्यौ तौ सगळा नै ई पाछौ थाणै जावणौ पड़ैला ।

—ग्रमरचूंनडी

उ०—४ वाचा साच न दक्खं वांणी, पं वीसार मगावै पाणी। घट सोचै डाढी कर घालै, 'सोनंग' 'दुरग' तणौ छळ सालै ।

—रा. रू.

२ दुखदाई होना, दर्दयुक्त होना ।

उ०—१ दुरभिख निकटासण किणनं नह दीधौ, नकटै नकटापण क्रपणासय कीधौ। मिळगा धूळी ज्यूं जेस्टासम जूना, सालै सूली ज्यूं स्टेस्टासम सूना ।—ऊ. का.

उ०—२ आविउ वसंत, हूउ जीवलोक कांतिमंत, संवहइं मलय-मारुत, उच्छलइं कोकिलारुत, मजरीइं सहकारवन, सालइं विर-हिणी तणा मन महमहइं बकुल विचकिल मालती कुरबक पाडला-वन, खिल्लइ.........।—व. स.

उ०—३ विरह खटूकौ रेण दिन, हरिया सालै मोय। का तुझ मिळिया भाजसी, का मुझ मिळिया तोय ।—ग्रनुभववांणी

३ पलग, खाट आदि के पाये मे पाटी डालने के उद्देश्य से पायों मे छेद किया जाना।

४ तपना।

उ०—ग्रंजळ करि रतन कावळी ग्राडी, ग्रादिया सकति ग्रनाथा-नाथ। सालइ सनमुख होइ ग्रगन सू, हाथ तपं तप दीन्हा हाथ ।

—महादेव पारवती री वेलि

५ आकर्षित करना ।

उ०—खिण पालणइ गोद लीजइ खण, चवर ढुळइ चिहूँ दिसै सुचग। बाळक तणइ बाधिया बधण, ऐकीका सइ सालै ग्रग ।

—महादेव पारवती री वेलि

सालणहार, हारौ हारी), सालणियौ—वि०।

सालिग्रोड़ौ, सालियोड़ौ, साल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सालीजणौ, सालीजबौ—भाव वा०।

सहलणौ ,सहलबौ, सालवणौ, सालवबौ, सेलणौ, सेलबौ

—रू० भे०।

सालदोज—स. पु [फा.] वह जो शाल के किनारे बेल-बूटे आदि बनाता हो ।

सालपरण, सालपरणि, सालपरणी—स स्त्री. [स. शालपर्णी] १ साल-विन नामक वृक्ष। (ग्रमरत)

२ वह छोटा क्षुप जिसकी प्रत्येक दडी में तीन-तीन पत्ते व फलियां लगती है।

सालबाफ—स. पु. [फा. शालबाफ] १ कपडा बुनने वाला व्यक्ति।

२ एक प्रकार का लाल व रेशमी कपड़ा।

साळबाव, सालबाव—स पु —कपडा बुनने वालो से वसूल किया जाने वाला एक प्रकार का राजकीय कर। (मा. म.)

सालमली—स. पु. [स. शालमलीस्थ] १ गरुड।

(नां, मा; ह. ना. मा.)

२ देखो 'सालमली' (रू. भे)

रू भे.—सालमिली।

सालमसाही—स पु —प्रतापगढ राज्यान्तर्गत प्रचलित प्राचीन सिक्का।

सालमिली—१ देखो 'सालमली' (रू. भे)

२ देखो 'सालमली' (रू. भे.)

सालमिसरी, सालमिस्री—सं. स्त्री [ग्रं. सालब+मिस्री] प्रायः हिमालय एव तिब्बत के पहाडों मे पाया जाने वाला क्षुप, सुधामूली, वीर-कदा।

वि. वि.—इसका कंद कसेरू के समान किन्तु चपटा, सफेद और पीले रंग का तथा कड़ा होता है। इसकी गध वीर्य्य के समान होती है। यह अत्यन्त पौष्टिक होती है।

सालमुख—सं. पु. [सं. शल्यमुख] युद्ध, संग्राम। (ग्र. मा.)

सालर—स. पु. [सं. शल्लकी] १ एक वृक्ष जिसकी लकड़ी पानी से शीघ्र खराब होती है। इसकी वैद्यक मे काम ग्राती है।

२ उक्त पेड़ की लकड़ी या जड़

सालरचर—स. पु.—हाथी, हस्ती।

उ०—सुर नर ग्रसुरै किणी न सुणियौ, बापा रै सांगं कज बोम।

चोथौ ज्याग कियौ चीतोड़, हुवै हुवा सालरचर होम ।
—महाराणा सांगा रो गीत

सालळणौ, सालळबौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळबौ' (रू. भे.)
उ०—१ सुणि चहुवांण कटक सालळिया, महिसिर किर बारह घण मिळिया । जडि अग सिलह सस्त्र अंग जकडै, कसै तंडीर कबांणा पकडै ।—सू. प्र.
उ०—२ प्रवाहै खडग्ग भडै हत्थ पग्ग, लहै जाण आरा धर काठ लग्ग । मुडै सालळै सालळै पै मुडक्कै, भडां ओभडा मांड ज्यौं माड भुक्कै ।—रा. रू.
उ०—३ कई ढोल कसाळ धरा ब्रहमड धड़क्कै, सुरणायं सालळै राग सीधू ओर हक्कै ।—रामरासौ
उ०—४ धणी रै हुकम सा बहत मादल धुबै, हुआ बरधू सबद देव दाणव हुबै । सालळै सीधुग्रो राग सरणाईयां, भलाई आज भाग्य करो भाईयां ।—पी ग्र.
सालळणहार, हारौ (हारी), सालळणियौ वि० ।
सालळिग्रोड़ौ सालळियोडौ, सालळ्योडौ भू० का० कृ० ।
सालळीजणौ, सालळीजबौ —भाव वा० ।

सालळियोडौ—देखो 'सालुळियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. सालळियोडी)

साळवणौ, साळवबौ-क्रि. स.—शस्त्र चलाना, प्रहार करना ।
उ०—'सादवा' छादत घमसाण मझ साळवी, चक्त हिंदवाण असुरांण चमकी । दाद 'भोपाळ' ग्रजरेळ बेरिया दळण, दुत कमर मैं हूत दलकी ।—भोपाळदान सादू रो गीत
साळवणहार, हारौ (हारी), साळवणियौ - वि० ।
साळविग्रोड़ौ, साळवियोड़ौ साळव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
साळवीजणौ, साळवीजबौ—कर्म वा० ।

सालवणौ, सालवबौ—देखो 'सालणौ, सालबौ' (रू. भे)
उ०—तास थयो प्रारभ रे, थभ जिसारै तरुवर पालवै रे । दुखिया नै दुरलंभ रे, विरही लोका रै हीयडै सालवै रे ।—वि. कु.
सालवणहार, हारौ (हारी), सालवणियौ——वि० ।
सालविग्रोडौ, सालवियोडौ सालव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सालवीजणौ, सालवीजबौ—भाव वा० ।

सालवदन-सं. पु. [स. शालवदन] कालवदन या शृगालवदन राक्षस का नाम । (पौराणिक)

सालवांनक-सं. पु [सं.] एक देश का नाम । (पुराण)

सालवाखर-सं. पु.—एक प्रकार का पाखर विशेष जो कि घोड़े को घाव लगने से बचाता है ।

सालवियोड़ौ—देखो 'सालियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सालवियोडी)

साळवियोड़ौ-भू० का० कृ०—शस्त्र चलाया हुआ, प्रहार किया हुआ ।
(स्त्री. साळवियोड़ी)

साळवी, सालवी-स. पु.—एक जाति विशेष जिसके व्यक्ति प्राय: करघे पर कपडे बुनने का व्यवसाय करते है ।
उ०—नगरि माडवी वारू पीठ, आछी खेरा चोळ मजीठ । पाडसूत्र पट्टआ सालवी, कुहरइ वस्त अणावइ नवी ।—कां. दे. प्र.

सालसंचउ-स. पु —उपकरण ।
उ०.........करुणानिधि, वात्सल्यसमुद्र, नसांजाल व्यक्ता दीसइं, अस्थिबंध ढीला ढलहलता, जिसा गांमटि अजांणि सूत्रधारि काष्ठ मेलिउं सालसंचउ ठगठगतउ मेलिउ हुउ जिसिउ,—व. स.

साळस, सालस-वि.—१ सज्जन, भला ।
उ०—दो दिनां पछै सेठाणी साव साजी-सूरी व्हैगी। तौ ई कुमार माडांणी वांनै ढाबिया । कुमार रै उण सालस बेटा रै माथै सेठ अणूता राजी व्हिया । पेट सूं जायोड़ा ई ग्रेंडा हीड़ा नीं कर सकै ।—फुलवाड़ी
२ सुशील ।
उ०—इदक रूपाळी । सीळ सुभाव । सालस, धीमी अर सुलखणी । हाथ री खामचण । सात्यू भाई परण्या पांत्या । बींदणियां रूपाळी ग्रेकाग्रेक नणद री अणूंतौ लाड राखै ।—फुलवाड़ी
३ होशियार, बुद्धिमान, चतुर ।
उ०—१ वौ सालस भतीजौ तौ सोनौ लेय सीधौ आपरै गाव ढळियौ । पछै उठै ढबणा मैं सार ई कांई । घर मैं सोनौ आवता ई सै बाता रा ठाट व्हैगा ।—फुलवाड़ी
उ०—२ हालतां-हालतां ग्रेक लाठौ नगर आयौ । उठै रात-वासौ लियौ । ग्रेक लखपति सेठ सालस अर समझणौ मोट्यार जांण उणनै पड़चूनी दुकांन माथै चाकर राख लियौ ।—फुलवाड़ी

सालसि, सालसी-स. स्त्री —साले की स्त्री, सलहज । (शेखावाटी)

सालहोतर, सालहोत्र—देखो 'सालिहोत्र' (रू. भे.)
उ०—नासा रा फरड़का वाजि नै रहिया छै। बेपख सूध जिकै सालहोतर मां बखाणिया तिहडा इण भांति रा तेजी, धरा रा खूदणहार, खुरताला रा अधखुरा सूं धरती धमकि नै रही छै ।
—रा. सा. स.

साला-सं. स्त्री. [स. शाला] १ गृह, मकान ।
२ कमरा, बडा कमरा ।
३ वृक्ष का तना ।
वि.—साल का, वर्ष सम्बन्धी ।

सालाना-वि.—वार्षिक ।

साळाकटार, साळाकटारी, साळाकटारौ—देखो 'साळकटारी' (रू. भे.)

सालाक्य-सं. पु. [सं. शालाक्य] आयुर्वेद के अन्तर्गत आठ प्रकार के तन्त्रो में से एक प्रकार का तंत्र विशेष ।

सालाक्ष-सं. पु. [सं. शालाक्ष] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

सालाखक—देखो 'साळाखख' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

साळायली—देखो 'साळाहेली' (रू. भे.)

सालाळी-स. स्त्री.—कटार, कटारी। (ना. डिं. को.)

सालावती-स स्त्री. [स. शालावती] विश्वमित्र मुनि की एक पुत्री का नाम।

साळाव्रक, साळाव्रख-सं. पु. [स. शालावृक] १ कुत्ता, श्वान।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ भेड़िया।

३ शृगाल।

४ बंदर।

५ बिल्ली।

रू. भे.—सालाव्रक, सूळाव्रक, सूळाव्रख।

साळासेली, साळाहेली-सं. स्त्री.—पत्नी के भाई की पत्नी, साले की पत्नी।

उ०—१ आप भंवरजी करवा पलाणिया मिरगानैणी नै बैल जुपाय। साळाहेळी बगड बुहारती, नणदोई नै लटक जुहार।
—लो. गी.

उ०—२ रथ ऊतर ऊभा राय अंगण, हरि ग्रहियइ हरि रइ ताइ हाथ। साळाहेली अनइ सासवा, निरखइ नयण अनाथानाथ।
—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सळायली, साळायली।

साळि, सालि—देखो 'साळी' (रू. भे.)

उ०—१ उड़िद पीस आटा किया, चावल की भई दाळि। हरिया रुचि कर जीमिया, सब तै मीठी साळि।—अनुभववाणी

उ०—२ सालि दालि घ्रत घोलसुं, भला पेट काठा भरघा। 'समयसुंदर' कहइ अव्यासिया, साध तउ अजै न साभरया।
—स. कु.

उ०—३ करपूरवासो बि आंगुली सालि, मडोर तणा मग तणी दालि, सोना तणइ स्यालि, सालणा तणी पालि, सुरहा घी तणी नालि, बि पहर तणइं कालि, परीसइ आखडियालि, इसिउ पुण्य विणु न प्राभीयइं।—व स.

२ देखो 'साळ' (रू भे.)

उ०—आज सापडता भखेरो आयो थो ज्यू आयो। जरै आप। दौड़ि सालि मैं गई, नैं हूं रंजी स् भरांणो।
—वीरमदै सोनगरा री बात

सालिक—देखो 'स्यालक' (रू भे.)

उ०—डावी देव जिमणी भइरव, डावु खइर डावु राजा, डावा लाली जिमणी मलाली, तंदल भरु भांणं, नीर भरि बहिढूं सवछी गाइ, सपलांणु घोडु रासु धोरी। एतनि प्रकारै करी अम्हारा मकन वरणवीता सोभइ, अहो सालिक बोलि।— व. स.

सालिकर-स. पु.—छंदशास्त्र मे टगण के तेरहवें भेद का नाम।
(डिं. को)

सालिगरांम, सालिग्रांन— देखो 'साळगराम' (रू. भे.)

उ०—१ अम्ह कजि तुम्ह छडि अवर वर आणं, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगरांम सूद्र ग्रहि सग्रहि, वेद मत्र म्लेच्छा वदनि।
—वेलि

उ०—२ हुओ हेक-मोनूं महाजुद्ध हाम, गळमाळ तुळछी अनै साळिग्रांम। सहू भीमरा भीच आखाडसिध्धं, मरण प्रब्ब सपेख मंगळीक किद्ध।—गु. रू. ब.

सालिणी, सालिनी-सं. स्त्री. [सं. शालिनी] १ ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त विशेष जिसमे क्रमशः एक मगण, दो तगण और अत में दो गुरु होते हैं। मतान्तर से इसमे क्रमशः चार गुरु, दो रगण एवं एक गुरु होता है।

२ वार्षिक।

सालिपिंड-सं. पु. [सं. शालिपिण्ड] कश्यप एव कद्रू के गर्भ से उत्पन्न एक काद्रवेण नाग का नाम।

सालिभद्र-स. पु.—१ एक राजा का नाम। (जैन)

२ महावीर स्वामी के समय का एक धनाढ्य सेठ जिसके ३२ पत्नियां थी।

वि. वि.—एक बार कोई दुपट्टे (साल) बेचने वाला आया। उसके साल इतने महगे थे कि उस देश का राजा भी नहीं खरीद सका। उन्हीं दुपट्टो को इसने खरीदे एवं खरीदने के एक दिन बाद ही अपने लायक न समझ कर बाहर फेंक दिये जिन्हें ओढ़ कर हरिजनो की स्त्रिया राजमहल मे सफाई हेतु गई। वहा रानी ने देखा और पूछने पर पता चला कि अमुख सेठ के घर से ये प्राप्त हुए है। तब राजा ऐसे सेठ से मिलने आया। उस समय यह अपनी रानियों के पास था। इसकी मां ने कहलवाया कि बेटा स्वामी मिलने आये है। तब इसने सोचा कि क्या मेरा भी कोई स्वामी है? यह विचार आते ही इसे ससार से विरक्ति हो गई और इसने प्रतिदिन अपनी एक पत्नी को छोडना शुरु कर दिया तब इसके साले ने आकर इसे कायर बताया और कहा कि सयम ही धारण करना है तो एक साथ सभी पत्नियों को छोडो। तब इसने अपनी ३२ पत्नियों को एवं साले ने अपनी आठो पत्नियो को छोड़ कर सयम धारण कर लिया।

साळिम, सालिम-वि. [अ.] १ पूर्ण, पूरा।

२ स्वस्थ, निरोग।

३ निरापद, सज्जन।

उ०—सुयण लाखौ सदा सालिम, जगत जांणै वडौ जालिम। लहण भेदा गुणा लाइक, निवड दाता नरा नाइक।—ल. पिं.

रू. भे.—सालयम।

सालियांणौ, सालियांनौ-स. पु.—गौड वश के अन्तर्गत एक क्षत्रिय वंश।

वि.—वार्षिक, सालाना।

सालियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ खटका हुआ, कसका हुआ. २ दुखदाई हुवा हुआ, दर्दयुक्त हुवा हुआ. ३ पलग, खाट आदि के पाये मे

चोथो ज्याग कियो चीतोडै, हुवै हुवा सालरचर होम ।

—महाराणा सांगा री गीत

सालळणौ, सालळबौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुणि चहुवांण कटक सालळिया, महिसिर फिर बारह घण मिळिया। जडि अंग सिलह सस्त्र अग जकडै, कसै तंडीर कबांण पकडै ।—सू. प्र.

उ०—२ प्रवाहे खडग्ग झडै हुत्थ पग्ग, लहै जांण आरा धर काठ लग्ग। मुडै सालळै सालळै पै मुडक्कै, झडां ओझडां माड ज्यौ माड झुक्कै ।—रा. रू.

उ०—३ कई ढोल कसाळ धरा ब्रहमड धड़क्कै, सुरणायं सालळै राग सीधू और हक्कै ।—रामरासो

उ०—४ धणी रै हुकम सा बहुत मावल धुबै, हुआ बरधू सबद देव दांणव हुबै। सालळै सीधूओ राग सरणाईयां, भलाई आज भारथ करो भाईयां।—पी ग्र

सालळणहार, हारौ (हारी) सालळणियौ वि०।

सालळिओड़ौ सालळियोडौ, सालळ्योडौ भू० का० कृ० ।

सालळीजणौ, सालळीजबौ – भाव वा० ।

सालळियोड़ौ—देखो 'सालुळियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. सालळियोडी)

साळवणौ, साळवबौ-क्रि. स.—शस्त्र चलाना, प्रहार करना ।

उ०—'सादवा' छादत घमसाण मझ साळवी, चक्त हिंदवांण असुरांण चमकी। दाद 'भोपाळ' अजरेळ बेरियां दळण, दुत कमर मैं हूत दलकी ।—भोपाळदान सादू री गीत

साळवणहार, हारौ (हारी), साळवणियौ - वि० ।

साळविओड़ौ, साळवियोडौ साळव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

साळवीजणौ, साळवीजबौ—कर्म वा० ।

सालवणौ, सालवबौ—देखो 'सालणौ, सालबौ' (रू. भे.)

उ०—तास थयो प्रारभ रे, थभ जिसारै तरुवर पालवै रे। दुखिया नै दुरलभ रे, विरही लोका रै हीयड़ै सालवै रे।—वि. कु.

सालवणहार, हारौ (हारी), सालवणियौ——वि०।

सालविओडौ, सालवियोडौ सालव्योड़ौ – भू० का० कृ० ।

सालवीजणौ, सालवीजबौ—भाव वा० ।

सालवदन-सं. पु. [स. शालवदन] कालवदन या श्रृगालवदन राक्षस का नाम। (पौराणिक)

सालवानक-स. पु [सं.] एक देश का नाम। (पुराण)

सालवाखर-स. पु.—एक प्रकार का पाखर विशेष जो कि घोडे को घाव लगने से बचाता है।

सालवियोड़ौ—देखो 'सालियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सालवियोड़ी)

साळवियोड़ौ-भू० का० कृ०—शस्त्र चलाया हुआ, प्रहार किया हुआ।

(स्त्री. साळवियोड़ी)

साळवी, सालवी-सं. पु.—एक जाति विशेष जिसके व्यक्ति प्राय: करघे पर कपडे बुनने का व्यवसाय करते हैं।

उ०—नगरि माडवी बाजू पीठ, आछी खेरा चोळ मजीठ। पाडसूत्र पट्टुआ सालवी, कुहरइ वस्त अणावइ नवी ।—कां. दे. प्र.

सालसंचउ-सं. पु.—उपकरण।

उ०.........करुणानिधि, वात्सल्यसमुद्र, नसांजाल व्यक्ता दीसइ, अस्थिबंध ढीला ढलहलता, जिसा गांमटि अजांणि सूत्रधारि काष्ठ मेलिउं सालसंचउ ठगठगतउ मेलिउ हुउ जिसिउ,—व. स.

साळस, सालस-वि.—१ सज्जन, भला।

उ०—दो दिनां पछै सेठाणी साव साजी-सूरी व्हैगी। तौ ई कुमार माडाणी वांनै ढाबिया। कुमार रै उण सालस बेटा रै माथै सेठ अणूता राजी व्हिया। पेट सूं जायोड़ा ई अंडा हीड़ा नी कर सकै ।—फुलवाडी

२ सुशील।

उ०—इदक रूपाळी। सीळ सुभाव। सालस, धीमी अर सुलखणी। हाथ री खामचण। सात्यू भाई परण्या पात्या। बीदणिया रूपाळी अेकाअेक नणद री अणूंतो लाड राखै ।—फुलवाडी

३ होशियार, बुद्धिमान, चतुर।

उ०—१ वो सालस भतीजो तो सोनो लेय सीधो आपरै गांव ढळियो। पछै उठै ढबण मैं सार ई काई। घर मैं सोनो आवता ई सै बाता रा ठाट व्हैगा।—फुलवाडी

उ०—२ हालतां-हालता अेक लांठो नगर आयो। उठै रात-वासो लियो। अेक लखपति सेठ सालस अर समझणो मोट्यार जाण उणनै पड़चूनी दुकान माथै चाकर राख लियो। – फुलवाड़ी

सालसि, सालसी-स. स्त्री.—साले की स्त्री, सलहज। (शेखावाटी)

सालहोतर, सालहोत्र—देखो 'सालिहोत्र' (रू. भे.)

उ०—तासा रा फरड़का बाजि नै रहिआ छै। बेपख सूध जिकै सालहोतर मा बखांणिया तिहड़ा इण भांति रा तेजी, धरा रा खूदणहार, खुरताला रा अधखुरां सूं धरती धमकि नै रही छै।

—रा. सा. सं.

साला-सं. स्त्री. [स. शाला] १ गृह, मकान।

२ कमरा, बडा कमरा।

३ वृक्ष का तना।

वि.—साल का, वर्ष सम्बन्धी।

सालाना-वि.—वार्षिक।

साळाकटार, साळाकटारी, साळाकटारौ—देखो 'साळकटारी' (रू. भे.)

सालाक्य-सं. पु. [सं. शालाक्य] आयुर्वेद के अन्तर्गत आठ प्रकार के तंत्रों मे से एक प्रकार का तंत्र विशेष।

सालाक्ष-सं. पु. [सं. शालाक्ष] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सालाब्रक—देखो 'साळाव्रक' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

साळायली—देखो 'साळाहेली' (रू. भे.)

सालाळी-सं. स्त्री.—कटार, कटारी। (ना. डिं. को.)

सालावती-स स्त्री [स. शालावती] विश्वमित्र मुनि की एक पुत्री का नाम।

साळाव्रक, साळाव्रख-सं. पु. [सं. शालावृक] १ कुत्ता, श्वान। (अ. मा; ह. नां. मा.)

२ भेड़िया।

३ शृगाल।

४ बंदर।

५ बिल्ली।

रू. भे.—सालाव्रक, सूळाव्रक, सूळाव्रख।

साळासेली, साळाहेली-स. स्त्री.—पत्नी के भाई की पत्नी, साले की पत्नी।

उ०—१ ग्राप भंवरजी करवा पलाणिया मिरगानैणी नैं बैल जुपाय। साळाहेळी बगड बुहारती, नणदोई नें लटक जुहार। —लो. गी.

उ०—२ रथ ऊनर ऊभा राय ग्रगण, हरि ग्रहियइ हरि रइ ताइ हाथ। साळाहेली ग्रनइ सासवा, निरखइ नयण ग्रनाथानाथ। —महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सळायली, साळावली।

साळि, सालि—देखो 'साळी' (रू. भे.)

उ०—१ उडिद पीस ग्राटा किया, चावल की भई दाळि। हरिया रुचि कर जीमिया, सब तै मीठी साळि।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ सालि दालि घ्रत घोलसु, भला पेट काठा भरघा। 'समयसुंदर' कहइ ग्रब्यासिया, साध तउ ग्रजै न सांभरचा। —स. कु.

उ०—३ करपूरवासी बि ग्रागुलो सालि, मडोर तणा मग तणी दालि, सोना तणइ स्थालि, सालणा तणी पालि, सुरहा घी तणी नालि, बि पहर तणइं कालि, परीसइ ग्रांखडियालि, इसिउ पुण्य विणु न प्रामीयइ।—व स.

२ देखो 'साळ' (रू भे)

उ०—ग्राज सापडता झखेरो ग्रायो थो ज्यू ग्रायो। जरै ग्राप। दौड़ि सालि मैं गई, नैं हूं रजी सू भरांणो। —वीरमदं सोनगरा री बात

सालिक—देखो 'स्यालक' (रू. भे.)

उ०—डावी देव जिमणी भइरव, डावु खइर डावु राजा, डावा लाली जिमणी मलाली, तंदल भर' भांणां, नीर भरि बहिढूं सवछी गाइ, सपलांणु घोडु रासु घोरी। एतनि प्रकारै करी ग्रम्हारा मकन वरणवीता सोभड, ग्रहो सालिक बोलि।— व. स.

सालिकर-सं. पु.—छंदशास्त्र मे टगण के तेरहवें भेद का नाम। (डिं. को)

सालिगरांम, सालिग्रांन— देखो 'साळगराम' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रम्ह कजि तुम्ह छडि ग्रवर वर ग्राणां, ऐठित किरि होमै ग्रगनि। साळिगरांम सूद्र ग्रहि सग्रहि, वेद मत्र म्लेच्छा वदनि। —वेलि

उ०—२ हुग्रो हेक-मौनूं महाशुद्र हांम, गळमाळ तुळछी ग्रनै साळिग्रांम। सहू भीमरा भीच ग्राखाडसिध्ध, मरण प्रब्ब सपेख मंगळीक किद्ध।—गु. रू. ब.

सालिणी, सालिनी-स. स्त्री. [सं. शालिनी] १ ग्यारह ग्रक्षरों का एक वृत्त विशेष जिसमे क्रमशः एक मगण, दो तगण ग्रौर ग्रत में दो गुरु होते है। मतान्तर से इसमे क्रमशः चार गुरु, दो रगण एवं एक गुरु होता है।

२ वार्षिक।

सालिपिंड-सं. पु. [सं शालिपिण्ड] कश्यप एव कद्रू के गर्भ से उत्पन्न एक काद्रवेण नाग का नाम।

सालिभद्र-स. पु.—१ एक राजा का नाम। (जैन)

२ महावीर स्वामी के समय का एक धनाढ्य सेठ जिसके ३२ पत्नियां थी।

वि. वि.—एक बार कोई दुपट्टे (साल) बेचने वाला ग्राया। उसके साल इतने महगे थे कि उस देश का राजा भी नहीं खरीद सका। उन्ही दुपट्टो को इसने खरीदे एवं खरीदने के एक दिन बाद ही ग्रपने लायक न समझ कर बाहर फेक दिये जिन्हें ग्रोढ कर हरिजनों की स्त्रिया राजमहल मे सफाई हेतु गई। वहा रानी ने देखा ग्रौर पूछने पर पता चला कि ग्रमुख सेठ के घर से ये प्राप्त हुए हैं। तब राजा ऐसे सेठ से मिलने ग्राया। उस समय यह ग्रपनी रानियों के पास था। इसकी मा ने कहलवाया कि बेटा स्वामी मिलने ग्राये हैं। तब इसने सोचा कि क्या मेरा भी कोई स्वामी है? यह विचार ग्राते ही इसे ससार से विरक्ति हो गई ग्रौर इसने प्रतिदिन ग्रपनी एक पत्नी को छोडना शुरु कर दिया तब इसके साले ने ग्राकर इसे कायर बताया ग्रौर कहा कि सयम ही धारण करना है तो एक साथ सभी पत्नियो को छोडो। तब इसने ग्रपनी ३२ पत्नियों को एव साले ने ग्रपनी ग्राठों पत्नियो को छोड़ कर सयम धारण कर लिया।

साळिम, सालिम-वि. [ग्र.] १ पूर्ण, पूरा।

२ स्वस्थ, निरोग।

३ निरापद, सज्जन।

उ०—सुयण लाखो सदा सालिम, जगत जांणै वडो जालिम। लहण भेंदा गुणा लाइक, निवड दाता नरा नाइक।—ल. पिं.

रू. भे.—सालम।

सालियांणौ, सालियांनौ-स. पु.—गौड वंश के ग्रन्तर्गत एक क्षत्रिय वंश।

वि.—वार्षिक, सालाना।

सालियोड़ौ-भू. का. कृ —१ खटका हुग्रा, कसका हुग्रा. २ दुखदाई हुवा हुग्रा, दर्दयुक्त हुवा हुग्रा. ३ पलग, खाट ग्रादि के पाये मे

पाटी डालने हेतु छेद किया हुआ. ४ तपा हुआ. ५ आकर्षित किया हुआ ।

(स्त्री. सालियोडी)

साळियौ, साळियो, सालियौ-सं. पु.—१ बैलगाडी के अग्रभाग को पृथ्वी से ऊपर रखने के लिये बैलगाडी के अग्रभाग मे बाधे जाने वाले लकड़ी के डडो मे से एक ।

(मि. डाया)

२ देखो 'सगाळ' (रू. भे.)

सालिवाहण, सालिवाहन-स. पु. [सं. शालिवाहन] शक संवत् को चलाने वाला शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा ।

सालिसिरा-सं. पु. [स. शालिशिरा] कश्यप एवं उनकी पत्नी मुनि के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र देवगन्धर्व ।

सालिसूरज, सालिसूरच-सं. पु [सं. शालिसूर्य] कुरुक्षेत्र का एक पुण्य-स्थल जहा शालिहोत्र ऋषि का आश्रम था ।

सालिहोतर, सालिहोत्र-स. पु. [स. शालिहोत्र] १ प्राचीन ऋषि का नाम, जिसने शालिहोत्र नामक ग्रन्थ (शास्त्र) की रचना की थी ।

२ वह शास्त्र जिसमे विशेषतः घोडों की चिकित्सा एव उनके शुभाशुभ लक्षणो का ही वर्णन होता है ।

३ घोडा, अश्व ।

रू. भे.—सालहोतर, सालहोत्र, सालिहोतरी, सालिहोत्रि, सालिहोत्री, सालोतर, साहलोतर ।

सालिहोतरी, सालिहोत्रि, सालीहोत्री-सं. पु. [सं. शालिहोत्री] १ घोडे के शुभ-अशुभ लक्षणो एवं उनकी तथा अन्य पशुओ की चिकित्सा के सम्बन्ध मे पूरी तरह जानकार व्यक्ति ।

२ देखो 'सालिहोत्र' (रू. भे.)

उ०—खेत्र खुरासाणी । बाहडदेसना बोरीया । लहिट्टया । गगेटिया । हंस जादर । ऊडणभ्रमर । ऊधस्या फोरणां । चपल चरण विस्तीरण । सालिहोत्रि प्रतिस्टा सिद्धा । विसेस गति करइ । मनस्यूं चालइ ।—कां. दे. प्र.

रू. भे.—सालोतरी, साहलोतरी ।

साळी, स्राळी, साली-सं. स्त्री. [सं. श्याली] १ पत्नी की बहिन ।

उ०—१ वाचइ गीत साळियां वाता, करता मगळ तइ गीत कहइ । गवरी नाह करइ रायग्रंगण, हसत पगा तळ गंग वहइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ साळचां हदो साथ, अरज करै छै आपनै । हथळेवा रो हाथ, जचियौ पर रचियौ नही ।—रामनाथ कवियौ

मुहा.—साळी नै छोड सासू सूं मसखरी करणी—उचित व्यक्ति से मजाक न करके ऐसे व्यक्ति से मजाक करना जिसके साथ मजाक करना अनुचित समझा जाता हो ।

[स. शालि] २ चावल ।

रू. भे.—साल, साळि, सालि ।

सालीणौ-वि. (स्त्री. सालीणी) वार्षिक ।

सालुळणौ, सालुळबौ-क्रि. स.—१ विनय करना, प्रार्थना करना, स्तुति-गान करना ।

उ०—नेम धारियौ नरेस, पहां न को चढै पेस, देख कहै सको देस खत्री बीज गयौ खेस । लहै बैण इतौ लेस, तांण भूह करै तेस, सालुळै अगेस सेस, राघवेस रावेस ।—र. रू.

२ युद्धार्थ प्रस्थान करना, गमन करना ।

उ०—१ लखि तोरा सालुळी, पुळी पलटण्या पटैता । सगीना साबळां, आभ छायो अखडैता ।—मे. म.

उ०—२ गुज्जर तणा गरूर, ताइ मिळै दिखणी तणा । सेन उजेणी सामुहा, सालुळिया दळसूर ।—र. वचनिका

३ आक्रमण करना हमला करना ।

उ०—धाडुं पुकार पड लाखि धाड, रवि उदय अस्त लगपच राड । सालुळै विदळ कंदळ ससत्र, रंग सेल खगै न मिटै रगत्र ।—रा. रू.

क्रि. अ.—४ प्रारम्भ होना, शुरु होना ।

उ०—१ वळ चहुवै कळ सालुळी, चळ चळ पुर हलचल्ल । आया वार निदान री, वीस हजार मुगल्ल ।—रा. रू.

उ०—२ राडो सालुळै अस्थगा बेध बधै सोबा रायजादा, सतारा उछाजा जूह उमंडे सजीत । घोर वेळा प्रथम्मी आणता सूत हेक घाटै, आसमान फाटै थभ लगायौ 'अजीत' ।

—अजीतसिंह चूंडावत री गीत

५ चलना ।

उ०—१ समर बाजिया खाग फौजा डमर सालुळी, ओप भर गुमर पौरस अमामो । उरड पडियौ अविधि घड़ा ऊपर अतर, सार धारा बिचै भंमर सामो ।—चादसिंघ रौ गीत

उ०—२ दातूसळा साबळा डमर, लगर लाज खळहळै लार । सालुळ अख लख खळा सघारै, पटहथ जेहा बिरद पगार ।

—ऊकी बोगसौ

उ०—३ मेडतिया महाराज वळ, किया मुदै करतार । दुंद अमदी सालुळै, त्यां हदी तरवार ।—रा. रू.

६ उमडना ।

उ०—१ लका लेवण लगरी, कप फौजा इधकात । प्रळै करण जांणै प्रथी, सालुळिया दध सात ।—र. रू.

उ०—२ आण तै नीर पाताळ उधेडिया, कमठ वाराह चा माण कळिया । सेस जळिया गुमर गगजळ सालुळै, महण परवाह परवाह मिळिया ।—जोगीदास कवियौ

७ प्रज्वलित होना, जलना ।

उ०—है फरहास खुदाय हमारै, थान राम जिम थुहड़ थारै । सुणै वचन धिक वीर सिंघाळा, जाणै जेठ सालुळी ज्वाळा ।—गो. रू.

८ झुकना ।

उ०—वह छूटै कंबर सोक नलीसर सीवणि सघर साचवियं। धुबि जांण घराहर सालुळि सेहर मेघ महाभर माचविय।—गु. रू. बं.

९ वाद्य यंत्रों का बजना।

उ०—केई ढोल कंसाळ, धरा ब्रहमंड धड़क्कै। सुरणायं सालुळै, राग सीधूग्रो रड़क्कै।—पी. ग्र.

१० उलटना। (डि. को.)

११ होना।

उ०—गाज ग्रबाळ पड़ रोल गेंणाइयां, सालुळै सिधुयें राग सरणाइया। कूद ग्या कायरां वाजती काहली, वीर ग्राकामसा मूरमा वलकुली।—रुखमणी हरण

१२ गाया जाना।

सालुळणहार, हारौ (हारी), सालुळणियौ—वि०।

सालुळिग्रोड़ौ, सालुळियोड़ौ, सालुळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सालुळीजणौ, सालुळीजबौ—कर्म वा; भाव वा०।

सलळणौ, सलळबौ, सललणौ, सललबौ, सलुळणौ, सलुळबौ, सालळणौ, सालळबौ, सालूळणौ, सालूळबौ—रू० भे०।

सालुळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विनय किया हुग्रा, प्रार्थना किया हुग्रा, स्तुतिगान किया हुग्रा. २ युद्धार्थ प्रस्थान किया हुग्रा, गमन किया हुग्रा. ३ ग्राक्रमण किया हुग्रा, हमला किया हुग्रा. ४ प्रारम्भ हुवा हुग्रा, शुरू हुवा हुग्रा. ५ चला हुग्रा. ६ उमड़ा हुग्रा. ७ प्रज्वलित हुवा हुग्रा, जला हुग्रा. ८ फुका हुग्रा. ९ वाद्य यन्त्र बजा हुग्रा. १० उलटा हुग्रा. ११ हुवा हुग्रा. १२ गाया हुग्रा।

(स्त्री. सालुळियोडी)

साळू-सं. पु.—१ मागलिक कार्यों पर काम मे लाया जाने वाला लाल कपडा।

२ सधवा स्त्रियों के ग्रोढने का सुंदर एवं कीमती वस्त्र, साडी। (डि. को)

उ०—१ बाळ बाळ लख बचन ग्रव, प्रजळ जीव दूं प्राण। मां जाई करजे मती, साळू सळू समाण।—रैवतसिह भाटी

उ०—२ पाग सुरंगी पीव री, साळू त्रिया सुरग। केसर भीनां कुमकुमै, पुसबा भरचा पिलग।—ग्रग्यात

उ०—३ सिर साळू रंग चूनड़ीवर, भल विखणी री चीर है। ग्रल्लै-पल्लै मोर पपिया, बिच मैं चांदो कीर है।—नारी सईकडो

३ विवाह के समय मे ग्रोढाई जाने वाली लाल ग्रोढनी। (मा. म.)

४ किसान स्त्रियो के ग्रोढने का लाल रग का वस्त्र विशेष।

उ०—डोरा डिगमगता ग्राटी खुल डुळनी, तिरछी भांकणिया बरछी सी तुळती। दुरबळ लाजाळू साळू मैं दीखै, भामण भूखाळू ब्याळू बिन बीखै।—ऊ. का.

५ रहट के उस लट्ठे का सिरा जो खडे चक्र ग्रौर पानी लाने वाली माळ को ऊपर लाने में सहारा देने वाले घेरे से जुडा रहता है।

६ शीतकाल मे मस्ती मे ग्राए हुए ऊंट के मुंह से बाहर निकलने वाली गलसूंडी।

(मि. गुल्लौ)

रू. भे.—सळू, सिळू।

ग्रल्पा;—साळूडौ।

सालूकिनी-स. पु. [सं. शालूकिनी] कुरुक्षेत्र मे स्थित एक तीर्थस्थान।

साळूड़ौ—देखो 'साळू' (रू. भे.)

उ०—नौसर तोडचो नवलखो, बेसर घाल्यो बक। साळूड़ौ संकुचायगो, निरख्यो इसो निसक।—ग्रग्यात

सालूर-सं. पु. [सं. शालूर] १ मेढक।

उ०—१ जिम सालूरां सरवरा, जिम धरणी ग्रर मेह। चपावरणी वालहा, इम पाळीजइ नेह।—ढो. मा.

उ०—२ ग्रंब तजे नहिं कोइला, सरवर सालूरांह। राज हिवइ मा पांतरउ, ग्रा धण धड ग्रवराह।—ढो. मा.

२ डिंगल का एक मात्रिक (छन्द) गीत विशेष जिसके विषम पद मे १६ तथा सम पद मे १२ मात्राऐं होती है किन्तु ग्रादि के पदो मे १८ मात्राऐ होती है। प्रथम एव तीसरे तथा दूसरे व चौथे चरण का तुक मिलता है। (र. ज. प्र.)

३ डिंगल का एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक पद मे प्रथम दो गुरु तथा २४ लघु ग्रौर ग्रन्त में एक सगण होता है। मतान्तर से इसके प्रत्येक पद में क्रमशः तगण, ग्राठ नगण एवं लघु गुरु होते हैं। इसे सालूर गीत भी कहते हैं। (र. ज. प्र.)

सालूळणौ, सालूळबौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळबौ' (रू. भे.)

सालूळणहार, हारौ (हारी), सालूळणियौ—वि०।

सालूळिग्रोड़ौ, सालूळियोड़ौ, सालूळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सालूळीजणौ, सालूळीजबौ—भाव वा०।

सालूळियोड़ौ—देखो 'सालुळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सालूळियोडी)

साळेवड़ौ, सालेवडौ, साळेवडौ-स. पु.—चावल के ग्राटे का बना एवं पापड़ की तरह तल कर खाया जाने वाला पदार्थ विशेष।

उ०—ग्रीसइ नारि पातली, ललकती ज वेणी, खलखती ज चूडी, लहिकतइ ज हाथि, खांड ग्रीसती ज वादइ, जमु सहू को सवादि, भलभला भावतां भीना वडां, सालणि सालेवडां,.......।—व. स.

साळै, सालै-कि. वि.—पास, निकट, समीप।

साळैड़ी, सालैड़ी-सं. स्त्री.—साले की पत्नी, पत्नी की भाभी।

सालोक, सालोक्य-सं. पु. [सं सालोक्य] १ पांच प्रकार की मुक्तियों मे से एक प्रकार की मुक्ति विशेष, जिसमे जीवात्मा भगवान के साथ ग्रथवा उसके ग्रन्य ग्राराध्यदेव के साथ एक ही लोक मे वास करता है।

उ०—१ मुकत ही पाच प्रकार की, सालोक ही सांमीप। सारूप

हसा जांणियें, को पौंहचे भव जीप ।—गज-उद्धार

उ०—२ परम निवास निवारण पाप, जोगेसर भद्र अजप्पा जाप। दातार मुकत्ति दिनंकर देव, सारूप सालोक सामीप सामेव।
—ह. र.

उ०—३ सालोक्य संगति रहै, सांमीप्य सन्मुख सोई। सारूप्य सारीखा भया, सायुज्य एकै होई।—दादूवांणी

वि. वि.—पांच प्रकार की मुक्तियों के नाम निम्नलिखित है—सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सार्ष्टि (सार्ष्टिता) और सायुज्य।

सालोतर—देखो 'सालिहोत्र' (रू. भे.)

उ०—एरापति आरिखा, पवै घण गाज पठाक्षर। ऊचस्रवा आरिखां, तुरंग घण वर सालोतर।—सू. प्र.

उ०—२ सालोतर सगीत, नीत वळ इत निरखण। आवध भेद 'अजीत', प्रीत तप ग्यांन परखण।—क. कु. बो.

सालोतरी—देखो सालिहोत्री' (रू. भे.)

सालोसाल-क्रि. वि.—प्रत्येक वर्ष, हर साल।

उ०—ठिकाणा री मकान बडी लबो-चौडो अर बाबा आदम रै जमाना री बणियोडो हो। बरसात मैं सालोसाल नील जम जम नै धवळा माळिया काळा भरंग पडग्या हा।—रातवासो

साळी, साळौ-स. पु. [स. श्यालक] पत्नी का भाई।

उ०—१ ताहरां ऊदोजी रो साळौ जाणियो। देखें तो घोडी छै। ओळखी तो घोडी ऊदोजो री। ताहरा ऊठनै घोड़ी पकडी दीठी—जायनै पायगा मांहे बाधू।—नैणसी

उ०—२ सामि रै रुखम साळा काळा काळा जिकै कान्ह, संघारै सिघाळा भाई कसवाळा सेव। धीसता दीनदयाळा, चिरिताळा निमो देव, अकरूर आळा भिळै तमासा अलेख।—पीरदान लाळस

रू. भे.—साळउ, सालौ, सालो, साल्हइ, साल्हउ, साल्हु।

सालो, सालौ—देखो 'साळौ' (रू. भे.)

उ०—"""भाजा मेलिया रूपा सोना ना कचोला, तिहा, बेठा बत्रीसलक्षणा पुरुष दुदला फुदला जाकजमाला मुंछाला, केई जमाइ केई साला, ईसा पाती बेठा राजवी ढीचाला""" "।—व. स.

२ देखो 'सीलो' (रू. भे.)

साल्मळि, साल्मळी-स. पु [सं. शाल्मलि] १ सेमल का वृक्ष।

२ क्रौंच (प्लक्ष) द्वीप से दुगुना एक द्वीप का नाम जो कि उतने ही चौड़े सुरोद से आवृत हैं। (पौराणिक)

वि. वि.—इसी द्वीप पर शाल्मलि वृक्ष है जिस पर गरुड़ भगवान की स्तुति करता है। इसके अधिपति यज्ञबाहु द्वारा अपने सात पुत्रो के नाम से इसे सात भागो में विभक्त किया था। इस पर मनुष्य की चार जातियां—श्रुतधार, वीर्यधार, वसुधर व इषन्धर निवास करती हैं। इसी पर स्वरस, शतशृंग, कुंद, मुकुंद आदि पर्वत व अनुमती, सिनीवाली, सरस्वती, नंदा आदि नदियां हैं।

३ गरुड़।

४ एक चंद्रवशी राजा जो कुरु का पौत्र व अविक्षित का पुत्र था।

५ एक प्रकार का नरक।

रू. भे.—सालमली, सालमिली।

साल्मलीकंद-सं. पु.—सेमल के वृक्ष की जड। (आयुर्वेद)

साल्य-स. पु.—अंगदेश का नाम। (महाभारत)

साल्यम—देखो 'सालिम' (रू. भे.)

उ०—बालम बिछुरत हे सखी, कालम लागी एह। जालम जंम कै वस्य भई, साल्यम रही न देह।—परमानंद वणियाळ

साळ्यो, साळ्यौ—देखो 'सगाळ' (अल्पा; रू. भे.)

साल्व-सं. पु. [स शाल्व] १ सौम राज्य का एक राजा जिसने काशी-राज की कन्याओं के हरण के समय भीष्म से युद्ध किया था।

२ एक देश का नाम। (डि. को.)

३ विष्णु द्वारा मारा गया एक राक्षस।

४ दुर्योधन का सहायक एक मलेच्छ राजा।

५ चेदी नरेश शिशुपाल-मित्र एक राजा जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था।

६ व्युताषिताश्व की पत्नी भद्रा का अग्नि से उत्पन्न एक पुत्र।

साल्हइ, साल्हउ, साल्हु—देखो 'साळौ' (रू. भे.)

उ०—१ एकवीस ऊथिला सपराणा, लखण सेभटइ दीधा। साल्हइ सोभित अति सपराणे, घाड घणा सुं लीधा।—कां. दे. प्र.

उ०—२ तिणइ दिवस अमावस हूती, खूडलीइं तिथि कालि। लखण सेभटउ साल्हउ सोभित, रह्या सरोवर पालि।—का. दे. प्र.

उ०—३ साल्हु सोभतु तैं समरगणि, लखण सेभटउ बीजउ। रिण-वटि रहिउ अजेसी माल्हण, माहि मूलिगउ त्रीजउ।—का. दे. प्र.

सावंत-सं पु. [स. शावन्त] १ पृथुवशीय युवनाश्व का पुत्र व बृहदश्व के पिता एक राजा का नाम।

२ मुसलमान वेश्या। (मा. म.)

३ देखो 'सामत' (रू. भे.)

सावंतरी, सावंत्री-स. स्त्री. [स. सवित्री] १ माता, जननी।
(ह नां. मा.)

२ गाय, गौ।

३ देखो 'सावित्री' (रू. भे.)

उ०—नाम नै चरण छोडै नहीं, गंग गौरि गावतरी। अहिल्या अनैं तारा तवै, सीत मात सावंतरी।—पी. ग्र.

साव, साव-स. पु. [स. शाव] १ बच्चा, विशेष कर पशु का।
(अ. मा; डिं. को.)

उ०—नागण जाया चीटला, सीहण जाया साव। राणी जाया नह रुकै, सौं कुळवाट सुभाव।—वी. स.

२ बालक, बच्चा। ३ पुत्र, बेटा। (डिं. को; ह. ना. मा.)

सं. स्त्री. [सं. स्राव] ४ नदी, सरिता। (ह. ना. मा.)

क्रि वि.—१ बिल्कुल, नितांत।

उ०—१ सेठ कह्यौ—अै बातां साव कूड़ी। आ माया माडै नी उळीचीजै। घकला ज्यू कह्यौ त्यू करण सारू त्यार। वत्ता गच-ळका भर्वं ई नीं काढूं।—फुलवाड़ी

उ०—२ तद जुम्मा नै कूड़ कंवरणी पडची कै वा खुद आपरै हाथां कंवरसा साथै घात करची। इण कूडी बात नै कांमेती साव साची मानली। तठा उपरात वौ जुम्मा रै साथै उणरै घर ताई गियौ।

—फुलवाडी

२ देखो 'स्वाद' (रू भे.)

उ०—१ मन दुख दाधा डोल मत, साधा जग तज साव। मानव भव भीता मिटण, गुण सीतावर गाव।—र. ज. प्र.

उ०—२ पर घर रीझण करहला, नीधरिया घर आव। बीजा अेक भवूकडा, वेला अेको साव।—जलाल-बूबना री बात

सावक-स. पु. [स शावक] १ बच्चा, बालक।

उ०—बहुरि दूसरौ द्रस्टात। कि इह तेज करि रतन हइ। बीजौ द्रस्टात। कि तार कहता रूपौ हइ। किना इह तारा छै। कइ हरि-हस कहतां सूरय कै ताक कै ससि कहता चंद्रमा। सावक कहता बचा छै। कै ए हीरा छै।—वेलि टी.

२ हंस।

उ०—'गजबघी' हंस अभिनमै 'गागै', सुज निज हेत खेध करि साथ। जळ जिम खळ मूंकौ साहिजादौ, भीम दूध भखियौ भाराथ। सावक सूरजसिंघ समोभ्रम, अेम बरजाणौ सु प्रमाण। नीर टाळि जंहगीर सुनदन, खीर जही भखियौ खुमाण।

—गजसिंह राठौड री गीत

३ देखो सावक' (रू. भे.)

रू. भे.—सावज, सावग।

सावकअडळ, सावकअडल-सं. पु.—डिंगल का एक छन्द (गीत) जिसके प्रत्येक चरण मे, अन्त मे, चौकल सहित सोलह मात्राऐ होती हैं एव जो शब्द प्रथम चरण के अन्त मे आता है वही चारो चरणो के अत मे भी आता है। (र. रू.)

उ०—लै चहुं पद सागोर लख, विखम तिकण मैं वीर। इक सबदौ चोकल अगर, सावकअडल सधीर।—र. रू.

वि. वि.—इसके द्वितीय भेद में प्रत्येक चरण मे, अन्त में, त्रिकल सहित पन्द्रह मात्राएें होती है। इसमे भी जो शब्द प्रथम चरण के अन्त मे आता है वही चारो चरणो के अन्त मे भी आता है।

इसके द्वितीय भेद में चार द्वाले होते हैं। यदि इसका एक ही द्वाला रखा जाय तो यही 'गाहा चौसर' गीत हो जाता है।

सावकरण-स. पु. [सं. श्यामकर्ण] १ घोडा, अश्व। (डिं. ना. मा.)

२ देखो 'स्यांमकरण' (रू. भे.)

सावकी, सावको-सं. स्त्री.—सौतेली।

उ०—कै है रे सासू थारै सावकी ए पणिहारी ऐ लो, कै थारो पीवरियौ परदेस वा'ला जो।—लो. गी.

सावकु, सावकुत, सावकौ, सावकौ-सं. पु. (स्त्री. सावकी) सौतेला।

उ०—१ पसायत गाडण री बेटी नांम मेली आढा नूं परणायी, मेली री सावकुत बेटौ हौ जिणनु मार पसायत रा बेटां आढा री जमी अपणाय गाडणा वसायौ वाय कनै।—बां. दा. ख्यात

उ०—२ अर राज रै सावका बेटा-बेटियां री राजा खुद जिम्मौ सभाळियौ। डूंडी पिटायदी कै कोई कुमात सावका टाबरा नै दुख दियौ तौ जीवतां दाग दिरीजैला।—फुलवाडी

सावग—१ देखो 'स्रावक' (रू. भे.)

२ देखो 'सावक' (रू. भे.)

सावगी—१ देखो 'स्रावगी' (रू. भे.)

२ देखो 'सावकी' (रू. भे.)

सावड़—देखो 'सावढ' (रू. भे.)

२ देखो 'सावळ' (रू. भे.)

सावचेत, सावचेत-वि.—१ सतर्क, सावधान।

उ०—१ राजकवर तौ खुद तल्लै-मल्लै सावचेत हौ। कमेड़ी री अेक टाग तोडनै अळगी वगाई तौ देतराज री टाग साथळ माय सू तूटनै खिरगी।—फुलवाडी

उ०—२ कामेनी री आख्या मै अेक दिन रगत री झाई देखी तौ बीदणीं कवरसा नै सावचेत करचा कै औ दुस्टी अवस घात करैला —फुलवाडी

२ होश मे लाने की किया, सचेत, सजग।

उ०—१ अरु बूदी रा राव राजा छत्रसाल जी घावा पूर हुवा पड़िया है जिसै आलमगीर गया। सू मूंहडै ऊपर हाथ फेरियौ। अरु पाणी पायौ सावचेत कर अमल दियौ।—द. दा.

उ०—२ इतरी सुण भरमल अति उदास हुई। विरह सू डील पसीज गयौ। नैणा माह परवाह छूट पड़िया। सो नीठ जीव नुं थामियौ। वडारण घणी धीरज दीनी। छोकरचा पवन करण लागी। सावचेत करी।—कुवरसी साखला री वारता

३ होशियार।

रू. भे.—सापचेत।

सावचेतगी, सावचेती सावचेती-सं स्त्री—१ चतुराई, होशियारी।

उ०—१ तौ ई पूछणौ छोकौ। सावचेती आपरी है किणी रै बाप री कोनी।—फुलवाड़ी

उ०—२ वा भला मिनखां सारू म्हनै अेक पोथी लिखणी पड़ै जका कै आपरा छळ कपट नै सावचेती सूं दरसावै।—फुलवाडी

उ०—३ मासी तुरत समझगी कै बातड़ी खासी निवाई है। लिखरा मे टाळै जैडी कोनी। बोली—थू भली-भात जाणै कै आ सावचेती तौ म्हैं नींद रै माय ई नी पांतरू'।—फुलवाड़ी

२ सावधानी, सतर्कता।

उ०—१ लोग जीवण वास्तै सौ भांत रा कळाप करैला, पण अपांनै अपा री घर तौ रूखाळणौ ई पड़ै। सावचेती नीं बरता तौ

ग्रौ धन रैवणी दूभर है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रबार ताईं म्हारी ग्राख्या मै लूंकडी रै वास्तै मोरचौ बाध्या, बारा-बोर री दुनाळी बदूक लियां, छै फुटी लांबी-चौड़ी बैजू ग्रर उण री सावचेतगी घूम रही ही ।—तिरसकू

रू. भे.—साउचेती।

सावज-सं. पु.—१ सिंह, शेर ।

उ०—ग्रागै मारग रै सै-बिचै नाहरी बैठी छै। पीछै पावडा १०० ऊपरां नाहर बैठ्यौ छै, तिकौ चावडी रै निजर ग्रायौ । तरै कह्यौ, महाराज कवरजी, सावज बैठ्यौ छै ।—जगदेव पंवार री बात

२ बाघ, बघेरा । (ना. डिं को.)

उ०—घेरै सिकार मांहि ससा, लुंकडी, सीह, रोझ, स्याळ, रींछ ग्रनेक हिरण ग्रादि देग्रर भेळा हुया छै । नान्हा जीवा पडेरा माहै ग्राइ ग्राइ पडै छै । ग्रर सीह, सावज, रोझ-कोसा ३ तिहु रै ग्रातर हुंता ।— द. वि.

३ शेर का बच्चा ।

उ०—ग्रापणै स्वार्यद री फौजू कै लोहै को ढाल, सेरू की सावजूं चित्रूं की मिसाल । जमकेसै फिरसतै लगै ग्रसमाण जिनूं कै देखेसै सूकै मदमसत फीलू कै डाण ।—सू. प्र.

४ खरगोश, हिरण ग्रादि वन्य पशु जिनका शिकार किया जाता है।

उ०—सादूळौ हण सावजां खाट कमाई खाय । टुकडा साटै टेगडा, हुख हुख पूछ हिलाय ।— रेवतसिंह भाटी

५ मासाहारी पक्षी ।

उ०—मडीयउ भाजि मरगमड मूड, रडव्वड रैण करडक रूंड । झडप्फड पंखणि सावज झूळ, गुडत गयाघण गात्र सथूळ ।

—गु. रू. ब.

६ योद्धा, वीर ।

उ०—ग्रथग ग्रचळ धिन 'जोध' ग्रभनमा, सावज कुळ पैंतीस सिरै । हरि मेलियौ मथै हीलोहळ, गाजियौ रावण मेर-गिरै ।

—किसनौ ग्राढौ

७ देखो 'स्यांमज' (रू. भे.) (ना. डिं. को)

रू. भे.—सवज, स्यावज ।

सावजन-वि. [सं. सावज्ञ] घृणित, निंद्य, तिरस्करणीय।

उ०—तह नहिं तमांम, घन सीत घाम, फळ फूल फार, ग्रध्वग उदार। नहिं पहूँच नीच, मारज्जरि मीच, सावजन संक, निद्रा-निसंक ।—ऊ का.

सावजळ-सं. पु.—भाला । (ना. डिं. को.)

रू. भे.—सावझळ।

सावझड़ो-स. पु.—डिंगल का एक गीत (छन्द) जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम चरण मे २३ मात्राएँ होती हैं तथा ग्रन्य तीन चरणों में २०, २० मात्राऐं होती हैं एवं चारों चरणों में तुकात मिलते है ।

(र. रू.)

सावझळ—देखो 'सावजळ' (रू. भे.)

सावट्ट-सं. पु.—१ सूर्योदय के समय भेड़िये द्वारा राह पर बांयी ग्रोर से ग्राकर दाहिनी ग्रोर जाने की क्रिया । (ग्रपशकुन)

उ०—'पाल' तणौ परधान तू, तूं नायक बौहजाण । सूरज ऊगै सावट्ट, सौ किसडौ चंद्रभाण ।—पा. प्र.

२ श्रेष्ठ कपड़ो की पोशाक ।

उ०—१ राणै उदयसिंघ री पुत्री परणि, घणौ उच्छव करि, मगित जणा री घणी ग्रासीस लै करि, करह केकाण सोना सावट्ट महुरा घणी दे चित्रोड रौ मेघ कहाई ।—द. वि.

उ०—२ चौथलई फेरइ डाईचौ, पल्यंग सावट्ट सोडि । कुग्ररि कर मेल्हावणई, दीया भाव भूखण कोडि ।—रुकमणी मंगळ

उ०—३ सावलोह भाला नइ सांगि, लीइ हुथियार सवै मनरंगि । नवा सावट्ट ठेसइ पाय, उलगीइ कान्हड़दे राय ।—कां. दे. प्र.

३ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—१ ग्रलूखानि जूजूग्रा दिवारचां, तेह सविहुंनइ ग्रनाम । सोना रूपां ग्रनइ सावट्ट तीरी ग्राप्या ग्राम ।—का. दे. प्र.

उ०—२ सोना कळत्र सावट्ट साकुर, गिण देपउत न मनि ग्रहिया । पूगै दीह खगार प्रिथी-पुड़, कहतै हरि चारण कहिया ।

—खंगार सोढा री गीत

४ तोता, सुग्गा ।

वि.—१ नया, नवीन ।

२ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू. भे.—सावट्ठ ।

सावडवी-स. पु.—एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।

उ०—खाटौ खीच फलका मांस, दाळ बाटी न्यारी । सावडवी समोसा मूंग, चावळ की तयारी ।—शि. व.

सावट्ठ—देखो 'सावट्ट' (रू. भे.)

उ०—जीमणा हाथ कानी सूं डावा हाथ कानी ग्रावै सावट्ठ नै सागवणौ कहीजै इण तरह सावट्ठ ऊबेड़ा सागवणा मालाळा जाणीजै।

—शकुन शास्त्र

सावढ-सं. स्त्री.—१ कृषि की ग्रधिष्ठात्री एक देवी जिसे कृषक हल जोतने व बीज बोने से पहले नमस्कार करते है ।

उ०—सूतल नाथा सर नासा सणकारी, फुरणीं धूंधाता रासा फणकारी । भूसर धाया गल ग्रावढ कढ भाखै, नम नम सावढ नै नाया, कण नाखै ।—ऊ. का.

२ फसल काटने के पश्चात साड ग्रादि के लिए छोडी जाने वाली कुछ फसल ।

३ मातृभूमि ।

रू. भे.—सावड़, सेवड़, सेवढ, स्यावड़ ।

सावढमाता—देखो 'सावढ' (१) ।

सावण—देखो 'सावण' (रू. भे.)

सावणिक-सं. पु. [सं. श्रावणिकः] श्रावण मास । (डिं. को)

वि. [सं. श्रावणिक] श्रावण मास का, श्रावण मास सम्बन्धी ।

सावणियौ—देखो 'सावण' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ सावणियै रा दिनडा च्यार, जंवाईडो लै जासी जी लै जासी । वा उडसी पाख पसार, सूवटियो लै जासी जी लै जासी ।
—लो. गी.

उ०—२ सोढी रांणी सावणियै री मेह, मूमल आभा वीजळी । बरसण लाग्यो मेह, झबूकण लागी बीजळी ।—लो. गी.

सावणूं—देखो 'सांवणूं' (रू. भे.)

सावतरी—देखो 'सावित्रि' (रू. भे.)

उ०—१ जड़ धारिन जाणी प्रचळ पुरांणी, अधिकि हुई किमि करि इतरी । पारबती निमौ हेमरी पुतरी, सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी ।—पी. ग्रं.

उ०—२ आखा पाछै आप खावै, त्याग राग जग जाणनी । सीता सावतरी, दमयंती, द्रौपत दाय पिछांणनी ।—नारी सईकड़ो

उ०—३ सावतरी रै साच, मरचोडो पति जियाळो । सकुंतळा री साघ, वीर बाळक बेताळो ।—नारी सईकडौ

सावतौ—देखो 'साबतौ' (रू. भे.)

उ०—आंपणां जु बेली कहतां साथी था तांहनै बळिभद्रजी पचारया । कहीयौ जु देखां अर्जन सत्रा री साथ सावतौ ऊभौ छै । वूठं उपरि वाह देण री इहै वेळा छै । सेई जीपसी जु हाथ वाहसी ।
—वेलि टी.

सावत्री देखो 'सावित्रि' (रू. भे.)

उ०—१ सावत्री सरसती गवरी गंगा गोमत्ती, मिळ सतियां धिन महरि करै इण पर कीरत्ति ।—रा. रू.

उ०—२ इम्या लेसै उवारण, तूं आतिम आधार । सावत्री साराहियौ, श्री निकळक अवतार ।—पी. ग्रं.

सावत्रीईस, सावत्रीईसर, सावत्रीईसुर, सावत्रीईस्वर-सं पु यौ. [सं. सावित्री+ईश, सावित्री+ईश्वर] ब्रह्मा, विरंचि । (डिं. को)

सावद्य-सं. पु. [सं.] योग में एक प्रकार की सिद्धि का नाम ।

वि. वि.—योग में तीन प्रकार की सिद्धिया होती हैं । यथा—सावद्य, निवद्य और सूक्ष्म ।

वि.—जिसमें किसी प्रकार का पाप या दोष हो, पाप या दोषयुक्त ।

यौ.—सावद्यअनुकंपा, सावद्यक्रिया, सावद्यदया, सावद्यदांन ।

सावद्यअनुकंपा-सं. स्त्री. यौ.—पापयुक्त दया ।

उ०—बखांण वांणी देवै सूत्र सिद्धांत बांचै छेहड़ै जीव खुवायां पुन्य मिस्र परूपै सावद्यअनुकंपा मैं धरम कहै ।—भि. द्र.

सावद्यक्रिया-सं. स्त्री. यौ —पापयुक्त क्रिया ।

उ०—जद स्वामीजी कह्यो—है बाई थारी करम बंधवा री सावद्यक्रिया ही तूं नहिं छोडै तो रोटी रै वासतै म्हारी साची क्रिया हूं किम छोडूं ।—भि. द्र.

सावद्यदया-सं. स्त्री. यौ.—पापयुक्त दया ।

उ०—बायां रात्रि मैं संसार लेखै चोखा चोखा गीत गावै अनै छेहड़ै जाता मोरचौ मारू गावै । ज्यूं........पहिला तौ वखांण मैं अनेक बातां कहै पिण छेहड़ै सावद्यदया सावद्यदांन मैं पुण्य मिस्र परूपै ।—भि. द्र.

सावद्यदांन-सं. पु. यौ.—पापयुक्त दान ।

उ०—१ जीव खवायां पुन सरधै । सावद्यदांन मैं पुन सरधै तिणसूं समकत चरित्र एक ही नहीं ।—भि. द्र.

उ०—२ केइ कहै सावद्यदांन मैं भगवान मूक कही है सो वरतमान काल बिना पिण मून राखणी । पुण्य पाप न कहिणी ।—भि. द्र.

सावधांन-वि.—१ खबरदार, चौकन्ना ।

उ०—१ सो कुंवर रंग देख कहण लागो—जो थे इतरा असवार तो अठै रहौ अर इतरा म्है आगै-आगै जावां छा । कजियै रौ कांम छै । कदास केई उरै ही आण फेरै तौ थे अठै सावधांन रहज्यौ । घणी खबरदारी राखज्यौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ लूंकड़ी नै देख नै बारा-बोर री बंदूक सम्हाळ लेवण आळो सावधांन मन । जै अबार वो पाछो आवै तो मनैं सरवर रै कनै देखनै काई कैवेलो ।—तिरसंकू

२ सचेत, सतर्क, होशियार ।

उ०—१ बुंदी आइ सम्हाळि बळ, सावधांन करि सरब । दूदो मुडि रहियौ दुसह, पावण जस रण परब ।—व. भा.

उ०—२ वरधमान नद इद्र अगजीत का मत्री, सरब सावधांन जंसै थान थांन जंत्री । रायाचद दीपावत दीप सा उजाळा, जाकी बुध अरि पतंग जाळबै कूं ज्वाळा ।—रा. रू.

३ चतुर, बुद्धिमान ।

४ जागरूक, सचेत ।

उ०—आय अरति पूछी विध एही, सावधांन हुय धरम सनेही । विखैं अग्यांन धरम वीसारो, सूरज कुळ चो धरम सभारो ।
—सू प्र.

सावधांनी-स स्त्री —सावधान होने की अवस्था या भाव, होशियारी, सतर्कता, जागरूकता, चतुराई ।

उ०—जैंकी सावधांनी सब लोगां जांणि लीनी, जेपुर की अजंटी सूं लिखावटि भेजि दीनी । —शि. व.

सावन—देखो 'सावण' (रू. भे.)

सावर-सं. पु. [सं. शावर] १ तांबा, ताम्र । (अ. मा; ह. ना. मा.)

सं. स्त्री. [सं. सा+वर] २ सुन्दर स्त्री ।

उ०—ढोला ढीली हर मुक, दीठउ घणौ जरोह । चोळ बरन्नै कप्पड़ै, सावर धन अंगोह ।—ढो. मा.

३ देखो 'साबरमत्र' (रू. भे.)

सावरणि, सावरणी-सं. स्त्री. [स. सम्मार्जनी] १ जैन यतियों द्वारा सदेव साथ रखा जाने वाला एक प्रकार का झाड़ू ।

२ झाडू।

[सं. सावर्णि] ३ विवस्वान व छाया का पुत्र, आठवां मनु।

४ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सावरत, सावरत्त-वि.—लाल, रक्तवर्ण, रक्तरंजित। (अ मा)

उ०—१ खित कारण करे नित खळवट, खेटे कटक तणां खुरसाण। असणा सोण अहोनस 'पातल', खग सावरत रहै खूमाण।
—प्रथीराज राठौड़

उ०—२ गोवरधन रदुवड, पडै पिंड लोहै पूरे। किये कूंत सावरत, दळा चतुरंगा चूरे।—गु रू. बं.

उ०—३ केसव भिडंत कुदरत्त गत्त, रायसिंघ सुत्त खग सावरत्त। 'नाहरौ' भाण सभ्रम निराट, घण घाइ घडे अरिहरां घाट।
—गु. रू. बं.

स पु —कम्बु, शख। (अ. मा; ह ना. मा.)

क्रि. वि.—दोनो ओर, दोनो तरफ। (डिं. को.)

सावरमंत्र, सावरीमंत्र—देखो 'साबरमंत्र' (रू. भे.)

सावळ, सावळ, सावल-सं. स्त्री.—१ दुःख या सकट के समय की जाने वाली देवी-देवताओं व ईश्वर की प्रार्थना।

उ०—१ सावळ संत तणी सुण सामी, ढळवळ सहज न धारे ढील। वचन वसीला तणौ वसीलौ, वड दरबारा तणौ वकील।
—ओपौ आढौ

उ०—२ बसु पूगळपती रोकियौ बावळा, दियै लप चावळा त्रास देखै। आप जद पावडा दीध ऊतावळा, सावळां करी जद राव सेखै।—खेतसी बारहठ

२ कहारो (कीर नामक) की जाति के अनुसार वह वस्तु जो खेत मे सबसे पहले तोड़ कर किसी बहन या बेटी को दी जाय।
(मा. म.)

३ शिल्पकारो का एक औजार विशेष जो सीध ई मापने के काम आता है।

वि.—१ उचित, ठीक।

उ०—१ खासा दिना ताई सेठ री वोणती साव ओळी गी तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड आपरा मन नें समझावणौ ई सावळ जाणियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हैं तौ इत्ती सी बात जाणूं कै रावळै रूप रा दरसण व्हियां पै'ली घडी दौ घड़ी वास्तै निजर जावती परी तौ सावळ ही। किणी निजर वाळा नै आज पै'ली दीठ साव अंडी दुख नी व्हियौ व्हैला।—फुलवाड़ी

२ पूर्ण, पूरा।

उ०—पिंडतजी नै इत्ती ताळ मैं ई सावळ जाच पडगी कै बापजी री अंतस ई डील रा रग सूं कम काळौ नीं है। अर अठी कामेती सूं ई आ बात छानी नी री, कै पिंडतजी लखणा रा पूरा पारवाड़ है।—फुलवाड़ी

३ ध्यानपूर्वक।

उ०—सावळ मोती री मोती बुहारनै भवारा मैं भर दे। सावळ सावचेती सूं, अंडी नी व्है कै अेक ई मोती लारै रै जावै। सौ पचास मोती तौ म्हैं ई गिट जावूं।—फुलवाड़ी

४ स्पष्ट, साफ।

उ०—१ मंगतौ बकाई खावतौ भप्प भप्प की बोल्यौ तौ उणनै सावळ जाच नी पडै। दूजी वार वळै पूछचौ। अबै नांव सुभट सुणीजियौ—धनियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ नाई राजाजी री सुभाव आछी तरै जांणतौ हौ। हाथ जोड बोल्यौ—अन्नदाता, सूरज रा उजास मैं चाद रै ऊगण री सावळ जांच नी पड़ै। म्है रात रा मतै ई पिछाण करनै बधाई दे दूंला।
—फुलवाड़ी

५ अच्छा, अनुकूल।

उ०—पण भाग सावळ था तीसूं पचास सवार रहिया। बाकी रा अगल-बगल आगे गया। खीवौ पाघ बाधणौ रुकियौ थौ। तीसूं खान री फतह हुई छै। प्रवाड़ौ हाथ आयौ।
—सूरै खींवै काधलोत री बात

६ बढकर, बहतर।

उ०—बीदणी तौ ई नीं मानी—थारै जेडा दुस्ट री मूंडौ देखणा बिचै तौ आडा दियोडा ई सावळ है। इण अकरम री बदळौ लिया छोडूला।—फुलवाड़ी

ज्यू—तूं म्हारै बिचै तौ सावळ है।

७ लाभप्रद, हितकर।

उ०—भोळा बामण रै हीयै मतै ई आ समझ वापरगी कै साची बात बताया वळै राड़ बधेला, इण वास्तै घरवाळी सू चोज राखणौ ई सावळ।—फुलवाड़ी

ज्यू—रोगीला मिनख नै दिनूगा दूध पायोड़ौ सावळ व्है।

८ स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

उ०—१ महीना दोय डाढाळौ भूडण चीलहरां सूधां जव गुळवाड़ी चरतां नूं हुवा सो मोटा-ताजा, बळपूर मस्त हुवा। तरह-तरह री जडी-बूटी खाधी थी तिण सू जखम सावळ हुआ।
—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ देख थूं तौ समझणौ है नी भांणूं। बाई कितरा दिन घरै मादी पडी री, अबै दवा नी करावै तौ सावळ कीकर व्है बता? ठीक व्हैताई म्हूं उणनें लेयनै आवूंला।—अमरचूनडी

९ सीधा।

उ०—इक चलैं सूंड अदोळतां, अध ऊरध सावळ अविळ। तम सुभट विछोहौ जाणि तिम, दिवस वहै करि डंग वळि।—रा. रू.

ज्यू—सावळ बैठौ।

क्रि. वि.—१ अच्छी तरह, भली प्रकार से।

उ०—१ थानै आज वळै कैवू, सावळ याद राखजौ कै औ देवाळौ

अपांरी अगगिण माया बचावैला। अनेखूं मण नेपै अपांरै कोठां-कोठां लाय भरैला।—फुलवाडी

उ०—२ फूंदी व्है ज्यूं कैर-कैर उडती फिरी। थोडी ताळ मैं राता-चुट्ट ढालुवां सूं खोळो भरनै पाछी आयगी। बुगती रा पांणी सु वानै सावळ धोया। ठारचा।—फुलवाडी

२ आराम से, चैन से।

उ०—१ सेठाणी बोली—लापी लागै इण गैणा गाठा रै। सावळ सूवण ई नी दो। औ धन सुख रै वास्तै है कै कोई दुख रै वास्तै। —फुलवाडी

उ०—२ कैवण लागी—देखौ थारी सिग्या परवारी है। हाल तो थारी ऊमर ई काई व्ही। चाळीस रै माय हो, पण साठ बरसां रा व्है ज्यूं दीसो। रात रा सावळ नींद आवै नी।—फुलवाड़ी

३ सीधे तरीके से, शिष्ट व्यवहार से।

ज्यूं—सावळ कैवणा सू वो रिपिया नी देवैला।

रू. भे.—साउळ, साउल, सावड, स्यावळ, स्यावल।

सावळायार—देखो 'सावळियार' (रू भे.)

सावळयारी—देखो 'सावळियारी' (रू भे)

सावळियार-वि.—१ भला, सज्जन।

२ सीधा, सयाना।

रू. भे.—सावळयार।

सावळियारी-स. स्त्री.—१ भलमानसता, शराफत।

२ सज्जनता।

रू. भे.—सावळयारी।

सावसादी अमावस-सं. स्त्री यौ—आश्विन मास की अमावस्या, सर्व-पितृ अमावस्या।

वि वि.—श्राद्ध पक्ष मे अगर किसी का श्राद्ध किसी कारणवश न हुआ हो तो इस दिन उसका श्राद्ध किया जा सकता है।

सावस्त-सं. पु. [सं. शावस्त] इक्ष्वाकुवंशीय युवनाश्व (द्वितीय) का पुत्र एक राजा का नाम।

सावित्र-स. पु [सं. सावित्रः] १ शिव, महादेव।

२ सूरज, सूरघ।

३ यज्ञोपवीत संस्कार।

४ एकादश रुद्रों मे से एक रुद्र का नाम।

५ आठ वस्तुओ में से एक।

६ सुमेरु पर्वत के एक शिखर का नाम।

७ कर्ण का नामान्तर।

८ गर्भ।

[स. सावित्र] ९ यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत।

सावित्री-स. स्त्री. [सं.] १ ब्रह्मा की स्त्री जो सूर्य की पुत्री थी।

उ०—भला वधाई आज कुंता वधायो, भला सावित्री गौरिज्या गीत गायो। भला सावित्री सूरज्या सती सीता, भला ग्यान आदेस वणिहारि गीता।—पी. ग्रं.

२ सूर्य की किरण।

३ ऋग्वेद का स्वनाम ख्यात मंत्र विशेष, गायत्री मंत्र।

उ०—सावित्री जप इक सहंस रस भक्ति रचाया।—व. भा.

४ उपनयन के समय का एक संस्कार विशेष।

६ सत्व देशाधिपति सत्यवान की पत्नी व मद्र देशाधिपति अश्वपति की पुत्री का नाम जो पतिव्रताओं में शिरोमणि मानी जाती है।

७ पार्वती, उमा।

८ सरस्वती।

९ सरस्वती नदी।

१० पुष्कर तीर्थ की अधिष्ठात्री देवी।

११ यमुना।

१२ सधवा स्त्री।

१३ प्लक्षद्वीप की एक नदी।

१४ धर्म की पत्नी का नाम जो दक्ष प्रजापति की एक कन्या थी।

१५ चौसठ योगिनियों के अन्तर्गत चौदहवी योगिनी।

रू. भे.—सावतरी, सावंत्री, सावतरी, सावत्री।

सावित्रीतीरथ-स. पु. यौ. [स. सावित्री+तीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ।

सावित्रीवरत, सावित्रीव्रत-स. पु. यौ [स. सावित्री+व्रत] पति की दीर्घायु की कामना हेतु ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी या अमावस्या के दिन स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला एक व्रत।

सावित्रीसूत्र-स. पु. यौ. [स.] १ गायत्री मंत्र की दीक्षा के समय धारण किया जाने वाला यज्ञोपवीत।

२ यज्ञोपवीत।

सावुं-स. पु—१ एक प्रकार का घास विशेष।

वि. वि.—अकालावस्था या अत्यन्त गरीबी की अवस्था मे लोग प्रायः इसकी रोटी बनाकर खाते हैं।

२ देखो 'सावौ' (रू. भे.)

सावौ-सं पु.—१ विवाह का शुभ मुहूर्त्त।

उ०—१ इतरै मैं रावळ अखैसिंहजी रा मांणस व्याह रै पगां आइया जद आप फरमायो थै तयारी करो माह मैं सावौ सखरो छै।—मारवाड़ रा अमरावा री वारता

उ०—२ भगवांन उणरो ई खोळो भर दियो होवतो तो किसोक नांमी रैवतो। गांम मैं उणरै सावै जितरी ई छोरियां परणीजी सगा रै ई खोळा मैं नैना टाबर है।—अमरचूनडी

२ पाणिग्रहण संस्कार की तिथि निश्चित करने की सूचना-पत्रिका, जो कि वधू पक्ष वालों की ओर से वर पक्ष वालो को भेजी जाती है।

उ०—१ अणछक इण हवेली रो नाळेर आयो। म्हारा बडभाग कै माईत सावौ कबूल कर लियो। आ हवेली नी होय कोई दूजी

ई गवाडी व्हैती तौ उणनै तौ उठै ई सिधावणौ पड़तौ।
—फुलवाडी

उ०—२ पिंडत रै साथै राजकवरी रौ सावौ भेज्यौ। जद भीडी माथै बैठौ कागलौ काव काव करतौ वळै बोल्यौ—सावौ भेजौ तौ भलांई, राजकंवरी है तौ म्हारी।—फुलवाड़ी

३ पोशाक, कपडे।

उ०—बरस दिन मैं दोय सावा सारै ही लोग नू दरबार सूं कीजं। श्रेक तौ दसराहै ऊपर आसोज मैं अर दूजौ होळी री परभात फागण मैं। सौ पोसाक इसी हुवै जिकी मैं सरदार रजपूत री अजाण नै गम नीं पड़ै। सौ इण भात सू साहिबी करै।
—सूरै खीवै कांधलोत री वात

रू. भे.—सहावौ, सावु, साहवौ, साहौ।

साध्यकार-वि.—शव से सम्बन्धित कार्य करने वाला।

उ०—... ...आरामकार सास्त्रकार मंत्रकार सुद्धकार उद्दीसकार ध्रुतिकार रूपकार करणीकार रसकार क्षीरकार सस्यकार वस्त्रकार विभूसणकार पुंतार अस्वसिक्षाकार रथकार साध्यकार प्रतीहार छुरीहार। ... ...—व. स.

सास-सं. पु [सं. श्वास] १ प्राणियों द्वारा नाक या मुंह से अन्दर ली व बाहर निकाली जाने वाली प्राणवायु, श्वास, दम।

उ०—१ सज्जण चाल्या हे सखी, सूना करे अवास। गळै न पाणी ऊतरइ, हियै न मावइ सास।—ढो मा.

उ०—२ उर ओद्रकै सास अभ्पास आंणै, वडा जूह पूंनारिआ पीलवांणै। गडा मारि बेसारिआ नीठ गज्जं, रूग्रामाल फेरै करै भाड़ि रज्ज।—र. वचनिका

क्रि. प्र.—आणौ, जाणौ, लेणौ।

मुहा.—१ सास अड़णौ, सास अटकणौ=मरते समय सांस रुकना, अटकना. २ सास अळूझणौ=जी घबराना. ३ सास आणौ=किसी भय, संकट या मुसीबत से छुटकारा मिलना, जिन्दा होना. ४ सास उडणौ=शरीर मे से प्राण निकलना, मरना. ५ सास ऊचौ चढणौ=देखो 'सास चढणौ'. ६ सास ऊठणौ=दम चढ़ना, दम का रोग होना, दम का दौरा पडना. ७ सास खांचणौ=सांस ऊपर चढ़ाना, सास खींचना, मृतप्राय होना. ८ सास खाणौ=अधिक परिश्रम करने के बाद विश्राम करना, सास लेना. ९ सास खूटणौ=मृत्यु को प्राप्त होना, मरना. १० सास गळा मैं आणौ=संकट मे फंसना. ११ सास घिरणौ=अचेतनावस्था के बाद सास का पुनरागमन होना. १२ सास घुटणौ=हवा की कमी या दुर्गन्ध के कारण सांस लेने में कठिनाई होना, घबराना. १३ सास चढणौ=अधिक परिश्रम के कारण सास की गति तेज होना, हाफना. १४ सास चाढणौ=देखो 'सास खांचणौ'. १५ सास छूटणौ=मरना. १७ सास टूटणौ=प्राण निकलना, सास बन्द हो जाना, सास लेने की क्रिया का कुछ समय के लिए रुकना, रोगी आदि का रुक-रुक कर सास लेना. १८ सास निकळणौ=मृत्यु को प्राप्त होना, प्राण निकल जाना. १९ सास बावडणौ=देखो 'सास घिरणौ'. २० सास भरीजणौ=अधिक परिश्रम के कारण थकना, हाफना. २१ सास मारणौ=देखो 'सास खाणौ' २२ सास मैं सास आणौ=चिन्ता, भय, घबराहट आदि से मुक्त होना. २३ सास रुकणौ=मृत्यु को प्राप्त होना या मृत्यु के करीब होना. २४ सास रोकणौ=प्राणायाम के समय अथवा यों ही वायु को अन्दर खींचकर उसे कुछ समय के लिये रोके रखना. २५ सास सूखणौ=अधिक भय, संकट आदि के कारण घबरा जाना।

२ प्राण, जीव।

उ०—१ होसी जग मैं हास, द्रोपद नागी देखतां। साड़ी पैली सास, सटकै लेलै सावरा।—रामनाथ कवियौ

उ०—२ सांमी सब तू सब तूं सब्र सासं, अखिल भूत तू श्रेक तूं अविणास। गरुड ऊपरा चढै वैकुंठ ग्रांमी, निमस्कार तोनूं निमो सहसनांमी।—पी. ग्रं.

३ देखो 'सासू' (रू. भे)

उ०—१ गोरी ए सुसरौ जी बैठेला म्हारी छाय सास सपूती कातै कातणो।—लो. गी.

उ०—२ रथ ऊपर ऊभा राय अगण, हरि ग्रहियइ हरि रइ ताइ हाथ। साळाहेली अनइ सासवां, निरखइ नयण अनाथानाथ।
—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सांस, सासु, सा, श्वास।

सासक-सं पु. [सं. शासक] १ शासन करने वाला व्यक्ति।

२ स्वामी, पति।

उ०—पचम राणी अति प्रिया सूरजकवरि सनाम। निज बासक कहियौ तिसा, इम सासक अभिराम।—व. भा.

सासघर-सं. पु.—ससुराल।

सासड़, सासड़ी—देखो 'सासू' (अल्पा; रू भे.)

उ०—म्हारी श्रे ववडिया सरवणती, श्रा सासड़ रै हुकमा मैं हालै ववडिया सरवणती।—लो. गी.

सासण—देखो 'सासन' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ केविआ दळ तडळ जेणि किआ, दन सासण लक्ख गजिंद्र दिआ। कमधज्ज करणगिरि राज करै, विधि श्रेणि गयौ सग कीति वरै।—र. वचनिका

उ०—२ अर सांम रै साथ सरकार हूं मिळायौ थकौ सीस रै साटै स्वांमी रौ ही सासण प्रमाणै।—वं. भा.

सासणपतर, सासणपत्र—देखो 'सासनपत्र' (रू. भे.)

सासत-वि. [सं. शाश्वत] १ हमेशा रहने वाला, अमर।

२ देखो 'सास्त्र' (रू भे.)

उ०—साखी सट सासत चहुं वेदा, रांम नाम सा श्रौर न भेदा।
—अनुभववांणी

रू. भे.—शाश्वत।

सासतर-स. पु [स. शास्त्र] १ रस्म, रीति।
उ०—तरै राणागदै री वैर कह्यौ-घरचारी री सासतर करो। तरै राव केल्हण कह्यौ—आज तो रावाई रा सासतर रौ मोहरत छै, सवारै बीजौ सासतर करस्यां। सु पैहलै दिन बाजोट माडनै रावाई रौ टीको कढायो, सासतर कियौ।—नैणसी
२ देखो 'सास्त्र' (रू. भे.)
उ०—१ आळीणौ हरनाम, जाण अजाण जपै जो जीहा। सासतर वेद पुराण, सरव मही तत्-अक्खर सारम्।—ह. र.
उ०—२ सुरह दुजदेव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तलक तुळसी नरंजण जाप। राह हिंदूधरम तणै साबत रहै, प्रगट मुरधर धणी तणौ परताप।—महाराजा जसवतसिंह प्रथम

सासतराथ, सासतरारथ—देखो 'सास्त्रारथ' (रू. भे)

सासती-वि. स्त्री.—आवश्यकतानुसार, जरूरतमुताबिक।
उ०—उवै दिली राठौड आदभाव घणो कीयौ। भली भात बसत सासती दी। इण वेसास पकडियौ। साथ थी तिण नु सीख दी।
—नैणसी

सासतीक, सासतीको-वि. (स्त्री. सासतीकी) १ शास्त्र का, शास्त्र सम्बन्धी।
२ स्थायी।
उ०—साढा तीन हजार री मुनसब तो सासतीक, पाच सौ कच्छी सौ इतरा परगना सासतीक रहिता—सरसौ, भटनेर, वाहणीवाळ, पुनिय सिवराण, तोसाम, फतियाबाद, अहिवौ, रतियौ अे सारा गांव ठाकुर लोगा नूं पट्टै मैं दिया था।
—महाराजा पदमसिंघ री वात
रू भे.—सासत्रीक, सास्तिक।

सासतौ-क्रि वि. (स्त्री सासती) १ नित्य, हमेश।
उ०—१ आंणी मन सूधी आसता, देव जुहारू सासता। पारस्वनाथ मुझ वंछित पूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि।—स. कु.
उ०—२ नै खाडाळ माहै विजैराव रहै सु भाटिया री साथ वरिहां हा रा सासता विगाड़ करै, सु इणा नु जोर खारा लागै तरै दीठौ बीजौ तो पौहचा नही, नै दाव करा।—नैणसी
उ०—३ अठै साखला री वैरा पाणी नै जाय सु दहिया रा कवर ४० तथा ५० भेळा हुवा फिरै छै। तिकै बेहडा नू गिलोलां वाहै छै सासता बेहड़ा फोडै छै।—नैणसी
२ निरन्तर, लगातार।
उ०—१ राव मालदे रा सासता कागळ पत्र देवीदास नूं आवै छै थै तो आपरो नाव करो छो, मांहा री ठाकुराई खोवो छो।
—नैणसी
उ०—२ सेठां रै डीकरा रै काळजै जांणै स्यार रा सासता ताबोड़ा लाग्या। अैड़ी वातां वो कदै सोची ई नीं ही। सोचण रौ मोको ई कद मिळ्यो हो। आज मोको ई मिळ्यो तो इण टाणै।
—फुलवाड़ी
वि.—१ स्थायी।
उ०—१ साता दीजो साधा भणी ए, तन मन चित्त उल्लास। आग्या मती उथापज्यो ए, ज्यू पामो सासतौ वास।—जयवाणी
उ०—२ ससार सार परतिख सर्म, सिद्धि रिद्धि दायक सासता। धरि ग्यान ध्यान धरमसीह धुरै, अधिक इणरी आसता।
—ध. व. ग्रं.
२ अक्षय, अटल।
उ०—करम कठिन दल चूरता जी, पूरता जगत नी आस। जिनवर देव इहां भासता जी, सासता अरथ सुविलास।—वि. कु.
रू. भे.—सायतौ, सास्तौ।

सासत्र—देखो 'सास्त्र' (रू. भे.)
उ०—१ वेद सासत्र वताया सु अवसाण आया। उजेणि खेत धारा तीरथ धणी री काम खित्री रो धरम साचवीजै। लोहां रा बोह सेला रा धमका लीजै।—र. वचनिका
उ०—२ अराध वीर मत्र एक, साधन सधीत रा। सिखंत भेद कोक सार, सासत्रं सगीत रा।—सू. प्र.

सासत्रीक—देखो 'सासतीक' (रू. भे.)
उ०—अर कठै ही म्हाभारत भी बाच रह्या छै। केई केईक सासत्रीक विधान अवसांण समैया रै ऊपरै तिरकुरा हुआ थका बिह्न सिव इस्ट अरचा करै छै।—प्रतापसिंह म्होंकमसिंघ री बात

सासद—देखो 'संसद' (रू. भे.)

सासन-सं. पु [सं. शासन] १ आज्ञा, आदेश।
(अ. मा; ह. नां. मा.)
२ राजा द्वारा दान या पुरुस्कार मे दी हुई भूमि या जागीर।
३ लिखित प्रतिज्ञा, पट्टा।
४ किसी देश, प्रान्त या स्थान आदि की हुकूमत।
५ वह परवाना या फरमान जिसके द्वारा किसी को अधिकार दिया गया हो।
५ प्रबलता।
उ०—परिस्थिति जठै इसड़ी सुणि बिहत्तर बरस रा बय में हाडा नरेस हालू रा बिवाहण री बात समय रा सासन करि अत्यंत ही असभव जाणि।—वं. भा.
रू. भे.—सासण, सासण।
मह,—सासणी।

सासनधर-स. पु. [स. शासनधर] १ शासक।
२ राजदूत।

सासनपतर, सासनपत्र-स. पु. [सं. शासनपत्र] १ वह ताम्रपत्र या शिला, जिस पर कोई राज्यादेश जारी किया गया हो।
रू. भे.—सासणपत्र।

सासनभ—स. स्त्री [सं. नभश्वास] वायु, हवा। (ह. ना. मा.)

सासनहिल, सासनसिला—स. स्त्री. [स. शासनशिला] वह पत्थर जिस पर किसी शासक की घोषणा, लेख आदि अंकित हो।

सासना—स. स्त्री. [सं. शासना] सजा, दंड।

उ०—अनुज ए उचित अग्रज इम आखै, दुसट सासना भली दई। बहिनि जासु पासैं बैसारी, भलौ काम किउ भला भई।—वेलि

सासनी—देखो 'सासणी' (रू. भे.)

सासनीय—वि. [स. शासनीय] १ जो शासन करने योग्य हो।
२ जिस पर शासन करना उचित हो या जिस पर शासन किया जा सके।

सासय—देखो 'सासत' (रू. भे.)

उ०—१ निब्ध निकाचित जे सासय कड़ा, जिन पन्नता रे भाव। भाखी रे सुंदर एह परूवणा, चरण करण नी रे जाव।—वि कु.

उ०—२ दौ सासय पडिया, महियलि जिन चौवीस। त्रिभुवन माहि प्रससिय, नांम जपू निसदीस।—स कु.

सासर, सासरउ, सासरवाड सासरवासौ—देखो 'सासरौ' (रू. भे)

उ०—१ सासर वासो सजी नैं बैठी, हवैं नथी कंई काच रे। मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, हरि नै चरणै जाचु रे।—मीरा

उ०—२ पिंगळ पूगळ आवियउ, देसैं थयउ सुगाळ। तेणि न राखी सासरइ, अजे स मारू बाळ।—ढो. मा.

उ०—३ तै देखि तिणि पूछियउ, कुण ए राजकुमारि। किह पीहर किह सासरउ, विगतइ कहइ विचारि।—ढो. मा.

उ०—४ करहा देस सुहांमणउ, जै मूं सासरवाड़ि। आब सरीखउ आक गिणि, जाळि करीरां झाडि।—ढो. मा.

उ०—५ सासरवासौ करि भलौ, बोलावी फरी गेह।—वि. कु.

सासरियौ—सं. पु.—१ ससुराल का निवासी, ससुराल वाला।

उ०—१ पाबूजी हरियै थोरी नूं कही—रे हरिया! दोदै री साढिया हेर आव, ज्यूं बाई नूं साढिया आण देवां। बाई रा सासरिया हसमी।—नैणसी

उ०—२ मा तौ मांस खाय, है ज्ठै ई गुडणी। आधी रा बेटी नै जगाय कह्यौ कै तडकै उण रा सासरिया आवैला।—फुलवाडी

२ देखो 'सासरौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ बीणां नारद सी कोयलमी बाणी, कुरळै केकीसी काया कुम्हलाणी। अपणै आसरियै अतळी दिन ऊगौ, पीहर सासरियै पतळौ पुनि पूगौ।—ऊ. का.

उ०—२ ऊभी आगणियै बोलूडी आवै, गद गद मुरळी सुर ओलूडी गावै। बालम ब्रीडा री पीडा कुण पालै, पीहर प्यारी नै सासरियौ सालै।—ऊ का

सासरौ—स. पु. [स. श्वसुरालय] श्वसुर का घर, ससुराल।

उ०—१ सुख पेखण अब सासरौ, 'अभौ' थयौ असवार। अगै अतर केसरा, सुरा खंभायच सार।—रा. रू.

उ०—२ सगळा मिनख अर बस्ती रौ तूमार जोयां पछै ई म्है फगत धन माथै आस गडाय राखी ही। बेटी! विधवा रौ सासरौ, पीवर, माईत अर भगवान फगत धन इज है।—फुलवाडी

मुहा.—१ गैलो सासरै जावै नी अर जै जावै तौ पाछौ आवै नीं=ऐसे व्यक्ति के प्रति उक्ति जो किसी कार्य को करता ही नही, अगर करता है तो उसे वापस छोडता ही नही. २ सासरौ सुख बासरौ=ससुराल सुख का स्थान है. ३ सासरै जावती नै छिनाळ कुण केवै=अच्छी जगह जाने वाले को बुरा कोई नही कहता है।

रू. भे.—ससराळ, ससुराळ, सा'रौ, सासर, सासरइ, सासरउ, सासरवाड, सासरवासौ, सासुरौ, सुसराळ।

अल्पा;—सासरियौ।

सासाहिबि, सासाहिबी—सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—सिरीसाप भैरव चौतार कसबी महमूदी फूलगार तनजेब सासाहिबी तरै-तरै रै कपडै रा वागा छै। सू उतार-उतार उणा हीज दरखता री साखा ऊपर उरळा कीजै छै।—रा. सा. स.

सासित्र, सासित्रि, सासित्री—देखो 'सास्त्र' (रू. भे.)

उ०—साभळि अरथ पराक्रत सासित्रि, अकलि प्रमांणै कियौ उचार।—ह. नां. मा.

सासिव—सं. पु [स. साशिव] एक देश का नाम जिसे अर्जुन ने जीता था।

सासीडाढो, सासीदाढो—सं. स्त्री.—जवानी मे मूंछो व दाढ़ी के निकलते हुए घने व मुलायम बाल।

उ०—सू रबारी ऊंठा जावै छै। किण भात रा रबारी छै। डीघा लाबा जुवान दीसता राजान, बाकी मूछां, राता नैण, सासीडाढी, मोटा वैण, जाडा पूहचा लाबा हाथ, भूखै सिंघ नै घातै बाथ।
—रा. सा. स.

सासु, सासू—सं. स्त्री. [सं. स्वश्रु] पति या पत्नी की मा, सास।

उ०—वच्छे! सासुरा तणी इसी स्थिति जांणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउ देखइ, वर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठाणी कुमइ, देअराणी हसइ, नणंद नरनरावइ, सासु काम करावइ।—व. स.

मुहा.—१ जवाई रै घरै घोडौ नै सासु सरणाट करै=किसी सबंधी के धन-वैभव पर अन्य द्वारा गर्व किया जाना. २ सासु आगली बहू व्हैणी=किसी के मातहती मे रहना. ३ साळी नै छोड सासु सूं मसखरी=किसी उचित व्यक्ति को छोड कर ऐसे व्यक्ति से मजाक करना जिसके साथ मजाक करना अनुचित हो ४ सासु सूं बैर नै पाडोसण सू नातौ=अपने से विरोध व परायो से प्रेम करना।

रू. भे.—सस्सु, सस्सू, सास, सास, साऊ, सासु, सासू।

अल्पा;—सासड, सासडी, सासूडी।

सासुरौ—देखो 'सासरौ' (रू. भे.)

उ०—१ वच्छे! सासुरा तणी इसी स्थिति जाणवी, सुसरउ उवे-

खइ, जेठ नीचउ देखइ, वर पुरा लडइ, देवर नडइ, जेठाणी कुसइ, देग्रराणी हसइ, नणद नरनरावइ, सासु काम करावइ ।—व. स.

उ०—२ सीतकालि दिवमिइ गोधूमवृद्धि थाइ, बेटी आपणै सासुरै जायइ, पान रंग मुहुआ थाइ, कंबलि जोइ, तीन लाभइ घरै फलसा वापरइं, तपोधन विहारकरम करइं, स्रीमत घरमाहि पइसी सूयइं,—— ।—व स.

सासू—देखो 'सासु' (रू. भे)

उ०—१ जै सासू जणतीह, सुमरा रै एकज सुतन । तौ मूछा तण-तीह, साड़ी न तणती सावरा ।—हिंगळाजदान कवियो

उ०—२ सासू सत्र ज साज, पूत जण्या सह पारका । इण री पारख आज, सांची पडगी सावरा ।—हिंगळाजदान कवियो

सासूडी—देखो 'सासु' (अल्पा; रू. भे.)

सासूछावड़ौ, सासूवाड़ौ-स. पु यौ.—१ दहेज के समय कन्या पक्ष की ओर से कन्या की सास के लिए दिया जाने वाला पहनावा, पोशाक ।

२ वह छबड़ा जिसमें उक्त पहनावा रखा होता है ।

रू. भे.—सासूसाडो ।

सासूमळी, सासूसली, सासूसळी-स. पु.—एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

उ०—सासूसली आपु सोवनकेरी, हवडां नही लीजइ बीजी अनेरी वे करी जोडा वरराज मागइ, सासूसली आपता वार न लागइ, अहो सीआलक बोलि ।—व. स.

सासूसाडौ—देखो 'सासूछावड़ौ' (रू. भे.)

सास्टांग-वि. [स. साष्टाग] हाथ, चरण, घुटने, वक्षस्थल, शिर, नेत्र, मन व वाणी, उक्त आठो अंगो सहित ।

स. पु.—उक्त आठो अगो सहित किया गया प्रणाम ।

सास्तर—देखो 'सास्त्र' (रू भे)

उ०—१ जग सास्तर कहिया जिता, सुभ सुभ चहन ससार । राम सफि 'अभमल' रमै, कमधज राजकुमार ।—सू. प्र.

उ०—२ राजगरू सागै दिन सूं ई सास्तरां रा पांनां फिरोळण लागौ । मोटा-मोटा ग्रंथ वाचण लागौ । मिळतौ जका नै ई इण सवाल रौ स्यानौ पूछतौ । यूं छाणबीण करतां करतां पूरौ पखवाड़ौ बीतग्यो पण सही पडूतर हाथ नी लागौ ।—फुलवाड़ी

सास्तिक—देखो 'सासतीक' (रू. भे)

उ०—आस्तिक बिन इदुक नास्तिक निंदुक, सास्तिक मत सोखदा है । तज धरम त्रिदडी अधिक अफडी, पाखंडी पोखदा है ।—ऊ. का.

सास्तौ—देखो 'सासतौ' (रू. भे.)

उ०—१ पण इण लोक रौ कांई सास्ता परलोक रा मैदान मुल्क लेण नू मनसा करणी ।—नी. प्र.

उ०—२ सौ दान चलतौ मसीत वंदगी री ठौड़ नै फकीरां री उतरणै री ठौड़ सारा ही मारग मैं होय कुवा पुल तिण रौ सास्तौ पुण्य छै सौ करणै वाळा रा जीव सू पहोचै ।—नी. प्र.

सास्त्र-सं पु [सं. शास्त्र] १ लोगो द्वारा पवित्र माना जाने वाला ऐसा धार्मिक ग्रन्थ जिसमे आचार, नीति आदि के नियमो का विधान किया गया हो ।

२ नियमानुसार आचरणादि करने हेतु दिये गये आदेश, निर्देश ।

३ किसी विशिष्ट विषय या पदार्थ के सम्बन्ध में समस्त ज्ञान ।

४ वह विवेचनात्मक ग्रन्थ जिसमे किसी कला, विद्या या विशिष्ट विषय से सम्बन्धित अगो, उपांगो आदि का विश्लेषण हो ।

५ वे सब बाते जिनका ज्ञान पढ़ या सीख कर प्राप्त किया जा सके ।

६ किसी गम्भीर विषय के सम्बन्ध मे प्रतिपादित सिद्धान्त ।

७ पुस्तक ।

रू. भे.—सासत, सासतर, सासत्र, सासित्र, सासित्रि, सास्तर ।

सास्त्रकार-स पु. यौ. [स. शास्त्रकार] जिसने शास्त्रों की रचना की हो, ऋषि, मुनि ।

सास्त्रग, सास्त्रग्य-स पु. यौ. [सं. शास्त्रज्ञ] १ शास्त्रो का जानकार ।

२ धर्म शास्त्रो के आचार्य ।

सास्त्रवकता, सास्त्रवक्ता-स. पु. यौ. [स. शास्त्र+वक्ता] शास्त्रो का उपदेश देने वाला ।

सास्त्रसारा-स स्त्री यौ. [सं. शास्त्र+सारा] शास्त्रो की साररूपा देवी ।

सास्त्रारथ-सं. पु. [स शास्त्रार्थ] १ किसी सिद्धान्त या विषय का सार व तथ्य निकालने हेतु शास्त्रों की युक्ति व दलीलों द्वारा की जाने वाली बहस ।

२ शास्त्र का अर्थ ।

३ तात्विक वाद-विवाद ।

रू भे.—सासतरारथ ।

सास्त्री-सं. पु. [स शास्त्री] १ शास्त्रो का ज्ञाता ।

२ धर्मशास्त्र का ज्ञाता ।

३ कुछ विश्वविद्यालयो मे इसी नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर दी जाने वाली उपाधि ।

[स. शास्तृ] ४ कश्यप एवं सुरभि के पुत्रों मे से एक ।

सास्त्रोक्त-वि [स. शास्त्रोक्त] जो शास्त्र मे लिखी या कही गई हो ।

सास्व-सं. पु [सं. शाश्व] यम का उपासक एक नरेश का नाम ।

सास्वत-वि. [सं. शाश्वत] १ नित्य, अमिट ।

उ०—१ नम सच्चिदानंद भक्तवत्सल भयहरता । सास्वत असरण सरण करण कारण जगकरता ।—ऊ का.

उ०—२ जठै भगवांन मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है । उठै सुखा रौ कदेई विरहौ पड़ै ईज नही ।—भिक्खु

स. पु.—२ सनातन ।

३ विदेह नरेश श्रुत राजा का नाम ।

४ स्वर्ग, वैकुंठ।

५ शिव, महादेव।

६ वेदव्यास।

सास्वती–स. स्त्री. [स. शाश्वती] १ सनातन देवी।

२ पृथ्वी, भूमि।

सास्वादन–स पु. [स] निर्वाण प्राप्ति की चौदह अवस्थाओं में से एक। (जैन)

उ०—प्रथम मिथ्यात कह्यौ गुणठाणौ। बीजौ सास्वादन मन आंणौ। तीजौ मिस्र वखाणु। चोथौ अविरतिनाम कहाणौ। देस विरति पचम परमाणौ। छठौ प्रमत्त पिछाणु।—वृस्त.

सास्वादन गुण स्थान–स. पु.—१४ गुणस्थानों में से दूसरा गुणस्थान। (जैन)

साहंस—देखो 'साहस' (रू. भे.)

उ०—१ धन्य कह्यौ सब ऊमरा, साहंस देख प्रचंड। हुवा सुरगा बांण सुण, भुज लागा ब्रहमंड।—रा. रू.

उ०—२ खगां सीस निवेड़िया, साहंस परम अथाह। जोधड़रा मिळ जमण मैं, कीधौ मात प्रवाह।—रा रू

साहंसाह–सं. पु. [फा. शाहंशाह] सम्राट, बादशाह।

रू. भे.—सहंसा, सहसाह, साहनसाह, साहासाह।

साहंसाही–सं. स्त्री. [फा. शाहंशाही] १ शाहंशाह का कार्य या पद।

२ बादशाही, शाही।

वि —१ शाहंशाह सम्बन्धी।

२ शाहंशाह का सा, शाहंशाह जैसा।

रू. भे.—सहसाही, साहजानी, साहनसाही।

साहंसी, साहंसीक—देखो 'साहसी' (रू. भे.)

उ०—१ भड़ा जोधा नैसरा जुरटा मगी वाघ भूरा, पूगो गला खतंगी रीधु रा सिधा पार। साहंसीक जाडे भाग जाणियो जिहान सिभू, आडे अक मारू चंपे आणियो आचार।—आऊवा रो गीत

उ०—२ खवां ठौर सुरत्ताणा दाखणी उथाडे खाडे, 'ऊदाणी' अटकां बोल आखणो अबीह। चाह हेक सामध्रमी हठाळौ बिलंद चीत, साहंसीक जोधांणै बख्तवाळौ सीह।—किरपाराम कवियौ

साह–स. पु. [फा शाह] १ बादशाह, सम्राट। (डि को.)

उ०—१ मालपुर टूंक अजमेर घर मालसी, दिली लग पौंहचसी हलां दहला। एमदाबाद सू खजाना आवसी साह उर मानसी रमण सहलां।—विजयकरण साढू

उ०—२ आलमसा उत्तर धरा, भिसत गयौ निज भोम। सारै जाया साह रा, जुध आया जम जोम।—रा. रू.

(स्त्री. साहणी) २ सेठ, साहूकार। (डि. को.)

उ०—१ जिका आवड़ा देस जेताण जिल्लै, करन्नी तिका द्रग देसांण किल्लै। मयंदी वर्ण 'कांन' रै थाप मारी, तरी साह तोफांन रै माह तारी।—मे. म.

उ०—२ कहा फागण की बूंद, चुगल सूं किसी भलाई। किसौ चोर सू संग, साह सू किसी ठगाई।—सुरजनदास पूनियौ

३ राजा, नृप।

उ०—पड़ै जागिया अखमी रौळ विखमी नीहाव पड़ै, रैण धौम लागी बौम रूकै पख राह। तेडै रथ गिरमा रा रभा रा लडंग तूटै, साहा बेहूं सीस जूटै बळाबध साह।

—सत्रसाल हाडा री गीत

४ शाहजादा।

उ०—१ पाडै धजां चम्मरां सु पक्खरा थडमा पाड़ै, नरा गिरा पाडै करा ऊधडा निराट। पाडै थूळ बगाळा अड़ाळा दळा फूल पाड़ै, साहां बेहूं सीस पाड़ै भीड फाड़ै बाट।

—सत्रसाल हाडा री गीत

उ०—२ गमागम आतस गडड साह दोय गाजिया, टळण रिणतूर लै केहीक टाळौ। 'कमो' दै रीठ काळौ सत्रा कोपियौ, 'कमां' माथै पड़ै रीठ काळौ।—कमा पडियार री गीत

५ मुसलमान फकीर की एक उपाधि।

६ धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति।

[फा. स्याह] ७ काले रंग का घोडा।

उ०—लाखीरी सुरंग अजूब लीत, किसमसी साह ज्यानू कुमैत। तेलिया मुहा सदळी तुरंग, सोसनी सबज हसा सुरंग।—सू प्र.

८ बादशाह राजा आदि द्वारा बनियों को दी जाने वाली उपाधि।

वि.—१ सज्जन, भला।

२ उदार, दानी।

३ महान, श्रेष्ठ।

रू. भे —सह, सा', साय, साहि, माहु, साहू।

साहइणौ, साहइबौ—देखो 'साहणौ, साहबौ' (रू भे.)

उ०—ढोलउ मन चळपत थयउ, ऊभइ साहइ लाज। साम्हउ वीसू आवियउ, आइ कियउ सुभराज।—ढो. मा.

साहजांनी—१ देखो 'साहसाही' (रू भे.)

२ देखो 'सा'जानी' (रू. भे.)

उ०—१ सात ताखडी साहजांनी तौल री खून भूंडण रै डील माही रहियौ। तठा पाछै सारी ही साथ ओलस बैठ रहियौ।

—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ तीन पहर राड हुई। साढे सात मण साहजांनी पक्कै तौल री लोह डाढाळै रै डील माही रहियौ। महाभारत जीत सूअर खडौ रहियौ।—डाढाळा सूर री बात

साहजादौ–स. पु. [फा. शाहजादा] (स्त्री. साहजादी) बादशाह का लड़का, राजकुमार।

उ०—१ साहजादौ खुरम दिखण नुं जातौ हुतौ।—नैणसी

उ०—२ नयरि योगिनि मुसळमान, जै साहजादा मोटा खान।

ताहरइ चिति गमइ वर जेह, करउ वीवाह मणावउं तेह ।

—कां. दे. प्र.

उ०—३ गोड़ अरजुनसिंघ राठोड रतनसिंह जिसड़ा जोधार काली रा कळस रणगळियार होइ हाथिया रै माथै हाथ करता साथियां रै सूरता री सांण लगावता साहजादां रै समीप हालिया ।

—ब. भा.

रू. भे.—सहाजादौ, साहिजादौ, सा'जादौ, साइजादौ, साईजादौ, सायजद्दौ, सायजादौ, सायज्यादौ, साहब्रजादौ, साहिजादौ, साहिब-जादौ, स्याहजादौ ।

साहण-वि.—सहार करने वाला, नाश करने वाला ।

सं. पु. [सं. साधन] १ घोडा, अश्व ।

उ०—१ कूदना उडता कूदना, ओद्रकता वप आप । जेहौ तोखै जाचणां, साहण इसा समाप ।—बां दा.

उ०—२ मणि वाहण साहण मुकटि, रीत सजव नव रूप । किया साज महाराज कजि, ऐसा वाज अनूप ।—रा. रू.

२ सेना, फौज ।

उ०—१ आउळै थाटि साहण समद्र आठमौ, करै गरकाब खळ दळां कोपै । चमरं चौसर ढळै सेत पासै चहूं, आतपत्र प्रिथीपति सिंघ ओपै ।—रूपसिंह राठोड रौ गीत

उ०—२ सुनन कलियांण साहण दध ममचडै, उरमिया थाट खेहार वण ऊपड़ै । कटक अरवद तणौ आय चढिया कड़ै, दहूं दिस त्रास कीधा भड़ै देवडै ।—महाराजा रायसिंह बीकानेर रौ गीत

उ०—३ सतिरि सहस साहणवइ साहण, गई अरदास पासि सुर-ताणह । कणगु कोस लीध हरि हिंदू, तु रणमल्ल इक्क नह बदू ।

—रणमल्ल छंद

३ साथी, सगी ।

४ देखो 'साधन' (रू. भे.)

उ०—१ इसी ताइ देवी । धन साहण पूत परिवार, उदउ उछाह देवणहार । तास गुण नमौ चलणाइ ।—अ. वचनिका

उ०—२ परिवार पून पोत्रै, अरु साहण भंडार इम । जण रुख-मिणि हरि वेलि जपता, जग पुडि वाधै वेलि जिम ।—वेलि

रू भे.—साहण ।

साहणवइ-सं पु.—सेनापति ।

उ०—सतिरि सहस साहणवइ साहण, गई अरदास पासि सुर-ताणह । कणगुरु कोस लीध हरि हिंदू, तू रणमल्ल इक्क नह बदू ।

—रणमल्ल छद

साहणी-स. स्त्री.—१ साहू की स्त्री, सेठानी ।

उ०—मु देखनै साह साहणी सांम्हो जोयौ । साहणी साह साम्हो जोयौ । जोयनै किंवाड खोल्या ।—चोबोली

२ देखो 'सा'णी' (रू. भे.)

उ०—१ सु भाटी देईदास नै साहणी लालौ मेहावत काम आया । नै उरजन ऊहड़ नै भीवौ साहणी किसनसिंघजी नूं लै नीसरिया ।

—नैणसी

उ०—२ गुणपति आग्या साहणी, अस्व अरोहण कज्जि । बाजि किया साजा विविध, सिधि रण करण समज्जि ।—रा. रू.

रू. भे.—सहाणी ।

साहणौ-वि. (स्त्री. साहणी) धारण करने वाला ।

उ०—१ सुज अद साहणौ रे, निबळ निबाहणौ । चित दिस चाहणौ रे, गज थट गाहणौ ।—र. ज. प्र.

उ०—२ वदत सुज कथ वेद वांणां सधर पांणां साहणौ, सारंग बांणा, जुध सभाणौ पण मुड़ाणा पूठ ।—र. ज. प्र.

रू. भे.—सांहणौ ।

साहणौ, साहबौ-क्रि. स.—१ पकड़ना, ग्रहण करना, झेलना ।

(डिं. को.)

उ०—१ दुर्वोवंत भू बंदरां रंध्र देखै, पंखी उड्डना चक्कवा हंस पेखै । सुरगी घसै हाथ हूं हाथ साहै, महा हेमरा धांम आरांम माहै ।—सू. प्र.

उ०—२ किता अग्र पाछै किता चक्र कुंडै, तरक्कै किता साहता बाह तुंडै । भिदै सार सेलै कटारी झलक्कै, हिलोळां कि सामुंद्र वेळा हलक्कै ।—रा. रू.

उ०—३ बळिबंध समरथि रथ लै बैसारी, स्यांमा कर साहै सु करि । बाहर रे बाहर कोइ छै वर, हरि हरिणाखी जाइ हरि ।

१ धारण करना ।

उ०—१ महाबळ धवळ रा साहि वरमाळ तूं, सबळ घड़ कड़तळा घणा सन्नाह सूं ।—हा. झा.

उ०—२ सती सतमत साहिकै, जळै मड़ै कै साथि । हरीया मन मूंवा विना, कछु न आवै हाथि ।—अनुभववांणी

उ०—३ हरीया कहसी राम कूं, विसीया मेट विकार । सूरा तन कूं साहि कै, झूझै बिन हथियार ।—अनुभववांणी

३ शस्त्र आदि का उठाना, लेना ।

उ०—१ पहल मिळै धण पूछियौ, किण कीधा किण हत्थ । बीजड़ साहै बोलियौ, इण डाकण भू अत्थ ।—वी. स.

उ०—२ खळा भांजतौ माण कैवाण साहै खवां, सुहांणै आपरै माण सेतौ । आवियौ करण' अवसान छिबतौ अफर, दिली दीवांण मझ डाण देतौ —महाराजा करणसिंघ बीकानेर रौ गीत

उ०—३ सिण तिण वार पनाग साहियइ, बगाळी दाखवइ बळ । उण वेळा सिव रइ मुह आगळ, दूजा कुण नेठवइ बळ ।

—महादेव पारवती री वेलि

४ सहन करना, झेलना ।

उ०—समंद फाळ कूदै हणूं जहर जारै सकर, सेस ही भुजां धर भार साहै । 'करण' रै 'पदम' जिम साहरै कटेड़ै, वदूं जो कोई तर-वार वाहै ।—द्वारकादास दधवाड़ियौ

५ थामना, रोकना।

उ०—१ सत्रां गाहतौ गैजूहां ढाहतौ वाहतौ सार, महाचंडी भूबळां साहतौ आसमाण। चत्रबाहां आरोहतौ चाहतौ अचूडा चौज, ऊ आयौ जवानीसिंघ थाहतौ आरांण।

—जवानीसिंघ पालडी री गीत

उ०—२ समत्था इसा ऊंडळा आभ साहै, गजा दंत तोड़ै रिमा थाट गाहै।—अ. वचनिका

६ उद्धार करना, मोक्ष करना।

उ०—अजामेळ सा घोर अधम्मी, नारी गणिका भील निकम्मी। असरण दीन अनाथ अथाहै, साहै रे माधव कर साहै।

—र. ज. प्र.

७ धरना, रखना।

उ०—निरबळां नेका कीध केका, साहि हाथ सुनाथ। गुण 'किसन' गावै प्रसिध पावै, अमर ईजत आथ।—र. ज. प्र.

८ संभालना।

उ०—सूरा बिहूं काटि खग साही, वदै पहल चूडांमणि वाही। लागण न दी ढाल परि लीधी, दूजी भांण झाट खग दीधी।

—सू. प्र.

९ मारना, वध करना।

उ०—१ धुज बिलद वौरिया स्यामध्रम धारियां, कूरमा तणां दळ बीच अहकारियां। वाहतां साहतां वौसरां बारिया, अखाडै वुढापौ वूर तरवारिया।—उदयसिंह, नरसिंह और लखधीर री गीत

उ०—२ घण अहिरण घण घाउ, सान्है चाचरि सात्रवां। वाहै साहै वीठलौ, खाडौ खाडेराउ।—अ. वचनिका

१० लेना।

उ०—रथ छांडि राजन उतरचा, रुखमण्यौ साहिउ बथ। दड़ दोट बाजइ कोट भाजइ, वेग वाळचा हथ।—रुखमणी मंगळ

११ सहन करना।

उ०—हाथी तरवरखान री, गो सो धांनख भज्ज। धकौ न साहै मीरजा, वाहै सार गरज्ज।—रा. रू.

१२ धारण करना, झेलना।

उ०—१ भागीरथ भजि रै भोळी चक्रवरत्त, आगा लगइ जोवतां अथाह। संकर देव पखउ कुण साहइ, पडती गंगा तणा प्रवाह।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ आंडिया व्रबवग जियइ द्रू माथइ, नाम जपंत एक निवांह। संकर देव पखउ कुण साहइ, पड़ती गंगा तणा झट पंख।

—महादेव पारवती री वेलि

१३ रक्षा करना।

उ०—१ प्रसेनसेन साई सहू ग्रासिया अेकठा, साथ विखळा सुहड चीत सुधै। चद गढ़ साहतां निमो अहंकार चित, राखतां निमो नेठाह रुधै।—राव चंद्रसेण री गीत

उ०—२ गत पथ तारक गाह रे, सुज सपत दिन जिग साह रे हरणखड कीध सुबाह रे, मारीच नख दध माह रे।—र. ज. प्र.

१४ संधान करना, चढाना।

उ०—मन कूं मारे ताकि करि, साहि सबद का बांण। जनहरिया चूकै नहीं, सांम काम अवसाण।—अनुभववांणी

१५ युद्ध करना।

उ०—सारिखा सूं बलभद्र लोह साहियै, वडफरि उछजतै विरुधि। भला भली सति तोईज भजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि।—वेलि

साहणहार, हारौ (हारी), साहणियौ—वि०।

साहिओडौ, साहियोड़ौ, साह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साहीजणौ, साहीजबौ—कर्म वा०।

साहणौ, साहबौ—रू० भे०।

साहनसाह—देखो 'साहसाह' (रू. भे)

साहनसाही—देखो 'साहसाही' (रू. भे.)

साहनिजार-सं. पु.—एक महात्मा का नाम, निजारशाह।

उ०—जीवा री पति जीमिसै, करिजो वेग कसार। मेघ तणी घर मालिहसे, निरखो साहनिजार।—पी. ग्रं.

साहपण, साहपणौ-स पु.—१ 'शाह' की उपाधि।

२ साहूकार होने का भाव।

साहब—देखो 'साहिब' (रू. भे.)

उ०—१ साहब नांम समारता क्या लागै नांणा।

—केसौदास गाडण

उ०—२ एतै पर दूत बोलै साहब सुन लीजै, पातस्याही सेना को प्रमाण कौन कीजै।—रा. रू.

उ०—३ भामणिया सुकमार भुज, साहब गळै सुहाय। जाणै नाळ जळ जातरा, काम पताका जाय।—बा. दा.

उ०—४ सबळा सूं बाद न कीजै साहब, है सारीखां बाद सही। कह्यौ म्हारौ जो मानै कता, 'राजड़' सूं डरपतौ रही।

—राजसिंघ भाखरोत कछवाहा री गीत

उ०—५ वाजियो भली भरतपुर वाळो, गाजे गजर धज्रनभ गोम। पहला सिर साहब रौ पडियौ, भड ऊभा नह दीधौ भोम।

—कविराजा बांकीदास

साहबजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—जिण दिना मैं जिहानगीरजी रौ साहबजादौ खुर्रम विराजै हुयनै दिली सू नीसरियौ। सू कितांईक दिना सू दिखण मैं जाहर हुवौ। वा मुलक मैं दगौ करण लागौ।—द. दा.

साहबाज-सं. पु. [फा. शाहबाज]-एक प्रकार का शिकारी पक्षी जिसका रग सफेद होता है।

साहबियौ—देखो 'साहिब' (अल्पा; रू. भे.)

साहबी—देखो 'साहिबी' (रू. भे.)

उ०—१ वगा विचाळे काढिया हुइ जिम पग झल्लै, ऊभी मेल्ही साहबी गढ गोख महल्लै ।—केसोदास गाडण

उ०—२ रावळ नूं मामें काढियां कह्यौ जु-लाखें री तौ अकल गई, अोर हमीर थाहरै घरै आयौ, परौ कूट मारौ, डावड़ा नांना छै, उड जामी काछ री साहबी परमेसर थानूं दी ।—नैणसी

उ०—३ तरै हाला नूं कहाड़ियौ—घोघां री मदत कांई करो ? हूं छूं तौ आपणै घरै साहबी छै । थे धरती दाबी छै सु थाहरी, नै म्हा हेठैं छै सु माहरी छै, इण वात री सील-काल करौ ।

—नैणसी

उ०—४ इणा नूं मारिया सुणी, तरै थे साथ करनै जाजो थाहरै वांमै माहरा हाथ छै । साहबी आसांन हाथ आवसी । थां आगै कोई टिकसी नहीं ।—नैणसी

उ०—५ रिणधीर भली भांत साहबी चलावै छै ।—नैणसी

उ०—६ साहबी वधी ।—नैणसी

साहबौ—देखो 'साहिब' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—निसचर ! अमरत म्हारौ साहबौ, रावण ! तू हळाहळ जेर । निसचर ! सूरज म्हारौ साहबौ, रावण ! तू तौ घोर अंधार ।

—गी. रा

साहमणि, साहमणी—देखो 'समठावणी' ।

उ०—रग हे सखि रगै घालै वरमाळ, घालै हे सखि घालै है जयमुत उचरै जी । सिंघल हे सखि सिंघल भूप सनेह, रूडी हे सखि रूडी है साहमणि करै जी ।—प च. चौ.

साहमी-वि —१ समान धर्म वाला, स्वधर्मी ।

उ०—१ गौतम नामइ नाणु मुकीयइ रे, सम्यग ग्यान उदय होइ जेम रे । कीजइ साधु तथा साहमी तणी रे, भगति जुगति मन आणी प्रेम रे ।—वि. कु

उ०—२ नीरस आहारै किया, तप आंबिल मन लाय । साहमी नै संतोखिया, पडिलाभ्या मुनिराय ।—वि कु.

२ देखो 'सांमी' (रू. भे.)

३ देखो 'साम्हीं' (रू. भे.)

उ०—जब साहमी ऊठी कूंयरी, ततखिण आडी परीयछ धरी । बोलइ वात कूंयरी घणी, वीती छइ जमारा तणी ।—का दे. प्र.

साहमीवच्छळ, साहमीवच्छल, साहमीवछल—देखो 'सामीवच्छळ' (रू. भे.)

साहमू, साहमौ—देखो सांम्हौ' (रू. भे.)

उ०—१ सौ आपै घोडा चढणौ पछै किसा दिन सारू सीखिया घोडां चढ साहमां हाल जुद्ध करण सारू घोडां री वागां उठावौ जुद्ध करसां वैरी निदव नै न जास सकै ।—वी. स. टी.

उ०—२ घणौ गौ-घ्रत नैं कपूर री आहूति दीजं छै । वेद ध्वनि कीजै छै । दूलह नै दूलहनी सेहरा बांधिआ पूरव साहमा बेसांणिआ छै । सेहरा दीजै छै । चार फेरा फेरीजै छै । वीमाह कीजै छै ।

—रा. सा. सं.

उ०—३ तुरक चडी गढ साहमा, आवइ ऊठवणी असवार । सांम्हा सीगिणि तीर विछूटइ, निरता वहइ नलीयार ।—कां. दे. प्र.

(स्त्री. साहमी)

साहय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—कलियुग द्वापर परति वदि, क्रोध न जाइ माहारि रिदि । तूं साहय माहारै आवेस, पासा मधि करै प्रवेस ।—नळाख्यांन

साहरिय, साहरियबोख, साहरियदोस-सं. पु. [सं. संहृत] एषणा समिति के ४७ दोषो मे से ३७ वा दोष । (जैन)

साहरू—१ देखो 'सारू' (रू. भे.)

उ०—जाहरू बात मन री सरब जाणगर, देख अद माहरू मदत देगी । सीह आरोहणी काज तव साहरू, वाहरू बरन री आव वेगी ।

—बालाबक्स बारहठ

२ देखो 'सारौ' (रू. भे.)

साहरौ—१ देखो 'सहारौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सारौ' (रू. भे)

साहल-स पु.—१ सिंह, शेर । (ना. डिं. को.)

स. स्त्री.—२ देवी-देवताओ को की जाने वाली आर्त्त पुकार, विनय ।

उ०—स्रवणं साहल सुणा सचाळी, ताय मिळी मुझ हेकण ताळी । 'पीथळ' वाहर काछ पचाळी, धावजे चारण धाबळवाळी ।

—प्रथीराज राठौड़ बीकानेर

रू. भे.—साहुलि, साहुलि ।

साहलोतर—देखो सालिहोत्र' (रू. भे.)

साहलोतरी—देखो 'सालिहोत्री' (रू. भे.)

साहवौ—देखो 'सावौ' (रू. भे.)

उ० —माघ सुदी १५ पछै हेमजी स्वांमी रै छ काया हणवारा त्याग हुता अनै त्यातिला कह्यौ फागुण वदि दूज रै साहवै बहिन नै पर-णाय दीक्षा दीज्यौ ।—भि. द्र.

साहस-सं. पु. [स] १ हिम्मत, जुरंत ।

उ०—१ हरि जस रस साहस करै हालिया, मौ पडिता वीनती मोख । अम्हीणा तम्हीणं आया, स्रवण तीरथै वयण सदोख ।

—वेलि

उ०—२ सुणी कमंधा ऊधरा, उत मेवाडां वत्त । सार्थं साहस झल्लियौ, घातै हाथ परत्त ।—रा. रू.

उ०—३ तपियौ तप बारह वरस लग तिण, निर आहार रह्यउ विण नीर । भखियउ पवन गुभारइ भीतर, सत साहस जोवतां सधीर ।—महादेव पारवती री वेलि

२ हठ, आग्रह ।

उ०—बय बीरां सह बोळिया, केसर कुंड दुकूळ । बळै तरुण भइ

बरजिया, मंडे साहस मूळ ।—व. भा.

३ जबरदस्ती, बरजोरी।

४ बेरहमी, नृशसता ।

५ जोश, उमंग ।

उ०—१ तिणि वार त्रिया 'रतनेस' तणी, विधि साहस सोळ सिंगार बणी। पग हाथ मलूकज पंकजयं, गुणि छत्रिय गात बिन्है गजयं ।
—र. वचनिका

उ०—२ धरमी करै धरम, सती नै साहस दीकै । मन राखीजै भाय, मुख्यौ सुवचन बोलीजै ।—वील्होजी

६ देखो 'स हसी' (रू. भे.)

उ०—'अजन' साथि भड़ साहस ऐमा, तोलै आभ एक भुज सेजा ।
—रा. रू.

रू. भे.—सहास, सांहस, साहस्स ।

साहसणौ, साहसबौ—क्रि. स.—साहस करना, हिम्मत करना ।

उ०—सिधा-सुत गग अणभग साहसियां, सुज 'अजन' सिधा यर नसिया साथ। हर दियै आब थट सिधा आहसिया, निपट रवि-बसिया आब रघुनाथ ।—र. ज. प्र.

साहसणहार, हारो, (हारी), सांहसणियौ—वि० ।

साहसिग्रोडो, साहसियोडो, साहस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

साहसीजणौ, साहसीजबौ—कर्म वा० ।

साहसबंध—देखो 'साहसी' ।

उ०—बीठू 'कान्है' सारखा, नेम अछानै सध। साथ हुवा देता छळा, एता साहसबंध ।—रा. रू.

साहसबंत—वि.—हिम्मतवर, पराक्रमी ।

उ०—सार तरस्सै सूरमा, सारा साहसवंत । सुजड़ै लाधै सांम छळ, वाधै तेज अनत ।—रा रू

रू. भे.—सहासवत ।

साहसि, साहसिक—देखो 'साहसी' (रू. भे.)

साहसियोड़ौ—भू. का. कृ.—साहस किया हुआ, हिम्मत किया हुआ ।
(स्त्री. साहसियोड़ी)

साहसौ, साहसीक—सं. पु.—बालि का पुत्र जो शाप के कारण गधा हो गया था ।

वि. [स. साहसिन्, साहसिक, साहसिकः] १ साहस सम्बन्धी, साहस का ।

२ निडर, निर्भीक ।

उ०—पैली मुलाकात मैं म्हैं पवन मैं अड़ियल अर घमंडी समझ्यौ, पण लीना थारी परख सांची निकळी। पवन सुसील, निस्वारथ अर साहसी है —तिरसंकू

३ हिम्मतवर, पराक्रमी ।

उ०—१ मुगल महाभड़ साहसी, मूकै दोय दोय बांणां रे। लाल-चद पतिसाह स्यु पूर्जे, केहौ किम पाणां रे ।—प. व. चौ.

उ०—२ बडा बरूथ रै साथ जूझण रा साहसी कुमार दारासाह नूं ओरंग और मुराद रै साम्हौ बिदा कीधौ ।—व. भा.

उ०—३ रीछ तणा समुदाय, चरू तणा घाट, साहसीक तणां ह्रदय कपइ, कातर कोइ उभउ न रहइ ।—सभा.

रू. भे.—साहसी, सांहसीक, साहसी, साहसीक, साहसि, साहसिक।

साहस्लक—स. पु. [स.] कुरुक्षेत्र मे स्थित एक तीर्थ स्थान ।

साहांणी—देखो 'सा'णी' (रू. भे)

उ०—पीछै बीकमसी पाछौ आयौ, तद कवर स्त्रीबीकैजी देस मैं खेडे साख ओठी मेलिया। सू ठौड़-ठौड ताकीदी हुई है, अरु साहांणी वेलंओ नूं हिंयां मिलके जोइयै खनै मेलिया।—द. दा.

साहांणौ—वि [फा.] राजसी, शाही ।

साहांमू, साहांमो—देखो 'साम्हौ' (रू. भे.)

उ०—१ साहांमू तै जूइ नही, आव्या नगर ना लोक। दरसन करवा कारणि, मनि पामता अति सोक ।—नळाख्यान

उ०—२ भेल्यइ नगर रह्या गढ थोभी, साहांमा तीर विछूटइ। माधव भणइ करण जा नासी, काई भरइ अखूटइ ।—का. दे. प्र.

उ०—६ एक जि ऊचै जो चडइ, जोता जोता जाइ। साहांमा साहमै सीगडइ, भइसा तणइ भराइ ।—मा. का. प्र.

साहांसाह—देखो 'साहंसाह' (रू. भे.)

उ०—जठै अकब्बर जनमियो, जाणै दुहूंवै राह। हुवो हिंद अक-लीम मैं, साहिब साहांसाह ।—बा. दा.

साहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—१ धिन मात पिता कुळ जात धिन, सत अवदात महासती। साहाय थकी निज सामि संग, वसी आय अमरावती ।—रा. रू.

उ०—२ असि गयंद अज्या नरमेद अपूरब, सुण्या हुवा जग चहू साहाय। नूंवौ जिगन जिम करै नरावत, राणा किणहि न होमिया राय ।—राव सूरजमल हाडा रो गीत

उ०—३ विध वयण क्रोध विचारियो, मिळ रांण मोकळ मारियो। थट सहित 'कूभो' थरहरै, साहाय मामौ संभरै ।—सू. प्र.

साहायक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

साहि—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—ऐसै चरित अनंत कै, को कह सकै अनंत। दुसटन कूं दीनी सजा, साहि करेवा संत ।—गज-उद्धार

उ०—२ मैं दुरबळ बळहीन मैं, निरधन निपट निकाज। ग्राह लियै मो जात है, साहि करो महाराज ।—गज-उद्धार

२ देखो 'साह' (रू. भे.)

उ०—१ छळि साहि तणै ग्रहि खाग छरा, धूसै चढि लीध बलक्क धरा। सनमान करै सुरितांण सई, जाळोर पटै गढ दीध जई ।
—र. वचनिका

उ०—२ 'जसौ' हालिग्रो आगरा हूंति ज्यारा, लिग्रां साहि रा उंबरां सब्ब लारां। कमधां वडां कूरिमा साथि कीधा, लजाथभ

मीसोदियां लारि लीधां।—र. वचनिका

३ देखो 'साही' (रू. भे.)

उ०—हाथ धोय बैठा साहि नैं, माराइ खोइ सनेही। होय अनूप राख हुयगी वा, दोय घड़ी मैं देही।—ऊ. का.

साहिक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

उ०—खल खायक साहिक जनां, दीनबंधु देवाधि। धाल बाळ सरणागती, तुमसैं पति हम व्याधि।—करुणासागर

साहिजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—१ चलंता इसा मीर तीर चलावैं, पखी जीवता म्रिग जाण न पावैं। माथैं साहिजादैं बिन्हा राउ मारू, सफै चालिग्रौ ग्रेम उज्जेणि सारू।—र. वचनिका

उ०—२ तिण समय दिली पातिसाह ग्रौसेरसाह राज करै छै। तिण रै पुत्र सलेमलाह साहिजादौ वडो ग्रदली हुयौ। तिण समैं जोधपुर राव मालदे राज करै छै।—द. वि.

साहित—देखो 'साहित्य' (रू. भे.)

उ०—१ मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित वीदग सारनै। कहै मछ भला रूपक करो, ऐं दस दोस निवारनै।—र. रू

उ०—२ राजस्थान रै रजवाडा'र राजवसा री छत्तर-छीया मैं कळा ग्रर साहित नैं ग्रासरौ मिळियौ।—चितराम

साहितकार—देखो 'साहित्यकार' (रू. भे.)

उ०—ग्रेक जोधाबाई माथैं ग्रणूतौ सिप्पौ होण सू बापड़ा माथैं काई काई नी बीती। साहितकारां ग्रर सिनेमाग्राळा रै पाण ग्राज ई लाई रै जीव मैं सोराई कोयनी। काळजौ कळपै है ग्रर विखा रा भारा लीयां फिरै।—चितराम

साहितिक—देखो 'साहित्यिक' (रू. भे.)

उ०—राज समाज साहितिक सभा, भाग जाण जुग लेवणौ। निस नभ भाज यांन गुप्तचर, सर तिर उपवण भेवणौ।—नारी सईकड़ौ

साहित्य-सं. पु. [स.] १ शब्द ग्रौर ग्रर्थ का यथावत् सहभाव सार्थक शब्द मात्र।

२ ज्ञान राशि का संचित कोश।

३ गद्य ग्रौर पद्य सब प्रकार के उन ग्रंथों का समूह जिनमे सार्वजनिक हित सम्बन्धी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं, वाङ्मय।

रू. भे.—साहित।

साहित्यकार-वि. [सं॰] साहित्य-सृजन करने वाला।

रू. भे.—साहितकार।

साहित्यिक-वि.—साहित्य सम्बन्धी, साहित्य का।

रू. भे.—साहितिक।

साहिब-सं. पु. [फा.] १ भगवान, ईश्वर।

उ०—१ वेरं बैस न भरकियैं, मन मैं रहौ सधीर। हरीया साहिब सा धणी, पारि उतारै तीर।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ साहिब सब सू गुपत है, जै कोई परगट जाण। हरीया दीसैं दिस्ट मैं, ताहि न जाणि पिछाण।—ग्रनुभववाणी

२ स्वामी, मालिक।

उ०—१ साहिब चुगल समान ह्वं, सो इज बुरो सुणंत। स्रोता बकता होत सम, भणिया लोक भणंत।—बा. दा.

उ०—२ लाखा सठ दे लीजिए, पडित गुण भरपूर। कायर लाखां बेच कर, साहिब लीजै सूर।—बा. दा.

उ०—३ जनम जनम को साहिब मेरो, वाही सो लो लागी। ग्रांण मिल्यौ ग्रनुरागी जोगी, ग्राण मिल्यौ ग्रनुरागी।—मीरां

३ पति, खाविंद। (डि. को.)

उ०—१ ग्राज हुग्रा विल्लाण सह, ग्राज हसदा मुक्ख। ग्राप पधारै ग्रागणैं, साहिब दीना सुक्ख।—गु रू. बं.

उ०—२ ताहरा भरमल जाणियो, जो कुवरजी छै। तद बोली—जो साहिब, ग्राघा पधारीजै। ग्रठै दूजो कोई नही। हूं रावळी चाकर खड़ी वाट जोऊ छु।—कुंवरसी साखला री वारता

२ प्रेमी, यार।

५ नाम के साथ व्यवहार मे प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मानसूचक शब्द।

६ उच्च ग्रधिकारी या कर्मचारी के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

७ ग्रग्रेजो के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

उ०—ग्रमावड़ वना मैं हुई लोथा ग्रनत, चढै घोड़ां बाव दिगंत चाली। सायरा दिराणा हजारा साहिबां, खुरसिया हजारा हुई खाली।—कविराजा बाकीदास

रू. भे.—सहाब, सा, साब, सा'ब, सायब, साहब, साहिब्ब, साहेब।

ग्रल्पा,—सायबियौ सायबौ, साहबियौ, साहबौ, साहिबियौ, साहिबौ।

साहिबजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—विध रावण सिर विलद, ग्रहिज चित धरै इरादौ। जुड़ै पहल इंद्रजीत, जेण विध साहिबजादौ।—सू प्र.

साहिबि—देखो 'साहिबी' (रू. भे.)

साहिबियौ—देखो 'साहब' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—राजुल कहै सजनी सुनो रे लाल, रजनी केम विहाय हे सहेली। ग्ररज करी ग्रांणो इहा रे लाल, साहिबियौ समभाय हे सहेली।—ध. व. ग्रं.

साहिबी-सं. स्त्री. [फा.] १ हुकूमत, शासन।

उ०—१ तरै गुर भीम री थाळी माहै सूं ग्रो लियौ, लं नै ग्रागरा पत्तर माहै घालियौ, पांणी भेळो नाई नै पी गयौ। नै भीव नूं कह्यौ—खीच ते खाधो हुतो तो तूं ग्रमर हुवतौ म्हे तोनूं इण धरती री साहिबी दी।—नैणसी

उ०—२ माथैं हाथ दियौ। कह्यौ—काछ री साहिबी म्हे तोनूं दी,

पण जोगियां री सेवा घणी करीजै, ज्यूं घणा दिन राज रहै ।
—नैणसी

२ वैभव, ठाट-बाट, ऐश्वर्य ।

उ०—१ अठै रिणमल जी रै तीन वार भूंजाई होवै । कडाह थाट रहै । आठ-पोहर सिकार खेले । वडी साहिबी ।—नैणसी

उ०—२ ताहरा मालदेजी नूं खबर हुई । कह्यौ—वीरमदेजी रै अधिकी साहिबी हुई । ताहरा वळै फोजा विदा कीवी वीरमदेजी ऊपर ।—नैणसी

३ दरबार ।

उ०—हिवै वसंत की साहिबी वरणं छै । वसत महीपति कहता राजा हुग्रौ । कामदेव मत्री प्रधान हुग्रौ । परवतां की सिला ग्राछी सुंदर रहि गई छै । यही सिंघासण हुग्रौ । ग्रांब जाह की बराबरि साखा मिळी छै । छत्राकारि जु हुइ रह्या छै । एही मानौं माथै छत्र धरै है । वाउका झकोळचा । ग्रांबा का मजर गिरि गिरि पडै छै । एही मानू चमर हुग्रा ।—वेलि टी.

४ राज्य ।

उ०—दोयसै गावा री साहिबी । वडा तरवारिया, वडा दातार । सौ खरळ वेणीदास राज करै । वडा भोमीया । सो इहा रौ लोक सारौ ग्राप मुरादौ वहै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

५ दल, साथ ।

उ०—तद रैबारियां कही—साहिबी कुवरसी सांखलै री छै । तिण कही, म्हांरौ रजपूत थां पल्लू मैं मारियौ । तेरै वैर मैं लै जावा छा अर थानु मारां छां ।—कुवरसी सांखला री वारता

६ साहब होने का भाव ।

७ ग्रानन्द, हर्ष, मौज ।

रू. भे.—सायबी, साहबी, साहिबि, साहेबी ।

साहिबौ—देखो 'साहिब' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—१ सखी ग्रमीणौ साहिबौ, बोह जूझो बळवड । सौ थांभै भुजदंड सूं, खड़हड़तौ ब्रहमंड ।—बां. दा.

उ०—२ सादूळौ वन साहिबौ, खाटै पग पग खून । कायरड़ा इण कांम नूं, जंबक कहै जवून ।—बां. दा.

उ०—३ दुलहो बनड़ौ देखता, ऊलही उर बिच ग्राग । संगम देखौ साहिबौ, कीनौ हस र काग ।—बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—४ ग्राठम ग्राज सहेलियां, ग्रो पख ग्रेळो जाय । हियै सदूकै साहिबौ, कांटो ग्रेड़ो माय ।—ग्रग्यात

उ०—५ साहिबा रै सीह थारौ सारौ, वडा धिणी जम प्रासै वारौ । खोटी वात सधारीइ खारौ, ग्रातिमा मुंना पारि उतारौ ।
—पी. ग्रं.

साहिब्ब—देखो 'साहिब' (रू. भे.)

उ०—दिन दांन जिमणइ करइ, साहिब्ब सेव सच्ची करइ । कुरांण ग्याइं पेखि चल्लइ, सो मुसलमांन ग्रस्त जि बरइ ।—ब. स.

साहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पकड़ा हुग्रा, ग्रहण किया हुग्रा, झेला हुग्रा. २ धारण किया हुग्रा. ३ शस्त्रादि उठाया हुग्रा, लिया हुग्रा. ४ सहन किया हुग्रा, झेला हुग्रा. ५ थामा हुग्रा, रोका हुग्रा. ६ उद्धार किया हुग्रा, मोक्ष किया हुग्रा. ७ धरा हुग्रा, रखा हुग्रा. ८ संभाला हुग्रा. ९ मारा हुग्रा, वध किया हुग्रा. १० लिया हुग्रा. ११ सहन किया हुग्रा. १२ धारण किया हुग्रा, झेला हुग्रा. १३ रक्षा किया हुग्रा. १४ सधान किया हुग्रा, चढ़ाया हुग्रा ।
(स्त्री. साहियोड़ी)

साहिय, साहियौ—देखो 'साह' ।

उ०—साहिया लोक बभ नइ बालक, नारी वरण ग्रढार । ग्रालै ग्राधै हालरा कीधा, बान न लाभइ पार ।—का. दे. प्र.

साही—स स्त्री. [फा. शाही] १ बादशाह का शासन या राज्यकाल ।

२ किसी प्रकार का ग्रधिकारिक प्रकार, व्यवहार ।

ज्यू—तानासाही, नादिरसाही, नौकरसाही, हिटलरसाही ।

वि.—१ राजसी, बादशाही ।

२ शाह का, शाह सम्बन्धी ।

३ शाहो जैसा ।

४ देखो 'सेही' (रू. भे.)

रू. भे.—साहि ।

साहीवांन—स. पु.—शामियाना, तम्बू ।

साहु—१ देखो 'साह' (रू भे.)

२ देखो 'साहू' (रू. भे.)

उ०—१ जुध धिणी जगत केणि भाति जीतौ, विळै खाफर जिसौ दइत वीतौ । ग्रला साहु लै मिधि वाळै सुणीजै, ग्रला कलकी तणौ ग्रवतार कीजै ।—पी. ग्र.

उ०—२ हिव सभव जिन तीजो होय, गणधर एकसो नै वलि दोय । दुइ लख साहु साहुणी सार, तीन लाख छतीस हजार ।
—ध. व. ग्रं.

(स्त्री साहुणी)

साहुकार—देखो 'साहूकार' (रू. भे.)

उ०—किण ही मेळो नी हाटै साधु उतरचा । रात्रै चोर ग्राया । हाट खोली । साधू बोल्या—थैं कुण हो जब तै बोल्या—म्हैं चोर छा । साहुकार हजार रुपइयां री थेली माहै मेली है सो म्हैं परही लै जाम्यां ।—भि द्र.

साहुणि, साहुणी—१ देखो 'साधवी' (रू. भे.)

उ०—हिव सभव जिन तीजौ होय, गणधर एकसौ नै वलि दोय । दुइ लख साहु साहुणी सार, तीन लाख छतीस हजार ।
—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'साउवाणी' (रू. भे.)

साहुळि, साहुलि—देखो 'साहुल' (रू. भे.)

उ०—१ ढील मती करिजो धणी, वैगा सांवळियाह । बारठ

बाहुडियौ वहन, साहुलि सांमळियाह ।—पी. ग्रं.

उ०—२ समझत धवळ नर-साहुळि संभळि, आळूदा ठाकुर अलल । पिंड बहुरूप कि भेख पालटै, केसरिया ठाहै झिगल ।—वेलि

साहुवांणि, साहुवांणी—देखो 'साउवांणी' (रू. भे.)

साहू-सं. पु.—१ साधु, मुनि ।

उ०—अजितनाथ बीजौ मन आरगु, प्रणमीजै गणधर पंचांणु । साहू इकलख वदो भविया, त्रिण लख बीस सहस साधवीयां ।
—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'साह' (रू. भे.)

रू. भे.—साहु ।

साहूकार-स पु.—१ कोई बड़ा व्यापारी, महाजन, सेठ, वैश्य ।
(डिं. को.)

उ०—१ कितरा एक दिन हूआ, उवै चोर गुजरात गया । ताहरा गुजरात मैं साहूकार रो बेटो परणीज नै परदेस व्यापार गयो हूतो, सू वरसै १० आयौ ।—स्यामसुदर री वात

उ०—२ अेक चोर कह्यौ—कुदरत बणावणिया भगवान नै ई चोरा री जात ईबै कोनी । अो ई साहूकारां रै पखै बंध्योडो । अेडी काई जरूरत ही उणनै रेत अर चाद बणावण री ।—फुलवाडी

२ वह व्यक्ति जो रुपयों के लेन-देन का कार्य करता हो ।

उ०—सतगुर साहूकार है, सिख सौदागर जानि । जनहरीया राखै नहीं, काय न अंतर कानि ।—अनुभववाणी

वि.—ईनामदार ।

उ०—रुघनाथजी कैयौ—चोर जको चोर अर साहूकार है जको सोळह आंनां साहूकार । राज तेज मैं मोकळी पूछ-ताछ रैवती ।
—दसदोख

रू. भे.—साऊकार, साहुकार ।

साहूकारी-सं. स्त्री —१ साहूकार होने की अवस्था या भाव ।

२ ईमानदारी ।

साहूकारौ-सं. पु.—१ रुपयों के लेन-देन का कार्य या भाव ।

२ ईमानदारी ।

साहूवांणी—देखो 'साउवांणी' (रू. भे.)

साहेत—देखो 'सहित' (रू भे.)

उ०—सको राकसा एकणी हाथ साहै, मेनु लक साहेत पाताळ माहै । जपै वैण ऐहा हणूंमान ज्यारा, तेडं मान बभीखणा भ्रात त्यारा ।—सू प्र.

साहेब—देखो साहिब' (रू. भे.)

साहेबी—देखो 'साहिबी' (रू. भे)

उ०—साखलौ खीवसी 'चरमुकाळ' जागळू राज करै । बडी साहेबी बडो सिरदार । सौ खीवसी हळोद झालै परणीया । बडो विहा हुवो ।—कुवरसी साखला री वारता

साहेली—देखो 'सहेली' (रू. भे.)

उ०—जड़ाऊ नगां मिंदरां हेम जाळी, सभै सेज साहेलियां चित्र-साळी । वणै कजळी सेज एही विराजै, लखै खीर सांमदरा फेण लाजै ।—सू प्र.

साहोगम-सं. पु.—ब्रह्मा, विधाता । (डिं. नां. मा.)

साहौ—देखो 'सावौ' (रू. भे.)

उ०—१ निरखै ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणै लागा वहण । सगळै दोख विवरजित साहौ, हूंतौ जई हुअौ हरण ।
—वेलि

उ०—२ तरै आपरै नांवै तौ बिजैराव न झालियौ नै देवराज वरसै ५ मैं बेटो हुतौ, तिण रै नावै नाळेर झालियौ नै साहौ थापियौ ।—नैणसी

उ०—३ ताहरां चारण कह्यौ—फोफाणंदजी परणीजै तौ पर-णावा । ताहरा कह्यौ जी आज री साहौ दयौ तौ परणीजा ।
—फोफाणद री वात

सिकुल—देखो 'साकळ' (रू. भे.)

उ०—हम जियत ही हनुमतसी पर, हत्थ म्लेच्छन कौ परचौ । यह बत्त हुव अनरत्थ सी, सादूळ सिकुल तै जरचौ ।—ला. रा.

सिख्या—देखो 'सख्या' (रू. भे.)

उ०—पाहीवाळ री अतरी भेस घोडी उठ हाथ आवै तिकां री सिख्या कांई नही ।—खीवर छाडावत री बात

सिग-स. पु. [स. शृंग] १ शिखर, चोटी ।

२ देखो 'सग' (रू. भे.)

उ०—राजान अनेक तीयइ सिग रमतउ, धरियइ गिर चिटी आधार । मुरळी अधर झालियइ माहव, आया गरुड़ तणा अस-वार ।—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'सींग' (रू. भे.)

सिगड़ौ—देखो 'सींग' (अल्पा; रू. भे.)

सिगणी—देखो 'सीगण' (रू. भे.)

उ०—सौ किण भात री कबाणा, थेट विलाती, सीगरी, सिंगणी तूंजी हळकी, अठारै टाक चिलै री खाऊणहार ।—रा. सा. सं.

सिगरफ-सं. पु [फा. शिगरफ] ईंगुर, हिंगुल ।

सिगरफी-वि. [फा. शिगरफी] १ हिंगुल के समान रग का, हिंगुल जैसा ।

२ लाल ।

सिगराज-सं. पु [देश] एक प्रकार का चिकना सफेद पत्थर जिसे पीसकर चूने के साथ मिलाया जाता है । (क्षेत्रीय)
(मि. मालणियौ-भाटो)

सिगरौर-स. पु. [स. शृंगवेर] प्रयाग के पश्चिमोत्तर कोण में स्थित एक तीर्थ जहां निषादराज गुह की राजधानी होना मानी गई है ।

सिगल-स. पु. [अ.] १ रेल की पटरी के किनारे ऊंचे खम्भे पर लगी लोह की वह पट्टी जो रेल के आने व जाने की सूचना देती है ।

उ०—परघर पग नही मेलणौ, बिनां मान मनवार। इंगन आवत देख कर, सिंगल रो सतकार।—अज्ञात

२ देखो 'सिंहल' (रू. भे.)

उ०—मलय सिंगल कोसल नइ अंध्य, स्नोपरवत द्राविड नइ वध्य। वैरोट तापी लाजी धार, स्नीवैदरभ पाटल अतिसार।

—नळदवदंती रास

रू. भे.—सींघल।

सिंगलदीप, सिंगलद्वीप—देखो 'सिंहलदीप' (रू. भे.)

सिंगसट, सिंगसठ, सिंगसत, सिंगसस्थ, सिंगसथ-सं पु. [सं. सिंहस्थ] सिंह राशि स्थित गुरु का समय जो १३ मास का होता है। इस अवधि मे विवाह संस्कार निषिद्ध माना गया है।

उ०—माह एक पछै सिंगसत लागसी सो महिना तेरह रहसी।

—व. भा.

रू. भे.—सिंहसत, सिंहसत, सींघसट, सींघसठ, सींघसत, सींघसथ।

सिंगाड़ौ, सिंगाड़ौ—देखो 'सिंगोटी' (रू. भे.)

उ०—मुगट सिंगाड़ौ साकवर।—व. भा

सिंगार-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो)

२ देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

उ०—१ रगत पिद्ध बळि लिद्ध, जपै जैकार सकत्ती। कियौ संकर सिंगार, रुंडमाळा गळ घत्ती।—गु रू. बं.

उ०—२ मांगणह'रा सीख दै, ढोलइ तिण हिज ताळ। सोवन जड़ित सिंगार दै, नांखयउ दळिद उलाळ।—ढो. मा.

उ०—३ श्री वरणण पहिलौ कीजौ तिणि, गूंथियौ जेणि सिंगार ग्रंथ।—वेलि

सिंगारक-सं. पु [सं शृंगारक] कामदेव, मदन। (अ. मा.)

सिंगारचौकी—देखो 'सिणगारचौकी' (रू. भे.)

उ०—आवियौ वादि तोरण 'अजौ', पह सिंगारचौकी परै। तदि मिळै लोक मुरधर तणा, कोड दरब निजरां करै।—सू. प्र.

सिंगारणौ, सिंगारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ घर बुगलाण तेज छत्रधारी, समै हेक चंद्रिका सिंगारी।

—सू. प्र.

उ०—२ रजथांनी उच्छब रहसि, मणि दीपक अप्रमांण। सूंचै महल सिंगारिया, सोरभी लहराण।—रा. रू.

उ०—३ तळिया तोरण बाधा हाट सिंगारी पोळि सिंगारी घरि घरि गूडी ऊछळी।—व. वि.

सिंगारणहार, हारौ (हारी), सिंगारणियौ—वि०।

सिंगारिओड़ौ, सिंगारियोड़ौ सिंगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिंगारीजणौ, सिंगारीजबौ—कर्म वा०।

सिंगारियोड़ौ—देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिंगारियोड़ी)

सिंगासण—देखो 'सिंहासण' (रू. भे.)

उ०—असिया रह्या पग्ग आफळता, मदझर खळहळता मैमत। बहळौ घणौ सिंगासण वाळौ, पाळौ होय हालियौ पंथ।

—प्रथ्वीराज राठौड़

सिंगियौ-सं. पु. [सं. शृंगिक] एक प्रकार का स्थावर विष।

वि. वि.—इसको गाय के सींग के बाध देने पर गाय का दूध लाल उतरने लगता है। इसका पौधा हल्दी या अदरक के समान होता है, जड सींग के आकार की होती है।

सिंगी-स. स्त्री. [स शृंगी] १ तुरही नामक बाजा।

उ०—सर सरिता बहु बाग सडबर, मंझि तिण सिंगी काम चित्र मंदिर।—सू. प्र.

२ योगियो द्वारा फूंक कर बजाने का सींग का बाजा।

३ घोड़ो का एक अशुभ लक्षण।

रू भे.—सींघी।

४ देखो 'स्रंगी' (रू. भे.)

५ देखो 'सिंघवी' (रू. भे)

सिंगीमलकाछबौ-सं. पु—एक प्रकार का कछुआ।

उ०—ओसीसा गींडवा कैसा विराजै छै। जाणै सिंगीमलकाछबौ समुद्र में केळ करै छै।—रा. सा. सं.

सिंगीमूरौ, सिंगीमूहरौ, सिंगीमोहरौ-सं. पु.—एक प्रकार का पत्थर विशेष।

रू भे—सींगीमुहरौ।

सिंगीय, सिंगीया-सं. स्त्री [सं शृंगिका, प्रा. सिंगिय] पिचकारी।

उ०—अरे कांहडु अन्नइ नेमिजिणु, खडोखलि मिलि जाइ। अरे सिंगीय जलभरै छांटियइ, एसिय रमलि कराइं।—समुध्र

सिंगोड़ौ—देखो 'सिंघोडौ' (रू. भे.)

सिंगोटी-सं. स्त्री.—१ बैलो के सींगों पर पहनाया जाने वाला एक प्रकार का आभूषण।

२ सींगों की आकृति या बनावट।

३ एक मध्ययुगीन सरकारी टेक्स।

रू. भे.—सिंगाड़ी, सिंगाडौ, सींगाडी, सींगोटी।

सिंगौ-स पु. [स. शृंग] १ फूंक कर बजाया जाने वाला एक बाजा विशेष, नरसिंहा।

२ देखो 'स्रींगौ' (रू. भे.)

३ देखो 'सींग' (रू भे)

सिंग्या—देखो 'संग्या' (रू. भे)

सिंग्याहीण—देखो 'संग्याहीण' (रू. भे.)

उ०—टापू माथै सिंग्याहीण खत बण्योडो, अेक काळो मिनख तागियां खावतो अठी ऊठी भंवतो हो।—फुलवाडी

सिंघ-सं. पु. [सं. सिंह] (स्त्री. सिंघण, सिंघणी) १ सिंह, शेर।

(डि. को; ना. मा; ना. डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ अेक विकराळ नौहत्थी सिघणी; रै कारण जंगळ मैं सून्याड़ व्हैगी ही।—फुलवाड़ी

उ०—२ सिंघ सरस रायसिंघ रै, रहियौ कूर्म राम। आड़ौ सरवहियौ अछै, कळह तणौ घरि कांम।—हा. झा.

उ०—३ वाघ सिंघ चितर घणा, भुइ बीहती चालइ रे। चालइ नइ सालइ वरसा रन घणु ए।—नळदवदनी रास

पर्याय.—अभग, अमल, अस्टपाद, आवद्धनख, एकबळा, ककाळ, कठोर कठीरव, करछिव, करीमार, काळ, केसरी, खिणकर, गजराज-अरि, गजरिपु, गहपुर, ग्रह, ग्रीठ, चोळचख, छटाधाव, जगी, जीवजख, डारण, ढुढराव, दाढाळह, दीरघछळ, दुगम दुछर, नखआवध, नखी, नहराळ, नाहर, पंचमुख, पचसिख, पचायण, पळपक्ष, पारंद, बनराज, बाघ, भुभारव, भूपवन, मंग, मंजारछळ, मतगरिपु, मयंद, मग्गराज, महाताव, महानाद, म्रगपत, म्रगमरद, म्रगमारण, म्रगयंद, म्रगराज, म्रगेम, लकाळ, लोहलाठ, वनपती, वांण, विकराळ, सहारण, सधीर, सरभ, सादूल, सारग, साहल, सिंघळी, सूर, सूरसेत, हर, हरि, हरीजख।

२ वीरता या श्रेष्ठता सूचक शब्द जो प्रत्यय रूप मे किसी के नाम के पीछे लगता है।

३ वास्तुविद्या मे प्रासाद का एक भेद।

४ एक राग का नाम।

५ ज्योतिष मे बारह राशियो मे मे पॉचवी राशि। (ना. मा.)

६ छप्पय छन्द का १६ वा भेद जिसमे ५५ गुरु, ४२ लघु कुल ९७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

रू. भे.—सघ, सिंह, सीह, सीह।

सिघण—स पु. पवार राजपूत वश की एक शाखा।

सिघनाद—देखो 'सिंहनाद' (रू. भे.)

उ०—१ वीराग्स हेक न मेल्है वाद, निहस्सै हेक करै सिघनाद।
—गु. रू. ब.

उ०—२ गजसिंघ कियो गज केसरी, सिघनाद मेवाड सिरि।
—गु. रू. ब.

सिघपोळ—स पु —वह मुख्य द्वार जिस पर सिंह की मूर्ति स्थापित हो।

सिघरास, सिघरासी—देखो 'सिंहरासी' (रू. भे.) (अ. मा; ना. मा)

सिघळ, सिघळदीप—देखो 'सिंहलदीप' (रू. भे.)

उ०—की कठियाणी कायथण, पूंगळ प्रसू प्रथीप। अमराणे घर ऊपनी, दूजै सिघळदीप।—पा. प्र.

सिघळी—स. पु —१ हाथी। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—डोहत मूंड सिघळी घटा विराज सामळी।—गु. रू. बं.

२ सिंह।

उ०—तठा उपरात करि नै राजांन सिलांमति बडा सिकारी सिघळी सादूळ पटाला केहरी नवहथां कठीरीआं।.........।
—रा. सा. सं.

३ पुत्र, लडका, औलाद।

उ०—सिवा रा सिघळी मुरधरा सहायक, कूंप रा पोतरा उग्रकारी। अंजसै गोत रा आपसू आज दिन, धजाबंध चिरजी छत्रधारी।—आसोर ठाकुर चैनसिंह रौ गीत

वि.—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ मुहर भूप वित मुहर, गुमर धर कुंवर 'गुमांनो'। 'सादूळो' सिंघळी, एम बोलियौ 'अमानौ'।—सू. प्र.

उ०—२ केई वारां तोखारा हरोळा ओरै फतै किधी। केई फौजां मार दीधो सिघळी कमध।—किरपाराम

२ वशज।

३ जबरदस्त।

रू. भे.—सीगळी, सीघळी।

सिघवाऊ—स. पु —१ घोड़े का एक रोग जिससे घोड़े के पेट मे पीले रग के कीड उत्पन्न हो जाते हैं। (शा हो.)

२ सिंह के शरीर से उत्पन्न होने वाली गन्ध।

सिंघवाहणी, सिंघवाहनी—सं. स्त्री. [स. सिंह+वाहिनी] १ गिरिजा, पार्वती। (अ. मा; ह. ना. मा.)

२ दुर्गा, भवानी।

३ रणचडी।

रू. भे.—सघवाहणी, सिंहवाहणी।

सिघविलोक—देखो 'सिंहावलोकन' (रू. भे.)

सिंघवी—सं. पु.—ओसवालो की एक प्रमुख शाखा व इस शाखा का व्यक्ति जो सघी या संघवी के नाम से पुकारे जाते हैं।

वि वि.—पहले नन्दवाणा बोहरा (ब्राह्मण) जाति में देवजी नामक प्रतापी पुरुष के पुत्र को साप ने काट लिया जिसे एक जैन मुनि ने जीवित कर दिया था। उसी समय से इनका इस्ट पुण्डरिक नागदेव हुआ। लगभग २३ पीढ़ियो तक ये नदवाणा बोहरा ही रहे। तत्पश्चात् बोहरावशीय आमानन्दजी के पुत्र विजयानन्दजी ने सुप्रख्यात जैनाचार्य जिनवल्लभ सूरि के उपदेश से जैन धर्म को स्वीकार किया। इन विजयानन्दजी से कुछ पीढ़ियो के बाद श्रीधरजी के पुत्र सोनपालजी ने शत्रुञ्जय का बडा भारी सघ निकाला। इनके बाद भी इनके वशजो ने बाद के कई सघों का नेतृत्व करते रहे। अतः ये सघी या संघवी कहलाये।

मतान्तर स ओसवालो की एक शाखा विशेष जो सिंघी या सिंघवी नाम से पुकारी जाती हैं। सिंघी या सिंघवी शब्द की व्युत्पत्ति सिंह शब्द से मानी जाती है। इनके पूर्वज देशी राज्यो मे दीवान, प्रधान, मन्त्री, सेनापति, फौजबख्शी व अन्य सैनिक तथा प्रशासनिक पदो पर कार्य करते रहे और इसीलिए इनके नामो के साथ सिंह (सिंघ) व सिंहवी (उच्चारण—सिंघवी, अर्थ—सिंहो मे प्रमुख या श्रेष्ठ) का प्रयोग होता रहा है। ये जैनी होने के नाते जैन धर्म व विशेष रूप से सनातन धर्म को मानते हैं।

रू. भे.—संगवी, संघवी, सिंगी, सिंघी ।

सिंघसादूळ—देखो 'सारदूळ' (रू. भे.)

सिंघसेन-सं. पु. [स. सिंह-सेन] एक सूर्यवंशी राजा।

उ०—तदा नाभिकमळ थै ब्रह्मा नीपनो । ब्रह्मा रौ अत्री । अत्रि रौ कस्यप, कस्यप रौ सूरघ तिण वंस उत्पन्न राजा सिंघसेन ।
—द. वि.

सिंघार—देखो 'सहार' (रू. भे.)

उ०—१ सिंघार हुवै असवार सूर, हर हार करै वर रंभ हूर । गळ भार लियै पळचार ग्रीध, पत भार सगत भर रुधर पीध ।
—वि. स.

उ०—सोहै तू डाहुल दंत सिंघार, निमौ नरकासुर खोसण नार ।
—पी. ग्रं.

२ देखो 'सस्त्र' (रू. भे.)

उ०—असटंग विभूत सनाह उपावै, सोह छतीस सिंघार लिय । सिध बारह पथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरख रूप किय ।
—गु. रू. बं.

सिंघारणौ, सिंघारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संहारणौ, सहारबौ' (रू. भे.)

उ०—धनुधारै रे धनुधारै, सर एका बाळ सिंघारै । महाराजधिराज सुग्रीव मनां रा, सारा कारज सारै ।—र. रू.

सिंघारियोड़ौ - देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सहारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिंघारियोडी)

सिंघाळ—देखो 'सिंघाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ चहुवांण 'चाळ' चम्मर बबाळ, सूरमौ सोह सांमंत सिंघाळ ।—गु. रू. बं.

उ०—२ करता कूक कराळ, आया फरियादू असुर । सुणजे 'दला' सिंघाळ, वीरम फगास वढावियौ ।—गो रू.

उ०—३ सेखावत वाहत खाग सिंघाळ, चढै जळपूर चवदह चाळ ।—सू. प्र.

२ देखो सिंघळौ' (रू. भे)

उ०—बाजै जसवास वीरघंट बळवळ, सिर आंकुस प्रम लीया सिंघाळ । खग पोगर खळ रूंख उखाळे, छावौ मद आयौ 'छाताळ' ।—महाराज छत्रसिंघ रौ गीत

सिंघाळी-स. स्त्री.—जो सिंह की सवारी करे, दुर्गा ।

उ०—सिंघाळी तुही सीमिका होल सैणी, बिदाळी तुही गूंगिका नाग बैणी । खगाळी तुही बिब्बड़ा चख्खड़ाई, मुद्राळी तुही आवड़ा मांमडाइ ।—मे. म.

सिंघाळौ-वि.—१ योद्धा ।

उ०—१ 'सावळ' तणा ऊपर जे सारा, घूमै 'अवरंग' साह घड़ । काळै मरण सिंघाळै कीधौ, उदयापुर वाळ अनड़ ।

—उगरसिंह राठौड़ रौ गीत

२ पराक्रमी, बलवान ।

उ०—सुणै बचन धिक वीर सिंघाळा, जाणै जेठ सालुळी ज्वाळा ।
—गो. रू.

३ सींगौ वाला ।

उ०—मोडला माण पण मेलिया, सिंघाळा बळ कर समथ । निरवाह तुही नव साहसा, रेण कळता राज रथ ।—अनोपसिंह सादू

४ श्रेष्ठ, अग्रणी ।

स पु.—हाथी, गज ।

रू. भे.—सघाळौ, सवाळौ, सिंघाळौ, सींगाळौ, सींवाळौ ।

सिंघावलोकण, सिंघाविलोकण—देखो 'सिंहावलोकन' (रू. भे.)

उ०—कह प्रहास साणौर किव, अंत विखम सम आद । तुक सिंघाविलोकण तिय, मुकताग्रह मुरजाद ।—र. ज. प्र.

सिंघासण—देखो 'सिंहासन' (रू भे.)

उ० —१ सूरजपोळ सूं बारै जकौ ई पैली मानखौ मिळै, वौ ई उजीण रै सिंघासण रौ धणी ।—फुलवाडी

उ० —२ मत्री तहा मयण वसत महिपति, सिळा सिंघासण घर सघर ।—वेलि

सिंघासणचक्र—देखो 'सिंहासनचक्र' (रू भे.)

सिंघी—१ देखो 'सिंगी' (रू. भे.)

२ देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

३ देखो सिंही' (रू. भे.)

४ देखो 'सिंगियौ' ।

उ० – बीछडता ही सज्जणा, क्यांही कहण न लध्ध । तिण वेळा कंठ रोकियउ, जाणक सिंघी खध्ध ।—अज्ञात

५ देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

सिंघेस्वरी-स. स्त्री. [सं. सिंहेश्वरी] १ दुर्गा ।

२ पार्वती ।

सिंघोडौ-सं पु –१ तालाब के पानी के ऊपर फैलने वाली लता के लगने वाला एक तिकोना फल । (अमरत)

२ तिकोनी सिलाई या वेल-बूटे जो सिंघाडे के आकार के होते हैं।

३ सिंघाडे के समान तिकोना समोसा नामक एक नमकीन पकवान ।

४ एक प्रकार की आतिशबाजी ।

५ ऊट के चारजामा के नीचे लगाई जाने वाली गद्दी ।

रू. भे —सींघोडौ ।

सिंघोदरी-वि. स्त्री. [सं. सिंहोदरी] १ जिसका उदर सिंह के समान हो ।

२ सिंह के समान पतली कमर वाली ।

सिंचणियौ—देखो 'सींचणियौ' (रू. भे.)

सिंचणौ, सिंचबौ—देखो 'सींचणौ, सींचबौ' (रू. भे.)

उ०—लाधइ सार सुधा रमिका रसि तै सिचंति। अग धरीयै अगलोचना लोच ना रंग चूकति।—जयसेखर सूरि
सिचणहार, हारौ (हारी), सिचणियौ—वि०।
सिचिग्रोड़ौ, सिचियोड़ौ, सिच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिचीजणौ, सिचीजबौ—कर्म वा०।
सिचन-स. स्त्री—सिचाई करने की क्रिया या भाव, सिचाई।
सिचय-सं. पु [सं.] १ वस्त्र, कपडा। (डि. को.)
उ०—ग्रनावळि अवगरढ़ रूप संचय सचारै। जळनिधि निभ सिचय जाळ इत तिरत अपारै।—व. भा
२ आवरण।
३ देखो 'सचय' (रू. भे.)
सिचांण, सिचांणौ-स. पु—१ एक शिकारी पक्षी जो बाज की अपेक्षा छोटा होता है।
उ०—१ पाए पवन पौडए, धरा धमस घोड़ ए। हुमस्स असी हूए ए, सिचांण जाण पख ए।—गु. रू. ब.
उ०—२ साई नाव सभाळि लै, क्या सोवै नर नींद। काळ सिचांणौ सिर खड़ौ, ज्यौ तोरण आयौ बींद।
—परमानद वणियाळ
२ दोहा नामक छन्द का चतुर्थ भेद, जिसमे १६ गुरु और १० लघु होते हैं।
रू. भे.—सचाण, सचाणौ, संचान, सचाण, सचान, सिचाण, सिच्चान, सीचाण, सीचाणौ।
सिचाई-सं. स्त्री.—१ सिचाई करने की क्रिया या भाव।
२ सिचाई का कर या लगान।
३ सिचाई का पारिश्रमिक या मजदूरी।
सिचाणौ, सिचाबौ—देखो सीचाणौ, सीचाबौ' (रू. भे.)
सिचाणहार हारौ (हारी), सिचाणियौ—वि०।
सिचायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सिचाईजणौ सिचाईजबौ—कर्म वा०।
सिचायोड़ौ—देखो 'सीचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिचायोड़ी)
सिचावणौ सिचावबौ—देखो 'सीचाणौ, सीचाबौ' (रू भे.)
उ०—क्यां रे वधावा नीमड़ली री पाळ हजारी ढोला। क्यां रे सिचावां ए हरियै रूख नै जी म्हारा राज।—लो. गी.
सिचावणहार, हारौ हारी), सिचावणियौ—वि०।
सिचाविग्रोड़ौ, सिचावियोड़ौ सिचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिचावीजणौ, सिचावीजबौ—कर्म वा०।
सिचावियोड़ौ—देखो 'सीचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिचावियोड़ी)
सिचियोड़ौ—देखो 'सीचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिचियोड़ी)

सिजनी-स. स्त्री. [स. शिञ्जनी] पैरों का आभूषण, पायजेब, पैजनी।
उ०—धिमिद्ध मिद्ध ऊध्वनी न सिजनी सुनी नहीं।—ऊ. का.
२ धनुष की डोर, प्रत्यंचा।
३ कटि मेखला के नूपुर, घुघुरु।
सिजारौ, सिंजारौ—देखो 'सिझारौ' (रू. भे.)
सिज्या, सिंज्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.)
सिज्यारौ, सिंज्यारौ—१ देखो 'सिझारौ' (रू. भे.)
२ देखो 'सजीरौ' (रू. भे)
सिझ, सिझया, सिझा, सिझ्य, सिझ्या—देखो 'सध्या' (रू. भे.)
उ०—१ आजक काल्है राम राय सिझ सवेरै। तुझि निरास मुझि आस नवेरै।—अनुभववाणी
उ०—२ चौखड आंथूणियै राजस्थान री घणी चावी रम्मत है। सिझ्या पड़चां मोटियार रम्मण ठोड भेळा व्है जावै। चौखड़ रम्मण री ठोड थोड़ी मोकळास आळी व्है।—चितरांम
सिझारौ-स. पु.—१ गौर व सावण मास की कृष्ण तृतीया को कन्या व वधु के लिए उसके पीहर व ससुराल वालों द्वारा भेजी जाने वाली सामग्री।
वि. वि—उक्त सामग्री मे मिठाई, फल, मेवा, वस्त्र एवं शृंगारिक वस्तुएं सम्मिलित होती हैं। यह सामग्री, जब कन्या ससुराल होती है तब उसके पीहर वालों द्वारा व जब वह पीहर होती है तब ससुराल वालो द्वारा भेजी जाती है।
२ वह दिन जिस दिन उक्त सामग्री भेजी जाने की प्रथा है।
रू. भे.—सिजारौ, सिंज्यारौ, सिज्यारौ, सिंदारौ।
सिंझ्या, सिंझ्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.)
उ०—१ दूजै दिन सिंझ्या री वेळा दौड़तौ दौड़तौ घोड़ौ अणछक ढब्यौ, जाणै च्यारूं पगां नै कोई अपड़ लिया व्है।—फुलवाड़ी
उ०—२ सिंझ्या रा ठाकर रंगमै'ल मे पधारचा उण वगत वौ ई सांप रै रस वाळौ दीवौ झुप्योड़ौ हौ।—फुलवाड़ी
सिण—देखो 'सण' (रू. भे.)
सिणगार—देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)
उ०—१ राजांन कुमार सोळै सिणगार विराजमांन हुआ छै। सु प्रथम मरदरा सोळै सिणगार तिकै किण भांति रा कहीजै।
—रा. सा. सं.
उ०—२ सजि सिणगार पधारत अबा, गाव खुड़द गढवाड़ै।
—मे. म.
उ०—३ हास हसता रह्या धोळहर, सुदर सझती रही सिणगार। लाखां धणी पयांणै लांबै, जाता ही न कियौ जुहार।
—प्रथ्वीराज राठौड़
सिणगारचौकी—देखो 'सिणगारचौकी' (रू. भे.)
उ०—सिणगारचौकी आगै सूरसिंघजी कराई तिका सादै भाटै री

थी, तिका म्हाराज बखतसिंघजी मकराणा री नवी कराई ।

—मारवाड री ख्यात

सिणगारणी-स. स्त्री.—शृंगार की सामग्री ।

वि. स्त्री.—शृंगार करवाने वाली ।

उ०—ताह बडारणा सहेलिया आगे ४ पात्रा सिणगारणी खवास्या रहै छै । १ गुणमाळा, २ फूलमाळा, ३ विजैमाळा, ४ दीपमाळा ।

—रा. सा. सं.

सिणगारणौ, सिणगारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे.)

सिणगारियोड़ौ—देखो 'सिणगारियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिणगारियोड़ी)

सिणतरौ, सितरौ—देखो 'सिणियौ' (रू. भे.)

सिंदड़ी—देखो 'सींदडी' (रू. भे.)

उ०—कहै दास सगराम, जितै साजी है जिंदड़ी । करो भजन दिन रात, काच री है या सिंदडी ।—सगरामदास

सिंदण, सिंदन—१ देखो 'स्यदन' (रू. भे.)

उ०—खाड़ेत्या खोलिया, खिडक खासा रथखाना । सिणगारचा सिंदणा, मिळण सामा मिजमाना ।—मे. म.

२ देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

३ देखो 'सिंधी' (स्त्री.)

सिंदळी-सं. पु.—शुभ रग का घोडा ।

उ०—१ गुलजार बोज अबलकख गात, सिंदळी अनै सरगा सुभात ।

—सू. प्र.

उ०—२ ढाल सिंदळी ऊपर छै सौ आगे होय कटारी माहे छुरी थी सौ काढी ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सिंदवी-स. स्त्री.—एक रागिनी विशेष ।

उ०—उण वेळा कवर कनै सिंदवी आसावरी गाइजे । रस रा डका लगत ।—पना

सिंदारौ—देखो 'सिंझारौ' (रू. भे.)

सिंदिया-स. पु.—१ सिंधिया ।

२ देखो 'संध्या' (रू. भे.)

सिंदुरिया-वि.—सिंदूर के रग जैसा ।

सिंदुरियौ-स. पु.—सिंदूरी रग का पौधा ।

वि.—सिंदूर के रग का, सिंदूर रंग सम्बन्धी ।

रू. भे.—सींदूरियौ ।

सिंदूक—देखो 'सदूक' (रू. भे.)

सिंदूर-सं. पु. [स.] १ सौभाग्यवती स्त्रियो के माग मे भरने का एक लाल रग का चूर्ण जो इंगुर को पीस कर तैयार किया जाता है । (डि. को.)

वि. वि.—हनुमान, गणेश आदि देवताओ की मूर्तियो पर यह घी या तेल मिला कर चढ़ाया जाता है ।

उ०—१ दाढी रग उज्जळ भाळ सिंदूर, प्याला मतवाळ नसौ भरपूर ।—मे. म

उ०—२ जिका काट माजिया, छाट उजळ जळ छोळा । रचि सिंदूर चितराम, चरचि आनन रग चोळा ।—मे. म.

२ देखो 'सिंधुर' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

रू. भे.—सदूर, सींदूर, स्यदूर ।

सिंदूरतिलक, सिंदूरतिलका-स. पु.—१ हाथी ।

स. स्त्री.—२ सधवा स्त्री ।

रू भे.—सदूरतलका, सदूरतिलका ।

सिंदूरदांन-सं. पु. [स सिंदूर+फा. दान] विवाह मे वर द्वारा कन्या के माग में सिंदूर डालने की एक रस्म ।

सिंदूरिया, सिंदूरी-स. स्त्री—सिंदूर रखने की डिबिया ।

वि.—सिंदूर के रग का ।

रू. भे.—सीदूरियौ ।

सिंदूवार-सं. पु.—१ वृक्ष विशेष । (सभा)

सिंध-स. पु. [सं. सिंधु:] १ पाकिस्तान के दक्षिण पश्चिम का एक प्रदेश ।

२ पश्चिमी पाकिस्तान की प्रमुख नदी ।

३ मालवा की एक नदी ।

४ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—१ मागी सीख नरिंद सू, दीन्ही सीख कुंवार । जाणै बध पलट्टियौ, सिंध प्रळै री वार ।—रा. रू

उ०—२ आतस बाजी गाडिया, आराबा अनमंध । गडडै गोळी नाळियां, किरि लहरी रव सिंध ।—गु. रू. बं.

उ०—३ नर नाग सुरासुर जोड नथी, कथ वेद पुराण दुजाण कथी मुर कीट मधु हण सिंध मथी, रट रे मन राघवदासरथी ।

—र. ज. प्र.

सिंधक-स. पु. [स सध्यक] पुष्प, फूल । (अ. मा.)

सिंधचारी, सिंधचोरी—देखो 'सिंधुचरी' (रू. भे.)

((अ. मा; ह. ना. मा.)

सिंधण—देखो सिंधी' (स्त्री.)

सिंधन—१ देखो 'सनद' (रू भे.)

उ०—चडाळा थारी बात री की सिंधन व्है तौ थे भूत क्यू बाजो ।

—फुलवाड़ी

२ देखो 'सिंधी' (स्त्री.)

सिंधपीण-स पु. [स. सिंधु+रा. पीणौ] अगस्त्य मुनि ।

वि. वि.—ये ऋग्वेद की कई ऋचाओ के रचयिता थे । देवासुर सग्राम मे जब दानव सागर मे जाकर छिप गये और खुद सागर ने भी इन्हे क्षुब्ध कर दिया था, तो ये सागर को ही पी गये और इसी कारण समुद्रचुलुक या सिंधपीण कहलाये ।

सिंधभैरव-स. स्त्री.—एक राग विशेष ।

सिंघळ-सं. पु.—राठौड क्षत्रियों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—बालीसा नइ सीसोदिया, सोढा नइ सिंघल आवीया। तें पचास सहस असवार, राउल भेटी करघउ जुहार।—का. दे. प्र.

सिंघलावटी, सिंघळावटी-स. स्त्री.—वह प्रदेश जहां सिंघल शाखा के राठौडों का आधिपत्य रहा था।

सिंघव—१ देखो 'सेंधव' (रू. भे.) (अ. मा; ह. ना. मा.)

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे)

उ०—घण बाण कोहक बाणा गहक, दुगम घार सिंघव डका। कमधजा खाग ऊनग करैं, बाग ऊपाड़ी वेढका।—सू. प्र.

सिंघवराग, सिंधवा—देखो सिंधुराग' (रू. भे.)

उ०—रुड़े दळ वेहूंय सिंघवराग, धजावध वेहु लाग धियाग।

—गो. रू.

सिंधवी-स. स्त्री.—आभारी और आसावरी के मेल से बनने वाली एक रागिनी विशेष।

वि.—सागर का, समुद्र सम्बन्धी।

सिंधवीराग—देखो 'सिंधुराग' (रू. भे)

उ०—लागा सिंघवीराग रा पाना साकुरा भडाळा लीधा, अभागा छडाळा आभ छवतो ताठौड।—विसनसिंह राठौड रौ गीत

सिंधसागरौ-स पु.—एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

सिंधी-स. पु (स्त्री. सिंधण) १ सिन्ध प्रदेश का निवासी।

२ सिन्ध प्रदेश के निवासी जो अब भारत मे यत्र-तत्र बस गये।

३ मुसलमानो की एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

४ सिन्ध प्रदेश का घोड़ा जो अपनी मजबूती के लिए प्रसिद्ध है।

स. स्त्री.—५ सिंध प्रदेश की भाषा या बोली।

६ शीतकाल मे पश्चिमोत्तर से चलने वाली हवा जो रबी की फसल के लिए हानिकारक होती है।

(मि. सूरियौ)

७ एक प्रकार की बन्दूक।

८ एक प्रकार की तलवार की मूठ विशेष।

सिंधु-स. पु. [सं. सिंधु] १ समुद्र, सागर।

उ०—सम माई क्रिया सब थाकी, ज्यूं सलीता सिंधु समाई। पांच पचीस लीन कर सब ही, साक्षी स्वरूप रहाई।

—सुखरामजी महाराज

२ सिंधुनद जो पंजाब के पश्चिम से होता हुआ सिंध देश के समुद्र मे मिलता है।

३ उक्त नद के आसपास का प्रदेश।

५ हाथी के सूंड से निकला हुआ पानी।

६ हाथी का मद।

७ हाथी।

८ ऊंट।

उ०—मजबून थूंम डाचा मगर, जिया पूंछ करवत जिसा। झोखिया सिंधु तुलता झटकि, अध कध राकस इसा।—सू. प्र.

९ वरुण देवता।

१० गंधर्वों के राजा का नाम।

११ पुराण प्रसिद्ध एक देश, जिसका राजा जयद्रथ था।

१२ एक सम्पूर्ण जाति का वीररस पूर्ण राग। (संगीत) (डिं. को.)

उ०—भाभी जागड़ आपणी, छिपै न लावां गाल। सूनै घर सिंधु थयौ, आपा रा मिजमान।—वी. स.

१३ बिलकुल श्वेत सुहागा।

सं. स्त्री.—१४ बडी नदी, नद।

१५ नदी, सरिता। (अ. मा; ह. ना. मा.)

उ०—चित प्रथम चेत, उलटू अचेत। यह तन अग्यान, न स्थिर निदान। बचि है न वीर, तरु सिंधु तीर। इक दिवस यार, है गिरन हार।—ऊ. का.

१६ सात की संख्या। * (डिं को.)

वि.—सुन्दर। (ह नां. मा.)

रू. भे.—संध, सधव, संधवौ, सधु, सिध, सीधु, सीधू, सींधू, स्यंध। अल्पा; —सिंधुडक, सिंधुडौ।

सिंधुओ-सं. पु—१ सिंधुदेशोत्पन्न घोड़ा। (का. दे. प्र.)

२ देखो 'सिंधु' (अल्पा; रू. भे)

सिंधुकन्या-सं. स्त्री. [सं.] लक्ष्मी।

सिंधुकुला, सिंधुकुल्या-सं. स्त्री.[सं. सिंधुकुल्या] नदी। (अ. मा.)

सिंधुडक, सिंधुडौ—१ देखो 'सिंधु' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सिंधी' (अल्पा; रू भे.)

उ०—मालांणी रै सिंधुड़ै गोरबंध गूथ्यौ। बीकांणै रै राइकै पोयौ, म्हारो गोरबद लूंबाळौ।—लो. गी.

सिंधुचरी-सं. स्त्री. [सं.] मछली। (अ. मा)

रू. भे.—सिंधचारी, सिंधचीरी।

सिंधुज, सिंधुजन्मौ-सं. पु. [सं सिंधुज, सिंधुजन्मा] १ चंद्रमा शशि।

२ सेंधा नमक।

वि.—१ समुद्र से उत्पन्न।

२ नदी से उत्पन्न।

३ सिंधु देश से उत्पन्न।

सिंधुजा-सं. पु. [सं.] लक्ष्मी।

सिंधुजात-सं. पु. [स.] १ घोड़ा, अश्व। (डिं. को; डिं. ना. मा.)

२ सागर मथन से उत्पन्न चौदह रत्नों मे से कोई एक रत्न।

३ शराब, मदिरा।

सिंधुदीप-सं. पु. [सं. सिंधुद्वीप] १ राजा भगीरथ के वंशज एक राजा।

२ अंबरीष के पुत्र का नाम।

सिंधुदेस—देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—अर सिंधुदेस रा सूबादार जवन करीमखान जिमा अनेक ।
—व. भा.

सिंधुदेसभव-स. पु. [सं. सिंधुदेशभव] सेंधानमक । (डि. को.)

सिंधुप-स. पु. [स.] अगस्त्य ऋषि का एक नाम ।

सिंधुपुत्र, सिंधुप्रसूत—देखो 'सिंधुजात' (अ. मा.)

सिंधुर-स. पु. [स.] १ हाथी, गज ।
(अ. मा; डि. को; ना. डि. को; ह. ना. मा.)

उ०—१ तिण समय अरसिंघ गदा री आघात देर दूजा सिंधुर री सीस चौफाडि करि पटकियौ ।—वं. भा.

उ०—२ वेउ वधव वळ बंधुर, सिंधुर जिम वनतीरि। खेलइ विपुल खडोखली, ओखली पाडली नीरि ।—जयसेखर सूरि

सं. स्त्री.—२ नदी ।

उ०—भाई बे भेळा हुवा, अकुर नदी सिर आय । सिंधुर घोडै मूकड़ी, मेल न मापी जाय । —रा. रू.

३ आठ की सख्या । * (डि. को.)

रू. भे.—संधुर, सधूर, सिदुर, सींदुर ।

सिंधुरवर-स. पु.—श्रेष्ठ नर ।

उ०—सिंधुरवर बावर भूडण कर सावै, बामा वीजळ नै थावर गळ दावै ।—ऊ. का.

सिंधुरमणि-स. पु. यौ. [स.] गज-मुक्ता ।

सिंधुरवदन-स. पु. यौ. [सं.] गणेश, गजानन ।

सिंधुराग-स. पु.—वीररस पूर्ण राग ।

उ०—गढवी गावौ गावीजै, स्यांम न मेलै साथ । ओढण अनि-वारा नरा, हाला रा पण हाथ । हाथ आवाहतौ सिंधुरागां थिया, सहै झूझा थया बळि 'जसा' रा सथियां ।—हा. भा.

(मि. सिंधु (८)

रू. भे.—संधव, सधवौ, सिंधवराग, सिंधूराग ।

सिंधुवौ-सं. पु —युद्ध का वाद्य, वीररस का वाद्य ।

उ०—उण दिसिया अजमेर सूं, आयौ तहवरखांन । इण दिसि वरणा सिंधुवा, भुज लग्गा असमान ।—रा. रू.

सिंधुसुत-स पु. यौ. [स.] १ चौदह रत्नों मे से कोई एक ।

२ चन्द्रमा ।

३ शिव द्वारा मारा जाने वाला जलंधर नामक एक राक्षस ।

सिंधुसुता-सं. स्त्री. यौ—१ लक्ष्मी ।

उ०—लोक माता सिंधुसुता स्री लिखमी पदमा पदमालया प्रमा ।
—वेलि

२ सीप ।

सिंधू—देखो 'सिंधु' (रू. भे.) (डि. नां. मा)

उ०—१ सकौ सोखियौ हाकडो नांम सिंधू, बहंतौ थकौ रोकियौ लोकबंधू ।—मे. म.

उ०—२ भोपाळां भांमी नेक नांमी, मेव पाय सुरेस । सुज दया सिंधू दीनबधू, अखै कीत गहेस ।—र. ज. प्र.

सिंधूप्रसूत—देखो 'सिंधुजात' (अ. मा.)

सिंधूभव-स. पु [स. सिंधुभव] १ सेंधा नमक । (डि. को.)

२ समुद्र से उत्पन्न होने वाले चौदह रत्नो मे से एक ।

सिंधूराग—देखो 'सिंधुराग' (रू. भे.)

उ०—गत मत करि सिंधूराग वडाळा, लथबथ भारत घणा लोह ।
—महादेव पारवती री वेलि

सिंधूरी-स. पु.— हिंडोल राग की पुत्रवधू माने जाने वाली एक रागिनी ।
(सगीत)

सिंधूसुवन-स. पु. [स. सिंधु+सूनुः] १ चन्द्रमा, चाद । (अ. मा.)

२ समुद्र से उत्पन्न होने वाले चोदह रत्नों मे से कोई एक ।

सिंध्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—कंवरजी स्री बीकोजी जोधपुर सूं विदा हुआ सू सिंध्या रा मडोवर आया ।—द. दा.

सिनेह—देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—संसार एह असगौ सगौ, दईति आप वासौ दियौ । कलिमाहि दुख सिनेह् वधा, कूड कूड साचौ किणौ ।—पी ग्र.

सिन्यास—देखो 'सन्यास' (रू. भे.)

उ०—क्या मै करत सिन्यास क्रम, का कुळ मारग लोक क्रम ।
—अनुभववाणी

सिपा—देखो 'सपा' (रू. भे.)

उ०—मुखमलू से मुलायम वरवागू कै साचै पखराउ सी धाव खुरतालु कै भमकै सत सिपा कै सिलाव......... ।—र. रू.

सिवन-सं. स्त्री.—फली ।

उ०—परंड अरणी अगथीउ अखोड ताड असोख । खजूरि खारिक कूडी सालर, सिबन सइबल मोख ।—रुकमणी मंगळ

सिबी-स. स्त्री. [सं. शिम्बा या शिम्बिका] फली । (डि. को.)

सिबेण—देखो 'सभु' (रू. भे.)

सिभ—देखो 'सभु' (रू. भे.)

उ०—१ भुजा सजोर भजणा, चढाय सिभ चाप ।—र. ज. प्र.

उ०—२ उभै साचा अखर कहै रिख सिभ अज । हरिभज हरिभज हरिभज हरिभज ।—र. ज. प्र.

सिभजियत, सिभजीत, सिंभजीवत—देखो 'जीवतसंभ' (रू. भे.)

उ०—१ 'केहर' जसावत कहै, घणा मुगळा खग घाऊ । काय आऊं जुध कांम, कियै सिभजियत कहाऊ ।—सू. प्र.

उ०—२ व्हां अमर काय सिभजीत व्हा, विखम 'विलंद' फौजां विहरि ।—सू. प्र.

उ०—३ वर अपछर जग कीत वधाऊं, का सिभजीवत विरद कहाऊं ।—सू. प्र.

सिभरि-स. पु.—सांभर ।

उ०—कइ अम्ह आवी करइ सिलांम, कइ प्राणइ छंडाविसुं ठांम ।

ग्या प्रधान सिरि धरीय पसाउ, अढ़ै भेटिउ सिभरि नउ राउ।
—का. दे. प्र.

सिभु, सिभू, सिभौ —देखो 'संभु' (रू. भे.) (अ. मा; नां. मा.)
उ०—१ यथा वद नाखत्र, कै चंद्र साथै, कना सोभियो, सिभु बीखेस माथै।—रा. रू.
उ०—२ सुगधा करं सुंदरं फूल सोहै, महाग्रभ सौरभ सिभु विमोहै।—रा. रू.
२ देखो 'सब' (रू. भे) (अ. मा.)

सिम्रत—१ देखो 'समरथ' (रू. भे)
२ देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

सिम्रित—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)
उ०—राम वखानै वेद, राम कुं दाखि पुरानै। राम साख सिम्रित, राम सासत्र सु जानै।—अनुभववाणी

सियातर-स. स्त्री.—कृषकों की इष्ट देवी।
(मि. सावढ)

सियारौ-स. पु.—लोहे की मोटी लम्बी नुकीली छड़।
(मि. सरियौ)

सियाळ-स. पु.—क्यारी के उस ओर की मेढ जिधर से पानी भरा नहीं जाता अपितु रोका जाता है। (कृषि)
२ देखो 'स्रगाल' (रू. भे.)

सिवटणौ, सिवटबौ —देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)
उ०—तडकै धड़ाधड़ ग्र..ो भचे..यां दोना ..ी सुम्बुध वारी। दीवा री उ..स बाटा मैं ..वट..ी ही। फू..ा ..ळफळ..ै ओग ग्र ..ी ग्रोलै ..िर्तै ..िर्तै ..ईत ..थ..ळ करता चूड़ियौ उन र मे..ी रै मांय वडता डज लिगै ..। - फुलवाड़ी
सिवटणहार, हारौ (हारी) सिवटणियौ — वि०।
सिवटिओड़ौ, सिवटियोड़ौ, सिवट्योड़ौ —भू० का० कृ०।
सिवटीजणौ, सिवटीजबौ — भाव वा०।

सिवटियोड़ौ -देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिवटियोड़ी)

सिवरणौ, सिवरबौ — देखो 'सुमरणौ, सुमरबौ' (रू. भे.)
उ०—१ सेवट हीमतहार अेक दिन पैलीवार वां रामजी नै सिवरया कै किणी जीव जीनावर नै ई बिसराम दै।—फुलवाड़ी
उ०—२ ग्रां देवी देवतावां रै भरोसै राज रौ खजानौ ई खाली कर दियौ, सिवरता सिवरतां म्हारी तौ जीभ ई घिसगी।
—फुलवाड़ी

सिवरियोड़ौ—देखो 'सुमरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिवरियोड़ी)

सिवरी-सं. स्त्री.—झड़बेरी के कांटों का उतना गोलाकार ढेर जितना एक बैलगाडी में समा सके।
रू. भे.—सिमरी।

सिवल-स. स्त्री.—१ लकड़ी की वह खूंटी या गुल्ली, जो जुए के कंधावर भाग के छोर पर लगी रहती है। इसी से जोत की रस्सी बांधी जाती है।
रू. भे.—संमळ, संबळ, समळ, समेळ, सिमल।

सिवसंगिया-सं. स्त्री.—घोड़े के गर्दन के दाहिनी ओर की (मतांतर से पीठ पर की) भौंरी जो शुभ मानी जाती है। (शा. हो.)

सिवाई-स. स्त्री.—१ कपड़े सीने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी, सिलाई।
२ कपड़े आदि की सिलाई का व्यवसाय या कार्य।

सिवाड़, सिवाड़ौ—देखो 'सीमाडौ' (रू. भे.)
उ०—पाड़ पतसाह घड़ सिवाड़ां पौढियौ, देव मंडळ सरी नकौ दूजौ।—सुजाणसिंघ कछवाहा री गीत

सिवाळ-सं. पु. [सं. शैवाल] १ बालों के लच्छों की तरह पानी पर पसरने, फैलने वाला एक घास।
उ०—सोहै ग्रगिया ग्रोट, हरी रंग साज मैं। दुड़िया चकवा ग्रोर सिवाळ समाज मैं।—बां. दा.
२ फफूंदी।
रू. भे.—सिवाळ, सीवाळ।

सिसपौ-सं पु. [स शिंशपा] १ शीशम का वृक्ष।
२ अशोक वृक्ष।

सिसार—देखो ससार' (रू. भे.)
उ० राजन मैं राजा वडौ इंद्र तणी अवसार। तिण ऊपर रज नाखिजै, मारानै न सिसार — पनहड़ी री वारता

सिसुमा—[सं. शिसु..] श्रीकृष्ण की रानी सुकेशी का एक नामान्तर।

सिसुमार-सं. पु [सं. शिशुमार] एक प्रकार का जल जंतु जिसे सूंस भी कहते हैं।

सिहंड -देखो 'सिहड' (रू भे.) (ह ना मा.)

सिह—सं. पु. [सं.] १ राजा। (डि. ना. मा.)
२ हवा, पवन। (ना डि. को)
३ सिंह, शेर, बाघ।
वि.—१ योद्धा, वीर। (डि. ना. मा.)
२ श्वेत। * (डि. को)
३ श्याम। * (डि. को.)
४ धूधला। * (डि. को.)
५ देखो 'सिंघ' (रू. भे.)
रू. भे —सीह, स्यंध।
मह.—सिहांण।

सिहकेतु-स पु [स] चेदि देश का एक राजकुमार जो महाभारत में कर्ण द्वारा मारा गया था।

सिहकेसर-स पु.—सिंह की गर्दन के बाल।

सिहगुहा-स. स्त्री.—सिंह की गुफा।

उ०—सिंहगुहा पइसी कवरा थाइ निःसंक, सरप साधि घालिउ कवरा थाइ निरवखान । —व. स

सिंहगोस-स. पु.—एक प्रकार का छोटा जानवर विशेष जिसकी उपमा घोडे के कान को दी जाती है ।

उ० सिंहगोस जिसा बेहूं कान सही, पग पींड पघा मुद्रिह पही ।
—मा. वचनिका

सिंहचन्द्र-स. पु [स] पाचाल देश का एक राजा जो युधिष्ठिर का मित्र एवं समर्थक था ।

सिंहचलोनिसांणी-स. स्त्री.—निसाणी छन्द का एक भेद जिसमे 'प्रौढ-गीत' का सिंहावलोकन किया गया हो ।

वि. वि.—देखो 'प्रौढगीत' ।

सिंहचलौ, सिंहचालौ-स. पु.—डिंगल का एक गीत जिसके प्रथम चरण मे १६, दूसरे मे १३, तीसरे में १६ और चतुर्थ चरण मे १३ मात्रा व तुकात में रगरा होता है ।

सिंहड—देखो 'सिंहंड' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सिंहणी-स. स्त्री.—१ आर्या या गाहा छंद का एक भेद जिसके चारो चरणो में ३ गुरु व ५१ लघु मात्रा से कुल ५७ मात्राएँ होती है ।
२ सिंह या शेर की मादा ।
रू. भे.—सिंही ।

सिंहदवार, सिंहदुवार, सिंहद्वार-स. पु. [सं. सिंहद्वार] मुख्य द्वार, तोरण द्वार ।
रू. भे.—सीहद्वार, सीहद्वारौ ।

सिंहनखौ—देखो 'बाघनखौ' ।

सिंहनाद-सं स्त्री [सं] १ सिंह की दहाड, सिंह की गर्जना ।

उ०—अळियळ आज करत सहू, गयंद कळोळा गान । सिंहनाद मद सूकियौ, औ कीजै अनुमांन ।—बा दा.

२ वीरो की हुंकार ।

स पु.—३ रावरा का एक पुत्र । (रामायरा)
रू. भे.—सिंघनाद ।

सिंहनिकीलिऊ-सं. स्त्री.—एक प्रकार की तपस्या या प्रायश्चित ।

उ०—मुकतावलि तपु सारू चउ थऊ ए सिंहनिकीलिऊ ए । पाचमु आंबिल वरध मानु तपु तपी ए अरगुतर सवि गिया ए ।
—सालिभद्र सूरि

सिंहफलंग-स. पु.—डिंगल का एक गीत विशेष जिसके प्रत्येक चररा में चार भगरा होते हैं ।

सिंहरासि, सिंहरासी-स. स्त्री. [स. सिंहराशि] ज्योतिष में बारह राशियो के अन्तर्गत एक राशि विशेष ।

सिंहल, सिंहलदिव, सिंहलदीप, सिंहलद्वीप-स. पु.—भारत के दक्षिरा में स्थित एक प्राचीन जनपद या द्वीप जो मतान्तर से आधुनिक लंका ही माना जाता है ।

उ०—१ सिंहलदिव-उ हार, नागर कूलनी गजवडि........ ।
—व. स.

उ०—२ सिंहल देस मैं गाधरब सेन नाव रौ राजा हौ । गाधरबसेन री कूंटरी-फररी कवरी पदमरगी रै हीरांमरा नाव रौ मिठ्ठू हौ जिको ग्रोर उड गयौ । -चितराम

रू. भे.—संघल, सघलदीप, सघलद्वीप, सघलि, सघलिदीप, संघ-लिद्वीप, सघलौ, सघलीदीप, सघलीद्वीप, सिंगल, सिंगलदीप, सिंगलद्वीप, सिंघलदीप, स्यघल, स्यंघलदीप, स्यघलद्वीप ।

सिंहळी-सं पु —शृगाल ।

उ०—सादूळउ एक अनेक सिंहळी, घूमर भिंयइ फेरतउ घम ।
— महादेव पारवती री वेलि

सिंहलोक-स पु सिंह समुदाय ।

उ०—भिग मसाधर की मसाल मीढता, सिंहलोक ओपमा किसी । अच्छर भिसु सकत रइ आगइ, जग अचरिज जोवता जिसी ।
—महादेव पारवती री वेलि

सिंहवाहणी देखो सिंघवाहणी' (रू भे.) (डिं. को.)

सिंहविक्रम, सिंहविक्रमांक-स. पु. [स. सिंहविक्रम] घोडा, अश्व ।
(डिं. को.)

सिंहविक्रांत-१ सिंह की चाल ।
२ घोड़ा ।

सिंहसत, सिंहस्थ—देखो 'सिंगसट' (रू. भे.)

उ०—ताहरा पुरोहित अरज कीवी—मास अेक पछै सिंहसत लागसी सौ महिना तेरह रहसी तौ पछै साहो करस्यां ।
—पलक दरियाव री बात

सिंहसेन-स पु —पाडव पक्ष का एक योद्धा जिसका वध द्रोणाचार्य के हाथो से हुआ था ।

सिंहांण - देखो 'सिंह' (मह; रू. भे)

उ०—सिंहांण चढै करवी सहाय, राखजै पीठ नारायरा राय ।
—पा. प्र.

सिंहार—देखो 'संहार' (रू. भे) (डिं. को.)

सिंहारणौ, सिंहारबौ—देखो 'सहारणौ, सहारबौ' (रू. भे.)

उ० बे कर जोडी करी बीनती, आसापुरी अवधारि । सातल भणइ भाजि तू सकट, असुर सबै सिंहारि ।—कां. दे. प्र.

सिंहारियोड़ौ देखो 'संहारियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. सिंहारियोड़ी)

सिंहालय-स. पु. यौ. [स. सिंह+आलय] सिंह की मांद, सिंह की गुफा ।

उ०—तुरकन कै आगम तदन, कर गहि ऐचै काळ । आयै जुत्थ पै जुत्थ मनु, सिंहालय संगाळ ।—ला. रा.

सिंहावलोकरा, सिंहावलोकन-स. पु.—१ सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना ।

२ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं। (वि. प्र.)

३ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में चार चौकल सहित अन्त में सगण होता है। (र. ज. प्र.)

रू. भे —सिंघविलोक।

सिंहासण, सिंहासन—सं. पु. [सं. सिंहासन] एक विशेष प्रकार का आसन जो राजाओं, महाराजाओं एवं बादशाहों के बैठने या देवमूर्तियों की स्थापना के लिए चौकी के आकार का बना होता है, जो बहुमूल्य रत्न, मणिकों आदि से सुशोभित होता है एवं इसके दोनो तरफ सिंह के मुख की आकृति बनी होती है।

उ०—१ आवियो सिंहासण राज इंद्र, आजियो सिवासण क्रीत धींद।—सू. प्र.

उ०—२ देव सेज्जा सिंहासण जांणौ रे, ज्योत ऊगा दह दिस भांणौ रे।—जयवाणी

उ०—३ राजरिद्धि दीठी निरमली, राय तणू सिंहासन वली। —का. दे. प्र.

२ योग के चौरासी आसनों मे से एक, जिसमे वृषण के नीचे सीवनी के दाये भाग मे बांये पैर की एडी रखना होता है। तत्पश्चात जांघ के ऊपर दोनो हाथो के पंजे की अगुलियां फैलाकर छाती निकालकर, मुंह फाड, जिह्वा को अच्छी प्रकार से बाहर निकाल कर नासिका के अग्रभाग को देखता हुआ स्थिर होकर बैठा रहना पड़ता है। इससे शरीर मे बल की वृद्धि होती है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

३ काम-शास्त्र मे सोलह प्रकार के रतिबंधो मे से एक।

४ देखो 'सिंहासनचक्र'।

रू. भे.—सघासण, सिंगासण, सिंघासण, सींगासण, सींघासण, स्यंगासण, स्यंगासन स्यघासण, स्यंघासन।

सिंहासनचक्र सं पु.—मनुष्य के आकार का सत्ताइस कोठो का एक चक्र जिसमे नक्षत्रो के नाम भरे रहते हैं। (फलित ज्योतिष)

सिंहिका-सं. स्त्री.—राहु की माता जो लंका के समीप समुद्र में रहती थी। लका जाते समय हनुमान ने इसे मारा था।

रू. भे.—सिंघका।

सिंही—१ आर्या (गाथा) छंद का एक भेद विशेष जिसमें तीन गुरु ५१ लघु से कुल ५४ अक्षर तथा ५७ मात्राए होती हैं। (र. ज. प्र.)

२ देखो 'सिंहणी' (रू. भे.)

सि—सं. पु. [स शि] १ शिव, महादेव। २ शिखर, चोटी।

३ सुक, तोता।

४ सुख। (एका.)

५ शुभ।

६ सौभाग्य।

७ शील।

सं. स्त्री.—८ शिखा।

९ अग्नि।

१० आशीष।

११ स्वस्थता।

१२ शान्ति।

वि.—हितैषी, शुभचिंतक।

सिआर—देखो 'स्याळ' (रू. भे.)

सिआल, सिआलक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे.)

सिआळौ—देखो सियाळौ' (रू भे)

उ०—१ सोही तद रिणमला रै घरै इसड़ी वडावड हुती। अबा-यचो सिआळै जैताजी रो मेलीयो पहरता।—राव मालदेव री बात

उ०—२ ऊनाळी आछो नही. बरसाळो महमंत। सिआळै मत सचरो, कांमण बरजै कंत।—अग्यात

सिउं—देखो 'स्यूं' (रू. भे.)

उ०—१ वणि वलता अम्ह रहइं अजीय सत्र सिउं सिउं करेसिइं। राजरिद्धि अम्ह तणी लईय जेण हिव सिउं हरेसिउं। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ कूडउ बोलइ घरमपुतु, हथीयार छडावइ। छेदिउ मस्तकु द्रस्टद्युमनि, क्रमु सिउं न करावइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ आज जीवी कहु सिउं कीजइ। ताहरइ नयरि गो हुरि लीजइ।—सालि सूरि

उ०—४ महासती सिउं कुणि हास्य कीजइ। तु जीविवा कौचक नीर दीजइ।—सालिसूरि

सिकंजौ—स. पु. [फा. शिकंजः] १ किसी वस्तु को कसकर दबाने का एक यंत्र विशेष।

२ जिल्दसाजी का एक छोटा यंत्र जिसमें किताब या कागजों को दबाकर किनारे काटे जाते हैं या गोलाई निकाली जाती है।

३ प्राचीन काल का एक काष्ठ का यंत्र जिसमें अपराधियों के पैर कस कर यत्रणा दी जाती थी।

४ वह तागा जिससे जुलाहे घुमावदार बंद बनाते हैं।

५ रूई की गाठ बाधते समय दबाव देने का यत्र, पेच।

६ ऊख, तेल आदि पेरने का कोल्हू।

सिकंदर—स. पु. [फा] विश्व प्रसिद्ध एक यूनानी सम्राट जो मकदूनिया के राजा फैनकूस का बेटा था और अरस्तू का शिष्य था।

उ०—कलाकार नीतिग्य पंडित, बुद्ध सिकंदर लापडा। माटी रा अवतार मारा, बिड खधेड़ै जापड़ा।—दसदेव

वि—१ तीव्र, तेज।

२ महान्।

३ अच्छा, श्रेष्ठ।

उ०—मुसाफरा फेर इम्टरेवां री सिवरण करघो, पण आज सिव-रण अक्यारथ अखावण लागग्यो; फेर भी हाथ तमं सिकंदर

हौ, अर समदर सिलामी लेयर मधरौ पडग्यौ।

—एक बीनणी दौ बीन

सिक—देखो 'सिख' (रू. भे.)

उ०—नानग सग्वर भरियौ नीकौ, फुर्के लोग पीवण ईं फीकौ। ठगराजी गादी री ठीवौ, फेर सिकां कर दीनौ फीकौ।—ऊ. का.

सिकटासुर—देखो 'सकटासुर' (रू. भे.)

उ०—ताड वृक्ष अमूप्या कान्हड, सिकटासुर संघारचा। नड कूवड नइ भंयण कराव्या, खड खड लवक मारचा।—रुकमणी मगळ

सिकणौ, सिकबौ-क्रि अ.—१ रोटी आदि खाद्य पदार्थ का अगारे या ताप पर पकना।

उ०—बापड़ै सा'ब रौ कसूर कौ हौ नी सोगरी व्है ई अंडी खीरा माथै सिक्योडो नै सा'ब जे उण नै पलेट समझ गिया तौ उण रौ घणौ कसूर कौ हौ नी।—चितराम

ज्यूं—रोटी सिकणी, चीणा सिकणा।

२ घी, तेल आदि डाल कर किसी पदार्थ का आंच पर भुनना।

ज्यूं—सेतळ सिकणौ, आटौ सिकणौ।

३ तेज धूप, आग या अत्यन्त गर्म वातावरण में गरमी पाना, तपना।

उ०—१ चमकंता डागल गोडा चिक चिक्ता, जंतू जळ रिकता सिकता मैं सिकता।—ऊ. का.

उ०—२ बिरखा री घणी ग्रोळू आवती तौ घोड़ा माथै बैठ बिना मतलब काकड़ मैं कुदडका मारतौ। रजी सूं भखभूर व्हैतौ। तावड़ा मैं सिकतौ।—फुलवाड़ी

४ तपना, गर्म होना।

उ०—सिकती सिकता सेक्ळै, मार अनोखी मार। तेल छिड़क तातौ तजण, तणिक न धरम तयार।—रैवतसिंह भाटी

सिकणहार, हारौ (हारी), सिकणियौ—वि०।

सिकिओडो, सिकियोडौ, सिक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिकीजणौ, सिकीजबौ—भाव वा०।

सिकता-सं. स्त्री. [सं.] १ बालू रेत धूलि।

(अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ चमकंता डागळ गोडा चिक चिक्ता, जतू जळ रिकता सिकता मैं सिकता।—ऊ. का.

उ०—२ सिकती सिकता सेक्ळै, मार अनोखी मार। तेल छिड़क तातौ तजण, तणिक न धरम तयार।—रैवतसिंह भाटी

२ रेतीली भूमि।

सिकताव-सं. पु.—शरीर के किसी रुग्ण अंग पर गर्म वस्तु, गर्म पानी या बिजली द्वारा किया जाने वाला सेक।

उ०—लूण रा सिकताव सूं लोई बिखरतौ नीं दीस्यौ तौ नेगड रा पांन एक जूट कर बांरौ सेक करचौ।—फुलवाड़ी

सिकदार-सं. पु. [फा. शिकदार] १ किसी क्षेत्र विशेष का पदाधिकारी।

वि. वि.—मुगलकाल मे सिकदार, परगने के चार अधिकारियों मे से एक प्रमुख अधिकारी होता था। वह परगने मे सामान्य प्रशासन के लिए उत्तरदायी होता था। परगने में शान्ति एव सुव्यवस्था बनाये रखने के अतिरिक्त काश्तकारों द्वारा लायी गयी मालगुजारी की रकम का भी ध्यान रखता था। खजाने के कर्मचारियो की निगरानी रखने के साथ साथ वह फौजदारी के मामले भी निपटाया करता था। किन्तु मजिस्ट्रेट के रूप मे उसके अधिकार बहुत ही सीमित थे।

२ राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके पास राज्य की मुद्रा या मोहर रहती हो, टकसाल का अधिकारी।

३ कोतवाल।

उ०—१ गोयद भगवांनो फतौ, अै धांधलन उदार। रैणायर प्रोहित रिधु, द्वालदास सिकदार।—रा. रू.

उ०—२ पांच पचीसू प्रोळीया, छठौ मन सिकदार। जनहरीया सुन्य सहर का, चेतन चौकीदार।—अनुभववांणी

रू. भे.—सिकादार, सीकदार।

सिकदारी-स. स्त्री.—१ सिकदार का पद व कार्य।

उ०—घट मैं अजपा जाप जपेसां, धरिस्या ध्यांन सदारी। प्याला भरि भरि पीया रांमरस, घरि आई सिकदारी।—अनुभववांणी

२ एक प्रकार का कर विशेष।

रू. भे.—सीकदारी।

सिकम-स. पु. [फा. शिकम] उदर, पेट। (बा. दा. ख्यात)

सिकमी-वि—१ पेट सम्बन्धी।

२ जन्म सम्बन्धी, पैदाईशी।

३ भीतरी, आतरिक।

सिकमीकास्तकार-सं पु. यौ. [फा. शिकमीकाश्तकार] अन्य काश्तकार का खेत जोतने वाला कृषक।

सिकर—देखो 'सिखर' (रू. भे.)

सिकरवार-सं. पु.—क्षत्रियो की एक शाखा।

सिकरौ-सं. पु [फा. शिकरा] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

उ०—कुत्तो मिन्नियां नै मारता विचार करै नी, मिन्नियां ऊंदरा नै मारता विचार करै नी, बाज अर सिकरा पंछियां नै मारता विचार करै नी।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सकरौ।

सिकल—देखो 'सकल' (रू. भे)

उ०—१ राम सूं बिमुख गेवण रसा, धूम्रपांन मुख मैं धरै। तूं देख सिकल होकै तणी, क्यूंकि अकल हांणी करै।—ऊ. का.

उ०—२ सहज चाल संगत समझ, वाणी सिकल वणाव। इता प्रकारां अवस है, गोला तणौ जणाव।—बां. दा.

सिकलात-सं. पु.—बहुमूल्य ऊनी वस्त्र की बनी बनात।

उ०—१ लाल हरी सिकलात जिलह जाळियां अजोवां। रसां कसै

रेसमा, हेम रूपी हरि हौदा ।—सू प्र.

उ०—ज्या भक्ति तखत नयद अमातां, सबज जियां ऊपरि सिकलातां ।—सू. प्र.

उ०—३ इण आराद निद्रा तदि आवै, अरुण भीणा सिकलाति उठावै ।—सू प्र.

सिकळी—स. स्त्री. [अ. सैकल] धारदार हथियारो को मांजने और उन पर सान चढाने की क्रिया ।

सिकळीगर, सिकळीघर—स. पु — १ वह व्यक्ति जो धारदार हथियार को मांजने और उन पर सान चढाने का कार्य करता है ।

उ०—१ इयनूं साथ लेय सिकळीगर और मणियार वसै जठै जावौ श्रौ माटी होसी तौ हतियार लावसी वैर हुवै तौ मणिहारी वस्तुवां जोयसी श्रा परीक्षा छै ।—रायधण री बात

उ०—२ काया लागौ काट, सिकळीघर सुधरै नही । निरमळ होय निराट, भेंट्यां तुझ भागीरथी ।—प्रथ्वीराज राठौड

२ हिन्दु लुहारो का एक भेद विशेष । (मा. म.)

(मि. सेरणिया)

रू. भे.—सकळीगर, सकळीघर ।

सिकसा—देखो 'सिक्षा' (रू भे.) (डिं को.)

सिकस्त—सं. स्त्री. [फा शिकस्त] हार, पराजय ।

उ०—१ तठै वेढ हुई, तिण मै पठाणा री फौज सिकस्त पाय भाज नीसरी ।—द दा

उ०—२ मेर मीणा नै सिकस्त देना ही पाछै मूं प्रथ्वी री पुड भुकावनौ बडै वेग आयौ ।—व भा.

सिकादार—देखो 'सिकदार' (रू. भे.)

सिकायत—स. स्त्री [अ. शिकायत] १ अपराधपूर्ण या अनियमित कार्यों की रोकथाम हेतु सम्बन्धित विभाग या अधिकारी के पास भेजी जाने वाली सूचना, कम्पलेण्ट, रिपोर्ट ।

उ०—राजा कान रा काचा हुवै है । वै सिकायत री तह मैं कदै ई कोनी जावै ।—नैणसी री साकौ

२ उद्दण्ड, अन्याय या शरारत के विरुद्ध उठाई जाने वाली आवाज आपत्ति, असतोष ।

उ०—कोई पण बात री हद व्हिया करै । सेवट सूरज री सिकायत प्रिंसीपल खनै अर उण रा बाप खनै पूगी । प्रिंसीपल री तरफ सूं उणनै ढवक मिळी अर सेठजी कानी सूं म्हनै कागज मिळ्यौ ।

—अमर चूनड़ी

३ चुगली ।

उ०—आप तौ उणनै दीवाना बणायो है अर वौ जिण हांडी मैं खावै उणनै इज फोड़ै । मारवाड सूं नित रोज आपरी साची झूठी सिकायतां दिल्ली पूगावै ।—अमर चनड़ी

४ निंदा, बुराई ।

५ उपालंभ, उलाहना ।

६ शरीर में उत्पन्न होने वाली कोई बीमारी या उसका कष्ट ।

सिकार—सं. पु. [फा. शिकार] १ किसी पशु-पक्षी आदि को मारने का कार्य, आखेट ।

उ०—१ समाजोग री बात कै एक दिन उठारौ राजा सिकार नै निकळ्यौ । आरूंणा भाखर री ढाळ मैं झाड़ी आयोडी ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ जावां तीतर लार, कर हाका भागै किता । मिघा तणी सिकार, रमणी मुसकल राजया ।—किरपाराम

उ०—३ म्हारी मारूडी रमै छै सिकार ।—रसीलै राज रौ गीत

पर्याय.—आखेट, आखोटण, पापकरण, म्रगया ।

क्रि. प्र.—आणौ, करणौ, खेलणौ, फसणौ, रमणौ, होणौ ।

२ उक्त प्रकार से मारा हुआ जानवर या पक्षी ।

३ मासाहार ।

मुहा.—सिकार व्हैणौ=अधिकार मे होना, प्रेम में फसना ।

रू. भे.—सकार ।

सिकारखांनौ—सं. पु.—देशी राज्यो का वह विभाग जो शिकार किये जाने वाले जानवरो की रक्षा एव देख-भाल का कार्य करता था ।

सिकारगाह—सं. स्त्री.—वह स्थान जहाँ शिकार किया या खेला जाता है ।

सिकारणौ, सिकारबौ—क्रि. स —स्वीकार करना । (ढूंढी)

सिकारपुरी—सं. पु.—१ घोड़ी की एक जाति विशेष ।

२ इस जाति या नस्ल का घोड़ा ।

सिकारबंद—स. पु [फा शिकारबंद] घोडे की दुम के पास चारजामें के पीछे शिकार लटकाने या आवश्यक सामान बांधने के लिए लगाया जाने वाला तस्मा ।

सिकारियोड़ौ—भू. का. कृ.—स्वीकारा हुआ ।

(स्त्री. सिकारियोड़ी)

सिकारी—वि. [फा. शिकारी] शिकार करने वाला, आहेरी, आखेटक ।

उ०—एक दो सिकारी कुत्ता हिम्मत करनै झाड़ी रै मांयनै घुसिया तो घुमता पाण डाकी वानै कागद रै ज्यूं चरड़ करता चीर नै थूंड सूं बारै उछाळ दिया ।—अमर चूनड़ी

उ०—२ नाहर 'करन' तणो नर नाहर, जवनां गजां सिकारी जाहर ।—रा रू.

सं पु.—१ बधिक, बहेलिया ।

२ शिकार करने वाला व्यक्ति ।

स स्त्री.—३ एक प्रकार की तलवार विशेष ।

रू. भे.—सकारी ।

सिकाल—सं. पु.—एक प्रकार का अशुभ घोडा जिसका अगला दाहिना तथा पिछला बांया पैर सफेद होता है ।

सिकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ अंगारे या ताप पर पका हुआ । (रोटी-चना) २ घी, तेल आदि डाल कर भुना हुआ. ३. तेज धूप या

आग से गर्मी पाया हुआ, तपा हुआ. ४ तपा हुआ, गर्म हुवा हुआ।
(स्त्री सिकियोड़ी)

सिकिरि—देखो 'सिखर' (रू. भे.)
उ०—चमर चिंध सिकिरि झमालु, गयरांगरा छायउ। सिरिदिवि नंदरा दंसराथु दस दिसि जरा धायउ।—जयसिंह सूरि

सिकुड़ण—सं. स्त्री—१ संकोच, आकुंचन।
२ खिन्न-चित्त या उदास होने की क्रिया या भाव।
३ कम होने या घटने की क्रिया या भाव, सकुचन।
४ शिकन, सिलवट।
५ एकत्रीकरण।
रू. भे.—संकुड़ण।

सिकुड़णौ, सिकुड़बौ—क्रि. अ.—१ संकुचित होना, तंग होना, छोटा होना।
२ कम होना, घटना।
३ सकोचयुक्त होना, शर्माना।
४ खिन्न-चित्त या उदास होना।
५ शिकन पड़ना सिलवट पड़ना।
६ एकत्र होना।
७ सिमटना।
सिकुड़णहार, हारौ (हारी), सिकुड़णियौ—वि०।
सिकुड़िओड़ौ, सिकुड़ियोड़ौ, सिकुड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिकुड़ीजणौ, सिकुड़ीजबौ—भाव वा०।
संकुड़णौ, संकुड़बौ, सकुडणौ, संकुडबौ, सुकडणौ सुकडबौ, सुकुड़णौ, सुकुड़बौ—रू० भे०।

सिकुड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सकुचित हुवा हुआ, तंग हुवा हुआ २ कम हुवा हुआ, घटा हुआ. ३ सकुचित या शर्माया हुआ. ४ खिन्न या उदास. ५ शिकन या सिलवट पड़ा हुआ. ६ एकत्र हुवा हुआ. ७ सिमटा हुआ।
(स्त्री. सिकुड़ियोड़ी)

सिकोड़णौ, सिकोड़बौ—क्रि. स.—१ संकुचित करना, तंग करना, छोटा करना।
२ कम करना, घटाना।
३ संकोच कराना, शर्म कराना।
४ खिन्न या उदास करना।
५ शिकन या सिलवट पटकना।
६ एकत्र करना।
७ समेटना।
सिकोड़णहार, हारौ (हारी), सिकोड़णियौ—वि०।
सिकोड़िओड़ौ, सिकोड़ियोड़ौ, सिकोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिकोड़ीजणौ, सिकोड़ीजबौ—कर्म वा०।

सिकोड़ियोड़ौ—भू. का कृ.—१ संकुचित किया हुआ, तंग किया हुआ, छोटा किया हुआ. २ कम किया हुआ, घटाया हुआ. ३ संकोच कराया हुआ ४ खिन्न या उदास किया हुआ. ५ शिकन या सिलवट पटका हुआ. ६ एकत्र किया हुआ. ७ समेटा हुआ।
(स्त्री. सिकोड़ियोड़ी)

सिकोतरी—स. स्त्री.—१ पिशाचिनी, चुड़ैल।
उ०—सूर वीरां रा काळजा वास्तै डाकणी सिकोतरी आवै छै। जिकै राजहंस हुवै हुवै रिझावै छै।—पना
२ दूती।
३ दुर्गा का एक नामान्तर।
उ०—जिकै ठौड सूं कूदियौ हुतौ, तिकरा ठौड रौ नांम पाखड कहीजै छै। पछै गयौ। पछै मही पै नू सिकोतरी रौ वर हुवौ।
—नैणसी

सिकोरौ—स. पु.—मिट्टी का बना कटोरानुमा पात्र विशेष।
उ०—पछौ जळ पय पियै, ठींगळा ठडी कोरा। वासै वाडी विकै, दूध अर साग सिकोरां।—दसदेव

सिकौ—स. पु.—[अ सक्का] १ मशक से पानी भरने का व्यवसाय करने वाला मुसलमान, बिहिस्ती।
उ०—१ तरै गुढा रा लोग महाजन, छोकरी, हीडागर, घाची, मोची, सिकौ महेस जी सै गिली करै जै बीजौ साथ रावजी रा तौ घाची हीडागर कस करै।—राव चद्रसेन रो बात
उ०—२ हमें मूळवौ रोजीनां पाणी पावै सिकौ हुय, रोज रौ काढरा रौ इलाज करै पण दाव लागै नही।
—मूळवै सागावत री बात
२ देखो 'सिक्कौ' (रू. भे.)
उ०—एक सिकौ इक साल कौ, घडीयौ एकण घाट। ह्रीया कहि द्यौ पारखु, जैसौ पेट'र थाट।—अनुभववाणी
३ देखो 'सकौ' (रू. भे.)
उ०—सुर जेठ अनै संकर सिकौ, अहि अमर मानव डरा। परमेस निभौ थारी पहुंचि, परा परा सिगळां परा।—पी. ग्रं.

सिक्कादवात—सं. स्त्री.—राजाओं द्वारा महत्वपूर्ण पट्टों, परवानों आदि पर लगाई जाने वाली मुहर, मुद्रा।

सिक्कौ—स. पु. [अ. सिक्कः] १ निर्दिष्ट मूल्य की कोई धातु मुद्रा जो वस्तुओं के क्रय-विक्रय या लेन देन में विनिमय के साधन के रूप मे काम आती हो।
२ किसी व्यक्ति का रौब या प्रभाव।
मुहा.—सिक्कौ जमणौ=प्रभाव जमना, असर होना, रौब पड़ना।
३ मुहर, छाप।
४ देखो 'सिकौ' (रू. भे.)
उ०—पखाळा भरै जम्म भैसौ सप्राजै, सुरा राव सिक्कौ छिड़क्काव साजै।—सू. प्र.

रू. भे.—सिकौ।

६ सत्यनामी साधुओं में एक साथ पंक्तिबद्ध करने के बाद उठने का सम्बोधन।

सिक्ख—१ देखो 'सिख' (रू. भे.)

२ देखो 'सिस्य' (रू. भे.)

उ०—तिण अवसर तिण कालौ जी, वड सिक्ख विसालौ जी।
—जयवांणी

३ देखो 'सीख' (रू. भे.)

उ०—दुज्जोहण घर घरणि सामि सिक्ख रडतीय मग्गइ। धम्मपुत्र वयरोण पुण इदपुत्तु तिणि मगि लग्गई।—सालिभद्र सूरि

सिक्षक-सं. पु. [सं. शिक्षकः] १ शिक्षा देने वाला, पढ़ाने का कार्य करने वाला, गुरु, अध्यापक।

उ०—सामरथ्य स्रेस्ठ, जग सकळ जेस्ठ। आ उदय अस्त, सिक्षक समस्त।—ऊ. का.

२ कुमार कार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

सिक्षण-सं. स्त्री. [सं. शिक्षण] शिक्षा देने का कार्य, तालीम।

सिक्षा-सं. स्त्री. [सं. शिक्षा] १ किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया।

२ गुरु के पास विद्याभ्यास या विद्याध्ययन।

उ०—म्हनै गुनीस करोड भूखा-नागा मिनख सतावण लागग्या, जिका बिना रोटी-रोजी, बिना घरबार, बिना सिक्षा रोज दिनुग्या उठै अर रात नै भूखै पेट सोवण रौ जतन करै है।—ति'सकू

३ उपदेश, सलाह।

क्रि. प्र.—दैणी, लैणी, मिळणी, पावणी।

४ छः वेदांगों में से एक जिसमे वेदों के वर्णों, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण या विवेचन है।

५ किसी अनुचित कार्य का बुरा नतीजा, दण्ड, सबक।

रू. भे.—सिकसा, सिख्या, सिच्छा, सिच्छा।

सिक्षागुरु-सं. पु. यौ. [सं. शिक्षागुरु] विद्या पढ़ाने वाला गुरु।

सिक्षापद-सं. पु. [सं. शिक्षापद] १ उपदेश।

२ विनयपिटक का एक प्रकरण (बौद्ध)।

सिक्षारथी-सं. पु. [सं. शिक्षार्थिन्] शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति, विद्यार्थी।

सिक्षालय-[सं. शिक्षालय] वह स्थान जहाँ शिक्षा दी जाती हो, विद्यालय।

सिक्षाविभाग-सं. पु. यौ. [सं. शिक्षाविभाग] विद्यालयों तथा अन्य शैक्षणिक कार्यों की व्यवस्था एवं नियंत्रण रखने वाला सरकारी विभाग।

सिक्षित-वि. [सं. शिक्षित] १ विद्वान, पंडित।

२ चतुर, दक्ष।

३ साक्षर।

रू. भे.—सिच्छित।

सिखंड-सं. पु. [सं. शिखण्ड] १ मोर की पूंछ।

२ चोटी, शिखा।

३ मुकुट।

उ०—अखंड ब्रह्मचरज कै सिखड खड अग्ग्ज कै। मधीर ही हमीर मैं गभीर भीर गज्जतै।—ऊ. का.

४ देखो सिखंडी' (रू. भे.)

सिखंडणी, सिखंडनी सिखंडिनी—देखो 'सिखंडी' (रू. भे.)

सिखंडी-सं. पु. [सं. शिखण्डिन्] १ मोर, मयूर।
(अ. मा; डिं. को; ह. ना. मा.)

२ मुर्गा।

३ बाण, तीर।

४ पांचाल देश के राजा द्रुपद का पुत्र जो पहले 'शिखंडिनी' नामक कन्या के रूप में उत्पन्न हुआ था, तत्पश्चात शिवजी की कृपा से उसे पुरुषत्व प्राप्त हुआ।

उ०—सीमु सिखंडी तणउ तामु छेदीउ छलु साधीउ। पाय पराभव नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ।—सालिभद्र सूरि

वि. वि.—देखो 'अंबा'।

५ विष्णु का एक नामान्तर।

६ शिव।

७ एक शिवावतार जो हिमालय पर्वत के शिखण्डिन् नामक शिखर पर हुआ था।

८ कृष्ण का एक नामान्तर।

९ यतीश्वर।

१० स्वामि कार्तिकेय। (ह. नां. मा.)

११ राम की सेना का एक बंदर।

सं. स्त्री.—१२ मयूर की पुच्छ।

१३ पीली जुही।

वि.—१ शिखा वाला, किलंगीदार।

२ नपुंसक।

३ कायर, डरपोक।

सिख-सं. पु. [सं. शिष्य] १ गुरु नानक व गोविन्दसिंह आदि दश गुरुओं का सम्प्रदाय एवं इस सम्प्रदाय का अनुयायी, पंजाबी-सरदार।

[सं. शिखिन्] २ मस्तक, सिर।

३ शेर, सिंह। (ना. डिं. को)

सं. स्त्री.—४ पतंग। (अनेका)

५ देखो 'सिखा' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

उ०—१ मुख सिख सधि तिलक रतन मैं मंडित, गयौ जु हुंतौ पूठि गळि।—वेलि

उ०—२ सिख दीप स्रवण मुख बीज ससि, चूर स्याम मूरति

चसम। सुखपाळ चाल उर ढाल सम, पलंग याल मुखमल पसम।

—सू. प्र.

६ देखो 'सीख' (रू. भे.)

उ०—सिख दियै मुनिराया जी।—धरम पत्र

७ देखो 'सिस्य' (रू. भे.)

उ०—कपट न मावै भगति मैं, यु आखिन मैं तुस। हरीया सिख सतगुरु बिना, हयनी बिन अकुस।—अनुभववाणी

सिखखंडौ–सं. पु.—एक जाति विशेष का घोडा। (शा हो.)

सिखजनम–सं. पु. यौ. [सं. शिखा-जन्म] १ दीपक। (अ. मा)

२ ज्योति, प्रकाश।

सिखदीपन–स. पु यौ.—केसर। (ह ना. मा.)

सिख-नख—देखो 'नखसिख'।

उ०—भामणि स्त्री व्रजराज घणा हित सूं भजै। सिखनख वरणू जास क बुद्धि समापजै।—बां दा

सिखर–स. पु. [स. शिखर] १ पहाड़ की चोटी या सब से ऊपरी भाग, शृंग। (डि. को)

उ०—कळा तिमगळ किता वरण गुण दोस विचारक। पबै सिखर इम गुपत, किता गुण औगुण कारक।—रा. रू.

पर्याय—कूट, सानु, सिंग।

२ ऊपरी भाग, ऊंचा स्थान।

उ०—दिस मारू खुरसांण तणा दळ, वाधै जाण प्रळै चा बद्दळ। अण, तर, थळां, सिखर खु' तूटै, फौजां घमा परब्बत फूटै।

—रा रू.

३ किसी प्रासाद या मंदिर आदि का सब से ऊंचा भाग, गुम्बद या कलश।

उ०—मदिरै गौख सु पदमराग मैं, सिखर सिखि रमै मदिर सिर।

—वेलि

४ मण्डप, गुम्बद।

५ कगुरा, कलश।

६ वृक्ष की फुनगी।

७ चुटिया, शिखा।

८ तलवार की धार, बाढ़।

९ सिरा, अग्रभाग, नोक।

१० बगल।

११ रोमाच।

१२ चुन्नी की तरह का एक रत्न।

१३ ध्वजा या छत्र।

१४ प्राचीन काल का एक अस्त्र।

१५ जैनियो का प्रसिद्ध तीर्थ।

१६ तान्त्रिक पूजन में बनाई जाने वाली अगुलियों की एक मुद्रा।

१७ गौत्र। (अनेका.)

वि.—शिर पर्यन्त, ऊचा, ऊपर।

उ०—मन पौणा मिळ लियौ लाटौ, सिखर आई साख। ग्यांन कौ भरि गूण गांठी, लदै बाळद लाख।—अनुभववाणी

रू भे.—सखर, सखरउ, सख्खर, सिंहर।

सिखरण, सिखरणी–सं. स्त्री. [सं शिखरिणी] १ दही व चीनी के योग से बनाया हुआ एक गाढा पेय पदार्थ जिसमे केसर, कपूर, मेवे आदि भी डाले जाते है। मतान्तर से—भैंस या गाय के दही को मथ कर उसमे मिश्री इलायची, काली मिर्च और भीमसेनी कपूर मिलाकर बनाया जाने वाला पेय पदार्थ। (अमरत सागर)

उ०—१ तठा पछै सिखरण रै पगा दही बाधौ थौ तेरी गळणी खुलै छै। माहै बूरौ घात, अधोतरै रूमाल सू छाणजै छै. मसाला माहै लाग इलायची मिरच घालजै छै। इण भात रौ सिखरण कर माटकी भरीजै छै।—रा सा स.

उ०—२ जीमण सिखरण भाय जिमावै, मेवा नूंत अनेक मिळावै।

- सू. प्र.

उ०—३ बदांमी साबूनी सरेसै जुडी, भाति भाति सिखरणी भांति भाति पुड़ी।—सू. प्र.

२ देखो 'सिखरिणी' (रू. भे.)

रू भे.—सखरण।

सिखरबंद, सिखरबंध–सं. पु. [सं. शिखरबन्ध] वह मन्दिर या देवालय जिसके ऊपर शिखर बना हुआ हो।

उ०—बोहरै संतन १ देहुरौ सिखरबध खीठाकुरां रौ करायौ नै बावड़ी १ बधाई छै।—नैणसी

वि.—शिखर वाला, शिखरदार।

सिखरवासणी, सिखरवासिणी–सं. स्त्री. [सं. शिखरवासिनी] पर्वत पर निवास करने वाली दुर्गा या पार्वती।

वि. स्त्री.—पर्वत वासिनी।

सिखरा–सं. स्त्री. [स. शिखरा] १ मरोड़ फली।

२ विश्वामित्र द्वारा दी हुई राम की एक गदा विशेष।

सिखराळ, सिखराळौ–वि. [सं. शिखरिन् या शिखर+आलुच्] १ शिखर वाला, शृगवाला, चोटी वाला।

उ०—प्रळै काळ का पावस, आतसू का वक भुरजाळ। सिखराळ दुरंगू कै भड़, भिड़ज भूक काळ।—सू. प्र

२ शिखा वाला, किलगीदार।

३ नुकीला, तीक्ष्ण।

४ अग्रगण्य, अग्रणी।

उ०—सो जगरांम विजावत सारै, मार लियौ पुर सहर मझारै। सावण वद चवदस सिखराळै, गह जवना भागौ गुणचाळै।

—रा. रू.

५ शिरोमणि, श्रेष्ठ।

६ वीर, बहादुर।

७ दीर्घ, बडा। (अ. मा.)

सं. पु.—१ गढ, दुर्ग।

२ पहाड, पर्वत।

३ वृक्ष, पेड।

४ शिखरी नामक पक्षी।

५ मुर्गा।

६ मोर, मयूर।

रू. भे.—सखराळो।

सिखरावत-सं पु.—गहलोत वंशीय क्षत्रियो की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

सिखरिणी-सं स्त्री. [सं. शिखरिणी] १ उत्तम स्त्री।

२ रोमावली।

३ सत्रह अक्षरो का एक वर्ण वृत्त जिसके छठे व ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है।

सिखरी-स. पु. [सं. शिखरिन्] १ पर्वत, पहाड़। (अ. मा; डिं. को; नां. मा.)

२ वृक्ष, पेड़। (अ. मा; नां. मा; ह. ना. मा.)

३ दुर्ग, किला।

स. स्त्री.—४ एक राग विशेष। (कां. दे. प्र.)

रू. भे.—सखरी।

सिखरीस-सं. पु. यौ. [सं. शिखर+ईश] पर्वत, पहाड़। (ह. नां. मा.)

सिखवांन-सं. स्त्री. [स. शिखावती] १ द्रौपदी। (अ. मा.)

[सं. शिखावत्] २ अग्नि, आग। (अ. मा; ह. ना. मा.)

सिखवाळ-स. पु.—ब्राह्मणों का एक वर्ग विशेष। (मा. म)

सिखसार-स. स्त्री. [सं. शिखासार] अग्नि, आग। (अ. मा.)

सिखा-सं. स्त्री. [सं. शिखा] १ दीपक की लौ, ज्योति।

२ प्रकाश की किरण।

३ अग्नि, आग। (अ. मा.)

४ सिर की चोटी, शिखा।

५ मोर, मुर्गा आदि पक्षियो के सिर की किलगी।

६ वेणी।

७ डाली, टहनी, शाखा। (डिं. को.)

८ शस्त्र की धार या बाढ।

९ वस्त्र की किनार।

१० केसर (अ. मा.)

११ तुलसी।

१२ मूर्वा, मरोड फली।

१३ जटामासी।

१४ बाल छड़।

१५ बच।

१६ शिफा

सं पु—१७ दीपक। (ना. मा.)

१८ मोर, मयूर। (ह. नां. मा.)

१९ शिखर, शृंग।

२० मित्र, दोस्त। (अनेका.)

२१ अंगारा।

२२ किसी वस्तु का नुकीला सिरा या छोर।

२३ चूड़ाकर्ण के समय मस्तक के बीच में छोडा जाने वाला केशों का गुच्छा, जो हिन्दुओं का जातीय व धार्मिक चिन्ह माना जाता है।

२४ एक वर्ण वृत्त जिसके विषम पदों मे २८ लघु मात्राएँ और अंत मे एक गुरु होना है तथा सम पदो मे ३० लघु मात्राएँ और अंत में एक गुरु होना है।

वि—१ प्रधान, मुख्य।

२ रक्त वर्ण, लाल। * (डिं. को.)

रू. भे.—सिख, सीखा।

सिखाई-स स्त्री.—१ शिक्षा देने की क्रिया या भाव।

२ शिक्षक का पारिश्रमिक।

सिखाओजल-सं पु [शिखा+उज्ज्वल] दीपक। (ह. नां. मा.)

सिखाजोत-स. स्त्री. [सं. शिखाज्योति] १ दीपक। (अ. मा.)

२ ज्योति, ज्वाला की लौ।

सिखाणौ, सिखाबौ-क्रि. स. ['सीखणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ किसी प्रकार की विद्या, शिक्षा, कला या कार्य के लिये शिक्षित करना, प्रशिक्षित करना, सिखाना।

उ०—इम कही नै समझाय स्वामीजी नै माही लै जाय नै वहिरायो ए कला पिण भायां नै स्वामीजी सिखाई दिसै।—भि. द्र.

२ नियमित अभ्यास कराना।

३ कठस्थ कराना, याद कराना, रटाना।

उ०—डाबडो नै तो जबाब सिखायोड़ो इज हो।—फुलवाड़ी

ज्यू—श्रो गीत मैं सेनजी नै एक दिन मैं सिखायो।

४ किसी को अपने उद्देश्य साधन के लिये अपने पक्ष की बात समझा कर तैयार करना।

उ०—राजा रो सिखायो कसाई वानै पटाया।—फुलवाडी

सिखाणहार, हारौ (हारी), सिखाणियौ—वि०।

सिखायोडौ—भू० का० कृ०।

सिखाईजणौ, सिखाईजबौ—कर्म वा०।

सिखावणौ, सिखावबौ—रू० भे०।

सिखाधर-स. पु. यौ. [स. शिखाधर] १ मयूर, मोर।

२ हिन्दू।

३ ब्राह्मण।

३ मुर्गा।

सिखाबंधण-सं. पु. यौ.—सिर के बालो को मिलाकर बांधने की क्रिया,

चोटी गूथना।

सिखावळ-सं. पु. [सं. शिखावलः] मोर, मयूर। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सिखावळी।

सिखामांण-स. पु.—विरोचन। (अनेका.)

सिखामण-स. स्त्री.—शिक्षा, उपदेश।

उ०—१ केमी समरण आया पछै, इण नैं किसी सिखामण दीध रे बाल।—जयवांणी

उ०—२ साधु देवै सखरी सिखामण तब तूं तिण सूं खीजे रे।
—जयवाणी

रू. भे.—सिखावण, सिखावन।

सिखायोड़ो-भू. का. कृ.—१ सिखाया हुआ, शिक्षित किया हुआ, प्रशिक्षित. २ कंठस्थ कराया हुआ, रटाया हुआ, याद कराया हुआ. ३ नियमित अभ्यास कराया हुआ. ४ समझाया हुआ, समझा कर तैयार किया हुआ।

(स्त्री. सिखायोड़ी)

सिखावण—देखो 'सिखामण' (रू. भे.)

उ०—१ वा राणियां री बलिहारी भ्रूण (गरभ) मैं हीज वा बाळकां नै काई तरै सिखावण देवै है सो दाई रा हाथ री नाळो री छुरी नैं साव (जनमतौ) हीज बाळक झपटै।—वी. स. टी.

उ०—२ हिवै रांणी सिखावण दै इसी, घणो पराक्रम फोड़ तप कीजो रे।—जयवांणी

सिखावणौ, सिखावबौ—देखो 'सिखाणौ, सिखाबौ' (रू. भे.)

उ०—रांम-लखण, प्रह्लाद ध्रू री, स्रवण, बुद्ध, मा'वीर री। वर प्रताप सिवा गांधी गुण, सीख सिखावौ धीर री।—टाबर-सईकड़ौ

सिखावन-सं. स्त्री. [सं शिखावत] १ आग, अग्नि। (ह. ना. मा.)

२ देखो 'सिखामण' (रू. भे.)

सिखावळी—देखो 'सिखावळ' (रू. भे.) (अ मा; ना. मा)

सिखावांन-स. स्त्री. [सं शिखिन्] १ आग, अग्नि।
(अ. मा; ह. नां मा.)

२ द्रोपदी। (अ. मा.)

स पु.—३ युधिष्ठिर की सभा में विराजने वाले एक ऋषि।

वि.—जिसके शिखा हो, शिखा वाला।

सिखि-सं. पु. [सं. शिखिन्] १ मोर, मयूर। (अनेका.)

उ०—मदिरै गोख सु पदमराग मैं, सिखरि सिखि रमै मदिर सिर।—वेलि

२ अग्नि।

३ कामदेव।

४ तीन की संख्या।

रू. भे.—सीखी।

सिखिध्वज-सं पु [स. शिखिध्वजः] १ धुंआ, धोम।

२ कार्तिकेय।

३ वह जिस पर अग्नि या मोर का चिन्ह बना हो।

४ मयूरध्वज राजा का एक नामान्तर।

५ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सिखिर, सिखिरि, सिखिरी-सं. पु. [सं. शिखरिन्] पर्वत, पहाड़।
(डिं. नां. मा.)

सिखिवाह, सिखिवाहण(न)-सं. पु. [सं. शिखिवाहन] स्वामि कार्तिकेय। (डिं. को.)

सिखी-सं. पु. [सं. शिखिन्] १ घोड़ा, अश्व।

२ मुर्गा।

३ दीपक।

४ पर्वत।

५ वृक्ष।

६ ब्राह्मण।

७ बाण।

८ जटाधारी साधु।

९ आग, अग्नि।

१० मोर, मयूर। (अ. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—कीध वैरि बढ कंत री, सह हसमां सेलोट। तूल झुंड जिम सिखी तुर, दपट उडावै दोट।—रैंवतसिंह भाटी

रू. भे.—सीखी।

सिख्खर—देखो 'सिखर' (रू. भे.)

उ०—सूवो सिख्खर दिन आवै जद कठै ही जेळ मैं पूरो सूरज दीखै।—दसदोख

सिख्या—देखो 'सिक्षा' (रू. भे)

उ०—१ कीरत कुळ कालेज, देज आयुणी सिख्या। लीला तितली रूप, ओखदा मागै भिख्या।—नारी-सईकड़ौ

उ०—२ नारदु पहुतउ सिख्या देवि, पडव बइठा ध्यानु धरेवि।
—सालिभद्र सूरि

सिग-सं. पु. [सं. शिखर] १ किसी पात्र में कोई वस्तु किनारों से ऊपर उठाकर शिखर के आकार की भरने की क्रिया या ढंग।

मुहा.—सिग चाढणौ=पूर्ण करना, ऊपर उठाना।

२ उक्त प्रकार का भराव।

३ ऊपर उठने की क्रिया।

उ०—सूवा रे दिवलो बळै नै लोळां सिग चढै। मोतीडां री लागी लड़ाझूम, सैंया ए उखरड़ी बधावौ म्हारै आवियो।—लो गी.

४ शिखर।

उ०—परगीत हुया सिग चढ तीयइ प्रब, जांगी सद गूंजीया जग। ईसर किया कवीसुर ईसर, उमयावर दइ तइ उदग।
—महादेव पारवती री वेलि

वि.—पूर्ण भरा हुआ।

रू. भे.—सिग्ग।

सिगड़ि, सिगड़ी–स. स्त्री. [सं. शकटी] १ भोजनादि बनाने के लिए मिट्टी या लोहे का बना चूल्हा, अगीठी। (डिं. को.)
उ०—दारू री फ़ैल घणी सुहायी, गोसनी आतशबाजी री नूर, जहूर निजर आयी। सूळा री गजक प्याला री छल पायबौ, सिगड़ी री तप फुलेल री मुगलायबौ।—पना
रू. भे.—सगडी।

सिगरल, सिगरी–वि. [स. सकल] १ सब, समस्त।
उ०—म्हे थानै कागद औ गाढा मारू मोकळघा आज्यौ सावणिया री तीज। कंवर बाई रा ढोला नै कहज्यौ जी सुमरा जी रै आजै सिगरल पावणा।—लो. गी.
२ सकुटुम्ब, सपरिवार।

सिगरेट–स स्त्री —तम्बाकू के बुरादे को कागज की छोटी नलिका मे भर कर तैयार की गई धूम्र-दण्डिका।

सिगळइ, सिगळई, सिगळउ, सिगलउ–क्रि. वि.—सर्वत्र, सब जगह।
२ देखो 'सगळौ' (रू भे.)
उ०—१ सेवक नइ समरचउ छइ सादा, जग सिगलउ जगइ जस-वादा।—स. कु.
उ०—२ कहइ सती प्रभू रूप प्रगट करि, सिगळउ ही देखइ ससार।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ हेमाचळ खेलता हसता, हसत दियउ मिना रइ हाथ। टूक कोइ आवी टूका, सिगळइ लिवइ अतेवर साथ।
—महादेव पारवती री वेलि

सिगळै सिगळैय—देखो 'सगळै' (रू. भे.)
उ०—१ इण भांत रु १५०००) रजपूत मुसलमान खालसै रा सिगळै देस रा आवै।—नैणसी
उ०—२ विजमल तुझ दीठे वीसरिया, सयळ तणा भूपति सिग-ळैय।—ईसरदास बारहठ
उ०—३ ताहरा बीजाणंद ईडर वागड, चांपानेर कछ सिगळै ही फिरियो।—सयणी री बात

सिगळौ—देखो 'सगळौ' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरां राजा कहै—खबर करो जु कुंण मरद हुतो। ताहरा सिगळां नुं खबर हुती जु सीह एक हरराम चहवाण मारीयो हुतो।—देवजी बगडावत री बात
उ०—२ राव केल्हण पुगळ विकूपुर वरसलपुर मीटासर हापासर सिगळी आ धरती भोगवतौ। पछै राव सेखो हुवौ तिण रै पेट धरती इण भात वटाणी।—नैणसी
उ०—३ देव कहै सिग्ळा दियौ, ईसाणंद आसीस। किलंग न जीतौ कापिरिस, जुध जीतौ जगदीस।—पी. ग्रं.
(स्त्री. सिगळी)

सिगाळौ—देखो 'सिघाळौ' (रू. भे.)

सिग्ग—देखो 'सिग' (रू. भे.)

उ०—पटवारी जी री व्याह सिग्ग चल्यौ, मूळी पटवारण वणी।
—दसदोख

सिघर—देखो 'सीघ्र' (रू. भे.)
उ०—महाराज तणी चिंता मिटै, विध इण आज विचारियां। सुभ काज वार रहसी सिघर, राजकवर पाधारियां।—रा. रू.

सिघळौ—देखो सगळौ' (रू. भे.)
उ०—सिघळी ही सेना सहित। इसा श्रीक्रणजी आया देखि ऊपरि पुहप वृस्टि होय छै।—वेलि टी.
(स्त्री. सिघळी)

सिघाळ, सिघाळौ—देखो सिंघाळौ' (रू. भे.)
उ०—१ भाटी जोधा मुहर भुजाळी, 'सकतो' 'भगवानोत' सिघाळी।—रा. रू.
उ०—२ मूगा 'उरजण' हरां सिघाळौ, पिड़ सूजो जादम प्रचाळौ।
—रा. रू.
उ०—३ चापा करण मुदै रूळ चाळा, साथ वळै राठोड सिघाळा।
—रा. रू.

सिघ्र—देखो 'सीघ्र'।

सिघ्रधाव–स. पु.—हरिन। (अ. मा.)
वि.—तेज धावक, तीव्र गति वाला।

सिड़–सं. स्त्री.—१ सनक, पागलपन।
२ धुन।
३ सड़ने की क्रिया या भाव, सड़ाध।

सिड़णौ, सिड़वौ—देखो 'सड़णौ, सडबौ (रू. भे.)
उ०—१ सोग हटावण सधौ, सोग मैं पड़िया सिड़स्यौ। लोक रीत सू लधौ, लोक सू चिडस्यौ लड़स्यौ।—ऊ. का.
उ०—२ अमल री आस माही उळझ, समझदार निसदिन सिड़ौ। आ बात अजब उलटी अकल, बिन बिगडयां क्यू बीगड़ौ।
—ऊ. का.
उ०—३ म्हारे आ इत्ती माया भेळी व्हियोड़ी सिड़ै है अर पाडो-सिया, रे पेट भरणा रा ई जांदा पड़ै।—फुलवाड़ी

सिड़सट–वि. [सं. सप्तषष्ठि, प्रा. सत्तसट्ठि] साठ और सात के योग के बराबर, सड़सठ।
रू. भे.—सिडसठ।

सिड़सटमौ–वि.—जो क्रम मे छियांसठ के बाद पड़ता हो।
रू. भे.—सिडसठमौ।

सिड़सटेक–वि.—सडसठ के लगभग।
रू. भे.—सिड़सठेक।

सिडसटौ–सं. पु —६७ की सख्या का वर्ष।
रू. भे.—सिडसठौ।

सिड़सठ—देखो सिड़सट' (रू. भे.)

सिड़सठमौ—देखो 'सिडसटमौ' (रू. भे)

सिड़सठेक—देखो 'सिडसटेक' (रू. भे.)

सिड़सठौ—देखो 'सिडसटो' (रू. भे.)

सिड़ियोड़ौ, सिड़ियौ—देखो 'सड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिड़ियोड़ी)

सिड़ी–वि.—१ सनकी।
२ पागल।
३ दीवाना।
४ देखो 'सिरडी' (रू. भे.)

सिचांण, सिचांन—देखो 'सिचाण' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—दागिया बाण किना सिचांण री नाई तूटा।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

सिचाणौ, सिचाबौ—देखो 'सिंचाणौ, सिंचाबौ' (रू. भे.)
सिचाणहार, हारौ (हारी), सिचाणियौ—वि०।
सिचायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सिचाईजणौ, सिचाईजबौ—कर्म वा०।

सिचियामाता–स. स्त्री. यौ.—पवारों की इष्टदेवी। (मा. म.)

सिच्चांन—देखो 'सिचाण' (रू. भे.)

सिच्छ, सिच्छा—देखो 'सिक्षा' (रू. भे.)
उ०—स्वइच्छ सिच्छ सूर वै अनिच्छ ऊघतै नही। मरै न तै कुमोति ते सुमोति सूघतै नही।—ऊ. का.

सिच्छित—देखो 'सिक्षित' (रू. भे.) (डि. को.)

सिजदा–स. स्त्री. [अ. सिज्दः] १ ईश्वर के लिए सिर झुकाना, नमाज पढ़ते वक्त जमीन पर सिर झुकाना या रखना।
२ उक्त प्रकार से शिर झुका कर की जाने वाली प्रार्थना।
उ०—किवना सिजदा करै, किलम उचरै कुराणी। जाणि प्रेत जागिया, मह्यारिण काळ मसाणी।—सू. प्र.

सिजळज—देखो 'सजलज' (रू. भे.) (द. दा.)

सिजवाळी—देखो 'सेजवाळी' (रू. भे.)
उ०—हाथी घोड़ा सिजवाळा छोकरचा घणी दायजो दे अर हलाया।—चौबोली

सिजाणौ, सिजाबौ—देखो 'सीझाणौ, सीझाबौ' (रू. भे.)
सिजाणहार, हारौ (हारी), सिजाणियौ—वि०।
सिजायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सिजाईजणौ, सिजाईजबौ—कर्म वा०।

सिजायोड़ौ—देखो 'सीझायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिजायोड़ी)

सिजावणौ, सिजावबौ—देखो 'सीझाणौ, सीझाबौ' (रू. भे.)
उ०—सीघ्र खयेडी खोद पीळती माटी लावो। गोबर रै गुण घाल, ठीगळै घोळ सिजावौ।—दमदोख
सिजावणहार, हारौ (हारी), सिजावणियौ—वि०।
सिजावियोड़ौ सिजावियोड़ौ, सिजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिजावीजणौ, सिजावीजबौ—कर्म वा०।

सिजावियोड़ौ—देखो 'सीझायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिजावियोड़ी)

सिजिया—देखो 'सय्या' (रू. भे.)
उ०—विजय सेठ नारी विजया जिणै सील पाल्यौ एकण सिजिया।
—जयवांणी

सिज्झणौ, सिज्झबौ—देखो 'सजणौ, सजबौ' (रू. भे.)
उ०—राउ भणइ तां खमउ मुझ वयणु जा अवधि पुज्जई। पंचाली रोमवसि अवसि अति अम्ह काज सिज्झई।—सालिभद्र सूरि
सिज्झणहार, हारौ (हारी), सिज्झणियौ—वि०।
सिज्झिओड़ौ सिज्झियोड़ौ, सिज्झ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिज्झीजणौ, सिज्झीजबौ—भाव वा०।

सिज्झाय–स. पु. [स. स्वाध्याय] स्वाध्याय। (जैन)
उ०—पाठक हरस निधानजी सहेली हे ग्यान तिलक सुपसाय कि। 'विनयचंद्र' कहइ मइ करि सहेली हे अंग इग्यार सिज्झाय।
—वि. कु.

सिज्झियोड़ौ—देखो 'सजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिज्झियोड़ी)

सिज्या—देखो 'सय्या' (रू. भे.)
उ०—ऐंपै द्वारि भर सेज विछि पधारिनो करै छै। वार वार फिरै छै। काज जु सिज्या गाय बंधै छै।—वेलि

सिज्यातर, सिज्यासदी—देखो 'सय्यातर' (रू. भे.)
उ०—कचरायजी सिज्यातर नै घणोई कह्यौ—थै आगा वधू लीधी।
—भि द्र.

सिटणौ, सिटबौ–क्रि. अ.—१ निर्बल होना, कमजोर होना।
उ०—पीहर पतळा रा सैणा रा प्यारा, तारक तूटा रा नैणा रा तारा। सोरा सिटियौ रा सुल्हा रा सारा, भोडी भूखा रा फूलां रा भारा।—ऊ. का.
२ पस्तहिम्मत होना।
उ०—भीखम मात प्रभाव, मात गग कीकर मनै सो पखहीण सभाव, सेवट सिटग्यौ सावरा।—रामनाथ कवियो
२ लज्जित होना।
सिटणहार, हारौ (हारी), सिटणियौ—वि०।
सिटिओड़ौ, सिटियोड़ौ, सिट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिटीजणौ, सिटीजबौ—भाव वा०।
सिटाणौ, सिटाबौ—रू० भे०।

सिटपिटाणौ, सिटपिटाबौ–क्रि अ.—१ किंकर्त्तव्यविमूढ होना।
२ असमंजस मे पड़ना।
३ दब जाना।
४ घबरा जाना।

सिटपिटाणहार, हारौ (हारी), सिटपिटाणियौ—वि० ।

सिटपिटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिटपिटाईजणौ, सिटपिटाईजबौ—भाव वा० ।

सटपटाणौ सटपटाबौ—रू० भे० ।

सिटळ सिटळौ–वि. (स्त्री. सिटळी) १ पथभ्रष्ट, पतित ।

उ०—रळचा खुलचा रजपूत, बिरंमण मिळगा बिटळा । वैस्य मिळग्या बिकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा ।—ऊ. का.

२ अविश्वनीय ।

३ निर्लज्ज ।

४ अपनी बात पर कायम न रहने वाला ।

सिटाणौ, सिटाबौ–क्रि. स.—१ पराजित करना ।

२ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना ।

३ दबाव डालना दबाना ।

४ देखो 'सिटणौ सिटबौ' (रू भे.)

उ०—लेतां तिरिया लाज, पति बोदौ ई आडौ पड़ै । ऐ नर बैठा आज, मिष सिटाया स्याळ मा ।—रामनाथ कवियो

५ देखो 'सटाणौ, सटाबौ' (रू. भे)

सिटाणहार, हारौ (हारी), सिटाणियौ—वि० ।

सिटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिटाईजणौ, सिटाईजबौ—कर्म वा० ।

सिटायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लज्जित किया हुआ. २ पराजित किया हुआ ३ दबाया हुआ ।

४ देखो 'सिटियोडौ' (रू. भे.)

५ देखो 'सटायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिटायोडी)

सिटावणौ, सिटावबौ—देखो 'सिटाणौ, सिटाबौ' (रू. भे.)

उ०—इसा रंग भू डूगरा अट्ट ऊचा, सिटावै जिका हेट पखी समूचा ।—वं. भा.

सिटावणहार, हारौ (हारी), सिटावणियौ—वि० ।

सिटाविग्रोड़ो, सिटावियोड़ौ, सिटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिटावीजणौ, सिटावीजबौ—कर्म वा० ।

सिटियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ पराजित हुवा हुआ. २ लज्जित हुवा हुआ. ३ हिम्मतपस्त हुवा हुआ. ४ दबा हुआ ।

(स्त्री. सिटियोड़ी)

सिटी—१ देखो 'सीटी' (रू. भे.)

२ देखो 'सिटौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—'ला' री बेळा जिण अपणायत सूं सगळा गाव वाळा नाठ-नाठ अर 'ला' करण वाळै रै सूड़, निनाण, सिटियां चूंटण मैं अर लाटै री बेळा बिना किणी लालच रै काम करावै, देखण जोग व्है ।—चितरांम

सिटेबाज–वि.—१ धोखेबाज, कपटी ।

२ बढ-बढ़ कर व्यर्थ की बातें करने वाला ।

सिटौ, सिट्टौ–स. पु. [सं. पष्टिक] १ बाजरी, ज्वार आदि का भुट्टा ।

उ०—१ सावण खेती भवरजी थे करीजै हाजी ढोला भादुडै करचौ जी नीनाण । सिटां री रुत छाया भवरजी परदेस मैं जी, ओ जी म्हारा घण कमाऊ ।—लो. गी.

उ०—२ पाळी फळीजै मोठ, पड़ै घड सिट्टा सोवै । ग्वारफळ्यां रा गोट, तिका मन फूली मोवै ।—दसदेव

रू भे.—सिरटौ ।

अल्पा.—सिटी, सिरटी ।

२ धोखा, भरमा ।

सिडवांणी–स स्त्री.—लकड़ी का वह डंडा जिसके बल बैलगाड़ी या छकड़े को खड़ा करके उसकी धुरी मे तेल या अन्य स्निग्ध पदार्थ लगाया जाता है ।

सिणकणौ, सिणंकणौ—देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

सिणंकणहार, हारौ (हारी), सिणंकणियौ—वि० ।

सिणंकिग्रोडौ, सिणंकियोड़ौ, सिणंक्योडौ—भू० का० कृ० ।

सिणंकीजणौ, सिणकीजबौ—कर्म वा० ।

सिणकियोड़ौ—देखो 'सिणक्योडौ' (रू. भे)

(स्त्री. सिणकियोडी)

सिणकणौ, सिणकबौ–क्रि. स—नाक साफ करने के लिए नाक मे से दबाव के साथ वायु निकालना जिससे नाक का मल निकल जाय ।

सिणकणहार, हारौ (हारी), सिणकणियौ—वि० ।

सिणकिग्रोड़ौ, सिणकियोड़ौ, सिणक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिणकीजणौ, सिणकीजबौ—कर्म वा० ।

संणकणौ, संणकबौ, संणक्कणौ, संणक्कबौ, सणंकणौ, सणंकबौ, सणकणौ, सणकबौ, सनंकणौ, सनंकबौ, सनकणौ, सनकबौ, सिणंकणौ, सिणंकबौ—रू० भे० ।

सिणकियोडौ–भू का. कृ.—नाक साफ करने के लिए नाक मे से तेज गति व दबाव के साथ वायु निकाला हुआ ।

(स्त्री. सिणक्योडी)

सिण–सं स्त्री.—एक प्रकार की घास ।

सिणगार–सं. पु. [सं. श्रृंगार] १ वस्त्र, कपडा । (ह. ना. मा.)

२ आभूषण, गहना । (अ. मा.)

३ एक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में तीन तगण और अन्त मे दो दीर्घ वर्ण होते हैं ।

४ देखो 'स्रणगार' (रू. भे)

उ०—माया पास रही मुळकंती, सजि सुंदरि कीधा सिणगार । बहु परिवार कुटंब चौ बाधौ, हरि विण गयौ जमारौ हार ।

—प्रथ्वीराज राठौड

उ०—२ गगा नद कमट ग्हता गज-बधी, थाहर थाहर गंज थिगा ।

देवळ देवळ हार दीपावै, कासी सिव सिणगार किया।
—किसनो आढो

उ०—३ बाता तौ फगत जीभ रौ बणाव। होठां रौ सिणगार। लाली री भिकाळ। पण मन रौ तौ भेद ई अगम। अगोचर।
—फुलवाडी

उ०—४ बस्ती पांत रोही सुहांमणी लागै कुदरत रा सिणगार नै आंख्या फाड फाड नै देखता इज जाग्रो पण जीव तिरपत नी व्है।
—अमरचूंनड़ी

उ०—५ छोड चल्या छा भंवरजी वाछडी जी, हा जी ढोला होय गई सुरही गाय। दूध पीवण री रुत चाल्या चाकरी जी, हा जी म्हारा सेजा रा सिणगार। मत ना सिधावौ पूरब री चाकरी।
—लो. गी.

सिणगारचौकी-स. स्त्री.—१ प्राय: राजभवनो, किलो, गढों आदि के अन्दर की वह चौकी जहाँ पर राज्याभिषेक के समय राजा शृंगार कर सिंहासन पर बैठता था।

२ राजप्रासाद मे वह स्थान जहाँ राजदरबार के समय राजा बैठता था। ३ शृंगार करने का स्थान।

रू. भे.—सिंगारचौकी, सिंणगारचौकी।

सिणगारण-वि.—शृंगार करने वाली।

सिणगारणौ, सिणगारबौ-क्रि स. [स. शृंगारणम्] १ सुशोभित करना, सजाना।

उ०—१ आगै सहर रा घर बाट, बजार-हाट भली प्रकार सिणगारिया। गुवाड-गुवाड घर-घर ऊपर लुगाया बधाई रा बधावा मागळीक गावै छै।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ खाडैत्या खोलिया, खिडक खासा रथ खानां। सिणगारचा मिदणा, मिळण सांमा मिजमाना।—मे. म

उ०—३ कनक रतन तोरण सुभकारी, सुंदर चित्र पौळि सिणगारी।—रा. रू.

२ अस्त्र-शस्त्र युक्त करना, शस्त्रों से सुसज्जित करना।

उ०—१ तरै लालोजी नूं बांह दीन्ही। देनै पछै घणी साथ लेनै फौज सिणगारी नै रजपूत सिणगारी नै केसर गुलाब सूंधा माहे गरकाब हुय नै जान करनै चढिया।—लाली मेवाडी री बात

उ०—२ सिणगारी सन्नाह सूं, विस कांमणी वरियांम। वरि आई हाला वरण, करण महाजुध कांम।—हा. झा.

३ शृंगार करना शृंगारना।

सिणगारणहार, हारौ (हारी), सिणगारणियौ—वि०।

सिणगारिओड़ौ, सिणगारियोड़ौ, सिणगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिणगारीजणौ, सिणगारीजबौ—कर्म वा०।

संणगारणौ, संणगारबौ, सणगारणौ, सणगारबौ, सिंणगारणौ, सिंणगारबौ, स्रंगारणौ, स्रंगारबौ—रू० भे०।

सिणगारदे-स. स्त्री. [सं. शृंगारदेवी] लोकगीत में सुहागिन स्त्री के लिए प्रयुक्त सम्मान सूचक शब्द।

उ०—ए जठै नै बहु सिणगारदे पोढिया, ऐ वारी दासी ढोळै चै वाव। ए म्हानै घणी ए सुहावै अच्चा पीपळी।—लो. गी.

रू. भे.—सणगारदे।

सिणगारपटी-स. स्त्री. [सं शृंगारपट्टिका] सिर का आभूषण विशेष।

सिणगारियोड़ौ-भू. का कृ.—१ सुशोभित किया हुआ, सजाया हुआ. २ अस्त्र-शस्त्र से सज्जित किया हुआ. ३ शृंगारा हुआ।

(स्त्री. सिणगारियोडी)

सिणतर सिणतरी-सं. स्त्री—धरती पर छितरने वाली एक घास विशेष जिसके फूल सफेद होते है।

सिणतरौ-स. पु. -राजस्थान में पाया जाने वाला तंतुदार जंगली क्षुप, जो छप्पर, झोपडी आदि की छाजन मे काम आता हैं। इसकी रस्सी भी बनाई जाती है।

उ०—१ चालता रेत माथै खोज नी उघड़ै इण जाब्ता सारू चोरां रै पगा सिणतरा बांधोडा हा।—फुलवाडी

उ०—२ सु रवारी जुवांन सिणतरा री डोळ कीवी छै। उठै भीड़ सी काठी कसी छै। लाबीया काबां हाथ छै।
—सातल जोधावत री बात

रू. भे.- संणियौ, सणिग्रौ, सणियौ, सिणियौ।

सिणफिण-स. स्त्री.—अविरल गति से धीरे धीरे होने वाली वर्षा।

उ०—चादणी चवदस रो दिन छै। सनि आदित्यवार री संध छै। ऊपर झड़ मंडियौ छै। सिणफिण मेह वरसै छै।—नैणसी

सिणमिणौ, सिणमिणौ-वि. (स्त्री. सिणमिणी) उदास, खिन्न चित्त।

उ०—१ घरै धणी नै सिणमणौ देख जोधाबाई घुदावण ढूकी कै बतावौ तौ खरी आपरै हीयै किसी दोराई है।—चितराम

उ०—२ उठै महाराजा रामसिहजी अणूती खातरी करी, अर अलन खमा करता। पण 'सर' रौ जीव तौ मारवाड़ मैं अटकियोड़ौ। 'सर' नै सिणमिणौ देख रामसिहजी सिकार री मनादी उठवाय अंग्रेज पावणा नै सिकार करावण रौ कांम 'सर' रै खांदै नाख दियौ।
—जहूरखां मेहर

सिणियौ—देखो 'सिणतरौ' (रू. भे.)

सितं—देखो 'सित' (रू. भे.) (नां. मा.)

सितंग-स. पु.—पागलपन।

सितंगियौ-वि.—पागल, मूर्ख।

उ०—अठै री राजा अर अठै रा लोग तौ म्हनै साव सितंगिया ई दीस्या। काला मिनखां रै माथै छोगा बंधियोड़ा तौ नीं व्है।
—फुलवाड़ी

२ सनकी।

उ०—पछै वौ सितंगियौ राजकंवर भाई री बाथ छुडाय डोकरी नै मारण सारू ताचकियौ।—फुलवाड़ी

रू भे.—सीतंगियौ।

सितंतर–वि. [सं. सप्तसप्तति, पा. सत्तसत्तरि; प्रा. सत्तहत्तरि, अप. सत्तत्तरि] सत्तर और सात के योग के बराबर या समान ।
सं. पु.—सत्तर व सात के योग से बनने वाली संख्या, ७७ ।
रू. भे.—सत्योत्तर, सत्योतरइ, सितहतर ।

सितंतरमौं–वि.—जो क्रम मे छिहत्तर के बाद पड़ता हो ।

सितंतरे'क–वि.—जो सतहत्तर के लगभग हो ।

सितंतरौ–सं. पु.—सितहत्तर की सख्या का वर्ष ।

सितंबर–सं. पु. [अं.] ईस्वी सन् का नौवा मास जो तीस दिन का होता है।

सित–वि [स. सित] १ श्वेत, सफेद । (डिं. को; ना. मा.)
उ०—सित कुसुमां गूथी सुखद, वेणी सहियां बंद । नागणि जाणौं नीसरी, सांपड खीर समंद ।—बां. दा.
२ निर्मल, स्वच्छ ।
उ०—चुरासी चहुटांनी हटश्रेणी, मांहइ वस्त संपूरण वरतइ सित द्रव्य, सहिस्र द्रव्य......... ।—व. स.
३ बंधा हुआ । (डिं. को.)
४ सम्पूर्ण, पूर्ण ।
[सं. शित] ५ तीक्ष्ण, तेज ।
उ०—तिक्ख कड्च्छा सज्ज यौं सित भल्ल सजाया ।—व. भा.
सं. पु. [स. सितः] १ शुक्ल पक्ष ।
उ०—अठतीसौ आसोज मैं, सित सातम सनवार । गौ 'सोनागिर' धांम हरि, नांम करै ससार ।—रा. रू.
[सं. सित] २ शुक्रग्रह ।
३ शुक्राचार्य ।
४ वासुकी ।
५ किरण ।
६ रजत, चादी । (अ. मा; ना. मा)
७ पंडित । (ह. ना. मा.)
रू. भे.—सिति ।

सितकठ–स. पु. [सं. शितिकठ] शिव, महादेव ।
वि.—सफेद कठ या गर्दन वाला ।
रू. भे.—सितिकंठ ।

सितछद–स. पु. [स. सितच्छद] हस । (डिं. को.)

सिततुरंग–स. पु. यौ. [सं. श्वेततुरंगः] अर्जुन ।

सितपक्ख, सितपक्खि, सितपक्ष, सितपख–स. पु. यौ. [सं. सितपक्ष] शुक्लपक्ष ।
उ०—सतरै समत छयासियै, चैत दसमि सितपक्खि । गुज्जर सिर दूजौ 'गजन', आसहियौ अमरक्खि ।—रा. रू.

सितपत्र–स. पु. [स. श्वेतपत्र] श्वेत कमल । (डिं. को.)

सितम–वि. [फा.] जोरदार, गजब, अद्भुत ।
उ०—की करै जोर लाचार कवि, आदत तजै न आलसी । सोधी मिसाल लाधी सितम, खतम दुतरफ खिलालसी ।—ऊ. का.
सं. पु.—१ अत्याचार, जुल्म ।
२ अनीति ।

सितमगर–सं. पु. [फा.] जालिम, अत्याचारी ।

सितमणि–स. स्त्री. [सं.] स्फटिक मणी, बिल्लौर ।

सितरंग–स. स्त्री.—रामवेलि नामक बेल । (अ. मा.)

सितर, सित्तर—देखो 'सित्तर' (रू. भे.)
उ०—सेना सितर हजार सूं, विचित्र अमित्र बळवांन । कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वर खांन ।—रा. रू.

सितरमौं—देखो 'सित्तरमौं' (रू. भे.)

सितरे'क—देखो 'सित्तरे'क' (रू. भे.)

सितरौ—देखो 'सित्तरौ' (रू. भे.)

सितवादी—देखो 'सतवादी' (रू. भे.)

सितहतर—देखो 'सितंतर' (रू. भे.)

सितांणमौ, सितांणवौ—देखो 'सताणमौ' (रू. भे.)

सितांणू—देखो 'सतांणू' (रू. भे.)

सितांबर—देखो 'स्वेतांबर' (रू. भे.)

सितांबरी—देखो 'स्वेतांबरी' (रू. भे.)

सितांसु–स. पु. [सं. सितांशु] १ चन्द्रमा ।
२ कपूर ।
रू. भे.—सीतअसु, सीतसु, सीतसु, सीतांसु ।

सिता–स. स्त्री. [सं.] १ मिस्त्री । (डिं. को.)
२ चीनी, शक्कर ।
३ शराब, मदिरा ।
४ सफेद दूब ।
५ रोशनी, प्रकाश ।
६ जुन्हाई ।
७ सुन्दरी, स्त्री ।

सिताब, सिताबी–वि.—तीव्र, तेज ।
क्रि. वि. [फा. शिताब] शीघ्र, जल्दी ।
उ०—१ हुइ साद नकीब सिताब हला, इम हौदाय जीण वणै अलला ।—रा. रू.
उ०—२ इण दिस थी राजा 'अजन', सफ आवतां सिताब । सांम्हो पाय सपेखवां, मिळियौ आय नबाब ।—रा. रू.
उ०—३ बहत सिताबी राइवर, दूत दरक्कां खेड़ि । गया बुलावण जतन गढ, त्यां सूं बूझी तेड़ि ।—रा. रू.
रू. भे.—संतांम, सताब, सताबी, सतावी ।

सितार–सं. पु. [फा. सेहतार] तारों को उंगुलियों से झनकारने से बजने वाला एक प्रसिद्ध तार वाद्य ।

रू. भे.—सतार।

सितारबाज, सितारवादक–वि.—१ वह जो सितार बजाता हो।

२ सितार बजाने मे निपुण।

सितारपेसांणी–सं. पु [फा. सितारःपेशानी] वह घोडा जिसके माथे पर सफेद छोटा चिन्ह हो। यह अशुभ माना जाता है।

सितारियौ–स. पु.—वह व्यक्ति जो सितार बजाता हो।

सितारेहिंद–स. पु. यौ. [फा] ब्रिटिशकाल मे अंग्रेजी सरकार की ओर से सम्मानार्थ दी जाने वाली एक उपाधि।

सितारौ–सं. पु. [फा सितारः] १ तारा।

२ नक्षत्र।

३ भाग्य, किस्मत।

उ०—थांणा में नवो थाणादार आवतौ जरै करेई एक रौ पलड़ौ भारी रेवतौ तौ करेई दूजा रौ। अबार फौजां रौ सितारौ तेज हौ। वौ थाणादार री मूंछ रौ बाळ बण्योडौ हौ।
—अमरचूंनडी

रू. भे.—सतारौ।

सितावड़ी–सं. स्त्री.—एक प्रकार का पौधा विशेष।

सितासित–सं पु. [स. सित+असित] बलराम। (अ. मा; ना. मा) (मि. निलाबर)

रू. भे.—सीतासित।

सितास्व–सं. पु. [सं. सिताश्व] १ अर्जुन का एक नाम।

२ चन्द्रमा।

सिति—देखो 'सित' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

सितिकंठ—देखो 'सितकंठ' (रू. भे.)

सितियासिमौं–वि.—जो क्रम से छियासी के बाद आता हो।

रू. भे—सत्यासीमौ, सित्यासिमौ।

सितियासियौ–स. पु.—सत्तासी की सख्या का वर्ष या साल।

रू. भे.—सतियास, सतियासियौ, सतियासो, सत्यासियौ, सत्यासीयौ, सित्यासियौ।

सितियासी, सितियासी–वि. [सं. सप्ताशीति, प्रा. सत्तासई, अ सत्तासी] अस्सी और सात के योग के समान।

रू. भे.—सतियास, सतियासी, सत्यासी।

सितियासीक–वि.—सत्तासी के लगभग।

रू. भे.—सत्यासीक।

सितिरि—देखो 'सत्तर' (रू. भे.)

उ०—साभरमती तणूं नीर, सितिरि खान, बुहुतिरि ऊबरा अनिमीर।—व. स.

सितोदर–स. पु.—कुबेर का एक नाम। (डि. को; ह ना. मा.)

वि.—जिसका पेट सफेद हो।

रू. भे.—सतोदर।

सि

सितोपळा–सं. स्त्री. [सं. सितोपला] मिश्री।

सित्तर, सित्तर–वि. [स. सप्तति, प्रा. सत्तरि] साठ और दस के योग समान, सत्तर।

रू भे.—सतरि, सत्तर, सत्तरि, सितर, सितिरि।

सित्तरमौ–वि.—जो क्रम से उनसित्तर के बाद पड़ता हो, ७० वा।

रू. भे.—सत्तरमौं, सितरमौ।

सं. पु.—७० वा वर्ष।

सित्तरेक–वि.—सत्तर के लगभग।

रू. भे.—सितरे'क, सितरेक।

सित्तरौ–सं. पु.—सत्तर की संख्या का वर्ष।

रू भे.—सितरौ।

सित्या–स. स्त्री.—१ बल, शक्ति।

उ०—लोडा तौ लाग्या पण गोडा टूटग्या। सूना हुयग्या, सित्या निसरगी अर सतगा टूटग्या।—दसदोख

२ बुद्धि, अक्ल।

उ०—हसी ढबियां हाथा रा लटका करती कैवण लागी—देख राख उडिया री कैड़ी सित्या निकळी जको अंडी कुलळी डूडो ? आदेस करियो।—फुलवाड़ी

सित्यानास—देखो 'सत्यानास' (रू. भे.)

उ०—१ टाबरा रा पग बढग्या, गवाड़ौ मूंधो मारीजग्यौ, सित्यानास हुयग्यौ। एक भाई होलात में आयौ, दूजो बेटो जेळ गयौ।
—दसदो

उ०—२ रोवती रोवती बोली—बापजी, म्हारी सगळी दाळ लेग्यौ। सित्यानास जावै इण रौ।—फुलवाड़ी

सित्यानासी—देखो 'सत्यानासी' (रू. भे.)

उ०—सब सित्यानासी ऊठ उदासी हासी मुख हिनकंदा है।
—ऊ. क

सित्यासिमौं—देखो 'सितियासिमौ' (रू. भे.)

सित्यासियौ—देखो 'सितियासियौ' (रू. भे.)

सित्यासी—देखो 'सितियासी' (रू. भे)

सित्यासीमौं—देखो 'सितियासीमौ' (रू. भे.)

सियर—देखो 'स्थिर' (रू. भे)

उ०—संसार को न रहसी सियर, सभा वहण रिण सार री जावसी नही जाता जुगा, ऐ बाता ईण बार री।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बा

सिथळ, सिथल–सं. पु. [स. शिथिल] राजा बाल का पुत्र, एक राजा

उ०—बाल सुतन नृप सिथल उबंबर, वज्रनाभ जिण सुतण भू बर।—सू. प्र.

वि.—१ जिसमे खिचाव न हो, ढीला।

उ०—सळ पड़ियोडा सिथळ, गोळ भुज है गळियोड़ा। गळियो छिक गुंमर, गिरै ढूगा गळियोड़ा।—ऊ. का.

२ मंद, धीमा।

उ०—१ तपसी रो रूप धरै अतताई, अडंग कुटी गह सीत उठाई। सिथळ पुकारी साद सुणीजे, कीजै हो हरि बाहर कीजै।
—र. रू.

उ०—२ तळप परहर अतुर चढ तुक, चकरधर मग सधर सचर। सिथळ पर घर जांण ईसर, छांड नगधर धरण दूछर।
—र. ज. प्र.

३ सुस्त, थकित, आलसी।

४ कमजोर, निर्बल।

५ जिसका पालन कड़ाई से न हो। (काम या बात)

रू. भे.—सिथिळ।

सिथिर—देखो 'स्थिर' (रू. भे.)

सिथिळ—देखो 'सिथळ' (रू. भे.)

उ०—तेह पुरुस जरजर हुवौ जी, सिथिळ पडी छै जी काय। लीलरी पड़ै सरीर मैं जी, चांमडी हाड विटाय।—जयवाणी

सिथिळता-सं. स्त्री. [स. शिथिलता] १ आलस्य, सुस्ती।

२ ढीलापन।

३ थकावट।

४ मदता, धीमापन।

५ कमजोरी, निर्बलता।

सिदक-सं. स्त्री [अ सिद्क] १ सच्चाई, सत्यता।

उ०—ज्यौ तुम भावै त्यौं खुसी, हम राजी उस बात। दादू कै दिल सिदक सौं, भावै दिन को रात।—दादूवाणी

२ निश्छलता।

उ०—दादू सिदक सबूरी सांच गह, साबित राख यकीन। साहिब सौ दिल लाइ रहु, मुरदा व्है मिस्कीन।—दादूवाणी

३ शुद्धता, निर्मलता।

उ०—हरीया हरिजन जांणीयै, अंतर गरबा तन। दास बिंदगी दीनता, सिदक सबूरी मंन।—अनुभववाणी

४ वास्तविकता, यथार्थता।

वि—सच्चा, वास्तविक।

रू. भे.—सिदिक।

सिदरी-स. स्त्री. [फा. सेहदरी] तीन ओर से खुला हुआ या तीन दरवाजो वाला कक्ष, बरामदा।

सिदाई—१ देखो 'सीधाई' (रू. भे.)

२ देखो 'सिधाई' (रू. भे.)

सिदिक—देखो 'सिदक' (रू. भे.)

सिदुर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे.)

सिदौ—देखो 'सिद्धो' (रू. भे.)

सिद्धंत—देखो 'सिद्धांत' (रू. भे.)

उ०—१ अनभय कथणी रहिणी करणी अति आठुंइ करम जीपै अधिकारी। गुणवंत अनंत सिद्धंत कला गुण प्राक्रम पौहोच विद्या पुण भारी।—भि. द्र.

उ०—२ साधवा मुक्ति का वास बंदा सहु भिक्खम स्वांम सिद्धंत है भारी।—भि. द्र

सिद्ध-सं. पु. [सं.] १ वायु पुराणानुसार एक प्रकार के देवता गण जिनकी संख्या ८८००० मानी गई है। सूर्य के उत्तर तथा सप्तर्षियो के दक्षिण अन्तरिक्ष (भुवर्लोक) में इनका वास लिखा है। ये एक कल्प भर के लिये अमर माने गये हैं।

उ०—१ धरत ध्यांन चारन विद्याधर, करत गान गुन अप्छर किन्नर। गुह्यक यक्ष रक्ष गंधरबह, सिद्ध पिसाच भजत तव सरबह।
—मे. म.

उ०—२ आचारजं सुर जक्ष, किन्नर अछराणि सिद्ध गंधरव। गण वेताळ मुनिंद्रो, कितं चवसट्टि पत्र पाणेयं।—रा. रू.

उ०—३ सेदेही स्रग गयो, रायराया उथपै। अंतरीख लै अम्रत, सिद्ध पिण आधो कीन्हो।—नैणसी

२ तपस्या, त्याग व योग साधना द्वारा प्राप्त किसी अलौकिक शक्ति से सम्पन्न कोई ऋषि, तपस्वी, महात्मा पुरुष, दैवी शक्ति सिद्ध किया हुआ कोई करामाती साधु।

उ०—१ द्रढ वर्ष 'सोनग' 'दुरग' तेरह साख कमध। या मैं साहस अधियौ, ज्यां तट कुंभज सिद्ध।—रा. रू.

उ०—२ सीत वात आतप सहीयइ, एकत्र सदैव न रहियइ, यथावस्थितै धरम कहियइ, एतदरथस्य करम, धरमक हियइ सुक्ल धांन धरिउं, अनंतर मरिउ, मुक्ति पयसारिउ इणि परि सिद्ध होयइ।
—व. स.

उ०—३ सिद्धां सिद्धाई धरणी मैं धसगी, भोपां भोपाई फाफा मैं फंसगी। भूठा जोतसियां जोतिस की भूठी, करसा कलपाया बरसा नह वूठी।—ऊ का

३ वेद, पुराण आदि शास्त्रों का मर्मज्ञ एव आध्यात्मिक दृष्टि से उच्च माना जाने वाला ऋषि, मुनि, महात्मा।

उ०—आखा तीजा धणी अमामी, सिद्ध जनमियौ सकर स्वांमी।
—ऊ. का.

४ नाथ सम्प्रदाय के योगी जिनकी संख्या ८४ मानी गई है।

ज्यूं—नौ नाथ अर सिद्ध चौरासी।

५ नाथ सम्प्रदाय एवं हिन्दू योगियो से बौद्धयोगी।

६ देवदूत, फरिश्ता।

७ ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

८ अभियोग, मुकद्दमा।

९ गुड़। (ना. मा.)

१० समुद्री नमक।

११ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगो मे से एक।

१२ फलित ज्योतिष के २८ योगों मे से एक योग ।
(ज्योतिष बालाग्रवबोध)
१३ एक युद्धप्रिय देवता ।
उ०—भूत प्रेत पेसाच, वहुत चेडा बहु वैंतर। वीर सिद्ध वैंताळ, निसाचर भूचर खेचर।—गु. रू. वं.
१४ शिव, महादेव ।
उ०—खुलै सिद्धां ताळियां रूप रा नाच वीर खेळा, रचै गात चाळिया धूप रा रखाराज। चमक्कै भ्फालिया बीच भूप रा हाथियां चली, नाळियां ऊपरा प्रळय काळियां नाराज।—दुरगादत्त बारहठ
१५ वह पुरुष जिसका वचन सत्य हो।
१६ पूजनीय व्यक्ति, महापुरुष।
१७ जसनाथ द्वारा प्रवर्तित जाटो का एक सम्प्रदाय एव इस सम्प्रदाय का व्यक्ति।
१८ एक देवगण जो हिमालय के समीप कण्वाश्रम के समीप निवास करता था।
१९ कश्यप एवं प्राधा के पुत्रो मे से एक।
२० एक मुनि जिसने कश्यप ऋषि से चर्चा की थी।
२१ सार्थकता।
२२ सूचना, सन्देश।
२३ आर्या-गीति या खधांण (स्कधक) का भेद विशेष।
२४ छप्पय छन्द का २३ वा भेद जिसमे २८ गुरु व ९६ लघु सहित १२४ वर्ण या १५२ मात्रायें होती है। (र. ज. प्र.)
वि.—१ जो साधना द्वारा सफल कर लिया गया हो, जिसकी साधना पूरी हो चुकी हो, साधा हुआ।
उ०—इण ही तरह देवी रा निदेस सूं जाचका सूं देण काज राजा बडाहरै सदा ही सुबरण रासि सिद्ध कीधो।—व. भा.
२ सफल, पूर्ण।
उ०—१ नर नाथ जाण राखै निजर, बाण बखाणा विसतरै। व्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै।—रा. रू.
उ०—२ दहूं बांह जोरै कहूं बुद्धि दीजै। कृपाळी कवी लालसा सिद्ध कीजै।—मे. म.
३ प्राप्त, उपलब्ध।
३ जो पूर्णतया सम्पादित हो गया हो।
५ स्थापित, बसा हुआ।
६ दृढ, पक्का।
७ सत्य माना हुआ, प्रमाणित।
८ निर्णीत, निर्धारित।
९ पकाया हुआ।
उ०—१ सो लै जावण सदन, पुणै मीसण बाटी प्रति। उठै सिद्ध पळ ग्रम्ह, मगि जीमण चहियै मति —वं. भा.
उ०—२ ग्रउ उचित ग्रगा रो सिद्ध पळ चडिका नूं चखाय प्रसन्न कीधी।—व. भा.
१० अदा किया हुआ, चुकाया हुआ।
११ वशीभूत किया हुआ।
१२ निपुण, दक्ष।
१३ तैयार किया हुआ।
१४ दमन किया हुआ।
१५ प्रायश्चित द्वारा पवित्र किया हुआ।
१६ अधीनता से मुक्त किया हुआ, मुक्त।
१७ अलौकिक शक्ति सम्पन्न।
१८ पवित्र, शुद्ध, निष्पाप।
उ०—जिको धोकबा काज जावै जमातां, अघा पाप थायै बजै सिद्ध आता।—मे. म.
१९ ठीक, उचित।
२० मुक्ति या निर्वाण प्राप्त।
२१ दैविक।
२२ अनादि, अविनाशी, सनातन।
२३ प्रसिद्ध, प्रख्यात।
२४ चमकीला, प्रकाशमान।
२५ स्थापित, बसा हुआ।
२६ मीठा। (ना मा.)
२७ जो सर्व कर्मों का क्षय करके संसार से मुक्त हो चुका हो।
(जैन)
रू. भे.—सिध, सिध्ध।

सिद्धआपगा-सं. स्त्री. [स.] गगा नदी। (डिं. को)

सिद्धकणेरी-स. पु.—नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध नव नाथों मे से एक, कृष्णपाद।

सिद्धकांमेस्वरी-सं स्त्री. [स. सिद्धकामेश्वरी] दुर्गा की पच मूर्तियों मे से प्रथम, कामख्या।

सिद्धकारी-वि. [सं. सिद्धकारिन्] १ जो धर्मशास्त्र का अनुसरण करता हो।
२ सिद्ध करने वाला।

सिद्धकूप-सं. पु. [सं.] कार्तिकेय की शक्ति द्वारा प्रलब दैत्य के वध के समय किया गया पृथ्वी का छेद, जो बाद मे पाताल गंगा के पानी से भर गया।

सिद्धगुटको-सं. पु.—एक काल्पनिक मत्र-सिद्ध गुटकी जिसे मुंह मे रखने से अदृश्य होने की शक्ति आ जाती है।
रू. भे.—सदगुटको, सिधगुटको।

सिद्धक्षेत्र-सं पु —दण्डक वन का एक भाग।
उ०—चउवीस जिणालउ ग्रस्टापदनउ, सिद्धक्षेत्र विमलगिरिनउं सास्त्र विरचना हरि भद्रसूरिनी......... ।—व. स.

सिद्धजोग—देखो 'सिद्धयोग' (रू. भे.)

उ०—१ सिद्धजोग रवि जोग, सुद्ध दिनमान सहू सिसि। दिसा सूळ थयो पूठि, वळे जोगणि वामी दिसि।—गु. रू. बं.

उ०—२ एकम छट इगीयार, वार सुकर वरतीजै। बारस सातम बीज, लेर बुद्ध मौरत लीजै। तेरस आठम तीज, होवै मगळ सुभकारी। चौथ नवमी चवदस्स, वळै सनि विघनविडारी। पचमी दसम अरु पूरणमा, आवै जो सुरगुर प्रबळ। सुभ होय घरां भल चालियै, सिद्धजोग रु कारज सफळ।—अग्यात

सिद्धजोगी—सं. पु. यौ. [स. सिद्धयोगी] १ शिव, महादेव।

२ कोई सिद्ध पुरुष, योगी, महात्मा।

सिद्धता—सं स्त्री.—१ सिद्धि प्राप्त कर लेने की अवस्था, क्रिया या भाव, सिद्धि, सिद्धत्व।

२ तपस्या व साधना से प्राप्त की हुई अलौकिक शक्ति।

३ सफलता, पूर्णता।

४ दृढ़ता।

५ प्रसिद्धि।

६ मुक्ति।

सिद्धदेव, सिद्धनाथ—सं. पु. [सं.] शिव, महादेव।

सिद्धपक्ख, सिद्धपक्ष, सिद्धपख—सं. पु [सं. सिद्धपक्ष] प्रमाणित बात।

सिद्धपुर—सं. पु.—१ एक कल्पित नगर जिसे कोई पृथ्वी के उत्तरी छोर में बताते है और मतान्तर से पाताल मे भी। (ज्योतिष)

२ गुजरात का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर।

रू. भे.—सिधपुर।

सिद्धमात्रका—स. स्त्री. यौ. [सं. सिद्धमातृका] एक प्रकार की लिपि।

सिद्धयोग—सं पु. [स.] मुहूर्त्त का एक शुभ योग जिसमे निर्दिष्ट तिथि तथा वारो में शुभ कार्य का समारम्भ किया जाना श्रेष्ठ माना जाता है।

वि. वि.—निम्नलिखित तिथियो व वारो के योग से बनने वाला योग शुभ व सिद्धिदायक माना जाता है—शुक्रवार को नन्दा अर्थात प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी, बुधवार को भद्रा अर्थात् द्वितीया, सप्तमी एव द्वादशी, मगलवार को जया अर्थात् तृतीया, अष्टमी व त्रयोदशी, शनिश्चरवार को रिक्ता अर्थात चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी और गुरुवार को पूर्णा अर्थात पञ्चमी, दशमी और पूर्णिमा तिथि।

रू. भे.—सिद्धजोग।

सिद्धयोगनी—स. स्त्री. [स. सिद्धयोगिनी] एक योगिनी का नाम।

सिद्धर—स. पु [स] एक ब्राह्मण का नाम जो मथुरापति कस की आज्ञानुसार श्रीकृष्ण को मारने गया था पर असफल रहा।

सिद्धरसायण—सं. पु. यौ. [स. सिद्धरसायन] दीर्घ जीवन और प्रभुत्व शक्ति प्राप्त कराने की एक रसौषध विशेष।

सिद्धराज, सिद्धराव—स. पु. [स. सिद्धराज] १ शिव, महादेव।

२ गोरखनाथ।

रू. भे.—सधराय, सिधराज, सिधराव।

सिद्धविचारनाथ—स. पु.—राजा भर्तृहरि का उस समय का नाम जब उसने सन्यास ले लिया था। (मा. म.)

सिद्धसाधक—स. पु.—१ सब इच्छाए पूर्ण करने वाला।

२ सिद्ध व उसका साधक।

सिद्धस्री—स. स्त्री. [सं. सिद्ध+श्री] १ शुभारम्भ।

मुहा.—सिद्धस्री मैं ही खोट=आरम्भ में ही त्रुटि।

(मि.—मामेळा मे ही गधा)

२ पत्र आदि लिखते समय सर्वप्रथम लिखा जाने वाला शब्द।

उ०—सिद्धस्री सूरजगढ सुभ स्थांन सरब ओपमा साधक महा श्रेस्ठ उपमा लाइक व्राजमान—सिर रा सेहरा हियारा हार आख्या रा अजण आतम रा आधार, गुणा रा गंभीर उकत्यां रा आगर बहत्तर कळाये विचित्र सुबुध रा सागर........।

—र. हमीर

रू. भे.—सिधसिरी।

सिद्धस्थाली—सं. स्त्री. [स.] एक बटलोई (धातु का बना पात्र) विशेष, जो बनवास के समय व्यासजी से द्रोपदी को मिली थी। इसमे से इच्छानुकूल भोजन निकाला जा सकता था।

सिद्धहस्त—वि. [स.] कार्यकुशल, निपुण, दक्ष।

सिद्धांजन—सं. पु. [सं.] एक कल्पित अंजन जिसे आँख मे लगा देने से भूमिगत वस्तुए भी स्पष्ट दिखाई देती है।

सिद्धांत—स. पु. [सं] १ कला, विज्ञान, शास्त्र आदि के सम्बन्ध में कोई मूल बात या मत जो किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादित या स्थापित हो और जो अन्य लोगो द्वारा मान्य हो। (Theory)

उ०—१ जिण रा सिद्धांत प्रमांणिक पडितां रा रचिया प्रबंध मैं इण रीति पुणीजै जिको पण बळाविध रा अधीस राम भूपाळ अंगउपाग सहित सुणीजै।—वं. भा.

उ०—२ गुरु परचु पास्ति कीजइ, सिद्धांत सांभलियइ, तत्त्व अभ्यसीइ, विचार पूछियइ।—व. स.

२ भलीभांत सोच विचार कर स्थिर किया हुआ मत, उसूल।

(Aim, Object)

उ०—१ वा बोली—पवन स्वारथ रै बस मे होय'र 'हत्या' करीजै सिद्धांत नै कायम राखण रै वास्तै वध।—तिरसंकू

उ०—२ घर घरणि गालि गाटो करे, पुन्य धरम नह पाळणूं। अमलिया तणौ सिद्धात औ, गळै जठा लग गाळणूं।—ऊ. का.

३ किसी बात या विषय का साराश, तत्व की बात।

४ वह बात जो विद्वानो द्वारा सत्य मानी जाती हो।

५ शास्त्र।

उ०—१ सिव सक्ति मीम, अनुभव असीम। सिद्धात सार, नित निराकार।—ऊ. का.

उ०—२ चउपरवी पोसउ कह्यउ जी, सूत्र सिद्धांत मझारि। हरिभद्र सूरि विवरउ कीयो जी, बावीस सहस्त्री सार।—स. कु.

उ०—३ बखांण वांणी देवै सूत्र सिद्धांत बाचै छेहड़ै जीव खुवायां पुन्य मिस्र परूपै सावद्य अनुकपा मैं धरम कहै तिण उपर स्वांमीजी द्रस्टात दियो।—भि. द्र.

६ बहत्तर प्रकार की पुरुषो की कलाग्रो मे से एक।

रू. भे.—सिद्धंत, सिधात।

सिद्धांती-वि. [स. सिद्धान्तिक] १ शास्त्र के तत्व का ज्ञाता।

२ अपने सिद्धान्तो के अनुसार आचरण करने वाला।

३ तार्किक।

४ सिद्धान्त का, सिद्धान्त सम्बन्धी।

सिद्धा-स. स्त्री.—आर्या छद का एक भेद जिसमे १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।

सिद्धाई-स. स्त्री.—१ सिद्ध होने की अवस्था या भाव, सिद्धि।

२ चतुराई।

उ०—सिद्धाई वाळा री वण आयी। जागां जागां ठगाई रा तप्पड़ बिछा'र ठगारो जमाया बैठा।—वरसगांठ

३ पांडित्य, विद्वता।

४ सिद्ध करने की शक्ति।

५ सिद्धत्व।

उ०—सिद्धा सिद्धाई धरणी मैं धसगी, भोपा भोपाई फांफा मै फसगी।—ऊ. का.

६ विशेषता, खासियत।

रू. भे.—सिधाई।

सिद्धाचळ, सिद्धाचल-स. पु. [सं. सिद्धाचलः] काठियावाड़ में स्थित जैनियों का एक तीर्थ स्थान।

उ०—१ सिद्धाचल सीमैं जी यात्रा करि जीमैं। निस्चय इन नीमैजी भमय न भव भीमइ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ करम आठ मेटै कियो, पचम गुण परवेस। थिर सिद्धाचळ थापना, आदीस्वर आदेस।—बां. दा.

सिद्धारथ-स. पु. [स. सिद्धार्थ] १ गौतम बुद्ध का नाम।

उ०—एहवी कुटब साहामी ग्यातिनी भगति कीवी सिद्धारथ राजाग्रहे।—व. स.

२ दशरथ के एक मत्री का नाम। (रामायण)

३ कार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

४ रुद्रवीसी का चौदहवां वर्ष। (ज्योतिष)

सिद्धासण-सं. पु.—१ योग के चौरासी आसनों मे से एक जिसमें, बाये पांव की ऐडी को सीवनी मे रखकर दक्षिण पैर की ऐडी को लिंग पर रखा जाता है। फिर गरदन नीची करके ठुड्डी को हृदय के समीप अर्थात हृदय के ऊपर चार अंगुल ऊंची रखते हुए दृष्टि को त्रिकुटी के (भ्रूमध्य में) स्थिर करके नेत्रो को अर्धउन्मिलित रख के नाभि के पास बाये हाथ की हथेली मे दाहिने हाथ को सीधा रखना होता है। इसके तीन भेद होते हैं—(१) वज्रासण(न)—इसमे दाहिने पैर की ऐडी को सीवनी एव बाये पैर की ऐडी को लिंग पर रख कर पूर्ववत बैठा जाता है।

(२) मुक्तासण(न)—इसमे बाये पैर की ऐडी को सीवनी एवं दाहिने पैर की ऐडी को लिंग पर रख कर पूर्ववत बैठा जाता है।

(३) गुप्तासण(न)—बाये पैर की ऐडी लिंग पर रख कर उसी पैर के पजे पर दाहिने पैर की ऐडी को जमाकर पूर्ववत बैठा जाता है।

यह आसन प्राणवाही नाडियो के सर्व मलो को दूर करता है तथा सहज मे उन्मनीकला को उत्पन्न करता है और तीन प्रकार के जो बंध है इनको अनायास सिद्ध करता है।

सिद्धि-स. स्त्री. [सं.] १ अलौकिक शक्तियो से युक्त आठ प्रकार की सिद्धियो मे से एक।

उ०—अस्ट सिद्धि नव निद्धि अखंडित, परम सती जुवती सुत पडित।—मे. म.

वि. वि.—आठ प्रकार की सिद्धियों का विवरण:—अंजन, गुटका पादुका, धातुभेद, बेताल, वज्र, रसायन और योगिनी। योग की आठ सिद्धिया इस प्रकार से है:—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।

२ ऐन्द्रजालिक विद्या द्वारा किसी चमत्कारिक शक्ति की प्राप्ति।

३ किसी प्रकार की साधना या तपस्या की पूर्णता, इससे मिलने वाली सफलता।

४ परिश्रम का फल या सफलता।

५ मुक्ति, मोक्ष।

६ निपुणता, दक्षता, प्रवीणता।

७ संस्थापना, प्रतिष्ठा।

८ शुद्धता, पवित्रता।

९ वास्तविकता, सच्चाई।

१० खाद्य पदार्थ की पकने की अवस्था, पकावट।

११ तत्परता, सावधानी।

१२ बुद्धि।

१३ अन्तर्ध्यान होने की क्रिया।

१४ समृद्धि, सुख।

१५ विजय, सफलता।

उ०—समरथ सूर तोगा बदिरसुत, अहिमद आणदि मिलई। दुत्थिय दुक्ख आरति टलइ, सयल सिद्धि वंछित फलई।—व. स.

१६ विजिया, भांग।

१७ दुर्गा का एक नाम।

१८ दक्ष प्रजापति की पुत्री व धर्मदेव की पत्नी का नाम।

१९ गणेश की दो पत्नियो मे से एक का नाम जो 'क्षेम' की माता थी।

उ०—नव नेनन मैं नव निद्धि बहै। सब हाजर रिद्धिय सिद्धि रहै।
—ऊ. का.

२० एक देवी का नाम जो कुन्ती के रूप में प्रगट हुई।

२१ जनक की पुत्रवधु व लक्ष्मीनिधि की पत्नी का नाम।
(रामायण)

सं. पु.—२२ वीर नामक अग्नि के पुत्र नाम, इस की माता का नाम सरयू था।

२३ सुफल, अच्छा फल।

२४ निवास, आवास।

२५ निर्विवाद परिणाम, निर्णय।

२६ निर्णय, निश्चय।

२७ फैसला, निपटारा।

२८ भुगतान, चुकारा।

२९ प्रभाव।

३० वार व नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगो में से उन्नीसवां योग। (ज्योतिष)

३१ आर्या या गाहा छन्द का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणो में कुल मिलाकर १३ गुरु और ३१ लघु सहित ५७ मात्राएँ होती हैं। (ल. पिं; र. ज. प्र.)

३२ देखो 'सुधि' (रू. भे.)

उ०—एह कस्ट भोगवी अहीइ रहूं न लही कंतनी सिद्धि। तै मन मोहन जु मझ मिलइ, तु एतलइ नव निधि।—नलदवदती रास

रू. भे.—सिद्धी, सिध, सिधि, सिध्धि।

सिद्धिदाता—सं पु.—गणेश, गजानन।

वि.—सिद्धि प्रदान करने वाला।

सिद्धदातिथि—सं स्त्री.—फलित ज्योतिष के अनुसार वार एव तिथि सम्बन्धी बनने वाले योगों मे से प्रथम योग।

सिद्धिदात्री—स स्त्री—नवदुर्गा के अन्तर्गत एक दुर्गा जो सिद्धि प्रदान करने वाली मानी जाती है।

सिद्धिनायक—सं. पु [स] गजानन, गणेश। (ह. ना. मा.)

सिद्धिप्रद—वि.—सिद्धि देने योग्य।

सिद्धिभू, सिद्धिभूमि—सं. स्त्री—वह स्थान जहाँ योग या तप शीघ्र सिद्ध होता है।

सिद्धी—देखो 'सिद्धि' (रू. भे.)

सिद्धेस्वर—सं. पु. यौ [स. सिद्धेश्वर] १ कोई बड़ा योगी, सिद्ध।

उ०—साथ थारै सदा, 'पाल' नव ही जोगेस्वर। साथ थारै सदा, चार असी सिद्धेस्वर।—पा. प्र.

२ जालंधरनाथ का एक नाम। (मा. म)

३ शिव, महादेव।

रू. भे.—सद्धेसर, सद्धेसुर, सद्धेस्वर, सिधेसर, सिधेसुर।

सिद्धोदक—सं. पु. [सं.] १ एक समुद्र विशेष।

२ एक प्राचीन तीर्थ स्थान।

सिद्धौ—स. पु. [सं. सिद्धः] १ वर्णों का अभ्यास कराने की प्राचीन पद्धति, जो व्याकरण युक्त होती थी।

अपभ्रंश—

सिद्धौ वरणा। समामनाया।
चत्रू चत्रू दासा। दऊ सवारा।
दसै समाना। दुध्यावरणौ।
न सीस वरणौ। पुरवौ हसवा।
पारौ दिरगा। सारौ वरणा।
विणज्यो नामी। इकरादेणी।
संध कराणी। कादी नाऊ।
विणज्यो नामी। तै विरघा पचा पचा।
विरघानाऊ प्रथम द्वितिया।
संपोसाइचा। घोषा घोष पितोरणी।
अनुनारा नासिक। निनाणुनामा।
अनता सता। जै रै लवा।
रुकमण सबोसासा।
आयती विसारजुनिया।
कायती जिह्वामूलिया।
पायती पदमानीया।
आयो आयो रतन सवारौ।

मतान्तर से—

सिधौ वरण समामनाया,
त्रै त्रै चतुरक दसिया
दौ सवेरा, दशै समाना,
तेरनु दुधवा, वरणौ
वरणो, नाशि सवरणौ,
पुरवो रसवा, पारौ दरघा,
सारौ वरणौ, विणजै नामि,
इकरादेणी, सध्यकराणि,
कादी नाउं विणजै नामी
तै वरगा पचौ पंचिग्रा,
वरगां णाउ, प्रथम दिवटिग्रा
श्री शंखौ साराशिया,
गोरवा गोरव, वतोरणै,
अनुसार शबा, निनाणिनम,
अथा संथा, जेरै लव्वा,
उर वमण शंखौषाहा।

संस्कृत —

सिद्धो वर्णसमाम्नाय । सिद्धः खलु वर्णानां समाम्नायो वेदितव्य. ते के । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ । क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । इति ।

तत्रादौ चतुर्दश स्वराः । तस्मिन् वर्णसमाम्नाये आदौ ये चतुर्दशवर्णाः ते के । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ ।

दश समानाः । तस्मिन् वर्ण समाम्नाये आदौ ये दश वर्णास्ते समानसज्ञा भवन्ति । ते के । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ इति ।

तेषा द्वौ द्वावन्योन्यस्य सवर्णौ । तेषा समानाना मध्ये द्वौ द्वौ वर्णौ अन्योन्यस्य परस्परं सवर्ण सज्ञौ भवतः । अ आ । इ ई । उ ऊ । ऋ ॠ । ऌ ॡ ।

पूर्वो ह्रस्वः । तयोः सवर्ण सज्ञयोर्मध्ये पूर्वो वर्णो ह्रस्वसज्ञो भवति । अ इ उ ऋ ऌ ।

परो दीर्घः । तयोः सवर्णयोर्मध्ये परो वर्णो दीर्घ सज्ञो भवति । आ ई ऊ ॠ ॡ ।

स्वरोऽवर्णवर्जो नामि । अवर्ण वर्जः स्वरो नामि सज्ञो भवति । इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ ।

एकारादीनि सध्यक्षराणि । एकारादीनि स्वरनामानि संध्यक्षरसंज्ञानि भवन्ति । तानि कानि । ऐ ऐ ओ औ ।

कादीनि व्यजनानि । ककारादीनि हकारपर्यन्तान्यक्षराणि व्यजनसज्ञानि भवन्ति ।

ते वर्गाः पञ्च पञ्च पञ्च । ते ककारादयो मावसाना वर्णाः पञ्च पञ्च भूत्वा पञ्चैव वर्ग संज्ञा भवन्ति ।

वर्णाणा प्रथमद्वितीय शषसाश्चाघोषा । कख चछ टठ तथ पफ श ष स एते अघोषाः ।

घोषवन्तोऽन्ये । अघोषेभ्योऽन्ये तृतीय चतुर्थ पचमवर्णा य र ल व हाश्च घोषतत्संज्ञा भवन्ति । ग घ ङ । ज झ ञ । ड ढ ण । द ब भ म । य र ल व ह — इमे घोषाः ।

अनुनासिका ङ ञ ण न माः ।

अन्तस्था य र ल वाः ।

ऊष्माणः श ष स हः ।

अः इति विसर्जनीयः ।

क $\overset{V}{\Lambda}$ इति जिव्हामूलीयः ।

प $\overset{V}{\Lambda}$ इत्युपध्मानीयः ।

अं इत्यनुस्वारः ।

हिन्दी —

वर्णों के समूह को सिद्ध समझना चाहिये । वर्ण ऊपर देखिये । ऊपर दिये हुए वर्णों मे से पहले १४ वर्णों की स्वर सज्ञा है । ये १४ वर्ण संस्कृत रूप के साथ दिये गये हैं । १४ स्वरो मे से पहले १० वर्णों की समान संज्ञा है । समान स्वरो में से दो दो की परस्पर सवर्ण संज्ञा है । यथा—अ आ परस्पर सवर्ण कहलाते हैं : इसी प्रकार इ ई, उ ऊ, ऌ ॡ के लिये समझिये । सवर्ण स्वरो मे पहला वर्ण ह्रस्व कहलाता है अर्थात् अ इ उ ऋ और ऌ ह्रस्व वर्ण हैं । आगे का वर्ण दीर्घ होता है । यथा—आ ई ऊ ॠ ॡ दीर्घ स्वर हैं । अ वर्ण को छोड कर स्वरो की 'नामि' सज्ञा है । ए ऐ ओ औ—संध्यक्षर कहलाते हैं ।

'क' से लेकर 'ह' तक के वर्ण व्यंजन कहलाते हैं । 'क' से 'म' तक के २५ वर्ण २५ वर्गों मे विभक्त है । यथा—क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग । इन वर्गों के प्रथम दो अक्षर तथा श ष स अघोष कहलाते हैं तथा वर्गों के शेष तीन तीन वर्ण तथा य र ल व ह घोष वर्ण हैं।

'ङ, ञ, ण, न, म' अनुनासिक हैं।

य र ल व अन्तस्थ हैं । 'श ष स ह' ऊष्म कहलाते हैं । अः विसर्जनीय है ।

क $\overset{V}{\Lambda}$ जिव्हामूलीय है । 'अं' अनुस्वार है ।

प $\overset{V}{\Lambda}$ इत्युपध्मानीय है ।

निम्नलिखित अपभ्रंश स्फुट रूप से और भी हैं ।

पूरबो फल्यो रयो रयो

पातारु पद पद ।

विणज्यो नामी सरु वह वरणानेतु

नेत कर मैया राम साल की जेतू ।

लषो(खो) पचा ईड़ा दुर्गण सधि ।

एती संती सूत्रता ।

प्रथमी पाटी शुभ करती ।

ये कातन्त्र व्याकरण पर आधारित है ।

२ देखो 'सीधौ' (रू. भे.)

रू भे.—सिदौ, सिधौ, सीदौ ।

सिधंत—स. पु.—१ यमराज । (अनेका.)

२ देखो 'सिद्धांत' (रू. भे.)

सिध—स. स्त्री.—१ सफलता विजय ।

उ०—आहव छोड फतैखा आसुर, परम दुवार गयो छोडै घर । पूर लुटियौ वडी सिध पाई, संभिया सुज मारिया सिपाई ।

—रा. रू.

२ सकेत ।

३ लक्षण, चिन्ह ।

उ०—मोर सोर मंडे, इंद्र धार न खंडै । आभो गाजै, सारंग वाजै, द्वादम मेघ नै दुवौ हुवौ, सू दुखियारी री आंख हुवौ । झड़ लागो, प्रथी रो दळद्र भागो । दादुरा डहिडहै, सावण आणवै री सिध कहै ।—रा. सा. सं.

वि.—१ उपयुक्त ।

उ०—सुख भायां अंजस सयण, आयां सिध अवसांण । पितु मनसा

पूरावियां, ज्यां जायां धिन जांण।—जैतदांन बारहठ

२ सफल।

उ०—आया सिवपुरी हुम्रौ कारिज सिध, परम पुरु चा ग्रहिया पगि। माहोमाहि करइ वाता मिळि, जनम सुकियारथ हूवौ जगि।
—महादेव पारवती री वेलि

३ देवी शक्ति वाली, चमत्कारपूर्ण, चमत्कारिक।

उ०—ज्वाळानळ जळेन मरइ मारियौ, घणीज दीन्हउ खडग सिध। मड ग्रन जीए जुडता भारथ, वाहइ ग्राविधि किसी विध।
—महादेव पारवती री वेलि

ग्रव्यय—१ कहां, किधर।

उ०—लोगा पूछ्यौ—सेठां इत्ता दिन देख्या कोनी, सिध गिया।
—फुलवाड़ी

वि. वि.—राजस्थान में 'थूं कठै जावै' ऐसा कहना ग्रशुभ मानते हैं। इसलिए 'थूं कठै जावै' न कह कर 'थू सिध जावै' या 'थूं सिधारू जावै' कहेंगे, यद्यपि दोनो का ग्रर्थ एक ही है।

२ देखो 'सीध' (रू. भे.)

उ०—कुंवरसी बोल री सिध हालियौ ग्रावै छै।
—कुंवरसी साखला री वारता

३ देखो 'सिद्ध' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ हरीया कड़वी बेल का, कडवाई फळ किध। जब वेली तें वीछड़ें, होय नांव की सिध।—ग्रनुभववांणी

उ०—२ सिधां सावता सहेतौ ग्राखाड़ै सोहियौ, राग सिंधू बजै खाग रीठौ। समर भूपाळ ग्रादेस करतां सहूं, दळा माहेस माहेस दीठौ।—राव महेसदास राठोड रौ गीत

उ०—३ सिध साधक राखै सबर, सबर तजै मतमंद। सबर काज सुधरै सहू, साई सबर पसद।—बा. दा.

उ०—४ सुरा सिधा मैं महेस जेम बांणावळी पाथ सिध, मांण मैं द्रजोण सिधां वदा महाबाह। दान मैं करण सिध धरापती सको दाखा, रूका सिधा बाध नै वखाणं दहूं राह।—पदमौ खिडियौ

४ देखो 'सिद्धि' (रू. भे)

उ०—१ परम सनेही पेम रस, सौ इतनौ निरबाहि। हरीया रिध सिध मुगति को, ग्रौर सकल कुं चाहि।—ग्रनुभववांणी

उ०—२ हरीया रिध सिध क्या करै, राम नांम धन पास। लाहा तोटा जोव का, गया दूरि दिस नासि।—ग्रनुभववाणी

सिधक—स पु.—सिद्ध पुरुष।

सिधकर—सं. पु.—एक देव जाति। (ग्र. मा.)

सिधकाम—स. पु —मिर्च। (ग्र. मा.)

सिधगुटकौ—देखो 'सिद्धगुटकौ' (रू. भे.)

उ०—पवन रा कुटवी वेग पाया, उड्ड'ड सिधगुटका जिम उडांण।
—सू. प्र.

सिधजोग—देखो 'सिद्धजोग' (रू. भे.)

उ०—सनि चतुरदसी वद पख सकाज, सिधजोग प्रगट उच्छब समाज।—सू. प्र.

सिधदेव—सं. पु.—प्रतिज्ञावीर पावू राठौड़ का एक नाम। (पा. प्र.)

सिधनायक—वि. [सं. सिद्धिनायक] सिद्धि प्रदान करने वाला।

सं. पु.—गजानन, गणेश।

सिधपुर—देखो 'सिद्धपुर' (रू. भे.)

उ०—हैनाळ पहट गिर तर हुवा, चढै गटां रज परचंड। सरसती नदी तट सिधपुर, महिपती डेरा मंडै।—सू. प्र.

सिधमल, सिधमल्ल—सं. पु.—महादेव, शिव।

उ०—ग्रग वरग ऊछळै, किलम विहंग खग कमळ। सुरंग रंग सांपड़ै, जांण सिधमल्ल गग जळ।—सू. प्र.

सिधराज—देखो 'सिद्धराज' (रू. भे.)

उ०—माकडा झाड़ ग्राखाड़मल चाढ्यां मसती वालिया। सिधराज जाण माजम मसत, हिंगळाज मग हालिया।—मे. म.

सिधव—देखो 'सेंधव' (रू. भे.)

सिधवा—देखो 'सधवा' (रू. भे.)

उ०—सिधवा लख धीरज सें निकसै, विधवा लख बारज सें विकसै।
—ऊ. का.

२ देखो 'सिद्ध' (रू. भे.)

उ०—सब काज भया जग मैं सधवा, बड भागण तू ज भई विधवा।
—ऊ. का.

सिधवाह—सं. पु.—वह शस्त्र जो अपने लक्ष्य से चूकता न हो, ग्रचूक शस्त्र।

सिधवुधवायक—सं. पु. यौ. [सं. सिद्धि+बुद्ध+वाक्य] गणेश, गजानन।
(ग्र. मा.)

सिधसिरी—देखो 'सिद्धसी' (रू. भे.)

सिधांत—देखो 'सिद्धांत' (रू. भे.)

उ०—चिलमियां करण चित चाव सू, टळणहार नहीं टाळणौ। ग्रमलिया तणा सिधांत एह, बळै जठा लग बाळणौ—ऊ. का.

सिधाई—स. स्त्री.—१ सरलता, सीधापन।

२ देखो 'सिद्धाई' (रू भे.)

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—दिल्ली ग्रागरा मैं तौ गायां कटै। इण बात मैं कांई सिधाई। सूत्र भण्या हवै तौ कहौ।—भि. द्र.

सिधाणौ, सिधाबौ—क्रि. ग्र. [सं. सिद्ध] प्रस्थान करना, गमन करना, जाना, रवाना होना। (शुभ)

उ०—१ राजरै सिधायां ग्रै नवलख तारा म्हारा रूं रूं मैं भाला री ग्रणियां ज्यू खुबै।—फुलवाड़ी

उ०—२ सिव ब्रहम विसन निज पुर सिधाय, प्रिय भूप विगन व्रत संगि पाय।—सू. प्र.

उ०—३ राव जैतसिंघ युद्ध करि वैकुंठ सिधायौ।—द. वि.

उ०—४ जोय कटक ग्रप जेत, सहर देसांण सिधायौ। साथ पचीस सवार, ईस्वरी कदमा ग्रायौ।—मे. म.

सिधाणहार, हारौ (हारी), सिधाणियौ—वि०।

सिधायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिधाईजणौ, सिधाईजबौ—भाव वा०।

सधाणौ, सधाबौ, सधारणौ, सधारबौ, सिधारणौ, सिधारबौ, सिधावणौ, सिधावबौ—रू० भे०।

सिधायोड़ौ—भू का. कृ.—गया हुआ, प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुवा हुआ।

(स्त्री. सिधायोड़ी)

सिधार—सं पु.—प्रस्थान या गमन करने का भाव। (डिं. को)

सिधारणौ, सिधारबौ—देखो 'सिधाणौ, सिधाबौ' (रू भे.)

उ०—१ मांमौ बैठां भाणेज सुरग सिधार जावै आ अणहूंणी बात गिणीजे सो 'धनजी' दरवाजौ तोडण नै तैयार व्हियौ।

—अमरचूंनडी

उ०—२ बधिया सील पोथी कथा, सुपह पथ सवारियौ। सीझन आठ साका किया, वील्ह वैकुंठ सिधारियौ।—वील्होजी

सिधारणहार, हारौ (हारी), सिधारणियौ—वि०।

सिधारिओड़ौ, सिधारियोड़ौ, सिधारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिधारीजणौ, सिधारीजबौ—भाव वा०।

सिधारियोड़ौ—देखो 'सिधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिधारियोड़ी)

सिधारू—क्रि. वि.—कहाँ, किधर।

उ०—गोपाळजी सिधारू जावै।

सिधावणौ, सिधावबौ—देखो 'सिधाणौ, सिधाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पातरां वाच नाजर उभै, भल भाई अन भावियौ। 'जसवंत' सुतन सतियां सहित, यौं स्वरलोक सिधावियौ—रा. रू.

उ०—२ ठाकर चाकरी सिधावण सारू आखता व्हिया। घोडा रळकती काळी भंवर आटी रौ फटकारौ देय ठकरांणी भचकै आडी फिरी।—फुलवाडी

सिधावणहार, हारौ (हारी), सिधावणियौ—वि०।

सिधाविओड़ौ, सिधावियोड़ौ सिधाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिधावीजणौ, सिधावीजबौ—भाव वा०।

सिधावियोड़ौ—देखो 'सिधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिधावियोड़ी)

सिधासण—देखो 'सिद्धासण' (रू. भे.)

सिधि, सिधी—देखो 'सिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ गुणपति आग्या साहणी, अस्व अरोहण कज्जि। वाजि किया सजा विविध, सिधि रण करण समज्जि। —रा. रू.

उ०—२ रिधि सिधि, सबही दासी, जोड़ें हाथ खड़ी। इनकै रंग राचै नहिं कबहूं, आतम जांण जुडी।—सुखरांमजी महाराज

उ०—३ एतला आद दळ मिळ अथाह, बुधि अडर करण सिधि महावाह।—रा. रू.

सिधु—देखो 'सधु' (रू. भे.)

सिधेसर—देखो 'सिद्धेस्वर' (रू. भे.) (अ. मा.)

सिधेसरनारी—सं. पु. यौ. [सं सिद्धेश्वर+नारी] पार्वती, उमा।

सिधेसुर, सिधेस्वर—देखो 'सिद्धेस्वर' (रू. भे.) (अ. मा.)

सिधोअंजन—देखो 'सिद्धांजन' (रू. भे.)

सिधोरौ—देखो 'सीधोरौ' (रू. भे.)

सिधौ—१ देखो 'सिद्धौ' (रू. भे)

२ देखो 'सीधौ' (रू भे.)

उ०—दासी नै सनकारि सिखावी, सगळौ सिधौ दीध। भोजन पांन सजाई, करता वेला कीध।—ध. व ग्रं.

सिद्ध—देखो 'सिद्ध' (रू. भे.)

उ०—किसुं न हुइ गुर भगति लगइ, मांटि नउ गुरु किद्ध। अह-निसि गुरु आराधतउ, एकलव्यु हूउ सिद्धु।—सालिभद्र सूरि

सिध्ध—देखो 'सिद्ध' (रू. भे)

उ०—चिंता बंध्यउ सयळ जग, चिंता किणहि न बध्ध। जे नर चिंता वस करइ, ते मांणस नहि सिध्ध।—ढो. मा.

सिध्धसिला—सं. स्त्री. [स. सिद्धः+शिला] १ स्थान या लोक विशेष जहाँ मृत्युपरान्त मोक्ष प्राप्त आत्माएँ अपने वास्तविक स्वरूप में रहती हैं। (जैन)

उ०—चऊद राज ऊपरि विस्तारि, सिध्धसिला छइ छत्राकारि। अनेक सुख छइ सिद्ध विलसत, सुखह तणउ तै पार न लहति।

—वस्तिग

२ पृथ्वी विशेष। (जैन)

सिध्धि—देखो 'सिद्धि' (रू. भे.)

सिध्म—स. पु [सं सिध्म] १ एक प्रकार का कुष्ठ रोग विशेष।

(अमरत)

२ कोढ़ का दाग।

सिन—स. पु—जाळ नामक वृक्ष का फल, पीलू। (डिं. को.)

सिनक—देखो सणक' (रू. भे.)

सिनकी—देखो 'सणकी' (रू. भे.)

सिनकादिक—देखो 'सनकादिक' (रू. भे.)

उ०—दै नारद उपदेस, नांव सिनकादिक जांण्यो, गुर तै जनक वदेह, पीव उर माहि पिछांण्यौ।—अनुभववांणी

सिनगारपट्टी—देखो 'सिणगारपटी' (रू. भे.)

सिनांण—सं. पु.—१ मस्तक, सिर।

उ०—धमै तोपा जिसूं अहिराट रा सिनांण धूजै, रोक जंगा ले खोहौ ओघाट रा रकत थे मुदेत थाट रा फडाथा भुजा आभ थाभै, लाट रा लिखाया मैदपाट रा लिखंत।—राधोदास सांदू

२ देखो 'स्नान' (रू भे)

सिनांन—देखो 'स्नान' (रू. भे.)

उ०—१ करि सिनांन वदन करि, ध्यान चित्त धरै चक्रधर। सिलह कसै कसि सस्त्र, पमग साखति सझि पक्खर।—सू. प्र.

उ०—२ विदा हुए पाधारियौ, पुहकर मुरधर पत्त। दान सिनांन

विधांन दिन, पुनि मनि इंद्र प्रकत्त।—रा. रू.

सिनांनघर—देखो 'स्नानघर' (रू. भे.)

उ०—सिनांनघर मांय घुसग्यौ। न्हाय-धोय नै नुंवौ पजांमो-कुड़तौ पैर'र जांणै नुंवी ताजगी श्रायगी।—तिरसंकू

सिनांनी-सं. पु.—१ विश्नोई जाति का आदर सूचक सम्बोधन।

२ विश्नोई जाति का व्यक्ति।

उ०—सातिळ सनमुखि श्राय, सुचील जित हुवौ सिनानी। साग रांण सुणि सीख, जका गुर कही स जांनी।—वील्होजी

वि.—नित्य स्नान करने वाला, नित्य स्नान का नियम रखने वाला।

रू. भे.—सनानी।

सिनाख्त-स. स्त्री. [फा. शिनाख्त] १ पहचान।

२ पहचान का चिन्ह।

रू भे—सनाकत, सनाख्त, सनागत।

सिनावड़ी-सं. स्त्री.—छितराने वाला घास जो वर्षा ऋतु में होता है।

सिनि-सं. पु. [सं. शिनि] १ गर्ग ऋषि का एक पुत्र।

२ एक यादव वीर का नाम जिसने देवकी हरण के समय सोमदत्त से भयंकर युद्ध किया था।

सिनिबाहु-स पु. [स. शिनिबाहु] वायु पुराण के अनुसार एक नदी।

सिनिया—देखो 'सेना' (रू भे.) (श्र. मा.)

सिनियास—देखो 'संन्यास' (रू भे.)

सिनियासी—देखो 'संन्यासी' (रू. भे.)

उ०—सजै जमात नवा सिनियासी, करबा जुध श्राया कहर। 'बाघ' हरा वाळौ दाटक विख, लागो ज्यू बागी लहर।

—ऊकौ बोगसौ

सिनिमाघर, सिनेमाघर, सिनेमाघर-स. पु.—जिसमे चलचित्र दिखाए जाएं।

उ०—म्है नई जाणती ही कै तूं इतरौ डरपोक लड़कौ होसी। सिनेमाघर माथै तौ तूं घणौ साहस श्रर बहादरी रौ काम कर नै श्रायौ है।—तिरसकू

सिनीमौ, सिनेमौ, सिनेमौ-स. पु [श्रं. सिनेमा] १ चलचित्र।

उ०—१ साळा श्रस्पताळां भूंडी, नारी पर क्यूं रीस कर। कथा कीरत थान तीरथां, खेल सिनेमा दोस नर।—नारी सईकडौ

उ०—२ श्रेक जोधाबाई माथै श्रणूतौ सिप्पो होणा सूं बापड़ां माथै काई काई नी बीती। साहितकारां श्रर सिनेमा श्राळां रै पाण श्राज ई लाई रै जीव मैं सोराई कोयनी।—जहूरखां मेहर

२ वह स्थान जहां चलचित्र दिखाए जाते हैं।

सिनेह—देखो 'स्नेह' (रू. भे.)

सिन्नांन—देखो 'स्नान' (रू. भे.)

उ०—१ सिन्नांन घात मधि संधियास, उचरत मत्र गायत्रि श्रभ्यास।—सू. प्र.

उ०—२ राजलोक रिख दूंण, वीस पडदायत प्यारी। सग सहेली च्यार, श्रगन सिन्नांन उचारी।—रा. रू.

सिन्यास—देखो 'संन्यास' (रू. भे)

सिन्यासी—देखो 'संन्यासी' (रू. भे.)

उ०—सिन्यासी कहीया क्या होई, जब तै श्रपना करम न खोई।

—श्रनुभववांणी

सिपत—देखो 'सिफत' (रू. भे.)

उ०—श्ररजी लिखी सौ बादसाह सुण नै घणौ ही रजाबंद हुयौ। जलाल री सिपत तारीफ बहोत-बहोत करी।

—जलाल बूबना री बात

सिपर-सं. स्त्री. [फा.] १ ढाल।

२ कवच।

रू. भे.—सपरि, सिफर।

सिपरा—देखो 'सिप्रा' (रू. भे)

सिपहसालार-सं पु.—सेनापति, सेनानायक।

उ०—सिपहसालार श्रो खिताब खानाखान नै श्रकबर दियौ।

—बां. दा. ख्यात

सिपाई—देखो 'सिपाही' (रू. भे.)

उ०—१ साह द्वार सकबंध गयौ 'गजबध' सवाई। हरखवत सुण हुवा, सकौ सामंत सिपाई।—रा. रू.

उ०—२ लाखां सूं श्रघडै लडाई, सार प्रथम साभिया सिपाई।

—रा. रू.

सिपाईगिरी, सिपागारी-स स्त्री.—सिपाही का कार्य या पेशा।

उ०—जरै पातिसाहजी पूठ थापली नै कह्यौ—तुम्ह सेर जुवांन ऐसै होज हो, पिण श्रागै जायगा विखम छा· तुम तुम्हारी नौकरी सिपागारी श्राछी करियौ।—जखडा मुखडा भाटी री बात

रू. भे.—सिपाहगिरी, सिपाहीगिरी सिपाहीगीरी।

सिपाय—देखो 'सिपाही' (रू भे.)

सिपारस—देखो 'सिफारिस' (रू. भे.)

सिपारसी—देखो 'सिफारसी' (रू. भे.)

सिपारौ-स. पु. [फा. सिपारा] कुरान के तीस भागो में से एक।

सिपाह-स. स्त्री. [फा.] १ सेना, फौज।

२ देखो 'सिपाही' (रू. भे.)

उ०—१ जबदल लिखै जबाब, 'गजण' दिस एम घरै गहि। सौ नाहि श्रसल सिपाह, मांग तजि मिळै दियै महि।—सू. प्र.

उ०—२ जरै पैलांरा प्रबळ प्रहार हू पड़ियौ कै पुळियार हुवौ जाणै साहूरी सेनारा सिपाहां मतै मतै मारग लागण रौ श्रारभ करियौ।

—वं. भा.

रू. भे.—सिप्पाह।

सिपाहगिरी—देखो 'सिपाईगिरी' (रू. भे.)

सिपाही-सं. पु. [फा.] १ सैनिक, योद्धा। (डि. को.)

पर्याय.—आवधवाळौ, आवधी।

२ पुलिस का सबसे नीचे का कर्मचारी जो पहरे आदि का कार्य करता है, कांसटेबुल।

उ०—सिपाहियां नीचौ उतार दियौ। थाणादार नेड़ै आवता ई ऊणरै मूडा माथै एक ठोकर जमाई।—ग्रमरचूनडी

रू. भे.—सिपाई।

अल्पा;—सिफाईडौ।

सिपाहीगिरी, सिपाहीगीरी—देखो 'सिपाईगिरी' (रू. भे.)

उ०—बहरांम गोरी अरब देस मैं नांमोन मंजर कन्है आपरै बापरी आग्या सूं सिपाहीगिरी सीखै थौ।—नी. प्र.

सिप्पाह—देखो 'सिपाह' (रू. भे.)

उ०—सिप्पाह वसै कमंध बावीस हसती बध। निज नारनौलह नांम, धुर तेग-बंदा धांम।—सू. प्र.

सिप्पौ—स. पु.—१ निशान, चिन्ह।

२ रोब, प्रभाव।

उ०—अेक जोधाबाई माथै अणूंतौ सिप्पौ होण सु बापड़ा माथै कांई काई नी बीती। साहितकारा अर सिनेमा आळा रै पाण आज ई लाई रै जीव मैं सोराई कोयनी।—चितरांम

सिप्रा—सं. स्त्री.—उज्जैन के पास बहने वाली एक नदी।

रू. भे.—सफरा, सिपरा, सिफरा, सीप्रा।

सिफत—सं. स्त्री. [अ. सिफत] हस्त लाघवता, निपुणता।

उ०—राघव सिफत बखांणी सच्चै सायरा, आफताब दुनियाणी दीद नगाहए।—र. ज. प्र.

२ कोई विशिष्ट गुण, विशेषता।

३ उत्तमता, उम्दगी।

४ प्रशसा, तारीफ।

रू. भे.—सिपत।

सिफर—सं. पु. [अ. साइफर] १ शून्य, बिन्दी।

२ देखो 'सिपर' (रू. भे.)

उ०—सूजमाळा खंजर सिफर किलंगी केवांण, माही तोग मुरातबा नौबत नीसाण।—अनोपसिंह सांदू

सिफा—स. स्त्री. [स. शिफा] १ जड़। (डि. को)

२ वृक्ष विशेष की रेशेदार जड जिससे प्राचीन काल में कोड़े बनाये जाते थे।

सिफाईड़ौ—देखो 'सिपाही' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सिफाईड़ा ज्यूं ही रायफला मैं रीझ्या, भुगांनै रा एकला भाई त्यूं ही सासै मैं सागीडा सिक्या अर सीझ्या।—दसदोख

सिफारस—देखो 'सिफारिस' (रू. भे.)

उ०—पिंडतिया गुराजी नै सागै लेर'र डिपटी कनै गैया अर आपरी सिफारस सही करवाई।—दसदोख

सिफारसी—वि. [फा सिफारिशी] जिसकी सिफारिश की गई हो।

रू. भे.—सिपारसी, सुपारसी।

सिफारिस—स. स्त्री. [फा. सिफारिश] १ किसी से कही जाने वाली ऐसी बात जिसमे अपना या दूसरों का भला होता हो।

२ कोई ऐसी बात जो किसी का अपराध माफ कराने के लिए किसी अधिकारी से कही जाय।

३ नौकरी दिलवाने के लिए कही जाने वाली प्रशंसा या बात।

४ प्रशसा, तारीफ।

यौ.—सिफारसी टट्टू।

रू. भे.—सपारस, सफारस, सिपारस, सिफारस, सुपारस, सुपारिस, सुफारस।

सिब—१ देखो 'सबी' (रू. भे.)

२ देखो 'सिबी' (रू. भे.)

सिबका, सिबिका—देखो 'सिविका' (रू भे.)

उ०—आपरी पुत्रिया रै समांन धन भूसण वस्त्र दास दासी गज बाजि सिबिका रथ प्रमुख सामग्री दे'र चौथै दिन बरात नूं बिदा करि फेर बूंदी आयौ।—वं. भा.

सिबिर—देखो 'सिविर' (रू. भे.)

उ०—मडप रा प्राघुणका प्रांमारराज री तरफ सूं बरात रै सिबिर जाय दुल्लह नूं मारीच चढाय.........तोरण पधरावियौ।

—वं. भा.

सिबी—स. स्त्री. [स. शिबा] १ मूग आदि की फली।

उ०—उव सिबी अंगुली बहु सेकि बटक्कै, खाजै पूरी खल्लकै ताजै करि तक्कै।—व. भा.

२ देखो 'सबी' (रू. भे.)

उ०—ज्यूं अपूठौ दीठौ ज्यूं बीजाणद री सिबी दीठी। ताहरा कह्यौ—तू बीजाणंद चारण हुवै।—सयणी री बात

रू. भे.—सिब।

सिमंट—देखो 'सीमेंट' (रू भे)

उ०—मोटोडौ बेटौ मिडल फेल हौ, वौ जिला मैं एक सेठ री हिस्सादारी मैं सिमंट रौ होल-सेल डीलर बणग्यौ।—ग्रमरचूंनडी

सिमक—सं. स्त्री.—ऊँट का एक रोग जिसमे उसका पिछला पैर पतला पड जाता है तथा वह लंगड़ा हो जाता है।

सिमटणौ, सिमटबौ—क्रि. अ.—१ दूर तक बिखरी या फैली चीजो का खिचकर थोडे स्थान मे आना, समेटा जाना, सीमित होना।

उ०—दूर ऊगुणा परवता री रीहरावळ रै लारै सूं परभात रौ गैरौ कसूमल पल्लौ अबार ताई अधारै मांय सिमट्यौ पड्यौ हौ।

—तिरसंकू

२ इकट्ठा होना, एकत्र होना।

३ क्रम या तरतीब से लगना।

४ काम पूरा होना, समाप्त होना।

५ फैली हुई चीज या तल में सिलवट पडना, सिकुडना।

६ डर, लज्जा आदि के कारण सकुचित होना ।
७ देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)
सिमटणहार, हारौ (हारी), सिमटणियौ—वि० ।
सिमटिग्रोड़ौ, सिमटियोड़ौ, सिमटचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिमटीजणौ, सिमटीजबौ—भाव वा० ।
संवटणौ, संवटबौ, समटणौ, समटबौ, सिंवटणौ, सिंवटबौ, सिमटाणौ, सिमटाबौ, सिमिटणौ, सिमिटबौ—रू० भे० ।

सिमटाणौ, सिमटाबौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)

सिमटायोड़ौ—देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमटायोड़ी)

सिमटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ क्रम या तरतीब से लगा हुआ. २ काम पूरा हुवा हुआ. ३ फैली हुई चीज या तल में मिलवट पड़ी हुई. ४ इकट्ठा हुवा हुआ. ५ समेटा गया, सीमित हुवा हुआ. ६ डर, लज्जा आदि से सकुचित हुवा हुआ ।
(स्त्री सिमटियोड़ी)

सिमणौ, सिमबौ—देखो 'सीवणौ, सीवबौ' (रू. भे.)
उ०—दमडी लं म्हे दरजी कै चाली, दरजीडा सौदौ कर लै रे। म्हनै तौ आंगी म्हारा बाईजी नै चोळी मारूजी नै कुड़तौ सिम दै रे ।—लो. गी.

सिमरण—देखो 'स्मरण' (रू. भे.)
उ०—आछी बातां दोय इळ, सब जांणत संसार । कै सिमरण करतार रो, सिमरण कै सुदतार ।—ऊ. का.

सिमरणौ, सिमरबौ—देखो समरणौ, समरबौ' (रू. भे)
उ०—सिमरण सास उसास का, सुरती सिमरी जेए। अग्र अणी चित आंणकै, प्रीतम रस पीजेए ।—स्रीसुखरामजी महाराज
उ०—२ बाजडिया पुत्र देय भवांनी, आद भवांनी सकल भवानी । चारू देस मैं चारू कूंट मैं, बखाणी सिमरू ए आद भवांनी ।
लो. गी
उ०—३ जोग ध्यांन सिमरै सिव ज्यांनू, श्री अति भार फबै नह ज्यांनू ।—सू. प्र.
उ०—४ कमळ नयन मगळ्करन, स्रीराधा घनस्याम । कवि-भ्रमभमर म सोच कर, सिमरि नाम अभिराम ।—रा. रू.
सिमरणहार, हारौ (हारी), सिमरणियौ—वि० ।
सिमरिग्रोड़ौ, सिमरियोड़ौ, सिमरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिमरीजणौ, सिमरीजबौ—कर्म वा० ।

सिमरत्थ, सिमरथ, सिमरथ्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)
उ०—१ सिमरथ हमकूं भेद लखाया, अनुभव तत्व बताई । सहज समाधी लागी घट भीतर, जीवन मुक्ति आनंद दिखाई ।
—स्रीहरीरांमजी महाराज
उ०—२ सोभीजै 'करणेस' सुत, 'सिवौ' अभंग सिमरथ्थ । दाह दिळेसां उर दयण, भू विजई भारथ्थ ।—द. दा.

सिमरि—देखो 'समीर' (रू. भे)
उ०—साभरपुर नौवन निहंसता, चड सुख हिमरित सिमरि वहतां ।
—रा. रू.

सिमरिव-सं. स्त्री.—बिजली । (ह. ना मा)

सिमरी—देखो 'सिवरी' (रू भे)

सिमल—देखो 'सिंबल' (रू भे)

सिमांनौ—देखो 'सांमियानौ' (रू. भे.)
उ०—१ सोव्रन जवाहर अति सरूप, धरि जड़ित जवाहर पाणि धूप । जयजरी सिमांनां खभ जडाव, तै रूप मेख रेसम तणाव ।
उ०—२ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमांन वितान वणाए ।—सू. प्र.

सिमाड़—देखो 'सीमाड़' (रू. भे)
उ०—तुडताण जिसौ चउवाण तपै, कर वेढ सिमाड़ मैं वास कपै ।
—पा. प्र.

सिमाणौ, सिमाबौ—देखो 'सींवाणौ, सींवाबौ' (रू. भे.)
उ०—दादासा री लाड, सिमाया कपडा नूंवा । नूंवा कपड़ा पै'राय, लाड सूं बैठायौ खूंवा ।—सातिलाल देवेरा

सिमायोड़ौ—देखो 'सीवायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमायोडी)

सिमाळीबांमण—देखो 'स्रीमाळीबामण' (रू. भे.)

सिमावणौ, सिमावबौ—देखो 'सीवाणौ, सीवाबौ' (रू. भे.)
उ०—नवलख तारा रे ईसर, चमकि रह्या तै को मख अंगिया सिमाव ।—लो. गी.

सिमावियोड़ौ—देखो 'सीवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री सिमावियोड़ी)

सिमिटणौ, सिमिटबौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)

सिमिटियोड़ौ—देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमिटियोड़ी)

सिमेंट—देखो 'सीमेंट' (रू. भे.)

सिमेटणौ, सिमेटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

सिम्रती—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

सियंभू—देखो 'स्वयंभू' (रू भे.)

सिय—देखो 'सीता' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—धरि गुर वचन, वचन पित धारै, प्रभु सिय जुत, वनवास पधारै ।—सू. प्र.

सियरौ-वि.—शीतल, ठंडा ।

सियल—देखो 'सील' (रू भे.)
उ०—१ धरम आराधियै ए, धरम ना चार प्रकार । ग्यानी देवा इम कह्यौ, दांन सियल तप भाव ।—जयवांणी
उ० —२ गुण सतावीस जेहनइ पूरा रे, सुद्ध किरिया मांहि धूरा रे । तप बारै भेदै सूरा रे, सियल व्रत सनूरा रे ।—स. कु.

सियली–वि.—ठण्डी, शीतल।

उ०—वाडी रा बड़ रळियांमणा ए, सियली बड री छाय। नागादडी नाडै भरी ए, भिलती भालर वाव।—लो. गी.

सियवाय—देखो 'स्यादवाद' (रू. भे.)

सियांन—देखो 'सांन' (रू. भे.)

सिया–सं. पु [अ. शीया] १ मुसलमानों का एक धार्मिक सम्प्रदाय जो हजरत अली को पैगम्बर का ठीक उत्तराधिकारी मानते हैं।

२ ढोलियों की एक शाखा। (मा. म.)

३ देखो 'सीता' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ वर्णौ चत्र धाए रचै पतिव्रता, सिया मडवी उरमिळा सत्यव्रता।—सू प्र

उ०—२ सिया ऊभी भाळोसा री पोळ, राम रथ हाक दियौ। सिया मांगै सोही माग पीछं रथ हूक जासी।—लो गी.

सियाइ–वि.—शीलवती।

उ०—नमणी खमणी बहुगुणी, सगुणी अनइ सियाइ। जे धण एही संपजइ, तउ जिम ठल्लउ जाइ।—ढो. मा

सियाकरी—देखो 'सिहाखरी' (रू. भे.)

सियापत, सियापति, सियापती—देखो 'सीतापति' (रू. भे.) (अ. मा.)

सियार–सं स्त्री.—१ छेद करने का बढई का एक ओजार।

२ देखो 'स्रगाळ' (रू भे.)

सियारौ–सं. पु.—१ वह बैल जिसकी मूत्रेन्द्रिय पर पेशाब करने की जगह भोरी हो। (अशुभ)

२ देखो 'सीरावौ' (रू. भे.)

सियाळ—देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सूकर स्वांन सियाळ सिंह, सरप रहै घट माहि। कुंजर कीडी जीव सब, पांडै जानै नाहि।—दादूबाणी

उ०—२ सीहणी हेकौ सीह जणि, छापर मडै आळि। दूध विटाळण का पुरस, बोहळा जणै सियाळि।—हा. भा.

(स्त्री. सियाळण, सियाळकी, सियालणी, सियाळी)

सियाल, सियालक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे.)

सियाळसींगी—देखो 'स्याळसींगी' (रू. भे.)

सियाळियौ—देखो 'स्रगाळ' (अल्पा; रू. भे.)

सियाळी–सं स्त्री.—१ एक प्रकार का मेवा विशेष जो गाजर की शक्ल का होता है। यह बेल की जड़ मे लगता है।

२ मादा सियार।

सियाळू—देखो 'सीयाळू' (रू. भे.)

उ०—बाता रा ब्याळ सरब सियाळू, ऊनाळू ऊगंदा है। जूता जतळाया मन मत लाया, बतळाया बीखदा है।—ऊ का.

सियाळौ—देखो 'सीयाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ सियाळा री ठाडी हेम राता अतस खीरा उकराळती ही। आमण-दूमणी आपो बिसरायोडी ठकराणी पाछी हीगळू ढोल्या माथै सूयगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ हमकै ओळंग हजा मारू देवरजी नै मेल्ह, अबकै सियाळै मद छक्या घरै बसो जी म्हारा राज।—लो. गी.

सियाळ्यौ—देखो 'स्रगाल' (अल्पा; रू. भे.)

सियावर–स. पु [सं. सीतावर] रामचन्द्र।

उ०—१ कोयक दिन सेवा इम करता, ध्यांन नरेस सियावर धरतां।—सू. प्र.

उ०—२ हेली नेण निजर भर निरखौ, सियावर बींद बण्यौ जोवण सरकौ।—समान बाई

रू. भे.—स्रियावर।

सियासामी—देखो 'सीतास्वांमी' (रू. भे.)

उ०—सुतण दासरथ रूप लसवांन कौटक समर जसवांन त्रप सियासामी।—र. ज. प्र.

सियाहगोस–स. पु—वनबिलाव।

सियौ–सं. पु.—सीसा। (डिं. को.)

सिरंग, सिरंगौ—देखो स्रग' (रू. भे.)

उ०—१ परसै त्या पिनाकी उरंगा हार लोक पावै, वळै धान किनाकी विरगा भूलै वाट। जाहनमी ताहरी तरंगा बीच भूलै जिका, पेमैर सिरंगा खुलै मोख री कपाट।—सकरदान सादू

उ०—२ अनग रग तरग घण सिरंग काठळ उपग। जग पतंग निहंग ढंग खतग जातौ।—कुभकरण सादू

उ०—३ पाहाड सिरंगै पंथ पवंगै गोम निहगै गूधोळ।—गु. रू. ब.

सिरंम—देखो 'सीरम' (रू. भे)

उ०—१ सिरंमां साट हुबै हय थाट, धरा रज-धूळ मुडै अख सूळ।—गु. रू. बं.

उ०—२ कटकां रा सूर पड़िनै रहीआ छै। हाथी लडावीजै छै। पाइक सिरंम सार्फ छै। फूलहाथ फेरीजै छै। भाति भाति रा तमासा लागनै रहीआ छै।—रा. सा. सं.

सिर–सं पु. [स. शिरस्] १ शरीर के ऊपर का वह गोल भाग जिसमे मस्तिष्क रहता है, कपाल।

२ शरीर का वह भाग जो गर्दन द्वारा धड़ से जुड़ा रहता है। (अ. मा.)

(मि. माथौ)

उ०—धरणी तळ व्याकुळ छेलो सिर धुणियौ, सरणागत बच्छळ हेलौ नह सुणियौ।—ऊ. का.

मुहा.—सिर रौ सेबरौ=सर्वश्रेष्ठ, आदरणीय।

३ मस्तिष्क की विचार शक्ति, बुद्धि।

४ शिरा, नस। (अमरत)

५ सेना का अग्र भाग।

६ किसी वस्तु का सबसे ऊंचा भाग या अग, शृंग।

उ०—भवि भवसउ तं बोलइं बोलइ गिरि सिर टोल ।
—जयसेखर सूरि

७ धान की बालि ।
उ०—बिजड़ां मुहे वेड़तौ बळभद्र सिरां पुंज कीधा समरि ।
—वेलि

८ ललाट, भाल ।
उ०—सूरज री उगाळी सुनार सांमौ मिळे लोग मूढो फेरै सांमै सिर सळ घालै वैं'म करै कारण सुभ जातरा रै वखत सुनार नै अवस टाळै ।—दमदोख

क्रि. वि.—१ पर, ऊपर ।
उ०—१ मुरधर थया वधावणा, हरखे तेरह साख । ज्यू वन पाळै पीड़िया, सिर आयौ वैसाख ।—रा. रू.
उ०—२ मदिरै गौरव सु पदम रागमैं, सिखरि सिखि रमै मदिर सिर ।—वेलि
उ०—३ खड देवड़ा भरै डंड खधो, सगपण कर भाटी सनबधो । सारां मिळे तुझ सूं सधो, वळ दाखै किण सिर 'गजबंधो' ।
—चतुरो मोतीसर

२ अतिनिकट, नजदीक ।
३ देखो 'सर' (११) (रू. भे.) (ह. नां. मा)
रू. भे.—सिरि, सिरी ।

सिरक-सं स्त्री. [सं. शीत+रक्षक] सर्दी से बचने के लिए रात्रि मे ओढने का खोला जिसमे रूई भरी हुई होती है, लिहाफ ।
उ०—सेठाणी दो तीन वळा पींजारो नै ओसीसा अर सिरक-पथरणा भरावण सारू बुलाई तोई वा नौळी रै रिपिया री बात नी करी ।—फुलवाड़ी
रू भे —सिरख, सीरक, सीरख ।

सिरकण-स. स्त्री.—१ खिसकना, हटना या जाने की क्रिया या भाव ।
२ देखो 'सिरकी' (रू. भे.)
उ०—१ पाल्है डेरा परठिया, मारग मध्यै आय । सिरकण तांणी तांतिया, डेरा किया बणाय ।—जसमा ओडणी री बात
उ०—२ राव कहै जसमल सुणो, महलां देखण आव । महला दीठा बीहिजै, म्हा सिरकणां रो साव ।—जसमा ओडणी री बात

सिरकणौ, सिरकबौ-क्रि. अ.—१ बीतना, व्यतीत होना, गुजरना ।
उ०—औ जबाब सुणिया मा धकै कीं बात नी चलाई । दिन सिरकता गिया । अेक पखवाड़ो सिरकग्यौ ।—फुलवाड़ी
२ हटना, खिसकना ।
उ०—१ टाल्या सिरदार हेटा लुळ नाई रै पगां हाथ लगावण वाळा हा कै वो लप आगौ सिरकग्यौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ राजकंवर नै आपरी जीत माथै तौ अडिग विस्वास हो इज । पछै होड करणा मैं क्यूं पाछो सिरकतौ । पण धणा तेळ री राड व्है ।—फुलवाड़ी

३ चलना, जाना ।
उ०—१ बोली—आपरी गाळिया तौ आसीस री गरज सारै । आप कित्ती ई गाळिया काढो तौ ई जीमियां बिना आपनै अठा सू सिरकण नीं दू ।—फुलवाड़ी
उ०—२ जड़ाव मासी कह्यौ—थूं तौ होठां आयोड़ी बात नै पूरी बारै पटकायां ई रंवै । डोळ दीखै कै सुणिया बिना नी सिरकैला ।
—फुलवाड़ी

४ आगे बढना, पास आना ।
उ०—१ सीढी काढियो कणाकलो आगो सिरकै अर माथै माथै पड़ै । म्हैं जाणनै गम खाई कै बापड़ो साधु है, भीड़ मैं दोरो बैठो है, जावण दो, घूड बाळो ।—अमरचूनड़ी
उ०—२ कूपोजी बोल्या—म्हा थका बैरचा री कटक एक पावंडो ई धकै सिरकजाय तो म्हैं कूंभीपाक भागी व्हूला । इण रा सूरज भगवान साखी है ।—कूपा राठोड़ री वारता

५ खिसकना ।
उ०—१ ज्यू ज्यू अधारो पायरतौ गियो चांद रो धोळो रंग पीळो पड़तो गियो । अर वो तर तर नीचै सिरकतौ गियो ।—फुलवाडी
उ०—२ सेवट हिम्मत कर नै एक जणा नै होळैसी'क कह्यौ—भाई जी राज थोड़ा आगा सिरकज्यो म्हू ई गोडीवाळ लूं ।
—अमरचूंनड़ी

६ किसी वस्तु का अपने पूर्व स्थान से कुछ हट जाना ।
ज्यू—थांभा रो सिरकणो, बाड़ या भीत सिरकणी ।
७ चुपचाप कही से चले जाना ।
८ मिटना, नाश होना ।
९ चूतड के बल धीरे धीरे किसी ओर बढना, रेंगना ।
१० साप, छिपकली आदि जन्तुओ का रगड खाते पेट के बल चलना, रेंगना ।
११ कार्य निकलना या पूरा होना ।
ज्यू—थूं रिपिया दे दिया जणै म्हारो कांम सिरकग्यो ।
१२ स्थगित होना, आगे बढना ।
ज्यू—वी री परीक्षा अर ब्याव दोन्यूं आगे सिरकग्या ।
सिरकणहार, हारौ (हारी), सिरकणियौ—वि० ।
सिरकिओड़ो, सिरकियोड़ौ, सिरक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिरकीजणौ, सिरकीजबौ—भाव वा० ।
सरकणौ, सरकबौ, सरक्कणौ, सरक्कबौ—रू० भे० ।

सिरकस-स. पु.—१ श्रेष्ठ, शिरमौर ।
उ०—बारहट केसरी भीम का भीम, सूरां तै सिरकस कविराजा की सीम । —रा रू.
२ देखो 'सरकस' (रू भे.)

सिरकाणौ, सिरकाबौ-क्रि. स.—१ रखना, धरना ।
उ०—१ बाणियो अेक कवो लियो तौ उणनै खीचड़ी फीकी अर

बिना घी री लागी। वौ कह्यौ—डागरा रै सांमी बाटौ सिरकावै ज्यू सिरकाय दी।—फुलवाड़ी

उ०—२ खुद तौ दिन-रात माल-मलीदा उडाती रैवै। अर म्हारै सामी सात दिना रा वासी टुकड़ा सिरकाय देवै।—फुलवाड़ी

२ खिसकाना।

३ धकेलना।

४ हटाना, दूर करना।

५ मिटाना, खत्म करना।

६ बढाना।

७ व्यतीत करना, गुजारना।

८ कार्य आदि निकालना, पूरा करना।

ज्यू—थूं मनै रिपिया दे'र म्हारौ काम सिरका दियौ।

९ स्थगित करना, अवधि बढाना।

ज्यू—थारी परीक्षा आगे सिरका दी।

सिरकाणहार, हारौ (हारी), सिरकाणियौ—वि०।

सिरकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिरकाईजणौ, सिरकाईजबौ—कर्म वा०।

सरकाणौ, सरकाबौ, सरकावणौ, सरकावबौ—रू० भे०।

सिरकापासी–स. स्त्री.—रस्सी में लगने वाली वह गाँठ जो रस्सी का एक छोर खीचने पर सरक कर कड़ी व दृढ हो जाती है।

सिरकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ रखा हुआ, धरा हुआ. २ खिसकाया हुआ. ३ धकेला हुआ. ४ हटाया हुआ, दूर किया हुआ. ५ मिटाया हुआ, खत्म किया हुआ. ६ बढाया हुआ. ७ व्यतीत किया हुआ, गुजारा हुआ. ८ कार्य आदि निकाला हुआ, पूरा किया हुआ. ९ स्थगित किया हुआ अवधि बढाया हुआ।

(स्त्री. सिरकायोडी)

सिरकार—देखो 'सरकार' (रू. भे.)

उ०—१ आप झरोखा बैठता, अळवळिया सरदार। हाजर रहती गोरडी, सज सोळै सिणगार। जी सिरकार आपरी सूरत प्यारी लागै म्हांरा राज।—लो. गी.

उ०—२ चादी कौ एक बाटकौ जी मैं बूरा भात। हुकम होय सिरकार कौ दोन्यू जीमा साथ।—लो. गी.

सिरकारी—देखो 'सरकारी' (रू. भे.)

सिरकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बीता हुआ, व्यतीत हुवा हुआ, गुजरा हुआ. २ हटा हुआ, खिसका हुआ. ३ चला हुआ, गया हुआ. ४ आगे बढा हुआ, पास आया हुआ. ५ खिसका हुआ. ६ किसी वस्तु का अपने पूर्व स्थान से कुछ हटा हुआ. ७ चुपचाप कही से गया हुआ. ८ मिटा हुआ, नाश हुवा हुआ. ९ चूतड़ के बल धीरे-धीरे किसी ओर बढ़ा हुआ, रेंगा हुआ. १० सांप आदि का रगड़ खाते हुए पेट के बल चला हुआ. ११ कार्यादि निकला हुआ, पूरा हुवा हुआ. १२ स्थगित हुवा हुआ, अवधि बढ़ाया हुआ।

(स्त्री. सिरकियोड़ी)

सिरकी–स. स्त्री.—पतली तीलियो की या सरकडे की बनी हुई टट्टी।

उ०—पीचका बेरा रै पाखती अेक रूपाळी लुगाई सिरकी तांण वासौ करियौ। साथै फगत अेक डावडी अर अेक कुत्तौ।

—फुलवाड़ी

सिरख—देखो 'सिरक' (रू. भे.)

उ०—उठौ म्हारा मारू बनड़ा करौ नी पोढणियौ, हिंगळू तौ ढोल्यौ बनडा सिरख पथरणा, इसड़ा पोढणिया थारा दासी जो करावै।—लो. गी.

सिरख-सोड़ियौ–स. पु. यौ.—हेमत ऋतु मे रात्रि मे ओढने का लिहाफ व चादर।

उ०—पीस पोयकर त्यार, मलीदा पाटै ल्यावै। सिरख-सोड़िया सीड़, ढोलिया ढाळ विछावै।—नारी सईकडो

वि. वि.—देखो 'मसोड'।

सिरखुली निसांणी–सं. स्त्री.—निसाणी नामक छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक पद में प्रथम १२ मात्रा पर यति और तुकबन्दी होती है तथा फिर नौ मात्राएं और होती हैं। इस प्रकार कुल २१ मात्राएं होती हैं।

सिरखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ बधव इक लखमण तू बीजौ, तौ सिरखौ बधव नह तीजौ।—सू. प्र.

उ०—२ बलता मात पिता कहै रे, सिरखी वयनी तौ नार।

—जयवांणी

उ०—३ रजपूताणी रुच सींचाणी सिरखी, नैणा जळ भरती सैणां थळ निरखी।—ऊ. का.

(स्त्री. सिरखी)

सिरग—देखो 'स्वर्ग' (रू. भे.)

सिरगा–सं. पु.—घोडे की एक जाति।

सिरगिर—स्रीगिरि' (रू. भे.)

उ०—कट्या घणा सज्जळ छज्जळ कान, सिरगिर कज्जळ कूट समान।—मे. म.

सिरड़–स. स्त्री.—१ एकाएक या सहसा आने वाली क्रोध की तरंग।

२ किसी कार्य के प्रति सहसा होने वाला उत्साह, धुन।

३ बुरी लत, कुटेव।

उ०—मिंदर तीरथ मंत्र व्रत माळा, मोटी भूल मिटाई। पिंड नव दरसण घत निजलापण, फिर क्यौ सिरड़ फंसाई।—ऊ. का.

सिरड़ि, सिरड़ी–सं. स्त्री.—तीव्र आवाज।

उ०—१ पछै कांन मैं आंगळी खसोल, ऊचौ मूंडौ करनै डूंडी वाळी जोर सूं सिरड़ी देय कंवण लागौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ डोकरी झिडक नै कह्यौ—रांम मारचा, क्यूं बिरथा कांन खावै। अठै दूजौ कुण ऊभौ है जकौ इत्तौ जोर सूं सिरड़ियां करै,

म्हैं तौ होळै बोलै ती ई सुण लेवूंला ।—फुलवाड़ी

वि.—१ सनकी, तुनक मिजाज ।

२ पागल, बेवकूफ ।

उ०—गळि अमलदार तिरगू' गिणे, मरणू' डूबि सुमांणसां । खळ भाति सिरड़ि मन मैं खिटै, मिटै न टिरड़ि कुमांणसां ।—ऊ. का.

३ हठी, जिद्दी ।

सिरचंद-सं. पु.—हाथी के मस्तक पर पहनाया जाने वाला एक अर्द्ध चंद्राकार आभूषण ।

सिरजदौ, सिरजंन, सिरजक, सिरजण-वि.—१ सृजन करने वाला, बनाने वाला ।

उ०—पण लुगाई तौ दुनिया रौ सिरजण करण वाळी मां है, उणरी कूख मैं साच रौ पोसण व्है ।—फुलवाड़ी

२ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—जप तप तीरथ बोहु कीया, वन वन डोल्या तन । जनहरीया मन थिर भया, जब सिवरया सिरजन ।—अनुभववाणी

सिरजणहार, सिरजणहारौ—देखो 'सरजणहार' (रू. भे.)

उ०—१ मानवी को कहा रे बावली हौ। तेतीस कोड़ि देवता सहित सिरजणहार, त्यउ तुहारइ कउतिग देखणहार ।

—अ. वचनिका

उ०—२ सिरजणहारौ सिवरियै, सकळ संवारै काज ।—डेल्हजी

उ०—३ हरीया साई एक है, सबका सिरजणहार । मैं पिंडत कू कहि रह्या, सुधि जाणौ सार ।—अनुभववाणी

उ०—४ बेटी, दुनिया रौ खिलकौ तौ देख कै इण अकल अर इण पोच रा धणी ई थारै म्हारै भाग रा सिरजणहार है।—फुलवाडी

सिरजणौ, सिरजबौ—देखो सरजणौ, सरजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हजूर बुलाइ अर कह्यौ भोपति का खुदाइ असा ही सिरजिया हुता ।—द. वि.

उ०—२ सीगण कांइ न सिरजियां, प्रीतम हाथ करंत । काठी साहत मूठि मा, कोडी कासी संत ।—ढो मा.

उ०—३ होणी सौ होई थिर नह थिर कोई, सिरजणहारै सिरजी सिर सोई ।—ऊ का.

सिरजणहार, हारौ (हारो), सिरजणियौ—वि० ।

सिरजिओड़ौ, सिरजियोडौ, सिरज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिरजीजणौ, सिरजीजबौ—कर्म वा० ।

सिरजथा-सं. स्त्री.—डिंगलगीत रचना का नियम विशेष जिसके अनुसार गीत के प्रथम द्वाले मे जो वर्णन किया जाय वह क्रमशः अंत तक एकसा ही रहता है ।

सिरजनहार—देखो 'सरजणहार' (रू. भे.)

सिरजळाइग्यारस—देखो 'सरजळाइग्यारस' (रू. भे.)

सिरजित, सिरजीत—१ प्रारब्ध, पूर्व लेख ।

उ०—सिरजित मेट न को सकै, करौ कोडि विधि कोई । एहवी हिज बुद्धि उपजै, होणहार जिम होई ।—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'सरजीत' (रू. भे.)

सिरजियोड़ौ—देखो 'सरजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिरजियोड़ी)

सिरजीलौ-वि.—सृजन करने वाला, बनाने वाला, निर्माता ।

उ०—उरध ढाकिलै तिसूळू आदि अनादि तौ हूंम रचीलौ हमैं सिरजीलौ स कवण ।—वि स. सा.

सिरजोर-वि. [फा. सरजोर] १ जबरदस्त, प्रचण्ड ।

च०—१ अठी एम पह उभै, दळां पारभ दरसाया । सयद उठी सिरजोर, अगन झळ जिम दळ आया ।—सू. प्र.

उ०—२ जुलफकार खा मारियौ, मुगळ थया निरजोर । माह महीनै जेठ ज्यौ, सँद वहै सिरजोर ।—रा. रू.

२ प्रबल ।

उ०—१ मिळिया दळ कमंधां अणमापै, अन सिरजोर गिणै नहि आपै ।—रा. रू.

उ०—२ जवन पेख सिरजोर, दियौ छत्रपति छिपाए । भसम जाण मारियौ, अगन करण जतन उपाए ।—रा. रू.

३ बलवान, शक्तिशाली ।

४ बागी, विद्रोही ।

५ उदंड, बदमाश ।

रू. भे.—सरजोर ।

सिरजोरी-स. स्त्री. [फा. सरजोरी] १ जबरदस्ती ।

उ०—लड़थड़ गळ लजा हतरस हजा, मनमथ काम मर्यदा है। जारी कर जोरी सठ सिरजोरी, कोरी हाय कथदा है ।—ऊ. का.

२ उद्दंडता, सरकशी, बदमाशी ।

रू. भे.—सरजोरी ।

सिरज्जण—देखो 'सरजण' (रू. भे.)

सिरज्जणौ, सिरज्जबौ—देखो 'सरजणौ, सरजबौ' (रू. भे.)

सिरज्जियोड़ौ—देखो 'सरजियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. सिरज्जियोडी)

सिरटी—देखो 'सिटौ' (अल्पा; रू. भे.)

सिरटौ—देखो 'सिटौ' (रू. भे)

उ०—१ बाजरिया सागै-पांग पाकौडी । बांस-बास ताळ डोका अर हाथ-हाथ भर सिरटा । दांणा देखौ तौ जाणै परडा रा डोळा ।

—अमरचूंनडी

उ०—२ ओळी तीन देपाळदे खंचायी हुती सू तियै मैं जुवार रा धाड़ छै तिया रा सिरटा नीसरिया नही, मकी रै सिरटै दाई निसरिया ।—देपाळदे री बात

सिरताज—देखो 'सरताज' (रू. भे.)

उ०—१ वर पंच वासै, सत्र नासै, राज कज सुरराज । खर खेत खंडै, थूर थडै, सूर कुळ सिरताज ।—र. ज. प्र.

उ०—२ बर तिलक कीजै वार, अविवेक राज उदार। स्रीकमळ फबि सिरताज, स्रीअनुज अखित सकाज।—सू प्र.

सिरत्रांण-स. पु [सं. शिरत्राणम्] सिर की रक्षा के लिए युद्ध आदि मे पहना जाने वाला लोह का बना टोप, झिलमटोप। (डिं. को)

सिरथंभ-स पु. यौ. [स शिर+स्तभ] गर्दन। (अ. मा.)

सिरदार—देखो 'सरदार' (रू. भे.)

उ०—१ स्वरण रखै जै अब सकै, दै किम पहरेदार। सिर राखै सिरदार नहि, सिर दै सौ सिरदार।—रैवतसिह भाटी

उ०—२ सायब सुघड़ सुजांण, रसक रिझवार हो। हो म्हारा सिरदार, हिया रा हार हो।—र हमीर

उ०—३ सेवट एक दिन तौ सगळा नै मरणौ इज है, पण सिरदारां री मौत रौ तौ की पतियारौ इज नीं।—फुलवाडी

उ०—४ रजपूती रैई नही, पूगी समदा पार। पातरिया रा पाद मैं, सीज गया सिरदार।—ऊ. का.

उ०—५ साथ रै लोक नूं कहण लागौ—जौ वीहा कुंवरजी रै आगै ही घणा छै पिण समझदार दातार तौ लाडीजी सारखौ कोई नही बडी सिरदार जांणीया विसेख।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—६ तद प्रोहित अरज कीवी—कुंवरजी साहिब लाडीजी मुजरौ मालम करवायौ छै। वडो सिरदार तारीफ कासु करू।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—७ आपणी बारली बरसाळी मैं एक ताजीमी सिरदार बैठाण परा'र आयौ हूं।—दसदोख

सिरदारगी-सं. स्त्री.—१ सरदार होने का भाव, सरदारगी।

२ सम्पन्नता।

३ अमीरी।

सिरदारड़ौ—देखो 'सरदार' (अल्पा; रू. भे.)

सिरदारि, सिरदारी—देखो 'सरदारी' (रू. भे.)

सिरदुआळी-स. स्त्री.—घोडे का एक साज जो चमडे का बना होता है और लगाम के कड़ों मे लगकर कानों तक होता है।

सिरदौ—देखो 'सरदौ' (रू. भे)

उ०—१ परहरै आन साकार पति, साहै गति साहै चडौ। सिर चाडि हाथि सिरदौ करण, अवर देव मुझ आखडी

—सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ पथर देव देहरा पथर, पथर कळस वणाया। पूरब पीठि पछम दिस सिरदा, हिंदू धरम गुमाया।—सुरजनदास पूनियौ

सिरधणी-सं. पु.—मालिक, स्वामी।

उ०—म्हाकै तौ थे पातसाहजी का सायजादा ज्याकं बराबर सिरधणी छौ।—द. दा.

वि.—सिरमौर, श्रेष्ठ।

सिरधर-सं. पु.—१ मकानों के स्तम्भ के ऊपर का पत्थर।

२ दरवाजे के ऊपर लगाया जाने वाला पत्थर या काष्ट का बना उपकरण विशेष।

उ०—खूंटा खडा, वळा डूंचिया, हाला सू हळ ठाटिया। सिरधर अर सेतीर साळा, खूड, भूण, थम, पाटिया।—दसदेव

रू. भे.—सरधर।

सिरधा—देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)

उ०—उण मैं लिख्यौ हौ—दूजा नै तौ काई लिखूं पण आप नै लिख्या बिना रैय नी सकूं कारण कै आपरौ तौ उण नालायक माथै थोडौ घणौ असर पडै है, वोई आपनै सिरधा री निजर सू देखै है।

—अमरचूनड़ी

सिरधारि, सिरधारी-स. पु.—सिरो को धारण करने वाला, महादेव।

उ०—सिरधारी तौ जटधार सदा रा, करधारी बणिया अब केम। उमा हूंत धुरजटी आखै, जग भू थई आहुवै जेम।

—मोहबत बारहठ

२ मालिक, स्वामी।

सिरनांमी-स. पु.—स्वामी, मालिक।

उ०—१ वीनति सुणौ रे म्हारा वाल्हाराजि मरूदेवा राणी ना लाल, राजि थारा चरण नमु सिरनांमी।—वि. कु.

उ०—२ घर त्यागी नै वैराग्य लियौ, इद्रा दीक्षा महोत्सव कियौ। गया ठिकाणै सिरनांमी, सुमरौ स्रीसीमंधर स्वामी।—जयवाणी

सिरनांमौ—देखो 'सरनामौ' (रू. भे.)

उ०—राजा दोनू रोहडा, रीझ किया कविराज। गण दामा गामा गजा, सिरनांमा सिरताज।—रा. रू.

सिरपच—देखो 'सरपंच' (रू. भे)

सिरपाउ, सिरपाव-स. पु—१ सिर से पैर तक पहनने के वस्त्रादि जो बादशाह, राजा, महाराजा द्वारा किसी को सम्मानार्थ दिये जाते थे।

उ०—१ उठै राजि स्रीकल्याणमलजी नूं सिरपाव देइ हाथी घोडा देइनै वीकानेर नू विदा किया।—द. वि.

उ०—२ फेर महाराजा जसवतसिहजी रै सांदू कूंभौ मालावत चारण आयौ सौ घणा दिन रहियौ। महाराज घोड़ौ कडा मोती सिरपाव देय रहिया तद विरावतै सू गयौ।

—महाराजा पदमसिहजी री बात

२ कपड़ा, वस्त्र।

उ०—कवरजी दरीखानै आया छै ईसा सुण ढाढीयां सिरपाव पहरीया वीणा सरू कर मुजरा नै चालीया।—ढो. मा.

४ विवाह आदि मागलिक अवसरो पर अपने सगे सम्बन्धियों को सम्मान के रूप में दिये जाने वाले वस्त्र आदि।

उ०—मान घणौ ई राखियौ, जाता दिया सिरपाव। ब्याह करियौ मन हरख सु, राख्यौ कोड अर चाव।—सातिलाल देवेरा

रू. भे'—सरपाव, सिरोपाव।

सिरपेच-स. पु. यौ. [सं. शिर+रा. पेच] पगड़ी या साफे पर बांधा

जाने वाला एक आभूषण विशेष। (अ. मा.)

उ०—१ दोय भाई सांवळा दोय ऊजळा घणा, सारां मैं सिरदार राघौरांम जी बनां सीस पै सिरपेच सोहै सेवरा घणा, मोतियां री लूम लागी हीरा जी पना।—लो. गी.

उ०—२ साहब नौबत सुद्रब, वमन जरकस्स जवाहर। रतन जडत सिरपेच, माळ मुगताहळ सुंदर।—रा रू.

उ०—३ जिस वखत स्रीमहाराजा केसरिया ऊच पौसाक पहरि खांधी पाघ पेच वणवाय। जंवहर कै सिरपेच सिर सोवा जगजोति जगाय।—सू. प्र.

रू. भे.—सरपेच।

सिरपोस—स. पु.—दीपक या पीलजोतो की लौ से उठने वाले धूए को ऊपर उठने से रोकने के लिए उस के ऊपर लगाया जाने वाला टोप।

२ बदूक के ऊपर का कपड़ा या गिलाफ।

३ सिर का आवरण।

वि.—१ शिरोमणि, श्रेष्ठ।

उ०—१ निडर 'चंडावळ' नाथ, रूप ग्रीखम रवि रावत। उदैभाण बोलियौ, फौज सिरपोस फतावत।—सू. प्र.

उ०—२ रहै अवर कथ 'रयण', सूर स गार संपेखै। सरब धरम सिरपोस, स्यामध्रम ध्रम सदेखै।—सू. प्र.

२ देखो 'सिरत्राण'।

उ०—सभि बाळक सिरपोस, नांम किताब निबाबा। साह बाळ दळ सबळ सभै भैजत सताबा।—सू. प्र.

सिरफ—वि. [अ. सिर्फ] १ केवल, मात्र।

उ०—म्है बोल्यौ—थारा साथ्या सूं घिर जाणै पैली म्हनै सिरफ च्यार गोळ्यां चलाणी पड़ैली सरदार।—तिरसंकू

२ अकेला, ऐकाकी।

सिरफूल—देखो 'सीसफूल'।

उ०—मांगफूल सिरफूल, जड़ाऊ मंडिया। खिण खिण निरखै नाह हिए दुख खडिया।—बा. दा.

सिरबंद, सिरबंध—देखो 'सरबंद, सरबंध' (रू. भे.)

सिरबधण—सं. पु.—किसी पात्र आदि के मुह पर लपेट कर बाँधी जाने वाली रस्सी।

सिरबंधी—स. पु.—मोर्चाबंधी।

उ०—१ बगसी बाळकिसन्न, कहै जरदैतां कापूं। सिरबंधी रातळा, अमल जवनां तिण आपू।—सू. प्र.

उ०—२ अर जितरौ सिरबंधी रौ लोक छै, इतरौ सरव मेवाड़ी दरवाजै पासै उभौ राखजै।—राजा नरसिंघ री बात

उ०—३ रांणी गढ संबाहि उभी रही। और सिरबंधी लोक लै राव दखणाधै पासै जाय उभौ रह्यौ दरवाजै। सहर रै लोक न खबर नही।—राजा नरसिंघ री बात

उ०—४ जरै भीवंजी अरज कीधी, म्हारै कनै पातिसाहा री सुखी निजर सू हजार तीन असवार छः वळै सिरबंधी रा घोड़ा साथ राखनै हुई जावुं।—जखडा मुखड़ा भाटी री बात

सिरभेदी भालौ—स. पु.—एक प्रकार का भाला विशेष।

सिरमंड—सं. पु. [स. शिर+मड] १ बाल, केश। (अ. मा.)

२ सिर का आभूषण। (अ. मा, ह. ना. मा.)

रू भे.—सिरिमड।

सिरमणि, सिरमणी—सं. पु. [स. शिरमणि] १ शेपनाग।

२ यह सर्प जिसके शिर मे मणि हो।

३ सरप, साप।

उ०—तेज गहड गोरा हठै तिण ताळ रा, तन जगै झाळ रा दबंग तातै। सिरमणि भाळ रा जेम हिंद सरब, मान चंद्रभाळ रा भुजा माथै।—कविराजा बांकीदास

वि.—शिरोमणि।

सिरमाळ, सिरमाळा—सं स्त्री. [स. शिरमाला] मुडमाल।

उ०—१ चौसठि पियै भरि पत्र चंड, सिरमाळ सभै आरोह सड।

—सू. प्र.

उ०—२ निरख सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ सचै।—रा. रू.

सिरमाळी—देखो 'स्रीमाळी' (रू. भे.)

सिरमाळी सुनार—स. पु.—सुनारो की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

सिरमुंडाई—स. स्त्री —१ सिर मूडने की क्रिया या भाव।

२ मुण्डन सस्कार।

३ सिर मुंडवाने का पारिश्रमिक।

सिरमौड, सिरमौर—स पु.—१ सर्वश्रेष्ठ अंग, सर्वोतम अंग या भाग।

उ०—म्हैं तौ कैवूं कै किणी रौ दुस्टी मर भलाई जावै पण उण रा माथै मैं टाट नी व्है। माथौ तौ देह रौ सिरमौड़।—फुलवाड़ी

२ शिरोभूषण, मुकुट।

३ पति, खाविंद।

४ मालिक, स्वामी।

वि.—१ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उ०—१ मीरा जनमी मेडतै परणाई चित्तौड। रांम भजन परताप सू सकळ सिस्ट सिरमौड़।—सगराम

उ०—२ सुण आवाज सूरमा, एम धज राज उठाया। मौर जीत सिरमौर, जाण पर जोर कि आया।—रा. रू.

उ०—३ सांगरियां रै साग, सती सिरमौड़ सुरांणी। खा साग-रियां साग, नरा पर पीड पिछाणी।—दमदेव

२ प्रधान, मुख्य।

सिरलोक सिरलोकौ—१ देखो 'सिलोकौ' (रू. भे.)

उ०—संवत छपनै रौ केवण सिरलोकौ। लौकिक लैवण नै सांभ-

-ळजौ लोकौ।—ऊ. का.

२ देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

सिरलौ-वि.—१ समान, बराबर।

२ देखो 'सिलौ' (रू. भे.)

सिरवरी-सं. स्त्री.—स्वच्छ आकाश मे कहीं-कहीं पर दिखाई देने वाले बादल के छोटे-छोटे टुकडे। (क्षेत्रीय)

सिरवाळै-क्रि. वि.—अन्त मे, आखिर मे।

सिरवाह-सं. स्त्री.—सिर पर किया जाने वाला प्रहार।

सिरस—देखो 'सरेस' (रू. भे.)

उ०—ऊंची डूंगरी पर खड़ी म्हारी हवेली आम अर सिरस रा बूठा रूखां मांय सूं दूर सूं ई दीखण लागगो।—निरसकू

सिरसतौ-स. पु.—सलाह, मशविरा।

उ०—नित्य सिकार चढै मारै तौ हेक हिरण विण सारी ही रोही रा हिरण घेचै, चरण देवै नहीं। तद हिरणी बैस अर सिरसतौ कीयौ।—बूढी ठग राजा री बात

सिरसद-वि.—घायल।

उ०—साहणियां अरज कीवी—महारावजी घोड़ा जौ कठै चरै, हाथी बाड़ कठै चरै। जवा माही नै बाड माही तौ जिकी बलाय आय थह दीवी छै सौ आदमी सौ-सवासौ राव रा काम आया। घोड़ा पचास सिरसद कै हुइया। जवा रे वास्तै साहणी सागिरद पेसै रा लोग पहला गया तिका सै बेहवाल हुइया।

—डाढाळा सूर री बात

सिरसव—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

उ०—फाग फाग पण सरिखा नही, छासि धोळी नइ दूध धोलु सही। जेवडउ अंतर मेरू सिरसव इ, तिम जिलगुण अवर कथा कव्यइ।—कल्याण

सिरसाळी-वि.—बढिया, उत्तम।

उ०—बद सास बिकारी एब उधारी, इधकारी ओढदा है। साकर सिरसाळी थिर भर थाळी, अगला कर ऊगदा है।—ऊ. का.

सिरसिज-सं पु—१ बाल, केश।

२ देखो 'सरसिज' (रू. भे) (प्रा. फा. स)

सिरसूं—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

सिरसूत-सं पु—पगडी, साफा।

सिरसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ सौ कमरसिंह सिरसौ बडौ भाई बिगोई बादसाह री हजूर रहवै छै तौनूं रोवै छै।.........—द वि.

उ०—२ जाळ जागडौ रूंख सघन गायड़मल गाढौ, वील सरेसा बडौ खजूरा सिरसौ डाढौ।—दसदेव

सिरस्यूं—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

सिरहर-सं. पु. [सं. सरोवर] १ तालाब। (ह. ना. मा.)

२ शिखर, शृग।

वि.—१ श्रेष्ठ, शिरोमणि, सरताज।

उ०—१ जग वताणी जीतणौ, करणा कोड पसाव। सोढ हुऔ तू भांण सुत, रावा सिरहर राव।—बा. दा.

उ०—२ गति गंगा मति गोमती, सीता सील सुभाय। महिलां सिरहर मारवी, अवर न दूजी काय।—ढो. मा.

२ समान, तुल्य।

रू भे.—सरहर, सरहरउ।

सिरहांणौ-सं. पु.—पलग, खाट आदि का वह भाग जिधर सोते समय सिर रहता है।

उ०—श्रीक्रस्ण जी पोढ्या था। दुरजोधन पहिलौ ही सिरहांणा दिसि आइ बैठौ।—वेलि टी.

२ सोते समय सिर के नीचे लगाने का तकिया।

रू भे.—सराणौ, सिराणौ, सिरातियौ।

सिरहार-स. पु—मुडमाल।

उ०—१ काळिका चडिका पतर भरसी। सदा सिव जिकौ सिरहार करसी। नारद ख्याल जोवसी।—पना

उ०—२ करै सिरहार हर नचै नारद कहर, खिती पुड़ मचै चहुवै दसा खेद। जगा अछरा क्रत हूत नरत्त जितै, अतै अजकौ रहै भूप 'उमेद'।—उम्मेदसिंह सिसोदिया रौ गीत

सिरांणौ, सिरांतियौ, सिराती—देखो 'सिरहाणौ' (रू. भे.)

उ०—१ तूं क्यु सूतौ नींद भरि, भजन बिना बेकाज। जनहरीया जोरौ करै, खडौ सिरांणै बाज।—अनुभववाणी

उ०—२ वीर पतनी (वीर स्त्री) रा वचन है कै बळती छाया देख भाग गया तौ रात रा सोवता सिरांणै गीदवौ तकियौ रहसी पण धण स्त्री कहै म्हारी बाह रौ सिराणौ नहीं हुसी अरथात भागगा तौ आपसू घरवास राखंला नहीं।—वी. स. टी.

उ०—३ सेठ आपरा हरख मैं ईं मगन हा कै सेठाणी सिरांतियै आयनै बैठगी।—फुलवाडी

उ०—४ पारवतिया बिहू सिरांती पगाती, पडिया भड धड आप प्रमाण। समहर अजर जरि सूतौ, साथरि अरि पाथरि 'सुरतांण'।

—सुरतांण मांनावत रौ गीत

सिरांमण, सिरांवण-स. पु. [स. शीतलासन या स. शिशिराऽसन]

१ नाश्ता, कलेवा।

उ०—१ ऊनग्यिा। दांतण कुरळा कीया। सिरांवण किया। सेज-वाळौ जैतराय दियौ।—देपाळदै री बात

उ०—२ ताहरा छोकरी कह्यौ—प्राचणा सिगळा ही रौ सिरांवण कियौ। ताहरा सारा ही ठाकर अबोला रह्या।—नैणसी

२ सबल, पाथेय।

३ स्वल्पाहार।

रू. भे.—सिरांमणौ, सिरांवणौ, सीरावण, सीरांमण, सीरामणौ, सीरावण, सीरावणौ।

सिरांमणी, सिरांवणी-सं.स्त्री.—देखो 'सिरामण' (रू. भे.)

उ०—थिरमौ एक वेस एक जनांनौ अवल। रुपीया सव इतरा प्रोहित नु विदा रा मेलिया। मरण एक सिरांवणी मारग री मेली।—कुंवरसी सांखला री वारता

सिरा-स. स्त्री. [सं. सिरा] १ रक्त वाहिनी नाडी, खून की छोटी नली, धमनी, रग। (डिं. को.)

उ०—घटि घटि घरा घाव घाइ घाइ रत घरा, ऊंच छिछ ऊछळै अति। पिंडि नीपनौ कि नेत्र प्रवाळी, सिरा हूंस नीसरै सति।—वेलि

वि. वि.—प्राणी के शरीर मे रक्त शिराएँ जाल के समान गुथी हुई होती है। मानव शरीर मे आठ रक्त शिराएँ प्रमुख मानी जाती है जिन्हे आठो दिशाओं के स्वामियो के नाम से जाना जाता है यथा—आग्नेयी, ऐन्द्री, महाशिरा इत्यादि।

२ नलिका, नाली।

सिराइचौ, सिराईचौ—देखो 'सिरायचौ' (रू. भे.)

उ०—१ तवू तांण सिराइचा, सहु छाया वनखड। इळ पुड ईडा मेल्हिया, किरि ब्यायौ ब्रहमंड।—गु. रू. बं.

उ०—२ असपका खडी हुई छै। तबू समीआण सिराइचा रावटी वाडि समेत करणाटी गूडर ताणीया छै।—रा. सा. सं.

सिराका-स. स्त्री. [सं. शका] भ्रम, सदेह, शका।

उ०—दानि धरमी एक वीर विचारै, सइ नरेंद्र न वलइ अणमारै। हेम नी गजवडिइं पताका, करण जाणिन किसिउं सिराका।—सालिसूरि

सिराडौ—देखो 'सराडौ' (रू. भे.)

उ०—तरै माह कह्यौ इणां घोडां री धाव कोस च्यार तांई एकै सिराड़ै देस्यौ, तरै इणां री हाम पूरी पोचसी, तिणसूं महाराज सिराडौ साथै दिरावौ।—कहवाट सरवहियै री वात

सिराचौ—देखो 'सिरायचौ' (रू. भे.)

उ०—लाल सिराचा तरकस जिहां, मलिक मसूरति बइसइ तिहा।—का. दे. प्र.

सिराज-वि.—श्रेष्ठ।

उ०—१ सिद्धराज मेह किनियौ सिराज, प्रतपाळ करन जस धरम पान।—करणी प्रकास

उ०—२ धिन भाग वस किनिया धिराज, सव बीस साख उप्रवट सिराज।—करणी प्रकास

सिराजी-स. पु.—रग विशेष का घोड़ा।

उ०—हरिया लीला गुलदार पचकल्यांण पवण गुरड़ संजाब संदली सीहा चकवा अबलख सिराजी फेर ही अनेक रंग रा घोडा तयार कीजै छै।—रा. सा. सं.

सिराणौ, सिराबौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)

सिराणहार, हारौ (हारी), सिराणियौ—वि०।

सिरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिराईजणौ, सिराईजबौ—कर्म वा०।

सिरायचौ-सं. पु.—छोटा तंबू, खेमा।

उ०—तंबू सिरायचा साथ सारू मांणस असवार कीया।—कुंवरसी साखला री वारता

रू. भे.—सरायचौ, सिराइचौ, सिराईचौ, सिराचौ।

सिरायत-सं. पु.—राजवंश का बडा जागीरदार।

वि.—१ हिस्सेदार, भागीदार।

उ०—म्हे आप सिरायतां सू घणा सुखी हा।—फुलवाडी

२ देखो 'सरायत' (रू. भे.)

सिरायोड़ौ—देखो 'सरायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. सिरायोडी)

सिरारौ-क्रि. वि.—तरफ का, ओर का।

सिरावण—देखो 'सिरावण' (रू. भे.)

उ०—१ रणछोड़ै रामा-सांमा करनै चिलम आघी करता पूछ्यौ-सेठा सिरावण करौ तो थोड़ौ माखण नै सोगरौ लाय दू।—रातवासौ

उ०—२ खावण मैं थळी री उपज बाजरी अर ज्वार, मोठ व कठै'क गेहूं काम आवै। कडी मेनत करण सूं भोजन दिन मैं चार बेळा व्है—सिरावण या कलेवौ, रोटी, बैफारौ अर ब्याळू।—जहूरखां मेहर

सिरावौ—देखो 'सीरावौ' (रू. भे.)

उ०—कुंभार सिरावा सोनारी रे, हुवौ नायक भार लदारौ।—जयवाणी

सिरावृत-स पु [स सिरावृत्त] सीसा नामक धातु, रागा।

सिराह—देखो 'सराह' (रू भे.)

उ०—ग्रीव न मोडै देवणौ, करणौ संभु सिराह। परणता धण पेखियौ, ओछी ऊमर नाह।—वी. स.

सिराहणौ, सिराहबौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)

उ०—अर बार बार सिराहि भोगा मै आसक्त आळसी। और अवनीसा रा आसय मैं सूतौ वीररस जगायौ।—व. भा

सिराही-सं पु—सिंध प्रदेश की एक प्राचीन लुटेरा जाति व इस जाति का व्यक्ति।

सिरि—१ देखो 'सिरी' (रू. भे.)

२ देखो 'सिर' (रू भे)

उ०—१ वाहै सत्रा सिरि खाग विहडै, मार लियै थाणा वळ मंडै।—रा. रू.

उ०—२ अणियाळा नयण बांण अणियाळा, सजि कुंडळ सुरसाण सिरि।—वेलि

३ देखो 'स्री' (रू. भे.)

उ०—दीठउ सुरगिरि क्षीरहरौ, सुमिणइ सिरि रवि वद ।
—सालिभद्र सूरि

४ देखो 'स्वर'।

उ०—भरर भरर सिरि भेरिग्र साद, पायडीउ आलवीउ नाद ।
—हीराणद सूरि

५ देखो 'सरी' (रू भे)

उ०—सउ सहसै एकोतरै, सिरि मोती हरि सुध्ध । नदी निवासउ उत्तरइ, आंगु एक अविध ।—ढो मा.

सिरिमंड—देखो 'सिरमड' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

सिरिया—सं. पु. [सं. शिरस्] सिर, मस्तक । (ह. ना. मा.)

सिरियादे—स स्त्री.—कुम्भार जाति की एक भक्त स्त्री जिसने प्रह्लाद को ज्ञान दिया था ।

उ०—सिरियादे धाया करौ सहाया, मिनडी जाया मभ आया ।
—भगतमाळ

सिरियारी—सं. स्त्री —ग्रौषधि मे काम आने वाली एक जंगली बूंटी ।

सिरियौ—देखो 'सरियौ' (रू भे.)

उ०—तीखा तीखा लोखड रा सिरिया रूपी दात लिया वौ हाथियां सूं हब्बीड़ा लेवण री हिम्मत राखै तौ मिनख बापडा री काई जिनात सौ उणरै सांम्हौ देख ई सकै ।—अमरचूनडी

सिरिस्ता—देखो 'सरिस्ता' (रू. भे)

सिरिस्तेदार—देखो 'सरिस्तेदार' (रू भे.)

सिरिस्तेदारी—स. स्त्री. [फा.] सरिस्तेदार का कार्य या पद ।

सिरी—सं. स्त्री. [स. शिरस्] १ बकरे के सिर का गोश्त जो भून कर या पका कर खाया जाता है ।

[सं. शिरि] २ तलवार, खड्ग ।

[सं. शिरः] ३ एक प्रकार का बडा सर्प ।

४ सर्प, नाग । (ग्र. मा.)

५ बकरे, हिरण, खरगोश आदि शिकार के जानवरों के सिर ।

६ देखो 'स्री' (रू. भे)

उ०—१ सिरी घटियाळ अरोहित सेर, सख्या मवताहळ माळ सुमेर ।—मे म.

उ०—२ कसै रेसमी लाल कठा कलावा, किना वेढिया राहु दै भाण कावा । सिरी सीस कुंभा तणी हेम साऊ, जथा नारि वक्षोज चोळी जडाऊ ।—व. भा.

७ देखो 'सीरी' (रू. भे.)

उ०—म्है तौ रिपिया भांगण रौ सिरी हू पण कोई जोगौ आदमी नी मिळै तौ वै रिपिया मगळा अकारथ जावै ।—फुलवाड़ी

८ देखो 'सरि' (रू. भे)

सिरीकिसन—देखो 'स्रीकिसन' (रू. भे.)

उ०—ए रुकमइयै री कहीजै जच्चा राणी बेनड़ी ए केसरिया सिरीकिसनजी री नार । ए म्हानै घणी ए सुहावे जच्चा पीपळी ।
—लो. गी

सिरीख, सिरीखउ, सिरीखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ औ राज सिरीखौ दीसे छै । तैसु मै तौ आपनु हीज जाणीया ।—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ साफ करण मा बाप, खून कियोडा खलक नै । आप सिरीखा आप, जग माही दूजा 'जसा' ।—ऊ. का.

(स्त्री. सिरीखी)

सिरीभरण—स. पु. [स. श्रीभरणः] श्रीविष्णु ।

सिरीमुख—देखो 'स्रीमुख' (रू. भे.)

सिरीवर—देखो 'स्रीवर' (रू. भे.)

सिरीसाप—देखो 'स्रीसाप' (रू. भे.)

उ०—सू किण भात रा नागा छै । सिरीसाप, भैरव, चौतार, कसबी महमूदी फलगार ।—र. मा. स.

सिरीसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिरीसी)

सिरीस्रप—स. पु. [सं. सरीसृपः] १ सर्प, नाग । (ह. ना मा.)

२ रेंगने वाला जानवर ।

सिरू, सिरू—वि.—१ शीघ्र स्वाहा न होने वाला ।

२ पर्याप्त, पूर्ण ।

३ बरकत ।

उ०—घर मै अस्टपौर दाता-रूसी । बामण रै तौ खायौ-पीयौ अग नीं लागतौ । औडा झगडा मैं लिछमी कद बसै । अर यूं ई मागण सिवाय बामण रै दूजौ कोई हलीलौ ई नी हौ । माग्या दांणा री काई सिरू व्हैती ।—फुलवाडी

४ देखो 'सरसू' (रू. भे.)

५ देखो 'सरू' (रू. भे.)

सिरे, सिरै—वि.—श्रेष्ठ, बढिया ।

उ०—१ अथग अचळ धिन 'जोध' अभिनमा, सावज कुळ पैंतीस सिरै । हरि मेलियौ मथै हीलोहळ, गाजियौ रांवण मेर-गिरै ।
—किसनो आढौ

उ०—२ छोटकी बीनणी सगळी बहुवा सू सिरै है । नैडा नेडा चौखळा मैं ई इणरै जोड री दूजी बीनणी नी लाधै ।—फुलवाडी

२ मुख्य, प्रधान, खास ।

उ०—१ मामे गढ रौ दरवाजौ ढाबियौ तौ भाणेज सिरै ड्योढी मैं डेरा किया ।—अमरचूनड़ी

उ०—२ मिनख रै वास्तै जीभ सूं कीं बोलणौ ई तौ सिरै बात नी है । मिनख री खास पिछाण तौ उणरै करतबा सूं व्है ।
—फुलवाडी

३ सिद्ध, सफल ।

उ०—राखवा राज पतसाह रौ, यौ समाज भड़ उच्चरै । रस थया

वेळ महाराजरी, सकळ काज चढसी सिरै ।—रा. रू.

क्रि. वि.—पर, ऊपर, सर्वोपरि ।

उ०—१ इम जीपै आवियौ 'गंग' वाजतां नगारां, सुजस वधै घर सिरै, उछक छक वधै अपारा ।—सू. प्र.

उ०—२ अला लाछिवर पहिलड़ौ साच लीधौ, अला किसौ मेघा सिरै कोप कीधौ ।—पी. ग्रं.

सिरैपंच--देखो 'सरपच' (रू. भे.)

सिरैपंचौ-स. स्त्री.—सरपंच का कार्य या पद ।

सिरैपोत—देखो 'सरूपोत' (रू. भे)

उ०—वा देत री वेटी तौ सिरैपोत औ इज सवाल करयौ—सांप्रत मौत रै मूंडै थे काई सोचनै आया ।— फुलवाड़ी

सिरैबाजार—देखो 'सदरबाजार' ।

सिरै रौ कुरब-स. पु.—जोधपुर महाराजा द्वारा अपने सामतो को दिया जाने वाला सम्मान, ताजीम ।

वि. वि —यह कुछ चुने हुए सरदारों को मिलता था जो राज-दरबार के समय अन्य सामन्तो से ऊपर बैठते थे ।

सिरोगुहा-सं. स्त्री. [स शिरोगुहा] शरीर के तीन घटो मे से एक जिसमे सुषुम्ना नाड़ी का सिरा रहता है ।

सिरोग्रह-सं पु [सं. शिरोग्रह] १ शिर का एक वात रोग । (अमरत) २ सब से ऊपर वाला कमरा या कक्ष ।

सिरोतर-वि.—समान तुल्य ।

उ०—कछ धर तणौ कमेत, ताव खगराज सिरोतर । परी भाव पेखजै, वीजळ इक अंतर भर । कुरंग ताछ कूदतौ, दूरग फरहर तौ डाणा, सरस जलूमा साज, वाज सिद गुटक वखाणा ।—पना

सिरोधर, सिरोधरि-स. स्त्री [स. शिरोधराः] गला, गर्दन ।

(ह. ना मा.)

सिरोपाव—देखो 'सिरपाव' (रू. भे)

सिरोबर-वि. - बराबर, समान ।

सिरोभूसण-स. पु. [स. शिरोभूषण] सिर पर धारण करने का गहना ।

सिरोमण—देखो 'सिरोमणि' (रू. भे.)

उ०—१ रतन गवज्ज सिरताज, सरब गजराज सिरोमण ।

—रा. रू.

उ०—२ नितजय ग्यान निवास, पती गणनायका । लबोदर हर-नद, सिरोमण लायका ।—बा. दा.

सिरोमणराय-सं. पु. [स. शिरोमणि+राज] १ परमेश्वर, ईश्वर ।

(ह. नां. मा.)

२ चक्रवर्ती, सम्राट ।

सिरोमणि, सिरोमणी-वि. [सं. शिरोमणि] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्व प्रमुख ।

उ०—१ अर सामतां मैं सिरोमणि जाणि जैत कुमार सहित प्रांमार राज सलख नू आपरै कनै राखण काज अजमेर बुलावियौ ।

—वं. भा.

उ०—२ सरव सिरोमणी होवण माल, लागा करण लड़ाई । मोक्ष गियोडा रिसि मुनियां मैं, अध बिच टाग लडाई ।—ऊ का.

२ जिसके सिर पर मणि हो ।

रू. भे.—सरोमण, सरोमणि, सरोमणी, सिरोमण ।

सिरोमरमा-स. पु. [स शिरोमर्मन्] सूकर, सूअर ।

(अ. मा; ह. ना. मा.)

सिरोमाळी-सं. पु. [स. शिरोमालिन्] शिव, महादेव ।

सिरोरुह, सिरोरूह-स पु. [सं. शिरोरुह] १ शिर के बाल, केश ।

(अ. मा, ह. ना. मा.)

उ०—सिरोरुह कोसेय काळा सरीखा, नियो आक भूं वांकडा नेत तीखा ।—मे. म.

२ देखो 'सरोरुह' (रू भे)

सिरोळी, सिरोळी-स. स्त्री.—१ आमो की एक प्रकार की किस्म या जाति या इस जाति का आम ।

२ देखो 'सिरोळौ' (पु.) (रू. भे.)

सिरोळौ, सिरोळौ-वि. (स्त्री सिरोळी) जिसमें एक से अधिक व्यक्तियो की साझेदारी हो, सामूहिक ।

मुहा —१ सिरोळचां री मां नैं स्याळ खावै=साझेदारी अच्छी नहीं होती २ धिरथी माळ सिरोळौ है=धरती पर उत्पन्न पदार्थ पर सबका हक होता है ।

सिरोही-वि स्त्री —सिरोही नगर की बनी । (तलवार)

उ०—ठाकर कहै बहु जांग क समझै अखवरा, सिरोही तरवार खणक्कै बक्करा ।—अग्यात

स. पु.—१ एक प्रकार का बढिया लोह जिसकी तलवारें बनती है ।

स. स्त्री.—२ तलवार ।

उ०—१ तेरा नांम सादा तौ अभी लौ चोट झेलौ, पजै जोर पाया तौ सिरोही दाव खेलौ ।—शि. व.

उ०—२ अर इणरै माथै घणौ अमामी सिरोहियां री फूल धारां री बाढ झड़सी ।—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री बात

वि. वि.—यह दो प्रकार की होती है—पत्राशाई और मानाशाई ।

३ राजस्थान का एक प्रसिद्ध कस्बा ।

रू. भे.—सीरोही ।

सिरौ-सं पु.—१ लम्बाई का अन्त, लम्बाई का छोर, शिरा ।

२ ऊपर का शीर्ष भाग ।

३ नोक, अणी ।

४ अग्र भाग ।

५ पंक्ति, कतार ।

६ शुरू का भाग ।

७ बाजरी के सिरटे के आकार के सिट्टे वाला एक प्रकार का पौधा जिसके सिरटे को पीसकर फोडे-फुंसियो पर लगाते हैं ।

(मि. पनी)

८ देखो 'सिरटौ' (रू. भे.)

उ०—पड़ सीस बिना लोटै पठाण, किर ज्वार सिरै ढूका किसाण। —रा. रू.

९ देखो 'सिरौ' (५) (रू. भे.)

उ०—सिखरौ जी सूळै री बोटी आप ही खावै अर भूत नूं ही हेक-हेक दै। इसी भात बकरौ खाधौ। बांसै बाकरा रौ सिरौ रह्यौ। —नैणसी

सिलंग-सं. पु.—रहँट पर बैलो के घूमने के चक्र मे खुदे हुए गड्ढे के किनारे पर उस चक्र की ओर लगाया जाने वाला लकडी का पाट।

सिल—देखो 'सिला' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ तौ पै धूळी सिल तरगी, वारी सारै हि.........। ऊ ही राघौ तरगि उडै छै ज्यौ साकौ स कुळ छुडै।—र. ज. प्र.

उ०—२ जनहरीया जुग अधरा, आंख्या विच अंधार। भेद न जाणै भगति कौ, सिल पूजै ससार।—अनुभववाणी

सिळकणौ, सिळकबौ—देखो 'सळकणौ, सळकबौ' (रू भे.)

उ०—१ ज्यु मिनख री किडवा हुई त्यु सरप सिळक नै रूंख माहै पैस गयौ।—नैणसी

उ०—२ करै तदबीर गोरा चढण कागुरां, तिलंग फररै फुरत फैल ताळी। छूट पिसतोळ पड हौल सापर छिलक, कराबीण सिळक किलक काळी।—कविराजा बाकीदास जी

सिळगणौ, सिळगबौ, सिळगणौ, सिळगबौ-क्रि. अ.—१ किसी चीज का इस प्रकार धुक-धुक कर जलना कि आग की लपटो की बजाय धूंआ ही निकले।

ज्यूं—बीडी, सिगरेट या चिलम रौ सिळगणौ।

२ जलना।

उ०—१ आप अबै सोच करता नी ढब्या तौ म्हैं सगळा सूवटा सिळग नै मरजावाला।—फुलवाड़ी

उ०—२ वा खुद कैंडा होण पुग्या गाजरा बाप सूं जलमी अर आपरी कूख मैं कैंडा अकरमी अर ओछा धणी रौ अस धारचौ—आ सोच उणरी आंख्या साम्ही सगळी हरियाली सगग सगग सिळगण लागी।—फुलवाड़ी

३ प्रज्वलित होना, धधकना।

उ०—१ थांनै जोत वाळी बात बताय नै कह्यौ—पैलका अदाता री गळाई आ अंदाता रै माथा मै ई जोत री भाळा सिळगै है। —फुलवाडी

उ०—२ धपळ धपळ नाडी री पाळ रथी सिळगण लागी जाणै धरती रौ कोई नवौ सूरज सिळगै।—फुलवाडी

उ०—३ सिव चै नयण की आग सिळगी, ज्वाळा सेस फणै किर जग्गी।—रा. रू.

४ प्रकाशयुक्त या प्रकाशमान होना, चमकना।

उ०—१ राजकंवर मगन होय कुदरत रौ रूप निखरतौ रह्यौ। के अणछक राजकंवर नै अधारा रो एक खुणौ सिळगतौ ज्यू लखायौ। तर गुलाबी भाळा रौ गोट ज्यूं भळकियौ।—फुलवाडी

उ०—२ आथूण मैं सिळगता सूरज रो उजास मिगसो पडण लागगौ।—फुलवाडी

५ उत्तेजित होना, भड़कना।

उ०—अदाता तौ ज्यूं हाथ जोडिया त्यूं तरतर काठा पडता गिया वारौ कोप सिळगतौ गियौ।—फुलवाड़ी

६ लाक्षणिक अर्थ मे ईर्ष्या-क्रोध आदि के कारण मन ही मन जलना, कुढना।

७ पेड़ पौधों आदि का अंकुरित होना।

८ असह्य वेदना होना।

९ झुलसना।

उ०—वींद मुळकनै कह्यौ—म्है तौ थांनै गैला ई कै दियौ कै अै ढालू तौ गिवारा रौ खांण। अपा बडभागिया नै आछा नी लागै। सेवट नी खावणी आया तौ थांनै ई वगावणा पडचा। बळती लाय मैं सिळगिया जकौ सवाय मै।—फुलवाडी

सिळगणहार, हारौ (हारी), सिळगणियौ—वि०।

सिळगिओडो सिळगियोडौ, सिळग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिळगीजणौ सिळगीजबौ—भाव वा०।

सळगणौ, सळगबौ, सळगणौ, सळगबौ, साळगणौ, साळगबो, सिल्लगणौ, सिल्लगबौ, सुळगणौ, सुळगबौ—रू० भे०।

सिळगाणौ, सिळगाबौ-क्रि. स. ['सिळगणौ' क्रि का प्रे. रू.] १ धुका धुका कर जलाना, धुकाना।

२ प्रकाशमान करना, चमकाना।

३ प्रज्वलित करना, सुलगाना।

उ०—१ सुधि बुधि बदूक साहो, वचन गोळी बाहि। जामगी सुळगाय जतना ढिग दूंदर ढाहि।—अनुभववाणी

उ०—२ सिळगाया दीवा री बाट जगामग करै ज्यूं जच्चा रै डील री आब पळापळ करण लागी।—फुलवाड़ी

४ जलाना, भस्म करना।

उ०—ऐडा रूप नै सिळगाय देणौ सांतरौ पण जुगा री रीत नै यूं अणछक कीकर मेटणी आवै।—फुलवाडी

उ०—२ गाव मैं तोरण वांदियौ इण वास्तै गम खावू नीतर ऊभौ सिळगाय देतौ।—फुलवाडी

५ उत्तेजित करना, भडकाना।

६ मन ही मन जलाना, कुढाना।

७ पेड पौधों आदि को अकुरित करना।

८ असह्य वेदना देना।

सिळगाणहार, हारौ (हारी), सिळगाणियौ—वि०।

सिळगायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिळगाईजणौ, सिळगाईजबो—कर्म वा०।

सळगाणौ, सळगाबौ, साळगाणौ, साळगाबौ, सिळगावणौ, सिळगावबौ—रू० भे० ।

सिळगायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ धुका-धुका कर जलाया हुआ, धुकाया हुआ. २ प्रकाशमान किया हुआ, चमकाया हुआ. ३ प्रज्वलित किया हुआ, सुलगाया हुआ. ४ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ. ५ उत्तेजित किया हुआ, भडकाया हुआ ६ मन ही मन जलाया हुआ, कुढाया हुआ. ७ असह्य वेदना दिया हुआ. ८ अकुरित किया हुआ । (स्त्री. सिळगायोडी)

सिळगावणौ, सिळगावबौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै फेर इणी भात बगदौ देवणौ अर वामदी सिळगावणौ ।—फुलवाडी

उ०—२ बाबौ बोवा मूडा मैं भिलियोडी बीडी सिळगावतौ हो । —फुलवाडी

सिळगावणहार, हारौ (हारी), सिळगावणियौ—वि० ।

सिळगाविओडौ, सिळगावियोड़ौ, सिळगाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

सिळगावीजणौ सिळगावीजबौ—कर्म वा० ।

सिळगावियोडौ—देखो 'सिळगायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री सिळगावियोडी)

सिळगियोडौ सिळग्गियोड़ौ-भू का. कृ.—१ धुका हुआ, लगा हुआ. २ जला हुआ. ३ प्रज्वलित हुवा हुआ धधका हुआ. ४ प्रकाशयुक्त या प्रकाशमान हुवा हुआ, चमका हुआ ५ उत्तेजित या भडका हुआ. ६ ईर्ष्या, क्रोधादि से मन ही मन जला हुआ, कुढा हुआ. ७ अकुरित हुवा हुआ ८ भुलसा हुआ ।

(स्त्री. सिळगियोडी सिळग्गियोडी)

सिलड़ी—देखो सिला' (अल्पा; रू भे.)

उ०—सुथार, सोनी, राछ पला रै, खाण सिलड़ियां हरखता । कसौटी कस सोणौ सोनौ, जंवरी गैणौ परखता ।—दसदेव

सिलड़ौ—देखो 'सिला' (मह; रू. भे.)

उ०—विपुळ सिलावटिया, सुवांरै सिलड़ा सारा । जाळी जथिया खुणां, वेल समदर नद तारा ।—दसदेव

सिलट—देखो 'सिलहट' (रू. भे)

उ०—मरण वेळा श्री नीतरीयौ इम कहै, कोय न मानो कूड़ । अमल करौ सिलट करौ, भटकै पड़सी भूड़ ।

—वरसै तिलोकसी भाटी री बात

सिळणौ, सिळबौ, सिळणौ, सिळबौ-क्रि. अ—छुपना ।

ज्यू—काई चोर ज्यूं सिळतौ फिरै ।

सिळणहार, हारौ (हारी), सिळणियौ—वि० ।

सिळिओड़ौ, सिळियोड़ौ, सिळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिळीजणौ, सिळीजबौ—भाव वा० ।

सिलता—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—१ सरवर कह रस भर जळ सिलता, तरवर खपसर ऊत सर त्यार ।—मयाराम दरजी री बात

उ०—२ नकौ सिंध सिलता नको ढार भारू, नकौ तीन लोका नकौ जुग च्यारू ।—अनुववाणी

उ०—३ सिलता समावै समद मां, रहै न मिलता नाव । यौ जीव समावै सीव मां, जदि नीर मिधि को नांव ।—परमानंद वणियाळ

सिलदर सिलधर-स. स्त्री—पत्थर की आयताकार पट्टी जो दरवाजे के ऊपर लगाई जाती है ।

सिलप—देखो 'सिल्प' (रू. भे) (डिं. को.)

सिलपट, सिलपट्टी-स. स्त्री.—१ जनानी चप्पल जो प्राय: रब्बर की होती है ।

२ ऐड़ी की तरफ से खुली जूती ।

३ लकड़ी का लम्बा एव चौकोर लट्ठा जिससे इमारती सामान बनता है तथा जो रेल की पटरी के नीचे भी बिछाया जाता है ।

४ एक प्रकार का पत्थर जिसमें सलेट पर लिखने की कलमें बनाई जाती है ।

सिलपकर, सिलपकार—देखो 'सिल्पकार' (रू. भे.) (ना. मा.)

सिलपसासतरी, सिलपसास्त्री-स. पु. [शिल्पशास्त्री] दक्ष एवं कुशल शिल्पकार ।

सिलपी, सिलप्पी—देखो 'सिल्पी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सिलप्पी रचायै जै रूपका असी चार सोभै, बिणायै रतन्नां विधा कागरा बुवाह ।—म्होकमसिंघ रूपावत रौ गीत

सिलल—देखो 'सलिल' (रू. भे.)

उ०—सिलल धार जळधर लगौ सुंड आकत स्रवण; चमंकियौ लोक वळ कमण चालै ।—बा. दा.

सिळवट—देखो 'सळवट' (रू भे.)

सिलवाड़-सं. स्त्री.—लकडी का वह टुकड़ा जिसमे रहट को उलटा घूमने से रोकने वाली लकड़ी फसाई जाती है ।

सिलवाणौ, सिलवाबौ-क्रि. स.—सिलाई करवाना, सिलाना ।

सिलवायोड़ौ-भू. का. कृ.—सिलवाई करवाया हुआ, सिलाया हुआ ।

(स्त्री सिलवायोडी)

सिलसिलाबंदी-सं. स्त्री.—कतारबदी, क्रम ।

सिलसिलेवार-वि.—यथाक्रम, क्रमानुसार, क्रमशः ।

सिलह, सिलहवक-स. पु. [अ. सिलह] कवच. बख्तर ।

उ०—१ जिण सिर वाहै खग बळ, देव मगाहै जोय । सिलह अटक्का मोम सम, हुवै बटक्का दोय ।—रा. रू

उ०—२ आरोही अन रोस अवब्बर अग सिलह तुरगै पक्खर ।

—रा. रू.

उ०—३ गज हैमर पक्खरै, सिलह सुहडा पहरावै ।—गु रू. बं.

उ०—४ कटै सिलहक्क कडा कसणक्क, भभक्क डबक्क स्रोणक्क भभक्क ।—सू प्र

२ अस्त्र शस्त्र, हथियार ।

उ०—१ सिलह सदूक सझीतै वडुं, लहै ऊट चलाए गडुं ।
—गु. रू. ब.

उ०—२ उजळै वस छळ सिलह जड़ ऊजळी, उजळा विरुद सोहै जीतू अग । चोळ बळ कियौ चौळ अस चकवतौ, गयण छिवतौ वहै अभनमौ गंग' ।—मालो सादू

३ युद्ध सामग्री ।

उ०—बारह ऊठालो माथै सिलह लदियोडौ हुतौ । अर पाचसै ५०० असवार सूं नरो चढियो आयौ ।—नैणसी

रू. भे.—सलह, सलै, सल्लै, सिलेह, सिलै, सिल्ह, सिल्है ।

सिलहखांनौ—स. पु —अस्त्र-शस्त्र रखने का कमरा, शस्त्रागार ।

उ०—त्रण करण कनात डेरा तबू, तिका पीठ ऊठा तुल्या । जुत म्होर तूट ताळा सजड, खूटि सिलहखांना खुल्या ।—मे. म.

२ अस्त्र-शस्त्र ।

उ०—एक दिन टिक दूजे दिन सिलहखांनौ वाटियौ । मारा हुय जोगंद्र घोडा पाच सव ऊपर पाखरा घात तयार हुआ ।
—कुवरसी साखला री वारता

रू. भे.—सिल्हखानौ, सीलैखानौ, सीलैहैखानौ ।

सिलहट—स. पु.—१ ईरान का बना एक प्रकार का मजबूत कपड़ा जो ढाल, बादले आदि बनाने के काम आता है ।

उ०—सझि अलीबंध सिलहट सपरि, धिख चख गिड़कध धांखिया । पाखडा बध ओळा प्रचंड, अध जेम उपड़ाखिया ।—सू प्र

२ कवच, बख्तर ।

रू. भे —सिलट ।

३ देखो 'सिलहटौ' (रू भे.)

सिलहटौ—वि.—सिलहट के कपडे का बना हुआ ।

उ०—१ तठा उपरायंत पताखां सूं बादळा छोडजै छै । सू किण भांत रा बादळा छै । हळवद रा मोरवी रा.........हालोर रा छै । रूपै री टूटी साकळी लागी छै । घणी सिलहटी अटायण मैं वीटिया थका, ऊपरा बेवड़ी-तेवड़ी झालरी मे गरकाब किया थका छै ।—रा. सा. स

उ०—तठा उपरायंत ढाला रा अलीबध खुलै छै सू ढाला किण भात री छै । सिलहटी छै । सुध गेंडा आरण्णा री छै ।
—रा. सा. स.

रू भे.—सलहटी, सिलहट, सिलेहट, सिलेहटी ।

सिलहडगळी—स. स्त्री. यौ.—धड पर पहना जाने वाला छोटा कवच, धड कवच ।

उ०—इणा रौ सूल अटकळियौ । सिलहडगळिया पहरिया बरछीया रा झूल भार, तोरडे रौ डांडौ साथै कोई नहीं ।
—राव मालदे री बात

सिलहदार—वि. [अ] १ अस्त्र-शस्त्र धारी ।

२ योद्धा, वीर ।

३ शस्त्रागार का अधिकारी ।

४ अस्त्र-शस्त्रो का व्यापारी ।

रू. भे —सलहदार, सलहिदार, सलहीदार, सलेदार ।

सिलहपूर—वि.—अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित ।

रू. भे.—सलहपुर, सलहपूर ।

सिलहपोस—स. पु.—१ कवचधारी, बख्तरबंद ।

उ०—१ मदा आठ पाटा सिलहपोस थाटां मसत, खाग भाटा अभैसिंघ खहियौ । जवन घड़ सीस गज पडै भेळा जठै, कठै गण-पत सगत ईस कहियौ ।—पीथौ सांदू

उ०—२ वरियाम सिलहपोसां विचै, भुजा अभै नभ भेटियौ । तदि जाणि भांण ग्रीखम तणौ, काळी घटा लपेटियौ ।—सू. प्र.

२ शस्त्रधारी ।

सिलहबंध—वि —कवच शस्त्र आदि धारण करने वाला, वीर योद्धा ।

उ०—१ किलम सिलहबंध खाडूं जस कर, प्रचंड किसन चाणूर तणी पर ।—सू. प्र.

उ०—२ धख करि फूल अणि असि धारूं, मुगळ सिलहबंध खग झट मारूं ।—सू. प्र.

उ०—३ पछटुत वीजळि केहर' पाणि, सिलहबंध हेक करै घग-सारिण ।—सू. प्र.

रू भे.—सिल्हैबंध

सिलहैत, सिलहैत—वि —१ अस्त्र-शस्त्र युक्त ।

उ०—सिलहैत ढहै इम वहै सार ऊधडै कड़ी बगतर अपार ।
—रो. रू.

२ वीर, योद्धा या कवचधारी ।

सिलांम—देखो 'सलाम' (रू. भे.)

उ०—विगत साभळ सकळ विदा हुय वीरवर, घणी सज सिलांमा घणी छक आया घर ।—रा. रू

सिलांमत, सिलांमति—१ देखो 'सलांमत' (रू. भे.)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलांमति मेळवणी जोळी जोळी मगाड़ीजै छै ।—रा. सा. सं

२ देखो 'सलामति' (रू भे.)

सिलांमी—देखो 'सलामी' (रू. भे.)

उ०—अरू खारवारै ठाकर तेजमाल नूं माजी कहायौ जौ भाटी छौ जिणसूं तौ थे म्हारा सिलांमी छौ, सू म्है इतरा रहसा तौ थेई रहसौ ।—द. दा.

सिला—सं. स्त्री. [सं. शिला] १ पाषाण, प्रस्तर खंड ।
(अ. मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ सिला रा किला द्वार चित्राम सोहै, विभुसा अलोकीक लोका बिमोहै ।—मे. म.

उ०—२ सिला तखत केसर चमर, अनड़ दरी आवास । प्रगट लिया अगराज पण, सादूळा स्याबास ।—बा. दा.

२ चट्टान ।
३ प्रस्तर पट्टिका ।
उ०—विद्या जोवा तोरण पलासि, पहिलु सिला रची आकासि ।
—सालिभद्र सूरि
४ पत्थर की चौडी लम्बी एवं समतल पटिया जिस पर प्रायः स्नान आदि करते है।
५ पत्थर की वह पटिया जिस पर ठडाई, मसाला आदि बाटे जाते हैं।
उ०—रोटा वास्तै आटौ गूंदीजियौ, साग-भाजी री तैयारी होवण लागी अर मसालौ पीसता सिला लोडी बाजण लागी ।
—अमरचूंनडी
६ सैनसिल । (डिं. को.)
रू. भे.—सिल ।
७ देखो 'सिलह' (रू. भे.)
उ०—घोड़ा घात पाखरा कर पूरीया सिला लगाय तरगस री कूटा अर घाटी गया ।—वरसै तिलोकसी भाटी री बात
अल्पा;—सिलड़ि, सिलाडी ।
मह;—सिलड़ौ ।

सिलाई-सं. स्त्री.—१ सीने का कार्य या ढग ।
२ इस कार्य की मजदूरी ।
३ देखो 'सलाई' (रू. भे.)

सिळाउ, सिलाउ-सं. स्त्री.—१ बिजली, विद्युत ।
उ०—धडि धडि धबकि धार धाहजळ सिहरि सिहरि समखै सिळाउ ।—वेलि
२ बिजली की चमक ।
उ०—१ तास कनात अनेक तणाए, विमळ निमांन वितान वणाए । चिग पडदारू चमकै, दामण जाग्ग सिलाउ दमकै ।—सू. प्र.
उ०—२ बाजति नाळ निहाउ, किरि कूत वीज सिळाउ । ऊडु ति आगि दवग, नाखत्र जाणि निहग ।—गु रू. वं.
३ तोप के छूटने की आवाज, शब्द ।
४ शलाका, सलाई ।
रू. भे.—सलाव, सिळाव, सिलाव ।

सिळाक, सिलाक—देखो 'सळाक, सलाक' (रू. भे.)
उ०—त्राबा री सिलाक हुए तिग्ग भाति रा, बारा बारां बरसा रा डाउडा रा कांन वीधीजै ।—रा. सा. सं.

सिलाड़-स. पु.—१ दो पशुओ को गर्दन से एक साथ बाँधने की रस्सी ।
२ वे दो पशु जो एक ही रस्सी से एक साथ बाधे गये हों ।
३ समान जाति के दो पशु ।
४ युग्म, जोडा । (पशुओं का)
रू. भे.—सिल्हाड़ ।

सिलाड़णौ, सिलाड़बौ-क्रि. स.—१ दो पशुओ को गर्दन से एक साथ एक ही रस्सी से बाधना ।
२ देखो 'मिलाणो, सिलावौ' (रू. भे.)
सिलाडणहार, हारौ (हारी), सिलाड़णियौ—वि० ।
सिलाडिग्रोड़ौ, सिलाड़ियोड़ौ, सिलाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिलाड़ीजणौ, सिलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
सलाड़णौ, सलाड़बौ—रू० भे० ।

सिलाड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ एक ही रस्सी मे बाधा हुआ ।
२ देखो 'सिलायोडो' (रू. भे)
(स्त्री. सिलाडियोडी)

सिलाड़ी—देखो 'सिला' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—पेच मुदियाड पर 'बादरौ' पीलाडी, कंवर रै लीलाड़ी मांय करकै । हाग्गा बियां सू हलै ना हिलाड़ी, सिलाडी नौ विना नाय सरकै ।—ऊमरदांन लाळस

सिलाडीबाब-सं. पु.—राज्य द्वारा लिया जाने वाला एक प्राचीन कर जो जूते बनाने वालो से लिया जाता था । (मा. म.)

सिलाजतु, सिलाजीत-स. पु. [स. शिलाजतु] वह लसदार पसेव जो बडी बड़ी चट्टानो या पहाड़ो मे निकलता है और जो बड़ा पौष्टिक एव ताकतवर माना जाता है, शलाजीत । (डिं. को.)
उ०—आळा अर अजमारचां मैं ताकत वेगी लायोडी वग सिलाजीत री मीरुयां जचाई पड़ी है ।—दसदोख
पर्याय.—असमज, गिरिज ।
रू. भे.—सलाजीत, सिलाजतु, सीलाजीत ।

सिलाट—देखो 'सिलावट' (रू. भे.)
उ०—आगळि उड ममारइ बाट, बार महस सूतार सिलाट । माळी तबोळी सोनार, चालइ घाट घाट घडा लोहार ।—कां. दे. प्र.

सिलाणौ, सिलाबौ-क्रि. स—१ ठण्डा करना ।
उ०—मामूजी दूध सिलाइयौ स रे भरचौ कटोरै दूध । दूधौ ठडौ होत है बहू ! वेग जगावौ म्हारौ पूत ।—लो. गी
२ क्षतिपूर्ति करना ।
३ देखो 'सीवाणौ, सीवाबौ' (रू. भे)
सिलाणहार, हारौ (हारी), सिलाणियौ—वि० ।
सिलायोडौ—भू० का० कृ० ।
सिलाईजणौ, सिलाईजबौ—कर्म वा० ।

सिलादान-स. पु.—ब्राह्मणो को शालिग्राम की मूर्ति का दिया जाने वाला दान ।

सिलामयी-स. स्त्री.—एक देवी का नाम । (बां. दा. ख्यात)

सिलायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ ठण्डा किया हुआ. २ क्षतिपूर्ति किया हुआ ।
३ देखो 'सीवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिलायोड़ी)

सिलार-सं. पु.—१ मुसलमान ।

२ देखो 'सिलारौ' (रू. भे.)

उ०—घोडे नू गजदां खुवाई सौ हाथ चालीस पचास उपर जाय खडौ। बरछी सिलार छै, सौ खरळ सारा देखता रह्या।

—कुंवरसी सांखला री वारता

सिलारस-स. पु.—१ रूमी पेड का गोंद जिसका रंग पीला होता है।

२ देखो 'सिलाजीत'।

सिलारौ-स. पु.—घोड़े की रकाब पर बना वह स्थान जिस पर बरछी का निचला भाग (बूडी) टिका रहता है।

उ०—ताहरा रिणमल जी जाणियौ—बरछी सिलारै सूं काढि मन मैं आणी ज्युं हाथी ऊपर जाऊ। सु पातसाह माहै बैठे रिणमल जी रौ छोह जाणियौ।—नैणसी

रू. भे.—सिलार, सेलार।

सिलाल-स. पु.—पाबू राठौड़ का एक नाम।

वि.—भाला धारण करने वाला।

सिलालेख-स. पु. [स. शिलालेखः] पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख।

सिळाव, सिलाव-स. पु.—१ आधार, साधन, स्रोत।

उ०—१ विरह गी बीज, काम री कळी, रग री बूटी, जीवण री जड़ी अर सुख री सिलाव।—फुलवाड़ी

उ०—२ काम री केळि, विरह री बीज सुख री सिलाव, सोना री कांब हुए तिण भांति री सकेली, नख मास माहै ऊलाळी आकासि जाएं, चावळ रौ चौथौ खाएं, साख्यात पदमणी।—रा. सा. स.

२ देखो 'सिळाउ' (रू भे.)

उ०—१ वधि वेल धमाधम सेल वहै, गुणि खीज की वीज सिळाव वहै।—रा. रू.

उ०—२ उर लागी असुहांवणी किर दांमणी सिळाव। सुण वाणी सारोखियौ 'जोगाणी' जमराव।—रा. रू.

उ०—३ गजराज् की हळवळ वाजराजूं की कळहळ। नाळ का निहाव, साबळूं का सिळाव।—सू. प्र.

सिलावट-स. स्त्री.—१ भवन निर्माण एवं पत्थर की घडाई-कटाई करने वाली जाति।

उ०—कव राउ सिलावट अखर कबाडा, मोटी नीम धरै मन मोट। 'अनरघ' किया जगत ऊपरवट, कीरत तणा पड़ै नह कोट।

—राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ री गीत

२ देखो 'सिलावटौ' (मह, रू. भे)

रू. भे.—सलवाट, सिलाट।

सिलावटियौ—देखो 'सिलावटौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—विपुळ सिलावटिया, सुवार सिलडा सारा। जाळी जयिया खुणै वेळ, समदर नद तारा।—दसदेव

सिलावटौ-स. पु.—भवन निर्माण एवं पत्थर की घड़ाई-कटाई करने वाला कारीगर, सगतराश, शिल्पी।

अल्पा; रू. भे.—सिलावटियौ।

मह;—सिलावट।

सिलावणौ, सिलावबौ—१ देखो 'सींवाणौ, सींवाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिलाणौ, सिलाबौ' (रू. भे.)

सिलावणहार, हारौ (हारी), सिलावणियौ—वि०।

सिलाविओड़ौ, सिलावियोड़ौ, सिलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिलावीजणौ, सिलावीजबौ—कर्म वा०।

सिलावियोड़ौ—१ देखो 'सींवायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिलायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिलावियोडी)

सिलासार-स. पु [सं. शिलासार] लोहा।

(अ. मा; डि. को; ह नां. मा.)

उ०—विध विध आभूखण जवाहर, लखबगसै जस सुद्रढ लियौ। सिलासार पलटै अग सुकवि, कमधज रुकमकर रूकम कियौ।

—मानजी लाळस

सिलास्वेद-सं. स्त्री. [सं.] शिलाजीत। (डि. को.)

सिलाह—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

सिलाहखांनौ—देखो 'सिलहखानौ' (रू. भे.)

सिलिंग-स स्त्री. [अं. शिलिंग] १ इंगलैण्ड का चाँदी का एक सिक्का विशेष, इंगलैण्ड की मुद्रा।

२ एक कानून जिसके अनुसार कोई भी व्यक्ति एक निश्चित मात्रा से ज्यादा जमीन नही रख सकता। यह मात्रा जमीन की उपज पर निर्भर करती है।

सिळिया-वि.—अश्लील, बेहूदा।

उ०—मोडा सूं मिळिया भीतर भिळिया, सिळिया रस सोधदा है। मुख ते रट रामा दिल बिच दामा, बामा घट बोधंदा है।

—ऊ. का.

सिळियार-सं. पु. [सं. शीलचार] युधिष्ठिर का एक नाम।

(ह. ना मा.)

सिळियोड़ौ, सिळियोड़ौ-भू. का. कृ.—छुपा हुआ।

(स्त्री. सिळियोडी)

सिळी-सं स्त्री—१ बाण या भाले की नोक।

२ शलाका, सलाई।

उ०—वळै बाढ दै सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियौ किरि।

—वेलि

३ एक प्रकार के पत्थर का टुकड़ा जिस पर अस्त्र तेज किये जाते हैं, शाण।

उ०—वळै बाढ दै सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियौ किरि।

—वेलि

४ छोटा तृण, फांस, फूस, 'भुरट' आदि की फांच।

उ०—१ सिळियां तिणकलां री सांतरी पीजरी बणाय टपरी मैं टेर दियौ। तपतौ तौ हवा करती।—फुलवाडी

उ०—२ खाटी सौ दाटी धर खोदै, साथ न चाली हेक सिळी।
—प्रथ्वीराज राटौड़

४ बदूक के कान मे फेरने की लोहे की कील।

रू. भे.—सळी।

सिळीमुख, सिलीमुख–सं. पु [सं. शिलीमुख] १ भ्रमर, भौरा।
(अ. मा, ना. मा; ह. ना. मा.)

उ०—अनोखौ सिलीमुख साह दळ ऊपरै, क्रमै कूरम जही कमर कुना। लागिया समौ बाणास मोह खाचि खं, हुस मकरद घट फूल हूता।—तेजसिंघ सेखावत रौ गीत

२ तीर, बाण। (अ. मा; ह ना. मा)

उ०—१ सिथळ सुकठ देख अवधेसर, ऊपर करण उमायौ। सारग ताण आण स्मृति सूधौ, बीर सिलीमुख बायौ।—र. रू.

उ०—२ चाप सिलीमुख पान बिमोह मु बाम बिभाग सिया जुत है।—र. ज. प्र.

रू. भे.—सलीमुख।

सिळू–स. पु.—ऊंट के मुंह का एक रोग विशेष।

सिलूप–स. पु.—नारियल। (अ. मा)

सिलेट—देखो 'स्लेट' (रू. भे.)

सिलेटिया–स. स्त्री.—रामावत साधुओ की एक शाखा। (मा. म.)

सिलेटियौ–स. पु.—१ रामावत साधुओ की 'सिलेटिया' शाखा का व्यक्ति।

२ एक प्रकार रग।

वि.—स्लेट के समान रंग का।

सिलेह—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

सिलेहट—देखो 'सिलहट' (रू. भे.)

उ०—सौ ढालां पातसाह जी सिलेहट री ढालां री परदडी मैं पटा घालनै ढाल छानै मेली।—रा. व. वि.

सिलेहटी—देखो 'सिलहटी' (रू. भे.)

उ०—सु किण भात रा बादळा छै? हळवद रा मौरवी रा अजार रा भरवछ रा हालोर रा छै। रूपै री टूंटी सांकळी लागी छै। घणौ सिलेहटी अटायण मैं बीटिया थका।—रा. सा. सं.

सिलै—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

उ०—१ अह सिलै री पूजा दसरावै नूं ए करावै।—द. वि.

उ०—२ सिलै अग साथै कटै छै।—सूरै खीवै काधळोत री बात

उ०—३ चलै सर वेधि सिलै घट चोळ, फिरै पट जाणि समीर झकोळ।—सू. प्र.

सिलोक—देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

उ०—सौ विडतराज स्रीमहाराजा की कीरति प्रताप का वरणण का सिलोक पढतै हैं।—सू. प्र.

२ देखो 'सिलोकौ' (रू. भे)

सिलोकौ–सं. पु.—बीस मात्राओ का एक प्रकार का पद्य बद्ध वचनिका।

रू. भे.—सरलोकौ, सलोक, सिरलोक, सिरलोकौ, सिलोक।

सिलोच, सिलोचय, सिलोचै–सं पु. [सं. शिलोचयः] पहाड, पर्वत।
(अ. मा; ना. मा; ह ना. मा.)

उ०—१ सिलोच समान लगै कइ आन, वडै विरदाळ वडै बळवांन।—नारायणसिंह सांदू

उ०—मेस हिमालय सम ग, सुरगय हय नय पय दरम। रुद्र सिलोचय रंग, जय जय लकवरीस जस।—वां. दा.

उ०—३ स्व क्रोधा समक्षा धगधगित दक्षाधिप मृत्ता। सिलोचै सभूता छजर अवधूता अद्भभुता।—मे. म.

सिलोटी–सं. स्त्री.—१ पथरीला और समचौरस भूमि का मार्ग।
(मेवाड़)

सिलोप–वि. [अ. स्लॉप] १ ढलुवां।

२ तिरछा।

सिळौ–वि. (स्त्री. सिळी) शीतल, ठण्डा।

उ०—जळै चद्र सिळौ थाई जगचख, रेणायर मामतौ रहै। जयमालउत जाइ छाडै जुध, वेणी जळ उपराठ वहै।
—रांमदास राठौड़ मेडतिया रौ गीत

सिलौ, सिलौ–सं. पु.—१ फमल की कटाई के वाद दूसरी अन्तिम कटाई की क्रिया।

२ गेहू, चावल, चना आदि की फसल काटने के पश्चात गिरा-बिखरा अनाज जिसे प्राय: बच्चे व गरीब लोग चुगा करते हैं।

उ०—साजन सिलौ न खाइयै, जं सौनै की बाळ। बात रहै दिन जावसी, समै पलट ज्या काळ।—अज्ञात

३ बाजरी की पकी हुई बालों को काट लेने के पश्चात पुनः कोपलें फूट कर आने वाली बालें।

रू. भे.—सिरलौ।

सिल्प–सं स्त्री. [सं. शिल्पम्] १ हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने की कला, दस्तकारी, कारीगरी।

२ पत्थर पर घड़ाई करने की कला।

रू. भे.—सिलप।

सिल्पकला–सं. स्त्री. [सं. शिल्पकला] १ हस्तकला।

२ पत्थर पर घड़ाई करने की कला।

सिल्पकार–सं. पु. [स. शिल्पकार] १ कारीगर, शिल्पी।

२ पत्थर का कारीगर।

सिल्पकारी–सं. स्त्री. [सं. शिल्प+कर्तृ] १ शिल्पकार का कार्य, कारीगरी।

२ घड़ाई, खुदाई, पत्थर आदि पर कलात्मक खुदाई।

सिल्पगेह सिल्पग्रह–सं. पु. [सं. शिल्पगृह] १ वह स्थान जहाँ पर शिल्प सम्बन्धी कार्य होता हो, कारखाना।

२ शिल्पी का घर।

सिल्पप्रजापत, सिल्पप्रजापति, सिल्पप्रजापती-स. पु. [सं. शिल्पप्रजापति] विश्वकर्मा का एक नाम।

सिल्पमत-अव्यय —कारीगरी से, व्यवस्थित ढग से।

सिल्पलिप, सिल्पलिपि-स. पु यौ [सं. शिल्पलिपि] १ पत्थर या धातु पर अक्षर खोदने की विद्या या कला।

२ पत्थर पर खुदी हुई इबारत।

सिल्पवत-क्रि. वि. [सं. शिल्प+वत्] शिल्पशास्त्र के अनुसार। (मा. म.)

सिल्पविद्या-सं. स्त्री, यौ. [स. शिल्पविद्या] हाथ से सुन्दर चीजें बनाने की विद्या।

सिल्पसाळा-सं. स्त्री. [स शिल्पशाला] वह स्थान जहाँ पर बहुत से शिल्पी मिलकर कलात्मक चीजें बनाते हों।

सिल्पसास्त्र-स. पु. यौ. [स. शिल्पशास्त्र] वह शास्त्र जिसमे हाथ से तरह-तरह की वस्तुए बनाने का विधान निरूपण हो, वास्तुशास्त्र।

सिल्पी-स. पु [सं. शिल्पिन्] शिल्पकार, कारीगर।

रू भे.—सिलपी।

सिल्लगणौ, सिल्लगबौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगबौ' (रू. भे.)

सिल्लगियोडौ—देखो 'सिळगियोडौ'

(स्त्री. सिल्लगियोडी)

सिल्लह—देखो 'सिलह' (रू. भे)

उ०—चढी नह सिल्लह् अंग बचाव, सादोहीज ताम कहै सिरपाव। —सू. प्र

सिल्लांम—देखो 'सलाम' (रू. भे.)

उ०—हेत नजर करि हरख, कहै ऊचरै हुकम्मा। दै असीस विरदाय, करै सिल्लांम कदम्मा।—सू. प्र.

सिल्लावटौ—१ देखो 'सिलावटौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिलावट' (मह; रू भे.)

सिल्लार—देखो 'सिलियार' (रू. भे.) (अ. मा.)

सिल्ली-सं. स्त्री.—हथियार अथवा नाई के उस्तरे आदि की धार तेज करने का पत्थर विशेष का खंड।

सिल्लौ—देखो 'सिलौ' (रू. भे.)

सिल्ह—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

सिल्हखांनौ—देखो 'सिलहखांनौ' (रू भे)

सिल्हाड़—देखो 'सिलाड' (रू. भे.)

उ०—जाणौ पाबासर रौ हंस मोती चुगण चालियौ छै। दोय-दोय बाकरा री सिल्हाड़ नै ठरका हुवै छै।—रा. सा. सं.

सिल्है—सिलह' (रू. भे.)

उ०—१ सिल्है खग वाढत खान सरीर, समोभ्रम 'सूर' बाबत सधीर।—सू. प्र.

उ०—२ घोडा हाथी सुभट पायक रथ सिल्है स जोयत बाजा छतीस बाजै छै।—पचदडी री वारता

सिल्हैखांनौ—देखो 'सिलहखानो' (रू. भे)

उ०—इव करता देव ऊढणी इग्यारस नजदीक आई। तद असवार हजार डोढ सूं सैल सारू असवार हुयौ। कही नूं जतायौ नही। सिल्हैखांनौ सारौ गोठ कर सलीतां मैं घाल लियौ। —कुवरसी साखला री वारता

सिल्हैबंध—देखो 'सिलहबध' (रू. भे.)

उ०—धमोडत सेल सिल्हैबंध धीग, समोभ्रम 'स्याम' महौकमसीघ। —सू. प्र.

सिव-स. पु. [स. शिवः, शिव] १ सनातन धर्म के त्रिमूर्ति देव मे से अन्तिम देव, महादेव।

(अ. मा, डिं. ना. मा; ना. मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ सिवा सिव कारण झेलत सीसु, उझेलत पत्र उमा कज ईस।—मे. म.

उ०—२ निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ संचै।—रा. रू

पर्याय.—अधकार, अंब, अकळ, अचळेसर, अज, अनत, अस्टमूरति, अहिग्रीव, ईस, उग्र, उरधलिंग, एकलिंग, कज, कपरदी, कपाळम्रत, कपाळी, कमाळी, कैलासपत, कोटेसर, क्रतध्रुसी, क्रसांनद्रग, क्रसानरेता, खाकी, गगधर, गणनाथ. गहीर, गिरजापत, गिरीस, गौरपती, ग्लौ-भाळ, चद्रसेखर, जख्यपति, जटधारी, जटी, जहरजर, जोग, जोगाण, जोगिंद, जोगी, जोगेसर, डगंबर डमरूकर, तपस, तापस, त्रिनयण, त्रिपुरारी, त्रिबंक, त्रिलोचन, त्रिसूळधर, त्रिह्लोचन, दिगवामा, धमळ-आरोहण, धूरजटी, नागपति, नीलकंठ, पंचमुख, पचानन, परब्रह्म, परम, परमगुर, पसुपति, पिनाकी, प्रमथापति, बांणपति, बिहारी, ब्रखब धुज, ब्रह्म, ब्रह्मा, भगअहारी, भडग, भव, भवेस, भारग, भाळचंद्र, भीम, भूतनाथ, भूतेस, भैरव, भोळानाथ, महादेव, महेस, महेस्वर, मुंडमाळी, मुरनैण, म्रड, म्रत्युजय, म्रिड, रुद्र, लोहितभाळ, लोदग, वरद, वामदेव, वांमसुर, विरूपाक्ष, विसाळद्रग, विस्वनाथ, वोमकेस, व्रखभधुज, सकर, संध्यापति, संभु, सदासिव, समराथ, समरारि, सरब, सरबरित, सामी, सारविद, सिधराव, सिधेसुर, सिसमत्थ, सुछांन, सूलपाण, सूळहथ, सूळी, स्रीकंठ, हर।

२ सत्य, साँच। (अ, मा.)

३ वेद।

४ देव, वसु।

५ मोक्ष।

६ सियार, गीदड।

७ खूंटा।

८ परमेश्वर, भगवान, ब्रह्म।

९ पारा।

१० लोहा। (डिं को; ह. नां. मा.)

११ समुद्री नमक।

१२ लिंग, जननेन्द्रिय।

१३ जल, पानी। (अनेका.)

१४ एक प्रकार का घोडा जिसके गले मे भौंरी होती है। यह अशुभ माना जाता है। (शा. हो.)

१५ कुशल, मगल। (अ. मा; ह. नां. मा.)

१६ विष्कंभादि सत्ताईस योगों के बीसवें योग का नाम। (ज्योतिष)

१७ आर्या गीति या खधाण (स्कंधक) का भेद विशेष।

१८ टगण के प्रथम भेद का नाम ऽऽऽ। (डिं. को.)

१९ शुद्ध, सुहागा।

२० एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे ५ और ६ के विराम से ११ मात्राएँ और अन्त मे सगण, रगण, नगण मे से कोई एक होता है तथा तीसरी छठी व नवी मात्रायें लघु होती है।

वि. [स. शिव] श्वेत, उज्जवल। (अ. मा.)

२ श्वेत पीत। * (डिं. को.)

३ ग्यारह। *

उ०—१ कीर्ज दूहौ प्रथम यक, सत्तरह मत्ता पाय। तिथ रिव तिथ सिव तिथ, सुपय रडु छद कहाय।—र. ज. प्र.

उ०—२ चव लघु सिव मत चरण, वळ खट पय तिण वरण। —र. ज. प्र.

४ शुभ, कल्याणकारी। (अनेका.)

उ०—उर करवत वहि आपरै, साठ भडां सप्रमाण। वीकम सिव मारग वहै, लै दीना मोजाण।—नैणसी

५ मागलिक।

६ स्वस्थ, सुखी।

७ भाग्यवान।

रू. भे.—सीव।

सिवकर-सं. पु [स. शिवकर] अतीतकालीन चौबीस जिनो के अन्तर्गत एक जिन का नाम। (जैन)

वि. [सं. शिवंकर] मंगलकारी, आनन्ददायी।

सिवकरणी-स. स्त्री. [सं शिवकर्णी] कातिकेय की अनुचरी एक मातृका।

सिवकवच-स. पु. [स. शिवकवच] शरीर के अगो की रक्षार्थं जप किया जाने वाला शिवस्तोत्र।

उ०—बूझ व्यास प्रोहिता, समर सूरां गुर सिक्षा। सकत-मत्र सिवकवच विस्णुपजर हरिरक्षा।—रा. रू.

सिवकांता-स. स्त्री. [सं. शिवकाता] १ शिव की पत्नी उमा।

२ दुर्गा।

सिवका—देखो 'सिविका' (रू. भे.)

उ०—पोहचि तठै सिवका पौढाणौ, इम पण पूर भरथ अग्र आंणौ। —सू. प्र.

सिवकाई-सं. स्त्री.—सेवा करने का भाव, सेवकाई।

उ०—वरख चतुरदस बन रघुवर की, करी कठिन सिवकाई। सील व्रत भीखम ने साध्यौ, वरणी व्यास बडाई।—ऊ. का.

सिवकारी-वि. [सं. शिवकारिन्] मंगलकारी, कल्याणकारी।

सिवकीरतण, सिवकीरत्तण-सं. पु [स. शिवकीर्त्तन] भंगी का नाम।

सिवकुमार-स. पु. यौ. [सं. शिव+कुमार] स्वामिकार्तिकेय। (अ. मा.)

२ गजानन।

सिवगत, सिवगति, सिवगती-सं. पु. [सं. शिवगति] १ भूतकाल के चौहदवे तीर्थंकर का नाम। (जैन)

२ मोक्ष, मुक्ति।

वि.—१ समृद्ध, सम्पन्न।

२ हर्षित, खुश।

सिवगामी-वि. [सं. शिवगामिन्] मोक्ष जाने वाला, मोक्ष प्राप्त करने वाला।

सिवगिर, सिवगिरि, सिवगिरी-सं. पु. यौ. [स. शिवगिरि] कैलाश पर्वत।

सिवगुर, सिवगुरु-सं पु. [सं. शिवगुरु] विद्याधिराज के पुत्र व शकराचार्य के पिता का नाम।

सिवड़-सं. पु.—१ श्वेताम्बर, जैन।

२ देखो 'सेवड' (रू भे.)

सिवढांण- सं. स्त्री.—१ श्मसान भूमि।

उ०—मार जुध सार मय सिवपुरी मनायै, ईखता अवर कोई ठौड़ ओढै। सुख करै सौड पौढै नकू सिवपुरी, पाण तज सौड सिवढांण पोढै।—दुरसौ आढौ

२ कन्दरा, गुफा।

सिवण-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का पौष्टिक घास।

२ शिव, महादेव।

सिवतिलक-सं. पु. [स. शिवतिलक] १ स्वर्ण का वह आभूषण जो स्त्रियां ललाट पर धारण करती हैं।

उ०—चारुबध चूंदड़ी, आटियां माग सवारी। लियौ बांध सिव-तिलक, भाल बिंदली भंवारी।—रमण प्रकास

२ चाद, चद्रमा।

सिवतीरथ-सं. पु. [स. शिवतीर्थ] शकर का प्रधान तीर्थस्थान काशी का एक नाम।

सिवदूतिका, सिवदूती-सं. स्त्री. [सं. शिवदूतिका] १ कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

२ आठ योगनियो में से अतिम योगिनी।

३ दुर्गा।

सिवदेवी-स. स्त्री.—चारण वंशोत्पन्न एक देवी।

सिवधांम-सं. पु. [सं शिवधाम] १ शिव का निवास स्थान, कैलाश-पर्वत।

२ श्मशान भूमि।

३ राजस्थान के सिरोही प्रदेश का नाम।

उ०—राठौडै **सिवधांम** रहाया, भूप तणा अत जतन भळाया। —रा रू.

सिवनंद, सिवनंदण-स. पु. यौ. [सं. शिवनंदन] शिव के पुत्र गणेश।

२ स्वामिकार्तिकेय।

सिवनाथ-स. पु [स.] शिव, महादेव।

सिवनाभ, सिवनाभि-स. पु. [सं. शिवनाभि] एक सर्वश्रेष्ठ शिवलिंग का नाम।

सिवनारायणी-सं. पु. यौ. [सं. शिवनारायणी] हिन्दुओं का एक सम्प्रदाय।

सिवपद-सं. पु.—[सं. शिवपद] मोक्ष, मुक्ति।

उ०—हिंसा सू दुरगति मै जासी, दया सू सिवपद पासी रे। —जयवाणी

सिवपुर-स. पु. [स. शिवपुर] १ मुक्ति स्थान, स्वर्ग। (जैन)

उ०—१ सुमति पदम 'सुपासनी' पहुँता सिवपुर ठांम।—जयवाणी

उ०—२ तै सिवपुर वासउ वसै रे, हूँ तउ मानव गण मइ जोय रे।—वि. कु.

२ काशी।

३ भगवान शिव का निवास स्थान, कैलाश।

उ०—मगळाचार **सिवपुरी** मांहे गूडी उछळी देव गति। —महादेव पारवती री वेलि

सिवपुरांण-स. पु. [सं. शिवपुराण] अठारह महापुराणो मे से एक पुराण जिसमें शिवमहिमा का वर्णन है।

सिवपुरि, सिवपुरी-सं. स्त्री. [सं. शिवपुरी] १ काशी या वाराणसी का एक नाम।

२ राजस्थान के सिरोही नगर का एक नाम।

३ परमपद, मोक्ष।

उ०—चवीयला तुम्हि हूआ पचइ ए भवि ए, सिवपुरि पांमियउ ए।—सालिभद्र सूरि

४ स्वर्ग। (जैन)

५ श्मशान।

रू. भे.—सवपुरी।

सिवपुरौ-स. पु.—चौहान वंश का क्षत्रिय।

सिवप्रिय-स. पु. [सं. शिवप्रिय] १ रुद्राक्ष।

२ भांग।

३ धतूरा।

४ स्फटिक।

सिवप्रिया-स. स्त्री. [स. शिवप्रिया] १ भांग।

२ पार्वती, गिरिजा।

३ दुर्गा।

सिवब्रह्मपोता-सं. पु.—कछवाह वश के क्षत्रियो की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

सिवभंडारी-सं पु. [सं. शिवभंडारी] कुबेर। (ना. मा.)

सिवभाळी-स. पु.—चद्रमा। (अ. मा.)

सिवमंडळी-स स्त्री. [स. शिव+मंडल+रा. प्रा. ई.] नाथ सम्प्रदाय के संन्यासियो का वह समूह या मडल जो मृत्युभोज के लिए एकत्रित होता है। (मा म.)

सिवमंदिर-स. पु. [स. शिवमदिर] १ शिवालय, शिवमदिर।

२ श्मशान, मरघट।

रू. भे.—सवमदिर।

सिवमाळ, सिवमाळा-स. स्त्री. [स. शिवमाला] महादेव के गले की मुडमाल।

उ०—धर मूंड अमा **सिवमाळ** धरू, कछ देसिय देव प्रणांम करू। —पा. प्र.

सिवरण—देखो 'सुमरण' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया जौ सतगुर मिळै, जो चाहै सो देत। सिवरण सौदा सहज का, विण समझ्या नही लेत।—अनुभववांणी

उ०—२ सासा सोहू सबद है, लख चौरासी माहि। राम नाम नर देह विन, हरीया सिवरण नाहि।—अनुभववाणी

सिवरणौ, सिवरबौ—देखो 'सुमरणौ, सुमरबौ' (रू. भे.)

उ०—माया का नर म्हैंनती, रांम न जांणे नाम। हरीया वांटण सिवरणौ, पूर नखत का काम।—अनुभववाणी

सिवरणहार, हारौ (हारी), सिवरणियौ—वि०।

सिवरिओड़ौ, सिवरियोड़ौ, सिवरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिवरीजणौ, सिवरीजबौ—कर्म वा०।

सिवरांणी-सं. स्त्री. [सं. शिवराज्ञी] उमा, पार्वती।

सिवराजोत-सं. पु.—राठौड क्षत्रियो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सिवरात, सिवरातरी, सिवरात्रि, सिवरात्री-सं. स्त्री. [स. शिवरात्रि] १ फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी। इस दिन शिव की पूजा करते हैं, रात्रि को जागरण देते है तथा व्रत रखते है।

उ०—**सिवरात्री** मैं सिव दरसण गयौ सुकेरौ, अवलोकै आखू सिव जब हुऔ उजेरौ।—ऊ. का.

वि. वि.—इस दिन शिव-पार्वती का विवाह हुआ माना जाता है। यदि यह चतुर्दशी तिथि त्रिस्पृशा (सूर्योदय, प्रदोष और निशीथ व्यापिनी) हो तो अत्युत्तम होती है और मगलवार हो तो शिवयोग होता है। यह पर्व चारो वर्णों व स्त्री, पुरुष, बच्चो व वृद्धों द्वारा मनाया जा सकता है। ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण

चतुर्दशी को हुआ था अतः इसे महाशिवरात्रि कहते हैं। सृष्टि के आरम्भ से ब्रह्मा ने रुद्ररूपी शिव को उत्पन्न किया था और रुद्र के अवतीर्ण होने का दिन व तिथि भी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी ही थी। इसी दिन शिव ने ताण्डव नृत्य किया था तथा अपने डमरू के निनाद से सारे वायुमण्डल में ज्ञान-विज्ञान को सूक्ष्मसूत्ररूपेण व्याप्त कर दिया था।

इस पर्व के प्रधान अंग निराहार व्रत व रात्रि जागरण है। सामवेदी व ऋग्वेदीय पद्धति से स्वस्तिवाचन व पूजन के बाद चार बार प्रत्येक प्रहर मे शिवपूजन का विधान है। प्रथम प्रहर में दुग्ध से शिव की ईशान मूर्ति का, द्वितीय प्रहर मे अघोर मूर्ति को दधि से, शिव की वामदेव मूर्ति को तृतीय प्रहर मे घृत से और चतुर्थ प्रहर मे सद्योजात मूर्ति को मधु से स्नान करा कर पूजन करने का विधान है। दूसरे दिन अमावस्या को व्रत-कथा सुन कर पारण किया जा सकता है। इस दिन शिवलिंग पर जल; बिल्वपत्र, आक, धतूरा, गाजर, बेर आदि अर्पण करने का विधान है।

२ प्रत्येक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी एवं इस दिन किया जाने वाला व्रत।

३ माघ कृष्णा चतुर्दशी।

उ०—अहे हीरडा तइ हरी पूजीउ, कि जागु सिवराति। गोरी कठ न ऊतरि, सारी देह न राति।—गुणचंद सूरि

सिवरियोड़ौ—देखो 'सुमरियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिवरियोडी)

सिवळ—देखो 'सिवल' (रू भे.)

सिवलिंग–सं पु. [स. शिवलिङ्ग] महादेव की पिंडी, लिंग मूर्ति, इसकी शिव-भक्त पूजा करते हैं।

सिवलिंगी–स. स्त्री. [सं. शिवलिङ्ग+रा प्र. ई.] वर्षाकाल मे जगलो और झाड़ियो मे बहुत अधिकता से मिलने वाली एक प्रकार की प्रसिद्ध लता। (अमरत)

सिवलोक–स. पु यौ. [सं. शिवलोक] शिवजी का लोक, कैलाश।

सिवलोकवासी–वि. [स. शिवलोकवासी] १ कैलाश पर्वत पर निवास करने वाला।
२ मोक्ष प्राप्त, परम पद प्राप्त।
स पु. यौ—शिव, महादेव।

सिववल्लभा–स. स्त्री. [स. शिववल्लभा] १ दुर्गा।
२ पार्वती।

सिववाड़ियौ–सं. पु.—शिववाड़ी नामक स्थान का ऊँट।
उ०—सूं ऊंठ कुण कुण दिसावररा छै काछो बोदला छपरी जालोरी वगरू बलोची सिववाड़िया खाडालिया।—रा. सा. सं.

सिववाहण–सं. पु. यौ. [सं. शिववाहन] १ शिव का वाहन, नंदी बैल।
२ बैल, वृषभ।

सिवव्रखभ–सं. पु. [स. शिव+वृषभ] शिवजी की सवारी का बैल, नंदी।

सिवसंकरी–स. स्त्री. [सं. शिवशंकरी] देवी की एक मूर्ति का नाम।

सिवसंगिया–सं. स्त्री. यौ.—घोडे के दाहिने गले की ओर की भौरी जो शुभ मानी जाती है। (शा. हो.)

सिवसंभव–सं. पु यौ. [स. शिवसभव] १ शिव का पुत्र, गजानन।
२ स्वामिकार्तिकेय।

सिवसखा, सिवसिख–सं पु. यौ [सं. शिवसखा] कुबेर।
(अ. मा; ना. मा.)

सिवसुंदरी–स स्त्री. [स. शिवसुदरी] दुर्गा।

सिवसुत–सं. पु. यौ. [स शिवसुत] १ गणेश।
२ स्वामिकार्तिकेय।

सिवसेखर–स. पु. यौ [स. शिवशेखर] १ शिव का मस्तक।
२ धतूरा।
३ चन्द्रमा, चांद।

सिवा–सं. स्त्री [सं. शिवा] १ पार्वती, गिरिजा।
(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)
उ०—सिवा मिव कारण झेलत सीस, उझेलत पत्र उमा कज ईस।
—मे म.
२ दुर्गा।
३ हर्रे, हरीतकी। (अ. मा; ना. मा; ह. ना. मा.)
४ मादा सियार, शृगाली।
उ०—घुमडी नभ ग्रीधणि चील्ह घणी, गहकाय अवाज सिवा गवणी।—मे म.
उ०—२ भयकर सोर सिवा अग्र भाग, चोळै मुख होत उदोत चराग।—मे. म.
अव्यय.—अलावा, अतिरिक्त।
उ०—म्हैं बापडी सुसीला नै जमारा मैं दुख रै सिवा काई सुख दियौ।—अमरचूंनडी

सिवाई—देखो 'सवाई' (रू. भे) (डिं. को)

सिवाड़ौ—देखो 'सीमाड़ौ' (रू. भे.)

सिवाणौ, सिवाबौ—देखो 'सींवाणौ, सीवाबौ' (रू भे.)

सिवाबळि–स. पु. [सं. शिवबलि] रात्रि के समय देवो के सामने रखा जाने वाला वह नैवद्य जिसमे मांस की प्रधानता होती है।
(तांत्रिक)

सिवाय–वि.—१ विशेष।
उ०—१ सच्च पियारा सांइया, साई सच्च सिवाय। सच्चां अगन न जाळ ही, सच्चां सरप न खाय।—ह. र.
उ०—२ ऊदा घरतो आधिया, आहव आध सिवाय। चाळौ वाधै साम छळ, ज्यां ऊन्हाळे लाय।—रा. रू.
क्रि. वि.—अलावा, अतिरिक्त।

उ०—१ दो बातां सिवाय वानैं की चेतो नी हौ—कमाई अर कजूसी।—फुलवाड़ी

उ०—२ इण भांत री बिरथा भोड मैं थूक उछाळणा रे सिवाय की सार नी दीस्यौ तौ मेठाणी माडै ई माठ झेली।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सवाय।

सिवायोड़ौ—देखो 'सीवायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिवायोडी)

सिवाराति-सं. पु. [स शिवाराति] सियारिन का शत्रु, कुत्ता।

सिवाळ—देखो 'सिंवाळ' (रू भे)

उ०—टीकी फीकी भवर जी पड गई जी हाजी ढोला हीगळू कै चढ गया सिवाळ अब घर आवौ जी।—लो. गी.

सिवाळौ, सिवालय-स. पु. [स. शिवालय] शिव का मन्दिर।

उ०—१ दूजोड़ै दिन अठीनै तौ ठाकर पूजा सूं निवडनैं सिवाळा सू बारै निकळ्यौ अर उठीनै दरबार सू हलकारौ परवाणौ लेयनै हाजर व्हियौ।—अमरचूंनडी

उ०—२ धरमादै ध्रमसाळ, मुफत मठ गटा सिवालय। सरवर झीला घाट, वावड़ी चाठ विद्यालय।—दसदेव

सिवाळौ-स. पु. [सं शैवाल] कुछ हल्के रग वाला एक प्रकार का मरकत या पन्ना।

सिवि-सं. पु. [स. शिवि] ययाति का दौहित्र तथा राजा उशीनर का पुत्र एक राजा जो अपनी दयालुता और दानशीलता के लिए प्रसिद्ध था।

वि. [स. सर्व] १ सब, समस्त।

उ०—चदवदनी तै सिवि सहि लालइ, रमइ रग रसि अबला बालि। तडकस कचू उर वरि हार, रेणि रगि रीझवइ भरतार।

—प्रा. फा. सं

२ देखो 'सिबि' (रू. भे.)

३ देखो 'सबी' (रू. भे)

रू. भे.—सिविहि, सिवी।

सिविका-सं. स्त्री [स. शिविका] पालकी, डोली।

उ०—उण समय सिविकारूढ समाज समेत कुमारळ भट्ट उपवन में आय निसरिया।—बां. दा. ख्यात

रू. भे.—सबिका, सिबिका, सिवका, सीविका।

सिविता—देखो 'सविता' (रू भे.)

उ०—सिविता रवि सूर पतंग सही, रकतबर अंबर ज्योत रही।

—पा. प्र.

सिविर-सं. पु. [सं. शिविर] १ डेरा, खेमा। (डि को.)

२ सेना का पड़ाव, छावनी। (डि. को.)

३ किला, कोट।

सिविल-वि. [अं] १ नगर सम्बन्धी, नागरिकी।

२ सभ्य, शिक्षित।

३ दीवानी।

सिविहि, सिवी—देखो 'सिवि' (रू. भे.)

उ०—इद्रसभा जई ऊसर करइ चरण उकडच्छी पक्खावज धरइं। सिविहि बीह तीह ए व्यापार, परवसि थिया कइं तै सवि वार।

—वस्तिग

सिवोभदेद, सिवोभ्देद-स. पु [सं शिवोभ्देद] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जहाँ सरस्वती नदी का दर्शन होता है, जहाँ पर स्नान करने वाले मनुष्य को सहस्त्र गौदान का फल प्राप्त होता है।

सिसंक—देखो 'ससांक' (रू भे)

सिस—देखो 'ससि' (रू. भे.)

उ०—१ अग छबि रवि सिस कोटि उदोता, जोगी ध्यान तजै तिण जोता।—सू प्र.

उ०—२ उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम विखम हिम द्रुम विज्जळ —रा रू.

२ देखो 'सिसु' (रू. भे.)

उ०—सिस बेस पहल तपबल सजेब, झालियौ साह 'अवरंग' जेब।

—वि. सं.

३ देखो 'ससा' (रू. भे) (ह ना. मा.)

५ देखो 'सीसा' (रू. भे.) (डि. को.)

४ देखो 'सिस्य' (रू. भे.)

सिसकणौ, सिसकबौ—देखो 'ससकणौ, ससकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ विरही सिसकै पीड सौ, ज्यौ घाइल रण मांहि। प्रीतम मारै बाण जद, दादू जीवै नाहि।—दादूबाणी

उ०—२ रोगली टीगर रै मूंढै मै झाग आयग्या, आख्या तिरादी अर सिसकण लागगी।—दसदोख

सिसकणहार, हारौ (हारी), सिसकणियौ—वि०।

सिसकिओड़ौ, सिसकियोड़ौ सिसक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिसकीजणौ, सिसकीजबौ—भाव वा०।

सिसकांनी-स. स्त्री.—एक प्रकार की बदूक।

सिसकार—देखो 'सिसकारी' (रू. भे.)

उ०—पीव उमायौ प्रेम रौ, ली धण कंठ लगाय। सुदर मुख सिसकार हुय, झाझर पग झणणाय।—नारायणसिंह सादू

सिसकारणौ, सिसकारबौ-क्रि. अ.—१ किसी प्रकार की वेदना, पीडा या अत्यधिक सर्दी के कारण मुह से बार बार 'सी' 'सी' करना।

२ रति क्रिया के समय नायिका (स्त्री) द्वारा सीत्कार करना।

३ मुह से निश्वास छोड़ना।

४ किसी को ताड़ना देते या चुपके से बुलाने के लिये मुह से 'सी' 'सी' शब्द करना।

५ इसी प्रकार पशुओ को भी संकेत देना।

सिसकारणहार, हारौ (हारी), सिसकारणियौ—वि०।

सिसकारिओड़ौ, सिसकारियोड़ौ, सिसकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिसकारीजणौ, सिसकारीजबौ—कर्म वा० ।

सिसकारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पीड़ा, कष्ट या शीत के कारण मुह से 'सी' 'सी' शब्द किया हुआ. २ सीत्कार किया हुआ. ३ निश्वास छोडा हुआ. ४ 'सी' करके इशारा किया हुआ. ५ इसी प्रकार पशुओ को सकेत किया हुआ ।

(स्त्री. सिसकारियोड़ी)

सिसकारी-स. स्त्री.—१ अधिक दुख, कष्ट या आनन्द के समय मुंह से निकलने वाली 'सी' 'सी' की ध्वनि ।

उ०—१ राजाजी रै तकलीफ री पार नी ही। हथाळिया रा छाळा नै देखता अर सिसकारियां न्हाकता।—फुलवाडी

उ०—२ थर थर धूजता सिसकारियां भरता नागा-तडग रावळां कांनी वहीर व्हीया।—फुलवाडी

२ प्राय रतिक्रीडा के समय मुंह से होने वाली आह-आह, ऊह ऊह की ध्वनि, नायिका का सीत्कार ।

३ निश्वास, सीत्कार ।

४ भेड़, बकरी आदि पशुओ को इकट्टा करने के लिए किया जाने वाला शब्द ।

५ ताड़ना या बुलाने के लिये किया जाने वाला इशारा ।

रू. भे —सिसकार ।

अल्पा; —ससकारौ, सिसकारौ ।

सिसकारौ—देखो 'सिसकारी' (अल्पा; रू भे.)

उ०—१ गाव गांव मुकाम, हुवै वित वेस अपारां। सिसकारा हुव सबद, पोट लादै अणपारा।—रमण प्रकास

उ०—२ हाथ भरै चूडी तिड़ै, रे मूरख मणियार। वै सिसकारा प्रेम रा, तौ सग नही गिवार।—अग्यात

उ०—३ लवखू सिसकारा भरती बोली—बरसा सूं म्हारै औ मोटौ रोग लाग्योडौ। खाज आगै जीव जावै।—फुलवाडी

उ०—४ भूखी की जीमैं सिसकारा भरती, नाखैं निसकारा धीमे पग धरती।—ऊ का.

सिसकियोड़ौ—देखो 'ससकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिसकियोड़ी)

सिसकी-सं. स्त्री.—१ रुक रुक कर रोने की क्रिया, भाव, गिगी।

२ देखो 'सिसकारी' (रू. भे.)

सिसखांनी—देखो 'सिसकानी' (रू. भे.)

सिसगोत, सिसगोति—देखो 'ससिगोति' (रू. भे.)

सिसट—१ देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरा चरित अनूप रूप कुंण लभै माया। सिसट उपाया संकरी, नवनाथ निपाया।—गज-उद्धार

उ०—२ सिरजनहारा सिसट का, करता कहीयै कोय। हरीया करता दूसरा, कहन सुनन का होय।—अनुभववाणी

२ देखो 'सिस्ट' (रू. भे.)

सिसटाचार—देखो 'सिस्टाचार' (रू. भे.)

उ०—पछै दीवाण नरबदजी रै डेरै पधारिया, वडौ सिसटाचार पडवज कीयौ।—नैणसी

सिसटी—देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

सिसदा-स. पु.—पक्षी विशेष ।

उ०—अटकत पथ जळ जोर अत, सिसदा कैकी सादवै। जिण रित 'कुसाळ' जीवराज सग, भवन चली तज भादवै।

—अरजुणजी बारहठ

सिसधर-स. पु. [स. शशधरः] १ चन्द्रमा ।

२ कपूर ।

सिसन—देखो 'सिस्न' (रू. भे.)

सिसपत, सिसपति, सिसपती-स. पु. [सं. शशिपति] शिव, महादेव ।

सिसपाळ—देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे)

उ०—दाणौ मार दफै किया, नासियौ सिसपाळ। नहचै तै कारज सरचौ, जीतौ स्रीगोपाळ।—पदमभगत

सिसप्रिया—देखो 'ससिप्रिया' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सिसबीज-सं पु.—शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा ।

सिसमत्थ, सिसमथ सिसमाथ—देखो 'ससिमाथ'

(रू. भे.) (ना. डि. को.)

सिसमाद, सिसमादचक्र, सिसमाध, सिसमाधचक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू. भे.)

उ०—१ तारागण तेताह सौ बाधा सिसमाद रै। जग राजा जेताह आमेरा तौ आसरै —अग्यात

उ०—२ सिसमाध बीच पेरै कितेक।—पाडव यसेंदु चद्रिका

सिसमार-स. पु. [स. शिशुमार] १ सूस नामक एक जल जन्तु ।

२ श्रीकृष्ण ।

३ देखो सिसमारचक्र' ।

रू. भे.—सिसुमार ।

सिसमारचक्र-सं. पु. यौ. [स. शिशुमारचक्र] समस्त ग्रह, नक्षत्र, तारा मण्डल सहित सूर्य मडल, सौर जगत ।

उ०—असत विण आंगमे, कवण सामद्र पयाळै। अणसका विण हणू, कवण लंका परजाळै। कवण अखंवड़ विगर, प्रळै सागर सिरसोभै। कवण बिना सुखदेव, देव माया नह लोभै। सिसमारचक्र ध्रुव विण सुतौ, भजै न कुण सिमि गण भ्रमण। अगमैं साह अव-रंग सूं, कमंधां विण चाळौ कवण।—रा. रू.

रू. भे.—ससमाद, ससमादचकर, ससमादचक्र, ससमाध, ससमाध-चकर, ससमाधचक्र, सिसमाद, सिसमादचक्र, सिसमाध, सिसमाध-चक्र, सिसुमार, सिसुमारचक्र ।

सिसवदनी—देखो 'ससिवदनी' (रू. भे)

उ०—दस दस पास खवासी दासी, चंपक वरण ओढिया चीर।

सिसवदनी नाखै सिसकारा, मीरा कहां हमारा मीर।
—रूघौ मुहतौ

सिसर—देखो 'सुसिर' (रू. भे.)
उ०—प्रतिदिन होत बेद बिधि पूजन, घुरियत तत ग्रानद्ध सिसिर घन।—मे. म.
उ०—२ तान गान ततकार बजत्रन, ध्वान सिसर तत घन ग्रानद्धन।—मे म.
२ देखो 'सिसिर' (रू. भे.)
उ०—१ हेम सिसर रित मेडतै, रहियौ कमधा राव। संभ विहाणै ऊगणौ, दिन दिन दूणौ चाव।—रा रू
उ०—२ एणइ अवसरि आवीउ रे, मनोहर मास वसत। सिसर गयु दुख देई करी रे, ठारवा जे जगि सत।—कल्याण

सिसलौ-स. पु—खरगोश।
उ०—इक दिन नळ राजा तिहां, चढ्यौ सिकार प्रभात। रमता सिसलौ नीसरचौ, दीनौ घोडौ दें लात।—ढो. मा.

सिसहर, सिसहरि, सिसहरी—१ देखो 'ससधर' (रू. भे.)
उ०—१ अब घट मेरे भया अणदा, सिसहर घर सूर, सूर घर चदा।—अनुभववाणी
उ०—२ वदन कला सोळह सिसहर वरि, कोमळ वध वरम्री केसरि।—गु. रू. ब.
२ देखो 'सिसिर' (रू. भे.)
उ०—हिम तै सिसहर रितू विहाई, दह्यौ बसत वात दुखदाई।
—ऊ. का.

सिसहुर-स. पु—शंख, कबु। (ह. ना मा.)

सिसि—देखो 'ससि' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)
उ०—निसा पडता भूँबीयौ जुर्न-ग्रनडा नडण। जवन दळ सिर सबळ दाबि जमरा। सिसि करै जेण उदमाद नव-साहुंसा, ग्ररक घोळौ करै जेण 'ग्रमरा'।—किसनौ ग्राढौ

सिसिगोत, सिसिगोति, सिसिगोती—देखो 'ससिगोती' (रू. भे.)
(ह. ना. मा.)

सिसिन—देखो 'सिस्न' (रू. भे.)

सिसियौ—देखो 'सस' (ग्रल्पा; रू भे.)
उ०—सिसियौ पादियौ लाकडी साख भर दी। काल मूं थांरै पापै पुन्नै लाग जाया।—वरसगाठ

सिसिर, सिसिरि-सं. स्त्री. [सं. शिशिर] १ माघ व फाल्गुन मास मे होने वाली एक ऋतु, षडऋतुग्रो में से एक।
उ०—१ सैसव स जु सिसिर वितीत थयौ सहु, गुणगति मति ग्रति एह गिणि। ग्राप तणौ परिग्रह लै ग्रायौ, तरुणापौ रितुराउ तिणि।
—वेलि
उ०—२ प्रगटै मधु कोक संगीत प्रगटिया, सिसिर जवनिका दूरि सिरि।—वेलि
२ शीतकाल, जाडा। (डि. को)
रू. भे.—ससर, ससरत, ससरित, ससिर, सिसर, सिसहर।

सिसिवदनी—देखो 'ससिवदनी' (रू भे.)
उ०—मरद हिम तह रिति सिमिर, की कीला सुख भोग। धूना मिंदर धोहरै, सिसिवदनी संजोग।—गु. रू. ब.

सिसिवौ-वि.—१ धनाढ्य, पैसो वाला।
२ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।
रू. भे—ससवौ।

सिसिसहोदर, सिसिसहोवर-सं. पु. यौ. [सं. शशि+सहोदर] शंख।
(ह. नां. मा.)

सिसिहर—देखो 'ससधर' (रू भे.)
उ०—दंड कलस धज मडित, खडित सिसिहर कति।
—प्रा. फा. सं.

सिसी—देखो 'ससि' (रू भे.)

सिसीगोत्री—देखो 'ससिगोती' (रू. भे.)

सिसीहर—१ देखो 'सिसिर' (रू. भे.)
२ देखो 'ससधर' (रू. भे.)

सिसु-स. पु [सं. शिशु] छोटा बच्चा। (ग्र. मा; ह. ना. मा.)
उ०—सिसु उयापि इक साह, साह सिसु ग्रवर सथप्पै। सिसु सुभडां हित सफै, पटै गढ देस समप्पै।—सू. प्र.
रू. भे.—ससि।

सिसुचांद्रायण-सं. पु. यौ [सं. शिशुचांद्रायण] चाद्रायण नाम का एक प्रकार का व्रत जिसमे प्रात:काल चार ग्रास ग्रौर सायकाल चार ग्रास भोजन किया जाता है।

सिसुता, सिसुताई-स. स्त्री.—बचपन।

सिसुनामौ-स. पु.—ऊट।

सिसुनाग-स. पु.—एक राक्षस का नाम।

सिसुपाळ-स पु. [सं. शिशुपाल] कृष्ण द्वारा मारा जाने वाला चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा।
रू. भे.—ससपाळ, ससिपाळ, सिसपाळ।

सिसुमार-स. पु.—जलमानस। (डि. को)
२ देखो 'सिसमार' (रू. भे.)

सिसुमारचक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू. भे.)

सिसुमारमुखी-सं. पु. यौ. [स. शिशुमारमुखी] स्वामी कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सिसू-सं. पु.—पौत। (ग्रनेका.)

सिसोदिया-सं. स्त्री.—गहलोत क्षत्रियो की एक शाखा।
रू. भे.—सीसोदिया।

सिसोदियौ-स. पु.—उक्त शाखा का व्यक्ति।

सिसोदौ-स. पु.—सिसोदिया वश का क्षत्रिय।

सिस्ट-वि. [स. शिष्ट] १ वह जो सभ्यतापूर्ण व्यवहार करता हो,

शिक्षित एवं सभ्य।

उ०—नमौ इस्ट निज देव नमौ सब सिस्ट गुसाई।—ऊदौजी नैण

२ बुद्धिमान।

३ देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

रू. भे.—सिसट।

सिस्टता-स. स्त्री. [सं. शिष्टता] १ सभ्य व शिष्ट होने का गुण या भाव।

२ शिष्ट आचरण।

रू. भे.—सिसटता।

सिस्टसभा-सं. स्त्री. [सं. शिष्ट-सभा] राजसभा, शिष्टसभा।

सिस्टा-सं. पु. [सं. सृष्टा] ब्रह्मा। (ना. मा.)

सिस्टाचार-सं. पु. [सं. शिष्टाचार] १ सभ्य व शिष्ट पुरुषों द्वारा किया जाने वाले व्यवहार, आचरण।

उ०—कागद कौ लिखबौ किसौ, कागद सिस्टाचार। वौ दिन भलौ ज ऊगसी, मिलसां बाहु पसार।—अग्यात

२ सभ्य व्यवहार, नम्रता।

३ आदर, सम्मान।

उ०—दोनूं महाराजा जाय गादी पर विराजिया सिस्टाचार निराट अव्वल तरह सूं कियौ हाथी एक बाकै राव, घोडा दोय, तुररा च्यार दिया। घणी घणी मनुहारा करी।

—मारवाड रा उमरावा री वारता

सिस्टी—देखो 'स्रष्टि' (रू. भे.)

उ०—सावत्री पति बीनबाजी, आदि ब्रंम अवतार। सकळ स्रिस्टी ब्रह्मा रचीजी, पंथ चलावण हार।—रुकमणी मंगळ

सिस्त-स. स्त्री [फा शिस्त] लक्ष्य, निशाना।

रू. भे.—सिस्ति।

सिस्तबाज-वि [फा. शिस्त+बाज] निशाने बाज, लक्ष्य साधने वाला।

सिस्ति—देखो सिस्त' (रू. भे.)

उ०—रुखमइया का वाण काटिवा की तांई। सिस्ति बांधी। अणी मूठि द्रिढि एक सिस्ति की।—वेलि टी.

सिस्न, सिस्नु-स. पु. [स. शिश्न] पुरुष लिंग, लिंग, जननेंद्रिय।

(डिं. को.)

रू. भे.—सिसन, सिसिन।

सिस्य-सं. पु [सं. शिष्यः] शिष्य, शागिर्द, चेला।

उ०—द्रव्य पूजा सिस्यादिका नुं माहरा पुत्र पोता राज नु घणी देमी।—रा व वि.

२ विद्यार्थी।

३ क्रोध, रोष।

रू. भे—सिक्ख, सिख, सिस, सीसय।

सिस्समत्थ, सिस्समथ, सिस्समथ्थ—देखो 'ससिमाथ' (रू. भे.)

सिस्सिहर—१ देखो 'ससधर' (रू. भे.)

२ देखो 'ससिधर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सिहंड-सं. पु. [स. शिखड] मोर, मयूर।

(अ. मा; नां. मा; ह. ना. मा.)

रू. भे.—सिहुंड, सिहुड।

सिहड-स. पु.—मल्हार नामक एक राग। (संगीत)

सिहण-स. स्त्री.—१ मादा शेर, शेरनी, सिंहनी।

स. पु. [सं. स्तन] २ स्तन, कुच।

उ०—सरल तरल भुयवल्लरिय, सिहण पीण घण तुंग। उदर देसि लकाउली य, सोहइ तिवल तुरगु।—राजसेखर सूरि

सिहर-सं. पु. [स. शिर] १ सिर, मस्तक।

[सं. शिखर] २ हाथी, गज। (ना. डिं. को.)

३ पर्वत, पहाड़।

उ०—भल दीसइ फाबियउ विसभर, सिहरां छायउ मानसर।

—महादेव पारवती री वेलि

४ पर्वत-शिखर, चोटी, शृंग।

उ०—१ मदन तणा सिहर चइ माथइ, बारइ तेज तपइ बाणाध।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ अंबर राव हतउ ओभाडइ, सिहरां रा सींग सहिनाण।

—महादेव पारवती री वेलि

५ बादल, मेघ।

उ०—१ अनेक रंग-रंग रा जु सिहर उठै छै। सूरज मेघ मानु आपणा घर सवारै छै।—वेलि टी.

उ०—२ मिळिया जाणै सिहर बीजळी, माहै कळा चढंती रूप।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ खेडपति धूणियौ कूत खीज, वळको किरि काळै सिहर बीज।—गु. रू. ब.

६ श्रेष्ठ वीर।

७ देखो 'सहर' (रू. भे.)

रू भे.—सिहरि।

सिहरसिलाव-स. स्त्री.—बिजली की चमक।

सिहसांन-सं. पु. [सं. सिहसान] एक सूर्यवंशी राजा जो मर्पण का पुत्र था।

उ०—मरवण सुन सिहसांन भूप मणि। भूप विस्वासा द्वै तै सुत भणि।—सू. प्र.

सिहसत—देखो 'सिगसट' (रू भे.)

सिहाई—देखो 'सहाय' (रू भे.)

उ०—१ राम भजीजै भीड तजीजै लाभ मदेही वेद वदेही, संत सिहाई राघवराई वौ हरि गावौ पै उघ पावौ।—र. ज. प्र.

उ०—२ संतौ सतगुर करण सिहाई।—अनुभववाणी

सिहाखरौ-सं. पु.—मस्तक, सिर।

उ०—जपियौ विदरां जाय यम जायल पत आगलै, काळौ हुइ

केहै वाय समपौ जकण सिहाखरौ ।—पा. प्र.

सिहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—१ धर सिहाय ध्रम न्याय धुरधर, कवि दुज गौ प्रज तपी दया कर ।—रा. रू.

उ०—२ आप अजेगढ आवियौ, माप जकै असमांन । वै सिहाय विहारियां, मेलै मुकरवखान ।—रा. रू.

सिहायक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

उ०—१ ततपर धरम सरम प्रज तारण, सुरां सिहायक असुर संघारण ।—रा. रू.

उ०—२ चक्रयत चाड क्रिए चुनरावत, रिण रावता सिहायक रावत ।—रा. रू.

सिहायत, सिहायता—देखो 'सहायता' (रू. भे.)

उ०—१ इळ रखवाळौ खानइनायत, आसतखा अजमेर सिहायत । —रा. रू.

उ०—२ गहै अब सुद्रसण भांज सुरताण गह, कीध नर सुरां सिहायतनि केही । आवियौ संकट गज सुपह ऊवेळियौ, जगळ चै नाथ रुघनाथ जेही ।—ठाकरसी सिंढायच

सिहारौ—देखो 'सहारौ' (रू. भे)

सिहि-वि.—सब समस्त ।

सिहोर—१ देखो 'सिखर' (रू. भे)

२ देखो 'सिहर' (रू भे.)

सींक—देखो 'सीक' (रू. भे.)

उ०—१ पवन री मारी सींक ठाहरै इण भातरी भाग काढ तयार कीजै छै ।—रा. सा. स.

उ०—२ उदैपूर सोळै उमरावा नूं सात सींक रौ बीडौ दिरीजै । देस निकाळौ दै जिणनूं तीन सीक री बीड़ौ दै ।—बा. दा. ख्यात

सींकलौ, सींखलौ-सं पु.—लकडी या लोहे का बना एक उपकरण जिसके अन्दर मथानी को फसाकर दही मथा जाता है । इसके लगाने का उद्देश्य मथानी व पात्र की सम्भावित टक्कर को बचाना है ।

सींग-सं. पु. [सं. शृंग] १ खुर वाले पशुओ के सिर पर दोनों ओर उठे हुए कठोर एव नोकदार वह अवयव जिनसे पशु अपनी रक्षा एवं दूसरो पर आक्रमण करता है, पशु शृंग । (डिं. को.)

उ०—अति सींग अजायब यभ घणइ थट, जाडइ कंध सुं बाधि जिहाज ।—महादेव पारवती री वेलि

मुहा.—१ सींग निकळणा=जानवरों का युवा होना ।

२ सींग री कसर पूछ मे निकळी=एक स्थान की कमी दूसरे स्थान में पूरी होना ।

३ सींगां में ठोकणी=मर्म वचन कहना, कमजोरी पर चोट करना।

कहा.—भैंस रा सींगड़ा भैस नै भारी, आपा नै चाइजै दही री पारी=किसी के अवगुणों को छोड़ उसके गुणो का लाभ उठाना ।

२ बंदूक का बारूद रखने का एक उपकरण । (पा. प्र.)

३ फूंक दे कर बजाया जाने वाला एक बाजा ।

४ सींग की बनी एक नली ।

वि. वि.—गाव के जर्राह प्रायः इस नली को शरीर से विकृत खून चूसकर बाहर निकालने के काम मे लेते है ।

अल्पा;—सीगड़ी, सीगडौ सीगटौ ।

सींगड़ी, सींगड़ौ—१ देखो 'सींग' (रू. भे.) (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हिरणां लांबी सींगड़ी, भाजण तणौ सभाव । सूरा छोटी दांतळी, दै घण थट्टां घाव ।—हा. झा.

सींगटी—देखो 'सींग' (अल्पा; रू. भे)

उ०—सूका तगरा सींगटी, लपट पडचा ओटाळ, जी लूआ लै नीसरी आयौ हिरणा काळ ।—लू

सींगण, सींगणि, सींगणी-स. पु [स. शृंग] धनुष ।

उ०—सींगण काई न सिरजिया, प्रीतम हाथ करंत । काठी साहंत मूठि मां, कोडी कासी संत ।—ढो. मा.

२ एक विशेष प्रकार का धनुष जो सींग का बना होता है । (रा. सा. सं.)

उ०—१ अंग टोप रगावळि खांडा, खेडा पटा कटारी । सींगणि जोड भली तरुयारी, लीजइ सार बिसारी ।—कां. दे. प्र.

उ०—२ कीधी सान खानि मूगलनइ, सींगणि परठ्यउ तीर । ताणी गयणि पखिणी वीधी, पेखइ मोटा मीर ।—का. दे. प्र.

उ०—३ परठ ओडण पटी खाग नाजा खजर, गुरज गुपती गदा साग सींगण सूपर ।—रुखमणी हरण

३ अशुभ लक्षणो वाला घोड़ा । (शा. हो.)

रू भे.—सिगण, सीघण, सीगणि, स्रंगणि, स्रंगणी ।

सींगलदीप—देखो 'सिंहलदीप' (रू. भे.)

उ०—दिन दुलहा माणीगरा, इण गढ रा धणियाह । आणी सींगलदीप सूं, पेखै पदमणियाह ।—बा. दा.

सींगळी—देखो 'सिघळी' (रू. भे.)

उ०—१ ऊजळा दांत गय सांभळा आगळी, सुंड उळळता हीडळै सींगळी ।—गु. रू बं.

उ०—२ सींगळी गज्ज गरजत साद । नभ जांण दवादस मेघनाद । —गु. रू. ब.

सींगसट, सींगसठ—देखो 'सिंगसट' (रू. भे.)

सींगसाज-स पु. यौ.—सींग का बना बारूद रखने का एक पात्र । (मा. म.)

सींगाड़ी, सींगाड़ौ—देखो 'सिंगोटी' (रू. भे.)

उ०—सुगट सींगाड़ी साकवर, आछौ ऊजळ अग । भारतवाळी भोम पर, नसल नागौरी रग ।—नारायणसिंह साढू

सींगायल-वि.—अवारा ।

उ०—सींगायल तथा सरकायल सो सौ रचै है, बाजेगारी अर तेरा-

तालौ नौ नौ ताल नाचै है ।—दसदोख

सींगाळ—देखो 'सीगाळौ' (मह; रू. भे) (डि. ना. मा.)

सींगाळी-सं. स्त्री.—१ सीगो वाला मादा पशु ।

२ गाय । (डि. को.)

सींगाळौ-सं. पु. [सं. शृगी] (स्त्री. सीगाळी) १ सीग वाला जानवर शृगी पशु ।

उ०—हुर्रै हुर्रै कर देता हलकार, लावा सींगाळां देना लल-कारा ।—ऊ. का.

२ बैल, वृषभ ।

उ०—जौ घणदीहौ सागड़ी, व्है विरदावणहार । सींगाळौ बळ मो गुणौ, जाणावै जिणवार ।—बा. दा.

३ वीर, बहादुर ।

उ०—सींगाळौ अवखल्लणौ, जिण कुळ हेक न थाय । जास पुरांणी बाड जिम, जिण जिण मत्थै पाय ।—हा. झा.

सींगासण—देखो 'सिंहासण' (रू. भे.)

सींगी—१ देखो 'सिंगी' (रू भे.)

उ०—भाव भगति का खाणा पीणा, सील संतोखी पतरा । सुरत निरत की सेली सींगी, लीया लगोटा जतरा ।—अनुभववाणी

२ देखो 'सिंगण' (रू. भे.)

उ०—गुरजा चकमारा अंग अयारा डाबै पट्टा जमदड्ड । खंडा खुरसाणी तेगा पाणी सींगी नेजा सन्नड्ढ ।—गु. रू. ब.

सींगीबंद, सींगीबंध-स. पु.—वह तालाब या वापिका जो चारो ओर से पत्थर एव चूने की पक्की चुनाई से बांधा हो ।

उ०—तळाव १ कोट माहे, तळाव १ काचो पाको कोट रा पट्टा हेठै खाई री ठौड़ छै । कोहर ४ कोट माहे सींगीबद पाणी मीठो । वडो कोट हुवो ।—नैणसी

रू. भे.—सींगीबद, सींगीबध ।

सींगीमुहरौ—देखो 'सिंगीमुहरो' (रू. भे.)

उ०—तमाल पत्र सींगीमुहरा धतूरो भूटटी एक खान इहमदा वादी खान.........।—रा. सा. सं.

सींगीरिख, सींगीरिखी, सींगीरिसी—देखो 'स्रंगीरिसी' (रू. भे.)

उ०—तप कै गुमांन सींगीरिख मारि हारिखाई, वेद कै गुमान तैं ब्रंभ हूं उठायौ है ।—सुरजनदास पूनियौ

सींगोटी—देखो 'सिंगोटी' (रू भे.)

सींगौ-स पु.—सीग के आकार का लकड़ी का डंडा जो 'चौसगी' या 'जई' के छोर पर लगाया जाता है ।

वि. वि.—देखो 'चौसगी' ।

रू. भे.—सिंगौ ।

सींघण, सींघणि, सींघणी-सं. पु.—घोडे के सिर पर होने वाला एक टीका जिसमे दो या अधिक भौंरियां होती हैं । (शा. हो.)

२ देखो 'सींगण' (रू. भे.)

उ०—१ गुण बाण सींघणि गाढ, वाहति ताणक बाढ ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ वह छूटै कैबर सोक नलीसर सींघणि सधर साचवियं ।
—गु. रू. बं

सींघल—१ देखो 'सिंहल' (रू. भे.)

२ देखो 'सिंगल' (रू. भे.)

सींघळी—देखो 'सिंघळी' (रू. भे.)

उ०—१ सीह वयण समधरे, खडग उपाडै हत्थळ । सीहै रा सींघळी, सीह ऊठिया सहस बळ ।—गु. रू. बं.

उ०—२ जाणीया ईस विण जहर कुण जीरवै, जागणी विवर कुण पैस जांणै । सकज मबळी तखत मा'ल रा सींघळी, अगम दरीयाव सु तुहीज आंणै ।—मालौ माढू

उ०—३ पछै लोह साकळ रा प्रास नाखि नै हाथी पकडीजै छै । इणी भात रा सीघळी गजराज वैसास नै आणिआ छै ।
—रा. सा. स.

सींघसट, सींघसठ, सींघसत, सींघसथ—देखो 'सिंगसठ' (रू. भे.)

सींघाळौ—१ देखो 'सिंघाळौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सींगाळौ' (रू. भे.)

सींघासण—देखो 'सिंहासण' (रू. भे)

सींघोड़ौ—देखो 'सिंघोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—भूरी मेवाती अरोड़ो अमल आगराई मिसरी अहिफीण अनै वासग नागरे मुहड़ै रा झाग हुऐ तिण भाति रौ नेस सींघोड़ा भज किया ।—रा. सा. स.

सींचणियौ-स. पु.—१ कुए से पानी निकालने के पात्र के बाधा जाने वाला रस्सा ।

२ कूऐ से पानी निकालने का पात्र ।

३ कूऐ से पानी निकालने वाला व्यक्ति ।

रू. भे.—सिंचणियौ ।

सींचणौ, सींचबौ-क्रि. स. [स. सिंचन्] १ खेत मे फसल या बाग-बगीचे मे पेड-पौधो आदि को कूऐ से निकालकर पानी देना, पानी पिलाना, सिंचन करना ।

उ०—१ बांवळिया कुण रै लगाया थारो पेड, बावळिया कुण रे सपूती थानै सींचियौ ।—लो. गी.

उ०—२ बाईजी सींचै रे आमूनौ कोई म्है मीचों म्हारो नीम-नीमोळीडा ।—लो. गी.

२ पानी छिड़कना, नमी देना ।

३ उड़ेलना, डालना ।

उ०—१ रावत झाटक रजां, गजां म्हावत गरदाया । सपड़ाया जळ सींच, बळै चितराम बणाया ।—मे. म.

उ०—२ सुणै सयद ऊससै अडर, वाहर पुर वाळा । अगनि कुंड ऊछळै, जांणि सींची घ्रत ज्वाळा ।—सू. प्र.

४ यज्ञ में घृत की आहुति देना।

उ०—वीवाह करण तेथ बैठा ब्राह्मण समधा अगिनि सींचतइ सारि। नवग्रह दस दिगपाळ निजीकी, अथवा बरइ करइ आचार।
—महादेव पारवती री वेलि

५ कुऐ से पानी निकालना।

उ०—बाबा म देइस मारूवा, वर कुंग्रारि रहेसि। हाथि कचोळउ सिरि घडउ, सींचती मरेसि।—ढो. मा

६ (चीटियो के बिल पर अनाज) आदि छिड़कना, छितराना, डालना।

उ०—आ ऊंदरा मारणा रा पाप रै बदळै कालै सूं ई दौ वेळा कीडी नगरी सींचौ।—फुलवाडी

सींचणहार, हारौ (हारी), **सींचणियौ**—वि०।

सींचिग्रोडौ, सींचियोडौ, सींच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सींचीजणौ, सींचीजबौ—कर्म वा०।

सीचांण, सींचांणउ—देखो 'सिचाण' (रू भे.)

उ०—उत्तर आज स वज्जियउ, ऊकठियइ केकाण। कामणि काम कमेडिज्यउ, इइ लागउ सींचांण।—ढो. मा.

सींचांणी—सं. स्त्री. [सं. शची] इन्द्राणी, शची।

उ०—रजपूताणी रुच सींचाणी सिरखी, नैणांजळ भरती सैणा थळ निरखी।—ऊ. का.

सींचांणू, सींचांणौ—देखो 'सिचांण' (रू. भे.)

उ०—चंपै सींचांणू मणा असमाणू, पुळत न जाणू पवाणू।
—भगतमाळ

सींचाणौ, सींचाबौ—क्रि. स. ['सीचणौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ कूऐ से पानी निकलवाकर फसल अथवा पेड़ पौधो को पिलवाना, पानी दिराना, सिचाई कराना।

२ पानी छिडकवाना, नमी दिराना।

३ उडेलवाना, डलवाना।

४ कूऐ से पानी निकलवाना।

५ (चीटियों के बिल पर अनाजादि) छिड़कवाना, छितरवाना।

सींचाणहार, हारौ (हारी), **सींचाणियौ**—वि०।

सींचायोडौ—भू० का० कृ०।

सींचाईजणौ, सींचाईजबौ—कर्म वा०।

सिचाणौ, सिचाबौ, सिचावणौ, सिंचावबौ—रू० भे०।

सींचायोड़ौ—भू. का. कृ—१ पानी दिराया हुआ, सिंचाई कराया हुआ. २ पानी छिड़कवाया हुआ, नमी दिराया हुआ. ३ उडेलवाया हुआ, डलवाया हुआ ४ कुऐ से निकलवाया हुआ (पानी). ५ चीटियो के बिल पर अनाजादि छिडकवाया हुआ, छितराया हुआ। (स्त्री. सीचायोडी)

सींचारौ—सं. पु.—वह व्यक्ति जो कुऐ से जल खीचने का काम करता है।

उ०—स्राप दियौ तद ईसरी, घट एक रह्यौ घर। सींचारै पड़तै सबद, कीधौ भभ कोहर।—जुझारसिंह मेडतियौ

२ सीचाई करने वाला व्यक्ति।

सींचियोडौ—भू. का. कृ.—१ सिंचित, सींचा हुआ, पानी दिया हुआ. २ कूऐ से पानी खीचा हुआ, निकाला हुआ. ३ जल, घी आदि उडेला हुआ, डाला हुआ. ४ छिडका हुआ, नमी दिया हुआ. ५ चीटियोंके बिल पर अन्न डाला हुआ, छिडका हुआ, छितराया हुआ. ६ यज्ञ या होम में आहूति दिया हुआ।
(स्त्री. सीचियोडी)

सींचौ, सींचौ—स. पु.—१ शौच से निवृत होकर मलद्वार की जल से की जाने वाली शुद्धि, आबदस्त। मलद्वार स्वच्छ करने की क्रिया या भाव।

२ अशौच मिटाने के लिए शुद्ध जल का छीटा देने या लेने की क्रिया।

सींठ, सींठ—स. पु.—१ गुप्तेन्दिय के आसपास उगने वाले बाल, झांट।

उ०—कपडा काळा कीट, नीठ उठ ऊठ निरोधै। मीट अमल रै माय, सींठ कुवरै जू सोधै।—ऊ. का.

२ गुप्तेंद्रिय, जननेंद्रिय।

सींठाणौ, सींठाबौ—क्रि. स.—बहकाना, फुसलाना।

सीठायोड़ौ—भू. का. कृ.—फुसलाया हुआ।
(स्त्री. सीठायोडी)

सींणगार—देखो 'स्रंगार' (रू भे.)

उ०—जदी गाम धणी री असतरी सींणगार करै आय सलांम कीवी।—गाम रा धणी री बात

सींणियौ, सींणौ—वि.—सफेद लेकिन हल्के कालेपन का।
रू. भे.—सणियौ, सणीग्रौ, सिणियौ, सीणौ।

सींतरी, सींतरी—स. स्त्री.—एक प्रकार का घास विशेष।

उ०—वृक्षा डाळा भात भतीली, फूल महक अणमीतरी। ऊभ एक पग साजन सजै, जो'डा स्वागत सींतरी।—दसदेव

रू. भे.—मणतरी।

सींथाल—सं. पु.—वह बड़ा चौड़ा पत्थर जो किसी जलाशय के किनारे कपडे धोने व नहाने के लिए रख दिया गया हो।

सीदडी, सींदरी—स. स्त्री.—१ ससुराल जाते समय कन्या के साथ डाली जाने वाली तेल, इत्र आदि की शीशी।

२ कुऐ से पानी निकालने की रस्सी।

३ पतली रस्सी का टुकड़ा।

रू. भे.—सिंदडी।

सींदल—देखो 'सिंधल' (रू. भे.)

सींदवौ—देखो 'सींधवौ' (रू. भे.)

सींदुर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे.)

सींदूर—देखो 'सिंदूर' (रू. भे.)

उ०—कांम पतसाह रै जरद झळहळ कियां, सेल सींदूरियौ सजै जगीस। पवंग सींदूर व्रन चाढनां पटहथां, सूरै सूर मंडळ नामियौ सीस।—मालौ सांदू

सींदूरियौ—उषाकाल।

उ०—दुत गंण उदै सींदूरियौ, लाग वाग पाटण लियौ।—पा. प्र.

२ देखो 'सिंदुरियौ' (रू भे.)

उ०—कांम पतसाह रै जरद झळहळ किया, सेल सींदूरियौ सजै जगीस। पवंग सींदूर व्रन चाढता पटहथा, 'सूरै' सूर-मडळ नांमियौ सीस।—मालौ सादू

सींधड़ौ—स पु.—१ ऊंट के चमड़े का बना तेल या घी डालने का पात्र।

२ ऊंट।

रू. भे.—सीदड़ौ।

सींधण—देखो 'सिंधी' (स्त्री.) (रू. भे.)

सींधल—देखो 'सिंघल' (रू. भे.)

उ०—सू बालोत देवळा (ड़ा) सींधल, दवि बोड़ा वाळीसा देवळ।—रा. रू.

रू. भे.—सीदल।

सींधलावटी—देखो 'सिंघलावटी' (रू. भे)

उ०—तिनरै सीहैण गुढा डोडियाल नू जावै छै। सींधलावटी छाडी छै।—नैणसी

सींधवा, सींधवाळ—देखो 'सीधवौ' (रू. भे)

सींधवी, सींधवीनाद, सींधवौ, सींधवौराग—देखो 'सिंधुराग' (रू. भे.)

उ०—१ ऊठि अढगा बोलणौ, कामणि आवै कत। अै हल्ला तौ ऊपरा, हूकळ कळळ हुवत। हूंकळै सींधवौ वीर कळकळ हुवै, वरण कजि अपछरा सूरिमा बहबुवै।—हा. झा.

उ०—२ ऊठि अचूका बोलणौ, नारि पयपै नाह, घोड़ा पाखर धमधमी, सीधूराग हुवाह। हुवौ अति सींधवौराग, वागी हूका, थाट आया पिसण घाट लागै थकां।—हा. झा.

उ०—३ रुड़ै सींधवौराग गुड़ै हल्लां गज ढल्लां। खळां उथल्लां खाग, बणै बगतर बरघल्लां।—ऊ. का.

सींधूर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे.)

उ०—सींधूर दळ बळ सबळ, पूर पैदल अणपारां। नदि सर टूटै निवांण, भाण ढंकै रज भारा।—सू. प्र.

सींधू—१ देखो 'सिंधुराग'।

उ०—आळस जाणं ऐस मैं, वपु ढीलै विकसत। सींधू सुणिया सौ गुणौ, कवच न मावे कत।—वी. स.

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

सींधूराग—देखो 'सिंधुराग' (रू. भे)

उ०—ऊठि अचूंका बोलणा, नारि पयपै नाह। घोड़ा पाखर धमधमी, सींधूराग हुवाह।—हा. झा.

सींप—देखो 'सीप' (रू. भे.) (डि. को.)

सींबल—देखो 'सिंबल' (रू. भे.)

सींम—देखो 'सीमा' (रू. भे.)

सींमल—१ देखो 'सेमल' (रू. भे.)

२ देखो 'सिंबल' (रू. भे.)

सींव—१ देखो 'सीमा' (रू. भे.)

उ०—१ जैसलमेर थी कोस ७० सोढां री ऊमरकोट छै तिण माहे कोस ३५ आधोफेरै दाग जाळ छै तठै ऊमरकोट जैसलमेर सींव छै।—नैणसी

उ०—२ दिल्ली री सींव रै काकड़ मैं आया तोपा रा धड़िदा उडण लागा। म्है तौ पाछौ लारै फिरनै ई नी जोयौ। मरता खपता ठेट आय पूगा।—चितराम

२ देखो 'सीम' (रू. भे.)

उ०—१ बडौ गाव नदी सूं रेलीजै सारी सीव मैं गेहूं हुवै।—नैणसी

उ०—२ बूझ्यौ सजनां गाया रौ गवाळ, सींव वताहौ रे भाईडा। हाडै राव री।—लो. गी.

सींवण, सींवणी—स. स्त्री. [स. सीवनी] १ अण्ड कोश के मध्य की रेखा जो सीली हुई सी प्रतीत होती है।

२ सिलाई की क्रिया या भाव।

३ सुई। (डि. को)

सींवणौ—स पु. [सं. सीवनम्] १ सिलाई करने की क्रिया या भाव।

२ सिलाई का व्यवसाय या कार्य।

उ०—सीव सीव सींवणौ, नैण आंधा हुयग्या म्हारा।—ऊ. का.

३ सिलाई के लिये लाये जाने वाले वस्त्र।

क्रि प्र.—आणौ, करणौ, देणौ, लाणौ, सीखणौ।

रू. भे.—सीवणौ।

सींवणौ, सींवबौ—क्रि. स. [स. सीवनम्] सिलाई करना, कपडे सीना।

उ०—बोदा कपडा बहुत रग, सींवणहार कुढग। घड़ धड़ टांका ऊघडै, घण मोड़ता अग।—जलाल बूबना री बात

सींवणहार, हारौ (हारी), सींवणियौ—वि०।

सींविओड़ौ, सींवियोड़ौ, सींव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सींवीजणौ, सींवीजबौ—कर्म वा०।

सीवणौ, सीवबौ—रू० भे०।

सींवाणौ, सींवाबौ—क्रि. स. [सं. 'सींवणौ' क्रिया का प्रे. रू.] सिलाई कराना या सिलाई करने मे प्रवृत्त करना।

सींवाणहार, हारौ (हारी), सींवाणियौ—वि०।

सींवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सींवाईजणौ, सींवाईजबौ—कर्म वा०।

सिमाणौ, सिमाबौ, सिमावणौ, सिमावबौ, सिलाणौ, सिलाबौ, सीमाणौ, सीमाबौ—रू० भे०।

सींवायोड़ौ-भू. का. कृ.—सिलाई करवाया हुआ, सिलाया हुआ।
(स्त्री सींवायोड़ी)

सींवाळ—देखो 'सिवाल' (रू. भे.)
उ०—ज्यारा द्रग कच जीतिया, सोह पकज सींवाळ। पडही लहरा मिस पगा, त्या हुदा ओताळ।—बा. दा.

सींह—१ देखो 'सिंह' (रू. भे.)
२ देखो 'सिंध' (रू. भे.)

सी-स. पु. [स. शीत, प्रा. सीअ] १ सर्दी, ठड, शीत। (डिं. को)
उ०—सीयाळइ तउ सी पडइ, ऊन्हाळइ लू वाइ। वरसाळइ भुइ चीकणी, चालण रत्ति न काइ।—ढो मा
पर्याय.—जाडौ, ठंड, तुखार, सिसिर, सीत, सुसीम, हिव।
२ सिंह, शेर।
३ डर, भय। (डिं. को)
४ जल, पानी। (ना. डिं. को.)
५ शका।
६ सीत्कार।
७ शोभा। (ह नां. मा)
८ समानता व तुल्यता सूचक प्रत्यय।
उ०—तरै नागही सारा सोरठ रा लसकर नूं नामी सी कोठी माही सूं सीधौ दियौ।—नैणसी
वि. स्त्री.—१ समान, तुल्य।
उ०—मारू सी देखी नही, अणमुख दोय नयणांह। थोडी सौ भोळै पड़इ, दणयर उगंताह।—ढो. मा.
सर्व.—१ क्या।
उ०—१ इम जाणी नइं प्रत्युपकार करंता, राखौ छौ सी चिंता हो।—वि कु.
उ०—२ हू तुज आगल सी कहूँ कन्हैया वीतक दुख री वात रे।
—जयवाणी
२ कैसी।
उ०—नेह बिना सी प्रीतड़ी, कठ बिना स्यउ गान। लूण बिना सी रसवती, प्रतिमा विण स्यउ ध्यान।—वि. कु.
क्रि. वि.—१ करीब, लगभग।
उ०—१ बी. ए. री परीक्षा देय नै म्है चिन्ही सी सोरी सास ली ही।—तिरसकू
उ०—२ सिरदार ढोलियै पर विराजै है अर सुपियारदे नेड़ै सी मसद रै सहारै गादी पर बैठै है।—नैणसी रौ साकौ
२ को, समय मे।
उ०—ओर म्हारै आवण रौ कारण ई काइ है? म्हारी डावडी सझ्या सी पुरी बात सुण'र म्हानै खवर दीनी है।
—नैणसी रौ साकौ
३ देखो 'सीता' (रू. भे.)
उ०—अत चोप सी-वर उचर, ध्यांन हू दय जुत चोप धर।
—र. ज. प्र.
४ देखो 'स्री' (रू. भे.)
५ देखो 'ही' (रू. भे.)
उ०—सौ अठै तौ अै बडी सी उडीक करै अर उठै कुवर नु इण तरै बिलमाय राखियौ।—कुवरसी साखला री वारता

सीआ-सं. पु. [अ. शीआ] १ इस्लाम धर्म का एक सम्प्रदाय जो हज्रत अली के सिवाय अन्य खलीफो को नही मानता है।
२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।
३ देखो 'सीता' (रू. भे.)

सीआल, सीआलक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे.)
उ०—१ चदन भरी कचोली (भरी) यनि रगि रोली, प्रीसइ रस घोली, हाथि लिउ पान कुली, पहिरणि पीत पटुली, काचली कानीआली, उढणि नवरंग फाली, रूप नी चित्रसाली, अहो सीआलक बोलि।—व स.
उ०—२ सासूसली आपु सोवनकेरी, हवडा नही लीजइ बीजी अनेरी, बै कर जोड़ी वरराज मागइ, सासूसली आपता वार ना लागइ, अहो सीआलक बोलि।—व. स.

सीए-स पु.—ठंड, सर्दी। (जैन)

सीओदग-स. पु. [स. शीतोदक] कच्चा पानी। (जैन)

सीओ, सीओताव-स पु. यौ. [सं. शीत+ताप] शीत लगकर आने वाला विषमज्वर, मलेरिया।
रू. भे.—सीयउ।

सीकंत—देखो 'स्रीकंत' (रू. भे.)
उ०—कह बुद्ध किळकी ईस असकी कळ पूरण सीकंता है।
—र. ज. प्र.

सीतकंठ-स पु. [स. शितिकठः] शिव, महादेव। (ह. ना. मा.)

सीकंपी सीकंपौ-स. स्त्री.—सर्दी के कारण होने वाली कपकंपी, कपन।

सीक-सं. स्त्री. [सं. इषीका] १ तीक्ष्ण और पतली द्रव पदार्थ की धार।
उ०—रुधर री धारा सरीर माय सू प्रवाळ री सीकां वह नै रही है।—द. दा.
२ लोहे की सलाई पर लपेट कर पकाया जाने वाला मांस।
उ०—१ रोगान मसालै सै सूलूं की सीक वणावै। अनेक भांति के साग तिसका पार न पावै।—सू. प्र.
उ०—२ सीकां पासै वर्णं छै। आडा डोरा घी रा दीजै छै। मास रफ्तै री खसबोय फूट रही छै।—रा. सा. स.
३ पतली सलाई, तूलिका।
४ जलकण, बूद।
५ पतली सलाई के शिरे पर लपेटी हुई रूई जो कि इत्र से भिगोई

हुई होती है।

क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त।

२ देखो 'सी' (वि) (रू. भे)

उ०—म्हारै कांन मैं धीरै सीक कानाफूसी मांय बोलो।—तिरसंकू

रू. भे.—सींक।

सीकदार—देखो 'सिकदार' (रू. भे.)

सीकदारी—देखो 'सिकदारी' (रू भे.)

सीकर-सं. पु. [स. शीकरः] १ जलकण, पानी की बूंद।

उ०—१ केवड़ा कुसुम कुद तरणा केतकी, सम सीकर निरभर स्रवति।—वेलि

उ०—२ अरांना हसै डूंगरा रैण आटै, छदीजै करा सीकरां गैण छाटै।—वं. भा.

२ वायु द्वारा उत्क्षिप्त जल बिंदू, वर्षा की फुआर।

३ स्वेद, पसीना।

सीकल-स. पु. [अ. सैकल] १ हथियार पर लगे जग को छुड़ाने की क्रिया।

उ०—ताडळा दळां ड्गळां टूक रूडळा रूळां सीकळां रूक।

—गु. रू. व.

२ देखो 'सकल' (रू. भे.)

सीकाळ-स. पु—शीतकाल।

उ०—जळ खूटै सीकाळ, रग मूंगी पड़ ज्यावै। ज्यू घोव्योडी भांग दूर सूं वरण दिखावै।—दसदेव

सीकिरि—एक विशेष प्रकार का छाता।

उ०—दिसि दिसि सीकिरि डामर चामर ढलइ सभाति। वाजइ तूर अनाहत नाह तणइ अनुभावि।—जयसेखर सूरि

सीकिसन—देखो 'स्रीकिसन' (रू. भे)

उ०—करै चित खांत निस दिवस रटरै 'किसन'। सीकिसन सीकिसन सीकिसन सीकिसन।—र. ज. प्र.

सीकोट-स. पु.—१ शीतऋतु मे पश्चिमी क्षितिज पर दृष्टिदोष के कारण दिखाई पडने वाला नगर, मकानात आदि का मिथ्याभास जो सूर्य के कुछ ऊपर चढने पर मिट जाता है, गधर्वनगर।

उ०—१ भुरजां रा कोसीस नै घमळहर घसळगिर पहाड़ ज्या वादळा रा किरण सारिखा उजळा सीकोट सौ नीजरि आवै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ तू भासंकर भाळियळ, वरै घडां अणबोट। भागा जो वड भाखरा, सर हुवा सीकोट।—गु. रू. बं.

२ वायु प्रवाह के कारण पानी, मिट्टी या धुंऐं का उठने वाला समूह।

उ०—उत्तर आज स उत्तरइ, ऊपड़िया सीकोट। काय दहेसी पोयणी, काय कुवारा घोट।—ढो. मा.

३ तेज गति के कारण उत्पन्न ध्वनि।

सीकोतर, सीकोतरि, सीकोतरी-स. स्त्री.—कलह प्रिय स्त्री।

उ०—धन उमरांणी घाट धर, पदमणियां विण पार। सह नारी सीकोतरी, धरती सिध धिकार।—बां. दा.

२ प्रेतनी।

३ एक युद्ध प्रिय देवी, रणचडी।

उ०—१ सीकोतरी सक्कणी, प्रेत डक्कणी अपारां, विविध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारां।—रा. रू.

उ०—२ वैताळ वीर मिळिया विहद, सीकोतरि साकणि महा सद्द।—गु. रू. बं.

२ पिशाचिनी।

उ०—लख लख नाव महिख धड लावै, सीकोतरी तिण व्रत साधै।

—सू. प्र.

सीखंड—देखो 'स्रीखंड' (रू. भे.)

सीख-स. पु.—१ शिक्षा, उपदेश।

उ०—१ विकथा तनै वल्लभ लागै, धरम कथा सुण खीजै रे। हिंसा कर कर हुवै तू राजी, किसी सीख तोय दीजै रे।

—जयवांणी

उ०—२ पण म्हारी सीख भळामण ई उणरै माथै मसाणिया बैराग वाळो असर जरूर कियो पण चिकणा घड़ा माथै छाट नी लागी।—अमरचूनड़ी

उ०—३ नी वानै आपरै हीया री उपजती अर नी वै किणी दूजा री सीख मानता।—फुलवाडी

२ युक्ति, उपाय।

३ परामर्श, सलाह, राय।

उ०—मासी बात नै मरोडता धकै कैवण लागी—विरथा भिकाळ रै लारै घोबां घोबा धूड़, अबै थनै लाख रीपिया री सीख बतावू। विसराजै मती।—फुलवाडी

४ किसी को परिश्रम व मेहनत के फलस्वरूप दिया जाने वाला उपहार, इनाम।

उ०—१ जळवा रै दूजै दिन ई इक्कीस मोहरां भळाय दायरा मां नै सीख दे दी।—फुलवाडी

५ याचकों को रवानगी के समय दिया जाने वाला द्रव्य।

क्रि. प्र.—दैणी, लैणी।

६ एक लोकगीत जो लकड़ी को ससुराल विदा करते समय उसके पीहर की औरतें गाया करती हैं।

७ मांगलिक अवसरों पर अपने रिश्तेदारों या अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भेंट स्वरूप दिया जाने वाला उपहार।

उ०—बोली पिंडतजी थे म्हारै कहै इत्ता फोडा भुगतिया। थांरो औ ओसाण जीवूं जित्तै नी भूलूं। बाई री सीख पछै थारी सीख मैं कमी-वेसी रै जावै तौ म्हनै कैजो।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—दैणो।

८ दामाद व सम्बन्धियो को विदाई के समय दी जाने वाली भेंट।
९ बहन, बेटी आदि को ससुराल भेजते समय दिया जाने वाला धन, जेवरात आदि।
१० अनुमति, इजाजत, आज्ञा।
उ०—१ सीख करै पिंगळ कन्हा, घर आया तिण वार। मेल्हि सखी तेडाविया, मारू मागणहार।—ढो. मा.
उ०—२ आगलै तीन म्हीना री फीस रै वास्तै रुपिया इण पोथी माय राख नै जाय रयो हूँ। अै रुपिया जद कदेई थारै कनै हुवैला अर म्हनै जरूरत पड़ी तो लै लू ली। किणी तरिया रौ ख्याल मत करजे। पोथी जरूर पढजे। अच्छया सीख मागू हू।—तिरसकू
११ प्रस्थान, रवानगी।
उ०—पछै वीरमदे जी उण सू सीख कीवी।—नैणसी
१२ विदाई।
उ० —१ बोली पिडत जी थै म्हारै कहै इत्ता फोडा भुगतिया। थारो औ ओसाण जीवू जित्तै नी भूलू। बाई री सीख पछै थारी सीख मैं कमी-बेसी रै जावै तो म्हनै कैजो।—फुलवाडी
उ०—२ पीछै फेरा लैणरी वखत स्रीकरनीजी मुलतान पधार राव सेखै जी नूं लाया। अरु कवर बीकैजी नू परणाया पीछै जान नू सीख दी।—द. दा.
रू. भे.—सिख्ख, सिख।
अल्पा;—सीखडलो।
सीखड़ली—देखो 'सीख' (रू. भे.)
उ०—१ सीखड़ली हुंजा मारू दीवी रे नी जाय। छाती भरीजै हिवड़ो ऊबकै जी म्हारा राज।—लो. गी.
उ०—२ मेंडी सूं नीचा पधारो भाभी म्हारी औ सीखड़ली देवौ नी, तेजल तौ ऊमायो जावै सासरै।—लो. गी.
सीखचौ—स. पु [अ. सीखच] १ लोहे की वह सलाख जिस पर माँस लपेट कर भूनते है।
६ लोहे की छोटी सलाखा।
सीखणौ, सीखबौ—क्रि. स. [स. शिक्षणम्, प्रा सिक्खण] १ किसी से कोई कला, विद्या आदि के ज्ञान की तालीम लेना।
उ०—१ सौ राजकंवर नै पूछ्या-ताछ्या बिना ई वा बडण-खटोलो सीखण सारू भूवा रै पाखती बैठगी।—फुलवाडी
उ०—२ जग लोक वांण सीखै जवन, पढै ब्रहम मुख पारसी। हित देव सेव आधा हुआ, काई लागा आरसी।—रा. रू.
२ शिक्षा, नसीहत आदि लेना।
३ स्मरण करना, याद करना, कठस्थ करना।
४ ग्रहण करना, स्वीकार करना।
उ०—क्या सुणिया क्या सीखीया, क्या व्है कथीया ग्यान। जन-हरीया हरि पाईयें, धरीयै अतर ध्यान।—अनुभववाणी
५ परस्पर एक मत होना।
ज्यू—नरपत जी अर म्है सीखीजनै आया।
सीखणहार, हारौ (हारी), सीखणियौ—वि०।
सीखिग्रोड़ौ, सीखियोड़ौ, सीख्योडौ—भू० का० कृ०।
सीखीजणौ, सीखीजबौ—कर्म वा०।
सीखत—सं. स्त्री.—१ सीखने की शक्ति या गति।
२ सीखने की क्रिया।
३ स्मरण शक्ति, याददास्त।
सीखांमण—सं. स्त्री.—१ सिखाने की क्रिया या भाव।
२ शिक्षा, नसीहत।
उ०—१ मान्यउ बोल देई सीखांमण, इम कान्हडदे राइ। पइसी प्राणि अमुर मारेज्यो, रखै हुंसारथ थाइ।—कां. दे. प्र.
उ०—२ दीइ सीखांमण साम्हउ जाइ, बीजउ भाट मोकलिउ राइ। ऊतारी सुदरला तीर, आव्या तिहा राय नइ वीर।
—कां. दे. प्र.
उ०—३ इम सीखांमण दीधी घणी ए, आगा चाल्या लकडधा भणी ए। लारै नीद तणै वस थाय ए, जितरै गई आग बुझाय ए।—जयवाणी
३ सलाह, राय।
सीखा—देखो 'सिखा' (रू. भे.)
उ०—लकडी तणा घोचा देई नै, ए देही हूंती गौरी रे। बाला सजन सगातै हुता, जिण पहिली सीखा फोडी रे।—जयवाणी
२ देखो 'सिक्षा' (रू. भे.)
सीख्या—स. स्त्री.—१ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात गुरु वर्ण होते है।
२ देखो 'सिक्षा' (रू. भे)
सीगणि, सीगणी—देखो 'सीगण' (रू. भे.)
उ०—प्रीउ तोउ चाल्यौ तुरीय पलांण, सीगणि जोड़ लीया करि-वाण।—बी. दे.
सीगी—देखो 'सिगी' (रू. भे.)
उ०—सेली सीगी मेखला, कानि मुदरका घालि। हरीया जोगी जुगति बिन, पंच न सधै पालि।—अनुभववाणी
उ०—२ वावै सीगी पूरै नादा, अनहद का नहीं जांणै स्वादा।
—अनुभववांणी
सीघ्र—वि. [स. शीघ्र] १ अविलम्ब, तुरंत, जल्द, चटपट।
क्रि वि.—२ जल्दी से, फुरती से, तुरंत।
सं. पु—१ पृथ्वी के दो भिन्न भिन्न स्थानो से ग्रहो को देखने मे आने वाला अन्तर।
२ एक सूर्यवशी राजा का नाम। (सू. प्र.)
सीघ्रकारी—वि. [स शीघ्रकारिन्] १ शीघ्रता करने वाला।
२ फुर्तीला।
३ शीघ्र प्रभाव करने वाला।

सीघ्रकोपी-वि. [सं. शीघ्रकोपिन्] १ जल्दी-जल्दी क्रोध करने वाला। २ चिडचिड़े स्वभाव वाला।

सीघ्रगामी-वि. [सं. शीघ्रगामिन्] तेज चलने वाला, द्रुतगामी।

सीघ्रता, सीघ्रताई-स. स्त्री. [सं. शीघ्रता] जल्दबाजी, उतावली, शीघ्रता, तीव्रगति।

उ०—तुहो पच्छ तारच्छ मैं **सीघ्रताई**, रती मूरती मैं तुंही सुदराई। —मे. म.

सीघ्रपतन-स. पु. यौ. [शीघ्रपतन] संभोग या मैथुन में वीर्य्य के शीघ्र स्खलित हो जाने की अवस्था, स्तभन शक्ति का अभाव।

सीड़-सं. स्त्री.—१ बकरियो के बालो या सूत आदि से बुनी पतली रस्सी जिससे बोरिये आदि सीते है।

स. पु.—२ सांड, बैल। (क्षेत्रिय)

सीचांण(न)—देखो 'सिचांणौ' (रू. भे.)

सीचांणौ-स. पु.—१ एक प्रकार का घोडा। (शा. हो.)

२ देखो 'सिचाणौ' (रू. भे.)

सीजणौ, सीजबौ—देखो 'सीझणौ, सीझबौ' (रू भे)

उ०—१ रजपूती रंई नही, पूगी समदा पार। पातरिया रा पाद मैं, **सीज** गया सिरदार।—ऊ का.

उ०—२ दस सेर चावळा रौ चरू चूला ऊपर चढायां ऊपरला चोखा **सीज्या** हाथ सूं देख्या।—भि. द्र

उ०—३ खदबद खीचड, खीर, राबडी, रोटी रळीजै। जिनवां सैजळ तणां, मलूणौ सोरौ **सीजै**।—दसदेव

सीजियोड़ौ—देखो 'सीझियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. सीजियोडी)

सीझणौ सीझबौ-क्रि. अ. [स. सिद्ध] १ आग की आच पर पकना, परिपक्व होना।

उ०—पण ढकणा रै मांय **सीझै** सौ सिरै।—फुलवाडी

२ तपस्या करना, तपना।

उ०—बधिया सील पोथी कथा, सुपह पथ सवारियौ। **सीझत** आठ साका किया, वील्ह वैकुठ सिधावियौ।—वील्हौ

३ सिद्ध होना, सफल होना।

उ०—१ कारज कौ **सीझै** नही, मीठा बोलै वीर। दादू साचै सब्द बिन, कटै न तन की पीर।—दादूबाणी

उ०—२ कहै कहै का होत है, कहै न **सीझै** कांम। कहै कहै का पाइयै, जब लग हिृदय न आवै रांम।—दादूबाणी

उ०—३ दया थकी दौलत हुवै ए, **सीझै** सगळा काम। दसमैं अगै कह्या ए, साठ दया तणा नाम।—जयवांणी

उ०—४ जिणदराय दरसण दीजौ आज, जिणदराय जिम **सीझइ** मुझ काज।—वि. कु.

४ जलना, भस्म होना।

५ कमजोर होना, बलहीन होना।

६ कष्ट, दुःख आदि सहन किया जाना।

७ झुलसना।

सीझणहार, हारौ (हारी), सीझणियौ—वि०।

सीझिओड़ौ, सीझियोड़ौ, सीझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सीझीजणौ, सीझीजबौ—भाव वा०।

सिजणौ, सिजबौ, सीजणौ, सीजबौ—रू० भे०।

सीझाणौ, सीझाबौ-क्रि. स. ['सीझणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ पकाना, परिपक्व करना/कराना।

२ तपस्या करने के लिये प्रेरित करना।

३ सिद्ध करना, सफल करना।

४ जलाना, भस्म करना।

५ कष्ट देना।

६ झुलसाना।

सीझाणहार, हारौ (हारी), सीझाणियौ—वि०।

सीझायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सीझाईजणौ, सीझाईजबौ—कर्म वा०।

सीझातर—देखो 'सय्यातर' (रू. भे.)

सीझायोडौ-भू का. कृ.—१ पकाया हुआ, परिपक्व किया हुआ. २ तपस्या के लिये प्रेरित कया हुआ. ३ सिद्ध या सफल किया हुआ. ४ जलाया या भस्म किया हुआ. ५ कष्ट दिया हुआ, त्रासित। ६ झुलसाया हुआ।

(स्त्री. सीझायोड़ी)

सीझियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पका हुआ, परिपक्व हुवा हुआ. २ तपस्या किया हुआ, तपा हुआ. ३ सिद्ध, सफल हुवा हुआ. ४ जला हुआ, भस्म हुवा हुआ. ५ कमजोर या बलहीन हुवा हुआ. ६ कष्ट या दुःख उठाया हुआ ७ झुलसा हुआ।

(स्त्री. सीझियोड़ी)

सीट-स. स्त्री. [अ.] १ बैठने का स्थान, जगह।

उ०—म्है **सीट** सूं उठ खडयौ हुयौ।—तिरसकू

२ आसन, गद्दी।

सीटकी-सं. स्त्री.—पतली टहनी।

उ०—नणद बाइ तोडै नीबडली रा पान, पन्ना मारू, देवरियो छिनगारो तोड़ै **सीटकी** जी म्हारा राज।—लो. गी.

सीटी-सं. स्त्री. [स. शीतृ] १ वह पतली और महीन ध्वनि जो होठ और जीभ को सिकोड कर मुंह से हवा बाहर फेकने पर उत्पन्न होती है।

क्रि प्र.—दैणी, लगाणी, बजाणी, मारणी।

२ वह बाजा या खिलौना जिससे उक्त प्रकार की आवाज निकले।

३ किसी विशिष्ट क्रिया द्वारा उत्पन्न होने वाली उक्त प्रकार की ध्वनि।

४ निर्धारित समय पर नियमित रूप से होने वाली किसी भोंपू की

आवाज।

[अं] ५ नगर, शहर।

रू. भे.—सिटि, सिटी।

सीडी, सीढी—स. स्त्री. [स निश्रेणी] १ मकान की छत या किसी ऊंचे स्थान पर चढने के लिए पत्थर या लकड़ी का बना जीना, सोपान, निसैनी, पेड़िया।

उ०—१ वसघर फील कियो फिलवाणं, आरोह्यो सीढी पग आंणे।—रा. रू.

उ०—२ जिस अवास की सीढियूं के ऊपर रंगदार सबजूं पसमीन पायंदाज राजै।—सू. प्र.

पर्याय—अवरोह, आरोह, आरोहण, निसेणी, सोपान।

२ बास का बना लम्बा ढांचा, जिस पर मृतक के शव को श्मशान ले जाया जाता है, अर्थी।

उ०—१ जीवता सेठा री सीढी बारै निकळताई सेठाणी अरडा अरडां रोवण ढूकी।—फुलवाड़ी

उ०—२ ताहरा सहर रै दरवाजे चच आढै नूं सीढी मैं लै अर काधीया नीसरीया।—लाखा फूलाणी री बात

३ लाक्षणिक अर्थ मे क्रमश. विकसित करने वाली अवस्थाएे, उन्नति के रास्ते।

रू. भे.—सेढी।

सीणौं—स. पु.—१ कपडे सीने का कार्य।

उ०—चाकी चूला पोत, छाणनौ, पोणौ। तीज तिंवार मनाय, मांजणौ, सीणौ, धोणौ।—सैंज सूझ

२ देखो 'सीणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सीणी)

सीतंग, सीतंग—देखो 'सितग' (रू. भे.)

सीतंगियौ, सीतंगी—देखो 'सितगियौ' (रू. भे.)

सीतंसु, सीतंसू—देखो 'सितासु' (अ. मा.)

सीत—स. पु.—१ पागलपन, सनक।

उ०—१ या रै मूडा सूं बाप रै चेता री वात सुणनै राजी व्है जातौ अर वांरै सीत री वात सुणनै अणूंतो विलखो व्है जातौ।
—फुलवाडी

उ०—२ मेट ताप म्हाराज, भाव मेटौ भरणाटै। मेटौ करजुर जोर, सीत मेटौ सरणाटै।—अग्यात

२ सन्निपात।

उ०—१ सेठ तौ सीत मैं बकै ज्यूं अरळ-विरळ बकण लागा।
—फुलवाडी

उ०—२ कंवण लागी—म्हारी काली बाता रौ कोई मयारो थोडौ ई है। म्हैं तौ सीत मैं वेलै ज्यूं अस्टपौर वेलूं।—फुलवाड़ी

३ जाडा, सर्दी। (डिं. को.)

उ०—१ अरक पेख फिर उदो, मिटै तम तारामडळ। गयो सीत भैभीत, जाणि पेखै जाळानळ।—गु रू. ब.

उ०—२ धोडै धावै धन करै, सहै धाम सिर सीत। जनहरीया नर छाडियौ, खाटि खटाउ मीत।—अनुभववाणी

४ शरद ऋतु, शीतकाल।

५ लताओ का कुज। (अ. मा.)

वि.—१ ठडा, शीतल। ❋ (डिं. को.)

३ मुफ्त, नि:शुल्क।

उ०—यौ सिर सौहगौ सीत कौ, पेम अमोलिक थाय। हरीया पीजै पेम कुं, जौ सिर साटै पाय।—अनुभववाणी

४ देखो 'सीता' (रू. भे.)

उ०—जुडै तै वार किता इंद्रजीत, सहार दइता वाळी सीत।
—हू. र.

सीतअंसु—देखो 'सीतासु' (रू. भे.) (नां. मा.)

सीतकटिबंध—सं. पु. [सं. शीतकटिबध] पृथ्वी के उत्तर व दक्षिण के कल्पित रेखाओ द्वारा विभाजित वे भूखड जो २३½ डिग्री के बाद माने जाते है। (भूगोल)

सीतकर—सं. पु. [स. शीतकर] जिसकी किरणे शीतल हो, चंद्रमा।

वि.—१ ठडा करने वाला।

२ ठडदायक, शीतल।

सीतकसाय—सं पु. यौ. [स. शीतकषाय] किसी काष्ठौषध आदि का वह कषाय या रस जो उससे छः गुने ठडे पानी में रात भर भिगोने पर तैयार होता है।

सीतकाळ—स पु. [स. शीतकाल] १ सर्दी का मौसम, हेमत ऋतु।

उ०—वहतै सीतकाळ वोळायौ, औ वैसाख अजेगढ आयौ।
—रा. रू.

सीतकिरण—सं. पु. [सं. शीतकिरण] जिसकी किरणे शीतल हो, चद्रमा।

सीतकोट—देखो 'सीकोट' (रू. भे.)

सीतजुर, सीतजुवर, सीतज्वर—सं. पु. [स. शीतज्वर] जूडी लग कर आने वाला बुखार, ठडा ज्वर, मलेरिया। (अमरत)

सीतता—सं. स्त्री [सं. शीत+रा. प्र. ता] शीतलता, ठडक।

उ०—सगंधता तौ भार ही मांझ हुई। स्रय हुओ छै। एही सीतता हुई। अर घणौ भार कार्य लीयौ छै।—वेलि टी.

सीतनाथ—देखो 'सीतानाथ' (रू. भे.)

उ०—निबाह सीतनाथ वाह संत चा नेहड़ा।—र. ज. प्र.

सीतपत, सीतपति, सीतपती—देखो 'सीतापति' (रू. भे.)

उ०—सीतपत अनंत छै पण भेद न पाया।—रामरासौ

२ देखो 'सीतपित्त' (रू. भे.)

सीतपित, सीतपित्त—सं. पु [स. शीतपित्त] एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें खुजली, पीड़ायुक्त वमन, ज्वर एवं दाह सहित त्वचा मे चकते से पड जाते हैं और वायु की अधिकता होती है।

रू. भे.—सीतपत, सीतपति, सीतपती ।

सीतप्रसाद–सं. पु.—साधु महात्माओं का उच्छिष्ट (जूठा) प्रसाद ।

उ०—काम करै नही काज करै कछु, सीरौ चरै सदाई। सीतप्रसाद नाम धर सौंधा, खूबहि ऐंठ खवाई ।—ऊ. का.

रू. भे.—सीतळप्रसाद, सीळप्रसाद ।

सीतभांण, सीतभांन, सीतभांनु–स. पु. [सं. शीतभानु] चद्रमा का एक नाम ।

सीतरित, सीतरितु–स. स्त्री. [स. शीतऋतु] हेमन्त ऋतु ।

उ०—ऊठी सरद सीतरित आई, सकळ दळै वणि सोभ सभाई ।
—रा रू.

सीतरूंख, सीतरूख–स. पु.—चंदन । (अ. मा; ना. मा; ह. ना. मा.)

सीतळ, सीतल–सं पु. [स. शीतल] १ चन्दन ।

२ मोती ।

३ चन्द्रमा ।

४ कपूर ।

५ पद्मकाठ ।

६ पीत चदन ।

७ बर्फ ।

८ एक प्रकार का व्रत । (जैन)

वि.—१ शीतलता प्रदान करने वाला, ठडा । (डि. को.)

उ०—१ थळ जेथी ऊंचा घणा, नीर न लब्भै कोय । सीतळ निरमळ ईख सम, जहां प्रगट जळ होय ।—गज-उद्धार

उ०—२ अग जातं भायो मनं, आयो पोस अवन्न । पसरता उत्तर पवन, धर सीतळ रवि धन्न ।—रा. रू.

उ०—३ साई गहरा रूंखडा, सदा'ज सीतळ छाह । हरीया पंछी बापडा, ता विच केळ कराह ।—अनुभववाणी

२ जिसमे जोश न हो, शांत ।

उ०—मोडै मुख मोडै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणनै सीतल सतवाळी ।—ऊ. का

३ प्रसन्न, खुश, आनंदमय ।

उ०—है जाह जोति सदा तन सीतळ, ताप न तिन कु लागै । तिल विन तेल दीया विन वाती, एक अखडत जागै ।—अनुभववाणी

४ सतुष्ट ।

उ०—हरीया जब सीतल भया, सब तै एक सभाय । राग दोस अतर नही, सुख सतोस समाय ।—अनुभववाणी

५ देखो 'सीतलनाथ' ।

उ०—सीतल दसम इक्यासी गणधर मुनि लख एक । साहुणी पिण इक लख हीज, अधिकी छए विवेक ।—ध. व. ग्र.

सीतळचीणी–स. स्त्री.[स. शीतल+हि. चीनी]—कबाब चीनी ।

सीतळता, सीतळताई–स. स्त्री. [सं. शीतलता] १ ठंडक, शैत्य, तरी, नमी ।

उ०—१ लूआ थां लारी लियो, छाणी सा घर आय । सीतळता लीधी सरण, साठीका मैं जाय ।—लू

उ०—२ फूल जु संकुच्या था । अर बास नै ग्रही रहीया था । त्याह तौ बास छोडी । विकस्या । अर ग्रहणा हुता तेहै सीतळता ग्रही ठढा हुआ ।—वेलि टी.

२ शांति, संतोष ।

उ०—१ गहौ एक मधि अगुली, सुख सीतळता थाय । जनहरीया दुह अंगुली, गहीया आग लगाय ।—अनुभववाणी

उ०—२ अह आगि जा घट बसै, पेम जिगासा नाहि । हरीया वासा पेम का, मन सीतळता माहि ।—अनुभववाणी

३ जडता ।

सीतलनाथ–स. पु [स. शीतलनाथ] जैनियो के वर्तमानकालीन दसवें तीर्थंकर का नाम । (स. कु)

सीतळपुहण–स. पु. [सं. शीतला+प्रवहणम्] १ रासभ गधा ।
(ह नां. मा.)

रू. भे.—सीतळप्रूहण ।

सीतळप्रसाद—देखो 'सीतप्रसाद' (रू. भे.)

उ०—बकतौ मैं बाद बाद, बूझत करतौ विवाद । सीतळप्रसाद सरब जात कौ जिमाता ।—ऊ. का.

सीतळप्रूहण, सीतळप्रूहण—देखो 'सीतळपुहण' (रू. भे.)

सीतळबाह, सीतळबाहण—देखो 'सीतळावाहण' (रू. भे)

सीतळमुद्रा–स. स्त्री [सं. शीत+मुद्रा] शरीर के किसी अग पर केसर की लगाई जाने वाली शख, चक्र, गदा, पद्म की छाप, मुद्रा ।
(मा. म.)

सीतळरूख–स पु. यौ. [सं. शीतल+वृक्ष] चंदन वृक्ष । (नां. मा.)

सीतळा–स. स्त्री. [सं. शीतला] विस्फोटक रोग विशेष, चेचक ।

उ०—१ पछै बुधसिंघ नै कहै छै, सीतळा नीसरी थी, तिण मैं विस हुवौ ।—नैणसी

उ०—२ तनि दरसाणी सीतळा, जुगरांणी जयमाय । सरम ग्रही देवासुरा, सुख कज धरम सहाय ।—रा. रू.

क्रि. प्र.— ढळणी, दरसणी, निकळणी ।

२ उक्त रोग की अधिष्ठात्री देवी ।

उ०—अस्वालब गवालंब आल्यो, झटकै गधौ सीतळा झाल्यौ ।
—ऊ. का.

३ नीली दूब ।

सीतळावाह, सीतळावाहण–सं. पु. [सं. शीतला+वाहनं] शीतला देवी का वाहन, गधा । (डिं. को.)

रू. भे —सीतळबाह, सीतळबाहण ।

सीतळासातम—देखो 'सीळसातम' (रू. भे.)

सीतलास्टमी–सं. स्त्री. [स. शीतलाष्टमी] चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी जिस दिन शीतला माता की पूजा की जाती है ।

रू. भे.—सीळआठम ।

सीतवीरज-सं. पु. [सं. शीतवीर्य्य] १ पाषाणभेद ।
२ पित्तपापड़ा ।
३ नीली दूब ।
४ वह जो खाने मे ठण्डा हो ।
सीतसिव-स. पु. यौ. [स. शीतशिव] सेंधा नमक । (डिं. को.)
सीतहर-सं. पु. [सं. शीतधर] १ चन्द्रमा, चाद । (अ. मा.)
[सं. शीतहर] २ सूर्य, सूरज । (अ. मा.)
[स. शीताहरण] ३ रावण ।
सीतहरण-सं. पु.—गरुड । (ना. डिं. को.)
सीतांसु—देखो 'सितांसु' (रू. भे.)
सीता-सं. स्त्री. [सं.] १ विदेहराज जनक (सीरध्वज) की पुत्री तथा श्रीराम दाशरथी की धर्मपत्नी । (अ. मा.)
पर्याय—जगदंबा, जानकी, भूजा, महमाया, महिजा, मैथली, वैदेही, सतवती, सती, श्री, हरिवांम ।
२ जमीन जोतते समय हल की फाल से बनने वाली रेखा ।
३ जोती हुई जमीन ।
४ एक देवी जो इन्द्र की पत्नी मानी जाती है ।
५ लक्ष्मी का एक नामान्तर ।
६ उमा का एक नाम ।
७ आकाश गगा की चार धाराओ में से एक ।
८ मदिरा, शराब ।
रू. भे.—सिय, सिया, सी, सीत, सीय ।
सीताकुंड-स. पु. [सं.] सीतादेवी से सम्बन्धित वे कुंड जो पवित्र माने जाते हैं ।
सीतानम, सीतानमी-सं. स्त्री.—वैशाख शुक्ला नवमी ।
सीतानाथ-सं. पु. [सं.] १ श्रीरामचन्द्र ।
२ श्रीविष्णु । (डिं. को.)
रू. भे.—सीतनाथ ।
सीतापत, सीतापति, सीतापती-सं. पु. [सं. सीतापति] १ श्रीरामचद्र । (ना. मा)
उ०—सीतापत सुमर सुज अहनिस ।—र. ज. प्र.
२ परमेश्वर, ईश्वर । (नां. मा; ह. ना. मा.)
रू. भे.—सीतपत, सीतपती ।
सीताफळ-स. पु. [स. सीताफल] १ कुम्हडे का वृक्ष ।
२ उक्त वृक्ष का फल ।
३ सुरवृक्ष । (अ. मा.)
सीताबर—देखो 'सीतावर' (रू. भे.)
सीतारमण-सं. पु. [स. सीता+रमण] श्री रामचन्द्र ।
सीताराम-स. पु. यौ. [सं. सीता+राम] सीता एवं राम का युग्म। (डिं. को.)
सीतारामी-सं. पु.—स्त्रियो के कठ का एक प्रकार का स्वर्णहार विशेष ।
सीतावट-स. पु.—चित्रकूट और प्रयाग के बीच का ऐक स्थान जहाँ बनवास काल मे श्रीराम ने सीता के साथ निवास किया था ।
सीतावर-स. पु. [सं.] श्रीरामचन्द्र ।
उ०—चित करणी श्रखा दिसी न चाहै, आप विरद चा पखा उमाहै । पतित खीण कुळ हीण अपारै, तारै रे सीतावर तारै । —र. ज. प्र.
रू. भे.—सियावर, सीताबर ।
सीतासित—देखो 'सितासित' (रू. भे.) (ह. नां. मा)
सीतासुत-सं. पु. [सं.] लव और कुश । (अनेका.)
सीतास्टमी-सं. स्त्री. [सं. सीताष्टमी] फाल्गुन मास की अष्टमी ।
सीतास्वांमी-स. पु [स. सीतास्वामी] श्री रामचन्द्र ।
रू. भे.—सियास्वामी ।
सीतोदक-स. पु. [सं. शीतोदक] एक नरक का नाम ।
सीताहरण-सं पु [स.] रावण । (नां मा.)
सीथट्ट-स. पु. [स. शीतटम्] जल, पानी । (ना. डिं. को.)
सीदड़ौ—देखो 'सीधडौ' (रू. भे.)
सीदवंत-वि.—सिद्धियुक्त ।
सीदी-स. पु. [अ. शीदी] हबश की रहने वाली हब्शी जाति या इस जाति का व्यक्ति ।
सीदोरौ—देखो 'सीधोरौ' (रू. भे.)
सीदौ—देखो 'सीधौ' (रू भे.)
उ०—मन मे सोच्यो कै अेक सीदौ लेवण सारू पांच सौ कोस रा कुण गोता खावेला ।—फुलवाडी
२ देखो 'सिद्धौ' (रू. भे)
सीध-स. स्त्री.—१ किसी निश्चित लक्ष्य की दिशा ।
उ०—राजकंवर तौ आगै की बात सुणी ई कोनी । उणी बाग री सीध मैं घोडौ बडगडायौ ।—फुलवाडी
२ ठीक सामने की दिशा, जिसमे कोई घुमाव-फिराव न हो ।
उ०—सीध बाध सामणौ चालै, कदै तकै ध्रुव तारियौ । कूवै बीच मुह दै बोलै, भलौ सुवावै वारियौ ।—दसदेव
३ समान्तर दिशा या स्थान ।
४ पक्तिबद्ध, शृंखलाबद्ध ।
ज्यूं—अे तीनूं घर एक सीध मैं है ।
५ प्रस्थान, रवानगी ।
उ०—घर की धणी भोळावण दीध, सेठ तिहा थी कीधी सीध । प्रोहित आवै सभाल, न सकै कर बांकौ बाल ।—ध. व. ग्र.
६ देखो 'सिद्ध' (रू. भे.)
उ०—ओघा नै वलि मुखपति जीवा, मेरू जितरा लीध । किरिया समकित बाहरी जीवा, एकौ काज न सीध ।—जयवाणी

सीधका-स स्त्री —पड़िहार वंश की एक शाखा।

सीधाई-स स्त्री —१ सीधा, सरल या सहज होने की अवस्था या भाव।

२ समानतर या सपाट होने की दशा।

रू भे —सिदाई।

सीधापण, सीधापणौ-स पु —१ सीधा होने का भाव, सरलता।

२ भोलापन।

३ सादगी।

४ छल, कपट आदि से रहित।

सीधी-स स्त्री —१ ऊंट की गति या एक चाल विशेष।

२ देखो 'सीधौ' (स्त्री रू भे)

उ०—**सीधी** मैंगी मी मैंगी मृग माल्हे, वैसक पुरवसर्गां हसगां नजि हाले।—ऊ का

सीधु, सीध्रु-स पु [स सीधु] गुड़ या ईख के रस से बनी मदिरा शराब।

उ०—निका सुधा रूप **सीधु** रा छाकिया नदनवन रैं निर म सु-धरमा सभा मै बैठि सुरा रैं साथ विलास कीधा।—व भा

सीधोडौ, सीधोरौ-स पु —श्रीमाली ब्राह्मणों मे व्याह से एक दिन पूर्व होने वाली एक रस्म जिसमें वधु पक्ष की कुछ औरते वर के घर जाकर उसके मुंह के दही लगाती है। उनके जाने के पश्चात् कुछ व्यक्ति रसोई (खाद्य सामग्री) का सामान लेकर वर के यहाँ आते है।

रू भे —सिधोरौ, सीदोरौ।

सीधौ-स पु —१ ब्राह्मणों को भोजन के निमित्त दी जाने वाली कच्ची खाद्य-सामग्री जिसमें प्राय घी, आटा, मिर्च, नमक दाल आदि अनिवार्य होते है।

उ०—१ गाढा बामण मागै **सीधौ** नै बामरणी मागं ठोर। बाईसा री बीरो म्हारी नथडी रौ चोर।—लो गी.

उ०—२ ठाकर कैयौ—चोखी बात गुलाब री मा। घरा चालौ, **सीधौ** भेज रह्यौ हू।—दसदोख

२ भोजन-सामग्री, खाद्य पदार्थ।

उ०—१ गढ मै वसरण री तयारी कीवी। गाडा ३०१ **सीधा** रा भर चलाया सू जाय गढ पोहता, सु बारहठ रतनू चद्रव माला रौ विखायत थकां महैवै रह्यौ थौ।—नैणसी

उ०—२ नठा पछै मडळीक नागहीरै घरै आयौ। तरै नागही मारा सोरठ रा लसकर नू नाती सी कोठी माहि सू **सीधौ** दियौ।

—नैणसी

उ०—३ ताहरा पीठवै ईया नू डेरौ दिरायौ। हाट सू **सीधौ** मुगतौ दिराय दीयौ। हिवै दुनै वखतै मुजरौ करै।

—पीठवै चारण री बात

३ देवताओं का चढाया जाने वाला प्रसाद।

उ०—१ बोल्या—गिलपिली, हाजरिया थै दोनू जणा एकर अठीनै आवौ। भडारै सू पूजणी रौ पूरौ **सीधौ** लै लेवौ अर गुलाब री मां रै घरै चढा आवौ।—दसदोख

उ०—२ ठाकरा रैं घर सू देवा रौ **सीधौ** आयौ देख'र गुलाब री मा रौ माथौ ठिणक उठ्यौ।—दसदोख

४ रसोई, भोजन आदि का कार्य।

ज्यू—सीधौ करणौ रह्यौ है।

वि (स्त्री सीधी) १ जिसमे फेर या घुमाव न हो, अवक्र, समतल एव समानान्तर।

ज्यू—सीधो मारग, सीधी सड़क, सीधी लकडी।

२ जो किसी ओर ठीक प्रवृत हो, ठीक लक्ष्य, लक्ष्य के अनुसार ठीक।

ज्यू—सेतजी रौ निसाणौ सीधौ लागौ।

३ जो कुटिल या कपटी न हो, सरल, सहज।

उ०—सुज बीजै नर पका सनह **सीधौ**।—र ज प्र.

४ शांत, सुशील, शिष्ट।

उ०—जग माहीं 'जसवत' रौ, **सीधौ** हुतौ सभाव। दिन उजळ नहीं बदळतौ, रक मिळो चाहै राव।—ऊ. का.

५ जिसका करना कठिन न हो, आसान, सुगम।

६ जो जल्दी समझ मे आवे, जो दुर्बोध न हो।

७ जो विरुद्ध न हो, अनुकूल।

८ उल्टे का विपर्याय, मुख्य बनावट को ऊपर या सामने रखते हुए।

ज्यू—सीधौ कमीज, सीधी कमीज।

९ ऊपर की ओर मुँह किये हुए, चित्त।

उ०—**सीधौ** सुवाण परौ'र करणौ री आंख्या मीचावै है।

—दसदोख

१० स्पष्ट, सही, सत्य।

ज्यू—गुचळक्या मत खा, **सीधी** बात बतादे।

११ उद्दण्डता रहित, चुपचाप, शान्त।

ज्यू—**सीधौ** सीधौ जाई परौ नी'तर मार खावेला।

१२ उचित, ठीक।

१३ अपनी ओर।

ज्यू—फाटक सीधौ खीचरण सू खुलेला।

१४ बिना इधर-उधर मुड़े गन्तव्य की ओर।

उ०—परण तौ ई जूंभळ रै उपरान्त देवळी तौ पुगणौ हौ ट्रम। **सीधौ** साइकल वाळा री दुकान माथै गियौ।—फुलवाडी

१५ बेरोक-टोक, बेहिचक।

उ०—१ फौजी बूटामै पासोंजा पैरचा ही **सीधौ** माळ मै आ धमक्यौ।—दसदोख

उ०—२ आडौ खुलता ई कवर तो **सीधा** जुम्मा माथै ढूळसता

इज निगै आया। जुम्मा वानै बाथ भरनै बोली ऊपर पधारौ जित्ती ई खटाव कोनी।—फुलवाडी

१६ शान्ति से, सभ्यता से।

ज्यू—पैली तौ सीधी तरह् समभाय दो।

१७ प्रत्यक्ष मे।

उ०—मायद वौ पूछणौ चा'तो हौ—अठवारी किण मूडै सू जाऊ रौ कांई मायनौ, पण उण म्हनै **सीधौ** पूछ्यौ कोनी।—निरसकू

१८ देखो 'मेधा' (रू भे)

१९ देखो 'मिद्ध' (रू भे)

उ०—१ हियमा करइ वधामणा, मही त **सीधा** काज। ऊँ मुपनन्तर दीखता, नयणै मिळिया आज।—ढो मा

उ०—२ प्रेमिका सू मिळणै रा मीठा मनसूबा बाधै अर मतर **सीधा** होणै री अवधी नै आण्या फाडचा अडीकै है।—दसदोख

२० देखो 'मिद्धौ' (रू भे)

सीनरी—स स्त्री [अ] दृश्य, नजारा।

उ०—रास रगीला रचै, चादनी राता चिलकै। विच-विच डाडा विरख, **सीनरी** भूमख भिलकै।—दमदोख

सीनांन—देखो 'स्नान' (रू भे)

उ०—घट मै गगा गोमती, ता विच कीया **सीनांन**। जनहरीया मन रिगमीया, ऊचा घर असमान।—अनुभववाणी

सीनाजोरी—स स्त्री [फा मीन+जोरी] १ जबरदस्ती, उद्दडता।

२ चोरी करके ऊपर से की जाने वाली हुज्जत, बहस।

सीनाबद—स पु—१ अगले पैर से लगडाने वाला घोडा। (शा हो.)

२ घोडे का एक रोग विशेष।

३ अगिया, चोली।

सीनावड़ी—स. स्त्री—जमीन पर छितरने, फैलने वाला पौधा विशेष।

उ०—हरी **सीनावड़ी** पड़िया हाथ। तोऊ न रह् पूरब कौ माथ।
—वील्हौ

सीनौ—स. पु [फा मीन] १ छाती, वक्षस्थल।

२ कुच, स्तन।

सीप—स. स्त्री [स. शुक्ति, प्रा. सुत्ति] १ एक कठोर आवरण वाला जल जन्तु जो छोटे तालाब, झील और बडे समुद्रो मे पाया जाता है, मुक्तागृह।

उ०—१ वैरागर हीरा हुए, कुळवनिया मपूत। **सीपै** मोती नीपजै, सब ब्रम्मा रा सूत।—बा दा.

उ०—२ कदळी चील **सीप** पिक केरी, नृपति प्रजादि आस बहुतेरी।—रा. रू

२ इस जन्तु का सफेद चमकीला आवरण जो बटन, चाकू, दस्ते आदि बनाने के काम आता है।

३ अगुलियों के ऊपर के पोरो पर सीप की आकृतिमय रेखाओ के चिन्ह विशेष। (सामुद्रिक)

४ सीप का वह सपुट जो चम्मच के रूप में प्रयोग किया जाता है।

५ एक पात्र विशेष जिसमें तर्पण आदि के लिए जल रखा जाता है।

६ श्वेत, सफेद। * (डि को)

रू भे.—सीपी।

अल्पा,—सीपडी।

सीपडी—देखो 'सीप' (अल्पा, रू भे)

उ०—हरीया हमौ जीव है, सुन्य सागर विसराम। सुरति हमारी **सीपड़ी**, निज कण मोती नाम।—अनुभववाणी

सीपज—स पु [स शुक्ति+ज] मुक्ता, मोती।

रू भे—सीपिज।

सीपत, सीपति, सीपती—देखो 'श्रीपति' (रू भे) (ह ना मा.)

सीपनी—स स्त्री [स. शिप्र] १ दरियाई नारियल का सपुटनुमा भिक्षा पात्र जो प्राय सन्यासी रखते है।

२ सीप का वह सपुट जो चम्मच के रूप मे काम आता है।

सीपर—देखो 'सिपर' (रू भे)

सीपसुत, सीपसुतण, सीपसुतन—स पु [स शुक्ति+सुतन्] मोती, मुक्ता। (अ मा)

सीपारौ—स. पु [फा सिपार] कुरान का अध्याय।

उ०—उजबका मुसलमान आकीनदार त्रीस **सीपारा** रा पढणहार, पाच बखत रा निवाज रा करणहार।—रा मा स

सीपिज—देखो 'सीपज' (रू भे)

सीपी—देखो 'सीप' (रू भे)

सीप्रा—देखो 'सिप्रा' (रू भे)

उ०—बहै नदी **सीप्रा** विस्तार कूप सरोवर वावि अपार।
—प च चौ.

सीबध, सीबंधव, सीबंधु—देखो 'श्रीबधु' (रू भे.) (ह ना मा)

सीबी—देखो 'सबी' (रू. भे.)

उ०—फूटरी लुगाई री **सीबी** हरवगत आख्या आगै फिरै है।
—दसदोख

सीब्रख, सीब्रक्ष, सीब्रछ—देखो 'श्रीवृक्ष' (रू. भे)

सीमंग—स पु—चन्द्रमा। (ना डि को.)

सीमंट—देखो 'सीमेंट' (रू भे.)

सीमंत—स. पु [स.] १ सिर के बालो की मांग।

उ०—सोभा सिर **सीमंत** यौ यौ टोप लगाय।—वं भा

२ सीमा रेखा या चिन्ह।

३ देखो 'सीमोतन्नयन'।

सीमंतक—स पु [स] १ स्त्रियो के सिर मे माग निकालने की क्रिया।

२ वह सिंदूर जो स्त्रियो की माग मे डालते है।

३ एक नरक का नाम। (जैन)

४ जैनियो के सात नरको मे मे एक नरक का अधिपति।

५ नरक विशेष का रहने वाला।

सीमंतनी–स स्त्री [स सीमंतिनी] महिला, स्त्री। (ह ना मा)

सीमंतोन्नयन–स पु [स.] हिंदुओं के दस सस्कारों में से तृतीय संस्कार जो गर्भाधान के चौथे, छठे, आठवें मास में होता है।

सीमंधर–स पु—प्रथम विरहमान जिनेश्वर का नाम। (जैन)

उ०—१ म्हारी सका तो **सीमधर** स्वाम मेटसी। पद्रह दिन आमरै मथारौ आयाँ आऊखौ पूरो लियो।—भि द्र

उ०—२ श्री **सीमधर** सुदर साहिवा मदरगिरि समधीर मलूणा।
—वि कु

सीम–स स्त्री [स.] १ जगल, वन।

२ वेला, समय। (ह. ना मा)

३ देखो 'सीमा' (रू भे) (डि. को.)

उ०—१ बैठौ सूर तखत गजवधी, **सीम** जितै सामद्रा सधी।
—रा रू.

उ०—२ वारहट केसरी भीम का भीम, सूरा तै सिरकस कविराजा की **सीम**।—रा रू.

रू भे—सीव।

क्रि वि—तक, पर्यन्त।

उ०—१ छम्मास **सीम** आबिल किया रे, राख्यु सील रतन्न रे। पाछी आणी वलि पाडवै रे, परिण स्रीकृस्ण जतन्न रे।—स. कु.

उ०—२ आदीस्वर आहार न पाम्यउ, वरस **सीम** कहिवाय जी। खाता पीता दान देवता, मत को करउ अतराय जी।—स कु

सीमट—देखो 'सीमिट' (रू भे)

सीमरण–स स्त्री—एक प्रकार का घास।

सीमति, सीमती—देखो 'स्रीमति' (रू भे)

उ०—नेहइ नव भव वीधिय दीधिय उग्रसेन राय। कुअरि भलीय राजीमति **सीमति** निहुयरण माहि।—जयसेखर सूरि

सीमांत–स पु.—जहाँ सीमा का अन्त होता हो, सरहद।

सीमा–स स्त्री [स] १ किसी प्रदेश या स्थान के विस्तार का अन्तिम छोर किनारा सरहद। (डि को)

उ०—१ इत्यादिक अपसकुन तजी, गयौ सनमुख ताम। **सीमा** सेढै उतरयौ, वीरसेन उल्लास।—वि कु

उ०—२ सलै हुई सुख ऊपनौ, भागी दळा दुवाळि। **सीमां** नीमां गढ मुलक, सगळै लिया सभाळि।—गु रू व

उ०—३ अठी भाणपुर रा खींची भरत सेण रै पोतै जयमल्ल तौ आपरी तरफ री **सीमा** रा खेडी रत्नगढ प्रमुख ववबदारा गढ गजि भैसरोड सूधी आई अमल जमायौ।—वं भा

२ सरहद का पत्थर, सीमा-चिह्न।

३ मर्यादा।

उ०—अविनासी अविकार असीमा, सुभ गुण दियण अनुग्रह **सीमा**।
—रा. रू

४ तट, किनारा।

५ जोड।

६ अन्तरिक्ष।

७ खेत, क्षेत्र।

८ गर्दन का पिछला भाग।

९ विभाजक रेखा।

१० अण्डकोश।

रू भे.—सीव, सीम।

अल्पा,—सीमाडौ।

सीमाड़–स पु—सीमावर्ती राज्य, पड़ौसी राज्य।

उ०—१ अर अठी मन्नुमडळ रा **सीमाडा** ववावदाग नरेस वीरदेव १८४ रा देस दावरण रौ निवाह कीधौ।—व. भा

उ०—२ सालौ **सीमाडां** सायरण आलौ भाण रौ करोठी मोहै, दकाळौ काळ रौ भैरवांग रौ डचाक। बिलाला पांग रौ दूत नाथ री हाक वाळौ, भालौ श्रीराण रौ भूतनाथ रौ भचाक।
—सूरजमल मीसण

उ०—३ जाजनेरा सावरा नू लूटिया जेहान जाणै, साग जोम हीण होय छूटिया **सीमाड़**।—चावडदांन महडू

वि—सीमा पर रहने वाला, पड़ोसी।

उ०—साड **सीमाड़** जग जेठ ऊचासिरौ, आवळै थाट 'दूदा' उजाळौ।—अग्यात

क्रि वि—सीमा पर।

उ०—अर बडा बडा देस पति **सीमाड़** जिण रा प्रस्थान सू आतक धरै।—व भा

२ देखो 'सीमा' (रू भे)

रू. भे—सिमाड।

सीमाड़ी–वि.—सीमा का, सीमा सम्बन्धी।

उ०—गजै दुरग अढगाण सेलासा जका गिरद, तजै डेर **सीमाड़ी** धरा ताजा। महाकाळी त्रजड खळा सोणत मजै, रजै नह धूकळा बिना राजा।—हुकमीचद खिडियौ

सीमाड़ौ—देखो 'सीमा' (अल्पा, रू भे)

सीमाणौ, सीमाबौ—देखो 'सीवाणौ, सींवाबौ' (रू भे)

उ०—दरजी कै नै वेग बुलाय, हरजी सू हेत लग्यौ। राणी मा सती री पोसाक **सीमाय** हरजी सू हेत लग्यौ।—लो. गी

सीमाणहार, हारौ (हारी), सीमाणियौ—वि०।

सीमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सीमाईजणौ, सीमाईजबौ—कर्म वा०।

सीमायोड़ौ—देखो 'सीवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सीमायोडी)

सीमार–स पु.—वढई का एक औजार।

सीमावरोध–स पु.—१ सीमा निरधारण, हदबदी।

२ सीमा पर होने वाला अवरोध ।
सीमिका—स स्त्री —चारणकुलोत्पन्न एक देवी का नाम ।
सीमीतमुख—स पु [स सीमितमुख] नासमझ, मूर्ख । (ह ना मा)
सीमेंट—सं स्त्री [अ] मकान आदि की चुनाई में काम आने वाला एक प्रकार का महीन चूर्ण जिसमे बालू बजरी मिलाने पर गारा बनता है जो पत्थरो की जुडाई एव प्लास्तर आदि की मजबूती के लिए प्रयोग मे लाया जाता है ।
रू भे —सिमट, सीमट, सीमट ।
सीमेण—स स्त्री —१ सीमा, सरहद ।
२ मर्यादा ।
३ वन, जगल ।
सीय—स पु [स शीत] १ शीत, सर्दी, जाडा ।
उ०—१ उत्तर आज स बज्जियउ, **सीय** पडेसी पूर । दहिमी गात निरद्धणा, धण चगी घर दूर ।—ढो. मा.
उ०—२ माह मास **सीय** पडै अति सार, रामजनी घन अखय कुमारि ।—बी. दे.
२ देखो 'सीता' (रू. भे.)
उ०—इसवर **सीय** चढै रथ ऊपर, तहक सारथी खडै तुरग ।
—र. रू.
सीयउ—देखो 'सीऔ' (रू. भे.)
उ०—एकतर ताप **सीयउ** दाह उखद बिण जायइ थइ माह ।
—स. कु
सीयमाळ—स. पु.—शृगाल, स्याल ।
उ०—आडी आवज्यौ इधणहार, बूड सल्हालौ वा **सीयमाळ** । चाल्यौ राजा जाई भोवाळ ।—बी. दे.
सीयल—स. पु —१ शीतलनाथ स्वामी का एक नाम ।
२ देखो 'सील' (रू. भे.)
३ देखो 'सीतल' (रू भे.)
४ देखो 'सीतळा' (रू भे.)
उ०—एछै गाव उदैसिध **सीयल** सू सूवौ ।—नैणसी
सीयळौ—वि. (स्त्री. सीयळी) १ शीतल, ठडा ।
उ०—नही ताता नहि **सीयळा** न ऊडा पगारा ।—केसवदास गाडण
२ देखो 'सीयाळौ' (रू. भे.)
सीया—देखो 'सीता' (रू. भे.)
उ०—१ अबका पूजण नै आयी **सीया** बाग मै, पूजण नै पूजापौ लाई थाळ लाइ हाथ मै, सग मै सहेल्या लाई निरखै रघुनाथ नै ।
—लो. गी
उ०—२ **सीया** ऊभी भाबोसा री पोळ रांम रथ हाक दियौ । सीया मागै सांई माग पीछै रथ हक जासी ।—लो. गी.
सीयायक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)
सीयार—१ देखो 'सार' (३८) (रू भे.)
२ देखो 'सियार' (रू. भे)
३ देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)
सीयाळ, सीयाल—देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)
उ०—बळ थी बुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल । बानर बाघ विणासियौ, एकलडइ **सीयाल** ।—प. च. चौ.
सीयाळइ, सीयालवी—क्रि वि —शीतकाल मे, सर्दी मे ।
उ०—आज **सीयाळइ** सी पडै, रात्यूँ कूकै स्याळ । ज्यारा साजन घर नही, व्हारा बुरा हाल ।—अग्यात
वि.—शीतल, ठडी ।
सीयाल, सीयालक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे)
सीयाळु, सीयाळू—स. पु.—१ खरीफ की फसल ।
२ शीतकाल मे उत्तर दिशा से बहने वाली ठडी हवा ।
वि.—१ शीतकाल सम्बन्धी, हेमत ऋतु का ।
२ शीतकाल मे पकने वाली ।
रू. भे.—सियाळू, स्याळू ।
सीयाळौ—स. पु. [स. शीतकाल, प्रा. सीअआल, रा सीयाल+रा. प्र. औ.] शीतकाल, शीत ऋतु, हेमत ऋतु ।
उ०—१ सौ **सीयाळा** मै राजकुमारी रौ जनम हुवौ है जिण सूं जचा रै तापण नै तपणी लाया है । - बी. स. टी.
उ० - २ **सीयाळै** पाधारिया, गढ महाराज 'अजीत' । अवतारी मिळियो 'अभौ', सूरज तेज सप्रीत ।— रा. रू.
उ०—३ उनाळौ आछौ नही, बरसाळौ महमत । **सीयाळै** मत मचरौ, कामण बरजै कत ।—अग्यात
रू. भे —स्याळौ, सियाळौ, सीयळौ ।
सीयौ—देखो 'सीऔ' (रू. भे.)
सीयौदाउ—स. पु.—प्रथम जाडा लगकर बाद मे उष्णता उत्पन्न करने वाला ज्वर ।
सीर—स. पु.—१ साझा, हिस्सा, साझेदारी, हिस्सेदारी ।
उ०—१ उणनै पक्कौ विस्वास हौ कै घरवाळा किसै मूडै नटैला । नटण री तौ गुजाइस ई कोनी । कमाई मै बट लेवणिया, करमा मै ई **सीर** राखैला ।—फुलवाडी
उ०—२ म्हारै साथै चौपार मै इणरौ थोडो घणौ **सीर** राख देवूंला ।—फुलवाडी
क्रि. प्र.—काढणौ, घालणौ ।
मुहा.—सीर रौ धन स्याळ खावै=साझेदारी अच्छी नही होती।
२ हिस्सा, भाग ।
३ लाभ ।
उ०—भाराणी दुख भंजणौ, गुण रजणौ गहीर । जास खजानै जगत रौ, साहिब कीधौ **सीर** । — बा. दा.
स. स्त्री. [स. शिरा] ४ कुओ मे आने वाली वह झिरी या जलधारा जो भूमि के मध्य तल मे अविरल गति से निरतर बहती है, स्रोत ।

उ०—वित जिम वाटै तिम वधै, श्रा है रीत अनाद । कुवा मूं जळ काढियै, सीरां वधै सवाद ।—बा दा.

८ स्रोत, धारा, प्रवाह ।

उ०—धरम धीर री धजा, मरम री सीर पुराणी । माम्वण मोटै मना, जुलम मूं अळगी जाणी ।—नारी सईकड़ौ

मुहा.—सीर खुलणौ=निरन्तर आय का जरिया उत्पन्न होना ।

५ हल, लांगुल ।

६ प्रवाह, धारा ।

उ०—१ वाहै विम की क्यारिया, ढोरै अम्रत नीर । जनहरीया क्या जाणसी, हरि रस हंदी सीर ।—अनुभववाणी

उ०—२ तट त्रिवेणी नीर की, चलै सीर चहु ओर । जनहरीया सौ चखीया, चख्य न रखी कोर ।—अनुभववाणी

उ०—३ सीरां छूटी चहु दिसा, अंत न कोई पार । जनहरीया पी मगनीया, तन कि सुधि न सार ।—अनुभववाणी

७ नस, शिरा ।

८ साथ, सग । (अमरत)

उ०—१ डिग मती रै तरवरा, मन मैं रैह सधीर । पाव पलक रौ बैठणौ, घड़ी पलक रौ सीर ।—ढो मा

उ०—२ जिण दक्खिण धर रौ जरै, अरि हूनौ 'अवरंग' । सोभी लै अब सीर मैं, जुडण चलायौ जग ।—व भा

९ सगत, सोहबत ।

उ०—नित करस्या समकित निरमलौ, निरमल जिम गगा नीर । तजस्या सगति निगुणा तणी, सुगणा सु करिस्या सीर ।

—ध व ग्र

१० सम्बन्ध, तालुक, मेल-मिलाप ।

उ०—१ अहल्या पद रेण उधरी, कियौ निरभै कीर । विभीखण कूं लक बगसी, साथ रावण सीर ।—भगतमाळ

उ०—२ सदा क्षणभगुर जांण सरीर, सखा सुखसागर कू कर सीर ।—ऊ का

११ सगम, समागम ।

उ०—जिण दीहै पावस झरै, नदी खळक्कै नीर । तिन दिन कीजै 'जमा', साजणिया स सीर ।—जमराज

१२ स्तनो की वह नसे जिसमे से दूध उतरता है ।

सीरख—स पु [स शीत+रक्षक, प्रा सी+रक्ख] १ सूर्य ।

(ना मा) (क. कु बो)

[स शीर्ष] २ सिर, मस्तक । (अ मा, ह. नां मा)

उ०—नमै सीरख चरण नीरज, धरै नहचौ करै धीरज । वाळ मरसी एण वाणा, भरम सह भागै ।—र रू

३ देखो 'सिरक' (रू भे)

उ०—१ पिलग पथरणौ पौढतै, लै लै सीरख सौडि । सोवै सीडी माथरै, दौडि सघै तौ दौडि ।—अनुभववाणी

उ०—२ ताहरा सीरख समेत दागिया । काढै तौ हाड मकळि एक एक जुई हुवै तिण वासतै सीरख समेत दागिया ।—द. वि

सीरखौ—देखो 'सारीखौ' (रू भे)

उ०—सीहै आप सीरखा, जोध जाया काधोधर । श्रासथान असभग 'अज्ज' 'सोनग' दुनै कर ।—गु रू व

सीरक्ख—देखो 'सिरक' (रू भे)

सीरक्खौ—देखो 'सिरक' (रू भे)

उ०—म्हारी सासू नै यू कह्यौ, वह पोळ मैं दीवौ मेलजै, हू भोळी नै यूं सुण्यौ, वह मोड मैं दीवो मेलजै, मोडवळै सीरख्या बळै, सासू बुझावा जाव हाँ ।—लो गी

सीरण—वि [स शीर्ण] १ फटा-पुराना, जीर्ण ।

२ मुरझाया हुआ ।

३ देखो 'सीरी' ।

सीरणकम, सीरणक्रम—स पु [स शीर्णक्रम] यमराज ।

(अ मा, ना मा, ह ना मा)

सीरणी—स स्त्री—१ किसी को प्रभू या गुरु मानकर चढाया जाने वाला प्रसाद, नैवेद्य ।

उ०—१ छिडकी देवै, पूजणी करावै, सीरणी वाटै धजा टगावै ।

—दसदोख

उ०—२ रसोई वणाई चूरमौ चूरचौ अर भूत देवता री जगा लै जा'र चढायौ । पोसाक लीनी अर गाव भर मैं सीरणी दीनी ।

—दसदोख

[स शीतलिनी, प्रा सियरणी] २ मिठाई ।

उ०—१ जीहौ बाध्या तोरण वाटै सीरणी लाला, चदन केसर हाथा दिराय ।—जयवाणी

उ०—२ कदै न ल्याया भवरजी सीरणी जी, हाजी ढोला कदै न करी मनुवार, कदेय न पूछी मनडे री वारता जी श्रौ जी म्हारी लाल नणद रा श्रौ वीर था विन गोरी नै पलक न आवडै जी ।

—लो. गी

उ०—३ थिरसौ एक वेस अव्वल एक रूपयै सौ प्रोहित नू दिराय एक सग सीरणी मारग नू दीवी ।—कुवरसी साखला री वारता

३ मनौती, सकल्प ।

उ०—तद बादसाह सू अरज कराई जै म्हे खीसदासिवजी नू सीरणी कबूली थी कै हजरत रै कदमा लागूं तौ सीरणी करू सौ हुकम हुवै तौ करू ।—जयसिह आमेर रा धणी री वारता

४ नजराना ।

उ०—तारा फौज हजार तीन लेर वनमाळीदास बीकानेर आयौ अरु पुराणौ कोट कनै डेरौ कियौ । वा नवाब माथै हुतौ तिणनूं रुपिया श्रेक हजार सीरणी रा वा सुभमानी रा दिया । दरबार री तरफ सू तथा सिस्टाचार अवल तरै हुवौ ।—द. दा.

सीरदार—वि.—१ साझेदार, हिस्सेदार ।

२ देखो 'सरदार' (रू. भे.)

सीरधर–स. पु. [स.] हल धारण करने वाला, बलराम।

सीरध्वज–स. पु. [स.] १ बलराम का एक नाम।

२ सीता के पिता विदेहराज जनक का एक नाम।

सीरपांण, सीरपाणी–स पु. [स सीरपाणि] बलराम का एक नाम।
(ना. मा, ह. ना. मा)

सीरपौ, सीरपौ–स पु.—१ भागीदारी, हिस्सेदारी।

२ लाभ।

३ भाग्य का लेख।

सीरबंधी–सं. स्त्री —हिस्सेदारी, साझेदारी।

सीरमा–स. स्त्री —वह भूमि जिसमे बिना सिचाई के रबी की फसल होती हो।

सीरवाळ, सीरवाळी–स. पु (स्त्री सीरवाळग, सीरवाळणी) हिस्सेदार, भागीदार।

सीरवीरंज–स स्त्री. [अ शीबिरञ्ज] एक प्रकार की खीर विशेष जिसमे १० सेर दूध, १ सेर चावल, १ सेर मिस्री, १ दाम नमक डाला जाता है इसमे पाँच रकाबिया भर जाती है।

सीरवी–स पु.—१ एक कृषक जाति जो अपना उद्गम राजपूतो से बताते है।

उ०—बीलाडै रा चौधरीया दाखल भेळौ **सीरवी** कुमार वसै, अरट ढीवडा सीरवी करै।—नैणसी

३ देखो 'सीरी' (रू भे)

उ०—१ जु रावळै रिजक रौ **सीरवी** औ हुसी।—नैणसी

उ०—२ साजण संग **सीरवी** सुखरा, जीव हेकलौ जासी।
—भीखजी रतनू

सीरस–स. पु. [स. शीर्ष] १ सिर, मस्तक।

उ०—१ पड़ै कटि **सीरस** वीर पठाण, मद्राचळ चक्र चमू मह–राण।—मे. म.

उ०—**सीरस** विन वाहै सदा, मत्रा दळ समसेर।
—नारायणसिंह सादू

२ एक प्रकार का वृक्ष जो अरावली पहाड़ की तलहटी मे पाया जाता है।

३ काला अजगर।

४ सिर का रोग।

सीरसक–स. पु. [स. शीर्षक] १ किसी विषय का वह परिचयात्मक सक्षिप्त नाम, शब्द या वाक्य जो बहुधा लेखादि के ऊपर लिखा जाता है।

२ सिरा, चोटी। ३ खोपडी।

४ मस्तक, सिर।

५ युद्ध के समय सिर पर धारण किया जाने वाला टोप।
(डिं. को.)

६ पगडी, साफा।

७ फैसला, परिणाम।

८ राहु।

सीरसोदय–स. पु. [स. शीर्षोदय] शिर से उदय होने वाली मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुभ और मीन राशियो का सामूहिक नाम। (ज्योतिष)

सीरांमण, सीरांमणी, सीरांवण, सीरांवणी—देखो 'सिरामण'
(रू. भे.)

उ०—१ **सीरांवण** जीमण दोपैरौ सारौ, पीमण पोवण नै आरौ पछलारौ।—ऊ. का.

उ०—२ साथै फौज छै। तठै जेठ रा दिन हुंता। **सीरावणी** रौ कठोरौ साथै छै।—बूढी ठग राजा री बात

उ०—३ पहिरामणी **सीरांमणी** नई करै चलावौ साथ। वीवाह कीधौ सुजस लीधौ तेडौ कुअरिनउ तात।—रुकमणी मगळ

सीराज–स. पु. [फा. शीराज] १ किताबो की सिलाई के छोर पर लगाया जाने वाला फीता जो पुस्तक की सुन्दरता एव मजबूती के लिए लगाया जाता है।

२ प्रबध, इन्तजाम।

३ क्रम, सिलसिला।

४ ईरान का एक प्राचीन नगर।

सिराफिणी–स. स्त्री —शिर का एक आभूषण विशेष।

सीरावणौ, सीराववौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)

उ०—सीरौ **सीरावै** भ्रम धीरावै निरदावै नीरदा है, लपसी लप–कावै तपसी तावै, आपा सीच उठदा है। - ऊ. का.

सीरावा–स. पु.—एक जाति विशेष जो कूऐ खोदने का कार्य करती थी।

सीरावाविदया–स. स्त्री.—भूगर्भ मे पानी का पता लगाने की विद्या, कला।

सीरावियोड़ौ—देखो 'सरायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सीरावियोडी)

सीरावौ–स. पु. [सं. शिरावाह] १ वह व्यक्ति जो भूगर्भ मे पानी का पता लगा कर उसकी मात्रा एव मीठा या खारा होने की पूर्व जानकारी देता हो।

उ०—पैसठ हाथ रै पछै रेळौ कारण बेरौ खुदणौ दूभर व्हैगौ तौ म्हैं अेक वाजिदा **सीरावा** री सोय मै निकळियौ।—फुलवाड़ी

२ सीरावा जाति का व्यक्ति।

रू. भे.—सियारौ, सिरावौ, सेरावौ।

सीरौ–वि. (स्त्री. सीरण) १ हिस्सेदार, साझेदार, भागीदार।

उ०—१ विरद जात कुळ विना, वात कुळवत विचारी। सुख री **सीरण** कीया, बैठ रहै सोक तयारी।—अरजुणजी बारहठ

उ०—२ **सीरौ** मिटिया रा सूलहा रा सारा, भीडी भूखां रा फूला

रा भारा। - ऊ. का.

२ उत्तरदायित्व ग्रहण करने वाला, उत्तराधिकारी।

३ साथी, संगाती।

उ०—१ हा ए म्हारी मोक कलाळी म्हारो हार नौलखौ राख यै ग्रावेलौ मदमातौ मारू म्हारौ सेजा रो सीरी जीनै थोडी थोडी दीजै ए दारुडी दाखा री।—लो. गी.

उ०—ए तीनों सौ मेल छै। इसु ग्रै म्हारी देही छै। वेळा बुरी रा सीरी छै। जितरै म्हाराज मया छै इतरै थै मरव म्हारा छौ।
—चौबोली

४ हक पाने का अधिकारी।

५ मददगार, सहायक।

उ०—घट घट दादू कह समझावै, जैसा करै सो तैसा पावै। को काहू का सीरी नाही, साहिब देखै सब घट माही।—दादूबाणी

उ०—२ मती ग्रापनौ घर कियौ, मडा ममांना मांहि। हरीया हरि बिन दूसरा, मूंवा सीरी नाहि।—अनुभववाणी

स पु —१ बलराम।

२ देखो 'सिरी' (रू. भे.)

उ०—हडोई रा मास पासै चरुवां मै घातजै छै। सीरी होसनाक सुधारै छै।—रा मा स.

३ देखो 'स्री' (रू भे)

सीरीमाळी—देखो 'स्रीमाळी' (रू भे)

सीरियस—वि. [ग्र] १ खराब, नाजुक।

ज्यूं—उग री तबियत कैडीक है? हाल तौ सीरियस है।

२ गम्भीर।

उ०—छोरचा सू तौ उगा रा हसबैंड भी कदै ई सीरियस बाता कोनी करै। लवरस रौ तौ सीरियस होवरा रौ सुवाल ई ज कोनी। जमानौ किनरौ बदळग्यौ है पवन! छोरचा ग्राजकल डेटिंग भी सीरियस कोनी लेवै।—तिरसकू

सीरूखौ—देखो 'सारीखौ' (रू भे.)

सीरोइयौ—स. पु. - चौहान वश का क्षत्रिय।

सीरोळौ—वि. (स्त्री सीरोळी) १ साझेदारी का, सामूहिक।

२ जिसके बहुत से व्यक्ति हकदार हो।

सीरोही देखो 'सिरोही' (रू. भे.)

उ०—बाकरा नू बरकौ करण रै पगां ग्रळवळिया मोट्यारा नू हुकम कीजै छै। सु ग्रसीला सीरोहियां लेनै ऊठिया छै।
—रा. मा. सं.

सीरौ—स. पु. [फा. शीर] १ मैदे, ग्राटे, बेसन, सूजी, दाल, गाजर, ग्रालू ग्रादि को घी में भूनकर उसमें शक्कर, मेवा ग्रादि पदार्थ मिला कर बनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध व्यञ्जन विशेष, हलुग्रा।

उ०—१ थोडी सी हळदी रौ पुट देय गुळ री झरझरतौ सीरौ खवाडती। तीन दिन ग्रर तीन राता ग्राख मै कम ई नी लियौ।
—फुलवाडी

उ०—२ ग्रागै घणौ सीरौ पुडी देवजी रोटौ तयार हुवौ छै।
—नैणसी

मुहा. - सीरौ खाता दात घसीजै तौ छौ घसीजता=बडे लाभ में किंचित हानि हो तो कोई चिंता की बात नहीं।

२ सीरौ बादी करणौ=दुर्भाग्यपूर्ण दशा होना।

३ बिगडचौ तोई सीरौ राब सू ग्रछौ है=ग्रच्छी वस्तु बिगड़ने पर भी कुछ तो काम की होती है।

४ सीरौ गरमी करणौ=देखो 'सीरो बादी करणौ'।

सीळ—देखो 'सीतळा' (रू. भे.)

उ०—पछै स्रीजी रौ कूच दिली नै हुवौ। सवत १७८२ माह मैं परबतसर स्रीजी नु सीळ तुठी।—रा. व. वि.

सीळ, सील—स. पु. [सं. शील] १ सद् ग्राचारण, सदाचार।

उ०—१ वकडोळ लगै डरिण भांति सु चाळी, मति तै बाखारगण न मूं। सखी समूह माहि इम स्यामा, सीळ ग्रावरित लाज सू।
—वेलि

उ० - २ स्याम कै सहाय सुरधर कै किंवाड़। पिंड कै प्रचड पौरस के पहाड। दातार सूर सील कै निवास। दीन कै सहाय द्विज गऊ कै दास।. .सू. प्र

२ नैष्टिक-ब्रह्मचर्य।

उ०—१ हनूमान नै सीळ सई हुय, चूक न द्रस्टि चलाई। मारचौ मान ग्रसुर कौ गरज्यौ, जब ही लक जराई।—ऊ. का.

उ०—२ सील का सगेव भारथ का पाथ, नरू का जंबहरी जोधाण का नाथ।—सू. प्र.

उ०—३ कोटन रिसी सील कै कारण, परम मुक्ति जिन पाई। ऊमरदान ग्रब सील ग्राराधत, परहर नार पराई।—ऊ. का.

उ०—४ धुर तै सील फरस धर धारचौ, विसय विकार विहाई। क्षत्रिय मार ग्रवनि निक्षत्री, वार इकीस बनाई।—ऊ. का.

३ सयम।

उ०—१ काम रिपू कू सील सू मारचा, लोभ कूं मारचा त्याग। क्रोध कूं ग्राय संतोख झपेस्या, मोह कूं लै वैराग।
—सुखरामजी महाराज

उ०—२ साध न ग्रांणै ग्रापदा, सील सतोसी थाय। हरीया राग न धेसता, सब सुं एक समाय।—ग्रनुभववाणी

४ पतिव्रत धर्म, पातिव्रत्य।

उ०—१ इम धाया उच्चरै, सुणौ बाया सतवत्ती। उभै बस ऊजळी, सील निरमळी सकत्ती।—रा रू.

उ०—२ ऊजळीदती ग्राभ, सनेनरा चीतालकी। नाजकड़ी पदमणी, सीळ सतवती सकी।—नारी सईकडौ

५ लज्जा, संकोच, शर्म।

उ०—सोळै ग्राभूसरण साजिया, सुभ लछ **सील** सुभाव। भलां पधारी भट्टण्या, पलका देती पाव।—रमरण प्रकास
६ चरित्र, ग्राचररण, चाल-चलन, नैतिक स्तर।
उ०—**सील** प्रताप सकळ ही सपत अंगरेजा घर ग्राई।—ऊ का
७ स्वभाव, ग्रादत, वान। (ग्र. मा; डि को; ह ना मा.)
८ गुरण, लक्षरण।
९ सम्मान, ग्रादर, झुकाव।
१० ग्रनुशासन।
उ०—१ **सील** सवार रूम री सेना, लेती फिरत लराई। करकै फतै तुरक लोकन की, हिम्मत खूब हराई।—ऊ. का
उ०—२ **सील** सहित सिवराज सितारै, खोस लूट धर खाई।
—ऊ का
स. स्त्री. [स शीतल] ११ ग्रार्द्रता, नमी।
उ०—म्हाराज तळाव कोट रै नेडौ घरणौ है। कोट री नीव मै **सील** जावसी।—नैरणसी रौ साकौ
१२ गाय के ऋतुमति की ग्रवस्था।
[ग्र] १३ छाप, मुहर।
१४ वादा, वचन, प्रतिज्ञा।
उ०—१ तिरै हाला नै भीम माहोमाही **सील** कोल कियौ। देवी ग्रासापुरा विचै दीवी।—नैरणसी
उ०—२ सु फौज राव कला री ऊभी थी। तिरण माहै साता ग्रसवारा सु ग्राय पडीयौ। इरणा मार लीयौ। सूली दीयौ। तरै मुगला रा परधान ग्राय वरस दिन रा **सील** कोल किया।
— राव चद्रसेन री बात
वि.—१ प्रवृत्त, तत्पर।
२ स्वभावयुक्त।
३ धैर्य।
४ विनम्र, शिष्ट।
५ पवित्र, निर्मल।
उ०—गति गगा मति गोमती, सीता **सील** सुभाय। महिला मिरहर मारुवी, ग्रवर न दूजी काय।—ढो. मा.
रू. भे.—सियल।

सीळग्राठम—देखो 'सीतळास्टमी' (रू. भे.)

सीलरणौ—सं. पु. १ एवज, बदला।
उ०—१ रारिण मोकळ चून री, कमी दिखावौ काय। ग्रौरा पहली **सीलरणौ**, म्हारा रौ मिर जाय।—वी. स.
उ०—२ महलां लूटरण धाडवी, झूँपडिया न सुहाय। झूँपड़िया री लूट मै, जीव **सीलरणौ** जाय।—वी. स.
२ प्रत्युपकार।
उ०—जिरण थी स्वतंत्र सभव में एक ग्रापरा ग्रालय हू काढि दैरण रौ उपकार करि जिकरण रा **सीलरणा मैं** सहियौ न जाइ इसडा ग्रनेक ग्रनरथ कुमाइ मनमत्तै बहै तिकरण री ग्रत तौ इसडौ खटावै।
—व. भा.
३ प्रतिकार, बदला।
४ क्षतिपूर्ति, हरजाना।
उ०—डररगै री कुरणसी बात छै कोई जै हिसाब मागसी तौ **सीलरणौ** करस्यूं।—ठा. जेतसी री वारता
रू. भे.—मिलवरणौ, सीलांरणौ।

सीलरणौ, सीलबौ—क्रि, स. [सं. शील=समाधौ, सीलनम्] १ किसी वस्तु के एवज में ग्रन्य वस्तु देना, प्रत्युपकार करना।
उ०—खावद कवा खवाड़िया, मीठा ले ले मोल। सहस गुरणा मै **सीलिया**, बोलै मीठा बोल।—बा. दा.
२ चुकाना, देना।
उ०—है वाभीजी सा ग्रापरा गौखडा सू ग्रापरा देवर री हथवाह तरवार वहती देख लेराग्रौ। वाभीसा ग्राप खरच गिरणता हा वौ म्हारौ पती **सीलै** छै।—वी. स. टी.
३ वसूल करना, लेना।
उ० ग्रजमेर हुवा नर एतला, नवलक्खी उग्रह लिया। **सीलत** पारण सुरतारण सू, कदळ सुरतारणी किया। मालौ ग्रासियौ
४ ग्रार्द्र करना, नमीयुक्त करना, ठडा करना।
उ०—मधुर सोवरणी राग, रीझवै ग्राभौ राजा। झीरणी छाटा झिलै, **सीलवै** माळू गाजा।—दसदेव
५ बन्द करना, मुहरबद करना।
सीलरणहार, हारौ (हारी), सीलरिणयौ—वि०।
सीलिग्रोड़ौ, सीलियोड़ौ, सील्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सीलीजरणौ, सीलीजबौ—कर्म वा०।
सीलवरणौ, सीलवबौ—रू० भे०।

सीळता—स. स्त्री. [स. शीलत्व] शील धाररग करने की ग्रवस्था या भाव।
उ०—उछाही सत्यनिस्ठ, **सीळता** साहसधारी। समुचित ग्ररणद उदार, ग्रारण सूं ग्राग्याकारी।—टाबर सईकड़ौ

सीलप्रसाद—देखो 'सीतप्रसाद' (रू. भे.)

सीळबरत, सीलव्रत—देखो 'सीळव्रत' (रू. भे.)
उ०—१ कठी तिलक दोवडी माळा, **सीळबरत** सिरणगारौ। ग्रौर सिगार सोहै नही रारणा जी, यौ गुर ग्यान हमारौ।—मीरा
उ०—२ परण सेठा री मन तौ सेठा रै बसू हौ, वै तौ उरण दिन सूं ई कोडाया होय **सीलव्रत** धाररण कर लियौ।—फुलवाड़ी

सीलवंत—देखो 'सीलवान' (रू. भे.)
उ०—१ एक साहिब रै गुलाम थौ सौ **सीलवंत** प्रभू सूं डर कररण वाळौ थौ।—नी. प्र.
उ०—२ नायक देस मै मोतबिर मबळा मेलै जिका भला ग्रादमी

भली चाल रौ होय अर साचौ **सीलवंत** निरलोभी होय ।
—नी. प्र.

सीलवंती, सीलवती–वि. [सं. शीलवती] १ पतिव्रता ।

उ०—१ पणवंती पारणी **सीळवंती** मनवती, अति सुगनी हालियौ किया साथै कुळवती ।—रा. रू.

उ०—२ पिण हू **सीलवंती** सती रे हां, केम विटालू देह ।
—वि कु.

उ०—३ कौसल्या दसरथ नी कांता महिमा घर राम नणी माता समार सराई **सीलवती** ।—जयवाणी

२ ब्रह्मचारिणी ।

३ अच्छे आचरण वाली ।

४ शील धारण करने वाली ।

सीलवणौ - देखो 'सीलणौ' (रू. भे.)

उ०—मन सुध हुय मोनू ह, तै दीधी केसर तुरग । बाधव बाई नू ह, **सीलवणौ** कद सील सूं ।—पा. प्र.

सीलवणौ, सीलवबौ—देखो 'सीलणौ, सीलबौ' (रू. भे.)

सीलवांन–वि. (स्त्री. सीलवती) १ सदाचारी ।

२ ब्रह्मचारी ।

३ अच्छे स्वभाव व आचरण वाला ।

४ शील को धारण करने वाला ।

रू. भे.—सीलवत ।

सीळव्रत, सीलव्रत–स. पु. यौ. [सं. शील+व्रत] जैन धर्म के पाँच अणुव्रतो मे से एक जिसमें श्रावक कुछ निश्चित समय या सदा के लिए विषय-वासना, मैथुन आदि को त्याग देता है ।

उ०—सेठाणी बीस बरसा ताई माय री माय धुकती री । पण अेक दिन अणूंती गोटीजनै सेवट वा होठ खोल्या इज । कह्यौ —थे तौ **सीलव्रत** धारयौ सौ घणी आछी बात । म्है तौ दादफरियाद नी करी, पण कवारी धीवडी नै सील-व्रत मत निरावौ ।
—फुलवाडी

२ ब्रह्मचर्य व्रत ।

३ पातिव्रत धर्म ।

उ०—पदमणी पाल्यौ **सीलव्रत**, बादळ गौरा वीर । सील वीर गावत सदा, खाड मली घ्रत खीर ।—प. च. चौ.

सीलसमजथा–स. स्त्री.—डिगल काव्य शास्त्र मे गीत रचना का एक नियम विशेष । (क. कु. बो.)

सीळसातम–स. स्त्री. [सं. शीतलासप्तमी] चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी जिस दिन शीतला देवी की पूजा की जाती है।

रू. भे.—सीतळासातम ।

सीलांगौ–वि.—आलसी, सुस्त ।

सीलांणौ —देखो 'सीलणौ' (रू. भे.)

सीलांम—देखो 'सलाम' (रू. भे.)

सीला—बालु प्रभा नामक नरक । (जैन)

सीलाणौ, सीलाबौ–क्रि. स. ['सीलणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ हरजाना वसूल करवाना ।

उ०—बाघ विधूंसै बाहरां, आरण छरा उपाड़ । **सीलाबा** सुणिया नही, बाधा करै बिगाड ।—बा. दा.

२ प्रतिकार करवाना ।

३ ठडा करना ।

सीलाधु–सं. स्त्री.—वह कल्पित पाषाण शिला जहाँ नौ लाख देवियाँ एकत्र होकर नृत्य करती है ।

उ०—ऊभै रूप धारायणी साचेली जेहांन आखै, तारायणी **सीलाधु** नाचेली निरत्याद । पारायणी प्रवाड़ा आछेली दसा देण पातां, नारायणी रूप नमौ काछेली अनाद ।—नवळजी लाळस

सीलायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हरजाना वसूल करवाया हुआ. २ प्रतिकार करवाया हुआ. ३ ठण्डा करवाया हुआ ।

(स्त्री. सीलायोडी)

सीलावणौ, सीलावबौ—देखो 'सीलाणौ, सीलाबौ' (रू. भे.)

उ०—दूध **सीळावत** दाभिया, हरजी मू हेत लग्यौ ।—लो. गी.

सीलियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ऐवजी मे दिया हुआ, चुकाया हुआ. २ वसूल किया हुआ, लिया हुआ. ३ आर्द्र या नम किया हुआ, ठंडा किया हुआ. ४ बन्द या मुहरबन्द किया हुआ ।

(स्त्री. सीलियोडी)

सीळी, सीली–स. स्त्री.—१ बास, घास आदि का पतला त्रण, फास ।

२ एक प्रकार के पत्थर का टुकडा जिस पर उस्तरा तेज किया जाता है ।

उ०—कुबध कतरणी विसै पाछणा, काम कळी जाह तांही । सासौ **सीली** चमोठौ लालच, मोह नहरणी माही ।—अनुभववाणी

मुहा.—सीली लगाणी=उत्तेजित करना, उकसाना ।

३ भूमि की नमी, आर्द्रता ।

४ एक वैवाहिक रस्म जो दूल्हे द्वारा विवाह के दूसरे दिन प्रात ससुराल मे पूरी की जाती है। (मा म)

वि.—१ ठडी, शीतल ।

उ०—१ काळी पीळी सह **सीली** ककुभाळी, कांठळ कावळती बावल बळ बाळी ।—ऊ. का.

उ०—२ ओभक अेली मै आवेस अलूके, **सीळी** रेळी मैं चीमळिया सूझै ।—ऊ. का.

२ देखो 'सीलवती' ।

उ०—किमीयक **सीली** सास मेरी माय ! किमोयक गढपत मेरौ सुसरौ ? कवसल्या सी सास मेरी माय ! दसरथ सौ गढपत सुसरौ ।
—लो. गी.

सीलेखांनौ—देखो 'सिलहखानौ' (रू. भे.)

सीलोनी–सं. स्त्री.—एक प्रकार की तलवार विशेष, जिसकी मूठ के

ऊपर सिह की आकृति होती है तथा नीचे का हिस्सा मुड़ा हुआ होता है।

सीळोरा-सं. पु.—पवार वश की एक शाखा।

सीळौ, सीलौ-वि. (स्त्री. सीळी) १ ठडा, शीतल।

उ०—१ रहै राम कै आमरै, सिर परि खेलै दाव। हरीया लगै न दास कु, तता सीळा वाव। - अनुभववाणी

उ० २ परभातै गह डबरा, माझँ सीळा वाव। डक कहै सुरा भड्डली, काळा तरा मभाव।—अग्यात

२ कायर, कातर।

उ०—राठौडा री कुळत्रिया, सीळा ग्रभ न धरत। ज्या भरतार न भजरा, सै भजरा न जरात।—कैवाट री बात

३ आर्द्र, नम।

सीलहैखांनौ—देखो 'सिलहखानौ' (रू. भे.)

उ०—उठै घोडा ऊठ था सौ सारा खोल लिया। बीजी वस्तु खजाना सीलहैखानां सभाळ लीन्हा।—सूरै खीवै काधलोत री बात

सीव-सं. पु. [स. सीमा] १ ईश्वर।

उ०—हरीया हरिजन हेक है, जीव सीव नही दोय। ज्यू नीर मिळाणा नीर मैं, फिर न्यारा नही होय।—अनुभववाणी

२ परब्रह्म।

उ०—१ जीव अर सीव करि एक जागी, मिल्या मिध मैं मिध ज्यू बूद पाणी।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया माया मोहनी, जा सुं बधै जीव। ता सुं तातौ तोड़ि करि, सहज मिळैगै सीव।—अनुभववाणी

उ०—३ हरीया छाया विरख की, वधै घटै बहि जाय। मेळा जीव'र सीव का, न्यारा कदू न थाय।—अनुभववाणी

३ देखो 'सिव' (रू. भे.)

उ०—देवी नाद तू बिंद नव्व निध्धि, देवी सीव तू स्रब्ब सिध्धि।
—देवि.

४ देखो 'सीमा' (रू. भे)

सीवरा—देखो 'सेवरा' (रू. भे.)

२ देखो 'सीवरा' (रू. भे.)

सीवरणौ—देखो 'सीवरणौ' (रू. भे.)

सीवरणौ, सीवबौ—देखो 'सीवरणौ, सीवबौ' (रू. भे.)

सीवन-सं. स्त्री.—१ सिलाई का कार्य, सिलाई।

२ सिलाई का जोड़।

३ सीमा, मर्यादा।

उ०—मह नासत सीवन मोध करै, बहु आमत जीवन बोध करै।
—ऊ. का.

४ देखो 'सीवनी' (रू. भे.)

सीवनी-सं. स्त्री. [सं.] लिंग के नीचे से गुदा तक जाने वाली रेखा।

रू. भे.—सीवन।

सीवर—देखो 'स्रीवर' (रू. भे.)

उ०—१ अत चोप भजन सीवर उचर, ध्यांन हृदय जुत चोप धर।
—र. ज. प्र.

उ०—२ सीवर सारणौ जी केता निबळ संता काम।
—र. ज. प्र.

सीवळ-स. पु. [स. शीतला] चेचक का रोग, शीतला रोग।

उ०—सै'र मै सीवळ रौ रौळाटौ फैलियौ। घर घर मै छोटा वडां रै सीवळ निकळै।—वरसगांठ

सीवाड़ौ—देखो 'सीमाडौ' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—रावा सिरहर राव, राजसिर हर रजवाडां। मथ मथ हर हैजमा, सक थक थरहर सीवाड़ां।—पना

सीविका—देखो 'सिविका' (रू. भे.)

उ०—महोमच्छव जमाली नी परै, करि मोटै मडाणौ रे। सीविका मा बेसाणनै दाखै जै जै वाणौ रे। जयवाणी

सीव्रख, सीव्रक्ष, सीव्रख—देखो 'स्रीव्रक्ष' (रू. भे)

सीस-स. पु. [सं. शीर्षम्] १ मस्तक, सिर।
(अ. मा, डि. को, ह. ना. मा.)

उ०—१ रास रामत रमै समै नवरातरी, नमौ कही जातरी सीस नामै। मातरी घणी बाता करामात री, पात री जीभ किम पार पामै।—मे. म.

उ०—२ न लाभत साबत सीस नत्रीठ, देतौ चक्र दड फिरै त्रण-दीठ।—मे. म.

२ ललाट, भाल।

उ० पेम प्रीत पतर पावोडी, सीस तिलक तत सारी रे। जन हरिराम लहै निज मन कु, यौं अपना घर जारी रे।
—अनुभववाणी

३ खोपडी, कपाल।

अल्पा,—सीसड़लौ, सीसडौ।

[सं. शिष्य] ४ शिष्य, चेला, सागिर्द।

उ०—१ विद्या निधि वाचक भला रे, मेध विजय तसु सीस। तस मतीरथ्य वाचक वरू रे, हरस कुसल सुजगीस।—वि. कु.

उ० २ स्रीजिनचद सूरीस, सकलचंद तसु सीस। तेह तरणइ सुपसायइ, समयसुदर गुण गायइ।—स. कु.

क्रि. वि.—पर, ऊपर।

उ०—१ डड विहारी राठवड, आया मोजत सीस। थिर जोधांणौ घेरियौ, किर त्रकुटाचळ कीस।—रा. रू.

उ०—२ बोल खवास तास कट वधै, कर डाढी धर सीस कमधै।
—रा. रू.

सीसकरणौ, सीसकबौ—देखो 'सिसकणौ, सिसकबौ' (रू. भे.)

उ०—चाद चढ्यौ गिगनार गौरी रा बना घरै रे पधार। पड़ी पलग पै सीसकै कर कर बालम री याद, आरे गौरी रा बना घरै रे

पधार ।—लो गी.

सीसड़लौ, सीसड़ौ – देखो 'सीस' (अल्पा, रू. भे.)

उ० - **सीसड़लौ** मूसल वागडियौ नारेळ, हाजी रे आटी तौ मूसल री वासग नाग ज्यू ।– लो. गी.

सीसढाळ–स. स्त्री. – एक वाद्य यंत्र विशेष ।

उ० –तिमा बैंग सीमडळ जंत्र नाळ, सहनाय बसी अनै **सीसढाळ** ।
—रा. रू.

सीसतांण–स. पु.—फारस और अफगानिस्तान के बीच का प्रदेश, सीस्तान ।

सीसत्रांण–स. पु. [स. शीर्षत्राण] १ टोप ।

२ टोपी, पगडी या साफा ।

सीसपत्र–स. पु. [स.] १ सीसा नामक धातु । (डि. को.)

२ उक्त धातु की चद्दर या पत्र ।

सीसपाळ देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे.)

सीसफूल–स. पु.—१ औरतों द्वारा सिर पर धारण करने का स्वर्ण आभूषण विशेष जो फूल के आकार का होता है ।

उ०—१ बधै **सीसफूल** बिदली सुवेस, सोहाग भाग सूरत सुदेस ।
—रमण प्रकास

उ०—२ **सीसफूल** तारा भलारै, अरध चद सम भाग रै रग । बिदी जाणै सगी धरी रे, पीवत अम्रत नाग रै रग ।
—प. च. चौ

रू. भे.—सहसफूल, सिरफूल ।

सीसम–स. पु. [फा. शीशम] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकडी इमारती कार्यों के काम आती है । यह लकडी दो प्रकार की होती है - एक कुछ श्यामता और ललाई लिए भूरे रग की तथा दूसरी काले रग की ।

उ०—भात भात रा घेरघुमेर रूख-आम, आमली, कदब, खिरणी, नींव, चन्नण, असोक. .. .. बडला, बावळ, सरेस, गूलर, गूदी, देवदार अर **सीसम** ।– फुलवाडी

२ उक्त वृक्ष की लकडी ।

सीसमेहल, सीसमे'ल–स. पु. [फा. शीश + अ. महल] वह कमरा या मकान जिसकी दीवारों में चारों तरफ शीशे जडे हो ।

सीसय—देखो 'सिस्य' (रू. भे.)

उ० –गच्छराय जिनचद सूरि **सीसय**, सकलचद्र सुगीस रौ । तसु सीस पभणइ समयसुंदर, हवउ जिन सुह सुह करौ ।– स कु

सीसवद–स. पु.—सीसोदिया वश का व्यक्ति ।

उ० – देखै अजस दीह, मुळकैलौ मन ही मना । दभी गढ दिल्लीह, सीस नमतां **सीसवद** ।—ठाकुर केसरीसिह सौदा

सीसांणी–स. स्त्री तोप ।

उ० – चड हाक वाणी व्है **सीसांणी** वाल्हा खाणी चल्लै, धमता ऊभल्लै गोळा गजाणी घडाक । महासूर अगी-पाणी ऊबाणी वाराणसा मेळै, लोहै घाणी घडा बीच 'सेखाणी' लडाक ।
—हुकमीचद खिडियौ

सीसागर–स. पु.—१ काच की चूडिया बनाने वाला कारीगर ।

२ शीशा बनाने वाला कारीगर ।

सीसागरी–स. स्त्री –१ मॉस खाने के उद्देश्य से मारे गये बकरे के सिर का मॉस ।

[फा.] २ सीसागर का कार्य या हुनर ।

सीसाड़णौ, सीसाडबौ, सीसाणौ, सीसाबौ–क्रि. स.—मुँह से सी सी' की ध्वनि करते हुए शिशु को टट्टी जाने के लिए प्रवृत्त करना ।

सीसिक–स पु. –१ काच, दर्पण ।

[स. सीसक] २ रागा नामक धातु ।

३ सिर, मस्तक ।

सीसी–स. स्त्री. [फा. शीशी] तेल, इत्र, दवा आदि रखने के काम आने वाला शीशे (काच) का पात्र विशेष ।

उ०—१ ससहर सैद काच री **सीसी**, माथै चतुरगणि वावीसी ।
—रा. रू.

उ०— २ काधै सबज ए जी ए रूमाल । हाथा मै **सीसी** प्यालौ प्रेम रौ जी ।—लो. गी.

मुहा.—सीसी मै उतारणौ=गुमराह करना, फुसलाना, बेवकूफ बनाना, वश मे करना ।

सीसोद–स. पु. सीसोदिया वश का व्यक्ति ।

उ०—**सीसोद** कमधा सैफला, वहि सेल भऋहळ बीजळा ।
—सू प्र

वि सीसोदिया वश का ।

सीसोदणी–स. स्त्री —सीसोदिया वश की कन्या ।

सीसोदिया —देखो 'सिसोदिया' (रू भे)

सीसोदियौ – देखो 'सिसोदियौ' (रू. भे)

सीसौ–स. पु. [स. सीसक] १ बहुत भारी और नीलापन लिए काले रग की एक मूल धातु जो अत्यधिक सख्त एव मजबूत होती है ।
(अ मा, डि. को.)

उ० **सीसा** जामग सोर, भार गाडा बाणा भर । चव हजार सुत्रनाळ, हवस उमताज बहादर ।– सू प्र.

पर्याय. –कथीर, गडूपदभव, वप्र, नाग, सीसपत्र, सुवरणारि, हेमअरि ।

रू. भे. – सस ।

२ बालु या खारी मिट्टी को आग मे गलाने से बनने वाली एक एक प्रकार की मिश्र धातु जो पारदर्शक होती है ।

३ दर्पण ।

४ तेल, इत्र, दवा आदि रखने के काम मे आने वाला शीशी से बडा काच का बना एक लबोतरा पात्र, बोतल ।

सीह –१ देखो 'सिंघ' (रू. भे.) (डि को; ना. डि को)

उ० —१ घेरै सिकार माहि समा लुकडी सीह रोझ स्याळ रीछ अनेक हिरण आदि दै अर भेळा हुया छै ।—द वि

उ०—२ इम सजै साज मुख करि अरण, जाणै सीह हकालिया । सुत बळ बधाय कहि कुळ कमव, चढण महावत चालिया ।

—सू. प्र.

उ० —३ सीहणि हेकौ सीह जणै, छापर मडै आळि । दूध विटाळण कापुरुस, बोहत्ता जणै सियाळी । हा. झा.

(स्त्री. सीहणा, सीहणि, सीहणी)

२ देखो 'सीत' (रू भे.)

उ० —उत्तर आज म उत्तरउ, मही पडेसी सीह । बाल्हम घरि किम छडियइ, जा नित चणा दीह । ढो. मा.

सीहगोस—स पु. - काले कानो वाला एक प्रकार का जतु विशेप ।

उ० —तिम पर चित्रू कुतू का धाव सीहगोसूं के दाव । - सू. प्र.

सीहड़—स. पु. —भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सीहदुआर, सीहदुवार, सीहद्वारी—देखो 'सिहद्वार' (रू. भे.)

उ०—१ सीहद्वारि जइ स्वामी नइ, पूछया प्रछन कुमार । कवण देस कवण गढ राजा, ए कहौ कवण विचार ।—रुकमणी मगळ

उ० २ माघ पडित बोलै तिण ठाई, चाउघडयच बाजइ सीहदुवारि ।—बी. दे.

(मि. सिघपोळ)

सीहमलोत—स. पु. राठौड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सीहरू—स पु. —शेर, सिह ।

उ० सीहा थाहर सीहरू, हुवा न इचरज होण । काम 'पता' कमधज्ज रा, सुणण ललच्चै स्रोण ।—किमोरदान बारहठ

सीहलोर—स. पु —डिगल का एक गीत (छद) विशेप ।

वि. वि. देखो 'पूणियौ' ।

सीहलौ—स. पु. —१ एक प्रकार का शुभ रग का घोडा । (शा. हो.)

२ देखो 'सिह' (अल्पा, रू. भे.)

सीहवणौ—स. पु डिंगल का एक गीत (छद) विशेप ।

वि. वि. - देखो 'सोहणौ' ।

सीहवाग—स. पु. एक क्षत्रिय वंश ।

उ० —एकण पासै जोईया रौ राज । एकण पासै सीहवाग खीचीया रा राज । एकण पासै पाहुवा रौ राज ।

—कुवरसी साखला री वारता

सीहाणौ, सीहाबौ—क्रि. स.—प्रशसा करना, सराहना ।

उ० - पडित भी राजी होय आसीरबाद दीधौ । मन माहै घणौ सीहायौ ।—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री बात

सीहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

सीहायक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

सीहायत—१ देखो 'सहायता' (रू. भे.)

२ देखो 'सहायक' (रू. भे.)

सीहायता—देखो 'सहायता' (रू. भे)

सीहायोड़ौ—भू का. कृ.—प्रशसा किया हुआ, सराहा हुआ ।

(स्त्री सीहायोडी)

सीहु, सीहू—देखो 'सिघ' (रू भे.)

उ० काली चऊदसि दीहु, तुम्हे रूडइं जोइजउ । एउ दुरयोधनु सीहू, आइ उपाइ मारिसिए । - सालिभद्र सूरि

सीहौ—स. पु. -एक रग विशेप का घोडा । (रा सा. स.)

उ०—गुरड सीहा गुलाल, चीतळा चौरगी चाल । कविळा काळा केकाण, कमेत पचकिल्याण ।—गु रू. ब.

सुं—सर्व. —१ उसका ।

उ० बाळू, ढोला, देसडउ, जइ पाणी कूवेण । कू कू वरणा हथ्थडा, नही सुं धाढा जेण ।—ढो. मा.

२ क्या ।

उ० —राजा रूपै रीझियौ रे लाल, राणै कही इण रीत । मुलौ सुं मुझ आगलै रे लाल, मुझ नै करतु मीत ।—ध. व. ग्र.

३ करण व अपादान का चिह्न ।

क्रि. वि.—१ से ।

उ० —१ चकडोळ लगै इणि भाति सुं चाली, मनि तै वाखाणण ना मू सखी समूह माहि इम स्याम, मीळ आवरित लाज सू ।

—वेलि

उ० २ बाबहिय पिउ पिउ करइ, कोयल सुरंगइ साद । प्रिय तिण रुति अळिग रह्या, ताह सु किसउ सवाद ।—ढो. मा.

उ० —३ जैसौ ई दातार वडौ रजपूत । सौ औ भोपीचारौ करै । परखडा रा माल लै आवै । तठै गाम माहै लै नै खावै खरचै । गाम माहै वडी गढी बळवत । सु देपाळ अठै ईयै भात सुं रहै ।

—देपाळ धध री बात

२ द्वारा, मार्फत ।

३ अपेक्षा मे ।

४ आरम्भ से ।

५ पर ।

६ से, को ।

उ०—सउदागर राजा सुं कह, सुणउ हमारी कथ्थ । मारवणी छानी रही, से माळवणी तथ्थ ।—ढो मा.

७ के द्वारा ।

उ० —हरीया मरबौ सौ भलौ, सूरातन सुं होय । कायर भागा काळ का, जाकौ मुह कुण जोय ।—अनुभववाणी

८ के साथ, सहित ।

उ०—तरै झाला रै वीहा हुवौ, सौ झाली नु आणौ आयौ । झाली पीहर आई तरै लाजसै सुं हलाई । सौ पीहर पोहती । पीहर रा

भली तरै राखी। भाली री मा भाली सु बाता कीवी मोका री बाता पूछी।—कुंवरसी सांखला री वारता

१० क्यो, क्योंकर।

वि—१ पूर्वक, सहित।

उ०—इतरौ कहि लाखौजी चढि नै घरै आया। लाखौ मुख सुं राज करै छै।—लाखै फुलाणी री बात

२ देखो सु' (रू भे)

उ०—जैसा ई दातार वडौ रजपूत। सौ औ भोमीचारौ करै। पर-खडा रा माल लै आवै। तठै गाम माहे लै नै खावै खरचै। गाम माहै वडी गढी वळवत। सुं देपाळ ग्रठै ईयै भात सु रहै।

—देपाळ धध री वात

रू भे—सू, सो।

सुंग्राळ—स स्त्री—१ चिकना होने की अवस्था, चिकनाहट स्निग्धता।

२ देखो 'सुंवाळौ' (मह, रू भे) (मा म)

रू भे—सुवाळ सुँहाळ।

सुखड़ौ—स पु—बादाम, दाख आदि स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ।

उ०—चोली मड चरणा चीर मखरा, **सुंखड़ा** सुसवाद ए। रली रग स्यूँ लइ जसोभद्रा, जाराइ जेठ प्रसाद ए।—स कु

सुंखणी, सुंखनी, सुंखिणी, सुंखिनी—देखो 'सखणी' (रू भे)

उ०—**सुंखिनी** सवै सुरनारण घरि, कोप हुइ बेजन कसइ। लावन मारि खोजा निमुरिग, पातिसाह सुरकै हसइ।—प. च चौ.

सुंग—स. पु. [स. शुग] १ मगध राज्य पर अन्तिम मौर्यसम्राट वृहद्रथ के पश्चात् राज्य करने वाला क्षत्रियवश।

२ जौ, गेहू, चावल आदि अनाजो के पौधे की बाल या भुट्टा।

(क्षेत्रीय)

३ बरगद, वटवृक्ष।

४ आवला।

५ पाकड वृक्ष।

सुंगण—१ देखो 'सुगध' (रू. भे.)

उ०—थाट भड़ अगै नर सुरगवासी थिया, गाढिया कृपाती लड़ लारै रिया। कथन वड लोक रा ग्राद साचा किया, निरावै नाक कर फूल **सुंगण** लिया।—स्यामजी वारहठ

२ देखो 'सकुन' (रू. भे)

सुंगवंस—स. पु. [स. शुगवश] मगध राज्य पर अन्तिम मौर्यसम्राट वृहद्रथ के पश्चात् राज्य करने वाला क्षत्रियवश।

सुगा—स. स्त्री. [स. शुगा] १ फूल की कलियो के नीचे का कोष।

२ गेहू, जौ, चावल आदि अनाजो के पौधो की बाल।

सुंघणी, सुंघनी—१ देखो 'सूघणी' (रू. भे.)

२ देखो 'मागणी' (रू. भे)

सुघाणौ, सुघाबौ—क्रि. स. [सूघणौ क्रिया का प्रे. रू.] सूघने की क्रिया करने के लिए प्रेरित करना।

सुंघाणहार, हारौ (हारी), सुंघाणियौ—वि०।

सुंघायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुंघाईजणौ, सुंघाईजबौ—कर्म वा०।

सुघायोड़ौ—भू. का. कृ.—सूघने की क्रिया करने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री सुघायोडी)

सुंज—स स्त्री—तैयारी।

उ० कजि उदकजळि **सुंज** करए, जमरा मिनान कियौ खप जाए। वेदोक्त मत्रा सुरा वाणी, जळ अजळि आणी जग जाणी।

—रा. रू.

सुंठ, सुठि, सुठी—देखो 'सूठ' (रू. भे.)

सुड—स पु. [स. शुण्ड] १ मदमाते हाथी की कनपटी स बहने वाला मद।

२ देखो 'सूड' (रू. भे.)

उ०—१ वहै लाम छूटा तुरा नाम वाजै, वडै मेघ ज्यौं मोक धारा विराजै। वणौ सिधुरा कुंडळी **सुंड** वाळी, करै चाळ जागौ फरणा नाग काळी।—रा. रू.

उ०—२ मगरूर धताधत मत्त मदा, उनमत्त मुनेस्वर दत्त ग्रदा। फवि हाटक दड धुना फहरै, कुडळी जिम भाटक **सुंड** करै।

—मे. म.

उ०—३ कव्या घरा मजळ छजळ कान, गिरगिर कज्जळ कूट समान। ससूदित साप ससाक्रत **सुंड**, दतूसळ सूसळ रूप दुरड।

—मे. म.

सुंडडंड, सुडदड—देखो 'सूडादड' (रू. भे.)

सुडभुसड, सुडभुसंडि, सुंडभुसंडी, सुंडभुसुंड, सुंडभुसुंडि, सुंडभुसुंडी—स. पु. [स शुडभुशडि] हाथी, हस्ती।

वि.—मस्त, उन्मत्त।

सुंडमुंड, सुंडमुडी, सुडमुस्टंड, सुंडमुस्तड—वि.—हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, स्वस्थ।

उ०—१ नटानि दै भटानि की जटानि ऐचतै ग्रभै, ग्रनीन मुच्छ मुच्छ दै स्वमुच्छ खेचतै ग्रभै। चलाक रूठ पुठ कै अगूठ चापतै चलै, हरामखोर **सुडमुड** भुड कपतै चलै।—ऊ का.

उ०—२ अेकर अेक गाव मैं अेक ग्रैडौ ई अेक रा री मडळना चार-मामा री धूणी जगाई। साथै **सुंडमुस्तड** चेलां री टोळी। अगराढ, अबूभ अर अग्यानी लोग अर पछै धरम, भगवान, आतमा, परमा-तमा अर मुगती मैं अमिट आस्था। ठगण साह ग्रैडी ठोट मानखौ दुनिया मैं वळै कठै मिळै।—फुलवाडी

रू. भे.—सडमुसड, सडमुसडी, सडमुस्टड, सडमुस्तड।

सुंडा—स. स्त्री. [स शुण्डा] १ हाथी की सूड। (डिं को)

उ०—१ जघा **सुंडा** करि वणी रे, उलटी कदली खभ रे। सोवन कच्छप सारिखा रे, चरण हरण मन दभ रे।—प. च. चौ

उ०—२ चढी नाळिया बाह यू राह चल्ली, हलाडै धजा कै गजा पति हल्ली। लसै ग्राल जगाळ मिदूर सुंडा, इळा मै धसै धाव रा पाव डडा।—व. भा.

२ वेश्या, रण्डी।

३ मदिरा, शराब। (डि को)

४ कुटनी स्त्री।

सुडाडंड, सुडाडडू—देखो 'सूडादड' (रू भे.) (डि. ना मा)

उ०—१ जठै जादवराम रै मवधी भ्राता जादवदेव रा किवाग करि चालुक्यराज रा गज रौ सुंडाडड वाहित्थ देस मू विछुटि भडियौ।—ब. भा.

उ०—२ हाथियौ कै हलकै खभूठाग तै खोलै ग्ररापत कै माथी भद्र जाती कै टोळै ग्रत देहु कै दिग्गज विध्याचळ कै सुजाव रग रग चित्रै सुंडाडडू कै वरणाव भूल की जलूसै वीरघट्ट कै ठगाकै बादलो की जगमगाट भरै भौरो की भकी भगाकै,. .. ... ।—र. रू.

सुंडाडबर—स. पु —१ हाथी, गज।

२ गणेश, गजानन।

उ०—रिधि सिधि प्रसिध प्रमाण करीनइ, विस्न तणौ वीवाह। सुंडाडबर करि धर फरसी, लीला लोचन चाह।—रुकमणी मगळ

सुंडादंड—देखो 'सूडादड' (रू. भे)

उ०—प्रतापसिंघ तो माहण सिगगार रै सीस चद्रहास रौ प्रहार कियौ निगा मू दोही दाता समेत सुंडादंड भडि पडियौ।—व भा.

उ०—२ हाथी सहु पहिरी हलकारै, हलकता नवि हारै। सुंडादंड मबल विमतारै, मद उनमत्ता मारै हो।—वि कु.

सुंडार—स. पु. [स. शुण्डार] १ हाथी की सूड।

२ साठ वर्ष की ग्रायु का हाथी। (डि को.)

३ देखो 'सूडाळ' (रू. भे.)

सुडाळ, सुंडाळकौ, सुडाळौ, सुंडालौ—देखो सूडाळ' (रू भे) (ग्र मा, डि ना. मा, ना डि को, ह ना मा)

उ०-१ सुंडाळ भिडिया ग्रावि ग्रडिया, सुहड ग्रणीग्रणि। नर सीस विहसई वदन विगसई सेल वाहई सगि।—रुकमणी मगळ

उ०—२ मैद महाबळ सूर कुळ, यौ वग्गा रण ताळ। जुडै ग्रछाया जोम ज्यौ, मद ग्राया सुंडाळ। - रा रू

उ०—३ मोहै खूबसूरता पैनाग वना सुंडाळका, प्रथी माठा भाळ काळ गाड पैलै पार। काळा ग्रगा तरजै फाळका बै वै तडा कूदै, तबेलां टाळका भूरी वरीमै तोखार।—जवानजी ग्राढौ

उ०—४ सुंडाळा सुमेर सा सजिया, ग्रमर विमाणासी ग्रबारी रे। चचळ हय चितचाळ चुकावण, नाचै मोर मनोहारी रे।—गी. रा.

उ०—५ काजळ किळकै तनु काळा, सवळा परचड सुडाला। सिंदूरघा सीस सलूकै, जळधर मैं बीज भबूकै।—ध. व ग्र.

सुंडावत—स. पु.—एक क्षत्रिय वश। (रा. व. वि.)

सुंडाहळ, सुडाहळौ—देखो 'सूडाळ' (रू. भे)

उ०—१ वदै राम वरियाम ससार रजपूत वट, लोह पागार सुंडाहळा लोध। ऊरडी सामा ग्रणी ऊपरै प्रिसण उरि, ग्रडै जमदाढ तू ग्रभिनमा 'जोध'।—रामसिह राठौड रौ गीत

सुंडी—स. स्त्री. [स. शौडिन्] १ पिप्पली नामक लता या उसका फल। (ग्र. मा.)

२ देखो 'सूडी' (रू. भे.)

सुंणणौ, सुंणबौ—देखो 'सुणणौ, सुणबौ' (रू. भे)

उ०—ढोला, खील्यौ री कहइ, सुणौ कुढगा वैण। मारू म्हाजी गोठणी, सै मारू दा सैण।—ढो. मा.

सुंणणहार, हारौ (हारी), सुणणियौ—वि०।

सुंणिग्रोडौ, सुंणियोड़ौ, सुंण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सुणीजणौ, सुणीजबौ—भाव वा०।

सुणियोडौ—देखो 'सुणियोडौ' (रू. भे) (स्त्री सुणियोड़ी)

सुंद—स. पु. [स.] एक राक्षस जो निकुभ का पुत्र ग्रोर उपसुद का भाई था। इसकी पत्नी का नाम ताडका था, जिससे इसके मारीच व सुबाहु नामक दो पुत्र हुए थे।

सुंदर—वि [सं.] १ जो दिखने मे ग्रच्छा लगता हो, मनमोहक, चित्ताकर्षक। (ग्र मा, ह ना मा.)

उ०—१ सुभ चित्र मदिर चौक सुंदर, ग्रौपि रुचि राय ग्रगणौ। तन सदन सोभित करण तरणी, विविध मनि उद्दम वणौ।—रा रू

उ०—२ ग्रति सुंदर कवळ माडिया ऊपर, सोभा ग्रति पामइ मादीत। चदवदनी मुख दिसउ चाहता, ऊगा किरि बारह ग्रादीत।—महादेव पारवती री वेलि

२ जो रग, रूप व वर्ण से ग्राकर्षक लगता हो, रूपवान्, खूबसूरत।

उ०—सुंदर सोभत घणस्याम, तडिता पट-पीत छिब ताम। वामै ग्रग सीता वाम, रूप ग्रनग कोटिग राम।—र. ज. प्र

३ ग्रच्छा, भला, बढिया। (डि को.)

४ ठीक, सही।

५ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उ०—दासरथी सुखदाई सुंदर, नमै पगा सुर नर ग्रानूप। नरका मिट जन तारै नकौ, भाख पयोध प्रभाकर भूप।—र ज. प्र.

६ सुघट, सुघडित।

७ उत्तम, पवित्र, स्वच्छ।

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुंदर, ग्रमळ ग्रबर ग्रोपयं। किरि सुबुधि वधि सत सग कारण, लुबुध होत विलोपय।-रा रू.

८ जिसके नख शिख व ग्रग-प्रत्यग सौन्दर्य के मापदण्ड के ग्रनुसार हो।

उ०—ग्रगनयणी, ग्रगपति मुखि, ग्रगमद तिलक निलाट। ग्रग-रिपु-कटि सुंदर वणी, मारू ग्रहहइ घाट।—ढो. मा.

९ जिसे पाने से, देखने मे या अनुभव करने से आनन्दानुभूति होती हो।

१० कला की दृष्टि मे जिसकी रचना अत्यन्त उच्च कोटि की हो।

पर्याय —अभिराम, कमन, कमनीय, दरमणी, दीपन, पेमल, प्रीय, मजु, मजुल मधुर, मनहर, मनोगिन, मनोरम, मनोहर, रमण, रमणीय, रुच, रुचिर, ललित, वर, वाम, सरूप, साधु, सुखम, सुभग, सुलखण, सोभित।

स. पु.—१ ईश्वर, परमात्मा। (ना. मा. ह. ना. मा.)

२ बालक, बच्चा। (अ. मा.)

३ कामदेव, मनोज। (ह. ना. मा.)

४ लका मे स्थित एक पर्वत।

५ एक प्रकार का वृक्ष।

६ लकड़ी के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

उ०—१ चल सुंदर मदिर चले, तुम विण चल्यौ न जाय। मान चलानी लाड मै, सौ दिन पहुच्या आय।—अग्यात

उ०—२ चल सुंदर मदिर चल, तुम हौ जीवजडी। हम हुतै तुम न हुतै, जद थी आणद घडी।—अग्यात

७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमे एक लघु एव एक दीर्घ के क्रम से पच्चीस मात्राएं व १६ वर्ण होते है।

उ०—सोलह आखर पय सवर, मात्र पचीस मलूक। कहि गुण लखपती कुअर, सुंदर छद सलूक।—ल पि

८ डिंगल के वेलिया सांणोर छद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे ५२ लघु, ६ गुरु, कुल ६४ मात्राएं होती है तथा शेष द्वालो मे ५२ लघु, ५ गुरु, कुल ६२ मात्राऐ होती है। (पि प्र.)

स स्त्री —६ पृथ्वी, भूमि।

(डि. को, डिं. ना मा, ना डि को.)

१० देखो 'सुदरी' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ कुण माळ्या, अै सुवागण, थारा हाथ, पेम रस महदी राचणी। राच्या राच्या, अै सुदर, थारा हाथ, पेम रस महदी राचणी।—लो. गी.

उ०—२ सुंदर सोळ सिणगार सजि, गई सरोवर पाळ। चद मुळक्यउ, जळ हस्यउ, जळहर कपी पाळ।—ढो. मा.

उ०—३ ग्रह फूटी, दिसि पुडरी, हणहणिया हय थट्ट। ढोलउ धण ढढोळियउ, सीतळ सुंदर-घट्ट।—ढो. मा.

उ०—४ साम्हउ जिण कळस आणियउ सुंदर, वदायउ कर भली विधि। जनम जनम वैकुठ पामिस्यइ, वळै वदावइता नवै निधि।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—५ उदमाद घणइ जगि चढनी वानी, करि निरखती फोरती कध। माईं मिळण कारणै सुदर, बधिया चोळी तणाज बध।

—महादेव पारवती री वेलि

अल्पा; रू. भे.—सुदरु, सुदरू।

सुंदरता, सुदरताई—सं. स्त्री. [स. सुन्दर+ता प्र.] १ सुन्दर होने की अवस्था या भाव।

२ सौन्दर्य, शोभा, झलक।

रू. भे.—सुंदराई, सुंदरापौ।

सुंदरबाई—स. स्त्री.—बेला चारण की पुत्री एक देवी विशेष जिसने महाराणा सग्रामसिह को राज्यप्राप्ति का वरदान दिया था।

रू भे.—सुंदराई।

सुदराई —१ देखो 'सुदरता (रू. भे)

उ०—हरीबच्छ सीलच्छ तू वीसहत्थी, तुही पन्नगाधीस रै सीस प्रत्थी। तुही पच्छ तारच्छ मे सीघ्रताई, रती मूरती मै तुही सुंदराई।—मे. म

२ देखो 'सुदरबाई' (रू. भे.)

सुदरापौ—स. पु देखो 'सुंदरता' (रू. भे.)

सुदरि, सुंदरी—वि. स्त्री. [स. सुन्दरी] १ सुदर, रूपवती।

२ प्यारी, प्रियतमा, वल्लभा।

उ०—मेझा आवौ सुंदरी, ज्यौं सोभा दै मेझ। तौ विन मेझ बिरगिया, कही न लागै जेह।—कुंवरसी साखला री वारता

स. स्त्री —१ सुन्दर एव खूबसूरत स्त्री।

उ०—१ गुणदाणा इसा अमोलक गाढा, मोती नाइ आवळा प्रमाण। सुंदरि हार तिसउ उर सोहइ, बीजी गग प्रगट की वाण।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी। त्रिय जीन नैनि गुण परखि चखि, सुख सकम पखि जिम सुंदरी।—रा. रू

उ०—३ भाखा सस्क्रत प्राक्रत भणता, सूभ भारती ए सरस। रस दायिनी सुंदरी रमता, सेज अनरिख भूमि सम।—वेलि

उ० ४ सुदरि चोरै सग्रही, सब लीना सिणगार। नकफूली लीधी नही, कहि सखि कवण विचार।—ढो. मा.

२ स्त्री, पत्नी। (अ. मा, ह. ना. मा.)

उ०—१ सुणि सुंदरि, सच्चउ चवां, भाजइ मनची भ्राति। सौ सारू मिळिबा तणी, खरी विलग्गी खति।—ढो. मा.

उ०—२ माया पास रही मुळकती, सजि सुंदरी कीधा सिणगार। बहु परिवार कुटुंब चौ बाधौ, हरि विण गयौ जमारौ हार।

—प्रथ्वीराज राठौड

३ देवी, दुर्गा, पार्वती।

उ०—भवानी नमौ स्वच्छ स्रगार अगा, भवानी नमौ सुंदरी सिभु सगा। भवानी नमौ कामरिद्रारि हता, भवानी नमौ आसि आभा अनंता।—मे. म

४ रुक्मिणी।

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर पच। चितवणि हसणि लसणि गति सकुचणि, सुंदरी द्रारि

देहरा सच । —वेलि

५ त्रिपुर सुन्दरी देवी ।

६ एक योगिनी ।

७ नर्मदा नामक गन्धर्वी की कन्या एवं माल्यवान राक्षस की पत्नी का नाम ।

८ हलदी ।

९ नाव आदि बनाने के काम आने वाली लकड़ी का वृक्ष ।

१० एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

११ एक प्रकार का वर्णिक वृत विशेष जिसमें प्रत्येक चरण में प्रथम एक नगण फिर दो भगण व अन्त में एक रगण इस प्रकार कुल बारह वर्ण होते हैं ।

उ०—नगण बि भगण रगण निरवाणि, पाइ **सुंदरी** छंद पिछाण । वरण दु आद म घाटिन बाधि, अनंत अजोध्या नाम अराधि ।
—पि. प्र.

१२ एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसमें प्रत्येक चरण में प्रथम दो मगण फिर भगण फिर मगण और अन्त में एक तगण, दो जगण व एक लघु एवं एक एक गुरु, कुल २३ वर्ण होते हैं ।

उ०—छाजै बि मगण भगण चरण विगता छाता, सगण तगण दुइ जगण लुघू गुर सौभाता । महि त्रिह अगाल वीस वरण सव लामणा, **सुंदरि** आ गुण जाणि सुचग सुहामणा । —पि. प्र

रू. भे.—सुदर, सूदरि, सूदरी ।

सुंदरु, सुंदरू—देखो 'सुँदर' (अल्पा, रू भे)

उ०—सगला आगज **सुंदरू** जी, इद्रिय नही कोई हीण । प्रथम वय वढती कला जी, चतुर घणा प्रवीण ।—जयवाणी

सुंदळौ–सं. पु.—१ छत की सुन्दरता व चिकनाहट बढाने के लिए लिपि में किया गया लेप । इसमे चूने की उम्र भी बढ जाती है ।

२ चूना ।

३ देखो 'सदळौ' (रू. भे.)

सुंदसण—देखो 'सुदरसण' (रू. भे)

सुंदुस–स पु [स.] अत्यन्त महीन एव बहुमूल्य रेशमी कपड़ा ।

सुंदूक—देखो 'सदूक' (रू. भे.)

सुंदोपसुंद–स. पु. [स.] सुद एव उपसुद नामक दो भाई जो राक्षस थे ।

वि. वि.—इन दोनो को वरदान प्राप्त था कि जब तक ये दोनों आपस मे एक दूसरे को नही मारे तब तक नही मरेंगे । अत इन्द्र ने तिलोत्तमा नामक अप्सरा को इस तरह की स्थिति उपस्थित करने हेतु भेजा । ये दोनों तिलोत्तमा की प्राप्ति हेतु आपस मे लड मरे ।

सुंधाखांणौ, सुंधाखांनौ—देखो 'सौधाखानौ' (रू भे)

सुंधौ—देखो 'ऊधौ' (रू. भे.)

उ०—भली भाति भुजाई जीमिया । ऊपर पान रा बीड़ा दिया, अंतर **सुंधै** री मनवार हुई । डेरै नूं सीख दीवी । ताहरा राजा वीरभाण जवाई नै खमा-खमा कह्यौ, हाथ भालिया, छाती सू लगाय कह्यौ—वावा, कासू कारज छै ।—पलक दरियाय री बात

सुंन, सुंन्य—१ देखो 'सुन्न' (रू. भे.)

२ देखो 'सून्य' (रू भे.)

उ०—१ **सुंन** महा सुन नही धुधूकारा, नही होता नूर विलामा । ज्या दिनका जोगी करो नी विचारा, किस विध रच्या सँमारा ।
—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ कोण देस मै गुरुजी मढी वगाऊ, काहा लगाऊ आसारै लोय । **सुन** सिखर मै चेला बधावो, अगम लगावो आसारै लोय ।
—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—३ **सुन** सरवर चहु फेर मैं, सुख सीतल तासीर । हरिया एक अखड मै, ध्यान धरू ता तीर ।—अनुभववाणी

उ०—४ जनहरीया मन जाह किया, **सुंन्य** सरवर मै वास । वळै न जामण मरण की, धरै न हसौ आय । अनुभववाणी

सुंपणौ, सुपबौ—देखो 'सूपणौ, सूपबो' (रू भे.)

उ०—नागोरी दरवाजा बारै नाजर हरकरण हस्तै बेरो १ खीणी-जियौ नै चौबीसौ हुवौ तीकौ हमार चापावत सुलतानसिघजी नै **सुंपीजियौ** । तथा दिरीजियौ ।—मारवाड री ख्यात

सुंपणहार, हारौ (हारी), सुंपणियौ—वि० ।

सुंपिओड़ौ, सुंपियोड़ौ, सुंप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुंपीजणौ, सुंपीजबौ—कर्म वा० ।

सुंपियोड़ौ—देखो 'सूपियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सुंपियोडी)

सुंब–स पु [फा. सुबः] १ लोहे मे छेद करने का औजार ।

२ लकड़ी मे छेद करने का औजार ।

३ पृथ्वी खोदने का एक प्रकार का औजार ।

स. स्त्री. [स शुम्ब] ४ डोरी, रस्सी ।

५ देखो 'सुम' (रू. भे)

६ देखो 'सूम' (रू. भे)

उ०—१ धधै करि करि जोड़ि धन, सचै राखै **सुंब** । भाग वसै केइ भोगवै, वलै न बाहर बुब ।—ध. व. ग्रं.

उ० –२ **सुंबै** मात प्रिया रै साह्यौ, गिणि पूरबलो वस गिनौ । पूज तठै पिण धरता पगला, न सकै रहि तिण ठाम न नौ ।
—ध व. ग्र

सुंबड़ौ–१ देखो 'सुम' (रू भे)

२ देखो 'सूम' (रू भे)

उ०—'बभुतौ' कीत धाडा करै चहु वळ, **सुंबड़ां** प्रजाळण नही सुधौ । सौतन कव छोड कम जाय सुरधर अगर, राठवड रतन पुर पथ रुधौ ।—खेतजी बारहठ

सुबुक–स स्त्री. [फा.] बडी नाव के साथ रहने वाली छोटी नाव ।

सुबुल–स स्त्री १ गेहूं या जौ की बाल ।

२ एक प्रकार की सुगंधित वनौषधि विशेष।
३ बारह प्रकार की राशियों में से कन्या राशि।
४ बालों की लटी, जुल्फ, अलक।

सुंबौ-स.पु. [देश.] १ तोप की नाल को साफ करने का गज।
२ तोप की नाल को ठण्डा रखने के लिए नाल पर फैलाया या फेरा जाने वाला गीला कपडा।
३ एक औजार विशेष जो लोहे में छेद करने के काम आता है।

सुंभ-स. पु [स शुम्भ] देवी दुर्गा द्वारा मारा जाने वाला एक असुर विशेष।
उ० -१ देवी धूमलोचन हूकार धोस्यौ, देवी जाडबा मैं रकत बीज मोस्यौ। देवी मोडियौ साथ नीसुभ मोडै, देवी फोडियो सुभ जी कुभ फोडै। -देवि.
उ०—२ लोयरा-धूम्र लुलाय, सुभ निसुभ महारचा। रकत बीज आरोगि, मुड चडादिक मारचा। -मे. म.
उ०—३ दिनी मृत सुंभ निसुभ विदारि, कई रतवीज गई अड-कारि। मुणी जिण कीरत पीर ममाज, रजा जिण मीम धरी जमराज। - मे. म

सुंभघातरण, सुभघातणी, सुंभघातनी, सुंभघातिरण, सुभघातिणी, सुंभ-घातिनी-सं स्त्री [स शुभ+घातिन्+ई रा. प्र] शुभ नामक असुर का वध करने वाली देवी, दुर्गा।

सुंभनिसुभमांजणी-स. स्त्री [सं. शुभ+निसुभ+भञ्जो] १ दुर्गा।
२ पार्वती। (डि को.)

सुंभपुरी-स. स्त्री [स. शुभपुरी] शुंभ नामक राक्षस की पुरी।

सुंभमांजणी-सं. स्त्री. [स. शुभ+भाजणी रा.] शुभ नामक राक्षस का वध करने वाली देवी। (डि को)

सुंभमरदणी, सुंभमरदनी, सुभमरदिणी, सुंभमरदिनी-स. स्त्री. [स. शुभ+मर्दिनी] शुभ नामक राक्षस को मारने वाली देवी, दुर्गा।

सुंमड़ौ—१ देखो 'सुम' (अल्पा; रू. भे.)
२ देखो 'सूम' (अल्पा; रू. भे.)
उ० -कीठै आया छौ जावौ छौ कीठै पोळ मैं धसौ छौ क्युजी, कौ जी म्हानै म्हाकै धणी बैठाया की काज। चारणा भाटा नैं आधा आवादया जी चाल्या चाल्या, न दै म्हांनै सुंमड़ौ खावानै मेर नाज। -सुरतौ बोगसौ

सुंमरणौ, सुंमरबौ—देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)
सुंमरणहार, हारौ (हारी), सुंमरणियौ—वि०।
सुंमरिओड़ौ, सुंमरियोडौ, सुंमरयोड़ौ -भू० का० कृ०।
सुंमरीजणौ, सुमरीजबौ—कम वा०।

सुमरियोड़ौ—देखो 'समरियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. सुंमरियोडी)

सुंवरणौ, सुंवरबौ -१ देखो 'सवरणौ, संवरबौ' (रू भे)
२ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे)
सुंवरणहार, हारौ (हारी), सुंवरणियौ—वि०।
सुंवरिओड़ौ, सुंवरियोड़ौ, सुंवरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सुंवरीजणौ, सुंवरीजबौ कर्म वा०, भाव वा०।

सुंवराड़णौ, सुंवराड़बौ—देखो 'सवराणौ, सवराबौ' (रू. भे.)
सुंवराड़णहार, हारौ, (हारी), सुंवराड़णियौ—वि०।
सुंवराड़िओड़ौ, सुंवराड़ियोड़ौ, सुवराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
सुंवराड़ीजणौ, सुंवराड़ीजबौ—कर्म वा०।

सुंवराड़ियोड़ौ—देखो 'सवराधोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री सुवराडियोडी)

सुंवराणौ, सुंवराबौ—देखो 'सवराणौ, सवराबौ' (रू. भे)
सुवराणहार, हारौ (हारी) सुंवराणियौ—वि०।
सुवरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सुवराईजणौ, सुंवराईजबौ—कर्म वा०।

सुवरायोड़ौ—देखो 'सवरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुंवरायोड़ी)

सुवरावणौ, सुंवरावबौ-क्रि. स.—१ हजामत करवाना, दाढी बनाना, बाल मुडवाना।
उ०—परभात रा तुरक री मुहडौ नही देखता। दरबार री सईयत तुरक था तिणरी डाढी सुवरावता काना मैं मोती घालता। बाद-साह चाकरी बदलै अहदी मेलिया सौ भली तरह जापतौ करावता, खावण नै मोकळौ देता, पांणी खारौ पावतौ।
महाराजा स्रीपदमसिंह री बात
२ देखो 'सवराणौ, सवरावौ' (रू. भे.)
सुवरावणहार, हारौ (हारी), सुंवरावणियौ—वि०।
सुंवराविओड़ौ, सुंवरावियोड़ौ, सुंवराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सुंवरावीजणौ, सुंवरावीजबौ—कर्म वा०।

सुंवरावियोड़ौ-भू का. कृ.-१ हजामत आदि बनवाया हुआ, दाढी बनाया हुआ, बाल मुडवाया हुआ।
२ देखो 'संवरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुवरावियोडी)

सुंवरियोड़ौ -१ देखो 'संवरियोडौ' (रू भे)
२ देखो 'समरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुवरियोडी)

सुंवार—देखो 'सवार' (रू भे.)
उ०—करणौ रफड़-रफड, मल-मल न्हायौ-धोयौ अर मिळणै खातर मन रौ दीयौ सजोयौ। सुंवार कराई, साफ कपडा पैरचा अर फाजल रै कैया मुजब डील रै तेल-फलेल लगायौ। कांनां मैं सेंट रा फोवा टांग्या, हाथा रै मैंदी माडी अर रोजौ राख्यौ।
—दसदोख

सुंवारण—देखो 'सवारण' (रू भे)

सुंवारणौ, सुवारबौ—देखो 'सवारणौ, सवारबौ' (रू भे)

उ०—१ तठा उपरायत पाछलै पोहर री ढळती छाया री विसायत कीजै छै। देसौत सिरदार जाजळ मा पधारै छै। केस सुंवारै छै। मोगरै री वेल केवड़ै रै तेल सूं केस सुथरौ कीजै छै। दात रा छलां रा चदरा रा चखडी रा कागमिया सू केम सुंवारजै छै।

—रा. मा म

उ०—२ ताहरा घोडै नू खुरी कराई। काश्रळजी घोडौ खुरी करावता ताहरां मदा तग, पुस्तग, दूमची, आगवध तूट जावता, मु तूट गया। ताहरा दीकरा राजौ, मूरौ, नींवौ, बीजौ ही साथ हुतौ तैनू कह्यौ कै—थै फोज रौ मुहडौ झालौ, जितरै हू तग सुवार ल्या सु साथ ठैहराय न सक्यौ।—नैणसी

उ०—३ चेला चांटी माल सुंवारै, दास भाव नही कोय दुवारै। लाभ लोभ राखै मन माही, दया धरम कू पालै नाही।

—अनुभववाणी

उ०—४ अवहा वहि अण मिळता मिळस्या, मुखमिण सेभ सुंवारी। खेल करू आतम कै परचै, दूजा दाव निवारी।

—अनुभववाणी

उ०—५ आहत एक करत मन नाई, मै तै धसै पलारै। मब ही दुनियांदार आहतु, विण कर मूड सुंवारै।—अनुभववाणी

उ०—६ भाख फाटी। ताहरा वडारण आगा जगाया। सौ दोनु ढीलै अग जागिया। भरमल रौ कपड़ौ पोमाख वडारण सुवार डेरै लै हाली। मौ अमलां री खुमार सु पग ठाह न पडै छै। नीठ मोहल मैं लै गई। —कुवरमी साखला री वारता

सुंवारणहार, हारौ (हारी), सुंवारणियौ—वि०।

सुंवारिओड़ौ, सुंवारियोड़ौ, सुंवारचोडौ भू० का० कृ०।

सुंवारीजणौ, सुंवारीजबौ कर्म वा०।

सुंवारियोड़ौ देखो 'सवारियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवारियोडी)

सुंवारै, सुंवारौ - देखो 'सवारै' (रू. भे.)

उ०—१ नापौ कही भली बात सुवारै अरज करस्यू।

—नापै साखलै री वारता

उ०—२ उहा रा कही रे लोग सू रसतै रै लोग सुवारै एक दोय कजियौ कर कर सही जीत हुई आवै।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—३ इसी तरै मारै राजलोक री हुई। पाछै सारी आप-आप रै डेरै गई। कुवरसी भरमल रै मोहल पोढियौ। परभात सुंवारौ उठि नितकरम कर रावजी रौ मुजरौ कीयौ।

— कुवरमी माखला री वारता

ाळ—१ देखो 'सुवाळौ' (मह, रू. भे.)

२ देखो 'सुंआळ' (रू. भे.)

ाळौ-वि. (स्त्री. सुवाळी) १ कोमल, मुलायम।

मुहा.—सुंवाळी खेजडी माथै सै चढै=सीधे एव सयाने को सभी सताते है, कमजोर को सभी दवाते हैं।

२ चिकना, स्निग्ध।

स. पु.—लेप लगाये हुए ताने को साफ करने का एक ब्रुश जैसा जुलाहों का औजार जो मिवण घास की जड का बनाया जाता है।

रू भे.—सुंआळौ, सुहाळौ, सूवारौ, सूवालौ।

मह, —सुआळ, सुवाळ, सुहाळ।

सुंवौ देखो 'समौ' (रू भे.)

उ०—१ तिकौ तळाव किण भात रौ छै। राती वरडी रौ। पाडरौ नीर। पवन रौ मारियौ फीण आछटतो थकौ झोला खाय रह्यौ छै। लहरा लियै छै। अथग डोव छै। कडिया सुवै पाणी मै पैठा पगा रा नख झाखै छै। दूध रै भौळावै बिलाव वासीजै छै।

—रा मा स

उ०—२ आपणी फौज निबळी देखू छु। आ फौज सबळी छै। आपा रा लोक घाव लागत सुवा धरती पडै, उवै पूग लोहा लागा विढै छै। उवै फौज रौ धणी माहै ऊभो। ई वास्तै का तौ राजा नू चोट पोहचावौ, नही तौ म्है कांम आमा। फोज आपणी भाजसी।

—हाहुल हमीर री वात

सुस - देखो 'सूस' (रू. भे.)

उ० - १ करि सास्त्र साखि धरमसी कहै, भार अढार वनस्पती। विण लीया सुंस खाधा विगर, छहु रितु मै हिमा छती।—ध.व.ग्र.

उ० - २ करौ सुंस जेतै कहे, बोल बध सवि साच। हम मुसाफ उपारि है, विचला नहि वाच। प च चौ

सुसाड़ौ —देखो 'सूसाडो' (रू भे.)

उ०—सुसाडा करता रे, सुर सेस धरता रे। दस दिन का भूखा रे, खावण नै ढूका रे। कूकारौ पाडै कहै देव छोडावजी रे।

— जयवाणी

सुह- देखो 'सूस' (रू भे)

सुंहगौ—देखो 'सूगौ' (रू भे)

उ०—१ इम करता जो को मारइ, तउ जगि कीरति होई रे भाई। कन्या साटइ पामता, सुहगी कीरति सोई रे मारै।

- प च. चौ.

उ०—२ बाजरी चउला मउठ, के कै धान सुंहगा कीधा। सुहगा-मुहगा सरव, लोक तै आणी लीधा।—स. कु.

उ०—३ अठयासीयउ अन्न आणि, करइ वलि सुहगा काई। लागी लख्यापत्थि, किम्यु धास्यइ हौ साइ।—स कु

(स्त्री. सुहगी)

सुंहाळ—१ देखो 'सुआळ' (रू. भे)

२ देखो 'सुवाळौ' (मह, रू भे.)

सुहाली-स. स्त्री.-एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष।

उ०—सीरा फीणी सुंहालिया रे लाल, साबूनी सुखकार। इद्रसा नै दहीथडा रे लाल, इम पकवांन अपार।—प. च. चौ.

सुंहाळौ—देखो 'सुवाळौ' (रू. भे.)

उ०—पचरंग दीधा ढोलिया, पुतळी पागै जाए। सेझ सुंहाळी अति भली, रेसम वणियौ वाण।—ढो. मा.

(स्त्री. सुहाळी)

सुंहिणौ, सुंहीणौ—देखो 'सुहिणौ' (रू भे.)

उ०—मदक सूती सुंहिणौ लाधौ, लका लाखण आयौ। लाखण आयौ लका लीत्री, मायर मेत वधायौ।—मेहोजी गोदारौ

सु—स. पु. [सं. शु] १ पल। (एका.)

२ पलास। (,,)

३ चाद, चन्द्रमा। (,,)

४ शुक, तोता। (,,)

५ पत्थर, पाषाण। (,,)

६ कैलाश पर्वत। (,,)

सं. पु.—७ घोड़ा, अश्व। (,,)

८ नख, नाखून। (,,)

९ गधा। (,,)

१० समूह, झुण्ड। (,,)

११ मोर की तेज आवाज, कौहक। (,,)

[सं. सु] १२ रवि, सूर्य। (,,)

१३ ध्वनि, आवाज। (,,)

१४ कुल्हाड़ी, कुठार। (,,)

१५ छेदन। (,,)

१६ परशु। (,,)

१७ सुथार, बढई। (,,)

१८ सुन्दरता, खूबसूरती।

१९ उन्नति, प्रगति।

२० आनन्द, प्रसन्नता।

२१ समृद्धि।

२२ पूजा, अर्चना।

२३ कष्ट, तकलीफ।

२४ अनुमति, आज्ञा, सहमति।

वि.—१ अच्छा, भला।

२ अच्छा, बढिया।

३ श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ।

४ उत्तम, पवित्र।

५ सुन्दर, खुबसूरत।

६ सहज, सरल, आसान।

७ उचित, उपयुक्त।

८ अधिक, अत्यधिक, खूब।

उ०—पाछइ प्रोहित राखियउ, तेडचा मागणहार। जै भेदक गीता तणा, बात करइ सु विचार।—ढो. मा

सर्व.—१ स्व, अपना।

उ० – वळिबंध ममरथि रथ लै बैसारि, स्यामा कर साहै सु करि। बाहर रै बाहर कोड छै वर, हरि हरिणाखी जाइ हरि।—वेलि

२ उन, उन्हे, उन्होंने।

उ०—१ धरती जेहा भरखमा, नमणा जेहि केळि। मज्जीठां जिम रच्चणा, दई, सु सज्जण मेळि। – ढो. मा.

उ०—२ मारूराव 'मुकन्न' रै, खीची साथ 'मुकन्न'। सु तौ अर्जंगढ खान मू, मिळ पूछिया प्रसन्न।—रा. रू

३ वह, वे, मो।

उ०—सैसव सु जु सिसिर विलीन थयौ सहु, गुण गति मति अति गिरि। आप तणौ परिग्रह लै आयौ, तरुणापौ रितुराउ तिणि।—वेलि

उ०—२ रावळ दूदौ जसहड रौ। जसहड पाल्हण रौ। पाल्हण काल्हण रौ पोतरौ। तिण आयनै जेसळमेर सूनौ पडियौ हुतौ सु लै नै टीकै बैठौ। वरस १० दिन ७ राज कियौ।—नैणसी

उ०—३ आरोपित हार घणौ थियौ अतर, उरस्थळ कुभस्थळ आज। सु जु मोती लहि न लहै मोभा, रज तिणि सिर नाखै गजराज।—वेलि

उ०—४ सखी सु सज्जण आविया, हुंता मुझ्झ हियाह। सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह।—ढो.मा.

क्रि.वि.—एक अव्यय शब्द जो सज्ञावाची शब्दो के साथ कर्मधारय और बहुव्रीहि समासो मे एवं विशेषणवाची व क्रिया विशेषणवाची शब्दो के साथ व्यवहृत किया जाता है। इसके निम्नाङ्कित अर्थ होते है.—

१ भली-भाँति, अच्छी तरह।

२ सरलतापूर्वक, सरलता से।

३ इसलिए।

उ०—तरै चीबै सावतसी कह्यौ आहेडिए सूअर दोय हेरिया था तठै गयौ, हमार आवै छै। सु यू करता आथण हुवौ, तरै राणै वळै मानसिंघ नु याद कीयौ।—नैणसी

४ ही।

उ०—१ इणि परि ऊमा देवडी, जाणी मारूवत्त। सु प्रभाति कहिबा भणी, पिंगळ पासि पहुत्त।—ढो.मा

उ०—२ सैसव तनि सुखपति जोवण न जोग्रति, वेस सधि सुहिणा सु वरि। हिव पळ-पळ चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यान एहवी परि।—वेलि

उ०—३ वधिया तनि सरवरि वेस वधती, जोवण तणौ तणौ जळ जोर। कामणि करग सु बाण कांम रा, दोर सु वरुण तणा किरि डोर।—वेलि

अव्य०—१ पादपूरक वर्ण।

उ०—१ इहा सु पजर मन उहा, जय जाणइला लोइ। नयणा

आडा वीभ वन, मनहु न आडउ कोइ ।—ढो.मा.

उ०—२ थळ भूरा, वन भंखरा, नहीं सु चपउ जाइ । गुणै सुगंधी मारवी, महकी सहु वणराइ ।—ढो मा

रू.भे —सू

२ देखो 'सु' (रू भे.)

३ देखो 'इसु' (रू.भे.)

उ०—इसिउ विमासी मनि पारथ निद्रा, मेल्हि नरेंद्रं सु मत्रत्थमुद्रा । निद्रा ति वूमिइ हथियार छाडइ, कोई किही सिउ नीय भूझ माडइ ।—मालिसूरि

सुअटौ—देखो 'सूवटौ' (रू भे)

सुअणौ, सुअबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू.भे.)

उ०—महि सुइ खट मास प्रात जळ मजै, आप अपरस अरु जित इद्री । प्रागै वेलि पढता नित प्रति, त्री वछित ५ ‍ ‍छित त्री ।

—वेलि

सुअणहार, हारौ (हारी), सुअणियौ—वि० ।

सुयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुईजणौ, सुईजबौ—भाव वा० ।

सुअन—सं.पु. [स. सूनु] पुत्र, बेटा ।

सुअर—देखो 'सूवर' (रू.भे.)

उ०—उठै डोळै कन्है खादरियौ पगा सूं खैरू कियौ । खग संख सू लगावणौ लागियौ । सारा ठाकुर सुअर ऊपर आ घिरिया । इतरै 'सुअर वळै फौज सू भिळियौ सौ मारी फौज फरोळतौ-रु दळती फिरै छै ।—डाढाळा सूर री बात

सुअरड़ौ—देखो 'सूवर' (अल्पा, रू.भे.)

सुअरदंतौ—स.पु –एक प्रकार का वह हाथी जिसके दाँत पृथ्वी की ओर झुके रहते है । (ऐबी)

सुअवसर—सं.पु. [स] अच्छा मौका, अच्छा अवसर ।

सुआंन—देखो 'स्वांन' (रू.भे.)

सुआंमी—देखो 'सामी' (रू.भे.)

सुआग—देखो 'सुहाग' (रू.भे.)

सुआगत—देखो 'स्वागत' (रू.भे.)

सुआगौ—देखो 'सुहागौ' (रू.भे.)

सुआड़—देखो 'सुवावड़' (रू.भे.)

सुआड़ी—देखो 'सुवाड़ी' (रू.भे.)

सुआद—देखो 'स्वाद' (रू भे)

सुआर—सं.पु. १ नापित, नाई ।

उ०—आय छिपै पुर मै असुर, निम उर धार विचार । छाना सैंघ्रां छेडिया, संगि तेडिया सुआर ।—रा.रू

२ देखो 'संवार' (रू भे.)

सुआरथ—देखो 'स्वारथ' (रू.भे.)

सुआरथी—देखो 'स्वारथी' (रू.भे.)

उ०—आप सुआरथी मरौ आदमी, सत छौडै सौ मरौ सती । भणीयौ नही सौ मरौ भ्रहामण, जत्र-मत्र विण मरौ जती ।

—अग्यात

सुआरव—वि.–मीठे व मधुर शब्द करने या बोलने वाला ।

सुआल—स.पु. [अ.] १ खांसी ।

२ देखो 'सवाल' (रू.भे)

सुआवड़—देखो 'सुवावड़' (रू भे.)

उ०—हर दौ बरस री छेटी सू तीजा, चौथकी, पाचकी, आयचुकी, धापुडी, पप्पू अर मुनियौ धड़ाधड़ जनमता इज गया । हरेक सुआवड़ इण रै वास्तै मौत री घाटी वण नै आई पण भगवान इज लाज राखी नी तौ राम जांणै म्हारी काई हालत व्हैती ।—अमर चूनडी

सुआवत—देखो 'सूआवत' (रू.भे)

सुआसण, सुआसणी—देखो 'सवासणी' (रू.भे.)

सुआसणौ—देखो 'सवासणौ' (रू.भे.)

सुआसन—स.पु. [स.] १ बैठने के लिए सुन्दर आसन ।

२ देखो 'सवासणी' (रू.भे.)

सुआसिण, सुआसिणी—देखो 'सवासणी' (रू.भे.)

सुआहित—स.पु. [स.] तलवार के ३२ हाथों मे से एक हाथ, तलवार का एक प्रकार का दाव ।

सुइ—१ देखो 'सूई' (रू.भे.)

२ देखो 'सुचि' (रू.भे.)

३ देखो 'स्रुति' (रू.भे.)

सुइच्छा—स. स्त्री. [स.] १ अच्छी भावना, सद्भावना ।

उ०—सिच्छा स्वय सिच्छा सिच्छा दीनी सेन सिच्छा सत्रू, इच्छा स्वय इच्छा की सुइच्छा अभिलाखी तै । सत्य मै प्रमत्त सूर दूर ह्वौ असत्य देख, सत्य सत्य साखी भयौ राजी सत्य साखी तै ।

—ऊ.का.

२ स्व-इच्छा, अपनी इच्छा ।

उ०—औ तत्मत इच्छा विचरत सुइच्छा जन विखै, लखै द्रस्टि करम परमेस्टी पुनि लिखै । तुही सरजै पाळै हनि पुनि सभाळै उतपती, अई इदू अबा जयति जगदबा भगवती ।—मे.म.

सुइणौ, सुइबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू.भे.)

उ०—१ अभिग्रह लीधा हौ कुमरी मदालसा, प्रीतम न मिलइ जाम । सुइवौ हौ धरती निरती चूप सु, जपती रहुं प्रिय नाम ।

—वि.कु.

उ०—२ कर मुकावण अवसरै रे, काइ अरधौ दीधौ राज रे । वलि ग्रह निज पुत्री तणी रे, काइ दीधौ सुइवा काज रे ।

—वि.कु.

सुइणहार, हारौ (हारी), सुइणियौ—वि० ।

सुइयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुईजणौ, सुईजबौ —भाव वा० ।

सुइयोड़ौ—देखो 'सूवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुइयोडी)

सुइयौ—देखो 'सूवौ' (रू.भे.)

सुई—१ देखो 'सूई' (रू.भे.)

उ०—१ आख्या मै **सुइयां** मह्, सूली मह पचास । आं दुखड़ौ कंमै मह्, पिव औरा कै पास ।—अग्यात

उ०—२ खुद नी गुरुजी बैंगण खावै, दूजा नै परमोद बतावै । ग्वैरणी सुई नै हूमै, तवौ हाडी नै काळी बनावै ।—फुलवाडी

२ देखो 'सुचि' (रू.भे.)

३ देखो 'स्रुति' (रू.भे.)

सुएँन—सं.पु.—सूर्य, रवि, सूरज । (ना मा)

सुऔ—देखो 'सूवौ' (रू.भे.)

उ०—भवारै हौ भवरौ गवरल है फिरी, हाजी वैरी लिलवट आगळ चार । आखडिया रतनै जडी, होजी वैरी नाक **सुआ** री चोंच ।—लो.गी.

सुऔरोग—स.पु.—सूतिका रोग ।

सुकट,सुकंठ—स.पु. [सं. सुकठ] किष्किधा नरेश वाली का भाई सुग्रीव ।

उ० —१ गोपाळ गोव्यद खगेस-गामी, नागेस सज्या क्रन सैन नामी । है जग वागा दसमाथ हता, साहेस वाछल्य '**सुकठ**' मीता ।

—र.ज.प्र.

उ०—२ अत हेत अहेस **सुकंठ** अनै, करुणानिध स्री रघुवीर कनै । दिल मोद महादिल आयर दोई, भेद सकोई भाखियौ ।—र.रू

२ सुरीली आवाज, मधुर ध्वनि ।

रू.भे. - सुकठी ।

सुकठी वि.स्त्री. १ मधुर कठ वाली, सुरीली आवाज वाली ।

उ०—कोकिल कठ **सुकंठी** कामिणी, गुणवती उतिम गज गामिणी । सुख समिहर जोवण मदमत्ती मोवन मै आभूखण सोहै, म्रिघलोचनी रा मन मोह ।—ल.पि

२ देखो 'सुकठ' (रू.भे.)

उ० - मिळ कपि हणुमत **सुकठी** स्यता, चोपट मारै बाळ अचता । दान भभीखण लक दीयता, बध पाज जळवानूंदा ।—र ज.प्र.

सुक—सं.पु [स. शुक] (स्त्री. सुकी) १ तोता, कीर, सुग्गा ।

(अ.मा,डिं.को.)

उ०—१ वर्णै कोकिला मोर चाकोर वाणी, सुक सारिकायं सुवायं सुहांणी । सुखै वैण कारडव कोक सहै, वळै जीह सू प्रीय बाबीय वदै । - रा.रू.

उ०—२ नासिका **सुक** चच सारखी, मुगतफळ सजोति । अहिर विद्रम ओपमा, जेहा डसण हीरा जोति ।—रुकमणीमगळ

२ रावण का एक अमात्य जो अपने सारण नामक मित्र के साथ उसके गुप्तचर का काम भी निभाता था ।

३ सोच, फिक्र । (डिं.को.)

४ कई सुगन्धित पदार्थों का मिश्रण ।

५ फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक योग ।

(ज्योतिष बालबोध)

रू भे.—सुक्क, सुग्ग, स्रुक ।

६ देखो 'सक्र' (रू.भे.)

उ०—वडपुरी **सुकं** कवि लघु अकल वाणि ।—रामरासौ

७ देखो 'सुकदेव' (रू.भे.)

उ०—१ कहि सिक सनकाद ध्रू प्रहलाद, अहयत आद जेण जपै । **सुक** नारद व्यास जळ कहि जास, फिर कर नाम दास थपै ।

—र ज.प्र.

उ०—२ दधि वीगि लियौ जाई वणतौ दीणौ, माखियात गुण मैं ममत । नासा अग्रि सुताहळ विदिसति, भजति कि **सुक** मुख भागवत । - वेलि

८ देखो 'सुक्र' (रू.भे.)

९ देखो 'सुख' (रू भे.)

सुकड़णौ, सुकड़बौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडबौ' (रू.भे.)

उ०—म्है अवार ताणी उठै ईज **सुकड़नै** बैठग्यौ ।—तिरसकू

सुकड़णहार, हारौ (हारी), **सुकड़णियौ**—वि० ।

सुकड़िओड़ौ, सुकड़ियोड़ौ, सुकड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुकड़ीजणौ, सुकड़ीजबौ—भाव वा० ।

सुकड़ाणौ, सुकुड़ावौ—देखो 'सिकुड़णौ, सिकुड़बौ' (रू भे)

सुकड़ाणहार, हारौ (हारी), **सुकड़ाणियौ**—वि० ।

सुकड़ायोडौ - भू०का०कृ० ।

सुकड़ाईजणौ, सुकड़ाईजबौ—भाव वा०।

सुकडायोड़ौ—देखो 'सिकुडियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री. सुकुडायोडी)

सुकडावणौ, सुकड़ावबौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडबौ' (रू.भे.)

सुकडावणहार, हारौ (हारी), **सुकड़ावणियौ**—वि० ।

सुकडाविओड़ौ, सुकड़ावियोड़ौ, सुकडाव्योड़ौ—भू०का०कृ०

सुकड़ावीजणौ, सुकड़ावीजबौ—भाव वा० ।

सुकडावियोड़ौ - देखो 'सिकुडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. सुकड़ावियोडी)

सुकडियोड़ौ—देखो 'सिकुडियोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकड़ियोडी)

सुकचण—देखो 'सकुचण' (रू.भे.) (डिं.को.)

सुकचाणौ, सुकचाबौ—देखो 'सकुचणौ, सकुचबौ' (रू भे.)

सुकचाणहार, हारौ (हारी), सुकचाणियौ—वि० ।

सुकचायोड़ौ - भू०का०कृ० ।

सुकचाईजणौ, **सुकचाईजबौ**—भाव वा०।

सुकचायोड़ौ - देखो 'संकुचियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकचायोड़ी)

सुकच्छ, सुकछ—वि. स्त्री. [स. सु+कच] १ अच्छे केशों वाली।
उ०—नमणी, खमणी, बहुगुणी, सुकोमळी जु **सुकच्छ।** गोरी गगानीर ज्यू, मन गरवी, तन अच्छ।—ढो.मा.
[स. सु+कक्ष] २ सुन्दर कक्ष वाली।
३ सुन्दर वस्त्रों वाली।

सुकजाणौ, सुकजाबौ—देखो 'सकुचणौ, सकुचबौ' (रू.भे.)
सुकजाणहार, हारौ (हारी), सुकजाणियौ—वि०।
सुकजायोड़ौ—भू०का०कृ०।
सुकजाईजणौ, सुकजाईजबौ—भाव वा०।

सुकजायोड़ौ देखो 'सकुचियोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री सुकजायोडी)

सुकटि—वि.स्त्री [स.] जिसकी कमर सुन्दर हो, अच्छी कमर वाली।
स.स्त्री १ अच्छी कमर, सुन्दर कमर।
२ सुन्दर कमर वाली स्त्री।

सुकतज, सुकतिज—देखो 'सुक्तिज' (रू भे.) (अ मा, डि.को.)

सुकतंड, सुकतुंड—स.पु [स शुकतुड] १ तोते की चोच।
२ तात्रिक पूजन मे बनाई जाने वाली हाथ की एक मुद्रा विशेष।
वि.—तोते की चोच के समान सुन्दर नाक वाला।

सुकथ, सुकथन—स.पु. [स. सुकथन] १ गुण-कथन, कीर्तिगान।
२ कीर्ति, यश।
उ०—धना हाथ कमधजां महाभडा सूरधीरा, किथा पाथ जेम हुइ भारथा कहाय। **सुकथां** रहावै इळा चौकूठ रा सूरां सारू, रभ सथां रथै बैठा दुनै मारु-राव।—चतुरौ खिड़ियौ
३ अच्छी बात या चर्चा।
४ कहने का सुन्दर तरीका, ढग या प्रणाली।

सुकथा—स.स्त्री. १ अच्छी बात, चर्चा या प्रसग।
२ कोई प्रेरणाप्रद कथानक।

सुकदायक—देखो 'सुखदायक' (रू.भे.)
उ०—मोरा मेह मछा जळ मानै, करै नही विहगा व्रछ कानै। 'चापा' ज्या सूरज चकवानै, **सुकदायक** आदू सकव्यां नै।
—भभूतसिहजी रौ गीत

सुकदेव—स.पु —पुराणो के भारी वक्ता एव ज्ञानी एक मुनि जो कृष्ण द्वैपायन व्यास के पुत्र थे।
उ०—१ अहौ निस कागभुसुंड आराध, पढै तौ नाम सदा प्रहळाद। जपै **सुकदेव** जिसा जोगेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।
—ह र.
उ०—२ **सुकदेव** व्यास जैदेव सारिखा, सुकवि अनेक तै एक सथ। त्री वरणण पहिलौ कीजै तिणि, गूथियै जेणि सिगार ग्रंथ।
—वेलि
रू.भे.—सुखदे, सुखदेव।

सुकन—वि. [स. सु+कर्ण] जिसके कान सुन्दर हो।
स.पु.—१ अच्छे कान।
२ देखो 'सुगन' (रू.भे.)
उ०—१ सूर न पूछै टीपणौ, **सुकन** न देखै मूर। मरणा नूं मंगळ गिणै, समर चढै मुख नूर।—बा.दा.
उ०—२ राजि उठा हुंती भलै मुहूरत खडिया छै, पातिसाहजी सू घणौ सुख हुयौ छै, भला **सुकन** हुया छै, राजि न पधारै। ताहरा मुहूर्त रै पालियै राजि पगै लागण न पधारिया।—द.वि

सुकनभेंट—देखो 'सुकुनभेंट' (रू.भे)

सुकनाई—देखो 'सुगन' (रू.भे)
उ०—आगम काग उडाय, सदा लेती **सुकनाई**। रुकम चच पर रजत, बोल वरदाती बाई। आगम काग उडाय, नित तुम बाट निहारी। वर 'जीवा' वासतै, राधै जिम कुज विहारी।
—अरजुणजी बारहठ

सुकनाधिप, सुकनाधिपत, सुकनाधिपति, सुकनाधिपती—स.पु
[स. शकुन+अधिपति] पक्षिराज गरुड।
उ०—बाळमीक पुळिद रिखी बाणौ, कीधौ गुरु **सुकनाधिप** काणौ। भख ओठित बोर करा कर भीलण, प्रेम घणा पद अप्पिया।
—र ज.प्र.

सुकनासी—वि. [स शुक+नासिका] तोते की चोच तुल्य नाक वाला, सुन्दर नाक वाला।
स.पु.—तोते की चोच तुल्य नाक।

सुकनी सं.स्त्री [स. सुकन्या] १ पुत्री, कन्या।
उ०—नीराजन मुख विधि नियम, साधि लगन पळ साच। कन्ह कवरि लाल **सुकनी**, आपी 'खेतळ' आच।—वं भा
२ देखो 'सकुनि' (रू.भे.) (अ.मा.)
३ देखो 'सुगनी' (रू.भे.)

सुकन्या—स.स्त्री. [स.] १ च्यवन ऋषि की पत्नी और शर्याति राजा की कन्या।
२ अच्छी कन्या, शुभ गुणो वाली कन्या।

सुकपिच्छक—स.पु. [स. शुकपिच्छक] गन्धक। (डि.को.)

सुकप्रिय, सुकप्रिया—स.स्त्री. [स. शुकप्रिय] अनार, दाड़म। (अ.मा)

सुकमळाकारी—स.पु.—एक प्रकार का शुभ लक्षणो वाला घोड़ा।
(शा हो.)

सुकमार—देखो 'सुकुमार' (रू.भे) (ह.नां मा.)
उ०—भामणि रा **सुकमार** भुज, साहब गळै सुहाय। जाण नाळ जळजात रा, काम पताका काय।—बा.दा

सुकमारता—देखो 'सुकुमारता' (रू.भे.)
उ०—अधर प्रवाळ सरीखा वणिया, दत जाणै हीरा री कणिया। बाह जिकै तौ चपा री डाळ, हात पग री **सुकमारता** जाणै कमळनाळ।—र. हमीर

सुकमाळ, सुकमाल — देखो 'सुकोमळ' (रू.भे.)

उ०—१ चदवदगा, अगलोयणी, भीमुर ससदळ भाळ। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ गरभ **सुकमाळ**।—ढो.मा.

उ०—२ कोईक कासरा मुख सू इम कहै रे, दीसै नान्हडियौ **सुकमाल** रे। कुटुब कबीलो किण विध छांडियौ रे, किण विध तोडयौ माया जाल रे।—जयवांणी

उ०—३ सोवन भारी जल भरी रे लाल, कनक कचोला थाल। लै आवै भावै घणै रे लाल, कामणि अति **सुकमाल**। —प.च.चौ.

उ०—४ धनख ज्यू ही भूहरा री खच, नासिका जि सूवा री ही चच। अधर प्रवाली जिमा बणिया, दात जाणै हीरा री कणिया। वाहू तो चपा री डाल हाथ पग जिकै कमळ सू ही **सुकमाल**।

—र हमीर

सुकमाळी, सुकमाली —देखो 'सुकामळ' (रू.भे.)

उ०—ए मदिर मालियां रे, ए **सुकमाली** सेज रे। कुकुम वरणी सा सुदरी रे, मति मूको अबला मू हेज रे। - जयवाणी

सुकमुख—वि. [स शुक+मुख] १ जिसका तोते के समान मुख हो।

२ टेढ़ा, कुटिल।* (डि.को.)

स पु.—तोते का मुख।

सुकर—स पु —१ वरछी, भाला। (ना डि.का.)

२ हाथ, कर। (डि.को.)

उ०—१ **सुकरै** गिर साहे सीस सबाहे, राखि व्रज ब्रजराज। सुरलोकि सराहै मो मन माहै, ताइ प्रभू सिरताज।- पि.प्र

उ०—२ आकुळत व्याकुळत चलत नह आंवणौ, पीव किण भात आराम पामै। **सुकर** दै मकरचा नैण मूरै सची, नागणी नाग सिर घडा नामै।—महाराणा राजसिहजी रौ गीत

उ०—३ इळा नभ भाळ पाताळ खप उपावण, कपावण काळ विकराळ कै केवी। **सुकर** प्रतमाळ किरमाळ जुग सम्हणी, दिपै डाढाळ घडियाळ देवी। —खेतसी बारहठ

उ० ४ काळ गिरद अथहा कळोधर, प्रतपाळा बधन महाराज। सुरियद भूप 'अमर' निज **सुकरां**, भाजै कुरद विया भाराथ।

—महाराणा अमरसिहजी रौ गीत

वि.—१ सहज, सरल।

२ सहज साध्य।

३ देखो 'सुक्र' (रू भे.)

उ०—१ आराधी ईसरि सदै महेसरि, पैठिसै कीरति परमेसर। जप सै जोगेसर **सुकर** सैनीछर, सस रुमेसर नै ससिहर। —पी ग्र.

उ०—२ बळि राजा छळिया बहनामी, निबिळै मैं दोइ ब्रिख नाखि। एक कीयै तै इदरै ऊपर, एक **सुकर** री काढी आखि।

—पी.ग्र

उ० ३ **सुकर** छाई वादळी, रही सनेसर छाय। डक कहै भडळी वा, वरस्यां विना न जाय। दीवा वीती पचमी, सोम **सुकर** गुरु मूळ। डंक कहै है भडळी, निपजै सातू तूळ। सोमां सुकरां सुर गुरा, जै चंदो ऊगत। डक कहै है भडळी, जळ थळ एक करत।

—वर्षा विज्ञान

४ देखो 'सुवर' (रू.भे)

रू.भे.—सुकरि।

सुकरणी—स.पु [स. सु—कर्मन्] अच्छे कर्म, अच्छे कार्य, शुभ कार्य।

उ०—करौ कथ केवडी, करो मत सील **सुकरणी**। करौ जीभ जीकार, करौ उदिया घट करणी।—सुरजनदास पूनियौ

सुकरत — देखो 'सुक्रत' (रू भे)

उ०—१ अवनी मैं जिकै भलाई आया, करै सदा **सुकरत** रा काम। दान सदा दित मारु देवै, नित रमणा लेवै हरिनाम।

— र.ह.

उ०—२ निसचर! पाप किया जै सुख हुवै, रावण! **सुकरत** करै न कोय। अभिमानी कुमती रे, निसचर कुमती, म्हारा प्राणा रा प्रीतम सू म्हारा सुखडा रा सागर सू विछवौ थैं कीयौ।

—गी रा.

उ०—३ नित जप जप जगनायक, वायक सत कहण सुजस कमळावर। **सुकरत** करग मदीवत, मोहत श्री करत सत पुरस।

—र ज प्र.

सुकरतळ—स पु—छप्पय छन्द का ४५वां भेद जिसमें २६ गुरु, १०० लघु से १२६ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। (र.ज.प्र)

सुकरति, सुकरती — देखो 'सुक्रत' (रू.भे.)

उ०—धीरम, धरिया ही रहा, का पुरसा का माल। **सुकरति** मोदा कर गया, जै माई का लाल।—अग्यात

सुकरम—स.पु [स सुकर्मन्] अच्छा कार्य, सत्कर्म।

सुकरमा—स पु [स.वि सुकर्मिन्] १ अच्छा कार्य करने वाला, पुण्य-कार्यकर्त्ता व्यक्ति।

२ विपकभ आदि सत्ताईस योगो में से सातवाँ योग। (ज्योतिष)

३ विश्वकर्मा।

४ विश्वामित्र।

सुकरमी—वि [स. सुकर्मी या सुकर्मिन्] १ अच्छा कार्य करने वाला।

२ पुण्यवत कार्य करने वाला, पुण्यात्मा।

३ सदाचार का पालन करने वाला सदाचारी।

रू.भे.—सुक्रमी।

सुकरवार—देखो 'सुक्र' (रू भे.)

सुकरांणौ—स पु—१ किसी कार्य के सम्पन्न होने पर कार्य-सम्पादन म सहायकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के शब्द।

२ उक्त कृतज्ञता या धन्यवाद के रूप मे दिया जाने वाला धन।

३ राजाओ या जागीरदारों द्वारा लिया जाने वाला एक प्रकार का कर विशेष।

वि.वि —यह कर आबादी की भूमि का पट्टा (अधिकार-पत्र) करने

पर राजा या जागीरदार द्वारा भूमि-क्रेता से वसूल किया जाता था, जो प्राय विक्रय-मूल्य के दसवे भाग के बराबर होता था।
रू भे —सकराणौ।

सुकराचारि, सुकराचारिय, सुकराचारी, सुकराचारच—
देखो 'सुक्राचारच' (रू भे)

सुकरि —क्रि वि –१ शीघ्र, जल्दी।
२ देखो 'सुकर' (रू.भे)

सुकरियप्रस्ट—स पु.–सूर्य, भानु (अ मा.)

सुकरिया—देखो 'सुक्रिया' (रू भे)

सुकलंबर, सुकलंबरा- देखो 'सुक्रांबर' (रू भे)

सुकळ, सुकल—वि. [स. सुकल] १ अपने धन का सद्व्यय करने वाला।
२ कोमल, मधुर एव अस्फुट स्वर करने वाला।
[स शुक्ल] ३ साफ, स्वच्छ, उज्ज्वल। (अ मा; ना मा)
उ०—बोलति मुहुरमुह विरह गमै बै, तिसी **सुकळ** निमि सरद तणी। हंमणी तै न पासै देखै हम, हस न देखै हसणी।
—वेलि
४ श्वेत, सफेद, धवल। (डि को, ह.ना.मा.)
५ चमकीला, चमकयुक्त।
६ सत्त्व गुणो से सम्बन्धित, सात्विक।
७ दोपरहित, निर्दोष।
८ शुभ, लाभकर।
९ पवित्र, उत्तम।
उ०—अनत सकति कउ निवास, अनंत मुक्ति सुख विलास। अनत बीरज अनत धीरज, अनत **सुकल** ध्यान री।
—स कु
१० प्रकाशमान, प्रकाशयुक्त।
स.पु.–१ ब्राह्मणो की एक पदवी।
२ देखो 'सुकळपख' (रू.भे.)
उ०—विन्है पख क्रसण **सुकल** निधांन, विन्हे वपु अग सुदक्षिण वाम। ब्रह्मा दक्षण अग वदीत, निपायौ दक्ष प्रजापति मीत।
—रा. वसावळी
३ घोडे के तालु कण्ठ मे होने वाली भँवरी (चक्र) जो कि अति शुभ व कीर्ति प्रदीपनी मानी गई है। (शा.हो.)
रू.भे —सुक्र।

सुकळपंग, सुकळपाग—देखो 'सुक्राग' (रू भे.) (ना.मा.)

सुकळपक्ष, सुकळपख, सुकळपख्य—स पु. [स. शुक्ल पक्ष] प्रत्येक पक्ष का उत्तरार्द्ध भाग, सुद पक्ष, इसमे प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का समय होता है। एक चन्द्रमा की कलाये प्रतिदिन बढती रहती है।
उ०—माह मास व्रतमांन, अरक बैठौ उत्तराइणि। **सुकलपख्य** रिति मिसिर, महासुभ जोग सिरोमणि।—ल.पि.
रू.भे.—सुकळ, सुक्र, सुकळपक्ष, सुक्रपख।

सुकळांग, सुकलांग—वि. [स. शुक्ल+अग] १ गौर वर्ण।
उ०—निकाळण वक जरमन तणौ नौह थौ, बबर अणसंक पतसाहचै बैल। अपत **सुकलांग** कोमंड सर नीछटण, उवह पत्र लदन तै रूप ऊझेल।—किसोरदान बारहठ
२ देखो 'सुक्राग' (रू.भे)

सुकळाबर, सुकळाबरा, सुकळा अंबर—देखो 'सुक्राबर' (रू भे.)
उ०—वीणाप सक्त हात वीमाळौ, **सुकळा अबर** आणद सीदी। मुकतागळ जयै उजळ माळौ, सारद तुज नीमामी नमस्तै।
—रामदान लाळस

सुकळापंग, सुकळापाग देखो 'सुक्राग' (रू.भे.) (अ मा; ना मा.)

सुकळी—स स्त्री [स शकुलिन्] मछी, मछली। (अ.मा.)

सुकळीण, सुकलीण, सुकळीणौ, सुकलीणौ, सुकलीन—देखो 'सुकुलीण' (रू भे.)
उ०—१ जै **सुकलीण** साहमी, मुवा न मूकै माण। मसतक उपराठो हुओ, तणौ विसलहू आण।—बा.दा. ख्यात
उ०—२ प्रसणा घर घूसतै 'पतावत', सबळ वरद लीधा **सुकळीण**। 'जोधा' रहे बगतरा जडिया, जडीया रहे अहासा जीण।
—माधौसीघ रो गीत
उ०—३ आणदीधौ लीजै त्रणौ, तौ ही अदत्तादान रे। एम विचारी परि हरै **सुकलीणौ** कुमर सुजाण रे।—वि.कु.
उ०—४ धन दिहाडौ धन घडी, धन मुहुरत धन वार। **सुकळीणी** मुदर तणी, सायब पूछी सार।—अज्ञात
उ०—५ मोल स्रगार सझि करी, **सुकलीणी** सुविलासौ रे। जाणै झबकी बीजली, आवी प्रीउ नै पासौ रे।—प.च चौ
(स्त्री सुकळीणी, सुकलीणी, सुकलिनी)

सुकळीपांग—देखो 'सुक्राग' (रू भे.)

सुकळौ, सुकलौ—देखो 'सुकुळीण'।
उ०—पांहण कु पूजै दुनी, करि करि कुळ का देव। हरिया **सुकळा** छाडिकै, करि निकुला की सेव।—अनुभववांणी

सुकव - देखो 'सुकवि' (रू.भे.) (अ मा.)
उ०—मथाण्यौ भाग धिन क्रपा फुरमावियौ, तोर बाझवियौ **सुकव** ताई। साम्हळै वीनती धाबिया सुगणी, बैठ रथ आविया उठै वाई।—खेतसी बारहठ

सुकवाह, सुकवाहण, सुकवाहन—स.पु [स. शुकवाहन] तोते पर सवारी करने वाला, कामदेव।

सुकवि, सुकवी स.पु. [स सुकवि] १ उत्तम काव्यकर्त्ता, अच्छा कवि। (डि.को.)
२ चारण।
उ० १ केईथोक निही नन पार कोड, सरब बात गाची सिही। किमि करि प्रणांम कीजै **सुकवि**, नरहर रै इतरौ निही। – पी.ग्र.
उ०—२ मारुधरा देस रै माही, **सुकव्यां** खुडद बसाई। रतनू साख

लाख रंग लागै, कुळ म कसर न काई।—मे म.

उ०—३ अविनासी अविकार असीमा, सुभ गुण दियण अनुग्रह सीमा। पूरण उरस पुराण प्रमेसर, सुकवि सधार वार अग्रेस्वर।

—रा.रू.

३ पण्डित। (ह.ना मा)

रू भे.—सकव, सकवि, सकवी, सुक्व।

सुकसार—स स्त्री.—मछ्ली, मछली। (अ मा)

सुकसारकाप्रलापण, सुकसारिकाप्रलापण, सुकसारिकाप्रलापन—स पु. [स. शुक सारिका प्रलापन] १ तोता-मैना को पढाने की क्रिया। २ स्त्रियों की ६४ कलाओं मे से एक।

सुकाज—स.पु [स. सुकार्य] १ भलाई, उपकार।

उ०—१ सासी कह्यौ—थू म्हनै ग्रैडी अबूझ जाणी है काई। किणी दूजा रै भरोसै म्हैं थनै आ सीख नी दी। म्हनै सपना मैं ई औ पतियारो नीं हौ कै म्हारौ धन सुकाज सारू बरतीजैला।

—फुलवाडी

२ यश, कीर्ति। (अ मा)

३ अच्छा कार्य।

क्रि वि –लिए, हेतु।

उ०—सहा दिय मान करि गृह मीत, तारै सह बीर कुटुम्ब सहीत। करै कपि मित्र सुग्रीव सुकाज, रहच्चै बाळि दियौ कपि राज।

—ह.र

रू भे —सुकारज।

सुकाणौ, सुकाबौ देखो 'सुखाणौ, सुखाबौ' (रू भे)

उ०—भीना चीर सुकायवा, रईय गुफा मै राजुल रग कि। रहनै मैं काउसग रह्यौ, अवलोकी कह्यौ सुंदर अग कि।—ध व ग्र

सुकाणहार, हारौ (हारी), सुकाणियौ वि०।

सुकायोडौ -भू०का०कृ०।

सुकाईजणौ, सुकाजबौ—कर्म वा०।

सुकात—वि –नष्ट होने वाला, नश्वर।

उ०—काळ है कराल औ कराळ भाभरचौ, दूसरे मरै विहाल हू डरचौ। यादि नै सुकात गात जात जी जरचौ, पाहि मा अचाहि आहि आपना सरचौ।—ऊ का

सुकातज, सुकातिज—स पु [स शुक्तिज] मोती।

सुकाय—वि –१ बडे आकार का, दीर्घकाय।

२ सुन्दर व श्रेष्ठ शरीर वाला।

३ दृढ, मजबूत, सशक्त।

उ० – नमौ प्रहळाद उबारण स्रम्म, नमौ अग कामव मारण ग्रम्म। नमौ कमठाधर रूप सुकाय, नमौ मदराचळ पीठ भ्रमाय।

—ह.र.

सुकायोडौ—देखो 'सुखायोडौ' (रू.भे)

(स्त्री. सुकायोडी)

सुकारज—देखो 'सुकाज' (रू.भे.)

सुकारथ—देखो 'सुक्यारथ' (रू भे.)

सुकारथौ—देखो 'सुक्यारथौ' (रू.भे)

(स्त्री सुकारथी)

सुकाळ, सुकाल—स पु [स सुकाल] १ दुष्काल का उलटा, सुभिक्ष।

उ०—ग्रभै नद ग्राम न ग्राम निराम, बस्यौ हरिराम ग्रभै पद वाम। दुरामद मारग ग्राम दुकाळ, सुधा झडि बारह मास सुकाळ।

—ऊ का

२ वह समय जो अन्न आदि की उपज की दृष्टि से उत्तम व अनुकूल हो।

उ०—पोकरण सुकाळ हुवै नै सखरी नीपजै तौ रुपिया १५०००) ऊपजै नै पातसाही तरफ सुनसब मैं दाम लाख ८००००००) मे छै। तिण रा रुपिया २०००० हुवै।—मारवाड री ख्यात

३ प्रचुरता, बहुतायत।

रू भे —सक्काळ, सुगाळ।

सुकावणौ, सुकावबौ—देखो 'सुखावणौ, सुखावौ' (रू.भे)

सुकावहार, हारौ (हारी), सुकावणियौ—वि०।

सुकाविग्रोडौ, सकावियोडौ सुकाव्योडौ—भू०का०कृ०।

सुकावीजणौ सुकावीजबौ—कर्म वा०।

सुकावियोडौ—देखो 'सुखायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सुकावियोडी)

सुकित्ति—देखो 'सुकीरति' (रू भे)

उ०—गुमान मोडि हत्थ जोडि देव कोडि वग्ग ए, अनूप भूप चूप धारि आइ पाइ लग्ग ए। पहू बहू सुकित्ति नित्त सव्व सोभ लायक, प्रगट्ट देव नित्त सेव सेव पास नायक।—ध व ग्र

सुकिय—देखो 'स्वकीय' (रू भे) (डि.को.)

सुकिया—देखो 'स्वकीया' (रू भे.) (डि.को.)

उ०—१ सुकिया मिळ जूथ अनेक करै सुख, रवि नाम नरद सुरच द तणी रुख। चत्र जाम वितीत उदोत जगाचख, सखि रीझ विदा किय तीस छहै सख।—सू प्र.

उ०—२ सखि बत्तीस नव सात, मिळै सुकिया जुथ मेळा। वाणी कोकिळ विमळ, चवै चदवदन सचेळा।—सू प्र.

उ०—३ सुकिया समूह मिळ नेह सुख, व्रत गायन आणद मैं। सुरराज जेम नरराज सुख, 'ग्रभमाल' राजस इद मैं।

—सू.प्र

उ०—४ बाजत्र बजन विसाळ, रस रागरग रसाळ। मिळ झूळ सुकिया वाम, क्रन रूप रति जिम काम।—सू प्र.

सुकियाग्ररथ, सुकियारथ, सुकियारथौ—देखो 'सुक्यारथ' (रू.भे.)

उ०—१ जिण दिन रघुवर जपै, सुकियाग्ररथ दिवस सोय नर सभळ। दरवै न राघव जिण दिन, जाणै सोय ग्राळजजाळ।

—र ज.प्र.

उ०—२ आज जनम सुकियारथउ रे, भेट्या स्रीजिनराय। प्रभु सु मन लागौ, खिण इक दूरि न थाय।—वि कु.

उ०—३ आया सिवपुरी हूग्रौ कारिज सिध, परमगुरू चा ग्रहिया पगि। माहोमाहि करइ वाता मिळि, जनम सुकियारथ हूग्रौ जगि।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ प्रथमी पावडेह, भुंय उपरि भुविया घणा। सुकियारथा जकेह, तौ दिस दीन्हा देवजी।—वील्हौजी

उ०—५ सीस गयौ सुकियारथौ, उणि सुदरि अरथाय। मीम पखै हि सारिस्या, सीत सहै सिर जाय।—मेहोजी गोदारौ

(स्त्री सुकियारथी)

सुकिरत, सुकिरति सुकिरित सुकिरिति—देखो 'सुकीरति' (रू.भे)

उ०—केहिक होवै तौ सुकिरिति कर्‌या, जरणा रै वाता सहि जर्‌या। डाकण छै ममता थी डर्‌या, त्रीकम मा कितराई तर्‌या।
- पी ग्र

सुकीय—देखो 'स्वकीय' (रू भे.)

सुकीया—देखो 'स्वकीया' (रू भे)

उ०—समर भडा सुकीया सुदरीया, चँवै कवर परगह सुचोख। अफर मत्रा आराण नर अवरा, दीठा तिया वळागौ दोख।
— तेजसी खिडियौ

सुकीरत, सुकीरति, सुकीरती—स स्त्री. [स सुकीर्त्ति] १ सुयश, यश, कीत्ति।

२ तारीफ़, बडाई, सराहना।

उ०—सुकीरती समाज रे, प्रसिद्ध सिव पाज रे। जना निवाह लाज रे, रहू अधार राज रे।—र ज प्र.

रू.भे.—सुकित्ति, सुकिरत, सुकिरति, सुकिरित, सुकिरिति।

सुकुंडल—स पु. [स] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक पुत्र।

सुकुड़णौ, सुकुड़बौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडबौ' (रू भे.)

सुकुड़णहार, हारौ (हारी), सुकुड़णियौ—वि०।

सुकुड़िओड़ौ, सुकुड़ियोड़ौ सुकुड़चोडौ—भू०का०कृ०।

सुकुड़ीजणौ, सुकुड़ीजबौ—भाव वा०।

सुकुड़ाणौ, सुकुड़ाबौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडबौ' (रू.भे.)

सुकुड़ाणहार, हारौ (हारी), सुकुड़ाणियौ—वि०।

सुकुड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुकुड़ाईजणौ, सुकुड़ाईजबौ—भाव वा०।

सुकुडायोड़ौ—देखो 'सिकुडियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री सुकुडायोड़ी)

सुकुड़ावणौ, सुकुड़ावबौ—देखो 'सिकुड़णौ, सिकुडबौ' (रू.भे.)

सुकुडावणहार, हारौ (हारी), सुकुड़ावणियौ—वि०।

सुकुड़ाविओड़ौ, सुकुड़ावियोड़ौ, सुकुड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुकुडावीजणौ, सुकुड़ावीजबौ—भाव वा०।

सुकुड़ावियोड़ौ—देखो 'सिकुड़ियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री. सुकुडावियोडी)

सुकुड़ियोड़ौ—देखो 'सिकुडियोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकुड़ियोडी)

सुकुति—देखो 'सुक्ति' (रू.भे.)

सुकुनभेंट—स.पु.—१ एक प्रकार का सरकारी कर विशेष जो अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर शुभ शकुनो के रूप मे लिया जाता था।

२ रस्मीतौर पर शकुन के रूप मे दी जाने वाली वस्तु या धन।

रू भे—सकुनभेट, सुकनभेट।

सुकुनि, सुकुनी—१ देखो 'सकुनि' (रू.भे.) (डिं.को.)

२ देखो 'सुगनि' (रू भे.)

सुकुमार—वि. [स.] १ कोमल, नाजुक।

उ०—मैं सुकुमार खडी कायल हौं, सिर पर दधि की मटुकिया भारी रे। मीरा के प्रभु गिरधरनागर, तुम्हरै चरणकमळ बळिहारी रे।—मीरा

२ सुन्दर।

३ चिकना, स्निग्ध।

स पु.—१ नाजुक लडका या बाल।

२ युवा पुरुष, जवान।

३ मेरू पर्वत के नीचे का वन।

४ स्वामी कार्त्तिकेय का नाम। (अ.मा.)

५ ईख।

६ शाकद्वीप के जलधार पर्वत के निकट का एक वर्ष।

७ काव्य का एक गुण।

८ चम्पा का वृक्ष या फूल। (अ.मा.)

रू.भे.—सुकमार, सुकुमाल।

सुकुमारता—सं स्त्री. [स.] १ सुकुमार होने का गुण, अवस्था या भाव।

२ कोमलता, नाजुकता।

रू.भे.—सुकमारता।

सुकुमारवन—सं.पु. [स.] सुमेरू के निकटस्थ का एक वन जो शङ्कर-पार्वती का क्रीडा-स्थल माना जाता है।

सुकुमारी—स.स्त्री. [स.] १ पुत्री, बेटी।

२ सुन्दर कन्या, सुन्दर लडकी।

३ कुमारी कन्या।

४ कोमल व नाजुक अङ्गो वाली युवती।

५ चमेली।

६ ईख।

७ शङ्खिनी नामक ओषधि।

८ नारद की पत्नी व सृञ्जय राजा की पुत्री का नाम।

९ परीक्षित-पुत्र राजा भीमसेन की पत्नी का नाम।

१० शाकद्वीपीय अनुतप्ता नामक नदी का नामान्तर।

वि.—जिसके अङ्ग कोमल हो, कोमलाङ्गी ।

सुकुमाल—देखो 'सुकुमार' (रू.भे.)

उ०—राज लीला सुख भोगियउ, म्हारउ रिखभ **सुकुमाल** रे। आज महइ तै परिमह्या, भूख क्षमा नित काल रे।—म.कु

सुकुळ—स.पु. [स मुकुल] १ उत्तम कुल, श्रेष्ठ वश।

२ अच्छा घराना, प्रतिष्ठित परिवार।

३ उत्तम जाति, उच्च वर्ण।

सुकुलीण, सुकुळीणौ, सुकुलीणौ, सुकुलीन— वि. [स सुकुलीन] (स्त्री. सुकुलीणी, सुकुलीनी, मुकुलीणी) १ श्रेष्ठ कुल या उत्तम वश में जन्मा, उच्च कुल का, कुलीन।

उ०—१ सुदर **सुकुलीणी** झीणी साडी मैं, जुलफा मपणी, जिम अपणी आडी मैं।—ऊ.का

उ०—२ मूंछ केम खडत नही, नाक न खडत कोर। पडी पुळता पाघडी, **सुकुळीणी** तज मोर।—बा दा.

उ०—३ गजुल वाली रग सु रे लाल, यदुपति वदरण जाड **सुकुलीणी** रे। मेह मु भीनी मार्गै रे लाल, ऊभी गुफा माहै आइ सुकुलीणी रे।—स कु

२ अच्छे नस्ल का, नस्ली।

रू.भे—सकलीण, सकलीणी, सकलीन, सकुलीण, सकुलीणी, सकुलीन, सुकळीण, सुकलीण. सुकळीणी सुकलीणी, सुकलीन, सुकळौ, सुकलौ।

सुकुसुमा—स.स्त्री. [स] स्कद की एक मातृका।

सुकुसुमाकर—स.पु.—छप्पय छद का ६७वाँ भेद जिसमे ४ गुरु १४४ लघु से १४७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। इसको कुसुम भी कहते हैं। (र ज.प्र.)

सुकेडी—देखो 'सुखेडी' (रू भे.)

सुकेतु—स.पु. [स.] १ ताड़का नामक राक्षसी का पिता एक असुर।

२ पाण्डव पक्षीय एक राजा जो चित्रकेतु राजा का पुत्र था व कृपाचार्य के साथ युद्ध करते हुवे मारा गया था।

३ ताड़का राक्षसी का पुत्र व सुबाहु राक्षस का भाई एक राक्षस का नाम।

४ कपिल ऋषि के शाप से बचा हुआ एक सगर-पुत्र।

५ कश्यप एवं दनु के पुत्रो में से एक पुत्र दानव।

सुकेस—सं.पु. [सं. सुकेश] विद्युत्केश व सालकटका के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र राक्षस जो राक्षस होते हुवे भी पवित्र जीवन जीता था व धर्मनिष्ठ थे।

सुकेसि, सुकेसी—स.पु. [स. सुकेशि] एक राक्षस जो विद्युत्केशि नामक राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान, सुमाली व माली नामक राक्षसो का पिता था।

स.स्त्री. [स. सुकेशी] १ लम्बे, घने एव सुन्दर केशो वाली स्त्री।

२ विराट नरेश की पत्नी का नाम।

३ अलकापुरी की एक अप्सरा जिसने अष्टावक्र के स्वागत में नृत्य किया था।

४ कृष्ण की एक पत्नी का नाम।

५ परी, अप्सरा। (अ मा; डि.ना.मा; नां.मा.)

६ मगध-नरेश केतुवीर्य की पुत्री व मरुत्त (तृतीय) की पत्नी का नाम।

वि.स्त्री —सुन्दर व सुकोमल बालो वाली।

सुकोमळ, सुकोमल—वि [स सु कोमल] (स्त्री. सुकोमळी, सुकोमली)

१ अत्यन्त सुन्दर, कोमल, नाजुक, मनोहर।

उ०—नमरणी खमरणी बहुगुणी, **सुकोमळी** जु सुकच्छ। गोरी गगा नीर ज्यू, मन गरवी तन अच्छ। - ढो.मा

२ मुलायम, नरम।

३ धीमा, मन्द।

४ प्रिय, मधुर।

रू.भे —सुकमाळ, सुकमाल, सुकमाळी, सुकमाली।

सुक्क —१ देखो 'सुक' (रू.भे.)

२ देखो 'सुक्र' (रू भे.)

उ०—होळी **सुक्क** सनीचरी, मगळवारी होय। चाक चढ़ोडै मेदनी, विरळा जीवै कोय।—अग्यात

सुक्कर—१ देखो 'सुक्र' (रू.भे)

उ०—समत सर विक्रम छत्तीस कम बै सहस, मास आसाढ़ तिथि सुकल नौमी। बार **सुक्कर** नखत स्वाति सध्या बखत, भवानी ओतस्या खुड्द भोमी।—मे.म.

२ देखो सुक्र' (५) (रू.भे.)

३ देखो 'सुकर' (रू.भे.)

सुक्करवार—देखो 'सुक्रवार' (रू.भे.)

उ०—उजवाळी वैसाख री, छठी गुर **सुक्करवार**। मुहकमसिंघ 'कल्याण' तणा, रिण जीपौ वड वार।—रा.रू

सुक्किया—देखो 'स्वकीया' (रू.भे.)

उ०—रमै हसै नरिंदर, मझार राज मिदर। करै उछाह **सुक्किया**, पचास सातसै प्रिया।—सू प्र.

सुक्ख—देखो 'सुख' (रू.भे.)

उ० - क्षुल्लक रिषि बोल्यउ खरउ, दीक्षा माहि दीठा दुक्ख र। आज आधउ राज लेईनइ, ससार ना भोगवु **सुक्ख** रे।—स.कु.

सुक्खम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे.)

उ०—नही तू बाळ न ब्रद्ध न मूळ, नही तू थावर **सुक्खम** थूळ।
—ह.र.

सुक्खेरण—देखो 'सुखेण' (रू.भे.)

उ०—कपी वीस कीडेक **सुक्खेण** कीधा, दिसा पाछिम सोधिवा लार दीधा।—सू प्र

सुक्खौ—देखो 'सुख' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—राज ना काज रूड़ा नहीं,तुच्छ छइ जेहना सुखौ जी । भेदन छेदन ताडना, नर तणां बहु दुखौ जी ।—स कु.

सुक्त—स.पु –मोती (ना.मा.)

सुक्तज—देखो 'सुक्तिज' (रू.भे)

सुक्ति, सुक्ती—सं.स्त्री. [स. शुक्ति] १ सीप । (डिं को.)

२ शङ्ख ।

३ घोंघा ।

४ खोपडी का भाग विशेष ।

५ घोड़े की गर्दन या छाती की भौंरी ।

६ गन्ध द्रव्य ।

रू भे —सुकुति ।

सुक्तिज—स.पु. [स. शुक्तिजं] मोती, मुक्ता ।

रू.भे. सुकतज, सुकतिज, सुक्तज ।

सुक्यारथ—क्रि.वि. [स. सु-कार्यार्थ] १ किसी उत्तम कार्य के लिए, शुभ कार्य हेतु, सद् उद्देश्य से ।

उ०—विहु तजै जळ धरा, तजै समार सुक्यारथ । मरणौ मगळ जाण, जाण जीवणौ अकारथ ।—साहिबौ सुरताणियौ

वि.—२ सार्थक, सफल ।

उ०—१ विधवा राजपूतांणी री उण बेटी नै सोळवौ बरस काई लागौ, जाणौं बिरमाजी रौ सिरजण सुक्यारथ व्हियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ धकै कैवण लागौ—पण थारै माईता रौ गुण म्है जीवू जित्तै नी बिसरूला । जै थारा माईत थांरै सागै औ अांटौ नी साजता तौ म्हारी जूण कीकर सुक्यारथ व्हैती ।—फुलवाडी

३ सद् उपयोग ।

रू.भे —सुकारथ, सुकियाअरथ, सुकियारथ, सुकीयारथ, सुक्यारत, सुक्यारथ, सुक्रियथ ।

सुक्यारथौ—वि [स. सु-कार्यार्थी] (स्त्री. सुक्यारथी) १ जो सद्-उद्देश्य मे कोई कार्य करता हो, शुभ कार्य करन वाला, उत्तम कार्य करने वाला ।

२. सार्थक, सफल ।

उ० —१ वीठू मजन मन वस्या, ज्यासु लागौ चित्त । सोई घड़ी सुक्यारथी, जाय मिळीजै मित्त ।—कुवरसी साखला री वारता

उ० —२ राम नाम सदा बाणी, रांम नाम सदा कथा । राम नाम मदा सब्द, तै सवद सुक्यारथा ।—ह.र

३ सद्-उपयोग करने वाला ।

रू.भे.—सुकारथ, सुकारथौ, सुकियाअरथ, सुकियारथ, सुकारथी, सुकियारथी, सुकियारथौ ।

सुक्र—स.पु. [स. शुक्र.] १ अग्नि देव का एक नाम । (डिं.को; ह.ना.मा.)

२ आग, अग्नि ।

उ०—असि धावक आविया,सस्त्र माजिया सताबी । साणा चढ़िया सुभ्र, फूल झड़िया हद फाबी ।—मे म

३ सौर मण्डल के नवग्रहो में से एक ग्रह, जो सूर्य के सबसे अधिक निकट है, शुक्र ग्रह । (अ.मा)

उ०—१ मगळ बुद्ध मयक, वळै सनि सुक्र ब्रहस्पति । राहु केत रिख अरुण, नवै ग्रह साति करै नित ।—ह.र.

उ०—२ सुकीर नासिक सरूप, वेस रीत राजियै । सुरू गुरू र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै ।—सू.प्र

उ०—३ पाचमै भवन ससि सुक्र पेखि । दाखै कवि जातक-भरण देखि ।—सू.प्र.

४ शुक्राचार्य ऋषि जो दैत्यो के गुरू थे । शिव से इन्होने मृत-सजीवनी विद्या प्राप्त की थी । वामन अवतार के समय दैत्यराज बलि के द्वार पर इन्होने अपनी एक आँख खो दी थी ।

उ०—१ चक्री-पीवणौ पाय भाई बचायौ, क्षुधाळी हणौ हेक हेरब खायौ । चढी ज्यौ धकै तेमडौ सुक्र चेलौ, भुजा झोक कीधौ पित्रालोक भेळौ ।—मे म

उ०—२ तुही हाथ लै सूळ सादूळ हक्कै, त्रणा मात्र तू सुक्र रा छात्र तक्कै ।—मे.म

पर्याय०—उसना, कवि, चखएक, दनुप्रोहिता, भारगव, विद्या-सजीवण, हिरणगरभ ।

५ सात वारो में से एक वार जो गुरुवार के बाद तथा शनिवार के पहले पडता है ।

उ० - दत्त माहाराज जसवतसिघजी रौ कुंवर प्रथीसिघ रौ बारैट नाथा रतनमीयोत रोहड़ीया नु । समत १७१५ रा फागण सुद ७ सुक्र दीयौ । - नैणसी

६ जैनियो के ८८ ग्रहो मे से बयालीसवां ग्रह ।

७ ज्येष्ठ मास का एक नाम ।

[स शुक्रम्] ८ पुरुष का वीर्य या धातु । (डिं.को.)

उ०— असुच अपवित्र सूगावणा है, मनुस्य तणा काम भोग । वाय पित्त भलेसमाए, सुक्र सोणित स्रवै रोग ।—जयवाणी

९ किसी वस्तु का सार, तत्त्व, सत । (डिं.को.)

१० रस ।

११ निष्कर्ष, परिणाम ।

[अ.] १२ धन्यवाद, आभार, कृतज्ञता ।

उ०— हे दरवेस मैं सुक्र करतौ थौ ती सू थारै जवाब री गफळत हुई ।—नी.प्र

वि. [स. शुक्र.] १ चमकीला, चमकदार ।

२ उज्ज्वल, स्वच्छ ।

३ एकाक्षी, काना ।

४ श्वेत ।* (डिं.को.)

रू.भे.—सूकर, सुक्क, सुक्कर, सूकर ।

सुक्रकर—सं.पु. [स. शुक्रकरः] मज्जा (डिं.को.)

सुक्रगुजार—वि. [अ शुक्र+फा. गुजार] आभार मानने वाला, कृतज्ञ, धन्यवाद देने वाला ।

सुक्रत–स.पु. [स. सु-कृत] १ दान, पुण्य, धर्म आदि सत्कर्म, पुण्य-कार्य । (अ.मा, डि.को)

उ०—१ **सुक्रत** लगन स्वाधीन सदाई, सदा मगन सुख रासी । मनमुख सपत लगत अग्नि सी, पराधीन दुख पासी ।—ऊ का

उ० –२ पिड पडै पुन ना पडै, परळै पतित न होय । रजब, सगी जीवका, **सुक्रत** सिवाय न कोय ।—रजब वाणी

उ०—३ जगतसिंह वडौ दातार विवेकी ठाकुर हुवौ, कळजुग माहै वडा वडा **सुक्रत** कीया । वडा वडा दान कीया ।—नैणसी

[स. सुकृत] २ परोपकार, भलाई ।

३ इन्द्रासन । (ना मा.)

वि. [स. सुकृत्] १ भाग्यवान ।

२ धर्मशील, धर्मात्मा ।

३ परोपकार, भलाई करने वाला, परहितैषी ।

४ दानशील ।

[स. सुकृत] भली-भाँति किया हुआ, भली-भाँति वनाया हुआ ।

रू भे.—सुकरत, सुकरति, सुकरती, सुक्रती, सुक्रत्य, सुक्रित, सुक्रिथ ।

सुक्रतकरम–स पु. [स. सुकृत-कर्म] १ दान, पुण्य, धर्म, भलाई, परोपकार आदि सत्कर्म ।

२ शुभ कार्य, उत्तम कार्य ।

सुक्रति, सुक्रती—१ देखो 'सुक्रत' (रू भे.) (ह.ना.मा.)

२ देखो 'सुक्रत्य' (रू.भे) (अ मा.)

सुक्रतु–स पु [स. सुक्रतु] १ अग्नि. आग ।

२ शिव, महादेव ।

३ इन्द्र ।

४ मित्र, वरुण, सूर्य, सूरज ।

सुक्रत्य–स.पु –१ ऋषि, तपस्वी, मुनि । (अ.मा)

२ देखो 'सुक्रत' (रू.भे.)

सुक्रमण–स पु –दैत्यो के गुरु शुक्राचार्य । (अ.मा.)

सुक्रमी—देखो 'सुकरमी' (रू भे)

सुक्रवार–स.पु. [स शुक्र-वार, वासर] सप्ताह का एक दिन जो वृहस्पतिवार के वाद तथा शनिवार के पहले पडता है ।

रू.भे.—सुक्करवार ।

सुक्रसिख, सुक्रसिस–स.पु [स शुक्र-शिष्य] शुक्राचार्य के शिष्य दैत्य, असुर । (अ मा, डि को, ना मा.)

सुक्रांस–स पु.–इन्द्र । (अ.मा, ना मा)

सुक्राचारज, सुक्राचारी, सुक्राचारय्य, सुक्राचारच—स.पु. [स. शुक्राचार्य] दैत्यो व असुरो के गुरु शुक्राचार्य जो महर्षि भृगु के पुत्र थे । (अनेका.)

रू.भे —सुकराचारि, सुकराचारिय, सुकराचारच ।

सुक्रित, सुक्रिथ—देखो 'सुक्रत' (रू भे)

उ०—१ क्रन रा भोज **सुक्रित** रा क्यावर, वित अवरण अछत रा वीर । दत रा करण रजत रा दाता, खित रा रूप प्रक्रत रा खीर ।
—आईदान पाल्हावत

उ०—२ जीव गयौ दहवाट, कारिज कौ सरीयौ नही । जनहरीया हरि हाट, **सुक्रिथ** सौदा ना कीया ।—अनुभववाणी

सुक्रियथ—देखो 'सुक्यारथ' (रू.भे.)

उ०—माडै पूजा तूझ महरासथ, सकळ सरीर करिस इम **सुक्रियथ** ।—ह.र.

सुक्रिया–स पु. [अ. शुक्रिया] आभार प्रदर्शन, धन्यवाद देने की क्रिया ।

रू.भे —सुकरियर ।

सुक्रीड़ा—स.स्त्री [स] १ एक अप्सरा का नाम ।

२ अच्छा खेल ।

सुक्रीत—वि. [स. सुकीर्ति] जिसका सुयश हो, वीर, वहादुर । (अ.मा.)

सुक्रोध—देखो 'सक्रोध' (रू.भे.)

उ० –'जुभार' सुतन 'उमेद' जोध, कोपियौ प्रळय पावक **सुक्रोध** ।
—शि.रू.

सुक्ल–स.पु. [स शुक्ल] १ ब्रह्मावीसी का तीसरा वर्ष । (ज्योतिष)

२ देखो 'सुकलपख' (रू.भे.)

उ०—प्रगम्मौ ससौ च्यार छै नौ पहोसी । नमौ मास आसाढ री **सुक्ल** तोसी ।—सू स.

सुक्लता—स.स्त्री [स शुक्ल-ता] १ शुक्ल होने की अवस्था या भाव ।

२ सफेदी, श्वेतता ।

३ उज्ज्वलता, स्वच्छता ।

४ चमक, आभा ।

सुक्लपक्ख, सुक्लपक्ष, सुक्लपख—देखो 'सुकळपख' (रू.भे)

सुक्लभास–स पु –ज्योतिष के २७ योगो मे से एक योग ।
(ज्यो. वा वा.)

सुक्लाग–स.पु. [स. शुक्ल+अग या अपाग] मोर, मयूर ।

रू.भे.—सुकळपग, सुकलपाग, सुकळाग, सुकलाग, सुकळापग, सुकळापाग, सुकळीपाग, सुक्रापाग, सुखलापाग ।

सुक्लांबर, सुक्लांबरा—स.स्त्री [स शुक्ल-अवरा] सरस्वती, शारदा ।

रू.भे.—सुकल अवर, सुकलवरा, सुकलांवर, सुकलांबरा ।

सुक्लापांग—देखो 'सुक्लांग' (रू.भे) (ह.ना मा.)

सुक्षम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे)

सुखंकरी–स.स्त्री –जीवती, डोडी ।

सुखंडज–स.पु. [स शिखडज] वृहस्पति । (अ.मा)

सुखंद—देखो 'सुखद (रू.भे.)

सुखंम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.)

उ०—धणौ हेत पित मात, रह्या घरि वैसि मया करि। सुखंम सेभ परहरी, श्राय सूतौ तिणि साथरि।—वि.स.सा.

सुख-स.पु. [स.] १ मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति, जिसमें वह मानसिक व शारीरिक कष्टों से मुक्त रहकर उत्साहित व सतुष्ट रहता है और इस दशा के बराबर बने रहने की आशा करता है। शान्ति, आराम, दुःख का विपर्याय। (डि.को.)

उ०—१ सोळैई थान अचळ इद्रीमुर, अति सुख उदै कियौ अतरि उर। विसन ब्रह्म मिव अरक बखाणौ, जळपति ससि दिस मारुत जाणौ। रा.रू.

उ०—२ सौय सुहागिन सूदरि, सुख सागर भरतार। दूजी दुखी दुहागनी, हरीया बिन इकतार।—अनुभववाणी

उ०—३ सुख लाधै केलि स्याम स्यामा सगि, सखिए मन रखिए मघट। चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियौ कहकहाहट।—वेलि

पर्याय०—आनन्द, निरव्रती, मोद।

क्रि०प्र०—आणौ, करणौ, दैणौ, पाणौ, भोगणौ, मिळणौ, व्हैणौ।

मुहा०—१ सुख आणौ=सुख के दिन आना, आराम मिलना। २ सुख करणौ=आनन्द करना, मौज-मस्ती करनी, क्रीडा करना, रति क्रीड़ा करना। ३ सुख खोणौ=आफत, परेशानी या कोई झझट गले लगाना। ४ सुख पाणौ=आराम पाना, किसी कार्य मे कम परेशानी या परिश्रम होना। ५ सुख माणणौ=मौज-मस्ती करना, प्रसन्न रहना, आनन्द करना। ६ सुख री नीद सोणौ=चैन से दिन काटना, निश्चित होकर रहना। ७ सुख लूटणौ=आनन्द करना, सुख-साधनो का उपभोग करना। ८ सुख व्हैणौ=कोई परेशानी या कष्ट समाप्त हो जाना, सुख होना।

[सं. सुखम्] २ हर्ष, खुशी, आनन्द।

उ०—१ तरसि पधार हुआ तय्यारी, 'धीर' तणौ आयौ व्रतधारी। राणी जळती 'ऊदै' राखी, सुख नव कोट किया जग साखी।—रा.रू.

उ०—२ अधं कु लोयन दीया ऐसे मन फूलाय। जन हरीया ज्यु विरहनी, राम मिल्या सुख थाय।—अनुभववाणी

उ०—३ एकत उचित क्रीडा चौ आरभ दीठौ सु न किहि देव दुजि। अदिठ असुत किम कहणौ आवै, सुख तै जाणणहार सुजि।—वेलि

३ भय, चिन्ता या कष्टों से मुक्तावस्था, निश्चितता, चैन, शान्ति, आराम।

उ०—१ इसी भांति भरमल अरजा कर रजाबध कर रीझाय लीयौ। सुख सु पोढ रह्या।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ सूतौ थाहर नीद सुख, सादूळौ बळवत। वन काठै मारग वहै, पग पग हौल पड़त।—बा.दा.

४ प्रेम, प्रीति, स्नेह। (अ.मा; ह.ना मा.)

उ०—मिळिया वका राठवड़, चित हित दाख वचाव। सुख जाडौ कीधौ सगै, रीधौ हाडौ राव।—रा.रू.

५ दोस्ती, मित्रता।

उ०—राव वीरमदे दूदावत धरती बाहिरौ काढीयौ थौ सु सहसै नै राठौड वेरमी राणौ अखैराजोत रै सुख हुतौ।—राव मालदेव री बात

६ सुविधा, आराम।

उ०—उर आस पार न वार, चित डरत करत विचार। जग धिनी पखी जात, सुख पख जेण सु गात।—रा.रू.

७ समृद्धि, सम्पन्नता।

उ०—१ सुख सपत्ति के सब कोई साथी, विपति परै सब सटकै।—मीरा

उ०—२ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख सपति, व्यापत नाहि विपत्ति।—मे.म.

८ कल्याण, मङ्गल। (अनेका.)

९ थ्यावस, तसल्ली, ढाढस।

उ०—१ आया मन विगतै नही, गया न होवै दुख। जनहरीया हरि भगति कौ, कैसै उपजै सुख।—अनुभववाणी

उ०—२ रथ थभि सारथी विप्र छडि रथ, औ पुर हरि बोलिया इम। आयौ कहि कहि नाम अम्हीणौ, जा सुख दै स्यांमा नै जिम।—वेलि

१० सन्तोष, सब्र।

उ०—आसा तिसना छाडि, निरासा हुय रहै। हरिद्वा दास कहै हरिराम, साम सुख जब लहै।—अनुभववाणी

११ उमग, उत्साह।

उ०—सुरख सरोरुह खड लिया सुख साजही। कै अरुणोदय कांति रही मिळि राजही।—बा.दा.

१२ निरोगता, स्वस्थता, आरोग्यता।

१३ खामोशी, शान्ति।

१४ सरलता, आसानी।

१५ सन्धि, सुलह।

१६ उपयुक्त, ठीक, उचित।

१७ जल, पानी। (अनेका.)

१८ स्वर्ग।

वि.—१ प्रिय, मधुर, मनोहर।

२ धर्मात्मा, पुण्यात्मा।

३ सरल, करने योग्य।

४ आरामदायक।

उ०—वल्ली तसु बीज भागवत वायौ, महि थांणौ प्रिथुदास मुख। मूळ ताल जड़ अरथ मडहै, सुथिर करणि चढ़ि छाह सुख।—वेलि

५ भला, अच्छा।

अव्यय–१ सहर्ष, आनन्द मे।

२ आराम मे।

३ आसानी से।

४ राजी या रजामन्दी मे।

५ चुपचाप, शान्ति मे।

रू.भे.—सुक, सुक्ख, सुख्ख, सूख।

अल्पा.—सुक्खौ, सुखडौ।

सुख आसन—देखो 'सुखासरण' (रू.भे.)

सुखकंद–वि. [स.] सुख देने वाला, आनन्ददायक।

उ०—तू उपगार करै जु अपार अनाथ अधार सवै **सुखकदा**। —ध.व.ग्र

स.पु.–सुख का मूल।

सुखकर, सुखकरण–वि. [स.] आनन्ददायक, हर्षप्रद, सुख देने वाला।

उ०—'ऊमर' हदो दूसरौ, हुतौ नाम 'हमीर'। नै हमराट कहावही, **सुखकर** नीर समीर।—बा.दा

स.पु.–वैकुण्ठ, स्वर्ग। (ना.मा.)

रू.भे.—सुखकार, सुखकारक, सुखकारी सुखकारौ।

सुखकार, सुखकारक, सुखकारी, सुखकारौ—देखो 'सुखकर' (रू.भे.)

उ० १ प्रथ्वी माहै पररारडौ, सिवीयरगौ गढ **सुखकार** रे लाल। जेलागर मत्री जेहा, नामै जयतश्री नारि रे लाल।—ध.व ग्र.

उ०—२ सभि करि सोल सिणगार, अधर बिंब निज नारिया जी। आवी आराद पूर धवल मगल करती **सुखकारी** या जी। —प.च चौ

उ०–३ गोखै बैठी गोरडी, अपछर नै अनुहारी रे। केलि करै मन मेलि नै, महियर सू **सुखकारौ** रे।—वि.कु

उ०–४ हुकम हुवौ सुसराजी मा' री, बरस चतुरदस बनचारी। प्रांरग प्रियाजी म्हारा बन मैं पधारै हौ, पनि सेवा ही **सुखकारी**। —गी.रां

सुखगध–वि.–जिसकी महक आनन्द देने वाली हो, सुगन्धित।

सुखग–वि.–आराम से चलने या जाने वाला।

सुखडी–स.स्त्री.–१ एक प्रकार का मीठा खाद्य पदार्थ जो गेहूं के सेके हुए आटे में घी व गुड मिलाकर बनाया जाता है।

२ मिठाई।

३ दस्तूरी, हक।

रू.भे.—सुखडी।

सुखडौ–स.पु.–१ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

उ०—तावा, कासी, पीतळ जसद, सीसौ, कथीर, गरी, नाळेर, मिरच, पीपळ, मजीठ, हीग, **सुखडौ**, तेल, मिसरी, गुळी, इतरा वसतै दुगारणी ८ मरण १ लागै।—नैणसी

२ देखो 'सुख' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—१ औ तौ, नेह-नीत नागर घरगौ, औ तौ, **सुखडा** रा सागर स्याम।—गी.रा.

उ०–२ दुधा न्हासी, पुतरा फळसी, विपता वधी, **सुखडे** रळसी। —दसदोख

सुखचतुरथी, सुखचौथ–स स्त्री [स सुखचतुर्थी] माघ, वैसाख, भाद्रपद व पौष मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को, यदि उस दिन मङ्गलवार हो, किया जाने वाला व्रत विशेष।

सुखचार–स.पु.–बढिया घोडा। (शा.हो.)

सुखजनक–वि [स.] जिससे सुख उत्पन्न हो, सुखप्रद।

सुखजननी–वि.स्त्री [स] आनन्ददायिनी, सुखप्रद।

सुखडी–स.स्त्री –देखो 'सुखडी' (रू भे)

उ० पीरसवा माडी **सुखडी** सारी।—धरमपत्र

सुखरण–स पु.–१ परशु, फरसा। (डि ना मा)

२ गडासा।

सुखरणी–वि स्त्री –सुखी।

उ० बुढापै **सुखरणी** हुस्यूजी, होसी मोटी रे आस। घर सूनौ कोर जाय छै रे, माता मर्का नीरास।—जयवारगी

सुखत्रिय–स.पु [स सुख=शोभा, सुन्दरता+स्त्री.] काजल।(अ.मा.)

सुखत्री–स पु [स. सुक्षत्रिय] श्रेष्ठ क्षत्रिय, ऐसा क्षत्रिय जिसका चरित्र उज्ज्वल हो।

सुखद–वि. [स.] १ आरामदेह, आरामदायक, सुविधाजनक।

२ आनन्ददायक, हर्षप्रद।

उ०—आमोज पूरण जगत आसा, भोम अन अति भार ए। सोभतु जतु अनत सुखमय, **सुखद** सपति सार ए।—रा रू.

३ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ सुच्छम रोमावळि **सुखद**, वरणी उकति विचार। सारप्रति रस सिणगार री, वेल कियौ विसतार।—बा.दा

उ०–२ सित कुसुमा गूंथी **सुखद**, वेणी महिया अद। नागरिण जाणै नीसरी, सापडि खीरसमद।—बां.दा.

४ प्रिय मधुर।

उ०—अत परमळ पसर पसरिया आवा सुक पिक बोलै सुखद सराग।—बा दा

स पु–१ विष्णु का आसन।

२ विष्णु।

३ मित्र, दोस्त। (अ मा.ह ना मा)

४ भोजन, खाना। (ह.ना मा.)

रू भे—सुखद।

सुखदांन, सुखदांनी–वि–सुख देने वाला।

उ०–१ सुपनै ही इण देसडै, स्रवरण रमरण **सुखदान**। नर नह सुरगै खायै नही, पिकवारणी पकवान।—कविराज बाकीदास

उ०—२ दरस विना मोहि कछु न सुहावै, तलफ तलफ मुरझानी।

मीरा तौ चरणान की चेरी, सुण लीजौ **सुखदांनी**।—मीरा

सुखदा—स स्त्री. [स.] १ इन्द्र की एक अप्सरा।

२ स्वामि कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

३ गङ्गा नदी।

४ लक्ष्मी। (अ मा)

५ हरितकी, हर्रे, हड। (अ मा)

वि स्त्री—सुखदायक।

सुखदाइ, सुखदाइक, सुखदाईक—देखो 'सुखदायक' (रू भे)

उ०—१ पाल्यौ छ खड कौ राज जिणै, जिन राय भयौ पदवी दु पाइ। सेवहु भाव भलै 'धरमसी' कहै 'साति' जिणद सबै **सुखदाइ**।
—ध व ग्र.

उ०—२ साखी पद वद गाय सुणावै, साध सग **सुखदाई**। साध ठिकाणै थै ठग सारा, गेहू लोक दुखदाई।—ऊ का

उ—३ होरी नितही निरभौ नचिंता, आतम दरसी सदा **सुखदाई**। नहिं कोई मित अमिता।—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—४ दाइ चदन बावना, बसै बटाऊ आई। **सुखदाई** सीतळ कियै, तीन्यौ ताप नसाई।—दादूबांणी

उ०—५ दसरथ 'अजन' घरै **सुखदाई**, रूप 'अभौ' प्रगट्यौ रघुराई।
—रा रू.

उ०—६ जियाराम गुरु साहब साचा, निरवानी अरज चितलाई। जन सुखरांम साधु की सगत, सदा रहौ **सुखदाई**।
—श्री सुखरामजी महाराज

सुखदात, सुखदाता—वि [स. सुख-दातृ] १ आनन्ददायक, सुख देने वाला।

२ आराम देने वाला।

सुखदाप्रांण—वि—प्राणों को सुख देने वाला।

सं.पु.—मित्र, दोस्त। (अ.मा.)

सुखदाय, सुखदायक, सुखदायी, सुखदायौ—वि. [स. सुखदायक] (स्त्री. सुखदायण, सुखदायणी, सुखदायिनी) १ आनन्ददायक, हर्षप्रद।

उ०—काय अमावस रैण प्रसंसा कीजही, दीवाळी **सुखदाय** प्रभा दरसीजही।—बा.दा

२ सुख पहुँचाने वाला, आरामदायक, भला।

उ०—१ जग नायक जिनवर पुहवी माहै प्रत्यक्ष, सोलम 'सतीसर' **सुखदायक** कल्पव्रक्ष।—ध व ग्र

उ०—२ सुणै पढै नह सासतर, सेवै नह सतसग। **सुखदायक** किम सापजै, उर सतोख अभंग।—बा.दा.

उ०—३ नै वा अचित खूबसूरत, इती छोखी, इती सुवावणी, इती मनहरणी, इती **सुखदायी**, अर इती लुभावणी लागै कै बात छोडौ।—फुलवाड़ी

उ०—४ थारी कचन वरणी काया, राजि थारउ रूप सकल **सुखदाया**।—वि.कु

३ सतुष्ट।

४ हितकर, भला करने वाला, हितैषी।

उ०—दसरथ नद मुकत रा दाता, असुर जुधा घाता असेम। निजकुळ मुकुट जानकीनायक, **सुखदायक** सेवगा सही।
—र.ज प्र.

रू.भे.—सुकदायक, सुखदाइ, सुखदाइक, सुखदाई, सुख्खदाई।

सुखदे, सुखदेव—देखो 'सुकदेव' (रू भे.)

उ०—१ सोई पीयाला पी रिख नारद, सौ सिनकादिक व्यास। सोई पीयाला जनक वदेही, सोई **सुखदे** व्यास।—अनुभववाणी

उ०—२ सौ कैसै बाळ बय विद्या बुधि सनकादिकू जैसै। **सुखदेव** तरुण व्रिध सौ वेद व्यास तैसै।—सू.प्र

उ०—३ विमळ कवेसर विलै साधु **सुखदेव** सरीखा। बालमीक जैदेव नाम नरहर कवि नीका।—पी ग्र.

सुखधांम—स पु [स. सुख+धाम] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ। (अ.मा)

२ सुख का घर, स्थान।

सुखधांमी—स.पु [स. सुख+धाम+ई रा.प्र.] १ विष्णु।

२ इन्द्र।

३ स्वर्ग का निवासी।

वि.—१ सुख के घर मे वास करने वाला।

२ सुखी।

सुखनबांण—स पु [फा सुखन+बाण] शब्द बाण, शब्द, ध्वनि।

उ०—बीरबळ मारांणौ जद पाताह खांना खान नूं खत इनायत कियौ। अकबर जिणमै लिखियौ म्हारी सभा नु नजरलागी जिणसू म्हारी सभा री जेब बीरबळ मारांणौ। हू बीरबळ री लोथ काधै लै बाळतौ तो उण री चाकरी सू उरण होतौ। खुदा ताळा री क्रपा सू बीरबळ भौ नूं मिळियौ हौ। म्हारा दिल मांहली बात बाहर आणतौ दारू ज्यू। म्हारा **सुखनबांण** सवारण नूं खुरसाण हुतौ।—बा.दा. ख्यात

सुखपत, सुखपति, सुखपती—देखो 'सुसुप्ति' (रू.भे.)

उ०—१ सैसव तनि **सुखपति** जोवण न जाग्रति। वेस सधि सुहिणा सु वरि, हिव पल पल चढतौ जि होइसै। प्रथम ग्यान एहवी परि।—वेलि

उ०—२ न कौ सुपन जागै न कौ **सुखपती**, न कौ पद तुरीया न कौ मोख मुगती।—अनुभववाणी

सुखपात—स.पु—सुख के पात्र।

उ०—अणघड आप अविगत सरूपी, अखै अगाध **सुखपात**। ग्यांन ध्यांन पोथी नहिं पुस्तक, स्याई कलम नहिं हात।
—श्री हरिरामजी महाराज

सुखपाळ, सुखपाल—स स्त्री—१ एक प्रकार का वाहन जिसे आदमी उठाकर चलते थे, पालकी, डोली।

उ०—१**सुखपाळ** चढण चाळीस साठ, असवार हाथिया तणा

आठ।—वि.स.

उ०—२ ताहरा प्रभात नरसंघ नु सुखपाळ बैसाग्र मरव लोक भेळौ करनै चालीया।—राजा नरसिंघ री वात

२ स्वर्ण निर्मित एक प्रकार का बढ़िया पलङ्ग।

उ०—पणधारी राजा 'पदम', निरखन किया निहाल। मैं सुवना माथरै, मैं पौढै सुखपाळ।—द.दा.

सुखपूरवक–क्रि वि. [स. सुख-पूर्वक] १ सुख से, आराम से।

२ आनन्द से, हर्ष सहित।

सुखपोस–वि.–जो सुखपूर्वक पाला-पोसा गया हो, जिसका पोषण सुखमय स्थिति में हुआ हो।

उ०—आथ अटूट अखूट अन, प्रजा घणौ सुखपोस। धन 'बाका' ऊ अगडौ, साहिब जै सतोस।—बां.दा

सुखप्रद–वि. [सं.] १ सुखद, सुखदायक. आरामदेह।

२ आनन्ददायक, हर्षप्रद।

सुखबास–सं.पु. [सं. सुख-वास] १ सुखपूर्वक रहने की जगह। कुछ दिन या समय के लिए आराम से रहने की जगह।

२ कष्ट या अभाव का समय व्यतीत करने के लिए किसी स्थान पर किया जाने वाला निवास।

रू.भे.—सुखवास।

सुखबासी–वि.–१ 'सुखबास' करने वाला।

२ आनन्द एव सुख से रहने वाला।

रू.भे.—सुखवासी।

सुखम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे) (अ मा, ह.नां.मा.)

उ०—१ थावर जगम सुखम थूळ।—केसोदास गाडण

उ०—२ त्रिण कोडा कोडि सागर सुखम बीय अरौ, देह दौ कोस दोई पल्ल आयु धरौ। बोर परिणाम आहार बीजै दिनै, युगलीया सातवी एह कहिया जिणै।—ध व.ग्र.

रू.भे —सुख्खम।

देखो 'सुसमा' (रू भे.) (ह.ना मा.)

सुखमगां–क्रि वि –सीधे रास्ते से, सुगमता से।

उ०—आवै मघण अचीत, जेम वनि अगनि मिळग्गा। मरप विख्ख मोखवा, मत्र आवै सुखमगा।—रा रू

सुखमण, सुखमणा, सुखमणि–स.स्त्री. [स. सुषुम्णा] १ शरीरस्थ तीन प्रधान नाडियों में से एक जो इडा और पिंगला के बीच में रहती है। (योग)

उ०—१ मनवा देव वसै हिरदा मै, नाभि कमळ पग दैला रै। चद्र सूर रा लिया मरोदा, सुखमण मीर चढैला रै।

—श्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ इळा अर पिंगळा वीच है सुखमणा, होय ताह त्रिगुटी घाट मेळा। अगम का पथ जाह और पूहचै नहीं, हम परिहम मिळ करन केळा।—अनुभववाणी

उ०—३ इळा चद रवि पगळा, विच सुखमणि कौ घाट। हरीया गुर परताप तै, खुल्हा सइज कपाट।—अनुभववाणी

२ वैद्यक के अनुसार चौदह प्रधान नाडियों में से एक जो नाभि के मध्य मे स्थित है और जिसमे अन्य सब नाडियाँ लिपटी हुई होती है।

[स सुषुम्ण] ३ सूर्य की मुख्य किरणों में से एक का नाम।

रू भे.—सुखमन, सुखमना, सुखमनि, सुखमल, सुखमिण।

सुखम-दुखम–स.पु.यो. [स. सुख+दुख] जैन मतानुसार काल के प्रमुख छः भागो मे से अवसर्पिणी काल तथा उत्सर्पिणी काल का तृतीय काल विभाग, जिसमे प्रथम सुख तथा पश्चात दुख हो।

सुखमन, सुखमना, सुखमनि—देखो 'सुखमणा' (रू भे.)

उ०—१ काम धेनु दुहि पीजियै. अलख रूप आनद। दादू पीवै हेत सौ, सुखमन लागा वद।–दादूवाणी

उ०—२ जाकै विच सुखमना जागी, नाव निरतर ताळी लागी। जुरा मरण काळ नही आसै. सनवा मिल्या राम इक रासै।

—अनुभववाणी

उ०—३ सकळ समीपी सकळ सुहावा, तीनि लोक त्रिभुवन पतिरावा। सुखमनि उलटि गगन मै आणी मुनि मडल मै खेलै प्राणी।—ह.पु वा.

सुखममारग—देखो 'सूखममारग' (रू भे) (अ वा.)

सुखमय–क्रि.वि. [स.] सुखपूर्वक, आनन्दपूर्वक।

उ० -आसोज पूरण जगत आसा, भोम अन अति भार ए। सोभनु जतु अनत सुखमय, सुखद सपति सार ए।

—रा रू.

वि.–सुखी।

रू भे.—सुखम।

सुखमल—देखो 'सुखमण' (रू.भे)

उ०—इळा पिंगळा पूरि करि, मन सुखमल कै माहि। जनहरीया सुख सहज की, इन सेती गम नाहि।—अनुभववाणी

सुखम-सुख–स पु.यौ. [स. सुखम्] जैन मतानुसार अवसर्पिणी काल का प्रथम काल विभाग तथा उत्सर्पिणी काल का छठवाँ काल विभाग, जिसमे केवल सुख ही सुख हो।

सुखमा–स.स्त्री. [स. सुषमा] १ आभा, कान्ति, दीप्ति, शोभा, छवि। (अ मा, ना.मा.)

२ खूबसूरती, सुन्दरता।

[स. शुष्मा] ३ ज्योति, प्रकाश।

४ शक्ति, पराक्रम।

५ तेज।

६ सूर्य, रवि।

७ महिमा।

उ०—सुखमा वरणु सुखसागर की, अपनी रूप भेख उजागर की।

चित चाह उछाह पथा चुणियै, सब सत समाज कथा सुणियै ।
—ऊ.का

८ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, यगण, भगण तथा अन्त मे गुरु के क्रम से १० वर्ण होते है। (र ज प्र)

९ पक्षी ।

१० देखो 'मुसमा' (रू.भे.) (अ.मा.)

११ देखो 'सुखमणा' ।

उ०—साम हमारी **सुखमा** नारी, ससुरौ परम सतोख । जेठ जुगत कर जागियौ रे, वाला पीव रह्यौ निरदोख ।—मीरा

सुखमादसद–स.पु [सुषमाऽऽदर्शद] परम शोभा का दर्पण, चन्द्रमा ।
(अ.मा.)

सुखमिरा—देखो 'सुखमणा' (रू भे.)

उ०—चद सूर **सुखमिरा** जाह मेला, नादै बिद समाई । उलटि धरिया गिगन मै गरजै, विन वादर झर लाई ।—अनुभववाणी

सुखरम–स.पु [स. सु+ख+रम] सूर्य, भानु ।

उ०—निमौ दिव सेस विचार ब्रह्मा । निमौ किरनाळ निमौ **सुखरम** ।—सूरज स्तुति

सुखरात, सुखराति, सुखरात्रि–स.स्त्री [स. सुखरात्रि] कार्तिक मास की अमावस्या की रात्रि ।

सुखरास, सुखरासि, सुखरासी–वि. [स. सुखराशि] सर्वथा सुखमय, सुखो का समूह ।

उ०—१ सुक्रत लगन स्वाधीन सदाई, सदा मगन **सुखरासी** । सनमुख सपत लगत अग्निसी, पराधीन दुख पासी ।—ऊ.का.

उ०—२ गोकुळ की नारी देखत, आनद **सुखरासी** । एक गावत एक नाचत, एक करत हासी ।—मीरा

उ०—३ रवि रिपु भवन जकौ **सुखरासी** । अरि अण कुळ बळ करण उदासी ।—रा रू.

सुखलापांग—देखो 'सुक्कांग' (रू.भे.) (अ.मा.)

सुखलिणी—देखो 'सुकुलीणी' (रू भे.)

उ०—नाडी अलियर नीर, झूल्या जल भागै नही । **सुखलिणी रे** सरीर, कऊ लगागौ काछबो ।—अग्यात

सुखलोया–स.पु.–घोड़ो का एक रोग जिससे पीडित होने वाला घोड़ा दुबला हो जाता है और उसकी त्वचा खराब हो जाती है ।
(शा हो)

सुखवंत, सुखवत–वि. [सं. सुखवत्] सुखी, प्रसन्न, खुश ।

सुखवाणौ, सुखवावौ—देखो 'सुखाणौ, सुखावौ' (रू.भे.)

सुखवायोड़ौ—देखो 'सुखायोडौ' (रू.भे)
(**स्त्री.** सुखवायोड़ी)

सुखवास—देखो 'सुखबास' (रू.भे.)

उ०—१ लाभै सुरग **सुखवास**, गुर फुरमाई चाली । वीसन जपौ ससारि, डडा डर करि चाली ।—वि.सं मा.

उ०—२ हु आव्यौ हौ ताहरै पास, बात कही मै माहरी । हिव दीजै हौ मुझ **सुखवास**, उलट मन माहै धरी ।—वि.कु.

सुखवासी—देखो 'सुखबासी' (रू भे.)

उ०—बाहडमेर रै काकड चारण **सुखवासी** बसै । रावळ भारमल महेसदास नै पटै ।—नैणसी

सुखसज्या—देखो 'सुखसेज्या' (रू.भे.)

उ०—माणत पदमणि महल मै, रसियौ बगसीराम । **सुखसज्या मै** माभळी, केहर तडव ताम ।—बगसीराम प्रोहित री बात

सुखसागर–स.पु. [स.] १ ईश्वर, परमेश्वर । (ना मा.)

उ०—१ हसा जानि दुखी सरवर विन, जुग जीवन **सुखसागर** धरि धरि ।—अनुभववाणी

उ०—२ सदा क्षणभगुर जाण सरीर, सखा **सुखसागर** सू कर सीर । हियै धर नाम अमोलक हीर, विस्वभर संवर बाधव वीर ।
—ऊ.का.

२ भागवत के अनुवाद का नाम ।

सुखसाजा–सं.पु –सुख का सामान ।

उ०–सपज 'अजन' सदन **सुखसाजा** । राम जनम जिय दसरथ राजा ।—रा.रू.

सुखसाता–स स्त्री [स. सुख-शाँति] १ सुख की उपलब्धि, प्राप्ति, आनंद, मङ्गल, खैरियत, कुशल-क्षेम ।

उ०—१ वानै जोसीजी माथै मोळै आना भरोसौ व्हैगौ । **सुखसाता** बूझी ।—फुलवाडी

उ०—२ नाळ उतरता काळजौ होठा लाय बोल्यौ—म्हनै एकर साळ रै माय जावण दौ । मा-बेटी री **सुखसाता** तौ पूछ लूं ।
—फुलवाडी

२ आरोग्यता, स्वस्थता ।

उ०—१ कनै बैठी समाचार छै । साहजी डीला मै कीसायक है ? **सुखसाता** है ?—भि.द्र.

उ०—२ दौलति द्यौ **सुखसाता**, सहुजन मन्न सुहाता राज । जै दिन राता तुझ गुण गाता, तै रहै राता माता राज ।—ध.व ग्र

सुखसार–सं पु.–१ सुख का सार ।

उ०—रित वसत सोभत अब तर मजर ओपै । गुल गुलाब **सुखसार** हार चौसर आरोपै ।—रा.रू.

२ अटारी, अट्टालिका । (अ.मा.)

सुखसेज, सुखसेज्जा, सुखसेज्या, सुखसेझ–स.स्त्री [स. सुख-शय्या] १ किसी की मृत्यु के अनन्तर मृतक के उद्देश्य से उसके सबधियो द्वारा ब्राह्मणादि को दिया जाने वाला शय्यादान, जिसमें चारपाई, बिस्तर, छाता व कपडे होते है ।

२ आरामदायक शय्या ।

उ०—पिंड प्राण छूटसी, नाड तूटसी करग्गा । धरा सेझ धारसी, करै **सुखसेझ** अळग्गा ।—ज.खि.

२ आरामदायक शय्या।

रू.भे.—सुखसज्या।

सुखसोरठ–स.पु.–एक राग विशेष। (मीरां)

सुखस्यायक–स.पु.–कल्पवृक्ष। (ना.मा.)

सुखहारी–वि.–सुख को हरण करने वाला।

उ०—दिली लखै दिगदाह, विगत हित साह विचारी। खर भूकै रव खैंग, स्वान कूकै सुखहारी।—रा.रू.

सुखाछक–स.पु.–चन्द्रमा, चाँद। (ना.मा.)

सुखांत–वि [सं.] जिसका अन्त सुखमय हो।

उ०—सुखी वियोग मैं सुखी, दुखी भ्रमैं दिगंत मैं। सुखात कांत ग्लौमुखी, दुखात तैं सुखांत मैं।—ऊ.का.

सुखाकर–वि.–सुखकर, सुखदायक।

उ०—पक्ष त्रिभाग विना त्रिक सागर, सोलम साति जिणंद सुखाकर।—ध.व.ग्र.

सुखाणौ, सुखाबौ–क्रि स. ['सूखणौ' क्रि. का प्रे.रू.] १ किसी गीले वस्त्र, कागज़ या किसी गीली वस्तु को धूप या हवा में, गीलापन या आर्द्रता दूर करने के लिए फैलाकर रखना।

२ किसी प्रकार से ताप पहुँचा कर या किसी अन्य प्रक्रिया से किसी पदार्थ की आर्द्रता दूर करना।

३ सूखने के लिए डाल देना।

४ पानी सोखने के लिए प्रेरित करना।

५ दुर्बल या क्षीण कर देना।

सुखाणहार, हारौ (हारी), सुखाणियौ—वि०।

सुखायोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुखाईजणौ, सुखाईजबौ—कर्म वा०।

सुकाणौ, सुकाबौ, सुकावणौ, सुकावबौ, सुखवाणौ, सुखवाबौ, सूखाणौ, सूखाबौ, सूखावणौ, सूखावबौ—रू०भे०।

सुखायत–स.पु. [सं.] प्रशिक्षित, सधा हुआ तथा शीघ्र वश में आने वाला घोडा।

सुखायोड़ौ–भू.का.कृ.–१ गीलापन या आर्द्रता दूर करने के लिए खुली हवा या धूप में फैलाया हुआ। २ ताप पहुँचा कर या किसी अन्य प्रक्रिया से आर्द्रता दूर किया हुआ। ३ सूखने के लिए डाला हुआ। ४ पानी सोखने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री. सुखायोडी)

सुखारथी–वि. [सं. सुखार्थी] सुख की इच्छा या कामना करने वाला।

उ०—सुखारथी स्वारथी जै स्वसुख, दुख प्रारथी बच सदै। वढै जी विद्यारथी विसद, परमारथी वच वदै। ऊ.का.

सुखाळा–वि –१ प्रसन्नचित्त, खुशमिजाज।

२ सुखी।

सुखाळी–स स्त्री –१ सुख की अवस्था या भाव।

२ आराम, चैन, खैरियत।

सुखाळौ–वि. (स्त्री. सुखाळी) प्रसन्न, सुखी।

उ०—हंस सुखाळौ मानसर, चुगि मोताहळ खाय। हरीया दूजा ना भखै, लाघणीयो रहि जाय।—अनुभववाणी

सुखावणौ, सुखावबौ—देखो 'सुखाणौ, सुखाबौ' (रू.भे.)

उ०—म्हारा जीवण मैं सुख री आ एक ई हिलोळ आई, इणनैं ई थू सुखावणो चावै।—फुलवाडी

सुखावणहार, हारौ (हारी), सुखावणियौ—वि०।

सुखाविप्रोडौ, सुखावियोड़ौ, सुखाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुखावीजणौ, सुखावीजबौ—कर्म वा०।

सुखावियोड़ौ—देखो 'सुखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री सुखावियोडी)

सुखावेस, सुखावेसु, सुखावेसू–क्रि वि –सुखपूर्वक।

उ०—कहा देस देसू रम प्रदेसू है परमेसू सग ए, दुस्टी विचेसू करि अनेसू खोस लेसू कग ए, सोई सरेसू जन निरभेसू सुखावेसू आज ए।

—करुणा सागर

सुखासण, सुखासन, सुखासनि–स पु –१ पालकी, डोली, सुखपाल।

उ०—१ हरि हरि उचार नर पुर हुए हेर वार विसमी हुई। उण वार रथी चप ऊरडै आप सुखासण आरुही।—रा रू.

उ०—२ तठा उपरांति राजान सिलामति घणा घोडा हाथी सुखासण रथ पायक जवहर हीरा मोती माणक सोना रूपा दाइजै दीजै छै।—रा सा सं.

उ०—३ दैत्य दमनी हारी राजा जीतियौ, सुखासण बैठ दैत्य दमनी घरै आई।—पचदडी री वारता

उ०—४ आवइ सकल कलापति व्यापति साडइ कोडि। वडठा स्वजन सुखासनि वासगि धन दिइ कोडि।

—जयसेखर सूरि

२ आरामदायक आसन।

३ पलथी, पालथी।

रू.भे – सुख-आसन।

सुखि–क्रि वि –१ सुखपूर्वक, आराम से।

उ०—मोटउ नगर लोग सुखि वसइ, चावउ कुवर कुळ छइ चिहूं दिसइ। आठ सहस हयवर तसु मिळइ, पच सहस पायदळ नसु जुडइ।—ढो मा.

२ देखो 'सुखी' (रू.भे.)

सुखिऔ –देखो 'सुखियौ' (रू.भे.)

सुखिणी–वि स्त्री –देखो 'सुखी' (रू भे.)

उ०—हूं जांणू सुखिणी करूं रे, परणावू वर सार रे।

—स्रीपाल रास

सुखिम –देखो 'सूक्ष्म' (रू भे.)

उ०—सींगी रिख सुखिम होय सोख्या, नारद रूप फिराया। संकर

का मन मांही पैठी, नांना भांति नचाया । —ह.पु.वा.

सुखियारौ–वि. (स्त्री. सुखियारी) सुखी ।

उ०—सुख सूं सूती थी विरजा सुखियारी, दुस्टी आता ही करदी दुखियारी ।—ऊ.का

सुखियौ–वि.–सुखी ।

उ०—१ सदा वास करि पौढै **सुखिया**, विमन समद जामात बखाण ।—ह.ना.मा.

उ०—२ माहरा सहू इण राज मैं, थै ही जौ दुखिया होय । तौ कहौ इण ससार मै, **सुखियौ** न दीसै कोय ।—जयवाणी

क्रि.वि —सुखपूर्वक, आराम से ।

उ०—१ साठ कोड़ घर बाहिरै जी, माहै बहोतर कोड । लोग सहु **सुखिया** वसै जी, राम कृस्ण री जोड़ ।—जयवांणी

उ०—२ सखरै महिलै राख्यौ **सुखियौ**, सखरी भगति सजाई । स्वारथ विण जै करणी सेवा, भला तणीय भलाई ।

—ध.व.ग्र.

रू भे.—सुखिग्रौ, सु ीग्रौ ।

सुखी–वि. [सं. सुखिन्] १ जिसको किसी प्रकार का दु.ख, कष्ट, परेशानी या अभाव न हो, कष्ट व अभाव से सर्वथा मुक्त ।

उ०—१ बळती लू चाली है अर **सुखी** जीवण मै फोड़ौ पड रै'यौ है ।—दसदोख

उ०—२ बहेजु बाट बाट मै पिता पिता महा वहै । **सुखी** सुबाट तै सदा दुखी दुबाट मैं दहै ।—ऊ.का.

२ आनन्दित, हर्षित, खुश ।

उ०—प्यारौ पजर भीतरै, ताहि न जाणै कोय । जन हरीया सौ जाणिसी, **सुखी** सुहागिन होय ।—अनुभववाणी

३ सतुष्ट ।

रू.भे.—सुखि ।

सुखीग्रौ, सुखीयौ—देखो 'सुखियौ' (रू.भे.)

उ०—१ जीव जिकै **सुखीग्रा** हूवा रे, वलि हुस्यइ छइ जेह । तै जिणवर ना धरम थी रे, मति कौ करज्यौ सदेहो रे ।—स.कु.

उ०—२ ताउ ऊपाडिउ घालिउ पाइ पूछिउ कुसुलु युधिस्टिरि राई । भणइ दुरयोधनु अतिग्र **सुखीया** तुम्ह पाय जउ मइं पणमीया —सालिभद्र सूरि

सुखुपती, सुखुप्ती—देखो 'सुसुप्ती' (रू.भे.)

उ०—१ जाग्रत स्वप्न **सुखुपती** तुरीया, इनतें अलग रहाया । तीन गुणां जहां उत्पति नाही, पाच भूत नहि काया ।

—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ जाग्रत काया खड़ बड़, सुपनही डोर हलाय । **सुखुप्ती** सांवेट मैल दै, तौ सब परळै होय जाय ।

—स्री हरिरामजी महाराज

सुखेड़ी, सुखेडी–सं.स्त्री.–हरी सब्जी जिसे उबाले या बिना उबाले सुखा-कर शाक बनाया जाता है ।

वि वि –ये सब्जियाँ है : काचरा, मतीरा, ग्वारफली, टीडसी, साँगरी, केर, पाँसा, गाजर इत्यादि ।

रू.भे.—सुकेड़ी ।

सुखेण, सुखेन–सं.पु. [स. सुषेण] १ एक वानर जो बालि का श्वशुर व धर्म नामक वानर का पुत्र था । राम-रावण-युद्ध मे वह राम-पक्ष मे था । यह युद्ध-विशारद के साथ ही वैद्यक शास्त्रज्ञ भी था ।

उ०—**सुखेणां** नळ नील सुग्रीव साथा । हणू आदि आए मिळै जोड़ि हाथा ।—सू.प्र

२ एक राजा जो अविक्षित्-पुत्र परिक्षित् राजा का पुत्र था ।

३ विष्णु का एक नामान्तर ।

४ जमदग्नि एव रेणु के पुत्रो मे से एक ।

५ कर्ण का एक पुत्र ।

६ दूसरे मनु का एक पुत्र ।

७ धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीमसेन द्वारा मारा गया था ।

८ श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

९ देवकी का एक पुत्र जो कस के द्वारा मारा गया था ।

सुखोपति—देखो 'सुसुप्ती' (रू.भे.)

उ०—जाग्रत सुपन **सुखोपति**, पाच ग्यान यद्री पचीस प्रक्रत लोई ।

—ह.पु.वा.

सुख्ख देखो 'सुख' (रू.भे)

उ०—१ काया झबकइ कनक जिम, सुदर केहै **सुख्ख** । तेह सुरगा किम हुवइ, जिण वेहा बहु दुख्ख ।—ढो मा

उ०—२ कहा घाट बाटू **सुख्ख** ठाटू मुज वेराटू राम ए । गुरु रांमदासू चरित गासू नित निवासू नाम ए ।—करुणा सागर

सुख्खदाई—देखो 'सुखदायी' (रू.भे)

उ०—नमौ नमामी अतरयामी सरव स्वामी स्रुष्टि ए । वंदौ सदाई **सुख्खदाई** चित्त आई इस्ट ए ।—करुणा सागर

सुख्खम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.)

सुख्याति–सं.स्त्री. [स.] १ कीर्ति, यश, प्रशसा ।

२ प्रतिष्ठा ।

सुख्यारत, सुख्यारथ—देखो 'सुक्यारथ' (रू.भे)

सुगंद, सुगध–स.स्त्री. [सं. सुगध] १ अच्छी और प्रिय गध, महक, खुशबू ।

उ०—१ मोनू **सुगंध** सोनू मिळचा, बळिहारी इण बात री । साखात सकति 'इदर' सुणै, महिमा 'करनळ' मात री ।—मे.म.

उ०—२ नाहर जौ गाजिस नही, ऐ गज बहता ईख । सर सर कमळ **सुगंध** री, भमर न मांगिस भीख ।—बा.दा.

पर्याय०—कसबोय, गंध, डमर, बगर, बास, बासना, बासावळी, महक ।

२ गंधक ।

[स सुगंध] ३ चन्दन ।
४ जीरा ।
५ नीलकमल ।
६ गंधेज नामक ग्राम, गन्ध-तृण ।
७ खुशबूदार चीज़ ।
८ चना ।
९ मरुवा ।
१० माधवी-लता ।
११ सफेद ज्वार ।
१२ केवड़ा ।
१३ राल ।
१४ व्यापारी ।
१५ रूसा घास ।
१६ शिला-रस ।
१७ देखो 'सुगंधित' (रू.भे.)
उ०—व्रक्ष वल्ली का परस तै **सुगंध** हुग्रौ । लतां का मन माहै संकोच छै ।—वेलि टी.
रू.भे.—सगंध, सुगंग, सुगंधि, सुगंधउ, सुगंधी, सूगंध ।

सुगंधउ—देखो 'सुगंध' (रू.भे.)
उ०—तनी नाद तबोळ रस, सुरहि **सुगंधउ** जाइ । ग्रामरण तुरी घरि गोरडी, किमउ दिसाउर त्याइ ।—ढो.मा

सुगंध उर—स पु.—१ हिरन, मृग । (ग्र.मा.)
२ कस्तूरिया हिरण ।

सुगंधक—स.पु [स. सुगंधक] १ चन्दन । (ना.मा; ह.ना.मा)
२ लाल तुलसी ।
३ पुष्प, फूल । (ग्र.मा, ना.मा, ह.ना.मा.)
४ नारंगी ।
५ गन्धक ।
वि.—जिसमें खुशबू हो, खुशबूदार ।
उ०—तद मीट लखंत धनंतर री, उड धारण **सुगंधक** ग्रनर री ।
—पा.प्र.
रू.भे.—सुगंधिक, सुगंधीक ।

सुगंधका—स.स्त्री.—सोनजुही, कस्तूरी । (ग्र.मा.)
रू.भे.—सुगंधिका ।

सुगंधता—स.स्त्री.—फूल आदि खुशबूदार वस्तुओं का गुण-धर्म, महक ।
उ०—केवडा केतकी कुंद । या का वास कौ भार लीयौ छै । **सुगंधता** तौ भार ही साभ हुई । स्रम हुग्रौ छै । एही सीतता हुई ।
—वेलि टी.

सुगंधधर—स.पु.—केसर । (ग्र मा.)
वि.—सुगंध को धारण करने वाला, महकदार ।

सुगंधमल्यका—स.स्त्री [स. सुगंधमल्लिका] मालती । (ग्र.मा)

सुगंधा—स.स्त्री [सं.] १ तुलसी ।
२ सौंफ ।
३ रुद्रजटा ।
४ बिजौरा नीबू ।
५ माधवी लता ।
६ काला जीरा ।

सुगंधाई—स स्त्री—सुगंध, महक, खुशबू ।
उ०—तठै रूप **सुगंधाई** सू काळौ भैरू जाड़ेची रै महल हमेसा आवै ।—जगदेव पवार री वात

सुगंधाकर, सुगंधाकार—वि —सुगंध से भरपूर, अत्यन्त सुगंधित ।
उ०—**सुगंधाकर** सुंदर फूल सोहै, महाथंभ सौरभ सिभू विमोहै ।
—रा.रू.

सुगंधि—वि. [स.]१ धर्मात्मा, पुण्यात्मा ।
२ खुशबूदार, महकदार ।
३ मधुर ।
स.पु [स. सुगंधि] १ परब्रह्म, परमात्मा ।
२ मधुर सुगंधियुक्त ग्राम ।
[स. सुगंधि] ३ पिपरा मूल ।
४ वन तुलसी ।
५ चन्दर ।
६ देखो 'सुगंध' (रू.भे.)
रू भे.—सुगंधी ।

सुगंधिक—स.पु. [स सुगंधिक] १ चन्दन ।
२ धूप ।
३ गन्धक ।
४ चावल विशेष ।
[स. सुगंधिकम्] ५ सफेद कमल ।
६ देखो 'सुगंधक' (रू.भे.)

सुगंधिका—देखो 'सुगंधका' (रू.भे.)

सुगंधित—वि. [स.] सुगंध फैलाने वाला, जिसमें से सुगंध फूट रही हो, महकदार, सुवासित, सुगंधदार ।
रू भे.—सुगंध ।

सुगंधी—१ देखो 'सुगंधि' (रू भे.)
उ०—मोती-जड़ी ज हाथि, सुरह **सुगंधी** वाटली । सूती साभिम राति, जाणूं ढोलू जागवी ।—ढो.मा.
२ देखो 'सुगंध' (रू.भे.)
उ०—थळ भूरा वन भाखरा, नही सु चंपउ जाइ । गुणे **सुगंधी** मारवी, महकी सहु वणराइ ।—ढो.मा.

सुगंधीक—देखो 'सुगंधक' (रू.भे.)

सुगड़, सुगड़ौ—देखो 'सुघड' (रू भे.)
उ०—सौ त्यू उठाय नै फौज मै पाछा नाखिया ज्यू बघूळियै ग्राया

सुगड़ा पान घास रा तिणका उड जावै त्यू मारौ लोग बिखर गयौ।
—डाढाळा सूर री बात

सुगठ—देखो 'सुघड' (रू.भे.)

सुगढ—स पु.—अच्छा गढ, मजबूत गढ या किला।

वि.—दृढ, पक्का।

उ०—थाका म्हाका अलग नही, राखौ था निज पास। म्हा तौ थारै आसरै, पायौ सुगढ निवास।—गौड गोपाळदास री वारता

सुगण—सं.पु.—१ इक्ष्वाकुवशीय एक राजा, शङ्खण या शङ्खनाभ।

उ०—वज्रनाभ सुत सुगण धरमवप, तै सुत विध्रत नरेस उग्र तप।
—सू.प्र.

२ देखो 'सुगन' (रू भे)

उ०—जिण दिन सुगण लैण नू नापौजी नरौजी गया, सू अबार माहाराज रायसिहजी गढ घातियौ तठै आया।—द दा.

३ देखो 'सुगुणौ' (रू भे.)

उ०—इम रहता सुख सु सदा, जे हूऔ छै विरतत। सुणयौ चित्त देइ सुगण, मन थिर करी एकत।—प.च चौ.

४ देखो सुगुण' (रू.भे)

सुगणी—वि स्त्री.—१ शुभ लक्षणा, गुणवती, गुणवान।

उ०—१ हा ऐ थारौ बिछड्यौ कथ मिळावा, सुगणी म्हानै देस बताद्यौ ऐ।—लो.गी.

उ०—२ आमी हे उदमादीयौ, रमीराजोवण कत। मौ सुगणी रौ साहिबौ, मद मातौ मैमत।—पना

उ०—३ बाबौ छोड्यौ जलम कौ, छोडी सुगणी माय। भाई छोड्या खेलता, सात सख्या रौ साथ।—लो गी.

२ सुन्दरी, रूपसी।

वि.स्त्री.—३ देखो 'सुगुणौ' (रू भे)

स.स्त्री—१ सुन्दर स्त्री, शुभ लक्षणो वाली स्त्री।

२ पुत्री।

रू भे—सुगुणी।

सुगणौ—देखो 'सुगुणौ' (रू.भे.)

उ०—१ कछु इक औगुण काढौ म्हामै, म्है भी काना सुणा। मै तौ दासी थारी जनम जनम की थै साहिब सुगणां।—मीरां

उ०—२ नित करस्या समकित निरमलौ, निरमल जिम गगा नीर। तजस्या संगति निगुणा तणी, सुगणा सु करस्या सीर।
—ध व.ग्र

उ०—३ हसा नै सरबर घणा, सुगणां घणा ज मिंत। जाय पड्या परदेस मैं, साजन आया चिंत।—अग्यात

(स्त्री सुगणी)

सुगत—सं पु [स. सुगत.] १ बुद्धदेव का नाम।

२ पाँडु-पुत्र अर्जुन। (ह ना.मा)

३. हस। (अ मा)

वि. [स सुगत] १ भली प्रकार बीता हुआ, अच्छी तरह गुजरा हुआ।

२ भली-भाँति दिया हुआ।

३ देखो 'सुगति' (रू.भे)

उ०—सुदतारा भल दान द्यौ, चित माझल कर चाव। सुगत दान दीधां मिळै, स्वरग किसू सुख साव।—बां दा

सुगति, सुगती—स.स्त्री. [स. सुगति] १ किसी प्राणी की मृत्यु के उपरात जीव को मिलने वाली उत्तम गति, मोक्ष।

२ अच्छी दशा, अच्छी हालत।

उ०—चौरी पकडी चौहट, दूती पूगौ दाव। सुगति विदर कपूत नै, विदरै न सिर पाव।—वि स सा

३ चलने का सुन्दर ढग, सुन्दर चाल।

उ० - अति चलति सुगति दुति अभित विद्ध, पदमणिय हस किरि गुरु प्रसिद्ध।—रा रू.

४ बढ़िया रफ्तार, अपेक्षित गति।

५ सदाचार।

६ शक्ति।

७ सीप।

८ एक प्रकार का सात मात्रा का मात्रिक छन्द, जिसके अन्त मे गुरु व लघु का कोई नियम नही होता है। (र ज प्र.)

रू.भे—सुगत।

सुगन—स.पु [स शकुन] १ यात्रा की शुरूआत या किसी कार्य के प्रारम्भ मे या किसी घटना के सम्बन्ध मे परिवेश मे दिखाई देने वाले या प्रगट होने वाले लक्षण या चिन्ह, जो उस कार्य के सम्बन्ध मे शुभ या अशुभ की सूचना देते है, सगुन, शकुन।

उ०—१ हरभूजी कही राव जोधौ पाहुणौ आज आय सै सुगन अहडा होवै छै।—नापै साखलै री वारता

उ०—२ कह म्हारी चिड़िया सुगन री बाता, कद आवैला म्हारा स्याम धणी।—मीरा

२ विभिन्न अवसरो पर शुभ मानी जाने वाली वस्तुएँ।

उ०—आदू तिवार मै सुगन औ देख अमल बिन दोघड़ा। आ रसम फैसाई अमलिया, तार न सोचै टोघडा।—ऊ का.

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, छोडणौ, मानणौ, लैणौ, होणौ।

मुहा०—१ सुगन देखणौ, सुगन विचारणौ=ज्योतिष या सगुन-शास्त्र में वर्णित आधारो से किसी कार्य के प्रति शुभ-अशुभ का विचार करना, भविष्य के लिए शुभाशुभ का विचार करना।

२ सुगन लेणा = अच्छे लक्षण देखकर कार्य प्रारम्भ करना, शुभ-बेला व शुभ माने जाने वाले प्राणियो का सामना करके प्रस्थान करना। ३ सुगन होणा = अच्छे लक्षण दिखाई देना, अच्छा कार्य होना।

३ विवाह का दस्तूर। (राजा-महाराजा)

८ शुभ मुहूर्त्त ।
५ उक्त मुहूर्त्त में सम्पादित कार्य ।
६ ऐसा माङ्गलिक कार्य जो शकुन के रूप में ही किया जाता है ।
७ माङ्गलिक अवसरों पर गाया जाने वाला गीत ।
८ गिद्ध पक्षी ।
९ चील ।
रू.भे.—सउग, सकन, सकुन, सकुण, सगुण, सगुन, सघुण, सवण, सहण, सावण, सुकन, सुकनाई, सुगण, सुगुन, सूग, सूण, सोण, सौण ।

सुगनग्य-स.पु. [स शकुनज्ञ] सगुनों का जानकार, शकुन शास्त्री ।
रू.भे —सकुनग्य ।

सुगनचिड़ी-स.स्त्री.-एक प्रकार की चिड़िया जिसका रंग सफेद, किन्तु परों में कुछ श्यामता होती है। इसके बैठने व बोलने की दिशा से शकुन माने जाते हैं ।
उ०—**सुगनचिडी** सात दिना ताई उण नै सुगन नी दिया। वौ निरणौ-तिरसौ उठै ई ऊभों रह्यौ ।—फुलवाडी
रू.भे.—सकुनचिडी ।

सुगनावळी-स.स्त्री.-शकुन-शास्त्र की पुस्तक जिसमें विभिन्न प्रकार के शकुनों का उल्लेख होता है ।
वि—शकुनों के बारे में जानने वाला, शकुन-शास्त्री ।

सुगनियौ—देखो 'सुगनी' (अल्पा, रू.भे.)

सुगनी-वि. [स. शकुन+ई प्रत्यय] शकुन-शास्त्र को जानने वाला, शकुन बताने वाला ।
उ०—तद **सुगनिया** इसी कही कै दरवाजौ खोदियौ सू आछौ काम नहीं कियौ ।—द.दा
स स्त्री.-१ श्यामा पक्षी ।
२ गौरैया पक्षी ।
स.पु. [स. शकुनी] ३ सुश्रुत के अनुसार एक बालग्रह का नाम ।
४ अर्जुन ।
५ गाडी के अगाड़ी का नोकदार वह हिस्सा जिस पर जुआ कसा जाता है। (अलवर)
६ देखो 'सुगणी' (रू.भे)
वि.स्त्री.-७ देखो 'सुगुणौ' (रू.भे)
रू.भे.—सउणी, सकुनि, सकुनी, सवणी, सावणी, सुकनी, सुकुनि, सुकुनी ।
अल्पा.—सगुनियौ, सुगनियौ, सौणी ।

सुगनौ—देखो 'सुगुणौ' (रू.भे)
उ०—मारौ चाहै छांडौ राणा, नाहि रहू मै बरजी । **सुगनां** साहिब सुमरना रे, मैं थारै कोठै खटकी ।—मीरा

सुगम-वि. [स.] १ जहाँ आसानी से चल कर जाया जा सके, सहज में जाने योग्य, सहज गम्य ।
उ०—हैसरा हीस नर लसकरा क्रह हुई, वहै सिंधुर कहर समर वेडा । आहाडा खड रज-मडळ ओछाइयौ, पहाडां अगम सर **सुगम** पेडा ।—गु रू.ब.
२ सहज, सरल, आसान ।
उ०—१ राजाजी आपरौ सुभाव बदळ, वारै वास्तै साव **सुगम** मारग बणाय दियौ ।—फुलवाडी
उ०—२ असगळ काळ आणद सम ईखियौ, सेन दूभर **सुगम** कीध सारै ।—व भा.
३ बोध गम्य ।
४ जो सहज ही प्राप्त किया जा सके ।
उ०—आग्या माग अगम की, अगम **सुगम** यू होय । हरिदास जन यू कहै, भूलि पडौ मति कोय ।—ह पु.वा.
क्रि वि—सरलता से, आसानी से ।
उ०—दास तन भजन विन तौ सबी दासरथ, थिरू बस कौड बातै न थावै । देवपत रूप वैराट थारौ दुगम, अणु सन सेवगां **सुगम** आवै ।—र.ज.प्र

सुगमता-स स्त्री—१ सुगम होने की दशा या भाव ।
२ सरलता, आसानी ।
३ स्पष्टता ।

सुगर—१ देखो 'सुघर' (रू भे)
२ देखो 'सुगुरु' (रू.भे.)
उ०—१ **सुगर** सीलवत होय, सुगर सत्य सदा सतोखी । सुगर सहज्य सुख, लील सुगर पर जीवा पोखी । सुगर सुमारग दाखव, जण तारण आयौ तरण ।—वील्होजी
उ०—२ सुकताहळ जै चवै, तां नरां मुकति ही दीजै । अलख जोति भेटियै, गोठि सुगर सिधां कीजै ।—वि.स.मा.
३ देखो 'सुघड' (रू.भे.)
४ देखो 'सुगरौ' (रू.भे)

सुगरथ-वि—१ सद्गुणी, गुणवान ।
उ०—मारचा तौ मारचा छै ए चारण, ऊदौ-दूदौ था रा ग्वाळ । गाया रै मूड मारचौ ए, **सुगरथ** था रा स्याम नै ।—लो.गी
२ उत्तम, श्रेष्ठ ।

सुगरापणौ-स.पु.-१ 'सुगरा' होने की अवस्था या भाव ।
२ कृतज्ञता ।
उ०—जभू भूला तेरा विसनोई, भूला तेरा साधू । **सुगरापणौ** साधै नह कोई, थोथा करै उपाधु ।—वि स.सा.
३ कृतज्ञता मानने का गुण ।
४ लिहाज, मुलाहिजा ।

सुगरीव—देखो 'सुग्रीव' (रू.भे)
उ०—१ इयै पिड माहि नही अपराध, सही **सुगरीव** वडौ कोई साध । नमौ हणमत तणौ कहि नाम, वडौ भड़ सत तणौ

विसराम ।—पी.ग्र.

उ०—२ राम कहै **सुगरीव** नैं, लंका केती दूर ? आळमिया अळघी घरणी, उद्दम हाथ हजूर ।—अग्यात

सुगरौ—वि. [स. स+गुरु] १ ऐहसान मानने वाला, कृतज्ञ ।

उ०—१ कैवरण लागी—श्री काळिदर तौ व्हियौ **सुगरौ** अर उरण नै मारग वाळौ धरणी व्हियौ नुगरौ ।—फुलवाडी

उ०—२ कोरण देस मै गुरुजी अमी झरत है, कोरणजू पीवरग वाळा रे लोय । गगन मडळ मै चेली अमी झरत है, **सुगरा** पीवरग वाळा रे लोय ।—श्री हरिरामजी महाराज

२ श्रद्धा रखने वाला, आस्था रखने वाला, विश्वास रखने वाला ।

उ०—१ सबद गरु का वारण, सहै कोई **सुगरा** । ग्यान ध्यान गलतांन, न सगी जुगरा ।—अनुभववारगी

उ०—२ सत् की नाव सत्गुरु खेवटिया, सत्सग **सुगरा** पाई । निरमळ सत समझ कौ मारग, हिळमिळ नाव चलाई ।

—श्री हरिरामजी महाराज

३ विनम्र, विनीत ।

४ भला ।

५ जिसके गुरु हो । (मा.म.)

स.पु.—१ किसी चीज को मजबूती से पकडने का लोहे का एक औजार ।

२ काष्ठ के दो टुकडों मे पेच फिट करके तैयार किया गया एक उपकरण जो छाप, मीनाकारी आदि मे काम आता है । इसमे किसी चीज को फँसाकर इसके लागे मे बल दे देने पर वह चीज हिलती-डुलती नही है ।

रू.भे.—सुगर, सुगुरौ ।

सुगळ—स पु—पवन, वायु । (ना.डि को.)

सुगह—स पु—१ अच्छी तरह कुचलने, पछाडने, झकझोरने की क्रिया या भाव, रोदन, मथन, गाहटन ।

उ०—रिग गाहटतै राम खळा रिग, थिर निज चरग म मेढि थिया । फिरि चढियै सधार फेरता, केकागा पाइ **सुगह** किया ।

—वेलि

२ कूट कर भूसे से निकाला हुआ, अनाज ।

वि.—१ धुना हुआ ।

२ मथा हुआ, कुचला हुआ ।

सुगांन—स.पु. [स. सुगान] अच्छा गीत, अच्छा गायन ।

उ०—वाजै द्वार वधावणा, सोभावणा **सुगांन** । वेर अवेरा वाधिया, डेरा डेरा दांन ।—रा.रू.

सुगाणौ, सुगाबौ—क्रि स.—१ नफरत करना, घृणा करना ।

२ किसी के केवल अवगुण ही जताना ।

३ न्यून या हेय समझना ।

सुगाणहार, हारौ (हारी), सुगाणियौ—वि० ।

सुगायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुगाईजणौ, सुगाईजबौ—कर्म वा० ।

सुगावणौ, सुगावबौ—रू०भे० ।

सुगात, सुगात्र, सुगाथ—स.पु. [स. सु-गात्र] १ सुन्दर शरीर ।

उ०—भज रे मन राम सियावर भूपत, अंग घणाघरण सोभ अनूप । नीरज जात **सुगाथ** निरूपित, कौटिक काम सकाम ।

—र.ज.प्र.

२ चरित्र या गुणकथन ।

उ०—किसौ वाद रिख सु करौ, साभळि जनक **सगात्र** ।

—राम रासौ

वि—सुन्दर शरीर वाला, सुकुमार ।

उ०—माल्ह कुमार विलसइ सदा, कामिरण सुगुण **सुगात** । माळवणी नू एक निम, मारवणी दुइ रात ।—ढो.मा

सुगायोड़ौ—भू.का.कृ.—१ नफरत किया हुआ, घृणित । २ अवगुण जताया हुआ । ३ न्यून या हेय समझा हुआ ।

(स्त्री सुगायोड़ी)

सुगार—स.पु.—गीत, गायन । (डि.को.)

सुगारि, सुगारी—स.स्त्री.—दीवार या कच्चा आँगन लीपने (लेपन करने) के लिये बनाया हुआ मिट्टी या गोबर का मिश्रण, गारा ।

उ०—ग्रिह ग्रिह प्रति भीति **सुगारि** हीगळू, ईंट फिटक मै चुणी अचभ । चदरण पाट कपाट ई चदरग, खुभी पना प्रवाळी खभ ।

—वेलि

सुगाळ, सुगाल—देखो 'सुकाळ' (रू.भे.)

उ०—१ पिंगळ पूगळ आवियउ, देसै थयउ सुगाळ । तेरिग न राखी सासरइ, अजै स मारू बाळ ।—ढो.मा.

उ०—२ सगलइ हुबउ **सुगाल**, अन्न चिहुं दिसि थी आयउ । आप आपणइ व्यापारी, सकौ अधिकारइ लायउ ।—स.कु.

उ०—३ सीहा विपत न सभवै, ठाली जाय न ठाळ । हाथळ सू पळ हेक मै, सीहा हुवै **सुगाळ** ।—बा.दा.

सुगाळी—वि.—अच्छे समय में जीवन बिताने वाला ।

स.स्त्री—एक देवी का नाम ।

उ०—आउवा रा नाथ तौ **सुगाळी** पूजै ओ, झगड़ौ आदरियौ ।

—लो.गी.

सुगावणौ, सुगावबौ—देखो 'सुगाणौ, सुगाबौ' (रू.भे.)

उ०—आरती मै भिळिया पछै प्रसाद नै **सुगावणियां** काला भगवान अर बामरग रै सार्गै ई भक्ता नै ई आप रा बैरी बिणायलै ।

—जहूरखां मेहर

सुगावणहार, हारौ (हारी), सुगावणियौ—वि० ।

सुगाविओड़ौ, सुगावियोड़ौ, सुगाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुगावीजणौ, सुगावीजबौ—भाव वा० ।

सुगावियोड़ौ—देखो 'सुगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुगावियोडी)

सुगिरीव—देखो 'सुग्रीव' (रू.भे.)

सुगीणी—देखो 'सागणी' (रू भे.)

उ०—बाहर तीमरनी काळ घणी सखरी सालाळी हुई उपरा तुरत लाभ री **सुगीणी** हुई।—कुंवरसी सांखला री वारता

सुगुण-स.पु. [स] १ अच्छा गुण, श्रेष्ठ गुण।

उ०—कवि कहै छै। जि सुनै उपायौ। जै परमेस्वर **सुगुणा** की निधि छै। जाकै गुण कौ पार कोई न पावै।—वेलि टी.

२ अच्छा व्यवहार, अच्छी आदत।

रू.भे.—सुगण, सुगुन।

३ देखो 'सुगुणौ' (रू.भे.)

उ०—१ माल्हकुमर बिलसइ सदा, कामिणी **सुगुण** सुजात। माळवणीनूं एक निस, मारवणी दुइ रात।—ढो.मा.

उ०—२ सु एक वडौ **सुगुण** मा'नसा। तैरी पोमाळ भेळा भणै। तद इहा री उठै आपस माहै नजर लागी।

—बीजड बीजोगण री वात

उ०—३ इम कहि लेइ सीख सनेह सु, ततखिण चाल्यौ रे ऊठि। **सुगुण** नर एकलडौ पिण स्यौ उर तेहनै, जगगुरु जेहनै रे पूठि।

—वि.कु.

सुगुणी-वि स्त्री.-१ देखो 'सुगुणौ' (रू.भे.)

२ देखो 'सुगणी' (रू.भे.)

सुगुणौ-वि. (स्त्री. सुगुणी) १ श्रेष्ठ एवं उत्तम गुणो वाला, गुणवान, गुणी।

उ०—हसा नै सरवर घणा, कुसुम घणा भमराह। **सुगुणा** नै सजण घणा, देस विदेस गयाह।—प.च.चौ.

२ शुभ लक्षणा।

उ०—रूप अनूपम मारुवी, **सुगुणी** नयण सुचग। साधण इण परि राखिजइ, जिम सिव-मसतक गग।—ढो मा.

३ भाग्यशाली।

४ जो किसी विशेष कला का माहिर हो।

रू.भे.—सुगण, सुगणी, सुगणौ, सुगनी, सुगनौ, सुगुण, सुगुणी, सुगुन।

सुगुन—१ देखो 'सुगन' (रू भे.)

उ०—वासी नरका रा विदर, स्यासी रा सैसोत। सत्यानासी रा **सुगुन**, दासी रा दैसोत।—ऊ का.

२ देखो 'सुगुण' (रू भे.)

३ देखो 'सुगुणौ' (रू भे.)

सुगुर, सुगुरु, सुगुरू-स पु. [स. सुगुरु] उत्तम या श्रेष्ठ गुरु जो अपने शिष्य को अच्छा ज्ञान सिखाये और सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करे।

उ०—१ सत्य गुरु कहि **सुगुर** रा, प्रणमु मन सुद्ध पाय। हता मूढ नै पिण हुआ, पडित जासु पसाय।—ध व.ग्र.

उ०—२ कुपह कुमारग वरजि करि, सुपह साच करणी कहै। महनाण **सुगुर** तणा सुरता सुणौ, प्रमन की प्रगट कहै।

—वि सं.मा.

उ० —३ **सुगुरु** साथिय हीण घणु भमिया, विसम वाट किहाइं न वीसमिया। जयसेखर सूरि

सुगुरौ-वि –१ अच्छे गुरु से मत्र लेने वाला।

२ देखो 'सुगरौ' (रू भे.)

सुग्गीव—देखो 'सुग्रीव' (रू.भे.)

सुग्घड़ी—देखो 'सुघड़ी' (रू भे.)

सुग्घड़ौ—देखो 'सुघड़' (रू भे.)

उ०—कलश परज कन्हड़ा, सुर सवाद **सुग्घड़ां**। निवास मान नाळिय, त्रिग्राम मूळ ताळिय।—रा.रू.

सुग्यान-वि [स. सुज्ञान] १ उच्च कोटि का ज्ञान, श्रेष्ठ ज्ञान।

२ अच्छी बुद्धि, श्रेष्ठ बुद्धि।

३ चतुराई, बुद्धिमानी।

४ अच्छी जानकारी, सब प्रकार की जानकारी।

५ एक प्रकार का साम।

६ देखो 'सुग्यानी' (रू.भे.)

उ०—बप रूप श्रोम नव घन वरण, हरण पाप-भय-ताप-हरि। गुण मान दान चाहै सु ग्रहि, कवि **सुग्यान** औ ध्यान करि।

—रा रू

सुग्यांनी-वि. [स. सुज्ञानी] १ विद्वान्, पण्डित, ज्ञानी, शास्त्रज्ञ।

२ समझदार, ज्ञानवान, दूरदर्शी, विवेकी।

उ०—ताहरा कुवर री मा नै तौ कह्यौ—थे तौ **सुग्यांनी** छौ। इतरा सास्तर सुणिया छै। कथा सुणी नै मैं इतरौ ही हठ सुणियौ छै? यूं कहि राणी रौ हठ छुडायौ।—पलक दरियाव री बात

३ चतुर, दक्ष, निपुण।

रू.भे.—सुग्यान।

सुग्रह-सं.पु [स.] १ फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ ग्रह।

[स. सुगृह] २ अच्छा घर।

[स स्व-गृह] ३ अपना घर, स्वगृह।

उ०—भजति **सुग्रह** हेमंति मीन भै, सिढि सिसि तु न कोई वहै सगि। कोई कोमळ वसत्रे कोइ कमळि, जण भारियौ रहंति जगि।

—वेलि

सुग्रही-स पु. [स सुगृह] घर।

सुग्री, सुग्रीव-स.पु. [स. सुग्रीव] १ वानर राज वालि का छोटा भाई जिसने श्रीराम से मित्रता करके अपने भाई बालि को मरवाया था। बाद मे इसने सीता की खोज व रावण को मारने में श्रीराम की ससैन्य सहायता की थी। (डि को.)

उ० –१ मच हणै वळ समराथ रा, रिण लडै भड रुघनाथ रा। तदि लखण अगद **सुग्री** हणवत, नील नळ नर नाह।—सू.प्र.

उ०—२ सुखेणां नल नील **सुग्रीव** साथा, हणू आदि आए मिळै जोडि हाथा।—सू प्र.

पर्याय.—सुकंठ, सूरजसुत।

२ हस।

३ बहादुर, योद्धा।

४ एक हथियार विशेष।

वि.—अच्छी गर्दन वाला।

रू.भे.—सुगरीव, सुगिरीव, सुग्गीव, सुग्रीवेस।

सुग्रीवसेन—स पु.—श्रीकृष्ण के रथ का एक घोडा।

उ०—**सुग्रीवसेन** नै मेघपुहप सम, वेग बळाहक इसै वहति। खति लागी त्रिभुवनपति खेडै, धर गिरि पुर साम्हा धावति।

—वेलि

सुग्रीवा—सं स्त्री. [सं.] १ एक अप्सरा का नाम।

२ सुन्दर गर्दन।

सुग्रीवी—स.स्त्री. [सं.] घोडे, ऊँट और गधो की जननी कही जाने वाली कश्यप की पत्नी तथा दक्ष की एक पुत्री।

सुग्रीवेस—देखो 'सुग्रीव' (रू.भे.)

उ०—अखै नाम ऊभौ **सुग्रीवेस** आगै, लखै राम जोवा कपी पाय लागै।—सू.प्र.

सुघड—वि. [सं. सुघट] १ चतुर, निपुण, होशियार, बुद्धिमान।

उ०—१ भाली बडी ठकुरांणी, जिसौ ही रूप, जिसौ ही सहुर, जिसी ही सारी बात मै **सुघड़**। सौ खींवसी घणौ राजी।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ पान पदारथ **सुघड** नर, अण तोल्या विकाय। जिम जिम पर भूयं सचरै, (तिम) तिम मोल मुहंगा थाय।—प.च.चौ.

२ समझदार, विचारवान, विवेकी।

उ०—१ जोई जुगत करम री कीरत जपी न मुख सूं जावै। **सुघड़** सुणौ साधा रौ सुजस ऊमरदान उडावै।—ऊ.का.

उ०—२ ताहरा वडारण महा चतुर **सुघड़** थी, सौ दोना ही रौ हेत देख रूप वय देख खुस्याल हुई।

—कुवरसी साखला री वारता

३ अच्छा, बढिया।

उ०—महा कपूत मुलक रै माही, लैण सपूत लडाई नै। पोल माय ऊमर पद पढियौ, **सुघड़** लेख सुघड़ाई नै।—ऊ.का.

४ जिसकी बनावट सुन्दर हो, सुनिर्मित, कलात्मक।

उ०—आटा खावती रूवाळी। लाबी भुजावा। धोळी **सुघड़** बत्तीसी, जाणै पळकता मोती ई खराद उतरया।—फुलवाडी

५ मधुर, प्रिय।

उ०—१ विविध बजत्री वीण बजावै, **सुघड़** भीण सुर सार। बोळौ कहै खीण व्है वंचक, हीण बजावण हार।—ऊ.का.

उ०—२ **सुघड़** जठै बोली या नवेली, महल सारै ही सिधावज्यौ। पण बाग वन सरोवर, कदै भी मत जावज्यौ।—रा सा स.

६ स्वरूपवान, सुन्दर।

उ०—जहा अब नही बाग नही, फूलै न फुलवाई। राग रग जहा नही, नहीं जहा **सुघड़** लुगाई।—दूलजी जोइयै री वारता

७ जिसकी स्मरण-शक्ति तीव्र हो।

८ सुशिक्षित।

स पु.—लखपत पिंगल के अनुसार राजस्थानी का एक छन्द विशेष।

रू.भे.—सुगड, सुगडौ, सुगठ, सुगर, सुग्घडौ, सुघडौ, सुघड, सुघर।

सुघड़इ, सुघड़ई—देखो 'सुघडाई' (रू भे.)

सुघड़ता—देखो 'सुघड़ाई'।

सुघड़पण, सुघड़पणौ—स पु.—१ 'सुघड़' होने की अवस्था या भाव।

२ चतुरता, निपुणता, होशियारी, बुद्धिमानी।

३ सुन्दरता, खूबसूरती।

४ समझदारी, दूरदर्शिता।

५ निर्माण-कला की विशेषता।

६ माधुर्य।

रू.भे.—सुघडापण, सुघड़ापणौ, सुघडापौ।

सुघड़राई कांन्हड़ा—स.स्त्री.यौ.—सब शुद्ध स्वरो की सम्पूर्ण जाति की एक राग।

सुघड़राई टोडी—सं.स्त्री.यौ.—सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

सुघड़ाइ, सुघड़ाई—स स्त्री.—१ चतुराई, निपुणता, होशियारी, बुद्धिमानी।

उ०—१ धोडाव्या नर रात्रिचर स्यु, करि नै सबल लड़ाई। माग्रत पाणी परगट कीधउ, ससु जाणौ **सुघड़ाई**।—वि.कु.

उ०—२ सौ कमळसी भरमल रौ कुंवरसी रूप रग तौ देखियौ ही थौ पण स्वभाव अर **सुघड़ाई** उण बखत करता दीठी।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ काम मै इत्ती ई फुरती अर उत्तीई **सुघड़ाई**। देख देख भाणजी री तौ अकल ई कह्यौ नी करती।—फुलवाड़ी

२ समभदारी, दूरदर्शिता।

३ सुन्दरता, खूबसूरती।

४ सुघड़ होने की अवस्था या भाव।

५ निर्माण-कला की विशेषता।

६ माधुर्य।

७ वर्ण्य विषय।

उ०—महा कपूत मुलक रै माही, लैण सपूत लड़ाई नै। पोल मांय ऊमर पद पढियो, सुघड लेख **सुघड़ाई** नै।—ऊ.का.

रू.भे.—सुघड़इ, सुघडई, सुघडाई, सुघराइ, सुघराई।

सुघड़ापण, सुघड़ापणौ, सुघड़ापौ—देखो 'सुघडपणौ' (रू.भे.)

सुघड़ी—स.स्त्री. [स. सुघटिका] १ अच्छा समय, अच्छी घडी, शुभ

घड़ी, शुभ वेला।

२ वह समय जब कोई अच्छा कार्य हो।

वि.स्त्री.–१ चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान।

२ सुन्दर, मनोरम।

३ अच्छी, श्रेष्ठ, उत्तम।

रू.भे.—सुघड़ी।

सुघड़ौ–देखो 'सुघड़' (रू भे)

उ०—आनद रौ आगार, आली है म्हारौ **सुघडा** रौ सरदार। हा हे आै तौ निरधारा आधार, हा हे आै तौ निरधन रौ धन सार। —गी.रा

सुघट–वि [स] १ सुन्दर, सुडौल।

उ०–१ थर थर कहावै सुमेरु सु ए रुक्मणीजी का स्तन छै। सुमेरु का सिर करि वरणाया छै। कटि छै सु घणौ खीण छै अरु अति ही **सुघट** छै।—वेलि टी

उ०—२ मुख निकट प्रकासित नास सज। क्रित उलट प्रगट किरि **सुघट** कज।—रा रू

उ०—३ हार डोर **सुघट** सोहई, भरचा माग स्यदूर। —रुकमणी मगळ

२ सहज, आसान।

उ०—मारवाड मगळी यह महाराजा रै साथ। तिण सू था सामल हुवौ **सुघट** वणै वौ पाथ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

३ मजबूत, दृढ।

४ अच्छी तरह बना हुआ।

स पु–१ सुन्दर व सुडौल शरीर।

उ०—कथ नै कामणी सीख इणी विध कीयै, लागवा तणौ नह नाव लीजै। घाव लागै जठै दीसवै बुरौ घट, कंथ घट **सुघट** क्यू कुघट कीजै।—कायर स्त्री रौ गीत

२ अच्छा पात्र।

रू भे.—सुघट्ट, सुघाट।

अल्पा.—सुघाटौ।

सुघटित–वि. [स] १ सुन्दर, सुडौल।

२ सुगठित।

३ दृढ, मजबूत।

सुघट्ट—देखो 'सुघट' (रू.भे)

उ०—कट पीत पट्ट, सुवर्ण **सुघट्ट**। गत पचमुख, चलै चाप रुख। —र.ज प्र

सुघड—देखो 'सुघड' (रू भे)

उ०—चाहत जोवन अधिक चित, मदन भई ऊनमत। हीरा डोलत हसगत, **सुघड** महेली सथ।—बगसीराम प्रोहित री बात

सुघडाई—देखो 'सुघडाई' (रू भे)

सुघर–स पु. [स. सुगृह] १ अच्छा घर, श्रेष्ठ घर।

२ बया नामक पक्षी।

३ देखो 'सुघड' (रू.भे)

सुघराइ, सुघराई—देखो 'सुघड़ाई' (रू भे)

उ०—ईण सु विरोध नहु बोलिजइ। नावी स माहणी **सुघराई** मान।—वी दे

सुघाट—देखो 'सुघट' (रू भे)

उ०—१ धुज **सुघाट** घाट कै कपाट छत्ति कै धरै। घन प्रनच्छ तच्छ कै प्रदच्छ स्वच्छ कै घरै।—ऊ का

उ०—२ सब लोक वसै धनवत सुपह, सोहै रूप **सुघाट** रौ। गहनत विकट जोधाण गढ, वणै मुकट वैराट रौ।—सू.प्र.

उ०—३ बज्र कपाट **सुघाट** विराजत, लखि दृढ दुरग स्वरग गढ लाजत। मठ अदर सुदर मूरत्ती, स्रीकरनी जय जयति सकत्ती। —मे.म

उ०—४ सदगुरु जिनचद सूरिजी, सघलै गुणै देखि **सुघाट** रे लाल। सुभ महोरत सत्योत्तरै, पाटण मैं दीधौ पाट रे लाल। —ध व ग्र

सुघाटौ—देखो 'सुघट' (अल्पा, रू भे)

उ०—कहै सुपह फरहास कटायौ, घणौ **सुघाटौ** ढोल घड़ायौ। —गो.रू

सुघोर–स पु.–तीव्र आवाज, जोर का शब्द।

उ०—धसी अकास धूमरी, कि वात सेन वित्थुरी। निसांण पांग नद्दय, **सुघोर** जोर सद्दय।—रा.रू.

सुघोस–स पु [स सुघोष] १ नकुल के शङ्ख का नाम।

२ एक बुद्ध का नाम।

वि–१ जिसका स्वर सुन्दर हो।

२ अच्छी आवाज, अच्छा स्वर, अच्छा शब्द।

सुड़णौ, सुड़बौ–क्रि.स–१ आनन्द के नगाड़े बजाना।

२ बेत या छडी से बुरी तरह पीटना।

उ०—आप सू फोरा सडकला माथै नाथावती कर उणा नै गळटूंपा दे'र घी पिलायोड़की रगाबग हुयोडी पेसला खोसणियां नै गुरामा आप कसाई कैय सडासड़ लीली कामड़ी सू **सुड़ता**।—चितराम

३ चाटकर खा जाना।

४ रगडकर इकट्ठा करना।

सुड़णहार, हारौ (हारी), सुड़णियौ—वि०।

सूड़िओड़ौ, सुडियोड़ौ, सुड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुड़ीजणौ, सुडीजबौ—कर्म वा०।

सुड़प—देखो 'सुड़फ' (रू भे)

सुड़पी–स पु–स्वर्ण तथा चाँदी का एक आभूषण विशेष जो पुरुषों के पैर के टखनों के नीचे धारण किया जाता है।

रू भे—सुरपी।

सुड़फ, सुड़फ–स.स्त्री.–वात-विकार के कारण शरीर या शरीर के किसी

भाग में रह-रह कर चलने वाली टीस ।

उ०—**सुड़फां** चालै सदा दाब दाबू फिर दाबू । पाळै वेमै पास ढाब ढाबू फिर ढाबू ।—ऊ का.

रू भे.—सुड़प ।

सुड़फड़ाट, सुड़फुड़–स स्त्री –फुसफुसाहट, कानाफूसी ।

सुचंग–वि [स सुचङ्ग] १ सुडौल, सुगठित ।

उ०—१ सीलभग जै करइ नरनारि घणाउ काल छइ तै नरग मझारि । आगि वरण पूतलि **सुचंग** सहइ दुक्ख नै नव नव भगि ।
—वस्तिग

उ०—२ अहिल्या नेम दियो तै अग, सरीर कुबजा कीध **सुचग** ।
—ह र

२ अत्यन्त सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ रूप अनूपम मारुवी, सुगुणी नयण **सुचंग** । माधण इण परि राखिजइ, जिम सिवममतक गग ।—ढो मा

उ० —२ तिहा किण सकल सभा मिली, त्रिप वैठौ मन रग । छत्र विराजै मस्तकै, चामर ढलै **सुचग** ।—वि.कु

उ०—३ देखौ (ताइ) चच विहंगम दहलड, रेखा सकति अनोपम रग । भरी किणही (कइ) विचित्र भरावी, सचउ करि नासिका **सुचग** ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ आभूखण सोहै अग अग, सिर पाग वादळाई **सुचग** ।
—गु.रु.ब.

३ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—१ पद्मनाभ पडित सुकवि, वाणी वचन गुरग । कीरति मोनिगिरा तणी, तिणि उच्चरी **सुचग** ।—का दे प्र

उ०—२ उमग अग मै उठे, **सुचग** सत्य सगतै । प्रलापमान अग नीच, कीच कै प्रसग तै ।—ऊ का.

४ शक्तिशाली, बलवान, बलिष्ठ ।

उ०—१ पैदल प्रबल रथा द्विदपगी, चतुरगी अतफौज **सुचग** ।
—र रू.

उ०—२ नागरवेली नित चरइ, पाणी पीवइ गग । ढोला, रयबारी कहइ, करहउ एक **सुचंग** ।—ढो.मा.

५ शुद्ध, पवित्र, निर्मल ।

उ०—१ निज अग लगाय **सुचग** कियौ नह, नीर सुचग कियौ जन रे ।—भगतमाळ

उ०—२ जगपावन त्रिपथा जाह्नवी, सुरगनदी सुरनदी (**सुचंग**) ।
—ह ना मा

६ ओज व कान्तिपूर्ण ।

उ०—लळवळ भैवै लळकता, सुथरै डील **सुचग** । भारतवाळी भोम पर, नसल नागौरी रंग ।—नारायणसिंह सादू

७ स्वस्थ, चगा ।

स पु.–१ घोड़ा, अश्व । (डिं.को.)

२ सात भगण व अन्तिम दीर्घ का एक छन्द विशेष ।

उ०—उगण साठि सौ पाच उचारि, सतरह लाख रूप गणि मार । सात भगण गुर अत सभारि, नांम **सुचंग** छद निरधारि ।—ल.पिं.

रू.भे —सचग, सुचगौ ।

सुचंगौ—देखो 'सुचग' (रू.भे)

उ०—पावडिया सहत नरम पद पकज, नूपुर हाटक परम पुनीत । छक कडबध **सुचंगा** छाजै, पट अगा राजै पुण पीत ।—र.रू.

(स्त्री. सुचगी)

सुच–वि. [स. शुचि] १ पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ, साफ ।

उ०—१ खलक मही वै खोजणा, **सुच** प्रसन्न सुख सत । धार जिकै सतोख धन, विण परवाह वसत ।—बा.दा.

उ० — २ कदि जाट जीकारथौ, **सुच** सिनान सुभाख्या । कहर करोध कुबाणि, वरजि करणि तीन्यौ राख्या ।—वि सं.सा.

२ धर्मात्मा, पुण्यात्मा ।

३ ईमानदार, निष्कपट, सच्चा ।

४ चमकीला, चमकदार ।

५ श्वेत, सफेद ।

६ ठीक, सही, उचित ।

स.पु. [स. शुच] १ दुख, शोक, सन्ताप ।

२ पीडा, दर्द ।

३ खेद, अफसोस ।

४ देखो 'सुचि' (रू भे.) (अ मा.)

सुचक्कर–स पु [स. सु-चक्र] सुदर्शन-चक्र ।

सुचत–स पु –कवि । (अ.मा)

सुचतौ–वि.–प्रसन्न, सन्तुष्ट ।

उ०— तरै परधाना कह्यौ—औ खोटौ आदमी छै नै गरज सारी छै, आज धरती सारी री मदार इण माथै छै इण नु हर भात कर **सुचतौ** कीजै ।—नैणसी

सुचमुखौ–वि –देखो 'सूचिमुख' (रू भे)

उ०—कूण नईरत मै पुरी, राकस बसै विसाळ । **सुचमुखा** सुपड कना, वडा रूप विकराळ ।—गज-उद्धार

सुचरित, सुचरित्र–वि. [सं. सुचरित्र] १ जिसका चरित्र अच्छा हो, चरित्रवान ।

२ जिसका आचरण व व्यवहार उत्तम हो ।

स पु.–१ अच्छा चरित्र, शुद्ध चरित्र ।

२ अच्छा आचरण, अच्छा व्यवहार ।

सुचरुच, सुचरूप–स.स्त्री.–पतिव्रता, सती । (अ.मा)

सुचळ, सुचळि–वि –१ अस्थिर, चञ्चल ।

उ०—चळ वैभव सपत **सुचळ**, चळ जोबण चळ देह ।—अग्यात

२ अस्थायी ।

स पु.–हस । (अ.मा; ह.ना.मा)

उ०—ग्रस पाखा ग्रावर 'ग्रजवाबत', वावर जुध ग्रावध विखम।
ढूढाहड़ा सतोल जळज ढिग, जै खळ भखिया सुचळ गत।
—कोटा राव री गीत

सुचवणौ, सुचवबौ–क्रि.स.–कहना, बोलना।
सुचवन–स.स्त्री. [स. सुच्यवत] ग्रग्नि, ग्राग। (ग्र.मा.)
सुचवियोड़ौ–भू.का.कृ.–कहा हुग्रा, बोला हुग्रा।
(स्त्री. सुचवियोड़ी)
सुचहिय–वि. [सं. शुचि-हृदय] शुद्ध हृदय वाला।
स.स्त्री.–मती। (ग्र.मा.)
सुचांणक–देखो 'सिचाण' (रू.भे.)
उ०—डाकर भर घमळा कुरंघ उडाणक, ग्रथी वखाणक पेलै पार।
सुलटौ वागा झपट सुचांणक, धज मांणक बळवत चत्र धार।
—देयोजी दधवाड़ियौ
सुचार–वि.–१ शुद्ध, पवित्र।
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
३ सदाचारी, चरित्रवान।
स.स्त्री.–१ अच्छी चाल-चलन, अच्छा ग्राचरण।
२ देखो 'सुचारु' (रू.भे.)
सुचारा–वि.स्त्री.–१ शुद्ध, पवित्र।
उ०—सामगरी ग्रग्र घरै सुचारा, साजै सव साधन सेवा रा।
—सू.प्र
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
सुचारु, सुचारू–स.पु. [स सुचारु] श्रीकृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
वि.–१ अत्यन्त सुन्दर, खूबसूरत, अतिशय मनोहर।
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
३ ठीक, उचित।
रू.भे.—सुचार।
सुचाल–स.स्त्री.–१ अच्छी चाल, अच्छी गति।
२ उत्तम ग्राचरण, सदाचार।
उ०—सुचाल चाल चाल कै, कुचाल चाल व्है कदा। ग्ररी विचाल चाल व्है, ग्रचाल चाल व्है ग्रदा। - ऊ.का.
३ अच्छा रहन-सहन।
सुचाळी–स.स्त्री.–पृथ्वी, धरती। (डि.को.)
वि.–१ उत्तम चरित्र वाला, सदाचारी।
२ अच्छे रहन-सहन वाला।
३ सुशील।
४ अच्छी चाल या गति वाला।
सुचि–सं.स्त्री. [स. शुचि] १ पवित्रता, विशुद्धता, स्वच्छता, सफाई।
उ०—१ नही मोती माळा, नहिन छक हाला सुचि नही। नही नारी प्यारी, वचन छिदगारी रुचि नही।—ऊ.का.
उ०—२ कागा कुत्ता कुमाणसा, तिहवां एकौ रुचि। ऐसा खाणा खाईयै, जैसी उपजै सुचि।—अनुभववाणी
उ०—३ हरीया खाणा ग्रन का, पीणा जळ का होय। भोजन माखी भखीयौ, सुचि कहा तै होय।—अनुभववांणी
२ ईमानदारी, सच्चाई।
३ भलाई, सज्जनता।
४ ग्रग्नि, ग्राग। (डि को.)
उ०—वहरक चमक खुर सुचि झमक चकमक किलक डक लगि ग्रजक चउ।—व.भा.
५ ग्रीष्म ऋतु, गरमी।
६ ग्रासाढ़ मास की वायु।
७ कश्यप की पत्नी के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या।
[स. शुचिस्] ८ किरण, रश्मि। (ना.मा, ह ना.मा.)
९ चमक, कांति, ग्राभा।
स.पु.–१० पुण्य, धर्म।
११ ब्रह्मचर्य।
१२ पवित्रजन।
१३ ब्राह्मण।
१४ ईमानदार व सच्चा मित्र।
१५ सूर्य, रवि।
१६ चन्द्रमा, शशि।
१७ शुक्र-ग्रह।
१८ शृङ्गार-रस।
१९ चित्रक वृक्ष।
२० ग्रासाढ़ मास का नाम। (डि.को.)
उ०—सुचि नवमी कुज ग्रसित भान बसि चउ तेरह मत।
—वं.भा
२१ ज्येष्ठ मास का नाम। (डि.को.)
वि. [शुचि] १ शुद्ध, पवित्र।
उ०—१ तु तन सुचि किया सुचि होई, तौ पाई और ग्रसुचि नही कोई।—अनुभववाणी
उ०—२ ब्रह्म विचार ग्रपार, अजित ग्ररि लगै न नरहरि। ग्रखिल ग्रथिर सुचि सुथिर, गया भजता भै थरहरि।
—ह. पु वा.
उ०—३ रुत प्रांत चंदण कपूर, सफै समसाण सफाई। विविध ग्रमित सुचि वसत, चेहरिन निमति चलाई।
—रा. रू
२ श्वेत, सफेद।* (डि.को.)(ह.ना मा.)
३ उज्ज्वल, स्वच्छ। (ना.मा.)
रू.भे.—सुइ, सुई, सुच, सुची।
सुचित–सपु. [स.] १ अच्छी बुद्धि, अच्छा ज्ञान।

२ शुद्ध मन, पवित्र मन।

३ निश्चितता, बेफिक्री, मस्ती।

४ मन की स्थिरता, एकाग्रता।

वि.-१ स्थिर मन, एकाग्रचित्त।

उ०—१ सु एतरइ हिजु कारणइ, आगिलउ राजा सभा सहित **सुचित** हुइ सुणाइ, तउ सु-कवि कु-कवि की पारिखा जणाइ।
—अ. वचनिका

उ०—२ **सुचितां** होय भजौ साहब नैं, पामै सदगत प्राणी। बेद पुराण कहै पर वामा, नरका तणी निसाणी।
—र. रू.

२ प्रसन्न, खुश।

उ०—आभ थोभै भुजै 'माल' हर आभरण, वधै आधक छत्रा विसोवा-वीस। दुचित दिल्लेस तद खळा माथै दुगम, **सुचित** तद परठिजै ऊमरा सीस।—गु.रू.ब.

रू.भे.—सुचीत, सुचील।

सुचितई-स.स्त्री.-१ सुचित्त होने की अवस्था या भाव।

२ एकाग्रता, स्थिरता।

३ शुद्धता, पवित्रता।

सुचिता, सुचिताई-स.स्त्री.-पवित्रता, स्वच्छता।

उ०—पहरण मैला पगरण, **सुचिता** सू सौ कोस। पाणी आवै दीवड़ा, होका चमड़पोस।—बाकीदास

सुचितौ-वि.-खुश, प्रसन्न।

उ०—जेठी घोड़ौ छै सु सिखरै उगमणावत नू देई। अर रजपूत दुचिता छै सु तूं **सुचिता** करै।—नैणसी

सुचित्त-वि.-जिसका चित्त स्थिर हो, शान्त, निश्चित।

सुचिमुख—देखो 'सूचिमुख' (रू.भे.)

सुची—देखो 'सुचि' (रू भे.) (ह.ना.मा.)

उ०—देवी कावेरी तापि क्रस्ना कपीला, देवी सोण सतलज्ज भीमा सुसीला। देवी गोम गंगा देवी वोम गंगा, देवी गुप्त गंगा **सुची** रूप अंगा।—देवि.

सुचीत-वि.-१ सुन्दर, सुहावना, मनोहर।

उ०—दसराहा लग भी रह्यउ, माळवणी री प्रीत। वरिखा रुति पाछी वळी, आवी सरद **सुचीत**।—ढो.मा.

२ शुद्ध, निर्मल।

३ देखो 'सुचित' (रू.भे.)

सुचीमुख—देखो 'सूचिमुख' (रू भे.) (ह ना मा)

सुचील—देखो 'सुचित' (रू.भे.)

उ०—१ जिह नगरी धरम दिढाव, सत सिवरण नर सूरा। मझै **सुचील** सिनान, जुगति जरणा पंण पूरा। वि.स सा.

उ०—२ सातिळ सनसुखि आय, **सुचील** जित हुवौ सिनानी। 'साग' राण सुणि सीख, जका गुर कही स मानी।—वील्हौजी

सुचेत—देखो 'सचेत' (रू.भे.)

सुचेतन-स.पु.-१ विष्णु। (डिं.को.)

२ देखो 'सचेतन' (रू.भे)

सुच्छंद—देखो 'स्वच्छंद' (रू भे.)

उ०—अबार ताई सरदार इणी ख्याल मैं हौ कै लीना उण सू ई हेत करै है। जद ई तौ उण घोड़ौ अर सोनै री गाठड़ी लीना नै सूपणौ री बातौ म्हारै सू करवायौ। म्हारै सागै औ भरोसौ भी दिरवायौ कै अब लीना बैजू रै सागै **सुच्छंद** घूम-फिर सकै है।—तिरसकू

सुच्छ—देखो 'स्वच्छ' (रू.भे.)

उ०—कुवळ नयण कुळ **सुच्छ**, अगनयणी मनासमी। मुहडै आगळ मुच्छ, जम क्यू जासी जेठवा। - जेठवौ

सुच्छता—देखो 'स्वच्छता' (रू भे.)

सुच्छम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.)

उ०—१ **सुच्छम** रोमावळि सुखद, बरणी उकति विचार। माप्रति रस सिणगार री, बेल कियौ बिसतार।
—बा. दा.

उ०—२ म्हनै रोज सुणाई देवण आळा **सुच्छम** सदेसड़ला सू कितरी ई घणी सापरत, परस, गध, सवरण अर सुवाद रै सगळै गुणा सू छळकती, सीतळ, फूटरी, नसीली, सुरीली वा म्हनै आप री मीठी बाथा माय भरनै चली गई।—तिरसकू

सुच्छमता—देखो 'सूक्ष्मता' (रू.भे.)

उ० कटि **सुच्छमता** हूत लजांणै केहरी, हररी अणिमा सिद्धि बराबर देहरी।—बा.दा.

सुछंद—देखो 'स्वच्छंद' (रू भे.)

उ०—उण आपरा सुरगा मै पूग्योड़ा घोडा नै जिकौ सनमान दियौ अर हमेस रै वास्तै बैजू नै **सुछंद** घूमण रौ जिकौ वचन दियौ वै सब बाता बर-बर मैं म्हनै याद आय रयी ही अर साचै बहादुर री कहाणी मी म्हारा काना माय गूज रयी ही।—तिरसकू

सुछम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ बरतुल **सुछम** कपोळ रसीली बामरा, किया तयारी वेह दरप्पण कामरा।—बा.दा.

उ० - २ निरालब निरलेप अनत, ईसर अविनासी। थावर जगम थूळ, **सुछम** जग निखिल निवासी।—ह र.

सुछळ, सुछळि—देखो 'छळ' (रू.भे.)

उ० - १ कहै प्रोहित 'केहरी', अम्हा धरवट अधिकाई। साम **सुछळ** सत्र वाढि; वडा जुध तरै वडाई।—सू.प्र.

उ०—२ सुतन 'वीरोच' जिम मागता 'अजन' सुत, कायबां पुराण कथ कहाणी। परम कमधज **सुछळ** सुपाता, पाण ओढवळीयौ हात

पाणी ।—सवाईसिंह री गीत

उ०—३ तीन पहर रवि नपै, जिया ऊपर जग जांणै । स्याम सुछलि व्रत सभिरण, अधिक उच्छव चित आणै ।—सू.प्र.

उ०—४ रिण कोड उठी ममता रवद, सूरमा अठी वड छड सवद । सामत रूप मामन सीह । 'अजमाल' सुछळ चापी अवीह ।

—रा.रू.

उ०—५ राजा छळ खीची कुळ राहै, साम धरम ऊभा व्रत साहै । धाधळ 'पाल' हरा पग धारी, गै 'अगजीत' सुछळ अहकारी ।

—रा.रू.

उ०—६ 'चतुरेस' महाबळ चाहुवाण, महाराज सुछळ बळ अप्रमाण । 'अखमाळ' कमंधै बळ अथाह, गजवा खळा 'वाली' सगाह ।—रा.रू.

उ०—७ अनि घणा कीध जुध सुछलि आप । पह जिकी आज कीजै प्रताप ।—रा.रू.

सुछांन—स पु.–शिव, शङ्कर । (अ.मा, ना मा)

सुछिम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)

उ०—अवरण वरण करम नहि काया, सुछिम व्रह्म सू सीतळ छाया ।—ह पु वा.

सुजंग—स पु –युद्ध ।

उ०—हत छाह देख उडता विहग, जौ कर ही काळ हूंता सुजग ।

—शि.रू.

सुज—सर्व –१ वह, वे ।

उ०—१ आहव छोड फतैखा आसुर, धरम दुवार गयौ छोडै घर । पुर लूटियौ वडी सिध पाई, मभिया सुज मारिया सिपाई ।

- रा.रू.

उ०—२ माह मत्री मेळ(सी) सकाजा, मिळणै आ हूता महाराजा । कर जोड़ै अरजा सुज करसी, धणी जेम निजरा द्रव धरसी ।—सू प्र

२ उसके ।

उ०—रूप भाग गुण भजन नरायण, पुत्र हुवौ सुज भगत परायण ।

—रा.रू

३ उस ।

उ०—१ जमदाढ वासै अग भीड जडी, सुज ऊपर पेटीय सावरडी ।

—गो.रू.

उ०—२ सुज कत अन अमरा सुपुरि, चौओडी हरि उचरै । छत्रपती सनेह 'चंदू' छडी, सेवावत व्रत संभरै ।—रा रू

३ वही ।

उ०—१ हरि चाहै सुज हुवै लेख साहै सुरलोयी । भूमडळ भोगवै, करम प्राचीन सकोयी ।—रा.रू.

उ०—२ प्रथम करां या रै सुज पल्लै, भल्लौ वाज चिडी जिम भल्लै । यानै पकड़ निजर मौ आणौ, रिण गुण पछै सभाळू राणौ ।

—रा रू.

सं.पु.—मस्तिष्क, सिर ।

वि.—१ शुभ ।

२ शुद्ध ।

क्रि.वि.—१ मानो ।

उ०—पिलवाणा आकम पाण धरै, सुज दामणि जाणि खिवै सिहरै । धज स्याह वरन्नह धम्मळिय, परि लाल सवज्जह पीयळय ।

—गु रू व.

२ पुन, फिर ।

३ और ।

उ०—राम पाट कुस भूप विराजै, सुज कुस पाटि अतिथ दिन साजै । नभ्रम अतिथ निर्वध्रि नृप सोहन, राजा निखध पाटि नभ राजत ।—सू.प्र.

रू.भे —सुजि ।

सुजगीस—क्रि.वि –शुद्ध भावना से ।

उ०—१ हम ऊपरि करुणा तइ कीनी, जग जीवन जगदीस । तोरण थी रथ फेरि सिधारै, जोग ग्रह्यौ सुजगीस ।—स.कु.

उ०—२ अतिसय कमला हाथिणी रे, परिवरियउ निसदीस । सहजानद नंदन वनइ रे, केलि करइ सुजगीस ।—वि.कु.

सुजड़—सं.स्त्री.—१ तलवार । (डि.को.)

उ०—१ घड उब्भै घड़ियाल ज्यू, घट घट वग्गा घाव । रज रज हुयगी 'रूपसी', सुजड़ा 'कुभ' सुजाव ।—रा.रू.

उ०—२ साहवै सभ हौद ताल सिर, मारगखा माथै सुजड़ । पचमुख माथ घणा पाधोरै, पाच खान पाडै अपड़ ।

—द दा

उ०—३ कीधौ विसेख करतै कळह, तरसि तूग 'चादै' तणौ । वणियौक चद' संकर वदन, सुजड घाइ मुहि सामणौ ।

—गु. रू. व.

उ०—४ एक घडी वग्गो सुजड़, धड़ कड लग्गी धार । पिसण थया विमुहा पणा, गहि वग्गा तोखार ।—रा.रू.

२ कटार ।

उ०—१ मल्हपियौ रूप अध्रियांसणौ, वहसतो ववाडनो । उरड़तौ सुजड़ जडतौ असुर, पांच हजारी पाडतौ ।

– सू. प्र.

उ०—२ केहर रै हाथळ करी, कीधी दात वराह । सूर काज कीधी सुजड़, विध करतापण वाह ।—वा.दा

उ०—३ नग-जडित सुजड़ नराज, वडवडा सदफर वाज । पौसाक ऊच अपार, भळि लुटै द्रव्य भडार ।

— सू. प्र.

उ०—४ सीहथा साह सिरपाव, सजि असि गज अवि सीनग अथा । सीहथा खाग खजर सहित, सुजड़ वधाए सीहथां ।

— सू प्र.

स.पु.—३ भाला।

उ०—साझै मेछ सुजड़ जस धरियै, कळकळ कोप कियै कमळ। गाळाबध महल नह घातै, गुण घातै पतसाह गळ।

—महाराणा सागा रौ गीत

रू.भे.—सुजडी, सुजड़, सूजड़।

सुजड़हत, सुजड़हथ, सुजड़ाहथ, सुजड़ाहथौ – वि. – जिसके हाथ मे तलवार, कटारी या भाला हो, शस्त्रधारी।

उ०—सुजड़ाहथौ भदावत 'सामळ', 'भीम' हरौ छळ धणी भुजागळ। 'साभल' जोड जोध 'मादावत', रिण पडिहार सजूभौ रावत। - रा रू

स पु—खड्गधारी योद्धा, वीर।

सुजड़ी—स.स्त्री.—देखो 'सुजड़' (रू.भे.)

उ०—१ जुध वाळियौ किसन जोधपुरा, निहसै वसि चाढियौ नीर। जस देवळ रचयौ सुजड़ी जडी, वढि ढाहै देवळ वणवीर।

—अमरसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—२ गाहि साम्हरि-नयर ढोळि फौजा गजा, ताळ सर ढीलडी ढाळि ताणी। बिजायी 'मान' मजिना सुजड़ी विगत, जगतचख चारि वाणाम जाणी।

— सवाई जयसिंह रौ गीत

सुजन—१ देखो 'स्वजन' (रू.भे.)

उ० — अपराध कोट जावै अलग, तरै स्रग्ग पासै तिकै। सुजन रा इसा फळ सपजै, 'जगा' आग न्हावै जिकै।

—ज.खि.

२ देखो 'सजण' (रू भे.)

उ० –भगवती प्रसन्न हुई कही—थारौ पुत्र चिरजी रहसी। महाधरमातमा होयसी। राजा प्रजा पुत्र जन्म रौ महोत्सव मनायौ। लोगा रा मन फिरिया। क्रपण था सौ दातार हुआ। दुरजण सुजन हुआ। लोग चोरी छोडी।

—बैताळ पचीसी

सुजनता—देखो 'सजनता' (रू.भे)

सुजनी—स स्त्री—एक प्रकार का बहुमूल्य मलमली वस्त्र जिस पर जरी व कारचोब का काम किया हुआ होता है। यह रईसो के बैठने के गद्दो आदि पर बिछाया जाता है।

उ०—१ विट्ठलदास ढोलिया सू उतर नै सुजनी बिछवाई, तकिया रखाया आप नीचा बैठिया।

— गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ तठा उपरायत जाजमा गिलमा रा विछावणा हुयनै रह्या छै। ऊपरा गदरा चादणी विछायजै छै। तै ऊपर सुजनी ढाळजै छै, सू किण भात री छै? भडोछी बाफतैरी, घणै कळाबूत रेसम रै कारचौभी रै काम री, गुजरात रै कारीगर री कीवी छै।—रा.सा.स.

सुजळ—स पु. [स. सुजल] १ पवित्र जल, उत्तम जल।

उ०—१ अधम न जा तीरथ अवर, तु जा सुरसरी तीर। दीरघ लछमी तीन द्रग, सुजळ पखाळ सरीर।—बा.दा.

उ०—२ माळी ग्रीखम माह, पोख सुजळ द्रुम पाळियौ। जिण रौ जस किम जाय, ग्रत घण बूठा ही 'अजा'।—बा.दा.

२ यश, कीर्ति, बडाई।

उ०—सुजळ बरद चाढण धर संभर, अणभग आप वस अजु-आळ। रूका जीत अखाडै रावत, राणा तणा धरा रखवाळ।

—रावत बुद्धसिंह चौहाण रौ गीत

३ आभा, कान्ती, दीप्ति।

उ०—चविजै 'वीर' पाटि राव 'चौडौ', चहुवै जका करण जस 'चौडौ'। चाढण सुजळ उभै कुळ 'चौडौ', चरुसुकाळ विरदा धर 'चौडौ'।—सू.प्र.

४ देखो 'सजळ' (रू.भे.)

सुजस—स.पु. [रा. सुयश] १ यश, कीर्ति।

(अ. मा, डि. को; ह. ना. मा.)

उ०—१ सिव सुसरौ बाहण मदन, तिलक हार सिर तोय। जेहल रौ या जेहडौ, कहै सुजस सह कोय।—बा.दा.

उ०—२ इम जीपै आवियौ, 'गग' बाजता नगारा। सुजस वधै धर गिरै, उछक छक वधै अपारा।—सू.प्र.

२ प्रशसा, तारीफ, वाहवाही।

उ०—मगण लारै मडिया, आगै भागौ जाय। सुजस कुजस नह सभळै, जंबुक सूंब कहाय। – बा दा.

३ ख्याति, बडाई, नामवरी।

उ०—साह कळि सेन लूटै तखत साह चा, वजाडै 'जोध' हर जैत-वाजा। दीपिया ऊजळा प्रवाडा दुवै दुहुं, राज रा भुज सुजस महाराजा।—नरहरदास बारहठ

रू.भे —सुजसउ।

सुजसउ—१ देखो 'सुजस' (रू.भे.)

२ देखो 'सुजसौ' (रू.भे.)

उ०—वरियाम जिकौ विकराळ वडाळह, हद वहद हद करण हद। तीजी जटा काढियउ ताहरा, भडताइ सुजसउ वीरभद।

—महादेव पारवती री वेलि

सुजसवांन—वि.—कीर्तिमान, यशस्वी।

उ०—गजराज सीहायक जीउ गोपाळ, पह तणी करनला करी पाळ। थापीयौ सिखर पुगळ सुथान, वड परचौ करनी सुजसवान।

—रामदान लाळस

सुजसा—स.स्त्री. [स. सुयशा] १ एक अप्सरा का नाम।

२ परीक्षित की एक रानी का नाम।

सुजसौ—वि.—यशस्वी।

उ०—सुजसा थट गरट मेलिया ईमर, आवै महल मचाळा आप।

लाडा तणा इजि दरसण लाधइ, प्रिथी तणा खाइजस्यइ पाप।
—महादेव पारवती री वेलि

रू.भे.—सुजसउ।

सुजांण—वि. [स. सज्ञान] १ चतुर, बुद्धिमान।

उ०—१ सा सोरी, सुन्यारक भवर **सुजांण**। बाईजी रै वीरै मुख पर दुपटौ राळियौ।—लो.गी.

उ०—२ मेवा वस्त्र आभरण मिस्री, वदजइ किसा किसा वाखाण। वरी घणइ (ताइ) उछाह ल्याया, जानी ईसर तणा **सुजांण**।
—महादेव पारवती री वेलि

२ दक्ष, निपुण, माहिर।

उ०—१ ढोलइ-मारू पउढिया, रसमइ चतुर **सुजांण**। च्यारै दिसि चउकी फिरइ, सोहड सूर जुवाण।—ढो.मा

उ०—२ नाई देख धाई ताडका मारन्ही रांम **सुजांण**।—रामरासौ

उ०—३ वेऊ चतुर **सुजाण**, पेम-रग-रस पिया। बरखा रुति घण वरख, जाणि कु हरखिया।—ढो.मा

उ०—४ कवाडउ रतन गारि कुदण री, युगति मिलावट चुणी **सुजाण**। तेज खमइ कुण देख तिया रउ, सुवण सुवण जिह्वा ऊगइ भाण।—महादेव पारवती री वेलि

३ समझदार, विचारवान, सज्ञान।

उ०—१ दायस वीजउ नाम, तै आगळि लहुउ ठवइ। जइ तू हुई **सुजाण**, तउ तू वहिलउ मोकळे।—ढो.मा

उ०—२ ज्योतिखी तेडै राव **सुजाण**, पूछै जिण पडित वेद पुराण।
—रामरासौ

उ०—३ जाणै जिकै **सुजाण** नर, ना जाणै सो बोक। जमी'र असमाना बिचै, अरबद तीजा लोक।—डाढाळा सूर री बात

४ पडित, विद्वान्।

उ०—कठै माघ इण विध कही, सुणि इम कहे **सुजांण**। माडै कायब 'माघ' सधि, पडित 'माघ' प्रमाण।—सू.प्र.

५ प्रियतम, प्रेमी।

उ०—१ म्हारो मन मोह्यो, छै जी स्याम **सुजाण**। माधुरी सूरत सुदरी सूरत, जाणै कोटिक भान।—मीरा

उ०—२ ढोउ सयमन **सुजाण**, सेज दिसि वाहुडइ। जाणै धरती-काज, असपति अ.हुडई।—ढो.मा.

६ सजन।

स.पु.—पति, खाविद।

२ परमात्मा।

उ०—मथै ते बार किना महराण, सुरा लै दीध अग्रन्त **सुजांण**।
—ह.र.

३ राजा, नृप।

उ०—सहनक तणा **सुजाण**, पारीसा 'पातल' तणा। तै रहिया राण, एकरा हुता 'ऊदवत'।—सूरायच टापरचो

रू.भे.—सजाण, सजान, सुजांणा, सुजाणी, सुजान, सुयाण, सूजाण।

सुजांणी—देखो 'सुजाण' (रू.भे.)

उ०—लागी प्रीत मोहि भई पुराणी, भावै जांणी मजाणी। लोक लखी में कौण काम है, सुदरी साम **सुजांणी**।—अनुभववांणी

सुजान—स.पु.—१ पंवारवश की एक शाखा। (व.भा.)

२ देखो 'सुजाण' (रू.भे.)

उ०—१ सम्रित साख पुरान कु, सीख'रि भया **सुजान**। हरीया अछर हेक विन, चतुराई मै मान।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया दळ ऊमटि घटा, तबल घुरै निसान। दहल पडै सिर दोखिया, आवै सूर **सुजान**।—अनुभववाणी

सुजाक—देखो 'सूजाक' (रू.भे.)

उ०—गरमी, सोज, **सुजाक**, पाव पुरसा रै होवै। सम्सा, तस-नासूर, भगदर भारी रोवै।—नारी सईकडौ

सुजाग—१ देखो 'सजग' (रू.भे.)

उ०—१ ओ नवमौ उत्तरण वाळौ। बीदणी आखै दिन मेडी मै ई सूनी रैवै। तीन तीन दाया हाजरी मै। अस्टपौर **सुजाग** रैवै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ हाथिया रै गळै भूलता वीरकठ, ऊटा रै गोडा लूमती नेवरिया, घोडा रै पगा खणकता आवळा री गमक सू काकड रौ कण कण जाणै **सुजाग** व्हैगौ।—फुलवाडी

२ देखो 'सूजाक' (रू.भे.)

सुजागर—वि.—१ जो देखने मे अत्यन्त सुन्दर लगे, मनोहर।

२ प्रकाशमान।

सुजाणौ, सुजावौ—देखो 'सूजाणौ, सूजावौ' (रू.भे.)

उ०—वौ पुटिया रै आळै दूजा पछिया रै साथै नी गियौ। मूंडौ **सुजायोड़ौ** उणी ठौड बैठौ रह्यौ।—फुलवाड़ी

सुजाणहार, हारौ (हारी), सुजाणियौ—वि०।

सुजायोड़ौ भू०का०कृ०।

सुजाईजणौ, सुजाईजबौ—कर्म वा०।

सुजात—वि. [स.] जिसका जन्म उत्तम विधि से हुआ हो, जो विवाहित स्त्री-पुरुषो की सतान हो।

स.पु.-जैनियो के बीस विहरमानो मे से पाँचवाँ विहरमान।

उ०—विहरमान जिणबीसै वदीयै, महाविदेह विख्यात। सीमधर १ युगमधर २ वाहुजी ३ सुबाहु ४ **सुजात** ५।—वृ.स्त.

उ०—२ **सुजात** तीथकर ताहरी, हुयइ देव किण होड़ि रे। देव बीजै तउ दूखण घणा, तु सइ नही तिल खोड़ि रे।—स.कु.

सुजाति—स.स्त्री. [स.] उत्तम जाति या कुल।

वि.—१ उत्तम कुल या जाति का, कुलीन।

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—वेद व्यास सींगी रिख वासिट, विस्वामित्र अजाति अगमत

बालमीक कुम गोतम, हरि भज होय **सुजाति** ।—अनुभववाणी

सुजाब—देखो 'सुजाव' (रू.भे.)

उ०—'करन' **सुजाब** बधै तौ करगा, कळहता गम अगम किया। चाढै धूमंडळ चीतोडा, धू धारक जिम ब्रहमधिया।
— महाराणा जगतसिंह रौ गीत

सुजायत–वि –जो अच्छी सलाह दे, उत्तम सलाहकार।

स.स्त्री [अ. शुजाअ+रा प्र. आयत] वीरता, शौर्य।

उ०—**सुजायत** मांटी पणौ मोटौ गुण छै।—नी प्र.

सुजायोड़ौ—देखो 'सूजायोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुजायोड़ी)

सुजाळ–स पु –चमडे या सूत की बनी एक रस्सी या तस्मा जो बैलों को गाडी या हल मे जोतते समय गले में बाँधकर जूए से बाँधी जाती है।

सुजाव–स पु. [स. सुजात] १ पुत्र, बेटा। (डि.को)

उ०—१ तास **सुजाव** प्रसेन जीत तत्र, जिण सुत खुद्रक भूप हुवौ जत्र।—सू.प्र.

उ०—२ हाथियौ कै हलकै खभूठाणा तै खोळै एरापत कै साथी भद्रजाती कै टोळै अत देहुकै दिग्गज विंध्याचळ कै **सुजाव** रग रग चित्रै.........!—र.रू.

उ०—३ घड़ उरभै घडियाळ ज्यू, धट घट वग्गा घाव। रज रज हुयगौ 'रूपसी', सुजडा 'कुभ' **सुजाव**।—रा.रू.

२ शत्रुघ्न का एक नाम। (डि.को.)

३ देखो 'सुझाव' (रू भे)

रू.भे—सुजाब, सूजाउ, सूजाव।

सुजावणौ, सुजाववौ—१ देखो 'सूजाणौ, सूजाबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'सुझाणौ, सुझाबौ' (रू.भे)

सुजावणहार, हारौ (हारी), सुजावणियौ—वि०।

सुजाविओड़ौ, सुजावियोडौ, सुजाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुजावीजणौ, सुजावीजबौ—कर्म वा०।

सुजावियोडौ—१ देखो 'सूजायोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'सुझायोडौ' (रू.भे)

(स्त्री. सुजावियोडी)

सुजि—देखो 'सुज' (रू.भे)

उ०—१ धिक मांमी किया गुण वीसरै, गुणधिकार विण हरि तरणि। **सुजि** धिक तरणि पिय अत सुणि, घर तक्कै मोटा घरणि।
—रा.रू.

उ०—२ पांन प्रयाग वड तणौ पौढियौ, **सुजि** हरि समरि ऊवर करि मोध।—ह.ना.मा.

उ०—३ **सुजि** जळ पियै जरत विण मूरति, मगरपचीस हुवै दिब मूरति।—सू.प्र.

उ०—४ सीखावि सखी राखी आखै **सुजि**, राणी पूछै रुखमणी। आज कही तौ आप जाइ आवू अब जात्र अबिका तणी।—वेलि

उ०—५ ससक्रत है सुरभाख, आदि पहिला उचारू। **सुजि** भाखा दूसरी, सेस दूजै विसतारू।—सू.प्र.

सुजीव–स.पु [स. सुजव] घोडा, अश्व। (ह.ना मा.)

सुजीवण—देखो 'सजीवण' (रू.भे)

उ०—रिदा न भूलै नाव रस, ओही **सुजीवण** मत। अनति नांए एक नाव, एकणि नाय अनत।—सुरजनदास पूनियौ

सुजोग–स पु [स. सुयोग] १ अच्छा योग, सुयोग।

२ सयोग, योग, अवसर।

सुजोधन–स.पु. [स. सुयोधन] दुर्योधन का एक नाम।

सुजोर–वि –१ पक्का, दृढ, मजबूत।

२ बलवान, शक्तिशाली।

सुज्जड—देखो 'सुजड' (रू.भे)

सुझणौ, सुझबौ—देखो 'सूझणौ, सूझबौ' (रू.भे)

उ०—जद पट उळझै तौ पग सुळझै, मद मत्त मना मै हास **सुझै**।
—सकुतळा

सुझतौ—देखो 'सूझतौ' (रू.भे.)

उ०—स्वामीजी लोका नै कह्यौ—थै **सुझता** तौ गहणौ गमायौ अनै आधा कना सू कढावौ सौ गहणौ कठा सू आसी।—भि.द्र.

सुझाड़–स पु –१ चदन। (ना.मा, ह.ना.मा)

२ वृक्ष। (ना मा.)

सुझाणौ, सुझाबौ–क्रि स ['सूझणौ' क्रिया का प्रे.रू.] १ सुझाव देना, प्रस्ताव करना।

२ दिखलाना, बतलाना, ध्यान दिलाना।

३ मार्ग-दर्शन करना, रास्ता बताना।

४ देखने के लिए प्रेरित करना।

५ युक्तियाँ प्रस्तुत करना।

सुझाणहार, हारौ (हारी), सुझाणियौ—वि०।

सुझायोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुझाईजणौ, सुझाईजबौ—कर्म वा०।

सुजावणौ, सुजावबौ, सूझाणौ, सूझाबौ, सूझावणौ, सूझावबौ
—रू०भे०।

सुझायोड़ौ—भू का. कृ—१ सुझाव दिया हुआ, प्रस्ताव किया हुआ।

२ दिखलाया हुआ, बतलाया हुआ, ध्यान दिलाया हुआ। ३ मार्ग-दर्शन किया हुआ, रास्ता बताया हुआ। ४ देखने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री. सुझायोडी)

सुझाव–स.पु–१ प्रस्ताव।

२ सलाह, राय, मशविरा।

३ तजबीज, तरकीब।

रू.भे.—सुजाव।

सुभियोडौ—देखो 'सूभियोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री सुभियोडी)

सुट्ट–वि. [स. शुप्] १ स्तम्भित, हत-प्रभ, भौंचक्का।
उ०—पछै राजकवर माडनै सगळी वात सुणाई। सुणरण वाळां रै काना रा कीड़ा भडग्या। सुट्ट हुय पावांग्रा री पूतळिया रै उनमान सगळी वारता सुणता रह्या।—फुलवाड़ी
२ निश्चल, स्थिर।
३ किंकर्त्तव्यविमूढ, जड-बुद्धि।
उ०—केई जगा नौ इण भात सुट्ट व्हेगा, जाणै सगळी सुध-बुध माथै वाग व्हैगो।—फुलवाडी
४ अचेत, बेहोश।
५ तल्लीन, एकाग्रचित्त।
उ०—म्है सगळा ई सुट्ट व्हियोडा वावा रै मूडा सू निकळता बोल सुणता हा।—फुलवाडी

सुठांम–सं.पु [स. सुस्थान] १ अच्छा स्थान, अच्छी जगह, उत्तम स्थान
उ०—ऊच-पणै सहु जोयण बहुत्तर, सोजोयण आया मारै। पिंडूल पणै पचास जोयण ना, प्रभु प्रासाद सुठांमा।—वृ स्त
२ उत्तम एव सुन्दर पात्र।

सुठि, सुठौ–वि [स. सुष्ठु] (स्त्री. सुठि) १ सुन्दर, मनोहर।
उ०—ईसर उठ भगा, धोमर अगगा, वै नै पग्ग, लग वग्गा। सुठि नारि सुहग्गा, मिळियौ सग्गा, दाणव पग्गा रच दग्गा।
—भगतमाळ
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
उ०—स्राव्य सुभावन है सुकबी सुठि, काव्य कपूतन भावत कैसै। वध किलौरन कधन कै विधि, अधन आरसि ओपत ऐसै।
—ऊ.का.

सुड–वि–अच्छा, बढिया।

सुडभक–क्रि.वि–अच्छे ढग से।
उ०—ताहरा राजा चारण नू पूछै छै। 'जु नै सारीखौ मोटौ आदमी तौ दरबार आवै सु तौ कपडै-लत्तै भली भात सुडभक रहनै हजूर आवै।—सूळवै सागावत री वात

सुडांडड—देखो 'सूडाडड' (रू.भे)

सुडौळ–वि.–१ जिसके अङ्ग-प्रत्यङ्गो की बनावट सुन्दर हो, सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत।
२ अच्छे डील-डौल वाला।
३ जिसकी बनावट कलात्मक हो।

सुढंग–स.पु.–१ अच्छा ढग, अच्छा तरीका।
२ अच्छा व्यवहार, अच्छा आचरण।
क्रि.वि.–अच्छे ढग से।
उ०—अति ऊचा तियरै उरज, बणिया विमवा बीस। जोडै लागै जगन मै, गिर गज कुभ गिरीस। गिर गज कुभ गिरीस, प्रवीणा गाविया। सुवरण वरण सुढंग, कठोर सुहाविया।—बां.दा.

सुढाळ, सुढाल–स.स्त्री–१ अच्छी ढाल, उत्तम ढाल।
२ सुन्दर लय या तर्ज।
वि.–१ रक्षक, सहायक।
२ सुन्दर।
उ०—सुभ घाट पिट्ठ उर तट विसाळ, मुख पीठ दीठ जग तिण सुढाळ।—रा.रू

सुढाळौ, सुढालौ–वि.–१ रक्षक, सहायक।
उ०—१ सेर साभी सछराळौ, सुयण मारिणक सप्पखाळौ। सुकवि ऊपरि सुढाळौ, कुअर गुण किरणाळ।—ल.पि.
२ सुन्दर, सुडौल।

सुणअ–स.पु. [स. शुनक] श्वान, कुत्ता। (जैन)

सुणघड़ियौ–स.पु.–स्वर्णकार, सुनार। (जैन)

सुणण–स.स्त्री.–सुनने की क्रिया या भाव।
उ०—१ कहण सुणण हय चढ क्रमण, साहस धरण समझ्झ। 'पता' छिहतर वरस पण, हेकण न कौ हरज्झ।—जैतदांन बारहठ
उ०—२ म्हनै वीरौ सुणण रौ अर बाई नै वीरौ गावण रौ कितरौ कोड हौ, जिणरौ कोई पार नी।—अमर चूनड़ी

सुणणौ–स.पु.–सुनने का कार्य।
उ०—रूप री आ छिब नी तौ किणी री आंख्यां मै आज पै'ली देखण मैं आई अर नी किणी रै काना मै सुणणा मैं आई।
—फुलवाड़ी

सुणणौ, सुणबौ–क्रि स. [स. श्रवण] १ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, आवाज या ध्वनि का ज्ञान करना, किसी प्रकार की बोली या आवाज का अनुभव करना, सुनना।
उ०—१ ऊपड़ी रजी मझि अरक एहवौ, वातचक्र सिरि पत्र वसति। सद नीहस नीसांण न सुणिजै, वरहासा वाजति।
—वेलि
उ०—२ बावहिया निल पखिया, सगरि ज काळी रेह। मति पावस सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह।—ढो.मा.
उ०—३ हरीया अनहद सबद की, तार न कबहु तुटि। घोर सुणत है गिगन मैं, सुर वाहरि नहिं फूटि।—अनुभववाणी
२ नियमित रूप से होने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनते रहना, ऐसे सुनने का अभ्यस्त होना।
उ०—धुनि वेद सुणति कहुं सुगति संख धुनि, नद झल्लरि नीसाण नद। हेका कह हेका हीलोहळ, सायर नयर सरीख सद।—वेलि
३ किसी बात या घटना की जानकारी प्राप्त करना, सूचना प्राप्त करना।
उ०—राठौडा पण झल्लियौ, नृप 'अगजीत' निमत्त। सुण तहवर उर छीजियौ, अत खीजियौ दुरत्त।—रा रू.

४ किसी की कही बात को ठीक समझ लेना, ध्यान देकर सुन लेना, बात का मर्म जान लेना, ध्यान देना, गौर करना।

उ०—१ सूर छतीसौ सांभळै, सूरा तणौ सकाज। 'बाका' रा वायक **सुणै**, कायरडा किण काज।—बा.दा.

उ०—२ पायौ म्हारौ ईंडूणी कौ चोर, **सुणज्यौ** ब्रज कै बासी लोग।—मीरा

उ०—३ सउदागर राजासु कह, **सुणउ** हमारी कथ्थ। मारवणी छानी रही, सै माळवणी तथ्थ।—ढो.मा.

उ०—४ वौ नारकियौ दीवाण तौ पाच पाच घड़ी ताई अेकलौ मिनखा रै ग्यांन री ऊंची बाता **सुणतौ**।—फुलवाडी

५ किसी चर्चा विशेष या बात विशेष को विभिन्न तरह से सुनना, विचार-विमर्श करना।

उ०—वसुदेव कुमार तणौ सुख वीखै, पुणै **सुणै** जण आप पर। अौ रुखमणी तणौ वर आयौ, हर'म करौ अनि रायहर।—वेलि

६ किसी घटना विशेष या बात विशेष को आद्योपान्त विस्तार से समझना।

उ०—१ राजाजी विगतवार आखी बात **सुणणी** चावता हा। पूछ्यौ—लारला सोळै बरसा मै काईं व्हियौ सौ म्हनै सब बता। —फुलवाडी

उ०—२ कीरत छपनै री गुणियै कविराजा, महिमा छपनै री **सुणियै** महाराजा।—ऊ का.

७ किसी की विनती या पुकार की ओर ध्यान देना, ग्रहण करना, मान लेना, स्वीकार कर लेना।

उ०—१ राज दिया 'बीका' 'रिडमल' नै, मा करनल मेहाई। प्रणत पुकार **सुणत** पीथळ री, राजड लाज रखाई।—मे.म.

उ०—२ बस्ती रा हैरान। खासा दिना ताई वळै सबर राखी। सेवट हाथ जोड फरियाद करणी पडी। **सुणतां** ई राजा रै झाळ झाळ ऊठगी।—फुलवाड़ी

८ कारणवश कठोर शब्द या फटकार सहन करना, बरदाश्त करना।

उ०—घरवाळा रा भाग समझौ कै इत्ता थोक **सुणियां** पछै ई म्है वानै जीवता छोड दिया। म्है गलती नाव आ इज करू कै इण कमसल जात नै जीवती छोडूं।—फुलवाडी

सुणणहार, हारौ (हारी), सुणणियौ—वि०।

सुणिओड़ौ, सुणियोड़ौ, सुण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुणीजणौ, सुणीजबौ—कर्म वा०।

सुंणणौ, सुंणबौ, सुनणौ, सुनबौ—रू०भे०।

सुणयोड़ौ—देखो 'सुणियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुणयोडी)

सुणवाई—सं.स्त्री.—१ सुनने की क्रिया या भाव।

२ कही जाने वाली बात की ओर दिया जाने वाला ध्यान।

उ०—वौ घणौ ई कूकियौ पण की **सुणवाई** न्ही नी।—फुलवाड़ी

३ न्यायालय मे किसी मुकद्मे का वृत्तान्त या तर्कों को न्यायाधीश द्वारा सुनने की क्रिया।

४ किसी की फरियाद या विनती मान लेने की क्रिया।

रू भे.—सुणाई।

सुणांमणी—स स्त्री—किसी की मृत्यु के समाचार, मृत्यु-सन्देश।

रू भे.—सुणावण, सुणावणी।

सुणांमणौ, सुणांमबौ—देखो 'सुणाणौ, सुणाबौ' (रू.भे.)

उ० - राव रंक हिंदू रवद, गोला सगळा गेह। सागै जात **सुणांमियां**, छुद्र दिखावै छेह।—बा.दा.

सुणांमियोड़ौ—देखो 'सुणायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. सुणांमियोड़ी)

सुणाई—देखो 'सुणवाई' (रू.भे.)

सुणाणौ, सुणाबौ—क्रि स ['सुणणौ' क्रिया का प्रे.रू,] १ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, आवाज या ध्वनि का ज्ञान कराना, किसी प्रकार की बोली या आवाज का अनुभव कराना, सुनने के लिए प्रेरित करना।

२ किसी बात या घटना की जानकारी देना या कराना, सूचना देना, सूचित करना।

उ०—१ असह खबर जोधांण आयी, सती महाव्रत लिया **सुणायी**। —रा.रू.

उ०—२ सूवा एक सदेसडउ, वार सरेसी तुझ्झ। प्रीतम वासइ जाइ नइ, मुई **सुणावै** मुझ्झ।—ढो.मा

उ०—३ कवराणी सू बधाई माग्या बिना ई बधाई री बात **सुणाय** दी।—फुलवाडी

३ नियमित रूप से चलने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनाते रहना, ऐसा सुनने के लिए अभ्यस्त करना।

४ कोई वृत्तान्त या इतिहास या पूर्व घटित घटना को विस्तार से कहना, बताना।

उ०—१ पछै राजकवर माडनै सगळी बात **सुणाई**।—फुलवाडी

उ०—२ राजाजी सोळै बरसा रौ विखौ दौ चार घड़ी मै नी **सुणाइजै**।—फुलवाडी

उ०—३ बाड्या सरप रै कैता ई छोटकी बहू रोवती ढबगी। पीहर अर सासरा रौ सगळौ विखौ **सुणायौ**।—फुलवाडी

५ गुप्त भेद या रहस्य खोलना, भेद की बात बताना, वास्तविकता प्रगट करना।

उ०—१ बैन रा नेह अर दुख माथै दिवला री मा नै दया आई। पछै वा उण सू की चोज नी राख्यौ। आप रै बेटा सागै ठकरांणी री प्रीत रौ सगळौ खातौ उघाडनै **सुणाय** दियौ।—फुलवाडी

उ०—२ पण नदलाल गैणौ गळा लेणै रौ समाचार खुदाखुद **सुणा** देवै, जद सेठां रै जी मै जी आवै है।—दसदोख

६ निकट भविष्य मे होने वाली घटना की पूर्व सूचना देना, आगाह कर देना।

७ कुछ पढकर या गाकर सुनाना, पढ़ना, गाना।

उ०—१ चाद बणाय रावळी चिरजा, सनमुख गाय **सुणाई**। दीजै भगति मुकति जगदंबा, कीजै जेज न काई।—मे म.

उ०—२ इण उपरात ई हमनै बोल्या—वौ रोज गावौ जिकी चाकरी वाळौ गीत तौ एकर **सुणाय** दौ नी लाडू आज तौ म्हू माचाणी चाकरी माथै वहीर व्हियौ हू।—अमर चूनडी

८ किसी विषय या बात को समझाकर कहना, विषय की व्याख्या करना, वर्णन करना।

उ०—ग्यान चरित गुण गाइ, पाइ लागै परमेसर। ग्यान बोध **सुणाइ**, मोख पामै नर अमर।—पी.ग्र.

९ निवेदन करना, प्रार्थना करना, विनती सुनाना।

१० कठोर शब्द कहना, खरी-खरी सुनाना, कटु सत्य कहना।

उ०—एक दिन मूडै मूड दोसा-मोसा करती सुभट **सुणाय** दियौ कै ओळियाकडा बेटा नै घर सू नी तगड़ियौ तौ वा घर छोडनै जावैला परी।—फुलवाडी

सुणाणहार, हारौ (हारी), **सुणाणियौ**—वि०।

सुणायोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुणाईजणौ, सुणाईजबौ—कर्म वा०।

सुणांमणौ, सुणांमबौ, सुणावणौ, सुणावबौ—रू०भे०।

सुणायोड़ौ—भू.का.कृ.—१ किसी शब्द, आवाज या ध्वनि का श्रवणेन्द्रिय द्वारा ज्ञान कराया हुआ, बोली या आवाज का अनुभव कराया हुआ, सुनने के लिए प्रेरित किया हुआ, सुनवाया हुआ। २ किसी बात या घटना की जानकारी दिया हुआ, सूचना दिया हुआ, सूचित कराया हुआ। ३ नियमित चलने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनने के लिए अभ्यस्त किया हुआ। ४ विस्तार से कहा हुआ, आद्योपान्त बताया हुआ (कोई इतिहास या घटना)। ५ गुप्त भेद या रहस्य खोला हुआ, भेद की बात बताया हुआ, वास्तविकता प्रगट किया हुआ। ६ निकट भविष्य की घटना की पूर्व सूचना दिया हुआ, आगाह किया हुआ। ७ पढकर या गाकर सुनाया हुआ, पढ़ा हुआ, गाया हुआ। ८ समझाकर कहा हुआ, व्याख्या किया हुआ, वर्णित। ९ विनती सुनाया हुआ, निवेदन या प्रार्थना किया हुआ। १० कठोर शब्द या कटु सत्य कहा हुआ, खरी-खरी सुनाया हुआ।

(स्त्री. सुणायोड़ी)

सुणावण—वि.—१ सुनाने वाला।

उ०—नमौ विध वेद समप्पण बिद्ध नमौ सुर-काज करै हर सिद्ध। नमौ तन हंस त्रिलोकी-तात, नमौ विध ग्यान **सुणावण** बात।

—ह.र.

२ देखो 'सुणांमणी' (रू.भे.)

सुणावणी—देखो 'सुणामणी' (रू.भे.)

उ०—१ जिसै जैसिंघजी री माजी री **सुणावणी** आयी। तद पातसाहजी सूं मालम कर राजा लारै रया।—द.दा.

उ०—२ जद स्वामीजी कह्यौ—परदेस मै चल्या री **सुणावणी** आया मोच नौ घणाइ करै, पिण लावी काचळी नौ एक जणी पहरै।—भि द्र.

सुणावणौ, सुणावबौ—देखो 'सुणाणौ, सुणाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ खुद नै बाना मृगण्णा मैं की जोर नी पडै तौ जाणौ कै बात **सुणावणा** मै ई की जोर नी आवै।—फुलवाड़ी

उ०—२ सलोका धुणी पाठ दुरगा **सुणावै**, गुणी माड रै राग सौभाग गावै।—मे म

उ०—३ प्रोहत नु कह्यौ, 'तू नाळेर लै जाय कुवरसी साखळै नुं दै। पण कही नु **सुणावै** मता।—कुवरसी सांखला री वारता

उ०—४ कहै **सुणावै** और कु, वाचै वेद पुरान। हरीया पिंडत की कथा, नाव विना हैरान।—अनुभववाणी

सुणावियोड़ौ—देखो 'सुणायोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री सुणावियोडी)

सुणियोड़ौ—भू.का.कृ.—१ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, आवाज या ध्वनि का ज्ञान किया हुआ, किसी प्रकार की बोली या आवाज का अनुभव किया हुआ, सुना हुआ। २ नियमित रूप से होने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनने का अभ्यस्त हुवा हुआ। ३ किसी बात या घटना की जानकारी प्राप्त किया हुआ, सूचना प्राप्त किया हुआ। ४ किसी बात को ठीक समझा हुआ, ध्यान देकर सुना हुआ, बात का मर्म जाना हुआ, गौर किया हुआ। ५ किसी चर्चा या बात को विभिन्न तरह से सुना हुआ, विचार-विमर्श किया। ६ किसी घटना विशेष या बात विशेष को आद्योपान्त विस्तार से समझा हुआ। ७ विनती या पुकार की ओर ध्यान दिया हुआ, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ। ८ कठोर शब्द या फटकार सहन किया हुआ, बरदाश्त किया हुआ।

(स्त्री. सुणियोडी)

सुणी—क्रि.वि.—१ पर्यन्त, तक।

२ देखो 'सुनी' (रू भे.)

उ०—जहां **सुणी** पइकन्नी।—जै.त.प्र.

सुणीक—स पु.—सुनना का निश्चयार्थक रूप।

सुणैर—स पु.—शयनागार, शयन-कक्ष।

उ०—एक दिन आपरी आगली **सुणैर** माहै छै, पोढै तठै सपाड़ौ करै छै।—वीरमदं सोनगरा री वात

सुतंतर—देखो 'स्वतत्र' (रू भे)

उ०—१ ११८४ ई. रा परमाल रा लेख महोवा अर कालिंजर सूं मिळिया है जिणां सू ठा' पडै कै इण वेळा वौ किणरोई दबैल कौ हौ नीं अर **सुतंतर** रूप सूं राज करतौ हौ।—चितरांम

उ०—२ जयचद रौ राज ११९४ ई. रै चदावर जुद्ध सू खतम हुवौ। पछै प्रिथीराज जीत्यौ कीकर। जै वौ जीततौ तौ जिम्मी साॡ आपरा काका-बाबा नै खेत राखणियौ, परमाल नै जीवतौ, अर बुंदेलखड नै **सुतंतर** कीकर छोडतौ।—चितरांम

सुतंतरता—देखो 'स्वतत्रता' (रू.भे.)

सुतंतरी—वि. [स. स्वतत्रिन्] १ स्वाधीन, मुक्त, आजाद।

२ देखो 'सुतत्रि' (रू.भे.)

सुतंत्र—देखो 'स्वतत्र' (रू.भे.)

सुतत्रता—देखो 'स्वतत्रता' (रू.भे.)

सुतंत्रि—स.पु. [स.] तार-वाद्य बजाने में प्रवीण व्यक्ति, वादक।

रू.भे.—सुततरी।

सुत—स.पु. [स. सुतः] १ पुत्र, बेटा, वत्स। (डि.को.)

उ०—१ बोल नवाब सरस द्रढ बधै, **सुत** पितु हूंत महा छळ सधै।

—रा.रू.

उ०—२ जै माता **सुत** जनमीयौ, विना भगति वसवास। हरीया जिन अर क्या कीयौ, भारि मूई दस मास।—अनुभववाणी

२ जन्म-कुण्डली में लग्न से पाँचवाँ घर। (ज्योतिष)

३ राजा, नृप।

रू.भे.—सुति, सुत्त।

४ देखो 'सूत' (रू.भे.)

उ०—१ भागीरथ सभ्रम **सुत** भुवाळ, नाभग हुवौ सूत सुत न्रपाळ।—सू.प्र.

उ०—२ जननी तूझ हस्त मस्तक जिह, त्रिदसालय सुख वसत निलय तिह। अस्ट सिद्धि नव निद्धि अखडित, परम सती जुवती **सुत** पडित।—मे.म.

सुतअरक—स.पु. [स. अर्क+सुत.] १ शनिश्चर। (डि.को.)

उ०—अण चपळ नैण लघु जोम अत्ति, सगि अहूं विदिस चेतन सकत्ति। दीपत जुगळ कळ अमळ दत, **सुतअरक** पागि लखि जांणि संत।—रा.रू.

२ कर्ण।

३ यम, यमराज।

सुतकासब—सं.पु. [कश्यप+सुत] कश्यप ऋषि का पुत्र, सूर्य।

सुतकीरति, सुतक्रित्या—स स्त्री. [स. श्रुतकीर्ति] राजा जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री व श्रीराम के छोटे भाई शत्रुघ्न की पत्नी, श्रुति-कीर्ति।

उ०—मंडवा सीत उरमळा **सुतक्रित्या** स्वरूप।—रांमरासौ

सुतगिलका—स.स्त्री.—शालिग्राम की मूर्ति।

उ०—कर तद सिनांन अत धरम कीन, जळ गग आचमन सब सुलीन। पढ गीता निज हर कर प्रणाम, **सुतगिलका** कंठ सु बध सकांम।—शि.सु.रू.

सुतण, सुतण्ण—सं.पु. [स स्व-तनय] १ पुत्र, बेटा। (ह.नां.मा.)

उ०—१ इद्रसिंघ दक्खण थी आयौ, साथ लियौ कर तोल सवायौ। राण **सुतण** विरदै समराथै, सग थयौ पहुंचावण साथै।—रा.रू.

उ०—२ अत दीरघ सगण भ्रमण फल पत अनल, **सुतण** कस्यप रयण स्याम रग सोय।—र.रू.

उ०—३ दुभळ राघव **सुतण** दसरथ, लियण भुजबळ लक।

—र.ज.प्र.

रू.भे.—सुतन, सुताण, सुतान।

सुतदीप—स.पु.—काजल।

सुतदेवकी—स.पु.—देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण। (अ.मा.)

सुतधर—स स्त्री.—रज, धूलि। (अ.मा.)

सुतन—सं.पु. [सं. सुतनु] १ स्वस्थ एव सुन्दर तन, देह, अच्छा शरीर।

उ०—जाळी मगि चढि चढि पथी जोवै, भुवणि **सुतन** मन तसु मिळित। लिखि राखै कागळ नख लेखणि, मसि काजळ आसूं मिळित।—वेलि

रू.भे.—सुतनु, सुतन्न।

२ देखो 'सुतण' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ ओपै आय अनत बळ, **सुतन** वियारू साथ। फिर सिव ऊपर आवियौ, जाळधर भाराथ।—रा.रू.

उ०—२ आसउत तणी आकाय देखै अकळ, साहजहा **सुतन** पटकै घणौ सीस। रीस मुज हुती मन 'नींब' हर ऊपरा, रौद रौदा सरस काढवी रीस।—सबळौ सादू

सुतनउमा—सं.पु. [स उमा-सुत] १ पार्वती के पुत्र, स्वामी कार्त्तिकेय।

(ह.नां.मा.)

२ गणेश, गजानन।

सुतनी—वि.स्त्री.—सुन्दर शरीर वाली, सुन्दरी।

उ०—सझै खोडस स्रगार **सुतनी**, वएसा भूल चली रिख वनि।

—रांमरासौ

स स्त्री.—पुत्री, लड़की।

सुतनु—देखो 'सुतन' (रू.भे.)

उ०—मळयाचळ **सुतनु** मळै मन मौरै, कळी कि काम अकूर कुच। तणौ दखिणादिसि दखिण त्रिगुणमै, ऊरध सास समीर उच।

—वेलि

सुतनेह—सं.पु. [स. सुत-स्नेह] काजल, अञ्जन। (अ.मा.)

सुतन्न—१ देखो 'सुतण' (रू.भे.)

उ०—१ रिणवत्तां रत्ता रहै, सकता वीर **सुतन्न**। जोड़ै साम्हा ईस तण, रिण जगदीस प्रसन्न।—रा.रू.

उ०—२ सबासण देव **सुतन्न** सरीन, तिसा सिव नेत्र 'लूण' हर तीन।—सू.प्र.

उ०—३ 'सूरउत' अनै 'अमरा' **सुतन्न**, कुरखेत जाण अरजन करन्न।—गु.रू.बं.

२ देखो 'सुतन' (रू.भे.)

सुतपंड–स.पु.–धृतराष्ट्र के छोटे भाई पाँडु के पाँचों पुत्र। यथा—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

सुतपवण, सुतपवन–सं पु [स. पवन-सुत] १ पवन पुत्र हनुमान।

उ०—समद सुतन, सुतपवण, भिरग-सुत, ग्रीखिद भ्रित आपौ ऊदार। ऊभौ करौ चियारै आवै, सुत विजमल खट वरन सधार।
—ईसरदास वारहट

२ पाण्डुपुत्र भीम।

सुतपस्वी–स पु. [स. सुतपस्विन्] कोई बडा तपस्वी, तपधारी।

सुतपा–स.पु [स सुतपस्] १ विष्णु।

वि वि –बद्रिकाश्रम मे नर-नारायण रूप मे सुन्दर तप करने के कारण उक्त नाम विष्णु को प्राप्त हुआ था।

२ सूर्य।

३ एक मुनि का नाम।

४ एक सूर्यवंशी राजा जो राजा अन्तरिक्ष का पुत्र था, इसका दूसरा नाम सुपर्ण भी था। (सू प्र)

सुतपाभगत–स.पु [स. सुतपाभक्त] इन्द्र। (ना.डिं.को)

सुतपावाहण, सुतपावाहन–स पु [स. सुतपावाहन] गरुड, खगराज।
(ना डिं.को.)

सुतर–स पु [फा. शुतुर] ऊँट, उष्ट्र।

उ०—फौजा विलोक सह लीध फेट, भाटियां कीध अमि सुतर भेट।
—सू.प्र

सुतरखांनो–स पु. [फा. शुतुर+खान.] वह स्थान या कक्ष जहाँ ऊँट बाँधे जाते है, उष्ट्रशाला।

उ०—फीलखांना रौ दरोगौ, सुतरखांना रौ दरोगौ।—नैणसी

रू भे.—सुतरखानौ।

सुतरनाळ, सुतरनाळी–स.स्त्री. [फा. शुतुर+स नालीः] एक प्रकार की छोटी तोप जो ऊँट पर रखकर चलाई जाती थी।

उ०—तद हजार सात आठ पखरैत तबळ बध, सेर-जुवान सीपाही राखिया। कदेक बारै चढै, तद ५०० घोडची सुतरनाळ रांमचगी लिया चढै। - जगमाल मालावत री वात

रू.भे.—सुत्रनाळ।

सुतरमुरग–स. पु. [फा. शुतुरमुर्ग] अमेरिका, अफ्रिका एव अरब के रेगिस्तानो मे होने वाला एक बहुत बडा पक्षी जिसकी गर्दन ऊँट के समान लम्बी होती है। इसकी ऊँचाई प्रायः तीन गज होती है। यह दूब व पत्थर खाता है।

उ०—पसू पणौ पखी पणूं, सुतरमुरग रै सग। मरदपणौ महिला पणौ, मावडिया रै अग।—बा.दा.

रू.भे —सतुरमुरग, सुतुरमुग्ग।

सुतराकस–सं पु [स. राक्षस-सुत] ऊँट।

सुतरु–स पु [स.] १ अत्यन्त सघन एव सुन्दर वृक्ष।

उ०—सुतरु छाह नदि दीघ जगत सिरि. सूर राह किय जगत सिरि।
—वेलि

२ उत्तम एव श्रेष्ठ माना जाने वाला वृक्ष।

सुतब्रम–सं.पु. [स. ब्रह्म-सुत] कामदेव। (अ मा.)

सुतळ–स पु [स. सुतल] सप्त अधो-लोको में से एक।

सुतस्थांन–स.पु.–जन्म-कुण्डली मे लग्न मे पाँचवाँ स्थान।
(फलित ज्योतिष)

सुतांण, सुतांन—देखो 'सुतण' (रू.भे)

उ०—१ पहला गुण सारा पणूं, भूतेस सुतांणा। लबोदर फरसी धरण, सुख सै करदाणा।—द.दा.

उ०—२ कुभ गेर सेन जूजी गग गौर भ्रम क्रन, अट्ट सतां वेसेक सो छाताळ सुतांन।—भगतराम हाडा रौ गीत

सुता–स.पु [स] १ पुत्री, बेटी, लडकी।

उ०—१ तिकण रा कटिया सीस नू थाळ मैं मगाय जवनराज री सुता वरमाळ घटकण रौ विचार कियौ।—व भा.

उ०—२ गोतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुचितां ध्यावै। प्रभु वैमुख जिणरौ रिपु प्राणी, ताह न कदै सतावै।—र.रू.

२ कुदरत, प्रकृति।

३ देखो 'सत्ता' (रू.भे)

४ देखो 'स्वत' (रू.भे)

सुतार—देखो 'सुथार' (रू.भे)

उ०—१ जैतारण था कोस २ पिछम नु था डावौ। मीरखी वाणीया सुतार कुभार वसै। वास १ चारणां रौ जुदौ छै।—नैणसी

उ०—२ सोनी, गाधी, दोसी, नेस्ती साहब, साह, सेठि, सोणावई, पडसूत्रीआ, कसारिआ, बीजउरीआ, खजूरिआ, कणसरा, भणसरा, सयारा, मणीयरा, सुतार, सूत्रधार।—सभा

(स्त्री सुतारी)

सुति—देखो 'सुत' (रू भे)

सुतियाग—देखो 'सुत्याग' (रू भे)

सुतियागी—देखो 'सुत्यागी' (रू.भे.)

उ०—परठी आभ गयण लग पूहत, कीरत बाडी मोर कळी। सुतियागी आरत कर सीची, फळ किव वयण सुफळ फळी।
—राणा हमीरसिंह रौ गीत

सुतीक्षण—देखो 'सुतीक्ष्ण' (रू.भे)

सुतीक्षण-खड्ग–स.पु.औ –एक प्रकार की तलवार जिसके नीचे का भाग पैना एव चन्द्राकार होता है।

सुतीक्ष्ण – स. पु. [स.] एक ऋषि जो अगस्त्य ऋषि के शिष्य थे। श्रीरामचन्द्र के वनवासकाल मे ये उनसे मिले थे। (रामरासौ)

वि –जो बहुत तीक्ष्ण या पैना हो।

रू भे —सुतीक्षण, सुत्रिछण।

सुतीरथ–सं.पु. [स सु-तीर्थ] उत्तम या पावन तीर्थ।

उ०—नाम सुतीरथ नाम व्रत, नाम सत्तोभौ काम। एकौ अक्खर ततफळ, जप जीहा श्रीराम।—ह र

सुतुंग–स.पु. [स.] ग्रहों का उच्चाश । (ज्योतिष)
सुतुरगाव–स.पु [फा] जिराफा नामक जतु ।
सुतुरमुरग–देखो 'सुतरमुरग' (रू.भे ।
सुतेई–देखो 'स्वन ' (रू भे)
उ०—सृस्टि कै आदि अरु अत परलोकै, सुद्ध मता निरवासी ।
सुतेई फोरग फुरी मता सू नांम अकाम धरामी ।
—स्री सुखरामजी महाराज
सुतेज–सं.पु [स.] १ तीव्र प्रकाश, अच्छा प्रकाश ।
२ आभा, कान्ति ।
३ जैनियों के अतीतकालीन दसवें तीर्थङ्कर का नाम ।
उ०—मरवानु भूति स्रीधर दत्त नामी, दामोदर स्री **सुतेज** स्वामी ।
—स कु.
सुतेसुभाव – क्रि वि [स. स्वत'-स्वभाव] १ कुदरतन, सयोग से, स्वयमेव ।
उ० –पीछै **सुतेसुभाव** चापावत हाथीसिंघ गोपाळदासौत सासरै जावतां आदमियां २०० सूं अजमेर आयौ ।—द.दा.
२ अचानक, अकस्मात् ।
सुतै—देखो 'स्वत ' (रू.भे.)
सुतैसिद्ध–वि. [स. स्वतस्-सिद्ध] जो अपने आप ही सिद्ध हो, स्वय-सिद्ध ।
सुत्त—देखो 'सुत' (रू.भे.)
उ०—चढै खान पाहाड चलतौ पहाड, वररिसघरे **सुत्त** फौजां विभाडं ।—गु.रू.बं.
सुत्तग–स.पु [स. सूत्रक] कटिसूत्र, मेखला ।
सुत्तरखांनौ—देखो 'सुतरखांनौ' (रू.भे)
उ०—मदझरता धुरता मसत, करता दत **कठीठ। सुत्तरखांनै** सोहिया, धुर इसड़ा गध धीठ ।—पे.रू.
सुत्तरुइ–सं.स्त्री.–सूत्र सुनने की रुचि । (जैन)
सुत्तसंपया–स.स्त्री.–१ सूत्र-सपदा । (जैन)
२ शास्त्रज्ञ । (जैन)
सुत्याग–स.पु. [सं.] अच्छा त्याग, श्रेष्ठ त्याग ।
रू.भे.—सुतियाग ।
सुत्यागी–वि.–अच्छा त्याग करने वाला, श्रेष्ठ त्यागी ।
रू.भे.—सुतियागी ।
सुत्र—देखो 'सूत्र' (रू.भे)
उ०—खिरोद कन्न खीनखास धारिय धुजवर, सुसोभित सिखा स **सुत्र** सेनय पितंबर ।—सू.प्र.
सुत्रनाळ - देखो 'सुतरनाळ' (रू.भे.)
उ०—सीसा जांमग सोर, भार गाडा बाणां भर। चव हजार **सुत्रनाळ,** हवस उसताज बहादर ।—सू.प्र.
सुत्रांमा–स.पु. [सं. सुत्रामन्] १ पुराणानुसार एक मनु का नाम ।
२ इन्द्र । (ह.ना.मा.)
रू.भे.—सत्राम, सूत्राम ।
सुत्रिछण—देखो 'सुतीक्ष्ण' (रू भे.)
सुत्री–स.स्त्री. [स. सुता] १ पुत्री, बेटी ।
[स. सु-स्त्री] २ सुन्दर स्त्री ।
उ० –१ कोकिळ निसुर प्रसेद ओमकण, सुरति अति मुख जिम **सुत्री** । –वेलि
उ० - २ सुनेत्र विनाण **सुत्री** सिणगार ।—रामरासौ
सुथंभणौ, सुथंभबौ – क्रि स. [सं. स्तम्भनम्] १ रोकना, ठहराना, थामना ।
२ पकड़कर रखना, पकड़ना ।
३ देखभाल करना, सम्हालना ।
सुथंभियोड़ौ–भू. का. कृ. – १ रोका हुआ, ठहराया हुआ, थामा हुआ ।
२ पकड़कर रखा हुआ, पकड़ा हुआ । ३ देखभाल किया हुआ, सम्हाला हुआ ।
(स्त्री. सुथभियोडी)
सुथण—देखो 'सूथण' (रू.भे)
उ०—तिण सूं थै डूगरसीजी नू परणावौ तौ म्हे बैर भाजा । तरा उणां परधाना कह्यौ—डूंगरसीजी ८० बरस रा हुवा, **सुथण रौ** नाड़ौ ही चाकर बांधै छै । थै इसड़ी बात काई कहौ ?—द वि.
सुथर–वि. [सं. सुस्थिर] १ दृढ, अडिग, अटल ।
उ०—रांण दळ पलटतां **सुथर** भालौ रहै, भाण अस रोक आरांण भाळै । राज रै कंठ भूखांण उण चौसरां, रभ चौसरन कौ सीस राळै ।—कल्याणसिंह झाला रौ गीत
२ मजबूत, पक्का ।
सं.स्त्री–१ पृथ्वी, भूमि । (ना.डिं.को)
रू.भे.—सुथिर ।
२ देखो 'सुथार' (रू.भे.)
सुथरसाही—देखो 'सुथरेसाही' (रू.भे.)
सुथराई–स.स्त्री.–१ सफाई, स्वच्छता ।
उ०—भाख फाटतांई वौ सीधौ गूजरी रै घरै गियौ। जावताई खापाचेक होय कैवण लागौ—**सुथराई** सू फूस-वाईदौ काढनै बाडा अर गवाडी नै देवता रमै जैड़ा करदौ ।—फुलवाड़ी
२ चतुराई, निपुणता ।
उ०—१ सिझ्या रा कड़ाई मै दूध रडाय वा **सुथराई** सू पराता मै राळचौ । परात परात सूं बाफां रा न्यारा न्यारा गोट ऊठता ।
—फुलवाडी
उ०—२ **सुथराई** अर खांमचीपणौ तौ मासी सू लारै हौ ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ नाई पींडिया नै **सुथराई** सू दबावतौ बोल्यौ – नी बापजी, औ तौ वे'म इज म्हारै माथै मत करौ । फुलवाड़ी

३ पवित्रता, शुद्धता।

उ०—सती उण वगत मूंन धारचा कुत्ता री आरती करती ही। थोड़ी ताळ पछै वा सुथराई सूं पुरसगारी करनै लाई। पण कुत्तौ मूंडौ फेर लियौ।—फुलवाडी

सुथरापण, सुथरापणौ—स.पु.—१ सफाई, स्वच्छता।

२ पवित्रता, शुद्धता, निर्मलता।

३ चतुराई, दक्षता, निपुणता।

सुथरासाही, सुथरेसाही—सं.पु.—१ एक सम्प्रदाय विशेष जो गुरु नानक के पुत्र सुथराशाह द्वारा चलाया गया है।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

रू.भे.—सुथरसाही।

सुथरौ—वि. [स. सुस्तर] (स्त्री. सुथरी) १ उत्तम, श्रेष्ठ।

२ उम्दा, बढ़िया।

उ०—दुरगादासजी रथ एक मैं जूतै अव्वल बीजौ कपड़ौ सुथरौ मेलियौ।—सुदरदास भाटी बीकूपुरी री वारता

३ छोटा आसन, बिछौना।

उ०—किण भात रा हुका छै? सोनै रा; रूपै रा, विदरी, खाखोळ ठाढा पाणी सूं भरजै छै। नीचै सुथरा बिछायजै छै। ऊपर हुका मेल्हजै छै।—रा.सा स

३ पवित्र, शुद्ध।

४ साफ, स्वच्छ, निष्कटक।

उ०—जे आप हुकम फरमावौ तौ उवौ हमाल उण ठौर सूं पत्थर उठावै मारग सुथरौ करै उवौ बै मनसब दीसै छै।—नी.प्र.

५ उज्ज्वल, शुभ्र।

६ सुन्दर।

उ० भखा खजरीटा भ्रगा, सबर हतक सरांह। जैतवार ज्यारा नयण, सरोरूहा सुथरांह।—बां दा.

७ सुगधित।

उ०—मोगरै री वेल केवडै रौ तेल सू केस सुथरौ कीजै छै।

—रा.सा.स.

८ स्वादिष्ट।

उ०—घ्रित पूरित रस जेण घण, अन मिस्ठान्न अपार। तरकारी सुथरी अतर, अतिसुदर आचार। रा.रू.

९ साफ, स्वच्छ, निर्मल।

उ०—काई सैल इण गुन्नीस करोड नै रोटी पुगा देली? काई वा उणा रा उघाडा डील ऊजळा सुथरा गाभा सूं ढक देली? वा नै स्कूल मदरसै भेज देली?—तिरसकू

सुथळ—स.पु.—१ प्रत्येक चरण मे २२ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द विशेष।

उ०—दीसै मात्रा वीस दुइ, पायै एक प्रमाण। सुथळ छद सोभा सहित, वदि लखपत्ति वखांण।—ल.पि.

[स. सुस्थल] २ अच्छा स्थान, शुभ स्थान।

३ कोई श्रेष्ठ भाव।

क्रि.वि—उचित, ठीक।

रू.भे.—सुथाळ।

सुथांणौ—सं.पु [स. सुस्थान:] ठहरने की जगह, स्थान।

उ०—आवै धकै सुथांणौ ऊठै, पिसणां चमू चढै नह पूठै।

— रा. रू.

सुथांन—स पु. [स. सु-स्थान] १ श्रेष्ठ व उत्तम स्थान, जगह।

उ०—१ पुहकर सुथांन कानी सुप्रव, जास जात्र अहि नर जुड़ै। वाराह देव दीठा वदन, महा आध दाळद मुडै।—ज.खि.

उ०—२ निज सुथांन द्रुम अरु लता, डाळ फूल फळ पात। अतै आवन चित्त सब, न्यारी न्यारी भात।—गज-उद्धार

२ उपयुक्त स्थान।

उ०—'काळ दुकाळी ना मरै, बांमण बकरी ऊट'। पण सुथांन वासौ ही तौ चाहीजै।—दसदोख

रू.भे.—सुथानौ।

सुथांनक, सुथांनिक—स.पु [सं. सुरस्थान.] १ सुमेरु पर्वत।

(ना.मा; ह.ना.मा.)

२ घर, गृह। (अ.मा)

रू.भे. सथानक, सथानिक।

सुथानौ—देखो 'सुथान' (रू.भे.)

उ०—चैत्र सुदै १ पोथौ संपुरण लीख्यौ छ वार बुधवारि वचना-रथी कान्हा गाव रामीसर सुभ सुथानै दास जी री थापना।

— वि.स.मा.

सुथार—स.पु. [स सूत्रकार] (स्त्री. सुथारण, सुथारी) १ बढ़ई नामक जाति।

उ०—तबोळी सुथार ठीक भैसात ठठारू, नव नारू इण नाम कहै हिव पाचै कारू।—ध व.ग्र.

२ उक्त जाति का व्यक्ति, बढई।

उ०—साई री हजार मोहरा दी जद सुथार हांमळ भरी। आखा राज मैं उडण-खटोळा घड़णिया फगत एक-दौ ई कारीगर है।

—फुलवाडी

३ एक प्रकार की चिड़िया।

रू.भे.—सुतार, सुथर।

सुथारखांनौ—सं.पु.—लकड़ी का सामान बनाने का कारखाना, जहाँ बढ़ई लोग काम करते हैं।

सुथाळ—देखो 'सुथळ' (रू.भे.)

उ०—पाई फतै रोळै पाव ढुंढाड़ दरायां पाछा, दुठ बाही बवाही न भूलौ घाव दाव। ऊबावरै 'पता' मार भाला धरा आपणाई, सुथाळां जणी नै पाछी बठाई सुजाव।—गोपाळदान

सुथिर—सं.पु.—१ एक मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में

सत्ताइस मात्राएँ होती है।

उ०—नव अढार आवै निमध, मात्र एक पय माहि। रूडी विधि कहिया रुचिर, **सुथिर** छद साराहि।—ल पि.

२ देखो 'सुथर' (रू.भे.) (डि.ना.मा)

उ०—मूळ ताल जड अरथ मड है, **सुथिर** करणि चढि छांह **सुख**। —वेलि

सुधिरवास—स.पु.—किसी श्रेष्ठ, उत्तम या रमणीक स्थान पर किया जाने वाला निवास।

सुदंत, सुदंती—स.पु. [स. सुदती] हाथी, गज।

वि.—जिसके दांत सुन्दर हो। (स्त्री. सुदतणी, सुदती)

रू.भे.—सुदती।

सुद—सं.पु. [स. सुदि] १ मास का शुक्ल पक्ष, जब चन्द्रमा की कलाएँ बढती रहती है।

उ०—१ छत्रीसै **सुद** भादवै, एकादसी वरत्त। 'राजोधर' एता लिया, गौ हरि धाम मुगत्त।—रा.रू.

उ०—२ **सुद** आई अर वद गई। इण बात नै छ महीना बीतग्या। सेठ नगीनदास री ताकड़ी रूपी निजर गिराका नै तोलती री' पण इसौ ताजौ गिराक फेरू नी आयौ।—अमरचूनड़ी

उ०—३ अट्ठारासै अठतरै मोजी फागण मास। **सुद** तेरस सतोस गुण, बरणै बांकीदास।—बां.दा.

२ देखो 'सुध' (रू.भे.)

उ०—बहती सीत भाळिया वादर, झटक उतार राळिया झाफर। कहियौ एह सदेसौ कीजौ, दीजौ रे प्रभु नू **सुद** दीजौ।—र.रू.

३ देखो 'सुद्ध' (रू.भे.)

रू.भे—सुदि, सुधि।

सुदक्खणा, सुदक्खिणा, सुदक्षणा, सुदक्षिणा—सं.स्त्री. [सं. सुदक्षिणा] १ राजा दिलीप (प्रथम) की पत्नी।

२ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम। (पौराणिक)

३ अच्छी दक्षिणा।

सुदत देखो 'सुदत्त' (रू भे.)

उ०—१ जो अरथी दस दिन मझि जावै, समयै तेणि **सुदत** चित सावै।—सू.प्र.

उ०—२ सतरा हरचद सुमत रा सागर, चित रा विलद **सुदत** रा चाव। वतरा व्रवण प्रभत रा वाधण, नतरा तार मुक्रत रा नाव। —र.ज.प्र.

सुदतपण, सुदतपणौ—स.पु.—दानशीलता, दानवीरता।

उ०—लाट मुरधरा जोधांण कै वरस लग, **सुदतपण** प्रगट कर चीत सामद।—द.दा.

सुदता—वि.—दातार, दानी। (अ.मा.)

सुदतापण, सुदतापणौ—देखो 'सुदतपण' (रू.भे)

सुदतार—देखो 'सुदातार' (रू.भे.)

उ०—१ **सुदतारा** भल दान द्यौ, चित माझळ कर चाव। सुगत दान दीधा मिळै, स्वरग किसूं सुख पाव।—बा.दा.

उ०—२ सांमा तू **सुदतार**, घर मागण आया घणा। बित बगसण बडवार, हरख घणौ तौ उर हुवै।—बा.दा.

उ०—३ अपणी सरधा सम अवर, दान देत **सुदतार**। इळ ऊपर होवै अमर, साख भरै ससार।—ऊ का

सुदतारी—देखो 'सुदातारी' (रू.भे.)

सुदती—देखो 'सुदती' (रू.भे.)

सुदतौ—वि.—श्रेष्ठ दानी, दानवीर। (अ.मा.)

उ०—रजधारी राठौड रे, इसडा भड़ मदअध। रिण वरिया रूप चखरता, **सुदता** बेळ समद।—पे.रू.

सुदत्त—सं.पु.—श्रेष्ठ एव उत्तम दान।

रू.भे.—सुदत।

सुदन—स.पु.—१ दानी, दातार। (अ मा.)

२ देखो 'सुदिन' (रू.भे.)

उ०—अगत नृपति राका वर पायौ, भणै **सुदन** आवै मन भायौ। —सू.प्र.

सुदपक्ष, सुदपख—स.पु. [स. सुदि-पक्ष] किसी मास का शुक्ल पक्ष।

सुदबक—क्रि.वि.—अच्छी तरह ढक कर (माँस या किसी खाद्य पदार्थ को पकाने के बाद किसी पात्र मे) रखने की क्रिया। इस प्रकार रखने से वह खाद्य पदार्थ अन्दर की भाप से अच्छी तरह पककर रसीज जाता है और स्वादिष्ट हो जाता है।

उ०—मिरच धाणा सूंठ लूण हळदी वेसवार दीजै छै। दही रौ रजबौ दीजै छै। लकडी री कठौती मै **सुदबक** राखजै छै। —रा.सा.सं.

सुदभाव—स.पु. [स. शुद्ध-भाव] १ मन की उत्तम एव पवित्र विचार-धारा, प्रवृत्ति, मनोदशा।

२ ऐसी भावना जिसमे स्वार्थ एव कपट न हो, निष्कपट व नि स्वार्थ भाव, सहज व सरल वृत्ति।

उ०—सु किणहीक परधान रै बेटै **सुदभाव** माहै वात करता जणायौ, तरै जोगिया पूछियौ—'वा बारी कठीनै छै' तरै उण बताई फलांणी ठोड़ छै।—नैणसी

सुदयाळ, सुदयाल, सुदयाळौ, सुदयालौ—वि.—दयावान, दयालु।

उ०—राज करै नगरी तणौ, मकरध्वज भूपालौ रे। सूरवीर अति साहसी, न्याय नीत **सुदयालौ** रे।—वि.कु

सुदर—देखो 'सूद्र' (रू.भे)

उ०—बामन खत्री कौन है, कूंन **सुदर** कुन वैईस। हरीया आतम हेक है, दूजा कोय न दीस।—अनुभववाणी

सुदरस, सुदरसण—स.पु. [स. सुदर्शन.] १ विष्णु भगवान् का सुदर्शन चक्र।

उ०—१ एक वधै मन वेग सू, अति धावत केकांण। चक्र **सुदरसण**

गुरुड तिरण, करत वखाण प्रमांण।—रा.रू.

उ०—२ मद लख वाह सुपरण तजै माग मैं, चरण ऊवाहणै धरण चालै। हरण नक्रण वहै सुदरसण हरोळी, पाय तता गरण छिद अपाळै।—र.ज.प्र.

२ शिवजी का नाम।

३ गीध, गिद्ध।

[स. सुदर्शनम्] ४ जम्बू द्वीप।

५ सुमेरु पर्वत का नाम।

उ०—पहिलौ जवुद्वीप समइ विधि थाल आकार, लावउ पिहलउ इक लख जोइण नैं विस्तार। मोटौ नेहणौ मध्य सुदरसण नामै मेर, तिण थी दस दिसिमानी गिरणी च्यारै फेर।—ध.व.ग्र.

६ शुभ दर्शन, महापुरुषो का साक्षात्कार।

उ०—पूछत पूछत ग्यौ अनहपुरि,हुऔ सुदरसण तणौ हरि।—वेलि

७ एक सूर्यवंशी राजा।

उ०—पुक्ष सभ्रम ध्रुव संधि प्रथीपति, सुत सुदरसण उदारह दति सति।—सू प्र.

८ ज्वर की एक प्रसिद्ध औषधि जो अत्यन्त खारी होती है।

वि—१ खूबसूरत, सुन्दर।

२ जो सहज मे देखा जा सके।

रू.भे.—सुदरसरण, सुदरमेण, सुदस्सण, सुद्रसण।

सुदरसणचक्र—स पु यौ [स. सुदर्शन-चक्र] १ भगवान् विष्णु के हाथ में रहने वाला चक्र, एक अस्त्र।

उ०—माह विरत्तौ मारवा, ग्राह जही गज वार। जठै सुदरसणचक्र ज्या रिणमल्ला पण धार।—रा.रू.

२ श्वेत, सफेद।* (डि.को.)

रू.भे—सुद्रसण-चक्र।

सुदरसणचूरण—स.पु यौ. [स सुदर्शन-चूर्ण] ज्वर की एक प्रसिद्ध औषधि। (वैद्यक)

रू भे—सुद्रसणचूरण।

सुदरसणद्वीप—सं.पु.यौ. [स- सुदर्शन-द्वीप] जम्बू द्वीप का एक नाम।

सुदरसेण—देखो 'सुदरसण' (रू.भे.) (ना.मा.)

सुदरांणी, सुदरांनी—देखो 'सूद्रणी' (रू.भे)

उ०—सूकी सुदरांणी झाडा रै सा'रै, लाधी बिदराणी बाडा रै लारै।—ऊ का.

सुदस्सण—देखो 'सुदरसण' (रू.भे)

उ०—भेळी हीज आवड़ बाहर भूप, रु नाहर चक्र सुदस्सण रूप।—मे म.

सुदांन—स.पु [सं. सुदान] अच्छा दान, श्रेष्ठ दान।

उ०—जोजनां उलाळै घड़ी अडै आसमान जातौ, जोया घणा मोद मानै सराहै जीहान। जमी रौ करोत जांणु पछी हाल छैकै जिसौ, दूजा 'वाघ' जुंग अेहौ तुंही दै सुदांन।—जीवणसिंह रौ गीत

सुदांनौ—स.पु.—देखो 'सादियांणौ' (रू.भे)

उ०—फजर हुवा फतै रौ, सुदांनौ जौ धुरायौ। तखत लाख पचास रौ, कवजा मै करायौ।—केहरप्रकाम

सुदांम—स.पु. [सं सुदामन्] १ कृष्ण का सखा, एक गोप।

स.स्त्री.—२ सुदामापुरी।

उ०—सुख धाम नाम परस्वै सकळ, हित सुदांम विस्राम हरि। नवकोट नाथ नवकोट दळ, किया निरम्मळ जात्र करि।—रा.रू.

सुदामा—स स्त्री. [स. सुदामा] १ स्कंध की एक मातृका।

२ एक पौराणिक नदी।

सुदांमानगरी, सुदांमापुरी—स स्त्री—कृष्ण-सखा सुदामा की नगरी जो श्रीकृष्ण ने बसाई थी।

रू भे—सदामापुरी।

सुदांमौ—स पु. [सं. सुदामन्] श्रीकृष्ण का सहपाठी एवं परम सखा एक गरीव ब्राह्मण।

उ०—१ बाळ पणैं का मित सुदामा, अब क्यौ दूर बसै। कहा भावज नै भेट पठाई, तादुल तीन पसै।—मीरा

उ०—२ सत ज सुदामा सारसा, कोड़ी धज कियाह।—ह.र.

२ इन्द्र का हाथी ऐरावत।

३ बादल।

४ समुद्र।

५ पहाड।

रू भे,—सदाम, सदामौ।

सुदात, सुदातार—वि—१ दातार, दानी। (अ.मा.)

२ उदार।

रू.भे.—सुदतार, सुदतारौ।

सुदातारी—स.स्त्री—दातारी, उदारता।

रू.भे—सुदतारी।

सुदाय—स.स्त्री [स. सुदाय.] १ ब्रह्मचारी को यज्ञोपवीत-संस्कार के समय दी जाने वाली भिक्षा।

२ पर्व विशेष पर दिया जाने वाला दान।

३ दहेज।

४ शुभ भेट।

सुदास—स पु. [स] १ च्यवन राजा का पुत्र एव सहदेव राजा का पिता।

२ एक कुरुवंशीय राजा।

३ अयोध्या का राजा जो आर्तपर्ण (सर्वकाम) राजा का पुत्र था, ऋतुपर्ण राजा इसका पितामह था।

उ०—पुत्र तासि रित्रुपरण बुधि प्रकाम, सुत जासु रित्रुपरण रै सुदास।—सू प्र.

४ दिवोदास का पुत्र एक प्राचीन राजा।

सुदि—१ देखो 'सुद' (रू.भे.)

उ०—दीसै न न्याय भोगवि दसा, पडछौ सुदि बदि पखरौ। देखै नै माच दाखै नी, खांडौ वादौ ए खरौ।—ध व.ग्र.

२ देखो 'सुध' (रू.भे.)

सुदिट्ठ—देखो 'सुदीठ' (रू.भे.)

सुदिट्ठी—देखो 'सुद्रस्टी' (रू भे.)

सुदिन, सुदिन्न—स.पु. [स. सुदिन] १ कोई पर्व का दिन, शुभ दिन।

२ खुशी या ग्रानन्द का दिन।

उ०—बळता तौ दीपक भला, टळता भला विघन्न। गळता तौ वेरी भला, वळता भला सुदिन्न।—ग्रग्यात

३ शुभ ग्रवमर, सुनहरा मौका।

रू.भे—सुदन।

सुदी—देखो 'सुद' (रू.भे.)

उ०—१ पनरैसै समत (१५१५) पनरोतड़ै, सुदी जेठ ग्यारस सनढ। ग्रवगाढ़ 'जोध' रचियौ इसौ, गाढपूर जोधाण गढ।

—सू. प्र.

उ०—२ सु राजा सूरजसिंघ समत १६७६ भादुवा सुदी २ काळ कीयौ तठा सुधी रही।—नैणसी

सुदीठ—सं.स्त्री. [स. सु+दृष्टि] १ शुभ-दृष्टि, दया-दृष्टि।

उ०—१ ग्रब हरि मेरी ग्रोर कू, क्यू न करौ सुदीठ।

—गज-उद्धार

उ०—२ ग्रनेक संत ग्रासरै, वसै सहीव वासरै। प्रथीप राम पोखणा, ग्रमी सुदीठ ग्रंग।—र.ज.प्र.

२ ग्रच्छी तरह से देखने की क्रिया या भाव।

रू.भे.—सुदिट्ठ।

सुदीस—सं.पु. [स. सु-दिवस] शुभ दिवस।

उ०—लौकिक विधि सहु कीध, तेहनौ स्यू कहीयै हौ लोक जाणै सहू। ग्राव्यौ लगन सुदीस, ग्रारंभ कारिभ कीधा तिहा बहू।

—स्रीपाळरास

सुदुमन—स. पु. [स. सुदुम्न] वैवस्त मनु का पुत्र जो इड़ नाम से प्रसिद्ध है।

सुदुर, सुदूर—वि. [सं. सुदूर] बहुत दूर।

उ०—साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कै पांव। सयणै घाटा वउळिया, वइरि जु हूग्रा वाव।—ढो.मा.

सुदेव—स.पु. [स.] १ उत्तम देवता।

२ श्वेत एव सुरथ के पिता विदर्भ नरेश।

३ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो चञ्चुराय का पुत्र था।

उ०—रोहितास तणै ह्वित चचुराय, तप सुत सुदेव तप भांण ताय।

—सू प्र.

४ देवक राजा का पुत्र एक राजा।

५ स्वारोचिष मन्वन्तर का एक देवगण।

६ करधम-पुत्र ग्राविक्षित राजा की पत्नी गौरी का पिता एक राजा।

७ एक वैदिक यज्ञकर्त्ता।

८ नाभाग राजा की पत्नी सुप्रभा का पिता, एक राजा।

सुदेस—स.पु. [स. स्वदेश] १ ग्रपना देश, स्वदेश।

[स. सुदेश] २ ग्रच्छा देश।

सुदेसी—वि. [स. स्वदेशी] १ ग्रपने देश का, स्वदेशी।

२ ग्रपने देश का बना।

सुदेह—स.स्त्री. [स.] सुन्दर शरीर।

सुदैव—सं पु. [स.] १ शुभ सयोग, ग्रच्छा ग्रवसर।

२ सौभाग्य, ग्रच्छा भाग्य।

सुदौ, सुद्दौ—वि. (स्त्री सुदी) सहित, साथ।

उ०—१ ग्रादमी जांणी, जै जगायस्या तौ सोर करसै तीसूं माचा सुदा ही उठाय लीन्हा ग्रर लेय कर हालिया।

—सांई री पलक मै खलक री बात

उ०—२ सौ सुदरदास नू स्वपनै मैं दरिद्र कही जै तू मोनू चोट लगाई तौ थारौ घर जड़ा मूल सुद्दौ उपाड नाखस्यूं।

—सुंदरदास भाटी वीकूपुरी री वारता

क्रि.वि—तक, पर्यन्त।

उ०—गोपाळपोळ सु लगाय फतैपोळ सुद्दौ कोट, नै फतैपोळ खास मा'राज जाळोर सू पधारिया तदै १७७४ कमठौ करायौ चहोतरै।

—मारवाड़ री ख्यात

रू.भे.—सुधौ, सूदौ।

सुद्ध—वि. [स. शुद्ध] १ जो भाषा, व्याकरण, उच्चारण व लिखावट की दृष्टि से सही हो, ठीक, शुद्ध, जिसमें कोई गलती न हो।

उ०—१ सारद ससि सारद बदन, सारद कविता सुद्ध। ग्रद सारद पारद उकति, करण विसारद बुद्ध।—रा.रू

उ०—२ कुवचन मुख कहणौ नही, सुवचन कहणौ सुद्ध। बचन विवेक पचीसिका, इम ग्राखै ग्रविरुद्ध। बा.दा.

२ पवित्र, शुद्ध, विशुद्ध।

उ०—१ नवौ जन्म लै कुड कडीर न्हावै, महा सुद्ध व्है मुद्ध मानू नमावै।—मे.म.

उ०—२ जद ब्राह्मण बोल्या—हे पापणी! म्हानै भ्रस्ट किया। ग्रबै गगाजी जाय स्नान पाणी रा लेप करी सुद्ध थास्या।—भि.द्र.

३ जिसमे कोई कमी या खामी न हो, उचित, ठीक।

४ युक्ति-युक्त, ठीक, सही।

उ०—जब घणौ कस्ट हुवौ सुद्ध जाब देवा ग्रसमरथ।—भि.द्र.

५ निर्दोष, बेदाग, दोष-रहित।

६ निर्मल, साफ, स्वच्छ।

७ बिना किसी मिलावट का, ग्रमिश्रित, खालिस।

८ ग्रद्वितीय, ग्रसमान।

९ चमकीला, उज्ज्वल।

१० सफेद, श्वेत ।

११ सीधा-सादा, भोला-भाला ।

१२ केवल, सिर्फ, मात्र ।

स पु. [सं. शुद्ध] १ शिव, महादेव ।

२ सेधा नमक ।

३ काली मिर्च ।

४ शुद्ध वस्तु ।

५ संगीत में राग का एक भेद ।

६ चौदहवें मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक ।

रू भे.—सुद ।

७ देखो 'सुध' (रू.भे.)

उ०—१ होणी होकर ही रहे, बिसर जात है सुद्ध । जाकी जस भवतव्यता, ताकी तैसी बुद्ध । —पचदडी री वारता

उ०—२ सुद्ध जमाई नीं लहू, तौ तेहनैं देई राज । हुं पिण सजम आदरु, सारू उत्तम काज ।—वि.कु.

सुद्धकुडळियौ–स पु यौ –'कुडळिया' छन्द का एक भेद ।

वि वि –देखो 'कुडळियौ' ।

सुद्धता–स.स्त्री [स. शुद्ध+ता प्र.] शुद्ध होने की अवस्था या भाव ।

२ पवित्रता, निर्मलता ।

३ सफाई, स्वच्छता ।

४ सही होने की अवस्था या भाव ।

५ निर्दोषिता ।

६ खालिसपना ।

७ उज्ज्वलता, चमक ।

८ सफेदी ।

९ सादगी, सरलता ।

सुद्धन–स.पु. [स.] एक सूर्यवशी राजा ।

उ०—संभूत सुतरण सुद्धन स्रिताज, सुधना सुत त्रिधना त्रप सकाज ।
—सू.प्र

सुद्धनीर–स पु.–सात प्रकार के समुद्रो मे से एक ।

उ०—दहकि दहकि दौलेप राज किरि राज पुकारै, लवणोदक सौ सुद्धनीर लग बढन विथारै । बळ सूदन सौ वामदेव लग अजग उसारै, बडवां मुख सौ ब्रह्मलोक लग सोक सम्हारै ।—व.भा.

सुद्धनिसांणी, सुद्धनीसांणी – स स्त्री – एक प्रकार का 'निसाणी' नामक छन्द जिसके प्रत्येक पद में प्रथम तेरह फिर दस इस प्रकार २३ मात्राएं होती है तथा अन्त में दो गुरु होते है ।

उ०—कळ तेरह फिर दस कळा, दै मोहरै गुर दोय । कळी एक तेवीस कळ, सुद्धनिसांणी होय ।—र.रू.

सुद्धमति–वि –जिसका मन व भावनाएं शुद्ध हो ।

सं.पु.–जैनियो के अतीतकालीन इक्कीसवें तीर्थङ्कर का नाम ।
(स. कु.)

उ०—क्रितारथ जिनेस्वर सुद्धमति सिवकर, स्यदन सप्रति चौवीसै तीरथकर ।—स कु.

सुद्धमन, सुद्धमन्न–वि [स. शुद्ध-मन] जिसका मन एव भावनाएं शुद्ध हों, पवित्र हो, निष्कपट ।

उ०—या आद विसै 'चापा' अनूप, भुज गयण धरै पण वयण भूप । 'करनोत' धरा छळ खीवकन्न, महाराज 'अजन' छळ सुद्धमन्न ।
—रा.रू.

सुद्धसांणोर, सुद्धसैणोर—देखो 'सुधसाणोर' (रू भे.)

सुद्धांत–सं.पु [स. शुद्धांत] १ अन्त पुर, रनिवास, जनानखाना ।

उ०—१ रागी तो कळिजुग रौ रूप एहा अभिरूप अवनीस रौ तिरस्कार करि सुद्धांत रै आस्रित अनेक जन रहै जिका मैं कोई दौ ही लोक रौ खोवणहार टाळियौ ।—व.भा.

उ०—२ अर जैत कुमार जुक्त सव सुद्धांत परिकर सहित प्रामाराज सळख चाहुवाण कुमार नूं स्वकीय सुता री सवध करण अजमेर द्रग चलायौ ।—व.भा.

सुद्धाद्वैत, सुद्धाधीत–स.पु. [स शुद्धाद्वैत] वल्लभाचार्य द्वारा चलाया हुआ एक वेदान्तिक सम्प्रदाय, जिसमे मायारहित ब्रह्म को अद्वैत तत्त्व माना जाता है ।

सुद्धापह्नुति–स स्त्री [स शुद्धापह्नुति] अपह्नुति अलङ्कार का एक भेद जिसमे वास्तविक (सत्य) उपमेय को निषेधपूर्वक छिपाकर उसके सहधर्मी उपमान का आरोप (स्थापन) किया जाता है ।

सुद्धि, सुद्धी–स स्त्री [स शुद्धि] १ शुद्ध या पवित्र करने या होने की क्रिया या भाव ।

२ शुद्धता, सफाई, स्वच्छता ।

३ एक प्रकार की वैदिक क्रिया या सस्कार जो किसी अशुद्ध व्यक्ति या पदार्थ को शुद्ध करने के लिए किया जाता है ।

क्रि वि –१ शुद्धता से ।

उ०—सन सुद्धि जपता रुखमिणि मगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित ।—वेलि

रू भे - सुधि ।

२ देखो 'सुध' (रू.भे.)

उ०—१ जिण थी आपरौ सिविर ऊचास्थळ पर होई तौ कुपुत्र नु आदाब राखण री सुद्धि रहे ।—व भा

उ०—२ जिण लागा हुय जाय, बुद्धि वाळौ बेबुद्धी । जिण लागां हुय जाय, सुद्धि वाळौ बेसुद्धी ।—ऊ.का.

उ०—३ नहीं तौ सार नही तौ सुद्धि, नही तौ खोट नही तौ बुद्धि ।—ह.र

३ देखो 'सुद्ध' (रू.भे.)

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊ, परहर ससय भय बुद्धी बर पाऊ ।—ऊ का

सुद्र—देखो 'सूद्र' (रू भे)

उ०—बाचै चत्र बेद बिरच बखाण, प्रकासै व्यास अठार पुराण ।

खत्री दुज बैम गया सुद्र खोज, हुतोज हुतोज हुतोज हुतोज ।
—ह र

सुद्रणि, सुद्रणी — देखो 'सूद्रणी, सूद्रा' (रू भे)
उ०—१ सतावीस लघु वैसी मोई, है लघु अधिक **सुद्रणी** होई ।
—र.ज.प्र.
उ०—२ पीत दुकूळ वैसणी पहरण, गाह **सुद्रणी** स्याम वसन गण । गौरै वरण विप्रणी गाहा, चपक वरण खित्रणी चाहा ।—र ज प्र

सुद्रब, सुद्रव्य—स पु [स सुद्रव्य] शुभ सम्पत्ति, अच्छा द्रव्य ।
उ०—१ माहब नौवत **सुद्रब**, वसन जरकस्स जवाहर । रतन जडत सिरपेच, माळ मुगताहळ सुंदर ।—रा रू.
उ०—२ छाही व्रना **सुद्रव्य** छेलिया, प्रिथी प्रमाणइ धरइ पगि । दियण तणइ ईसर धणदानी, जगहथ बाधउ तरइ जगि ।
—महादेव पारवती री वेलि

सुद्रसण – देखो 'सुदरसण' (रू.भे)
उ०—गहै ग्रब **सुद्रसण** भाज सुरताण गह, कीध नर सुरा सिहायतनि केही ।—द.दा

सुद्रसणचक्र —देखो 'सुदरसणचक्र' (रू.भे) (ग्र.मा)

सुद्रसणचूरण - देखो 'सुदरसणचूरण' (रू.भे)

सुद्रस्ट—वि [सं. सुदृष्ट] कृपालु, दयालु ।

सुद्रस्टि, सुद्रस्टी—सं स्त्री. [स. सुदृष्टि] शुभ-दृष्टि, दया-दृष्टि ।
रू.भे.—सुदिट्ठी ।

सुद्रह—सं.पु [स.] समुद्र, सागर ।
उ०—बेह रहइं कन्हु जाएवि **सुद्रह**, ए माहि बारडी ए। आणीय धानुकी पडि देवीय, ए अरि वसि घालीया ए । —सालिभद्र सूरि

सुध—स स्त्री. [स शुद्ध] १ चेतना, सज्ञा, होश ।
उ० – १ मारौ मार मचाया मनवौ, आप एक घर आवै । एक ठोड आया सू अनुभव, बस **सुध** बुध बिसरावै । - ऊ.का.
उ०—२ उसाकाळ उठणिया बाळक, विद्या विकास पावसी । **सुध** बुध विमळ सरीर सिरसू, गीत नीत रा गावसी ।—टावर सईकडौ
२ बुद्धि, ज्ञान । (ग्र.मा.)
३ ध्यान, खयाल, विचार ।
४ खबर, पता, जानकारी ।
उ०—१ बाप नै सै बाता री **सुध** ही । इण वास्तै वौ बेटी नै समझावण सारू आयौ कै मोल्यार रो रूप नी देखीजै ।— फुलवाडी
उ०—२ जोडी एक पच्छिम दिसा जयसलमेर थटौ मुलतान सू लाहोर मांही कर आया पण घोड़ी री कठै ही **सुध** नही हुई ।
—सूरै खीवै काधळोत री बात
५ याददाश्त, स्मृति, स्मरण ।
उ०—बिरछा बेला पर चढणौ बुधि चाही । उरमै अलबेला बेलण **सुध** आई ।—ऊ.का.
६ देख-भाल, सार-सम्हाल, खोज-खबर ।
उ०—भौसागर मै बही जात हू, बेग म्हारी **सुध** लीज्यौ जी ।
—मीरा
७ नीयत ।
८ राह, मार्ग ।
उ०—आथणी बीसमी किसौ अब अवरचौ, समी घर सेख रै बणी सादी । सिध मुलताण री **सुध** लै सिधाया, दूध तू सवारै पियै दादी ।—गोपीनाथ गाडण
९ डिंगल का एक छन्द विशेष ।
रू.भे —सुद, सुदि, सुद्धि, सुद्धी, सुधि, सुधी ।
१० देखो 'सुद्ध' (रू.भे.)
उ०—१ ईखै पित मात एरिसा अवयव, विमळ विचार करै वीवाह । सुदर सूर सीळ कुळ करि **सुध**, नाह किसन सरि सूझै नाह ।—वेलि
उ०—२ सु किण भाति री ढाला **सुध** गेंडौ घणा री मारी बधै, मुहरतौलौ रग लागै ।—रा.सा सं.

सुधउ—देखो 'सुधौ' (रू भे.)
उ०—परदेशी राजा प्रतिबोध्यउ, कसी गुरु स्रावक कियौ **सुधउ** ।
—स कु.

सुधकर—स.स्त्री. [स शुद्ध-कर] काली मिर्च । (ग्र.मा.)

सुधजथा – स. स्त्री. – १ डिंगल गीतो की रचना की एक परिपाटी या नियम जिसमे गीत के प्रथम द्वाले में जो वर्णन किया जाता है, वही वर्णन अन्त तक के द्वालों मे होता है ।
२ इस प्रकार से रचा हुआ गीत ।

सुधधर—देखो 'सुधाधर' (रू भे.)

सुधनु—स पु. [स. सुधनुस्] राजा कुरु का एक पुत्र जो सूर्य की पुत्री तपती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था ।

सुधन्न, सुधन्वा—वि. [सं सुधन्वन्] अच्छा धनुर्धर, तीर-अदाज ।
उ० – समोभ्रम देव 'करन्न' **सुधन्न**, करै खग झाटक खींवकरन्न ।
—सू.प्र.
सं.पु –१ विष्णु ।
२ एक राजा जो मान्धाता द्वारा परास्त किया गया था ।

सुधपिंड—स.पु –बहेडा । (ग्र मा.)

सुधबायरौ—वि. (स्त्री. सुधबायरी) १ जिसके होश-हवास ठिकाने न हो, बदहवास, घबराया हुआ ।
उ०—पान खडक्क्या जावता, कोसां छाळोछाळ । बैसागी **सुधबायरा**, आया जोडा पाळ ।—लू
२ अचेत, बेहोश ।
३ विक्षिप्त, पागल ।
४ मदहोश, मदमत्त, नशे मे चूर ।

सुधबुध—स स्त्री. [स. शुद्धि-बुद्धि] १ होश-हवास, सावचेती, सावधानी, विवेक ।

उ०—१ अकबरसाह गाफल गुमान सू भारचौ, तहवरखान हाथ सब राज बोझ धारचो। निवाब निदान पाण सुधबुध बिसराई, और सू और विचार बावळै की नाई।—रा.रू.

उ०—२ मारौ मार मचाया मनवौ, आप एक घर आवै। एक ठौड आया सूं अनुभव, बस सुधबुध बिसरावै।—ऊ.का.

उ०—३ सेठा रौ औ घमकौ देख्यौ तौ सेठाणी खुद सुधबुध पातरगी।—फुलवाडी

२ चेतना संज्ञा, होश।

उ०—१ भैरा स आथेडौ करता करता नेवट राजाजी नै अगाढ ऊ र आयगी। सिगा री ढिगली रै माथै गुडग्या। नी की चेनो रह्यौ अर नी की सुधबुध।—फुलवाडी

उ०—२ ठकराणी बेचेन होय गुडगी। ठाकर नै मोद व्हियौ कै ठकराणी कित्ती पतिव्रता अर गुनवरणी। धणी रै जोखा री बात सुणता ई सुधबुध पातरगी।—फुलवाडी

३ ध्यान, खयाल, विचार।

उ०—नी किणी चीज रौ कोड अर नी किणी चीज री घिन। धकै आई सौ कबूल। जाणै नटणा री सुधबुध ई नी व्है।—फुलवाडी

४ बुद्धि, ज्ञान।

उ०—देखण वाळा लोगा री आख्या काळजा रै माय बडगी। केई जणा तौ इण भात मुट्ठ व्हैगा, जाणै सगळी सुधबुध माथै वाग व्हगी व्है।—फुलवाडी

५ पता, खबर, जानकारी।

६ याददाश्त, स्मृति, स्मरण।

सुधभाव—स पु. [स. शुद्ध-भाव] शुद्ध विचार।

सुधमन, सुधमनौ – वि. [स. शुद्ध-मन] १ जिसका मन शुद्ध हो, शुद्धमना।

२ जो होश-हवास मे हो, सचेत।

सुधमांण—वि. [स शुद्धि-मान्] बुद्धिमान।

उ०—पयोधर पार पय ऊतरै अवध पत, पाजबध चारसै कोस पैरा। हूल असुराड पड भूल सुधमाण हट, फिरै चित्त डूल जिम चाक फेरा।—र रू

सुधरणौ, सुधरबौ—क्रि अ [स सुध् या शोधन] १ किसी कार्य या बात का बिगडने से रहना, बनना, बात बन जाना।

२ बिगडे हुए में सुधार होना, कमियाँ या गल्तियाँ दूर होना, ठीक होना।

उ०—आ काठां चढसी अवस, धरणीधर दै धोक। सठ मन मानै सुधरसी, पातर सू परलोक।—बा.दा

३ बीमारी की दशा मे सुधार होना, फायदा होना, स्वस्थता की स्थिति होने लगना।

४ आर्थिक दृष्टि से अच्छी हालत होना, तरक्की होना।

उ०—माईता रौ जमारौ कोई सुधरियोड़ौ नी हौ, पण तौ ई वै छोरा रौ जमारौ बिगड़ण रौ सोच करता।—फुलवाड़ी

५ बिगडे हुए आचरण का ठीक होना।

६ सफल होना, सद्गति होना।

उ०—१ आ बात कैय वै थोडा हसिया। नाई कह्यौ—अदाता, म्हारौ तौ जलम सुधरग्यौ अर आप मिसखरिया करौ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ था सगळा रै हाथा म्हा दोना नै भेळौ दाग दिरीज जावै तौ ओ जमारौ सुधरै।—फुलवाडी

उ०—३ मिनखा देही पाय कर, जाण्यौ नही जगदीस। दीन कहै सुधरै नही, बिगडी बीसवा-बीस।—वि स सा

७ वातावरण का तनाव कम होना।

सुधरणहार, हारौ (हारी), सुधरणियौ—वि०।

सुधरिओड़ौ, सुधरियोड़ौ, सुधरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुधरीजणौ, सुधरीजबौ—भाव वा०।

सुधरम—स पु [स सुधर्म] १ उत्तम व श्रेष्ठ धर्म।

उ०—हरि सुधरम हारै काय हासै, या नरदेह नही उदरि दरि दरि।—अनुभववाणी

२ पुण्य, दान।

३ परोपकार।

४ अच्छा आचरण।

५ महावीर स्वामी का एक शिष्य।

६ देखो 'सुधरमा'।

उ०—दिन दिन दीपै देहरा, जिहा खीपास जिणदौ रे। माथै लै सुधरम सभा, आयौ जाणै इदौ रे।—ध व ग्र.

सुधरमा—स.स्त्री. [स सुधर्म्मन्] १ इन्द्र की सभा, देव-सभा। (अ.मा.)

२ इन्द्र के सभा-भवन का नाम।

उ०—तिका सुधारूप सीधु छाकिया नदन बन रै निवास सुधरमा सभा मै बैठि सुरा रै साथ बिलास कीधा।—व.भा.

३ दृढनेमि के एक पुत्र का नाम।

४ जैनो के एक गणाधिपति।

वि –अपने धर्म पर अटल रहने वाला, स्वधर्मी।

सुधराई—स स्त्री –१ सुधरने की क्रिया या भाव।

२ किसी कार्य में किया जाने वाला सुधार।

३ सुधार कार्य की मजदूरी।

सुधरियोड़ौ—भू का.कृ –१ बिगडने से रहा हुआ, बना हुआ (कोई कार्य)।

२ कमियाँ, गल्तियाँ आदि दूर होकर ठीक हुवा हुआ, सुधार हुवा हुआ। ३ स्वस्थता की स्थिति में आया हुआ, इस दृष्टि से सुधरा हुआ। ४ अच्छी हालत मे हुवा हुआ, उन्नत दशा मे आया हुआ। ५ आचरण ठीक हुवा हुआ। ६ सफल हुवा हुआ, सद्गति पाया हुआ। ७ तनाव घटा हुआ।

(स्त्री सुधरियोडी)

सुधरी–स स्त्री.–१ अच्छी हालत, सम्पन्नावस्था।
उ०—**सुधरी** मै सौ वार, मदद करै मन-माडिया। विगडी मै इक वार, कोई न रै'वे किसनिया।—अग्यात
२ स्वस्थता।

सुधबटी, सुधवट्टी–स.स्त्री –तलवार। (ना डि को)

सुधसांणोर–स.पु.–डिगल का एक गीत (छन्द) विशेष जिसके प्रथम और तृतीय चरण मे २०-२० मात्राएँ तथा द्वितीय-चतुर्थ चरण मे १८-१८ मात्राएँ होती है, लेकिन द्वाले के प्रथम पद मे २३ मात्राएँ होती है।
रू.भे.—सुद्धसाणोर, सुद्धसैणोर।

सुधहीण–वि –१ चेतना, सज्ञा व होश-हवास से रहित, अचेत, बेहोश।
२ जिसको अपने भले बुरे का ज्ञान न हो।
उ०—तड लाग गयौ मग माग तणौं, **सुधहीण** अकब्बर राग सुणौं।
—रा.रू.

सुधांग–स.पु [स.] चन्द्रमा, शशि।

सुधांम–सं.पु [स. सुधामन्] १ कोई श्रेष्ठ या उत्तम धाम, तीर्थ।
२ घर।
३ चन्द्रमा।

सुधांसु–स पु. [स. सुधा-अशु] १ चन्द्रमा, शशि। (ह.ना.मा)
२ कपूर।

सुधा–स.स्त्री. [स.] १ अमृत। (अ मा.)
उ०—१ हुवै मुवां बिन मुकत नह, भै बिन हुवै न प्रीति। **सुधा** पिया बिन अमरपद, व्है न दिया विन क्रीति।—बा दा.
उ०—२ आज फल्यौ सुर कौ तरु अगण, आज चितामणि सौ कर आयौ। काम कौ कुभ धरचौ निज धाम, **सुधा** मनु पान कराइ धपायौ।—ध व ग्र.
उ०—३ सब ही अत्तक देखियै, किहिं विधि जीवै जीव। साधु **सुधा** रस आन कर, दादू बरसै पीव।—दादूबाणी
उ०—४ नायक रमा नयण कज नरवर, सुखदायक निज जन मयण। भगत विछळ मन महण सुभायक, निमौ **सुधा** स्रायक नयण।—र ज प्र.
२ पुष्पो का रस, पुष्पो का शहद।
३ मदिरा, शराव।
उ०—तरै जलाल जागीर मै आदमी भेज्या। भला सिपाही साख-दार खांप खाप रा राखिया। हमेसा **सुधा** मै गरकाव रहै।
—जलाल बूबना री बात
४ जल, पानी।
५ गङ्गाजी का नाम।
६ पृथ्वी, धरती।
७ पुत्री, बेटी।
८ बिजली।
९ ईट।
१० सफेदी।
११ थूहर।
१२ दूध।
१३ जहर।
वि –श्वेत, सफेद।* (डि को.)
क्रि.वि –१ तक, पर्यन्त।
२ सहित।
उ०—१ संवारै दिन पोहर चढता आग रै घरै पाटण माहै मूळराज मीहाजी नु सारै साथ **सुधा** मोहौला मै लै गया।—नैणसी
उ०—२ पाठै कन्है आया हता, तिकै दरवाजै आय ठहकीया। अठै ईहा उपर सिरदार भाखरसी **सुधा** तरवार री डीक दीनी।
—राजा नरसिंघ री वात

सुधाई–स स्त्री.–सीधापन, सरलता।

सुधाकर–स पु [स] चन्द्रमा, शशि। (ना.मा.)
उ०—मधुकर भ्रमत सुबास मद, भाल **सुधाकर** भास। मोदक कर मन मोदमय, नित जय ग्यान निवास।—बा.दा.

सुधाकुंडळी–स स्त्री.–एक वाद्य विशेष।
उ०—**सुधाकुंडळी** खजरी चग सोहै, वजै चग मिरदग सोभा विमोहै।—रा.रू.

सुधागेह–स.पु [स. सुधा+गृह] चन्द्रमा, शशि।

सुधाचरण–स.पु –गरुड। (अ मा.)

सुधातमा–वि. [स. शुद्ध-आत्मा] जिसकी आत्मा शुद्ध हो, पवित्र विचारो वाला।
स.पु –ईश्वर, परमात्मा।
उ०—निरालब निरवाण निरतर, सब प्रकासी वोई। सोई सुख-राम **सुधातमा**, चेतन मत बुध लखै न मोई।
—श्री सुखरामजी महाराज

सुधाधर, सुधाधरण, सुधाधांम, सुधाधार–स.पु.–चन्द्रमा।
(डि को; ना.मा)
रू.भे —सुधधर।

सुधाभुज, सुधाभुजीस, सुधाभुजू–स पु –देवता, सुर। (अ मा, ना मा.)
उ०—धजराजू कै समाज अत जातू कै अनेक सज, रथू कै घमसाण जिसकू देख लजावै **सुधाभुंजू** कै विमाण।—र.रू

सुधामद—देखो 'सुधारस'।
उ० · दुनिया मै सुख देख, तार आवेला तीखी। सतगुरु कौ परसाद, **सुधामद** घूटन सीखी।—ऊ.का

सुधार–स.पु.–१ सुधरने की क्रिया या भाव।
२ किसी बढिया या बहतर अवस्था मे हाने, आने या करने की क्रिया, तरक्की, उन्नति।
उ०—कर **सुधार** खत्रवाट कुळ, रखी अघट रुखवाळ। हक वेहक

तोड़ वाळहट, 'पता' पिता प्रतपाळ ।—जैतदांन बारहठ
३ बुराइयाँ, विकार, दोष आदि दूर करने की क्रिया ।
उ०—कोर कौ सुधार ग्यानी, गोर तैं कियौ । आपनौ उधार पांनी, धोर तैं पियौ ।—ऊ.का.
४ संशोधन, संस्कार ।
५ अच्छाई ।
६ उपयुक्तता ।
उ०—दरजी फाड़ दुकूल नू, सीवै लिए सुधार । इण विध री रचना अठै, जाणै जाणणहार ।—बां दा.
७ परिवर्तन ।
८ फायदा, लाभ ।
९ घृत, घी । (अ.मा)
रू.भे.—सुधारौ ।

सुधारक-वि.-१ सुधार करने वाला ।
२ समाजसेवी ।
३ धर्म, समाज व राजनीति में आई कुरीतियों को दूर करने के लिए आन्दोलन करने वाला, क्रान्तिकारी ।
उ०—चौवटै जावता दो-तीन पचा नै लोगां पूछियौ—सुणीक नहीं? सुधारक लोग माईता री पुराणी परणलका तोड़ै है।—वरसगाठ
४ संशोधन या संस्कार करने वाला ।
५ परोपकारी ।
उ०—उधारक धारक लोक असेस, सुधारक तारक सेम विसेम ।
—ऊ.का.

सुधारण-वि.-सुधारने वाला ।
उ०—नमौ गज तारण मारण ग्राह, नमौ व्रज-काज सुधारण नाह ।
—ह.र.
क्रि.वि.-सुधारने के लिए ।
उ०—मोटी माफी मांग, अमलदारां सूं अडग्या । देस सुधारण दसा, लाख विध थासूं लडस्या ।—ऊ.का.
स.स्त्री.-सुधारने की क्रिया या भाव ।

सुधारणौ, सुधारबौ-क्रि.स ['सुधरणौ' क्रि. का प्रे रू] १ किसी कार्य या बात को बिगड़ते हुए से बचाना, बात बनाना, कार्य सुधारना ।
उ०—१ समरथ सरणा तुम्हारी साइयां, सरब सुधारण काज ।
—मीरा
उ०—२ काम सुधारै काज कु, काम ही करै अकाज । जन हरीया निहकामना, सौ सता सिरताज ।—अनुभववाणी
उ०—३ आप कळा सम अवतरण, मतौ कियौ महाराज । असुरां हद राखण इळा, सुरां सुधारण काज ।—रा रू.
२ व्यवस्थित करना, जमाना, बैठाना, सुधारना ।
उ०—वै दरबार नै चौखी सलाह देवणी चावै, राज काज रौ ढग सुधारणौ चावै पण कोई बात भरै नी पडै ।—अमरचूनड़ी
३ बिगडे हुए को ठीक करना, कमियाँ, गल्तियाँ, दोष, विकार आदि दूर करना ।
उ०—१ पथ सुधारण कारणै वील्हजु जंभगुर आयुस आविया । रामदास ससाद लै वील्ह वैकुठ सीधाविया ।—वि स.सा.
उ०—२ ध्यान विद्या धरै, ध्यांन नहीं देस सुधारै । धरम ध्यान नहिं धरै, अलवता ध्यान उधारै ।—ऊ.का.
४ लक्ष्य-सिद्धि करना, उद्देश्य पूरा करना पूर्ण करना ।
उ०—लाखां काज सुधारणा, लाखा सूधी बात । लाखां रीझै आवगौ, तै क्यू कटियै हाथ ।—जलाल बूबना री बात
५ तरक्की कराना ।
६ आदतें ठीक करना, आचरण ठीक करना ।
७ सफल बनाना, सद्गति देना या प्राप्त कराना ।
उ०—१ हा हे म्हारौ जनम सुधारण हार, हा हे म्हारौ मरण-मिटावण हार ।—मी.रां.
उ०—२ पास आए की लाज, कुळ काज विचारौ । मेरा रण मरणा, कै जीवणा सुधारौ ।—रा रू.
८ काम में लेने के लिए तैयार करना, साफ करना ।
उ०—पत्र सुधारै जोगणी, माळ सुधारै रंभ । थभ चलेबौ सोम रवि, पेखै व्योम अचभ ।—रा रू.
९ सजाना, सँवारना ।
उ०—आहव चापावत अखै, लड़ कूपावत लाल । कीधौ हार सुधारतां, सिव तिण वार खुमाल ।—रा रू.
१० वातावरण का तनाव कम करना, कम कराना ।
११ सफ़ाई करना, साफ़ करना ।
उ०—सीडै कातै वणै, जोस सू जगां सुधारै । करडा दोरा काम, साम घर विपत निवारै ।—नारी सईकड़ौ
सुधारणहार, हारौ (हारी), सुधारणियौ—वि० ।
सुधारिओड़ौ, सुधारियोड़ौ, सुधारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
सुधारीजणौ, सुधारीजबौ—कर्म वा० ।
सुधरणौ, सुधरबौ—अक० रू० ।

सुधारस—स.पु.-१ अमृत ।
उ०—काज महौ बिसराय, सुणेबौ कीजिए । प्याला स्रवणां पूर, सुधारस पीजिए ।—वा दा.
२ कमल । (ह.ना मा)

सुधारसम—स पु [स सुधारश्मि] चन्द्रमा । (अ.मा)

सुधारियोड़ौ – भू.का.कृ. – १ किसी कार्य या बात को बिगडते हुए से बचाया हुआ, बात बनाया हुआ, कार्य सुधारा हुआ । २ व्यवस्थित किया हुआ, जमाया हुआ, बैठाया हुआ, सुधारा हुआ । ३ बिगडे हुए को ठीक किया हुआ, कमियाँ, दोष, विकार आदि दूर किया हुआ । ४ लक्ष्यसिद्धि या उद्देश्यपूर्ति किया हुआ । ५ तरक्की कराया हुआ । ६ आदतें सुधारा हुआ, आचरण ठीक किया हुआ ।

७ सफ़ल बनाया हुआ, सद्‌गति दिया हुआ, प्राप्त कराया हुआ। ८ तैयार किया हुआ। ९ सजाया हुआ, सँवारा हुआ। १० तनाव घटाया हुआ। ११ सफाई किया हुआ, साफ किया हुआ।

(स्त्री. सुधारियोड़ी)

सुधारू–वि.–सुधार करने वाला, सुधारक।

सुधारौ–स.पु.–१ मृतक के पीछे किए जाने वाले वे कर्म जिससे मृतक को पितृयोनि या मोक्ष प्राप्त हो जाय।

२ देखो 'सुधार' (रू.भे.)

उ०—१ माथा फोडी करनै स्कूल खुलवाई तौ इण वास्तै ही कै गाम रा टावर पढ-लिख नें हुसियार बणैला अर गाम री **सुधारौ** व्हैला। पण औ तौ जबरौ सुधारौ व्हियौ।—अमरचूनड़ी

उ०—२ करियै कृपा यहाँ अविकारा, अब नहीं जाऊं लैन उधारा। सब तेरेतें होत **सुधारा**, भल्लरि जू करतौ भनकारा।—ऊ.का

सुधासार–स.पु. [स.] अमृत।

उ०—दडकाळ करगा तरेस मी गणेस दत, सूर प्रलैरसम्मा गणेस **सुधासार**। चडी सूळ पारजात मराला पकता चगी, किरमाळा मोज पणी कोसल्या कवार।—र रू.

सुधासुत–स.पु. [स.] १ चन्द्रमा। (ह.ना.मा.)

२ इन्द्र।

सुधासुती–सं.पु. [स सुधा-सूती] चन्द्रमा। (अ मा)

सुधास्रव–स पु. [स. सुधा-श्रव] चन्द्रमा। (ना.मा.)

उ०—प्रभा रव तणी सू वधै उण री प्रभा, तूझ सूं वधै रव प्रभा तैई। **सुधास्रव** अमर कियौ नह साभल्यौ, किया तै अमर ज्या रीत केई।—र.रू.

सुधि—१ देखो 'सुध' (रू.भे.)

उ०—यू करता यौवन अवस्था हुई। अेक तौ रूप हतौ बीजौ यौवन आयौ, तीजै सिणगार कर बैठी सौ उवै नू देख सेठ री **सुधि** बिगड़ी।—बैताळ पच्चीसी

उ०—२ सहजा **सुधि** बुधि ऊपनी, हीरी चडीयौ हाथि। हरीयौ मगै कौन कू, घट मै पाई आथि।—अनुभववाणी

उ०—३ लागत बेहाल भई, तन की **सुधि** बुधि गई। तन मन व्याप्यौ प्रेम; मानौ मतवारी है।- अनुभववाणी

२ देखो 'सुधी' (रू.भे) (ह.ना मा.)

३ देखो 'सुद्धि' (रू.भे)

उ०—मधुर करबक ऊपरि, सुपरि परीसइ घोल। मुख **सुधि** करइं ति करविय, करविय करइ तबोल।—जयसेखर सूरि

४ देखो 'सुद' (रू भे.)

उ०—हुव सबद नाळि निहाव रा, **सुधि** भाद्र बीज सिळाव रा, धर सपत पुड़ थर अनड़ धडहड़, हुवै घड असमान खडहड़।—रा.रू.

सुधिक–स.स्त्री.–फ़टकार, धिक्कार।

सुधी–वि. [स. सुधीः] १ पण्डित, विद्वान्। (अ.मा; डि.को.)

२ बुद्धिमान, चतुर।

३ धार्मिक।

स.पु.–१ शिक्षक।

२ कवि। (अ मा.)

क्रि.वि.–१ सहित, साथ।

उ०—पीपळ ऊपर चढनै मत्र पढ़ियौ, पीपळ जड़ा **सुधी** उडियौ।
—पचदंडी री वारता

२ तक, पर्यन्त।

उ०—१ पगा **सुधी** खाल, तौ ही रह्या सयम मां लाल, सुकोमल साध।—जयवाणी

उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या—एक कानी नदी कडिया ताई अनै एक कानी गोडा **सुधी**। एक कानी सुकी तौ म्है सुकी ऊतरा।
—भि.द्र.

३ देखो 'सुद' (रू.भे.)

४ देखो 'सुद्धि' (रू भे.)

उ०—गायां नै गिरमास, ठिकाणै चौडै ठायौ। सूवै सूतक **सुधी**, तळै छिंगास बिसायौ।—द.दे.

५ देखो 'सुध' (रू.भे)

सुधीर–वि [स.] धैर्यवान, विवेकवान।

सुधीव, सुधू, सुधया–स.स्त्री –सुपुत्री, सुन्दर कन्या।

उ०—१ माळवगढ राजा **सुधू**, कुवरी माळवणीह। ढोलइतिण बहु प्रीति छइ, अति रग नेह घणीह।—ढो.मा

उ०—२ नळवर नयर निरिंदौ, नळराय सुउ सल्लकुमर वरौ। पिंगळराय **सुधूया** वनिता मा(र)वणि वरणविमु।—ढो.मा

सुधोदक–स पु –सप्त समुद्रो मे से एक।

उ० दध मडोदक सस्ठमौ, लाख बतीस बखान। **सुधोदक** कहै सपतवौ, चोसठ लाख प्रमान।—गज-उद्धार

सुधौ–सं.पु (स्त्री. सुधी) १ सीधा-सादा, सरल, भला, शरीफ़, सज्जन।

२ देखो 'सुदौ' (रू.भे.)

उ० –१ राव वीरमदे दिन ४ पहली मेडतौ ऊभौ मेल नीसरीयौ। अजमेर माणसा बसी **सुधौ** गयौ।—नैणसी

उ०—२ पछै समत १६६१ रा. कान्हीदास रौ ही आध राजा सुरजसिंघ नुं अकबर पातसाह दीयौ। तिकौ राजा सुरजसिघजी जीवीया तठा **सुधौ** मेडतौ रहौ।—नैणसी

३ देखो 'सूधौ' (रू.भे)

उ०—आख्या काजळ घालसी फूलां रा हार पहरसी **सुधौ** लगावसी।
—पचदडी री वारता

(स्त्री. सुधी)

रू.भे.—सुधउ।

सुनंग–स.पु.–देखो 'सुनग' (रू.भे.) (अ मा, ह ना.मा.)

सुनंद—स.पु. [सं] १ श्रीकृष्ण का एक पार्षद ।
२ एक देव-पुत्र ।
३ बलरामजी के मूसल का नाम ।
वि.—आनन्ददायक ।

सुनंदन—स पु.—श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

सुनंदा—स.स्त्री. [स.] १ उमा, गौरी ।
२ कृष्ण की एक पत्नी ।
३ दुष्यन्त के पुत्र सम्राट् भरत की पत्नी ।
४ चेदिनरेश सुबाहु की बहिन जो दमयन्ती की मौसेरी बहन थी ।
५ ऋषभदेव की एक पत्नी का नाम ।
उ०—आदि प्रथम ओंकार, ओंकार पुत्र ब्रमा, ब्रमा पुत्र कामिव, पुत्र सूरच, सूरच पुत्र आत्रैय, पुत्र मनुरिख, पुत्र देवभून, पुत्र आकृति, पुत्र प्रसूति, पुत्र प्रीयव्रत्ति, पुत्र अग्निध्रज, पुत्र नाभिराजा, मोरादै भारचा पुत्र रिखभदेव । रिखभदेव भारचा दो—**सुनंदा**१, सुमगळा२ ।—राठौडा री वमावळी
६ स्त्री, नारी ।
७ सुबुद्धि ।

सुन—१ देखो 'सून्य' (रू.भे.)
उ०—**सुन** सुभर मै बाळक जाया, तुचा हाड़ नही मासु । जाति न पाति वरण नही वाकै, नाव न धरीयै कामु ।—अनुभववाणी
२ देखो 'सुनक' (रू.भे) (डि.को.)

सुनक—सं.स्त्री. [स. शुनक] १ कुत्ता, श्वान । (अ मा, डि.को.)
२ दोहा-छंद का एक भेद विशेष जिसमे ४४ लघु, २ गुरु कुल ४६ वर्ण तथा ४८ मात्राएं होती है । (र ज.प्र)
३ भृगुवशीय एक ऋषि का नाम ।
रू.भे—सुन ।

सुनक्षत्र—स पु. [स.] १ उत्तम नक्षत्र ।
२ मरुदेव राजा के उत्तराधिकारी राजा का नाम ।
उ०—सुत जै बप मरुदेव वयण मति, पुत्र जास **सुनक्षत्र** प्रथमि पति ।—सू प्र.
रू भे.—सुनिखत्र ।

सुनक्षत्रा—स.स्त्री. [स.] स्कन्द की एक मातृका ।

सुनखी—स.स्त्री —चील ।

सुनग—स पु. [स] चन्दन । (ना.मा.)
उ० निस-दीह न थाकै वयुहि नाखतौ, अस गज कनक **सुनग** अतर ।—नैणसी

सुनजर—स स्त्री.—कृपा-दृष्टि, दया-दृष्टि ।
वि—दयालु, कृपालु ।
रू भे.—सुनिजर ।

सुनणौ, सुनबौ—देखो 'सुणणौ, सुणबौ' (रू.भे.)
उ०—१ न कौ **सुनत** काजी, न कौ बग ख्वाजा । न कौ दिन रोजा, मका नाहि ख्वाजा ।—अनुभववाणी
उ०—२ पढत छंद बंदत पद पुनि पुनि, स्रवनानंद बढत धुनि **सुनि** सुनि ।—मे म
सुनणहार, हारौ (हारी), सुनणियौ—वि० ।
सुनिओड़ौ, सुनियोड़ौ, सुन्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
सुनीजणौ, सुनीजबौ—भाव वा० ।

सुनत—देखो 'सुन्नत' (रू भे.)

सुनफा—स.स्त्री.—ज्योतिष का एक योग जो चन्द्रमा से एक स्थान मे चाहे पूर्व, चाहे उत्तरार्द्ध मे शुभ ग्रह होने पर होता है ।

सुनमंडळ—देखो 'सून्यमडळ' (रू भे.)

सुनमांन—देखो 'सनमान' (रू.भे.)
उ०—तठै हेक स्त्री तापता हुंता । तठै आय पागड़ौ छांड, नमसकार कीधौ । स्त्री **सुनमांन** दीधौ । तरै आप रुजक पर्गे मेलिऔ ।—कल्याणसिंघ बाढेल री बात

सुनमित—वि.—विनम्र, नत-मस्तक ।
उ०—सुसमित **सुनमित** निज वदन सुव्रीडित, पुडरीकाख थिया प्रमन । प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन ।—वेलि

सुनयणा, सुनयना—स.स्त्री [सं. सुनयना] १ राजा जनक की पत्नी व सीता की माता का नाम ।
२ नारी, स्त्री ।
३ अच्छे नैत्रो वाली स्त्री ।

सुनर—स.पु. [स सु-नर] १ अर्जुन । (अ मा; डि.को, ह.नां.मा.)
२ सुन्दर एव वीर पुरुष ।

सुनसांन—वि [स शून्य+स्थान] १ निर्जन, वीरान, शून्य ।
उ०—सारै वदन मै छुटै कपी कपी, भीजै मारी देह । मारूजी **सुनसांन** जगळ मै, रात अंधेरी था री चालीबौ ।—लो.गी.
२ जहाँ कोई न हो, एकान्त ।
३ उजाड, उजडा हुआ ।

सुनहरालौ—स पु—वह घोडा जिसके पैर सफेद हो और पैरो के अन्दर लाल चकते हो, मतान्तर से वह घोडा जिसके सुमो के अन्दर चकते हो । (शा.हो.)

सुनहरी, सुनहरौ—वि. [सं. स्वर्णिम] १ स्वर्ण का, स्वर्ण सम्बन्धी, स्वर्णिम ।
२ जिसमे स्वर्ण का काम किया हुआ हो, स्वर्ण-जड़ित ।
उ०—१ सीसापका मंगस खाना । खडा करि **सुनहरी** की चौकी धरि । तिस परि भोजन पूर कनक थाळ विराजमान करि । खिजमत गारू नै अरज कीवी भौजाई की तयारी ।—सू.प्र.
उ०—२ तद जलाल कही—मात सौ घोडा कंधारी, इकमोला हजारी तिकी **सुनहरी** रूपहरी साखर्त दिरायजै और खजाना सूं रोकड दिरायजै ।—जलाल बूबना री बात

३ स्वर्ण के समान, स्वर्ण-जैसा, सोने के रंग का।

रू.भे—सुनही, सुनेरि, सुनेरी, सोनैरी।

सुनही—देखो 'सुनहरी' (रू.भे)

उ०—**सुनही** गुलजार कस्मीर काम, सबजी अममसिब मीनै कै विराम।—सू.प्र

सुनाम—सं.पु. [सं. सुनाम] १ यश, कीर्ति, ख्याति।

२ शुभ नाम।

उ०—बच्ची नै गोदी लेली, चट प्यार भरोखैं राखी। पछी सकुत नैं देख्यौ, **सुनांम** सकुतला भाखी।—सकुतला

सुनामा—सं.पु.—४६ क्षेत्रपालों में से ४८वाँ क्षेत्रपाल।

सुना—सं.पु.—फूल, सुमन। (अ.मा.)

सुनाच—स पु [सं. सुनृत्य] नाच। (डि.को.)

सुनात—देखो 'सनाथ' (रू.भे.)

उ०—कपाट पाट हिंगळाज तू विराजनी, जगात को **सुनात** तू प्रभात पाजनी।—मे म.

सुनातन—देखो 'सनातन' (रू भे.)

सुनातन-धरम—देखो 'सनातन-धरम' (रू.भे.)

उ०—सदा प्रसन कव सदन सीतळ नजर सुपेखै, मन वछत करै हेकै लहर माय। न देखै भाव भगती दसा करनळा, **सुनातन धरम** लेखै करै स्याय।—नंदजी मोतीसर

सुनाथ—देखो 'सनाथ' (रू.भे.)

उ०—१ मैं अब हुग्रौ **सुनाथ**, पाप कटै भव भव तणा। मेरै सिर पर हाथ, राज दिया रघनाथ जी।—गज-उद्धार

उ०—२ आप मारू भटी कढाइ छै, आपकै तौ मारवाड़ की चढाइ छै। जगा दारू का दोय पयाला लीजै, जसा नै **सुनाथण** कीजै।

—मयाराम दरजी री बात

उ०—३ कै नाथ अनाथ **सुनाथ** किया, सुज जेगा वेरी दळ चाप सिया। वळ रावण कुंभ जिसा वहिया, है काम भलौ भज रांम हिया।—र.ज प्र.

(स्त्री. सुनाथण)

सुनाद—सं.पु. [सं.] १ शङ्ख।

२ देखो 'सनाद' (रू.भे.)

सुनायक—वि [सं.] श्रेष्ठ नायक, अच्छा नेता।

स पु.—१ कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

२ एक दैत्य का नाम।

सुनार—सं.पु. [सं. स्वर्णकार] (स्त्री. सुनारी) १ एक जाति या वर्ग विशेष जो सोने, चाँदी आदि के आभूषण बनाने का कार्य करता है।

उ०—यू **सुनार** री जात छाटकी गिणीजै।—अमरचूनड़ी

२ उक्त जाति या वर्ग का व्यक्ति, सुनार, स्वर्णकार।

उ०—१ पछै राजाजी रा देस रा **सुनार** पकडीया था सौ अबु रै हवालै किया।—नैणसी

उ०—२ उठीनै धाडितिया चावटा रै सै बीच ऊठ भोकिया, चातरा माथै जाजम ढाळी, कपडै री दुकान फोड़'र मोठडा भुकाया, खवा माथै नूवा खेग राळिया अर सब सू पे'ली **सुनार** री दुकान लूट'र मोहरत कियो।—अमर चूनडी

रू.भे.- सोनार।

अल्पा—सोनारडौ, सोनिडौ, सोनीडौ।

सुनासीर, सुनासीरी—सं पु. [सं शुनाशीर, शुनासीर] १ इन्द्र।

(अ.मा, डि.को; ना डि.को, ह.नां.मा.)

२ देवता।

३ उल्लू।

रू.भे.—सुनीसीर।

सुनि—१ देखो 'सुन्न' (रू भे)

उ०—अछती माही छति है, छति माही अछती। वसती माही **सुनि** हे, सुनि माही वसती।—अनुभववाणी

२ देखो 'सूनौ' (स्त्री)

उ०—ब्रह्म वदेही वालमा, जीव नीयारी नाहि। एक अखडी रम रया, **सुनि** सेभडीया माहि।—अनुभववाणी

३ देखो 'सुनी' (रू.भे)

सुनिखत्र—देखो 'सुनक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—पुत्र **सुनिखत्र** नाम रै अगा पुक्कळ।—सू प्र.

सुनिजर—देखो 'सुनजर' (रू.भे)

उ०—**सुनिजर** ताहरी देखिनइ रे जिनजी, सफल थई मुभ आरा।

—वि.कु

सुनिभ—स स्त्री.-आभा कान्ति, प्रभा।

उ०—रवि **सुनिभ** राजही, सुकर धनु साजही। सुकव धर सीसजौ, अवधपुर ईसजौ।—र.ज.प्र.

सुनिमंडळ—देखो 'सून्यमडळ' (रू.भे)

उ०—तन पाटण तहा वास हमारा, नौ दरबार जडाया। **सुनिमंडळ**, मै जोति चमकै, उलटा पवन चडाया।—ह पु वा.

सुनिरूप—देखो 'सून्यरूप' (रू.भे.)

सुनिहार, सुनिहाल—सं.स्त्री—१ गम्भीरता से देखने, समझने या विचार करने की क्रिया या भाव।

उ०—पाम्यौ जनम मनुस्य नौ आरिज कुल **सुनिहाल**। रयण रासि कवडी सटै, कोई गमावौ आलि।—वि.कु.

२ अच्छी तरह देखने की क्रिया या भाव।

सुनी—स स्त्री [सं. स्वर्णी] नदी। (अ मा)

रू भे—सुणी, सुनि।

सुनीत, सुनीति, सुनीती—स स्त्री. [सं. सु-नीति] १ वह श्रेष्ठ एव उत्तम नीति जिसके माध्यम से देश व राज्य का हित हो, अच्छी राजनीति।

२ अच्छा व्यवहार, अच्छा आचरण।
३ बुद्धिमत्ता, समझदारी।
४ अच्छी नीयत, अच्छा उद्देश्य।
५ अच्छी युक्ति, अच्छा उपाय।
६ ध्रुव की माता का नाम।

सुनीसीर—देखो 'सुनासीर' (रू.भे.) (ना.मा.)

सुनु–स.पु.–सुत, पुत्र। (डि.को.)

सुनूं—देखो 'सूनौ' (रू.भे.)
उ०—पिया बिन सुनूं म्हारौ देस, जतन करौ हे आली हे।
—मीरा

सुनूर–स.पु. [स. सु+फा. नूर] सौन्दर्य।
वि.–सुन्दर।
उ०—सुनूर सूर सझकै, निसभ मैं हसै नचै। क्रिपाळि काळिका अगेन, बाळि बाळिका बचै। - ऊ.का.

सुनेर–स.पु.–सोलंकी राजपूतवंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति। (बा.दा. ख्यात)

सुनेरि, सुनेरी–स.पु.–१ बगाली शेर।
उ०—प्राक्रम निज जै परखणौ, सावज सू भिड सार। साजणौ सुनेरि हुत समर, केहर ! पडै न पार।—रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'सुनहरी' (रू.भे.)

सुनोची–स.पु.–एक प्रकार का घोडा। (शा.हो.)

सुन्न–स.पु. [स. शून्य] १ शरीर के किसी अङ्ग मे रक्त-सञ्चार बन्द हो जाने की अवस्था या दशा।
२ स्तब्ध एव किंकर्त्तव्य-विमूढावस्था।
वि.–१ जिसमे कोई हरकत, हलचल या चेतना अथवा स्पन्दन न हो, निश्चल, निश्चेष्ट, जड।
२ किंकर्त्तव्य-विमूढ, स्तब्ध।
उ०—लेव्या-लेव्या दोय पळ भी कोनी बीत्या होसी कै कोई दरवाजै नै धीरेसीक खटखटायौ। म्हूं सोच भी कोनी सक्यौ, कुण हौ सकै है ! रोसनी करी अर दरवाजौ खोल्यौ। दरवाजौ खोलता ई सुन्न होग्यौ।—तिरसकू
३ निर्जीव।
रू.भे.—सन्न, सुंन, सुन्य।
४ देखो 'सून्य' (रू.भे.)
उ०—१ सकर ना सुरजेठ नां, आस तुहारी आस। सावतरी थारौ सघर, वडौ सुन्न घर वास।—पी.ग्रं.
उ०—२ सुन्न सिखर कै द्वारै आकै, मोहि मिळै अविनासी। मीरा कै प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम की दासी।—मीरा
उ०—३ सुन्न महल मैं सुरत जमाऊं, सुख की सेज बिछाऊं री। मीरा कै प्रभु गिरधरनागर, बार बार बळि जाऊ री।—मीरा
उ०—४ पिया गुरु जियाराम मेरा, किया जिन सुन्न मैं सेरा। कह सुखराम मिसरथ दासा, ब्रह्म हळाबोळ प्रकासा।
—श्री सुखरामजी महाराज

सुन्नगार—देखो 'सून्यागार' (रू.भे.)

सुन्नत–स.स्त्री [अ.] एक मुसलमानी रस्म जिसमे छोटे बच्चे की लिङ्गेन्द्रिय के अग्रभाग की चमडी को काटकर सुपारी को नगी कर दिया जाता है, खतना।
रू.भे.—सुनत।

सुन्नागार—देखो 'सून्यागार' (रू.भे.)

सुन्नाळ—देखो 'सून्याड' (रू.भे.)
उ०—गोदाम रै बास मैं सफा सुन्नाळ पडी है। गडकडा भूंसै, बाकी चिड़ी ही चूकै नहीं है।—दमदोख

सुन्नी–स.पु. [अ.] १ मुसलमानों का एक वर्ग जो चारो खलीफाओं को प्रधान मानता है। इसी वर्ग के मुसलमानो मे सुन्नत की रस्म की जाती है।
२ उक्त वर्ग का मुसलमान।

सुन्य—देखो 'सून्य' (रू.भे.) (अ.मा.)
उ०—१ वळै त नमौ इंद्रबाई, तुही सुन्य रै माहि चैतन्य ताई।
—मे.म.
उ०—२ हरीया बाळ न त्रिधउ, ना तरणापौ तन। निरालंब सुन्य मैं रमै, निराकार निरजन।—अनुभववाणी

सुन्हरियौ—देखो 'सुनहरौ' (रू.भे.)

सुन्हली—देखो 'सुनहरी' (रू.भे.)
उ०—इण भात भालौ ठाकुरसिंह ऊभौ ऊभौ विसूरणा करै छै। हाथ ममळै छै। घोडलौ आपरी सवारी रौ सुन्हली साखत सू खेत माही पड़ियौ छै।—डाढाळा सूर री बात

सुपंख–वि.–१ सुन्दर तीरो वाला।
२ सुन्दर परो वाला।
स.पु.–अच्छे पख।

सुपंखरौ–स.पु.–डिंगल का एक गीत (छन्द) विशेष जिसके विषम चरणो मे सोलह एवं समचरणो में चौदह वर्ण होते हैं, किन्तु गीत के सबसे प्रथम चरण मे अठारह वर्ण होते है, तुकात में गुरु लघु होने है। (र.ज.प्र.)
रू.भे.—सपखरौ।

सुपंथ–स.पु. [स. सु-पथ] १ अच्छा रहन-सहन, अच्छा चाल-चलन, अच्छा आचरण, अच्छा व्यवहार जिसमे जीवन मे खुद का भी भला हो और अन्य सम्पर्क मे आने वालो का भी हित हो सन्मार्ग, उत्तम या श्रेष्ठ मार्ग।
उ० - मोक्ष मारग नी खप करै रे लाल, चालै सूत्र सुपंथ सुविचारी रे।—जयवाणी
२ उत्तम पथ या सम्प्रदाय।
रू.भे.—सुपथ।

सुपंन—देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

उ०—जांही वाह्यौ तां लुंण्यौ, **सुपंन** सुवाया खेत। म्हैं सींवरां साचै स्यांम नै, म्हारौ भांभैजी सूं हेत। - रूपौ वणियाळ

सुपक–वि.–जो अच्छी तरह पका हुआ हो।

सुपक्ख, सुपक्ष–सं.पु. [सं. सुपक्ष] १ अच्छा पक्ष, दृढ़ और मजबूत पक्ष। २ अच्छा वंश या कुल, श्रेष्ठ कुल। ३ सुन्दर पंख।

वि.–सुन्दर पंखों वाला।

सुपखाळ, सुपखाळौ–सं.पु.–१ श्रेष्ठ या उत्तम वंश का, कुलीन।

उ०—१ सलखावत **सुपखाळ,** सुत सुपहां जोहियां सहत। लख वेरै लंकाळ, हिंदू देखण हालियां।—गो.रू.

उ०—२ आवू सजन मुवौ अड़साळौ, सुणियौ जेम 'कलौ' **सुपखाळौ**।—कल्याणसिंह रौ गीत

उ०—३ क्रोड जुगां राजस करौ, प्रथमी 'वूडौ' 'पाल'। भूप उभै भुलावियां, सरवैयां **सुपखाळ**। —पा.प्र.

सुपड़कंना–वि.–बड़े-बड़े कानों वाला।

उ०—कूंण नईरत मैं पुरी, राकस बसै विसाळ। सुचमुखा **सुपड़कना,** वड रूप विकराळ।—गज-उद्धार

सुपच–वि.–जो पाचक हो, आसानी से पचने वाला, सुपाच्य।

उ०—जोड़ै माया क्रपण पच, रांधै **सुपच** अनाज। वायस संचियौ मांस वप, कळ मैं नावै काज।—बां.दा.

सं.पु.–१ सुपथ्य, पथ्य।

[सं. श्वपच] २ भंगी, डोम।

सुपट्ठ–वि.–१ सुपाठ्य, सुवाच्य। २ स्पष्ट, साफ़।

सुपण, सुपणौ—देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

उ०—माई म्हांनै **सुपणा** मां परणी दीनानाथ।—मीरां

सुपतळ, सुपत्तळ–वि.–पतला, क्षीण।

उ०—जंघ **सुपत्तळ** करि कुंअळ, भीणी लंब प्रलंब। ढोला ऐही मारुई, जांणिक कणयर कंब।—ढो.मा.

सुपतास, सुपतासव–सं.पु. [सं. सप्ताश्व] जिसके रथ में सात घोड़े जुते रहते हैं, सूर्य।

सुपतिक–सं.पु.–रात को डाला जाने वाला डाका। (डिं.को.)

सुपतिट्ठ–वि.–प्रतिष्ठित, सुप्रसिद्ध।

उ०—तीजौ ठांणा अंग **सुपतिट्ठ,** सूत्रै सइत्रीससै सतसट्ठि। चौथौ समवायांग सुजांण, सोलेसै सतसठ स्लोक प्रमांण।—ध.व.ग्रं.

सुपत्र–वि.–१ सुन्दर पत्तों से युक्त, सुन्दर पत्तों वाला। २ सुन्दर पंखों वाला।

सं.पु.–सुन्दर पत्ता।

सुपत्री–सं.स्त्री. [सं] एक प्रकार का पौधा, गङ्गापत्री।

सुपथ—१ देखो 'सुपंथ' (रू.भे.)

२ देखो 'सुपथ्य' (रू.भे.)

सुपथ्य–सं.पु. [सं.] वह आहार या खाद्य पदार्थ जो सुपाच्य होने के साथ ही स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हो, पथ्य।

रू.भे.—सुपथ।

सुपनंतर, सुपनंतरि–क्रि.वि. [सं. स्वप्न-अनन्तर] १ स्वप्न में, स्वप्न के समय, स्वप्न के दौरान।

उ०—१ जिम **सुपनंतर** पांमियउ, तिम परतख पांमेसि। सज्जन मोतीहार ज्यूं, कंठा ग्रहण करेमि।—ढो.मा.

उ० २ हियमां करइ वधांमणां, सहीत सीधा काज। जै **सुपनंतर** दीखता, नयणे मिळिया आज।—ढो.मा.

उ०— ३ वासर चित्त न वीसरइ, निमिभरि अवर न कोइ। जइ निद्रा-भरि भोगवूं, तउ **सुपनंतरि** सोइ। - ढो.मा.

उ०—४ निस पौढी 'अगजीत' ग्रह, पटरांणी चहुवांण। **सुपनंतर** सुख संभळै, जै जै वंदन वांण।—रा.रू.

२ स्वप्न के बाद, स्वप्न के अनन्तर।

सुपन—१ देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

उ०—१ आळस न कर अजांणं, निज मन हरख भजन रघुनाथं। **सुपन** रूप संसार, विण संतां देहनां वारं।—र.ज.प्र.

उ०—२ सोभा नांम रूप विसतारा, **सुपन** चिह्न कहिया अप सारा। —सू.प्र.

२ देखो 'सुपनक' (डिं.को.)

सुपनउ—देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

सुपनक–वि. [सं. स्वप्नक] १ निद्राशील, निद्रालु, उनिंदा। (डिं.को.)

रू.भे.—सुपन।

२ देखो 'सपनौ' (रू.भे.)

सुपनखा–सं.स्त्री. [सं. शूर्पणखा] रावण की बहन एक राक्षसी, राम के वनवास के समय लक्ष्मण ने दण्डकारण्य में इसके नाक-कान काटे थे।

उ०—१ सुणै **सुपनखां** बैण चढ हांकिया साकुरां, खर दूसर त्रिसर खळ भाळ खांगा, पूर तन पहरियां।—र.रू.

उ०—२ नाक रांम छेदन **सुपनखा,** रढ मेटण रांमण रढरांण। —ह.नां.मा.

वि.–जिसके नाखून सूप-जैसे हों।

सुपनदोख, सुपनदोस–सं.पु.–देखो 'स्वप्नदोस' (रू.भे.)

सुपनूं, सुपनू—देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

उ०—गैली यै मीरां भई बावरी **सुपनूं** छै आळ जजाळ।—मीरां

सुपने, सुपनै–क्रि.वि.–स्वप्न में।

उ०—१ जिणनूं **सुपनै** देखती, प्रगट भए प्रिव आइ। डरती आंख न मूंदही, मत सुपनउ हुय जाइ।—ढो.मा.

उ०—२ कै मुवौ कै मारियौ, कै **सुपनै** आयौ सांम्य। स्री रांम रौ मूंदड़ौ, कुण रंन मां ल्यायौ रांम।—मेहौजी गोदारौ

उ०—३ दिल्ली हूंत रहै चित दावै, उर सुपनै ही भरम न आवै। —रा.रू.

सुपनौ—देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

उ०—१ माई म्हांनै सुपना में परण्या गुपाळ राती पीरी चूनर पहरी, मंहदी पांन रसाळ।—मीरां

उ०—२ मनमैं अकबर मोद, कलमां विच धारै न कुट। सुपना मैं सीसोद, पलै न रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

सुपवीत—देखो 'सुपवीत' (रू.भे.)

सुपरकास—सं.पु.—सूर्य की रोशनी, धूप। (डिं.को.)

सुपरडंट, सुपरडेट—सं.पु [अं. सुपरिनटेन्डेन्ट] १ अधीक्षक का पद।

२ उक्त पद पर कार्य करने वाला अधिकारी।

उ०—थांणैदार नै थावस, सिपायां नै सावस, गिरदावळ नै घी, अर सुपरडेंट नै दूजनी गाय पौंचावै है।—दसदोख

सुपरण, सुपरणक—सं.पु. [सं. सुपर्णकः] १ गरुड़, खगराज। (अ.मा; डिं.को; नां.मा; ह.नां.मा.)

उ०—मंद लख बाह सुपरण तजै माग मैं, चरण उवांहणै धरण चालै।—र.ज.प्र.

२ पक्षी।

३ विष्णु।

४ घोड़ा, अश्व। (डिं.को.)

५ एक देव योनि विशेष।

६ सूर्य की किरण।

७ मुर्गा।

८ एक सूर्यवंशी राजा जो अन्तरिक्ष का पुत्र।

वि.—सुन्दर पत्तों वाला।

रू.भे.—सुपरणेय।

सुपरणा, सुपुरणी—सं.स्त्री. [सं. सुपर्णा, सुपर्णी] १ गरुड़ की माता का नाम।

२ पद्मनी।

३ कमल-समूह।

४ वह तालाब जिसमें कमलों की बहुतायत हो।

सुपरणेय—सं.पु. [सं. सुपर्णेय] गरुड़। (अ.मा; ह.नां.मा.)

सुपरबांण, सुपरवांण—सं.पु [सुपर्वाणः] १ देवता, सुर। (डिं.को; नां.मा.)

उ०—घुमडै सुपरवांणा घोर किय उतसव घणौ, तन मन जांणियौ प्रसतांन अत दससिर तणौ।—र.रू.

२ बाँस।

३ तीर।

४ धूम्र, धुंआ।

सुपरवाइजर—सं.पु. [अं.] कार्य की निगरानी या देखभाल करने वाला, निरीक्षक।

सुपरस—देखो 'स्परस' (रू.भे.) (अ.मा.)

सुपरसन—देखो 'सपरस' (रू.भे.) (अ.मा.)

सुपरि—वि. [सं. सु+परि] १ श्रेष्ठ, उत्तम।

२ बड़ी।

क्रि.वि.—अच्छी तरह से, चतुराई से।

उ०—१ देवड़ी नांम ऊभा घरणि, मारुवणी तसु घू कुमरि। चौसठि कळा सुंदरि कुंमरि, चतुर कथा कहिस्युं सुपरि।—ढो.मा.

उ०—२ मधुर करंबक ऊपरि, सुपरि परीसइं घोल। मुखसुधि करइं ति करविय, करविय करइं तंबोल।—जयसेखर सूरि

सुपरौ—वि.—शुभ।

उ०—सूवा सुपरा बोलिए, विपरा बोल्यौ कांय। छंदा जहां रा छाइए, जिण रै वसिए गांव।—परमराम

सुपवित्त—देखो 'सुपवीत' (रू.भे.)

उ०—व्रत सुणतां अति दोहिलौ, राखै तिण मां चित्त। सद्दहणा वलि साचवौ, संयम धरि सुपवित्त।—वि.कु.

सुपवौ—वि.—दृढ़, मजबूत।

उ०—सू ऊंठ किण भांत रा छै? थापवी तलीरा, सुपवी नळीरा, नाळेरा गोडां रा, बीळफळ इरकीरा...... —रा.सा.सं.

सुपवीत—वि. [सं. सु-पवित्र] विशुद्ध, पवित्र।

उ०—१ पग परि देखी बाप परा भव, धन सागर सुपवीत। मांन धरी मन माहि नीसरिउ, नयर बाहरि चलचींत। — हीराणंद सूरि

उ०—प्रहविहसी पूरव दिसै, उदय थयौ आदीत। मांनुं मयणा सुंदरी, देखवा सुपवीत।—स्रीपालरास

रू.भे.—सुपवीत, सुपवित्त।

सुपसाइ, सुपसाउ, सुपसाय—सं.पु. [सं. सुप्रसाद, प्रा. सुपसाअ] पूर्ण कृपा, अनुग्रह।

उ०—१ सुपसाइं स्री गुरु तणै, लब्धोदय गणि भाखै रे। प्रथम खंड पूरौ कियौ, धरम तणौ अभिलाखै रे।—प.चं.चौ.

उ०—२ स्री जिणचंद सूरीसरु हो, स्री जिनसिंघ सूरीस। सकलचंद सुपसाउ लइ हो, समय सुंदर भणइ सीस।—स.कु

उ०—३ ग्यांन तिलक गुरु नइ सुपसाय इ, विनयचंद्र गुण गाया जी।—वि.कु.

वि.—अत्यन्त शुभ, अच्छा, ठीक।

उ०—जांण हार हुं इ तिहां अछउं, मझ मनि लागउ ढाउ। तुम्ह साथिइं आवउं जउ, तेडउ घणउ करी सुपसाउ। — हीराणंद सूरि

सुपह, सुपहि, सुपहु—सं.पु. [सं. सुप्रभु] १ श्रेष्ठ नृप, उत्तम राजा, बड़ा राजा।

उ०—१ हा मां बाप हमीर हीडाऊ, सुपहां दाप सवाया। — ऊ. का.

उ०—२ जोड़ि कपाळ मंकर जीवाए, कपाळिया तिण हूंत कहाए। करि विध वेद उछाह नेह करि, **सुपह** वरै इम कीरति सुंदरि।
—सू.प्र.

उ०—३ गजसिंह कुंअर कुंअरां तिलक, मल्ल जेम जीपण कळह। जैचंद 'पंग' राजा जिसौ, सूरजसिंघ राजा **सुपह**। - गु.रु.ब.

२ दातार, दानवीर।

उ०—१ **सुपह** छतीसी दूहड़ा, **सुपहां** तणा छतीस। सरळ बणाया समभ चित, बांकै विसवा बीस।—बां.दा.

उ०—२ बास स्त्रीया विळसंत न विरचै, सुरतर **सुपह** बिन्है सारीक। सोरमतरि अहि वंस सुखी सहि, मांगण सुखी कन्हीं मछरीक।
—नांदण बारहट

२ राजा, नृप। (डिं.को)

उ०—१ लीधी गढ पल मैं लंका रौ **सुपह** वभीख थपै थिर संत।
—र.रू.

उ०—२ नरपति आयौ जैनगर, निज उर हरख निवाम। **सुपह** सुरंगौ सामरै, लग्गौ सांवण माम।—रा.रू.

उ०—३ जांनी एक अनेक जोवतां, नर सुर वडा नागिंद्र। वडड **सुपहि** बोलता वडावडि, आया जुडै अठारह इंद्र।
—महादेव पारवती री वेलि

३ स्वामी, मालिक।

उ०—प्रथम विदा कीधौ **सुपह**, चांपावत 'मुकनेस'। 'आमावत' ग्रह आपरै, 'दुरग' रहे निज देस।—रा.रू.

४ पति, स्वामी।

उ० —यौं तूंवर उचरै, आज अवमांण सु उज्जळ। **सुपह** साथि गण सती, महा कौतूहळ मंगळ।—रा.रू.

५ योद्धा, सुभट। (डिं.को.)

उ०—१ 'अमरती' रीत 'अवरंग' तणी आदरी, चित्रगढ तणी आदू तजी चाल। सांमद्रोहां हूआ रांण वाळा **सुपह**, रांण पाराथियौ बियौ रिड़माल।—दुरगादास राठौड़ रौ गीत

उ०—२ तदि हुवा हाजर तांम, वड वडा सब वरियांम। तळि गौख ऊभा तांम, मार्भत **सुपह** सलांम।—सू.प्र.

६ ईश्वर, प्रभु।

उ०—संसार **सुपहु** करता ग्रह संग्रह, गिणि तिणि हीज पंचमी गाळि। मदिरा रीम हिंसा निंदा मति, च्यारै करि मूंकिया चंडाळि।
—वेलि

७ देखो '**सुपंथ**' (रू.भे.)

उ०—थथा थापि कुपह करि कांनै, चालौं **सुपह** छाडिर हौं छांनै।
—ह.पु.वां.

सुपांण—सं.पु. [सं. सुपाणि] वरद हस्त।

सुपाच्य—वि. [मं.] जो आसानी से पच जाय, अच्छी तरह पचने वाला, पाचक।

सं.पु.—नरम भोजन।

रू.भे.—सुपच।

सुपात, सुपातर, सुपात्र—सं.पु. [सं. सुपात्र] १ कवि। (अ.मा.)

उ०—दिल्ली जैत सुबोल सहंसदस, राजा मुहरि मरण रिम राह। 'सुभ' दातार जूझार **सुपातां**, दांन च्यारि बकसिया दुवाह।
—सुभरांम गौड़ रौ गीत

२ चारण कवि।

उ०—१ मुणां सौभाग सुछत्री मेदपाटां रा अमीरां मांभी, केता दळां मठां रा आचार ढांकै काथ। विना दीध रांणै आधाहटां रा कायदा वाधै, प्रथीनाथ तेड़ै दधां तटां रा **सुपात**।—डूंगजी गाडण

उ०—२ जोड़ावै हात, हात नह जोड़ै, विग आंकस गज निसंक वहै। ऐहवा फैज **सुपातां** वाळा, सुदत 'भीम' विण कवण सहै।
—भीमसिंघ रौ गीत

३ अच्छा पात्र, उत्तम एवं सुन्दर बर्तन।

वि.—१ सुयोग्य, योग्य।

उ०—नहीं बेटा! एक अंगरेजी री छठी अर बीजौ सातवीं किलास मैं भणै है, **सुपातर** है।—वरसगांठ

२ सज्जन, भला, सुपात्र।

उ०—१ वेहती वेला मैं धरम कीजौ, दांन **सुपातर** दीजौ रे।
—जयवांणी

उ०—२ बारमां व्रत मैं दांन देवै घणौ, साधां नै निरदोसौ जी। चवदै प्रकारै हरख घणौ करी, रह्यौ **सुपातर** नै पोसौ जी।
—जयवांणी

सुपारस, सुपारसि, सुपारिस—सं.स्त्री.—१ यश, प्रशंसा, कीर्ति, तारीफ़। (अ.मा; ह.नां.मा.)

उ०—नागोर आया, सारा **सुपारस** कीवी, टका दिया, जबांन दिया—उजाड़-बिगाड़ रा।—अमरसिंघ राठौड़ री बात

२ देखो 'सिफारिस' (रू.भे.)

उ०—१ तद नबाब माहाबत खांन राजाजी री घणी **सुपारस** करनै हजारी जात हजार असवार ईजाफै करायौ।—नैणसी

उ०—२ दिन दिन मुरधर देस मैं, वात वधै विसतार। हुई **सुपारस** 'दुरग' री, औरंगसाह दुवार।—रा.रू.

उ०—३ लिखै **सुपारस** साह नूं, अत आरत उर जांण। थेली साठ हजार री, मेल्ही पायै आंण।—रा.रू.

उ०—४ फुरमास **सुपारसि** मोकळी, दिढ राजा दळथंभ नूं। जागीर दीध जोगणि पुरै, कणियागिर सांचौर सूं।—गु.रु.बं.

उ०—५ राजा दखिण विराजियौ, गा दखणी हुइ रद्द। साह **सुपारिस** सांभळै, की फत्तै सरहद्द।—गु.रु.बं.

सुपारस, सुपारस्व, सुपारसनाथ, सुपारस्वनाथ—सं. पु. [सं. सुपार्श्वनाथ]

१ जैनियों के वर्तमानकाल के सातवें तीर्थङ्कर का नाम।

२ जैनियों के भविष्यकाल के तीसरे तीर्थङ्कर का नाम।

सुपालग्र, सुपालक–वि. [सं. सुपालक] अच्छी तरह पालन-पोषण करने वाला।

सुपास—देखो 'सुपारस्वनाथ'।

उ०—हूं गुणरागी हो सागी सेवक ताहरउ, साहिब सुगुण सुपास।
—वि.कु.

सुपारी–सं.स्त्री. [सं. सुप्रिय] १ नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसकी ऊंचाई चालीस से सौ फुट तक की होती है।

२ उक्त पेड़ का फल जो १½ या २ इञ्च का गोलाकार या अण्डाकार होता है। इसको काटकर पान में डालकर खाया जाता है।

उ० पान-सुपारी चाट, हाट रा ओगण हेटा। मेळा-डोळां डोळ, फिरगा फागड़दां फेटा।—नारी सईकड़ौ

३ इसी जाति का अन्य प्रकार का पेड़ व उसका फल जिसको काट-कर भोजन के बाद मुख-शुद्धि के लिए खाया जाता है। यह अत्यन्त स्वादिष्ट एवं पौष्टिक होता है। यह औषध में भी काम आता है। चिकनी सुपारी।

उ०—ना होकौ ना चिलम, पांन-बीड़ी न सुपारी। ना सुलफौ ना भांग, कदै ना वणै जुवारी।—नारी सईकड़ौ

पर्याय.–क्रमुक, गुवाक, पुग।

४ सुपारी के आकार का पुरुष-लिङ्गेन्द्रिय का अग्रभाग। (अमरत)

रू.भे.—सोपारी।

सुपारीपाक–सं.पु.यौ.–सुपारी से बनने वाली एक पौष्टिक औषधि।
(टॉनिक)

वि.वि.–आठ टके भर चिकनी सुपारी को कूट, कपड़-छान कर आठ टके भर गौ-घृत में मिलाया जाता है तत्पश्चात् उसको तीन बार गाय के दूध में डालकर धीमी-धीमी आँच पर पकाकर खोवा बनाया जाता है। फिर वंग, नाग केसर, नागर-मोथा, चन्दन, सौंठ, पीपल, काली मिर्च, आँवला, कोयल के बीज, जायफल, धनिया, चिरौञ्जी, तज-पत्रज, इलायची, सिंघाड़ा, वंश लोचन, दोनों प्रकार का जीरा (प्रत्येक पाँच-पाँच टंक) आदि दवाओं का चूर्ण बनाकर उक्त खोवे में मिला दिया जाता है। फिर ५० टंक भर मिश्री की चासनी में मिलाकर इसकी एक-एक टके भर की गोली बना ली जाती है। इसके सेवन से शुक्र-दोष, प्रमेह, प्रदर, जीर्ण-ज्वर, अम्लपित्त, मंदाग्नि और अर्श का निवारण होकर शरीर पुष्ट होता है।

सुपियार–सं.पु.–१ स्नेह, प्रेम, अनुराग, आदर्श-प्रेम।

२ लाड-दुलार, प्यार।

३ देखो 'सुपियारौ' (रू.भे.)

उ०—सिहांरा चढै करवा सहाय, राखजै पीठ नागांरा राय। सुपियार तणा मायव सधीर, व्रन पाळ करण नव लाख वीर।
—पा.प्र.

रू.भे.—सुपीयार, सुप्यारौ।

सुपियारौ–वि. (स्त्री. सुपियारी) जो अत्यन्त प्रिय हो, प्यारा, प्रिय, वल्लभ।

उ०—संगत तेम्ं कीजियै सुपियारा हौ, जल मरिखा हुवै जेह तेम सुपियारा हौ।—स.कु.

सं.पु.–प्रेमी, प्रियतम, पति।

रू.भे.—सुपीयारौ, सुप्यारौ।

सुपीत–सं.पु. [सं.] १ ज्योतिष में पांचवें मुहूर्त का नाम।

२ पीला वस्त्र, पीताम्बर।

वि.–बिल्कुल पीला, पीत।

उ०—नमो पंच-व्रन्न-पवित्र सुपीत, सु स्यांम, सु नील, सु रत्त, सु सीत।—ह.र.

सुपीयारौ—देखो 'सुपियारौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुपीयारी)

सुपीहरी–वि.स्त्री.–अच्छे पीहर वाली, जिसका पीहर उत्तम हो।

उ०—रूडो घर देखाडिजै रे हां, चलिजै चतुर आचार। सुपीहरी कहराविजै रे हां, करिजै महनी मार।—स्रीपाल रास

सुपुण्ण–सं.पु. [सं. सुपण्य] शुभ कार्य, पुण्य या पुनीत कर्म, दान।

उ० पोस मास वदि दसमी तरणइ, दिन जायउ जिरण सुपुण्ण दिनइ। जय जयकार मुखइ पभणइ, सेवइ दिसि कुमरी हरखि घणइ।—स.कु.

सुपुत्र–सं.पु. (स्त्री. सुपुत्री) गुणवान, योग्य एवं सुन्दर पुत्र।

उ०—पंच पुत्र ताइ छठी सुपुत्री, कुंअर रुकम कहि विमळ कथ।
—वेलि

सुपुर–सं.पु.–सुन्दर नगर।

रू.भे.—सुपुरि।

सुपुरस–सं.पु. [सं. सु-पुरुष] भला एवं सज्जन व्यक्ति, साधु पुरुष।

उ०—सिंह-संगम, सुपुरस वचन, कदळि फळै इक सार। तिरिया तेल 'हमीर' हठ, चढै न दूजी वार।—अग्यात

रू.भे.—सुपुरुस।

सुपुरि—देखो 'सुपुर' (रू.भे.)

उ०—सुज कंत अंन अमरां सुपुरि, चौग्रौड़ि हरि उच्चरै। छत्रपती सनेह 'चंदू' छडी, सेखावत व्रत संभरै।—रा.रू.

सुपुरुस—देखो 'सुपुरस' (रू.भे.)

सुपुहप–सं.पु. [सं. सुपुष्प] १ सुन्दर पुष्प।

उ०—पकवांनै पांनै फळै सुपुहपै, सुरंगै वसत्रै दरव स्रव। पूजियै कसटि भंगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रव।—वेलि

२ लवंग, लौंग।

३ स्त्रियों का रज।

सुपूत—देखो 'सपूत' (रू.भे.)

सुपूती—देखो 'सपूती' (रू.भे.)

उ०—मात सिधांरणै उदर, मभ 'पता' सुपूती पाय। पिता पिछांरणै

पाळणौ, इण सुत अंजस आय ।—जैतदांन बारहठ

सुपेखणौ, सुपेखबौ–क्रि.म.–देखना ।

उ०—**सुपेख्यौ** स्वांमी सोवन धार, नमौ निज नाथ जकौ निराकार । नरांपति निरख करै मन राव, पिछांण्यौ दूद परस्या पाव ।

—वि.सं.मा

सुपेखणहार, हारौ (हारी), सुपेखणियौ—वि० ।

सुपेखिओड़ौ, सुपेखियोड़ौ, सुपेख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुपेखीजणौ, सुपेखीजबौ—कर्म वा० ।

सुपेखिड़ौ–भू.का.कृ.–देखा हुआ ।

(स्त्री. सुपेखियोड़ी)

सुपेत—देखो 'सफेद' (रू.भे)

उ० स्यांम ताज कफनी, कमंडळ मैं नीर । डाढी **सुपेत** 'सेख', सुवरण सरीर ।—शि.वं.

सुपेतचंदन —देखो 'सफेदचंदन' (रू.भे.)

सुपेती—देखो 'सफेदी' (रू.भे.)

उ०—हलै थाट दखणाद लग टल तोपां हसत, खसत मद मींढरा नरां खागां । मरट तिणवार राखी विकट मोसरां, **सुपेती** चौसरां तणी 'सांगा' ।—रावत संग्रांमसिंह रौ गीत

सुपेद—देखो 'सफेद' (रू.भे.)

सुपेदचंदन—देखो 'सफेदचंदन' (रू.भे.)

सुपेदाई—देखो 'सफेदाई' (रू.भे.)

सुपेदौ—देखो 'सफेदौ' (रू.भे.)

सुपेस–सं.स्त्री.–सुन्दर भेंट ।

उ०—सब लोक नजर **सुपेस**, निज हाथ लीध नरेस । धुर थाळ प्रोहित धारि, किय आरती अधिकारी । –सू.प्र.

सुपेहा – सं. पु. – राठौड़ राजपूतवंश की एक उप - शाखा ।

(बां.दा. ख्यात)

सुप्यार—१ देखो 'सुपियार' (रू.भे.)

उ०—सेवा कळा **सुप्यार** बोली, नाजौ राजौ गोरड़ी । चकर चुलबुली हिवड़ै खुली, कंवळ कळी मन मोरड़ी ।—नारी सईकड़ौ

२ देखो 'सुपियारी' ।

सुप्यारी—देखो 'सुपियारी' (रू.भे.)

सुप्यारौ—देखो 'सुपियारौ' (रू.भे.)

सुप्रज्ञ–वि. [स. सुप्रज्ञ] १ बुद्धिमान, चतुर ।

२ पण्डित, विद्वान् ।

सुप्रतिस्ठ – वि. [सं. सुप्रतिष्ठित] जिसकी बहुत प्रतिष्ठा हो, सुविख्यात, मशहूर ।

सुप्रतिस्ठा–सं.स्त्री. [सं. सुप्रतिष्ठा] १ यश, कीर्ति, प्रशंसा, तारीफ़ ।

२ स्कन्द की एक मातृका का नाम ।

३ किसी प्रतिमा, मन्दिर आदि का स्थापना समारोह, उत्सव ।

४ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं, जिसमें पहला, दूसरा व चौथा वर्ण लघु तथा तीसरा व पाँचवाँ वर्ण गुरु होता है ।

सुप्रतीक–वि. [सं.] सुन्दर, मनोहर ।

सं.पु. [सं. सुप्रतीकः] १ ईशान कोण का दिग्गज जिसके वंश में नागराज, ऐरावत, वामन, कुमुद, अञ्जन आदि की उत्पत्ति हुई मानी जाती है ।

उ०—बुंदी जैपुर उलटि बीर आयै ति अखारैं । गायक सिंधू तार ग्रांम आलाप उचारै । भुम्मि मचक्कै कटक भार फन नाग पसारै । ऐरावत तैं **सुप्रतीक** लग चीट चिकारैं ।—वं.भा.

२ इक्ष्वाकुवंशी प्रतीताश्व के पुत्र तथा मरुदेव के पिता का नाम ।

उ०—प्रतीकास जिण सुत बौह पौरस, जेण सुतण **सुप्रतीक** उजळ-जस । सुत जै न्रप मरुदेव वयण सति, पुत्र जास सुनक्षत्र प्रथमि पति । – सू.प्र.

३ कामदेव का नाम ।

४ शिव, महादेव ।

सुप्रभ–सं.पु. [सं.] शाल्मली द्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष । (पौराणित)

वि.–आभा, कान्ति या प्रभा से युक्त ।

सुप्रभा–सं.स्त्री. [सं.] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

२ स्कंद की एक मातृका ।

३ सात सरस्वतियों में से एक ।

४ आभा, चमक, कान्ति ।

सुप्रभात–सं.पु. [सं.] १ मङ्गलमय प्रातःकाल, शुभ प्रभात ।

२ बड़ा सवेरा, तड़का, अर्द्ध रात्रि के बाद का समय ।

सुप्रवीण–वि.–बहुत ही चतुर व दक्ष ।

उ०—धंध गिणइ संसरण सुख, चरण करण गुण लीण । अति-सय सुध जसु आचरण, क्रिया धरण **सुप्रवीण** । – वि.कु.

सुप्रवीत–वि.–अत्यन्त पवित्र एवं शुद्ध ।

सुप्रसण, सुप्रसन, सुप्रसन्न–वि. [सं. सुप्रसन्न] बहुत खुश, आह्लादित ।

उ०—१ सुरराय **सुप्रसण** हुयै, दीजै मौ वरदांन । सुजस गाऊं 'भारथ' सुत, दळ नायक सिवदांन ।—शि.रू.

उ०—२ पहला दळ पेसोर थी, खड़ आया लाहौर । जनम हुवौ अगजीत रौ, **सुप्रसन** संकर गौर ।– रा.रू.

उ०—३ जादमण आद करि भेट भणिया जठै, आगरा अठै परताप आछा । ऊगिया मदां **सुप्रसन्न** सबदां इसां, पूगिया भवण विसरांम पाछा ।—मे.म.

सं.पु –गरुड़, खगराज । (अ.मा.)

सुप्रसिद्ध–वि. [सं.] बहुत प्रसिद्ध, मशहूर, सुविख्यात ।

सुप्री–सं.स्त्री. [सं. सुप्रिया] १ श्रेष्ठ व उत्तम स्त्री, सुन्दर स्त्री ।

२ प्रेयसी, प्रेमिका, प्रिया ।

सुप्रीमकोरट–सं.पु.[अ.]देश का सर्वोच्च न्यायालय, उच्चतम न्यायालय ।

सुफर देखो 'सफरी' (रू.भे.)

उ० – अयग मीतळ अचळ छोळ कर उट्टां, वेळ ऊजळ अनम पाळ कुळ वेस। सुफर चख चकोरां देव मोरां सुकवि, संध सोम समर सक्र नंद-भगतेस।—सनमांनसिंघ हाडा रौ गीत

सुफळ, सुफल – सं. पु. [सं. सुफल] १ वह अस्त्र या शस्त्र जिसका फल अच्छा हो, सुन्दर फल वाला।

२ अच्छा परिणाम, इच्छानुकूल नतीजा।

उ० – सेठ नौ महीनां तांई वेटा-वेटा री माळा फेरी तौई सुफळ नीं पड़ी। - फुलवाड़ी

[सं. सुफल] ३ अनार का पेड़।

४ बेरी का पेड़।

५ मूंग।

वि.–१ बहुत फलने वाला।

२ बहुत उपजाऊ।

३ देखो 'सफळ' (रू.भे.)

उ० –१ विसरि गई दुख निरखि पिया कूं, सुफळ मनोरथ कांम। मीरां कै सुखसागर स्वांमी, भवन गवन कियौ रांम।—मीरां

उ० – २ सेजां कुम्हाळायोड़ा फूलां री पाछी कळी कळी खिलगी। मेड़ी रौ चांनणौ सुफळ व्हियौ। मेड़ी रौ अंधारौ सुफळ व्हियौ।

—फुलवाड़ी

सुफलक–सं पु. [सं.] अक्रूर के पिता एक यादव। (महाभारत)

सुफला–सं.स्त्री. [सं.] १ मुनक्का दाख, द्राक्षा।

२ तलवार जिसका फल सुन्दर हो।

सुफाळौ–सं.पु.–तीर का अव्यव विशेष।

उ० – तिलौर रा पंखारा छै, दांत रा सुफाळा छै, मोन्दे री हळ लिखी छै, नव मूठ रा तीर छै।—रा.सा.सं.

सुफील–सं.पु. [सं. सुपील] श्रेष्ठ एवं बड़ा हाथी।

उ०—नदी जळनील सुफील निसांण, उभेलत छीलर ढीलत आंण। बगत्तर भीवर जाळ वहंत, आवै नह माळ रगत्तर अंत।—मे.म.

सुफेर–वि.–१ वुद्धिमान, समझदार।

२ सज्जन, सुशील।

सुफ्फी–सं.स्त्री.–छोटी कोटड़ी। (शेखावटी)

सुब—देखो 'सुभ' (रू.भे.)

सुबत्त—देखो 'सोवत' (रू.भे.)

उ० —सुख वीच पड़ै महाराज मूं, समरौ लाज सुबत्तियां। कुळ तणै नहीं वांटै किणी, वांटै मत पण खत्तियां। - रा.रू.

सुबध—देखो 'सुबुद्धि' (रू.भे.)

उ०—सुरसत मौं दीजै सुबध, वरणूं ग्रंथ विचार। सिवदांनौ सभियौ समर, (सौ) कहूं बुध अनुसार।—शि.रू.

सुबधी–सं.पु.–१ कवि। (अ.मा.)

२ देखो 'सुबुद्धि' (रू.भे.)

सुबनजर—देखो 'सुभनजर' (रू.भे.)

सुबर–सं.स्त्री.–१ गर्भवती घोड़ी।

२ गर्भवती ऊंटनी।

रू.भे.—सुभर।

३ देखो 'सुवर' (रू.भे.)

उ०—मांडियौ त्याग कमधां घरै मांडहौ, लिखत वर सुबर ईसवर लिखायौ।—कमौ नाई

सुबरण—देखो 'सुवरण' (रू.भे.)

उ०—१ सुबरण पख्खत सौ उथ्थौ रे ग्रौ तौ ज्यूं रघुवर रौ बांण, हनु०। - गी.रां.

उ०—२ अति ऊंचा निपरै उरज, बगिया विसवा वीस। जोड़ै लागै जगत में, गिर गज कुंभ गिरीस। गिर गज कुंभ गिरीस, प्रवीणां गाविया। सुबरण वरण सुढंग, कठोर सुहाविया।

—वां.दा.

सुबरणरासि–सं.पु.–स्वर्ण का ढेर, सोने का ढेर।

उ०—इण ही तरह देवी रा निदेस सूं जाचकां नूं देण काज राजा वडाहर सदा ही सुबरण रासि सिद्ध कीधौ। – वं.भा.

सुबह–सं.पु. [अ. सुब्ह] १ प्रातःकाल, सवेरा।

उ०—इक रक्खोगै मुख वचन याद, सब चक्खोगै सनमुख सवाद। सिर कूटोगै फिर सुबह सांम, तोबा कर छूटोगै तमांम।

—ऊ.का.

२ ईश्वर का एक नाम।

वि.–अत्यन्त पाक, पवित्र।

क्रि.वि.–प्रातःकाल के समय, सवेरे।

रू.भे.—सुवह, सुबै।

सुबहांन–सं.पु. [अ. सुब्ह+आन] १ ऊषा वेला, प्रातःकालीन समय, सवेरा।

२ भजन, सुमिरन का समय, ईश्वर-भजन का समय।

३ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—१ आव आतम अरस कुरसी, सूरतै सुबहांन। सरर सिफत करद बूद, मारफत मकांम।—दादूबांणी

उ०—२ काळा मुंह कर करद का, दिल थैं दूर निवार। सब सूरत सुबहांन की, मुल्ला मुग्ध! न मार।—दादूबांणी

वि.–१ पवित्र, पाक, शुद्ध।

उ०—काया कतेब बोलियै, लिख रांखूं रहमांन। मनवा मुल्ला बोलियै, स्रोता है सुबहांन।—दादूबांणी

२ महान्, श्रेष्ठ।

क्रि.वि.–वाह-वाह, धन्य-धन्य, साधु-साधु।

रू.भे.—सुभांन।

सुबहांनअल्ला–अव्यय [अ.] वाह-वाह, साधु-साधु, धन्य-धन्य।

सं पु. – १ किसी की वाह-वाही या साधुवाद में बोला जाने वाला शब्द।

२ पवित्र हृदय से ईश्वर-स्मरण करने की क्रिया।

सुबहू-सं.स्त्री. [सं सु+वधू] १ सुन्दर एवं शुभ लक्षणों वाली वधू।

उ०—वसुदेव पिता सुत थिया वासुदै, प्रदुमन सुत पित जगतपति। सासू देवकी रांमा **सुबहू**, रांमा सासू बहू रति।—वेलि

२ देखो 'सुबह' (रू.भे.)

सुबांण, सुबांणी—देखो 'सुवांणी' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

उ०—सीस दस भडै धनुधार रै सायकां, हेर कप भाळ अणपार हरखै। वसू सारी सुजस पयंपै **सुबांणां**, विमांणां बैठ सुर सुमन बरखै।—र.रू.

सुबायत-सं पु -सूबेदार।

उ०—तौ ही अजमेर रौ **सुबायत** बैस रहौ। तिण समै राव सातळ नै कंवर बरसिंघ अवणत हुई।—नैणसी

सुबाळ, सुबाल-सं.स्त्री.-१ सुन्दर बाला, सुन्दर युवती।

उ०—छटा बिसाळ साळतै छबी घटा छपै नहीं, दिवाळपै **सुबाळ** दीपमाळसी दिपै नहीं।—ऊ.का.

सं.पु.-२ सुन्दर बालक।

सुबाव—देखो 'स्वभाव' (रू.भे.)

सुबास—देखो 'सुवास' (रू.भे.)

उ०—लोयण चंचळ स्रवण लग, लांबा वेणी डंड। महकै सहज **सुबास** बप, किर लायौ स्रीखंड।—बां.दा.

सुबासना—देखो 'सुवास' (रू.भे.)

सुबाह, सुबाहु-सं.पु. [सं. सुबाहु] १ एक राक्षस जो मारीच का बड़ा भाई था और ताड़का का पुत्र था।

उ०—बाढ **सुबाह** जिगन रखवाळै, महण बीच डालै मारीच। ताई विमद करै त्रप ताखा, विरदाई जांनकी वरी।—र.ज.प्र.

२ कालिन्दी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

३ चेदि का एक राजा जो वीरबाहु का पुत्र और सुनन्दा का भाई था।

४ राम की सेना का एक वानर।

५ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

६ जैनियों के एक तीर्थङ्कर।

उ०—नलिनावत्त चउवीसमी पछिम विदेह वखांण, वीतसोका नयरी तिहां चौथौ **सुबाहु** सुजांण।—ध.व ग्रं.

सं.स्त्री.-७ एक अप्सरा जो दक्षपुत्री प्राधा के गर्भ से महर्षि कश्यप द्वारा उत्पन्न हुई थी।

वि.-१ सुन्दर एवं दृढ़ बाँहों वाला।

२ आजानबाहु।

सुबियांण—देखो 'सुभियांण' (रू.भे.)

उ०—'जोदौ' गड 'जोदांण' हुवौ राठोड़ हटाळौ, 'जोदा' रै जगजीत कमंद 'सूजौ' कळ चाळौ। 'सुजा' रै **सुबियांण** प्रगट 'ऊदौ' खत्रीयांपण, सरबा पादर सींदळां जेण लीदी जैतारण।—अग्यात

सुबीतौ—देखो 'सुभीतौ' (रू.भे.)

सुबीर-सं.पु.-१ रबड़ी।

२ छाछ की बनी राबड़ी।

वि.वि.-देखो 'राबड़ी'।

३ देखो 'सुवीर' (रू.भे.)

सुबुक-रंदौ-सं.पु यौ.-१ बरतनों की कोर आदि छीलने का एक औजार विशेष।

२ बढ़इयों का एक औजार जिससे लकड़ी को छील कर साफ़ किया जाता है।

सुबुदी, सुबुद्दी, सुबुद्ध, सुबुद्धि-सं स्त्री. [सं. सुबुद्धि] १ उत्तम एवं श्रेष्ठ बुद्धि वाला, बुद्धिमान, दूरदर्शी।

उ०—हुती थेटु क्रपा मौ पै जिहुं ही तै जणाई हातां, जुगां जातां जावै नहीं वातां क्रीत जोड़। **सुबुदी** 'अनोप' मारू चीरंजी हजार सालां, रीज रा वीलाला राजा अगंजी राठौड़।

—अनोपसिंह राठौड़ रौ गीत

२ जो बुद्धि हमेशा अच्छे कार्यों की ओर प्रवृत्त होती हो, सुमति।

३ चतुर, निपुण, दक्ष।

४ कवि, पण्डित, विद्वान्। (अ.मा.)

५ प्रत्युत्पन्न मति वाला, हाज़र-जवाब।

सं.स्त्री.-१ श्रेष्ठ एवं उत्तम बुद्धि।

२ बुद्धि, अक्ल, समझ, होश, ज्ञान, मति। (डिं.को; ह.नां.मा.)

रू.भे.—सुबध, सुबधी, सुबुध, सुबुधि, सुबुधी।

सुबुध-वि. [सं.] १ बुद्धिमान।

२ सतर्क, सावधान।

३ देखो 'सुबुद्धि' (रू.भे)

उ०—कनक दांन कुरखेत विरधि, गुणि वासुर वासुर। **सुबुध** वधै सतसग, ग्यांन गुर वांणि उजागर।—रा.रू.

सुबुधि, सुबुधी—देखो 'सुबुद्धि' (रू.भे.)

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुंदर, अमळ अंबर ओपयं। किरि **सुबुधि** वधि सतसंग, कारण लुबुध होत विलोपयं।—रा रू.

सुबुद्धिनाथ, सुबुधिनाथ-सं.पु. [सं. सुबुद्धिनाथ] जैनियों के वर्तमानकाल के नवमें तीर्थङ्कर का नाम। (स.कु.)

सुबेल—देखो 'सुवेल' (रू.भे.)

सुबेस-वि.-१ वयस्क, बालिग।

२ देखो 'सुवेस' (रू.भे.)

सुबेसांणी-क्रि.वि -बड़े सवेरे, ऐन सुबह, प्रात:काल के समय।

रू.भे.—सुबैसांणी।

सुबै—देखो 'सुबह' (रू.भे.)

उ०—जकै दबावौ चीज, घणौ री अूंची आवै। आथण छिपणौ भांण, **सुबै** लाली वरसावै।—नारी सईकड़ौ

सुबैण-सं.पु. [स. सु-वचन] १ अच्छे एवं शुभ वचन।

२ मित्रता, दोस्ती।

सं.स्त्री. [सं. सु-वेणि] ३ स्त्रियों की सुन्दर वेणी, चोटी।

उ०—अही सुबैण अग नैण दीर नासका भ... ।—पा प्र.

सुबैमांणी—देखो 'सुदेमांणी' (रू.भे.)

सुबोध—सं.पु. [सं.] १ अच्छा ज्ञान, अच्छा बोध, अच्छी जानकारी।

२ अच्छी सलाह, अच्छा मशविरा।

३ श्रेष्ठ ज्ञान।

उ०—हाडा ग्रंथ निदांन है मौ सब सुन्य सुबोध।—वं.भा.

वि.—१ जिसे बोध हो, जो अबोध न हो।

२ जो सहज ही जाना जा सके।

सुबोल—सं.पु. [सं.] १ सुन्दर वचन, उत्तम एवं मधुर वचन।

उ०—जिन मामन राखवउ विग्गाड, डोलतउ डमडोल। समकावउ श्री पातिस्याह, सद्गुरु बोलावउ सइं सुबोल।—स.कु.

२ यश, कीर्ति।

उ०—विक्री जैत सुबोल महंमदन, राजा सुहरि सरण रिम राह। सुभ दातार सुकव सुपातां, दांन च्यारि बकसिया दुवाह।

—सुमरांम गौड़ रौ गीत

सुबौ—देखो 'सुवौ' (रू.भे.)

सुब्भ—देखो 'सुभ' (रू.भे.)

उ०—प्राचीन करम **सुब्भ** ए, पुन्वा पाइत उत्तमा महिला। कुळ-दीप पुत्र जिएयै, कुळ ध्रु विनै रूप संयुगता।—गु.रू.बं.

सुब्भजोग— देखो 'सुभयोग' (रू.भे.)

उ०—सुभ वासर **सुब्भजोग** वेळा, निहक्क निलाट नांण ए। सोळह सुखि कळा चंद संपूरण, द्वादस ऊगांत भांण ए।— गु.रू.बं.

सुब्भट—देखो 'सुभट' (रू.भे.)

उ०—उड्डि वैसनरं, सांमटां सध्धर। **सुब्भटां** भ्रूलरं, फौज घांसाहर।—गु.रू.बं.

सुभ्र—देखो 'सुभ्र' (रू.भे.)

सुब्रह्मण्य-क्षेत्र—सं.पु.यौ. [सं.] मद्रास-क्षेत्र के दक्षिण में कनाड़ा जिले में स्थित एक प्राचीन तीर्थ।

सुव्रीड़ित—वि. [सं. सुव्रीडित] लज्जित, सङ्कोचयुक्त।

उ०—सुर्मासन सुनमित निज वदन **सुव्रीड़ित**, पुंडरीकाख थिया प्रसन। प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, सिरिगाखी राखिवा सन।

—वेलि

सुभंकर—सं.पु.—१ छप्पय छन्द का १४वाँ भेद जिसमें ५७ गुरु व ३८ लघु से ९५ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। (र.ज.प्र.)

२ देखो 'सुभकारी' (रू.भे.)

सुभंकरी—सं.स्त्री. [सं. शुभङ्करी] पार्वती, दुर्गा।

वि.स्त्री—कल्याण करने वाली, मङ्गल करने वाली।

सुभंग—सं.पु. [सं. सुभङ्ग] १ देव-वृक्ष। (अ.मा.)

२ नारियल का वृक्ष। (अ.मा.)

वि.—१ सुन्दर व खूबसूरत।

२ योद्धा, वीर।

उ०—कळ सुक 'करन' हर खळां काळ, जवनां वन दाहण सेन्व ज्वाळ। 'भगवांन' 'हरी' 'चांपै' सुभंग, 'ऊदळ' 'विजौ' 'अचळौ' अभंग।—रा.रू.

सुभ—वि. [सं. शुभ] १ कल्याणकारी, मङ्गलमय।

उ०—१ पधराविया सुभ प्रात, छळ हुंत सुरधर छात। दळ बसंब साह ववार, अत रहै सांम उवार।—रा.रू.

उ०—२ नटा उछ्रांति स्थान सिलांमति तोरण बांधीजै छै। अच्छा गज उंबर देसान श्रवि संजोवर महलै पधराया छै। सुभ दिन सुभ घड़ी सुभ मुहरत सुभ लगन सुभ वेळा मांहि आंणि पाट सिंघासण विराजमांन किया छै।—रा.सा.सं.

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—१ ऐसै कोइ कहति एक एक प्रति, विमळ सकळ अह एक वरनि। गणि ग्वरण सुभ क्रम आचरन, जांणियै वेलि जपंति जांणि।

— वेलि

उ०—२ आदि दक्ष अन्तर्मी साम नम सुभ गुण मंडित। सपनि-पुनी मणि मुकट, नेत्र मधुपुरी अभंडित।—रा.रू.

उ०—३ अविनासी अधिकार असीमा, सुभ गुण दियण अनुग्रह सीमा।—रा.रू.

३ मनपसन्द, सुखप्रद, आनन्ददायी।

उ०—१ डावड़ी रै मूंडै बधाई रा ऐ सुभ समाचार सुणता ई ठकरांणी री आंख्यां सांम्ही धूंवा रा गोट ऊठण लागा।

—फुलवाड़ी

उ०—२ दीवांणजी राजाजी नै सुभ समंचार देवण सारू घोड़ा माथै बैठ न्हाटा।—फुलवाड़ी

उ०—पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रामथळ व्रजनाथ आथ। कांन कंवार विहरि गली व्रज कुंजरी, सुभ रली कीजियै लाडली साथ।—बां.दा.

४ भाग्यवान, भाग्यशाली।

५ नेक, धर्मात्मा।

६ सुन्दर, खूबसूरत।

७ चमकदार, चमकीला।

८ सुखी।

९ पवित्र, शुद्ध।

क्रि.वि.—अच्छी तरह, भली प्रकार से।

उ०—नहं तीरथ जरणां समौ, जगणीं समौ न देव। इण कारण कीजै अवस, सुभ जगणी री सेव।—बां.दा.

सं.पु.—१ बिन्दु, शून्य, सिफ़र, जीरो, बिन्दी का चिह्न।

उ०—१ असपतियां सिर ऊपरै, हेकै नव सुभ होय। सां देसां केरा तुरी, जेहल समयै जोय।—बां.दा.

उ०—२ समरै मैं सांमंत, आंक आठै सुभ अग्गळ। सुकळ पक्ष

आसाढ, उतर रवि तेरस मंगळ ।—रा.रू.

२ सात प्रकार के चौघड़ियों में से पाँचवाँ चौघड़िया ।

वि.वि.–'चौघड़ियौ' ।

३ विष्कंभादि सत्ताइस योगों में से तेवीसवें योग का नाम ।

(फलित ज्योतिष, ज्यो. बा. बो.)

४ वार व नक्षत्रों-सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से बीसवाँ योग ।

५ एक राग विशेष ।

रू.भे. - सुब, सुब्भ ।

सुभकंद–सं.पु.–गणेश, गजानन । (अ.मा.)

सुभकर–वि. [सं. शुभकर] कल्याण करने वाला, मङ्गल करने वाला ।

सुभकरी–सं.स्त्री.–पार्वती ।

सुभकांम–सं.पु. [सं. शुभ-कर्मन्] अच्छा व श्रेष्ठ कार्य, पुण्य का काम ।

सुभकांमयर–सं.पु. [सं. शुभकामकर] नारियल । (अ.मा.)

सुभकांमी–वि.[सं. शुभकामिन्] शुभकामना करने वाला,शुभेच्छु,हितैषी ।

उ०—सब रौ हितू धरम रौ धोरी, संतां रौ **सुभकांमी** रे ।

—गी रां.

सुभकार–सं.पु. [सं. शुभ-कार्य] शुभ कार्य, माङ्गलिक कार्य ।

उ० –ऊजळी उत्तम रेत, ओकळी सूं लै आवै । वेदी जिगां विवाह, साज **सुभकार** सजावै । –द.दे.

सुभकारक, सुभकारि, सुभकारी–वि. [सं. शुभ-कारिन्] १ कल्याण करने वाला, माङ्गलिक ।

उ०—रूप भाग गुण भजन नरायण, पुत्र हुवौ सुज भगत परायण । सुक्र पंचम थांनक **सुभकारी**, कंवर हुवै सुज आग्याकारी ।

—रा.रू.

२ पवित्र, शुद्ध ।

३ शुभकामना करने वाला, शुभेच्छु ।

उ०—वांनैता असवार गयंद सिंगारिया, हूआ मंगळचार कवी **सुभकारिया** ।—गु.रू.बं.

४ शुभ वाणी बोलने वाला ।

५ उत्तम व श्रेष्ठ फलदायक ।

उ०—निरखै मात प्रभात निस, निरमळ दिवस सनूर । ईखै छत्र-धारी 'अजौ', **सुभकारी** ससि सूर ।—रा.रू.

रू.भे.—सुभंकर ।

सुभकूट– सं. पु. [सं. शुभकूट] लङ्का का एक प्रसिद्ध पर्वत जिस पर चरण-चिह्न बने हुए हैं ।

सुभक्रत, सुभक्रित–सं.पु. [सं. शुभकृत] विष्णुवीसी का सोलहवाँ वर्ष ।

(ज्योतिष)

सुभग–वि. [सं.] १ सुन्दर, मनोहर । (अ.मा; ह.नां.मा)

उ०—१ भरत्थ अरिहा लछण भ्रात अग्रज **सुभग** महा । मन हरण घण रूप तन स्यांम है ।—र.ज.प्र.

उ०—२ मन मेरै परसि हरि कै चरन । **सुभग** सीतळ कमळ कोमळ, त्रिविध ज्वाळा-हरन ।—मीरां

२ मधुर, प्रिय ।

३ भाग्यवान, समृद्धिशाली ।

४ प्रेम-पात्र, प्यारा ।

५ प्रसिद्ध ।

सं.पु.–१ चन्दन ।

२ सुहागा ।

३ अशोक का वृक्ष ।

४ चम्पक वृक्ष ।

५ लाल कटसरैया ।

सं.स्त्री.–सुन्दर योनि ।

रू.भे.—सुभग्ग, सोहग ।

सुभगा–सं.स्त्री. [सं.] १ वह स्त्री जिसको उसका पति बहुत प्यार करता हो, प्रियतमा पत्नी ।

२ पूज्या माता ।

३ हल्दी ।

४ तुलसी ।

५ पाँच वर्ष की कुमारी कन्या ।

६ स्कन्द की एक मातृका ।

वि.स्त्री.–१ सुन्दरी, मनोहारी ।

उ०—**सुभगा** सिवा जया स्री अंबा, परिया परंपार पालंबा ।

—देवि०

२ सौभाग्यवती, सुहागन ।

सुभग्ग–वि.–१ सौभाग्यशाली ।

उ०—अभग्गि अग्गि कै अगै **सुभग्ग** भग्गतै सुनैं । उदग्ग पग्ग विग्गि आसु पग्ग लग्गतै उनैं ।—ऊ.का.

२ देखो 'सुभग' (रू.भे.)

उ०—हिरनमै पन्न हीरै जडित्त, सांकळा करग्गै सुशोभित । मुद्रका सुकर-साखा **सुभग्ग**, मिण जांण दिपै फुण सेस नग्ग ।—गु.रू.बं.

सुभग्रह–सं.पु. [सं. शुभ-ग्रह] सौम्य और शुभ माने जाने वाले वृहस्पति व शुक्र-ग्रह । (फलित ज्योतिष)

सुभड़—देखो 'सुभट' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ हे **सुभड़ां** थै तरवार उण वीर पुरस रौ नांम लेनै बांधौ सौ तांह री कठै ही हार न होवै ।—वी.स.टी.

उ०—२ जिकौ सिकार गयौ **सुभड़ां** जुत, सोभावती पंवारतणौ सुत ।—सू.प्र.

सुभचरित–सं.पु. [सं. शुभ-चरित्र] १ अच्छा चरित्र, शुद्ध चरित्र ।

२ अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति ।

सुभचरिता – वि. स्त्री. [सं. शुभ-चरित्रा] १ शुद्ध चरित्र वाली, चरित्रवान ।

२ साध्वी, पतिव्रता ।

सं.स्त्री.-१ चरित्रवान व साध्वी स्त्री ।

२ पतिव्रता स्त्री ।

सुभचिंत, सुभचिंतक – वि. [सं. शुभ-चिन्तक] भलाई या मङ्गल की कामना करने वाला, शुभ चाहने वाला, शुभेच्छु, हितैषी ।

उ०—१ पूछै व्यास पवित्र, नांम महाराज 'ग्रजग' तरण । स्यांम ध्रमी व्रुव सरस, घरणू **सुभचित** देखि घरण ।—सू.प्र.

उ०—२ एनै कवि वीरता कै ग्रग्रकारी, श्री महाराज कै **सुभचिंतक** विद्या जस कै व्यौपारी ।—रा.रू.

सुभट–सं.पु. [सं.] १ योद्धा, भट, वीर । (ग्र.मा; ह.नां.मा.)

उ०—१ इक चलै सूंड ग्रांदोळतां, ग्रध ऊरध सावळ ग्रविळ । तम **सुभट** विछोहौ जांणि निम, दिवस वहै वरि इंग वळि ।—रा.रू.

उ०—२ सती वळै जूझै **सुभट**, करै ग्रथ कविराज । दाता माया ऊधमैं, नांम उवारण काज ।—बां.दा.

२ सैनिक, सिपाही ।

३ ग्रर्जुन । (ग्र.मा; ह.नां.मा.)

वि.–१ पराक्रमी, बहादुर ।

उ०—सम सिकार तीनर **सुभट**, कुरजां चिड़ी कबूतरा । भायां सूं नित उठ भिड़ै, परम धरम रजपूत रा ।—ऊ.का.

२ रक्षा करने वाला, रक्षक ।

३ चतुर, दक्ष ।

उ०—जठै ग्रापरा **सुभट** मंत्रियां एकत्र होइ ग्ररज कीधी इण समय बेघम हालियां तौ बूंदी घरै रहण मैं हापुर हिसावै ।—वं.भा.

रू.भे.—सहड़, सुभड़, सुहड़, सोहड़, सोहड़ ।

४ सुगम, सहज, सरल ।

उ०—बीनणी नै घणौ ई समभावं पण उण रै तौ ग्रा साव **सुभट** बात ई समझ मैं नीं ग्रावै ।—फुलवाड़ी

५ स्पष्ट, साफ ।

उ०—१ वाई बारणै ऊभी सगळी वातां **सुभट** सुणी । उण सूं कीं जवाब देवणी नीं ग्रायौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ बादळ रै सांम्ही देख बोली—वीरा, थूं कह्यौ सौ ई बात व्ही । वै तौ सगळा ई **सुभट** नटग्या ।—फुलवाड़ी

क्रि.वि.–१ ठीक तरह से, ग्रच्छी तरह ।

उ०—१ राजकंवर सगळा जांनियां नै न्यारा न्यारा **सुभट** समभाय दिया कै वै घरै जाय किणी नै ई ग्रौ भेद परगट नीं करै ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ मासी जवाब दियौ—म्हैं हाल थारी बात नै **सुभट** समझी कोनीं कै थूं कांई जांणणी चावै । भांणजी कह्यौ—तौ पछै म्हनै सुभट ई समभावणौ पड़ैला ।—फुलवाड़ी

२ प्रगट, चौड़े ।

उ०—हथळेवा वाळौ छळ-छंद ग्रबै जावतां **सुभट** व्हियौ सुभट व्हियां घणौ वत्तौ ग्रळूभग्यौ ।—फुलवाड़ी

३ पूर्णतया, पूर्ण रूप से ।

उ०—पण चार बरसां सूं प्रीत रै खोळियै उणरौ ग्रंतस बदळग्यौ । झूठ बोलणी चायौ तौ ई उण सूं बोलीजियौ कोनीं । **सुभट** साच ई कैवै तौ कीकर कैवै ?—फुलवाड़ी

रू.भे.—सुब्भट, सुभट्ट ।

सुभट्ट—देखो 'सुभट' (रू.भे.)

उ०—१ कवि नद बोलै 'केहरी', सकवी सुर **सुभट्ट** । बोध समस्पण श्रहड़ां, कुळ रोहड़ां सुगट्ट ।—रा.रू.

उ०—२ मिळ थट्ट वगट्ट **सुभट्ट** मिळं, दुजड़ाहत 'पाल' भड़ं दुजळं ।

—पा.प्र.

सुभत्ती–वि.स्त्री.–शुभ, ग्रच्छी ।

उ०—तौ पूठै वरजांग साख जैसांग **सुभत्ती** । पहचौंगी परगणतां चढै नह कौ चकवती ।—रा.रू.

सुभदंता–सं.स्त्री.–पुष्पदंत नामक हाथी की हथिनी । (पौराणिक)

सुभदरसण, सुभदरसन–वि. [सं. शुभ-दर्शन] १ जिसके दर्शन से कोई शुभ या मङ्गलकारी काम होना हो ।

२ सुन्दर, खूबसूरत ।

सुभद्र–सं.पु. [सं.] १ कुशल-क्षेम, खुशहाली । (ग्र.मा.)

२ विष्णु का एक नाम ।

वि.–१ भाग्यवान, भाग्यशाली ।

२ ग्रत्यन्त प्रसन्न, खुश ।

सुभद्रा, सुभद्रिका – सं.स्त्री. [सं.] १ श्रीकृष्ण की बहन व ग्रर्जुन की पत्नी ।

२ दुर्गा का एक नाम ।

रू.भे.—सभद्रा ।

सुभद्रेस–सं.पु. [सं. सुभद्रेश] सुभद्रा का पति ग्रर्जुन ।

(ग्र. मा; ह. नां. मा.)

सुभनजर–सं.स्त्री.–शुभ दृष्टि, कृपा दृष्टि ।

रू.भे.—सुबनजर ।

सुभनांमा–सं.स्त्री. [सं. शुभनामा] १ शुक्ल पक्ष की पञ्चमी ।

२ दशमी या पूर्णिमा तिथि ।

सुभप्रद – वि. [सं. शुभप्रद] शुभ या मङ्गल करने वाला, शुभकारी, मङ्गलकारी ।

सुभम–सं.पु. [सं. शुभं] १ फूल, पुष्प । (ग्र.मा.)

२ जल, पानी ।

सुभमोहरत, सुभमौरत–सं.पु. [सं. शुभ-मुहूर्त्त] १ शुभ घड़ी, शुभ लग्न ।

उ०—ब्याव रै खरचा रौ सगळौ हिसाब सभळाय म्हनै तीज रै सैं दिन दिसावर विणज सारू सिधावणौ है । ऐड़ौ **सुभ-मौरत** धकला सात बरसां मैं ई कोनीं ।—फुलवाड़ी

सुभयांणी—देखो 'सुभियांण' (रू.भे.)

सुभयोग–सं.पु.–शुभ संयोग।

रू.भे.—सुब्भजोग, सुभजोग।

सुभर—१ ब्रह्माण्ड।

उ०—सुन **सुभर** मैं बाळक जाया, तुचा हाड़ नहीं मासुं। जाति न पांति वरण नहीं वाकै, नांव न धरीयै कासुं।—अनुभववांणी

२ देखो 'सुवर' (रू.भे.)

सुभराज–सं.पु.–१ अभिवादन, शुभराज।

उ०—१ ढोलउ मन चलपत थयउ, ऊभउ साहइ लाज। सांम्हउ वीसू आवियउ, आय कियउ **सुभराज**।—ढो.मा.

उ०—२ रांणौ कूंभौ राइमल, मेहौ हरि भम पीर। सिगळां नां **सुभराज** छै, पाबू गोगा पीर।—पी.ग्रं.

उ०—३ सांमा तौ **सुभराज**, ऊगै दन ऊनड़ हरा। जेहा धरम जिहाज, कीरत काज दधीच क्रन।—बां.दा.

२ आशीर्वचन या आशीर्वाद में कहा जाने वाला शब्द।

उ०—१ ज्यूं ज्यूं मिंदर ऊंचौ आयौ, गुलाब री मां रै पेट स्यांव नीं मायौ। डरतौ डूम **सुभराज** करै जकी कैवत चौड़ै कर नाखी।

—दसदोख

उ०—२ बाप महारांणी रै पाखती आतां ई **सुभराज** करी। हाथ जोड़ नै कह्यौ—अदाता, अठै आवण री तौ आपनै ठा' इज व्हैला।

—फुलवाड़ी

उ०—३ एक बूढौ चरवादार खम्मा घणी करनै **सुभराज** करी। पछै खुणियां सूदा हाथ जोड़नै कह्यौ अंदाता, औ दुस्टी राज रै तबैला री घोड़ी रौ माथौ बाढ न्हाकियौ।—फुलवाड़ी

रू.भे.—सुभराजू।

सुभराजू—देखो 'सुभराज' (रू.भे.)

उ०—अवगत्य तुं प्रगट आजूं, कोड़चां तारण काजूं। महि मंडण माहराजूं, सोह सांम्य **सुभराजूं**।—वि.सं.सा.

सुभरासी–सं.पु. [सं. शुभ-राशि] चन्द्रमा, शशि। (अ.मा; नां.मा.)

सुभव्रत–सं.पु. [सं. शुभ-व्रत] कार्तिक शुक्ला पञ्चमी को किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत।

सुभसांत–सं.पु.–शान्त वातावरण, अनुकूल परिस्थिति।

उ०—रजपूत हिमार जगमाल रौ मेड़तै वससी, **सुभसांत** हुऔ औ पटा रै गांवै बरस १ पछै जाय बससी।—नैणसी

सुभसूचक–वि. [सं. शुभसूचक] माङ्गलिक।

उ०—राधा चंद भागा चंद्रावली, भांमा ललित सुसीलै। **सुभसूचक** सुवरण घट सिर धरि, अंब बोर जब ही लै।—मीरां

सुभांगी–सं.पु. [सं. शुभ-अङ्गी] १ कामदेव की पत्नी, रति।

२ कुबेर की पत्नी का नाम।

३ राजा कुरु की पत्नी जिसके पुत्र का नाम विदूरथ था।

४ सुन्दर स्त्री।

वि.स्त्री.–सुन्दर अङ्ग वाली, सुन्दरी।

सुभांन–सं.पु. [सं. शुभान] १ ब्रह्मवीसी का सत्रहवाँ वर्ष। (ज्योतिष)

२ देखो 'सुबहांन' (रू.भे.)

सुभा–सं.स्त्री. [सं. शुभा] १ आभा, कान्ति।

२ सौन्दर्य, शोभा।

३ कामना, अभिलाषा।

४ दूर्वा, दूब।

५ प्रियंगुलता।

६ देवताओं की सभा।

७ शमी वृक्ष।

८ गोरोचन।

सुभाइ, सुभाई, सुभाउ, सुभाऊ—देखो 'स्वभाव' (रू.भे)

उ०—गति गंगा मति सरसती, सीता सीळ **सुभाइ**। महिलां सरहर-मारुई, अवर न दूजी काइ।—ढो.मा.

सुभाग–सं.पु. [सं. सौभाग्य] अच्छा भाग्य, सौभाग्य।

वि.–१ भाग्यशाली।

२ देखो 'सुहाग' (रू.भे.)

सुभागण - देखो 'सुहागण' (रू.भे.)

सुभागी–वि.–सौभाग्यशाली, भाग्यवान।

उ०—१ अपणां पिया संग हिळमिळ खेलूं, अधर सुधारस पागी। मीरां गिरधर कै मन मांनी, अब मैं भई **सुभागी**।—मीरां

उ०—२ दस वसु खट आठं इक पद, पाठं सौ पदमावती छंद सही। सौ सुकव **सुभागी** हरि अनुरागी, मत लागी जस रांम मही।

—र.ज.प्र.

उ०—३ तसु बंधव डुंगरसी तै पण दीपतउ रे, भागचंद कुल भांण। विनयवंत गुणवंत **सुभागी** सेहरउ रे, वड़ दाता गुण जांण।

—वि.कु.

सुभाग्य–सं.पु. [सं.] अच्छा भाग्य, सौभाग्य।

वि.–भाग्यशाली, भाग्यवान।

सुभाय—देखो 'स्वभाव' (रू.भे.)

उ०—अडोळ पायरा सीह **सुभाय** रा आसतीक, सिहायरा जनां औधराय रा सुजाव।—र.ज.प्र.

सुभायक–वि.–रुचिकर, मन-भावता, अच्छा लगने वाला, सुहावना।

उ०—१ भीनै रंग वैसणी **सुभायक**, लख सुद्रणी स्यांम रंग लायक।—र.ज.प्र.

उ०—२ सौ नित गाव 'किसन' **सुभायक**, नाथ अनाथ धणी रघुनायक।—र.ज.प्र.

सुभारजा, सुभारिजा, सुभारिया–सं.स्त्री. [सं. सुभार्या] श्रेष्ठ स्त्री, श्रेष्ठ पत्नी।

उ०—ग्यांन राजा कियौ मंन्य विचार, बंधवां, चेतंन तांहरी वार। सुमंति **सुभारिजा** सूं कहै वात, उप उपगार करै दियां हाथ।

—बि.सं.सा.

सुभाव—देखो 'स्वभाव' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ इनड़ौ अधकौ बोलणौ भलौ नहीं थौ पण हेक थां विहूणी नहीं छै, मारवाड़ मैं घणा छै पण थारौ ओ ही जै **सुभाव** छै।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ उद्दम री आसा करै, सहै नहीं घणराव। घात करै गैंवर घड़ा, सीहां जात **सुभाव**।—बां.दा.

उ०—३ मूळी दार **सुभाव**, त्रिमूळ दार नैयारी। मरज दार होय मांग, आंणी कहूं दार उधारी।—ऊ.का.

उ०—४ सेठ रै बेटा री बोली-चाली अर उणरै **सुभाव** री चाइजनी मोय करनै बौ तौ टूजै मारग टळग्यौ।—फुलवाड़ी

सुभावत—वि.—प्यारा लगने वाला, मनचाहा, सुहावना।

उ०—वखतौ लड़ण खळां रस वायौ, अधपति निजर **सुभावत** आयौ। 'अमर' नणौ जांमळ वळ ऐसौ, जोड़ै भीम अरजण जैसौ।
—रा.रू.

सुभाविक—देखो 'स्वाभाविक' (रू.भे.)

उ०—झवैरी बजार री भीड़ लिछमी री रेळ-पेळ मैं आपरी **सुभाविक** गति सूं चालती री......।—अमरचूनड़ी

सुभासण—सं.पु. [सं. सु-भाषण] १ सुन्दर भाषण, कर्णप्रिय भाषण।

[सं. शुभ+आसन] २ सुन्दर आसन।

सुभासित—वि. [सं. सुभाषित] जो सुन्दर ढंग से या अच्छी तरह कहा गया हो।

सुभिक्ष, सुभिख—सं.पु. [सं. सुभिक्ष] वह समय जब अन्न की पैदावार खूब हुई हो और अन्य फसलें भी अच्छी हुई हो, दुर्भिक्ष का विपरीत, सुकाल।

उ०—न पड़इ दुरभिक्ष दुकाल कदा, सुभ त्रिम्टि **सुभिक्ष** सुगाल सदा। ततखिन तुम्हें असुभ करम तोड़उ, तिननांम जपउ जी नाकउड़उ।—स.कु.

सुभियांण, सुभियांन—वि. [सं. शुभ+रा.प्र. यांण] १ सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—१ धुर मात्रा नेबीस धर, बाकी वीस बखांण। मुहरा सम च्यारू मिळै, मावझड़ौ **सुभियांण**।—डिं.को.

उ०—२ वोह दिन हुवा पौडिया, न जगै निरवांण। चिंता नहीं लिगार मन, साहिब **सुभियांण**।—गज-उद्धार

२ प्रमुख, मुख्य, खास।

उ०—गुणां भरपूर परसिध रण गिणीजै, तेज दरियर घणौ वधै तुड़-तांण। वेख बळवांन कपिराव बिण कुंण वियौ, अडर 'चांदावतां' वगौ **सुभियांण**।—रुघनाथसिंह चांदावत रौ गीत

३ योद्धा।

उ०—१ चळवळीया रावत चंगा, अळवळिया **सुभियांण**। भळ-हळीया सांवळ भूजा, कळहळिया केकांण।—पनां

उ०—२ सवांदिस वीरसदै **सुभियांण**, कमंधज ढीलवीया केकांण।
—गो.रू.

४ शुभ, माङ्गलिक।

रू.भे.—सुवियांण, सुवियांणी, सुभीयांण, सुभीयांणी, सुभीयांन।

सुभीतौ—सं.पु.—आराम, सुभीता, आसानी, सुविधा।

उ०—१ थैं मत चालौ काका! चालता तौ रास्तौ ढूंढण मैं **सुभीतौ** रैवनौ। थांरौ जिमौ निसांणौ भी म्हारौ थोड़ौ ईज है?
—निरसंकू

उ०—२ मैंनेजर आपरी बोली मांय घणी पीड़ भर'र बोल्यौ—कठै नूं है पवन, कितरणी करड़ी हालतां मांय पड रयौ है अर कठै म्हारा बेटी-बेटा है! सब तरियां रौ **सुभीतौ** होतां थकां हायर-सैकंडरी भी पास कोनी कर सक्या।—निरसंकू

सुभीमा—सं.स्त्री. [सं.] श्रीकृष्ण की एक पत्नी।

सुभीयांण, सुभीयांणी, सुभीयांन—देखो 'सुभियांण' (रू.भे.)

उ०—१ तू सब बीज अबीज मांई **सुभीयांणी**।
—केसोदास गाडण

उ०—२ उण समै ईडर मैं राव रायभांणजी राज्य करै। वडा **सुभीयांन**। परखज प्रमांणा। आचार रौ करण।—पनां

सुभीयागत—देखो 'सुभ्यागत' (रू.भे.)

उ०—जौ पूंन अठसठ जी भाई तीरथौ, गुर **सुभीयागत** म्हारौ। देह दियावौ जी भाई मोमिणौ, देत न करौ उधारौ।—वि.सं.सा.

सुभूखण, सुभूसण—सं.पु. [सं. सु-भूषण] सुन्दर आभूषण, अच्छे अलङ्कार।

वि.—अच्छे आभूषणों से अलंकृत।

सुभूसित—वि. [सं. सु-भूषित] १ अच्छे अलंकारों से अलंकृत।

२ सुसज्जित।

सुभेद—वि.—रहस्य जानने वाला, भेदिया।

सुभेय—सं.पु.—चम्पा का वृक्ष। (अ.मा.)

सुभेवौ—वि.—रहस्यपूर्ण?

उ०—जड़कूं सेल जैतसंभ जेहै, असि असवार कहै चित्र एहै। 'भूप' कहै सुत 'देव' **सुभेवौ**, काढूं देव दांणवां केवौ।—सू.प्र.

सुभै—वि.—सुन्दर।

उ०—वांणी सा थिर हा जुगळ चरण, कुचभाव उठै वैठै थिरकै। कल्पना करां मैं कमळ चारु, आ कविता ज्यूं साकार **सुभै**।
—सकुंतला

सुभोम, सुभोमि, सुभौम—सं.स्त्री. [सं. सु-भूमि] १ अच्छी भूमि, उपजाऊ भूमि।

उ०—संगति करीयै साधकी, हरि सुं धरीयै हेत। हरीया खाली नां गमै, बीज **सुभोमि** खेत।—अनुभववांणी

सं.पु.—२ कार्त्तवीर्य्य का पुत्र व जैनियों का एक चक्रवर्ती राजा जिसने बड़े होने पर परशुराम से अपने पिता के वध का बदला लेने

के लिए बीस बार पृथ्वी को ब्राह्मणों से शून्य किया।
(जैन हरिवंश)

सुम्भ—१ देखो 'सुभ्र' (रू.भे.)
२ देखो 'सुभ' (रू.भे.)

सुम्भागियौ–वि.–सौभाग्यशाली, भाग्यशाली।
उ०—सपना तूं **सुम्भागियौ**, उत्तम थारी जात। सौं कोसां साजन वसै, आंण मिळावै रात।—अग्यात

सुम्यागत–वि.–सौभाग्यशाली, भाग्यवान।
उ०—सबद सतगुर तणां स्रवणै सांभळौ, पाल्य क्रिया दया आंणि प्रतीति। माल मां माल **सुम्यागतां** आपणां, प्यारौ सोय खरचियै विसंन प्रतीति।—जांभौ
रू.भे.—सुभीयागत।

सुभ्र–वि. [सं. शुभ्र] १ श्वेत, सफ़ेद। (अ मा; नां.मा.)
२ उज्ज्वल, साफ़, शुभ्र। (अ.मा.)
उ०—सीतावर जसधर सुमति सदन **सुभ्र**, कळुख सघन वन दहन करी।—र.ज.प्र.
३ चमकीला, कान्तीमान, द्युतिमान, आभा-युक्त।
४ स्वच्छ, निर्मल, पवित्र।
सं.पु.–१ चन्दन।
२ सफ़ेद रंग।
३ चाँदी, रजत।
४ सेंधा नमक।
५ अभ्रक।
६ तूतिया।
रू.भे.—सुब्भ, सुम्भ, सुभ्रु, सुभ्रू।

सुभ्रकर, सुभ्रकरण, सुभ्रकिरण–सं.पु. [सं. शुभ्र-कर, किरण] चन्द्रमा, शशि। (अ.मा; नां.मा; ह.नां.मा.)

सुभ्रतटी–सं.पु.–क्षीरसागर।
उ०—जटी जोग पाखारां धावां **सुभ्रतटी** जेम, गैणाबटी तावां ऊंच सभावां गोविंद। चीलार पुरेंद्र चावां चंद्र ज्यूं नखत्र चावां, नरां लोक दावां सरै 'किसनेसनंद'।—हुकमीचंद खिड़ियौ

सुभ्रदुति–सं.सु. [सं. शुभ्र-द्युति] इन्द्र का हाथी। (नां.मा.)

सुभ्रम–सं.पु.–पुत्र, बेटा।
उ०—१ स्रवण स्रवण कुंडळ सारीखा, आंख आंख प्रत अंजन एम। **सुभ्रम** 'सूर' तुहाळी समवड, जुडै नहीं नक वेसर जेम।
—सांइयौ झूलौ
उ०—२ बांणा पत लखण काय अजण बांणपत, सर दस लेवण कंस संगार। सांसौ भांज 'हमाऊ' **सुभ्रम**, अकबर साह कसौ अवतार।—दुरसौ आढौ
क्रि.वि.–जैसा।

सुभ्रा–सं.स्त्री. [सं. शुभ्रा] १ गङ्गा, सुरसरि।
२ वंश-लोचन।
३ स्फटिक, फिटकरी।

सुभ्रि–सं.पु. [सं. शुभ्रिः] ब्रह्मा, विरञ्चि।

सुभ्रु, सुभ्रू—देखो 'सुभ्र' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

सुमंगळ–सं.पु. [सं. सुमंगल] कुशल-क्षेम, ख़ुशहाली, ख़ुशी।
वि.–१ अत्यन्त शुभ।
२ कल्याणकारी।
उ०—सदा **सुमंगळ** हरण सकल भ्रम, ब्रहमानंद विराजै। जन हरिराम सुरति कीया वासा, अधर महल कै छाजै।
—अनुभववांणी

सुमंगळा–सं.स्त्री. [सं. सुमंगला] १ स्कन्द की एक मातृका।
२ एक अप्सरा का नाम।

सुमंगळी–सं.स्त्री. [सं. सुमगल] विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा।

सुमंत–सं.पु. [सं. सु-मित्र] १ सूर्य, भानु, रवि। (अ.मा.)
२ देखो 'सुमंत्र' (रू.भे.)
वि.–अत्यन्त बुद्धिमान।

सुमंत्र–सं.पु. [सं.] राजा दशरथ का मन्त्री सुमंत।
रू.भे.—सुमंत।

सुमंत्रक–सं.पु. [सं.] कल्कि का बड़ा भाई।

सुमंत्रसुत [सं. सुमित्रासुत] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण व शत्रुघ्न।
(अ.मा.)

सुमंदर—देखो 'समुद्र' (रू.भे.)

सुम–सं.पु. [फा.] १ घोड़े, गधे आदि पशुओं के पैरों के बिना फटे हुए खुर, टाप (पोड़)।
[सं. सुमं, सुमः] २ सुमन, पुष्प, फूल।
(डिं.को; नां.मा; ह.नां.मा.)
उ०—कमनैत तीरन तांनिकै पखरैत बेधत पांनिकै, बुध तनय हित जय प्रणय नय बय छपय रन **सुम** अलय अतिसय विसय चय भुव बलभ विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नय निलय अतिरय अजय खयकर अखय जय अय अभय सय पय हृदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।
—वं.भा.
३ चन्द्रमा।
४ कपूर।
५ आकाश।
६ देवता।
७ पण्डित।
८ देखो 'सूम' (रू.भे.)
९ देखो 'सून्य' (रू.भे.)
रू.भे.—सूंम।

सुमखारौ – सं. पु. – वह घोड़ा जिसकी एक आँख की पुतली बेकार हो गई हो ।

सुमध्य, सुमज्झ–क्रि.वि.–मध्य में, मध्य ।

उ०—अक्खी सकळ अजीत सूं, मोती बाग **सुमज्झ** । देखेवा दरगाह जग, साह दरस्सग काज ।—रा.रू.

सुमण – सं. पु – १ छप्पय छन्द का ४८वाँ भेद जिसमें २३ गुरु, १०६ लघु से १२६ वर्ण तथा १५२ मात्राएँ होती हैं । (र.ज.प्र.)

२ कौस्तुभमणि ।

उ०—त्रिगुणंतन विबुधेस विहारी, संख चक्र धारी **सुमण** । भव तारण भूधर भय भंजण, हिरणाकस्स वध ताप हरण ।—र.ज.प्र.

३ देखो 'सुमन' (रू.भे.)

उ०—वरण रंभ क्रत **सुमण** वरखण, मिटण दुख ग्रह बंधण मोखण ।—सू.प्र.

सुमत–सं.स्त्री.–१ इन्द्र की सभा । (अ.मा.)

२ देखो 'सुमति' ।

उ०—१ सरल तन सहज दन मुकत दायक **सुमत**, गज गमणी जांनकी भांम गुण ग्रांम है ।—र.ज.प्र.

उ०—२ राज भवन दससै मन राजै, छित इक छत्र करै सुख छाजै । आव **सुमत** खग सकत असांमी, सनि गुण हुवै जगत चौ सांमी ।—रा.रू.

उ०—३ जाळंधर 'अगजीत' रै, पुत्र 'अभौ' अवतार । दुरमत व्यापै दुरजणां, सयणां **सुमत** अपार ।—रा.रू.

उ०—४ ओढन लज्जा चीर धीरज कौ घाघरौ, छिमता कांकण हात **सुमत** कौ मूंदरौ ।—मीरां

सुमतरास–सं.पु.–घोड़े के नाखून या सूम काटने का औजार ।

सुमतिजय–सं.पु. [सं.] विष्णु ।

सुमति–वि. [सं.] श्रेष्ठ बुद्धि वाला, बुद्धिमान ।

उ०—स्रीपति कुण **सुमति** तुझ गुण जु नवति । तारू कवण जु समुद्र तरै ।—वेलि

सं.स्त्री.–१ श्रेष्ठ मति, अच्छी बुद्धि, सुबुद्धि, सद्बुद्धि ।

उ०—१ लाभ नहीं अहलोक, नहीं परलोकह निरभय । **सुमति** नहीं ज्यां स्यांन, खांत ज्यां नहीं पाप खय ।—र.ज.प्र.

उ०—२ विमळती वेद रघु वंचती, आणंदति हरत्ती कुमति । 'अभपती' गुणां गावण उकति, सरस्वती दीजै **सुमति** ।
— सू. प्र.

उ०—३ मन अडोळ द्रढ बोल, मेर सम तोल अमापै । अत सम्यांन ऊवरां, **सुमति** ऊंवरां समापै ।—रा.रू.

२ अच्छी भावना, सद्भावना

उ०—१ झूठा जब ही जांणीयै, करै साच कुं झूठ । जन हरीया उंन जीव कै, **सुमति** न हिरदै ऊठ ।—अनुभववांणी

उ०—२ मांहौं मांहि बातां कर हेतु युक्ति सीख **सुमति** आछी तरै वरसन देई पाछा कंटालीयै पधार जाता ।—भि.द्र.

३ कृपालुता, दयालुता, सहृदयता ।

उ०—१ पापोघ हरन अत जन चिनवत, तिन हरख करत दुख हरत हरी । सीतावर जसधर **सुमति** सदन सुभ्र, कळुख सघन वन दहन करी ।—र.ज.प्र.

उ०—२ विखै विकारी जीव कूं, **सुमति** न उपजै काय । हरीया मिनख मलीन कै, भक्ती न आवै दाय ।—अनुभववांणी

४ दया, आशीर्वाद ।

उ०—पलक एक हुई **सुमति** मति आई, मनौं कियौं पंगि लात न वाही । संतसा फेरी बात वीवांनै, बाद रूप होय बेठी पासै ।
—वि.सं.मा.

५ देवताओं का अनुग्रह ।

६ प्रार्थना ।

७ अभिलाषा, इच्छा ।

८ मैत्री, दोस्ती ।

९ सगर की भार्या जो ६० हजार पुत्रों की माता थी ।

१० कल्कि की माता और विष्णुयश की पत्नी ।

११ देखो 'सुमतिजिन' ।

रू.भे.—सुमत, सुमती, सुमत्ति, सुमत्ती ।

सुमतिजिन, सुमतिनाथ – सं. पु. – १ जैनियों के वर्तमानकाल के पाँचवें तीर्थङ्कर का नाम । (स.कु.)

२ जैनियों के भूतकाल के तेहरवें तीर्थङ्कर का नाम । (स.कु.)

रू.भे.—सुमत्ति ।

सुमती, सुमत्ति, सुमत्ती—१ देखो 'सुमति' (रू.भे.)

उ० –१ गणपति मोहि **सुमत्ति** दै, सुभ अख्यर ततसार । मौ मत सारू वरणवूं, हरि गुण ग्रंथ अपार ।—गज-उद्धार

उ०—२ जिता हितू जवनेसरा, सुज गिणि खरा **सुमत्ति** । सेर तणौ दुख संभरै, एनां सूं असपत्ति ।—रा.रू.

उ०—३ कहै तांम कमधज, सुणौ साहिब छत्रपत्ती । विध विचार धारियौ, सकौ तिण आर **सुमत्ती** ।—रा.रू.

२ देखो 'सुमतिजिन' ।

सुमत्तौ–सं.पु.–इरादा, नेक इरादा, इच्छा ।

उ०—करै कूच इतकाद, साह दरगाह सपत्तौ । गुदरायौ धर गुंझ, महासुख सुंझ **सुमत्तौ** ।—रा.रू.

सुमन–सं.पु. [सं. सुमनः] १ पुष्प, फूल । (अ.मा; नां.मा.)

उ०—१ असुर प्रळय करि जय करि आई, ब्रंदारकन ब्रिद बिरदाई । बरखिय **सुमन** घुरिय नवबत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती ।
—मे.म.

उ०—२ सुर करै हरख वरखै **सुमन**, अमर तरणि धिन उच्चरै । नर भुवण हूंत सतियां नपति, सुरपुर मारग संचरै ।—रा.रू.

२ गेहूँ । (डि.को.)

३ धतुरा ।
[सं. सुमनम्] ४ देवता । (अ.मा.)
उ०—१ मनुस्य नमैं भूपत पत मुमनां, **सुमन** नमैं मघवा ससमाथ। मघवा नमैं अनाद महेसुर, नमैं महेस तनै रघुनाथ।—र.रू.
उ०—२ मौड़ कुळमीता जुध अरिजीता, लख जम लीता अवन अखै। अत दाम उधारै सरण-सधारै, रांमण मारै **सुमन** सखै।
—र.ज.प्र.
५ पण्डित या विद्वान् व्यक्ति ।
६ मित्र, दोस्त । (डि.को.)
[सं. शमनः] ७ यमराज। (नां.मा.)
८ एक दानव ।
वि. [सं. सुमनस्] १ दयालु, कृपालु ।
२ अच्छे मन वाला, सहृदय, भावुक ।
उ०—आपी खबर अजीत नूं, जासूसां जिणवार। सूरातन रत्ता **सुमन**, आया जवन अपार।—रा.रू.
[सं. सुमन] ३ सुन्दर, खूबसूरत ।
४ देखो 'समन' (रू.भे.)
रू.भे.—समण, सुमन्न ।

सुमनचाप-सं.पु. [सं.] १ फूलों का धनुष ।
२ उक्त धनुष को धारण करने वाला, कामदेव ।

सुमनस-सं.पु. [सं. सुमनस्] १ गेहूँ।
२ नीम का पेड़।
३ देवता । (डि.को; नां.मा; ह.नां.मा.)
उ०—सेवै पुरुख सुपह पह **सुमनस**, सुमनस सेवै सुरप सुबेस।
—र.रू.
४ पण्डितजन ।
५ कवि ।
६ वेदपाठी, ब्रह्मचारी ।
७ फूल, पुष्प । (अ.मा; डि.को; ह.नां.मा.)
उ०—पर भाग रंग म्रिदंग गूंजइ, सरव ताल विमाल ए। समकित तंत्री तंत भणकइ, सुमति **सुमनस** माल ए।—वि.कु.
८ अच्छा या शुद्ध मन ।

सुमनरस-सं.पु.-फूलों का रस, पराग ।

सुमनसधुज-सं.पु. [सं. सुमनस्+ध्वज] कामदेव । (डि.को.)

सुमना-सं.स्त्री. [सं.] १ चमेली, जाती पुष्प ।
२ सेवती, शतपत्री ।
३ कैकयी का एक नाम ।
४ पुष्प, फूल । (नां.मा.)
५ मालती, मधुमयी । (अ.मा.)
वि.-प्रसन्न, खुश ।
उ०—ताहरां आगै लोक सरब एकठा हुवा छै। वसी गाडा एकठा कर रिणमलजी ढूंढाड़नूं लै हालिया। रजपूत सारा **सुमना** किया। जेठी घोड़ौ सिखरै नूं दियौ।—नैणसी

सुमनौकस-सं.पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

सुमन्न—देखो 'सुमन' (रू.भे.)
उ०—रिस्ट रतन सगवीसै मुनिपदै, सतसठि एकावन्न। सित्तरनै पंचास उलास सुं, मुगता सेस **सुमन्न**।—स्त्रीपालरास

सुमफटौ – सं.पु. – घोड़ों का एक रोग जो उनके खुर के ऊपरी भाग से तलुवे तक होता है। (शा.हो.)

सुमरण—देखो 'स्मरण' (रू.भे.)
उ०—१ दिन दिन प्रीत सवाई दूणी, सुमरण आठौं यांम। मीरां कै प्रभू गिरधर नागर, चरण कमळ बिसरांम।—मीरां
उ०—२ रांम नांम कौ चुड़लौ पहरौं, **सुमरण** काजळ सार। माळा ल्यौ हरिनांव की, उतरि चलौ पैली पार।—मीरां

सुमरणी – सं.स्त्री. – १ नाम जपने की माला, इसमें प्रायः १०८ मणियें होते हैं।
उ०—१ मैं जपती नांव मेरै सायब का, आंण मिळौ नंदलाला रे। हाथ **सुमरणी** कांख कूबड़ी, ओढ रही मृगछाळा रे।—मीरां
उ०—२ इतरा मैं उण तरवार बाही सौ माथै ऊपर पड़ी। पाघ रा पेच वढ **सुमरणी** जै वाढी।—पदमसिंघजी री वात
२ सत्ताईस दानों (मणिकों) की नाम जपने की छोटी माला।
रू.भे.—सुमरिणी, सुमरिनी, सुमिरणी।

सुमरणौ, सुमरबौ-क्रि.स. [सं. स्मरणम्] १ ईश्वर या अपने ईष्टदेव के नाम का बार-बार उच्चारण करना, नाम जपना, माला जपना, भजन करना।
उ०—मनुआ बावा रै **सुमर** लै सीतारांम। बडै बडै भूपति सुल्तांन, उनकै डेरै भये मैदांन। - मीरां
२ किसी कार्य के प्रारम्भ में या यात्रा के प्रारम्भ में अपने ईष्टदेव का ध्यान करना, याद करना, स्मरण करना।
उ०—१ प्रथम **सुमर** इण विध परमेस्वर, पूरण ब्रह्म प्रताप अपंपर। —रा.रू.
उ० – २ सौ भवांनी नैं **सुमर**, लै खांडा हाथ मैं अर मांमौ भांणेज जोधांण रा किला कांनी रवांनै व्हिया।—अमरचूनड़ी
उ०—३ सस्त्र बांध हरि, **सुमर** देह धर प्रीत अदावै। समै तेण साहंस, जेण मापियौ न जावै।—रा.रू.
३ पूर्व की कोई बात या घटना याद करना।
उ०—अकथ कहांणी प्रेम की, किण सूं कही न जाइ। गूंगा का सपना भया, **सुमर** सुमर पिछताइ।—ढो.मा.
४ भूली हुई बात को याद करने का प्रयास करना, सोचना, विचारना।
सुमरणहार, हारौ (हारी), सुमरणियौ—वि०।
सुमरिओड़ौ, सुमरियोड़ौ, सुमरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुमरीजणौ, सुमरीजबौ—कर्म वा० ।
सुमिरणौ, सुमिरबौ—रू०भे० ।
सुमरन—देखो 'स्मरण' (रू.भे.)
उ०—दोऊ दयन महादुख दीनौं, कमळयोनि तब **सुमरन** कीन्हौ ।
—मे.म.
सुमरिणी, सुमरिनी—देखो 'सुमरणी' (रू.भे.)
उ०—अनंत घणी कै सरणै आई, हाथ **सुमरिणी** धारी । जोग लियौ जब बाद तजी री, गुर पाया निज भारी ।—मीरां
सुमरियोड़ौ—भू.का.कृ.—१ ईश्वर या अपने ईष्टदेव के नाम का बार-बार उच्चारण किया हुआ, नाम जपा हुआ, माला जपा हुआ, भजन किया हुआ । २ किसी कार्य या यात्रा के प्रारम्भ में अपने ईष्टदेव का ध्यान किया हुआ, याद किया हुआ, स्मरण किया हुआ । ३ पूर्व की कोई बात या घटना को याद किया हुआ । ४ भूली हुई बात को याद करने का प्रयास किया हुआ, सोचा हुआ, विचारा हुआ ।
(स्त्री. सुमरियोड़ी)
सुमसायक—सं.पु. [सं. सुमन+सायक] रति-पति, कामदेव । (डिं.को.)
सुमसुखड़ौ—सं.पु.—१ वह घोड़ा जिसके सुम सूखकर सिकुड़ गये हों ।
२ उक्त प्रकार का घोड़ों का एक रोग । (शा.हो.)
सुमांण, सुमांणस—सं.पु. [सं. सु+मानस] भला एवं सज्जन पुरुष ।
उ०—१ गलि अमलदार तिरणूं गिणैं, मरणूं डूबि **सुमांणसां** । खळ भाति सिरड़ि मन मैं खिटै, सिटै न टिरड़ि कुमांणसां ।
—ऊ.का.
उ०—२ राजा मित्र म जाणौ रंग, **सुमांणस** रौ करिजै संग । काया रखत तपस्या कीजै, दांन वलै धन मारु दीजै ।—ध.व.ग्रं.
सुमांनी—वि. [सं. सुमानिन्] स्वाभिमानी ।
सुमाग—देखो 'सुमारग' (रू.भे.)
उ०—चित **सुमाग** खरचियौं, चित्त लीणौं हर पाए । जिसौ वेद वाचियौ, तिसी परसिद्धी पाए ।—नैणसी
सुमात—सं.स्त्री.—श्रेष्ठ माता, पार्वती । (अ.मा.)
सुमात्रा—सं.पु.—बोर्निया के पश्चिम और जावा के उत्तर-पश्चिम में स्थित इण्डोनेशिया द्वीप-समूहों में से एक द्वीप ।
सुमाद्रेय—सं.पु. [सं. माद्रेय] पाण्डु-पुत्र नकुल व सहदेव का एक नामांतर जो उनकी माता माद्री के नाम के आधार पर हुआ ।
सुमार—सं.पु. [फा. शुमार] १ गणना, गिनती, संख्या ।
उ०—१ करै **सुमार** भलाई कितरां, जेट तुमार जमाडी । और खुमार चढी नहीं अंतर, एक दुमार अगाडी ।—ऊ.का.
उ०—२ खिजायौ त्रिनेण प्रळै काळ रौ रिमां घू खंगै, पांखियौ नागेंद्र फतै पाव रौ प्रभाव । लेवाळ अंत रौ गजां धाव रौ **सुमार** लागै, सेल मारु राव रौ क्रतांत रौ सुजाव ।
—राजा बळवंतसिंघ रै भाला रौ गीत
२ लेखा-जोखा, हिसाब-किताब, नाप-तोल ।
३ सीमा, हद, पार, पारावार ।
उ०—१ साह रै धन घणौ । विणज रौ **सुमार** नहीं । जहाज हालै ।—पलक दरियाव री वात
उ०—२ जैपुर नें वगरू कै खेत खूब आया, कूरम की सेनि का **सुमार** हू न पाया ।—शि.वं.
४ अदद, नग ।
५ चोट, प्रहार ।
उ०—केइकां रै **सुमार** लागी छै । जिकां मैं बोलण री तौ बकाय रही नहीं पण मूछां हाथ फेर फेर माथियां नूं कोट मैं पड़ण री सैन करै छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
५ नाश, संहार, ध्वंस ।
सुमारग—सं.पु. [सं. सु-मार्ग] श्रेष्ठ व उत्तम मार्ग, सन्मार्ग ।
उ०—कुण अमली कुण कमसली, नास पटंतर एह । कमसल चलै कुमारगी, अमलि **सुमारग** लेह ।—अनुभववांणी
रू.भे.—सुमाग ।
सुमारणौ, सुमारबौ—क्रि.स.—१ गणना या गिनती करना, गिनना ।
२ लेखा-जोखा करना, हिसाब करना ।
३ वर्गीकरण करना, श्रेणी बनाना ।
४ सीमा या हद निर्धारित करना ।
५ चोट या प्रहार करना ।
सुमारणहार, हारौ (हारी), सुमारणियौ—वि० ।
सुमारियोड़ौ—भू०का०कृ० ।
सुमारीजणौ, सुमारीजबौ—कर्म वा० ।
सुमाळी, सुमाली—सं.पु. [सं. अंशुमाली] १ सूर्य, रवि ।
(अ.मा; नां.मा.)
[सं. सुमाली] २ एक राक्षस जो सुकेश राक्षस का पुत्र तथा रावण का नाना था ।
३ एक वानर का नाम ।
सुमित, सुमित्र—देखो 'सुमित्र' (रू.भे.)
सुमिट्ठउ—वि. [सं. सुमिष्टम्] मधुर ।
उ०—साह आलिम एक वयण, विप्र उच्चरइ **सुमिट्ठउ** । लोयण तै हेतम कीय, जेणि परि रमणि मुह दिट्ठउ ।—प.च.चौ.
सुमिणइ, सुमिणौ—सं.पु. [सं. स्वप्न, प्रा. सुमिण, सुविण] स्वप्न, सपना ।
उ०—१ रोपीउ पवणिहि कलपतरौ **सुमिणइ** कुतिहूयारि, पवणह नंदण वज्जमओ भीमसु भूयण मझारि ।—सालिभद्र सूरि
उ०—२ धनुखु चडावीउ भूयणि भमउं इच्छा छइ मन माहि । वइठउ दीठउ हाथिणीयं सुरवइ **सुमिणा** माहि ।—सालिभद्र सूरि
सुमितरा—देखो 'सुमित्रा' (रू.भे.)
उ०—**सुमितरा**, कौसल्या दुरगा, विद्वतमा वर केकयी । गौरव गाथा घणा नमूना, मदालसा अर मैत्रयी ।—नारी सईकड़ौ

सुमित्त—देखो 'सुमित्र' (रू.भे.)

सुमित्ति—१ देखो 'सुमतिजिन'।

२ देखो 'सुमति' (रू.भे.)

सुमित्र—सं.पु. [सं.] १ श्रेष्ठ व अच्छा मित्र।

उ०—चरित्र मैं विचित्र ज्यूं, पवित्र मैं पवित्र जै। अमित्र कै अमित्र त्यूं, सुमित्र कै **सुमित्र** जै। —ऊ.का.

२ श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

३ अभिमन्यु के सारथि का नाम।

४ इक्ष्वाकुवंशीय राजा सुरथ का पुत्र।

उ०—सुतरा सुरथ नृप **सुमित्र** सरूपति, तरणी हवौ राज तजि भूपति। —सू.प्र.

५ विक्रमादित्य के समसामयिक सौराष्ट्र के अन्तिम राजा का नाम। (कर्नल टॉड)

६ देखो 'सुमित्रा' (रू.भे.)

उ०—उदर **सुमित्र** लछमण जीपण अरि, धरै सेस अवतार धरंधर। —र.रू.

रू.भे.—सुमित, सुमित्र, सुमित्त।

सुमित्रा—सं.स्त्री. [सं.] १ मगध देशाधिपति सूर राजा की कन्या, जो इक्ष्वाकुवंशीय राजा दशरथ की तीन पत्नियों में से एक थी। लक्ष्मण और शत्रुघ्न इसके पुत्र थे।

उ०—निज कौसल्य केकइ **सुमित्रा** नांम, वरियांम त्रण अति हित वांम। —सू.प्र.

२ श्रीकृष्ण की एक रानी।

३ मार्कण्डेय ऋषि की माता।

रू.भे.—सुमितरा, सुमित्र।

सुमित्रानंदन—सं.पु. [सं.] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न।

सुमित्रासुत, सुमित्रासुतन—सं.पु. [सं. सुमित्रासुत] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न।

सुमियांणौ—सं.पु.—मारवाड़ राज्यान्तर्गत सिवाना नामक कस्बे का गढ़ या किला।

सुमिरण—देखो 'स्मरण' (रू.भे.)

उ०—१ राजा विक्रमादित्य आगिया वैताल री **सुमिरण** कियौ। —पंचदंडी री वारता

उ०—२ ज्वांन अवस्था जौर बहौत, विण जारिया सकैतौ जोर निवारि वै। हरि **सुमिरण** हिरदै धरौ, विण जारिया चालौ देखि विचारि वै। —ह.पु.वा.

उ०—३ तन सौं **सुमिरण** सब करैं, आतम **सुमिरण** एक। आतम आगै एक रस, दादू बडा विवेक। —दादूबांणी

सुमिरणी—देखो 'सुमरणी' (रू.भे.)

उ०—हाथ मैं मोटै मोटै मिणियां री **सुमिरणी** थी। —पदमसिंहजी री बात

सुमिरणौ, सुमिरबौ—देखो 'सुमरणौ, सुमरबौ' (रू.भे.)

उ०—१ समरणां करै तो रांम रत, आंगण लगै न अंग। जै सुख चाहै जीव रो, **सुमिर** सांमरा संग। —ह.र.

उ०—२ अपनी आंगौ आप गति, और न आंगौ कोइ। **सुमिर** सुमिर रस पीजियै, दादू आनंद होइ। —दादूवांणी

सुमिरन—देखो 'स्मरण' (रू.भे.)

उ०—थोड़ा धीरज रखो भगत, संसार असार है अर सुख-दुख का जोड़ा है। साधु संत की सोहब्बत तकदीर वालै को मिलती है। सो मालिक का **सुमिरन** करो और प्रेम सै सीधै गडै रहो बेटां। —अमरचूंनड़ी

सुमुख—सं.पु. [सं. सुमुख] १ गणेश, गजानन।

उ० सुकवि **सुमुख** पग नाय सिर, तिण सिर आंण उल्लास। कुकवि कलीसौ गंथ कवि, दासौ बांकीदास। —बां.दा.

२ शिव, महादेव।

३ गरुड़।

४ पंडित जन।

[सं. सुमुखं] ५ नाखून की खरोंच।

वि. [सं. सुमुख] (स्त्री. सुमुखा, सुमुखी) १ मनोहर, सुंदर।

२ आनन्दकर, सुखप्रद।

३ आतुर, उत्सुक।

४ सुंदर मुख वाला।

सुमुखा, सुमुखी—वि.स्त्री. [सं.] सुन्दर मुख वाली, सुन्दरी।

सं.स्त्री.—१ सुन्दर स्त्री।

२ एक अप्सरा।

३ संगीत में एक मूर्छना।

सुमुखौ—वि. [सं. सुमुख] (स्त्री. सुमुखी) सुन्दर मुख वाला।

सं.पु.—आइना, कांच, शीशा।

सुमेधा—सं.पु. [सं. सुमेधस्] १ पितरों का एक गण या भेद।

सं.स्त्री.—२ मालकांगनी।

सुमेर, सुमेरगिर, सुमेरु, सुमेरू—सं.पु. [सं. सुमेरु] १ पुराणानुसार एक पर्वत जो स्वर्ण का कहा गया है। (अ.मा.; नां.मा.)

उ०—१ देतौ अडब पसाव दत, वीर गौड़ बछराज। गढ अजमेर **सुमेर** सूं, ऊंचौ दीसौ आज। —बां.दा.

उ०—२ हिंदू मुसलमांन सलांम कर ठाढै, एक तें एक **सुमेर** सै गाढै। —रा.रू.

उ०—३ देवी रथ्थ रेवंत सारंग राजै, देवी विमांणां पाल्खी पीठ भ्राजै। देवी प्रेत आरुढ पद्मं, देवी सागरं **सुमेरु** गूढ सद्मं। —देवि.

पर्याय.—अचल, आरकगिर, कंचनगिर, कांचनअचळ, गरमेर, गिरपति, देवगर, पंचरूपी, माहव, रतनसांन, सबळ, सुथांनिक, सुरगिर, हेमगिर।

२ माला के सिरे पर रहने वाला बड़ा मनका।

३ शिवजी का नाम ।

रू.भे.–मेर, मेरु, समेर, सूंमेर ।

सुमोज–सं.पु.–उत्सर्ग, दान । (डिं.को.)

सुमोद–सं.पु. [सं. सु+मोदः] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी ।

सुमौरत–सं.पु. [सं. सु+मुहूर्त्त] श्रेष्ठ व उत्तम मुहूर्त्त ।

उ०—ज्यांरा सोवन थाळ भलांई वजिया, 'पातल' जनम पखैत **सुमौरत** सजिया ।—किसोरदांन बारहट

सुयं—देखो 'स्वयं' (रू.भे.)

उ०—**सुयं** विष्णु रुघवंसी राजा, वरण आस्रम ध्रम बांधी पाजा । —वि.सं.सा.

सुयंबर, सुयंवर –देखो 'स्वयंवर' (रू.भे.) (डिं.को.)

सुय–सं.पु. [सं. सूत्र] १ जिनेन्द्र की वाणी या सूत्र ।

२ देखो 'स्रुत' (रू भे.) (जैन)

सुयकरण–सं.पु. [सं. श्रुतकरण] व्याकरण, दूसरी कलाओं आदि का ज्ञान रूप, अवस्था विशेष । (जैन)

सुयक्खंध, सुयखंध–सं.पु. [सं. श्रुति-स्कद] वेदों का एक विभाग ।

उ०—१ **सुयक्खंध** अध्ययन उद्देसादिक भला हौ लाल,संख्यायइं एक एक प्रत्येकइ गुण निला हौ लाल ।—वि.कु.

उ० – २ एक **सुयखंध** इणि अंग नउजी, वरग छइ आठ अभिरांम । आठ उद्देसा छइ वलीजी, सख्याता सहस पद ठांम ।—वि.कु.

सुयगडांग–स.पु –'कृताङ्ग' नामक सूत्र । (जैन)

उ०—स्री आचारांग पहिलौ अग, सहस अढी ए सूत्र सुचंग । **सुयगडांग** बीजौ स्रीकार (सुविचार), सख्या इकवीससै सुविचार । —ध.व.ग्रं.

सुयण –देखो 'सैण' (रू.भे.)

उ०—१ **सुयण** लाखौ सदा सालिम, जगत जांणै वडौ जालिम । लहण भेदां गुणां लाइक, निवड दाता नरां नाइक ।—ल.पि.

उ०—२ सिंघ भूंझार नरसिंघ रा सींधळी, सूरवट **सुयण** वट भुजै सोहै ।—जूंझारसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—३ दैवु न गिणाई दैवु, न गिणाई पुण्यु नइ पावु । संतापु **सुयण**-ह करई, पुण्यहीन जिम राय रोलई ।—सालिभद्र सूरि

सुयस–सं.पु. [सं. सुयश] कीर्ति, यश, बड़ाई, तारीफ़, सुख्याति ।

उ०—नाग देव नर तोहि मनावत,- पढि पढि **सुयस** पार नहीं पावत । गावत निगम अगम तव गत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती ।—मे.म.

सुयसा–सं.स्त्री. [सं. सुयशा] १ परीक्षित की एक पत्नी ।

२ एक अप्सरा ।

३ दिवोदास की पत्नी व काशीराज भीमरथ की पुत्र-वधु ।

सुयांण—देखो 'सुजांण' (रू.भे.)

उ०—प्रोहित तांम परिछवै, सुणि दसरथ **सुयांण** ।—रांमरासौ

सुयुद्ध–सं.पु. [सं.] न्याय-सम्मत-युद्ध, धर्म-युद्ध ।

सुयोग – सं. पु. [सं.] १ अच्छा योग, शुभ संयोग, शुभ अवसर या मौक़ा ।

२ देखो 'सुयोग्य' (रू.भे.)

सुयोगता–सं.स्त्री. [सं. सु-योग्यता] योग्यता, सुयोग्यता ।

उ०—अयोग कौ **सुयोगता**, दई प्रयोग दौ नहीं । लबार कै पुकार की, लगारसी रलौ नहीं ।—ऊ.का.

सुयोग्य–सं.पु. [सं.] बहुत योग्य, क़ाबिल, लायक ।

रू.भे.—सुजोग, सुयोग ।

सुयोधन, सुयोधनि–सं.पु. [सं. सुयोधनः] दुर्योधन का एक नामान्तर ।

उ०—१ एहिज परिथई भीरि कजि आयां, धनंजय अनै **सुयोधन** । —वेलि

उ०—२ मरचौ **सुयोधन** गौ भक मारत, आर्य्यवरत्त कौ करगौ आरत ।—ऊ.का.

उ०—३ एहु तु पुरोचन नांमि, पुरोहितु दुरयोधनह । तुम्हि वीनविया सांमि, राय **सुयोधनि** पय नमीय ।—सालिभद्र सूरि

सुयौ—१ देखो 'सुवौ' (रू.भे.)

उ०—ढोलइ चलतां परिठव्यउ, अगणि मोजां सह्ल । ढोलउ गयउ न वाहुड़इ, **सुआ** मनावण चह्ल ।—ढो.मा.

२ देखो 'सूवौ' (रू.भे.)

सुरं—१ देखो 'स्वर' (रू.भे.)

२ देखो 'सुर' (रू.भे.)

सुरंग–सं.स्त्री. [सं.] १ किसी मकान, किले या गढ़ के अन्दर से या किसी दीवार के अन्दर से जमीन के नीचे-नीचे बनाया हुआ तंग रास्ता जो आपात्-स्थिति में गुप्त रूप से भाग कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के काम आता है, गुप्त मार्ग, चोर-रास्ता ।

उ०—सगरिहिं खणीय **सुरंग** विदुरि दिवारीय दूर लगइ, हुं ऊगारउ अंग ईण ऊपाइं पंडवह ।—सालिभद्र सूरि

२ किले की दीवार को उड़ाने के लिए बनाया जाने वाला बड़ा गड्ढा या छेद जिसमें बारूद भर कर पलीता लगाया जाता है ।

उ०—१ नीसरणी लागै नहीं, लागै नहीं **सुरंग** । लड़ नहिं लीधां जाय औ, दीधौ जाय दुरंग ।—बां.दा.

उ०—२ गढ नै घणौ ही खसीया वार दोय **सुरंग** लगाई सु दखल गढ नु पोहोतौ, पिण गढ नहीं आयौ ।—नैणसी

३ चोरी करने के लिए मकान की दीवार में किया जाने वाला बड़ा छेद, सेंध ।

४ खान (पहाड़) से पत्थर निकालने के लिए विस्फोट करने बाबत किया जाने वाला छोटा गड्ढा जिसमें बारूद भर कर धमाका किया जाता है ।

उ०—ओदी उधरै मिनख, खोदवै ख्यारां भारी । कोलै कंवळी रेत, खांणरी **सुरंगां** सारी ।—दसदेव

५ पहाड़ की गुफ़ा, गिरि-कन्दरा ।

उ० सुरंगां चर्गे हाथ हूं हाथ गाहै, महा हेमरा थांम आरांम माहै।
—सू.प्र.

६ रेल आदि के लिए पहाड़ को फोड़कर बनाया हुआ रास्ता।

सं.पु.—७ अच्छा रंग, अच्छा वर्ण।

उ० भरिया रंग सुरंग भादरवड़, लंबीया ताड़ अवर लगम। अहर डसण ओपिया अनोपम, रसण जुड़ीया तंबोळ रंग।
—महादेव पारवती री वेलि

८ सूर्य के रथ का सारथी, अरुण।

उ० —अंतरीख मग उरग चंचळ, सातहमुख चालै। सुरंग पंग सारथी, हेक चक्रह रथ हालै।—सू.प्र.

९ (लाल) रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—१ मांनी सुरंग अमोल, नगी अवलंग फुरागी। रंग अजान हगरंग, हरी सुनहरी हजारी।—सू.प्र.

उ०—२ मोटिया केहरू पीळा पमंग, मांन रै कहल घुमर सुरंग। अग थाग वेग किई भंवर अंग, रेसमी पांन किरमजी रंग। —रा.रू.

१० घोड़ा, अश्व। (ना.डि.को.)

उ०—अमावल सूर 'सुभै' अजरंग, मनौ जुध जीत गरक्क सुरंग।
—सू.प्र.

११ प्रत्येक चरण में २८ मात्राओं का एक छन्द विशेष।

उ०—दाखां मात अठार दस, एक चरण री अंग। अनवां आगी वीरवर, सभरां छंद सुरंग।—र.जि.

१२ आनन्द, सुख।

उ०—निरधारखा नैं थे आधार, भवसायर उतारै पार। आरती यांनी आरत भंग, धरै ध्यांन नै लहै सुरंग।—वृ.स्त.

वि. (स्त्री. सुरंगी) १ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—वळती मारवणी कहइ, मारू देस सुरंग। बीजा तठ सगळा भला, माळव देस विरंग।—ढो.मा.

२ अच्छा, बढ़िया।

उ०—१ लाग सुरंग आल काढवै, नागी खांग विरंगी दहन री। उर जेम अरी ग कागी उरड़, ऊनी तेग अगन्न री।— रा.रू.

उ०—२ तन ऊजमणी रजनापालवणीं, सांवन पूनमी नंग। मोदक थाल देहरै मूंकी, जिनवर स्नात्र सुरंग।—वृ.स्त.

३ सुन्दर, सुडौल।

उ०—१ जिण मुखि नागरबेलड़ी, करहउ गहं सुरंग। मांगळीर बाड़ी चरइ, पांगी पीवइ गंग।—ढो.मा.

उ०—२ रजंग रूप अंग सुरंग चतुरंग, सीन संग करि खतंग सारंग।—सू.प्र.

४ अच्छे रंग का, सुन्दर रंग का।

५ जोशपूर्ण, जोशीला।

उ०—तेरैई साख कमंध मिळ, मुख सौनंग 'दुरंग'। मीर कमंधां धीर मिळ, थया सधीर सुरंग।—रा.रू.

६ रक्ताभ, लाल।

उ०—१ निज राग भळक जीण फानूसां, सुरंग जरी पोसाख भळसा।— सू.प्र.

उ०—२ केही भुप सायोगर कांपोर, जड़ सागा मह जीण जुबा। सामळ सुरंग हुई भगती रत, रागी भाभर सुरंग हुवा।
—द.दा.

उ०— ३ बाहां बाधै राळवड़, विगर सनाहां अंग। बागा केसर भारिया, हयगा सोगा सुरंग।—रा.रू.

६ सुन्दर, सुहावना।

उ०— १ सभा पोसाक सुरंग दळ साजा, राज परगा आए चंद राजा।— सू.प्र.

उ०— २ जगै मजारूह प्रासार सिर अरस, ओन मलाग आगरा। सुरंग होदा रै बरब्बर कळसी, ढलिया रा नूरस ढलियां।—स.भा.

७ स्वच्छ, साफ।

८ अनूठा, ओजवाला।

९ शुभ।

उ०—सुरंग मरम्म सुभ पाळी, दळ प्रमधा 'अजमाल'। आगम दरसण आविया, हाथी दुरंगा साळ।— रा.रू.

१० मधुर, मीठा।

सुरंगड़, सुरंगई, सुरंगउ, सुरंगलौ—देखो 'सुरंगो' (रू.भे.)

उ०—१ बाबीहगउ पिउ पिउ करइ, कोयल सुरंगइ साद। प्रिय बिण कवि आळिग रहां, ताह स विरह सवाद।—ढो.मा.

उ०— २ देस सुरंगउ भुइ निजळ, न दिया दोस भळांह। घरी घरी नद-वरखियां, नीर सबड़ कमाळांह।— ढो.मा.

उ०—३ गावणियां सुरंगली रे लाल, आयां नीरा कन्हैयालाल पावणा।— लो.गी.

सुरंगियौ- देखो 'सुरंगौ' (अल्पा; रू.भे)

सुरंगी—वि.स्त्री.—१ हरी-भरी, प्रकृति-सौन्दर्य से भरपूर, आनन्दमय।

उ०— १ आगा रे तीज सुरंगी होसी, म्हारै भर रहसी रंग काची।
—लो.गी.

उ०—२ माल मता अर जगां मेडा रे पगां, सदा सुरंगी रैती आई ही।—अमदीप

२ हरी-भरी।

उ०—१ उण बगत वौ किरसी तौ खीकलोर सूं घाटी री फटकारी देतौ अर अेकरा दौड़ बैठौ ई निज मंडोवर री सुरंगी बाड़ी वर जातौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ देखि सुरंगी आलि, जांणूं जाइ बिलगूं असा। आस करूं हूं आलि, करम बिना मिलबौ किसौ।—जसराज

३ सुन्दर, आकर्षक।

उ०—१ मारवणी सिणगार करि, मंदिर कूं मल्हपंति। सखी सुरंगी साथ करि, गयंगयणी गय गंति।—ढो.मा.

उ०—२ सदा **सुरंगी** कामणी, वरसां सदा जवार। जुग जुगंतर जावतां, कुंवरां वरस अठार।—वि.सं.सा.

४ आरामदायक, सुखदायक।

उ०—इसड़ौ वधावौ म्हांरी सेजा मैं राखां, सेज **सुरंगी** ढोल्यौ नित नवौ।—लो.गी.

५ अच्छे रंग वाली, सुन्दर रंग की।

उ०—१ पेच **सुरंगी** पाग रा, ढांकै मत धर ढाल। काछी चढ आछी कहूं, हुंजा भीजण हाल।—बां.दा.

उ०—२ हालतां हालतां मारग मैं मोची री हाट आई। चौबा री **सुरंगी** मोचड़ियां देखी तौ बादळ रौ मन डुळियौ।—फुलवाड़ी

६ देखो 'सुरगौ' (रू.भे.)

सुरंगीयौ—देखो 'सुरंगौ' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—भूलूं नह कुळवाट सुभाए, असी **सुरंगीयै** खग आए।
—सू.प्र.

सुरंगौ—वि. [सं. सुरंग] (स्त्री. सुरंगी) १ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ छत्रा रूप छवि परख, सरब चख वदन **सुरंगै**। यौं लग्गै रसरूप, आखिर किर कागद अग्गै।—रा.रू.

उ०—२ टूंच अर पंजां मैं रंग भर-भरनै चित्रांम मांडणा चालू करचा, सौ छात, आंगणौ, छाजा, मोड़ा अर गुमटियां माथै सगळै **सुरंगा** मांडणा मांड दिया।—फुलवाड़ी

उ०—३ उर धण हुळसण हरख मन, रीझण खीजण रूप। लाज **सुरंगा** लोयणां, राजै अंग अनूप।—अग्यात

२ आनन्दमय, सुखमय।

उ०—१ नरपति आयौ 'जैनगर', निज उर हरख निवास। सुपह **सुरंगौ** सामरै, लग्गौ सांवण मास।—रा.रू.

उ०—२ वा डुसकिया भर-भर नै रोवण लागी। आंख्यां रै डोळां मैं कुरचोड़ा **सुरंगा** सपना खारौ पांणी बणनै ढळग्या। पण मासी री आंख्यां मैं बस्योड़ा सोनळ सपना हाल मगसा नीं पड़्या।
—फुलवाड़ी

३ उत्साह, जोश व उमङ्ग से पूर्ण, उत्साह-युक्त।

उ०—धन्य कह्यौ सब ऊमरां, साहस देख प्रचंड। हुवा **सुरंगा** बांण सुण, भुज लागा ब्रहमंड।—रा.रू.

४ रक्ताभ, लाल।

उ०—१ वसुधा स्रोण **सुरंगी** तुरियां, धमळ विथुरी रैणा। आदू चपळ सहावौ हुइ. रत्ती हुइ अग्गरतह।—गु.रू.बं.

उ०—२ कळ रोद्रां बळ दाख कमंधां, कीधा खग्ग **सुरंगा** कंधां।
—रा.रू.

उ०—३ भिड़ै रत्थ चांचा नखां भांजि भारौ, **सुरंगौ** कियौ रांग रौ गात सारौ।—सू.प्र.

५ अच्छे रंगों का सुन्दर रंगों का।

उ०—१ पकवांनै पांनै फळै सुपुहपै, **सुरंगै** वसत्रै दरब सब। पूजियै कसटि भंगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रब।
—वेलि

उ०—२ नाभी गुलाब रा फूल ज्युं दरसी, रति जांणौ अनंग री निजर करसी। **सुरंगा** चीर मै चूड़ौ झमकै छै। जांणौ झीणा बादल मैं वीजळी चमकै छै।—पनां

६ प्रफुल्लित, प्रसन्न।

उ०—काया झबकइ कनक जिम, सुंदर केहै सुक्ख। तेह **सुरंगा** किम हुवइ, जिण वेहा बहु दुक्ख।—ढो.मा.

७ शुभ।

उ०—कर क्रपांण मोरत किसूं, आखै सूर अबीह। रण मर स्वरग सिधावणौ, सुतौ **सुरंगौ** दीह।—बां.दा.

८ श्रेष्ठ, उत्तम।

९ अच्छा, बढ़िया।

उ०—चोखौ केलू हेरै तौ ध्यांन तौ **सुरंगै** रंग रौ इज ठहरचौ—इम कहिनै समझायां समझ गया।—भि.द्र.

१० स्वच्छ, साफ।

११ मधुर, प्रिय।

१२ रसिक।

१३ सुशोभित।

उ०—१ धाट **सुरंगौ** गोरियां, आदू कहवत एह। पदमणियां हमरोट व्है, राख म संसौ रेह।—बां.दा.

उ०—२ इसड़ौ वधावौ म्हारै घूंघट पर राखां, घूंघट **सुरंगौ** चूनड़ नित नवी।—लो.गी.

१४ हरा-भरा।

रू.भे.—सरंगौ, सुरंगइ, सुरंगई, सुरंगउ सुरंगलौ।

अल्पा;—सुरंगियौ, सुरंगीयौ।

सुरंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू.भे.)

उ०—१ महा मदंध आसुरां, **सुरंद** चाउ मारणा। त्रिलोक नाथ गोह, ग्राह ग्रीध आद तारणा।—र.ज.प्र.

उ०—२ हीरां कौ रूप देख, **सुरंद** मन मैं जांणै छै। धन्य छै ऊ पुरुस (जु) इं नारिनै महल मैं मांणै छै।
—बगसीरांम प्रोहित री बात

सुरंपत, सुरंपति—देखो 'सुरपति' (रू.भे.)

उ०—रावळ बापा जसौ रायगुर, रीझ खीज **सुरंपत** री रूंस।
—वारूजी सोदौ

सुरंभ—देखो 'सौरभ' (रू.भे.)

उ०— वाजै सीतल वाय रै र०, लहरी आवै रै **सुरंभ** तणी घणी रै। कहतां न वणै काय रै र०, सबली रे सोभा वन मांहै वणी रे।
—वि.कु.

सुरंभी—देखो 'सुरभि' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

सुर—सं.पु [सं.] १ देवता, देवगण।

उ०—१ सखी अमीणा कंथ री, पूरी एह प्रतीत। कै जासी सुर अंगड़ै, कै आसी रण जीत।—बां.दा.

उ०—२ सिव संभव सिव रूप सुरेसर, सिव गुण दियण प्रगांग कथै सुर।—रा.रू.

२ ऋषि, मुनि, महात्मा।

३ सूर्य, रवि।

४ आकाश।

५ विद्वद्जन, पंडित।

६ हिन्दू, आर्य।

उ०—१ हट छोड़ौ हर मत करौ हूरां, नर हिंदू लै तुरक नहीं। वांमीबध केसरी वाणौ, सुर सींहड़ राठौड़ सही।

—हठीसिंह जीधा री गीत

उ०—२ लड़थड़ै पड़ै की धर लड़ै, एम असुर सुर आथड़ै।

—सू.प्र.

उ०—३ आराध साथ बहु सुर असुर, फबै गजां मज फरहरां। आगरा हूंत चढ़ियौ 'जसौ', कीधां विकटां नराकरां।—सू.प्र.

उ०—४ राठौड़ मौड़ हिंदुवांण सिरि, महा दुग्ग गढ जोधपुर। गजसिंध कुवर अप सूरसिंघ, सहुवै पंदै सुर असुर।—गु.रू.बं.

७ परमार राजपूतों की एक शाखा। (बां.दा.ख्यात)

८ ठगण के प्रथम लघु मात्रा का नाम। (डिं.को.)

९ टगण के चतुर्थ भेद का नाम। (र.ज.प्र.)

१० तेतीस की संख्या।* (डिं.को.)

११ राग, धुन।

उ०—गत यत करि गिधू सुर गावै, वयंड संडची भेर वजावै।

—सू.प्र.

१२ देखो 'स्वर' (रू.भे.) (डिं.को; ह.नां.मा.)

उ०—१ हिरण रहै थिर होय, बीणा सुर सूं बांकना। जिण कारण सूं जोय, पारधियां पांनै पड़ै।—बां.दा.

उ०—२ गहकै आरंगपुर, सारंग सुर गावै। बांणिक बीठांई नीठां, बणि आवै।—ऊ.का.

उ०—३ भूं भुहरा सुर कोकला, कंठ कपोत ठार। खंजन चपळा द्रमह पर, ए पंखी लक्षण च्यार।—हो.मा.

उ०—४ राग-रंग हुवै छै। छह राग, तीस रागणी। मूरतवंत खड़ा हुवा छै। सात सुर तीन ग्रांम रौ भेद वणियौ छै।

—रा.सा.सं.

सुरअंगना—सं.स्त्री. [सं.] अप्सरा।

सुरआळ, सुरआळय—सं.पु. [सं. सुर+आलय] देवताओं का निवास स्थान, स्वर्ग। (अ.मा; नां.मा.)

उ०—चारू चोहटा चार दिस, वणिया हाट विसाळ। मणिमंडत कंचन मई, सबै जिसै सुरआळ।—गज-उद्धार

सुरइंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू.भे.)

उ०—बरै रंभ बीस रथा रण बिर, अधी-अध राज लियै सुरइंद।

—सू.प्र.

सुरईस—देखो 'सुरेस' (रू.भे.) (डिं.को; ना.डिं.को.)

सुरओक—सं.पु. [सं.] स्वर्ग, बैकुण्ठ। (डिं.को.)

सुरकंत—सं.पु. [सं. सुरकांत] इन्द्र। (डिं.को.)

सुरक—सं.पु. [सं. स्वर्ग] स्वर्ग, बैकुण्ठ।

उ०—सरब लघु नगण आयुग द्रवण सुर सुरक। नात विध साविती कनक रंग नैण।—र.रू.

२ घबराने या डरने की क्रिया या भाव, डर, घबराहट।

उ०—१ नांगां रै हीयै असवार मागां रै घर रा मोरकी रैवती। मन सुरक सुरक करती।—फुलवाड़ी

उ०—२ अबै नांगी नीं नारी ढज्जन सूं ठागी आपड़नां री सावळ! जीव अलगौ सुरक सुरक करै।—फुलवाड़ी

३ चिंता, फिक्र।

उ०—थूं क्यूं सुरक सुरक करै, म्हारी अबल माथै थनै भरोसौ कोनी।—फुलवाड़ी

४ धड़कने या फड़कने की क्रिया या भाव।

उ०—बाप री तो हाड हाड कुळती ही। तौ तो पैंडी करणी के काळजौ सुरक-सुरक करण लागौ।—फुलवाड़ी

५ सुरक-सुरक कर पानी पीने की क्रिया।

६ देखो 'सुरग' (रू.भे.)

उ०—फजर ऊगा समां गजा नैजा फरक, मैळा इब रजी असमांन हलिगौ अरक। सुर सब अछर बेताळ सारद हरक, सुतन 'अजमल' कठी नयण कीधा सुरक।—गिरधर आढ़ौ

सुरकणौ, सुरकबौ—क्रि.अ.—१ डरना, घबराना।

२ धड़कना, फड़कना।

३ चिंता होना, सोच करना।

४ सुड़क-सुड़क कर धीरे-धीरे पीना।

५ ऊपर की ओर हवा के साथ धीरे-धीरे खिंचना।

सुरकणहार, **हारौ (हारी), सुरकणियौ**—वि०।

सुरकिओड़ौ, सुरकियोड़ौ, सुरक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुरकीजणौ, सुरकीजबौ—भाव वा०।

सुरकन्या—सं.स्त्री. [सं.] १ देवबाला, देव कन्या।

२ अप्सरा।

सुरकरिप्रसठ—सं.पु. [सं. सुरकरिप्रष्ठ] सूर्य, भानु। (अ.मा.)

सुरकरी—सं.पु. [सं. सुरकरिन्] १ इन्द्र का हाथी।

२ दिग्गज।

सुरकली—सं.स्त्री.—एक रागिनी का नाम। (संगीत)

सुरकांनन—सं.पु. [सं. सुर+कानन] देवताओं का वन, नन्दन वन।

सुरकांमणी, सुरकांमिणी—सं.स्त्री. [सं. सुर+कामिनी] अप्सरा।

उ०—केवी मुहर पूठि सुर-कांमिणी, जडाधार पासै व्योम

जोगिणी ।—गोकुल राठौड़ रौ गीत

सुरका-दुरकी-सं.स्त्री.-किसी बात को इधर उधर करने की क्रिया, दौत्य कर्म, चुगली ।

उ०— खिलवत हास खुमांमदी, **सुरकादुरकी** सांग । किसब लियां ए कुकवियां, माहव हूता मांग ।—बां.दा.

सुरकियोड़ौ-भू.का.कृ.-१ डरा हुआ, घबराया हुआ । २ धड़का हुआ, फड़का हुआ । ३ चिंता या सोच-फ़िक्र किया हुआ । ४ सुड़क-सुड़क कर पीया हुआ । ५ हवा के साथ धीरे-धीरे ऊपर की ओर खिचा हुआ ।

(स्त्री. सुरकियोड़ी)

सुरकी-सं.पु.-सोलंकी राजपूतों की एक शाखा ।

सुरकुंभ-सं.पु. [सं.] देवताओं का कलस, देव-घट ।

उ०—पूरैं प्रभु आस सदा परतख, वदां **सुरकुंभ** किना सुरव्रक्ष ।

—ध.व.ग्रं.

सुरकेतु-सं.पु. [सं.] १ इन्द्र ।

२ देवताओं की ध्वजा ।

सुरक्ष-सं.पु [सं.] १ एक मुनि ।

२ एक पौराणिक पर्वत ।

वि.-रक्षित, सुरक्षित ।

सुरक्षा-सं.स्त्री. [सं.] १ रक्षा, हिफ़ाज़त ।

२ देखभाल, संभाल ।

सुरखंडनिका-सं.स्त्री. [सं.] एक प्रकार की वीणा ।

सुरख-वि. [फा. सुर्ख़] १ लाल, रक्ताभ ।

उ०—१ किरमजी रेसम कै तणाव दियै, जोतिकै वीचतैं **सुरख** डोरि कैसी खुली । तारा मंडळ तैं और धार सुरसती की चली ।

—सू.प्र.

उ०—२ बोलीयौ **सुरख** चख कीयां चांपौ वयण, भड़ां पग मांड जोस धर दीण री भुयण । लाभ छत्री धरम बहोससत्रां लयण, गाज नाळं धरर धुवां ढकीयौ गयण ।—रिवदांन बारहठ

उ०—३ **सुरख** सरोरुह खंडळियां सुख साजही, कै अरुणोदय कांति रही मिळी राजही ।—बां.दा.

२ क्रोध पूर्ण, रोशपूर्ण ।

सं.पु.-१ तांबा । (अ.मा.)

२ एक प्रकार का शुभ रङ्ग का घोड़ा । (शा.हो.)

रू.भे.—सुरक ।

अल्पा;—सुरखौ ।

सुरखरू-वि. [फा.] १ सफ़ल, क़ामयाब ।

२ सम्मानित ।

उ०—लोकां सूं ठीक कीयौ, परदेसै माल विकीयौ । नांणौं आयौ । सिगळां सुं **सुरखरू** हूवौ, सरव थोक घरै हुवा ।

—सतरी बांधी लिखमी री बात

सुरखांनी-वि.-रक्ताभ, लाल ।

उ०—कमळा रेसमी नारंगी पैबंदूका हूंनर अदभूत, रोसनी हमरांनी **सुरखांनी** सहतूत ।—सू.प्र.

सुरखाब-सं.पु. [फा. सुर्ख़ाब] १ चकवा नामक पक्षी ।

२ लाल परों का पक्षी विशेष ।

वि.-लाल ।

उ०—नदि नांम अगैं कहता निलाब, **सुरखाब** होय उफ़ळै सताब ।

—सू.प्र.

३ ब्राह्मणी बतख ।

सुरखिया बगलौ, सुरखिया बुगलौ-सं.पु.-बगले का भेद विशेष ।

सुरखी-सं.स्त्री. [फा. सुर्ख़ी] १ अरुणिमा, लालिमा ।

उ०—लड़वा भुज अंबर जाय लगा, जिणवार फुणावण सेस जगा । **सुरखी** मुख मूंछ ब्रहार चली, किरदंत वराह खड़ी कंवली ।

—पा.प्र.

२ नाराज़गी, ग़ुस्सा ।

उ०—तद कुंवर क्यूं **सुरखी** कर कही जै हूं पूछूं उवा तौ बात बोलौ नहीं ।—कुंवरसी सांखला री वारता

३ इमारत आदि बनाने में काम आने वाला ईंटों का महीन चूरा ।

उ०—पकै ढूंढ़ियां ईंट चूनौ, **सुरखी** हळकी फूल छुट । ठंठेरा लुहारा सारा, लोह चढावै लाल चुट ।—दसदेव

सं.पु. [फा. सुर्ख़] १ वह घोड़ा जिसकी दुम लाल हो ।

२ वह घोड़ा जिसका रङ्ग सफ़ेदी या भूरापन लिये काला हो ।

सुरखौ-सं.पु. [फा. सुर्ख़] १ लाल रङ्ग का कबूतर ।

२ देखो 'सुरख' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—सुत कल्यांण साहि भुज सुजड़ां, अर समहर साफै औनाड़ । चुगती चोळ थई चांचाळी, पसरी **सुरखा** हुआ पहाड़ ।

—धोळूजी वीठू

सुरग—देखो 'स्वरग' (रू.भे.)

उ०—१ भागीरथ सुत जिण तप अभंग, गौ **सुरग** अहुति जिण आंणि गंग ।—सू.प्र.

उ०—२ जाजुल गोळा ज्वाळ, गरज जिण काळ उगल्लै । त्रासै **सुरग** पताळ, दिगज दिगपाळ दहल्लै ।—मे.मः

उ०—३ तौ सुरसरी तरंग, कूंची **सुरग** कपाट री । गेथ पखाळै अंग, जग मैं धिन मांनख जिकै ।—बां.दा.

सुरगज-सं.पु. [सं.] इन्द्र का हाथी, ऐरावत ।

रू.भे.—सुरगय ।

सुरगण-सं.पु. [सं.] १ देवगण, देवतागण । (अ.मा.)

२ देखो 'सगुण' (रू.भे.)

उ०—भुख न भागी भेन गयौ, तिण चर तिण तहां जाय । **सुरगण** तिण सुख छाडि करि, यस निरगुण का गुण गाय ।—ह.पु.वां.

रू.भे.—सुरियण ।

सुरगति—सं स्त्री. [सं.] १ देवयोनि, दैवीगति ।

उ०—मती करी संयम लियौ रे, पाँच सौ सिरदार । चोखौ पाली **सुरगति** लही रे, करमी सेवी पारी रे ।—जगवांगी

२ भावी ।

सुरगनदी—देखो 'स्वरगनदी' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

सुरगपत, सुरगपति, सुरगपती—देखो 'स्वरगपति' (रू.भे.) (डि.को; ह.नां.मा.)

सुरगपहाड़—सं.पु. [सं. स्वर्ग-पहाड़] सुमेरु पर्वत ।

सुरगपाताळी—सं.पु.—वह सींग वाला पशु जिसका एक सींग आकाश की ओर तथा दूसरा सींग भूमि की ओर झुका हुआ हो । (अशुभ)

सुरगपुर, सुरगपुरी—देखो 'स्वरगपुरी' (रू.भे.)

सुरगबाळी—सं.स्त्री.—कान का एक आभूषण ।

सुरगबेसां, सुरगबेस्या—सं.स्त्री. [सं. स्वर्गवेश्या] अप्सरा ।

सुरगमंदाकनी, सुरगमंदाकिनी—देखो 'स्वरगमंदाकिनी' (रू.भे.)

सुरगय—देखो 'सुरराज' (रू.भे.)

उ०—सेत हिमालय संग, **सुरगय** हय नग पय दरस । रुद्र सिवांलय रंग, जय जग लाखवरीस जस ।—बां.दा.

सुरगरंद—सं.पु. [सं. सुर-गिरि] सुमेरु पर्वत ।

सुरगरंद-माळा—सं.स्त्री. [सं. सुर-गिरी-माला] सुमेरु पर्वत की श्रेणी ।

उ०—भड्ज वादळ सबळ वीज साबळ झळक, झळक जळ रुधर घट नाळ खाळा । वार सुरतांण दळ अकाळ खूटा वरस, 'मान' हर सीस **सुर-गरंद-माळा** ।—अजबो बारहठ

सुरगर—१ देखो 'सुरगुरु' (रू.भे.)

२ देखो 'सुरगिरि' (रू.भे.)

सुरगलोक—देखो 'स्वरगलोक' (रू.भे.)

सुरगवधू—देखो 'स्वरगवधू' (रू.भे.)

सुरगवास—देखो 'स्वरगवास' (रू.भे.)

उ०—दोनूं बेटा परणा-पांत्या हा, माईतां री **सुरगवास** व्हियां जमां थाट सूं लारै औसर-मोसर कर्‌यौ ।—फुलवाड़ी

सुरगवासी—देखो 'स्वरगवासी' (रू.भे.)

सुरगविहारी—देखो 'स्वरगविहारी' (रू.भे.)

सुरगसार—सं.पु. [सं. स्वर्गसार] चतुर्दश ताल के चौदह भेदों में से एक । (संगीत)

सुरगह—सं.पु.—तोता, कीर । (अ.मा.)

रू.भे.—सुरगाह ।

सुरगांम—सं.पु. [सं. स्वर-ग्राम] स्वर-ग्राम ।

उ०—अंबपुर नाथ सूं बैठ सनमुख अडर, प्रगट **सुरगांम** उतपति पिछांणै ।—सिवनाथसिंह मेड़तिया रौ गीत

सुरगादि—सं.पु. (ब.व.) [सं. स्वर्ग-आदि] स्वर्ग-लोक-समूह ।

उ०—मध्य पाताळ जीव जंत **सुरगादि** मैं, सकळ ही देखीया है कांम भारी ।—अनुभववांणी

सुरगापगा—सं.स्त्री. [सं. स्वर्गापगा] स्वर्गगंगा, मंदाकिनी, गंगानदी ।

सुरगापुर, सुरगापुरि—सं.पु. [सं. स्वर्ग-पुर] स्वर्ग धाम, वैकुण्ठ धाम ।

उ०—१ पार गिरवां अंभराग नग, **सुरगापुर** गुहांवंगो । —वि.सं.सा.

उ०—२ नीर वलाऊ भाड़्या, म्हांनै पीहर पंथ बताय । डावो आंखो परहरी, जीवगी **सुरगापुरि** जाय ।—वि.स.मा.

सुरगायक—सं.पु. [सं.] देवताओं के गायक, गंधर्व ।

सुरगायत—सं.पु.—स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

सुरगारोहण—सं.पु. [सं. स्वर्गारोहण] स्वर्ग या वैकुंठ की ओर किया जाने वाला गमन ।

सुरगाह—सं.पु. [सं. सुर+गाथा] १ देवताओं की कथा ।

२ देखो 'सुरगह' (रू.भे.)

सुरगि—देखो 'स्वरग' (रू.भे.)

उ०—स्वान कागा **सुरगि** मांहे, क्षीण जीव समारनै । हुंसि मिळौ मौ मिग करो छकागत, मन्यमो करतार नै ।—वि.सं.सा.

सुरगिर, सुरगिरि, सुरगिरी—सं.पु. [सं. सुरगिरि] सुमेरु पर्वत । (अ.मा; नां.मा; ह.नां.मा.)

उ०—दीठउ **सुरगिरि** क्षीरहरा, सुभिसाद सिर रवि चंद । जनमि गुणिरिजराय समाइ, मिलीया सुमई विंद ।—मानिभद्र सूरि

वि.—पीला ।* (डि.को.)

सुरगी—वि. [सं. स्वर्गीय] स्वर्ग का, स्वर्ग सम्बन्धी ।

सं.पु.—१ स्वर्ग का निवासी, देवता, सुर । (डि.को.)

२ देखो 'स्वरग' (रू.भे.)

सुरगीनदी—देखो 'स्वरगनदी' (रू.भे.) (डि.को.)

सुरगुण, सुरगुन—देखो 'सगुण' (रू.भे.)

उ०—१ निगुण म्हारा नांव है, **सुरगुण** बिना न पाय । किस कुं नहीये वहीये, हरीया पितार माय ।—अनुभववांणी

उ०—२ मन की भांळै तन गहै, गोविंद भांळै ग्यान । निरगुन के भांळै करै, हरीया **सुरगुन** ध्यांन ।—अनुभववांणी

सुरगुर, सुरगुरु, सुरगुरू—सं.पु. [सं. सुर-गुरु] १ देवताओं के गुरु, बृहस्पति । (अ.मा.)

२ बृहस्पति नामक ग्रह । (अ.मा.)

उ०—१ अनग्रह भवन कब्‍हू आवै, दसमै जो **सुरगुर** दरसावै । दुसह तोइ ग्रह जोर न दाखै, रक्षा जीव परख कर राखै ।—रा.रू.

उ०—२ निरख छठै रिपु ग्रह ससिनंदरा, कुळ मातुळ सुख अरी निकंदरा । राज भवन **सुरगुर** सुभ राजै, विसव छत्र आंरा विराजै । —रा.रू.

३ बृहस्पतिवार, गुरुवार ।

उ०—सोमां सुकरां **सुरगुरां**, जौ चंदो उगंत । डंक कहै सुण भड्डळी, जळ थळ एक करंत ।—वर्षा विज्ञान

४ पीतवर्ण, पीला ।* (डि.को.)

रू.भे.—सुरगर, सुरगरि, सुरुगुरु, सुरुगुरू ।

सुरग्यांन, सुरग्यांनी—देखो 'सुग्यांनी' (रू.भे.)

उ०—१ जमुना कै नीरै तीरै, धेनु चरावै सब ही कै **सुरग्यांन** । बंसी बजा मेरौ मन हर लीन्हौ, मार बिरह का बांन ।—मीरां

उ०—२ यूं मूजरौ मांनौ प्यारी कौ, संग छोडौ परनारी कौ । सायर **सुरग्यांनी** प्यारा, अवलेखा आवै थारा ।—लो.गी.

उ०—३ जद हट बोल्यौ रै दिल्ली कौ बादस्या कोठै हूं चाल'र आई लोय । **सुरग्यांनण** हूरम कुरासी कूंटा का यै पड़ चंदा पड़ै ।
—लो.गी.

(स्त्री. सुरग्यांनण)

सुरग्रह, सुरग्राह—सं.पु. [सं. स्वर+ग्रह] १ वीणा । (अ.मा.)

२ श्रवणेन्द्रिय, कान ।

सुरघंट—सं.पु.—वीरघंट ।

उ०—अंकुस सीस वणै गुण ऐसौ, जग वेधियौ मघा सनि जैसौ । अनुहरतां **सुरघंट** अपारै, दीपै किरि झल्लरि हरि द्वारै । रा.रू.

सुरघण—सं पु —मेघनाद, इन्द्रजित ।

उ०—रिण कुंभ **सुरघण** मार रांवण, कठण खळ जण कीध करण करण ।—र.ज प्र.

सुरघाती—सं.पु.—दैत्य, असुर, राक्षस । (अ.मा.)

वि.—देवताओं का नाश करने वाला ।

सुरड़—देखो 'सरड़' (रू.भे.)

सुरड़णौ, सुरड़बौ—क्रि.स.—१ कांटेदार छड़ी, बेंत या चाबुक से बुरी तरह पीटना ।

उ०—१ बिरखा रा विछोव पछै उण माथै कांई-कांई विखौ पड़्यौ, किण भांत उणरौ सुभाव बदळियौ, वौ पिणियारयां नै छेड़तौ, घड़ा बेवड़ा फोड़तौ, पछै कीकर मां एक दिन उणनै कांबड़ियां सूं **सुरड़ियौ** ।—फुलवाड़ी

उ०—२ मतै ई बोहरा रा मोर सड़िंद सड़िंद **सुरड़ीजण** लागा कै वौ जोर सूं डाढियौ । चौधरी रौ बेटौ जाग्यौ जित्तै जित्तै बोहरा रौ आखौ डील वींधीजग्यौ । झाटी तौ उणी भांत सड़िंद सड़िंद बाजती री ।—फुलवाड़ी

२ किसी पौधे या पेड़ की टहनी को हाथ या मुंह (जानवरों द्वारा) में पकड़कर इस प्रकार खींचना कि उसके समस्त फल, फूल या पत्ते एक साथ तोड़ लिये जावें, टहनी को नङ्गा कर देना, सूंतना ।

उ०—१ इण निम झरनै **सुरड़**, बुरड़ भेळी कर राखै । लरड़ लाय सा भाळ, साल भर सागां नाखै ।—दसदेव

उ०—२ खोड़ै खील्हैरी रा चारिया, फुरणियां रा बैसणहार । कूमटै कंकेड़ै रा **सुरड़णहार**, आयबैरा चरणहार ।—रा.सा.सं.

३ अनर्गल बोलना ।

उ०—सेठां री हूंस हाल मिटी नीं ही । मुधरा मुधरा मुळकता बोल्या—गीगला री मां थांमैं औ इज तौ मोटौ औगण कै बोलता ढबौ ई नीं, **सुरड़ता** ई जावौ ।—फुलवाड़ी

४ चाटकर खाना ।

५ सञ्चय करना, सञ्चित करना ।

क्रि.अ.—खरोंचना या खरोंचें आना ।

उ०—दौ च्यारैक धकै आया जियां रा मूंडा तौ **सुरड़ीज्योड़ा** गोडा अर खुणियां सूं लोई चिकै पण घणा खारा घाव नीं लागोड़ा ।
—चितरांम

सुरड़णहार, हारौ (हारी), सुरड़णियौ—वि० ।

सुरड़िओड़ौ, सुरड़ियोड़ौ, सुरड़योड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुरड़ीजणौ, सुरड़ीजबौ—कर्म वा० ।

सुरड़ियोड़ौ—भू.का.कृ.—१ कांटेदार छड़ी, बेंत या चाबुक से पीटा हुआ ।

२ हाथ या मुंह में पकड़कर, सूंतकर फल, फूल या पत्ते तोड़ा हुआ (पेड़, पौधा या टहनी) । ३ अनर्गल बोला हुआ । ४ चाटकर खाया हुआ । ५ सञ्चय किया हुआ, सञ्चित । ६ खरोंचा हुआ या खरोंचें आई हुई ।

(स्त्री. सुरड़ियोड़ी)

सुरड़ी—वि.स्त्री.—नाक कटी हुई ।

सुरड़ी-बुरड़ी—वि.स्त्री.—नाक-कान कटी हुई, 'बूंची' ।

सुरड़ौ—वि. (स्त्री. सुरड़ी) १ नाक-कान कटा हुआ, बूंचा ।

२ निर्लज, बेशर्म ?

उ०—संकर सागर हुयगौ **सुरड़ा**, करण मिलै नहीं पांणी कुरड़ा । चोभ मांय ठहरै नहि चुरड़ा, जिण री पाळ पड़ै दस दुरड़ा ।
—ऊ.क .

सुरचक्र—सं.पु.—सुदर्शनचक्र । (अ.मा.)

सुरचाप—सं.पु. [सं.] इन्द्रधनुष ।

सुरचाह—सं.स्त्री.—अग्नि, आग । (अ.मा.)

सुरच्छा—देखो 'सुरक्षा' (रू.भे.)

सुरज—सं पु —१ एक देव-जाति । (अ.मा.)

२ देखो 'सूरज' (रू.भे.)

उ०—छक बढियौ अणछेह, पमंग चढियौ भुबपत्ती । जांण चढ्यौ जेठ रौ, **सुरज** सपतास सपत्ती ।—मे.म.

सुरजण - देखो 'सुरजन' (रू.भे.)

सुरजणौ—सं.पु. [सं. सुरञ्जनः] सुपारी का पेड़ ।

उ०—आंव आंवळौ **सुरजणौ** मौरसळी भड़ जाय ।—रुखमणी मंगळ

सुरजन—सं.पु. [सं.] १ देवगण, देवता लोग, सुरगण ।

२ सज्जन, भला ।

३ चतुर, बुद्धिमान ।

रू.भे.—सुरजण, सुरजण ।

सुरजमुखी - देखो 'सूरजमुखी' (रू.भे.)

सुरजरठ—देखो 'सुरज्येस्ठ' (रू.भे.)

सुरजवंसी—देखो 'सूरजवंसी' (रू.भे.)

सुरजांण–सं.पु.–१ विष्णु ।

२ श्री कृष्ण ।

३ इन्द्र ।

सुरजा–सं.स्त्री. [सं.] १ एक अप्सरा ।

२ पुराणोक्त एक नदी ।

उ०—जगंनाथ गंगासागर हैं, साखी गुपाल ब्रजवासी । सेतुबंध रांमेस्वर ईस्वर, मूळ बटी **सुरजा** सी ।—मीरां

सुरजेठ, सुरजेठि, सुरजेठी, सुरजेठौ—देखो 'सुरज्येस्ठ' (रू.भे.)
(डि.को; नां.मा; ह.नां.मा.)

उ०—१ उमा सहित गण ईस, लच्छि जगदीस पधारै । सावत्री **सुरजेठ** जती, जंगम अण पारै ।—रा.रू.

उ०—२ हमैं सठा उपरांति कवि नै राजांन मिलांमांन ग्रीखम रित मांहे जिकै राजांनां ठाकुरनां सुख जेठ मांहे कहीआ तिकै सब **सुरजेठ** कहतां इंद्र री ठकुराई पिण नहीं इसा राजा रा सुख कहीजे छै । –रा.सा.सं.

सुरज्जण—देखो 'सुरजन' (रू.भे.)

उ०—रांवण गुणी सुरार, हार मारखी बभीखण । असी बंद आसुरां, जोर अत कमी **सुरज्जण** ।—रा.रू.

सुरज्येस्ट, सुरज्येस्ठ–सं.पु. [सं. सुर-ज्येष्ठ] १ ब्रह्मा, विधाता ।
(नां. मा.)

२ विष्णु ।

३ श्री कृष्ण ।

४ इन्द्र, जो देवताओं में बड़े माने गए हैं ।

रू.भे.—सुरजरठ, सुरजेठ, सुरजेठि, सुरजेठी, सुरजेठौ ।

सुरझणौ, सुरझबौ—देखो 'सुळझणौ, सुळझबौ' (रू.भे.)

उ०—१ दादू सब्दैं ही मुक्ता भया, सब्दैं समझै प्रांण । सब्दैं ही सूझै सबै, सब्दैं **सुरझै** जांण ।—दादूबांणी

उ०—२ जब समझा तब **सुरझिया**, उलट समांना सोइ । कछू कहावै जब लगैं, तब लग समझ न होइ ।—दादूबांणी

सुरझाणौ, सुरझाबौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझाबौ' (रू.भे.)

सुरझायोड़ौ—देखो 'सुळझायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. सुरझायोड़ी)

सुरझावणौ, सुरझावबौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझाबौ' (रू.भे.)

उ०—हमनै कहा **सुरझावण** रांणा, तुम जातै उरझाय रांम । हमनै कहा निरमोहित रहना, तुम तौ जात मोहाय रांम ।—मीरां

सुरझावियोड़ौ—देखो 'सुळझायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. सुरझावियोड़ी)

सुरझियोड़ौ—देखो 'सुळझियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. सुरझियोड़ी)

सुरटीप–सं.स्त्री. [सं. स्वर+रा. टीप] गायन में स्वरालाप, आलाप; टीप । (संगीत)

सुरण–सं.स्त्री.–१ वह रस्सी जो कुएं से पानी खींचने वाले पात्र के साथ बंधी हुई हो, नेज, लाव । (शेखावाटी)

२ देखो 'सूरण' (रू.भे.)

सुरणा, सुरणाइ, सुरणाई, सुरणाय, सुरणौ—देखो 'सहनाई' (रू.भे.)

उ०—१ तरै भाटी भांणदे पाण हथाळै, आगमच्या जगहड़ोतरै, भेद दियौ । नै कोई कहै छै, **सुरणाई** बजाई, तिण मैं काई बात जणाई ।—नैणसी

उ०—२ सबदां आगै छत्तीस बाजां रा नांम कहै छै । ढोल ६, दमांमा ७, भेरि ८, भुंगळि ९, नफेरी १०, मदन-भेरि ११, **सरणाई** १२, झांझ १३.........। –रा.सा.सं.

सुरणौ, सुरबौ–क्रि.अ.–अपान वायु का निकलना, पाद आना ।

सुरतंर—देखो 'सुरतर' (रू.भे.)

सुरत–सं.स्त्री. [सं. सु.+रत] १ स्त्री सम्भोग, रति क्रीड़ा, सम्भोग ।

उ०—१ पति पान आनंदित जी नाह निद्रालित, **सुरत** अंत नेहवी सी । सजेद्र क्रीड़ता सु निद्राळित सी ।, नीरागइ पोर कमळिनी ।
—वेलि

उ०—२ जैसैं निधवन कहतां **सुरत** सुं भोग कै विषै अस्त्री की लाज सरब सरीर छोडि कै नैणा मांहै जाय रही छै । तैसैं प्रथी छांडि तळावां पांणी जाय रह्यौ छै ।—वेलि टी.

उ०—३ जिण समें रा रमतौ किणी हेत, जठै घण जिका धरती मावौ जिकौ सांवण री मेह. इण भांत **सुरत** जंग जुआ थाय हुय छूआ ।—र. हमीर

२ लहर, ऊर्मी, तरङ्ग ।

३ अत्यन्त हर्ष, आनन्द या आह्लाद ।

४ योग-दर्शन के अनुसार चित्त व शरीर के छः प्रकार के क्लेश यथा भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, लोभ और मोह ।

उ०—एक रमा अहनिस, दोय रवि चंद त्रिगुण दस । च्यार वेद तत पंच, **सुरत** छह सपत सिंध सस । र.अ.प्र.

५ पुष्प-गुच्छ जो सिर पर धारण किया जाय ।

[म. सुरत] ६ अच्छा खिलाड़ी ।

७ देखो 'सूरत' (रू.भे.)

उ०—१ ध्रुव बन सिधारयौ वचन मारयौ, ध्यांन धारयौ एक ए । तजि पांन नीरु महाधीरु, परा पीरु पेख ए । सब ब्रह्म मंजू उर समजू, **सुरत** रंजू तांम ए । ऐसा गोविंदू क्रपासिंधू, दीन बंधू रांम ए ।—करुणासागर

उ०—२ रांणी भारी पणां ही । रांणी नै किणी **सुरत** मांनतां नीं देख डांवडी रा मन में एक उपाव सूझियौ ।—फुलवाड़ी

रू.भे.—सुरती, सुरत्त, सुरित ।

८ देखो 'स्रुति' (रू.भे.) (अ.मा.)

९ देखो 'सुरति' (रू.भे.)

उ०—१ म्हांरी आद भवांनी यै ! टेर लगाई यै हरकै नांव की

सुरत लगाई यैं हर कै ध्यांन की ।—लो.गी.

उ०—२ भजन, यजन कर पिता थांनै पाया। अमर अराध्यां अवनी पैं आप आया । सौ **सुरत** करौ सुर-काज सुधारौ ।—गी.रां.

उ०—३ **सुरत** सब्द रांमत रची, सुंन सहर घर माय। गेबी आवाजां साधां होय रही, झिळमिळ जोत जगाय ।

—श्री हरिरांमजी महाराज

उ०—४ वा पातसाह आलमगीर हाथी असवार कुरांन मैं **सुरत** लगाय रयौ है । लारै खवासी मैं मुखनस बैठौ मोरछड़ करै है ।

—द.दा.

सुरतग्रही—सं.पु. [सं.] नाक । (अ.मा.)

सुरतजंग—सं.पु.—रति-क्रिया में होने वाला सङ्घर्ष, रति-क्रीड़ा ।

सुरतटी—सं.स्त्री.—गङ्गा नदी ।

उ०—लाखीकां ऊपरा, चढै भड़ लक्ख सचेळै। जांण जटी चल्लिया, कुंभ **सुरतटी** समेळै ।—रा.रू.

सुरतपाक—वि.—जिसका चेहरा पवित्र एवं शुद्ध हो ।

सुरतर—सं.पु. [सं. सुरतरु] देव-वृक्ष, कल्प-वृक्ष, मंदार, पारिजात ।

(अ.मा; नां.मा.)

उ०—१ कारण विण जगसूं करै, आठ पोहर उपगार। जांणीजै **सुरतर** जिकै, मांनव लोक मझार ।—बां.दा.

उ०—२ सत हरचंद समांन, प्रगट दरियाव अथघपण। **सुरतर** आस सपूर, जांण पारस सेवक जण ।—र.ज.प्र.

रू.भे.—सुरंतर, सुरतरु, सुरतरुवर, सुरांतर ।

सुरतरण—सं.स्त्री. [सं. सुर+तरुणी] अप्सरा ।

उ०—किरण-पत आवियौ, कहै सुण **सुरतरण**। थियै मत गमजा घिरै थारै ।—द.दा.

सुरतरु, सुरतरुवर—देखो 'सुरतर' (रू.भे.)

सुरतांण—देखो 'सुलतांण' (रू.भे.)

उ०—१ आवै जौ अकलीम, सात हेक **सुरतांण** रै । नहीं जिका दै नीम, ईछै लेवा आठमी ।—बां.दा.

उ०—२ आयी ऊपर ऊपरा, सुणी खबर **सुरतांण**। उर अकुळाय पटक्कियौ, सीस खुदाय कुरांण ।—रा.रू.

उ०—३ मेदपाट खुरसांण, आदि बकवाद संभारै। सहि कीध फुरमांण, खांन **सुरतांण** हकारै ।—गु.रु.बं.

सुरतांणी—देखो 'सुलतांणी' (रू.भे.)

उ०—१ करण भारथ महा महाराजा कमंध, मिळै ... भड तांम-गयणि मेळै । चींत **सुरतांणी** आगळि 'चौंडरज', चैन सुरितांण तिम न कौ चेलै ।—केसोदास गाडण

उ०—२ भागां झाड बीड थीउं पाधर, कादव कीधां पांणी । डूंगर तणां सिखर जिम चालइ, तिम हाथी **सुरतांणी** ।—का.दे.प्र.

सुरतांणोत—सं.पु.—१ कछवाहा राजपूत-वंश की एक उप-शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

२ मेड़तिया राठौड़-वंश की एक उप-शाखा व इसका व्यक्ति ।

सुरतांणौ—देखो 'सुलतांण' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—मंडी आस मळेछं, खट्टण खंड द्रुग्ग चितंगौ। कित्ती खंड विहंड, जित्ती हार धार **सुरतांणौ** ।—रा.रू.

सुरतांत—क्रि.वि. [सं. सुरत=सम्भोग+अन्त] सम्भोग के पश्चात्, मैथुन के पश्चात् ।

उ०—तठा उपरांति करि राजांन सिलांमत रंगमहल मैं प्रेम झड़ लागिनै रही छै । **सुरतांत** समय हुवौ छै ।—रा.सा.सं.

सुरता—सं.स्त्री.—१ चित्तवृत्ति, वुद्धि ।

उ०—१ पुनि पुन्य उदै भए पूरब कै, उघरै उर अंक अपूरब कै । **सुरता** बिकसी सरसायन मैं, परि प्रेम पयोनिधि पायन मैं ।

—ऊ.का.

उ०—२ सिली **सुरता** घस सिद्धि संमद्ध, पिली प्रभुता वस बुद्धि प्रबंद्ध । हिली जुगती जस वार हजार, मिळी मुगती दस द्वार मंझार ।—ऊ का.

उ०—३ तूं तौ समझि सुहागण **सुरता**, नारि पलक मेरी रांम सू लगी ।—मीरां

२ आत्मा ।

उ०—कुपह कुमारग वरजि करि, सुपह साच करणी कहै । सेहनांण सुगुर तणा **सुरता** सुणौ, प्रमन की प्रगट कहै ।—वि.सं.सा.

३ लगन, ध्यान ।

४ याद, स्मृति ।

५ देखो 'स्रोता' (रू.भे.)

उ०—१ **सुरता** अर बकता बौह ग्यांनी, विन गुर गम आतम नहीं जांनी ।—अनुभववांणी

उ०—२ सकळ प्रताप सुरसरी, हरि पद रुद्र सहित । **सुरता** रांम सुमित्र सुत, वकता विसवामित्र ।—रांमरासौ

६ देखो 'सुरत' (रू.भे.)

७ देखो 'सूरत' (रू.भे.)

८ देखो 'सुरति' (रू.भे.)

सुरतात—सं.पु. [सं.] १ देवताओं के पिता कश्यप ।

२ देवताओं के अधिपति इन्द्र ।

सुरताभीलणी—सं.स्त्री.—एक राजस्थानी लोक-गीत ।

सुरति—सं.स्त्री. [सं. सु+रति] १ जमकर या छककर किया जाने वाला उपभोग, अच्छा भोग ।

२ तसल्ली, सन्तोष ।

३ अप्सरा, देवाङ्गना । (नां.मा.)

४ याद, स्मरण ।

उ०—१ तद घर थी नीसर विलाप करण लागियौ—हा हा प्रियै! केथी गई मोनूं बांणी देय । है प्रियै ! थारा जोबन री **सुरति** कर जीवूं छूं ।—बैताळ पच्चीसी

उ०—२ हरीया हंसौ जीव है, सुन्य सागर विसरांम। **सुरति** हमारी सीपड़ी, निज कल मोती नांम।—अनुभववांणी

५ ध्यान, लगन।

उ०—१ ध्यांन विहूंणा गुर मिळ्या, **सुरति** विहूंणा सिख। जन-हरीया गुर सिख का, संसा मिट्या न लिख।—अनुभववांणी

उ०—२ लगी **सुरति** सत सबद सुं, कबहूं खंडै नांहि। जनहरीया मन मिळ रह्या, आर पार पद मांहि।—अनुभववांणी

६ चित्तवृत्ति, बुद्धि।

उ०—**सुरति** चली आकास कुं, दै जाळंधर बंध। जनहरीया जांह जांणीयै, हदि वेहद की संध।—अनुभववांणी

७ आत्मा।

उ०—बंधन तैं त्रिबंध भया, मिळ्या सुन्य घरि जाय। हरीया **सुरति**'र सबद का, तिभैं ध्यांन लगाय।—अनुभववांणी

८ मोक्ष, मुक्ति।

उ०—जन हरिरांम कहै घट परचा, अगंम एक रांम की निरचा। घट मैं रांम-नांम लिव लावै, जब तैं **सुरति** निरत घर पावैं।

—अनुभववांणी

९ ज्ञान।

उ०—अरध उरध कै बीच मैं, हरीया झिलमिल जोत। **सुरति** सबद परचा भया, मिळै ओत अर पोत।—अनुभववांणी

१० भावना।

उ०—नर नारी को रूप धरि, नाचै करै निरत। जनहरीया नारी नहीं, कांमी कांम **सुरति**।—अनुभववांणी

११ शब्द, ध्वनि, स्वर।

उ०—हरीया पांव न पंख विन, **सुरति** चढी असमांन। नांव निरंजन पाईयां, न्यारा वेद पुरांन।—अनुभववांणी

१२ परमपद, परमधाम।

उ०—१ उलटा मन असमांण कुं, मिलै त्रिवेणी तट। जनहरीयै जांह मंडीया, **सुरति** सबद का मट।—अनुभववांणी

उ०—२ **सुरति** सबद कै मट की, है अजरायल वाटि। जनहरीयै जांह घर कीया, लोक वेद सु फाटि।—अनुभववांणी

१३ प्राण या प्राण-वायु।

उ०—जाळधर बंधा उरधै कंधा, मन अरु पवन मिळंदा है। उलटया है आसण पलटया वासण, **सुरति** सबद परसंदा है।

—अनुभववांणी

१४ देखो 'स्रुति' (रू.भे) (ह.नां मा.)

१५ देखो 'सूरत'।

उ०—१ ओढूं लज्या चीर, धीरजि कौ घाघरौ। समता कांकण हाथ, **सुरति** कौ मूंदड़ौ।—मीरां

उ०—२ महासूर **सुरति** निळै ऊपटै 'सहसमल', मारकां तौ जिसां मिळै जुध मेच। जड़ळकां कटै बिचि गळै ठहरै जकै, परीवरमाळ जिग हिचळै पेच।—सहसमल राठोड़ रो गीत

१६ देखो 'सुरत' (रू.भे.)

रू.भे.—सुरत, सुरती, सुरत्त, सुरित।

सुरतिगोपणा, सुरतिगोपना—सं.स्त्री. [सं. सुरतिगोपना] वह नायिका जो रति-क्रीड़ा करके आई हो, परन्तु अपनी सखियों से यह बात छिपाती हो।

सुरतिय—सं.स्त्री. [सुरस्त्री] अप्सरा।

सुरतिवंत—वि. [सं. सुरतिवत्, सुरतिमान्] कामातुर।

सुरती—सं.स्त्री.—१ तम्बाकू के पत्तों का चूरा जो चूना मिलाकर या पान में डालकर खाया जाता है।

२ देखो 'सुरत' (रू.भे.)

३ देखो 'सुरत्त' (रू.भे.)

४ देखो 'सुरति' (रू.भे.)

उ०—१ सावन माई स्यामी सिधाया, बिरहा बुरी बिचारी रे। मोनस भरम गामन रो महिमा, **सुरती** नहीं सभाळी रे।

—ऊ. का.

उ०—२ अथिर सुख संसार ना जी, काग अळूजी जी जाळ। वचन सुणो सत गुरु तणा जी; नती **सुरती** सभाळ।—जयवांणी

५ देखो 'सुरता' (रू.भे.)

६ देखो 'स्रुति' (रू.भे.)

सुरत्त—१ देखो 'सूरत' (रू.भे.)

उ०—१ बाहू नळी निरमळी, नरव बीभळी **सुरत्त**। आजै 'करनल' आकळी, (तूं) संवळी रूप सगत्त।—राव सेखी

उ०—२ बिदर बुराई बींदिया, बिदर बडा बाचाळ। बिदर पला लावै **सुरत्त**, छोगाळा निरताळ।—बां.दा.

२ देखो 'सुरति' (रू.भे.)

उ०—पही भमंतउ जउ मिळइ, कही अम्हीणी बत्त। सगा कंगागर री कंव उगउं, सुणी लोड **सुरत्त**।—ढो.मा.

३ देखो 'सुरत' (रू.भे.)

सुरत्थ, सुरत्थी—देखो 'सुरथ' (रू.भे.)

उ०—थंडै काहुळा बिखंगीनाद तबैबै बीरांग थूंथ, मंडकै धुरंदी जोध मट्टां छडै मांण। **सुरत्थां** समत्थां जुत्थां खासा भांडां होदां सीस। करी मुंडां तुम्ब बाळी उमडै कंवांण।

—भगवानरांम हाडा रो गीत

सुरत्रिय, सुरत्रिया, सुरत्री—सं.स्त्री. [सं.] अप्सरा, परी, देवाङ्गना।

उ०—१ मिळ सची संग **सुरत्रिय** समाज, 'जोध' हर वधायो हरख साज।—शि.सु.रू.

उ०—२ सदन कज फरै ग्रहियां फलां **सुरत्रियां**। वदन कज वडा सिध फरै वांसै।—माहसिंह रावत रो गीत

उ०—३ हुवै दिव्य देहा, **सुरत्री** सनेहा। विवांण विराजै, गयं स्वर्ग्ग गाजै।—सू.प्र.

सुरथ–सं. पु. [सं.] १ पुराणानुसार स्वारोचिष मनवन्तर का एक राजा जिसने सर्वप्रथम दुर्गा की आराधना की थी।

उ०—देवी गाजता दैत ता वंस गमिया, देवी नवै खंड त्रिभुवन तूझ नमिया। देवी वन्न मैं समाधी **सुरथ** वन्नी, देवी पूजतै आस पुरणा प्रसन्नी।—देवि.

२ राजा द्रुपद का एक पुत्र।

३ जनमेजय का एक पुत्र।

४ हंसध्वज का एक पुत्र जो चंपकपुरी का राजा था।

५ सुरथ नामक द्वीप का राजा।

६ एक द्वीप का नाम।

७ सूर्यवंश में रणक नामक राजा का पुत्र, एक सूर्यवंशी राजा।

उ०—तास सुनाव प्रसेनजित तत्र। जिण सुत खुद्रक भूप हुवौ जत्र। खुद्रक सुतण रिणक्क दहण खळ। हुवौ **सुरथ** जिण सुत झाळाहळ।—सू. प्र.

८ शस्त्रों से सज्जित सुन्दर रथ।

उ०—लखि फौज तुंग लड़ंग, ऊबंध किर दधि अंग। वणि **सुरथ** पायक व्रंद, जग जांण दळ जयचंद।—रा. रू.

९ उक्त प्रकार के रथ पर चढ़ने वाला बड़ा योद्धा।

रू. भे.—सुरत्थ, सुरत्थी, सुरथि।

सुरथांण, सुरथांन–सं. पु. [सं. सुर+स्थान] १ देवालय, देव मन्दिर।

उ०—जितै 'जसौ' पह जीवियौ, थिर रहियौ **सुरथांण**। आंगळ ही अवरंग सूं, पड़ियौ नह पाखांण।—बां. दा.

२ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

उ०—रिध नेह बैस पटरांणियां, देह न गाळी दुक्ख मैं। **सुरथांन** काजि महाराज संगि, मिळी एम सुरमुक्ख मैं।—रा. रू.

रू. भे.—सुरथांनक, सुरांथान, सुरांथांनि।

सुरथांनक–सं. पु.—१ सुमेरु पर्वत। (अ. मा.)

२ देखो 'सुरथांण' (रू. भे.)

सुरथि—देखो 'सुरथ' (रू. भे.)

सुरदारू–सं. पु. [सं.] देवदारू का वृक्ष।

सुरदुंदुभि–सं. स्त्री. [सं.] देवताओं का नगाड़ा।

सुरदेव–सं. पु. [सं.] जैनियों के भविष्यकाल के दूसरे तीर्थंकर का नाम। (स. कु.)

रू. भे.—सूरदेव।

सुरदेवि, सुरदेवी–सं. स्त्री. [सं. सुरदेवी] यशोदा के गर्भ से अवतार लेने वाली योगमाया जो, कंस द्वारा पछाड़ी जाते समय उसके हाथ से छूटकर आकाश में चली गई थी।

सुरदेस–सं. पु. [सं. सुरदेश] स्वर्ग।

सुरदोखी–सं. पु. [सं. सुर+द्वेषिन्] देवताओं का दुश्मन दैत्य, दानव, असुर। (अ. मा.)

सुरद्रुम, सुरद्रुमी–सं. पु. यौ. [सं. सुरद्रुम] देववृक्ष, कल्पवृक्ष।

सुरद्रोही–सं. पु. यौ. [सं.] १ असुर, दैत्य, दानव, राक्षस। (अ. मा.)

२ रावण, दशानन। (अ. मा.)

३ यवन, मुसलमान।

उ०—**सुरद्रोही** जाग्रत सुपन, प्रगट लखै उतपात। वार सुरंगी वीच तै, करै विरंगी वात।—रा. रू.

रू. भे.—सुरध्रोही।

सुरद्वार–सं. पु. यौ. [सं.] स्वर्ग-द्वार।

उ०—देबारी **सुरद्वार**, अडियौ अकबरियौ असुर। लड़ियौ भड़ ललकार, पोळां खोल 'प्रतापसी'।—दुरसौ आढौ

सुरद्विप–सं. पु. यौ. [सं.] १ इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

२ देवताओं का हाथी।

सुरधनुख, सुरधनुस–सं. पु. यौ. [सं. सुर+धनुष] इन्द्रधनुष।

सुरधरम–सं. पु. [सं. सुर+धर्मी] बृहस्पति। (अ. मा.)

सुरधांम–सं. पु. [सं. सुरधामन्] स्वर्ग।

उ०—परी वर होय विमांण पधारि। मिळै **सुरधांम** आरांम मझारि।—सू. प्र.

सुरधि–सं. स्त्री.—१ सफाई, स्वच्छता, शुद्धि।

२ अशुद्ध को शुद्ध करने का भाव, शुद्धि।

उ०—उच लगन लखि रिखि अरधि। स्रब कूंण प्राचिय **सुरधि**।—रा. रू.

सुरधुनी–सं. स्त्री. [सं. सुर+ध्वनी] गंगा नदी।

सुरधेन, सुरधेनु–सं. स्त्री. [सं. सुर+धेनु] १ इच्छित फल देने वाली देवताओं की वह गाय जो समुद्र मंथन से निकलने वाले १४ रत्नों में से एक थी, कामधेनु।

उ०—१ राजा तिण नगरी तणौ होजी, मछरालौ महसेन। मांनी महिपति अछै सभा दौ सुभमती होजी, दायक जिम **सुरधेन**।—वि. कु.

उ०—२ धेन पूज **सुरधेन**, विमधु चरणांम्रत वंदां। धनुख मांण न्रप कळप, संख जस मद्द विरद्दां।—रा. रू.

२ वशिष्ट मुनि की शवला नामक (नंदिनी) गाय जिसके लिये विश्वामित्र से युद्ध हुआ था।

सुरध्रमरिम–सं. पु. [सं. सुर+धर्म+रिपु] दैत्य, दानव, असुर, राक्षस। (नां. मा.)

सुरध्रोही—देखो 'सुरद्रोही' (रू. भे.) (नां. मा.)

सुरनगर–सं. पु. [सं.] स्वर्ग।

सुरनद, सूरनदि, सुरनदी–सं. स्त्री. [सं. सुरनदी] १ गंगा नदी। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—पोसप्प पांन कपूर प्रिथवी, बणत जण धन वांन ए। इधकार तीरथ जात उद्दम, आदि **सुरनदि** आंन ए।—रा. रू.

२ आकाश गंगा।

सुरनयर—देखो 'सुरनगर' (रू. भे.)

उ०—'अभसाह' न्रप दुख हरण आयां, जोधपुर सुख जांगियै । सुरनयर की कविलास सोभा, बाधि तास वखांगियै ।—रा. रू.

सुरनरजयकारी—सं. पु. यौ.—वह घोड़ा जिसका समस्त शरीर श्वेत हो और एक कान श्यामवर्ण का हो। ऐसा माना जाता है कि ऐसे घोड़े के स्वामी में देवताओं को जीतने की भी शक्ति आ जाती है। (शा. हो.)

सुरनाथ सं. पु. [सं.] इंद्र, सुरपति।

उ०—१ **सुरनाथ** त्रितासुर साखियात। प्रगटै कि सस्त्र रव वज्रपात।—रा. रू.

उ०—२ माथ पगां **सुहनाथ** नमावै, गौरव सारद नारद गावै। —र. ज. प्र.

रू. भे.—सुरनाह।

सुरनाथरथ—सं. पु. [सं.] इंद्र का हाथी, ऐरावत। (अ. मा.)

सुरनायक सं. पु. [सं.] १ ईश्वर, परमात्मा। (ह. नां. मा.)

२ विष्णु। (नां. मा.)

उ० सुरनायक सेव्य सम्रद्धि सही, बळ सागर री बल बिद्ध सही। नव नैनन में नव निद्धि नही, सब साजर सिद्धिय सिद्धि सही।

—ऊ. का.

सुरनारी—सं. स्त्री. [सं.] देवबाला, देवांगना, अप्सरा।

सुरनाह—देखो 'सुरनाथ' (रू. भे.)

सुरनैज सं. पु. [सं सुर+नदी+ज] पितामह भीष्म, गांगेय।

उ०—धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज। सौ सूरां सिर सेहरौ, नर पुंगव **सुर-नैज**।—बां. दा.

सुरप, सुरपत, सुरपति, सुरपत्ती—सं. पु. [सं. सुरप, सुरपति] १ देवताओं का राजा इन्द्र, सुरराज। (अ. मा; डि. को.)

उ०—१ लहर हेक दीठी लछीम थांनक लंकमा। गुज पय नमै अविरळ सीस **सुरप** असंकमा।—र. ज. प्र.

उ०—२ सेवैं पुरख सुपह पह सुमनस, सुमनस सेवै **सुरप** सुबेस। सेवैं सुरपतादि उर ईसर, ईसर ती सेवै **अवधेस**।—र. रू.

उ०—३ रट नर अधिका राज, राजा अधिका सुर रटै। सुरां अधिक सुरराज, अवधेसर **सुरपत** अधिक।—र. ज. प्र.

उ०—४ ब्रह्मा विसन सेस सिव नारद, नर **सुरपति** लै आदि। गिरही रिखवदेव औतारा, और की कौंन सुनादि। -अनुभववांणी

२ विष्णु।

३ दुर्गा, देवी। (क. कु. बो.)

४ पार्वती। („)

५ टगण के चतुर्थ भेद का नाम। (डि. को.)

६ ढगण के द्वितीय भेद का नाम। (र. जं. प्र.)

७ आदि गुरु त्रिकळ मात्रा का एक नाम।

रू. भे.—सुरंपति, सुरपती, सुरपत्ती, सुरांपत, सुरांपति, सुरापत सुरापति, सुरापती।

सुरपतगुरु, सुरपतिगुरु—सं. पु. यौ. [सं. सुरपतिगुरु] बृहस्पति।

सुरपतिचाप सं. पु. यौ. [सं.] इन्द्रधनुष।

सुरपतितनय सं. पु. [सं.] १ इन्द्र का पुत्र, जयंत।

२ अर्जुन।

सुरपतिपाट सं. पु.—इन्द्रासन। (नां. मा.)

सुरपती, सुरपत्ती—देखो 'सुरपति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ० १ मानवी भाकरी, निजर **सुरपती** निहारै। भाग धन्य भूपती, एम सोभाग उचारै।—रा. रू.

उ० २ तिलोतमा मेनका रंभा, उरवसी सगोतरि। **सुरपत्ती** सेवतां, ईंद्र न भरै निरा ओगरि।—रा. रू.

सुरपथ सं. पु. [सं.] आकाश, आसमान। (अ. मा.)

सुरपरवत सं. पु. [सं. सुर+पर्वत] सुमेरु पर्वत।

सुरपाज, सुरपाजा सं. पु. —श्रीरामसेतु, सेतुबंध। (नां. मा.)

सुरपादप सं. पु. [सं.] कल्पवृक्ष, कल्पतरु।

सुरपाळ, सुरपाळक, सुरपालक सं. पु. [सं. सुरपाल, सुरपालक] १ इन्द्र, सुरराज।

२ ईश्वर। (नां. मा.)

वि. देवताओं की रक्षा या पालन करने वाला।

उ० देवी दानवां काळ **सुरपाळ** देवी, देवी साधकां चारणां सिद्धं सेवी।—देवि

सुरपीर—देखो 'सुरपी' (रू. भे.)

सुरपी—सं. पु. देवताओं के पूजनीय, देव पूज्य।

उ० बीर बळ बळी महाबळां, आगौं **सुरपीर**। छुरिनि मदोपति छोळियां, फिर गिरि पहु सरीर।—रा. रू.

सुरपुर—सं. पु. [सं.] १ अमरावती, स्वर्ग, बैकुण्ठ।

उ० १ **सुरपुर** नूं गयौ अभिनवौ 'सेखा' सुजस रास्वि धर स्यांम सनाह।—बां. दा.

उ० २ सुर वरै हरख बरखै सुमन, अमर नरगि धिन उच्चरै। नर सुख्रम हूंत सौदियां क्रमाल, **सुरपुर** मारग संचरै।—रा. रू.

२ किसी विषय, घटना या बात की गुप्त रूप से या दबी जबान से चलने वाली चर्चा, जिक्र, गुप्त वार्ता।

उ०—१ इण बात री **सुरपुर** बांणियै सुणी तौ बौ मांय रावळा मैं सीधौ 'ठाकरांणीसा' रै पाखती गियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ काले थारै भाग री म्हैं निपटनै पाछौ आवतौ हौ कै एक बांटका लारै म्हैं दो लुगायां री **सुरपुर** सुणी।—फुलवाड़ी

३ गुप्त मंत्रणा।

उ०—पछै घड़ी भर तांई दोनूं लोग लुगाई **सुरपुर** करता रह्या।

—फुलवाड़ी

४ फुसफुसाहट, अस्पष्ट आवाज।

उ०—बरसाळी मैं ऊभा चोर साळ मैं **सुरपुर** सुणी तौ किवाड़ रै पाखती कांन लगाय ध्यानं सूं सुणण लागा।—फुलवाड़ी

५ भनक ।

उ०—उण देस रौ राजा अदल न्यायी हौ । इण सौदा री **सुरपुर** ई सुणली तौ पीढियां री कमाई तक खोस लेवैला ।—फुलवाड़ी

६ खबर ।

उ० च्यारू टाळ्या सिरदारां री गत बिगड़ी उण सूं चौगणी **सुरपुर** उण रै कांनां पूगगी ही ।—फुलवाड़ी

७ उड़ती खबर, अफवाह ।

उ०—इण गवाड़ी राजाजी री ढूक नीं व्ही जित्तै कित्ता मिनख प्रीत करण रौ स्वांग रचियौ, पण राजाजी री **सुरपुर** सुणतां ईं एक ई इण गवाड़ी साम्ही मूंडौ नीं करियौ ।—फुलवाड़ी

८ चक-चक ।

उ०—जांनियां रै डैरा सूं ठौड़ ठौड़ **सुरपुर** सळवळण लागी कै वींदराजा नै किणी काळजीभा री निजर लागगी । तपास करनैं उणरी जीभ डांभौ ।—फुलवाड़ी

९ चर्चा, बात, जिक्र ।

उ०—मेड़ी रै बारणैं ऊभा धणी नै अबै जावतां चेतौ व्हियौ पण चेतौ बावड़तां ईं जकी **सुरपुर** कांनां सुणीजी तौ. जांणै काळजा मैं अणचीती सुरंग छूटी ।—फुलवाड़ी

१० विचार-विमर्श, सलाह ।

उ०—खिलकौ जोवण सारू गांव रा सगळा बूढा-ठाडा चोवटै अेकठ होय **सुरपुर** करण लागा ।—फुलवाड़ी

सुरपुरनाथ, सुरपुरनाह—सं. पु. यौ. [सं. सुरपुरनाथ] इन्द्र । (अ. मा.)

सुरपुरी—सं. स्त्री. [सं.] देवताओं की पुरी, स्वर्ग, वैंकुण्ठ ।

सुरपोढणी—सं. स्त्री.—आसाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी । यह दिवस भगवान के शयन करने का माना जाता है ।

सुरप्रिय—सं. पु. [सं.] १ इन्द्र का एक नामान्तर ।

२ बृहस्पति का एक नामान्तर ।

वि.—जो देवों को प्रिय हो ।

सुरफांकताल—सं. स्त्री.—मृदंग की एक ताल ।

सुरबंधु—सं. पु. [सं.] दैत्य, दानव । (डिं. को)

सुरबांग—सं. स्त्री. [सं. स्वर+फा. बांग] अजान की आवाज ।

उ०— सुर झालर घटां सरसाया । महजीतां **सुरबांग** मिटाया ।
—रा. रू.

सुरबांणी—सं. स्त्री. [सं. सुर+वाणी] देव भाषा, संस्कृत ।

उ०—साच वाच संभळै, सोचि बोलै **सुरबांणी** । जीहा जपि जीकार, कथा ध्रंम सिध कहांणी ।—वि. सं. सा.

सुरबाळ, सुरबाळा—सं. स्त्री. [सं. सुरबाला] देवांगना, अप्सरा ।

उ०—वरै सुज हिंदु वरै **सुरबाळ** । चलै सुख हूर धरै चंगलाळ ।
—रा. रू.

रू. भे.—सुरबाळी ।

सुरबाळी—सं. स्त्री.— १ पृथ्वी, धरती । (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'सुरबाळ' (रू. भे.)

सुरभंग—सं. पु. [सं. स्वर+भंग] १ एक प्रकार का रोग जिसके कारण स्वर बैठ जाता है और भर्राई हुई आवाज निकलती है ।

२ उच्चारण में होने वाली बाधा ।

३ साहित्य में एक सात्विक अनुभाव जिसमें हर्ष, भय, क्रोध आदि के कारण स्वर में रूपान्तरण हो जाता है ।

सुरभख—देखो 'सुरभिक्ष' (रू. भे.)

उ०—मेटै **दुरभक** मुरधरा, **सुरभख** चारू चाळ । रायपाळ पायौ विरद, महींरेलण घणमाळ ।—पा. प्र.

सुरभमण, सुरभवन—सं. पु. [सं. सुर+भवन] १ स्वर्ग, वैकुण्ड ।

२ देवस्थान, मंदिर, देवालय ।

रू. भे.—सुरभुयण, सुरभुवण ।

सुरभाका, सुरभाख, सुरभाखा—सं. स्त्री. [सं. सुर+भाषा] संस्कृत भाषा, देववाणी । (अ. मा.)

उ०—१ संसक्रत है **सुरभाख**, आदि पहिला उच्चारू । सुजि भाखा दूसरी, सेस दूजै विसतारू ।—सू. प्र.

उ०—२ भाखा ब्रज मारू **सुरभाखा**, भाखा प्राक्रत जांन भर । पायौ रचण रूपगां पैंडौ, 'मेहाही' थारी महर ।—बां. दा.

सुरभि—सं. स्त्री [सं. सुरभिः] १ वसंत ऋतु ।

२ महक, सुगंध, खुशबू ।

उ०– पुहप **सुरभि** पांचैवरण, वरखा करण विसेख ।—ध. व. ग्रं.

३ गौ, गाय ।

उ०— **सुरभि** रसा नूं स्यांम मौ, खंड खगट खाटेह । ओण साड़िदै सावरत, बिप्रां नित बांटेह ।—रैंवतसिंह भाटी

४ पृथ्वी, धरती । ५ शराब, मदिरा ।

६ अष्ट मातृकाओं में से एक ।

७ वन तुलसी ।

८ एक प्रकार की सुगंधित घास ।

९ साल वृक्ष की राल ।

१० गंधक ।

११ कस्तूरी ।

१२ हरीतकी, हर्रे ।

सं. पु.—१३ चैत्र मास, मधुमास ।

१४ चंदन ।

१५ पुष्पहार ।

१६ नारियल ।

१७ चपक वृक्ष ।

१८ समी वृक्ष ।

१९ कदंब वृक्ष ।

२० जातिफल, जायफल ।

२१ मोतिया बेला।

२२ सुवर्ण।

वि. [सं. सुरभि] १ महकदार, खुशबूदार, सुगंधित।

उ०—१ छठ्ठी पूजा ए छती, महा **सुरभि** पुस्पमाल। गुण गुंथी थापौ गलै, जेम टलै दुख जाल।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ वात समीरण चालवै, **सुरभि** सीतल नै मंद। गगन वस्त्र जास कहीयै, तजै तिमिर नौ फंद।—वि. कु.

२ मनोहर, सुन्दर।

३ आनन्ददायक, प्रिय।

४ चमकदार, चमकीला।

५ प्रेम पात्र।

६ प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित।

७ बुद्धिमान, पंडित, विद्वान।

८ पुण्यात्मा, नेक।

९ जवान, युवा।

रू. भे.—सरभि, सरंभि, सुरभी, सुरभेई, सुरब्भी, सुरह, सुरहि, सुरही, सुरहि, सौरभेई।

सुरभिक्ष, सुरिभख—सं. पु. [सं. सुरभिक्ष] १ वह समय जब वर्षा अच्छी होने के कारण अन्नादि की फसल अच्छी होती है, दुरभिक्ष का उल्टा, सुकाल।

२ अधिक वर्षा।

रू. भे.—सुरभख।

सुरभिगंध—सं. स्त्री. [सं.] सुगंध, खुशबू।

सुरभितनय—सं. पु. [सं.] १ बैल।

२ सांड।

३ बछड़ा।

सुरभितन्या—सं. स्त्री. [सं.] १ गाय, गौ।

२ गाय की बछिया।

सुरभिमास—सं. पु. [सं.] चैत्रमास, मधुमास।

सुरभी— देखो 'सुरभि' (रू भे.)

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.) (अनेका.)

उ०—१ **सुरभी** गोबर पाक, करै ओखर चहुंआरां। काया पाक किम कहां, भोत मळ भरी विकारां।—वि. सं. सा.

उ०—२ **सुरभियां** चरावौ संग लावौ सखा, छैल आवौ कदम तणी छांही। पोख हित वेल गावौ चरित पेम रा, मुरळिका सुणावौ घोख मांही।—बां. दा.

सुरभुयण, सुरभुवण—देखो 'सुरभवन' (रू. भे.)

सुरभूखण—देखो 'सुरभूसण' (रू. भे.)

सुरभूप—सं. पु. [सं.] इन्द्र, सुरेश।

२ विष्णु।

सुरभूसण—सं. पु. [सुर+भूषण] देवताओं के पहनने का एक मोतियों का हार जो एक हजार दानों का चार हाथ लम्बा होता है।

रू. भे.—सुरभूखण।

सुरभेई, सुरभ्भी—देखो 'सुरभि' (रू. भे.) (अ. मा)

सुरमंडप—सं. पु. [सं.] देवालय, मंदिर। (अ. मा.)

सुरमंडळ—सं. पु. [सं. सुरमंडल] १ देवसमाज, देवगण।

२ देवताओं की सभा, मण्डली या गोष्ठी।

३ मिजराब से बजाया जाने वाला एक तार वाद्य।

सुरमंत्री—सं. पु. [सं. सुरमंत्रिन्] बृहस्पति।

सुरमंदिर—सं. पु. [सं.] देवालय, देवस्थान।

सुरम—सं. स्त्री.—घोड़े की ललाट पर होने वाली एक भंवरी (चक्र) जो शुभ मानी जाती है। (शा. हो.)

२ देखो 'सुरम्य' (रू. भे.)

सुरमण—सं. स्त्री. [सं. सुरमणम्] रतिक्रीड़ा।

उ०—सेती नदि साथ **सुरमण** कौक मनि। रमण कौक मनि सीस रही।—वेलि

सुरमणि, सुरमणी—सं. स्त्री. [सं.] चिंतामणि।

सुरमांनी—वि. [सं. सुरमानिन्] अपने को देवता समझने वाला।

सुरमाग—सं. पु. [सं. सुर+मार्ग] देवताओं का मार्ग, आकाश, गगन।

उ०—धिरी घर घीधांणि चील्ह अपाय, अंत्रावळि नाड़ि नखां उळझाय। माळा उड जोत लसी **सुरमाग**, जसी रण आंगण जोत-चराग।—मे. म.

रू. भे.—सुरमारग।

सुरमाता, सुरमात्ता—सं. स्त्री. [सं. सुरमातृ] सरस्वती, शारदा। (अ. मा.)

सुरमादांनी—सं. स्त्री.—धातु या लकड़ी की डिबिया जिसमें सुरमा रखा जाता है, सुरमे की शीशी।

सुरमारग—देखो 'सुरमाग' (रू. भे.)

सुरमुक्ख, सुरमुख, सुरमूख—सं. पु. [सं. सुरमुख] अग्नि, आग।

उ०—१ **सुरमुख** करै सनांन, पंथ सुरपुर कै हाली। दियौ नहीं जमसाद, खांवंद सग कियौ 'खुमाली'।—अरजुन जी बारहठ

उ०—२ रिमां दळ बीच 'जसौ' दरस रूख। समूद्रह बीच जिसौ **सुरमुक्ख**।—सू. प्र.

उ०—३ रिख नेह बैस परसंगियां। देह न गाळी दुक्ख मैं। सुरथांन काजि महाराज संगि, मिळी एम **सुरमुक्ख** मैं।—रा. रू.

उ०—४ विप्र वेद मंत्र विधवत विचार। आहूत वेद **सुरमुख** अपार।—सू. प्र.

उ०—५ दया धरम दी वेल, वाट गुर ग्यांन बतावै। रांम चरण चित राख, जाप **सुरमूख** जगावै।—जगौ खिड़ियौ

रू. भे.—सुरांमुख, सुरासुख

सुरमौ—सं. पु. [फा. सुर्मः] एक खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आंखों में अंजन की तरह डाला जाता है।

उ०—१ और सहेली म्हांरी मैहंदी मांडी। नैणां **सुरमौ** सारचौ।
—लो. गी.

उ०—२ बडी बडी ग्राखियां भीणा भीणा **सुरमा** ज्योत सी ज्योत मिळाइ लेती।—मीरां

उ०—३ चौथै फेरै री चूनड़ियां, हींगळू री कूंपियां, **सुरमा** री डबियां, काजळ री कूंपळियां, स्नोपाउडर री डबियां…।
—ग्रमरचूंनड़ी

सुरम्य–वि. [सं.] ग्रत्यन्त मनोरम, सुन्दर, रमणीक।

रू. भे.—सुरम।

सुरयंद, सुरयंद्र—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.) (ग्र. मा; डिं. को.)

उ०—सुक्रिया मिळ जूथ ग्रनेक करै सुख। रविनांम नरंद **सुरयंद** तणी रुख।—सू. प्र.

सुरयांन–सं. पु. [सं. सुरयान] देवताग्रों का रथ।

सुरांयद—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

सुरयौ–सं. पु.—बछड़ा, बच्छ। (ग्र. मा.)

सुररंग–सं. पु.—फूल, पुष्प। (ग्र. मा.)

सुररख्खव–सं. पु. [सं. सुरर्षभ] इन्द्र। (नां. मा.)

रू. भे.—सुररिखभ, सुररिखव।

सुररांण, सुररांणी–सं. स्त्री. [सं. सुर+राज्ञी] १ पार्वती, गिरिजा।
(ग्र. मा.)

२ दुर्गा, देवी।

उ०—१ रीभ एम कहियौ **सुररांणी**। भूपति वर मांगौ मन भांणी।—सू. प्र.

उ०—२ रांणमरी बाजी रहै, जद भव जीतौ जांण। धोळां रौ रखसी धरम, 'सचियादै' **सुररांण**।—पा. प्र.

३ इन्द्राणी, शची।

उ०—ग्राय बइठा माया तणइ ग्रागळि, भरिया थाळ रतन बहु भांति। सनमुख हुऐ कहउ **सुररांणी**, ग्रवचळ गवरि तणउ ग्रहवाति।—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सुरांण, सुरांणी, सुरांरांण, सुरांराज, सुरांराय, सुरांराव।

सुरराइ, सुरराई, सुरराज–सं. पु. [सं. सुर+राजा] १ देवताग्रों का राजा, इन्द्र।

उ०—१ भूप रूप रतिराज, प्रांण ग्रगराज प्रकासण। कौरवराज धन करण, विमळ **सुरराज** विलासण।—सू. प्र.

उ०—२ हिय लोभ धरौ धख पुन्य धरौ। ऋत ऊंच करौ **सुरराज** सरौ।—र. ज. प्र.

२ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—घट घट घणनांमी स्वांमी **सुरराई**। ग्रंतरजांमी हुय ग्रोळज न ग्राई।—ऊ. का.

सं. स्त्री.—३ देवी, दुर्गा, पार्वती।

४ पूर्व दिशा।

५ श्यामापक्षी।

६ भैरवी (कोचरी पक्षी)

वि.—१ श्वेत। ꕥ

२ श्याम। ꕥ

रू. भे.—सुरराजा, सुरराय, सुरराव, सुरांरांण, सुरांराज, सुरांराय, सुरांराव।

सुरराजगज—सं. पु. यौ. [सं.] १ इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

२ श्वेत। ꕥ (डिं. को.)

३ कृष्ण, श्याम। ꕥ (डिं. को.)

सुरराजगुरु–सं. पु. यौ.—१ वृहस्पति।

२ पीत, पीला। ꕥ (डिं. को.)

सुरराजा, सुरराय, सुरराव सुरांराय—देखो 'सुरराइ' (रू. भे.)

उ०—१ दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारै। सकत वांम **सुरराय**, सोम दाहिणौ संभारै।—रा. रू.

उ०—२ राखियौ निजपुर राय, **सुरराय** जेण सुहाय। जग कमण फेरै जाब, कळ ग्रकळ 'सेर' नवाब।—रा. रू.

उ०—३ कई **सुरराय** डकाय कंठीर, बणै छबि छूटक मूंठ ग्रबीर।
—मे. म.

उ०—४ धुरा तू **सुरांराय** नौ नांम धेई।—मे. म.

सुररास–सं. पु. [सं. स्वरराशि] मुख, मुंह। (ग्र. मा.)

सुररिखभ,—देखो 'सुररख्खव' (रू. भे.)

सुररिखभवन–सं. पु. यौ. [सं सुरर्षभवनं] स्वर्ग। (ह. नां. मा.)

सुररिखव—देखो 'सुररख्खव' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

सुररिप, सुररिपु–सं. पु. [सं. सुररिपु] देवताग्रों का शत्रु, दैत्य, दानव ग्रसुर, राक्षस। (नां. मा.)

सुररूंख–सं. पु. [सं. सुरवृक्ष] कल्पवक्ष।

सुररिसी–सं. पु. [सं. सुर+ऋषि] देवर्षि।

सुरळक—देखो 'सीवल' (शेखावाटी)

सुरललिता–सं. स्त्री.—श्वेत, सफेद। ꕥ (डिं. को.)

सुरळा–सं. पु.—थूंक।

ज्यूं—संख बजै नै सुरळा उडै।

सुरळियांमणा–वि. [सं. स्वर+रा.+रळियांमण] १ कर्णप्रिय, मधुर, मीठा।

उ०—गावइ गीत **सुरळियांमणा**, जिणवर ना लीजइ भांमणा।
—स. कु.

२ मनोहर, सुन्दर।

सुरळियौ–सं. पु.—१ एक ग्राभूषण विशेष।

उ०—वीनणी ग्रावै रांमलौ कदैई बैरौ बोरियौ तौ कदैई **सुरळियौ** पार कर देवै।—वरसगांठ

२ कान का ग्राभूषण विशेष।

सुरलोक, सुरलोकि–सं. पु. [सं. सुरलोक] स्वर्ग, वैकुण्ठ। (नां. मा.)

उ०—१ इण हीज वंस मैं भटनेरपुर रै अधीस जसराज सोनगिरै कही वार जवनां री जोरदार कटक भांजियौ अर अंतरै समय आप री पत्नी री मस्तक गळै बांधि धारा चढि टूक टूक होय **सुरलोक** मैं निवास कीधौ ।—वं. भा.

उ०—२ झळहळ खेड़ि विवांण झोकां । सुर हुय इम जाऊं **सुरलोकां** ।—सू. प्र.

रू. भे.—सुरांलोक ।

सुरवइ—सं. पु. [सं. सुरपति, प्रा. सुरवइ] १ इन्द्र ।

उ०—दीठउ सुरगिरी क्षीर हरो, सुमिणइ सिरि रवि चंद । जनमि युधिस्ठरराय तणइ, मिलीया **सुरवई** विंद ।—सालिभद्र सूरि

२ देवता ।

उ०—धनुख चडावीउ भूयगि भमउं, उच्छा छइ मन माहि । बइठउ दीठउ हाथिणीयं, **सुरवइ** गुमिणा माहि । —सालिभद्र सूरि

सुरवधू सं. स्त्री. [सं.] देवांगना, अप्सरा ।

सुररिखभवन सं. पु. [सं. सुर + ऋषभ = श्रेष्ठ + भवन = आवासस्थान] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ । (ह. नां. मा.)

२ नन्दन-वन ।

सुरवर, सुरवरि—सं. पु. [सं. सुरवर] देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्र ।

उ०—धूलि मिल्हीय झलमलीय, सयल दिसि दिणयरु छाइउ । गयणि दुंदुभि द्रमद्रमीय, **सुरवरि** जसु गाईउ ।—सालिभद्र सूरि

सुरवल्लभा सं. स्त्री. [सं.] १ सफेद दूब ।

२ देवांगना, अप्सरा ।

सुरवल्ली—स. स्त्री. [सं.] तुलसी ।

सुरवां—सं. पु. [सं. स्वर] आवाज, कोलाहल, शोर ।

उ०—कैसौ लगै सुवावणौ, धुरवां धुरवां कंत । जळ झुरवां **सुरवां** करै, मुरवां गण महमंत । —अज्ञात

सुरवांणी सं. स्त्री. [सं. सुरवाणी] १ देव वाणी ।

२ संस्कृत भाषा ।

उ०—कर खेंचां तांणी चूंदी कांणी, **सुरवांणी** सोकंदा है ।

—ऊ. का.

सुरवांम, सुरवांमा—सं. स्त्री. [सं. सुर+वामा] देवांगना, अप्सरा ।

उ०—दुति ज्यां विघन करण तप दांमा । विदा कीध सुरपति **सुरवांमा** ।—सू. प्र.

सुरवास—सं. पु. [सं.] स्वर्ग वैकुण्ठ ।

सुरविटप—सं. पु. [सं.] कल्पवृक्ष ।

सुरवीण, सुरवीणू—सं. स्त्री. [सं. स्वर+वीणा] एक प्रकार का तार वाद्य ।

उ०—देवतूं कै मन भूलतै डोलतै है अदंगूं कै परन धौलकूं कै टिकौर । **सुरवीणू** कै झणहण तंबूरूं कै घोर ।—सू. प्र.

सुरवीथी—सं. स्त्री. [सं.] नक्षत्रों का मार्ग ।

सुरवीर—सं. पु. [सं.] १ इन्द्र ।

२ देखो 'सूरवीर' (रू. भे.)

सुरवेस्म—सं. पु. [सं. सुरवेश्मन्] स्वर्ग, देवलोक ।

सुरवेस्या सं. स्त्री. [सं. सुरवेश्या] अप्सरा । (डिं. नां. मा.)

सुरवैरी सं. पु. [सं. सुर वैरिन्] दैत्य, दानव, असुर, राक्षस ।

सुरव्रक्ष, सुरव्रख सं. पु. [सं. सुर + वृक्ष] कल्पतरु । (अ. मा.)

उ०—पूरै प्रभु आस सदा परतख, वधां सुरव्रभ किना **सुरव्रक्ष** ।

—ध. व. ग्रं.

रू. भे. सुरव्रिश, सुरव्रिख, सुरव्रिछ ।

सुरव्रतक सं. स्त्री. [सं. सुरवृतक] अग्नि, आग । (डिं. को.)

सुरव्रिक्ष, सुरव्रिख, सुरव्रिछ देखो 'सुरव्रक्ष' (रू. भे.)

सुरव्रिति स. स्त्री. [सं. सुर + वृत्ति] देव-पूजन, गणेश-पूजा ।

उ० सुभ अवि मांझ नगर मनेळो । **सुरव्रिति** मिळण थयौ मामेळो । रा रू.

सुरसंत देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

सुरसंपति, सुरसंपती स. स्त्री [सं. सुरसम्पत्ति] कल्पवृक्ष । (अ. मा.)

सुरस वि [सं] १ रसीला, रसदार ।

२ मधुर, मीठा ।

३ सुन्दर, मनोहर ।

४ स्वादिष्ट, सरस ।

सुरसख सं पु देवताओं का सखा, इन्द्र ।

सुरसत देखो 'सरस्वती' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ० १ मामी री जीभ माथै जांणै **सुरसत** ई आय बिराजगी व्है । उण रा एक एक बोल मैं इमरत घुळियोड़ौ हौ । फुलवाड़ी

उ०—२ मांमै गढ री दरवाजौ ढाबियौ नै भांणेज सिरै ड्योढी मैं डेरा किया । कवियां री वांणी माथै **सुरसत** आय बिराजी ।

अमरचूंनड़ी

सुरसतजनक सं. पु. यौ. ब्रह्मा । (डिं. को.)

सुरसती देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

उ० १ मगतगि ओऊंकार, वेद लिखि उवरि मेळा । गंग जमनां **सुरसती**, वीणी नाद बिंद का मेळा । वि. सं. सा.

उ०—२ जोति कै बीच तै सुरख डोरि कैसी सूली । तारा मंडळ तै और धार **सुरसती** की चली । सू. प्र.

सुरसत्रु—सं. पु. [सं सुर + शत्रु] असुर, दैत्य, दानव, राक्षस ।

सुरसदन सं. पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

सुरसद्म सं. पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

सुरसर, सुरसरि, सुरसरित, सुरसरिता, सुरसरी—सं. स्त्री. [सं. सुर-सरित्] गंगा नदी । (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ **सुरसर** सुजळ त्रमळ, संजोगी, दळ मळ अध ओघी दुख दंद ।—र. ज. प्र.

उ०—२ अत सीतळ उतराद सूं, ऐथ बह्योड़ौ आय । जळ **सुरसरि** अघ जाळतौ, करै विलंब न काय ।—बां. दा.

उ०—३ 'सूर' तणौ **सुरसरी** तणौ सर, मानव विहंडिया बजावै मारं ।—किसनौ आढौ
रू. भे.—सुरसुर, सुरसुरी ।

सुरसांम—सं. पु. [सं. सुर+स्वामी] १ इन्द्र ।
उ०—रमा कंत ची वंक बे भ्रूंह रंजी । लखै कांम **सुरसांम** ची चाप लजी ।—रा. रू.
२ विष्णु ।
३ महादेव ।
४ ईश्वर ।

सुरसांमणी, सुरसांमिणी—सं. स्त्री. [सं. सुर+स्वामिनी] पार्वति, दुर्गा ।
उ०—सुभराज करै तनां **सुरसांमिणी**, ताहरै नांम सांम्हेई तरां । जयौ निमी तुंनां जग जांमिणी, कतियांणी आदेस करां ।—पी. ग्रं.
रू. भे.—सुरस्यांमण, सुरस्यांमणी ।

सुरसा—सं. स्त्री. [सं.] नागों की माता जिसने समुद्र पार करते समय श्रीहनुमान का रास्ता रोका था ।
२ एक अप्सरा ।
३ तुलसी ।
४ ब्राह्मी ।
५ दुर्गा ।
रू. भे.—सुरस्सा ।

सुरसाइ, सुरसाई—सं. पु. [सं. सुर+स्वामिन्] १ इन्द्र ।
२ स्वर्ग में ले जाने का प्रथम दिया जाने वाला द्रव्य या दान ।
उ०—कमधै फतमालौत 'किसोरौ', जिण दीठां खळदळा निजोरौ सोहै 'माहब' तणौ सवाई, रिण जिण खड़ग वसै **सुरसाई** ।
—रा. रू.
३ देखो 'सूरसाही' (रू. भे.)
उ०—तरै उमराव दरबार आया, तरै ढाल देखण रै मिस लीनी । तरै परदडी मांहं सु पटा लीना नै मोदीयां री हाटां सूं मोहरां **सुरसाइ** आइ ।—रा. वं. वि.

सुरसाखी—सं. पु. [सं. सुर+शाखिन्] कल्पवृक्ष ।

सुरसाज—सं. पु.—बृहस्पति । (अ. मा.)

सुरसाल—सं. पु.]सं. सु+रसाल] अच्छे व मीठे आमों का वृक्ष ।
उ०—किहां सायर किहां छिल्लरू, किहां केसरि किहां साल । किहां कायर किहां वर सुहड, किहां वण किहां **सुरसाल** ।
—हीराणंद सूरि

सुरसालु, सुरसालू—वि. [स. सुर+शल्य] देवताओं को सताने वाला, असुर, राक्षस ।

सुरसिंधु—सं. पु. [सं.] गंगा नदी ।

सुरसुंदरी—सं. स्त्री. [सं.] १ देवकन्या, देवांगना, अप्सरा ।
२ दुर्गा, पार्वती ।

सुरसुर—सं. स्त्री.—१ फुसफुसाहट, सुरसुराहट ।
२ देखो 'सुरसरी' (रू. भे.)
उ०—चाव घणौ कर चेत, सांपड़ता थारै सुं-जळ । **सुरसुर** पाप समेत, ताप मिटै जीवां तणां ।—बां. दा.

सुरसुरभि, सुरसुरभी—सं. स्त्री [सं.] देवताओं की गाय, कामधेनु ।

सुरसुराट, सुरसुराहट—सं. स्त्री.—१ खुजलाहट ।
२ गुदगुदी ।
३ फुसफुसाहट ।

सुरसुरी—देखो 'सुरसरी' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—जग अघ हरण **सुरसूरी** जांमी । राज तणा चरणां रघुराज ।
—र. ज. प्र.

सुरसेनप—सं. पु. [सं. सुरसेनपः] देवताओं का सेनापति, कार्त्तिकेय ।

सुरसेना—सं. स्त्री.—देवताओं की सेना ।
रू. भे.—सेनसुर ।

सुरस्थांन—सं. पु. [सं. सुरस्थान] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ, स्वर्गलोक ।
२ देवालय, मंदिर ।

सुरस्यांम—देखो 'सुरस्वांमी' (रू. भे.)
उ०—नटणी ज्यूं मुगती नचै, सदावास **सुरस्यांम** ।—ह. नां. मा.

सुरस्यांमण, सुरस्यांमणी—देखो 'सुरसांमणी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सुरस्यांमी, सुरस्वांमी—सं. पु. [सं. सुरस्वामिन्] १ विष्णु ।
२ ईश्वर ।
३ इन्द्र, सुरेन्द्र ।
रू. भे.—सुरस्यांम ।

सुरस्सती—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)
उ०—**सुरस्सती** द्वारमती विचि सूर । पयौ अतस 'रैण' वडै ध्रूम पूर ।—सू. प्र.

सुरस्सा—देखो 'सुरसा' (रू. भे.)
उ०—**सुरस्सा** असी जोजनां डाव साहै । थमांऊ निवै जोजनां है अथा है ।—सू. प्र.

सुरह—देखो 'सुरभि' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ मोती-जड़ी ज हाथि, **सुरह** सुगंधी वाटली । सूती मांझिम राति, जांणू ढोलूं जागवी ।—ढो. मा.
उ०—२ **सुरह** दुज देब तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तिलक तुळसी निरंजण जाप ।—नरहरदास बारहठ
उ०—३ सूर वाहर चढै चारणां **सुरह** री, इतै जस जितै गिरनार आबू ।—बांकीदास आसियौ

सुरहउ, सुरहर, सुरहरि, सुरहरी, सुरहळ—देखो 'सुरभि' ।
उ०—१ सिंधु परइ सत जोअणां, खिवियां वीजळियांह । **सुरहउ** लोद्र महक्कियां, भींनी ठोवड़ियांह ।—ढो. मा.
उ०—२ **सुरहळ** रे तेरी खेद्यां जाय, वारी, म्हारा गूगा भल रही वौ ।—लो. गी.

सुरहि, सुरही—सं. स्त्री.—गाड़ी जो बैलों द्वारा खींची जाती है ।

उ० रूणाझुणा बैल भंवरजी ! मैं वणूं जी, हांजी ढोला ! वरण ज्याऊं **सुरही** रा बैल हार लगै जद मारूजी बैठ ल्यौजी, ओजी म्हांरी मेजां रा सिरणगार !— लो. गी.

२ देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

उ०—१ तै थप्पै सुर धरम धरम उसरां ऊथप्पै। देवळ तीरथदेव **सुरही** द्ध्रकार समप्पै।—रा. रू.

उ०—२ मांनि अगनि दोय गरबगत, प्रकट परम पद हाथि। कांमधेनि **सुरही** सबै, सोतौ कांमधेनि तहां साथि।—ह. पु. वा.

उ०—३ छोड चल्या भंवर जी वाछड़ी जी, हांजी ढोला हो गई **सुरही** गाय। दूध पीवरण री रुत चाल्या चाकरी, हां जी म्हारी सेजां रा सिरणगार।—लो. गी.

सुरहौ- वि. [सं. सुरभि + रा. प्र. औ] १ गाय का।

उ०—१ इण भांतिरा सूअरां बाकरां रा सूळा रजबै रा मारिया घणै **सुरहै** घीरा झारिआ, आडीआं पोटळिआं ऊपरि झरराट करिनै रहिआ छै।— रा. सा. सं.

उ०—२ मूंग मोठ तूअर वणी रे लाल, राती दाल मसूर। उड़द चिणां उपरी घणा रे लाल **सुरहा** घ्रत भरपूर।— प. च. चौ.

उ०—३ जद इण गवांरी जाड़ी रोटियां कर मांहि **सुरहौ** घी घाल्यौ।—भि. द्र.

२ सुरभि संबंधी, सुरभि का।

सुरांचर—सं. पु. [सं. सुर + चरणम्] आकाश नभ। (ना. डिं. को.)

सुरांण—सं. पु. ब. व. [सं. सुर] १ देव गण, सुरगण। (ना. डिं. को.)

उ०—सुख वर **सुरांणां** गौ दुजांणां माघवांणां सुख मिळै।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'सुररांण' (रू. भे.)

सुरांणी—देखो 'सुररांणी' (रू. भे.)

उ०—सांगरियां रै साग सती सिरमोड़ **सुरांणी**। खा सांगरियां साग, नरां पर पीड़ पिछांणी।—दसदेव

सुरांतर—देखो 'सुरतर' (रू. भे.)

उ०—'पातल' सूं अंजसै प्रथी, नवकोट नरांतर। काळ भयंकर केवियां, सेवियां **सुरांतर**।—मोडजी आसियौ

सुरांथांण, सुरांथांणी, सुरांथांन, सुराथांनि—देखो 'सुरथांन' (रू. भे.)

उ०—पाट छळि ऊधरै वंस विरदां प्रगट, वरै अछरां **सुरांथांनि** बसियौ।—बिहारीदास राठौड़ रौ गीत

सुरांपत, सुरांपति, सुरांपती—देखो 'सुरपति' (रू. भे.)

उ०—१ 'जगा' तरण राज सांमुद्र जग जांणियौ, बयण बाखांणियौ येह बारूं। 'करन' हर तमासै हेल माटै कियौ, **सुरांपत** बिमासै बेल सारूं।—महारांणा राजसिंह रौ गीत

उ०—२ इंद्र पूछिया तरइ ब्रह्मादिक, मेछ कीयइ रइ हाय मरइ। देव अनइ महांत दूहवइ, तिण कहर **सुरांपति** खेद करइ।

—महादेव पारवती री वेलि

सुरांमुख—देखो 'सुरमुख' (रू. भे.) (ना. डिं. को: ह. नां. मा.)

सुरांरांण, सुरांराज, सुरांराय, सुराराव—१ देखो 'सुरराज' (रू. भे.)

उ०—१ साज पांण चाप बांण खळां खांण धमंगाण। **सुरांरांण** भुजांपांण जैं लियौ असंक।—र. ज. प्र.

उ०—२ तरै बांण बांदै गयौ देखि त्रासं। **सरांराज** झल्लै न हल्लै सगासं।— सू. प्र.

उ०—३ पखाळां भरै जम्म भैसौ संप्राजै। **सुरांराव** सिक्कौ छिड़क्काव साजै।— सू. प्र.

२ देखो 'सुररांण' (रू. भे.)

उ० चउद चाळ उजाळ बड निति करै कवि नव खंडै कीरति। पाट पती बह दीह प्रतपै **सुरांराय** सहाय।— ल. पि.

सुरांलोक—देखो 'सुरलोक' (रू. भे.)

उ० विरद बांकम तणा झीकमळ बांधियौ, वींद बांकम **सुरांलोक** बणियौ।— द. दा.

सुरा—सं. स्त्री. [सं] १ शराब, मदिरा। (अ. मा.)

उ०—१ सुरा अमी निलवट बनि मार्घ। आधी निस भैरव आराधै।

—सू. प्र.

उ०—२ विखम खीज जिण वार, 'जैत' भूपति उर जग्गी। **सुरा** घिरत संजोग, ज्वाळ जांणै जगमग्गी।— मे. म.

२ अंगूरी शराब।

३ अप्सरा, देवांगना।

उ०—तिकां सुधा रूप सीधु रा छाकियां नदन वन रै निवास सुधरमा सभा मैं बैठि सुरा रै साथ विलास कीधा।—वं. भा.

४ पानी, जल।

५ पान पात्र।

६ सर्प।

सुराई—१ देखो 'सुराही' (रू. भे.)

उ०—सात हमायचा भांग, सात **सुराई** सराब की, सात सीकां जमनाजळ री हळवांन पींडा साल, बीटबा सूळा सराब बस्त भाव मांहै घात उभौ छै।—तिमरलिंग पातसाह री वात

२ देखो 'सूराई' (रू. भे.)

सुराक, सुराख—देखो 'सूराख' (रू. भे.)

उ०—काढै नाहर काळजा, छक मां अचरज छाक। केस जास लग काळजै, सालै करै **सुराक**।—बां. दा.

सुराग—सं. पु. [सं. सु + राग] १ अत्यन्त गाढ़ा प्रेम।

उ०—यौं प्रितची यौ प्रयाग **सुराग** रचाया।—वं. भा.

[तु + सुराग] २ किसी गुप्त बात, रहस्य या किसी की वास्तविकता को जानने का सूत्र, इशारा, संकेत।

उ०—उण गवाड़ी रौ भेद जांणण सारू मांय रा मांय घणाई तड़फा तोड़ता पण भेद रौ सुराग लगावरण सारू डरता घणा।

—फुलवाड़ी

३ पांव का चिन्ह, खोज, निशान ।
४ पता, खबर, ठिकाना ।
५ तलाश, अनुसंधान ।
६ जिज्ञासा ।
७ देखो 'सूराख' (रू. भे.)

सुरागाय—देखो 'सुरेगाय' (रू. भे.)

सुरागार–सं. पु. [सं. सुरा+आगार] जहां मद्य बिकता हो, शराब-खाना ।

सुरागी–वि.—अनुरक्त, आशक्त ।

सुराचार–सं. पु. [सं. सुर+आचार] १ देवताओं के आचार-विचार ।
२ रीति, ढंग ।
उ०—**सुराचार** घंटारवं तार साजै । वर्णौं नौबती सोभती रीत वाजै ।—रा. रू.

सुराचारज–सं. पु. [सं. सुर+आचार्य] देवताओं के गुरु वृहस्पति । (अ. मा.)

सुराज–सं. पु. [सं] १ श्रेष्ठ राजा द्वारा शासित देश, अच्छे राजा वाला देश ।
२ देखो 'सुराज्य' (रू. भे.)
उ०—१ मलयानिळ वाजि **सुराज** थिया महि, भई निसंकित अंकभरि ।—वेली
उ०—२ कुंडळिय्यां उदिय्यापुर की छब अधिक संपति नगर समाज । घर घर परजा लखपती रांणौ 'भीम' **सुराज** ।
—बगसीरांम प्रोहित री बात

सुराजा–सं. पु. [सं.] श्रेष्ठ राजा जो प्रजा पालन एवं शासन व्यवस्था ठीक रखता हो ।

सुराजीव–स. पु. [सं.] विष्णु ।

सुराज्य–सं पु. [सं.] ऐसा राज्य जिसमें प्रजा के हितों की रक्षा की जाती है और शासन का प्रबंध अच्छा रखा जाता हो ।
रू. भे.—सुराज ।

सुराट–सं पु. [सं.] सुरराज, इन्द्र सुरपति । (ह. नां. मा.)

सुराडौ–सं. पु. [देश] खाद्य पदार्थ के स्वाद पर ध्यान न देकर उदर पूर्ति करने वाला पशु या व्यक्ति ।

सुराति—देखो 'सूरता' (रू. भे)
उ०—दुरजोण मांण, अरजणह बांण । भुजबळी भीम **सुराति** सीम ।—वचनिका

सुराद–सं. [सं. सुराध्य] सूर्य रवि ।
उ०—निमौ जग आसाय पूरणजंद, निमौ विस्वनाद **सुराद** सुरंद ।
—सूरजनारायण री अस्तुति

सुराद्रि–सं. पु. [सं.] सुमेरु पर्वत ।

सुराधिप–सं. पु. [सं. सुर+अधिप] इन्द्र, सुरराज ।

सुराधीस–सं. पु. [सं. सुर+अधीश्वर] इन्द्र, सुरपति ।

सुरानक–सं. पु. [सं.] देवताओं का नगाड़ा ।

सुरानीक–सं. स्त्री. [स] देवताओं की सेना ।

सुरापगा–सं. स्त्री. [सं] गंगा नदी ।

सुरापत, सुरापति, सुरापती–देखो 'सुरपति' (रू. भे.)

सुरापांन–सं. पु. [सं. सुरापान] १ मद्यपान की क्रिया या भाव, मद्यपान ।
उ०—**सुरापांन** आंमुख सैहैत, करी गोठ तिण ठौड । रात सरोवर पर रह्यौ, राजंसी राठौड ।—पा. प्र.
२ शराब, मदिरा ।
उ०—पी जाय भठी इक **सुरापांन** । भख जाय अरद्ध भैंसा भयंन ।
—वि. सं.
३ शराब के साथ खाये जाने वाले चटपटे पदार्थ ।

सुरापात्र–सं. पु.—१ मदिरा रखने का पात्र ।
२ मदिरा पीने का पात्र ।

सुराब्धि–सं. पु. [सं.] सुरा का समुद्र, मदिरा सागर ।

सुरामुख—देखो 'सुरमुख' (रू. भे.)
उ०—**सुरामुख** हूतौ नै वळै घ्रत सींचियौ ।—दूदौ आसियौ

सुरायण–सं. पु.—बहादुर दल, योद्धा-समूह ।
उ०—**सुरायण** पूर किया रिणसाज । बिढै देविचंद अनै बछराज ।
—सू. प्र.

सुरार, सुरारि, सुरारी–सं. पु. [सं. सुर+अरि] १ देवताओं का शत्रु, असुर, दैत्य, दानव, राक्षस ।
उ०—रावण गुणै सुरार, हार सारखौ बभीखण, अमी बंट आसुरां, जोर अत कमी सुरज्जण ।—रा. रू.
२ एक प्रकार की बरसाती घास ।

सुराळ–सं. पु.—देवता ।
उ०—**सुराळ** नराळ व्याळ आळ पाळ ढाळ सक्र । सिघाळ अकाळ काळ टाळ वेद साख ।—र. ज. प्र.

सुरालय–सं. पु. [सं.] १ देवताओं के रहने का स्थान, मंदिर, देवालय ।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।
३ सुमेरु पर्वत ।
४ शराब-खाना ।

सुराळी—देखो 'सुरावळी' (रू. भे.)

सुराव–सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार का घोड़ा ।
२ उत्तम ध्वनि ।

सुरावट–सं. स्त्री. [सं. शूरत्व] बहादुरी, शूरता ।

सुरावती, सुरावनि–सं. स्त्री.—कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता अदिति ।

सुरावळि, सुरावळी–सं. स्त्री. [सं. स्वरावली] १ गायन में स्वरों का थाट, स्वर पंक्ति ।

उ०—गायन भीन सुरावळि मैं गहि, ज्यूं बधिरादर बीन बजाई ।
—ऊ. का.

[सं. सुर+अवलि] २ देवताओं की पंक्ति ।

रू. भे.—सुराळी ।

सुरावाहि—सं. पु [सं.] सुरा-समुद्र, शराब का समुद्र ।

सुरावास—सं. पु.—सुमेरु पर्वत ।

सुरासण—स. पु—इन्द्रासण । (नां. मा)

सुरासमुद्र—स पु [सं] मदिरासागर ।

सुरासुर—सं पु [सं] देवता व दानव ।

सुरासुरगुर, सुरासुरगुरू—स पु. [स सुर+असुर+गुरु] १ शिव ।

२ कश्यप ।

३ वृहस्पति और शुक्राचार्य ।

सुरास्ट्र—देखो 'स्वरास्ट्र' (रू भे)

सुराश्रय—सं. पु [सं. सुर+आश्रय] सुमेरु ।

सुराही—सं. स्त्री [अ.] १ प्रायः मिट्टी या धातु का बना जल पात्र जिसका पेट गोलाकार कुछ बड़ा होता है तथा मुंह नलिका की तरह लम्बा होता है ।

२ अच्छा राहगीर ।

रू भे—सुराई ।

सुराहीदार—वि. [अ.] सुराई के आकार प्रकार का ।

सुरिंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ दीवांण तणी तन कळा देखनइ, सिगळा सत्रारिज रखा सुरिंद । जोती जुडी कर तियउ जोवतां, चंदबाही किनां ऊगउ चंद ।
—महादेव पारवती रो वेलि

उ०—२ सुरिंद सबळा बिरिद साहणौं, चउद विदि आचरस चाहणौं ।—ल. पिं.

उ०—३ वदै मुख दीन सुरिंद वचन । —रांमरासौ

सुरिंदौ—सं. पु.—सारंगी के प्रकार का एक तार (गज) वाद्य ।

वि. वि.—वाद्य में तबली की शकल अन्य प्रकार की होती है । वह नीचे से छोटी बीच में एक दम पतली एवं ऊपर से पेट खुला रहता है । इस वाद्य को गज से बजाया जाता है । गज पर घुंघरू बंधे रहते हैं । इसके तीन तारों पर गज चलता है । बाज का तार लोहे का होता है । जो तार षड्ज पर मिला होता है उसके साथ ही दूसरा जोड़े का तार तांत का होता है, वह मध्य षड्ज पर मिला होता है । अंत में लोहे का तार होता है, जो मध्य सप्तक के पंचम पर मिलता है । पंचम एवं तार षड्ज दोनों स्वर के तार वजाते समय काम में लिये जाते हैं । सारंगी में नख के स्पर्श से स्वर निकाले जाते हैं किन्तु सुरिंदे में तार को अंगुली के पैरवे से दबाया जाता है, किन्तु इस दबाब से तार सुरिंदे की लकड़ी पर नहीं लगता । यह वाद्य मुख्यतया सुषिर वाद्यों की संगत में बजाया जाता है । विशेष कर पूंगीनुमा एक मुरली वाद्य के साथ इसके बजाने वाले मुख्यतः लंगा जाति के लोग होते हैं जो जैसलमेर क्षेत्र के निवासी हैं ।

सुरिंद्र, सुरिइंद, सुरिइंद्र—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे)

उ० १ सुरिइंद्र मिळ अग्रदेव साथ । हरि अग्र रहै सह जोड़ि हाथ ।—सू प्र.

उ०—२ वरू अपछर चढि कनक विवांणां । इम जाऊं सुरिइंद आथांणां ।—सू. प्र

सुरिज, सुरिजि—देखो 'सूरज' (रू भे.)

उ०—प्रगटियौ उदैगिरि जोधपुर, कमळ सुकवि प्रफुलित करै । गह धार पाट वणियौ 'गजण', सुरिज सूरिजसिंघ रै ।—सू. प्र. रु.

सुरित—स. स्त्री. [स. सु+ऋतु] १ अच्छी ऋतु ।

२ देखो 'सुरति' (रू. भे)

उ० १ है जलंधरबंध मैं, मन पवनां की गांठि । हरीया मिळै उनांन मैं, सुरित सबद की सांठि ।—अनुभववांणी

उ०—२ हीरां केरां गाहकू, हीरां हाट सुनाय । सरित निरत सूं निरखलै, सांटै साट मिळाय ।—अनुभववांणी

उ०—३ चंदा मांहि चिकोर की, सुरित वगीहै जाय । हरीया तन दाझै नहीं, जळत अगारा खाय । जनहरीया मत सबद मैं, सुरित रैन दिन पोय । माया को डर को नहीं, रहौ निसंगै होय ।
—अनुभववांणी

उ०—४ हरीया पछिम देस की, घाट विखम घर दूरि । सुरित सबद जांह संचरै, ताप त्रिगढ कूं चूरि ।—अनुभववांणी

३ देखो 'सूरत' (रू. भे.)

४ देखो 'सुरत' (रू. भे.)

सुरितांण, सुरितांणि—देखो 'सुलतांण' (रू. भे.)

उ०—चीत सुरतांणी आगळि 'चौंडरज', चैन सुरितांण तिम न को चेलै ।—केसोदास गाडण

सुरियं, सुरियंद—सं. पु.—१ वीर, योद्धा ।

उ०—जीवै के वरस असी धन जोड़ा, नर जीवै के वंस निवै । चाळीसां मांहे जस चाखौ, सुरियंद जायौ भलौ 'सिवै' ।
—आपो आढौ

२ देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

उ०—बजिथाळ सकळ वाजित्र बजै, कुसम सधण सुरियंद किया । बेखियां हीज आवै वणै, उण दिन तणी अजोधिया ।—सू. प्र.

सुरियण—देखो 'सुरगण' (रू. भे.)

उ०—उहव थयां नां कोई वह आवै, सुरियण मारग अन्य सह । मेक बहै अरसीह समोभ्रम, प्रथी बिलग्गी तूझ पहं ।
—महारांणा हमीरसिंह रौ गीत

सुरिहि—देखो 'सुरभि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सुरींद, सुरींद्र—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

उ०—सिंगां गिरां मैं गिरंद पटांधरां मैं खगींद्र सोहै, नखत्रां मैं

सीगा चंद्र ग्रहां मैं दिनेस। पारजत व्रछां सीगा सुरां मैं **सुरींद्र** पबै, पबै सीगा प्रथी नरां मैं नरींद 'सांवतैस'।—सांवतसींघ रौ गीत

सुरी—सं. स्त्री. [सं. सुरभिः] १ सीमा या सरहद का पत्थर।
२ पुण्य निमित्त छोड़ी हुई भूमि के सरहद का पत्थर जिस पर गोवत्स का चित्र अंकित हो, गोचर भूमि की सीमा का पत्थर।
३ देवी, दुर्गा।
उ०—रगता सेता रगा, नमौ मा ऋसना लीला। सीकोतरी आमुरी, **सुरी** सुसिला गरवीला।—देवि.
४ देवांगना, अप्सरा।
उ०—उग भवग वसग राजा 'अजन', आप सुखासग ऊतरी। लखि वरत **सुरी** अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी।—रा. रू.

सुरीत, सुरीति, सुरीती—सं. स्त्री. [सं. सुरीति] अच्छी या उत्तम रीति, तरीका, ढंग।
उ०—१ सुभ कंठ राग छत्रीस, सुख ओप जोप **सुरीत**। जगमगत तोरग जोत, गगलाल नग ससि गोत।—रा. रू.
उ०—२ हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी **सुरीति** चीत नरंदां।—गु. रु. बं.

सुरीयंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

सुरीयांग—वि.—शूरवीर, बहादुर।
उ०—बातां जातां जुगां 'जोधा' नरां, जाय नई आदू बडा **सुरीयांग**।—रावत जोधसिंह कोठारिया रौ गीत

सुरीली—वि. स्त्री. [सं.] कर्णप्रिय, मधुर, मीठी।
उ०—उगी बेळा रसाळ रै लीला पत्तां मांय लुक नै बैठी कोयलड़ी आपरी कूक री **सुरीली** तांन छेड़ी अर छोटी काळी चिड़कोली प्रेम मैं लीन आपसरी में बांध्यां मैं बंध्यै जोड़ै कनै आनै आपरी लांबी **सुरीली** बिगल बजादी।—तिरसंकू
स. स्त्री.—मधुर आवाज, मधुर ध्वनि।

सुरीलौ—वि. [स्त्री. सुरीली] १ कर्णप्रिय, मधुर, मीठा (कंठ, स्वर)।
उ०—डाळ डाळ पंछियां रा **सुरीला** गीत सुगीजग लागा।
—फुलवाड़ी
२ मधुर या मीठे स्वर वाला।
उ०—म्हनैं रोज सुगाई देवग आळा सुच्छम संदेसड़ला सूं कितरी ई घगी सांपरत, परस, गंध, संवरग अर सुवाद रै सगळै गुगां सूं छळक्ती, सीतळ फूटरी, नसीली **सुरीली** वा म्हनैं आपरी मीठी बांथां माय भरनै चाली गई।—तिरसंकू

सुरीस—सं. पु. [सं. सुर+ईश] इन्द्र, सुरेन्द्र।
उ०—साल निवार **सुरीस** कियौ सुख, बीस भुजा हग बांक रौ। बैख दियौ रघुराज भुजांबळ, राज भभीखग लंक रौ।
—र. ज. प्र.

सुरु—देखो 'सरु' (रू. भे.)
उ०—नोबता **सुरु** हुई जद वारली फौज मैं जांगीयौ आज नौबत सुरु हुई है सौ जांगां किलांगदासजी सासरै सूं आय गया दीसै है।
—नैंगसी

सुरुगुरु, सुरुगुरू—देखो 'सुरगुरु' (रू. भे.)
उ०—सुकीर नासिका सरूप, वेस रीत राजियै। **सुरुगुरु** र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै।—सू. प्र.

सुरुचि—सं. स्त्री. [सं.] १ राजा उत्तानपाद की दूसरी पत्नी जो ध्रुव की विमाता थी।
२ उत्तम रुचि, सद्इच्छा।
वि.—१ उत्तम रूचिवाला।
२ स्वाधीन, स्वतंत्र।

सुरुज—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

सुरुजमुखी—देखो 'सूरजमुखी' (रू. भे.)

सुरुतांम—सं. पु. [सं. सुर+राज+तमाम] सब देवता, देवगग।
उ०—तिहां जक्ष क्यंनर सिध साधिक, आविया **सुरुतांम**। सुरां नारी धवळ गावइ, रची चउरी तांम।—रुकमगी मंगळ

सुरुद—सं. पु. [सं. सुहृद] मित्र, दोस्त। (अ. मा.)

सुरू—देखो 'सरु' (रू. भे.)
उ०—१ स्रीडाढाळी रा **सुरू**, बंद्या पद अरबिंद। अब बंदू अवसांग मैं, ए पद पंकज 'इंद'।—मे. म.
उ०—२ दौलतखांना रौ म्हेल नवौ करायौ। नांव इग रौ पैं'ला अजीतविलास दीयौ थौ, पछै दौलतखांनौ कैगौ **सुरू** हुवौ १७७५।
—मारवाड़ री ख्यात

सुरूप—वि. [सं.] १ सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत।
उ०—१ कोई रसायग औसध खाय कुरूप सूं **सुरूप** हुवौ।
—पंचदंडी री वारता
उ०—२ काळी भोत कुरूप, कस्तूरी कांटै तुलै। सक्कर बडी **सुरूप**, नरजां तुलै नाथिया।—नाथियौ
२ समान, सदृश्य।
३ पंडित, विद्वान, बुद्धिमान।
४ कवि। (अ. मा.)
सं. पु.—१ अच्छा रूप, सुन्दर रूप, अच्छी आकृति।
२ प्रकृति, स्वभाव।
३ ढांचा, डौल।
[सं. सुरूपः] ४ शिव।
५ कामदेव।
६ तरह, प्रकार, किस्म।
७ देखो 'स्वरुप' (रू. भे.)

सुरूपा—सं. स्त्री.—पुरागानुसार एक गाय।
वि.—रूपवती, सुंदरी।

सुरेंगलौ—देखो 'सुरैंगलौ' (रू. भे.)
उ०—वाड़ी वाड़ी भंवरौ भिगकै रे **सुरेंगलौ**, चंद्रमाजी री पाग

बिराजै रे सुरेंगलौ सुरेंगलौ । रोहणदै धिर धिर निरखै रै सुरेंगलौ सुरेंगलौ ।—लो. गी.

सुरेंद्र-सं. पु. [सं.] १ सुरराज, इन्द्र ।

उ०—१ नरेंद्र कै **सुरेंद्र** कै धराधरेंद्र कै भ्रितू । अकारनीक आप नांहि कारनीक हौ भ्रिकू ।—ऊ. का.

उ०—२ तेरा ही पंथ साचा त्रिऊं लोक मैं नाग **सुरेंद्र** नमै नरनारी ।
—भि. द.

२ विष्णु ।

३ सूर्य्य, रवि ।

४ देवगरण, देवता ।

रू. भे.—सुरंद, सुरइंद, सुरयंद, सुरयंद्र, सुरयिंद, सुरिंद, सुरिंद्र, सुरिइंद, सुरिइंद्र, सुरियं, सुरियंद, सुरींद, सुरींद्र, सुरीयंद, सुरय्यंद ।

सुरेंद्रचाप-सं. पु. यौ. [सं.] इन्द्रधनुष ।

सुरेंद्रलोक-सं. पु. यौ. [सं.] इन्द्रलोक ।

सुरे-सं. पु.—१ स्वरवाला वाद्य ।

२ देखो 'सुरै' (रू. भे.)

सुरेख, सुरेखा-सं. स्त्री. [सं.] १ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार हाथ या पैर की शुभ मानी जाने वाली रेखा, सुन्दर रेखा ।

२ सुन्दर रेखा ।

उ०—अणियाळा नयरण आंजिया अंजरण, काजळ रेख **सुरेख** कर । इंद्र तरणइ दिन मूंठ अपूठी, भळका नांखइ वांम वर ।
— महादेव पारवती री वेलि

सुरेगाय-सं. स्त्री.—गायों की नस्ल विशेष जो हिमालय की तराई वाले क्षेत्र में पाई जाती है । इसी के पूछ का चंवर बनता है ।

सुरेज्यजुग-सं. पु. [सं. सुरेज्ययुग] वृहस्पति का युग जिसमे निम्नलिखित पांच वर्ष होते है :—

१. अंगिरा, २. श्रीमुख, ३. भाव, ४. युवा व ५ धाता ।

सुरेली-सं. स्त्री.—एक प्रकार का घास । (शेखावाटी)

सुरेस-सं. पु. [सं. सुर+ईश] १ सुरराज, इन्द्र ।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ कहै सनकादिक चारूं कीत, पढै नित नारद धारै प्रीत । रहै नित सेव रमाय **सुरेस**, आदेस, आदेस, आदेस आदेस ।
—ह. र.

उ०—२ च्यार चक राजन संसय पड़चा रे, धरहर धूजै सेस । रज उडी रे गयरणै रवि ढांकियौ रे, संक्यौ मन ही **सुरेस** ।
—प. च. चौ.

२ विष्णु, ईश्वर ।

३ कृष्ण ।

४ शिव ।

५ लोकपाल ।

रू. भे.—सुरईस ।

सुरेसर—देखो 'सुरेसुर' (रू. भे.)

सुरेसी-सं. स्त्री. [सं. सुरेशी] दुर्गा, देवी ।

सुरेसुर, सुरेस्वर सं. पु. [सं. सुरेश्वर] १ देवताओं का स्वामी, इन्द्र ।
(नां. मा.)

२ विष्णु, ईश्वर ।

उ०—मोख खमी खम कंद निगुण निरपख नरेसुर । निरालंब निरलेप अछाप अछेप **सुरेसुर** ।—पी. ग्रं.

३ गजानन, गणेश ।

उ०—सिव संभव सिव रूप **सुरेसुर** । सिव गुण दियण प्रणांम कथेसुर । अति लघु तिकौ सरण तक आवै, पात्र गुणै सुज बडपण पावै ।—रा. रू.

रू. भे.—सुरेसर ।

सुरेस्वरी सं. स्त्री. [सं. सुरेश्वरी] १ देवताओं की स्वामिनी, दुर्गा, देवि ।

२ लक्ष्मी ।

सुरें—देखो 'सुरै' (रू. भे.)

उ०—चारणां लगी लीनी **सुरें**, जुग रवि कोतक जोवसी । सिर घणां भड़ां वाळा समर, हरमाळ माळा होवसी ।—पा. प्र.

सुरेंगळौ सं. पु.—लोकगीतों मे लय का शब्द ।

वि.—सुन्दर, खूबसूरत ।

रू. भे.—सुरेंगलौ ।

सुरै-स. स्त्री. [सं. सुरभि] १ गाय, गौ ।

२ ब्राह्मणों, संन्यासियों व पुजारियों को दान में दी गई भूमि ।

३ उक्त दान दी गई भूमि की सीमाबन्दी हेतु रोपा गया पत्थर जिस पर गाय की आकृति चित्रित होती है ।

४ वह भूमि जो गायों के चारागाह के लिए छोड़ी गई हो ।

सं. पु. [सं. सुर] ५ देवता, सुर ।

सुरोतरि—देखो 'सुरतरु' (रू. भे.)

उ०—सहर लहांणी सिध **सुरोतरि** । कुळ सिणगार नरूकै 'केहरि ।'
—रा. रू.

सुरोदय-सं. पु. [सं. सूर्योदय] १ सूर्योदय ।

२ स्वरोदय ।

सुरोमा-वि.—जिसकी रोमावलि सुन्दर हो ।

सुरयंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

उ०—इम जीतै कनयज अयौ, अति छक वधै अणंद । सुरयंद गीत बहु कीध सुख, जगजीत जयचंद ।—सू. प्र.

सुलंक-सं. स्त्री.—सुन्दर कटि, श्रेष्ठ कटि ।

वि.—सुन्दर कटि वाली ।

सुलंकी-वि. स्त्री.—सुन्दर कटि वाली सुन्दरी ।

सुलंब—देखो 'सुलब' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सुलक्ष, सुलक्षण-सं. पु. [सं. सुलक्षण] १ किसी के शरीर पर होने

वाला ऐसा कोई चिन्ह, जो उसके भाग्यशाली होने का द्योतक हो, शुभ लक्षण।

उ०—सालहोत्र **सुलक्षण** साख, लेखां हय चौबीस लाख। सोल सहसं घरां सनमांन, राजै साथै राजांन।—ध. व. ग्रं.

[सं. सुलक्षण] २ व्यावहारिक दृष्टि से अच्छी आदत, अच्छा स्वभाव।

३ विद्वान, पंडित।

४ कवि।

वि.—सुन्दर, मनोहर।

रू. भे.—सुलक्षण, सुलखण, सुलखरा, सुलख्खरा, सुलख्यरा, सुलच्छरा, सुलछरा।

सुलक्षणौ—वि. [सं. सुलक्षणं] (स्त्री. सुलक्षणी) १ जिसके भाग्य के लक्षण अच्छे हों, शुभ लक्षण, भाग्यशाली।

२ जिसकी आदतें अच्छी हों।

३ चतुर, निपुण, गुणवान, व्यवहारकुशल।

४ सुन्दर मनोहर।

५ विद्वान, पंडित।

६ कवि।

७ सीधा, सयाना।

रू. भे.—सुलखणौ, सुलखणु, सुलखणौ, सुलच्छणौ, सुलछणौ।

सुलखरा—देखो 'सुलक्षरा' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा)

सुलखणु, सुलखणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू. भे.)

उ०—१ यतः धन्ना होइ **सुलखरा**, कुसती होइ सलज्ज। खारा होइ सीयला, बहु फल फलै अकज्ज।—वि. कु.

उ०—२ औगरा-कुवांग री जात नीं। काछ द्रढौ। **सुलखणौ**। इतबारी। जूंनी बातां-विगतां रौ परतख अवतारी।—फुलवाड़ी

उ०—३ हूं भंवरौ **सुलखणौ**, कैर मूळ नहिं खाय। का बैठूं उड केतकी, का सतलंघण रह जाय।—अग्यात

उ०—४ भोळौ ठाकर समभयौ के धणी रै जोखा री बात सुणनै **सुलखणी** नार सुध-बुध पांतरगी।—फुलवाड़ी

उ०—५ रावळ मांनसिंह, रावळ परताप रै खवास पदमां, विणी रै पेटरौ, रावळ प्रताप रै और बेटौ को न थौ, नै मांनसिंह निपट **सुलखणौ** हुतौ, पांच रजपूत देसरा मिळनै मांनसिंह नूं टीकौ दीयौ, राज करै छै।—नैणसी

उ०—६ मेरी सास **सुलखणी**, कोई करै घणेरा लाड।—लो. गी.

(स्त्री. सुलखणी)

सुलख्खरा, सुलख्यरा—देखो 'सुलक्षरा' (रू. भे.)

उ०—तखधीर **सुलख्यरा**, वीर विचख्यरा काइम रख्यरा कीति। 'सांमौ' मति सागर सूरस गागर राज उजागर रीति।—ल. पिं.

सुळगणौ—वि. (स्त्री. सुलगणी) १ शीघ्र जलने वाला, ज्वलनशील।

२ भली प्रकार अंकुरित होने वाला।

सुळगणौ, सुळगबौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगबौ' (रू. भे.)

उ०—अरै पपीहा बावला, आधी रात न कूक। होळै होळै **सुलगती** सौ तैं डारी फूंक।—अग्यात

सुळगणहार, हारौ (हारी), सुळगणियौ—वि०।

सुळगिओड़ौ, सुळगियोड़ौ, सुलग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सुळगीजणौ, सुळगीजबौ—भाव वा०।

सुळगाणौ, सुळगाबौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगाबौ' (रू. भे.)

उ०—म्हैं छकड़ा रा पाटिया रै आपौ लगाय नै पग लांबा कर लिया अर सिगरेट **सुळगाय** ली।—अमरचूंनड़ी

सुळगाणहार, हारौ (हारी), सुळगाणियौ—वि०।

सुळगायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुळगाईजणौ, सुळगाईजबौ—कर्म वा०।

सुळगायोड़ौ—देखो 'सिळगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुळगायोड़ी)

सुळगावणौ, सुळगावबौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगाबौ' (रू. भे.)

सुळगावियोड़ौ—देखो 'सिळगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुळगावियोड़ी)

सुळगियोड़ौ—देखो 'सिळगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुळगियोड़ी)

सुलग्न—सं. पु. [सं.] ज्योतिष के अनुसार श्रेष्ठ लग्न।

सुलग्नौ—वि. [सं. सुलग्न] ज्योतिष के अनुसार श्रेष्ठ लग्न का।

उ०—रायधण पाछौ फिरियौ **सुलग्नौ** साहौ जोयनै कुंवर रायधण नूं सजनळ परणाई छै।—रायधण भाटी री बात

सुलच्छरा—देखो 'सुलक्षरा' (रू. भे.)

उ०—तखत तपत जोधांणपत, बरणं 'विजौ' विचार। तेज **सुलच्छरा** धरम रत, सब री लेवै सार।—सि. सु. रू.

सुलच्छणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू. भे.)

उ०—सोई पुरस **सुलच्छणौ**, सोइज पूत सपूत। सोइज कुळरौ सेहरौ, तांडै जस रथ जूत।—बां. दा.

(स्त्री सुलच्छणी)

सुलछ, सुलछरा—देखो 'सुलक्षरा' (रू. भे.)

उ०—बोह चंद्र वदन **सुलछरा** बतीस। सोलै स्रिंगार आभ्ररा छतीस।—सू. प्र.

सुलछणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुलछणी)

सुळभ, सुळभरा—सं. स्त्री.—१ सुलभने की क्रिया या भाव।

२ उलभन का विपर्याय।

सुळभणौ, सुळभबौ—क्रि अ.—१ किसी प्रकार की उलभन से मुक्त होना, छुटकारा पाना।

उ०—जद पट उळभै तौ पग **सुळभै**। मद मत्त मनां मैं हाम सुभै।

मत हाथ लगावौ कांटै रै, औ फूल देखलौ खड़्यौ जळै।—सकुंतला
२ किसी प्रकार की गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटना, समस्या का समाधान होना।
३ किसी गूढ़ विषय का आशय समझ में आना, समझना।
४ भ्रम का निवारण होना, भ्रम मिटना।
उ०—उळझ'रि **सुळझया** साधकै, जै कोई सरणै जाय। जनहरीया जब ऊबरै, रांम नांम सिवराय।—अनुभववांणी
५ रस्सी, डोरे, तार आदि में पड़ी हुई गुत्थियां मिटना, गुत्थियां निकल कर सीधा होना, गुत्थी खुलना।
६ किसी प्रकार की लड़ाई या झगड़े का निपटारा होना, फैसला होना।
उ०—केई दीह तांई तौ जमीं का झोड़ कीनां, पाछै न्याय तावै सीम काटि सुळझ लीनां।—शि. व.
७ किसी प्रकार के बंधन से मुक्त होना।
सुळझणहार, हारौ (हारी), सुळझणियौ—वि०।
सुळझिग्रोड़ौ, सुळझियोड़ौ, सुळझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सुळझीजणौ, सुळझीजबौ—भाव वा०।
सळूझणौ, सळूझबौ, सुरझणौ, सुरझबौ—रू० भे०।

सुळझाड़, सुलझाड़ौ—सं. पु. १—जब किसी प्रकार की उलझन न हो, उलझनरहित स्थिति, अवस्था या भाव।
२ साफ-सफाई, स्पष्टता।
३ फैसला, निपटारा।
४ किसी समस्या का समाधान।
उ०—उहांरौ **सुळझाड़ौ** कराइयौ, सारी धरती पागड़ै लगाय पाछा भटनेर आइया।—ठाकुर जेतसी री वारता
रू. भे.—सळूझाड़ सळूझाड़ौ।

सुळझाणौ, सुळझाबौ—क्रि. स. ['सुळझणौ' क्रि. का. प्रे. रू.] १ किसी प्रकार की उलझन से दूर करना, उलझन मिटाना।
२ किसी प्रकार की गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटाना, समस्या का समाधान करना।
उ०—एक दिन उणरै गांव लखपति सेठ खुद चलायनै कुमार रै घरै आया। कुमार चाक छोडनै वांरै सांमी गियौ। तद सेठ केवण लागा—भाया एक बात अळुझगी है, थूं चावै तौ **सुळझा** सकै।—फुलवाड़ी
३ किसी गूढ़ विषय के आशय को समझाना, स्पष्ट करना, व्याख्या करना।
४ भ्रम निवारण करना, दूर करना।
५ किसी तार, डोरे रस्सी आदि में पड़ी गुत्थियों को निकालना, गुत्थियां खोलना, सुलझाना।
उ०—धूजतै हाथां चन्नण री कांघसी सूं केस **सुळझाय**, ढाळ काढती वा धकै कैवण लागी—म्हारी काली बातां रौ कोई मथारौ थोड़ौ ई है।—फुलवाड़ी
६ किसी प्रकार के बंधन से मुक्त करना।
उ०—नैंन हमारै यार सु, रहीया उलिझि उलिझि। हरीया न्यारा नां हुवै, सळझाया न सुलिझि।—अनभववांणी
७ किसी प्रकार झगड़े को निपटाना, फैसला करना।
सुळझाणहार, हारौ (हारी), सुळझाणियौ—वि०।
सुळझायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सुळझाईजणौ, सुळझाईजबौ—कर्म वा०।
सळूझाणौ, सळूझाबौ, सळूझावणौ, सळूझावबौ सुरझाणौ, सुरझाबौ, सुरझावणौ, सरझावबौ, सुळझावणौ, सुळझावबौ—रू० भे०।

सुळझायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी प्रकार की उलझन दूर किया हुआ, उलझन मिटाया हुआ. २ कोई गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटाया हुआ, समस्या का समाधान किया हुआ. ३ किसी गूढ़ विषय के आशय को समझाया हुआ, स्पष्ट किया हुआ, व्याख्या किया हुआ. ४ भ्रम निवारण किया हुआ, भ्रम दूर किया हुआ. ५ गुत्थियां खोला हुआ, सुलझाया हुआ. (तार, डोरा, केश) ६ किसी प्रकार के बंधन से मुक्त किया हुआ. ७ झगड़ा निपटाया हुआ, फैसला किया हुआ।
(स्त्री. सुळझायोड़ी)

सुलझावणौ, सुलझावबौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझाबौ' (रू. भे.)
उ०—एक दिन सोनल-वरणी कंवरांणी झिरोखा मैं बैठी सोना री कांघसी सूं केस सुळझावती ही।—फुलवाड़ी
सुळझावणहार, हारौ (हारी), सुळझावणियौ—वि०।
सुळझाविग्रोड़ौ, सुळझावियोड़ौ, सुळझाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सुळझावीजणौ, सुळझावीजबौ—कर्म वा०।

सुळझावियोड़ौ—देखो 'सुळझायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुळझावियोड़ी)

सुळझियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी प्रकार की उलझन से मुक्त हुवा हुआ, छुटकारा पाया हुआ. २ समस्या का समाधान हुवा हुआ, पेचीदगी, गुत्थी या जटिलता मिटा हुवा. ३ गूढ़ विषय के आशय समझ में आया हुवा, स्पष्ट हुवा हुआ. ४ भ्रम निवारण हुवा हुआ. ५ गुत्थियां खुला हुवा, सुलझा हुआ. (तार, डोरा आदि) ६ निपटा हुआ, फसला हुवा हुआ (झगड़ा). ७ बंधन मुक्त हुवा हुआ. ८ मजा हुआ, चतुर।
(स्त्री. सुळझियोड़ी)

सुळटौ, सुलटौ—वि. (स्त्री. सुलटी) १ उल्टे का विपरीत।
२ औंधे का विपरीत, सौंधा, सीधा।
३ उचित, सीधा, ठीक।
उ०—१ छतीस राजकुळी हुई। **सुलटै** राह चाल्या। रिखभदेवीजी रै पुत्र बाहुबळी हुवौ।—रा. वंसावळी

उ०—२ जुग चालै जुग राह मैं, इनकी **सुलटी** चाल्हि । हरियाजन उलटा चलै, जुग डग सधै न हालि ।—अनुभववांणी

४ प्रत्यक्ष ।

उ०—१ काळ किसी सारै नहीं, मारै **सुलटी** मूंठ । हरीया हरिजन ऊबरै, उलटि चडै वैकूंठ ।—अनुभववांणी

उ०—२ दान दया दिल मैं धरौ, दुख जाइ दहट्टा । धरम करौ कहै धरमसी, सुख होइ **सुलट्टा** ।—ध. व. ग्रं.

५ जिसमें कोई घेराव नहीं हो, जो टेढ़ा मेढ़ा न हो ।

उ०—सपनलां सँग हीडा-सुमन, उलटा झड़खलां ज्युं झुरड़ीजै है। कुभावना हाला काळी नस रा कीड़ा कुसुम **सुलटा** तिणखला सा तुरड़ीजै ।—दसदोख

सुळणौ, सुळबौ, सुलणौ, सुलबौ–क्रि. अ.—१ लकड़ी या अनाज के दानों में कीड़े पड़ना, कीड़ों द्वारा खाया जाना ।

उ०—१ मांन वसै वेचै घणा ए, पंद्रह करमादांन कै । लोभ कै कारणै ए, विणजै **सुलियां** धांन कै ।—जयवांणी

उ०—२ कावड़ तै जूनी थई रे लाल, घुणादिक जीव खाय सुवि । तणियां छींकौ बोदौ थयौ रे लाल, डांडौ **सुलियौ** जाय सुवि० । —जयवांणी

२ अधिक दिन तक कोई वस्तु निरर्थक पड़ी रह जाने से कार्य-लायक न रहने की दशा में आना, बेकर होना, निरर्थक होना ।

उ०— आड ई घड़ावणी व्है तौ तिजौरी मांय सूं मोहरां काढौ, पड़ी पड़ी **सुळ** जावैला ।—फुलवाड़ी

३ कमजोर होना ।

उ०— राजाजी नीचौ माथौ करियां खासी ताळ तांई सोचता रह्या । अणछक बोल्या—नाईड़ा, अपारै बडेरां री अकल ई साव **सुळियोड़ी** ही ।—फुलवाड़ी

सुळणहार, हारौ (हारी), सुळणियौ— वि० ।

सुळिओड़ौ, सुळियोड़ौ, सुळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुळीजणौ, सुळीजबौ—भाव वा० ।

सळणौ, सळबौ—रू० भे० ।

सुळतांण, सुलतांण–सं. पु. [फा. सुल्तान] बादशाह, सम्राट ।

उ०—१ जूसरां धवळ अप्रमांण जव, की विमांण पवमांण कथ । **सुलतांण** मुगळ माथै सज्या, राजथांण बीकांण रथ ।—मे. म.

उ०—२ हिंदुऔ राउ आइ दिली लेसी हिवै, सबल मन माहि **सुलतांण** सोचै ।—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—सुरतांण, सुरितांण, सुळतांन, सुलतांन, सुलतांण, सुलितांन, सुल्तांन ।

सुळतांणी, सुलतांणी–सं. स्त्री. [फा. सुल्तानी] बादशाहत, बादशाही ।

रू. भे.—सुरतांणी, सुरितांणि ।

सुळतांन, सुलतांन—देखो 'सुळतांण' (रू. भे.)

उ०—१ बडै बडै भूपति **सुळतांन** उनकै डेरै भयै मंदान ।—मीरां

उ०—२ अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत रै **सुलतांनां** मैं सगळां सूं भारी भिड़मल गिणिजै । उण कनै फौज बळ अणूतौ । खाताळी घुड़सेना अड़घम देती खड़बड़ां खड़बड़ां जाय पड़ती ।—चितरांम

सुलता—देखो 'सलिता' (रू. भे.)

सुलप–वि. [सं. स्वल्प] सूक्ष्म, छोटा ।

उ०—करामाति दै लै कहूं कहुं पेगंबर कहुं पीर । गुपत प्रगट विचरत फिरत, करि दीरघ **सुलप** सरीर ।—ह. पु. वां.

सुळफ. सुलफ–वि.—१ श्वेत, सफेद ।

२ साफ, सुन्दर ।

३ देखो 'सुलफौ' (रू. भे.)

सुळफसिला–सं. स्त्री.—स्फटिकशिला ।

उ०— **सुळफसिला** छाया जळ सुंदर, पेख प्रभा ठम रहै पुरंदर । निरख तठै हरि लीध निवास ।—र. रू.

सुलफी–सं. स्त्री.—जर्दा या तम्बाखू पीने की चिलम ।

उ०—**सुलफी** गुड़गुड़ियां, चिलम होकांरी हळकी । हांडी बूरै हरख, आभूखण रिपियां रळकी ।—दसदेव

सुलफेबाज–वि. [फा. सुल्फ+बाज] गांजा या चरस पीने वाला ।

सुलफौ–सं. पु. [फा. सुल्फ] वह सूखा तम्बाखू जिसे गांजे की तरह चिलम में भर कर पीते हैं ।

उ०—१ एक नाथ सोनजी री दातारी सूं रींझ'र गांव मैं आसण ही लगा बैठ्यौ । बस ! **सुलफै** अर भांग री रंगत छिड़गी है । —दसदोख

उ०—२ ना होकौ ना चिलम, पांन-बीड़ी न सुपारी । न **सुलफौ** ना भांग, कदै ना वणै जुवारी ।—नारी सईकड़ौ

रू. भे.—सुळफ, सुलफ ।

सुलब्भ, सुलभ–वि. [सं.] १ जो सहज ही उपलब्ध हो, जो आसानी से मिल सके ।

उ०—१ अथ ओंमकर अक्षर उचार । निस दिवस नांम रट रांम रांम । द्वै **सुलभ** दीप स्रद्धा समीप, रुचि व्है सु राख दुहुं दिव्य दाख ।—ऊ का.

उ०—२ पिंड विहूंड होय चुख चुख पड़ूं, ताय वरूं रंभ हित तिकौ । **सुलभ** ही जिकौ पाऊं सुरग, जगत घणौ दुल्लभ जिकौ । — सू. प्र.

२ सहज, आसान, सुगम ।

उ०—१ कै धरि दंभ **सुलब्भ** अब्भ आछादि रहै धर । तर तमाळ वन तरळ, मिळै किर डाळ समंजर । रा. रू.

उ०—२ महासमुद्र तिरवौ भुजा, दोहिलौ तूं जांण । तीखा भाला ऊपर चालवौ, **सुलभ** नहीं लै सयांण ।—जयवांणी

उ०—३ हरीया कठण बूझिबौ, दुलभ चलिबौ राह । सौ **सुलभ** संसार मैं, ता दिस जांहि घणाह ।--अनुभववांणी

३ उपयोगी, लाभकारी ।

४ सीधा, सयाना ।

उ०—पछै सिवरांमदासजी संतोकनंदजी दोनूं **सुलभ** परणै रह्या । उवै दोनूंइ विमुख रह्या तौ पिण स्वांमीजी उणांरी गिणत राखी नहीं ।—भि. द्र.

रू. भे.—सलभ, सुलभौ, सुल्लभ, सुल्लभौ ।

सुलभता—सं. स्त्री. [सं.] १ सरलता, आसानी, सुगमता ।

२ उपयोगिता ।

सुलभौ—देखो 'सुलभ' (रू. भे.)

उ०—आप्या सीस सु तौ ऊबरिया, वसुधा वादीजै वड गात । 'सीधल' कहै, हमै जस **सुलभौ**, गरथ सटै बोलै गुरा पात ।

—सींधळ खंगार रायपालोत रो गीत

सुललित—वि. [सं.] अत्यन्त सुन्दर ।

उ०—आव्या पूज्य उपासरइ रे, **सुललित** करइ रे वखांगि । संग सहु ध्रम सांभलइ रे, मन जीव्यु परमांग । —स. कु.

सुललौतर—सं. पु.—शुभ नक्षत्र ।

सुलव—सं. पु. [सं. शुल्व] तांबा, ताम्र । (अ. मा.)

वि.—सूक्ष्म, बारीक ।

रू. भे.—सुलंब ।

सुळसुळ, सुळसुळाहट—सं. स्त्री.—१ सनसनाहट, फुसफुसाहट ।

२ अफवाह, जनश्रुति ।

उ०—लुचां हरदयाल सूं अड़ंगौ लगायौ, छळ करै आपसूं रया छांनै । सताबी हुई **सुळसुळ** मुलक सेर मैं, मुंसी कोठरियां तरणी मांनै ।—ऊमरदांन लाळस

सुलह—सं. स्त्री. [फा. सुलह] मेल-मिलाप, संधि, समझौता ।

उ०—इतरौ सुरातां दीवांरा रै मुंहडै री रंग फुरगयौ । सांखलै नापै नूं कह्यौ—किरण ही भांत **सुलह** परण हुवै ?—नैणसी

रू. भे.—सलै, सुलै, सुल्लह ।

सुलहनांमौ—सं पु. [फा. सुलहनामा] वह पत्र या दस्तावेज जिसमें संधि या समझौते की शर्तें लिखी गई हों, राजीनामा ।

रू. भे.—सुलेनांमौ ।

सुळाणौ, सुळाबौ—क्रि. अ.—१ प्रसव के पूर्व मादा पशुओं के पेट में दर्द होना ।

क्रि. स.—२ लकडी या धान में कीड़े पड़ने का अवसर देना ।

सुळावणौ, सुळावबौ—रू. भे. ।

सुलाणौ, सुलाबौ—क्रि. स.—१ शयन कराना, लिटाना, सोने के लिये प्रेरित करना ।

२ मैथुन या संभोग के लिये किसी को साथ में लेटाना ।

सुलाणहार हारौ (हारी), सुलाणियौ—वि० ।

सुलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुलाईजणौ, सुलाईजबौ—कर्म वा० ।

सुलावणौ, सुलावबौ—रू० भे० ।

सुलायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शयन कराया हुआ, लिटाया हुआ, सोने के लिये प्रेरित किया हुआ. २ साथ में लिटाया हुआ ।

(स्त्री. सुलायोड़ी)

सुळावणौ, सुळावबौ—देखो 'सुळाणौ, सुळाबौ' (रू. भे.)

सुलावणौ, सुलावबौ—देखो 'सुलाणौ, सुलाबौ' (रू. भे.)

उ०—उन्हाळै दै ईल, नीन चौमास सुलावै । सीयाळै न्यायाम, आखरयां सुखी **सुलावै** । —रुगनाथ

सुलावणहार, हारौ (हारी), सुलावणियौ—वि० ।

सुलाविओड़ौ, सुलावियोड़ौ, सुलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुलावीजणौ, सुलावीजबौ—कर्म वा० ।

सुलावियोड़ौ—देखो 'सुलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुलावियोड़ी)

सुळाबख, सुळावख—देखो 'साळाबक' (रू. भे.)

उ०—वेहू भैरवां नरणी **सुळाबख**, वळै सगत नाहर असवार । मछ-मसीज मोरगढ़ सुसरै, हुवौ न रांणौ भीम जुहार । —पूरजी भादौ

सुलितांण, सलितांन—देखो 'सुलतांण' (रू. भे.)

उ०—गहि गुरु ग्यांन जागि जीन जोगी, झूठै भरमि भुलांना रे । हरि सूं विमुख नाचि नांना विधि, छांडि तजै **सुलितांनां** रे ।

—ह. पु. वा.

सुळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कीड़ों द्वारा खाया हुआ (अनाज या लकड़ी). २ निरर्थक या बेकार हुवा हुआ. (धन या सामान) ३ कमजोर हुवा हुआ ।

(स्त्री. सुळियोड़ी)

सुलूक—देखो 'सलूक' (रू. भे.)

सुलेक—सं. पु. [सं.] एक आदित्य का नाम ।

सुलेख—सं. पु. [सं.] सुन्दर लेख, सुन्दर लिखावट ।

सुलेनांमौ—देखो 'सुलहनांमौ' (रू. भे.)

सुलेमांनी—सं. पु.—१ सफेद आंखों वाला घोड़ा ।

२ एक प्रकार का पत्थर जिसका कुछ अंश सफेद व कुछ अंश काला होता है ।

३ एक प्रकार का नमक विशेष ।

सुलै—देखो 'सुलह' (रू. भे.)

सुलोक—सं. पु. [सं.] १ स्वर्ग या वैकुण्ठ ।

२ अच्छा व भला आदमी ।

सुलोचरण, सुलोचन—सं. पु. [सं. सुलोचन] १ मृग, हरिण ।

२ रुक्मिणी के पिता का नाम ।

३ अच्छे एवं सुन्दर नेत्र ।

वि.—अच्छे नेत्रों वाला ।

सुलोचरणा, सुलोचना—सं. स्त्री. [सं. सुलोचना] १ एक अप्सरा का नाम ।

२ मेघनाद की स्त्री व वासु की पुत्री, यह पतिव्रता थी ।

उ०—सिव ऊमिया पेमां **सुलोचना** तुज तणां अवतार त्यां।
—पा. प्र.

सं. स्त्री.—सुन्दर नेत्रों वाली।

सुलोमा—वि. [सं.] सुन्दर रोमावाली वाला।

सुलोह, सुलोहक, सुलोहित—सं. पु. [सं. सुलोहकं] पीतल।

सुलोहिता—सं. स्त्री. [सं.] अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा।

सुलोही—सं. पु.—एक ऋषि का नाम।

सुळौ—सं. पु.—१ किसी लकड़ी या अनाज में लगने वाला कीड़ा, घुन।
२ उक्त घुन लगने की अवस्था या भाव।
३ शूल, दर्द।
४ बीमारी, रोग।

सुल्क—सं. पु. [सं. शुल्क] १ किराया, भाड़ा।
२ मूल्य, कीमत।
३ फीस।

सुल्तांन – देखो 'सुलतांण' (रू. भे.)
उ०—फरिस्ता रै लिखण मैं कीं साच है तौ अलाउद्दीन री फौज मैं अख्तर बख्तर बंधियोड़ा चार लाख पिचंतर हजार घुड़सवार हर घड़ी टंच हुवोड़ा **सुल्तांन** रै झालै री वाट जोयबौ करता।
—चितरांम

सुल्लभ, सुल्लभौ—देखो 'सुलभ' (रू. भे.)
उ०—पर जिण त्रिनेत्र गंजण त्रिपुर, समहर पायौ **सुल्लभौ**। जुग अंत मेघ वरसै जिसौ, इसी भांत दरसै 'अभौ'।—रा. रू.

सुल्लह—देखो 'सुलह' (रू. भे.)

सुल्लौ—सं. पु—१ एक प्रकार का मांस के साथ बना व्यंजन।
वि. वि.—इसमें १० सेर मांस के साथ ३½ सेर चावल, २ सेर घी, १ सेर चना, २ सेर प्याज, ½ सेर नमक, १ पाव अदरक, दो-दो दाम लहसुन तथा गोल मिर्च, एक-एक दाम दालचीनी, इलायची, लौंग आदि सामग्री पड़ती है।
२ देखो 'सूळौ' (रू. भे.)

सुवंक—वि.—सुन्दर व मनोहर।
उ०—साहिब कछूंछ न जांइइ, तिहां परेरउ द्रंग। भीभळ नयण **सुवंक** धण, भूलउ जाइसि संग।—ढो. मा.

सुवंछक—सं. स्त्री.—सखी, सहेली। (अ. मा.)
वि.—शुभचिंतक, शुभेच्छु।

सुवंस—सं. पु. [सं. सु+वंश] १ वसुदेव का एक पुत्र।
२ अच्छा व श्रेष्ठ वंश।

सुव—देखो 'सुत' (रू. भे.)
उ०—धरम खट वरन रौ जितौ हुवतौ धरा। 'करण' **सुव** राहतौ साहि केवांण।—द. दा.

सुवक्ता—वि. [सं.] सुन्दर व्याख्यान देने वाला, वाक्पटु।

सुवक्षा—सं. स्त्री.—१ विभीषण की माता और मयदानव की पुत्री थी।
२ वह स्त्री जिसके वक्ष का उभार सुन्दर हो।

सुवखत—सं. स्त्री—अच्छा समय, शुभ अवसर।
उ०—धरावेध खत्रबेद चत्रकोट गढ ढेलड़ी। पूरबा नखत्र **सुवखत** प्रमांणौ। साह 'अवरंग' अवतार सिसपाळ रौ, 'राजसी' किसन अवतार रांणौ।—कम्मौ नाई

सुवग—स. पु.—डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष, जिसके प्रत्येक द्वाले के प्रत्येक पद में चौदह मात्राऐं और अंत में चौकल होता है एवं चौथे चरण में वीप्सा रखते हुए तुकांत मिलाया जाता है।
उ०—चरणौ चौकळ अंत उचारै, चौथै चरण वीपसा धारै। सम मोहरा चारू सरसावै, गीत मंछ **सुवग** इम गावै।—र. रू.

सुवड़—सं. पु. [सं. सुवट] वट वृक्ष। (नां मा.)

सुवच, सुवचन—स. पु. [सं. सुवचन, सुवचस्] अच्छा वचन, सत्य वचन।
उ०—झूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का कांम। हरीया **सुवचन** साचका, विसन परा विसरांम।—अनुभववांणी

सुवचनो—वि.—१ अच्छा वक्ता, वाक्पटु।
२ मृदुभाषी।

सुवटियौ, सुवटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ **सुवटा** रे मीनकी डर करणां, बाळक गिरौ न वूढां तरणां।—वि. सं. सा.
उ०—२ मा! बाग-बगीचां मैं गयी जै, मा! पाक्यां सै दाड़म-दाख। कोयल-**सुवटा** खाय रह्या जै।—लो. गी.

सुवण—देखो 'स्वर्ण' (रू. भे.)

सुवणौ, सुवबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू. भे.)
उ०—१ जिणि देसै विसहर घणा, काळा नाग भुयंग। **सुवइ** निचंती मारुई, ढोला मेल्है अंग।—ढो. मा.
उ०—२ जै जागै तौ रांम जप, **सुवै** तौ रांम संभार।—ह. र.
उ०—३ दिन मैं पोहर **सुवणौ**, उपरंत आखड़ी।—रा. सा. सं.

सुवदन—वि. [सं.] जिसका मुख सुन्दर हो, सुमुख।

सुवदना—सं. स्त्री [सं.] सुन्दर मुख वाली, सुन्दरी।

सुवद्द—सं. पु.—तीर बाण। (डिं. नां. मा.)

सुवधि—सं. स्त्री.—अच्छा समय या अवधि।

सुवन—सं. पु.—१ सूर्य, रवि। (नां. डिं. को.)
२ चन्द्रमा, शशि। (अ. मा.)
३ अग्नि, आग। (नां. मा.)
४ पुत्र, बेटा, सुत।
उ०— **सुवन** 'सौंन-सादूळ' भूळ वनचरां विचाळै। जिसौ चंद जग वंद, बीज रख व्रंद संभाळै।—रा. रू.

सुवन्न—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)
उ०—नरक सात दंडक पढम। असुरा नाग सुवंन्न।—वृ. स्त.

सुवप, सुवपि, सुवपु—सं. पु. [सं. सु. वपु] सुन्दर शरीर।
उ०—१ नड़ी नाचै भिड़ै छोह लौहां मिळै। ऊससै **सुवप** मुख मूंछ

भोहां मिळै ।—हा. झा.

उ०—२ मन गंगाजळ न्रिमळ, वदन किरि पूनम ससिहर । **सुवप** व्रन्न सोव्रन्न, गात मैंमंतक गैमर ।—गु. रू. बं.

उ०—३ **सुवपि** सोळ स्निगार, लाज बत्रीसंइ लक्खरण । खम्या धरम धीरज्ज, सीळ संतोख सतोगुरण ।—गु. रू. बं.

वि.—जिसका शरीर सुन्दर हो, सुन्दर देहधारी ।

सुवयरण—सं. पु. [सं. सुवचन] १ उत्तम व श्रेष्ठ वचन ।

२ मधुर या मीठे वचन ।

सुवर—वि. [सं.] सुन्दर व श्रेष्ठ ।

उ०—१ स्रीपति भगति सकाजं, रिध सिध **सुवर** नमौ संकर सुत । सुर अगिवांरण समाज स्त्रेस्ठ, बुधि दीजियै गरणेस्वर ।—सू. प्र.

सं. पु.—१ पति, खाविंद ।

उ०—तारंग मंत्र आदेस तौ, दिढ चा रंग निरा संधि दिव । सारंग नयरण उमय **सुवर**, सीस गंग धारंग सिव ।—सू. प्र.

२ श्रेष्ठवर, उत्तम वरदान ।

उ०—करि जोरि **सुवर** राखी किता, अमर देह अप्रकारियां । संदेह तजौ कवि इम सुवंस, रघुवंसी छत्रधारियां ।—सू. प्र.

३ सम्मुख या सामने करने की क्रिया ।

उ०—इतरै मांही वात कहतां बार लागै, पांच सब सांवतां सौं राव तीडै पागड़ी छाडीयौ । वाट छोड अर बरछीयां री **सुवर** कर अर राव तीडौ भील लड़ता हंता, तिका रै मगरै आयौ ।

—तीडा राठौड़ वीरां री बात

रू. भे.—सुवर ।

३ देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—इसा **सुवरां** रा मोरां ऊपरां राजानां घोड़ा लगाया छै। वरछियां रा घमोड़ा लाग रह्या छै। चूकमारां री खाटखड़ लाग रही छै। कैई घोड़ा **सुवरां** रा तूंडां सूं उछल परै पड़ै छै।

—रा. सा. सं.

सुवरजित—सं. पु.—वह घोड़ा जिसके तीन पैर सफेद और सिर में तिलक हो ।

सुवरण—सं. पु. [सं. सु+वर्ण] १ अच्छा वर्ण, अच्छा रंग, अच्छा रूप ।

२ अच्छा कुल, अच्छी जाति ।

३ काव्य में शुभ और सुन्दर माने जाने वाले वर्ण, अक्षर ।

उ०—१ देरणां उत्तर कविजरणां, **सुवरण** अरथ सनेह । सुकवि सूंम सम दाखिए, नहीं तफावज रेह ।—बां. दा.

४ राजा दशरथ का एक मंत्री ।

५ एक वृक्ष विशेष । (नां. मा.)

६ कंचन, कनक, सोना, स्वर्ण ।

उ०—१ पारस बदन वचन चिंत्तामरिण, ग्यांन गुरण लाया ए । परसत चरण **सुवरण** होय काया, दया पद पाया ए ।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ फिटक रगरण मरिण विद्रुम हिंगुल वळि हरियाला मरणसिल पारौ **सुवरण** आदि धातु नीहाल ।—वृ. स्त.

७ धन, संपत्ति ।

रू. भे.—सुबरण, सुवन्न, सुवरण्ण, सुवरन, सोव्रंण, सोव्रन ।

सुवरणक—सं. पु.—एक प्रकार का भाला या सांग ।

सुवरणकार सं. पु. [सं. स्वर्णकार] सुनार, स्वर्णकार ।

सुवरणकेतकी सं. स्त्री.—लाल केतकी ।

सुवरणगिर, सुवरणगिरि, सुवरणगीरी—सं. पु. [सं. स्वर्णगिरि]

१ सुमेरु पर्वत ।

२ लंका का पर्वत ।

३ जालोर का पर्वत ।

सुवरणधेन, सुवरणधेनु सं. स्त्री. [सं. स्वर्णधेनु] दान देने के उद्देश्य से बनवाई हुई सोने की गाय ।

सुवरणचूड, सुवरणचूडक सं. पु.—सोने का एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

रू. भे. सुवरण्णचूड, सुवरण्णचूडक ।

सुवरणपंख सं. पु. [सं. स्वर्ण+पक्ष] गरुड़ ।

सुवरणपरपटी सं. स्त्री. [सं. स्वर्ण+पर्पटी] वैद्यक की एक रसौषधि जो प्रायः संग्रहणी रोग के काम आती है ।

सुवरणमालिनीवसंत सं. स्त्री. [स्वर्णमालिनीवसंत] वैद्यक की एक रसौषधि जो स्वर्ण के योग से बनती है ।

सुवरणवजर, सुवरणवज्र—सं. पु.—एक प्रकार का भाला या सांग ।

सुवरणा सं. स्त्री. [सं. सु+वर्णा] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

सुवरण्ण—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)

उ० **सुवरण्ण** वेदी अहिनांरिण जांरिण, सरदह्नती सूनु कृपांरण पांरिण ।—सालिसूरि

सुवरण्णचूड, सुवरण्णचूडक—देखो 'सुवरणचूडक' (रू. भे.)

उ०—…… निरगनायक मधुमनायक त्रिगरनायक आद्यांगुलीयक मध्यांगुलीयक सरबांगुलीयक लघुचूडक गुरुचूडक **सुवरण्णचूडक** मोतीसरी करंगी कंकरणी पादवेस्टक पोलरकात्रिक चतुसरक नवसरक अस्टादसरक इति आभरणांनि । व. स.

सुवरन—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)

उ०—जथा आप कविता जथा, कीरत 'पता' कमंध । उभय संग मिळ अधिकता, **सुवरन** जथा सुगंध ।—जैतदांन बारहट

सुवराड़णौ, सुवराड़बौ—१ देखो 'सुवराणौ, सुवराबौ' (रू. भे.)

उ०—तितरै रांणीजी री दीकरी रांमसिंघजी री बहू आंबां रांम कहिया । तिण ऊपरि रांमसिंघजी विरागिया । दाढी न **सुवराड़ै** । कपड़ा न धोवाड़ै । वागौ न पहिरौ ।—द. वि.

२ देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)

सुवराड़णहार, हारौ (हारी), सुवराड़णियौ—वि० ।

सुवराड़िग्रोड़ौ, सुवराड़ियोड़ौ, सुवराड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सुवराड़ीजरणौ, सुवराड़ीजबौ—कर्म वा० ।

सुवराड़ियोड़ौ—१ देखो 'सुवरायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुवराड़ियोड़ी)

सुवराणौ, सुवराबौ–क्रि. स.—१ सुधरवाना, ठीक करवाना ।
२ बालों की कटिंग करवाना ।
३ बालों में कंघी ग्रादि करवाना ।
४ सज्जित करना, सजाना ।
५ दाढ़ी ग्रादि बनवाना ।
६ देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)
सुवराणहार, हारौ (हारी), सुवराणियौ—वि० ।
सुवरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सुवराईजणौ, सुवराईजबौ—कर्म वा० ।
सुवराड़णौ, सुवराड़बौ, सुवरावणौ, सुवरावबौ—रू० भे० ।

सुवरायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ सुधरवाया हुग्रा, ठीक कराया हुग्रा. २ बालों की कटिंग करवाया हुग्रा. ३ बालों में कंघी करवाया हुग्रा. ४ सजाया हुग्रा, सज्जित कराया हुग्रा. ५ दाढ़ी ग्रादि बनाया हुग्रा. ६ देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुवरायोड़ी)

सुवरावणौ, सुवरावबौ—१ देखो 'सुवराणौ, सुवराबौ' (रू. भे.)
उ०—परभात रा तुरक रौ मुंहडौ नहीं देखता । दरबार री सईयत तुरक था तिण री दाढी **सुवरावता** कांनां मैं मोती घालता ।
—पदमसिंह री बात
२ देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)
सुवरावणहार, हारौ (हारी), सुवरावणियौ—वि० ।
सुवराविग्रोड़ौ, सुवरावियोड़ौ, सुवराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सुवरावीजणौ, सुवरावीजबौ—कर्म वा० ।

सुवरावियोड़ौ—१ देखो 'सुवरायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुवरावियोड़ी)

सुवरियौ—देखो 'सूवर' (रू. भे.)
उ०—**सुवरियौ** रे हुवैलौ जीवड़ा सहरि फिरैंलौ, ठरड़क्य ठरड़क्य नास करै ।—ऊदौजी नैंण

सुवस-सं. पु. [सं.] ग्रच्छा या श्रेष्ठ निवास, ग्रावास ।
वि.—१ उत्तम, श्रेष्ठ ।
उ०—ग्राप भलाई ग्राविया, **सुवस** वसावौ देस । जंबक ए क्यू जीविया, ग्रासौ, 'किसनौ', महेस ।—महाराजा जसवंतसिंह रौ दूहौ
२ सीधा, सरल ।
उ०—म्हारै तौ माता ग्रौहीज डायजौ है म्हनै तौ सुख रै वास परणाजै ग्ररथात ऐड़ौ **सुवस** होवै किण सूंई लड़ै न भिड़ै गरीब होवै तो सुख है ।—वी. स. टी.
३ सुव्यवस्थित ।
उ०—**सुवस** वसीजै सहर सितारौ, हथणपुर मैं वेढ हुवै ।
—ग्रोपौ ग्राढौ

सुवह–वि.—योद्धा, वीर ।

सुवहू–सं. स्त्री. [सं. सुवधू] पुत्रवधू ।
उ०—वसुदेव पिता सुत थिया वासुदै, प्रदुमन सुत पित जगतपति । सासू देवकी रांमा **सुवहू**, रांमा सासू वहू रति ।—वेलि

सुवा–क्रि. वि.—तक, पर्यन्त ।

सुवांणणौ, सुवांणबौ—देखो 'सुवाणौ, सुवाबौ' (रू. भे.)
उ०—दुसमण री फौज गढ घेरियौ तठै गढ रा धणी साकौकर मरण री विचारी तद स्त्री बोहत समझाय नै **सुवांणिया** कि सुवार रा लड़जौ ।—वी. स. टी.
सुवांणणहार, हारौ (हारी), सुवांणणियौ—वि० ।
सुवांणिग्रोड़ौ, सुवांणियोड़ौ, सुवांण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सुवांणीजणौ, सुवांणीजबौ—कर्म वा० ।

सुवांणियोड़ौ—देखो 'सुवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुवांणियोड़ी)

सुवांणी–सं. स्त्री. [सं. सु+वाणी] १ सरस्वती, शारदा ।
२ श्रेष्ठ व उत्तम वाणी ।
रू. भे.—सुबांण, सुवांण ।

सुवांणौ–वि. (स्त्री. सुवांणी) १ सुवक्ता, ग्रच्छा वक्ता ।
२ मधुरभाषी, मृदुभाषी ।
३ देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

सुवांन–सं. पु. [सं. श्वान] कुत्ता ।

सुवाई–सं. स्त्री. [सं. सु+वायु] १ शुद्ध एवं शीतल हवा, ग्रच्छी हवा ।
२ सुलाने की क्रिया भाव ।

सुवाक्य–स. पु. [सं.] सुन्दर वाक्य ।
वि.—सुन्दर वाक्य बोलने वाला, सुवक्ता ।

सुवाग—देखो 'सुहाग' (रू. भे.)
उ०—१ **सुवाग** रा एक-दौ साल ही सोरा नीं नीसरै । बाकी तौ सगळी जिंदड़ी दुखरी इकरंजी वरतीजै ।—दसदोख
उ०—२ जद बुढली मन मैं हरखाई, हो जौ थारौ, ग्रमर **सुवाग** ववड़िया सखणती ।—लो. गी.

सुवागण—देखो 'सुहागण' (रू. भे.)
उ०—१ पहली ब्रह्म-ग्यांन, सुरी बन राखड़ी । पहरि **सुवागण** नारि, झरोखै ग्राखड़ी ।—मीरां
उ०—२ सज सोळै सिणगार, **सुवागण** जळ लै जावै । सांझ सवारै व्रद्ध, हथाई होका लावै ।—दसदेव

सुवागत—देखो 'स्वागत' (रू. भे.)

सुवागथाळ—देखो'सुहागथाळ (रू. भे.)

सुवागौ—१ सुन्दर पहनावा, सुन्दर वेश ।

उ०—पुखतौ एक पोळियौ राख्यौ । मांय सूं **सुवागौ** मंगाय दियौ । पछै राजा जगदेव, सै साथै करि दरबार आया ।

—जगदेव पंवार री बात

२ देखो 'सुहागौ' (रू. भे.)

सुवाड़—देखो 'सुवावड़' (रू. भे.)

सुवाड़णौ, सुवाड़बौ—देखो 'सुवाणौ, सुवाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जुम्मा री माथौ ठरणकियौ । अधरसेक आंगणै **सुवाड़** नाड़ अर सांस भाळियौ । कीं नीं । डील ठाडौ हेम ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वा लुगाई रात दिन उणरी सेवा बंदगी करै । उणनै पिलंग माथै **सुवाड़े** अर आप आंगणै सूवै ।—फुलवाड़ी

सुवाड़णहार, हारौ (हारी), सुवाड़णियौ—वि० ।

सुवाड़िअोड़ौ, सुवाड़ियोड़ौ, सुवाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुवाड़ीजणौ, सुवाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

सुवाड़ियोड़ौ—देखो 'सुवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवाड़ियोड़ी)

सुवाड़ी सं. स्त्री. [सं. सूता] वह गाय या भैंस (बकरी) जिसे प्रसव किये हुऐ बहुत ही थोड़े दिन हुऐ हों । (लवाई)

उ०—रसोई री बारी सूं ऊलळी जांणै **सुवाड़ी** गाय लुवारै टोघड़िये पर रांभी है ।—दसदोख

रू. भे.—सुवावड़ी, सूवाड़ी ।

सुवाड़ी-जांन—सं. स्त्री. यौ.—दूध-मुंहे बच्चे की बारात जिसमें वर की माता भी बारात के साथ जाती है । (बिश्नोई)

सुवाट—सं. स्त्री.—अच्छी राह, अच्छा मार्ग ।

सुवाणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

उ०—१ नीम पेस्टी दांत उजाळै, मोती सा चिलकै जबर । मुखड़ै मैं खुसबू **सुवाणी**, दुरगंध डर दुबकी कबर ।—दसदेव

उ०—२ पतली केळू कांमड़ी है, सरस **सुवाणी** डाळियां । छांट छील लै'रां लपेटां, करड़ पटीली बाळियां ।—दसदेव

उ०—३ काबुल काली मांय, मतीरा मीठौ मेवौ । सुभिया नित कसमीर, **सुवाणी** सुसमा सेवौ ।—दसदेव

(स्त्री. सुवाणी)

सुवाणौ, सुवाबौ—क्रि. स.—१ सोने के लिये प्रेरित करना, सुलाना ।

२ सुलाना, लिटाना ।

उ०—१ राजकंवरी नै पाछी मैं'लां लाय **सुवाणी** । जै वौ वगत माथै नीं जावतौ तौ राजकंवरी रा पाछा सपना मैं ई दरसण नी व्हैता ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हेटै **सुवाण** देह री सावळ जांच करी । नीं सांस, नीं नाड़ अर नीं किणी भांत मुड़दावाली विडरूपता ।—फुलवाड़ी

३ बच्चे को नींद लाने के लिये थपकी देना, नींद लाने का उपक्रम करना ।

४ किसी को अपने साथ लिटाना, सुलाना ।

५ मार गिराना ।

६ विश्राम या आराम कराना ।

७ पटकना ।

८ देखो 'सुहाणौ, सुहाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पांना फूलां गहगही, गुर नगां **सुवाई** गेळ । सुरगा सोरंभ आवै घणी, आंगणी नागरवेल ।—बि. सं. गा.

उ०—२ औ तौ सुभड़ **सुवायौ**, खाब आयौ रघुवर ।

—गी. रा.

उ०—३ त्रिहुए पग तारणी सोभ जुग क्यार **सुवाणी** । पांच तत्त होमणी रीत मोटी सत राणी ।—रा. रू.

उ०—४ धूड़ छिनकणी थकी, थणां ला लागी देवौ । मोगड़ मांय बिछाय, सवाती सूता देवौ ।—दसदेव

सुवाणहार, हारौ (हारी), सुवाणणियौ—वि० ।

सुवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुवाईजणौ, सुवाईजबौ—कर्म वा० ।

सुवांणणौ, सुवांणबौ, सुवाड़णौ, सुवाड़बौ, सुवांणणौ, **सुवांणबौ**

रू० भे० ।

सुवाणियोड़ौ भू. का. कृ.—१ सोने के लिये प्रेरित किया हुआ, सुलाया हुआ. २ लिटाया हुआ, सुलाया हुआ ३ नींद लाने के लिये थपकी दिया हुआ. ४ मार गिराया हुआ. ५ विश्राम या आराम कराया हुआ. ६ किसी को अपने साथ लिटाया हुआ, सुलाया हुआ. ७ पटका हुआ ।

८ देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवायोड़ी)

सुवाद—देखो 'स्वाद' (रू. भे.)

उ०—१ मंडती रंगांळा मलीरिया ओमण मैं घणा **सुवाद** लागै है, ऊपर सू कातळियां गटकावण नै ही जो आगै है ।—दसदोख

उ०—२ यूं रस मैं राति बितीत भई । होरा की समस्या पूरण भई । रंग महल को गमाव बणायौ । पातसाहजी नै रति बिलास को **सुवाद** आयौ ।—बगसीराम प्रोहित री बात

सुवाद्य सं. पु.—श्रेष्ठ व उत्तम वाद्य ।

सुवापी सं. स्त्री. अर्क के साथ चूना मिला कर खाने योग्य बनाने की क्रिया ।

उ०—तन कर काठी, प्यारे मन कर घोटा, सुरती री **सुवापी** बणाई ।—मीरां

सुवायंत सं. स्त्री.—शान्ति ।

उ०—सुख **सुवायत** करी, दुख दुवायंत टाळी । तेरी रजा करी सैतांन की बेरजा करी, आई बलाय दफै करी ।—बि. स. सा.

सुवाय, सुवायौ—देखो 'सवायौ' (रू. भे.)

उ०—तद मारग मैं जावतां आदमी साथवाळा वातां करण लगा—

जौ सिरदार जिसौ सुणीयौ थौ, तिण सुं **सुवाय** निजर ग्रायौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

सुवार—क्रि. वि. [सं. श्वः] १ आने वाला कल, ग्रागामी दिवस ।

उ०—तद सूरेजी कही ग्राज न बांधी तौ **सुवार** दोय फेरा बांधजौ ।
—सूरै खींवै कांधळोत री बात

२ प्रातःकाल, सवेरा ।

उ०—कुंवरजी पधारि ग्रर सुख कियौ । **सुवार** हुया कूच हुयौ ।
—द. वि.

३ देखो 'संवार' (रू. भे.)

उ०—न क्युं वांना पहरियां, न क्युं घसीयां छार । न क्युं केस वधारियां, न क्युं कीयां **सुवार** ।—ग्रनुभववांणी

४ देखो 'सवार' (रू. भे.)

उ०—तद ग्रा इहां नै मैहल मांहै लै जाय ग्रर उडण खटोलणी **सुवार** ग्रर इतरा बैठा ।—चौबोली

रू. भे.—सुहार ।

सुवारणौ, सुवारबौ—क्रि. स.—१ तराशना ।

उ०—विपुल सिलावटिया, **सुवारै** सिलड़ा सारा । जाळी जथिया खुणै, वेल, समदर, नद, तारा ।—दसदेव

२ देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ च्यारूं तौ राव **सुवारियां**, ग्रडिया है सगळा भांड ।
—लो. गी.

उ०—२ ग्राज सहैली ग्रंगणै, ऊभी ग्रंग **सुवारि** । हरीया सांझ'क स्वार मैं, सूती पाव पसारि ।—ग्रनुभववांणी

सुवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे.)

उ०—१ मितराई न दोस्ती, ग्रापौ न प्यार । लोगां नै धका देवै, मोटा-मोटा मै'ल दिखाळै । मुतळब ले'र सुवार करै, लोभ ग्रर **सुवारथ** मैं मरै ।—दसदोख

उ०—२ विणज वटा धन बौह कीया, ग्राप **सुवारथ** जांनि । निज परमारथ बाहिरौ, ग्राखरि व्हैगी हांनि ।—ग्रनुभववांणी

सुवारथी—देखो 'स्वारथी' (रू. भे.)

सुवारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ तराशा हुग्रा ।

२ देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवारियोड़ी)

सुवारां, सुवारि, सुवारी, सुवारे, सुवारै—क्रि. वि. [सं. श्वः] कल ।

उ०—१ झांझरकौ घड़ी च्यार-रौ रहै ताहरां जाय कंदोई नै बोलाय ल्याया, सीरौ करावज्यौ, परभात महाजन **सुवारां** ही जिमावां ।—राजा भोज ग्रर खापरा चोर री वात

उ०—२ जै प्रभात म्हारी गोठ छै सौ सवार होयजै, **सुवारै** पधारजै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सं. पु.—१ ग्राने वाले कल का दिन, ग्रागामी दिवस ।

उ०—१ जद भीमराजजी कही काकाजी **सुवारै** तौ खांमखां ग्ररज करौ ।—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ तारां रावजी कयौ, 'सांणीजी वांणियां तौ गेर रमै है, ग्रठै कद ग्रावै ऊ ? तद साहणी कयौ, 'जी ग्राप **सुवारै** थांणा ग्राय संभाळज्यौ ।—द. दा.

२ प्रातःकाल ।

उ०—तद **सुवारां** ही कारीगर नूं बुलाय कै कहियौ सौ तिण भांति दरिद्र भींत मांहीं दिराइयौ ।—सुंदरदास भाटी वीकूंपुरी री वारता

रू. भे.—सुहारे, सुहारै, स्वार, स्वारै ।

सुवाळ—सं. स्त्री.—सुंदरबाला, सुबाला ।

उ०—छटा बिसाल सालतैं छबी घटा छवै नहीं । दिवाळपै **सुवाळ** दीपमाळसी दिपै नहीं ।—ऊ. का.

सुवाल—देखो 'सवाल' (रू. भे.)

उ०—१ गार्गी उण बेळा चुप होगी । मिनख रै ग्रभिमांन, ग्राङ्पणै ग्रर रांगड़ाई रै कारण एक भणीज्योड़ी, समझदार ग्रर लुगाई नैं **सुवाल** रौ जवाब नीं मिल्यौ । उणरै बजाय उणनै धमकाय दी ।—तिरसंकू

उ०—२ छोरचां सूं तौ उणां रा 'हसबैंण्ड' भी कदै ई 'सीरियस' बातां कोनी करै । 'लवरस' रौ तौ 'सीरियस' होवण रौ **सुवाल** ईज कोनी ।—तिरसंकू

सुवालख—देखो 'सवालख' (रू. भे.)

उ०—सू वेहलिया किण भांत रा छै ? थेट काकरेच रा छै, सोरठ रा छै, हालार रा छै, **सुवालख** रा छै, देस देस रा इकरंग सपेत छै ।
—रा. सा. सं.

सुवालखपट्टी—देखो 'सवालखपट्टी' (रू. भे)

सुवाव—वि.—उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—रवि तता जळ सींवळा, सिख सतगुर का भाव । हरीया रवि गुर ताप तैं, सब गुण होत **सुवाव** ।—ग्रनुभववांणी

सुवावड़—सं. पु.—१ प्रसव के समय खाने के लिये तैयार किया जाने वाले खाद्य पदार्थ विशेष जो बहुत पौष्टिक होते हैं ।

उ०—कोठचां रै मूंडै ई **सुवावड़** सांधीजी । पैलड़ा सात दिनां एक टंक ग्रजमौ ग्रर टंक सीरौ । पछै सूंठ, लोद ग्रर गूंद रा लाडू । बिदांमा रा लाडू ।—फुलवाड़ी

२ सन्तानोत्पत्ति से प्रसूतिका स्नान तक का समय ।

रू. भे.—सवाड़, सवावड़, सुग्राड़, सुग्रावड़, सुवाड़, स्यावड़ ।

सुवावड़ी—देखो 'सुवाड़ी' (रू. भे.)

सुवावणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारै ग्रांगण ग्रांम पिछोकड़ै मरवौ, ग्रौ घर सदा ए **सुवावणौ** ।—लो गी.

उ०—२ म्हारै चांनण चौक **सुवावणौ**, जैं मै खेलै भतीजौ नंदलाल । ग्रांगण मैं ऊभौ केवड़ौ, जैं मैं खेलै भतीजौ नंदलाल ।
—लो. गी.

उ०—३ जांमै जद सूं भेद भावां, कुळ कुळ सवै सुवावणी। समझै घर मैं सीर स्यांणा, ताता राखै तासणी।—नारी सईकड़ौ

(स्त्री. सुवावणी)

सुवावणौ, सुवावबौ—देखो 'सुहाणौ, सुहाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ छाटी सौ पेट, लाडू सा होठ, लोतर बा'री, बरड़ी बोली हाली लुगाई, लोगां नै तीजै घर नीं सुवावै।—दसदोख

उ०—२ सीध बांध सांमणौ चलै, कदै तकै ध्रुव तारियौ। कूवै बीच मुंह दै बोलै, भलौ सुवावै वारियौ।—दसदेव

सुवावणहार, हारौ (हारी), सुवावणियौ—वि०।

सुवाविग्रोड़ौ, सुवावियोड़ौ, सुवाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सुवावीजणौ, सुवावीजबौ—कर्म वा०।

सुवावियोड़ौ—देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवावियोड़ी)

सुवास—सं. स्त्री. [सं. सु+वास] १ सुगंध, महक, खुशबू।

उ०—१ चंदण सुवास पंखा चमर कत गंगाजळ दास करि। छिड़कंत कंत रांणी छहूं, पांणी खेल बसंत परि।—रा. रू.

उ०—२ तरै छोकरी झारी भर ल्याई। तरै सोनगरी पूछियौ—पांणी मांहे इसड़ी सुवास इसड़ी तिरवाळी किण भांत पड़ै छै।

—नैणसी

सं. पु.—२ निवास, ग्रावास, रहवास।

उ०—दळ ग्रग्र ग्ररां सिर ईस दियौ, कयळास मैं जाय सुवास कियौ।—पा. प्र.

३ घर, मकान, निवास स्थान।

४ डेरा, पड़ाव।

५ स्थान, जगह।

६ पोशाक, पहराव, वेशभूषा।

७ ग्रच्छा, पड़ौस।

८ शिवजी का एक नामान्तर।

९ श्वास, सांस

रू. भे.—सवास, सुबास, सुवासि, सुवासी।

सुवासणी—१ देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

उ०—पोळां मायला हसती बै जेठ तुम्हारा, जी राज हरी-हरी दूब सुवासणी, राज।—लो. गी.

२ देखो 'सुवासिणी' (रू. भे.)

सुवासणौ—१ देखो 'सवासणौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सुवासिणौ' (रू. भे.)

सुवासमद—सं. पु.—कदम। (ग्र. मा.)

सुवासव—सं. पु.—चंदन।

उ०—किरणपत सुवासव वर गिरपत कहां, एतला थोक देवां ग्रमेळा। जनमैं साथ विसतार दै पयोजित, भाटियां छात दरगाह भेळा।—रावळ ग्रखैराज री गीत

सुवासि—देखो 'सुवास' (रू. भे.)

उ०—पाटम्बर पग पावड़े मंदर मान सुवासि। सुख निरखै हरखै महल, सायरण छांमि सवासि।—रा. रू.

सुवासिणी वि. स्त्री.—१ सुगन्धदार, सुगंधित।

२ देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

रू. भे.—सुवासणी।

सुवासिणौ वि.—१ सुगन्धदार, सुगंधित।

२ देखो 'सवासणौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सुवासणौ।

सुवासी वि. [सं. सुवासिन्] १ किसी अच्छे या भव्य निवास स्थान में रहने वाला।

२ देखो 'सुवास' (रू. भे.)

सुवाह—सं. पु. [सं.] अच्छा घोड़ा, उत्तम श्रेणी का अश्व।

सुवि—अव्यय—सभी, सब, समस्त।

उ०—चतुर विध वेद पढीत निरन्तर। सकल ग्रन्थ मत तंत्र सुवि।—वेलि

सुविख्यात वि. [सं.] अच्छा, ख्याति प्राप्त, प्रसिद्ध, मशहूर, लब्ध प्रतिष्ठित।

सुविग्य वि. [सं. सुविज्ञ] १ पंडित, विद्वान।

२ अतिशय, बुद्धिमान, चतुर।

सुविचार—सं. पु.—अच्छा व उत्तम विचार, नेक इरादा।

उ०—१ 'सोनग' आद कमंधां सारां। चाल सुणी मानी सुविचारां।

—रा. रू.

उ०—२ मिळिया मेळ आप रा समूनट, रागा रंग रळियउ सुविचार। कहउ सखी प्रभु रूप प्रगट करि, सिणगारउ ही दिखाइ संसार।—महादेव पारवती री वेलि

सुविधा—सं. स्त्री. [सं.] किसी प्रकार के कार्य में मिलने वाली छूट, रहन-सहन में किसी वस्तु को उपयोग लेने की छूट, आराम, सुख।

उ०—१ वस आगा कमर कैदी बारकर फिर आवै है अर आप आपरी कोटड़ी री गोरव सुविधा बनावण लाग जावै है।

—दसदोख

उ०—२ जनवासा में सुख सुविधा री पूरी इंतजाम हो। म्हैं स्नान ध्यान सूं निपटनै ढळता पलंगिया पर थोड़ी ताळ आरांम करण री विचार कियौ।—अमरचूनड़ी

सुविनीत वि. [सं.] १ विनम्र, बहुत ही नम्र।

२ सुशिक्षित। (पशु)

सुविसाल वि. [सं. सुविशाल] भव्य एवं विशाल।

उ०—जाळना साधि पांणी तलाव, ए सहु पुण्य तणउ परभाव तेत्रीस सइ दांतना देवाला, बारह सइ साम न सुविसाला।

—स. कु.

रू. भे.—सव्विसाल।

सुविसाला–सं. स्त्री. [सं. सुविशाला] कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

सुविहांण–सं. पु.—१ शुभ सवेरा, उत्तम दिन ।

उ०—१ हितू जांण **सुविहांण**, खांन इतकाद आद अत । कियौ विदा आलोभ, सोभ सुख वात घात चित ।—रा. रू.

उ०—२ आज तौ अडंडौ कै सीस डंड धारै । आज **सुविहांण** प्रांण ताकै मांण मारै ।—रा. रू.

उ०—३ सूरि जिनोदय उदयउ भांण, स्रीजिनराज नमूं **सुविहांण** । स्रीजिनभद्र सूरीसर भलउ, स्रीजिनचंद्र सकल गुण निलउ ।
—स. कु.

सुविहि–सं. स्त्री. [सं. सुविधि] अच्छी विधि, सुविधि ।

सुविहित–वि. [सं.] सुव्यवस्थित ।

उ०—मन लागउ रे मोरउ सूत्र थी, एतउ भव वइराग तरंग रे । रस राता गुण ग्याता लहइ, परमारथ **सुविहित** संग रे ।—वि. कु.

सुवीर–सं. पु. [सं.] १ स्कन्द का एक नाम ।

२ शिव का एक नामान्तर ।

३ उत्तम व श्रेष्ठ योद्धा ।

४ देखो 'सौवीर' (रू. भे.)

सुवीरक--देखो 'सौवीरक' (रू. भे.)

सुवेण–सं. पु.—सुन्दर व मृदु वचन ।

उ०—**सुवेण** कुवेण लोक ना, खमणा परीसा-मार । राजकुंवर सुकमाल छै, करवी न देह री सार ।—जयवांणी

रू. भे.—सुरवैण ।

सुवेता–सं. पु. [सं. सवितृ] सूर्य्य, सूरज । (नां. मा.)

सुवेध–वि.—१ पंडित, विदग्ध ।

उ०—तेहमांहि सगुण **सुवेध** सुजांण, करइ सहू कौ तेह नूं वखांण । गंभीर गिरूउ नइ गुणवंत, बुद्धि पराक्रमी अति बलवंत ।
—नळदवदंती रास

२ रसिक ।

रू. भे.—सुवेध ।

सवेल–सं. पु.—लंका के पास का एक पर्वत जिस पर रामचन्द्रजी ने अपनी वानर सेना सहित पड़ाव डाला था ।

सुवेलड़ी–सं. स्त्री.—सुन्दर लता, वल्लरी ।

उ०—वीठू वेल **सुवेलड़ी**, ऊगी ठांय कुठांय । एक घड़ी रै कारणै, कुळ बोड़त दह मांय ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सुवेळा–सं. स्त्री.—अच्छा समय, शुभ बेला ।

सुवेस–सं. पु. [सं. सुवेश] सुन्दर वेश ।

वि.—सुन्दर, स्वरूपवान ।

रू. भे.—सुबेस ।

सुवै–क्रि. वि.—तक, पर्यन्त ।

सुवैण–सं. स्त्री. [सं. सुवेणि] १ किसी स्त्री की सुन्दर चोटी, सुन्दर वेणी ।

२ मित्रता, दोस्ती ।

३ देखो 'सुवेण' (रू. भे.)

सुवैन–सं. पु.—सूरज । (अ. मा.)

सुवोरोग–सं. पु.—सूतिका रोग ।

सुवौ–सं. पु. [स. शुक] १ तोता, कीर, सुग्गा, शुक । (अ. मा.)

उ०—१ सिंघ सी कमर । कुच नारंगी । नख लाल ममोला । ग्रीवा मोर सी । बोली कोकल सी । अधर प्रवाळी । दांत दाड़मी-कुळी । नाक **सुवा** री चांच ।—रा. सा. सं.

उ०—२ भोगावती नांम नगरी छै । तेथी रूपसेन राजा राज करै । तींरै विदग्ध चूड़ामणि नांन **सुवौ** पींजरा मांही रहै । सौ महा पंडित छै ।—बैताळ पच्चीसी

२ प्रसवकालीन समय, सूतक ।

उ०—मूठावैं खग मूठ, चालै भारत सामहौ । **सुवै** ज खाधी सूंठ, मात भळांही मोतिया ।—रायसिंह सांदू

३ देखो 'स्रुवौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

सुव्रख–सं. पु. [सं. सु+वृक्ष] पीपल का वृक्ष ।
(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

सुव्रत–सं. पु. [सं.] १ उत्तम व श्रेष्ठ व्रत ।

उ०—**सुव्रत** साधु समीपै कारतिक । लीधउ संजम भारजी ।
—स. कु.

२ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ७८ वां ग्रह ।

३ जैनियों के भविष्यकाल के ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम ।
(स. कु.)

सुव्रन—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)

सुव्रिंद–सं. पु. [स. सुर+वृन्द] १ इन्द्र ।

२ देवगण ।

सुव्रीड़णौ, सुव्रीड़बौ–क्रि. अ.—लज्जित होना, संकुचित होना ।

सुव्रीड़णहार, हारौ (हारी), सुव्रीड़णियौ—वि० ।

सुव्रीड़िओड़ौ, सुव्रीड़ियोड़ौ, सुव्रीड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुव्रीड़ीजणौ, सुव्रीड़ीजबौ—भाव वा० ।

सुव्रीड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—लज्जित हुवा हुआ, संकुचित हुवा हुआ ।
(स्त्री. सुव्रीड़ियोड़ी)

सुव्विसाल—देखो 'सुविसाल' (रू. भे.)

उ०—विसाल भाल **सुव्विसाल** अद्धचंद छज्जियं । रउद्द थी रिसाइ जांणि एथि आइ रज्जियं ।—ध. व. ग्रं.

सुसंग–सं. पु.—१ अच्छा संग, उत्तम संगति ।

२ सत्संग ।

सुसंगत–वि. [सं.] युक्तियुक्त, उचित, ठीक ।

सुसंगति–सं. स्त्री.—अच्छी संगत, सत्संग ।

सुसंधि—सं. पु. [सं.] एक सूर्यवंशी राजा।
रू. भे.—संधि।

सुस—१ देखो 'ससा' (रू. भे.)
२ देखो 'सस' (१) (रू. भे.)
३ देखो 'सूंस' (रू. भे.)
उ०—अभयसिंघजी तौ गुजरात रा कजिया पछै कजियौ करण रौ **सुस** घालियौ नै राजाधिराज जयसिंह सूं कजियौ कियां पछै मारवाड़ सारै जैसिंह सूझै छै। मारवाड़ रा अमरावां री वारता

सुसकणौ, सुसकबौ—देखो 'ससकणौ, ससकबौ' (रू. भे.)
उ०—इसी कहिनै धींस धींस नै सांढ कनै न्हाखिया, नै अलवाई भीलनै **सुसकतौ** देख घावां सुं रंज्यौ नांख्यौ।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

सुसकल्यौ—देखो 'सस' (१) (अल्पा; रू. भे.)

सुसकार, सुसकारौ—सं. स्त्री.—१ कपड़ा धोते समय धोबी के मुह से निकलने वाली ध्वनि।
२ ध्वनि, आवाज।
३ देखो 'सिसकारी' (रू. भे.)
रू. भे.—सुस्कार, सुस्कारौ।

सुसकियोड़ौ—देखो 'ससकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुसकियोड़ी)

सुसज्जित—वि. [सं.] १ भली-भांति सजा हुआ।
२ शोभायमान, शोभित।

सुसणौ, सुसबौ—क्रि. अ.—१ सिकुड़ना, संकुचित होना।
२ सूखकर कम होना, सोखा जाना।
उ०—स्वांमीजी बोल्या—ज्यूं तिण ब्राह्मण कोरा करवा मैं घी चोरायौ। **सुसजाए** तौ पिण जांण्यौ पांनै पड़यौ गोही खरौ।
—भि. द्र.

सुसत—सं. पु.—१ सुख-शांति, कुशलता। (अ. मा.)
उ०—औ ताठौ पांणी पीवै, इण मैं जळ छै। तिण मैं रुवै सु अरोगौ तरै जळ पीधौ। **सुसत** जीव मैं हुवौ।
—राव रिणमल री बात
२ सत्य, सच। (अ. मा.)
३ देखो 'सुस्त' (रू. भे.)

सुसता, सुसताई—सं. स्त्री. [फा. सुस्ती] १ शांति, तसल्ली।
उ०—१ **सुसता** उतावळ नांहि, धीरज धरै मन मांहि, सुकोमल साथ।—जयवांणी
उ०—२ धीरज **सुसताई** विचार सारा कांम सुधारै। अर उतावळी सूं निस्चय सारा कांम बिगड़ै।—नी. प्र.
२ उदासी, खिन्नता।
३ आलस्य, प्रमाद, सुस्ती।

सुसताणौ, सुसताबौ—देखो 'सुस्ताणौ, सुस्ताबौ' (रू. भे.)

सुसतायोड़ौ—देखो 'सुस्तायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुसतायोड़ी)

सुसती—देखो 'सुस्ती' (रू. भे.)
उ०—सेवना **सुसती** कर हेक भई। कर पड्या पीक रमी कलनै।
पा. प्र.

सुसते, सुसतै—क्रि. वि.—धीरे, शनैः।
उ०—तरै चीबैजी कह्यौ, था इतैयां में रोजगी पांणी नहीं, जिणसूं राज बाहिर पाली नै सेना पधारीज्यौ। इसौ कोइ थोड़ी ढोळी। तरै पिउसणी कह्यौ, धीमा धीमा **सुसतै** सुसतै चाल्यां जाज्यौ। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

सुसतौ—देखो 'सुस्त' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—रावळ जैतसी दूदावत रौ। दूदावत रै पछै पाट बैठौ। बरस ३५ मास ४ दिन १० जैसलमेर राज कियौ। **सुसतौ** सौ ठाकुर हुवौ।—नैणसी
(स्त्री. सुसती)

सुसद्द—देखो 'सुसबद' (रू. भे.)
उ०—संग मांहि आयास मात आस, ए महना परबंसे मास। सरसती कंठा सरस विरुद, भऊंगति बोलद भद **सुसद्द**।—स. कु.

सुसनंद—सं. पु. [सं. श्वसन् + नंदन] हनुमान।

सुसब—सं. स्त्री. [सं. सु + छवि] सुन्दरता, छवि।
उ०—जिण नाद भरता हुई रस मगरूर, सगुं **सुसब** जोवतां घणी। काचा कीर बखत कारीगर, बाजै भरण जड़ाव जणी।
—महादेव पारवती री वेलि

सुसबद, सुसबद्द—सं. पु. [सं. सु + शब्द] १ कीर्ति, यश, बड़ाई।
(अ. मा.)
उ०—१ कनमाळ सुता राजकुमार, धवळी बगत सुजस अधार। **सुसबद** किया जिण मन विचार, जीता जिके नर जमवार।
र. ज. प्र.
उ०—२ जागी फूल भड़ंद, गिड़ गिरथौ सी ऊपरा। **सुसबद** लागौ सनेह, गास न आसौ ढोकरा। —ढोकरा अहीर री बात
उ०—३ जोधां रा रणं जरद्द, सुमटा उतारै मद्द। बाढाळौ काटै विरद्द, मरदां मरद्द। जिण आगै करै रद्द, बहु लियै **सुसबद्द**। हीदू रै हद्द, चिहुं चक बद बद्द।—स. पि.
२ श्रेष्ठ एवं उत्तम शब्द।
३ मधुर शब्द।
रू. भे.—सुसद्द।

सुसमय—सं. पु.—अच्छा समय, अच्छा अवसर।

सुसमा—सं. स्त्री. [सं. सुषमा] १ सुन्दरता, शोभा, छवि।
उ०—१ काबुल कासी मांय, मनीरां मीठौ मेवौ। गूंथियां नित कसमीर, सुवांणी **सुसमा** सेवौ।—दसदेव
उ०—२ कोमळ वेल कांटियां वरणै **सुसमा**-सधर सुरधरा। कठै

लांमी केल कहीजै, गोळ भुंड सर मुनवरां ।—दसदेव
२ मंद मुस्कराहट, मृदु हास्य ।
[सं. सुष्मं, सुष्म] ३ अग्नि । (डिं. को.)
रू. भे.—सुखम, सुखमा ।

सुसमाथ–वि.—सामर्थ्यवान, समर्थ ।
उ०—'राजड़' नै 'कुंभै' जिसा, मांगळिया **सुसमाथ** । रूकहथा 'जसराज' रा, पोरस भीम क पाथ ।—रा. रू.

सुसमित–सं. पु. [सं. सुस्मित] १ आनन्द से मुस्कराता हुआ, मुदित ।
उ०—**सुसमित** सुनमित निज वदन सुव्रीड़ित । पुंडरीकाख थिया प्रसन ।—वेलि
२ प्रस्फुटित, प्रफुल्लित ।

सुसमौ—देखो 'ससमौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुसमी)

सुसर–सं. पु.—१ छप्पय छंद का ३६ वां भेद जिसमें ३५ गुरु, ८२ लघु से कुल ११७ वर्ण या १५२ मात्राऐं होती हैं । (र. ज. प्र.)
२ देखो 'ससुर' (रू. भे.)
उ०—**सुसर** इ वळै जवाई सरिसउ, क्युं हेक खाटउ जीव कियउ ।
—महादेव पारवती री वेलि
३ देखो 'सुसरि' (रू. भे.)
उ०—नरनाथ कोडि मथुरा नयर, वाजै **सुसर** वधांमणा । वाजंत्र सुतांन खट त्रीस वगि, सोभै ग्यांन सुहांमणा ।—रा. रू.
४ देखो 'सुसिर' (रू. भे.)

सुसरनंद–सं. पु. [सुसुर=शंकर+नंदन] हनुमान । (नां. मा.)

सुसरमा–सं. पु. [सं. सुशर्मा] त्रिगर्त्त नरेश वृद्धक्षेम का पुत्र जो द्रौपदी स्वयंवर में उपस्थित था एवं महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष में लड़ता हुआ अर्जुन द्वारा मारा गया था ।
वि. वि.—दुर्योधन के कहने पर इसने मत्स्यदेशाधिपति विराट पर उस समय आक्रमण किया था जबकि पांडव लोग विराट के यहां अपने अज्ञातवास की अवधि बिता रहे थे । उक्त युद्ध में इसने विराट को बन्दी बना लिया था किन्तु अर्जुन, भीमादि ने युद्ध करके पुनः छुड़वा लिया ।
रू. भे.—ससरम, ससरमा ।

सुसराळ–सं. पु. [सं. श्वशुर+आलय] श्वशुर का घर, ससुराल ।
उ०—कुण नगर म्हारौ **सुसराल** मेरी माय, कुण नगर म्हारौ पीवरियौ ।—लो. गी.

सुसरि–स. स्त्री. [सं. सु+सरित्] १ सुन्दर हार, सुन्दर लड़ी या माला ।
उ०—कळ मोतियां **सुसरि** हरि कीरति । कंठसरी सरसती किरि ।
—वेलि
[सं. सुरसरी] २ गंगा नदी ।
३ तालाब, सर ।
क्रि. वि.—१ मधुर एवं मीठे स्वर में ।
उ०—१ बाजै **सुसरि** राजगढ बाजा । रांणी गौड़ परणियौ राजा ।—रा. रू.
उ०—२ आणद मोर **सुसरि** आवाजै । वीणा वंस मधुर सुर वाजै ।—आसौ बारहठ
२ देखो 'सुसिर' (रू. भे.)
३ देखो 'ससुर' (रू. भे.)

सुसरौ—देखो 'ससुर' (रू. भे.)
उ०—१ सुंदर गोरी ओळूं थारी परी रै निवार, चंपक वरणी बाबोसा री ओळूं **सुसरौ** जी भांगसी ।—लो. गी.
उ०—२ **सुसरैजी** रै हुकम कंवरड़ौ चालै, सासड़ रै कवरांणीजी । सुसरौजी तो पूत सरावै, सासूजी कुळ व्याहीजी ।—लो. गी.
उ०—३ 'सबळै' नूं **सुसरौ** करण, 'मिरजै' किया मुकांम । 'आसावत' छळ ऊजळै, वळ भरियौ वरियांम ।—रा. रू.

सुसलौ, सुसल्यौ—देखो 'सस' (१) (अल्पा; रू. भे.)
उ०—एक **सुसला** रै पाछै दोय छाली नाहर दोड़्या । जद **सुसळौ** न्हास नैं बिल मैं पेस गयौ ।—भि. द्र.

सुसवट–पु.—कीर्ति, यश ।
उ०—घण दळ लियां 'घासी' घण नांमी, **सुसवट** सुबद-बदीती साखि । भैरूं घड़ पाड़ि बाड़ बिधि बैरौ, करि भेळा येळा कमळाखि ।—घासीरांम हाडा रौ गीत

सुसवद, सुसवाद–सं. [सं. सु+स्वाद] स्वादिष्ट, जायकेदार ।
उ०—चोली मइ चरणा चीर सखरा, सुंखड़ा **सुसवाद** ए । रली रंग स्युं लइ जसौभद्रा, जांणइ जेठ प्रसाद ए ।—स. कु.

सुसांत–वि. [सं. सु+शांत] अत्यन्त शान्त, स्थिर, गंभीर ।

सुसा—देखो 'ससा' (रू. भे.)
उ०—१ गुरु गेहि गयौ गुरु चूक जांणि गुरु, नांम लियौ दमघोख नर । हेक वडौ हित हुवै पुरोहित, वरै **सुसा** सिसुपाळ वर ।
—वेलि
उ०—२ रथ गज त्रिखभ तुरंग रथ, दन अनंमिति सत दास । **सुसा** विदा किय नेम सूं, पूरण प्रेम प्रकास ।—रा. रू.

सुसाध्य–वि. [सं.] जो सहज में किया जा सके, जो सहज में पूरा किया जा सके, सुखसाध्य ।

सुसार–सं. पु.—कमल । (अ मा.)

सुसाणौ, सुसाबौ, सुसावणौ, सुसावबौ–क्रि. स. ['सुसणौ' क्रिया का प्रे. रू.] संकुचित करना, सिकोडना, सिकुड़ाना ।
उ०—भरियौ हब्बाहोळ, उबक नाळांनै आवै । आंन ओसरै मेह, पेटनै भळै **सुसावै** ।—दसदेव

सुसायोड़ौ, सुसावियोड़ौ–भू. का. कृ.—संकुचित किया हुआ, सिकोड़ा हुआ ।
(स्त्री. सुसायोड़ी, सुसावियोड़ी)

सुसिख–सं. स्त्री. [सं. सुशिख] १ अग्नि का एक नाम ।

[सं. सुशिखा] २ सुन्दर वेणी, चोटी ।

[सं सुशिष्य] ३ सुशिष्य ।

सुसियोड़ो–भू. का. कृ.—१ सिकुड़ा हुआ, संकुचित हुवा हुआ. २ सूखा हुआ, सोखा गया हुआ ।

(स्त्री. सुसियोड़ी)

सुसियौ—देखो 'सस' (१) (अल्पा; रू. भे.)

उ०—लूंकड़ खावै बोरिया लिप, **सुसिया** सरणौ ओट है। ठायां ठायां टोपली, अर बाकीरां लंगोट है।—दसदेव

सुसिर–वि. [सं. सुशिर] जिसका सिर सुंदर हो ।

सं. पु. [सं. सुषिर] १ बेंत ।

२ बांस ।

३ अग्नि ।

४ एक प्रकार का वाद्य ।

उ०—तत वितत घन **सुसिर** पंच वरण्ण वाजित्र वाजइ छद ।

—कां. दे. प्र

रू. भे.—सिसर, सुसिर, सुसरि ।

सुसिला—देखो 'सुसीळा' (रू. भे.)

सुसीतळ–वि. [सं. सु+शीतल] अत्यन्त ठण्डा, शीतल ।

सुसीतळताई–सं. स्त्री.—अत्यन्त ठण्डा होने की अवस्था या भाव, शीतलता ।

सुसीम–सं. स्त्री.—शरदी, शीत ।

उ०—कहिचौ सोलंकियां रौ ओज तौ इण समय हिंदुस्थांन रा अंधकार नूं महंद आगळी मंजा करि बांधवजणां रा दुक्ख रूप **सुसीम** नै उडावै छै।—वं. भा.

सुसीर–सं. पु.—चन्द्रमा, चांद । (नां. मा.)

सुसीळ, सुसील–वि. [सं. सु+शील] १ उत्तम स्वभाव वाला, सज्जन, भला ।

उ०—१ **सुसील** सम्य साच्छरं, स्रुति प्रमांन सोहनैं। अभग पुन्नि ओज कै मनोज मूरति मोहनैं—ऊ. का.

उ०—२ बैजू मुळक्यौ, लीना म्हैं गळती मार्थ हौ। पैं'ली मुलाकात मैं म्हनै पवन नैं अड़ियल अर घमंडी समझ्यौ, पण लीना थारी परख सांची निकळी। पवन **सुसील**, निस्वारथ अर साहसी है।

—निरसंकू

२ उत्तम चरित्र वाला, चरित्रवान, सच्चरित्र ।

उ०—जै हुंता जगि जाचंध, तै हुवा गुर ग्यांनी। जै हुंता सदा असोच, हुवा **सुसील** सिनांनी।—उदौजी नैण

३ सरल-चित्त, सीधा-सादा, भोला-भाला ।

उ०—फूटरी **सुसील** गुणवांन किन्यावां नै सुखी बणा'र देस रौ ढांचौ बदळौ।—दसदोख

४ विनीत, नम्र ।

सुसीलता–सं. स्त्री.—सुशील होने की अवस्था या भाव, सज्जनता ।

सुसीला सं. स्त्री. [सं. सुशीला] १ श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक ।

२ यमराज की पत्नी का नाम ।

३ सुदामा की पत्नी का नाम ।

४ देवी, दुर्गा ।

५ एक नदी का नाम ।

उ०—देवी कावेरी नाम करना कपीला, देवी गाग सतलज्ज भीमा **सुसीला**। देवी गोम गगा देवी बाम गगा, देवी गुप्त गगा सुत्रीरूप अगा।—देवि.

६ राधिकाजी की एक अनुचरी का नाम ।

सुसुक्षा–सं. स्त्री.—अग्नि, आग ।

उ०—स्वक्रोधा **सुसुक्षा** धगधगित :आगि गा। भिनौनै गंभूता धजर अवभूता अदभूता।—मे. मा.

सुसुपत–वि. [सं. सुषुप्त] १ प्रगाढ़ निद्रा में सोया हुआ, निद्रित ।

२ अचेतन, बेहोश ।

३ लकवा मारा हुआ, सुन्न ।

सुसुपति, सुसुपती, सुसुप्ति, सुसुप्ती सं. स्त्री. [सं. सुषुप्ति] १ गहरी नींद, प्रगाढ़ निद्रा ।

उ०—सागो भाई या मत नै कोई नर रे, आपन माय **सुसुप्ती** बरनै निज स्वरूप थित कर रे। —श्रीसुखरामजी महाराज

२ अचेतनता, जड़ता, अज्ञानता ।

उ०—१ सत्वगुण विस्न भरमा न सुपन, सूक्षम जांत न जूप। तमगुण सिव संघार न **सुसुपती**, नहीं ज्यां सुन अनूप।

—श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ **सुसुप्ती** कास्ठ ज्यूं भाया, ज्यां मांई चेतन अग्नि समाया। सत् सब्द सू कास्ठ मथांणी, ज्यां मै ग्यांन अग्नि प्रगटाणी।

—श्रीसुखरामजी महाराज

३ पातंजल दर्शन मे सुषुप्ति, चित्त की उस वृत्ति या अनुभूति को माना है, जिसमें जीव, नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है किन्तु जीव को इस बात का ज्ञान नहीं रहता कि उसने ब्रह्म की प्राप्ति की है ।

४ वेदान्त के अनुसार जीव की अज्ञानावस्था ।

रू. भे.—सुखपत, सुखपति, सुखपती, सखुपती, सुखुप्ती, सुखोपति ।

सुसुमण सं. स्त्री. [सं. सुषुम्णा] १ सूर्य की मुख्य किरणों में से एक ।

२ देखो 'सुसुमणा' (रू. भे.)

सुसुमणा सं. स्त्री. [सं. सुषुम्णा] १ शरीर की नौ प्रमुख नाड़ियों में से नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित रहने वाली एक नाड़ी। (हठयोग व तंत्र)

२ देखो 'सखुमणा' (रू. भे.)

सुसुरुत सं. पु. [सं. सुश्रुत] १ आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र के एक प्रसिद्ध आद्याचार्य ।

२ उक्त आचार्य द्वारा रचित आयुर्वेद चिकित्सा का ग्रंथ 'सुश्रुत-संहिता'।

वि.—१ अच्छी तरह सुना हुआ।

२ वेद विद्या में निपुण।

३ प्रसिद्ध, मशहूर।

सुसेण—सं. पु. [सं. सुषेण] १ रामायण के अनुसार एक वानर जो वरुण का पुत्र, बाली का श्वसुर तथा सुग्रीव का वैद्य था।

२ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

सुसेत—वि. [सं. सु+श्वेत] श्वेत एवं उज्जवल, शुभ्र, चमकीला।

उ०—मारु देस उपन्नियां, तांहका दंत **सुसेत**। कूंझ-बचां गोरंगियां, खंजर जेहा नेत।—ढो. मा.

सुसैंधवी—सं. स्त्री. [सं.] सिंध देश की अच्छी घोड़ी।

सुसोभित—वि. [सं. सुशोभित] १ शोभायमान, शोभित।

उ०—भाळ विसाळ सिंदूर **सुसोभित**, हाल मराल, हसत्ती।
—मे. म.

२ सुन्दर, मनोहर।

रू. भे.—ससोभित, सुसोहत, सुसोहित।

सुसोहणौ, सुसोहबौ—क्रि. अ.—शोभायमान होना, शोभित होना।

उ०—जाहर जस सुसबोह जुत, सुदता कुसम **सुसोह**। कांटां सूं भूंडौ क्रपण, बप अपजस बद बोह।—बां. दा.

सुसोहत, सुसोहित—देखो 'सुसोभित' (रू. भे.)

सुसोहियोड़ौ—भू. का. कृ.—शोभित या शोभायमान हुवा हुआ।

(स्त्री. सुसोहियोड़ी)

सुसौ—सं. पु.—शशक, खरगोश।

उ०—अंगरा रिख **सुसा** वाह रस हास यण, कळंदीराव कुळ वैस्य त्रय कंज।—र. रू.

रू. भे.—सूंसौ, सूसौ।

सुसौभ—सं. स्त्री. [सं. सुशोभा] शोभा, आभा, कान्ति, छबि।

उ०—नग बंधण अग्र **सुसौभ** नई। थिर सेहरि दांमणि जांणि थई।—रा. रू.

सुस्क—वि. [सं. शुष्क] १ जिसमें किसी प्रकार की नमी न हो, जिसमें तरलता न हो, खुश्क, सूखा।

२ जिसमें कोई रस न हो, नीरस।

३ जिसमें हर्ष, आनन्द आदि की अनुभूति न होती हो, नीरस, विरक्त, उदास।

४ भुना हुआ।

५ कृश, दुबला।

६ झूठा, बनावटी।

७ रीता, खाली।

८ व्यर्थ, निरर्थक।

९ कटु, कर्कश।

१० जीर्ण-शीर्ण, पुराना।

सुस्कार, सुस्कारौ—देखो 'सुसकार' (रू. भे.)

उ०—आड़ू भाटा, थळिया, मोथा, गांवेड़ी अर बारतू कैईजण, मोसा बोल सुणण अर मस्करी जोग बिचै **सुस्कार** ई नी करण री धारली।—चितरांम

सुस्त—वि. [फा. सुस्त] १ जिसमें तत्परता या स्फूर्ति की कमी हो, आलसी, प्रमादी।

२ दुर्बल, कमजोर, अशक्त, शिथिल।

३ खिन्न, मलिन, उदास।

४ मंद गति वाला, धीमा, दीर्घ सूत्री।

५ जिसमें काम-शक्ति कम हो।

६ जिसकी बुद्धि तीव्र न हो, मंद-बुद्धि।

७ आभा या कान्ति से रहित, निस्तेज।

८ रोगी।

रू. भे.—सुसत।

अल्पा;—सुसतौ।

सुस्ताई—देखो 'सुस्ती'।

उ०—जिण कांम मैं विचार **सुस्ताई** सूं कांम करै तौ सही मन मांनी सुधरै।—नी. प्र.

सुस्ताणौ, सुस्ताबौ—क्रि. स.—१ थकावट दूर करने के लिये विश्राम करना, श्रम दूर करना।

उ०—घुड़लां नै रास्तौ रोक्यां देख नै म्हैं सोच मैं पड़ग्यौ। सरवर री पाळ माथै लीना री बाथां मांय **सुस्तातां** जिकी घुड़लां री आवाज सुणी वा सांचली कोनी निकळी।—तिरसंकू

२ किसी कार्य को करने से कुछ समय के लिए रुकना, ठहरना।

उ०—तद बखतसिंहजी कही दिन दोय **सुस्तायजै**।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३ धैर्य रखना, धीरज धरना।

उ०—मंत्रीपुत्र कहियौ—महाराजकुमार! चंदण अपणै हाथ मैं लगाया चपेटा मारिया छै तीं रौ यौ विचार छै—दस दिन चांनण पछै मिळस्यां, तितरै थां **सुस्ताय** रहौ।—बैताळ पच्चीसी

४ प्रतीक्षा या इंतजार करना।

५ आलस्य या सुस्ती फैलाना।

६ नींद लेना।

सुस्ताणहार, हारौ (हारी), सुस्ताणियौ—वि०।

सुस्तायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुस्ताईजणौ, सुस्ताईजबौ—कर्म वा०।

सुसताणौ, सुसताबौ, सुस्तावणौ, सुस्तावबौ—रू० भे०।

सुस्तायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ थकावट दूर करने के लिये विश्राम किया हुआ, श्रम दूर किया हुआ. २ किसी कार्य को करने से कुछ समय के लिये रुका हुआ, ठहरा हुआ. ३ धैर्य रखा हुआ, धीरज धरा

हुआ. ४ प्रतीक्षा या इंतजार किया हुआ. ५ आलस्य या सुस्ती फैलाया हुआ. ६ नींद लिया हुआ ।
(स्त्री. सुस्तायोड़ी)

सुस्तावणौ, सुस्तावबौ—देखो 'सुस्ताणौ, सुस्ताबौ' (रू. भे.)
उ०—१ मास **सुस्तावो** सू एक बात री बुहांनौ कर अठै सूं विदया होसां ।—द. दा.
उ०—२ सांमी दीखती प्याऊ मैं थोड़ी ताळ **सुस्तावण** री मतौ करियौ ।—फुलवाड़ी
उ०—३ पांणी पावण री कह्यौ तद वा डावड़ी बोली—थोड़ी ताळ **सुस्तावौ**, परसेवौ सूख जावै तौ पछै पावूं ।—फुलवाड़ी

सुस्तावियोड़ौ—देखो 'सुस्तायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुस्तावियोड़ी)

सुस्ती—सं. स्त्री. [फा.] १ आलस्य, प्रमाद ।
२ शिथिलता, ढीलापन ।
३ दुर्बलता, कमजोरी ।
४ मलिनता, उदासी, खिन्नता ।
५ गति मांद्य, दीर्घ सूत्रता ।
६ बुद्धि मांद्य ।
७ काम शक्ति का अभाव ।
८ निस्तेजावस्था ।
६ रूग्नावस्था ।
रू. भे.—सुसती, सुस्ताई ।

सुस्थित—सं. पु.—घोड़े का एक ग्रह विशेष, इसके ग्रसित होने पर घोड़ा बराबर हिनहिनाता रहता है और अपने आपको देखता रहता है ।

सुस्यांम—वि. [सं. सुश्यामः] सुन्दर एवं श्याम, श्याम सुन्दर ।
उ०—नमौ पंच ब्रन्न-पवित्र सुपीत । **सुस्यांम** सुनील, सुरत्त, सुसीत ।—ह. र.

सुस्यौ—देखो 'सस' । (१) (अल्पा; रू. भे.)

सुस्री—सं. स्त्री. [सं. सुश्री] १ सुन्दर-शोभा ।
उ०—गौ खीर स्रवति रस धरा उदगिरति, सर पोइणिए थई **सुस्री** । वळी सरद स्रग लोग वासिए, पितरै ही अत लोक प्री ।
—वेलि
२ कुमारी, मिस । (Miss)

सुस्रूसा—सं. स्त्री. [सं. शुश्रूषा] १ सेवा-चाकरी, टहल-बंदगी ।
२ देख-भाल, संभाल, सुरक्षा ।
उ०—अंजन न घालै आंख, मसी न लगावै दांत । **सुस्रूसा** देह तणी ए, बरजी सासन कै धणी ए ।—जयवांणी

सुस्रेय—सं. पु. [सं. सुश्रेय] १ कुशल-क्षेम । (ह. नां. मा.)
२ यश, प्रशंसा ।

सुस्वधा—सं. स्त्री. [सं.] कल्याण, मंगल, सौभाग्य ।

सुस्वप्न—सं. पु. [सं.] अच्छा सपना, शुभ सपना ।

सुस्वर—सं. पु.—मधुर व मीठा स्वर, मीठी आवाज ।
वि.—जिसका स्वर मधुर हो, सुरीला ।

सुहंगौ—देखो 'सूंगौ' (रू. भे.)
उ०—मुळतांणी धर मन वसी, **सुहंगा** नइ संसार । हिरणाखी, हंसि नइ कहइ, आंणउं हेडि तुखार ।—ढो. मा.
(स्त्री. सुहंगी)

सुह—१ देखो 'सुख' (रू. भे.)
२ देखो 'सुभ' (रू. भे.)
उ०—धन धन तै नर धरणीयै, जेहनी सफली जीह । अस कहै पास जिणंद नौ, **सुह** भावै धरमगीह ।—ध. व. ग्र

सुहग्गा—देखो 'सुहागण' (रू. भे.)
उ०—ईसर उठ भग्ग धोमर अग्ग, बै बै पग्ग लग्ग बग्ग । मठि नारि **सुहग्गा** मिळियौ मग्गा, दांणव पग्गा रत्त दग्गा ।—भगतमाळ

सुहड़, सुहड़ौ—देखो 'सुभट' (रू. भे.)
उ०—१ सौ पाड़िया दूजा **सुहड़**, अन ऊपाड़िया अेन । अग नत्रीठा वाजिया, आद 'दुरग्ग' सनेत ।—रा. रू.
उ०—२ हीयाफूट हठ न करौ हुरा, नर हिंदू के तुरक नहीं । बांमीबंध केसरियै बागै, सूर **सुहड़** राठौड़ सही ।
—ठाकुर राठौड़ जोगावत रौ गीत

सुहट—देखो 'सुभट' (रू. भे.)

सुहटौ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)
उ०—ईं समय दैत्य दमनी कन्हा सै **सहटौ** एक कागद लेयनै जयमाला कन्है आयौ ।—पंचदंडी री वारता

सुहणौ—देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)
उ०—१ मैं **सुहणौ** इम पाइयौ, हूं गयौ इंद्र सभाय । तहं तू दीठी नाचती, बैठा सुरपती राय ।—पंचदंडी री वारता
उ०—२ **सुहणां** ही मां ताहरौ ध्यांन, बाल्हौ लागै जेम निधांन ।
—वि. कु.

सुहद्र—सं. पु.—यम । (अ. मा.)

सुहद्रागिर—सं. पु. [सं. शुभद्रागिरि] भाद्राजून नामक ग्राम (जोधपुर) के पास की पहाड़ी, शुभद्रागिरी ।
उ०—आयौ **सुहद्रागिर** असुर, छायौ मेह निहग । आगै 'भाग' तरस्सियौ, गढ केवाण अभंग ।—रा. रू.

सुहांणी—सं. स्त्री.—१ लोहे का नुकीला औजार विशेष जो बारीक चीजों को पकड़ने के काम आता है ।
२ देखो 'सुहावणी' (रू. भे.)
उ०—१ बोलै सीतापत इसडीजी बाणी, सुरनर नागां नै लागै **सुहांणी** ।—र. रू.
उ०—२ माहरै हिव था धणीयांणी, तु हिज मन मांहि **सुहांणी** जिम राजा नै पटरांणी ।—वि. कु.
रू. भे.—सुणी ।

सुहांणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

उ०—हरियळ केरां केरां कसूंबल ढाळू ई ढाळू पळकता हा। कित्ता **सुहांणा**। किता रूपाळा।—फुलवाड़ी

सुहांमणउ, सुहांमणौ—देखो 'सुहावणौ' (रू. भे.)

उ०—१ नरवर देस **सुहांमणउ**, जइ जावउ पहियांह। मारू तणा संदेसड़ा, ढोलइनूं कहियांह।—ढो. मा.

उ०—२ फागण मास **सुहांमणउ**, फाग रमइ नव वेस। मौ मन खरउ उमाहियउ, देखण पूगळ देस।—ढो. मा.

उ०—३ एहिज व्रिक्ष **सुहांमणा** सखी, घणा वली फल फूल।

—वि. कु.

उ०—४ चित हूंत मेटी राय चिंता, वधै चाय वधांमणा। दुरदीह चा दुखगया दुरै, संपजि दीह **सुहांमणा**।—रा. रू.

(स्त्री. सुहांमणी)

सुहांमणौ, सुहांमबौ—देखो 'सुहाणौ, सुहाबौ' (रू. भे.)

सुहा, सुहाग—सं. पु. [सं. सौभाग्य] १ स्त्री के सधवा रहने की अवस्था, वह समय जब स्त्री का पति जीवित हो, सौभाग्य।

उ०—१ **सुहा** ताइ विसन ब्रह्म ताइ सुहा, इंद्र सुहा आसीस दीयइ। न कहइ **सुहा** घणूं नांन्हडियउ, कवळ मजीठउ राव कीयउ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कहै वेलि वर लहै कुमारी, परणी पूत **सुहाग** पति।

—वेलि

उ०—३ कुलीन नारि केकयं, आणंद मैं अनेकयं। **सुहाग** भाग सूं भरी, अनेक राग उच्चरी।—सू. प्र.

२ स्त्री के शरीर पर का ऐसा पहरावा जो उसके पति के जीवित होने का प्रतीक हो, सौभाग्य चिन्ह।

उ०—१ अबै **सुहाग** रै इण ओछौ बांहां रै कंचुवै (कांचळी) सूं मोनै बराबरी री स्त्रियां मैं हाथ देखावती नै लाज आवै छै।

—वी. स. टी.

उ०—२ हूं साची रावत जोधार री बेटी हूं तौ ए आपरी **सुहाग** री चूड़ियां पग पग माथै पछट्र जमी माथै पटक नै **सुहाग** आघौ न्हांकूंला।—वी. स. टी.

३ पति की आयु।

उ०—१ रानी कौ राज तपतौ जाय, म्हांकौ **सुहाग** बधतौ जाय।

—लो. गी.

उ०—२ म्हनै पूरौ भरोसौ है बीरा थांरै बाहुबळ रौ अर इण भरोसा रै पांण इज तौ थां सूं **सुहाग** री भीख मांगती अमरचूनड़ी री ओढांमणी चावूं।—अमरचूंनड़ी

४ पति का संसर्ग, सौभाग्य-सुख, पति का प्रेम।

उ०—पण अणी सौ ठाकुर मया करै सौ या सुहागण। दुजी तीनौं सौ मया थोड़ी। जदी बेटां री माउवा विचार कीधौ सौ ईणी नै ठाकुर **सुहाग** दीधौ।—गांम रा धणी री बात

५ विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले मांगलिक गीत।

६ यश, प्रशंसा, तारीफ।

रू. भे.—सवाग सवाग, सुआग, सुभाग, सुवाग, सुहागि।

सुहागण, सुहागणि, सुहागणी—सं. स्त्री.—१ वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा, सुहागन, सौभाग्यवती, जो विधवा न हो।

उ०—१ सूरां खोटौ सूरपण, चूड़ा अजब उतार। हूं बळिहारी कायरां, सदा **सुहागण** नार।—वी. स.

उ०—२ अणी धड़ कहि, फबै फळ एम। जाळी मझि हत्थ, **सुहागणि** जेम।—सू. प्र.

उ०—३ फागुन फरहरै वात, प्रभात नौ सीत अपार। नाह सुं फाग रमैं बहु, राग **सुहागणि** नारि।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ सुरति **सुहागन** सुंदरी, दुलहौ सबद सुजांन। सदा सनेही ऊपरै, वारू मन अर प्रांन।—अनुभववांणी

२ वह स्त्री जिसे उसका पति विशेष प्रेम करता हो, मानवती, मानेती।

उ०—१ मांडण री बेटी **सुहागण**, सीहै री बेटी दुहागण।

—नैणसी

उ०—२ गरीबनाथ उण डावड़ा दुहागण रा नूं दिया, सु आंबा लै डावड़ौ घरै आयौ। तरै **सुहागण** बैर करन है (रे) हुती, तिण रै छोरू वै आंबा दीठा।—नैणसी

रू. भे.—सवागण, सवागण, सुआगण, सुभागण, सुवागण, सुहागिण, सुहागिन, सुहागिनी।

सुहागथाळ—सं. पु.—भोजन परोसा हुआ वह थाल जिसमें कुछ सुहागिनी स्त्रियां नवागंतुक वधू के साथ भोजन करती है।

रू भे.—सवागथाळ सवागथाल, सुवागथाळ।

सुहागदार-बिड़लौ, सुहागदार-बीड़ौ—सं. पु. यौ.—दूल्हे के स्वागत के समय वधु-पक्ष की स्त्रियों द्वारा दी जाने वाली पान की गिलोरी।

सुहागवती—देखो 'सौभाग्यवती' (रू. भे.)

सुहागि—देखो 'सुहाग' (रू. भे.)

उ०—वेळा तिणि व **सुहागि** धड़हड़ती धूंवा पखइ। तणौ अंतेवर ऊठिखी अग्गहुं जांणइ आगि।—अ. वचनिका

सुहागिण, सुहागिन, सुहागिनी—देखो 'सुहागण' (रू. भे.)

उ०—१ या मैं एक वदेही पुरखा, इळा पिंगळा रांणी। सुखमिण सदा **सुहागिण** सूंदरी, मोख मुगति जांह जांणी।—अनुभववांणी

उ०—२ सौय **सुहागिन** सूंदरी, सुख सागर भरतार। दूजी दुखी दुहागनी, हरीया बिन इकतार।—अनुभववांणी

सुहागौ—सं. पु.—१ एक प्रकार का क्षार, इससे स्वर्ण के अभूषण साफ किये जाते हैं।

उ०—ऐसी प्रीत लगी मन मोहन ज्यूं सोनै मैं **सुहागा**।—मीरां

२ सुन्दर वागा, सुन्दर पौशाक।

रू. भे.—सुआगौ, सवागौ, सवागौ, सुवागौ, सोहागौ।

सुहाणौ वि. (स्त्री. सुहाणी) १ शोभा देने वाला, शोभायमान, शोभित ।
२ सुवासित ।
३ अच्छा, बढ़िया ।
४ सुन्दर, मनोहर ।
५ स्वादिष्ट ।
६ सुरुचिकर, मनभावना, प्रिय ।
रू. भे.—सुवांणौ, सुवाणौ, सुवावणौ, सुहांमणौ, सुहावणौ ।

सुहाणौ, सुहाबौ—क्रि. स.—१ अच्छा लगना, मन भाना, रुचिकर लगना, प्रीतिकर लगना ।
उ०—१ जबतैं मोहि नंद नंदन द्रस्टि परयौ माई । तबतैं परलोक लोक कछु नां **सुहाई** ।—मीरां
उ०—२ सतसूरां री बात, हरीया भावै सूर कुं । कायर कुं न **सुहात**, चौर न चाहै चांदणी । अनुभववांणी
उ०—३ दुनीयां भूठै रचणी, साच न पैंडै जाय । सांई भूठ न रचई, हरीया सचि **सुहाय** ।—अनुभववांणी
२ बरदाश्त होना, सहन होना ।
उ०—१ बेटा रा बाप नै औ सगळौ ठरकौ **सुहायौ** कोनी । बात बात मैं घणी ई खांमियां काढ़ण री अटकळां करी, पण मांढिया कसूर मैं नीं आया जकौ नीं आया । फुलवाड़ी
उ०—२ हरीया वचन बमेक का, सबकु कहघा सुणाय । आडा बगतर भरम का, एक न अंग **सुहाय** । अनुभववांणी
क्रि. अ.—३ शोभायमान होना, शोभित होना ।
उ०—१ दळ फूलि विमळ वन नयण कमळ दळ । कोकिल कंठ **सुहाइ** सर । पांपणि पंख संवारि नवी परि, भ्रूहां रै भ्रमिया भ्रमर । —वेलि
उ०—२ अतही **सुहायौ** मेरौ साहिबौ सेरौ प्रम दयाळ । आलिम प्रभूजी रौ लाडिलौ गिरधरलाल गुवाळ ।—आलमजी
सुहाणहार, हारौ (हारी), सुहाणियौ वि० ।
सुहायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सुहाईजणौ, सुहाईजबौ—भाव वा० ।
सउहाणौ, सउहाणौ, सवाणौ, सवाबौ, सुवाणौ, सुवाबौ, सुवावणौ, सुवावबौ, सुहांमणौ, सुहांमबौ, सुहावणौ, सुहावबौ, सूआणौ, सूआबौ, सोहांमणौ, सोहांमबौ—रू० भे० ।

सुहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)
उ०—राखियौ निज पुर राय, सुरराय जेण **सुहाय** । जग कमण फेरै जाब, कळ अकळ 'सेर' नबाब ।—रा. रू.

सुहार—देखो 'सुवार' (रू. भे.)
उ०—१ दुसमणां फौज गढ घेरियौ तठै गढ रौ धणी साकौ कर मरण री विचारी तद स्त्री बोहत समभायनै सुवाणिया कि **सुहार** रा लड़जौ ।—वी. स. टी.
उ०—२ इण सारू उण वीर पुरस री स्त्री नकीब नै कह्यौ रे वैरी दोय घड़ी तो थूं ही जीभ नै जक दै, **सुहार** होवण री वेळा नकीब बोलण लागौ तिण सूं कहै छै । वी. स. टी.

सुहारे, सुहारै—देखो 'सुवारै' (रू. भे.)
उ०—१ तरै आसथांन कही आज ऐ आपां नुं गाव माहै दगा कर ऊतारै छै, **सुहारे** डेरौ बीजै गांव करसां तरै आपां नै कुण डेरा गांव मैं करण देसी । नैणसी
उ०—२ मह कुपी आज भरी महाराज, **सुहारै** लीजौ वैर सकाज । —गो. रू.

सुहाली—वि. स्त्री.—सुन्दर, सुहावनी ।

सुहालीसेज—सं. स्त्री. यौ. सुन्दर व सुहावनी शय्या ।

सुहावणि, सुहावणी वि. स्त्री. १ सुन्दर, मनोहर ।
उ०—१ स्वांमी भगति सगनेहलि, अति सुकुमाळ **सुहावणी** । कहै राघव सुलतांन सुणी, पहीवी हुइ इणी पदमणी । प. च. चौ.
उ० २ जंगळ वीर **सुहावणि** गाजै, फिरै सकति री आण । मठ मैं आपूआप विराजौ, भळहळ ऊगौ भाण ।
राघवदास भादौ
२ जो रुचिकर लगे, मन भावन ।
उ०—हिरणाणियां ज्यूं दमकता नख । मीठी घर **सुहावणी** बोली ।
फुलवाड़ी
३ शोभायमान, शोभित ।
रू. भे.—सुहांणी ।

सुहावणौ देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)
उ० १ जब लागै छै खेत रमणीक **सुहावणा** । नगवांणी
उ० २ कांती कत **सुहावणौ** प्यारी कियौ बणाव ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—३ सायण ढोल **सुहावणौ**, दैणौ मो दाह । —वी. म.
(स्त्री. सुहावणी)

सुहावणौ, सुहावबौ—देखो 'सुहाणौ, सुहाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ सती दीयै आसीस सहु परवार **सुहावै** । तौ ऊमै गढ धणी कमण बळ वीयै कहावै । ग्र. वचनिका
उ०—२ तुं धरम तणा न छाड़ धोरी, माहरउ मन लीधउ चोरी रे । तुझ दीठां विण न **सुहावइ**, मुझ जीव अमाता पावइ रे ।
—वि. कु.
उ०—३ म्हारा भाग कै म्है तौ अठा री सूळां नैई नी **सुहावूं** ।
फुलवाड़ी
उ०—४ ताहरां मूळ-पसाव आपरी रजपूतांणी नूं कैयौ, 'गोत री गाळ मैंस नूं **सुहावै** नहीं । सु पेथड़, म्है जांणां, तोनूं नहीं **सुहावै** ।
—तीन राठौड़ वीरां री बात

सुहावियोड़ौ—देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सुहावियोड़ी)

सुहावौ—वि.—सुन्दर, सुहावना ।

उ०—त्रीजै प्रहरै रैणकै, मिळिया तेहातेह । धन नहिं धरती हुइ रही, कंत **सुहावौ** मेह ।—ढो. मा.

सुहासणी—देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

उ०—बाजा बाजै अति भला, वरत्या मंगल-माल । संतोखै याचक **सुहासणी**, हरख्या बाल गोपाल ।—जयवांणी

सुहाहीणौ—वि.—मूर्ख, नासमझ ।

सुहिणइ, सुहिणउ, सुहिणौ—सं. पु.—सपना, स्वप्न ।

उ०—१ सहिए फिरि समझावियउ, **सुहिणइ** दोस न कोइ । सउ जोयण साहिब वसइ, आंण मिळावइ तोइ ।—ढो. मा.

उ०—२ जिण दिन ढोलउ आवियउ, तिण अगलूणी रात । मारू **सुहिणउ** लहि कह्यउ, सखियां सूं परभात ।—ढो. मा.

उ०—३ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस संधि **सुहिणा** सु वरि । हिव पळपळ चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि ।

—वेलि

वि.—प्रिय, वल्लभ, प्यारा ।

रू. भे.—सुंहिणौ, सुंहीणौ ।

सुहित—सं. पु. [सं. स्वहित] अपना हित, अपना भला, स्वार्थ ।

उ०—उत्तम धांम दुवारिका, महिमा **सुहित** संभारि । लियौ महा सुख एक पख, न्रप परसियौ मुरारि ।—रा. रू.

वि.—१ हितैषी, हितु ।

२ लाभदायक, शुभ ।

उ०—सुभ जोग सकळ नव ग्रह **सुहित**, इसैइ महूरत ऊधरै । असपती मिळण खड़िया 'अभै', जैत हथा जोधाहरै ।

—रा. रू.

३ देखो 'सहित' (रू. भे.)

रू. भे.—सुहित्त ।

सुहितौ—देखो 'सोहितौ' (रू. भे.)

उ०—उणी भांति वौ मांस, उणि भांति रौ **सुहितौ**, उणि भांति रा भरहता सूळां रौ निकुळ कीजै छै ।—रा. सा. सं.

सुहित्त—देखो 'सुहित' (रू. भे.)

उ०—राज्येंद्रौ जोग्येंद्रौ संगौ सांमरथ नेह एकंगौ । लेखै सेव **सुहित्त**, आसंगौ नइव लेखती ।—रा. रू.

सुहिद्रा—सं. स्त्री.—सुभद्रा ।

उ०—चौरी बैठै चक्रधर वळि **सुहिद्रा** रौ वीर । बाबै नां सबळा बिरिद, पुणै कवेसर पीर ।—पी. ग्रं.

सुहिलौ—वि.—सुलभ ।

उ०—कोजै रयण तणै नित कुळ क्रत, बैरां ऊपरी वत्र अवत्र । जेइ अहोनिस दुहिला जंगम, **सुहिला** तइयां म गिणि सत्र ।

—गु. रू. बं.

सुहो—सर्व—१ वही, वह ।

उ०—**सुहो** नर 'केहर' वीजळसार, रखी निज पास वड़ै रिझवार ।

—पे. रू.

२ देखो 'सुखी' (रू. भे.)

सुहुड़—देखो 'सुभट' (रू. भे.)

उ०—सोलंकी वाघेला **सुहुड** रोसाला राउत राठउड ।

—कां. दे. प्र.

सुहेल—सं पु. [अ.] यमन देश में उगने वाला एक प्रसिद्ध चमकीला तारा ।

सुहेलु, सुहेलू, सुहेलौ—देखो 'सोहिलौ' (रू. भे.)

उ०—माल्हंतौ घरि आंगणै, सखी **सुहेलौ** कांम । जो जांणूं पिय माल्हणौ जै मल्है संग्रांमि ।—हा. झा.

सुहृत—सं. पु. [सं. सुहृत्] १ मित्र, दोस्त, सखा ।

२ राज्य के सात अंगों में से एक ।

सुहृद—वि. [सं.] प्रिय, प्यारा, मित्र । (ह. नां. मा.)

उ०—अणूं तैं व्याणूं तैं व्रहदळ विभूतैं अति विभू । तुजै नां जांनैं को **सुहृद** स्वसु जांनै भल त्रभू ।—ऊ. का.

सूं—क्रि. वि.—१ ही ।

उ०—वदनारविंद गोविंद वीखियै, आलोचै आपौआप **सूं** । हिव रुखमणी क्रतारथ हुइस्यै, हुओ क्रितारथ पहिलौ हूं ।—वेलि

२ देखो 'सुं' (रू. भे.)

उ०—१ सखी समूह मांहि इम स्यांमा, सील आवरित लाज **सूं** ।

—वेलि

उ०—२ नरनारी **सूं** क्यूं जळइ, नर **सूं** नारि जळंत । साल्हकुंवर जोगी कहइ, अहलउ केम मरंत ।—ढो. मा.

उ०—३ एक देस वाहणी न आंण । सुरसरि समसरि वेलि **सूं** ।

—वेलि

उ०—४ मां रै मूंडै औ नांव म्हारै कांनां इमरत ज्यूं लागतौ । हेलौ मारतां उणरौ गळौ माखण **सूं** भरचौ ज्यूं लखावतौ ।

—फुलवाड़ी

उ०—५ धिन आजूणौ दीहड़ौ, यां कहियौ रघुनाथ । धरम निभाहां सांम छाळ, साहां **सूं** भाराथ ।—रा. रू.

३ देखो 'स्यूं' (रू. भे.)

सूंई—क्रि. वि.—से ही ।

उ०—१ सेवट तौ वांरी कमाई **सूंई** पार पड़ैला, किणी रै दियां लियां सूं कीं सांधौ नीं लागै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ थूं भरोसौ राख । इण **सूंई** वेसी चावै तौ थनै उणरौ फोटू बताय सकां । पण ऐन मौका माथै रूबरू देखण री हर करणी कम अकल री बात है ।—अमरचूंनड़ी

वि. स्त्री.—१ उल्टी का विपर्याय, सीधी, सुलटी ।

२ चित्त, सीधी ।

३ देखो 'सूई' (रू. भे.)

सूंक—सं. स्त्री.— रिश्वत, घूंस

उ०—१ तीन दिनां सू साक मिळै तोई, धोको हियै न धारौ रे !
सूंक लेर पधरावै सीरौ, नहिं नीकौ निरधारौ रे !—ऊ. का.

उ०—२ राजाजी नै उपाव सूझ्यां पछै कांई ढील ! राज रा असवारां नै हुकम दियौ सौ अणगिण मिनखां रा हाथ पुगानां मांय सूं उतार न्हांकिया । धपावू **सूंक** दो फगत उणानै छोडयौ ।
—फुलवाड़ी

सूंकखोर—वि.—रिश्वत लेने वाला, रिश्वतखोर ।

सूंकड़ी—१ देखो 'सुखड़ी' (रू. भे.)
२ देखो 'सूंक' (अल्पा; रू. भे.)

सूंकेड़ी—वि.—रिश्वतखोर ।

सूंखड़ी—सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का प्राचीन कर ।

उ०—सुरतांण कुतबदीन नै पाट सुरतांण महमंद बैठौ । महमंद बारै लोकां नै १८ कर लागा । ते कही—१ (प्रथम) दाण । २ (बीजौ) पूंछी । ३ हळगत । ४ भोम । ५ भेट । ६ तलार । ७ **सूंखड़ी** । ८ बंधांमणी लाग । ६ मळबौ लाग ।—नैणसी

२ खलिहान से ब्राह्मण, साधु आदि को दिया जाने वाला अनाज ।
(मेवाड़)

३ देखो 'सूकड़ी' (४)

रू. भे.—सूंकड़ी ।

सूंखलौ—सं. पु.—गेहूं या जौ की भूसी जिसे मारवाड़ में 'खाखला' कहते हैं ।

सूंगणी—देखो 'सांगणी' (रू. भे.)

उ०—सूखोड़ी मूंडी, मैला-मैला गाभा, माथौ जांणै **सूंगणियां** रौ माळौ ।—अमरचूंनड़ी

सूंगा, सूंगाकलाल—सं. पु.—एक वैश्य जाति जो शराब बनाने व बेचने का व्यवसाय करती थी । (मा. म.)

सूंगी—सं. स्त्री.—१ सूंगा जाति की स्त्री ।

वि.—२ देखो 'सूंगौ' (पु.)

उ०—थूं खुद जांणै कै म्हारौ नेह अर म्हारी प्रीत इत्ती **सूंगी** कोनीं । फुलवाड़ी

सूंगीवाड़ौ—सं. पु.—बाजार में वस्तुएँ सस्ती होने की अवस्था या भाव, सस्तापन, मंदी ।

सूंगौ, सूंगौ—वि. [सं. समर्घ] (स्त्री. सूंगी) १ कम दामों में प्राप्त होने वाला, सस्ता ।

उ०—सेठ रै जातां ई माल इत्तौ **सूंगौ** कर दियौ कै आखा चौखळा री उठै ढूक व्हैगी ।—फुलवाड़ी

२ महत्वहीन, जिसकी कोई कदर न हो ।

उ०—१ मांणस मुरधरिया मांणक सम मूंगा । कोडी कोडी रा करिया स्रम **सूंगा** ।—ऊ. का.

उ०—२ सुपियारी मुंहगी सदा, नायक थारै नांम । अब सूरजमल आंगणै, रखै न **सूंगी** रांम ।—पा. प्र.

३ जो काम खर्च या थोड़े से प्रयास से पूरा हो गया हो ।

उ०—ऐड़ौ **सूंगौ** ब्याव तौ उण जमानै मुद्दतां सूं ई नी निवड़ियौ । बेटी री ब्याव माईतां री हरड़ै काढ दै । फुलवाड़ी

४ सहज, आसान, सुलभ ।

रू. भे.—सुंहगौ, सूंघौ, सूंहगौ ।

सूंघ—सं. स्त्री.—रोचक वचन कहने की क्रिया ।

उ०—का तन आळस करत ऊंघ, का फिर सूधा करत **सूंघ** ।
अनुभववाणी

सूंघणी—स. स्त्री.—१ नाक में सूंघने की तम्बाकू ।

२ देखो सांगणी (रू. भे.)

रू. भे.—सुंघणी, सूंघनी ।

सूंघणौ, सूंघबौ—क्रि. स. [सं. शिङ्घनं] १ नाक द्वारा किसी प्रकार की गंध का अनुभव करना ।

उ०—भंवरा घूमै हा कळी कळी, **सूंघै** हा सुमणां भली भली । झाला देता सौ झूम झूम, सौरभ बटै ही घणी घणी । सकुन्तला

२ घ्राण शक्ति द्वारा किसी पूर्व परिचित गंध का अनुमान लगाना, अनुभव करना, जानना ।

उ०—१ अर औ नवाबियां जिसौ इण प्रबोध किसनू औ फकत पांच बरस रौ है अर इणरौ आमणा मरगी, उणनै ई मायड़ रा परसेवा री बास **सूंघ्यां** बिना ऊंघ नी आवै तो इण मैं इचरज री बात ई कांई ? अमरचूंनड़ी

उ०—२ भावली नवाबियौ मांग्या पछै डाग **सूंघतौ** अर हिड़ाड़ करती गाय री हालत देखी कोनी । अमरचूंनड़ी

३ गंध लेने के लिये किसी वस्तु का नाक से स्पर्श कराना ।

उ०—१ नाहरा **सूंघनै** चार पांवक रोकी आई तो पछै उणरा जीव मैं जीव आयौ । फुलवाड़ी

उ०—२ ठाकरां तमाखू बोली तौ है नहीं इसी है । अद निगू रजपूत बिचळी भरनै **सूंघी** पनै बीनौ ... है । भि. द्र.

४ ध्यान या तवज्जाह देना, देखना ।

उ०—मांड सांपिया री बयार मैर पवकी मिळी अर गुड़ नै तौ कोई **सूंघतौ** ई कोनी । अमरचूंनड़ी

सूंघणहार, हारौ (हारी), सूंघणियौ—वि० ।

सूंघिओड़ौ, सूंघियोड़ौ, सूंघ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूंघीजणौ, सूंघीजबौ—कर्म वा० ।

सूंघियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ नाक द्वारा किसी प्रकार की गंध का अनुभव किया हुआ. २ घ्राण शक्ति द्वारा किसी पूर्व परिचित गंध का अनुमान लगाया हुआ, अनुभव किया हुआ. ३ गंध लेने के लिये किसी वस्तु का नाक से स्पर्श कराया हुआ. ४ ध्यान या तवज्जा दिया हुआ ।
(स्त्री. सूंघियोड़ी)

सूंघौ–वि.—१ रोचक वचन कहने वाला।
२ देखो 'सूंगौ' (रू. भे.)
उ०—घिरत घणौ **सूंघौ** हुवौ, मद मूंघौ अरणमाप। कह कहनै कितरी कहूं, प्रभुता तूझ 'प्रताप'।—चिमनदांन रतनू

सूंज, सूंझ–सं. पु.—विवाह के समय दहेज के रूप में तथा प्रथम प्रसव के बाद विदाई के समय कन्या को उसके माता-पिता द्वारा दिया जाने वाला आभूषण, वस्त्र एवं अन्य सामान।
उ०—सझ विसाल अंबर जरीय, नख चख **सूंज** सिंगार राज रवन गुरजन अलन, कत कर लग्न कुंआर।—कूंभकरण सांदू
रू. भे.—सौंज।

सूंट–सं. पु.—एक प्रकार का कीड़ा, कीट।

सूंटी–सं. स्त्री. [सं. सूत्थिता] नाभि।
उ०—१ सूरजमल वागरी जेह झाल नै कटारी गळा नीचा सूं वाही **सूंटी** आवती रही।—नैणसी
उ०—२ सु कारी न हिंदुस्तांन न खुरासांण मांहै सुणी न दीठी। **सूंटी** रै पाखेडि कारी की।—द. वि.
रू. भे.—सूंठि, सूंठी।

सूंटौ–सं. पु.—वर्षा के साथ चलने वाली तेज हवा जो खड़ी फसल को आडी पटक देती है तथा पेड़ों को तोड़ देती है। (शेखावाटी)

सूंठ–सं. स्त्री. [सं. शुण्ठी] सूखी अद्रक, सोंठ। (अ. मा; डिं. को.)
उ०—१ काचां हाडां मैं कुचमाध हुयगी। गूंद **सूंठ** अर पींपळामूळ जिसा ओखदां मैं तौ बोतौ मारयां पड़यौ ही रैणौ चाहीजै।
—दसदोख
उ०—२ खांड, सूत, **सूंठ**, पींपळामूळ, घीरत मण १ दुगांणी ६॥ लागै।—नैणसी
रू. भे.—सुंठ, सुंठि, सुंठी।

सूंठि, सूंठी—१ देखो 'सूंटी' (रू. भे.)
उ०—१ आंगणौ धोय-धाय, पूंछ-पांछनै घी हळदी रा **सूंठी** माथै सावता सावता चोपा दिया।—फुलवाड़ी
उ०—२ पछै एक **सूंठी** तणौ ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै राजाजी कैवण लागा—जै इण दुनियां में सगळा ई मिनख राजा व्हैता तौ कैड़ौ नांमी कांम बणतौ।—फुलवाड़ो
२ देखो 'सूंठ' (रू. भे.)

सूंड–सं. स्त्री. [सं. शुण्डा] १ हाथी की नाक जो हाथी की ऊंचाई से जमीन तक लम्बी होती है। खाने पीने आदि क्रियाओं में हाथी अपनी सूंड को हाथ की तरह प्रयोग में लाता है।
(डिं. को.)
उ०—बाजता घंट बिहुवै बळां, ऊरध **सूंड** उछाजता। दाझता क्रोध ज्वाळा दग्घा, गज मतवाळा गाजता।—मे. म.
२ हाथी की सूंड के आकार का मोट का वह भाग जिसमें पानी बाहर आकर मोट को खाली करता है।
३ हरे रंग का एक कीड़ा, कीट।
रू. भे.—संड, सुंड, सूंडा, सूंढि।

सूंडकियौ, सूंडक्यौ—देखो 'सूंडौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—चालौ ए साथणियां अपें, कांमड़ियौ नै जावां। ऐ तौ कांमड़ियां चोखी म्हारी, **सूंडकियौ** गुंथाऊं।—लो. गी.

सूंडडंड, सूंडदंड—देखो 'सूंडाडंड' (रू. भे.) (डिं. को.)

सूंडधर–सं. पु. [सं. शुण्ड+धर] १ हाथी, गज। (डिं. को.)
२ गणेश, गजानन।

सूंडर–सं. पु.—राठौड़ वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।
(बां. दा. ख्यात)

सूंडळौ, सूंडलौ—देखो 'सूंडौ' (अल्पा; रू. भे)
उ०—मालणि आंपि मोगरा, तंवोळी दिइ पांन। सपरि समधिउं **सूंडलै**, साहमुं आवइ धांन।—मा. कां. प्र.

सूंडहळ–सं. पु. [सं. शुंण्डा+धर] हाथी, गज। (डिं. को.)

सूंडा–सं. पु.—१ राठौड़ों की एक उपशाखा।
२ पंवारों की एक शाखा।
३ देखो 'सूंड' (रू. भे.)

सूंडाडंड, सूंडादंड–सं. पु. [सं. शुण्डादण्ड] १ गणेश, गजानन।
उ०—**सूंडादंड** अहेस राग रीझेस समोसर।—सू. प्र.
२ हाथी, गज। (डिं. नां. मा.)
उ०—गेंधूंमै आरांण घांण मथांण नीसांण घौक, सूकै डांण **सूंडाडंड** बीछुड़ै सीधांण। दोवळा विवांण ठहै खड़ा गरबांण देखै, भड़ै दखणांण हूंत हिंदवांण भांण।—पहाड़खां आढौ
३ हाथी की सूंड।
उ०—दीयै खंभू ठांणां मचौळा, अचाळा झाट **सूंडांडंडां**।
—चैनकरण सांदू
वि.—जिसके सूंड हो, सूडधारी।
रू. भे.—सुंडडंड, सुंडदंड, सुंडाडंड, सुंडाडंडू, सुंडादंड, सूंडड़ंड, सूंडदंड, सूंडाडंडौ।

सूंडाडंडौ—देखो 'सूंडाडंड' (रू. भे.)

सूंडाळ, सूंडाळौ–सं. पु. [सं. सुण्डार] १ गजानन, गणेश।
(ह. नां. मा.)
उ०—१ डसण एक **सूंडाळ**, बरदायक रिध सिध-बरण। विद्या बयण बिसाळ, आपीजै आखिर उकत।
— बगसीरांम प्रोहित री बात
उ०—२ **सूंडाळौ** लाइक सुंरां, रांम सरीखौ रूप। ब्रह्म सतगुरु हूंता वडौ, ईसरदास अनूप।—पी. ग्रं.
उ०—३ **सूंडाळा** दुख भंजणा, सदा जो बाळक भेस। सारां पै'ली सिवरीयै, गौरी पुत्र गणेस।—जांभौ
२ हाथी, गज। (अ. मा; डिं. को; डिं. नां. मा; ना. डिं. को.)
उ०—१ **सूंडाळा** धड़ सांमही, फैरी जेसलमेर। पाछौ दळ

पतसाह रौ, घिरियौ घातै घेर ।—नैणसी

उ०—२ सूंडाळ दरगह साबता, वेगाळ खैंग वडाळ । किरमाळ वळ रिण ताळ केतां जीरगा-जमजाळ । -नैणसी

वि. जिसके सूंड हो, सूंड वाला ।

रू. भे. -सुंडार, सुंडाळ, सुंडाळकौ, सुंडाळौ, सुंडाहळ, सुंडाहळौ, सूंडाहळ, सूंडाहळौ, सूंड्याळौ, सूडाहळ ।

सूंडाहळ, सूंडाहळा-सं. स्त्री.—१ हाथी की सूंड ।

उ०—१ गजराजां रा भाळ कपोळ सूंडाहळ घणौ लाल सिंदूर सूं चरचिआ ।—रा. सा. सं.

उ०—२ भुयंग सरप नीसरीआ छै । सौ लू नैं तावड़ै री अगनि सूं बळता थकां द्रौड़ि द्रौड़ि नैं हाथीआंरै सीयळ सूंडाहळां मांहै पेसि पेसि रहीआ छै ।—रा. सा. सं.

२ देखो 'सूंडाळ' (रू. भे.)

रू. भे.—सूडाहळ ।

सूंडियौ-सं. पु.—१ एक प्रकार का चरस (मोट) जिसका पानी निकलने का हिस्सा सूंड के आकार का बना होता है ।

२ ऐसा कूप जिसका पानी सूंडदार चरस द्वारा निकाला जाता हो ।

३ मोठ की फसल में लगने वाला एक कीड़ा विशेष जिसका आकार सूंड के अनुरूप बना होता है । (शेखावाटी)

३ हाथी, गज ।

४ देखो 'सूंडौ' (अल्पा; रू. भे.)

रू. भे.—सूंड्यौ ।

सूंडी-सं० स्त्री.—१ ऊंट के मुख की आकृति ।

२ हाथी, गज ।

उ०—नित नित सूंडी नइ गढि आवइ साव दळइ सुरतांण ।

—कां. दे. प्र.

३ नाभि ।

उ०—मगर मांन मखतूल सा है, सूंडी रतन कचेळियां । जांघ थांमलौ देवल जिसौ, पांव पांनड़ा ओळियां ।—नारी सईकड़ौ

रू. भे.—सुंडी ।

सूंडीर-सं. पु [सं. शुण्डीर] १ हाथी ।

२ हाथी की सूंड ।

उ०—भौरां नूं बैठा सासड़ै नहीं, सूंडीर वरां वळाका खाइनै रहीआ छै ।—रा. सा. सं.

सूंडौ-सं. पु.—खपचियों का बना हुआ टोकरा जो तगारी के स्थान पर अनाज नापने के काम में लिया जाता है ।

अल्पा;—सूंडळौ, सूंडलौ, सूंडियौ ।

सूंड्याळौ—देखो 'सूंडाळ' (रू. भे.)

सूंड्यौ—१ देखो 'सूंडियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सूंडौ' (अल्पा; रू. भे.)

सूंढा-सं. पु.—पंवार वंश की शाखा ।

सूंढि—१ देखो 'सूंड' (रू. भे.)

उ०—सरळी सूंढि हाथीउ, बांधिउ गांमि गांमि । तेह-थिकी जै ऊपजइ, तै मुझ ल्यावै स्वांमि ।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'सूंढी' (रू. भे.)

सूंण—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—१ एक दिन बळै इदकी व्ही । आखातीज रै हळोतियै सूंण मनावण सारू एक जाट आपरै खेतां जावतौ हो कै सेठ सांम्हा धकग्या ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जै थूं उडनै सूंण बतावै, तौ थारौ । जलम जलम गुण गाऊं रे कागा ।—लो. गी.

सूंणावणौ, सूंणावबौ—देखो 'सुगणाणौ, सुगणाबौ' (रू. भे.)

उ०—दासी जाई सूंणावीयौ । तव धन उठी मोतीय राळ ।

—बी. दे.

सूंणावियोड़ौ—देखो 'सुगणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूंणावियोड़ी)

सूंणी-सं. स्त्री—१ छोटी चिमटी जो बारीक वस्तुओं या तार आदि को पकड़ने के काम आती है । (स्वर्णकार)

२ शकुनशास्त्र का ज्ञाता, शकुनी ।

सूंणौ, सूंबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू. भे.)

सूंतणौ, सूंतबौ क्रि. स. [सं. सुत्रूर्वणं] १ तीक्ष्ण धार वाले शस्त्र से शरीर का कोई अंग काटना, विच्छेद करना ।

उ०—१ कागज लावणिया री गळौ सूंत न्हांखियौ अर किणी रै कांनां भणकारौ ई नीं पड़ण दियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण नींद में सूता री गळौ सूंतणा सूं तौ तरवार रौ ई मांन घटै ।—फुलवाड़ी

उ०—३ दायण सावळ सुथराई सूं आंवळ कांनी नाळौ सूंत्यौ । पाचणा सूं नाळौ मोळ डोरां सूं बांध दियौ ।—फुलवाड़ी

२ गीली रस्सी या गीले वस्त्र को मुट्ठी में गाढ़ा भींचकर खींचना । (इससे उसमें से पानी झर जाता है अथवा खुरदरापन या सलवटें मिट जाती है ।)

३ इसी तरह किसी रसदार पदार्थ का रस निकाल लेना ।

४ लाक्षणिक अर्थ में किसी की ताकत या सत्व निकाल लेना, मोटे ताजे को थकाकर दुबला कर देना ।

५ खींचकर एकत्र करना, इकट्ठा करना ।

६ पतंग उड़ाने की डोर पर पके हुए मैदे (लेई) में पीसा हुआ काच मिलाकर लेपन करना, सूंती देना ।

७ किसी पौधे या पेड़ की टहनी को हाथ या मुंह (जानवरों द्वारा) में पकड़कर खींचते हुए उसके समस्त पत्ते, फूल व फल तोड़ लेना ।

उ०—बाग मैं खोज कठैई नीं अर इण सागै चोरी रौ नेम कदैई ढळै नीं । चोर पांन फळ अर फूल सगळा साथै ई सूंतै ।

—फुलवाड़ी

८ उजाड़ करना, उजाड़ना ।

उ०—राजाजी ई देखियौ कै इण भांत वाड़ी नै **सूंतणी** तौ चोरां रै बस री बात कोनीं । इण मैं ग्रवस कीं न कीं रासौ है ।
—फुलवाड़ी

९ दूसरे के धन या दौलत को धीरे धीरे करके अपने कब्जे में कर लेना ।

१० पीटना ।

उ०—राज रौ हाथ माथै रैवैला ई सौ ग्रकड़ू ग्रर हेंकड़ीबाज हा जिका साळां री ग्रांतड़ियां-ग्रोजरियां काढ न्हांखांला, **सूंत** दां ला, पांसलियां रा भचका बोलाय दां ला, तिनका कर काढांला,······ ग्रर गोडा, खुरियां, पुरा छा, हांसळियां ग्रर गट्टा तांई उतारतां री ग्रारी-बारी हांक दी ।—जहूरखां मेहर

सूंतणहार, हारौ, (हारी), सूंतणियौ—वि० ।

सूंतिग्रोड़ौ, सूंतियोड़ौ, सूंत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूंतीजणौ, सूंतीजबौ—कर्म वा० ।

सूंत्रणौ, सूंत्रबौ—रू० भे० ।

सूंतियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ तीक्ष्णधार वाले शस्त्र से शरीर का कोई ग्रंग काटा हुग्रा, विच्छेद किया हुग्रा. २ मुट्ठी में गाढा भींच कर पानी निकाला हुग्रा, खुरदरापन मिटाया हुग्रा (वस्त्र या रस्सी). ३ रस निकाला हुग्रा, निचोड़ा हुग्रा (फल, रसदार पदार्थ) ४ ताकत या सत्त्व निकाला हुग्रा, दुबला-पतला किया हुग्रा. ५ खींचकर एकत्र किया हुग्रा, इकट्ठा किया हुग्रा. ६ पतंग की डोर पर लेपन किया हुग्रा. ७ फल, फूल व पत्ते तोड़ कर नंगा किया हुग्रा (पौधा, वृक्ष की डाल). ८ उजाड़ा हुग्रा. ९ ग्रपने कब्जे में किया हुग्रा (धन) ।

(स्त्री. सूंतियोड़ी)

सूंती–सं. स्त्री—१ सूतने की क्रिया या भाव ।

२ मुट्ठी में भींचकर दिया जाने वाला खींचाव, मरोड़ ।

उ०—चकमक सूं बगदौ सिळगाय ग्रणू ता कोड सूं पूंख सेकिया । **सूंती** देय दांणा झाड़िया ।—फुलवाड़ी

३ पतंग की डोर पर पके हुऐ मेदे में पीसा हुग्रा कांच मिलाकर किया जाने वाला लेपन ।

४ तीक्ष्ण या पैनी वस्तु की रगड़ ।

उ०—ऐड़ौ लखावतौ जांणौ कांटां री झाटी सूं उणरी नसां ग्रर काळजा मैं कोई **सूंती** देवै ।—फुलवाड़ी

सूंत्रणौ, सूंत्रबौ—१ देखो 'सूत्रणौ, सूत्रबौ' (रू. भे.)

उ०—राठोड़ै रिण **सूंत्रियौ**, सू दखणाध दळांह । जोगणपुर रौ जूवटौ, माथै जोधपुरांह ।— गु. रू. बं.

२ देखो 'सूंतणौ, सूंतबौ' (रू. भे.)

सूंत्रियोड़ौ—१ देखो 'सूत्रियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सूंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूंत्रियोड़ी)

सूंथण, सूंथणि, सूंथणी—देखो 'सूथण' (रू. भे.)

उ०—१ बेटा भणग्या ग्रंगरेजी'र बणग्या फिरटांग, पैरली **सूंथण** ग्रर लगाय लियौ तेली रै बळध दाई चसमौं । —धरमगांव

उ०—२ टोळै टोळै पडइ करांखि, नीर प्रवाह वडइ जिम ग्रांखि । एक फाड़इ पहिरण **सूंथणी**, पाण नेउरी बांजइ घणी ।
कां. दे. प्र

सूंथारियौ—देखो 'सूथार' (ग्रल्पा; रू. भे.)

सूंथौ—देखो 'सूंतौ' (रू. भे.)

सूंद—देखो 'सूद्र' (रू. भे.)

उ०—पांच तत्व का पूतळा, रज वीरज की बूंद । ऐकै घाटी नीसरचा, बांमण क्षत्री सूंद । —ह. पु. वां.

सूंदरि, सूंदरी—देखो 'सुंदरी' (रू. भे.)

उ०—१ दै दै थकी संदेसड़ा, सूणि **सूंदरि** का कंत । मछी जीवै जळ बिनां, तौ तौ विन मैं ग्रौतंत । —ग्रनुभववाणी

उ०—२ घर घर में दाता नहीं, फन फन मिणन न होय । पतिवरता काई **सूंदरी**, यु जुग में जन होय । —ग्रनुभववाणी

सूंदाराय–सं. स्त्री.—सूंधा पर्वत पर निवास करने वाली देवी ।

सूंदौ–सं. पु.—१ जालोर जिले के जसवंतपुरा के पास वाला पहाड़ ।

२ देखो 'सूंधौ' (रू. भे.)

सूंधां, सूंधा–क्रि. वि.—१ सहित, समेत ।

उ०—तद बादसाह रा समुद्र रै टापू माही नीर सू काम एक ऊपर महल था उठै नूबना नूं परगह **सूंधां** गाखी ।
—जलाल बूबना री बात

२ देखो 'सौंधौ' (रू. भे.)

उ०—लिव सुधि बुधि का **सूंधा** नांउं, चित चंदन चरचाय ऐसी रांम बदेही दुलही, त्यु ग्रंतर लपटाय । —ग्रनुभववाणी

सूंधावास–सं. स्त्री. सुवास, सुगंध, खुशबू ।

उ०—१ **सूंधावास** ग्रनै नेउर सद, कमि ग्रागै ग्रागमन कहै ।
. वेलि.

उ०—२ ऊंचा मंदिर चौगणा, ऊंचा घणा ग्रावास । ग्रनव झरोखां जाळीयां, सीस्यां **सूंधावास** ।—ढो. मा.

सूंधै–क्रि. वि.—१ सुगंध से, खुशबू से ।

उ०—१ रजधांनी उच्छत्र रहसि मणि दीपक ग्रप्रमांण । **सूंधै** महळ सिंगारिया, सोरंभी लहरांण ।—रा. रू.

उ०—२ परभोम पंचायण, घण दियण जस लियण, कळायरौ मोर, **सूंधै** भीनै गात ·· ।—रा. सा. सं.

सूंधौ–वि.—१ उलटा या सौंधा का विपर्याय, सुलटा, सौधा, सीधा ।

उ०—उलटी न सुलटी कहै, ऊंधी नै **सूंधी** । जन हरिदास गोसै उसी, दुनियां चकचूंधी ।—ह. पु. वां.

२ देखो 'सूधौ' (रू. भे.)

उ०—वडौ दुग्गमी देस जोधै विलूंधौ । सुधै अंगदं अंतरानेर **सूंधौ** ।
—सू. प्र.

३ देखो 'सौंधौ' (रू. भे.)

उ०—१ सीसी खुलै छै, मोती पड़ै री सीपरा प्यालां मैं । घात हाजर कीजै छै, **सूंधौ** बंगलां लगायजै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ पछै पोसाख गहणौ पहिरियां, **सूंधौ** चोवौ अतर लगाय कस्तूरी री कंठी बगाइ, सेलरा थेगा दै ताडूंकतौ ताडूंकतौ आयौ ।
—जगदेव पंवार री बात

उ०—३ अलायदौ महल करायौ तिण मांहै घणा सुख भोग विलास करै । अतर **सूंधा** अरगजा माहै गरकाब रहै ।
—वीरमदे सोनगरा री बात

४ देखो 'सूंदौ' (रू. भे.) (मा. म.)

उ०—रावळ चाचगदे करमसी री, चांचगदे **सूंधा** रै भाखरै देहुरौ चावंडजी री करायौ, संमत १३१२ ।—नैणसी

सूंन—देखो 'सून्य' (रू. भे.)

उ०—रांम कहत रांडी भली, नीकौ जिनकौ भाग । रांम विमुख सौ जांणियै, हरीया **सूंन** सुहाग ।—अनुभववांणी

सूंनउ—देखो 'सूनौ' (रू भे.)

उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, पाछै पीळी पज्ज । नव पाड़ा नगर बसई, मौ मन **सूंनउ** अज्ज ।—ढो. मा.

सूंनत, सूंनित—देखो 'सुन्नत' (रू. भे.)

उ०—१ काजी मन का मरम न पाया, तातैं **सूंनत** कीन्ही काया ।
अनुभववांणी

उ०—२ मुलां **सूंनित** तैं करी, तैं कीया विसमल । खलड़ी गळा कटाय के क्या कीया वे'कल ।—अनुभववांणी

सूंनी—देखो 'सुन्नी' (रू. भे.)

उ०—खुरसांणी रहमांन अबूंनी, सीदी हबस राफसी **सूंनी** । मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुर जसथांनी ताई ।—रा. रू.

सूंनौ—देखो 'सूनौ' (रू. भे.)

सूंन्य—देखो 'सून्य' (रू. भे.)
(स्त्री. सूंनी)

उ०—अग्नि उस्ण अरु जळ दरवरता, जैसे पवन सफंदारै । **सूंन्य** पोळरु भूमि कठोरा, यूं जग ब्रह्म कहंदा रै ।—स्रीसुखरांमजी महाराज

सूंप—सं. स्त्री.—सौंपने की क्रिया या भाव ।

उ०—क्यूं जै जेर दस्त लोक प्रभूरी **सूंप** बादसाह नू छै तौ इणां री पर दाखत यतन रैयत रा करै तौ आरांम सूं रहै ।—नी. प्र.

सूंपणौ, सूंपबौ—क्रि. स.—१ किसी कार्य का भार, उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी किसी के कंधों पर डालना, संभलाना, सुपुर्द करना ।

उ०—१ नै सीसोदियौ छाजू, सिवौ चंद्रावत, ऐ वडा रजपूत छै, नै वडा भोमियां छै, यांनूं गांव रौ सांसर **सूंपां** तौ ऐ जतन करै ।
—नैणसी

उ०—२ भणवां गुण्यां नै कला-चातुरी री जिम्मा **सूंपै** । मोटा ताजा नै डील सारू कमाई री मोरचसी ओळावै । —[illegible]

२ सुपुर्द करना, देना, संभलाना, हस्तांतरण करना ।

उ०—१ सेठांणी बिचाळै ई बोली — जे म्हारै माथै भरोसौ नी हौ तौ म्हनै आ जोखम क्यूं **सूंपी** ? —फुलवाड़ी

उ०—२ गांम री भली-बुरी बातां कोनी अर आपसी टंटा री पंचायतां बैठती, डंड-मूळ भलीजता अर डंड री रामसा रा हिसाब मास्तर नै **सूंपीजतौ** । —अमरचूनड़ी

उ०—३ सोनजी रै हाडै में कोई दिनां सू चमचमक नाजी हौ । सेर सेर पक्की सोनी सागी ही एक एक साहूकार **सूंपै** हौ ।
—[illegible]

३ भेंट करना, देना, समर्पण करना, स्वागत करना ।

उ०—१ कोई दूजौ जीव अंगेजतौ व्है तौ थारी ऊमर किणी नै **सूंप दूं** । बिना अंगेजियां म्हैं करूं ही काई काम । —फुलवाड़ी

उ०—२ देव अरचणौ । पंचामृत पर्व ई मान जावै । थांनै मन री अखूट साजांनी **सूंपूंला** । —फुलवाड़ी

४ किसी की देख-रेख में करना, ध्यान रखने के लिये सौंपना, चौकसी में रखना या देना ।

उ०—१ जद स्वांमीजी नेत्रास नै जैमलजी नै **सूंप्यौ** । जद जैमलजी बोल्या — देखौ भीखणजी री बुद्धि । किसनौजी नै म्हांनै **सूंपता** तीन घर बधावणां हुआ । —भि. द्र.

उ०—२ गांव री इण बेटी पछै रा भाग नहीं फिरया । नै धुरै ई दादी रै पालनी रैगा । आपरै **सूंप्योड़ा** टाबरां री आपनै ई जाब कोनी । —फुलवाड़ी

५ सिखाना, बताना ।

उ०—इण परमेस्वर रै कगार री कुंती आंक लियौ बैठी ! म्है थनै म्हारी औ हुज ग्यांन **सूंपणी** चावती । —फुलवाड़ी

सूंपणहार, हारौ (हारी), सूंपणियौ—वि०

सूंपिग्रोड़ौ, सूंपियोड़ौ, सूंप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूंपीजणौ, सूंपीजबौ—कर्म वा० ।

संपणौ, संपबौ, सांपणौ, सांपबौ, सूपणौ, सूपबौ, सोंपणौ, सोंपबौ सौंपणौ, सौंपबौ—रू० भे० ।

सूंपियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी कार्य की जिम्मेदारी, भार या उत्तरदायित्व किसी के कंधों पर डाला हुआ, संभलाया हुआ, सुपुर्द किया हुआ. २ सुपुर्द किया हुआ, दिया हुआ, संभलाया हुआ, हस्तांतरण किया हुआ. ३ भेंट किया हुआ, सुपुर्द किया हुआ. ४ किसी की देखरेख में रखा हुआ, चौकसी में रखा हुआ. ५ सिखाया हुआ, बताया हुआ ।
(स्त्री. सूंपियोड़ी)

सूंफ—सं. स्त्री. [सं शत पुष्पा] १ भारत में प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला पांच या छै फुट ऊंचा एक पौधा ।

२ उक्त पौधे का बीज जो जीरे के समान कुछ बड़ा व पीले रंग का होता है।

रू. भे.—सौंफ।

सूंब—देखो 'सूम' (रू. भे.)

उ०—१ दातारूं सरूं कै दिल कै खुस्याळ। **सूंबूं** कायरूं कै नाटसाल।—सू. प्र.

उ०—२ हरीया माया **सूंब** की, हाथिन दीनी जाय। का डंडै का घर मुसै, का कोई ठगि लेजाय।—अनुभववांणी

उ०—३ कहा **सूंब** कै मिळै, कहा विणि अवसर मांगै। कहा पर नग्री सूं प्रीति, सील वीणि त्रिया सुहागै।

—सूरजनदास पूनियौ

सूंबड़ौ—देखो 'सूम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०— लंगर तळै **सूंबड़ा** लटकै, जस उप्रवट कै जणोजण।

—भारतदान बारहठ

सूंम—सं. पु.—१ दाब के समान पत्तों वाला एक पौधा जिसके पत्तों की महीन रस्सिऐं बनती हैं जो खाट बुनने के उपयोग में ली जाती है।

२ देखो 'सूम' (रू. भे.)

उ०—फाटक रखवाळी करै, फाटक हरै फसाद। **सूंम** कहै सुख सूं सुवां, फाटक तणै प्रसाद।—बां. दा.

३ देखो 'सुम' (रू. भे.)

उ०—ढालां जैड़ा पुट्ठा। लांबौ बाळचौ। केसावळी लांबी। चौड़ा **सूंम**। लांबै वेलै। चोड़ौ लिलाड।—फुलवाड़ी

सूंमरा—सं. पु.—यादव वंश की एक शाखा विशेष जिसके सदस्य अधिकतर मुसलमान हो गये हैं।

उ०—पछै वाहड़ रौ बेटौ सोढौ तौ **सूंमरां** कनै गयौ तिण नूं **सूंमरां** रातौ कोट दियौ, ऊमरकोट सूं कोस १४।—नैणसी

सूंमरौ—सं. पु.—उक्त जाति का व्यक्ति।

उ०—सहर बसायौ **सूंमरै**, ऊमरकोट कराय। कहजै ऊमरकोट तै, सोढां लीधौ आय।—बां. दा.

सूंमेर—देखो 'सुमेरु' (रू. भे.)

सूं'रौ— वि. (स्त्री. सूं'री) सीधा, सामने की दिशा में, आर-पार।

उ०—तीर **सूं'रौ** निकळ गयौ खायौ पीयौ अंग ही नहीं लागौ।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—सूंसरउ, मूंसरौ, सूहरौ।

सूंलियौ—सं. पु.—खरहा, खरगोस।

सूंवाळौ—देखो 'सुंवाळौ' (रू भे.)

(स्त्री. सूंवाळी)

सूंवौ—वि. (स्त्री. सूंवी) १ सीधा, सुलटा, सौंधा।

२ सीधा, चित, सीधे मुंह।

क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त।

उ०—गुवार चिड़ी-मोठ रा खावणहार, भाहरै सादरा, कड़कती नळीरा, कबाड़िया दांतांरा, कमर **सूंवा** ऊंचा, चिलकता मोरांरा, माडरै खेतरा·······।—रा. सा. सं.

२ ठीक ऊपर।

उ०—**सूंवौ** सिख्खर दिन आवै जद कठै ही जेल मैं पूरौ सूरज दीखै।—दसदोख

सूंस—सं. पु.—१ शपथ, सौगन्ध, कसम।

उ०—१ तरै वीकमसी कह्यौ—'हूं कठी जाऊं? पण रावळ **सूंस** दै वीकमसी नूं जाणौ थपायौ।—नैणसी

उ०—२ उदर भरण घर घर अटै, रटै नहीं स्रीराम। **सूंस करै** कवडी सटै, तै गुण घटै तमांम।—बां. दा.

२ संकल्प, प्रण।

उ०—१ ताहरां औ जाब कल्यांणमल सांभळियौ। ताहरां धांन रौ **सूंस** घातियौ। कहियौ—बंध छुडायनै जीमीस।—नैणसी

उ०—२ **सूंस** वरत पचखांण मैं, लागी जावै कोई दोखौ रे।

—जयवांणी

उ०—३ जाय तूं ही करम करण नै, परनारी घर मायौ रे। पंचां मैं सतगुरु नै मूंढै, **सूंस** लेतां सरमायौ रे।—जयवांणी

३ त्याग।

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—किणहि भाठौ उछाल नैं हेठौं माथौ मांड्यौ अनै पछै भाठौ उछालण रा त्याग किया, तौ आगै भाठौ उछाल्यौ तै तौ लागै, पछै **सूंस** किया तौ पछै न लागै।—भि. द्र.

४ वादा, कौल।

उ०—त्रिविध छकाय हणवा तणाजी, **सूंस** किया नव कोटि। तिरिया तिरै तिरसी घणाजी, ग्यांन दया तणी ओट।—जयवांणी

५ एक जानवर जिसके चमड़े की ढाल बनती है।

उ०—**सूंस** गवय कछ स्लेट री, खेटक री नह खंत। झेलण आवध झाटका, बक्ख ढाळ बळवंत।—रैंवतसिंह भाटी

रू. भे.—सांस, सुंस, सुस, सोंस, सौंस।

सूंसतौ—वि. (स्त्री. सूंसती) समर्थ, शक्तिशाली।

उ०—तरै कह्यौ—डूंगरसी जैतारण छै। धणी छै। **सूंसतौ** ठाकुर छै। नै इण कन्है साथ घणौ थौ, तद पंवारै नीमाज लूटी।

—राव मालदेव री बात

सूंसर—सं. पु.—मगर विशेष।

सूंसरउ, सूंसरौ—देखो 'सूं'रौ' (रू. भे.)

उ०—१ सपरांणा सींगिणी गुण गाजइ, तीन्दा तीर विछूटइ। जरहजीण आंगा वीधीनइ, अंगि **सूंसरा** फूटइ।—कां. दे. प्र.

उ०—२ सीगिणि तणां बिकोसां मेली प्रांणि तीर विछूटउ। हस्तक धरि सोलहीनइ वाज्यु, अंगि **सूंसरउ** फूटउ।—कां. दे. प्र.

(स्त्री. सूंसरी)

सूंसाड़, सूंसाड़ौ—सं. पु.—१ अत्यन्त तीव्र गति से चलने या फेंके जाने के कारण हवा के टकराव से होने वाली सूं-सूं की आवाज, शब्द।

उ०—१ अर गूंठण रै डावै पसवाड़ै सूंसाड़ करती गोळी वगी। —फुलवाड़ी

उ०—२ मतीरौ घड़ा रै उनमांन टणकौ, सीसा री गळाई भारी। वौ उणनै तोड़ण वास्तै नीचौ लूळियौ, जितै तो सूंसाड़ करतोड़ी एक गोफणियौ उणरै माथै होय नै निकळग्यौ। —अमरचूनड़ी

उ०—३ लीला सूवटां री एक लांठी टोळी सूंसाड़ बजावती मेड़ी रै माथा कर निकळगी।—फुलवाड़ी

२ क्रोधावस्था या दौड़ने के कारण नाक से तेज श्वास निकलने से होने वाली आवाज, शब्द।

३ सूं-सूं की ध्वनि।

उ०—सागै सीयाळा री रात सऊं सऊं सूंसाड़ा मारै। —दसदोख

रू. भे.—सुंसाड़ौ।

सूंसाणौ, सूंसाबौ—क्रि. स.—१ अत्यन्त तीव्र गति से फेंकना या चलाना कि उसके चलने से सूं-सूं की आवाज हो।

२ सूं-सूं की आवाज करना।

उ०—तीर लड़ै बिन पांखड़ा, रोकै सूझ्यां रोस। सुण सूंसातां जोर सूं, भूलै हिरणां होस। —लू

रू. भे.—सूंसावणौ, सूंसावबौ।

सूंसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ तीव्र गति से चलाया या फेंका हुआ. २ सूं-सूं की आवाज किया हुआ।

(स्त्री. सूंसायोड़ी)

सूंसावणौ, सूंसावबौ—देखो 'सूंसाणौ, सूंसाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गोफणियौ सूंसावती वा मोसा सूर मैं बोली—भाटियां सूं हाल थांरौ पांनौ नीं पड़ियौ दीसै, इणी खातर ऐड़ी बिलळी बात करी।—फुलवाड़ी

उ०—२ अचूक निसांणा मैं तौ पारंगत हा इज। सूंसावता तीर छोड़ता जकौ भांडां रै आरपार। —फुलवाड़ी

उ०—३ मतीरिया-काकड़ियां सूं धापोड़ी थिगै ही। डकार लेवै ही, सागीड़ी सूंसावै ही अर रागळी गुण-गुणावती मैळै वगै ही। —दसदोख

सूंसौ—देखो 'सुसौ' (रू. भे.)

उ०—लंकाळ'र सूंसौ लुकै, पिण लुकवा मैं फेर। आकै वा अर मौत अर, औ निज मौत अबेर।—रैंवतसिंह भाटी

सूंहणौ—देखो 'सूंणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूंहणी)

सूंहणौ—सं. पु.—सोहणौ नामक गीत (छंद)।

उ०—सुज पंचम सूंहणौ, छठौ जांगड़ौ सु छज्जत ६। सौरठियौ सातमौ ७। विहद सुखऋत वज्जत।—र. ज. प्र.

सूंहरौ—देखो 'सूं'रौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूंहरी)

सूंहाळी—सं. पु.—एक प्रकार का व्यजन।

उ०—सेव सूंहाली लाडू भल्या, पापड़ मांडा पापड़ तल्या साजी सकल सालणौ भली, कूर कपूर तणी पापरी। —कां. दे. प्र

सू—देखो 'सु' (रू. भे.)

उ०—१ द्वादस मेघ ने दुवौ त्यौ, सू दुनियागी गो आय त्यौ। —रा. सा. सं.

उ०—२ सखी सू सज्जण आविया, त्यां सज्झ लियाह। सुगण था सू पाल्हव्या, पालहिंगा फळियाह।—ढो. मा.

उ०—३ तठा उपरांत माळी फळां री छाबां। आंण हाजर कीजै छै। सू फळ कुण भांत रा छै? —रा. सा. सं.

उ०—४ आगै भीव भणां आसाजां, मोती सेष रातौ मेवाजां। सू कुण बंध कमंधां साथै, भिड़सा जोर भला भारथै। —रा. रू

सूअड़—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

उ०—मन आयौ सूअड़ बोलियौ, प[illegible] नहीं मगड। [illegible] सरवरि [illegible] करड, सुणी बात इम [illegible]। —ढो. मा.

सूअटौ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

उ०—कौतुक थारे ने पावसो, लड़ आव्या प्रण परमद मांहि। राय बोलावो सूअटौ, नर भाषा बोल्यो ने मांहि। —वि. कु.

सूअणौ, सूअबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू. भे.)

उ०—मांचा बिना धरती माथै कणसतौ सूईज सकै, रजाईयां बिना फाटोड़ा पूरां में अळेबी बगती रात काढीज सकै पण पेट री लाय नै ठेगण भरणोइज पड़ै। —अमरचूनड़ी

सूअर—देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—हिरण, सिरगोस, सूअर, तीतर, बटेर, बिलोर रै मास री तौ फगत बाता ई बाता रैगी। —फुलवाड़ी

सूअरड़ौ—देखो 'सूवर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—राव आदमी पांच-सात मिळ सत्रसाल रौ कै मांहै नैडाणी और राव ई बैठा मुंह सुं आतिस करै छै [illegible] सूअरड़ै री आवली रामजी, [illegible]। —[illegible] सूर री बात

सूअरबंतौ—देखो 'सुभरवंतौ' (रू. भे.)

सूआगळौ—सं. स्त्री. यौ.—स्त्रियों के हाथ कगन जो सुहाग चिन्ह माना जाता है।

सूआणौ, सूआबौ—देखो 'सुहाणौ, सुहाबौ' (रू. भे.)

सूआयोड़ौ—देखो 'सुहावोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूआयोड़ी)

सूआरोग—सं. पु.—सूतिका रोग।

सूआवड़, सूआवड़ौ—१ देखो 'सुवाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—सूआवड़ ना दोख कीयां बलि थापण मोस, बोल्या वलि उत्सूत्र कीयां गुरु ऊपर रोस।—ध. व. ग्रं.

२ देखो सुवावड़ (रू. भे.)

सूआवत—सं. पु.—गहलोत वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—खींवारा देवळियै रा धणी, ४ सूग्रारा **सूग्रावत**।
—नैणसी

सूइ, सूई–सं. स्त्री. [सं. सूची] १ पक्के लोहे के पतले तार का बना सिलाई का एक उपकरण जिसके एक सिरे में छेद होता है जिसमें धागा पिरोया जाता है तथा दूसरा अत्यन्त तीक्ष्ण होता है।
उ०—१ **सूई** कै नाकै जिती, सेरी ताहि समंन। हरिया हसती नीसरै, हुय कीड़ी उनमांन।—अनुभववांणी
उ०—२ थांरा डील माथै **सूई** रौ तबोड़ौ ई लागै तो केड़ीक पीड़ व्है।—फुलवाड़ी
वि. वि.—सिलाई मशीन की सूई का छेद उसकी नोक के ठीक ऊपर बना होता है।
२ ग्रामोफोन रिकार्ड बजाने की सूई जिसके पीछे छेद नहीं होता तथा वह अत्यन्त छोटी होती है।
उ०—ग्रांमोफोन रेकार्ड रा खाडा मैं **सूई** अटकीजगी व्है ज्यूं वार वार एइज समाचार उणरै कांनां मैं गूंजण लाग्या।—अमरचूंनड़ी
३ किसी बीमार के शरीर में दवाई प्रवेश (नाड़ी या मांस में) कराने का सूई के आकार का उपकरण जो अन्दर से थोथा होता है, इंजेक्शन की निडल।
रू. भे.—सुइ, सुई।

सूग्रौ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)
उ०—१ सिंघ री गुफा मांहै नीपनी, थोहररै बिड़ै री, भाखर रै खुड़ै री, **सूऐ** री पांख, परड़री आंख, रोज मारि, अिघ मारि....।
—रा. सा. सं.
उ०—२ विधि बतावै छै **सूग्रा** इहै पाठक वकता हुआ। सारस छै सरस वांछक छै।—वेलि टी.

सूकड़ि, सूकड़ी–सं. स्त्री.—१ चंदन।
उ०—१ धनसार केसर अगर **सूकड़ि**, अगलूहण दीस ए। पांच पांच सगली वस्तु ढोवइ, सगति सहु पंचवीस ए।—स. कु.
उ०—२ कालां पीलां नीलां धउलां इस्यां पटोलां, **सूकडिना** समूह, कपूरनां पूर, घणां केसरनां अलवेसरपणां, अगरना भर, सुगंधपण-पूरी इसी कस्तूरी ।—व. स.
२ एक वनस्पति विशेष।
उ०—सेवंत्री संधेसरा, **सूकड़ि** सरकडि साय। सीमंतक सोहइ भला, सरब सदाफळ खाय।—मा. कां. प्र.
३ एक खाद्य पदार्थ विशेष।
४ मारवाड़ की एक नदी जो लूनी नदी की एक सहायक नदी है।
उ०—१ भाई बै भेळा हुवा, असुर नदी सिर आय। सिंधुर घोड़ै **सूकड़ी**, मेळ न मापी जाय।—रा. रू.
रू. भे.—सूखड़ी, सूखडी।

सूकड़ौ—देखो 'सुखड़ी' (रू भे.)

सूकणौ, सूकबौ—देखो 'सूखणौ, सूखबौ' (रू. भे.)
उ०—१ क्यूं नह **सूकौ** कबर मै, हातम हंदौ हत्थ। हातम लै उण हत्थ सूं, अपहड़ बांटी अत्थ।—बां. दा.
उ०—२ **सूकी** सुदरांणीं झाड़ां रै सा'रै। लाधी बिदारांणीं बाड़ां रै लारै।—ऊ. का.
उ०—३ हियड़इ भीतर पइसि करि, ऊगउ सज्जण रूंख। नित **सूकइ** नित पल्हवइ, नित नित नवला दूख।—ढो. मा.
उ०—४ वहै थाट दहुवळां, सरां नदियां जळ **सूकै**। चाकै दहुं दळ चढै, धरा गुजरात धधूकै।—सू. प्र.
सूकणहार, हारौ (हारी), सूकणियौ—वि०।
सूकिग्रोड़ौ, सूकियोड़ौ, सूक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सूकीजणौ, सूकीजबौ—भाव वा०।

सूकनंद–सं. पु. [सं. शूकनद] ४६ क्षेत्रपालों में से ४६ वां क्षेत्रपाल।

सूकर—१ देखो 'सुक्र' (रू भे.)
२ देखो 'सूवर' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)
उ०—१ बंधन देखी ससि अग **सूकर** सोक रसंत। पूछइं प्रभु आधोरण तोरण बारि पहूत।—जयसेखर सूरि
उ०—२ अपणौ जांण अभाग, गजब नहिं खाय गबेड़ौ। **सूकर** भूंडी समज, निपट निकळै नहि नेड़ौ।—ऊ. का.
(स्त्री. सूकरी)

सूकरक्षेत्र, सूकरखेत–सं. पु. [सं. सूकरक्षेत्र] मथुरा जिले में स्थित एक प्राचीन तीर्थ।

सूकरमुखी–सं. स्त्री.—एक प्रकार की तोप जिसके मुख का आकार सूवर के मुख के अनुरूप होता है।

सूकरी–सं. स्त्री.—मादा सूवर, 'भूंडण'।

सूकरौ—देखो 'सूवर' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—हरीया साकट **सूकरा**, दोउं की परि एक। गयंद चलै गय आपनी, कूकर लवौ अनेक।—अनुभववांणी

सूकळ–सं. पु.—बुरी चाल से चलने वाला, अशिक्षित घोड़ा।

सूकळापांग—देखो 'सुक्लांग' (रू. भे.)

सूकविक–सं. पु.—एक प्रकार का पक्षी। (सभा)

सूकाणौ, सूकाबौ—देखो 'सूखाणौ, सूखाबौ' (रू. भे.)
सूकाणहार, हारौ (हारी), सूकाणियौ—वि०।
सूकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सूकाईजणौ, सूकाईजबौ—कर्म वा०।

सूकायोड़ौ—देखो 'सूखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सूकायोड़ी)

सूकावणौ, सूकावबौ—देखो 'सूखाणौ, सूखाबौ' (रू. भे.)
उ०—ब्या'रै जोग वणै, मरतौ मरै, एक टेम जीमै, पेट री दौल **सूकावै** है।—दसदोख
सूकावणहार, हारौ (हारी), सूकावणियौ—वि०।
सूकाविग्रोड़ौ, सूकावियोड़ौ, सूकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सूकावीजणौ, सूकावीजबौ—कर्म वा०।

सूकावियोड़ौ—देखो 'सूखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूकावियोड़ी)

सूकोड़ौ—भू. का. कृ.—सूखा हुआ, शुष्क।

(स्त्री. सूकोड़ी)

सूकौ—देखो 'सूखौ' (रू. भे.)

उ०—१ कालर बीज न नीपजै, **सूकै** ठूंट न फूल। केवळ त्यांनी बाहरधौ, कूड़ा कुगरां न भूल।—वील्होजी

उ०—२ पण बेटी रौ बाप **सूकौ** लक्कड़ तथा ठूंठ, लुळै नहीं, टूटणी जांणै।—दसदोख

(स्त्री. सूकी)

सूक्षम, सूक्ष्म—वि. [सं. सूक्ष्म] १ बहुत छोटा, लघु।

२ बहुत कम, अत्यन्त अल्प, थोड़ा, कम।

३ बहुत बारीक, महीन।

४ पतला, क्षीण।

५ तीक्ष्ण, नुकीला।

६ नाजुक, कोमल।

७ विलक्षण, अद्भुत।

८ उत्तम, श्रेष्ठ।

६ ठीक, सही।

१० गूढ़, गहरा।

११ चालाक, धूर्त्त।

सं. पु. [सं. सूक्ष्म] १ सर्वव्यापी परमात्मा, ब्रह्म।

२ आत्मा।

३ अणु, परमाणु।

४ शिव का एक नामान्तरण।

५ सूक्ष्मता।

६ केतक वृक्ष।

७ शिल्प कौशल।

८ धूर्तता, कपट, फरेब।

६ महीन डोरा, धागा।

१० लिंग, शरीर।

११ योग द्वारा प्राप्त योगियों की तीन शक्तियों में से एक।

१२ एक काव्यालंकार जिसमें चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है।

१३ देखो 'सूक्ष्मभूत'।

रू. भे.—सुक्खम, सुक्षम, सुखंम, सुछम, सूखम, सूखिम, सूछम।

सूक्ष्मदेह—देखो 'सूक्ष्मसरीर'।

सूक्ष्मद्रस्टि—सं. स्त्री. [सं. सूक्ष्मदृष्टि] ऐसी दृष्टि, समझ या बुद्धि जिससे बहुत ही सूक्ष्म दिखलाई दें या समझ में आ जाय।

वि.—जिसकी ऐसी दृष्टि हो।

सूक्ष्मभूत—सं. पु. यौ. [सं.] पंच तन्मात्रा का नाम।

उ० राजस अहंकार सूं दसइंद्री नीपजी। पांच ग्यानेंद्री पांच करमेंद्री। एवं दस तांमस। अहंकार तें पांच महाभूत, पांच **सूक्ष्मभूत** नीपना।—द. वि.

सूक्ष्मसरीर—सं. पु. यौ. [सं. सूक्ष्मशरीर] इन सत्रह तत्वों का समूह यथा पांच प्राण, पांच ज्ञानेंद्रियां, पांच सूक्ष्मभूत, मन और बुद्धि।

उ० सूक्ष्मसरीर, व्याकृति बहीर, भीनांनि भीन, नित विदित चीन।—ऊ. का.

रू. भे.—सूखमसरीर।

सूक्ष्मा—सं. स्त्री. [सं.] विष्णु की नौ शक्तियों में से एक।

रू. भे. सूखमा।

सूखड़िया—सं. पु. एक वर्ग विशेष।

सूखड़ी—१ देखो 'सुखड़ी' (रू. भे.)

२ देखो 'सूखड़ी' (रू. भे.)

सूखड़ौ—देखो 'सूखड़ी' (अल्पा; रू. भे.)

उ० १ बागां जासी छैल, मन्न कद फूलड़ा लेसी। तीज तणी दिन दिया, तीन पर महगी देसी। आगम लिखना कलम, प्रथम नवसंडी कहसी। जठरा बाह जीवणा दरस भूखा कद देसी। मीठास अरथ हित रा महण, सागै खाजा **सूखड़ा**। नाहरा कवत मोहणमा रमंण, दाळ चीणी रा रूखड़ा।—प्रताप री बारहठ

उ० २ माथै भाउयौ **सूखड़ा**, रैण दिराउयौ सेज। आउयौ साजां ऊमदा, तरणा रमाउयौ तेज।—सयाराम दरजी री बात

रू. भे. सूकड़।

सूखड़ी—देखो 'सुखड़ी' (रू. भे.)

उ० मंदिर माहि मांडीउ, भोजन कीधा भाव। स्वामि करेवा **सूखड़ी**, मिठा नैरषू तत्काळ।—मा. कां. प्र.

सूखणौ, सूखबौ—क्रि. अ. [सं. शुष्क] १ किसी भीग हुए, आर्द्र या तर पदार्थ की आर्द्रता समाप्त होना, तरावट नष्ट होना, गीलापन न रहना।

ज्यूं—धोती सूखणी, लाकड़ी सूखणी, पान सूखणौ।

२ नदी व जलाशयों का जलरहित होना, जलहीन हो जाना।

उ० सांगांणी अपा जै सायक पल्हाळ करा लो डां पड़ै की इण मरुस्थल री ठौड़ कदैई हबोळा खावतौ समंदर हौ। पछै समंद रौ पांणी **सूख** गियौ। पांणी री जैंगा रेत री जैंगा बणगी।

—नितरांम

३ वृक्षों, पौधों, लताओं, वनस्पतियों आदि की जल के अभाव में जीवन शक्ति नष्ट हो जाना, जीवन शक्तिहीन होना।

उ०—पण मिनखां रै राजा रा मन में आ बात खटी कोनीं। उठा-रा बाग देखतां देखतां **सूखग्या**। बाड़ियां **सूखगी**। काळ माथै काळ पड़ण लागा।—फुलवाड़ी

४ रसहीन होना, नीरस होना।

५ दुर्बल होना, क्षीण होना।

उ०—नागण तौ नीठ गिण-गिण अै बिरवा रा दिन तोड़चा। **सूखनै** सांकळ व्है ज्यूं व्हैगी।—फुलवाड़ी

सूखणहार, हारौ (हारी), सूखणियौ—वि०।

सूखिओड़ौ, सूखियोड़ौ, सूख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सूखीजणौ, सूखीजबौ—भाव वा०।

सूकणौ, सूकबौ—रू० भे०।

सूखम—देखो 'सूक्ष्म' (रू. भे.)

उ०—महिला रइ संगति मिळचां, **सूखम** जीव मरइ नव लाख। भगवंतइं इम भाखीयौ, सूत्र सिद्धांतै लाभै साख।—ध. व. ग्रं.

सूखमसरीर—देखो 'सूक्ष्मसरीर' (रू. भे.)

सूखमा—सं. स्त्री. [सं. सुषमा] १ शोभा, छवि, आभा, कान्ति।

२ एक प्रकार का वृक्ष।

३ देखो 'सूक्ष्मा' (रू. भे.)

सूखाणौ, सूखाबौ—देखो 'सुखाणौ, सुखाबौ' (रू. भे.)

सूखायोड़ौ—देखो 'सुखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूखायोड़ी)

सूखावणौ, सूखाववौ—देखो 'सुखाणौ, सुखाबौ' (रू. भे.)

सूखावियोड़ौ—देखो 'सुखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूखावियोड़ी)

सूखिम—देखो 'सूक्ष्म' (रू. भे.)

उ०—**सूखिम** गळी नजरि मैं राखै, पांच चरण तळि चूरै। परम जोति कै परचै खेलै, अनहद सींगी पूरै।—ह. पु. वां.

सूखियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ आर्द्रता या तरावट समाप्त हुवा हुआ, गीलापन न रहा हुआ (वस्त्र). २ जलहीन हुवा हुआ, रिक्त हुवा हुआ (जलाशय). ३ जीवन शक्ति नष्ट हुवा हुआ (वृक्ष आदि). ४ रसहीन या नीरस हुवा हुआ. ५ दुर्बल व क्षीण हुवा हुआ।

(स्त्री सूखियोड़ी)

सूखी-खांसी—सं. स्त्री. [सं. शुष्क+कास] शुष्क कास का एक रोग।

सूखेड़ौ—सं. पु.—१ शुष्क वातावरण या आंगण।

२ आर्द्रता या नमीविहीन मौसम।

सूखौ—वि. [स शुष्क] (स्त्री. सूखी) १ आर्द्रता, नमी या तरावट से विहीन, शुष्क।

उ०—धोवण उन्हौं पांणी पाज्यौ। **सूखौ** चारौ न्हाखज्यौ। साधां रौ एवर न्यारौ उछेरज्यौ।—भि. द्र.

२ चिकनाई, स्निग्धता से रहित, फरका, लूका।

उ०—१ वौ मुखिया नै कह्यौ कै पटियां मैं थोड़ौ तेल घालण सारू मन ताखड़ा तोड़ै। संपाड़ौ तौ बावड़ी माथै कर लियौ, पण केस साव **सूखा** है।—फुलवाड़ी

उ०—२ हरीया आधी लाभतां, सारी सुरति न धारि। लूखी **सूखी** खायकै, सांई नांव संभारि।—अनुभववांणी

३ उदास, विरक्त।

४ कोमल भावों से रहित, हृदयहीन।

५ कोरा, केवल, निरा।

सं. पु.—१ अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, अकाल।

उ०—बारह-मासी नीपजै, तहां किया परवेस। दादू **सूखा** नापड़ै, हम आये उस देस।—दादूवांणी

२ जल या वर्षा की कमी वाला प्रदेश (Desert)।

३ सूखा हुआ तम्बाखू का पत्ता।

रू. भे.—सूकौ।

सूखौड़ौ—भू. का. कृ.—सूखा हुआ, शुष्क।

(स्त्री. सूखौड़ी)

सूखौसपाक—वि.—बिल्कुल सूखा।

सूग—सं. स्त्री.—घृणा।

उ०—१ देख थारै डील माथै कितरौ मैल जमग्यौ है अर कुड़तौ किसौक मैलौ घांण व्हैग्यौ है। थनैं **सूग** ई नीं आवै भोळा?
—अमरचूंनड़ी

उ०—२ मांणस पापी मंस, अंस पिण **सूग** न आंणै। परगट्ट जीवां पिंड, जीभ स्वादै नवि जांणै।—ध. व. ग्रं.

सूगणी—वि. स्त्री.—शुभ लक्षणा।

उ०—ईस अहनिसि अवगण्यु, गिर **सूगणी** नगुरि। घणां अणूरां मेलीई, तेह मांहि हूं धूरि।—मा. कां. प्र.

सूगती—स. स्त्री. [सं. शूक्तिः] शुक्ति, सीप।

सूगतीज—सं. पु. [सं. शूक्तिज] मोती, मौक्तिक।

सूगलवाड़ौ—सं. पु.—गंदगी।

उ०—बैः नीं जांणै आः सेवा नी **सूगलवाड़ौ** है, जिंदगी अलीण करणै रौ अखाड़ौ है।—दसदोख

सूगलियौ—सं. पु.—वर्षा ऋतु में गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं के मुंह में होने वाला रोग विशेष।

सूगलौ—वि. (स्त्री. सूगली) १ गंदा, घृणित, घिनौना।

उ०—१ डील सुं सरगड़ा पणौरी **सूगली** गिंध सी आवै सी आवै है।—दसदोख

उ०—२ पण नांव थारौ **सूगलौ** घणौ। बोलतां ताळवा मैं भुरंट ज्यूं खड़कै।—फुलवाड़ी

२ बुरा, खराब, गंदा।

उ०—१ समज तमाकू **सूगली**, कुत्तौ न खावै काग। ऊंट टाट खावै न आ, अपणौ जांण अभाग।—ऊ. का.

उ०—२ सेठांणी मूंडा सूं थूकती थकी बोली—थूकौ थांरा मूंडा सूं, अै **सूगली** बातां मुंडा सूं निकळै कीकर है।—फुलवाड़ी

३ कुरूप, भद्दा।

उ०—होळै-होळै कसायां मैं ई चौखा-मूंडा, गोरा चिट्ट' काळा किट्ट फूटरा'र **सूगला**, राता-माता'र मुड़दार मिनमिनिया, गळतियौ हुयोड़ा मड़कल'र ।—चितरांम

सूगावणौ, सूगावबौ—देखो 'सुगाणौ, सुगाबौ' (रू. भे.)

उ०—असुच अपवित्र **सूगावण** हे, मनुस्य तणा कांम भोग। वाय पित्त सलेसमाए सुक्र, सोणित स्रवै रोग ।—जयवांणी

सूगावियोड़ौ—देखो 'सुगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूगावियोड़ी)

सूड़–सं. पु.—१ खेत में उगने वाले कंटीले पौधे, झाड़ी आदि ।

२ खेत की सफाई के लिये उक्त प्रकार के पौधों को जड़ामूल से काटने की क्रिया ।

उ०—१ सु आगै रायधण बाप हमीर नै बेटौ भीम हळ खड़ै छै, भींव **सूड़** करै छै ।—नैणसी

उ०—२ आखातीज रा सुगन मनावण सारू वौ गांव चौधरी खांधै कस्सी लेय **सूड़** करण सारू आपरै खेतां वहीर व्हियौ ।

—फुलवाड़ी

३ नाश, ध्वंस ।

उ०—तप सरिखउ जगि को नहीं, तप करइ करम नौ **सूड़** हौ ।

—स. कु.

४ सफाई ।

उ०—तन मन मांहिलै ख्यांत खेती करौ। पहल सांसै तणा **सूड़** कीजै ।—अनुभववाणी

रू. भे.—सूड़ि ।

सूड़उ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—साल्ह कुंअर **सूड़उ** कहइ, माळवणी मुख जोइ। प्रांण तजेसी पदमणी, लंछण देस्यइ लोइ ।—ढो. मा.

सूड़ि—देखो 'सूड़' (रू. भे.)

उ०—सबद कुहाड़ी **सूड़ि** सांसौ, सुक्रिय करि किरसांन। नाज निज कण बौहत नेपै, भूख दुख नसांन ।—अनुभववांणी

सूड़ौ—१ देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सुणि **सूड़ा** सुंदरि कहय, पंखी पड़गन पाळि। प्रीतम पूगळ पंथ सिरि, किम ही पाछउ वाळि ।—ढो. मा.

२ देखो 'सूड़' (रू. भे.)

(स्त्री. सूड़ी)

सूचक–वि. [सं.] १ सूचना देने वाला, सूचित करने वाला, बताने वाला ।

२ बोधक, ज्ञापक ।

उ०—१ भावी **सूचक** थिया कि भेळा। सिघरासि ग्रहगण सकळ ।—वेलि

उ०—२ तिकां रांणा री सभा मैं जाय समता रा **सूचक** पत्र दिया ।—वं. भा.

३ दिखलाने वाला, बतलाने वाला, मुखबिर ।

४ सिद्ध करने वाला ।

५ छेद करने वाला ।

सं. पु.— १ शिक्षक ।

२ किसी नाटक का प्रधान नट, सूत्रधार ।

३ दर्जी ।

४ सूई ।

५ कुत्ता, श्वान ।

६ काग, कौआ ।

७ बुधदेव ।

८ सिद्ध ।

९ दुष्ट, गुण्डा ।

१० राक्षस, शैतान ।

११ बिल्ली ।

सूचना–सं. स्त्री. [सं.] १ बात का परिचय, घटना की जानकारी, (इन्फोरमेशन) ।

२ किसी अभियान, षड़यन्त्र या योजना की कार्यवाही की जानकारी जो भिन्न-भिन्न स्रोतों से प्राप्त की जाती है ।

३ विज्ञापन व विज्ञप्ति, इश्तिहार ।

४ ऐसा राजकीय आदेश जिसके द्वारा किसी नीति सम्बन्धी निर्णय, नियम या प्रणाली को प्रसारित किया गया हो, नोटिस ।

५ दुर्घटना की रिपोर्ट ।

६ टोह ।

सूचना-पत्र सं. पु.—१ वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की सूचना प्रकाशित की गई हो, परिपत्र ।

२ विज्ञप्ति-पत्र, इश्तिहार ।

सूचनिका सं. स्त्री.—१ विगत, सूची, विवरणिका, लिस्ट ।

२ एक प्रकार का छन्द । (ल. पिं.)

सूचि–सं. स्त्री.—किरण । (ह. नां. मा.)

सूचिका–सं. स्त्री.—१ सुई ।

२ हाथी की सूंड ।

सूचिपत्र—देखो 'सूचीपत्र' (रू. भे.)

सूचिमुख–सं. पु.—मूसा, चूहा । (अ. मा.)

वि.— जिसका मुंह तेज व तीक्ष्ण हो ।

रू. भे.— सुचमुखौ, सुचिमुख, सुचीमुख, सूचीमुख ।

सूचियौ—देखो 'सूचक' ।

उ०—जिण समै महामारी रै मंडांण नरां रौ नास देखि कोईक कच्चा मंत्र रा दैणहार आहव रा अमेध सांमंतर **सूचिया** घोड़ै चढण री हूंस धारि दारासाह हाथीरूप तखत हूं हेठौ उतरियौ ।—वं. भा.

सूची–सं. पु. [सं. सूचि, सूची] १ सेना का व्यूह ।

२ इशारा, सैन ।

३ भेदन।
४ हावभाव।
५ छेदन।
६ नृत्य विशेष।
७ गुप्तदूत, भेदिया।
८ चुगलखोर।
९ दुष्ट, खल।
१० कपड़ा सीने की सुई।
११ किरण, आभा।
१२ दृष्टि।
१३ अप्सरा।
१४ विगत, तालिका, फहरिश्त।
१५ सुई की नोंक।
१६ कील की नोंक।
१७ विषयानुक्रमणिका।
१८ पिंगलशास्त्र के ८ प्रत्ययों के अन्तर्गत एक प्रत्यय जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कुछ निश्चित वर्णों या मात्राओं से कितने प्रकार के छंद या वृत बनते हैं तथा उनके आदि और अन्त में कितने लघु व कितनी मात्राऐं होती हैं।
वि. [स. शुचि] १ उजला, शुभ्र।
२ सफेद, श्वेत।
३ पवित्र, शुद्ध।

सूचिकरम—सं. पु. [सं. सूची+कर्म] सीने पिरोने की कला जो चौसठ कलाओं में से एक मानी जाती है।

सूची-पत्र—सं. पु. [सं] वह पत्र, पत्रिका या पुस्तिका जिसमें कई वस्तुओं की विगत दी गई हो, तालिका, फहरिश्त।
रू भे.—सूचिपत्र।

सूचीमुख—देखो 'सूचिमुख' (नां. मा.)

सूचौ—वि. [सं. शुचि] स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध, पवित्र।
उ०—छोटे वडे नीच कुळ ऊंचा, रांम कहत सब ही नर **सूचा**। कहा भयौ जै ऊंच कहायौ, रांम नांम हिरदै नहीं गायौ।
—अनुभववांणी

सूछम—देखो 'सूक्ष्म' (रू. भे.)
उ०—कळह घणा ही कटक नूं, **सूछम** गणै समाथ। नव हत्था वाळी नरां, है छाती सौ हाथ।—बां. दा.

सूज—देखो 'सूझ' (रू. भे.)

सूजड़, सूजड़ी—सं. स्त्री.—देखो 'सुजड़' (रू. भे.)

सूजणौ, सूजबौ—क्रि. अ.—१ किसी चोट, रोग या वात-विकार के कारण शरीर के किसी अंग में सूजन आना, फूलना, शोथ आना।
उ०—१ पण मार खाय-खाय नैं ज्यांरा डील **सूज्यौड़ा** हा वांरै मन मैं तौ औ भौ तीर री गळाई सालतौ हौ कै जै खूनी रौ पतौ नीं लाग्यौ तौ सगळां नैं'ई पाछौ थांणै जावणौ पड़ैला।
—अमरचूंनड़ी
उ०—२ सगळां रै हीयै हरख रौ पार नीं हौ। पण छोटकी बहू री रोय रोय आंख्यां **सूजगी**।—फुलवाड़ी
२ देखो 'सूझणौ, सूझबौ' (रू. भे.)
उ०—इण मारवण रै थै नैड़ा चाल जौ। ज्यूं मारग **सूज्यौ** जाय।
—रसीलैराज रा गीत

सूजणहार, हारौ (हारी), सूजणियौ—वि०।
सूजिओड़ौ, सूजियोड़ौ, सूज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सूजीजणौ, सूजीजबौ—भाव वा०।

सूजन—सं. स्त्री.—१ चोट आघात या रोग के कारण शरीर के किसी अंग में आने वाली शोथ, फुलाव।
२ सूजने की अवस्था या भाव।

सूजनम—सं. स्त्री. [सं. सूर्यनवमी] आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष की नवमी।
रू. भे.—सूझनम, सूनम।

सूजांण—देखो 'सुजांण' (रू. भे.)

सूजाउ—देखौ 'सुजाव' (रू. भे.)
उ०—१ 'सलखा' सहि अभिनमौ 'सकतौ', सोह चडावै 'करन' **सुजाउ**।—रूकमांगद राठौड़ रौ गीत
उ०—२ घण वींटियौ कवी मोटा घण, घण सात्रवां वहंतौ घाउ। अनिकारां मुहरी ऊंचवहौ, सौहै सूरजमल **सूजाउ**।
—दयालदास राठौड़ रौ गीत

सूजाक, सूजाग—सं. पु. [फा. सूजाक] दूषित लिंग और योनि के संसर्ग से उत्पन्न मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग विशेष जिसमें लिंग का मुंह और छिद्र सूज जाता है तथा मूत्रनलिका में बहुत जलन होती है तथा मूत्रेंद्रिय में घाव हो जाते हैं।
रू. भे.—सुजाक, सुजाग।

सूजाणौ, सूजाबौ—क्रि. स. ['सूजणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ मार-मार कर या पीट-पीट कर किसी के शरीर में शोथ लाना, सूजा देना।
२ रो रो कर आंखें सूजा लेना।
३ रूठकर या नाराज हो कर मुँह फुलाना।
उ०—मूंडौ **सूजायै** रै'ती, आयोड़ा पर भुजती-बळती..........।
—दसदोख

सूजाणहार, हारौ (हारी), सूजाणियौ—वि०।
सूजायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सूजाईजणौ, सूजाईजबौ—कर्म वा०।
सूजाणौ, सूजाबौ, सूजावणौ, सूजावबौ—रू० भे०।

सूजायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मारपीट कर शोथ लाया हुआ, सुजाया हुआ. २ रो-रो कर आँखें सुजाया हुआ. ३ मुंह फुलाया हुआ. ४ देखो 'सूझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूजायोड़ी)

सूजाव–सं. पु.—१ सूजन शोथ ।

२ देखो 'सुजाव' (रू. भे.)

सूजावरणौ, सूजावबौ—१ देखो 'सूजाणौ, सूजाबौ' (रू. भे.)

उ०—पैंलड़ौ लटवा करै-हाथ जोड़ै। बीजी मूं' **सूजावै**, माथौ फोड़ै।—दसदोख

२ देखो 'सूझावणौ, सूझावबौ' (रू. भे.)

सूजावियोड़ौ—१ देखो 'सूजायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सूझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूजावियोड़ी)

सूजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी प्रकार की चोट आघात या विकार के कारण सूजन आया हुआ, फूला हुआ, शोथ आया हुआ. (शरीर, अंग)

२ देखो 'सूझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूजियोड़ी)

सूजी–सर्व—वह, वही ।

सं. पु. [सं. सूचिक] १ दर्जी ।

उ०—ताहरां राजा भोज बात कहै छै। एक हुतौ ब्राह्मण रौ बेटौ। एक हुतौ सिलावट रौ बेटौ। एक हुतौ **सूजी** रौ बेटौ। एक हुतौ सुनार रौ बेटौ यां चारै ही मैं मित्रा-चारौ थौ।

—चौबोली

सं. स्त्री.—२ सूजन, शोथ, फुलाव ।

३ एक प्रकार का दानादार मेदा जो हलवा बनाने के काम आता है।

सूझ–सं. स्त्री.—१ सूझने-समझने की क्रिया या भाव ।

२ दृष्टि, नजर ।

३ बुद्धि, समझ, अक्ल ।

उ०—दोनूं राजावां रै बैर सारू दियोड़ा सावूतां नै कांट-छांट अर **सूझ** रौ अेक हळकोक थट्टौ ई घणौ।—चितरांम

४ वह बौद्धिक-शक्ति जिसके द्वारा कोई अद्भुत बात, नई उद्भावना जाग्रत होती है, समस्या को सुलझाने की शक्ति ।

५ समझदारी, दूरदर्शिता ।

सूझणौ, सूझबौ–क्रि. अ.—दिखाई देना, दृष्टिगत होना, दिखना ।

उ०—१ बयळ न **सूझै** बोम, पोहोम धूजै हय पोड़ां।—मे. म.

उ०—२ सुंदर सूर सीळ कुळ करि सुध। नाह किसन सरि **सूझै** नाह।—वेलि

उ०—३ अहि खग म्रिग दम हंस अळूझै। सुणै न सबद गात नह **सूझै**।—सू. प्र.

२ समझ में आना, ध्यान में आना, मन में आना ।

उ०—१ नांम लियंतां नांम, सांमि सूझै सहि **सूझै**। रांम तणौ रस मांहि सेस, बूझै सिवि बूझै।—पी. ग्रं.

उ०—२ थें मरद होय इण भांत हारग्या तौ म्हैं लुगाई री जात कांई करती अर कांई नीं करती, अबै ई थांनै आ बात नीं **सूझै** ?

उ०—३ लारै आई हूं, इण बारी थांरै सारी पाप रा भाग म्हारै ई बंधै। आ ई नीं जचती व्है तौ थांनै ज्यूं **सूझै** त्यूं करौ।

—फुलवाड़ी

३ बुद्धि द्वारा उपजना, मस्तिष्क में आना, ज्ञान चक्षुओं से समझ में आना ।

उ०—१ हरीया सरवर ढूकड़ै, पग-पग पैंडै मांहि। सुरति बिनां **सूझै** नहीं, आस पास वहि जांहि।—अनुभववांणी

उ०—२ टूंक चावड़ी राव राजा नै कंवर बीज नांमै राज करै छै। तिकौ राजाराज तौ आंख्यां संजम छै, पिण हीयारा नेत्र खुल्या छै। आंख्यां देखतां सूं घणौ **सूझै**।—जगदेव पंवार री बात

उ०—३ मन का आसन जै जिव जांनै, तौ ठौर ठौर सब **सूझै**। पंचां आंनि एक घर राखै, तब अगम निगम सब बूझै।

—दादूवांणी

४ याद रहना, स्मरण रहना ।

उ० मालजादा मन मांहि, रांड **सूझै** दिनराती। मालजादि मन मांहि, यार **सूझां** अकुळाती।—ऊ. का.

५ प्रवृत्ति होना, मन में आना ।

उ०—जद तद **सूझै** जूझणौ, बाघ न लागा बीर। इण रै जात सुभाव औ, सीहै समै सरीर।—बां. दा.

६ योग बनना, संयोग होना ।

उ०—हिवै ईयां रा साहा **सूझै** नहीं। घणूं ही ढूंढि थाया।

—देवजी बगड़ावतां री वात

७ चलना ।

उ० ओझक ऐंली मैं आवेस अळूझै। सीळी रेळी में चीगाळियां **सूझै**।—ऊ. का.

८ उत्पन्न होना, उठना ।

उ०—कह्यौ बापजी, म्हनै तौ बैराग **सूझियौ**। म्हारी मुगती अबै आपरै हाथ है।—फुलवाड़ी

९ अनुभव होना, समझ आना ।

उ०—१ नागण मूंडौ मसकारनै कह्यौ म्हैं तौ कठै ई आंधी कोनी, म्हनै तौ तीन भौ री **सूझै**।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै स्वांमीजी आहार कर आयनै कह्यौ—औगुण आपरी आतमा रा सूझै है कै म्हारा।—भि. द्र.

सूझणहार, हारौ (हारी), सूझणियौ—वि० ।

सूझिओड़ौ, सूझियोड़ौ, सूझ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूझीजणौ, सूझीजबौ—भाव वा० ।

सुझणौ, सुझबौ, सूजणौ, सूजबौ—रू० भे० ।

सूझतउ, सूझतौ–क्रि. वि. (स्त्री. सूझती) १ आंखों वाला, दृष्टि वाला ।

उ०—१ राज काज रीत नीत बूझतौ रह्यौ। बाट **आंधरै** कि

यार **सूझतौ** वह्यौ ।—ऊ. का.

उ०—२ नाई राजाजी रै पगां हाथ लगाय बोल्यौ—हां, अंदाता म्हारा मन ई कैवै कै आंधा इण रूप रै सांम्ही ऊभा व्है जावै तौ वांनै **सूझतौ** व्हैणौ पड़ै ।—फुलवाड़ी

२ विशुद्ध निर्दोष ।

उ०—आहार विहरावइ **सूझतउ**, गति पांमइजी, सांभलइ सूत्र सिद्धांत, देवगति पांमइजी ।—स. कु.

क्रि. वि.—१ देखते व समझते हुऐ ।

२ दिखता, दिखाई देते हुऐ ।

सूझनम—देखो 'सूजनम' (रू. भे.)

सूझबूझ—सं. स्त्री.—सोचने-समझने की बुद्धि, दृष्टि और बुद्धि ।

सूझाणौ, सूझाबौ—देखो 'सुझाणौ, सुझाबौ' (रू. भे.)

सूझायोड़ौ—देखो 'सुझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूझायोड़ी)

सूझावणौ, सूझावबौ—देखो 'सुझाणौ, सुझाबौ' (रू. भे.)

सूझावियोड़ौ—देखो 'सुझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूझावियोड़ी)

सूझियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ दिखाई दिया हुआ, दृष्टिगत हुवा हुआ, दिखा हुआ. २ समझ में आया हुआ, ध्यान में आया हुआ, मन में आया हुआ. ३ युक्ति से जाना हुआ, बुद्धि द्वारा उपजा हुआ, मस्तिष्क में आया हुआ. ४ याद रहा हुआ, स्मरण रहा हुआ. ५ प्रवृत्त हुवा हुआ, मन में आया हुआ. ६ बना हुआ (योग, संयोग). ७ चला हुआ. ८ उत्पन्न हुवा हुआ, उठा हुआ. ९ समझ में आया हुआ, अनुभूत ।

(स्त्री. सूझियोड़ी)

सूटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

सूठ—वि. [सं. सुष्ठु] उत्तम, श्रेष्ठ ।

सूडाहळ—१ देखो 'सूंडाहळ' (रू. भे.)

२ देखो 'सूंडाळ' (रू. भे.)

सूण—१ देखो 'सगुन' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां **सूण** भला हुआ ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ चढती बाई नै ए **सूण** भला होया राज । लाड जंवाई नै ए सूण भला होया राज ।—लो. गी.

उ०—३ सारै-सारै दिन थारा **सूण** मनावै तो उभा जोवै थारी वाट वदळी । मारूजी रै खेतां जावौ वदळी ।—लो. गी.

२ देखो 'सकुन' (रू. भे.)

सूणघर, सूणहर—सं. पु. [सं. शयन+गृह] शयनाघर, सोने का कक्ष या कमरा ।

उ०—दूलह दुइ आगै पाछै दुलहणि । दीन्हा क्रम **सूणहर** दिसि ।
—वेलि

सॅणांपौ, सूणापौ— सं. पु.—सौन्दर्य ।

उ०—१ **सूणापौ** खुल्लौ बंटै हो, अब प्यार कठै न अंटै हौ ।
—सकुंतळा

उ०—२ आ धरा धरी या नीर परी, या नभस्यूं उतरी देवनार । पलकां मैं सदा रखण जोगी, कै **सूणापौ** आग्यौ अपार ।
—सकुंतळा

सूणौ—वि. (स्त्री. सूणी) सुहावना, सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ आ थमी कमळणी नैड़ै-सी, ईं **सूणै** रूप चुरावण नै ।
—सकुंतळा

उ०—२ अंबर रौ रंग सुरंगौ हौ, चंदै री आभा **सूणी** ही ।
—सकुंतळा

क्रि. वि.—१ तक, पर्यंत ।

२ सहित, युक्त ।

सं. पु.—किसी मोटे व गर्म धातु खण्ड को पकड़ने का एक लोहे का चिमटा ।

सूणौ, सूबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ **सूतौ** थाहर नींद सुख, सादूळौ बळवंत । वन कांठै मारग वहै, पग पग हौल पड़ंत ।—बां. दा.

उ०—२ तै भांग खाधी न छै । इसा प्रथी मैं कुण छै सौ **सूतै** काळ नुं जगावै ?—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ गई रवि किरण ग्रहै थई गहमह, रहरह कोइ वह रहै रह । सु जु दुज पुग नीसरै **सूतौ**, निसा पड़ी चालियौ तह ।—वेलि

सूणहार, हारौ (हारी), सूणियौ—वि० ।

सूयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूईजणौ, सूईजबौ—भाव वा० ।

सूत—सं. पु. [सं. सूत्रं] १ धुनी हुई रूई को कातकर तैयार किया हुआ बारीक कच्चा धागा, तंतु या रेशा ।

उ०—१ छोरा छोरी छोड वरागण संग वण्यौ है नीकोरै । **सूत** उन का सांग बणायौ, गोपीचंद कौ टीकौ रे ।—रैदास धत्तरवाळ

उ०—२ वौ आछी तरै जांणतौ हौ कै सती रौ परचौ उणनै अठा तांई काचै **सूत** बांधनै लावैला ।—फुलवाड़ी

वि. वि.—ऐसे धागों के समूह से लटिकाएं, लच्छियें तथा कोकड़ियें बनाई जाती हैं । इनसे विभिन्न प्रकार के डोरे, रस्सियां आदि बनाई जाती हैं । कपड़ा बुनने के लिये ऐसे रेशों के बड़े-बड़े गट्टे बनाऐ जाते हैं ।

२ उक्त प्रकार के कच्चे रेशों से बनाया हुआ बारीक डोरा जो सिलाई आदि में काम आता है ।

उ०—मन माळा सतगुर दई, सुरति **सूत** सुं पोय । हरीया घट मैं फेरीयै, जाप अजपा होय ।—अनुभववांणी

वि. वि.—ये डोरे विभिन्न रंगों में मोटे, बारीक कई प्रकार के बनाये जाते हैं । इनमें आवश्यकतानुसार तीन तार, चार तार, पांच तार आदि जोड़े जाते हैं ।

३ उक्त तागों से बुना हुआ वस्त्र, कपड़ा, सूती वस्त्र ।
४ साफा, पगड़ी ।
उ०—१ पीठ तुरस केवांण कर, आस पास रजपूत । मावड़िया सोहै नहीं, मुख मूंछां सिर **सूत** ।—बां. दा.
५ रूई ।
६ रस्सी, डोरी ।
उ०—१ भार सोर भातड़ां **सूत** सिलहां सांमांना । सरब भार सिरताज, भार पूरकार खजांनां ।—सू. प्र.
उ०—२ बात करता करता ई सेठ **सूत** सूं बणियोड़ा मांचा माथै बैठग्या ।—फुलवाड़ी
७ दीवार बनाते समय दीवार की सीध मापने की डोरी, इससे आंगण या छत की समतलता भी नापी जाती है ।
८ सूत का ढेर ।
९ द्विजों की जनेऊ ।
[रा.] १० आभूषण, गहना ।
उ०—१ मैं बीजा भूप अनेक मांगिया, मौजां बार अनेक मिळी । सुत 'किसनेस' वीर गुरु संचियौ, कुजमांना रा **सूत** कळी ।
—ओपौ आढौ
उ०—२ लाडू वड़ा री संभाळ रिपियां-खोपरां री मनुवार । साळ्यां नै वीरी छल्ला अर साळैल्यां नै **सूत** सांकळी ।—दसदोख
११ संपति, धन, पूंजी ।
उ०—एक एक कहे बारी जाऊं एहनी रे, इण वैरागै छोड्यौ घर **सूत** रे । जोवन वय में मुंदर परहरी रे, राजा 'स्रेणिक धारिणी' केरौ पूत रे ।—जयवांणी
१२ संचय, संग्रह ।
उ०—निरधन नैं घरि धन नौ **सूत** । आपै अपुत्रीया नैं पुत्र, कायर नै सूरापण धरैं ।—वृ. स्त.
१३ संबंध ।
उ०—१ पूरणमल की नूं राज तिरमळ कै पूत । साबक रजवाड़ां को बांध्यौ यक **सूत** ।—शि. वं.
उ०—२ फेर जोख छै तौ एक-दोय सखरी जायगा करि । इणरौ नाळेर फेर दै । आपां सुं इहां रौ किसौ **सूत** छै ? काल गाडा भरीया मांणस मारीया छै । जाह सुं किसौ सनमंध ।
— कुंवरसी सांखला री वारता
१४ विधान, नियम, कायदा ।
उ०—१ बैरांगर हीरा हुए, कुळवंतिया सपूत । सीपै मोती नीपजै, सब ब्रम्मारा **सूत** ।—बां. दा.
उ०—२ बोल नबाब सरस द्रढ बंधै, सुत पितु हूंत महा छळ संधै । यूं रिम सूरत **सूत** प्रबधै । नेम लियौ विधि जेम निमंधै ।
—रा. रू.
उ०—३ हरीया हरि कै नांव विन, सब ही **सूत** कसूत । ऐसैं नारी बांझड़ी, दूध न बाकै पूत । —अनभै वांणी
१५ विधि, तरीका ।
उ०—यसा **सूत** सूं कांम बणियांम तूं गम करै, लकड़ मांनै तरस जकड़ लागां । —नगराज री गीत
१६ ढंग, हाल, हालत ।
१७ कार्य, काम ।
उ०—१ हरीया सोच विचार करि, अपना **सूत** समोद । या अलपल संसार सुं, कहा पड़ी है तोग ।—अनभै वांणी
उ०—२ पण मैवासा रै सबब करै चोरी मोहरी री पण **सूत** ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
१८ उपक्रम ।
उ०—रावळा घर मांहे छै एक एक ईसा रजपूत । जिकौ बांधै दिली नै चीतोड़ सूं लड़बा री **सूत** । जिणमें जिणही री फरमाय हाथ देसीजै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
१९ प्रभाव, प्रताप ।
उ०—इंद्र नरेंद्र नै ज्योतिसी ए, रवि ज्यूं निकर भूत कै । सुर नर सेवा करै ऐ दया धरम ना **सूत** कै ।—जयवांणी
२० मार्ग ।
उ०—अवधिग्यांन प्रयूंजियौ, देण मुगतरा **सूत** । आंपै नव किहा ऊपजां, थासां 'भ्रगु' रा पूत ।—जयवांणी
२१ रूप, सौंदर्य ।
उ०—जगी छोरी हैं जाती फिरती देखै नै एक दिन अणी री **सूत** देखनैं कांणा रा मन मैं पाप उपज्यौ ।
—कांणा राजपूत री बात
२२ बंदीजन, भाट ।
उ०—कितरोइ पुर उच्छब कियौ, दूणौ सुख दरबार । कथै महागुण **सूत** कवि, चित हित मंत्र उचार ।—रा. रू.
२३ वेदव्यास के शिष्य, एक ऋषि का नाम ।
उ०—'बांका' वेद पुरांण बिन, सगपद आ छै **सूत** । सुख मनोरथ सराहियौ, आपदत अवधूत ।—बां. दा.
२४ रथ हांकने वाला, सारथि ।
२५ बढ़ई ।
२६ एक प्राचीन वर्ण शंकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता से होना माना गया है ।
२७ इस जाति का व्यक्ति ।
वि. वि.—पुराणों में प्राप्त जानकारी के अनुसार सूत कुल में उत्पन्न लोग प्राचीनकाल से ही देव, ऋषि, राजा आदि के चरित्र एवं वंशावली का कथन या गायान का कार्य करते थे जो कथा आख्ययिका गीत (गाथा) आदि में समाविष्ट थे । इसी प्राचीन लोक साहित्य को एकत्रित कर व्यास ने अपने आद्य पुराण की रचना की थी ।

२८ व्यवस्था, प्रबन्ध ।

उ०—राड़ौ सालूळै अरथगां बेध वधै सोवां रायजादां, सतारा उछाजां जूह उमडै सजीत । घोर वेळा प्रथम्मी आंणतां **सूत** हेक घाटै, आसमांन फाटै थंम लगायौ 'अजीत' ।

—रावत अजीतसिंह चुंडावत रौ गीत

२६ सीध, सीधाई ।

३० घाड़ी या मादा ऊंट की योनि ।

वि.—१ सीधा ।

उ०—पड़ियौ सेडौ पेखि भवन भेडौ भणणावै, भींतांहि सेडैभरी गरट मांख्यां गणणावै । आवै देख उबाक थूक रा थेचा थाया, उतरचा **सूत** अणूंत मत रेला नह माया । करजोड़ अरज कांमणि कहै, हाय हमैं, हूं हारगी । भरतार मती भुगताय रे निलज जीवतोई नारगी ।—ऊ. का.

२ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू. भे.—सूतर, सूत्र ।

अल्पा;—सूतियौ ।

सूतक—सं. पु. [सं.] १ संतान होने पर घर या परिवार में होने वाला अशौच, प्रसूतिका-अवधि, जन्म-सूतक, जनन अशौच ।

उ०—१ तीस दिन **सूतक**, पांच रुतवंती न्यारौ, सेरौ करौ स्नांन, सीख संतोख सुच प्यारौ ।—जांभौ

उ०—२ गायां नै गिरमास ठिकांणौ चोड़ै ठायौ । सूवै **सूतक** सुधी, तळै छिगास विसायौ ।—दसदेव

२ सूर्य या चन्द्रग्रहण के समय की कुछ घंटों पूर्व की अवधि, ग्रहण अशौच ।

३ मृत्यु, अशौच ।

४ पारा, पारद ।

रू. भे.—सूतग ।

सूतका—सं. स्त्री. [सं.] वह स्त्री जिसके हाल ही में बच्चा हुआ हो, सद्य:प्रसूता ।

रू. भे.—सूतिका ।

सूतकाळौ—सं. पु.—किसी की मृत्यु के नवें दिन परिवार एवं संबंधियों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक स्नान । (मेवाड़)

सूतकी—वि. सं. [सूतकिन्] जिसके घर या परिवार में 'सूतक' हो ।

सूतग—देखो 'सूतक' (रू. भे.)

सूतगड—सं. पु. [सं. सूतकृत] तीर्थंकरों द्वारा अर्थ रूप में उत्पन्न पर गणधरों द्वारा ग्रंथ रूप दिया गया हुआ । (साहित्य) (जैन)

सूतड़ा-चींटूड़ी—सं. स्त्री.—पैर का आभूषण विशेष । (म. मा.)

सूतड़ौ—सं. पु.—हाथ का आभूषण विशेष । (म. मा.)

सूतज—सं. पु. [सं.] दानवीर राजा कर्ण

सूतण—देखो 'सूथण' (रू. भे.)

उ०—**सूतण** विराजै धरमी रे केसरिया नाड़ौ लाल गुलाल आो ।

—लो. गी.

सूततनय स. पु. [सं.] राजा कर्ण । (ह. नां. मा.)

सूतधार—देखो 'सूत्रधार' (रू. भे.)

सूतनंदन सं. पु. [सं.] राजा कर्ण ।

सूतनउमा—सं. पु. यौ. [सं. उमा+सुत] १ स्वामिकार्त्तिकेय ।

२ गणेश, गजानन ।

सूतपाळ—सं. पु. [सं. सूतपाल] कर्ण । (अ. मा.)

सूतबंधी—सं. स्त्री.—सीध, सीधाई ।

क्रि. वि.—सीधे लक्ष्य की ओर ।

सूतर—१ देखो 'सूत्र' (रू. भे.)

उ०—१ मनुख जनम अति दोहलौ, **सुतर** सुणवौ सार । सतगुरू सरधा दोहिली, उत्तम कुल अवतार ।—जयवांणी

उ०—२ **सूतर** खडग्गू सार नग्गू जन प्रतग्गू राख ए । कर माग दग्गू जिए जग्गू दुस्ट अग्गू खाख ए ।—करुणासागर

उ०—३ जैसै **सूतर** पूतळी, चित्रकार चित्रांम । मैं अनाथ ऐसै सदा, तुम इच्छा सोइ रांम ।—करुणासागर

२ देखो 'सूत' (१, २) (रू. भे.)

उ०—१ औ **सूतर** रौ ढौलियौ अर ए पड़वा रा थेपड़ा इण बात रा साक्षी है ।—अमरचूंनड़ी

उ०—२ कंवळा **सूतर** री सूंतमी नाथां नै छेड़ा मांथै मोर पांखां री तीखी तुगियां सूं बांधनै त्यार कर राखी है ।—अमरचूंनड़ी

सूतळ—वि.—सूत का, सूत संबंधी ।

उ०—**सूतळ** नाथां सर नासां सणकारी, फुरणी धूंधातां रासां फणकारी ।—ऊ. का.

सूतळी—सं. स्त्री—१ जूट के बारीक रेशों की बनी पतली डोरी जो बोरे सीने के काम आती है ।

उ०—पण अकल तौ वळै ई कांम नीं दियौ । जांणै **सूतळी** सूं खीलीजगी व्है ।—फुलवाड़ी

२ सूत की डोरी ।

उ०—कदै न ल्याया भंवरजी ! **सूतळी** जी हांजी ढोला ! कदै बी बुणी नहीं खाट ।—लो. गी.

सूतहार, सूतार—देखो 'सूथार' (रू. भे.)

उ०—१ तद ब्राह्मण कही जी हूं थांनै कठै मिळीस । तद कंवर कही **सूतहार** उडण खटोलणी लै आसी तेरै साथ आयजौ ।

—चौबोली

उ०—२ भोई सोई भरडीया, सोनी नइं **सूतार** । व्यवसाईया सहू जातिना, जै जोईइ तिणी वारि ।—मा. कां. प्र.

सूतिका—देखो 'सूतका' (रू. भे.)

सूतिका-रोग—सं. पु. यौ.—प्रसव के कुछ समय बाद स्त्री के होने वाला रोग । (अमरत)

सूतियौ—देखो 'सूत' (रू. भे.)

उ०—रोटी फलका दही भिड़का, रोट बाटियां घूतियौ। फोगलासू सूकी लकड़्यां, लट्टा कातै **सूतियौ**।—दसदेव

सुती–वि.—१ सूत का, सूत सम्बन्धी।

२ सूत का बना हुआ।

सं. पु.—सूत का वस्त्र।

सूतोड़ौ–वि. (स्त्री. सूतोड़ी) सोया हुआ।

उ०—१ पदमणि पुरखां रै पंगरण नह पूरा। भूखा **सूतोड़ा** संगरण वैं भूरा।—ऊ. का.

उ०—२ चिणां री ढिगली माथै **सूतौड़ी** डोकरी नै आठ दस वार देख देख नै गिया तौ ई सावळ पिछांण नीं व्ही।—फुलवाड़ी

सूतौ–वि. [सं. सुप्त] (स्त्री. सूती) १ सोया हुआ, सुप्त।

उ०—१ तूं तौ **सूतौ** नींद भरि, लिवैं नचीतौ धंम। हरीया आया जोवता, एक जुरा एम जंम। अनुभववांणी

उ०—२ फौजी बूंटा मैं पांमोजा पैरयां ही सीधौ साळ मैं आ धमक्यौ। लोर में **सूती** राजी री घणी नराजी सूं नाड़ देख'र मूंडौ मिचकोड़्या।—दसदोख

२ बेहोश, बदहवास।

सूत्र–सं. पु. [सं. सूत्रं] १ बहुत थोड़े शब्दों में कही हुई बात, वचन या पद जो गहरा अर्थ प्रकट करे, सारगर्भित एवं गूढ़ार्थी पद, वाक्य।

२ कटिप्रदेश पर करधनी की तरह धारण किया जाने वाला डोरा, कटिसूत्र।

३ यज्ञोपवीत, जनेऊ। ४ जैनशास्त्र, जैनागम।

उ०—१ जद उरजौजी बोल्या, भीखणजी पिण म्हांनै कहै, उ थांनै दोस लागै। जद सेठ बोल्या उवै तो **सूत्र** री साख सूं समचै दोस कहै। साधां नै औ कांम करणौ नहीं।—भि. द्र.

उ०—२ दस स्रवक तउ इहां भाखिया, पिण **सूत्र** भण्यउ नहिं कोई रे।—वि. कु.

४ संक्षेप में जीव अजीव आदि पदार्थों की सूचना करने वाला पद या वाक्य। (जैन)

५ किसी प्रकार की व्यवस्था करने का नियम।

६ कठपुतली का तार या डोरा जिसे थामकर कठपुतली नचाई जाती है।

७ किसी समस्या का हल निकालने की युक्ति या उपाय।

८ काष्ठ, लकड़ी।

९ देखो 'सूत' (रू. भे.)

उ०—१ आजाति जाति पट घूंघट अंतरि, मेळण एक करण अमिळी। मत दंपति कटाछि दूति मैं, नियमन **सूत्र** कटाछि नळी। —वेलि

उ०—२ जरै हाथ वाला पड्या माथ जाया पड़ी साप री कांचळी सूत्र काचा।—ना. द.

रू. भे.—सूतर।

सूत्रकंठ–सं. पु. [सं.] १ ब्राह्मण, द्विज।

२ कबूतर।

३ खंजन।

सूत्रक–सं. पु. [सं.] लोहे के तारों का बना कवच।

सूत्रकरम–सं. पु. [सं. सूत्रकर्मन्] १ बढ़ई का कार्य या कर्म।

२ बेल-बूटे आदि कसीदा निकालने की क्रिया।

३ चौसठ कलाओं में से एक।

सूत्रकार–सं. पु. [सं.] १ सूत्र का रचयिता, सूत्र बनाने वाला।

उ०—अनेक **सूत्रकार** सत धरम रा रागणहार खैराइत्तां रा करणहार धज बंधी·······।—रा. सा. सं.

२ बढ़ई, सूथार।

३ जुलाहा।

४ मकड़ी।

सूत्रक्रीड़ा–सं. स्त्री. [सं.] एक प्रकार का सूत का खेल जिसकी गणना ६४ कलाओं में होती है।

सूत्रग्रंथ–सं. पु. [सं.] सूत्र के रूप में रचा हुआ ग्रंथ।

सूत्रणौ, सूत्रबौ–क्रि. स. [सं. सूत्रणम्] १ आरंभ करना, प्रारंभ करना, रचना।

उ०—१ कर ऊभियै महेस कळोधर, गवळा सूं **सूत्रै** समर।
—अमरसिंह राठौड़ री गीत

उ०—२ वाजतै नगारै कटक चालै विसम, जैत हथ **सूत्रियौ** इसौ रण जंग।—नरहरदास बारहठ

२ गूंथना, गुत्थियां डालना।

सूत्रणहार, हारौ (हारी), सूत्रणियौ–वि०।

सूत्रिओड़ौ, सूत्रियोड़ौ, सूत्र्योड़ौ–भू० का० कृ०।

सूत्रीजणौ, सूत्रीजबौ–कर्म वा०।

सूंत्रणौ, सूंत्रबौ–रू० भे०।

सूत्रधार–सं. पु. [सं.] १ नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट जो भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार नांदी पाठ के अनन्तर खेले जाने वाले नाटक की प्रस्तावना सुनाता है।

२ बढ़ई, सूथार।

३ भवन निर्माण करने वाला शिल्पी। (सभा)

उ०—तरै राजा रै मन आई 'जु एक इसड़ौ देहुरौ कराऊं, जिसड़ौ म्रत्युलोक मांहे अचंभौ हुवै, सु हमै देसरा **सूत्रधार** तेड़ीजैं छै।
—नैणसी

४ सूत्रों को बनाने वाला।

५ जुलाहा।

६ इन्द्र।

रू. भे.—सूतधार।

सूत्रविपाक—देखो 'विपाकसूत्र' (रू. भे.)

उ०—**सूत्रविपाकै** इग्यारम अंग, स्लोक बारसै सोलै संग । अंग इग्यार सूत्र मिलै थाय पैंत्रीस सहस दौइ सं प्राय ।—ध. व. ग्रं.

सूत्रसंपदा–सं. स्त्री. [सं.] सूत्र-ग्रंथों का संग्रह ।

वि.—शास्त्र के अर्थ-परमार्थ का ज्ञाता ।

सूत्रस्थविर–वि.—स्थानांगसूत्र, समवामांगसूत्र के सार या अर्थ को जानने वाला । (जैन)

सूत्रांम, सूत्रांमा—देखो 'सुत्रांमा' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

सूत्रा–सं. स्त्री.—मकड़ी । (अ. मा.)

सूथण, सूथणि, सूथणी–सं. स्त्री.—१ जंजीरनुमा कवच विशेष जो शरीर के अधोअंग में धारण किया जाता था ।

उ०—१ हथियार सारा सांतरा करण लागा । बगतर, झिलम, जिरह-**सूथण** जिरै-जूता, घोड़ां री पाखरां काढजै छै, सुवारजै छे । मनै ग्यांनै सारी तेवड़ कर रहचौ छै । सखरा रजपूत तैयार कीजै छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ शरीर के अधोभाग में धारण किया जाने वाला वस्त्र, पजामा, पायजामा ।

उ०—१ इतरै मांहै रळै पण घर मांहै जाय, सिनांन कर **सूथण** पहिर पाछीया सौं **सूथण** फाड़ी ।—रळै गढवै री वात

उ०—२ **सूथणि** वागा इकळंग सीया, कोड़ि अहुंठ कसीदा कीया ।

—सूरजनदासजी पूनियौ

रू. भे.—सुथण, सूंथण, सूंथणि, सूंथणी ।

सूथांनक–सं. पु. [सं. सुस्थानक] सुमेरु पर्वत । (ह. नां मा.)

सूथार, सूथारियौ—देखो 'सुथार' (रू. भे.)

सूद–सं. पु. [फा.] १ उधार या ऋण के रूप में दिये जाने वाले रुपयों पर बनने वाला ब्याज ।

२ लाभ, नफा ।

३ वृद्धि ।

४ शूद्र ।

[सं. सूदः] ५ नाश, वध ।

६ कूप ।

७ सोता ।

८ चश्मा ।

९ रसोइया ।

१० पकवान ।

१० चटनी, कढी ।

११ दली हुई मटर ।

१३ पाप, गुनाह, कसूर, दोष ।

रू. भे.—सूध ।

सूदकसाला–सं. स्त्री. यौ. [सं. सूदः+शाला] पाकशाला, रसोईघर । (डिं. को.)

सूदखोर–सं. पु. [फा.] ब्याज लेने वाला, निर्ममता मे ब्याज वसूल करने वाला ।

सूदणौ, सूदबौ–क्रि. स. [सं. मृद्] १ काटना, काटकर अलग करना ।

उ०—अंबा सिर **सूदत** कूदत एम, तजै गिरि स्रिंग प्लवंगम तेम ।

—मे. म.

२ मर्दन करना, हनन करना ।

३ घायल करना, चोटिल करना ।

४ वध करना, संहार व नाश करना ।

५ निकलना ।

६ जमा करना ।

७ स्वीकार करना, मानना ।

८ पकाना, पकाकर तैयार करना ।

सूदन–सं. पु. [सं.] १ काटने, नष्ट करने या वध करने की क्रिया या भाव ।

२ विनाश, नाश ।

३ वध, कत्ल ।

४ निष्कासन, निकास ।

५ पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र ।

उ०—दहकि दहकि दौलपराज किरिराज पुकारै, लवणोदक सौं सुद्धवीर लग बढन बिथारै । बळ **सूदन** सौ बांमदेव लग अजग उसारै, बडवा मुख सौं ब्रह्मलोक लगसोक सम्हारै ।—वं. भा.

वि.—१ विनाश करने वाला, नाशक ।

२ वधिक ।

३ प्रेम-पात्र, प्यारा ।

४ माशूक, आशिक ।

सूदनकिरमर, सूदनकिरमिर–सं. पु. [सं. सूदन+किर्मीर] भीम ।

(ह. नां. मा.)

सूदर—देखो 'सूद्र' (रू. भे.)

सूदियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ काटा हुआ, काटकर अलग किया हुआ. २ मर्दन किया हुआ, हनन किया हुआ. ३ घायल व चोटिल किया हुआ. ४ वध किया हुआ, संहार व नाश किया हुआ. ५ निकला हुआ, उड़ेला हुआ. ६ जमा किया हुआ. ७ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. ८ पकाया हुआ, पकाकर तैयार किया हुआ ।

(स्त्री. सूदियोड़ी)

सूदौ—१ देखो 'सुदौ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै खुणियां **सूदा** हाथ जोड़नै कह्यौ—अंदाता, औ दुस्टी राज रै तबेला री घोड़ी रौ माथौ वाढ न्हांकियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ इतरौ कहै नै साह परदेस गयौ । यौ वरस ५ **सूदौ** रयौ ।

—बंधी बुहारी री वात

उ०—३ धवूस व्है ज्यूं ढूकौ जकौ कड़ियां **सूदौ** खाड खोद न्हांकियौ ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'सीधौ' (रू. भे.)

उ०—मीरां महलां सें ऊतरयाजी, ऊंटां भार कसाय। डावौ छोड्यौ मेड़तौ, कोई सूदा द्वारका जाय।—मीरां

(स्त्री. सूदी)

सूद्र–सं. पु. [सं. शूद्र] (स्त्री. सूद्रणी, सूद्रा, सूद्री) १ स्मृत्यनुसार या हिन्दू धर्म शास्त्रानुसार मानव-समाज के चार वर्णों में से चौथा एवं अन्तिम वर्ण, शूद्र।

उ०—रुळ्या खुळ्या रजपूत, विरांमण मिळगा बिटळा। वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा।—ऊ. का.

२ उक्त वर्ण का कोई व्यक्ति।

उ०—अम्हे कजि तुम्हे छंडि अवर वर आंणौ, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगरांम सूद्र ग्रहि संग्रहि, वेद मंत्र म्लेच्छां वदनि।

—वेलि

३ सेवक, अनुचर, दास।

४ नैऋत्यकोण स्थित एक देश।

रू. भे.- सुदर, सूद, सूदर।

सूद्रक–सं. पु. [सं. शूद्रक] १ मृच्छकटिका नामक ग्रंथ का रचयिता, शूद्रक।

२ शंबूक नामक शूद्रकुलोत्पन्न एक व्यक्ति जो श्रीराम का समकालीन था, यह बड़ा तपस्वी था।

सूद्रणी, सूद्रांणी, सूद्रा, सूद्री–सं. स्त्री.] सं. शूद्रा, शूद्राणी] १ शूद्र जाति की स्त्री।

२ गाथा छंद का एक भेद जिसमें २७ से अधिक लघु वर्ण होते हैं।

रू. भे.—सुदरांणी, सुदरांनी, सुद्रणि, सुद्रणी।

सूध–सं. पु.—१ शुक्ल (पक्ष)।

उ०—आसाढऊ सूध, नम स्त्रीनरपती 'अजन्न'। राजा आयौ रोहचै, परणीजण सुप्रसन्न।—रा. रू.

२ देखो 'सुद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ बेपख सूध जिकै सालहोतरमां वखांणिया तिहड़ा इण भांति रा तेजी, धरा रा खूंदणहार, खुरताळां रा अधखुरां सूं धरती धमकिनै रही छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ कनेस्ट वंस सूध छतीस ही वंस छतीस ही राजकुळी एक एक हवइ लोहड़इ मिळी।—अ. वचनिका

उ०—३ वस्त्र तणी चोरी करी, सात आंबिल सूध थायौ जी। काती सात दिन तप कीयां, रतन हरण पाप जायौ जी।—स. कु.

उ०—४ सूध मन सेव गुरुदेव री साचबै। सखर समझै अरथ सूत्र सिद्धंत।—ध. व. ग्रं.

३ देखो 'सूद' (रू. भे)

सूधउ–वि.—१ सहज, सरल, आसान।

उ०—दूसम कालै दोहिलउजी, सूधउ गुरु संयोग। परमारथ प्रीछइ नहीं जी, गडर प्रवाही लोग।—स. कु.

२ देखो 'सूधौ' (रू. भे.)

सूधणौ, सूधबौ–क्रि. स. [सं. शोधनम्] १ खोजना, ढूंढना, पता लगाना।

उ०—१ ग्वालक अंधै रालक गभ, विरळै सूधा।

केसौदास गाडण

२ शुद्ध करना, निर्मल करना।

उ०—बेपख सूधति बिहूं मास बै। बसंत ताइ सारिखौ वहंति।

—वेलि.

सूधर–सं. स्त्री. [सं. सु+धरा] अच्छी भूमि।

उ०—कीधी फौज वळै कमधज्जां, सूधर सोधण प्रांण सकज्जां।

—रा. रू.

सूधरणौ, सूधरबौ–देखो 'सुधरणौ, सुधरबौ' (रू. भे.)

उ०—गुरु लोक गप्फा चरै, धरै न राजा ध्यान। सौ किण विध सूं सूधरै, दाखै ऊमरदांन।—ऊ. का.

सूधरियोड़ौ–देखो 'सुधरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूधरियोड़ी)

सूधलौ–देखो 'सूधौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०— सासू सूधलो लड़ै, फोग आलड़ी बाळै।—लो. गी.

(स्त्री. सूधली)

सूधां, सूधा–वि.—१ सहित, युक्त।

उ०—१ युं कहीनै पचास असवार जीन सान्यिा नख चख सूधा था त्यांरी गोळ करनै उपाड़ नांखिया। नैणसी

उ०—२ जीवों मांही जिव रहै, ऐसा माया मोह। सांई सूधा सब गया, दादू नहिं अंदोह। दादूवांणी

२ सहज, सरल, आसान।

उ०—धूंणी का मन मितर दूभा, उनकु रांम नांम नहीं सूधा। अपनै तन की आसा वरनै, नांव निरासन की नहीं सुरतै।

अनुभववांणी

क्रि. वि.—१ रहते हुए, होते हुए।

उ० चांपावत 'लाखौ' 'फतौ', 'कूंपौ' 'किसन' 'रांम'। यां सूधां कळ जोधपुर, मिटै न आठूं जांम। रा. रू.

२ लक्ष्य की ओर, सीधा।

उ०—राजा नर ब्रह्म री नांम लियौ तौ दूतरा हाल होयसी कै सूधां चली आ।—पंचदंडी री वारता

सूधारणौ, सूधारबौ–देखो 'सुधारणौ, सुधारबौ' (रू. भे.)

उ०—सुगिण कहै वादल वात, धन धन माताजी ताहरौ हीयौजी। सतवंती तूं साच, धन तैं, आपौआप सूधारीयौ जी।—प. च. चौ.

सूधारियोड़ौ–देखो 'सुधारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूधारियोड़ी)

सूधियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, पता लगाया हुआ।

२ शुद्ध किया हुआ, निर्मल किया हुआ।

(स्त्री. सूधियोड़ी)

सूधी–क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त ।

उ०—१ प्रमुख बंबावदारां गढ गंजि भैंसरोड़ **सूधी** आय अमल जमायौ ।—वं. भा.

उ०—२ तरै इणै रांणां री तळाई खरड़ री पोकरण थी कोस १६, फळोधी सूं कोस ८, उठा थी लेनै वीठणोक **सूधी** इण धरती मांगी ।—नैणसी

२ लक्ष्य की ओर, सीधी ।

उ०—रांण ढिलौ कर वंक पण, लीधी **सूधी** वाट ।—रा. रू.

वि.—सहित, युक्त ।

उ०—१ इण करमसीजी नूं रिणी पटै हुती पड़गनै **सूधी** । अरु करमसीजी बारट आसै भाद्रेसै नूं कोड़ रौ दांन कियौ ।

—द. दा.

उ०—२ ईसौ केहनै घोडचढ़ी नै रौही मै जावता एक तुरत री ब्याई हीरणी बच्चानै चूंघावती देखी नै वचा **सूधी** लघू-लाघवी कळासूं रांणी रै वास्तै पकड लाया ।—रीसालू री वात

सूधौ–वि. [सं. शुद्ध] (स्त्री. सूधी) १ सीधा-सादा, भोला-भाला, सरल, शान्त ।

उ०—१ बाबा म देइस मारुवां, **सूधा** एवाळांह । कंधि कुहाड़उ सिरि घड़उ, वासउ मझि थळांह ।—ढो. मा.

उ०—२ ऊजळौ सुभाव, चड़ड़ चल्लौ, गांव री बेटी पण सगलां सूं गूंघटौ पल्लौ । **सूधी** गऊ रा ऊपरला दांत ।—दसदोख

उ०—३ ओठी कठैई पड़ग्यौ कै उणनै कोई मार न्हांकियौ । सांयड तौ **सूधी** अर टाळकी दीसै ।—फुलवाड़ी

२ शुद्ध, निर्मल ।

उ०—ध्यावै जेह **सूधै** मन सदगुरु, दिन दिन सुभ परिणांमै ।

—ध. व. ग्रं.

३ उचित, यथोचित, उपयुक्त ।

उ०—चिता कुण बैठा जड मूढ ए, बाग सहू मारौ रूधौ रे इत्यादिक स्रवणै सुणी, चित्त उत्तर देवै **सूधौ** रे ।—जयवांणी

४ सहित, युक्त ।

उ०—१ धीर मेर रा खड्ग प्रहार सूँ कन्ह महर रौ अंस पंसुली **सूधौ** झड़ियौ ।—वं. भा.

उ०—२ नै कोई नारायणजी रा चक्र थीं तेजसी तीन सै रजपूतां **सूधौ** भूत री गति पाई ।—जगमाल मालावत री वात

रू. भे.—सूदौ, सूंधौ, सूधउ ।

अल्पा;—सूधलौ ।

क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त ।

उ०—१ मोटै राजा केलावौ पटै दियौ थौ । संमत १६६२ **सूधौ** रह्यौ । केलावौ, लवेरौ, विकूंकोहर गांव सूं पटै थौ ।—नैणसी

उ०—२ तिण पछै गोळ रौ लोक भी मोरछा मांडि तुपक तीरां रौ बेझौ बणाइ पहर दोय **सूधौ** लड़ियौ ।—वं. भा.

२ से ।

उ०—बादसाह री इजाजत **सूधा** दोनूं एक कबर मैं दफनाया गया ।—जलाल बूबना री बात

३ की ओर, को ।

उ०—हदि को लोपि वेहद **सूधौ** चल्यौ, गांव सुनि गोरिवै निजर गाडी ।—अनुभववांणी

सून–सं. पु.—१ फूल, पुष्प। (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ देखो 'सून्य' (रू. भे.)

उ०—१ देख सरप व्है दाहुरा, सब्द कळा कर **सून** । पुरख असैंदौ पेख व्है, मावड़ियां मुख मून ।—बां. दा.

उ०—२ गोलां सूं न सरै गरज, गोला जात जवून । ऊखांणौ सायद भरै, सौ गोलां घर **सून** ।—बां. दा.

सूनउ—देखो 'सूनौ' (रू. भे.)

उ०—सत्थवाह मोकलावीय मन रंगि धन सागर पुर जोइ । सजन विहूणउं सहूइ **सूनउं**, सुद्धि न पूछइ कोइ ।—हीराणंद सूरि

सूनम—देखो 'सूजनम' (रू. भे.)

उ०—१ इणी महीना री **सूनम** रै सैं दिन सावा री बात सुणी तद वा मां नै कह्यौ—म्हनै एकर पूछतौ लेणौ हौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजां विचार करण लागी—आज धनतेरस है अर कालै रूपचवदस । आ **सूनम** (असाढ सुदनम) गई तौ उणानै परणीयां नैं पूरा तीन बरस व्हिया अर चौथौ बरस लागग्यौ ।

—अमरचूंनड़ी

सूनसांन—देखो 'सुनसांन' (रू. भे.)

उ०—धबळै दिन रा गांव बिलकुल **सूनसांन** मसांण व्है ज्यूं लागै ।

—रातवासौ

सूनसायर–सं. पु. [सं. सुनु+सागर] समुद्रपुत्र, कामदेव ।

सूनादोख–सं पु. [सं. सूनादोष] वह दोष या पाप जो, चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल, झाड़ू आदि से जीव हिंसा होने पर लगता है ।

(जैन)

सूनापण, सूनापणौ—देखो 'सूनौपणौ' (रू. भे.)

सूनासीर—देखो 'सुनासीर' (रू. भे.)

सूनी–वि. [सं. शून्य] १ निर्जन, शून्य, खाली, रिक्त ।

उ०—१ ब्रज **सूनी** ऐ सहेल्यां एक रांम बिना ब्रज **सूनी** ।

—लो. गी.

उ०—२ बिज्जुळियां नीळज्जियां, जळहर तूं ही लज्जि । **सूनी** सेज, विदेस प्रिय, मधुरइ मधुरइ गज्जि ।—ढो. मा.

उ०—३ **सूनी** ढांणी मैं सेठांणी सोती, रैगी बिणियांणी पांणी नैं रोती ।—ऊ. का.

रू. भे.—सूनोड़ी ।

२ देखो 'सुनी' (रू. भे.)

३ देखो 'सुन्नी' (रू. भे.)

सूनीयाड़—देखो 'सूंन्याड़' (रू. भे.)

सूनु, सूनूं, सूनू–सं. पु. [सं. सूनु] १ पुत्र, बेटा, लड़का।
२ देखो 'सूनौ' (रू. भे.)

सूनोड़ी—देखो 'सूनी' (रू. भे.)
उ०—ऊभी सज सणगार, **सूनोड़ी** वाड़ी रा माळी।—लो. गी.

सूनोपण, सूनोपणौ—निर्जनता, शून्यता।

सूनौ–वि. [सं. शून्य] (स्त्री. सूनी) १ जनरहित, निर्जन, एकान्त, उजाड़।
उ०—१ सज्जण चाल्या हे सखी **सूना** करै ग्रवास। गळेय न पांणी ऊतरइ, हियै न मावइ सास।—ढो मा.
उ०—२ ईंण प्रकारै ग्रौ नगर **सूनौ** हुवौ छै।—रीसालु री बात
२ रिक्त, खाली, शून्य।
उ०—१ रात बीत्यां दिन उग्यौ। ग्राज स्कूल रौ भूंगौ **सूनौ** पड़्यौ हौ ग्रर लगातार तीन बरस सूं बोलतौ लौडस्पैकर मूंडी लटकायां नींबड़ा माथै चुपचाप पड़्यौ हौ।—ग्रमरचूंनड़ी
उ०—२ **सूना** घर मैं इण वास्तै मन नीं लागै। थोड़ा वैगा ग्राय जावै तौ ग्राछौ।—फुलवाड़ी
३ बन्धनमुक्त, खुला, स्वतन्त्र।
उ०—ताळ-सूणां सांढ सा सरोढ बेटा-बेटी **सूना** फिरै। पेमजी खुद दूजै जुबांन बणै है।—दसदोख
४ ग्ररक्षित।
रू. भे.—सूंनउ, सूंनौ, सूनउ, सूनु, सूनूं, सूनू।

सून्य–सं. पु. [सं. शून्य] १ खाली स्थान, रिक्त स्थान।
२ जिसका कोई ग्राकार या रूप न हो, निराकार।
३ ग्रभय स्थान।
उ०—जनहूरीया गुर ग्रापना, लै पुंहचै **सून्य** गांय। जिन गुर सबद न जांणिया, धका काल का खांय।—ग्रनुभववांणी
४ परमधाम।
५ ग्राकार।
६ एकान्त स्थान।
७ गणित में ग्रभावसूचक चिन्ह।
८ बिन्दी, बिन्दू।
९ भंवरगुफा।
उ०—ग्रधर धरै रे कोई ग्रधर धरै, **सून्य** सिखर मैं वास करै। नृमल नांव नकेवल सहजां, रोम रोम रसनां उचरै।
—ग्रनुभववांणी
१० सहस्राधार चक्र।
११ त्रिकुटि।
१२ विष्णु।
१३ ईश्वर, परमात्मा।
१४ स्वर्ग।
वि.—१ कुछ नहीं, निरर्थक।
२ गुनातीत।
३ जिसका ग्रस्तित्व न हो।
४ जो वास्तविक न हो, ग्रसत्।
५ जो खाली हो, रीता, रिक्त।
६ निर्जन, एकान्त।
७ ग्रनाशक्त, विरक्त, निर्विकल्प।
उ०—दादू मन फकीर जग थैं रह्या, सद्गुरु लीया लाइ। ग्रह निसि लागा एक सौं, सहज **सून्य** रस खाइ।—दादूबांणी
८ उदास, रंजीदा।
९ सीदा-सादा, सरल।
१० ग्रर्थ शून्य।
११ नंगा, नग्न।
१२ ग्रचेत, बेहोश, विमूढ़।
उ०—सुभट रहइ भुंहि पडइ मांन करि थाइ। देखी जतूं कटक उत्तर **सून्य** थाइ।—गाजिगुरि
रू. भे.—सुंन, सुंन्य, सुनि, सुन्न, सुन्य, सन, संन्य, सून।

सून्यमंडल–सं. पु.—१ सौर-मण्डल, ग्राकाश।
२ मस्तक (योग)।
रू. भे.—सुनमंडळ, सुनिमंडळ।

सून्यवाद–सं. पु. [सं. शून्यवाद] बौद्धों का एक सिद्धान्त, जिसके ग्रनुसार जीव व ईश्वर में कुछ भी नहीं माना जाता है।

सून्यवादी–सं. पु.—उक्त सिद्धान्त को मानने वाला बौद्ध।

सून्या–सं. स्त्री. [सं. शून्या] १ नलिका नामक गंध द्रव्य।
२ वंध्या स्त्री।

सून्यागार–सं. पु. [सं. शून्यागार] १ ग्राकाश, गगन।
२ सूनाघर या मकान।
३ सूना कक्ष।
रू. भे.—सुन्नगार।

सून्याड़–सं. स्त्री.—१ सुनसान जगह, एकान्त स्थान, निर्जन स्थान।
उ०—१ डोकरी उण **सून्याड़** रोही मैं रोवण सारू घणी ई खपी, पण रोईजियौ ई नीं।—फुलवाड़ी
२ खाली एवं रिक्त होने की ग्रवस्था, रिक्तता।
उ०—उण वगत म्हैं थारा सूं कांईं कम बेचैनै ही बेटी जिण विखा री वेळा माथा मैं फगत थोथी **सून्याड़** घरणावै, उण सूं वत्तौ कीं दुख कै संताप नीं व्है।—फुलवाड़ी
रू. भे.—सूनियाड़, सुन्नाळ।

सूपंखी–वि.—सुवापंखी रंग का, हरे रंग का।
उ०—तरै ऊंणै कह्यौ—महाराजा बारै बारै मास कोरड़ घास **सूपंखी** म्हांकै मायै छै।—कहवाट सरवहिये री बात

सूप–सं. पु. [सं.] १ पकी हुई दाल, भाजी ।
२ रसदार सब्जी ।
३ सब्जी का रस, शोरबा ।
४ कढी ।
५ चटनी ।
६ तीर, बांण ।
[सं. शूर्प, सूर्पः] ७ अनाज फटकने का एक उपकरण जो वेंत, बांस, सींक का बना होता है ।
उ०—१ मोतिए विसाहण ग्रहि कुण मूंकै, एक एक प्रति एक अनूप । किळ सोभण मुख मूभ वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी न **सूप** ।—वेलि
उ०—२ कुळ मोटै बहुवां कुळ धुबां, मांन महातम निरवहै । कण **सूप** जिहीं औगण तजै, गुण मोताहळ जिम ग्रहै ।—गु. रू. बं.
उ०—३ सांमी सेवग **सूप** ज्युं, एकै मतै वहंत । कंण छाडै कूकस गहै, खाली आप रहंत ।—अनुभववांणी
[सं. सूपः] ८ रसोइया ।
९ करुण रसपूर्ण एक राग विशेष ।
१० एक नायिका विशेष ।
११ एक प्रकार का कपड़ा विशेष ।
उ०—वेहद्द हद्द वागै वणाव, चम्मीर हीर जंगै जडाव । जगमगै जोप कसबी अनूप, नीलक्क मसंजर लाल **सूप** ।—गु. रू. बं.
१२ देखो 'सुपनखा' (रू. भे.)
उ०—हेक दांणव व्याधि हणियौ, खरां त्रिसरां मूळ खणियौ । लाछि वर सिर **सूप** लुणियौ, सात्रवै सुणियौ ।—पी. ग्रं.

सूपकनौ–वि. [सं. सूर्प+कर्ण] सूप के समान बड़े बड़े कानों वाला ।
उ०—ऐकळ जंघा आइया, विमळ वहिथिया वाज । जळ मांणसिया जोइया, **सूपकनां** सुभराज ।—पी. ग्रं.
सं. पु.—हाथी ।

सूपकार–वि. [सं. सूपकार] भोजन बनाने वाला, रसोईया ।

सूपड़ौ—देखो 'सूप' (७) (अल्पा; रू. भे.)
उ०—नी रांड रोवण नैं ही, नीं भैंस दोवण नैं अर नीं **सूपड़ौ** सोवण नैं ।—अमरचूंनड़ी

सूपनखां, सूपनिखा, सूपनेखा—देखो 'सुपनखा' (रू. भे.)
उ०—१ **सूपनखा** रौ स्रमण, नाक वाढियौ निभै नरि । निमौ अकलि रुघनाथ, अनंत पंचवटी ऊपरि ।—पी. ग्रं.
उ०—२ जका **सूपनेखा** कटा फूल जाई । अवध्येस रा रूप सूं रीभ आई ।—सू. प्र.

सूपरसन–सं. स्त्री. [सं. स्पर्शन्] वायु, हवा ।

सूफंजर–सं. पु.—वह ऊनी वस्त्र जिस पर स्वर्ण का काम किया हुआ हो ।
उ०—पाटंबर पैहरंत, **सूफंजर** बाफ मसंजर । जमदाढां नमि जडित, वडां जडिया जरकंबर ।—गु. रू. बं.

सूफी–सं. पु. [अ. सूफी] (स्त्री. सूफिनि) १ बहुत उदार विचार वाले एवं सभी धर्मों से प्रेम करने वाले मुसलमानों का एक वर्ग ।
उ०—कुतब गौस अबदाळ **सूफी** अनै कळंदर, पीरजादा मिळै सांभ परभात ।—नरहरदास बारहठ
वि० वि०—यह वर्ग ब्रह्मवादी व अध्यात्मवादी विचार एवं एकेश्वरवाद को अधिक महत्व देता है ।
२ उक्त वर्ग का अनुयायी, कोई संत या फकीर ।
उ०—१ सोइ जोगी, सोइ जंगमा, सोई **सूफी** सोइ सेख । सोइ संन्यासी, सेवड़ा, दादू एक अलेख ।—दादूबांणी
उ०—२ योगिनि है योगी गहै, **सूफिनि** व्है कर सेख । भक्तनि व्है भक्ता गहै, कर कर नांना भेख ।—दादूबांणी

सूब—देखो 'सूम' (रू. भे.)
उ०—ऊख गिरी धर ऊपरै, यळ खांडांमय आव । तूंबां मीठम होय तौ, **सूबां** होय सबाब ।—बां. दा.

सूबर–सं. स्त्री.—गर्भवती घोड़ी या मादा ऊट ।
उ०—तेंरै पेट री उठै घोड़ी **सूबर** आई थी सौ जोगिया कन्है राजूखां रा आदमी मोल लाया था ।
—सूरे खींवे कांधळोत री बात
रू. भे.—सूभर ।

सूबांण—देखो 'सुवांणी' (रू. भे.)

सूबादार—देखो 'सूबेदार' (रू. भे.)

सूबादारी—देखो 'सूबेदारी' (रू. भे.)

सूबायत—देखो 'सूबेदार' ।
उ०—१ बादसाह लाहोर रै **सूबायत** नूं ताकीद कीवी जै चोर नूं पकड़ौ ।—दूलजी जोइयै री वारता
उ०—२ पांचवैं चौथै बरस **सूबायत** नवौ आवै सो खेचल हुवै ।
—गोपाळदास गौड़ री वारता

सूबेदार–सं. पु. [फा. सूबःदार] १ किसी प्रान्त या सूबे का अधिपति, अधिकारी ।
उ०—जै थटै री अमल नहीं आयौ, **सूबेदार** फिराऊ हुवौ ।
—गोपाळदास गौड़ री वारता
२ फौज या सेना में एक ओहदा या पद ।
३ उक्त पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति ।
रू. भे.—सूबादार, सोबेदार ।

सूबेदारी–सं. स्त्री. [फा.] १ सूबेदार का कार्य ।
२ सूबेदार का पद ।
रू. भे.—सूबादारी ।

सूबै—देखो 'सुबह' (रू. भे.)
उ०—हुवै चम्मरां भाटका जोति हुवै, सदा ऊतरै आरती सांभ

सूबै।—मे. म.

सूबौ–सं. पु. [फा. सूबः] १ किसी राज्य का कोई प्रान्त, जिला या सूबा।

उ०—१ माल कितराहीक लै गयौ। नबाब रौ **सूबौ** उतरीयौ। संमत १७१६ रा आसाढ सुदि ६ नबाब कूच कीयौ।—नैणसी

उ०—२ नबाब महोबतखां बुरहांनपुर सूं पूरब नूं रवांना हुवा खुरमनूं हरावण तद बुरहांनपुर रौ **सूबौ** राव रतन नूं भोळायौ।
—बां. दा. ख्यात

उ०—३ सारा ब्रहमंड इकीसा **सूबा**, पुरंद गुणां सूबायतपूर।
—र. रू.

[अ. शुबहा] २ शक, संदेह।

रू. भे.—सुबौ, सोबौ।

सूभग–वि.—सुंदर।

सूभभद्र–सं. पु.—कुशल, मंगल, खैरियत।

सूभर–वि.—१ सुन्दर।

उ०—१ सब्द सरोवर **सूभर** भरा, हरिजळ निरमळ नीर। दादू पीवै प्रीति सौं, तिनकै अखिल सरीर।—दादूबांणी

उ०—२ भाप करै सर **सूभर** भरिया, धरती रूप अनेरा धरिया। 'हमीरौत' हुवा गिर हरिया, सीख समापी, घर सांभरिया।
—आसी बारहठ

२ सुख, सुख रूप।

उ०—अहपुर महपुर इंद्रपुर, स्यौं ब्रह्मा लौ जोंय। जनहरिदास दुभर दुनी, **सूभर** भरया न कोय।—ह. पु. वां.

सं. पु.—१ पुष्कर।

२ छोटा तालाब।

३ देखो 'सूबर' (रू. भे.)

उ०—१ दूभर द्वीहायन त्रीहायन दोरी। **सूभर** चतुरब्दा सब्दारथ सोरी।—ऊ. का.

उ०—२ भूरी **सूभर** भर भावड़दा भांगी, मोटी झोटी री आवड़दा मांगी।—ऊ. का.

सूभरा–वि.—सुन्दर।

उ०—रतन मैं राखड़ी वेणी वासग जड़ी, **सूभरा** बांहड़ी लहक लोहै।—रुकमणी मंगळ

सूभाव—देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—म्हां सगळा हाथा-जोड़ी करां, राज रै पगां पड़ां। बाई भोळी अर कीं आकरा **सूभाव** री है। आप मोटा हौ मोटी विचारौ।
—फुलवाड़ी

सूभ्र, सूभ्रू—देखो 'सुभ्र' (रू. भे.)

सूम–वि. [अ. शूम] (स्त्री. सूमण) कृपण, कंजूस।

उ०—१ नीत रीत **सूमां** नहीं, **सूमां** नहीं सबाब। **सूमां** घरै सुगाळ मै, रंधै रसौड़े राब।—बां. दा.

उ०—२ थोथा गैडंबर संभर बिण थागा, ज्यांनै **सूमां** सा आडंबर छाया। तुरत तिजोरी मैं जळ नें जड़ दीनूं, दे दे सांठेला खड़नै खड़ दीनूं।—ऊ. का.

सं. पु.—१ पुष्प, फूल।

२ देखो 'सुम' (रू. भे.)

रू. भे.—सुंब, सूंब, मूंब, सूंम, सूब।

अल्पा;—सुंबड़ौ, सुंमड़ौ, सूंबड़ौ, सूमड़ौ, सूमौ।

सूमड़ापण सं. पु.—कंजूसी, कृपणता।

उ०—हकीमां सूं पूछियौ ऐब तिका तमांम गुणां नू ढांकै सौ कांई छै—तरै कही **सूमड़ापण**।—नी. प्र.

सूमड़ौ—देखो 'सूम' (अल्पा; रू. भे.)

(स्त्री. सूमड़ी)

सूमपण, सूमपणौ सं. पु.—कृपणता, कंजूसी।

सूममन–वि.—कठोर। ✽ (डिं. को.)

सूमरा–सं. पु.—१ पंवारवंश की एक शाखा।

२ सिंधी मुसलमानों का एक भेद जो पहले राजपूत थे।

सूमि—देखो 'सूम' (रू. भे.)

उ०—लई पद नांगि अपूठनि भूमि, सरब्बसु दब्ब लई मनो **सूमि**।
—ला. रा.

सूमेर—देखो 'सुमेरु' (रू. भे.)

सूमौ–सं. पु.—१ आकाश।

२ दूध।

३ जल।

४ देखो 'सूम' (अल्पा; रू. भे.)

सूयंभू—देखो 'स्वयंभुव'। (नां. मा.)

सूयटौ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

उ०—सूयटा सोभागी कहि किहां सगुरु दीठा। साकर दूध सेती, मुख करावुं मीठा रे।—रा. गु.

सूयर—देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—जउ गढ नावड करीय तु परांण, **सूयर** भक्ष करउ गुरतांणी।
—कां. दे. प्र.

सूयावड़ि–सं. पु.—प्रसूति काल।

उ०—**सूयावड़ि** दूखण घणा, वलि गरभ गलाया। जीवांणी ढोल्या घड़ा, सीलवरत भंजाया।—सं. कु.

सूयीधार—देखो 'सूईदार' (रू. भे.)

सूर–सं. पु. [सं. शूर, सूर, सूरि] १ शूरवीर, बहादुर, योद्धा।
(अ. मा., डिं नां. मा; नां. मा.)

उ०—१ धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिणा निज पैज। सो **सूरां** सिर सेहरौ, नर पुंगव सुर-नैज।—बां. दा.

उ०—२ थाट थड़ै जमदाढ जुड़ी, उठै बळाबळ नूर। **सूर** खड़ा पिड़ ले रह्या, कायर भागा दूर।—अनुभववांणी

२ सूर्य, रवि सूरज। (नां. मां.)

उ०—१ वदि रुद्र खाग स्रीहथां वाहै। **सूर** थंभि रथ हाथि सराहै।—सू. प्र.

उ०—२ सुतरु छांह तदि दीध जगत सिरि। **सूर** राह किय जगत सिरि।—वेलि

३ सिंह, शेर। (ह. नां. मा.)

४ चीता।

५ श्रीकृष्ण का पितामह।

६ विष्णु का एक नाम।

७ सूरदास, अंधा।

८ नाक का दाहिना छिद्र। (योग)

उ०—१ साध मंडळि साथि बिराजै, अनहद नाद अखंडित बाजै। चंद **सूर** समि अरथ बिचारै, धुनि मैं ध्यांन कमळ दळ धारै।
—ह. पु. वां

उ०—२ मनवा देव वसै हिरदा मैं, नाभि कमळ पग देलारै। चंद्र **सूर** रा लिया सरोदा, सुखमरा सीर चडेलारै।
—स्रीहरिरांमजी महाराज

९ भूरे रंग का घोड़ा।

१० पठानों की एक जाति।

११ राठौड़ों की एक शाखा अथवा इस शाखा का व्यक्ति।

१२ उत्तर और वायव्य के मध्य की दिशा जिधर सप्तर्षि अस्त होते हैं। इसे ऊंध भी कहते हैं।

१३ आक, मदार।

१४ सालवृक्ष।

१५ शूरवीर राजा।

१६ छप्पय छंद का एक भेद जिसमें १६ गुरु, १२० लघु कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राएं होती हैं।

१७ छप्पय छन्द का ५७ वां भेद जिसमें १४ गुरु, १२४ लघु, १३८ वर्ण या १५२ मात्राऐं होती हैं। (र. ज. प्र.)

१८ मतान्तर से छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें २ गुरु व १४८ लघु होते हैं।

१९ देखो 'सूरि' (रू. भे.)

उ०—सेवै पग सन्नक जन्नक **सूर**।—ह. र.

वि.—१ तप्त ❀। (डिं. को.)

२ देखो 'सूवर' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ हिरणां लांबी सींगड़ी, भाजण तणौ सभाव। **सूरां** छोटी दांतळी, दै घण थट्टां घाव।—हा. झा.

उ०—२ **सूरां** रै मोरै भूखाबाज ज्यौं असवार नै घोड़ौ आफळि रहिआ छै।—रा. सा. सं.

३ देखो 'सुर' (रू. भे.)

सूरकिरण—सं. पु.—१ छाते के आकार का राजचिह्न।

उ०—सिर चमर चौसर सोह, व्रत्ति **सूरकिरण** विमोह।—रा. रू.

वि. वि.—देखो 'किरणियौ'।

सूरखनीलौ—सं. पु.—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

सूरगुर—वि. [सं शूरगुरु] १ श्रेष्ठ वीर।

उ०—गयौ खीजियौ थकौ सैं देस हूं **सूरगर**, टळण परदेस री न कर टाळौ।—राव भीमसिंघ हाडा रौ गीत

२ देखो 'सुरगुरु' (रू. भे.)

सूरगुलूं—सं. पु.—एक प्रकार का पुष्प।

उ०—गुललाल कै डंबर **सूरगुलूं** का प्रकास। दाबदी अजूबां गुलरोसनूं का उजास।—सू. प्र.

सूरड़ौ—देखो 'सूवर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हरसा बीर मेरा रे, बोजै बोजै मेंरै ना'री ना'र। जांमण का रे जाया थूंरां रांमैड़ा रे सूरा **सूरड़ी**।—लो. गी.

(स्त्री. सूरड़ी)

सूरज—सं. पु. [सं. सूर्यः] १ सूर्य, रवि, दिनकर (अ. मा; नां. मा.)

उ०—**सूरज** खांखळ रतन सळ, पोहमी रिण जळ पंक। कायर कटक कलंक इम, कुकवी सभा कळंक।—बां. दा.

उ०—२ आवड़ रूप पधारचा अंबा, बणि मांमड़ा रा बाई। सरवर सोखि रोकियौ **सूरज**, भाल कियौ निज भाई।—मे. म.

पर्याय.—अंगारक, अंसुमाळी, अजनमा, अपी, अरक, अरीअंधार, अरुण, अहि, अहिकर, अहिपति, आदीत, आरांण, उतंग, उद्योत, उसनरसम, कपी, कमळविकासण, करनाळ, करमसाखी, कासिपसुतन, किरमाळ, खग, गगणमिण, गगनवटी, गगनपति, ग्रहपति, चक्रधर, चक्रवीर, चित्रभांणु, चोरणअपा, छतरपत, जगचख, जगदीप, जगनैण, जगसाखी, जनककरण, जनकजम, जनकजमण, जनकसनि, जमजनक, जमपिता, जोतप्रकासण, ज्योत, तपधण, तपन, तपी, तमचर, तमरार, तरण, तिमग, तिमगअंस, तिमरहर, तींखंसक्रम, तेज, तेजपुंज, दरिणयर, दिनंद, दिनकर, दिनेस, दिव, दिवाकर, दीत, दुतिवांन, दुनियण, दोमिण, द्वादसआतमा, धरधूपरा, धात, धीर, ध्रुजअसमांण, नभमिण, निसारिप, पंकजबंधु, पंकजहती, पतंग, पदमणपति, पपी, पिंगळ, पीथ, पुनीत, प्रकास, प्रद्योतन, प्रभाकर, प्रभू, प्रवीत, बनकर, बयळ, बिंब, भग, भगवांन, भरळाटतन, भांण, भासंकर, भासवांन, मणगयण, महचक्र, महाग्रह, मारतंड, मित्र, मिहर, मेटणछपा, रतन, रवि, रातंबर, रानळपति, रांनापति, लोकबंधु, विकरतन, विभाकर, विभावसु, विरळ, विरोचन, विवसवांन, विवसांण, वेदउदय, सपतसपती, सपतहर, सविता, सहसकर, सांमल, सीतहर, सुंमाळी, सुमंत, हंस, हरि, हिरळवंत, हीर।

२ नाक का दाहिना स्वर स्थान।

३ टगण के तृतीय भेद की छः मात्रा का नाम, ।ऽ।ऽ।

४ आक का पौधा।

५ बारह की संख्या । ॐ
वि.—१ श्वेत, सफेद । ॐ (डिं. को.)
२ रक्तवर्ग ।
रू. भे.— सुरज, सूरज्ज, सूरज्जि, सूरिज, सूरिजि ।

सूरजकांतमरिण–सं. स्त्री.— सूर्यकान्तमरिण ।
वि.—श्वेत, सफेद । ॐ (डिं. को.)

सूरजकाळ–सं. पु. [सं. सूर्यकाल] १ दिन का समय ।
२ फलित ज्योतिष का एक चक्र जिससे शुभाशुभ का निर्णय किया जाता है ।

सूरजकुंड–सं. पु.—आबू का एक तीर्थ स्थान ।
उ०—सो विधना रै लेख सूं भूंडरण प्रातकाळ घड़ी दोय रै तड़कै **सूरजकुंड** मैं स्नांन कररण नूं गई ।—डाढाळा सूर री बात

सूरजकुळ–सं. पु. [सं. सूर्य्य+कुल] क्षत्रियों का एक वंश, सूर्य-वंश ।
उ०—विखै अग्यांन धरम वीसारौ । **सूरजकुळ** चौ धरम संभारौ ।—सू. प्र.

सूरजग्रह–सं. पु. [सं. सूर्य+ग्रह] १ सूर्य, रवि ।
२ सूर्य का ग्रहरण ।
३ राहु व केतु के नामान्तर ।
४ जल घट की तली ।

सूरजग्रहरण–सं. पु. [सं. सूर्य ग्रहरण] १ सूर्य और पृथ्वी के मध्य में चंद्रमा के आ जाने पर और सूर्य आड़ में हो जाने के काररण होने वाला ग्रहरण ।
२ हठ योग की वह प्रक्रिया जब प्रारण पिंगला नाड़ी में होकर कुंडली में पहुंचता है ।

सूरजछट–सं. स्त्री.— कार्त्तिक शुक्लाषष्टी ।

सूरजनम—देखो 'सूजनम' (रू. भे.)

सूरजनारायरण–सं. पु.—सूर्यदेव, सूर्यनारायरण ।
उ०—ऐ तौ **सूरजनारायरण** सुरणी बीरणती, आ तौ बेहमाता सुरणेला पुकार ।—लो. गी.

सूरजपांख–सं. स्त्री.—सूर्यकिररण, सूर्य प्रभा । (१)
उ०—यातैं हीरां कै सरीर ऊपर सूरज रूपी जोवन आयौ छै । हावभाव दरसायौ छै । पाछै **सूरजपांख** जागी छै ।
—बगसीरांम प्रोहित री बात

सूरजपुत्र–सं. पु. [सं. सूर्यपुत्र] १ यम ।
२ शनि ।
३ कर्ण ।
४ सुग्रीव ।

[सू]रजपुत्री–सं. स्त्री. [सं. सुर्य+पुत्री] १ यमुना ।
२ विद्युत, बिजली ।

[सू]रजपुर–सं. पु. [सं. सूर्यपुर] काश्मीर का एक प्राचीन नगर ।

[सू]रजपुरांरण–सं. पु. [सं. सूर्यपुरांरण] एक ग्रंथ विशेष जिसमें सूर्य्य का माहात्म्य वर्णित है ।

सूरजपूजरणौ, सूरजपूजबौ–क्रि. स.— प्रसव के पांच, सात, नौ या अट्ठारह दिनों के बाद जच्चा द्वारा स्नान करके बाहर आकर सूर्य की पूजा करना, सूर्य पूजा का संस्कार करना ।

सूरजपूजा–सं. स्त्री.—१ सूर्य की पूजा ।
२ प्रसव के कुछ दिन बाद प्रसूता द्वारा की जाने वाली सूर्य-पूजा ।

सूरजप्रकास–सं. पु.—१ सूर्य का प्रकाश, उजाला ।
२ धूप ।

सूरजप्रदीप–सं. पु. [सं. सूर्य+प्रदीप] एक प्रकार का ध्यान या समाधि । (बौद्ध)

सूरजमंडळ–सं. पु. [सूर्यमंडल] सूर्य की परिधि ।
उ० जितरा-जितरा पग दीजइ तितरा तितरा अस्वमेध ज्याग का फळ लीजइ । इरिंग विधि जीवरण बेदिजइ तउ **सूरजमंडळ** भेदिजइ ।— अ. वचनिका

सूरजमंडळभिद–सं. पु.— वीर, योद्धा । (डि. ना. मा.)

सूरजमरिण–सं. स्त्री. [सं. सूर्यमरिण] सूर्यकान्तमरिण ।

सूरजमथबा–सं. पु.— सूर्यावर्त्त नामक सिर दर्द का एक रोग जो सूर्योदय से पूर्व शुरू होता है और सूर्यास्त के बाद स्वयं मिट जाता है ।

सूरजमल–सं. पु. [सूर्यमल्ल] दुल्हा के लिए प्रयुक्त शब्द ।
उ०—जास्यां घड़ी दोय लागसी ए अम्मा मोरी गायड़मल रै डेरै, ए सइयां मोरी, **सूरजमल** रै डेरै ।—लो. गी.
२ पति ।
३ राजस्थानी का प्रसिद्ध कवि सूर्य्यमल्ल मिश्ररण ।

सूरजमाल–सं. पु. [सं. सूर्यमाल] शिव का एक नामान्तर ।
रू. भे.— सूरिजमाल ।

सूरजमुखी–सं. पु. [सं. सूर्यमुखी] १ पीले रंग के पुष्प का एक प्रसिद्ध पौधा विशेष तथा जिसके पुष्प का मुख सूर्य की दिशा में ही रहता है ।
२ उक्त पौधे का फूल ।
३ राजाओं, बादशाहों के सिर पर धाररण करने का एक प्रकार का राजछत्र विशेष, राज्य चिन्ह ।
उ०—इरण भांत हाथी रै मेघाडंबर चंवर ढुळतां थकां **सूरजमुखी** लागियां जलाल आइयौ ।—जलाल बूबना री बात
४ एक प्रकार का रोग जिससे सारा शरीर श्वेत हो जाता है ।

सूरजमुखौ–सं. पु.—आभूषरणों में सूर्यमुखी का फूल खोदने का एक औजार विशेष । (स्वर्णकार)

सूरजरोटौ–स. पु.—१ चैत्रमास में रविवार का किया जाने वाला स्त्रियों का व्रत विशेष ।
२ इस व्रत के अवसर पर सूर्यदेव को नैवेद्य में चढाया जाने वाला प्रसाद ।

सूरजवंस–सं. पु. [सं. सूर्य+वंश] क्षत्रियों का एक वंश, कुल, सूर्यवंश ।

सूरजलोक–सं. पु.—सूर्यलोक ।

सूरजवंसी–सं. पु.—सूर्यवंशी क्षत्रिय ।

उ०—कुळ महिमा वरणै कारण, बुध बळ पीढी बंध । सारां **सूरजवंसियां**, कुळ रखवाळ कमंध ।—रा. रू.

सूरजसंक्रमण–सं. पु. [सं. सूर्य्यसंक्रमण] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने की क्रिया या भाव ।

सूरजसुत—देखो 'सूरजपुत्र' (रू. भे.)

सूरजसुता–सं. स्त्री.—१ सूर्य की पुत्री, यमुना । (डिं. को.)

२ विद्युत, बिजली ।

सूरजा–सं. स्त्री. [सं. सूर्य+जा] १ यमुना ।

२ विद्युत ।

रू. भे.—सूरिजिजा ।

सूरजालोक–सं. पु. [सं. सूर्यालोक] १ सूर्य का तेज प्रकाश ।

२ देखो 'सूरजलोक' (रू. भे.)

सूरजि—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

उ०—किरणावळि **सूरजि** जेम कळक्कळ, घूण घजब्बड खेड घणी ।
—गु. रू. बं.

सूरज्ज, सूरज्जि—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

उ०—१ 'अमर' धरम आंकूर, पटौ दीधौ पाटोधर । राजहंस प्रम अंस, जिसौ **सूरज्ज** सुधाकर ।—गु. रू. बं.

उ०—२ **सूरज्जि** जेम सपतास चढि, पदमपांण आवध ग्रहै । गजसिंह लोह खंटत्रीस लै, इम 'जैं' पूठी आरुहै ।—गु. रू. बं.

सूरज्या–सं. स्त्री. [सं. सूर्या या सूर्य+जा] सूर्य की पत्नी, संज्ञा ।

वि. वि.—वैदिक मंत्रों में इसे सूर्य की पुत्री कहा गया है । कहीं कहीं इसे सविता या प्रजापति की कन्या और अश्विनीकुमारों की स्त्री कहा गया है ।

उ०—अला सावित्री **सूरज्या** सती सीता । अला ग्यांन आदेस उणिहारि गीता ।—पी. ग्रं.

सूरझटकाकरण–सं. स्त्री.—तलवार, खड्ग ।

सूरण–सं. पु. [सं. शूरण, सूरण] १ जमीकंद, सूरन, ओल ।

उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति भांति-भांति रा अंबरस, सिखरण, आंबा, नींबू, **सूरण**, आदा । भांति भांति रा आचार अथांणां । भांति भांति री तरकारी ।—रा. सा. सं.

उ०—२ अमरकंद आदू अलां, **सूरण** रोभ रताळ । वच्छनाग वाकुंभीयां, भेडागारी भाळि ।—मा. कां. प्र.

उ०—३ आदा **सूरण** केलां हूआं, बीजोरां दाडिम लींबूआं ।
—कां. दे. प्र.

रू. भे.—सुरण ।

सूरत–सं. स्त्री. [फा.] १ मुखाकृति, चेहरा, शक्ल, आकृति ।

उ०—१ नांव बतास्यां, गांव बतास्यां । **सूरत** बतास्यां, म्हारै साजन की ।—लो. गी.

उ०—२ जठै कंवर मन मैं तौ आवात घणी चाही, चौडै नटवा की **सूरत** दरसाइ ।—पनां.

उ०—३ लोई ओढण नै साड़ौ लूमाळौ, फूटर लटकंतौ नाड़ौ फूंदाळौ । पावां पचडोरी पगरखियां पै'रै । **सूरत** सिंघण सी बन जगल बैरै ।—ऊ. का.

२ रूप, सौंदर्य ।

उ०—१ सिध दाखियौ झळाहळ **सूरत** । पौरस न्रपत तूझ भरपूरत । राजा ज तुं अवस ठहरावै, अबै समै विण हाथ न आवै ।—सू. प्र.

उ०—२ जेवर की न जरूरत **सूरत** मन मोहै । जयमात करनी ।
—मे. म.

३ दशा, हालत, स्थिति ।

उ०—नोसेरवां बुजरखी मैं हकीमां नूं पूछी जै मांटीपणै री **सूरत** कांई छै ।—नी. प्र.

४ चित्र, तस्वीर, फोटो ।

५ उपाय, तरकीब, तदबीर, युक्ति ।

उ०—बोल नवाब सरस द्रढ बंधै, सुत पितु हूंत महाछळ संधै । यूं रिम **सूरत** सूत प्रवंधै, नेम लियौ विधि जेम निमंधै ।—रा. रू.

६ रूपरेखा, डौल ।

७ इच्छा, विचार ।

उ०—१ सौ दक्षिण री **सूरत** धारी जै बीजापुर रै बादशाह री जाय नोकरी करस्यां ।—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—२ इतरै मैं चांपावत 'बलु' गोपाळदासोत अर भावसिंह जोधपुर छांडि सुरांणै जावण री **सूरत** कीवी ।
—अमरसिंह राठौड़ री बात

८ शोभा, छबि, आभा ।

९ चित्त वृत्ति, बुद्धि ।

१० देखो 'सुरत' (रू. भे.)

उ०—वीर महाबळ धीर उर, सूरम **सूरत** धार । आवी आदर ऊठियौ, भावी सीस विचार ।—रा. रू.

वि. [सं. सूरत] १ सहृदय, दयालु, कृपालु ।

२ कोमल, नाजुक ।

३ शान्त, स्थिर ।

४ अनुकूल ।

रू. भे.—सुरत, सुरता, सुरति, सुरत्त, सूरति, सूरती, सूरते ।

अल्पा;—सूरतड़ी ।

सूरतड़ी—देखो 'सूरत' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आंनत रह उण **सूरतड़ी** री, रही तन मन मैं छाय, मंत्री जंत्री सुकनी जोतसी, यांरै हाथ न उपाय ।—लो. गी.

सूरतन—देखो 'सूरातन' (रू. भे.)

उ०—१ तरस्सीया ग्रहंटाळ, जोध लियौं जीणसाळ। **सूरतन** चडी सोह, लिया खटत्रीस लोह ।—गु. रू. बं.

उ०—२ भूडंड वधै ब्रहमंड लग, धन्न पराक्रम **सूरतन** । पाडियौ जोध ग्रउट्ठमौं, दोढौ रावत कूंभक्रन ।—गु. रू. ब.

सूरता, सूरताई–सं. स्त्री. [सं. शूरता] १ शूरवीर होने की दशा, अवस्था या भाव ।

२ शौर्य, पराक्रम ।

उ०—१ सील संतोख **सूरता** सारा, तूटण लगा दिवस मैं तारा । —ऊ. का.

उ०—२ किनूं कायरी **सूरताई** दई है, जिनौ ग्रप्पनी ग्रप्पनी ई ही लई है ।—ला. रा.

रू. भे.—सूराति ।

सूरति, सूरती—देखो 'सूरत' (रू. भे.)

उ०—१ मैं परणंती परखियौ, **सूरति** पाक सनाह । धड़ि लड़िसी गुड़िसी गेयंद, नीठि पड़ेसी नाह ।—हा. भा.

उ०—२ मोह तणै वस ग्राज, **सूरती** चलती रही रे जाया। सीतल पवन घाल, माता बैठी थई ।—जयवांणी

सूरद–सं. पु. [सं. सुहृद] १ मित्र, सखा ।

२ वीर, बहादुर ।

उ०—गज समैप गाढा गरू, सिंह **सूरदां** छत्र । 'दुरगा' भोपांनै दई, कोळू तांबापत्र ।—पा. प्र.

सूरदांत–सं. पु.—वाराह का दांत जो मुंह से बाहर निकला हुग्रा रहता है ।

वि.—कुटिल, टेढ़ा । ❀ (डि. को.)

सूरदास–सं. पु.—१ अंधे व्यक्ति के लिये ग्रादरसूचक सम्बोधन ।

२ ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि जो ग्रष्टछाप कवियों में प्रमुख थे ।

सूरदेव—देखो 'सुरदेव' (रू. भे.)

सूरपंथ–सं. पु. [सं. सूर्य+पथ] ग्राकाश, नभ । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सूरपथ ।

सूरपकार–सं पु.—कामदेव, मदन । (ह. नां. मा.)

सूरपण, सूरपणौ–सं. पु.—शूरत्व, शौर्य, पराक्रम, पौरुष ।

उ०—१ सूरां खोटौ **सूरपण**, चूड़ा ग्रजब उतार । हूं बळिहारी कायरां, सदा सुहागण नार ।—वी. स.

उ०—२ सूरवीर रौ सुभाव चाहै जिण खौलिया मै होवौ **सूरपणौ** पलटै नहीं ।—वी. स. टी.

रू. भे.—सूरमण, सूरापण, सूरापणौ, सूरापौ ।

सूरपत, सूरपति–सं. पु.—राजा, नृप । (डि. नां. मा.)

सूरपथ—देखो 'सूरपंथ' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

सूरपनखा–सं. स्त्री. [सं शूर्पणखा] रावण की बहन का नाम जिसके नाक कान लक्ष्मण ने काट डाले थे ।

सूरप्रभ–सं. पु.— जैनियों के नौवें विहरमान स्वामी के नाम ।

सूरबीर—देखो 'सूरवीर' (रू. भे.)

सूरबीरतन–वि.—कठोर । ❀ (डि. को.)

सूरभि, सूरभी—देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

सूरभूमि–सं. स्त्री. [सं. शूरभूमि] १ उग्रसेन की एक कन्या का नाम । (भागवत)

२ जहां पर वीर ग्रधिक उत्पन्न होते हों, वीरभूमि ।

सूरभेई—देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

सूरमंडळ–स. पु. [सं. सूर्य+मण्डल] १ सूर्य का वृत्त, घेरा या परिधि ।

उ०—१ कांम पतसाह रै जरद झळहळ किग्गां, सेल सींदूरियौ सजै जगीस । पवंग सींदूर ग्रन चाळतां पटहथां 'सूरै' **सूरमंडळ** नांमियौ सीस ।—माली सांदू

उ०—२ रजपूती रा रीजवारां नै जीनै नळावरुयां, **सूरमंडळै** भीळरयां ।—पनां

२ सूर्य व उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रह, उपग्रहों का समूह ।

सूरमंडळभिद–वि. सूर्यमंडल को भेदकर जाने वाला, ग्रर्थात युद्ध में ग्रद्भुत शौर्य दिखलाकर वीरगति प्राप्त करने वाला वीर, योद्धा ।

सूरम—देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

उ०—वीर महाबळ धीर उर, **सूरम** सूरा धार । ग्रावी ग्रादर ऊठियौ, भावी सीस बिचार ।—रा. रू.

सूरमटौ (ठौ)–वि.—कायर, डरपोक ।

उ०—मनिगेच सुणी यम **सूरमटौं** । तिण भूपर नाळ दियौ ग्रवटौं ।—पा. प्र.

सूरमण—देखो 'सूरपण' (रू. भे.)

उ०—जगी मगाना जोत पाळ ग्राभास वडी पग । साथ सरब सिरदार, मैंहर मरजाद **सूरमण** । पा. प्र.

सूरमांनी–वि. [सं. शूरमानिन्] जिसे ग्रपनी शूरता का बहुत गर्व हो ।

सूरमा–सं. स्त्री.—राठौड़ों की १३ शाखाग्रों में से एक ।

सूरमाई–सं. स्त्री.—वीरता, बहादुरी ।

उ०—बारला गांवां मैं मुळांगा सिरदार वाजै, **सूरमाई** री वातां करै ग्रर ग्रापनै ग्रन्नदाता सूं ग्रड़ा'र वंसमैं बतावै है । —दगदौस

सूरमापण, सूरमापणौ–सं. पु.—१ वीरता या बहादुरी की ग्रवस्था या भाव ।

उ०—म्हारौ पती म्हारा बूढापणां पहलां मारीजगी दगी **सूरमापणौ** दीसै छै ।—वी. स. टी.

सूरमू—देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

सूरमौ–सं. पु.—१ शूरवीर, बहादुर, पराक्रमी, साहसी ।

उ०—१ त्यां हूंत ग्रती वाधू तरणि, ग्रगन कंत हित ग्रांगमै । साराह तेज दीठां सती, सीह वराह न **सूरमै** ।—रा. रू.

उ०—२ रांमायण भारथ्थ, विगत रण चारण वांचै । सांचै दिल **सूरमां**, खडग ग्रहि मूंछां खांचै ।—मे. म.

सूरयौ–सं. पु.—सप्तर्षि के अस्त स्थान से चलने वाला वायु जो श्रावण मास में वर्षासूचक माना जाता है।

उ०—१ बिरछां चढ किरकांट विराजै, स्याह सफेद लाल रंग साजै। विजनस वाव **सूरयौ** वाजै, घड़ी पलक मांहै मेहा गाजै।
—वर्षा विज्ञान

उ०—२ **सूरया** बीर बदली ल्याइ रे। झाला दै दै तोय बुलाऊं।
—लो. गी.

रू. भे.—सूरियौ, सूरयौ।

सूरलोक–सं. पु. [सं. सूर्यलोक] १ सूर्यलोक, सौरजगत।

२ वह कल्पित लोक जहां वीरगति प्राप्त योद्धागण पहुंचते हैं, सुरलोक।

उ०—चढ विमांण चलावियां, सकौ कमधज सिरदारै। **सूरलोक** सतलोक, जाइ 'अमरेस' जुहारै।—सू. प्र.

सूरवादी–सं. पु.—योद्धा, सुभट, वीर, बहादुर।

उ०—जोइ गात्र टोळी मळी नाग जादी, बढै सापनै सांमळौ **सूरवादी**। अभै जग्ग जेठी फरी नीर उंडै, काळी नाग सूं आविश्रौ 'कांन' कूंडै।—ना. द.

सूरवाळौ–सं. पु.—एक प्रकार का घास जो छप्पर छाने में उपयोग लिया जाता है।

सूरविद्या–सं. स्त्री.—युद्ध विद्या।

सूरवीर–वि. [सं. शूर+वीर] १ वीर, बहादुर, यौद्धा।

उ०—१ **सूरवीर** की रीत **सूरवीर** जांणै। एतौ अवसांण आयां हिम्मत प्रमांणै।—रा. रू.

उ०—२ **सूरवीर** अवसांण, न चूकै एक रे। हरिहांदास कहै हरिरांम, न छंडै टेक रे।—अनुभववांणी

उ०—३ आपणी आपणी वांणी राजवंसी राजावां कै रूपक सुणाए। **सूरवीर** सांमंत्त ताकूं अनंत सुहाए।—रा. रू.

२ ताकतवर, बलवान।

३ साहसी, हिम्मतवर।

४ पुरुषार्थी।

रू. भे.—सूरबीर।

सूरवीरता–सं. स्त्री.—वीरता, शूरत्व, बहादुरी।

सूरवौ—देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रिसणां आगै **सूरवौ**, हरिया भाजि न जाय। घाव सहै समसेर का, इणीयां मंडै आय।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया डरै न **सूरवौ** अधर अोट निरधार। कायर डरपै बापड़ौ, हरीया कै आधार।—अनुभववांणी

सूरसज्जा–सं. स्त्री. [सं. शूर+शय्या] वीरों की शय्या, रणक्षेत्र।

उ०—हड्डाधिराज हालू **सूरसज्जा** सोवण रै साधन संपादन करते बांणवै बरस रौ बय बांसै बाळियौ।—वं. भा.

सूरसरौ–सं. पु.—बहादुरों, वीरों की परम्परा, परिपाटी।

सूरसागर–सं. पु.—महाकवि सूरदास द्वारा रचित एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें अनेक राग-रागनियों में श्रीकृष्ण लीला वर्णित है।

सूरसांमंत–सं. पु.—१ युद्धमंत्री।

२ सेनानायक, सरदार।

सूरसाही–सं. पु.—बादशाह शेरशाह सूरी द्वारा चलाया गया सिक्का।

रू. भे.—सूरसाइ, सुरसाई।

सूरसुत–सं. पु. [सं. सूर्य+सुत] १ शनि।

२ यमराज। (ह. नां. मा.)

३ कर्ण।

४ सुग्रीव।

सूरसुता–सं. पु. [सं. सूर्य+सुता] १ यमुना।

२ विद्युत, बिजली।

सूरसेत–सं. पु.—सिंह, शेर। (अ. मा.)

सूरसेन–सं. पु.—१ श्रीकृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा।

२ मथुरा के आस-पास के भू भाग का नाम।

सूरसेनप–सं. पु. [सं. शूरसेनप] १ शूरवीरों की सेना का पालन करने वाला।

२ स्वामिकार्त्तिकेय।

सूरसेनपुर–सं. पु.—मथुरा नगरी।

सूरसेनी–सं. पु.—शौरसेनी भाषा।

उ०—तै अपभ्रंस तीसरै, मगध देसी चवथम्मै। सरस **सूरसेनी** पढूं थांनक पंचम्मै।—सू. प्र.

सूरस्वारथी–सं. पु.—वह घोड़ा जिसके चारों पैरों के बाल पीले केसर के समान हो एवं नेत्र काले हों। (शा. हो.)

सूरांगुर–सं. पु.—वीरों में श्रेष्ठ, वीर शिरोमणि।

सूरांण–सं. पु. (ब. व.) शूरवीर व बहादुर लोग।

उ०—चाडिया चाक जुध पहल चाय। **सूरांण** हूंत केवांण साय।
—वि. सं.

सूरांणौ–क्रि. वि.—शूरवीर, बहादुर।

उ०—धीरजौ लज मांणौ, अवसांण मैं सिध अणभंगो पौरस पराक्रमौ, **सूरांणै** सपत चिह्नांनि।—गु. रू. बं.

सूरांतण—देखो 'सूरातन' (रू. भे.)

उ०—लइता जग लहरि तुरंगै लागा, **सूरांतण** जोवतां सधीर। अग छावडइ जिसा लोचन मुख, तीखा जिसा खुतंगी तीर।
—महादेव पारबती री वेलि

सूरांयर–वि.—वीर बहादुर।

सूरा–सं. पु.—चौहान क्षत्रिय वंश की एक शाखा।

सूराई–सं. स्त्री.—१ वीरता, बहादुरी।

सं. पु. [सं. सुरराज] २ इन्द्र।

उ०—घट घट घरा नांमी, सांमी **सूराई**। अंतरजांमी हुय, ओळज न आई।—ऊ. का.

रू. भे.—सुराई।

सूराख–सं. पु. [फा.] १ छिद्र, छेद।

२ रास्ता, मार्ग।

रू. भे.—सुराक, सुराख।

सूराचंद–सं. पु.—मारवाड़ का एक प्रदेश जो सांचोर तहसील के अन्तर्गत आता है। (बां. दा. ख्यात)

सूरातन–सं. पु.—१ वीरता, शौर्य, पराक्रम।

उ०—१ हरीया मरिबौ सौ भलौ, **सूरातन** सुं होय। कायर भागा काळ का, जाकौ मुंह कुरा जोय।—अनुभववांणी

उ०—२ **सूरातन** सहजैं सदा, सांच सेल हथियार। साहिब केबल भूंभतां, केतै लियैं सु मार।—दादूवाणी

२ शौर्य, पराक्रम।

उ०—१ **सूरातन** सूरां चढ़ै, सत सतियां सम दोय। आडी धारां ऊतरै, गरौ अनळ नूं तोय।—बां. दा.

उ०—२ सूरातन जांही घणइ **सूरातन**, ईसर तणा बाधिया अंग।
—महादेव पारवती की वेलि

३ वीरत्व की अवस्था या भाव।

उ०—बिजड़ां भाट ऋमांट बाजतां, स्यांमध्रम **सूरातन** साहि। सत छांडै टेभा अवछंडिया, गिड़ भूरा मंडिया गज-गाहि।
—बैरीसालोत हाडां री गीत

रू. भे.—सुरातन, सूरतन, सूरांतरा।

सूरापरा, सूरापरा़ौ—देखो 'सूरपरा़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ **सूरापरा** मसळत बळ सधतौ। 'विलंद' 'निजांम' हूंत परिग वधतौ।—सू. प्र.

उ०—२ जुद्ध मैं त्रंबाळ नगारा ग्रह-ग्रहिया वाजियां थकां पड़ै कारण औ है जुध रा वाजा सुण सूरवीरां नै तौ **सरापणौ** छूटसी नै कायरां जुद्ध नगारा सुण धूजणी चढसी।—वी. स. टी.

सरापौ—देखो 'सूरपणौ' (रू. भे.)

सूरभिमुह–क्रि. वि. [सं. सूर्याभिमुख] सूर्य के सम्मुख, सूर्य के सामने।

सूरामंडळ—देखो 'सूरमंडळ' (रू. भे.)

उ०—मांहै सौ सांम ठांम न मायौ, गहमह पूर सपूर गनै। राजापुरौ बसायौ राजा, 'केहर' **सूरामंडळ** कनै।—अग्यात

सूरावत–वि.—वीर, बहादुर, पराक्रमी।

सूरि–सं. पु. [सं.] १ पंडित, विद्वान।

उ०—१ संकू रा बणाया रससिंधु, रसरत्न आदिक साहित्य रा प्रबंध **सूरि** जनां रा स्रवणां नूं पवित्र करै।—वं. भा.

उ०—२ सास्वत स्वरूप अवगन अनूंप, मुव गगन भूरि सब साक्षि **सूरि**।—ऊ. का.

२ सूर्य, रवि।

उ०—१ करी केडि तुरकांगा पूठि, ए जाणरगइ सूरि। पूठि मिल्या ताक्या तेजी, जई आथिमतइ **सूरि**।—कां. दे. प्र.

उ०—२ जागतउ देव तूं हाजर हजूरि, दुख दोहग अळगां करि दूरि। सदा जुहारूं उगंतइ **सूरि**, समयसुंदर कहइ करि तूं पडूरि।—स. कु.

३ जैन आचार्यों के नाम के पीछे उपाधिस्वरूप प्रयुक्त होने वाला शब्द।

रू. भे.—सूरिहिं, सूरी।

सूरिज—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

उ०—१ सरग हेम दिसि लीधी **सूरिज**। **सूरिज** ही ब्रिख आसरित।—वेलि

उ०—२ प्रति **सूरिज** कोटेक प्रकासं। आगम जगमग जोति उजासं।—सू. प्र.

सूरिजन–सं. पु. (ब. व.)—विद्वान लोग, विद्वज्जन।

उ०—**सूरिजन** सांभळजो कथा जो।—धरमपर

सूरिजमाळ—देखो 'सूरजमाळ' (रू. भे.)

सूरिजि—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

उ०—महि गिनै मेह पांणी पवन, सूरिजि ससि भांजै सरै। त्रैभुवण नाथ बिया तणी, धरणीधर मनखा धरै।—पी. ग्र.

सूरिजिजा—देखो 'सूरजा'। (ह. नां. मा.)

सूरिमौ—देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

उ०—१ गजराज चढै कमधज गरूर। **सूरिमां** मोड़ महाराज सूर।
—सू. प्र.

उ०—२ 'राजौ' भिडंत **सूरिमां** राह। 'जिगनाल' सीहक सिंधुराह।—सू. रू. वं.

सूरियोपवन—देखो 'सूरयौ।

सूरियौवायरौ—देखो 'सूरयौ' (रू. भे.)

उ०—खेत जागी ऊभांग आगोठी। **सूरियौवायरौ** पूंगी बजावै अर बाजरी लैरां लेवै।—रातवासौ

सूरिवौ–सं. स्त्री—१ शूरा।

२ देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

उ०—साध सती अर **सूरिवां**, सिष सेवग अर संत। आचारै वीर जिग जतंन, जोग जंत कै मंत।—सूरजनदास पूनियौ

सूरिस, सूरिसर, सूरिसरू, सूरिसरौ, सूरिस्वर—देखो 'सूरीस, सूरीसर'
(रू. भे.)

उ०—अरिहंत, सिद्ध **सूरिसरू** उवज्झाया सहुसाध। दसरा नांगा चरगा वली तम नवदद आराध।—स्रीपाळ रास

सूरी–सं. स्त्री.—१ आभूषणों में छेद करने का कीलनुमा उपकरण विशेष। (स्वर्णकार)

२ एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

वि. स्त्री.—१ वीर स्त्री, सती।

उ०—नरां न ठीणौ नारियां, ईखौ संगत एह। सूरां घर सूरी महळ, कायर कायर गेह।—वी. स.

२ देखो 'सूरि' (रू. भे.)

सूरीस, सूरीसर, सूरीसरु, सूरीसरू, सुरीसरौ, सूरीस्वर—सं. पु. [सं. सूरि=पंडित+ईश, ईश्वर] १ आचार्य (जैन)

उ०—१ गिरुयउ गच्छ खरतर तणउ ए, स्रीजिणचंद सूरीस प्रथम सिस्य स्रीपूज्य ना ए, सकलचंद सुजगीस।—स कु.

उ०—२ युगप्रधांन जिनचंद सूरीसर, सकलचंद तसु सिस्य जी समयसुंदर संतोख छत्तीसी, कीधी सध जगीस जी।—स. कु.

उ०—३ स्रीजिनकुसल सूरीगरु दादा, चिंता आरति चूरि। समयसुंदर कहइ माहरा दादा, मन वंछित फल पुरि।—स. कु.

उ०—४ गच्छराज स्रीजिनचंद्रसूरि, स्रीजिनसिंह सूरीसरौ गणि सकलचंद्र विनेय वाचक, समयसुंदर सुखकरौ।—स. कु.

उ०—५ स्रीजिनरतन सूरीसरू, जोग जांणी हौ, जसु दीधौ पाट। जसु जस जागै इण जगत मैं, गावइ गावइ हौ गीतां रा गहगाट।—ध. व. ग्रं.

उ०—६ गच्छ मोटौ खरतर गायौ, महावीर पाट चल आयौ रे। सूरीस्वर स्रीजिनरंग रे, तसु सासन स्रावक चंग रे।—प. च. चौ.

२ महापंडित।

रू. भे.—सूरिस, सूरिसर, सूरिसरू, सूरिसरौ, सूरिस्वर।

सूरू—१ देखो 'सरु' (रू. भे.)

२ देखो 'सूर' (रू. भे.)

उ०—फतूहकै फरसतै, सांम कांम मैं सधीर, सूरू कै सहायक। —र. रू.

सूरेह—देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

सूरौ—सं. पु.—१ छंदशास्त्र में ठगण का दूसरा भेद जिसका रूप यह है —ऽऽ। या ठगण की पांच मात्राओं के द्वितीय भेद का नाम।

२ देखो 'सूर' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीआदीसर भेटियउ, प्रह ऊगमतइ सूरौ जी। दुख दोहग दूरि दल्या, प्रगट्यउ पुण्य पडूरौ जी।—स. कु.

उ०—२ सूरा लड़ै धणी कै कारण, सती सांम कै हेत। हरीया भागां भुय घणी, मुख न सोभा देत।—अनुभववांणी

उ०—३ सूरौ मरणौ आसंगै, पूठा धरै न पाव। हरीया आगै सांम कै, चूक न जावै दाव।—अनुभववांणी

३ देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—हरसा बीर मेरा रै, बोजै बोजै मैं रे ना'री ना'र, जांमण का रै जाया, थूंरा रांभैड़ा रै सूरा सूरड़ी।—लो. गी.

सूरधज—सं. पु. [सं. सूर्यध्वज] कायस्थ जाति का भेद विशेष। (मा. म.)

वि.—जिसके रथ पर सूर्य के चित्र का ध्वज हो।

सूरचाभ—वि. [सं. सूर्याभ] जिसकी आभा सूर्य के समान हो।

उ०—'परदेसी' न्रप पापियौ, अविनीत नै अभिमांन। इण धरम तणौं प्रसदथी, लह्यौ सूरचाभ विमांन।—जयवांणी

सूरचावरत—सं. पु. [सं. सूर्यावर्त] एक प्रकार का सिर दर्द का भयंकर रोग जो सूर्योदय से पूर्व शुरू होता है और सूर्यास्त के बाद स्वयं मिट जाता है।

सूरचावली—सं पु.—एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—हार अरद्धहार प्रलंब प्रालंब नवसर कटक कंकण केयूर नूपुर करण्णकूंडल एकावली कनकावली रत्नावली वज्रावली पत्रावली चंद्रावली सूरचावली नक्षत्रावली स्रोणीसूत्र कांचीकलाप रसना किरीट चूडांमणि मुद्रानंतक......इति आभरणांनि।—व. स.

सूरचौ—देखो 'सूरयौ' (रू. भे.)

सूलंधरा सं. स्त्री.—शूल नामक शस्त्र को धारण करने वाली देवी, दुर्गा।

उ०—देवी वाहन नांम कै वप्पवाळी, देवी खग्ग सूलंधरा खप्पराळी —देवी

सूळ—सं. पु. [सं. शूल] १ बरछे के आकार का प्राचीनकाल का शस्त्र, बरछा, भाला।

उ०—कर सूळ विकटह सुभट कौचट। रांम थट झपट रौंझट। —सू. प्र.

२ त्रिशूल।

उ०—१ बंदन बिंदु ललाट विराजत। रूप अनूप तेज मय राजत। पांन सूळ बाहन वनपत्ती। स्रीकरनी जय जयति सकती।—मे. म.

उ०—२ बिजै तू सजै आहवां बाह बीसां, सजै तू हियै हार भूभार सीसां। तु ही हाथ लै सूळ सादूल हक्कै। त्रणां मात्र तू सुक्र रा छात्र तक्कै।—मे. म.

३ प्राण-दण्ड देने की प्राचीन काल की सूली।

४ बबूल आदि वृक्षों का लम्बा कांटा।

उ०—मासी कीं आगै ई कैवती ही कै उणरा पग मैं सूळ खुबगी। उठै ई हेटै बैठ सूळ बारै काढनै कह्यौ—इण घर री तौ सूळां ई म्हारा सूं खोड़ीलायां करै।—फुलवाड़ी

५ तीक्ष्ण या नुकीला कोई पदार्थ।

६ कांटा या नुकीली चीज के चुभने से होने वाला दर्द।

७ वात-विकार के कारण होने वाला तीव्र दर्द।

८ भय, डर।

उ०—डरै लोग वन डांडियां, सूतै ही सादूळ। जै सूता ही जागता, सबळां माथा सूळ।—बां. दा.

९ टीस, कसक, दर्द।

उ०—१ सांझ पड़ै दिन आथवै, छेला माळण लावै फूल कांई करूं ऐ माळण फूलनै हे म्हारी आलीजै बिना लागै सूळ। —लो. गी.

उ०—२ सूरज किरणां चाव मैं, फूटी कळी समूळ। लूआं दीसी

सांमनै लागी हिवड़ै सूळ ।—लू

१० मृत्यु, मौत ।

११ दुख, पाप ।

उ०—नमौ सिध संकर भंजरा सूळ । मुकुंद मुरारि महातत्व मूळ ।—ह. र.

वि.—नुकीला, तीक्ष्ण ।

सूल-सं. पु.—१ रक्षा, बचाव ।

२ हाल-चाल, रंग-ढंग ।

उ०—१ या जुग मांहि जीवरा, त्युं तरवर का फूल । जनहरिया इन जीव का, तन करि पहली सूल ।—अनुभववांणी

उ०—१ तद ऊ गयौ । उवै- नै आवतौ देख खाफरै री वहू रोवरा लाग गयी । ऊ परा देखरा-नै लाग गयौ । पूछियौ—कासूं सूल छै ।
—राजा भोज अर खापरै चोर री बात

उ०—२ अन भावै नहीं । मुहड़ै मिळकरणी रहै । खाली ओकारी रहै । तद वडाररा पूछरा लागी, कासुं सूल छै ?
—कुंवरसी सांखला री वारता

३ दशा, हालत, अवस्था ।

उ०—राव कटारी लागां पछै पोहरेक जीविया, तरै रजपूतै पूछियौ 'रावळौ तौ औ सूल छै, राव रै बेटौ न छै, टीका रौ किरानै हुकम छै ?—नैणसी

४ प्रबन्ध, व्यवस्था ।

५ संस्कार, सुधार ।

उ०— हंसराज तौ मूवौ पड़ीयौ । ताहरां बछराज विचारी, 'जु हमैं भाई रौ सूल करां ।—हंसराज बछराज री बात

६ उपाय, तरकीब, प्रयास, प्रयत्न ।

उ०—गैलकौ असूल सूल धूल मैं गयौ । मूळकौं गमाय मूळ फूल क्यौ रह्यौ ।—ऊ. का.

७ उद्देश्य, इरादा, मकसद ।

उ०—बुरहांन पिरा राहवेद्यी रजपूत थौ । इरां रौ सूल अटकळियौ ।—राव मालदेव री बात

८ काररा, वजह ।

उ०—१ हूं पूछूं उवां तौ बात बोलौ नहीं अर बीजा ही परा धूंसाला मारै सौ कासूं सूल छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ राठौड़ तेजसी पंवारां नुं नींबाज रै दावै भूंबियौ तद पंवार राव जगमाल चाट मूं किरा ही सूल छोडनै आंबेर कन्है खोह वसीयौ हुतौ ।—राव मालदेव री बात

९ तरह, भांति, प्रकार ।

उ०—तरै रबायनूं घरणौ सुख हुवौ । पछै घरणी अजीजी की—जु किरणही सूल देवराज नूं अठै आंणौ तिका वात करौ ।—नैणसी

१० आराम, चैन ।

उ०—एहिज व्रक्ष सुहांमणा सखी, घणा वली फल फूल । तौ हिव इरा हिज थांनकै राखी, वसिगै करनै सूल रे । —वि. कु.

११ विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों में से नौवां योग । (ज्योतिष)

१२ वस्तु, पदार्थ ।

उ०—आंरणी तिरा समै निपट बेखरच छै, सूल सामांन मांमूर कूं न छै । —नैणसी

वि.—१ कुशल, प्रवीण ।

२ ठीक, दुरुस्त ।

उ०—अर सांवळ साह नुं बोलावौ । औ बडौ अकलवत छै । उवै नुं आपां कांम सोंपसां । औ आपां री कांई बात सूल पाडसी ।
—बीजड़ बीजोगरा री बात

क्रि. वि.—१ दशा में, हालत में, स्थिति में ।

उ०—औ तौ मोनूं इरा हीज सूल घरै लै आवतौ हुतौ । मै उरा नूं कह्यौ, गांम किसौ ? ताहरां औ बोलियौ, गाम आपरणौ । तरै हूं बोली, मोनुं उतारौ, ज्युं कपड़ौ संवारूं ।
—कांवळी जोईयो नै तीजी मरवळ री बात

२ उपाय से, तरकीब से, ढंग से ।

उ०—तरै रावळ मन मांहै जांणियौ जु जरा तौ नेड़ो आई, सू ही मर जाईजसी, किरणीक सूल नांम रहै तिका बात कीजै । —नैणसी

३ देखो 'सूळ' (रू. भे.)

उ०—१ ताप सन्निपात जांगी अतीसार संग्रहणि, फीहौ बिध राज पांडु गोला सूल खैंग है । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ फीहै जी बिधि कहु बखांगि, गुलम रोग तिरा री बिधि जांरा । पेट सूल जो होई अगाध, सूल दंभ तै नासै व्याध ।
—ध. व. ग्रं.

सूळक—सं. पु. [सं. शूलक] १ दुष्ट और उद्दण्ड घोड़ा

२ बिदकने वाला या चमकने वाला घोड़ा ।

सूळगजकेसरीरस—सं. पु. यौ. [सं. शूलगजकेसरीरस] शूल का नाश करने वाली एक औषधि विशेष या इस औषधि की गुटिका ।

सूळग्रह—वि. [सं. शूलग्रह] शूल या त्रिशूलधारी ।

सं. पु.—शिव या महादेव का एक नामान्तर ।

सूळचित—सं. पु.—शृंगार में एक आसन ।

सूळभरणौ, सूळभबौ—देखो 'सुळभरणौ, सुळभबौ' (रू. भे.)

सूळभियोड़ौ—देखो 'सुळभियोड़ौ' (रू. भे.)

सूळटंकेस्वर—सं. पु. [सं. शूलटंकेश्वर] प्रयाग वट के पास शिव की एक मूर्ति ।

उ०—तिल भंडेस्वरी १, सूळटंकेस्वर २, प्रयाग राजेस्वर ३, ऐ तीन सिव प्रयाग वट कनै है ।—बां. दा. ख्यात

सूळदावानळरस—सं. पु. [सं. शूलदावानलरस] एक प्रकार की रसौषधि । (वैद्यक)

सूळधन्वौ—सं. पु. [सं. शूल+धन्वन्] शिव, महादेव ।

सूळधर—स. पु. [सं. शूल+धर] शिव, महादेव ।

सूळधरा–सं. स्त्री. [सं. शूलधरा] दुर्गा, पार्वती।

सूळधारणी, सूळधारा, सूळधारिणी–सं. स्त्री. [सं. शूलधारा, शूलधारिणी] दुर्गा, पार्वती।

उ०—भवांनी नमौ धारनी **सूलधारा**, भवांनी नमौ तेज संघात तारा।—मे. म.

सूळधारी–वि. [सं. शूलधारी] त्रिशूलधारी, शूल धारण करने वाला।

सं. पु.—१ शिव, महादेव।

सं. स्त्री.—२ देवी, दुर्गा।

सूळनासनीवटी, सूळनासिनीवटी–सं. स्त्री. यौ. [सं. शूलनाशिनीवटी] एक प्रकार की रसौषधि। (वैद्यक)

सूळनासी–सं. स्त्री. [सं. शूलनाशिन्] हींग।

सूळपांण, सूळपांणि, सूलपांणि, सूलपांणी–वि. [सं. शूलपाणिन्] जिसके हाथ में त्रिशूल रहता हो।

उ०—**सूलपांणि** संकर तिहां, जात्र मिळी जोऐसी। फालि देई हूं फणगटइ, वाहला ! वाडि पाडेसि।—मा. कां. प्र.

सं. पु.—१ शिव, महादेव। (अ. मा.)

२ दुर्गा, पार्वती।

सूलसांमांन–सं. पु.—साज-सामान, साधन-सामग्री।

सूळहती–सं. पु. [सं. शूल+हस्त] दुर्गा, पार्वती। (डिं. को.)

सूळहथ, सूळहथी–सं. पु. [स. शूल+हस्त] १ शिव, महादेव। (डिं. को; ना. डिं. को.)

स स्त्री.—२ दुर्गा, पार्वती।

वि.—शूलधारी, त्रिशूलधारी।

रू. भे.—सूळहस्त।

सूलहरी–सं. पु.—एक रंग विशेष का घोडा।

उ०—कासनी ताफता पंचकल्यांण। **सूलहरी** चंपा पट सिचांण।—सू. प्र.

सूळहस्त—देखो 'सूळहथ' (रू. भे.)

सूळांगारियौ, सूळागारी–स. पु.—'सूला' (एक प्रकार मांस) बनाने वाला।

उ०—तठा उपरायंत **सूळांगारियां** होसनाकां नै हुकम हुवै छै। जाजमां कनारै सूळा तयार करौ।—रा. सा. सं.

सूळाव्रक, सूळाव्रख—देखो 'साळाव्रख' (रू. भे.)

सूळि–क्रि. वि.— १ अच्छी तरह, भली प्रकार।

उ०—प्रजंक ओपतें अनोप रूप चूंप पार मैं। हुए विछात **सूळि** लूंब झूल फूल हार मैं।—रा. रू.

२ देखो 'सूळी' (रू. भे.)

सूळिक–सं. पु. [सं. शूलिक] १ खरगोश। (डिं. को.)

२ शिवजी का एक नामान्तर।

वि.—१ त्रिशूलधारी।

२ फांसी पर चढ़ाने वाला।

३ वात-विकार से पीड़ित।

सूळिणी–सं. स्त्री. [सं. शूलिणी] दुर्गा, पार्वती।

सूळियां, सूलिया–क्रि. वि.—१ ठीक तरह, अच्छी तरह से।

२ ढंग से, तरीके से।

वि.—३ स्वस्थ।

सं. पु.—१ आराम, चैन, सुख।

२ सुविधा।

सूळियौ–सं. पु.—भैंस, गाय आदि के बछड़े के मुंह पर बांधा जाने वाला कांटेदार उपकरण जिसके कारण जंगल में चरते समय अपनी मां का स्तन-पान न कर सके।

सूळी, सूली–सं. स्त्री. [सं. शूल] १ प्राचीन समय में प्राण दण्ड देने का एक उपकरण। यह लोहे का अत्यन्त नुकीला खड़ा दण्ड होता था। जिस पर कैदी को बैठाकर ऊपर से मुंगेरा मारा जाता था।

उ०—१ चलण कटाय चौरंगी, कोपि कुवा मां राल्यौ। साध सुदरसंण सेठ पकड़ि **सूळी** दिस चाल्यौ।—वील्हौजी

उ०— २ राजा मारण मांडीयउ, रांणी अभया दूखण दाख्यउ रे। **सूली** सिंहासन थयुं, मइ सेठ सुदरसण राख्यउ रे।—स. कु.

२ प्राचीनकाल का एक प्राण दण्ड, एक सजा विशेष।

उ०—१ **सूळी** देवै सहज देय दै फांसी देखौ। मिरघी लकवै मांहि, उभय अंतर अवरेखौ।—ऊ. का.

उ०—२ आंधा पीसै नै कुत्ता खावै। जबर रुळियार-रासौ मचियौ। राज छोडनै जावै उण सारू **सूळी** रौ आदेस। रया मांय री मांय सीझै।—फुलवाड़ी

३ कांटों के समान चुभने वाली कोई चीज।

४ यातनादायक अवस्था, दुख भरा जीवन।

५ दर्द, पीड़ा, वेदना।

६ देखो 'सूळौ' (रू. भे.)

उ०—सावडदी समोसा मांस **सूळी** भांति न्यारी। दारू पीय बैठा थाळ आवा री तयारी।—शि. वं.

[सं. शूलिन्] ७ शिव का एक नामान्तर। (नां. मा.)

वि.—१ कृश, दुर्बल।

ज्यूं—वौ तौ थाक'र **सूळी** होग्यौ।

२ सैद्धान्तिक, उसूल वाला।

उ०—विनां मखसूद उपाव हुवा जै लड़िजै छै त ई वात **बै-सूली**। विना लड़िया किराड़ छोडै नहीं।—अमीपाल साह री बात

रू. भे.—सूळि।

सूळूं, सूलूं—देखो 'सूळौ' (रू. भे.)

उ०—रोगांन मसालै सै **सूळूं** की सीक वणावै। अनेक भांति कै साग तिसका पार न पावै।—सू. प्र.

सूळौ, सूलौ–सं. पु. [सं. शूल:] (ब. व. सूळा) १ लकड़ी में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा जो लकड़ी में घुसकर उसका आटा बना

देता है तथा लकड़ी को खोखली कर देता है, घुन ।

२ शरीर में होने वाला घुन के समान कोई रोग जो शरीर को अन्दर अन्दर ही खोखला बना देता है ।

उ०—पण थारै लखणां मुजब थारौ रूप अर जोबन **सूळौ** लागनै रिब रिब खूटै तद जायनै गुमैज ठांणौ आवैला ।—फुलवाड़ी

३ लोहे की छड़ से घी या तेल के साथ आग पर सेका हुआ एक प्रकार का मांस विशेष ।

उ०—१ एकठ। बैठा । बैर नुं कहीयौ । उठि अलगी हूं । बैर उठि मुंहडै आगै आंणि **सूळां** री कांब मेल्ही । —चौबोली

उ०—२ भरमल प्यालौ भर, उठ, मुजरों कर कुंवरसी नुं दीयौ । मोछण नुं **सूळा** अवल उवैं मांह काढ दैण लागी ।

— कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ तांह खाजरूआं उधेड़िआं री कासू एक बखांण । वजाज रौ हाट बास्तेरा थांन रू री वरकी, पींजी अैरूगा गोटा, गुजराती कागलरा पाठ, इण भांति रा खाजरू नीसरिया छै । भीतर वाड़िआं हुसनाकां नू **सूळां** रौ हुकम हुऔ छै । तिके **सूळा** कीजै छै ।

—रा. सा. सं.

रू. भे.—**सूळी** ।

सूलौ, सूल्हौ–क्रि. वि.—१ सीधे हाथों ।

२ दाहिनी ओर ।

वि. (स्त्री. सूली) १ श्रेष्ठ, उत्तम ।

२ सीधा, शरीफ, सज्जन ।

उ०—पीहर पतलां रा सैणां रा प्यारा । तारक तूटां रा नैणांरा तारा । सीरी सिटियांरा **सूल्हारां** सारा, भीड़ी भूखां रा फूलां रा भारा ।—ऊ. का.

३ कुशल, प्रवीण ।

सूवउ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

उ०—ढोलइ **सूवउ** सीख दइ, जा पंछी ग्रह वास । उडियर पाछउ आवियउ, माळवणी-कइ पास ।—ढो. मा.

सूवड़–सं. पु.—पंवार वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

(बां. दा. ख्याता)

सूवड़ौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—इण भवि थी **सूवड़ौ** कोइ जो, राख्यौ रे तें तौ सहस्रत मैं भवें रे लौ ।—वि. कु.

सूवटियौ, सूवटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ थै धण होस्यौ वागां री कोयलड़ी । पनौ-मारू **सूवटियौ**, होय ज्यासी म्हा रा राज ।—लो. गी.

उ०—२ कहा गिनका वेद पढियौ, जातकी कुळ हीन । **सूवटा** कौ प्यार करंता, मुक्त मारग लीन ।—भगतमाळ

सूवणौ, सूवबौ–क्रि. स. [सं. शयनम्] १ नींद लेने के लिये सोना, शयन करना, नींद लेना ।

उ०—१ जियै ठौड़ **सूवता** तिका ठौड़ हेर आगा छां । हेरौ चौकस कर गया हूता **सूवण** री ठौड़ । — नैणसी

उ०—२ राजा नै नींद नीं आवती तौ उगारा सिपाही आग्या नगर मैं ई किणी नै **सूवण** कौ देता नी । —फुलवाड़ी

२ विश्राम करना, आराम करना, लेटना ।

उ०—बेटी बुढापै कढ़ियां भाग दी, नींतर म्है ई बाड़ा रा नींबड़ा हेटै ढळियोड़ा ढुकलिया माथै **सूवतौ** अर रांमजी री नांव लेवतौ ।

—फुलवाड़ी

३ रूठकर सोना ।

उ० राजकंवर रै वाल्हा दिया । मूंडा माथै हाथ फेरयौ । कह्यौ आ थारै **सूवण** री ठौड़ है कांई । म्हैं जकी बात निसंक बता ।

—फुलवाड़ी

सूवणहार, हारौ (हारी), सूवणियौ —वि० ।

सूवोड़ौ भू० का० कृ० ।

सूवीजणौ, सूवीजबौ—भाव वा० ।

सुअणौ, सुअबौ, सुइणौ, सुइबौ, सुवणौ, सुवबौ, सूंणौ, सूंबौ, सूअणौ, सूअबौ, सूणौ, सूबौ, सोणौ, सोबौ, सोवणौ, सोवबौ ।

—रू० भे० ।

सूवर–सं. पु. [सं. शूकर] वराह, सूअर, शूकर ।

उ०—१ भाखरा रा खुडा बेहड़ां मांहां **सूवर** नीचा उतरिया छै ।

—रा. सा. सं.

उ०—२ हींदू कै पण जांणि गऊ कौ, **सूवर** कौ तुरकांणं । दोउं मार भखै मुख मांसां, घटि बधि, कोण बखांणं । —अनुभववांणी

रू. भे.—सुअर, सुकर, सुवर, सूअर, सूकर, सूहर ।

अल्पा; —सुअरड़ौ, सुवरियौ, सूअरड़ौ, सूकरौ ।

सूवांणणौ, सूवांणबौ देखो 'सुवाणौ, सुवाबौ' (रू. भे.)

उ०—बातां करता करता क्यारू जगा दूगैह सू बारै आयगा । गूंगी री बेटी नै तप रै पाखती ई बिछावणा करनै **सूवांण** दी ।

—फुलवाड़ी

सूवांणियोड़ौ—देखो 'सुवांणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूवांणियोड़ी)

सूवाड़–सं. पु. [सं. सूतिका + वृत्ति] १ प्रसव, सौरी ।

२ देखो 'सुवावड़' (रू. भे.)

सूवाड़ी—देखो 'सुवाड़ी' (रू. भे.)

उ०—खोली खीलां री डेढां ढिग ढीली, पोली सेढां री लीलां विण पीली । खड़ती **सूवाड़ी** बाड़ी बिन खटकै मरती मोछड़िया पूंछड़ियां पटकै ।—ऊ. का.

सूवाभळकौ–सं. पु.—स्त्रियों के सिर का आभूषण विशेष ।

सूवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे.)

उ०—पूत कलित परवार में, सकल रहै उळझाय । **सूवारथ** का सबकौ सगा, अंति अकेला जाय ।—ह. पु. वां.

सूवारे—देखो 'सुवारां' (रू. भे.)

उ०—आज तौ आप डेरा करावौ, भोजन करावौ, **सूवारे** जबाव सारौ ही हुय जासी।—रीसाळू री बात

सूवौ–सं. पु. [सं. शुक] १ कीर, तोता, सुग्गा, शुक।

उ०—१ दादू यहु तन पिंजरा, मांही मन **सूवा**। एक नांम अल्लाह का, पढ हाफिज हूवा।—दादूबांणी

उ०—२ **सूवा** एक संदेसड़उ, बार सरेसी तुज्झ। प्रीतम वांसइ जाइ नइं, मुई सुणावै मुज्झ।—ढो. मा.

२ किसी के घर या परिवार में शिशु जन्म से होने वाला सात से सत्ताईस दिन (जैसा आवश्यक हो) प्रसूतिकाकाल।

उ०—१ मूठावै खंग मूठ, चालै भारत सांम हा। **सूवे** ज खाधी सूंठ, मात भलांई मोतिया।—रायसिंह सांदू

उ०—२ गायां नै गिरमास, ठिकांणौ चौड़ै ठायौ। **सूवै** सूतक सुधी, तळै छिंगास बिसायौ।—दसदेव

३ लोहे की बड़ी सूई जो बोरा आदि सीने के काम आती है, सूवा।

४ एक मारवाड़ी लोकगीत।

रू. भे.—सुइयौ, सुग्रौ, सुवौ, सुहटौ, सूग्रउ, सूग्रौ।

अल्पा;—सुवटियौ, सुवटौ, सूग्रटौ, सूड़उ, सूड़ौ, सूटौ, सूयटौ, सूवड़ौ, सूवटियौ, सूवटौ, सूहटौ।

सूस–सं. पु.—१ मगर की तरह का एक बड़ा जल जन्तु।

२ देखो 'सुस'।

३ देखो 'सिसु' (रू. भे.)

सूसतौ—देखो 'सुसतौ' (रू. भे.)

सूसमदूसम—देखो 'सुखमदुखम' (रू भे.)

उ०—**सूसमदूसम** त्रीजउ जांणि, बिहु कोडा कोडि हुई परिमांण। त्रीजइ भागइ सरीर दीसंति, एक पल्योपम आउ धरंति।—बस्तिग

सूसमसूसम—देखो 'सुखमसुख' (रू. भे.)

उ०—**सूसमसूसम** आरउ विचारि, कोडा कोडि सागर सुइ च्यारि। त्रिणि गाऊ मणि ऊचउं देह, त्रिहु पल्योपमि आउखा छेह।
—बस्तिग

सूसमार—देखो 'सिसमार' (रू. भे.)

सूसी–सं. स्त्री.—१ ऊंट के चारजामे के नीचे लगाई जाने वाली गद्दी।

२ एक प्रकार की धारीदार चारखानों की चादर।

सूसीम–सं. स्त्री.—शीत, सर्दी, ठंड।

सूसौ—देखो 'सुसौ' (रू. भे.)

उ०—हरिण **सूसा** नै बाकरा, सूर सांबर नै मोर। दयालराय कोई वाड़ै केई पिंजरै, दुखिया कर रया सोर।—जयवांणी

सूहड़—देखो 'सुभट' (रू. भे.)

सूहटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—कुच अनार आंबा अधर, देह सुरंगी फूल। मौ मन मधुकर **सूहटौ** रह्यौ ज जित तित डूल।—कुंवरसी सांखला री वारता

सूहणौ—१ देखो 'सोहणौ' (रू. भे.)

२ देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)

सूहर—१ देखो 'सूर' (रू. भे.)

२ देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—तरै पंवार कह्यौ 'ओ **सूहर** म्है दीठौ। उणरौ नांव थे मत ल्यौ।—नैणसी

सूहव–सं. स्त्री– सौभाग्यवती या सुहागन स्त्री, सधवा।

उ०—१ फिरियौ पछि वाउ ऊतर फरहरियौ। सहुए **सूहव** उर सरग।—वेली

उ०—२ **सूहव** अस्त्री मंगळ गावै छै। जै जै कार हुय रह्यौ छै।
—लाली मेवाड़ी री बात

उ०—३ वहु मोतीय तंदुल थाल भरे, नित **सूहव** नारी बधावत है।—ध. व. ग्रं.

सूहाकांन्हड़ा–सं. पु.—सब शुद्ध स्वरों का सम्पूर्ण जाति का एक राग।
(संगीत)

सूहाटोडी–सं. स्त्री—सब कोमल स्वरों की सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी। (संगीत)

सूहाबिलावल–सं. पु.—सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग। (संगीत)

सूहास्यांम–सं. पु.—सब शुद्ध स्वरों का सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग।

सूहौ–सं. पु.—स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष।

उ०—**सूहौ** कसूंभी ओढ डुपट्टौ, झुरमट खेलन जासी। झुरमुट खेल मिळै यदुनंदन, खोल मिळी मिळ छाती।—मीरां

सेंग—देखो 'सैंग' (रू. भे.)

उ०—१ बोदां रै आडा बहै, रोदा मिलनै **सेंग**। भूकोड़ा भंवता फिरै, लाडू खावै लैंग।—ऊ. का.

उ०—२ सरधा घटगी **सेंग**, बेग बिरधापण वळियौ। निकळण रौ रथ नहीं, कळण ऊंडी मैं कळियौ।—ऊ. का.

सेंगटी, सेंगटीघाट–सं. स्त्री. [देशज] तक्र में पकाया हुआ बाजरी का खीचड़ा या घाट।

सेंगत–वि. [सं. सम+दाति, सह+गति] १ जिसका वातावरण के साथ तारतम्य बैठ रहा हो, जो परिस्थिति के अनुकूल बन गया हो, किसी परिस्थिति या वातावरण विशेष का आदी।

उ०—खालड़ा री बास सूं तौ वौ खासौ **सेंगत** व्हैगा लागौ हौ पण दोनूं धणी-लुगायां रौ संप उणनै झरियौ कोनीं।—फुलवाड़ी

२ हमसफर, हमराही।

रू. भे.—सैंगत।

सेंगर–सं. पु. [देशज] १ राजपूतों का एक वंश।

२ इस वंश का राजपूत।

सेंचळ–सं. पु.—एक प्रकार का नमक।

उ०—**सेंचल** सैंधव जांण, आगर रौ परमांण। समुद्र-खार जांणियौ ए, कालौ लूण आंणियौ ए।—जयवांणी

सेंजणौ सं. पु.—एक प्रकार का वृक्ष जिसके लाल, नीले व सफेद तीन रंग के फूल होते हैं।

सेंजोड़ै—१ देखो 'सैजाड़ै' (रू. भे.)

उ०—म्हारौ कंणौ मांनौ अपां दोनूं **सेंजोड़ै** कांटा मैं भेळा ऊभनै सात वार जवार जोखनै कबूड़ा नै चुगावां, तौ थोड़ौ घणौ पाप धुपैला।—फुलवाड़ी

२ युग्म से।

सेंट—देखो 'सैंट' (रू. भे.)

सेंटर—सं. पु. [अं.] १ मध्यस्थल, मध्यबिन्दु।

२ केन्द्र, प्रधानस्थान।

सेंटौ—१ देखो 'सांठौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सैंठौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सेंटी)

सेंट्रल—वि. [अं.] केन्द्र का, केन्द्रीय।

सेंठाइ, सेंठाई—देखो 'सैंठाई' (रू. भे.)

उ०—पछै एकदा विहार करतां उजाड़ मैं त्रसा घणी लागी। गुरां नैं कहै मोनैं त्रसा घणी लागी गुरां कह्यौ—साधु रौ मारग है **सेंठाइ** राखौ।—भि. द्र.

सेंठौ—१ देखो 'सैंठौ' (रू. भे.)

उ०—१ अणछक डाढाळौ ढबियौ। जांणौ कोई उणरै चारूं पगां नै **सेंठा** भाल जरू कर दिया व्है।—फुलवाड़ी

उ०—२ ऐसा अहंकारी रे, हुआ पाप सूं भारी रे। नीचा जाय बैठा रे, परवस किया **सेंठा** रे।—जयवांणी

उ०—३ साधु सूत्र छकाय मैं, संसय समकित जाय। नि:संकपणै **सेंठो** हुवै, स्वरग मुक्ति सुख थाय।—जयवांणी

उ०—४ पींडियां अर जांघां थरहर कांपण लागती जणां या दांत भींच **सेंठी** रैवण री घणी ई चेस्टा करती।—फुलवाड़ी

उ०—५ अठै रा कळा-साहित भी भूगोल रै असर सूं कोरा कौ रै' सक्या नीं। खुदाई अर मीनाकारी री इमारतां नींबण, मडोर, जोधपुर, सीवांणा, जालोर, बीकानेर, जैसलमेर अर तनोट रा **सेंठा** दुरग चूणीजिया जिणां री भींतां तांई बीस बीस फिट चवड़ी है।—चितरांम

२ देखो 'सांठौ' (रू. भे.)

सेंण—देखो 'सैण' (रू. भे.)

सेंणप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

सेंताळीस, सेंतालीस—देखो 'सैंताळीस' (रू. भे.)

सेंताळीसौ, सेंतालीसौ—देखो 'सैंताळीसौ' (रू. भे.)

उ०—असल थांणा तौ अमीचंदजी रौ सौ **सेंतालीसै** मारवाड़ मैं विखौ पड़यौ जद दूजा ठांणां वाला तौ चौमासा मैं पगां २ विहार कर गया अनै अमीचंदजी तौ चौमासा मैं पींपाड़ सूं परचूसणां मैं भादवा विद १४ नैं रात रा बाजरी रा गाडा ऊपर वेगीनैं गया।—भि. द्र.

सेंताळौ, सेंतालौ—देखो 'सैंताळीसौ' (रू. भे.)

उ०—तेरै सैंतीसैं समै, जायौ सुभ दिन जयकार रे लाल। **सेंतालै** संयम लीयौ, सहु अथिर गिण्यौ संसार रे लाल।—ध. व. ग्रं.

सेंतीर, सेंहतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

उ०—आखा राज मैं वांरा **सेंतीर** निरै। मोटा मोटा धाड़ायतियां रा थरगा कांपै, पछै औ कुचमादी किण खेत री मूळी।—फुलवाड़ी

सेंतीस—देखो 'सैंतीस' (रू. भे.)

सेंतीसमौं, सेंतीसवौं—देखो 'सैंतीसमौ' (रू. भे.)

सेंतीसेक—देखो 'सैंतीसेक' (रू. भे.)

सेंतीसौ—देखो 'सैंतीसौ' (रू. भे.)

सेंद—१ देखो 'सैंद' (रू. भे.)

२ देखो 'सेंध' (रू. भे.)

सेंदरूप—देखो 'सैंदरूप' (रू. भे.)

उ०—एक प्रचंड गोरियावर नै **बीजौ** काळिंदर। जांणै **सेंदरूप** दो मोतां अड़थड़ै। काळ सूं काळ जूंझै।—फुलवाड़ी

सेंदी—सं. स्त्री.—१ खजूर का आसव।

वि. वि.—सर्दियों के मौसम में (मार्च तक) खजूर के ठीक मस्तक के पास छिद्र करके एक मिट्टी का पात्र बांध दिया जाता है। रात में उस पात्र में रस टपककर भर जाता है। यह एक स्वादिष्ट व मीठा पेय पदार्थ होता है।

सेंदेमूंडे—क्रि. वि.—जान-पहचान का होते हुऐ।

वि.—परिचित।

रू. भे.—सैंधा-मुहां।

सेंदेस, सेंदेह—देखो 'सैंदेह' (रू. भे.)

उ०—जग अनंत प्रवाड़ा करै जास। **सेंदेस** मात कैळास वास।—रांमदांन लाळस

सेंदौ, सेंदौ—१ देखो 'सैंदौ' (रू. भे.)

ज्यूं—**सेंदौ** आवै पांमणौ, हल्यौ आवै चोर।

२ देखो 'सेंधौ' (रू. भे.)

सेंध—सं. स्त्री. [सं. संधि] १ चोरी करने की दृष्टि से किसी मकान की दीवार में किया जाने वाला बड़ा छेद, सूराख।

२ बड़ा छेद, सुरंग, नकब।

३ देखो 'सैंद' (रू. भे.)

रू. भे.—संधि, सैंध।

सेंधव, सेंधवौ—देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

सेंधियौ—वि.—'सेंध' लगाने वाला, सुराख करने वाला।

सं. पु.—१ चोर।

२ देखो 'सैंदौ' (अल्पा; रू. भे.)

३ देखो 'सेंधौ' (अल्पा; रू. भे.)

संधौ–सं. पु. [सं. सैंधव] १ एक प्रकार का खनिज नमक।

उ०—बांमण मांग-तांग नै **सेंधा** लूण अर अजमा री फाकी लायौ। बांमणी घांटी हिलाय बोली—मौत रै मूंडै तौ इमरत ई बिरथा व्है, तद बापड़ी इण फाकी सूं कांई सांधौ लागैला।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—सीधौ, सूंधौ, सेंदौ, सैंधौ।

अल्पा;—सेंधियौ।

२ देखो 'सैंदौ' (रू. भे.)

उ०—कितरी एक दूर तौ लाखौ पाळौ गयौ, पछै आगै जातां एक बांमण कठैक **सेंधौ** थौ तिण कन्हां घोड़ी मंगाय नै चढनै खड़ीया।

—राव लाखै री बात

सेंन–सं. पु.—१ संकेत, इशारा।

उ०—तारै उमर जांणीयौ, ढोलौजी हिवै मांहरै सारू छै। पछै उमर आपरा सिरदारां नै **सेंन** करनै समझावण लागा।—ढो. मा.

२ शयन, विश्राम।

३ देखो 'सैण' (रू. भे.)

रू. भे.—सेंनी, सैंन।

सेंनप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

सेंनी—देखो 'सेंन' (रू. भे.)

उ०—**सेंनी** मैं समझावै सतगुरु, साध संगत बिन मुकति न सुपनै सतगुरु बोल सुणावै।—ऊ. का.

सेंभा–सं. पु.—घोड़ों का एक वात रोग।

सेंमुख—देखो 'सनमुख' (रू. भे.)

उ०—इण कलि **सेंमुख** नवि मिलइ रे, वलि पहुंचइ नहीं कागल मात रे। दूर थकी जै रंग इसी परि रे, राखिस ए पटोलै भांति रे।

—वि. कु.

सेंव–सं स्त्री.—१ एक प्रसिद्ध फल।

उ०—नवरंग, नारंगी, आंबा, अंगूर, अंजीर, जांमुन, जांमफळ, सीताफळ, केळा, दाड़म, **सेंव**, इरंडकाकड़ी, बिदांम............।

—फुलवाड़ी

२ उक्त फल का पेड़।

रू. भे.—सेब, सेव।

सेंवज–सं. स्त्री.—१ रबी की वह फसल जो बरसात के पानी से होती है, जिसमें सिंचाई की आवश्यकता नहीं रहती है।

उ०—परगनै मांहै इतरा गांवां **सेंवज** गेहूं हासलीक गांवां हुवै।

—नैणसी

२ वह जमीन या खेत जिसमें बिना सिंचाई के बरसात के पानी से फसल होती है।

उ०—कोस ६ रूपारास मैं। सदा वसी रहै। सींव घणी, खेत **सेंवज** भला चिणा हुवै।—नैणसी

रू. भे.—सेवज, सैवज।

सेंस—१ देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

उ०—सेठांणी वौ ई हमेसां वाळौ पड़ूत्तर दियौ कै लुगाई रा **सेंस** धरम व्है, मिनख समझणी चावै तौ नीं समझ सकै।—फुलवाड़ी

२ देखो 'सेस' (रू. भे.)

सेंसनाग—देखो 'सेसनाग' (रू. भे.)

सेंसपा–सं. पु.—सेना का एक वर्ग विशेष।

उ०—माहाराजा जसवंतसिंघ सात हजारी असवार तिण मै पांच हजार दोसपा **सेंसपा**, दोय हजार वावरदी २५८० आसांमी ५ कासमखांन बगेरै.......।—नैणसी

सेंहतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

से–वि. [सं. सह] सब, समस्त।

उ०—१ राजा 'गाजी' सारिखा, **से** वड्डा सिरदार। दखणी मार मनाविया, मार कहीजै सार।—गु. रू. ब.

उ०—२ **से** नर आवै थांनै ध्यावतां वारी जाऊ जांकी थै पूरौ आस आज अजमलजी रै छावौ कलम धोकस्यां।—लो. गी.

उ०—३ खळ धारा सिगळाई खूटा, तुं सां वाद कियौ **से** त्रुटा। करनळ मात निमौ किनियांणी, तूं जोराबर दइतां जांणी।

—पी. ग्रं.

सर्व.—१ वे, वह।

उ०—१ रांम नांम नहीं चेतीयौ, आलस करि करि अंग। हरीया **से** रीता रह्या, सूरां कूकर संग।—अनुभववांणी

उ०—२ ध्यायौ तोनै ध्यांन धरि, आराह्यौ जग ईस। त्यां पायौ बैंकुंठपुर, **से** जीता जगदीस।—पी. ग्रं.

उ०—३ सांई तू बड्डा धणी, तुझ न बड्डा कोय। तूं जिन्नां सिर हाथ दै, **से** जग बड्डा होय।—ह. र.

उ०—४ आंखड़िया डंबर हुई, नयण गमाया रोय। **से** साजण परदेस मइं, रह्या विडांणा होय।—ढो. मा.

२ जो।

उ०—जनहरीया सरवर सबै, ठांम ठांम भरपूर। जांह पायौ तां परम सुख, दुखी रह्या **से** दूर।—अनुभववांणी

विभक्ति—१ तृतीया और पंचमी की विभक्ति जो नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होती है—

१ द्वारा, मार्फत।

२ अपेक्षा में।

३ आरंभ से।

४ पर।

५ को।

२ करण और अपादानकारक का चिन्ह।

सं. पु.—१ शेष। (एका.)

२ शिखर ।　　　(एका.)
३ गिरि, पर्वत ।　　(„)
४ सरस, मीठा ।　　(„)
५ तरु, पेड़ ।　　(„)
६ तोता, कीर ।　　(„)
७ पक्षी ।　　(„)
८ बकरी ।　　(„)
९ नभ, आकाश ।　　(„)
१० पाताललोक ।　　(„)
११ देखो 'सेह' (रू. भे.)
१२ देखो 'सेही' (रू. भे.)
१३ देखो 'सह' (रू. भे.)

से'—१ देखो 'सेही' (रू. भे.)
उ०—लास, फोगल, धिटाळ ऊंटां, कातीसरौ हर मास रौ । से' सेलां, घुरी घरस्यांळां, आळां पंछआं आस रौ ।—दसदेव
२ देखो 'सेह' (रू. भे.)
३ देखो 'सेस' (९) (रू. भे.)
४ देखो 'सह' (४, ८, ९) (रू. भे.)

सेइया—देखो 'सय्या' (रू. भे.)
उ०—जितरौ मुंहगौ परोटियौ होवै इण हीज तरै सत्रुवां नै मार तंडळ कर रण **सेइया** सुवै तौ कवी कहै हे सुभड़ां थै तरवार उण वीर पुरस रौ नांम लै नै बांधौ सौ तांह री कठै ही हार न होवै ।
—वी. स. टी.

सेई-सर्व.—वे ही ।
उ०—१ तौ कुं जाचि और नहीं जाचुं, जाचिग होय अजांमका । **सेई** जांम अजांम न राता, माता दमड़ी चांमका ।
—अनुभववांणी
उ०—२ कहीयौ जु देखां अजैलग सत्रां रौ साथ सावतौ ऊभौ छै । वूठै उपरि वाह देण री इहै वेळा छै । **सेई** जीपसी जु हाथ वाहसी ।—वेलि टी.
सं. स्त्री.—१ अनाज मापने का एक पात्र विशेष जो प्रायः आधा मन अनाज का होता है ।
२ आधा मन अनाज ।
उ०—हाट १ महमूंदी वरस १ री लागै । जाणै परणियै महमूंदी २ लागै । देस सिगळै हळ १ **सेई** ।—नैणसी
२ अनाज की वह मात्रा जो उक्त पात्र में समा जाती हो ।
३ देखो 'सेही' (रू. भे.)

सेकंड-सं. स्त्री. [अं.] समय का वह भाग जो एक मिनट के साठवें भाग के बराबर होता है ।

सेक-सं. पु.—१ आंच, गर्म पानी या अंगारों द्वारा गर्मी या ताप पहुंचाने की क्रिया ।
२ भुनाई, सिकाई ।

सेकणौ, सेकबौ—क्रि. स.—१ पास में अग्नि जलाकर गर्मी पहुंचाना, गर्म पानी किसी पात्र में डाल कर उसके जरिये गर्मी पहुंचाना, ताप देना, तपाना, गर्म करना ।
उ०—आसा लूम्बी हूं न मृदग, गगन गंगाजी । माऊ **सेकइ** हूथड़ा भीणौ अंगारेह ।—ढो. मा.
२ आंच पर रखना, पकाना, भूनना ।
उ०—१ पछै मेजड़ी री सूखी किटकिळियां अर बगदी भेळी करियौ चकमक सूं बगदौ सिळगाय अणूंता कोड सूं पूंख **सेकिया** ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ जिणौ लाय जाळियौ, फजर मिळ जाय फकीरां । साह दहण **सेकियौ**, इसौ परखियां अमीरां ।—रा. रू.
३ दग्ध करना, जलाना ।
उ०—१ रह रह सुंदरि माठ करि, हळफळ जगी काइ । डांभ दिरावउ करहलउ, **सेकंता** मारि जाइ ।—ढो. मा.
उ०—२ जिन दिन झड़ता देखिया, पाणी दूगा आगमाप । बळसी आगै बेलड़यां, मतना सेकौ ताप ।—मू
सेकणहार, हारौ (हारी), सेकणियौ—वि० ।
सेकिओड़ौ, सेकियोड़ौ, सेक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सेकीजणौ, सेकीजबौ—कर्म वा० ।

सेकता—देखो 'सिकता' (रू. भे.)

सेकसन—सं. पु. [अं. सेक्शन] उपविभाग, अनुभाग ।

सेकाणौ, सेकाबौ—क्रि स. ['सेकणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ पास में अग्नि जलाकर गर्मी पहुंचवाना, गर्म पानी किसी पात्र में डलवाकर गर्मी पहुंचवाना, ताप दिलवाना, तपवाना, गर्म करवाना ।
२ आंच पर रखवाना, पकवाना, भुनवाना ।
३ दग्ध कराना, जलवाना ।
सेकाणहार, हारौ (हारी), सेकाणियौ—वि० ।
सेकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सेकाईजणौ, सेकाईजबौ—कर्म वा० ।
सेकावणौ, सेकावबौ—रू० भे० ।

सेकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पास में अग्नि जलवाकर गर्मी पहुंचवाया हुआ, किसी पात्र में गर्म पानी डालकर गर्मी पहुंचवाया हुआ, ताप दिखाया हुआ, तपवाया हुआ, गर्म करवाया हुआ. २ आंच पर रखवाया हुआ, पकवाया हुआ, भुनवाया हुआ. ३ दग्ध कराया हुआ, जलवाया हुआ ।
(स्त्री. सेकायोड़ी)

सेकावणौ, सेकावबौ—देखो 'सेकाणौ, सेकाबौ' (रू. भे.)
उ०—बावन चंदन बालि करि, सोविन-सगड़ि आंणि । ससिवयणी सज्जण-तणां, **सेकावइ** पय पांणि ।—मा. कां. प्र.
सेकावणहार, हारौ (हारी), सेकावणियौ—वि० ।
सेकाविओड़ौ, सेकावियोड़ौ, सेकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सेकावीजणौ, **सेकावीजबौ**—कर्म वा० ।

सेकावियोड़ौ—देखो 'सेकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सेकावियोड़ी)

सेकिम–स. पु. [सं सेकिम] १ मूली ।

२ सलजम ।

उ०—कै उद्धत संग्रहि कलाप । हुठि दंत निकारै, मुंडादंड खंड खेरि, ग्रहि रूप उतारै । **सेकिम** मालाकार सोभ, अतिजोर उपारै, आधोरु घुम्मैं अचेत, कपि ज्यौं द्रुमकारै ।—वं. भा.

सेकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ पास में अग्नि जला कर गर्मी पहुंचाया हुआ, किसी पात्र में गर्म पानी डालकर गर्मी पहुंचाया हुआ, ताप दिया हुआ, तपाया हुआ, गर्म किया हुआ. २ आंच पर रक्खा हुआ, पकाया हुआ, भुना हुआ. ३ दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ ।

(स्त्री. सेकियोड़ी)

सेकिळगर—देखो 'सिकळीगर' (रू. भे.)

सेक्रेटरी–सं. पु. [अं.] १ सचिव, अमात्य ।

२ मुन्शी, कारींदा ।

३ वर्त्तमान समय में किसी राज्य के सचिवालय या विभाग का प्रशासनिक अधिकारी, शासन-सचिव ।

सेक्रेटरियेट–सं पु.—सचिवालय ।

सेख–सं. पु. [अ. शैख] १ मुहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि ।

२ मुसलमानों का एक वर्ग ।

उ०—१ सोबा आद जोधपुर सोजत, च्यारूं तरफ रहे चक्राकित । **सेख** रहै भड़ मेछ सनाहै, नूरअली जैतारण मांहै ।—रा रू.

उ०—२ जादम भांण पठांण जुमल्लां । सैद रहीम **सेख** सादुल्लां ।
—सू. प्र.

३ उक्त वर्ग का मुसलमान ।

उ०—सत्रां दळ मूगळ सैयद **सेख**, वणै ग्रह बाज कबूतर वेख । सरां अप्रमांण पठांण संहारि, लिया कर सेल नरां ललकारि ।
—मे. म.

३ सरदार, अध्यक्ष, नायक ।

उ०—१ **सेख** सैंण आगै अरज, केरळनाथ करंत । आवण नहं दीजै अठै, गूजरवै बळवंत ।—बां. दा.

उ०—२ हरवळ पठांण तरियल हलाय, बदसाह तणा सद्दां बुलाय । सूरमा **सेख** अति बळ समंद, बाबरी बंगाळी तबल-वंध ।
—वि. सं.

४ मुसलमान धर्मोपदेशक, पीर, मुसलमान फकीर ।

उ०—१ जिंदा होय जिंद नहीं जांणी, उलटा नाद बिंद नहीं आंणी । फकर जलाली **सेख** कहायां, रांम रहीमां दूरि रहाया ।
—अनुभववांणी

उ०—२ सोइ जोगी सोइ जंगमा, सोइ सूफी सोइ **सेख** । सोइ संन्यासी सेवड़ा, दादू एक अलेख ।—दादूवांणी

उ०—३ जोगी जंगम सेवड़ै, बौद्ध संन्यासी **सेख** । खट्-दरसन दादू रांम बिन, सबै कपट कै भेख ।—दादूवांणी

५ बड़ा-बूढ़ा, वृद्ध, बुजुर्ग ।

६ कुल का नायक ।

७ प्रतिष्ठित या श्रेष्ठ व्यक्ति ।

८ नामर्द, शिखंडी ।

उ०—आगै कुखत्री एक, तौ जेहौ हूंतौ त्रिपट । सांप्रत कीनौ **सेख**, नाच नचायौ नागवी ।—पा. प्र.

सं. स्त्री.—९ आग की लपट, अग्निशिखा ।

१० देखो 'सेस' (रू. भे.)

उ०—१ हुई दौड़ हैमरां, नरां ऊथरां करारां । **सेख** ज्वाळ सल्लळी, कनां सिव चक्ख विकारां ।—रा. रू.

उ०—२ **सेख** सळळसला । नाग नव्वै कुळां । अव्वंता प्रज्जळा । टंक टळा टळा ।—गु. रू. बं.

उ०—३ सीय बांम अंग मुख अग्र **सेख** । बजरंग पाय सेवत विसेख ।—र. ज. प्र.

उ०—४ पूछै अन कवि छंद पढि, गिण जिण मत्त प्रमांण ' वटै स गुरु कह गुरु घटै, **सेख** रहै लघु जांण ।—र. ज. प्र.

उ०—५ यहां विवेक उहां मोहदळ, खेत बुहारचा देख । ऐ मारैं कै वै मारिलै, संचर रहै न **सेख** ।—ह. पु. वां.

सेखइकाल–सं. पु.—चातुर्मास के उपरान्त का काल ।

उ०—जे नव कल्पी नवि करै रे हां, उद्यत मुदित विहार । मास दिवस ऊपरि रहइ रे हां, **सेखइकाल** अपार ।—वि. कु.

२ शैशवकाल, बाल्यकाल ।

सेखचिल्ली–सं. पु.— १ झूठ-मूठ बड़े बड़े मंसूबे बांधने वाला व्यक्ति ।

२ एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके विषय में बहुत सी हंसाने वाली कहानियां प्रचलित हैं ।

रू. भे.—सेखसली ।

सेखनाग—देखो 'सेसनाग' (रू. भे.)

उ०—धड हडै सात पंयाळ धूजै, **सेखनाग** धडक्क ए । खित भार दाढ वाराह खड़कै, कोम कंध कड़क्क ए ।—गु. रू. बं.

सेखज्वाळ, सेखज्वाळा–सं. स्त्री. [सं. शेष+ज्वाला] शेषनाग के मुंह से निकलने वाला वह फुत्कार जो आग की लपट के समान होती है ।

उ०—जोधै 'किसन' तणौ 'रांजोधर' **सेखज्वाळ** सम आयौ समहर । 'जूझारोत' 'फतौ' तिण जांमळ, ज्यौं विध कोप पवन पेखै जळ ।
—रा. रू.

सेखर–सं. पु. [सं. शेखरः] १ शिखर, चोटी, शृंग ।

२ माथा, मस्तक, सिर ।

३ मुकुट, कीरीट ।

४ सिर पर धारण करने का आभूषण ।
५ सिर पर धारण की जाने वाली पुष्पमाला ।
६ श्रेष्ठतावाचक शब्द ।
७ संगीत में ध्रुव या स्थायी पद का एक भेद ।
[सं. शेखरं] ८ लौंग ।
९ आर्यागीति या खंधाण (स्कंधक) का एक भेद विशेष ।
(पि. प्र.)
१० ठगण की पांच मात्राओं के पांचवें भेद का नाम, ।।ऽ। ।
(डि. को; र. ज. प्र.)
११ छप्पय छन्द का ६६ वां भेद जिसमें ५ गुरू, १४२ लघु कुल १४७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं । (र. ज. प्र.)

सेखरापीड़योजन—सं. स्त्री.—स्त्रियों की चौसठ कलाओं के अन्तर्गत एक कला ।

सेखसद्दौ—सं. पु.—एक पीर जो मुसलमान स्त्रियों के उपास्य हैं और कभी-कभी भूत की तरह उनके सिर पर आते हैं ।

सेखसली— देखो 'सेखचिल्ली' (रू. भे.)
उ०—१ साफल्य स्वप्न संपति समान, पांनी मंथन मैं घ्रत प्रमांन । चांचल्य चित्त सिद्धांत चूक, सब **सेखसली** कै है सलूक ।—ऊ. का.
उ०—२ **सेखसली** सरखा हुवै, मावड़ियां रै मीत । पोपां बाई प्रगट व्है, नवी चलावै नीत ।—बां. दा.

सेखासाय, सेखसायी—सं. पु. [सं. शेष+शायी] १ श्रीकृष्ण । (अ. मा.)
२ विष्णु ।

सेखा—सं. पु.—१ दो भगण या छः गुरु का वर्णवृत विशेष ।
२ देखो 'सेखावत' ।

सेखाअवतार, सेखाअवतारी—सं. पु. [सं. शेषावतार] दसरथ सुत लक्ष्मण जो शेष का अवतार माने जाते हैं । (नां. मा.)
रू. भे.—सेखावतार ।

सेखाक्षर—सं. पु. [सं. शेषाक्षर] परब्रह्म, ईश्वर ।
उ०—नमांमी सरवेसा विलख लय **सेसाक्षर** नमौ । नमौ सरवग्यात्मा परम परमात्मा वर नमौ ।—ऊ. का.

सेखाटी, सेखावटी—सं. स्त्री.—जयपुर डिविजन के अन्तर्गत एक भू प्रदेश जहां पहले शेखावत क्षत्रियों का राज्य था । (शेखावाटी)
उ०—कागज नैं बांचतां ही भड़ेच ऊठि जाजै । **सेखाटी** देस मैं विचारि फौज ल्याजै ।—शि. वं.
रू. भे.—सेखावाटी ।

सेखावत—सं. पु.—कच्छवाहा क्षत्रियों की एक शाखा तथा इस शाखा का व्यक्ति ।
उ०—१ वरसिंघ आंबेर री गादी बैठौ जिणरा राजावत । नरसिंघ रा नरूका । वाला रौ मौकळ मौकळ रै सेखौ, सेखा रा **सेखावत** ।
—बां. दा. ख्यात
उ०—२ 'अभै' [illegible] **सेखावत** ।
—सू. प्र.
उ०—३ [illegible] सेखावत [illegible] । —रा. रू.
२ भाटी वंश की शाखा विशेष ।
उ०—अब [illegible] री [illegible] री औलाद **सेखावत** भाटी पुगळिया । —द. दा.
रू. भे.—[illegible] ।

सेखावतार— देखो 'सेखाअवतार' (रू. भे.)

सेखावत्त— देखो 'सेखावत' (रू. भे.)
उ०—[illegible] **सेखावत्त** [illegible] । —रा. रू.

सेखावाटी— देखो 'सेखाटी' (रू. भे.)

सेखी—सं. स्त्री. [फा. शेखी] १ अहंकार, घमंड, गर्व, [illegible] ।
उ०—१ [illegible] । [illegible] सेखी निकळी ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ नीं मिळी [illegible] भरम ही, म्हारा मन मैं । मिळियां नी जबरी **सेखी** निकळी । —फुलवाड़ी
२ अहंकार भरी बात, डींग ।
उ०—माता रुधिर पिता वीरज नौ जीवा, जीनौ प्रथम तूं आहार । भूल गयौ जनम्यां पछै जीवा, **सेखी** करै अपार । —[illegible]
३ झूठी आन-शौकत ।
४ तारीफ, बड़ाई ।
क्रि. प्र.—दिखाणी, निकळणी, बघारणी, मारणी ।

सेखीबाज—वि.—१ अहंकारी, घमंडी, अभिमानी ।
२ शेखी बघारने वाला, डींग मारने वाला ।

सेखू—सं. पु.—बादशाह ।
उ०—प्रगट [illegible] **सेखू** तणी उवर [illegible] । [illegible], 'करण' नै माळवौ फतै कीधौ ।—[illegible]

सेखौ—सं. पु.—पीली चोंच और सफेद रंग का एक प्रकार का मांसाहारी पक्षी विशेष ।
उ०—रज्ज भरया डाबर रगत, दमगळ [illegible] दाब । डुबकी नै उण डाबरां, **सेखां** ल्हां गुरगाब ।—रैवतसिंह भाटी

सेगार— देखो 'सागार' (रू. भे.)

सेड़ै—क्रि. वि.—१ एक तरफ, किनारे, एक ओर, परै ।
२ अलग, दूर ।
३ एकान्त में ।

सेड़ौ—सं. पु. [फा. सरहद] १ सीमा, हद ।
उ०—पण बापजी, चुगलखोरां रौ कांई **सेड़ौ** । पांवडै-पांवड

चुगलखोर भरचा । एक री इक्कीस मेळ राजाजी नै भिड़ावैला ।
—फुलवाड़ी

२ किनारा, छोर, सरहद ।

रू. भे.—सेडौ, सेढौ, सैंड़ौ, सैंहड़ौ ।

सेचरलूण–सं. पु. [सं. सौवर्चल+लवणं] एक प्रकार का नमक ।

सेज–सं. स्त्री. [सं. शय्या, प्रा. सज्जा] १ वह चारपाई या खाट जिस पर बिस्तर बिछा कर सोने योग्य बनाया गया हो, शय्या, पलंग, सेज । (अ. मा.)

उ०—१ एक बार तौ द्वारै आय कांन दै आहाट सुणै छै । वहुरि **सेज** छै, तठै पधारै छै ।—वेलि टी.

उ०—२ सूर बाहर चढै चारणां सुरहरी, इतै जस जितै गिरनार आबू । बिहंड खळ खींचियां तणा दळ बिभाड़ै, पोढियौ **सेज** रण भोम 'पाबू' ।—बां. दा.

उ०—३ रांमा अभिरांमा कांमातुर रोवै, हड़मल हुड़दंगी **सेजां** मैं सोवै ।—ऊ. का.

२ बिस्तर, बिछावन ।

उ०—चौकी रूप पिलंग चढाए, विमळ पुहुप घण **सेजां** बिछाए ।
—सू. प्र.

रू. भे.—सेजइ सेज्जा, सेज्या, सैज सैझ ।

अल्पा;—सेजड़ली, सेजड़ी, सेजरी, सेझरी ।

मह;—सेजड़ौ ।

३ देखो 'सहज' (रू. भे.)

उ०—च्यार ही वरण सुण जो चतुर, पात पुकारै पेज मैं । आ लाज सरम कुळरी अबै, साध गमावै **सेज** मैं ।—ऊ. का.

सेजइ—१ देखो 'सहज' (रू. भे.)

२ देखो 'सेज' (रू. भे.)

सेजखांनौ–सं. पु.—वह कक्ष जहाँ शय्या लगी हो, शयनकक्ष ।

रू. भे.—सेझखांनौ ।

सेजडली, सेजड़ी, सेजडी— देखो 'सेज' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ गिरधर आवणां हे, ऊदांबाई **सेजड़ली** संवार । आवण री बिरियां भई जी, अब महलां ढोल्यौ ढार ।—मीरां

उ०—२ चंदमुखी री चूंदड़ी, पिय पिचरंगी पाग । **सेजड़ली** नै सुण सखी, रह्यौ आज रंग लाग ।—अग्यात

उ०—३ सीहीअ समांणी **सेजडी** रे, चंदन जेहवी झाल । दावांनल जिम दीवडउ रे, कमल जिस्यां करवाल ।—हीराणंद सूरि

उ०—४ सूतां हूंता **सेजड़ी**, साथ न मूंकइ नाथ । सहस-गुणउ सुख ऊपजइ, जिम जिम भीडउं बाथ ।—मा. कां. प्र.

सेजड़ौ–सं. पु.—१ विश्राम स्थल ।

उ०—भूल कस्ट निज, करै भलाई, मरू दरोगी खेजड़ौ । हेरत करत हेजड़ौ पंछी, जिणरौ जूनौ **सेजड़ौ** ।—दसदेव

२ देखो 'सेज' (अल्पा; रू. भे.)

सेजपंथ, सेजपथ—देखो 'सहजपथ' (रू. भे.)

सेजपाळ–सं. पु. [सं. शय्या पालक] शयनागार का पहरेदार ।

सेजबंध -सं. पु. [सं. शय्या+बन्धन] शय्या का बन्धन ।

उ०—आगै जायनै देखै तौ ऊदौजी पोढिया छै । ताहरां मेळै जायनै हथियारां री बाधरचां वाढी । **सेजबंध** वाढिया । अस्त्री री चोटी वाढी ।—नैणसी

सेजबरदार–सं. पु.—शय्या बिछाने वाला कर्मचारी ।

उ०—आळै री कूंची मोहण **सेजबरदार** कन्है छै ।
—पलक दरियाव री बात

रू. भे.—सेजव्रदार ।

सेजरी—देखो 'सेज' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—बिसर गया मारूड़ा नैहड़ौ ल्याय, नैणां रा तीर चलाय । रसराज सांवरा सैंण **सेजरियां** मैं, नई नई रमक बताय ।
—रसीलैराज रौ गीत

सेजरीओवरी–सं. स्त्री.—महाराणा साहब के आराम करने के पलंग आदि तैयार करवाने का महकमा । (वी. वि.)

सेजलदेवी–सं. स्त्री.—एक देवी विशेष ।

उ०—परमार भंवरसेन राजा री बेटी **सेजळदेवी** हुती । सोजत मैं सेजळ रै नांमै सोजत सहर बसियौ हौ ।—बां. दा. ख्यात

सेजवट—देखो 'सेझवट' (रू. भे.)

सेजवाळौ, सेजवालौ–सं. पु.— १ पर्दानशीन स्त्रियों के बैठने की वह गाड़ी, रथ या बग्घी जिस पर बिस्तर लगाकर लकड़ियों के सहारे चारों ओर ऊपर से पर्दे से बंद कर दिया जाता है ।

उ०—१ आगै मारग मैं तळाव आयौ । ताहरां वडेरा ठाकुर हुता सु बोलिया—जु सिनांन करौ, सेवा-पूजा कर अमल करौ । **सेजवाळौ** एकै आंतरै छोडावौ ।—नैणसी

उ०—२ नेमिकुंवर वर नींद विराजै, यादव यांनी केसरीया । असीय सहस **सेजवाला** साथै मंगल मुख गावै गोरीयां ।—वि. कु.

उ०—३ ताहरां राव जेसौ फोज करि **सेजवाळा** जोड़ाइ नै फूल नुं लेनै हालीयौ ।—लाखा फूलांणी री वात

२ पालकी, डोली ।

३ पर्दानशीन स्त्रियों के रथ या गाड़ी पर वस्त्र डाल कर किया जाने वाला पर्दा ।

रू. भे.—सिजवाळौ, सेझवाळौ, सेझवालौ ।

सेजव्रदार—देखो 'सेजबरदार' (रू. भे.)

उ०—'बहादर' डूंगर **सेजव्रदार** । सत्रां रिण सेलां मूं वीहत सर ।
—सू. प्र.

सेजौं–सं. पु.—हृदय ।

उ०—दादू निरंतर पिव पाइया, तीन लोक भरपूर । सब **सेजौं** सांई बसै, लोक बतावैं दूर । —दादूवांणी

सेजौ–सं. पु. [सं. श्रोत] १ कूऐ का जल-स्रोत ।

उ०—जाट रजपूत बांणीया बसै, सेजौ नहीं, सेवज चिरणा हुवै ।
—नैणसी

२ स्रोत, उद्गम ।

३ भूमिगत जल-प्रवाह ।

रू. भे.—सेभौ, सैंभौ ।

सेज्जांतरदोख-स. पु. [सं. शय्यान्तरदोष] जिसकी आज्ञा लेकर मकान में उतरे, उसके घर का आहार लेने पर लगने वाला दोष । (जैन)

सेज्जा— देखो 'सेज' (रू. भे.)

उ०—देव सेज्जा सिंहासरण जांणौ रे, ज्योत ऊगां दह दिस भांणौ रे ।—जयवांणी

सेज्जासरण--सं. पु. [सं. शय्यासन] शय्या का आसन ।

सेज्जा, सेभ—१ देखो 'सेज' (रू. भे.)

उ०—१ हे सखी म्हारै विनां एकलौ हीज रण मैं सूतौ है पण सेभ री रीत नहीं छोडै छै ।—वी. स. टी.

उ०—२ विरह सौं फाटत हृदय मेरौ, दुख धनै री होहि । यह माह मास उलास धरि कैं, सेभ को सुख जोहि ।—वि. कु.

उ०—३ सांवरण की लूंबा आवै छै । भीजतां सांजै घरां नूं जावै छै । आपका रेहवास मैं आय पनां सेभ की त्यारी कराई । अगर चंनरण री ढोलणी कसाई ।—पनां

२ देखो 'सहज' (रू. भे.)

सेभ—१ देखो 'सेज' (रू. भे.)

उ०—भीतर सरस बिछाइतां, सेभां अधिक अनूप । नांनाविध सूं वरण रही, कवरण बखांणै रूप ।—गज-उद्धार

२ देखो 'सहज' (रू. भे.)

सेभखांनौ— देखो 'सेजखांनौ' (रू. भे.)

उ०—सेभखांना रा ढोली नुं-मोहोर १, बेस १ खबर देण आवै तिण नुं ऊल गुडुंब नुं मोहोर १ बेस १ ।—मारवाड़ री ख्यात

सेभड़ली, सेभड़ी—देखो 'सेज' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ मुख नीसांसां मूंकती, नयणै नीर प्रवाह । सूळी सिरखी सेभड़ी, तौ विण जांणै नाह ।— ढो. मा.

उ०—२ ब्रह्म विदेही वाल्या, नीयारौ नांहि । एक अखंड़ी रम रहचा, सुनि सेभड़ीयां मांहि ।—अनुभववांणी

सेभरण-सं. स्त्री.—तलाश, खोज, शोध ।

सेभरी—देखो 'सेज' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आसि पासि सब सखी सहेली, चाबत पांन तंबोली । सेभरीयां सुख रास विलासा, अमल कटोरां घोळी ।—अनुभववांणी

सेभवट-सं. स्त्री.—शय्या, बिस्तर, बिछावन ।

उ०—उणि भांति री गरम ठौड़ मांहै ऊंची सोड़ तलाई सेभवट तकिया घणूं ऊजळा गरकाब गदरा परांनै रू सूं भरिया थका घणां ऊजळी गरकाब बिछात कीजै छै ।—रा. सा. सं.

रू. भे.- सेजवट ।

सेभवाळौ, सेभवालौ देखो 'सेजवाळौ' (रू. भे.)

उ०- १ अठै पांणी ऊपर सोनगरौ री पिण सेभवाळौ आंण ऊभौ राखियौ छै । नैणसी

उ०—२ तिण हीज वेळा आपरा कड़ा, मोती, सिरपाव दीधा, नै अमल री गोटी एक, मिठाई री कारडियौ, दारू री बतक, पाना सूं भरनै पांनदांन दीधी और सेभवाळौ ओलाय आदमी च्यार साथै देनै बिदा कीयौ ।—जैतसी ऊदावत री वात

सेभौ देखो 'सेजौ' (रू. भे.)

उ०—१ जह तन मन का मूळ है, उपजै ओंकार । अनहद सेभा सब्द का, आतम करै विचार । —दादूवांणी

उ० २ दादू अनुभव काटै रोग की, अनहद उपजै आइ । सेभे का जळ निरमळा, पीवै रुचि ल्यौ लाइ । —दादूवांणी

उ०—३ सांवणू वला रेलां रा मेल । सेवज निपजा हुवै । ऊनाळी सिगळी सीव मैं सेभौ । पांणी हाथै ७ तथा ८ पणौ मीठौ ।
—नैणसी

उ० —४ ज्यूं जळ सेभै सिध का, वाका थाह न कोय । हरीया सिवरत सहज का, निसदिन घट मैं होय । —अनभववांणी

सेटौ--सं. पु. वह उत्तम नस्ल का सांड जिसे अच्छी नस्ल पैदा करने के लिये विशेष रूप से पाला पोषा गया हो ।

सेट्ठि—देखो 'स्रेस्ठी' (रू. भे.)

सेठ—सं. पु. [सं. श्रेष्ठिन्] (स्त्री. सेठाणी) १ प्रतिष्ठित एवं श्रेष्ठ व्यक्ति ।

२ धनी व्यक्ति ।

३ व्यापारी, महाजन, साहूकार, वणिक ।

उ०—१ सेठ हाथ जोड़ नै उरबांणी पगां दौड़या सांमी आया । ठाकरसा नै सेठ अगांता दुमना निगै आया ।—फुलवाड़ी

उ०—२ लियां दियां बिनां कैड़ाई मोटा सेठ रै सरै कोनीं ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ पण धनवंती सेठ साहूकारां रा तौ उण परवांना पछै हौमला इज गुम व्हैगा हा ।—फुलवाड़ी

४ वणिक या व्यापारी की उपाधि ।

५ दलाल ।

६ व्यापरियों की पंचायत का मुखिया ।

रू. भे.- सेट, सेठि ।

अल्पा;—सेठड़ौ, सेठियौ, सेठौ ।

सेठड़ौ—देखो 'सेठ' (अल्पा; रू. भे.)

सेठांणी-सं स्त्री.—१ किसी व्यापारी या वणिक की स्त्री ।

उ०—सूनीं ढांणी मैं सेठांणी सोती, रैंणी विणियांणी पांणी नै रोती ।— ऊ. का.

२ धनी औरत ।

सेठाई, सेठायी–सं. स्त्री.—१ धनाढ्यता, मालदारी ।
उ०—मिनख हंसता मुळकता राज ग्रर ठकराई छोड दी, **सेठायां** छोडावण खातर छापा पड़ण ढूका, सागड़ी धणियां सूं छूट गिया पण बापड़ै कसाई रौ भूंडीजणौ ग्रजै तांई नीं छूटौ ।—चितरांम
२ सेठ होने की ग्रवस्था, भाव या स्थिति ।
सेठि—देखो 'सेठ' (रू. भे.)
उ०—तिणि पुरि निवसइ **सेठि**, धनावह धरमी नइ धनवंत । पदमसिरि तसु घरणी भणीइ, सहजिइं ग्रति गुणवंत ।
—हीराणंद सूरि
सेठियौ—देखो 'सेठ' (ग्रल्पा; रू. भे.)
सेठौ—देखो 'सेठ' (ग्रल्पा; रू. भे.)
उ०—नर-नारी वांदण गया, ग्रायौ कारत्तिक **सेठौ** जी । जिनवर वंदना करी, बेठौ छै जिनवर भेटौ जी ।—जयवांणी
सेड–वि. [सं. शौण्ड]१ मदोन्मत्त, मस्त, नशे में चूर ।
२ निपुण, दक्ष ।
३ ग्रभिमानी, घमंडी ।
४ शराबी, मद्यप ।
५ देखो 'सेढ' (रू. भे.)
उ०—१ सवार सिञ्झ्या नांनी-मां रै जोड़ै बैठ दुवारी सीखतौ घणाकरी **सेडां** बारै ही ढोळ देतौ—फुलवाड़ी
सेडळ, सेडल–सं. स्त्री.—चेचक रोग की ग्रधिष्ठात्री देवी विशेष, शीतला-माता, शीतला-देवी ।
सेडळमाइ, सेडळमाता, सेडळमाय–स. स्त्री.—१ शीतला-माता ।
उ०—जै तळै बाळौ खेलतौ जी, खेलत चड गयी ताप । बला ल्यूं **सेडळमाता** ए ।—लो. गी.
२ उक्त माता के नाम से या उक्त माता के लिये गाया जाने वाला एक लोक-गीत ।
सेडाउ, सेडाऊ, सेडावू—देखो 'सेढावू' (रू. भे.)
उ०—१ घूंटी रै उपरांत पाछौ चेतौ बावड़ियां उणनैं ग्रेड़ौ लखायौ जांणौं उणरा छळी मन मैं **सेडाऊ** दूध घुळग्यौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ दांत जांणौं **सेडावू** दूध रा इज भाग । हंसणा मुळकणा रै समचै दूध भरतौ ।—फुलवाड़ी
सेडी–सं. स्त्री. [सं. चेटि, प्रा. चेड़ि] सखी, सहेली ।
सेडौ–सं. पु.—१ प्रायः जुकाम के कारण नाक से निकलने वाला एक गाढ़ा द्रव पदार्थ या मल जो श्लेष्मा मिश्रित होता है, रेंट ।
उ०—पड़ियौ **सेडौ** पेख, भवन भेड़ौ भणणावै । भींतां ही **सेडै** भरी, गरट माख्यां गणणावै । ग्रावै देख ऊबाक, थूक रा थेचा थाया । उतरचा सूत ग्रणूत, मूत रेला नह माया ।—ऊ. का.
२ देखो 'सेड़ौ' (रू. भे.)
रू. भे.—सेढौ ।
सेढ–सं. स्त्री.—१ चौपाया मादा जानवरों के स्थनों से निकलने वाली दूध की धारा ।
उ०—सांयंड फेरावै **सेढां** रै सारू । बेरै बैठांकर हेरै हथवारू ।
—ऊ. का
२ स्तन ।
उ०—खोळी खीलां री डेढां ढिग ढीली, पोली **सेढां** री लीलां बिण पीळी । खड़ती सुवाड़ी बाड़ी विन खटके, मरती मोछड़ियां पूंछड़िय पटकै ।—ऊ. का.
रू. भे.—सेड ।
सेढकढियोड़ौ, सेढकढियौ–वि.—तुरन्त का दूहा हुग्रा, धारोष्ण । (दूध)
सेढाउ, सेढाऊ, सेढावू–वि.—तुरन्त दूहा हुग्रा, ताजा निकाला हुग्रा धारोष्ण । (दूध)
सं. पु.—ताजा निकाला हुग्रा दूध जो फेनिल होता है ग्रौर ग्रत्यन्त पौष्टिक माना जाता है ।
रू. भे.—सेडाउ, सेडाऊ, सेडावू ।
सेढितव–सं. पु.—श्रेणितप । (जैन)
सेढी–सं. स्त्री.—सीढी, जीना । (ग्र. मा.)
सेढूगारी–सं. स्त्री. [सं. सेध+कारी] तंत्र-मंत्र या तांत्रिक विद्याग्रों से दूध, दूही या घी चुराने वाली स्त्री ।
सेढे, सेढै–क्रि. वि.—१ समीप, निकट, पास, नजदीक ।
उ०—१ इत्यादिक ग्रपसुकन तजी, गयौ सनमुख तास । सीमा **सेढै** ऊतरचौ, वीरसेन उल्लास ।—वि. कु.
उ०—२ धोधौ हेक भाई काठियां मांहै मोरबी रै **सेढें** गयौ, उण रै केड़ रा मोरबी हळोद्र विचै छै ।—नैणसी
२ पार्श्व में ।
सेढौ—१ देखो 'सेड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'सेडौ' (रू. भे.)
सेण–सं. स्त्री.—१ ग्रौजारों की धार को घिसकर तेज करने का पत्थर या कांच का टुकड़ा, सिल्ली ।
२ देखो 'सैण' (रू. भे.)
उ०—ज्यांरी जीभ न ऊपड़ै, **सेणां** मांही सेत । वांरा कर किम ऊपड़ै, खळां घिरचां बिच खेत ।—बां. दा.
३ देखो 'स्येन' (रू. भे.)
सेणतियौ–सं. पु.—१ वह कुग्रा जिसमें से सिंचाई के लिए रात-दिन पानी निकाला जाता रहा हो ।
२ उक्त प्रकार के कुऐ से निरन्तर पानी निकालने वाला व्यक्ति ।
सेणप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)
सेणावइ—देखो 'सेनापति' (रू. भे.) (जैन)
सेरि—१ देखो 'स्रेणि' (रू. भे.)
उ०—वजंत घाव जूसणौं, निहाव उट्ठवेणियं । संग्रांम पंड कैरवै कि, खंड बांण **सेणियं** ।—रा. रू.

२ देखो 'सैणी' (रू. भे.)

सेणियौ-सं. पु.—एक गुरु एक लघु इस क्रम से ११ वर्ण का एक वर्णिक वृत्त विशेष। (पिं. प्र.)

सेणी—१ देखो 'सैणी' (रू. भे.)

२ देखो 'स्रेणी' (रू. भे.)

सेणीयौ—देखो 'सेणियौ' (रू. भे.)

सेणौ-वि. [सं सज्ञान] (स्त्री. सेणी) १ समझदार, योग्य, व्यवहार-कुशल।

उ०—१ तरै नींबै इणनूं तेड़ नै यूं हीज पूछियौ। यूं हीज काळ कियौ। पछै वेगौ ही राव सूजौ जोधपुर सेणौ सौ ठाकुर हुवौ।
—राव जोधा रै बेटां री बात

उ०—२ सारी वातां नीकौ सांठै, रघुवर जस सहजग यम साधै। भाळौ रूड़ौ खोजै सेण, भव ससि निगम अहम रवि भाखै।
—र. ज. प्र.

२ सीधा-सादा, सरल, विनम्र।

उ०—होवै सुविनीत सेणा रे, धारै गुरु वेणा रे। जैसी ळळती छाया रे, राखै प्रीत सवाया रे। —जयवांणी

३ अनुभवी, दूरदर्शी, विवेकशील।

४ वयस्क, बालिग।

उ०—नगराज कांम आयौ। धरती छूटी। बेटा बालक हुंता। तवां माउ अरज करै उठै ढांणी दै रहै। उण हीज देस मांहै। कतराक दीहाड़ा गिए सेणा हुआ।—कल्यांणसिंह वाढेल री बात

५ चालाक, धूर्त, कपटी।

६ सज्जन, शरीफ।

७ बुद्धीमान, चतुर, दक्ष।

रू. भे.—सैंणौ, सैणौ।

सेणौ, सेबौ—१ देखो 'सेवणौ, सेवबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सहणौ, सहबौ' (रू. भे.)

सेतंबर—देखो 'स्वेतांबर' (रू. भे.)

उ०—ब्राह्मण सेतंबर वळै जोगी जंगम जांणि। दांन संन्यासी सोफिया, खट दरसण वाखांणि।—रा. सा. सं.

सेतंबरी—देखो 'स्वेतांबरी (रू. भे.)

सेतंबळ-सं. पु.—पानी, जल। (ना. डि. को.)

सेत-क्रि. वि.—प्रत्यक्ष।

उ०—दिग्रौ सेत वरदांन तू परमेसरि प्रसताव। राजांनांरी रस-कथा विधि कहि वात वणाव।—रा. सा. सं.

वि.—सहित, साथ।

सं. पु.—१ आकाश, नभ। (नां. डि. को.)

२ देखो 'सहद' (रू. भे.)

३ देखो 'सेतुबंध' (रू. भे.)

उ०—हेम सेत मझार न कौ हिव अत्थ न रावह। इत्थ चवत्थौ राव हुवत जंपियै सरोवह। —नैणसी

४ देखो 'सेतु' (रू. भे.)

उ०—वाराधिप सेतां बंधण री, कुळ रावण कुळ निकंदण री। दिल तूं 'किसना' जग वंदण री, नहचौ रख कामदळ नंदण री।
—र. ज. प्र.

५ देखो 'स्वेत' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां मा.)

उ०—१ मैली अंग अदतार मन, रुच जग लागी रहै न। तन काळी विसहर तणी, कंचुक सेत सहै न। —बां. दा.

उ०—२ क्षण राता क्षण पीअळा, क्षण नीला क्षण सेत। चोली चरणा पालटइ, इडउं पुछी हेत। —मा. कां. प्र.

उ०—३ तन घण घटा नराज, धरर धर गाज निराज घन। पंन दल बक पाज, वर्णी सोभाज सेत बन। —गु. प्र

उ०—४ नीरग भाग अमृत बिलसिया जाते, कांन न ऐसी कूजै अनहद कीही। नागण सेत नाग रंग वेगाणौ, नागणि नत आळसै नहीं। —लाखा रा पीरं री गीत

उ०—५ प्यारी तेरै रूप की, उपमा कही न जाय। कंवळ सेत तरुणा नयळ, नद सावळड कहाय। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—६ साजन ऐसा प्रीत कर, जिस घर बंदै हेत। चंदै बिन जिम सांवळी, जिम बिन चंदौ सेत। —अग्यात

उ०—७ जांगी जीभ न ऊपड़ै, सेणा मांही सेत। नांग कर किम ऊपड़ै, खळा विरचां विन सेत। —बा. दा

उ०—८ अनि आया असपति आवाहनि, भुअबै भूयंग हुआ दळ भंग। रहिसी रण मरीं धाम रांमी, सेत उरग कळोधर 'सांग'।
—गोरधन बोगसौ

उ०—९ नमो तत्त सेत मवै गुग सेस, नवै-कुळ-नाग पयाळ नरेस।
—ह. र.

उ०—१० उतंग नग भीत चीत, मड मंड मंदरं। काळी सगीत जांणि सेत, धार धम्मनागिरं।—गु. रू. बं.

रू. भे.—सैत, सैद।

सेतअस, सतअसव, सेतअस्व सं पु. [सं. श्वेताश्व] अर्जुन।
(अ मा; ह. नां. मा.)

सेतकरण-सं. पु. [सं. श्वेत+किरण] चन्द्रमा। (डि. को.)

सेतकुळी-सं. पु. [सं. श्वेत+कुलीन] सर्पों के आठ कुलों में 'सेत' कुल का सर्प जो सफेद होता है।

सेतखांनौ सं. पु. [फा. सेहतखान:] मल त्याग करने का स्थान, शौचालय, पाखाना।

उ०—१ सेतखांना रै मांय, कोई भगी कहै बतलाय। आवौ पग धरौ ए, मोसूं बातां करौ ऐ। —जयवांणी

उ०—२ घड़ी एक नूं जागिया वडारण लोटौ रखियौ आप ऊठ सेतखांनै गया।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—सहतखांनौ, सेतिखांनौ, सेथखांनौ, सेदखांनौ, सेहतखांनौ,

सैदखांनौ ।

सेततरंग–स. स्त्री. [सं. श्वेत+तरंग] गंगा नदी । (अ. मा.)

सेतदंती–सं. पु. [सं. श्वेत+दंतिन्] सफेद हाथी ।

सेतदुत–सं. पु. [सं. श्वेत+द्युति] चन्द्रमा । (डि. को.)

सेतधज–सं. पु. [सं. श्वेत+ध्वज] १ श्वेत ध्वजा ।

२ जिसके रथ पर श्वेत ध्वजा हो ।

सेतपिंग–सं. पु. [सं. श्वेत+पिङ्ग] शेर, सिंह । (अ. मा; ह. नां. मा.)

सेतबंद—देखो 'सेतुबंध' (रू. भे.)

सेतबंद-रांमेसर– देखो 'सेतुबंध-रांमेसर' (रू. भे.)

सेतबंध—देखो 'सेतुबंध' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ कुंकण कंनवज नइ कलहटौ, मरहठ नइ मुलतारी। स्यंघळ **सेतबंध** नौ राजा, तै सविनीया हकारी । —रुकमणी मंगळ

उ०—२ छाजां मेर स्रंग रूप बाजां सपतास छतौ, पाजां **सेतबंध** बाजां दुंदभी प्रमांण । साजां सूर राजां जेण सकाजां आजरां सिंघ आजां ओप चाढ रूप राजां चहुवांण । —राव बखतसिंघ चुवांण रौ गीत

सेतबंध-रांमेस, सेतबंध-रांमेसर, सेतबंध-रांमेस्वर—देखो 'सेतुबंध-रांमेसर' (रू. भे.)

उ०—१ कंकण दांमण सघण काछ पंचाळ निरंतर, **सेतबंध-रांमेस** लगौ नव दीपां सायर । झाड़खंड मेवाड़ खंड गुज्जर वैरागर । बागड़ महियड़ सहित खेड़ पावट पारक्कर ।—नैणसी

उ०—२ **सेतबंध रांमेस्वर** सुणीइ, वांनरि बांधी पाज । वरतइ आंण तिहां जण माहरा, इमूं अम्हारूं राज ।—कां दे. प्र.

सेतबळ–सं. पु.—जल, पानी । (ना. डि. को.)

सेतबाह–सं. पु. [सं. श्वेत+वाहन] १ अर्जुन । (डि. को.)

२ चन्द्रमा । (डि. को.)

रू. भे.—सेतवाह ।

सेतरंग–सं. पु. [सं. श्वेत+रंग] सफेद रंग, श्वेत रंग ।

उ०—दिखण ऊथाळ 'जसराज' जिसड़ा दुरस, प्रकासै लाल झंडा वरण पूर । राखतां दिखण सरणै सुजस **सेतरंग**, सरस वाधी भुजा अभनमा 'सूर' ।—महाराजा मांनसिंहजी रौ गीत

सेतरंगी–सं. स्त्री. [सं. श्वेतरंग+रा. प्रा. ई.] कीर्ति, यश । (डि. को.)

सेतरूंख–स. पु. [सं. श्वेत+वृक्ष] चन्दन का वृक्ष । (ह. नां. मा.)

सेतळ—१ देखो 'सैंतळ' (रू. भे.)

२ देखो 'सैतळ' (रू. भे.)

सेतलै–सं. पु.—श्वेत रंग का घोड़ा ।

उ०—१ प्राखिड़ियां पूछाड़िसै, पिंडता निहिं पिछांण । साहिब चढिसै **सेतलै**, हुइसै निगुरां हांणि ।—पी. ग्रं.

उ०—२ सत धरम तणै कजि आव बड़ा छत्त, ग्यांन रहौ गति-वाळौ ग्रांमि । गिर भाखर वाळा गोसांई, **सेतलै** चढि प्रिथिमी'रा सांमी ।—पी. ग्रं.

वि. वि.—ऐसा कहा जाता है कि कल्कि अवतार श्वेत घोड़े पर सवारी करेगा ।

रू. भे.—सेतिलौ ।

सेतवाजौ–सं. पु.—एक अद्भुत पदार्थ जो सिद्धि प्राप्त पुरुषों के पास मिलता है ।

सेतवाह—देखो 'सेतवाह' (रू. भे.)

सेतांबर—देखो 'स्वेतांबर' (रू. भे.)

सेतांबरी—स्वेतांबरी' (रू. भे.)

सेतिखांनौ—देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

उ०—रात घड़ी चार रही तरै जगदेवजी नै जगाया । **सेतिखांनै** गया । हाथ पग ऊजिळा करि, कुरळा करि दांतण कीनौं । —जगदेव पंवार री बात

सेतिलौ—देखो 'सेतलौ' (रू. भे.)

उ०—प्रवाड़ां तणौ लेखौ किसौ प्रमेसर, नरिंदि घोड़ै **सेतिलै** निभै नर ।—पी. ग्रं.

सेती–क्रि. वि—१ से ।

उ०—१ सिवदांन 'भीमाजळ' 'करनेस' आद । राह् खेती रखवाळै साह **सेती** वाद ।—रा. रू.

उ०—२ वीदौ गुहिलोत भारमल आसाइच त्यांह नूं कहियौ त्यूं करौ ज्यूं दळपतकुंवर **सेती** वेढ़ि हुवै ।—द. वि.

उ०—३ जनहरीया निसदिन भजौ, रसनां **सेती** रांम । नांव विनां नर निफल है, ज्यूं वसती विन गांम ।—अनुभववांणी

२ सहित, पूर्वक ।

उ०—१ इण भांति महीना च्यार तौ सुख **सेती** बिताइया । —ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ इण भांति घणी खरी करुणा **सेती** हाथ जोड़ नमस्कार कर आगा हालिया ।—पलक दरियाव री बात

उ०—३ इण भांति प्रेम **सेती** कागज लिखनै बडारण सूं कही जै इतर लगाय पछै खांम कर थैली रै मांही घाल और प्रोहित नूं दे देय ।—कुंवरसी सांखला री वारता

३ को ।

उ०—१ जै सतगुर **सेती** बंदीयै, धरीयै हरि कौ ध्यांन । हरीया जब तैं पाईयै, परापरी कौ ग्यांन ।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया मारग अगम की, मौ **सेती** गम नांहि । कहि कैसी विध पाईयै, चित गयौ ता मांहि ।—अनुभववांणी

उ०—४ चांवड **सेती** भैंसा चाड़ै, भलौ आपणौ चाहै । जुगमैं जीव दया विन देख्यां, सांईकै नहीं राहै ।—अनुभववांणी

४ लिये, वास्ते, प्रति ।

उ०—१ हरीया सोई सूंदरी, हरि **सेती** हितकार । ताहि वदूं नहीं

सूंदरी, मन बिंध्यौ संसार ।—अनुभववांणी

उ०—२ जांणि बूझि हरि कूं तजै, औरां सेती चित्त । हरीया जम दरगाह मैं, मार पड़ेसी नित्त ।—अनुभववांणी

५ द्वारा, मार्फत, जरिये ।

उ०—१ वैर वध्यौ हिज बुरौ, अधिक उपद्रौ व्है आगै । वध्यौ बुरौ वासदै, लाय जिण सेती लागै ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ प्रथम गरु सिव जांनि, नांव पारबती दीयौ । ता सेती नारद, नांव तन मतैं लीयौ । दै नारद उपदेस, नांव सिनकादिक जांन्यौ, गुर तैं जनक विदेह, पीव उर मांहि पिछांन्यौ ।

—अनुभववांणी

६ में ।

उ०—कर सेती माळा फिरै, मन विखीया कै मांहि । हरीया कूड़'र कपट मैं, पलै पड़ै कुछि नांहि ।—अनुभववांणी

७ संग, साथ, निकट ।

उ०—१ रहता सेती रचीयै, क्या वहतां सुं कांम । भाव जहां हंसि बोलीयै, बै भावत वेकांम ।—अनुभववांणी

उ०—२ ताहरा माया सेती जु मिल्यौ तै जीवात्मा (अर) माया थकी जु भिन रह्यौ तै परमात्मा ।—द. वि.

उ०—३ हरीया चलतां सुं चलै, थिर सेती थिर होय । काया बंधी करम सुं, छाया लिपै न कोय ।—अनुभववांणी

८ पर ।

उ०—हरीया अंदर ऊपजै, ऐसा निकसै वैंन । मिळीयां सेती मन कहै, यौ दुरजन यौ सैंन ।—अनुभववांणी

९ नीचे ।

उ०—रांम नांम नहीं चेतीयौ, करी विडांणी आस । जनहरीया घर गोरिवै, सरिक्यां सेती वास ।—अनुभववांणी

रू. भे.—सेथी ।

सेतीर, सेंतीर—देखो 'सहतीर' ।

सेतु—सं. पु. [सं.] १ किसी नदी, जलाशय, नहर या समुद्र के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पानी के ऊपर बनाया हुआ पुल, किसी प्रकार का रास्ता जिसके द्वारा एक किनारे से दूसरे किनारे आसानी से आया-जाया जा सके ।

२ पानी के बहाव को रोकने के लिये तथा पानी को एकत्र कर रखने के लिये बनाया हुआ बांध, रोक, रुकावट ।

३ घाटी, दर्रा ।

४ बंधन, प्रतिबंध ।

५ टीला ।

६ खेत की मेड़ ।

७ भू-सीमा, हद ।

८ सीमा, मर्यादा ।

९ किसी कार्य की कोई निर्धारित विधि, प्रणाली, नियम ।

१० ओंकार, प्रणव ।

रू. भे.—सेत, सेतू ।

सेतुक—सं. पु. [सं.] १ पुल, सेतु ।

२ बांध ।

३ घाटी, दर्रा ।

सेतुज—देखो 'सेतुज' (रू. भे.)

उ०—सेतुज वदिअ गीरवराउ, सुरगा सगाहग करउ पगाउ । वाग वांणि हउ समरउं देवि, सिद्ध गवि गमगा करउं संखेवि ।

—वस्तिग

सेतुबंध—सं. पु. [सं.] दक्षिणी भारत में रामेश्वरम् के आगे लंका की ओर समुद्र में बना पथरीला मार्ग या पुल जिसके लिये ऐसा माना जाता है कि लंका पर चढ़ाई के समय श्रीरामचन्द्रजी ने इस पुल का निर्माण नल-नील नामक वानरों से करवाया था ।

२ रामेश्वर, महादेव ।

उ०—सेतुबंध सिव नै सभा, परमेसरजी । ए भोळा भगवंत ईस्वरजी । आप हळाहळ पी गया परमेसरजी, औरां नै अमरत पाय, ईस्वरजी ।—मी. रां.

३ द्वादश शिवलिंग में से एक ।

४ ईश्वर, परमेश्वर । (नां. मा.)

५ पुल की बनावट ।

६ पुल बनाने की क्रिया या भाव ।

रू. भे.—सेत, सेतबंद, सेतबंध ।

सेतुबंध, सेतुबंधन—सं. पु. [सं.] पुल बनाने का कार्य ।

सेतुबंध-रांमेसर, सेतुबंध-रांमेस्वर—सं. पु. [सं. सेतुबंध + रामेश्वर] भारत की दक्षिणी सीमा पर स्थित वह स्थान जहां शिव का विशाल मन्दिर है । इस शिव मन्दिर की स्थापना श्रीरामचन्द्रजी ने लंका पर चढ़ाई करते समय की थी और इसके आगे समुद्र में पुल का निर्माण करवाया था । यह हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है ।

उ०—जगंनाथ गंगासागर है, साखी गुपाळ व्रजवासी । सेतुबंध-रांमेस्वर ईस्वर, मूळ बटी सुरजा सी ।—मीरां

रू. भे.—सेतबंद-रांमेसर, सेतबंध-रांमेसर, सेतबंध-रांमेसर, सेतबंध-रांमेस्वर ।

सेतूत—देखो 'सहतूत' (रू. भे.)

सेतौ—वि.—सहित, पूर्वक ।

उ०—१ खळां भांजतौ मांण कैवांण साहै खवां । सुहांणी आपरै मांण सेतौ ।—द. दा.

उ०—२ लखै सूळ सिंदूर रौ झोक लेतौ, अजयौ मात स्रीहाथ स्री नोक सेतौ ।—मे. म.

सेत्तुंजि, सेत्रंज—देखो 'सेत्रुंज' (रू. भे.)

उ०—प्रह ऊठी नै नित प्रणमीजइ, तीरथ **सेत्तुंजि** प्रमुख प्रधांन ।
—स. कु.

सेत्र—सं. पु. [सं. श्वेत, प्रा. सेग्र, ग्रप. सेत्त] १ श्वेत, सफेद ।

उ०—कडि मणि मेहल नूंपर, रूप रहावइं पाय । पहरणि **सेत्र** पटउलीय, कूलीय पांन न माइ ।—जयसेखरसूरि

२ देखो 'खेत' ।

३ देखो 'खेत्र' ।

सेत्रंज, सेत्रुंजय, सेत्रुंजि, सेत्रुंजौ—सं. पु. [सं. शत्रुंजय] जैनियों का एक प्रमुख तीर्थ स्थान, शत्रुंजय ।

उ०—१ राजा मन ग्राणंदीयौ रे, रांमति जीपैं एह । सुणि पंथी **सेत्रुंज** नी रे, रांमति जीपैं जेह ।—प. च. चौ.

उ०—२ इति स्त्री **सेत्रुंजय** स्तवनं संपूरणम् ।—वृ. स्त.

उ०—३ सी **सेत्रुंजि** गिरि सिखर समोसरचा, त्रेवीस तीरथंकर स्त्रीग्ररिहंत । ग्राठ करम नउं ग्रंत करी नइ, सीधा मुनिवर कोड़ि ग्रनत ।—स. कु.

उ०—४ **सेत्रुंजा** सिखरै मन लागौ, साहिबनी सूरति चित लागौ ।
—वि. कु.

उ०—५ तठा पछै कितरै हेक दिनै ऐ सोरठ नूं गया । **सेत्रूंजा** सूं कोस ४ सीहोर गांव छै, तठै जाय रह्या छै ।—नैणसी

रू. भे.—सेतुंज, सेत्तुंजि, सेत्रंज, सैत्रुंज, सैत्रुंजौ ।

सेथखांनौ—देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

सेथर—वि. [सं. स्थिर] १ स्थिर, ग्रचचल ।

२ दृढ़, मजबूत ।

सेथी—देखो 'सेती' (रू. भे.)

सेद—क्रि. वि.—ठीक निकट ।

उ०—वैसाख सुद ५ कांनी लाखण कोहर री **सेद** तळाई डेरा हुवा । भा: लालचद सींवांणा रौ साथ ग्रादमी ८०० नै ग्रायौ ।
—नैणसी

सं. पु.—तरह, प्रकार ।

उ०—जिकां री मूडहथ मोहनाळ, हाथ भर नस, वड़ रै पांन जिसा कांन, ताजणा **सेद** पूंछ, नाहरसा पंजा ।.........—रा. सा. सं.

सेदखांनौ—देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

उ०—स्रीमुख सिड़ै **सेदखांना** जिसौ, नाक भरै ज्यूं नारदौ । भव जांण नरक भोगै जकांनैं, लांनत दै ललकार दौ ।—ऊ. का.

सेदज—देखो 'स्वेदज' (रू. भे.)

सेदेव, से'देव' स'देव—देखो 'सहदेव' (रू. भे.)

उ०—देवी कुंति रै रूप तै करण कीधा, देवी सासत्रां रूप **सेदेव** सीधा ।—देवि

सेध—सं. पु.—१ काम, कार्य ।

उ०—भड़ां दुबाहां वंकड़ां, हुई सनाहां सत्थि । **सेध** निवाहां सूरमां, राहां वेध ग्ररत्थि ।—रा. रू.

२ सिद्धि ।

उ०—ग्राखै 'भींव' भडां ग्राहाड़ां, मोटी **सेध** खटी मेवाड़ां । मू जुध बंध कमंधां साथै, भिड़िया जोड़ भला भाराथै ।—रा. रू.

सेधणौ, सेधबौ—क्रि. स.—कार्य साधना, कार्य सिद्ध करना, उद्देश्य पूर्ति करना ।

उ०—करण निवेधी वेघड़ा, **सेधी** सांम छळांह । ग्रस तौरै सांम्हा किया, फौरै सेल फळांह ।—रा. रू.

सेधाळ—वि.—कार्य सिद्धि करने वाला, यशस्वी ।

उ०—बडौ देवोत मांगणगर हुवौ कवि राव, भाट लोगां नूं घणा दांन, मांन दीन्हा, बडौ ही **सेधाळ** राजसधारी सिद्धिवंत हुवौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

सेधियोड़ौ—भू. का. कृ.—कार्य सिद्धि किया हुग्रा, उद्देश्य पूर्ति किया हुग्रा ।

(स्त्री. सेधियोड़ी)

सेन—सं. पु. [सं.] १ नाई जाति का एक भक्त । (भक्तमाळ)

उ०—**सेना** काज भये हरि नाई, भगत ग्रापनौ जांनी ।
—ग्रनुभववांणी

उ०—२ '**सेन**' लागौ संत सेवा, भाव धर उर भूर । रूप धर कर **सेन** कौ हरि, करी दुविधा दूर ।—भगतमाळ

२ बंगाल का एक राजवंश जिसने ११ वीं से १५ वीं शताब्दी तक राज्य किया था ।

३ नाई जाति ।

४ प्राचीन भारतीय व्यक्तियों के नाम के पीछे लगने वाला एक शब्द ।

५ दिगम्बर जैन साधुग्रों का एक भेद ।

६ बंगाल की वैद्य जाति का खिताव ।

७ तन, शरीर ।

८ जीवन ।

९ शयन, बिछौना, शय्या ।

वि.—१ जिसका कोई प्रभु हो, सनाथ ।

२ ग्राश्रित, ग्रधीन ।

३ देखो 'सेना' (रू. भे.) (ग्र. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—पारस प्रासाद **सेन** संपेखै, जांणि मयंक कि जळहरी । मेरु पाखती नखित्र माळा, धूमाळा संकर धरी ।—वेलि

उ०—२ चढै **सेन** चतुरंग, सपत किरि साइर फट्टां । एक लाख ग्रसवार, ग्रावि मेवाड निहट्टां ।—गु. रू. बं.

उ०—३ साथ निहाव थयौ नीसांणौं, जग सांमंद्र मथांणौं । मुग्गळ तुंग चढै ससमाथां, **सेन** हडव्वड़ एकण साथां ।—रा. रू.

४ देखो 'सैन' (रू. भे.)

उ०—१ कंचन एक काच मैं देख्या, है दीपक देह मांई । सुरत

निरत की चढ्या पावड़ी, सतगुरु **सेन** बताई । **सेन** समझ कै साहब पाया, सौ साहब अपरमपारा, हरिरांम बेरागी बोलै, है सब मैं सबसूं न्यारा ।—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ साथियां नूं कोट मैं पड़ण **सेन** रौ करै छै ।

—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात

५ देखो 'सैण' (रू. भे.)

उ०—चैन कौ कुचैन मैं गमावनौं चह्यौ । **सेन** साथ नैन कौ गमावनौं रह्यौ ।—ऊ. का.

६ देखो 'स्येन' (रू. भे.)

सेनप—सं. पु. [सं. सेनापति] १ सेनापति । (डि. को.)

२ देखो 'सैणप' (रू. भे.)

सेनपत, सेनपति, सेनपती—देखो 'सेनापति' (रू. भे.)

उ०—बंभण वजीर राजा विरद, भारथ ओडवि उर्भे भुअ । सुरतांण खुरम दळ **सेनपति**, 'बीकम' खंड विहंड हुअ ।—गु. रू. बं.

सेनसुर—देखो 'सुरसेना' (रू. भे.)

सेनांण, सॅनांण—देखो 'सैनांण, सॅनांण' (रू. भे.)

उ०—१ नीचै मतीरा रै बीजां जिसी छोटी दो आंख्यां । आंख्यां तौ कांई, आंख्यां रा दौ **सेनांण** ।—फुलवाड़ी

उ०—२ निरभय नीसांणां मद **सेनांणां** । जन उमरेस जयंदा है ।

—ऊ. का.

२ देखो 'सैनांणी' (रू. भे.)

सेनांणी, सॅनांणी—१ देखो 'सैनांणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सैना'ण' (रू. भे.)

सेनांणू—देखो 'सैनांण' (रू. भे.)

उ०—वपु तौ स्यांन समांन बखांणू, सार सनांन जीव **सेनांणूं** ।

—ऊ. का.

सेनांनायक—देखो 'सेनानायक' (रू. भे.)

(अ. मा; डि. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

सेनांनी—देखो 'सेनानी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सेनांनीरथ—सं. पु. यौ. [सं. सेनानीरथ] १ मोर, मयूर । (अ. मा.)

२ सेनापति का रथ ।

सेना—सं. स्त्री. [सं.] १ युद्ध के लिये प्रशिक्षित तथा शस्त्रास्त्र से सज्जित मनुष्यों का दल, समूह, फौज, वाहिनी, कटक ।

(डि. को.)

उ०—**सेना** सितर हजार सूं विचित्र अमित्र बळवांन । कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वरखांन ।—रा. रू.

वि. वि.—प्राचीन समय में भारतीय युद्ध कला में इसके चार अंग माने जाते थे—पदाति, अश्व, गज (हाथी), रथ । वर्तमान समय में मुख्यतः तीन प्रकार की सेना होती है—स्थल सेना, जल सेना, वायु सेना । इनके कई उपविभाग भी होते हैं ।

२ सेना की अधिष्ठात्री देवी जो कार्तिकेय की पत्नी मानी जाती है ।

३ जैनियों की एक देवी विशेष ।

उ०— **सेना** मात [illegible] ।

ग. कु.

रू. भे.— सेन, सेन्या, सैना, सैन, सैनया, सेना, सैन्या ।

सेनाउलि—सं. स्त्री. [सं. सेना + अवलि] १ फौज की कतार, सेना की पंक्ति ।

२ सेना, फौज ।

सेनाद, सेनादार—सं. पु.— फौज का [illegible], सेनानायक, सेनापति ।

उ०— मिळ रजी [illegible] अपमाण, [illegible] बार [illegible] सुजांण । **सेनाद** [illegible] सूर कायर अकाज ।—शि. रू.

सेनाधपत, सेनाधपति, सेनाधिप, सेनाधिपत, सेनाधिपति—सं. पु. [सं. सेना + अधिपति] सेना का अधिपति, सेनापति ।

उ०—१ [illegible] 'पतो' [illegible] **सेनाधपत**, आगळ फौज अथाग । [illegible]

उ०—२ [illegible] **सेनाधिपत** हुवा ।

राव मालदेव री बात

उ०—३ [illegible] **सेनाधपति** सेन मांझ, भणै ।

गु. रू. बं.

सेनानायक—सं. पु. [सं.] सेना का अधिकारी, सेनापति ।

रू. भे.—सेनांनायक ।

सेनानी—सं. पु. [सं. सेनानी] १ स्वामिकार्तिकेय । (ह. नां. मा.)

२ सेनापति, सेनाध्यक्ष ।

उ०—१ सांमंत सूरा सुहड़ घणा, हय गय गिणत न पार । **सेनानी** साहसिक भट, मंत्रेस्वर सुविचार ।—म. कां. प्र.

उ०—२ धरटद्युमनु **सेनानी** कीउ, [illegible] सामह्यउ । पवित्र भूमि सरसति नइ [illegible], [illegible] कुरुक्षेत्र ।

—सालिभद्र सूरि

सेनानीरथ—सं. पु.—मोर, मयूर । (अ. मा.)

सेनापत, सेनापति, सेनापती—सं. पु. [सं. सेनापति] १ सेना का प्रधान अधिकारी, सेनाध्यक्ष, फौज का प्रमुख अफसर ।

उ०—१ **सेनापति** दूजौ सगह, तड़ै पह तिण वार । विक्रम भड़ां लीधौ 'बीजौ' आयौ मंत्री उदार ।—सू. प्र.

उ०—२ लहै अंगद दक्खणां, माग लीधा, दवादस **सेनापती**, लार, दीधा ।—सू. प्र.

२ सेना के किसी एक विभाग का अधिकारी ।

३ शिव ।

४ हिन्दी साहित्य का एक कवि ।

रू. भे.— सेणावइ, सेनपत, सेनपति, सेनपती, सैनपति, सैनपती ।

सेनापाल—सं. पु.—सेनापति, सेनानायक ।

सेनाबेध-सं. पु.—सुभट, वीर, योद्धा। (डिं. को.)

सेनामुख-सं पु.—सेना का अग्र भाग, हरावल।

सेनाय—देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

सेनायची—देखो 'सहनायची' (रू. भे.)

सेनावास-सं. पु.—सैन्य-शिविर, छावनी, सेना का पड़ाव।

सेनियौ-सं. पु.—सिपाही, सैनिक।

सेनी-सं पु.—सहदेव का एक नाम जो विराट के यहाँ अज्ञातवास करते सयय रक्खा गया था।

सेनेस-सं. पु. [सं. सेना+ईश] १ सेना का मालिक।

२ सेनापति।

सेन्या—देखो 'सेना' (रू. भे.)

उ०—१ भड़ मेलै दुरजणसल भाटी, असुरां **सेन्या** रहै उचाटी। —रा. रू.

उ०—२ हरनाथ 'भीमंग' रु भीम का अवतार, जवन की **सेन्या** कुरु वंस ज्यां लिगार।—रा. रू.

उ०—३ स्रीमाहादेवीजी री अग्या सुं कंकर सब संकर हुवा सु प्रीत रौ इक भाखर मै सारा लिंगाकार रा दरसण हुवा, तरै **सेन्या** सारी नै दरसण हुवा।—नैणसी

सेपटा-सं. पु.—चौहान राजपूत वश की एक शाखा।

उ०—चहुवांणां री चोईस साख लिखंतै—हाडौ १, खीची २ सोनगरौ ३, बाली ४, सोभादार ५, चोमालहण ६, गोरवाळ ७, भदोरिया ८, मीरवांण ९, वाकुर १०, चील ११, थेथा १२, दूंदळोत १३, **सेपटा** १४, गरावा·······—बां. दा. ख्यात

सेपटौ-सं. पु.—चौहानों की 'सेपटा' शाखा का व्यक्ति।

उ०—ताहरां मेलौ **सेपटौ** भाद्राजण रै कांठै रहै।—नैणसी

रू. भे.—सेभटी।

सेफ-सं स्त्री.—एक प्रकार की तलवार।

उ०—सू तरवारचां किण भांतरी छै? सीरोही री नीपनी, वेग्रां आंगळां बाढ झेरिया थकां जनैब मगरेब पुड़तकाळ **सेफ** विलायती मुजरी बिरांणपुरी हबसांनी फिरंगी।—रा. सा. सं.

सेब-सं. स्त्री.—१ शीत लहर।

उ०—मेघवाळां रौ वास, ऊंचावै माथै घर अर राज रै कोटवाळ री तिरवारी मैं दिवलौ चस `यौ है। उघाड़ बारणां सूं **सेब** आवै मारजा भेळा भेळा हुवै है।—दसदोख

२ देखो 'सेंव' (रू. भे.)

सेबक—देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—जुड़ै आय सव्वासण्यां रायजादी, दरस्सै कई **सेबकां** माय दादी।—मे. म.

सेबळौ-सं. पु.—रास्ते का खर्च, संबल।

उ०—बरस दीहां कौ **सेबळौ**, घी घणौ खाज्यौ पगाहपरांण। —बी. दे.

सेबू—देखो 'सेंव' (रू. भे.)

उ०—बेदांनै दाखां बेदांनै अनार। चिलकौचै बेह और **सेबूं** का विस्तार। कपूर-गरभ केळी का जूथ केळूं की झूंब।—सू. प्र.

सेभटउ—देखो 'सेपटौ' (रू. भे.)

उ०—जइत देवडउ लखण **सेभटउ**, लूणकरण बोलाव्या। साल्हु सोभतु बळवंत राउत, लसकर भणी चलाव्या।—कां. दे. प्र.

सेमंती-सं. पु. [सं.] सफेद गुलाब।

सेमळ, सेमल-सं. पु.—एक बहुत बड़ा वृक्ष जिसके लाल-लाल फूल लगते हैं और फल में केवल रूई होती है, गूदा नहीं होता।

उ०—दादू जतन जतन कर राखियै, द्रढ गह आतमा मूळ। दूजा द्रस्टि न देखियै, सबही **सेमल** फूल।—दादूबांणी

२ उक्त पेड़ का फल जिसमें केवल रूई होती है गूदा नहीं। इसमें चोंच मारने वाले पक्षी का परिश्रम व्यर्थ जाता है क्योंकि उसके हाथ कुछ नहीं लगता।

उ०—जब लग प्रांण पिंड है नीका, तब लग ताहि जनि भूलै। यहु संसार **सेमल** कै सुख ज्यौं, तापर तूं जनि फूलै।—दादूबांणी

रू. भे.—सैंबळ, सैमळ, सैमल।

सेमांन—देखो 'सांमांन' (रू. भे.)

उ०—और गढ मैं चोकेळाव मैं वेरौ भाखर मैं सुरंगां सुं खोदाय करायौ नै ऊपर अरठ मंडायौ नै दोय कोठार वाग मैं **सेमांन** रा कराया·······।—मारवाड़ की ख्यात

सेमुंडे, सेमुंडै—देखो 'सेमूंडै' (रू. भे.)

सेमुंदौ—देखो 'सेमूंदौ' (रू. भे.)

उ०—इण परिग्रह रै कारणै ए, वाढी डोढी खाय कै। कोइक इसडौ मिलिए, **सेमुंदा** ही गिल जाय कै।—जयवांणी

सेमूंडे, सेमूंडै-क्रि. वि.—१ प्रत्यक्ष, सामने, मुंह के आगे।

२ रज्जु, रूबरू।

३ आमने-सामने।

४ मौजूदगी में, उपस्थित रहते हुऐ।

रू. भे.—सेमुंडे, सेमुंडै।

सेमूंदौ-वि. [सं. समुदित] (स्त्री. सेमूंदी) समस्त, सम्पूर्ण, समूचा, सबका, सब।

उ०—हाल नीं तौ म्हैं मरियौ अर नीं म्हारी कारीगरी मरी। पूतळी नै **सेमूंदी** गाळ ऐड़ी पाछी बणावूं कै जांणै फूकोजी परतख मूंडै बोलण लागा।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सेमुंदौ, सैमुदौ, सैमूंदौ, सैमूदौ।

सेमूळौ-वि. [सं. समूल] (स्त्री. सेमूळी) १ मूल या जड़ सहित।

२ सम्पूर्ण, सब, समस्त।

सेयं, सेय—देखो 'स्रेय' (रू. भे.)

उ०—१ छौरू छत्रपतिवां तणा, दोळा **सेय** दुबाह। अप सगाह दीठौ 'अजै', साह तणौ दरगाह।—रा. रू.

उ०—२ जं सेयं तं समायरे ।—जैन

सेयर—सं. पु. [अं. शेयर] हिस्सा, भाग, अंश ।

सेयर-होल्डर—सं. पु. [अं.] हिस्सेदार, भागीदार ।

सेयली—देखो 'सेही' (अल्पा; रू. भे.) (डिं को.)

सेयव्रख—सं. पु.—धर्म । (अ. मा.)

सेर—स पु. [सं. सेरः] १ सोलह छटाँक या अस्सी तोले का एक मान या तौल ।

उ०—क्रपरा संतोख करै नहीं, सौ मरा जांणै सेर । कर टांकी लै काटहीं, सुपना मांहि सुमेर ।—बां. दा.

२ उपर्युक्त मान का तौल, बाट या पात्र ।

उ०—कीरै सारै—माया तेरा तीन नांव, फरसियौ, फरसौ अर फरसरांम । लारला दिन भूलग्यौ । सेर री हांडी मैं सवासेर ऊरीजग्यौ । फाटरा लागग्यौ ।—दसदोख

३ किसी वस्तु की उक्त मान के बराबर की मात्रा ।

उ०—१ उहां तौ विचार कांम कीयौ छै, जौ आंधी बेटी नुं सेर धांन ऊ देसी । सौ म्हारै सिर माथै । आ किसी बात छै ! चालौ, डेरै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ जद साधां उपदेस दियौ सेर धांन खारगौ पड़ै तिरग रै अरथै इसा पाप करै । जद कसाइ बोल्यौ—मोनैं तौ भगवांन कसाइ रै घरै मेल्यौ है सौ मोनैं दोख नहीं ।—भि. द्र.

[फा. शे'र] (स्त्री. सेरणी, सेरनी) ४ सिंघ, शेर, व्याघ्र ।

उ०—१ दगै तोफां वहै गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जौ लार सकै सूता सेर नै जगाय । भूरजाळ वांकडौ बीटीयौ दूजां गढां भौळी, लोहां जाळ धसै केहौ नसैंणी लगाय ।—बां. दा.

उ०—२ दुहाड़त सेर हल्यारण धीठ, देख्यां कर चक्र चल्या अणदीठ ।—मे. म.

उ०—३ सिरी घटियाळ अरोहित सेर । सख्यां मुक्ताहळ माळ सुमेर ।—मे. म.

५ उर्दू या फारसी कविता के दो चरण या दो चरण का कोई छन्द ।

वि.—वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा ।

उ०—गोपाळदास गरूअत मेर, पर घड विभाड पक्खरह सेर । 'सुंदर' सुतन सात्रवां सल्ल, मरजाद महा नेठाह-मल्ल ।

—गु. रू. बं.

सेरगीर—सं. पु. [सं. शेरगीर] एक प्रकार का हाथी विशेष ।

सेरड़ौ—सं. पु.—एक प्रकार का कर विशेष ।

उ०—कणवारीयां री लागै । पेटीयौ आटौ घीरत पावै । भोग वरा १) सेरड़ा, ताली १ दुगोरगी ६, बंटै जाई दुगोरगी ३, लबायचै रा दु० २) छूट नवै थांन रौ दु० बोरा २) छूटा ।—नैणसी

सेरण—सं. स्त्री.—राजस्थान व मध्यप्रदेश के पहाड़ी हिस्सों में पाई जाने वाली एक घास विशेष ।

सेरणी १ देखो 'सीरणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सेर' (रू. भे.)

सेरणौ—देखो 'सैरीणौ' (रू. भे.)

सेरदहां, सेरदां—सं. स्त्री [फा.] १ पुराने ढंग की एक बन्दूक विशेष ।

२ एक प्रकार की तोप ।

उ०—हुरणू हाक चामुड फतैनस्कार कांळिका, भिभुवारण **सेरदां** कड़क बीजळी किलक्का । —रा. रू.

वि.—शेर के समान मुख वाला ।

सेरपंजौ—सं. पु.—१ सिंह का पंजा ।

२ सिंह के पंजे के आकार का एक शस्त्र, बघनखा ।

सेरबच्चौ—स. पु. १ शेर का बच्चा, सिंह शावक ।

२ वीर पुरुष ।

३ एक प्रकार की छोटी बन्दूक जिससे एक ही गोली से शेर का शिकार हो जाता था ।

उ० **सेरबच्चा** करावीणी भजर कतार गिरासी प्रमाण तग बांधै असवार । —शि. वं.

सेरबबर सं. पु. [illegible]

सेरवांनी—सं स्त्री. एक प्रकार का कोट जो घुटनों तक लम्बा एवं नीचा होता है, चोगा, अंगा ।

सेरावौ—देखो 'सीरावौ' (रू. भे.)

सेराह, सेराहौ—सं. पु. [स. सेराहः] दूध के समान सफेद रंग का घोड़ा ।

(डिं. को.)

उ०—१ रोझी निलौ गंगाजळ, हंसला नैरा काजळ । अस **सेराहा** अऊब, खैंग रोहला हाबूब ।—गु. रू. बं

उ०—२ पांणीपंथा । ऊराहा । **सेराहा** । कालीकंठा । किहाडा । करडा । करडागर । नीलडा ।—कां. दे. प्र

रू. भे.—सेरराह, सेरूराह ।

सेरि—देखो 'सेरी' (रू. भे.)

सेरियौ—सं. पु.—खेतों की मेड़ के बीच का तंग रास्ता ।

उ०—१ चांमड़ियास रै मारग करभावा रै **सेरियौ** बीजी तरफ रांमासरणी री मीठवांणियौ छै । सांगवौ मुहता री टीबडी ऊठै छै ।—सोजत रै मंडल री वात

उ०—२ पै'ली पनजी बव्हांरा री बेरौ आवैला अर पछै अरणां वाळौ **सेरियौ** । लांबा **सेरिया** रे दोनूं कांनी कोरा अरणा इज अरणा ।—अमरचूनड़ी

रू. भे.—सेरीयौ, सैरियौ ।

सेरी—सं. स्त्री.—१ वीथिका, गली, तंग रास्ता । (अ. मा.)

उ०—सिंधु परइ सउ जोयणां खिंवियां बीजुळियांह । ढोलउ नरवर **सेरियां**, धरण पूगळ गळियांह ।—ढो. मा.

२ मार्ग, रास्ता ।

उ०—१ महारांणी नै ओड़ौ देवरा री सगळी **सेरियां** थै थारै

हाथां ई बंद करदी ही, अबै थैं चावौ तौ ई वै खुल नीं सकै ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ समरथ सौ सेरी समझाइ नें, कर अण करता होइ। घट घट व्यापक पूर सब, रहै निरंतर सोइ ।—दादूवांणी

३ वह छोटा गुप्त मार्ग जो प्राय: छुपकर भागने के काम आता है ।

उ०—१ मुनि-घातक ब्राह्मण जिकौ, डरप्यौ मन मैं अपार। सेरी कांनी नीकल्यौ, जावै नगरी बार ।—जयवांणी

उ०—२ उठी सैदजादां तणा थाट आया, संपेखै अठी जोस मारू सवाया । भणंकै नफैरी सुरै तूर भेरी, सुणै कातुरां आतुरां लीध सेरी ।—रा. रू.

४ किसी बाड या दीवार को थोड़ी सी तोड़कर बनाया जाने वाला छोटा रास्ता जो मुख्य दरवाजे से भिन्न होता है, छोटा द्वार ।

५ छेद, सूराख, दरार ।

उ०—१ ताहरां किंवाड़ री सेरी मां हाथ घात केवरण लागौ ।
—पलक दरियाव री बात

उ०—२ गोमती औरै मैं वडती-ही पण वातां सुणन लागगी। जांणियौ मांय कोई बीजौ मिनख हुवैला । किंवांड़ां री सेरी मांय सूं जोवै तौ आगै कोई न कांई ।—वरसगांठ

६ मुख्यद्वार के बगल में बना छोटा फाटक जो मवेशियों को भीतर आने से रोकने व आवागमन की सुविधा के लिये बनाया जाता है ।

७ स्थिति ।

उ०—ससहर सूरिज वंस नी, सेरी सरली जांणि । हूं नाचसि त्रिवटी तीणइ, लज्जा लेस न आंणी ।—मा. कां. प्र.

८ दो अंगों के बीच का अवकाश, अंतर ।

उ०—सू ऊंठ किण भांतरा छै ? थापवी तळी रा, सुपवीनळी रा, नाळेरा गोडां रा, बीलफळ इरकीरा, हथाळियै ईडर रा, ससा सेरी बगलां रा·····।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सेरि, सैरि, सैरी ।

सेरीणौ–सं. पु.—प्राचीन कालीन एक प्रकार का कर ।

उ०—बोपारी बार था बसत आंणैं तिण नूं सेरीणौ मण धांन घीरत वुस्त सिगळी बसत लागै । नै बीछाहीत नुं दांण नै बिकरी लागै ।—नैणसी

रू. भे.—सेरणौ ।

सेरीयौ—देखो 'सेरियौ' (रू. भे.) (मि. सेड़ौ)

सेरुराह, सेरूराह—देखो 'सेराह' (रू. भे.) (शा. हो.)

सेरे'क–वि.—एक सेर के लगभग, करीब एक सेर ।

सेरौ–सं. पु.—१ खेत का किनारा ।

२ सूराख ।

३ बाड़ या दीवार के बीच बनाया छोटा मार्ग ।

सेलंग–सं. पु.—रहट के खड़े चक्र के गड्ढे के किनारे पर लगी हुई लः या पत्थर जो उसमें खाद आदि गिरने से रोकता है ।

क्रि. वि.—१ लगातार, एक साथ, निरंतर ।

२ श्रृंखलाबद्ध ।

३ देखो 'संलग्न' (रू. भे.)

रू. भे.—सेलग, सैलंग ।

सेल–सं. पु. [सं. शलः, प्रा. सेल] १ भाला, बरछा, बरछो, साग ।
(ना. डिं. को.

उ०—१ सेल घमोड़ा किम सह्या, किम सहिया गज दंत। कठि पयोहर लागतां, कसमसतौ तू कंत ।—हा. झा.

उ०—२ रण त्रांमागळ रोड़ि, जोड़ि अछरां गठजोड़ां । से घमोड़ां सार, मार मुगळां दळ मोड़ां ।—मे. म.

उ०—३ मच धांम धूम सर सेल मार। पड़ त्रास आस आ पुकार । दिन लाख घटै हैंवर दरक्क, जवनां न पड़ै निस दिव जक्क ।—रा. रू.

[अ. शेल] २ तोप का वह गोला जिसमें गोलियां आदि भर रहती हैं ।

३ वज्र ।

४ छिद्र, सूराख, बिल ।

५ दर्द, टीस, पीड़ा ।

६ देखो 'सैर' (रू. भे.)

उ०—गंगेव खीची काग भड़ां किंवाड़ वैरियां जडां ऊपाड़, जिण की सेल कहूं वणाय, सुणियां मन प्रसन थाय ।—रा. सा. सं.

७ देखो 'सैर' (१) (रू. भे.)

रू. भे.—सेल्ह, सैल ।

अल्पा.—सेलड़ौ ।

सेलक, सेलक्क–सं. पु.—भाला, बरछा ।

उ०—१ धमक सेलक बंबक धकधक । तदि उबकि पत्र चंडकि त्रपतक ।—सू. प्र.

उ०—२ बिजक्क बळक्क जुरक्क जरक्क। सेलक्क धमक्क भचक्क सहक्क ।—सू. प्र.

सेलखड़ी–सं. स्त्री.—१ खरियामिट्टी ।

२ एक प्रकार का मुलायम व चिकना पत्थर जो बरतन बनाने के काम आता है ।

सेलग—देखो 'सेलंग' (रू भे.)

सेलड़ी–सं. स्त्री.—१ ईख, गन्ना ।

उ०—बीजी लागत घणी छै । पांणी घटै तद मांहै बेरी दोय सौ च्यार सौ आखारी सी हुवै छै । ऊपर छोंतरा, गेहूं, तरकारी हुवै । पांणी मीठौ । विणां फागुणियां-मूंग, जवार, सेलड़ी सोह हुवै ।
—नैणसी

२ बांस के लम्बे डंडे पर लगा हुआ लोह का हासिया जिससे वृक्ष

की टहनियां काटते हैं ।

उ०—हैदाळां भड़ हेक मथ, खींच खींच खसकाय । सूर ग्वाळ लै **सेलड़ी**, चील्हां 'अजा' चराय ।—रैवतसिह भाटी

रू. भे.—सहलड़ी ।

सेलड़ौ–सं. पु.—१ स्त्रियों की वेणी में गूंथा जाने वाला एक रौप्य आभूषण । (पुष्करणा ब्राह्मण)

२ देखो 'सेल' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ एरण ठमक्कौ म्है सुण्यौ, रे लोहा घड़ै लुहार । सूरां सारू **सेलड़ा**, मूंडण सारू भाल ।—लो. गी.

उ०—२ भळक रह्या छै तीखा **सेलड़ा** । अमा कमधजियौ रमै छै सिकार ।—लो. गी.

सेलणौ, सेलबौ–क्रि. स.—१ चुभाना, घुसेड़ना ।

उ०—सुणै हाक साम्हा गजां दंत **सेलै** । खगां भाटि थाटां विचै डाणि खेलै ।—वचनिका

२ भाले, बरछे या तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार करना ।

३ कष्ट देना, त्रास देना, पीड़ा देना ।

४ देखो 'सालणौ, सालबौ' (रू. भे.)

सेलणहार, हारौ (हारी), सेलणियौ—वि० ।

सेलिओड़ौ, सेलियोड़ौ, सेल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सेलीजणौ, सेलीजबौ—कर्म वा० ।

सहलणौ, सहलबौ—रू० भे० ।

सेलपी–स. स्त्री.—वनस्पति विशेष ।

उ०—गळौ गौवळ तरण त्रवठ, करंजनइ कैळास । बिदांम बंग कड **सेलपी**, फिरसांगणि पळास ।—रुकमणी मंगळ

सेळभेळ, सेळमेळ–सं. पु.—१ मिश्रण ।

२ गिल-मिल ।

सेलवण–सं. स्त्री.—एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसकी पतली टहनियों से टोकरियां एवं टाटे बनाये जाते हैं ।

सेलवणी—देखो 'सेवलणी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सेलसुत—देखो 'सैलसुत' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सेलहत्थ, सेलहथ–वि—१ योद्धा, वीर ।

२ जिसके हाथ में भाला हो ।

उ०—१ भालागीरी भेद मैं, बळ साह बखांणै । **सेलहथां** 'तखतेस' सुत, हिंदु तुरकांणै । राजा रावळ राव रांण, जग सारौ जांणै, आज 'प्रताप' इळ वड वार वखांणै ।—मोडजी आसियौ

उ०—२ बारहठ ईसर । १ **सेलहथ** बाळौ । १ मांगळियौ किसनौ । १ धांधू खेतसी ।........।—नैणसी

रू. भे.—सेल्हथ ।

सेलांणी–सं. स्त्री.—१ कोल्हू में पिले हुऐ अधकचरे तिल, कच्चर ।

२ देखो 'सेनांणी' (रू. भे.)

उ०—१ सिधायौ सूरज धरती छोड, देग्यौ **सेलांणौ** मैं सांझ । करै आथूंण धर्णी अंधेर, लुकावै पीळा टांकियां माझ । अज्ञात

उ०—२ वा गळियारा मैं कागनी छोरी नै रमावती ही । बिछड़ता भाई नै कांई **सेलांणी** देवै । उणरै पाखती आसुवां रै सिवाय ही ई कांई । फुलवाड़ी

सेला–वि.—शीतल, ठण्डा ।

उ०—१ तन सूं तन मन सूं मन मळा, अगार ? भेला रे । और सकल सुख विसर भार लागत, तुम लागत हौ **सेला** रे ।

—ह. पु. वां.

उ०—२ मन ही सूं मन मेळा, बैनहौ मु दैन **सेला** । निज घर नैन समाए हो ।—ह. पु. वां.

सेलाक–वि.—भाला धारण करने वाला योद्धा, वीर ।

उ०—हाक डाक जोगणी अवाक शूळ हाक हुवै, ऐराक भचाक छाक **सेलाक** ऊनाळ । जाक सजै सूराक बैडाक तै बेडाक जादा, केगा माथै ऊपड़ै थंडाक प्रळै काळ । पहाड़खां आढौ

सेलार, सेलारौ–स. पु.—पहाड़ी घोड़ा ।

उ०—१ मुळताणी धर मन वसी, गह्णा नइ **सेलार** । हिरणाखी हसि नइ कहइ, आंगाउ होइ तुखार । ढो. मा.

उ०—२ कटक्क कांधार, समूह **सेलार** । पयांण करंत, मेल्हांण दियंत । गु. रू. ब.

२ भाला, बरछा ।

उ०—१ वार बिकरार सिरदार विध वाहियौ, समर भर भार धर भार सूरै । सार **सेलार** ऊआर भंभार सर, पार चौधार कर पार पूरै ।— नाथौ सांदू

उ०—२ 'दुरंग' वडाई दाखवै भाटक्कै कागीम । अचळ लड़ेवा ऊठियौ, अंबर लागौ सीम । नवरंग हाप बहादरां, अर हज्जारी तार, राव पधारो गढ सिरै खळ मिळिया **सेलार** ।—अ. वचनिका

३ डिंगल का एक मात्रिक छन्द (गीत) जिसके प्रत्येक पद में सोलह-सोलह मात्राएं होती हैं और अन्तिम पद में विधि अलंकार होता है । मतान्तर से रघुवर जस प्रकाश के अनुसार प्रथम चरण में सोलह, द्वितीय चरण में चौदह तथा तृतीय चरण में पुनः सोलह और चतुर्थ चरण में चौदह मात्राएं होती हैं । प्रथम और तृतीय चरण में मगणान्त तुकांत होता है तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में यगणान्त तुकांत होता है ।

४ तीन सगण और अन्त में लघु वर्ण का एक छन्द विशेष ।

उ०—सगण तीनि लुघु अंति सझि, तेर मात्र प्रसनार । सहि बत्रीस अनै सातसौ, रूप छंद **सेलार** ।—ल. पि.

५ प्रत्येक चरण में चौदह मात्राओं का एक छन्द ।

उ०—चवदह मत्ता चरण दुव, इण विध च्यारै अख्य । सौ **सेलारौ** सेस कहि, देव सेस इम दख्य ।—पि. सि.

सेलारसी–सं. पु.—एक भक्त का नाम ।

उ०—साध विजैसी सारखा, **सेलारसी** सरीख । पदवन रै लागा

पगै, ऐ जोइ नयणे ईख ।—पी. ग्रं.

सेलारियौ–सं. पु.—बबूल वृक्ष की फली ।

सेलाळ–वि.—भालाधारी वीर, योद्धा ।

उ०—**सेलाळ** जरद् मरद् सकाज । वेधै वस्त्र भाखर पाखर बाज ।
—सू. प्र.

सेलि—देखो 'सैली' (रू. भे.)

उ०—गय घड गुड गडमडत धीर धयवड धर पाडइं । हसमसता सांमंत सरसू, सर **सेलि** दिखाडइं ।—सालिभद्र सूरि

सेलिया–सं. स्त्री.—१ घोड़ों की एक जाति ।

२ पीलू नामक लाल रंग का एक फल विशेष ।

सेलियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चुभाया हुआ, घुसेड़ा हुआ. २ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार किया हुआ. ३ कष्ट पीड़ा या त्रास दिया हुआ. ४ देखो 'सालियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सेलियोड़ी)

सेळी–सं. स्त्री.—घोड़े की बागडोर में कान के पास लगाया जाने वाला एक उपकरण ।

सेली–सं. स्त्री.—१ ऊन, सूत, रेशम या बालों की बनी एक मोटी डोरी जिसे योगी लोग गले में डालते हैं या सिर पर लपेटते हैं ।

उ०—१ **सेली** सीगी मेखळां, कांनि मुदरका घालि । हरीया जोगी जुगति विन, पच न सचै पालि ।—अनुभववांणी

उ०—२ कांनां बिच कुंडळ गळै बिच **सेली**, अंग भभूत रमाई रे । तुम देख्यां बिन कळ न पड़त है, ग्रह अंगणौ न सुहाई रे ।—मीरां

२ स्त्रियों के सिर का एक आभूषण ।

३ पगड़ी पर बांधने का एक आभूषण ।

४ छोटा भाला, बरछी ।

५ देखो 'सैर' (रू. भे.)

रू. भे.—सेल्ही ।

सेलीसंद, सेलीसमंद, सेलीसमंध–सं. पु.—एक प्रकार का उत्तम जाति का घोड़ा ।

उ०—१ जिलहरी आबनूंसी जमंद, मुरहरी हरी **सेलीसमंद** ।
—सू. प्र.

उ०—२ और ही अनेक जात रा घोड़ा तयार कीजै छै । कुमेत नीला समंदा मकड़ा **सेलीसमंद**, भूवर बोर सोनैरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केळा महुवा धूमरा……. ।—रा. सा. सं.

उ०—३ मौहरी चंपा **सेलीसमंध**, पंचकल्यांण पहचांणियै । अन्नेक रंग पसमां अलल, जेहा मुखमल जांणियै ।—सू. प्र.

सेलीहालौ–वि.—जिस की पगड़ी पर सेली बंधी हो । (दुल्हा)

उ०—करवा मारू देस का ढोलां कै ढमकै आव, वनड़ा धीमा चलौ महाराज, **सेलीहालां** धीमैं चलौ महाराज ।—लो. गी.

सेलुत–वि.—भालाधारी ?

उ०—तिहां नगर मध्यै किसा लोक वसइं । भणइराय रांणा । मंडलीक । महाधर । मउड़धर । सांमंत । **सेलुत** । वरवीर राउत । पायक । डिंडिमायन ।—सभा

सेलुस–सं. पु. [सं. शेलुष] एक प्रकार का लिसोड़ा ।

सेलून–सं. पु. [अ.] १ कमरे के समान सजा हुआ रेल का डिब्बा जिसमें उच्चाधिकारी यात्रा करते हैं । (अधियान)

२ नाई की दुकान ।

सेळै–क्रि. वि.—चिता में ।

उ०—भड़ जै खुद न भंज दै, अघ व्है आतम घात । **सेळै** दव मेलं सती, सदेह सुरग सिधात ।—रैंवतसिंह भाटी

सेलोट—देखो 'सैलोट' (रू. भे.)

उ०—विरद पत जबर प्रताप 'विजपत' बिया, सद विजै त्रंबाट पिसत्र **सेलोट** । उरड़ जाता वडा करै वा गरदवां, अभै पद वरं वै राज री ओट ।—महाराजा मानसिंह रौ गीत

सेलोत–सं. पु.—गरासिया जाति में मुख्या अथवा प्रधान ।

सेळौ–सं. पु.—१ एक प्रकार का छोटा जंतु जिसकी समस्त रोमावली कांटेदार होती है । खतरे का आभास पाते ही यह अपना मुंह व पांव रोमावली में छुपाकर गोल गेंद के समान हो जाता है । यह सर्प को मार सकता है ।

उ०—लास, फोगलू बिटाल ऊंटां, कातीसरौ हर मासरौ । से **सेळा** घुरी घरस्यांळां आळां, पंछयां आसरौ ।—दसदेव

२ गाय को दूहते समय उसके पिछले पैरों में बांधी जाने वाली छोटी रस्सी । (नांजणौ) (पोहकरण)

रू. भे.—सहळौ, सेवळौ ।

सेलौ–सं. पु.—१ एक उत्तम कोटि का वस्त्र ।

उ०—तठा उपरायंत वागां रा चिहरवंद छूटै छै । सूं किण भांतरा वागा छै । सिरीसाप भैरव चौतार कसबी महमूदी फूलगार अध-रस **सेला** बाफता डोरियां मोमनी तनजेब सासाहिबी तरै-तरै रै कपड़ै रा वागा छै । सू उतार-उतार उणहीज दरखतांरी साखां ऊपर उरळा कीजै छै ।—रा. सा. सं.

२ मेघवाल (चमार) जाति में लड़की की मंगनी तय हो जाने पर वधू के पिता द्वारा वर के लिये भेजा जाने वाला आठ हाथ लम्बा लाल कपड़ा । (मा. म.)

३ लाल रंग का साफा ।

४ अश्लेषा नक्षत्र का एक नाम ।

५ सीधा-सादा भोला व्यक्ति ।

उ०—मेळ तणौ कज मेलियौ, व्रत रज गत बुधिवांन । सरबंगी **सेलौ** सुमति, चेलौ नाहरखांन ।—रा. रू.

६ देखो 'सेल' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ वीता अधुरां वार पूरां, वेध सूरा वच्चए । **सेले** प्रहारं धार सारं, मार मारं मच्चए ।—रा. रू.

उ०—२ एक दिन फूल मांनुं कह्यौ 'मां मोनुं एक **सेलौ** भोल

लेह।' ताहरां एक सेलो लै दीयौ। ढलौ हाथ लीयां केरडा चारै।
— लाखा फूलांणी री बात

रू. भे.— सेल्हौ, सेवलौ, सेहलौ।

सेलिल—सं. स्त्री.—प्रस्तरपट्टिका, सल्ली।

सेल्ह—देखो 'सेल' (रू. भे.)

उ०—जमडड्ढां तरवारियां, सेल्ह बंदूकां सत्थ। आगै धूप उखेवियां, पाछै झालीहत्थ।—रा. रू.

सेल्हथ—देखो 'सेलहथ' (रू. भे.)

उ०—कंठालीया किस्या। भंडार भरीया। आलोचि आत्मांनइ आव्या। मंत्र मुहाडि हुई। सेल्हथ सीखांमण हुई। गोत्र देव्यांनइ नैवेद्य नीपनां।— कां. दे. प्र.

सेल्हा—सं. स्त्री.—चावलों की एक जाति जो सफेद न होकर कुछ मैले रंग के होते हैं। इनके भी कई प्रकार होते हैं।

सेल्हारस—सं. स्त्री.—१ केसर या चन्दन।

उ०—अगै सेल्हारस अगर, पुरो सुखे कपूर। अरिहंत पुजा आठमी, करम आठ कर दूर।—ध. व. ग्रं.

सेल्ही—देखो 'सेली' (रू. भे.)

सेल्हौ—१ देखो 'सेलौ' (रू. भे.)

उ०—१ अर वागै नूं बाफता सेल्हा अव्वल तरह रा लेती आव।
— कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पाघां उतार माथै सेल्हा बांधियां छै।
— सूरै खींवै कांधलोत री बात

२ देखो 'सेळौ' (रू. भे.)

सेवंति, सेवंती, सेवंत्री—देखो 'सेवती' (रू. भे.)

उ०—१ फबै मोगरौ सेवती जाय फूली, भ्रंगी पंति सेवंति भूली अभूली। लता माधुरी मालती फूल लेखै, दसा आप भूलै नयौ रूप देखै।—रा. रू.

उ०—२ कणियर तरु करणि सेवंत्री कूजा, जाती सोवन गुलाल जत्र। किरि परिवार सकळ पहिरायौ, वरणि वरणि ईण वसत्र।—वेलि

उ०—३ कणेर वृक्ष करणी सेवंत्री। कूजा जाय। सोवन जाइ। गुलाल। जु फूलि रह्या छै। सु वनसपती कै पुत्र प्रसव हुआै। सु मांनौ रंग रंग कै वसत्रै आपणौ परिवार पहिरायौ छै। वरण २ का वसत्र पहिराया छै।—वेलि टी.

उ०—४ सेवंत्री संघेसरा सूकडि सरकाडि साय। सीमंतक सोहइ भला, सरब सदाफळ खाय।—मा. कां. प्र.

सेव—सं. स्त्री. [सं. सेविका] १ एक प्रकार का नमकीन खाद्य पदार्थ, जो बेसन में नमक, मिर्च व मसाले मिलाकर, आटे की तरह गूंदकर, झारे के माध्यम से तेल में तल कर लंबे डोरों के रूप में तैयार की जाती है।

वि. वि.—सेवें इच्छानुसार मोटी, बारीक तरह तरह की बनाई जाती है। इनकी बनावट 'झारे' पर निर्भर करती है।

२ उक्त पदार्थ के अनुरूप ही मैदे का बनाया हुआ खाद्य पदार्थ जो प्राय: रक्षा-बंधन के त्यौहार व ईद पर बनाया जाता है।

वि. वि.—इसे पानी में उबाल कर चीनी-शक्कर मिला कर खाई जाती है।

३ कुशल-क्षेम, सुख-शान्ति, खुशहाली। (अ. मा.)

४ एक प्रकार का कंटीला पेड़, जिसकी लकड़ी कुछ पीलापन या ललाई लिये हुए सफेद रंग की होती है। यह चमकीली एवं मजबूत होती है।

५ देखो 'सेब' (रू. भे.)

उ०—१ बांलसरी नारंगियां, अखरोटां, अंजीर। सेव सेवती अति सरस, गहरा खिरख गहीर।—गज-उद्धार

उ०—२ खरबूजा जग गह जाग रे, सो आगोक अमर सदै। सैमळ सरीस नक आंन सुरा, दाख रायफळ सेव दै।—र. ज. प्र.

६ देखो 'सेवा' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ कुळ देवी अह पाज रूखावण, निज जन नव नेवज विसतारण। धूप अगर दीपक सभ धारण, मन दीयां मन सेव अपारण।
— रा. रू.

उ०—२ नहं गोरख जगणी गमी, जगणी गमी न देव। इण कारण कीजै अवस, सुभजगणी री सेव।—बां. दा.

उ०—३ भूपती सकळ नमै डर भरै, कुळ स्वत्र जोग सेव सह करै।
— सू. प्र.

उ०—४ दादू जै साहिब मानै नहीं, तऊ न छाड सेव। इहि अवलंबन जीजिये, साहिब अलख अभेव।—दादूबांणी

रू. भे.—सेब।

सेवक—सं. पु. [स] (स्त्री. सेवकण, सेवकाणी) १ आराधना करने वाला, भक्त, सेवा करने वाला, उपासना करने वाला, उपासक।

उ०—१ दाताळी देवांगा हू, दूर भगू दरियाव। माथै हाथ पसारि तै, निज सेवक री नाथ।—सं. स.

उ०—२ अतुळीबळ तणइ सिवपुरी ईसर, असरण सरण अनाथां नाथ। मिगळां ही सुख दयण सेवकां, हथवर इसन वगीसण हाथ।
— महादेव पारवती री वेलि

[सं. सेवक:] २ नौकर, चाकर, दास, अनुचर, परिचायक।

उ०—१ अदभूत रेख सोभा अमित, कळप तरोवर सेवकां। अंग अंग सोभ वाधै 'अभौ', असहै रूप असेवकां।—रा. रू.

उ०—२ गिरधर गास्यां सती न होस्यां, मन मोह्यौ घण नांमी। जेठ बहू कौ नहिं रांणाजी, थे सेवक म्हे स्वांमी।—मीरां

उ०—३ सेवक कौ सेवक यह स्वांमी, जग सब की है अंतरजांमी।
— ऊ. का.

३ पूजा, अर्चना करने वाला, पुजारी।

४ सिलाई का कार्य करने वाला, दर्जी।

५ बोरा ।

वि. [सं. सेवक] १ सेवा, टहल व शुश्रूषा करने वाला ।

२ पूजा, उपासना व भक्ति करने वाला, अनुयायी, उपासक ।

३ नौकरी करने वाला, चाकरी करने वाला ।

४ पराधीन ।

५ सेवन करने वाला, उपभोग करने वाला ।

६ मदद या सहायता करने वाला ।

ज्यूं – समाज सेवक ।

रू. भे.—सेबक, सेवकर, सेवक्क, सेवग, सेवगर, सेवग्ग, सेवागर ।

सेवकरण सेवकरणी–सं. स्त्री.— दासी, सेविका, नौकरानी ।

रू. भे.—सेवकांरणी, सेवगरण. सेवगांरणी ।

सेवकपरण, सेवकपरणौ–सं. पु.—१ सेवक होने की अवस्था या भाव ।

२ सेवक का कार्य, सेवक का धर्म ।

३ सेवा, चाकरी ।

सेवकर—देखो 'सेवक' (रू. भे.) (अ. मा.)

सेवकांरणी—देखो 'सेवकरण' (रू. भे.)

सेवकाइ, सेवकाई–सं. स्त्री.—१ सेवक का कार्य, सेवा, चाकरी, शुश्रूषा ।

२ आवभगत ।

३ नौकरी । ४ भक्ति ।

रू. भे.—सेवगाइ, सेवगाई ।

सेवक्क—देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—नमौ बहुनांमिय माधव बुद्ध, **सेवक्क** साधार सदासिव सुद्ध ।
—ह. र.

सेवग–सं पु. [सं. सेवक] (स्त्री. सेवगरण, सेवगरणी, सेवगांरणी) १ शाकद्विपीय, ब्राह्मण वर्ग । (मा. म.)

वि. वि.—इन ब्राह्मणों का उद्गम शकद्वीप से माना गया है । श्रीकृष्ण के पुत्र सांब ने सूर्य मन्दिरों की पूजा एवं सौर यज्ञ के लिए इन्हें आमन्त्रित कर भारतवर्ष में बसाया था । कालान्तर में मन्दिरों की पूजा करना ही इनका मुख्य कार्य रह गया । इन ब्राह्मणों को मग, भोजक, व्यास आदि नामों से पुकारा जाता है ।

२ उक्त वर्ग का व्यक्ति ।

उ०—नाडोलाइ रौ सोभाचंद **सेवग** तिरण नैं बावेचा कह्यौ, भीखरणजी खैरवै है सौ त्यांरां अवररणवाद विस्वर जोड़ ।
—भि. द्र.

३ देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—१ मन मेरा **सेवग** भया, लगा सबद गुर कांन । रोम रोम मैं भिद गया, हरीया किधू न जांन ।—अनुभववांरणी

उ०—२ किता तैं **सेवग** साररण काज । रचै हथरणापुर पंडव राज ।
—ह. र.

उ०—३ पालै दळद **सेवगां** पांरणां, दुरंग पालटै 'खुरम' दुवै । 'सूजा' हरौ असहतां सालै, हालै मन मांनियै हुवै ।—नाथौ सांदू

सेवगरण—देखो 'सेवकरण' (रू. भे.)

सेवगर—देखो 'सेवक' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ केतेक हजूर कै **सेवगर** दुज कवि उमराव मंत्री तिनकूं बगसावै ।—सू. प्र.

उ०—२ बिरदाळौ जी बिरदाळौ, दुज गाय पखी बिरदाळौ । सीताचौ सांम सिघाळौ, पौह **सेवगरां** प्रतपाळौ जी बिरदाळौ ।
—र. ज. प्र.

सेवगसाधार–सं. पु.—१ भक्तों के परिपालक, ईश्वर, विष्णु, श्रीकृष्ण ।
(ह. नां. मा.)

२ अपने चाकर या दास की रक्षा करने वाला स्वामी ।

सेवगांरणी—१ देखो 'सेवकरणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सेवग' (स्त्री.)

सेवगाइ, सेवगाई—देखो 'सेवकाई' (रू. भे.)

सेवगी—देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—१ कहूं स्वांमी कहूं **सेवगी**, माया ही पर मूंठि । लड़त जुड़त यूं ही करत, गया किताहि ऊठि ।—ह. पु. वां.

उ०—२ धररण एक धाररणा १ पार परमोद अपंवर । सात बाच २ संजमी ३ बाह न करै ४ भागळ पर । माताजीत मनजीत ५ **सेवगी** रौ पख साचौं ६ । सुरणे हाक सात्रवां 'पाल' न देवै पग पाछौं ।—पा. प्र.

सेवग्ग—१ देखो 'सेवग' (रू. भे.)

२ देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—प्ररणम्मै पग्ग परम्म प्रवीत, गायत्री गोरि सावित्री सीत । जुहारै पग्ग जिसा जयदेव, **सेवग्ग** अनेक करै पग सेव ।—ह. र.

सेवग्रह–सं. स्त्री.—सेवा, चाकरी, टहल, बन्दगी ।

सेवड़–सं. पु.—१ राजगुरु पुरोहितों का एक गोत्र जो राठौड़ों के गुरु माने जाते हैं । (मा. म.)

२ उक्त गोत्र का पुरोहित ।

३ देखो 'सेवड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सावढ' (रू. भे.)

सेवड़ौ–सं. पु. [सं. श्वेत+पट] १ जैन साधुओं का एक वर्ग विशेष तथा इस वर्ग का साधु ।

उ०—१ जोगी जंगम **सेवड़े**, बौद्ध संन्यासी सेख । खट दरसन दादू रांम बिन, सबै कपट कै भेख ।—दादूबांरणी

उ०—२ सोइ जोगी, सोइ जंगमा, सोइ सूफी सोइ सेख । सोइ संन्यासी, **सेवड़ा**, दादू एक अलेख ।—दादूबांरणी

उ०—३ एक दिन पातिसाह आगरइ कोपियौ, दरसनी एक आचार चूकउ । सहर थी दूरि काढौ सबइ **सेवड़ा**, मेवड़ां हाथ फुरमांरण मूक्यउ ।—स. कु.

२ एक ग्राम्य देवता।

सेवज—देखो 'सेंवज' (रू. भे.)

उ०—ऊनाळी करै तितरी हुवै। रेल मांहै **सेवज** घणा हुवै। नदी लूणी नजीक। तळाव मास ६ पांणी। कुवौ पुरस १० मीठौ। —नैणसी

सेवट—क्रि. वि. [स. सीमट्ट] अन्त में, आखिर, अन्ततोगत्वा।

उ०—१ अरै भोळा कांही डर सूं भागौ देखै अंत (काळ) **सेवट** ही छोडण वाळौ नहीं अर्थात् जैं जलमैं है तै मरै।—वी. स. टी.

उ०—२ काळी मासी रौ घणौ ना दियोड़ौ हौ, इण वास्तै इत्ता बरस कोई समचौ नीं भेज्यौ। **सेवट** गोटीजतां-गोटीजतां सबूरी नीं व्ही तौ तीरथां रौ ओळावौ लेय, सौ कोस रौ गोतौ खाय, वैं मिळण सारू आया।—फुलवाड़ी

उ०—३ बीसां हीरा देख्या पण उण जिसौ हीरौ तौ निगैं नीं आयौ सौ नीं ज आयौ। **सेवट** हार खायनैं सेठ कलकत्ता कांनी रवानै व्हिया अर देसाई नैं दिल्ली कांनी दौड़ायौ।—अमरचूंनड़ी

उ०—४ भीखम मात अभाव, मात गंग कींकर मनै। सो पख हीण सभाव, **सेवट** सिटग्यौ सांवरा।— रांमनाथ कवियौ

सेवढ—देखो 'सावढ' (रू. भे.)

सेवण—सं. स्त्री.—एक प्रकार की घास।

उ०—१ सूकी **सेवण** री हेला उरहाई, मैंदी देवण री बेळा मुरझाई। खावण रूणैं धन ऊणैं मन खूंणैं, धांमण तांमण बिन जांमण सिर धूणैं।—ऊ. का.

उ०—२ जोड़ नाचणौ जैसलमेर था कोस २ ऊगवण नूं कोस १, घास करड़, ऐहुख रौ। जैसलमेर था दिखण नूं कोस २ घास **सेवण**, कोस २ रै फेर।—नैणसी

२ उपासना, भक्ति या आराधना करने की क्रिया या भाव।

३ सेवा-चाकरी या टहल-बंदगी करने की क्रिया या भाव।

४ मादा पक्षियों द्वारा अण्डे पकाने की क्रिया या भाव।

५ देखो 'सेवन' (रू. भे.)

सेवणौ, सेवबौ—क्रि. स. [सं. सेवनं] १ पूजा करना, अर्चना करना।

उ०—गिलका-सिला सिला-गोमत्ती, मंडावै संजम मूरती। साळग-रांम। सिला सुध **सेविस**, अग्गर चंदण धूप उखेविस।—हृ. र.

२ वंदना करना, नमस्कार करना, प्रणाम करना।

३ उपासना करना, आराधना करना, भक्ति करना, स्मरण करना।

उ०—नाथन कै नाथु मसतग हाथु, सिव ब्रह्मा **सेवंदा** है। हरिजन हरिजांनी वेद वखांनी, सेस विसन ध्यावंदा है। —अनुभववांणी

४ सेवा-शुश्रूषा करना, टहल करना, चाकरी करना।

उ०—**सेवत** ही रहै साध कुं, आलसि कबू न जाय। हरीया जब तब रांम कुं, आपा भीतरि पाय।—अनुभववांणी

५ उपभोग करना, भोग करना, भोगना।

उ०—१ जद ईख स्वाद पी ऊख रस, जिम अवर चार अनारयं। सुख परम दिनपति न्रपति **सेवत**, विवध भोग विहारयं। —रा. रू.

उ०—२ **सेवंति** नवै प्रति नवा नवै सुम, जग नां मिमि वासी जगति। रुखमिणि रमण तणा जु सरद रितु, मुगति रासि निसि दिन भगति।—वेलि

६ सानिध्य करना, संसर्ग करना।

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ रवद। का वासंदर **सेवियइ**, कइ तरुणी कइ मद।—ढो. मा.

उ०—२ बांवळि कांइ न सिरजियां, मारू मंझ थळांह। प्रीतम बाढत कांबड़ी, फळ **सेवंत** करांह।—ढो. मा.

उ०—३ अडसट तीरथ तणौ आभरण, चावौ पावन चार चक। राखण बात **सेवियौ** रड़मल, जग जगणौ वाळौ जनक।—बां. दा.

८ मादा पक्षियों द्वारा अपने अण्डों को पकाने के लिये उन पर बैठना, पोषण करना।

९ रहना, बसना।

१० कोई औषधि या पथ्य लेना।

११ लिप्त होना।

उ० **सेवतौ** पाप अठार, ममता मात विकार। मरयादा लोपतौ रे, अधरम मैं ओपतौ रे।—जयवांणी

१२ पालन करना।

उ०—इम अव्रत सीं‍व्यां व्रत वधै तौ तिण रै लेखै श्रावक स्त्री सेवै तिण पिण अव्रत **सेवी** तिण सूं व्रत पुस्ट हुवै।—भि. द्र.

सेवणहार, हारौ (हारी), सेवणियौ—वि०।

सेविओड़ौ, सेवियोड़ौ, सेव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सेवीजणौ, सेवीजबौ—कर्म वा०।

सेणौ, सेबौ, सैंवणौ, सैंवबौ, सैणौ, सैबौ, सेवणौ, सेवबौ —रू० भे०।

सेवति, सेवती—सं स्त्री. [स. सेमती] १ एक प्रकार का सफेद गुलाब का फूल।

उ०—१ मालती **सेवती** केतकी प्रफुल्लमांन। फूलू की सोभा असमांन कै तारूं का विधांन।—सू. प्र.

उ०—२ तोही आंगू भेइरव चांपा का फूल, चोवा चंदन अग कपूर। पाका पांन घउंटहुली, जाई **सेवती** नीरवाली का फूल।—बी. दे.

२ उक्त गुलाब का पौधा।

उ०—१ फबै मोगरौ **सेव्ती** जाय फूली, भ्रंगी पंति सेवंति भूली अमूली। लता माधुरी मालती फूल लेखैं, दसा आप भूलैं तपी रूप देखैं।—रा रू.

उ०—२ बोलसरी नारंगियां, अखरोटां अंजीर। सेव **सेवती** अति सरस, गहरा बिरख गहीर।—गज-उद्धार

रू. भे.—सेवति, सेवंती, सेवंत्री।

सेवन—सं. पु. [सं] १ सेवा करने की क्रिया या भाव।

२ उपासना, आराधना, भक्ति ।
३ उपभोग, भोग, इस्तेमाल ।
४ स्त्री मैथुन की क्रिया, भोग ।
५ टहल, चाकरी ।
६ सानिध्य, संसर्ग ।
७ संरक्षण, रक्षा ।
८ मादा पक्षियों की अपने अण्डों पर बैठने की क्रिया पोषण ।
९ औषधि पथ्य का खान-पान ।
१० सीना, सिलाई ।
रू. भे.—सेवरण, सैवरण ।

सेवनी–सं. स्त्री.—१ सिलाई, सीवन ।
२ टांका ।
३ सुई ।
४ संधिस्थान ।
५ दासी, सेविका ।

सेवभद्र–सं. पु.—कुशलता ।

सेवमांरण–वि.—सेवन करने योग्य ।

सेवर—देखो 'सेहर' (रू. भे.)

सेवरड़ौ, सेवरियौ—१ देखो 'सेवरौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ नगरी कुंवारा परणसी, म्हारै नवल वनै कौ व्यांव, चोखा **सेवरड़ा** गूंथ ल्याय ।—लो. गी.
उ०—२ **सेवरियौ** सिरपेच कलंगी सोरठड़ी तरवार । मीरां कै प्रभु गिरधर नागर पूरबलै भरतार ।—मीरां
२ देखो 'सेहर' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—उमराव बनाजी घुड़ला थै लाइजौ है खुरसांणी देस रा । सिरदार बनाजी **सेवरियै** झबूकै औ आबा बीजळी ।—लो. गी.

सेवरौ–सं. पु. [सं. शिखर] १ विवाह की एक रश्म जो विवाह मण्डप में कन्या के भाई या मामा द्वारा वर के सामने 'सरवा' घुमाकर अदा की जाती है ।
ज्यूं—वीरा **सेवरा**, मामा **सेवरा** ।
२ विवाह में प्रत्येक भांवर के समय गाया जाने वाला एक मांगलिक लोक गीत ।
३ सेहरा जो विवाह के समय सिर पर बांधा जाता है, शिरमौर ।
उ०—१ ठाकरां खंखारौ करतां थका कयौ—हूं **सेवरौ** बांध'र चालसूं जद लोग हंसाई हुसी ।—दसदोख
उ०—२ आंधी गिण्यौ न सोपौ, सागै-सागै बदनांमी रौ **सेवरौ** ही बांधता रैया हां ।—दसदोख
उ०—३ ओरां रै बांधरण पाए ए सुंदर ओरां रै बांधरण पागकाछबिया रै बंकौ **सेवरौ** ए ।—लो. गी.
उ०—४ सौ माथा पर किलंगी अनै **सेवरौ** केमर रंगिया दुकूळ कपड़ा वागौ केसर मैं रंग दौ, आपरा सिरदारां नैं कहै औ म्हारौ चलावरण करदौ ।—बी. स. टी.
४ पगड़ी में बांधकर मौर के नीचे दूल्हे के मुख के सामने लटकाई जाने वाली फूल मालाएँ । (मुसलमान)
५ खजूर का बना हुआ एक प्रकार का मौर जिसके दो गुच्छे नीचे तक लटकते हैं । यह विवाह के समय पहना जाता है । राजस्थान में उत्तरप्रदेश से आए व्यक्ति उपयोग में लाते हैं ।
६ माला, हार, विशेषकर रेशमी माला ।
७ ब्याह की एक रश्म विशेष जिसके अनुसार भांवर के समय कन्या का भाई हवन का सरवा दोनों हाथों में पकड़कर चार बार वर के सामने करके घुमाता है । इसे सेवरा देना या अदा करना कहते हैं । (श्रीमाली)
८ एक राजस्थानी लोकगीत ।
९ मुकुट ।
१० द्वार के छज्जे के नीचे वाले पत्थर के नीचे शिल्प कलापूर्ण लगाया हुआ पत्थर ।
वि.—१ उत्तम, श्रेष्ठ ।
२ शिरोमरिण ।
रू. भे.—सहेरउ, सहेरौ, सेहरि, सेहरौ, सेहुंरौ, सेहुरौ, सैवरौ ।
अल्पा;—सेवरड़ौ, सेवरियौ, सेहरउ, सेहरियौ ।

सेवलरणी, सेवलनी–सं. स्त्री. [सं. शैवलिनी] नदी, सरिता, तटनी । (डिं. को.)
रू. भे.—सेलवरणी ।

सेवळी—देखो 'सेही' (अल्पा; रू. भे.)

सेवळौ–सं पु.—१ सेमल वृक्ष ।
उ०—**सेवलां** रा पाट अरणावौ, जठै बैठा औ दसरथजी रा सीय । वधावौ म्हांरै घर आवियौ ।—लो. गी.
२ कलई पर धारण की जाने वाली एक प्रकार की चूड़ी जो बिलकुल वृत्ताकार न होकर कुछ बल खाई हुई होती है ।
३ देखो 'सेळौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ० —ऋत प्रगत खोट परताप कर, अक्रत रहण अकेवळौ । 'मौकमा' कमंध मोटा मिनख, स्याळ हुसी कन **सेवळौ** ।
—अरजुणजी बारहठ

सेवांजळि, सेवांजळी–सं. स्त्री. [सं. सेवांजलि] दोनों हथेलियों के जुड़े हुए सम्पुट से भक्त या सेवक द्वारा अपने उपास्य या स्वामी को कुछ अर्पण करने की क्रिया ।

सेवा–सं. स्त्री. [सं.] १ देवताओं की पूजा, अर्चना ।
उ०—१ सेवक सुकवि करत नित **सेवा**, मधु मिस्ठान्न चढत अति मेवा ।—मे. म.
उ०—२ सांमगरी अग्र धरै सुचा रा । साजै सब साधन **सेवा** रा । हर पूजियां पछै न्रप चितहित, खड़ग पात्र जळ पूर धरै खित ।
—सू. प्र.

२ सेवा-शुश्रूषा, तीमारदारी, टहल-बंदगी ।

उ०—१ वींदणी ज्यूं त्यूं आपरा मन नैं समभाय धणी री **सेवा** बंदगी करण लागी । गिरस्ती रौ अरटियौ गणण-गणण घूमण लागौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ रूंकाटा खड़ा ठगें, सुख रा सीला सास वगें । आथण सुख-दुख री दिनंग **सेवा**, दिन भर हंसी ठठा, मन रा मेवा । मत्त री जांणै, हित री कैवै, गाळचां-तकात सुणै अर सिर मैं दी ही सेवै ।—दसदोख

३ नौकरी ।

४ आदर-सत्कार, आवभगत ।

उ०—१ सब बिधि की **सेवा** सधी, आदर भयौ अमाप । मांननीय गुरु मांनियौ, परतापी 'परताप' ।—ऊ. का.

उ०—२ धरम उपदेस नितप्रति सुणती हूं, मन कुचाळ सै भी डरती हूं । सदा साधु **सेवा** करती हूं, सुमरन ध्यांन मैं चित करती हूं ।—मीरां

५ उपासना, आराधना, भक्ति ।

६ आश्रय, शरण ।

७ अनुरक्ति, प्रेम ।

८ उपयोग, भोग ।

९ श्रम, परिश्रम ।

उ०—पंखी जु वसंत कै विखै पांखां फूलावै छै तांह आपणी **सेवा** कौ फळ पायौ छै ।—वेलि टी.

१० समाज-सुधार के कार्य, समाज-सेवा ।

उ०—१ बळौ इसी **सेवा**, ठंठा री लागगी तौ कुण आडौ आसी ? इयै साल तौ पूरा गाभा ही कराया नहीं । एकली बैठी फूसी कळपै-कुढै । वठै मां'रजा, हरिजण बाळकां मैं रीझै-मुळकै ।—दसदोख

उ०—२ म्हारौ कांम तौ फगत जनता री **सेवा** करणौ है । म्हूं गरीबां रौ दुख नीं देख सक्यौ इण वास्तै इज तौ म्हनैं चुणाव मैं खड़ौ होवणौ पड़्यौ ।—अमरचूंनड़ी

११ उक्त कार्य के लिये बनी हुई संस्था ।

उ०—मा'रजा, **सेवा** लाईब्रेरी रा मिंत्री, सनातन धरम रा सभापति, ग्रांम सेवा संघ रा उपाध्यक्ष, अर आरय समाज रा सदा सूं सदस्य है ।—दसदोख

१२ चापलूसी, जी-हजूरी ।

रू. भे.—सेव ।

सेवागर—देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—सरण असरण अमैकरण **सेवागरां**, धरण सरीखा चरण धावै । जोन संगट हरण बरण बै हुवै 'जसा', गिरां तारण तरण किऊं न गावै ।—जसजी आढौ

सेवाधरम—सं. पु. [सं. सेवा+धर्म] १ सेवक का धर्म या कर्तव्य ।

सेवाधारी—सं. पु. [सं. सेवा+धारिन्] पुजारी, सेवक ।

वि.—जिसके मूर्ति की पूजा करने का नियम हो ।

सेवापण, सेवापणौ—सं. पु. १ सेवा-वृत्ति, टहल-बन्दगी ।

२ नौकरी, चाकरी ।

सेवार—देखो 'सेवाळ' (रू. भे.)

उ०—बाळ् बाबा देसड़उ, जहां पांणी **सेवार** । ना पणिहारी झूलरउ, ना कूवउ लैंकार । —ढो. मा.

सेवाळ, सेवाल—सं. स्त्री. [सं. शैवाल] १ पानी के ऊपर जमने वाली काई, लील ।

उ०—१ भूपाळ बिया **सेवाळ** तणी भत, कळिया सह संसार कहै । माया जळ कळजुग चै मांहै, राजा कमळ सरूप रहै ।

—जगन्नाथ सांदू

उ०—२ चंदह वैरी वादळी, जळ-वैरी **सेवाळ** । मांगण वैरी नींदड़ी, माछ्रां वैरी जाळ । —अग्यात

२ एक प्रकार की घास जो जलाशय या सरोवर के पानी पर जाल की तरह बिछ जाती है ।

उ०—एक दिवस सर नै कूलै गयौ रे, जहां बहुला **सेवाल** । अणजांणतां मांहि अलूझियौ, कंठइ आयौ काल । —वि. कु.

३ किसी पदार्थ (विशेषकर द्रव पदार्थ) पर जमने वाली मैल की परत ।

उ०—१ हिंगळू मैं जाळौ, भंवरजी, पड़गयौ जै, हांजी मारू, काजळै मैं पड़्या **सेवाळ** । थिब घर आवौ, अंधेरै घर का पावणा जै ।

—लो. गी.

उ०—२ आलोयण साबुड़ो सुद्धि करी रे, रखे आवै नी माया **सेवाल** निस्चय पवित्रपणो राखजै, पछइ आपणो नेम संभाल । —स. कु.

४ आवरण, पर्दा ।

वि.—आसमानी, नीला । ※ (डि. को.)

रू. भे.—सेवार ।

सेवावरती—वि. [सं. सेवा+वृत्तिः] जिसके सेवा करने का व्रत हो ।

उ०—सेवावरती थाऊं सार । —धरम-पत्र

सेवि—देखो 'सेवी' (रू. भे.)

सेविका—सं. स्त्री.—१ दासी, नौकरानी ।

२ परिचारिका, सेवा करने वाली ।

सेवियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पूजा किया हुआ, अर्चना किया हुआ. २ वंदना, नमस्कार या प्रणाम किया हुआ. ३ उपासना, आराधना या भक्ति किया हुआ. ४ सेवा-शुश्रूषा, टहल बंदगी या चाकरी किया हुआ. ५ उपभोग किया हुआ, भोग किया हुआ, भोगा हुआ. ६ सानिध्य किया हुआ, संसर्ग किया हुआ. ७ संरक्षण किया हुआ, रक्षा किया हुआ. ८ अण्डों पर बैठा हुआ, पोषण किया हुआ. ९ रहा हुआ, बसा हुआ. १० औषधि या पथ्य खाया हुआ ११ लिप्त हुवा हुआ. १२ रस लिया हुआ. १३ सहन किया हुआ, सहा हुआ ।

(स्त्री. सेवियोड़ी)

सेवी–वि. [सं. सेविन्] १ सेवन करने वाला, खाने या पीने वाला ।

२ उपासना करने वाला, आराधना करने वाला, भक्त ।

उ०—हालिया फेर गजनेर करवा सहळ, देखिया कोठियां महल देवी । भाळि दोनूं सहर आय पूठा भळै, सहर देसांण दीवांण **सेवी** । —मे. म.

३ सेवा करने वाला, चाकरी करने वाला ।

रू. भे.—सेवि ।

सेवौ, स़ेवौ–सं. पु.—१ पानी का सोता, श्रोत ।

२ मस्तक नीचा करके चलने वाला ।

३ अपेक्षाकृत कम गहराई पर मिलने वाला भूगर्भीय जल ।

सेव्य–वि.—१ जिसकी आराधना या उपासना करना उपयुक्त हो ।

उ०—सुरनायक **सेव्य** सम्रद्धि वहै । बळ वायक तै वज व्रद्धि वहै । —ऊ. का.

२ जिसकी सेवा या बंदगी करना उचित हो ।

सेस–सं पु. [सं. शेष, प्रा. सेस] १ पाताल में रहने वाला सहस्र फनों वाला सर्प, जिसकी शय्या पर विष्णु शयन करते हैं और जिसके फन पर पृथ्वी टिकी रहती है । लक्ष्मण और बलराम इसी के अवतार माने गये है, शेषनाग । (ह. नां. मा.)

उ०—१ जिणि **सेस** सहस फण, फणि फणि बि बि जीह, जीह जीह नवनवौ जस । तिण ही पार न पायौ त्रीकम, वयण डेडरां किसौ वस ।—वेलि

उ०—२ जिण समय दौ २ ही फोजां रा हिलोळा समुद्र रैं समांण प्रमांण मैं आया । अर तोपां री गाज हुं **सेस** रा सीसां १ समेत मकराकर मेखळा मही २ रैं मचोळा लगाया ।—वं. भा.

२ लक्ष्मण ।

उ०—१ सुण **सेस** रे सुण **सेस** रे, दिल कैकई उपदेस रे । वनवास जावण वेस रे, इम आखियौ अवधेस रे ।—र. रू.

उ०—२ कोपै तूं मौ राज कज, सांभळ वायक **सेस** । गरवां मत ग्रहियौ नहीं, यूं कहियौ अवधेस ।—र. ज. प्र.

३ बलराम, बलभद्र ।

४ परमेश्वर, ईश्वर ।

५ एक प्रजापति ।

६ एक दिग्गज ।

७ हाथी, गज ।

[सं. स=पक्षी+ईश] ८ पक्षिराज गरुड़ । (अ. मा; नां. मा.)

उ०—सट पटत भर **सेस** अति चक्रित अरेस । दिन धूंधळ दिनेस, थरराहइ अर साथ ।—र. ज. प्र.

[सं. शेष] ९ देवताओं की मनौती मनाने के लिये चढाया जाने वाला प्रसाद ।

उ०—महळी कुसळ विरांणैं मूंडै, सूंक हमेस बांटणी **सेस** । कजियारौ कीजै मुंह काळौ, कजिया मैं नित नवौ कळेस । —बां. दा.

रू. भे.—'से', सेह ।

१० पुरुषों की जनेऊ के स्थान पर धारण किया जाने वाला एक स्वर्ण आभूषण विशेष ।

११ वाक्य का अर्थ पूरा करने के लिये ऊपर से लगाया जाने वाला शब्द ।

१२ बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने पर शेष बचने वाली संख्या ।

१३ बाकी बचा हुआ भाग, अंश या मात्रा ।

१४ मुक्ति, छुटकारा ।

१५ परिणाम, नतीजा ।

१६ समाप्ति, अन्त ।

१७ मृत्यु, मौत ।

१८ नाश, विनाश ।

१९ किसी की यादगार, अवशेष ।

२० सोलंकी राजपूत वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

२१ छप्पय छन्द का २५ वां भेद जिसमें ४६ गुरु ६० लघु कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएें होती हैं । (र. ज. प्र.)

२२ टगण का पांचवां भेद, ।।।।ऽ । (डिं. को.) पिं. प्र.)

२३ टगण के छठे भेद का नाम, ।ऽऽ। । (र. ज. प्र.)

२४ छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें ७० गुरु तथा १२ लघु होते हैं ।

वि. [सं. शेष] १ जो बाकी बचा हुआ हो, अवशिष्ट, बाकी, शेष ।

उ०—१ सूरां जमदाढ लई उण संग, लई रवि रेवत माड मलंग । हुवौ असताचळ ओट ग्रहेस, सक्यौ नंह देख कुतूहल **सेस** ।—मे. म.

उ०—२ वसुदेव देवकी सूं ब्राहमणैं, कही परसपर एम कहि । हुए हरण हथळेवौ हूऔ, **सेस** संसकार हुवइ सहि ।—वेलि

२ उच्छिष्ट, छूटा हुआ ।

३ अन्य, और, बाकी, शेष ।

उ०—१ 'सुरजन' परिकर **सेस** सह, देखौ नयण दयाळ । लेतां जस १ अपजस २ लहै, चूकै जै कुळचाल ।—वं. भा.

उ०—२ द्रोण भीस्म न्रप हौ जयवंता, **सेस** कौरव जिकै बलवंता । तीह हुं सविहुं प्रतिमल्ल, एकलु त्रिजगती रि पुसल्ल । —सालसूरि

४ सफेद, श्वेत । ※ (डिं. को.)

रू. भे.—सैंस, सेस, सेस, सैंस ।

सेसजी–सं. पु.—१ शेषनाग ।

उ०—हेकण जीहा किम कहूं, मारू बौत गुणांह । इंद्र **सेसजी** गुण कहै, थाह न लाभै तांह ।—अग्यात

२ श्रीलक्ष्मण ।

३ श्रीबलभद्र, बलराम ।

सेसट–सं. पु.—१ बारह मेघमालाओं में से एक ।

उ०—मिळ रजी दहूं दळां अप्रमांण, जिण बार **सेसट** चौथी सुजांण। सेनाक हुवा जाब जस काज, अत हरख सूर कायर अकाज।
—शि. रू.

२ एक सूर्यवंशी राजा ।

उ०—सुत युव्वनास **सेसट** सवेस । निज हुवौ मांनधाता नरेस ।
—सू. प्र.

सेसधर–सं. पु. [सं. शेष+धर] शिव, महादेव ।

सेसन–सं. पु. [अं. सेशन्] १ संसद, विधानसभा, व्यवस्थापिका या न्यायालय आदि संस्थाओं का एक बार कुछ दिनों तक या एक निश्चित अवधि तक चलने वाला अधिवेशन, सत्र ।

२ इसी प्रकार कालेजों व स्कूलों की, गर्मी-सर्दी आदि अवकाशों के अतिरिक्त कार्यावधि जिसमें पढ़ाई नियमित चलती रहती है ।

सेसनकोट–सं. पु. [अं. सेशन+कोर्ट] जिले की बड़ी अदालत ।

सेसनजज–सं. पु. [अं.] उक्त अदालत का न्यायाधीश ।

सेसनाग–सं. पु. [सं. शेष+नाग] पाताल में रहने वाला, सहस्र फनों वाला सर्प, जिसके फन पर पृथ्वी टिकी रहती है, शेषनाग ।

उ०—**सेसनाग** री बेटौ मुळकतौ थकौ कैवण लागौ—म्हनै इण मैं कांई जोर पड़ै । ज्यूं कैवौ त्यूं करण नै त्यार हूं ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सेंसनाग, सेखनाग ।

सेसनाथ–सं. पु.—शेषनाग के स्वामी विष्णु ।

सेसभखण–सं. पु.—पवन, हवा । (ना. डि. को.)

सेसरंग–सं. पु.—श्वेत रंग ।

सेसर–सं. पु. [सं. शेखर] ब्रह्मा । (नां. मा.)

सेसराज–स. पु. [सं. शेषराज] १ प्रत्येक चरण में दो मगण वाला एक वर्ण वृत्त ।

२ देखो 'सेसनाग' ।

सेससायंत, सेससायी–सं. पु. [सं. शेष+शायिन्] शेषनाग पर शयन करने वाले, विष्णु ।

उ०—नमौ बेंद विस्तरण, नमौ निसचर बोह नांमण। नमौ **सेससायंत**, नमौ हबकब्ब हुतासण ।—ह. र.

सेसु, सेसू–स. पु.—जासूस, गुप्तचर ।

उ०—१ सु पोहकरण रै कोट री पौळ कींवाड़ तद न था। सु नरौ घात जोवै छै। **सेसू** लगाय मेलीया छै।—नैणसी

उ०—२ पछै असवार ४ वांसै जगमालजी **सेसू** मेल्हिया-देख्वां सिखरौ कासूं करै छै ? सु थैं जोय आवौ ।—नैणसी

सेह—१ देखो 'सेस' (६) (रू. भे.)

२ देखो 'सह' (४) (रू. भे.)

उ०—मीयांखांन मिलक्क **सह**, ऊंडा मंडै पग्ग। एक कर घतैं दढ़ियां, इक कर धूणै खग्ग ।—गु. रू. बं.

३ देखो 'सेही' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—तिकां हिज हेत दगी नंह तोप, रहौ वांन गीक बिहूं बळ रोप। जिका सगुणांकि भगांकिण जेह, मुवा भड़भांभ हुवा घड़ **सेह**।
—मे. म.

सेहज—१ देखो 'सहज' (रू. भे.)

२ देखो 'सेज' (रू. भे.)

उ०—म्हांरै **सेहज** रा सिणगार धरै आवौ थां अभारजी, भगड़ै निण विध जूंजगा।—लो. गी

सेहजै–क्रि. वि.—१ अपने-आप, स्वतः ।

उ०—कोइ भंभमूंरो भिरती म्हांनी हो। गाढ़कार दिगां जानी **सहजै** द्रस्टि पड़ी, देखनै भंभमूरो भोग्गी भाटजी री पिण मन हुओ दीसै है।—भि. द्र

२ सुगमता से, आसानी से ।

३ सहज ही, बात की बात में ।

रू. भे.—सैंज, सैजै ।

सेहट–सं. पु.—कमरा, कक्ष, कोठरी ।

सेहत–सं स्त्री. [अ.] १ स्वास्थ्य, तन्दुरस्ती, तबियत ।

२ शरीर ।

३ शुद्धि ।

रू. भे.—सेहति, सेहथि, सैहत, सैहती ।

सेहतखांनौ–देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

सेहति–देखो 'सेहत' (रू. भे.)

उ०—तै ऊपरि पछतावौ कियौ मै बुरा किया उनकै कहिनै ऊपरि कहिया। भोपति कूं खुदाइ **सेहति** दौ।—द. वि.

सेहतूत–देखो 'सहतूत' (रू. भे.)

सेहथ, सेहथि–क्रि. वि.—१ अपने हाथों से, हाथों से, स्वहस्त ।

उ०—गांगाणा पातिसाहजी नूं कहियौ—पातिसाहजी आप **सेहथि** मारो तो गाजा हुवौ।—द. वि.

२ देखो 'सेहत' (रू. भे.)

रू. भे.—सैहात ।

सेहर–सं. पु. [सं. शेखरः] १ पर्वत-शिखर, गिरि-शृंग ।

उ०—१ कासमीरी बिन्दै बिराजइ कानै, सांधा बिचइ हरिगइ सिंदूर। चढ़ती मउज रसण पिण चढ़ती, **सेहरां** बिचइ ऊगतउ सूर।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ पग पहगी सकल वाजगी पायल, नै प्रांचइ आगळी नद। गोडीरव भाद्रवड तणी गति, **सेहरां** ऊपरि सांग सद।
—महादेव पारवती री वेलि

२ शिखर, शृंग ।

उ०—१ मचि सोर झळ अप्रमांण री, बूगरड़ गोळा बांण री। घर जांण **सेहर** अब धारा, ओवडै अण पार।—रा. रू.

उ०—२ भुज च्यारै रूप बिराजइ भारी, घरहरती घूळनी घण

घाव । हेमाचळ गिरवर चा **सेहर**, वसंत तणी रुत हुई बणव ।
—महादेव पारवती री वेलि

३ मेघ, बादल, मेघ-माला ।

उ०—१ पंथी एक संदेसड़इ, लग ढोलइ पौहच्याइ । विरह बाघ वनि तनि वसइ, **सेहर** गाजड़ आइ ।—ढो. मा.

उ०—२ वह छूटै कैबर सोक नलीसर, सींघणि संधर साचवियं । धुबि जांण धराहर सालुळि **सेहर,** मेघ महाभर माचवियं ।
—गु रू. बं.

उ०—३ बिजळी झिळोमिळ करनै रही छै । बांदळां झड़ लायौ छै । **सेहरां-सेहरां** बीज चमकनै रही छै । जांणै कुळटा नायका घर सूं नीसर अंग दिखाय दूसरै घर प्रवेस करै छै ।—रा. सा. सं.

४ आकाश, नभ । (ना. डिं. को.)

५ मंडप ।

६ कंगूरा ।

७ शिखर स्थित कलश ।

रू. भे.—सेवर, सेवरड़ी, सेवरियौ, सेहरउ, सेहरि, सेहरियौ, सेहरी, सेहरौ, सेहुंरौ, सेहुरौ ।

८ देखो 'सहर' (रू. भे.)

उ०—जसौ हळोद सुं नीसर गयौ । तरै **सेहर** लूट लीनौ नै मेहरकोट पाडीयौ ।—रा. व. वि.

सेहरउ—१ देखो 'सेहर' (रू. भे.)

उ०—गणधर देव तणइ उपदेस, इंद्रइवलि दीधउ आदेस । आदिनाथ तणउ देहरउ, भरत करायउ गिरि **सेहरउ** ।—स. कु.

२ देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

सेहरकोट—देखो 'सहरपनाह' ।

उ०—जसौ हळोद सुं नीसर गयौ तरै सेहर लूट लीनौ नै **सेहरकोट** पाडीयौ ।—रा. वं. वि.

सेहरि, सेहरी—१ देखो 'सेहर' (रू. भे.)

उ०—१ लखि रूप चितांमन वारि लियां, कसि तंग उतंग सु त्यार कियां । नग बंधण अग्र सुसौभ नई, थिर **सेहरि** दांमणि जांणि थई ।—रा. रू.

उ०—२ ऊंमटि आई **सेहरी,** वरसै अगनि अपार । हरीया ऊठि पुकार करि, दाझै दुनीयांदार ।—अनुभववांणी

२ देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

३ देखो 'सहरी' (रू. भे.)

सेहरियौ—१ देखो 'सेहर' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सेवरौ' (अल्पा; रू. भे.)

३ देखो 'सेहरी' (अल्पा; रू. भे.)

सेहरौ—१ देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

उ०—१ धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज । सौ सूरां सिर **सेहरौ,** नर पुंगव सुर-नैंज ।—बां. दा.

उ०—२ 'जसवंत' न्रप रौ जगत मै, इक्कौ नांम उदार । सुदतारां रौ **सेहरौ,** दातारां दातार ।—ऊ. का.

उ०—३ आहुड़िया सूर थटै गढ ऊपर, अपछर रथ खडिया ऊमांहि । बेटौ बाप **सेहरै** बांधे, गौड़ चढै तोरण गजगाहि ।
—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—४ रांम लछमंण भरथ और चत्रघंण, देखि दसरथ हिरदौ सिळायौ । मोतियां लुंब नै कोर हीरां मांण्यकां, **सेहरौ** सीस सोभा सवायौ ।—परमानंद वणियाळ

उ०—५ हरि रै **सेहरै** सूरज सोहै, मुकट सोहै हीर । कांनै कुंडळ रतन झळकै, निरमळ सांम सरीर ।—पदम भगत

उ०—६ जिकै वेदमूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनी लगाड़ि होम करै छै । घणौ गौ घ्रत नै कपूर री आहूति दीजै छै । वेद-ध्वनि कीजै छै । दूलह नै दूलहनी **सेहरा** बांधियां पूरव साहमा वैसांणिया छै । **सेहरा** दीजै छै । चार फेरा फेरीजै छै ।—रा. सा. स.

२ देखो 'सेहर' (रू. भे.)

उ०—ढकी नींवं काकोदरां लोक ढूकै । फतै चिन्ह आकास लागौ फरूकै । मिणै मेहरौ—माग पाताळ मांनूं । सकौ देहरौ **सेहरौ** रत्न सांनूं ।—मे. म.

सेहल—देखो 'सैर' (रू. भे.)

सेहलौ—देखो 'सेळौ' (१) (रू. भे.)

उ०—वांटि व्रस्चिक दीसीइ, भूकोटि भू-टंकि । **सेहला** साबलि संखला, साह विनांणी बहू संक ।—मा. कां. प्र.

सेहवीरी—वि. स्त्री.—लज्जाजनक, शर्मनाक ।

उ०—ताहरां खीवौ विजौ बोलीया तैं बुरौ कांम कीयौ चोर रौ जायौ नहीं । इसी बात कोई करै । या तौ **सेहवीरी** बात छै ।
—चौबोली

सेहसूळियौ—देखो 'सेळौ' (१) (रू. भे.)

सेहहजारी—सं. पु. [फा.] मुगलबादशाहों के शासन में सरदारों और दरबारियों को मिलने वाली एक उपाधि जो तीन हजार सैनिकों का अधिष्ठाता होने की सूचक थी ।

सेहाई—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—**सेहाई** सतां सेवगां, ताई देणा तापरां । औनाड़ा राधौ भू अखै, पांणां धाड़ा आपरां ।—र. ज. प्र.

सेहो—सं. स्त्री. [सं. सेधा, शल्लकी] एक प्रकार का रेगिस्तानी जानवर विशेष जिसके शरीर पर नुकीली सूलें होती हैं । यह प्राय: टीबों के विवर में रहता है ।

उ०—करसण **सेही** स्याळ बिल, गिर त्रिय बांमण गाय । समरांगण मंह साधणा, चाहै चित्त चलाय ।—बां. दा.

रू. भे.—साही, से, सें, सेयली सेवली, सेह, सैवळी, स्याही ।

सेहुंरौ, सेहुरौ—१ देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

उ०—१ पट चौरी पधराविया, वर बेहुड़ा सु विंद । सोहै दुल्लह

सेहरा, उडगरण मधि जिम इंद ।—रांमरासौ

उ०—२ साळै दीधा **सेहुरा** वणि सखराळा विंद ।—रांमरासौ

२ देखो 'सेहर' (रू. भे.)

सैं—क्रि. वि.—१ ठीक, एकदम ।

उ०—१ यूं करतां कोस ६ पौंहच्या । आगै मारग रै **सैं** बिचै नाहरी बैठी छै ।—जगदेव पंवार री बात

उ०—२ थोड़ी ताळ मैं इज टाबर मे'ल माळियां सूं कुड़ता री फड़क भरनैं पाछौ आयौ अर ऊभौ ऊभौ इज वांनैं आंगणा रै **सैं** बीच नांखनैं रमण नैं बारै नाठग्यौ ।—अमरचूनड़ी

२ प्रत्यक्ष ।

उ०—स्रीजिणचंदसूरिंदजी रे, **सैं** हथ दीधौ पाट । महोछब सूरेत मंडिया रे गीतां रा गहगाट ।—ध. व. ग्रं.

वि.—१ खास ।

उ०—१ पूनमौ कैवण लाग्यौ—थांरै आयां पछै दीवाळी रै **सैं** दिन गांव मैं धाड़ौ पड़ग्यौ । रातवासौ

उ०—२ मां ठीमर सुर मैं आगै बोली—थारै जनम रै दौ बरसां पे'ळ री बात है बेटा, आंपणै गांम मैं धाड़ौ पड़ग्यौ हौ, धनतेरस रै **सैं** दिन ।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ इणी महीना री सूनम रै **सैं** दिन सावा री बात सुणी तद वा मां नैं कह्यौ—म्हनै अेकर पूछ तौ लेणौ हौ ।—फुलवाड़ी

२ सौ ।

उ०—आया उमराव रायमल का तमांम । ग्यारा **सैं** घोडां का बणिगा कमांम ।—शि. वं.

३ सब, समस्त ।

उ०—मासी रा नेह मैं समंदर रै उनमांन तूफांन, गरजण, छोळां, हिबोळा इत्याद **सैं** बातां ।—फुलवाड़ी

सं. पु.—खास दिन, विशेष दिवस ।

उ०—**सैं** होळी नै ढळी जाजमां, होय रही मतवाळ । बोतल तौ जगजग करै, कोई प्याला करै पुकार ।

—डूंगजी जवारजी री छावली

सर्व.—हम ।

उ०—ढोला खील्यौगे कहइ, सुणै कुढंगा वैण । मारू म्हाजी गोठणी, **सैं** मारूंदा सैण ।—ढो. मा.

रू. भे.—सै ।

सैंकड़ी, सैंकड़ौ—देखो 'सैंकड़ौ' (रू. भे.)

उ०—पछै थोड़ा दिनां मैं मेह घणौ आयां थी पहिली उतरिया तिण हाट रौ पाट भागौ । **सैंकड़ी** मणा बोझ पड़ग्यौ ।—भि. द्र.

सैंग—वि. [सं. सकल] १ सब, समस्त, सभी, तमाम ।

उ०—१ तौ समांन तोलूं तुला, खांवद 'जसवंत' खैंग । तेज लैण जावै न्रपत, सूरज मंडळ **सैंग** ।—ऊ. का.

उ०—२ सेठ रै जातां ई माल इत्तौ सूंगौ कर दियौ कै आखा चौखळा री उठै ढूक व्हैगी । दूजी **सैंग** दुकानां री कमाई ठाय रै'गी ।

फुलवाड़ी

उ०—३ जिनावरां मैं सोधौ स्याळियौ, पंखेरूआं मैं कागौ काळिगौ अर मिनखां मैं नाई-नागौ तथा जाळियौ बाजै है । जिगा ही **सैंग** जात्यां मैं सुनार लखणहीण अर बेविसवासी गिण्यौ जावै है ।

दमदोस

२ पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण ।

उ०—जिकां नैं म्हैं **सैंग** उमर दबाय नैं राख्या पण आज वै आपां माथै मुसीबत आई देखनै कारवां कूटै है । अमरचूंनड़ी

रू. भे.—सैंग ।

सैंगत—देखो 'सेंगत' (रू. भे.)

उ०—जटियै पडूत्तर दियौ—बात तौ है ज्यूं री ज्यूं है । थूं ईज **सैंगत** व्हैगी । थारै नाक री कूपळ बळगी । फुलवाड़ी

सैंगमैंग—वि. हतप्रभ ।

उ०—लिखमी **सैंगमैंग** हुयोड़ी टुग-टुग जोय रही ही अर बिर्य री आंख्यां मांय-सूं झर-झर'र मोती रा दांणा अेकेन पांत रै पगां में पड़ रया हा । वरसगांठ

सैंगू वि.—१ संग, साथ वाला, साथी ।

२ देखो 'सैंग' (रू. भे.)

सैंचनण, सैंचनण, सैंचन्नण सं. पु.—प्रकाश की अत्यन्त तीव्र किरण, झलक या लौ जिसके कारण परिवेश में पूर्ण उजाला हो जाय, पूर्ण प्रकाश, तेज रोशनी ।

उ०—बीजळियां रा छै मिळाव, **सैंचनण** बर हुवै रह्यौ जी ।

रमीजेराज रौ गीत

वि. पूर्णतया प्रकाशित, जगमगाता हुआ, ज्योतिर्मय ।

उ०—दोय बीजां री जड़ सदा हरी । पांणी नै मैंणत री । पांणी सूं ई आ धरती हरियळ । मैणत सूं ई आ दुनियां **सैंचन्नण** । मैंणत आगै मांदेवजी नैं ई निवंणौ पड़ै । फुलवाड़ी

रू. भे.—सैंचन्नण ।

सैंजोड़—सं. पु.—दम्पति ।

वि.—१ जोड़ सहित ।

२ समान, सदृश ।

सैंजोड़े, सैंजोड़ै—क्रि. वि.—पति-पत्नी साथ-साथ, पति सहित ।

उ०—सारस केळ करै **संजोड़े**, ऊंचा भमंग चढै अर ओड़ै । दिस पिछमांण बादळा दौड़ै, नद जळ नदियां ढावा तोड़ै ।

वर्षा विज्ञान

संजोत, सैंजोती—सं. स्त्री. [सं. स+ज्योति] जीवात्मा का परमात्मा से मिलन, ज्योति में ज्योति का मिलना, मोक्ष, सामुज्य मुक्ति ।

उ०—अछरां वरां पळवरां आंमल, सिर सकर सूरां **संजोत** । जिम दीरघ व्हैतां जमजेठी, दीरघ मरण कियौ दैसोत ।

—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

२ ज्योतिर्मय, ज्योतियुक्त, प्रकाशमान, प्रकाशित ।

उ०—रतनां सुग्ग रोतीह, भाटी नैं पूगौ भलौ । जद जस **सैंजोत-ह** थांन पांन थप थापना ।—पा. प्र

सैंजोर–वि. [फा. शहज़ोर] बलवान, ताकतवर ।

सैंट–सं. पु. [ग्रं.] इत्र, सुगंधित द्रव्य ।

उ०—कांनां मैं **सैंट** रा फोवा टांग्या, हाथां रै मैंदी मांडी ग्रर रोजौ राख्यौ । ग्राज दोनूं ड्यूटी मूं छुट्टी लै ग्राया ग्रर करसी ग्रापरा मन चाया ।—दसदोख

रू. भे.—सेंट ।

सैंठाइ, सैंठाई–सं. स्त्री.—१ बलशाली या ताकतवर होने की अवस्था या भाव ।

२ जोरावरी, जबरदस्ती ।

३ बल, शक्ति, ताकत ।

रू. भे.—सेंठाइ, सेंठाई ।

सैंठौ, सैंठौ–वि. [सं. साधीष्ठ, प्रा. साहिट्ठ] (स्त्री. सैंठी) १ किसी प्रकार के भय, त्रास, चिंता कमजोरी या हीन भावना से मुक्त, साहसयुक्त, साहसी, निर्भय, निश्चित, दृढ़ ।

उ०—जगरूपसिंघ विहारीदासजी नूं इसी लिखावट करी थी कै मोहतौ थांनूं मारणनूं ग्रादूणी सूं हुकम लेयनै ग्रायौ है, सू थै घणा **सैंठा** रहज्यौ ।—द. दा.

२ ग्रावेश, जोश, उत्तेजना या ग्राक्रोणपूर्ण विचारों पर काबू रक्खा हुग्रा, सब्र किया हुग्रा, विवेकशील, दृढ़ विचार वाला, धैर्यवान ।

उ०—डीकरी घणी ई **सैंठी** रही तौ ई उग्र री रीस काबू बारै व्हैगी ।—फुलवाड़ी

३ कष्ट, पीड़ा, हानि ग्रादि को झेलने वाला, सहनशील, सहिष्णु ।

४ ग्रपने उद्देश्य, सिद्धान्त या धर्म पर कायम, दृढ, ग्रडिग ।

५ थकान, ग्रालस्य ग्रादि से मुक्त, तरौताजा, स्वस्थ ।

६ बलवान, शक्तिशाली ।

७ विचलित न होने वाला, ग्रविचल ।

८ ग्रटल, ग्रडिग, निश्चल ।

९ मजबूत, दृढ, पक्का ।

१० सावधान, सचेत ।

११ सख्त, ठोस ।

१२ देखो 'सांठौ' (रू. भे)

रू. भे.—संहटौ, सहटौ, सहंठौ, संठौ, सांठौ, सेंटौ, सेंठौ, सैठौ ।

सैंग—देखो 'सैग' (रू. भे.)

उ०—१ स्यांग्रा स्यांग्रा **सैंग** देस मैं गैला दीठा । पुरख कठग्र पारखा, मांहि खारा मुख मीठा ।—ऊ. का.

उ०—२ तन झूठा जोबन भी झूठा, झूठी **सैंग** सगाई । माता-पिता सब ही सुत झूठा, ग्राडा कोय न ग्राई ।—ग्रनुभववांणी

उ०—३ बहु ग्रादर सूं बोलियैं वारू मीठा वैंग्र । धन विग्र सागां 'धरमसी', सगला ही व्है **सैंग** ।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ कहैं नं बंध्र **सैंग** हकारूं, कोट गढां का राजा । जोगी जंगम सह चुग मारूं, एक न मेल्हूं राजा ।—मेहौजी गोदारौ

सैंगकी—देखो 'सैंगी' (ग्रल्पा; रू. भे)

उ०— बापड़ी **सैंगकी** गाय रै गाडी मैं जुतग्गौ तौ बस री बात ही पग्र नीचै सूं मूतग्गौ हाथ री वात ही कोनी ।—ग्रमरचूंनड़ी

सैंगप— देखो 'सैंगप' (रू. भे.)

उ०—तनै कांई पंचायती है ? तूं थारै पापै-पुन्नै लाग । ग्रायौ वग्गौ-ई रांड रौ भाई वग्र'र । कांनून छांटै है, कोरी **सैंगप** लगावै है ।—वरसगांठ

सैंगर— देखो 'सज्जन' (रू. भे.)

सैंगला–सं. स्त्री.—वेदा की पुत्री, सैंणीदेवी ।

उ०—तैं पावइं वडा ब्रिदि पाया, तैं जगदीस जिसा नर जाया । इंमिया खिमिया मांस ग्रहारिग्गी, चारिग्गी निमो **सैंगला** चारिग्गी ।

—पी. ग्र.

सैंगाई–सं. स्त्री.—१ शहनाई ।

उ०—चारूं कांनी बाजा वाजै है । **सैंगाई** रै सुर सूं दिसावां गूंजै हैं ।—वरसगांठ

२ देखो 'सैंगप' (रू. भे.)

सैंगी—देखो 'सैंगी' ।

उ०—बाबर बीखरिया ग्रोढणियै ग्राडै । डाबर नयग्गां री टांबर वय डाडै । नवळा नगाती संगाती **सैंगीं** । निरगीं नव ग्रंगा गंगा जळ नैंगीं ।—ऊ. का.

सैंगौ—देखो 'सेगौ' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रादर ऊंचै कुल ग्रधिक, रिद्धि घगौ निरोग । धरम थकी व्है धरमसी, **सैंगां** रौ संयोग ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ सौ पनियौ **सैंगौ** साळस ग्रर निरदोस व्हेतां थकांई एक चोरी रा मांमला मै पकड़ीजग्यौ ।—ग्रमरचूंनड़ी

(स्त्री. सैंगी)

सैंतळ–सं. स्त्री.—१ हलवा बनाने के लिये घी में भुना हुग्रा मेदा, ग्राटा, पीसी हुई दाल या सूजी ।

उ०—खुरपै सूं **सैंतळ** हलावग्र लागौ ।

—राजा भोज ग्रर खापरा चोर री बात

रू. भे.—सेतळ ।

२ देखो 'सैंतळ' (रू. भे.)

सैंता—देखो 'सैंता' (रू. भे.)

सैंताळिस, सैंताळी, सैंताळीस–वि. [सं. सप्तचत्वारिंशत्] चालीस व सात का योग, छियालीस से एक ग्रधिक ।

सं. पु.—चालीस व सात के योग से बनने वाली संख्या, ४७ ।

उ०—सात टगग्र फिर त्रिकळ यक, ग्रंत रगग्र इक ग्रांग्र । मत

सैंताळी पाय मैं, पंच वदन सौ जांण ।—र. ज. प्र.

रू. भे.—सैंताळी, सैंताळीस, सैंतालीस ।

सैंताळीसमौ, सैंताळीसवौं–वि.—छियालीस से आगे वाला, ४७ वां, सैंतालीस के स्थान पर होने वाला ।

सं. पु.—सैंतालीसवां वर्ष ।

सैंताळीसे'क–वि.—सैंतालीस के लगभग, करीबन् ४७ ।

सैंतालिसैं–क्रि. वि.—सैंतालीसवें वर्ष में ।

रू. भे.—सैंताळीसैं, सैंतालीसैं, सैंताळै, सैंताळै, सैंताळै ।

सैंताळीसौ–सं. पु.—४७ का वर्ष ।

रू. भे.—सैंताळीसौ, सैंतालीसौ, सैंताळौ ।

सैंताळै—देखो 'सैंताळीसैं' (रू. भे.)

सैंताळौ—देखो 'सैंताळीसौ' (रू. भे.)

उ०—आद इतां नवकोट उजाळा, राजा जतन उतन रखवाळा । तुरकां असह थयौ सैंताळौ, चढियौ 'दुरंग' करण धर चाळौ ।
—रा. रू.

सैंतिस—देखो 'सैंतीस' (रू. भे.)

सैंतीर, सं'तीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

उ०—१ खूंटा खड़ा वळा कूंचिया, हालां सूं हळ ठाटिया । सिरधर अर सैंतीर साळां खूड भूण थम पाटिया ।—दसदेव

उ०—२ औ पाप फूट फूट नै निकळैला । आज तौ थांरा सैंतीर तिरै-मन चाया करलौ ।—फुलवाड़ी

सैंतीस–वि. [सं सप्तत्रिंशत्] तीस और सात का योग, छत्तीस से एक अधिक ।

सं. पु.—तीस और सात के योग से बनने वाली संख्या, ३७ ।

रू. भे.—सैंतीस, सैंतिस, सैंत्रीस, सैतीस ।

सैंतीसमौं, सैंतीसवौं–वि.—सैंतीस के स्थान पर होने वाला, छत्तीस से आगे वाला ।

सं. पु.—सैंतीसवां वर्ष ।

रू. भे.—सैंतीसमौं, सैंतीसवौं, सैतीसमौं, सैतीसवौं ।

सैंतीसे'क–वि.—सैंतीस के लगभग ।

रू. भे.—सैंतीसे'क, सैतीसे'क ।

सैंती–क्रि. वि.—धीरे-धीरे ।

उ०—**सैंती-सैंती** पीड़ ताड़ौ, लपेट लकड़ी लीरड़ा । तीजै दिन वन पयांन करै, त्याग दुवाई चीरड़ा ।—दसदेव

सैंतीसौ–सं. पु.—३७ वां वर्ष ।

उ०—**सैंतीसौ** पूरौ थयौ, अड़तीसै वरसात । असमर चाळौ उठियौ, समहर सांझ प्रभात ।—रा. रू.

रू. भे.—सैंतीसौ, सैंत्रीसौ, सैतीसै, सैतीसौ ।

सैंत्रीस—देखो 'सैंतीस' (रू. भे.)

सैंत्रीसौ—देखो 'सैंतीसौ' (रू. भे.)

उ०—'अकबर' 'तहवर' बूझनैं, मेलै ताजतखांन । **सैंत्रीसै** रा माहन्द, नमि रस थयौ निदांन ।—रा. रू.

सैंद–सं. स्त्री.—१ जान पहचान, परिचय ।

२ जानकारी ।

रू. भे.—सैंद, सैंध, सैध ।

सैंदरुप, सैंदरूप–क्रि. वि.—१ सम्मुख, सामने, प्रत्यक्ष, साक्षात ।

उ०—फूफोजी **सैंदरूप** म्हनै दरसाण दिया । काकी की नै अमल गियोड़ा है ।—फुलवाड़ी

२ वास्तविक रूप, असली रूप ।

उ०—पण मिनख खुदोखुद ईस्वर री ईं एक साचेलो नै **सैंदरूप** प्रमांण है ।—फुलवाड़ी

सं. पु.—रेशेदार व कड़े छिलके वाला नारियल, श्रीफल ।

रू. भे.—सदरूप, सेंदरूप, सैंदरूप ।

सैंदांण—देखो 'सादियांणी' (रू. भे.)

सैंदांणी—देखो 'सैनांणी' (रू. भे.)

उ०—अमरत कीरी रतन मदवी, या **सैंदांणी** जीजा । काममरा हूता सब जड़मांणी, जाय भरत नै दीज्यो ।—ना गी

सैंवांणी, सैंवान, सैंवानी—देखो 'सादियांणी' (रू. भे.)

उ०—निरी दारू धोळ दरबार नाय बधाई दीधी, बधाई पधारजा छै । **सैंवांना** गरू हुवा, पधार वाजै, अगावा वाजण लागा ।
—जगदेव पवार री वात

सैंदेस–सं. पु. [सं. स्व + देश] १ अपना देश, अपना वतन, स्वदेश ।

उ०—१ हम कहै वयण **सैंदेस** आय । परदेस छवायौ गढ़ गजाय ।
—गू. प्र.

उ०—२ 'सीहै' आउ **सैंदेस**, कथन कहियौ ।मधउजा । मारि निमी भारकां, किसा पुरदीप मकाउजा ।—गु. रू. ब.

२ देखो 'सैंदेह' (रू. भे.)

सैंदेह, सैंदेहौ, सैंदेहे, सैंदेहै–वि.—देह के साथ, सशरीर, सदेह, जीवित ।

उ०—१ नारांजा कै भड़ै सूर अरूड़ण लगावै नेह । देह पलै केही सूर आभड़ै न छोन । देह त्यागै केही सूर जीरणां वस्त्रां दाय, **सैंदेह** देवांणां बैठ जावै कै साजात ।—बदीदास खिड़ियौ

उ०—२ **सैंदेही** स्रग गयौ, गगनाया कथणी । अंगरेजा नै अमरा, सिद्ध पिण आघौ कीन्हौ ।—बैगामी

उ०—३ परणि हौ पिरिथिणि परमेस पाव, जीव सहि वरै **सैंदेहे** जात्र ।—पीं. ग्रं.

उ०—४ जरा व्याध तीर तांण, प्रभु कै लगायौ बांण । ताही कूं विवांण सूरग, **सैंदेही** पठायौ है ।—ऊदौजी अड़ीग

रू. भे.—सैंदेस, सेंदेह, सैंदेस, सैंदै, सैंदेह ।

सैंदै—देखो 'सैंदेह' (रू. भे.)

उ०—नै रावजी स्रीकरनीजी रौ दरसण कियौ । अरु हाथ जोड़ इग्या मांगी । तद स्रीकरनीजी **सैंदै** विराजै है । सू स्रीकरनीजी फुरमायौ, 'वीका', भलौ हुसी, सिद्ध कर' ।—द. दा.

संदोई–सं. पु.—सहदोई नामक एक प्रकार का क्षुप ।

सैंदौ–वि. [स. सधित] (स्त्री. सैंदी) जान-पहचान का, परिचित ।

ज्यूं—**सैंदौ** मसांण, असैंदौ निवांण ।

२ जिससे किसी प्रकार का सम्पर्क हो ।

रू. भे.—सहंदौ, सेंदौ, सेंधौ, सैंधौ, सैंहदौ ।

अल्पा;—सेंधियौ ।

सैंध—१ देखो 'सैंद' (रू. भे.)

उ०—तद इबराहीम कही मोनूं तो सूं आगली पिछांण नहीं तिण री फेर सैंध करूं ।—नी. प्र.

२ देखो 'सेंध' (रू. भे.)

सैंधणी–वि.—स्वामी, मालिक ।

उ०—१ महाराजा साजां गुणां कविराजां प्रतिपाळ । तेरह साखां **सैंधणी**, सौ लक्खां देवाळ ।—रा. रू.

उ०—२ करम रौ **सैंधणी** सरम रौ कोट । मरम रौ जांणगर कुंअर मन मोट ।—ल. पिं.

क्रि. वि.—१ प्रत्यक्ष, सामने ।

२ देखो 'संधीणी' (रू. भे.)

सैंधव–सं. पु. [सं. सैंधवः] १ सिंधु देश का एक घोड़ा विशेष, अश्व । (डिं. नां. मा.)

२ घोड़ा, अश्व ।

उ०—१ स्रीफळ रतन जड़ित सुखदाई । **सैंधव** दस दोय गयंद सवाई ।—रा. रू.

उ०—२ ऐ जौ अकबर काह, **सैंधव** कुंजर सांवठा । बांसै तौ बहताह, पंजर थया प्रतापसी ।—दुरसौ आढौ

२ सेंधा नमक ।

उ०—१ दादू **सैंधव** कै आपा नहीं, नीर क्षीर परसंग । आपा फटक पखांण कै, मिळै न जळ कै संग ।—दादूबांणी

उ०—२ सेंचल **सैंधव** जांण, आगर रौ परमांण । समुद्र-खार जांणियौ ऐ, कालौ लूण आंणियौ ऐ ।—जयवांणी

३ सिंधु देश ।

४ उक्त देश का निवासी ।

५ उक्त देश का राजा, जयद्रथ ।

६ सिंधु राग विशेष, वीररस पूर्ण राग ।

उ०—तुटै कइ सीस कटै तन त्रांन, उठै कइ सूर जुटै कइ आंन । लुटै कइ भोम छुटै सर लाग, रटै कइ जोगड़ **सैंधव** राग ।—पे. रू.

वि. [सं. सैंधव] १ सिंधु देश का, सिंधु देश सम्बन्धी ।

२ समुद्र सम्बन्धी, सामुद्रिक ।

३ सिंधु नदी सम्बन्धी ।

रू. भे.—सिंधव, सेंधव, सेंधवौ, सैंधू, सैंधौ, सैंधव ।

सैंधवपति–सं. पु.—सिंधु देश का राजा जयद्रथ ।

सैंधवादिचूरण–सं. पु. [सं. सैंधवादिचूर्ण] वैद्यक का एक अग्निदीपक चूर्ण ।

सैंधवी–सं. पु.—१ सिंधु राग ।

२ भैरव राग की पुत्र-वधू, सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी ।

उ०—तीज गळै अलवैला झूलै, सखियां गाय रही छै समाजी । मिळ रही तांन **सैंधवी** रा सुर सुं, वण रही रंग री वाजी ।

—रसीलैराज रौ गीत

वि.—सिंधु देश की, सिंधु देश सम्बन्धी ।

सैंधा-मुहां—देखो 'सेंदेमूंडे' (रू. भे.)

उ०—'सूर' रौ दिली दरगाह असहां सिरै, हियै चड प्रवाडा लियण हिळियौ । मूंहां सैंदां तणां मार हिंदु मुगळ, मछर **सैंधा-मुहां** आंण मिळियौ ।—देवराज रतनू

सैंधौ-मैंधौ–वि.—परिचित ।

उ०—लूंणासर मैं रेल वगै जकी ही मा'रजा रै गांव रै ठेसण लागै । **सैंधा-मैंधा** घणां आवै अर रेल चढै उतरै ।—दसदोख

सैंधी—देखो 'सैंदौ' (पु.)

सैंधू—१ देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

२ देखो 'सैंदौ' (रू. भे.)

सैंधौ—१ देखो 'सैंदौ' (रू. भे.)

उ०—१ अठा थी भंवर गयौ । उठै **सैंधौ** पटेल १ थौ तिण कन्है घोड़ी १ मांग नै घुघरट गयौ ।—नैणसी

उ०—२ सेवट सेठां री **सैंधी** बोली सुणनै पाछा मुड़्या ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ मारू **सैंधै** मुहै, दुरति धौळै दीहाड़ै । जग-जेठी जमदूत, 'मल्ल' जांणै आखाड़ै ।—गु. रू. बं.

उ०—४ बच्चां नूं छोड कठै जाय न सकी व सहर अण **सैंधौ** थौ ।

—साह रांमदत्त री बात

२ देखो 'सेंधौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सैंधी)

सैंन—१ देखो 'सैंण' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ सूती ही सपनै मैं जांनु, सहीत आयैं **सैंन** । आधी हुय हुय मिळवा लागी, ऊघरि आयैं नैंन ।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया अंदर ऊपजै, ऐसा निकसै वैंन । मिळीयां सेती मन कहै, यौ दुरजन यौ **सैंन** ।—अनुभववांणी

उ०—३ सूती सपनै रैंन कै, पाय विलंबी **सैंन** । हरीया जांणु उठि मिळुं, ऊघरि आयैं नैंन ।—अनुभववांणी

२ देखो 'सेंन' (रू. भे.)

उ०—सांम सखी मिळवा कै कारन, दै दै थाकी **सैंन** संदेसै । उंन मुंन ध्यांन आतम कौ, एकौ आठुं पौहर हमेसै ।—अनुभववांणी

सैंनणी—देखो 'सांजणी' (रू. भे.)

सैंना—देखो 'सेना' (रू. भे.)

सैंनिका–सं. पु.—एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक गुरु, एक

लघु के क्रम से २१ वर्ण होते हैं।

सैंफळ, सैंफळियौ—देखो 'सैंफळौ' (रू. भे.)

उ०—आ व्रत कळ ऊकळगहण गळोवळ, सिलहां सकंळ ऊजडियं। भड भिडै भुजां बळ सुजडै **सैंफळ**, धोमग उच्छळ धटहडियं।

—गु. रू. बं.

सैंफळौ—सं. पु.—युद्ध, समर।

उ०—१ भाट नाराजियां बहंतां झेलतौ, जोरवर बुधा री बेळ जोपै। संभजीवत हुवौ साजि खळ **सैंफळै**, अवळ 'दोलां' कमळ लोह ओपै।—दौलतसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ **सैंफळै** लड़ै भड़ असुर सुर, जड़ै मैल खागां जरक। कौतक्क जेण देखै कळह, ऊभौ रथ थांभै अरक।—सू. प्र.

वि.—अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित, शस्त्रधारी योद्धा।

उ०—१ प्रळैकाळ रण ताळ वडौ इक आव्रत वूहौ। सीसोदां **सैंफळां**, सरिस राठोड़ां हुऔ।—गु. रू. बं.

उ०—२ स्रीरांम खळ हुय **सैंफळां**, हुव बांण बहजळ झळहळां।

—सू. प्र.

रू. भे.—सइंफळउ, सैंफळ, सैंफळियौ, सैंफळ, सैंफळौ।

सैंबळ—देखो 'सेमळ' (रू. भे.)

उ०—ददा देही कारमी, गरब करौ मत कोय। **सैंबळ** कै सै फूल हैं, देखण कै दिन दोय।—जांभौ

सैंभर—१ देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—१ अधिप डंडै अजमेर नूं चढियौ **सैंभर** सीस। सिर लंका किर सांम घण, रांम विचारी रीस।—रा. रू.

उ०—२ रांमूजी! थै उस्ताद किसौ पीसणौ उठाय लाया। मजौ किरकिर कर दियौ। मरण दो-नी साळी मंगतवाड़ नै, किसी **सैंभर** सूनी हुवै है?—वरसगांठ

२ देखो 'सांभरियौ' (रू. भे.)

उ०—वजी हक गूंझ उठी सहवेड, खगां मुंह झूटत **सैंभर** खेड।

—पा. प्र.

सैंभरियौ—देखो 'सांभरियौ' (रू. भे.)

उ०—'इंद्रोखै' आथांण रौ, **सैंभरियौ** साखैत। खित पुड़ धड़ सिर खूंद रै, हरक समप्पण हेत।—किसोरदांन बारहठ

सैंभरी—सं. स्त्री.—१ सांभर नगर के निकट पहाड़ी पर स्थित एक देवी की मूर्ति जिसे शाकंभरी देवी भी कहते हैं।

२ देखो 'सांभरियौ' (रू. भे.)

सैंमुख, सैंमुखि, सैंमुखौ—देखो 'सनमुख' (रू. भे.)

उ०—१ **सैंमुख** गुरु रै सुजस, प्रसिद्ध कीजै परसंसा। सगा सणेजा सैंण, वरणवौ पूठा वांसा।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ ताहरां राव स्रीकल्यांणमलजी पातिसाहजी **सैंमुखि** तेड़ि घणी दिलासा दै नै बीकांनेर नूं विदा किया।—नैणसी

उ०—३ **सैंमुखौ** कांम न कीजिइं रे लाल, जै पर पूठें थाय रे सौ०। आलोची मन आपणी रे लाल, मांडज्यो एह उपाय रे सौ०।

—प. च. चौ.

सैंलौट—देखो 'सैलोट' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रग जड तोड़ मोड़ बीरगा, भर गारूजळ दांत धरै। मारू राग अगी मद गैगळ, कोट गहा **सैलोट** करै।

—महाराजा जसवंतसिंघजी रौ गीत

उ०—२ मोकमसिंघ कलियांण रौ, मेड़तियौ मन मोट। दिस गुज्जर अरा खेड़ियौ, घरकरवा **सैलोट**।—रा. रू.

सैंवणौ, सैंवबौ—१ देखो 'सेवणौ, सेवबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सहणौ, सहबौ' (रू. भे.)

उ०—गे: सैं: ऊमर भर ऊंधा-सूंधा लोगां रा कोरडा ही **सैंवता** रै'वै है।—दसदोख

सैंवज—देखो 'सेवज' (रू. भे.)

उ०—घणां **सैंवज** गोहूं सारी सीव काठा नीपजै छै। मण १ गोहूं वाया मण ६० गोहूं हुवै छै। घणी ज्वार हुवै।—नैणसी

सैंवियोड़ौ—१ देखो 'सेवियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सैंवियोड़ी)

सैंस—१ देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

उ०—१ सोळा **सैंस** गोपी तज दीनी, कुबजा संग लगाई।—मीरां

उ०—२ सतमेख सदं, अज **सैंस** अदं। मिराटान मदं, अण अन्न हद।—र. रू.

२ देखो 'सेस' (रू. भे.)

सैंसकार—देखो 'संस्कार' (रू. भे.)

उ०—१ आगं वोनी बापड़ा रा **सैंसकार** थांरै घर रा हुयग्या, महाराज! म्हारै घर री अन-जळ चूकग्यौ।—वरसगांठ

उ०—२ बापूजी सूं चोखौ जी रळघोड़ौ है। आगलां रा **सैंसकार** है। जणा ही अकसांच आवै है।—दसदोख

सैंसक्रत—देखो 'संसक्रत' (रू. भे.)

सैंसमूळी—सं. स्त्री.—थोर नामक पौधे के आस-पास होने वाली एक जड़ी विशेष।

सैंसार—देखो 'संसार' (रू. भे.)

उ०—खडग कणत तणां तका नागा खड़ै, ऊबरै तका जळधार वारै। गहर भर तारियौ 'छत्रौ' खत्रियां गुर, नवै **सैंसार** गुर सदा तारै।—राव सत्रसाल हाडा रौ गीत

सैंसारी—देखो 'संसारी' (रू. भे.)

उ०—आंढगी केकांण फेर सुरभी एवठी आंणी, जांणी मही सूर चंद्र रिसी तौ जुगाद। देवळा संभाळी बाई आपरी गाय नै देखौ, ऊचारी **सैंसारी** वात निभाई अनाद।—बादरदांन दधवाड़ियौ

सैंसी—देखो 'सांसी' (रू. भे.)

उ०—ठगी माथै कमर बांधी, सोखीनाई नै धोखा धड़ी सूं सांधी।

सैंसी अर मैं'तर तांई मांगै विना नहीं छोडचौ ।—दसदोख

सैंहते–क्रि. वि.—धीरे-धीरे ।

उ०—छळ सूं त्रंब घेंच लयौ **सैंहतै**, पुळ पूगोय 'पाल' विनां पैहतै ।
—पा. प्र.

सैंहदौ—देखो 'सैंदौं' (रू. भे.)

उ०—जद सुसलौ बोल्यौ—**सैंहदौ** जागां छूटै नहीं । ज्यूं साची स्रद्धा री रहिस बेठी तौ पिण आगला **सैंहदा** कुगुरु त्यांरौ संग छोडै नहीं ।—भि. द्र.

(स्त्री. सैहदी)

सैंहस—देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

उ०—रण जोर अलेख लहै जोरावर, भिड़ै कायमखां छळि भरै । **सैंहस** एक दस लिया सकरड़ै, कूरम तौ न संतोख करै ।
—सादूळसिंघ सेखावत रौ गीत

सैंहसकर, सैंहसकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

सैंहसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

उ०—आरंभ रांम आरंभ गुरु, पारधही फरसां धरण । गजसिंघ महण गंभीर पण, कळा तेज **सैंहसकिरण** ।—गु. रू. बं.

सैंहात, सैंहाथ—देखो 'सेहथ' (रू. भे.)

उ०—**सैंहात** जोड़ गाडौ सकत, सेवग पुंचायौ कुसळ सत ।
—रांमदान लाळस

सै–वि.—१ समान, अनुरूप, बराबर ।

उ०—१ दळ भागा बिंदुर नीधक निडुर, वूहड मच्छर धन्न हियं । वूहां किरि वज्जर चौरंगि चक्कर, गज्ज गिरव्वर **सै** गुडियं ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ लखण बतीसै मारुवी, निधि चंद्रमा निलाट । काया कूंकूं जेहवी, कटि केहरि **सै** घाट ।—ढो. मा.

२ सब, समस्त ।

उ०—१ सहू दईरा दीकरा, लीला लाडै लीक । दई हूंत छांना दिवस, **सै** काटै विण सोक ।—बां. दा.

उ०—२ लारै फुर'र देखियौ तौ आगै लुगायां, टाबर-टींगर, मिनख, **सै** मिळा'र कोई १५ जणा ऊभा ।—वरसगांठ

उ०—३ पछै राजा जगदेव, **सै** साथै करि दरबार आया । बैठां बातां करी । राजा निपट राजी हुवौ ।—जगदेव पंवार री बात

क्रि. वि.—१ में ।

उ०—तिसड़ै फोज विचळी । ताहरां पठांण नाठा । नासतां हीज मांहै हेमू नाठौ जाइ छै । तिसड़ै **सै** साहु कुळीखांन बळीवेग आपड़ियौ ।—द. वि.

२ से ।

उ०—१ जांहरां ऊ बांभी गांम लांबिया रै कनारै **सै** गयौ । ताहरां बांभी दीठौ—नगारा तौ बजाय लेवां ।—नैणसी

उ०—२ सिरकार पातसाही **सै** जांन कर सत गुमास्तै अर आदमी अपनै कै ताकीद तमांम करै ।—द. दा.

उ०—३ सांम्रित साख पुरांन कु, सीख'रि भया सुजांन । हरीया अच्छर हेक विन, चतुराई **सै** मांन ।—अनुभववांणी

सं. पु. [फा. शह] १ शह, किस्त । (शतरंज)

२ पक्षपात, तरफदारी ।

३ बल, शक्ति ।

४ सहारा ।

५ बचत ।

रू. भे.—सय, सैह, सैहे, सैहेत ।

६ देखो 'सै' (रू. भे.)

उ०—तिणनुं ढोलै पूछीयौ, मारवणी विरतंत । **बोलै बारट सै-मुखै** केता गुण कहंत ।—ढो. मा.

७ देखो 'सौ' (रू. भे.)

उ०—१ अठारै **सै** समत वरस अैसियौ माह सुद । बुद्धबार तिथ चौथ हुवौ प्रारंभ ग्रंथ हद —र. ज प्र.

उ०—२ गुरज धरा री कपाट होय आपरा **बारह सै बांनैतां** समेत ।—वं. भा.

उ०—३ चित्तोड़ भिळियौ जद साढै तीन **सै** लुगायां रौ जंवर हुवौ ।—बां. दा. ख्यात

८ देखो 'है' (रू. भे.)

उ०—करहौ कंत कंबेरियौ, सुगणी मारू संग । **वौ सै उमर सुंमरौ;** ताता खड़ै तुरंग ।—ढो. मा.

९ देखो 'सह' (रू. भे.)

सैइ–सं. स्त्री.—सखी, सहेली ।

उ०—वीरौ तौ आयौ **सैयां** कांकड़ै, गोरीड़ां सूं लटक जुहार ।
—लो. गी.

रू. भे.—सैई ।

सैइकौ—देखो 'सईकौ' (रू. भे.)

सैई—देखो 'सेइ' (रू. भे.)

सैकड़ी—देखो '**सैकड़ौ**' (रू. भे.)

सैकड़ं–वि.—कई सौ, सैकड़ों ।

उ०—दुकांनां रा **सैकड़ूं** माथै करचा, वोरां रा हजारू घर खरच मैं ऊघरचा ।—दसदोख

सैकड़े–क्रि. वि.—प्रतिशत, फीसदी ।

सैकड़ौ–वि. [सं. शतकाण्ड, प्रा. सयकंड] सौ, पूर्णसौ, शत ।

उ०—खेल तमासा सरु कराया, **सैकड़ां** री सराब बाळी । बडार रै नातै गांव नूंत्यौ, सोनजी रात सुखरी नींद सूत्यौ ।—दसदोख

सं. पु.—सौ की संख्या, १०० ।

रू. भे.—सईकड़ौ, सैंकड़ी, सैंकड़ौ, सैकड़ी ।

सैकळ–सं. पु. [अ.] हथियारों को साफ करके उन पर सान चढ़ाने का कार्य ।

सैकळगर—सं. पु. [ग्र.] तलवार, छुरी, चाकु, कैंची आदि पर धार लगाने वाला ।

सैगार—देखो 'सागार' (रू. भे.)

सैड़ौ—देखो 'सेड़ौ' (रू. भे.)

सैचन्नग—देखो 'सैंचन्नग' (रू. भे.)

उ०—वीजळी कांई किड़की, ग्राभा नै **सैचन्नग** कर दियौ । —फुलवाड़ी

सैचाल—सं. स्त्री.—शतरंज के खेल की एक चाल विशेष ।

सैचेत—देखो 'सावचेत' (रू. भे.)

उ०—प्रोहितजी **सैचेत** होय मारू कनै ग्राय ऊभौ रह्यौ, ताहरां मारू बोली ।—ढो. मा.

सैज—देखो 'सेज' (रू. भे.)

सैंज—देखो 'सहज' (रू. भे.)

सैंजे, सैंजै—देखो 'सहज' (रू. भे.)

ज्यूं—**सैंजे** चूड़ौ फूटियौ, हळकौ हुयग्यौ हाथ । बाई रा बंधण कट्या, भली करी रघुनाथ ।—ऊ. का.

सैजोरी—सं. स्त्री. [फा शहजोरी] १ जबरदस्ती, जोरावरी ।

२ शक्ति, बल, ताकत ।

सैझ—देखो 'सेज' (रू. भे.)

उ०—**सैझ** फूलां माह गडकर बछाई छै । —कल्यांणसिंध वाढेल री बात

सैंझ—देखो 'सहज' (रू. भे.)

उ०—तद पंचायण उठै सूं ईज पाछौ घिरियौ । तद कूंपै मैंराजोत कयौ, 'जी वीरमदै सूं **सैंझ** सूं मरै नहीं ।'—द. दा.

सैझड़ौ—सं. पु.—लगातार एक ही समान होने वाली वर्षा ।

सैझौ—देखो 'सेजौ' (रू. भे.)

उ०—मऊरा कोटरा पठा हेठै नदी उजार सदा बैहती रहै छै, **सैझौ** कौ महां सेंवज गोहूं चिणा, धरती काळी ।—नैणसी

सैण—स. पु.—पति, खाविंद ।

उ०—कथण इसा कांमण कहै, सुण हौ कुंजर **सैण** । ग्रब कब बाहिर ग्राय हौं, सौ हम देखौं नैंण ।—गज-उद्धार

वि. [सं. सज्जन] १ सज्जन, शरीफ, भला ।

उ०—यतौ न भेद जांणियैह, ज्याग **सैण** दूजणां । संधाण-बांण जांण ए न, तांण ऐ सरासणां ।—सू. प्र.

२ प्रियतम, प्रेमी ।

उ०—सातम दिन सांची हुई, सात बरस री रैण । नैण न ग्रावै नींदड़ी, सालै घट मैं **सैण** ।—ग्रग्यात

३ मित्र, दोस्त । (डिं. को.)

४ सहायक, मददगार ।

५ हितैषी, शुभेच्छु ।

उ०—१ वातां वैर विसावणा, **सैणां** तोडै नेह । हासै विस पीणा हरख, ग्राल्हा कांम न एह ।—बां. दा.

उ०—२ किणी भाई **सैण** री भली कौ नीं व्हनै गांवतरै फिरणा मैं कांई हांण ।—फुलवाड़ी

६ मेल मुलाकात वाला, मेल-जोल वाला, मुलाकाती ।

७ सम्बन्धी, रिश्तेदार ।

उ०—रजपूतांणी मन सीनाणी निरखी । नैणा जळ भरती **सैणां** थळ निरखी ।—ऊ. का.

८ संरक्षक ।

९ सीधा-सादा, भोला-भाला ।

१० चतुर, होशियार, समझदार । (व्यग्य)

रू. भे.—सइण, सउयण, सइयणि, सईण, सयण, सहुण, सेंन, सेण, सेन, सेंण, सैंण, सैंन ।

सैणप—सं. स्त्री. १ भलमनसाहत, सज्जनता ।

२ सीधापन, सरलता ।

३ प्रेम, स्नेह, मेल-जोल ।

उ०—तोड़ी कथा गरीबां री, **सैणप** सूं भिळसी । थू रे वैभव ! सुणतां, मत घिरणा सूं गुळसी ।—फुलवाड़ी

४ होशियारी, चतुरता ।

ज्यूं.—घणी **सैणप** मैं किरकिर पड़ै ।

रू. भे.—सयांणप, सयांनप, सैंणप, सैंनप, सैणप, सैनप, सैंणप, सैणाई, सैणाई, स्यांणप ।

सैणल—देखो 'सैणी' (रू. भे.)

उ०—बींझाणद बळेह, **सैणल** घर संपजै नहीं । चित डूंगर चढेह, जीवां जितै जोवां घणी ।—ग्रग्यात

सैणाई—१ देखो 'सैणाई' (रू. भे.)

२ देखो 'सैणप' (रू. भे.)

सैणाचार सं. पु.—१ सज्जनतापूर्ण ग्राचरण, सौजन्यतापूर्ण व्यवहार ।

उ०—जाहर जग जीवाड़णौ, मानै दोयण मेह । किण सूं रावै केहरी, **सैणाचार** सनेह ।—बां. दा.

२ मित्रता, दोस्ती, प्रेम ।

३ मेल-जोल ।

४ भलाई ।

रू. भे.—सैंणाचार ।

सैणी—सं. स्त्री.—१ वेदाचारण की पुत्री, जो दुर्गा का ग्रवतार मानी गई है, इसका जन्म कच्छ में हुग्रा था ।

उ०—सिंघाळी तुही सीभिका होल **सैणी** । ग्रिदाळी तुही गूंगिका नागवैणी ।—मे. म.

वि. स्त्री.—१ सीधी-सादी, भोली-भाली ।

उ०—सीधी **सैणी** सी मैंणी सुण मालहै । बैसक पुरबसणौ हसणौ तजि हालै ।—ऊ. का.

२ भली, सज्जन, शरीफ ।

रू. भे.—सयणी, सेरिण, सेणी, सैंणकी, सैणाल ।

सैणू, सैणौ—१ देखो 'सेणौ' (रू. भे.)

उ०—१ रसराज आ मिळसां मिळ रहै मेरा स्यांणा । नहीं सहतो विरहा **सैणू** दा ।—रसीलैराज रौ गीत

उ०—२ राजा महलै बैसकै, चमर ढुळाविया । **सैणां** मनै संतोख, खळां नह भाविया ।—गु. रू. बं.

उ०—३ **सैणां** ठरिया नयण हिया प्रसणां परजळिया । जस प्रताप वाधियौ, घाउ नीसांणा वळिया ।—गु. रू. बं.

उ०—४ ना कीज्यौ **सैणा**, नरां, काचौ बीजौ कांम । राखै लाजा सतरी, राजा साचौ रांम ।—र. ज. प्र.

उ०—५ दस सेर चावलां रौ चरू चूला ऊपर चढायां ऊपरला चोखा सीज्या हाथ सूं देख्यां तौ **सैणौ** हुवैतै हेठला पिण सीज्या जांणै अनै मूरख हुवै तैं जांणै ऊपरला तौ सीज्या पिण हेठै कोरा नहीं ।—भि. द्र.

सैत—१ देखो 'सेत' (रू. भे.)

उ०—१ जिण घेरियौ मुज जाय, दळ प्रबळ **सैत** दबाय । धर कीध परवस धाव, रहि कोट ओटां राव ।—रा. रू.

उ०—२ भोपतसिंघ भादरसिंघजी कौ एक भाई । जैनैं पांच गांवां **सैत** सीवोटां बताई ।—शि. वं.

२ देखो 'सहद' (रू. भे.)

उ०—वेटा रै मुळमुळावतां ईं काली मासी रा हांचळ **सैत** री कोकड़्यां ज्यूं भरीजग्या ।—फुलवाड़ी

सै'त—देखो 'सहद' (रू. भे.)

सैतळ—वि.—१ नाश, नष्ट, ध्वस्त ।

उ०—मद तोसूं मन मेळ, जादु कुळ **सैतळ** हुवौ । मद तोसूं मन मेळ, भोज रावत घर खोयौ ।—अरजुनजी बारहठ

२ समतल, बराबर ।

रू. भे.—सेतळ ।

३ देखो 'सैंतळ' (रू. भे.)

सैतांन—सं. पु. [अ. शैतान] १ ईश्वर विरोधी एक अदृश्य शक्ति जो समस्त दुष्ट प्रवृत्तियों एवं दुर्देवों की अधिष्ठाता के रूप में मानी जाती है । इसका कार्य मनुष्यों में क्रूर व नीच भावनाऐं भरकर ईश्वर विरोधी पाप कर्मो (अमानवीय कार्य) की ओर प्रेरित करना है ।

उ०—डडा डर करि चालियै, डाहा होय सुजांण । विसंन नांय विलंब्यौ रही, जुंवर न मलिसी मांण । जुंवर न मलिसी मांण, तांन **सैतांन** न चालै, औ मन राखौ ठांय, गोठि सुरां की माल्है ।
—वील्हौजी

२ भूत, प्रेत आदि अधम योनि तथा इस योनि का कोई भूत या प्रेत ।

३ दुष्ट, अत्याचारी, क्रूर या आततायी व्यक्ति ।

४ अत्यन्त क्रोध व वासनापूर्ण दुष्ट प्रवृत्ति ।

वि.—१ अत्यन्त दुष्ट, क्रूर, अत्याचारी, दुराचारी, आततायी ।

उ०—पण एक उपाय है, अबार मुसलमांन बद **सैतांन** बौहत जबर है, सू आपां आ कहसां कै म्है हिंदू हां, सू थांसू पैहला उतरसां, तिण माथै ऐ वाद कर पै'ला उतरसी, पीछै आपां सारी वात करसां ।—द. दा.

२ बदमाश, उद्दण्ड, उपद्रवी, शरारती ।

३ प्रचण्ड, रौद्र ।

४ शक्तिशाली, प्रबल ।

उ०—१ अला महा **सैतांन** तोफांन मोडै, अला त्रिधारै खड़ग सां दईत तोड़ै ।—पी. ग्र.

उ०—२ कबड्डी थिन तारा, **सैतांन** बीरू मारा ।—चितरांम

५ विशाल, भीमकाय ।

उ०—मामौ-भांणैज दोन्यूं डील रा **सैतांन** अर छाती रा वज्जर । काळजौ इसौ कै दोन्यूं मिळनै हजारां मिनखां री सांमनौ करण री हिम्मत राखै ।—अमरचूंनड़ी

६ धर्म-विरोधी, विधर्मी ।

उ०—देवजी न मेळी दुज, पंथ ता पासै टळिया मेल्हि सुगुर की गोठि, जाय **सैतांना** मिळिया ।—वील्होजी

सैतांनी—सं. स्त्री. [अ. शैतानी] १ शैतान का काम ।

२ अत्याचार, दुष्टता ।

३ उद्दण्डता, बदमाशी, शरारत ।

४ शक्ति, बल, पराक्रम ।

सैता—वि.—१ सब, समस्त ।

उ०—रैता गोपाळ बस गांवां दो च्यारि । सारी अणहोती बात **सैता** बिचारि ।—शि. वं.

२ सहित ।

रू. भे.—सैंता ।

सैतार—देखो 'सितार' (रू. भे.)

उ०—स्लोकां धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माड रै राग सौभाग गावै । बंबी बीण **सैतार** सैनाय बाजै, त्रमाळा घुरै मेघ माळा तराजै ।—मे. म.

सैतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

सैतीस—देखो 'सैंतीस' (रू. भे.)

सैतीसमौं, सैतीसवौं—देखो 'सैंतीसमौं' (रू. भे.)

सैतीसे'क—देखो 'सैंतीसे'क' (रू. भे.)

सैतीसै, सैतीसौ—देखो 'सैंतीसौ' (रू. भे.)

सैतूत—देखो 'सहतूत' (रू. भे.)

सैत्रुंज, सैत्रुंजौ—देखो 'सेत्रुंज' (रू. भे.)

उ०—**सैत्रुंजै** नायक वीनति, सांभलौ, स्रीरिखहेसरु स्वांम । दीन

दयाल तुम्हांनै दाखिवुं, अंतर बीतग आंम ।—ध. व. ग्रं.

सैद–क्रि. वि.—१ लिये, वास्ते, निमित्त ।

२ देखो 'सैयद' (रू. भे.)

उ०—१ आया असुरांणं अप्परमांणं, किंकर जांण जमरांणं । ऊगंता भांण रैण विहांणं, **सैद** पठांणं घमसांणं ।—रा. रू.

उ०—२ इसै रूप सूं 'भीम' खग वाहतौ आवीयौ, विखम भारथ तणी वणी वेळा । भांज दळ **सैद** गजसिंघ सूं भेळिया; भांज गजसिंघ 'जैसंघ' भेळा ।—भीम सीसोदिया रौ गीत

उ०—३ जादम भांण पठांण जुमल्लां, **सैद** रहीम सेख सादुल्लां ।
—सू प्र.

३ देखो 'सेद' (रू. भे.)

४ देखो 'सेत' (रू. भे.)

सैदखांनौ—देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

सैदजादौ—देखो 'सैयदजादौ' (रू. भे.)

उ०—उठी **सैदजादां** तणा थाट आया । संपेखै अठी जोस मारू सवाया ।—रा. रू.

(स्त्री. सैदजादी)

सैदरूप—देखो 'सैंदरूप' (रू. भे.)

उ०—रांमपुर सूं नूंतौ आयौ घोड़ा च्यार हाथी एक **सैदरूप** रुपया १५००) रोकड़ी नूंतौ ।—बां. दा. ख्यात

सैदांण—१ देखो 'सैयद' ।

उ०—काजि चकथांण **सैदांण** वाळै हुकम, असौ जगचख्खि रचायौ अचूकां ।—भींवसिंघ हाडा व गजसिंघ कछवाहा रौ गीत

२ देखो 'सादियांणौ' ।

सैदांणी, सैदांन, सैदांनी—देखो 'सादियांणौ' (रू. भे.)

उ०—**सैदांनी** बाजतां राजा सहर भीतर आयौ ।
—पलक दरियाव री बात

क्रि. वि.—साक्षात, प्रत्यक्ष ।

उ०—दळ अनेक जोधा प्रभु जीत्या, मोहि बिवाह करि आंणी । क्रपानिध क्रपा अब कीजै, प्रगट होय **सैदांणी** । रुकमणी मंगळ

सैदांनौ—देखो 'सादियांणौ' (रू. भे.)

उ०—१ राठौड़ कूंपै भदै पिण खेत आप रै हाथ आयौ सु उण ठौड़ **सैदांना** बजाय ऊभा रहा ।—नैणसी

उ०—२ युं करता दरबार आंगि उतरीया, **सैदानां** घुरिया ।
—पनां

सैदेव, सै'देव, सैदेव—देखो 'सहदेव' (रू. भे.)

उ०—बापड़ौ जोसी यूं रौ यूं बतायनै गियौ । एक-एक बात मिळै । जोसी कांई हौ **सैदेवजी** हौ परतख **सैदेवजी** ।—फुलवाड़ी

सैदेह—देखो 'सैदेह' (रू. भे.)

उ०—भार उतारै भोनि अवधि **सैदेह** उधारै । वसै रांम वैंकुंठ, विमळ जग जस विसतारै ।—सू. प्र.

सैधव–सं. पु.—१ द्रव्य, धन, वित्त । (ह. नां. मा)

२ देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

सैधौ–सं. पु.—सुरंग ।

उ०—आय छिपै पुर मैं असुर, निस उर धार विचार । छांना **सैधां** छेड़िया, संगि तेड़िआ सुआर ।—रा. रू.

सैन–सं. स्त्री. [सं. संज्ञपन] १ इशारा, संकेत ।

उ०—१ अर दो ही बीरां रा करवाळां बाधन ही बीरां रै अरथ बपा खप्पर मैं भरण री **सैन** दीधी ।—वं. भा.

उ०—२ पीछै दूजै फौजां रा मुहमेभ हुवा नै तठै सारांई **सैन** करी । तद भीमसिंघजी चुरू रै ठाकर हौदै मैं मा'राज नै हाथ घालियौ ।—द. दा.

२ निशान, चिन्ह, यादगार ।

३ ज्ञान, शिक्षा ।

४ मार्गदर्शन ।

रू. भे.—सेन, सैनी ।

५ लेटना, शयन ।

उ०—गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी, नागेस सज्या अत **सैन** नांमी ।
—र. ज. प्र.

६ कामदेव, मदन । (अ. मा.)

७ देखो 'सेन' (रू. भे.)

उ०—१ मौत रौ लेख 'बिसना' तणौ मेटियौ, पोत रौ **सैन** रौ चसम पाई । सुपह चहुवांण री कंवर आई सरण, बकस दीधा चरण इंद्रबाई ।—मे. म.

उ०—२ पण मांचा सूं नीचौ उतारियौ तौ मफा नटग्यौ—कै म्हनैं कीं ठा' को तौ **सैन** भगत री सौगन ।—अमरचूनड़ी

८ देखो 'सैण' (रू. भे.)

उ०—हाथ पांव कर कूबडी, नीचै मुख अरु नैन । इन कस्टां पोथी लिखी, तुम नीकै रखियौ **सैन** ।—जगवाणी

९ देखो 'सेना' (रू. भे.)

उ०—१ कही व्है कुघाटां घाट खगाटां बिछोड़ै कंध, मही धौम पाटां धू निराटां माळ मैन । बीजै 'रूप' बीसैरी अराबां सूधी आटां-वाटां, सार भाटां बीभूसै सताराा वाळी **सैन** ।
—प्रभुदांन मोतीसर

उ०—२ **सैन** रिजमट असंख पलटणां तणौ सग, भड़ तिलंग बंग किळंग तणा भिळिया । अभंग जंग भरतखंड पारका ऊसर ऊवै, मारका 'वजंद्र' रै दुरंग मिळिया ।—कविराजा बांकीदास

सैनक–सं. पु.—सर्प ।

उ०—जांणौ काळै **सैनक** पूंछ दबियां फुंफकारै मारै त्यूं उभौ उभौ मूंसाडा मारै छै ।—सूरै खीवै कांधळोत री बात

सैनपति, सैनपती—देखो 'सेनापति' (रू. भे.)

सैनभोग–सं पु. [सं. शयन+भोग] शयन के समय देवताओं के चढ़ाया जाने वाला भोग ।

सैनया—देखो 'सेना' (रू. भे.)
सैंनसील—देखो 'सहनसील' (रू. भे.)
सैंनसीलता—देखो 'सहनसीलता' (रू. भे.)
सैनांण, सैंनांण–सं. पु.—१ निशान, चिन्ह ।
उ०—नीचै मतीरा रै बीजां जिसी छोटी दौ आंख्यां, आंख्या तौ कांई आंख्यां रा **सैनांण** हा ।—फुलवाड़ी
२ पहिचान, चिन्ह ।
उ०—बेलै कही मोनूं तौ सारा समाचार ठावा कहि **सैनांण** दिखाय घोडा लेगयौ ।—नापै सांखलै री वारता
३ स्मृति, चिन्ह ।
उ०—अरु फरीदखां री कबर पथर री है तिण ऊपर तरवार वाही जिकौ **सैनांण** अद्याप है ।—द. दा.
४ धब्बा, दाग, खरोंच ।
५ प्रतीक ।
६ सकेत ।
७ झण्डा, पताका ।
रू. भे.—सनांण, सहनांण, सहलांण, सहिनांण, सहिलांण, सहीलांण, सेनांण, सैंनांण, सेनाणी, सेनांणू ।
सैनांणी, सैंनाणी–सं. स्त्री.—१ वह वस्तु या यादगार जो किसी की यादगार हो, स्मृतिचिन्ह ।
२ पहिचान, शिनाख्त ।
३ लक्षण, गुण ।
४ न्यादर्श, नमुना ।
उ०—हूं जौ मौज देऊं तिण मां सूं **सैनांणी** ३ छांनै सी लै लेवै ।
—पंचदंडी री वारता
रू. भे.—सहनांणी, सेनांणी, सैंनाणी, सेलांणी, सैंदाणी, सैळांणी ।
सैना—देखो 'सेना' (रू. भे.)
सैनाई, सैनाय–सं. स्त्री. [फा. शहनाई] शहनाई, नफीरी, बाजा ।
उ०—बंबी बीण सैतार **सैनाय** बाजै । त्रमाळा धुरै मेघ माळा तराजै ।—मे. म.
सैनिक–सं. पु. [सं.] १ सेना या फौज का आदमी, सिपाही ।
२ सुभट, योद्धा ।
३ प्रहरी, संतरी ।
सैनी–सं. पु.—१ नाई, हज्जाम ।
२ देखो 'सैन' (रू. भे.)
सैनीछर—देखो 'सनिस्चर' (रू. भे.)
उ०—जंपसै जोगेसर सुकर **सैनीछर** सप्त रुसेसर नै ससिहर ।
—पी. ग्रं.
सैन्या—देखो 'सेना' (रू. भे.)
उ०—१ धर पतसाही धूपटै, बळपांण बहादुर । आयौ 'कमरौ' पातसाह, सज **सैन्या** आसुर ।—जूंझारसिंह मेड़तियौ
उ०—२ **सैन्या** सहर मांहैं पेसती किसी सोभै छै । ताकौ द्रस्टांत । जैसैं समुद्र मांहै नदी आय मिळै छै ।—वेलि टी.
सैपाठी–सं. पु.—सहपाठी, साथ पढ़ने वाला, साथी ।
सैपीड़ौ–वि.—निरन्तर दर्द या पीड़ा बना रहने वाला ।
सैप्रत, सैप्रत्त—देखो 'सांप्रत' (रू. भे.)
उ०—दोइ रगण गण देखिजै, पाय जेण **सैप्रत्त** । विजोहा, एही विगत्ति, तवां रांम गुण तंत्त ।—पिं. प्र.
सैफ—देखो 'सेफ' (रू. भे.)
सैफळ—देखो 'सैंफळौ' (रू. भे.)
सैफळौ—देखो 'सैंफळौ' (रू. भे.)
उ०—भूंभारां आवध भळहळेय, अहमंडक वीजा वळवळेय । **सैफळौ** वाजियौ सामतांह, मेलियौ लोह मुह रावतांह ।—गु. रू. बं.
सैफौ–सं. पु. [अ. सैफा] जिल्दसाजी का एक औजार जिससे किताबों का हाशिया काटा जाता है ।
सैबास—देखो 'साबास' (रू. भे.)
उ०—ताहरां रावळजी कह्यौ—'**सैवास** ! ऊदा **सैबास** !' ताहरां वाघ रावळजी ऊदै नूं बगसियौ ।—नैणसी
सैबासी—देखो 'साबासी' (रू. भे.)
सैबुलबुल–सं. स्त्री.—शह बुलबुल नामक पक्षी ।
सैमत—देखो 'सहमत' (रू. भे.)
सैमळ, सैमल—१ देखो 'सेमळ' (रू. भे.)
उ०—खरबूजा जग सह जाय रे, सौ असोक अमर सदै । **सैमळ** सरीस तज आंन सुण, दाख रांमफळ सेवदै ।—र. ज. प्र.
२ देखो 'सांमल' (रू. भे.)
उ०—जद किणही पूछ्यौ करियावर मैं गुल गालवा मैं तौ थैंई **सैमल** ईज हुसौ नैं बारदांनौ घल्यौ क्यूं ?—भि. द्र.
सैमांन—देखो 'सांमांन' (रू. भे.)
उ०—नीत काज इंगळ न्रपत, सझियौ जुध **सैमांन** । बेलजियम औ सरविया, थिरा उबारण थांन ।—किसोरदांन बारहठ
सैमात–सं. स्त्री.—शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात, किश्त, शिकश्त ।
सैमुदौ, सैमूंदौ, सैमूदौ—देखो 'सेमूंदौ' (रू. भे.)
उ०—१ किणी प्रिथीराज नै चौहांन वंस रौ सूरज, बारवीं सदी रै सगळै राजाधिराजां सूं लूंठौ भिड़मल अर मरांड़ आळौ बतायौ तौ बीजा उणनै **सैमूंदै** भारत नै बारला बैरचां रै हमलां सूं बचावण आळी ढाल मांनी ।—चितरांम
उ०—२ रांमजी नै दया आयगी अर उणां द्रमकुल्य कांनी बांण म्हा दियौ । इण ब्रह्मदंड नांव रै अग्निबांण सूं **सैमूंदै** द्रमकुल्य रौ पांणी तौ कळकळीज अर हवा हुय गियौ अर रुखां समेत मलेच्छ बळ'र भसम हुवा ।—चितरांम

(स्त्री. सैंमुदी, सैंमूदी)

सैमै—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—बांभण नैं प्रचौ दीया, तैं सैमै कौ सबद स्त्रीवायक । गुर चीन्हौ गुर चीन्ह पिरोहित, गुर मुख धरम वखांणी । —जांभौ

सैय–सं. पु.—पक्ष ।

उ०—दुसट तथा दैःणोगै मिनख नैं मार देणौरी सैः लोग सला देवै पण मारयां पछै कोई ही **सैय** अर सायता नीं करै । —दसदोख

सैयद–सं. पु.—१ मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग ।

उ०—१ सत्रां दळ मूगळ **सैयद** सेख, बणैं ग्रह बाज कबूतर बेख । —मे. म.

उ०—२ घटै दळ मुग्गळ **सैयद** धांण, पटैत कटै कई सेख पठांण । —मे. म.

२ मुहम्मद साहब का नाती तथा हुसैन का वंशज ।

३ मुसलमान ।

रू. भे.—सइद, सइयद, सइयद्, सईद, सईयत, सईयद, सयद, सैद, सैय्यद ।

सैयदजादौ–सं. पु. (स्त्री. सैयदजादी) मुसलमानों के 'सैयद' वर्ग का व्यक्ति, मुसलमान ।

रू. भे.—सैंदजादौ ।

सैयां–सं. स्त्री. (ब. व.) सखियां, सहेलियां ।

उ०—चांदा थारी निरमळ रात **सैयां** म्हारी ए, चांदा थारी निरमळ रात नणद भौजाई सैलां सांचरी म्हारा राज । —लो. गी.

सं. पु.—प्रियतम, पति ।

ज्यू.—**सैयां** भए कुतवाल, अब डर काहै का ।

रू. भे.—सैय्यां ।

सैयारौ—देखो 'सहारौ' (रू. भे.)

सैयोग—देखो 'सहयोग' (रू. भे.)

सैयोगी—देखो 'सहयोगी' (रू. भे.)

सैय्यद—देखो 'सैयद' (रू. भे.) (अ. मा.)

सैय्यां—देखो 'सैयां' (रू. भे.)

उ०—मैं अपनै **सैय्यां** संग सांची । अब काहै की लाज सजनी, प्रगट व्है व्है नाची । —मीरां

सैरंध्रिका, सैरंध्रि, सैरंध्री–सं. स्त्री. [सं. सैरन्ध्री] १ द्रौपदी का वह नाम जो उसने अज्ञातवास के समय रखा था ।

उ०—**सैरंध्रि** बांधी इम खल वोलइ, गंधरव देवा तुम्ह कौ न तोलइ, चूकी अछइ तउ तुम्हि मइ म राखि । —सालिसूरि

२ दूसरे के घर में रहने वाली स्वाधीन शिल्पकारिणी स्त्री ।

३ अन्तःपुर में काम करने वाली दासी, जिसकी उत्पत्ति वर्णसंकर जाति विशेष में हुई हो ।

४ दासी, सेविका, परिचारिका ।

५ नीच जाति की चाकरानी । ६ वर्ण संकर जाति ।

रू. भे.—सैरिंध्री ।

सैर, सैं'र–सं. स्त्री. [अ.] १ मनोरंजन के लिये की जाने वाली यात्रा, पर्यटन, तफरीह, सैर-सपाटा, घुमाई, भ्रमण ।

उ०—सारी ही दुनियां नै छोड़ नै गगना अर मंगोंवा री दुनियां मैं अग्गपौ'र सैर करता । —फुलवाड़ी

२ मौज, मस्ती, बहार, मनोविनोद ।

उ०—खावणा पीवणा खैर, **सैर** करणा भोजा मरद । हा हा ही बिन हैर, जैर जिसी जग है 'जसा' । —ऊ. का.

३ शिकार, मृगया ।

रू. भे.—सेल, सैल, सैहर, सैहल ।

४ देखो 'सहर' (रू. भे.)

उ०—१ सैं'र री जाई गांव मैं आई अर मरी जद ताई गाळी-गाळी रैं'यी । —दसदोख

उ०—२ तळाव मानसागर मा'मंदिर मैं नै सैर पक्की कराई जिण मैं पांणी रैहै नहीं । और मा'मंदिर सैं'र बसायौ । —मारवाड़ री ख्यात

उ०—३ नहर सुधार म नीर री, दाखी सैं'र दुमार । मेरवांन मुरधर महिप, हैर गया रो हार । —ऊ. का.

सैरगाह—सं. स्त्री. [अ.] पर्यटन-स्थल, सैर करने का स्थान ।

सैरड़ौ—देखो 'सहर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मुरधर रा भूधर कहीज, बिलखणिया लूळ सैरड़ा । जांणै किसड़ी वाय लागी, धोर धंसै सै **सैरड़ा** । —दसदेव

सैं'रपना, सैं'रपनाह, सैं'रपनौ, सै'रपनाह, सै'रपनौ—देखो 'सहरपनाह' (रू. भे.)

उ०—१ **सैं'रपना** री कोट, सैं'र मै मसीतां तथा छत्रियां थी तिण पाड़ नै **सैं'रपनौ** करायौ, संमत १७८८ मैं । —मारवाड़ री ख्यात

उ०—२ **सैं'रपना** री कोट पकौ करायौ नै गढ नै सैं'र बिचलौ कोट मिळती करायौ नै पायगा कराई । —मारवाड़ री ख्यात

सैरसपाटा—सं. पु. (ब. व.) भ्रमण, पर्यटन ।

सैं'रसारणी—सं. स्त्री. [फा. शहर+सं. सारणी] वह भोज जिसमें शहर के समस्त व्यक्तियों को भोजन कराया जाता हो ।

उ०—१ **सैं'रसारणी पर काळौ चढग्यौ, पांणी फिरग्यौ । भूखरै बिखै सगळा भाई आव-उतार हुयग्या अर गांव छोडग्या ।** —दसदोख

उ०—२ गिटाकड़ बांमण विरमपुरी अर सैं'रसारणी जीमी, जितै तौ जसरी थोथी पोथी सी उघाड़ी, धजा फुरकाई । —दसदोख

सैरिंध्री—देखो 'सैरंध्री' (रू. भे.)

सैरि–सं. स्त्री. [सं.] १ कार्तिक मास ।

२ एक प्राचीन जनपद ।

३ देखो 'सेरी' (रू. भे.)

सैरियौ, सैरी—देखो 'सेरियौ' (रू. भे.)

सै'रियौ, सै'री—देखो 'सहरी' (ग्रल्पा; रू. भे.)

सैलंग—देखो 'सेलंग' (रू. भे.)

उ०—माथै गिगन री ग्रनंत सून्याड़, ग्रसींव सोसनी रंगत, सूरज रौ **सैलंग** उजास ग्रर हेटै कुदरत रौ बेजोड़ बणाव ।—फुलवाड़ी

सैल—सं. पु. [सं. शैल:] १ पहाड़, पर्वत, । (डिं. को.)

उ०—१ हुवै गैल चौड़ा जठै **सैल** हूंता, हलै बैल जोटां घणां बैल हूंता । ठही चोट दै भंभरी कोट ठांणै, छकी पांन जै ग्रट्टरै बट्ट छांणै ।—वं. भा.

उ०—२ गुण गंध ग्रहित गिळि गरळ ऊगळित, पवण वाद ए उभय पख । स्रीखंड **सैळ** संयोग संयोगिणि, भणि विरहिणी भुयंग भख ।—वेलि

२ कोई बड़ा पत्थर, चट्टान ।

३ हिमाचल का राजा जो पार्वती का पिता था ।

रू. भे.—सईल, सयल ।

वि.—१ पत्थर का, पत्थर सम्बन्धी ।

२ कड़ा, कठोर ।

३ देखो 'सैर' (रू. भे.)

उ०—१ **सैल** करण सायबौ गयौ हुय लीली ग्रसवार । कै जंगळ की मिरगळीयां म्हारौ लियौ छै स्यांम बिलमाय ।—लो. गी.

उ०—२ राज पाट रांणा का छोड्या, ग्रोर कंचन का म्हैल । हाती घोड़ा माल खजांना, ग्रौर दुनियां की **सैल** ।—मीरां

उ०—३ मेह सुजळ पोटां महीं, सांवण करतां **सैल** । मोटौ हुवै सिताब मन, छोटां रौ ही छैल ।—बां. दा.

४ देखो सेल' (रू. भे.)

उ०—कुंभां सीस चंच गौम बिहंगी कराळ कौ सौ, कै ठाठ कौ तराळ लाय भाळ कौ कै ठेल । लेण सिंधां फाळ कौ प्रजाळ कौ कै लंका पूंछ । सवाई 'ग्रजा' रौ धकौ काळ कौ कै **सैल** ।

—महादांन मेहडू

रू. भे.—सयल ।

सै'ल—देखो 'सहल' (रू. भे.)

उ०—१ सेठां धन नै केवटणौ **सै'ल** कांम नीं है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ छोरौ इण बात नै इत्ती **सै'ल** नीं जांणी ही ।

—फुलवाड़ी

सैलकन्या—सं. स्त्री. [सं. शैल+कन्या] पार्वती, उमा ।

सैलकुमारी—सं. स्त्री. [सं. शैल+कुमारी] पार्वती, उमा ।

सैलगंगा—सं. स्त्री. [सं. शैल+गंगा] गोवर्द्धन पर्वत से निकलने वाली एक नदी ।

सैलगुर, सैलगुरु—सं. पु. [शैल+गुरु] १ बड़ा, पहाड़ ।

२ हिमालय पर्वत ।

३ सुमेरु पर्वत ।

सैलजा—सं. स्त्री. [सं. शैलजा] पार्वती, उमा ।

सैलड़ौ—देखो 'सेल' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—भळक रया छै तीखा **सैलड़ा** । ग्रमां कमधजियौ रमै छै सिकार ।—रसीलैराज रौ गीत

सैलधन्वा—सं. पु. [सं. शैलधन्वन्] शिव, महादेव ।

सैलधर—सं. पु. [सं. शैलधर] १ श्रीकृष्ण, गिरिधारी ।

२ श्रीबजरंग, हनुमान ।

सैलनंदनी—सं. स्त्री. [सं. शैल+नन्दिनी] पार्वती ।

सैलपत, सैलपति, सैलपती—सं. पु. [सं. शैल+पति] १ हिमालय पर्वत ।

२ सुमेरु पर्वत ।

सैलपुती, सैलपुत्ती, सैलपुत्री—सं. स्त्री. [सं. शैल+पुत्री] १ नौ दुर्गाम्रों में से एक, पार्वती, दुर्गा ।

उ०—प्रथस्मा तुही पब्बई **सैलपुत्ती** । दुरगा तुही ब्रह्मचारण्य दुत्ती ।

—मे. म.

२ ग्राठ विशिष्ठ देवियों में से एक ।

सैलराज—सं. पु. [सं. शैलराज] १ हिमालय पर्वत ।

२ सुमेरु पर्वत ।

सैलसपाटा, सैलसिकार—सं. पु.—ग्रामोद-प्रमोद के लिये किया जाने वाला भ्रमण, सैर ।

उ०—बीच हाळां दलालां नै खावकी दी ग्रर **सैर** मैं सागीड़ा **सैलसपाटा** तथा चग्घा कराया ।—दसदोख

सैलसुत—सं. पु. [सं. शैलसुत] १ स्वर्ण, सोना ।

२ शिलाजीत ।

रू. भे.—सेलसुत ।

सैलसुता—स. स्त्री. [सं. शैलसुता] पार्वती, उमा ।

सैलांण—देखो 'सेनांण' (रू. भे.)

उ०—ग्राखी दुनियां मैं तावड़ा रौ उजास छितरावणियां रौ कीं **सैलांण** नीं बच्यौ ।—फुलवाड़ी

सैलांणी—वि.—१ सैर करने वाला, भ्रमणशील ।

उ०—लागै परदेसां रौ पांणी, ग्रबै घर ग्राज्या **सैलांणी** ।

—लो. गी.

२ देखो 'सेनांणी' (रू. भे.)

३ देखो 'सेलांणी' (रू. भे.)

उ०—इण रै उपरात दोन्यूं बखत जव-ग्वार रौ बांटौ सियाळा मैं तिलां री **सैलांण्यां** ग्रर ऊपर सूं गायां रै घी री नाळां ।

—ग्रमरचूंनड़ी

सैलांन—सं. पु.—१ नग, नगीना । (ग्र. मा.)

२ देखो 'सेनांण' (रू. भे.)

सैलाड़—सं. पु.—१ एक साथ गर्दन से बंधे हुऐ दो बैल, बकरे, ऊंट ग्रादि चौपाये ।

२ उक्त प्रकार से बांधने की रस्सी ।

३ उक्त प्रकार से बांधने की क्रिया ।

४ दो पशुओं का जोड़ा, युग्म ।

५ देवी को एक साथ बलि चढ़ाये जाने वाले दो बकरे या बकरों का युग्म ।

सैलाड़णौ, सैलाड़बौ—क्रि. स.—दो बैल, बकरे, ऊंट आदि चौपायों को एक रस्सी से एक साथ गर्दन से बांधना ।

सैलाड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—उक्त प्रकार से एक साथ गर्दन से बांधा हुआ ।

(स्त्री. सैलाड़ियोड़ी)

सैलात्मजा—सं. स्त्री. [सं. शैलात्मजा] पार्वती ।

सैळी— देखो 'सेही' (रू. भे.)

सैली—सं. स्त्री. [सं. शैली] १ वाक्य-रचना का ढंग, लिखने का ढंग ।

२ चाल, ढंग, तरीका ।

३ परिपाटी, प्रणाली ।

४ रीति, रिवाज, प्रथा ।

५ आचरण, चाल-चलन ।

रू. भे.—सेलि, सेली ।

सैलोट—सं. पु.—१ ध्वंस, नास, नष्ट ।

उ०—गजां रत पोट पड़ चोट त्रंमागळां, बचन अर ओट लै बीसां बीसै । धसै मन मोट जा सिर ग्रहै धजवडा, दीवालां कोट **सैलोट** दीसै ।—कुंभकरण सांदू

२ समतल ।

उ०—ऊपड़ी वग्ग 'अभसाह' री, अति आनंग कजि आसुरां । किर नीरथळां **सैलोट** कज, सीर पलट्टै सागरां ।—रा रू.

रू. भे.—सइलोट, सहलोट, सेलोट, सैंलोट ।

सैळौ, सैलौ—सं. पु.—१ मटमैले रंग का ऊट या कुत्ता ।

२ देखो 'सेळौ' (१) (रू. भे)

सैव—वि. [सं. शैव] १ शिव का, शिव सम्बन्धी ।

२ शैव सम्प्रदायी ।

३ जिसकी सेवा करना उचित हो, सैव्य ।

उ०—देवादिदेव, सुर असुर **सैव**, राजाधिराज सविता समाज ।
—ऊ. का.

सं. पु.—१ शैव सम्प्रदाय व इस सम्प्रदाय का अनुयायी ।

उ०—१ वीरा जगम साक्षज **सैव** ।—धरमपत्र

उ०—२ एक कहै परतिख फल जोइ, **सैव** धरम थी स्यूं नवि होइ ।
—स्रीपाल रास

२ शिव का भक्त, उपासक ।

३ अष्टादश पुराणों में से एक ।

सैवण—देखो 'सेवण' (रू. भे.)

सैवणौ, सैवबौ—देखो 'सेवणौ, सेवबौ' (रू. भे.)

उ०—बेटां बिनां बहुवां कद रै'वै ? कींरौ **सैवै** ? सासू एकली जांन, घर रौ खोरसौ करै अर कुढकुढ मरै ।—दसदोख

सैवपुरांण—सं. पु. [सं. शैवपुराण] शिव पुराण ।

सैवरौ—देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

सैवळी—देखो 'सेही' (रू. भे.)

सैवांन—देखो 'सादियांणी' (रू. भे.)

उ० तठा उपरांति करि नै राजांन मिलांमति राजांन राजावत ऐरावरै रिणमेंत हाथी आगी छै । रिणजीत नगारो धुबै छै, फतै रा **सैवांन** वागा छै । —रा. सा. सं.

सैवाळ—देखो 'सेवाळ' (रू. भे.)

सैवालमालना स. पु.—एक प्रकार का भाला या सांग ।

सैवी—सं. स्त्री. [सं. शैवी] १ पार्वती, दुर्गा ।

२ मनसादेवी ।

३ कल्याण ।

सैव्या—सं. स्त्री. [स. शैव्या] अयोध्या के प्रसिद्ध सत्यव्रती राजा हरिश्चंद्र की पत्नी, शैव्या ।

सैस—१ देखो 'सेस' (रू. भे.)

२ देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

सैंसकिरण देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

सैंसजीभ देखो 'सहसजीभ' (रू भे)

सैंसदळ देखो 'सहस्रदळ' (रू. भे.)

सैंसनैंण देखो 'सहस्रनयण' (रू. भे.)

सैंसफण देखो 'सहस्रफण' (रू. भे.)

सैंसबाहु देखो 'सहस्रबाहु' (रू. भे.)

सैंसमुख देखो 'सहस्रमुख' (रू. भे)

सैंसरनांव देखो 'सहस्रनाम' (रू. भे.)

उ० मंगळ मम भागीरथी, स्रीगीता **सैसरनांव** । गायन अमरापुर बसैजी पवन कहै सब गाव । —रुकमणी मंगळ

सैसव—सं. स्त्री. [सं. शैशव] बाल्यकाल, बचपन, लड़कपन, बाल्यावस्था ।

उ०—१ **सैसव** गुरु गिगिर बिनीत थयौ सहु, गुण गति मति अति एह गिणि । —वेलि

उ०—२ **सैसव** तनि सुसपति ओवगा न आयौ । —वेलि

वि.—शिशु सम्बन्धी ।

सैसवदन—सं. पु. [सं. सहस्र + वदन] शेषनाग ।

सैसाजळ सं. पु.—लक्ष्मण ।

उ०—बोलै सीतापत इसडीजी बांणी, सुरनर नागां नै लागै सुहांणी । **सैसाजळ** हणमंत जिम ही सरसाई, बीरां अवरांरी कीधी बडाई ।—र. रू.

सैसार—देखो 'संसार' (रू. भे.)

उ०—घाट पालट करै नाट रावत घणां, मेलि ऊभा गहै क मेळा । ऊजळी सनस **सैसार** सोहौ ऊपरै, चालियौ 'भोज' खबीवाट बेळा ।
—राव भोज हाडा रौ गीत

सैसारजुन—देखो 'सहस्रारजुन' (रू. भे.)
उ०—बळिराजा, पुत्र बांणासुर २५, पुत्र स्रगदैत्य २६, पुत्र राजा दक्ष २७, दक्ष पुत्र **सैसारजुन** २८, पुत्र करूप २९,...... ।
—रा. वंसावली

सैस्रणी—देखो 'सहस्रिन' ।

सैह—देखो 'सैं' (रू. भे.)

सैहड़ौ—सं. पु. [सं. सुभट] १ योद्धा, सुभट ।
उ०—कर ग्रातुर बूढेय राव किहौ, **सैहड़ां** थट वांटिय सोर सिहौ ।
—पा. प्र.

२ देखो 'सेड़ौ' (रू. भे.)

सैहटा—सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा ।

सैहत, सैहती—१ देखो 'सेहत' (रू. भे.)
२ देखो 'सहित' (रू. भे.)
उ०—लै मंजार द्रढ बचन लै, कोळू गयौ कमंद । वरणी ग्रंतहपुर वसै, 'ग्राणंद' **सैहत** ग्रणंद ।—पा. प्र.

सैहनाई—देखो 'सहनाई' (रू. भे.)
उ०—सोभ वरण वणि जांन सवाई, सुर नौबत बाजै **सैहनाई** ।
—रा. रू.

सैहर—१ देखो 'सहर' (रू. भे.)
उ०—सू **सैहर** जोधपुर सूं कोस एक उरै मुंहमेजा हुवा ।
—द. दा.

२ देखो 'सैर' (रू. भे.)

सैहल—देखो 'सैर' (रू. भे.)
उ०—तरै रांणाजी सुं कह्यौ—कदैही **सैहलां** नीकळौ नहीं सौ दीवांण पधारौ, काळीयैद्रह विराजज्यौ, म्है पिण ग्रावां छां ।
—राव रिणमल री बात

सैहे, सैहेत—१ देखो 'सैं' (रू. भे.)
२ देखो 'सहित' (रू. भे.)

सों—१ देखो 'सुं' (रू. भे.)
उ०—तद झाली खींवसीजी नुं बोलाया । दरबार **सों** ऊठि भीतर ग्रायौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता
२ देखो 'सोगन' (रू. भे.)

सोंक—देखो 'सूंक' (रू. भे.)
उ०—उणनूं **सोंक** चाहिजै सौ म्हारै कनै नहीं छै ।
—राव ग्रमरसिंह री बात

सोंगणी—देखो 'सांगणी' (रू. भे.)

सोंगसी—सं. स्त्री.—घोड़े के कानों के नीचे ग्रौर ग्रांखों के ऊपर होने वाली भंवरी (चक्र) जो ग्रशुभ मानी जाती है । (शा. हो.)

सोंगाड़ौ—सं. पु.—बढई का एक ग्रौजार विशेष ।

सोंझ—देखो 'सौंज' (रू. भे.)
उ०—ऊठी सरद सीतरित ग्राई, सकळ दळै वणि **सोंझ** सझाई ।
—रा. रू.

सोंधौ—देखो 'सौंधौ' (रू. भे.)
उ०—१ तिणि **सोंधै** रै डोरै लगी जाय छै । ऊजळी ठकुरांणी उजळा ठाकुर प्रीतम सूं जाइ जाइ मिळै छै ।—रा. सा. सं.
उ०—२ घणै **सोंधे** घणी केसरि ग्रगरचै सूं गरकाब कियां थकां घोड़ां रजपूतां रै घूमरै सूं ग्राइ तोरण बांदिग्रौ छै ।
—रा. सा. सं.

सोंपड़—देखो 'सांपड़' (रू. भे.)

सोंपणौ, सोंपबौ—देखो 'सूंपणौ सूंपबौ' (रू. भे.)
उ०—१ झाली री मां उठा जती नुं बुलाय कांमण करवाया । सो कांमण बेटी नुं **सोंप** पेई मैं घात राखीया ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ ग्रबु ग्रमीन होय ग्रायौ । कीरोड़ी एक हाजी इतबारी दूजौ मीरसकांरै हवालै ग्राधो-ग्राध परगनौ **सोंपीयौ** । बरस २ ग्रबु री हाकमी रही ।—नैणसी
सोंपणहार, हारौ (हारी), सोंपणियौ—वि० ।
सोंपिग्रोड़ौ, सोंपियोड़ौ, सोंप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सोंपीजणौ, सोंपीजबौ—कर्म वा० ।

सोंपियोड़ौ—देखो 'सूंपियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सोंपियोड़ी)

सोंवौ—सं. पु.—एक प्रकार का घास ।

सोंस—देखो 'सूंस' (रू. भे.)
उ०—१ ग्रजीज रावजी रा उमरावां मोनूं नांमा भेज्या छै । ग्रौर **सोंस** खाय लिखियौ छै ।—नैणसी
उ०—२ इण रा वखत मैं इसड़ौ हीज लिखीयौ । थैं ग्रारती करौ । ताहरां **सोंस** काढि नै पाछी गई ।
—कांवळै जोईयौ नै तीडी खरळ री वात

सोंहगौ—देखो 'सूंगौ' (रू. भे.)
उ०—मसलत नूं मुस्किल कै तांई ग्रासांन करणै री बडी बात जांणौ । सत्य जांणौ इतरी सारी ग्रकलां रौ बिचार कर ग्रकल मूं **सोंहगौ** ग्रौर नफा सूं भरियौ होसी ।—नी. प्र.
(स्त्री. सोंहगी)

सो—सं. पु.—१ शोक । २ दुख । ३ मनुष्य । ४ शरीर । ५ पण्डित । ६ चन्द्रमा । ७ मंत्र । ८ शुक्रवार । (एका.)
सं. स्त्री.—९ पार्वती ।
वि.—१ शुद्ध, पवित्र । २ मलीन, म्लान ३ स्थिर । ४ सब, समस्त ।
उ०—ग्रबै तौ **सो** कांम उलटौ हुयग्यौ । थांनै महीणै-मासरी छुट्टी लैणी पड़सी । ग्राज पूरौ महीणौ ग्राडौ रै'यौ है ।—दसदोख

(स्त्री. सी) ५ समान, तुल्य।

उ०—१ एक दिन रै समैजोग रावत प्रतापसिंघ कनै एक पंडित पुरांणीक आयौ जिकण बडा बडा ग्रंथां रौ समुद्र कौ **सो** पार दरसायौ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ 'सबळौ' माधवदास समोभ्रम। आहव कर मभ **सो** जम आतम।—रा. रू.

अव्य.—किसी अनिश्चित मात्रा, माप और मान पर जोर देने के लिये प्रयोग किया जाने वाला प्रत्यय, शब्द।

ज्यूं—बटाऊ बोल्यौ बाबाजी थोड़ौ **सो** दूध घाल दौ तौ न्याल कर दौ चाय बिनां नाड़ां तूटै।—फुलवाड़ी

क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त।

उ०—उदै-अद्रजौ बारमौ भांण ऊगै, पवै अस्त **सो** पुगियां नीठ पूगै।—मे. म.

२ ऐसा, इस प्रकार से।

उ०—१ जै जै मरणी जुग मरै, **सो** मरणौ आसांन। हरीया विन मरणी मरै, सो तौ कठण जांन।—अनुभववांणी

उ०—२ **सो** सुनत ही कुतबुद्दीन अटक नदी कों उल्लंघि उतकी आरय अवनी कौ अपनै ही अधीन करत आयौ **सो** सुनि रत्नसिंह सवितालौं सम्मुह जाइ बिग्रह बिरचन बिचारचौ।—वं. भा.

३ अतः, इसलिए।

उ०—१ जेज व्हियां नाकाबंदी होवण रौ भौ हौ **सो** भीमड़ौ विजळी रै पळाका रै ज्यूं किला रै मांय नै वळियौ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ जद हाट रौ धणी बोल्यौ-अबारूं तौ स्वांमी जी उतरचा है **सो** आखी पेडी रुपियां सूं जड़ देवौ तौ ही न द्यूं।

—भि. द्र.

सर्व—१ वह, वे।

उ०—१ करहा नीरूं सोइ चर, वाट चलंतउ पूर। द्राख विजउरा नीरती, **सो** धण रही स दूर।—ढो. मा.

उ०—२ धनौ धन्य **सो** लोक जौ नोक धोकै। वळै गोर हूं और बातां विलोकै।—मे. म.

उ०—३ स्यांम धरम्मी कांम द्रढ, खीची 'सिवौ' 'मुकन्न'। **सो** रहिया साजा पणौ, राजा तणौ जतन्न।—रा. रू.

२ वही।

उ०—१ पीछै वाघैजी कवर स्रीवीकैजी नूं कयौ, "हूं तौ आपरी मदत मैं हूं सूं आप कहौ **सो** तग्तोज करूं जिण सूं आपरै फायदौ हुवै।"—द. दा.

उ०—२ अधुरां डसणां सूं उदै, विमळ हास दुतिवंत। **सो** संध्या सूं चंद्रिका, फैली जांण फबंत।—बां. दा.

३ उस, उसके।

उ०—छकीयौ घूंमै धाव कौ, **सो** घट घायल पीर। हरीया घूंमै भाव बिन, भीतर मार सरीर।—अनुभववांणी

४ उन।

उ०—सान्हा नल्लाइ परठिया, आंगण नीसांणियांह। **सो** मइं हियड़ लगाड़ियां, भरि भरि मूठड़ियांह।—ढो. मा.

५ जो।

रू. भे.—सौ।

सोअणौ देखो 'सोवणौ' (रू. भे.)

सोअणौ, सोअबौ देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू. भे.)

सोअहम अव्य. [सं. सोऽहम्] वही मैं हूं. अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूं।

रू. भे.—सोउं, सोहं, सोहंग, सोहंगम।

सोइ देखो 'सोई' (रू. भे.)

उ०—१ दादू जै जै निस बगै, **सोइ** सोइ आवै नीति। बाहर भीतर देखिये, जाही सेती प्रीति।—दादूवांणी

उ०—२ सामिण सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा **सोइ**। खिण खिण अंतर संभरइ, नहीं विसारइ **सोइ**।—ढो. मा.

उ०—३ संदेसा ही लग्ग ल्हइ, जउ कहि जाणइ कोइ, ज्यूं धण आखइ नयण भरि, ज्यउ जइ आखइ **सोइ**।—ढो. मा.

उ०—४ जोड़ जळद पळळ दळ सांवळ ऊजळ, धुरै नीसांण **सोइ** घणघोर। प्रोळि प्रोळि तोरण परठीजै, मंडै किरि नाचण गिरि मोर।—वेलि

सोइतौ देखो 'सोहितौ' (रू. भे.)

उ०—साथीड़ां रै भोजन भात, कोठीना रै मूळामद **सोइता**।

—लो. गी.

सोई—सं. स्त्री—१ एक जाति विशेष।

उ०—भांई **सोई** भरडीया, सोनी नदं सूनार। व्यवसाईया सहू जातिना, जै जोईइ तिणी वारि।—मा. कां. प्र.

सर्व.—वही, वह।

उ०—१ सांच बोलियां टूकड़ा सूका, मिळ जावै **सोई** मीठा। कूड़ बोल पकवांन करावै, धूड़ बराबर मीठा।—ऊ. का.

उ०—२ हरीया करता हेक है, दूजा करता नांहि। **सोई** करता सिसट का, न्यारा घट घट मांहि।—अनुभववांणी

उ०—३ पेम भगति नित नेम का, बौह कठण वहवार। हरीया **सोई** लै निभै, सुख दुख तज्य संसार।—अनुभववांणी

वि.—१ शुभचिंतक, हितैषी, मित्र।

उ०—१ डुबी बात छै, कदाचित भूठी होय जावै तौ पातसा रा **सोई** तथा गांई डूबी बात जांण कोई हंससी।

—पलक दरियाव री बात

२ सभी, समस्त।

३ देखो 'सोजौ' (पु.) (रू. भे.)

उ०—जीण मेरी बाई यै, लट्टू सा होग्या ज्यारां होठ, जांमण

की यै जाई, आंख्या पर फिरगी **सोई** मारा की ...।
—जीगमाता रौ गीत

सोउं—देखो 'सोग्रहम्' (रू. भे.)
उ०—ग्रोउं **सोउं** सबद की, सहजां सुणी अवाज। जनहरीया इन ऊपरै, ररंकार का राज।—ग्रनुभववांगी

सोऊ–सर्व.— वह।

सोक–सं. पु. [सं. शोक:] १ परिवार में किसी की मृत्यु के उपरांत प्राय आगामी त्यौहार तक रक्खा जाने वाला रंज, जिसमें कोई खुशी या मांगलिक कार्य न तो परिवार में किया जाता है और न ऐसे कामों में भाग लिया जाता है, दुख, रंज।
उ०—१ रावजी बोलिया—इण महा सूरवीर रै मुंह चढ कांम आया सौ बैंकूंठ री बाट बुहा, जिणां रौ **सोक** न करणौ।
—डाढाळा सूर री बात
उ०—२ तद रावजी फुरमायी—ग्राज अठै गोठ हुवै सौ सगळां रौ **सोक** भाजै। आदमी जिनस रै पगां सहर मेलिया।
—डाढाळा सूर री बात
क्रि. प्र.—करणौ, भंगाणौ, भांजणौ, राखणौ, होणौ।
२ दुख, रंज।
उ०—झगड़ा मैं भाजौ तिण सूं सारौ जगत इण नै हंसियौ नैं एक वीर स्त्री न हंसीं सौ उण रै पतिरा भागलपणा री मैंहणी लागी तिण कारण हंसी नहीं **सोक** कीधौ।—वी. स. टी
३ कष्ट, पीड़ा।
उ०—रोग **सोक** दुख पाप रिण, ग्रै मत करौ प्रवेस। रहौ अनीत अनीत बिण, दाता हंदै देस।—बां. दा.
४ विपत्ति, संकट।
५ चिंता, संताप, पश्चाताप।
उ०—ाजकै वज्रपात जिसड़ा बचन सुणतां ही पातसाह रा मन मैं भी पतसाही करण री आधी ग्रास रही। जठै दारा नूं उपालंभ देर पछतावा रै प्रमांण **सोक** रा समुद्र में मग्न मुगळेस इण रीति कही।—वं. भा.
६ साहित्य में ३३ प्रकार के संचारी भावों में से एक।
उ०—बांह चंदन सुगम सेव्यइ, भाव संचारिक वधइ। तेत्रीस ध्रति मति स्मरण, लज्जा **सोक** निद्रादिक सधइ।—वि. कु.
वि. वि.—साहित्य ग्रंथों में आये संचारी भाव के ३३ भेदों में शोक का नाम नहीं मिलता है।
रू. भे.—सोग।
मह;—सोक।
७ देखो 'सौक' (रू. भे.)
उ०—१ सर **सोक** वजंत परा सगणौं, तिम हीज जड़ाव तुरंग तणौं।—सू. प्र.
उ०—२ रुडै सिंधड़ौ राग पड़ै सर **सोक** अपारां।—रा. रू.
उ०—३ विवांण अच्छरां **सोक** वाजी हाक डाक बीरां, वीटीयौ सधीरां घणा धारिया विसन।—नैणसी
उ०—४ त्रींगड़ा भालोड़ां रा बूम पड़िया छै। सवायै मेहरौ जोरि **सोक** बाजै तिण भांति पंखांरी रुण बाजिनै रही छै।
—रा. सा. सं.
उ०—५ ग्रीध पंखांरा सरांरी **सोक** वाजि नै रहिया छै। सेलां रा धमोड़ा पड़ै छै।—रा. सा सं.
उ०—६ असी तरै थी **सोकां** ठाकर आगै मुहागण री बुरी कही तद ठाकुर साची मांनी अर घणौ इतराज हुवौ।
—गांम रै धणी री बात
उ०—७ अणख वयण हर ईसकौ, चित्त नित्त आही चाल। सहस्यौ क्यूं कर थैं इसा, **सोकां** वाळा साल।—पनां.
उ०—८ झाली री मां झाली सूं बातां कीवी **सोकां** री बातां पूछी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

सोकड़—१ देखो 'सौक' (१, २, ३, ४) (रू. भे.)
उ०—१ ग्रौ कुचमादी तौ राजाजी नै ईनीं बगसिया। डोकरी रा गाभा बदळाय खुद राजाजी रा गाभा पैर घोड़ा मायै बैठ **सोकड़** मनाई।—फुलवाड़ी
उ०—२ पछै तौ अेक **सोकड़** न्हाटी। पण न्हाटणौ सब अकारथ गियौ।—फुलवाड़ी
२ देखो 'सौक' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ भला न कैसी कोयक भोग्या भायली, **सोकड़** कांई थांनै सणगां ऊपर लै जायली।—लो. गी.
उ०—२ प्रीतम तुम मत जांणियौ, दूर देस का बास। खोड हमारी यहां पड़ी, प्रांण तुम्हारै पास। जी उमराव थांनै किण **सोकड़** बिलमाया म्हारा प्रांण, उमराव ग्रौ रसिया।—लो. गी.
३ देखो 'सोक' (मह; रू. भे.)

सोकड़ली—१ देखो 'सौक' (१) (अल्पा; रू. भे.)
उ०—जला रे ठंडौ पांणी साहिबजी नै पाइजै रे म्हारी जोड़ी रा जला मिरगानेणी रा जला खारोड़ौ म्हांरी **सोकड़ली** नै पाइजै रे जला।—लो. गी.

सोकण—देखो 'सौक' (१) (अल्पा; रू. भे.)
उ०—डाक्या टोडा टोडड़ी, लोपी नदी बनास। आडावळौ उलांघियौ, जद छोडी धण आस। जी उमराव थांनै कुण **सोकण** बिलमाया म्हारा राज।—लो. गी.

सोकरड़ौ—देखो 'सौकरड़ौ' (रू. भे.)
उ०—देवर भाभी देखणौ, ढाहण गजां निसांण। **सोकरड़ां** रा सिंधू मैं, पूणौ पवन प्रमांण।—वी. स.

सोकळ–सं. पु.—१ शुष्क, साधारण।
उ०—रांणी **सोकळ** चून री, कमी दिखावौ काय। औरां पहली सीलणौ, म्हारा रौ सिर जाय।—वी. स.

२ अपौष्टिक ।

सोकाकुळ–वि. [सं. शोकाकुल] शोक से व्याकुल, दुखी, चिंतित ।

उ०—इक नहीं आक्रांता क्रांतातुर आडी, डाई अवतोका **सोकाकुळ** डाडी ।—ऊ. का.

सोकातिसार–सं. पु.—शोक एवं चिंता से होने वाला एक अतिसार रोग । (अमरत)

रू. भे.—सौकातिसार ।

सोख–सं. पु.—१ वह घोड़ा जिसके गले में बकरी के समान "गलथने" हों ।

२ देखो 'सौख' ।

सोखण—देखो 'सोसण' (रू. भे.)

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण **सोखण** सरपंच ।—वेलि

सोखणी–सं. स्त्री.—१ संहार करने वाली ।

उ०—तुंही **सोखणी** पोखणी तीन लोकं तुंही जोगणी सोगणी दूर दोखं ।—मे. म.

२ शोषण करने वाली ।

सोखणौ, सोखबौ–क्रि. वि. [सं. शोषणम्] १ पीना, आचमन करना ।

उ०—१ सकौ **सोखियो** हाकड़ौ नांम सिंधु, बहंती थकी रोकिणी लोकबंधू ।—मे. म.

उ०—२ बीर बचायौ ब्याळ रूप वणी, तूटी लाव संधाय । समंद हाकड़ौ आप **सोखियौ**, सेठ जिहाज तराय ।—राघवदास भादी

२ सुखाना ।

उ०—१ विढवा चंद गोरधन वाळौ. अरि सर **सोखण** जांग उन्हाळा ।—रा. रू.

उ०—२ उरध रोम उल्लसै, जोम अरि करण रसातळ । भजि त्रिसळौ निज भाळ, कळा **सोखण** सत्र कम्मळ ।—रा. रू.

उ०—३ वीर वचन सुणि विहरण चाल्यउ, सालिभद्र मन संतोखी रे । आयउ धरि ओलख्यउ नहीं माता, तप करि काया **सोखी** रे ।—स. कु.

३ चूसना, शोषण करना ।

उ०—धोरांधोरां धर धूधळ धुरधाई, थळ थळ ऊथळती बळती बुरकाई । पड़ती पुळ पुळ पर भुल भुल भरभुंजै, सरकर सर **सोखत** गिरवर दरगूंजै ।—ऊ. का.

ज्यूं—पुड़ियां मांयलौ घी तौ गळणौ **सोख** लियौ ।

४ मारना, संहार करना ।

उ०—ऊंची रीत उजाळणौ, खीची सुंदरदास । खळ **सोखै** पड़ियौ खहै, पोखै चंद्रप्रहास ।—रा. रू.

५ नष्ट करना, मिटाना ।

उ०—१ खूटोड़ा खोळा गाफल गोळा भोळा इस्क भणंदा है । आस्तिक बिन इंदुक नास्तिक निंदुक, सास्तिक मत **सोखंदा** है । तजधरम त्रिदंडी, अधिक अफंडी, पाखंडो पोखंदा है ।—ऊ. का.

उ०—२ आप लेते हैं प्याला तब बोलते हैं कविराव । गत्रु **सोखियै** मित्र पोखियै ।—सू. प्र.

६ विष आदि उतारना ।

उ०—आवै सघण अनीत, जेम वनि अगनि सिळगगां । सरप विसरां **सोखवा**, मंत्र आवै सुखमंगां ।—रा. रू.

सोखणहार, हारौ (हारी), सोखणियौ—वि० ।

सोखिओड़ौ, सोखियोड़ौ, सोख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सोखीजणौ, सोखीजबौ—कर्म वा० ।

सोखता–सं. स्त्री. [सं. शुष्] एक प्रकार की काल्पनिक पिशाचिनी जिसके सहवास से मनुष्य कृशकाय होकर धीरे-धीरे मृत्यु को प्राप्त होता है । (वि. पोखता)

उ०—सांप्रत जांणी **सोखता**, जिणरी आंण जुड़ेन । [illegible] गयौ अछूतौ हुऔ, छूतौ थकौ ही छेल ।—बां. दा.

सोखायत—देखो 'सौगात' ।

उ०—करी एक उमराव अरज ईरान बिलायत । पातवर जरतार, भार मेवा **सोखायत** ।—ना. रा.

सोखियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ पिया हुआ, आचमन किया हुआ । २ सुखाया हुआ. ३ चूसा हुआ, शोषा हुआ. ४ मारा हुआ, संहार किया हुआ. ५ नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ विष उतारा हुआ ।

(स्त्री. सोखियोड़ी)

सोखी–वि.—१ मित्र, दोस्त, हितैषी ।

उ०—१ मन का **सोखी** मन है, मन का दोखी मन । इणीया सोखी सकल का, एकौ रांम भजन ।—पनूभ स्वामी

उ०—२ तब थी सो मति अब नहीं, तब टोटा अब लाह । दोखी सब **सोखी** भया, चोर भया सब साह ।—ह. पु. वा.

२ शौकीन ।

रू. भे.—सोगी, सौखी ।

सोकोटगवरत–सं. पु.—वह घोड़ा जिसके पेट या भुजाओं के मोड़ पर भंवरी (चक्र) हो (अशुभ) । (शा. हो.)

सोखीन—१ देखो 'सौखीन' (रू. भे.)

उ०—खोखा सूं **सोखीन** खावै, आठ महीनों गे गणा । अगाणित अपूरब आणंद, समी विरख दल देवता ।—दसदेव

सोखीनाई—देखो 'सौखीनाई' (रू. भे.)

उ०—१ ठगी माथै कमर बांधी, **सोखीनाई** में [illegible] सांधी । सैसी अर मैंतर तांई मांगै विना नहीं छोड़्या ।—दसदोख

उ०—२ तेल साबण लगावै, सलाजीत खावै अर गोटा पीवै है तो ही बूढापौ वैरी लुक्यौ नीं चावै । जद ई **सोखीनाई** में ही मजौ नीं आवै, गजौ ऊपरली गली जावै है ।—दसदोख

सोगंध–सं. स्त्री.—शपथ ।

उ०—**सोगंध** लीध सिकारियां, नह लाहोरी आय। थांरौ सेकौ एक वस, लूआं प्रांण सुकाय।—लू

रू. भे.—सोगन, सौगंद, सौगंध, सौगध।

सोग—देखो 'सोक' (रू. भे.)

उ०—१ सज्जरण चाल्या हे सखी, नयणाँ कियौ **सोग**। सिर साड़ी गळि कंचुवौ, हुवउ निचोवरण जोग।—ढो. मा.

उ०—२ बेटा ताहरां तात नै मार तूं जहर सस्त्र नैं जोग रे लाला जिम राज्य बेसांणूं तौ भरणी, म्हारौ मिट जाय दुख नै **सोग** रे लाला।—जयवांणी

उ०—३ मन मैं धारै अधिकौ **सोग**, हीयड़ौ फाटइ नाह वियोग।—वि. कु.

सोगटाबाजी—सं. स्त्री.—शतरंज या चौसर का खेल।

सोगटी, सोगट्टी—देखो 'सोगटौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—जै थांणौ भड ऊठिया, बैठा तै थांणैह। **सोगट्टी**, सतरंज जिम, आपौ आंपांणैह।—गु. रू. बं.

सोगटौ, सोगठौ—सं. पु.—शतरंज या चौसर की गोट, गोटी।

उ०—१ वरस २ तथा ३ हुवा सु कमालदीनूं **सोगटां** रमरण घणी चूंप हुती सु एक दिन मूळराज सादौ सौ वागौ पेहर सादा हथियार बांध नै कमालदी चौपड़ रमतौ थौ तठै आय ऊभौ रह्यौ दांण बतावरण लागौ।—नैणसी

उ०—२ इरण भांति वागांरा चिहुरबंध छूटै छै। कड़िआं लोल लीजै छै। वीजणैं वाउ ढोळीजै छै, घोडां वाउठा कीजै छै, अैराकी टहलावीजै, चौरंगा **सोगठां** री खाटखड़ पड़ि नैं रही छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ करि भोजन बइटा एकठा, आंण्या पासा नइ **सोगठा**।—ढो. मा.

सोगन—१ देखो 'सोगंध' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ माईतां रौ लोई पीवरण री **सोगन** दिरायां पछै ई डीकरी आपरी ठौड़ बैठी थेपड़ी रै मापै ढिगली सूं गोबर रौ पींडौ लेय नीची धूरण करियां थापरण रौ कांम उणी भांत चालू करियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हरसा वीर म्हारा रे **सोगन** मैं खायी रे सरवर पाज पै।—लो. गी.

२ देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

सोगरौ, सोगरौ-सं. पु.—बाजरी की मोटी रोटी।

उ०—पछेवड़ी मैं **सोगरा** बांधतां चौधरण बोली—दो च्यार जागां भाव तांव पूछनै चीज लीजौ इसी नीं व्है कै भोगनौ भंगाय नै आवौ।—रातवासौ

उ०—२ चौधरण कनै भातौ हौ। दोय **सोगरा** अर चटणी उणनै भिलाय उणरौ नांव पूछ्यौ।—फुलवाड़ी

सोगात—देखो 'सौगात' (रू. भे.)

सोगियौ—वि.—१ भेद लेने वाला।

२ देखो 'सोगी' (अल्पा; रू. भे.)

सोगी—वि. [सं. शोक+रा. प्रा. ई.] १ शोक-संतप्त, दुखी, चिंतित।

उ०—कोप करि लोक तिण पकड़ी कबजै किया, विगर घर बार हूवा वियोगी। नासतां मूंडूं भारी पड़ी त्यां नरां, सबळ पांनै पड़्या थया **सोगी**।—वि. कु.

२ देखो 'सुहागौ' (रू. भे.)

३ देखो 'सोखी' (रू. भे.)

सोड़—सं. स्त्री.—१ रजाई, सिरख।

उ०—चम चीर बेज बणाय दांवरण घलाओ मखमूल री। सूआ भरणी **सोड़** भराय गाल मसीरां गादी गींड़वा।—लो. गी.

२ देखो 'मसोड़' (रू. भे.)

रू. भे.—सौड़।

सोड़क—सं. पु.—लाव के साथ घूमने वाले चक्र में लगने वाला लोहे का डंडा।

सोड़व—सं. पु. [सं. षाडव] छः स्वरों का एक राग विशेष।

सोड़स—देखो 'सोडस' (रू. भे.)

सोड़सकळा—देखो 'सोडसकळा' (रू. भे.)

सोड़सगण—देखो 'सोडसगण' (रू. भे.)

सोड़सदांन—देखो 'सोडसदांन' (रू. भे.)

सोड़सपूजन—देखो 'सोडसपूजन' (रू. भे)

सोड़समात्रका—देखो 'सोडसमात्रका' (रू. भे.)

सोड़ससंसकार—देखो 'सोडससंस्कार' (रू. भे.)

सोच—सं. पु.—१ चिंता, फिक्र।

उ०—१ भूपति इम भाखियौ, हमैं सुभडां किम व्हीजै। बोल्या भड़ धजबंध, कमधपति **सोच** न कीजै।—मे. म.

उ०—२ **सोच** करौ मत ठाकरां, मौ धड़ जेतै मत्थ। की ताकत जमराज री, तौ सिर घालै हत्थ।—मुकनदांन खिड़ियौ

२ पश्चाताप, पछतावा।

उ०—जब लोक कहै—भीखणजी जगूजी समजतां बीजा नै इ दोरौ लागौ पिण खेतसी जी लुणावत नै तौ दोहरौ घणौं इज लागौ। **सोच** घणौं करै।—भिक्खु

३ दुख, रंज।

४ आश्चर्य, विस्मय।

उ०—गिरवर रइ सिखर मांडियउ गाहड, तिकौ अचरिज पेखीयउ तिण। **सोच** हूऔ मन मांहि संपेखै, वध कमळ किम वार विण।—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सोज।

५ देखो 'सौच' (रू. भे.)

उ०—मांहै बांमण थौ जणीं रौ तौ सत छूट गयौ। सौ मांहै हीज **सोच** गयौ।—राजा रा गुर रा बेटा री बात

सोचक—सं. पु. [सं. सूचिकः] दरजी। (डिं. को.)

सोचकेस—देखो 'सोचीकेस' (रू. भे.) (अ. मा.)

सोचणौ, सोचबौ—क्रि. स.—१ चिंता या फिक्र में पड़ना, चिंतित होना।

उ०—१ रवद स्यांम कै रूम कै, सुनी राफसी सोय। साह हुकम चौड़ै स्रवण, सुण सोचिया सकोय।—रा. रू.

उ०—२ मौड़ै मुख मौड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणानैं सीतळ सतवाळी। लुच्चा ललचावै लालच धिन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण खिण लागै।—ऊ. का.

२ किसी विषय पर मन में विचार करना, कल्पना करना।

उ०—१ नगर रा सगळा कवि भेळा होय गुजरी रै रूप री ओपमावां सोचण लागा।—फुलवाड़ी

उ०—२ वौ दरबारियां नै नवा नवा सवाल पूछतौ। सही जवाब मिळिया मूंडै मांग्यौ इनांम देवतौ। सोचण सारू मोलगत देवतौ। फुलवाड़ी

३ निश्चय करना, इरादा करना, विचार करना।

उ०—दैंत री मौत अर उणरा रगत सूं बिरथा ओक्या नीं बैठ जावै, इण वास्तै नाहरसिंघ तड़कै सगळी बात बतावण री सोची। —फुलवाड़ी

४ विशेषत: किसी कार्य परिणाम या प्रणाली के विषय में विचार करना, विचार-विमर्श करना।

५ किसी कार्य के उचित अनुचित का विचार करना।

उ०—आ कैयनै वै तौ मूंडी सोची नीं कोई भली। मिठाइयां माथै किड़कायनै पड़िया जकौ गपाक गपाक मिठाइयां खावणी चालु करदी।—फुलवाड़ी

६ अनुमान करना, अंदाजा लगाना।

७ असमंजस मे पड़ना, पशोपेश मे पडना।

सोचणहार, हारौ (हारी), सोचणियौ—वि०।

सोचिओड़ौ, सोचियोड़ौ, सोच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सोचीजणौ, सोचीजबौ—कर्म वा०।

सोचिकेस—देखो 'सोचीकेस' (रू. भे.)

सोचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चिन्ता या फिक्र में पड़ा हुआ, चिंतित. २ मन में विचारा हुआ. ३ निश्चय किया हुआ, इरादा या विचार किया हुआ. ४ विचार-विमर्श किया हुआ. ५ औचित्य पर विचार किया हुआ. ६ अंदाजा लगाया हुआ, अनुमानित. ७ असमंजस या पशोपेश में पड़ा हुआ।

(स्त्री. सोचियोड़ी)

सोची—सं. स्त्री. [सं. शोचिस्] १ प्रकाश, ज्योति।

२ आभा, कांति, चमक। (ह. नां. मा.)

३ अग्नि, आग।

सोचीकेस—सं. पु. [सं. शोचिष्केशः] अग्नि, आग। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सोचकेस, सोचिकेस।

सोज १ तैयारी।

उ० गुरां प्रोहित सुभट गाजी, तेड़ मंत्री अकल ताजी, मन्ना कीध सधीर। सोज लावां करै गाजी, गुमर धारै सबण गाजी, बिराजै रघुबीर। रा. रू.

२ देखो 'सोच' (रू. भे.)

उ० आध कोस अतरै, कटक आपणौ चलावा। न को रह्यां अण सोज, न कूं आवाज उपावा। रा. रू.

सोजणौ, सोजबौ देखो 'सोधणौ, सोधबौ' (रू. भे.)

उ०—पुरख तौ ईंणां रांडां अठैईज छिपायौ है। जौ थै ही सोज ल्यौ।—राजा रा गुरु रा बेटा री बात

सोजाक—देखो 'सुजाक' (रू. भे.)

सोजि देखो 'सोजी' (रू. भे.)

सोजियोड़ौ देखो 'सोधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सोजियोड़ी)

सोजी, सोजी—सं. स्त्री. १ विवेकशक्ति, बुद्धि, ज्ञान।

उ०—थूं हाल टाबर है। भूंडी-भली सोचण री थनै अंगै ई सोजी कोनीं थूं जांणै कै म्हैं थारौ भूंडौ चीता ला। फुलवाड़ी

२ ध्यान, पता, जानकारी।

उ०—१ बाजरी री तौ म्हैं फेर ई गम खाय लेती, पण थानै इण बात री सोजी होवणी चाईजै कै भाटियां रै मरणै आया सूअर रौ खुद भगवान ई सारौ करै तौ उणरौ पार नी पड़ै।—फुलवाड़ी

उ०—२ जै मिनख नै सांप्रत दीठ सूं आगै दीसण लाग जावै, आगला छिण री सोजी पड़ण लाग जावै तौ उणरी पलक बातां री पीदी आय जावै। फुलवाड़ी

३ अकल, बुद्धि, विचार शक्ति।

उ०—१ बेटी लूणी वांणी में जवाब दियौ—म्हारौ भूंडी-भली चींतण री म्हामैं पूरी सोजी है। फुलवाड़ी

रू. भे.—सोधी।

४ देखो 'सोजौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—होठां री सोजी मिटियां दीवांणजी ई ओका वाळी बात नै खासी भूलग्या हा। याद राखणां सूं लाज आवती। फुलवाड़ी

सोजौ, सोजौ सूजन, शोथ।

अल्पा;—सोजी, सोई।

सोझण—सं. स्त्री.—शुद्ध करने या संशोधन करने की क्रिया।

सोझणौ, सोझबौ—देखो 'सोधणौ, सोधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हितू जांण सुविहांण, खान इतकाद आद अन। कियौ विदा आलोझ, सोझ सुख बात घात चित्र।—रा. रू.

उ०—२ बेटा री मग रण बधण, बहू री बळणौ मग्ग। सोझौ पीहर सासरा, लारै रजवट लग्ग।—रैवतसिंह भाटी

उ०—३ दिस दिक्खण खड़िया 'दुरग', सूरधरा छळ सज्झ।

छोडै मंका ज्यौं हणू, लंका **सोझण** कज्ज ।—रा. रू.

उ०—४ मोतिए विसाहण ग्रहि कुण मूंकै, एक एक प्रति एक अनूप । किल **सोझण** मुख मूझ वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी न सूप ।—वेलि

उ०—५ सुरित निरत करि **सोझीया**, पाया रांम रतंन । तन ताळा मन ताकड़ी, त्रिणजणहार वचंन ।—अनुभववांणी

सोझणहार, हारौ (हारी), **सोझणियौ**—वि० ।

सोझिओड़ौ, सोझियोड़ौ, सोझ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सोझीजणौ, सोझीजबौ—कर्म वा० ।

सोझियोड़ौ—देखो 'सोधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सोझियोड़ी)

सोट, सोट—सं. पु.—१ गोढ़वाड़ में बच्चे के जन्म के बाद प्रथम होली पर उसकी 'ढूंढ' के संस्कार के अवसर पर अपनी जाति में बांटा जाना वाला खाजा जो पापड़ के आकार का होता है ।

रू. भे.—सोठौ ।

२ देखो 'सोटौ' (रू. भे.)

उ०—गांव मैं बडतांरै सांमै केई बेलीड़ा भळै मिळ्या ! **सोट** सांभ लिया ।—दसदोख

सोटण, सोटी—सं. स्त्री—१ वह लंबी लकड़ी जिससे ज्वार बाजरा आदि की सिट्टियों को कूटकर दाना निकालते हैं । (लकड़ी)

२ देखो 'सोटौ' (अल्पा; रू. भे)

सोटौ—सं. पु.—१ मोटी लकड़ी का मजबूत डंडा, लाठी, लट्ठ ।

उ०—तद गांम रै धणी आपरी असतरी रौ वचन सुणनैं छोकरी रै **सोटा** री मारी ।—राजा रा गुर रा बेटा री बात

२ भैंसा-सांड ।

उ०—मोडा ग्रेक बहुत ह्वै महिला, ज्यूं भैंसिन मैं **सोटा** । दै छांटा नारी परबोधै, खसम बतावै खोटा ।—ऊ. का.

३ देखो 'सोठौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सोट ।

सोठागारौ—वि. (स्त्री. सोठागारी) १ मितव्ययी ।

२ कृपण, कंजूस ।

सोठौ, सोठौ—सं. पु.—१ तंगी, अभाव ।

उ०—यां 'राजोधर' अक्खियौ, सू जादवां सप्रांण । **सोठै** नांणा जीवणौ, तौ पूठै 'जैसांण' ।—रा. रू.

२ मितव्ययता ।

३ कृपणता ।

४ देखो 'सोटौ' (रू. भे.)

रू. भे.—संठौ ।

सोडस—वि.—सोलह ।

सं. पु.—सोलह की संख्या ।

रू. भे.—सोड़स ।

सोडसकळा—सं. स्त्री. [सं. षोड्श्+कला] चन्द्रमा की सोलह कलाएँ जिससे वह क्रमशः घटता-बढ़ता रहता है ।

वि. वि.—देखो 'कळा' (२)

रू. भे.—सोड़सकळा ।

सोडसगण—सं. पु. [सं. षोडशगण] ५ ज्ञानेन्द्रियों, ५ कर्मेन्द्रियों, ५ भूत और एक मन इन सोलह का समुह ।

रू. भे.—सोड़सगण ।

सोडसदांन—सं. पु. [सं. षोडसदान] १ धर्मानुसार इन 'सोलह चीजों का दान—पृथ्वी, जल, आसन, वस्त्र, अन्न, पान, दीपक, छत्र, सुगन्धित द्रव्य, फल, पुष्पमाला, खड़ाऊ, शास्त्र, गाय, सोना और चाँदी ।

रू. भे.—सोड़सदांन ।

सोडसपूजन—सं. पु. [सं. षोडशपूजन] पूजन के सोलह अंग या कृत्य ।

२ षोडशोपचार से की जाने वाली पूजा ।

रू. भे.— सोड़सपूजन ।

सोडसमातृका—सं. स्त्री. [सं. षोड़श्+मातृका] सोलह मातृकाओं का समूह या वर्ग जिनके नाम इस प्रकार हैं—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शालि, पुष्टि, धृति तुष्टि, मातृ और आत्म देवता ।

रू. भे.—सोड़समातृका ।

सोडसवारखी—वि. स्त्री. [सं. षोडस+वार्षिका] सोलह वर्ष की ।

उ०—बाळी-भोळी अबळा प्रउढा **सोडसवारखी** रांणी रवतांणी । बहदा बहदी ही आपणा देवर जेठ भरतार का सत देखती फिरइ छइ ।—अ. वचनिका

सोडससंस्कार—सं. पु. [सं. षौडशसंस्कार] गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक वैदिक विधान के अनुसार किये जाने वाले सोलह-संस्कार ।

रू. भे.—सोळैसस्कार ।

सोडसी—वि. [सं. षोडशी] १ सोलह वर्ष की आयु वाली ।

२ युवती ।

सं. स्त्री.—१ सोलह वर्ष की युवती ।

२ दस महाविधाओं में से एक ।

३ इन सोलह वस्तुओं का समुह—ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, जल, अग्नी, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म और नाम ।

सोडसोपचार—सं. पु [सं. षोडशोपचार] पूजन के सोलह उपचार या अंग—आसन, स्वागत, अर्ध्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना ।

सोडौ—सं. पु. [अं.] सज्जी को रासायनिक क्रिया द्वारा साफ करके बनाया जाने वाला एक प्रकार का क्षार ।

सोढांण, सोढांयण—सं. पु.—ऊमरकोट का प्राचीन नाम ।

सोढा–सं. पु.—पंवार वंश की एक शाखा।

सोढौ–सं. पु —१ पंवार वंश की सोढा शाखा का व्यक्ति।

२ वर, पति।

उ०—भावी न मिटै कुंयरी, तुम्है थया छौ एक। मन मांन्यौ **सोढौ** मिळचौ, परणी आंगिण विवेक।—वि. कु.

३ एक प्रसिद्ध लोक गीत जो विवाह के समय रात्रि में गाया जाता है। (बां. दा. ख्यात)

सोण–सं. पु. [सं. शोण] १ अत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

२ देखो 'सोणित' (रू. भे.)

उ०—मचायौ **सोण** रौ कीच द्रोण सौ दिखायौ मांनूं, तेगां सूं रचायौ ख्याल अनोखौ तमास। छकै छाक लोहां पूर आरबां विमांणां छायौ, हैकंपै भूलोक आयौ मुनिंद्रां सहास।

— बादरदांन दधवाड़ियौ

३ देखो 'सुगन' (रू भे.)

उ०—म्हांरा **सोण** सैंफळिया वै पांचौ ही मिळ राजा रै पगां लागी।—चौबोली

४ देखो 'सोणभद्रा' (रू. भे.)

उ०—देवी कावेरी तापि ऋस्ना कपीला, देवी **सोण** सतलज्ज भीमा सुसीला।—देवि

सोणक–वि.—लाल।

सोणगिर, सोणगिरि, सोणगिरी— देखो 'स्वरणगिर' (रू. भे.)

सोणत—देखो 'सोणित' (रू. भे.)

सोणभद्रनद–सं. पु. यौ. [सं. शोणभद्रनद] विंध्याचल से निकलकर पटना के पास गंगा में गिरने वाला एक नद।

सोणभद्रा–सं. स्त्री. [सं. शोणभद्रा] पंजाब की सोन नदी का एक नाम।

रू. भे.—सोण।

सोणहर–सं. पु.—शयनघर।

उ०—ताहरां सोनगरां रिणमल जी सूं चूक तेवड़ियौ। **सोणहर** रिणमल जी पोढिया हुता।—नैणसी

सोणित–सं. पु. [सं. शोणित] १ रुधिर, खून, रक्त।

उ०—१ जुद्ध मैं मांझियां नै विरोळै मारनै **सोणित** लोही सूं रूक तरवार रंग नै पाछौ मुड़ै छै। इणमैं पती री वीरता दिखाई है।

—वी. स. टी.

उ०—२ इणी रीति रतळांम रै राजा राठौड़ रत्नसिंह सारथी समेत तरणी नूं तमासै लगाइ केही गजदंतां सहित सुंडादंड सुनां करि दीठा दोयणां रै **सोणित** भद्रकाळी रौ खप्पर भराइ बीर बेताळां नूं गूदरा गाळा जिमाइ बिनां माथै भी साहजादां नूं संकाइ लोह छक घूमता गजां री घड़ा मैं सूरसज्जा सूतै इच्छा रै अनुसार परलोक लियौ।—वं. भा.

२ सिंदूर।

३ केसर।

४ ताँबा।

५ शूर राजा का पुत्र एक यादव राजा।

वि.—लाल, रक्तवर्ण। ❀ (डि. को.)

रू. भे.—सांणत, सोण, सोणी, स्त्रुण, स्त्रुणि, स्त्रुणी, स्रोण, स्रोणित, स्रोणी।

सोणितचंदण, सोणितचंदन सं. पु. [सं. शोणितचंदन] लाल चंदन।

सोणितपुर–सं. पु. [सं. शोणितपुर] १ बाणासुर की राजधानी का नाम।

२ सोजत नगर का एक प्राचीन नाम।

सोणितोद–सं. पु. [सं. शोणितोद] एक यक्ष का नाम।

सोणी—१ देखो 'सोणित' (रू. भे.)

उ०— वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सूं सर साबळ झळहळ ए। अडडै कांछसळ कुटकै कम्मळ, **सोणी** रळ-चळ खळहळ ए।

—गु. रू. बं.

२ देखो 'सांणी' (रू. भे.)

सोणू– देखो 'सोहणौ' (रू. भे.)

उ०—**सोणू** नीतर बोल्यौ जाय ढोळी ज्वार री।— लो. गी.

सोणौ, सोबौ—१ देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू. भे.)

उ०—जब **सोऊं** तब जागवइ जब जागूं तब जाइ। मारू ढोलउ संभरइ, दणि परि रयण विहाइ।— ढो. मा.

२ देखो 'सोहणौ, सोहबौ' (रू. भे.)

सोत–सं. स्त्री.—१ जयपुर राज्य की एक नदी जो झाड़ली और जैंतगढ की पहाड़ियों में से निकलकर साबी में गिरती है। (वीर विनोद)

२ देखो 'स्रोत' (रू. भे.)

३ देखो 'सौत' (रू. भे.)

सोतपत, सोतपति, सोतपती— देखो 'स्रोतपति' (रू. भे.) (डि. को.)

सोतौ—देखो 'स्रोत' (रू. भे.)

सोथ–सं. स्त्री. [सं. शोथ] सूजन।

सोदंति–सं. पु. [सं.] एक आचार्य जिस पर विश्वामित्रजी ने विजय प्राप्त की थी।

सोदकुंभ सं. पु.— पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला एक प्रकार का कृत्य।

सोदणौ, सोदबौ – देखो 'सोधणौ, सौधबौ' (रू. भे.)

उ०— ताकत डोलै तीसरा, साथरवाड़ा **सोद**। पैलां घर पटकी पड़ै, माखां रै मन मोद।—ऊ. का.

सोदणहार, हारौ (हारी), सोदणियौ—वि०।

सोदिओड़ौ, सोदियोड़ौ, सोदयोड़ौ— भू० का० कृ०।

सोदीजणौ, सोदीजबौ— कर्म वा०।

सोदर, सोदरज–सं. पु. [सं. सहोदर, सं. स+उदर] एक ही मां के कोख से उत्पन्न भाई, भ्राता। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ **सोदर** इम 'सादूळ' रौ, पूरण राज बळ पूर। राज भदावड़ जिण रचै, सात्रव दळ दळि सूर।—वं. भा.

उ०—२ लालसिंह रौ **सोदर** हरिसिंह सिंधु देस रौ अधीस हुवौ जिणरै पुत्र घुंधट उपजियौ जिकण रौ वंस घुंघटिया चहुवांण कहावै।—वं. भा.

सोदरा, सौदरी–सं. स्त्री. [सं. सहोदरा, सं. स+उदरा] १ सगी बहिन, भगिनी। (ह. नां. मा.)

[सं. सुभद्रा] २ श्रीकृष्ण की बहिन का नाम।

उ०—सांवळियौ बहनोई मांगां, **सोदरा** बहन मांगो, हांडा धोवण फूंकौं मांगां, भाड़ू देवण भूवा।—लो. गी.

२ दुर्गा देवी का एक नामान्तर।

सोदागर—देखो 'सौदागर' (रू. भे.)

उ०—लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया **सोदागर** वहरांमसंद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै।—रा. सा. सं.

सोदियोड़ौ—देखो 'सोधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सोदियोड़ी)

सोदौ—देखो 'सौदौ' (रू. भे.)

उ०—१ वा घर घर हाट चोवटै सगळै फिरी, नेवरा करचा पण कोई वांणियौ **सोदौ** जोखण सारू राजी नीं व्हियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ गाहै **सोदै** ग्राहकां, ढाहै जै गज ढल्ल। लाहौ लोटै वांणियौ, आ है सांची गल्ल।—बां. दा.

उ०—३ कांम करै नहीं काज करै नहीं, सीरौ चरै सदाई। सीतप्रसाद नांम धर **सोदां** खूबहि श्रेंठ खवाई।—ऊ. का.

सोध–सं. स्त्री. [सं. शोध] १ खोज, तलाश और खबर।

उ०—१ पाछा आय खांन नूं कह्यौ—जै घोड़ी कठै पाई नहीं। **सोध** पण नहीं हुई।—सूरे खींवै कांधळोत री बात

उ०—२ पछै रावतजी नुं खबर हुई सो पाछौ बुलावण रौ तलास तौ घणौ ही कीधौ पण इणरौ **सोध** किण ही न लीधौ।

—प्रतापसिंह म्होंकमसिंघ री बात

२ शुद्धि, संस्कार।

३ अन्वेषण, गवेषण।

४ दुरुस्ती।

५ छिपी हुई रहस्यपूर्ण बातों की खोज।

सं. पु.—६ घर, मकान। (अ. मा.)

७ महल, प्रासाद। (डि. को.)

८ विचार।

उ०—१ बारलौ असेस **सोध** बोध तैं करचौ, सोधनां विसेस मांहि **सोध** ना करचौ।—ऊ. का.

उ०—२ पांन प्रयाग बड़ तणौं पौढियौ, सुजि हरि समरि अवर करि **सोध**। (ह. नां. मा.)

४ देखो 'सौध' (रू. भे.)

सोधक–वि. [सं. शोधक] १ शुद्ध करने वाला।

२ ढूंढने या पता लगाने वाला।

३ शोध करने वाला।

४ सुधार करने वाला।

सोधणी–सं. स्त्री. [सं. शोधनी] बुहारी, भाड़ू (डि. को.)

रू. भे.—सोधनी।

सोधणौ, सोधबौ–क्रि. सं. [सं. शोधनं] १ खोजना, ढूंढना, तलाश करना।

उ०—१ चरवादार **सोधतौ** सौधतौ राजकंवरां रै पाखती पुगौ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै राजा घणौ कह्यौ तौ वौ भायां नै **सोधण** सारू पाछौ वहीर व्हियौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ भांत भांत रा सांग भर, प्रभू सूं करै न प्रेम। **सोधे** लिछमीं साधड़ा, नाभ कवळ रौ नेम।—ऊ. का.

२ साफ करना, शुद्ध करना।

३ ठीक और दुरुस्त करना, सुधारना।

४ विचार करना, सोचना।

५ आयुर्वेद के अनुसार धातुओं को दोषरहित करना, शोधन करना।

६ छान-बीन करना।

७ गवेषणा या अन्वेषण करना।

सोधणहार, हारौ (हारी), सोधणियौ—वि०।

सोधिओड़ौ, सोधियोड़ौ, सोध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सोधीजणौ, सोधीजबौ—कर्म० वा०।

सोजणौ, सोजबौ, सोदणौ, सोदबौ—रू० भे०।

सोधन–सं. पु. [सं. शोधन] १ शुद्ध या साफ करने की क्रिया या भाव।

२ दोष, भूल आदि का सुधार।

३ रहस्यपूर्ण एवं नई बातों की खोज करना, अन्वेषण।

४ प्रायश्चित।

५ सजा, दंड।

६ दस्त लगाकर कोठा साफ करना, विरेचन।

७ धातुओं को दोषरहित करना, शोधन करना।

८ नींबू।

सोधनी—देखो 'सोधणी' (रू. भे.)

सोधाणौ, सोधाबौ–क्रि. स. ['सोधणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ खोज या तलाश कराना, ढूंढाना।

२ शुद्ध कराना, साफ कराना।

३ ठीक या दुरुस्त कराना, सुधराना।

४ विचार करने के लिये प्रेरित करना ।
५ वैद्यक में धातुओं का शोधन कराना ।
६ छान-बीन कराना, जांच-पड़ताल कराना ।
७ अन्वेषण कराना, गवेषणा कराना ।
सोधारणहार, हारौ (हारी), सोधाणियौ—वि० ।
सोधायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सोधाईजणौ, सोधाईजबौ—कर्म वा० ।
सोदाणौ, सोदाबौ—रू० भे० ।

सोधायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ ढुंढवाया हुआ, खोज कराया हुआ. २ शुद्ध या साफ कराया हुआ. ३ ठीक या दुरुस्त कराया हुआ. ४ छान-बीन करवाया हुआ. ५ गवेषणा या शोध करवाया हुआ ।
(स्त्री. सोधायोड़ी)

सोधिया—सं. स्त्री.—पड़िहार वंश की एक शाखा जो मालवे में आबाद है ।

सोधियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ ढूंढा या खोजा हुआ. २ छान-बीन किया हुआ. ३ शुद्ध या साफ किया हुआ. ४ सोचा हुआ, विचारा हुआ. ५ ठीक या दुरुस्त किया हुआ. ६ गवेषणा किया हुआ ।
(स्त्री. सोधियोड़ी)

सोधी—देखो 'सोजी' (रू. भे.)
उ०—१ **सोधी** नहीं सरीर की, औरौं कौ उपदेस । दादू अचरज देखिया, यै जायेंगे किस देस ।—दादूबांणी
उ०—२ **सोधी** नहीं सरीर की, कहै अगम की बात । जांन कहावै बापुड़ै, आयुध लीयें हाथ ।—दादूबांणी

सोधौ—देखो 'सौदौ' (रू. भे.)
उ०—जिनावरां मैं **सोधौ** स्याळियौ, पंखेरूआं मैं कागौ काळियौ अर मिनखां मैं नाई नागौ तथा जाळियौ वाजै है ।—दसदोख

सोनंग, सोनंगर, सोनंगरौ—देखो 'सोनगरौ' (रू. भे.)
उ०—'कैहरी' पड़ै **सोनंगरौ** 'दलौ' लड़ै आगा दळां ।—रा. रू.

सोन—सं. स्त्री. [सं. स्रोण] १ एक नदी जो मध्यप्रदेश के अमरकंटक की अधित्यका से निकलती है तथा अंत में गंगा में मिलती है ।
२ एक सदाबहार लता ।

सोनइयौ—सं. पु.—१ स्वर्णमुद्रा ।
उ०—१ इम कही हय गय सार, लाख **सोनइया** रोकड़ा जी ।
—प. च. चौ.
उ०—२ लाख **सोनइया** रोकड़ा रे लाल ।—प. च. चौ
२ एक प्रकार की घास ।
रू. भे.—सोनेयौ, सौनइयौ ।

सोनउ—देखो 'सोनौ' (रू. भे.)
उ०—जी हौ **सोनउ** स्यांम न होय ।—स. कु.

सोनगढ—सं. पु.—१ जालोर का दुर्ग ।
२ देखो 'स्वरणगिरि' ।

सोनगर—सं. पु.—जालोर नगर का एक प्राचीन नाम । (ऐतिहासिक)

सोनगरा—सं. स्त्री.—चौहान वंश की एक शाखा ।

सोनगरौ—सं. पु.—चौहान वंश की सोनगरा शाखा का व्यक्ति ।
रू. भे.—सोनंग, सोनंगर, सोनिगरौ, सोनगिरौ ।

सोनगिर, सोनगिरि, सोनगिरौ—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)
उ० जिण जालोर री दूजौ परयाय आरचावत मैं विदित **सोनगिरि** इसौ कहावै ।—वं. भा.

सोनचिड़ी—सं. स्त्री.—एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो सफेद एवं काले रंग की होती है, इसके सकुन माने जाते हैं ।
रू. भे.—सोवनचिड़ी, सोहनचिड़ी, सौनचिड़ी ।

सोनजरद—सं. पु.—पीली जूही ।

सोनजाय, सोनजुही—सं. स्त्री. पीले रंग के फूलों वाली जूही, स्वर्ण यूथिका ।
उ०—१ औ विचारां भंवरा भेद कहे है बीजू **सोनजुही** तौ अग मैं मिल रही है । —र. हमीर
उ०—२ **सोनजुह** रिगाबेल चंबेल नबेली कै फुलवाद । मोगरैकी महक गुलाब फुनूंकी सुगध जवाद ।—सू. प्र.
उ०—३ तठा उपरांयत माळी फूलां री छाबां आंण हाजर कीजै छै । सू फूल कुण भांतरा छै । हजारा नौरंग तुररौ मैंहदी किलंगौ **सोनजुही** इसकपेचौ बेरी कोयल मालती चांदणी मुखमल नरगस हवास गुलअनार दाऊदी केवड़ौ ।—रा. सा. सं.
उ०—४ कुमुद ढाक कल्हार, वेस कचनार विराजै, **सोनजाय** पल्लव असोक सुर धोकसु साजै ।—रा. रू.
रू. भे.—सोवनजाई, सोवनजुही ।

सोनड़ौ—सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा विशेष । (शा. हो.)

सोनभद्र, सोनभद्रा—देखो 'सोन' (रू. भे.)

सोनमेनी—सं. स्त्री.—एक नगरी का नाम जो करांची से ३० कोस है ।
उ०—नग्री **सोनमेनी** पछै गांम नांही, महा कासटा घोर ऊजाड़ मांही ।—मे. म.

सोनल—वि.—१ सोने का, स्वर्णमय, सुनहरा ।
उ० राजकंवरी रौ रूप सुभट दीसतौ हौ **सोनल** केस । चांद रै उनमांन पळकतौ उगियारौ ।—फुलवाड़ी
२ गौर वर्ण ।
उ०—बादळां नै छोड आ कोई बीजळी नाळ उतरै है कै गिगन छोड कोई चांद नाळ उतरै ! सोना रा केस अर **सोनल** वरणी ।
फुलवाड़ी
३ चमकदार, चमकीला ।

सोनलभींग, सोनलभींगी—सं स्त्री.—१ वर्षा ऋतु के बाद एवं शरद ऋतु के प्रारम्भ में पाया जाने वाला एक कीट विशेष जिसकी गर्दन पर हरे रंग का ठोस चमकदार आवरण (पदार्थ) होता है ।
२ एक राजस्थानी लोकगीत ।

सोनलिया—सं. स्त्री.—मांगणियार जाति का एक भेद विशेष । (मा. म.)

सोनळवौ, सोनळहलवौ, सोनळहलुवौ—देखो 'सोहनहलवौ' (रू. भे.)

सोनवांणी–सं. पु.—वह पानी जिसमें सोना डुबोया गया हो या स्वर्ण स्पर्श किया हो।

रू. भे.—सोनावांणी।

सोनहरौ–सं. पु. (स्त्री. सोनहरी) वह घोड़ा जिसके काले सुमों पर सफेद रेखा या सफेद सुमों पर काली रेखा हो। (अशुभ) (शा. हो.)

वि.—चमक, दमक, रंग आदि में सोने जैसा, सुनहला।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति कटारी किण भांति री कुनारबंधी, कुनारगांमी, जमदाढ **सोनहरी** नकसी जड़ाव सांतरी! घणौं मुखमल घणौं कतीफै मांहैं गरकाब कीधी थकी।

—रा. सा. सं.

सोनागर, सोनागिर, सोनागिरि—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

उ०—सत कै **सोनागिर** वाचा हरचंद।—रा. रू.

सोनागेरू–सं. पु. [सं. स्वर्णगैरिक] साधारण गेरू से अधिक लाल एवं मुलायम एक प्रकार की मिट्टी विशेष।

सोनानांमी–सं. पु.—रुक्मिणी का भाई, रुक्मि।

उ०—निराउध कियौ तदि **सोनानांमी**, केस उतारि विरूप कियौ।—वेलि

सोनामक्खी, सोनामखी—देखो 'सोनामुखी' (रू. भे.)

सोनामछी–सं. स्त्री.—रेतीले मैदान में पाया जाने वाला विषैला जंतु।

सोनामुखी–सं स्त्री. [स्वर्णमक्षिका] १ एक प्रकार का खनिज पत्थर जो सोने के अभाव में औषधियों में काम लिया जाता है, इसका रंग पीला होता है।

२ एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियाँ विरेचन के काम आती है, सनाय।

३ एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

रू. भे.—सोनामक्खी, सोनामखी।

सोनार—देखो 'सुनार' (रू. भे.)

उ०—मांडणा मांड्या। **सोनार** सूं गेणौ-गांठौ घड़वायौ।

—फुलवाड़ी

(स्त्री. सोनारी)

सोनारूपौ–सं. पु.—एक मारवाड़ी लोक गीत।

सोनावांणी—देखो 'सोनवांणी' (रू. भे.)

सोनावेल–सं. स्त्री.—वन में तथा पर्वतों पर होने वाली लता विशेष।

सोनाहरणी–सं. स्त्री.—वेश्या।

उ०—करहै असवारी कियां, **सोनाहरणी** संग। उण ढोला ज्यूं आपरौ, ढोलौ मानै ढंग।—बां. दा.

सोनिक–सं. पु.—१ खटीक। (डिं. को.)

२ कसाई।

सोनिगरा—देखो 'सोनगरा' (रू. भे.)

उ०—खुमांणां **सोनिगरां**, कर ऊधरा सरीस। आद पमांरां सांम छळ, आया वंस छत्रीस।—रा. रू.

सोनिड़ौ—देखो 'सुनार' (अल्पा; रू. भे.)

सोनी—देखो 'सुनार' (रू. भे.)

सोनीड़ौ—देखो 'सुनार' (अल्पा; रू. भे.)

उ० - **सोनीड़ा** नै वेग बुलाय, हरजी सूं हेत लग्यौ। रांणी मा'सती रै गैं'णौ पैराय हरजी सूं हेत लग्यौ।—लो. गी.

सोनू— देखो 'सोनौ' (रू. भे.)

सोनेयौ—देखो 'सोनइयौ' (रू. भे.)

सोनेरण–सं. स्त्री.—सोने की मूठ वाली तलवार या कटार।

सोनेरी–सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा।

वि.—१ स्वर्ण सम्बन्धी, सोने का।

२ देखो 'सौनहरी' (रू. भे.)

सोनेली–सं. स्त्री.—१ वर्षा ऋतु में होने वाला एक छोटा पौधा जिसके छोटे २ पीले फूल आते हैं, इसे पशु खाया करते हैं।

सोनेलौ—१ देखो 'सोनेली' (अल्पा; रू. भे.)

२ स्वर्ण के समान रंग वाली।

सोनौ–सं. पु. [स. स्वर्ण] १ एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके आभूषण आदि बनते हैं, इसका रंग पीला होता है, कंचन, स्वर्ण।

उ०—खीर खांड रौ जीमण जीमाऊं, **सोना** चांच मंडाऊं कागा, जद म्हारा पिवजी घर आवै।—लो. गी.

पर्याय.—अगनीबीज, अस्टपाद, कंचन, कनक, करबुर, कळधोत, कुंनण, कुरमदन, गांगोय, गारुड़, गैरूक, चांमीकर, जांबूनद, जातरूप, तपनीय, धातांसार, धातोपम, पीतरंग, भरम, भूतम, भूर, भूरम, भूरि, महारजत, रजत, रजतधांम, रुकम, लोहतम, वसू, सातकूंभ, साळ, सुवरण, सेलसुत, सोनूं, सोव्रण, स्वरण, हरन, हाटक, हिरन, हेम।

मुहा.—१ सोना मैं सुगंध=जब दो अच्छी बातों का संयोग हो. २ सोना रा थाल मैं तांबा री मेख=उत्तम वस्तु में घटिया वस्तु का योग होने पर उसके सौन्दर्य में कमी हो जाती है। स्वच्छता पर दाग होने की दशा में, बेमेल कार्य. ३ सोना नै काट नीं लागै =सच्चे व ईमानदार अपने प्रण से नहीं डिगते. ४ सोनौ गयौ करण री लार=भले और महान व्यक्तियों का अभाव होना. ५ सोनौ घड़ाई सूं मूंगौ पड़ै है=आभूषण की घड़ाई स्वर्ण की कुल कीमत से अधिक होने पर मुख्य कार्य से गौण कार्य जब अधिक भारी पड़ता हो. ६ सोनौ देख्यां मुनी रौ ई मन डिगै=लालच बुरी बला होती है. सुन्दर व मूल्यवान् वस्तुओं में आकर्षण होता है. ७ सोना री कटारी पेट मैं नीं मारीजै= कीमती वस्तु भी यदि प्राण लेने वाली हो तो त्याग देना चाहिये. ८ सोना रौ सूरज ऊगणौ=अत्यन्त खुशी की घड़ी आनो. ९ सोना रै छोत थोड़ीइ लागै=चंदन विष व्यापै नहीं लपटे रहत

भुजंग. १० सोळमौ सोनौ=खरी वस्तु, खरा आदमी, अत्यन्त शुद्ध. ११ सोना रै सूळी लागौ है=असंभव बात होना ।

२ बहुमूल्य पदार्थ, वस्तु ।

वि.—पीत । ※ (डि. को.)

रू. भे.—सोनूं ।

सोन्हैरी—१ देखो 'सौनेरी' (रू. भे.)

२ देखो 'सौनहरी' (रू. भे.)

सोपट—वि.—प्रत्यक्ष, खुल्लमखुल्ला, सामने ।

उ०—घर घर घाटां संसोवन घालै, हर हर हाटां बिन हंसौ उड हालै । दुरग्घट अटव्यासरा **सोपट** दुख दीखै, अज्जरा मज्जरा बिरा सज्जरा मुख ईखै ।—ऊ. का.

सोपांन—सं. पु. [सं. सोपान] १ जीना, सीढी ।

उ०—कोमल कमल रै ऊपरै त्रिवली समर **सोपांन** रै रंग । कटि तटि अति सुछिम कही रे, थूल नितंब बखांरा रे रग ।

—प. च. चौ.

२ किसी पुस्तक का अध्याय, पाठ ।

३ जैन धर्मानुसार मोक्ष का उपाय ।

सोपारी—देखो 'सुपारी' (रू. भे.)

उ०—साग साल मलियागरी, वळि नारेळ विदांम । **सोपारी** खिरणी सरस, हेम हुवा तिहि ठांम ।—गज-उद्धार

सोपारौ, सोपारौ—सं. पु.—१ अलगोजा से मिलता-जुलता एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

२ लिंगेंद्रिय का अग्र भाग, मरिण ।

सोपौ, सोपौ—सं. पु. [सं. स्वापः] १ रात्रि का वह समय जब सन्नाटा छा जाता है, रात्रि का दूसरा प्रहर, सन्नाटा, शान्ति ।

उ०—१ त्रंबाबाती नगरी । चंद्रसेन राजा । तांबा री खांन हुती । तिरा रै सोजल नांवै बेटी हुई । तिका चौसठ जोगणीयां साथै रमती । सु **सोपौ** पड़तौ तरै तीसरथी '—सोजत रै मंडल री बात

उ०—२ मोरौ गांव, छोटौ घर, सीयाळै रौ मैं' अंधारी रात मैं, सफा **सोपौ** पड़ रैयौ है ।—दसदोख

उ०—३ ताहरां रात पोर डोढ गई । सहर मैं **सोपौ** पड़ियौ ।

—राजा भोज अर खापरा चोर री बात

२ स्तब्धता, सुनसान, सूनापन ।

उ०—**सोपौ** पड़चौ, सरणाटौ छायौ । वत्ती काटी, लोटियौ बुझायौ ।

—दसदोख

३ शांति ।

उ०—पूरी रात गांम मैं **सोपौ** कोनीं पड्यौ । मिनख भींकता रहता । कुत्ता ऊंचौ मूंडौ कर कर नै कूकता रहता ।

—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—स्यापौ ।

सोफियांनी, सोफियांनौ—वि. [अ. सूफी + इयाना] १ सूफियों का, सूफी सम्बन्धी ।

२ हल्का-फुल्का, साधारण ।

सोफियौ सं. पु.—सूफी सम्प्रदाय का व्यक्ति ।

उ०—ब्राह्मण सेतवर वळै, जोगी जगम जांग । दांन संन्यासी **सोफिया**, खट दरसग वाखांग । रा. सा. सं.

सोफी—सं. पु.—वह व्यक्ति जो किसी प्रकार का नशा न करता हो ।

उ०—तद ईयै कही, 'अठै दारू री भाळी छै । अर थैं नहीं पीसौ तौ थांनै साळा हसगी । अर मोनैं गिरा गहेल्या हसगी । अर कहिसी **सोफी** छै । ईयैं मूं कामूं हुसी । —बूढी ठग राजा री बात

सोफोदर—सं. पु. [सं. शोफः+उदर] उदर पर सूजन आने से होने वाला एक रोग विशेष ।

उ०—पांडु रोग **सोफोदर** गही, तीजौ रोग जलोदर लहि ।

—ध. व. ग्रं.

सोब सं. पु.—१ पोशाक, पहनावा ।

उ०—बीरा थ्रो अबकै तौ भेजौ म्हारी **सोब**, गुजरी जी मुसा बोलिया ।—लो. गी.

२ देखो 'सोभा' (रू. भे.)

सोवरण सं. स्त्री. लकड़ी घिसने का औजार ।

सोबत सं. पु.—१ व्यापारियों का काफिला, समूह, ।

उ०—१ डूंगरसी दुरजणसल री, विक्रमपुर धरणी हुवौ । वडौ ठाकर हुवौ । तद मोटौ राजा फळोधी बसै छै । तद दांरा घरणौ धरती मांहि लागती । तद **सोबत** सोदागरां री आवती हुती । सु राव डूंगरसी आपरा भाई भांनीदास नं सोबत सांम्ही मेल, सोबत तेड़ाय, दांरा लेनै सोबत आघी चलाई । नैरासी

उ०—२ भानीदास दुजणसल रौ सिरहड़ बसियौ । पछै **सोबत** रै मांमलै मोटै राजा फळोधी थकां संमत १६२५ रै टांगां मारियौ ।

—नैरासी

२ घोड़ों का झुण्ड, समूह ।

उ०—१ पातसाह रै पांणीपंथा घोड़ां री **सोबत** आवती थी सु मार ली ।—नैरासी

उ०—२ कितराइक दिन हुवा, ताहरां एक घोड़ां री **सोबत** आई । सु सोदागरां कनां घोड़ा खोस लिया ।—नैरासी

उ०—३ ताहरां प्रथीराज चढ नै गयौ असवार १००० जाय कहीयौ, 'अखा जांणौ इनरा रुपीया लै परा घोड़ा दै । नहीं तौ मार नै **सोबत** सरब लेगां ।—हाहुल हमीर री बात

३ देखो 'सोहबत' (रू. भे.)

सोबा—देखो 'सोभा' (रू. भे.)

उ०—जिस बखत स्रीमहाराज केसरिया ऊंच पोसाक पहिर खांघी पेच बरणाय । जंवहर कै सिरपेच सिर **सोबा** जग जोति जगाया ।

—सू. प्र.

सोबादार—देखो 'सूबेदार' (रू. भे.)

उ०—डंडै खांन रौ मेवास दिली आगरौ साह रौ डंडै, ग्रांन रौ कीं गिणां बेहूं राह रौ ग्रनेक। ग्रांटीपणौ **सोबादार** सतारानाथ नूं ग्राखै, हिंदुवां मैं मांटीपणौं 'राजांन' रौ हेक।

—महाराजा बहादरसिंघ रौ गीत

सोबायत—देखो 'सूबेदार'।

उ०—१ ग्रजमेर रौ **सोबायत** नुं फरमांन हुवौ—ग्रौ कहै सु कांम सरभरा कर देजौ।—नैणसी

उ०—२ ग्रजमल भड़ गांघाणी ग्राया, सुण **सोबायत** सहर समाया।—रा. रू.

उ०—३ **सोबायत** सांभर तणौ, पकड़ लियौ पंडवेस। उर द्रढ पायौ कूरमां, ग्रब घर ग्रायौ देस।—रा. रू.

सोबावटी—देखो 'सोभावटी' (रू. भे.)

सोबौ—१ देखो 'सूबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लसियौ निबाब कटिया किलम, ग्रह न्रप धरि गजगाह रौ। लसकरी खांन लूटै लियौ, **सोबौ** ग्रौरंगसाह रौ।—सू. प्र.

उ०—२ सांमधरम छळ 'खीमसी', साह कियौ सुप्रसन्न। **सोबौ** गुजर खंड रौ, दीनौ खूंद जवन्न।—रा. रू.

२ देखो 'सूबेदार' (रू. भे.)

उ०—ग्रसमर भुज ग्रहियां 'ग्रखौ', मोकळसर मेवास। **सोबा** ग्राया तीन सिर, माह वहंतै मास।—रा. रू.

सोब्रण—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)

उ०—जायोड़ा जोडरा, थाट पाटां थायोड़ा। दिल ग्रायोड़ा दाय, तिकै **सोब्रण** तायोड़ा।—मे. म.

सोब्रणकार—देखो 'स्वरणकार' (रू. भे.)

सोब्रन—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)

उ०—जरीतारां जरीबाफां नीलंकां जड़ाव जामां, दांमां पार पावै नकौ देता चित दत्ति। कहां खोटी बार विचै मोटी रीभ़ां 'सेवौ' करै, सासणां **सोब्रन्नां** कड़ा समापै हसत्ति।—नाथौ बारहठ

सोभ—देखो 'सोभा' (रू. भे.)

उ०—१ मातै मैंगळ ज्यूं ढळै, **सोभ** समंदां पार। चंद वदन म्रग लोचनी, ग्राप करी करतार।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ महि नयर घर प्रति दीप मंडित, माळ जोत मनोहरं। किर व्योम नाखत्र परखि कमळा **सोभ** धारत सुंदरं।—रा. रू.

उ०—३ भज रै मन रांम सियावर भूपत ग्रंग घणा घण **सोभ** ग्रनूप।—र. ज. प्र.

उ०—४ म्हैं कीधौ तौ मीत, जोय लाखां मैं 'जसा' पलटै हव क्यूं मीत, पलट्यां **सोभ** न पाइजै।—जसराज

उ०—५ छुटी ग्रलक्क नाग छौन, **सोभ** एम साज ही। रंथस जांण चंद्ररासि, रूप मैं बिराज ही।—सू. प्र.

सोभक—वि.—सुन्दर, सजीला।

सोभग्रीवा—सं. स्त्री.—१ गले में धारण करने का ग्राभूषण विशेष।

२ कण्ठ की शोभा।

सोभण—सं. पु.—१ प्रत्येक चरण में चार रगण ग्रौर गुरु लघु वर्णं का २३ मात्राग्रों का छन्द विशेष। (ल. पिं)

२ वस्त्र, कपड़ा।

रू. भे.—सोभन।

सोभणी—१ देखो 'सोभा' (रू. भे.)

उ०—सूर वागा सभै रौद्र हिंदू रजै, **सोभणी** सकजै ग्रमेळां ग्रकजै।—रा. रू.

२ देखो 'सोभनी' (रू. भे.)

उ०—देवी खेचरी भूचरी भद्र खेमा, देवी पद्मणी **सोभणी** कलह प्रेमा।—देवि

सोभणौ, सोभबौ—क्रि. वि.—१ शोभित होना, शोभायमान होना।

उ०—१ नाह विकसै घणौ कमळ जिम भड़ निवड़। भड़ घणां पाड़तौ **सोभियौ** महा भड़।—हा. झा.

उ०—२ ग्रासोज पूरण जगत ग्रासा, भोम ग्रन ग्रति भार ए। **सोभंतु** जंतु ग्रनंत सुखमय, सुखद संपति सार ए।—रा. रू.

उ०—३ **सोभंति** रिखगण चंद्र सोभा, किरण जगमग कास ए।

—रा. रू.

२ जचना, फबना, शोभा देना।

ज्यूं—बडै मूंडै ग्रोछी बात **सोभै** कोनीं।

३ सज्जित होना, सजना।

सोभन—सं. पु. [सं. शोभन] १ शिव, महादेव।

२ सूर्य।

३ मालकोंश राग का एक पुत्र। (संगीत)

४ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से पांचवें योग का नाम।

उ०—नखत विसाखा तिथी चवदस। घड़ी च्यार पल वीस गया निस। मिथन लगन **सोभन** मिळ जोगै। सकुन करण दुख हरण संजोगै।—रा. रू.

५ ग्रग्नि, ग्रग्निदेव।

६ ग्राग।

७ ग्रह।

८ चौबीस मात्राग्रों का एक छंद जिसके ग्रंत में जगण होता है ग्रौर १४ व १० पर यति होती है।

९ विष्णुवीसी का सत्रहवां वर्ष। (ज्योतिष)

वि.—१ मंगल, कल्याण।

२ सुंदर, मनोहर। (ग्र. मा.)

३ देखो 'सोभण' (रू. भे.)

सोभना-सं. स्त्री. [सं. शोभना] कुमार कार्त्तिकेय की ग्रनुचरी एक मातृका।

सोभनी-सं. स्त्री.—१ मालकोंश राग की स्त्री रागिनी। (संगीत)

२ देवी दुर्गा का नाम ।

रू. भे.—सोभणी ।

वि.—सोभा देने वाली ।

सोभय–सं. स्त्री.—सुख प्रदान करने वाली एक देवी का नाम ।

सोभरधांम–सं. पु.—सोभर ऋषि का धाम अर्थात् यमुना नदी का हृद ।

उ०—दुजराज त्रास काळी डरै, **सोभरधांम** संभारियौ । कूरमां तेम कमधज्ज रौ, ध्यांन नेम कर धारियौ ।—रा. रू.

सोभवती–वि.—सुंदर, आकर्षक ।

उ०—**सोभवती** संजती सोळ स्रंगार सकत्ती । हंसगत हालती हंस आरोह हकत्ती ।—सू. प्र.

सोभवांन–वि.—१ सौभाग्यवान, सौभाग्यशाली ।

२ शोभा वाला ।

३ आभा व कान्ति वाला ।

४ कीर्तिवान ।

सोभा–सं. स्त्री. [सं. शोभा] १ दीप्ती, आभा, कांति, चमक । (डिं. को.)

उ०—१ **सोभा** सारिख किरण सविता, दीपै मंदर राज दुहिता । — गु. रू. ब.

उ०—२ लळक्कै गजां पोगरा नाळ लोभा, भळक्कै मुखां सूरमां भांण **सोभा** ।—सू. प्र.

पर्याय.—अनोपम, आभा, कंकळा, कळा, कांति, कोमळता, छिब, दुति, परभा, प्रभा, बिंब, भा, राढा, विभूखा, विभ्रभा, विमळा ।

२ सुन्दरता, छबि, रूप ।

उ०—१ रूपक कुकवी रसण सूं, बिगड़ै यूं रसवत । ज्यूं बिसफोटक रोग बस, वप **सोभा** बिगड़ंत ।—बां. दा.

उ०—२ पण बगेची री **सोभा** देखनै कीं चेतौ नीं रह्यौ । —फुलवाड़ी

३ रंग, वर्ण ।

४ सौंदर्य को बढ़ाने वाला तत्व ।

५ प्रशंसा, बड़ाई, कीर्ति ।

उ०—१ हरीया कदै न कीजीयै, अपनी **सोभा** मुख । अपने मुख सरावतां, और पड़ै कोई दुख ।—अनुभववांणी

उ०—२ कंचन काच कथीर कौ, पहिर अभूसन अंग । हरीया **सोभा** होत है, ऐसा करियें संग ।—अनुभववांणी

उ०—३ सिरोही री सबजी, बरणी नहीं जाय । साखियात इन्दरलोक, समान **सोभा** छै ।—डाढाळा सूर री बात

६ अच्छा गुण ।

७ हल्दी ।

८ गोरोचन ।

९ बीस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त जिसमें क्रमशः यगण, मगण दो नगण दो तगण और दो गुरु होते हैं ।

१० आर्या या गाहा छंद का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणों में ८ गुरु और ४१ लघु से कुल ५७ मात्राएं होती हैं ।

रू. भे.—सोब, सोबा, सोभ ।

सोभाऊ–सं. स्त्री.—वह स्त्री या कन्या जिसे, विवाहित कन्या के प्रथम बार सुसराल जाते समय साथ भेजा जाता है । (मेवाड़)

वि.—शोभा बढ़ाने वाला, केवल सुंदर ही ।

सोभाग—देखो 'सौभाग्य' (रू. भे.)

उ०—१ ऊलौ पेलौ साथ घणौ कांम आयौ । पिण वेढ मूळराज जीतौ, नै राजा सीहा रौ बड़ौ **सोभाग** हुवौ ।—नैणसी

उ०—२ जस **सोभाग** थयउ जग मांहे ।—स. कु.

उ०—३ इतड़ा बखत किहां थकी, कायम रहै **सोभाग** । सिर कद आवै माहरै, अगूठानी आगि ।—वि. कु.

उ०—४ जपू जीह **सोभाग** मो भाग जागो, तुळ्ळं पाय सीमाय रै पाय लागो । —मे. म.

उ०—५ वागै करै बणाव, ओपि सुंदर पट अंबर । गौरंबर ऊधरां, पाघ **सोभाग** कि मंदर ।—रा. रू.

सोभागण, सोभागणी—देखो 'सौभाग्यवती' (रू. भे.)

सोभागियौ, सोभागी–वि.—सौभाग्यशाली, भाग्यवान ।

उ०—१ सांतिनाथ **सोभागी** हौ लाल, सोलम जिन सागी हौ । विनयचंद्र रागी हौ लाल, जयौ तूं वड भागी हौ ।—वि. कु.

उ०—२ जाग्यौ जैन चंद सागी, **सोभागी** रागी जैन धरम । वैरागी पुण्याइ जागी अधिकै उछाह ।—ध. व. ग्रं.

सोभादर–सं. पु.—१ चौहान वंश की एक शाखा ।

२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।

सोभायमांन–वि.—शोभायुक्त, शोभित ।

सोभाळ–वि.—१ सुन्दर, बढ़िया, प्रशंसनीय ।

उ०—इण देसरा घणां कांम **सोभाळ** होय विधा बधै नै हिकमत उपजै ।—नी. प्र.

सोभाळौ–वि. (स्त्री सौभाळी) १ यशस्वी, कीर्तिवान ।

उ०—सूरौ खीवौ वीर अत, **सोभाळौ** दातार । हीमतधारी मनगरां, हुवा न होणहार ।—सूरे खीवै काधळोत री बात

२ सुन्दर, मनोहर ।

सोभाव—देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

सोभावटी–वि. स्त्री. [सं. शोभा+वती] एक प्रकार की पत्थर की पटिया या लकड़ी का मोटा तख्ता जो खिड़की व दरवाजे के ऊपरी भाग पर पाटन के रूप में लगाया जाता है, करगहना ।

रू. भे.—सोबावटी ।

सोभावत–सं. पु.—१ राठौड़ वंश की एक उप-शाखा ।

२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।

सोभित–वि. [सं. शोभित] १ सुन्दर, मनोहर। (ह. नां. मा.)
२ शोभायमान।
३ शोभायुक्त, सजा हुआ, शृंगारित।
उ०—तन सदन **सोभित** करण तरणी, विविध मनि उद्दम वर्णं।
—रा. रू.

सोम–सं. पु. [सं. सोम] १ चन्द्रमा। (अ. मा; ह. नां. मा.)
उ०—१ गाणां गीत साखी वेद ऊचारै गैणाग गाजै, राजै रूप आंगणौ इंद्र सौ सची रूप। सोळाही कळा सूं **सोम** ऊगियौ प्रकास सारै, वळोवळी ऊचारै न आयौ इसौ भूप।—बादरदांन दधवाड़ियौ
उ०—२ पत्र सुधारै जोगणी, माल सुधारै रंभ। थभ चलेवौ **सोम** रवि, पेखै व्योम अचंभ।—रा. रू.
२ अमृत। (ह. नां मा)
३ यम।
४ सोमवार।
५ स्वर्ग।
६ एक लता विशेष जिसका रस यज्ञ में काम आता था।
७ सोमवल्ली का रस।
८ किरण।
९ कपूर।
१० जल, पानी।
११ पवन, वायु।
१२ कुबेर।
१३ शिव का एक नाम।
१४ मन का एक नाम।
१५ एक प्राचीन वैदिक देवता।
१६ एक प्रकार की औषधि।
१७ आठ वसुओं में से एक वसु।
१८ पितरों का एक गण या समूह।
१९ स्त्रियों को होने वाला एक प्रकार का रोग। (श्वेतप्रदर)
२० मांड।
२१ मालकोश राग का पुत्र। (संगीत)
२२ एक ऊँचा व विशाल पेड़ जिसकी लकड़ी मजबूत एवं चिकनी होती है।
२३ मेवाड़ की एक नदी का नाम। (वीर विनोद)
२४ भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
२५ देवता।
२६ यज्ञ की सामग्री।
२७ एक प्रकार का यज्ञ।
२८ आकाश।
२९ काँजी।
३० जैनियों के ८८ ग्रहों में से बारहवां ग्रह।
३१ जरासन्ध के चार पुत्रों में से एक।
३२ एक ग्रह जो सूर्यमंडल से आठ लाख मील दूर है।
३३ एक अग्नि जो भानु एवं निशा का पुत्र था।
३४ अंगिरस कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
वि.—१ श्वेत। ❀
२ लाल। ❀
३ शांत, निर्मल।
उ०—रोग रहित पचेंन्द्री परगड़ा **सोम** प्रकृति सुसनेही जी।
—स. कु.

सोमइयौ, सोमईउ, सोमईयौ–सं. पु.—सोमनाथ नामक महादेव का लिंग जिसकी गणना बारह ज्योतिर्लिंगों में की जाती है।
उ०—१ सोरठ मांहै देवकै पाटण **सोमईयौ** महादेव बडौ जोतलिंग हुतौ, तिकौ संमत १३०० अलावदी पातसाह जाय उपाडियौ।
—नैणसी
उ०—२ देखै तौ पातसाह **सोमइयै** ऊपरां खड़ीयां आवै छै। ताहरां एक दीहाड़ौ कटक में रह नै पाछौ बाहड़ै। आय खबर दीवी, 'माहाराजा पातिसाहा आवै छै।—अरजन हमीर री बात
रू. भे.—सोमीईयौ।

सोमक–सं. पु. [सं.] १ कृष्ण एवं कालिंदा का पुत्र।
२ सोमकवंशीय क्षत्रिय।
३ एक प्राचीन ऋषि।
४ स्त्रियों का एक रोग।

सोमकर–वि.—मधुर। ❀ (डि. को.)

सोमकांत–सं. स्त्री. [सं.] १ चन्द्रकांतमणि।
२ सुराष्ट्र देश का एक राजा जो गणेश भक्त था।

सोमकीरती–सं. पु.—धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सोमग्रह–सं. पु.—घोड़ों का एक रोग विशेष, इस रोग से ग्रसित होने पर घोड़ा कांपने लग जाता है। (शा. हो.)

सोमग्रहण–सं. पु.—चन्द्रग्रहण।

सोमघ्रत–सं. पु. [सं. सोमघृत] स्त्रियों के सोम रोग की दवा।

सोमज–सं. पु. [सं.] दूध। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सोमदत्त–स. पु.—१ शन्तनु के बड़े भाई के पुत्र का नाम।
२ एक कुरुवंशीय राजा जो प्रतीप राजा का पौत्र था।
३ पांचाल राजा कुशाश्व के पुत्र का नाम इसने सौ अश्वमेध यज्ञ किये थे।

सोमदा–सं. स्त्री.—उर्मिला नामक गंधर्व की कन्या।

सोमधात–सं. पु.—सूर्य, भानु। (अ. मा.)

सोमनाथ–सं. पु. [सं.] १ काठियावाड़ में स्थित महादेव का एक लिंग जिसकी गणना प्रसिद्ध बारह ज्योतिर्लिंगों में की जाती है।
२ वह स्थान जहाँ यह लिंग स्थित है।

सोमप–सं. पु. [सं.] १ पितरों का एक समूह जो मानस नामक स्वर्ग

में निवास करते हैं, इन्हें ब्रह्मत्व प्राप्त है ।

२ स्कंद का एक सैनिक ।

३ रैवत मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक ।

४ एक सनातन विश्वदेव ।

वि.--जिसने यज्ञ में सोमरस का पान किया हो ।

सोमपुत्र–सं. पु. [सं.] चन्द्रमा का पुत्र बुध ।

सोमपुर–सं. पु.—चन्द्रलोक ।

सोमपुरा–सं. पु.—एक जाति विशेष जो तोप ढालने, तसवीर बनाने और स्थापत्य कला का कार्य करती थी । (मा. म.)

सोमप्रदोख–सं. पु. [सं. सोमप्रदोष] सोमवार को होने वाला प्रदोष जो विशेष महत्व का माना जाता है ।

सोमप्रिया–सं. स्त्री. [सं.] १ रात्रि । (ना. मा.)

२ चांदनी ।

सोमबंधु–सं. पु.—१ बुधग्रह ।

२ सूर्य ।

३ कुमुद ।

सोमबल्लि–सं. स्त्री.—सोमलता ।

उ०—कळि कळप वेलि वळि कांमधेनु का, चिंतामणि **सोमबल्लि** चत्रा ।—वेलि

सोमभू–सं. पु. [सं.] १ बुध का एक नाम ।

२ चंद्रवंशी ।

सोमरस–सं. पु. [सं.] सोम नामक लता का रस जिसका वैदिक काल में ऋषि मुनि पान करते थे ।

सोमभूपाळ–सं. पु.—कर्नाटकी पद्धति का एक राग । (संगीत)

सोमभैरवी–सं. स्त्री.—कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी । (संगीत)

सोममंजरी–सं. स्त्री.—कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी । (संगीत)

सोममद–सं पु.—सोमरस पीने से होने वाला मद या नशा ।

सोमयग्य–सं. पु. [सं. सोमयज्ञ] एक प्रकार का यज्ञ जिसमें सोमरस का पान किया जाता था ।

२ हठयोग में तालू की जड़ में स्थित चन्द्रमा से निकलने वाला रस, योगी जीभ उलट कर इसका पान करते हैं ।

सोमराज–सं. पु. [सं.] चन्द्रमा ।

सोमराज्य–सं. पु. [सं.] चन्द्रलोक ।

सोमरोग–सं. पु.—अति मैथुन, शोक, परिश्रम के कारण शरीरस्थ जलीय धातु के योनि मार्ग से बहने के कारण होने वाला स्त्रियों का एक रोग ।

सोमल–सं. पु.—१ शंखिया नामक विष का एक भेद ।

उ०—कहा होत है रूप तैं, गुण तै होत निदांन । उजळ **सोमल** तै मरत है । रखत मंमाई प्रांन ।—जैतदांन बारहठ

२ एक वृक्ष ।

वि.—कड़वा, खारा ।

सोमलखार–सं. पु.—मल्ल नामक विष जिसका शोधन करके औषधि के रूप में प्रयोग में लिया जाता है ।

सोमलता–सं. स्त्री.—१ गिलोय ।

२ ब्राह्मी ।

३ सोम नाम लता ।

सोमवंस–सं. पु. [सं. सोमवंश] १ क्षत्रियों का एक वंश, चंद्रवंश ।

२ युधिष्ठिर ।

सोमवंसपत–सं. पु. [सं. सोमवंशपति] १ युधिष्ठिर का एक नाम । (अ. मा.)

२ चन्द्रवंशी राजा ।

सोमवंसराजा–सं. पु. युधिष्ठिर । (ह. नां. मा.)

सोमवंसी–सं. स्त्री.—१ चन्द्रवंशी क्षत्रिय ।

२ चन्द्रवंशीय व्यक्ति ।

सोमवती–स. स्त्री १ एक प्राचीन तीर्थ ।

२ देखो 'सोमवतीअमावस' ।

सोमवतीअमावस, सोमवतीअमावस्या–सं स्त्री. [सं. सोमवती + अमावस्या] सोमवार को आने वाली अमावस्या जो पुराणों के अनुसार पुण्यतिथि मानी जाती है ।

रू. भे. सोमवती, सोमती, सामोती ।

सोमवरचा–सं. पु. [सं. सोमवर्चा] १ एक सनातन विश्वदेव का नाम ।

२ एक गन्धर्व का नाम ।

सोमवल्लि देखो 'सोमलता' ।

सोमवार–सं. पु. [सं.] प्रत्येक सप्ताह में रविवार के बाद तथा मंगलराव से पहले होने वाला दिन जो चन्द्रमा का माना जाता है ।

सोमवारी–वि. १ सोमवार का, सोमवार सबंधी ।

२ सोमवार को पड़ने वाला या आने वाला ।

सोमवारीव्रत–सं. पु.—सोमवार को किया जाने वाला व्रत जो प्रायः श्रावण मास में किया जाता है ।

सोमसद–सं. पु. [सं.] विराट के पुत्र तथा साध्यगण के पितर-मनु ।

सोमसुत–सं. पु. [सं.] चंद्रमा ।

सोमसेन–सं. पु. [सं.] शंबर राक्षस का एक पुत्र ।

सोमा–सं. स्त्री. [सं.] १ एक प्राचीन नदी ।

२ एक अप्सरा का नाम ।

सोमायन–सं. पु.—महीने भर किया जाने वाला व्रत जिसमें २७ दिन दूध पीकर रहने तथा तीन दिन उपवास करने का विधान है ।

सोमावती–सं. स्त्री. [सं.] चन्द्रमा की माता का नाम ।

सोमास्टमी–सं. स्त्री.—सोमवार के दिन पड़ने वाली अष्टमी ।

सोमास्टमीव्रत–सं. पु. सोमाष्टमी के दिन किया जाने वाला व्रत ।

सोमास्रम–सं. पु. [सं. सोमाश्रम] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

सोमिज—देखो 'सोमज' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सोमित्र–सं. पु. [सं. सौमित्रः, सौमित्रिः] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न ।

सोमीईयौ—देखो 'सोमइयौ' (रू. भे.)
उ०—इम करतां एक दिन माहादेव **सोमीईयै** उपर पातसाही फोज आई।—अरजन हमीर री बात

सोमेसर, सोमेसुर, सोमेस्वर-सं. पु. [सं. सोमेश्वर] १ महादेव, शिव।
२ काशी में स्थित एक शिवलिंग जिसकी स्थापना सोम द्वारा किया जाना माना जाता है।

सोमैती, सोमोती—देखो 'सोमवतीअमावस' (रू. भे.)

सोम्य–वि. [सं.] १ सोम-सम्बन्धी, सोम का।
२ सुन्दर, मनोहर।
३ जो सोम-पान करने का अधिकारी हो।
४ यज्ञ में सोम की आहुति देने वाला।
५ अच्छा, सुन्दर।
६ शांत, गम्भीर।

सोयंप्रभा—देखो 'स्वयंप्रभा' (रू. भे.)
उ०—अहं नांम **सोयंप्रभा** धांम एता, जिकै तात विस्वैक्रमा कीध जेता। हिमांनी सखा माहरै एक हूंती, अठाहूंत सौ उद्धरी भागवंती।—सू. प्र.

सोय–सं. स्त्री.—१ जानकारी, ध्यान, समझ।
उ०—१ तद लिछमी कह्यौ—हाल तांई थांनै इण री **सोय** नीं व्ही। पछै कैणा धूड़ रा पिंडत हौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ जकी बात थनै बतायां ई समझ मैं नीं बैठै, म्हैं बिनां बतायां ई उणरी **सोय** करलूं हूं।—फुलवाड़ी
२ सीध, ठीक सामने की दिशा।
उ०—१ उपरलौ होठ नाक री **सोय** तणियोड़ौ अर हेटलौ ठोडी कांनी लुलियोड़ौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ धणी सूं दवायती लेय वा राखी रै मंगळ त्यूंहार बणाव सिणगार करनैं अणूंती उमाई होय नाडी री **सोय** मैं वहीर व्ही।
—फुलवाड़ी
३ टोह।
उ०—१ चारूं दिस सांमी घांटी घुमाय घुमायनैं चारा री **सोय** करणी चाही।—फुलवाड़ी
उ०—२ राजकंवरी बिना जीवणौ अवस दूभर व्हैगौ, पण बिना **सोय** करचां मरणौ ई कीकर व्है।—फुलवाड़ी
४ पता, जानकारी।
उ०—१ बींद रै उणियारै औ कोई रूप है, कै रूप रौ बीज है। रूप रै बीज री तौ आज **सोय** व्ही।—फुलवाड़ी
उ०—२ अर जद उणनै इण बात री **सोय** व्ही कै कालै कस्मीर रा राजाजी रै सागै खुद अंदाता बाड़ी जोवण नै आवैला तौ उणरौ तौ जांणै अंस ई निकळग्यौ।—फुलवाड़ी
५ रुख, इरादा, ध्यान।
उ०—नाई खूंदनै ढब्यौ तौ सेठ सदरी माथै बगतरी ठसाई। बालाबंदी रा ज्यूं त्यूं आंटा दिया। कालै वाळौ जोस नीं हौ। नाई तौ हाजरी साज गवाड़ी री **सोय** करी।—फुलवाड़ी
सर्व.—१ वह, वे।
उ०—जिण दिन रघुबर जंपै, सुकिया अरथ दिवस **सोय** नर संभळ। दखै न राघव जिण दिन, जांण **सोय** आळ जंजाळ।—र. ज. प्र.
उ०—२ **सोय** नर सुभागियौ, बरसाळै बाळाह। पाटा बांधण पदमणी, सुख पूछण साळाह।—अग्यात
२ उसे।
उ०—१ मुलां हरतां तुं भयौ, तुंहीज करता होय। तुंहीज मारै हाथ सूं, तुंही जीवारै **सोय**।—अनुभववांणी
उ०—२ हरीया सारी सिसट का, ठाकुर कहीयै **सोय**। पटा परित नहीं ऊतरै, कै कळि उथल होय।—अनुभववांणी
३ जो।
उ०—१ हरीया दिल साबति भया, चितवा निहचळ होय। रसीया सोई जांणीयै, निज मन वसीया **सोय**।—अनुभववांणी
उ०—२ हरीया हरि की क्या कहै, रांम सकळ मैं होय। जांणत होसी वावरौ, हिरदै धरसी **सोय**।—अनुभववांणी
४ वही।
उ०—हरीया हिरमच लायकै, बैठै विरकत होय। विरकत सोई जांणीयै, विसै विरता **सोय**।—अनुभववांणी
५ देखो 'सौ' (रू. भे.)
उ०—वाड़ौ तौ भरियौ करहलां रे, जिण मांय आछा सा **सोय**। सोयां मांयला दस भला, कोई दसां मांयलौ एक।—लो. गी.
रू. भे.—सौय।

सोयण–सं. पु. [सं. सज्जन] चारण कवि।
उ०—चंदाणणि चीर अमीर न चंचळ, कुंवर भंडार न चित करिया। माहब समा 'खंगार' मरण दिन, **सोयण** सुणिजी संभरिया।
—खंगार सोढा रौ गीत

सोयतौ—देखो 'सोहितौ' (रू. भे.)

सोयम–वि.—तीसरा, तृतीय।

सोयली–सं. स्त्री.—साड़ी।

सोयलौ–सं. पु.—१ एक प्रकार का घास।
२ देखो 'सोहिलौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सोयली)

सोयसी–सं. स्त्री. [सं. श्रेयसी] हरीतकी, हरें। (नां. मा.)

सोरंभ—देखो 'सौरभ' (रू, भे.)
उ०—१ दहूं हाथ जोड़चां पढै छंद दोहा, बढै मेंमदादीक **सोरंभ** बोहा।—मे. म.
उ०—२ **सोरंभ** अबीर कमकमौ केसर, परिमळ जांणक हट्ट ए।
—गु. रू. बं.

सोरंभणौ, सोरंभबौ–क्रि. अ.—सुगन्धयुक्त होना, सुगंधित होना, महकना।

उ०—डोलउ मन आंणदिउ, चतुर तणै वचनेह। मारू-मुख **सोरंभियउ**, आवि भमर भणकेह।—ढो. मा.

सोरंभचर—देखो 'सौरभचर' (रू. भे.)

सोरंभमूळ— देखो 'सौरभमूळ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सोरंभी—देखो 'सौरभ' (रू. भे.)

उ०—रजधांनी उच्छव रहसि, मणि दीपक अप्रमांण। सूंधै महल सिंगारिया, **सोरभी** लहरांण।—रा. रू.

सोर–सं. पु. [फा. शोर] १ कोलाहल, हल्ला।

२ बारूद।

उ०—१ औरंगसाह महाबळी, विसव तणौ बडवाग। रीस तरस्सी पूत सिर, **सोर** परस्सी आग।—रा. रू.

उ०—२ धड़कै उर कातर **सोर** धुखै, मच हक्क किलक्क अनेक मुखै।—रा. रू.

२ ऊँची तथा तीक्ष्ण आवाज, ध्वनि।

उ०—१ पहाडां पाखर पड़ी घटा ऊपड़ी मोर **सोर** मंडै इंद्र धार न खंडै।—रा. सा. स.

उ०—२ लूंबां झड़ नदियां लहर, बक पंगत भर बाथ। मोरां **सोर** ममोलियां, सांवण लायौ साथ।—बां. दा.

उ०—३ हरै लीनौ हियौ तनां हरिआलियां, **सोर** कर सरै दादुर सुहाया।—बां. दा.

३ मधुर ध्वनि, मोहक ध्वनि।

उ०—१ दै घररी तज देहळी, पणघट सांमां पाय। बाजै घूघर पार बिण, **सोर** सरोवर जाय।—बां. दा.

उ०—२ कोकिल **सोर** मोर तंडवि ऋत, नटवर गांन संगीत करै व्रत।—सू. प्र.

उ०—३ मतवाळौ रंग मांणतां, घुघर पड़ती घोर। आज सुणी आली अधिक, सिसकारां री **सोर**।—नारायणसिंह सांदू

४ ध्वनि, आवाज।

उ०—भयंकर **सोर** सिवा अग्र भाग, चोळै मुख होत उदोत चराग।—मे. म.

५ आतिशबाजी, पटाखा।

रू. भे.—सौर।

सोरकौ–सं. पु.—१ डर, भय, आतंक।

उ०—लोगां रै हियै अस्टपौर मासी रै घर रौ **सोरकौ** रै'वतौ। मन सुरक सुरक करतौ।—फुलवाड़ी

२ चिंता, फिक्र।

सोरखांनौ–सं. पु. [फा. शोरखाना] बारूद बनाने व रखने का स्थान, बारूद कक्ष।

सोरगर–सं. पु. [फा. शोरगर] बारूद व आतिशबाजी बनाने व बेचने वाला। (मा म.)

सोरजंत्र-सं पु. [फा. शोर + स. यंत्र] १ बंदूक।

उ०—सहंस पगा मल्लाळै, सुजड़ भळाळै महना। **सोरजंत्र** भुज साझ, कुल धानंख सकरणां।—रा. रू.

२ तोप।

सोरट, सोरठ-सं. स्त्री. १ राजस्थान के दक्षिण पश्चिम में स्थित सौराष्ट्र प्रदेश।

उ० तठा पछै पै पठांण गिरनार रै थांणैवाळा पातसाह रै बेटै सूं फिर बैठा। सारी सोरठ इणां गाधी। नैणसी

२ हिंडोल का पुत्र ओड़व जाति का एक राग। (संगीत)

अल्पा;- सोरठड़ी।

सोरठगेड़-सं. स्त्री. शकुनशास्त्र के अनुसार दक्षिण दुर्गादेवी के परिभ्रमण की गति का नाम।

सोरठड़ी-वि. स्त्री.—१ सौराष्ट्र देश की।

२ अच्छी लगने वाली।

३ देखो 'सोरठ' (अल्पा; रू. भे.)

सोरठमलार स. पु. सब शुद्ध स्वरों का संपूर्ण जाति का एक राग।

सोरठियौ सं. पु. डिंगल का एक गीत (छंद), जिसके प्रथम चरण में १८ मात्रा, द्वितीय चरण में १० मात्रा, तीसरे चरण में १६ मात्रा तथा चौथे चरण में १० मात्राएं होती हैं। दूसरे सभी द्वालों में प्रथम चरण १६ मात्रा व चौथे में १० मात्रा इसी क्रम से हों तथा तुकांत लघु होता है। (र. ज प्र.)

सोरठी-सं. स्त्री. एक रागिनी जो मेघराग की पत्नी कही गई है।

उ० रजै मलार सारंग, रितंग रंग मारगं। रगांन नान **सोरठी**, रागांन तांन सांमठी।—रा. रू.

सोरठौ-सं. पु.—१ एक छंद जिसके पहले और तीसरे में चरण ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह-तेरह मात्राएं होती हैं।

सोरदांणी–स. स्त्री. [फा. शोरदानी] बारूद रखने का ढक्कनदार धातु का बर्तन।

सोरप—देखो 'सौरपी' (रू. भे.)

उ०—जग आगा ऊभर कीदी बारकार फिर जावै है अर आपरी कोटड़ी री **सोरप** सुविधा बनावण लाग जावै है।—दसदोख

सोरबौ—देखो 'सौरबौ' (रू. भे.)

सोरभ-देखो 'सौरभ' (रू. भे.)

उ०—१ सावण मास सुहावणौ, लागै झड़ जळ लूंम। उण दिन ही आसव तणी, **सोरभ** नह लै सूंम।—बां. दा.

उ०—२ हंसा राखि हजूर मां, सखरी वास सुवास। **सोरभ** आवै सांमिरी, दाखै बारठ दास।—पी. ग्रं.

सोरभमूळ—देखो 'सौरभमूळ' (रू. भे.)

सोरभेय—देखो 'सौरभेय' (रू. भे.)

सोरभखी, सोरभखी-सं. स्त्री. [फा. शोर+सं. भक्षी] तोप, बन्दूक।

सोरम—देखो 'सौरभ' (रू. भे)

उ०—धूप-दीप अर अगरवती री **सोरम** तथा गायं घीरी जोत ।
—दसदोख

सोरमदे-सं. स्त्री.—एक देवी का नाम ।

सोरमौं—देखो 'सोरवौं' (रू. भे.)

सोरवौं-सं. पु.—१ पके हुए मास का रस ।
२ सब्जी का मसाला युक्त भोल, वसा ।
रू. भे.—सोरवौ, सोरमौं ।

सोराई, सोराई-सं. स्त्री.—१ आराम, शांति, तसल्ली । -
उ०—जीव मैं **सोराई** वापरियां पछै कँवण लागी ।—फुलवाड़ी
२ सुख ।

सोरापौ, सोरापौ-सं. पु.—आराम, सुख, शान्ति, चैन ।
उ०—इण खेतर मैं जीवणौ दोरौ, मेनत घणीं, मिनख रात-दिन अबखतौ रैवै, भूंझतौ रैवै, जद जीवै **सोरापौ** नांव री कीं चीज नैड़ी ई कोयनी ।—चितरांम
अल्पा;—सोरप ।

सोराष्ट्र—देखो 'सौरास्ट्र' (रू. भे.)

सोरीघर-सं. पु.—प्रसूतीगृह ।

सो'रौ, सोरौ-वि. (स्त्री. सोरी) १ आरामदायक, सुखप्रद ।
उ०—फूठरौ नुवावै । सगळा गाभा धोवै अर **सोरी** मुठ्ठी देय'र सुवाणै आखी रात छाती माथै हाथ फेरै अर मनरळी वात वणावै ।
—दसदोख

२ सहज, सरल और आसान ।
उ०—१ नांई कह्यौ—समझै जका नै तौ समझावणौ ई **सोरौ**, नीं समझै जका नै कीकर समझावां ।—फुलवाड़ी
उ०—२ इण रेगिस्तांन अर पांणी री कसर रौ असर अठै रै मिनखां, जीव-जिनावरां अर रुंखड़ां माथै तांई साव **सोरौ** दीसै ।
—चितरांम
उ०—३ हरीया **सोरी** चोट सर, हाड पासळी छेक । चोट सहेसी सबद की, गरवा ग्यांन वमेक ।—अनुभववांणी
३ सम्पन्न, समृद्ध ।
४ प्रसन्न, खुश ।
५ सुखी, आरामपूर्वक ।
उ०—छोटा भाई री पांती खायां सपनां मैं ई **सोरा** नीं व्हैला । म्हारौ काळजौ बाळचौ वांरौ भगवांन बाळैला ।—फुलवाड़ी
क्रि. वि.—आसानी से, आराम से ।
उ०—१ बापजी पेट पापी है, **सोरौ** गुजारौ व्है जावैला ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ काजळ टीकी बिन फीकी द्रग कोरां, सधवा विधवा बिच विवरौ नहिं **सोरौ** ।—ऊ. का.
सं. पु.—१ बारूद ।
[फा. शोर:] २ सफेद रंग का एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में से निकलता है ।
३ देखो 'सुसरौ' (रू. भे.)
रू. भे.—सोहरौ, सौरौ ।

सोलंकी-सं. पु. (स्त्री. सोलंकणी) १ क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश ।
२ उक्त वंश का व्यक्ति ।

सोळ, सोल-सं. स्त्री.—१ वह गाय जिसके स्तन बड़े हों किन्तु दूध कम देती हो ।
२ पीतल या लोहे का बना छोटा लट्टू जिसको रस्सी के एक छोर पर बांधकर दीवार बनाते समय ईंट या पत्थर की सीध देखने में काम लेते हैं ।
रू. भे.—सौळ ।
३ देखो 'सोळह' (रू. भे.)
उ०—१ सुंदर **सोळ** सिंगार सज, गई सरोवर पाळ । चंद मुळक्कयउ जळ हंस्यउ, जळहर कंपी पाळ ।—ढो. मा.
उ०—२ पहल अठारह बी चवद, **सोळ** चवद लघु अंत ।
—र. ज. प्र.

सोळपग्गौ-सं. पु.—१ कनखजूरा ।
२ वे रेंगने वाले जन्तु जिनके सोलह पांव होते हैं ।

सोळमौं—देखो 'सोळवौं (रू. भे.)

सोळमौंसोनौ—देखो 'सोळवौंसोनौ' (रू. भे.)

सोळवीं-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की लपसी जिसमें पांच व दो के अनुपात से अर्थात एक मन दलिये में सोलह सेर घी पड़ता है।
उ०—लापी रंधाड़ू औ म्हांरा इंदर राजा **सोळवीं** मईनै नीळड़ियौ नारेळ ।—लो. गी.
२ देखो 'सोळवौं' (पु.)

सोळवौं-वि. (स्त्री. सोळवीं) १ पन्द्रह और एक के योग से होने वाला क्रमशः पन्द्रह के बाद वाला ।
२ जो सोलह के स्थान पर हो ।
रू. भे.—सोळमौं ।

सोळवौंकुनण—देखो 'सोलवौंसोनौ' ।

सोळवौंसोनौ-सं. पु. यौ.—१ सोलह बार तपा कर शुद्ध किया हुआ सोना, पूर्णतया शुद्ध और श्रेष्ठ सोना ।
उ०—मेह कौ ममोलौ बावनौ चंदण **सोळवौंसोनौ** रायकेळ रौ

ग्रभ, हंस कौ बच्चौ ।—लाली मेवाड़ी री बात

२ लाक्षणिक अर्थ में अच्छे गुणों वाला ईमानदार व्यक्ति ।

रू. भे.—सोलमौंसोनौ ।

सोळह —वि. [सं षोडस्] पन्द्रह और एक का योग ।

सं. पु.—उक्त योग से बनने वाली संख्या, १६ ।

रू. भे.—सोळ, सोळा, सोळे, सोळै ।

सोळहकळस्वांमी—सं. पु. [सं. षोडशकलास्वामी] चन्द्रमा ।

सोलहसिंगार, सोलहसिणगार, सोलहस्रंगार—सं. पु. [सं. षोडश+श्रृंगार] स्त्रियों की वह सोलह प्रसाधन-क्रियाएं, जो उन्हें और अधिक सुन्दर चित्ताकर्षक एवं मोहक बनाती हैं। ये क्रियाएँ निम्नलिखित हैं—१ अंग में उबटन लगाना. २ नहाना. ३ स्वच्छ वस्त्र धारण करना. ४ बाल संवारना. ५ काजल लगाना. ६ सिंदुर से मांग भरना. ७ महावर लगाना. ८ भाल पर बिन्दिया लगाना. ९ चिबुक पर तिल बनाना. १० मेहंदी लगाना. ११ फूलों की माला पहनना. १२ मिस्सी लगाना. १३ पान खाना. १४ होठों को लाल रंगना. १५ इत्र का प्रयोग १६. आभूषण पहनना ।

रू. भे.—सोलासणगार, सोलासिणगार ।

सोलहौ—देखो 'सोळौ' (रू. भे.)

उ०—आपनांमी हुवा दातार झूंझार नमक हलाल हुवा **सोलहौ** गायौ थौ सौ सांचौ कियौ ।—पदमसिंघ री बात

सोळा—देखो 'सोळह' (रू. भे.)

उ०—पदमावत री पदमणी **सोळा** सौ पालकियां मैं धूम धड़ाकै सूं दिल्ली बईर हुई । आ बात चारुंमेर बिखेर दी कै उण सुल्तांन रौ कैणौ मांनण री धारली है ।—चितरांम

सोलाळी, सोलाली—सं. स्त्री.—धरती, पृथ्वी । (डिं. को.)

रू. भे.—सहिलाळी, सोहळाळी, सोहिळाळी ।

सोळासणगार, सोळासिणगार, सोळासंगार—देखो 'सोलहस्रंगार' (रू. भे.)

उ०—वह रिमझिम करती महलां सूं ऊतरी, आतौ कर **सोळासिणगार** ।—लो. गी.

सोळासारी—देखो 'सोळैकांकरी' (रू. भे.)

सोलियाळ—वि. [सं. सुखलन्+रा. प्र. ईयार] १ जिसके पास कोई कार्य न हो, किसी कार्य की जिम्मेदारी से मुक्त, कार्य निवृत्त ।

२ जो किसी प्रकार का शारीरिक श्रम न कर सकता हो, नाजुक ।

३ आलसी, निकम्मा ।

सोळियौ—सं. पु.—किसी लकड़ी में दूसरी लकड़ी फंसाने के लिये किया गया छेद ।

सोळी, सोली—सं. स्त्री.—रहट के चक्र के पृथक भागों के बीच के भाग को जोड़ने वाला लकड़ी का टुकड़ा, यह एक चक्र में चार होते हैं ।

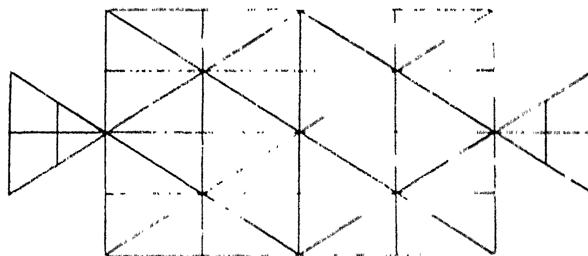
सोळे, सोळै—देखो 'सोलह' (रू. भे.)

उ०—पछै राजाजी **सोळै** घोड़ां रौ सोनल रथ जुताय राजकंवर नै साथै लेय, रांणी नै मनावण सारू वहीर व्हिया । —फुलवाड़ी

सोळै'क—वि.—सोलह के लगभग ।

सोळैसंस्कार—देखो 'सोळसंस्कार' (रू. भे.)

सोळैकांकरी, सोळैसारी—सं स्त्री.—दोनों पक्षों से सोलह-सोलह कंकरियों से खेला जाना वाला एक शतरंज-नुमा खेल जो अधिकतर राजस्थान के देहातों में खेला जाता है ।



सोळौ, सोळौ—सं. पु.—१ बच्चे के जन्मोत्सव एवं विवाह से पूर्व गाया जाने वाला राम-सीता के विवाह सम्बन्धी मांगलिक लोकगीत ।

२ उक्त गीत के प्रभाव से उत्पन्न होने वाला जोश, आवेश, उत्साह ।

उ०—सौ जांणौ वाभीसा तोरण माथै वींद जाय ज्यूं थांरौ देवर **सोळौ** चढियोड़ा जाय रया छै । —वी. स. टी.

३ खुशी एवं हर्ष के गीत ।

उ०—आगै जगदेव रोवै छै त्यां तीरै गयौ । तरै बोली आवौ जगदेव । कह्यौ, थें हिवारूं आधी रातरी रोवौ छौ, सौ थांनै कांई दुःख छै । तरै उवै बोली, पाटण री जोगणियां छां, तिकौ प्रभात सवा पौ'र दिन चढतै सिधराव जैसिंह री म्रत्यु छै, तिण सूं रुदन करां छां । म्हांरी सेवा पूजा घणी करतौ, सौ अबै कुण करसी । तिणसूं रोवां छां । राजा पिण सुणै छै । तरै जगदेव बोलियौ, उवै गीत कुं गावै छै । जोगणी कह्यौ, तू उणनै ही पूछ आव । तरै जगदेव उणां कनै गयौ । ज्यूं उणां पिण कह्यौ आवौ आवौ जगदेव । तठै राजा पिण ऊभौ नेडौ सुणै छै । जगदेव पगै लागिनै कह्यौ, आप खंभायची राग मांहै सोळौ गावौ छौ, बधावौ छौ । सौ थे कुण छौ नै किसी बधाई खुस्याल मांहै गावौ छौ । जरै कह्यौ, म्हे दिल्ली री जोगणियां छां, जिकै राजा जैसिंह नै लेणनै आई छां । तिण सूं बधावा गीत गावां छां ।—जगदेव पंवार री बात

४ कांति, दीप्ति, तेज ।

५ अंगारा ।

उ०—आज सूरत **सोळे** उडै, अर उर **सोळे** उट्ठ । बाळ जय जिण उरबसी, बिण सोळै बिण कट्ठ ।—रैंवतसिंह भाटी

६ सोलह का वर्ष, सोलहवां वर्ष ।

रू. भे.—सोळहौ, सौहळौ ।

सोल्लास—वि.—१ उल्लासयुक्त ।

सोवंन, सोवंन्न—देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

उ०—**सोवंन** जड़ित सिंगार, बहु, मारुवणी मुकळाई । गय हेंवर दासी बहुत, दीन्ही पिंगळराई ।—ढो. मा.

सोवड़, सोवड़ि—सं. स्त्री.—१ किसी भारी ओढने के वस्त्र के नीचे ओढा जाने वाला हल्का वस्त्र, कम्बल ।

उ०—सीत ठंठार सबलउ पड़ई जी, चेलणा प्रीतम साथि । चारित्रियउ चित मां वस्यउ जी, **सोवड़ि** बाहिर रह्यउ हाथि ।

—स. कु.

२ सर्दी में ओढने का बिस्तर, रजाई ।

सोवड़ौ—सं. पु.—मुँह, मुख । (शेखावटी)

सोवणग्रह, सोवणघर—सं. पु.—शयनगृह, शयन कक्ष ।

सोवणौ—देखो 'सोहणौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताकू तेरौ **सोवणौ** लाल गुलाबी माळ, चरकू मरकूं फिरै घेरणी, मुधरी-मुधरी चाल ।—लो. गी.

उ०—२ कोई कोठै उतरै पाबू वनड़ौ **सोवणौ** ।

—पाबू जी रा परवाड़ा

सोवणौ, सोवबौ—१ देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांमा अभिरांमा कांमातुर रोवै, हड़मल हुड़दंगी सेंजां मैं **सोवै** ।—ऊ. का.

उ०—२ **सोवै** अळगी सायधण, सुपनै ही नह सग । गणिका सुं राखै गुसट, रसिया तौनूं रंग ।—बां. दा.

२ देखो 'सोहणौ, सोहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारौ मन नहीं पतीजै हो राज, थंइ ज औ केसरिया । सायब गांव सिधाया, औ अजमौ कुण **सोवसी** औ राज ।

—लो. गी.

उ०—२ नीं रांड रोवण नैं ही, नीं भैंस दोवण नैं अर नीं सूपड़ौ **सोवण** नैं ।—अमरचूंनड़ी

सोवणहार, हारौ (हारी), सोवणियौ—वि० ।

सोविश्रोड़ौ, सोवियोड़ौ, सोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सोवीजणौ, सोवीजबौ—कर्म वा० ।

सोवन—देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

उ०—१ आ तौ **सोवन** सिलाड़ियां घोटाऔ भांग । रंग भर दिवलौ भिग रह्यौ ।—लो. गी.

उ०—२ सुंदरि **सोवन** वरण तमु, अहर अलत्ता रंग । केसरि लंकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरंग ।—ढो. मा.

सोवनकार—देखो 'स्वरणकार' (रू. भे.)

उ०—**सोवनकार** घर आंगणइ जी, मुनिवर पहुंतउ जांम । आहार भणी तै मांहि गयउ जी, क्रौंच गळघा जव तांम ।—स. कु.

सोवनगर, सोवनगिर, सोवनगिरि, सोवनगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

उ०—१ पांणी खग रहियौ कुळ पांणी, हर कर गयौ सबळ दळ हार । **सोवनगर** कीन्हौ 'राजड़' सुत, सादूळा वाळौ सिणगार ।

—लादूरांम बारहठ

उ०—२ **सोवंनगिर** कि सिखर, धजबंधी छतधारी । धौळागिर कौ राव, सुख भुगतै इधकारी ।—सूरजनदास पूनियौ

सोवनचिड़ी—देखो 'सोनचिड़ी' (रू. भे.)

उ०—भांत भांत रा रळियावणा रूड़ा पंखेरू रळियां करता हा—तीतर, तिलोर, बाटबड़, मैना, कूकड़ा, फूंदियां, भंवरा, खातीचिड़ा, सुगनचिड़ी काबर कोचर गोगू कुरज जळकाग बटेर अर **सोवनचिड़ी** सरब इत्याद पंछी मीठा बोल सुणावता हा ।—फुलवाड़ी

सोवनजाई, सोवनजुही—देखो 'सोनजुही' (रू. भे.)

उ०—कणेर व्रक्ष (व्रक्स) करणी सेवंत्री । कूजा जाय । **सोवनजाइ** गुलाल । जु फूलि रह्या छै ।—वेलि टी.

सोवनथांभ—सं. पु.—स्वर्ण स्तंभ ।

उ०—म्हांरै गाय गळाड़ै भैंस्यां वाड़ै, **सोवनथांभ** विलोवणौ ।

—लो. गी.

सोवनथाळ—सं. पु. [सुवर्णस्थाल] सोने का थाल ।

उ०—नणदल करचौ रसोवड़ौ, सरै पुरस्यौ **सोवनथाळ** ।

—लो. गी.

सोवनदे—सं. स्त्री. [सं. सुवर्ण+देह] वधु के लिए प्रयुक्त होने वाला समान सूचक शब्द ।

उ०—म्हारी माता नै ठंढौ सौ पांणी, कुण ज प्यावै अे मांय ! अे म्हारी बहु **सोवनदे**, अमर चुड़ै सुहाग अे माय !—लो. गी.

वि.—स्वर्ण के समान सुन्दर देह वाली ।

सोवनमाखी—सं. स्त्री. [सं. स्वर्ण+मक्षिका] १ एक विशेष प्रकार की मक्खी जिसका शरीर सुनहरा होता है ।

उ०—राकसणी **सोवनमाखी** राजा नुं करि नै जटा मांहै राखीयौ । राजा च्यारै ही धरम भाई समरिया ।—चौबोली

२ देखो 'सोनामक्खी' (रू. भे.)

सोवनसींगी—वि. स्त्री. [सं. स्वर्णश्रृंगी] सोने के सींग वाली या जिसके सींग स्वर्ण से मंडित हों ।

उ०—मास एक बीलंबाअयौ दुजइ फिरइ प्रिय समझाई । देइस हाथ कउ मुंदड़उ, **सोवनसिंगी** नई कपिला गाई ।—बी. दे.

सोवनौ—वि. (स्त्री. सोवनी) १ स्वर्ण का, सोने का ।

उ०—१ कर तयार हाजर किया, ओधांदारां आय । साज जरकसी **सोवना**, विध विध नोख वणाय ।—सू प्र.

उ०—२ समपी लंका **सोवनी**, दीन भभीखण दांन ।—र. ज. प्र.

उ०—३ हुय कुरंग **सोवनौ** दरसण दरसाया ।—केसौदास गाडण

२ सुंदर, सुनहला, सुनहरा ।

सोवरण—देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

सोवरणगिर, सोवरणगिरि, सोवरणगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

सोवायत—देखो 'सूबेदार'।

सोवियोड़ौ—१ देखो 'सूवियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सोहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सोवियोड़ी)

सोविन, सोव्रन—देखो 'स्वरण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ वायस मोती घूघरी, **सोविन** केरइ थालि। मिलीस जिहारी माधवड़, हूं मुकिसि तिणि तालि।—मा. कां. प्र

उ०—२ करि उच्छव सूरजकंवर, कीध विदा 'अभसाह'। रिध **सोव्रन** मोती रतन, वसन अमोल्य विसाह।—रा. रू.

सोव्रणौ—वि.—स्वर्ण का, स्वर्णयुक्त।

सोव्रनतन—सं. पु. [स. सुवर्णतन] गरुड़।

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

वि.—जिसका शरीर स्वर्ण का हो।

सोव्रनगिर, सोव्रनगिरि, सोव्रनगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

सोव्रनौ—देखो 'सोव्रणौ'।

उ०—काज अहोणौ ही करै, एक प्रक्रत खळ अंग। रांमण पठियौ रांम दिस, करै **सोव्रनौ** कुरंग।—बां. दा.

सोव्रन्न—देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

उ०—रवै कुंभ **सोव्रन्न** थंभा अरेह, वणै आद्रवै वंस **सोव्रन्न** वेह।

—सू. प्र.

सोव्रन्नगिर, सोव्रन्नगिरी, सोव्रन्नगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

सोस—सं. पु. [सं. शोषः] १ अफसोस, खेद।

उ०—समय सुंदर कहइ सांभलिज्यौ देतउ नहीं छूं चेलां दोस। जिन आग्या न पाली जमंतरि, तउ सिस्यां दिसि किसउ करूं **सोस**।

—स. कु.

२ जिसमें मन न लगता हो।

३ चिन्ता, फिक्र, सोच।

४ सूजन।

५ दबने का भाव या क्रिया।

५ देखो 'सूंस' (रू. भे.)

उ०—घोड़ौ एराकी छै। राजा जांणौ सौ दिवावौ। ताहरां राजा कहीयौ **सोस** करौ।—हाहुल हमीर री बात

सोसक—वि. [सं. शोषक] १ शोषण करने वाला, चूसने वाला।

२ सुखाने वाला।

३ नाश करने वाला।

४ क्षीण करने वाला।

५ वह जो दूसरों का धन हरण करता हो।

सं. पु.—समाज का वह धनी वर्ग जो गरीबों का धन हरण करता है।

सोसण—सं. पु. [सं. शोषणं] १ सुखाना या खुश्क करने की क्रिया या भाव।

२ शोषण।

३ सोखने की क्रिया।

४ कामदेव के पाँच बाणों में से एक बाण जो मनुष्य को चिंतित करके उसका रक्त सोखता है।

रू. भे.—सोसन।

सोसणौ, सोसबौ—क्रि. स.—१ सुखाना, खुश्क करना।

उ०—१ साठीकां पर नह चल्यौ, लूआं रौ जद दाव। भूंभळ मैं सह **सोसिया**, बेरयां कुंड तळाव।—लू

उ०—२ ज्यूं ज्यूं सूकै जीव जग, त्यूं त्यूं लूआं तेज। बाळै जाळै **सोसवै**, दूणी चढै मगेज।—लू

२ चूसना।

३ लाक्षणिक अर्थ में किसी नाजायज तरीके से किसी का धन कब्जे करना या किसी के श्रम का शोषण करना।

४ किसी की आर्द्रता या नमी दूर करना, सोखना।

सोसणहार, हारौ (हारी), सोसणियौ—वि०।

सोसिओड़ौ, सोसियोड़ौ सोस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सोसीजणौ, सोसीजबौ—कर्म वा०।

सोसन—सं. पु.—१ वस्त्र। (अ. मा.)

२ देखो 'सोसण' (रू. भे.)

सोसनग्रह—सं. पु. पारसियों के अनुसार रात्रि के १२ बजे से प्रातः-काल तक का समय। (मा. म.)

सोसनपता—सं. स्त्री. एक विशेष प्रकार की तलवार, कृपाण।

सोसनिया, सोसनी—वि. [फा. सौसनी] आसमानी, नीला।

उ०—सिर **सोसनिया** ओढणी, लंहगौ लाल सुरंग। पिय पै आई सुंदरी, सेज्यां मांणण रंग।—कुंवरसी सांखला री वारता

सं. पु.—१ आसमानी रंग।

२ आसमानी रंग का घोड़ा विशेष।

उ०—तेलियां मुहा संदली तुरंग, **सोसनी** सब्ज हूंसा सुरंग।

—सू. प्र.

रू. भे—सौसनी।

सोहं, सोहंग, सोहंगम—देखो 'सोऽहम्' (रू. भे.)

सोह—वि.—१ सब, समस्त।

उ०—१ सु आवतौ राव वातां करतौ आवै छै—जै कदाच घाटा मांहै लखौ देवल उठै तौ हिमार कासुं हुवै। सु लखै बात **सोह** सांभळी।—राव लाखै री बात

उ०—२ अजामेळ पर आविया, साठ सहंस जम साज। नांम लियां हिक नारियण, भड़ **सोह** छूटा भाज।—र. ज. प्र.

२ सहित, युक्त।

उ०—तुरक्कां लेखौ किमूं तेवड़ौ, सदी हजारी मिळिया सोह। महाराजा गिरवर मेवाड़ौ, सरगि पुहतौ सिलै **सोह**।

—हिंदू जोधां रौ गीत

सं. पु.—१ जोश, उत्साह ।

उ०—१ सारा सिरदार आय हाजर होवौ। नकारौ करौ। सौ सूरां पूरां **सोह** चढी। कायरां नूं कांपणी छूटी।

—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ **सोह** चढै समहर समै, आहंस ग्रदै अमाप। वेस चढै ज्यूं ज्यूं वढै, पौरस अंग 'प्रताप'।—किसोरदांन बारहठ

२ कीर्ति, सुयश।

उ०—जसु नयरि जेसलमेरि राउल, मालदै महुच्छव कियं। उद्धरी किरिया नयरि विक्कमि, वंस **सोह** चड़ावियं।—स. कु.

३ तेज।

उ०—हुं माया सूं मोहीयउ, मइ कीधा पर द्रोह। अधम तणी संगति ग्रही, न रही संयम **सोह**।—वि. कु.

४ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—मइ तउ कीधउ मौ दिसा रे, जि० ताहरइ ऊपरि मोह विनयचंद्र कहै माहरी रे, जि० सगली तुझ नै **सोह**।—वि. कु.

५ शोभा।

उ०—१ चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंब तणी वनरायौ जी। थुड़ साखा अंकुरित थइ, **सोह** वसंतइ पायौ जी।—वि. कु.

उ०—२ पाई वसंतइ **सोह** जिण परि, प्रिया गमनइं पदमिनी। सिणगार विन पिण मुदित होवइ, प्रेम पुलकित अंगिनी।

—वि. कु.

६ सिंह, शेर। (ना. डिं. को.)

रू. भे.—सौह।

सोहग—१ देखो 'सुभग' (रू. भे.)

उ०—१ सुंदर **सोहग** सुंदरी, अहर अलत्ता रंग। केहर लंकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरंग।—अग्यात

उ०—२ पहिली **सोहग** सुंदरी रे लाल सोहग तणौ निधांन।

—स्रीपाल रास

२ देखो 'सोहाग' (रू. भे.)

सोहगी—१ देखो 'सुहागौ' (रू. भे.)

उ०—मन सोनौ मन **सोहगी**, मन ही काच कथीर। हरीया राखै हेकठौ, सब रस पावै सीर।—अनुभववांणी

२ देखो 'सोगी'।

सोहड़, सोहड—सं. पु.—१ राठौड़ वंस की एक उपशाखा, इस शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'सुभट' (रू. भे.)

उ०—१ तराछत **सोहड़** आछत त्रांण, कलेवर साबण तांत क्रपांण।—मे. म.

उ०—२ हिव सूमर हेरा हुवइ, मारू झूंबणहार। पिंगळ बोळावा दिया, **सोहड़** सौ असवार।—ढो. मा.

सोहण—सं. पु.—१ डिंगल का एक गीत (छंद), जिसके प्रथम द्वाले की प्रथम पंक्ति में १८ मात्रा, दूसरी में १४, तीसरी में १६ तथा चौथी में १४ मात्राएँ होती हैं।

२ देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)

उ०—**सोहण** याई फर गया, मइं सर भरिया रोइं। आव सोहागण नींदड़ी, वळि प्रिय देखूं सोइ।—ढो. मा.

सोहणीनिसांणी सं. स्त्री.—अंत गुरु सहित प्रत्येक चरण में २९ मात्रा तथा १३ और १६ पर यती वाला डिंगल का मात्रिक छंद विशेष। इसका दूसरा नाम मछटथल भी है।

सोहणौ—वि. (स्त्री. सोहणी) १ सुहावना, सुन्दर, मनोहर।

२ प्रिय, मधुर।

३ शोभा देने वाला।

४ देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)

उ०—हुता सज्जण हियड़ै, सयणा हुंदा हत्त। जउ **सोहणौ** साचइ हौ, सोहणौ वडी वसत्त।—ढो. मा.

सोहणौ, सोहबौ—क्रि. अ.—१ शोभा देना, शोभित होना।

उ०—१ घर आंगण मांहै घणां, त्रासै पड़िया ताव। जुध आंगण **सोहै** जिकै, वालम वास वसाव।—बां. दा.

उ०—२ सिला रा किला द्वार चित्रांम **सोहै**, बिभूसां अलोकीक लोकां विमोहै।—मे. म.

उ०—३ चौधारां लाखीक चाडतौ, किलम पंचाहर कीयां कर। राड़ विभाड़ **सोहियौ** राजा, अरक्क ज्यूंई दळ फाड यर।

—चांवडदांन बारहठ

२ जचना, फबना, सुन्दर लगना।

उ०—१ अजहुं तरु पुहप न पल्लव अंकुर, थोड़ डाळ गादरित थिया। जिम सिणगार अकीधै **सोहति**, प्री आगमि जांणियै प्रिया।—वेलि

उ०—२ बाजूबंध बधै गोर बाहु, बिहुं स्यांम पाट **सोहंत** सिरी मणि मैं हींडि हींडलै मणिधर, किरि साखा स्रीखंड किरी।

—वेलि

३ कीर्ति, यश आदि फैलना, प्रसिद्ध होना।

उ०—महाराज आजांनभुज रांम रघुवंसमण, राड़ रिमजूथ अवनाड़ रोहै, गढां गह गंजणा। वार निरधांर आधार आधार आलम वणौ, सरण साधार जिण विरद **सोहै**, भिड़ै दळ भंजणा।

—र. ज. प्र.

क्रि. स.—४ सूप में डाल कर अनाज साफ करना।

उ०—गोरी म्हारी ए हरियाळी **सोहीजै** क्यूं, यूं म्हारा सायब यूं जी यूं, गोरी म्हारी ए, हरियाळौ पीसीजै क्यूं, यूं म्हारा सायब यूं जी यूं।

—लो. गी.

सोहणहार, हारौ (हारी), सोहणियौ—वि०।

सोहिओड़ौ, सोहियोड़ौ, सोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सोहीजणौ, सोहीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

सोणौ, सोबौ, सोवणौ, सोवबौ—रू० भे० ।

सोहतौ—देखो 'सोहितौ' (रू. भे)

उ०—सारा ईंदा अेकठा हुवा छै, अमल पांणी किया छै। वाकर मारिया छै। **सोहता** हुवै छै।—उदै उगमणावत री बात

सोहनचिड़ी—देखो 'सोनचिड़ी' (रू. भे.)

सोहनहलवौ-सं. पु.—जमे हुए कतरों के रूप में घी से तर एक मिठाई विशेष ।

रू. भे.—सोनळवौ, सोनळहलवौ, सोनळहलुवौ ।

सोहबत-सं. स्त्री. [अ. सोहबत] १ संग, साथ ।

उ०—एक विनय री निसांणी चाहना करणी छै, **सोहबत** पंडितां धरमवंतां री नै भला सांचा महा पुरसां रै दरसण री।—नी. प्र.

२ दोस्ती, मेल ।

३ देखो 'सोबत' (रू. भे.)

सोहबरदिया-सं. पु.—सूफी मुसलमानों का एक सम्प्रदाय विशेष । (मा. म.)

सोहमणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

सोहरौ—देखो 'सोरौ' (रू. भे.)

उ०—१ राधोदास वडौ मरदां ऊपरलौ मरद ऊंट जमी रौ घणौ **सोहरौ**।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ ताहरां वळद ऊपर सखरा वीछावणा, तिण उपर बिणयांणी नूं **सोहरी** बैसांणी।—रळै गढवी री बात

(स्त्री. सोहरी)

सोहलाली—देखो 'सोलाळी' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

सोहली-सं. स्त्री.—स्त्रियों का ललाट पर पहनने का आभूषण विशेष ।

उ०—भमुहां ऊपरि **सोहली**, परिठिउ जांणिक चंग। ढोला एही मारुवी, नव नेही नव रंग।—ढो. मा.

सोहळौ—देखो 'सोळौ' (रू. भे.)

उ०—दूलह दुलहणि रौ **सोहळा** गाईजबां बीकानेर पधारिया छै। —द वि.

सोहांन—देखो 'सांण' (८) (रू. भे.)

उ०—दूजै बंध लोहै री जिण अंग नूं दीजै सौ **सोहांन** खुरसांन सूं घिसियौ जाय।—नी. प्र.

सोहांमणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि। संजोगणी **सोहांमणइ**, विजोगणी अंग दाधि।—ढो. मा.

उ०—२ जंबू नांमइ दीप है, दक्षिण भरत मझार। सोरठ देस **सोहांमणउ**, तिहां छइ तीरथ सार।—स. कु.

उ०—३ सांझी गीत **सोहांमणा**, ऐ मइं गाया इकवीस रे। समयसुंदर कहइ संघ नइ, नित पूरवउ मनह जगीस रे।—स. कु.

उ०—४ सहु कुं सुखदायक मुख सोहै, देखतां हौ दुख जावै दूर। जसु सुरति अति **सोहांमणी**, सोहै सोहै हौ स्रीजिनचंदसूर। —ध. व. ग्रं.

(स्त्री. सोहांमणी)

सोहांमणौ, सोहांमबौ—देखो 'सुहाणौ, सुहाबौ' (रू. भे.)

सोहा—१ देखो 'सोभा' (रू. भे.)

२ देखो 'स्वाहा' (रू. भे.)

सोहाग-सं. पु.—१ वृक्ष विशेष ।

उ०—सींबली सादडीआ, सरघू सींसब साग। सिवनी अनइं सिंदूरीया, सरिता-सरिस **सोहाग**।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'सुहाग' (रू. भे.)

उ०—ताहरां औ झोकाई बोलियौ, थै इण मांटी सूं ठरिस्यौ नहीं। इण **सोहाग** मैं लक्षण कोई नहीं।

—कावळै जोड्यै नै तीडी खरळ री बात

सोहागण, सोहागणी, सोहागवति, सोहागवती, सोहागिण—देखो 'सौभाग्यवती' (रू. भे.)

उ०—१ सोहण याई फर गया, मइं सर भरिया रोइ। आव **सोहागण** नींदड़ी, वळि प्रिय देखूं सोइ।—ढो. मा.

उ०—२ पुत्रवती **सोहागवति** पतिवरता पिण सोय। स्रीरांणी चूड़ौ सथिर, वांणी भणै सकोय।—रा. रू.

उ०—३ उत्तर आज स उत्तरउ, सीय पड़ेसी थट्ट। **सोहागिण** घर आंगणइ, दोहागिण रइ घट्ट।—ढो. मा.

सोहागौ—देखो 'सुहागौ' (रू. भे.)

सोहापति-सं. पु. [सं. स्वाहापति] अग्नी, आग। (ह. नां. मा.)

सोहारद-सं. पु. [सं. सौहार्द] १ मित्र, दोस्त। (डिं. को.)

२ सहृदय होने का भाव ।

३ सहानुभूति, सहृदयता ।

४ कृपा, अनुग्रह ।

सोहावणौ, सोहावबौ—देखो 'सोहणौ, सोहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दसमउ अंग सुरंग **सोहावइ**, प्रस्नव्याकरण नांमइ। सूत्र कल्पतरू सेवई तेतउ, चितानंद फल पांमइ।—वि. कु.

उ०—२ मन दुरमत आवी रे, सगलां मन भावी रे। वीरभांण **सोहावी**, भावी जै हुवै रे।—प. च. चौ.

सोहितौ-सं. पु.—चावल व गोश्त को एक साथ पकाकर बनाया जाने वाला नमकीन मांसोदन ।

उ०—तठा उपरांयत सीरौ-पूड़ी वणै छै। **सोहितै** सारू देवजीभि जोयजै छै। विरंजै सारू चोखा मंगायजै छै। पुलाव सारू कमोद वीणजै छै।—रा. सा. सं.

वि. वि.—सोहिते में मिर्च, हल्दी, धनिया आदि सब मसाले डाल कर चावलों के साथ मांस पकाया जाता है। कहीं२ पर चावलों के अभाव में बाजरे या काठे गेहूं के दलिये के साथ भी पकाया जाता है। यह पुलाव से भिन्न होता है, क्योंकि पुलाव में नमकीन मसाले

मिर्च, हल्दी, धनिया आदि नहीं डाले जाते सिर्फ सूखा मेवा, काजू, कालीमिर्च, घी आदि डाले जाते हैं।

रू. भे.—सुहितौ, सोइतौ, सोयतौ, सोहतौ, सौहतौ।

सोहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शोभायुक्त या शोभित हुवा हुआ. २ जचा हुआ, फबा हुआ, सज्जित, सुन्दर लगा हुआ. ३ फैला हुआ, प्रसिद्ध हुवा हुआ (यश). ४ सूप में डालकर साफ किया हुआ। (स्त्री. सोहियोड़ी)

सोहिलौ—वि. (स्त्री. सोहिली) १ आसान, सुगम, सरल।

उ०—१ ए अवसर रे आवंता वली दोहिलउ, पुण्य योगइ रे धन पामंता **सोहिलउ**।—स. कु.

उ०—२ मयमत्ता मेंगल महा, मणिधरि केहरि मल्ल। सगला दमता **सोहिला**, मन दमणौ, मुसकल्ल।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ कर जोड़ी कहइ कांमिनी जी, बंधव सम नहीं कोइ। कहिता बात **सोहिली** जी, करतां दोहिली होय।—स. कु.

२ सुखी।

उ०—१ सरणै राख क्रपा करि साहिब, ज्यूं पारेवौ पल्यौ री। समयसुंदर कहइ तुम्हारी क्रपा तै, हिव रहस्यूं **सोहिली** री।
—स. कु.

उ०—२ **सोहिलौ** थाय संसार, दोहिलौ कोई देखूं नहीं।
—सूरौ टापरियौ

३ सम्पन्न।

सं. पु.—आराम, सुख।

रू. भे.—सोयलौ।

सोही—वि.—शुभचिंतक, हितैषी।

सर्व.—वही, सौ।

सोहोड़—देखो 'सुभट' (रू. भे.)

उ०—१ असमर अगनि कड़ाई आरियण। लाकड़ **सोहोड़** धुखै कुळ लाज।—प्रथीराज राठौड़ रौ गीत

उ०—२ साकुर झपट **सोहोड़** थट सांमट, थरहर जगि जस थह थरट। दोयण दंताळ करण गट दुजड़ां, मळै औ होट दूछर मरट।
—छतरसिंह हाडा रौ गीत

सोह्रद, **सोह्रिद**—वि. [सं. सहृदय] १ मित्र, हितैषी। (डिं. को.)

२ दयावान, कृपालु।

सौं—सं. स्त्री.—शपथ, सौगंध।

सौंज—सं. पु.—१ साज-सामान, साधन, सामग्री।

उ०—१ दादू अंतर आतमा, पीवै हरि जळ नीर। **सौंज** सकल लै उद्धरै, निरमळ होइ सरीर।—दादूबांणी

उ०—२ सदगुरु दाता जीव का, स्रवण सीस कर नैन। तन मन **सौंज** संवारि सब, सुख रसना अरु बैन।—दादूबांणी

उ०—३ आजम दक्खण हूंत उलट्ठौ, विकट धनुख सर जांण विछुट्टौ। उत्तार धरा सु आलम आयौ, **सौंज** नेंज दळ तेज सझायौ।
रा. रू.

२ भाला चलाने की विद्या या खेल।

उ०—मोती बाग हूंत सब मारू, **सौंज** नेज खड़ि रमणा सारू।
रा. रू.

३ खेती, फसल।

उ०— क्रम नेदांण करि राखि ध्रम आपणौ, और उजाड़ कुण करत तेरौ। गोफणी ग्यांन अग्यांन गेरां उडै, सत की बाड़ि गुर सबद फेरौ। आय अनेक जुगमांहि जन नीपनां, नांव निज लावणी **सौंज** लागा। दास हरिरांम गुण गाहि गाडा भरी, भूख भै दुख ग्या दूर भागा।—अनुभववांणी

३ राह, मार्ग।

उ०—सील संतोख की सनाह, अंगिय पहरिवा। सुमरण की **सौंज** लेवा आगम कूं चालिवा।—ह. पु. वां.

४ खजाना, भण्डार।

उ०—सकल सुखौं की **सौंज** हरि, वार पार मधि मांहि। देख गत दुनियां तरक, प्रांन गरकता मांहि।—ह. पु. वां.

५ विशिष्ट कार्य या क्रिया।

६ वह पूजनीय चित्र, वस्त्र आदि जिसे साम्प्रदायिक नियमानुसार किसी स्थान विशेष में रख कर पूजा जाता है।

वि.—सब, समस्त।

उ०—काया कोट बिन्यौ बिन टांची, कळी न चूनी लाया। करता पुरख भया कारीगर, नग नग **सौंज** बनाया।—अनुभववांणी

७ देखो 'सूंज' (रू. भे.)

सौंडिक—सं. पु. [सं.] शराब बनाकर बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति। (बं. भा.)

सौंण—१ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—ताहरां गोगैजी पाबूजी नूं कही आगै परभाते **सौंण** लेस्यां, जो सौंण आछा हुआ तो चढस्यां।—नैणसी

२ देखो 'सयन' (रू. भे.)

सौंणहर—सं. पु. [सं. शयनगृह] शयनागार। (डिं. को.)

सौंणी—देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

उ०—पछै उठारा चाढिया सांखला हरभो रै गांव बेंहगटी आया। हरभोजी **सौंणी** हुता।—नैणसी

सौंधाखांनौ—सं. पु.— इत्र, तेल आदि सुगंधित द्रव्य रखे जाने का स्थान या कक्ष।

उ०—**सौंधाखांना** बेल सजि, बटा कहार कहाय। कावड़ सरवण धारि कंध, जांणै तीरथ जाय।—सू. प्र.

रू. भे.—सांधाखांनौ, सुंधांखांणौ, सुंधाखांनौ।

सौंधौ—सं. पु.—१ राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में पाया जाने वाला एक

पौधा या घास, जिससे सुगंधित तेल, इत्र आदि निकाला जाता है, रोहिष।
२ इस घास से निकाला हुआ सुगंधित तेल या इत्र।
उ०—१ अगनाभ अतर **सौंधा** प्रमळ, वंटि अरगजा वळोवळ। जदि चढै अनुज अग्रज गजां, हूंतां हाल किलोहळां।—सू. प्र.
उ०—२ वैनी फूल गूंथ **सौंधै** भीनै आज कारै कारै वार संवार भारी।—रसीलै राज रौ गीत
उ०—३ धरिया तनि वसत्र कुमकुमै धोया, **सौंधा** प्रखोळित महल सुख। भर स्रावणि भाद्रवि भोगविजै, रुखमिणि वर एहवी रुख।
—वेलि

वि. वि.—उक्त प्रकार का घास राजस्थान, मध्यप्रदेश, नेपाल, शिमला, अलमोड़ा, काश्मीर, पंजाब आदि के पहाड़ी प्रदेशों व बंबई व मद्रास के पर्वतों में पाया जाता है। इससे गुलाब की (मतान्तर से नारियल की) सी सुगंध आती है और इसका तेल निकाला जाता है। मुख्यत: इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक के फूल सफेद व दूसरे के नीले रंग के होते हैं। जब यह घास नरम रहता है तो पत्तियों का रंग नीला होता है तब इसे मोतिया कहते हैं एवं पकने पर पत्तियाँ लाल हो जाती हैं तब इसे सौंफिया कहते हैं। इसकी पत्तियाँ सावन-भादों से कार्तिक अगहन तक फूलती हैं। इसी समय इसकी पत्तियाँ तेल निकालने के योग्य हो जाती हैं।

जब घास फूलने लगती है, तब काटकर छोटी-छोटी पूलियाँ बनाली जाती हैं। उक्त पूलियों को पानी भरे बर्तन में डालकर उबाली जाती हैं। उक्त बर्तन पर तीन-चार अंगुल मोटी व तीन-चार फुट लम्बी नलियों सहित सरपोश लगा रहता है। उक्त नलियों के सिरे तांबे के दो घड़ों से लगे रहते हैं। इस प्रकार इसका आसव खींच लिया जाता है। आसव को किसी चौड़े मुंह के बर्तन में उड़ेल लेते हैं। रोहिष का अर्क थोड़ी देर रहता है। ऊपर से तेल को धीरे-धीरे निकाल लेते हैं। यह तेल गुलाब के इत्र में मिलाकर इसमें ताड़पीन या मिट्टी का तेल मिलाया जाता है। इस प्रकार सुगन्धित पदार्थ तैयार किया जाता है।
३ विभिन्न प्रकार के इत्रादि सुगन्धित पदार्थ।
रू. भे.—सांधौ, सुंधौ, सूंधौ, सोंधौ।

सौंन—देखो 'सुगन' (रू. भे.)
उ०—जाकै सिर हरि की रजा, कजा करैगा कौंन। जनहरीया वसवास विन, दुनिया देखै **सौंन**।—अनुभववांणी

सौंपणौ, सौंपबौ—देखो 'सूंपणौ, सूंपबौ' (रू. भे.)
उ०—१ निगुण गुण मांनै नहीं, कोटि करै जै कोइ। दादू सब कुछ **सौंपियै**, सौ फिर वैरी होइ।—दादूबांणी
उ०—२ घेर नै बाघ नूं पाकड़ियौ। आंण नै रावळजी नूं **सौंपियौ** ताहरां रावळजी कह्यौ। साबास ऊदा।
—उदै उगमणावत री बात
उ०—३ हरीया निस दिन धिन घरी, वार पूरब धिन जांनि। अपनै सांई कारणै, तन मन **सौंपूं** आंनि।—अनुभववांणी
उ०—४ तिसा ही रजपूतवट रा आचार देखनै महाराजा राजेसर अजमेर रै थांणै राखैआ छै। हसम हुकम **सौंपीआ** छै।
—रा. सा. सं.

सौंफ—सं. स्त्री.—१ पाँच छ: फुट ऊँचा पौधा जिसकी पत्तियाँ सोए के के समान ही बारीक और फूल सोए के समान ही कुछ पीले होते हैं। फूल लम्बे सींकों में गुच्छों के रूप में लगते हैं।
२ उक्त पौधे के बीज जो मसाले व औषधि के काम में लिए जाते हैं।
रू. भे.—सूंफ।

सौंलौ—देखो 'संवळौ' (रू. भे.)
उ०—अजरांमर का मारग औंला, **सौंला** संत पिछांणै। वंक नाळि मेर संचरि कै, भंवरगुफा सुख मांणै।—अनुभववांणी

सौंस—देखो 'सूंस' (रू. भे.)
उ०—१ महाराज विच रहमांण, करि **सौंस** छिब्री कुरांण। तदि धरै दिल परतीत, बोलियौ 'अंगजीत'।—सू. प्र.
उ०—२ तेज पुंज आसप आरोगीजै छै। प्यार करनै **सौंस** दै दै नै प्याला दीजै छै।—रा. सा. सं.

सौ—सं. पु—१ शंख. २ शनि. ३ बालक. ४ सूर्य. ५ बुध. ६ भाई. ७ मित्र. ८ जप. ९ अच्छा वाक्य। (एका.)
सं. स्त्री.—१ पृथ्वी, जमीन, धरती। (,,)
२ क्षुधा, भूख। (,,)
३ उपासना आराधना। (,,)
४ सौ की संख्या, १००।
वि.—१ बलवान, पराक्रमी। (एका.)
२ शुद्ध, पवित्र। (,,)
३ सब, समस्त, सम्पूर्ण।
उ०—१ सासू गहणां नै कांई पूछौ, गहणौ औ म्हारो **सौ** परवार।
—लो. गी.
उ०—२ दाळरोटी खाब्या बैठो आंगण **सौ** परवार।—लो. गी.
[सं. शत] ४ निन्नानवें से एक अधिक, पचास का दुगुना।
उ०—चरख्यां चटीट अंगीठ चख, पीठ समोवड़ पाळणां। पाकेट सज्या **सौ** कोस पथ, हेकण चांटी हालणां।—मे. म.
मुहा.—१ सौ ई मरज्यौ पण सौवां नै पूरण वाळौ मत मरज्यौ = आश्रित मिट जाय पर आश्रय-दाता नहीं मिटना चाहिये. २ सौ गुंडा पर एक मूंछ मुंडा = हिंजड़े के साथ कोई क्या बदमाशी करे. ३ सौ गोलां ई घर सूनौ = केवल नौकरों से घर की शोभा नहीं होती। गुलाम गैर जिम्मेदार होते हैं. ४ सौ ज्यूं पचास = असमर्थों

के लिये पचास की संख्या भी सौ के बराबर होती है. ५ सौ दिन चोर रा एक दिन साहूकार रौ=चोर कभी तो पकड़ में आता ही है. ६ सौ नीच नै एक आंख मींच=एक काना सौ बदमाशों से बढ़कर होता है. ७ सौ बरस रौ सिलावटौ नै बारै बरस रौ घर धणी=शिल्पकार को वही करना पड़ता है जो मकान-मालिक कहे, शिल्पकार के अनुभव की मकान-मालिक आगे कोई कीमत नहीं. ८ सौ बातां री एक बात=सार बात, सार वस्तु, सारांश. ९ सौ रांडां भांग नै एक रंडवौ घड़चौ=रंडुवे या विधुर में सौ विधवाओं के गुण होते हैं। अधिक छल-छन्द करने वाले के लिये है. १० सौ रा भाई साठ=देखो 'सौ ज्यूं पचास'. ११ सौ री एक खोवै=नासमझ के लिये है जो अपने कई पूर्वजों की संचित पूंजी व्यर्थ गमाता हो. १२ सौ री बिनती नै एक रौ सोठौ=जहाँ विनय व शराफत से काम न बने तो शक्ति प्रयोग करना चाहिये. १३ सौ सुल्टी नै एक कुल्टी=एक कुटिल कई शरीफों से बढ़कर होता है. १४ सौ सोनार री नै एक लवार री=बलवान की एक ही चोट पर्याप्त होती है. १५ सौ सोगी नै एक दोगी=एक दुश्मन सौ मित्रों के बराबर होता है। दुश्मन कभी छोटा नहीं होता. १६ सौ स्यांणा रौ एक मतौ=समझदारों में मतान्तर नहीं होता, समझदारों का मत एक होता है।

५ देखो 'सो' (रू. भे.)

उ०—१ दुनियां मैं कोई ऐड़ी चीज नीं **सौ** वांरै कोठै नीं मिळै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ मांदां मिनखां नै तौ बतावै **सौ** ई औखद जचै।
—फुलवाड़ी

उ०—३ कुतरां रै कनारै धवळौ **सौ** देखै तौ क्यूं पड़ियौ छै जोयौ। देखै तौ अमल रौ पोतौ छै।—ऊदै उगमणावत री बात

उ०—४ रघुवर **सौ** प्रभू तज कर औयण जै अवरां अमर अभि-यासत। त्रखित सुरसुरी तीरह, खिती कूंप खणत नर मूरख।
—र. ज. प्र

रू. भे.—सउ।

सौक—सं. स्त्री. [सं. सहपत्नी] १ सौत।

उ०—१ सौ अठै ही सेझ री रीत नहीं भूलौ और ग्रीधां सूं कांम लियौ तौ सायत सुरग मैं अपछरां वर ली तौ म्हारै **सौक** होय जायला सौ चाल सीस लै ताकीद सत कर हाजरी मैं जाऊं।
—वी. स. टी.

उ०—२ आ नित दीसै साजना, रीस रखूं की रोळ। साजनिया सालै नहीं, सालै ल्होड़ी **सौक**।—अग्यात

२ एक प्रकार की ध्वनि जो बाण, वायु, विमान अथवा पक्षियों आदि के तीव्र गति से चलने या उड़ने से उत्पन्न होती है, सर-सराहट।

उ०—१ परां **सौक** पक्खरां, धमक वागी धजराजां। अनळपंख उड्डियां, गिळण जांणै गजराजां।—सू प्र.

उ०—२ **सौक** पड़ै सायकां, सेल धमरोळ सतावा। मिळै लोह मारकां, नरिंद हरवळां नबाबां।—सू. प्र.

३ तीव्र गति या रफ्तार।

४ तीव्र गति से भागने की क्रिया।

रू. भे.—सउक, सउकि, सोक।

अल्पा;—सोकड़, सोकड़ली, सोकण, सौकड़, सौकड़ली।

५ देखो 'सौख' (रू. भे.)

सौकड़—देखो 'सौक' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आंगणियै रे ढोला हवद खुणाय, पितकळनै पड़ै रे म्हाजी **सौकड़** वैरण गालती दी रे म्हाराज।—लो. गी.

सौकड़ली—देखो 'सौक' (१) (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आडी रे आडी ढोला भीतड़ली रे चुणाय, निजरां नहीं देखां रे इयै **सौकड़ली** नै मालती रे म्हाराज।—लो. गी.

सौकण—देखो 'सौक' (१) (रू. भे.)

सौरकड़ौ—स. पु.—१ बन्दूकों का वह समूह जो प्राचीन काल में घोड़ा-गाड़ी या ऊंटगाड़ी के पिछले हिस्से में कसा जाकर काम में लिया जाता था।

उ०—१ **सौकरड़ा** भड़ तणा सह्या, नरी सही गगनाळ। बीजड़ झड़ सह बंस पर, आंण न दी अवगळा।—अग्यात

उ०—२ अनै **सौकरड़ां** रा सिंधु मैं सोकरड़ा री गाडिया हौवै है वां गाडियां रा सिंधु दरियान मैं पवन ज्यूं पूगौ।—वी. स. टी.

वि. वि.—प्राचीन समय में आधुनिक मशीनगनों की जगह प्रयोग होने वाला लगभग सौ डेढ सौ बन्दूकों का समूह जो घोड़ागाड़ी, ऊँटगाड़ी और बैलगाड़ी के पिछले भाग में फिट कसा रहता था। युद्ध में इन गाड़ियों को तीव्रगति से दौड़ाते हुए शत्रु सेना के बिलकुल समीप ले जाकर गाड़ियों को वापिस उल्टा घुमाकर शत्रु सेना को बन्दूकों की मार में लेकर बन्दूकों को पलीता लगा देते थे। इससे गाड़ी पर कसी बन्दूकें एक साथ मशीनगन की तरह गोलियों की बौछार करने लगती। युद्ध-स्थल में इस प्रकार की बन्दूकें कसी गाड़ियों के समूह एक के बाद एक क्रमशः आते रहते थे। सभी बन्दूकों की नालों का मुँह पीछे की तरफ होता था।

२ देखो 'सौक' (२) (मह; रू. भे.)

रू. भे.—सोकरड़ौ।

सौकरतीरथ—सं. पु. [सं. सौकरतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ स्थान।

सौकलटी—सं. स्त्री.—१ स्त्री के सिर के वे बाल जो आगे लट के रूप में निकले रहते हैं। (अशुभ)

वि. वि.—समाज में ऐसी धारणा है कि इस प्रकार की लट वाली औरत को सौत का मुँह देखना पड़ता है।

सौकातिसार—देखो 'सोकातिसार' (रू. भे.)

सौकिया—क्रि. वि.—१ शौक की प्रवृत्ति के वश होकर कार्य करने

वाला ।
२ दिल बहलाव या मनोरंजनार्थ किये गये कार्य ।
सौकीन—देखो 'सौखीन' (रू. भे.)
उ०—माफ कराई जौ म्हूं थोड़ौ **सौकीन** तबीयत रौ आदमी हूं । इण वास्तै म्हारै साथै इण नसा री गैळ चढघोड़ी ही ।
—अमरचूंनड़ी
सौकीनी—देखो 'सौखीनी' (रू. भे.)
सौकूतरौ, सौकूतौ—देखो 'साकूतरौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सौकूतरी)
सौख-सं. पु. [अ. शौक] १ किसी पदार्थ की प्राप्ति या निरन्तर भोग के लिए अथवा कोई कार्य करते रहने के लिए होने वाली तीव्र लालसा ।
उ०—पेख सिव नौख रिम सीस चाढै पौहप, ओख खत्रवाट कुळवट अराधौ । **सौख** मांगै जसी रमै रांमत सरात्र, जौख मांगै असी रायजाधौ ।—बहादरसिंघ रौ गीत
क्रि. प्र.—करणौ, राखणौ, होणौ ।
२ आकांक्षा, लालसा ।
३ व्यसन, चसका, चाट ।
४ प्रवृत्ति, झुकाव ।
५ देखो 'सौक' (रू. भे.)
उ०—विवांणां परां ता चलां **सौख** वागी, लखै हूर रंभा वहै वादि लागी ।—सू. प्र.
रू. भे.—सोक, सोख, सौक ।
सौखी—१ देखो 'सोखी' (रू. भे.)
२ देखो 'सौखीन' (रू. भे.)
सौखीन-वि. [अ. शौकीन] वह व्यक्ति जिसे किसी बात का बहुत शौक हो, चाव रखने वाला ।
२ वह व्यक्ति जो सदा बना-ठना रहता हो, सदा बना-ठना रहने वाला ।
३ ऐय्याश, तमाशबीन, रंडीबाज ।
रू. भे.—सोकीन, सोखीन ।
सौखीनाई-सं. स्त्री.—१ शौकीन होने का भाव या अवस्था ।
२ रंडीबाजी, तमाशबीन, ऐय्याशी ।
रू. भे.—सोखीनाई ।
सौखीनी—१ देखो 'सौखीनाई' (रू. भे.)
२ देखो 'सौखीन' (रू. भे.)
३ देखो 'सोखी' (रू. भे.)
सौगंद, सौगंध—देखो 'सोगंध' (रू. भे.)
सौगंधिक-सं. पु. [सं.] कुबेर का एक वन जिसकी सुगंध के साथ पवन कुबेर सभा में कुबेर की सेवा करता है ।
सौगंधिकवन-सं. पु. यौ. [सं.] एक प्राचीन तीर्थ जहाँ ब्रह्मादि-देवता, सिद्ध, मुनि, नाग, गंधर्व, किन्नर आदि निवास करते हैं ।
सौगंधिका-सं. स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नदी जो कुबेर नगरी में बहती है ।
सौगत-सं. पु. [सं.] धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।
सौगन—देखो 'सोगंध' (रू. भे.)
उ०—१ थांनै आंख्यां री **सौगन** धकै अेक पावंडौ ई बधियौ तौ । नदी रौ ठाडौ पांणी पीवौ, धमेक बिसाई खावौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ म्हैं तौ भायजी री **सौगन** पोहरै चढचां पछै अबै घरै आयौ हूं ।—फुलवाड़ी
सौगात-सं. स्त्री. [तु.] उपहार के रूप में व्यक्ति विशेष को दी जाने वाली स्थानीय उपज की कोई वस्तु या चीज ।
रू. भे.—सोखायत ।
सौगाळौ-सं. पु. [सं. शोक+आलुच्] एक रश्म विशेष जिसमें मृतक के परिवार वालों को उनके सगे-संबंधियों द्वारा मद्यपान आदि करवा कर शोक-भंजन कराया जाता है । (मेवाड़)
सौड़—देखो 'सोड़' (रू. भे.)
सौच-सं. पु. [सं. शौच] १ शरीर की शुचिता के लिये सवेरे सो कर उठते ही किया जाने वाला कृत्य ।
२ शुचिता, शुद्धता ।
३ टट्टी जाना, मल त्यागना ।
४ देखो 'सोच' (रू. भे.)
सौण—१ देखो 'सुगन' (रू. भे.)
२ देखो 'सोणित' (रू. भे.)
सौणी—१ देखो 'सुगनी' (रू. भे.)
२ देखो 'सोणित' (रू. भे.)
सौत-सं. स्त्री. [सं. सपत्नी] किसी स्त्री के प्रेमी या पति की दूसरी प्रेमिका, सपत्नी ।
सौति-सं. पु. [सं.] उग्रश्रवा ऋषि का एक नाम ।
सौतेलौ-वि. (स्त्री. सौतेली) सपत्नी का, सौत का ।
स. पु.—विमाता का पुत्र ।
सौदरा—१ देखो 'सुभद्रा' (रू. भे.)
२ देखो 'सोदरा' (रू. भे.)
सौदांमणी, सौदांमनी, सौदांमिणी-सं. स्त्री. [सं. सौदामनी] १ विद्युत, बिजली । (ह. नां. मा.)
उ०—अर उच्छाह रै अनुसार भाला नूं भमाय **सौदांमिणी** रा सा सळाव देता अति ही समीप आय अड़िया ।—वं भा.
२ कश्यप ऋषि की एक पुत्री ।
३ एक अप्सरा का नाम ।
सौदागर-सं. पु. [फा.] १ व्यापारी, व्यवसायी ।
उ०—१ बीकमपुर रा पिण आदमी तेडण आया । सु **सौदागर** मांडणसर बीकांनेर सूं कोस १२ तठै आयौ । कह्यौ अठै मोनू आप

नै तेड़ जासी पिण मारग जाय सूं ।—राजा उदैसिंघ री बात

उ०—२ सौदा एक सकल तन भीतरि, विगणै विरळा भाई जनहरिरांम मिळै **सौदागर**, सौदै साट मिलाई ।—अनुभववांणी

२ घोड़ों का व्यापारी ।

रू. भे.—सोदागर ।

सौदागरी–सं. स्त्री. [फा.] १ व्यापार का कार्य, रोजगार, व्यवसाय ।

२ सौदागर का कार्य ।

सौदास–सं. पु.—१ कौसल के राजा सुदास के पुत्र तथा ऋतुपर्ण के पौत्र का नाम ।

२ च्यवन के पुत्र सुदास के पुत्र का नाम ।

सौदौ–सं. पु. [अ. सौदा] १ क्रय-विक्रय का सामान, माल ।

उ०—गरु धलाली बाहिरौ, सिवरन **सौदौ** लेह । हरीया भाव'र भगति कौ, भाजै नांहि संनेह ।—अनुभववांणी

क्रि. प्र.—लाणौ मंगाणौ, खरीदणौ ।

२ लेन-देन की बात-चीत, व्यवहार, व्यवसाय, व्यापार ।

उ०—१ जीव गयौ दहवाट, कारिज कौ सरीयौ नहीं । जनहरीया हरि हाट, सुक्रिथ **सौदा** नां कीया ।—अनुभववांणी

उ०—२ कालै अेक **सौदा** मैं खासौ नफौ रैग्यौ हौ । सेठ राजी हा ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मैंहघा मौल दियै मेघाउत, लियै अपार नफौ जसलाह । आडाबळै मोतियां असड़ौ, **सौदौ** करै बळापति साह ।

—महाराजा छतरसिंह रौ गीत

क्रि. प्र.—बैठणौ, करणौ, व्हैणौ ।

३ शरीर की एक धातु ।

४ मस्तिष्क-विकार, पागलपन ।

५ प्रेम, इश्क ।

६ वस्तु-विनिमय ।

७ पशुओं का क्रय-विक्रय, आदान-प्रदान, सट्टा ।

८ कार्य ।

वि.—१ चालाक, धूर्त ।

रू. भे.—सोदौ ।

सौध–सं. पु.—१ भवन, महल, अट्टालिका । (अ. मा.)

उ०—अटै सोध अवरोध अचांणक, बोध मोद बिसराए प्रांणनाथ हा नाथ जोधपुर, गौख **सौध** गणणाए ।—ऊ. का.

रू. भे.—सोध ।

सौधरमइंद्र–सं. पु. [सं. सौधर्मइन्द्र] वह इन्द्र जिसने भगवान महावीर के विश्वकल्याणकारी उपदेश के लिए उपदेशशाला-समवशरण अपने कोषाध्यक्ष कुबेर को आदेश देकर बनवाया था ।

सौधन्वा–सं. पु. [सं.] सुधन्वा के पुत्र ऋभु का एक नाम ।

सौनंद, सौनंद–सं. पु. [सं.] १ बलराम का एक नाम विशेष, जो मूषल रखने के कारण पड़ा ।

२ बलराम का मूसल ।

सौनइयौ – देखो 'सोनइयौ' (रू. भे.)

उ०—त्रणसै कोडि अठयासी कोडि असी लाख उपर वलि जोडि । इतरा **सौनइया नौ** मांन, दै सहु अरिहंत वरसीदांन ।—ध. व. ग्रं.

सौनक–सं. पु. [सं. शौनक] भृगुवंशी शुनक ऋषि के पुत्र एक प्रसिद्ध वैदिक आचार्य ऋषि ।

सौनचिड़ी–सं. स्त्री.—१ वह नटी जो कलाबाजियाँ दिखाने में अत्यधिक निपुण हो । (मा. म.)

२ देखो 'सोनचिड़ी' (रू. भे.)

सौनहरी, सौनेरी–सं. पु.—१ सिंह की एक जाति व इस जाति का सिंह । (अ. मा.)

उ०—तहां **सौनहरी**-पटैत विकराळ रूप बाघ भभकार उठै रोस का रूप जांणि जमराज रूठै ।— सू. प्र.

२ देखो 'सोनेरी' (रू. भे.)

सौपरण–सं. पु. [सं. सौपर्ण] विष्णु के वाहन गरुड़ के अस्त्र का नाम ।

सौपाक–सं. पु.—एक प्राचीन वर्णसंकर जाति ।

सौबत—१ देखो 'सोहबत' (रू. भे.)

२ देखो 'सोबत' (रू. भे.)

सौबल्य–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन जनपद का नाम ।

सौबायत, सौबाहौ—देखो 'सूबेदार' ।

उ०—'अखई' माधौदास रौ, तिण वेळा तुड़तांण । यूं **सौबाहां** ऊठियौ, साहां गंजण मांण ।—रा. रू.

सौभ–सं. स्त्री.—१ एक काल्पनिक नगरी का नाम जो आकाश में स्थित मानी जाती है, राजा हरिश्चन्द्र की नगरी ।

२ शाल्वों का एक नगर ।

सौभद्र–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन तीर्थ ।

सौभाग—देखो 'सौभाग्य' (रू. भे)

उ०—१ स्रलोकां धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माढ रै राग **सौभाग** गावै ।—मे. म.

उ०—२ आतल नै पिण औहटै, वलि संबाहै काठी वाग कि । तारै आपणपौ तिकौ, सहु मांहै पांमै **सौभाग** कि ।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ गुण रा जांण ग्यांन रा गौरख, तप रा भांण मांण रा त्याग । वित रा पांण 'हणू' रा वरसै, सत रा ढांण धणौ **सौभाग** ।—आईदांन पाल्हावत

उ०—४ कांम बखतेस चै भांजतै कूरमां, प्रथी मां वाह **सौभाग** पायौ । वाहि विहाड़ि वधि पूरिजळ चाडिवंस, अभिनवौ करमसी कुसळ आयौ ।—कीरतदांन बारहठ

सौभागण, सौभागणी, सौभागिणी—देखो 'सौभाग्यवती' ।

सौभागिनेय–सं. पु. [सं.] उस स्त्री का पुत्र जो अपने पति को प्रिय हो ।

सौभागियौ—देखो 'सोभागियौ' (रू. भे.)

उ०—भाटा थूंज **सौभागियौ**, पिछौळा री टग्ग । गुल हंजा पांणी भरै, ऊपर दै दै पग्ग ।—अग्यात

सौभाग्य–सं. पु.—१ अच्छा भाग्य, अच्छी किस्मत ।
२ यश, कीर्ति ।
३ शुभत्व, कल्याणत्व ।
४ मनोहरता, सुन्दरता ।
५ धन, सम्पत्ति, वैभव ।
६ स्त्री के सधवा रहने की अवस्था, सुहाग, सौभाग्यपन ।
७ शुभ-सन्देश, मंगल-कामना ।
८ ज्योतिष के २७ योगों में से चतुर्थ योग का नाम । (ज्योतिष)
९ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में एक लघु वर्ण सहित नगण, रगण और यगण आता है । (ल. पिं)
रू. भे.—सभाग, सोभाग, सौभाग ।

सौभाग्यतीज, सौभाग्यत्रतीया–सं. स्त्री. [सं. सौभाग्यतृतीया] भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया जो अति उत्तम मानी जाती है ।

सौभाग्यवती–सं. स्त्री.—१ सधवा या सुहागिन स्त्री ।
२ सुंदर स्त्री ।
वि.—१ अच्छे किस्मत वाली ।
२ शुभ लक्षणों वाली ।
रू. भे.—सुहागवती, सोभागण, सोभागणी, सोहागण, सोहागणी, सोहागवती, सोहागिणी ।

सौभाग्यवांन–वि.—१ खुशकिस्मत, अच्छे भाग्यवाला ।
२ वैभवशाली, सम्पन्न ।

सौभाग्यव्रत–सं. पु. [सं.] फाल्गुन शुक्ला तृतीया को किया जाने वाला व्रत ।

सौभाग्यसूंठी–सं. स्त्री.—सूतिका रोग के लिए बहुत उपकारी माना जाने वाला एक आयुर्वेदिक पाक ।

सौमंत्रेय–सं. पु.—१ लक्ष्मण । (नां. मा.)
२ शत्रुघ्न ।

सौमन–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन अस्त्र ।

सौमनस–सं. पु. [सं.] १ पश्चिम दिशा का दिग्गज । (पौराणिक)
२ उदयगिरी पर्वत के एक शिखर का नाम । (पौराणिक)

सौमनसा–सं. स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नदी । (रामा.)

सौमनस्य–सं. पु. [सं.] १ आनन्द, खुशी ।
२ पारस्परिक सद्भाव ।
३ श्राद्ध में पुरोहित के हाथ में फूल देने का कार्य ।

सौमित्रा—देखो 'सुमित्रा' (रू. भे.)

सौम्य–वि.—१ शांत, गंभीर ।
२ नम्र, कोमल ।
३ ठंडा, शीतल, स्निग्ध ।
४ स्वच्छ, निर्मल ।
५ सुंदर, मनोहर ।
६ प्रसन्न, खुश ।
७ उज्ज्वल, चमकीला ।
८ चन्द्रमा संबंधी ।
९ शुभ, मंगलमय ।
सं. पु.—१ पुराणानुसार एक द्वीप का नाम ।
२ चन्द्रमा का पुत्र बुध ।
३ साठ संवत्सरों में से एक ।
४ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक ।
५ वार व नक्षत्र संबंधी बनने वाले २८ योगों में से पांचवां योग ।

सौम्यगिरि–सं. पु.—एक प्राचीन पर्वत ।

सौम्या–सं. स्त्री.—दुर्गा ।

सौयंबर—देखो 'स्वयंबर' (रू. भे.)

सौय—देखो 'सोय' (रू. भे.)

सौरंभ—देखो 'सौरभ' (रू. भे.)
उ०—१ सुगंधाकरं सुंदरं फूल सोहै, महाथंभ **सौरंभ** सिभू विमोहै । —रा. रू.
उ०—२ मुकट परखि मुख तांम रूप किर कांम पलट्टं । अंगराग आरंभ परम **सौरंभ** प्रगट्टं ।—रा. रू.

सौरंभचर—देखो 'सौरभचर' (रू. भे.) (नां. मा.)

सौरंभमूळ—देखो 'सौरभमूळ' (रू. भे.)

सौरंम—देखो 'सौरभ' (रू. भे.)
उ०—तांम छोळां घ्रत तणी, वर्ण ऊपरां वहौतरि । छकै मसालां डमर, तकै **सौरंमां** अम्मरि ।—सू. प्र.

सौर–सं. पु. [सं.] १ सूर्य का पुत्र, शनि ।
२ यमराज ।
३ दाहिनी आंख ।
४ तुंबरु ।
वि.—१ सूर्य का, सूर्य संबंधी ।
२ सूर्य से उत्पन्न ।
३ देखो 'सोर' (रू. भे.)
उ०—बहै सेल दूधारा चौधारा धारा रुद्र बहै, उडै सीस केवाणां निराळा हुवै अंग । काळा **सौर** ऊछळै कराळ भाळ दहूं कांनी, जोधपुरां आंमेरां मंडांणौ महाजंग ।—बखतसिंध रौ गीत

सौरकौ—देखो 'सोरकौ' (रू. भे.)
उ०—राजा री खीभ रा डर सूं उणरौ जीव तौ **सौरकां** चढण लागौ । अबै करै तौ कांई करै —फुलवाड़ी

सौरत—देखो 'सौहरत' (रू. भे.)

सौरभ–सं. स्त्री. [सं.] १ सुगन्ध, खुशबू, महक ।

उ०—पळकै ही आभा चंदै ज्यूं, मटकै ही नैण लाज री ज्यूं। सांसां मैं **सौरभ** सांमेड़ी, होठां मैं हास राज हौ ज्यूं।—सकुंतळा
२ केसर।
३ सुरभि, गाय।
४ तुंबरु।
५ धनिया।
६ बोल नामक गंध-द्रव्य।
७ आम।
रू. भे.—सोरंभ, सोरंभी, सौरंभ, सौरम।

सौरभचर-सं. पु. [सं.] भौंरा, भ्रमर।
रू. भे.—सोरंभचर, सौरंभचर।

सौरभमूळ-सं. पु. [सं. सौरभ+मूल] चंदन।
रू. भे.—सोरंभमूळ, सौरंभमूल।

सौरभेई-सं. स्त्री. [स. सौरभेयी] गाय। (ह. नां. मा.)

सौरभेय-सं. पु. [सं. सौरभेय] बैल। (डि. नां. मा; ह. नां. मा.)
रू. भे.—सोरभेय।

सौरभेयी-सं. स्त्री. [सं.] एक अप्सरा का नाम।

सौरम—देखो 'सौरभ' (रू. भे.)
उ०—१ किरियौ तौ **सौरम** रा चार सरड़ाटा खांचिया अर मस्त व्हैगौ। मस्ताई मै मंडोवर रा बगीचा री सोय मैं **सौरम** रै समचै आपरी घांटी बधावण लागौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ वौ नैंना टाबर री गळाई खोळा मैं पसरग्यौ अर आंख्यां मींचनै उण **सौरम** रौ अणछक आणद लूटण लागौ।
—अमरचूंनड़ी

सौरमास-सं. पु.—सूर्य के किसी एक राशि में रहने में रहने तक माना जाने वाला महीना, एक सूर्य संक्रान्ति से दूसरी सूर्य संक्रान्ति तक का समय।

सौरसेन-सं. पु. [सं. शौरसेन] १ वर्तमान ब्रजमण्डल का प्राचीन नाम।
२ उक्त जनपद के निवासी।

सौरसेनी-सं. स्त्री. [सं. शौरसेनी] शौरसेन प्रदेश में बोली जाने वाली एक प्राचीन भाषा का नाम, सौरसेनी अपभ्रंश।

सौरसेय-सं. पु. [सं.] स्वामिकार्त्तिकेय का एक नाम।

सौरास्ट्र-सं. पु. [सं. सौराष्ट्र] राजस्थान के दक्षिण पश्चिम में स्थित गुजरात, काठियावाड़ का एक प्राचीन नाम।
रू. भे.—सोरट, सोरठ।

सौरि-सं. पु. [स. शौरि] १ विष्णु।
२ वसुदेव।
३ कृष्ण।
४ बलदेव।
३ शनिश्चर ग्रह।

सौरी-सं. स्त्री. [सं.] राजा कुरु की माता का एक नाम।

सौ'रौ, सौरौ—१ देखो 'सोरौ' (रू. भे.)
उ०—१ ज्यूं त्यूं करनै बीस बरस तौ **सौरा** दौरा काढ सकूं।
—फुलवाड़ी
उ०—२ जबाब दियौ—माड पंचायती करणी **सौरौ** कांम नीं है। थांरी समझ व्है तौ थैं ई करौ।—फुलवाड़ी
(स्त्री. सौरी)
२ देखो 'सुसरौ'।

सौरच-सं. पु. [स. शौर्य] १ वीरता, साहस।
२ पराक्रम, पौरुष।
३ शक्ति, बल।

सौळ—देखो 'सोलह' (रू. भे.)

सौवस्तिक-सं. पु. [सं.] जैनियों के ८८ ग्रहों में से ५९ वां ग्रह।

सौवीर-सं. पु.—सिंधु नदी के आस-पास स्थित एक प्राचीन प्रदेश का नाम अथवा इस प्रदेश का निवासी।
रू. भे.—सुवीर।

सौस—देखो 'सूंस' (रू. भे.)
उ०—पण भागणी, तैं सूरज रौ **सौस** खाधौ हंतौ तौ परमेस्वर पर दाद नहीं पावै।
—नाहरी हरणी धरमै कै बाबत सांवतसी री बात

सौसनी—देखो 'सोसनी'।

सौह—देखो 'सोह' (रू. भे.)
उ०—१ **सौह** चढावण तेरह साखां, 'लखौ' 'प्राग' तण ओडण लाखां।—रा. रू.
उ०—२ आवै दाव कळहण दुनियांन **सौह** ऊचरै, बडी धर राव रूकां विभाड़ी। उधारी राड़ि रजपूत आंबेरि धरि, पहाड़ी कामां लै भोग पाड़ी।—रावराजा फतैसिंघ नरूका रौ गीत

सौहगी—देखो 'सुहागौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—हरिरांम हम रांम का, रांम हमारा यार। ज्यूं **सोनौ** अर **सौहगी**, मिळग्या तारौतार।—अनुभववांणी

सौहड़—देखो 'सुभट' (रू. भे.)
उ०—आसत खग लियां करामत ईजत, **सौहड़ां** चेळा लियां समाथ। आठौ पौहर जरद ऊपावै, नाथ नवां जिम गोपीनाथ।
—गोपीनाथ रौ गीत

सौहतौ—देखो 'सोहितौ' (रू. भे.)

सौहरत-सं. पु.—१ प्रसिद्धि, ख्याति।
२ कीर्ति, यश।
रू. भे—सौरत।

सौहागण—देखो 'सुहागण' (रू. भे.)
उ०—तद **सौहागण** बोली कथा मांहे कांही ओगण है धरम री

वात है ।—गांव रा धरणी री वात

स्कंद–सं. पु. [सं. स्कंदः] १ स्वामिकार्तिकेय का नाम ।
२ शिव, महादेव ।
३ राजा, नृप ।
४ विद्वान, पण्डित ।
५ शरीर ।
६ बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक ।
वि. वि.—उक्त नौ ग्रहों के नाम इस प्रकार हैं—स्कन्द, स्कन्दापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, अन्धपूतना, शीतपूतना, मुखमण्डिका और नैगमेष ।
रू. भे.—सकंद ।

स्कंदछट, स्कंदछटी, स्कंदछठ, स्कंदछठी—देखो 'स्कंदसस्टी' (रू. भे.)

स्कंदजणणी, स्कंदजननी–सं. स्त्री. [सं स्कंदजननी] स्कन्द की माता, पार्वती ।

स्कंदजित, स्कंदजीत–सं. पु. [सं. स्कंदजित्] विष्णु ।

स्कंदधर–सं. पु. [सं.] भगवान् विष्णु का नाम ।

स्कंदपुरांण–सं. पु. [सं. स्कंदपुराण] अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम ।

स्कंदमात, स्कंदमातरी स्कंदमाता, स्कंदमात्री–सं. स्त्री. [सं. स्कंदमातृ] १ स्वामिकार्त्तिकेय की माता, पार्वती ।
२ नवदुर्गाओं में से एक दुर्गा ।
रू. भे—सकंदमात, सकंदमाता, स्कंदमात, स्कंदमातरी, स्कंदमाता, स्कंदमात्री, स्कंधमात, स्कंधमाता, स्कधमात्री ।

स्कंदससटी, स्कंदसस्टी, स्कंदसस्ठी–सं. स्त्री. [सं. स्कन्दषष्ठी] १ चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी, इस दिन स्वामिकार्त्तिकेय देवसेनापति पद पर आसीन हुए थे ।
२ स्कंद की भार्य्या एक देवी का नाम । (तांत्रिक)
रू. भे.—स्कंदछट, स्कंदछटी, स्कंदछठ, स्कंदछठी ।

स्कंदापसमार, स्कंदापस्मार–सं. पु. [सं. स्कंदापस्मार] बालकों के प्राणघातक नौ ग्रहों या रोगों में से एक ।

स्कंध–सं. पु. [सं. स्कन्धः] १ कन्धा ।
२ शरीर, बदन ।
३ तना ।
४ नृप, राजा ।
५ नारियल ।
६ शाखा, डाल ।
७ आर्या छन्द का एक भेद ।
८ मूर्छित राम-लक्ष्मण की रक्षा करने वाला वानर ।
९ एक नाग ।

स्कंधकवच–सं. पु. [सं.] कवच का वह भाग जो कंधे पर धारण किया जाता है ।

स्कंधतर, स्कंधतरु–सं. पु. [सं. स्कन्धः+तरुः] नारियल का पेड़ ।

स्कंधतरांण, स्कंधत्रांण–सं. पु. [सं. स्कन्धत्राण] कन्धे पर धारण किया जाने वाला एक प्रकार का कवच विशेष ।

स्कंधफळ, स्कंधफल–सं. पु. [सं. स्कन्ध+फलः] १ नारियल का पेड़ या नारियल ।
२ विल्ववृक्ष ।

स्कंधमरण, स्कंधमरिण, स्कंधमरणी–सं. पु [सं. स्कन्धमणि] एक प्रकार का मंत्र या ताबीज ।
रू. भे.—स्कंधमिरण, स्कंधमिरिण, स्कंधमिरणी ।

स्कंधमात, स्कंधमाता, स्कंधमात्री—देखो 'स्कंदमात' (रू. भे.)

स्कंधमिरण, स्कंधमिरिण, स्कंधमिरणी—देखो 'स्कंधमरण' (रू. भे.)

स्कंधाक्ख, स्कंधाक्ष, स्कंधाख–सं. पु. [सं. स्कंधाक्ष] देवताओं के एक गण का नाम ।

स्कंधावार–सं. पु. [सं. स्कंधावार] १ सेना, फौज ।
२ सेना का पड़ाव ।
३ शिविर ।
रू. भे.—सकंदवार, सकंदावार, सकंधवार, सकंधावार ।

स्काउट–स. पु. [अं.] बालचर ।

स्काउटिंग–सं. स्त्री. [अं.] बालचर का कार्य, अवस्था या भाव ।

स्कूल–सं. स्त्री. [अं.] १ पाठशाला, विद्यालय ।
उ०—पण औ सगळी बातां मन मैं सोचतौ ई रह जावतौ अर कदै **स्कूल** अर कदै कालेज अर उण री ढेर सारी पोथ्यां, उणां नैं पढावण नैं झांझरकै ई प्रोफेसर आ धमकतौ ।—तिरसंकू
२ विद्यालय की इमारत, भवन ।
रू. भे.—सकूल ।

स्खलन–सं. स्त्री. [सं स्खलनं] १ चुवन, रिसन, टपकन ।
२ रगड़न ।
३ भूल-चूक ।

स्खलित–वि. [सं.] १ चुआ हुआ, टपका हुआ ।
२ गिरा हुआ ।

स्टांप–सं. पु. [अं.] १ डाक का टिकट ।
२ मोहर ।
३ एक प्रकार का सरकारी कागज जो भिन्न२ मूल्यों के होते हैं । इस पर किसी प्रकार की पक्की (अपरिवर्तनीय) लिखा-पढी की जाती है ।

स्टाप, स्टाफ–सं. पु. [अं. स्टाफ] किसी कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारी ।

स्टीयरिंग, स्टीरिंग, स्टेयरिंग, स्टेरिंग–सं. पु. [अं.] कार, जीप, ट्रेक्टर, ट्रक आदि को नियंत्रित करने का यंत्र ।
उ०—जीप त्यार खड़ी है । बै ग्रू खुद **स्टीयरिंग** सम्हाळयां बैठयौ है । दूजी कांनी लीना है अर बीच मैं मनैं बैठांण्यौ है ।—तिरसंकू

स्टेसरण, स्टेसन—देखो 'टेसरण' (रू. भे.)

स्टैंड–सं. पु. [अं.] १ पड़ाव, रुकाव।
२ अड्डा।
३ गाड़ियों के रुकने का स्थान।
४ सहारा।
५ स्थाम।
उ०—बैंजू रै कनैं बारा बोर री दुरबीरण लाग्योड़ी दुनाळी भारी बंदूक अर लीना कनै हलकी अमरीकी गन जीं नैं जीप माथै लाग्योड़ै **स्टैंड** माथै राखनै निसांनौ बांध्यौ जा सकै है।—तिरसंकू

स्टोव–सं. पु. [अं.] एक प्रकार का आधुनिक चूल्हा जो टंकी में भरे तेल आदि से गर्म होकर (जल कर) ताप उत्पन्न करता है।

स्तंब–सं. पु. [सं.] १ भुट्टा, बाल।
२ झाड़ी।
३ गुच्छा।
४ स्वरोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

स्तंबतररण, स्तंबत्ररण, स्तंबत्रिरण–सं. पु. [सं. स्तंब+तृरण] घास, झाड़ी।

स्तंबवन–सं. पु. [सं.] १ खुर्पी।
२ हंसिया।

स्तंभ–सं. पु. [सं. स्तम्भः] १ खम्भा।
२ मूर्खता।
३ रोग आदि के काररण होने वाली मूर्च्छा।
४ गतिहीनता।
५ सुन्नता, संज्ञाहीनता।
६ तना।
७ प्रतिबन्ध, रुकावट।
८ साहित्य दर्पण के अनुसार एक प्रकार का सात्विक भाव।
९ स्वरोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक सप्तर्षि का नाम।

स्तंभक–वि. [सं.] १ रोकने वाला, स्तंभन करने वाला।
२ सम्भोग करते समय वीर्य को स्खलित होने से कुछ समय तक रोके रखने वाला।

स्तंभकी–सं. स्त्री. [सं. स्तंभकिन्] एक देवी।

स्तंभरण–सं. पु. [सं. स्तम्भनं] १ रुकावट, अवरोध।
२ कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
३ वीर्यपात रोकने वाली दवा।
४ सम्भोग आदि के समय वीर्य को स्खलित होने से रोकने की क्रिया, अवस्था या भाव।
५ देखो 'थंभरण'।

स्तंभेसतीरथ–सं. पु. [सं. स्तंभेशतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जिसमें सौरभेयी नामक अप्सरा शाप वश ग्राह रूप में रहती थी। इसका उद्धार पांडुनंदन अर्जुन ने किया था।

स्तंभेस, स्तंभेसवर, स्तंभेसुर, स्तंभेस्वर–सं. पु. [सं. स्तंभेश्वर] एक शिवलिंग का नाम जो विश्वकर्मा द्वारा प्रस्तुत व स्कंद द्वारा स्थापित किया गया था।

स्तन–सं. पु. [सं. स्तनः] १ किसी स्त्री के उरोज, चूंची।
उ०—एजु रुखमरणीजी कै कठिन स्तन छै सु करि कहतां हस्ती तिरण का कपोल करि वरणया छै। नवी वेस का कवि कहै छै। वांरणी करि रूड़ा वखांरणी। **स्तनां** उपरि स्यांमता सोमै छै। सु जांरणै जोवन का दांरण दिखाळिया छै।—वेलि टी.
२ मादा पशु या जानवरों के थन।

स्तनधय–सं. पु [सं. स्तनधयः] बालक, शिशु। (ह. नां. मा.)

स्तनांतर–सं. पु. [सं.] १ हृदय, दिल।
२ एक प्रकार का सामुद्रिक चिन्ह विशेष जो स्त्रियों के स्तन पर होता है एवं वैधव्य का सूचक माना जाता है।

स्तब्ध–वि. [सं.] १ गतिहीन, गतिरहित।
२ सुन्न।
३ सुस्त।

स्तब्धता–सं. स्त्री. [सं.] स्तब्ध होने की अवस्था, दशा या हालत।

स्तव, स्तवरण, स्तवन–सं. पु. [सं. स्तवः, स्तवनम्] १ स्तोत्र, स्तव।
२ प्रशंसा, स्तुति, गुरणगान।
उ०—गुरु सांथइ रे चैत्य प्रवाडि करइ खरी, देवइ वांदइ रे सक्र **स्तव** पांचै करी। उपासिइ रे आवी इरिया पडी कमी, आगमरणउ रे आलोयइ नीचउ नमी।—स. कु.
रू. भे.—सतवन।

स्तुति, स्तुती–सं. स्त्री. [सं. स्तुतिः] १ प्रशंसा, तारीफ।
उ०—निज रोस रु द्वेस सैं कांम नहीं, उर हांम आरांम हरांम नहीं। गरबै **स्तुति** निंद समांन गिनै, हरवै न बनै नहिं विंद हनै।—ऊ. का.
२ विरुदावली।
३ ठकुरसुहाती, चापलुसी।
४ देवी-देवताओं के गुणों का आदर भाव से पाठन करने की क्रिया या भाव।
५ देवी का एक नाम।
सं. पु.—६ शिव का एक नाम।
रू. भे.—सतुति, सतूति, सतूती।

स्तुभ–सं. पु. [सं.] भानु नामक अग्नि के छः पुत्रों में से एक।

स्तोक–वि. [सं. स्तोक] १ तनिक, थोड़ा। (अ. मा.)
२ ह्रस्व, लघु।
३ कुछ।
४ निम्न।

स्तोतर, स्तोत्र–सं. स्त्री. [सं. स्तोत्र] १ प्रशंसा, तारीफ।
२ विरुदावली।

स्तोम–सं. पु. [सं. स्तोमः] १ यज्ञ, हवन, होम।
२ संग्रह।
३ विरुदावली, प्रशंसा।
४ धन, दौलत।
रू. भे.—सतोम, सांतोम, सांतोमि।

स्त्रसतर, स्त्रसत्र, स्त्रस्तर, स्त्रस्त्र–सं. पु. [सं. तृण+सस्तर] तृण शय्या।

स्त्रींद्रिय, स्त्रींद्री–सं. स्त्री. [सं. स्त्रींद्रिय] भग, योनि।

स्त्री–सं. स्त्री. [सं.] १ नारी, औरत। (डिं. को.)
२ पत्नी, जोरू।
३ व्याकरण में स्त्रीलिंग का संक्षिप्त रूप।
४ मादा जन्तु या प्राणी।
रू. भे.—अस्तरी, अस्तरी, अस्त्रिय, अस्त्री, अस्त्रीय।

स्त्रीकरण–सं. पु. [सं.] सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीकांम–सं. स्त्री. [सं. स्त्री+काम] १ मैथुन हेतु अभिलाषी।
२ भार्या प्राप्ति की कामना।

स्त्रीगमण, स्त्रीगमन–सं. पु. [सं. स्त्रीगमन] स्त्री से सम्भोग करने की क्रिया, मैथुन।

स्त्रीग्रह–सं. पु.—ज्योतिष के अनुसार बुध, चन्द्र और शुक्र ग्रह जो स्त्री जाति के माने जाते हैं। (ज्योतिष)

स्त्रीचिन, स्त्रीचिह्न–सं पु. [सं. स्त्रीचिह्न] १ स्त्री जाति के लक्षण।
२ भग, योनि।

स्त्रीधन–सं. पु.— स्त्रियों के छः प्रकार के वे धन जिन पर उनका पूर्ण अधिकार हो।

स्त्रीधरम–सं पु. [सं. स्त्रीधर्म] १ पत्नी या स्त्री का कर्तव्य।
२ स्त्री का रजस्वला होना।
उ०—दिन ऊगौ। ताहरां अहीरणी फूल नुं कह्यौ, राज जाड़ेचा ठाकुर छौ। अर हुं **स्त्रीधरम** हुती। म्हारौ छोरू नीमीयौ छै एक कागद रावळै हाथ रौ करि द्यौ।—लाखै फूलांणी री बात
३ मैथुन, संभोग।

स्त्रीधरमणी, स्त्रीधरमिणी–सं. स्त्री. [सं. स्त्री+धर्मिणी] रजस्वला स्त्री।

स्त्रीपरसंग, स्त्रीप्रसंग–सं. पु. [सं. स्त्रीप्रसंग] संभोग, मैथुन।

स्त्रीभोग–सं. पु. [सं.] संभोग, मैथुन।

स्त्रीमंत्र–सं. पु. [सं.] ऐसा मंत्र जिसके अंत में 'स्वाहा' हो।

स्त्रीमांनी–सं. पु. [सं. स्त्रीमानी] भौत्य मनु के एक पुत्र का नाम।

स्त्रीरासि, स्त्रीरासी–सं. स्त्री. [सं. स्त्रीराशि] ज्योतिष के अनुसार स्त्री जाति की राशियाँ यथा—वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन।

स्त्रीलक्खण, स्त्रीलक्षण, स्त्रीलखण–सं. पु. [सं. स्त्रीलक्षण] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

स्त्रीलिंग–सं पु. [सं.] १ व्याकरण में स्त्रीवाचक एक प्रकार का लिंग।
२ भग, योनि।

स्त्रीवरत—देखो 'स्त्रीव्रत' (रू. भे.)

स्त्रीवार–सं. पु. [सं.] ज्योतिष के अनुसार तीन वार जो स्त्रीजाति के माने जाते हैं यथा–बुध, चंद्र और शुक्र।

स्त्रीवास–सं. पु. [सं.] १ संभोग या मैथुन के समय उपयुक्त वस्त्र।
२ संभोग या मैथुन के लिए उपयुक्त स्थान।

स्त्रीविसय, स्त्रीविसै–सं. पु. [सं. स्त्रीविषय] संभोग, मैथुन।

स्त्रीव्रत–सं. पु. [सं.] १ वह पुरुष जो अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री की कामना न करता हो।
२ अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्री की कामना न करने की क्रिया या भाव।
रू. भे.—स्त्रीवरत।

स्त्रीसंग–सं. पु. [सं.] मैथुन, सम्भोग।

स्त्रीसंभोग–सं. पु. [सं.] सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीसमागम–सं. पु. [सं.] सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीसुख–सं. पु. [सं.] १ गृहस्थाश्रम का आराम व आनन्द।
२ स्त्री से मिलने वाला आनन्द।
३ मैथुन, सम्भोग।

स्त्रीसेवण, स्त्रीसेवन–सं. पु. [सं. स्त्रीसेवन] सम्भोग, मैथुन।

स्थंभणौ–सं. पु.—पार्श्वनाथ का नाम।

स्थग–वि. [सं.] १ धूर्त, कपटी।
२ ढीठ, लापरवाह।
३ गुण्डा, बदमाश।

स्थपत, स्थपति, स्थपती–सं. पु. [सं. स्थपति] १ राजा, शासक।
२ कारीगर।
३ रथ हांकने वाला, सारथी।
४ कुबेर।
५ वृहस्पति।
६ अन्तःपुर का रक्षक।

स्थर—देखो 'स्थिर' (रू. भे.)

स्थळ–सं. पु. [सं. स्थल] १ भूमि, जमीन।
२ भू-भाग।
३ जलरहित भूमि या वह भू-भाग जहाँ पानी की कमी हो।
४ मरुभूमि।
५ पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।
रू. भे.—असतळ, असथळ, अस्तळ, अस्थळ।

स्थळकाळी–सं. स्त्री. [सं. स्थलकाली] दुर्गा देवी की एक सहचरी का नाम।

स्थांणु–सं. पु. [सं. स्थाणु] १ शिव, महादेव।

२ ग्यारह रुद्रों में से एक ।
३ एक प्रजापति का नाम ।
४ घोड़े का एक प्रकार का रोग विशेष ।
५ एक प्राचीन तीर्थ ।
६ एक प्राचीन ऋषि ।

स्थांन–सं. पु. [सं. स्थान] १ जगह, स्थल ।
२ भू-भाग, जमीन ।
३ मकान, घर आदि रहने की जगह ।
४ व्यर्थ या किसी कार्यवश हमेशा बैठने की जगह ।
५ मंदिर, देवालय ।
६ पद, ओहदा ।
७ उदासीन होकर बैठने की क्रिया, भाव या अवस्था ।
रू. भे.—सथांन ।

स्थांनक—देखो 'थांनक' ।
उ०—ज्यूं पांच महाव्रत पचखी आधाकरमी **स्थांनक** निरंतर भोगवै। इत्यादिक अनेक दोख सेवै । तिण रौ प्रायस्चित पिण नहीं लेवै । औ मोटौ देवालौ लोच सूं नै तपस्या सूं कठै ऊतरै ।
—भि. द्र.

स्थांनकवासी—देखो 'थांनकवासी' ।

स्थांनजफ–सं. पु.—मुसलमानों का एक तीर्थ स्थल । (बां. दा. ख्यात)

स्थाई—देखो 'स्थायी' (रू. भे.)

स्थापन— देखो 'थापन' ।

स्थापननिक्षेप–सं. पु. यौ.—अर्हंत् की मूर्ति का पूजन । (जैन)

स्थापना—देखो 'थापना' ।

स्थापनानिक्षेप–सं पु. यौ.—एक वस्तु के गुणों की किसी दूसरी ऐसी वस्तु में उसके गुणों की कल्पना करना जिसमें वह गुण न हों ।

स्थायी–वि. [सं.] १ हमेशा बना रहने वाला । (परमानेंट)
२ गीत का पहला चरण या पंक्ति, टेक ।
३ दृढ़, मजबूत ।
रू. भे.—थायी, स्थाई ।

स्थायीभाव–सं. पु. [सं.] मनुष्य के मन में सदा रहने वाले वे मूल तत्व या भाव जो विशिष्ट अवसर पर या अन्य कारण से स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं । (साहित्य)
वि. वि.—इन्हीं भावों के आधार पर साहित्य के नौ रस स्थिर हुए हैं । ये भाव दूसरे भावों के आने पर भी स्पष्ट रूप से व्यक्त होने के कारण स्थायी भाव कहलाते हैं ।
रू. भे.—थायीभाव ।

स्थाळ—देखो 'थाळ' (रू. भे.)

स्थाळी—देखो 'थाळी' (रू. भे.)

स्थावर–सं. पु. [सं.] १ अचेतन, पदार्थ ।
२ पहाड़, पर्वत ।
३ स्थूल-शरीर ।
४ अचल सम्पति ।
वि.—१ जो हट न सके, स्थिर ।
२ जंगम का विलोम ।
३ अचल ।

स्थावरता–सं. स्त्री.—स्थावर होने की अवस्था या भाव ।

स्थित–सं. पु. [सं.] १ निवास, अवस्थान ।
२ अचल ।
३ उपस्थित, मौजूद ।
४ दृढ़, पक्का ।
५ बसा हुआ ।
६ वर्तमान ।
७ तैयार ।

स्थितव्विेकासण, स्थितविवेकासन–सं. पु. [सं. स्थितविवेकासन] योग के चौरासी आसनों में से एक प्रकार का आसन विशेष, जिसमें हाथों तथा पैरों की अलग-अलग पलथी मारकर सीधा मर्यादापूर्वक बैठना होता है ।

स्थितता–सं. स्त्री.—स्थित होने की अवस्था या भाव ।

स्थिति–सं. स्त्री. [सं.] १ स्थित होने की क्रिया या भाव ।
२ टिकाव, ठहराव ।
३ हालत, दशा ।
४ पद, मर्यादा आदि के अनुसार समाज में मिलने वाला स्थान ।
५ ढंग, तरीका ।
६ सीमा, हद ।
रू. भे.—सथिति ।

स्थिर–वि. [सं.] १ स्थायी ।
२ सदा एक ही स्थिति में रहने वाला, निश्चल ।
३ जिसमें किसी प्रकार की चंचलता आदि न हो, शान्त ।
४ निश्चित, पक्का ।
५ दृढ़, मजबूत ।
६ निर्दय, निष्ठुर हृदय ।
सं. पु. [सं. स्थिरः] १. २८ योगों में से एक योग ।
२ फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि व नक्षत्रों संबंधी तृतीय योग ।
३ स्थिर राशियाँ—वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुंभ । (ज्योतिष)
४ ४९ क्षेत्रपालों में से एक ।
५ शनिग्रह ।
६ देवता ।
७ पर्वत, पहाड़ ।
८ वृक्ष, पेड़ ।
९ शिव, महादेव ।

१० स्वामिकार्तिकेय ।

११ वृष, सांड ।

१२ देखो 'थिर' (रू. भे.)

रू. भे.—सिथर, सिथिर, स्थर ।

स्थिरता–सं. स्त्री. [सं.] स्थिर होने की अवस्था, भाव या स्थिति ।

उ०—··· सौम्यतां चंद्र, क्षमां करी प्रथ्वी, गंभीरि मां रत्नाकर, निरवलेपतां कमल, **स्थिरतां** द्रूमंडल, अनियतविहारतां समीर, गुप्तेंद्रियतां कूरम्म, अप्रमत्ततां भारुंड ।— व. स.

स्थिरासरा, स्थिरासन–सं. पु. [सं. स्थिरासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत वह आसन जिसमें पलथी मारकर बैठना होता है ।

स्थूरा–सं. पु. [सं.] विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्र का नाम ।

स्थूळ, स्थूल—देखो 'थूळ' (रू. भे.)

उ०—१ पंद्रह तत्व का **स्थूळ** सरीरा, जग्रत सब ही जंजाळ । इंद्रियां अपनै अपनै कांमा, रही विखय रस माळ ।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ ज्यूं दरपरा कै अंतर बहिर, मुखा भास विचारी । अंतर सूक्ष्म बाहिर **स्थूळा**, मध सता हमारी । —स्रीसुखरांमजी महाराज

स्थूलकेस–स. पु. [सं. स्थूलकेश] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

स्थूलजंघा–सं. स्त्री. [सं.] नौ समिधाओं में से एक ।

स्थूळपाद–सं. पु. [सं. स्थूलपाद] हाथी, हस्ती ।

स्थूळहसत, स्थूळहस्त–सं. स्त्री. [सं. स्थूलहस्त] हाथी की सूंड ।

स्थूळा–सं. स्त्री. [सं. स्थूला] १ सौंफ ।

२ इलायची ।

३ मुनक्का ।

४ कपास ।

५ ककड़ी ।

स्थूळाक्ख, स्थूळाक्ष, स्थूलाख–सं. पु. [सं. स्थूलाक्ष] १ एक महर्षि का नाम ।

२ एक राक्षस जो श्रीराम के द्वारा मारा गया था ।

स्नांन–सं. पु. [सं. स्नान] १ जल से शरीर को साफ करने की क्रिया, नहाने की क्रिया ।

उ०—१ जद ब्राह्मरा बोल्या—हे पापरगी ! म्हांनै भ्रस्ट कीया । अबै गंगा जी जाय **स्नांन** पांरगी रा लेप करी सुद्ध थास्यां जद आ दोनूं डावड़ां नेइ लै जावौ अनै सुद्ध करौ ।—भि. द्र.

उ०—२ इसड़ा पुरांरा रा बचन सांभळ, संग साथ करि गयाजी हालियौ । तेथी जाय **स्नांन** दांन स्राद्ध क्रिया करि पिंडदांन कररगै लागियौ सौ तीन हाथ प्रकटिया ।—बैताळ पच्चीसी

२ धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना कि सारे शरीर पर उसका प्रभाव पड़े ।

३ धार्मिक दृष्टि से कुछ दिनों तक बराबर नियमपूर्वक किसी नदी या जलाशय में नहाने की क्रिया ।

ज्यू · कातिस्नांन ।

४ पानी या किसी तरल पदार्थ से भीगने की क्रिया ।

रू. भे.—असनांन, सनांरग, सन्नांन, सिनांरग, सिनांन ।

स्नांनग्रह, स्नांनघर–सं. पु. [सं. स्नानगृह] गुसलखाना, बाथरूम ।

रू. भे.—सनांनघर, सांरगग्रह, सांरगघर, सिनांनघर ।

स्नांनजातरा, स्नांनजात्रा, स्नांनयात्रा–सं. स्त्री. [सं. स्नानयात्रा] विष्णु की मूर्ति को महास्नान कराने का एक उत्सव विशेष जो ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है ।

रू. भे. सनांनजात्रा, सनांनयात्रा ।

स्नांनसाळ, स्नांनसाळा, स्नानागार–सं. पु. [सं. स्नानशाला, स्नानागार] गुसलखाना, स्नानगृह ।

स्नायु–सं. पु.- नहरुआ । (अमरत)

स्नायुवरम–सं. पु. [सं. स्नायुवर्मन] आंख का एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें कोड़ी या सफेद भाग पर छोटी गांठ निकल जाती है । (वैद्यक)

स्निग्ध–वि. [सं.] १ चिकनाहट से युक्त, चिकना ।

उ०—**स्निग्ध** गार रा खग सुवरग, घड़ मचाय घमसांरग । बाप लख्यौ जद बाहसी, कंठ कढ्यौ केवांरग ।—रैंवतसिंह भाटी

२ कोमल, मुलायम ।

३ प्रिय, प्यारा ।

४ तर, नम ।

सं. पु. [सं. स्निग्धः] १ तेल ।

२ मोम ।

३ मित्र, दोस्त ।

स्निग्धता–सं. स्त्री. [सं.] स्निग्ध होने की अवस्था या भाव ।

स्नेह–सं. पु. [सं.] १ चिकना पदार्थ ।

२ दूध, दही आदि पर आने वाली मलाई ।

३ हिंडोल राग का पुत्र ।

४ प्रेमियों, बच्चों आदि के साथ होने वाला प्रेमभाव ।

५ सरसों ।

६ नमी, तरी ।

७ चरबी ।

८ तेल ।

९ वीर्य, शुक्र ।

१० कोमलता, मुलायमता ।

११ चिकनाहट ।

वि. [सं. स्नेहः] १ चिकना, स्निग्ध ।

२ नमी से युक्त, नम ।

३ देखो 'सनेह' (रू. भे.)

रू. भे.—सनेस ।

अल्पा; — सनेसड़ौ ।

स्नेहन–सं. पु. [सं. स्नेह्न] १ पांच प्रकार के पित्तो में से एक । (अमरत)

२ तेल की मालिश ।

स्नेहपातर, स्नेहपात्र–वि. [सं. स्नेहपात्रं] जिसके प्रति स्नेह हो, प्रिय ।

स्नेही—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—दादू स्रोता **स्नेही** रांम का, सौ मुझ मिळव हु आंणि । तिस आगैं हरि गुण कथूं, सुनत न करई कांणि ।—दादूबांणी

स्पंदण, स्पंदन–सं. पु. [सं. स्पंदन] १ धड़कन ।

२ कंपन ।

स्पंदणी, स्पंदिणी–सं. स्त्री [सं. स्पंदिनी] १ रजस्वला स्त्री ।

२ कामधेनु ।

स्परधा–सं. स्त्री. [सं. स्पर्द्धा] १ बराबरी, समता ।

२ ईर्ष्या, डाह ।

३ प्रतियोगिता, होड़ ।

स्परस–सं. स्त्री. [सं. स्पर्श] १ सटने या छूने की क्रिया, अवस्था या भाव ।

उ०—तुरक री तनया रौ **स्परस** अनुचित जांणि जाळोर नूं जळ देर वाजी मैं प्रांण रौ ही पण लगायौ ।—वं. भा.

२ एक प्रकार का रतिबंध ।

३ हवा, पवन, वायु ।

४ ज्योतिष में ग्रहों का समागम ।

५ रोग, बिमारी ।

रू. भे.—परस फरस, सपरस, सपरस्स, सफरस, सुपरस, सुपरसन ।

स्पस्ट–वि. [सं. स्पष्ट] १ साफ, प्रकट ।

२ साफ-साफ, बिना छिपाव या दुराव का ।

रू. भे.—सपस्ट ।

स्पस्टता–सं. स्त्री. [सं. स्पष्ट+ता] स्पष्ट होने की अवस्था या भाव ।

स्पीच–सं. पु. [अं.] भाषण, व्याख्यान ।

स्पीड–सं. स्त्री. [अं.] गति, चाल ।

स्पेसल–वि. [अं.] विशेष, खास ।

स्प्रिंग–सं. स्त्री. [अं.] कमानी ।

स्प्रिंगदार–वि. [अं.] जिसमें कमानी लगी हो, कमानीदार ।

स्फिटक–सं. पु. [सं. स्फटिक] १ सूर्यकान्तमणि ।

२ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर ।

३ कपूर ।

४ फिटकरी ।

रू. भे.—फिटक, सफटीक ।

स्फटिकमणि–सं. स्त्री. [सं. स्फटिकमणि] सूर्यकान्तमणि ।

स्फटिकी, स्फटी–सं. स्त्री. [सं. स्फटिका] फिटकिरी ।

स्फरण, स्फुरण–सं. पु. [सं. स्फुरणं] अंग के फड़कने की क्रिया या भाव ।

स्फूरति, स्फूरती–सं. स्त्री. [सं. स्फूर्ति] १ चंचलता, फुर्ति ।

२ तेजी । ३ ताजगी ।

४ दिलचस्पी ।

स्मर–सं. पु. [सं. स्मरः] १ कामदेव, मनोज ।

२ यादगारी, स्मृति ।

३ प्रेम, प्यार ।

रू. भे.—समर ।

स्मरकूप–सं. पु. [सं.] भग, योनि ।

स्मरग्रह–सं. पु. [सं. स्मरग्गृह] भग, योनि ।

स्मरण–सं. पु. [सं.] १ याद आने की क्रिया या भाव ।

२ नौ प्रकार की भक्तियों में से एक प्रकार की भक्ति जिसमें उपासक अपने आराध्य देव को बराबर याद रहता है ।

४ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार विशेष ।

रू. भे.—समरण, सुमरण ।

स्मरणपतर, स्मरणपत्र–सं. पु. [सं. स्मरणपत्रं] किसी को कोई बात याद दिलाने हेतु लिखा जाने वाला पत्र, चिट्ठी ।

स्मरणसकति, स्मरणसक्ति–सं. स्त्री. [सं. स्मरण+शक्ति] याद रखने की शक्ति, याददाश्त ।

स्मरदसा–सं. स्त्री. [सं. स्मरदशा] वह अवस्था जो प्रेमी प्रेमिका के न मिलने पर होती है ।

स्मरदहण, स्मरदहन–सं. पु. [सं. स्मरदहन] कामदेव को भस्म करने वाले शिव, महादेव ।

स्मरवधु, स्मरवधू–सं. स्त्री. [सं स्मर+वधू] कामदेव की पत्नी, रति ।

स्परसख, स्मरसखा–सं. पु. [सं. स्मरसखा] चाँद, चन्द्रमा ।

स्मररिप, स्मररिपु–सं. पु. [सं. स्मर+रिपु] १ शिव, महादेव ।

२ संयमी, संयमधारी ।

स्मरारि–सं. पु [सं.] शिव, महादेव ।

रू. भे.—समररि, समरारि ।

स्मरसासतर, स्मरसास्तर, स्मरसास्त्र–सं. पु. [सं. स्मर+शास्त्र] कामशास्त्र ।

स्मसांण—देखो 'समसांण' (रू. भे.)

स्मसांणकाळिका—देखो 'समसांणकाळिका' (रू. भे.)

स्मसांणपत, स्मसांणपति, स्मसांणपती—देखो 'समसांणपति' (रू. भे.)

स्मसांणपाळ—देखो 'समसांणपाळ' (रू. भे.)

स्मसांणभैरवी—देखो 'समसांणभैरवी' (रू. भे.)

स्यमसांणवासण, स्मसांणवासणी, स्मसांणवासिण, स्यमसांणवासिणी—देखो 'समसांणवासणी' (रू. भे.)

स्मसांणवासी—देखो 'समसांणवासी' (रू. भे.)

स्मारक–सं. पु. [सं. स्मार्क] वह कार्य या रचना जो किसी की स्मृति में बनायी गई हो ।

रू. भे.—समारक ।

स्मारत—सं. पु. [सं. स्मार्त] स्मृतियों के अनुसार चलने वाला एक सम्प्रदाय या व्यक्ति ।

स्म्रति, स्म्रती—सं. स्त्री. [सं. स्मृति] १ धर्म संहिता ।

२ स्मरण शक्ति, याददाश्त ।

३ अंगिरा ऋषि की पत्नी का नाम ।

४ एक प्रकार का छंद ।

५ अठारह की संख्या का सूचक शब्द ।

रू. भे.—संम्रत, संम्रति, संम्रित, समरति, समरती, सम्रती, सम्रिति, सरइ ।

स्म्रतिकार—सं. पु. [सं. स्मृतिकार] धर्म संहिता बनाने वाला, धर्माचार्य ।

रू. भे.—समरतिकार ।

स्म्रतिवेता—वि. [सं. स्मृतिवेता] स्मृतियों का जानकार ।

रू. भे.—सम्रतवेता, सम्रतिवेता ।

स्यंगार—देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

उ०—रस **स्यंगार** य हासरस, बिच जिण कवित बखांण । जाता-संख जिण नुं कहै, वरणव रांम बखांण ।—र. ज. प्र.

स्यंगासण, स्यंगासन—देखो 'सिंहासन' (रू. भे.)

स्यंघल, स्यंघलदीप, स्यंघलद्वीप—देखो 'सिंहल' (रू. भे.)

उ०—कुंकण कनवज नइ कलहटी, मरहठ नइ मुलवारी । **स्यंघल** सेतबंध नौ राजा, तैं सांवि लीया हकारी ।—रुकमणी मंगळ

स्यंघासण, स्यंघासन—देखो 'सिंहासन' (रू. भे.)

उ०—बीच आंगण **स्यंघासण** बणाय, आभूसण कर त्रियै बैठ आय । अंतर फुलेल चिरचंत अंग, सभळिया किनका गोद अंग ।
—बगसीरांम प्रोहित हीरां की बात

स्यंद—सं. पु. [सं. स्यन्दः] रथ, गाड़ी ।

रू. भे.—स्यंध ।

स्यंदण, स्यंदन—सं. पु. [सं. स्यंदन] १ विशेषतः युद्ध में काम आने वाला एक प्रकार का रथ, गाड़ी । (डिं. को.)

२ बहाव, कटाव ।

३ जैनियों के अतीतकालीन तेईसवें तीर्थंकर का नाम । (स. कु.)

४ वायु, हवा, पवन ।

५ जल, पानी ।

६ चन्द्रमा, चाँद ।

७ घोड़ा, अश्व ।

रू. भे.—संदण, संदन, संदि, संदी, सिंदण, सिंदन ।

स्यंदूर—देखो 'सिंदूर' (रू. भे.)

उ०—हार डोर सुघट सोहइ, भरघा मांग **स्यंदूर** । राखड़ी रतन अनेक भळकइ, जांणि उग्या सूर ।—रुकमणि मंगळ

स्यंध—१ देखो 'स्यंद' (रू. भे.)

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—१ अधर ब्यंब राम अरुण, रागह भुज नागरौ ज सख । सिल समांन उर समर, अथघ राम **स्यंध** उदर अख ।—र. ज. प्र.

उ०—२ राघव अनुरागी भव बडभागी, मति सुभ लागी पथ मही । हरि संत कहाही जम भय नांही, **स्यंध** तिरां ही सुभ वसही ।
—र. ज. प्र.

स्यंभ—देखो 'स्वयंभू' (रू. भे.)

उ०—तिण दी विण जोत गोत मिट्टी नन, 'किसन' कहै सब कच्चा है । बोलै स्रुत संम्रत **स्यंभ** अज वायक, सीतानायक सच्चा है ।
—र. ज. प्र.

स्यंमतकमण, स्यंमतकमणि, स्यंमतकमणी, स्यंममिण, स्यंमतमिणि, स्यंममिणी, स्यमंतकमण, स्यमंतकमणि, स्यमंतकमणी, स्यमंतकमिण, स्यमंतमिण, स्यमंतमिणी सं. स्त्री. [सं. स्यमंतकमणि] एक प्रकार की बहुमूल्य मणि जिसको सत्यभामा के पिता ने सूर्य की तपस्या करके प्राप्त की थी ।

स्यांणप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

उ०—१ होणहार सी होज हुवी, **स्यांणप** थी क्या होय वै । राजा कोपै भी भरसी, बरजण सकै कोय वै ।—रीसाळू री बात

उ०—२ जांन रै आछै हीड़-चाकरी रौ हुकारौ भरयौ, अर बाकी सारी बातां भरमा-भरमी में ही राखी । **स्यांणप** सूं सौदौ पटायौ, बेटै री बाप नांव-नांमून में आयौ ।—दसदोख

उ०—३ हुनर करौ हजार, **स्यांणप** चतुराई सहित । हेत कपट विवहार, रहै न छांना राजिया ।—किरपारांम

स्यांणौ—देखो 'सैणौ' (रू. भे.)

उ०—१ अर **स्यांणा** लोकां कयौ है सो कांणी रा जनांना मांहै जाजै नहीं ।—गांम रा धणी री बात

उ०—२ हरीया दुरमति सठकी, पिंड प्रांण लग होय । भावैं **स्यांणा** बौह मिळौ, सठ न समझै कोय ।—अनुभववांणी

उ०—३ गम ही **स्यांणा** हुय रह्या, नहीं ईयांणौ कोय । **स्यांणौ** सोई जांणीयै, अलख ओळखै सोय ।—अनुभववांणी

उ०—४ सगळी गाभां इणी **स्यांणी** अर समझणी कै उण वेळा पूछड़ी ई नीं हिलावती । बादळ मन करतौ जणा ई दूध चुरड़ लेतौ ।—फुलवाड़ी

उ०—५ लाड, मोह अर प्रीत में अबूझ, नादांन, छोटौ टाबर जित्तौ समझै, उत्तौ **स्यांणौ**, समझणौ अर लांठौ मौट्यार ई नीं समझै ।—फुलवाड़ी

उ०—६ जिकै सूरवां अजरायत था, त्यांरौ रौ तौ रंग लाल हुवण लागौ । अर जिकै **स्यांणा** काचा था, त्यांरौ रंग सपेती पकड़ लागौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—७ मूळी रौ पापा रजवाड़ां में रैवणियौ **स्यांणौ** हाजरियौ, राजनीत सूं रंग्योड़ौ-सुधरयोड़ौ मिनख ! ख्यात अर जात नै जांणै,

विड़द अर वडाई वखांणुँ ।—दसदोख

उ०—८ **स्यांणा** पंडित आवै, झाड़ोळा काजी जावै। पंडित जाप करै, पूजारी माळा फेरै। जोतकी टीपणुँ मैं गिरै—गोचर संभाळै, कोतकी धूप खेवंता थका जोत करै।—दसदोख

(स्त्री. स्यांणी)

स्यांन—देखो 'सांन' (रू. भे.)

उ०—१ लाभ नहीं अहलोक नहीं परलोकह निरभय। सुमति नहीं ज्यां **स्यांन**, खांत ज्यां नहीं पाप खय।—र. ज. प्र.

उ०—२ पोहरै पधरावेह, **स्यांन** गमावै सहज मैं। दावै बेदावेह, मुनसी खावै मुरधरा।—ऊ. का.

उ०—३ **स्यांन** छोड बहै साध, रसा माता पितु रोवै। सुत तिरिया दुख सहै, जिकण दिस फेर न जोवै।—ऊ. का.

स्यांनमठ—वि.—मूर्ख, बेवकूफ। (अ. मा.)

स्यांनै—क्रि. वि.—किसलिए।

उ०—**स्यांनै** राखै छै इहां, स्युं रहिवा नौ कांम। हूं छाया जिम ताहरै, कहिवौ न घटै आंम।—वि. कु.

स्यांम—सं. पु. [सं. श्याम] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। (अ. मा.)

उ०—१ **स्यांम** नदी कांठै सघण, तरवर **स्यांम** तमाळ। संजुत स्यांमा सायधण, साहग **स्यांम** समाळ।—बां. दा.

उ०—२ कह म्हारी चिड़िया सुगन री बातां, कद आवैला म्हारा **स्यांम** धणी। मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, बाट जोऊं थारी कदकी खड़ी।—मीरां

२ रामचन्द्रजी का एक नाम। (अ. मा.)

उ०—सुत तिण तणौ तिर सायर करि निज, **स्यांम** तणौ सिध कांम। लंका जाळि सीत सुध लायौ, रुळीयाईती कीधी स्रीस्यांम।

—र. ज. प्र.

३ भगवान, ईश्वर।

४ एक प्राचीन देश का नाम।

उ०—१ रवद **स्यांम** कै रूम कै, सुनी राफसी सोय। साह हुकम चौड़ै स्रवण, सुण सोचिया सकोय।—रा. रू.

उ०—२ तिण री धाक ईरांन तूरांन रूम **स्यांम** फिरंग रूस चीन्ह म्हाचीन्ह ईव देसां देसां रा पातसाह ईण रा हुकम रा आधीन सारा डरै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

५ प्रयाग का अक्षयवट।

६ श्रीराग का पुत्र एक राग। (संगीत)

[सं. श्यामक] ७ सांबा नामक एक प्रकार का (कंगनी या चने की जाति का) कदन्न। (डिं. को.)

रू. भे.—सांऊं।

[स. श्यामा] ८ रात, रात्रि।

उ०—खासौ खुलासौ जितौ भी कदै आसौ करौ खुसी, वासौ वसै जासौ वळै पासौ नहीं वार। हासौ रखै करासौ ज्यूं 'ओपै' कहै भजौ हरि, **स्यांम** सौ विमांसौ नरां तमासौ संसार।—ओपौ आढ़ौ

६ कृष्ण पक्ष।

उ०—१ अठारै तैंयासियै, चैत मास नम **स्यांम**। रूपक 'बंक' बणावियौ, धवळ पचीसी नांम।—बां. दा.

उ०—२ एकोतरै अठारसौ, सांवण दसमी **स्यांम**। बुध धुर रची बतीसका, पोखण सुकव तमांम।—बां. दा.

१० स्वामिकार्तिकेय का नाम। (डिं. को.)

११ बादल, मेघ। (अ. मा.)

१२ समय, वक्त। (अ. मा; ह. नां. मा.)

१३ छप्पय का पन्द्रहवां भेद। (र. ज. प्र.)

वि.—१ काला, कृष्ण। (ह. नां. मा.)

उ०—१ रेत रेत रेत मैं परेत सौ परचौ, **स्यांम** बारसेत ह्वै सचेत सौ करचौ। काळ है, अंदेस नां संदेस औ करचौ, देसनैं बिदेस वास त्रासतैं डरचौ।—ऊ. का.

उ०—२ सरळ सच्चिकण **स्यांम** कच, मुकता मांग मझार। तरणि तनुजा मधि तसि, धसी सुरसरी धार।

—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ पीत दुकूळ वैसणी पहरण, गाह सुद्रणी **स्यांम** वसन गण। गौरै वरण विप्रणी गाहा, चंपक वरण खित्रणी चाहा।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'सांमी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ 'पाता' बोधस अग्गळा, बोलै जोध 'मुकन्न'। **स्यांम** गरज्जां ओछणा, तिकै अकज्जां तन्न।—रा. रू.

उ०—२ कमंध **स्यांम** कांमयं, जुटै अरद्ध जांमयं। मुड़ै घड़ा मलेछणी, विचार धार भज्जणी।—रा. रू.

उ०—३ सुख सेज दैण ढीलौ सदा, अमल लैण नैं आखतौ। इण **स्यांम** हूंत आछी हुती, रांम कंवारी राखतौ।—ऊ. का.

उ०—४ **स्यांम** विना फागण इसड़ौ फीकौ लागै अे, साग फीकौ अे लूण विना, फागण फीकौ अे।—लो. गी.

उ०—५ किसोयक समरथ **स्यांम** मेरी माय, किसोयक छोटौ देवरियौ। चंदरमा सौ **स्यांम** मेरी माय, लिछमण सौ छोटौ देवरियौ।—लो. गी.

३ देखो 'सांम' (रू. भे.)

४ देखो 'स्यांमा' (रू. भे.)

रू. भे.—सांम्य।

स्यांमकंठ—सं. पु. [सं. श्यामकंठ] १ शिव, महादेव।

२ मोर, मयूर।

स्यांमक—सं. पु. [सं. श्यामक] १ एक देश का नाम।

२ रामकपूर।

स्यांमकरण—सं. पु. [सं. श्यामकर्ण] वह घोड़ा जिसका सम्पूर्ण शरीर

सफेद हो परन्तु कान, नाक या नेत्रों का रंग श्याम हो। (शुभ) (शा. हो.)

रू. भे.—सांमकरण, सावकरण।

स्यांमकल्यांण—सं. पु. [सं. श्यामकल्याण] एक राग विशेष जो संध्या के समय गायी जाती है। (संगीत)

स्यांमकारतिक, स्यांमकारतिकेय, स्यांमकारितिक—देखो 'स्वांमीकारतिकेय' (रू. भे.) (नां. मा; ह. नां. मा.)

स्यांमग्रीव—सं. पु. [सं. श्यामग्रीव] एक प्रकार का सारस विशेष जिसकी गर्दन काली होती है।

स्यांमचिड़ी—सं. स्त्री.—एक प्रकार की चिड़िया विशेष।

स्यांमज—सं. पु. [सं. शामज] १ हाथी, हस्ती। (अ. मा.)

२ श्याम देश का निवासी।

रू. भे.—सांमज, सांवज, सांमाज, सावज।

स्यांमजीरौ—देखो 'स्याहजीरौ' (रू. भे.)

उ०—कमोद तुलछी **स्यांमजीरा** दधि मोगर चीनी एळची पूरब कपूर पोहप प्रसंग हरेवी सौरंभ कुसुसवा किय जगनाथ भोग अैसी चौरासी भांति जिन्हु कै गंज दरसावै।—सू. प्र.

स्यांमण—देखो 'सांमण' (रू. भे.)

स्यांमणी—देखो 'सांमणी' (रू. भे.)

स्यांमतवाळ, स्यांमतमाळ—सं. पु. [सं. श्यामतमाल] एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—स्यांम नदी कांठै सघण. तरवर **स्यांमतमाळ**। संजुत स्यांमा सायधण, साहब स्यांम समाळ।—बां. दा.

स्यांमतर, स्यांमतरु—वि. [सं. श्यामतर] १ श्यामवर्ण का, सांवला।

२ श्याम के समान।

उ०—धर स्यांमा सरिस **स्यांमतर** जळधर, घेघूंचै गळि बाहां घाति। भ्रमि तिणि संध्या वंदन भूला, रिखिय न लखै सकै दिन राति।—वेलि

स्यांमता—सं. स्त्री. [सं. श्यामता] १ सांवलापन, कालापन।

उ०—१ कांमिणि कुच कठिन कपोळ करी किरि, वेस नवी विधि वांणि वखांणि। अति **स्यांमता** विराजति ऊपरि, जोवण दांण दिखाळिया जांणि।—वेलि

उ०—२ तजि **स्यांमता** जांणि वपि ताजै, राकापति निकळंक छबि राजै। औ चक्र एण रूप वणि आवै, आच हूंत पतिव्रता उठावै।—सू. प्र.

उ०—३ सुंदर रूप अनूप **स्यांमता**, अंजण नयण मुनी रिख अंजै। तीनकाळदरसी व्है ततपुर, **गौरव** कांम क्रोध अघ गंजै।—र. ज. प्र.

स्यांमताळ, स्यांमताळु, स्यांमाताळू—सं. पु. [सं. श्यामतालु] एक प्रकार का घोड़ा विशेष जिसका तालू श्याम वर्ण का होता है। (अशुभ) (शा. हो.)

स्यांमतीतर—सं. पु. [सं. श्याम + तित्तर] लगभग डेढ़ बालिश्त लंबा और सदा अकेला रहने वाला एक प्रकार का पक्षी।

स्यांमद्रोह—देखो 'स्वांमीद्रोह' (रू. भे.)

स्यांमद्रोही—देखो 'स्वांमीद्रोही' (रू. भे.)

स्यांमधरम—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

उ०—रजपूतां रै स्त्रीयां री तौ धरम पती रै लारै काठां चढ जाणौ नैं रजपूतां री धरम **स्यांमधरम** सारू तथा निज कुळ सारू तरवारां री धारां सूं बढ जावणौ।—बी. स. टी.

स्यांमधरमाई, स्यांमधरमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

उ०—याकूब फरमायौ तू बधारणै लायक छै। स्याबास थारी **स्यांमधरमाई** नूं पछै उणनूं बधार मोटौ कियौ।—नी. प्र.

स्यांमधरम्म, स्यांमध्रम, स्यांमध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

उ०—रटै अवर कथ 'रयण', सूर स्रंगार संपेखै। सरब धरम सिरपोस, **स्यांमध्रम** ध्रम सदेखै।—सू. प्र.

स्यांमधरमी, स्यांमध्रमी, स्यांमध्रम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्यांमनद, स्यांमनदी—सं. स्त्री. [सं. श्याम + नदी] यमुना नदी का नाम।

उ०—**स्यांमनदी** कांठै सघण, तरवर स्यांमतमाळ। संजुत स्यांमा सायधण, साहब स्यांम समाळ।—बां. दा.

स्यांममंजरी—सं. स्त्री. जगन्नाथजी के आस-पास की भूमि में पाई जाने वाली एक प्रकार की मिट्टी जिसे वैष्णव लोग पवित्र मानते हैं तथा उसका तिलक लगाते हैं। इसका रंग काला होता है।

स्यांमळ—सं. पु. [सं. श्यामल] काला रंग।

वि.—श्यामवर्ण का।

स्यांमला—सं. स्त्री. [सं. श्यामला] एक देवी।

स्यांमवायक—सं. पु. [सं. सामवाक्य] मित्र, दोस्त। (अ. मा; ह. नां. मा.)

स्यांमसुंदर—सं. पु. [सं. श्यामसुंदर] श्रीकृष्ण का एक नाम।

स्यांमांग—सं पु. [सं. श्याम + अंग] बुध ग्रह।

वि. जिसका रंग श्याम हो।

स्यांमा—सं. स्त्री. [सं. श्यामा] १ राधिका का एक नाम।

उ०—स्यांमनदी कांठै सघण, तरवर स्यांम तमाळ। संजुत **स्यांमा** सायधण, साहब स्यांम समाळ।—बां. दा.

२ लक्ष्मी, रमा। (अ. मा.)

३ पृथ्वी, भूमि। (नां. मा.)

४ रात, रात्रि। (नां. मा.)

५ कोयल नामक पक्षी।

६ छाया।

७ छाया, प्रतिबिम्ब।

८ रुक्मिणी का नाम।

उ०—१ सांभळि अनुराग थयौ मनि **स्यांमा**, वर प्रापति वंछती वर। हरि गुण भणि अपनी जिका हर, हर तिणि वंदै गवरि हर।—वेलि

उ०—२ संगि संति सखीजण गुरुजण **स्यांमा**, मनसि विचारि ए कहि महंति। कुसस्थळी हूंता कुंदणपुरि, किसन पधारचा लोक कहंति।—वेलि

८ कालिका।

९ कस्तूरी।

१० यमुना नदी।

११ सोलह वर्ष की युवती।

१२ श्यामवर्ण की गौ, गाय।

१३ सुन्दरी, स्त्री।

१४ हल्दी।

१५ गुग्गुल।

१६ शीशम।

१७ तुलसी।

१८ नील।

१९ हर्रे।

२० गोरोचन।

२१ हरी दूब।

२२ पींपल, पिप्पली।

२३ मेरु की नौ पुत्रियों में से एक पुत्री का नाम।

२४ सवा या डेढ बालिश्त लंबा काले रंग का एक पक्षी जिसके पैर पीले होते हैं।

वि. स्त्री.—काले रंग की।

रू. भे.—स्यांम।

स्यांमाधार—सं. पु. [सं. श्यामाधार] पींपल, पिप्पल। (अ. मा.)

स्यांमायन—सं. पु. [सं. श्यामायन] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

स्यांमी—देखो 'सांमी' (रू. भे.) (नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ जिण विलोकि कहियौ जगजांमी, सिव छै सुखी सिवा तौ **स्यांमी**। कहि इम प्रभु आतिथ-भ्रम कीधौ, दखि प्रमांण आसण त्रण दीधौ।—सू. प्र.

उ०—२ व्रत जिग वर उपवास, धणी इग्या बिना सूना। **स्यांमी** सेवा तणा, घणखरा सुरग नमूना।—नारी सईकड़ौ

स्यांमीद्रोह—देखो 'स्वांमीद्रोह' (रू. भे.)

स्यांमीद्रोही—देखो 'स्वांमीद्रोही' (रू. भे.)

स्यांमीधरम—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्यांमीधरमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्यांमीधरम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्यांमीधरम्मी, स्यांमीध्रमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्यांमीध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्यांमीध्रमी, स्यांमीध्रम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्या—देखो 'सा' (रू. भे.)

स्याई—देखो 'स्याही' (रू. भे)

स्याजस, स्याजिस—देखो 'साजिस' (रू. भे.)

उ०—पछै पताई रावळ रै साळौ सइयौ वांकलियौ तिकेरौ वडौ मांमलौ, वडौ इतबार, गढी री कूंची तै वसू। तद पातस्याह सूं **स्याजस** कीवी। कह्यौ जू - म्हनै सगळां ऊपर करौ तौ हूं गढ री कूंची देऊं।—नैणसी

स्यात, स्याति, स्याती—वि.—१ पूर्ण, पूरा।

सं. पु.—१ समय, वक्त।

२ देखो 'सायद' (रू. भे.)

(यौ. घड़ीस्यात)

स्यातेक, स्यातें'क—वि.—करीब, लगभग।

सं. पु.—१ घड़ी भर समय या तनिक समय।

२ देखो 'सातें'क' (रू. भे.)

स्यादवाद, स्याद्वाद—सं. पु.—जैन दर्शन जिसमें नित्यत्व, अनित्यत्व, सत्त्व, असत्त्व आदि में से किसी एक को निश्चित न मानकर कहा जाता है कि स्यात यही हो, स्यात वही हो आदि।

रू. भे.—सियवाय।

स्यापौ—देखो 'सोपौ' (रू. भे.)

उ०—गांव मैं **स्यापौ** छायोड़ौ, पांनड़ौ ई नहीं हिलै, चिड़ी रौ जायौ ई नहीं फरूकै, कुत्ता ई जांणै पताळ मैं पेठग्या। धवळै दिन रा गांव बिलकुल सून-सांन मसांण व्है ज्यूं लागै।

—रातवासौ

स्याफी—देखो 'साफी' (रू. भे.)

स्याबास—देखो 'साबास' (रू. भे)

उ०—१ रांणौ कही **स्याबास** नापै नूं नापौ आंपणौ हीज छै।

—नापा सांखला री वारता

उ०—२ देस देस सह कौ दियै, सूरां नूं **स्याबास**। ज्यांरौ कौतक देख जग, हुवै मुनिद्रां हास।—बां. दा.

स्याबासणौ, स्याबासबौ—देखो 'साबासणौ, साबासबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुत **स्याबासै** सुपह, पांन दीधा निज पांणौ। कमं धरि कसै कटार, 'अजै' बहु छक चित आंणौ।—सू. प्र.

उ०—२ रटूं जेणिहूं करूं वाधि रिण, तौ आपरौ बंधव 'अजमल' तण। इम सुणि वयण हुवौ आणंदवर, **स्याबासियौ** बंधव राजेसुर।—सू. प्र.

स्याबासणहार, हारौ, (हारी), स्याबासणियौ—वि०।

स्याबासिओड़ौ, स्याबासियोड़ौ, स्याबास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

स्याबासीजणौ, स्याबासीजबौ—कर्म वा०।

स्याबासियोड़ौ—देखो 'साबासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. स्याबासियोड़ी)

स्याबासी—देखो 'साबासी' (रू. भे.)

उ०—१ म्हैं कह्यौ-काले गाडी चूकरणा सूं तौ घरणौ नांमी कांम रह्यौ। जै बेठनै ग्राय जावूं तौ गजब व्है जाता। म्हैं चलायनै **स्याबासी** देवरण सारू मोटर माथै ग्रायौ हूं। - फुलवाड़ी

उ०—२ **स्याबासी** छै ग्रापनै, हिंदू मरद सुजांन। मोटी जायगा ग्रापरी, ग्रौर न दीसै ग्रांन।—जयसिंह ग्रांमेर रै धरणी री वारता

स्याय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

स्यार—१ देखो 'सार' (रू. भे.)

उ०—१ कै चांरणचक डाढाळै रै लिलाड़ मैं तच करती गै ग्रेक तीर वड़ग्यौ। ग्रर भूंडरण रै डावै पसवाड़ै सूंसाड़ करती गोळी वड़गी। पछै क्यूं पूछौ! जांरणै मौत रै **स्यार** लागी।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी री रीस रै जांरणै **स्यार** लागी। पग पटकता बोल्या—भूठ माथै तौ म्हनै भाळ भाळ ऊठै। क्यूं नाईड़ा, सेठां रै कैरणा सूं म्हारै सांम्ही हळाहळ भूठ बोलग्यौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)

स्यारी—सं. स्त्री.—वह स्त्री जो मंत्रों द्वारा घी, दूध ग्रादि की चोरी करती हो, डायन।

उ०—१ गायां चूंगै गांम री, सोच करै **स्यारी**। धांन धरणी री ऊपड़ै, कळपै कोठारी।—ग्रग्यात

उ०—२ रांम, बुध ग्रर गांधी जैहड़ा गुरणी मिनखां जांमैं तथा मिनख नै देवपरणौ दिरावरणौ मैं सफल हुवै, बियैनै ग्राज री इक्कसवीं सदी मैं ही मूरख-मुसटंडा लोग खांमखां डाकरण-**स्यारी** कैवरणै गी हिम्मत कर लेवै है ग्रर निरपराध निस्सहाय ग्रबलावां री दुरदसा भी कर नाखै।—दसदोख

रू. भे.—सारी।

स्याळ—देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)

उ०—१ करसरण सेही **स्याळ** बिळ, गिर त्रिय बांमरण गाय। समरांगरण मंह साधरण, चाहै चित्त चलाय।—बां. दा.

उ०—२ कारज सरै न कोय, बळ प्राक्रत हिम्मत बिना। हलकारयां की होय, रंग्या **स्याळां** राजिया।—किरपारांम

(स्त्री. स्याळरण, स्याळरणी)

मुहा.—१ स्याळचा कद सिकार करी=कायर व्यक्ति कभी बहादुरी का कार्य नहीं कर सकता, भूठन खाने वालों के प्रति कथन, (मि. भिलरणियां कद दही भिलोयौ) २ स्याळ कैडा बोल्या कै मूंडा व्हैता जैड़ा=जो जैसा होगा वह वैसा ही कार्य करेगा. ३ स्याळ बात करी ग्रर लूंकी साख भरी=एक ही प्रकृति के प्राणी एक दूसरे की बात पर जल्दी ही सहमत हो जाते हैं, ग्रप्रतिष्ठित व्यक्ति की साख ग्रन्य ग्रप्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा दी जाने पर प्रयुक्त कथन. ४ स्याळ री मौत ग्रावै जरणै गांव कांनी जावै=विनाश वाले विपरीत बुद्धि, जब हानि का योग होता है तब बुद्धि भी विपरीत दिशा में कार्य करती है. ५ स्याळ सूं सांड थोड़ौ ई फाटै=ग्रपनी क्षमता से ग्रधिक कोई कार्य नहीं कर सकता।

स्याल, स्यालक—सं. पु. [सं. श्यालः, श्यालक.] जोरू का भाई, शाला। (व. स.)

उ०—.........सत्तरि सहस्र गुजरात नु धरणी, जुनुगढ चांपानेर प्रमुख विखम गढ लीधा, मनवंछित काज हेलां सीधा, सघला राजा ग्रांरण मनाव्या, सेव कराव्या, इसिउ एक राजाधिराज स्त्रीमहिमुद पातसाह वरणवीतउ सोभद, ग्रहौ **स्याळक** बोलि।—व. स.

रू. भे.—साल, सालक, सालिक, सिग्राल, सिग्रालक, सियाल, सियालक, सीग्राल, सीग्रालक, सीयाल, सीयालक।

स्याळकियौ, स्याळकौ, स्याळक्यौ—देखो 'स्रगाळ' (ग्रल्पा; रू भे.) (स्त्री. स्याळकी)

स्याळभुग्रा, स्याळभुवा, स्याळभूग्रा, स्याळभूवा—सं. स्त्री.—लोमड़ी।

उ०—लुळ खाखुय सायक वैरण लगै, परधांन जगायौ दै हाथ पगै। ग्रख बोलत भूखिम **स्याळभुग्रा**, वरजातां ऐ मारग ना'र वुवा।

—पा. प्र.

स्याळसींगी, स्याळियासींगी—सं. स्त्री. सिद्ध-योगियों के पास मिलने वाली एक ग्रलौकिक बूंटी, जिससे किसी व्यक्ति को ग्रपने वश में किया जा सकता है।

उ०—पाघ ऊपर चौकड़ी तरवारियां री पड़ रही छै। परण ग्रेक ग्रतीत रौ दियोड़ौ यंत्र पाघ मै रहतौ ग्रौर महाराजा करणसिंहजी री दीन्ही **स्याळियासींगी** सदा पाघ रै मांही रहती तिरणसूं सरीर री रक्षा रहती।—पदमसिंह री बात

रू. भे.—सियाळसींगी।

स्याळियौ—देखो 'स्रगाळ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

स्याळू—१ देखो 'सीयाळू' (रू. भे.)

उ०—सौ एक जागां कन्हा म्हां मुकातौ कराय लेवौ। उपरां कर साख **स्याळू** ग्राई छै सौ लोगां कन्है बहावौ।

—गोपाळदास गौड़ री वारता

२ देखो 'साळु' (रू. भे.)

स्याळयौ—देखो 'स्रगाळ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

स्यावक—सं. पु. [सं. श्यावक] एक प्राचीन राजर्षि का नाम।

स्यावड़—१ देखो 'सावढ' (रू. भे.)

२ देखो 'सुवावड़' (रू. भे.)

स्यावड़माता—देखो 'सावढ' (१) (रू. भे.)

स्यावज—१ देखो 'सावज' (रू. भे.)

२ देखो 'स्यांमज' (रू. भे.)

स्यावळ, स्यावल—सं. पु. [सं. स्यावल] १ सूत की डोरी में बंधा लोह, पत्थर या ग्रन्य धातु का वह गोल लट्टू, जिससे कारीगर दीवार की सीध देखते हैं।

२ देखो 'सावळ' (रू. भे.)

रू. भे.—सहावळ।

स्याह–वि. [फा.] कृष्ण, काला ।

उ०—जरद् लाल सेत **स्याह**, जाळियां पखांण ए । सपत्त मैं खरण आंमास, ओपि असमांण ए ।—गु. रू. बं.

सं. पु.—१ काला रंग ।

२ देखो 'साह' (रू. भे.)

स्याहगोस–वि. [फा.] जिसके कान काले हों, काले कान वाला ।

सं. पु.—बन-बिलाव ।

स्याहजबांन–सं. पु. यौ.—वह हाथी, घोड़ा या बैल जिसकी जीभ श्याम रंग की हो । (अशुभ)

स्याहजादौ–देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—जिका पातसाह रौ दसतूर जिका ही बसत वा आदमो दोढी मैं जाय जिणां नूं देखनैं जाबा देवैं । घणौ हाजर रहै । किणही सूं **स्याहजादौ** छांनौ बात करै तद औ भी आय कांन देवैं ।

—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात

स्याहजीरौ–सं. पु. यौ. [फा. स्याह+हिं. जीरा] १ काला जीरा ।

२ गर्म मसाले में दाने वाला एक प्रकार का मसाला । (अमृत)

रू. भे.—स्यांमजीरौ ।

स्याहज्यादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

स्याहताळ, स्याहताळु, स्याहताळू—देखो 'स्याहजबांन' ।

स्याहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—करी ज्याग **स्याहाय** मूनेस कज्जं, दखै जै ज्या बोल आंनेक दुज्जं ।—र. ज. प्र.

स्याही–सं. स्त्री. [फा.] १ लिखने एवं छपाई आदि में काम आने वाला रंगीन तरल पदार्थ, इंक, मसि ।

२ देखो 'सेही' (रू. भे.)

३ देखो 'साही' (रू. भे.)

रू. भे.—सई, स्याई ।

स्याहीचूंस, स्याहीचूस, स्याहीसोख, स्याहीसोखतौ–सं. पु.—वह कागज जो स्याही को सोख लेता हो, सोखता कागज ।

रू. भे.—सईचूस ।

स्युं, स्यूं–सर्व. [गु.] १ क्या ।

उ०—१ मन लोभीड़ा मांनुस तन पावी नै कारज **स्युं** कीधौ ।

—व. स.

उ०—२ तुम पासैं आव्या तणौ रै, अधिक ऊमाहउ थाय । पिण **स्युं** कीजइ साहिबा, आव्या नै छै अंतराय ।—वि. कु.

२ क्यों ।

उ०—सोहागिण रंग रंगीली, तुं प्रेम महारस झीली, सांभलि मुझ वात रसीली । हठीली तेहनैं **स्युं** झूरै, तै नजर थकी थयौ दूरै, हिव मुझ नै थापि हजूरै ।—वि. कु.

क्रि. वि.—१ कैसे, किस प्रकार ।

उ०—**स्युं** कहुं कीरति राज तुम्हारी, तुमै छउ बाल ब्रह्मचारी हौ । राजुल नारी तैं विरहागर क्यारी, पोतां नी कर तारी हौ ।

—वि. कु.

२ साथ, से ।

रू. भे.—सिउं, सूं ।

स्यूढ–वि. [सं. समूढ] दीर्घ, बड़ा । (अ. मा.)

स्येन–सं. पु. [सं. श्येन] १ बाज नामक पक्षी ।

२ एक महर्षि ।

३ दोहे का एक भेद जिसमें १६ गुरु और १० लघु मात्राऐं होती हैं ।

स्येनगांमिण, स्येनगांमिन, स्येनगांमी–सं. पु. [सं. श्येनगामिन्] खर राक्षस के बारह अमात्यों में से एक ।

स्येनजित, स्येनजीत–सं. पु. [सं. श्येनजित्] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम ।

२ भीभ के मामा, एक महारथी का नाम ।

स्येनी–सं. स्त्री. [सं. श्येनी] १ दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम ।

२ कश्यप ऋषि की एक पुत्री का नाम, जो पक्षियों की माता कही जाती है ।

३ पुरुवंशीय प्रवीर राजा की पत्नी का नाम ।

स्यौं, स्यौ–सर्व.—क्या, कैसा ।

उ०—इम कहि लेइ सीख सनेह सुं, ततखिण चाल्यौ रे ऊठि, सुगुण नर एकलड़ौ पिण **स्यौ** डर तेहनै, जगगुरु जेहनैं रे पूठि ।

—वि. कु.

स्त्र ंखळ—देखो 'स्त्र ंखळा' (रू. भे.)

स्त्र ंखळक–सं. पु. [सं. शृंखलक] ऊंट ।

स्त्र ंखळता–सं. स्त्री. [सं. शृंखलता] क्रमबद्ध या सिलसिलेवार होने की अवस्था या भाव ।

स्त्र ंखळा, स्त्र ंखला–सं. स्त्री. [सं. शृंखला] १ जंजीर, सांकल ।

२ हाथी के पैरों में बांधने की जंजीर ।

३ बेड़ी, हथकड़ी ।

४ क्रम, सिलसिला ।

५ सिक्कड़ ।

६ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार ।

रू. भे.—स्त्र ंखळ ।

स्त्र ंखळाबद्ध, स्त्र ंखलाबध–वि. [सं. शृंखलाबद्ध] १ जंजीर से बंधा हुआ, जकड़ा हुआ ।

२ सिलसिलेवार, क्रमबद्ध ।

स्त्र ंग–सं. पु. [सं. शृंग] १ चोटी, शिखर । (डिं. को.)

उ०—१ कपोत कंठ पोत केम, मोह ओपमा मिळी । जिका तनूज भांणि जांणि, मेर **स्त्र ंग** मंडळी ।—सू. प्र.

उ०—२ अंबा सिर सूदत कूदत एम, तजै गिरि **स्त्र ंग** प्लवङ्गम

तेम । थावै गज कायल खाय सथाप, झुकै घट घायल आय झुवाफ ।
—मे. म.

उ०—३ ज्यौं जंघस्थळ अर उरस्थळ वधै त्यौं हेमाचळ का **स्रंग** लागा । जैसैं जोवन कै आयैं नायिका की कटि खीण होइ । त्यौं नदी खीण हुई । अर नितंब कहतां जंघस्थळ अर उर कुच ऐ वढै ।
—वेलि टी.

२ गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं के सींग ।

उ०—१ तिनूं परि महिसूं कै चख झाळ तूटै । जमराज कै राज-बांण आरणौं जूटै । सौ कैसैं भयांणक गजराजूं कै आकार प्रारोध कंधै । चोगजै साबळ सै **स्रंग** जोम सै अंधै ।—सू. प्र.

उ०—२ उस तरफ केसरसिंघ पटैत नळै झाड़ भभकार सांमुहै आए । नळूं हाथळूं का दाव औझड़ि झड़ **स्रंगूं** का घाव दारुणूं कै हाथळ लगणौं न पावै ।—सू. प्र.

३ मकान, दुर्ग आदि का ऊंचा भाग, कगूरा ।

४ वृक्ष, विटप । (अनेका.)

५ ऊँचाई ।

६ सींगी नामक वाद्य जो फूंककर बजाया जाता है ।

७ निशान, चिन्ह ।

८ कमल ।

६ अदरक ।

१० सोंठ ।

११ कुच, स्तन ।

१२ पानी का फुहारा, पिचकारी ।

१३ काम-वासना ।

१४ प्रमुखता, प्रधानता ।

१५ एक औषधि विशेष ।

१६ एक प्राचीन ऋषि का नाम । (रांमरासौ)

उ०—आंणौ रिख **स्रंग** कहै विप्र एह, मुगता होय इंदरा जिम मेह ।—रांमरासौ

१७ एक शिवपार्षद का नाम ।

[सं. शृक] १८ माला ।

उ०—चळवळां जोगण खपर चढवै, सिभ कमळां **स्रंग** । जग गीत चिहुंवै-वळां जाहर, सुजस हुवै सुढंग ।—र. ज. प्र.

१६ देखो 'स्रंगी' (रू भे.)

उ०—१ तन मछ जोजन **स्रंग** लख तण, रेण जन सत वरत रखण ।—र. ज. प्र.

उ०—२ सोहिया सांमळा वप्पि वींजा-चळा, **स्रंग** कूंभाथळा वोम किरि वद्दळा ।—गु. रू. बं.

रू. भे.—सिरंग, सिरग, स्रिग, स्रिगी, स्रींग ।

स्रंगक—सं. पु. [सं. शृंगक.] १ सींग ।

२ कोई नोकदार चीज ।

३ शिखर, चोटी ।

रू. भे.—स्रिगक ।

स्रंगणि, स्रंगणी—सं. स्त्री. [सं. शृंगिणी] १ गाय, गौ ।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ देखो 'सींगण' (रू. भे.)

उ० वारण सिर तोड़ै खग वंकी, तांणौ **स्रंगणि** अढारह टंकी । तांणै तठी जोम खळ तूटै, फील पांच एकणि सर फूटै ।—सू. प्र.

स्रंगधर—सं. पु. [सं. शृंगधर] १ पर्वत, पहाड़ ।

२ वृषभ, बैल ।

३ सींगधारी पशु ।

स्रंगबेर– देखो 'स्रंगवेर' (रू. भे.)

स्रंगरिख, स्रंगरिखि, स्रंगरिखी, स्रंगरिस, स्रंगरिसि, स्रंगरिसी—सं. पु. [सं. शृंगीऋषि] शमीक ऋषि के पुत्र का नाम ।

रू. भे. - सींगीरिख, सींगीरिखी, सींगीरिसी, स्रंगीरिख, स्रंगरिखी, स्रंगीरिसी ।

स्रंगवण- सं. पु. शृंगार, बनाव ।

स्रंगवांण, स्रंगवांन—सं. पु. [सं. शृंगवान्] एक ऋषि का नाम ।

स्रंगवेस—सं. पु. [सं. शृंगवेस] कौरव कुलोत्पन्न एक नाग ।

स्रंगवेर—सं. स्त्री. [सं. शृंगवेरं] १ अदरक । (डि. को.)

२ सोंठ ।

३ गंगा के तट पर बसे एक प्राचीन नगर का नाम जो वर्तमान में मिर्जापुर के पास है, शृंगवेरपुर ।

रू. भे.—स्रंगबेर ।

स्रंगवेरपुर—सं. पु.—एक प्राचीन नगर जो निषादराज गुह की राजधानी थी ।

स्रंगाटक—सं. पु. [सं. शृगाटक] १ सिंघाड़ा ।

२ दरवाजा, द्वार ।

३ चौराहा ।

४ प्राचीनकाल में खाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य-पदार्थ जो मांस से बनाया जाता था ।

५ मस्तिष्क में वह स्थान जहां नाक, कान, आंख व जीभ से संबंधित चारों शिराएँ होती हैं ।

स्रंगार—सं. पु. [सं. शृंगार:] १ साहित्य के नौ रसों में से एक प्रसिद्ध एवं प्रमुख रस जो रसराज व रससम्राट माना जाता है ।

वि. वि.—शृंगार दो शब्दों के योग से बना है—शृंग तथा आर । शृंग का अर्थ कामोद्रेक अथवा काम की वृद्धि होता है । दूसरे शब्दों में काम अंकुरित होने को शृंग कहते हैं । 'आर' गत्यर्थ 'ऋ' धातु से बना है जिसका अर्थ यहाँ प्राप्ति है । इस प्रकार शृंगार कामोद्रेक अथवा काम वृद्धि की प्राप्ति का द्योतक है । साहित्य के नौ रसों में यह प्रधान माना गया है । इसी कारण शृंगार को विद्वान साहित्यकारों ने रस सम्राट माना है ।

इसके मुख्य दो भेद माने जाते हैं—संयोग तथा वियोग। मनुष्य की कामवासना से संबंधित बातों से मिलने वाला ग्रानंद या सुख ही इस रस का मूल ग्राधार है।

२ ग्रपने ग्रापको ग्रधिक ग्राकर्षक एवं सुंदर बनाने के लिए सुंदर वस्त्र, ग्राभूषण ग्रादि धारण करने की क्रिया, सजावट।

३ किसी मूर्ति, शरीर ग्रादि में ऐसी चीज जोड़ना या लगाना कि वे ग्रौर ग्रधिक ग्राकर्षक बन जाय।

४ शोभा, सौंदर्य।

५ स्त्रियों के सौभाग्य व सौन्दर्य प्रशाधन सामग्री, ग्राभूषण ग्रादि।

६ मैथुन, रति, सम्भोग।

७ श्याम, कृष्ण। ॐ

८ देखो 'सिणगार' (रू. भे.)

रू. भे.—संगार, सणंगार, सणगार, सयंगार, सिंगार, सिंघार, सिंणगार, सिणगार, सींणगार, स्यंगार, स्रिंगार।

स्रंगारजनमा, स्रंगारजन्मा–सं. पु. [सं. शृंगारजन्मा] कामदेव, मनोज।

स्रंगारजोनि, स्रंगारजोनी—देखो 'स्रंगारयोनि'।

स्रंगारणौ, स्रंगारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे.)

उ०—सू दिल्ली ग्रभसाह, चित्त ग्रोछाह विचारै। कमधज्जां नव कोट, सुभट मन मोट स्रंगारै।—रा. रू.

स्रंगारणहार, हारौ (हारी), स्रंगारणियौ—वि०।

स्रंगारिग्रोड़ौ, स्रंगारियोड़ौ, स्रंगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

स्रंगारीजणौ, स्रंगारीजबौ—कर्म वा०।

स्रंगारभूखण, स्रंगारभूसण–सं. पु. [सं. शृंगारभूषण] सिंदूर।

स्रंगारमंडळ, स्रंगारमंडल–सं. पु. [सं. शृंगारमंडल] १ वह स्थान जहां प्रेमी-प्रेमिका क्रीड़ा करते हैं।

२ ब्रज का वह स्थान जहां श्रीकृष्ण ने राधिका का शृंगार किया था।

स्रंगारयोनि, स्रंगारयोनी–सं. पु. [सं. शृंगारयोनि] कामदेव, मनोज।

रू. भे.—स्रंगारजानि, स्रंगारजोनी।

स्रंगारवेख, स्रंगारवेस–सं. पु. [सं. शृंगारवेश] प्रेमी द्वारा प्रेमिका के पास जाते समय धारण किया जाने वाला वेश, पौशाक।

स्रंगारहाट–सं. स्त्री. [सं. शृंगारहाट] १ वह स्थान या बाजार जहां प्रायः वेश्याएं रहती हों, चकला।

२ वह स्थान जहां सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री मिलती हो।

स्रंगारिण, स्रंगारिणी–सं. स्त्री. [सं. शृंगारिणी] १ शृंगार करने वाली स्त्री।

२ एक प्रकार की रागिनी विशेष।

३ यथेष्ट शृंगार की हुई स्त्री।

स्रंगारियोड़ौ—देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. स्रंगारियोड़ी)

स्रंगारियौ–सं. पु.—१ वह व्यक्ति जो शृंगारकला में दक्ष हो।

२ देवमूर्तियों का शृंगार करने वाला व्यक्ति।

३ बहुरूपिया।

स्रंगारी–वि. [सं. शृंगारिन्] शृंगार सम्बन्धी, शृंगार का।

स्रगाळ—देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)

स्रंगी–सं. पु. [सं. शृंगी] (स्त्री. स्रंगणी) १ बैल, वृष। (ग्र. मा; ह. नां. मा.)

२ सींग वाला पशु।

उ०—कै दंती स्रंगी किता, किता नखी वन जंत। समझाया दै दै सजा, सादूळै बळवंत।—बां. दा.

३ पर्वत, पहाड। (ग्र. मा; नां. मा.)

४ वह घोड़ा जिसके कान की भौंरी के पास ही दो ग्रौर भौंरियां हों। (शा. हो.)

५ हाथी, हस्ती।

६ पेड़, वृक्ष।

७ सिंगिया नामक जहर, विष।

८ महादेव, शिव।

९ एक प्राचीन देश का नाम।

१० शमीक के पुत्र एक ऋषि जिसके शाप से तक्षक ने परीक्षित को डसा था।

११ बरगद, वट।

१२ सोना, स्वर्ण।

१३ ग्रांवला।

१४ देखो 'सिंगी' (रू. भे.)

रू. भे.—स्रंग, स्रींगी।

स्रंगीगिर, स्रंगीगिरि, स्रंगीगिरी–सं. पु. [सं. शृंगीगिरि] एक प्राचीन पर्वत जिस पर शृंगी ऋषि ने तपस्या की थी।

स्रंगीरिख, स्रंगीरिखी, स्रंगीरिसी—देखो 'स्रंगरिखी' (रू. भे.)

स्रंगेरी–सं. पु. [सं. शृंगेरी] दक्षिण में स्थित शंकराचार्य के मतानुयायी संन्यासियों का मठ।

स्रंगोत–सं. पु.—बीकावत राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

स्रंगोन्नति–सं. स्त्री. [सं. शृंगोन्नति] नक्षत्र, ग्रह ग्रादि की एक प्रकार की गति। (ज्योतिष)

स्रंजय–सं. पु. [सं. सृञ्जय] १ उग्रसेन का दामाद व वसुदेव के भाई का नाम।

२ सूर्यवंशी राजा श्विलि के पुत्र का नाम, इनके सुवर्णष्ठीवी नामक पुत्र था।

३ उत्तम मनु के पुत्रों में से एक।

स्रंजयी–सं. स्त्री. [सं. सृंजयी] भजमान की दो पत्नियों के नाम।

स्रक–सं. स्त्री. [सं. सृक] १ माला, पुष्पहार। (ग्रनेका.)

२ पवन, हवा ।

३ कमल ।

४ बाण, तीर ।

५ भाला ।

६ ज्योतिष में एक प्रकार का योग ।

रू. भे.—स्रग, स्रज, स्रिक, स्रिज ।

स्रकवण सं. पु. [सं. सृक्कं, सृक्कणी, सृक्कन] १ कपोल, गाल । (डिं. को.)

२ मुख के दोनों ओर के कोने ।

स्रग—१ देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

२ देखो 'स्रक' (रू. भे.)

स्रगदवार, स्रगदुवार, स्रगद्वार–सं. पु. [सं. स्वर्ग+द्वार] सूरज, सूर्य । (नां. मा.)

स्रगम–सं. पु.—जल, पानी । (ह नां. मा.)

स्रगलोक, स्रगलोग—देखो 'स्वरगलोक' (रू. भे.)

उ०—गौ खीर स्रवति रस धरा उदगिरति, सर पोइणिए थई सुस्री । वळी सरद **स्रगलोक** वासिए, पितरै ही ओतलोक प्री ।
—वेलि

स्रगवाट–सं. पु.—स्वर्ग जाने का रास्ता ।

स्रगविहारी—देखो 'स्वरगविहारी' (रू. भे.) (नां मा.)

स्रगसुखदा–सं. पु. [सं. स्वर्गसुखदाः] कल्पवृक्ष । (अ. मा.)

स्रगाळ, स्रगाल–सं. पु. [सं. शृगाल] (स्त्री. स्रगाळी) १ गीदड़, सियार । (डिं. को.)

२ कायर, डरपोक व्यक्ति ।

३ निर्दय व्यक्ति ।

४ धूर्त, चालाक व्यक्ति ।

रू. भे.—सयाळ, साळ, सियार, सियाळ, स्यार, स्याळ, स्रंगाळ ।

अल्पा;—सयाळियौ, साळियौ, साळयौ, साळचौ, साळचौ, सियाळियौ, सियाळचौ, स्याळियौ, स्याळचौ ।

स्रग्ग—देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

उ०—१ देवी मंगळा वीजळा रूप मध्धं, देवी अब्बळा सब्बळा वोम अध्धं । देवी **स्रग्ग** सूं उतरी सिव साथै, देवी सगर सुत हेत भगिरथ्थ साथै ।—देवि.

उ०—२ नमौ मछ **स्रग्ग**-मंडांण मुकुंद, नमौ कळि रास दइत निकंद । नमौ है-ग्रीव निगस्म सहेत, नमौ खळ-मार हयांनन खेत ।—ह. र.

स्रज–सं. पु.—१ एक विश्वदेवा का नाम ।

२ देखो 'स्रक' (रू. भे.)

स्रजण—देखो 'सरजण' (रू. भे.)

स्रजणियौ—देखो 'सरजणियौ' (रू. भे)

स्रजणौ, स्रजबौ–क्रि स.—१ प्राप्त करना ।

२ देखो 'सरजणौ, सरजबौ' (रू. भे.)

उ०—बिजै तू **स्रजै** आहवां बाह बीसां, सजै तूं हियै हार भूम्फार सीसां । तुही हाथळै सूळ सादूळ हक्कै, त्रगां मात्र तू सूक रा छात्र तक्कै ।—मे. म

स्रजणहार, हारौ (हारी), स्रजणियौ वि० ।

स्रजिओड़ौ, स्रजियोड़ौ, स्रज्योड़ौ भू० का० कृ० ।

स्रजीजणौ, स्रजीजबौ—कर्म वा० ।

स्रणिका–सं. स्त्री. [सं. सृणिका] लार । (डिं को)

स्रणी–सं पु [सं. श्रणिः] १ अंकुश ।

उ०—दरसै मुख आगळ दांत दुवै, बक बादळ आगळ जांण बुवै । दुति चातक घंट **स्रणी** दमकै, चपला घण जांण घणी चपकै ।
—मे. म.

[सं. सृणी] २ चंद्रमा, चांद ।

स्रणीक–सं. पु. [सं. सृणीक] १ वायु, हवा ।

२ आग, अग्नि ।

स्रत, स्रति, स्रती–सं. पु. [सं. सृति] मार्ग, रास्ता । (ह. नां. मा)

स्रद्धणौ, स्रद्धबौ—देखो 'सरधणौ, सरधबौ' (रू. भे.)

स्रद्धणहार, हारौ (हारी), स्रद्धणियौ वि० ।

स्रद्धिओड़ौ, स्रद्धियोड़ौ, स्रद्धयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

स्रद्धीजणौ, स्रद्धीजबौ—कर्म वा० ।

स्रद्धांजळि, स्रद्धांजळी–सं. स्त्री. [सं. श्रद्धांजलि] १ किसी बड़े व पूज्य व्यक्ति के लिए श्रद्धा व आदरपूर्वक कही जाने वाली बातें ।

२ श्रद्धापूर्वक दी जाने वाली अंजलि ।

स्रद्धा–सं. स्त्री. [सं. श्रद्धा] १ किसी धर्म, ईश्वर या पूज्य लोगों के प्रति मन में उत्पन्न होने वाला आदरपूर्ण भाव, आस्था या भावना ।

उ०—परतख पग जळती पेखै नह पाई, डूंगर बळती नैं देखै दुखदाई । रचनां ईस्वर री ईस्वरता रोचै, संम दम **स्रद्धा** बिण संभव नहिं सोचै ।—ऊ. का.

२ किसी काम या बात की प्रबल इच्छा, वासना, उग्र कामना ।

३ गर्भवती स्त्री के मन की अभिलाषा, वासना, दोहद ।

४ घनिष्ठ परिचय, घनिष्ठता ।

५ सम्मान, प्रतिष्ठा ।

६ चित्त की प्रसन्नता ।

७ विश्वास ।

८ वेद शास्त्र और आप्त वाक्यों में विश्वास ।

९ वैवस्त मनुकी एक पत्नी, कामायनी ।

१० दक्ष प्रजापति की कन्या एवं धर्म ऋषि की पत्नी जो शुभ व काम की माता थी ।

११ सूर्य की एक कन्या का नाम ।

१२ कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि की पत्नी थी, अनुसूया ।

१३ कर्दम प्रजापति की पुत्री जो अंगिरा ऋषि की पत्नी थी।

रू. भे.—सरधा, सिरधा, स्रधा।

स्रद्धादेवी—सं. स्त्री. [सं. श्रद्धादेवी] वसुदेव की पत्नी व गवेषण की माता का नाम।

स्रद्धाळु, स्रद्धालु, स्रद्धाळू, स्रद्धालू—वि. [सं. श्रद्धालु] १ श्रद्धा रखने वाला, श्रद्धावान।

२ अभिलाषी, इच्छावान।

सं. स्त्री. [स. श्रद्धालुः] वह गर्भवती स्त्री जिसके मन में तरह-तरह की अभिलाषाऐं उत्पन्न हों।

स्रद्धावति, स्रद्धावती—सं. स्त्री. [सं. श्रद्धावती] वरुणदेव की नगरी का नाम।

स्रद्धियोड़ौ—देखो 'सरधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. स्रद्धियोड़ी)

स्रधा—देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)

उ०—**स्रधा** सुपनै सुख संपति सोइ, कृपा हरिरांम बिना नहिं कोइ। सुनूं हरिरांम गुनूं किय साफ, महाप्रभु मांगत आगत माफ।

—ऊ. का.

स्रप—देखो 'सरप' (रू. भे.)

उ०—गोम गज है पाए गाही, **स्रप** फुण सहस तपै सगळाही। लागा अंबर करण लडाई, पूरब दळ आय, पतसाही।—गु. रू. बं.

स्रपाटी—सं. स्त्री.—चौंच, चंचु। (डिं. को.)

स्रपी—वि.—तृप्त, संतुष्ट।

उ०—लगी नर है तिल हेक लगांण, जरद्द मरद्द कटै जंगमांण। सदा सित्र तांम लियै खळ सीस, स्रुणी **स्रपी** चंड देत असीस।

—सू. प्र.

स्रप्प—देखो 'सरप' (रू. भे.)

उ०—१ बिनै जड़ाव बाजुबंध, सम्म पाट सोहिया। स्रिखंड साखि जांणि **स्रप्प**, मैणधार मोहिया।—सू. प्र.

उ०—२ सांमळा गात डोहत्ति गै-सूंडयं, **स्रप्प** हींडै किरै साख स्रीखंडयं। घूघरां पाखरां रोळ घंटा-सुरं, चोळ कप्पोळ सिंदूर मैं चम्मरं।—गु. रू. बं.

स्रब—देखो 'सरव' (रू. भे.)

उ०—१ असंख्यात दत कमण गिणावै, असि गज द्रब नग पार न आवै। धिन धिन न्रप नभ वांणि हुई धुर, **स्रब** जग सिरै ज तूं दांनेसुर।—सू. प्र.

उ०—२ सुणि प्रोहित हित वात सुहाई, विध **स्रब** कहि न्रप दसा वताई। सोभा नांम रूप विसतारा, सुपन चिह्न कहिया न्रप सारा।—सू. प्र.

उ०—३ पकवांनै पांनै फळै सुपुहपै, सुरंगै वसत्रै दरब **स्रब**। पूजियै कसटि भंगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रब।—वेलि

स्रबकांमधुन, स्रबकांमधुनि—सं. पु.—वेद। (अ मा.)

स्रबकारण—सं. पु. [सं. सर्व+कारण] ईश्वर, प्रभु।

उ०—नमौ बहुनांमिय बुद्ध, सेवक्क साधार सदासिव सुद्ध। नमौ **स्रबकारण** सारण स्यांम, उबारण गोकुळ इंद्र उदांम।—ह. र.

स्रबजांण, स्रबजांणग—वि. [स. सर्वज्ञ] सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञ।

उ०—१ तूं **स्रबजांण** राज प्रभुताई, अजै अतीत परख नह आई। दिब नयणां चेतनै दरसियौ, हूं न्रप तूझ देखि इम हसियौ।

—सू. प्र.

उ०—२ सीखंत वेद पंडत सकळ, दाता दांन विध दसदसौ। **स्रबजांण** उतम विद्या प्रसध, जगतगुरु राजा 'जसौ'।—सू. प्र.

रू. भे.—स्रवजांण।

स्रबथा—क्रि. वि.—सर्वथा।

स्रबदायक—सं. पु. [सं. सर्वदायक] कल्पवृक्ष। (अ. मा; नां. मा.)

स्रबसेव—सं. पु.—सूर्य, सूरज।

स्रब्ब—देखो 'सरव' (रू. भे.)

उ०—विस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रैण पै हूंत गोतम्म तारी। पति स्रापहुं देह पाई पखांणं, जिका दिव्य देहा हुई **स्रब्ब** जांणं।—सू. प्र.

स्रब्बेस—सर्व.—१ सर्व, सब, समस्त।

उ०—मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजंगेस देवेस **स्रब्बेस** भेळा। विदेहं प्रतंग्या कहै एम वाकं, पुत्री जौ वरै सो ज तांणै पिनाकं।

—सू. प्र.

२ देखो 'सरवेस' (रू. भे.)

स्रब्बवियाप, स्रब्बबियापी, स्रब्बवियाप, स्रब्बवियापी—वि. [सं. सर्वव्यापिन्] जो सर्वत्र और सर्व पदार्थों में व्यापक है।

सं. पु.—१ ईश्वर।

२ परब्रह्म।

३ शिव, महादेव।

स्रम—सं. पु. [सं. श्रमः] १ परिश्रम, मेहनत।

उ०—१ जिण दीध जनम जगि मुख दै जीहा, क्रिसन जु पोखण भरण करै। कहण तणौ तिणि तणौ कीरतन, **स्रम** कीधा विणु केम सरै।—वेलि

उ०—२ धर कवि कोट जनम **स्रम** धावै, इण कुळ गुण पर पार न पावै। धर हरि अंस हुवै धरपत्ती, सस्त्रबंध सामरथ सकत्ती।

—रा. रू.

क्रि. प्र.—करणौ।

२ साहित्य में संचारी भावों के अंतर्गत एक भाव।

३ दौड़धूप, प्रयत्न, प्रयास।

४ थकावट, थकान।

५ व्यायाम, कसरत।

६ अभ्यास।

७ खेद, रंज।

८ तपस्या।

९ आप नामक वसु के एक पुत्र का नाम।

रू. भे.—सरम, स्रम्म।

स्रमकरण–सं. पु. [सं. श्रमकरण] परिश्रम करने से निकलने वाली पसीने की बूंदें।

स्रमजळ, स्रमजल–सं. पु. [सं. श्रमजल] पसीना, स्वेद।

स्रमण–सं. पु. [सं. श्रमणः] १ सर्व पाप, दोषादि से रहित साधु, मुनि। (जैन)

२ भगवान महावीरस्वामी का उपनाम।

उ०—माहण **स्रमण** साक्यादिकैं, मांडी मोटी साल। असनादिक निपजाय नैं, दांन देऊं दग चाल।—जयवांणी

३ बौद्ध भिक्षुक।

वि. [सं. श्रमण] १ परिश्रमी, मेंहनती।

२ तपस्या करने में तत्पर, तपस्या का कष्ट सहन करने वाला।

३ दुष्ट, पतित।

४ पाखंडी, ढोंगी।

५ देखो 'स्रवण' (रू. भे.)

उ०—१ नइणि नै **स्रमण** बेवइ निही, कठै तात माता कठै। निगुण ना किणही जायौ नहीं, उठै आप आतिमि अठै।—पी. ग्रं.

उ०—२ सूपनखा रौ **स्रमण**, नाक वाढियौ निभै नरि। निमौ अकलि रुघनाथ, अनंत पंचवटी ऊपरि।—पी. ग्रं.

उ०—३ धरी **स्रमण** मंत्री परधांनै, अकस अमीर लगौ असमांनै। गुदरावी सुज बात सुग्यांनै, कमधांनाथ सुणी सुज कांनै।

—रा. रू.

स्रमबिंदु–सं. पु. [सं. श्रमबिन्दु] पसीना, स्वेद।

स्रमविभाग–सं. पु. [सं. श्रमविभाग] मजदूरों के संबंध का विभाग।

स्रमसीकर–सं. पु. [सं. श्रमशीकर] श्रमबिंदु।

स्रमिस्ठ–सं. पु. [सं. श्रमिष्ठ] अक्रूर एवं अश्विनी के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

स्रम्म—देखो 'स्रम' (रू. भे.)

स्रयांणी–सं. स्त्री.—स्त्री, औरत।

स्ररक–सं. पु. [सं. सरक] घोड़ा, अश्व। (डिं. नां. मा.)

स्रलोक, स्रलोकौ—१ देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

उ०—**स्रलोकां** धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माढ रै राग सौभाग गावै। बंबी बीण सैतार सैनाय बाजै, त्रमाळा घुरै मेघ माळा तराजै।—मे. म.

२ देखो 'सिलोकौ' (रू. भे.)

स्रवंति, स्रवंती–सं. स्त्री.—नदी, सरिता। (अ. मा; ह. नां. मा.)

स्रव–सं. पु. [सं श्रवः] १ कान, कर्ण। (अ. मा; डिं. को.)

२ झरना, स्रोता। (डिं. को.)

३ मूत, मूत्र, पेशाब। (डिं. को.)

४ देखो 'सरव' (रू. भे.)

उ०—१ तूं **स्रव** बीज अबीज सांइ सुभीयांणी।

—केसौदास गाडण

उ०—२ माता मारीछ तणी तैं मारि, आयौ इहिला नां आज उधार। बळाक्रम तुझ निमौ **स्रव** बाप, चत्रभुज आप चढावै चाप।

—पी. ग्रं.

स्रवजांण—देखो 'स्रबजांण' (रू. भे.)

स्रवण–सं. पु. [सं. स्रवनं] १ चुआव, टपकाव।

२ पसीना, स्वेद।

३ मूत्र, पेशाब।

[सं. श्रवणं] ४ कान, कर्ण। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ धर अंबर रज डंबर अंधारां, जोगण करि चवसठि जैकारां। आतसवांण चिला मझि आंणै, तेज अमोघ **स्रवण** लगि तांणै।—सू. प्र.

उ०—२ जिह्वा न बोलै झूठ, **स्रवणां** झूठ न सांभळै। वरजै कुण बैंकूठ, माधव दरगह मोतिया।—रायसिंह सांदू

उ०—३ सुणि **स्रवणि** वयण मन माहि थियौ सुख, क्रमियौ तासु प्रणांम करि। पूछत पूछत गयौ अंतहपुरि, हुओ सुदरसण तणौ हरि।—वेलि

५ गर्भपात।

६ स्तन।

७ कान से प्राप्त होने वाला ज्ञान, अनुभूति।

[सं. श्रवणः] ८ तीर के आकार का सत्ताईस नक्षत्रों में से बाइसवां, नक्षत्र। (ज्योतिष) (अ. मा; नां. मा.)

उ०—**स्रवण** नखित्र मझ जनम तास सुण, कहियौ सरब गाह चौ कारण। गाथा नाम छत्रीस गिणावै, ग्रंथ अनेक वडा कवि गावै।—र. ज. प्र.

९ नवधा भक्ति में से एक प्रकार की भक्ति जिसमें आराध्य देव के चरित्र कथा आदि का श्रवण करते हैं।

१० शेषनाग।

११ मुरासुर के सात पुत्रों में से एक, जो कृष्ण द्वारा मारा गया था।

१२ सोम की सत्ताईस स्त्रियों में से एक स्त्री का नाम।

१३ अक्रूर एवं अरुणा के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रों में से एक।

१४ एक तपस्वी जो वैश्य पिता एवं शूद्र माता का पुत्र था। इसकी मृत्यु दशरथ के हाथों हुई।

वि. वि.—यह अपने माता-पिता का बड़ा ही भक्त था। अपने अंधे माता-पिता की काशीयात्रा की अभिलाषापूर्ति हेतु उन्हें कन्धे पर बिठाकर काशीयात्रा प्रारम्भ की। यात्रा के दौरान यह एक बार रात को जलाशय से पानी लेने गया था। उस समय इसके पानी भरने की आवाज से इसे कोई वन्य प्राणी समझकर मृगया हेतु

आये दशरथ ने इस पर शरसंधान किया और इसकी मृत्यु हो गई।

अपनी असावधानी से हुई ब्रह्महत्या से दशरथ विह्वल हुआ किन्तु इसने उसका समाधान किया। तत्पश्चात् इसके माता-पिता ने दशरथ को पुत्र के शोक से पीड़ित होकर मृत्यु पाने का शाप दिया। इसकी अकाल मृत्यु के कारण इसके माता-पिता की भी दुख से मृत्यु हो गयी।

रू. भे.—सरवरण, सवरण, स्रमण, स्रव्वण।

स्रवणद्वादसी–सं. स्त्री. [सं. श्रवणद्वादशी] भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की श्रवण नक्षत्र में होने वाली द्वादशी।

स्रवणपथ–सं. पु.—वह इन्द्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है, कान।

स्रवणपाल, स्रवणपालि, स्रवणपाली–सं. पु. [सं. श्रवण+पालिः] १ कान की नोक।

२ कान में धारण किया जाने वाला एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—''' मणिजालक रत्नजालक मांनक गोपुच्छक उरस्त्रिक मगध वरण्णसर कदंबपुस्प कललभंगक अभ्रमेसक नुटक संकलिक स्रबणपीठ **स्रवणपाल** वैस्टिक हस्तसंकलिका'''इति आभरणांति।
—व. स.

स्रवणपीठ–सं. पु. [सं. श्रवणपृष्ठः] कान में धारण करने का एक आभूषण विशेष।

उ०—'''मणिजालक रत्नजालक मांनक गोपुच्छक उरस्त्रिक मगध वरण्णसर, कदंबपुस्प कललभंगक अभ्रमेसक नुटक संकलिक **स्रवणपीठ** स्रवणपाल वैस्टिक हस्तसंकलिका '''इति आभरणांनि।
—व. स.

स्रवणौ, स्रवबौ–क्रि. अ. [सं. श्रवणं=श्राव] १ बहना।

२ बरसना।

उ०—१ जळजाळ **स्रवति** जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल। आधोफरै मेघ ऊधसता, महाराज राजै महल।—वेलि

उ०—२ नाइका आउस दीध नरींद. आंणी रिख स्रंग **स्रवै** जिम इंद।—रांमरासौ

३ झरना, रिसना, चूना।

उ०—लागी दळि कळि मळयानिळ लागै, त्रिगुण परसतै खुधा त्रिस। रटति पूत मिसि मधुप रूंखराइ, मात **स्रवति** मधु दूध मिसि।—वेलि

४ टपकना, गिरना।

५ सुनना।

उ०—बंभण मिसि वंदै हेतु सु बीजौ, कही **स्रवणि** संभळी कथ। लिखमी आप नमै पाइ लागी, अचरिज कौ लाधै अरथ।—वेलि

स्रवणहार, हारौ (हारी), स्रवणियौ—वि०।

स्रविग्रोड़ौ, स्रवियोड़ौ, स्रव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

स्रवीजणौ, स्रवीजबौ—भाव वा०।

स्रवत–सं. पु. [स. स्रष्ट] ईश्वर। (नां. मा.)

स्रवता–सं. पु. [सं. सविता] सूर्य, सूरज। (डिं. को.)

स्रवती–सं. स्त्री.—नदी। (ह. नां. मा.)

स्रवदायक–सं. पु. [सं. सर्वदायक] कल्पवृक्ष। (अ. मा; नां. मा.)

स्रवमंगळा, स्रवमंगला—देखो 'सरवमंगळा' (रू. भे.) (अ. मा.)

स्रवस–सं. पु. [सं श्रवस्] १ दक्षसावर्णि मनु के पुत्रों में से एक।

२ भृगु ऋषि के पुत्रों में से एक।

३ अमिनाभ देवों में से एक।

स्रवसार–सं. पु.—शब्द, ध्वनि। (अ. मा.)

स्रवाड़ा–सं. पु.—कथा, बात, वृत्तान्त।

स्रवियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बरसा हुआ. २ टपका हुआ, गिरा हुआ. ३ रिसा हुआ, चूआ हुआ. ४ बहा हुआ. ५ सुना हुआ।
(स्त्री. स्रवियोड़ी)

स्रविस्टा, स्रविस्ठा–सं. पु. [सं. श्रविष्ठा] १ घनिष्ठा नक्षत्र।

२ श्रवण नक्षत्र।

स्रवेति, स्रवेती–सं स्त्री.—नदी, सरिता। (ह. नां. मा.)

स्रव्व—देखो 'सव्व' (रू. भे.)

स्रसतर—देखो 'स्रस्तर' (रू. भे.) (डिं. को.)

स्रस्ट, स्रस्टा–सं. पु. [सं. स्रष्टृ] १ ब्रह्मा।

२ विष्णु।

३ शिव, महादेव।

४ ईश्वर।

वि.—१ सृष्टि का निर्माता, कर्त्ता।

२ देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

उ०—जग रखवाळ जगतचौ जांमी, सुरनर इस्ट **स्रस्ट** चौ सांमी।
—रा रू.

स्रस्टि–सं. स्त्री. [सं. सृष्टिः] १ संसार, विश्व।

उ०—१ नमौ नमांमी अंतरयांमी, सरव स्वांमी **स्रस्टि** ए। वंदौ सदाई सुखदाई, चित्त आई इस्ट ए।—करुणासागर

उ०—२ नमौ अपरम्म नमौ अखिलेस, नमौ अव्यक्त नमौ सरवेस। नमौ ऊं रूप नमौ ऊंकार, नमौ अजरांमर **स्रस्टि** आधार।—ह. र.

२ संसार के चराचर प्राणी व पदार्थ।

३ पृथ्वी, जमीन।

४ निर्माण, रचना।

५ कंस के एक भाई का नाम।

६ एक देवी का नाम।

रू. भे.—ससटी, सिसट, सिसटी, सिस्टी, स्रस्ट, स्रस्टि, स्रस्टी, स्रिस्ट, स्रिस्टि, स्रिस्टी।

स्रस्टिकरता–सं. पु. [सं. सृष्टिकर्त्तृ] १ ब्रह्मा।

२ सृष्टि की रचना करने वाला, ईश्वर।

स्रस्टिवेल, स्रस्टिवेलि, स्रस्टिवेली-सं. स्त्री.—एक प्रकार की लता विशेष ।

उ०—संखाहूली सताउरी, **स्रस्टिवेलि** नइं सोम । साथरि सारस सींगडी, पूरीसह परि रोम ।—मा. कां. प्र.

स्रस्टी—देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

उ०—सारी **स्रस्टी** मैं कुंडळ छळ करियौ, भारी हा हा ! रव भूमंडळ भरियौ । बसुधा काळी री ताळी तड़ बागी, भिड़ियां सोनां री चिड़ियां पड़ भागी ।—ऊ. का.

स्रस्टीवार—सं. पु.—सृष्टि के क्रमानुसार ।

उ०—निरद्वंद नाथ आस्रम अनाथ वह **स्रस्टीवार** प्रलयांत पार । विस्रांमव्यूढ गोतीत गूढ, निरगुरण निरीह आधार ईह ।—ऊ. का.

स्रस्तर—सं. पु. [सं संस्तर:] १ शय्या, बिस्तर ।

२ घास, फूस आदि का आसन ।

रू. भे.—स्रसतर ।

स्रांत—वि. [सं. श्रांत] १ परिश्रम से थका हुआ ।

२ दुःखी, खिन्न ।

३ जितेन्द्रिय । (डिं. को.)

४ जो सुख भोगकर तृप्त हो चुका हो ।

सं. पु.—साधु, तपस्वी ।

स्राद्ध—सं. पु. [सं. श्राद्धम्] १ श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला कार्य ।

२ वह कृत्य जो सनातनी हिंदुओं में शास्त्र के विधानानुसार पितरों के उद्देश्य से तीर्थ स्थानों में किया जाता है ।

उ०—इसड़ा पुरांण रा वचन सांभळ संग साथ करि गयाजी हालियौ । तेथी जाय स्नांन दांन **स्राद्ध** क्रिया करि पिंडदांन करणौ लाग्यौ ।—बैताळ पच्चीसी

वि. वि.—श्राद्ध अपने मृत प्रियजनों की आत्मशांति के लिए किया जाता है । प्रायः श्राद्ध मृत्यु की वर्षगांठ पर या अमावस्या के दिन किया जाता है । इस दिन महाविष्णु के ध्यान के पश्चात पितरों के प्रीत्यर्थ तर्पण श्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन करवाते हैं । गया, बद्रीनाथ आदि पुण्य स्थलों पर श्राद्ध करने से दिवंगत आत्मा को विष्णु पद की प्राप्ति होती है, ऐसा विश्वास किया जाता है । यह कृत्य आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में किया जाता है । इसे पितृपक्ष भी कहते हैं ।

३ आश्विन मास का कृष्ण पक्ष ।

४ आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में मृत व्यक्ति या पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला कृत्य या कर्म ।

रू. भे.—सराद, सराध, साद, साध, स्राध ।

स्राद्धकरता—सं. पु. [सं. श्राद्धकर्ता] श्राद्ध करने वाला व्यक्ति ।

स्राद्धदेव, स्राद्धदेवता—सं. पु. [सं. श्राद्धदेव] १ मार्कण्डेय पुराणानुसार वैवस्त मनु का एक नाम जो श्रद्धा का पति था ।

२ यमराज, धर्मराज ।

३ ब्राह्मण ।

रू. भे.—साददेव, साधदेव ।

स्राद्धपक्ख, स्राद्धपक्ष, स्राद्धपख—सं. पु. [सं. श्राद्धपक्ष] आश्विन मास का कृष्ण पक्ष ।

रू. भे.—सरादपक्ष, सरादपख, सराधपक्ष, सराधपख, सादपख, सादपक्ष, साधपख ।

स्राद्धपूनम, स्राद्धपूरणिमा—सं. स्त्री. [सं. श्राद्धपूर्णिमा] भादौ मास की पूर्णिमा ।

रू. भे.—सरादपूनम, स्राधपूनम, स्राधपूरणिमा ।

स्राध—देखो 'स्राद्ध' (रू. भे.)

स्राधपूनम, स्राधपूरणिमा—देखो 'स्राद्धपूनम' (रू. भे.)

स्राप—देखो 'सराप' (रू. भे.)

उ०—१ विस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रैण पै हूंत गोतम्म तारी । पति **स्राप** हूं देह पाई पखांणी, जिका दिव्य देहा हुई स्रब्ब जांणी ।—सू. प्र.

उ०—२ तरै इण बूट कह्यौ—मैं तौ थांनूं वरजियौ थौ । पण थै मांनियौ नहीं । हमैं गोहिलां सूं खेड़ जाज्यौ । पड़िहारां सूं मंडोवर जाज्यौ । इणां दोनां ही बूंट **स्राप** देनै उड़ गई । नैणसी

उ०—३ इतरी कहि भरमल बोली—जो रै पापी थै आया, सौ बुरी करी । जुंवाई कर मारणौ न थौ । इण तरह कामू सिध करस्यौ । थांनूं महापाप **स्राप** लागसी ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

स्रापणौ, स्रापबौ—देखो 'सरापणौ, सरापबौ' (रू. भे.)

उ०—इण रा न्याय रौ कायदौ इण नूं न पहुंचौ छै नै अन्याई **स्रापियौ** सारा संसार रौ तौ अन्याई पणा रौ तोटौ उणां नूं न पहुंच्यौ छै ।—नी. प्र.

स्रापणहार, हारौ (हारी), स्रापणियौ—वि० ।

स्रापिओड़ौ, स्रापियोड़ौ, स्राप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

स्रापीजणौ, स्रापीजबौ—कर्म वा० ।

स्रापियोड़ौ—देखो 'सरापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. स्रापियोड़ी)

स्रायक—वि. [सं. श्रव] बरसाने वाला, देने वाला ।

उ०—१ सूर प्रभवतौ तेज, तेज नह इम्रत **स्रायक** । यिम्रत स्रायक चंद, चंद नह स्यांम सुभायक ।—र. ज. प्र.

उ०—२ नायक रमा नयण कज नरवर, सुखदायक निज जन सयण । भगत-विछळ मन महण सुभायक, निमौ सुधा **स्रायक** नयण ।—र. ज. प्र.

स्राव—सं. पु. [सं. स्राव:] १ बहाव, रिसाव, टपकाव ।

२ गर्भपात, गर्भस्राव ।

३ पेड़-पौधों व जीव-जन्तुओं के भीतरी अंगों से निकलने वाला तरल पदार्थ, रस ।

४ युवनाश्व प्रथम का पुत्र, शावस्त।

उ०—ग्रारद्र जेयसुत वंस ग्रोप, जै सुत जवनासव ब्रह्म जोप। संभ्रम जवनासव हुवौ स्राव, ब्रहदस्व जेण सुत तप वधाव।
—सू. प्र.

स्रावक, स्रावग-सं. पु [सं. श्रावक] (स्त्री. स्राविका) १ शिष्य, ग्रनुयायी।

उ०—१ पाली मैं एक जणौ भीखणजी स्वांमी सूं चरचा करतां ऊंधौ ग्रवलौ बोलै। कहै—थांरा **स्रावक** इसा दुस्टी सौ किणही रा गला मांहि थी पासी नहीं काढै।—भि. द्र.

उ०—२ स्वांमीजी रा **स्रावकां** रै संका घालवा री उपाय करवा लागा। जद स्रावक पिण उणां रै ठागा रौ उघाड़ करवा लागा।
—भि. प्र.

२ जो वारह सूत्रों का पालन करता हो, जैन धर्मानुयायी, जैनी।

उ०—१ एतौ कुंबर सुबाहु तिण समैं, **स्रावक** हुवौ छै ग्रायौ रे। भेद जीव ग्रजीव ना ग्रोलख्या, जांण्या भलै पुण्य नै पायौ रे।
—जयवांणी

उ०—२ परंतु प्रथ्वीराज रौ मंत्री उणरा उक्तरूप इंद्रजाळ रा उब्दंघन मैं न ग्रायौ र **स्रावक** रा प्रेरिया समस्त ही फंद जांण लिया।—वं. भ.

उ०—३ पंच महाव्रत जै धरइ गति पांमइजी, **स्रावक** ना व्रत बार देवगति पांमइ जी। ध्यांन भलुं हियड़इ धरइ गति पांमइ जी, पालइ सील उदार देवगति पांमइ जी।—स. कु.

३ बौद्ध संन्यासी।

४ जैन संन्यासी।

५ धर्मोपदेश सुनने वाला, श्रोता।

७ बौद्ध भक्त।

वि.—१ चुग्राने वाला, बहाने वाला।

२ सुनने वाला।

रू. भे.—सावक, सावग।

स्रावगी-सं. पु. [सं. श्रावगी] जैन स्रावक, जैनी।

उ०—१ एक दिन घणा **स्रावगियां** स्वांमी नैं कह्यौ—ग्राप वस्त्र न राखौ तौ ग्रापरी करणी भारो घणी। जद स्वांमीजी कह्यौ—म्हैं स्वेतांबर सास्त्र थी घर छोडचा है। तिण मैं तीन पछैवड़ी चोलपटौ ग्रादि कह्या है जिणां सूं राखां हां।—भि. द्र.

उ०—२ सांमजी रांमजी बूंदी रा वासी। **स्रावगी** जाति रा बेद। दोनूं भाई वेला रा (जोड़ै जनम्या)। उणीयारौ सूरत एक सरीखी दिसै। केलवै दीक्षा लेवा ग्राया।—भि. द्र.

उ०—३ हरीया कळिका बंभना, करम करै किरसांन। का तौ होवै **स्रावगी**, सेवै मड़ा मसांन।—ग्रनुभववांणी

रू. भे.—सरावगी, सावगी।

स्रावण-वि.—१ देने वाला, चुग्राने वाला, बरसाने वाला।

उ०—प्रफुलंत ग्रथध दतवार, तप ग्रोज सरण **स्रावण** ग्रम्रत। तन एक रांम दसरथ सुतण, विहद सात गुण निरवहत।
—र. ज. प्र.

२ सांवण संबंधी, सांवण मास का।

३ देखो 'सांवण' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ ग्रगिणत दांन निजर पह ग्रागै, लूंबां किर **स्रावण** झड़ लागै। उर 'ग्रगजीत' हरख ग्रधकायौ, सरद निसा कि उदधि सवायौ।—रा. रू.

उ०—२ तद भरमल ग्ररज कीवी, "जौ मनैं वैण देवौ तौ थांनुं घोड़ां पुहचाऊं।" तद कुंवरसी कह्यौ, "किसौ वैण मांगौ?" तद इण कही, "**स्रांवण** री तीज ग्रठै पधारौ।"
—कुंवरसी सांखला री वारता

४ देखो 'स्रांवण' (रू. भे.)

स्रावणि, स्रावणी-सं. स्त्री [सं. श्रावणी] १ श्रावण मास की पूर्णिमा, इस दिन ब्राह्मण तर्पण यज्ञोपवीत धारण करते हैं एवं इसी दिन रक्षाबंधन त्यौंहार होता है।

२ देखो 'सांवणी' (रू. भे.)

स्रावणौ, स्राववौ-क्रि. स.—१ बरसाना।

२ गिराना, टपकाना।

३ बहाना।

स्रावणहार, हारौ (हारी), **स्रावणियौ**—वि०।

स्राविग्रोड़ौ, स्रावियोड़ौ, स्राव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

स्रावीजणौ, स्रावीजबौ—कर्म वा०।

स्रावस्त-सं. पु. [सं. श्रावस्त] इक्ष्वाकुवंशीय राजा जो वृहदश्व का पिता एवं युवनाश्व (द्वितीय) का पुत्र था। मतान्तर से श्राव राजा का पुत्र था।

स्रावस्ति, स्रावस्ती-सं. स्त्री. [सं. श्रावस्ती] श्रीरामचन्द्र के पुत्र लव की राजधानी का नाम।

स्रावियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ बरसाया हुग्रा. २ गिराया हुग्रा, टपकाया हुग्रा. ३ बहाया हुग्रा।

(स्त्री. स्रावियोड़ी)

स्रिग—देखो 'स्रंग' (रू. भे.)

स्रिगक—देखो 'स्रंगक' (रू. भे.)

उ०—गज रूपां सीस फाबि फरहरिया, उण उणिहार इक्ख ए। ग्रारुहि करि ग्रछर मेरगिरि स्रिगी, विभ्रम **स्रिगक** पेख ए।
—गु. रू. बं.

स्रिगार—देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

उ०—१ पदमणि तठै तेजमणि भूपति, ग्रातुर गयौ मदन सुख ग्रारति। सुंदरि दीठ **स्रिगार** सोळ सझि, मुरछा ग्राय पड़ै उपवन मझि।—सू. प्र.

उ०—२ बाजोटा ऊतरि गादी बैठी, राजकुंग्ररि **स्रिगार** रस

इतरै एक आली लै आवी, आंनन आगळि आदरस ।—वेलि

स्त्रिगी—देखो 'स्रंग' (रू. भे.)

उ०—गज रूपां सीस फाबि फरहरिया, उरा उरिाहार इक्ख ए। आरुहि करि अच्छर मेरगिरि **स्त्रिगी**, विभ्रम स्त्रिगक पेख ए।
—गु. रू. बं.

स्त्रि—देखो 'स्त्री' (रू. भे.)

स्त्रिक—देखो 'स्रक' (रू. भे.) (अनेका.)

स्त्रिखंड—देखो 'स्त्रीखंड' (रू. भे.)

उ०—बिन जड़ाव बाजुबंध, सम्म पाट सोहिया। **स्त्रिखंड** साखि जांणि स्त्रप्प, मैरा धार मोहिया।—सू. प्र.

स्त्रिज—देखो 'स्रक' (रू. भे.) (अनेका.)

स्त्रिय—देखो 'स्त्री' (रू. भे.)

उ०—१ दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी। **स्त्रिय** जीत पति गुरा परखि चखि, सुख सकस पखि जिम सुंदरी।—रा. रू.

उ०—२ रमा हुतासरिा सररिा न्हाए, हथि रांमरा **स्त्रिय** छांह हराए। छाया हररा हुवा दुख छाया, माया अबसि मोहवसि माया।
—सू. प्र.

उ०—३ करि वनफळ जळ अग्र जोड़ि कर, वंदन करि वन हलै स्त्रियावर। छलतां उमा एह नह छळिया, चित प्रणांम **स्त्रिय** रांम न चलिया।—सू. प्र.

स्त्रियखंड—देखो 'स्त्रीखंड' (रू. भे.)

उ०—**स्त्रियखंड** वर अगसार, संग अंबर तर घरासार। सुभ आज समधि प्रसिद्ध, करि गार तिरा जुति किद्ध।—रा. रू.

स्त्रिया—देखो 'स्त्री' (रू. भे.)

उ०—कवि ओपम ऐसी कहा, औपम और विचार। जांणिक भायौ रूप मन, पायौ **स्त्रिया** मुरार। रा. रू.

स्त्रियाबर, स्त्रियावर—देखो 'सीतावर' (रू. भे.)

उ०—१ करि वनफळ जळ अग्र जोड़ि कर, वंदन करि वन हलै **स्त्रियावर**। छलतां ऊमा एम नह छळियां, चित प्रमांरा स्त्रिय रांम न चलिया।—सू. प्र.

उ०—२ भुजां दुय च्यारि भुजां बळ भूप, रचै गजग्राह **स्त्रियावर** रूप। वहै खग साबळ तांत विनांरा, कटै जरदांरा जुवांरा केकांरा।
—सू. प्र.

स्त्रिलोक, स्त्रिलोकूं—१ देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

उ०—ऐसी विध पंडतराज चातुरच कळा प्रवीरा **स्त्रिलोकूं** का प्रबंध अनेक विध विमळ बांणी सै उच्चरै जिनूं सैं रीझ स्त्रीमहाराज कनक जग्योपवीत चढाया।—सू. प्र.

२ देखो 'सिलोको'।

स्त्रिस्ट, स्त्रिस्टि, स्त्रिस्टी—देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

स्त्रींगी—देखो 'स्रंगी' (रू. भे.) (अ. मा.)

स्त्री—सं. स्त्री. [सं. श्री] १ लक्ष्मी, रमा। (एका.) (अ. मा.)

२ पृथ्वी, भूमि, जमी। (,,)

३ धन-दौलत, सम्पत्ति। (,,)

४ कीर्ति, यश। (,,)

५ कान्ति, चमक। (,,)

६ मर्यादा, सीमा। (,,)

७ इज्जत, प्रतिष्ठा।

८ कुशलक्षेम। (,,)

९ प्रकाश। (,,)

१० शोभा, सौन्दर्य। (,,)
(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

११ सरस्वती।

१२ सिद्धि।

१३ गिरजा, पार्वती। (अ. मा.)

१४ सीता। (अ. मा.)

१५ हाथी के मस्तक का आभूषण विशेष।

१६ त्रिवर्ग-धर्म, अर्थ और काम।

१७ धूप।

१८ साल वृक्ष।

१९ पैर के तलुए में होने वाली एक रेखा जो शुभ मानी जाती है।
(सामुद्रिक)

२० एक रागिनी जो सूर्यास्त के समय गाई जाती है।

२१ स्त्रियों के माथे का आभूषण विशेष।

२२ बुद्धि, प्रतिभा।

२३ स्त्री, पत्नी।

२४ अलौकिक शक्ति।

२५ सजावट।

२६ बेल का पेड़।

२७ कमल।

२८ सफेद चंदन।

२९ एक औषधि विशेष।

३० ऊर्ध्व पुंड्र के बीच लम्बी नोकदार लाल रंग की रेखा।

३१ अधिकार।

३२ उच्च पद।

३३ एक आदर सूचक शब्द जिसका प्रयोग देवी-देवताओं, राजाओं, धार्मिक ग्रन्थों के नाम के पूर्व किया जाता है।

ज्यूं—स्त्रीपाबूजी राठौड़, स्त्रीभागवत, स्त्रीमहमाय साय छै।

३४ धर्म ऋषि की पत्नी का नाम।

सं. पु.—१ ब्रह्मा।

२ विष्णु।

३ कुबेर।

४ संपूर्ण जाति का एक राग। (संगीत)

५ वैष्णवों का एक सम्प्रदाय विशेष।

६ एक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक पद में एक गुरु होता है।

७ मंगल-सूचक शब्द जो किसी लिखावट के आरम्भ में प्रयुक्त होता है।

वि.—१ बुद्धिमान। (एका.)

२ श्रेष्ठ, सुन्दर।

३ शुभ, उत्तम।

४ योग्य, लायक।

सर्व—अपने, स्वयं के। (सम्मान)

उ०—१ महाराज कै जोधांण के राव हथळूं पहल कीए बीजळूं कै घाव। केतेक वाघूं पर आप असि धरै। सेल तरबारूं का घाव स्री हथूं सै करै।—सू. प्र.

उ०—२ बोहौ लोह भूप सुभड़ां बकसि, स्री हाथै खग साहियौ। करि क्रोध मधू माथै किनां, लखमी-बर नंदक लियौ।—मे. म.

रू. भे.—सरी, सिरि, सिरी, सी, स्रि, स्रिय, स्रिया, स्रीय, स्रीया।

स्रीकंठ—सं. पु. [सं. श्रीकंठ] शिव, महादेव। (अ. मा; नां. मा.)

रू. भे.—सीकंठ।

स्रीकंठसखा—सं. पु. यौ. [सं. श्रीकंठसखा] कुबेर।

स्रीकंठी—सं. स्री. [सं. श्रीकंठी] कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी। (संगीत)

स्रीकंत—सं. पु. [सं. श्रीकांत] लक्ष्मीपति, विष्णु।

रू. भे.—सीकंत।

स्रीकमळ—सं. पु. [सं. श्रीकमल] मुख।

स्रीकर—सं. पु. [सं. श्रीकर] १ विष्णु।

२ लालकमल।

वि.—शोभा बढ़ाने वाला।

स्रीकरी—सं. स्री. [सं. श्रीकरी] कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी। (संगीत)

स्रीकरण, स्रीकरणा, स्रीकरणिक, स्रीकरणीक, स्रीकरिणिक—वि. [सं. श्रीकरण] १ खजाने की देखरेख करने वाला, कोषाध्यक्ष।

उ०—जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत लघुसामंत तलवर तंत्रपाल चतुरसीतिक तांडकपति मंत्रि महामंत्रि ग्रहकहक **स्रीकरिणिक** व्ययकरिणिक राजकरणिक.........।—व. स.

२ वैभव की वृद्धि करने वाला।

३ धन इकट्ठा करने वाला।

रू. भे.—स्रीगरण, स्रीगरणा, स्रीगरणिक, स्रीगरणीक, स्रीगरिणिक।

स्रीकांत—सं. पु. [सं. श्रीकांत] १ विष्णु।

२ श्रीरामचंद्र भगवान।

३ श्रीकृष्ण।

४ महादेव, शिव।

स्रीकार—वि. [सं. श्रीकार] १ श्रेष्ठ, उत्तम, कल्याणकारी।

उ०—१ चौ विधि देव मिली रच्यौ, समवसरण **स्रीकार**। स्वांमि बैठा सिंहासणैं, बैठी परसद बार।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ नंदी सूत्र मइं मांन वखांण्यउ, मांन ना पांच प्रकार रे। मति सुति अवधि अनइ मन, परयन केवल मांन **स्रीकार** रे।
—स. कु.

उ०—३ जठै तठै इण जगत मैं, जीकारौ **स्रीकार**। बालौ जस रा बायकां, तूंकारौ तन सार।—बां. दा.

२ श्री अक्षर का आकार, बनावट।

३ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती हैं। (ल. पि.)

स्रीकिसण, स्रीकिसन—देखो 'स्रीक्रस्ण' (रू. भे.)

स्रीकीरति—सं. पु.—ताल के आठ भेदों में से एक भेद।

स्रीकास्ट, स्रीकास्ठ—सं. पु. [सं. श्रीकाष्ठ] वह प्रदेश जिसे नल राजा ने विजय किया था।

उ०—पस्चिम दिसिना एतला देस, सबल सैन्यइ करी जीपइ नरेस। बरबर बूजर कास्मीर कार, **स्रीकास्ठ** स्रीराज्य हिमालय सार।
—नळदवदंती रास

स्रीक्रसण, स्रीक्रस्ण, स्रीक्रिसण, स्रीकिस्ण—सं. पु. [सं. श्रीकृष्ण] श्रीकृष्ण भगवान् का नाम।

रू. भे.—सीकिसण, सीकिसन, स्रीकिसण, स्रीकिसन।

स्रीखंड, स्रीखंडस—सं पु. [सं. श्रीखण्डः] १ चंदन। (अ. मा; नां. मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ बाजूबंध बंधै गोर बाहु बिहुं, स्यांम पाट सोहंत सिरी। मणिमैं हींडि हींडळै मणिधर, किरि साखा **स्रीखंड** की।—वेलि

उ०—२ डोहंत सूंडा डंड ए, **स्रीखंड** सरपक हिंड ए। गज-वाग मत्थै मैंगळां, वळकत्त वीजक वद्दळां।—गु. रू. बं.

२ दही, चीनी, केशर, कपूर, मेवे आदि के मिश्रण से बनाया जाने वाला एक प्रकार का गाढ़ा पेय पदार्थ, शिखरन।

रू. भे.—सीखंड, स्रियखंड।

स्रीखंडसेल—सं. पु. यौ. [सं. श्रीखंडशैल] मलयागिरि पर्वत।

स्रीखांवद, स्रीखांविद, स्रीखावंद, स्रीखाविंद—सं. पु. [सं. श्री+फा. खांविद] १ विष्णु।

२ श्रीरामचन्द्र।

स्रीगंण—सं. पु.—नैऋत्य और दक्षिण के मध्य की उपदिशा।

स्रीग—देखो 'स्रंग' (रू. भे.)

स्रीगणेस—सं. पु. [सं. श्री+गण+ईश] १ किसी ग्रंथ, पत्र आदि के आरंभ में लिखा जाने वाला शब्द।

२ आरंभ, शुरुआत।

स्रीगरण, स्रीगरणा, स्रीगरणिक, स्रीगरणीक, स्रीगरिणिक—देखो

'स्रीकरणिक' (रू. भे.)

उ०—१ एकदा सभाइ बइठउ भूप, इंद्र सरीखुं उद्‌भुत रूप। स्रीगरणा वइगरणा घणा, मंडलीक मुड्‌धा नही मणा।
—नळदवदंती रास

उ०—२ राइ मनसिउं मेल्हिउ रोस, प्रजा सहूनइ हवु संतोस। स्रीगरणा वइगरणा मिली, प्रधांन सहू विमासइ वली।
—नळदवदंती रास

उ०—३ किरणइ करी जीवनइ सुख होइ, ग्रह नक्षत्र नु नायक जोइ। पुण्य राजा नु आदेस ज पालइ, स्रीगरणा ए च्यारइ माहलइ।—नळदवदंती रास

स्रीगिर, स्रीगिरि, स्रीगिरी—सं. पु. [सं. श्रीगिरि] हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।

रू. भे.—सिरगिर, सिरगिरि, सिरगिरी, सिरिगिरी।

स्रीचकर, स्रीचक्कर, स्रीचक्र—सं. पु. [सं. श्रीचक्र] भगवान् का दिव्य आयुध, चक्र, जिसका निर्माण विश्वकर्मा ने किया था।

स्रीजी—सं. पु.—राजा-महाराजाओं, ठाकुरों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के नाम के स्थान पर प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान-सूचक शब्द।

उ०—१ तठा पछै वेगी हीज स्रीमहाराजाजी री फौज पोकरण ऊपर आई। रावळ सबळसिंघ खारै रा डेरां आदमियां ७०० सूं आय स्रीजी रा साथ भेळौ हुवौ।—नैणसी

उ०—२ पछै स्रीजी घणौ आदर कर वडौ पटौ ८०००) रेख लवेरौ घणां गांवां सूं भोवाळ वधारै दी।—नैणसी

स्रीजुकत, स्रीजुक्त, स्रीजुत—वि. [सं. श्रीयुक्त] श्री से युक्त।

रू. भे.—स्रीयुत।

स्रीतळ, स्रीतल—सं. पु. [सं. श्रीतल] एक नरक का नाम।

स्रीतीरथ—सं. पु. [सं. श्रीतीर्थ] एक तीर्थ का नाम।

स्रीद—सं. पु. [सं श्रीदः] १ कुबेर।
(डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ विष्णु।

स्रीदत—सं. पु. [सं श्रीदत] १ कुबेर। (अ. मा.)

२ पृथ्वी, जमीन। (नां. मा.)

स्रीदांम, स्रीदांमण, स्रीदांमन—देखो 'सुदांमौ'।

स्रीदेवा—सं. पु.—वसुदेव की एक पत्नी का नाम।

स्रीदेवियांण, स्रीदेवीयांण—सं. स्त्री.—१ बीज मंत्राक्षरों में से एक बीज मंत्राक्षर।

२ बीजाक्षर।

३ बारहठ ईश्वरदास कृत देवी की स्तुति का छोटा ग्रन्थ।

स्रीधन्वी—सं. पु.—एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

स्रीधर—सं. पु.—१ जैनियों के अतीतकालीन सातवें तीर्थंकर का नाम।

२ विष्णु का एक नाम।

३ श्रीरामचन्द्र भगवान का एक नाम।

४ श्री कृष्ण। (अ. मा.)

५ ईश्वर, परमेश्वर। (नां. मा.)

उ०—स्रीधर स्रीरंग सियावर, स्रीपत, करणाकरण कारण करण। व्रजनायक विसवेस विसंभर, घणनांमी आणंद घण।—र. ज. प्र.

६ त्रेतायुग का एक राजा।

स्रीधांम—सं. पु. [सं. श्रीधाम] १ लक्ष्मी का निवास स्थान।

२ स्वर्ग, बैंकुठ।

स्रीनंदण, स्रीनंदन—सं. पु. [सं. श्रीनंदन] १ कामदेव, मनोज।
(अ. मा.)

२ श्रीरामचन्द्र।

३ विष्णु।

४ श्रीकृष्ण।

स्रीनाथ—सं. पु. [सं. श्रीनाथ] १ लक्ष्मीपति विष्णु।

उ०—विराजै नगां आप सूं रूप वीठौ, दळांनाथ स्रीनाथ रौ रूप दीठौ। वणै सांमळै गात भीणै वसन्नं, तिसी भूखणै जोत मोती रतन्नं।—रा. रू.

२ श्रीकृष्ण।

३ श्रीरामचन्द्र।

४ महादेव, शिव।

स्रीनितंबा—सं. स्त्री. [सं. श्रीनितम्बा] राधिका।

स्रीनिध, स्रीनिधि, स्रीनिधी—सं. पु. [सं. श्रीनिधि] भगवान् विष्णु का नाम।

स्रीनिवास सं. पु. [सं. श्रीनिवास] विष्णु का नामांतर।

स्रीपंचमी—सं. स्त्री. [स. श्रीपंचमी] माघ मास के शुक्लपक्ष की पंचमी जिसे वसंतपंचमी भी कहते हैं।

स्रीपत, स्रीपति, स्रीपती—सं. पु. [स. श्रीपति] १ विष्णु। (डिं. को.)

उ०—स्रीपत सरण सरोज रौ, गंगाजळ मकरंद। अलियळ ज्यूं कर पांन अब, अधिकावण आणंद।—बां. दा.

२ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

उ०—स्रीपति कुण सुमति तुझ गुण जु तवति, तारू कवण जु समुद्र तरै। पंखी कवण गयण लगि पहुचै, कवण रंक करि मेरु करै।—वेलि

३ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

४ श्रीरामचन्द्र।

उ०—स्रीधर स्रीरंग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण। व्रजनायक विसवेस विसंभर, घणनांमी आणंदघण।—र. ज. प्र.

५ कुबेर। (अ. मा.)

रू. भे.—सीपत, सीपति, सीपती।

स्रीपाळी—सं. स्त्री.—सौंठ। (अ. मा.)

स्रीपूज, स्रीपूजनीय, स्रीपूज्य—सं. पु.—१ जैन धर्मानुसार संप्रदाय के अधिपति, संघनायक, आचार्य।

२ जतियों के आचार्य ।

स्रीफळ, स्रीफल–सं. पु. [सं. श्रीफल] १ नारियल । (डिं. को.)

उ०—१ कटै पळ कमळ **स्रीफळ** कीध, लुही घट काढ जिकौ अ्रत लीध । धुबै रणताळ सभाळ न्रधोम, हकां धुनि वेद करै इम होम ।
—सू. प्र.

उ०—२ पणघट पर पणिहार, नीर कज नीसरी । **स्रीफळ** तणौ प्रमांण क सोभा सीस री । कच वेणी गूंथी कुसुम लपेटा लागणी, सांपडि खीर समदक निकसी नागणी ।—सिववक्स पाल्हावत

२ आंवला ।

३ बेल का वृक्ष । (ह. नां. मा.)

स्रीबंध, स्रीबंधव, स्रीबंधु–सं. पु. [सं. श्रीबंधु] १ चंद्रमा, चांद ।
(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ अमृत ।

रू. भे.—सीबंध, सीबंधव, सीवंधु ।

स्रीभरतार–सं. पु [सं. श्रीभर्तृ] १ विष्णु ।

उ०—हंस मीन कूरम हुऔ **स्रीभरतार** समत्थ । सरित हुवौ द्रव सोय सौ, किसू अच्छेरा कत्थ ।—बां. दा.

२ श्रीरामचन्द्र ।

३ श्रीकृष्ण ।

स्रीभांण, स्रीभांणु, स्रीभांनु–सं. पु. [सं. श्रीभानु] श्रीकृष्ण व सत्यभामा के एक पुत्र का नाम ।

स्रीभ्रात, स्रीभ्राता–सं. पु. [सं. श्रीभार्तृ] १ चन्द्रमा, चाँद ।

२ घोड़ा, अश्व ।

३ अमृत, सुधा ।

स्रीमंडळ, स्रीमंडळू–सं. पु. [सं. श्रीमंडल] १ एक वाद्य विशेष ।
(रा. सा. सं.)

उ०—देवतूं कै मन भूलतै डोलतै हैं अदंगूं कै परन धौलकूं कै टिकौर । सुरवीणू कै भणहण तंबूरूं कै घोर । ताळूं की भमक भंभरूं कै भणकार । कांम कै घुघर जैसै जंत्र कै तार पिनाकूं का परवेज **स्रीमंडळू** का सवाद ।—सू. प्र.

२ एक राग विशेष ।

उ०—इण भांति री आखाड़ै रंभा पात्र निरत कारणी सोळै सिणगार किआं थकां कांन रा भांभर वाजि नै रहिआ छै । **स्रीमंडळ** राग कलावंत घमंड राग जमावि नै रहिआ छै ।
—रा. सा. सं.

स्रीमंत–सं. पु. [सं. श्रीमंत] १ एक प्रकार का शिरोभूषण ।

२ किसी आदरणीय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक सम्बोधन ।

स्रीमति, स्रीमती–सं. स्त्री. [सं. श्रीमती] १ पर्णीता स्त्रियों के लिए सम्मानसूचक शब्द जो उनके नाम के पूर्व लगाया जाता है ।

२ सुंदरी, स्त्री ।

३ एक गन्धर्व कन्या का नाम ।

४ सृंजय राजा की कन्या दमयंती का नामांतर ।

रू. भे.—सीमति, सीमती ।

स्रीमदभगवतगीता—देखो 'भगवदगीता' ।

स्रीमदभागवत—देखो 'भागवत' ।

स्रीमांण, स्रीमांन–सं. पु. [सं. श्रीमान] १ आदरणीय व्यक्तियों के नाम के पहले लगाया जाने वाला आदरसूचक शब्द ।

२ सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

वि.—१ धनाढ्य, वैभवशाली ।

२ श्री से युक्त ।

स्रीमात, स्रीमाता–सं. स्त्री. [सं. श्रीमाता] कर्नाटक नामक राक्षस की वधकर्तृ एक मातंगी नामक देवी का अवतार ।

स्रीमाळ–सं. पु. [सं. श्रीमाल] १ भीनमाल कस्बे का एक प्राचीन नाम ।

२ वैश्यों की जैनमतावलम्बी जाति । (मा. म.)

स्रीमाळी–सं. पु. (स्री. स्रीमाळण) १ ब्राह्मणों की एक प्रसिद्ध जाति ।

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

रू. भे.—सिरमाळी ।

स्रीमुख–सं. पु.—विष्णु का मुख, वेद ।

२ सन्त, महात्मा, राजा, महाराजा तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति के 'स्वयं' के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।

उ०—१ जुधवार सुत 'अगजीत' रौ, रिण खळां अंतक रीतरौ । दिसि अस्ट **स्रीमुख** दाखवि, मोरचै फुरमांण ।—रा. रू.

उ०—२ हुवौ मूरछा मंत्रियां लीध हांमां, तकै रांन लेगा रथां चाढि तांमा । कहै **स्रीमुखां** रांण जोधां करारां, हणूं पूंछ रू अ्रत बांधौ हजारां ।—सू. प्र.

३ ब्रह्मावीसी का सातवां वर्ष । (ज्योतिष)

सर्व.—अपने, स्वयं के ।

रू. भे.—सिरीमुख ।

स्रीय, स्रीया—देखो 'स्री' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ फळं कंदळी **स्रीय** स्वादै अफारा, छयै स्रीय बादांम पिस्ता छुहारा । सुधा साव नारगियां रंग सोहै, महादेव देवेस मेवै विमोहै ।—रा. रू.

उ०—२ आपनां आप मारै अनंत इसौ ग्यांन महाराज रौ । माहरौ कंत प्यारौ मनां, **स्रीय** सुहावै बुरौ छौ ।—पी. ग्रं.

स्रीयुत—देखो 'स्रीजुत' (रू. भे.)

स्रीरंग–सं. पु. [स. श्रीरंग] १ भगवान विष्णु का एक नाम ।
(डिं. को.)

उ०—१ तन मछ जोजन स्रंग लख तण, रेण जन सत वरत रखण । समंद प्रळय विहार **स्रीरंग**, वेद मुख वांणी ।—र. ज. प्र.

उ०—२ स्रीधर **स्रीरंग** सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण ।

व्रजनायक विसवेस विसंभर, घणनांमी आणंदघण ।—र. ज. प्र.

२ श्रीकृष्ण ।

उ०—सतवार जरासंध आगळ, स्रीरंग बिमहा टीकम दीध बग ।
मेलि घात मारै मधुसूदन, असुर घात नांखै अलग ।

— जमणाजी सोदौ

३ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ अहि सारीखौ विसव औ, रखवाळौ स्रीरंग । तंना न भुजिसै त्रीकमा, अखि सै तिका भुइंग ।—पी. ग्रं.

उ०—२ रसणां रटै तौ रांम रट, आंमय लगै न अंग । जै सुख चाहै जीव रौ, (तौ) सुमरि सुमरि स्रीरंग ।—ह. र

४ श्रीरामचन्द्र ।

उ०—संघट तोड़ अघां घण स्रीरंग, कौड़ जमां भय कापै । आसा राघव पूर अनेकां, थांनक दासां थापै ।—र. ज. प्र.

स्रीरमण, स्रीरवण—सं. पु. [सं. श्रीरमणः] १ एक संकर राग । (संगीत)

२ विष्णु भगवान् ।

उ०—देखै भव दरियाव, रची पगां सूं स्रीरमण । नरा अपूरब नाव, नाविक बिण निरझर नदी ।—बां. दा.

३ श्रीकृष्ण ।

४ श्रीरामचन्द्र ।

स्रीरामलय—सं. पु.—हनुमान, पवनसुत । (अ. मा.)

स्रीराग—सं. पु.—संगीत में छः रागों में से तीसरा सम्पूर्ण जाति का एक राग ।

स्रीराज, स्रीराज्य—सं. पु. [सं. श्रीराज्य] वह प्रदेश जिसे नल राजा ने विजय किया था ।

उ०—पम्चिम दिसिना एतला देस, सबल सैन्यइ करी जीपइ नरेस । बरबर बूजर कास्मीर कार, स्रीकास्ठ स्रीराज्य हिमालय सार ।—नळदवदंती रास

स्रीवंति, स्रीवंती—सं. स्त्री.—नदी, सरिता । (अ मा.)

स्रीवक्खस्थळ, स्रीवक्षस्थळ, स्रीवखस्थळ—सं. पु. [सं. श्रीवक्षस्थल] १ श्रीकृष्ण । (अ. मा.)

२ श्रीविष्णु ।

३ ईश्वर, परमेश्वर । (नां. मा.)

स्रीवच्छ, स्रीवछ, स्रीवत्स—सं. पु. [सं. श्रीवत्सः] १ भगवान् विष्णु का एक नाम ।

२ भगवान् के वक्षस्थल पर लगा भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न ।

उ०—चूडांमणि बोलई सुणि ब्राह्मण, आदि विस्नु अहिनाण । पाई पदम उर स्रीवछ लछन, कोटइ कौस्तुभ मयण ।

—रुकमणि मंगळ

वि. वि.—मतान्तर से भगवान् विष्णु के वक्षस्थल पर स्थित चिह्न भृगु के चरण-प्रहार का नहीं है । दक्ष यज्ञ के समय, भगवान् शंकर ने एक प्रज्वलित त्रिशूल चलाया था । दक्ष यज्ञ का विध्वंस करके, वही त्रिशूल भगवान् विष्णु की छाती में आ लगा । भगवान् के वक्षस्थल पर स्थित चिह्न उसी त्रिशूल-प्रहार का है ।

३ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक । (ज्योतिष)

४ वार, नक्षत्र, सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में आठवाँ योग ।

स्रीवर—सं. पु. [सं. श्रीवर] १ भगवान् विष्णु । (नां. मा.)

२ श्रीरामचन्द्र ।

उ०—१ कीजै बारणै छिब कांम कौटिक, दीन दुख दाधौ । साभाव सरण-सधार स्रीवर, राजरौ राधौ ।—र. ज. प्र.

उ०—२ नेतबंध रघुनंद नाहर, छत्री सरण हित ऊछाहर । भभीखण कर लंक स्रीवर, मौज की महराज ।—र. ज. प्र.

३ परमेश्वर, ईश्वर । (नां. मा.)

उ०—१ ऊफणै दूध जळतां अगन, अंग तेम सत ऊफणै । स्रीवर सहाय धारै सती, आय खड़ी रायअंगणै ।—रा. रू.

उ०—२ रांम भजन विण अहळ जनम रे, नांम समर पय सिर नित नम रे । मांस असत तन चरमसु मळ रे, स्रीवर रट रट रसण सफळ रे ।—र. ज. प्र.

४ श्रीकृष्ण ।

रू. भे.—सिरीवर, सीवर ।

स्रीवलभ, स्रीवल्लभ—सं. पु. [सं. श्रीवल्लभः] १ भगवान् विष्णु ।

२ श्रीरामचन्द्र ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ ईश्वर, परमेश्वर ।

स्रीवास—सं. पु. [सं. श्रीवासः] १ भगावन् श्रीविष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

३ कमल ।

स्रीव्रक्ख, स्रीव्रक्ष, स्रीव्रख—सं. पु. [सं. श्रीवृक्ष] १ पींपल का वृक्ष । (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ बेल का वृक्ष ।

३ घोड़े के माथे व छाती पर की भौंरी ।

रू. भे.—सीब्रक्ख, सीव्रक्ष, स्रीब्रख, सीव्रक्ख, सीव्रक्ष, सीव्रख ।

स्रीव्रखक—सं. पु. [सं. श्रीवत्सकिन] वह घोड़ा जिसकी छाती पर भौंरी हो । (शा. हो.)

स्रीव्रत—सं. पु. [सं. श्रीव्रत] चैत्र शुक्ला पंचमी को किया जाने वाला व्रत ।

स्रीसंग—सं. पु. [सं. श्रीसंज्ञं] लौंग, लवंग । (अ. मा.)

स्रीसंघ—सं. पु. [सं. श्रीसंघ] १ जैन धर्मानुसार जहाँ श्रावक, श्राविका, साधु और साध्वी इन चारों का संगम या मिलाप हो ।

२ जैन धर्मानुसार श्रावक, श्राविका, साधु व साध्वी इन चारों का समूह ।

उ०—गांम नगरपुर विहरता रे, आव्या जिणचंदसूरि । स्रीसंघ

सांम्हउ संचरइ रे, वाजइ मंगल तूरि ।—स. कु.

स्रीसंप्रदाय–सं. पु.— वैरागी साधुओं का एक सम्प्रदाय विशेष ।

स्रीसंभूता–सं. स्त्री.—ज्योतिष में कर्ममास (श्रावण) की छठी रात्रि ।

स्रीसमाध, स्रीसमाधि, स्रीसमाधी–सं. पु. [सं. श्रीसमाधि] १ श्री, शुद्ध, मालश्री, भीमपालश्री टंक को मिलाकर बनाया जाने वाला एक राग ।

२ भविष्यकाल के सतरहवें तीर्थंकर का नाम ।

स्रीसहोदर–सं. पु. [सं. श्रीसहोदरः] १ चंद्रमा, चांद ।

२ मोती ।

३ समुद्र-मंथन के समय समुद्र से निकलने वाले चौदह रत्नों में से कोई एक ।

स्रीसाप, स्रीसाफ–सं. पु.—१ एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा ।

उ०—१ सिकलात मुखमल खास, तहताज अतलस तास । खुल इलायची खमखाप, सुजि मुलमुल **स्रीसाप** ।—सू. प्र.

उ०—२ वागां रा चिहुरबंध छूटै छै । सौ किण भांत रा वागा ? **स्रीसाफ** भैरव चौतार हजारी, गंगाजळ खासा वासता, इण भांति वागां रा चिहुरबंध छूटै छै ।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सिरीसाप ।

स्रीसुत, स्रीसुतण–सं पु. [सं. श्रीसुतः] कामदेव, मनोज । (डि. को.)

स्रीसुपास–स. पु. [सं. श्री पार्श्वनाथ] जैनियों के २४ तीर्थंकरों में से तृतीय तीर्थंकर, श्रीपार्श्वनाथ का नाम ।

स्रीस्यांम–सं. पु. [सं. श्रीश्याम] १ विष्णु भगवान् ।

२ श्रीरामचन्द्र ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ शिव, महादेव ।

५ ईश्वर, परमेश्वर ।

स्रीस्रीमाल–सं. पु.—जैन धर्म के अंतर्गत एक जाति विशेष । (मा. म.)

स्रीहजूर–सं. पु.—एक प्रकार का प्राचीन कर ।

रू. भे.—स्रीहुजूर ।

स्रीहर, स्रीहरि–सं. पु. [सं. श्रीहरि] १ विष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

स्रीहुजूर—देखो 'स्रीहजूर' (रू. भे.)

स्रु क—देखो 'सुक' (रू. भे.)

उ०—भर फूल फळित अढारभार, जुथ करत भ्रमर भणहण गुंजार । मिळि करत नाच छत्र कोहक मोर, **स्रु क** चात्रिग कोकिल करत सोर ।—सू. प्र.

स्रु ग, स्रु गि, स्रु गी—देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

उ०—इम करि करि बहुग्रचड़, मोह परहर वप माया । दिब धरि धरि सुर देह, अछर वर **स्रु गि** आया ।—सू. प्र.

स्रु ण, स्रु णि, स्रु णी—१ देखो 'सोणित' (रू. भे)

उ०—लगी नर है तिल हेक लगांण, जरद्द मरद्द कटै जंगमांण । सदा सिव तांम लियै खळ सीस, **स्रु णी** स्रपी चंड देत ग्रमीस ।

—सू. प्र.

२ देखो 'स्रोण' (रू. भे.)

३ देखो 'स्रोणि' (रू. भे.)

स्रु तंजय, स्रु तंजै–सं. पु. [सं. श्रुतञ्जय] १ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई जो अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

२ पुरुरवा का पौत्र व सत्यायु का पुत्र ।

स्रु त–सं. पु. [सं. श्रुत] १ राजा भगीरथ के एक पुत्र का नाम ।

उ०—भगीरथ सुत जिण तप अभंग, गौ सुरग अहुति जिण आंणि गंग । भगीरथ संभ्रम सुत मुवाळ, नाभंग हुवौ **स्रु त** सुत न्रपाळ ।—सू. प्र.

२ कृष्ण एवं कालिंदी के पुत्रों में से एक ।

३ वासुदेव एवं शांतिदेवा के पुत्रों में से एक ।

४ पांचालराज द्रुपद का एक पुत्र ।

[सं. श्रुतं] वेद, श्रुति ।

उ०—१ सुरसरी राघव सुजस मंजण जिण कीध सुध नित मांनव । तीरथ अड़सठ तेण, बोलै **स्रु त** लाभ ग्रह वासत ।

—र. ज. प्र.

उ०—२ तिणदी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै कच्चा है । बोलै **स्रु त** संम्रत स्यंभ ग्रज वायक, सीता नायक सच्चा है ।

—र. ज. प्र.

रू. भे.—सुत ।

स्रु तकरमण, स्रु तकरमन–सं. पु. [सं. श्रुतकर्मन्] १ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।

२ सहदेव का एक पुत्र जो महाभारत में अश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

३ अर्जुन के एक पुत्र का नाम ।

स्रु तकीरत, स्रु तकीरति, स्रु तकीरती–सं. पु. [सं. श्रुतकीर्ति] १ अर्जुन व द्रौपदी के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो अश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

सं. स्त्री.—२ दशरथ-पुत्र शत्रुघ्न की पत्नी व जनक-भ्राता कुशध्वज की पुत्री का नाम ।

३ वसुदेव की बहन का नाम ।

रू. भे.—सुतकीरति, सुतक्रिता, स्रु तिकीरत, स्रु तिकीरति, स्रु ति-कीरती ।

स्रु तग्यांन–सं. पु. [सं. श्रुतज्ञान] वह ज्ञान जो शास्त्रों को पढ़ने व सुनने से इन्द्रिय और मन को प्राप्त होता है । (जैन)

स्रु तग्यांनी–वि. [सं. श्रुतज्ञानी] श्रुतज्ञान को जानने वाला, समझने वाला ।

स्रु तदेव–सं. पु. [सं. श्रुतदेव] १ कृष्ण के महारथी पुत्रों में से एक ।

२ एक विरागी कृष्ण भक्त ब्राह्मण ।

३ विष्णु का एक पार्षद ।

स्रुतदेवा–सं. स्त्री. [सं. श्रुतदेवा] वसुदेव की बहन और दन्तवक्त्र की माता का नाम ।

स्रुतदेवी–सं. स्त्री. [सं. श्रुतदेवी] १ शूर राजा की कन्या जो करूष-देशीय वृद्धधर्मन को ब्याही गई थी, यह वसुदेव की बहन थी ।

२ सरस्वती देवी ।

स्रुतधज—देखो 'स्रुतध्वज (रू भे.)

स्रुतधर–सं. पु. [सं. श्रुतधर] कान, श्रवण ।

स्रुतधुज, स्रुतध्वज–सं. पु. [सं. श्रुतध्वज] विराट राजा का एक भाई। रू. भे.—स्रुतधज ।

स्रुतसेण, स्रुतसेन–सं. पु. [सं. श्रुतसेन] १ भीमसेन व द्रौपदी के संसर्ग से उत्पन्न पुत्र जो अश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

२ एक नाग ।

३ परीक्षित राजा का पुत्र, एक राजा ।

४ गरुड़ के द्वारा मारा गया एक असुर ।

५ जनमेजय के एक भाई का नाम ।

स्रुतस्रवा–सं. पु. [सं. श्रुतश्रवा] १ सोमश्रवा के पिता एक महर्षि का नाम ।

२ मगधनरेश जरासंध का पौत्र व अयुतायु का पिता ।

३ सूर्यपुत्र शनैश्चर का नामांतर ।

४ गरुड़ के द्वारा मारा गया एक असुर ।

५ सावर्णि मनु का नामांतर ।

सं. स्त्री.—६ शिशुपाल की माता, वसुदेव की बहन और चिदिनरेश दमघोष की पत्नी का नाम ।

स्रुतांत–सं. पु. [सं. श्रुतांत] भीमसेन द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

स्रुतांनीक–सं. पु. [सं. श्रुतानीक] विराटनरेश के एक भाई का नाम ।

स्रुतायु–सं. पु. [सं. श्रुतायु] १ अंबष्टनरेश, जो अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

२ कलिंगनरेश, जो अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

३ पुरुरवा का पुत्र व वसुमान का पिता एक राजा ।

स्रुतावति, स्रुतावती–सं. स्त्री. [सं. श्रुतावति] भरद्वाज ऋषि व घृताची नामक अप्सरा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्री ।

स्रुति–सं. स्त्री. [सं. श्रुति] १ सुनने की क्रिया या भाव, श्रवण ।

२ शब्द, ध्वनि ।

३ कान, कर्ण ।

उ०—१ ऊभी सहु सखिए प्रसंहिता श्रति, क्रितारथी प्री मिळण क्रत । अटत सेज द्वार विचि आहुटि, **स्रुति** दै हरि घरि समास्रित ।—वेलि

उ०—२ अघ कळ घोर अंधार, बिब रवि चंद्र विकासण । प्रगट घरम द्रुम उभय, यम **स्रुति** नयण सुभासण ।—र. ज. प्र.

उ०—३ बभूती की टीकी निज अलिक नीकी नित बसै । कड़ा डोरी मूरती लवंग पुरिपूरती **स्रुति** लगै । —मे. म.

४ वेद । (अ. मा.)

उ० —१ अविणासी कौ हलकारौ जग मैं आयौ, लोकन मैं सक्ति अलौकिक लारै लायौ । **स्रुति** समाचार कौ सार पुकार सुनायौ, घरमी सुख धार अधरमी सीस धुनायौ ।—ऊ. का.

उ०—२ सेस धनेस दिनेस रटै सुर, ईखण जै अभिलाख । माथ पगां सुरनाथ नमावै, गौरव सारद नारद गावै । पार गुणां करतार न पावै, सौ **स्रुति** संम्रत साख ।—र. ज. प्र.

५ ध्वनि, आवाज ।

६ चौसठ योगनियों के अंतर्गत बत्तीसवीं योगनी ।

७ युक्ति, कथन ।

८ जनश्रुति ।

९ अत्रि ऋषि की कन्या तथा कर्दम ऋषि की पत्नी ।

१० अनुप्रास का एक भेद ।

११ संगीत में किसी स्वर का अन्तराल ।

१२ श्रवण नक्षत्र ।

१३ चार की संख्यासूचक शब्द । ❀

रू. भे.—सुरति, सुरती स्रुत ।

स्रुतिकटु–सं. पु. [सं. श्रुतिकटु] काव्य रचना में एक प्रकार का दोष ।

स्रुतिकीरत, स्रुतकीरति, स्रुतिकीरती—देखो 'स्रुतकीरति' (रू. भे.)

स्रुतिधर–वि. [सं. श्रुतिधर] वह व्यक्ति जिसकी स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र हो । (अमरत)

स्रुतिमुख–सं. पु. [सं. श्रुमिमुख] जिसके चार मुख हों, ब्रह्मा ।

स्रुतिरंजण, स्रुतिरंजणी, स्रुतिरंजनी–सं. स्त्री. [सं. श्रुतिरंजनी] कर्नाटकी पद्धति की एक रागनी । (संगीत)

स्रुतिवांण, स्रुतिवांणी, स्रुतिवांन–सं. स्त्री. [सं. श्रुति + वाणी] १ वेद वाक्य, वेदों की वाणी ।

उ०—संसकार **स्रुतिवांण** सुणि, कुरम कै सक्कार । परणावै पधरावियौ, महलै राजकंवार ।—रा. रू.

२ जो वेदों में आस्था रखता हो ।

उ० —गुनवांन कुरांन पुरांन गुनैं, **स्रुतिवांन** स्रुती सब सास्त्र सुनैं । मतभेदन खेद खुबी मत की, सत चूंप चुभी उपनीसत की ।

—ऊ. का.

स्रुतिविंदा–सं. स्त्री. [सं. श्रुतिविंदा] कुशद्वीप में प्रवाहित होने वाली एक नदी का नाम ।

स्रुवौ–सं. पु. [सं. स्रुवा] यज्ञाग्नि में घी इत्यादि की आहुति देने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला लकड़ी का चम्मच ।

स्रूत–सं. पु.—कान, कर्ण ।

स्रूल–सं. पु.—गढ, किला ।

स्रेणता–सं. स्त्री.—पंक्ति ।

उ०—सरी नौसरं हार मोती संजोया, पड़ै स्रेणत हीणता सुक्र पोया। परीखै सरीकंठ मैं हीर पूरौ, सुभै सूर आकास जांणै सनूरौ।—रा. रू.

स्रेणि, स्रेणी—सं. स्त्री. [सं. श्रेणिः] १ रेखा, पंक्ति।

२ समुह, दल।

३ कारीगरों का संघ, व्यापारियों का संगठन।

४ शृंखला, सिलसिला।

५ सेना, फौज।

६ जीना, सीढी !

७ वर्ग, विभाग, दरजा। (क्लास)

रू. भे.—सेणि, सेणी।

स्रेणीबद्ध—क्रि. वि.— पंक्तिबद्ध, कतार में।

स्रेय—वि. [सं. श्रेयस] १ बहतर, उत्कृष्टतर।

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

३ मंगलकारी, कल्याणकारी।

४ शुभ।

५ यश, कीर्ति देने वाला।

सं. स्त्री.—१ उत्तमता, अच्छापन।

२ शुभ आचरण।

३ भलाई, कल्याण।

रू. भे.—सेय।

स्रेयसी—सं. स्त्री. [सं. श्रेयसी] हरडै। (ह. नां. मा; नां. मा.)

स्रेयस्कर सं. पु. [सं. श्रेयस्कर] जैनियों के ८८ ग्रहों में से ६६ वां ग्रह।

स्रेयांस, स्रेयांसनाथ—सं. पु. [सं. श्रेयासनाथ] जैनियों के वर्तमान काल के ११ वें तीर्थंकर का नाम (स. कु.)

स्रेवड़ा—सं. पु.—१ जैन साधु।

२ साधु, संन्यासी।

स्रेस्ट—देखो 'स्रेस्ठ' (रू. भे.)

उ०—नमौ सुक्र संध्या घणौ स्रेस्ट सम्मौ, नखित्रां तणौ पातिसा स्वाति नम्मौ। महालक्ष्मी मात 'धापां' नमांमी, नमौ मात रौ तात 'सांमुद्र नांमी'।—मे. म.

स्रेस्टता—देखो 'स्रेस्ठता' (रू. भे.)

स्रेस्टास्रम—देखो 'स्रेस्ठास्रम' (रू. भे.)

स्रेस्टी—देखो 'स्रस्ठी' (रू. भे.)

स्रेस्ठ—सं. पु. [सं. श्रेष्ठः] १ विष्णु।

२ कुबेर।

३ ब्राह्मण।

४ राजा, नृप।

५ सुधामन् देवों में से एक।

[सं. श्रेष्ठं] ६ गाय का दूध।

वि.—१ सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट।

२ मुख्य, प्रधान।

३ वृद्ध, बूढा।

रू. भे.—स्रेस्ट।

स्रेस्ठता—सं. स्त्री. [सं. श्रेष्ठता] १ प्रधानता।

२ खासियत, विशेषता।

रू. भे.—स्रेस्टता।

स्रेस्ठास्रम—सं. पु. [सं. श्रेष्ठाश्रम] श्रेष्ठ आश्रम, गृहस्थाश्रम।

उ०—मिळगा धूळी ज्यूं जेस्ठास्रम जूना, सालै सूळी ज्यूं स्रेस्ठास्रम सूना।—ऊ. का.

रू. भे.—स्रेस्टास्रम।

स्रेस्ठी—सं. पु. [सं. श्रेष्ठिन्] प्रतिष्ठित व्यवसायी, सेठ।

रू. भे.—स्रेस्टी।

स्रोण—सं. पु. [सं. श्रोणः] एक प्रकार का रोग विशेष।

वि.—१ लंगड़ा, लूला।

२ लाल, रक्तवर्ण।

३ देखो 'सोणित' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ विढै मल्ल पांणं जिही जुंभवांणं, पठांणै कमंध कमंधै पठांणं। खळां स्रोण रंगै वहै खग्ग खग्गै, अकासै घटा जांण माळा उमंगै।—रा. रू.

उ०—२ वहै लोह वंका, घटां ह्वै घणंका, बिनै तीर बारा, धड़ां स्रोण धारा। करं पाव केकं, उडै धू अनेकं, करै लै कराळा, महारुद्र माळा।—सू. प्र.

४ देखो 'स्रोणि' (रू भे.)

उ०—पदमनी रुखमणीजी कौ जु नाभि सु प्रियाग करि वरणयौ। नाभि कै विखै जु त्रिवलि छै सु त्रिवेणि करि वरणवी छै। स्रोण कहतां नितंब सोई तट हुउ।—वेलि टी.

रू. भे.—स्रुण, स्रुणि, स्रुणी, स्रोन।

स्रोणि—सं पु. [सं. श्रोणिः श्रोणी] १ चूतड़, नितम्ब।

उ०—धरधर स्रंग सधर सुपीन पयोधर, घणीं खीण कटि अति सुघट। पदमणि नाभि प्रियाग तणी परि, त्रीवलि त्रिवेणी स्रोणि तट।—वेलि

२ कटि, कमर।

३ मार्ग, रास्ता।

रू. भे.—स्रुण, स्रणि, स्रुणी, स्रोण।

स्रोणित—देखो 'सोणित' (रू. भे.)

स्रोणी—सं. स्त्री. [सं. क्षोणी] १ भूमि, पृथ्वी। (नां. मा.)

२ देखो 'सोणित' (रू. भे.)

उ०—१ सुजड़ां मुंहि संधर लडिया लसकर, डिगमिग काइर कळह डरै। खागां पळ खंडर कटि सिर कूपर, स्रोणी खप्पर सकति भरै।—गु. रू. बं.

उ०—२ पणिहार सकति पांणी भरै, स्रोणी खप्फर कूं भलै।

'गोपाळ' तणौ मंजन कियौ, रिण तळाई भूपाळ लै।—गु. रू. बं.

उ०—३ 'अमरावत' ऊपरि दळ अचाळ, माथै किरि आबू मेघमाळ। सीसोद सीस स्रोणी निवेस, मस्तक्क जांण गंगा महेस।

--गु. रू. बं

३ देखो 'स्रोणि' (रू. भे.)

स्रोणीसूतर, स्रोणीसूत्र–सं. पु. [सं. श्रोणिः+सूत्र] एक प्रकार का आभूषण विशेष, कटिमेखला।

उ०—हार अरद्धहार प्रलंब प्रालंब नवसर कटक कंकण केयूर नूपुर करण्णकुंडल एकावली कनकावली रत्नावलि वज्रावली पत्रावली चंद्रावली सूरयावली, नक्षत्रावली **स्रोणीसूत्र** कांचीकलाप रसना किरीट······ इति आभरणानि।—व. स.

स्रोत–सं. पु. [सं. श्रोत] १ कर्ण, कान। (अ. मा; डिं. को.)

२ हाथी की सूंड।

[सं. स्रोतं] १ चश्मा, सोता, धार। (अ. मा.)

२ जलप्रवाह, तेजप्रवाह वाली नदी। (अ. मा.)

३ वह आधार या साधन जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती या आती रहे।

४ वंश-परम्परा।

५ लहर, तरंग।

६ जल, पानी।

७ इन्द्रिय।

रू. भे.—सरोत, सोत, सोतौ।

स्रोतईस–सं. पु. [सं. स्रोत+ईस] नदियों का स्वामी, समुद्र।

स्रोतपत, स्रोतपति, स्रोतपती–सं. पु. [सं. श्रोतपति] समुद्र, सागर। (डिं. को.)

रू. भे.—सोतपत, सोतपति, सोतपती।

स्रोतस्वी, स्रोतस्विनी–सं. स्त्री. [सं. स्रोतस्विनी] नदी, सरिता। (ह. नां. मा.)

स्रोता–वि. [सं. श्रोता] सुनने वाला।

सं. पु.—१ सुनने वाला व्यक्ति।

उ०—१ दादू **स्रोता** स्नेही रांम का, सौ मुझ मिळव हु आंणि। तिस आगै हरि गुण कथूं, स्रुणत न करई कांणि।—दादूबांणी

उ०—२ साहिब चुगल समांन है, सौ हिज बुरी सुणांत। **स्रोता** बकता होत सम. भणिया लोक भणांत।—बां. दा.

[सं. श्रोतस्] १ नदी, सरिता।

२ जल, पानी।

३ चश्मा, सोता, जलप्रवाह।

स्रोत्र–सं. पु. [सं. श्रोत्रं] १ कान, कर्ण।

२ वेदों का ज्ञान।

३ वेद।

४ तुषित देवों में से एक।

स्रोन – देखो 'स्रोणित' (रू. भे.)

स्लिप–सं. स्त्री. [अ.] कागज का छोटा टुकड़ा, जिस पर कुछ लिखा जाता हो, चिट, पर्ची।

उ० –१ आपरै हुकम बिनां कोई इंसपेक्टर किणी नैं पकड़'र नीं लै जा सकै। इंसपेक्टर कनै कोई 'सरच नोटिस' कोनीं हौ सर! उण रै कनै, मांय घुसणै री आपरी **स्लिप** भी कोनीं ही।

--तिरसंकू

स्लीपद–सं. पु. [सं. श्लीपदम्] एक रोग विशेष जिससे पैरों में सूजन आ जाती है। (अमरत)

स्लीपर–सं. पु [अं.] १ एक प्रकार की लकड़ी जिसके बड़े-बड़े पाटिये (तख्ते) बनते हैं।

२ एक प्रकार की चप्पल।

स्लेट–सं. स्त्री.—१ चिकने पत्थर, लोह व गत्ते की बनी चौकोर तखती या पटरी जिस पर बच्चे लिखने का अभ्यास करते हैं।

२ मलमल के तह डालकर बनाई जाने वाली ढाल, ईरानी ढाल।

स्लेस–सं. पु. [सं. श्लेष] १ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हों।

२ आलिंगन।

३ जुड़न, मिलन।

स्लेसम–सं. पु. [सं. श्लेष्म] १ लिसोड़े का वृक्ष।

२ देखो 'स्लेस्म' (रू भे.)

स्लेस्म–सं पु [सं. श्लेष्म] पाँच प्रकार के कफों में से एक प्रकार का कफ। (अमरत)

रू. भे.—स्लेसम।

स्लोक–सं. पु. [सं. श्लोक] १ प्रशंसा, तारीफ।

३ यश, कीर्ति।

४ पुकार, आह्वान।

५ प्रशंसात्मक छंद, कथन।

उ० राजा देवसरमां रा मुख सूं **स्लोक** सुण पूछी—हे ब्राह्मण देवता, थां कुण छौ, अर कठा सूं आइया छौ सौ कहौ। तौ देवसरमा आपरी सारी बात कही। राजा सुण'र बहोत प्रसन्न हुवौ छै।—सांई री पलक मैं खलक

६ संस्कृत का पद्य, छंद।

उ०—कोई पंडितराज कविराज पूछै मनकै बीच संदेह राखि तिस संदेहकै मेटणैकौ दोइ ग्रंथ एक व्रतरतनाकर दूसरा स्रुतबोध साखि और फिर एक आगलै पंडितका वणाया **स्लोक** इसही साखिका सौ कहणैमैं आवै साखि उही सच्ची जो औरका कह्या वतावै सौ कैसै कहि दिखाय।—सू. प्र.

७ ध्वनि, आवाज।

८ लोकोक्ति, कहावत।

रू. भे.—सरलोक, सलोक, सिरलोक, सिलोक, स्रलोक,

स्रलोकौ, स्रिलोक, स्रिलोकूं ।

स्व–सर्व. वि. [सं.] १ निजू, अपना, स्वयं का ।

२ अपनी जाति का, सजातीय ।

३ स्वाभाविक, प्रकृतिगत ।

सं. पु. [सं. स्वः] १ नातेदार, रिश्तेदार ।

२ जीवात्मा ।

[सं. स्वं; स्वः] ३ धन-दौलत, सम्पति । (ह. नां मा.)

स्वकरमी–वि. [सं. स्वकर्मिन्] १ स्वार्थी, मतलबी ।

२ अपने कर्त्तव्य व धर्म का पालन करने वाला ।

स्वकीय–सं. पु. [सं.] १ स्वजन, कुटुम्बी ।

उ०—इसडी कहाई तौ भी नरेस सुरजन आपरा डेरा जुदा न टाळिया । अर एक ही घर रौ जु····जांणि अठी उठी दौ ही तरफ रा सरब ही **स्वकीय** भाळिया ।—वं. भा.

२ अपना, निजी ।

उ०—तिण समय चंद्रमा रै चोतरफ परिवेस रै प्रमांण भालैसिंह देव साठि हजार सेना सूं **स्वकीय** स्वांमी रा सिविर रै छबीनां रौ चक्र चलायौ ।—वं. भा.

रू. भे.—सुकिय ।

स्वकीया–सं. स्त्री. [सं.] वह नायिका या स्त्री जो केवल अपने पति से अनुराग करती हो । (साहित्य)

रू. भे. —सुकिया, सुकीया, सुक्किया ।

स्वगत–वि. [सं.] १ मन में आया हुआ ।

अव्य.—२ स्वतः, अपने-आप ।

स्वच्छंद, स्वछंद–सं. पु. [सं. स्वछंद] १ कार्तिकेय या स्कंद का एक नाम ।

सं. स्त्री.—२ अपनी इच्छा या मर्जी ।

वि. [सं. स्वछंद] १ मनमाना काम करने वाला, मनमौजी ।

२ किसी अंकुश, नियंत्रण या मर्यादा का ध्यान न रखते हुए अपनी इच्छानुसार आचरण करने वाला ।

३ भयरहित, निर्भय ।

उ०—रही **स्वछंद** रैत तव राजस, सुभ अमंद सुखियारी । आणंद कंद एक दम उठग्यौ, 'तखत' नंद अवतारी ।—ऊ. का.

क्रि. वि.—१ अपनी इच्छानुसार, अपनी मर्जी से ।

उ०—**स्वछंद** कियौ निज कांम सोर, उडि गयौ चंद्र की बांम ओर । उपमा कवि ऊमर दै अमोल, ततकाळ समय टंकार तोल ।

—ऊ. का.

२ बिना किसी भय, विचार या संकोच के ।

रू. भे.—सच्छंद ।

स्वछंदचारण, स्वछंदचारणी, स्वछंदचारिण, स्वछंदचारिणी–सं. स्त्री.—१ वेश्या, रंडी ।

२ बदचलन स्त्री ।

स्वछंदचारी–वि. (स्त्री. स्वछंदचारण, स्वछंदचारणी, स्वछंदचारिण, स्वछंदचारिणी) स्वेच्छाचारी, मनमौजी ।

स्वछंदता–सं. स्त्री.—स्वछंद होने का गुण, भाव या अवस्था ।

स्वच्छ–वि. [सं.] १ जिसमें किसी प्रकार का मेल या गन्दगी न हो ।

२ साफ, निर्मल ।

३ सुन्दर, मोहक ।

उ०—**स्वच्छ** कपोल महेळियां, मझ छबि नकू मिणांह । पात समर सोनी किया, जर जाफरी तणांह ।—बां. दा.

४ स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

५ पवित्र, शुद्ध ।

६ निष्कपट ।

७ स्पष्ट ।

उ०—गौ तिमर गच्छ सूझंत **स्वच्छ** दरसन दयाळ क्रपया क्रपाळ । स्वांमी सचेत अति गुन उपेत, सेवक विसार सौ लीन सार ।

—ऊ. का.

रू. भे.—सुच्छ ।

स्वच्छता–सं. स्त्री. [सं.] १ स्वच्छ रहने का भाव, गुण या अवस्था ।

२ निर्मलता, सफाई ।

३ स्पष्टता ।

रू. भे.—सुच्छता ।

स्वजन–सं. पु. [स.] १ आत्मीयजन ।

२ रिश्तेदार, संबंधी ।

स्वजनता–सं. स्त्री. [सं.] १ आत्मीयता ।

२ रिश्तेदारी ।

स्वजात–सं. पु. [सं.] पुत्र, बेटा ।

वि.—अपने से उत्पन्न ।

स्वजाति–सं. स्त्री.—अपनी जाति, अपनी कौम ।

स्वजातीय–वि.—१ अपनी जाति का ।

२ एक ही जाति या वर्ग का ।

स्वतंत्र–वि. [सं.] १ जिस पर किसी का दबाव या शासन न हो ।

२ जो किसी प्रकार के बंधन में न पड़ा हो, आजाद ।

३ काम या बात जिसमें किसी दूसरे का सहारा न लिया गया हो ।

४ अलग, जुदा, भिन्न ।

५ नियमों आदि से बन्धनरहित ।

रू. भे.—सुतंतर, सुतंत्र ।

स्वतंत्रता–सं. स्त्री.—१ स्वतंत्र रहने या होने का भाव ।

२ आजादी ।

३ स्वाधीनता ।

रू. भे.—सुतंतरता, सुतंत्रता ।

स्वतिस्री—देखो 'स्वस्तिस्री' (रू. भे.)

उ०—**स्वतिस्री** दिल्लीपुर सुथांन, सल्तनत मुगळ कुळ सावधांन ।

दरगाह सदर दोलत दराज, तालाबुलंद इस्लांम ताज।—ऊ. का.

स्वतः—अव्यय [सं. स्वतस्] अपने आप, आप से आप, स्वयं।

रू. भे.—सुता, सुतेई, सुतै।

स्वत्व—सं. पु. [सं. स्वत्वः] १ किसी वस्तु को अपने अधिकार में रखने व काम में लाने का अधिकार, हक।

२ अपनापन।

स्वदेस—सं. पु. [सं. स्वदेश] अपना देश, वतन।

स्वदेसी—वि. [सं. स्वदेशी] १ अपने देश का।

२ अपने देश में होने वाला।

स्वधरम—सं. पु. [सं. स्वधर्म] १ अपना धर्म।

२ अपना कर्तव्य।

स्वधा—सं. स्त्री. [सं.] १ पितरों के निमित्त दिया जाने वाला भोजन, पितृ अन्न।

२ दक्ष की एक कन्या, जो पितरों की पत्नी मानी जाती है।

३ अंगिरा ऋषि की पत्नी का नाम।

अव्य.—४ देवताओं तथा पितरों को हवि देते समय उच्चारण किया जाने वाला मंत्र।

स्वधाधिप, स्वधाधिपत, स्वधाधिपति, स्वधाधिपती—सं. पु. [सं. स्वधा+अधिपति] आग, अग्नि।

स्वधाप्रिय—सं. पु. [सं.] आग, अग्नि।

स्वधोद—सं. पु.—लांगल नामक राजा जिसका दूसरा नाम राहुल था।

उ०—तिण सुत संजय रघुकुळ तारण, साक्य संजय सुत दुसह संघारण। संभ्रम साक्य **स्वधोद** सकाजा, राजै जै सुत लायक राजा।—सू. प्र.

स्वनंदा—सं. स्त्री.—दुर्गा।

स्वन—सं. पु.—१ सत्य के एक पुत्र का नाम।

२ शब्द, ध्वनि।

[सं. श्वन्] ३ कुत्ता, श्वान।

स्वनचकर, स्वनचक्र—सं. पु. [सं. स्वनचक्र] एक प्रकार का रतिबंध या संभोग का आसन।

स्वनांमधन्य—वि. [सं. स्वनामधन्य] जो अपने नाम से प्रसिद्ध हो।

स्वपच—सं. पु. [सं. श्वपचः] १ श्वान का मांस पकाकर खाने वाला व्यक्ति, चांडाल।

२ पतित जाति का व्यक्ति।

स्वपथ—सं. पु.—स्वर्ग का मार्ग या रास्ता।

स्वपन, स्वपनौ—देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)

स्वपाळ, स्वपाल—सं. पु. [सं. स्वपाल] स्वर्ग का रक्षक।

स्वप्न—सं. पु. [सं.] १ सोने की क्रिया या अवस्था, नींद।

उ०—जाग्रत **स्वप्न** सुसुपती तुरीया, इनतैं अलग रहाया। तीन गुणां की जहां उत्पती नांही, पांच भूत नही काया।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

२ निद्रावस्था में किसी काल्पनिक घटना, विचार, चित्र आदि का मस्तिष्क में आना जो प्रायः अवास्तविक होता है।

३ निद्रावस्था में आने वाले विचार, बात आदि जो कभी-कभी सत्य भी होते हैं।

उ०—थिरू मूरती सूर रै तूर थाई, तिका **स्वप्न** रै मांहि पिंडां बताई।—मे. म.

४ मन ही मन की जाने वाली बड़ी-बड़ी कल्पनाएं और योजनाएं आदि, ख्वाब।

५ एक राजस्थानी लोक-गीत।

वि.—१ क्षणभंगुर, नाशवान।

२ मिथ्या।

रू. भे.—सपणौ, सपनौ, समणाउ, समणौ, सुपण, सुपणौ, सुपन, सुपंन, सुपनउ, सुपनू, सुपनू, सुपनौ, सूहणौ, सोहण, सोण, सोहणौ, स्वपन, स्वपनौ।

स्वपनदोस—सं. पु. [सं. स्वप्नदोष] १ निद्रावस्था में कोई कामोद्दीपक या शृंगारिक दृश्य देखने के कारण वीर्यपात होने का रोग।

रू. भे.—सपनदोख, सपनदोस, सुपनदोस।

स्वभाउ, स्वभाव—सं. पु. [सं. स्वभाव] १ अपना या निज का भाव।

पर्याय.—अनिज, आतम, गत, गति, गुणआतम, चलगत, चलगति, निसरग, प्रगति, रीति, लखण, बिसव, संसिध, संसिधि, सततरूप, सभाव, सरग, सहज, सांनिज, सुभाव।

२ सदा बना रहने वाला मूल गुण, खासियत।

३ जीव-जन्तुओं और प्राणियों की वह प्रकृति जो जन्म से होती है।

४ मनुष्य के मन का वह पक्ष जो बहुत कुछ जन्मजात होता है तथा सदैव देखने में आता है।

ज्यूं—सुरेसजी री स्वभाव सूं ई रीसटू है।

५ आदत, बान।

रू. भे.—सबाव, सभाय, सभाव, साभाय, साभाव, सुभाई, सुभाई, सुभाउ, सुभाऊ, सुभाय, सुभाव, सोभाव।

स्वभाविक—देखो 'स्वाभाविक' (रू. भे.)

स्वभावोकति, स्वभावोक्ति, स्वभावोगत, स्वभावोगति—सं. स्त्री. [सं. स्वभावोक्ति] एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी जातिवाचक पदार्थ व व्यक्ति के स्वाभाविक गुणों का वर्णन होता हो।

स्वभू—देखो 'स्वयभू' (रू. भे.)

स्वयं—वि. [सं. स्वयम्] अपने-आप अपना कार्य करने वाला।

सर्व.—१ खुद, आप।

अव्यय.—२ अपने आप।

रू. भे.—सवं, सुयं।

स्वयंजोत, स्वयंजोति, स्वयंज्योत, स्वयंज्योति, स्वयंज्योती—सं. पु.

[सं. स्वयंज्योति] १ परमेश्वर, ईश्वर।
२ परब्रह्म।

स्वयंदूत–सं. पु. [सं.] वह नायक जो अपना प्रेम नायिका पर स्वयं प्रकट करता हो। (साहित्य)

स्वयंदूति, स्वयंदूती–सं. स्त्री. [सं.] नायक के समक्ष स्वयं ही अपना दूतत्व करने वाली परकीया नायिका।

स्वयंप्रभ–सं. पु. [सं.] १ जैनियों के भविष्यत्काल के चौथे तीर्थंकर का नाम। (स. कु.)
२ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ६४ वां ग्रह।

स्वयंप्रभा–सं. स्त्री. [सं.] १ इंद्र की एक अप्सरा जिसे मयदानव चुरा ले गया था। इसी के गर्भ से मंदोदरी का जन्म हुआ था, मंदोदरी की माता।
वि. वि.—यह मेरुसावर्णि की पुत्री, रावण की सास व मेघनाद की नानी थी। यह ऋक्षबिल में रहती थी। सीता की खोज करते समय हनुमान आदि से इसकी भेंट हुई थी। इसने सब वानरों की आँखें बंद कराकर ऋक्षबिल से समुद्र के किनारे भेज दिया था।
२ अर्जुन के स्वागत-समारोह में इन्द्रभवन में नृत्य करने वाली एक अप्सरा का नाम।
रू. भे.—सोयंप्रभा।

स्वयंप्रभु–सं. पु. [सं.] अट्ठाईस व्यासों में से एक।

स्वयंफळ–सं. पु [सं. स्वयंफल] जो आप ही अपना फल हो।

स्वयंबर—देखो 'स्वयंवर' (रू भे.)

स्वयंभुव, स्वयंभू–सं पु. [सं स्वयंभुः] १ ब्रह्मा, विरंचि।
[सं स्वयंभुवः] २ प्रथम मनु का नाम।
३ शिव, महादेव।
[सं. स्वयंभूः] ४ विष्णु।
५ कामदेव, मनोज।
६ काल जो मूर्तिमान हो।
७ जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक।
वि.—[सं. स्वयंभू] आप से आप उत्पन्न होने वाला।
रू. भे.—सभुमन, संभुमनु, सभूंमुनी, संभूमन, संभूमनु, संभूमुनी, सयंभू, सियभू, सूयंभू, स्यंम, स्वभू।

स्वयंभोज–सं. पु. [सं.] राजा शिवि के एक पुत्र का नाम।

स्वयंवर–सं पु. [सं.] १ स्वयं वरण करने की क्रिया, स्वयंवरण।
२ वह उत्सव या समारोह जिसमें कन्या स्वयं अपने लिए उपस्थित व्यक्तियों में से वर को वरण किया करती थी या चुनती थी।
उ०—फेर मारग चालतां मड़ौ बोलियौ—राजा सांभळ। चंपावती नांम एक नगर, तेथी चांपकेस्वर राजा, तिंव रै एक पुत्री भुवनसुंदरी। सौ वर प्रापति लायक हुई। तठै राजा विचार कियौ पुत्री रै कारण **स्वयंवर** रचायजै। जोग वर आंणिजै।
—बैताळ पच्चीसी
३ कन्या द्वारा स्वयं के लिए वर को वरण करने की रीति या विधान।
४ विवाह, शादी।
रू. भे.—सइंवर, सइंवरि, सयंबर, सयंवर, सयंवरु सुयंबर, सुयवर, स्वयंबर

स्वयंसेवक, स्वयंसेवी–सं. पु. [सं.] किसी ऐसे संगठन का सदस्य जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों की सेवा करना होता है।

स्वयमेव–क्रि. वि. [सं. स्वयं+एव] स्वयं ही, खुदबखुद।

स्वर–सं. पु. [सं. स्वरः] १ किसी पदार्थ पर आघात पड़ने या प्राणी के कंठ से उत्पन्न शब्द।
२ आघात अथवा संघर्षण से उत्पन्न स्निग्ध एवं अनुरागात्मक ध्वनि जिसका निश्चित स्वरूपहो और जो सुनने वाले के मन को अनुरंजित कर सके।
३ संगीत में वह शब्द जिसका कुछ निश्चित रूप हो, ये सात प्रकार के माने गये हैं यथा—षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, और निषाद।
४ व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसका उच्चारण आप से आप हो, तथा जिसके बिना किसी व्यंजन का उच्चारण नहीं हो सकता हो। स्वर वर्ण–ये तेरह होते हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ऋ।
५ किसी वाद्य की ध्वनि, आवाज।
उ०—घण माळ ज्युंही असुरांण घड़ा, खित आव्रत मेन किसेन खड़ा। रिण तूर नफेरिय भेर रूड़ै, गहरै **स्वर** तांम दमांम गुड़ै
—रा. रू.
६ वेदपाठ में शब्दों का उतार चढाव जो उदात्त, अनुदात्त और स्वरित नामक तीन प्रकार का होता है।
७ पवन जो नथुनों से होकर निकले।
८ सोते समय नाक से निकलने वाला शब्द खर्राटा।
९ सात की संख्यासूचक। ॐ (डिं. को)
[सं. स्वर्] १० स्वर्ग।
११ आकाश, अन्तरिक्ष।
१२ सूर्य और ध्रुव के बीच का स्थान।
१३ तीन व्याहृतियों में से तीसरी व्याहृति।
रू. भे.—सर, सुर।

स्वरकळानिध, स्वरकळानिधि, स्वरकळानिधी–सं. स्त्री. [सं. स्वर+कलानिधि] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

स्वरक्षस–सं. पु. [सं.] अट्ठाईस व्यासों में से एक।

स्वरगंगा–सं. स्त्री. [सं. स्वर्+गंगा] आकाशगंगा।

स्वरग–सं. पु. [सं. स्वर्ग] १ अन्तरिक्ष में स्थित सात लोकों में से तीसरा लोक, जहां देवता, पुण्यात्मा तथा सत्कर्मी निवास करते हैं, देवलोक, वैकुंठ।

उ०—१ सरद घटा जिम ऊजळी, दिस दिस घटा विलंद । नगर थटा रुख निरखियां, **स्वरग** छटा व्है मंद ।—बां. दा.

उ०—२ तिण मैं रूड़ा राजपूत तिकै **स्वरग** रा उतावळा, बैकुंठां लोड़ाऊ, अवधां बिरदां रा बहणहार, तिणां री बाग ऊपड़ी । कोस दोय-तीन ऊपर जावतां वै भूंडण-रेढां नूं पहूंचिया ।
—डाढाळा सूर री बात

पर्याय.—अपवरग, अमरापुर, अमरालय, अमरावती, अवय, अवयदिव, उरधगति, उरधलोक, गऊ, ग्यांनसत, तविखि, त्रदसतप, त्रिदख, त्रिदसासदन, त्रिदिव, त्रिवस्ट, दिवत, दिविश्रोक, धरमफूल, नाक, पतावख, मुव, सुखधांम, सुरआलय, सुररिखय-वन, सुरलोक ।

मुहा.—१ स्वरग जाणौ या सिधाणौ=मरना, मृत्यु होना. २ स्वरगपुरी होणौ=अत्यन्त रमणीक स्थान होना. ३ स्वरग री मौज करणी=अत्यन्त सुख भोगना, आनन्द लूटना ।

२ अन्य धर्मों के अनुसार एक विशिष्ठ स्थान जो आकाश में माना जाता है ।

३ कोई ऐसा स्थान जहाँ सर्व सुख प्राप्त होता हो ।

४ आकाश, आसमान ।

५ ईश्वर ।

६ सुख ।

७ देखो 'सरग' (रू. भे.)

रू. भे.—सग, सग्ग, सरग, सरगि, सरग्ग, सुरग, स्रग, स्रग्ग, स्त्रुग, स्त्रुगि ।

स्वरगगमण, **स्वरगगमन**—सं. पु. [सं. स्वर्गगमन] स्वर्ग जाने की क्रिया, अवस्था या भाव, मरना ।

स्वरगगांमी—वि. [सं. स्वर्गगामिन्] १ स्वर्ग की तरफ जाने वाला ।

२ मरा हुआ, मृत ।

स्वरगगिर, **स्वरगगिरि**, **स्वरगगिरी**—सं. पु. [सं. स्वर्गगिरि] सुमेरुपर्वत ।

स्वरगतरंगिण, **स्वरगतरंगिणी**—सं. स्त्री. [सं. स्वर्गतरंगिनी] आकाश-गंगा ।

स्वरगतर, **स्वरगतरु**—स. पु. [सं. स्वर्गतरु] १ कल्पवृक्ष ।

२ पारिजात ।

स्वरगद—वि. [सं. स्वर्गद] स्वर्ग देने वाला ।

स्वरगधेन, **स्वरगधेनु**—सं. स्त्री. [सं. स्वर्गधेनु] कामधेनु ।

स्वरगनद, **स्वरगनदी**—सं. स्त्री. [सं. स्वर्गनदी] आकाश-गंगा ।

रू. भे.—सरगनद, सरगनदी, सुरगनदी, सुरगीनदी ।

स्वरगपत, **स्वरगपति**, **स्वरगपती**—सं. पु. [सं. स्वर्गपति] स्वर्ग का मालिक, इन्द्र ।

रू. भे.—सरगपत, सरगपति, सरगपती, सुरगपत, सुरगपति, सुरगपती ।

स्वरगपुर, **स्वरगपुरी**—सं. स्त्री. [सं. स्वर्गपुरी] अमरावती, वैकुण्ठपुरी ।

रू. भे.—सरगपर, सरगपुर, सरगपुरी, सरगापुर, सरगापुरी, सुरगपुर, सुरगपुरी ।

स्वरगमंदाकनी, **स्वरगमंदाकिनी**—सं. स्त्री. [सं. स्वर्गमंदाकिनी] आकाश-गंगा ।

रू. भे.—सुरगमंदाकनी, सुरगमंदाकिनी ।

स्वरगलोक—सं. पु. [सं. स्वर्गलोक] १ देवलोक ।

उ०—जिण री संगति रै प्रभाव **स्वरगलोक** रौ मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रौ निवास भाळियौ ।—वं. भा.

२ मृत्यु को प्राप्त होना, मरना ।

क्रि. प्र.—व्हेणौ, जाणौ ।

रू. भे.—सरगलोक, स्रगलोक, सुरगलोक, स्रगलोक, स्वरलोक ।

स्वरगलोकेस, **स्वरगलोकेसर**, **स्वरगलोकेसु**, **स्वरगलोकेसुर**—सं. पु. [सं. स्वर्गलोकेश, स्वर्गलोकेश्वर] १ इन्द्र ।

२ तन, शरीर ।

स्वरगवधु, **स्वरगवधू**—सं स्त्री. [सं. स्वर्गवधू] अप्सरा ।

रू. भे.—सबरगवधू, सुरगवधू ।

स्वरगवास—स. पु. [सं. स्वर्गवास] १ बैकुंठवास, देवलोक ।

उ०—कायर घर आवण करै, पूछै ग्रह दुज पास । **स्वरगवास** खारौ गिणै, सब दिन प्यारौ सास ।—बां. दा.

२ स्वर्ग का निवास ।

३ देहावसान, मृत्यु, मौत ।

रू. भे.—सरगवास, सुरगवास ।

स्वरगवासी—वि. [सं. स्वर्गवासी] १ स्वर्ग में रहने वाला ।

२ स्वर्गीय ।

रू. भे.—सरगवासी, सुरगवासी ।

स्वरगविहारी—सं. पु. [सं. स्वर्गविहारी] देवता, देव ।

रू. भे.—सुरगविहारी, स्रगविहारी ।

स्वरगगात्री—सं. स्त्री. [सं.] अप्सरा ।

स्वरण—सं. पु. [सं. स्वर्ण] १ सुवर्ण, सोना, कनक ।

२ धतूरा ।

३ कामरुप देश की एक नदी ।

रू. भे.—सवरण, सोवंन, सोवंन्न, सोव्रण, सोवन, सोवरण, सोविरणं, सोव्रण, सोव्रन, सोव्रन्न ।

स्वरणकाय—सं. पु. [सं. स्वर्णकाय] गरुड़ का एक नाम ।

स्वरणकार—सं. पु. [स. स्वर्णकार] स्वर्ण के आभूषण बनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

रू. भे.—सोव्रणकार, सोवनकार ।

स्वरणगिर, **स्वरणगिरि**, **स्वरणगिरी**—सं. पु. [सं. स्वर्णगिरि] १ सुमेरुपर्वत ।

२ लंका का दुर्ग ।

३ जालोर का दुर्ग ।

४ मगध देश की प्राचीन राजधानी ।
रू. भे.—सोणगिर, सोणगिरि, सोणगिरी, सोनगढ, सोनगिर, सोनगिरि, सोनगिरी, सोनागर, सोनागिर, सोनागिरि, सोनागिरी, सोवनगर, सोवनगिर, सोवनगिरि, सोवनगिरी, सोवरणगिर, सोवरणगिरि, सोवरणगिरी, सोव्रनगिर, सोव्रनगिरि, सोव्रनगिरी, सोव्रन्नगिर, सोव्रन्नगिरि, सोव्रन्नगिरी ।

स्वरणचूड़–सं. पु. [सं. स्वर्णचूड़] १ नीलकंठ नामक पक्षी ।
२ महादेव, शिव ।

स्वरणजात, स्वरणजाति, स्वरणजाती–सं. स्त्री. [सं. स्वर्णजाति] पीली चमेली ।

स्वरणपक्ख, स्वरणपख, स्वरणपक्ष–सं. पु. [सं. स्वर्णपक्ष] गरुड़ ।

स्वरणप्रस्थ–सं. पु. [सं. स्वर्णप्रस्थ] जंबू द्वीप का एक उपद्वीप । (पुराण)

स्वरणभूखण, स्वरणभूसण–सं. पु. [सं. स्वर्णभूषण] १ सोनागोरू ।
२ सोने के आभूषण ।

स्वरणाद्रि, स्वरणाद्री–सं. पु. [सं. स्वर्णाद्रि] भुनेश्वर नामक तीर्थ । (उड़ीसा)

स्वरभंग–सं. पु. [सं.] १ आवाज बैठ जाने व ठीक-ठीक स्वर न निकलने का एक प्रकार का रोग विशेष । (वैद्यक)
२ उच्चारण में होने वाली बाधा ।

स्वरभांण, स्वरभांणु, स्वरभांनु–सं. पु. [सं. स्वरभानु] १ श्रीकृष्ण एवं सत्यभामा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।
२ राहु नामक ग्रह ।

स्वरभूखणी, स्वरभूसणी–सं. स्त्री. [सं स्वरभूषणी] कर्नाटिकी पद्धति की एक रागिनि । (संगीत)

स्वरमंडळ–सं. पु. [सं. स्वरमंडल] एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

स्वरलोक—देखो 'स्वरगलोक' (रू. भे.)
उ०—पातरां पांच नाजर उभै, भल बाई अत भावियौ । 'जसवत' सुतन सतियां सहित, यौं **स्वरलोक** सिधावियौ ।—रा. रू.

स्वरवीथी–सं. स्त्री. [सं स्वर्वीथी] ध्रुव-पुत्र वत्सर की पत्नी का नाम ।

स्वरवेस्या–सं. स्त्री. [सं. स्वर्वेश्या] अप्सरा ।

स्वरवैद्य—सं. पु. [सं. स्वर्गवैद्य] अश्विनीकुमार ।

स्वरसंक्रम–सं. पु. [सं] संगीत में स्वरों का उतार और चढाव ।

स्वरसंधि–सं. स्त्री. [सं.] व्याकरण में दो या अधिक पास-पास आने वाले स्वरों का मिलकर एक होना ।

स्वरस–सं. पु.—औषधि का रस । (अमरत)

स्वरा–सं. स्त्री. [सं.] १ ब्रह्मा की पत्नी, गायत्री की सपत्नी ।
२ उत्तानपाद एवं सूनृता की एक कन्या का नाम ।

स्वराज्य–सं. पु. [सं.] १ अपना देश, वतन ।
२ वह राज्य जिसकी शासन-व्यवस्था विदेशी शासकों के हाथ से निकलकर देशवासियों के हाथ में आ चुकी हो ।

स्वराट–सं. पु. [सं.] १ इंद्र, देवराज । (ना. डिं. को.)
उ०—छबीलौ घणौं खास-आवास छाजै, लखै घाट **स्वराट** रौ पाट लाजै ।—मे. म.
२ ब्रह्मा ।
३ परमेश्वर, ईश्वर ।

स्वराभरण–सं पु [सं.] कर्नाटकी पद्धति का एक राग । (संगीत)

स्वरालाप–सं. स्त्री. [सं.] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी । (संगीत)

स्वरास्ट्र–सं. पु. [सं. स्वराष्ट्र] अपना राष्ट्र, वतन ।

स्वरूप–सं. पु. [सं.] १ आकार, बनावट, आकृति ।
२ रूप, शक्ल ।
३ सौंदर्य, सुन्दरता, रूप ।
उ०—इतरै एक जख आइयौ सौ मदनावती रौ रूप देख उठाय वींनूं विंध्याचळ पर लेय गयौ । तेथी कहियौ छै—अति **स्वरूप** नाहीं भलौ, नाहीं भलौ गुमांन । अति की चाह भली नहीं, ऐ त्रय वचन प्रमांण ।—बैताळपच्चीसी
४ मूर्ति या चित्र ।
५ किसी चीज का ढंग या पद्धति ।
६ स्वभाव, आदत, प्रकृति । (ह. नां. मा.)
७ आत्मा ।
८ विद्वान, पंडित ।
९ ईश्वर, भगवान् ।
उ०—तुरीयै नांम कहण सूं न्यारां, निज अपरोक्ष अनूपा । कारज कारण लेस न कोई, सोई सुखरांम **स्वरूपा** ।
—स्रीसुखरांमजी महाराज
१० पांच प्रकार की मुक्तियों में से सारूप्य नामक मुक्ति ।
वि.—१ मनोहर, सुन्दर, रूपवान ।
उ०—और सुरसुंदरी आवास थकी अपणी पाळतू मदनमंजरी, सारिका, तीनूं पूछियौ कै तूं जांणै तौ बताय, मौ लायक बींद कुण होसी ? सारिका कही—भोगावती नगरी रौ राजा रूपसेन, सौ नांम सकळ गुण जांण, अति **स्वरूप** सौ थारै भरतार होयसी ।
—बैताळपच्चीसी
२ तुल्य, समान ।
३ देखो 'सरूप' (रू. भे.)
रू. भे.—सारूप ।

स्वरूपमांन, स्वरूपवांन–वि. [सं. स्वरूपवत्] सुन्दर, खूबसूरत ।

स्वरूपी–वि.—स्वरूप वाला, स्वरूपवान ।
रू. भे.—सरुपी ।

स्वरेणू–सं. स्त्री. [सं.] सूर्य-पत्नी संज्ञा का एक नाम ।

स्वरोदय–सं. पु. [सं.] वह ज्ञान जो दाहिने और बाएँ नथुने से निकलते हुए श्वासों के आधार पर सब प्रकार के शुभाशुभ फल जानने

के लिए होता है।

स्वल्प–वि. [सं.] बहुत थोड़ा, अल्प।

स्ववस–वि. [सं. स्ववश] जो अपने वश में हो।

स्वसन–सं. पु. [सं. श्वसन] १ हवा, पवन। (ह. नां. मा.)
२ धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग का नाम।

स्वसरिता–सं. स्त्री. [सं. स्वः+सरित्] गंगा।

स्वसा–सं. स्त्री. [सं. स्वसृ] बहन।
उ०—सिसु 'गंगा' थारी **स्वसा**, एक तजै आंमैर। क्रम ईखै देगी कंवर, बर बय कुळ घर बैर।—वं. भा.

स्वसाद–सं. पु.—एक सूर्यवंशी राजा, शशाद।
उ०—सुत विकुख सक्रुनिज सुत **स्वसाद**, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद। जै सुत अनन प्रथु पुत्र जास, राजै प्रथु नदन विस्टरास।
—सू. प्र.

स्वसुंदरी–सं. स्त्री. [सं. स्वःसुंदरी] अप्सरा।

स्वसुर, स्वसुरौ—देखो 'सुसरौ'।

स्वस्ति–सं. स्त्री. [सं.] १ ब्रह्मा की तीन पत्नियों में से एक।
२ पत्रों के प्रारम्भ में मंगलकामना हेतु लिखा जाने वाला शब्द।
उ०—लिखि **स्वस्ति** स्त्री स्त्री स्त्री विराज, लिखियै जु प्रिय जोग आज। उपमा जु लिखौ जेती बनाय, सौ सकळ अंग तुम्हरै लखाय।
—समानबाई
अव्य—१ मंगल हो, भला हो। (आशीर्वाद)
२ मान्य है, ठीक है।
३ कल्याण, क्षेम।
उ०—हुंतौ थयौ मूरख रे दाक्षिणवंत थी, बात कही सहु तुझ रे। राज चाहुं पाछै, खोटी मति आछै, थाज्यौ तौ तुझनें रे **स्वस्ति** महीपति।—वि. कु.
४ देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)
उ०—कुडी चढतइ वेडि विचि, महिला मूकी जाइ। ऊंदिरडु मुखि मूंजरइ, तु तै **स्वस्ति** भणाइ।—मा. कां. प्र.

स्वस्तिक–सं. पु. [सं.] एक प्रकार का मांगलिक चिन्ह जो मांगलिक अवसरों पर भवनादि में अंकित किया जाता है।
२ सखिया जैसा सामुद्रिक चिह्न जो प्रायः हथेली या पैर में होता है एवं शुभ माना जाता है। (सामुद्रिक)
३ एक प्रकार का शुभ द्रव्य जो विवाहादि के समय भिगोये हुए चावलों को पीसकर बनाया जाता है।
४ सथिया जैसा चिन्ह।
५ एक विशेष प्रकार का राजप्रासाद।
६ चौराहा।
७ एक प्रकार का पकवान।
८ एक प्राचीनकालीन यंत्र जो शरीर में गड़े हुए शल्य आदि निकालने के काम आता था।
९ सांप के फन पर की नीली रेखा।
१० एक विशेष प्रकार का मकान जिसके पश्चिम व पूर्व की ओर दो दालान हों।
११ लहसुन।
१२ मूली।
१३ रतालू।
१४ लंपट, रसिया।
१५ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ५८ वां ग्रह।
१६ एक प्रकार का योगासन।
रू. भे.—सठिक, सखियौ, सतियौ, सथियौ, साकियौ, साखियौ, साख्यौ, साथियौ, स्वस्ति।

स्वस्तिका–सं. स्त्री.—चमेली।

स्वस्तिकासण, स्वस्तिकासन–सं. पु. योग के चौरासी आसनों में से एक, जिसमें दोनों जंघाओं के बीच के भाग में और दोनों पावों की पिंडलियों के बीच में दोनों पावों के पंजों को रखना और शरीर को सीधा रखकर बैठना होता है। (योग)

स्वस्तिमत, स्वस्तिमति, स्वस्तिमती–सं. स्त्री. [सं. स्वस्तिमती] स्वामी-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

स्वस्तिस्री–सं. पु.—पत्र के प्रारम्भ में लिखा जाने वाला मांगलिक शब्द।
उ०—**स्वस्तिस्री** चंद्रगढ सुभ स्थांन अनेक ओपमा लाइक बाजमांन प्यारी सजीली लजीली फबीली छबीली नसीली रसीली चकीली ककीली अंगीली रंगीली बंकीली लारंकली रमकीली समकीली चटकीली...।—र. हमीर
रू. भे.—स्वतिस्री।

स्वस्न–सं. पु. [सं. स्वश्न] एक असुर का नाम।

स्वस्रप, स्वस्रिप–सं. पु. [सं. श्वसृप] सैंहिकेय नामक असुर जो हिरण्यकशिपु का भतीजा था।

स्वस्व–सं. पु. [सं. स्वश्व] एक राजा जिसके पुत्र रूप में सूर्य ने जन्म लिया था।

स्वांग–सं. पु. [सं.] १ किसी दूसरे की वेश-भूषा अपने शरीर पर इस प्रकार धारण करना कि देखने वालों को वही दूसरा व्यक्ति जान पड़े।
उ०—१ दूजी बातां तौ राजाजी रै घणी मोड़ी समझ मैं आवती, पण मरजी रा खवास री आ बात वांरै तुरत समझ मैं आयगी। बोल्या—हां, आ बात तौ थारी साची, वौ जात रौ नाई नीं हौ, नाई रौ **स्वांग** लायौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ जै डौकरी रै बदळै वौ किणी दूजा वेस मैं व्हैतौ तौ

म्हैं किणी भाव फिटक मै नीं आवतौ। मारयां ईं छोडतौ। पण उणरा भाग कै वौ डोकरी रौ इज **स्वांग** लायौ।

—फुलवाड़ी

२ कोई बहाना बनाकर दूसरों को भ्रम में डालने या अपना काम निकालने के लिए धारण किया जाने वाला झूठा रूप।

उ०—राईकौ ऊंचौ मूंडौ करनै जोयौ। देखतां ईं तुरत पिछांणग्यौ कै औ निस्चै कोई भांड है। पैं'ला तौ लुगाई रौ वेस धरनै आयौ। दाळ नीं गळी तौ अबै दूजौ **स्वांग** लायौ।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—करणौ, लाणौ।

३ ढोंग, आडम्बर।

उ०—१ सेठांनै तौ लड़ण सारू मिस चाहीजतौ हौ। ब्याव री बात घणी धकै नीं बधै इण वास्तै सेठ लड़ण रौ तुरत **स्वांग** रच लियौ। सेठांणी रौ माजनौ पाड़तां कैवण लागा—थै तौ आ इज चावौ कै म्हैं मर जावूं तौ पाप कटै।—फुलवाड़ी

उ०—२ उणी भांत थैं मिनख लुगायां रा तोख उठावौ, आंरा सूं प्रीत करण रौ **स्वांग** रचौ। प्रीत करण सारू तौ थांरौ मूंडौ घणौ बळै अर प्रीत रौ जोखौ उठातां माईत मरै। औ किण रै घर रौ न्याव।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—रचणौ।

४ देखो 'सांग' (रू. भे.)

स्वांगी-वि.—१ ढोंगी।

उ०—**स्वांगी** सब संसार है, साधु सोध सुजांण। पारस परदेसां भया, दादू बहुत पखांण।—दादूबांणी

२ नकल करने वाला, नकलची।

३ बहुरूपिया।

स्वांत, स्वांति-सं पु.—१ अपना अंत, मृत्यु।

२ मन, अंतःकरण।

३ देखो 'स्वाति' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—१ तव कीति स मोर भंगौर करै, घन वूठां तूठां दोख हरै। सुख सारंग **स्वांति** जिसि पपियै, मुखि मीठी बांणी सदा जपियै।

—गोकळजी

उ०—२ **स्वांति** बूंद बुधवंत सरजिया, बांणी जौति नीर बाखांण। कीमति नारी तणा गहणा कजि, चाहि लिया अमज चहूवांण।

—महाराजा छतरसिंघ रौ गीत

स्वांन-सं. पु. [सं. श्वान] १ कुत्ता।

उ०—१ करै चाड़ परा काचड़ा, अठी उठी नूं ईख। पगबिच हाडक परछियां, तिण सूं **स्वांन** सरीख।—बां. दा.

उ०—२ वदियौ **स्वांन** वनंचरां, नहिं लाज निहारै। मुख भख ग्रासज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै।—सू. प्र.

२ दोहा नामक छंद का एक भेद जिसमें २ गुरु और ४४ लघु होते हैं।

३ छप्पय का एक भेद जिसमें ५६ गुरु, ४० लघु कुल ९६ वर्ण व १५२ मात्राएँ होती हैं।

[सं. स्वानः] ४ शब्द, ध्वनि, आवाज। (डिं. को.)

उ०—भवांनी नमौ कच्छपी **स्वांन** भासा, भवांनी नमौ ऐन ईसांन आसा। भवांनी नमौ व्योम गंगा बलच्छा, भवांनी नमौ चेतना देन दच्छा।—मे. म.

वि—क्रूर। ❀ (डिं. को.)

रू. भे.—सुआंन।

स्वांननिद्रा-सं. स्त्री.—थोड़े से खटके या आहट से खुलने वाली निद्रा, हल्की नीद, अल्पनिद्रा।

स्वांम, स्वांमि—देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—१ रति रयण सुदि नर नारि रांमति गाळि प्रमदति गावही, मुख गांन दिन निस **स्वांम** मगळ वैण चंग वजावही।—रा. रू.

उ०—२ वीनति एक करूं मोरा **स्वांम**, द्यौ मोहि मुगतिपुरी कौ धांम। किसकै हरि हर किसकै रांम, समयसुंदर करै जिनगुण ग्रांम।—स. कु.

उ०—३ दियैं गुण निम्मल मुत्तियदांम, सेवुं मन सुद्ध तिकौ हिज **स्वांम**। सुरासुर सरव करै जसु सेव, दियै सुख वंछित रिखभदेव।

—ध. व. ग्रं.

स्वांमिकारतिक, स्वांमिकारतिकेय—देखो 'स्वांमीकारतिकेय' (रू. भे.)

स्वांमिद्रोह—देखो 'स्वांमीद्रोह' (रू. भे.)

स्वांमिद्रोही—देखो 'स्वांमीद्रोही' (रू. भे.)

स्वांमिधरम—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्वांमिधरमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

उ०—तीं सूं दूजा नूं पण चाहनां **स्वांमिधरमी** जोव देखणौं री हीवै।—नी प्र.

स्वांमिधरम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

उ०—ठावै हम ठक्कुर सुकुळ ठीक, नोकरी चहत नजदीक नीक। सुभ **स्वांमिधरम्म** सेवक सुसील, अनुसरन असुर ईमांन ईल।

—ऊ. का.

स्वांमिधरम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वांमिध्रम, स्वांमिध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्वांमिध्रमी, स्वांमीध्रम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वांमी—देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—१ गज तजंता पुळिया गिणै, **स्वांमी** कासिम संग। दळ भग्गौ दिल्लीस रौ, जांणै परबळ जंग।—वं. भा.

उ०—२ स्त्री पुत्र जगाय लक्ष्मी रा बचन कहिया। तठै स्त्री बोली—अेतौ कारज नहीं करौ तौ अेती दिहाड़ी खातां क्यौं छूटोला। पाछै पुत्र कही—हूं धन्य छूं, म्हारौ सरीर **स्वांमी** रै अरथदेव रै कांम आवै।—बैताळ पच्चीसी

स्वांमीकारतिक, स्वांमीकारतिकेय-सं. पु. [सं. स्वामिकार्त्तिकेयः]

देवों का सेनापति जो तारकासुर का वध करने के लिए अवतरित हुआ था।

वि. वि.—पुराणों में सर्वत्र इसे शिव और पार्वती का अथवा अग्नि का पुत्र माना गया है एवं इसे छः मुख वाला भी कहा गया है। इसके जन्म के विषय में कई प्रकार की कथाएँ पुराणों में प्रसिद्ध है। ब्रह्माण्ड के अनुसार एक समय शिव और पार्वती एकान्तवास में थे, उस समय इंद्र ने अनल नामक अग्नि से उनके एकान्त का भंग करवाया। इस कारण शिव के वीर्य का अर्द्धांश भूमि पर गिर पड़ा। अग्नि के इस प्रकार की उद्दण्डता के कारण पार्वती ने इस पर कोप किया एवं अग्नि को शाप देकर शिव के वीर्य को धारण करने के लिए बाध्य किया। ब्रह्माण्डपुराण के अनुसार शिव के वीर्य को अग्नि अधिक समय तक धारण न कर सका अतः उसने गंगा को दे दिया। गंगा भी धारण न कर सकी अतः उसने भूमि पर छोड़ दिया। आगे चलकर उसी वीर्य से स्वामिकार्त्तिकेय का जन्म हुआ।

महाभारत में यह वृत्तान्त भिन्न रूप से प्राप्त होता है। एक समय सप्तऋषियों के यज्ञ में अग्नि सप्तऋषियों की पत्नियों पर आसक्त हो गया और अपनी पत्नी स्वाहा को त्याग दिया और अरुंधति के अतिरिक्त छः ऋषि-पत्नियों के साथ यह रमण करने लगा। अग्नि-पत्नी स्वाहा को यह पता लगा तो उन छः ऋषि-पत्नियों में वह समाविष्ठ हो गई, पश्चात् उसे ही ऋषि-पत्नी समझ कर उसके साथ संभोग करने लगा। स्वाहा ने अग्नि से प्राप्त उसका सारा वीर्य एक कुंड में रख दिया। आगे चलकर स्वामिकार्त्तिकेय का जन्म हुआ। तारकासुर का वध करने के लिए ही इनका अवतार हुआ था। ब्रह्मा ने तारकासुर को अवध्यत्व का वर दे दिया था और कहा था कि इसका वध सात वर्ष की आयु वाला ही बालक कर सकेगा। इस कारण जन्म के पश्चात् सात दिन की अवधि में ही इसने तारकासुर से युद्ध कर उसका वध कर दिया था। महाभारत में तारकासुर के साथ महिषासुर का भी वध इसने ही किया था। इसकी पत्नी का नाम देवसेना था।

पर्याय.—अगनीभू, आसुतरेस्वर (श्वर), उमाकुमार, क्रतकाकुमार, क्रौंचार, खटमातर, खटमुख, गुह, गंगासुत, चखबारह, चखदेव, छमा, तारकारि, द्रढक, परभ्रति, प्रखतवाह, ब्रह्मचार, भूरिश्रक्ष, महासेन, मोररथ, रुद्रात्मज, विसाख, सरभू, सिखंडी, सुकुमार, सेनांनी।

रू. भे.—स्यांमकारतक, स्यांमकारतिक, स्यांमकारतिकेय, स्वांमि-कारितिक।

स्वामीद्रोह–सं. पु. [सं. स्वामिन्+द्रोह] स्वामी या मालिक के प्रति विद्रोह, बलवा।

रू. भे.—सांमद्रोह, सांमीद्रोह, स्यांमद्रोह, स्यांमीद्रोह, स्वांमिद्रोह।

स्वांमीद्रोही–वि. [सं. स्वामिन्+द्रोह+ई. प्रत्य] स्वामी या मालिक के विरुद्ध, विद्रोह करने वाला, स्वामी के विरूद्ध विद्रोह-कर्त्ता व्यक्ति।

रू. भे.—सांमद्रोही, सांमीद्रोही, स्यांमद्रोही, स्यांमीद्रोही, स्वांमिद्रोही।

स्वांमीधरम–सं. पु [सं. स्वामिन्+धर्म] स्वामि के प्रति वफादारी, स्वामीभक्ति।

रू. भे.—सांमधरम, सांमधरमाई, सांमधरम्म, सांमध्रम, सांमध्रम्म, सांमिधरम, सांमिधरम्म, सांमिध्रम, सांमिध्रम्म, सांमीधरम, सांमीधरम्म, सांमीध्रम, सांमीध्रम्म, स्यांमधरम, स्यांमध्रमाई, स्यांमधरम, स्यांमधरम्म, स्यांमध्रम, स्यांमध्रम्म, स्वांमिधरम, स्वांमिधरम्म, स्वांमिध्रम, स्वांमिध्रम्म, स्वांमीधरम्म, स्वांमीध्रम, स्वांमीध्रम्म।

स्वांमीधरमी–सं. पु. [सं. स्वामिन्+धर्म+ई. प्रत्य] १ स्वामी के प्रति वफादारी रखने वाला, स्वामीभक्त।

२. स्वामिभक्ति, स्वामी के प्रति वफादारी।

रू. भे. सांमधरमी, सांमधरमौ, सांमधरम्मी, सांमध्रमी, सांमध्रम्मी, सांमिधरमी, सांमिधरम्मी, स्यांमधरमाई, स्यांमधरमी, स्यांमधरम्मी, स्यांमध्रमी, स्यांमध्रम्मी, स्वांमिधरमी, स्वांमिधरम्मी, स्वांमिध्रमी, स्वांमिध्रम्मी।

स्वांमीधरम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्वांमीधरम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वांमीध्रम—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्वांमीध्रमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वांमीध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू भे.)

स्वांमीध्रम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वागत–सं. पु. [सं. स्वागतं] १ अगुवानी, अभिनंदन।

उ०—जाळ खेजड़ा झाड़खा, झट खनै बुळा **स्वागत** करै। मरु दातार देव बना विच, छांय सुला विपता हरै।—दसदेव

२ उक्त अवसर पर पूछा जाने वाला कुशल-मंगल।

३ किसी के आने के बाद उसकी की जाने वाली आवभगत, खातिरी।

उ०—ती नूं देखतां ही लुगाई ऊठी, गरम जळ सूं हाथ पग धुलाया, आगत **स्वागत** करण लागी।—जैसौ खाय तैसी बुद्धि री वात

४ किसी के विचारों आदि को मान्य करने की क्रिया या भावना।

५ शकुनि राजा का पुत्र, एक राजा।

रू. भे.—सवागत, सुआगत, सुवागत।

स्वात–सं. पु. [सं.] १ कश्यप एवं ब्रह्मधना के पुत्रों में से एक पुत्र राक्षस।

२ देखो 'स्वाति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ पंथी एक संदेसड़उ, लग ढोलइ पौहचाइ। निकसी

वेणी सापणी, **स्वात** न वरसउ ग्राइ ।—ढो. मा.

उ०—२ सीप उडेकै **स्वात** जळ, चकई उडेकै सूर । नवा उडेकै रण निडर, सूर उडंकै हूर, दारूड़ौ दाखां रौ ।—लो. गी.

स्वातग—सं. पु.—१ चातक ।

उ०—हिया पीतम परहरत, **स्वातग** भई सुभाय । भीर तबै कर ग्रंक भर, प्रोहित ऊर लपटाय ।—बगसीरांम प्रोहित री बात

२ देखो 'स्वाति' (रू. भे.)

स्वातज—सं. पु.—मोती, मुक्ता । (ग्र. मा.)

स्वाति—सं. पु. [सं] १ मोती, मुक्ता ।

उ०—रतन मैं राखड़ी वेणी वासग जड़ी, सूभरां वांहड़ी लहक तोड़ै । **स्वाति** नौ बिंदलौ नासिका निरमयौ, ग्राज ग्राल्यंगन क्रस्न कोड़ै ।—रुकमणी मगळ

२ शुभ माना जाने वाला सत्ताईस नक्षत्रों में से पन्द्रहवाँ नक्षत्र ।

उ०—१ ढाढी जै साहिब मिळइ, यूं दाखविया जाइ । ग्रांख्यां सीप विकासियां, **स्वाति** ज बरसइ ग्राय ।—ढो. मा.

उ०—२ नमौ सुक्र संध्या घणौ स्रेस्ट सम्मौ, नखित्रां तणौ पातिसा **स्वाति** नम्मौ । महालक्ष्मी मात 'धापां' नमांमी, नमौ मात रौ तात 'सांमुद्र' नांमी ।—मे. म.

३ सूर्य की एक पत्नी का नाम ।

रू. भे.—स्वांत, स्वांति, स्वात, स्वातग, स्वाती ।

स्वातिसुत, स्वातिसुतण, स्वातिसुतन—सं. पु.—मोती, मुक्त ।

स्वाती—देखो 'स्वाति' (रू. भे.)

स्वाद—सं. पु. [सं.] १ किसी चीज को खाने या पीने पर रसनेंद्रिय को होने वाला ग्रनुभव, जायका ।

उ०—१ जद ग्रा बोली वीरा काचरी रा **स्वाद** री तौ तिखण मिली हुंती तौ खबर पड़ती । जद ग्रे बोल्या—तीखण कांई । जद ग्रा बोली—काचरियां बंदारवां नैं छुरी न मिली ।—भि. द्र.

उ०—२ मीठा रौ **स्वाद** ग्रायां पछै सेठ ग्रागै पांणी ई नीं पीयौ । इण भांत रौ मीठौ पांणी पीयां ग्रागै पीवण री लत पड़ जावै तौ ! ग्रौ तौ मारग ई खोटौ ।—फुलवाड़ी

२ भोजन ।

३ किसी काम बात या चीज से प्राप्त होने वाला ग्रानंद, मजा ।

उ०—१ जद लूंकड़ी बोली—ग्ररै चोधरपण मैं तौ बडौ **स्वाद** है । जद सुसलौ बौल्यौ—थारौ मन हुवै तौ तूं लै । म्हारै तौ कोई चाहीजै नहीं ।—भि. द्र.

४ संभोग ।

उ०—विभचार मांय पायौ विभौ, जातां जुगां न जावसी । नित **स्वाद** लियौ परनार मैं, याद घणा दिन ग्रावसी ।—ऊ. का.

५ ग्राराम, सुख, ग्रानंद ।

उ०—१ जद मूलजी मूंहतौ बोल्यौ—इण चरचा मैं **स्वाद** न पावोला । मोकळौ कह्यौ पिण मांन्यौ नहीं ।—भि. द्र.

उ०—२ म्हनै हाल तांई ठा' नीं पड़ी कै ग्रौ हित्यारौ ग्रापरै **स्वाद** री खातर क्यूं जंगळ रै जीवां रा प्रांण लेवतौ भंवै । पण मूं सोरै सास इण दुस्ट रै हाथ ग्रावणियौ म्हैं ई कोनीं ।—फुलवाड़ी

६ रस, ग्रानंद ।

उ०—सुगण सुणीज्यौ स्रुतिधरी, परहौ तजौ प्रमाद । बीजै खंड वखांणता, सुणता उपजै **स्वाद** ।—प. च. चौ

७ इच्छा, कामना ।

उ०—मन वरज्यौ लागै नहीं, जागै विखीया **स्वाद** । हरीया मन की कीजियै, मन ही सूं फरियाद ।—ग्रनुभववांणी

८ ग्रादत, लत ।

९ मीठा, रस ।

१० तत्व, गुंजाइश, सार ।

वि.—स्वादिष्ट ।

रू. भे.—सवाद, सवादौ, साद, साव, सुग्राद, सुवाद ।

स्वादक—देखो 'सवादक' (रू. भे.)

स्वादियौ—देखो 'स्वादु' (ग्रल्पा; रू भे.)

स्वादिस्ट, स्वादिस्ट—वि. [सं. स्वादिष्ठ] जिसका स्वाद ग्रच्छा हो, जायकेदार ।

उ०—जक्षणी ग्राय प्राप्त हुई । ग्राई हाथ जोड़ि कही—कींसूं ग्राग्या छै ? जोगी कही—इयै विदेसी नूं सत्कार कियौ चाहिजै । इतरी ग्राग्या पाय सौ महल रचियौ । नांना प्रकार रा व्यंजन रचिया । तींनूं **स्वादिस्ट** यथेच्छा भोजन कराय सुख भुगाया ।—बैताळपच्चीसी

स्वादी—स. स्त्री—दाख, द्राक्ष । (ग्र. मा.)

वि.—१ स्वाद वाला, स्वादपूर्ण ।

२ स्वाद लेने वाला ।

३ रसिक, रसिया ।

४ हठी, जिद्दी ।

रू. भे.—सवादी ।

स्वादीलौ—वि. (स्त्री. स्वादीली) १ स्वादिष्ट, स्वादयुक्त, जायकेदार ।

२ स्वाद लेने वाला, स्वादरसिक ।

स्वादु—सं. पु. [सं. स्वादु] १ मधुर रस ।

२ गुड़ ।

३ मीठास ।

४ महुग्रा ।

५ बेर ।

६ दुग्ध, दूध ।

वि.—१ स्वादिष्ट, जायकेदार ।

उ०—१ एक दिन राजा रै ग्ररथ कोई तपस्वी महारसायण रौ निदांन एक ग्रपूरव **स्वादु** फळ दीधौ ।—वं. भा.

२ मधुर, मीठा।

३ मनोहर, प्रिय।

४ स्वादिष्ट चीजें खाने का लोभी, चट्टू।

अल्पा;—स्वादियौ।

स्वाधिस्ठांण—सं. पु. [सं. स्व+अधिष्ठान] कुंडली के ऊपर पड़ने वाले छः चक्रों में से दूसरा चक्र जिसका रंग लाल होता है। इसका स्थान शिश्न के मूल में माना जाता है। इसके देवता विष्णु माने गये हैं। (हठयोग)

स्वाधीन—वि. [सं.] १ जो पराधीन न हो, आत्मनिर्भर। (डिं. को.)

उ०—सुक्रत लगन **स्वाधीन** सदाई, सदा मगन सुख रासी। सन्मुख संपत लगत अग्नि सी, पराधीन दुख पासी।—ऊ. का.

२ स्वतंत्र, निरंकुश। (आजाद)

उ०—राव राय रांणौ सहित, सकौ थया **स्वाधीन**। यां छूटा जग जाळ ज्यौं, जळ विछुट्टा मीन।—रा. रू.

स्वाधीनता—सं. स्त्री. [सं.] १ स्वाधीन होने का भाव, आजादी।

२ स्वतंत्रता।

स्वाधीनपतिका—सं. स्त्री. [सं.] वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो। (साहित्य)

स्वाध्याय—सं. पु. [सं.] १ वेदों का निरंतर अभ्यास करने की क्रिया या ढंग।

२ किसी गंभीर विषय का भली प्रकार से किया जाने वाला अध्ययन।

स्वापतेय, स्वापतेयक—सं. पु. [सं स्वापतेय] धन, दौलत।

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा)

स्वापद—सं. पु. [सं. श्वापदः] १ हिंसक पशु।

उ०—रौद्र घोर भयंकर। मनुग्य रहित। अनेक **स्वापद** सहित। किहां इक सिवा फूत्कार। घूहड़ तणा घू घू सब्दकार। सिंह तणा सिंहनाद। वाघ तणा गुंजारव। सूअर तणा घरघरा रव।

—सभा

२ चीता।

वि.—हिंसक, भयंकर।

स्वाभाविक—वि. [सं.] १ जो स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो, जो आप ही हुआ हो, प्राकृतिक।

उ०—रूप चतुरता माधुरी, **स्वाभाविक** गुण एह। सुमधुर स्वर भासणी, विना चपळता देह।—बैताळपच्चीसी

२ जो या जैसा प्रकृति के या स्वभाव के अनुसार साधारणतः हुआ करता हो।

रू. भे.—सभाविक, साभाविक, स्वभाविक।

स्वायंत—सं. पु.—१ संतोष, शान्ति।

उ०—मन परचै विनां ध्यांन कैसै धरै, त्याग परचै विनां **स्वायंत** नावै। अरध परचै विनां उरध कैसै चरै, नाद परचै विनां विंद जावै।—अनुभववांणी

२ देखो 'स्वाति'।

उ०—ब्रह्म आणंद मैं पेम पिरला वणी, उलटि बरसाल चहूं दिस धारूं। **स्वायंत** की बूंद आकास मैं घर कीया, नांव नग हीर पाया अपारूं।—अनुभववांणी

स्वायंभु, स्वायंभुव, स्वायंभू सं. पु. [सं. स्वायंभुवः] एक सुविख्यात राजा जो स्वायंभुव नामक पहले मन्वंतर का अधिपति (स्वायंभुवमनु) माना जाता है। मनुस्मृति नामक धर्म-शास्त्र का कर्ता यही माना जाता है।

स्वार—देखो 'सुवारि' (रू. भे.)

उ०—१ आज सहेली आंगणौ, ऊभी अंग सुवारि। हरीया सांझ'क **स्वार** मैं, सूती पाव पसारि।—अनुभववांणी

उ०—२ सांझि सभ **स्वार** वया करत नर बावरा, वैग भजि वैग हरि दाव आई। दास हरिरांम तन खाक मिळ जांहिगे, चूक सब जांणि जुग चतुराई।—अनुभववांणी

स्वारथ—सं. पु. [सं. स्वार्थ] १ स्वयं का भला या हित सोचने की क्रिया या भाव, मतलब।

उ०—१ एक कहै आपरै, कियौ मत **स्वारथ** कज्जै। एक कहै अणगंम, रीत अण प्रीत सु रज्जै।—रा. रू.

उ०—२ हर रांम रु रांम गिनौ हरसैं, जग मैं गुरु जेमल मैं दरसैं। सुपनैं मनसा नहिं **स्वारथ** की, प्रभू प्रारथना परमारथ की।

—ऊ. का.

२ केवल अपना हित, लाभ।

उ०—१ बेटी कह्यौ—थूं समझावै अर म्हैं समझूं कोनीं, कांई थारौ समझावणौ अैडौ ई है मां! इण भुळावण मैं थारै बिचै म्हारौ **स्वारथ** वत्तौ है।—फुलवाड़ी

उ०—२ लुगायां री विगास करियां तौ थां मिनखां री पैं'ला विणास व्है जावै, इण वास्तै खुद री **स्वारथ** पूरण सारू थैं वांनै जीवती राखौ।—फुलवाड़ी

३ उद्देश्य, प्रयोजन।

रू. भे.—सवारथ, सुआरथ, सुवारथ, सूवारथ।

स्वारथता सं. स्त्री. खुदगरजी, स्वार्थपरता।

स्वारथत्याग सं. पु.—दूसरों के हित के लिए अपने हित या लाभ को छोड़ना।

स्वारथी—वि. [सं. स्वार्थिन्] १ अपना मतलब सिद्ध करने वाला, मतलबी, अपना उल्लू सीधा करने वाला, खुदगरज।

उ०—१ घर रा चांनणा सारू तौ दीवौ ई धणौ, पण आखी दुनियां मैं उजास छितरावणिया सूरज नै कोई घर री मेड़ी मैं बंद करणी चावै तौ वौ निपट **स्वारथी**।—फुलवाड़ी

उ०—२ वांरी भोळप अर काली बातां सूं कोई **स्वारथी** लोगां रौ मतलब सरतौ हौ। घरवाळा आपरै नाता रै कारण साथै

रैवणौ चावता अर कुलालची आपरै लालच सारू ।—फुलवाड़ी
२ देखो 'सारथी' (रू. भे.)
उ०—लंकाळ सेवग तूझ लांगौ, भ्रात लिछमण खळां भांगौ। पतीकुळ **स्वारथी** पांगौ, करण असह निकंद ।—र. ज. प्र.
रू. भे.— सवारथी, सारथि, सारथी, सुआरथी, सुवारथी।

स्वारै—देखो 'सुवारै' (रू. भे.)

स्वाल—देखो 'सवाल' (रू. भे.)
उ०—१ जवनपती जांणियौ । हेक इण वात हरक्खै । महाराजा 'अभमाल' **स्वाल** सुण और न अक्खै ।—रा. रू.
उ०—२ मतौ बिचारै रांण रा **स्वाल** माथै उदैपुरां वीच मांही, वेर लेण हाल माथै हांकिया अहास । मांटीपणा ख्याल मावै छकौ आयौ देवगढां बेरिसाल माथै बियौ 'माल', भैरूदास ।
—भैरूदास सांदू रौ गीत

स्वालक—देखो 'सवाळख' (रू. भे.)

स्वालकपट्टी, स्वालखपट्टी—देखो 'सवाळखपट्टी' (रू. भे.)

स्वास–स. पु. [सं श्वास] १ एक रोग विशेष जिसमें सांस बहुत जोर-जोर से चलता है, दमा ।
उ०—हिरणां न मावै हियै, सड़बौ दीठां **स्वास** । वाघ घणा मिळ वीटियां, तौ पिण तिल नह त्रास ।—बां. दा.
२ देखो 'सास' (रू. भे.)

स्वासकुठार–सं. पु. [श्वासकुठार] आयुर्वेद की वह रसौषध जो श्वास रोग के मरीज को दी जाती है ।

स्वासणि, स्वासणी—देखो 'सवासणी' (रू. भे.)
उ०—भाइ सहु ह्वै भीर, गुणी जन कीरति गावै । **स्वासणि** द्यै आसीस, सासरै रह्यौ सुहावै ।—ध. व. ग्रं.

स्वासा–सं. स्त्री [सं. श्वासा] दक्ष प्रजापति की एक कन्या ।

स्वास्थ्य–सं. पु.—निरोगता, तंदुरूस्ती ।

स्वाहा–सं. स्त्री.—स्वायंभुव मन्वन्तर के दक्ष एवं प्रसूति की एक कन्या जो अग्नि की पत्नी थी ।
वि. वि.—इसने अपने पूर्वायुष्य में अधिक तप किया जिसके कारण देवों को हवि भाग पहुंचाने का शुभ कार्य इसको सौंपा गया । अग्नि से इसका पावक, पवमान एवं शुचि नामक तीन पुत्रों एवं स्वारोचिषमनु नामक मन्वंतराधीश राजपुत्र उत्पन्न हुआ । एक बार इसने सप्तर्षियों की पत्नियों का रूप धारण कर अग्नि से संभोग किया जिस कारण इसे स्कंद नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । आगे चलकर स्कंद ने अपनी माता को आशीर्वाद दिया कि तुम समस्त प्राणी मात्र के लिए पूज्य रहोगी एवं अग्नि में आहुति देते समय लोग स्वाहा कह कर तुम्हारा नाम लेंगे ।
२ वैवस्वत मन्वतंर के वृहस्पति एवं तारा की एक कन्या जो वैश्वानर अग्नि की पत्नी थी ।
३ माहिष्मती के नील ध्वज राजा की पुत्री जो अग्नि की पत्नी थी ।
वि.—जो जलाकर नष्ट कर दिया गया हो ।
२ जिसका पूर्णतया नाश या अंत कर दिया गया हो ।
अव्य.—एक शब्द जिसका प्रयोग यज्ञ में आहुति देते समय मंत्रों के अंत में किया जाता है ।

स्वाहाग्रसण, स्वाहाग्रहण–सं. पु. [सं. स्वाहा+ग्रसन] देवता ।
(डिं. को.)

स्वाहापत, स्वाहापति, स्वाहापती–सं. पु. [सं. स्वाह +पति] आग, अग्नि । (अ. मा; ह. नां. मा.)

स्विच–सं. पु. [अं.] विद्युत-प्रवाह को संयुत्त या असंयुत्त करने का यंत्र ।

स्विचबोरड–सं. पु. [अं.] वह काष्ठफलक जिस पर स्विच आदि लगाये जाते हैं, संयुत्तफलक ।
उ०—उण आपरै हाथ सूं कमरौ बंद कर दियौ—बोली, रोसनी घणी तेज है । उण **स्विचबोरड** रै कांनी देख'र तेज रोसनी बद करदी अर मंदरी सोसन्या रोसनी जगा दी ।—तिरसंकू

स्वीकार–सं. पु. [सं. स्वीकार:] १ अंगीकार, मंजूर, कबूल ।
उ०—सोही **स्वीकार** करि गौळवाळ री दोही दुहिता नूं साथ लेर राजकुमार देवसिंह ऊमरथूणै आइ पिता हूं प्रच्छन्न आपरी प्रांणप्रिय छोटी कुमरांणी गोडि मदनावती ।—वं. भा.
२ रजामंदी ।

स्वीकारणौ, स्वीकारबौ–क्रि. स.—अंगीकार करना, कबूल करना, स्वीकार करना ।
उ०—जद अैनी आपां री दोनां री है, ज्यूं कै आ आपरा मूंडै सूं **स्वीकारै**, फेर एकलौ धणियाप लगावणौ खुदगरजी है ।
—एक बीनणी दौ बीन री वात
स्वीकारणहार, हारौ (हारी), स्वीकारणियौ—वि० ।
स्वीकारिओड़ौ, स्वीकारियोड़ौ, स्वीकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
स्वीकारीजणौ, स्वीकारीजबौ—कर्म वा० ।

स्वीकारियोड़ौ–भू. का. कृ.—अंगीकार किया हुआ, कबूल किया हुआ, स्वीकार किया हुआ ।
(स्त्री. स्वीकारियोड़ी)

स्वीकृति–सं. स्त्री. [सं. स्वीकृति] मंजूरी, रजामंदी ।

स्वेच्छा–सं. स्त्री. [सं.] अपनी इच्छा ।

स्वेच्छाचार–सं. पु. [सं.] अपनी इच्छानुसार कार्य करने की क्रिया, अवस्था या भाव ।

स्वेच्छाचारी–वि. [सं.] मनमानी करने वाला, निरंकुश ।

स्वेत–वि. [सं. श्वेत] १ धवल, सफेद ।
उ०—वूठौ सार मेघ अत वूठौ, जळरत खूठौ जुवौ जुवौ । **स्वेत** नीर बहतौ सर सांभर, हमकै भाद्रवि लाल हुवौ ।
—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

२ निर्मल, साफ ।
३ उज्जवल, उजला ।
४ उदासीन, मंद, कांतीहीन, कमजोर ।
५ दोषरहित, निष्कलंक ।
६ स्पष्ट, साफ ।
सं. पु. १ सफेद रंग ।
२ चांदी, रजत ।
३ शंख ।
४ कौड़ी ।
५ शिव का एक अवतार ।
६ पुराणानुसार एक द्वीप ।
७ शुक्र ग्रह का एक नाम ।
८ स्कन्द का एक अनुचर ।
९ सर्पों के आठ कुलों में से एक तथा इस कुल का सर्प ।
१० सफेद घोड़ा ।
११ पुच्छल तारा ।
१२ नील व शृंगवान पर्वत के पास के एक पर्वत का नाम ।
१३ विराट नरेश का भाई जो भीष्म द्वारा मारा गया था ।
१४ विप्रचित्ति नामक असुर का पुत्र ।
१५ राम-रावण युद्ध में राम पक्षीय एक वानर का नाम ।
१६ मणिवर एवं देवजनी के पुत्रों में से एक पुत्र, यक्ष ।
रू. भे.—सेत ।

स्वेतग्रंजणी, स्वेतग्रंजनी—सं. पु. [सं. श्वेत+अजनी] अशुभ माना जाने वाला वह घोड़ा, जिसकी पसलियां श्वेत हों । (शा. हो.)

स्वेतकुंजर—सं. पु. [सं. श्वेतकुञ्जर] ऐरावत का एक नाम ।

स्वेतगंडक, स्वेतगंडकी—सं. स्त्री. [सं. श्वेत+गंडकी] गंडक नदी की एक सहायक नदी । (वीरविनोद)

स्वेतगज—सं. पु. [सं. श्वेत+गज] ऐरावत हाथी ।

स्वेतनायक—सं. पु [सं. श्वेत+नायक] एक प्रकार का आभूषण विशेष ।
उ०—''''संकलिक स्रवणपीठ स्रवणपाल वैस्टिक हस्तसंकलिका पादसकलिका उत्तरिका पादक ग्रैवेयक सरवहार मध्यनायक कृस्णनायक नीलनायक पीतनायक **स्वेतनायक** रक्तनायक व्रतनायक तिस्रनायक चतुस्रनायक त्रिसरनायक ''''इति आभरणांनि ।
—व. स.

स्वेतपक्ख, स्वेतपख, स्वेतपक्ष—सं. पु. [सं. श्वेत+पक्ष] शुक्ल पक्ष ।
उ० महाराजकुमार स्रीदळपतिजी दिन दिन **स्वेतपक्ष** चंद्रमा री ज्यूं परिवधवंत होता पूरणिमा रै चद्रमा री परिसकळ कळा भरित बिभूसित गात्र नीपगा छै । - द. वि.

स्वेतपिंगळ—सं. पु. [सं. श्वेतपिंगल] शिव, महादेव ।

स्वेतम्रग, स्वेतम्रिग—सं. पु. [सं. श्वेत+मृग] एक प्रकार का मृग ।

स्वेतरंगी—सं. स्त्री. यश, कीर्ति ।

स्वेतवक्त्र—सं. पु. [सं. श्वेतवक्त्र] स्वामिकार्तिकेय के एक सैनिक अनुचर का नाम ।

स्वेतवाहण, स्वेतवाहन—सं. पु. [सं. श्वेतवाहन] १ अर्जुन का एक नाम ।
२ चंद्रमा का एक नाम ।

स्वेतांबर—सं. पु. [सं. श्वेताम्बर] १ जैन धर्म की दो प्रमुख शाखाओं में से एक जो श्वेत वस्त्र धारण करते हैं ।
२ उक्त शाखा का अनुयायी ।
रू. भे. सवंबर, सितांबर, सेतांबर ।

स्वेतांबरी—वि. [सं. श्वेताम्बरी] जैन धर्म के श्वेतांबर शाखा का अनुयायी ।
रू. भे. —सितांबरी, सेतंबरी, सेतांबरी ।

स्वेता—सं. स्त्री. [सं श्वेता] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।
२ स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम ।
३ कश्यप एवं क्रोधा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्री ।

स्वेतोदर—सं. पु. [सं श्वेतोदर] १ एक पर्वत का नाम ।
२ कुबेर का एक नाम ।

स्वेद—सं. पु. [सं.] पसीना ।

स्वेदज, स्वेदज्ज—सं. पु. [सं.] पसीने से उत्पन्न होने वाला जतु ।
उ०- अंडज्ज **स्वेदज्ज** जरा उद्भिज्ज, माया सब तूझ म भूलब मुज्झ । म राख पड़द्दौ आडौ मूंह, जहां कुछ देखूं त्यां सब तूं ह ।
—ह. र.
रू. भे.—सेदज ।

स्वेदण, स्वेदन—सं. पु.—पसीना, स्वेद ।
उ०—भूरै मुखड़ै पर **स्वेदण** कण भारी, पहुंची पोळड़ मैं प्रीतम री प्यारी । नाचै खेलावण मेलावण नांहीं, जोवण जोगी वा वेळा जग मांहीं । —ऊ. का.

स्वै—वि.—अपना, निज का ।

स्वैरी—वि. [सं. स्वैरिन्] (स्त्री. स्वैरिणी) १ व्याभिचारी ।
२ दुराचारी, बदचलन ।

ह

ह—देवनागरी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यञ्जन (अंतिम वर्ण) जो उच्चारण तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से कंठ्य-घोष, महाप्राण तथा ऊष्म माना जाता है।

हंऊडौ–सं. पु.—कूए में पत्थर तोड़ने का लोहे का बना एक भारी औजार।

हंकणौ, हंकबौ—देखो 'हकणौ, हकबौ' (रू. भे.)
उ०—की ह्वै तूंबा बांधियां, सूंमां हूंके सत्थ। नर डूबै बहतीं नदी, सायर तरण समत्थ।—बां. दा.
हंकणहार, हारौ (हारी), हंकणियौ—वि०।
हंकिग्रोड़ौ, हंकियोड़ौ, हंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हंकीजणौ, हंकीजबौ—भाव वा०।

हंकरणौ, हंकरबौ—देखो 'हांकरणौ, हांकरबौ' (रू. भे.)
हंकरणहार, हारौ (हारी) हंकरणियौ—वि०।
हंकरिग्रोड़ौ, हंकरियोड़ौ, हंकरचोड़ौ—भू० का० कृ०।
हंकरीजणौ, हंकरीजबौ—भाव वा०।

हंकराड़णौ, हंकराड़बौ—देखो 'हंकराणौ, हंकराबौ' (रू. भे.)
हंकराड़णहार, हारौ (हारी), हंकराड़णियौ—वि०।
हंकराड़िग्रोड़ौ, हंकराड़ियोड़ौ, हंकराड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।
हंकराड़ीजणौ, हंकराड़ीजबौ—कर्म वा०।

हंकराड़ियोड़ौ—देखो 'हंकरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंकराड़ियोड़ी)

हंकराणौ, हंकराबौ–क्रि. स. 'हांकरणौ' क्रिया का प्रे. रू. १ स्वीकार कराना, स्वीकृत कराना।
२ मानने के लिए मजबूर करना, मनवाना, कबूल कराना।
३ किसी को कोई कार्य करने के लिए राजी कर लेना, सहमत कर लेना।
उ०—लोगां थर पेड़ा पंचां सागै लड़-भिड़'र आछी रड़कां काढी। नो'रा कढाया, चिणी री सीरौ'र चिणा-चावल हंकराया।
—दसदोख
४ मन में छिपी या गुप्त बात को उगलवा लेना।
हंकराणहार, हारौ (हारी), हंकराणियौ—वि०।
हंकरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
हंकराईजणौ, हंकराईजबौ—कर्म वा०।
हंकराड़णौ, हंकराड़बौ, हंकरावणौ, हंकराबबौ—रू० भे०।

हंकरायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्वीकार कराया हुआ, स्वीकृत कराया हुआ. २ मानने के लिए मजबूर किया हुआ, मनवाया हुआ, कबूल कराया हुआ. ३ किसी कार्य को करने के लिए राजी किया हुआ, सहमत किया हुआ. ४ गोपनीयता प्रकट कराया हुआ।
(स्त्री. हंकरायोड़ी)

हंकरियोड़ौ—देखो 'हांकरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंकरियोड़ी)

हंकाड़णौ, हंकाड़बौ—देखो 'हकाणौ, हकाबौ' (रू. भे.)
हंकाड़णहार, हारौ (हारी), हंकाड़णियौ—वि०।
हंकाड़िग्रोड़ौ, हंकाड़ियोड़ौ, हंकाड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।
हंकाड़ीजणौ, हंकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

हंकाड़ियोड़ौ—देखो 'हकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंकाड़ियोड़ी)

हंकाणौ, हंकाबौ—देखो 'हकाणौ, हकाबौ' (रू. भे.)
हंकाणहार, हारौ (हारी), हंकाणियौ—वि०।
हंकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
हंकाईजणौ, हंकाईजबौ—कर्म वा०।

हंकायोड़ौ—देखो 'हकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंकायोड़ी)

हंकार—देखो 'ग्रहंकार' (रू. भे.)
उ०—१ दादू धरती व्है रहै, तज कूड कपट हंकार। सांई कारण सिर सहै, ता को प्रत्यक्ष सिरजनहार।—दादूबांणी
उ०—२ सतगुरु वचन बांण सत लागा, मोहा जाळ नींद माहुं जागा। कांम क्रोध मोह लोभ हंकारा, बोध खड़ग ले सबी संघारा।—स्रीसुखरांम जी महाराज
२ देखो 'हुंकार' (रू. भे.)

हंकारणौ, हंकारबौ–क्रि. स.—१ स्वीकार करना, स्वीकृत करना।
उ०—लिगतौ नही सभाव, जीवड़ौ वस रै सारै। मांण राखणौ रूप, वसत नो'रा हंकारै।—नारी सईकड़ौ
क्रि. ग्र.—२ किसी कार्य को करने के लिए राजी होना, सहमत होना।
३ मानने के लिए मजबूर होना।
४ मन में छिपी या गुप्त बात उगल देना।
हंकारणहार, हारौ (हारी), हंकारणियौ—वि०।
हंकारिग्रोड़ौ, हंकारियोड़ौ, हंकारचोड़ौ—भू० का० कृ०।
हंकारीजणौ, हंकारीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

हंकारियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत किया हुआ. २ किसी कार्य को करने के लिए राजी हुवा हुआ, सहमत हुवा हुआ. ३ मानने के लिए मजबूर हुवा हुआ. ४ मन में छिपी या गुप्त बात को उगला हुआ।
(स्त्री. हंकारियोड़ी)

हंकारौ—१ देखो हुंकारौ' (रू. भे.)
उ०—१ पीछे उण आय जोधपुर जोधेजी नूं समाचार मालम

किया, तद राव जोधैजी मदत री **हंकारौ** भरियौ नहीं ।

—द. दा.

उ०—२ भुगानै री बेटी सुखली, पूरै पनरा वरसां री जुवांन, ब्याह रै जोग । पण कठै परणावै । काग नै देवै क मोर नै ? छोरौ तौ लाधै नहीं । ईं घर सूं साख री **हंकारौ** कुण भरै । कतळ करणियां सूं कुण नीं कतरावै ।—दसदोख

उ०—३ दोनूं वां हुकम सूं **हंकारौ** दियौ अर ढाळ्यां रै घर रौ गेलौ लियौ ।—दसदोख

२ देखो 'हुंकार' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हरांम खोरां नूं नेड़ा आवण देवौ । जाहरां तीर-वह मांहै आसी, ताहरां म्है **हंकारौ** करसां ।—राजा नरसिंघ री वात

हंकियोड़ौ—देखो 'हकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हंकियोड़ी)

हंगणौ, हंगबौ—क्रि. अ.—मल त्याग करना, टट्टी करना ।

उ०—वौ जाट अणूंता मळीच सुभाव रौ हौ । हंगनै लारै भाळतौ ।

—फुलवाड़ी

हंगणहार, हारौ (हारी), **हंगणियौ**—वि० ।

हंगिओड़ौ, हंगियोड़ौ, हंग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हंगीजणौ, हंगीजबौ—भाव वा० ।

हंगाम—देखो 'हंगांमौ' (रू. भे.)

उ०—१ धांम धांम मंगळ धवळ, हुए **हंगांम** हलोर । छडक पगारां नीर छित, घुरै नगारा घोर ।—र. रू.

उ०—२ लिगन्नां नारेळ लेर देर सावौ नकौ लीधौ, सजायै ठिकांणां बेहूं ब्याव का सांमांन । **हंगांमा** होकबा राग रंग रा हमेस हुवै, अठी जांन वाळी सोभा बणावै आजांन ।—बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ ईसौ सुणत पांण कुंवरजी मूंछां हाथ घालनै राजी हुय-नै कहीयौ — हिरणजी ! हिवै हुं थांहरै पूठी रखौ छुं । आप नित्य सदा ही **हंगांम करौ** ।—रिसाळू री बात

उ०—४ सुदि फागण माही सरस होळी गोठि **हंगांम** ।

—सिवबक्स पाल्हावत

हंगांमी—वि. [फा. हंगाम+रा. प्र. ई.] १ क्रान्तिकारी, उपद्रवी ।

२ उत्साही, साहसी ।

३ योद्धा, वीर ।

४ हुल्लड़ मचाने वाला, हल्ला करने वाला ।

रू. भे.—हगांमी ।

हंगांमौ—सं. पु. [फा. हंगाम:] १ युद्ध, जंग, लड़ाई ।

उ०—१ तरवार बरछियां री खड़ाखड़ लाग रही छै । घोड़ा पाखां तळ जावै छै । **हंगांमौ** माच रहियौ छै ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ राड़ री मोरचै बंधी हुई; **हंगांमौ** हुवौ सो महीना नव राड़ हुई ।—गोपाळदास गौड़ री वारता

२ क्रान्ति, विप्लव, विद्रोह, उपद्रव ।

उ०—और बाहर चोडै **हंगांमौ** कियौ ।

—सुंदरदास भाटी वीकूंपुरी री वारता

३ कोलाहल, शोरगुल, हल्लड़ ।

उ०—१ आठौं पहर अणंद **हंगांमा** होकबा । राग रंग रस रीझ अणंद अलोकबा ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—२ घोड़ा दौड़ रह्या छै । होकारा **हंगांमा** हुय रह्यौ छै ।

—रा. सा. सं.

४ दंगा-फसाद, मारपीट, छीना-झपटी ।

उ०—'सो' रै बीच में किणी इन्सपेक्टर नें म्हैं मांय घुस'र **हंगांमौ** कोनी मचावण देवूंला ।—तिरसंकु

५ सेना, सैन्य-दल ।

उ०—बडौ **हंगांमौ** लगायौ रांम मांम्हौ कूच कियौ ।

—महाराजा जयसिंह री वारता

६ जन-समूह, भीड़, मेला ।

उ०—१ अर उठै दिन पांच कुंवरसी टिकीयौ । सो ज्युं ही तौ भुंजाई हुवै, ज्युं ही बळकुळै । लोक आय भेळौ हुवौ । केई देखण नुं आवै । कई मांगण नु आवै । सो वडौ **हंगांमौ** लाग रह्यौ छै ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ जिण नूं कठै ही मिळै नहीं सु उण वखत भुजाई लै जलाल री रहवास आवै सो मलिया भोजन जीमै । **बडौ हंगांमौ** लागियौ रहै ।—जलाल बूबना री बात

७ धूम-धाम ।

उ०—फेर तीसरे बरस रौ सावण आवियौ । गोठां रौ **हंगांमौ** लाग रहियौ छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

८ हर्ष, खुशी, आनन्द ।

उ०—हंगांमा होकबा राग रंग रा हमेस हुवै ।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

क्रि. प्र.—करणौ, कराणौ, मचणौ, मचाणौ, हुणौ ।

रू. भे.—हगांमौ, हिंगांमौ ।

मह.—हंगांम, हगांम ।

हंगाड़णौ, हंगाड़बौ—देखो 'हंगाणौ, हंगाबौ' (रू. भे.)

हंगाड़णहार, हारौ (हारी), **हंगाड़णियौ**—वि० ।

हंगाड़िओड़ौ, हंगाड़ियोड़ौ, हंगाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हंगाड़ीजणौ, हंगाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

हंगाड़ियोड़ौ—देखो 'हंगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हंगाड़ियोड़ी)

हंगाणौ, हंगाबौ—क्रि. स. [हंगणौ क्रिया का प्रे. रू.] मल त्याग करने के लिए प्रवृत्त करना, टट्टी कराना ।

हंगाणहार, हारौ (हारी), **हंगाणियौ**—वि० ।

हंगायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हंगाईजणौ, हंगाईजबौ—कर्म वा० ।
हंगाड़णौ हंगाड़बौ, हंगावणौ, हंगावबौ—रू० भे० ।
हंगायोड़ौ—भू. का. कृ.—मल त्याग कराया हुआ, टट्टी कराया हुआ ।
(स्त्री. हंगायोड़ी)
हंगावणौ, हंगावबौ—देखो 'हंगाणौ, हंगाबौ' (रू. भे.)
हंगावणहार, हारौ (हारी), हंगावणियौ—वि० ।
हंगाविग्रोड़ौ, हंगावियोड़ौ, हंगाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हंगावीजणौ, हंगावीजबौ—कर्म वा० ।
हंगावियोड़ौ—देखो 'हंगायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंगावियोड़ी)
हंगियोड़ौ—भू. का. कृ.—मल त्याग किया हुआ, टट्टी किया हुआ ।
(स्त्री. हंगियोड़ी)
हंगोड़ौ, हंगोड़ौ, हंगोरौ, हंगोरौ—वि. (स्त्री. हंगोरी) वह जो बार बार मल त्याग करता हो, जो इस रोग का मरीज हो ।
हंचणौ, हंचबौ—देखो 'हिंचणौ, हिंचबौ' (रू. भे.)
उ०—खुचंती खुरी रुधिर खीची री, घणा असुर हंचे घण घाय । कुंभड़ा री कुटकै क्रम देती, गऊ-त्रिया ली गौरी राय ।
—कुंभा खीची री गीत
हंचणहार, हारौ (हारी), हंचणियौ—वि० ।
हंचिग्रोड़ौ, हंचियोड़ौ, हंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हंचीजणौ, हंचीजबौ—कर्म वा० ।
हंचियोड़ौ—देखो 'हिंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंचियोड़ी)
हंज—देखो 'हंस' (रू. भे.)
उ०—पाबास री तीजणी, मांन सरोवरि हंज । सीह वीलुधा सांकळे, ज्यौं घण दीसे संभ ।—जांभौ
हंजर—वि.—सुन्दर, सुरूप, खूबसूरत ।
हंजरणौ, हंजरबौ—देखो 'हिंजरणौ, हिंजरबौ' (रू. भे.)
उ०—हंजा तमीणौ हेत, सर सारौ ही डोवियौ । सर में पंखी ढेर, नहीं मु आवि हंजरै ।—अग्यात
हंजरियोड़ौ—देखो 'हिंजरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंजरियोड़ी)
हंजलोमारू—सं. पु.—१ एक राजस्थानी लोक गीत जो वर वधू के स्वागत में वर के यहाँ गाया जाता है ।
२ देखो 'हंजामारू' (अल्पा; रू. भे.)
हंजा—सं. स्त्री. [सं. हञ्जे] १ दासी, चेरी ।
२ पति, प्रियतम ।
उ०—हांजी ल्याया पनामारू तुरराजी टांग, वारी धण वारी ओ हंजा ।—लो. गी.
३ प्रेमी ।
उ०—पेच सुरंगी पाघ रा, ढांकै मत धर ढाल । काळी चढ आछी कहूं, हंजा भींजण हाल ।—बां. दा.
४ लोक गीतों की एक लय ।
क्रि. वि.—ढंग से, उचित तरीके से ।
हंजामारू—सं. पु.—१ पति, प्रियतम ।
उ०—सूता हंजामारू सुख भर नींद । इतरै मैं राइकौ हेलौ मारियौ जी म्हारा राज ।—लो. गी.
२ रसिक, प्रेमी ।
उ०—रुपये री देऊं हो हंजामारू अधोड़ी छटांक । हे कोई मोहर री देऊं म्हारा मदछकिया मोकळी हो म्हारा राज ।—लो. गी.
हंजीरौ—सं. पु.—नाश, विध्वंस, तहस-नहस ।
हंजौ—देखो 'हंजा' (२,३) (रू. भे.)
उ०—नाच गा कर निलजता, रच वप भूसण रास । मार निजारा मोहियौ, हंजौ अधरै हास ।—बां. दा.
२ देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ हंजा घरि हंजा हुवै, कग्गां कगा विहाय । ऊढांणी वर जख्खड़ो, नग नीपजै स न्याय ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात
उ०—२ बतक सग्दा घरट हंजा तरै है, सारसां रा टोळां भिंगोंर करै है ।—र. हमीर
हंझ, हंझि, हंझौ—देखो 'हंस' (रू. भे.)
उ०—१ डीं भू लंक, मराळि गय, पिक-सर एहि वांणि । ढोला एही मारुई, जेहा हंझ निवांणि ।—ढो. मा.
उ०—२ दादू हिरा दरियाव, मांणिक मंझेई । दुबी डेई पांण में, डिठौ हंझेई ।—दादूबांणी
२ देखो 'हंजा' (रू. भे.)
हंटर—सं. पु. [अं.] १ लम्बा चाबुक, कोड़ा ।
२ शिकारी ।
हंडक—१ देखो 'हाडक' (मह; रू. भे.)
उ०—आयौ मास असाढ, हंडक लै लारै हुयौ ।—भगवांनजी रतनू
२ देखो 'हंडियौ' (मह; रू. भे.)
हंडवाई—देखो 'हांडी' (रू. भे.)
उ०—उमादे गुरवांणी उठ नै उन्हौ पांणी कियौ, सांपडी हंडवाई धोई ।—पंचदंडी री वारता
हंडिज्जणौ, हंडिज्जबौ—क्रि. अ.—भ्रमण करना, घूमना ।
उ०—दोसइ विवहचरीयं, जांणिज्जइ सयण दुज्जण सहावो । अप्पांण च कळिज्जइ, हंडिज्जइ तेण पुहवीए ।—ढो. मा.
हंडिज्जियोड़ौ—भू. का. कृ.—भ्रमण किया हुआ, घूमा हुआ ।
(स्त्री. हंडिज्जियोड़ी)
हंडियौ—सं. पु.—१ लकड़ी, धातु या हाथी दांत की बनी अफीम रखने की डिबिया ।
मह.—हंडक ।
२ देखो 'हांडी' (मह; रू. भे.)
हंडी—देखो 'हांडी' (रू. भे.)

हंडुळाहट—देखो 'हिंडळाट' (रू. भे.)

उ०—आवादा नर ईत, झिलै हंडुळाहट झूलां। जमी नोख गुल-जार, फबै सुवरण मय फूलां।—सू. प्र.

हंडो—सं. पु.—१ मिट्टी या धातु का बना जल पात्र। (जयपुर)

२ देखो 'हांडो' (रू. भे.)

३ देखो 'हांडी' (रू. भे.)

हंणू—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

हंणै—देखो 'हणां' (रू. भे.)

उ०—बिछेरी छै हंणै तौ हूं फेरां छां। हिडोकै साल चराय पछै मुहडै आगै आंण फेरीस।—राठौड़ रिणमल खावड़िये री वात

हंत—अव्य.—१ दुख या खेदजनक दशा में बोला जाने वाला अव्यय शब्द, हाय, ओह।

उ०—१ होय सबद हा हंत, पड़ पुढकर भयंकर। कर हूंता धर कांम, नांख थावै नारी नर।—साहिबौ सुरतांणियौ

उ०—२ सेरखांन भर समर, कहर परखे धर कंदळ। लोथ लोथ ऊपरा, गरा भिड़जां गज तंडळ। दंत कुळी अंगुळी, मत्थ पग हत्थ निराळा। अंत तंत्र विस्थुरी, हंत दाढाळ हठाळा। रिव सेख महूरत एक रहि, ईख वेर वै आब री। फुरमाय हाय गज फेरियौ, वीती लज नबाब री।—रा. रू.

२ आश्चर्य सूचक शब्द।

३ उद्दीपक या उत्तेजक दशा में बोला जाने वाला अव्यय शब्द।

उ०—आघा चारण खावकां, बीड़ी मोज बटंत। दूरा केम दका-ळतां, हूंचकतां भड़ हंत।—वी. स.

४ आशीर्वचनात्मक सौभाग्य सूचक शब्द।

५ दया व रहम सूचक शब्द।

६ देखो 'हूंत' (रू. भे.)

उ०—राजा राकसणी री जटा माहै विमासै छै। म्हारी अकल चूक जु गंगाजी रै कंठ मरण हुवै हंत तौ मुगति जावंत।—चौबोली

हंतकार—सं. स्त्री.—पितरों की तृप्ति के लिये ब्राह्मण अथवा जोशी को दी जाने वाली रोटी या रोटियाँ।

रू. भे.—हतकार।

हंता—देखो 'हूंत' (रू. भे.)

उ०—१ तद रांणी कही, थानै जे वासतै वंसै राखिया हंता सु विद्या सीखी क नहीं।—चौबोली

उ०—२ अठै खोखर रा हेर हंता हीज।

—खोखर छाडावत री वात

हंती—१ देखो 'हूंती' (रू. भे.)

उ०—१ तद कुंवर फूलमती नुं हाथ पकड़ अर फेरा लै नै परणीज अर उठै भोगवी। तैसों अे राकस री डर री मारी संकोचीज अर रही हंती तद कुंवर रो हाथ लागो तोसुं फूल गई।—चौबोली

उ०—२ उठै एक रोही हंती तठै रोही मांहै एक सुथार अर वासी-दार रहै।—चौबोली

२ देखो 'हांती' (रू. भे.)

हंतीया—देखो 'हूता' (रू. भे.)

उ०—तठै ठकुरो साह उवां दिनै पांच सब जिहाज रो जोखम लीयो हंतो। सु काई वाव वाजी, तैसूं जिहाज कहीं पसवाड़ै जाय नीस-रीयां। जद जेरै जिहाज हंतीया, जिकै ठकुरै पासै आया।

—ठाकुरै साह री वारता

हंतोगत, हंतोगति—सं. स्त्री.—कृपा, दया, अनुग्रह।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

हंतौ—वि. [सं. हंतृ] (स्त्री. हंती) १ मारने वाला, बध करने वाला।

२ देखो 'हूंतो' (रू. भे.)

उ०—१ राजा रै मछ तेल करावणो हंतो। तद नदी मांहैं जाळ नाखीयो।—चौबोली

उ०—२ ऊभो राहां सीस भांण जेतै अंत ऊगो, अनोखा अंदरा गोखां पूंगो आसमांन। भूरो जसा कांम जोगो हंतो वेढीगारो भूप, जसै कांम कांम आयो जांणीयो जिहांन।—चायंडदांन महडू

हंद—देखो 'हद' (रू भे.)

हंदइ, हंदा—अव्य.—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, जो सम्बन्ध-सूचक होता है।

उ०—१ पीहर-संदी डूंमणी, ऊंमर-हंदइ सथ्थ। मारवणी नूं तंत-मइ, कहि समझावर तथ्थ।—ढो. मा.

उ०—२ हूंता सज्जण-हीयड़ै, सयणां-हंदा हत्त। जउ सोहणो साचइ होअइ, सोहणो बडी वसत्त।—ढो. मा.

उ०—३ जोर दिखायो साह रो, फोर घरै प्रसताव। घर घर हंदा मांझिया, कर कर वात प्रढाव।—रा. रू.

उ०—४ अनमंता इंद्रजीता, अहिनिस रता रांम। मन मींता परमारथी हरिजन हंदा कांम।—श्रीहरिरांमदासजी

हंदी—अव्य.—षष्ठी विभक्ति के सम्बन्ध सूचक शब्द का स्त्री रूप, की।

उ०—अंग अंग मझ ऊफणै, जोबण आठो जांम। त्यां हंदी तसबीर री, कलम हुवै नह कांम।—बां. दा.

हंदे, हंदै—अव्य.—षष्ठी विभक्ति का बहुवचनात्मक रूप के।

उ०—१ पौ फाटां चालै पहो, सिर आयां किरणाळ। नीठ नीठ पहुंचै कहै, घोरां हंदै ढाळ।—थळवट बत्तीसी

उ०—२ दहूं प्रवाड़ा एक दिन, गौ वाको गुजरात। बिहूं हजूर बोलावियो जोधां हंदै छात।—रा. रू.

रू. भे.—संदै।

हंदौ—अव्य.—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, का।

उ०—१ थळ हंदौ फूटी रखो, अेवड़ जांणै आथ। सुतर ज जांही करण रो, हुनर ज्यां रै हाथ।—थळवट बत्तीसी

उ०—२ डाढाळी सूं रूड़ो लागै, थळवट हंदौ देस। माऊजी सुं प्यारो लागै, देसांणा रो देस।—अग्यात

रू. भे.—संदइ, संदउ।

हंफणी—देखो 'हांफणी' (रू. भे.)

हंबा हंबै–अव्य.—स्वीकृति सूचक अव्यय शब्द, हाँ।

हंम—देखो 'हम' (रू. भे.)

उ०—मोरी आदि न जांणंत, महियळ धूं वां वखांणंत; उरध ढाकिलै तिसूळं, आदि अनादि तौ हंम रचीलौं।—जांभौ

हंबुक–सं. पु.—४९ क्षेत्रपालों में से अन्तिम क्षेत्रपाल।

हंस–सं. पु. [सं.] (स्त्री. हंसणी, हंसी) १ बड़े बड़े सरोवरों या झीलों के किनारे रहने वाला, बतख के आकार का एक सफेद जल-पक्षी। (ह. नां. मा.)

उ०—१ हंस हाल परहरै, बचन पलटै दुरवासा। मह मोरां झड़ मंडै, इंद नहिं पूरै आसा।—चौथ वीठू

उ०—२ बोलंति मुहुरमुह विरह गमै वै, तिसी सुकळ निसि सरद तणी। हंसणी तै न पासै देखै हंस, हंस न देखै हंसणी।—वेलि

उ०—३ केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगलौ कीध। हंसां नग हर नूं तुघा, (अर) दांत किरातां दीध।—बां. दां.

२ सूर्य, भानु, रवि। (अ. मा; ना. डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ लोथ बथ्थां भिड़ै सूर पीठांण, राचबा लागौ, बेखै ख्याल हंस भी खांचबा लागौ बाज। बैणतार झणंका दै मुनिंद्र नाचबा लागौ, कपाळी जाचबा लागौ मुंडमाळी काज।

—सुखदांन कवियौ

उ०—२ हेत किरण हरि हंस, अंग अवतंस उजासै। अरत्त हुवां संगि अस्त, उदै संग उदै प्रकासै।—रा. रू.

३ शिव, महादेव। (रुद्र)

उ० – गैणरा ऊछाह फूल बारंगां रा बांधै गंथी। महाभांण रत्थां खाग खुराटां मांडीस। हंस बीर पेखवा तमासा ताळी देदै हत्थी, तत्तथेई थेई करै आरुढै तांडीस।—करणीदांन कवियौ

४ ब्रह्मा। (ह. नां. मा.)

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुग विधायक। सरवजीव विस्वकृत ब्रह्मसु, नरवर हंस देहनायक।— वेलि

५ विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक। (नां. मा.)

उ०—१ तूं बलि तूं द्विज व्यास, पिरथ हरि हंस मुनिंतर। जरा राख्यौ हय ग्रीन, धुव तूं आप धनंतर।—गज-उद्धार

उ०—२ देवी नारद रूप तै प्रस्न नाख्या। देवी हंस रै रूप तत ग्यांन भाख्या। देवी ग्यांन रै रूप तूं गहन गीता, देवी क्रस्ण रै रूप गीता कथीता।—देवि.

६ परमात्मा, परब्रह्म, ईस्वर।

उ०—रमै तूं रांम जुवा धरि रंग, तूं हीज समंद तूं हीज तरंग। अनोअन मांय तुहाळौ अंस, हमैं न संताय छतौ थयौ हंस।

—ह. र.

७ विष्णु का एक नामान्तर।

८ मन।

उ०—१ संगीत अत सोहती, मुनेस हंस मोहती। अनंग रंग आतुरी प्रिया नचंत पातुरी।—सू. प्र.

उ०—२ बिछायत समियांन वणिया, तई जरकसि हीर तणिया। सिंघ आसण छत्र सोहै, महा जगमग हंस मोहै।—सू. प्र.

९ जीवात्मा, प्राण।

उ०—१ घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊंच नीच छिछ ऊछळै अति। पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाळी, सिरा हंस नीसरै सति।—वेलि

उ०—२ मारचो बांण सरीर मैं, बिण सांठी विण भालि। जन हरिया मन मरि रह्यौ,हंस गयौ सर हालि।—अनुभववांणी

उ०—३ अरू सांवत राय समेत घोड़ौ भागौ। सू जादूराय रै हाथी कनै जावतौ पड़ियौ। पड़तां घोड़ै रा हंस गया।—द. दा.

१० शरीरस्थ प्राण वायु।

क्रिया. प्र.—उडणौ, जाणौ, निकलणौ, हालणौ.

१२ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र जो जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता रहा।

१३ साध्यदेवों में से एक।

१४ एक गंधर्व विशेष।

१५ जरासंध का एक मंत्री।

१६ रजत, चांदी। (अ. मा; ह. नां. मा.)

१७ पर्वत, पहाड़।

१८ एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

१९ घोड़ा, अश्व। (डिं. को.)

२० कामदेव, अनंग।

२१ सन्यासियों का एक भेद, एक सम्प्रदाय विशेष।

२२ अनिरुद्ध का एक नाम।

२३ ज्ञानी और भक्त पुरुष।

२४ शिवदेवों में से एक।

२५ वसुदेव एवं श्रीदेवा के पुत्रों में से एक।

२६ जरासंध की सेना का एक राजा जो कृष्ण-जरासंध युद्ध में बलराम के द्वारा मारा गया।

२७ एक श्रेष्ठ पक्षी जाति जो कश्यप-पत्नी ताम्रा का पौत्र एवं धृतराष्ट्री की संतान मानी जाती है।

२८ दोहे का एक भेद, जिसमें १४ गुरु और २० लघु होते हैं।

२९ प्रथम एक यगण व अन्त में दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छन्द।

३० हंस के आकार का बनाया जाने वाला प्रासाद जिस पर शृंग बना हो।

३१ एक मंत्र विशेष।

३२ रव, ध्वनि। (अनेका.)

३३ सफेद रंग। * (डि. को.)

वि.—सफेद श्वेत। *

रू. भे.—हंज, हंझ, हसल।

अल्पा.—हंजौ, हंझौ, हंसलउ, हंसलौ, हंसौ, हांसौ।

मह.—हंसाल।

हंसक—सं. पु. [सं. हंसक:] १ पैर की अंगुली का बिछुवा।

उ०—हंसक पाव हंसगत, हस हस, अंसक व्रथा उदंत्त। बांझि नारि कुळ लीक विधुंसक, कहत नपुंसक कंत्त।—ऊ. का.

२ नूपुर।

३ देखो 'हिंसक' (रू. भे.)

हंसग—सं. पु. [सं.] ब्रह्मा, विधाता। (नां. मा.)

हंसगत, हंसगति—सं. स्त्री.—१ ब्रह्मत्व की प्राप्ति, सायुज्य की प्राप्ति।

२ हंस के समान सुन्दर धीमी चाल, गति।

उ०—हंसक पाव हंसगत हस हस, अंसक व्रथा उदंत। बांझ नारि कुळलीक विधुंसक, कहत नपुंसक कंत।—ऊ. का.

३ एक प्रकार का मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में २०-२० मात्राएँ होती है।

रू. भे.—हंसागति।

हंसगमण, हंसगमणा, हंसगमणि, हंसगमणी—देखो 'हंसगामिणी' (रू. भे.)

उ०—१ हंसगमण अगली अणी, मुहि बोलइ हे मंगल चार।

—हीराणंद सूरि

उ०—२ प्रीतवती मुख आगालेजी, मुळकंती मोहन-वेल। चतुरां ना मन मोहतीजी, हंसगमणी सूं करता बहु केल।—जयवांणी

हंसगरब्भ, हंसगरभ—सं. पु.—एक रत्न विशेष।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सूरयकांत चंद्रकात नील महानील इंद्रलील सवकर विभकर ज्वर हर रोगहर सूलहर विसहर हरिन्यणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरब्भ पुलक अंक अंजन अरिस्ट चितांमणि।—व. स.

हंसगवणी, हंसगांमणि, हंसगांमणी, हंसगांमिणी, हंसगोणी—सं. स्त्री.—[सं. हंसगामिनी] हंस के समान सुन्दर धीमी चाल चलने वाली स्त्री, सुन्दरी।

उ०—१ दीठउ आंनासागर समंदतणी बहार, हंसगवणी अग लोचणी नार। एक भरइ बीजी कलरव करइ, तीजी घरी पीवजै ठंडा नीर।

—बी. दे.

उ०—२ छती तू सती भूपती दच्छ छोणी, गती मत्त मातंग तू हंसगोणी।—मे. म.

वि. स्त्री.—हंस के समान सुन्दर चाल वाली।

रू. भे.—हंसगमणि, हंसगमणी, हंसागमणी, हंसीगवणी।

हंसड़—देखो 'हंसी' (मह; रू. भे.)

उ०—देखो काकाजी ! मांन जावौ। लोगां में हंसड़ मत करावौ।

—वरसगांठ

२ देखो 'हंस' (मह; रू. भे.)

हंसड़ौ—देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आसा लूंध उतारियउ, धण कुंचुवउ गळांह। घूमइ पड़िया हंसड़ा, भूला मांनसरांह।—ढो. मा.

हंसचर—वि. [सं. हंस=प्राण, जीव] मांसाहारी।

उ०—पतीव्रती धारि चौज संकरां ग्रीधरां पोखै, हंसचरां पोखै भरा पत्रां चंडी हांम। परी वरै चांपां छात सुरां तणौ लोक पूगौ, धणी 'दूदां' तणौ पूगौ परम्म रै धांम।

—कुसळसिंघ मेड़तिया रो गीत

सं. पु.—मोती।

हंसजा—सं. स्त्री. [सं.] १ सूर्य की पुत्री, यमुना।

२ हंस की पुत्री।

हंसण—सं. स्त्री.—हसने की क्रिया या भाव, हंसी।

रू. भे.—हंसन।

हंसणौ—सं. पु.—हसने की क्रिया।

उ०—भटियांणी रै डावै दै जेड़ी। दोनूं एक लखणी। हंसणौ तौ जांणती ई नीं।—फुलवाड़ी

हंसणौ, हंसबौ—क्रि. अ. [सं. हसे] १ आनन्द या खुशी के आवेग में चेहरा खिलना और आंखों में कुछ फैलाव आकर गले से 'ह-ह-ह-ह' की ध्वनि निकलना, हंसना, खिलखिलाना, ठहाका मारना।

उ०—१ पड़ै कटि सीरस बीर पठांण, मुद्राचळ चक्र चमू महरांण। गुड़ै गिड़कंध मदंध मुगल्ल, ख्याली रिखराज हंसै खलखल्ल।

—मे. म.

उ०—२ हंसती दै ताळी हरखि, कसती लक कबांण। मद मसती भरियां मदन, जोबन हसती जांण।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ एकला मिनख सूं नीं तौ हंसीजै नीं रोईजै। कोई बावलौ व्है तौ बात न्यारी।—फुलवाड़ी

२ मुस्कराना, मंद मंद हंसना।

उ०—मनि संकांणी मारुवी, खुणसउ राखइ कंत। हंसतां प्रीसूं वीनवइ, संभळि प्री विरतंत।—ढो. मा.

३ खुश होना, आनन्दित होना।

उ०—सुंदर सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर-पाळ। चंद मुळक्कयउ जळ हंस्यउ, जळहर कंपी पाळ।—ढो. मा.

मुहा.—१ हंसणौ-बोलणौ=खुशी में बातें करना, मन की बात कह कर खुश होना, आमोद-प्रमोद करना।

२ हंस-हंस नै दोवड़ौ हुणौ=खूब हंसना, हंसते हुए लोट-पोट हो जाना।

४ किसी स्थान या वस्तु का सुन्दर लगना, शोभित होना।

उ०—सोई सज्जण आविया, जांह की जोती बाट। थांभा नाचइ

घर हंसइ, खिलण लागी खाट।—ढो. मा.

क्रि. स.—५ मजाक करना, व्यंग करना, चुहलबाजी करना।

६ हंसी उड़ाना, दिल्लगी करना, परिहास करना।

उ०—पिरोळ माथै पूगा तौ दरवाजौ बंद। किला रौ दरवाजौ भाखर रै उनमांन ऊंचौ माथौ कियां मांनखा री निबळाई माथै हंसण लाग्यौ।—अमरचूंनड़ी

मुहा.—१ (किणी माथै) हंसणौ=किसी की कमजोरी की हंसी उड़ाना, किसी को मजाक बनाना।

२ हंस'र बात टाळणी=किसी विषय या प्रस्ताव की अवहेलना करना। किसी बात को तुच्छ समझ कर उसकी उपेक्षा करना।

हंसणहार, हारौ (हारी), हंसणियौ—वि०।

हंसिओड़ौ, हंसियोड़ौ, हंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हंसीजणौ, हंसीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

हसणौ, हसबौ, हासणौ, हासबौ—रू० भे०।

हंसन—देखो 'हंसण' (रू. भे.)

हंसपदी, हंसपादी—सं. स्त्री. [सं. हंसपदिका] एक प्रकार की ओषधि जिसका क्षुप जलाशयों के पास पाया जाता है। इसे हंसराज भी कहते हैं।

हंसबाहण—देखो 'हंसवाहण' (रू. भे.) (डिं. को.)

हंसबाहणी—देखो 'हंसवाहणी' (रू. भे.)

उ०—हंसबाहणी होय, गिरा बाकबांणी गवै। सुरसत सारद सोय, बेधाधी भारती वणै।—डिं. को.

हंसभख—सं. पु. [सं. हंस-भक्षणम्] मौक्तिक, मोती। (ह. नां. मा.)

हंसमंगळा—सं. स्त्री.—संगीत में एक संकर रागिनी।

हंसमाळा—सं. पु.—एक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम सगण, फिर रगण और अंत में गुरु होता है।

हंसमुख-वि.—प्रसन्न-वदन, विनोदशील, हास्य-प्रिय।

हंसमोती—सं. पु.—शुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

हंसरथ—सं. पु. [सं.] ब्रह्मा। (डिं. को.)

हंसराज—सं. पु.—स्वर्णकारों के काम आने वाला एक लोहे का कीला विशेष, जिससे आभूषणों पर खुदाई की जाती है।

२ देखो 'हंसपदी'।

हंसराजा—सं. पु.—प्राण, जीव।

उ०—तरै रीस आई लाखानूं, सु कनै भलको पड़ियौ थौ तिकौ झाल नें लाखे सोलंकी राज नूं चूंकलियौ, सु राज रै थण रै लाग गयौ, सु वात करतां राज सोलंकी रौ हंसराजा उड गयौ।

—नैणसी

हंसल—देखो 'हंस' (मह; रू. भे.) (नां. मा.)

हंसलउ—देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मांनसरोवर हंसलउ रे, जेम करइ झकझोल। तिम साहिब सूं मन मिल्यउ रे, करइ सदा कल्लोल।—वि. कु.

हंसलिपि, हंसलिवी—सं. स्त्री. [सं. हंसलिपि] लिपि विशेष।

उ०—हंसलिवी, भूयलिवी जक्खा तह रक्खसीह बोधव्वा। उड्डी जवणि तुरक्की कीरी, दविडी य सिंधविया। मालविणी नडि नागरि लाडलिवी पारसीय बोधव्वा। तह य निमित्ती अ लिवी, चांणक्की मूलदेवी अ।—व. स.

हंसली—देखो 'हांसली' (रू. भे.)

उ०—औ लै ए म्हारी सोक कलाली म्हारी हंसली गणै राखौ ए ए आवेजो मद छकियौ आलीजौ जीनैं थोड़ी दीज्यौ ए दारूड़ी।

—लो. गी.

हंसलौ—देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ अनइ कालुआ किहाडा किसोयरा गंगाजला हंसला नीलडा हरीअडा कछेला भुंगरा इस्या तुरंगम।—व. स.

उ०—२ सांवरिया! तूं सरवर म्हे हंसला, रांम प्यारा रे! म्हे चातक तूं मेह।—गी. रां.

उ०—३ साधु सदा संयम रहै, मैला कदे न होइ। सून्य सरोवर हंसला, दादू विरळा कोइ।—दादूबांणी

उ०—४ सोना रा रथ में बैठ कबूड़ी रै वहीर व्हैतां ई डोकरी रौ हंसलौ उडग्यौ, जांणै उण कबूड़ी में ई उण रा प्रांण व्है।

—फुलवाड़ी

(स्त्री. हंसली)

हंसवंस—सं. पु. यौ. [सं. हंस+वंश] सूर्य वंश।

उ०—स्रीगनेस गिरिजा गिरा, गुरु गिरीस मनाय। हंसवंस कुळ कच्छ गुन, बरनूं ग्रंथ बनाय।—शि. वं.

हंसवडि—सं. पु.—वस्त्र विशेष।

उ०—अथ वस्त्राणि—देवदूस्य, देवांग, चीनांसुक, पट्टदुकूल, नील-नेत्र, वायंगणनेत्र, पांडुअ, पट्टहीर, पट्टसाउलि, पंचराइआ, नरमर-वरव, फूलपगर, जादर, नेत्रपट्ट, धौतपट्ट, राजपट्ट, गजवडि, सुवर-णवडि, हंसवडि, कालपडि।—व. स.

हंसवाहण—सं. पु यौ. [सं. हंस+वाहनं] १ ब्रह्मा।

२ देखो 'हंसवाहणी' (रू. भे.)

रू. भे.—हंसबाहण।

हंसवाहणी, हंसवाहिणी—सं. स्त्री. यौ. [सं. हंस+वाहनं] वह जिसकी सवारी हंस है, सरस्वती। (डिं. को.)

रू. भे. हसबाहणी, हंसवाहण।

हंससुता—सं. स्त्री. यौ. [सं. हंस+सुता] सूर्य की पुत्री, यमुना।

हंसाई—देखो 'हंसी' (रू. भे.)

उ०—ठाकरां खंखारौ करतां थकां कैयौ हूं सेवरौ बांध' र चाल सूं जद लोग हंसाई हुसी।—दसदोख

हंसागति—वि. स्त्री.—१ हंस के समान सुंदर व मंद चाल वाली।

उ०—हंसागति तणौ आतुर थ्या हरि सूं, बाधा ऊग्रा जेही वहै।

संधावास अनै नै उर सद, कमि आगै आगमन कहै ।—वेली
२ देखो 'हंसगति' (रू. भे.)
हंसागमण—सं. स्त्री. [सं. हंस+गमनं] हंस की चाल ।
उ०—दळां री सिणगार । अतुळ पौरस धर चंड मुंड बोलिया—हंसागमरण री हांम पूरां ।—मा. वचनिका
हंसागमणि, हंसागमणी—देखो 'हंसगांमिणी' (रू. भे.)
उ०—चंदमुखी हंसागमणि, कोमळ दीरघ केस । कंचन वरणी कांमनी, वेगउ आवि मिळस ।—ढो. मा.
हंसाड़णौ, हंसाड़बौ—देखो 'हंसाणौ, हंसाबौ' (रू. भे.)
हंसाड़णहार, हारौ (हारी), हंसाड़णियौ—वि० ।
हंसाड़िप्रोड़ो, हंसाड़ियोड़ो, हंसाड़चोड़ो—भू० का० कृ० ।
हंसाड़ीजणौ, हंसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
हंसाड़ियोड़ौ—देखो 'हसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंसाड़ियोड़ी)
हंसाणौ, हंसाबौ—क्रि. स. ['हंसणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ हँसने के लिए प्रेरित करना, हँसाना ।
२ खुश करना, आनन्दित करना ।
३ शोभित करना, सुन्दर लगने लायक करना ।
४ मजाक कराना, व्यंग कराना, चुहलबाजी कराना ।
५ हंसी उड़वाना दिल्लगी कराना, परिहास कराना ।
हंसाणहार, हारौ (हारी), हंसाणियौ—वि० ।
हंसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हंसाईजणौ, हंसाईजबौ—कर्म वा० ।
हंसाड़णौ, हंसाड़बौ, हंसावणौ, हंसावबौ—रू० भे० ।
हंसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ हंसने के लिये प्रेरित किया हुआ, हंसाया हुआ. २ खुश किया हुआ, आनन्दित किया हुआ. ३ सुन्दर लगने लायक बनाया हुआ, शोभित किया हुआ. ४ मजाक, व्यंग या चुहलबाजी कराया हुआ. ५ हंसी उड़वाया हुआ, दिल्लगी कराया हुआ, परिहास कराया हुआ ।
(स्त्री. हंसायोड़ी)
हंसारी—सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा । (शा. हो.)
हंसारूढ—सं. पु. [सं. हंस+आरूढः] १ ब्रह्मा ।
सं. स्त्री—२ सरस्वती ।
वि.—हंस पर सवार, हंस पर आरूढ ।
हंसाळ—सं. पु.—१ छंद विशेष ।
२ घोड़ा, अश्व । (डि. नां. मा.)
३ देखो 'हंसाळु' (रू. भे.)
४ देखो 'हंस' (मह; रू. भे.)
हंसाळु, हंसाळू—वि.—१ हंसी या मनोरंजन करने वाला, विनोद प्रिय ।
२ खुश-मिजाज ।
सं. पु.—१ विनोद प्रिय व्यक्ति ।
२ किसी नाटक या खेल का मजाकिया पात्र (कोमेडियन)
रू. भे.—हंसाळ ।
हंसावणौ, हंसावबौ—देखो 'हंसाणौ, हंसाबौ' (रू. भे.)
हंसावणहार, हारौ (हारी), हंसावणियौ वि० ।
हंसाविप्रोड़ो, हंसावियोड़ो, हंसाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
हंसावीजणौ, हंसावीजबौ—कर्म वा० ।
हंसावळी—सं. स्त्री.—१ निसांणी छंद का एक भेद ।
वि. वि.—देखो 'रूपमाळा' ।
[सं. हंस+अवली] २ हंसों की पंक्ति ।
हंसावळो—सं. पु.—डिंगल का वह गीत जिसमें 'बेलिया' नामक छंद में 'रा' 'रा' शब्द रीति सहित आकर उल्लेखालंकार का प्रयोग होता है ।
वि. वि.—देखो 'बेलियो' ।
हंसावियोड़ो—देखो 'हंसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंसावियोड़ी)
हंसासण—सं. पु.—योग के ८४ आसनों के अन्तर्गत एक आसन, जिसमें प्रथम मयूरासन की तरह स्थिर होकर पीछे दोनों पांवों के पंजों को पृथ्वी से स्पर्श कराकर स्थिर होना होता है ।
हंसासणी-सं. स्त्री. यौ. [सं. हंस+आसन+रा. प्र. ई. अथवा हंसासना] सरस्वती, शारदा । (अ. मा.)
उ०—स्री सारद विधि सुता धरण, वीणा धवलांवर । हंसासणी हुलास परम बोधक त्रिभुवनपुर ।—केहर प्रकास
हंसि—देखो 'हंसी' (रू. भे.)
उ०—दबै रद खोट न ओट दकूल, फबै हंसि होठ चंड्यां मुख फूल ।—मे. म.
हंसियौ—सं. पु.—१ लोह-निर्मित अर्द्ध चन्द्राकार औजार जिससे फसल आदि काटी जाती है ।
२ हाथी के अंकुश का अग्र टेढा भाग ।
हंसी—सं. स्त्री—१ राजस्थान में दूध देने वाली गायों की एक अच्छी जाति तथा इस जाति या नस्ल की गाय ।
२ हंसने की क्रिया या भाव, खिलखिलाहट ।
उ०—हंसण जोग बात तो समझ-समझायां पछै ऊमर में ई नीं व्ही, बाळपणा साथै हंसी ई छूटगी ।—फुलवाड़ी
क्रि. प्र.—आणी, करणी, कराणी, निकळणी, होणी ।
३ मुस्कान, मृदुहास्य ।
उ०—सायद वा म्हारी हंसी सूं घायल होयगी ।—तिरसंकू
४ मजाक, परिहास, दिल्लगी ।
उ०—१ तरै आदमी दोय मांणस घर रा चाढनै मेलिया—'म्है भूखा मांहरा हाथी आंखियां अदीठ किया था सु उरा दीजै । नहीं दौ तो म्हांनै थां बुराई होसी । रे रावळ रा आदमी धार गया । पंवार सूं जाय मिळिया । रावळ कहाड़ियौ थौ सु कह्यौ । वात हंसी

री विख-सी हुई ।—नैणसी

उ०—२ वौ बोल्यौ—नीं, नीं, इण री कोई जरूरत नहीं है । ओ कतल रौ केस है, कोई हंसी ठट्ठा नीं है ।—अमरचूंनड़ी

मुहा.—१ हंसी उड़ाणी=मजाक करनी, व्यंग्यपूर्ण निंदा करना ।

२ हसी-खेल समझणौ=किसी कार्य को साधारण या तुच्छ समझना ।

३ हंसी में उड़ाणौ=तुच्छ समझ कर (किसी वस्तु की) उपेक्षा करना ।

४ हंसी रा बुडबुड़िया उठणा=मन्द मन्द हंसी आना ।

५ हंसी समझणौ=किसी गम्भीर बात को मजाक समझना ।

यौ.—हंसी-खेल, हंसी-मजाक, हंसी-खुशी ।

५ वह बात जो हंसी के क्रम में की जाय ।

६ वक्रोक्ति-युक्त निंदा ।

७ जग हंसाई, निंदा ।

८ मादा हंस ।

९ आर्या या गाहा छंद का भेद, जिसके चारों चरणों में मिलाकर २ गुरु और ५३ लघु सहित ५७ मात्रा हो ।

१० प्रत्येक चरण में ८ गुरु वर्ण फिर १२ लघु वर्ण और अन्त में दो गुरु का वर्णिक छंद विशेष ।

११ २२ अक्षरों का एक वर्णिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण एक तगण, तीन नगण, एक सगण और एक गुरु होता है ।

रू. भे.—हंसाई, हंसि, हसि, हसी, हांसी, हासा, हासी ।

मह.—हंसड़, हंसौ, हांसौ ।

हंसीगवणी—देखो 'हंसगांमिणी' (रू. भे.)

हंसौ—१ देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ म्हां मैं कुडा औगुण काढै छै सौ जै म्हारी गति हुई जिकी थारी गति हुइज्यौ, इतरी ही कहि हंसौ चलतौ हुवौ ।

—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ सौ ज्यूं हाथ जमी रै मारियौ त्यूं ही दळ पड़ियौ हंसौ चलतौ रहियौ ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ आंख्यां सूं दीसै नहीं, पगां सूं चालीजै नीं अर कांनां सूं सुणीजै नीं पण उमर री डोर टूटै नीं अर हंसौ काया रौ पिंजरौ छोड़ै नीं ।—अमरचूंनड़ी

उ०—४ एक समय मोतियन कै धोकै हंसा चुगत जुवार । सरवर छांड तलैया बैठै, पंख लपट रही गार ।—मीरां

उ०—५ परम तेज प्रकास है, परम नूर निवास । परम ज्योति आनंद मैं, हंसा दादू दास ।—दादूबांणी

उ०—६ हंसा होय हसगति जांणै, परम हंस करै सेवा । आवागमण आवै नहिं कबहूं, वै जाहिर योगी देवा ।—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—७ कई जनम का सोता हंसा हमकै जाग गया । तन मन खोज जोरा री बातां, इसमैं लाग रया ।—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—८ जनहरिया मन जांह कीया, सुंन्य सरवर मैं वास । वळै न जांमण मरण की, धरै न हंसौ आस ।—अनुभववांणी

२ देखो 'हंसी' (मह; रू. भे.)

हंहकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

ह—१ हरख । (एका.)

२ चोर । (,,)

३ हर, शिव । (,,)

४ काष्ट । (,,)

५ निरवेधा । (,,)

६ मृगाक्ष । (,,)

७ शून्य ।

८ आकाश ।

९ जल, पानी ।

१० चन्द्रमा, शशि ।

११ ध्यान ।

१२ स्वर्ग ।

१३ ज्ञान ।

१४ कल्याण, मंगल ।

१६ खून, रक्त ।

१६ डर, भय ।

१७ कारण, सबब ।

१८ विष्णु, लक्ष्मीपति ।

१९ वैद्य, चिकित्सक ।

२० घोड़ा, अश्व ।

२१ लड़ाई, युद्ध ।

२२ अभिमान, घमंड ।

२३ योग में एक प्रकार का आसन ।

२४ हास, हंसी ।

२५ राजस्थानी कविता में पाद-पूर्ति में अधिक उपयोग किया जाने वाला, व्यंजन ।

अव्यय.—पाद-पूरक अव्यय, तक ।

उ०—ढोला ढीली हर कियां, मूक्यां मनह विसारि । संदेसउ ह न पाठवइ, जीवां किसइ अधारि ।—ढो. मा.

हआं—देखो 'हां' (रू. भे.)

हइंवर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—वसि करिय मीरि गढ वास वत्थ, पाधरा किया तेरहइ पत्थ । हइंवरा भड़ां दुहूं हूंइ हल्लि, मुलिताण मन्नि घातिय मुगुल्लि ।

—रा. ज. सी.

हइ—अव्यय.—हे, अरे, ओ ।

उ०—१ गिरह पखाळण, सर भरण, नदी हिंडोळणहारि । सूती

सेजइं एकली, हइ हइ दइव म मारि।—ढो. मा.

उ०—२ हइ रे जी, निळज्ज तूं, निकस्यू जात न तोहि। प्रिय विछुड़त निकस्यउ नहीं, रह्यउ लजावण मोहि।—ढो. मा.

२ देखो 'है' (रू. भे.)

उ०—१ पांखड़ियां ई किउं नहीं, दैव म्रवाड़ू ज्यांह। चकवीकइ हइ पंखड़ी, रयणि न मेळउ त्यांह।—ढो. मा.

उ०—२ लगन कुसुघउ म्रापिय पापिय म्रम्ह घरबोल। जोतइं जांणइं जांणसु मांणसु न हइ तै ढोर।—जयसेखर सूरि

३ देखो 'हृदय' (रू. भे.)

उ०—पंचाली केसि [ग्रहीनि] तांणी, म्रांणी सभा मुभारि। तै दुःख हई थी [नवि] जाइ, करतां कोडि पुकार।—नळाख्यांन

हइकंप—देखो 'हैकंप' (रू. भे.)

उ०—हइकंप हिंदूकार घर-घर प्रति हूवउ घणाउ। मिळियइ मंडप-राइ-कइ, कुण ऊपरइ कंधार।—म्र. वचनिका

हइमर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—मोटा मुगल्ल मद्दोन्मत्त, म्रमिळित दियइ म्ररि म्रावरत्त। 'कम्मरइ' कोपि कीया कटक्क, हइमरां हींस भड़ हुइ हक्क।
—रा. ज. सी.

हइरांन—देखो 'हैरांन' (रू. भे.)

उ०—चंबेल चोम्रा करू मरदन, दरद होइ म्रसमांन। प्रिय पोस मास सरीर सोसत, हूं भई हइरांन।—वि. कु.

हइवइ—सं. पु. यौ. [सं. हय+पति] १ राजा, नृप।

उ०—१ हइवइ म्रगणइ हाथि, पाडै कवर पंचाहरइ। म्रांत्रावळि म्रारूदतउ, भेळउ हुइ भारथि।—म्र. वचनिका

२ देखो 'हैवै'।

३ देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—पनर समत म्रेकांणव पक्खरि, पुणि मागसिरि प्रथम पखि पूंणरि। हूठमल हइवइ सउं हथियारै। विढियउ जइत चउथि सिनिवारै।—रा. ज. सी.

हइवर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—हइवर गइवर पाइदळ पुहुवि न पारावार। गोरी राउ गिरि म्रासनउ, गउ गढ गंजणहार।—म्र. वचनिका

हई—१ देखो 'हय' (रू. भे.)

उ०—छोगौ सिर सोनहुरी छवगाळ, भळकंत सूरज रूप भळाळ। वधै खळ लेत नटां जिम वंस, हई घट फटत छूटत हंस।—सू. प्र.

२ देखो 'हे' (रू. भे.)

उ०—हई हई! देव किसूं करिउं, रत्न ऊदालिउ हत्थि। कालि किसूं कारण हतूं, म्राज म्रनेरी भत्ति।—मा. कां. प्र.

हईम्रंगवीन—देखो 'हयम्रंगवीन' (रू. भे.) (म्र. मा.)

हईइ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—द्रुपदी नु नचावणहार, ए व्रिहन्नट कलासिणगार। म्रस्त्रबंध एह वीर नकीजइ, म्रस्त्र विद्य सघली हरइ हईइ।—सालिसूरि

हईडइ, हईडौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ कंठ ग्रहण करी रहियउ, हईडइ दीधउ हेलि। तै संघातइ स्या थिकी, खेलतां नर खेलि।—मा. कां. प्र.

उ०—२ दैवइं लिखिउं तै नवि टलइ, बाउव रहिउ विचारी। धीर धरी धर उद्दिलु, हईडा! हुवइ म हारि।—मा. कां. प्र.

हईदळ—देखो 'हयदळ' (रू. भे.)

उ०—जुड़ै रायसिंघ चढै घणा जोस, रमै भट तेग 'म्रनावत' रोस। समोभ्रम 'राजड़' रूप समत्थ, हईदळ वाढत वीजळ हाथ।—सू. प्र.

हईवर—सं. पु.—१ योद्धा, वीर।

उ०—हईवर पाय म्रसीसत हूर, समोभ्रम 'केहर' कायम सूर। सभै जुध वीजळ मूगळ साथ, रिधु 'जंसराज' तणौ रुघनाथ।—सू. प्र.

२ देखो 'हयवर' (रू. भे.)

हउं—देखो 'हूं' (रू. भे.)

उ०—देवि पांडव नरेंद्र पुरेंद्री द्रूपदी तणइ हउं जि सुलिद्री।
—सालि सूरि

हउंस—देखो 'हूंस' (रू. भे.)

उ०—ढोलउ नितु फेरवइ प्रभाति, सउदागर पणि तेडइ साथि। भगति जुगति जीमण तसु-तणी, पूरी हउंस सालह वसुतणी।
—ढो. मा.

हउ—म्रव्य.—म्ररे।

उ०—भाई कहि बतळावसूं, नागर बेल निरेस। हउ हउ करहा, कुंवर-नइ मत लै जाव विदेस।—ढो. मा.

हउणौ, हउबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हउम्रौ (हुइतौ) संभालु, [मन] मारु ठारु। सोकाग निजवा [ला लागी] छि, सीतल [वचनि] वारु।—नळाख्यांन

उ०—२ खोड़उ हउं तउ डांभिज्यउं, बंधियउ भूख मरंह। जाउं ढोल रइ सासरइ, सफळा मूंग चरंह।—ढो. मा.

हऊणौ, हऊबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

उ०—घरणी पड़ि पाछी पडी, हऊउ हाहाकार। हृदय सिद्धि राजा रउइ, सूभइ नहीं विचार।—मा. कां. प्र.

हए—भू. का. कृ.—हते, मारा।

उ०—हरि हुए वराह हए हरिणाकस, हूं ऊधरी पताळ हूं। कहौ तई करुणामै केसव, सीख दीध किण तुम्हां सूं।—वेली

हकंड—देखो 'हैकंड' (रू. भे.)

उ०—उरड़ म्रकुळाय म्राधा पड़ै म्राय म्रत, पड़ावै माजनूं लाजनूं खो म्रपत। रीछलै तमाखू दांम दे रोकड़ा, हकंड भूंडा लगै हाथ मैं होकड़ा।—ऊ. का.

हक—सं. पु. [म्र. हक़] १ स्वत्व, म्रधिकार, दावा।

उ०—१ भटियांणी कह्यौ—म्हैं क्यूं भूंडौ मांनूं। जायोड़ी मलांई व्हौ, म्हारै बिचै इण माथै थारौ हक वत्तो है, म्हैं इण बात नै भूलणा बिचै मरणौ म्राछौ समभूं।—फुलवाड़ी

उ०—२ लेणौ-देणौ कींकर नीं है बोफा ! राजा इण धरती रो धणी है, इण मुलक रो मालिक है। इण धरती माथै जिकी चीज निपजै उण माथै उणरो हक है।—ग्रमर चूंनड़ी

२ न्याय, प्रथा ग्रादि से प्राप्त अधिकार।

उ०—२ ग्रो कैड़ो राज ? किणरो राज ? ग्रां राज करणियां नै कुण ग्रो हक सूंप्यो जको वै चंवरचां बैठी किणी लुगाई नै झप-टलै।—फुलवाड़ी

उ०—२ किणी री मंसा परवारो दुख देवण री ग्रो हक जे राजा नै भगवांन ई सूंप्यो तौ ग्रेडा भगवांन री पूजा ई किताक दिन तक व्हैला।—फुलवाड़ी

३ किसी कार्य को करने का अधिकार।

४ सत्य, यथार्थ।

उ० हफत-हजारी हफत सझै हक सद जै सायत। ग्राय हफत ईसफां, मिळी हफतम सभि हिम्मत।—सू. प्र.

५ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—हकां बेली हक है, वेहकां वेहक। हरीया हेकै हक विन, सब दिन जांहि ग्रन्हक।—ग्रनुभववांणी

६ ठीक कार्य, सीधा कार्य।

उ०—काजी सरै हक है तेरै. तौ ग्रनहक जीव क्यूं मारै। कुछी एक दीन तणौ डर दुनियां, सिर अपनै सुं टारै।—ग्रनुभववांणी

७ पक्ष, हिस्सा, भाग।

उ०—उण दोनूं घोड़ा ग्रापां रै हक मैं छोड़ दिया। सोनै री गांठड़ी भी दी। इण सगळी बातां रै अलावा वचन दियौ कै ग्राज सूं उण री तरफ सूं वैर-भाव खतम है।—तिरसंकू

८ पारिश्रमिक, मेहनताना।

उ०—मुंई मिटीया मुरदार कहत हैं, हाथै हक हलाळा। काजी धणी'र ग्रौर धलाली, सत्र स्वारथ का चाळा।—ग्रनुभववांणी

वि.—१ मृत।

उ०—१ पातिसाही करता थका एक दिन मुणा रै पातिसाह हुमाग्रूं चढिया हुता तिहांथी पड़िया ग्रर हक हुग्रा।—द. वि.

उ०—२ इतरी कहता पांण तौ ग्रमरसिहजी ऊभा तिकी जगां सूं तमक जाय खांन सूं भेळा हुइ गया। कटारी दीन्ही सौ पेट में हाथ तक गरक हो गयो। ग्रौर कही पाजी मुंह सूं सावळ बोल। यूं कही फेर दूजी दी सौ मियां तौ हक हौ गयो।

—ग्रमरसिंह गजसिंहोत री बात

२ जायज, ठीक, वाजिब।

उ०—१ हिमत हक हिसाब है, रहमांण रवाकी। मोह सराब खराब है, छत उमत छाकी।—केसोदास गाडण

३ युक्ति संगत, युक्ति-युक्त।

४ देखो 'हाक' (रू. भे.)

रू. भे.—हक्क।

हकडक—सं. स्त्री.—१ हंसने की ध्वनि, खिलखिलाट।

२ देखो 'हकबक' (रू. भे.)

हकड़ाणौ, हकड़ाबौ—देखो 'हकलाणौ, हकलाबौ' (रू. भे.)

हकड़ाणहार, हारो (हारी), हकड़ाणियौ—वि०।

हकड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

हकड़ाईजणौ, हकड़ाईजबौ—कर्म वा०।

हकड़ायोड़ो—देखो 'हकलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हकड़ायोड़ी)

हकड़ी—सं. स्त्री—ग्रटक कर बोलने या तुतलाने की क्रिया, हकलाहट।

उ०—जीभरै फाला जकै सूं हकड़ी खा'र बोलै। मन मैं वसै दुनिया फंसै।—दसदोख

हकड़ौ—देखो 'हाकड़ौ' (रू. भे.)

हकणौ, हकबौ—क्रि. ग्र.—१ गतिमान होना, चलना, रवाना होना।

उ०—थे जीमो थांरा कंवर जिमावौ, थे जीमौ थांरा कंवर जिमावो। म्हारी रेल हक जाय म्हारा ए साथीड़ा उठ जाय।

—लो. गी.

ज्यूं—ई गाडी रै हकण रो टेम कणेक रो है।

२ जुतना, चलाना।

उ०—नहचो थळ निरधार, हळ तौ ग्रासाढां हकै। ह्वै मण धांन हजार, मासै कातिक 'मोतिया'।—रायसिंह सांदू

३ युद्ध करना, भिड़ना।

उ०—भुजंगी लचकै देत कौम धकै भोम भार, बकै वळोवळी खेळा किलकै वीरांण। छिळै घाव चळूळां सूरमां घावा लोह छकै, उभै सेन हकै ऊचकै ग्रारांण।—हुकमीचंद खिड़ियौ

४ ग्राग पर गरम करने से द्रव्य पदार्थ का भाप बनकर उड़ना।

५ कमहोना, घटना।

६ देखो 'हाकणौ, हाकबौ' (रू. भे.)

उ०—महा क्रोधंगी गनीमां हुंता हुचकै नरिंद 'माधौ', भू-लोक भूचकै बाधो चकै कोम भार। बोमगी ग्ररांबां झाळ बेताळ वभकै बकै, बाजेंद्रां 'बहादरेस' हकै तेगवार।—हुकमीचंद खिड़ियौ

हकणहार, हारो (हारी), हकणियौ—वि०।

हकिग्रोड़ो, हकियोड़ो, हक्योड़ो—भू० का० कृ०।

हकीजणौ, हकीजबौ—भाव० वा०।

हाकणौ, हाकबौ—रू० भे०।

हकदार—वि. यौ. [ग्र. हक+फा. दार] १ स्वत्व या अधिकार रखने वाला, अधिकारी।

उ०—प्रीत री कूख सूं जलमियौ राजगीदी रो हकदार नीं व्है ग्रर ब्याव री कूख सूं जलमियो राज रो हकदार व्है।—फुलवाड़ी

२ पात्र।

३ दावेदार।

हकनाक, हकनाहक—ग्रव्य. यौ. [ग्र. हक+फा. नाहक] १ निष्प्रयोजन

से, व्यर्थ में, बेकार में।

उ०—१ कह्यो—बाई बंगा, **हकनाक** इत्तौ वगत खराब करचो। एक नाकुछ कांब ई नीं वधी तो वै कांई नव री तेहरै करैला।

—फुलवाड़ी

उ०—२ पीढ्यां सूं नर जोर मारै, पण ऊंचायो कद मिळे। लक्ष्य जोग सदीनो लफै, फंफै **हकनाहक** गळे।—नारी सईकड़ो

२ अनुचित।

उ०—सेवट नाई हीमत करी। धड़ांम करती रो ऊभो ऊभो ई राजाजी रे पगां पड़चो। जोर सूं कूक्यो—अन्याव व्है, अंदाता हळाहळ अन्याय व्है। बेकसूर दीवांणजी नै **हकनाक** राज रै हाथां डंड मिळे।—फुलवाड़ी

हकबक-वि.—हक्काबक्का, भौचक्का, स्तंभित।

रू. भे.—हकडक, हकबाक।

हकबकणौ, हकबकबौ—देखो 'हकबकाणौ, हकबकाबौ' (रू. भे.)

उ०—धकधकै स्रोण मिळ करद धूर, **हकबकै** कात्र बकबकै हूर। कर कोप अठी कमधज करूर, पिसादीय लोक भर रोस पूर।

—पे. रू.

हकबकाणौ, हकबकाबौ-कि. अ.—१ हक्का-बक्का होना, स्तंभित होना। क्रि. स.—२ किसी को हक्का-बक्का करना, स्तंभित करना।

हकबकाणहार, हारौ (हारी), **हकबकाणियौ**—वि०।

हकबकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हकबकाईजणौ, हकबकाईजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

हकबकणौ, हकबकबौ—रू० भे०।

हकबकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हक्का-बक्का हुवा हुआ, स्तंभित हुवा हुआ।

२ किसी को हक्का-बक्का या स्तंभित किया हुआ।

(स्त्री. हकबकायोड़ी)

हकबकियोड़ौ—देखो 'हकबकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हकबकियोड़ी)

हकबाक—देखो 'हकबक' (रू. भे.)

उ०—डहकीय डायण बांमै डाक, बहकीय रंग हुआ **हकबाक**।

—गो. रू.

हकमोरूसी-सं. पु. [अ.] पितृ-परम्परा से प्राप्त होने वाला अधिकार, उत्तराधिकार।

हकळाणौ, हकळाबौ-क्रि. अ.—जीभ तेजी से न चलने के कारण अटक-अटक कर बोला जाना, हकलाना, बोलते-बोलते अटकना।

हकळाणहार, हारौ (हारी), **हकळाणियौ**—वि०।

हकळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हकळाईजणौ, हकळाईजबौ—भाव वा०।

हकड़ाणौ, हकड़ाबौ, हकळावणौ, हकळावबौ—रू० भे०।

हकळायोड़ौ-भू. का. कृ.—बोलते-बोलते अटका हुआ, हकलाया हुआ।

(स्त्री. हकळायोड़ी)

हकळावणौ, हकळावबौ—देखो 'हकळाणौ, हकळाबौ' (रू. भे.)

हकळावणहार, हारौ (हारी), **हकळावणियौ**—वि०।

हकळाविओड़ौ, हकळावियोड़ौ, हकळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हकळावीजणौ, हकळावीजबौ—भाव वा०।

हकळावियोड़ौ—देखो 'हकळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हकळावियोड़ी)

हकलौ—देखो हाकड़ौ' (२) (रू. भे.)

(स्त्री. हकली)

हकसफा-सं. पु. [अ. हक्+शफ्अः] पड़ोसी अथवा गांव के हिस्सेदार को किसी जमीन को खरीदने में अन्य क्रेता की अपेक्षा प्राप्त पूर्व-अधिकार।

हकां—देखो 'हाक' (रू भे.)

उ०—ऊठि अचूंका बोलणा, नारि पयंपै नाह। घोड़ां पाखर धमधमी, सींधू राग हुवाह। हुवो अति सींधवो राग वागी **हकां**, थाट आया विसण घाट लागै थकां। अखाड़ा जीति खग अरि घड़ा खोलणा, ऊठि हरधवळ सुत अचूंका बोलणा।—हा. झा.

हकाड़णौ, हकाड़बौ—देखो 'हकाणौ, हकाबौ' (रू. भे.)

हकाड़णहार, हारौ (हारी), **हकाड़णियौ**—वि०।

हकाड़िओड़ौ, हकाड़ियोड़ौ, हकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हकाड़ीजणौ, हकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

हकाड़ियोड़ौ—देखो 'हकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हकाड़ियोड़ी)

हकाणौ, हकाबौ-क्रि. स. ['हकणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ गतिमान कराना, चलाना, रवाना कराना।

उ०—सिंगाळ धवळ मोडी सुरह, केई पीळी त्रंभाड़ कर। बाछड़ा झेल सांमी वळी, ग्वाळ **हकाई** टोळ घर।—पा. प्र.

२ जुताना, चलाना।

३ युद्ध करने के लिए प्रेरित करना, भिड़ाना।

४ द्रव पदार्थ को आग पर गर्म करके भाप बनाकर उड़ाना।

हकाणहार, हारौ (हारी), हकाणियौ—वि०।

हकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हकाईजणौ, हकाईजबौ—कर्म वा०।

हकाड़णौ, हकाड़बौ, हकावणौ, हकावबौ—रू० भे०।

हकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गतिमान कराया हुआ, चलाया हुआ, रवाना कराया हुआ. २ जुताया हुआ, चलवाया हुवा (हल). ३ युद्ध के लिये प्रेरित किया हुआ, भिड़ाया हुआ. ४ भाप बना कर उड़ाया हुआ।

(स्त्री. हकायोड़ी)

हकार-सं. पु.—१ 'ह' अक्षर या वर्ण।

२ शब्द, ध्वनि, पुकार।

[प्रा. हक्कार] ३ ललकार, हुंकार।

उ०—१ हाथियां कपोळा केक भूमै लूथबत्थां होय, केक आय लूमै दौळां साथियां हकार। बंसां नीर चाढै भूप अबीहां जनेवा बाहै, संभरी बांधळा सीहां विभाड़ै सिकार।

—रांमसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ उड़ पड़ै पोगरां धरति आंण, जनमेज जाग रा नाग जांण। हाथियां दांत पग घर हकार, मीरजां जंगी हवदां मझार।

—वि. सं.

४ देखो 'अहंकार (रू. भे.)

उ०—विसन नांम तौ सबही भूंडा, पंच बडा जोधार। कांम क्रोध मोह लोभ हकारा, यै तजै सौ साधू सार।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

रू. भे. हकारि, हकाळ, हक्कार, हेकार।

हकारणौ, हकारबौ—क्रि. स.—१ बोलना, कहना।

उ०—बारै आवरै रिण रोपण बंका, बंध सुग्रीव बकारै। ऊठै सुण अमजघड़ अधायौ, धींग क्रोध उर धारै। हूं हिव आवियौ पगमांड हकारै।—र. रू.

२ जोश दिलाना, उत्साहित करना।

उ०—लहै जोत सोभा भड़ां मैं सलोभा, सदा खेत प्रांमै गैहल्लोत सोभा। सबै मंत्रवी व्यास प्रोहित्त साथै, हकारै कवी वाहता खग्ग हाथै।—रा. रू.

३ बुलाना।

उ०—१ हिंदू तुरक हकारिया, नरपति अनै निबाब। आरावां भेळौ अटक, मेलौ भड़ां सताब।—रा. रू.

उ०—२ हिंदू तांम हकारिया सिंघ 'जसौ' जैसिंघ। किया विदा कूरम कमंध, अै बेवै अरडिंग।—वचनिका

४ चलाना।

उ०—राजा भड़ां हकारिया, तोलै खग्ग करग्ग। उर पैलां लग्गी तिकर, जग्गी अग्ग सिळग्ग।—रा. रू.

५ ललकारना।

उ०—१ वधिया भुज भोम लगै विमळा, क्रम देतेय टीकम जेम कळा। भड़ वीर हकारत 'पाल' भला, वरियांम चढै वहळा बहळा।

—पा. प्र.

उ०—२ सीसोद कमधां सैंफळा, वहि सेल झळहळ वीजळा। हुय लूथबाथ हकारियां, कर खंजर वाह कटारियां।—सू. प्र.

उ०—३ हत्यौ महारावण तेण हकारि, बध्यौ महिखासुर बीर बकारि।—मे. म.

६ सचेत करना।

उ०—जिहां हकारइ मोहि, तौहि साचउ करि जांणइ। आदि अंत्त उतपत्ति, विपति तौ सहु पीछांमइ।—प. च. चौ.

क्रि. अ.—चलना।

हकारणहार, हारौ (हारी), हकारणियौ—वि०;

हकारिओड़ौ. हकारियोड़ौ, हकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हकारीजणौ, हकारीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

हक्कारणौ, हक्कारबौ—रू० भे०।

हकारवाड़ा—सं. पु.—१ ध्वनि, आवाज।

उ०—हुवै बाननेस वीरां विखमी हकारवाड़ा, धरां पारवाड़ा सरां सावलां सधोम। सिंधु राग रेड़तै आहुटै कै सिगारवाड़ा, भूटकै मेड़तै मारवाड़ा वीर-भोम।—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ हुँकार।

हकारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बोला हुआ, कहा हुआ. २ जोश दिलाया हुआ, उत्साहित किया हुआ. ३ चला हुआ, रवाना हुवा हुआ. ४ बुलाया हुआ. ५ चलाया हुआ. ६ ललकारा हुआ. ७ सचेत किया हुआ.

(स्त्री. हकारियोड़ी)

हकारौ—सं. पु.—१ आवाज, ध्वनि।

उ०—तठा उपरांयंत कमांणां कुरमांणां मांहै मेलजै छै। तिकै कमांणां किण भांतरी छै? बारै वरस दरियावां मांहि जहाजां हेठै बंधी आइ चिलेवाइ हकारा करती गुण-भार बंकी अढ़ार-टंकी, असली जादी पठांण री बेटी ज्यूं तुही तुही करती थकी, बलोचणी ज्यूं लचकार करती थकी, इण भांत री कमांणां उणहीज दरखतां री साखां सूं नांगळजै छै।—रा. सा. सं.

२ देखो 'हुँकारौ' (रू. भे.)

उ०—ठाकर सगळी बातां री हकारौ भरचौ, गुलाब री मां धूप-दीप करचौ।—दसदोख

हकाल—देखो 'हकार' (२) (रू. भे.)

हकालणौ, हकालबौ—क्रि. स.—१ बलपूर्वक अथवा डरा धमका कर कहीं से भगाना, खदेड़ना।

उ०—हकावै अभाड़ां चौतरफ्फां नरां फौज हल्लै, भल्लै जठै बोल दै दकालै कै भाराथ। 'अजो' दूजौ गाढेराव गयंदां बकाळै असां, प्रळै काळा मयंदां हकालै प्रथीनाथ।—सूरजमल मीसण

२ चलाना, हाँकना।

उ०—दबै रद खोट न ओट दकूळ, फबै हंसि होठ चड्यां मुख फूल। हकालत बीस ह्थ्यां नव-हथ्थ, रूड़ा सुखपालक हालत रथ्थ।

—मे. म.

३ उत्तेजित करना, ललकारना।

उ०—काळी पत्र झालै ईषै धरा धर्म कूंभकाळी, हकालै दवाळीबंध बराकां हरोस। चाब स्रोण लाली पीठ लाली पीठ लेंण धूंधमाती चालै, गुलाली बणाव कीधां दकालै गरोस।—नंदजी सांदू

४ विरुदाना, वकारना।

उ०१ —पड़ै आरपारं। जुधारां जुधारं। हकालै हेआरं। पीउसै पयारं।—कल्यांणसिंघ नगराजोत री बात

उ०—२ हकालै अफाड़ां चौतरफां नरां फौज हल्लै, भल्लै जठै बोल दै हकालै कै भाराथ।—सूरजमल मिसण

५ उत्साहजन्य वाक्य बोलना, आवाज करना।

उ०—उडै गति गेंद नरां उतमंग, गहै भट कंज करां जट-गंग। महानट हाथ हकालत मुंड, रोळां मझ घुम्मर घालत रुंड।

—मे. म.

६ पुकारना, आवाज लगाना।

७ ललकारना।

उ०—उपजै घणां ज ईख, चरै मन मौज सूं, बिचरै सावां बीच, फिरै नहीं फौज सूं, घातै सिहां घात, हकालै हेकला। मिळै क्रमतां मग मांह, टळै नहि टेकला।—सिवबक्स पाल्हावत

हकालणहार, हारौ (हारी), हकालणियौ—वि०।

हकालिग्रोड़ौ, हकालियोड़ौ, हकाल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हकालीजणौ, हकालीजबौ—कर्म वा०।

हकालियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ खदेड़ा हुआ. २ आवाज लगाया हुआ. ३ चलाया हुआ, हांका हुआ. ४ उत्तेजित किया हुआ. ५ बिरुदाया हुआ. ६ ललकारा हुआ।

(स्त्री. हकालियोडी)

हकालौ—देखो 'हाकौ' (रू. भे.)

उ०—तठै आंम री छाया नै चमेली मोगरै नजीक महर बारंज कन्है सूअर डार नूं लियां सूतौ छै। सो देख बागवांन हकालौ देय गाळी काढी।—डाढाळा सूर री बात

हकावणौ, हकावबौ—देखो 'हकाणौ, हकाबौ' (रू. भे)

हकावणहार, हारौ (हारी), हकावणियौ—वि०।

हकाविप्रोड़ौ, हकावियोड़ौ, हकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हकावीजणौ, हकावीजबौ—कर्म वा०।

हकावियोड़ौ—देखो 'हकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हकावियोडी)

हकीकत—सं. स्त्री. [अ.] १ वृतान्त, हाल, विवरण।

उ०—१ ताहरां मांम्यां नुं सलांम की छै। ताहरां राजा अजैपाळ मांनधाता नुं बात पूछी। सारी हकीकत मालीम की।—चौबोली

उ०—२ ताहरां धीरीयै नुं मूळवै पूछीयौ, 'जु वेमवसौ कठै?' ताहरां घोड़े री हकीकत पूछी।—मूळवै सांगावत री बात

उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति फेर पातसाहजी हुकम कीयौ। हकीकत इत कही छै।—रा. सां. सं.

उ०—४ तठा उपरांयंत सातलजो नूं लै आयौ। आपरी कोटड़ी मांहै उतारीयौ। अठै वडा हीड़ा कीया, अर पूछीयौ, 'थां किम जोधपुर सो छाडीया?' ताहरां ईहां सरब हकीकत मांड नै कही।

—सातल जोधावत री बात

२ सच्चाई, वास्तविकता, यथार्थ।

उ०—एक कहै असपत्ति, लिखै खत हफत विलायत। हफत नकल लिख हफत, कमध फुरमांण हकीकत।—सू. प्र.

३ सूचना, खबर, समाचार।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति अतरा मांहै महमद मुसतफा खांन रा चार दूत विनारिया हुंता त्यां हकीकत राजांन रा पातसाह आगै पोहचाई।—रा. सा. सं.

४ घटना।

उ०—अठी-उठी री मोकळी आडी डोडी बातां हुई पण दोन्यूं जणा उण दिन वाळी हकीकत जबांन माथै ई नीं लाया। पण मन मैं छकै पंजै सावधांन।—अमर चूंनड़ी

५ मन्तव्य।

६ इतिहास।

रू. भे.—हकीगत, हगीगत।

हकीकी—वि. [अ.] १ सच्चा, असली।

२ आत्मीय।

३ वास्तविक, यथार्थ।

हकीगत—देखो 'हकीकत' (रू. भे.)

उ०—१ सीहैजी बीरांमणा नुं आदर दीयौ नै कयौ, बीरांमणां थे सारा भेळा होय नै किण कांम आया छौ। अब थांरी हकीगत कहौ।—रा. वं. वि.

उ०—२ राव कल्यांणसिंघजी मदत करी अरु मेड़तिया पण इणां रै सांमल हा तिका हकीगत इण तरै है—पठांण हाजीखांन ऊपर अजमेर राव मालदे फौज मेली।—द दा.

उ०—३ बसी (बीच में ई) अबळा रूपी गायां नहीं, सांचेली गायां। इत्ती कै'र सारी हकीगत समझायी।—वरसगांठ

उ०—४ फूलचन्दजी रै पूछणै पर वेगराजजी रै ओसर री सारी हकीगत बतावै है।—दसदोख

उ०—५ संध्या समै रावजी महिलां पधारिया तरै अपच्छरा मुजरौ करै नै सीख मांगी। अबै तो साहिबजी मोनै लोकां दीठी। राज पीण हकीगत कीही सो म्हैं तो जावसुं।

—बीरमदे सोनगरा री बात

हकीम—सं. पु. [अ.] १ यूनानी पद्धति से चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक।

उ०—हकीम वैद्य सरब पचि हारया दीनी बहुत दवाई। जांण असाध्य व्याध जगदंबा, अंबा बांसै आई।—मे. म.

२ मीमांसा का पण्डित, मीमांसक।

उ०—सौ आं बचनां सूं सीख मांनै नीयत रैयत रै ऊपर किरपा करै हकीमां कही छै अदल भलौ खरौ गुण छै।—नी. प्र.

हकीमी—सं. स्त्री. [अ.] १ यूनानी चिकित्साशास्त्र।

२ यूनानी चिकित्सा का कार्य।

वि.—यूनानी चिकित्सा से सम्बन्धित।

हकीयत—सं. पु. [अ. हक़+रा. प्र. यत] हक होने का भाव, स्वत्व,

अधिकार।

हकूक-सं. पु. [अ. हुकूक हक ब. व.] कई प्रकार के स्वत्व या अधिकार।

हकूमत-सं. स्त्री. [अ.] १ राज्य, सरकार।

२ शासन, प्रशासन।

उ०—मोकळा महीणा बीतग्या। मा'राजा लूंणसर में चोखीतरां रसबसग्या। चोखौ खावै-कमावै अर मंडी रा मिनखां माथै आछी प्रेम हकूमत करै।—दसदोख

क्रि. प्र.—करणी।

मुहा.—हकूमत करणी या चलाणी=दूसरों को साधिकार आज्ञा देना।

३ सत्ता, अधिकार।

हकूमत जताणी=रोब या प्रभुत्व प्रदर्शित करना।

रू. भे.—हुकमत, हुकूमत।

हकौ—देखो 'हाकौ' (रू. भे.)

उ०—१ सत्रां महपति करंत संघार, घड़ां पग दे खग वाहत धार। करै अप वीर जय जय कार, हकां करि जांणि रमै होळियार।
—सू. प्र.

उ०—२ गहर पग मांडो ठकराहां, हूं आयौ सुण वाहर हकौ। मोनु भां अतरी छै मालम, सांलम धन लै जाय न सकौ।
—ठाकर रांमसिंघ री गीत

हकौबकौ—देखो 'हक्कौबक्कौ' (रू. भे.)

हक्क—देखो 'हक' (रू. भे.)

उ०—जिन्हा तज जुलमांणी, हक्क सराहियां। रुख चुगलक ब...... जांनी, सिरहद सझियां।—र. ज. प्र.

२ देखो 'हाक' (रू. भे.)

उ०—१ हुअै रिणि हक्क किलक्क हमस्स, उडै रत छोळि दिसेह अरस्स। अखै धिन धिन्न रतन्न अरक्क, चढावै मेछ घड़ा खग चक्क।
—र. वचनिका

उ०—२ मोटा मुगुल्ल मद्दोनमत्त, अमिळित्त दियइ अरि आवरत्त। 'कम्मरइ' कोपि कीया कटक्क, हइमरां हींस भड़ हुइ हक्क।
—रा. ज. सी.

उ०—३ फौजक्क रोसक्क फारक्क फरक्क, हूरक्क वरक्क हुवै खळ हक्क। सीसक्क सभक्क हारक्क हरक्क, ग्रिधक्क गहक्क गूंदक्क गटक्क।—सू. प्र.

हक्कणौ, हक्कबौ-क्रि. अ.—१ कमजोर होना।

२ देखो 'हकणौ, हकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ थटां काळ सी डंकाळ सी तोपां यौ साबात धक्की, मैंगळां.है खुरां जम्मी मचक्की प्रमांण। वीर छंडां लीधा साथ चंडका किलक्की बक्की, आंमेरनाथ री सेना यौ हक्की आरांण।
—सुखदांन कवियौ

उ०—२ ईख भांण आरांण तमासै तुरी तांण ऊभौ, बारंगां विवांण हक्कै, काथा मंगां बोम। फौलां झंडा फरक्कै, बभक्कै घावां तनां फाबै, धधक्कै लोयणां क्रोध, जुड़ै रूपी धोम।
—बुधसिंह सिंढायच

हक्कणहार, हारौ (हारी), हक्कणियौ—वि०।

हक्किओड़ौ, हक्कियोड़ौ, हक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हक्कीजणौ, हक्कीजबौ—भाव वा०।

हक्कबक्क—देखो 'हक्कोबक्कौ' (मह, रू. भे.)

हक्कल—देखो 'हैकल' (रू. भे.)

हक्काबुक्कौ—देखो 'हक्कोबक्कौ' (रू. भे.)

उ०—अथ राजप्रस्थांनं, पवनोद्धद धूलि पट सहस्रसंछन्नतरणि-किरणि, सुभट विमुक्त हक्काबुक्कार विशित कातर जन.........
—व. स.

हक्कार—देखो 'हकार' (रू. भे.)

हक्कारणौ, हक्कारबौ—देखो 'हकारणौ, हकारबौ' (रू. भे.)

हक्कारण हार, हारौ (हारि), हक्कारणियौ—वि०।

हक्कारिओड़ौ, हक्कारियोड़ौ, हक्कारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हक्कारीजणौ, हक्कारीजबौ—कर्म वा०।

हक्कारियोड़ौ—देखो 'हकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हक्कारियोड़ी)

हक्कियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कमजोर हुवा हुआ।

२ देखो 'हकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हक्कियोड़ी)

हक्कोबक्कौ-वि. [स्त्री. हक्कीबक्की] १ आश्चर्यचकित, विस्मित।

उ०—पण म्हारै डरावणा विचारां रै बीच लीना री मीठी पण तीखी किलकारी कोयल री कूक ज्यूं गूंजगी—'पवन'! अर म्हैं सब कुछ भूल नै कीं सोच्यां बिना ई हक्कोबक्को सो उठै ईज ऊभो रह्ग्यौ।—तिरसंकू

२ अचानक किसी घटना के कारण जो घबरा गया या शिथिल पड़ गया हो, किंकर्त्तव्यविमूढ़।

उ०—कागद देखतां ही बौ भूं भूं रोवण लागग्यौ। छोटकी साळी तौ हक्कीबक्की हुयगी, सासू खट सगळौ खेल समझ गयी।
—दसदोख

३ स्तंभित, भौंचक्का।

रू. भे.—हकोबको, हुक्कौबुक्कौ।

मह;—हक्कबक्क।

हक्कोहक्क-वि.—१ ठीक, उचित।

२ देखो 'हाक'।

उ०—१ नीसांणि धाइ वलइं, पताका झलहलइं, आरेणि माडीयइ, अरधचंद्र बाल खंडियइं, भट हक्कोहक्क करइं, देवांगना वीर वरइं।—व. स.

उ०—२ वध वीर किलक्कं हक्कोबक्कं, धूप सवक्कं धमचक्कं।

वण वार असक बाधा रक, रूक भटक्क रहचक्क ।—रा रू

हुबकौ–स. पु.—१ बारह फूंक-वाद्यों में से एक ।

उ०—द्वादस तूरय निरघोष नावा नाम—हुबका, द्यका, मरम, काहल, पुप्फभेर, भाणगं, पहुडो, जुग, सख, करड, पाणय, मृदल, कसाल, रणनदी, इति रणनदी तूरय ।—व. स.

२ यश, कीर्ति ।

३ ललकार, हाक ।

४ देखो 'हाकौ' (रू. भे)

हुमगौ–वि. (स्त्री. हुमगी) प्रसन्नचित्त, प्रफुल्लित ।

हुगांम—देखो हुगामो' (मह; रू. भे)

उ०—१ अबार रात रा ही वधू गोळा री नजर माडी हो सुहारै फजर परभात रा हीज हुगांम जुद्ध है—नेठाव किया नजर वेख लेसो ।—वी स टी.

उ०—२ जोरावर कदै इन्द्र पखाड़ै आवसो जाणु, सागावरी कदै खळां ताळबै तगाग । रीझै वळी-वळी कदै करुबौ पावसो राजा, हळीवळी भडां कदै थावसी हुगांम ।—बलूतसिंघ री गीत

उ०—३ घड बोळ सधा धर, जोस घणौ । तैय होय हुगांमां खूब तणौ ।—गो. रू.

उ०—४ हुगांमां हमेसा बजत त्रिदवेसा नवनती । अई 'इन्दु' अबा जयति जगवबा भगवती । मे. म.

हुगांमी—देखो 'हुगामी' (रू. भे)

उ०—आप पधारिया मेलीडां रै साथ हुगांमी ढोला रे । थारी ओलूडी धण नै आवती हो राज ।—लो. गी.

हुगांमौ—देखो 'हुगामो' (रू. भे.)

उ०—आठू पहर हो वरीखांनै हुगांमौ लागियौ रहै ।

—ठाकुर जयतसी री वारता

हुगीगत—देखो 'हकीकत' (रू. भे.)

उ०—अबै करीज वाकबी हुगीगतूं अवेलनै । प्रचड जूंभ मल्लनै, बुलाय वीर पालनै ।—पा. प्र.

हुड़–क्रि वि.—जल्दी, शीघ्र ।

हुड़कायौ—देखो 'हिड़कियौ' (रू. भे.)

उ०—काटै ज्या गडक हुडकायौ, खील बिलाय नीकळै खाख । आप तणा नावरी ओखद, अग न दूखै न दूखै आख ।

—बखतौ आसियौ

हुड़कियाबाव—देखो 'हिडकियाबाव' (रू. भे)

हुड़कियौ—देखो 'हिडकियौ' (रू. भे.)

हुड़ड़–स. स्त्री. [अनु.] १ ध्वनि विशेष, जो प्राय परत के रूप में जमी हुई वस्तुओं के गिरने से उत्पन्न होती है । दीवार आदि के ढहने की आवाज ।

उ०—इतरा मैं तो न मालम कीकर ई सांकळ नीकळगी अर हुडड़ .. ...ड़ धागीड करती पट्टी आंगणा पर । जे म्हैं फुरती सू आगी नही सरक जावती तो घटणी .... घटणी ।—रातवासी

२ देखो 'हुडहुड़' (रू भे.)

उ०—रिख हुड़ड़ ठड्ड़ अरा दडड, रत खड़बड़ अछुखा धागणौ । गडगड अचाट तडतड प्रगट, उरड थाट अधियागणौ ।

—बखतौ खिड़ियौ

उ०—२ फीफर फाळज हुय फडड दहड रुधिर धर डाक । सडड गजा मद सू किया हुड़ड़ वीर हुय हाक ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ चडड ऊधड़ प्रगड चल प्रड, खडड नरहड रूपर खड-खड । हुड़ड नारद वीर हुडहुड, धडड आसस सिखर धडहुड ।

—र ज प्र.

हुडड़ाट–सं स्त्री.—हुडड़ की ध्वनि ।

हुड़ताल–सं. स्त्री [स. हट्ट+ताला] १ असतोष, विरोध या शोक प्रकट करने हेतु कर्मचारियो द्वारा काम बन्द करके व्यापारियो द्वारा दुकाने बन्द करके तथ विद्यार्थियो द्वारा अध्ययन बद करके किया जाने वाला सामूहिक प्रदर्शन या अभियान ।

उ०—आगरै सहर हड़ताळ पडिगा 'अगर', मारवा राव दरियाव मांहि । हाथ पाठ पांहुरै तठै हाथ हुय हो रिमा । लोह बही लोह असमांन लागै ।—अमरसिह राठोड री बात

२ न होने की स्थिति, अभाव ।

उ०—वधू मौत री मरजी मार्थ, जीवण री पडगी हड़ताळ । हिरणी बोली रया करैं कांई, रखवाळा रो पडग्यो काळ ।

— चेतमानखा

३ देखो 'हरताळ' (रू भे)

रू भे —हटताळ, हठताळ, हुडताल, हरताळ, हरताल ।

हुड़ताळतीज–सं. स्त्री.—हरियाली तृतीया ।

हुड़दे–क्रि. वि.—१ शीघ्रता से, जल्दी से ।

२ देखो 'हिरदो' (रू भे)

हुड़दौ–सं पु —१ अत्यधिक परिश्रम का घरेलु कार्य ।

२ देखो 'हिरदौ' (रू. भे)

हुड़प–वि —१ अनुचित रीति से प्राप्त कर अपने अधिकार मे किया हुआ ।

२ गले मे उतारा हुआ, निगला हुआ ।

३ गायब, अलोप, पार ।

उ०—नई तो वो समभोलो के गांठड़ी म्हे राखली । वो आ भी समझ सकै है कै गाठडी तूं बीच मे ई हुड़प करग्यो ।—तिरसकू

सं. स्त्री —हुड़पने की क्रिया या भाव ।

रू. भे.—हड़प ।

हुड़पणो, हुड़पबौ–क्रि. स.—१ अनुचित रूप से किसी की वस्तु प्राप्त कर अधिकार कर लेना, दबा लेना ।

२ गायब करना, उड़ाकर लेना, पार कर देना ।

हड़पणौ, हड़पबौ–क्रि. स.—अनुचित रूप से किसी की वस्तु प्राप्त कर अधिकार कर लेना, दबा लेना ।
२ गायब करना, उड़ा लेना, पार कर लेना ।
उ०—बैजू अर बापू गाठड़ी हड़पणी चावै है। लीना उण नै ठोकर मार'र चली गई है ।—तिरसकू
३ पेट मे उतार लेना, निगल जाना ।
४ झपटना, छीनना ।
हड़पणहार, हारौ (हारी), हड़पणियौ—वि० ।
हड़पिश्रोड़ौ, हड़पियोड़ौ, हड़प्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हड़पीजणौ, हड़पीजबौ—कर्म वा० ।
हड़प्पणौ, हड़प्पबौ, हड़फणौ, हड़फबौ, हड़पफणौ, हड़पफबौ —रू० भे० ।

हड़पियोड़ौ–भू का कृ —१ अनुचित रूप से किसी का माल (पदार्थ) प्राप्त कर अधिकार किया हुआ, दबाया हुआ २ गायब किया हुआ, उडाया हुआ, पार किया हुआ ३ पेट मे उतारा हुआ, निगला हुआ ४ झपटा हुआ, छीना हुआ ।
(स्त्री हड़पियोड़ी)

हड़प्पणौ, हड़प्पबौ—देखो 'हड़पणौ, हड़पबौ' (रू भे)
हड़प्पणहार, हारौ (हारी), हड़प्पणियौ—वि० ।
हड़प्पिश्रोड़ौ, हड़प्पियोड़ौ, हड़प्प्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हड़प्पीजणौ, हड़प्पीजबौ—कर्म वा० ।

हड़प्पियोड़ौ—देखो 'हड़पियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. हड़प्पियोड़ी)

हड़फ—देखो 'हड़प' (रू भे)

हड़फणौ, हड़फबौ—देखो 'हड़पणौ, हड़पबौ' (रू भे)
हड़फणहार, हारौ (हारी), हड़फणियौ—वि० ।
हड़फिश्रोड़ौ, हड़फियोड़ौ, हड़फ्योड़ौ —भू० का० कृ० ।
हड़फीजणौ, हड़फीजबौ—कर्म वा० ।

हड़फियोड़ौ —देखो 'हड़पियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हड़फियोड़ी)

हड़पफणौ, हड़पफबौ—देखो 'हड़पणौ, हड़पबौ' (रू. भे)
उ०—सडपफै बीजूजळा हास मोहा बडपफै सूर, सीसहार भडपफै पडवखं नथी सभ । श्रीधणी हड़पफै पळा सामळी हड़पफै गूद, रुड केई अडपफै पडपफै वरा रभ ।—बद्रीदास खडियौ

हड़फ़ियोड़ौ—देखो 'हड़पियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हड़फ़ियोड़ी)

हड़बड़—देखो 'हड़बड़ी' (रू. भे)
उ०—हड़बड जोगण खेतल होय, सडवड कायर पथ सजोय ।
—गो. रू
क्रि. प्र.—लागणी, होणी, मचणी ।

हड़बड़णौ, हड़बड़बौ —देखो 'हड़बडाणौ, हड़बडाबौ' (रू भे)
उ०—केई जणा तौ इण भांत सुट्ट व्हैगा, जाणै सगळी सुध बुध माथै वाण व्हैगी व्है। केई जणा मिनकी रै प्रगट व्हियां ऊंदरा हड़बडै ज्यूं कानी कानी न्हाटा ।—फुलवाड़ी
हड़बडणहार, हारौ (हारी), हड़बडणियौ—वि० ।
हड़बडिश्रोड़ौ, हड़बडियोड़ौ, हड़बड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हड़बीजणौ हड़बीजबौ—भाव वा० ।

हड़बडाट–स. स्त्री.—१ हड़बड़ की ध्वनि, कोलाहल, शोरगुल ।
उ०—सारा जिरासा लिया थका सिरोही पोळ मैं बैठा, हड़बडाट सुण जाळी मे मूढौ काढ रावजी पूछियौ—साथ किणरौ ।
—बा दा. ख्यात
२ शीघ्रता, जल्दबाजी ।
३ देखो 'हड़बडी' (रू भे.)
क्रि प्र —लागणौ ।
रू भे —हड़बड़ाट, हुटुहुडाट ।

हड़बडाणौ, हड़बडाबौ–क्रि. अ —१ बहुत जल्दी करना, अत्यन्त शीघ्रता करना ।
उ० - अेक दिन बसी तावड़ै मे ऊभौ आप रै विचारा मे गरक हौ। इत्ते मे अेक जणै कैयौ—श्रा देखौ, बसी भाई ! थारी गाय'र बच्छी । बसी हड़बड़ाय'र उठियौ । —वरसगाठ
२ अधिक जल्दी के कारण घबडाहट उत्पन्न होना । आतुर होना, अधीर होना । सतुलन खो देना ।
३ भय या खुशी के मारे इधर उधर भागना ।
क्रि स —४ जल्दी या शीघ्रता करने के लिए प्रेरित करना ।
ज्यूं—म्है थोडो उणां नै हड़बडाय'नै आऊ ।
हड़बडाणहार, हारौ (हारी), हड़बड़ाणियौ— वि० ।
हड़बडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हड़बडाईजणौ, हड़बड़ाईजबौ—कर्म वा० ।
हड़बडणौ, हड़बड़बौ, हड़बडावणौ, हड़बड़ावबौ, हड़बड़णौ, हड़-बड़बौ, हड़बडाणौ, हड़बड़ाबौ—रू० भे० ।

हड़बडायोड़ौ–भू का. कृ.—१ जल्दी किया हुआ, शीघ्रता किया हुआ. २ अधिक जल्दी के कारण घबराया हुआ, आतुर, अधीर, असतु-लित ३ इधर उधर भागा हुआ. ४ जल्दी या शीघ्रता के लिए प्रेरित किया हुआ ।
(स्त्री. हड़बडायोड़ी)

हड़बडावणौ, हड़बडावबौ —देखो 'हड़बडाणौ, हड़बडाबौ' (रू. भे)
उ०—दोय जणा-अेक कईक ढळती औस्था-रौ अर अेक मोटियार जिकै-रै हाथ मे लालटेण, बारणौ खोल'र हड़बडावता खाथा-खाथा टुर पड्या ।—वरसगाठ
हड़बड़ावणहार, हारौ (हारी), हड़बड़ावणियौ—वि० ।
हड़बडाविश्रोड़ौ, हड़बड़ावियोड़ौ, हड़बड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हड़बडावीजणौ, हड़बड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

हुड़वड़ावियोड़ौ—देखो 'हुड़वड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री हुड़वड़ावियोड़ी)
हुड़वड़ियोड़ौ—देखो 'हुड़वड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री हुड़वड़ियोड़ी)
हुड़वड़ियौ—वि. (स्त्री. हुड़वड़ी)—जल्दबाज, उतावला, आतुर।
हुड़वड़ी—स. स्त्री.—१ सेना की हलचल की ध्वनि।
क्रि. प्र.—चराणी।
२ बहुत से प्राणियों के एक साथ चलने से उत्पन्न ध्वनि।
३ वह स्थिति, जिसमें हड़बड़ाते हुए कोई काम करना पड़ता है, घबराहट, व्याकुलता।
क्रि. प्र.—मचणी, लागणी।
४ शीघ्रता, जल्दबाजी, उतावलापन।
रू भे.—हड़बड़, हड़बडाट, हुडब्बड, हुडवड, हड़वडाट, हुडव्वड़, हुड़हुड, हुडवड।
हुड़वच—स. स्त्री.—मुह से किसी को काटने की क्रिया या भाव।
ज्यू—कुत्ते हुड़बच घाल दी।
क्रि प्र.—घालणी, भरणी।
रू भे.—हुडभच।
हुड़वौ—देखो 'हिड़वौ' (रू. भे.)
उ०—अरी रे कोडा तू उजळा मैं, हुडवौ काय बिडाया रे, म्हारी गोरबद लूंबाळौ।—लो गी.
हुड़वू—सं. पु.—[देश.] १ राजपूत कुलोत्पन्न एक सिद्ध पुरुष जिनकी कई लोग पूजा करते है।
वि वि—'हुडवूजी' पवार वंशीय साखला शाखा के राजपूत थे इनके पिता का नाम मेहराज (मेहाजी) था। इन्होंने राव जोधाजी का कष्ट के दिनों में सहयोग दिया। इनमें अतिथि सत्कार की असीम श्रद्धा थी। मंडोवर पर जब चित्तौड़ के महाराणा का अधिकार हो गया तब राव जोधाजी अपने १२० अनुगामियों सहित हुड़वूजी के पास पहुँचे। दुर्भाग्य वश जोधाजी के पहुँचने तक सदाव्रत बँट चुका था। ऐसे समय हुड़वूजी को 'गुअव' नामक एक लकड़ी, जो रगाई के काम आती है, याद आई। इन्होंने उस लकड़ी का एक टुकडा छीला और उसके बुरादे को आटे चीनी और मसालों के साथ पकाया इससे वह एक स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ बन गया। राव जोधजी, अपने साथियो सहित इस पदार्थ को खाकर सुख की नीद सो गये। वे मंडोर के दुख को कुछ काल तक भूल गये। प्रातः काल उठने पर प्रत्येक व्यक्ति ने देखा कि उनकी मूछों पर सायकालीन भोजन का रग लगा हुआ है। इससे सभी व्यक्तियों को आश्चर्य हुआ। हुडवूजी ने इस घटना को जादुई रूप दिया और जोधाजी को आशीर्वाद दिया कि इस पदार्थ के पेट में रहते तुम अपना घोडा जितनी दूर फेरोगे वहां तुम्हारा राज्य हो जाएगा। हुड़वूजी की बात सही निकली और राव जोधाजी को राज्य वापस मिल गया। इसके बाद राव जोधाजी ने इनका सम्मान किया और फलोदी के पास 'बेंगटी' नाम गाव शासन मे दिया। वहा पर आज भी हुडवूजी का प्रभाव लक्षित होता है।
हुडवूजी ने सिद्ध पुरुष रामदेवजी तवर की सत्संग की थी इनकी योग्यता एव श्रद्धा को देखकर रामदेवजी के गुरु योगी बालकनाथजी ने इनको अपना शिष्य बना लिया। यहीं से ये हथियार त्याग साधु बन गये और भजन मे लीन हो गये। ये एक वीर सिपाही एव तपस्वी भक्त थे। इनका जीवन कठोर तपस्या से युक्त एव पवित्र था। सिद्ध पुरुष रामदेवजी की समाधि के ठीक आठवें दिन इन्होने भी, उन्ही के पास समाधि ले ली।
२ भट्टी से कोयले निकालने व डालने का एक लोहे का उपकरण जिसके पीछे लकडी का डडा लगा हुआ होता है।
रू भे.—हरवू, हरभू।
हुड़व्वड़—१ देखो 'हुडवडी' (रू. भे)
उ०—हुई हुड़व्वड़ सेन मैं, भेर भयाके सद्द। पड़ियौ डाकौ अंबके, पाडियौ आळ रवद्द।—रा. रू
२ ध्वनि विशेष।
हुड़बोचौ—स. पु.—मुह द्वारा काटने की क्रिया या ढग।
हुडभच—देखो 'हुडवच' (रू भे.)
हुडमत, हुडमत—देखो 'हनुमान' (रू भे.)
हुडमल—वि.—कुलटा, पुश्चली, छिनाळ।
उ०—रांमा आभरामा कांमातुर रोवै, हुडमल हुडदंगी सेजा मैं सोवै।—ऊ. का.
हुडमान—देखो 'हनुमान' (रू भे)
उ० -१ कै तौ जिवावै माता सीता सतवती, कै तौ जिवावै हुडमान जती। लिछमन कै बाण लग्यौ सकती लिछमण कै।
—लो. गी
उ०—२ तौ रामजी भला दिन देवै हडमानजी री अगेची रा उण पुजारी नै।—गैंव गांव मे ओ इज तिणाचियौ बांणियौ रै'वतौ।
—फुलवाडी
हुडमानौ—देखो 'हनुमान' (अल्पा; रू. भे)
हुड़वड़—देखो 'हुडवडी' (रू. भे.)
उ०—१ कटका बिहू हुइ ध्रूब, गडगड अयागळ गुडै। हुडवड भड हुइ हैवरा, चढिया पीरस चूंच।—र. वचनिका
उ०—२ हुडवड़ जोगणा खेलत होय, सडवड कायर पंथ सजोय।
—गो. रू
हुड़वड़णौ, हुड़वड़बौ—देखो 'हुडवड़ाणौ, हुडवड़ाबौ' (रू भे.)
हुड़वड़णहार, हारौ, (हारी), हुड़वड़णियौ—वि०।
हुड़वड़िग्रोड़ौ, हुड़वड़ियोड़ौ, हुड़वड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हुड़वडीजणौ, हुड़वड़ीजबौ—भाव वा०।
हुड़वड़ाणौ, हुड़वड़ाबौ—देखो 'हुड़वड़ाणौ, हुड़वड़ाबौ' (रू. भे.)

हडवडाणहार, हारौ (हारी), हडवड़ाणियौ—वि० ।
हडवडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हडवडाईजणौ, हडवड़ाईजबौ—कर्म वा० ।
हडवडायोडौ—देखो 'हडवडायोडो' (रू भे)
(स्त्री. हडवडायोडी)
हडवडियोडौ—देखो 'हडबडायोडो' (रू भे)
(स्त्री. हडवडियोडी)
हड़वडाट—देखो 'हडबडाट' (रू. भे.)
हडवा-स पु —भाटी वश की एक शाखा । (बा दा ख्यात)
हड़व्वड—देखो 'हडबडी' (रू भे)
उ०—हय जीण हडव्वड हूत हूवा, जवना पण लीधा पथ जुवा । खग बाध चढै श्रस तूग खडा, घरण थाट कमध श्रबीह घडा ।
—रा. रू.
हडसोली—देखो 'हीयोडी' (रू भे)
हडहड-स स्त्री.—१ जोर से हंसने या अट्टहास से उत्पन्न ध्वनि, खिलखिलाहट।
उ०—१ वीर हडहड सूर वर चड, धार सर भड भिदै अरि घड। वूर पड़ि जबूर विहु घड, भुरज बीछडि पडै खडभड ।—रा रू.
उ०—२ बढि कधड मुख करत बडबड, फरड फिफरड कळिज फडफड । फील धड पड ग्रभड भडफड, हुय वडड रत मुनद हडहड । पडै दळ अणपार । – सू प्र
उ०—३ हडहड हसत मसत मदिरा मद, धड हड सेर धुवाडै । चड चड चाव जोगण्या चोसट, धड धड भूमि धुजाडै ।—मे म.
२ ध्वनि विशेष ।
रू भे —हडड, हडाहड, हडहड ।
हडहडणौ, हडहडबौ—क्रि अ —१ जोर से हंसना, अट्टहास करना, खिलखिलाना ।
उ०—१ हरचद वीर मुनद हडहडिया, खेत समर साम्हा श्रसि खडिया । पुर बाहिर इकवार वधूपुर, श्राया उठै श्रपति दळ श्रातुर ।
—सू. प्र.
उ०—२ पीठ बडबडाट कूरम, छटा प्रळै री, मही खडखडात हैजम मचोळा । मुनि हडहडात, धडडात तोपा महत, गयण गडडात पड भाट गोळा ।—कविराजा बाकीदास
२ गुंजित होना, गूंजना ।
उ०—फीफरड भूट गोळा गजां फरहडै, जंगी हौदा गजा खडहडै जोम । धडहडै धौम वै मुसाहब लडै धर, बिहु साहब हसै हडहडै बोम ।—हुकमीचद खिडियौ
हडहडणहार, हारौ (हारी), हडहडणियौ—वि० ।
हडहडिश्रोडौ हडहडियोडौ हडहडयोडौ—भू० का० कृ० ।
हडहडीजणौ, हडहडीजबौ—भाव वा० ।
हडहडणौ, हडहडबौ—रू० भे० ।

हडहडाट-स स्त्री.—१ जोर से हंसने की ध्वनि ।
२ हडहड की आवाज ।
हडहडियोडौ-भू का कृ —१ जोर से हंसा हुआ, अट्टहास किया हुआ, २ गूंजा हुआ ।
(स्त्री हडहडियोडी)
हडाहड —देखो 'हडहड' (रू भे)
उ०—हडाहड रिखिस हुश्रै हर हार, जयज्जय जोगणि किद्ध जिश्रार । महारिणि पोढै सूर मसत्त, दिगबर जाणि श्रखाडै दत्त ।
—र. वचनिका
हडींदौ-स. पु [अनु] ऊंचे स्थान से किसी भारी वस्तु के यकायक गिरने से उत्पन्न ध्वनि।
मि. धडींदौ ।
हडीप-वि —१ साहसी, वीर ।
२ शक्तिशाली, बलवान ।
३ दृढ मजबूत ।
हडुमान —देखो 'हनुमान' (रू. भे)
उ०—गळा मैं जरख री दात श्रर मत्रायोडौ मादळियौ । चोटी मैं हडुमान जी री मिळाई ।—फुलवाडी
हडूडी-स पु [देश] परस्पर मस्तक भिडाकर खेला जाने वाला एक खेल ।
उ०—भडै श्रसुडा भूमि भूमि इण भाव सू । खरौ हडूडौ खेल रमै महाराव सू ।—सिवबख्स पाल्हावत
हडूमान - देखो 'हनुमान' (रू भे) (डिं को)
उ०—परालबध का पावणा, देख दई का खेल । भभीखण नै लक, श्रर हडूमान नै तेल ।—अज्ञात
हडोई—देखो 'हडोई' (रू भे)
हडौ-स पु —१ वायु का बवडर, वातचक्र, बतूला ।
२ देखो 'हूडो' (रू भे.)
हच—देखो 'हिचण' (रू भे)
उ०—पौरस मारा है प्रथी, 'कला' पराई चाड । रावत मछरा राखतां, हच लोही वल हाड ।—कल्याणसिंघ थाढेल री वारता
हचकणौ, हचकबौ—देखो 'हिचकणौ, हिचकबौ' (रू भे.)
उ०—हचकै बहु बैल करै हमला, टहलै लगि गैल गयद टला ।
—मे म.
हचकणहार, हारौ (हारी), हचकणियौ—वि० ।
हचकिश्रोडौ हचकियोडौ हचकयोडौ—भू० का० कृ० ।
हचकीजणौ, हचकीजबौ—भाव वा० ।
हचकाडणौ, हचकाडबौ—देखो 'हिचकाणौ, हिचकाबौ' (रू भे)
हचकाडणहार, हारौ (हारी), हचकाडणियौ—वि० ।
हचकाडिश्रोडौ हचकाडियोडौ, हचकाडयोडौ—भू० का० कृ० ।
हचकाडीजणौ हचकाडीजबौ—कर्म वा० ।

हुचकाड़ियोड़ौ—देखो 'हिचकायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हुचकाड़ियोड़ी)
हुचकाणौ, हुचकाबौ—देखो 'हिचकाणौ, हिचकाबौ' (रू भे.)
हुचकाणहार, हारौ (हारी), हुचकाणियौ—वि० ।
हुचकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हुचकाईजणौ, हुचकाईजबौ—कर्म वा० ।
हुचकायोड़ौ—देखो 'हिचकायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. हुचकायोड़ी)
हुचकावणौ, हुचकावबौ—देखो 'हिचकाणौ, हिचकाबौ' (रू भे)
हुचकावणहार, हारौ (हारी), हुचकावणियौ— वि० ।
हुचकाविश्रोड़ौ, हुचकावियोड़ौ, हुचकाव्योड़ौ - भू० का० कृ० ।
हुचकावीजणौ, हुचकावीजबौ—कर्म वा० ।
हुचकावियोड़ौ—देखो 'हुचकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री हुचकावियोड़ी)
हुचकियोड़ौ—देखो 'हिचकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री हुचकियोड़ी)
हुचकौ—देखो 'हिचकौ' (रू. भे.)
उ०—१ हे ! असि तरवार रा धावण सुधारण वाळा री स्त्री असिधावण री लुगाई थारै पीव रै हाथां री बलिहारी धारणा लेऊं इसी तरवार खुरसाण चढाय तयार कर दीधी है। सो रिण मैं दुसमणां ऊपरै झाटकतां हाथ रै नाम भर झटकौ हुचकौ नहीं आवै जिण दुसमण माथै वहै सो निरलंग होतौ निजर आवै ।
—वी. स टी.
उ०—२ इण समै रा कापुरसां (कायरां) नै बिरदाय माडाणी जोतिया पिण गाडौ किणसूं ही खांचियौ नहीं। सो खेचाताण करी पण उठै हीज हुचका खावै पण चलै नहीं जद उण हीज वीर धवळा रो वाळक वांघडो, तिकौ हीज इण सकट रै कंध लगाय नै ताड़कै छै—अरथात म्हारौ पिता जिण गाडा रै बोझ जुड़ौ थौ कायरां सू खचै नहीं हू ईंज खेंचसूं ।—वी. स. टी.
हुचक्कणौ, हुचक्कबौ—देखो 'हिचकणौ, हिचकबौ' (रू. भे.)
हुचक्कणहार, हारौ (हारी), हुचक्कणियौ—वि० ।
हुचक्किश्रोड़ौ, हुचक्कियोड़ौ, हुचक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हुचक्कीजणौ, हुचक्कीजबौ— भाव वा० ।
हुचक्कियोड़ौ—देखो 'हिचकियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री हुचक्कियोड़ी)
हुचण—देखो 'हिचण' (रू. भे.)
हुचणौ, हुचबौ—देखो 'हिचणौ, हिचबौ' (रू. भे.)
उ०—१ जमी पुड़ धरहरै उडै रूका जरक, देख कपणां धरक पीठ दीधी। हुचण रण सुकर जम दाढ ग्रहियां हुरक, करी बाळै भसुड कीधी ।—गुलाबसिंघ रावत रो गीत
उ०—२ 'हमला' हर भाळै जुध हुचियो, रजवाळी कुळ नाम श्रभंग। चल चल धुपै खेचर ताळी, भूतेसर वाळौ चित भंग।
—केसरीसिंह चुंडावत रो गीत
हुचणहार, हारौ (हारी), हुचणियौ वि० ।
हुचिश्रोड़ौ, हुचियोड़ौ, हुच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हुचीजणौ, हुचीजबौ—भाव वा० ।
हुचां—क्रि. वि.— शीघ्रता से, जल्दी से ।
उ०—श्रा कैयनै वा तौ राचाणी धैरा गे पडण सारू हुचां हुचां वहीर व्हैगी ।— फुलवाड़ी
हुचियोड़ौ— देखो 'हिचियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री हुचियोड़ी)
हुचीड़ौ, हुचीड़ौ—स. पु —१ जोर का धक्का, जोर का झटका ।
उ०—१ उदास मन सूं वानै किणाईं ठिरडतौ ठिरडतौ मोटर मैं श्राय नै बैठ्यो तौ बैठता पाण एक जोर रा हुचीड़ा सागै वा स्टारट होगी ।—श्रगरचूंनड़ी
उ०—२ मोटर री चाल रै सागै थां खुसी पण सरसर वधतीज जावती श्रोर मोटर रा हुचीड़ा रै सागै उणांरी उछाळ पण श्रावता रैवता । - श्रगरचूंनड़ी
उ० ३ श्राख्या रातरी श्रोळू री कावड़ धूमण लागी इज ही कै राहड़ी रो हुचीड़ लाग्या उणनै चेतौ व्हियौ ।—फुलवाड़ी
२ जोर की टक्कर।
हुचोळणौ, हुचोळबौ— देखो 'हिचोळणौ, हिचोळबौ' (रू. भे)
उ०—हाथळां गळा कुंभाथळां हुचोळै, मैंगळां दळां भुजबळां गारै। बाधा इसा गळै सांकळी गजोथर, धणी देवै 'अभौ' अजस धारै।—लखपत इसा रो गीत
हुचोळणहार, हारौ (हारी), हुचोळणियौ वि० ।
हुचोळिश्रोड़ौ, हुचोळियोड़ौ, हुचोळ्योड़ौ— भू० का० कृ० ।
हुचोळीजणौ, हुचोळीजबौ—कर्म वा० ।
हुचोळियोड़ौ—देखो 'हिचोळियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. हुचोळियोड़ी)
हुचोळौ—सं. पु —वाहनों पर चलते समय आने वाला हल्का झटका या झोंका ।
उ०—लोभाणी नचोळा नेह नसा रा कचोळा लेती, भारी अंग अचोल सचोळा लेती भाव । करां केतकां रै लचोळां लेती तूंजी कना, नक्र रै मचोळा सूं हुचोळा लेती नाव ।—र हमीर
२ धक्का, टक्कर।
३ तरंग, लहर, हिलोर।
हुज—देखो 'हज्ज' (रू. भे.)
उ०— १ मैं सुणी छै थे हुज घणी कीधी छै। थां एक हुज रौ फळ म्हांनूं वेचौ तौ थांनूं संपति मिळै मोनूं धरम जुड़ै ।—नी. प्र.
उ०—२ अकबर कसमीर मे जद खबर मक्का री हुज करण मुसळमांन जाता हा हिंदसू ज्यांनूं बळोचा लूटिया। श्रा बात

सुणता ही अकबर नाक सळ घालियौ तीरै मार बफादार राजा बीरबळ वलोचा माथै विदा होतौ हुवौ।—बा दा ख्यात

हजम—वि. [अ] जो खा लेने के बाद आमाशय मे पच गया हो, पचा हुआ।

२ दबाया हुआ, अधीकृत किया हुआ।

स. पु —सिंह के अगले स्कन्ध के पास की एक हड्डी जिसे चाट कर वह खाना हजम करता है।

उ०—डाक्या घर डाकी सुहड, डट लै ले न डकार। हजम चाट जिम सिंह हजम, करे खूब खज खार।—रेवतसिंह भाटी

हजरत, हजरति—स पु [अ हज्रत] १ आदर या सम्मान-सूचक शब्द, श्रीमान।

उ०—१ उठै जायनै साहिजादी सिसोदिया सिवारौ सैमान कराय दियौ। नै पातसाहजी सू मालम कियौ—'पातसाह सलामत'! मोनू नदी माहै सू वूडती नू एकै सिसोदियै राणा रै भाई काढी छै। तिणनू म्हैं भाई कहि बोलायौ छै, सो हजरत उस कू पावा लगावौ नै चाकर करौ।—नैणसी

उ०—२ जे थे बादसाही चाकर सै छौ थे हरामखोर सू क्यू सामल हुवा? तद इहा कहाई—जे हरामखोर हजरत का भी न है। पाजी मुह से हजूर मे गैरजबान बोलै सो कैसे।

—अमरसिंह गजसिंहोत री बात

उ०—३ म्हारी लोक आधौ मुलक सीरोही री पातसाही खालसे कीयौ छै, तठै थाणौ राखियौ छै। हजरत रै दाय आवै तिण जागीरदार नू दीजै, भावै करोडी भेजीजै, राव हुकमी चाकर छै।

—नैणसी

२ बादशाह।

उ०—पीछै घोडा हजार तीन सू मीर हमजौ चढियौ। पीछै प्रथीराजजी कासीद अमरसिंघजी नू मेलियौ, कै मैं दोय बात री हजरत सू पैज करी है, सू मारण वालै नू मारजे वा पकडीजै मती।

—द. दा

३ महात्मा, महापुरुष।

४ चालाक, दुष्ट या लुच्चा व्यक्ति। (व्यग्य)

रू. भे —हजरति, हजरत्ति, हजरथ, हजरिति।

हजरतसलामत—स. पु. [अ. हजरतसलामत] प्रतिष्ठित व्यक्तियो के लिए सम्बोधन वाचक शब्द।

२ माननीय पुरुष, सज्जन पुरुष।

हजरति, हजरत्ति, हजरथ, हजरिति—देखो 'हजरत' (रू भे)

उ०—१ अवलीए आसलीक कवलै जिहानिआ हजरति पातिसाह मुहमद मुसतफाखान रा उमराउ हुसन हुसेनखा अलीखान सरीखा गोरी, पठाण, सैद, मुगळ, उजबका मुसलमान आकीनदार, त्रीस सीपारा रा पढणहार, पाच बखत निवाज रा करणहार, सुद्ध कलमे रा पढणहार, पेसता, आरबी, पारसी रा बोलणहार, आउली ढाढी राखणहार।—रा सा स.

उ०—२ सहर देखै दिली मिळै पातिसाह सू, खलक देखत सिवौ नांम खारै। आवियौ वळै कुसळै वळै आप रे, हाथि घसि रह्यौ हजरत्ति हारै।—ध. व. ग्र

उ०—३ हुसम हुकम सौपीआ छै। हजरिति सू मालिम छै। राजान कुअर बत्रीस लक्षणौ छै।—रा सा स

हजांम—स पु [अ हज्जाम] हजामत बनाने वाला, नाई।

हजाज—स. स्त्री. [अ. हजाज] १ बफा।

उ०—अर हजाज री बात चालै तरै उण नू अन्याय रे कारण सारा धक धक करै नै स्राप देय।—नी प्र

हजामत, हजामति—स. स्त्री [अ] १ सिर या दाढी के बाल कटाने या बनवाने की क्रिया, क्षौर।

उ०—हजामति कराडि अर सहु कही ठाकुरा नै कहियौ जु डाढी रखावौ।—द वि

क्रि प्र – करणी, कराणी, बणवाणी, बणाणी।

२ बढे हुए बाल जो हजामत की श्रेणी मे आते है।

क्रि प्र —कराणी, बढणी, बढाणी, बधणी, बधाणी।

३ ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी से जबरन कुछ ले लिया जाय, ठगी। (व्यग्य)

क्रि प्र —करणी, होणी।

मुहा —बिना पाचणी हजामत करणी=जबरदस्ती खर्चा कराना।

हजार—वि [फा] सौ का दस गुना, दस सौ, सहस्त्र।

स पु —२ एक सख्या जो सौ की दस गुणी होती है, सहस्त्र की सख्या।

उ०—१ सेना सितर हजार सू, विचित्र अमित्र बळवान। कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वरखान।—रा रू.

उ०—२ दलाल सै चीज वसत मिला'र हजार खड तौ देणा ही पडेला नही चौखी कोनी लागै।—दमदोख

२ उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०००।

हजारमेखी—वि —जिसकी बनावट मे हजार मेखें (कीले) लगी हो, हजार मेखो वाला।

स. पु —एक प्रकार का कवच।

उ०—हजारमेखी दसतौ हाथ मे पहरिया जैमळजी रात रा तीनू पहरारी चोकी मे आप फिरता। संग्राम नामा बदूक अकबर रा हाथ री छूटी। गोळी जैमल रै लागी।—बा दा. ख्यात

हजारवौं—वि —१ हजार के स्थान पर होने वाला।

२. ९९९ के बाद वाला।

स पु.—किसी इकाई का हजारवा अश या भाग।

उ०—ऐडी अकल रौ हजारवौं रेसोई हाथ आय जावै तौ निहाल

न्है जावै ।—फुलवाडी

हजारी–सं पु.—१ एक हजार मुद्रा के मूल्य का घोड़ा ।

उ०—आण पाखर भरणा हजारी लड़छिया, रोळ भुज वडछिया रचण राडा । कर मछर धाडवी लियण वित कडछिया, धडछिया 'चडरज' भुजा धाड़ा ।—हम्मीरसिंघ चूडावत री गीत

२ एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा ।

उ०—असली जावा कोल बोल रा राखणहार, गाजी बहादर ताजक नीलक तार, जरबाफ, बादलो आरावरी, विलाती, हजारी कपडै रा पहरणहार, वेस वेस रा, जाति जाति रा मीरजादा भेळा हूआ छै ।—रा. सा. स

३ एक हजार सिपाहियों का सरदार, सेना नायक ।

उ०—१ हजूर अमीर खड़े नामदार सकल । कमरदीखान दोरा तुररावाज बगस । साहि का दरगाह पनाह निजर आवै, बारे बारै हजारियां की गिनत को पावै ।—रा रू.

उ०—२ असुरा झाट झड़ दीयतो अमरसिंघ, थाट हजारी तणो थड़ियो । हुआ कोई गोम पुड वोम पुड हेकठा । खिवी खागण किना वजर खिरियो ।—राव अमरसिंह राठौड़ रो गीत

वि.—१ हजार के मूल्य का ।

उ०—उवा घोड़ा दीठा । रख नै राजा नै कहीयो, 'घोडा सखरा आया । राज, हजारी छै पण लाखी नहीं ।—हाहुल हमीर री बात

२ हजार का, हजार से सम्बन्धित ।

३ हजार की गणना मे, तादाद मे ।

उ०—पण करणी गोमदै री आयेली, हजारी रकम भळै धाने ।

—दसदोख

४ हजार वर्षों की ।

उ०—लोटो पाछो पकडावतां बोल्या—जीवतो रै भाया—राम थारी हजारी ऊमर करै ।—बिज्जी

५ वर्ण संकर, दोगला ।

६ हजारे का ।

उ०—कुसुमल पाग केसरियो जागा, ऊपर फूल हजारी । मुकुट ऊपरे छत्र बिराजे, कुंडळ की छबि न्यारी ।—मीरां

७ देखो 'पचहजारी' (रू. भे.)

हजारीगुल–सं. पु.—एक प्रकार का पुष्प ।

उ०—बना मैं थानै फूरमल यूं कयो, जटके ने सरवरियै मत जाय बना, पिणियारिया री नीजर लागणी, रायजादी हजारीगुल रो फूल, तुरा री लीजी पाकडी ।—लो. गी

हजारीघास–स. स्त्री.—एक विशेष प्रकार की घास, जिसे महीन पीस कर फोडे फुंसी के लगाते है ।

हजारीसदी–स. पु. [फा. हजारी+अ. सद्] हजारवां महोत्सव ।

हजारीहफत—देखो 'हफतहजारी' (रू. भे.)

उ०—मुरतबो हजारीहफत महि, पांन प्रहतां पावियो । इम विदा होय मुवफरअली, 'भजण' भूप दिस आवियो ।—सू प्र.

हजारू–वि [फा हजार+रा प्र. ऊ] १ कई हजार, सहस्त्रों ।

उ०—१ पण अटकल जांणै न ढंग, कोरी करडावण री रंग । हजारूं भेळा करै अर ऊभा सूंधा लगावै, बीच-बीच मे बुही पायतो जावै ।—दसदोख

उ०—२ साभर सुड सुड सरै, रचावै जग रौ रोळा । पच भद्रा रै पीड, हजारू हिवडै खोळा । डीडवाण रो डील, विगाडै आवम आखो । खारी भीला खपै, नीकाळै लूण लाखो ।—दसदेव

२ अत्यधिक, बहुत ।

३ हजारों की तादाद मे ।

उ०—१ बडला रै नीचै हजारू मनुष्य भेळा थया । घणा उछव मोच्छव सहित स्वामीजी रै हस्तै दोक्षा लीधी —भिक्खु

उ०—२ रोवट हजारू जीवां नै मार एक दिन मरणी तो है ईज ।

- फुलवाड़ी

रू भे—हआरा ।

हजारेक–वि. यौ [फा हजार+रा प्र. एक] एक हजार के लगभग ।

उ०—और केई हिंदू रजपुत काम आया था त्यारा प्रसंगी भाई आदमी हजारे'क आहरला आया था त्यांनू तो परा लांन उठै ही जे दिकाया था ।—सूरेखांन कांधलोत री बात

हजारौ–स. पु.—१ पीले और लाल रंग का छोटी छोटी पत्तियों का फूल ।

उ०—केवड़ की बाडी सिरू का विकास । नाफरमां हजारा और गुलहूवास । गुललाल के ऊपर सुरगुलं का प्रकास ।—सू. प्र

२ उक्त फूल का पौधा, जो प्रायः सर्दी मे फूल देता है ।

अल्पा.—हजारि ।

हजुरि—देखो 'हजूरी' (रू भे.)

उ०—याद कियौ हरि पदमया मै, दिया निवाण पठाय । कृपा करी हरि परि, लियौ हजुरि बुलाय ।—रुकमणी मगळ

हजूमी–वि —प्राकृतिक, नैसर्गिक ।

उ०—धुमी घणाहर री घटा, बिरछां लूमी बेल । नरां विलूमी नारियां, खरी हजूमी खेल ।—सिवबगस पाल्हावत

हजूर—देखो हुजूर' (रू भे)

उ०—१ आळसवां अणजाणवां, दिल खोवतां दूर । साहिब सांचा साधवां, है हाजरा हजूर ।—ह. र.

उ०—२ मीरां कूं प्रभु परच्यो दीन्हो, दिया रे खजीना भरपूर । मीरा के प्रभु गिरधरनागर, धणी मिळ्या छै हजूर ।—मीरा

उ०—३ तेरे तो आसांन राम, मेरे बोहत जरूर । हरीयै कु आपनी राखो रांम हजूर —अनुभववांणी

उ०—४ दोढीया जाय दरबांन नै खमा है कहवायो । बारै ढाढी ऊभा छै । कवरजी कह्यो हजूर आवै ।—द्वो. मा.

उ०—५ जात री दरोगी, हजूर री धाभाई दावो । डरतो सो

सिंघ लिखै, मरतौ सो आपरो नाव माडै ।—दसदोख

उ०—६ अर ओर भी भाई भतीजा बडा बडा रजपूतवट रा सुभाव लीधा थका रावत प्रतापसिंघ री हजूर रहै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—७ सो अमरसिंघ सिरसो बडो भाई बिगोई बादसाह री हजूर रहवै छै तीनू रोवै छै।—राजसिंघ री बात

उ०—८ तिको फौज सु अळगो निसरे थो, तरा रजपूता दीठो। गोहरी नै पकडियो, तिको रावजी रै हजूर आण्यो।

—राव रिणमल री बात

उ०—९ सु हाथी लिया लिया सहर आया। ताहरा सेतरामजी राजा री हजूर आया।—नैणसी

उ०—१० दिस कमधा पैसौर, व्यास मोकळे दिलासा। आवौ सूझ हजूर, सूर साखेत सज्यासा।—रा रू

उ०—११ ताहरा राजा कह्यो, माणस किसडोक छै? हजूर आवण लायक छै क ना? विदा नाहर सो ही दीजे।

—मूळवै सागावत री बात

उ०—१२ जनहरि राम जहा घर पाया, जनम मरण संदेह मिटाया। बिन गुर गम देखै नर दूरा, ब्रह्म बताया आप हजूरा।

—हरिरामदास जी महाराज

हजूरि—देखो 'हुजूरी' (रू भे)

उ०—भूरसिंघ नाथावत डूगरचा ठिकाणै। भेज्यौ हजूरि को तमाम फौज जाणै।—शि. व

उ०—२ पछतावैगो प्राणिया, हरि सू पडसै दूरि। हरीया पहली चेत लै, तन मन थकै हजूरि।—हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ पतिवरता सो जाणियै, हरि सू नित हजूरि। जनहरिया बिभचारणी, तन नेडी मन दूरि।—हरिरासदास जी महाराज

हजूरिय—देखो 'हुजूर' (रू. भे.)

उ०—पूर अपूरिय आस, तौ पिण उमरथी पूरिय। हाथ जुडत तिल चढ न, हाथ ढुळ हाथ हजूरिय।—र ज प्र.

हजूरियौ—देखो 'हुजूरी' (अल्पा; रू भे)

उ०—१ तद एक हजूरियै कही—जी हजरत सलामत, जे तकसीर माफ़ हुवै तौ अरज करू, बेअदबी की अरज छै।

—जलाल बूबना री बात

उ०—२ इतरै कुंवर विचित्र नू बुलायौ सो कुवर पोसाख भली भाति सू करि, आपरा हजूरिया नै साथै ले आयौ।

—पलक दरियाव री बात

हजूरी—देखो 'हुजूरी' (रू. भे)

उ०—१ कुवर दैपाळदे री हजूरी पासै मुहतौ नेणादास, चदन छडीदार सारा ही नै राजा कनकरथ ज्यू था त्यूही राख्या।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ अ चहुवांण हजूरी आया, भूपति तणै सदा मन भाया। खगि ऊधरौ 'दलावत' 'खेतौ', दीठौ बळ वाका छळ देतौ।

—रा रू

उ०—३ म्हारा हरिजी, चाकरी री चाह म्हारे मन राखोला सरण हजूरी। बैल बधावौ भावै घोडा बधावौ, चाहे करावौ मजूरी।—मीरा

उ०—४ तठा उपरायत गगेव नीबावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखा करै छै। कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया नारगिया सपेत —रा सा स

उ०—५ सेवग हाजरि चाहिजै, साहिब सदा हजूरि। पून्यू पूरा चद ज्यू, जहा तहा भरपूरि।—ह पु वा

उ०—६ हर रोज हजूरी होइ रहु, काहे करै कळाप। मुल्ला तहा पुकारियै, जह अरस इलाही आप।—दादूबाणी

उ०—७ अन्त—'रग छहरते है। कपडे पहरते है। तोसक मीलया-वता है। हजूरी पावता है। चढते उतरते पाव दे सलाम करावदे है।—रा सा स

हजूरीवांन - देखो 'हुजूरीवान' (रू भे)

उ०—हरीया हौदै बैस करि, निजर लगी असमान। कै आगै पुठा खडा, केई हजूरीवांन।—हरिरामदास जी महाराज

हज्ज—स पु [अ] मुसलमानो का एक धार्मिक कृत्य, जो उन्हे मक्का और मदीना मे जाकर करना पडता है, तीर्थ यात्रा।

वि. वि.—धनाढ्य लोगो को उम्र मे एक बार इसके करने का हुक्म है।

क्रि प्र —करणी।

रू भे.—हज।

हझार—देखो 'हजार' (रू भे)

हट—१ देखो 'हाट' (रू. भे.)

उ०—१ हट अटा हेम नग जटित हीर, धज कोटि कोटि ऊपर सधीर। हिम हीर गोख जाळी हजार, दमकत जोति अति जिल-हदार —सू प्र

उ०—१ जनहरीया मन एक बिन, मिळै न सौदै सट। जुग सारौ फिर आवीयौ, लख चौरासी हट।—अनुभववाणी

२ देखो 'हठ' (रू भे.)

हटक, हटकण—स. पु —१ भय, डर।

मुहा०—हटक मे रखणौ=आतक में रखना।

२ आज्ञा, अनुशासन।

मुहा —हटक मे रहणौ=आदेशो का पालन करना।

३ रौब, धाक।

४ मर्यादा, सीमा, बधन।

मुहा —हटक मे राखणौ=मर्यादा या सीमा मे रखना।

५ मना करने का भाव, वर्जन।

६ हाँकने की क्रिया या भाव।

७ नियंत्रण।

हटकणौ, हटकबौ—क्रि. स.—१ मना करना, वर्जन करना, रोकना।

उ०—१ जीवतौ देख दया उपजी। खमीचार री क्रोध उपज्यौ। उरण नू हटकिया। तरै वै मसकरी करण लागा।

- कल्याणसिंघ वाढेल री बात

उ०—२ थारो रूप देख्यां अटकी। कुळ कुटंब सजण सकळ बार बार हटकी, बिसरयां ना लगन लगा मोर मुगट नटकी।—मीरा

उ०—३ किणरोई रह्यौ न हटकियौ, निज हठ कियौ निभाव। वाळै ज्यूंइ वळियौ नहीं, बाळापणै ई सुभाव।—जैतदांन बारहठ

२ डाटना, धमकाना, फटकारना।

उ०—ताहरा आनै रै कुंवर नूं खबर गई जु थोरियै, जिनावर मारियौ छै। ताहरा कुंवर आयौ। थोरिया नू हटकिया।—नैणसी

३ पीछे हटाना, परास्त करना।

उ०—वांसै बरदेत कमध बळ वाळै, छतीस भुजा डंड लेय। राणा रावळ राव मुरडता, दोयण हटक्या वीरम देव।

—वीरमदेव गेडलिया री गीत

४ प्रतिबन्ध लगाना, रोक लगाना।

उ०—गोविंद सूं प्रीत करी, तब ही क्यों न हटकी। अब तो बात फैल गई, जैसे बीज अटकी, बीच को बिचार छांडि, पारि प्रीति अटकी।—मीरा

५ हटाना, दूर करना।

६ नियन्त्रण मे रखना, नियंत्रण रखना।

उ०—१ हरीया पांच पचीस कु, हटिक्या रहै न राखि। जिन राख्या जिन सहज सु, रांम नाम कु आखि।—अनुभववाणी

उ०—२ चाली चटकी भव भटकी, माच्यौ हूँ विधि नटकी राजि। दिव मन हटकी आपसी अटकी, लागी तुम्ह पाय लटकी।—मीरां

उ०—३ मन नै हटक, भटक मती मूरख। घट मैं धीरप राख घणी।—भीखजी रतनू

हटकणहार, हारौ (हारी), हटकणियौ—वि०।

हटकिओड़ौ, हटकियोड़ौ, हटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हटकीजणौ, हटकीजबौ—कर्म वा०।

हटकारणौ, हटकारबौ—रू० भे०।

हटकारणौ, हटकारबौ—देखो 'हटकणौ, हटकबौ' (रू भे.)

हटकार—स. स्त्री.—लानत, फटकार।

हटकारियोड़ौ—देखो 'हटकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हटकारियोड़ी)

हटकारौ—वि.—१ वर्जन, निषेध।

२ डांट, फटकार।

३ हटने की क्रिया या भाव।

४ मूंछो पर ताव देने का भाव।

उ०—भीरू आरातुर मूंफाड़ा भाजै, बैंतां फुरणा रा फूंफाड़ा वाजै। हाळी मूंछ्यां लेता हटकारा, फिरता पूंछां रा देता फटकारा।

—ऊ. का.

हटकियोड़ौ—भू का. कृ—१ मना किया हुआ, रोका हुआ, निषिद्ध वर्जित २ डाटा, फटकारा हुआ, धमकाया हुआ. ३ पीछे हटाया हुआ, परास्त किया हुआ. ४ रोक लगाया हुआ, प्रतिबंधित, ५ हटाया हुआ, दूर किया हुआ ६ नियमित।

(स्त्री हटकियोड़ी)

हटकी हटकी—अव्य. [अनु.] अटक-अटक कर, रुक-रुक कर।

उ०—माधव! मन गाहरा माहि, तई बधिस हींदोल। हटकी-हटकी हींचता, हुईहड हाल कलोल।—मा कां प्र.

हटक्क—देखो 'हटक' (रू भे.)

उ०—इम आवै इक ऊपरां, हाटी लोप हटक्क। सलभ मुआ सिर सक्रमे, कीडी जेम कटक्क।—बां दा.

हटड़ी—सं. स्त्री. १ काष्ट या धातु निर्मित खानेदार वह पात्र, जिसमे नमक, मिर्च आदि मसाले रखे जाते हैं।

२ दीवार मे आळे (ताक) की तरह रखी जाने वाली जगह, जिसके कपाट भी लगाते है। (शेखावटी)

३ देखो 'हाट' (अल्पा; रू भे.)

उ०—ध्यान ध्यान का तोला तकड़ी, डिगै न मन की डांडी। सुरत निरत सु तोलण लागा, काया हटड़ी मांडी।—अनुभववाणी

हटड़ौ—स. पु—१ वह स्थान जहां एक ही व्यवसाय की कई दुकानें हो।

उ०—हाट बजार री गर सुनारां रै हटड़ां री सोभा देख'र बगता री आख्यां खुली री खुली रैवै ही।—दसदोख

२ देखो 'हटडी' (मह, रू भे.)

हटणौ, हटबौ—क्रि अ — १ किसी स्थान को छोड़ कर इधर-उधर होना, सिरकना, खिसकना। स्थान से टल जाना, हट जाना।

उ०—अरि भाड खगे 'अगजीत' छळ, पडे फील खाते पटे। धर आध जको ऊबां' धरां, आहव आध न भो हटै। रा. रू.

उ०—घटियौ बळ देतां थयां, हटियौ नह हारे। रांम हुकमि भड रांग रै, वार भ्राटि करारे।—सू प्र.

२ किसी बात या काम का नियत समय स आगे सरकना, समय टलना। स्थगित होना।

४ दूर होना, न रहना, मिटना।

५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ़ न रहना। विचलित होना।

६ दूर रहना, अलग रहना, अन्यत्र रहना।

उ०—सारास वीर पुरसां री पक्की विसय दुर वासना सूं हटीयोड़ी रहै है नै आपरा पुराणा वैर लेवणा रात दिन धाटघड मे वणिया रह है।—वी. स. टी

हटणहार, हारौ (हारी), हटणियौ—वि०।

हुटिग्रोडौ, हुटियोडौ, हुटयोडौ—भू० का० कृ० ।
हुटीजणौ, हुटीजबौ—भाव० वा० ।
हुठणौ, हुठबौ—रू० भे० ।
हुटताळ—देखो 'हुडताल' (रू भे.)
हुटवांणीयौ–स पु—व्यापारी, दुकानदार ।
उ०—तौ कह्या—'मुहर केथी करो ?' कह्यौ—जी हुटवांणीयौ नु वेषा छा । तीयँ मुहर में इतरौ रोज लेवा छा ।
—स्यामसुदर री बात
हुटवाडी, हुटवाडौ–स पु—१ सप्ताह मे किसी नियत दिन लगने वाला बाजार या हाट ।
उ०—१ सतगुरु माथै कर धरचा, सोवत लिया जगाय । सोवण री बिरीया नही, यहि हुटवाडे आय ।—ह पु वा
उ०—२ काचौ देह तणौ कमठाणौ, पडतां नह लागै पलक । दुनिया तणी निहली दौलत, हुटवाडा वाली हलक ।—बा दा.
२ हाट समूह । वह स्थान जहा बाजार लगता हो ।
उ०—दुनिया सब काम पाच दिन आया महमाणा, हुटवाडा ससार है बाजार मडाणा । सब आयै व्यापार कू ले करम किराणा एका लाभ विसाविया, मुळ हेक ठगाणा ।—केसोदास गाडण
३ बाजार ।
रू. भे —हुठवाडौ ।
हुटवाणौ, हुटवाबौ–क्रि स.—['हुटणौ' क्रिया का प्रे. रू] १ किसी स्थान को छुडा कर इधर-उधर कराना, खिसकवाना, टलवाना ।
२ सामने से दूर चले जाने मे प्रवृत्त करना, विमुख कराना ।
३ किसी बात या काम को नियत समय से टलवाना, स्थगित करवाना, आगे सरकवाना ।
४ दूर करवाना, न रखवाना, मिटवाना ।
५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ न रहने मे प्रवृत्त करना, विचलित करना ।
६ दूर, अन्यत्र या अलग रहने के लिये प्रेरित कराना ।
हुटवाणहार, हारौ (हारी), हुटवाणियौ—वि० ।
हुटवायोडौ—भू० का० कृ० ।
हुटवाईजणौ हुटवाईजबौ—कर्म वा० ।
हुटवाडणौ, हुटवाडबौ, हुटवावणौ, हुटवावबौ—रू० भे० ।
हुटवायोडौ–भू का कृ—१ किसी स्थान को छुडा कर इधर-उधर कराया हुआ, सिरकाया हुआ, खिसकाया हुआ २ सामने से दूर चले जाने मे प्रवृत्त किया हुआ विमुख कराया हुआ. ३ किसी बात या काम को नियत समय से टलवाया हुआ, स्थगित कराया हुआ, आगे सरकवाया हुआ ४ दूर कराया हुआ, न रखवाया हुआ, मिटवाया हुआ ५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ न रहने मे प्रवृत्त किया हुआ, विचलित कराया हुआ ।
६ दूर, अलग या अन्यत्र रहने के लिये प्रेरित करवाया हुआ ।
(स्त्री हुटवायोडी)
हुटवावणौ, हुटवावबौ—देखो 'हुटवाणौ, हुटवाबौ' (रू भे)
हुटवावियोडौ—देखो 'हुटवायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री हुटवावियोडी)
हुटवौ–स पु—हाट पर बैठकर सौदा बेचने वाला, दुकानदार, व्यापारी ।
उ०—मा, सहस बजारा मे मैं गयी जे, मा, हुटवा सै खोली अे हाट, बाजीगर का कम रह्या जे ।—लो गी
हुटाडणौ, हुटाडबौ—देखो 'हुटाणौ, हुटाबौ' (रू भे)
हुटाडणहार, हारौ (हारी), हुटाडणियौ—वि० ।
हुटाडिग्रोडौ, हुटाडियोडौ, हुटाड्योडौ—भू० का० कृ० ।
हुटाडीजणौ, हुटाडीजबौ—कर्म वा० ।
हुटाडियोडौ—देखो 'हुटायोडौ' (रू भे)
(स्त्री हुटाडियोडी)
हुटाणौ, हुटाबौ–क्रि स—१ किसी स्थान से इधर-उधर करना, सिरकाना, खिसकाना, स्थान से टालना, हटाना ।
२ सामने से दूर करना, विमुख करना ।
३ किसी बात या काम को नियत समय से आगे सरकाना या समय टालना, स्थगित करना ।
४ दूर करना, मिटाना, न रखना ।
उ०—मीरा के प्रभु सदा सहाई, राखै विघन हटाय । भजन भाव मे मस्त डोलती, गिरधर पै बळि जाय ।—मीरा
५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि से डिगाना, विचलित करना ।
६ दूर अलग या अन्यत्र रखना ।
हुटाणहार, हारौ (हारी), हुटाणियौ—वि० ।
हुटायोडौ—भू० का० कृ० ।
हुटाईजणौ, हुटाईजबौ—कर्म वा० ।
हुटायोडौ–भू का कृ—१ किसी स्थान से इधर-उधर किया हुआ, खिसकाया हुआ, टाला हुआ, हटाया हुआ. २ सामने से दूर किया हुआ ३ किसी बात या काम को नियत समय से आगे सरकाया हुआ, या समय टाला हुआ, स्थगित किया हुआ ४ दूर किया हुआ, मिटाया हुआ, न रखा हुआ. ५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि से डिगाया हुआ' विचलित किया हुआ ६ दूर, अलग या अन्यत्र किया हुआ ।
हुटारडी—देखो 'हाट' (अल्पा; रू भे)
उ०—अकबर सै रूप लोभी रे खोभी नही कटारडी । पर नार बेटी वळ बोल्यौ, हुटबै हाट हुटारडी ।—नारी सईकडो
हुटाळ, हुटाळौ—देखो 'हुटी' (मह; रू भे)
उ०—१ कमठाळ हुटाळ डला कळता, वह लावैय पीठ वसै वळता ।

कळ अजर गूडर माग किया, लख आरोध डूंगर ठेक लिया ।
—पा. प्र.

उ०—२ सालिया घणा छाती वचन साल रा, बेसरफ काळ रा नाद बागा । हटाळा 'सादवत' मोहर नड़ हाल रा, भीम जै गाल रा बिनै भागा । —जसवंतसिंह चूंडावत री गीत

हटावणो, हटावबो—देखो 'हटाणो, हटाबो' (रू. भे.)

उ०—चगरथां सथा हेडवै खग 'चापा', करै हाथिया हाथ आराथ 'कूपा'। 'करनोत' कूंता अरी नाग काळा, हटावै धुजै सिंघ जेहा हठाळा ।—रा. रू.

हटावणहार, हारौ, (हारी), हटावणियौ—वि० ।

हटाविओड़ौ, हटावियोड़ौ, हटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हटावीजणौ, हटावीजबौ—कर्म वा० ।

हटावियोड़ौ—देखो 'हटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हटावियोड़ी)

हटि—स. स्त्री.—१ शरीर की बनावट ।

२ शक्ति, बल, ताकत ।

३ देखो 'हठ' (रू. भे.)

उ०—हरीया होडा होड करि, हटि पचि मरो न कोय । सहज रांम सुख पाईये, भाव भजन गुर होय ।—हरिरांमजी महाराज

४ देखो 'हाट' (रू. भे.)

५ देखो 'हठी' (रू. भे.)

रू. भे.—हटी, हट्टि ।

हटियाळ—देखो 'हठी' (रू. भे.)

उ०—लुळ वाळ करा पुण चाळ लियूं, कर कोध कबांण कुंडाळ कियूं । धुरजाळ उलाळ भताळ धसै, हटियाळ कांधाळ कराळ हसै ।—पा. प्र.

हटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी स्थान को छोड़कर इधर-उधर हुवा हुआ, सिरका हुआ, खिसका हुआ, टला हुआ, हटा हुआ. २ सामने से हटा हुआ, विमुख हुवा हुआ. ३ कोई बात या काम समय से आगे सरका हुआ, समय टला हुआ, स्थगित हुवा हुआ. ४ दूर हुवा हुआ, मिटा हुआ. ५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ़ न रहा हुआ, विचलित हुवा हुआ ६ दूर, अलग या अन्यत्र हुवा हुआ ।

(स्त्री हटियोड़ी)

हटी—१ देखो 'हटि' (रू. भे.)

२ देखो 'हठी' (रू. भे.)

हटीलो—देखो 'हठी' (रू. भे.)

उ०—सास की जाई मोरी ननद हटीली, यह दुख किण से सहूं । मीरा के प्रभु गिरधरनागर, जग उपहास सहूं ।—मीरां

(स्त्री. हटीली)

हटैल—वि.—हठ वाला, हठी, जिद्दी ।

उ०—कूंभाथळां लागै नरां हैमरां डोहता कोप, हाथळां हाथियां घडा डोहता हटैल । हाक वागा फौज नूं रोहतां लथोबथ्था होय, पाड़ै अरा दूजौ 'दती' नौहथ्था पटैल ।—रांमसिंघ हाडा री गीत

हटोकटौ—देखो 'हट्टोकट्टौ' (रू. भे.)

हटोटी—स स्त्री —कला, बुद्धि, चतुराई ।

उ०—१ बाणिया रै भाई ई हटोटी हाथ लागी । आपरा घर सूं कदै ई संपत खाडी नीं होवण दी पछै संपत री वासो छोड नै लिछमी जावै तो कठै जावै ।—फुलवाड़ी

उ० - २ बुढापै सरधा खूट्यां पछै बेटा पोता नै सगळी माया सूंप दी । वानै ई बिणज री सगळी हटोटियां बताय दी ।—फुलवाड़ी

हट्ट, हट्टण, हट्टन—देखो 'हाट' (रू. भे.)

उ०—१ जावो जीभा ना कहूं, बधो सवाई वट्ट । ऊधडसी या आविया, हेतारथ रा हट्ट ।—जलाल बूबना री बात

उ०—२ तु जा भूंडण आखरा, म्है जाऊं रण वट्ट । मैं'ला रोवाऊं कामणी, मास बिकाऊं हट्ट ।—डाढाळा सूर री बात

उ०—३ पुर पट्टण ज हट्टण बीजपुर, अरि हुवै न जैसिंघ तेणी डर । पुर पटण न हटण न बीजपुर ।—गिरजा राजा जैसिंघ री गीत

हट्टसोभा—स. स्त्री.—दुकानों की छवि ।

उ०—सरवत्र मारग चोखालिया, गोमय पांणी सिचाइ, मचोनमंच बाधा, वानरवालि बाधी, हट्टसोभा सरवत्र रची ।—व. स.

हट्टस्रेणि—स. स्त्री.—दुकानों की कतार, पंक्ति ।

उ०—जै नगर माहइ दानसाला पोसधसाला, धरमसाला, गढ मढ मंदिर प्रकार, चुराली चुहुटानी हट्टस्रेणि. मांहइ वस्त संपूरण भरतइ........ ।—व स.

हट्टांत—अव्य—दुकानों से, दुकान से ।

उ०—कलसांत प्रासाद, नरकांत राज्य, गोरसांत भोजन, अधनांत नियोग, वियवांळ खलमैत्री, गजांत लक्ष्मी, नायकांत समर, हट्टांत व्यवहार, कासवटांत सुवरण्ण, राजसभांत वाद, प्रवासांत स्नेह, नामांत जोस, हारांत स्रंगार, वक्षांत गणित ।—व. स.

हट्टि—१ देखो 'हट' (रू. भे.)

उ०—माळ आवी चउहटइ, गांधी-केराइ हट्टि । हट्ट लूटायइ वाणीयइ बलद नगाना अट्टि । ढो. मा.

२ देखो 'हठी' (रू. भे.)

हट्टीका—देखो 'हट' (रू. भे.)

उ०—सत्र सूत्र घ्रत तैल काठा इत्यादि विचित्र हट्टिका सोभा विसाल रमणीय चतुःसाल द्विभूमिक, त्रिभूमिय, चतुर भूमिकादि नदावरत, स्वस्तिकादि विचित्र प्रासादमाल ।—व. स.

हट्टोकट्टौ—वि. [सं. हृष्ट+काष्ठ] (स्त्री. हट्टीकट्टी) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।

रू. भे.—हटोकटौ

हट्ठ—देखो 'हठ' (रू. भे.)

हट्ठपुट्ठ—वि.—हृष्ट-पुष्ट ।

हठ–स पु [स] १ जिद्द, दुराग्रह।

उ०—१ तरै इण चारण तौ घणी ही उजर कियौ, पण पातसाह हठ पडियौ कहै—एक वार जैसो म्हौनू आखिया दिखाव।

—नैणसी

उ०—२ लाखा बाता हठ लागौ, आयौ खड सोवायत आगौ। बापू तणौ नगारौ बागौ, जागौ सा कमधजिया जागौ।—बरजू बाई

२ अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति या स्नेह पूर्वक किया जाने वाला आग्रह।

उ०–१ बाणियौ तौ ई तिथ नी छोडी। ज्यू बापजी नटिया त्यू वौ घणौ आडौ लियौ। सेवट बापजी नै ई भगत री हठ देख नै निवणौ ई पडयौ।—फुलवाडी

उ०—२ मा, साथणिया अर भाई हठ भेल्यौ तौ राणी नो दिन बळे ढबगी।—फुलवाडी

मुहा —१ हठ करणौ, हठ पकडणौ=किसी बात का जिद् करना, आग्रह करना, बात पकड कर बैठ जाना।

२ हठ मानणौ, हठ राखणौ=किसी के हठ की पूर्ति करना, किसी की बात, इज्जत या मर्यादा रखना।

३ योग के दो भेद राज-योग व हठ योग मे से एक।

उ०—१ साध सोई जाकै सहज समाधि, हठ पचि मरै न और न उपाधि।—अनुभववाणी

उ०—२ सन्यासिए जोगिए तपसि तापसिए, काइ इवडा हठ निग्रह किया। प्राणी भवसागर वेलि पढता, थिया पार तरि पारि थिया।

—वेलि

४ दृढ सकल्प, प्रतिज्ञा।

५ दुश्मन के पीछे से किया जाने वाला आक्रमण।

६ मर्यादा, टेक।

७ जबरदस्ती।

८ अनिवार्यता।

रू. भे —हट, हटि हट्ट, हट्ठ।

हठजोग–स. पु. यौ [स. हठ.+योग] योग का वह भेद, जिसमें आसन-सिद्धि, प्राणायाम, नैति, धोति आदि कठिन मुद्राओ और आसनो द्वारा चित्तवृत्ति को हठात् बाह्य विषयो से हटाकर अन्तर्मुख किया जाता है।

वि वि.—इसमे शरीर के अन्दर कुण्डलिनी और अनेक प्रकार के चक्र भी माने गये है। इसके सबसे बडे आचार्य योगी मत्स्येन्द्रनाथ (मछदरनाथ) और उनके शिष्य गोरखनाथ माने जाते है।

हठणौ, हठबौ–क्रि. स —१ हठ करना, दुराग्रह करना, जिद् करना।

उ०—अहइ रूप असभव भूवलइ, कवण कामिनि एह समी तुलइ। हिव हठिउ मझ मन्मथ मारिवा, एह ऊडण अग ऊगारिवा।

—सालिसूरि

२ देखो 'हटणौ, हटबौ' (रू. भे.)

हठणहार, हारौ (हारी), हठणियौ—वि०।

हठिओडौ, हठियोडौ, हठ्योडौ—भू० का० कृ०।

हठीजणौ, हठीजबौ—भाव वा०।

हठधरम–स पु यौ [स हठ+धर्म] १ बिना उचितानुचित का विचार किए किसी बात पर अडे रहने या जिद् करने की क्रिया या भाव, दुराग्रह।

२ धर्म, मत या सम्प्रदाय में होने वाला कट्टरपन।

रू भे—हठधरमी।

हठधरमी–वि —१ हठ पर दृढ रहने वाला, हठ करने वाला।

२ देखो 'हठधरम' (रू भे.)

हठधारी–वि. [स हठ+धारिन्] १ हठ को धारण करने वाला, हठी, जिद्दी, दुराग्रही।

२ दृढ-प्रतिज्ञ।

३ हठयोग की साधना करने वाला।

हठनाळ–स. स्त्री —दुकानो की पंक्ति।

उ०—हठनाळ पेठ बाजार हाठ, प्राजळै महल चदण कपाट। चाचरै गयण चक चूर चोट, कागरा अपारथ भुरज कोट।

—वि. स.

२ देखो 'हडताळ' (रू. भे) (जयपुर)

हठमल, हठमल्ल–स. पु —१ योद्धा, वीर।

उ०—१ हाथळ खळ पटकै केहरी हठमल, रायसाल दूजी रिम-राह। चौडै खेत अखाडै अणचळ, बाकडमल ओखळ खगबाह।

—नवलसिंघ सेखावत री गीत

उ०—२ राठउड उदियउ 'चउडराउ', वेगडइ साड वीरम वियाउ। साळवडी थाणउ दै सधीर, हठमल्ल राउ थाणै हमीर।

—रा ज सी.

हठवाडौ—देखो 'हटवाडौ' (रू भे)

हठाडणौ, हठाडबौ—देखो 'हटाणौ, हटाबौ' (रू भे.)

हठाडणहार, हारौ (हारी), हठाडणियौ—वि०।

हठाडिओडौ, हठाड़ियोडौ, हठाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हठाडीजणौ, हठाडीजबौ कर्म वा०।

हठाडियोडौ—देखो 'हटायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री हठाडियोडी)

हठाणौ, हठाबौ—देखो 'हटाणौ, हटाबौ' (रू. भे.)

हठाणहार, हारौ (हारी), हठाणियौ—वि०।

हठायोडौ—भू० का० कृ०।

हठाईजणौ, हठाईजबौ—कर्म वा०।

हठायोडौ—देखो 'हटायोडौ' (रू भे)

(स्त्री हठायोडी)

हठाळ, हठाळौ—देखो 'हठी' (रू भे.)

उ०—१ उठै भीम हरवला, हुवौ खूमाण हठाळौ। अवर खान ऊबरा, चढै लसकर कळिचाळौ।—सू. प्र.

उ०—२ हरोळाय हूत हरोळ हठाळ, तठै 'कुसळेस' वधै रिणताळ। धरा बळ क्रोध औरै धजराज, जिती विध सागद वीच जिहाज।
—सू. प्र

उ०—३ पटाळा हठाळा महागात पूरां, सुरंगा सगाहा साकोपा सनूरा। सलीता कन्है क्रोधवै प्राण साहै, लियां हाथ राठौ समां सेल ठाहै।—रा रू

उ०—४ तेगाळा बीजाळा करा रिमाळा जीवता सत्रो, अड़ाळा हठाळा जुटाळा भीम वाय। सचाळा वाचाळा बोल जगाळा पगाळा साचा, मीछाळा ओहाळा हालै हाडा रै सुभाव।
—सतमानसिंघ हाडा री गीत

हठावणो, हठावबो—देखो 'हटाणो, हटाबो' (रू. भे.)

उ०—म्हे बाइसगोला साचा ज्या नेंह भूठा पाडै है तो औ तौ साक्षात ताबा री रुपइयो है सो इणनै तो हठावणो सोरो है।
—भि प्र.

हठावणहार, हारो (हारी), हठावणियो— वि०।

हठाविओडो, हठावियोड़ो, हठाव्योड़ो – भू० का० कृ०।

हठावीजणो, हठावीजबो—कर्म वा०।

हठावियोड़ो—देखो हटायोडो' (रू भे)

(स्त्री. हठावियोडी)

हठी–वि. [स. हठिन्] १ हठ करने वाला, जिद्दी, दुराग्रही।

उ०—फालीजी सारी कुवरांणिया नु बुलाय कही बेटा था जाणो छो। कुवरसी घणो हठी वावी छै।—कुवरसी साखला री वारता

२ योद्धा, वीर।

उ०—१ हठी रणखेत सगराम 'कूंभा' हरै, घडा वाराव तणी सभै रण धाय। घणो तो सूर ससि ग्रहणाह्न दुयघडी, पला उभै सरब-गल कीध पतसाय।—महाराणा सग्रामसिंघ रो गीत

उ०—२ सूर मुरड़ि इम साहरू, लूटै हय जय लाह। हणि रच्छक 'दूदा' हठी, आयौ धरत उछाह।—व. भा.

३ दुश्मन को पराजित करने वाला, जीतने वाला, परिमर्दन।

उ०—रेवा सागर अमल मैं, भागे हो अरड़ीग। हूंमैं सिंध सागर हठी, अपणायो तै 'सीग'।—बाँ दा.

रू. भे.—हटाळ, हुटाळो, हटियाळ, हटियाळो, हटीलो, हुठाळ, हठाळो, हठीलो।

मह.—हठेल।

हठीलो—देखो 'हठी' (रू. भे)

उ०—१ हीचता बाछडिया तांबाड़, मिळै जद गायां अड़वड़ जाय। टाळता भूल आपणी गाय, हठीला टाबरिया लड जाय।—सांझ

उ०—२ सास बुरी अर नणद हठीली, लड़ लड दै मोहि गाळी, हे माय। मीरां कै प्रभु गिरधर नागर, चरण कमळ की वारी, हे माय।—मीरां

उ०—३ छच्छ मास छाकिया, हुवा डाकियां हठीलां। प्रचड नील जगि पीठ, निलै गसळै जगि नीलां।—सू. प्र.

उ०—४ गाग और पाटी उतार धरूंगी, ना पहिरू कर चूडो। मीरां हठीली कहै सतगुरु सौ, बर पायो छै मैं पूरो।—मीरा

(स्त्री हठीली)

हठेल—देखो 'हठी' (मह; रू. भे.)

उ०—यहूँ छत्रधारी सुणा बाखाणिया रायथाना, हुवा बका फटै सका उजवकै हठेल। रेवा आयो छाक जकै पाछो माग लागो, ऊभो जेत खभ हुआ (पको) संभरी अठेल।
—रावत जोधसिंघ कोठारिया रो गीत

हड—देखो 'हाड' (रू भे)

हडजोड, हडजोड़ा–स स्त्री.—एक औषधि विशेष जो वात कफ नाशक एवं टूटी हड्डी को जोडने वाली होती है।

हडताल—देखो 'हड़ताल' (रू. भे.)

उ० व्यापारी विधि विधि मिल्या, ह्वै सहु हडताळ। करि कुचो कांधि कणा, फरि फरि वेता फाळ।—मा. का. प्र.

हडफूटण, हडफूटणी–स स्त्री. एक प्रकार का रोग विशेष जिससे शरीर की प्रत्येक हड्डी या जोड मे तीव्र पीडा होती है।

२ घमगावड।

हडफोड़–स. स्त्री.—१ एक प्रकार की चिडिया।

२ देखो हडफूटण'।

हडय—देखो 'हाड' (रू भे.)

उ०—सीमत घरमाहि पइसी सूयइ, वारिद्रि लोक सीतइ कांपइ, सकल लोक अगीठै तापयइ, टाढि हडयां लवइ, राति भरि जिम साकुडइ.. .. ...।—व. स.

हडवडी–स स्त्री —१ एक वनस्पति विशेष।

उ०—हनुमती नइ हडवडी, हीरावलि हर गज्जि। हाथा जोडी हीकणी, हेलां आवइ कज्जि।—मा का प्र.

२ देखो 'हड़बडी' (रू भे.)

हडमंत, हडमत– देखो 'हनुमान' (रू. भे)

उ०—१ काका भतीजा बिहूँ, गोरउ अरु बावल्ल। पवनी काज भारथ कीउ, हडमत जिम सर भल्ल।—प. च चौ.

उ०—२ किण हडमत बिना समद कुण कूदै, अरणा बिना कुण गमै अधार। 'मांडण' बिना धांणा कुण मारै, सारै यम कहियो संसार।—तेजसी खिडियो

हडवड—देखो 'हड़बड़ी' (रू. भे.)

उ०—धू नाचै भड धड, फीफड फडहड, लोडै लड थट लोहि लडै। बीयै वळ वड चढ हुई हडवड, जोवै धडतड अनड अडै।
— गु. रू. ब.

हडसहारी, हडसेलि–सं. स्त्री. [सं. हड्डसंहारी] एक प्रकार की लता व उसका डठल।

उ०—वातरा पांणी तउ करू, जउ अभ बहसाउ बेलि। कामसेन

कूली करउ, सइ काढउ हडसेलि।—मा का प्र.

वि. वि.—इसकी लकडी का दातुन भी करते है। यह बात कफ नाशक तथा टूटी हड्डी को जोडने वाली मानी जाती है।

हडहड—देखो 'हडहड' (रू. भे.)

उ०—हडहड हडती तै इसी, तालोटा कर बेय। 'माधव' तु मूरिख खर ! मइ जाणिउ भल भेय।—मा. का प्र

हडहडणौ, हडहडबौ—देखो 'हडहडणौ, हडहडबौ' (रू भे)

उ०—रथचक्र चाणीती करोडि कडकडइ, वेताल हडहडइ, भाग्य-वत जयलक्ष्मी वरइ, आपणु काज करइ, युद्ध।—व स.

हडहडियोडौ—देखो 'हडहडियोडो' (रू भे)

(स्त्री हडहडियोडी)

हडा—देखो 'हाडा' (रू भे)

हडाराहा-स. स्त्री —घोडे की एक जाति विशेष।

उ०—घोटक जाति, केहाडा नीलडा हरियाडा सेसहा। हडाराहा कोहाणा भरयणा ताई तुरगी ऊघसीया नीधसीया डाटकिया डोट-किया खेलवि (या) मल्हाविया लडाविया पुलाविया सरला तरला छोट करणा एकरण्णा।—व. स

हडू बी—देखो 'हिडबी' (रू भे)

हडूमान—देखो 'हनुमान' (रू भे) (अ मा)

हडोई-स. स्त्री —१ वक्षस्थल की हड्डी।

उ०—मोरा पसवाडा पीडा री मास देगचा मैं घात जै छै। हडोई रा मास पासै चरवा मैं गातजै छै।—रा. सा स

२ मास रहित अस्थियो का समूह, मासहीन अस्थियाँ।

उ०—हडोई ऊपर चीलका, कागला भडफडा करनै रह्या छै। तिका कागला नू मलूकजादा कुवर गिलोळा री चोटा कर रह्या छै।—रा सा स

रू. भे.—हडोई।

हडोती—देखो 'हाडोती' (रू भे)

उ०—दो ही बीर साकडै मिळिया दाव करता बचता हडोती कै मारग बहिया आवै।—व भा

हडौ—देखो 'हाडौ' (रू. भे)

उ०—सरगुण निरगुण हो ही हस होय न हडा

—केसोदास गाडण

हड्ड—देखो 'हड्डी' (मह, रू. भे)

उ०—१ कसूमल छोळ भरै नद खड्ड, करद्दम आमिख हड्ड कवड्ड। गजा ढळ पड्ड गरद्दन गोप, हिया भ्रम भजत कज्ज पहोप।—मे. म

उ०—२ सूवर वाही दातळी, आण खटक्की हड्ड। भाई व्है तो वावडै, गया विराणा छड्ड।—लो. गी

हड्डा-सं. पु.—१ घोडो के होने वाला एक रोग विशेष।

२ देखो हाडा' (रू भे.)

हड्डी-स स्त्री. [स अस्थि, प्रा अत्थि, अट्ठि] शरीर के भीतर सफेद रग का वह कठोर अग या तत्व जो रीढ वाले प्राय सभी प्राणियो के होता है, अस्थि।

मह —हड्ड, हड्ढ।

हड्ढ—देखो 'हड्डी' (मह; रू भे)

उ०—बसन बेधि कटाक्ष, कोर कुलटा अग कढ्ढिय। हड्ढ बेधि जमदड्ढ, येम तन पारऊ कढ्ढिय।—ला रा

हण—१ देखो 'हनुमान' (रू भे)

उ०—एको हि जादम भीड न आवै, रीद पेख उग्रसेण रहै। आवै हण न गुरड न आवै, कमध आव रिण छोड कहै।

—सिवा वाढेल री गीत

२ देखो 'हणौ' (रू भे.)

उ०—हण फूल खिरयौ ई रज मे, मा बोली 'धरती' माजी, जामण री बेळा आई, हू करम धरम स्यू बाधी।—सकुलता

हणकस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—देवी छकारा रूप तै राम छळिया, देवी राम रै रूप दसकध दळिया। देवी कान रै रूप गिरि नक्ख चाडै, देवी नक्ख रै रूप हणकस फाडै।—देवि

हणकणौ, हणकबौ-क्रि अ —हाक करना, हुकार करना।

हणकणहार, हारौ (हारी), हणकणियौ—वि०।

हणकिओडौ, हणकियोडौ, हणक्योडौ—भू० का० कृ०।

हणकीजणौ, हणकीजबौ ——भाव वा०।

हणक्कणौ, हणक्कबौ—रू० भे०।

हणकियोडौ-भू का कृ.—हाक किया हुआ, हुँकार किया हुआ.

(स्त्री. हणकियोडी)

हणक्कणौ, हणक्कबौ—देखो 'हणकणौ, हणकबौ' (रू. भे)

उ०—रत्ता पी गणक्कै के भणक्कै, यै विमाण रभा, लोयणा भणक्कै डड मणक्का लेवाण। हुवै पखा भडफका ग्रीधाण वीर है हणक्कै, कमरा सणक्कै बाजै खडक्का केवाण।—प्रभूदान मोतीसर

हणक्कियोडौ—देखो 'हणकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हणक्कियोडी)

हणणाक-स. स्त्री —घोडो के हिनहिनाहट की ध्वनि।

उ०—ठणणाक घट गदळा ठहै, गणणाकै पळचर गयण। हणणाक हीस हैगाम हय, जय कणणाकै बदीजण।—व भा.

हणणाकणौ, हणणाकबौ-क्रि अ. —घोडो का हिनहिनाना।

हणणाकणहार, हारौ (हारी), हणणाकणियौ—वि०।

हणणाकिओडौ, हणणाकियोडौ हणणाक्योडौ—भू० का० कृ०।

हणणाकीजणौ, हणणाकीजबौ—भाव वा०।

हणणाकियोडौ-भू का कृ.—हिनहिनाया हुआ। (घोडा)

(स्त्री. हणणाकियोडी)

हणण-स पु [स हन्] १ मार डालने या वध करने की क्रिया, वध, हत्या।

२ नष्ट करने या मिटाने की क्रिया या भाव।
ज्यू—पाप हणण।
३ आघात या प्रहार।
४ गणित में गुणन या गुणा करने की क्रिया।

हणणाट, हणणाहट—देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे.)
उ०—अळगी डर ऊभोए जूथ अरी, काळवी हणणाहट हीस करी। तिण तोडिय साकळ लोह तणी, चपळागत आवत सीस सुणी।
—पा. प्र.

हणणी, हणबौ—क्रि. स. [सं. हन्] १ वध करना, संहार करना, मारना। (उ. र)
उ०—१ मूके सर हेक ताडका मारी, चड सुबाहु हणे कर चाव। जिण मैं कियौ धनुस भग जालम, रग भुजा थारा रघुराव।
—र. रू.
उ०—२ सोढा ऊमरकोट रा, सिर कढ़िया समसेर। वाहे हणिया बैरहर, 'बांका' भारथ बेर।—बां. दा.
उ०—३ रथगजारह सहस्त्र जउ निरजणइ, दस सहस्त्र महाभट जौ हणइ। फुरसराम महाबुधि निरजणिउ, इसिउ भीस्म पितामह मइ मुणिउ।—सालिसूरि
२ आघात या प्रहार करना।
उ०—हे कथ थे भागळ वण जुद्ध सूं जीवता आय काही कीधी इयूं कह हाय हाय कर बळती थकी छाती मे दोनू हाथ हणिया छाती मे मूकीया वाही तद भागळ कही हे धण थारे हण धणी हेत बुलाय लीधी।—वी. स. टी.
३ मारना, पीटना।
४ कष्ट देना, सताना।
५ हराना, परास्त करना।
हणणहार, हारौ (हारी), हणणियौ—वि०।
हणिओड़ौ, हणियोड़ौ, हण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हणणीजणौ, हणणीजबौ—कर्म वा०।
हनणौ, हनबौ, हिणणौ, हिणबौ—रू० भे०।

हणमंत, हणमति, हणमतौ, हणमत, हणमांत, हणमतौ—देखो 'हनुमान' (रू भे.) (अ. मा, हि को)
उ०—१ नजर वछेक का हुन्नर अगूंता वचाव। हणमत रूप जगजेठ नै भुजग दडूं पर दसतताळ दिया।—सू प्र.
उ०—२ चक्री विचाळ रघुवर विसाळ, जपै जरूर, सुण भरथ सूर। हणमंत एह, इण गुण अछेह, सेवा सुसेव, किनी कपेस।
—र रू
उ०—३ हणमति किया हमल सहल बांणव सघारै।—पी. ग्रं.
उ०—४ रुद्रां री रुद्र हणमत रांम, नारायण तुझ तणौ नह नांम।
—पी ग्रं.
उ०—५ जै नांमी गढ-लक जयंता, सिव एकादसमा निज सता। कीधी अमर जानकी कता, हुकमीदास जाण हणमता।
—र. ज. प्र
उ०—६ हणमत सिथी बरोबरि हुआ। पोरिस बळ दाखिवं प्रमाण, भोग गयौ गढ राम उघोडै, थिली भेक गमगी डाण।
—ओपोदास चारण

हणमान—देखो 'हनुमान' (रू. भे.)
उ०—बमलै मैं हणमान बाबो जाग्या, परीडै पीतर देवता जाग्या, गिंदर मैं सती माता जाग्या, मठ मैं भैरूं बाबौ जाग्या।
—लो गी

हणमान चाळीसौ—स. पु —१ चालीस छन्दो का एक लघु काव्य जिसमे हनुमानजी की महिमा वर्णित है।
उ० -म्हे मन मैं हणमान-चाळीसौ जपणौ सरु कियो अर लट्ठ लेय'र पग वग ऊभौ व्हैगौ।- रातवासौ
२ उपर्युक्त पद्यो के संग्रह की पुस्तक।

हणवत, हणवत—देखो 'हनुमान' (रू. भे.) (डि को.)
उ० -१ लखि लखण अगद सुग्रीव हणवत, नील नळ नर नाहु। जामवत अधु भाळ जळहली, सुमेण गवयह सलनली।—सू. प्र
उ०—२ सत वरतं काली कळस लेस, शुध मिणी राती माळेर जेम। रांम रै कांम एहा सधीर, राम रै कांम हणवत धीर।—वि स.

हणहण—देखो 'हिणहिणाट' (रू भे.)
उ० —जुजुइ जाति-तणा घणा, पलवग न लभइ पार। वेगि वहुना वाचनइ, हणहण घरा हीसार।—मा. कां. प्र.

हणहणणौ, हणहणबौ—देखो 'हिणहिणणौ, हिणहिणबौ' (रू भे)
उ०—१ अह फूटी, दिसि पुंडरी, हणहणिया हय-थट्ट। ढोलइ धण ढंढोळियउ, सीतळ सुंदर घट्ट।—ढो मा
उ०—२ कटक माहि हाथी पाखरिया, पटा वतूसलि घाल्या। कीटिउ नगर तुरी हणहणिया, पोलि पाधरा चाल्या।—का दे प्र.

हणहणा—स स्त्री —घोडे के बोलने की ध्वनि, हिनहिनाना।
उ०—न जांणीइ पुरष न जांणीइ परिधान, मकलं गज गलगला रवि करी जांणीइ, तुरगम हणहणा रवि करी जांणीइ, रथ चक्र चिरकार करी जांणीइ... . . ..।—व. स

हणहणियोड़ौ—देखो 'हिणहिणियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हणहणियोड़ी)

हणा, हणा—क्रि वि. [स अधुना, प्र. अहुणा] इसी समय, अभी।
उ०- तद राजा 'जैत' नूं कहियौ, 'जु मैं तौ थां नूं सगळौ उपर कीयौ थौ, तिकौ तू बाहर चढ नै वांणीयां री हणा वळतौ माल छोड आयौ।—जैतमाल पुमार री वात
रू. भे.—हणै, हणे हणौ, हणौ, हाणे, हाणै, हेणां, हैणा।

हणियोड़ौ—भू. का. कृ —१ वध या संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ आघात या प्रहार किया हुआ. ३ मारा हुआ, पीटा हुआ. ४ हराया हुआ, परास्त किया हुआ. ५ कष्ट दिया हुआ, सताया हुआ।

(स्त्री हणियोडी)

हणु', हणुमांन, हणु, हणुअंगी, हणुमत, हणुमत, हणुमांन—देखो 'हनुमान' (रू. भे.) (ना मा)

उ०—१ हणु हुवा जिण जग होय, हरखित चाह बेद चियार। तत पच कर खट तरक तै, दरियाव सात उदार।—र ज प्र

उ०—२ पबै उठाहै हणु जिऊ चाहै, मुनि जैम सिंघ पीण, विजै की सबाहै मही डाइ जिऊ बाराह। गाढा भीम मतारा गनीमा गजां जैम गाहै, सतारा सु तैग तुही साहौ 'विजैसाह'।
—हुकमीचद खिडियौ

उ०—३ सुग्रीव ग्रगद हणुमत सहत, ग्रातम धनि ग्राहुसिया। जिण वस राम प्रगटै जिकौ, वस सुध्रिन रघुवसिया।—सू प्र.

उ०—४ सदा पग ग्रागळ लोटै सेस, गुणा असतुति करत गणेस। पगा हणुमत करत प्रणाम, सोहै पग ग्रागळ कातकसाम।
—ह र

उ०—५ चढे इम वैरिसाल ग्रभग, रचावण जुद्ध रमायण रग। चढै हरिसीह मुछा धर हाथ, मनौ हणुमत लका गढ माथ।
—शि. सु रू

उ०—६ स्रीमुख सू हणुमान जी रा बखाण।—र रू

हणुमा–स पु —१ भारी दाढ या जबडे वाला।

२ देखो 'हनुमान' (रू. भे)

हणुस्तम–स पु —एक प्रकार की वात व्याधि। (अमरत)

हणू, हणू मांन, हणू—देखो 'हनुमान' (रू भे.)

उ०—१ ग्रमरावत 'नाथौ' दळ ग्रागळ, कळहण गैलौ जाण दबी कळ। 'तेजावत' 'वाघो' रिण तैसौ, जुध बळ धणू हणू कपि जैसौ।—रा रू

उ०—२ रिमाखिसै लागी दीखै इद्र ज्यूं जभ पै रूठौ, ग्राहुसी भाराथा ऊठौ हणू' ज्यूं ग्रोपाळ। छूटा डाण लाठां मदा पाण हू भूरेस छूटौ, गोरा गजा माथै रूठौ सीधळी 'गोपाळ'।
—गुलाबसिंह महडू

उ०—३ सकौ राकसा एकणी हाथ साहे, मेलु लक साहेत पाताळ माहे। जपै वैण ऐहा हणू'मांन ज्यारा, तेडै मान बब्भीखण भ्रात त्यारा।—सू प्र

उ०—४ मारू जोधा रिणमला, भळै सम्रोधा भार। जाण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार।—रा. रू

हणूग्रौ—देखो 'हनुमान' (रू. भे)

उ०—बाण यथा ग्ररजुन-तणा, हणूग्रा पूछड जेम। तिम तनि वद्धइ माहरइ, माधव-केरु प्रेम।—मा का प्र.

हणूफाळ—देखो हनुफाळ' (रू भे)

हणूमत—देखो 'हनुमान' (रू भे)

उ०—महबळ सूर दिना मकरद, चखा करि चोळ लडै भड 'चद'। जठै भड 'तेज' हणूमत जाति, जुडै हरनाथ कहर जमाति।
—सू. प्र

हणूमांन—देखो 'हनुमान' (रू. भे) (डि को)

हणूयौ—देखो 'हनुमान' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—जिसी प्रीति हणूया सुग्रीव, जाणै नही जूजूग्रा जीव। सीकरि छत्र चमर ढालीइ, साचइ न्याइ लोक पालीइ।
—का दे. प्र.

हणे—देखो 'हणा' (रू भे)

हणेहण–स. स्त्री [ग्रनु] मार-काट की ध्वनि।

हणै, हणै—देखो 'हणा' (रू. भे)

उ०—१ हणै तौ चाबौ, क्यू जिनकर करौ हौ। काल हडमानजी री बगेची मे पाच बजी सिज्या नै सै भेळा हौ जासा।—वरसगाठ

उ०—२ दरखत रा गात हरया हा, सापडदै प्राण भरया हा। सूका ठूठा सा होग्या, की खातर हणै खड्या हा।—सकुतळा

हत–वि. [स] १ मरा हुग्रा, मृत।

२ ग्राहत, घायल, जख्मी।

३ पीडित, ग्रस्त।

४ रहित, विहीन, वचित।

५ बिगडा हुग्रा।

६ ध्वस्त, नष्ट।

७ परेशान, दु खी, त्रस्त।

८ निर्बल, कमजोर।

९ हताश, निराश।

स. पु.—१ रिपु, वैरी।

रू भे.—हत्त।

२ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—लोक कुटबी बरज बरजा ही, बतिया कहत बणाय। चचळ चपळ ग्रटक नहिं मानत, पर हत गयै बिकाय।—मीरा

हतग्रासा–वि —निराशा।

हतक–स स्त्री.—१ बेइज्जती, तौहीन।

२ हत्या, सहार।

वि.—१ मारा हुग्रा, हत।

२ घायल।

उ०—भखा खजरीटां ग्रगा, सबर हतक सराह। जैतवार ज्यारा नयण, मरोरुहा सुथराह।—बा दा.

हतकडी—देखो 'हथकडी' (रू. भे)

हतकार—देखो 'हतकार' (रू भे.)

हतणपुर, हतणापुर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू भे)

हतणी—देखो 'हथणी' (रू. भे.)

हतणौ, हतबौ–क्रि. स. [स. हन्] १ मार डालना, वध करना, संहार करना।

उ०—१ केहरि छोटौ बहुत गुण, मोडै गयदा माण। लोहड बडाई

की करै, नरा नखत परमाण । नखत परमाण बाखांण बाधी नरै । आवगी भूंफ री भार भुजि आपरै । गैटणी भीड़ भुंजि गयद री मोटियां । छावड़ बळ हतै कळाधया छोटिया ।—हा. भा

उ०—५ पूजे सिव वरहू अप पाई, कनिया हतण अजोग्य कगाई । अनुचित काज न कीजै ऐही, जुध अप उचित काज तो जेही ।

—सू. प्र.

२ आघात करना, पीटना ।

३ पीड़ित करना ।

४ घायल करना, जखमी करना, आहत करना ।

उ०—भमरडउ मरिवा अख बीह तउ, पसरि पइसइ केतकिई हतउ कठिन कटक कोडि कुटीरडइ पडिउ, वेधि पछइ पुणि आरडइ ।

—सालिसूरि

५ हराना, परास्त करना ।

६ हटाना, हो जाना ।

७ वंचित करना ।

८ परेशान करना, दुःखी करना ।

९ नाश करना, ध्वस्त करना, मिटाना ।

१० हताश करना, निराश करना ।

हतणहार हारो (हारी), हतणियो—वि० ।

हतिओडो, हतियोड़ो, हत्योड़ो—भू० का० कृ० ।

हतीजणो, हतीजबो—कर्म वा० ।

हथणो, हथबो—रू० भे० ।

हतबाह्—देखो 'हथबाह' (रू. भे.)

उ०—देखीजै निज गोखडे देवर री हतबाह । भाभी पै गिणता खरच, सो सीलै गी नाह ।—वी. स.

हतभाग, हतभागी, हतभाग्य—वि. यौ. [स. हत+भाग्य] भाग्य-हीन, अभागा, बदकिस्मत ।

हतरस—वि.—हस्तमैथुन करने का अभ्यस्त ।

उ०—लड थड़ गळ लजा हतरस हुआ, मनमथ काग गदवा है । जारी कर जोरी सठ सिर जोरी, कोरी हाथ वर्थदा है ।—ऊ. का

रू. भे.—हथरस, हथळस ।

हतळेवो—देखो 'हथळेवो' (रू भे.)

हतवा—देखो 'हथवाह' (रू. भे.)

उ०—हिंदू तुरक वखांणै हतवा, माभी धन कमधज मन मोट । राजा ओट रखै कै रावत, असपत तुज कटारी ओट ।

—दुरगादासजी आसकरनोत रो गीत

हतवाओ—देखो 'हथवाहो' (रू. भे.)

हतवार, हतवारू—देखो 'हथवार' (रू. भे.)

हतवाह्—देखो 'हथवाह' (रू. भे.)

उ०—साकदडै 'रतनेस' समोभ्रम, धोळै दिन देखतां धणी । कथ जुग च्यार रहसी कमधज, तो वाळी हतवाह तणी ।

—महाराजा मानसिंह (जोधपुर)

हतां, हता—भू क्रि—थे ।

उ०—१ मुता तोमरमल तेजमालोत परगनै फलोदी सुं साथै छै नै वीना २ नोर गयो हता पछै आया भेळा हुवा ।

—राठौड वस री विगत

उ०—२ ताहरा सरब हजूरी, पासवान, खवास तेरू हता तिकै सरब तळाव डूबियो ।—पलक दरियाव री बात

रू. भे —हुता, हुतीया ।

हतायळी, हतायली—देखो 'हथायळी' (रू. भे.)

हतास—वि. [सं. हत+आशा] १ जिसकी आशा टूट चुकी हो, निराश ।

२ साधनहीन ।

३ मजबूर, विवश ।

हतियारो—देखो 'हत्यारो' (रू. भे.)

उ०—१ मिन जाणिसौं अगरा, हुवो बुसगण हतियारा । किसा किसा ने कथू, किसा ने भोगण धारा ।—ऊ. का.

उ०—२ निरमानेणी आवो थारी आस पजोय छां ए मनै सोगन थारी ए, कोई छां ए हतियारी ए । कोई आस निरास्यो गजबण तो करधो जी राज ।—लो. गी

उ०—३ सुण रे मन सगरांम, कहु इती रीस मत राख । बोय म्हाखसी पावगी, हतियारण हकनाक । हतियारण हकनाक कह्यो जो मानै म्हारो । कर जरणा सूं प्रीत भलो व्है जासी थारो ।

—सगराम

(स्त्री हतियारण, हतियारी)

हतियोड़ो—भू का. कृ.—१ मारा हुआ, वध किया हुआ, संहार किया हुआ. २ आघात किया हुआ, पीटा हुआ. ३ ग्रस्त हुआ, पीड़ित ४ घायल किया हुआ, जखमी, आहत. ५ हटाया हुआ. ६ हराया हुआ, परास्त किया हुआ. ७ वंचित किया हुआ. ८ हताश या निराश किया हुआ. ९ दुःखी या परेशान किया हुआ १० नाश किया हुआ, ध्वस्त या मिटाया हुआ ।

(स्त्री. हतियोड़ी)

हती—देखो 'हूंती' (रू. भे)

हतीक—क्रि. वि.—निश्चय ही ।

उ०—सही आज अयारसी, म्हारै हिवड़ै तीख । करसा तो ही पारणो, जो पिय मिळै हतीक ।—अज्ञात

हतीको—वि. [सं. हस्तकृत] (स्त्री. हतीकी) १ ठीक स्थान पर ।

२ प्रत्यक्ष, हाथोहाथ ।

३ विश्वासपात्र ।

४ हाथ का रखा हुआ ।

५ प्रसिद्ध, मशहूर ।

रू. भे.—हथीको ।

हतीयारो—देखो 'हत्यारो' (रू. भे.)

उ०—सीसडली मूमल रो सरूप नारेळ ज्यो, हाजी रे केसडला हतीयारी रा वासग नाग ज्यौ, मारी साचोडी मूमल हालौ नी रे अमराणै रे देस ।—लो गी

(स्त्री हतीयारी)

हतूडिया-रा पु —राठौड वश की एक उप शाखा।

हतेरण-स. पु. [स. हस्तकरण] १ लेख या साक्षी-पत्र, दस्तावेज, सनद।

उ०—आखियो जिती धर ओपण थायौ इळा, सुभोजन चाखियौ थाळ साथै। ताम्रपत्र ढाकियौ चाखडौ थान तळ, हतेरण राखियौ आप हाथै।—खेतसी बारहठ

२ आभूषण या वह वस्तु जिसको गिरवी रख कर रुपये उधार लिये जाते हैं।

रू भे —हथेरण।

हतेरी—देखो 'हथेळी' (रू भे)

उ०—अब कै पार लगावौ, नातर, हंसेगे बजा के हतेरी। मीरा के प्रभु गिरधरनागर, मेरी सुध लीज्यौ प्रभुआन सवेरी।—मीरा

हतोटी—देखो 'हथोटी' (रू भे)

हतोडौ—देखो 'हथोडौ' (रू भे)

हतोळियौ-स पु —वह हल जिसे आदमी अकेला खींचता हो।

हतौ—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—१ सहर रै नैकाळ बडौ तळाव हतौ।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ हू बराकी धणी ! मोकियउ रोस। पाव की पाणही मु कियउ रोस। मे य हसली बोलीयौ, आपणइ मान हतौ मानस छइ सास।—बी दे

उ०—३ कान्हडदे नी घरणी हती, तेह भणी लिखी विनती। ऊमादे नइ कमळादेवि, जइतळदे नइ भावळदेवि।—का दे. प्र.

हत्त—१ देखो 'हाथ' (मह; रू भे.)

उ०—हुना सज्जण-हीयडै, सयणा-हदा हत्त। जउ सोहणौ सावइ होअइ, सोहणौ बडी वसत्त।—ढो. मा

२ देखो 'हत' (रू भे.)

हत्तीबीस—देखो 'बीसहती' (रू भे.)

उ०—महाराव छडेव छडेव न्है न दै न गूड, बजडेव डम्मरू चडेव हत्तीबीस। सडेव छडेव मेख पाथ बाण पाय साच, उमडेन मडेव तडेव नाच ईस।—बद्रीदास खिडियौ

हत्तोडौ—देखो 'हथोडौ' (रू भे)

हत्थ, हत्थ—देखो 'हाथ' (मह; रू. भे)

उ०—१ सत्थ न को बळ हत्थ के, ना जांणै छळ मत्त। जै पाणै रिप सग्रहै, तप हूना छत्रपत्त।—रा. रू

उ०—२ क्रित करण अकरण अन्नथा करण, सगळै ही थोकै समरत्थ। हा लिया जाइ लगाया हूता, हरि साळै सिरि थापे हत्थ।—वेलि.

उ०—३ तवेरम कुभ दुहायळ तत्थ, आडागिरि मत्थ क हत्थ अगत्थ। प्ररोहत होफर खोफ अपार, अधोफर आग डरै असवार।

—मे. म

उ०—४ इद बधू अणपार क वारिज विस्थरी, मूगफळी समतूळ क अगुळी हत्थ री।—सिवबक्स पाल्हावत

हत्थडौ - देखो 'हाथ' (अल्पा, रू भे.)

उ०—राणौ भीम न राखियौ, दत विन दीहाडौ हु। हय गय दैणौ हत्थडौ, मरणौ मेवाडौ हु।—महाराजा मानसिंह जोधपुर

हत्थळ—देखो 'हाथळ' (रू भे)

उ०—भूख री लाय मू उणारा रू-रू मे काळ रमण लागौ। पछै वा तौ भली सोची नी कोई बूडी गाय रै माथै होकारा रै सागै मलापनै ताचकी जकौ एक ई हत्थळ मे ठायै राख दी।—फुलवाडी

हत्थाण—देखो 'हाथ' (मह, रू. भे.)

उ०—मौत तुम्हारी होइयौ, मेरे हत्थांण। जब दैत गत जाणियौ बोलै बधाण।—गज-उद्धार

हत्थि—देखो 'हाथी' (रू भे)

उ०—१ हटी घुमाय हत्थ तै, हुले घुमाय हत्थि को। अग्रेत मत खेल मे, भिखार वे प्रमत्थि कौ।—ऊ का.

उ०—२ चिरे वहित्थ हत्थि के, चिकार चूर चूर है, भिरे भटालि भाल मे, भिखार भूर-भूर हे।—ऊ का

२ देखो 'हाथ' (रू भे)

उ०—रहि रे तू चाली म कहि, इम अवनी-तटि नत्थि। कहिता कोडि सवा-तणउ, माणिक आपिउ हत्थि।—मा. का. प्र.

उ०—२ हई ! हई ! देव किसू करिउ, रत्न ऊदालिउ हत्थि। काल्ही किसू कारण हत, आज अनेरी भत्ति।—मा का प्र

हत्थिप-स पु [स हस्तिप] १ हाथी का अकुश।

२ महावत।

हत्थी-क्रि वि [स. हस्त] हाथ से, हाथ पर।

उ०—गैणाग ऊछाह भूल बारगा रा बाथै ग्रथी, महाभाग रत्थां खाग खुराटा माडीस। हसबीर पेखवा तमासा ताळ दे दे हत्थी, तत्तथेई थेई करै आल्है ताडीस।—करणीदान कवियौ

वि स्त्री —१ हाथ के माप वाली, हाथ की।

उ०—एक विकराळ नौ हत्थी सिंघणी रै कारण जगळ मे इण भात सून्याड व्हैगी ही।—फुलवाडी

२ हाथो वाली, हाथो की।

उ०—हरी बच्छ स्रीवच्छ तू बीस हत्थी। तु ही पन्नगाधीस रै सीस पत्थी।—मे म.

३ देखो 'हाथी' (रू भे.)

उ०—एक महूरत सार भड, मातौ ताती वाण। लागा हत्थी भगगणै, या बगा आराण।—रा रू.

४ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

५ देखो 'हत्थौ' (श्रल्पा; रू. भे.)

हत्थु, हत्थौ-सं. पु.—१ मशीन या किसी औजार का वह भाग जिसे हाथ मे पकड़ कर घुमाया, चलाया या सचालन किया जाता है, दस्ता, मूठ।

२ विशिष्ट प्रकार का ऐसा उपकरण या औजार जो हाथ का सा काम देता है।

३ कसरत (दण्ड-बैठक) करते समय हाथ के नीचे रखने का पत्थर या ईंट।

४ अहाता, चार दिवारी।

५ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ तीरा परीक्षा गुर तणी, पूगउ एकु जु पत्थु। राहावेहु तउ सिखवइ, मच्छइ देविणु हत्थु।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ चारुंग भोजाई पचा नै माल-मलीदा खवाड़ अर की मूठी लिवाई कर खासो हत्थौ मार लियो।—फुलवाडी

हत्थ—देखो 'हाथ' (गह; रू. भे)

उ०—फल करण अकरण अन्नथा करण, सगळै ही थोकै ससमरथ। हालिया जाइ लगाया हुता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ।—वेलि

हत्थोहत्थ—देखो 'हाथोहाथ' (रू भे.)

उ०—गास पलच्चर सीत सिर, हस अपच्छर हत्थ। 'चवो' चन्ना फूल ज्यू, होरवो हत्थोहत्थ।—राव चारा रो दूहो

हत्या-सं. स्त्री. [स] किसी शस्त्र, लाठी या किसी अन्य साधन या तरीके से किसी जीव का किया जाने वाला प्राणान्त, कत्ल, वध।

उ०—१ आज पे'ली थूं रित्ती हत्यावां करी वा थूं इज जाणै।
—फुलवाडी

उ०—२ जगडइ ए जासक जुहिय यूं हियडउ निरधार, देखउ केवडी केवडी जेवडी करवत धारि। प्रिय विण चंगि नारग रग ना आवइ श्राजु, हिव मइ हत्या साधवी माधवी वेलि न काजु।
—जयसेखर सूरि

उ०—३ 'तो तूं हत्या, वध श्रर मिरतू मांय भेद कोनी कर सकै? 'हत्या श्रर वध करथा जावै, मिरतू हो जावै।—तिरसंकू

मुहा.—हत्या लागणी=किसी की श्राह लगना, वध करने का पाप लगना, अभिशप्त होना।

क्रि. प्र.—करणी, कराणी, टळणी, टाळणी, लागणी, व्हैणी, होणी

रू भे.—हितिया, हिरया।

हत्यारौ-वि. [स्त्री. हत्यारण, हत्यारणी, हत्यारी] १ किसी का वध या कत्ल करने वाला, वधिक।

उ०—१ हा हा पापण मां हत्यारी रे, नहीं आंणी दया लिगारी। देखो रांणी री कमाई रे, जोयजो स्वारथ नी सगाई।—जयवाणी

उ०—२ पुलिस समझेली विचारै नै हत्यारणी डोरी सूं बांधणी। इण सू पुलिस तनै तंग नई करैली।—तिरसकू

२ सताने वाला।

३ क्रूर, निर्दयी।

उ०—तू हाल 'जात हीण' श्रर 'धरमहीण' समाज री बात 'यूटोपिया' मान'र 'असमानता' री हत्यारी आंधी रै धुल अर पीड सूं दूर है।—तिरसकू

रू भे.—हतियारौ, हतीयारौ, हथियारौ, हितियारौ, हित्यारौ।

हथ—देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ आज सहेली दस की, पुछो पहरयो हथ। हरीया सिझ सवेर मै, चली अडोळी बथ।—अनुभववाणी

उ०—२ हुय चोप कोड चमंड हुथं कर कोड नवै कतियांण कथं। खट कोडलखे अहमांण खडी, मच भाखड लोवांळियाळ लडी।
—पा. प्र.

उ०—३ ऊठि अ गा बोलाणा कामणि आखै कत, श्रै हुल्ला तो ऊतरा हुकळ कळळ हुवत। हुकळै सीधवो बीर कळहळ हुवै, वरण काज अपछरा सुरिमा बहु दुवै। भिजड़-हथ गयय जुध गयण-धड तोलणा, ऊठि हरधवळ सुण श्रहंगा बोलणा।—हा झा.

उ०—४ वा श्रत किया अनेक, हिरण वे वे भिन्न हथ। ज्या सधिया अठजोग, त्या किया कौटक तीरथ।—र. ज. प्र.

मुहा—हथउधार- देखो 'हाथउधार'।

हथकंडौ-स. पु. [ब व. हथकंडा] १ किसी कार्य मे दिखाई जाने वाली कुशलता, हस्तकौशल।

२ किसी कार्य का करने मे बरती जाने वाली चालाकी या धूर्तता।

३ साधन, स्रोत।

उ०—म्है तो आ-ग्रो करा हा उस्ताद! थे आंणो कोयमी, श्रै श्रो इणै रा हथकंडा है। हूं तो पांच-सात सस्थावां नै आगा बूझ'र गळै घातियै राखू हू।—वरसगांठ

रू. भे—हथखंडौ।

हथकड़ी-स. स्त्री [स. हस्तकटुक] शासनिक अधिकारी द्वारा अपराधी को पहनाई जाने वाली लोहे की कड़ी या जंजीर।

उ०—१ सिपाईड़ा वगं ही रायकना मैं रीझ्या, भुगानै रा एकला भाई रयूं ही सासै मैं सागीड़ा सिमया श्रर सीझ्या। हथकड़ी देखता ही आकळ-बाकळ हुयग्या।—दसदोख

उ०—२ मित सूंश्रा ऊधा-पाधरा कोनून निकळै। जै इण देवतावां नै टैमसर श्रर मरजी परवाणैं धूप नी खेवौ तौ हथकड़ियां त्यार। अबै श्राप इज विचार करो कै केड़ो'क मजो है अबार बिणज बैपार मैं।—अमरचूनड़ी

रू. भे.—हतकड़ी, हाथकड़ी।

हथकती-स. स्त्री. [सं. हस्तकृति] १ हाथ की बनाई हुई वस्तु, दस्तकारी।

२ हाथ की लिखी प्रति या पुस्तक।

हथखंडौ—देखो 'हथकंडौ' (रू. भे)

हथखरच—देखो 'हाथखरच' (रू. भे)
उ०—बादसाह कही—दस हजार री जागीर पावौ छौ, सागै तीन हजार रोकड़ **हथखरच** रा ही पावौ छौ, तौ ही निबाह क्यू ना हुवै ?—जलाल बूबना री बात

हथखारौ-वि —१ हाथो का खार खाया हुआ, कुपित, झल्लाया हुआ।
उ०—ताहरा इंदा छै सु सारा ही **हथखारै** सातरा थका रहै। यु करता छव मास हुवा।—नैणसी
२ गुस्सैल, जिसके हाथ की चोट भारी पडती हो।

हथडौ—देखो 'हाथ' (अल्पा, रू भे)
उ०—करहा काछी काळिया, भुइ भारी घर दूर। **हथडा** काइ म खचिया, राह गिलतइ सूर।—ढो मा

हथजोडौ-वि —सदा हाथ जोड कर खडा रहने वाला, खुशामदी, चाटुकार।
उ०—हथजोडा रहिया हयै, गढवी काज गहथ। ऊ 'राजड़' छत्र-धारिया, गयौ जोडावण हत्थ।—महाराजा गजसिंह जोधपुर

हथडौ—देखो 'हाथ' (अल्पा, रू भे)

हथणांपुर, हथणाउर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू भे.)
उ०—१ इण महामुनि ना ए अधिकारा, नित साभलता हुवै निसतारा। एण भरतखेत्र चउथा आरा, हथणाउर सुरपुर अणु-हारा।—ध व ग्र.
उ०—२ किता तै सेवग सारण काज, रचै **हथणांपुर** पडवराज। जलतौ उत्रा ग्रभ (गब्भ) मझार, अनत परीखत सत उबार।
—ह र

हथणी-स. स्त्री [स. हस्तिनी] १ सरोवर आदि की सीढियो के बगल मे तल से ऊपर तक क्रमवार बना हुआ चबूतरा।
२ मादा हाथी।
उ०—तिल मातर भीत न बीत तणी, थमि हालत अग्रकिया **हथणी**।—मे म.
३ हरिजन जाति की स्त्री।
रू. भे.—हथिणी, हाथणी, हाथिणी।

हथणौ, हथबौ-क्रि. स. [स हस्त+रा प्र णौ] १ हाथ मे पकडना, हाथ मे लेना।
२ हस्तगत करना, अधिकार मे करना।
३ अपने प्रभुत्व या सरक्षण में लेना।
४ दूसरे की वस्तु पर बलात् या धूर्त्तता से अधिकार कर लेना, हथिया लेना।
५ देखो 'हतणौ, हतबौ' (रू भे)
उ०—रमा हुतासणी सरणि रहाए, हथि रामण स्त्रिय छाह हराए। छाया हरण हुवा दुख छाया, माया अबसि मोह वसि माया।
—सू प्र.

हथणहार, हारौ (हारी), हथणियौ—वि०।

हथिओड़ौ, हथियोड़ौ, हथ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हथीजणौ, हथीजबौ—कर्म वा०।
हथियाणौ, हथियाबौ—रू० भे०।

हथनाळ, हथनाल, हथनाळि, हथनाळी-स स्त्री.—१ हाथ की बन्दूक।
उ०—१ कुहक बाण **हथनाळ**, विसख वरखै तिण वारा। अति खामण वहळा, जाण घण मत्तौ धारा।—रा रू.
उ०—२ **हथनाळ** दगण आरब हसम, गाहुत चढिया मेंगळा। देवळा तरा घर करि हुगम, जगम जूथ बीझाजळा।—सू प्र
२ देखो 'गजनाळ'।
उ०—१ सबलै सग्रामै भिडता भूप भूपाळ। अति राता ताता वहै, गोळा **हथनाळ**।—ध. व. ग्र
उ०—२ सहस बार गज धुज अनि साथी, **हथनाळिया** मुहर लख हाथी, जोड जबूर रहकळा जमला, इसी तरह दोहू दिस अमला।
—सू प्र
उ०—३ फौजा आगै आतस चालै जै। जबरजग नाळि, किलकिला नाळि, जबूरनाळ, गजनाळ, हथनाळ, सुतरनाळ, कुहकबांण, राम चगी कई भाति भाति रा आराबा रहइए घाती आवै छै।
—रा सा स
उ०—४ **हथनाळि** हवाई कुहकबाण याकौ सोर आघात होण लागौ वीरजु वडा वडा जोधा। त्याकौ वीर हाक होण लागी।
—वेलि टी.

हथपाह—देखो 'हथबाह' (रू भे)
उ०—हाफा पीथळ हाक हक **हथपाह** हडदै। बाघण ज्याई वेढ मैं कुण दूर करदै।—पा. प्र.

हथफूल-स पु यौ [स हस्त+पुष्प] स्त्रियो का एक पुष्पाकार आभूषण विशेष जिसको हथेली के ठीक पृष्ठ भाग पर पहना जाता है। इसका एक सिरा कलाई से तथा दूसरा अगुठियो से जुडा रहता है।
उ०—१ हस्ती दात री चूडो। मजीठ सू रगियोडो। बिलिया रै धकै चादी री पुणचिया। हाथा चादी री **हथफूल**।—फुलवाडी
उ०—२ बगडी बाजूबद चोळ रग चूडला। फबि पहुची **हथफूल** छाप मुदडी छला।—सिवबक्स पाल्हावत

हथफेरी-स स्त्री.—हाथ की सफाई, तान्त्रिक क्रिया।
उ०—फाजल ही आपरी साधना सह करी, करणौ माथै हथफेरी करणी पैलाई।—दसदोख

हथबाह-स. पु —शस्त्र प्रहार की कला।
उ०—बीर अवसाण केवाण उजबक बहै, राण **हथबाह** दुसराह रटियौ। कट झलम सीस बगतर बरग अग कटै, कटै पाखर सुरग तुरग कटियौ।—गोरधनजी बोगसौ
रू भे.—हतबाह, हतवा, हतवाह, हथपाह, हथवा, हथवाह।

हथबोलणौ-स. पु —१ शादी के बाद आगन्तुक नव वधू के प्रथम परिचय निमित्त अदा की जाने वाली एक रस्म जिसमे घर की सब

स्त्रियां वर वधू के साथ भोजन करती है ।

उ०—पछै भरमल सासू रै पगां लागी, श्रीजी सासुवां रै पगां लागी । सो रूप देख सारी चकत रही । हथबोलणै री जीमण तयार हुवौ । सारी एकण थाळ श्राय बैठी । सो सोका भरमल री रूप देख चकत रही जीमणौ भूल गई ।

—कुंवरसी साखला री वारता

२ उक्त अवसर के लिये बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ ।

उ०—फेरा लै चुका । अंतरपट कर सहेल्यां हथबोलणै री कसार मुहं आगै आण धरियौ । ताहरां भरमल अरज होळै सै कीवी — 'जो आज रात चाकर ऊपर किरपा कर विराजै तौ गोटी करै ।'

—कुंवरसी साखला री वारता

हथमार, हथमारौ—वि.—अपने हाथ से दूसरों का सिर काटने वाला, संहारक, आघात या प्रहार करने वाला ।

उ०—१ गो पित हथमारोह, वेगा वेग वतायदै । सज तूं घर वारोह, तानौ हूं रहसूं नहीं ।—पा. प्र.

उ०—२ आप पाछौ आवतौ मोहनसिंहजी कह्यौ—भाभीजी, हथमारौ आवै, सो पहोच साळै रै बीवी सो दोय बटका हुवा अर तरवार मांही नीसर थांभै मे लागी सो पत्थर रौ टुकडौ दूर जाय पडियौ ।—पदमसिंहजी री बात

स पु —जल्लाद ।

उ०—१ राजाजी री आदेस मिळतां ई हथमार अर राज रा असवार पगा रा जूता हाथा मे लै लिया ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सूळी चढावतां हथमार उण नै मन री कोई इछा अरसावण सारू पूछयौ, तद वौ कह्यौ—म्हारै पडोसी सेठां री फरजन साथै लेय नै मरणौ पडै, इण री अवस पिछतावौ है ।—फुलवाड़ी

हथमेळौ—देखो 'हथळेवौ' (रू. भे.)

उ०—हथमेळा रै हाथ, धरै नाळेर हससी, सलभ सदा मनसमी, वल्लभ घर तणी वससी ।—अरजुण जी बारहठ

हथमोड़ौ—देखो 'हथबोलणौ' ।

हथयार—देखो 'हथियार' (रू. भे.)

उ०—आदमी १२०० रांणौ आय सांम्ही लड़ाई कराई छै । लोकां नूं बापूकारै छै, जणै जणै पाछी लागी हथयार बांधा थकां ।

—राजा नरसिंघ री बात

हथरस—देखो 'हसरस' (रू. भे.)

हथळ—१ देखो 'हाथ' (रू. भे)

उ०—महाराज के जोधाण के राव । हथलूं पहल कीए बीजळूं के घाव ।—सू. प्र.

२ देखो 'हाथळ' (रू भे.)

हथळस—देखो 'हतरस' (रू. भे.)

हथळेबौ—देखो 'हथळेवौ' (रू. भे.)

उ०—माध पंडित बोलइ तिणि ठाय, हथळेबौ वेगौ मंगाय । माध पंडित ईम उच्चरई, अहाण वेवतणा गुणाकार ।—बी. दे.

हथळेव—देखो 'हथळेवौ' (रू भे.)

उ०—१ कंवर बांण जपूर अराति कढि, हाथां किये जगवढि हथळेव । फिरि फिरि अफिरि कियै सुज फेरा, ओगणि घेरा राग जमेव ।—कल्याणदास राव

उ०—२ अंधुळै भारै करी, सत वात सुणाणा, कमध प्रणावै 'धूपसी', धीय आप घराणा । गत पामि वैकूंटगया, जैकार जपांणा, वीरा जद वीधा वचन, हथळेव छुडांणा ।—वी मा.

हथळेवड़ौ—देखो 'हथळेवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आदि विसनु नइ आदि माया, हुआ अचळ गठि । मधु-पुरख हथळेवड़ौ, वरमाळ वीठळ कठि ।—रुकमणी मगळ

हथळेवौ—स पु [सं हस्त+लग्न] १ विवाह मे वर द्वारा वधु का प्रथम बार हाथ पकड़ने का संस्कार, पाणिग्रहण ।

उ०—१ एक गढ मांहे पधारौ तरै कहिजो—'सहर उमरकोट सारीखौ नहीं' । एक सोनगरी सूं हथळेवौ जोड़ौ तरै कहीजो—सोढी सारीखो सोनगरी रौ हाथ नहीं ।—नैणसी

उ०—२ वसुदेव देवकी सूं श्राह्मणै, यही परसपर एम कहि । हुए हरण हथलेवौ हुओ, रोस संस्कार हुवइ सहि ।—वेलि

उ०—३ हरीया चोरी चहु दिसा, सत व्रत रोप्या थंभ । हरि हथळेवौ हरख सूं, किरत कमाई कंभ ।—अनुभववाणी

क्रि. प्र.—छुडाणौ, छूटणौ, छोड़णौ, जुड़णौ, जोड़णौ, जोड़ाणौ ।

मुहा.—१ हथळेवौ जुड़णौ=विवाह होना, रिश्ता होना ।

२ हथळेवौ जोड़णौ=विवाह करना, पाणिग्रहण संस्कार करना ।

३ हथळेवौ छूटणौ=वैवाहिक रस्म पूरी होना ।

२ उक्त अवसर पर गाया जाने वाला लोक गीत ।

३ उक्त अवसर पर वधु के सम्बन्धी व मित्र-गणों की तरफ से दी जाने वाली भेंट ।

४ हाथ पकड़ने की क्रिया या भाव ।

रू भे.—हतळेवौ, हथळेबौ, हथळेव ।

अल्पा.—हथळेवड़ौ ।

हथवड़ौ—देखो 'हथोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां ईयै तिमरलिंग दोनां ही हाथ सो दोय हथवड़ा सबाया । संभाय नै जिकै भांत कूंभार रा पग गार मांहि जावै, तिकै भांत, डांडै सुधा घणा मांहि हाथवडा जावै छै ।

—तिमरलिंग री बात

हथवा—देखो 'हथवाह' (रू. भे.)

उ०—पडिय सिर 'पाल' धरा न पड़ै, हथवा हथ सात्रव सेन हुई । लग आभ भुजा धड़ जंग लहै, मुख मार बकी पिड लेत महै ।

—पा. प्र

हथवार, हथवाक—वि. [सं. हस्त+वृणतीति, हस्तवारः (री)] वह गाय या भैंस जो एक ही व्यक्ति के हाथ से दुहाने की आदी हो गई हो ।

रू भे.—हतवार, हतवारू ।

हथवावौ-वि.—१ घात करने वाला, प्रहार करने वाला, घातक ।

२ वधिक, मारने वाला ।

रू भे —हथवाहौ ।

हथवासौ-वि [स. हस्त+वाह] ढाल पकडने का हत्था ।

उ०—१ सोनही री फूला नकसी फूला मुखमल गादी घातिया, साबरा हथवासा, बुलगारी डाबा सहित ऊग्रास राजाना रा हाथा री उहाग्रीज वडा नै ग्रा पीपलारी ग्रा साखा सू नागलिग्रा ।

—रा. सा स.

उ०—२ ग्रागै ग्राय साथ रै दै हथवासै ढाला नै उतर पडिया, सारौ साथ मारियौ।—नैणसी

रू. भे.—हथवाही, हथौसौ ।

हथवाह—देखो 'हथवाह' (रू भे)

उ०—१ सत जरण तरण चख क्रपा रुख साहरै, साह रै विरद भुजडड सिघाळा । बीस भुज भाजरण समर हथवाह रे, वाह रे राम ग्रवधेस वाळा ।—र. ज प्र

उ०—२ हे वाभीजी सा ग्रापरा गोखडा सू ग्रापरा देवर री हथवाह तरवाह वहती देख लेराग्रौ वाभीमा ग्राप खरच गिणता हा वौ म्हारौ पति सीलै छै ग्ररथात् हाथी रै चैंवचै (हौदै) पर तरवार वाहै छै।—वी. स टी.

हथवाही-स स्त्री —प्रहार करने की क्रिया या भाव ।

उ०—कोई लडाई मे पचा मे हथवाही ग्रधिक कर ग्रावै तौ उणा नूं इनाम देणौ ।—नी. प्र.

हथवाहौ-वि.—१ मारने वाला, शत्रु ।

उ०—तद भूणसिघजी कयौ, 'भाभीजी, हथवाहौ जीवतौ जावै है।—द दा

२ देखो 'हथवासौ' (रू. भे)

हथसकळ, हथसकळी, हथसांकळ, हथसांकळि, हथसांकळी-स स्त्री — [स. हस्त+शृखला] हाथ का ग्राभूषण विशेष । (व. स.)

उ०—जदि राजा कडा मोती कठसरी, दुगदुगी, जनेऊ, हथसाकळा सिरपेच, कडीया री तरवार, ढाल कटारी, खजर तरगस, बाण, सरव बगसीया ।—जगदेव पवार री बात

हथसाळ-स स्त्री [स हस्ती-शाला] हाथियो को रखने का स्थान।

(उ. र)

हथाई-स. स्त्री [सं ग्रस्थाई] १ गाँव के मध्य का वह स्थान या जगह जहाँ गाव के व्यक्ति फुरसत मे बैठकर इधर-उधर की बातें करते हैं, बैठक, चौपाल ।

उ०—१ रात रा हथाई मे इण बात री ईज चरचा छिडगी ।

—फुलवाडी

उ०—२ भरी हथाइयां बैठा बाईसा रा बाप, कागदियौ दीधौ वारै हाथ ।—लो गी

उ०—३ जसवतजी चाग गया । ग्रागै मेर माणस ३०० तथा ४०० हथाई बैठा था ।—राव मालदेव री बात

२ वार्तालाप, बातचीत, गपशप ।

उ०—१ रात री हथाई ठाकरा रै जमानै री जुगती वण रैयी ही ।—दसदोख

उ०—२ वगत वटावा हेत, खेत फिरसाणा ताई । वन मैं पसवा प्रेम, हमीरा ग्राम हथाई ।—दसदेव

उ०—३ सैल सपाटा नार, नही नर होड हथाई । पर पुरखा री पात, जुड गिणै जामी भाई ।—नारी सईकडौ

क्रि प्र —करणी, जुडणी, बैठणी, बैसणी, होणी ।

हथायली-स स्त्री —१ हल के ऊपरी छोर की लकडी ।

२ कुम्हार का चाक घुमाने का काष्ठ का डडा ।

रू भे.—हतायली ।

हथाळि, हथाळिय—देखो 'हथेळी' (रू भे)

उ०—१ उणा हथाळिया रै मूडै ग्रमल जमायौ ।—फुलवाडी

उ०—२ हथाळियां रा छाळा नै देखता सिसकारिया न्हाकता ।

—फुलवाडी

हथाळियौ-वि.—१ हथेली जैसा ।

२ हथेली के ग्राकार का ।

३ हथेली मे समाने योग्य ।

उ०—सू कठ किण भात रा छै ? थापवीतळी रा, सुपबी नळी रा, नाळे रा, गोडा रा बीलफळ इरकी रा, हथाळियै ईडर रा, ससा सेरी बगला रा ।—रा सा स.

हथाळी—देखो 'हथेळी' (रू भे)

उ०—१ टुकडा करि करि ग्रर हिंदुवा नू हेक हेक पाघडी रौ टुकडौ ग्रर गगोदक हथाळी माहै दिया ।—द. वि

उ०—२ फेरा रै पै'ली हथळेवा मै बीदराजा रौ हाथ काई भिलियौ, जाणै गिगन रा नवलख तारा बीदणी री हथाळी मैं ग्राय खिरिया।

—फुलवाड़ी

हथाळौ-स. पु [स. हस्त+ग्रालुच्] १ वीर, योद्धा ।

उ०—बूडा वीरम सळख, साख तेरह ग्रजुग्राळा । छाडा तीडा छात्र हुग्रा, कमधज्ज हथाळा ।—र वचनिका

२ दानी, दातार ।

हथि—देखो 'हाथ' (रू. भे)

उ०—धन दिहि सइ हथि थापिय, वापी ग्र वर ग्रारामि । मणि कण धण सपूरिय, पूरिय द्वारका नामि ।—जयसेखर सूरि

हथिग्रार—देखो 'हथियार' (रू. भे.) (गु. रा.)

हथिणाउर, हथिणापुरि, हथिणापुर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू. भे)

उ०—१ तिण कालै नै तिण समै, जबू द्वीपै हौ भरत क्षेत्र मांय। हथिणाउर नगर हुतौ, धन धानै हौ सम्रद्ध कहाय ।—जयवाणी

उ०—२ ग्रह दैवट्ट वसि तेवि पच ए पडव वणि चलिय ।

हुथिणाउपरि जाएवि मुकलावइ, निय माय पीय ।—सालिभद्र सूरि

हुथिणी—देखो 'हथणी' (रू. भे.)

हुथिनापुर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू भे.)

उ०—हथिनापुरे सहसाब वन गर्भ, उतरया ही ग्यानी बुध सार । —जयवांणी

हुथिनाळ १ देखो 'गजनाळ'।

उ०—मगरूर हौद जगिया गभार, धुर चढे अरब हुथिनाळ धार । साफदा कंयक बध साधि, वह बीजळ सूंडाडंड बाधि ।—सू. प्र.

२ देखो 'हथनाळ' (रू भे.)

हुथियाणौ, हुथियाबौ—देखो 'हथणौ, हथबौ' (रू. भे.)

हुथियाणहार, हारौ (हारी), हुथिणियौ—वि०।

हुथियायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हुथियाईजणौ हुथियाईजबौ—कर्म वा०।

हुथियायोड़ौ—देखो 'हुथियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हुथियायोडी)

हुथियार—स. पु.—१ वह चीज जिससे किसी पर प्रहार किया जाय, अस्त्र शस्त्र।

उ०—१ गणइ जीण, कमाण-गुण, भीजइ सब हुथियार। इण रुति साहिब ना चलइ, चारइ तिर्फ मिमार।—ढो. मा.

उ०—२ काम क्रोध को फेंक के रे, सील लिये हुथियार। जीती मीरा एकली रे, हारी राणा की धार।—मीरा

उ०—३ सहलया पदचार सवार रथां, हुथियार छतीस प्रकार हथां। —मे म.

२ औजार।

३ लिंगेन्द्रिय, शिश्न। (बाजारू)

४ हाथी का शिश्न। (,,)

रू. भे—हथयार, हथिआर हथीआर, हथीयार, हथ्यार।

हुथियारबंद—वि—अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित, सशस्त्र।

हुथियारौ—देखो 'हरयारौ' (रू. भे.)

उ०—हरिजन हुथियारा है हुसियारा न्यारा हुय नाचवा है, रमणी मैं राजी कुळ मैं काजी, हाजी हुस हरवा है।—ऊ का.

हुथियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ हस्तगत किया हुआ, हाथ मे पकड़ा हुआ, २ दूसरे की वस्तु पर बलात् या कौशल से अधिकार किया हुआ, हथियाया हुआ ३ अपने प्रभुत्व या सरक्षण मे लिया हुआ। ४ अधिकार मे किया हुआ।

५ देखो 'हतियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुथियोडी)

हुथी—स. स्त्री.—१ कपाट के मध्य लगा हुआ पकडने का हत्था।

वि.—१ हाथो वाला।

२ देखो 'हाथी' (रू. भे.)

हुथीआर—देखो 'हुथियार' (रू. भे.)

उ०—हरि हुथीआर हुलावता, मुकल्यह रूंधी वट्टि। तै मुम्फ-लीधइ आविजै, नाकि घणा जिणि घट्टि।—मा. कां. प्र.

हुथीकौ—देखो 'हतीकौ' (रू. भे.)

उ०—कीजै गया गुभ सेवक कीजै साचौ, कीजौ मत अवर हुथीकौ।—ध. व ग्रं.

हुथीड़ौ, हुथीडौ—देखो 'हाथी' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—सूज हूर, मिळै अधियांगण राज सूं, जेत खभ आज री किला जेरै। बारण लियण हेरै नह बिसाती, हुथीड़ा दुकाळां खळा हेरै। —राजा उम्मेदसिंह सिसोदिया री गीत

हुथीणाउर, हुथीणापुर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू. भे.)

उ०—'राजग्रही' वैभारगिरी, यात्रा करी सघ साथ। 'हथीणापुर' जिन वादीया, शाति कुथु अरनाथ।—साह लाधौ

हुथीयार—देखो 'हुथियार' (रू. भे)

उ०—सुरातन हुथीयार गहि, मारि किसी कुं नाहि। मारे तौ मन मोह कुं, पाप बसी हुय जाहि।—हरिरामदासजी महाराज

हुथूडिया—स. पु—राठौड वश की एक उपशाखा।

हुथूडियौ—स. पु—राठौड व'श की हथूडिया शाखा का व्यक्ति।

(बां. दा. ख्यात)

हुथेरण—देखो 'हुतेरण' (रू. भे.)

उ०—तिर्माणाये रे बाद आई वाड्ली, कासारयां नैं फळोतिया री वारी। क्यूंके पेट मैं तौ भूखौ रै'बीजै नी अर बिना हुथेरण सेठ लोग पेढी मार्थै ई चढण देवै नहीं।—रातवासौ

हुथेळी—स. स्त्री. [स. हस्ततल प्रा. हत्थतल] कलाई और अंगुलियो के मध्य का कोमल भाग, हस्ततल, करतल।

उ०—छोरा कैवैला रात नैं पवन आपरै कमरै माय कोई छोरी लियायो हो। म्है झट देणी सी उठ र उण मूंडै मार्थै म्हारी हुथेळी लगा दीनी।—सिरसपू

मुहा.—१ हथेळी माथै जान राखणी=जान हाथ मे रखना, जोखिम का काम करना।

२ हथेळी माथै थुकाणी=भारी खुशामद करना, अत्यन्त प्यार करना।

३ हथेळी माथै राखणी=बहुत सावधानी से रखना, बिल्कुल कष्ट न देना।

४ हथेळी में खाज हालणी=हथेली मे खुजलाहट होना, द्रव्य प्राप्ति की सूचना होना।

५ हथेळी में सरसू उगाणी=बहुत शीघ्रता करना।

६ हथेळी रौ छाळौ=अत्यन्त प्रिय।

७ हथेळी लगाणी=सहारा देना, हा में हां मिलाना, चापलूसी करना।

रू. भे.—हथाळि, हथाळिय, हथाळी, हाथाळी।

मह.—हथाळौ, हथेळौ।

हुथेळौ—सं. पु.—१ हल की वह लकड़ी जो हल चलाते समय हाथ मे

रहती है।

२ देखो 'हथेळी' (मह, रू भे)

हथोडी—देखो 'हथोडो' (अल्पा, रू भे.)

हथोडो-स पु [स हस्त-घोट.] स्वर्णकार, लौहार, सुथार आदि कारीगरो के काम आने वाला एक मुष्ठिकाकार ठोस लोहे का उपकरण जिसके ठीक मध्य मे एक बडा छेद होता है जिसमे लक्डी या लोहे का (बेंट) दस्ता लगा रहता है। वि वि-यह उपकरण चोट मारने के काम आता है। इसकी बनावट आवश्यकतानुसार छोटी बडी होती है।

रू. भे-हतोडो, हत्तोड़ो, हथवडो, हथौडो, हाथोडो।

अल्पा,—हथोडी।

हथोटी स स्त्री. [स हस्तकृति] १ किसी काम मे हाथ डालने की क्रिया या भाव।

२ हस्तकौशल, दक्षता, निपुणता।

रू भे-हटोटी, हतोटी,

हथोहत्थ—देखो 'हाथोहाथ' (रू. भे)

उ०—हुसं दीध आसीस आणद हुती, अखं भाग सोभाग हो पुत्रवती। जुवा खेल जीता हथोहत्थ जूटा, खुभं छेहडा तेहड ताम खूटा।—सू. प्र

हथौसो—देखो 'हथवासो' (रू. भे.)

उ०—सोनं-रूपे रा चांद-फूल, मुखमल री गादी, साबर रा हथौसा, बोयदार री डाबा कसा इण भात री ढाला सू उणहीज दरखता री साखा सू नागळीजै छै।—रा सा स

हथ्थ—देखो 'हाथ' (रू. भे)

उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, बीजा सहु अकयथ्थ। जिए चडथा दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ।—ढो. मा

हथ्थड़, हथ्थडो—देखो 'हाथ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—ऊलबं सिर हथ्थड़ा, चाहदी रस-लुध्ध। विरह-माहघण ऊमट-घउ, थाह निहाळइ मुध्ध।—ढो. मा.

हथ्थळ—१ देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

२ देखो 'हाथळ' (रू. भे.)

उ०—देख गुडाल्या हालं उण दिन, डूगर डिगणो चहीजे। मेडी हथ्थळ मेली, रे बेटा, आभो फूकणो चहीजं।—चेतमांनखा

हथ्थहेक-स स्त्री—कटारो। (ना. डि. को.)

हथ्थार—देखो 'हथियार' (रू. भे)

हथ्थी-वि. स्त्री—हाथो वाली।

उ०—भवानी नमो जोगनी जुथ्थ सथ्थी, भवानी नमो भैरवी बीस हथ्थी।—मे म.

हथ्थां-क्रि. वि—हाथो से, हाथ से।

उ०—हकाळत बीस हथ्था नवहथ्थ। रूडा सुखपाळक हालत रथ्थ।
—मे. म

हद-स. स्त्री [अ] १ आखिरी किनारा, सीमा, छोर।

उ०—१ सु पातसाह महिपै नू राख अर हद ऊपर साम्हो आयो। लडाई हुई पातसाह सू।—नैणसी

उ०—२ नागोर सु तरफ दिखणाद गाव कोणो चो कोस १८ मेडता री हद लागै।—नैणसी

उ०—३ पाखती भाई बध छाजू रा भोमिया था, तिणा रा चोर कसबा नू लागता सु छाजू मनह कराया। वार वार चोरी कीवी थी। तिणा नू आपड नै मारिया। सु उठा सू ही हद पड गई।
—नैणसी

उ०—४ अगम निगम दोई जाण न पावै, हद बेहद के पारा। केवल पद कथणी मैं नाही, सब्द थकेगा सारा।
—हरिरामजी महाराज

मुहा—१ हद करणी=किसी बात या विषय को चरम सीमा तक पहुँचाना। सीमा से बाहर का कार्य करना।

२ हद होणी=आवश्यकता से अधिक होकर रहना।

२ मर्यादा, सीमा।

उ०—१ साहा ऊथप थप्पणो, पह नर नाहा पत्त। राह दुहू हद रक्खणो, 'अभैसाह' छत्र पत्त।—रा रू.

उ०—२ आदर अणी धणी छळि आया, सेहर सजळ जिसा दरसाया। उदियाभाण प्राण अणमायौ, ओ फिर हद न जवन सिर आयो।—रा रू

३ तारीफ, साधुवाद।

उ०—हद हाथा जी हद हाथा, है लक अवी हद हाथां। सत्र भज जुधा समराथा, गुण राखण विसुधा गाथा। जी हद हाथा।
—र ज॰ प्र

४ तह, परत।

५ औकात।

वि.—१ अत्यन्त, बहुत, खूब।

उ०—१ इण मे थारी कुछ चूक नही छै, आ सूरत मोमू साह सू हुई सो हद नरमाई भारी रकमाई छै।—नी प्र.

उ०—२ असि धावक आविया, सस्त्र साजिया सताबी साणी चढिया सुक, फूल झडिया हद फाबी।—मे. म.

२ असाधारण, विशेष।

उ०—१ हद डाण जिगा अभिमाण हरै, प्रलबी कुरबाण उडाण परै।—मे. म

उ०—२ हद चाटी हालता हवा हालत रद होवै। तवि जूनों सपतास, जिका कानी रवि जोवै।—मे म

३ भयकर, भीषण।

उ०—जरदाळ घण पखराळ जुडि विहड खाल नारग वहै। हद करा इसो जुध विहद हू, करा झोकी सूरिज कहै।—सू. प्र.

४ पूर्ण, पूरा।

उ०—घर प्रीत पूछै गह्र भूधर, कहै विध कवि राव। उर वधत हुरख अमाप सुण सुण, अवै कोड पसाव। बळ करत नाटक अगर नटवर चवत हाटक चाव, हव अवर हुनरदार भेट दे बहु भाव।
—र रू

रू. भे.—हंव, हवि, हवेस, हद, हद्दि।

हवकी—सं. स्त्री.—कंपन, थरथराहट।

उ०—गिवर जावणिया लुगाई-टाबर धूजता-कांपता दरसण करै, काळजी हवकी खावै।—दसदोख

हवगा—सं स्त्री —वात, पित्त, कफ आदि नाशक एक औषधि विशेष।

हवधज—स. पु —मन्दिर, देवालय। (ह ना. मा.)

हवनीरोग्रर—स. पु.—समुद्र, सागर।

हवफ—सं. पु [अ.] १ लक्ष्य, निशाना।

उ०—कराव कर सोगुणा जोस मैं आवै छै। तीरमदाज बदुकजी हवफां उतारै छै।—बगसीराम प्रोहित री बात

२ वह गोलाकार निशान जिस पर निशाना सीखने के लिए गोलियां चलाते है, चांदमारी।

उ०—बेपरवाह हुवा थका बाह करै छै। जिण भांत बाग माहि हवफ री चोट धारै ईण भांत ईण वेळा मैं चोंप धारै छै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

हववंत—स. पु [अ. हद+रा वंत] देश, मुल्क। (अ मा.)

हववाद—क्रि. वि —सीमा की ओर, सीमा पर।

उ०—डावड़ी औरठै परणायी। जिण कारण सूं नैणसी वाडमेर हववाद मेलियौ वाडमेर प्रोळ रै कमार रै काठ रा किवाड़ हुता जिकै आण जाळोर गढ री पोळ चढाया।—बां. दा. ख्यात

हववाळौ—वि. [अ. हद+स. आलुच्] मर्यादा मे रहने वाला।

हवबि, हववी—क्रि. वि [अनु] धीरे-धीरे, शनैः शनैः।

उ०—स्रीराम चरण महाराज इसी दीवी है पदवी, जिका बताऊ थनै हमैं तो हदवी हववी। हदवी या हववी हमैं करो भजन रा ढेर, जैड़ी दूजी नहीं तीन लोक मैं फेर।—अग्यात

हवसाही—स. स्त्री.—बादशाहत, राज्य।

हवि—सं. पु —१ संसार।

उ०—१ जनहरिया हवि मैं घणा, सुख दुख भरम सनेह। बेहद काम न कलपना, अति आनद अछेह।—अनुभववांणी

उ०—२ हदि बैठा हवि की कहै, वेद पुरानां वाचि। हरीया वेहद बावरा, रह्या राम सु राचि।—अनुभववाणी

उ०—३ सहज का भेद सोई संत जाणै, हवि कुं जीत वेहद माणै। सहज का आसण सहज आसा, सहज मैं खेलणा सहज पासा।
—अनुभववांणी

२ अज्ञान।

उ०—१ हवि छाडि वेहद भया, हरीया रांम हजूर। अखड उजाळा गैब का, निसा न ऊगै सूर।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया वेहद कै घरा, नही हवि की आस। संसा सोग न ताप न, नांव निरारा वास।—अनुभववांणी

३ असत्य झूठ।

उ०—१ हवि का रता हवि मै, वेहद का वेहद। हरीया वेहद पाय कै, हदि गई सब रद।—अनुभववाणी

उ०—२ हवि सू जाणौ दूरि हरि, वेहद ठावौ ठीक। हदि वेहद की सुधि हुय, हरीया राम नजीक।—अनुभववाणी

उ०—३ जनहरीया हम कुं कह्या, सतगुरु अैसा दाव। हवि का पासा छाडि दै, बेहद साम्हा आव।—अनुभववाणी

४ मृत्युलोक।

उ०—वेहद कु पुहुचै नही, हरीया हदि कै लोक। तन तो माटी मैं मिल्यो, मनयौ सासै सोक।—अनुभववाणी

वि —१ सांसारिक, लौकिक।

उ०—हरीया हदि आसामुखी, ताहि न करीयै हेत। वेहद वास निरारा घर, ताकुं तन मन देत।—अनुभववाणी

२ अज्ञानी।

उ०—वचन सुण्या वेहद का, हवि न आवै दाय। हरीया सुण्य मैं साईया, ता सु ध्यान लगाय।—अनुभववांणी

३ देखो 'हद' (रू भे)

हवियौ—स. पु.—सीमा पर गडा हुआ पत्थर।

वि.—लौकिक।

हवीस—सं स्त्री. [अ] १ नई बात, नई खबर।

उ०—तन मन सौज सवार सब, राखै बिसवा बीस। सो साहिब सुमिरै नहीं, दादू मान हवीस।—दादूवाणी

२ हिन्दुओ मे 'स्मृति' ग्रन्थ जैसा मुसलमानो मे मुहम्मद साहब की कही हुई बातो का संग्रह-ग्रन्थ।

उ०—जुमलै तीन ईवगा। हवीस में कहे है ईवगा सहर उत्तर तरफ करावणी।—बा. दा. ख्यात

हवेस—देखो 'हद' (मह; रू. भे.)

उ०—रूपजी वास री हवेस रै फाळरै छै।—नैणसी

हवौहद—वि.—हठपूर्वक।

उ०—निहाव सबद्दां वजा सोक नीर कूप नद्दां, मद्दां छाकां दुरद्दां छकको फरकै समाध। कै भड़ां सधीरां जग छकावै जरद्दां कीधा, हदौहद्दां मरद्दां करद्दां भलै हाथ।—सुखदान कांवियौ

हद्दंबिहद्द—वि.—अपार, असीम।

उ०—जिकै वार बोलै वडा पात जद्द', वडा वस वाखांण हद्दं-बिहद्द। छुटै अम्रताधार अप्पार छद, चवै वस वाखांण बै भाण चद।—सू प्र.

हद्द—देखो 'हद' (रू. भे.)

उ०—१ पड़ै निहाव भेरि, घाव उझटा पर्भगय। मह्रा समुद्र लोप हद्द जाण लीध मग्गय।—रा. रू.

उ०—२ फिरग जना री फौज मैं, 'पातल' प्रथी प्रसिद्ध । करनळ व्हैरणौ है कठण, हुयगौ जनरल हद्द ।—जुगतीदान देथौ

उ०—३ ताहरा तिणि कहियौ—पातिसाहजी सलामति मिरी हद्द है जु हू हजरत रै पाए आवतं नु पालू ।—द वि

उ०—४ देरा सेवग लक दाता, घल्ल व्याध कवध घाता । बिसू रखरा क्रीत वाता, हद्द हाता हद्द हाता ।—र. ज प्र

हद्दि—देखो हद' (रू भे)

उ०—धनि आखै सारी धरा, मनि कापै महमद । साकाबध कमधा रा, वाका हद्दि समद ।—रा रू

हधूरण–स. पु —आधा मन, बीस सेर ।

उ०—मरण पक्कै पारणी री लोट, कच्चै हधूरण आटै री पाव री, खीर हाळी तबली अर ओढण-बिछावरण रा गाभा काधै नाख्या, न्हास्या वगता ।—दसदोख ।

हधूर–स स्त्री.—हुत्कार ।

उ०—केई दाति आगुली लेई ओलगइ, केई वेलगाडी ओलगइ, केई स्कधि कुठार घाली ओलगइ, केई हधूर चालइ लोटइ लीलइ ओलगइ, इसिउ प्रतापी राजा राज्य करइ ।—व. स

हनकरणौ, हनकबौ—देखो 'हिरणहिरणरणौ, हिरणहिरणबौ' (रू भे)

उ०—हनकिय बाजि मिळै दुहूं ओर, धुनकिय तोप धुनि उडि सोर । गनकिय तोप तुपक्कनि-भक्ख, भनकिय आमिख-हारन लक्ख ।
—ला रा

हनकणहार, हारौ (हारी) हनकणियौ—वि० ।

हनकिओडौ, हनकियोड़ौ, हनक्योडौ—भू० का० कृ० ।

हनकीजणौ, हनकीजबौ—भाव वा० ।

हनकियोडौ—देखो 'हिणहिणियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. हनकियोडी)

हनणौ, हनबौ—देखो 'हरणणौ, हरणबौ' (रू भे.)

उ०—१ जनमैं रक्त बीज तन ज्यौं ज्यौं । तैं निर्बीज कियै हनि त्यौं त्यौं ।—मे. म

उ०—२ तुही सरजै पाळै हनि, पुनि सभाळै उतपती । अई 'इद्र' अबा जयति, जगदबा भगवती ।—मे. म

हनणहार, हारौ (हारी), हननियौ—वि० ।

हनिओडौ, हनियोडौ, हन्योडौ—भू० का० कृ० ।

हनीजणौ, हनीजबौ —कर्म वा० ।

हनफी–वि, [अ.] इमाम अबू हनीफा के अनुयायी । (मुसलमान)

हनुग्रह–स. पु [स] जबडे बैठने का एक रोग विशेष । (अमरत)

हनुफाळ–स. पु.—प्रत्येक चरण मे १२ मात्राओ व अन्त मे एक लघु वर्ण वाला मात्रिक छद ।

रू भे.—हरणूफाळ ।

हनुमत—देखो 'हनुमान' (रू भे.)

उ०—जिम राम कज्ज हनुमत करि, महिरावण बंध्यव तिखिरिए । काटव ज बध राउ रत्न कै, तु साहस भजउ साह हरिए ।
—प. च चौ

हनुमती–स. स्त्री —एक वनस्पति विशेष ।

उ०—हनुमती नइ हडबडी, हीरावलि हर-मज्जि । हाथाजोड़ी हींकरणी, हैला आवइ कज्जि ।—मा. का प्र.

हनुमत—देखो 'हनुमान' (रू भे)

हनुमत्कवच–स पु [स] १ हनुमानजी का एक स्तोत्र ।

२ हनुमानजी को प्रसन्न करने का एक मत्र, जिसे तावीज मे लगा कर बाधा जाता है ।

हनुमान–स पु [स हनुमत्] एक सुविख्यात वानर जो सुमेरू के राजा केसरिन् एव गौतम कन्या अजना का पुत्र था । यह राम का अनन्य भक्त था ।

उ०—१ राम लखन अरु भरत सत्रुहुन, अगवारणी हनुमान । मीरा के प्रभु राम सियावर, तुम ही कृपानिधान ।—मीरा

उ०—२ दीन्हौ जीवदान हनुमान हिंगळाज दान । धरनी पै भूमि परै धरनी धरन को ।—मे म

वि० वि०—वैशाली नगरी के उत्तर-पूर्व पर्वत प्रदेश मे मरुत्त नामक एक पौराणिक मानव जाति निवास करती थी । हनुमान की उत्पत्ति इसी मरुत्त जाति मे होनी मानी गई है । इसीलिए इसका नाम मारुति भी है । पौराणिक मतानुसार इसे शिव और वायु के अश से उत्पन्न होना माना गया है ।

यह किष्किन्धा के वानरराज सुग्रीव का मुख्य अमात्य था । यह एक सभाषण चतुर राजनीतिज्ञ, वीर सेनानी था । साथ ही यह, विनम्रता, निर्भीकता, निरभिमान, वाणी-माधुर्य आदि सत्व गुणो से युक्त था । राम एव सुग्रीव की मैत्री मे इसने प्रमुख भूमिका निभाई और सुग्रीव का राज्य स्थापित करवाया । इसने राम दाशरथी की बहुत सेवा की । सीता की खोज, लंका-दहन एव राम-रावण-युद्ध मे इसने कई असाध्य कार्य किये ।

इन्द्र, यम, वरुण, सूर्य, ब्रह्मा, शिव आदि देवो से इसको कई प्रकार के वरदान प्राप्त हुऐ । इन्द्र ने इसको वज्र दिया और अवध्यत्व व हनुमत् नाम दिया । सूर्य ने इसको शास्त्रविद् बनाया । इस प्रकार यह दैवीगुणो से युक्त हुआ ।

देवताओ से शास्त्रास्त्रो से युक्त होने के कारण एक बार यह अत्यन्त ही उच्छृखल हो गया, तब भृगु, अगिरस आदि ऋषियो ने इसको शाप दिया कि 'इसकी अगाध दैवी सामर्थ्य इसे स्मरण नही रहेगी और कोई देवतातुल्य व्यक्ति ही इसे याद दिलायेगा तभी उसका सदुपयोग होगा ।

यह अखण्ड ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय एव उर्ध्वरेतस् था । ब्रह्मचारी होने के कारण इसका अपना कोई परिवार नहीं था लेकिन इसके पसीने की बूद से मछली के गर्भ से उत्पन्न मकरध्वज नामक मत्स्यराज को इसका पुत्र होना आनन्द रामायण मे माना गया है ।

लोग इसको संकटमोचक देव एवं राम के परमभक्त व दासानुदास के रूप में मानते हैं।

वि.—१ वीर, बहादुर।

२ भारी दाढ़ या जबड़े वाला।

रू. भे.—हणू, हड़मत, हड़मत, हड़मान, हड़ूमांन हड़ूमान, हडमंत, हडमत, हडुमांन, हडूमान, हण, हणमंत, हणमत, हणमति, हणमांन, हणरथि, हणवत, हणवत, हणु, हणू मान, हणु, हणुअगी, हणुमत, हणुमत, हणुमान, हणुमा, हणू', हणू'मांन, हणू, हणूमत, हनुमत, हनुमत, हनू, हनूमत, हनूमत।

अल्पा.—हड़मानी, हणमती, हणमतियो, हणमतो, हणूयो।

हनुमानजयती—स. स्त्री. यौ [स हनुमत्+जयन्ती] चैत्र की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला उत्सव, जो महावीर हनुमान का जन्म दिवस माना जाता है।

हनुमानबैठक—सं स्त्री—एक पैर पैंतरे की तरह आगे बढ़ाते हुए बैठने उठने की एक कसरत विशेष।

हनू, हनूमत, हनूमत—देखो 'हनुमान' (रू. भे.)

उ०—१ साधवान वैनतेह अमीधार पुनी तेज, कूज नाग ज्वाळा गयी सिध कहू सेस। ईस मेर साह हनू अधी अजं आप भोग, अहु खटा वै भेक सो राजे 'भगतेस'।—भगतराम हाडा री गीत

उ०—२ लीला तव महेस्वर तणी, सस्टि ब्रह्मा तणी, प्रतिग्या स्रीराम तणी, पवनवेग कला हनूमत तणी, मर्म दुरयोधन तणी।
—व स.

हनोज, हन्नोज, हन्नोज—क्रि वि. [फा हनोज] १ अब तक, अभी तक।

उ०—१ काबिल कलाम कहियत करीम, रहमान हुक्म रय्यत रहीम। खातरी नजर धर करहु खोज, हम है न सजा लायक हनोज।—ऊ का.

उ०—२ बिलूबो निधी नीर स्रीहाथ बांमै, पुरी मैं सको सीर हन्नोज पामै। सजा हु छुड़ायो भाई राव सेखो, लाई पुत्र पिप्तेस रो छोप लेखो।—मे. म.

२ नित्य, हमेशा।

३ नहीं तो।

४ अन्यथा, वरना।

हप, हप्प—स. पु.—मुह से जोर से श्वास छोड़ते हुए एक दम होठ बंद कर लेने से उत्पन्न शब्द।

वि. वि.—प्राय छोटे बच्चो को सिखाते समय या प्रताड़ना देते हुए ऐसी क्रिया की जाती है।

क्रि. वि.—शीघ्रता से, जल्दी से, तुरन्त, सहसा, एकदम।

उ०—मासी तुरत की जबाब देवण वाळी ही कै दोनूं टाबर हप्प करती रा मांय आय धाधरा मासी सू लटूमग्या।—फुलवाड़ी

हफत—वि. [फा. हफ्त] १ सात की सख्या।

उ०—एक कही असपति, लिखै खत हफत बिलायत। हफत नकल लिख हफत, कगध फुरमांण हकीकत।—सू प्र.

२ सात दिन की अवधि, सप्ताह।

हफतहजारी—स. पु. [फा. हफ्त | हजारी] मुगलकालीन एक पदवी, जो सात हजार सैनिको के सरदार को दी जाती थी।

उ०—हफतहजारी हफत, सभो हक सव जै सायत। आय हफत ईसफा, मिळी हफतम सफि हिमायत।—सू प्र.

रू. भे.—हजारीहफत।

वि.—सात हजार वाला, सात हजार का।

हफतौ, हफ्तौ—स. पु. [फा. हफ्त:] सात दिनो के समूह की एक अवधि, सप्ताह।

उ०—अठै सू फारम लियो अर भर्‌यो एक हफ्तै तांई इण वास्तै बिना काम घूमतो फिरयो थयूं कै भरती रै वास्तै 'टैस्ट' आगले सोमवार नै होवणो हो।—तिरसकू

हब—क्रि. वि. [अनु] १ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त।

२ आसानी से। ३ अब।

हबकणौ, हबकबौ—क्रि अ.—१ छलकना, उछलना।

२ फिरना, घूमना।

३ निरुद्देश्य घूमना, आवारा फिरना।

४ काटने के लिए झट से मुंह खोलना।

५ द्रव पदार्थ का तेज गति से गति करते हुए बहना, उछलना।

हबकणहार, हारो (हारी), हबकणियो—वि०।

हबकिओड़ो, हबकियोड़ो, हबक्योड़ो भू० का० कृ०।

हबकीजणो, हबकीजबो—भाव वा०।

हबक्कणो हबक्कबो—रू० भे०।

हबकियोड़ो—भू. का कृ.—१ छलका हुआ, उछला हुआ. २ काटने के लिए झट से मुह खोला हुआ ३ आवारा फिरा हुआ।

(स्त्री. हबकियोड़ी)

हबको—सं. पु. [अ स. हबका] मृत्यु के समय अन्तिम श्वास लेने की क्रिया।

उ०—ऊंण हबका खावण लागो। ओझाजी आया। गीता सुणाई, वखाण ली।—वरसगांठ

हबक्कणौ, हबक्कबो—देखो 'हबकणो, हबकबो' (रू भे)

उ०—म्हारै पती री जोधारां रै लागोड़ा घाव हबक्कै बोलै, अनै रिण बावळा हुयोड़ा जोधार बकै जिकै तमासा म्हारै पती रै देखण लायक जाणणा।—वी. स टी.

हबक्कणहार हारौ (हारी), हबक्कणियो—वि०।

हबक्किओड़ो, हबक्कियोड़ो, हबक्क्योड़ो—भू० का० कृ०।

हबक्कीजणो, हबक्कीजबो—भाव वा०।

हबक्कियोड़ो—देखो हबकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हबक्कियोड़ी)

हबड-हबड़–क्रि. वि —१ शीघ्रतापूर्वक, शीघ्रता से, तेज गति से।
२ 'सबडका' मारते हुए।
हबड़ाक–क्रि वि.—तुरन्त, शीघ्र, उसी समय।
हबद—देखो 'हौदो' (मह, रू भे.)
उ०—उड पडै पोगरा धरति आए, जनमेज जाग रा नाग जाए।
हाथिया दात पग धर हकार, मीरिजा जगी हबदां मझार।
—वि स.
हबबाहण—देखो 'हव्यवाहन' (रू भे) (डिं को)
हबरकै—देखो 'अबरकै' (रू भे)
उ०—भारथा देखि साथी घणा भाजिया, समर रौ हुवौ गजगाह साथी। आगै भीमडै हाथी घणा उछाळीया, हबरकै भीव नखि गुडै हाथी।—गजसिंघ कछवाहा री गीत
हबवाहण—देखो 'हव्यवाहन' (रू. भे.)
रू. भे—हबबाहण।
हबस–स पु [अ हबस] १ मिश्र के दक्षिण में पडने वाला अफ्रीका का एक प्रसिद्ध देश।
२ देखो 'हविस' (रू. भे)
३ देखो 'हबसी' (रू भे.)
उ०—१ सीसा जामग सोर, भार गाडा बाण भर। चव हजार सुत्रनाळ, हबस उसताज बहादर।—सू. प्र
उ०—२ खुरसाणी रहमान अखूनी, सीदी हबस राफसी सूनी। मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुर जस थानी ताई।—रा रू
हबसनफस–स पु—प्राणायाम। (मा म.)
हबसाणी, हबसानी–स स्त्री—१ घोडों की एक जाति विशेष।
उ०—सू घोडा कुण जात रा छै, कुण रग भात रा छै? ऐराकी, आरबी, तुरकी, खधारी, ताजी, सिकारपुरी, धारी, काछी, माळवी, हबसानी, पूरबी, टाघण, पहाडी, जिन्हाई और ही अनेक जात रा घोडा तयार कीजै छै।—रा. सा. स
२ उक्त जाति का घोडा।
३ एक प्रकार की तलवार।
उ०—सू तरवारिया किण भात री छै। सीरोही री नीपनी वै आगळ बाढ झेरिया थका जनैब मगरैब फुडतकळ सेफ विलायती गुजरी बिराणपुरी हबसानी फिरगी सू म्यानां माहा काढ घास मैं नाखजै।—रा. सा. स
हबसी–स. पु. [अ हबशी] १ उत्तरी अफ्रिका के प्रसिद्ध देश 'हबश' का निवासी जिसका शरीर बिल्कुल काला होता है।
२ हबश देश के मुसलमान जो सुन्नी मुसलमानो का धर्म पालन करते हैं। (मा. म)
उ०—हबसी साह हुसेन, तरह मवला तूरानी। सेरसाह इसफहा, अभग अहियौ ईरानी।—सू. प्र.
३ एक प्रकार का काला अगूर।
वि—हबश देश का, हबश देश सम्बन्धी।
रू. भे—हबस।
हबास—देखो 'हवास' (रू भे.) (अ मा.)
हबिद, हबिदौ, हबींद, हबींदौ–स. पु [अनु] किसी के गिरने या टकराने से उत्पन्न होने वाली एक तेज व भारी आवाज।
उ०—१ डोलर हीडा ज्यू, सिळगती गवाडी घूमण लागी। काळजा मे जाणै तोपां रा हबिदा गूजण लागा।—फुलवाडी
उ०—२ चार पोहरा खाया जद नोठ वौ बावडी मायै पूगौ। पाज मायै धरनै बोरी माय सिरकाय दी। जोर सू अेक हबिदौ सुणी-जियौ।—फुलवाडी
उ०—३ तद वौ खेसला रै पल्लै बध्या काछबा नै खोल हबिद करतो हेटै थरकाय बोल्यौ—अर म्हारी जू इत्ती लाठी।
—फुलवाडी
रू भे—हब्बद।
हबीड—देखो 'हबीड़ौ' (मह; रू. भे)
हबीडणौ, हबीडबौ–क्रि स—१ गिराना, पटकना।
२ मारना, पीटना।
हबीडणहार, हारौ (हारी), हबीड़णियौ—वि०।
हबीडिओड़ो, हबीड़ियोडौ, हबीडयोडौ—भू० का० कृ०।
हबीड़ीजणौ, हबीडीजबौ—कर्म वा०।
हबीडियोडौ–भू. का कृ—१ गिराया हुआ, पटका हुआ. २ मारा हुआ, पीटा हुआ।
(स्त्री. हबीडियोड़ी)
हबीडौ–स पु [अनु] १ किसी भारी वस्तु के ऊपर से गिरने पर उत्पन्न ध्वनि, धमाका।
उ०—झटक झाडबड रटक सूड पर उठण दे हबीडौ रे बेली। धीरै रे।—कानदान कल्पित
२ चोट, प्रहार।
३ जोर का धक्का, जोर की टक्कर।
रू भे.—हब्बीडौ।
मह—हबीड, हब्बीड।
हबीब–स. पु [अ.] १ मित्र, दोस्त।
२ प्रेमपात्र, माशूक।
हबूब–स. पु. [अ.] १ आधी, तूफान।
२ पानी का बुलबुला।
३ निस्सार बात।
हबै—देखो 'हवै' (रू. भे)
उ०—बाका जेह न लागा बीजा, साहिगाजी औरंग सुकठि। हठि हठि घणी चढायौ हिंदू, हबै उतरसी घणै हठि।
—जैसिंघ कछवाहा री गीत
हबोथब, हबोथबी–क्रि. वि—१ गुत्थम-गुत्था।

उ०—लफंगा खीच्या वेह हाळा बास । अर दोनां पखा हाळा हुया आपस मे हबोथबो भिडग्या, हाथै बाथै नीं रैया ।—दसदोख

स. पु —२ डिंगल का एक छन्द विशेष । (किराड़ रासौ)

३ पूर्ण भरा हुआ, छिलोछिल ।

हबोळो–स. पु.—१ लहर, तरग, हिलोर ।

उ०—१ भरिया जोडला मारै छै हबोळा ।—पाबूजी रा परवाड़ा

उ०—२ मासी रा नेह मैं समदर रै उनमान तूफान, गरजण छोळा, हबोळा इत्याद सै बाता ।—फुलवाडी

२ उमग ।

३ झूमते हुए चलने की क्रिया या भाव ।

उ०—चद बदनी मुख चोज, हसगति चालबी । हाव-भाव गावत, हबोळै हालबी ।—बगसीराम प्रोहित री बात

४ समूह, झुड ।

उ०—१ घटा घोर अंबर घरहरिया, फौजा पर झंडा फरहरिया । फौजा तणा हबोळा फिरिया, झोळा जिम गोळा झोसरिया ।

—बरजू बाई

उ०—२ सोनै री झाळ नीलाड रै ऊपर दीना । कुरजा री टोळो । सहेल्यां रो हबोळो । साथ लीनां ऐ लागणा लोयणां ।—पना

उ०—३ फागण फाग राग फरहरिया, फौज मनोज हबोळा फिरिया । मानो जो मानो मुरधरिया, क्यूं ऐ भेस विदेसां करिया ।

—बारामासा रो गीत

उ०—४ मिळ 'पेम' विसाळ 'देबाळ' मुणो, तिणताळ हबोळोय जान तणो । दत वालाय बाहिर झोल दियां,'कमठाळय तेल चगेल किया ।—पा. प्र.

५ चमक ।

उ०—हुव सावण धण बीज हबोळै, हीडा कामण तीज हिलोळै । झुक सरवर नव नीर झकोळै, वालम चवण न कीजै भोळै ।

—अज्ञात

६ मन की इच्छा, मौज ।

७ जलसा ।

८ टक्कर, भिड़त ।

उ०—भौळां ज्यूं आसार भट, गोळा गैण गरज्ज । पर टोळां सिर 'पातलो', करै हबोळां कज्ज ।—किसोरदान बारहठ

रू. भे.—हिबोळो ।

हब्बड—देखो 'हुबिद' (रू. भे.)

उ०—तीजी टक्कर तो किला रो दरवाजो चूळिया समेत उखलने नीचो पडियो । हब्बड हब्बड करतोडो ।—अमरचूंनडी

हब्बीड़, हब्बीड़ो—देखो 'हुबीड़ो' (रू. भे.)

उ०—१ खड़ीड़ खड़ीड हब्बीड़ हब्बीड मोटर रा छाजला मे मिनखा रा छोटा मोटा दाणा उछळ उछळ नै नीचा पडता ।

—अमर चूंनड़ी

उ०—२ चौधरी रा धै छिलग्या । भवळ सी आवण लागी । पण हिम्मत बाधी । अबै उछळ मे माथो देयनै हब्बीड़ा सू काई डरणो । ठहेला जिसी आग री ।—अमर चूंनड़ी

उ०—३ तीखा तीखा लोखड रा सिरिया रूपी दांत लियां वो हाथिया सू हब्बीड़ा लेवण री हिम्मत राखतो, मिनख बापड़ा री काई जिनात ।—अमर चूनडी

हब्बोडब्बो–स. पु —प्रायः बच्चो को होने वाला श्वसन रोग, न्यूमुनिया ।

हब्सेबेजा–सं. पु. [अ.] अवैध रूप से रोकने की क्रिया ।

हमचो–सं पु.—१ गाँव में कृषि कार्य शीघ्रतापूर्वक करते हुए उच्चारण किया जाने वाला शब्द ।

२ सदेश, सूचना, समाचार ।

हमस–स पु —कोलाहल, शोर ।

उ०—विलहिया तुरी सह राजवस, हदमरा भड़ा हुई हमस । जह जिसउ तुरी तह चीन्ह जाणि, पाट रउ पवग पडव पलाणि ।

—रा. ज. सी

हम–सर्व [स. अहम्] मैं का बहुवचन, हम ।

उ०- मारो हू सिख नाथ री, गोरख ध्यान गहाह । किण कारण कमधज कहै, हम भज देख रहा ।—पा. प्र.

स. पु.—अहम्, घमण्ड ।

वि. [फा. हम·] सर्व, सब, समस्त ।

रू. भे.- हुमा ।

हमअसर–वि [फा. हम +अ. असर] एक ही समय मे होने वाला, एक समान प्रभावशाली ।

हमउमर, हमउम्र–वि. [फा. हम +अ. उम्र] समान आयु का, सम-वयस्क ।

हमकर–स. पु —१ गर्व, अभिमान ।

उ०—फाकर वेला हमकर परहरण, वे दिलाय सो खुदाय, पिंड पोखण भरण ।—केसोदास गाडण

२ देखो 'हिमकर' (रू. भे.)

उ०—है नभ जतै अहमकार हमकर, मर पुर अतै रहण री नीम । महत सुजस विसतार न मावै, भरत खंड मभ राणा भीम ।

—महाराजा मानसिंह

हमकलै, हमकलै, हमकै–क्रि वि.—इस बार, अबकी बार ।

उ०—१ ताहरां वीरमदेजी कह्यो—हमकै हू काम आइस । हमकै नीसरू' नहीं, घणी ही वार नीसरियो ।—नैणसी

उ०—२ हमकै 'अजमल' होत, असधारी आगड़ इळा । गढ छोडै गहलोत, जातो नह रावळ 'जसू' ।—वलजी महडू

उ०—३ कई जनम का सोता हंसा, हमकै जाग गया । तन मन खोज जोग की बातां, इसमे लाग रया ।—हरिरामजी महाराज

हमकोम–वि. [फा. हमः+अ. कौम] अपनी जाति का, स्वजातीय ।

हमगीर–वि. [फा हम·गीर] १ समस्त, समग्र, पूर्ण, कुल ।

२ विस्तारपूर्ण, विस्तृत ।
उ०—बणी बहु काळ तणी तसबीर, गणी नह जाय घणी हमगीर । सझ्या खग खप्पर चक्र त्रसूळ, झल्या कर डेरव भैरव झूळ ।
—मे म.
३ अग्रगण्य, अगुआ नेता ।
उ०—१ हमगीर जिको वागा हका, सिंधुर ऊपर सेर सौ । 'सूरज' पसाव ऐराक सुध, सूरज तुरगा एरसौ ।—सू प्र
उ०—२ नाहर वस निपाति हुवौ हमगीर सो । वसुधा करै वखाण बहादर वीर सो ।—सिवबक्स पाल्हावत
४ वीर, बहादुर, योद्धा ।
उ०—१ तिण सोमेसर तनय, हुवा उभै हमगीर । एक भरत दूजो उरथ, निज कुळ चाढण नीर ।—व. भा
उ०—२ हमगीर करण जुध हैमरा, धोम अराबा धरहरै । चिलतह छतीस आवध चुरस, कुळ छतीस राजस करै ।—सू. प्र
५ मारने व नष्ट करने वाला ।
उ०—दुख मेटण पोट कबीर घरा दिस, हाकल कीध वईर हरी । करवा दुय चीर सरीर झुकायौ, काप रयौ हमगीर करी ।
—भगतमळ
६ सभा के नियमो को तोडने वाला, उद्दण्ड, उत्पाती ।
उ०—होय सभा हमगीर, दुय हाथा खंचै दुसट । चळ्यौ पुराणौ चीर, सिर सू चाल्यौ सावरा ।—रामनाथ कवियौ
७ अनुगामी ।
उ०—बध्यौ बळ धी गळ कज विकास, प्रभा परिपूरण प्रेम प्रकास । ह्रदै हुय नाम हली हमगीर, सवी रग रोम खुली सुख सीर ।
—ऊ का
८ उत्तेजित ।
उ०—हुवौ अधिक हमगीर हाथ नहि होवसी । सीहा वस सताब खरौ, जड खोवसी ।—सिवबक्स पाल्हावत
९ मित्र, दोस्त, सहायक, साथी ।
१० मस्त, उन्मत्त ।
११ प्रसन्न, खुश ।
क्रि वि.—साथ ।
उ०—पच अयुत लग सग दळ, होय किलम हमगीर । कियौ मुकाम उलधि जळ, खळ वाखिस्टी तीर ।—ला रा.

हमगीरता–स. स्त्री.—१ मित्रता, दोस्ती ।
उ०—वीरता 'पता' की, रनधीरता 'पता' की । हमगीरता 'पता' की, पर पीरता 'पता' की जू ।—किसोरदान बारहठ
२ नैसुत्व ।

हमचौ–सं. पु —१ नौबतखाने मे वाद्य-वादन के समय शहनाई के अतिरिक्त नगारे, दमामे एव धूंसे पर किया जाने वाला वादन ।
२ उक्त वाद्य के साथ किया जाने वाला नृत्य ।
क्रि. प्र.—लेणौ ।
३ रावळो द्वारा रात्रि का खेल (रामत) समाप्त करने के बाद प्रात· देवी के सामने किया जाने वाला नृत्य ।

हमचौ–स पु —१ आक्रमण ।
२ तैयारी ।
३ वीर-ध्वनि ।
४ सदेश, समाचार ।

हमजोळी, हमझोळी–स पु —साथी, सखा, मित्र ।

हमणौ–सर्व —हमारा ।
उ०—कुखत्री लोपी कार, बूढे नै जीवै बहू । चौडै चूथ चकार, हमणौ वत लै हीडिया ।—पा. प्र.
क्रि वि —अब ।

हमतम, हमतमौ–स पु.—तूतू-मैंमैं, लडाई ।
उ०—१ विण अीठ रीठ उडुं विखम, हमतम ऊधम हैमरा । सक फौज कीध सका सहित, जाण क लका वन्नरा ।—रा रू
उ०—२ उण देस चाली जठै प्राणा री वोपार जिण सिरदार रै हमतम होवै कठैई सत्रुवा ऊपर चढे है कठा सू ई दुसमणा री फौज ऊपर आय गई है इण तरै प्राणा री वौपार होवै जठै लै चाली ।
—वी स टी.
रू भे —हमतम्म ।

हमतम्म—देखो 'हमतम' (रू. भे.)
उ०—सुणै कीध 'अभसाह', किलम ताकीद हुकम्मा । बिहुवै फौज नकीब, ताम फिरिया हमतम्मा ।—सू प्र

हमदरद–वि. [फा हमदर्द] सुख-दुख का साथी, सहायक ।

हमदरदी–स स्त्री. [फा] सहानुभूति ।

हमपेसा–वि [फा हमपेश] एक ही तरह का पेशा करने वाला, सह-व्यवसायी ।

हममजहब–वि. [फा.] एक ही धर्म को मानने वाले, सहधर्मी ।

हमरग–वि —समान रग वाला ।
उ०—ज्वाब ज्वाब कै ऊपर सबज हमरंग वर मतगै धरै । सुनही गुलजार कस्मीर कै कांम ।—सू. प्र

हमरकै—देखो 'हमकै' (रू. भे.)
उ०—१ जायै जीव नू मरणौ छै, हमरकै आपे भेळा हुय जास्या, देखा गोविंद कासू करै ।—नैणसी
उ०—२ मठै वेवडा रै खबर आई । आज हमरकै जीवण री सोस कोई नही । पैहली हाथी धीठा हुता । हमरकै ता वडाळियौ ।
—राव तीडै री बात
रू. भे.—हमलकै ।

हमराह–स. पु. [फा.] १ साथी, मित्र ।
२ सग, साथ ।
उ०—आसमानी मौहरा किये पल्लै सै झिलतै आए । छछौहै हौस-

नामगूं की हुमराह रा छूटै ।—सू प्र.

वि.—१ एक मत ।

२ एक ही रास्ते पर चलने वाला, राह का साथी ।

हुमरोट—देखो 'अमरकोट' (रू भे.)

उ०—१ सभरात सजै सबगात सलै, हुमरोट धरात वारात हलै । करहा अस धांधल लूंग कियूं, अमरोण जती खड आवहियूं ।

—पा प्र.

उ०—२ ऊमर हुवौ दूसरो, हुतौ नाम हमीर । तै हुमरोट कहावही, सुखकर नीर समीर ।—बा. दा.

हुमरोटी-सं. स्त्री —ऊमरकोट की स्त्री ।

उ०—आभूसण तन आभरण, जकै आवता झूल । हसगती हुम-रोटियां, दिपै सुरग वकूल ।—पा प्र.

हुमल-स पु —१ समुद्र, सागर ।

उ०—पड़ियाळग मेर सभै पिंड संग्रह, हुमल हिलोळै आय हुथ । किसन किसन जिम रतन काढ़िया, महण गडोवर खड मथ ।

—स. वा.

२ समूह, झुण्ड, दल ।

उ०— हैवराण एराकिया हुवतां, हाथियां मद वहुता हुमल । देखे गजबध तणा दूथियां, दूजै वेरीतां दहल ।—किसनो आढो

हुमलकै—देखो 'हुमरकै' (रू. भे.)

हुमलौ, हुमल्ल, हुमल्लौ-स. पु [अ. हम्लः] १ आक्रमण, हमला ।

उ०—१ रह तोप हरोल चदोल रुखी, मक्र कोल गयद मयंद मुखी । हचकै बहुबेल करै हुमला, टहरौ लगि गैल गयद टला ।

—मे. म.

उ०—२ झरणे री तळाई रै च्यारू मेर चमगादड़ां हुमलौ बोल दियौ अर उणां री चांमडी री बडी पाखां सूं सांय सांय री डरा-वणी अवाज सगळी घाटी मांय फैलगी ।—तिरसंधू

उ०—३ किता तै बार बिखै कल्पत, बांधी लै स'ग अथी बळवंत । हुलायौ केता बार हुमल्ल, मथै महरांणव हेकल-मल्ल ।—ह्र र.

उ०—४ हूलै हुमल्ल मल्लको करीन हल्लपै हूलै । बहै न हल्ल घल्लकै स्वहल्ल और की बनै ।—ऊ का.

उ०—५ पायकां के हुमल्लै बांक पट्टै फूलहत्थूं दाव । नजरवल्लेक का हुन्नर अंगूगा वचाव । हणमत रूप जगजेठून भुजग दढू पर ।

—सू. प्र.

२ आघात, चोट, वार, प्रहार ।

उ०—धरा मोर खेंगा खुरा जोर धूजै, मरै वाग विच्छोहिया अग्ग मूजै । हुमल्लां असा सेस चा सीस हल्लै, दिसा अग्र बाजू सकाजू दहल्लै ।—रा रू.

३ चढ़ाई, युद्ध प्रयाण ।

उ०—१ हुमलौ कर आदमी हजार डेढ सूं अचांणचक गया । सो गाय सूं अेक कोस उरै जाय नौबत बजाई ।

—सूरै खींवै कांधळोत री बात

उ०—२ जुड़ै आय सव्वासण्या रायजादी, बरस्सै कई रोयका गाय बादी । हुमल्लै धनी उवरी रेन हुदै, मनो मेघली बद्दरी रेन बंदै ।

—मे. म.

४ झटका ।

उ०—तद गूसलै आयनै वेपाळ नु बांधीयौ । पातसाह री बेटी नु ऊठाय दीवी । तद वेपाळ हुमला दीया पिण रसी तुटी नहीं ।

—वेपाळदे धध री बात

५ टक्कर, भिड़त ।

६ दाव पेच ।

हुमस-सं. पु.—१ सेना, फौज ।

उ०—ज्यू 'दुरगै' 'अभजीत' सुरखर गाफळी । आहुव आहुव आग वणायौ भुजबळी । सधर 'पता' पर सार झळा प्रगळेस रै, हुमस हुलावणहार सहायक वेसरै ।—किसोरदान बारहठ

२ गर्व, अभिमान ।

३ भूमि, पृथ्वी ।

४ कोई बड़ा कार्य ।

५ इच्छा, अभिलाषा ।

रू. भे.—हुमस्स ।

हुमसर-स. पु.—बराबरी के दरजे का व्यक्ति ।

हुमसरी-स स्त्री.—बराबरी, समानता ।

हुमसाया-सं पु [फा] पड़ोसी ।

हुमस्स—देखो 'हुमस' (रू. भे.)

हुमां-सर्व.—हम ।

हुमाम-स पु. [अ हम्माम] १ नहाने या स्नान करने का कमरा या कक्ष, स्नानागार ।

उ०—सूरज कुंड चादपोळ बारै १६७२ रा जेठ वद २ नै ऊपर हुमाम करायौ और सगळौ १ सूरजकुंड मांथै मागै करायौ १७२६ मे, जिण रा बाग सिरकारी ताणा, जसवंतसिंघजी री बार रै ।

—नैणसी

२ वह अन्धकारमय तहखाना, जिसमें दण्डित अपराधी को डाल दिया जाता है, तलगृह ।

उ०—होय न हिकमत लख हुवां, हीणां डाल हुमांम । धारण करणौ पर धरम, हिय बिच गिणै हराम ।—रेवतसिंह भाटी

३ कोई कमरा या कक्ष विशेष ।

उ०—जांणै सातम सररी सुहावण हुमांम रै झरोखै आपां खाइ नै रही नै च्यार टाक चावळ खाएं तो सरीर अहार-विकार थाए ।

—रा. सा स.

[अ. हुमामः] १ कपोत, कबूतर ।

२ गले पर कण्ठीदार पक्षी ।

हमांमदस्तौ–स पु [फा हावनदस्त] लोहे की ग्रोखली व मूसल ।
उ०—तथा लोह रा हमांमदस्ता ग्रादि पिण पाडिहारा रात्रि ग्रहस्थ रा थका रहै तिण मैं दोस नहीं तौ सूई कतरणी छुरी ए पिण ग्रहस्थ रा थका पाडिहारा रात्रि रहै तिण मैं दोस नहीं ।
—भि द्र
रू भे —ग्रमामदस्तौ, मामदस्तौ, हिमामदस्तौ ।

हमाऊ–स पु —सुरखाब नामक पक्षी, जिसके बारे में किंवदती है कि जिस किसी पर उसकी छाया पड जाय, वह बादशाह बन जाता है ।
उ०—१ हमाऊ रस सारस राजहस, ग्रखै भौर भकार बेपार वस ।
—रा. रू.
उ०—२ हमाऊ परा तोकरा छाह हेकी । न को पार ग्रोतार थारा ग्रनेकी ।—मे म
रू भे —हमायु, हमायू ।

हमाट–स स्त्री —ध्वनि विशेष ।

हमात—देखो 'हमायत' (रू भे)

हमायचौ–स पु —एक माप या परिमाण विशेष ।
उ०—सात हमायचा भाग, सात सुराई सराब की, सात सीका जमनाजळ री . . ।—तिमरलिंग पातसाह री बात

हमायत–सर्व —हम, मैं ।
रू. भे.—हमात ।

हमायु, हमायू—१ देखो 'हमाऊ' (रू भे)
उ०—सिर छाया राज हमायु समवै, सो इक पीढी राज समाज । कर छाया थारी राजा कमधज, रेणव ग्रनत पीढिया राज ।
—सावळदास कवियौ

हमार–क्रि वि —ग्रभी, इस समय ।
उ०—भाटियै कह्यौ—टीकौ काढा ।' तरै देवीदास कह्यौ—टीकौ हमार हू कोई कढाऊ नहीं ।—नैणसी
रू भे.—हमारू, हमारू, हिमार, हिमारू, हैमार ।

हमारउ—देखो 'हमारौ' (रू. भे)
उ०—बाबहिया डूगर-दहण, छाडि हमारउ गाम । सारी रात पुकारियउ, लइ लइ प्रिउकउ नाम ।—ढो. मा

हमारू, हमारू—देखो 'हमार' (रू भे.)
उ०—फेर मन मैं ग्रा विचारै छै—कै हमारू वड सू नीचै उतरनै हाथ पकड घरै लै जाऊ ।—पलकदरियाव री बात

हमारौ–सर्व [स्त्री हमारी] हमारा, मेरा ।
उ०—माह नू ग्रावइ सखी, एह हमारी बुज्झ । साल्ह कुवर सुहिणइ मिल्यउ, सुदरि सउ वर तुज्झ ।—ढो मा
रू भे —हमारउ ।

हमाल–स पु. [ग्र] १ बोझा ढोने वाला मजदूर, भारवाहक, कुली ।
उ०—१ मख ग्रेह पैठै करै भेख मल्ला, हमालां लखा ग्राणियौ नीठ हल्ला । हरी वाळ चमाट जेही चहोडै, तमासा ज्युंही खांचि धानख तोडै ।—सू प्र.
उ०—२ किस्तुरी काळी भली, राती भली गुलाल । राजन तौ पतळा भला, जाडा भला हमाल ।—लो गी
२ सभालने वाला, रक्षक ।
रू भे.—हम्माल ।
वि [ग्र] सदृश समान ।

हमासत–सर्व —हमारे जैसे ।

हमीणौ–सर्व.—हमारा ।

हमीर–स पु —१ भाटी वश की एक शाखा । (बा दा ख्यात)
२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।
३ देखो हम्मीर' (रू. भे)

हमीरकोट—देखो 'ग्रमरकोट' ।

हमेल, हमेलबेग–स पु [ग्र हमाइल] १ बगल मे लटकाने की वस्तु ।
२ छोटा कुरान, जिसे गले मे लटकाया जा सके ।
३ घोडे के गले मे पहनाने का एक ग्राभूषण विशेष ।
४ स्त्रियो के गले मे पहनने का एक स्वर्णाभूषण ।
उ०—१ हमेळबेग चद्रहार, सोभयं सकाजय । उडत नेक चद्र ग्रग, राज पत राजय ।—सू प्र.
उ०—२ 'भाऊ' ग्रप सिवराज भुजाळा, हद गजरा गज देवण हार । 'मान' भूप 'बळवत' महाराजा, हुग्रा हमेल ग्रनै चद्रहार ।
—स्वामी गणेसपुरी
उ०—३ रतना' मैं धिठाई प्रगट हुई लाज थी सू भागी, पायल बिछिया मौन कीवी कटि मेखला बागी । छिब मै छिलिया, हार हमेल हिलिया । छातिया थहरै, केस छूग छहरै ।—र. हमीर
वि वि —उक्त ग्राभूषण स्वर्ण मोहरो का हार होता है, जिसके बीच मे एक बडी चौकी होती है । इस चौकी मे तसवीर भी जडी जाती है ।
रू भे —हुमेल ।

हमेलहार—देखो 'हमेल' (३ व ४)

हमेळौ –देखो 'हामेळौ' (रू. भे)
उ०—नैणा दीठा क्या हुवै, जै न हमेळौ थाय । पेट पड्या ही धापियै, ऊवै खेत गमाय ।—जलाल बूबना री बात

हमेस, हमेसां–क्रि वि. [फा. हमेश] १ सदा, सर्वदा ।
उ०—१ ज्या घण बूद तळाब जळ, मिळ पर दियण हमेस । इक सग्रह गुण लेहु उण, सुण 'प्रताप' उपदेस ।—जैतदान बारहठ
उ०—२ ग्राडदा हमेसां वास्तै पूरा सौ रिपियां रौ महीनौ बाध दियौ ।—फुलवाडी
२ प्रतिदिन, नित्य, रोजाना ।
उ०—१ कुमार कुमारी भेळा बेठ नित हमेसां नी नी व्है जेडी ग्रजोगती बातां विचारता रैवता ।—फुलवाडी

उ०—२ ऊंचै सिर छत्र चमरा हुवै आपटा, हमेसा चोवहर साफ होता। बव री धोख कवि लोग बोलै बिरद, जगै जगदंब री दोय जोता।—मे. म.

उ०—३ दिवस आठ दुरगा तणै, व्है बलिदान हमेस। पूजि पुरष गुरतब पगम, निस गरटणी नरेस।—सिवबगस पाल्हावत

३ हर वक्त।

उ०—१ लखीजै असी भांति आकास लागी। भवानी तणा पाण दीधा पनागी। हमेसा रहै सत्रु री सीस हाथै। पुखै रत्न रोलासळी छत्र माथै।—मे. म.

उ०—२ दुगामा हमेसा बजत त्रिदवेसा नवबती। गाई पदू अबा जयति जगदबा भगवती।—मे. म.

४ प्रायः अधिकतर।

उ०—१ महळी कुराळ विराणै मूंडै, सुक हमेस बाटणी रेस। काजियारी कीजै मुंह काळी, कजिया म नित नवी कळेस।

—बां. दा.

उ०—होवण लगी हमेस गोठ अजमेर री। अरज जिकण री आम करवला सह करी।—सिवबगस पाल्हावत

रू. भे.—हिमेस।

हमै, हमे, हमौ—क्रि. वि.—१ अब।

उ०—१ देवा सागर अगरा मै, आगै ही अरडीग। हमै सिंघ सागर हूठी, अपणायौ तै सीग।—बा. दा.

उ०—२ आया पछै कहण लागौ जु—'राज सोनूं कूडी काळक दे चोरी री काढियौ थो सो हमे साम कूड री आसकरण नै पूछै नै नवेडौ कीजै।—नैणसी

उ०—३ प्रवाड़ा किसू हेक जीहा पुणीजै, करा जोडिया कोडि आदेस कीजै। धजाळी हमै फेर औतार धारचौ, बडौ काम स्री-जोगमाया विचारचौ।—मे. म.

२ इस बार, इस समय।

रू. भे.—हिमे, हिमे, हिमैं, हिमै।

हम्म—देखो 'हम' (रू. भे.)

हम्मर—सं. पु. [स हय+वर] घोडा।

हम्माम—देखो 'हमाम' (रू भे)

हम्माल—देखो 'हमाल' (रू भे.)

उ०—ग्रहि अमीरस बेगार, हम्माल जेम हुजार। सदि जवहरी हूट ताम, जवहार लूटिय जाम।—सू प्र.

हम्मीर—स. पु.—१ प्रसिद्ध रणथम्भोर गढ का एक चौहान राजा जो अलाउद्दीन खिलजी के साथ युद्ध मे सन् १३०० ई० मे मारा गया था।

२ योद्धा, वीर।

३ सम्पूर्ण जाति के संगीत का एक सकार राग।

रू. भे.—हमीर।

हम्मीरनट—स. पु.—नट और हमीर के योग से बनने वाला एक सकार राग।

हय, हयव, हयं—स पु. [स. हय] १ अश्व, घोडा।

(अ. मा., डि. नां मा.)

उ०—१ जसीज जबाब, राजत सताब। हिसार हयब, गराज गयद।

—सू. प्र.

उ०—२ घनै बरोळ बावनी, दुरोळ तीन दारसी। हलै हयंद हेसतै, सजै गयद सारसी।—ऊ. का

उ०—३ तै भड भिडजा तार हयबा हाकिया। वीर धीर वणवीह सीह उपडाकिया।—सिवबगस पाल्हावत

उ०—४ झळहळ पाखर सिलह झप करती, हय असवार दोय लख हाती। सीहा तेज पराक्रम सहती, बरकदाज दोय लाख बहती।

—सू. प्र.

२ पुष्पित एवं सात्य देखो मे से एक।

रू. भे.—हयण, हे।

अल्पा.—हयड़ौ।

त्रि. वि. हा।

उ०—सोझड़ राहु भेळा किया, तिण वेळा तिण वार। नर नारी राहु बिल बिलख, हय हय सरजणहार।—डो मा.

हयअगवीन—स पु. [सं हैय+गवीनम्] १ मक्खन, नवनीत।

२ घी, घृत। (ह नां मा.)

रू. भे.—हईयंगवन।

हयग्रीव—सं. पु.—१ विष्णु का एक अवतार। (ना. मा.)

उ०—तूंनळि तूंहिज व्यास, निरख हरि हस मुनितर। जग राखणौ हयग्रीव, धुव तूं आप धनतर।—गजउद्धार

२ एक असुर, जो कश्यप एवं दिति के पुत्रो मे से एक था।

३ एक दानव, जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों मे से एक था।

४ एक असुर, जो नरकासुर का प्रमुख अनुयायी एवं उसके राज्य की रक्षा करने वाले प्रमुख असुरो मे से एक था।

५ एक राजा, जिसने क्षात्र धर्मानुसार उत्तम रीति से राज्य कर मुक्ति प्राप्त की।

६ विदेहवश का एक कुलगार राजा।

७ कल्पान्त में ब्रह्मा की निद्रावस्था मे वेदों को चुराने वाला एक राक्षस।

रू. भे.—हेग्रिव, हेगीन, हेगीव।

हयग्रीवा—स. स्त्री.—दुर्गा देवी का एक नामान्तर।

हयण—देखो 'हय' (रू. भे.)

हयथट्ट—स पु.—१ अश्व समूह, अश्वदल, अश्वसेना।

२ अश्व सेना।

हयदळ—सं. पु. [स. हय+दल] अश्वदल, अश्वसेना, घुडसेना।

रू. भे.—हईदळ।

हयनाळ-स स्त्री. [स. हय+नाल] १ घोडो द्वारा खींची जाने वाली या घोडो की पीठ पर रख कर चलाई जाने वाली तोप ।

उ०—पिव ग्रभ गजण पैंडली, हैरै की हयनाळ। घण जीवण वाल्हा धुवै, एण जाव तज ग्राळ । —रैंवतसिंह भाटी

२ घोडो की टाप (क्षुर) मे, सुरक्षार्थ लगाई जाने वाली चन्द्राकार लोहे की पत्ती, खुरताल ।

हयमेध—देखो 'ग्रस्वमेध'

हयवर-स पु [स] १ श्रेष्ठ घोडा, उत्तम जाति का घोडा ।

उ०—१ हयवर गयवर हीसता, गौ महिसी थट्टा । लाछ पु लीधी भृषका, पल्लिग सु पट्टा ।—ध व. ग्र

उ०—२ जीहो-दीधा मेगळ मोतीडा, लाला दीधा हयवर हार । जीहो-दीधा सोनौ साबट्ट, लाला दीधा ग्ररथ भडार ।—जयवाणी

२ घोडा, ग्रश्व ।

उ०—सबल दान बहुमान कणय कव्वाहि समप्पइ, हेला हयवर कोडि जोडि मगण थिर थप्पइ ।—व स.

रू. भे.—हइवर, हइमर, हइवर, हईवर, हेवर, हेमर, हैंमर, हैवर, हैमर, हैराव, हैवर।

ग्रल्पा, —हैमरौ, हैवरौ ।

हयसाला-स. पु यौ [स हय+शाला] वह स्थान जहा पर घोडे बाधे जाते हैं, ग्रश्वशाला, घुडशाला ।

हयहरि-स पु —पीले रग का घोडा ।

हयाणी हयाणीग्रा-स स्त्री [स. हय+ग्रनीक] ग्रश्व-सेना, घुडसेना।

हयांणौ-स. पु —एक जाति विशेष का घोडा ।

उ०—तेजी उरडा गहवरा, तोरखा खुरसाणा भयाणा हयाणा रोहवाला, रूडवाला तोरका, मदकोरा, पीलूम्रा भादिजा ग्रोराहा केकाणा सूनडा सिरखडा महूडा दक्षिणपथा पाणपथा माकडा नीलडा क्याहडा गगाजल सिंधूया पाखरा ग्रस्वजातय ।—व स

हयांराज-स पु. [स हयराज] १ बडा घोडा, हयेन्द्र ।

२ घोडा । (डिं को)

हया-स स्त्री [ग्र] १ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।

उ०—स्याळ मौत ग्रावै ज्यू साप्रत, गाव तरफ गडवडिया है । हया गमावण इण हवाल मैं, ऊमर सू ग्रब ग्रडिया है ।—ऊ का.

२ शर्म, लज्जा ।

३ दया, करुणा ।

उ०—१ इसै सगत माणस नै धोखैं रै जाळ मैं लेय'र मारता दया नही ग्राई, पथर हिडदा मैं हया नही वापरी ।—दसदोख

उ०—२ तन छीजै जोबन हटै, घटै वयस धन धरम । मदगत पसगत एक सी, ज्या मैं हया न सरम ।—ग्रग्यात

४ भावुकता ।

उ०—वाणियै रौ बेटौ हया दया बा' यौ, हिसाब किताब मै कामण गारौ ।—दसदोख

हयाऊत-स पु —एक पक्षी विशेष ।

हयात-स. स्त्री [ग्र.] जीवन, जिन्दगी ।

उ०—१ बै महर गुमराह गाफिल, गोस्त खुरदनी । बै दिल बदकार ग्रालम, हयात मुरदनी ।—दादूवाणी

उ०—२ जिण भाति वादसाह हयात सू बणी सूरत हाल इण भाति थी ।—नी प्र

हयादार-वि [ग्र हया+फा दार] १ लज्जाशील, शर्मीला ।

२ दयावान, करुणाशील ।

३ भावुक ।

४ मान, प्रतिष्ठा व इज्जत वाला ।

हयानन-स पु [स हय+ग्रानन] विष्णु का एक ग्रवतार, हयग्रीव ।

उ०—नमौ मछ सग-मडाण मुकद, नमौ काळि रास दइत निकद । नमौ है-ग्रीव निगम्म सहेत, नमौ खळ मार हयानन खेत ।—ह र

हय्येक [स स्त्री] एक ही बात ।

उ०—तरै भील माहौ-माहे बोल्या, म्हारै डीकरै रपचूयै हय्येक दाख्खु छै, वह्यो हतौ त्यू होज ग्रायौ ।

—जखडा मुखडा भाटी री बात

हर-स. पु. [स. हर] १ शिव, महादेव ।

(ग्र. मा, डिं को, ना मा, ह. ना. मा.)

उ०—१ ढोला साय घणा माणजै, भीणी पासळियाह । कइ लाभै हर पूजिया, हेमाळै गळियाह । —ढो. मा

उ०—२ सामळि ग्रनुराग थयौ मनि स्यामा, वर प्रापति वछती वर । हरि गुण भणि ऊपनी जिका हर, हर तिण वदै गवरि हर ।

—वेलि

उ०—३ केहर हाथळ घाव कर, कुजर ढिगलौ कीध । हसा नग हर नू तुचा, दात किराता दीध । —बा दा

२ ग्रग्नि, ग्राग ।

३ सूर्य, भानु । (ना डिं को)

४ एक दानव जो कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक था ।

५ विभीषण का ग्रमात्य एक ग्रसुर ।

६ राम की सेना का एक प्रमुख वानर ।

७ गणित मे वह सख्या जिसका किसी ग्रन्य सख्या मे भाग दिया जाता है, भाजक-सख्या ।

८ छप्पय छद का दसवाँ भेद जिसमे ६१ गुरु, ३० लघु से ९१ वर्ण तथा १५२ मात्राऐं होती है ।

९ तीन दीर्घ वर्ण वाले टगण के प्रथम भेद का नाम।

१० पौत्र, वशज ।

उ०—या 'मधकर' हर वज्जिया, ग्राद विखै ग्रणरेह । ज्या उलटै मेघा रवी, सिद्ध पलट्टै देह ।—रा. रू

११ पानी, जल । (ना. डिं. को.)

१२ गधा, गर्दभ ।

स. स्त्री. [सं. स्मर] १३ उत्कृष्ट आकांक्षा, प्रबल इच्छा ।

उ०—सांभळि अनुराग थयौ मन स्यामा, वर प्रापति वछती वर । हरि गुण भणि ऊपनी जिका हर, हर तिण वंदै गवरि हर ।
—वेलि

१४ इच्छा, चाह ।

उ०—१ जो देसांतर ऊतरै, बाधी जै दळ राग । हुर सकोचै गीरजा, तौ सोचै 'अवरंग' ।—रा. रू.

उ०—२ वसुदेव कुमार तणौ गुख वीखै, पुणै गुणै जण आग पर । श्री रुखमणि तणौ वर आयौ, हर म करौ मनि राय हर ।—वेलि

१५ आशा, उम्मीद ।

उ०—समझ मै नी आई कै बात कांई व्ही । सगळा ही म्हारी हर पाल ली दीसै ।—फुलवाड़ी

१६ ध्यान ।

उ०—तरै गांनी बैठौ छै । अठै राय घणौ कांम आयौ । पैलौ पाचार पाडिगा, नै उणै गानै राय वेढ जीती देख नै नगारौ दीयौ । राय जुदौ जुदौ फूटी थी सु नगारा री हर कर नै नगारा री तरफ गयौ ।—राय मालदेव री बात

१७ स्मरण, याद, स्मृति ।

उ०—१ ढोला, ढीलो हर कियउ, मूंनया मनह विसारि । संदेसउ न पठावइ, जीवां किसइ अधारि । —ढो. मा.

उ०—२ ढोला, ढीली हर मुझ, दीठउ घणै जणेह । चोळ अरग्गै कप्पडै, सायर धन अणेह । —ढो. मा.

१८ जिद्द, दुराग्रह, हठ ।

१९ ऊंट पर लदे हुए बोझे का एक तरफ अधिक झुकाव ।

२० हरियाली ।

अव्यय—१ एक विशेषण प्रत्यय जो यौगिक शब्दों के अन्त मे लगकर निम्न अर्थ प्रकट करता है—१ हरण करने वाला, लूटने वाला, छीनने वाला । २ दूर करने वाला, हटाने वाला । ३ धारण करने वाला ।

ज्यूं.—धनहर, पापहर, रोगहर, जळहर आदि ।

२ प्रत्येक, हर एक, एक एक, हरेक ।

उ०—मासी एक सूंठी तणौ ऊंडौ निरकारौ न्हाका नै बोली—बेटी ! जुगां जुगां सूं हर लुगाई रै मुडै औ सवाल भभकै पण आज दिन तांई कुण जबाब दे सक्यौ ? —फुलवाड़ी

३ श्वेत, सफेद । * (डिं. को)

क्रि. वि—१ पूर्व कालिक क्रिया सूचक अव्यय शब्द, कर ।

उ०—अठै राजा बेटै सूं मिळ हर राजी हुवौ । —चौबोली

२ देखो 'हरि' (रू. भे) (अ. मा.)

उ०—हंस मांयला मूढ रे, कर हर सर विसराम । मर मर घर घर नह फिरै, उर धर गिरधर नाम । —ह. र.

३ देखो 'हरौ' (रू. भे.)

हरई—स पु—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा (शा हो.)

हरककण—देखो 'हरकांकण' (रू. भे)

हरक—वि. [सं] १ हरण करने वाला ।

२ ले जाने वाला, पहुंचाने वाला ।

स. पु.—१ गणित मे भाजक ।

२ प्रलयंकर रूप मे शिव का एक नाम ।

३ देखो 'हरस' (रू. भे.)

उ०—१ हात कमाई घाट हरक सूं, पसळी गट गट पीणी । घोर रेत सग चेत घमडी, घोर लियोडी चीणीं । —ऊ. का.

उ०—२ तप तेज परख हिंदू तुरक, सदा हरक मन सज्जणा । कोमळ किसोर तौ ही कमध, दुति कठोर उर दुज्जणा ।—रा. रू.

हरकण—देखो 'हरख' (रू. भे.)

उ०—हरकण छाई दिस जिलकारी हरियौ, करसण करसणिया किलकारी करियौ । भेंसण हुलवेधर भालकी तन भाएं, गरिया डेडर ज्यूं हरिया गम गाही । —ऊ. का

हरकणौ, हरकबौ—देखो 'हरसणौ, हरसबौ' (रू. भे.)

उ०—भजा विस्णु सिव सनकादिक, हरकत निस दिन ह्वाल । सुर नर मुनि सब जोवण आयै, ऐसौ दधक को ख्याल ।
—स्रीहरिरांमजी महाराज

हरकणहार, हारौ (हारी), हरकणियौ—वि० ।

हरकिओड़ौ, हरकियोड़ौ, हरक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हरकीजणौ, हरकीजबौ—भाव वा० ।

हरकत, हरकति—स. स्त्री. [अ.] १ गति, चाल ।

२ चेष्टा ।

उ०—पण कवर री तरफ सूं की हरकत नी व्ही । वे तौ मडा री गळाई जुगां रै आसरै टिकयोडा ऊभा हा ।—फुलवाडी

३ स्पंदन, धड़कन ।

उ०—कांमेती खासा जंभेड़िया सौ ई की हरकत नीं । नाड़ अर सांस जोयौ तौ ठ्हालो आप रै ठांणै पूगौ हो ।—फुलवाड़ी

४ उद्दण्डतापूर्ण कार्य, बदमाशी, शैतानी ।

उ०—जसोदा मैया नित सतावै कनैया । वाकी हरकत क्या कहूं मैया ।—मीरां

५ खुशी, उत्साह ।

उ०—सुकरत करतां हरकत आवै, तौ मा पछतावौ करियौ ।
—जांभोजी

हरकबनोळौ—स. पु. [देशज] श्रीमाळी ब्राह्मणों में एक वैवाहिक प्रथा, जिसमे प्रथम कन्या के विवाहोपलक्ष मे कन्या का पिता, लग्न से पहले दिन अपने कुटुंबियों को लपसी, कढी, चावल आदि का भोजन कराता है । (मा. म.)

हरकांकण—स. पु.—महादेवजी का कंकण ।

उ०—'बखतेस' खळा सिर वेढगरौ, हरकांकण सौ 'अमरेस' हुरौ ।

मग 'राम' 'रूधं' जेसिंघ सही, गजरूप सभं रिम टेक ग्रही ।
—रा. रु

रू. भे —हरककरण ।

हरकाईचद्रा-स स्त्री —एक प्रकार की औषधि विशेष ।

हरकारौ—देखो 'हलकारौ' (रू भे)

उ०—अेक दिन राजा री हरकारौ कागद लेय ठिकाणा मैं आयौ ।
—फुलवाडी

हरकियोडौ—देखो 'हरसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हरकियोडी)

हरक्क, हरक्ख—देखो 'हरस' (रू भे)

हरक्खणौ, हरक्खबौ—देखो 'हरसणौ, हरसबौ' (रू. भे)

उ०—सुरा गुर पूर झिलै अगि सार, तजै असि भौमि चढै तिण-वार । हरक्खि कटंज धरै रभ हार, अत्रावळि पाय रुळत अपार ।
—सू. प्र.

हरक्खणहार, हारौ (हारी), हरक्खणियौ—वि० ।

हरक्खिओडौ, हरक्खियोडौ हरक्ख्योडौ—भू० का० कृ० ।

हरक्खीजणौ, हरक्खीजबौ—भाव वा० ।

हरक्खियोड़ौ—देखो 'हरसियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री हरक्खियोडी)

हरख—देखो 'हरस' (रू. भे.)

उ०—१ सो आधी रात ताई तो हरख खुसहाळी रही ।
—सूरै खीवै काधलोत री बात

उ०—२ कुमाए मता लै घरै आया छै । अठै घणा हरख सू रहै छै ।—पचमार री वात

उ०—३ मा रै हिवडै हरख रौ सरवर हिबोळा खावण लागौ ।
—फुलवाडी

हरखण—देखो 'हरसण' (रू. भे.)

हरखणौ, हरखबौ—देखो 'हरसणौ, हरसबौ' (रू भे.)

उ०—१ राजा राणी हरखिया, हरख्यउ नगर अपार । साल्ह कुवर पधारियउ हरखी मारू नार ।—ढो. मा.

उ० - २ हिंदसथान हरखियौ ताम दहलै तुरकाणौ । जगत सरब जाणियौ, जोध लेसी जोधाणौ ।—सू प्र

उ०—३ बधू बध्या ध्यावै हुलर हुलरावै हरखती । अई इदु अबा जयत्ति जगदबा भगवती ।—मे म.

उ०—४ हरखिउ अरजुनु जारथि चडिउ दाणव धरि बुबाखु पडिउ ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—५ नयणे करि निरखौ जी, हियडै वलि हरखौ । सत्रुजय सरीखौ जी, पुहवि न को परखौ ।—ध व. ग्र.

उ०—६ ताळ्या दै तिण बार हरखि हुलसै हसै । केकी ज्या छद करै केक गरदन कसै ।—सिवबक्स पाल्हावत

हरखणहार, हारौ (हारी), हरखणियौ—वि० ।

हरखिओडौ, हरखियोड़ौ, हरख्योडौ—भू० का० कृ० ।

हरखीजणौ, हरखीजबौ—भाव वा० ।

हरखत—१ देखो 'हरसित' (रू. भे)
२ देखो हरकत' (रू भे)

हरखमाण-वि. [सं हषमान] हर्षित, प्रसन्न, खुश, हर्षायमान ।
(डिं को.)

हरखवत-वि —प्रसन्न, हर्षित ।

उ०—कुवर रै कुवर हुवौ । वडौ हरख हुवौ । नानाणै सहर बधाई गई । तद राजा हरखवत होय घोडो अेक, सिरपाव, कडा-मोती, रिपिया हजार दोय देनै विदा किया ।—पलक दरियाव री वात

हरखा-स स्त्री – राठोडो की एक उप शाखा ।

हरखाडणौ, हरखाडबौ—देखो 'हरसाणौ, हरसाबौ' (रू. भे)

हरखाडणहार, हारौ (हारी), हरखाडणियौ—वि० ।

हरखाडिओडौ, हरखाडियोडौ, हरखाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हरखाडीजणौ, हरखाडीजबौ—कर्म वा० ।

हरखाडियोडौ—देखो 'हरसायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. हरखाडियोडी)

हरखाणौ, हरखाबौ —देखो 'हरसाणौ, हरसाबौ' (रू. भे)

उ०—१ मात पिता मे दोसण मोटौ, प्रथम मिटया सुख पाई नै । नग दोना मिळ औ निपजायौ, हिया फूट हरखाई नै ।—ऊ का

उ०—२ परस्पर दपति सपति पाय, हिकोहिक भेट करै हरखाय ।
—मे. म.

हरखाणहार, हारौ (हारी), हरखाणियौ—वि० ।

हरखायोडौ—भू० का० कृ० ।

हरखाईजणौ, हरखाईजबौ—कर्म वा० ।

हरखायोड़ौ—देखो 'हरसायोडौ' (रू भे)
(स्त्री हरखायोडी)

हरखावणौ, हरखावबौ—देखो 'हरसाणौ, हरसाबौ' (रू भे)

उ०—ओथ बावडी पागोडा थिर नीलम जडिया, रतन-नाळ जुत हेम-कवळ जळ फूटर भरिया । तिरछी हसा डार कचोळै मन हरखावै, पाबासर की याद पेखिया तोय न लावै ।—मेघ

हरखावणहार, हारौ (हारी), हरखावणियौ—वि० ।

हरखाविओडौ, हरखावियोडौ, हरखाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

हरखावीजणौ हरखावीजबौ —कर्म वा० ।

हरखावियोडौ – देखो 'हरसायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरखावियोडी)

हरखित—देखो 'हरसित' (रू भे)

उ०—१ इसरी वात सुणै राणी खुसी हुई । बहुत हरखित हुई छै । कितरै हेकै दिनै पुत्र हुवा ।—नैणसी

उ०—२ हरग हुवा जिण जग होय, हरखित चाह वेद चियार । तत पच कर खट तरक तै, दरियाव सात उदार ।—र. ज. प्र.

उ०—३ विड मैं घणी प्यार, मिळणा मन हरखित मिळै। वै हेतु दाखवार मिळजो विन मैं 'मोतिया'।—रायसिंह सांदू

हरखीलौ-वि. [सं. हर्ष+रा. प्र ई लौ] (स्त्री हरखीली) हर्षित, प्रसन्न।

उ०—हरखीला देवर भाभी नै प्यारा लागोजी देवर म्हारा जी।
—लो गी.

हरखल -देखो 'हुरस' (रू भे)

उ०—'जोध' हर आवियौ सहर जोध, कर ऊंच थान जेरा सशोध। 'विजपाळ' सुणै इम माहवीर, धारै हरखल मन अत सधीर।
—शि सु रू

हरगज, हरगिज—अव्यय [फा हर्गिज] कदापि, कभी भी।

उ०—१ मुनीम दोनूं हरामी, इन्याव रा काम करै। हरगज तीन सौ नी हुकारै। दसदोख

उ०—२ अंधविसवासी मिनख हरेक मादमी री कैयोड़ी बात नै सांची मानण खातर ही बण्यो है। नहरी खातर हरगिज नहीं।
—दसदोख

हरगिर हरगिरि—स. पु [सं हरगिरि] कैलाश पर्वत।

उ०—हरगिर हाथी दांत धवळ इण वेळ चिरांणी, काळै काजळ होड मेघ वठ सीस धरांणी। दुग दुग जोयण जोग उणी पुळ सोभा होवै, हळधर कांधै जाण सावळो दुपटौ सोवै।—मेघ

रू भे.— हरगिर।

हरगीता—स. स्त्री.—प्रत्येक चरण मे अन्तिम गुरु वर्ण सहित २८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद। (पि प्र)

हरगौरीरस—स पु —एक आयुर्वेदिक रसौषधि विशेष।

हरग्गिर—देखो 'हरगिर' (रू भे)

उ०—हय सफ बज्ज हरग्गिर विज्ज। जिवै सुरसार मनो घन विज्ज।—ला, रा.

हरड़ देखो 'हरड़ै' (रू. भे)

उ०—हरड़ बहेड़ा आंवळा, घी सक्कर मैं खाय। हाथी दाबै कांख मैं, साठ कोस लै जाय।—अग्यात

हरड़कौ—स पु —१ भैंस के दौड़ने की क्रिया।

२ दौड़ते समय भैंस के मुख से होने वाली आवाज।

हरड़ाट, हरड़ाटौ—स पु. - १ तेज वायु आंधी, बरसात या किसी के अत्यन्त तीव्र गति से चलने, होने या गिरने से होने वाली आवाज।

उ०—१ अपणा घी पीयोड़ा घोड़ा ई बीचली छेनी पूरता हरड़ाट दौड़ता जावै हा। -फुलवाड़ी

उ०—२ अणचीत्यौ हरड़ाटौ सुण्यौ तौ दोनूं जणियां बारै आई।
—फुलवाड़ी

उ०—३ म्हारेक खेतवा तांई तौ मामूली छांटा छिड़का व्हिया पण पछै तौ हरड़ाट माचग्यौ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हरराट।

हरड़ी, हरड़ै—स स्त्री. [सं हरीतकी] १ एक पेड़ विशेष जिसके पत्ते महुए के पत्तों की तरह चौड़े होते हैं।
(अ मा; ना मा, ह. ना. मा.)

२ उक्त पेड़ का फल जो औषध के काम आता है।

उ०—हरड़ै बैड़ा आंवळा, पीयो नीम गिलोय। कूट छेता कर धर तौ बेरा, राम करै सौ होय।—अग्यात

३ शक्ति, सामर्थ्य, औकात।

४ गुदेन्द्रिय का भीतरी मांसल भाग।

उ० - बेटी री ब्याव माईता री हरड़ै काढ दै। —फुलवाड़ी

मुहा —हरड़ै काढणी—शक्तिहीन करना, बर्बाद करना।

रू भे —हरड़, हरड, हरडी, हरड़ु।

हरड़ौ—स पु —रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—नीला नै कागड़ा, करड़ा हरड़ा ठेक। सुरंगी नुकरा मोतिया, दसउा तुरग अनेक। पे रू

हरचंद—अव्यय [फा] १ कितना ही, कितना भी।

२ यद्यपि, अगरचे।

३ जितना कुछ, जिस कदर।

४ देखो 'हरिश्चंद्र' (रू भे)

उ०—१ सत हरचंद समान, प्रगट दरियाव गणधमण। सुर तर आस सपूर, जाण पारस सेवग जण।—र. ज. प्र.

उ०— २ देतो दान रै रूप बळराव रीधी, दवी सत रै रूप.हरचंद सीधी। देवी रढ़ रै रूप दसकंध रूठी, दवी सोन रै रूप सोमित्र तूठी।- देवि

हरचवर—देखो 'हरिश्चंद्र' (रू. भे.)

हरचंदधारा—स पु — १ राजा हरिश्चन्द्र का शासन काल।

२ आनन्द का समय।

रू. भे.—धाराहरचंद।

हरचवि—देखो 'हरिश्चंद्र' (रू. भे.)

उ०—अंब नट घरि जल वहिउ हरचविई। भाराडी गरण लाध मुकुविइ। -सारिसूरि

हरचवोत—सं पु. -राठौड़ वंश की एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

हरचनण—देखो 'हरिनंदन' (रू. भे)

हरज—स पु [अ.] १ हानि, नुकसान।

२ उपद्रव, गड़बड़।

३ अड़चन, बाधा, रुकावट।

४ आपत्ति, विरोध, ऐतराज।

रू भे.—हरज्ज।

अल्पा, —हरजौ।

हरजख—देखो 'हरिजख' (रू भे)

हरजद—वि —पीला, पीत। * (डिं. को.)

हरजटा—देखो 'हरिजटा' (रू. भे)

हरजस-स. पु [स. हरि+यश] १ ईश्वर सम्बन्धी गायन, स्तुति या भजन ।

२ ईश्वर का यश या कीर्ति ।

हरजाणौ, हरजानौ-स. पु —१ वह धन, जो किसी हानि की पूर्ति हेतु दिया जाय, मुआवजा ।

२ नुकसान, हानि ।

हरजाई-वि स्त्री.—१ उजाड करने वाली, आवारा ।

उ०—पळ खावण चसकौ पड्यौ, प्रदत्तै पुस्कळ पीव । थिर रह हरजाई थिरा, जाच्या देसी जीव ।—रैंवतसिंह भाटी

२ व्यभिचारिणी स्त्री, वैश्या ।

हरजौ-स. पु.—१ किसी सतह को चौरस करने की समतराणी की टाकी ।

२ देखो 'हरज' (अल्पा; रू. भे)

हरज्ज—देखो 'हरज' (रू. भे)

उ०—कहण सुणण हय चढ क्रमण, साहस धरण समझ्झ । 'पता' छिहतर वरस पण, हेकण न कौ हरज्ज ।—जैतदान बारहठ

हरड, हरडइ, हरडि, हरडू—देखो 'हरडै' (रू. भे) (उ. र)

उ०—हरडू हरडि हीमजी, हरडा हलद्रह बेर । हरवी हाथुडी हरी, हुफर हुसि हसेर ।—मा का प्र

हरणक, हरणक्ख, हरणख, हरणखुर—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—हुयौ जेम हरणक, ज्यम साह 'अवरग' हुग्रौ, ग्रहै सुर नरा छोडै दियौ गाढ । अवन अणथाह जाता हुई अबरकै, 'दुरग' री तेग वाराह री दाढ ।—भोजराज मईयारियौ

२ देखो 'हिरण्यकस्यप' (रू भे.)

उ०—नख हरणख उधेडि नाखियौ, असुरा रिपि जुग-जुग अलख । —ह ना मा.

हरण-स. पु [स. हरण] १ दूसरे की वस्तु को उसकी इच्छा के विपरीत या उसकी जानकारी के बिना, अपने अधिकार मे करने या ले लेने की क्रिया । छीनने, लूटने या चोरी करने की क्रिया या भाव ।

२ वचित करने की क्रिया या भाव ।

३ हटाने, मिटाने या दूर करने की क्रिया या भाव ।

ज्यू—पीड हरण, सकट हरण ।

४ किसी को बलपूर्वक, चोरी या धोखे से उडा कर ले जाने तथा लेजाकर छुपा देने की क्रिया, अपहरण ।

उ०—निरखै ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणै लागा कहण । सगळै दोख विवरजित साहौ, हूतौ जई हुग्रौ हरण ।—वेलि

५ अपनी ओर खीचने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

ज्यू—मन हरण, चीर हरण ।

उ०—दुख-चीसारण, मन हरण, जउ ई नाद न हुंति । हियडउ रतन-तळाव ज्यउ, फूटी दह दिसि जति ।—ढो मा

६ पकडने की क्रिया ।

७ सहार, नाश ।

८ विभाजन ।

९ वहन ।

१० विद्यार्थी के लिये दिया जाने वाला दान ।

११ यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को दी जाने वाली भिक्षा ।

१२ बाहु ।

१३ वीर्य धातु ।

१४ स्वर्ण, सोना ।

वि.—१ चुराने वाला, चोरी करने वाला ।

२ मिटाने वाला, दूर करने वाला, नष्ट करने वाला ।

उ०—बप रूप ओप नव धन वरण, हरण पाय-त्रय-ताप-हरि । गुणमान दान चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यान ओ ध्यान करि । —रा. रू.

३ देखो 'हिरण' (रू भे)

रू. भे —हरन, हिरण ।

हरणकस्यप, हरणकुस, हरणकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे.)

उ०—१ हरणकस्यप हैमुख हरणायख, खाधा कै फिर खासी । तौ पण भूख न गी तिण तावै, बावौ खाय उबासी ।—र. ज. प्र

उ०—२ जै जुध हरणकुस नू जरियौ, धड नाहर मानव चौ धरियौ । जिण कारण देव वितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनाथ सू । —र ज प्र

हरणक्ख, हरणख—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे)

हरणगरभ—देखो 'हिरण्यगरभ' (रू भे.)

उ०—चीजा इतरी दीवी, (१) तखत, (२) छत्र, (३) चवर, (४) ढाल, (५) तरवार, (६) साखलै हरबू दीवी तिका कटार, (७) लक्ष्मीनारायण हरणगरभ, (८) नागणेची कुळ-देवी री स्वरूप अठार भुजी, (९) करड, (१०) भवर ढोल, (११) वैरी-साल नगारौ थापन जाभै दियौ तिकौ, (१२) दळ सिणगार घोडौ, (१३) भुजाई री घेगा वगेरै चीजा लीवी । पीछै माजी सू सीख कर रावजी फौज री कूच कियौ ।—द दा.

हरणाख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

हरणाखुर—स. पु.—घोडा ।

हरणाकस, हरणाकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे)

उ०—१ हरणाकुस हत्ते महणसु मथ्यै, छितलै बळि छळता है । —र ज प्र.

उ०—२ द्रुपद सुतारौ चीर बढाया, दुसासण मद मारण । प्रहलाद परतग्या राख्या, हरणाकुस नौ उद्र बिदारण ।—मीरा

उ०—३ भीर परी पहलाद उबारै, हरणाकस हिरणताज ।
—अनुभववाणी

हरणाक्ष, हरणाक्षय, हरणाख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)
उ०—बळ थियौ चित हरणाक्षय अप्रबळ, तेज गीहर धर रसातळ ताम ।—र. ज. प्र.

हरणाखी—देखो 'हरिणाक्षी' (रू. भे.)
उ०—काछी करह बिधूंभिया, घड़ियउ जोइण जाइ । हरणाखी जउ हरि कहइ, प्राणिसि एथि विसाइ ।—ढो. मा.

हरणाट-स स्त्री.—१ नगाडे की ध्वनि ।
उ०—घूघरा तणा भरणाट हुय घमाघम, बेण रा तत्र तरणाट बाजै । नकीबा बोल हरणाट हुय नोबतां, गयण धर सबद गरणाट गाजै ।—खेतसी बारहठ
२ ध्वनि विशेष ।
३ देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे.)

हरणामछ-स पु —१ एक रंग विशेष का घोड़ा । (शा हो.)
२ एक प्रकार का घोडा ।
उ०—हरणामछ बागळ बोदलीया हद, भुलड़ीया गलीया भलीया ।
बादरदान दधवाड़ियौ

हरणायख—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)
उ०—हरणकस्यप हैमुख हरणायख, खाधा कै फिर खासी । तोपण भूल न गी तिण ताबो, बाबो खाय उनासी ।—र. ज. प्र.
२ देखो 'हिरणकस्यप' ।

हरणी-वि स्त्री.—१ हरण करने वाली ।
२ देखो 'हरिणी' (रू. भे.)

हरणीमन-वि स्त्री.—१ मन को लुभाने वाली, सुन्दर, आकर्षक ।
२ देखो 'मनहरण' (रू. भे)

हरणौ-वि. [स. हर] (स्त्री हरणी) १ हरण करने वाला, चुराने वाला ।
२ छीनने वाला, लूटने वाला ।
३ मिटाने वाला, दूर करने वाला, हटाने वाला ।
४ नष्ट करने वाला ।
५ खीचने वाला ।
६ आकृष्ट करने वाला ।

हरणौ, हरबौ-क्रि. स. [स. हरण] १ दूसरे की वस्तु को उसकी इच्छा के विपरीत या उसकी जानकारी के बिना, अपने अधिकार मे कर लेना या ले लेना, छीनना, लूटना, चोरी करना ।
२ हटाना, दूर करना, मिटाना । (ऊ. र.)
उ०—छेदण दैत भूत छळ छेहा, पीड़ा कसट रोग दळ पाण । विघना हरै साद सुण वहली, देसणोक हुदी दीवाण ।—दोलो
३ किसी को बल पूर्वक, चोरी से, धोखे से या फुसला कर, उठा ले जाना तथा ले जाकर छुपा देना, अपहरण करना ।
उ०—१ हुवा राग ओतार सीता हरांणी । पखै जोइवा आवियां देखि पांणी ।—सू. प्र.
उ०—२ बळिवध रागरथि रथ तौ बैसारी, स्यांमा कर साहे सु करि । बाहर रै बाहर कोइ छै वर, हरि हरिणाखी जाइ हरि ।
—वेलि.
उ०—३ अस्वबल एह वीर नकीजइ, अरथ विग्र सघली हरइ हईइ ।—सालिसूरि
४ अपनी ओर खींचना, आकर्षित करना ।
ज्यूं—मन हरणौ ।
५ पकड़ना ।
६ पूर्ण करना, पूर्ति करना ।
उ०—हरौ अभिलाख नथ 'अमर' री हगरके, जोगणी वीसरौ मती जाता । कदम दे दास री नेस पावन करौ, गुण सिर धरौ धणियाप गाता ।—खेतसी बारहठ
७ सहार करना, नाश करना ।
८ विभाजन करना ।
९ वहन करना ।
हरणहार, हारौ (हारी), हरणियौ—वि० ।
हरिओड़ौ हरियोड़ौ हरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हरीजणौ, हरीजबौ —कर्म वा० ।

हरत—देखो 'हरित' (रू. भे.)
उ०—अंत लघु तगण धन नार पत अकास, गिता जग गात विलगण हरत पेख । विसिस्ट रिख वैत आकुळ रस सात वण, उजेणी सुद्र लोयण उभं भेख ।—र. रू

हरतणु, हरतणू हरतनु हरतनू-सं पु [स हरतनुः] प्रातः काल मे तृणादि पर दिखाई देने वाला जल बिन्दु, ओस-कण ।

हरता-वि [स. हर्त्ता, हर्तृ] १ हरण करने वाला, चोर ।
२ जबरदस्ती छीनने वाला, डाकू, लुटेरा ।
३ सहार व नाश करने वाला, मारने वाला ।
उ०—१ मुला हरता तु भयौ, तुं हीज करता होय । तुं हीज मारै हाथ सु तुही जीव रै सोय ।—अनुभववाणी
उ०—२ दीन दिमां दाता नही कोई, हरता करता राम का सोई । ग्यान ध्यान गलतान गभीरा, पेम सहत मन वचन सरीरा ।
—अनुभववाणी
४ दुःख, शोक, पीड़ा आदि मिटाने, दूर करने वाला ।
५ आकर्षित करने वाला ।
६ उड़ा कर ले जाने वाला ।
७ विभाजक ।
८ सूर्य ।
रू. भे.—हरत्ता ।

हरतार-वि. [स. हर्त्तारि] हरण करने वाला, हर्ता ।

हरताळ, हरताल-स. स्त्री [स हरिताल] सखिया और गधक के योग का एक खनिज पदार्थ, उप धातुओ मे से एक, गोदत । (अ मा.)

वि —१ पीला, पीत। * (डि. को)

रू. भे.—हरिताल, हरियाळ, हरियाल।

२ देखो 'हडताल' (रू भे)

हरतेज-स पु [स हरतेजस्] पारद, पारा।

हरत्ता—देखो 'हरता' (रू भे)

उ०—तु ही करत्ता धरत्ता भुवन त्रिय भरत्ता हित तु ही। तु ही नाही मरत्ता अभय भय हरत्ता नित तु ही।—ऊ का

हरथानक-स. पु. [स हर-स्थानः] १ शिवमन्दिर, शिवालय।

२ हिमालय पर्वत।

[सं हरि स्थान] ३ विष्णु का मन्दिर।

हरद—देखो 'हल्दी' (रू भे)

हरदम-क्रि वि [फा] १ प्रति क्षण, हर-क्षण, हर वक्त, हर समय।

उ०—१ दादू हरदम माहि दिवान, सेज हमारी पीव है। देखू सो सुबहान, यह इस्क हमारा जीव है।—दादूबाणी

उ०—२ अठै करणौ तौ जूनां कैदघा वेगी की कोनी, पण पुराणा कैदी तौ करणैं सू भारी हमदरदी दिखाळै। करणैं रै मुढै माथै हरदम ऊमर कैद री डरावणी सुनाळ नीद लेवै है।—दसदोख

उ०—३ उठता-बैठता, खावता-पीवता हरदम उण री आख्या रै आगै वा काळी अधारी मौत सू ई डरावणी रात फिरण लागती।

—अमरचूनडी

२ निरन्तर, लगातार।

उ०—माटी नै पगा हेटै खूदणा सू हरदम औ चेतौ रैवै के वगत आया आ माटी अपानै पाछी खूदैला।—फुलवाडी

३ सर्वदा, सदा।

उ०—जठै बाजै रे राम कस्ण महाराज। ज्यारै हरदम रे हरिजी सू काज।—गी रा

रू. भे.—हरधम।

हरदय—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

हरदास—देखो 'हरिदास' (रू भे)

(स्त्री. हरदासी)

हरदासियौ—देखो 'हरिदास' (अल्पा, रू. भे)

उ०—हर भज रे हरदासिया, दाखै ईसरदास। मोल लियां सू नहि मिळै, कोट मोहर इक सास।—ह र.

हरदासी—देखो 'हरिदासी' (रू भे.) (अ मा)

हरदी—देखो 'हळदी' (रू. भे) (अ मा.)

हरदोखी, हरदोसी-स. पु यौ [स हर+दोषी] कामदेव, मदन।

(डि. को)

हरदौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—आठौ पहर अखाडै आनद झरणाम्रत झरजावै। हरदा बीचि हुवै हरियाळी ठीक आख ठर जावै।—ऊ. का

हरद्वान-स पु—एक स्थान का नाम जहाँ की तलवार प्रसिद्ध है।

हरधम देखो 'हरदम' (रू भे.)

उ०—नमौ हरधम निराकार, नमौ निगम निरुपन। नमौ अवचळ नमौ अनुभै, नमौ एक अनूपन।—अनुभववाणी

हरन—१ देखो 'हिरण्य' (रू भे.) (ह ना मा.)

२ देखो 'हिरण' (रू भे)

३ देखो 'हरण' (रू भे)

उ०—करि सहाय कमलासन केरी। हरन दनूज दसौ दिस हेरी।

—मे म.

हरपुर-स पु. [स.] १ शिव धाम, कैलाश।

२ देखो 'हरिपुर' (रू भे.)

उ०—चीतवियउ चहवाणि, जवहर की माडउ जुगति। हुव हुइस्यां हरपुर दिसा, वेगावेगि विहाणि।—अ वचनिका

हरपेडी, हरपैडी—देखो 'हरिपैडी' (रू. भे)

हरप्रि, हरप्रिय-स पु [स हर+प्रिय] १ धनपति कुबेर। (ना. मा)

२ देखो हरिप्रिय' (रू भे.) (अ. मा)

हरप्रिया-स स्त्री [स हर+प्रिया] १ उमा, पार्वती।

२ दुर्गा, भवानी।

३ देखो 'हरिप्रिया' (रू भे) (अ मा)

हरफ-स पु [अ हर्फ] १ अक्षर, वर्ण।

२ शब्द, आवाज।

उ०—दूजा रा मन ल्यै, आप तो होठा सू हरफ ही नही काढै। पिंडतजी हा! हा! कर'र हस्या अर फूलचदजी रै घर री गळी लीनी।—दसदोख

३ दोष, ऐब, बुराई।

४ लक्ष्य, निशान।

हरफगीर-वि [अ फा हर्फगीर] १ बहुत बारीकी से अक्षर-अक्षर का गुण-दोष निकालने वाला।

२ ऐब या गलती निकालने वाला, छिद्रान्वेषी।

३ आलोचना करने वाला आलोचक।

हरफगीरी-स स्त्री. [अ फा. हर्फगीरी] १ हरफगीर का कार्य या धर्म, छिद्रान्वेषण।

२ आलोचना।

हरफोरवडी-स. स्त्री —कमरख की जाति का एक वृक्ष विशेष जो अति सुन्दर होता है तथा जिसके गूलर के आकार के खट्टे-मीठे फल

लगते है। (गमरस)

हुरफौ-स पु —कटा हुआ चारा या भूसा रखने का घर या कक्ष जिसके चारों ओर लकड़ी का घेरा बना होता है।

हुरमड़ाहद-रा. पु.— ध्वनि विशेष।

उ०—हुड़बड़ाट उठ्यौ तपोवन गै, भभडया सगळा लख्या हिरण।
—रा.रू.

हुरबळ—देखो 'हुरावळ' (रू. भे.)

उ०—आगी गाडा ऊपरा माळ घास भराया, चानै वेली पांचसौ तिरा मांयै छिपाया। छळ कीधा बळ वालिया धर कारण धाया, हुरबळ ईंदा राण होय गाडा गणणाया।—वी. मा

हुरबांम, हुरबामा—१ देखो 'हरवाम' (रू. भे) (अ. मा)

२ देखो 'हुरिवांग' (रू भे.)

हुरबी-स पु —एक वृक्ष विशेष।

उ०—हरडू हुरडि हीगजी, हरडां हुलबहू बेर। हुरबी हाथुरी हुरी, हुफट हुरि हुसैर।—मा, कां. प्र

हुरबू—देखो 'हुड़बू' (रू भे.)

उ०—धुणता नर माथा चुणता धर धाड़ा, पाबू हुरबू रा सुणता परवाड़ा।—ऊ. का.

हुरभांत, हुरभांति-क्रि वि —हर तरह से, हर प्रकार से, तरह-तरह से।

उ०—तरै फेर अरज कीवी—जैसळमेर सुं म्हांरै कोई कांम नहीं हुवै। ठौड भाटीया री कदीम ऊतन छै। नै पोकरण सदा म्हांरी छै। म्हारी जागीर मांहे पातसाही दफतर लीखीजै छै। हजरत फरमांण कर दै तो मांहारी हुरभांत कर उरी देवा।—नैणसी

हुरभू हुरभौ—देखो 'हुड़बू' (रू. भे.)

उ०—पछै उठारा चढिया सांखला हुरभौ रै गाव बेहुमटी आया। हुरभौ जी सोणी हुता।—नैणसी

हुरम-सं पु [अ] १ महल या राज-प्रासाद का वह भाग या कक्ष जिसमे रानियां रहती है, जनान खाना, अन्तःपुर।

उ०—१ पातसाह री हजूर अमराव मंमूसाह, मीर गाभरू, सु हुरम री खुटक नै मुरगांब्यां पगां उखांणी सो तीजै भाई नूं आप-ड़ियौ थौ सु आ धणी वात छै, सु ऐ पचीस हजार घोड़ां रा धणी दिलगीर थका बैठा था।—नैणसी

उ०—२ महिर महिर अलावदीन, राधव, हकारीय, नयण नारि निरखेवि, बेखीइ हुरम हमारीय।—प. च चौ.

उ०—३ नित नांम जपै जे निजमन करि अति नरम। हुरखै ते पहुचै, मुगति-रमणि ने हुरम।—ध व ग्र

२ अन्त.पुर मे रहने वाला स्त्री समाज।

[सं. हर्म्य] ३ बड़ा महल, अट्टालिका। (अ. मा)

उ०—जेहल ताळ खड़ीण ज्युं, सरवर लाकड़ होय। हुरम छहै कूढा हुवै, जस अविकारी जोय।—बां दा.

४ मक्के के आसपास का वह क्षेत्र जिसमे किसी जीव की हिंसा करना महापाप माना जाता है।

५ गुवद।

६ सुहागा।

स. स्त्री.—७ पत्नी, स्त्री।

८ बादशाह की बेगम।

उ०—गोकरांणि सरोवरि हुलत, हरम सहित आणयउ जीवतउ। साहगु रावल गाथ्हीइ गयउ, मालदेव सिर नांमी रहाउ।
—का. दे. प्र.

९ वह स्त्री जिसे पत्नी बना कर रख लिया गया हो, रखेल।

१० दासी, बांदी, चेरी।

रू. भे.—हरम्म, हरम, हुरम, हुरम, हुरम।

हुरमखानौ-स पु. [अ फा] जनानखाना, अन्त पुर।

रू भे —हुरमखानौ।

हुरमजवणी—देखो 'हरामजादगी' (रू. भे) (मा. म)

हुरमजादौ—देखो 'हरामजादौ' (रू भे)
(स्त्री. हुरमजादी)

हुरमजी वाम्रिम-स. पु यौ. एक प्रकार का अनार। (व स.)

हुरमज्जि-सं स्त्री.—एक प्रकार की हरी सब्जी।

उ०—हुनुमती नइ हुरबखी, हीराउलि हुरमज्जि। हाथाजोड़ी हीकणी, हेला आवइ कज्जि।—मा कां. प्र.

हुरमल-स स्त्री —एक प्रकार की भाड़ी जो करीब डेढ़ दो हाथ ऊंची होती है।

हुरमी-खजूर-स. पु. यौ.—एक प्रकार का खजूर, छुहारा।

उ०—सगारा खजुर, फउद खजुर, पैगी खजुर, रतबी खजुर, नवइ-साक खजुर, मधुफलव खजुर, हुरमी-खजुर, मधुरू मांकडुं, दीप सिखा समान।—व. स

हुरमीजीसीरू-स पु यौ.—एक प्रकार का फल।

उ०—हुरमीजीसीरू, आवनी सखु, रोलडीना कटकडा, तरणां करणा नारिंगा जमीरां कमरक दोवगा सदाफल.........।—व. स.

हुरमेखलिक-वि —सिद्धाई रखने वाला, सिद्ध।

उ०—भोजिक सूपकार चक्षाक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य अश्वभयैद्य मंत्रिक तंत्रिक गारुड़िक हुरमेखलिक लेखक कथक कविकर तालचर कविराज राज्य सभापति........।—व. स.

हुरम्म हुरम्य-सं पु [स हर्म्य] १ राजभवन, महल।

उ० -१ चलैं गुचार बार की सुन्वार मी चलावनी। हुलैं हसति हिकली हुरम्म कौ हलावनी।—ऊ. का.

उ०—२ दसा बिसाग सम्यहा अगम्य गम्य है नही। रसा परम्य रम्य रम्य हा हुरम्य है नही।—ऊ का.

२ हवेली, बहुत बड़ा मकान।

३ देखो 'हुरम' (रू. भे.)

हुरयबुवर—देखो 'हरियंदुवर' (रू. भे) (अ. मा)

हुररथ-सं. पु. यौ. १ शिव का नन्दी।

उ०—हररथ माठो होय, सकत रथ होयै सयाणो। सितरथ देवै पूठ घटै उतराध पयाणो। —चौमबीढू

२ बैल। (ह ना मा)

३ देखो हरिरथ' (रू भे)

हरराणी—स स्त्री [स हर+राज्ञी] १ उमा, पार्वती।

उ०—तज बरवण कुळवाट समधे आपी एडी। सिव हरराणी हेत चढण नै सरणी जेडी। —मेत

२ देखो 'हरिराणी' (रू भे)

हरराट—देखो 'हरडाट' (रू भे.)

हरराया—स पु.—विष्णु।

हररोज—क्रि. वि —नित्य, प्रतिदिन, रोजाना।

हरलोयण—स पु [स. हर+लोचनं] १ शिव का नेत्र।

२ तिकोनी वस्तु। *

वि.—त्रिकोण। * (डिं को)

हरवकत, हरवखत, हरवख्त—क्रि वि. [फा. अ हरवक्त] हर क्षण, हर समय, हर दम।

उ०—फाजल हरवखत इयै धारणा मैं डूब्योडी रैवै। पण जेळ मैं आ बात जाबक निजोरी।—दसदोख

हरवळ—देखो 'हरावळ' (रू. भे)

उ०—१ पछै कटक कर राव कोटवाळ हरवळ हुवा।

—सुदरदास भाटी वीकूपुरी री वारता

उ०—२ पेखै चद हरवळ खळ पाडै। उरडै फौजा वाग उपाडै।

—सू प्र

हरवळी—देखो 'हरावळी' (रू. भे)

हरवल्ल—देखो 'हरावळ' (रू भे)

उ०—१ ईंदा आहव आगळा, पडिहारा पण झल। हरवल्ला आगै हुवा, चढै अलल्ला भल्ल।—रा. रू

उ०—२ लीधा हलकौ साथ सह, आप हुवा हरवल्ल।

—गज-उद्धार

हरवांम, हरवांमा—स स्त्री. [स. हर+वामा] १ उमा, पार्वती।

२ गगा।

३ देखो 'हरिवामा' (रू. भे.) (अ. मा.)

रू भे—हरबाम, हरबामा।

हरवाइ, हरवाई—स स्त्री.—नीचता, कुकर्म, दुष्टता।

हरवाहण, हरवाहन—स पु. [स हर+वाहन] १ शिवजी की सवारी, नन्दी।

२ बैल।

३ देखो 'हरिवाहण' (रू भे.)

हरवौ—देखो 'हळवौ' (रू भे)

हर सकरौ—स पु.—एक प्रकार का मादक पदार्थ विशेष।

उ०—इण भात तमासो करता पाछलो चोघडियो आय रह्यो छै। अमला री वखत हुवो छै। तद खिजमतगारा नै हुकम हुवो छै—सताबी सू हर सकरौ तयार कीजै। सू हर-सकरै री तयारी कीजै छै। सू हर-सकरौ किण भात रो छै। भागेसुर घोटिया री पीडी घणी मसाला समेत री आणजै छै। गळिया अमल मे भाग गाळजै छै। फेर दारू सू उलटाय काढजै छै। रूमाल सू तिवारा छाणजै छै।—रा. सा स

हरस—स पु [स हर्ष] १ आनन्द, खुशी, प्रसन्नता।

उ०—गिउ कौरवाधिपति सैन्य समस्त हारी, गिउ पारथ उत्तर सहित मनु हरस भारी।—सालिसूरि

२ उत्फुल्लता, प्रफुल्लता, रोमाच।

३ सयोग शृगार के अन्तर्गत साहित्य मे एक सचारी भाव जिसमे प्रसन्नता के कारण रोए खडे होने या चेहरे पर कुछ पसीना आने की क्रिया होती है।

४ धर्म के तीन पुत्रो मे से एक।

५ देखो 'हरसवरद्धन'।

रू भे—हरक, हरख, हरक्ख, हरख, हरख्ख, हरिख, हरिखि, हरिस, हरीख।

हरसक, हरसकर—वि [स. हर्षक, हर्ष-कर] आनन्दप्रद, प्रसन्न-कारक, खुश करने वाला।

हरसकीलक—स पु [स हर्ष+कीलक] कामशास्त्र के अनुसार एक आसन।

हरसखा—स. पु [स] धनपति कुबेर। (ह ना मा.)

हरसचरित—स पु [स हर्ष-चरित्र] बाणभट्ट द्वारा रचित एक सस्कृत गद्य काव्य, जिसमे सम्राट हर्षवर्द्धन के जीवन वृत्त का वर्णन है।

हरसण—स पु [स हर्षण] १ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक।

२ काम की तीव्रता से पुरुष की इन्द्रिय का तनाव।

३ एक नेत्र रोग विशेष।

४ श्राद्ध कर्म का अधिष्ठाता एक देवता।

५ फलित ज्योतिष के २७ योगो मे से चौदहवा योग।

स स्त्री—६ प्रसन्न या खुश होने की अवस्था या भाव।

७ प्रसन्नता, खुशी।

८ एक प्रकार का श्राद्ध।

वि—१ आनन्द दायक, प्रसन्न कारक।

२ हर्ष-उत्पादक।

रू. भे—हरखण।

हरसणाकल—स. स्त्री—हर्ष ध्वनि।

उ०—जिम आकासि माहि सरव पदारथ आवइ तिम दधि दुरवा अक्षत चदन कुसम कुकम, पूज्य वृद्धासीरवाद, द्व दसतूरचनिनाद, विवाहादि हरसणाकल, अनेरायइ पुत्र जन्मादि महोत्सव ... ...।

—व. स.

हरसणौ, हरसबौ—क्रि. अ [स. हर्षण] १ खुश होना, प्रसन्न होना,

आनन्दित होना।

उ०—हिलै न चलै परस्पर हुरसै वरसै मुख दरसावै। बारैई मास अमीरस बरसै, परसै तान परसावै।—ऊ. का.

२ हँसना, खिलखिलाना।

हुरसणहार, हारौ (हारी), हुरसणियौ—वि०।

हुरसिओड़ौ, हुरसियोड़ौ, हुरस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हुरसीजणौ, हुरसीजबौ—भाव वा०।

हुरकणौ, हुरकबौ, हुरक्खणौ, हुरक्खबौ, हुरखणौ, हुरखबौ, हुरीखणौ, हुरीखबौ—रू० भे०।

हुरसत—देखो 'हुरसित' (रू. भे.)

उ०—पथिक गामि जाता रहि, पूरब दिसा तणा वाय वाजइ, लोक हुरसत थाइ।—व. स.

हुरसवरद्धन, हुरसवरधन—सं. पु. [सं. हर्षवृद्धनः] भारत का एक प्रसिद्ध सम्राट, जो विक्रम की सातवीं शताब्दी मे हुआ था।

हुरसाणौ, हुरसाबौ—क्रि. अ [सं. हर्षण] १ खुश होना, प्रसन्न होना।

उ०—कमळ समान कलेवर कोमळ, हेर हियौ हुरसायौ।

—गी. रा.

२ हँसना।

क्रि. स.- १ खुश करना, प्रसन्न करना।

२ हँसाना।

हुरसाणहार, हारौ (हारी), हुरसाणियौ—वि०।

हुरसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हुरसाईजणौ, हुरसाईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

हुरखाड़णौ, हुरखाड़बौ, हुरखाणौ, हुरखाबौ, हुरखावणौ, हुरखावबौ

—रू० भे०।

हुरसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ खुश हुवा हुआ, प्रसन्न हुवा हुआ. २ हँसा हुआ. ३ खुश किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ ४ हँसाया हुआ।

(स्त्री. हुरसायोड़ी)

हुरसित—वि. [सं हर्षित] प्रसन्न, खुश, आनन्दित।

उ०—वरसा काळ हुउ, वहितौ रहिउ कुपउ, वाधि पांणी भरता रया। वादळ ऊनया। मेघ तणा पांणी वहै, पंथी गामइ जाता रहै। पूर्व ना वाजइ वाय, लोक सहु हुरसित थाय।—रा. सा स

रू. भे—हुरखत, हुरखित, हुरसत।

हुरसियोड़ौ—भू. का कृ—१ प्रसन्न हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ, आनन्दित हुवा हुआ २ हँसा हुआ।

(स्त्री. हुरसियोड़ी)

हुरसिरा—सं. स्त्री [सं.] गंगा नदी। (ह. नां. मा.)

हुरसुत—सं पु. [सं] १ शिव के पुत्र स्वामि कार्तिकेय।

उ०—नाचै हुरसुत मोर प्रमकै खोह गुजाता। कोया जिणरा जांण चानणी धौळ सुहाता।—मेघ.

२ गणेश, गजानन।

हुरसेखरा—सं. स्त्री. [सं हुरशेखरा] गंगा नदी।

हुरसेन—सं पु. [सं. हरिसेना] राम की वानर सेना, बंदर सेना।

उ०—वेवी खगेश रूप लै नाग खाधा। वेवी नाग रै रूप हुरसेन बाधा।—वेवि.

हुरस्वात—सं. पु.—पपीहा। (अ. मा.)

हुरहुंस—सं. पु.- सूर्य। (ना. डि. को)

उ०—हुवै जेम हुरहुंस सू, वासर कमळ विकास। ए्ग धरम जस व्हे उगै, बत सू आंकीवास।—बां. दा.

हुरहार—सं. पु.—शिवजी के गले का हार, सर्प।

उ०—सा बाळा प्री चिंतवइ, खिणखिण रयणि विहाइ। तिण हुरहार परहुव्यउ, ज्यू दीवलउ बुझाइ।—ढो मा.

हरांन—देखो 'हैरान' (रू भे.)

हरांम—वि. [अ. हराम] १ इस्लाम धर्म के अनुसार हलाल का विपर्याय।

उ०—फाजल हुरखत इसै धारणा मैं डूब्योड़ी रैवै। पण जेळ मैं आ बात जाबक निजोरी। काटण वेगी जिनावर कठै सूं आवै? हलाल बिना ही हरांम खाणौ।—वरसोल

२ जो धार्मिक दृष्टि से या धर्म शास्त्र मे वर्जित माना गया हो, निषिद्ध, अधार्मिक।

उ० साधू जात री नैणी व्हैता थकांई बडौ मसखरौ अर भलौ आदमी हौ। उणरै वलैरा चोरी चकारी भलांई कीधी व्हैं, उण रै वास्तै तो दूजा री चीज हरांम बरोबर ही।—अमरचूंनड़ी

३ जिसका खाना निषिद्ध हो, वर्जित।

४ जो नाजायज हो, अनुचित।

उ०—मुई हरांम कहै हक मारी, पसुवौ करत पुकारा। काजी जाय कोण रा वेती, सांई के घर बारा।—अनुभववांणी

५ बुरा, खराब, दूषित, दोष पूर्ण।

उ०—माया मोह न कीजियै, माया बडी हरांम। जन हरीया तिह रोक मैं, कैसा करै विरांम।—अनुभववांणी

६ बहुत ही कटु, अप्रिय।

७ कठिन, दूभर।

उ०—१ एक दिन बिणियाणी भायौ रा पाड़ौस सूं अणूती आती आय बांणिया नै कैवण लागी- म्हनै तौ म्हारै पीहर पुगाय दौ, कै औ गांव ई छोड दौ। रोटी खावणी ई हरांम व्हैगी।

—फुलवाड़ी

उ०—२ पंथी एक संदेसड़उ, कहिज्यउ सात सलाम। जब थी हम तुम बीछड़ै नयणी नींद हरांम।—ढो. मा.

८ बेकार, व्यर्थ।

उ०—खाट त्याग खट तुरत खोड़ नै सोच सिधायौ। हाजत हुवै हरांम, कांम मैं विलंग करायौ।—डाबर सईकाडी

स पु —१ अधर्म, पाप ।

उ०—१ आपरा सत आगै तौ म्हारी अकल कह्यौ ई नी करै। पूतळी री कारीगरी रौ एक टकौ ई लेवणौ म्हारै वास्तै हराम है।
—फुलवाडी

उ०—२ हराम का हठवाडा, हरांम जादु की हाट, खोटु का खजाना, परे तु की पाट।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ मिनख मारणिया सू लोग बात करणी ही माडो काम समझै। घर रौ पाणी पीणौ ही हरांम गिणै।—दसदोख

२ बुराई।

३ स्त्री पुरुष का नाजायज सम्बन्ध, व्यभिचार।

४ निषिद्ध की हुई वस्तु।

मुहा.—**हरांम मूडै लागणौ**=बुरी आमदनी का चस्का लगना, रिश्वत की आदत पडनी, मुफ्त का माल खाने की प्रवृत्ति बननी।

हरांम री कमाई=रिश्वत की आय, चोरी का माल, नाजायज ढग से की जाने वाली कमाई, काला बाजारी।

हरांम समझणौ=बुरा व अनुचित समझना, पाप समझना।

(नींद) **हरांम होणौ**=जीना दूभर होना।

(रोटी) **हरांम होणौ**=सुख मे दुख आना, रस बेरस होना, विषमय वातावरण होना।

हरांमकारी–स. स्त्री. [अ फा. हरामकारी] पर-स्त्री गमन, व्यभिचार।

हरांमखोर–वि. [अ. फा. हरामखोर] १ कृतघ्न, नमक हराम।

उ०—१ पछै लाखै' री मा, लाखै' री राजलोक आयौ। खेत माहै लाखौ' पोढियौ छै। जीव नही नीसरियौ छै। ताहरा राखायत निजीक पडियौ दीठौ। ताहरा लाखै' री राजलोक कहण लागौ—'ओ हरांमखोर अठै क्यू पडियौ ? दूर करौ।' तरै लाखोजी बोलिया—'ओ राखायत सामधरमी छै हरामखोर नही छै।
—नैणसी

उ०—२ लायौ मस्तक काटकर, हरांमखोर नू मार। आवै सारी लोग जे हूंमैं करौ करनार।—गोपाळदास गौड़ री वारता

२ अनुचित रूप से धन कमाने वाला, हराम की कमाई खाने वाला।

३ कामचोर, निकम्मा, मुफ्तखोर।

४ दगाबाज, धोखेबाज।

उ०—१ होळे सी कुवरजी नू जगाइया अग कही जे हरांमखोर बाहर खडा छै।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ मूडौ भूडौ बापडा चीणिया रौ जो काकड री मायली कांनी ई पग देय दे। पग कलम नी कर नाखू हरांमखोरां रा।
—अमरचूनडी

रू. भे —हरमखोरौ, हरामखोरौ, हरामीखोर।

हरांमखोरी–स. स्त्री [फा. हरामखोरी] १ हरामखोर का कार्य।

२ कृतघ्नता, नमकहरामी।

उ०—इसडी हरामखोरै हरामखोरी की, तिण ऊपरि रामसिघजी बुलावण नू आया समाधि पूछिवा।—द दा.

३ कामचोरी, मुफ्तखोरी, निकम्मापन।

४ पाप की कमाई, चोरी।

५ धूर्तता, बदमाशी।

उ०—तद कुसळसिह कही हरांमखोरी म्हा कीवी, बीजा ऊभोडा किसी म्हासू परभारी साम-धरमी कीवी।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

हरांमखोरौ –देखो 'हरामखोर' (रू भे)

उ०—आमेरनाथ को लून खाय, लीनो हरामखोरौ उठाय। जो करहि चेत 'जगतेस' राय, तब काढि खाल भूसी भराय।
—ला. रा.

हरांमडौ –देखो 'हरामी' (अल्पा, रू भे)

उ०—हरीया देख हरामडौ, रोस न कीजै राम। अब तौ तेरौ हुय रह्यौ, और न मेरै काम।—अनुभववाणी

हरांमजादगी–स स्त्री. [फा हराम+जादगी] १ हरामजादे का कार्य, हरामखोरी।

२ धूर्तता, कृतघ्नता।

३ चोरी, बेईमानी।

४ दुष्टता, बदमाशी।

५ मुफ्तखोरी, निकम्मापन।

६ दोगलापन।

रू भे —हरमजदगी।

हरांमजादौ–वि. [अ फा. हरामजाद] (स्त्री हरामजादी) १ हराम की औलाद, दोगला, जारज, वर्णसकर।

२ धूर्त, दुष्ट, पाजी।

३ हरामखोर, निकम्मा।

रू. भे —हरमजादौ।

हरांमी–वि [अ हरामी] १ हराम की पैदाइस, व्यभिचार से उत्पन्न, दोगला।

उ०—मर रसाळा हरांमी तेरी ..... थाणादार एक वजनी गाळ ठरकाय दी अर कागदिया पूरा करने मुलजिम नै हवालात मै बद कर दियौ।—अमरचूनडी

२ दुष्ट, धूर्त, पाजी।

उ०—आ भूल कीरै वगी ? कूडी कलम कैया चाली ? मुनीम दोनू हरांमी, इन्याव रा काम करै। हरगज तीन सौ नी हाकरै।
—दसदोख

३ कृतघ्न, नमकहराम।

उ०—१ कुळ अजस घरै जोय 'पता' रौ पराक्रम, धणी रा हरांमी जका धूजै। प्रवाडा सदा नत नवा खाटै 'पतौ', 'पता' रा भुजा

'ग्राजीत' पूजै ।—प्रतापसिंह ऊदावत री गीत

उ०—२ सूरमां नाथ जंगा धार ग्रांटीपणै, सामी फौजा कांटीपणै हरांमी साधीग । ग्रासमान फाटै थाभी लागतौ ऊछांटी पणो, माटी पणें थारै फोका लागै मानसीग ।—महादान महडू

४ मुफ्तखोर, हरामखोर, निकम्मा ।

अल्पा.—हरामडौ

हरांमीखोर—देखो 'हरांमखोर' (रू. भे)

उ०—मति गति लखै न कोय, राम तुम सब के दाता । जीव हरांमीखोर, ग्रहूं माया मद माता ।—ह. पु. वा.

हरा–स स्त्री —१ उमा, पार्वती, गिरिजा । (अ. मा, ह ना. मा.)

२ हरितकी, हर्रे, हरड़ । (अ. मा.)

हराउळ—देखो 'हरावळ' (रू भे)

हराड़–स. स्त्री.—हार, पराजय ।

उ०—मन चींता न मीटै चख मासै, जैत हराड़ जाणौ । घुरै नगारी कहै कंध धरणी, प्रसण भगा सज पाणौ ।

—ठाकुर रामसिंह री गीत

हराणौ, हराबौ–क्रि. स. [स हृ] १ युद्ध, लड़ाई, द्वन्द्व या प्रतियोगिता मे अपने प्रतिपक्षी को परास्त करना, हराना, शत्रु को पछाड़ना ।

२ शिथिल करना, थकाना, नाकामयाब करना ।

३ तर्क या युक्ति द्वारा हार मानने के लिए विवश करना, निरुत्तर करना ।

४ हरण करने या चुराने के लिए प्रेरित करना ।

उ०—देवी लखमण राम पीछै पठाई, देवी रावणं रूप सीता हराई ।

—देवि.

हराणहार, हारौ (हारी), हराणियौ—वि० ।

हरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हराईजणौ, हराईजबौ—कर्म वा० ।

हरावणौ, हरावबौ, हारावणौ, हारावबौ—रू० भे० ।

हराद–सं पु [स. ह्लाद] ध्वनि, ग्रावाज ।

उ०—बळि निसिवान हराद नाम वदि । की गजराज ग्रावाज पुकार ।—ह. नां. मा

हरायण, हरायणौ–स. पु.—१ हरे होने की अवस्था या भाव, हरितता ।

२ हरे रंग या वर्ण की झलक ।

हरायत–स. पु.—१ संदेश वाहक, खबर नवीस ।

२ देखो 'हेरायत' (रू. भे)

उ०—पछै लाहौर सूं फौज लाख ग्रेक सू दिल्ली चलाय ग्राया । ग्ररु दिल्ली मैं पातसाह हुमायूं थौ सु भाज नीसरियौ नै हरायत गयौ छुछम साथ सूं । पीछै सूरसा नै सलेमसा दिल्ली रै गढ दाखल हुवा ।—द. दा.

हरायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ अपने प्रतिपक्षी को परास्त किया हुआ, शत्रु को पछाड़ा हुआ. २ शिथिल किया हुआ, नाकामयाब किया हुआ, थकाया हुआ. ३ तर्क या युक्ति द्वारा हार मानने के लिए विवश किया हुआ. ४ हरण करने या चुराने के लिए प्रेरित किया हुआ.

(स्त्री. हरायोड़ी)

हरारत–सं. स्त्री [अ.] १ मंद ज्वर, हल्का ज्वर, बुखार का हल्का सा ग्रसर ।

२ गर्मी, उष्णता ।

हरालउ–वि.—हर्षित ।

उ०—तीहूं कूंयरह तीह कूयरह माहि वो वीर । प्रभु ग्ररजुनु माग-लउ ग्रनइ करयु हीयइ हरालउ ।—सालिभद्र सूरि

हरावणौ–वि (स्त्री. हरावणी, हरावनी) १ हार या पराजय दिलाने वाला ।

२ हराने वाला, पराजित करने वाला ।

उ०—हरामखोर चोर को कुहुषक दे हरावणी । कराळ कंठ काक-नीय उमकनी डरावणी ।— ऊ. का.

३ हरण कराने वाला ।

हरावणौ, हरावबौ – देखो 'देखो 'हराणौ, हराबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ० १ जे पासा धईनि हरावु ते ग्राणी द्यूं, महाराज ।

—नळाख्यान

उ० -२ चरण चारिहिं हंस हरावती । वचनि ग्रीणइ जीती भारती ।—शांतिसूरि

उ०—३ पवन चंदनगंध हरावतउ । वदनि वांस वसइ विधि वासतु ।— सांतिसूरि

हरावणहार, हारौ (हारी), हरावणियौ—वि० ।

हराविग्रोड़ौ, हरावियोड़ौ हराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हरावीजणौ, हरावीजबौ—कर्म वा० ।

हरावळ हरावल–सं. पु [फा] १ सेना का अग्र भाग ।

२ फौज मे सब से आगे चलने वाला सिपाहियों का दल ।

३ अग्र भाग, आगे का हिस्सा ।

उ०—सूर ग्रगूणा परबतां री हरावळ रै गारै सूं परभात री गेरी कसूमल पणी ग्रबार ताई ग्रंधारै सांग रिमझौ पड़यौ ही ।

—तिरसकू

रू. भे —हरवळ, हरवळ, हरवल, हराउळ, हरौळ, हरोल, हरो-ळाई, हिरावळ, हिरौल ।

हरावियोड़ौ देखो 'हरायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. हरावियोड़ी)

हरास—१ देखो 'ह्रास' (रू. भे.)

२ देखो 'हरारत'

हराहर–स. पु —सोलंकी क्षत्रियों की एक शाखा ।

हरि–स. पु. [स.] १ ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा । (नां. मा)

उ०—१ सांभळि ग्रनुराग थयौ मति स्यामा, वर प्रापति वंछती

वर। हरि गुण भणि ऊपनी जिका जिका हर, हर तिणि वदै गवरि हर।—वेलि
उ०—२ बप रूप ग्रोप नव घन वरण, हरण पाप-त्रय ताप हरि। गुण मान दान चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यान ग्रौ ध्यान करि।
—रा रू
उ०—३ हरीया सब हरि हाथि है, हरि मारै जीवारि। हरि धारै जो कुछि करै, त्यै डूबता तारि।—अनुभववाणी
२ विष्णु।
उ०—हेंनी कवि हिंगळाज री, कान करो करनैल। खाथी डग मारग खडौ, हरि हाथी री हेल।—मे म
३ श्रीकृष्ण। (अ मा)
उ०—१ नर मारगि एक एक मगि नारी, क्रमिया अति उछाह करेउ। अकमाळ हरि नयर आपिवा, बाहा तिकरि पसारी बेउ।
—वेलि
उ०—२ पुरातन प्रीत जिसी हरि पथ, राजा लोमज हुनै दसरथ।
—रामरासौ
४ श्रीरामचन्द्र, श्रीराम।
५ ब्रह्मा।
६ इन्द्र।
उ०—बग रिखि राजान सु पावसि बैठा, सुर सूता थिउ मोर सर। चातक रटै बलाहकि चचळ, हरि सिणगारै अबहर।—वेलि
७ सूर्य, रवि। (ह ना मा)
८ शिव, महादेव।
उ०—हरि कहइ जिकै करि भाव घणइ हित, दासा तिया तणउ हूँ दास।—महादेव पारवती री वेलि
९ चन्द्रमा, चाद।
१० वायु हवा।
११ अग्नि, आग।
१२ कामदेव, मदन। (ह ना मा.)
१३ मानव, मनुष्य।
१४ यमराज।
१५ शुक्रग्रह।
१६ सिंह, शेर। (डि को)
१७ हाथी, गज।
उ०—रथ पदाति रूपक तणा स्वामी नीलजण रिद्धजस हरि एरावण मातलि दामिट्ठी हरिणेगमेखी सरवागि सन्नाह पेहिरि, ब्रढ कसा बधि, धनुखि गुण चडावी रह्या।—व स.
१८ वानर, वदर, लगूर। (ना मा)
१९ अश्व, घोडा।
२० इन्द्र का घोडा।
२१ हिरन, मृग। (ह ना मा)
२२ भ्रमर, भौरा। (ह ना मा)
२३ मयूर, मोर।
२४ तोता, कीर।
२५ गीदड।
२६ हंस।
२७ जल, पानी।
उ०—हरि नै कह्या, हरि नै सुना, हरि गयै हरि कै पास। हरि तौ हरि मै गयै, हरि भयै उदास।—अग्यात
२८ सर्प, साँप।
उ०—हरि नै कह्या, हरि नै सुना, हरि गयै हरि कै पास। हरि तौ हरि मैं गयै, हरि भयै उदास।—अग्यात
२९ मेढक।
उ०—हरि नै कह्या, हरि नै सुना, हरि गयै हरि कै पास। हरि तौ हरि में गयै, हरि भयै उदास।—अग्यात
३० एक प्राचीन पर्वत।
३१ एक वर्ष या भू भाग का नाम।
उ०—तेह युगलीयाना च्यारि भेद, छप्पन्न अतरद्वीप १ हैमवत, हैरण्यवत २ हरि वा रम्यक तणा ३ देवकुरु उत्तरकुरु ४ एवं ति पाहि अनुक्रमइ अनत गुण बल रूव सुख ..।—व स
३२ गरुड के पुत्रो मे से एक।
३३ भर्तृहरि का नामान्तर।
३४ तारकाक्ष का पुत्र एक असुर।
३५ तामस मन्वन्तर का एक देवगण।
३६ भूरा या पीला रग।
३७ जैनियो के ८८ ग्रहो मे से उनचालीसवां ग्रह।
३८ छप्पय छन्द का ९ वा भेद जिसमे ६२ गुरु, २८ लघु से १५२ मात्राऐ तथा ९० वर्ण होते है। (र ज. प्र)
३९ मतान्तर मे छप्पय छन्द का एक अन्य भेद जिसमे ५५ गुरु तथा ४२ लघु मात्राऐ होती हैं।
स स्त्री—४० किरण, रश्मि।
४१ सिंह राशि।
४२ इच्छा, कामना।
४३ कोयल।
४४ घोडो की एक जाति। (इस जाति के घोडो की गर्दन पर बडे बडे बाल होते है, शरीर के रोयें सुनहले रग के होते हैं)
वि—१ भूरा, कपिल, बादामी।
२ पीला।
उ०—लाल हरी सिकळात, जिलह जाठिया अजोदा। रसा कसै रेसमा, हेम रूपी हरि हौदा।—सू प्र
३ हरा, धानी।
४ काला श्वेत। (डि को.)

रू. भे —हर, हरी।

अल्पा —हरियो।

हरिआळी—देखो 'हरियाळी' (रू. भे)

हरिक–स पु. [रा.] १ पीले या भूरे रंग का घोड़ा।

२ जुआरी।

३ चोर।

वि.—पीला-हरा। (डि. को)

हरिकथा–स स्त्री [स हरि+कथा] १ ईश्वर के अवतारो एव चरित्रो का वर्णन, कथानक।

२ उक्त कथानको के सग्रह की पुस्तक।

हरिकाय–स. पु. [रा. हरितक] शाकाहार, फलाहार।

उ –कद मूल फल बीज नौ, भोजन हरिकाय। साध ने भोगवणो नही, पाप दोखण थाय।—जयवाणी

हरिकीरतन, हरिकीरत्तन–सं पु. [स हरिकीर्तन] भगवान के नाम का कीर्त्तन, भजन, गायन।

रू. भे —हरीकीरतन, हरीकीरत्तन।

हरिकेत–सं पु.—एक तीर्थ का नाम।

उ०—भूतेस्वर भूयतलि खरू, हरिस्चंद्र हरिकेत। घइतरणी-विधि थई जता, सरग सधावइ प्रेत।—मा कां. प्र.

हरिकेस–सं. पु [रा. हरिकेश] १ सूर्य की एक कला।

२ शिव, महादेव।

हरिकेसि, हरिकेसी–स पु [रा हृषिकेशः] १ श्री कृष्ण।

उ०—तडि पहुतउ जल गाहिय, नाहिय प्रभु हरिकेसि। मानि म परियण उत्सव कुरस वयण म भणेसि —जयशेखर सूरि

२ एक ऋषि चाडाल कुल मे उत्पन्न होने पर भी सयम प्रताप से ऋषीश्वर हो गये।

उ०—ऊचै कुल 'ब्रह्मदत्त' हुवौ, नीचैं कुल हरिकेसी रे।

—जयवाणी

हरिक्षेत्र–सं पु. [सं] पटना के पास का एक तीर्थ स्थान।

रू भे.—हरिखेत, हरिखेतर।

हरिख–सं पु.—१ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम चार ह्रस्व तथा फिर दो दीर्घ वर्ण इसी क्रम से बारह वर्ण होते है।

(ल. पि)

२ देखो 'हरस' (रू भे)

उ०—सकल लक्षण सुंदरी, जाणे रभानु अवतार। नयणे निरखी हरिख पाम्यु विप्र तेणि ठार।—नळाख्यांन

हरिखि—देखो 'हरस' (रू. भे.)

हरिखेत, हरिखेतर—देखो 'हरिक्षेत्र' (रू. भे.)

हरिगीतिका–सं. स्त्री. [स.] अट्ठाईस मात्राओ का एक छन्द जिसकी पाचवी, बारहवीं, उन्नीसवी और छब्बीसवीं मात्रा लघु होती है। सोलह व बारह पर यति होती है तथा अन्त मे लघु गुरु होता है।

हरिचंद—देखो 'हरिश्चंद्र' (रू भे)

उ०—१ सतवादी हरिचद रो राजा, नीच घर नीर भरै। पांच पांडू अरु कुती द्रोपदी, हाड हिमाळय गरै।—मीरा

उ०—२ मू कथार सप मोरधुज, अबरीक हरिचद। पद रोया परि पच्छा, की नव कोट नरिंद।—रा. रू.

हरिचदण, हरिचंदन–स. पु. [सं] १ एक प्रकार का चन्दन विशेष।

२ स्वर्ग का एक वृक्ष।

उ०—१ कळपवृक्ष संतान, पारिजाती हरिचदण। तर मंदार दुवार, सारा ऊमा सुख अप्पण।—रा. रू.

उ०—२ मदार पारजाती कलप, हरिचदन संतान तर। परसियौ 'अभै' ग्रदा विपन, कुज पुज तरवर निकर।—रा. रू.

रू भे. -हरचदण, हरचदन, हरीचदण, हरीचंदन।

हरिचरित, हरिचरित्र–स पु.—ईश्वर का चरित्र या उसका गुणगान।

रू. भे.—हरीचरित, हरीचरित्र।

हरिचाप–स पु. [स] इन्द्र धनुष।

हरिजख–स. पु. [सं. हर्यक्ष] सिंह, शेर। (ह ना मा)

रू. भे. –हरजख, हरीजख।

हरिजटा–सं. स्त्री [सं] रावण की अनुचरी एक राक्षसी, जो अशोक वाटिका मे सीता को समझाने के लिये नियुक्त थी।

रू. भे.—हरजटा

हरिजण, हरिजन–स पु. [सं. हरि+जन] १ ईश्वर का भक्त।

उ०—जो रज हुवा ज मया भया, उडि उडि लागै आग। हरीया हरिजन जाणीयै, जैसा पाणी नाग। —अनुभववाणी

२ भंगी, मेहतर।

उ०—एकली बैठी फुसी कळपै-कुळै। बठै मा'रजा, हरिजण बाळकां मैं रीझै-मुळकै।—बसवोल

हरिजस–स. पु [रा हर्यश्व] १ इक्ष्वाकु के पुत्र एक सूर्यवशी राजा।

[सं. हरियश] २ ईश्वर का यश, ईश्वर की कीर्ति जो भक्तो द्वारा बखान की जाती है, भक्तो द्वारा गाई जाती है, ईश्वर का स्तुति-गान।

३ देखो 'हरिकीरतन'।

हरिण–स पु [रा. हरिण] (स्त्री हरिणी) १ एक सींगदार प्रसिद्ध चौपाया जगली जानवर, मृग, हिरन। (अ. र)

उ०—सर सांधी राउ केडइ धाइ, हरिणउ हरिणी सहितु पुलाइ।

—सालिभद्र सूरि

वि. वि —इसके शरीर के बाल अत्यन्त मुलायम होते है और इनकी खाल ऋषि-मुनियो के पहनने के काम आती है। इसके नेत्र बड़े सुन्दर होते है जिनकी उपमा स्त्री के सुन्दर नेत्रो को दी जाती है (मृगनयनी)। यह चौकड़ियां भरते हुए अत्यधिक तेज दौड़ता है। हिरन प्राय. सफेद, पीले व काले रग के होते है, इनका कद

बकरे के समान होता है, परन्तु इनकी कई नस्लें होती है जिनके अनुसार इनके रग व कद में विभिन्नता पाई जाती है। सबसे प्रसिद्ध हिरन 'बारहसिगा' होता है जिसके मुख्य दो सीगो मे से कई छोटे छोटे अन्य सीग निकले हुए होते है। इसका रग काला होता है।

२ हस। ३ सूर्य।

४ विष्णु।

५ शिव।

६ सफेद रग।

७ ब्रह्मा।

वि.—१ श्वेत।

२ पीला।

३ देखो 'हिरण्य' (रू भे)

रू भे—हुरण, हरन, हरिन, हिरण, हिरण्ण, हिरण्य, हिरन, हिरिण।

अल्पा — हिरणली, हिरण्यौ।

हरिणईख, हरिणख—१ देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे)

उ०—पहलाद सभरियौ आयौ जमपति, चत्रभुज नमो भगत री चाड। बहनामी रै दाढ तणौ बळ, हरिणख तणौ जाणियौ हाड।
—पी. ग्र

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

हरिणनयणा हरिणनयणी-स स्त्री—मृग के नेत्रो के समान सुन्दर नेत्रो वाली स्त्री, मृगनयनी।

हरिणनाभ-स. पु.—१ हरण्यनाभ नामक एक सूर्यवशी राजा।

उ०—सुत जय हरिणनाभ सुभियाणौ। पुरब नृप जै सुत इंद्र प्रमाणै।—सू. प्र.

२ मृगनाभि जिसमे किस्तूरी होती है।

हरिणली—देखो 'हरिणी' (अल्पा, रू भे)

उ०—रानह न सिरजी हरिणली। सूरह न सिरजी धीणु गाई।
—बी दे

हरिणाकुस—१ देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

हरिणांखी—देखो 'हरिणाक्षी' (रू भे)

उ०—जे कै घरि हरिणाखी नारि। तौ किम भमइ पार कइ बारि।—बी. दे

हरिणाकस, हरिणाकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे.)

उ०—कोपमान नरसिंघ रूप करि, विकट विराट वदन विकराळ। सोखै रगत असुर हरिणाकुस, प्रभु प्रह्लाद भगत प्रतिपाळ।
—ह ना मा.

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

उ०—हरि हुए वराह हुए हरिणाकस, हू ऊधरी पाताळ हू। कहौ तई, करुणा मैं केसव, सीख दीध किण तुम्हा सू।—वेलि.

हरिणाक्षी, हरिणाखी-स स्त्री [स हरिणाक्षी] मृग के नेत्रो के समान सुन्दर नत्रो वाली स्त्री, मृगनयनी।

उ०—१ हरि समरण रस समझण हरिणाखी, चात्रक खळ खंगि खेत्र चढि। वैसे सभा पारकी बोलण, प्राणी बछइ त वेलि पढि।
—वेलि

उ०—२ मुझ वर गयौ हरिणाखी नाखी दीध निराम, बिलबिलै राजुल आखीय भरि भरि नाखी निरास।—ध व. ग्र

रू भे—हरणाख, हरणाखी, हरणाखी, हरिणाखी, हरिणाखी, हिरणाखी, हिरणाखि, हिरणाग्मी, हिरणाखिख।

हरिणि, हरिणी-स स्त्री [स हरिणी] १ मादा हिरन, मृगी।

उ०—जइ तु पूछइहौ धरह नरेस। वन खड रहती हरिणि कइ वेस।—बी. दे.

२ कामशास्त्र के अनुसार चित्रणी नामक स्त्रियो की जाति का नाम।

३ आर्या या गाहा छन्द का एक भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे ७ गुरु और ४३ लघु वर्ण सहित ५७ मात्रायें होती हैं।
(ल. पिं)

४ सुन्दर स्वर्ण प्रतिमा।

५ सोनजुही नामक लता।

रू भे—हरणी, हिरणि, हिरणी।

अल्पा—हरिणली।

हरिणेगमेखी-स पु—जैन मान्यतानुसार शकेन्द्र की पैदल फोज के सेनापति देव का नाम।

उ०— ' १६ सहस्र बाह्य सभा तणा देव, ७ कटक, नाट्य गधरव हय गज व्रखभ रथ पदाति रूपक तणा स्वामी नीलजणा रिद्धजस हरि एरावण मार्तलि दामिढी हरिणेगमेखी सरवागि सन्नाह पेहिरि, द्रढ कसा बँधि, धनुखि गुण चडावी रह्या,.. ...।
—व. स.

वि वि.—गर्भ परिवर्तन सतान समस्या मे इसका आराधन करने का विधान भी जैनागमो मे आता है।

हरित-स पु [स.] १ विष्णु का एक नामान्तर।

२ सूर्य।

३ सूर्य का एक घोडा, कुम्मेद घोडा।

४ सिंह, शेर।

५ हरा, पीला या धानी रग।

६ घास, तृण।

७ दिशा।

८ द्वादश मनवन्तर का एक देव गण।

९ मान्धाता के पौत्र व युवनाश्व के पुत्र का नाम।

वि—१ हरे रग का, हरा।

२ पीला ।
३ धानी ।
रू. भे.—हरत ।
हरितकाय–सं. पु.— शाक-सब्जी । (जैन)
हरितकी—देखो 'हरीतकी' (रू. भे.)
हरितमणि–सं. स्त्री. [सं.] पन्ना, मरकत ।
हरिताळ, हरिताल–सं. पु. [सं. हरिताल] १ पीले रंग का कबूतर ।
२ देखो 'हरताळ' (रू. भे.)
रू. भे.—हरियाळ, हरियाल ।
हरिताळिका, हरितालिका–सं. पु. [सं. हरितालिका] १ भाद्र शुक्ला चतुर्थी ।
२ दूर्वा घास, दूब ।
रू. भे.—हरिताळी ।
हरितालिका-व्रत–सं. पु. यौ. [सं.] भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को किया जाने वाला व्रत विशेष ।
हरिताळी, हरिताली–सं. स्त्री.—१ तलवार का धारदार अग्र भाग, तलवार की धार ।
२ देखो 'हरितालिका' (रू. भे.) (डिं. को.)
हरितिय–सं. स्त्री. [सं. हरि+तिय] १ सरस्वती, शारदा ।
उ०—पीठ धरांण-धर पट्टड़ी, हरितिय चिभ्रण हार । तोइ तोरा चरितां तणी, परम न लाभै पार ।—ह. र.
२ लक्ष्मी ।
हरिदरस–सं. पु. [सं. हरिदर्श] हरे घोड़े वाला सूर्य ।
हरिदवार—देखो 'हरिद्वार' (रू. भे.)
हरिदास–सं. पु. [सं.] (स्त्री. हरिदासी) १ ईश्वर का भक्त ।
२ रामस्नेही सम्प्रदाय के एक महात्मा ।
३ विष्णु भक्त ।
रू. भे.—हरदास ।
अल्पा:—हरदासियौ ।
हरिदासी–सं. पु. [सं. हरिदासिन्] १ ईश्वर की भक्त, भक्तिन, साध्वी-स्त्री ।
२ लक्ष्मी, रमा ।
३ पार्वती ।
४ रिद्धि-सिद्धि ।
५ दौलत, माया ।
रू. भे.—हरदासी ।
हरिदिन, हरिदिवस–सं. पु. [सं.] विष्णु की उपासना का दिन, एकादशी ।
हरिदिसा–सं. स्त्री. [सं. हरि+दिशा] पूर्व दिशा ।
हरिदेव–सं. पु. [सं.] १ विष्णु ।
२ श्रवण नक्षत्र ।
हरिद्वार–सं. पु. [सं.] उत्तर भारत में स्थित वह तीर्थ स्थान जहाँ पर 'गंगा' पहाड़ों को छोड़ कर मैदान में प्रवेश करती है ।
उ०—१ हरिद्वार कुरुखेत जगन्नाथपुर, गोदावरी हुलासी । तीरथ बडे प्रयाग गयाजी, कासी राखवर बासी ।—मीरां
उ०—२ भानुहरता सुरधर अपारै, दीपै किरि झल्लारि हरिद्वारै । कांगि अगम ओपम नवकोटा, राणु मढ कोट करण सैलोटा ।
—रा. रू.
रू. भे.—हरिदवार ।
हरिधनुख, हरिधनुस–सं. पु. [सं. हरिधनुष] इन्द्र धनुष ।
हरिधाम–सं. पु. [सं. हरि+धाम] विष्णु लोक, स्वर्ग ।
हरिध्रम–सं. पु. [सं. हरि+धर्म] १ ईश्वर का भजन ।
उ०—जिण कारण कुं सब कोई आधा, हरिध्रम रीती पाछा । जन हरिराम राम रस पीजै, छाडि सुवर गऊ बाछा ।—अनुभववाणी
२ विष्णु धर्म ।
हरिन १ देखो 'हिरण' (रू. भे.)
२ देखो 'हिरण्य' (रू. भे.)
हरिनख–सं. पु.—१ बाघ का नाखून लगा एक ताबीज ।
२ एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।
मि वि.—देखो 'बाघनख' ।
वि.—कुटिल, टेढ़ा ।
हरिनैणी–सं. स्त्री.—मृगनयनी ।
हरिनाम–सं. पु.—ईश्वर का नाम, स्मरण ।
हरिनामी–सं. पु.—एक प्रकार का अशुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो)
हरिनाकुस—देखो 'हिरणाकस्यप' (रू. भे.)
हरिनाक्ष—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)
हरिनाथ–सं. पु. [सं.] हनुमान का एक नामान्तर ।
रू. भे.—हरीनाथ ।
हरिन्मणि–सं. स्त्री. [सं.] हरे रंग की मणि, पन्ना ।
उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुखराग वज्र वैडूर्य सूर्यकांत चंद्रकांत नीर महानील इन्द्रनील सस्यकर विभाकर ज्वरहर रोगहर सूलहर विसहर हरिन्मणि चूनड़ी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगर्भ पुलक अंक अंजन अरिस्ट चिंतामणि ।—व. स.
हरिपद–सं. पु. [सं.] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।
२ मोक्ष, मुक्ति ।
३ वसंत कालीन वह दिन जब दिन व रात बराबर होते हैं, २१ मार्च ।
रू. भे.—हरीपद ।
हरिपदि, हरिपदी–सं. स्त्री. [सं.] गंगा नदी का एक नाम, विष्णुपदी ।
(ह. नां. मा.)
रू. भे.—हरीपदि, हरीपदी ।
हरिपुर–सं. पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

रू भे.—हरपुर, हरीपुर।

हरिपैडी-स स्त्री —१ हरिद्वार में गगा का एक प्रसिद्ध घाट।

२ उक्त घाट पर बनी सीढिया।

रू भे.—हरपेडी, हरपैडी।

हरिप्रिय-स पु [स.] एक प्रकार का चदन।

हरिप्रिया-स स्त्री [स] १ लक्ष्मी, कमला।

२ पृथ्वी, धरती।

३ तुलसी।

४ द्वादशी तिथि।

५ शराब, मद्य।

६ शहद, मधु।

७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे १२, १२, १२, १० के विराम से ४६ मात्राएँ होती है और अन्त मे गुरु होता है।

रू. भे —हरप्रिय, हरप्रिया।

हरिप्रबोधणी, हरिप्रबोधनी-स स्त्री [स हरिप्रबोधिनी] कार्तिकशुक्ला एकादशी।

वि. वि.—चातुर्मास मे देवशयनी के दिन विष्णु शयन करते हैं और कार्तिक मास की शुक्लएकादशी के दिन जागृत होते हैं। इस दिन का अत्यधिक माहात्म्य है। इस दिन लक्ष्मी अपने गुणो से अपने पति (विष्णु) को जीत कर नैत्रो से देख कर सुख पाती है।

हरिप्रीता-स स्त्री.—ज्योतिष मे एक मुहूर्त।

हरिबल्लभा—देखो 'हरिवल्लभा' (रू. भे)

हरिबाहण, हरिबाहन—देखो 'हरिवाहण' (रू. भे.) (डि. को)

हरिबोधनी, हरिबोधिनी-स स्त्री. [स हरिबोधिनी] कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

हरिभक्त-स. पु [स] जो ईश्वर मे विश्वास एव श्रद्धा रख कर निरन्तर ईश्वर की भक्ति करता हो, ईश्वर-भक्त।

रू. भे.—हरिभगत।

हरिभक्ति-स स्त्री [स] ईश्वर की भक्ति, ईश्वर-प्रेम।

रू. भे —हरिभगति।

हरिभगत—देखो 'हरिभक्त' (रू भे)

उ०—बन मे हुती स्योरी भीलणी, ज्याका आरोग्या ठाकुर बोर। ऊच नीच हरि ना गिणै, ऐसी म्हारा हरिभगतां री कोर।

—मीरा

हरिभगति—देखो 'हरिभक्ति' (रू. भे.)

उ०—कुण ऊचा नीचा कवण, आस पटतर जोय। हरीया ऊची हरिभगति, करै स ऊचा होय।—अनुभववाणी

हरिमथक-स पु [स हरि+मन्थक] १ छोटा मटर।

२ चना।

हरियबुंदर-स पु. [स. हरितेन्दुदर] भ्रमर, भौंरा। (अ. मा)

हरिय-स पु [स हरित] १ वनस्पति।

२ पीत रग का घोडा। (डि को)

हरियर-स पु —एक प्राचीन राजकुल।

उ०—राजकुली ३६, सूरजवस सोमवस यादववस कदव परमार इक्ष्वाक चहुमान चालुक्य मोरी सेलार सैधव विदक चापोत्कट प्रतिहार लब्धक रास्ट्रकूट सक करवट कारट पाल चादिल गोहिल गुहलिपुत्रक धान्यपाल राजपाल अनग निकुभ दधिकर कालामुह दापिक हूण हरियर डोसमार।—व स

हरियळ, हरियल-वि —१ हरे रग का, हरा।

उ०—१ उतरतौ भादरवौ। सरस हरियळ धरती री कूख पावडै पावडै हिवडा रौ हरख दरसावती ही।—फुलवाडी

उ०—२ गाम स् उगमणा आयौडा डूगर नीला हेवत व्हैग्या हा अर वारै ढाळ में आयोडा कोसा लाबा खेत, इसा लागता हा जाणै हरियळ जाजम बिछयोडी व्है।—अमरचूनडी

उ०—३ मेडी रा छाजा माथै एक हरियल सूवटौ आयनै बेठ्यौ। वौ आखतो होय बोल्यौ—मा, सूवौ, सूवौ।—फुलवाडी

२ जो सूखा न हो, हरा। (पेड, पौधे, घास, वनस्पतियाँ आदि)

उ०—१ कैता पाण ठाकर रा मन मे आ बात जचगी। अजेज ऊभा व्हू ई बाग मे गिया। हरियल पाना रै बिचाळै फूल दीप दीप करता हा। सौरम सूँ ठाकर री रग रग नाचण लागी।

—फुलवाडी

उ०—२ उण री आ विकट दरद भरी बतळावण सुणनै एकण सागै गिगन रा सात तारा तूट्या, रूखा री कूपळा बळगी, हरियल पान झडग्या अर बाग-बगेच्या रा कैई फूल मुरझायग्या।

—फुलवाडी

३ हरा भरा, प्रफुल्लित, पुष्पित-पल्लवित।

उ०—तबुआ उतरै राठोडा री जान कोई, हरियल बागा पाबू बनडी सोवणौ ए मोरी सइया।—पाबूजी रौ गीत

४ जो फलने फूलने लायक हो, विकासशील।

स०—दुनिया रौ सिरजण करण वाळी हरियल कूख नै म्है म्हारै ई हाथा मसाण बणायौ, इण अथाग दुख रौ थू कूंती कर सकै बेटी।—फुलवाडी

स. पु —एक प्रकार का पक्षी, जिसका मास बढिया होने के कारण इसका शिकार किया जाता है।

रू. भे.—हरियाळ, हरियाल, हरीयाल।

हरियाणउ, हरियाणौ, हणियाणौ-वि. (स्त्री. हरियाणी) १ हरा भरा, सर सब्ज।

उ०—सक्कर पय खाणा हैं हरियाणा। जहा सिंधू दा थिर थाणा। वसतै अवधूता सिद्ध सवूता, जोग जगूता सबजाणा।—पा. प्र.

२ प्रसन्न, हर्षित।

३ पुष्पित, पल्लवित।

सं पु.—भारत का एक प्रान्त विशेष जिसकी सीमाऐं राजस्थान व पंजाब से मिलती हैं।

उ०—मथुरा अवध्या वणारसी चंदेरी गहितवाल गहवर महोब हरियांणउ भयाणउ रत्नपुर कांगरू ओडियाण जालंधर सिंधुआरब बंगाल त्रिहुण भोट महाभोट चीण महाचीण.........।—व. स.

हरियामूळ-सं पु —गाय, भैंस, बैल आदि पशुओं को होने वाला एक रोग जो वर्षा ऋतु में हरा घास अधिक खाने से होता है।

हरियाळ हरियाल-स पु [स. हरिचाल] १ वक्त, समय। (अ. मा.)

२ देखो 'हरताळ' (रू. भे) (उ र)

३ देखो 'हरिताळ' (रू. भे.)

४ देखो 'हरियळ' (रू. भे.)

हरियाळी हरियाली-स. स्त्री.—१ हरे भरे वृक्ष, पौधों या वनस्पतियों का समूह।

उ०—१ वधज्यौ, फड़वा नीम ज्यूं, बीरा वधज्यौ, श्रो हरियाळी री दूब, वधायौ जी म्हारै घर आवियौ।—लो गी.

उ०—२ मटकियां मे पाणी जम जातौ। पाना माथै पड़ी ओस री कणीरियौं मण जातौ। नित री फाफाी सूं हरियाळी पीळी पड़गी। —फुलवाड़ी

२ हरा घास, दूब।

उ०—सूखी भर पागळी नदियां नै पगा हलावै। सूखा मे हरियाळी उगावै फूला रा गाडणा गाडै। धान निपजावै।—फुलवाड़ी

३ पेड़-पौधों, घास व वनस्पतियों की प्रस्फुटित, पुष्पित-पल्लवित होने की अवस्था या दशा।

उ—बाजरिया हरियाळियां, बिचि बिचि वेलां फूल। जउ भरि वूठउ भाद्रवउ, मारू देस अमूल।—ढो मा.

४ आर्द्रता, गीलापन, नमी, सूखे का विपर्याय।

५ हरापन।

उ०—पीयू पीयुस सनै, ऊजळी छिब उणियारै। जांणै वणै अगूर, झळक हरियाळी सारै।—दसदेव

६ पावस, वर्षा।

उ०—चयारइ पासइ घण घणउ, बीजळि खिवइ अगास। हरिय ली रुति तउ भली, घर संपति पिउ पास।—ढो. मा.

७ लाक्षणिक अर्थ मे आनन्द, खुशहाली।

रू. भे.—हरिआळी, हरीआळी, हरीआली, हिराळी।

हरियाळी अमावस-स. स्त्री. यौ.—श्रावण मास की अमावस्या।

हरियाळी ढाली-स. स्त्री. यौ.—लडकियों द्वारा गाया जाने वाला एक मारवाडी लोक गीत।

हरियाळी तीज-सं. स्त्री. यौ —श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया। स्त्रियों के लिये यह एक त्यौहार माना जाता है।

हरियाळौ-बनड़ौ-स. पु यौ.—१ नया दूल्हा।

उ०—जद हरियाळो बनड़ो, सहेळ पधारची ए, सहेळै मैं सहर रारायौ, ए आईजी म्हारा राज।—लो. गी

२ एक लोक गीत।

हरियाळौ, हरियालौ-स पु —१ हरे-भरे पौधो का समूह, विस्तार।

उ०—हेरै हरियाळौ भूतळ हरखाती, गहरी ऊंचै गळ हरियाळौ गाती। घिन धण छाक जाती छाती लल छाती, जांझर झणकाती जाती गवगाती।—ऊ का.

२ खेतो में कार्य करते समय किसान स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—१ गोरी म्हारी ए, हरियाळौ वूठोजै मयूं, यूं म्हारा सायब यूं जी यूं। गोरी म्हारी ए हरियाळौ वायी जै मयूं, यूं, म्हारा सायब यूं जी यूं।—लो गी

उ०—२ हेरै हरियाळौ भूतल हरखाती। गहरी ऊंचै गळ हरियाळौ गाती।—ऊ का.

३ हरा घास।

४ हरा-भरा वातावरण।

५ एक खास जाति का घोड़ा।

वि.—१ जो सूखा न हो, हरा, आर्द्र, ताजा।

उ०—हरियै हरियाळै डाळै काळी कोयल बोलै राज। बोलै बोलावै, सैंयां सबद सुणावै राज।—लो. गी.

२ हरे रंग का, हरा।

उ०—एयड छेयड सात चिड़कली, बीच मैं हरियालौ सूवटो। चकबक बोलै सात चिड़कली, दमत बोलै हरियौ सूवटो।—लो. गी.

३ हरा-भरा।

उ०—१ सुत 'अजमल' रंग घणौ सहामण, रीझ दियौ हरियाळै साबण।—अज्ञात

उ०—२ हेत रा गिगना री परनाळा उघाड़ा परबता माथै रपट'र गुडगुडै हरियाळै मैदान नै कद पार करवा अर कद ऊंची ऊंची लहैरवरा खाता समदर माय समावण्या।—तिरसकू

हरियौ भरियौ-वि. यौ —१ हरा-भरा।

२ पुष्पित पल्लवित।

३ सुखी, प्रसन्न, प्रफुल्लित, सम्पन्न।

४ पर्याप्त, पूर्ण।

उ०—हरियौ भरियौ धांन, ऊतरै रावा सतोलो। ढिगला लगै ललाम, धोर धन देवण पोलो।—दसदेव

हरियौ-स. पु. [सं. हरित] १ हरा घास, हरा चारा, वनस्पति।

२ हरे रंग का विस्तार।

३ एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—कुमैत नीला समदा मकड़ा सेली समद, भूवर बोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केला महुवा धूगरा हरिया लीला गुलदार पचकल्याण पवण गुरड साजाब सवळी सीहा चकवा अबलख

सिराजी। फेर ही अनेक रंग रा घोडा तयार कीजै छै।
—रा. सा. स.

वि —१ हरे रंग का, हरा।
उ०—१ सू मूंग किण भातरा छै? मगरै रा नीपना, भरत रै खेतरा, हरियै रग रा, चुवळा जेडा, इण इण भात रा मूग हाथा सू रळकाय जै छै। —रा सा स
उ०—२ चक बक बोलै सात चिडकली इम्रत बोलै हरियौ सूवटौ।
—लो गी.
२ जो सूखा न हो, जो मुरझाया हुआ न हो, ताजा, हरा, आर्द्र, नम।
उ०—हरियै हरियालै डाळै काळी कोयल बोलै राज। बोलै बोलावै सैया सबद सुणावै राज। —लो गी
३ पुष्पित, पल्लवित।
ऊ०—१ भाप करै सर सूभर भरिया, धरती रूप अनेका धरिया। हमीरोत, हूवा गिर हरिया, सील समापो घर साभरिया।
—आसौ बारहट
उ०—२ हरिया गिरवर धर तर हरिया, गै वूबै अबर घर हरिया। धारोळा वादळ धर हरिया, सुकव विदा कर घर समरिया।
—अग्यात
४ हरियाली से भरा हुआ।
५ प्रसन्न, प्रफुल्लित।
उ०—दोसती-मितराई मोटी चाल, कितौ ही तुलावौ चावै मंडी सूं माल। मा'रजा रौ मन सतवाडै हरियौ हुयग्यौ। ऊचौ उछळ पडयौ।
—दसदोख
६ देखो 'हरि' (अल्पा, रू भे)

हरिरक्षा—स. पु —राम रक्षा नामक एक स्तोत्र विशेष।
उ०—बूझ व्यास, प्रोहिता समर सूरा गुर सिक्षा। सकत मत्र सिव कवच विस्णु पजर हरिरक्षा। —रा रू

हरिरथ—स पु [स हरि+रथ] विष्णु का वाहन गरुड।
उ०—हरिरथ माठौ होय, सगत रथ होय सयाणौ। सितरथ देवै पूठ, घटै उतराद पयाणौ। —चोथ बीठू
रू. भे —हररथ।

हरिरस—देखो 'रामरस'।
उ०—ज्यु लाभै ज्यु लीजीयै, हरीया हरिरस जानि। तन मन देता सीस कु, मत पछतावौ आनि। —अनुभववाणी

हरिरांणी—स स्त्री —१ लक्ष्मी।
२ पार्वती।
३ सरस्वती।
रू भे.—हरराणी।

हरिराय—स. पु —ईश्वर, परमात्मा।

हरिरूपा—स स्त्री [स] विष्णु रूपा, गगा।
उ०—देवी हारणी पाप श्री हरिरूपा, देवी पावणी पतिता तीर्थ भूपा। —देवि.

हरिलकी—वि स्त्री [स हरि+लक] जिसकी कमर सिंह की कमर के समान पतली हो, सुन्दरी।
उ०—सरि वदन अगलोचना रे, हरिलका सुविसाल। राजा मानै अति घणी रे, जीव सू अधिक रसाल। —जयवाणी
स स्त्री —पतली कमर वाली सुन्दर स्त्री।

हरिलीला—स. स्त्री [स] १ ईश्वर की माया, ईश्वर की लीला।
२ चौदह अक्षरो का एक वर्ण वृत्त।

हरिलोक—स पु [स] विष्णु-लोक, स्वर्ग, वैकुण्ठ।

हरिवंस—स. पु [स हरि+वश] १ सूर्य वश।
२ कृष्ण का वश।
३ महाभारत का एक परिशिष्ट, जिसमे कृष्ण के वश का वर्णन है।

हरिवंसपुरांण—स. पु. यौ [स हरि+वश+पुराण] एक पुराण का नाम।
उ०—परभात सवारौ महूरत देख महला मे देवसरमा नू बुलाइयौ अर उण सू स्रीहरिवसपुरांण कथा आरभ कराई।
—साई री पलक मे खलक री बात

हरिवल्लभा—देखो 'हरिप्रिया'।
उ०—लोकमाता सिंधुसुता स्री लिखमी, पदमा पदमालया प्रभा। अवर ग्रहै अस्थिरा इंदिरा रामा हरिवल्लभा रमा। —वेलि

हरिवसु—वि [स हरि+वश] ईश्वर के अधीन।
उ०—दाणा पाणी हरिवसु, जाह जावै ताह देह। खाणा पीणा जिद कु, हरि का करि करि लेह। —अनुभववाणी

हरिवाम, हरिवामा—स स्त्री. [स. हरि+वामा] १ लक्ष्मी, कमला।
(अ मा.)
२ सरस्वती।
३ पार्वती।
४ सीता।
रू भे.—हरवाम, हरवामा, हरवाम, हरवामा।

हरिवासर—देखो 'हरिदिन'।
उ०—देव दसमि एकादसी, हरिवासर जो होइ। पुन्य प्रथम ते पारणइ, द्वादस नी दिनि जोइ। —मा का. प्र.

हरिवाहण, हरिवाहन—स पु [स. हरि+वाहन] विष्णु का वाहन, गरुड। (अ मा)
वि —पीला, पीत। * (डि. को)
रू भे.—हरवाहण, हरवाहन, हरिवाह, हरिवाहन।

हरिविक्रम—स पु —शृंगार मे एक आसन विशेष।

हरिव्रत—स. पु. [स. हरि+व्रत] हरि भक्ति, ईश्वर की आराधना।
उ०—हरीया हरिव्रत छाडिकै, करै और ही वास। जेसै गिनका पीव बिन, औरा सु घरवास। —अनुभव वाणी

हरिव्रती-वि. [सं. हरि+व्रतिन्] १ ईश्वर भक्त, हरिभक्त।
२ धर्मात्मा, व्रतधारी, भक्त।
सं पु. [रा हरिवर्ती] पवन चारी पक्षी विशेष।
हरिसंकर-सं. पु. [सं हरि+शंकर] १ विष्णु का एक नामांतर।
उ०—ईसर सो सरणाइ ऊअरिजइ, हरिसकर समरीयो हर।
—महादेव पारवती री वेली
२ विष्णु व शिव की जोडी।
हरिहर-सं. पु. यौ [सं.] विष्णु व शिव।
उ०—दीनासर वेदासर करनीसर कूवा। कदम कपरद कमडळ हरिहर विधि हूवा।—मे. म.
हरिस-सं पु. [स हृस] १ अर्श रोग।
२ देखो 'हरस' (रू भे)
हरिसखा-सं. पु [सं. हरिसख] १ अर्जुन का एक नामान्तर।
(अ मा)
२ गधर्व।
रू. भे.—हरीसखा।
हरिसेण, हरिसेन-सं. पु.—१ एक चक्रवर्ती राजा। (जैन)
२ ब्रह्म सावर्णि मनु का एक पुत्र।
हरिस्चंद्र-सं. पु [स हरिश्चन्द्र] एक सूर्यवंशी राजा जो त्रिशकु के पुत्र थे। ये विख्यात सत्यवादी एव दानी थे।
उ०—भूतेस्वर भूपतलि खरू, हरिस्चद्र हरिकेत। बड्तरणी-विधि थाई जता, सरगि सधावइ प्रेत।—मा का. प्र.
रू. भे.—हरचद, हरचदर, हरचदि, हरिचंद।
हरिहस, हरिहसल—देखो 'हरहस' (रू भे)
उ०—ऊपरि पद पलव पुनरभव ओपति, त्रिमळ कमळ दळ ऊपरि नीर। तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरिहस सावक ससिहर हीर।—वेलि
हरिहरक्षेत्र, हरिहरखेत-स पु —बिहार मे स्थित एक तीर्थ स्थान जहाँ कार्तिक पूर्णिमा को गंगास्नान का बड़ा माहात्म्य माना जाता है।
हरी-सं. पु.—१ एक वृक्ष विशेष।
उ०—हरडु हरडि हीमजी, हरडा हळद्रह बेर। हरबी हाथुडी हरी, हुकट हुसि हसेर।—मा. का. प्र.
२ भलाइ, हित।
उ०—अर उण रो बेटो पतियो तो उण सू ई वो पांवडा आगै हो। सफा अल्ला री गाय। नी कोई री हरी मे अर नी कोई री भरी मे।—अमर चूनडी
३ देखो 'हरौ' (पु.)
उ०—१ वधाउआं ग्रहै ग्रहै पुरवासी, वळिव्र सणी वीधी वळिव्र। ऊछव हुआ अखित उछळिया, हरी द्रोब नेसर हळिव्र।—वेलि
उ०—२ हरी कुस समुद्र हाथ, चित्र भाळ चदण। करत पाण जोड़ि कैक, वेणि भाणि वदण।—सू. प्र.
उ०—३ तठा उपरायत नगेव नीवाबत का भाई भतीजा उमराव हजूरी पोसाखा करै छै। कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू नारगिया सोत।—रा सा. सं.
४ देखो 'हरि' (रू. भे.) (डि. को.) (ऊ. र.)
उ०—गुरु सात की सोहनि सूरति उर बिच आइ अरी। मीरा के प्रभु हरि अबिनासी, सरणैं राखि हरी।—मीरां
हरीअडौ-स. पु.—एक प्रकार का घोडा।
उ०—अरब छह जे घोडा, हेरगा हरीअडा नील नीलडा कालूंआ काजला किहाडा कोतीरा अहिठाणा पदठाणा ऊजळा जीहडा...।
—व स.
हरीआळी, हरीआली—देखो 'हरियाळी' (रू. भे.)
उ०—हरै लोनी हियो तनां हरीआलियां, सोर कर रारै दादुर सुहाया। गाज ऊंडो करै मेघ गाया गयण, नागरी कामजी घरै नाया।—बा दा.
हरीकीरतन, हरीकीरतन देखो 'हरिकीरतन' (रू. भे)
हरीख-क्रि. वि. १ हर्षित होकर।
उ०—श्रीपाल राजा ओधी परीख, कोढ रोग गयो हुतो बहु बरीख। निरधार सूरति नयणे निरीख, सायरसुंदर गुण गायइ हरीख।
—स कु.
२ देखो 'हरस' (रू. भे.)
उ०—भावी अबलाई सांभरी। हीयडइ हरीख मन रग धरार।
—बी. दे.
हरीखणौ, हरीखबौ—देखो 'हरसणौ, हरसबौ' (रू. भे.)
उ०—पूजी वेध्या मनी हरीखीयो। बहु गायळ बाजै तिणी ठाई।
—बी दे.
हरीखियोड़ौ —देखो 'हरसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरीखियोड़ी)
हरीखौ —देखो 'हरसित'।
उ०—ढोलाजी रै ऊंच्या बोलायो, ढोलाजी रै काठियो मझावो। ढोलाजी रै होई नै हरीखा, ढोलाजी रै आंमू तेवा जाए।
—लो. गी
हरीचदण, हरीचदन—देखो 'हरिचंदण' (रू. भे)
उ०—फुकार अहेरा, हरीचदण पयोध फीणा, गाहेस त्रिनेण इंद्र जुन्हाई समाथ। गिरधाणा सहाई मनोज गेनु ग्यान गोभा, नाराज, वरीस, सोभा हरी प्राणनाथ।—र. रू.
हरीचरित, हरीचरित—देखो 'हरिचरित' (रू भे.)
हरीजस—देखो 'हरिजस' (रू. भे.) (ना. डिं. को)
हरीतकी-सं. स्त्री [स] १ हरडे, हरै।
२ हरै का पेड़।
रू. भे.—हरितकी।
हरीतणौपिलंग-स पु —१ शेषनाग की शैया।

२ शेषनाग ।

हरीतन-स पु.—हरियाली ।

उ०—सर सरिता सुभ भरी, रसा सुभ करी हरीतम । त्रण वल्ली विसतरी, वर्ण ग्रह वरी दिसा वन ।—रा रू.

हरीनाथ—देखो 'हरिनाथ' (रू. भे.)

हरीपडौ-स. पु.—एक प्रकार का घोडा । (शा हो)

हरीपद—देखो 'हरिपद' (रू. भे)

हरीपदि, हरीपदी—देखो 'हरिपदि' (रू भे)

हरीपुर—देखो 'हरिपुर' (रू भे)

उ०—फिरै मुहडै गजा फोजां, धजा नेजा ढाहि । 'भाण' रौ गौ गयण भेदै, 'मान' हरीपुर माहि ।—जैतौ महियारियौ

हरीफ-वि [फा] प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु, दुश्मन ।

उ०—बर री बी व्हाली बसै, हरीफ रे हिरदेह । भैखज दे थाकै भिसग, छुटै न रूज निच छेह ।—रैवतसिंह भाटी

स पु.—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—सारीपी तिलवास गरभसूत्र राजिउ वयराजीउ महिदअरउ तीतत्रागिउ कचीयउ पीठ समुसी पीठ देवगिरू मदील होलीउ तलपकाउ नरम्म हरीफ प्रभृति वस्त्रजाति ।—व स.

हरीभरीवाडी-स स्त्री.—१ लताओ, पौधो एव पुष्पो से भरी वाटिका ।

२ हरा भरा खेत ।

३ ऐसा परिवार या घर जो सुखी और सम्पन्न हो ।

हरीभाजी-सं. स्त्री.—हरा शाक, सब्जी ।

हरीयड-स. पु —एक क्षत्रिय वश विशेष ।

उ०—चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायगणि गया । जयवता यादव वीहूल्ल, नर निकुंभ गिल्या गोहिल्ल ।—का. दे. प्र

हरीयड़ौ, हरीयडौ-स पु.—एक प्रकार का घोडा ।

उ०—१ देवसीह भोजउ भड़ वेउ अणतउ धड़सी तेजउ जेउ । एक सहस पल्हाणा कीध, एह हरीयड़ा तेजी दीध ।—का. दे. प्र.

उ०—२ हासइ हयवर नीलडा हरीयडा गगाजळा सामळा । तेहै यादव सचरचा परवरचा तेजी तुखारै चड्या ।—धनदेवगणि

हरीयल, हरीयाळ—देखो हरियळ' (रू. भे.)

हरीयोनीलौ-स. पु —एक प्रकार का शुभ रग का घोडा । (शा हो.)

हरीरौ-स पु.—एक प्रकार का पतला हलवा जो प्रायः रोगियो को खिलाया जाता है ।

हरीस-स. पु. [स. हरीश] १ वानरो का राजा ।

२ हनुमान ।

हरीसखा—देखो 'हरिसखा' (रू. भे)

हरीसरी-स. स्त्री —गगा नदी ।

हरीसौ-स पु.—एक प्रकार का व्यजन विशेष जो १० सेर मास, ५ सेर कुटा हुआ गेहू, २ सेर घी, १/२ सेर नमक, २ दाम दारचीनी आदि मिश्रण से बनता है । उक्त सामग्री से पाच रकाबिया भर जाती है ।

हरीहय-स. पु.—देवराज इन्द्र ।

हरीहोणी-स. स्त्री [देशज] गाय, भैस आदि का गर्भ धारण करना ।

हरेई-स पु —एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा ।

उ०—हरेई चल्यौ बाजि साहाब दीन, भयै कध केकीन के मान हीन ।—ला. रा.

हरेक-वि. [फा. हर+स. एक] प्रत्येक, हरएक ।

उ०—१ अब विसवासी मिनख, हरेक आदमी री कीयोडी वात नै साची मानण खातर ही वण्यौ है ।—दसदोख

उ०—२ हरेक बार नवो हीरौ देखता ई एक बार तो मैंमडी री आख्या चमकण लागती पण थोडीक जेज मे पाछी मगसी पड जावती ।—अमर चूनडी

हरेबी-स. पु —१ एक प्रकार का घोडा ।

उ०—के आरब ऊधरा हेत घजराज हरेबी । आरूहता उत्तग अग जुगि लगै रकेबी ।—रा रू

२ देखो 'हरेवी' (रू. भे.)

हरेवा-स स्त्री —१ हरे रग की बुल बुल ।

२ छोटा मकान ।

हरेवी-स. स्त्री —१ एक प्रकार की खटाई युक्त दाल ।

उ०—कमोद तुळछी स्यामजीरा दधि मोगर चीनी एळची पूरब कपूर पोहप प्रसग हरेवी सौरभ क्षुभवा किय जगनाथ भोग ऐसी चौरासी भाति जिन्हु के गज दरसावै ।—सू. प्र.

२ देखो 'हरेबी' (रू. भे)

हरोळ, हरोल—देखो 'हरावळ' (रू भे.)

उ०—१ 'दळपति' अमर विदा करि दीधा, कूरम प्रगति हरोळा कीधा ।—सू प्र.

उ०—२ उणनै सरणै राखीजै । अरू मौनै हरोल कीजै नै अवरगजेबसू लडाई अर आटा री बात दाखीजै ।

—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री वात

हरोळाई, हरोलिय, हरोळी—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)

उ०—१ धुर लूटण धाधळ पूत धरा । चव मुज्ज हरोळिय सारग रा ।—पा प्र.

उ०—२ साजी मेळा साग देव राखी चदोली । मिंदर मडी मसाण होळिका फाग हरोळी ।—ऊ का.

उ०—३ लेखै राम सुलिखमण बाळक, तेज रिखी अण तोली । हेरै भूप कह्यौ हु हाजर, हालू साथ हरोळी ।—र. रू.

उ०—४ हरण नक्रण वहै सुदरसण हरोली । पाय तता गरण छिद अपाळै ।—र. ज. प्र.

हरौ-सं पु.—१ पौत्र, वशज ।

२ ताजी घास या पत्ती का सा रग ।

३ उक्त प्रकार के रग का घोडा ।

वि. [सं हरित] (स्त्री हरी) १ हरे रंग का, हरा।
२ जो ताजा रंग की पत्तियों से भरपूर हो।
ज्यूं—हरी खेत, हरी मैदान।
३ जो मुरझाया या सूखा हुआ न हो।
४ जो भरा या सूखा न हो (घाव)।
५ थकावट या शिथिलता से रहित, प्रसन्न, प्रफुल्लित।

हरौळ, हरौळी—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)
उ०—१ 'जैसा' जैतहथा रण जीपै, दळा हरौळ ढाल रंग दीपै। मारू 'करन' साथि महवेचो, धजवडहथ 'अमरेस' धवेचौ।
—रा रू
उ०—२ संमत १६८१ रा काती सुदि १५ टूंस नदी ऊपर साहजादे परवेज नूं सुरंम लडाई हुई। राजाजी नु हरौळ दीया था, फतै पाई।—नैणसी
उ०—३ केई वारां तोखारां हरौळां मोरै फतै लिधी। केई फौजां मार दीधी सिपळी कमध।—किरपाराम कवियौ

हर्यौ—देखो 'हरियौ' (रू. भे.)
उ०—१ नख चख ही नाडा भरया, हरया गठारै भार। बिण फूला फळ मौरीया, हरिजन चाखण हार।—अनुभववाणी
उ०—२ दरखत रा पात हर्या हा, सावड दै प्राण भरया हा। सूका ठूंठां सा होग्या, की खातर हर्यौ खजा हा।—सकुनला

हलंत—वि.—जिसका अन्तिम अक्षर या वर्ण हल् हो।
रू भे.—हलित।

हळ—सं. पु [सं हल] १ कृषि कार्य का एक प्रमुख उपकरण या यंत्र जो जमीन को जोतने तथा बीज बोने मे काम आता है। यह पहले लकड़ी का और अब लोहे का भी बनता है।
उ०—१ 'हरिया' हळ हाक मती कर मन हठ, जाय किसान ज्यूं दाळद जाय। अवरां लरां न भाजै ऊणत, गीत मिटा कर गोम गुड़ाय।—हरदान बारहठ
उ०—२ बरसात रा दिन छै। सु आगै रायधण बाप हमीर नै बेटौ भीम हळ खड़ै छै।—नैणसी
२ श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम के हाथ मे रहने वाला आयुध जो उक्त उपकरण (हल) के आकार का बना होता था। (व. स)
उ०—बळिभद्रजी का हळां सुं दुसमणां का माथा टूटै छै। जैसे बीजा हळा सौ रूखा का मूळ जड अूंता आघात होय। इणि भांति हळिधरजी कौ हळ वहै छै।—वेलि टी.
३ खेत का उतना भाग जितना एक हल द्वारा एक दिन मे बोया जाता है, खेतों का एक माप।
४ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार पैर की एक रेखा या चिन्ह।
५ अस्त्र शस्त्रो के ऊपर बनी स्वर्णिम रेखा।
उ०—खुरसाण रा उतारिया, माठी रा तिलारिया, ऊपर रूपै रा साबा छै, पीतळ ताबें रा छल्ला छै, रात री चौकडी छै, तिलोर रा पंखा छै, पातरा सुफाळा छै, सोनै री हळ लिखी छै।—रा. सा स.
रू. भे.—हळि, हळी, हल,।
अल्पा.—हळियौ।

हल—सं. पु [अ] १ किसी समस्या का समाधान, निराकरण,।
२ गणित मे किसी सवाल का उत्तर निकालने के लिए तैयार किया जाने वाला विवरण।
३ किसी सवाल का उत्तर।
[सं हल्] ४ वह शुद्ध व्यंजन जिसमे स्वर न मिला हो।
[देशज] ५ गति, चाल।
उ०—वदळै डार गई दस वाढां, हुई लार गण पार हल। ध है चाढ सरदार धकाणा, मार पणी ओलाळणा।—महादान महडू
६ हिलने डुलने की अवस्था या भाव, झटका, कंपन।
रू भे, हल्ल।

हलक—सं पु [अ हल्क] १ गले की नली, कंठ।
२ गला।
३ मण्डली।
४ मण्डल, घेरा, वृत्त।
५ देश, इलाका।
६ महल-महल।
उ०—मानी देह तणी कमठाणी, पडता नह लागै पलक। दुनिया तणी निहूनी दौलत हठवाड़ा वाळी हलक।—बां. दा.
[सं. हल्लक] ७ कुसुम, फूल। (अ. मा; ह ना मा)
८ लाल कमल।
९ सुन्दरता, शोभा।
उ०—१ पेख्यां हलक हिमाळ सारस-बार पधारणौ। कोच-रव्व अवियास, पारस कीरत आणौ।—मेघ
उ०—२ जोधांणी जसराज री, खुबी करै खलक। खाणा पीणा गांठ रा, जोबण री बडी हलक।—अग्यात
१० आनन्द।
११ देखो 'हलको' (रू भे.)
उ० १ हरती धै लाई जी कजळी देस री। हरियाळा रै हलक पधारजो रे लोरै आवजो।—लो. गी.
उ०—२ नगर हलक हालै नर नारी, घर धणी छोडै परवारी। मिळ साजू वी सीख उमंग।—र रू.
रू भे.—हलक्क, हलग।

हलकणौ, हलकबौ—क्रि. अ.—१ भरे हुए पात्र मे द्रव पदार्थ का हिलना डुलना।
२ हिलना डुलना, हिलोरे खाना।
उ०—पगाळी जोड़ा पगी पर धडूं है। लेगै री नाडौ लारनै ले लियौ। डील हवा ज्यूं हलकै है। ऊपर गे ना बोली जकी फाग गाड़ाछा मारै है —वसदोख

क्रि स — ३ ललकारना, उकसाना।

उ० —सवार हुवौ, तरै रावळ आपरौ साथ हलकनै तूट पडियौ। पेली कानी सूं राव रौ साथ आयौ।—नैरासी

हलकणहार, हारौ (हारी), हलकणियौ—वि०।

हलकिओडौ हलकियोडौ, हलक्योडौ—भू० का० कृ०।

हलकीजणौ, हलकीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

हलक्कणौ, हलक्कबौ—रू० भे०।

हलका-स स्त्री —एक प्रकार की कमान।

उ० —१ सो किरण भाति री कबाण पेट विलाती, सीगरी सिगणी, तूजी हलका, अठारै टाक चिलैरी खाअणहार . . .. ।
—रा सा स.

उ० —२ इण भाति री तूजी हलका ज्यौ लचकती, रतनाळा लोचना, अणियाळा काजळ सारीजे छै।—रा सा स.

हळकाई-स. स्त्री.—१ हल्कापन।

उ० —हळकाई तीर की ज्यू जाण जै सौ कमान सू निकाळिया पछै पाछौ नही फिरै।—नी प्र

२ विनम्रता।

उ० —जिको काम नरमी हळकाई सू आवरै तौ सही आछै अरथ नही सुधरै आगलै दुख री कारण होय ससार सू सरमिंदगी होय।
—नी प्र

३ लघुता, तुच्छता।

हलकाणौ, हलकाबौ-क्रि स.—१ हिलाना-डुलाना, हिलोरे देना।

२ ललकारना।

हलकाणहार, हारौ (हारी), हलकाणियौ —वि०।

हलकायोडौ—भू० का० कृ०।

हलकाईजणौ, हलकाईजबौ —कर्म वा०।

हळकापण, हलकापण, हळकापणौ, हलकापणौ-स पु — १ वजन या भार की दृष्टि से हल्का होने की अवस्था, गुण, हल्कापन।

उ० —लकडा नै पाणी मैं न्हाख्या ऊचौ आवै तो कुण ही ल्यावै नही पिण हलकापणा रा योग सू तिरै।—भि द्र.

२ तुच्छता, ओछापन।

३ लघुता, छोटापन।

हलकायोडौ-भू. का. कृ.—१ हिलाया हुआ, डुलाया हुआ, हिलोरे दिया हुआ।

२ ललकारा हुआ।

(स्त्री. हलकायोडी)

हलकार—स स्त्री —ललकार।

उ० —१ पन्नामारू हलचल हुई हलकार। खळभळ हुई राठोडा री चाकरी हो म्हारा राज।—लो गी.

उ० —२ हलकार भीरू बडा हिंदू, ताहरा तुडताण। समसेर झालै करौ सेहरा, साभळै सुरताण।—जसौ बारहठ

हलकारणौ, हलकारबौ-क्रि स —१ ललकारना, चुनौती देना, उकसाना, जोश दिलाना।

उ० —१ कपि पकडौ पकडौ कहै राकस हलकारै। जूटा हुकम प्रमाण, जोध कपि हूँ अधिकारै।—सू प्र

उ० —२ अभै दळा हलकारिया, कळ आगळा लकाळ। चढिया सायक वेग ज्यौ, पायक ऊपरि माळ।—रा रू.

उ० —३ रिण रसीयौ आलिम रढाळ, हळकारचा जोधा जिम काल। करी किलकी जिम दोड्या देत कायरपाण तजै निकसी जैत।—प च चौ

२ हाकना, प्रेरित करना।

उ० —काती! छाती माहिं तइ, हलकारिउ हीमाल। धूजइ अग अम्हारडु, श्री ताहरी चक चाल।—मा का प्र

३ बुलाना, पुकारना।

उ० —'राजड' राण तणी हलकारै, अग्र कमधा वात उचारै। ऐ दीवाण तणा पत्र ईखौ, समहर राखौ मेळ सरीखौ।—रा रू.

हलकारणहार, हारौ (हारी), हलकारणियौ—वि०।

हलकारिओडौ, हलकारियोडौ, हलकारयोडौ —भू० का० कृ०।

हलकारीजणौ, हलकारीजबौ—कर्म वा०।

हलकारियोड़ौ-भू का कृ.—१ ललकारा हुआ, चुनौती दिया हुआ, उकसाया हुआ, जोश दिलाया हुआ. २ हाका हुआ, प्रेरित किया हुआ ३ बुलाया हुआ, पुकारा हुआ।

(स्त्री हलकारियोडी)

हलकारु, हलकारू, हलकारौ-स पु — १ दूत, सदेशवाहक, पत्रवाहक।

उ० — १ याही समै हलकारू कही आन ऐसी। तहबरखा साह मारा, जैसी की तैसी।—रा रू

उ० —२ पीछै मालदेजी हलकारा मेल खबर करायी सू इणारै खरची री मौकाळ दैखी नै हलकारा आय कयौ—राज, खरची तौ घणी है।—द दा.

उ० —३ सो गौड आया जिकारी हलकारां अरज करी।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ० —४ कोस पन्नह रौ डेरौ ठहरायौ और आप पण तोपखानौ सारो साथ लेय थटै भखर साम्ही कूच कियौ। कोस दोय गयौ तद जोहिया नू हलकारा जाय कही—जं जलाल नू इसी ताकीद आई छै सो वर मजल ताकीदी सू जायसी।—जलाल बूबना री बात

२ ध्वनि, आवाज।

रू. भे.—हरकारौ।

हलकियोडौ-भू का कृ —१ हिला हुआ, डुला हुआ २ ललकारा हुआ, उकसाया हुआ।

(स्त्री हलकियोडी)

हळकौ-वि. (स्त्री हळकी) १ जो वजनी न हो, गुरुता या भार हीन, भार का विपर्यय।

उ०—१ थोड़ी ताळ उपरांत ईं उणनैं ऐड़ी लखायी जाणै वा फूल री पांख रै उनमांन हळकी व्हैगी व्है।—फुलवाड़ी

उ०—२ आकासा वडौ पताळा ऊंडौ, प्रभू पहिलौ हुता प्रथमी। हद सौ पणि विहद पवन सू हळकौ, कांइ नहीं जिण मांहि कमी।
—पि प्र

उ०—३ कोई कहै हळकौ कोई कहै भारी, (मैं तो) लियो री ताकड़िया तोल।—मीरां

२ कम, थोड़ा, अल्प।

उ०—धापू नै तौ फेर किंयाई धावरा देय सका, समझाय सका, उण रा दुख नै थोड़ौ हळकौ ईं कर सका। पण इण पसुवां नै किण समझावा, इण नै कांई कैय नै धीरज बधावा?
—अमर चूंनड़ी

३ ओछा, तुच्छ, ओछा, न्यून स्तर का।

उ०—१ आ वात लोक सुणसी तो कहिसी, इसड़ी हळकी वात किम कहै छै। बाबा, तू डावड़ौ छै पण रजपूत रै सवै आगौ हुवै इतरै जोर चाहीजै। अबै इसड़ी हळकी बात कदै मता कहौ।
—अरजन हमीर भीमोत री बात

उ०—२ थिमां सूं एक काम है। बारी कठै ही हळकी नाड़ी बात सुणी जद म्हारी तौ घणी जी दोरौ हुवै है।—वरसगांठ

उ०—३ जो धरम पुण्य करौ छौ सो सूं क्यूं इसी हळकी बात कही।—साह रामदत्त री वारता

४ अशिष्ट, असभ्य, बुरा।

उ०—१ पण स्वभाव सूं वौ निराठ हळकौ बोलतौ तदै क्यूं ही नहीं।—सुवरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

उ०—२ राजा कनैं कांई बात करै राजा कनैं हळका माणस ऊभा रहै सो आहीज बात करैं।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ जग मैं नर हळका जिकै, बोलै हळका बोल। आप तणौ मुख आपरौ, मूरख करदै मोल।—बां दा.

५ अपमानित, बेइज्जत।

उ०—पातसाह पछै कमालखां नूं विदा करै छै। कमालखां उजर करै छै जु—'हजरत मरहट्टा कपूरा रै कहै मोनूं हळकौ पाड़ियौ।
—नैणसी

६ मंद, धीमा।

उ०—कोटवाळ रै मिया हळकी थापी सूं आडौ ठणकारीजियौ।
— फुलवाड़ी

७ पतला, महीन, बारीक।

८ जो बनावट, मोल, टिकाऊपन की दृष्टि से न्यून हो, प्रकारान्तर या तुलनात्मक दृष्टि से न्यून।

ज्यूं—औ कपड़ौ हळकौ है।

९ महत्वहीन।

१० सुख साध्य, आसान।

११ किसी उत्तरदायित्व से मुक्त, भार मुक्त, निश्चिन्त।

१२ जिसमें कुछ भरा न हो, खाली।

१३ ताजा, प्रफुल्ल।

रू भे—हलकौ, हल्कौ।

हलकौ-स. पु. [अ. हल्का] १ प्रशासनिक दृष्टि से कोई विशिष्ट क्षेत्र या भू-खण्ड।

२ परिधि, वृत्त, घेरा।

३ दल, समूह, झुण्ड।

उ०—हाथियों के हलके सभू ठाणा तें च्यौरै एरावत के साथी भद्रजाती की टोळै ऊस बेहुकै दिग्गज विंध्याचल के सुजाव रंग रंग लिनै सुडादडू की वणाव।—र. रू.

४ सौ हाथियों का समूह या दल।

उ०—वीस हजार गांव दीधा, घोड़ा हजार वीस हाथियां रौ हलकौ पातरी ११०० रथ २०० लाख एक रुपिया रोजीना कर दिया।
—जगदेव पंवार री बात

रू. भे.—हलक्कौ, हल्कौ।

५ देखो 'हळकौ' (रू. भे)

उ०—१ राकड़ा नै पांणी मैं न्हांखणा ऊधौ आवै तैं कुण ही न्हावै नहीं तिण हलकापणा रा योग सूं तिरै। तिम जीव पिण करमां करी हलकौ थया देवगति मैं जावै।—भि. द्र.

उ०—२ किणही पुरुष री जीव हलकौ किम हुवै, जद स्वामीजी बोल्या—'पइसौ पांणी मैं मेल्यां डूबै, अनै उण ही पइसा नै ताप लगाय कूट कूट'र बाटकी कीधी तो तिरै। उण बाटकी मैं पइसौ मेलै तौ तै पइसौ पिण तिरै। तिम जीव तप संयमादि करी आतमा हलकी कीधां तिरै।—भि द्र.

उ०—३ रथ हलकौ घणी वाजणौ, वरी च्यार पेडा रौ आण रै लाला।—अयवाणी

उ०—४ सुरत हिज नरांन धरणसी, तुला घणी जणावै सीस धुणि। हलकौ तिकोज ओछौ हुवै, गुण औ कहिजै नमण गुण।
—ध. व. ग्रं

(स्त्री. हलकी)

हलक्क—देखो 'हुलक' (रू. भे.)

उ०— ऊचा गोला बैठणौ, नीचै बहै खलक्क। खलक जेम सजणा मिळै अइयौ वाह हलक्क।—जलाल बूबना री बात

हलक्कणौ, हलक्कबौ —देखो 'हलकणौ, हलकबौ' (रू. भे.)

उ०—किता अग्र पाछै किता चक्र कुडै, तरक्कै किता साहता वाह तुडै। भिदै सार सेलै कटारी भळक्कै, हिलोळा कि सामुद्र वेळा हलक्कै।—रा. रू.

हलक्कियोड़ौ—देखो 'हलकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हलक्कियोड़ी)

हलक्कौ—देखो 'हलकौ' (रू. भे.)

उ०—हलक्का गजा बाजा हुवै हकाळा, भडा छक आवला ओध भाळा। हेतुवा पातुवा तणौ दाळद हरौ, हरौ इद राजीव इद म्हाळा।—छत्रसिंह हाडा रौ गीत

हलख—देखो 'हलक' (रू. भे)

उ०—हार जितोहो आतरौ, हिये न सहियौ रात। राज हलख रौ आतरौ, किम सहसौ परभात।—अग्यात

हळखड, हळखडौ–स. पु—कृषि पर जीविका उपार्जन करने वाला व्यक्ति।

उ०—१ चदाणा जाति रा हळखड रजपूत री पुत्री नू वळ मैं अतुळ जाण परणियौ।—व भा.

उ०—२ जमीरत टूटिया पछै कोई आगै ही और न करसी। और अठै हळखड हुय जासी।—गोपाळदास गौड री वारता

हळगणत–स. पु—मुफ्त मे काम आने वाले हल।

उ०—पूनियै रै परगनै मैं हळगणत-आवै। डीडवाणै रा साहूकारा री बरसोत आवै। परबतसर चोरासी मारोठ री दाळ आवै और चारू पासा रौ माल खायजै।—सूरै खीवै काधलोत री बात

हळगत–स. पु—खेत को जोतने पर हलो के हिसाब से लिया जाने वाला कर।

उ०—सुरताण कुतबदीन नै पाट सुरताण महमद बैठौ। महमद बारै लोकां नै १८ कर लागा। तै कही—१ (प्रथम) दाणा। २ (बीजौ) पूछी। ३ हळगत। ४ मोम। ५ भेट .।—नैणसी

हलगल–स स्त्री.—१ अफवाह, गप्प।

२ चर्चा।

हलचल–स स्त्री.—१ घबराहट, बेचैनी, खळबळी, हडबडाहट।

उ०—१ पन्नामारु हलचल हुई हलकार। खळ भळ हुई राठोडा री चाकरी हो म्हारा राज।—लो गी.

उ०—२ भला रावता ठाकुरा माही हा हू हलचल हुई रही छै। डाढाळी सूअर रान सू विकराळ होय लडियौ, भला भरोसाबध राजपूता रा घोडा रुळ रहिया छै।—डाढाळा सूर री बात

२ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला।

उ०—परदळ आया जाणि हो रा, कोलाहल हलचल हुई अति घणीजी। चित चमक्यौ वीरभाण हो रा, धाया सुर सुभट जूझण भणीजी।—प. च. चौ

३ भगदड़, अव्यवस्था।

४ कपन, आतक, भय।

५ युद्ध, लडाई।

उ०—सत्रहरा नारि नह नीद भरि सोवसी, हलचलां सही हाला घरै होवसी।—हा. झा

६ धूमधाम, रौनक, चहलपहल।

उ०—मेहला मै बैठी हो राणी कमलावती, झीणी तौ ऊडै मारग खेह, जोवै तमासौ हो इखुकार नगर नो। कोतुक उपनौ मनमैं एह। साभळ हे दासी आज नगर मैं, हलचल किम घणी।—जयवाणी

७ गतिशीलता।

उ०—हलचल साम सरीर मैं, मन छाड्यौ अहकार। पुत पिता परवार मैं, सग न चालणहार।—अनुभववाणी

८ असर, प्रतिक्रिया।

उ०—निजर रै पैल झबकै ई तीनू जणा एक दूजा नै सुभट ओळख लिया। काली मासी रा मन मैं तौ की विसेस हलचल नी व्ही, पण बाप बेटी माथै तौ ओळखाण रै समचै ई जाणै बीजळी पडी।

—फुलवाडी

९ स्वागत, सत्कार।

उ०—कछवाहौ मानसिंह कवरपदै अकबर पातसाह गुजरात मेलियौ छौ, तद चीतोड धणी प्रताप छै, सु राणैजी मानसिंह कनै सोनगरौ मानसिंह अखैराजोत डोडियौ भीव साडावत मेल नै हलचल कराई हुती, सु मानसिंह कछवाहौ पाछौ वळतौ डूगरपुर आयौ।—नैणसी

१० किसी प्रकार की क्रिया, हरकत।

रू भे.—हलचली, हलचल्न, हलचल्ली, हलचल्लै।

मह.—हलचलौ।

हलचलणौ, हलचलबौ–क्रि अ—१ घबराहट होना, बेचैनी होना, हड-बडाहट होना, खलबली मचना।

२ शोर गुल होना, हुल्ला-गुल्ला होना।

३ भगदड मचना, अव्यवस्था होना।

४ आतकित होना, भयभीत होना।

५ युद्ध होना, लडाई होना।

६ धूमधाम होना, रौनक होना, चहल-पहल होना।

७ गतिशील होना।

८ असर होना, प्रभाव होना, प्रतिक्रिया होना।

९ स्वागत-सत्कार होना।

१० किसी प्रकार की क्रिया होना, हरकत होना।

हलचलणहार, हारौ (हारी), हलचलणियौ वि।

हलचलिओड़ौ, हलचलियोड़ौ, हलचल्योड़ौ—भू. का कृ।

हलचलीजणौ, हलचलीजबौ—भाव वा।

हलचल्लणौ, हलचल्लबौ—रू. भे.।

हलचलियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ घबराया हुआ, बेचैन, हडबड़ाया हुआ, खलबली मचा हुआ. २ शोर-गुल या हुल्ला-गुल्ला हुवा हुआ. ३ भगदड मचा हुआ, अव्यवस्थित. ४ आतकित हुवा हुआ, भयभीत, कपित।

५ लडाई या युद्ध हुवा हुआ।

६ धूम-धाम या चहल-पहल युक्त।

७ गतिशील।

८ प्रभावित, प्रतिक्रिया युक्त।

९ आदृत, सत्कारित।

१० क्रिया युक्त, सक्रीय।

(स्त्री. हलचलियोडी)

हलचली—देखो 'हलचल' (रू भे)

उ०--तेज घट अमीरा नरा वदळी तरह, छिली खत्रवट निरख हिंदुआ छात। कमधजा धणी चंडी भुजा किळकळी, हलचली दिली जमवळ दियौ हात।—बखतौ खिड़ियौ

हलचलौ—देखो 'हलचल' (मह; रू भे)

उ०—१ यौ आदमी ४ ५ मारिया। अबै किण ही री आंगवण हुवै नहीं। हलचलौ हुवौ।—जगदेव पवार री बात

उ०—२ हाक कुणि करै जसवन सू हलचलौ। उडिया तोह अबर अडै हेकलौ।—हा. झा

हलचल्ल—देखो 'हलचल' (रू भे.)

उ०—१ पड़या रण जूंझि सवार पचीस। बेता उण आभ अड़धा भुजबीस। नवायुध हाकलियौ करनल्ल, चराचर राखि थई हलचल्ल।—मे. म.

उ०—२ वैरी पैरा लीजियै, नित कीजियै हमल्ल। मिटै न सोच बिलेस उर, घटै न धर हलचल्ल।—रा. रू.

हलचल्लणौ, हलचल्लबौ—देखो 'हलचलणौ, हलचलबौ' (रू भे.)

हलचल्लणहार, हारौ (हारी), हलचल्लणियौ—वि०।

हलचल्लिओड़ौ, हलचल्लियोड़ौ, हलचल्लयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हलचल्लीजणौ, हलचल्लीजबौ—भाव वा०।

हलचल्लियोड़ौ—देखो 'हलचलियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. हलचल्लियोडी)

हलचल्ली—देखो 'हलचल' (रू. भे.)

उ०—१ एता आद छतीस कुळ, तीस 'अजौ' पत धार। हलचल्ली मेछां धरा, या झल्ली तरवार।—रा रू.

हळचो-स पु—मेला।

उ०—हुदवाड़ै हळचौ मच्यौ, असरै दोन्हूं आण। रांगड़ौ कीयौ रूड़ां, दुंनी छुड़ायौ दांण।—जांभो

हळछठ-सं. स्त्री.—भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की षष्ठी तिथि।

हलणौ—देखो 'हलांणी' (रू. भे.)

उ०—तद सुसरै नूं कही हलणौ करौ।—साह रामदत्त री वारता

हलणौ, हलबौ—१ देखो 'हालणौ, हालबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पवमिणि रखपाळ पाइदळ पाइक, हिलबळिया हलिया हसति। गमै गमै मदगळित गुडता, गाम गिरोवर नाग गति।—वेलि

उ०—२ हलीज किणी रै नंह हली हली न किण रै हत्थ। मूरति 'मेहाई' तणी, आई गयणै पत्थ।—क. च री

उ०—३ धमस नाळ रजधोम, झळळ लप झाळ कमाळ झळ। धर थरसळ धरधरण, वतन दिस हलै 'अभैमल'।—सू प्र.

उ०—४ दूसरा लियण टाळी दुरै, नैण भरै पण नामरै। जिणवार 'जोधा' तारै हली किया प्रमाण हिम सागरै।—अरजुनजी बारहठ

उ०—५ खूब दान-पुण्य-धरम जो करणौ थौ सौ कियौ। यूं करता दिन च्यार व्यतीत हुआ। पांचवै दिन वैकुंठ हलणै री तैयारी कीवी।—सांई री पताक गे गलक री बात

उ०—६ जगमग गोख बहू बळ जोत, हरा गढ जोड बहू बळ होत। बहू बळ बीर बिबीरण बरा। हलै परलोक बहू बळ हस।—मे. म.

२ देखो 'हिलणौ, हिलबौ' (रू. भे)

उ०—त्रिगपति चलिय हलिय वसुमती। स्त्रीकरनी जयजयति सकती।—मे. म

हलणहार हारौ (हारी), हलणियौ—वि०।

हलिओड़ौ, हलियोड़ौ, हल्योड़ौ भू० का० कृ०।

हलीजणौ हलीजबौ—भाव वा०।

हळस पळस—स पु—लालन-पालन, भरण-पोषण।

उ०—अलता अक्रिय अजोनी सिशु चार लिह को कोण लहै। हळस-पळस तिह भरण विसंभ भरण ऊबौ कहै।—ऊबौ नैण

रू. भे—हळसि-पळसि।

हळसि-सं. स्त्री—मर्यादा, सीमा।

उ०—भूता जाहिं स जाही जाहीं, चोईसा कै पड़ पेडै जाहिं। हळसि कौ मारग छाडि कै, पळसि की तै जाहिं।—धि. रा. सा.

हळसि पळसि—देखो 'हळस-पळस' (रू भे.)

उ०—म्हांरै तोहु बिणि अवर न कोय तुं र दिखावैं तूं दियै। कुटंब पिता परिवार हळसि-पळसि सारी सरणौ त्यैहु।—ऊबौ नैण

हळव, हलव—देखो 'हळदी' (रू. भे.) (अ. मा) (उ. र.)

उ०—१ सहुंत समपि कपिला इक साथै। हळव दोब चंदण दधि हाथै।—सू. प्र.

उ०—२ जीरौ, अजमौ, सोवा, धाणा, चिराळी, हळव मण १ सुपांणी ३॥ लागै।—नैणसी

उ०—३ मांहै वेसवार हळव धांणा सूंठ मिरच जायफळ तज लाग घालजै छै।—रा. सा स.

हळवघाट—देखो 'हळदीघाटी' (रू. भे)

हळविया-वि.—हल्दी के रंग का, पीला।

उ० मारग मैं एक डोकरियौ धकियौ। धोळी पाग, धोळी ई अंगरखी अर हळदिया धोती, धोळी ई खत।—फुलवाडी

हळवियौ-स पु.—१ एक रोग विशेष जो कामला रोग का ही एक भेद है।

२ गेहूं की फसल का एक रोग जिसके कारण पकते समय बाले पीली पड़ जाती है।

३ सफेद सीधे तने का एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी हल्दी के समान पीली होती है।

वि.—हल्दी जैसे रंग का, पीला, पीत।

हळदी-सं. स्त्री [स. हरिद्रा] १ हल्दी नामक पौधे की जड जो सोंठ के समान ही होती है और जिसका रग पीला होता है। यह मिरच मसालो मे तथा औषधि मे काम आती है।

उ०—१ लेपन रै पैला नाककाटा री जडा मीठा तेल मैं उकाळ खासी ताळ ताईं मालिस करती। थोडी सी हळदी रौ पुट देय गुठ रौ करकरतौ सीरौ खवाडती।—फुलवाडी

उ०—२ ठौड ठौड रेसम बाळ नै दाबतौ। घी हळदी रा फूग लगाया।—फुलवाडी

उ०—३ हळदी तो पीठी म्हारै अग लगटाई। महदी सू राच्या म्हारा हाथ।—मीरा

२ दूल्हे को उबटन करते समय हल्दी के नाम से गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—म्हारी हळदी रौ रग सुरग, निपजै माळवै। हळदी मोल पसारी री हाट, बनडै रै सिर चढै।—लो गी.

रू भे—हरद, हरदी, हळद, हलद, हळद्, हळिद्र, हरद, हल्दी।

हळदीघाटी—मेवाड़ स्थित नाथद्वारा-गोगूदा के मार्ग पर अरावली की पर्वत श्रेणियो का सकरा दर्रा विशेष, जहा पर ४०० वर्ष पूर्व जून १५७६ मे महाराणा प्रताप व आमेर (जयपुर) के राजा मानसिंह (अकबर के सेनापति) के बीच भयकर युद्ध हुआ था।

वि. वि—नाथद्वारा-गोगुदा के मार्ग पर पहाड़ियो के बीच एक सकरा दर्रा है। आज से चार सौ वर्ष पहले यह दर्रा इतना सकरा गलियारा था कि दो घुडसवार भी एक साथ रास्ता पार नही कर सकते थे। मुगल सेना का बाया पक्ष खमनौर गाव से २-३ मील दूर इस घाटी के मुहाने पर रखा गया था। मुगल सेना का दाहिना पक्ष तथा मध्य भाग पूर्वी घाटी के मुहाने से लेकर पश्चिम मे बनास तक फैला हुआ था। राणा की सेना दर्रे के पीछे से आयी थी और हाकिम खा सूर के नेतृत्व मे हरावल दस्ता पहाडी के पश्चिम भाग से निकला था। स्वय राणा हाकिम खा सूर के पीछे 'अज-मियाने-धारी' से बाहर आये थे।

हल्दी घाटी की पीले पत्थरो से जडी कठोर पीली मिट्टी की दुर्गम भूमि उस समय घनी कटीली झाडियो से ढकी हुई थी। इसी घाटी मे दोनो सेनाओ का तीन प्रहर का यह भीषण सग्राम इस युग का इतिहास बनता है।

हल्दी घाटी के क्षेत्र मे मिट्टी का रग हल्दी के समान पीला है। इसीलिये इसे हल्दी घाटी का नाम दिया गया। महाराणा प्रताप और अकबर के सेनापति व आमेर (जयपुर) के राजा मानसिंह की सेनाओ मे जिस स्थल पर सबसे घमासान लडाई हुई उसे आज भी 'रक्त तलाई' के नाम से पुकारा जाता है।

रू. भे—हळदघाटी, हरदघाट, हल्दघाटी।

हळद्—वि.—१ पीला, पीत।

२ देखो 'हळदी' (रू भे)

उ०—वसिस्ठ आदि ब्रह्माय, करत जात क्रमय। हळद् कुकम हरी, करत छोह केसरी।—सू प्र.

हळद्दर—देखो 'हळधर' (रू भे)

हळद्दरजोड, हळद्धरजोड—स पु यौ—बलराम के भाई, श्रीकृष्ण।

उ०—नमौ जदुराज हळद्धर-जोड, रैणायर-रूप नमो रणछोड।

—ह र.

हळधर, हलधर—स पु [स. हलधर] १ श्रीकृष्ण के भाई बलराम का एक नामान्तर। (ना. मा)

उ०—१ विसरिया विसर जस बीज बीजिजै, खारी हाळाहळा खळाह्। तूटै कध मूळ जड-तूटै, हळधर का वाहता हळाह्।

—वेलि

उ०—२ गज घोडा देख भुलाणो रे, देव दानव नै चक्री हलधर, ब्रह्मा विस्णु बखाणो रे।—जयवाणी

२ हल चलाने वाला व्यक्ति, किसान, कृषक।

उ०—ऊचा हळधर आकरा, ऊचा दुद्ध पियत। सदा सोक दुख मैं रहै, मुख मैं पीळा दत।—थळवट बत्तीसी

रू. भे—हळद्दर, हळिधर, हळिधरि।

हळधरबधव—स. पु यौ—श्रीकृष्ण।

उ०—हळधर-बधव गोकुळ बाळ, खिमाव्रत साधुव दुस्ट खैगाळ।

—ह र

हळनागळ—स पु—हल से सम्बन्धित उपकरण, हल की सामग्री।

हळनाडियौ, हळनाडौ—स पु—हल मे हरिस के साथ जूआ बाधने का का चमडे का रस्सा।

हळपळणौ, हळपळबौ—देखो 'हळफळणौ, हळफळबौ' (रू. भे)

उ०—सेठ निपटतै घर रै माय बडता हा कै हळपळियोडौ बामण सीधौ वारा घर मैं बडग्यौ।—फुलवाडी

हळपळणहार, हारौ (हारी), हळपळणियौ—वि०।

हळपळिओडौ, हळपळियोडौ हळपळ्योडौ—भू० का० कृ०।

हळपळीजणौ, हळपळीजबौ—कर्म वा०।

हळपळियोडौ—देखो 'हळफळियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री हळपळियोडी)

हळपाणि—स पु [स. हलपाणि] हल-आयुध रखने वाले, बलराम का एक नामान्तर।

हलफ—स. स्त्री [अ.] किसी कार्य के सम्बन्ध में न्यायालय या न्यायालय द्वारा अधिकृत व्यक्ति के समक्ष ली जाने वाली शपथ, सौगध।

हलफ नामौ—स. पु [अ हलफ नामा] शपथ-पत्र।

हळफळ—स स्त्री—१ व्याकुलता, व्यग्रता, आतुरता, घबराहट, बेचैनी।

उ०—रह रह सुदरि माठ करि, हळफळ लग्गी काइ। डाभ दिरावइ करहलउ, सेकता मरि जाइ।—ढो मा.

२ शीघ्रता, ताकीद, उतावलापन।

उ०—बगमी अरज करै बोलावै, गाचडौ सौ मोहरत है आज।

लटकी करी पगां थे लागगी, कातौ होसी पटा री काज। हळफळ करै काचरी पहुरै, ऊपर बाधै पाघ अमेळ। बरणत हार जिसौ वाडी री, मूठ अनै ताडी री मेळ।—कपूत री गीत

३ परेशानी, हैरानी।

४ बातचीत, विचार-विमर्श, हलचल, सलाह मशविरा।

उ०—सु आजमखांन गिरनार लेवण मतै। तरै जाग हण री ऊपर करै। तरै आजमखांन जांग सू हळफळ करी।—नैणसी

हळफळणौ, हळफळबौ, हलफलणौ, हलफलबौ—क्रि. अ.—१ व्याकुल होना, आतुर, अधीर और बेचैन होना।

उ०—१ अपछरा एक हाथ सू तो वर माळा पैरावै छै। अर एक हाथ सूं आपरा कपड़ा बुजावै छै। अपछरा वी उतावळ मैं इसी हळफळै छै। कपड़ा तो भूल गई अर हार समाळै छै।—पनां

उ०—२ की अचांणचक उण नै आपरी छाती माथै किण री जीभ रै लपरका रौ परस लखायौ। थी हळफळियौ भिभकनै बैठौ व्हियौ।—फुलवाडी

उ०—३ कूकै पाडोसण हळफळी खोल किमाड़। साहुरा पति ना कागल माहि मोटी धाड़।—ध. व. ग्रं.

२ घबराना, डरना।

उ०—१ अणचीत्यौ खतरौ जांण मोरियावर हळफळतौ बांटका मे चापळायौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हळफळ आछट हाथ, सुगियारी ऊठी चमक। नाथ अभी अणनाथ, किम कीधी होसी किसूं।—पा. प्र.

उ०—३ सादतै अटकळियौ हळफळियौ कोटवाळ, गुभ नै जाणि मुहतै कुड कारी ततकाळ।—ध. व. ग्र.

३ आश्चर्य चकित होना, विस्मित होना, चौंकना।

उ०—म्है इण साधारण चूनड़ी वास्तै थारौ डोरौ नीं बांध्यौ है वीरा, थारै कानीं सू तो म्हनै अमर चूनड़ी मिळणी चाहिजै। ठकरांणी ठीमर सुर में बोली।—अमर चूनड़ी? दोन्यूं मांमौ भाणेज एक साथै इज हळफळता बोल्या।—अमर चूनड़ी

४ दौड़ना, भागना।

उ०—पंखी टळवळ्या, माळे जावा नै खळभळ्या, चोर सळसळ्या आवइ हळफळ्या। आकास राता, मेह करि माता।—रा. सा. स.

५ परेशान होना, हैरान होना।

उ०—ओ अणचीत्यौ खिलकौ देखनै बाई री तौ अकल ई कांम नीं करयौ। वा हळहळियोड़ी खाथी खाथी आय नै कैवण लागी, बा, यूं कालायां कांई करौ। कसूर करियौ जका रै पगां मायौ निवाय माफी मांगौ। औ कठा रौ न्याव! म्हैं कौ ऊंधौ कांम नीं करियौ।
—फुलवाड़ी

६ शीघ्रता करना, ताकीद करना।

उ०—हल हल करवा हलफल्या, पुहता मंदिर-पासि। अवसि थया तै अधला, रोता जाहि नासि।—मा. कां प्र.

हळफळणहार, हारौ (हारी), हळफळणियौ—वि०।

हळफळिओड़ौ, हळफळियोड़ौ, हळफळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हळफळीजणौ, हळफळीजबौ—भाव वा०।

हळपळणौ, हळपळबौ, हळफळाणौ, हळफळाबौ—रू० भे०।

हळफळाणौ, हळफळाबौ—देखो 'हळफळणौ, हळफळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ या डरनै उठा सू दौड़ी। भाखर री ढाळ मैं ई वा हळफळा'ई वेग सूं न्हाटण लूंकी कै अणछक उण रौ पग रपटायौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ दरबार मैं पुगता ई सेठजी जोर सू बांग गेल कूक्या तौ राजाजी री नींद खुली। भिभकनै ऊभा व्हिया। हळफळाया होय गाय दौड़ण लागा।—फुलवाड़ी

उ०—३ राजाजी नाई नै देखतां ई हळफळाया होय उणरै साम्ही दौड़िया। थूक उछाळता पूछ्यौ—बोल, म्हारी नवी जुगत सू काम पटियौ कै नीं।—फुलवाड़ी

हळफळाणहार, हारौ (हारी), हळफळाणियौ—वि०।

हळफळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हळफळाईजणौ हळफळाईजबौ—भाव वा०।

हळफळायोड़ौ—देखो 'हळफळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हळफळायोड़ी)

हळफळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ व्याकुल हुवा हुआ, आतुर हुवा हुआ, अधीर और बेचैन हुवा हुआ. २ घबराया हुआ, डरा हुआ. ३ आश्चर्य चकित व विस्मित हुवा हुआ, चौंका हुआ. ४ दौड़ा हुआ, भागा हुआ. ५ परेशान हुवा हुआ, हैरान हुवा हुआ. ६ शीघ्रता किया हुआ, ताकीद किया हुआ. ७ बातचीत किया हुआ, सलाह किया हुआ।

(स्त्री. हळफळियोड़ी)

हळफळौ—वि. (स्त्री. हळफळी) १ जिसका संतुलन खो गया हो, असंतुलित।

उ०—जांन मैं मारी चालौ हुई। अेनोई बींद नै बागौ पैरायौ हळफळौ सो बींद री बाप गड-बड़ी कर उठ्यौ अर आपरा भायलां नै पैड्यां मैं रोजा'र सागीड़ा समझाया।—बसदोख

२ आतुर, व्यग्र।

३ शीघ्रता करने वाला।

हलब—सं. पु. [फा.] फारस की तरफ का एक प्राचीन देश जहां का शीशा प्रसिद्ध था।

हळबळ—देखो 'हळवळ' (रू. भे.)

उ०—१ हु ळेळ आगली अणी रा रावत है तिकै कहै आधा रहजौ आधा रहजौ उण वेळा रावतां रा पग खरडै डिगण टूक जावै हळबळ न्हासण री आगत री लाग जावै।—वी. स. टी.

उ०—२ हळबळा वळा मुजरा हुवै, गह हाका पहाड़ गह। तण अजण' नगारै तीसरै, सुवर गज चढियौ सुपह।—सू. प्र.

उ०—३ बीजळ हळबळ बळबला, दरलिय यळ दरियाव। घटा प्रघळ बाजण लगी, बिरह जगावण बाव।—र. हमीर

हळबळणौ हळबळबौ—देखो 'हळवळणौ, हळवळबौ' (रू भे)

हळबळाणौ हळबळाबौ—देखो 'हळवळाणौ, हळवळाबौ' (रू भे)

उ०—घरवाळी घणी हळबळायौ तौ एक दिन वौ काटीजियोडा राचा नै उजाळिया। सवारनै टच करचा।—फुलवाडी

हळबळायोडौ—देखो 'हळवळायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री हळबळायोडी)

हळबळाहट–स स्त्री —१ भय, घबराहट आदि के कारण होने वाली मन स्थिति, घबराहट।

२ शीघ्रता।

३ भगदड।

हळबळियोडौ—देखो 'हळवळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. हळबळियोडी)

हळबळौ, हुलबलौ–स पु.—१ भय, आतक।

उ०—पछै फौज रौ हुलबलौ पडचौ जद भाया तौ रात्रि रा कानी २ म्हास गया।—भि. द्र.

२ शोर-गुल, हल्ला।

उ०—डागळा अर पाडोस्या रै घरा बारणा ही कान पडयौ नी सुणीजै है। हळबळौ हुवै, सावण रा सा बादळ घुटै है।—दसदोख

३ भगदड, अव्यवस्था।

४ शीघ्रता, ताकीद।

हळबांणी–स पु —लोहे की लम्बी छड, जिसका एक शिरा तीक्ष्ण एव नोकदार होता है।

वि वि —यह हल मे लगाने का एक उपकरण होता है जो हल के नीचे की ओर फसा रहता है। हल चलाते समय इसका नोकदार शिरा जमीन मे घुसकर चलता है जिससे सीता बनती जाती है।

रू भे —हळवाणी, हनवाणी।

हळबाणं—देखो 'हलमाणं' (रू भे)

उ०—दळिया रावै दळबळिया हळबाणं। बेचण बीदणिया ई धणिया आणं।—ऊ का

हळबा—देखो 'हळवा' (रू भे)

उ०—नीव थोडी हळबा ६० तथा ७० खेत सखरा। जवार तिल कपास हुवै।—नैणसी

हळबी–वि स्त्री —हलब देश की, हलब देश सबधी।

स स्त्री.—१ एक प्रकार की तलवार।

२ एक प्रकार का काच, आईना, शीशा।

३ देखो 'हळवी' (रू भे)

हळबेडर–स स्त्री —हल के पीछे बधा रहने वाला बीज बोने का एक उपकरण जो बास के खोखले डडे का बना होता है।

उ०—भेरण हळबेडर झळकी तन झाई। मरिया डेडर ज्यू हरिया मनमाही।—ऊ का

हळबोळ, हुलबोल–स. पु —कोलाहल, शोरगुल।

उ०—आडबर करता थका, न धरै किसि प्रवाह म। कोलाहल हलबोल सु, मत्री कहै सुणि नाह।—गीपालराम

हळभळ—देखो 'हळवळ' (रू. भे)

उ०—१ सूरजमल रीस करी राणै कह्यौ, 'हाथी माडा आयौ' घणी हळभळ की। दिन १ आडौ घात नै कह्यौ, 'आवै सिकार सूअरा री मूळा री खेलमा।'—नैणसी

उ०—२ पछै मुदायत राणै रायमल जैमल नू कीयौ, तिकौ राव सुरताण नू जोर कुमया करै, इणै तौ घणी ही हळभळ की, जैमल मानै नही, पग पडियौ आवै।—नैणसी

उ०—३ तरै राव हजूर तेड नै इणा नु हळभळ कर सीख दी। वीरमदे मेडतै आयौ।—नैणसी

उ०—४ पछै सीहौजी तौ आपरै डेरै माहै गयौ नै मूळराज नु बारै बेसाण नै बीच आपरा परधान हुता सु फेरनै पुछायौ—ये म्हासु इतरी हळभळ करौ छौ, सु म्हासु थाहारै कोई काम हुवै सु फुरमावौ।—नैणसी

हळभळी–स. स्त्री —१ खलबली, भगदड।

२ घबराहट, बैचेनी।

३ हलचल।

हलभ्रत–स पु [स हलभृत] बलराम का एक नामान्तर।

हलमांणं–क्रि वि —साथ-साथ।

उ०—पावस हुया व्यतीत, टिकै ना टीब ठिकाणं। दुत-गत भागा दौड, हेड रमवा हलमाणं।—दसदेव

रू भे —हळबाणं।

हळमुख, हळमुखी–स पु —पिंगल मे एक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, नगण, सगण, क्रमश होते हैं।

उ०—रगणा नगण सगणी, भगण ए हळमुख भणी। ईसरी गिरज आवीयै सव्व मगळ सुख दीयै।—पि सि

हलरावणौ, हलराबबौ–क्रि स —१ छोटे बच्चे को गोद मे उठाकर दाये-बाये घुमाना, एक हाथ से थपकी देते हुए हुलराना।

२ बच्चे को सुलाने के लिये या चुप कराने के लिये कुछ गाना गुन-गुनाना।

३ पालने मे सुलाकर झूला देना।

उ०—माता धोता अमल, झुलरायो झोली। हालरि हुलराबियौ, हीडोल हिचोली।—ध व ग्र.

हलरावण हार, हारौ (हारी), हलरावणियौ—वि।

हलराविओडौ, हलराबियोड़ौ, हलराग्योडौ—भू० का० कृ०।

हलरावीजणौ, हलरावीजबौ—कर्म वा०।

हलराबियोडौ–भू का. कृ.—१ गोद मे उठाकर दाये बाये घुमाया हुआ, थपकी देते हुऐ हुलराया हुआ २ सुलाने या चुप कराने के लिये कुछ

गाया या गुनगुनाया हुआ।

(रपी. हलरावियोडी)

हुलव-स. पु.—१ अनुगमन करने या आचरण करने की क्रिया या भाव।

२ चलने की क्रिया व भाव, चलन।

हळवइ, हुलवइ, हळवई हलवई—देखो 'हळवौ' (रू. भे.)

उ०—गळइ सोहा, नियतीयइ सांख्या, सबलीइ छड्या, हुरावइ हाथइ सोहा, नखवतीइ वीण्या, उत्तम स्त्रीइ ओरघा, सुजांण स्त्रीइ ओसाया, सुबह स्त्रीइ ऊतारघा, एहवा गणीगाला सरस फरहरा कूर प्रीस्या।—व. स.

हुलवणौ, हुलवबौ—देखो 'हालणौ, हालबौ' (रू. भे.)

उ०—सावधान गुर ग्यान, पाव छिब सत्त परहुं, जुग कीरत ओढ्या, पच सत पच पहडुं। धरै कळस सिरधरा, वरा माळा भ्रत कर। इम ओरही सांरुही, पार जमवारी उत्तर। आ धारा धात रातौ छती, पछिल भाग भूलिस पगा। हरिनाम वरस ऊपर हुलव जीव नद्दु जेही 'जगा'।—ज. खि.

हळवव हळवद्द-स पु—एक प्रदेश का नाम।

उ०—मन बहगी मुरधर पति, हल चलियौ हळवद्द। जयपुर घर भालौ 'जसौ', मेलह गयौ निज मद्द।—रा. रू.

हुळवळ-स. स्त्री.—१ चिंघाड, चिंघाड़ने की ध्वनि।

उ०—१ गजराजूं की हुळवळ। बाज राजूं की कळहळ। माळूं का निहाव। साबळूं का सिळाव, त्रंबागळूं की डाकी। जसोरलूं की हाकै।

—सू. प्र.

२ आवाज, ध्वनि, कोलाहल।

उ०—१ त्रिधुक तुरी वळवळ चपळ, दळ हुळवळ दीवांण। सरद निसा किर खीर सर, वेळा सारा वखांण।—रा. रू.

उ०—२ हुळवळ दळ प्रबळ हैमरां हुकळ, सबहर न थियै मनै सुख। धव आयौ अरहर तज्ञ गोडुण, रूपसिंघ गजराज रुख।

— ऊको बोगसौ

३ शीघ्रता, ताकीद।

उ०—१ पह सेव देव हुळवळ प्रबळ, अति मंगळ धमरावती। निस अगनि चरित दीठौ निजर, पडै न भूठौ सप्रती।—रा. रू.

उ०—२ बरसै सघण खळळ वजवाळा, वसधा जळथळ एक हुआ। अलबल हूं तज करण पुळ अलीया, हुळवळ कर वधूं त्यार हुआ।

—मयाराम दरजी री बात

४ हलचल, आवाज, बोली, शब्द।

उ०—१ ग्रीध हुळवळ समळ गळळ पळहळ गरां, त्रिसळ सळ वळोवळ कळळ हूकळ तुरां।—महादांन मेहडू

उ०—२ इत्ता जीवां री हुळवळ सुणी तौ भाजरी रै मांय ऊभी एक डोकरौ खांधै गोफण लियां 'कुण व्हैई, कुण व्हैई' री हाक लगावतौ बारै आयौ।—फुलवाड़ी

५ भगदड़।

उ०—१ गेछ करारा ऊरा, हुवा नगारा राद। दळ हुळवळ भाका दिया, राका जांणा साम।—रा. रू.

उ० —२ भाइ भाई फौज सापळी भाळहळ, द्रोमकि तूबिया जंगळ बळ। हळबळ कळळ बहुबळ हुळवळ, गामळिगा माथै मंडळ।

—हीरा गामळिया रा जुध रौ गीत

उ०—३ हय कप नरा तुरा गज हुळवळ, तूटि अगारा सार तड़। आप 'धराज' बखाणौ ओलै, भुळताणौ मेवाड़ भड़।

—राजा बखतसिंह रौ गीत

६ व्यग्रता, व्याकुलता, आतुरता, बेचैनी।

७ घबराहट, भय।

८ परेशानी, हैरानी।

९ चकाचौंध, क्रोध।

उ०—बीजळिया हळवळ हुइ, आभै छिपौ वणाव। धरमइण धर आवियौ, धर गडण घर भाव।— र. हमीर

१० आदर-सत्कार, स्वागत।

रू भे.—हळबळ, हळवळी।

हुळवळणौ, हुळवळबौ-क्रि अ —१ हल्लागुल्ला होना, शोर गुल होना, कोलाहल होना।

२ शीघ्रता करना, ताकीद करना।

३ उत्सुक होना, व्यग्र होना, व्याकुल होना।

उ०—तेरस तेरै घर गई, आज न लागै थाग। हियडौ हुळवळियौ हरी ऊभीजै ऊवाग।—अग्यात

४ तेज चलना, द्रुतगति से जाना।

उ०—जु रुकमणीजी का साथ की रख्या कौ पाइक पाइक हुया छै। हुळवळीया कहता घणौ उतावळा छै।—वेलि टी

५ चहल पहल होना, हलचल होना, आवाज होना, बोलना, शब्द होना।

६ भगदड़ मचना।

७ घबराना, डरना।

८ परेशान होना, हैरान होना।

९ आदर-सत्कार होना, स्वागत होना।

१० चकाचौंध होना, क्रोधना।

हुळवळणहार, हारौ (हारी), हुळवळणियौ—वि०।

हुळवळिओड़ौ, हुळवळियोड़ौ, हुळवळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हुळवळीजणौ, हुळवळीजबौ—भाव वा०।

हळवळणौ, हळवळबौ, हिलवळणौ, हिलवळबौ—रू० भे०।

हुळवळाणौ, हुळवळाबौ-क्रि. स. ['हुलवळणौ' क्रि. का प्रे. रू.]

१ हुल्ला गुल्ला, शोर गुल कराना, कोलाहल कराना।

२ शीघ्रता कराना, ताकीद कराना, त्वरा करना।

३ उत्सुक, व्यग्र, व्याकुल या आतुर होने के लिये प्रेरित करना।

४ तेज या द्रुत गति से चलाना।
५ चहल-पहल कराना, हलचल कराना, आवाज कराना, बोलाना, शब्द कराना।
६ भगदड मचवाना।
७ डराना।
८ परेशान करना/कराना, हैरान करना/कराना।
९ आदर-सत्कार कराना, स्वागत कराना।
हळवळाणहार, हारौ (हारी), हळवळाणियौ—वि०।
हळवळायोड़ौ – भू० का० कृ०।
हळवळाईजणौ, हळवळाईजबौ—कर्म वा०।
हळवलाणौ, हळवलाबौ—रू भे।

हळवळायोड़ौ-भू का कृ —१ हल्ला-गुल्ला या शोर कराया हुआ, कोलाहल कराया हुआ. २ शीघ्रता कराया हुआ, ताकीद कराया हुआ, त्वरा कराया हुआ ३ उत्सुक, व्यग्र, व्याकुल या आतुर होने के लिये प्रेरित किया हुआ ४ तेज या द्रुतगति से चलाया हुआ ५ चहल-पहल या हलचल कराया हुआ, आवाज या शब्द कराया हुआ ६ भगदड मचवाया हुआ. ७ डराया हुआ. ८ परेशान या हैरान करवाया हुआ ९ आदर-सत्कार या स्वागत कराया हुआ।

हळवळियोड़ौ-भू का कृ —१ हल्ला-गुल्ला या शोरगुल हुवा हुआ, कोलाहल हुवा हुआ २ शीघ्रता, ताकीद या त्वरा किया हुआ ३ उत्सुक, व्यग्र या आतुर हुआ हुआ. ४ तेज या द्रुत गति से चला हुआ. ५ डरा हुआ. ६ परेशान या हैरान हुवा हुआ. ७ आदर, सत्कार या स्वागत हुवा हुआ।
(स्त्री. हळवळियोड़ी)

हळवळी—देखो 'हळवळ (रू भे.)
उ०—धुबि तबल बब उडि अरणधज, हलै धमळ हुय हळवळी। हाथिया टिला बेला हमल, हठा नीठ कठठै हली।—सू प्र.

हळवा हळवा-क्रि. वि [अनु.] धीरे-धीरे।
उ०—वीरा रे, तू हळवा-हळवा बोल, मेरी देराणी-जेठाणी सौ सुणै जी, म्हा रा राज।—लो गी
रू. भे.– हळवा हळवा।

हळवाणी, हलवाणी—देखो 'हळवाणी' (रू भे)
उ०—१ जद स्वामीजी कह्यौ -रोग तो गभीर रौ चढयौ अनै कहै म्हारै खूजाळौ। पिण खूजाळया साता न हुवै। हलवाणी रा डाम दिया साता हुवै।—भि द्र.
उ०—२ हलवाणी रा छेहड़ा दोनू कानी बलै अनै बीचै ठडी। उठी सू पकडचा हाथ बलै ने दूजा छेहड़ा सू पकडै तोही हाथ बलै। —भि. द्र

हळवा-स. स्त्री.—१ उतनी जमीन १०० या ४० हलो से एक दिन मे जोती जा सके।
उ०—१ जैतारण था कोस ३ दिखण था डाबौ। जाट बाणिया बसै। धरती हळवा १०० बाजरी मोठ हुवै। खेत कवळा उन्हाळी अरट ८ ढीबडा १०, सेवज चिणा हुवै।—नैणसी
उ०—कोस ५ ऊगवणी, वेरौ १ तळाव १। हळवा ५०। गांव देवडा रौ छै। गाव जमोया पछै एक साखीयौ।—नैणसी
२ बोऐ हुए खेत मे फसल से खाली रह जाने पर बीच बीच मे दुबारा की जाने वाली बोवाई। (बीकानेर)
३ ऐसी वर्षा जिससे हल चल सके।
४ देखो हलवाह' (रू भे)

हळवा-हळवा—देखो हळवा हळवा' (रू. भे)

हलवाइ, हलवाई, हलवायी–स. पु —मिठाई बनाने व मिठाई का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति, कदोई।
वि.—बातूनी, वाचाल, वाक्पटु।

हळवाह–स. पु —१ श्रीकृष्ण के बडे भाई, बलराम।
२ देखो 'हळवा' (रू. भे)

हळवाहण–स पु —बैल।

हळवी, हलवी–वि स्त्री —१ तुच्छता, ओछी।
उ०—१ तरै भालै रायसिंघ कह्यौ —'म्हारा ठाकुर। इसडी वात हळवी कासू करी छौ? पैडा रौ गाव छै। घणा ही पेंडै नीसरसी, थै किण किण सू वेढ करसौ?—नैणसी
उ०—२ हळवी वात हराम तजि, धरणि धर सू ध्यान धरि। मोसरि मिनखा देह कै, इणि अवसर उपगार करि।—जाभौ
२ छोटी, लघु, पतली।
३ निर्बल, अशक्त।
उ०—प्रथीराज नु कह्यौ—राव मालदे रै आगै ही बडा ठाकुर था सु सारा काम आया छै। नै आपै ही मरस्या तौ ठकुराई हळवी पडसी।—नैणसी
४ भारमुक्त, हल्की।
उ०—पाप टलै नही आलोयण पखै, कहै ग्यानी सहु कोय। परही मूक्या सिरनी पोटली हलवी गाबडी होय।—ध. व ग्र.
५ सुख साध्य।
क्रि वि.—धीरे-धीरे, शनै शनै।
रू. भे.—हळवी।

हळवे—देखो 'हळवै' (रू. भे.)

हळवे-हळवे, हलवे-हलवे–क्रि. वि [अनु] धीरे-धीरे, शनै शनै।
उ०—१ पछै सीसोदियौ परबतसिंघ देवडै रामै सिलावट तेडाय हळवे-हळवे भीत खोलाय नै अखैराज नुं काढ लीयौ।—नैणसी
उ०—२ हलवे-हलवे ऊतरघा रै, वाद्या भुनि ना पाय। मात पिता नै पूछनै रै, मैं लेसा सजम सुखदाय।—जयवाणी
रू. भे —हळवै-हळवै, हलवै हलवै, हवले-हवले, हवलै हवलै।

हळवै, हळवे–क्रि. वि.—धीरे।
उ०—१ करि साकणि डाकणी सग कई, लगडा मग जग मलग

राई। गण घूमर भूत पिसाच पगी, हळवै पग गैल चुडैल हली।
—गे म

उ०—२ तरै बीजळी रा चमका सूं पिउरासी दीठी, आणियौ उळगाणोजी पधारिया। तिरै सूती हळवै सै ऊठी नै तरवार काढी नै उबाहया ऊभी।—जलजा गुलजा भाटी री वारता

रू भे—हळवइ, हलवइ, हळवई, हलवई, हळवे, हळिवइ, हळिवई, हयळे, हवळै।

हळवै हळवै, हलवै-हलवै—देखो 'हळवे हळवे' (रू. भे)

उ०—तरै रिणधीर गाजणियौ, पैहला खगार करै रहतो, सु रिणधीर कह्यौ—यूं काहू जोवौ ? 'आवो सांढिया रवा। खगार विण आवडियौ नही रहै।' तरै फेरनै सांढि ली नै हळवै हळवै जाण लागा।—नैणसी

हळवौ—वि - १ छोटा, लघु।

२ अल्प, थोड़ा।

३ तुच्छ, ओछा।

४ हलका, भारमुक्त।

५ जो आघात, प्रभाव, असर की दृष्टि से हलका हो।

उ०—एक तीर हळवौ सो चावै रायमलोत रै लागो।—द. वि.

रू. भे.—हरवौ, हलवौ, हलुअउ, हलुवौ।

हलवौ—सं. पु.—१ मैदा, सूजी, आटा आदि को घी मे भून कर उसमे निश्चित अनुपात मे शक्कर एव गर्म पानी डाल कर बनाया जाने वाला एक खाद्य पदार्थ, हलवा, सीरा, मिष्ठान्न, मिठाई।

उ०—चरखा, पीढा, सांगवा भल, पेई, पिलाण, पाखरा। हलवे भरया कड़ाव हालै, भोग भूरटी आचरा।—दसदेव

२ मोहन भोग।

रू. भे.—हलुअउ, हलुओ।

३ देखो हळवौ' (रू. भे.)

उ०—१ हलवा मारट नौ भूंमरो, बलै घोड़ा पेड़ा जोस रे लाला।
—जयवांणी

उ०—२ सारदा देवी सरीर आवो कीयो १, सांभरादेवी सरीर हलवौ कीयो २, रामादेवी सरीर प्रभंग कीनो ३, तारादेवी सरीर तेजवत कीयो ४।—रा. व. वि.

हळसोटौ, हळलोतियौ—देखो हळोतियौ' (रू. भे)

हळहळ, हलहल—सं. स्त्री.—१ शीघ्रता, ताकीद।

उ०—ऊपर बीठा जात्रता, हळहळ करइ कन्हर। एराकी ग्रीव भिया, जइसइ केती दूर।—ढो मा.

२ भगदड़, खलबली, हड़बड़ाहट।

उ०—हळहळ बळ बिसतरै, जाण हीलोहळ फट्टी। पवन सग पेरियां, प्रबळ दव दग प्रगट्टी।—रा. रू.

३ धूम धाम, चहल-पहल।

उ०—सतखनै आवासूं की हळहळ नरधद का निवास। गोखूं के बीच मैं जोति का उजास।—सू प्र.

४ कोलाहल, शोर गुल।

उ० तीरा री सांठी टूटी, भालां री गाय गाडी रही सो टोळा सूं सूर हुवौ थको पार होय जा बरछी ऊपर खड़ो रहियौ। भला रावता ठाकुरा भांती रा हू हलहल हुई रही छै।
—डाढाळा सूर री वात

५ घबराहट, बेचैनी।

क्रि वि.—धीरे धीरे, शनै-शनैः।

उ०—परसाती पाखरा बल्या, सेना सकल विहांण। हलहल हय गय सतरिया, निरधोरया नीसाण।—रा का प्र.

रू. भे—हलहलल।

हलहलणौ, हलहलबौ—क्रि अ.—१ कापना।

उ० —१ उरा वार रत नद ऊभळे, दुग डाक धर गिर हलहले।
—सू प्र.

उ०—२ एक मैं चढ़ नागेस बिल कालीया, धड़हड़यो सेस। नै धरा धूंसै। लपकि किपलीप करै पीठ धू दासणि, हलहलै मेर दिगदत धूजै।—प. च. चौ.

२ डरना, घबराना।

उ०—साह पतिसाह सर्णह पायाणउ पारथ सुणी। हलहलिया हेकाणयह गढपति गर्भ-गोल।—श्र. वचनिका

३ अधीर होना विचलित होना।

उ०—१ हालतै जवान अमर नर हलहलै, अमरकौ धीर मन धरै ओहवो। 'जसो' महाराज नाराज प्रहै जरै, कसो कुळराज नाराज केहवो।—जयसिंह कछवाहा री गीत

उ०—२ गढ ऊपरि बातां गई रै, हलहलियौ हिंदुस्थान। गढपति भाल्यौ आपणोजी, कोजयै केहौ पान।—प. च. चौ

४ भगदड़ मचना, खलबली मचना।

५ कोलाहल होना, शोर-गुल होना।

६ हिलना-डुलना।

७ शीघ्रता करना, ताकीद करना।

हलहलणहार, हारौ (हारी), हलहलणियौ—वि०।

हलहलिओड़ौ, हलहलियोड़ौ, हलहलयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हलहलीजणौ, हलहलीजबौ—भाव वा०।

हलहल्लणौ, हलहल्लबौ—रू० भे०।

हलहलाणौ, हलहलाबौ—क्रि. स.—१ कपायमान करना।

२ डराना।

३ अधीर करना, विचलित करना।

४ भगदड़ मचवाना, खलबली मचवाना।

५ कोलाहल कराना, शोर गुल कराना।

६ हिलवाना, डुलवाना।

७ शीघ्रता कराना, ताकीद कराना।

८ सलाह करवाना, विचार करवाना ।

हलहलाणहार, हारौ (हारी), हलहलाणियौ—वि० ।

हलहलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हलहलाईजणौ, हलहलाईजबौ—कर्म वा० ।

हलहलायोड़ौ-भू. का कृ.—१ कम्पायमान किया हुआ २ डराया हुआ ३ अधीर किया हुआ, विचलित किया हुआ. ४ भगदड मचवाया हुआ, खलबली मचवाया हुआ. ५ कोलाहल कराया हुआ, शोरगुल कराया हुआ. ६ हिलाया हुआ, डुलाया हुआ ७ शीघ्रता कराया हुआ, ताकीद करवाया हुआ. ८ सलाह करवाया हुआ, विचार करवाया हुआ ।

(स्त्री हलहलायोडी)

हलहलियोड़ौ-भू का कृ—१ कम्पित २ डरा हुआ, घबराया हुआ ३ अधीर या विचलित हुवा हुआ ४ भगदड या खलबली युक्त ५ कोलाहल पूर्ण हुवा हुआ ६ हिला हुआ, डुला हुआ ७ शीघ्रता किया हुआ, ताकीद किया हुआ. ८ सलाह किया हुआ, विचार किया हुआ ।

(स्त्री हलहलियोडी)

हलहली-वि. स्त्री —सजी हुई ।

उ०—जीमा जूठ्या रम रमा ए मामी पोढण ठौर बताय । ऊची मडी हलहली जी दिवलो चसै यै मुमाल रानी सोरठी ।—लो. गी.

हलहल्ल—देखो 'हळहळ' (रू भे)

हलहल्लणौ, हलहल्लबौ—देखो 'हलहलणौ, हलहलबौ' (रू भे.)

उ०—हलहल्लिय लक गढ बकसौ, दस-धू पै हुल काहल्लिय । हल्लिय पताख गजराज पै, विजै कटक राघव हल्लिय ।—र ज प्र.

हलहल्लियोड़ौ—देखो 'हलहलियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. हलहल्लियोडी)

हलाण-स स्त्री —गति, चाल ।

उ०—राणौ सूरजमाल रै, पमंगा हुवा पलाण । पोह फाटी परभात री, हलबल हुई हलाण ।—पा प्र

हलांणौ-स पु.—१ विवाह के बाद कन्या की पिता के घर से विदाई, गौना ।

उ०—१ चौरी माहै बैठा, परणायौ । परणाइ नै कावळो जानी वासै गयौ । तीडी नु घर मैं लै गया । प्रभात हुवौ । जान नु भगति हुई । दिन ४ राखीया । हीडा किया । जांनी बोलीया, हलांणौ करो ।—कावळी जोइयौ नै तीडी खरळ री वात

उ०—२ आज अठै टिक मिजमानी जीमौ बीजी म्है झट तयारी कर हलांणौ ही कर देयस्या ।—कुंवरसी साखला री वारता

२ विदाई के समय कन्या के पिता द्वारा दिया जाने वाला धन, दहेज ।

३ प्रथम प्रसव के बाद कन्या की पिता के घर से वस्त्राभूषणो सहित की जाने वाली विदाई ।

उ०—जेतपुर माही एक तेली रहै, तिण रै भटनेर री तेली परणियौ सो सासरै हलाणै नू आयौ ।—ठाकुर जेतसी री वारता

४ प्रस्थान, गमन ।

उ०—तरै सोलकणी आसथान नु समझाय नै कह्यौ—अठै थाहा री टिकाव कोई नही । ऐ साम्ही कोहीक ऊपाव कर मारसी । आपै हालो, म्हारै पाटण जावां । तरै इण हलांणा री दिन ५ तथा ६ माहे तयारी कर, दस मांणस रजपूत राख नै पाटण नै चालीया ।

—नैणसी

रू भे —हलणौ, हलावणौ, हल्लाणउ, हल्लांणौ, हहलाणउ, हहलाणौ, हालांणौ ।

हलाम-स पु —सेना, फौज ।

उ०—धरा पै हमला हलांम चोळा सु नाग धूजै, सकै बोज मयी डढा कोल रा समैत । चमु देख सोगणी जे ऊपरा चखा, वइडा नाखीया बाभी ओळरा वार्नैत ।—ठाकुर महेसदास री गीत

हला-स स्त्री. [स] १ पृथ्वी, धरती ।

२ सखी ।

३ शराब ।

४ पानी, जल ।

हळाई-स. स्त्री —१ हल की बारह सीताओ (रेखाऐं) की एक इकाई ।

उ०—जमी माथै मडियोडी आ हळाइयां रा आखरा नै कुण पूग सकै ।—फुलवाडी

वि वि —देखो 'हळाव'

२ खेत या भूमि का वह भाग जिसमे उक्त सीताऐं आती है ।

३ हल जोतने का समय । (शेखावाटी)

हलाक-वि [फा] १ मृत हुआ, मृत, हत, वध किया हुआ ।

२ नष्ट ।

उ०—प्राण जितै जग आपणौ, प्राण जितै तन पाक । प्राण प्रयाण किया पछै, व्है नर नाम हलाक ।—बा दा.

हलाकत-स स्त्री [फा] हत्या, मृत्यु, वध, नाश ।

हलाकुएल-स. पु [फा.] सेना का भयकर आक्रमण ।

उ०—हलाकुएल सेल तै सदा उथेलतै हलै । चितार पेट भेट कै चपेट मेलतै चलै ।—ऊ का

हलाकू-वि [फा.] मारने वाला, वध करने वाला, हत्यारा ।

हलाडणौ, हलाडबौ—देखो 'हलाणौ, हलाबौ' (रू. भे)

हलाडणहार, हारौ (हारी), हलाडणियौ—वि० ।

हलाड़िओडौ, हलाडियोड़ौ, हलाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हलाडीजणौ, हलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

हलाड़ियोड़ौ—देखो 'हलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हलाडियोडी)

हलाणौ, हलाबौ-क्रि. स. ['हालणौ' क्रि. का प्रे रू] १ चलाना, चलायमान करना, चलने के लिए प्रेरित करना ।

२ गतिमान करना।
३ आगे बढ़ाना, अग्रसर करना, भेजना।
उ०—साहूरा गाता साहू माळवी नुं कासीद हलायौ।
—देवजी बगडावत री वात
४ रवाना करना, सीख देना।
उ०—थै हलाणौ करो, ज्यो म्हे जाय जाता करां। तद केसरियै वात वायजी दै नै बेटी हलाई।—ठकुरै साहू री वात
५ घुमाना, फिराना।
६ देखो 'हिलाणौ, हिलाबौ' (रू भे.)
हलाणहार, हारौ (हारी), हलाणियौ—वि०।
हलायोड़ौ—भू० का० कृ०।
हलाईजणौ, हलाईजबौ—कर्म वा०।
हुलावणौ, हुलावबौ, हुलाणौ, हुलाबौ—रू० भे०।
हलाणौ चलाणौ—देखो 'हलाबौ-चराबौ' (रू. भे.)
हळाबोळ-वि.—१ बिल्कुल, नितान्त, सरासर।
२ प्रचंड।
उ०—हळाबोळ फोधाळ दैसेत हुच्छ। अणी सूळ नै बाधिया वाघ अच्छ।—सू प्र.
३ ऊपर तक भरा हुआ, लबालब, परिपूर्ण।
४ समुद्र के समान लहरें देता हुआ।
उ०—सझि दळ झळहळ सकळ, गयंद चढियौ गह धारै। हळाबोळ दळ हलै, वाजि कुंकुम जिण वारै।—सू प्र.
५ अत्यधिक, बहुत।
६ तेज।
उ०—पिया गुरु जियाराम मेरा, किया जिन सुख मै सेरा। कहू सुखराम सिमरथ दासा, ब्रह्म हळाबोळ प्रकासा।
—श्री सुखरामजी महाराज
७ बुरा, खराब।
रू. भे —हाळबोळ।
हळाभ-स पु.—वह घोड़ा जिसकी पीठ पर काले या अति गहरे रंग के बाल बराबर कुछ दूर तक हों।
हलायुध, हलायूध-सं पु [स हलायुध] १ हल के आकार-प्रकार का एक आयुध जिसे कृष्ण के भाई बलराम रखते थे।
उ०—हलायुध हलायुधइं मुसलायुध मुसलायुधइ, सूलायुध सूलायुधइ, बैं दल मिलइ सरवभ्र धूलि पटल उच्छलइ।—व. स
२ बलराम का एक नामान्तर। (ह नां मा)
हलायोड़ौ-भू. का कृ.—१ चलाया हुआ, चलायमान किया हुआ, चलने के लिए प्रेरित किया हुआ. २ गतिमान किया हुआ, शुरू किया हुआ. ३ अग्रसर किया हुआ, आगे बढ़ाया हुआ, भेजा हुआ. ४ घुमाया हुआ, फिराया हुआ ५ रवाना किया हुआ, सीख दिया हुआ।
६ देखो हिलायोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री हलायोड़ी)
हलारकौ-स. पु. [देशज] हलार देश मे उत्पन्न एक प्रकार का घोड़ा।
हलारियौ-सं पु [देशज] कुंभट व बबूल की फली।
हलाल-वि [अ] १ उचित, वाजिब।
उ०—हैवान आलम गुमराह गाफिल, अव्वल सरीयत पद। हलाल हराम नेकी बदी, रसै वांनि समद।—वाळूवांणी
२ जिसका खाना पीना धर्म शास्त्र मे वर्जित न हो।
३ मुसलमानी शास्त्र के अनुसार खाने वाले जानवर की गरदन पर धीरे धीरे छुरी चलाते हुए मारने की क्रिया।
उ०—फाजत हरवखत इयै धारणा मे डूबयोड़ौ रेवै। पण जेळ मैं आ वात आवक निजोरी। कादण वेगी जानवर कठै सूं आवै। हलाल विना ही हराम नहीं।—दसदोख
हलालखोर-सं. पु [अ., फा.] मेहतर, भंगी।
उ०—साहूरां रुपीयो १ रा टका मंगाया। मंगाइ नै रागीया। कह्यौ, जा हलालखोर बुलाई ल्याव। हलालखोर बुलायो। घर फूस रास्व सूं भरीयो पांडयो हुतो, सु आछो भटकायो बुहारि आछो कियौ।—स्याम सुंदर री वात
वि.—मेहनत या श्रम की कमाई खाने वाला।
हलालखोरी-स पु [अ. फा.] १ हलालखोर का कार्य।
२ मेहनत, परिश्रम।
३ परिश्रम से की जाने वाली कमाई।
हलालियौ-वि.—कृतज्ञ।
हलाली-वि [फा] १ जिसका कत्ल किया जाय, जिसका हलाल किया जाय।
उ०—बक्कर का हलाली खांणा, सूकर का कौन खांणा।—शि. वं.
२ हलाल करने वाला। (ना म)
३ उत्तम, अच्छा।
उ०—फरि फिरि आवै सहजि वुहावै सिद्धकौ खीर हलाली।
—जाभो
स पु. —हलाल करने की क्रिया या भाव।
उ०—असल मुसलमान हुवै जकौ मजब री कायदै सूं निवाज पढै रोजा राखै अर बरस मैं दो-चार बार हलाली कर परो'र मालकनै मूढौ दिखाळै।—दसदोख
हळाव-स पु.—१ हल की बारह सीताओ (रेखाओं) की एक ईकाई।
वि. वि —जुताई या बुवाई करते समय खेत का कुछ अंश, प्राय बारह सीताऐं निकलने योग्य अंश, खाली छोडकर एक सीता निकाली जाती है। फिर आते जाते उस सीता के आजू-बाजू दूसरी सीताऐं निकाली जाती है। इस प्रकार जब छोड़ा हुआ अंश भर जाता है तब फिर उतना ही अंश खाली छोड कर दूसरी सीता निकाली जाती है। यह क्रम पूरे खेत की जुताई-बुवाई तक चलता

रहता है। इस प्रकार से बनने वाली इकाइयों को 'हळाव' कहा जाता है। बुवाई-जुताई के बाद गौर से देखने पर ये इकाइयां स्पष्ट लक्षित होती है।

२ खेत का वह अंश जिसमे उक्त इकाई आती है।

हलावणौ—देखो 'हलाणौ' (रू भे.)

उ०—बडारण सगळा समाचार कहिया सो सुण राजी हुवा सर-बरा तयारी हलावणौ री होवै छै।—कुंवरसी साखला री वारता

हलावणौ, हलावबौ—१ देखो 'हलाणौ, हलाबौ' (रू. भे)

उ०—१ माता जसोदा पालना हलावै, हलावै हाथ मैं लेकर दोरा।—मीरा

उ०—२ लाखो लडता जेज न लावै, हरी तणो लख धके हलावै। नाहर बखत सिंघ वै नाहर, सुत लखधीर मीर लखि सिंधुर।—रा रू.

उ०—३ हरि हथिआर हलावता मुकत्यह रूधी वट्टि। तै मुक्-तीधइ आविजै, नाकि घणा जिणि घट्टि।—मा का प्र

उ०—४ सुक साहमु जोइ नही जागतु जोगेस। सास न चूकु सील-वर सीस हलाविउ सेस।—मा. का प्र

२ देखो 'हिलाणौ, हिलाबौ' (रू भे)

हलावणहार हारौ (हारी), हलावणियौ—वि०।

हलाविश्रोडौ, हलावियोडौ, हलाव्योडौ—भू० का० कृ०।

हलावीजणौ, हलावीजबौ—कर्म वा०।

हलावियोड़ौ—१ देखो 'हलायोडौ' (रू भे.)

२ देखो हिलायोडौ' (रू भे)

(स्त्री हलावियोडी)

हलावौ-चलावौ—स पु—मृतक के शव को श्मसान ले जाने का कार्य-क्रम।

उ०—म्है दुनिया मैं कजूसी रै बेजोड गुण री मिसाल थापनै जावूंला। हलावौ-चलावौ करो अर म्हनै सीढी मै घाल ठेट मसाण ताई रोवता रोवता लेय जावौ।—फुलवाडी

रू भे.—हलाणौ-चलाणौ।

हळासीक—वि—विषयुक्त।

उ०—महाभारत्त क्रतत किना पड्डी अढी मत, नदी हळासीक किना अरदीक नाग। जळाबोळ सिंधवाळी मानौ प्रळैकाळ जाळ, खळा तळाबोल बीजा तूंभ वाळी खाग।—भैरुदान बारहठ

हळाह—स पु [स] कबरे रंग का घोडा। (डिं को)

हळाहळ—स पु [स हलाहल] प्रचंड-विष, महाविष जो समुद्र मथन के समय समुद्र से निकला था।

उ०—१ घर घर घट कोल्हू चलै, अमी महारस जाइ। दादू गुरु के ग्यान बिन, विसय हळाहळ खाइ।—दादूवाणी

उ०—२ पीव पीव मैं रटू रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री। बिरह भवग मेरो डस्यो है काळजो, लहरि हळाहळ जागी री।—मीरा

२ देखो 'हळाहळयोग'।

वि.—१ प्रचण्ड, तेज।

उ०—दुतिय अनग रूप दरसाणा, पाण पाच दीरघ निज पाणा। बाहुअजान तेज अतुळीबळ। हरचख झळ मधि जेठ हळाहळ।—सू प्र.

२ कुपित, नाराज।

उ०—पातसाहजी रा० वीरमदे सु राजी हुवा। पातसाह आगै ही राव मालदे सु हळाहळ हुय रह्यो छै। तिण समै बीकानेर रा धणी पण कवर भीवराज जैतसीयोत मु. नगो ऐ ही फिरीयाद गया छै।—नैणसी

३ बिलकुल, कतई।

उ०—तिण देस रा रतभ मै वेगी खळळ पडै नीब बादसाहत री मैं उत्पात हळाहळ हलचल हुवै।—नी. प्र

४ सरासर, साफ, स्पष्ट।

उ०—१ जोर सू कूक्यौ—अन्याव व्है, अदाता हळाहळ अन्याव व्है। बेकसूर दीवाणजी नै हकनाक राज रे हाथा डड मिळै।—फुलवाडी

उ०—२ वै खुद चलाय चलाय नै मौत रै मूडै कीकर गिया। औ तौ हळाहळ इण पाचवा री अन्याव है।—फुलवाडी

रू भे—हळाहळि, हाळाहळ हालाहल।

हळाहळयोग—स पु [स हलाहल+योग] फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि व नक्षत्र सम्बन्धी चतुर्थ योग।

हळाहळि—देखो हळाहळ' (रू. भे)

उ०—सप्रति बरत्तइ कळिकाळ, महाकूड कपट काळ। चाड चबाड साक्षात् हळाहळि, सापु बहु परस्पर कळि।—रा सा स

हलाहिव—अव्य.—अभी, तुरन्त।

उ०—मुछ बल घालि बहू रोस भाखै रतन। हलाहिव साहि नइ करा सीधौ।—प. च. चौ

हळि—स. पु [स हलिन्] १ बलराम का एक नामान्तर। (अ. मा)

२ हल चलाने वाला कृषक।

रू भे—हळी।

३ देखो 'हळ' (रू भे)

हळिद्र—देखो 'हळदी' (रू भे)

उ०—वधाउआं ग्रहे ग्रहे पुरवासी, दळिद्र तणौ दीधौ दळिद्र। ऊछव हुआ अखिल ऊछळिया, हरी द्रोब केसर हळिद्र।—वेलि

हळिधर, हळिधरि—देखो 'हळधर' (रू. भे)

उ०—जैसे बीजा हळा सो रूखा का मूळ जड़ त्रूटता आघात होय। इणि भांति हळिधरि जी को हळ वहे छै।—वेलि टी.

हळिप्रिय-सं. पु [स हरिन् | प्रिय.] १ कदंब का वृक्ष। (डि को)
२ मद।
३ बलराम का एक नामान्तर। (प्र. मा.)
हळिप्रिया-स. स्त्री [सं हलिन्+प्रिया] १ शराब, मदिरा।
२ बलराम की प्रिय वस्तु।
हलिमा-स, स्त्री. [स] स्कन्ध की एक मातृका।
हळियौ-स. पु [स हलिन्] १ हल चलाने वाला कृषक।
उ०—हळियां हळ संजोडिया, गळियौ गीखम गाढ। आतसुवा उद्दम कियौ, आयौ रुत आसाढ।—पा प्र
२ खेलने का हलनुमा छोटा खिलौना।
३ देखो 'हळ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ एक तौ म्हानै हळियौ दीजो हाल दीज्यो जाडो। दोय तौ म्हानै बैलगा दीज्यो बिच गे दीज्यो गाडी।—लो. गी.
उ० - २ भिरमिर भिरमिर मेहडो बरसै, बादळियौ घररावै है। जेठजी तौ बूंजा काटै, परण्यौ हळियौ बावै है।—लो गी.
हळिवइ, हळियई—देखो 'हळवै' (रू. भे)
उ०—राज्जसा गुज्जण कै कहि, शङ्किम न दीजइ गाळि। हळिवइ हळिवइ छुटिवइ, जिम जळ छुडइ पाळि।—ढो मा.
हळी—१ देखो 'हळि' (रू भे.) (ह ना. मा)
२ देखो 'हळ' (रू. भे.)
हळीपण, हळीपणी, हळीपाणि-सं. पु [स. हल+पाणि] बलराम का एक नामान्तर। (ह. ना मा.)
हळीम, हलीम-सं. पु. [स. हलीम] १ केतकी।
[अ. हलीम] २ मुहर्रम मे बनने वाला एक प्रकार का खाना।
३ एक प्रकार का मांस जो हसन और हुसेन के लिये पकाया जाता है।
४ खिचडी।
५ गम्भीर स्त्री।
६ एक प्रकार का व्यंजन विशेष जो गोश्त, गेहूं, चना, मसाले व केसर की कस्क की तरह १ सेर घी, पाव-पाव भर शलजम, गाजर, पालक आदि के मिश्रण से बनता है। उक्त सामग्री से १० रकाबिया भर जाती है।
वि [अ हलीम] १ सहनशील, गम्भीर।
२ सीधा सादा, शान्त।
उ०—१ आरण रण रचता ऊदावत, दाव घण सिर दाव दिया। केवी गाज भाज करडावण, कवळा नरम हलीम किया।
— तेजसी सादू
उ०—२ तरै कही नरमी हलीम री तीन निसाणी छै।—नी. प्र
हलीसक-स. पु [स.] पाण्डु रोग का एक भेद। (अमरत)
हलील-स. पु —समुद्र, सागर।
उ०—अराबां निबाबा किया थट्ट आगै, पबै गाहिजै घाट औघाट पगै। हलीलां हिलै राग फौजां हसती, त्रिणी राग राया केई देसपत्ती।—वचनिका
हलीलौ-स. पु [देशज] साधारण गृह-कार्य।
उ०—बाई आसै विन उठै है रैवती। नित रो हलीलौ करती। पोतडिया धोवती। आटा री रोई फेरती। जचा री पीठी करती।
—फुलवाडी
हलीसक-सं. पु.—एक प्रकार का नृत्य विशेष।
उ०—मिळ गण सावणि झावणि भोत, हलीसक नाच भली विधि होत।—मे. म
हलुअउ—१ देखो 'हळवौ' (रू. भे)
२ देखो 'हलवौ' (रू. भे)
हलुआपण, हलुआपणू, हलुआपणौ-सं. पु [राज हळवौ+पणौ] १ लघुत्व, लघुता।
२ ओछापन, तुच्छता।
उ० —लाजि सीस नीचां नमै मानवूं आंत हलुआपणू। सू करि जु मन वरि नहीं तेज छायूं तै तणू। —नळाख्यान
हळुऔ - देखो 'हळवौ' (रू भे)
हलुऔ —देखो 'हलवौ' (रू भे)
हलुकरम-स पु - हल्का कार्य।
रू भे हलुकाउ।
हलुकरमी-वि —हल्के कर्म वाला, जिसके कर्म न्यून स्तर के हो।
(जैन)
उ०—१ जद स्वामीजी बोलया— दाल हुवै तो गुण मोट घणा री हुवै पिण गोहां री दाल न हुवै। ज्यू हलुकरमी बुद्धीवंत हुवै तै समझै पिण बुद्धी हीण न समझै।—भि द्र
उ०—२ सत गुरु सबद ज सांभळ्, जद मनडो हुवै राजी जी। हलुकरमी हरसै घणा, मिथ्यात मत जावै भाजी जी।—जयवाणी
रू भे हलूकरमी, हलूकमी।
हलुहार-स पु.- एक प्रकार का घोडा जिसके अण्डकोश काले होते है और माथे पर दाग होते है।
हलू, हलूइ-वि.- हल्का, धीमा, मन्द।
उ०—१ मनइ छलपय पुहतिनइ सामि, समनइ ऊनटि, मडोरा मगनी वाति, बुभक्षानी काति, फोतिरै छाडी, हलू हथीये खाडी, त्रिळइ कीधी धणइ पाणी सीधी ... ...।—व स
उ०—२ एक लगे पाटइ, माहइ दीजइ साटउ, वेलणस्यु वेलीइ, हलू हस्यु मेल्हीइ, घ्रत स्यु गिल्या, लोह कडा है तल्या।—व. स.
हलूकमउ—देखो 'हलुकरम' (रू भे)
उ०—ढकण कुमर हलूकमउ, प्रति बूधउ ततकालो जी। तेगि सगीरि संजम लीयउ, जिन आज्ञा प्रतिपालो जी।—रा. फु.
हलूकरमी, हलूकमी—देखो 'हलुकरमी' (रू भे)
हलूर-स. स्त्री —तरग, लहर।

उ०—ग्रहा सिरि सरां देवा सिरै गढपत्या, स ऊजळ हलूरा उरड साभाय ।—भगतराम हाडा री गीत

हलूस-स पु —उत्साह, उमग ।

उ०—फिळे मे ग्राई घणौ हलूस, लागी पगं मुहागण भूख ।—साफ

हलूसणौ, हलूसबौ-क्रि ग्र —१ उत्साहित होना, उमगित होना, प्रसन्न होना ।

२ यकायक उचकना या झपटना ।

हलूसियोडौ-भू का. कृ —१ उत्साह या उमग से भरा हुग्रा, प्रसन्न

२ उचका हुग्रा, झपटा हुग्रा ।

(स्त्री हलूसियोडी)

हळोचळ-वि —विचलित, व्याकुल ।

हळोटौ-स पु.—जैसलमेर राज्य का एक प्राचीन कर जो प्रति हल चार रुपये के हिसाब से वसूल किया जाता था ।

हळोतियौ-स पु.—बीज बोने लायक होने वाली मौसम की पहली वर्षा जिस पर पहली बार हल चलाया जाता है ।

उ०—हळिया जोती रै कामेती, खेती निपजै धणिया हेती, हाळी बीज री हळोतियौ ।—चेतमानखौ

रू भे —हळसोटौ, हळसोतियौ हळोतरौ, हळौतियौ ।

हळोद, हळोदपुर-स पु.—एक प्राचीन शहर का नाम ।

उ०—१ तरै मारग मैं हळोद जसा झाला सु लडीया । जसौ हळोद सु नीसर गयौ । तरै सेहर लूट लीनौ नै सेहर कोट पाडीयौ ।

—रा व वि

उ०—२ साथ भडारी थानसी, सकतै ग्राद कमध । ग्राया मार हळोदपुर, पय लाया छत्रबध ।—रा रू

हलोर—देखो 'हिलोर' (रू भे)

उ० – धाम धाम मगळ धवळ, हुए हगाम हलोर । छडक पगारा नीर छिन, घुरै नगारा घोर ।—र रू

हलोरणौ, हलोरबौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडबौ' ।

हलोरणहार, हारौ (हारी), हलोरणियौ —वि० ।

हलोरिग्रोडौ, हलोरियोडौ, हलोरयोडौ—भू० का० कृ० ।

हलोरीजणौ, हलोरीजबौ कर्म वा० ।

हलोरियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हलोरियोडी)

हलोळौ –देखो हिलोळौ' (रू. भे)

उ०—हाका तीरदाजा होय, हलोळा वाहरा हुवा, ग्रासै प्रथी सारी दीरा हरा हुवा येम । हीदू पती गळै नेत बाधीया धाहरा हुवा, जोव ज्यौ नाहरा ग्राभूमणा जेम ।—महादान महडू

हळोवळ, हळोवळां, हळोवळी-क्रि वि,—१ चारो ग्रोर, चौ तरफ ।

उ०—फजर गज पीठ पीचरग नैजा फरक, हळोवळ पाखरा हुडड भडै हरक । गुमर धर पतसाह सुभट सीलहा गरक, चवठठ हम लाट टला बोत तोपा चरख —रामलाल बारहठ

२ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ।

उ०—पराक्रया ग्रनळ चळ वळ सुपरि, वळवळ सुचळ हळोवळा । चक्रवति सतारि सिर चक्रियौ जाणि महण छिळियौ जळा ।

—रा रू.

हल्लौ-स पु —१ ग्राक्रमण, हमला ।

उ०—१ ग्रठ लाख दोय पोठिया रेत सू भराय नै हल्लौ कियौ सू ग्रठै वडौ झगडौ हुवौ ।—व दा

उ०—२ काई एक वीर पुरख मारीज गयौ नै लारै नाबाळक जाण सत्रुग्रा हल्लौ करणौ विचारियौ तठै उण वीर खतरी री स्त्री ग्रापरा बाळक रौ परिचै मत्रुग्रा नै करावै छै ।— वी स टी

२ हल्ला-गुल्ला, शोर गुल ।

हळौतरौ, हळौतियौ—देखो 'हळोतियौ' (रू भे.)

उ०—१ मेह तौ पे'ली हळौतरौ कराय नै गयौ सो गयौ ईज गयौ ।—रातवासौ

रू०—२ म्हनै इण वरस ई ग्रासार माडा निजर ग्रावै । सूना रै टाणौ हळौतियौ व्है जावै तौ पण टिकै ।—फुलवाडी

हळ्कौ—देखो 'हळकौ' (रू भे)

उ०—१ बोलो इणा पर काई ग्रसर पडै ? ग्रर ससार मै 'मा' सबद काई इतरौ हळ्कौ व्हैग्यौ है क उण रौ यू ग्रपमान कियौ जावै ।—ग्रमरचूनडी

उ०—२ मजाल है पेढी चढ्यौ कोई गिराक जेब हळ्की किया बिना नीचौ उतर जावै ।—ग्रमरचूनडी

(स्त्री हळ्की)

हल्कौ—देखो 'हलकौ' (रू भे.)

हल्द—देखो 'हळदी' (रू भे)

हल्दहात, हल्दहाथ-स पु —विवाह के समय वर या वधू के हल्दी लगाने की प्रथा ।

हल्दियौ-वि.—हल्दी के रग का, पीला ।

स पु —१ एक शुभ रग का घोडा । (शा. हो)

२ एक प्रकार का कामला रोग ।

हल्दी—देखो हळदी' (रू. भे.)

हल्दीघाट, हल्दीघाटी—देखो 'हलदीघाटी' (रू भे)

हल्ल-स स्त्री –१ ग्रावाज, शब्द ।

उ०—१ हुई गप्रमाण ग्रचाणक हल्ल, कमी हुग्र सैयद सेल कत्तल्ल । पडै कटि सीरस वीर पठाण, मद्राचळ चक्र चमू महराण ।

—गो रू.

उ० —२ धमधम बाम त्रमागळां, हुवै नकीबा हल्ल । सादा ग्राजै सम्माळी, भिनियाणी करनल्ल ।—महाराजा बलतावर सिंह ग्रलवर

२ सेना, फौज ।

३ देखो 'हल' (रू. भे.)

उ०—कद थे नाग विसासिया, मैंण लिया ग्रा भल्ल । मानसरोवर

नव गया, हरा सीखरा हुलत ।— प्रग्यात
४ देखो 'हळ' (रू. भे.)
हुलराणौ, हुलराबौ—देखो 'हालाणौ, हालबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हुलराउ हुलराउ मत करउ, हियडइ सात म देह । जै साचेई हुलरावउ, सूता पछताएसैह ।—ढो मा.
उ०—२ दुहाडत सेर हुलया रण धीठ । देख्या कर चक्र चत्या भ्रणदीठ ।—मे म
उ०—३ पिय पचह पेखता द्रुपदधीय कढिचीर मडीय । द्रोण विदुर गगेय गुरा न हुलिल कोहुगिग वदीय ।—सालिभद्र सूरि
उ०—४ वरस छत्रीसै जेठ सुद, तेरस सोम प्रभात । रोतासर तज हुलियौ, राव मुरद्धर तात ।—रा. रू.
हुलरणहार, हारौ (हारी), हुलरणियौ—वि० ।
हुलिग्रोडौ हरितयोड़ौ, हुलयोडौ—भू० का० कृ० ।
हुलीजणौ, हुलीजबौ—भाव वा० ।
हुल्लर फल्लर-स. पु. यौ.—१ टालमटोल, उपेक्षा ।
उ०—माहण सूग मिलाव मत, नेगा धरा हिमाब । कै हुल्लर-फल्लर करै, पावै कल्लर राब ।—बां. दा.
२ अतिथि-सत्कार ।
३ खुशामद ।
हुल्लाणउ—देखो 'हुलाणौ' (रू. भे.)
उ०—ढोलउ हुल्लाणउ करइ, धण हुलिवा न देह । झब झब झूबई पागडइ, डबडब नयण भरेह ।—ढो मा
हुल्लाणौ, हुल्लाबौ—देखो 'हुलाणौ, हुलाबौ' (रू. भे.)
हुल्लाणहार, हारौ (हारी) हुल्लाणियौ वि० ।
हुल्लायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हुल्लाईजणौ, हुल्लाईजबौ—कर्म वा० ।
हुल्लायोडौ—देखो हुलायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. हुल्लायोडी)
हुल्लीसक-सं. पु —१ वर्तुलाकार नृत्य ।
२ बहुत सी स्त्रियो द्वारा एक साथ किया जाने वाला वर्तुलाकार नृत्य ।
उ०—अर प्रथ्वीराज रै साथ वी महाकानी री तरफ हुल्लीसक वास री कटाक्षा देतो सांम्है चलायो ।—व. भा.
हुल्लौ—स पु —१ हमला, धावा, आक्रमण
उ०—१ कुमार पाछौ आइ ततकाल ही हुल्लौ करि दहिया 'जस-करण' नू मारि कर उर मैं आपरौ भडौ कुरायौ ।—व भा
उ०—२ रूडै सीधवौ राग गुडै, हुल्ला गज हल्ला । खळा उथल्ला खगा, बणै बगतर बरघल्ला ।— ऊ. का.
२ शोरगुल, हुल्ला-गुल्ला, कोलाहल ।
३ आवाज, पुकार, शब्द ।
उ०—१ ताहरा राजा कह्यो—'बहोत भला', ताहरा ए चढ हुल्लौ नार, धर दरवाजै आय लागा । नैणसी
उ० २ पछै गाम नू हुल्लौ किनौ । नेणसी
४ गुप्त की ललकार, चुनौती ।
५ काम काज, धधा, कार्य ।
उ०— १ दिन रै अधारै गगली दाया हुल्लै लागै । उण बगत म्हांनै अधारा मैं मुळकी जोरै ऐ नी ।—फुलवाडी
उ०— २ सेठ साभा नै हेला पाड पाड जगाया । कैवता—ऊठौ रे गेल्या ऊठौ, डाल सारै कोकर सूता हौ । धर रो हुल्लौ करौ । हाट बजार सूना पडग्या-खोसी रो ।— फुलवाडी
हव—स. पु [स] १ यज्ञ की अग्नि मे किसी देवता के निमित्त दी जाने वाली आहुति, बलि, चढावा ।
२ आग, अग्नि ।
३ यज ।
क्रि. वि. - १ अब, इस समय, अभी ।
उ० १ जगपत राण तणा जाळाहळ, जगत कथै अरजुनी जुधी । हर धणियर अधर हालसौ हव रावर आधार हुवौ ।
— महाराणा राजसिंह री गीत
उ०—२ म बीह रे सूरउ सूंळ मोकी, ढ लोलह राबै मि पूडी । मह मोराखी ताउ हव अगु सामि, भाजउं जिसिए कोरव सैन्य वाहि ।
—सालिसूरि
हवइ हवई—क्रि. वि —अब, अभी, इस समय ।
उ० —१ जा माठिग हउ फिरउ ससार लौ गुरह ध्यान करउ सविचार । अविनस भगतिइ मागउ योग, क्षण इकु रहै हवइ वियोगु ।—वसिग
उ०—२ हवइ कूकडा बोल्या, लगारेक नीर भी डोल्या । नींदइ झकोल्या, भूकी सभोगनी लोटया, स्त्री भरतार झगडोल्या ।
-रा मा म
हवण हवणि—स पु १ वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय, हवि ।
उ० दुै अग्र दीधौ दान हवणि । राजगसी
२ घृत, घी । (अ मा, ह ना मा)
हवट—स पु.— मोबा, मद्य ।
उ० तौ जाणा करनेग का, मे तू धगतोसा । हवटा अन कढू भडा, थट्टा नूजाणा ।—द. दा.
हवड—स पु —समय, वेला ।
क्रि वि —अब, अभी ।
हवडा, हवडा—क्रि. वि [सं अधुना] १ अब, अभी । (उ र.)
उ० - १ मैं जाणूं मारू हू हवडा दुस्यासन माहापापी । जेणै केश गहीनै आणी द्रुपदसुता सतापी ।—नळाख्यान
उ०—२ महीपति ! की माधव कहा, हृतउ हवडा तेह । ऊजेणी माहि आज छइ, पणि सही पाडसि देह ।—मा. का. प्र.
२ इधर ।

उ०—झाल झाझी झटका करइ, जिम जाणौ दव दाह। हूँ हरणी हवडा बलू, सार करिसिन ? नाह।—मा का प्र.

३ कभी-भी।

उ०—सासूसली आयु सोवन केरी, हवडा नही लीजइ बीजी अनेरी, बे कर जोडी वरराज मागइ, सासूसली आपता वार न लागइ, अहो सीआलक बोलि।—व स

हवडौ-क्रि वि [स अधुना] १ अब, अभी।

उ०—गूजर फतै नदगिर गोरभ, जुड काबल वळ कोध जुवौ। कीधा सामा जेर कलासुत, हवडौ कै जग जेठ हुऔ।—द दा

२ देखो 'हिवडौ' (रू. भे)

हवणार—देखो 'होणहार' (रू भे.)

उ०—पछाण्याय जीद वूडौ पीहवाल। वूहौ राव हेकल काढ वै गाळ। हवौ वित्त लाग घणू हवणार। वुरै मुख कीनव जीद जवार।—पा. प्र

हवणौ-क्रि वि —इस समय, अब।

उ०—आगै बरवा अच्छरा, उर धरता अनुराग। हवणौ का अलियळ हुआ, वारवधू वव वाग।—बा दा.

हवणौ, हववौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू भे.)

उ०—आ बात हवण की नही।—नैणसी

हवद—देखो 'हौद' (रू. भे)

उ०—१ राणीसर रै बुरज ऊपर अरट मडाय नै नाळा चलाय नै अरट नग ४ रा कुडीया कराय फतैमैल रा हवद मैं पाणी लावण वास्तै कराया।—नैणसी

उ०—२ धण रै तो आगण हवद खिणावौ साहिब भूलण रै मिस आवो रे। हाजी रै ऊमळ दतीरा साहिब केण बिलमाया रे।

—लो. गी

२ देखो 'हौदौ' (रू. भे.)

उ०—१ रुहल्या पदचार सवार रथा, हथियार छतीस प्रकार हथा। हुबि रोल कईक चढ्या हवदा, रण कारण जोस बढ्या रवदा।

—मे म

उ०—२ जगी हवद जडिया जम जाळा, पाच हजार गयद पखराळा।—सू प्र

हववौ —देखो 'हौदौ' (रू. भे.)

उ०—हाथिया तणा जगी हववा मै, रोपू सेल घडा रवदा मैं।

—सू. प्र.

हवदाळौ-वि.—अबारी या चारजामा युक्त।

उ०—वहता घण गोळा विकराळा। हाथी उडै जगी हवदाळा।

—सू प्र.

हवद्द—१ देखो 'हौदौ' (रू. भे)

उ०—हाथिया मेघ डबर हवद्द, जगी कसि हवदा विखम जद्द।

—सू. प्र

२ देखो 'हौद' (रू. भे)

हवद्दौ—देखो 'हौदौ' (रू भे)

उ०—सेखावत हाथिया हवद्दा मै सेत बायौ, कूडि कै ठिकाणै बखतेस कामि आयौ।—खि व

हवन-स पु [स] १ घी, जौ, तिल आदि पदार्थो का मिश्रण कर उन्हे मन्त्रोच्चारण के साथ, किसी देवता के निमित्त अग्नि मे डालने की क्रिया, होम, यज्ञ।

२ चढावा, बलि, नेवैद्य।

३ आह्वान, आमन्त्रण, प्रार्थना।

४ ललकार।

हवनिया—स पु—चार मास का समय।

हवनीय—वि —हवन करने योग्य।

स. पु —घी, घृत।

हवरू, हवरू—क्रि वि —अभी, इस समय।

उ०—ताहरा नरसघ घरा वताना कहायौ, 'पैहलोकै तो म्हाहरौ निबाह थौ सु हुसी। म्हारी धरती तुरका हेठै छै। दिन म्हारौ उपर घणी कीजौ। हवरू तो म्हांनू त्रिखो छै।

—राजा नरसिंघ री बात

हवल—देखो 'हवाल' (रू. भे)

हवलदार—स पु—१ सेना का एक छोटा अधिकारी जिसके अधीन थोडे से सिपाई होते है।

२ राज्य कर की ठीक ठीक वसूली तथा फसल की निगरानी के लिये तैनात किया जाने वाला अधिकारी।

रू भे —हवालदार।

हवळै, हवलै—देखो 'हळवै' (रू भे.)

उ०—१ वहिया पथ डाक पाछा न वळै। हय ठाभय चद कह्यौ हवळै।—पा प्र

उ०—२ ओछा कुळ मै ऊपना, दोभा डावडियाह, हवळै बोलै होट मैं, मूरख मावडियाह।—बा दा

हवलै हवलै—देखो 'हळवै हळवै' (रू. भे.)

हवल्ल—देखो 'हवाल' (रू भे)

उ०—चपा मार्णौ निर चढै, आंबा भखै अवल्ल। अरबद सू अळगा रहै, ज्यारा कूण हवल्ल।—डाढाळा सूर री बात

हववाह—देखो हव्यवाह' (रू. भे)

हवा—देखो 'हो' (रू भे)

उ०—माणस हवा त मुख चवा, म्है छा कूंझडियांह। प्रिउ सदेमउ पाठविसु, लिखि दे पखडियाह।—ढो. मा.

हवाभाव—देखो हावभाव' (रू भे.)

उ०—धर कामची उर धाक, अपछर छव धरै, हवाभाव कर अदुहेर बोली सुण हरै।—र. रू

हवा-सं स्त्री. [अ.] १ समस्त प्राणियों के लिये परमावश्यक एक तत्व जो सूक्ष्म प्रवाह रूप से समस्त भूमण्डल मे व्याप्त रहता है। यह पंचभौतिक पदार्थों मे से एक है, वायु, पवन।

उ०—१ उण रा डील नै पतवाणिया रहनै पेटी जगामों के भी आबी भाग, पाणी अर हवा रै पाण नी जीवे, आपरा निरधार रै गापै जीवै है।—फुलवाड़ी

उ०—२ हद चाटी हालता, हवा हालत रद होवै। तवि धूनी सगतास, जिका कानी रवि जोवै।—मे. म.

२ झपट, झोंका।

उ०—झरोखा, जाळिए, छाणिएं पवन री हवा पड़ि नै रही छै। औ महल केसर गुलाब सूं छाटीजै छै।—रा सा. सं.

मुहा —हवाई किल्ला बणाणा= कल्पना मे महल आदि बनाना, मन मे वैभवशाली होने के भाव आना, ख्वाब देखना।

हवाई बाता करणी=-निराधार या निर्मूल बात कहना।

हवा ज्यूं हळको=अत्यन्त हल्का, जिसका वजन इतना कम हो जो देखने मे आश्चर्यजनक लगे।

हवा भखणी=वायु के आधार पर जीवन यापन करना।

हवा मैं उडणी-बिना सिर-पैर की बाते करना, व्यर्थ की शेखी बिखाना, किसी बात को महत्व न देना।

हवा मे वाता करणी=स्वगत कथन करना, अकेले बातें करना, बडबड़ाना।

हवा मैं मे'ल बणाणा=देखो 'हवाई किल्ला बणाणा'।

हवा होणो=अत्यन्त तीव्र भागना, चपत हो जाना।

३ वातावरण।

उ०—कळजुग री हवा मैं सांस लेवणिया क्यूं कळजुग री धरम नी निभावै। वै हाल ताईं साच जैडा पाप री क्यूं गोद करै।

—फुलवाड़ी

४ धुन, सनक।

५ भूत, प्रेत।

६ मातृका का प्रभाव।

मुहा.—हवा वहणी=किसी बालक के शरीर म मातृका का प्रभाव हो जाना।

हवाइ, हवाई-सं. पु १ एक प्रकार का आग्नेयास्त्र।

उ०—१ हथनाळि हवाई कुहक बाण याकी सोर आघात होण लागो वीर जु वडा वडा जोधा। त्याकी वीर हाक होण लागी।

—वेलि टी.

उ०—२ धर मुहर तोपखानां सधीर, ज्या पीछ अरांना गज जजीर। सजतोह फिरंगी लिया साथ, हथनाळ हवाई बांण हाथ।

—वि. स.

२ एक प्रकार की आतिशबाजी।

उ०—सीकोतरि मणहल सनाई, छूटै जिण हथनाळ हवाई।

—सू प्र.

३ चार मास या दो ऋतुओं का समय।

वि.—१ हवा का, हवा सबधी।

२ हवा मे चलने वाला।

३ हवा से छोड़ा जाने वाला।

४ व्यर्थ निर्मूल, निरर्थक।

५ असत्य।

हवाई-जंत्र-सं पु - तोप।

उ०—जोगणी उबकै पत्र छुबकै हवाई जत्र, तोपि छकै धुबकै राटकै गजा लोथ।—राजा बखतसिंघ रो गीत

हवाईमे'ल-सं. पु.- १ काल्पनिक महल।

२ देखो 'हवामैल' (रू. भे.)

हवाचक्की-सं. स्त्री. - अनाज पीसने की वह चक्की जो हवा के प्रभाव से चलती है।

हवादार-वि. [अ.] जिसमे हवा के आवागमन की पर्याप्त गुजाइश हो, वातायनो से युक्त।

हवामहल, हवामैल-सं. पु —वह महल जिसमे, हवा आने के विशेष साधन, वातायन झरोखे आदि हों।

उ०—१ बादळी बरसै क्यू नी ए। बीजळी चमकै क्यूं नी ए। म्हारा भवर सा रा हवामहल मैं च्यो सूखी ए।—लो गी.

उ०—२ ओर गढ मै हवामैल हजार बाजै तिको करायो। ओर कपड़ां री कोठार करायो।—नैणसी

रू भे —हवाईमैल।

हवाल-सं. पु. [अ. हाल] १ दशा, अवस्था, हालत, गति।

उ०—१ देख हवाल भाल कर देवी, चाल गराल चलाई। गोखम पुरै 'किसन' हुय गाढो, पूरण अड़चल पाई।—मे म.

उ०—२ तरै इण हीज हवाल परणाया, नै मैं थारी चाकरी कीवी। परमेसर आछी कीवी, आपरा चित ऊभा, नै गोनूं जस आवणहार।—नैणसी

२ दुर्दशा, बुरा हाल, शोचनीय दशा।

उ०—१ नरसिंघ नु खबर पोहती। सुपीयारी पाछी आई। तरै नरसिंघ घणा हवाल कीया।—नैणसी

उ०—२ तिण भारमल नु तो रायमल पलतोत मारियो नै कूंपेजी मेरा माहे घण हवाल कीया।—राव मालदे री बात

३ हाल-चाल, हालात।

उ०—म्हारी बाईजी री काई छै हवाल। राजिंद चालै छै चाकरी।

—रसीले राज री गीत

४ समाचार, खबर।

५ विगत, विवरण।

६ परिणाम ।

रू भे —हवल, हवल्ल, हुवाल ।

हवालगीर–स पु [फा] एक अधिकारी ?

उ०—ग्राठू मिसल कै हवालगीर केन धाए । फरासू नै ग्रावासू वीच विछायत वणवाए ।—सू प्र.

हवालदार—देखो 'हवलदार' (रू भे)

उ०—हाजरिया हवालदार एका तागा तथा वेंल्या री कतार सजाई । बीन-बीनणी खातर रूडो रुणझुणो रथ लाया खडो कियो ।—दसदोख

हवालात–स. स्त्री —१ जेल, कैद खाना ।

उ०—थाणादार एक वजनी गाळ ठरकाय दी ग्रर कागदिया पूरा करनै मुलजिम नै हवालात मैं बद कर दियो ।—ग्रमरचूनडी

२ नजर बदी ।

हवाली-मुवाली–स पु यौ.—परिग्रह ।

उ०—कुवर राजा रै मुजरै गयौ, ग्रागै जाय बैठो । इतरै सारा ही हवाली मुवाली मुजरो कर बैसै छै ।—पलक दरियाव री बात

हवाले, हवालै–वि —[ग्र हवाल'] १ सुपुर्द ।

उ०—१ ग्रबु नुं मेहमद मुराद कह्यौ—राजा रा लोग सु थै ग्रसनाव छो । इणा री रदल-बदल थै करो । पछै राजाजी रा देस रा सुनार पकडीया था सो 'ग्रबु' रै हवालै कीया ।—नैणसी

उ०—२ माया दोरी घणी भेळी करी । यू कमसला री धमकीया सू वारै हवालै करदा तौ कीकर पार पडै ।—फुलवाडी

क्रि. वि —१ ग्रधिकार मे, कब्जे मे, ग्रधीन ।

उ०—१ साकर सूरावत । वडो राजपूत राव मानदेव रो । साकर रै हवालै ग्रजमेर रो गढ थो ।—नैणसी

उ०—२ सवत १५९४ रावजी जैतमालोत कना सू सिवाणो लियो जद मागळिया देवा रै हवालै कियो ।—बा दा ख्यात

२ वश मे, काबू मे ।

उ०—१ ताहरा राजा कह्यौ—दैपाळदै बिना म्हारै घडी एक सरै नही । वासनी सरम सारी बात री थाहरै हाथ हवालै छै ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ जेर हवालै जाण चढावै गढ्ढै चौडै । बेडी लीना बहै खास पग धरदे खोडै ।—ऊ का

रू भे —हुवाले, हुवालै ।

हवालौ–स पु. [ग्र हवालः] १ उल्लेख, वर्णन ।

उ०—बात सुणावती वगत बाबा रो ई काळजो चिपग्यो । थोडी ताळ रुकनै कैवण लागी—उण वगत वा दोना रा मन माथै काई बीती म्है नाढ ग्रादमी उण रो कीकर हवालो दै सकू ।—फुलवाडी

२ उदाहरण, मिसाल, दृष्टान्त ।

उ०—ग्रथा मैं जठै कठै ही रूढी-रिवाजा री वात ग्रावै, पानो मोड देवै ग्रर ग्रापरै लेखा मैं हवालो देवै ।—दसदोख

३ सदर्भ, प्रसग ।

४ प्रमाण ।

५ हवलदार का कार्यालय ।

६ ग्रधिकार, कब्जा ।

७ हस्तान्तरण, सुपुर्दगी ।

८ खालसे का गाव ।

९ कर, लगान ।

उ०—१ गुनहगारी ग्राप लीवी ग्रोर सारै परगनै रै सिर हवालो ठहरायो ।—*ठाकुर जेतसी री वारता*

उ०—२ तद कही भली बात छै पण बरस एक रो माह रो हवालो दोनू फसला रो देवो ।—ठाकुर जेतसी री वारता

१० एक विभाग जो भूमि-लगान वसूल करता था । (प्राचीन)

रू भे —हुवालो ।

हवास–स पु —पुष्प, फूल । (ग्र मा)

२ घोडा, ग्रश्व ।

रू. भे —हवास ।

हवि, हवि–क्रि वि. [स ग्रथवा, प्रा ग्रहवा] १ ग्रब ।

उ०—१ हवि पकवान ग्राणि तै केहवा वखाणि सतपुडा खाजा, तुरत कीधा ताजा, सदला नि साजा, मोटा जाणी प्रासादना छाजा ।

—व स

उ०—२ हवि ए उपकार करि, तेहनि पासि परवस, [जूठा एह मुझ गुण] कहीनि चित्त ता तेहनू हरु ।—नळाख्यान

२ ग्रग्नि, ग्राग । (डि. को)

रू. भे —हवी ।

स पु [स हविस्] १ यज्ञ की ग्रग्नि मे मत्र पढ कर डाला जाने वाला पदार्थ, हवन सामग्री ।

उ०—होम जजै हवि कवि हुतासण, सेवत स्याम क्रितै दर भासत । पिड किता हद जोग प्रकासण, पूरक कुभ करै चक ग्रासण ।

—रा. वी गी.

२ घृत, घी । (ग्र. मा.)

हविख–स. पु. [स हविष] घी, घृत ।

वि [स हविष्य] हवन करने योग्य पदार्थ ।

हवियोडौ—देखो 'होयोडौ' (रू भे)

(स्त्री हवियोडी)

हविवाह, हविवाहण, हविवाहन—देखो 'हव्यवाहन' । (ह ना मा.)

हविस—देखो 'हविस्य' (रू भे)

हविस्मती–स. स्त्री [स हविष्मती] कामधेनु ।

हविस्मान–स पु [सं हविष्मत्] यज्ञ करने वाला ।

हविस्यद–स पु. [स. हविष्यंद] विश्वामित्र के पुत्र का नाम ।

हविस्य–वि. [स हविष्य] १ हवन करने योग्य ।

२ जिसकी ग्राहुति दी जाने वाली हो, बलि, हवि ।

रू. भे.—हविस।

हुविस्यान्न-स. पु. [सं. हविष्यान्न] व्रत में खाने योग्य पदार्थ, फलाहार, शाकाहार।

हुवी—देखो 'हवि' (रू. भे.)

उ०—चिति धरइ जिग चक्रवी, हुवी अंधारी राति। रवि-वचइ सायर वहइ, तपन न मूंकइ साति।—मा. का. प्र.

हुवीवाह—देखो 'हव्यवाहन' (रू. भे.)

हुवु-क्रि. वि.—अब।

उ०—प्रविलोकी उत्तम हसिउ, माधव मनि संतोस। हुवु हरिख हेला-माहिं, पामिउ समय-प्रदोस।—मा. का. प्र.

हुवे—देखो 'हवे' (रू. भे.)

उ०—हुवे न मेरह तू स्वामी मारो, दादू सन्मुख सेवक तारो।

—दादूवाणी

हुवेजी-स. स्त्री.—छाछ आदि के साथ बनाई हुई चने की दाल।

हुवेली-स. स्त्री. [अ.] पत्थर या ईंटों का बना हुआ बड़ा मकान जिसमें कम से कम दो मंजिल होती है, भवन, महल, प्रासाद।

उ०—१ राजाजी तो आपरी हुवेली बैठा रह्या। पछै फिदाईखान सारा मु साभआया पण की माने नहीं।—नैणसी

उ०—२ उण रै आया दूजै वरस ई हुवेली री नींव दिरावूंला। चार पेडी प्यावुवा दिरावूंला। बीनणी री ओडी सोना सैणी पैरनै भिरोखा मैं बैठेला जद जायनै मिनख जमारो सुफळ व्हैला।

—फुलवाडी

रू. भे.—हेली।

हुवेसरूथरेन-स. पु. [फा.] पारसियों के अनुसार सायंकाल से बारह बजे रात्रि तक का समय। इसमें वे चौथी बार नमाज पढ़ते है।

हुवै-क्रि. वि.—अब, अभी।

उ०—आलिम चिंता अति घणी, पदमणी पेखण प्रेम। गढ हाथै आवै नहीं, कहो हुवै कीजै केम।—प. च. चौ.

स. पु.—१ स्वीकृति सूचक शब्द, हां।

उ०—ताहरा गोरै कह्यौ—बावळजी! देखो छो! मालण रा पग ठाहै पड़ै न छै। सु जांणां सांगमराव री बीज छै। ताहरा बावळ कहै—हुवै हुवै! माळी रै घरै सांगम रावजी रो डेरो हुतो।

—नैणसी

२ होना क्रिया।

उ०—ताहरा कहियौ—बेटा हरदास! देखे, सेरेरी मा री टापरो उपाडतो हुवै नी?—नैणसी

हुव्य-स. पु. [सं.] १ घृत, घी।

२ चढ़ावा, नैवेद्य।

उ०—द्वि जन्म पाय हुव्य कव्य हुव्य वाद मैं वहै।—ऊ. का.

३ हवन सामग्री।

वि.—हवन करने योग्य।

हुव्यवाह, हव्यवाहण, हुव्यवाहन-स. स्त्री. [सं. हव्यवाहन] अग्नि, आग।

रू. भे.—हव्यवाहण, हवाह, हविवाह, हुवीवाह।

हुसब, हुसम—देखो 'हुसाब' (रू. भे.)

उ०—१ वस डेरो पह वरो, भाट जाळंधर भाखै। हुसब भाट सभि हुवै, पथ गुजरात पाखै।—सू. प्र.

उ०—२ पातसाह रा डेरा हुसम रमत तमासा हवा सु आणि थांणै दाखिल कीया छै।—रा. सा. सं.

हुस-स. पु. [सं. हास्य] हंसी, विनोद, परिहास।

हुसणि, हुसणी-स. स्त्री.—हंसने की क्रिया या भाव, हंसी, मुस्कान।

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर पंच। चितवणि हसणि लसणि गति सकुचणि, सुंदरी धारि देहुरा सच।—वेलि

हुसणौ-स. पु.—हंसने की क्रिया या भाव, हंसी।

उ०—रहणै दुरा गैं ई हुसणो आवणो।—अमरचूंनड़ी

हुसणौ, हुसबौ—देखो 'हसणौ, हसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हसण निमत करिस दामोदर, भाखण तुभ हुसै गिरवर धर। अहर निमत करिस अघ वारण, मुळकै तुभ प्रेम मधु मारण।

—ह. र.

उ०—२ हड हड हुसत मसत मदिरा मद, भड हड सेर धुजावै। खड चड चाव जोगणा चोसट, धड भड भूमि धुजावै।—मे. म.

हुसणहार, हारौ (हारी), हुसणियौ—वि०।

हुसिओड़ौ, हुसियोड़ौ, हुस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हुसीजणौ, हुसीजबौ—भाव वा०।

हुसत—१ देखो 'हुरत' (रू. भे.) (अ मा, हु नां मा)

२ देखो 'हस्त' (रू. भे.) (हु नां मा)

उ०—१ जुध ताकळ परठै जैताउत, अरि खागिया सहित आयांण। आंकुस काळा तणौ सिर ऊपर, सांकै हुसत मानै सुरताण।

—कुसळो वीठू

उ०—२ मसत हुमस बहु भात द्वार भूपै उळवाहुण। बाला हींसै बाज वगौ जाणै रवि वाहण।—बा दा.

हुसतणी—देखो 'हुरितनि' (रू. भे.)

उ०—१ चगार सकार हुसतणी चायो, बहु सकार संखणी बतायो।

—र. ज. प्र.

उ०—२ सठै काळबूत हुसतणी रै फरस कर नै छिबतरी खाड मांहि पडै छै, पछै लोह साकळ रा प्रास नांख नै तिकै हाथी पक-डीजै छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ सबाग भाग सुंदरी अनुराग लाग खातरी, हुसतणी चित-रणी पदमणी, घणी जणी वणी ठणी।—पना

हुसतनखतर, हुसतनखत्र, हुसतनखित्र-स. पु. [सं. हस्त-नक्षत्र] खुले हुऐ हाथ की आकृति का एक नक्षत्र विशेष।

उ०—पछै इण कोटडी ठौड राग कोटडी री भगाई। राव वरसिंघ दुदै आ ठौड समत १५१८ चैत्र सुदी ६ नु हसतनखतर कहै छै बासो।—नैणसी

हसतबध—देखो 'गजबध'।

उ०—सक हसतबध सगाह, सग दिया महमद साह। उरि वेण प्रीत उचारि, सुख बार बार समारि।—रा रू

हसति, हसती—देखो 'हस्ति' (रू भे) (ना डिं को, ह ना मा)

उ०—१ पदमिणि रखपाळ पाइदळ पाइक, हिलव्रळिया हुलिया हसति। गमै गमै मदगळित गुडता, गात्र गिरोवर नाग गति।—वेलि

उ०—१ हाले जिण अगर घूमना हसती, ताता गयण भूमता तुरग। पैदल प्रबळ रथा ह्लदगगी, चतुरगी अत फौज सुचग।—र रू

उ०—२ हसत्या रै हादै राणी काछवौ जी म्हारा राज।—लो गी

हसतीबद, हसतीबध—देखो 'गजबध' (रू भे)

उ०—१ गजै भुगती कण घर रतनौ, धजबद खाटण नवी धरा। बीजा होड करै कुण बापौ, हसतीबद दळसीग हरा।—ठाकुर महेसदास री गीत

उ०—२ ग्राम धरै विधाधर आया, फत्रि सुज हसतीबध कहया।—रा रू

हसतेजामा—प पु—एक प्रकार का सरकारी कर।

हसत्ति, हसत्ती—देखो 'हस्ति' (रू भे)

उ०—१ दिग्रा वधारा देस दै, हैवर द्रव्व हसत्ति। पातिसाही था ऊपरा, यू कहिग्री असपत्ति।—वचनिका

उ०—२ भाळ विसाल सिंदूर सुसोभित, हाल मराळ हसत्ती। रूप अनूप तेज मय राजत, मिलक पलक मदमत्ती।—मे म

उ०—३ ज्या कर जोड ऊभा समजत्ती, ज्या आगै गडि पडै, महा मैंमत हसत्ती।—जगो खिडियो

हसन—म स्त्री. [स.] १ हसने की क्रिया या भाव, हसी।

२ मजाक, दिल्लगी, विनोद हास-परिहास।

रा पु—३ अली के दो बेटो मे से एक, जिसका शोक मुहर्रम के दिन मनाया जाता है।

हसब—अव्य. [अ] अनुसार, मुताबिक।

हसम—स पु [अ] १ सेना, फौज।

उ०—१ हयनाळ बगण आरब हसम, माहुत चढिया मैंगळा। देवळा तरा धर करि दुगम जगम जूथ बीभाजळा।—सू. प्र.

उ०—२ मुलक तेवणौ नू लसकर सेवक हसम सामान सै चाहिजै पण मारा सू बुद्धि बळ नू भलौ जाणी जै।—नी प्र.

२ अश्व, घोडा।

उ०—तिण वेन नदी ऊपर वडौ जगत छै। तिण मैं प्रोब, फडब री वडी ऊगम छै। तिका ठौड जोय आया। जाणियौ-गाहरौ हसम याट अठै चरसी।—नैणसी

३ लश्कर, समूह।

उ०—सुक्त इमारत मोटा बाग वैकुठ जिसा रो धर बाग रैयत रा माही चाकरा हसम नू उतरणौ न देवणौ।—नी प्र

४ नौकर चाकर, सेवक।

उ०—१ ओर भार सरब हसम लोक मोहडै कनै धातीयो पठाणा तो डेरी जाय कीयौ छै मर रात पहर गई। घोडा नू रातब दे दाणौ-दाणौ कर तै गढ माहा नीसरीया।—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ राजपूत वट रा आचार देख नै महाराजा राजेसर अजमेर रै थाणौ राखेग्रा छै। हसम हुकम सापीग्रा छै।—रा सा स

५ भाग्य।

उ०—हिंदुग्रा मौड राठौड मोटै हसम, पुहवि पति माहि परताप प्राभौ। अनूपसिह राजवी अटक कटके अडिग, आप भीजो करै जास आभौ।—ध. व ग्र

६ वैभव।

रू. भे—हसब, हसम, हसम्म, हसम्मि, हसम्मी, हसीम, हुम्मम, हासम।

हसमपत, हसमपति, हसमपती-स पु—सेनापति।

उ०—कमद मुरड कुसळेस जम प्रथी चळ चळ करण, खलपहा चारवा वण साव खारी। देवसा कोय कण दनै बळै दाखसा। हसमपत धूकळा करण हारी।—ठाकुर कुसाळसिंध जी री गीत

हसमस—स पु—१ धक्का, प्रहार।

२ उत्साह जोश।

उ०—१ हिण्डइ हसमस करता, प्रकट थिया थण बेउ।—प्राचीन फागु-सगह

उ०—२ रज रमी रूप हारतउ गगन आछादिउ, आदित्यकिरण निरुद्ध हुआ, हसमस हयदलै हेबारवि हरिण कम्हा।—व स

हसमसणौ, हसमसबौ—क्रि स.—१ धक्का देना, धकेलना।

२ उत्साह दिखाना, जोश दिखाना।

उ०—गयघडगुड गन्मडत धीर धयवड धर पाडउ। हसमसता सांमत सरसु सरसेलि दिखाडइ।—सालिभद्र सूरि

हसमसणहार हारौ (हारी), हसमसणियो—वि०।

हसमसिओडो, हसमसियोडौ, हसमस्योडौ—भू० का० कृ०।

हसमसीजणौ, हसमसीजबौ—कर्म वा०।

हसमसियोडौ—भू का कृ—१ धक्का दिया हुआ, धकेला हुआ।

२ उत्साह दिखाया हुआ, जोश दिखाया हुआ।

(स्त्री हसमसियोडी)

हसम्म, हसम्मि, हसम्मी—देखो 'हसम' (रू भे)

उ०—१ गाजणाइ तणा चढिया गरट्ट, थनवाह पईठा विढिय थट्ट

हालिया सत हद बाजि हुम्म, हिदुवद राव सांम्हा हसम्म ।
—रा. ज. सी

उ०—२ पाए हसम्मि हालइ पयाळ, फडफडइ नाग फाटइ फुणाळ। राया राव अरि गसुर राइ, जळराइ जाणि मेल्हो मजाद ।
—रा ज. सी.

हसर—स पु [अ. हजर] रिसाले के सवारों का एक भेद ।

हसाइ, हसाई—स स्त्री १ हंसी, मजाक ।
  २ अपकीर्ति ।

हसाणौ, हसाबौ—देखो 'हसाणौ, हसाबौ' (रू भे.)
  हसाणहार, हारौ (हारी), हसाणियौ—वि० ।
  हसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
  हसाईजणौ, हसाईजबौ—कर्म वा० ।

हसाब—वि १ उचित, ठीक, श्रेष्ठ, उत्तम ।
  उ०—तुरीया रोटी अरस की, आधी मिळै हसाब । जौ चाहै लौ साबती, तौ तुझि नहीं सबाब ।—मनुभववाणी
  २ देखो 'हिसाब' (रू भे.)
  उ०—एकर पैर मोल चिडघा रै सुगनै रा रिपियै राइकड़ै रै हसाब सूं देणा पडसी ।—वसवोय

हसायोड़ौ—देखो 'हसायोड़ौ' (रू भे.)
  (स्त्री हसायोड़ी)

हसारथ—स. स्त्री—हसी ।
  उ०—मानवउ बोल वेई मीयामण, हग कान्हड़दे राइ । पहसी प्राणि असुर मारेज्यौ, रखे हसारथ थाइ ।—का दे प्र.

हसावणौ, हसावबौ—देखो 'हसाणौ, हसाबौ' (रू भे.)
  हसावणहार, हारौ (हारी), हसावणियौ—वि० ।
  हसाविओड़ौ, हसावियोड़ौ, हसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
  हसावीजणौ, हसावीजबौ—कर्म वा० ।

हसावियोड़ौ—देखो 'हसायोड़ौ' (रू भे)
  (स्त्री हसावियोड़ी)

हसि—देखो हसी' (रू. भे)

हसित—स पु.—पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक ।
  वि—हसा हुआ, खुश, प्रसन्न, हर्षित ।

हसियसद्द—स पु.—हास्य शब्द ।

हसी—देखो 'हसी (रू भे)
  उ०—कुसलराय पूछिऊ तव हसी हस वाणी वदि । विरहि वेदन जणावी मि सबल सामनि रिदि ।—नळाख्यान

हसीम—देखो 'हसम' (रू. भे.)
  उ०—सूरा हसीम, भारथ भीम, नरपति नीम । सेनाधिपत, हमीर मत, सातलह चित ।—अ वचनिका

हसेर—स. पु—एक वृक्ष विशेष, पेड़ ।
  उ०—हरड़ हरडि हीमजी, हरडा हलग्रह बेर । हरमी हाथुडी हरी, हुफट हुरी हसेर ।—मा का प्र

हसौ—स पु—हसने की क्रिया या भाव, हसी विनोद, हास्य ।
  उ०—इण रास्ते गहणा रै मेळी नाळेर राखिया सो देखनै इण री हसी री कारण औ है कै नागद तौ सतौ है और नागदोई सूरवीर है इण सुरो री हसौ आयौ । —वी स टी

हस्त—स. पु. [स] १ कुहनी से अंगुलियों तक का भाग, कर, हाथ ।
  २ कुहनी से अंगुलियों तक के हाथ की लंबाई का एक माप, परिमाण ।
  ३ तेरहवां नक्षत्र जो हाथ के आकार का व पांच तारों का होता है । (ना मा.)
  ४ हस्त लिपि ।
  ५ सबूत, प्रमाण ।
  ६ सहायता, मदद ।
  ७ नृत्य का एक भाग ।
  ८ वसुदेव के रोचना के गर्भ से उत्पन्न पुत्रों में से एक पुत्र ।
  ९ देखो 'हस्ति' (रू भे) (अ मा.)
  रू. भे.—हसत ।

हस्तउडु—सं. पु [स हस्त-उडु] पांच तारों वाला, हाथ के आकार का एक नक्षत्र ।

हस्तक—स पु. [स] १ हाथ, हस्त ।
  २ संगीत का एक ताल ।

हस्तकौसळ—स पु [स हस्तकौसल] हस्त लाघव, हाथ की सफाई, हस्त कला ।

हस्तक्रिया—स. स्त्री [स] १ हाथ के कार्य की निपुणता ।
  २ हाथ से इन्द्रिय संचालन ।

हस्तक्षेप—स पु [स.] किसी कार्य में या बात में किया जाने वाला दखल ।

हस्तगत—वि. [स] जो हाथ में आ गया हो ।
  क्रि वि.—अधिकार में, काबू में ।

हस्तग्रह—स पु [सं.] पाणि ग्रहण, विवाह संस्कार ।

हस्तणी, देखो 'हस्तिनि' (रू भे)
  उ०—सुविचारी राघव कहै, स्त्री की च्यारू जाति । पदमणी चित्रणी हस्तणी संखणी ऐसी भांति ।—ग ज. चौ.

हस्तत्राण—स पु [स हस्तत्राण] अस्त्र शस्त्रों से रक्षा के लिये हाथ में पहना जाने वाला दस्ताना या कवच ।

हस्तनक्षत्र, हस्तनखत्र—स पु [स हस्तनक्षत्र] पांच तारों वाला, हाथ के आकार का एक नक्षत्र ।
  उ० हस्तनखत्र जांणौ चन्द्रमा कै बीचि बैठ्यौ छै । दूसरौ भाव । जांणौ आधा कमळ कै विखै, अलि कहता भ्रमर ताहकी पकति फिरी छै ।—वेलि टी.

हस्तनी—देखो 'हस्तिनी' (रू. भे)

उ०—हस्तनी चित्रणी कर सखिनी, पुहवो बडी पदमावती। इम भणइ विप्र साचउ बछण, गातमसाह अलावदी।—प. च. चौ.

हस्तपुर-स.—देखो 'हस्तिनापुर'। (रू भे)

हस्तपुरपत, हस्तपुरपति-स. पु [स हस्तिनापुर-पति] युधिष्ठिर का एक नामान्तर। (अ मा)

हस्तबध—देखो 'गजबध' (रू भे)

उ०—राजा अगर री वास सु मन मैं विचारियो-जै एथ कोई हस्तबध राजा छै। कै पवनबध योगी छै। तौरै अगर बळै छै।
—चौबोली

हस्तभुजासण, हस्तभुजासन-स. पु—योग के चोरासी आसनो के अन्तर्गत एक आसन जिसमे बाये पाव को हाथ के कधे पर चढाकर उसी हाथ से गदन को पकडा जाता है। इसे वामहस्त भुजासन कहा जाता है। इसके विपरीत करने पर दक्षिणहस्त भुजासन होता है। दोनो साथ करने पर हस्तभुजासन कहा जाता है।

हस्तमैथुन-स. पु [स] हाथ से किया जाने वाला मैथुन।

हस्तरेखा-स स्त्री [स] हाथो की रेखा। (सामुद्रिक शास्त्र)

हस्तलक्षण-स. पु [स] हथेली मे पडी रेखाओ के आधार पर शुभाशुभ भाग्य का निर्णय।

हस्तलाघव-स. पु [स] १ चौसठ कलाओ मे से एक।

२ हस्तकौशल।

हस्तलिखित-वि [स] १ किसी कवि, पडित या विद्वान के हाथ का लिखा हुआ।

२ हाथ से लिखा हुआ।

हस्तव्रक्षासन, हस्तव्रखासण, हस्तव्रखासन, हस्तव्रिक्षासण, हस्तव्रिक्षासन-स पु [स हस्तवृक्षासन] योग के चौरासी आसनो मे से एक जिसमे दोनो हाथो के ठेउनी से मोडकर पजे को पृथ्वी पर लगा कर शिर को जमीन पर रख कर हाथ के आधार से उल्टे खडे रहना होता है।

वि वि.—केवल सिर से खडे रहकर हाथ के आधार को छोड देना मुक्त हस्तव्रिक्षासन कहलाता है।

हस्तसकलिका-स स्त्री [स] हाथ का एक आभूषण विशेष।

उ०—अभ्रमेसक त्रुटक सकलिक स्रवणपीठ स्रवणपाल वैस्टिक हस्तसंकलिका पादसकलिका उतरिका पादक ग्रैवेयक ..... इति आभरणानि।—व स

हस्तसूत्र-स पु [स] रक्षा बन्धन।

हस्तागुलक—स पु—एक प्रकार का वस्त्र। (व.स.)

हस्ताक्षर-स. पु [स] किसी प्रकार की लिखावट या लेखन के नीचे अपने हाथ से लिखा जाने वाला अपना नाम, दस्तखत।

उ०—प्राणात पहूमि परिणामयस्य, राठौर सकळ सबत रहस्य। हस्ताक्षर हेरहु हिय हुलास, दुरद्धर दुख्हरण दुरगदास।—ऊ का.

हस्ति-स. पु [स] १ हाथी, गज।

उ०—मल्ल हस्ति तुरग रथ पायक टकसाली व्यायाम कारक।
—व स.

२ ऐरावत।

३ हाथी की सूड।

४ बरछी। (ना डिं को)

रू भे—हसत, हसति, हसती, हसत्ति, हसत्ती, हस्त, हस्ती।

हस्तिणि, हस्तिणी—देखो 'हस्तिनि' (रू. भे)

हस्तिनागपुर, हस्तिनागपुर, हस्तिनापुर-स पु [स हस्तिनापुर] वर्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूर एक प्राचीन नगर जहा कौरव-पाण्डवो की राजधानी थी। (पौराणिक)

उ०—इदप्रस्थु तिलपत्थु पुरु वाराणु कोसी च्यारि। हस्तिनागपुर पाचमु आपीउ मत्सरु वारि।—सालिभद्र सूरि

रू भे.—पुरहथण, हतणपुर, हतणापुर, हथणाउर, हथिणाउर, हथिणापुर, हथिनापुर, हथीणाउर, हस्तपुर।

हस्तिनी-स. स्त्री [स] १ मादा हाथी।

२ चार प्रकार की स्त्रियो मे से एक, जिसके अधर, नितब, अगुलिया, वक्षस्थल आदि अग स्थूल काय होते है तथा जो रतिक्रिया मे अधिक रुचि रखती है।

३ सुगन्ध द्रव्य या रूखरी विशेष।

४ आर्या (गाथा) छन्द का एक भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे कुल मिलाकर चार 'सकार' का प्रयोग होता है। (र. ज. प्र.)

रू भे—हसतणी, हस्तणी, हस्तनी, हस्तिणि, हस्तिणी।

हस्तिमुख-स पु—गणेश का नामान्तर।

हस्तिसाळ, हस्तिसाल, हस्तिसाळा, हस्तिसाला-स. स्त्री. [स. हस्ति+शाला] हाथियो को बाध कर रखने का स्थान।

उ०—१ जिनमदिर धवलमदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेखसाल, पौसधसाल रथसाल हस्तिसाल तुरगसाल व्यायामसाल टकसाल आस्थान सभा. ....।—व स

उ०—२ क्षण एक जाइ वयगरणि, क्षण एक जाइ राजगरणि, क्षण एक जाइ हस्तिसाला, क्षण एक जाइ आयुधसाला, क्षण एक जाइ वाहणि .।—व स

हस्ती-स पु [फा.] १ कोई अस्तित्ववान या प्रभावशाली व्यक्ति।

२ अस्तित्व, सामर्थ्य, शक्ति।

उ०—बाप माडाणी फोटी हुसी रा दात काढतो कैवण लागी—म्हारी हस्ती ई काई के म्है रावळी सोच करा।—फुलवाडी

[स] ३ सुहोत्र का पुत्र एक चन्द्रवशी राजा जिसने हस्तिनापुर बसाया था।

४ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

५ देखो 'हस्ति' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—१ ढाढी, जै राज्यद मिळइ, यूं दाखविया जाइ। जोबण हस्ती मद चढ्यउ, अकुस लइ घरि आइ।—ढो. मा.

उ०—२ घूम रह्यौ दुरयोधन राजा, जैसे गज मतवारौ। सिंह होय कर हस्ती मारै, बडौ भरोसौ थारौ।—मीरां
हस्तीबंध, हस्तीबध—देखो 'गजबंध'।
हस्ते, हस्तै—क्रि. वि. [सं. हस्त्य] १ हाथ से, मार्फत, द्वारा।
२ हाथ मे, हाथ पर।
उ०—हस्तै खग पटंबर कटि छुरी विद्या विनोदा मुख। तांबूल मति सलिवत चतुर स गारक खोडस।—रा. सा. सं.
३ तालके, हवाले।
हस्म, हस्सम—देखो 'हराम' (रू. भे.)
हस्स—देखो 'ह्रस्व' (रू. भे)
हहकार, हहकार, हहकारौ—देखो 'हाहाकार' (रू भे.)
उ०—१ पळचर उदमाद गयौ अंत पायौ, थांन वडौ हहकार थयौ। वाको भड 'सांगौ' खगवाही, ग्रीध धपावण हार गयौ।
—सांगा पीपाड़ा री गीत
उ०—२ सुर तेतीसूं कोट, आण नीरता थारी। नह खावत नह चरत, मनै करती हहकारौ।—महाराणा कुंभा री कवित्त
उ०—३ याहि तेग सगाहि ग्रासौ, हहकारौ ग्रसियौ। धन्य तेरौ ध्यान करमहि, सीझतौ साकौ कियौ।—जांभौ
हहयाधीस—सं. पु. [सं. हहयाधीश] सहस्रार्जुन।
हहरणौ, हहरबौ—क्रि. अ.—१ कांपना, थर्राना, धूजना।
२ डरना, घबराना, भयभीत होना, दहलाना।
हहराणौ, हहराबौ—क्रि. स.—१ कंपाना, धुजाना।
२ डराना, भयभीत करना, दहलाना।
हहरायोड़ौ—भू का. कृ.—१ कंपाया हुआ, धुजाया हुआ।
२ डराया हुआ, भयभीत किया हुआ, दहलाया हुआ।
(स्त्री. हहरायोड़ी)
हहरियोड़ौ—भू का. कृ—१ कांपा हुआ, थर्राया हुआ, धूजा हुआ।
२ डरा हुआ, घबराया हुआ, भयभीत, दहला हुआ।
(स्त्री हहरियोड़ी)
हहलांणउ, हहलांणौ—देखो 'हलांणौ' (रू. भे.)
उ०—जदि श्रेवडि करिस्यां अवभणउ, तदि हहलांणउ कुंअरी तणउ पीहरि राखी राजकुमारी, पिंगळ राय चाल्यउ तिणि वारि।
—ढो. मा.
हहा—सं स्त्री.—१ हंसने की ध्वनि।
२ हँसी, मजाक, ठट्ठा।
३ दुख या पश्चाताप को व्यक्त करने के लिये कहा जाने वाला शब्द 'हा'।
उ०—हरी ओम् ओम् प्रांनी जुगति नहि जानी अग हहा। महा ह्यानी ठांनी मुगति नहि मानी भग महा।—ऊ. का.
४ विनती।
५ गिड़गिड़ाहट।
६ गंधर्व विशेष।
हहाकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)
हहौ—सं. पु—१ हंसी, मजाक, परिहास, विनोद।
२ देवनागरी वर्णमाला का अन्तिम वर्ण 'ह', जो काव्य मे दग्धाक्षर माना जाता है।
उ० हहौ करै हित हांण, भाजी तन व्याध जगावै। धधौ राज भय धरै, ररौ धन नास करावै।—र. रू.
हां—अव्यय [सं. आम्] १ स्वीकृति या सम्मति सूचक अव्यय।
उ०—घर गु पुत्र सही मनि गणी तिणि अवसरि तिणइ 'हां' भणी घरि आविउ मनि चिंता करइ 'एह काज हिव किण परि सरइ।'
—हीराणंद सूरि
२ किसी प्रश्न, आवाज या सम्बोधन के प्रत्युत्तर मे बोला जाने वाला स्वीकृति सूचक शब्द।
उ०—स्वामीजी बोल्या—त्याग है थारै। जद त्याग करावताइ हुवा। त्याग कराय नै बोल्या : परणीजवा रै वासतै नव वरस थे राख्या है कै ? हां स्वामीनाथ।—भि. द्र
३ होने की अवस्था या दशा।
उ०—पण अरजनियै री तौ खगनास ही खोय दधौ। जाटणी री जायौ, जाट सू ही आगै अर गैरै। जात-जात मैं ही भेद भरै। वाणियां थोड़ा ही हां, जकौ कैद फांसी सू डरां।—दसदोख
रू. भे हआ।
हांक—देखो 'हाक' (रू. भे.)
हांकणौ, हांकबौ—क्रि स.—१ रथ मे जुते घोड़ो को या गाड़ी मे जुते बैलो को अथवा किसी जानवर या जानवर समूह को चलने या आगे बढने के लिये प्रेरित करना, चलाना, चलाने के लिये मुह से कुछ शब्द करना, हांकना।
२ प्रोत्साहन देना, उत्साहित करना।
३ बढ़ बढ़ कर बातें करना, शेखी बघारना, गप्पे मारना।
४ चराना।
उ०—जरै कमर नै परिकर नागौर आय सौ सासन आगारां रा दाहिमां नु गुणाय ररसा रा तंतुवां रै समांन एक मतै हुवौ अर नागपुर री लज्जा कौनार नूं भळाय अणिहलपुर गजनवी रा अनीक मैं रातिवाह देण हांकियौ बणाय हूवौ।—व. भा.
५ आवाज देना, पुकारना।
६ चिल्लाना।
हांकणहार, हारौ (हारी), हांकणियौ—वि०।
हांकिओड़ौ, हांकियोड़ौ, हांक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हांकीजणौ, हांकीजबौ—कर्म वा०।
हाकणौ, हाकबौ, हाकरणौ, हाकरबौ—रू० भे०।
हांकरणौ, हांकरबौ—क्रि. स—१ हां करना, स्वीकार करना।
२ मानना, कबूल करना।

हाकरणहार, हारौ (हारी), हाकरणियौ—वि० ।
हाकरिग्रोडौ, हाकरियोड़ौ हाकरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हाकरीजणौ, हाकरीजबौ—कर्म वा० ।
हुकरणौ, हुकरबौ, हाकरणौ, हाकरबौ—रू० भे० ।
हाकरियोडौ-भू का कृ.—१ हा किया हुआ, स्वीकार किया हुआ ।
२ माना हुआ, कबूल किया हुआ ।
(स्त्री हाकरियोडी)
हाकल-स. स्त्री—१ जोर की पुकार, आवाज ।
उ०—यू जाण घोडी नू कायजो देय, गट्टी सुद्दा बाहर काढी । खाच अर धूळ कोट रो बुरज थो, हाथ दसै 'क ऊचो, उण ऊपर चाढी । फदाकी मार ऊपर चाढियो । चढनै हाकल कीवी—जै सरदारा हूँ राजूखा छू, घोडी म्हारी लिया जाऊ छू ।
—सूरै खीवै कांधळोत री बात
२ ललकार ।
३ देखो 'हाक' ।
हांकलणौ, हांकलबौ—देखो 'हाकलणौ, हाकलबौ' (रू. भे)
हांकलणहार, हारौ (हारी), हाकलणियौ—वि० ।
हाकलिग्रोडौ, हाकलियोडौ, हाकल्योडौ—भू० का० कृ० ।
हांकलीजणौ, हाकलीजबौ - कर्म वा० ।
हांकलियोडौ—देखो 'हाकलियोडौ (रू भे)
(स्त्री हाकथियोडी)
हांकांधाकां—देखो 'हाकाधाका' (रू भे)
हांकार-स. पु—१ हा, स्वीकृति ।
२ देखो 'हुकार' (रू. भे)
हांकारणौ, हाकारबौ-क्रि स—१ स्वीकार करना अगीकार करना ।
उ०—है तो ओ-ई मौत-री जागा ताव हाकारणौ । पण खैर घणी, बुराई तो टळ जासी ।—वरसगाठ
२ मनवाना, कबूल कराना ।
हांकारणहार हारौ (हारी), हाकारणियौ—वि० ।
हाकारिग्रोडौ, हांकरियोडौ, हाकारयोडौ—भू० का० कृ० ।
हांकारीजणौ हांकारीजबौ—कर्म वा० ।
हांकारियोडौ-भू का. कृ—१ स्वीकार किया हुआ, अगीकार किया हुआ. २ मनवाया हुआ, कबूल कराया हुआ ।
(स्त्री. हाकारियोडी)
हांकारौ—देखो 'हुकारौ' (रू भे.)
उ०—१ ताहरा हासू कह्यौ—थै माह रै घरै आवेज्या, मावीतां कन्हा मो नूं मागो, हू मावीता कन्हा हांकारौ भणायीस, हू घरै जाऊ छू, थै वासै वेगा पधारिज्या ।—कूगरै बळोच री वात
उ०—२ पीछै ऐ पूलौ वगैरै साराई नरसिंघ सू मिळिया, अरु कयो, 'म्हारो बदळो घेरावो थानू बारै महीना मैं इतरो मासूल भरसा । पीछै कर ठहराई, तद उणा हाकारो भरियो, अरु लाधडियै हेरा मेलिया ।—द. दा
उ०—३ दोना रै घणो सबाद हुवो चोर हाकारो करै नही, सुगार मजरी छोडै नही ।—पचदडी री वारता
हांकियोडौ-भू का. कृ—१ घोडे, बैलो या मवेशियो को चलाया हुआ, चलाने के लिये मुह से शब्द किया हुआ २ प्रोत्साहन दिया हुआ, उत्साहित किया हुआ ३ बढ-बढ कर बातें किया हुआ, शेखी बघारा हुआ, गप्पे मारा हुआ ४ आवाज दिया हुआ, पुकारा हुआ. ५ चिल्लाया हुआ ।
(स्त्री हाकियोडी)
हाचळ-स पु, ब. व [स. अञ्चल] १ किसी स्त्री के उरोज, स्तन ।
उ०—१ माता जुद्ध मैं जाता कहै म्हारा हाचळ चूगियो है सो लजाजै मती, लुगाई बिलिया देखाय कहै चूडा री लाज राखजो ।
—वी. स. टी
उ०—२ जाहरा माता रै हांचळे पान्हौ आयो । कह्यो बाळक ल्यावो ज्यू चूघावा ।—देवजी बगडावता री बात
उ०—३ दोवडी कमर, पिचक्योडा गाल नै बैया रै, ओला जिसा लटकता हाचळ ।—फुलवाडी
२ मादा पशु या जानवरो के स्तन ।
उ०—१ सिङ्या रा सिंघणी चूघावण आई तो थो हांचळा मूडो नी घाल्यो ।—फुलवाडी
उ०—२ मा मरती रै हाचळा लाग रह्या बाखोट । लूआ मती उघाडज्यो, आता जाता ओट ।—लू
हांजी-स पु—१ 'हा' करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति सूचक शब्द ।
२ हा में हा मिलाने की क्रिया या भाव ।
उ०—१ न जागू हांजी चुप गहि, मेट अग्नि की झाळ । सदा सजीवन सुमरियै, दादू बचै काळ ।—दादूबांणी
उ०—२ ऐ लोग रईस अर हू जूवारो खायोडो कगलो कलीर । थरका पडता, लोग हांजी करता । अर अबै कै हुयग्यो ? छोडी है तो नौकरी छोडी है ।—दसदोख
३ बडे व्यक्ति के पुकारने पर प्रत्युत्तर मे बोला जाने वाला आदर-युक्त शब्द ।
४ लोकगीतो मे प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक सम्बोधन ।
उ०—१ धण रै तो आंगण हवद खिणावो साहिब झूलण रै मिस आवो रे । हाजी रे ऊजळ दती रा साहिब केण बिलमाया रे ।
—लो. गी
उ०—२ होठडला भूमल रा रेसमीयै रा तार ज्यो, हांजी रे दातडला ऊजळ दतीरा दाडम बीज्यो ।—लो. गी.
हांजीडौ-वि.—हा मे हा मिलाने वाला, चापलूस ।
हांडणौ-वि. [स हिण्ड] १ आवारा घूमने वाला, आवारा ।
२ भटकने वाला ।
हांडणौ, हाडबौ—देखो हाढणौ, हाढबौ' (रू. भे.)

हांडलउ, हांडलौ—देखो 'हांडौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—जै साधु तै साधुं, सेद मासी भिणहुणतउ, मेल्हइ हांडलउ कूडपु खरडिउं मेल्हइ, खर ऊखरलु, माकुण माचा भिरिया......।—व स

हाडाडोयौ–स पु —रसोईघर या पाकशाला सम्बन्धी कार्य।

हांडियोड़ौ—देखो 'हांढियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री हाडियोडी)

हाडी–स. स्त्री [स हण्डिका] १ मिट्टी का बना, बटलोई के आकार का मझोला बरतन जो प्राय खाद्य वस्तु पकाने के काम आता है।

उ०—१ कुभार हांडी घडइ।—उ. र.

उ०—२ नगरपालिका री नौकरी, भाग री बात। गाव री गांव मैं एक हांडी रौ भात।—दसदोख

२ पात्र।

उ०—काचा ऊछळै ऊफणैं, काया हांडी माहिं। दादू पाका मिळ रहै, जीव ब्रह्म द्वै नांहि।—दादूवाणी

मुहा.—(१) चढी हांडी जाणौ=बने हुए भोजन को छोड़कर जाना।

(२) चढी हांडी रैणी=भोजन बनने के बाद ज्यो का त्यो रहना, उपयोग न होना।

(३) मोटी हांडी=ऐसा घर या स्थान जहा बहुत कुछ करने की गुजाईश हो, जहा बहुतो का गुजारा होता हो।

(४) रांध्योडी हाडी रैणी=देखो 'चढी हांडी रैणी'।

(५) सेर री हांडी मे सवा सेर घालणौ=क्षमता से अधिक उत्तरदायित्व डालना, गुजाईश से ज्यादा।

(६) हाडी खोटी होणी=कुपात्र होना।

(७) हाडी चोखी होणी=सुपात्र होना।

(८) हांडी बद रैणी=रसोई न बनना।

(९) हाडी में खटाणौ=घर मे रख लेने की क्षमता होना।

रू भे.—हंडवाई, हंडी।

हांडौ–सं. पु.—१ बडे पेट का मिट्टी का बर्तन, बडी हंडिया।

उ०—१ जदी रजपूतांणी ओडी रौ जणौ माहे हांडा चाढ़ु ओर बसत मेल माथै लै चाल्या।—पवमार री बात

उ०—२ सावळियौ बहनोई मागा, सोदरा बहनड मांगौ। हांडा धोवण फूफी मांगां, झाड़ू देवण भूवा।—लो गी.

२ कोई बडा पात्र।

३ बडे पेट वाला व्यक्ति।

४ मोटा-ताजा आदमी।

रू. भे.—हडौ।

अल्पा.—हडियौ, हाडलउ, हाडलौ।

हांडणौ, हांडबौ–क्रि. स. [स. हिण्ड] १ भटकते हुऐ फिरना, भटकना, दर दर की ठोकरें खाना।

उ०—कोई अवगुण मन बस्या, चित थैं धरी उतार। दादू पति बिन सुदरी, हांडै घर घर बार।—दादूवाणी

२ आवारा घूमना, आवारा फिरना।

हांडणहार, हारौ (हारी), हांडणियौ—वि०।

हांडिओड़ौ, हांडियोड़ौ, हांड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हांडीजणौ, हांडीजबौ—कर्म वा०।

हाडणौ, हांडबौ—रू० भे०।

हांडियोड़ौ–भू. का कृ.—१ दर दर की ठोकरें खाया हुआ, भटका हुआ. २ आवारा घूमा हुआ फिरा हुआ।

(स्त्री हांडियोडी)

हांण–स स्त्री —१ ऊट के जवानी के दात।

उ०—सो किण भांत रा ऊठ, किण भांति रा हांण किण भांति रा डांण, किण भांति रा पलांण नै किण भांति रा बणाण.. ...।—रा सा स.

२ ऊट के आयु की दांतो द्वारा की जाने वाली पहचान।

३ आयु।

४ शत्रु।

५ देखो 'हानि' (रू भे.)

उ०—१ एम 'करन' आखियौ, सुणौ कमधां सगरत्था। हांण लाभ जै हार, हुई करतार सु हत्था।—रा. रू.

उ०—२ 'बांका' हरख न आंण सू, हांण हुवा नह सोक। हरि सतोख दियौ हियै, तिण नूं दीध त्रिलोक।—बा दा.

उ०—३ सुहाग री लाम्बीणी रात बीद बींदणी मैं सीख री बात बताई कै बा पर-घर नी तौ कदेई बासदी लावण साल्ल जावै अर नी कदेई परीडो रीतो राखै। आं दोनूं बाता मैं खामी रै'गी तौ सुहाग री हांण पड जावैला। फुलवाड़ी

हांणक–स. पु. [स. हानिक] दुश्मन, शत्रु, बैरी।

(अ. मा, ह नां. मा.)

उ०—विधूसण आंणक हांणक भूप। रच्या अप्रमाण सुवस्सण रूप।—मे. म.

वि.—१ हानि या नुकसान पहुचाने वाला।

२ चोट करने वाला।

हांणफांण–स. स्त्री—१ किसी कार्य या चलने मे की जाने वाली अत्यन्त शीघ्रता।

२ श्वास की तीव्र गति।

वि.—१ अव्यवस्थित, अस्त व्यस्त।

उ०—वै विरमोडा रूख, अठै सूखी छांहडली। हांणफांण सी घास काय काया री डिगली।—सच्चिदान कवियौ

२ भयभीत, डरा हुआ, विकल, व्याकुल, बदहवास।

उ०—आदमी 'र लुगाया सब हांण-फांण व्हियोडा, पेट रा गोळा

ऊचा चढयोडा, छाती मैं सास मावै नी। आदमी धोतियौ पकड़ै तौ पोतियौ बिखर जावै अर पोतियौ सभाळै तौ धोतियौ खुल जावै।
—रातवासौ

हांणि, हांणी-स स्त्री. [स. हानि] १ नुकसान, हानि, क्षति।
२ नाश, सहार, बरबादी।
३ ह्रास, क्षय।
४ अभाव, कमी।
५ बुराई, अपकार, अनिष्ट।
६ घाटा।
७ छूट, त्याग।
८ असफलता।
९ अनुपस्थिति।
१० कष्ट, तकलीफ, दुख।
रू. भे.—हाण, हान, हानि, हानी।

हांणीकर, हांणीकारक-वि [स हानिकारक] १ नुकसानदायक, हानिकारक, हानिप्रद।
२ कष्ट-प्रद, दुखदायी।

हाणू-त्रि —१ हनन करने वाला, नाश करने वाला, मारने वाला।
२ हानि पहुचाने वाला, नुकसान पहुँचाने वाला।

हांणे हांणै—१ देखो 'हणा (रू. भे)
उ०—दादू भाती पायें पसु पिरी, हांणे लाइ न बेर। साथ सभोई हल्लियो, पोइ पसदो केर।—दादूबाणी
२ देखो हाने' (रू भे)

हांती-स. स्त्री. [स हिन्त+अण्=हान्ती] विवाहादि कुछ विशिष्ट (शुभाशुभ) अवसरो पर बनने वाले विशिष्ट खाद्य पदार्थ का वह अश जो पडोसियो, सगे-सम्बन्धियो एव बधु-बांधवो मे बाटा जाता है।
उ०—बडार रै नातै गाव नूत्यौ, सोनजी रात सुख री नीद सूत्यौ। लापसी'र घी रौ धूरौ नूंतौ कर दियौ है। हांती अर हरख री मजौ ले लियौ है।—दसदोख
रू भे—हती।

हांतौ-स पु —स्थापना नवरात्रि के अवसर पर देवी के निमित्त रग-बिरगे कागजो द्वारा बनाये गये चिन्ह जो दीवार पर चिपकाये जाते है।

हांन—१ देखो 'हांण' (रू भे)
२ देखो हाणि' (रू. भे.)

हांनि, हांनी—देखो 'हाणि' (रू. भे)

हांनै, हानै-क्रि वि —१ यथा स्थान।
२ अधिकार मे, कब्जे मे, वश मे।
रू. भे —हाणे, हाणै।

हांनौ-स. पु.—१ ऊट के चारजामे के आगे का वह भाग जहां सामान लटकाया जाता है। जीन का अग्रिम भाग।
उ०—१ वस्तुवा नू तयार कर ऊट पर घाल गगाजळी पाणी री एक हानै घाली। वाक एक पताकै बाधी।
—साह रामदत्त री वारता
उ०—२ सो एक दिन सिकार नूं बन मैं गयौ, हिरणी भाग गई एक छाटौ बच्चौ थौ सौ भाग नही सक्यौ, सो पकड हाथ पग बाध हानै ऊपर मेल्ह सहर नू हालियौ।—नी प्र

हापणौ, हापबौ—देखो 'हाफणौ, हाफबौ' (रू. भे)
हापणहार, हारौ (हारी), हापणियौ—वि०।
हापिओडौ, हापियोड़ौ, हाप्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हापीजणौ, हापीजबौ—भाव वा०।

हापियोडौ—देखो 'हाफियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हापियोडी)

हाफ-स स्त्री —उमग, इच्छा, ख्वाहिश।
उ०—नीठ माळा फेरतै फेरतै औ सजोग बणियौ हौ, पण भाग-मैं भाठौ लिखियौ। कदास भळै' जिसौ होवतौ तौ तनै राजी करता' र मन री हाफ.. .. .   —वरसगाठ

हाफणी-स स्त्री—१ तीव्र गति से श्वास आने की दशा या भाव।
२ श्वास रोग, दम की बिमारी।
रू भे—हफणी, हाफी।

हाफणौ, हांफबौ-क्रि अ [स उष्मायते, प्र. उम्हायइ] तीव्र गति से या जोर जोर से श्वास लेना, उसासें लेना, हाफना।
उ०—दीपि कापइ, पय भारि मेदिनी हाफइ, घाट खलकई .... ।
—अ स
हाफणहार, हारौ (हारी), हाफणियौ—वि०।
हाफिओडौ, हाफियोड़ौ हाफ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हाफीजणौ, हांफीजबौ—भाव वा०।
हापणौ, हापबौ, हूफणौ, हूफबौ—रू० भे०।

हाफरडै-क्रि वि —तीव्र गति से, तेज, जोर से, हाफने की स्थिति मे।
उ०—सोनजी री बूढी मा बहू रै कोड मै डागळै चढै अर ऊतरै है। सैंर हालै वरै मारग कानी जोवतां-जोवता आख्यां दूखण लागगी, पग थकग्या अर सास हाफरडै़ सरु हुयग्यौ।—दसदोख

हांफळणौ, हांफळबौ-क्रि अ —उतावला होना, त्वरित होना।
उ०—तन अखत रोड डोलै तिकै, उर अतर सू आफळै। इम पिवण घूट पेखू उमग, होका दीठा हांफळै—ऊ. का

हाफळियोडौ-भू का. कृ —उतावला, त्वरित।
(स्त्री हाफळियोडी)

हांफियोडौ-भू का कृ.—तीव्र गति से या जोर जोर से श्वास लिया हुआ।
(स्त्री हाफियोडी)

हांफी—देखो 'हांफणी' (रू भे.)

हांभाड़-स. स्त्री.—गाय के रंभाने से उत्पन्न ध्वनि।
उ०—फुरणावज बाह् हिहाड़ फरै, फल गाय हांभाड़ आंभाड़ करै।
—पा. प्र.

हांम-सं. स्त्री.—१ मन की इच्छा, कामना, अभिलाषा, चाह, मनोरथ।
उ०—उर ढाळ सारीख चौडा ग्रलल्ला, भिड़ज्जा बाहू जंघ बै पगल्ल भल्ला। पुड्ळ्छी जिग्रा सोछ पै कध पूरा, संग्रांम विखे हांम पूरत सूरा।—वचनिका
उ०—२ सिव दौडै संग्राम, सिर जोड़ै माळा सभै। वर सूरां अछरा वरै, हुरां पूरै हांम।—रा. रू.
उ०—३ मडै जुध नाथ' तणो 'फतमाल', तई वग झाडि भरै रत ताळ। 'दलो' 'भग्णदेस' 'सुत्तन' दुगांम, 'हरी' खळ डाहत पूरत हांम।—सू. प्र.
उ०—४ तेज भूप देख ताम मिले पाग तीस नाम। हेतवा सपूर हांम, वरमाळ लिया वांम।—र. रू.
२ उत्कण्ठा, लालसा।
उ०—जसा सरीखी जगत मैं, महिल नहीं म्यारांग। पमोतरा है पदमणी, हाली पूरण हांम।— मयारांम दरजी री बात
३ उत्साह, उमंग, जोश।
उ०—१ हांम घणी हुरवास रै, जोड़ै हाम जुभल्ल। हरी सुजूभा गाड़ पड़, सूजा दुरजण सल्ल।—रा. रू.
उ०—२ कांम धणी हुररांम का, हांम घणी जूंभार। पाछै कहिया वीर वर, यांसू आगळियार।—रा. रू.
४ क्षमता, योग्यता।
उ०—१ सखी भणइ सामिणि हिव सुणउ, एह वोस नवि कुणइ तणउ। दैविहिं कीधां छइ जै काम, तेह मांजिवा धरइ कुण हांम।
—हीराणंद सूरि
उ०—२ तरै साह कहयौ, इणा घोडां री धाव कोस च्यार तांई एकै सिराडै देखौ, तरै इणा री हांम पूरी पोचसी, तिण सू महाराज, सिरडो साथै दिरावां।—कहवाट सरवहियै री बात
५ धैर्य धीरज।
[प्र. हामः] ७ कपाल, खोपड़ी, मस्तक।
८ अपने गोत्र या जाति का नामक।
रू. भे.—हांमू।

हांमकांम-सं. पु.—मनोवेग, मन का आवेग।

हांमकांमलोचनी-स स्त्री—१ वह स्त्री जिसके नेत्रों में काम भावना का निवास हो, मदिरेक्षणा।
२ अत्यन्त सुन्दर।
उ०—भरमल पोसाक आभरण पहर हांमकांमलोचनी आभैरी बीजळी सांवण री तीजणी पावासर री हस ज्यूं मलहफती थकी सुंधे भीनै गात रमभम करती आई —कुंवरसी सांखला री वारता

हांमकांमा-स स्त्री.—१ अत्यन्त सुन्दर नैत्रो वाली स्त्री।
२ इच्छा पूर्ण करने वाली स्त्री।
३ रति की इच्छा करने वाली स्त्री।

हांमगीर-वि.—देखो 'हमगीर' (रू. भे)
उ० - लोग सारो हामगीर थयो आपो आप कांम मू लाग गयो।
—सूदरवास भाटी बीकूपुरी री वारता

हांमळ-स. स्त्री—स्वीकृति, स्वीकारोक्ति, सहमति।
उ०—१ राजा रो सिखायो कसाई वानै पटाया। वै तो ई हांमळ भर दी।—फुलवाड़ी
उ०—२ सेठजी पिडतजी नै इचरज सूं खरावता दूजी वार वळै पूछयो—जान रो ई सगळो खरचो ओढण सारू हामळ भरी, कठै ई जात-पांत मैं काण-कोसर तो नी है।—फुलवाड़ी
क्रि प्र —भरणी।

हांमलौ-वि.—१ प्रसन्नचित्त, खुश।
२ सौहार्द पूर्ण।

हांमस-सं. स्त्री.—इच्छा, कामना।
उ०—राजसी पग्गे ओढण रगे रगढ लाय निज ल्यागरो। पल करै प्रवाडा रवि उदय सदा हांमस भाग री।—पा प्र

हांमी-स. स्त्री.—१ हां करने या स्वीकार करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति।
२ सहमति।
वि.—शुभ चिंतक, हितैषी, मददगार।

हांमू—देखो 'हांम' (रू. भे.)
उ०—अजामेळ जैसो महा अपराधी, लियो वार हैको तिके गत लाधी। हियै पुत्र बोलाड़वा तेण हांमूं, निमो रांम नांमूं, निमो रांम नांमूं।—भगतमाळ

हांयली—देखो 'हांसली' (रू भे)

हांस-स पु—१ स्त्रियो के गले मे धारण करने का एक आभूषण विशेष। (व. स.)
उ०—१ सपत लडी कंचन सुभग, हांस हार सुहेल। नवसर कण नवरंग कै, चोसर फूल चमेल।—बगसीरांम प्रोहित री बात
उ०—२ म्हांरी रखड़ी रतन जड़ाओ सा, म्हारा हिवडा नै हांस मंगाओ सा।—लो. गी.
२ देखो 'हूंस' (रू. भे)
उ०—सठा उपरायंत सिरदारां देसोता तळाव मैं भूलण री हांस करै छै। लाल तागीरी पोतां पहरजै छै।—रा. सा. सं

हांसउ—देखो 'हांसो' (रू भे)
उ०—राजा रांणी नूं कहइ वात विचारउ जोइ। आज विखइथी दीकरी, हांसउ हसिसी लोइ।—ढो. मा.

हांसड़ौ-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)
२ देखो 'हांसो' (अल्पा, रू. भे.)

हांसल-स पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो)

२ देखो 'हासिल' (रू. भे.)

उ०—१ थेट्ट छोड बवा थोक मह अध दीध हांसल मोक। सातू ईतरो नह सोक, लगर सुखी सगला लोक।—र. रू

उ०—२ और सवाई राजपूता सू हांसल मागे ती सू उवै दोहरा। —सूदरदास भाटी बीकूपुरी री बात

उ०—३ जै बाग री वसूध दरबार मै आवै तौ घणौ हांसल बधै अर रैयत रो पण कुछ विगडै नही हमै बाग रो हासल सगळा सू लेयस्या।—नी प्र.

हांसली-स स्त्री—१ गर्दन के नीचे व छाती के ऊपर की धनुषाकार हड्डी।

२ गले मे पहनने का एक चन्द्राकार आभूषण।

रू. भे.—हसली, हायली, हास।

हांसलीओ हासलीयौ-स पु—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—मूगीआ चलवलीआ चारूलीआ परवालीआ माडलीआ खाजलीआ पिपलीआ पोपटिआ हांसलीआ चपकदुरगीआ विद्यापुरीआ देकापाटकीआ कास्मीरीआ —व स

हांसलौ-स पु—एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—१ घोडो तो भीजै धरमी हांसळौ, मोतीडै जडी लगाम भो। जामो विराजै धरमी रै केसरिया, पाच मोहर गज पाग भो। —लो गी

उ०—२ मेघउ लोलु नइ देवाइत, मूळराज महियडउ जइत। वालि माहि जे तेजी भला, एक सहस दीधा हासला।—का दे. प्र.

हांसिल—देखो हासिल' (रू. भे)

उ०—तद नेणसी अरज कीवी जै हूँ तो राज मै हासिल बधतो लियो राज रो विस्वो गमायो नही।—रा. सि.

हांसी-स स्त्री—१ श्वास रोग से पीडित एक प्रकार की गाय विशेष।

उ०—कपला कवळी नै बारै पुचकारै, लाखर लाखर ऐ आखर मन मारै। हासी बासीसी सूकी हिय हारै, ससणी लसणी लख द्वैसणी सारै।—ऊ का

२ देखो 'हसी' (रू. भे)

उ०—१ थाळ आइयो। दोनू सरदार भेळा बैठिया ठट्ठौ मसकरी हांसी ही रही छै।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ उठै दोनूं मिळिया हांसी करणै लागिया। —भाटी सुदरदास बीकपुरी री वारता

उ०—३ लोगा मैं बात जाहर होय सै तो लोग हांसी करसै। —नापै साखलै री वारता

उ०—४ गोकुळ की नारि देखत, आनद सुखरासी। एक गावत एक नाचत, एक करत हांसी।—मीरा

उ०—५ झालि झलामल नागला, नाग लागा छइ गालि। देसि हू प्रोपम तिहा सीय ? हासी य जीवए चालि।—आगम मांणिक्य

हासौ-स. पु [स हास्य] १ हसने की क्रिया या भाव।

२ हसी, विनोद, मजाक, परिहास।

उ०—सीता छाडै सत्त, जत्त लिछमण सू जावै। मद्दा जोध हणमत कळा बळहीण कहावै। नारद जुध निरखता, तिको विण हासौ तज्जो, भयण अभ भोजन, भूख जीमिया न भज्जै।—चोथ वीठू

३ किसी की उपेक्षा करने या अपमान करने के लिये किया जाने वाला मजाक, खिल्ली, बदनामी, खिल्ली।

उ०—१ तरै सिधराव निसासो मेलि नै कह्यौ, कवरजी, दुख छै तिको तो माहिलो सरीर जाणै छै, कह्या सू हासौ हुवै नै गरज पिण किणही सू सरै नही, नै राज म्हारा जीवरा दातार छो, नै म्हारै भलो परताप दीसै छै सो राज रो उपगार छै। —जगदेव पवार री बात

उ०—२ म्हे तो राज रा रजपूत छा पिण लाकडी रा गोढ दिसा अठै थाह्रो हांसौ जोर हुवो।—राव रिणमल री बात

४ हँसने की ध्वनि।

५ सफेद जीभ वाला बैल।

६ देखो 'हसी' (मह, रू. भे)

७ देखो हस' (अल्पा, रू भे)

रू भे.—हासउ, हासडौ हासउ, हासू, हासौ।

हा-हा-अव्य.—मुह से बोला जाने वाला एक शब्द जिसके उच्चारण भेद से ही स्वीकृति सूचक या निषेधात्मक अर्थ प्रकट होते हैं।

हा-अव्य. [स] १ दुःख, उदासी, पीडा का द्योतक एक अव्यय।

२ आश्चर्य या आह्लाद सूचक शब्द।

३ क्रोध या भर्त्सना सूचक शब्द।

४ है का भूतकालिक रूप, था, थे।

उ०—१ कत करण अकरण अन्नथा करण, सगळै ही थोकै सस-मत्थ। हा लिया जाइ लगाया हुता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ। —वेलि

उ०—२ दरखत रा गात हरया हा, सापडदै प्राण भरया हा। सूका ठूठा सा होग्या, की खातर हणै खड्या हा।—सकुतला

५ एवम्, अथ। (उ र.)

हाइफण, हाइफन-स पु [अ] यौगिक शब्दो के बीच मे लगने वाला एक चिह्न विशेष जो अत्यन्त छोटी आडी लकीर के रूप मे होता है।

हाइ-भाइ—देखो 'हावभाव' (रू भे)

उ०—अवसरि तिणि प्रीति पसरि मन अवसरि, हाइ-भाइ मोहिया हरि। अग अनग थया आपाणा, जुडिया जिणि वसिया जठरि। —वेलि

हाईकोट, हाईकोरट-स पु. [अ. हाईकोर्ट] उच्चन्यायालय।

हाईस्कूल-सं. पु. [अ हाईस्कूल] वह विद्यालय या पाठशाला जहाँ दशवी या ग्यारहवी कक्षा तक की पढाई होती है।

उ०—हाईस्कूल वेगी तो जैपर अर बीकानेर रै बीचाळै भूखा तिसा

फिरता-फिरता रै पेट मैं आळा जागग्या ।– वगचौल

हाउ-भाउ—देखो 'हावभाव' (रू भे.)

हाउस—सं पु [अं.] मकान, भवन, घर ।

हाऊ—रा. पु [देशज] एक काल्पनिक भयानक जंतु जिसका जिक्र बच्चों को डराने धमकाने के लिये किया जाता है, होवा ।

उ०—हाऊ बेठौ छै तिहा, कन्हैया, अळगो तू मति जाय र ।
—जयवाणी

हाऊबोर—स. पु.—एक प्रकार की बेर ।

रू भे.—हाडूबोर ।

हाक—स स्त्री [सं. हुक्क] १ जोर से पुकारने की आवाज, बुलाने के लिये की जाने वाली जोर की पुकार । (उ र)

उ०—१ सद रावजी भीवै नू साथि ले-नै, जठै भरमल राखी हुती तठै आया । भाय हाक मारी, बोलै काई नही ।
—कुंवारै भाटियाणी री बात

उ०—२ इत्ता जीवा री हळवळ सुणी तो बाजरी रै माय ऊभौ एक डोकरौ खाधै गोफण लियां 'कुण व्है ई, कुण व्है ई' री हाक लगावतौ बारै आयौ ।—फुलवाडी

२ हल्ला-गुल्ला, शोरगुल ।

उ०—हुवै कि हाक हमकर्य, सवै कतल लावकर्य । धकै अनंत धारय, समीर घाव सारिय ।—रा. रू.

३ हुंकार, वीर ध्वनि ।

उ०—इण रो सुर नर, मुनिवर जस जपै । इण री हाक हुवां कोरव कपै, जग जननी जोड़ न जायो रे, हनु. ।– गी. रां.

४ ललकार ।

उ०—१ 'हरी' सबळेस' तणी कार हाक । करे खग भूक घणा किलमाक ।—सू प्र.

उ०—२ अबर री अवाज सूं, केहर खीज करत । हाक धरा पर हुई, किम सहै बळवत । —बां. दा.

४ ललकारने या प्रोत्साहन देने के लिये बोले जाने वाले जोश पूर्ण शब्द ।

उ०—१ तरवारियां रो रीठ वागियो । माथै चोकडी पड़ रही छै । हाक ऊपर हाक हुय रही छै । वीर नाच रहिया छै ।
—सूरै खीवै कांधळोत री बात

उ०—२ फिरि फिरि झटकै जे सहै हाका बाजताह । त्यां धरि हंदी ग्रवडी धरणी कापुरसांह ।—हा. झा

५ चिल्लाहट ।

उ०—वह दिसि वाजइ हाक बहु जीव विणासई । एक धुसइ एक धायइ एकि आगलि नासई ।—सालिभद्र सूरि

६ ऊंची आवाज, जोर का शब्द ।

उ०—१ चडी हाक वागता घूमडी भैरू डाक चोडै, नार तडी तमासै लागती गैण माग । मडी तीरां नागणी जागती आयी रोस माथै, नखी धरी पीथळै उचडी काळी नाग ।—जसो आढो

उ०—२ भिडि श्राम इळाळ समक खुभी, खुरताळ धमक पताळ खुभी । बढि हाक अमाणळ डाक बजी, त्रिपुरासुर-सभु समानि तजी ।
—मे. म.

७ बहुत से लोगों के सम्मिलित स्वर से बोलने से होने वाली भारी ध्वनि ।

उ०- कूंणै गळाकै ई सगळा नगरवासी आडा जड़नै सूयग्या । एक ई गळी मैं फिरतो किसे नी आयो । नी रुखाळगणी री हाक सुणीजी ।—फुलवाडी

८ डांट-फटकार, प्रताड़ना ।

९ डर, भय आतक ।

रू भे हाको, हका, हाक, हाकणी, हाकल, हाकि ।

हाकडणौ, हाकड़बौ—क्रि अ [रा हिं...] झटकते-झटकते बोलना, हकलाना ।

हाकडणहार, हारौ (हारी), हाकड़णियौ —वि० ।

हाकडिओड़ौ, हाकड़ियोड़ौ, हाकड़्योड़ौ —भू० का० कृ० ।

हाकडीजणौ, हाकड़ीजबौ —भाव वा० ।

हाकड़ियोड़ौ—भू का. कृ.—झटकते-झटकते बोला हुआ, हकलाया हुआ ।
(स्त्री हाकड़ियोड़ी)

हाकड़ियौ—वि.– १ तेज चाल से चलने वाला ।

२ देखो 'हाकडो' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—खाली कूप भराबो अहियण, तूटी नाव संधाणी । हाकड़िया री हेक चळू कर, पीवी आवड़ पाणी ।—रावलदास भादी

हाकड़ौ—स. पु [देशज] १ सतलज नदी की शाखा के रूप मे बहने वाला एक नद जिसे आवड़ देवी ने एक बनजारे की सहायता के लिये रोक दिया था ।

उ०—थिरा आवड़ा नाम विख्यात थायी, छिया-सगु सो तेमडे छत्र छायी । सको सोखियौ हाकड़ौ नाम सिंधु, बक्सो थको सोखियौ लोकबंधु ।—मे. म.

[स्त्री. हकड़ी, हाकड़ी] २ हकलाते हुए बोलने वाला व्यक्ति ।

उ०—त्यागड़ा विनद साजण खत्रीठ, रागडा बजावै खाग रीठ । हाकड़ा तणी गुण सुण हुकाळ, सड़वडै सत्र उर पड़ैय साळ ।
—पे. रू

रू. भे.—हकडो, हकलो ।

अल्पा, रू. भे.—हाकड़ियो ।

हाकडाक—स. स्त्री. [रा हुक्क । डाकृति] १ रण भैरी, रण वाद्य ।

२ वीरों की हुंकार ।

उ०—हुवै हाक-डाक बकी कायरा ऊबकै हियो । इण डकै भैरवी बजावै रुद्र डाक ।—ठाकुर सुरताण सिंह री गीत

हाकणी—वि.—१ ललकारने वाली, हांकने वाली ।

उ०—देवी कटका हाकणी वीर कवरी, देवी मात वागेस्वरी महा-गवरी।—देवि

२ देखो 'हाक' (रू भे)

हाकणौ, हाकबौ—देखो 'हाकणौ, हाकबौ' (रू भे)

उ०—१ पडिया पचायणनी परि हाकइ, रोस लगि मुछ मुंछ फरकावइ। रथ चक्र चापी ती करोडि कडहडइ।—रा सा स.

उ०—२ आसमुद्द धरहि धणिय दक्केक्कइ कडिचीरि। हाकीउ रल जिम काढीइउ आयमतई सूरि।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ हाकी भड ऊठाडइ आगला ति पाडइ। सरसै जरउ ढाडइ राउत रुसाडइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ घर रा लोग राजस करै हा। कमाई मे सर्फ अर बरकत ही। सगळा सिरज्योडा चालै, एक रा हाक्या हालै।—दसदोख

हाकणहार, हारौ (हारी), हाकणिडौ—वि०।

हाकिओडौ हाकियोडौ, हकयोडौ—भू० का० कृ०।

हाकीजणौ, हाकीजबौ—कर्म वा०।

हाकबवाळ-वि —बहादुर, वीर, पराक्रमी।

उ०—आसथानजी रा धूहडजी, धूहडजी रा बेटा री विगत—रायपाळ महिरेळण १ जोगाइत उडणौ २. वेगड कटारमल ३ जाळू गज उछाळ ४ कीतपाळ अभैउर सिणगार ५ पेथड हाक-बवाळ ६ कहाणौ।—बा दा ख्यात

हाकबक, हाकबाक—देखो 'हाकियौ-बाकियौ' (रू भे)

उ०—१ झलबा झलूस साज सहेल्या री साथ जोवै, बादी बीजी हुइ रूप देखै हाक बाक। कुरवा बधारै लाडी जसा नै सुनाथ कीजै, चैल (छैल) बना लीजै दुबारै की चाक।

—मयाराम दरजी री बात

उ०—२ कानजी हाक-बाक व्हैग्यौ। वो आपरी लुगाई री रीस नै आछी तरिया जाणै हो। उणे कह्यौ—थोडी धीरै बोल भली मिनख, कोई बाड काटौ सुणैला, कतल रौ मामलौ है अर हाल मुकद्दमौ ई दरज व्हैणौ है।—अमरचूनडी

हाकम—देखो 'हाकिम' (रू भे)

उ०—१ समत १७८१ मे महाराजा श्री अभैसिंघजी पाट बैठा नै हाकम मुणोयत सावतसिंघ आयौ। नै संमत १७८५ रा गनीमा जाळोर मारी। पछै समत १७६१ मुतौ किसनचद हाकम गायौ।

—नैणसी

उ०—२ पछै बावेचा जेठमलजी हाकम कने जाय कूचीआ म्हाख कहयौ-के तौ भीखणजी रहमी के म्हे रहस्या। जद हाकम बोल्यौ इसौ अन्याय तौ म्हे नही करा।—भि द्र

हाकमारीघरलाग-स स्त्री —प्रजा से वसूल किया जाने वाला एक प्रकार का कर या लगान विशेष जो हाकिम के निजी व्यय के लिये होता था।

हाकमी—देखो 'हाकिमी' (रू भे)

हाकर-डाकर-स स्त्री —वीरो की हुंकार।

हाकरणौ, हाकरबौ—क्रि. स.—१ गरजना, दहाड़ना।

उ०—नाथ परताप नह धरै धडक नरपति, चमू सत्रहरा चकरै धकै चाळ। डाखियौ सेर साजी अणी हाकरै, पेसकस भरै किम बियौ 'बिजपाळ'।—जवानजी आढौ

२ ललकारना, चुनौती देना।

३ चिल्लाना।

४ देखो 'हाकणौ, हाकबौ' (रू भे)

उ०—हिवा हाथिया आस्वासायइ उधा मउड पडइ, रेवत रडवडइ, पडिया पचायणनी परि हाकरइ, रोस लगी मुच्छ मूंच्छ फरकावइ, रथचक्र चापीती करोडि कडकडइ .. ।—व स.

५ देखो हाकरणौ, हाकरबौ' (रू भे)

हाकरणहार, हारौ (हारी), हाकरणियौ—वि०।

हाकरिओड़ौ, हाकरियोडौ, हाकरयोडौ—भू० का० कृ०।

हाकरीजणौ, हाकरीजबौ—कर्म वा०।

हाकरियोडौ-भू का कृ —१ गरजा हुआ, दहाडा हुआ।

२ चुनौती दिया हुआ, ललकारा हुआ।

३ चिल्लाया हुआ।

४ देखो 'हाकियोडौ' (रू भे)

५ देखो हाकरियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री हाकरियोडी)

हाकळ-स. पु.—१ एक चौकल तथा पचकल युक्त १४ मात्रा का एक छन्द विशेष।

२ प्रथम और द्वितीय चरण मे ग्यारह ग्यारह तथा तृतीय और चतुर्थ चरण दश-दश वर्णा का एक वर्णिक छन्द। इसके प्रत्येक चरण मे पद्रह मात्राएं और अन्त मे एक गुरु होता है।

३ तीन चौकल तथा अन्त मे गुरु से १४ मात्रा का एक मात्रिक छन्द।

४ प्रथम और तृतीय चरण में दश वर्ण सहित १४ मात्राऐ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण मे ग्यारह वर्ण सहित १४ मात्राओ का एक छन्द।

उ०—आदि बियै पायै दस आक्खर, पठि इग्यार बियै चौथै पर। दीजै तात्रा पाइ चउद्दह, हाकळ एम कहीजै छद्दह।—पि प्र.

हाकल—देखो 'हाक' (रू भे.)

उ०—१ खा भी तू कही हाकल मारू थारौ नाव कासू उण कही जी जमाल छै।—नापै साखळै री वारता

उ०—२ गोळी लागता ई इनकड अरडाट कियौ अर सन्मुख आई झाडी मे बडग्यौ कुवर अर उणरा साथीडा सगळाई झाडी नै घेर नै ऊभा व्हैग्या। जोर री हाकल हुई।—अमरचूनडी

उ०—३ माहै सिरदार ऊभौ छै—तिण वास्तै टूक टूक हुय पडै छै, राजा री हाकल सौ। का तौ राजा सौ कोई दाव करौ, राजा

नूं जोर पोहचै नहीं ।—हाहुल हमीर री वात

उ०—४ हरीया वाडी बीगडै, सिर परि धणी न होय । यु चिड़िया खाया खेतड़ा, हाकल करै न कोय ।—अनुभववाणी

उ०—५ जन हरीया मन मिरघ कै, पाच पचीसु नारि । न्यारी न्यारी फिर चरै, हाकल गिणै न वारि ।—अनुभववाणी

रू. भे.—हाकलि, हाकली, हाकह्ल ।

हाकलणौ, हाकलबौ—क्रि. स.—१ चलाना, हाकना ।

उ०—नखायुध हाकलियौ करनह्ल । चराचर स्रस्टि थई हलचल्ल ।
—मे म

२ ललकारना, चुनौती देना ।

उ०—हाकलै राणा सूं साम्है चालसी जै पूदी हाडा । बूदी आडा—वळा सूधी राळती बखेर ।—जीवौजी भादौ

३ प्रोत्साहन देना, उत्साहित करना ।

४ डाटना, फटकारना, दुत्कारना ।

५ जोश दिलाना, उत्तेजित करना ।

६ जोर से पुकारना, आवाज देना ।

७ हुकार करना, गरजना ।

८ डराना, भयभीत करना ।

उ०—जसवत गुरड़ न उडुही, ताळी अजड तगेह । हाकलिया तूला हुवै, पंछी अवर पुणेह ।—हा. झा.

हाकलणहार, हारौ (हारी), हाकलणियौ—वि० ।

हाकलिओड़ौ, हाकलियोड़ौ, हाकल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हाकलीजणौ, हाकलीजबौ—कर्म वा० ।

हाकळणौ, हाकळबौ, हाकालणौ, हाकालबौ—रू० भे० ।

हाकळि—१ देखो 'हाकळ' (रू भे)

२ देखो 'हाकळी' (रू. भे)

हाकळिका—स स्त्री.—पन्द्रह अक्षरो का एक वर्ण वृत्त ।

हाकलियोड़ौ—भू का कृ —१ चलाया हुआ, हाका हुआ. २ ललकारा हुआ, चुनौती दिया हुआ. ३ प्रोत्साहन दिया हुआ, उत्साहित किया हुआ. ४ डांटा हुआ फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ. ५ जोश दिलाया हुआ, उत्तेजित किया हुआ. ६ जोर से पुकारा हुआ, आवाज दिया हुआ. ७ हुंकार किया हुआ, गरजा हुआ. ८ डराया हुआ, भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री. हाकलियोड़ी)

हाकळियौ—वि.—हकलाकर बोलने वाला, हकलाने वाला ।

रू. भे —हाकळू ।

हाकळी—सं. स्त्री.—१ दस अक्षरो वाला एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन भगण और एक गुरु होता है ।

२ देखो 'हाकल' (रू. भे.)

रू. भे.—हाकळि ।

हाकल्ल—स. पु —१ फौज, सेना ।

२ घोड़ा, अश्व ।

उ०—सिर विलंब भालै भुज भार सार । हाकल्ल इसा बारह हजार । आवता देख कहि वाह-वाह । इम कियौ मारवा मन उछाह ।—सू. प्र.

३ सिपाही, सैनिक ।

वि.—१ हांका जाने वाला ।

२ देखो 'हाकल' (रू. भे.)

हाकहीक, हाकहूक—देखो 'हाकाहाक' (रू. भे.)

उ०—१ विविध प्रकारि जे छद पालती, चकडोल, अनइ तदप्रारि स रमता, भाला उछालता, हाकहीक करता एहवै पायकै परिवारउ ।—व. स

हाकांणौ—स पु.—दुर्भिक्ष के समय मवेशियो को ऐसे स्थान पर ले जाने की क्रिया जहा पानी व घास अधिक मात्रा मे हो ।

हाकांताकां, हाकांधाकां—क्रि वि —१ देखते-देखते, गुप्ते-आम ।

उ०—१ देखण वाळा नै सौ फगत धुड़ री मोट इज निजर आयौ । हाकांधाकां गैं जोड़ी आगै निकळगी अर घोड़ौ लारै रैग्यौ ।
—अमरचूंनड़ी

उ०—२ बीदणी सांनी सूं की समझायै उण पैलां ई कामेती रै सागै आठ दस'क आदमी उणनै माडांणी हाकांधाकां रथ माथै धरकाय दी ।—फुलवाड़ी

२ बलवान्, हठात् ।

रू. भे.—हांकाधाका ।

हाकावड़बड़—सं. पु [अनु] शोरगुल, हल्ला-गुल्ला ।

उ०—दरबार रै पालती पुगो तौ साम्ही हाकावड़बड़ सुणीजी । राज रै तबेला सूं एक ओछरडी घोडी न्हाटती आई । लारै चरवादार ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हाकंविड़बड़, हाकोबड़बड़ ।

हाकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

हाकारौ—देखो 'हाहाकार' (अल्पा, रू. भे)

उ०—समहि आग आण्यौ उर ऊपरि, हिरण करै हाकारौ । मेरी वारी मोहि विणासौ, अबळा मूळि न मारौ ।—जांभौ

हाकालणौ, हाकालबौ देखो 'हाकलणौ, हाकलबौ' (रू. भे.)

उ०—हाकालीया केहरी 'गुमान' वाळा वगां हाका, रारीया भभका क्रोध डकां बंबी रोड़ । गजा काळा मोड़ वाळा रखै तूं दूसरा 'गजा', जोड़ वाळा पौहा री मरोड़ जाडी जोड़ ।
—गोपाळजी धधवाड़ियौ

हाकालणहार, हारौ (हारी), हाकालणियौ —वि० ।

हाकालिओड़ौ, हाकालियोड़ौ, हाकाल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हाकालीजणौ, हाकालीजबौ—कर्म वा० ।

हाकालियोड़ौ—देखो 'हाकलियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. हाकालियोड़ी)

हाकाहाक–स स्त्री.—१ बहुत से व्यक्तियों के सम्मिलित स्वर से होने वाली ऐसी आवाज जिसमे एक आवाज पर दूसरी आवाज तीव्र-तर होकर उठती हो, शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला।

उ०—१ हर रावत भीडचा ऊभा छा। ज्या ऊपरै कोरडी तरवार ही वाही, फुनधारा का बाढ जडचा हर बारा पडघा, हाकाहाक हुइ, कोहक माची।—पना

उ०—२ हाका वडबड अर कोपरिया रा बरणाट सुणनै आडोसी पाडोसी जाग्या। मार हाकाहाक मची। सिरदार लुकता छिपता साव नेडा आयग्या।—फुलवाडी

२ हुकार पर हुकार, वीर ध्वनि।

क्रि प्र —करणी, मचणी, मचाणी, होणी।

रू भे.—हाकहीक, हाकहूक।

हाकि—देखो 'हाक' (रू भे.)

उ०—बिहु पखा हाकि हाकि, हिणि-हिणि मारि-मारि।

—रा सा स

हाकिनी–स स्त्री —तत्र की एक प्रकार की घोर देवी।

हाकिम–स पु [अ.] १ राजा, नरेश, बादशाह।

२ स्वामी, मालिक।

३ शासक।

४ किसी प्रान्त या जिले का सब से बडा अधिकारी।

५ अध्यक्ष, सरदार, नेता।

वि.—हुकूमत करने वाला, शासन करने वाला, हुक्म चलाने वाला।

रू. भे.—हाकम।

हाकिमी–सं. स्त्री [अ.] १ हाकिम का कार्य।

२ शासन, हुकूमत।

३ स्वामित्व, मालिकी।

रू. भे —हाकमी।

हाकियोडौ—देखो 'हाकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हाकियोडी)

हाकियौ-बाकियौ–वि यौ (स्त्री हाकीबाकी) हक्का-बक्का, भौंचक्का, हतप्रभ।

उ०—मांहिलौ साथ हाकियौ बाकियौ हुवौ, रग माहे भग कीयौ। इणा तौ लोह बजायौ। आदमी सौ दौढ मारिया।

—जैतसी ऊदावत री बात

रू. भे —हाक-बाक, हाकबाका, हाकी बाकी, हाक्यौ-बाक्यौ।

हाकी–स. स्त्री [अ हॉकी] १ गेंद खेलने की एक विशेष प्रकार की छडी जो आगे से कुछ अर्द्धचन्द्राकार मुडी हुई होती है।

२ उक्त छडी एव गेंद से खेला जाने वाला एक विश्व प्रसिद्ध खेल।

हाकीबाकी–वि स्त्री —१ हक्की-बक्की, हतप्रभ।

उ०—जठै पना की सायण्या तौ हाकीबाकी रही, हर रावत भीडचा ऊभा छा, ज्या उपरै कोरडी तरवार ही वाही।—पना

२ देखो 'हाकियौ-बाकियौ' (रू भे)

हाकैडिडबड, हाकोवडबड—देखो 'हाकादडबड' (रू भे.)

हाकोटणौ, हाकोटबौ–क्रि स.—हाकना।

उ०—पचाइण वळ पूर, पैठौ ईसर कौ प्रगट। हैवैं थट हाकोटिया, अणी चढावैं ऊर।—वचनिका

हाकोटो–वि —१ प्रसन्न, खुश।

२ स्वस्थ, स्वच्छ।

हाकोटियोडौ–भू का कृ.—हाका हुआ।

(स्त्री हाकोटियोडी)

हाकोबेवौ–स. पु. यौ —शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला, कोलाहल।

हाकौ–स. पु. [राज हाक] १ जोर की आवाज, जोर का शब्द।

२ पुकार, आवाज।

उ०—१ वीदणी अळगा सू ई हाका करचा पण सुभट सुणीजियौ कोनी।—फुलवाडी

उ०—२ बीजै दिन कुवरि जोरावरी कर वेस्या रै घर सू बाहर निसरी बाजार माहे ऊभी रही नै हाकौ दियौ।

—पचदडी री वारता

३ शोर, हल्ला, कोलाहल।

उ०—सुणता हाकौ सहज ही, कीधी जेज कधी न। नीदाळ अब छोडणा भीडाणा कुच पीन।—वी. स.

४ ललकार, चुनौती।

उ०—कळह बिहू कूरमा कजाका, हिणियौ 'अभै' सेन करि हाका।

—सू. प्र.

५ किसी को बुलाने या लोगो को एकत्र करने के लिये किया जाने वाला शब्द, आवाज।

उ०—१ पैलां तौ म्है सूत जाण्यौ। भगवान झूठ नीज बुलावै, अदाता, म्है डरयौ। म्हारा सूं हाकौ ई नी व्हियौ।—फुलवाडी

उ०—२ आ बात कैय वा हाकौ करण वाळी ही के दीवाणजी हाथ जोडनै बोल्या—थानै थारा धणी री सौगन हाकौ करचौ तौ। साचाणी म्है दीवाण इ हू। कुचमादी रै भरोसै हाकौ कर दियौ तौ अबार लोग भेळा व्है जावैला।—फुलवाडी

उ०—३ म्है धापू नै हाकौ कियौ तौ वा पाडोस रा घर सूं दौडी आई। पण सदैई का ज्यू आयनै पगा मे बाथ नी घाली।

—अमरचूनडी

६ खुली चर्चा, खबर, अफवाह।

उ०—१ राजाजी अर महाराणी रै डर सूं भेळा होय पचायती के हाकौ करण री हीमत तौ किणी री नीं ही, पण काना ई काना मे हळाहळ फूटण लागी जकी रात पडचा पै'ली पै'ली किणी सू आ बात अछानी नी री.......।—फुलवाडी

उ०—५ दिन ऊगताई गाम मैं हाकौ रौ फूटग्यौ । जणीका जणीका री जबान माथै एक इज बात ।—अगरचूनड़ी

६ धिक्कार, फटकार, डांट, प्रताड़ना आदि के लिए कहा जाने वाला शब्द ।

उ०—राजा हाकौ कियौ—म्हारै ओरणा री पाळी ती थोड़ी म्हारै माथा पर नाख दौ रे ना जोगा । मूंछाळा व्हैनै एक मामूली टोग-डिया सूं डरनै भागग्या ।—अमरचूंनड़ी

७ चिल्लाहट, हाय-त्राय ।

उ०—अबै बाणिया रै कांई ढील । वौ चूड़ौ झालनै थोड़ी जगेड़ी । बिणियाणी हाकौ करियौ । आडोस-पाडोस रा लोग भेळा हुवा ।

—फुलवाड़ी

८ गर्जना, हुंकार ।

९ बहुत से लोगों के या प्राणियों के एक साथ बोलने पर सम्मिलित स्वर में होने वाली आवाज ।

उ०—'सभैगाल' पान कपूर अरोगाए । जदी गुलाबी नजर पहरि करि धूप धारै । राणा वणा हाकै होतै नजर सूं बाहर पधारै ।

—सू. प्र.

क्रि. प्र.—करणौ, कराणौ, फूटणौ, मचणौ, मारणौ होणौ ।

रू. भे.—हक्को, हुक्क, हुक्को, हकाळौ ।

हाबयौ-बाबयौ—देखो 'हाकियौ-बाकियौ' (रू. भे.)

उ०—१ वै हाबया-बाबया छिद्योड़ा परकोटा रै गाय वळिया । अठी जोयनै उठी जोवै, सामी जोय नै पाछी लारै जोवै ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ नाई छोकरी नै समझावण सारू की नवी बात माथै विचार करण लागौ ई ही के उण रै काना रथ री आवाज साव सलबै सुणीजी । हाबयौ-बाबयौ होय फिळौ खोल्यौ । थरथरावती आवाज मैं बोल्यौ—अन्नदाता तौ पधारग्या । —फुलवाड़ी

हागड़थाट-सं. पु.—१ आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, विनोद ।

२ वैभव, ठाट-बाट ।

रू. भे.—हागड़ाथाट ।

हागड़दि, हागरड़दि-सं. स्त्री.—हाहाकार, त्राहि-त्राहि ।

उ०—धागड़दि धमक ओयण धहलै धर, वागड़दि दिसा वहलै दिगपाळ । हागड़दि हुवै आलम हैकपै, कागड़दि कर्मामस जोण कराळ ।—र. रू.

हागड़ाथाट—देखो 'हागड़थाट' (रू. भे.)

उ०—हागड़ाथाट गहमह हरख, जोख हसी कर जाणणौ । 'जोध-राज' मन वेग गरुड़ ज्यूं, मगरै मजलिस माणणौ ।

—करजुणजी बारहठ

हाड़होड़—देखो 'हाडहोड़' (रू. भे.)

हाड़ी-सं. स्त्री.—रबी की फसल । (मगानगर)

हाजत-सं. स्त्री. [अ.] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा, ख्वाहिश ।

२ मल त्याग की इच्छा, टट्टी की शंका ।

३ शंका, संदेह ।

रू भे.—हाजित ।

हाजमौ-सं. पु. [अ. हाजिम] पाचन शक्ति, पाचन क्रिया ।

उ० चाय मे आधौ भिगसो भेंस री दूध ही, उण री चिकणाई सूं हाजमौ बिगड़ग्यौ ।—फुलवाड़ी

मुहा.—(१) हाजमौ खराब होणौ—पाचन क्रिया बिगड़ना, बद-हजमी होना, पेट मे खराबी होना, सहनशीलता की कमी होना, विवेकहीन होना, बात को मन मे न रख पाना । (२) हाजमौ दुरस्त होणौ पाचन क्रिया ठीक होना, सहनशील होना, विवेकशील होना, बात को मन मे रख पाने की क्षमता होना । (३) हाजमौ बिगड़णौ- देखो 'हाजमौ खराब होणौ' ।

हाजर—देखो 'हाजिर' (रू भे)

उ०—१ तेरै राग सुणि गायन आळा, तेज रिझि अण तोळी । हेरै भूप काशी हूं हाजर, हातूं साथ हरोळी । र. रू.

उ०—२ लठा उपरांत पुराणी अमर री चिकायौ संधी मगायनै छै-नीसी सुरी छै । मोती पुष री सीप रा प्याला में मात हाजर कीजै छै ।—रा सा स

उ०—३ गुजराती कशमीरी कसूरी मारवाड़ी दखणी गिरजाई भटनेरी लाहौरी हजारबोली घणी रंग-रग री बनात मुखमल कलाबूती सोनै रूपै रा वणिया जीण हाजर कीजै छै ।

—रा. सा स.

हाजर जबाब—देखो 'हाजिर जवाब' (रू भे)

हाजर-जबाबी- देखो 'हाजिर-जवाबी' (रू. भे.)

हाजर नाजर-सं पु [अ हाजिर=तैयार+नाजिर=कर्मचारी] वह नौकर या सेवक जो सेवा के लिये तैयार रहता है ।

उ०—थे जो पता उघाड़ौ दीनानाथ, म्है हाजर-नाजिर कद की खड़ी ।—मीरां

क्रि. वि.—सुगं आगा, दिन वहाड़े ।

हाजरात—देखो 'हाजिरात' (रू. भे.)

हाजरि—देखो 'हाजिर' (रू भे.)

उ०—१ ऊजळा प्राचा री खवास्या ऊजळा रूपोटा लीआं हाजरि खड़ी मिसरी, अफीण सूं अरोगाडी जै छै ।—रा. सा स.

उ०—२ राम सकळ मैं रमि रह्या, हाजरि खड़ा हजूर । हरीया अंध न देखई, चहु दिस ऊगा सूर ।—अनुभववाणी

२ देखो 'हाजरी' (रू. भे.)

हाजरियौ-सं. पु.—१ सेवक, अनुचर, नौकर ।

उ०—दिन उग्यौ, सिनान-पाणी करघा अर बीन-बीनणी रै मौड बांध्या । हाजरिया-हवालदार एकौ ताणा तथा बैल्या री कतार सजाई ।—वसदोख

२ संदेशवाहक ।

उ०—१ पण जूता री हुकम मिळता ई बादळ पाछौ पैतरो बदळियौ । एक हाजरिया नै भेज पोळिया नै तेडायौ ।—फुलवाडी

३ हाथ मे रखने का डडा ।

हाजरी—स स्त्री [अ हाजिरी] १ उपस्थिति, मौजूदगी या वर्तमान होने की अवस्था या भाव ।

२ किसी कार्य विशेप या अवसर पर उपस्थित रहने की अवस्था, मौजूदगी ।

३ कार्यालय या नौकरी पर नियत समय पर उपस्थित होने की क्रिया, उपस्थिति ।

उ०—छठै दिन दरबार में पाछौ हाजर व्हैणौ । डोढ दिन मारग रौ । आधी ढळियां ई घोडै नी चढिया तौ हाजरी मैं चूक व्है जावैला ।—फुलवाडी

४ विद्यार्थियो, मजदूरो, सिपाइयो आदि की ली जाने वाली रोजाना की उपस्थिति ।

उ०—सोपौ पडग्यौ, सरणाटौ छायौ । बत्ती काटी, लोटियौ बुझायौ । हाजरी हुई अर सोवण री घटी बाजी ।—दसदोख

क्रि. प्र.—देणी, बोलणी, लैणी होणी ।

५ उपर्युक्त उपस्थिति के फलस्वरूप किसी पजिका मे किया जाने वाला अकन, हस्ताक्षर आदि ।

क्रि प्र.—करणी, कराणी, माडणी, लगाणी, लिखणी, लैणी ।

६ कर्त्तव्य, ड्यूटि ।

उ०—भाग सू उणरी ड्यूटी बी. डी ओ. सा'ब रै घरै इज लागी । वौ जितरौ नाचण-गावण मैं हुसियार हौ, उतरौ ई हाजरी साजण मै पण पाटक हौ ।—अमरचूनडी

७ सेवा, चाकरी, टहल ।

उ०—१ वठै म्हारै ही काम वेगौ, चौधरीजी री हाजरी मै आखी रात खडा अटकता रैया ।—दसदोख

उ०—२ बेटौ इग्याकारी ऐडौ कै बाप नै सपना मे ई ओडौ को देवै नी । आठ पौ'र बाप री हाजरी मैं हाथ जोडचा एक पग रै पाण ऊभौ रैवतौ ।—फुलवाडी

८ अपने स्वार्थ के लिये या उद्देश्य पूर्ति के लिये किसी के पास बार-बार जाने की क्रिया या भाव ।

उ०—खासा दिना ताई सेठ री वीणती साथ ऐळी गी तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड आपरा मन समझावणौ ई सावळ जाणियौ । जणा जणा री हाजरी साझिया कांई सार ।—फूलवाडी

९ देखो 'हाजिर' (रू. भे.)

रू भे.—हाजरि, हाजिरि ।

हाजित—देखो 'हाजत' (रू भे)

उ०—मध सिवरन जु ऐसै भाई, राम विना हाजित नही काई । गद गद कठा कमळ विगासा, पाया पेम भया परगासा ।

—अनुभववाणी

हाजिर—वि [अ] १ उपस्थित, मौजूद, वर्तमान, विद्यमान ।

२ प्रस्तुत ।

३ सन्नद्ध, सावधान, तैयार ।

४ उपलब्ध ।

रू भे - हाजर, हाजरि, हाजरी, हाजिरि, हाजिरी ।

हाजिर-जबाब—वि यौ [अ] प्रत्येक बात का तत्काल युक्तियुक्त उत्तर देने मे निपुण, प्रत्युत्पन्न मति ।

रू भे —हाजर-जबाब ।

हाजिर-जबाबी—स स्त्री. [अ] १ 'हाजिर-जबाब' होने की अवस्था या भाव ।

२ प्रत्युत्तर की निपुणता, प्रत्युत्पन्नमतित्व ।

रू भे —हाजर-जबाबी ।

हाजिरात—स स्त्री. [अ.] भूत-प्रेत आदि को बुलाने की क्रिया ।

रू भे.—हाजरात ।

हाजिरि—स पु —१ छडीदार, प्रतिहार । (ह. नां मा)

२ देखो 'हाजरी' (रू भे)

रू भे —हाजिरी ।

हाजिरियौ—देखो हाजरियौ' (रू भे)

उ०—गळ बिच सेली हाथ हाजिरियौ, अग बिभूति रमायो । मीरां कै प्रभु हरि अविनासी, भाग लिख्यौ सोही पायौ ।—मीरा

हाजिरी—१ देखो 'हाजरी' (रू भे)

२ देखो 'हाजिरि' (रू. भे)

हाजी—स पु [अ] वह व्यक्ति जिसने हज की यात्रा करली हो, हज किया हुआ ।

हाजी-विट्ठल—स पु —मुसलमान हिंजडो का एक पीर । (मा. म)

हाट—स. स्त्री [स हट्ट] १ वह स्थान, मकान या कक्ष जहां वस्तुओ का क्रय-विक्रय किया जाता है, दुकान ।

उ० —१ तुं सरवर की मछली, कौण पिता कुण माय । अलप सनेही कारणै, हाटौ हाट विकाय ।—अनुभववाणी

उ०—२ सांवळगढ रै अडूड च्यानणै मैं सेठ साहूकारा री माल-मत्ता री सत्ता सरूप सागी पाग ठा' पडरैयौ हो । हाट बजार री अर सुनारा रै हटडै री सोभा देख'र वगता री आख्या खुली री खुली रैवै ही ।—दसदोख

क्रि प्र —करणी, खुलणी, मडणी, माडणी, लगाणी, लागणी ।

२ वस्तुओ के क्रय-विक्रय का केन्द्र बाजार ।

उ०—१ पेम न निपजै खेत मैं, हाट न विकतौ जोय । हरीया गाहक पेम की, सिर दै लेसी सोय ।—अनुभववाणी

उ०—२ जगळ जाट न छेडियै, हाटां बीच किराड । रांगड कदै न छेडियै, पटकै टाग पछाड ।—अग्यात

क्रि. प्र.— खुलणी, मंडणी, मांडणी, लागणी ।
रू. भे.—हट, हटण, हट्ट, हट्टि, हट्ट, हाटक, हाटी, हाटु ।
अल्पा; – हाटकी, हाटड़ी, हाटडि, हाटडी ।

हाटक–सं. पु. [सं.] १ स्वर्ण, सोना । (अ मा, ह ना मा)
उ०—१ हाटक रांग आराटक खडण, हाटक-गेट आधीस मिहं-डण ।—र. ज प्र
उ०—२ मणि कंकण अगद अमूल्य पद हाटक नूपर । नवसासी नवरग, सग भुज बसी सुदर ।—रा. रू.
उ०—३ मगरूर धतोधत मत्त गवां, उनमत्त गुनेस्वर वत्त भवा । फबि हाटक दड धुजा फहरै, कुंडळी जिम भाटक मुंड करै ।
—मे म.

२ देखो 'हाट' (रू. भे)
उ०—एक जोइ नव हाटक, हाटक दान प्रवीण । करई ति मागण आलवि, आलवि मलई वीण ।—जयसेखर सूरि

हाटककोट, हाटकपुर–सं पु. यौ. [स] स्वर्ण निर्मित नगर, लंका ।

हाटकलोचण–स. पु. यौ [रा हाटक+लोचन] हिरण्याक्ष नामक दैत्य ।

हाटकौ—१ देखो 'हाटक' (रू. भे)
२ देखो 'हाट' अल्पा, रू भे.)

हाटकेस–स. पु [स हाटकेश] शिव की एक मूर्ति जिसकी उपासना गोदावरी के तट पर होती है ।

हाटड़ी, हाटडि, हाटडी—१ देखो 'हाट' (अल्पा; रू. भे.) (उ र)
उ०—१ कुलड़ कटोरदान, कचोळा लोटा, उखळ माटडी । साह लधेड़ दास प्रजापत, व्याही नगरी हाटड़ी ।—वसदेव
उ०—२ म्है तोनूं पांच रुपया देयस्यां तीसूं तूं हाटड़ी कर भावै लूमचौ कर सो थारो गुजरान हुयो जायसी ।
—साह रामदत्त री वारता

२ देखो 'हटडी' (रू. भे.)

हाटी–स. पु [सं. हाट्टिक] १ हाट लगाने वाला वणिक, व्यापारी ।
उ०- -दम आवै दम ऊपरां हाटी लोप हटवक । समभ मुवां सिर संक्रमै, कीड़ी जेम कटक ।— बां. दा.
२ देखो 'हाट (रू भे)

हाटू—देखो 'हाट' (रू भे.)

हाटेड़ी–स. पु. [सं. हाट्टिक] हाट लगा कर माल बेचने वाला, दुकान-दार ।

हाटोहाट–क्रि. वि.—एक दुकान से दूसरी दुकान, दुकान-दुकान पर ।
उ०—तु सरवर की मछली, कौण विना कुणमाय । अलप सनेही कारणै, हाटोहाट विकाय ।—अनुभववाणी

हाठ—देखो 'हाट' (रू. भे.)
उ०—पाली मैं भिखणजी स्वामी आया लेइ नै एक हाठ मैं ठहरया ।—भि. द.

हाठ्ठ, हाठू—देखो 'मांठू' (रू भे.)

उ० होकारै होकारो होइ नै रहियो छै । लाल बरछी थकी न रही छै । पगेज बराबर चालता घोडां रा हाठुआं उपरि अध लोही ए रा भाग हजारै री वाभी री भांत विराज नै रहिया छै । फौज बराबर चालतां आकास उरै मेहुरा अबर हुइ नै रहिया छै ।
—रा. सा. सं.

हाड, हाडक–सं. पु. [सं. हड्ड] १ किसी प्राणी के शरीर का अस्थि समूह, हड्डी, अस्थि । (उ. र)
उ०—१ आप री हाड-हाड कुळणी हो । वो तो ऐड़ो डरचो कै काळजो सुरक सुरक करण लागो । ठगाई करण वाळा ठग खुद ठगीजै तो वै पूरा हाड-गाय व्है जावै ।—फुलवाड़ी
उ०—२ पुलिस गांम गांमनै सूं पनरै आदमियां नै पकड़'र लेयगी अर लैजायनै ठरकावणा सरू किया तो पछै भजलो रै भीड़ूरांम नै । मार-मारनै सगळां रा ई हाड जोजरा कर नाख्या ।
—अमरचूंनड़ी

२ मृत प्राणी के शरीर की हड्डी का टुकड़ा अस्थि खण्ड ।
उ० १ गोस पूत अमलजा, लज पर हुवि अराजै । रुळै हाड उकाळ, गीध ग्वाळी रगावजै ।— जांभो
उ० – २ तौ मैं च्यार कळस, रतन रै रोड़ा बंद, च्यारां पर अळग-अळग च्यार नांम लिखिया । सो राजी राजी रोय न्होड़ा खोलिया तो कांकड़ कोयला तुस अर हाड नीसरिया ।—सिंघासण बत्तीसी

३ शरीर, पिंड ।
उ०—१ पांच पांडु अरु कुंती द्रोपदी, हाड हिमालय गरै । जग किया बळि लेण इंद्रासण, सो पाताळ धरै ।—मीरां
उ०—२ अधारी रात, फळसो उघाड़ो, मरोड़ ठर्र, तुलसी जाड़ो । ठडा फिरता बिछावणा मैं मारजा दिया आपारा सोयसी । कोढियै जाडै हाड धोळा कर राख्या है । वरसोख
उ०—३ आह्वाण विनां वरण करसी सिंधु न व्यु मारुआडि । तु सूं पुण करसूं गि मा रगूं, जिमा पांगि हाडि ।—मळारघान

४ वंश का गौरव, वंश की मर्यादा, कुलीनता ।
वि.—सपेद, श्वेत । ५ (डि. को.)
मह; —हाडल, हाडळ हाडाळ ।
रू. भे.—हाडि, हाडी ।

हाडकाड़ौ-सं. पु —वह स्थान जहां मृत पशुओं की हड्डियां पड़ी रहती है ।
रू. भे.—हाडकोड़ ।

हाडकी—देखो 'हाड' (अल्पा; रू भे.)
उ०—किण हि सूं डरता नहीं, एसो हुतो औ जोरावरी जोध कै । मारी नै गाड दिया ज्यांरी हाडकियां नहीं सकिया सोध कै ।
—जयवांणी

हाडकौ—देखो 'हाड' (मह, रू. भे.)
उ०—१ ठौड़ ठौड़ गांवा रै बारै ढोर-डांगरां रै हाडकां रा ढिग लाग्योड़ा पड़्या हा अर जठै तठै बाटकां रै ओलै मिनखां री लासां

पडी ही ।—रातवासौ

उ०—२ फगत पनरै दिना मैं ईज मेथकी भूडी दीखण लागगी । भ्राख्या धसगी जबाडा बैठग्या भ्रर हाडका निकळ गया ।

—रातवासौ

उ०—३ जच्चा-राणी रै हळद, तेल भ्रर गुज्जी रै भ्राटा री पीठी करनै भ्राखौ डील मसळियौ । बाटा उतारी । हाडका लुळाया । साधौ-साधौ दबायौ ।—फुलवाडी

मुहा —१ हाडका कुळणा=शरीर मे भ्रत्यन्त दर्द होना २ हाडका-हाडका खुलणा=शरीर की जकडन दूर होना ३ हाडका जोजरा करणा=बुरी तरह पीटना ४ हाडका दूखणा=शरीर में दर्द होना. ५ हाडका फोड़णा=पीटना. ६ हाडका भांगणा=बुरी तरह पीटना ७ हाडका भागणा=जगह-जगह शरीर मे दर्द होना ८ हाडका निकळणा=कमजोर होना, कृशकाय होना ९ हाडका बधणा=शरीर मे जकडन पडना. १० हाडका बोलणा=कमजोरी के कारण चलते समय हड्डियो से कट-कट की भ्रावाज होना ११ हाडका मे रीळा ऊठणी=रह-रह कर शरीर मे कसक होनी, दर्द की चीस चलनी १२ हाडका लुळाणा=उबटन भ्रादि करके शरीर के भ्रगो को इधर-उधर मोडना, व्यायाम कराना ।

हाडकोड़—देखो हाडकाडौ' (रू भे)

हाडल—देखो 'हाड' (मह, रू भे.)

हाडजळ–स पु —भ्रग्नि, भ्राग । (ना डि को)

हाडजुर–सं पु —हड्डियों का ज्वर, भ्रस्थि-ज्वर ।

हाडजोड़–स पु —शरीर की हड्डियो का सधिस्थल, हड्डियो का जोड ।

हाडफूटणी, हाडफूटि, हाडफूटी–सं स्त्री. [स. हड्डस्फूटि] हड्डियो मे होने वाली पीडा, दर्द । (भ्रमृत)

हाडफोड़–वि —१ बलवान ।

२ मासाहारी ।

हाडबरड़–वि —जबरदस्त । (बांकीदास)

हाडबेर, हाडबैर–स पु [स. हड्डु-वैर] वह दुश्मनी या वैर जो किसी निकट सम्बन्धी को मारने से उत्पन्न होता है ।

उ०—१ भूगडा चुगायनै ऊगै कह्यौ, सुणि हो साखळा, ठाकर मोटा मोटा गढपती छत्रपती था, तिणा रै नै थारै कोई लांबौ वैर नही, धरती रौ विरोध नही, कोई हाडबैर नही । तै इणां री इसी भात इज्जत गमाई ।—कहवाट सरवहियै री वात

उ०—२ खून किया जाणौ खलक, हाडबैर जो होय । बणै सगाई वयण तौ, कल्पत रहै न कोय ।—र. रू

रू भे —हाडवैर ।

हाडबड़ियौ–सं पु.—कृषि कार्य मे खेत मे काम कराने के बदले काम करने वाला ।

वि वि —परस्पर सहयोग की दृष्टि से एक किसान दूसरे किसान के खेत मे कार्य करता है । इस कार्य की कोई मजदूरी न लेकर वह भ्रपने खेत मे वापस उससे भ्रपने खेत मे कार्य करवा लेता है । इस प्रकार की चढी हुई पार को उतारने वाले को 'हाडवडियौ' कहा जाता है ।

हाडवड़ी–स स्त्री —'हाडवडियै' का कार्य, कार्य के बदले किया जाने वाला कार्य । (कृषि)

हाडवैर—देखो 'हाडबैर' (रू भे)

हाडसकलि–स स्त्री [स हड्डु+भृखला] भ्रस्थि पजर, भ्रस्थि-समूह ।

उ०—ताहरा भोपतजी रा नळ छूटि छूटि पडिया । भ्राखि भ्रर इद्री छूटि पड़िया । हाडसकळि जुदी हुई ।—द वि

हाडहोड, हाडहौड–स स्त्री —१ प्रतिस्पर्धा ।

२ बहस, तर्क, दलील ।

३ शोरगुल, हल्ला ।

रू भे —हाडहोड ।

हाडा–स. पु —१ चौहान क्षत्रियो की एक शाखा ।

उ०—१ कुळ हाडा कूरमा, किया विण भ्राडा कारण । ज्या भ्रागै भ्रगराज, धरै गजराज न धारण ।—रा रू.

उ०—२ सोनीगरा का हू कहू बखाण, हाडा बूदी का धणी ।

—बी. दे

२ राठौडो की एक उपशाखा ।

उ०—खोखर २९, मूळा ३०, वाढेल ३१, हाडा ३२, सीमाळिया ३३...... ।—बा. दा. ख्यात

रू. भे —हुडा, हड्डा ।

हाडारौखेत–स. पु यौ.—वर्षा ऋतु मे होने वाला एक प्रकार का क्षुप ।

हाडारौतिल–स पु. यौ —एक प्रकार का तिलहन जो बिना बोये होता है ।

हाडाळ—देखो 'हाड' (मह, रू भे)

हाडाहोड—देखो 'हाडहोड' (रू भे)

हाडि—१ देखो 'हाड' (रू भे.)

उ०—तन मन पहली भ्राडि दै, हरीया नेह न छाडि । सूर सहै रिण खेत मैं, यु मांसा चूकी हाडि ।—भ्रनुभववांणी

२ देखो 'हाडी' (रू भे.)

हाडी–स स्त्री. [देशज] १ हाडा राजपूतो की कन्या ।

उ०—सीसोदणी बहूजी हाडी जी री मा' कछवाही भगवतसिंघजी री मा ३ ।—बा दा. ख्यात

२ मादा कौवा ।

३ ऊट का एक रोग जिससे उसके पिछले पैर की हड्डी बाहर निकल जाती है ।

४ देखो 'हाड' (रू भे)

रू. भे.—हाडि।

हाडेराव—देखो 'हाडोराव' (रू. भे.)

उ०—राजता बुरणी पांणी री पणियार, होद बतावो, ऐ पणिया-रघां हाडेराव रो।—लो गी.

हाडोघास—सं. पु.—वर्षाऋतु में होने वाला एक प्रकार का घास।

हाडोतण—सं. स्त्री.—१ हाडोती प्रदेश की।

२ हाडोती प्रदेश में उत्पन्न तमाखू।

उ०—होको राज री रावरगीलो नै है बूटादार चिलम सवागण यूं कही म्हनै पेर भरी सरदार, ग्रनवीराजा छलियोड़ी जाजम पर होको मढियोड़ी निजल मैं होको मह्‌रो गूंजै राज हाडोतण प्यारी लागै राज।—लो गी.

३ देखो 'हाडो' (१) (रू. भे.)

हाडोती—सं. स्त्री.—राजस्थान का वह भाग या प्रदेश जहाँ कोटा तथा बूंदी के जिले स्थित हैं और जहाँ पर हाडा शाखा के चौहानों का राज्य था।

उ०—वीराल लाखरण रो, तिरण रा हाडोती मूं छै।—नैणसी

रू. भे.—हडोती।

हाडोराव—सं. पु.—१ हाडा शाखा का क्षत्रिय राजा।

२ एक प्रकार का लोक गीत जो दुल्हे के तोरण पर आने पर गाया जाता है।

रू. भे.—हाडेराव।

हाडोहाड—देखो 'हाडोहाड' (रू. भे.)

उ०—जणै म्हारै तो पिंडलजी-आळी बात हाडोहाड बैठगी।
—वरसगांठ

हाडौ—सं. पु. (स्त्री हाडी) १ हाडा जाति का क्षत्रिय।

उ०—१ हाडौ भारथसिंघ छत्रसालोत साथै काम आयौ।
—बां दा ख्यात

उ०—२ बहुव पटा लगो खग वांनै, मोडै खळ करसां गरद।
लख वळ मिल्यां वळां कौ टाळो, हाथी हाडो गरास हद।
—महाराज छत्तरसिंह रो गीत

२ कौवा।

उ०—सधी सिक्खा फौज कूच कीधी। खत्र रा गोट इसा विध आभै चढ्या कै वळतो गुलाबी उजास मगसो पड़ग्यो। हळवळ होकारां रै सागै फौज आगै बधती गी। कांकड़ मैं इण हळवळ रै सागै हाडा काव-कांव करता कांनी कानी उडण लागा।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हड, हडो।

हाडोहाड—क्रि. वि.—१ अंग प्रत्यंग में, सम्पूर्ण अंग में।

२ यथोचित, ठीक।

रू. भे.—हाडोहाड।

हात—देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ उडै पग हात किरका हुवै अंग रा, बहै रत जेम सावण बहाळा। आप आयो वरी जोय नै भाडिया, लडै रिण भळ भळा निराताळा।—र रू.

उ०—२ भई हूं दिवानी तन सुध भूली, कोई न जांणी म्हारी बात। मीरां कहै बीती सोई जांणै, मरण जीवण उन हात।
—मीरां

हातकमाई—सं. स्त्री.—१ स्वयं का उपार्जित धन, खुद की कमाई।

२ जो वस्तु अपने हाथ की या अपनी मेहनत से बनी हो।

उ०—हात-कमाई घाट हुरक सूं पतळी गट गट पीणी। घोर रैत सग चेत घमडी, चोर लियोड़ी चीणी।—ऊ का.

हातम—देखो 'हातिम' (रू. भे.)

हातमताई—सं. पु. [फा.] फारस देश का एक व्यक्ति जो दीन-दुखी जनों की सहायता करने के लिये प्रसिद्ध था।

उ०—हातमताई हरण सूं, पारातो पहिचांह। अमर नाम उण रो अजै, की जाता कहियांह।—बां दा

रू. भे.—हातिमताई।

हातळ—देखो 'हाथळ' (रू. भे.)

उ०—पाड़तो अरी हातळ पड़ग पछटोतो, वेख वागळ मगळ पडै दारू। गोड करता गयंद खदगार्थ गयो, गयंद हुव वांकीया जैम गारू।—रांगवान लाळस

हातळियो—देखो 'हाथ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—पूगो पातळियाह, हातळिया जोड्त हुवा। कूकै कावळियाह बावळिया तै बोलिया।—जुगतीदांन देथो

हातळी—सं. स्त्री.—आरा की मूठ या बेंट जिसे दोनों हाथों से पकड़ कर आरा को खींचा जाता है।

हातवीसाळी—देखो 'वीसहती' (रू. भे.)

उ०—वीणापत सक्त हातवीसाळी, सुकळा अबर आंणंद सीवी। मुक्ताभळ जर्य उजळ माळी, सारद तुज नीगांमी नमस्ते।
—रांगवान लाळस

हाता—वि. स्त्री.—संहार करने वाली, हनन करने वाली।

उ०—देवी नारसिंघी वराही विख्याता, देवी इला आधार आसुर हाता।—देवि.

हातापाई—सं. स्त्री.—१ द्वन्द्व युद्ध, झगड़ा।

२ परस्पर की छोटी लड़ाई जिसमें हाथों पैरों से प्रहार होता है।

हाताळौ—देखो 'हाथाळ' (रू. भे.)

हातिम—वि. [अ.] १ दानी, उदार।

२ निपुण, चतुर।

सं. पु.—१ न्यायाधीश, जज।

२ काजी।

३ एक बड़ा कौवा।

रू. भे.—हातम।

हातिमताई—देखो 'हातमताई' (रू. भे.)

हाती—देखो 'हाथी' (रू भे)

हाते, हातै–क्रि वि —१ हाथ से।

सर्व —२ स्वयमेव, अपने-आप, स्वत ।

उ०—हमैं कोई नै उर्लै पासै मता आवण देज्यो। घडी दोय रात गया हू हातै आऊ छू।—पलक दरियाव री बात

३ हाथ मे।

हातोताळी–क्रि वि —शीघ्र, जल्दी।

हातोपाई–स स्त्री —१ हाथो का प्रक्षालन, हाथ धोने की क्रिया।

उ०—सु गुरु कहै वेगा हुवो उठो, गुरु हातोपाई करण गयो।

—पचदडी री वारता

२ देखो हातापाई' (रू भे.)

हातोहात, हातोहाथ—देखो 'हाथोहाथ' (रू भे)

हातौ–स. पु —१ घेरा हुआ स्थान, अहाता।

२ सीमा, हद।

३ रोक, निषेध।

४ स्थापना नवरात्रि के अवसर पर देवि के लिये बनाये गये रग बिरगे कागजो के चिन्ह जो दीवार पर चिपकाये जाते है।

५ देखो 'हाथी' (रू भे)

हात्थियौ, हात्थीयौ—देखो 'हाथी' (अल्पा, रू. भे)

उ०—इसिइ समय [पर] दलइ वरत्तमांनि राजा सन्नद्धबद्ध लोह चूरण्ण हुई सुहुड सुहडइ, सुगड हात्थीया लूडइ ।

—व स

हाथ–स. पु. [स हस्त] १ मनुष्य जाति के प्राणियो के शरीर का कधे से लेकर पजे तक का अग, भाग या हिस्सा, हस्त, हाथ, कर।

(उ र)

उ०—१ पण खवास री आख्या मे आसू छळक आया। वळै पगा रै हाथ लगाय बोल्यो—अदाता, औ काई हाको व्हियो।

—फुलवाडी

उ०—२ तिसोता जिसो नीर गभीर टाको, बिलूंमै बिचै जाळ भुज्जाळ बाको, जिका कोट नूं देवता हाथ जोडै, चहूं कूंट रै बीच बैकूट चोडै।—मे म

पर्याय—आच, आचित, कर, करग, जुधजय, तस, दोर, पचसाख, पाचूसाख, पण, पागि, बाहू, भुज, भुजा, सय, सुकर, हसत, हात।

मुहा०—१. हाथ अजळी करणौ=हाथ जोडना, दोनो हाथो की अगुलियो को परस्पर ऐसे गुथना कि दोनो हाथो की स्थिति एक पात्रनुमा हो जाय। २ हाथ अटकणौ=कार्य करते समय एका-एक हाथ रुकना, किसी वस्तु या उपकरण के अभाव मे कार्य रुकना, अर्थाभाव के कारणवश कार्य रुकना। ३. हाथ अटकाणौ=बाधा या रुकावट उत्पन्न करना। ४ हाथ आणौ=मिलना या उपलब्ध होना। ५ हाथ उठावणौ=उपस्थिति अथवा समर्थन मे हाथ ऊपर करना, मारपीट करना। ६ हाथ उतरणौ=किसी चोट या झटके के कारण हाथ की हड्डी चटखना, सधिस्थलो से हड्डी का अलग हो जाना, अधिकार या कब्जे से चला जाना। ७ हाथ उत्तर देणौ=मांगने वाले को न्यूनाधिक कुछ देकर विदा करना। ८. हाथउधार, हाथ उधारौ=ऐसा ऋण जो बिना लिखा-पढी के जबानी तौर पर अल्प समय के लिए लिया जाता है। ९ हाथ ऊचौ करणौ=देखो 'हाथ उठावणौ'। १० हाथ ऊपर हाथ धर नै बैठणौ=अकर्मण्य होकर बैठना, निकम्मा हो जाना, कुछ करने धरने की दशा मे न होना। ११ (दो-दो) हाथ करणा=प्रतिस्पर्धा करना, मुकाबला करना। १२ हाथ काटणौ=देखो 'हाथ बाढणौ'। १३ हाथ काठौ व्हैणौ=मितव्ययता का स्वभाव होना, कजूस होना। १४ हाथ खडौ करणौ=उपस्थिति अथवा समर्थन मे हाथ ऊपर करना। १५ हाथ खाणौ=किसी के हाथ का बनाया हुआ खाना खाना, किसी को मारने-पीटने के लिए तत्पर रहना, किसी पर क्रोध करना। १६ हाथ खीचणौ=खाना खाते हुए रुक जाना, खर्च से हाथ खीच लेना, तटस्थ हो जाना। १७ हाथ खाली होणौ=धन या आभूषणो का अभाव होना। १८ हाथ खुजाळणौ=आय होने की स्थिति होना, कही से रुपये पैसे प्राप्त होने के सकेत मिलना। १९ हाथ खुलणौ=खर्च करने की प्रवृत्ति होना, अधिक खर्च करना, कुछ करने का हौसला होना। २० हाथ खोळौ व्हैणौ=मन से उदार होना, दानी होने का गुण होना, अधिक खर्चीला होना। २१. हाथ घालणौ=किसी कार्य मे हाथ डालना, शरीक होना, कार्य सभालना। २२ हाथ घिसाई करणी=किसी कार्य का अभ्यास करना, व्यर्थ श्रम करना। २३ हाथ चढणौ=हाथ में आना, काबू मे आना, वश मे आना। २४. हाथ चालणौ=धन की कमी न रहना, यथा अवसर साधन मिल जाना, गुजारा होना, प्रहार होना, दक्ष और चतुर होना। २५. हाथ छोडणा=किसी की मदद करना छोड देना। २६ हाथ झटकणौ=झटका देकर हाथो को साफ करना, गीले हाथों को झटका देना जिससे पानी छूट कर गिर जाय, किसी कार्य से इन्कार करना, अपनी असमर्थता प्रकट करना। २७ हाथ जमणौ=किसी कार्य मे दक्षता प्राप्त करना, कुशल होना। २८ हाथ झाट-कणौ=देखो 'हाथ झटकणौ'। २९ हाथ जोडणौ=अभिवादन करने के लिए दोनो हाथो को मिलाकर ऊपर उठाना, कर-बद्ध होना, क्षमा मागना, झझट के कार्यों से दूर रहना, छुटकारा पाना। ३० हाथ झालणौ, हाथ झेलणौ=किसी का हाथ पक-डना, वर द्वारा वधु का पाणिग्रहण करना, किसी को सहारा देना, किसी के कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। ३१ हाथ झाडणौ=देखो 'हाथ झटकाणौ'। ३२ हाथ टाळणौ=अलग हट जाना, बचाव करना। ३३ हाथ ठरणौ=सर्दी से हाथ ठिठु-रना, हाथ सुन्न होना। ३४ हाथ ढीलौ करणौ=उदारता

दिखाना, दान करना । ३५. हाथ ढीलो तो जगत गोलो=देखो 'हाथ पोलो तो जगत गोलो'। ३६. हाथ ढीलो तो जगत लीलो=उदारता रखने वाले पर सभी प्रसन्न रहते है। ३७. हाथ तंग होणो=घर मे तंगी होना, स्थाई या अस्थाई तौर पर रुपये पैसे की तंगी आना। ३८ हाथ तपावणो, हाथ तापणो=सर्दी उड़ाने के लिए आग के सामने हाथ करना। ३९. हाथ दबावणो, हाथ दाबणो=दर्द कम करने के लिए हाथो को धीरे धीरे दबाना, किसी के हाथ को दबा कर कोई गुप्त संकेत करना। ४०. हाथ दिराणो=सहायता या मदद करना पाणिग्रहण करना। ४१. हाथ दिखाणो=किसी ज्योतिषी को हाथ की रेखाएँ दिखाकर भाग्य जानना, चतुराई, बहादुरी या हस्त कौशल दिखलाना। ४२ हाथ देखणो=भविष्य बताने के लिए हाथ की रेखाओ का अध्ययन करना, हस्तकौशल देखना। ४३ हाथ देणो, हाथ धरणो=सहायता रखना, सहायता देना। ४४ (माथे) हाथ देणो, (माथे) हाथ धरणो=वरद हस्त रखना। ४५ हाथ धरणो=हाथ रखना। ४६. हाथ धूजणो=हाथ में कम्पन होना, हाथो मे वात रोग होना, भय के कारण हाथ कांपना, कामासक्त होना। ४७. हाथ धोय बैठणो=खो के बैठ जाना। ४८ हाथ धोय लारै पड़णो=किसी का पीछा करना, किसी को बात-बात मे तंग करना। ४९. हाथ नी धरण देणो=किसी का वश नहीं चलने देना, होशियार रहना। ५०. हाथ नी लगावणो=स्त्री का रजस्वला होना, अशौच होना, कार्य नहीं करना, छूना तक नही। ५१. हाथ नै हाथ नीं सूझणो=गहन अन्धकार होना। ५२. हाथ नै हाथ खाणो=नितांत अविश्वसनीय स्थिति होना, एक दूसरे को नुकसान पहुँचाने मे तैयार रहने की दशा होना। ५३. हाथ पकड़णो=किसी का हाथ पकड़ना, पाणिग्रहण करना, सहारा देना, संभाल करते रहना। ५४ हाथ पकड़ पुंणचो पकड़णो=अंगुली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना, धीरे धीरे या शनैः शनैः काबू मे करना, बंधन मे लेना। ५५. हाथ पग चलाणा=देखो 'हाथ पग पटकणा'। ५६ हाथ पग चिपणा=जहाँ का तहाँ खड़ा रह जाना, हिलने डुलने की स्थिति मे नहीं रहना, भाग नहीं सकना। ५७. हाथ पग जोड़ना=हाथा-जोड़ी करना, अनुनय-विनय करना। ५८. हाथ पग टूटणा=अस्वस्थता के कारण हाथो-पावो मे दर्द होना। ५९. हाथ पग टेढा होणा=वात रोग से ग्रसित होना। ६० हाथ पग ठंडा पड़णा=मरणासन्न होना, शरीर की गर्मी समाप्त हो जाना। ६१ हाथ पग पटकणा=छटपटाना, हाथ पांव मारना, छूटने का भरसक प्रयत्न करना। ६२ हाथ पग फूलणा, हाथ पग फूलीजणा=घबरा जाना। ६३. हाथ पग मारणा=पानी से निकलने के लिये हाथ-पांव हिलाना, देखो 'हाथ पग पटकणा'। ६४. हाथ पग हालणा=अपने कार्य मे समर्थ होना, कार्य करने योग्य होना, शरीर काम करने की दशा में होना। ६५. हाथ पग हिलाणा=हाथ-पावो मे हरकत होना, चेतन्य होना, किसी कार्य के लिये प्रयास करना। ६६ हाथ पड़णो=हाथ मे आना, उपलब्ध होना, सहसा कहीं से मिल जाना, वश मे या काबू मे आना। ६७ हाथ पसारणो=हाथ फैलाना, अपना प्रभुत्व फैलाना, बांह पसारना, भीख मांगना। ६८. हाथ पाणी घालणो, हाथ पाणी घालणो, हाथ पाणी देणो=किसी को करने, किसी बात को कहने या किसी वस्तु को उपयोग मे लेने के निषेध मे हाथ मे पानी देकर शपथ दिराना, निषेध कराना। ६९ हाथ पाणी लेणो=हाथ मे पानी लेकर शपथ लेना। ७०. हाथ पाधरा राखणा=हाथ सीधे रखना, सीधा एवं सरल व्यवहार करना। ७१. हाथ पीळा करणा=शादी कर देना. ७२ हाथ पोलो नै जगत गोलो=उदारता दिखा कर जगत को गुलाम बनाया जा सकता है। ७३. हाथ फेंकणो=पासा फेंकना, पासा चलाना। ७४. हाथ फेरणो=किसी के माथे पर आशीर्वाद का हाथ रखना, किसी पर धीरे धीरे हाथ फिराना, ठग लेना। ७५ हाथ फैलाणो देखो 'हाथ पसारणो'। ७६. हाथ बंधणो=किसी प्रकार के बंधन में आना। ७७ हाथ बळणो=आग से हाथ जलना। ७८ हाथ बारै करणो=मुक्ति देना, छोड़ना। ७९ हाथ बारै होणो=वश मे नहीं रहना, अधिकारच्युत होना। ८० हाथ बाळणो=आग से हाथ जलाना। ८१. हाथ बिकाणो=किसी के पूर्ण अधीन होना। ८२. हाथ बैठाणो=अभ्यास करना। ८३ हाथ भरीजणो=धन या आभूषणो से हाथ परिपूर्ण होना। ८४ हाथ भींजणो=हाथ गीला होना, कृपण होना। ८५ हाथ मलणो=देखो 'हाथ मसळणो'। ८६. हाथ मसळणो=दोनो हाथो को परस्पर रगड़ना, विवशता या मजबूरी मे पछताना, पश्चाताप करना। ८७. हाथ मांजणो=हाथ धोना, हाथ साफ करना, अभ्यास करना। ८८. हाथ मांडणो=मेहदी आदि से हाथ पर चित्रकारी करना, याचना करने के लिए किसी के आगे हाथ फैलाना, कुछ लेने के लिए हाथ पसारना। ८९. हाथ माथै हाथ देय बैठणो=काम-काज कुछ नहीं करना, निकम्मा हो जाना। ९०. हाथ माथो कूटणो=हाय-त्राय मचाना, कुहराम मचाना। ९१. हाथ मारणो=चोरी करना, माल हड़पना। ९२. हाथ मिळाणो, हाथ मिळावणो=किसी से हाथ मिलाना, दोस्ती करना, मुलाकात करना, संधि करना। ९३ हाथ मींजणो=देखो 'हाथ मसळणो'। ९४. हाथ मैं आणो=हाथ आना, हाथ लगना, अधिकार मे आना। ९५. हाथ मैं कीं नी होणो=हाथ खाली होना, आभूषणो का अभाव होना, धन का अभाव होना, किसी कार्य को करने का कोई अधिकार नहीं होना। ९६. हाथ मैं खाज हालणी==हाथ में खुजली चलना, रुपये पैसे की आमदनी का संकेत होना। ९७ हाथ मैं गंगाजळ उठावणो या लेणो=अपनी बात को सत्य प्रमाणित करने के पक्ष मे गंगाजल का कोई पात्र हाथ मे लेना। ९८ हाथ मैं ठीकरो लेणो=भिक्षा मांगना, मांगते हुए फिरना।

९९. हाथ मैं डुळावणी=हाथो मे डोलाना, झुलाना। १००. हाथ मैं नी होणौ=हाथ मे न होना, वश मे या अधिकार मे न होना। १०१. हाथ मैं माळा अर पेट मैं कुदाळा=बकध्यानी होना, बुगलाभक्ति करना। १०२ हाथ मैं राखणौ=हाथ मे रखना, काबू मे रखना। १०३. हाथ मैं हाथ देणौ=हाथ से हाथ मिलाना, आत्म समर्पण करना, शादी करना या करवाना। १०४ हाथ मैं हुनर होणौ=उद्यम जानना, हाथ मे कला या व्यवसाय होना, हाथ का कारीगर होना। १०५ हाथ मैं होणौ=हाथ में होना, वश मे होना, अधिकार मे होना। १०६. हाथ मेळावणौ=हाथ से हाथ मिलवाना, शादी करवाना। १०७ हाथ रंगणौ=हाथ मैं किसी प्रकार का रग लगाना, हाथ से किसी का खून करना। १०८ हाथ रखावणौ=सहारा देना, मदद करना। १०९ हाथ रगडणौ=कठिन परिश्रम करना। ११० हाथ राखणौ=सहारा देना, मदद रखना। १११ हाथ री कमाई=खुद के परिश्रम से अर्जित धन, स्वय की आय। ११२. हाथ री करामात=हस्तकौशल, हस्तलाघव, हाथ की सफाई। ११३ हाथ री कलम=हाथ की लिखावट, हाथ से की गई कोई चित्रकारी, हस्ताक्षर। ११४. हाथ री खाज=अपना स्वय का कार्य एव उत्सुकता। ११५. हाथ री खाज हाथ सू भागणी=अपना कार्य अपने से ही होना। ११६ हाथ री वात=वश की बात। ११७. हाथ री सजावट=हाथ से की गई सजावट, हाथ से की गई बारीकी या तकनीकी विशेष। ११८. हाथ री सफाई=हस्तलाघव, जादुई चमत्कार, चोरी। ११९ हाथ रुकणौ=चलता कार्य रुकना, बाधा आना, अड़चन पड़ना, रुपये-पैसे की कमी होना। १२० हाथ रै नीचै आणौ=अधिकार मे आना, अधीन होना, काबू मे रहना। १२१ हाथ रोकणौ=मदद बन्द करना, कार्य बन्द करना। १२२ हाथ रोडणौ=तगी मे होना, तग करना। १२३ हाथ रो उत्तर=मागने वाले को कुछ न कुछ देना। १२४. हाथ रो काम=हस्तलाघव, हाथ की कारीगरी, वश का काम, अपने अधिकार का काम, हाथ से किया हुआ कार्य। १२५ हाथ रौ कूडौ=झूठा, चोर, उचक्का, अविश्वसनीय। १२६ हाथ रौ छालो=बहुत महत्वपूर्ण, जिसका अधिक ध्यान रक्खा जाता हो। १२७ हाथ रौ दियौ=अपने से दिया हुआ, जो चुराया हुआ न होकर किसी का दिया हुआ हो, पुण्य, धर्म। १२८. हाथ रौ धधौ=हाथ की कारीगरी, अपने काबू का कार्य। १२९ हाथ रौ बळियौ नै पैला रौ सुधारियौ=अपना स्वय का बिगाडा हुआ दूसरो के सुधारे हुए ठीक होना। १३०. हाथ रौ मेल=अत्यन्त तुच्छ, साधारण, मामूली। १३१ हाथ री राजा=अत्यन्त उदारवृत्ति वाला। १३२ हाथ रौ साचौ=ईमानदार, विश्वसनीय, दक्ष। १३३ हाथ रौ हुनर=हाथ की कारीगरी, हाथ का काम। १३४ हाथ लगावणौ=स्पर्श करना, छूना, किसी कार्य मे सहायता करना। १३५ हाथ लागणौ=किसी का हाथ लगना, सहयोग मिलना, हाथ मे कार्य होना, नफा होना, उपलब्धि होना, कुछ मिलना, हाथ मे आना, वश मे आना, पकड मे आना। १३६ (ई) हाथ लियौ'र वी हाथ डकारग्यौ=इधर से लिया और उधर हजम कर लिया, माल हडपने में दक्ष होना। १३७ हाथ लेणौ=किसी की लडकी को अपने लडके के लिए स्वीकार करना, सहायता के लिए किसी को रजामन्द करना। १३८. हाथ वाढ नै देणौ=अपने हाथ काट के देना, ऐसा लिख कर दे देना जो सामने वाले का पक्ष मजबूत करे, लिखावट द्वारा स्वत' बधन मे आना। १३९ हाथ वाढ नै लेणौ=किसी से ऐसा लिख कर लेना कि लिखावट से अपना पक्ष मजबूत हो, लिखावट से किसी को बधन मे कर लेना। १४०. हाथ सकडीजणौ, हाथ सकराइजणौ=देखो 'हाथ तग होणौ'। १४१ हाथ समेटणौ=अपना हाथ खीच लेना, कार्यक्षेत्र से हट जाना, खर्चा बन्द कर देना, तटस्थ हो जाना। १४२ हाथ साधणौ=टूटे हुए या उतरे हुए हाथ को ठीक बैठा कर इलाज करना। १४३ हाथ साफ करणौ=हाथो की सफाई करना, डट कर खाना, माल उडा जाना, चोरी करना। १४४ हाथ सिरकणौ=आसानी से रुपयो आदि का काम निकलना। १४५ हाथ सुमरणी=हाथ मे माला। १४६ हाथ सू काम निकाळणौ=खुद काम करना, किसी उपकरण के बिना भी काय करना। १४७ हाथ सू जाणौ=अपने पास किसी वस्तु का खो जाना, वश के बाहर होना, अधिकार मे न रहना। १४८ हाथ सू राख उडावणी, हाथ सूं राख नाखणी=अपने हाथ से खुद अपनी इज्जत उडाना, अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान नही रखना, अपना कार्य खुद ही बिगाडना। १४९ हाथ सू हाथ नी बढै=अपनी हानि खुद के द्वारा नही होती। १५० हाथ सोरौ चालणौ, हाथ सोरौ सरकणौ, हाथ सोरौ हालणौ=ऐसी आय होना कि जिसमे अपना खर्चा आसानी से चल सके। १५१ हाथ हळकौ करणौ=पास मे जो है वह खर्च देना, उत्तरदायित्व से मुक्त होना, किसी रोग पीडित व्यक्ति या प्राणी पर मत्र जपते हुए हाथ घुमाना। १५२ हाथ हिया माथै आणौ=हाथ दिल पर आना, किसी कार्य को पूरा करने की चिन्ता होना, जोखम सिर पर आना। १५३ हाथ हिया माथै धरणौ, मेलणौ=दिल पर हाथ रखना, कुछ त्याग करना, दिल की धडकन सभालना। १५४ हाथ हिया माथै होणौ=देखो 'हाथ हिया माथै आणौ'। १५५. हाथ ई बळिया नै पूंखई दुळिया=परिश्रम का व्यर्थ जाना, कुछ भी हाथ न आना। १५६. माथै हाथ होणौ=किसी की छत्रछाया होना, किसी का वरद हस्त मिलना, बडे आदमी का सहारा मिलना। १५७. हाथ होणौ=अधिकार मे होना, वश की बात होना, सहायक होना, समर्थन करना। १५८ हाथा पगा दिया बळणा=अत्यन्त उद्दण्ड होना, अत्यन्त चचल होना। १५९. हाथा पगा बायरौ होणौ=हाथ पाव रहित होना, अविश्वास का पात्र होना, विश्वास न करने योग्य।

१६०. हाथा बारै काढणौ=किसी कार्य को अच्छी तरह से जांच करना, किसी की अच्छी तरह पिटाई करना। १६१. हाथां माथै उठावणौ=अपने हाथों पर उठाना, गोद में लेना, कंधे पर उठाना, किसी को प्यार व इज्जत देना। १६२. हाथा माथै राखणौ=अत्यधिक लाड प्यार रखना, संभाल कर रखना। १६३ हाथां मैं चलणौ=अपने सामने जनमना, किसी का अपने से अत्यधिक छोटा होना। १६४. हाथां मैं मोटौ होणौ=बचपन से लेकर बड़े होने तक अपने सामने खेलते कूदते बड़े होना। १६५ हाथां मैं सरसू उगावणी=कठिन कार्य करना, असम्भव कार्य करना। १६६. हाथां री सत निकळणौ=अत्यन्त शिथिल होना, अत्यन्त अशक्त होना। १६७. (आडै) हाथा लैणौ=किसी को बुरी तरह से फटकारना। १६८. हाथा छूट=खुले हाथों, अत्यधिक तेज। १६९ हाथा पाई करणी=मारपीट करना। १७०. हाथै ही करम फोड़णौ=अपना अनिष्ट स्वय करना। १७१. हाथोहाथ=तुरन्त खड़े-खड़े, एक हाथ से दूसरे हाथ, कई हाथों के सहयोग से।

२ कुहनी से पंजे तक की लम्बाई के बराबर का एक माप।

उ०—छट्ठउ आरउ आवतउ जोइ एक बीस वरिस सहस तै होइ। हाथ भुइ देह, बिहु अंगुल नी कोटि सोल वरिस माहि आउखा खोटि।—वस्तिग

३ ताश के खेल मे जीता जाने वाला 'सर'।

ज्यूं—म्हारा पांच हाथ तौ बणग्या अबै जीतण नैं दो हाथ भळै बणावणा है।

४ (चौपड़) चौसर के खेल मे बड़े पासे के साथ आया हुआ छोटा पासा।

५ पारी।

क्रि. वि.—१ वश में, काबू में, अधिकार में।

उ०—दांणा पांणी रिजक धन, हरीया हरि कै हाथ। मतो करै जाकु दिवै, भरि भरि नंखै बाथ।—अनुभववांणी

२ देखो 'हासिल'।

रू भे.—हत, हत्त, हत्थ, हत्थि, हत्थी, हत्थु, हथौ, हथ, हथा, हथ्थ, हाथि, हाथी।

अल्पा;—हथड़ौ, हथडौ, हथ्थांण, हाथड़, हाथड़ौ।

मह;—हथ्थड, हथ्थळ, हथ्थांण, हाथड़, हाथळ।

हाथकड़ी—देखो 'हथकड़ी' (रू. भे)

उ०—देवीदास रै हाथकड़ियां लागै छै। सु रा जैमल सरफदीन नजीक उण रै माथै मांहि उण गेडी री दी, सु भेजी फूट नै नाक दिसा नीसरी।—नैणसी

हाथ-कांम-स. पु. यौ—यज्ञोपवीत या वैवाहिक कार्य की शुरुआत जिसमे पहले गणपति का पूजन कर आगे के कार्य प्रारम्भ किए जाते हैं। (पुष्करणा ब्राह्मण)

हाथखरच-सं. पु. यौ. [सं. हस्त+फा. खर्च] निज का खर्च, जो भोजन या आवश्यक खर्च के अलावा होता है।

२ उक्त खर्च की निर्धारित धन राशि।

३ राजाओ द्वारा सामन्तों को उनकी जागीर के बदले मे दिया जाने वाला वह समस्त खर्च जिससे वे अपना निर्वाह करते थे।

रू. भे.—हथ खरच।

हाथगरौ-वि —आश्रित।

हाथड़—१ देखो 'हाथ' (मह; रू भे.)

उ०—अर गोइन्द टेलांणी मेड़ो नालि, अर बे हाथड़ तरवार उतारी अर गदनै ऊपरि भाय अर कांहची केथ रै गदनो।—द. वि.

२ देखो 'हाथळ' (रू. भे.)

हाथड़ौ—१ देखो 'हाथ' (अल्पा, रू भे)

उ०—जलाल हुवा हाथड़ा न जोगा अहीयांह। सार पछंटण बैरियां, का रमावण सहियां।—जलाल बूबना री बात

२ देखो हाथळ' (अल्पा; रू. भे.)

हाथणी—देखो 'हथणी' (रू. भे.)

हाथफूल—देखो 'हथफूल' (रू. भे)

उ० —हाथां रा हाथफूल भाभी ढीला कीकर पड़ग्या हो।

—लो. गी

हाथबाथ-वि. स्त्री.—इच्छानुसार तीव्र गति से चलने वाली।

(सांढ़, ऊंटनी)

उ०—तरै देवराज री धाय आही थी, तिण देवराज नूं प्रो। लूंणा नूं सूपियो, कह्यौ—थांरै साढ १ हाथबाथ छै, तिका नावजादीक छै। थे इतरी आपणा धणी री बीज उबारौ, ले नीसरौ।

—नैणसी

हाथव-सं. पु —हाथी, गजराज। (बांकीदास)

हाथ रौ कुरब-स. पु —देशी राजाओ द्वारा दिया जाने वाला सम्मान या ताजीम।

वि. वि.—जिसको यह ताजीम मिलती है उसे बांह पसाव वाले की तरह महाराजा का घुटना या दामन छूने पर महाराजा उसके कंधे पर हाथ लगाकर अपने हाथ को अपने वक्षस्थल तक ले जाते थे। यह ताजीम इकहरी व दोहरी दोनो प्रकार की होती थी। और उन्हीं के अनुसार महाराणा खड़े होकर आदर देते थे।

हाथळ-स. स्त्री. [सं. हस्त+तल] १ सिंह का अगला पंजा।

उ०—१ केहरि मक कळाइयां रूहिरज रतड़ियांह। हेकणि हाथळ गै हणै, वत दुहत्था ज्यांह।—हा. झा.

उ०—२ केहर रै हाथळ करी, कीधी वात वराह। सूर काज कीधौ सुजड़, विध करतापण वाह।—बां. दा.

२ मनुष्य के हाथ का पंजा, हथेली, करतल।

उ०—१ इसै मोकै अचांणचकै ही भोरी गुलाब री गां अंगाड़ी उबासी तोड़ती थकी धूजण लाग ज्यावै है। हाथळ पटकै है अर तोतली आवाज मैं तैः तैः, पैः पैः करै है।—वसंतोत्सव

३ बाहु, भुजा।

उ०—आपरी पौरस सीह वाजण री नही–हाथळ (भुजा रा) जोर सू हाथिया नै भाजै अरथात जिका री तरवार सू हाथिया रा भ्रसुड (सीस) वैरीजै वै भडसिघ वाजै।—वी स. टी.

४ शस्त्र प्रहार।

उ०—१ दाखै ऐ गज घडा दमगळ। वाह करै हाथळ वीजूजळ।
—सू प्र

उ०—२ 'राम' सुतन बोलै 'सिध राजड'। घण खग हाथळ वहै त्रविध घड।—सू प्र.

५ हाथ का कवच।

उ०—१ बीस लाख असवार पाखरीआ लोहमी वाड किआ बगतर, हाथळ, टोप, झिलमैं, चिलकता ऊपरै पूरी सिलहा किआ, गरकाब हूआ थका छत्रीस आउध डाबिया रहै छै।—रा. सा स

उ०—२ कसै हाथळा टोप गोजा कगल्ल, जमद्दाढ वामै जिकै खाग ढल्ल।—वचनिका

रू भे.—हत्थळ, हयळ, हत्थड, हथ्थळ, हातळ, हाथड।

अल्पा,—हाथडौ।

५ देखो 'हाथ' (मह, रू भे)

हाथळचेरी–सं स्त्री —हर समय उपस्थित रहने वाली दासी।

उ०—बारै गायण वळै, वळै नव पडदा बेगण। हाथळचेरी उभै वी जणी हजूरण।—रा रू

हाथळणौ, हाथळबौ–क्रि स.—हाथ के पजे से प्रहार करना।

हाथळियोडौ–भू का. कृ —हाथ के पजे से प्रहार किया हुआ। (स्त्री हाथळियोडी)

हाथलियौ–स पु —हल के ऊपर का वह भाग जो पकडने के काम आता है।

हाथलूहांण–स. पु.—हाथ पोंछने का कपडा।

उ०—हाथै मिलिउ गलणौ गलिउ, अत्यत धवल प्रौणीइ मुखकमल कपूर इस्या थोल, ऊपरि उन्हा ढाढा पाणी सीकरी वासितावासित पाडलवासित एलचीवासित इस्या पाणी, खीरोदक चीर हाथलूहाण।—व. स.

हाथलौ–स पु —बैलगाडी का एक उपकरण विशेष।

हाथसाइइ–स पु —हाथ पोंछने का रूमाल।

उ०—तदनंतरु करपूर पाडल चपक सुगध सीकिरी वास्या पाणी तेहै मुख पवित्र करी, हाथसाडइ हाथ लूही, बीडां आप्या,. ।
—व स.

हाथां–क्रि. वि. [स हस्त] हाथो, से, हाथ से।

उ०—१ नवै चढाव री तात, रेसमैं री मेदान गूंथिया थका, राजा ना देसौता रै हाथा दीजै छै।—रा सा स.

उ०—२ इसै मस्तानै रूप सू दुनिया हरै है। हाथा भळै आकड हाळो गेड, घरा लो री तिरसूल अर साकळ मढ मैं मेल राखी है।
—दसदोख

२ अपने हाथ से, खुद के द्वारा।

उ०—१ पछै वौ दीवाणजी रौ घोडौ लेजाय पायगा मैं बाध्यौ। हाथा दाणौ दियौ। फुलवाडी

उ०—२ हाथा करनै आफत निवती। अबै काइ उपाव व्है सकै।
—फुलवाडी

हाथांहेल–वि —बडा दानी, बडा त्यागी, उदारचित्त।

उ०–मिजलस हदौ मोडं, हगामा माण रौ, हाथाहेल 'हमीर', नाथ हिदवाण रौ।—महादान महडू

हाथाछूट, हाथाछूटौ–क्रि. वि —तीव्र गति से, तेजी से।

हाथाजोडी, हाथाजोडी–स स्त्री —खुशामद, नम्रता, आजीजी।

उ०—नकीब फेरनै सारी लसकर भेळौ कराय नै आप चढनै वाडी घेरी। हाथाजोडी करी, नै कह्यौ—'सको हुसियार हुजौ। जिण माहै हुय जेसी जासी तिण नू हू मारीस।—नैणसी

उ०—२ भाबीडा हाथाजोडी करण लाग्या—आप बडा हौ, आप मालक हौ, आप धणी हौ, आप रोटिया रा देवाळ हौ।
—रातवासौ

२ औषधि के काम आने वाला एक पौधा विशेष।

उ०—हनुमती नइ हडबडौ, हीराउलि हर-मज्जि। हाथाजोडी हीकणी, हेला आवइ कज्जि।—मा का. प्र

हाथाताळी–स. स्त्री [सं हस्त+ताल] १ दोनो हाथो से बजाई जाने वाली ताली।

२ दोनो हाथो से ताली बजाने मे लगने वाला समय।

हाथापाई–स स्त्री —१ हाथ-पाव चलाकर की जाने वाली लडाई।

उ०—च्यारू जणा परणीजण सारु माहोमाह वाद करण लागा। कोई नी मान्यौ तौ राड बधगी। होठा-जीभी सू हाथापाई माथै उतरग्या।—फुलवाडी

२ मस्ती, मौज।

उ०—हसै बोलै अर हाथापाई करै है। अडघा भडघा अर ओलै—छानै, सूग अर स्याणप ही नी राखै।—दसदोख

३ हाथ-पाव धोने की क्रिया।

रू भे —हाथोपाइ, हाथोपाई।

हाथाळ–वि.—१ शक्तिशाली, बलवान।

उ०—माझी 'मेघ' हरी मछराळ, हूतल्लमल्ल हाथाळ। जैत्र वादी जमजाळ, केवियां रौ काळ, सूरधीर सप्पखाळ।—ल. पि

२ आजान बाहु।

उ०—हाथाळ हेम हमीर हूतल, आप कुळ अजुआळ। हीमति बहादर हीमती, कळि भडा घोडा कीमती।—ल. पि.

३ शस्त्र चलाने मे प्रवीण, निपुण, चतुर।

४ हाथल वाला।

५ योद्धा, वीर।

उ०—पडै प्राण संधाण बाथां बटक्कै, हुवै केइ हाथाळ रोसै हटक्कै। भाला झाल गोलिह नालै भटक्कै, तुटै तुंड मुंडां प्रचण्डां लटक्कै।—ध व. ग्र

सं. पु.—सिंह, शेर।

रू. भे. हातळो, हाथाळो।

हाथालगि–वि.–हस्तगत किया हुआ, प्राप्त।

उ०—वैवाळै पंति अम्बिका वरसै, घणै घणै भाव हित प्रीति घणी। हाथै पूजि कियो हाथालगि, मन वांछित फळ रुखमणी।—वेलि

हाथाळी—देखो 'हथेळी' (रू. भे.)

उ०—राति ज रुनी निसह भरि, सुणि महाजनि लोइ। हाथाळी छाला पड्या, चीर निचोइ निचोइ।—ढो. मा.

हाथाळो—देखो 'हाथाळ' (रू. भे)

उ०—१ हाथाळो उद्दण्ड 'हरी', गळ गड हूंदी लज्ज। 'हबो' 'भोज' महाबळी, 'रायो' दद सकज्ज।—रा रू.

उ०—२ जद राहुर रूपा छिव गांगड़ा मैं बणावणा साक कोट (जीवरखो) बणायो थाण नै हाथाळै 'सिंघ' हाथीयां नैं सुण 'मार' नैं भरवात हाथीयां री फौज मारनै हाथीयां रा पिंजर तर रो कोट नाम वोळो बणाय दीधो।—वी. स. टी

उ०—३ 'सबळ' तणौ बळ बाल सवायो, भरा भरा कम घणी छळ आयो। 'हरजी' 'बळू' तणो हाथाळो, चाहुडदै आयो गळ चाळो।

—रा. रू

हाथि—१ देखो 'हाथ' (रू. भे)

उ०—१ खाटी वाटी रहि गई, कुछ न चली साथि। अनहरीया नर वीन दिन, हाल्यो रीतै हाथि।—अनुभववांणी

उ०—२ लोक तणै हाथि वीणा, वस्त्राडंबर झीणा। धवळ ल गार सार, मुक्ताफळ तणा हार। सरवांग सुंदर, मन मोहि रमइ पुरंदर।—रा सा. स.

२ देखो 'हाथी' (रू भे.)

उ०—जेहइ धीर मस्तक पखइ सेसइ कायर पणि विहि भजइ, हाथि उ हाथि इ, घोडो घोडइ, रथ रथइ, पायक पायकइ........।

—व स.

हाथिणी—देखो 'हथणी' (रू. भे)

उ०—१ धनुसु पडावीउ भूयणि भमउ, इच्छा सुख मन माहि। बइठउ वीठउ हाथिणी यं सुखइ सुमिणा माहि।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ हेमागिरि थी हाथिणी, आवइ मयन परांणि। ऊपरि चढी, मारइ मन्मथ-बांण।—मा. का. प्र.

हाथियौ—देखो 'हाथी' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ इव पद पमुह देव कीहना, हाथिया जिम निनावि सीह ना। पुछ दड गउरी सवि चाली, भूरइ नगर ऊपरि चाली।

—सालिसूरि

उ०–२ महरांणक मुगल वारै गढी, चाटकू भकल बाद थया। 'जोधा' तणै सामहा जाता, गाडा भर हाथिया गया।

गोहोजी खिड़ियौ

हाथी–स. पु [सं. हस्तिन्] १ एक विशाल एवं स्थूल शरीर वाला, प्रसिद्ध स्तन पायी चौपाया जानवर, गज, हस्ती।

(ऊ. र, ह. नां. मा.)

उ०—१ हाथी अण मारग लड़ै, हरि हाथी रो हेल। की मेहाई थारो माई थारो करीजै उवेल। मे. म.

उ०—२ दिन दूजै मिळ मारवा, हाथी रिद्ध तुरंग। बरसाया दीवांण नूं, फिर जोधा 'अमरंग'।—रा रू

वि० वि०—इसकी नाक (सूंड) बहुत लम्बी जमीन तक लटकती हुई होती है, भारी पैर बड़े स्तम्भ के समान होते है, कान बड़े तथा आंखें अपेक्षाकृत छोटी होती है। इसके दो दांत बहुत बड़े होते हैं जो मुंह के दोनों ओर बाहर की तरफ निकले रहते हैं। इन दांतों का चूड़ा बनता है जो बहुत कीमती होता है, इसके अतिरिक्त इससे खिलौने सजावट का सामान आदि कीमती वस्तुएं भी बनती है।

२ शतरंज का एक मोहरा।

३ हरिजन, भंगी।

४ एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो भूमि मे गड्ढा बना कर रहता है तथा चींटियों को खाता है।

उ०—मद चुत करियां मजमा, लड़ै भवर लाखोह। हाथी जिम कीड़यां हुवै, लाख लिल बिच लाखोह।—रेवतसिंह भाटी

रू भे—हस्थि, हस्थी, हथी, हाथि।

अल्पा, —हथीड़ो, हथीयो, हस्थीयो, हाथियो, हाथीड़ो।

हाथीखानौ–सं. पु. [सं. हस्तिन्+फा. खाना] वह कक्ष या स्थान जहां हाथियों को रखा जाता है, हस्तीशाला, फीलखाना।

हाथीड़ो देखो 'हाथी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—बाथै आयो हाथीड़ा री सूंड।—पाबूजी रा प्रवाड़ा

हाथीदांत–सं पु.—हाथी के वे बड़े बड़े दांत जो मुंह से बाहर निकले रहते हैं। ये बहुत मजबूत एवं कीमती होते हैं। इनसे चूड़े, सजावट का कीमती सामान, खिलोने आदि बनते हैं।

उ०—चुड़लियो चुड़लियो, गोरी कांई बिलखै, मेह दिन धरती तरसै मेहड़ो हुवण दै। चुड़लो चिराव हाथीदांत रो मेहड़ो हुवण दै।—लो. गी.

हाथीनाळ–सं. स्त्री.—हाथी की पीठ पर रख कर चलाई जाने वाली एक पुरानी तोप विशेष।

हाथीपगौ–स. पु.—फील पांव नामक एक रोग विशेष, जिसमें पैर फूल कर हाथी के पैर जैसा हो जाता है।

हाथीबंध–सं. पु.—वह व्यक्ति जिसकी स्थिति हाथी रखने लायक हो, जिसके घर हाथी बंधा रहता हो।

हाथीबच-स पु —एक प्रकार का पौधा जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

हाथीमती-स स्त्री.—ईडर की एक नदी विशेष जो पूर्वी सीमा से आकर प्रदेश के बीच में से गुजरती हुई अहमदनगर के पास साबरमती मे मिलती है। (वी वि)

हाथीमोगरौ-स पु —मोगरे की जाति का पौधा विशेष।

हाथीयउ—देखो 'हाथी' (रू. भे)

हाथीयौ—देखो 'हाथी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—साधिइ साधि जूजूई कीधी, थर पाडेवा लागा। ऊपरि थि का हाथीया घाडा घण तणौ घाए भागा।—का. दे प्र

हाथीवान-स पु —हाथी को चलाने व उसकी देख रेख करने वाला व्यक्ति, महावत, फीलवान।

हाथी-सिरोपाव-स पु राजाओ के समय मे दिया जाने वाला एक पुरस्कार, सिरोपाव।

वि वि —जिसको यह सिरोपाव मिलता था उसको राज्य से कपडो वगैरा के सब मिला कर ७८० रु० दिए जाते थे। (जोधपुर)

हाथुडी हाथुडी-स स्त्री.—एक प्रकार की वनस्पति।

उ०—हरडू हरडि हीमजी, हरडा हलभद्र बेर। हरबी हाथुडी हरी, हुँफट हुसि हसेर।—मा का प्र.

हाथुलि, हाथुली-स स्त्री [स हस्त+लि] हाथ का एक आभूषण विशेष।

उ०—गलइ नगोदर नइ झूमणू, घणु सणगार हव केहु भणू। हाथि हाथुलि करि मूद्रडी, माणिक मोती हारे जडी। —प्राचीन फागु-सग्रह

हाथूडिया-स पु.—राठौड राजपूतो की एक उपशाखा। (बा दा ख्यात)

हाथूडियौ-स पु.—राठौड राजपूतो की 'हाथूडिया' शाखा का व्यक्ति।

हाथेवालइ—देखो 'हथलेवौ'।

उ०—हाथेवालइ हाथ नवि धरू', नहीं बइसू जीमण माहिरू। चाहू आणनउ कुल निकळक, जिस्यउ पूनिम तणउ मयक। —का दे. प्र

हाथे हाथै-क्रि वि —१ हाथ मे।

उ०—१ हाथे न लेवइ वस्त्र, आधा ओढै वस्त्र। लोक सीसि-आट करइ, चौपूं उछरइ, ताटइ न चरइ।—रा सा. स.

उ०—२ लखीजे असी भाति आकास लागौ, भवानी खडा पाण लीधा अभागौ। हमेसा रहै सत्रु री सीस हाथै, मुखै रत्र रोतासळी छत्र माथै।—मे म.

२ काबू मे, पकड मे, वश मे।

उ०—जदी कोट वाळ घणी ही जाबती राखै। पण चोर हाथै आवै नही।—पचमार री वात

३ हाथ से।

उ०—१ टोलउ चाल्यउ हे सखी, वाज्या विरह निसाण। हाथे चूडी खिस पडी, ढीला हुया सधाण।—ढो. मा

उ०—२ देवाळै पैसि अबिका दर सैं, घणै भाव हित प्रीति घणी। हाथै पूजि कियौ हाथालगि, मन वछित फळ रूखमणी।—वेलि

३ खुद ब खुद, स्वत॰, अपने आप।

उ०—आखियौ जिती धर ओयण थायौ इळा, सुभोजन चाखियौ थाळ सायै। ताम्रपत्र ढाकियौ चावडा थान तळ, हतेरण राखियौ आप हाथै।—सेनसी बारहठ

हाथोगळ-स स्त्री —गले पर हाथ रखकर शपथ लेने की क्रिया या भाव।

उ०—मुणै वेण खग तोल सेस उठ्यौ रोसा जळ, करमाणद पर-धान आय दाढी हाथोगळ।—पा प्र

हाथोडी—देखो 'हथोडी' (अल्पा, रू. भे)

हाथोडौ—देखो 'हथोडौ' (रू. भे)

हाथोताळी—देखो 'हाथाताळी' (रू भे)

हाथोपाइ हाथोपाई—देखो 'हाथापाई' (रू भे)

हाथोहाथ-क्रि वि —१ एक हाथ से दूसरे हाथ, प्रतिहस्त।

२ लगे हाथ, तुरन्त, शीघ्र।

उ०—१ थै तौ सगळा जाणौ ईज हौ कै म्हारै इत्तौ तैठाव कठै हाथोहाथ फारगती करी।—फुलवाडी

उ०—२ नाहरसिंघ नै ई चकवा री बात रौ हाथोहाथ परचौ मिळग्यौ। जद खेखार रै मिस लाल वाळी बात साची निकळी तौ राजा वाळी बात ई साची निकळैला इणमैं की मीनमेख नी। —फुलवाडी

३ प्रत्यक्ष।

४ खुद स्वय।

५ किसी कार्य को कई लोगों द्वारा मिल कर शीघ्र ही पूरा करने को क्रिया या भाव।

रू भे —हत्थोहत्थ, हथोहत्थ, हातोहात, हातोहाथ, हाथौहाथ।

हाथौ-स पु [स. हस्तक] १ किसी औजार या उपकरण का दस्ता, मूठ, बेट।

२ हाथ मे पकडने का वह भाग जो कघी के ऊपर नीचे दोनो तरफ होता है तथा जिससे कपडा बुनते समय कपडे को ठोका जाता है। (जुलाहा)

३ शहर के द्वार पर किसी वीर योद्धा या सती स्त्री के हाथ का चिन्ह।

उ०—भोजौ जोधावत। समत १६०० सईके सूर पातसाह आयौ तद जोधपुर गढ री प्रोळ हाथौ दै तुरका सूं विढ मुओ।—नैणसी

४ देखो 'हातौ' (रू. भे.)

हाथौडौ—देखो 'हथोडौ' (रू भे)

हाथौहाथ—देखो 'हाथोहाथ' (रू. भे)

उ०—१ हाथोहाथ घर री सफाई कर नै नींबड़ा री छिया गै माचा माथै बैठ्यो तो मन जाणै कियांई व्हैग्यो ।—अमरचूनड़ी

उ०—२ थू तो राम जाणै कद छुट्टी झालनै काठै आगणै ठिरड़ैला, म्हैं तो थनै हाथोहाथ परचो बताय दूं ।—फुलवाड़ी

हाफज, हाफिज—स. पु [अ. हाफिज] वह मुसलमान जिसको कुरान कंठस्थ हो ।

उ०—दादू यहु तन पिंजरा, मांही मनसूबा । एक नांव अल्लाह का, पढ हाफिज हूवा ।—दादूबाणी

वि. [अ मुआफिज] रक्षक ।

उ०—मंगतू का महोला कंगालू का कोट, हीजड़ो का हाफज जाफ का जोट ।—दुरगादत्त बारहठ

हाफुस—स. पु —आमो की एक जाति ।

हाफे, हाफै—सर्व.—खुद, स्वय ।

क्रि वि —स्वत , अपने आप ।

हाब गाब—वि.—१ जिसके मस्तिष्क का सतुलन बिगड़ गया हो, अस्थिर चित्त, उद्विग्न, व्यग्र, आश्चर्ययुक्त ।

उ०—सेठांणी हाब-गाब व्हियोड़ी बरसाळी मैं आई । इचरज अर हरख रा सुर मैं बकाई खावती बोली ।—फुलवाड़ी

२ भयभीत, घबराया हुआ, स्तभित ।

उ०—१ ठगाई करण वाळा ठग खुद ठगीजै तौ वै पूरा हाबगाब व्है जावै । वौ गिरणावतौ बोल्यौ—म्हनै छोड नै कठै ई मत जाजो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हाबगाब व्हियोड़ौ चित्रगुप्त डरतौ डरतौ कैवण लागौ — अबै अकेला सूं औ काम बणै नी आवै । कै तौ आप हरछिण बधती इण आबादी माथै आंकस राखौ कै मुनीम बधावौ ।
—फुलवाड़ी

हाबर—वि.—सुन्दर, मनोहर ।

उ०—भिवरी हिरणीसी फिरणो बिजकाती, मुळकी मुळकाती जोरो जगळाती । श्रोलै भक माटा कोलै जिम कुयिगी, हाबर भांमणियां सांमणियां हुयगी ।—ऊ का.

हाबी—सं. स्त्री.—जबड़ा ।

हाबू—सं. पु —वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का कीट (पतग) ।

हाबूब—स पु.—रंग विशेष का घोड़ा ।

उ०—रोझो नीलो गगाजळ हसला नैण काजळा अस सेराह अकम खैग रोहळा हाबूब ।—गु. रू. ब.

हाबो—स. पु —१ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला ।

२ रोने की आवाज, क्रदन ।

उ०—पछै घर मांहे पैस कूकवो कीयो, जु म्हारी मांटी कीयो, जु म्हारो मांटी चोर मारियो, जाय छै, कूकवो हुवो, सको लोक हाबो सुण नै आयो ।—नैणसी

३ करुण-पुकार, चिल्लाहट ।

उ०—ललता पधारा पैखु लागोड़ा, भूखा भगता रा भीतर भागोड़ा । छिगनी छोकरिया छोकरिया छोलै, बाबा टुकडो दो हाबा कर बोलै ।—ऊ का

हाय—स. स्त्री [सं हा] १ अत्यन्त दुख, शोक या शारीरिक पीड़ा के कारण तड़फने या तड़फते हुये कूकने रोने, चिल्लाने की क्रिया, दशा या भाव, त्राहि-त्राहि ।

उ०—हरीया बाळक जनमीयो, ता दिन भलो कहूं य । इक दिन याही मुख तै, आय कहै हाय हाय ।—अनुभववांणी

२ शाप, बददुआ, दुराशीष ।

उ०—चोरी करणी तो किणी लांठा धींग री घर ई फाडणो । खासी भलो मता तो हाथ लागै । दुबळा नै संताया तौ फगत हाय पानै पड़ै ।—फुलवाड़ी

३ परवशता के कारण मुख से निकलने वाली आह ।

उ०—कर जोडै साजन कहै, हाय कछू नहि हाथ । थोरो लागै चैनतां, सोनड़ल्यां रो साथ ।—अज्ञात

हायछी—सं स्त्री घृणित वस्तु, घृणित बात, मल, विष्टा ।

हायणी—स स्त्री पचास से साठ वर्ष तक की आयु या अवस्था । (जैन)

हायतराय हायत्राय—स. स्त्री.—१ चिल्लाहट, करुण-क्रदन, विलाप, व्याकुलता, व्यग्रता ।

उ०—१ किणहि रै रोगादिक ऊपनां हायतराय करै ।—भि. द्र.

उ०—२ झुर झुर हायत्राय कर कर नैन पर, नर को न काम यहै कांम अबला को व्है ।—जेतदान बारहठ

उ०-३ बिणयारचा कूकी, हायत्राय मचाई । बेवडा फूटग्या । कोई हेटै गुडी, कोई पिंतली ।—फुलवाड़ी

२ किसी कार्य के लिये किया जाने वाला अत्यधिक परिश्रम, भागदौड़, चिन्ता ।

क्रि. प्र.—करणी, मचणी, मचाणी, होणी ।

हायधाय—सं. स्त्री.—दुख भरी आवाज ।

उ०—सुकाय सीस भीस मैं मिसीथ धूजती सही । निकाय हायधाय मैं उपाय सूझती नहीं ।—ऊ का.

हायन—स. पु —१ वर्ष, साल, संवत्सर ।

२ शोला, अंगारा ।

३ एक प्रकार का चावल विशेष ।

वि.—१ गुजरा हुआ, बीता हुआ, विगत ।

२ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, परित्यक्त ।

हायबोय—स. स्त्री.—१ कूकने की आवाज, शोरगुल, हल्ला ।

२ विलाप, क्रन्दन ।

उ०—हे सखी जुद्ध री भला आन कहतां दूसरा भड़ दोठा सो वे निरदय (बिना दया रा) है, क्यूं कि कूकावै पर्सं न दुसमणां री फौज नै कूकावै अरथात हायबोय करावै ।—वी. स टी.

३ प्रलाप, बकवास ।

हायहाय—देखो 'हायश्राय'।

हार—स. स्त्री. [स हारः, हारि] १ युद्ध, लडाई तथा खेल-कूद, भाग-दौड आदि प्रतियोगिता मे होने वाली पराजय, शिकस्त, जीत का विपर्याय।

उ०—१ एम 'दुरग' श्राखियौ, सुणौ कमधा समरत्था। हाण लाभ जै हार, हुई करतार सु हुत्था।—रा. रू

उ०—२ 'जैत' भूप 'जैतरी' हार 'कमरा' री होसी। श्रड पोसी मुडमाळ जगतचख कौतुक जोसी।—मे म

उ०—३ हार जीत मन श्रापनी, श्रौर किसी की नाहि। जनहरीया मन हैकलौ, सारी वाता माहि।—श्रनुभववाणी

२ वह दशा श्रवस्था या भाव जब श्रादमी किसी कार्य मे सब तरफ से असफल हो कर थक कर बैठ जाता है, निराशा, असफलता, थकान।

उ०—१ श्रडसठ तीरथ भ्रमि भ्रमि श्रायौ, मन नाही मानी हार। या जग मैं कोई नही श्रपणा, सुणियौ स्रवण कुमार।—मीरा

उ०—२ श्राप लोगा नै समझावण री वाद भगवान ई करै तो वण नै हार मानणी पडैला। म्है तो श्राप लोगा री बाता रै मिस श्रापरी श्रकल री पीदी देखणी चावू। -फुलवाडी

स पु.—३ स्वर्ण, चादी, पुष्पो, मोतियौ श्रादि की माला, जो गले मे धारण की जाती है।

उ०—१ डाडी रा चौक मैं स्याम बुद विराजै छै. जाणै चद्रमा रै मगीर हार राजै छै।—पना

उ०—२ माथै सोना री ई मुगट। श्रमोलक नग पळपळाट करै। गळै सोना री ई हार। तरवार श्रर कटारी रै सोना री मूठ श्रर सोना री म्यान।—फुलवाडी

४ मुडमाला।

उ०—श्राभूखण वज्रतणा श्रथाहै। माथातणा हार गळि माहै।
—सू प्र

५ युद्ध, लडाई, सग्राम।

६ एक दीर्घ या गुरु मात्रा का नाम।

उ०—श्रठ दुजबर खटकळ सुयक, एक हार गण श्रत। मदनहरा सौ छंद मुणि, राघव सुजस रटंत।—र ज प्र

७ प्रथम गुरु के सगण का नाम। (र ज. प्र)

८ छन्द शास्त्र के श्रनुसार ठगण का चौथा भेद जिसमे मात्रा क्रम दो गुरु एक लघु इस प्रकार होता है—(ऽऽ।)। (डि को.)

९ श्रक गणित का भाजक, विभाजन।

१० वन, जगल।

११ खेत।

१२ राज्य द्वारा किया जाने वाला हरण, जब्ती।

१३ पक्ति।

१४ देखो 'हारौ' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया प्याणौ दुलभ है, ज्यु खाडै की धार। इन सरवर कै नीर कु, विरही पीवन हार।—श्रनुभववाणी

उ०—२ बाप बाप हो! थारा श्रारभ पारभ लागि गढ लेयण हार, किना बाप बाप हो! थारा सत तेज श्रहकार, राइ दुरग राखण हार।—रा सा स

हारक—स पु [स] १ चोर।

२ हरण करने वाला, लुटेरा।

३ धूर्त कपटी।

४ मुक्ताहार।

५ विभाजक।

वि —हारने वाला।

रू. भे —हारिक।

हारणौ—वि (स्त्री हारणी) १ हरण करने वाला, नष्ट करने वाला, पाप हरने वाला।

उ०—१ देवी रोग भव हारणी श्राहि माम, देवी पाहि पाहि देवी पाहिमाम।—देवि

उ०—२ देवी हारणी पाप स्री हरि रूपा, देवी पावणी पतिता तीरथ भूपा।—देवि

२ हारने वाला, पराजित होने वाला।

३ निराश होने वाला, थकने वाला।

हारणौ, हारबौ—क्रि स [स हृ ,हारयति प्रा हारणें] १ युद्ध, लडाई, मुकद्दमे खेल, प्रतियोगिता श्रादि मे श्रपने प्रतिद्वन्द्वी से पराजित होना, शिकस्त खाना, हारना।

उ०—श्रमीरखान नै जाम सतै माहीमाह एकी छै। पछै श्रजमखान गिरनार, नवानगर ऊपर श्रसवारी की, वेढ हुई। जाम सतो नै श्रमीरखान वेढ़ हारिया।—नैणसी

२ श्रपना दाव गमा देना, खो देना।

उ०—प्रहरै प्रहर ज ऊनरचु, दिवला साझ भरेह। धण जीती प्रिव हारियउ, बेल्हा मिळण करेह।—ढो मा

३ किसी कार्य में परिश्रम करने के बावजूद श्रसफल होना, परिश्रम करके थकना, असफल होकर निराश होना, हतोत्साहित होना।

उ०—१ हकीम वैद्य सरब पचि हारया, दीनी बहुत दवाई। जाण श्रसाध्य व्याध जगदबा, श्रबा वासै श्राई।—मे म.

उ०—२ कुसळ विहावउ सज्जणा, पर मडळै थयाह। जउ बिह हिया न हारियइ, वळै मिळेवउ त्याह।—ढो. मा.

उ०—३ नानी पोटाय पोटाय, बिलमाय बिलमाय हार थाकी पण दस बरसा री बाळ-हठ रागै नी श्रायो सो नी श्रायो।—फुलवाडी

४ श्रपनी हार मान लेना।

उ०—पण श्रत मेनका हारी, बोली 'हू' नारी माडी। तू जोगी जग रो जीत्यो, श्रा काया चरणा डाळी।—सकुतळा

५ कोई वस्तु बिना उचित उपयोग के व्यर्थ गुमा देना, व्यर्थ खोना, सदुपयोग न करना।

उ०—१ राम नाम कु सिवर कै, हरिजन उतरे पार। बूजी बुंगीया दीन दिन, गए जमारो हार।—अनुभववांणी

उ०—२ मावी पढि पढइ आपरा आपरा रूप विचारि। नारी नयन सजीवन यौवन अफल म हारि।—जयशेखर सूरि

५ वचन देना, वचन हारना।

उ०—अनी विरीख इकु बीजउ जोर रमणी रिन्नि रजिउ राहु कोइ। मोह बंध पड़िया छइ सात धरम तणी चित्ति हारती वात।

—वसिग

हारणहार, हारौ (हारी), हारणियौ—वि०।

हारिओड़ौ, हारियोड़ौ, हारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हारीजणौ, हारीजबौ—कर्म वा०।

हारव—स पु [सं. हार्द] १ प्रेम, स्नेह, प्यार। (अ. मा; ह ना. मा.)

२ कृपालुता, दयालुता।

३ कोमलता, नाजुकता।

४ अभिप्राय, इरादा, मन की बात।

उ०—सूर नूं बराबदे भेजि आपरी हारव पिता नु जणायौ।

—व. भा.

५ दृढ़ सकल्प।

६ प्रेमी, मित्र। (अ. मा.)

हारवा—स. पु. [स. हृदय] हृदय, दिल, मन।

हारदिक—वि. [सं. हार्दिक] १ हृदय का, हृदय से सम्बन्धित, हृदय से निकला हुआ।

२ सच्चा, वास्तविक।

हारबंध, हारबध—सं. पु [सं. हार+बध] एक प्रकार का चित्र काव्य जिसमे पद्यो के अक्षर हार के आकार मे रक्खे जाते है।

हारहमेल—देखो 'हमेल' (१)

उ०—'रतना' मैं धिठाई प्रगट हुई। लाज थी सू भागी, पायल बिछिया मीन कीवी कटिमेखळा वागी। छिब छिलिगा हारहमेल हिलिया।—र. हमीर

हारमोनियम—स. पु [अ] सन्दूक के आकार का एक वाद्य, जिसमें एक तरफ हवा भरने का पर्दा लगा रहता है तथा ऊपर स्वर लगते रहते हैं। पर्दे से हवा भर कर, स्वरो को अंगुलियो से दबाते हुए विभिन्न राग रागिनियो की धुने बजाई जाती है, पेटी बाजा।

हारमोर—वि.—१ गायब, अलोप, ओझल।

उ०—१ कोकळ समै कुबेलियां, म दै संग महमाय। भिजरां आगै निमख मैं, हारमोर व्है जाय।—बां. दा.

उ०—२ घर, गळिया, खेत, खळा, आकरिया, तळाव, कुआ-बावडी सगळाई देख-देख नै तळा री माटी कर नाखी, पण टाबर तौ जांणै हारमोर इज व्हैग्यौ, जांणै मोर ऊबी गिटली कै जांणै जीवता नै धरती ऊगारगी।—अमरचूनडी

२ नष्ट, समाप्त।

हारल—स. स्त्री. एक प्रकार की चिड़िया जो हर वक्त अपनी चोंच मे कोई लकड़ी या तिनका दाबे रहती है, यह भूख मे रहती है।

रू. भे.—हारिल।

हारवणौ, हारवबौ—देखो 'हराणौ, हराबौ' (रू. भे.)

उ०—हामावत एकौ हारवसी, वळ नर वाख वहण खग दाहि। कुंजर कोड मिळै जौ कारी, सोह भाडफलौ सकै न साहि।

—साहिब हमीरोत रौ गीत

हारवल्ली—स. स्त्री —माला।

उ०—वानरी हारवल्ल्या किं करोति, विधवा स्त्री किं करोति, वणिक खगेन किं करोति, दिगम्बर पट्टकूलेन किं करोति.. .....।

—व. स.

हारसणगार हारसिंगार, हारसिंगार—सं. पु. [स. हार। शृगार] १ शरद ऋतु मे होने वाला, शेफाली का एक प्रकार का वृक्ष, जिसके पुष्प अत्यन्त सुन्दर एवं सुगन्धित होते हैं, पारिजातक वृक्ष।

[स हार+शृगार] २ वस्त्राभूषणो द्वारा किया जाने वाला शृगार।

हारहूर—सं पु. [सं] एक प्रकार का मद्य।

हारहूरा—स स्त्री.—१ मुनक्का दाख, द्राक्षा। (डिं को)

२ अगूर।

हाराड़—स स्त्री —१ लड़ाई, झगड़ा।

२ युद्ध, जग।

हारावणौ हारावबौ देखो 'हराणौ, हराबौ' (रू भे.)

उ०—प्रभावती मुख नै मिलै, पछि आयौ चप चड प्रद्योत कि हिंमति करि हारावीयौ, पाल्यो नै उदय नै पोल की।

—ध. व प्र

हारावियोड़ौ—देखो 'हरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हारावियोड़ी)

हारि—देखो 'हार' (रू. भे.)

उ०—१ जूइ राजा केरी हारि, पूछि नाम गोत्र विस्तार। जै आगलि जई कन्या रहि, पिछिलूं, तेहना मनमि अहि।—नळाख्यान

उ०—२ का तौ पासो हारि को, का तौ पासो जीत। हरीया दोउ दूरि करि, एको मतो अजीत।—अनुभववांणी

उ०—३ हाडै राव तीनी मास एक की लड़ाई। बूंदी सैर लूट्यो वेखि पाछै हारि पाई।—शि व.

हारिक—देखो 'हारक' (रू. भे.)

उ०—विया 'गिरमेर' यौ हारबौ जीतबौ, सारिखां तणी करतार सारै। हारिकां तणी तौ जीत मारै नहीं, मारिका तणी तौ हारि मारै।—धीरतसिंघ खीची रौ गीत

हारिख–स पु.—एक प्रकार का रोग।
उ०—१२ जवर, १३ सनिपात, १८ प्रमेह, ५००० आमवात, ८४ वायु ३६ महावायु दोख, ४५ खाधाविकार, १०८ फोडि। ५ गुल्मक्षयन, २० स्लेस्मा, ८ उदर, १० व्याधि, १०० सइमउ म्रत्यु, ७६ चक्षुरोग, कास, स्वास, हारिख, अतिसार, गुड, गूवड, देह रोगा।—व स.

हारित–स पु [स] १ एक प्रकार का कबूतर।
२ हरा रग।
वि —१ हारा हुआ, पराजित।
२ भेंट किया हुआ।
रू भे.—हारीत।

हारिनास्वा–स स्त्री [स हृरिनाश्वा] सगीत मैं एक मूर्च्छना जिसका स्वर ग्राम इस तरह का है—ग म प ध नि स रे। स रे ग म प ध नि, स रे ग म प।

हारिल—देखो 'हारल' (रू भे)

हारी—देखो 'हार' (रू भे)

हारीत–स पु [स हारीत] १ एक कबूतर विशेष।
२ धूर्त या कपटी व्यक्ति।
३ जाबाल ऋषि के पुत्र का नाम।
४ सूर्यवशी राजा युवनाश्व का पुत्र।
५ एक स्मृतिकार, जिसके पुत्र का नाम कमठ था। इसने कई स्मृति ग्रथो की रचना की।
६ विश्वामित्र ऋषि का एक पुत्र।
७ एक अगिरस कुलोत्पन्न तत्वज्ञ, जिसके द्वारा प्रणीत सन्यास मार्ग का तत्वज्ञान 'हारीतगीता' नाम से विख्यात है।
८ एक ऋषि जो युधिष्ठिर की सभा मे उपस्थित था और शरशय्या पर पडे भीष्म से मिलने भी गया।
९ देखो 'हारिल' (रू भे)

हारु, हारू–वि —१ कायर, डरपोक।
२ कमजोर, अशक्त।
३ हार मानने वाला।
४ देखो 'हार' (रू भे.)
उ०— हारू त्रोडती वलय मोडती। आभरण भाजती, वस्त्र गांजती। किंकणी कलाप छोडती, मस्तक फोडती। वक्षस्थल ताडती, कचुउ फाडती।—रा सा सं
५ देखो 'हारौ' (रू भे)

हारो–प्रत्यय—एक प्रत्यय जो क्रिया शब्दो के पीछे लगकर उन्हे विशेषण बनाता है, वाला।
उ०—फूलाना पगर भरचा, अगरना गध सचरचा। धान गादी चातुरि चाकळा, बइसरण हारा बइठा पातळा।—रा सा स
स. पु.—१ चूल्हा।
२ देखो 'हार' (अल्पा, रू भे)
उ०—ठलक ठलक आसू पडै, जाणै तूट्यौ मोत्या री हारौ जी। कुंवर कनै माता आय नै, भाखै वचन उदारौ जी।—जयवाणी
रू भे—हारु, हारू।

हालदियौ–वि (स्त्री हालदी) चलने वाला।
उ०—हम जही हालदियां, धाटेचिया तियाह। कनक लता कठ-याणिया, जोडे-नही जियाह।—बा दा

हाल–स पु [अ] १ दशा, अवस्था, हालत।
उ०—१ राणीजी वेचेतै व्हियोडा सूता हा। वै मरग्या तौ पेट री आसा री काई हाल व्हैला।—फुलवाडी
उ०—२ चगाऊ जणिया कह्यौ—नी अो मा'राज, इत्ती भुळावण दिया पछै काई धोवौ खावा। थारो भो भो ई भलो व्हे, जको सगळी बात बताय दी। नीतर राम जाणै काई हाल व्हैता।
—फुलवाडी
२ रग-ढग, स्थिति।
३ समाचार, खबर, सवाद।
४ ब्यौरा, विवरण, वृत्तान्त बयान।
उ०—तथा स्त्रीचद फरजद परतू तणौ, पाय सकट घणौ खुडद पूगौ। कसट सहियौ जिकौ हाल मालुम कियौ, हाल कहियौ अतै व्हाल हूवौ।—मे म
५ आख्यान कथा।
६ व्यवस्था।
७ चलने का ढग गति चाल।
उ०—१ तौ कुवर विचारौ हाल तौ माटी री नही बैर री दीसै छै।—रायधण री वात
उ०—२ दाता रौ पाणी, कडीया रौ केहरी, हाथ री हस, भूंआरी भमर, कुरज री नस। अलकां री नागण, पलका री कुरग, कठ री कोयल, सोनै री अग।—मयाराम दरजी री वारता
उ०—३ हस हाल पाहुरै, बचन पलटै दुरवासा। मह मोरा भड मडै, इद नहिं पूरै आसा।—चौथ बीठू
उ०—४ भाळ विसाळ सिंदूर सुसोभित हाल मराल हसत्ती। रूप अनूप तेज मय राजत, मिळत पलक मदमत्ती।—मे. म.
८ सुख, चैन।
९ वर्तमान काल।
१० वर्तमान मे कुछ पहले का समय।
[स हालः] ११ हल।
१२ हल की वह लम्बी पट्टी या लट्ठा, जिसका एक सिरा हल के बीच मे फसा रहता है तथा दूसरे सिरे पर जूआ बाधा जाता है, हरिसा।
१३ बलराम का एक नाम।
१४ शालिवाहन का एक नाम।

१५ एक प्रकार का पक्षी ।

[अ.] १६ एक बहुत बड़ा व लम्बा चौड़ा कमरा, बड़ा कक्ष, हॉल ।

अव्यय [अ., फा.] १ अभी, इसी समय, तुरन्त, तत्काल ।

उ०—१ तुम थै तब ही होइ सब दरस परस दर हाल । हम थै कबहु न होइगा, जै बीतहिं युग काल ।—दादूवाणी

उ०—२ काई करां और सग भावर, म्हांनै जग जंजाळ । मीरां प्रभु गिरधरन लाल सूं, करी सगाई हाल ।—मीरां

२ अभी तक, वर्तमान काल तक, अब तक ।

उ०—१ हाल दाळयी अर घाम खावणी नीं सीख्या तौ पछै कांई करूं । हावळ नी चूंघावूं तौ सगळा बेटा नै मरणौ पड़ै ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ आज ई पांणी री बेळा व्हेगी दीसै । कांम हाल सगळोई पड़्यौ है । बांटी भरणी है, बिलोवणी करणौ है ।—अमरचूनड़ी

उ०—३ हाल नखा री भैली ई को धुपियौ नीं । अां काळिंदर रा बिचियां नै किता चौरा पाळ पोस नै मोटा करिया, वांनै इण बात री कांई चेतौ । गाडिया रै मूंडै पोतड़िया धोया अर हाल धोवूं ।
—फुलवाड़ी

३ तुरन्त, शीघ्र ।

४ फिलहाल ।

उ०—आई हाल मांदी है भाई, वा सफा ठीक नीं व्है जितरै उण नै सफाखाना सूं छुट्टी मिळै कोनी । म्हैं उण नै गोदी मे ऊंचाय लियौ ।—अमरचूनड़ी

हालक—स. पु. [स.] बादामी या भूरे रंग का घोड़ा । (शा. हो.)

वि.—पीला, हरा । (डि. को.)

हालड़ौ—स. पु. [देश.] हेंगा या पटेला नामक कृषि उपकरण ।

हाल चाल—स. पु. यौ.—१ दशा, हालत, अवस्था, स्थिति ।

२ रग ढग, व्यवस्था ।

३ समाचार, खबर ।

४ विवरण, वृत्तान्त ।

५ रहन-सहन का ढग ।

हालण—स. स्त्री.—१ चलने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ घणी सकोप रहै कर घेरा, फौजां साह तणी चौफेरा । आगम निस दिस विदिस अधेरा, हालण सोध नकांम गहेरा ।
—रा. रू.

उ०—२ उण दिन म्हैं वांनै म्हारै साथै हालण री बात करी जद वै सूवर रै माथै हाथ फेरतां गळगळा कठ सूं सूवर रै साम्हौ देखनै कह्यौ कै उणनै अठै छोड बांरौ कठै ई दूजी ठौड़ जावणौ नीं व्है ।—फुलवाड़ी

२ गतिमान होने की क्रिया या भाव ।

हालण डोलण—स. स्त्री.—हिलने-डुलने की क्रिया या भाव ।

उ०—हालणडोलण बोहु बकण, मन पवना थिर नाहि । हरीया परमानद सुख, उर्दै नही उर माहि ।—अनुभववाणी

२ छोटा मोटा कार्य, साधारण फुटकर कार्य ।

हालणसींगौ—स. पु. (स्त्री. हालणसींगी) वह बैल जिसके सींग हिलते हो ।

हालणौ, हालबौ—क्रि. स. [सं. हल्लनं] १ गतिमान होना, चलना ।
(ज. र.)

उ०—१ बेगी, थारै बिना, माथै भाखर री भार उखणियां ई म्हैं थाकेला नै नेड़ौ नी फटकण देतौ, पण अबै म्हारा दिन ढोळै बैठग्या, थारै ओडै कीकर हाल सकूं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हद चाटी हालता हथ हालत रव होवै । सवि जूनो सपसास, जिको कांनी रवि जोवै ।—मे. म.

उ०—३ इम हालियौ चाट दिस उत्तर । कगळा नभ रज चढै भगकर । एण सपूत मंगा आकुळावै, पंखी नहि उडता प्रत पावै ।
—सू. प्र.

२ रास्ते लगना, आगे बढना, जाना ।

उ०—१ चौधरण री आधी सूधी मन बुझग्यौ । सोई वा हेठै नीं म्हाकी । धणी सारू एक फूटरा गांव री सोच मैं वा धकौ हालती री ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सारा बहू रै इण भांत बरताव होवती ही अर चौधरी तौ ऊंडी ऊंडी डकारां खावतौ जोधांणा रै मारग भरणाटै हालतौ रह्यौ ।—फुलवाड़ी

३ कहीं जाना, जाना, चलना ।

उ०—१ गां साळ रै गाय बड़ आडी जड़ दियी । बेटी होळै होळै चितबंगी व्है ज्यूं बाड़ा कांनी हालण लागी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ तरै महा वैराग ऊपनौ । रह्यौ न गयौ । तद पुत्र भीमसीपै, काका खेमसी नू सारोही भळाय नै हालियौ ।
—कल्याणसिंह राठेल नगराजोत री बात

४ प्रस्थान करना, रवाना होना, चलाना ।

उ०—१ सा आंणां जाय खड़ा मांही ययूं बैठ री । इसरी कहि आगानै मेड़तै साम्हे हालिया ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ हालिया पटा-भर तणी हाल, मिळ पातसाह बहु दीय माळ । कुसळात पूछ इम हेत कीध, देबी रसाळ जब हार दीध ।
—वि. स.

उ०—३ तरै हेक दीहाड़ै रजपूतांणी सूं कहीयोज म्है हमैं पर भोम सजवा रै आंटै हालां तौ बैठा काहूं करां । तरै हालण लागौ ।
—कल्याणसिंघ राठेल नगराजोत री बात

५ घूमना, फिरना, टहलना, विचरण करना ।

उ०—१ जिन की कळा से हालत चालत धरण अकास अधारा । जिन कोकळ मैं सब जग भूलयौ, यै ही पुरुस है न्यारा ।—मीरा

उ०—२ बिना अजाद हालतौ वहतौ, बधतौ क्रोध हीळोल बप।
नीर बिना कीधौ आमेरौ, ताहारौ सोखा बीर तप।
—राव दुरजण साल हाडा रौ गीत

६ हिलना डुलना, झोले खाना।
उ०—नगर माहि चतुरंग कटक चालतइ, तेहनइ भारि सेसनाग हालतइ तुरग चडिउ, ।—व स
७ कापना, धूजना।
८ उडना।
उ०—जद पून चली आयूणी, पत्ता सागै सैं हाल्या। थी अटक्या बीच मगा मैं, की दूर दूर तक चाल्या।—सकुंतला
९ होना, चलना।
उ०—१ घरां मैं तौ काना ई कांना बाता हालती, पण काकड मैं ई डरता धूजता छानै-ओलै बात करता।—फुलवाडी
उ०—२ राड बैठा-सूता केडा भवरजाळ मैं न्हाक दिया। इण भात री कचकच खासी ताळ ताई हालती री।—फुलवाडी
१० आना, चलना।
उ०—पाचवै महीनै टाबर पेट मैं टळबळण लागौ। माय हुरडिया देवतौ सौ लखायौ। जच्चा राणी नैं होबरडा हालण लागा।
—फुलवाडी

११ किसी से व्यभिचारिक सम्बन्ध रखना, किसी के साथ व्यभिचार करना।
उ०—सु सातमी वार गंगोदक कावड भरी नै आणती हुती सु किणहेक सहर वटाउ थकौ किणहेक रै चौनरै ऊतरियौ हुतौ सु उणरी बैर किणीहेक जिंदा सू हालती हुती।—नैणसी
१२ प्रचलन मे होना, व्यवहार मे होना, जारी होना या रहना।
उ०—किण ही पूछ्यौ—आप रौ इसौ साकडौ मारग किताक वरस चालतौ दीसै है। जद स्वामी बोल्या—सरधा आचार मैं सेठा रहै। वस्त्र पात्र उपगरण री मरयादा न लोपै। थानक नही बधीजै। जठा ताई मारग चोखौ हालतौ दीसै है।—भि. द्र.
१३ किसी वस्तु का ठीक तरह से उपयोग मे आते रहना।
ज्यू—औ कमीज थारै हाल ताई हालै।
१४ चलना।
उ०—लक्खू सिसकारा भरती बोली—वरसा सू म्हारै औ मोटौ रोग लाग्योडौ। खाज आगै जीव जावै। हालणौ सरू व्हियां पछै ढबै ई नी।—फुलवाडी
हालणहार, हारौ (हारी), हालणियौ—वि०।
हालिओडौ, हालियोड़ौ, हाल्योडौ—भू० का० कृ०।
हालीजणौ, हालीजबौ—कर्म वा०।
हलणौ, हलबौ, हलवणौ, हलवबौ, हल्लणौ, हल्लबौ—रू० भे०।
हालत-स. स्त्री. [अ] १ दशा, अवस्था।
उ०—१ बाई रामचरण हुया पछै थारी काई हालत ही, म्हैं सगळा समाचार सुण लिया हा। जै इण टाबरा रौ बधण नी व्हैतौ तौ वै कदेई औ घर बार छोडनै नाठ गया व्हैता।—दसदोख
२ घर की अवस्था, आर्थिक स्थिति।
उ०—कै—जदी छोटू मारजा री हालत दुरबळ नी होती तौ अवस एम० ए० ताई पढ लिख जावता।—दसदोख
३ परिस्थिति, वातावरण।
४ वृत्तान्त, हाल, विवरण।
५ समाचार, खबर।
हालतसीगौ-स पु (स्त्री हालतसीगी) वह बैल जिसके सीग झुके हुए तथा हिलते हुए हो।
हालताई-क्रि वि—अभी तक, अब तक।
उ०—पण हालताई उणनै कोई इसौ मौकौ नी मिळ्यौ हो कै वौ कानजी सू राजीपौ करतौ।—अमरचूनडी
हाळबोळ—देखो 'हळाबोळ' (रू. भे)
उ०—हाळबोळ छक हूत, हलं असि चढण झळाहळ। इम दीसै उण वार, समद मथसी साहस बळ।—सू प्र.
हालमकर-स पु—अनार, दाडिम। (अ मा)
हालर—देखो हालरियौ' (मह, रू भे)
उ०—पिलग म्हारौ हालर पोढसी, काई पाटी बाधी हालरिया री मायजी।—लो गी
हालर-फालर-स पु यौ—चापलूसी, खुशामद।
हालर-हूलर-स पु यौ—१ व्यर्थ का प्रलाप।
२ व्यर्थ का कार्य, झझट।
३ व्यर्थ की हसी या हसी की आवाज।
हालरि, हालरियु, हालरियौ-स पु—१ बच्चा, पुत्र, बेटा।
उ०—१ हनै काई करसा औ हालरिया रा बाप, माताजी चमकिया देस मैं।—लो. गी
उ०—२ मण भर धागडौ मैं फिर घर ल्याई जी गोद मेरी हालरियौ मेरौ स्याम लटकौ आयौजी।—लो. गी
उ०—३ थेइज औ मानेतण राणी हालरियौ जिणजौ। थेनड़ियौ जिणजौ औ अजमी मारा भावोसा मोलवै ओ राज।—लो गी
२ बच्चे को मीठी थपकी दे कर या किसी झूले मे डाल कर सुलाते समय गाया जाने वाला लोक गीत, लोरी।
उ०—१ रूडा रिखभजी घरि आवउ रे, हालरियु गाऊ रे गाउ। मरुदेवी माता इण परि बोलइ, जीवन तोरी बलि जाउ रे।
—स. कु.

उ०—२ माता धोता अमल फुनरायो झोली, हालरि हुलरावियौ हीडोल हिंचोली। वलि रमीयौ अठ दस बरस तु बालक टोली, परणावै तु नइ पछै वयिता हइ दोली।—ध. व. ग्र
उ०—३ उणौ इज किण रा काळा तिल चोरिया है, उणौ इज

किसा बोभण मारिया है सो हुलराई उणरी रोळी लागी है। जेठाणी गीगा नै हालरियौ गावै जद उण रै कानी देख देख नै किसरी मुजेज सूं गावै।—अगरचूंनड़ी

उ०—४ रात रा मासी बेटा नै केई बाता सुणावती। पेड़ पेवड़ नै नित नवा हालरिया गावती।—फुलवाड़ी

३ बच्चों को झुलाने का पालना, झूलना, झूला।

४ बच्चे को पालने में सुला कर झुलाने की क्रिया, झुलाने के लिये दिया जाने वाला धक्का, हिलोरा, झोला।

उ०—रोवतौ मैं राख्यौ नहीं कन्हैया, पालणियै पोढाय रे, गिर०। हालरियौ देवा तणी, कन्हैया, म्हारै हूंस रही मन मांय रे, गिर०।
—जयवाणी

५ बच्चे के जन्मोत्सव पर गाया जाने वाला एक लोक गीत।

६ बालक को गाया जाने वाला एक लोक गीत।

७ गले में धारण करने का एक आभूषण।

रू. भे.—हालरौ।

मह;—हालर।

हालरौ-स पु.—१ वीर रस पूर्ण गायन।

उ०—दुभाल रा संघ ज्यूं रहै न कोइ खीज खोटी, करे की लाल रा जकै छोरी बूथ कूत। धाराळा झालरा माथां अनोठी काळ रा धूबै, हालरा चौसठी थैं अनोठी बाण हूत।—बद्रीदास खिड़ियौ

२ घोड़े के गले का एक आभूषण विशेष।

उ०—करै हालरा काल रा नाद कठा, अथीला मणी झालरा लूम गंठा।—व. भा.

३ किसी दूरस्थ को हाथ के इशारे से बुलाने की क्रिया या भाव।

४ देखो 'हालरियौ' (रू. भे.)

उ०—१ ए तौ देरांण्यां जेठाण्यां जाया हालरा मरवण थैं काई जायी है धीव। लाम दौ नी, भंवर, म्हां नै चीणोटियौ।
—लो गी.

उ०—२ हुवे बीर हक अधक चौसट दीयै हालरा, जुधां प्रण पाल रा पाव जड़कै। तंडळ खळ हुएं स्रोणत भरे तालरा, ऊरस फतमाल रा भुजा भड़कै।—गोपाळ धधवाड़ियौ

उ०—३ हरखी न दीधौ हालरौ जी, बहू नहीं पाड़ी रे पाय। एक ही पुत्र न जनमियौ जी, हूस रही मन-मांय रे जाया।—जयवाणी

उ०—४ थे सिणगार दै जी ए जायौ हालरौ, उजळदती ए जायौ हालरौ।—लो. गी.

हालवव-स. पु.—तंग, तस्मा ?

उ०—बीजै फेरै हमीर बाप नूं सलाम कर कहै छै, हेडौकै म्हारा हाथ देखौ। पाखरीयौ घोडौ दोना ही पाखती बाजूवां हालवव बाधा थका माथे सिरी चोसारी बध हुआर सेखासिरी घोडे रै छै।
—अरजन हमीर भीमोत री वात

हालवौ-स. पु.—अभिचार या रति क्रीड़ा के लिये आने जाने की क्रिया या भाव।

उ०—राजा प्रथीराज चहुवाण री बैर सुहवदे जोइयाणी कुसखी बापरै घरै हुती, तिण नूं चाहुरी चाकरी उण रै बाप गाळियौ करायौ, इसौ कथो, जिण री चौगौ अजमेर दीसे, तिसूं मूंदळराव हालवौ गाळियौ सु इसड़ी सुरग एक बणाई, जिका उणरैं गांव थी सुहवदे रै माळिया छाना आवै—नैणसी

हालहवाल-स. पु. बौ.—१ दशा, अवस्था, हाल-चाल।

२ समाचार, खबर, वृत्तान्त।

हालहुकम हालहुक्कम, हालहुक्म-स पु बौ—हकूमत, शासन।

उ०—१ भडाण री मूंधी, सर छूणासर गांव री सवाल, गा'रजा रो हाल हुकम, वाणिया भूपाल। दोसती-गिसराई मोटी चाल, किसी हो हुराथौ चावै मझौ सू गार।—दसदोख

उ०—२ जिण कीधा हो जगहर व्यापार, सव गांसाहारी गनि लिए सारद। जिण कीधउ हो सदा हालहुक्कम, सउ वै हुंकारथउ किण गमद।—स कु

हालांणौ देखो 'हलाणौ' (रू. भे)

हाला-सं. स्त्री. [स] १ भाटी वंश की एक शाखा।

२ शराब, मदिरा। (अ मा)

उ०—१ हुवै धन लोहित्त संगत हाला, नसा रा किसा पार सूळा निवाला। मधू मास आसोज मैं रास मंडै, तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडै।—मे म.

उ०—२ घोड़ा सवार ऐहिज घणा, चावर कर सागै चढ़ण। मैं चढ़ै पीठ डालामथै, लै हाला आई लडण।—मे. म.

हालाकूलौ, हालाडोई, हालाडोली, हालाडोलौ-स. पु.—१ घर का छोटा-मोटा कार्य।

२ व्यर्थ का गोरख-धंधा।

रू. भे.—हालाबोळी, हालाहीलौ।

हालाबोळी-सं स्त्री—१ प्रार्थना, स्तुति, वंदगी।

उ० आगे देखै तो राजाजी उघाड़ै माथै माताजी रै आगे हालाबोळी करै छै।—जैतसी ऊदावत री वात

२ देखो 'हालाडोई' (रू. भे)

हालार-स. पु.—गुजरात का एक प्राचीन प्रदेश, जहां पहले हाला भाटियों का राज्य था।

उ०—जिसौ देस हालार मैं वन जगळ।—नैणसी

रू. भे.—हालाहर।

हालाहर-स. पु.—१ यादव या भाटी वंश की हाला शाखा का व्यक्ति।

उ०—रिम गजण सिंध मछरियौ राजा, जो जिण ठांम सा जुवा जुवा। झाला चोडा सगा झळहळे, हालाहर हैं-कार हुवा।
—व. दा.

२ देखो 'हालार' (रू. भे.)

उ०—राव खगार हालानू कछ माहे सूं काढिया । उवै जाय हाला-हर वसिया ।—बा. दा ख्यात

हाळाहळ, हालाहल—देखो हळाहळ' (रू भे) (ग्र मा; ह. ना मा)

उ०—१ विसरिया विसर जस बीज बीजिजै, खारी हाळाहळी खळाह । ग्रूटै कध मूळ जड ग्रूटै, हळधर का वाहता हळाह ।
—वेलि

उ०—२ जन्म पछी ता जनक नइ, हेला हवु जधान । पासइ धरता पांमयु, हर हालाहल पान ।—मा का. प्र.

उ०—३ जो हालाहल जरचौ, जोइ मन्मथ रिपु ते । भाल नैत्र महि भरचौ, वलै वन ग्रनल वदीतै ।—ध. व. ग्र

हालाहीलौ—देखो 'हालाहूलौ' (रू भे)

हाळि हालि—देखो 'हाळी' (रू भे)

उ०—सूर खळा सिर सालती, हरीया ग्राज'क कालि । लाटी लूटै लोभीयां, हकै ग्रायौ हाळि ।—ग्रनुभववाणी

हाळिडौ—देखो 'हाळी' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—म्हारै बैंता नै चारौ मोठ रौ, म्हारै हाळिडा नै गुवळी खीर ग्राज बदळी म्हारी वरसेगी ।—लो गी

हालिद्दौ-वि [स हारिद्र] पीत, पीला । (जैन)

स पु.—१ पीला रग ।

२ कदब का वृक्ष, क्षुप ।

हालियोडौ-भू का कृ.—१ गतिमान हुवा हुग्रा, चला हुग्रा २ रास्ते चला हुग्रा, ग्रागे बढा हुग्रा, गया हुग्रा ३ कही गया हुग्रा, चला हुग्रा, गया हुग्रा ४ प्रस्थान किया हुग्रा, रवाना हुवा हुग्रा, चला हुग्रा ५ घूमा हुग्रा, फिरा हुग्रा, टहला हुग्रा, विचरण किया हुग्रा ६ हिला हुग्रा, डुला हुग्रा, झोले खाया हुग्रा. ७ कापा हुग्रा, धूजा हुग्रा ८ उडा हुग्रा ९ हुवा हुग्रा, चला हुग्रा. १० ग्राया हुग्रा, चला हुग्रा ११ व्यभिचारिक सम्बन्ध हुवा हुग्रा या किया हुग्रा १२ प्रचलन मे हुवा हुग्रा, व्यवहार मे हुवा हुग्रा, जारी हुवा हुग्रा १३ किसी वस्तु का ठीक तरह से उपयोग मे ग्राया हुग्रा. १४ चला हुग्रा ।

(स्त्री हालियोडी)

हाळियौ—देखो 'हाळी' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—सातमी वार गगोदक री कावड भरि नै ग्राणतौ हुतो सु किणहेक सहर वाटाउ थकौ किणहेक रै बारणै चौतरै उतरियौ हुतौ, सु उण री वैर किणीहेक जिदा सू हालती, सु वा सासती जिदा रै जाती, सु तिण दिन उण रौ माटी कठै कै हाळियौ हुतौ सु घरै ग्रायौ ।—नैणसी

हाळी, हाली-स पु. [स हलिन्, हालिक] १ हल चलाने वाला, किसान, कृषक ।

उ०—१ ताहरा राव चवडौजी एक दिन दरबार जोड बैठा छै । जितरै हेक हाळी ग्रायौ ।—नैणसी

उ०—२ ग्राकास धडहडै खाळ खडहडै । पखी तडफडइ, वडा माणस लडथडइ, काठ सडइ, हाळी हळ खडइ ।—रा सा स.

उ०—३ ग्वाळा नै म्हारै गळछट चूरमो हाळ्या नै खीर लापसी ए ।—लो. गी

उ० —४ जाट बसै । धरती हळवा ४५ बाजरो मोठ खेत कवळा । ऊनाळी ग्ररट ७ हुवै । हाळी थोडा छै सु बसी एक गाव मैं राखै छै ।—नैणसी

२ कृषि कार्य मे रखा जाने वाला वह नौकर जो हल चलाने, बैल हाँकने से लेकर समस्त कृषि सम्बन्धी कार्य करता है ।

उ० —१ राम नाम चेत्यौ नही, गाफिल पणै गिवार । हरीया रहिसै पारकै, हाळी घर घर बार ।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ कुवारै री कमाई, जोर ग्रर घूस खोर री माया तथा बादळी री छाया कितीक दूर चालै ? हून्डौ जड दियौ, खेत खड लियौ । ऊट लीनौ हाळी राख्यौ, ल्हास करी ग्रर खेत बुह यौ ।
—दसदोख

३ कृषि कार्य मे मजदूरी करने वाला मजदूर, श्रमिक ।

उ०—सु जीजी खेत मै हुती । जुवार री खेत हुती । सु चूंटावण गई हुती । ... राव खेत मैं पधारिया । हाळीयां नु पूछीयो, 'जीजी केथ' ? ताहरा हाळीया कह्यौ, 'घरै गई' । ताहरा राव घरै ग्रायौ ।—जीजी डाभी रो बात

४ पति, खाविंद । (किसान)

वि —१ हाकने वाला, चलाने वाला, चालक ।

२ लोभी ।

उ०—रात रा सेठ मतै ई बात छेडी । कैवण लागा—ग्रबै सन्यास लेलू तौ सावळ है । फगत थारो घ्यान ग्राया मन डिगमिगै । ग्रा माया रै हाळी बेटा रै भरोसै था मैं फोडा पडैला, नीतर कदे ई हेमाळै गुफा मैं वास कर लेतौ ।—फुलवाडी

३ पापी ।

उ०—जेवडउ ग्रतर बहिन नइ साली, जेवडउ ग्रतर दीवाली (नइ होली), जेवडउ ग्रतर पुण्यवत नइ हाली जेवडउ ग्रतर हस नइ काग ।—व स.

रू भे.—हाळि, हालि ।

ग्रल्पा;—हाळिडौ, हाळियौ, हाळीडौ ।

हाली-स स्त्री.—१ चलने का ढग, चाल, गति ।

२ रहन सहन का ढग, ग्राचरण, व्यवहार ।

३ बूदी राज्य का प्राचीन रुपया ।

हाळीग्रमावस-स. स्त्री यौ —वैशाख मास की ग्रमावस्या ।

हाळीडौ—देखो हाळी' (ग्रल्पा, रू. भे)

उ०—१ टीबै तौ ग्रोळै, ए लाडी बेटी, टीबडी, जे तळै हाळीडै री खेत बाबैजी नै कहियौ ए, हाळी नै वेटी क्यूं दयी ।—लो. गी.

उ०—२ हाळीड़ै री गधरावै जावी रे बलाय। राय हाळीड़ै रा बाया माजै मोती नीपजै।—लो गी

हाली-चाली—सं. स्त्री.—चाल-चलन, आचार व्यवहार, ढंग।

हाळीचिट्ठी, हाळीचीट्ठी—स. स्त्री.—जागीरदार द्वारा किसान को लिख कर दिया जाने वाला खत जिसमे उसे (किसान को) कुआ या खेत जोतने की स्वीकृति दी गई हो।

हाळीपण, हाळीपणौ, हाळीपौ—स पु —१ 'हाळी' का कार्य, 'हाळी' के रूप में की जाने वाली नौकरी।

उ०—१ पाच किलोडिया हुक हाळीपणौ, सील संतोख की रासि बाधी। साज अर बाज सब सून करि साधरा, निरत की सीव सूं सुरति सधी।—अनुभववाणी

उ० २ तद वै कह्यौ—थानै 'ठा' कोनी कै अठा सूं निकळै जकी बटाऊ सोवनी लका रै वहन री बात सुणाय जावै। नीं सुणावै जकौ आखै बरस हाळीपौ करै। फुलवाड़ी

२ 'हाळी' के कार्य का वेतन या पारिश्रमिक।

हाळीबाळधी—स. पु.- नौकर चाकर।

उ०—१ आवगी पर आवगी, बुलावै पर बुलावौ, म्हांना म्होड़ा आळा पगवोड़ी करै। पग वोड़ी मैं पाछ नीं राखै। हाळी-बाळधी सकात भाज्या वगै।—वसवोल

उ० —२ हाळीबाळवी, रथ अर बैल्यां मे खींचता ल्यासी।
—वसवोल

हाळीबीज—सं. स्त्री —वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया। इस दिन छोटे बच्चे हल जोतते हैं, बहनें पाथेय ले जाती है। जागीरदार अपने किसानो को भोजन करवाता है।

उ०—खेती निपजै धणियां हेती, हाळीबीज री हळोतियो।
— चेतमानखो

हाळेड़, हालेड़—वि —१ जो किसी स्थान पर जाने या किसी वस्तु को खाने का आदी हो गया हो, आदी। (पशु)

२ आवारा, बंधन रहित।

सं पु.—वह गाय या पशु जो किसी स्थान पर जाने या स्थान विशेष का कोई पदार्थ विशेष खाने का आदी हो और बंधन से छूटते ही सीधा वहीं जाता हो।

हाळेती—देखो हाळी' (रू. भे.)

उ०—हळिया जोतो रे हाळेती, खेत निपजै धणियां हेती। हाळी बीज री हळोतियो।—चेतमानखो

हालोचालो—स. पु. यो.—हो हल्ला, शोरगुल, हलचल।

उ०—भोजन करणो भूल खेलै, बूढा लारी खडभडै। हेठै हालो-चालो भणै, रुळा रुळाळी रड़भडै।—दमदेव

हालोर—देखो 'हालार (रू भे)

उ०—तठा उपरायत पताखां सूं बावळा छोजजै छै। सू किण भात रा बावळा छै? हळबदरा, मोरवीरा, अजाररा भरवछरा, हालोर रा छै। —रा. सा. सं.

हालोहळ, हालोहाल—सं पु.—१ शोरगुल।

उ०—१ नौबतूं रै निहाव वीरारस वाजै। जिस बखत जळाबोळ हालोहळ री फौज हल्ली। नाळ रै निहाव सेती धरती धरसली।
— सू. प्र.

उ०—२ हुई घारा हळवळ, हुय तस हालोहळ। अरावा नालि उपाडि, चोटां नूं नगारा चाडि।—सू. रू. ब.

उ०—३ सिंहगल सिळाकिया करगट कूकिया। फटकां हुई ज हालोहाल।—अमरसिंह राठोड़ री बात

२ देखो 'हुलाहळ' (रू भे.)

हालौ—स. पु —१ चलाने का संकेत, हाथ का इशारा।

२ चलने या आचरण-व्यवहार करने की क्रिया या भाव।

३ भाटी वश की 'हाला' शाखा का व्यक्ति।

उ० - १ रायधणा विधै हालां रै मयूं पांच वरस गाव दधकेरा था। दस माणसा री जोड़ धधकी थी। भीव हमीरोत लालजी री साहबी री, तरै हाले जाणियो, भीव ठाकुराई रो धणी हुवौ तो म्है काईक ठौड़ ओटहां तो रूडा।—नैणसी

उ०—२ हाला अरु झाला जोड़ हाथ, 'माला' हर आगळ नाय माथ। जस कोळी काढी पुर प्रआळ, भालेट रंगसी कीध भाळ।
—वि सं.

हाळौ, हालौ—प्रत्यय—वाला।

उ०—१ सावळ कावळ करण हाळौ तो मालक है, पर राजी रै चेडै मैं काळजा री लजबीज करस्यूं।—वसवोल

उ०—२ घर हाळा धणी ही समभावै, पण सिर मैं गूंग चढायोडो, भुंवाळी खातो फिरै। दसदोल

हालौचळ देखो 'हलचल' (रू. भे.)

हालौहल, हालोहाल,—स स्त्री —हलचल।

उ०—केरै हालोहळ हुई, हुआ रावाळा सत्थ। आज विहाणै रड़वड़, करिसी को भारत्थ। सु. रू. बं.

हाल्ट—स. पु [अं.] १ रुकने की क्रिया या भाव, रुकाव।

२ सेना के किसी दल को या अन्य किसी को सहसा रुकने के लिये दिया जाने वाला आदेश।

हाल्यौ-मोल्यौ—वि —तुच्छ, ओछा।

उ०—हाल्या-मोल्यां सूं काम नहीं रे, सीख नही सिरदार कामदारा सूं काम नही रे, मैं तो जाब करूं दरबार।—मीरां

हाव—स. पु [सं.] १ संयोग शृंगार मे नायिका की वे चेष्टाएँ जिनके द्वारा वह नायक को आकर्षित करती है, नाज, नखरा।

उ०—नव यौवन निज सुंदरी, मन्मथ भालि अकथ्थ। हाव भाव हुई प्रथा, चढी नपुंसक-हथ्थ।—मा. कां प्र.

२ साहित्य मे होने वाले ग्यारह हाव, यथा—लीला, विलास, विच्छति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, कुट्टमित, बिब्बोक, विहृत, ललित और हेला।

३ प्रेमालाप।

४ बुलावा, पुकार।

हावउ-क्रि. वि —१ ऐसे, इसी तरह।

उ०—नीरि निरखिय नीरज, नीरज हावउ केमु। टालइ ए केलीहर दोहर खल जिम खेमु।—जयसेखर सूरि

२ जैसे, जिस तरह।

हावनगह-स. पु. [फा] पारसियो के अनुसार पौ फटने से लेकर दोपहर तक का समय जिसमे वे पहली बार नमाज पढते हैं।

हावभाव-स पु यौ. [स] १ प्रेमिका की वे शृंगारिक चेष्टाएं जिनके द्वारा प्रेमी को आकर्षित करती है, नाज नखरा।

उ०—१ पण हैं अतरजामी, थू म्हारी इत्ती करडी परख क्यू ली। जिण नैं धुरकार मेडी सू बारैं काढियौ, उणनैं ई हावभाव सू पाछौ रिझावणौ है।—फुलवाडी

उ०—२ बूबना आप बादसाह सलामत नू अमल-पाणी कराय, हावभाव बताय नै बस करिया।—जलाल बूबना री बात

उ०—३ बचन बिलास बिनोद रस, हावभाव रति हास। प्रेम प्रीति, सभोग रस, कै सिणगार आवास।—डो मा.

उ०—४ हावभाव लावै मद हासा, अेवट आट करत तमासा। सोभा रूप गान व्रत सोहै, महीप किसू इद्र मन मोहै।—सू प्र.

२ नृत्य की मुद्राएँ चटक-मटक।

उ०—१ अमरावती माही दैत्य दमनी इद्र कनै अखाडौ नाचै छै। गावै छै। हावभाव ख्याल करै छै।—पचदडी री वारता

उ०—२ गायणी नृत सगीत, रग करत वखस रीत। करि हावभाव अनेक कटाच्छ मनमथ केक।—सू प्र

३ प्रभाव।

उ०—या तै हीरा के सरीर ऊपर सूरज रूपी जोबन आयौ छै हावभाव दरसायौ छै।—बगसीराम प्रोहित री बात

४ सकेत, भाव।

उ०—गूगी रै धणी खवासजी सू भेटका व्हिया तौ ई वै नी एक दूजा नै बतळायौ अर नीं सैध-पिछाण ई काढी। सुभट पिछाण लिया तौ ई की हावभाव नी जतळायौ।—फुलवाडी

क्रि प्र.—करणा, दिखाणा।

रू भे—हाइभाई, हाउभाउ।

हावर-स पु—एक प्रकार का वृक्ष जो राजस्थान, मध्यप्रदेश, तथा मद्रास मे प्रचुर मात्रा मे होता है।

हावै-वि—१ भयभीत, स्तभित।

उ०—चली फौज चावै, हुवौ लोक हावै। अठी ऐ अछाया, उठी खेप आया।—रा रू

२ हर्षित, प्रसन्न।

उ०—पूघरणा कोई पार न पावै, हारीया असुर हुआ सुर हावै। बनौ द्रोपदी तणौ बधावै, गुण जेरा नारायण गावै।

—सिवदानजी बारहट

३ आश्चर्यान्वित, चकित।

उ०—भडा बाधि सोभा सुरा हून भ्राजे, रहै इद हावै जिसौ वीद राजै। अनेकं अनोपं गजे रूप ऐसौ, करै एक ऐरापती बाप कैसौ।

—रा. रू.

४ किंकर्त्तव्य विमूढ, हतप्रभ।

उ०—हुवौ सोच आसुरा, हुवौ मद मोच दिलेसर। हुवा देस भैचक्क, हुवा अवनेस भयकर। हावै हुए जिहान, हुए सामान दुरगा। सादर गढ साहबा हुवौ आदर अण-भगा।—रा रू

हावौ-स. पु—१ भय, आतक।

उ०—हुवै सतं हीमता हुए देखत जग हावौ।—भगवान रतनू

२ आश्चर्य, अचभा।

हास-स. पु [स हास] १ हसने की क्रिया या भाव।

२ हसी, मुस्कान।

उ०—१ सखिया रै साथ इसी सोवै, ज्यू चिरम्या मैं मोती अनूप। होठा पर हास इसौ मोहै, ज्यू तारा री जोती सरूप।—सकुतला

उ०—२ फिरि जिनुका जसका प्रकास मनु हसका सा बिलास। किधु हर जू का हास, किधु सरद पुन्यु का सा उजास।

—रा सा. स

उ०—३ सुदर भाळ विसाळ, अलक सम माळ अनोपम। हित प्रकास अदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम।—रा. रू.

उ०—४ अधुरा डसणा सू उदै, विमळ हास दुतिवत। सौ सध्या सू चद्रिका, फैली जाण फबत।—बा. दा

३ विनोद, मजाक, ठिठोली, दिल्लगी, व्यग, मसखरी।

उ०—१ फाग खेलीजै छै। नाचीजै छै। हास विणोद कीजै छै।

—रा. सा. स.

उ०—२ वाहन विसी आपणि साचरि सब आकास। इद्र केहि ठाला पडि अप्सरा करसि हास।—नळाख्यान

४ हर्ष, खुशी, उल्लास।

उ०—१ नेत्रो मैं हास की लहर दरसावै, मुख राग की सोभा कमळ कू लजावै।—रा. रू

उ०—२ नदिखेण विहरण गयउ, गणिका कीधु हास हो। अस्टि करी सोनातणी, मइ तसु पूरी आस हो।—स. कु.

५ निंदा, अपकीर्ति, अप्रतिष्ठा, जग हसाई।

उ०—मैं पग छडू किस वजै, हुय हास हमारी। तेग बधी मैं तखत सै, कावी नह धारी।—सू प्र

६ उपहास, खिल्ली, हसी।

७ साहित्य मे नौ प्रकार के रसो मे से एक।

वि—श्वेत। * (डि को.)

हासउ—देखो 'हासौ' (रू. भे.)

उ०—सउ राउ दुरयोधन ए विमासइ। हासउ हूंतौ तु पडिउ विखा सइ।—सालिसूरि

हासक—सं. पु. [सं.] १ हंसी-मजाक, विनोद।

२ मजाकिया, विनोदी व्यक्ति।

३ देखो 'हास'।

उ०—सुण मेछ खत्री जुध काज सजे। रस भ्रम हासक वीर रजे। —रा. रू.

हासकारी—वि [सं ह्रास+कारक] १ ह्रास करने वाला, क्षीण करने वाला, कम करने वाला।

उ०—हिम्मत को हासकारी विद्या को विनासकारी। तितिक्षा को तासकारी भीरू भरवाई को।—ऊ. का.

[सं. हास्य+कारक] २ मजाक करने वाला, हंसाने वाला, विनोदी।

३ हंसने योग्य, हास्यास्पद।

हासक्रीड़ा—सं. स्त्री. [सं हास्य+क्रीड़ा] मजाक, दिल्लगी, हंसी।

हासणौ, हासबौ देखो 'हंसणौ, हंसबौ' (रू भे.)

हासपरिहास—सं. पु यौ —हंसी-मजाक, ठिठोली।

हासम—स पु [अ हाशिम] १ मुहम्मद साहब के वंशज, मुसलमान।

२ रोटी बनाने वाला, बावर्ची।

उ०—इसकंदर कूं आंणि जगायौ, करहा की असवारी। हासम कासम दरजी रोवया, फिर कापर मुरदारी।—गोकलजी

३ देखो 'हसन' (रू. भे)

हासरस—सं. पु [सं. हास्य+रस] साहित्य में नौ रसों में से एक रस। यह शृंगार रस से उत्पन्न होता है और शुभ माना जाता है। इसका स्थाई भाव 'हास्य' होता है। यह शृंगार, वीर और अद्भुत रसों का पोषक माना जाता है।

उ०—सरस धीरै वीररस किया, रौद्रै रौद्ररस किया। अपछरा सिंगार रस किया। नारद हासरस किया।—वचनिका

रू. भे.—हासारस।

हासल—देखो 'हासिल' (रू. भे)

उ०—१ वेगार वेठऊंडा हासल पांन चराई न देवै। चंवरी माफ यहू देस मैं (जिको) विरणोई नहीं देवै।—वि सं. सा.

उ०—२ रु० ३१००) गांवां रौ हासल। बाभणी कै गावै लागै गांव ६० तथा ७० छै। भोग दै हैंसौ ५ मो, मण रौ दोढ मण लीजै।—नैणसी

उ०—३ बरस दोय तौ सीहै तुं राव दुदै हासल गेहतै री आधो-आध लीयौ। मुदौ सारौ दुदै रै हाथ छै।—नैणसी

हासलीक—वि.—१ हासिल का, हासल सम्बन्धी।

उ०—१ ८६ हासलीक। चूंडौ-राणपुर, वळवांणा नूं लागै। —नैणसी

२ हासिल के रूप में प्राप्त होने वाला।

उ०—परगनै मांहै इतरा गांवां सेवज गेहू हासलीक गांवां हुवै। —नैणसी

३ हासिल देने वाला।

उ० —करावै सोजत हळ २०१ दरबार हासलीक वरसाळु जुपै छै। —सोजत रा मंडळ री बात

हासविलास—सं. पु. यौ.—आमोद-प्रमोद, हंसी-मजाक, मनो-विनोद।

हासा—देखो 'हंसी' (रू. भे.)

उ०—हरीया संगति साध की, हासा मेल न आंणि। आपना सीस उतारिकै, धरै पगां तलि आंणि।—अनुभववांणी

हासारस —देखो 'हासरस' (रू. भे)

उ० आद सगत रीझीयां, भोम किया तर प्याला, रुद्र रीझीया ऊपर, पहरी क ंमाळा। जिल नारद रीझीया, जिका हासारस गाया, हर अरद रीझीया, महासुरा सर पाया। अरजुनजी बारहठ

हासियौ—सं. पु. - १ फैली हुई वस्तु का किनारा, गोट, मगजी।

२ लेखन के समय कागज के आगे-आगे छोड़ा जाने वाला स्थान।

३ उक्त छोड़े हुए स्थान में लिखी जाने वाली टिप्पणी।

हासिल—सं पु. [अ] १ जागीरदार, जमींदारों अथवा राजाओं द्वारा किसानों से लिया जाने वाला, कृषि उपज का वह निश्चित भाग, जो राज्य कर के रूप में वसूल किया जाता था, राजस्व।

उ०—१ कह्यौ म्हानुं थारा करम नुं २४ ठांम थी। म्है थाहरी चाकरी करिस्यां नै हासिल छी देस्यां।—देवजी बगड़ावत री बात

उ०—२ सोई निपज्या साध, हरीया हासिल नाव को। दूजा बाध बळाध, एकै हासिल बाहिरौ।—अनुभववांणी

२ जमीन की उपज से होने वाली आय।

३ उपज, पैदावार।

४ लाभ, नफा, फायदा।

५ लगान कर।

६ नतीजा, परिणाम।

७ गणित में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बचता हो।

वि —१ प्राप्त, उपलब्ध।

उ०—हक हासिल नूर दीदम, करारे मकसूद। दीदार यार बाहै, आंगद मौजूदे मौजूद।—दादूवांणी

२ वसूल किया हुआ।

रू. भे —हासल, हांसिल, हासल।

हासी—देखो 'हंसी' (रू भे.)

उ०—दिली को नाम सुण कमान कूं खांचै। मीरै फुरगांण हासी तै वांचै।—रा. रू.

हासु—देखो 'हासौ' (रू. भे.)

उ०—करी कूच जाई नई लेज्यौ, मारूआडि नूं पासूं। पातिसाह एहवूं मुखि बोलइ, वली रखै हुइ हासूं।—कां. दे. प्र.

हासौ—देखो 'हांसौ' (रू. भे.)

उ०—१ खडै खाग ऊपरा, हसै नारद रिख हासौ। विढण एम वेखवै, तरण रथ थामि तमासौ।—सू प्र

उ०—२ काफो सेखोजी काम ग्राया, तरै राजा सूडा रौ बैर पह-रियौ थौ, सौ दसराहौ पिण दिन २० मैं ग्रायौ नै बोल रै सलूक दीसै नही छै। भाया मैं हासौ होसी। सूराचद पिण ग्रळगौ नै राजा सू मामलौ करणौ, तिण सूं फिकर घणी।

—जेतसी उदावत री बात

उ०—३ हायभाव लावै मद हासा। त्रेवट ग्राट करत तमासा।

—सू प्र

हास्य-वि [स हास्य] १ हसने योग्य, उपहास करने योग्य।

उ०—सुणौ हास्य विध कहै नरेसुर। गनिका ग्रेह ग्रासण जोगेसुर। वनखड गिर झगर नह वसियौ, हूँ ग्रौ देख कतूहळ हसियौ।

—सू. प्र

२ देखो 'हास' (रू. भे)

उ०—१ जुरै समीप दीपसी, प्रदीप जोवनी नही। मयक हास्य ग्रक मैं निसक सोवनी नही।—ऊ का

उ०—२ रुखमणीजी का योवन ग्राया ग्रएाद प्रकट हुग्रौ। इहा तौ चद्रमा का उदौ। रुखमणीजी की मद हास्य छै। सोई चद्रमा को प्रकास भयौ।—वेलि टी

हास्यकथा-स स्त्री [स] हसी की बात, मनोरजक कहानी।

हास्यकर-वि [स] १ हसी ग्राने लायक, हास्यास्पद।

२ हसाने वाला।

हाहत-ग्रव्य —ग्रत्यन्त शोक सूचक शब्द।

हाहा-स स्त्री [ग्रनु] १ हसी की ग्रावाज।

उ०-सब धन कर स्वाहा, उठता ग्राहा, हाहा हास हसदा है।

—ऊ. का

२ रोने की ग्रावाज, रुदन।

उ०—सारी स्रस्टी मैं कुडळ छळ करियौ। भारी हाहा रव भूमडळ भरियौ। वसुधा काळी री ताळी तड वागी। भिडिया सोना री चिडिया पड़ भागी।—ऊ का

३ त्राहि-त्राहि।

४ ग्रत्यन्त दुखी होने पर मुह से निकलने वाला शब्द 'हा', ग्राह।

उ०—खारी रे ग्रा समै दूखारी, हाहा बडी हत्यारी रे।—ऊ. का

हाहाकार-स पु.[स] बहुत बडी खलबली, होहल्ला, तहलका।

उ०—१ धना सेठ व सिंगार मजरी नू लेय गया। गाव माहै हाहाकार हुवौ।—पचदडी री वारता

२ करुण पुकार, करुण विलाप, क्रदन, हायग्राय, कुहराम, रुदन।

उ०—१ देखै तौ देही निरजीव देखी तद हाहाकार सबद हुग्रौ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ चखि पेखै साह धरा खगचाळौ, जिद विना कळ नीद जुई। मचि दुद ग्रपार दिली पुर मडळ, हाहाकार पुकार हुई।

—रा रू

रू भे—हहकार, हहकार, हहकार, हहाकार, हाकार।

ग्रल्पा,—हहकारौ, हाकारौ, हाहाकारौ।

हाहाकारौ—देखो 'हाहाकार' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ भाई मारि भूडउ कियउ, हुयउ हाहाकारौ जी। सील राखण नारी सती, सील वडउ ससारो जी।—स कु

उ०—२ मुगल वसत लूट घणी, माम कोठार भडारी रे। मायैं कीधी मेदनी, हुग्रौ गढ हाहाकारौ रे —प च चौ

हाहाठीठी-स स्त्री [ग्रनु] हसी की ग्रावाज।

हाहाहूहू-स. पु —१ व्यर्थ का हल्ला, शोर।

२ व्यर्थ की हसी।

३ जोर की हसी।

हाहुळि हाहुळी स पु [देशज] १ उदार, दातार।

उ—बाहुडै फतै कर सधर ऊभाबरा, हाहुळी समद बढ चीत जेता'-हरा। भुजां ग्रद लिया दत्त देण 'करण' भोज रा, महपता मुदी 'खुसियाळ' वध मोज रा।—विसनदासजी बारहठ

२ योद्धा, सूरवीर।

उ०—ग्रारुहै गयद ग्रवदळ ग्रली, सैद महाबळ सद्ळा। हाहुळि ग्रसख मिळि हल्लिया, जाणक वावळ वद्ळा।—रा रू.

हाहू, हाहू-स पु [ग्रनु] शोर, हल्ला, हलचल, चिल्लाहट।

उ०—१ ग्रर इहा री फौज डेरा ऊपर ग्राय खडी रही तद डेरा रै वाजार रौ लोग हाहू करणै लागियौ।

—मारवाड रा ग्रमरावा री वारता

उ०—२ गोर मै हाहू मच्योडी ही। एक कानी मोल्यार लाठिया मै मजबूत गाळा घाल नै घेरो दिया ऊभा हा।—ग्रमरचूनडी

हाहूबोर—देखो 'हाऊबोर' (रू भे)

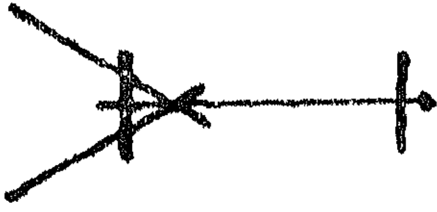
हि—देखो 'ही' (रू. भे)

उ०-ग्रकळ तु हिज कै कोई ग्रवर बोहोनामी बुभक्ख।—ह र

हिंग्रोडी-स स्त्री. [देशज] दो मोटी लकडियो के एक-एक सिरे को परस्पर फसा कर बनाया हुग्रा एक प्रकार का कृषि उपकरण।

वि वि —करीब २-२ फुट की लम्बी दो लकडियो को एक सिरे से परस्पर फसा दिया जाता है। इसकी शक्ल ग्रग्रेजी के 'वी' (V) की तरह हो जाती है। किसान लोग नए बछडो (बैलो) को गाडी हल ग्रादि के लिये प्रशिक्षण देने मे इस उपकरण को काम मे लेते हैं। एक लट्ठे के एक सिरे मे ग्राडी लकडी फसा (बाध) कर उसे उक्त उपकरण मे फसा देते हैं ग्रौर दूसरे सिरे मे जूग्रा बाध कर उससे बछड़ो को जोत कर दूर-दूर तक घुमाया जाता है। इस उप-करण का प्रयोग हल एव कुछ भारी सामान (चारा ग्रादि) खेत मे ले जाने हेतु भी करते है। इसके लिए हल को इसमे फसा दिया जाता है ग्रौर हरिसा के सिरे पर जूग्रा बाधा जाता है। इसका

चित्र निम्न प्रकार है —



रू. भे.— हिंगोडी, हिंयोडी, हींयोडी, हींगोडी, हींगोळी।

हिंग्रोड़ौ—स पु. [देशज] काष्ट के मोटे डंडो का कैंचीनुमा बना बढ़ई का एक उपकरण जिस पर मोटे लट्ठे रख कर आरे से चीरे जाते हैं।

हिंगरडौ—स. स्त्री. — किसी कार्य के लिए या किसी बात के लिए लगातार की जाने वाली साकोश।

उ०—सगळी बोरगत टूगगी। अर बाणियो वसूली सारू हिंगरडो घाल दी। सगळी जायदाद बारडै घाल्या ई लेणो नी चूको।

—फुलवाड़ी

हिंगळाज—सं स्त्री.—सिंध और बलूचिस्तान की पहाडियो मे स्थित लासबेला राज्य की हिंगोल नदी पर दुर्गादेवी की एक मूर्ति विशेष। यह स्थान कराची बंदरगाह से उत्तर की ओर समुद्र के किनारे से ४५ कोस दूर है।

उ०—१ माकश्र भाइ आवाड़गत, चाळया मराठ चालिया। सिंधराज जाणा माजणा मसत, हिंगळाज गग हालिया।—मे ग

उ०—२ देवा दुरगि यजिजया, हिंगलाज दरबार। माता सूं गुण भज लिया, सुण नभ बयण मुरार।—रा. रू.

रू. भे.— हिंगुलाजा।

हिंगळू—स. पु [स हिंगुल] इंगुर। (अमरत)

हिंगळू-ढोलियौ—सं पु.—वह चारपाई या पलग जिसके पाये लाल रग से रंगे हुए होते हैं।

उ०—हाथ करां रे हिंगळू ढोलियां रे, आछी, लातण होय होय जाय। आलीजो रे जोवसा म्हारा राज।—लो गी.

हिंगामौ—देखो 'हगामो' (रू. भे.)

हिंगाडेल—वि.—प्रचुर, पर्याप्त।

हिंगास्टक-चूरण—स. पु. [स. हिंग्वष्टक-चूर्ण] वैद्यक का प्रसिद्ध, अजीर्ण नाशक व पाचक चूर्ण, इसमे हींग की प्रधानता रहती है।

हिंगुणी—देखो 'हिंगूण' (रू. भे.)

हिंगुळा—सं. स्त्री —वह प्रदेश जहां 'हिंगलाज' देवी की मूर्ति स्थित है।

वि० वि०—देखो 'हिंगळाज'।

हिंगुलाजा—देखो 'हिंगळाज' (रू. भे.)

हिंगुलेस्वर—सं पु.—ज्वर की एक आयुर्वेदिक औषधि विशेष।

(अमरत)

हिंगू—देखो 'हींग' (रू. भे.) (डिं को.)

हिंगूण—सं. पु - इगुदी का वृक्ष। (शेखावाटी)

रू. भे - हींगण, हिंगुणी।

हिंगूणियो स स्त्री.- इगुदी वृक्ष का फल। (शेखावाटी)

हिंगोड़ौ देखो 'हिंग्रोडौ' (रू. भे.)

हिंगोट—स. पु. [स हिंगुपत्र] मझोले कद का एक झाड़दार, कटीला जंगली वृक्ष। इसका तना सफेदी लिये हुए मटमैले रंग का होता है। फल मजबूत कपड़े धोने के काम आता है।

रू भे हिंगोटी हिंगोटो, हिंगोरो, हिंगोटौ।

हिंगोटियौ—स पु —'हिंगोट' वृक्ष का फल।

हिंगोटी —देखो 'हिंगोट' (रू भे.)

हिंगोटौ - देखो 'हिंगोट' (रू. भे)

हिंगोरौ —देखो 'हिंगोट' (रू भे.)

हिंगोळ —देखो 'हिंगळाज' (रू भे)

उ० १ मनछा परम्रा हिंगोळ माता। रातैं सात पोरा रमै दीप माता। मे. म

उ० —२ देवी मात हिंगोळ पञ्चग्रा माता, देवी देव देवाधि वरदान दाता। देवि

हिंगोळराय देखो 'हिंगळाज'

हिंग्वादि चूरण—स. पु [सं हिंग्वादि चूर्ण] हींग के योग से बनने वाला एक प्रकार का चूर्ण जो अनाह, अर्श, संग्रहणी, शूल, उन्माद आदि रोगो मे दिया जाता है।

हिंचणौ, हिंचबौ—देखो 'हिंसणौ, हिंसबौ' (रू. भे)

उ०—'पदम' 'कुसळ' अयसाण सापने, हिंचियो खाग खड्ग हथ। कांमण तणा जिका कथ कहती, कौध जिका हिंग साथ कथ।

—ब. वा.

हिंचणहार, हारौ (हारी), हिंचणियौ—वि०।

हिंचिओड़ौ, हिंचियोड़ौ, हिंच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हिंचीजणौ हिंचीजबौ—कर्म वा०।

हिंचियोड़ौ—देखो 'हिंचियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. हिंचियोड़ी)

हिंचोळणौ, हिंचोळबौ—देखो 'हिचोळणौ, हिचोळबौ' (रू. भे.)

उ०—तनु तरणा सरखु हुवु, भूटइ रखै हिंचोळि। वनिता तुफनइ वागसइ, रखि रिखमानी खोलि।—मा. कां. प्र.

हिंचोळियोड़ौ—देखो 'हिचोळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हिंचोळियोडी)

हिंजड़ौ—देखो हींजड़ो' (रू. भे.)

हिंजरणौ, हिंजरबौ—क्रि स —१ वियोग, विरह या किसी की याद मे निरन्तर रोना, करुण विलाप करना, सिर धुनना, झुरना।

२ वात्सल्य प्रेम मे विलाप करना।

३ किसी की ओर टकटकी लगा कर देखना।

४ किसी की शरण या आश्रय लेना।

५ घोडो का हिनहिनाना ।

हिंजरणहार, हारी (हारी), हिंजरणियो—वि० ।

हिंजरिग्रोडो, हिंजरियोड़ो, हिंजरघोडो—भू० का० कृ० ।

हजरणी, हजरबो, हींजरणी, हींजरबो, हीजरणी, हीजरबो —रू० भे० ।

हिंजरियोडो–भू का कृ—१ विरह में रोया हुआ, विलाप किया हुआ, सिर धुना हुआ, झुरा हुरा. २ वात्सल्य प्रेम मे विलाप किया हुआ ३ टक टकी बाध कर देखा हुआ. ४ शरण या आश्रय लिया हुआ ५ हिनहिनाया हुआ ।

(स्त्री हिंजरियोडी)

हिंजीर–स स्त्री – हाथी के पैर मे बाधने की रस्सी या जजीर ।

हिंडणी, हिंडबो—देखो 'हीडणी, हीडबो' (रू. भे)

उ०—ग्रह पुहप तणो तिणि पुहपति ग्रहणी पुहप ई ग्रोढण पाथरणि । हरखि हिडोळि पुहपमै हिंडति, सहि सहचरि पुहप सरणि । —वेलि

हिंडणहार, हारो (हारी), हिंडणियो—वि० ।

हिडिग्रोडो, हिंडियोडो, हिंड्योडो—भू० का० कृ० ।

हिंडीजणी, हिंडीजबो—भाव वा० ।

हिंडळणी, हिंडळबो—देखो 'हिंडुळणी, हिंडुळबो' (रू. भे)

हिंडळाट—देखो 'हिंडोळाट' (रू. भे)

उ०—कटहडा मडप कराळ, झळि काठ वभकत झाळ । हिम हीर जळि हिंडळाट, अगीर दमग उपाट ।—सू प्र

हिंडळियोडो—देखो 'हिंडुळियोडो' (रू भे)

(स्त्री हिंडळियोडी)

हिंडाणी, हिंडाबो—देखो 'हीडाणी, हीडाबो' (रू. भे.)

उ०—पहली हिंडा मेरी सात सहेली, मनै फेर हिंडायी रे । —लो गी

हिंडाणहार हारो (हारी), हिंडाणियो—वि० ।

हिंडायोडो –भू० का० कृ० ।

हिंडाईजणी, हिंडाईजबो—कर्म वा० ।

हिंडायलौ–स पु—कूऐ के अन्दर की ओर लटकती हुई लकडी को बाधने वाली रस्सी । (मालेरियो)

हिंडायोडो—देखो 'हीडायोडो' (रू भे)

(स्त्री. हिंडायोडी)

हिंडी–स स्त्री [स] दुर्गा का एक नाम ।

हिंडुक–स पु [स] शिव का एक नाम ।

हिंडुळणी, हिंडुळबो–क्रि अ—१ हिलना, डुलना, झोले खाना, लटकना ।

उ०—१ झगै भाळ सिंदूर ज्यौ ज्वाळ झाळा, मुद्राळी गळै हिंडुळै मुडमाळा । भुजां भामणा ककणा सज्ज कीधा, लसै सूळ डैरू खडखप्र लीधां ।—मे. म.

उ०—२ महासूर सुरति निळै ऊपटै 'सहसमल', मारकां तौ जिसा मिळै जुध मैच । जडळका कटै विचि गळै ठहरै जकै, परी वरमाळ जिम हिंडुळै पेच ।—सहसमल राठौड री गीत

२ झूला-झूलना ।

३ मस्त चाल मे झूमते हुऐ चलना ।

४ मस्ती मे घूमना ।

हिंडुळणहार हारो (हारी), हिंडुळणियो—वि० ।

हिंडुळिग्रोडो, हिंडुळियोडो, हिंडुळघोडो—भू० का० कृ० ।

हिंडुळीजणी, हिंडुळीजबो—भाव वा० ।

हिंडळणी, हिंडळबो –रू० भे० ।

हिंडुळियोडो–भू का कृ.—१ हिला हुआ, डुला हुआ, झोले खाया हुआ लटका हुआ २ झूला झूला हुआ. ३ मस्त चाल से झूमते हुवे चला हुआ ४ मस्ती मे घूमा हुआ ।

(स्त्री हिंडुळियोडी)

हिंडोरचो—देखो 'हींडोरचो' (रू भे)

हिंडोरौ—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—१ अराहे सराहे घणू अव्वलोकै, रुधो नाग लोका तणी राज लोकै । इसी भागणी कोण जै कूख जायो, हिंडोरौ घलायो घरै हुल्लरायो ।—नागदमण

उ०—२ आज आई छै सावणिया री तीज मिजाजीडा, खेलण चालो चपाबाग मैं । ऊचै विरछ हिंडोरौ बाध्यो, झोटा दैदै झूलावे साथण मोरी ।—रसीलैराज री गीत

हिंडोल–स पु [स. हिन्दोल] १ गाधार स्वर की सन्तान एक राग विशेष ।

२ देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे)

हिंडोळणी हिंडोळबो–क्रि स [स हिण्डनम्] १ किसी झूले या पालने मे बैठाकर या सुलाकर झुलाना, झूले के हल्का सा धक्का देना, झूले के रस्सी बाधकर उस रस्सी को खीचना व छोडना ।

उ०—कामण चली हिंडोळणै, गावै आल जजाळ । 'जभ' अचभो न गावही, जो वचै जभ काळ ।—वि. स. सा.

२ हिलाना, झकझोरना ।

क्रि. अ —३ रस्सी, माला, हार आदि का किसी आश्रय पर लटकना, लटकते हुऐ हिलना-डुलना, झूलना ।

उ०—पेयां नाग छोडिया जी, छोडो मीरां के महल, हिवडै हार हिंडोळिया, कोई तुम जाणो रघुनाथ ।—मीरा

४ पानी की लहर या भांवर उठना ।

उ०—गिरह पखाळण, सर भरण नदी हिंडोळणहार । सूती सेजइ एकली, हइ हइ दइव म मारि ।—ढो. मा

हिंडोळणहार, हारो (हारी), हिंडोळणियो—वि० ।

हिंडोळिग्रोडो, हिंडोळियोड़ो, हिंडोळघोडो—भू० का० कृ० ।

हिंडोळीजणी, हिंडोळीजबो—कर्म वा०, भाव वा० ।

हींडोळणी, हींडोळबी, हींडोलणी, हीडोलबी, हीडोलणी, हीडोलबी —रू० भे० ।

हिडोळाट—स. पु —एक पलग विशेष ।

उ०—हिडोळाट सुघाट हद, कचन मणि को काम । सेज सओपाळ सूं जुगत, भूल रहे सब ठाम ।—गज उद्धार

रू भे.—हिंडळाट, हींडोळाट ।

हिडोळ—देखो 'हिंडोळी' (रू. भे.)

उ०—ग्रह पुहप तणी तिणि पुहपति ग्रहणी, पुहप ई ओढणा पाग-रणि । हरलि हिडोळि पुहप मैं हिडति, साह साहणि पुहपां सरणि ।
—बेलि

हिडोळियोडी—भू. का. कृ.—१ किसी पालने या झूले मे झुलाया हुआ २ लटका हुआ, लटकते हुए हिला हुआ, झूला हुआ ३ मथा हुआ, लहरे उठा हुआ, भंवर पड़ा हुआ, ४ हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ ।

(स्त्री हिडोळियोडी)

हिडोळी—स. स्त्री [स] सगीत की एक रागिनी ।

हिंडोळी—स पु [सं. हिंदोलक] १ किसी पेड की मोटी डाल के लम्बी-लम्बी रस्सियां बांध कर बनाया जाने वाला झूला, जो प्राय श्रावण-मास मे बांधा जाता है तथा जिस पर नव युवतियां व नव वधुएं झूलती है ।

उ०—१ वनखड मैं हिडोळी मांड्यो, रेशम री पट डोर, ओ जी । राणी रैणादे हीडण बैठ्या, धरती न झेलै भार, ओ जी ।
—लो गी

उ०—२ मेल्हइ वैराग, खेलइ फाग । अति सुविसाल आंबानो डाल । तिहा बांधहि हिंडोळा, रमइ नर भोळा ।—रा. सा स

उ०—३ सरिता री कळ कळ कामणिया, रमै ही घणी किलोळा मैं । ही रूप निहारै चारू कगळ, झूलै ही लहर हिंडोळा मैं ।
—शकुनला

उ०—४ सब वलतो 'हरि' भूखियो रे सारथो 'नेम' नो हाथो । हिडोला जिम हींचिया रे, गोप्यां सणो इम नाथो ।—जयवाणी

२ पालना ।

३ वह वणिक जो व्यवसाय न करके मांग कर खाता हो ।

४ एक लोक गीत विशेष ।

उ०—कोटड़िया रामाजी मारनै साढा पाछी आणी तै नोर तळै पाणी पाय दोड कराय राईकानूं दूध पायो । उणसम रा हिंडोळा—साढो लोप सो इतरो, गांधी साह री सांध । चढ़ि महारा नतसी, रातो तरगस बांध । नळी कटाड़ू नीळी, लप घी अमावियो खाय । हाथ वैतरै आतरै, भै कोटड़िया जाय ।—बां दा. ख्यात

वि.—मूर्ख, अज्ञानी ।

रू. भे.—हिंडारो, हिंडोळि, हींडोल, हींडोलणी, हींडोळो, हींदोल, हींदोलइ ।

हिडौ—देखो 'हींडो' (रू भे)

उ०— सात सहेल्यां रै सातौ आयी, बीरा गोद भतीजो ल्याई रे । पहली हिडा दे मेरी मात सहेली, गनै पेर हिडायी रे ।—लो गी.

हितांळ—स पु [स. हिंताल] एक प्रकार का जगली खजूर तथा उसका पेड ।

हिंद—स. पु [फा] भारत वर्ष, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त ।

उ० –१ ऐळची हिंद री इहां आय । जिस पास करी रद बदळ जाय ।—सू. प्र.

उ० –२ सतरज री रांगत, केसां री कळप, पचाख्यान ग्रंथ—ऐ नोसरवा रै वकत तीन चीजा हिंद सूं ईरान गै गयी ।
—बा. दा. ख्यात

रू भे. —हींद ।

हिंदआंण—देखो 'हिंदवाण' (रू. भे.)

हिंदगी स स्त्री.—हिन्दी भाषा । (अमरत)

हिंदव—देखो 'हिंदू' (रू भे.)

हिंदवाण, हिंदवाणी –देखो 'हिंदवाण' (रू भे)

हिंदवा देखो 'हिंदू' (रू. भे)

उ० १ नेत बध बळा नाथ दीय राखी 'छता' नथ, तुरकका हिंदवा बदै तुझ वाळो तेग ।—भगतराम हाडा री गीत

उ० –२ जवन जोस बरजोर, हेक सग सोर हजारा । हीण तवै हिंदवा एक तेवथै अपारा ।—रा रू.

हिंदवसथांण, हिंदवसथान—देखो 'हिंदुस्तान' (रू. भे.)

उ०—पातै तप जेहान फैलता घणा राजड़ रांन घणा । राजा हिंदवसथान राखियो, सो भुज डंड 'गुमान' तणा ।
—नाथूराम लाळस

हिंदवाण—स पु —१ भारतवर्ष, हिन्दुस्तान ।

उ०—१ खग्गनट रारा सवा धां खोळै, श्री हिंदवाण वचायी ओळै । समहर मो दळ लियो समेळा, 'भीम' राहत खुमाणा भेळा ।
—रा. रू

उ० २ काठब्बो घमसांण अगाण किसा, वहल्यो हिंदवांण विसा विदिसा । शिवसालय चाव चढ्या तपण्यां, समचार चळी छत्रधार सुण्यां ।—मे. म

२ हिन्दू-समाज, हिन्दू, आर्य ।

उ०—१ हिंदूपति 'परताप', पत राखी हिंदवाण री । सहै विपति संताप, सत्य सपथ कर आपणी ।—महाराणा प्रताप री सोरठो

उ०—२ परीछत साहिजिहान सुत कोपियो, तक्षक होगण गहण स ह सुत तणि । तपोधनि जही हिंदवाण चाढण प्रभति, जरू रखपाळ जैसिंघ सुत जाणि ।—राजा रामसिंघ री गीत

उ०—३ जगा रा आगि बरजागि धनो जैतसी, खाग ताहरै खैर छ खड खुरसांण । मगज रा कोटि मेछांण मूंडै मरै, ऊबरै राजि री पीठि हिंदवाण ।—राव जैतसिंघ सेखावत री गीत

३ हिन्दू धर्म, हिन्दुत्व ।

उ०—अजमेर कूच कर आवियौ, आण फेर धर ऊपरा । 'अवरंग' अग छिबतै उरस, हटै मग्ग हिंदवाण रा ।—रा रू

रू भे —हिंदआण, हिंहवाण, हिंदवाणौ, हिंदवाणी, हिंदुआण, हिंदुआन, हिंदुवाण, हिंदूवाण, हीदवाण ।

हिंदवांणी–स स्त्री —हिंदू जाति की स्त्री, हिन्दू-स्त्री ।

उ०—तठै मुलतान मैं पातसाह पातसाही करै । तैरं एक हुरम तिका हिंदवाणी, नाम भगा ।—देपाळ धध री बात

वि —१ हिन्दुओ का, हिन्दू सम्बन्धी ।

उ०—१ धाणी तोपा भुजाणी दाखियौ कासबाणी धाड, फरंगा की मजौ चाखियौ सेला फूट । मिळतै पारका भीम ठाणी हिंदवाणी मौड, खरदे 'माधाणी' जगा जाणी च्यार कूट ।

—जसा आढा री गीत

उ०—२ बकसी मात राव 'बीका' नै, धर थळवट रजधाणी । रिडमल तणौ मुरधरा राखी, है साखी हिंदवाणी ।—मे म.

२ देखो 'हिंदवाण' (रू. भे)

उ०—बाधोडी कमरा औ भाभीसा नही खोलौ, लाजै म्हारी जरणी रौ दूध ए । हिंदवांणी झगडै जूजिया ।—लो गी

रू. भे —हिंदुआणी, हिंदुवाणी, हीदणी, हीदूआणी ।

हिंदवाणौ–वि —१ हिन्दुओ का, हिन्दू सम्बन्धी ।

उ०—१ थू हिंदुसथान मैं, जगळधर देस न जाणी । जठै चवद्दह जणा, हुता राजा हिंदवाणै ।—मे म

उ०—२ एकादसी वरस हिंदवांणै, रोजा ईद भया तुरकाणै । करि करि ईद इग्यारसि रोजा, राम रहीम न पाया खोजा ।

—अनुभववाणी

उ०—३ बडा घरा की छोरी कहावो, नाचो दै दै तारी । बर पायौ हिंदवांणौ सूरज, अब दिल मैं कहा धारी ।—मीरा

२ देखो 'हिंदवाण' (रू भे)

उ०—१ राजा करण माधव बाभण नागर तियैरी पुत्री घर माहै घाती । तिको जाय नै पातस्याह अलावदीन आगै पुकारियौ । पातसाही फौजा लायौ । पछै गुजरात तुरकै लियौ । पछै तुरकाणी राज हुवौ । हिंदवाणौ मिटियौ ।—नैणसी

उ०—२ मांहहूत खप्पराणो मिटै, हिंदवाणौ मुरधर हुवौ । जोधाण 'अजौ' आयौ जदिन, दुजड पाण 'गजबध' दुवौ ।—सू प्र.

रू भे —हिंदुवाणौ ।

हिंदवाद–स पु —हिन्दुस्तान भारतवर्ष ।

उ०—दाखै दाद हिंदवाद राज रीज वना भाखी । लाग्या वाता गोरा दळा रटक्का लेवाड ।—राघोदास सादू

हिंदवासूरज–स पु —उदयपुर के महाराणाओ की उपाधि ।

हिंदवी–स स्त्री —१ हिन्दू-स्त्री ।

२ देखो 'हिंदी' (रू. भे)

उ०—नकल फुरमाण पडगना बावना री । नकल हिंदवी अखर मैं । जलालुदीन महमद अकबर पातसाह गाजी ।—द. दा

हिंदवेराय–स. पु —हिन्दू-राजा ।

हिंदसथाण, हिंदसथान—देखो 'हिंदूस्तान' (रू भे.)

उ०—१ 'केहर' रूप 'करन' रौ, सब हिंदसथांना । तेण प्रवाडा चितवा, खत्रवाट बखाणा ।—द दा.

उ०—२ जसवत विना जिहान, पान चळ जाणै पवनै । कना केतु साकप, थया मन हिंदसथांनै ।—रा रू

हिंदी–स स्त्री —१ भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा जो देवनागरी लिपि मे लिखी जाती है तथा सस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है ।

रू भे —हिंदवी ।

२ किसी की भद्द, दिल्लगी, मखौल, खिल्ली ।

क्रि प्र.—करणी, कराणी, होणी ।

हिंदु—देखो 'हिंदू' (रू भे)

उ०—अनेक हिंदु आसुरे प्रकोप सेल पिंजरै । वहै सहेत वारय, मुगत्त मार मारय ।—रा रू.

हिंदुआण—देखो हिंदवाण' (रू भे)

हिंदुआणी–स स्त्री —१ हिन्दू-स्त्री ।

स पु [फा. हिंदुआन] २ तरबूज नामक एक देशी फल ।

३ देखो 'हिंदवाणी' (रू भे.)

हिंदुआन–स पु [व व] १ हिन्दू-गण, आर्य ।

उ०—गढ ऊपरि बाता गई रे हलहलियौ हिंदुआन । गढपति झाल्यौ आपणौ जी, कीज्यै केहोपान ।—प. च चौ.

२ देखो हिंदवाण' (रू भे)

हिंदुकर, हिंदुकार—देखो हिंदूकार' (रू भे)

२ हिन्दू-लोग, हिन्दू-जगत ।

हिंदुग–वि —हिन्दुओ का, हिन्दू राजाओ द्वारा शासित ।

उ०—मिरजै इब्राहिम इम कहियौ जु न करै खुदाय जु घर की पातिसाही खोवूं । पातिसाह गुजरात ल्यौ । हू हिंदुग देस जाइ करि लेइसि ।—द वि

हिंदुपति, हिंदुपती—देखो हिंदूपति' (रू भे)

उ०—मैं अपणा क्रत करम सु, असुर कुलै अवतारो रे । पूरब पुण्य प्रमाण सु, तू हिंदुपति सारो रे ।—प. च. चौ

हिंदुपछाल–स पु —हिंदुओ का राजा ।

हिंदुवाण—देखो 'हिंदवाण' (रू भे)

उ०—हिंदुवाण खुरसाण पाणि ग्रह पक्खर आया । कर मोसू घमसाण कुणौ निज माण वचाया ।—रा. रू

हिंदुवाणी—देखो 'हिंदवाणी' (रू भे.)

हिंदुवांणौ—देखो हिंदवाणौ' (रू भे)

उ०—विमळ कतूहळ वधै, हुवौ उच्छव हिंदुवांणै । 'अवरंग' चित औदकै, तेज घाटियौ तुरकाणै ।—सू प्र

हिंदुसथान, हिंदुस्तांन–स पु [फा. हिंदुस्तान] भारतवर्ष, आर्यावर्त, हिन्दुस्तान ।

उ० १ भूं हिंदुसथान री, जगळधर देस न जाणी । जठै पतसाह जणा, हुता राजा हिंदवाणै ।—गे ग.

उ०—२ कोपै हिंदूसथान पर, श्री गाजी अजमेर । पाखै अवरग हाथियाँ, कड बांधे समसेर ।—रा रू

उ०—३ दरसाण तौ परमेसर री, ताल तौ मान सरोवर री, हस्ती तौ कजळी बन री, पदमणी तौ सिंहल द्वीप री, चतुराई गुजरात री, बागो तौ हिंदुस्तांन री, स्वाद तौ जीभ री .. । रा सा सं

रू भे.—हिंदवसथान, हिंदसथांण, हिंदसथांन, हिंदुस्थांन, हींदुसथांन, हींदुस्तान, हींदूसथान, हींदूस्थान ।

हिंदुस्तानी–सं पु.—१ भारत का नागरिक, भारत का निवासी, भारतीय ।

स. स्त्री.—२ भारत की भाषा, हिन्दी भाषा ।

वि.—भारत का, भारत सम्बन्धी ।

हिंदुस्थांन—देखो 'हिंदुस्तांन' (रू. भे.)

हिंदू–स पु. [फा.] १ भारत में बसने वाले मनुष्यों का वह वर्ग जो वैदिक संस्कृति का अनुयायी हो, हिन्दू धर्म को मानने वाला भारतीय, आर्य ।

उ०—१ इन्द्र धरा गज ऊपरै, ज्यों पेलै जळ जाळ । धर हिंदू सुर पीडवा, आया चामरआळ ।—रा रू.

उ०—२ हिंदू महाराजाधिराज श्रीराजान राजावत माहू ऐरावत सूरजवंसी इण भांति रौ छै ।—रा. सा. सं

२ हिन्दू धर्म का अनुयायी ।

रू. भे.—हिंदव, हिंदव, हिंदू, हींदव, हींदु हींदू, हैंदू ।

हिंदूकार–स. पु —हिन्दू होने की अवस्था या भाव, हिन्दुत्व ।

उ०—१ हुवा तेणै वस हुवौ हिंदूकार हरि हस । राव राजा जाणै राणा रावळ रंढाळ ।—नैणसी

उ०—२ हुदकाप हिंदूकार घर घर प्रति हुवउ घणउ । मिळियइ मडण-राइ-कइ कुण ऊपरइ कधार ।—अ. वचनिका

उ०—३ बेगम गरण बडा भड बणाव्या, वोही राजियां बदळियो भेस । हिंदूकार तणी हद हाडा, करता किया तेज सिर केस ।

—राव भोज हाडा री गीत

रू. भे.—हिंदुकर, हिंदुकार, हींदूकार ।

हिंदूकुस–स. पु [फा. हिन्दुकुश] हिमालय से मिली हुई अफगानिस्तान के उत्तर में एक पर्वत श्रेणी ।

हिंदूधरम, हिंदूध्रम–स. पु. [फा हिन्दू+स. धर्म] १ वह धार्मिक मत जिसका प्रतिपादन वेद, पुराण तथा उपनिषदों में किया गया है, आर्य संस्कृति ।

उ०—१ आणी अणी रहै ऊरावत, साखी आलम कलम सुणी । राखी अकबर बार रागियी, 'पातल' हिंदूधरम पणी ।

—दुरसौ आढौ

उ० २ राम धाम जगराज, गयौ हिंदूध्रम आगळ । मास सपत 'अजमाल', मात अभवास महाबळ ।—रा रू.

२ हिन्दुओं के आचार विचार, हिन्दुओं के सिद्धान्त ।

३ हिन्दुओं के रीति-रिवाज ।

हिंदूपण, हिंदूपणौ–सं. पु —१ हिन्दू होने की अवस्था या भाव, हिन्दुत्व ।

२ हिन्दुओं का गौरव ।

हिंदूपत, हिंदूपति, हिंदूपती–स पु [फा. हिन्दू+स. पति] हिन्दुओं का राजा ।

उ०- हिंदूपत परताप, पत राखी हिंदवांण री । सहै विकट संताप, सत्य सपथ कर आपणी । —दुरसौ आढौ

रू. भे हिंदुपत, हिंदुपति, हिंदुपती, हींदूपत, हींदूपति ।

हिंदूवांण - देखो 'हिंदवांण' (रू भे)

उ०-- हिंदूवांण रौ प्रांण बेसांण हुवौ, अणां री अलकार आकार ऊगौ । बुरजां माहै जाण जोगिण-माका, अखी आभ री बीच भांगै पताका ।—गी म

हिंवोरणौ, हिंवोरबौ–क्रि स.—किसी तरल पदार्थ में हाथ डाल कर इधर उधर घुमाना, मथना ।

हिंवोरणहार, हारौ (हारी), हिंवोरणियौ वि० ।

हिंवोरिओडौ, हिंवोरियोडौ, हिंवोरयोडौ भू० का० कृ० ।

हिंवोरीजणौ, हिंवोरीजबौ—कर्म वा० ।

हिंवोरियोडौ–भू. का कृ —हाथ डाल कर इधर-उधर घुमाया हुआ, मथा हुआ । (तरल पदार्थ)

(स्त्री. हिंवोरियोडी)

हिंयालौ–स. पु.—एक मारवाडी लोक गीत ।

हिंयोडौ - देखो 'हिंओडौ' (रू. भे)

हिंयौ—देखो 'हियौ' (रू. भे)

उ०—गूळी री हिंयौ फूटण लागग्यौ, उळकग्यौ होल उपडग्यौ चित्त भरम हुयग्यौ । —दसदोख

हिंव —१ देखो 'हिंम' (रू. भे.)

२ देखो 'हुव' (रू. भे)

हिंवणां, हिंवणा–क्रि. वि.—अभी, तत्काल ।

उ०—पचम भगवती सूत्र सुधम, पनर सहस सतसैबावन्न । ग्याता धरम कथा अग छट्ठ, हिंवणां पच हजारै दिट्ठ ।—ध. व. ग्र.

हिंवळास–सं पु —धीरज, धैर्य, ढाढ़स ।

उ०—मांथरा माथै हाथ फेरव्यौ, राणी नै हिंवळास । भाई-भतीजा नै मुजरा कहव्यौ, माजी नै घणा सिलाम ।

—डूंगजी जवारजी री छावली

हिंवाक–क्रि. वि.—अभी, इसी समय, तत्काल ।

उ०—तठै देखै तो अस्त्री छै। देख नै माथौ धूणै छै। नै जाण्यौ परमेस्वर रा घर-माहै घणी रीध छै, नै आ जो म्हारै बैर होयनै इण रै पेट रो कोई नग नीवजै तो हू प्रथ्वी माहै अमर होवू पिण हिंवाळ बतळाऊ तो माथौ वाढै।—जखड़ा मुखडा भाटी री बात

हिंस—देखो 'हीस' (रू भे)

हिंसक-वि [स] १ हिंसा करने वाला, मारने या वध करने वाला, हत्यारा।

उ०—चोर हिंसक नै कुसीलिया, यारै ताइ ही साधा दियौ उपदेस। यानै सावद्य रा निरवद्य किया, एहवो छै हो जिन दया धरम रेस।—भि द्र.

२ हानिकारक, अनिष्ट-कर।

३ दूसरो को कष्ट या पीडा पहुँचाने वाला।

स पु. [स] १ शत्रु, वैरी, दुश्मन।

२ जगली जानवर।

रू भे—हसक।

हिंसा-स स्त्री [स.] १ किसी जीव को मारने की क्रिया या भाव, जीव हत्या, शिकार, वध, हत्या।

उ०—१ मारण मारण समझै मूरख, तारण लखै न ताई नै। रात दिवस हिंसा सू राजी, कर दे मात कसाई नै।—ऊ का

उ०—२ ससार सुपहु करता ग्रह सग्रह, गिणि तिणि हीज पचमी गाळि। मदिरा रीस हिंसा निंदा मति, च्यारै करि मूकिया चडाळि।—वेलि

उ०—३ इम हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्या सेवाया अव्रत सीची तो उण रै लेखै व्रत पिण वधती कहिणी।—भि द्र.

२ अहिंसा का विपर्याय।

३ ऐसा कार्य, हरकत या प्रवृत्ति जिससे किसी अन्य को पीडा, कष्ट या आघात पहुचे।

४ पीडा, कष्ट।

५ विनाश, नाश।

६ अनिष्ट, बुराई।

७ उत्पात, लूट-मार।

रू. भे—हिंस्या।

हिंसा करम-स पु. यौ [स हिंसा+कर्म] १ ऐसे कार्य जो हिंसा की सज्ञा मे आते है, हिंसात्मक कार्य।

२ वध, हत्या।

३ कष्ट, पीडा।

हिंसात्मक-वि [स] जिसमे हिंसा निहित हो, हिंसायुक्त।

हिंसा-धरमी-वि. [स. हिंसा+धर्मी] हिंसात्मक कार्यों मे विश्वास करने वाला।

उ०—हिंसाधरमी कहै हिंस्या बिना धरम नही हुवै।—भि. द्र.

हिंसार, हिंसारव-स पु. [स. हेषा+रव] घोडो की हिन-हिनाहट।

उ०—१ जसौल जबाब, सजत सताब। हिंसार हयद गराज गयद।—सू प्र.

उ०—२ हक होय हिंसारव साद हुवै, घूसा छक काहुळ भेर धुवै।—गो रू

हिंसावान-वि—हिंसात्मक भावना रखने वाला, हिंसक, हत्यारा।

उ०—चोरी करसी चोर, जार करसी नित जारी। हिंसा हिंसावान, जवा रमसी जूवारी।—ऊ का

हिंस्या - देखो 'हिंसा' (रू भे)

उ०—१ आप नपो चाहे भलो, परको भलो न चाय। जनहरीया ता दिस्ट मैं, हिंस्या उपजी आय।—अनुभववाणी

उ०—२ थे हिंस्या मै धरम कहो सो थारै लेखै कुसील मै पिण धरम ठहरचो।—भि द्र

हिंस्र-वि [स] १ हिंसक, हिंसात्मक प्रवृत्ति वाला, हिंसालु।

२ खूखार, खतरनाक, भयानक।

३ अनिष्टकर, घातक।

४ निष्ठुर।

५ उपद्रवी।

स पु [स] १ हिंसक पशु या जानवर।

२ शिव।

३ भीम का एक नामान्तर।

हि-स स्त्री [स.] १ एक प्राचीन विभक्ति।

उ०—सुपनइ प्रीतम मुझ मिळ्या, हूँ लागी गळि रोइ। डरपत पलक न खोलही, मति हि विछोहव होइ।—ढो मा.

२ टिटहरी। (एका)

स पु [स हय] ३ अश्व, घोडा।

उ० – हारचा हि गज रथ वाहन दिवस दिवसि नित्य। नारि कहि करू, रायजी, काइ धरम केरा कत्य।—नळाख्यान

४ खेद, अफसोस। (एका)

५ सर्प, साँप। („)

६ मोर, मयूर। („)

७ हाथ पाणि। („)

वि.—१ हरा। („)

२ देखो 'ही' (रू भे.)

हिअ—देखो 'हिरदौ' (रू भे.)

हिअकाम—देखो 'हितकाम' (रू भे.)

हिअय—देखो 'हिरदौ' (रू. भे)

हिआउ हिआव-स पु [स हृद] साहस, हिम्मत।

हिएसी, हिऐसी—देखो 'हितैसी' (रू. भे) (जैन)

हिऔ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

हिक-वि. [स एक] एक।

उ०—१ हिक सियड पडै अण बारहट, सो पड़िया बका सुलभ । वैकुंठ गयौ वीठल री, अजबसाह रावै अचड़ ।—रा रू.

उ०—२ अठा़ी हिक गणि सराव छकै, भर भुण पुलाव कवाब भखे । महली घट पिंड प्रतीत मणै, घरसै नभ गुड धमड घणै ।
— मे म.

हिकमत–स स्त्री [अ. हिकमत] १ बुद्धि, अक्ल, बुद्धिमानी ।

उ०—१ पैदा किया घाट घड़, आपै आप उपाइ । हिकमत हुनर कारीगरी, दादू लखी न जाइ ।—दादूवांणी

उ०—२ पाछै एक उमराव पूछी उण मैं हिकमत इसी काई पै इण पाणी नू नही चलाइसौ ।—नी. प्र

२ उपाय, तरकीब, युक्ति ।

उ०—हिकमत करो हजार, मळपतिया जाचौ मणा । धीरज मिळसी धार, करम प्रवांणै किसनिया ।—अज्ञात

३ विद्या ज्ञान ।

उ०—इण देस रा घणा कांम सोभाळ होया विद्या बढै नै हिकमत ऊपजै ।—नी प्र.

४ कला, कारीगरी, कौशल ।

५ चतुराई, चालाकी ।

६ नीति, धारा ।

उ०—बचन उणरो दस्तूर अकल नै कायदा हिकमत रा रू न फिरियो ।—नी. प्र.

७ युनानी चिकित्सा ।

८ चिकित्सा शास्त्र, आयुर्वेद ।

९ विज्ञान ।

रू. भे.—हिकमति, हिकमती, हिगमत, हीगमत ।

हिकमति, हिकमती–वि. [अ. हिकमत] १ अपने कार्य मे कुशल, चतुर ।

२ चालाक, नीतिज्ञ ।

३ ज्ञानवान, पंडित ।

४ बुद्धिमान, अकलमंद, व्यवहार-कुशल ।

सं. पु.—१ वैद्य, हकीम ।

२ देखो हिकमत' (रू. भे)

उ०—१ गुड़ मीठौ ऊडी नदी, आय मिल्यौ ए न्याव । हिकमति सो बीजौ हिवै, कीजै कोउ उपाय ।—प. च. चौ.

उ०—२ साथै सुभट हुंता तिकै रे, तेह हुआ मति मद । हिकमति काइ न केलवी, राय पड्यौ बहु फद ।—प च. चौ.

उ०—३ अगावती सुभ नै मिलै, चढि आयौ धप चधप्रद्योतकि हिकमति करि हारावीयौ, पाल्यौ नै उदय नै पोत कि ।—ध. व ग्र.

हिकमन–स पु.—१ दो या दो से अधिक व्यक्तियो के परस्पर सम्बन्ध की वह दशा जिसमे भावात्मक एकता होती है । अर्थात् जैसे किसी एक का मन वैसा सभी का मन, मिलकर रहने की अवस्था, प्रेम, मेल ।

उ०—साहरो जोध जोता सामद, कठहर्डे पढण मलफै कमद । किलमाण गीर हिकमन कीध, दइवांण पाण जमदाढ दीध ।—वि. स.

२ एक मत ।

वि.—एकाग्रचित्त, दत्तचित्त ।

हिकरंगौ–वि.—१ जिसका रग कभी बदलता नहीं हो, एक ही रग मे रहने वाला ।

२ जो अपने आचार विचार व सिद्धान्तो को कभी नहीं बदलता हो, अपने आचरण पर दृढ़ रहने वाला ।

उ०—रैहणा हिकरगाह, केहणा नहो पूडा कथन । चित ऊजळ चगाह, भला ज कोई 'भैरिया' ।—बळवतसिंह

३ किसी रग से मिलते हुए रग का ।

४ समान अवस्था वाला ।

हिकरदन–स. पु. [स. एक+रदन] गणेश, गजानन ।

उ० रज गुलाल सोणित रगी, अरबर तरा पर आय । रमै फाग जगा हिकरदन, सिधुर हरयौ सुहाय । रैवतसिंह भाटी

हिकोहिक–क्रि वि १ सब के सब, सभी ।

उ०—परस्पर दपति सगति पाय, हिकोहिक भेट करै हुलसाय । हरी विधु मोड़ भली अप्रहास, सणी सब आय धणी सपलास ।
—मे. म

२ एक-एक करके ।

उ०—रही कटि फौज गई अधरात, नेई तब तेण हियै नफ्रजात । जडै समरार हिकोहिक 'जैत', पडै रण भूमि अनेक पर्दैत ।
—मे. म

३ परस्पर, आपस मे ।

हिचकली–वि —अकेली ।

उ० – चले कुचार बार की सुचार मैं चलावनी, हुले हुसति हिचकली हुरम की हुलावनी ।—ऊ का

हिगमत –देखो 'हिकमत' (रू भे.)

उ०—मन्नावसी जूनै अक्षक रहै, लठै हाररसी नूं मेली । आगै खबर वैण री सी गिस मै हिगमत मेली ।—र. हमीर

हिंगळुओ–वि.— हिंगळाज' देवी के दर्शनार्थ यात्रा करने वाला ।

हिगैमिग–सं. पु.—हर्षोल्लास ।

उ०—थाळी रै भणभणाटा सूं हुवा रा रैसा चौरीजण लागा । मासी री गवाडी सौ हिगैमिग लागी पण लागी । पण आखा गांव माथै जांणै किड़किड़ायनै बीजळी पडी ।—फुलवाड़ी

हिगोटौ - देखो 'हिंगोट' (रू भे.)

हिगोणियौ—देखो 'हिंगोणियौ' (रू. भे)

हिड़कणौ–स. पु.—१ पागल कुत्ता ।

२ पागलपन के रोग वाला कोई पशु या मनुष्य ।

हिड़कणौ, हिड़कबौ–क्रि स.—१ काट खाने के लिए टूट पड़ना, उचक कर आना ।

२ किसी पर अनावश्यक चेंटना, नाराज होना, लडाई करना।
३ पागल होना। (पशु)

हिडकवा–स. स्त्री.—१ पागल कुत्ते या गीदड आदि के काटने से होने वाली बीमारी जिसमे मनुष्य प्यास से व्याकुल रहता है पर पानी देख कर चिल्ला कर भागता है। इस बीमारी मे मनुष्य जिंदा नही रह सकता।
२ पागलपन का रोग जो अधिकतर कुत्तो को होता है।
३ पागलपन का कार्य, शैतानी।
रू भे.—हिडकाव, हिडकियाबाव, हीडकियाबाव।

हिडकायौ—देखो 'हिडकणौ' (रू. भे)

हिडकाव—देखो हिडकवा' (रू. भे)

हिडकियाबाव—देखो 'हिडकवा' (रू भे.)

हिडकियौ, हिडक्यौ–स पु —१ पागलपन के रोग वाला कुत्ता। इस रोग के प्रभाव से कुत्ते के जबडे खराब हो जाते हैं और लार टपकने लगती है। किसी को जबरदस्ती काटने की ताक मे रहता है और यह जिसको काटता है उसे भी पागलपन का रोग हो जाता है।
उ०—१ सौ पचास पावडा आगै निकळ्या बाद ठाकर बोलतौ—डरजै मत ए बाइ। ए हिडकिया कुत्ता है तौ म्हूँ ई भाटी भीमौ हू। फाड नै खाय जाऊ साळा नै समझ्या कै नी।—रातवासौ
उ०—२ आम्ही-साम्ही तरवारा री लडाई मैं तौ आप सिरदारा सू सिंघ अर हिडकिया कुत्ता ई डरै। उठै म्हारी अकल नी भवै।
—फुलवाडो

२ पागल।
उ०—दुसमण लाभ दाना दहण, खुली न काना खिडकिया। नर परम धरम बूझै नही, हूको सूझै हिडकिया।—ऊ. का.
क्रि. प्र —उठणौ, होणौ।
रू भे —हडकायौ, हुडकियौ, हीडकियौ।

हिडचाळ, हिडचाळौ–स. पु [सं हुडुचाल] १ सिंह, शेर।
२ भिडने वाला या टक्कर लेने वाला, योद्धा।
उ०—१ चाळागारौ हिडचाळ करग करमाळ करारौ।—रा. रू
उ०—२ 'चाडा' रै वडचीत हुवौ रिणमल हिडचाळौ —रा रू

हिडवौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे.)
उ०—१ अदाता आपनै काई ठा' टाटचा रै हिडदा री पीड कॅडी व्है। म्है तो जाणू कै टाट्या रा नाव बिचै कोळ्यौ हजार गुणी वत्तो।—फुलवाडी
उ०—२ आध घडी रै उपरात वेद टिचकारी देवतौ कैवण लागौ, देखौ म्हारो राम निकळियौ। एक खास बूटी तौ भूल ई गियौ। बुढापा मैं हिडदौ काम ई नी करै।—फुलवाडी
उ०—३ इसै सगत माणस नै धोखै रै जाळ मै लेय'र मारता दया नी आई, पथर हिडवा मै हया नी वापरी।—दसदोख

हिडमचं–स स्त्री [अ. हिरमिजी] १ एक प्रकार की लाल मिट्टी विशेष।
२ उक्त मिट्टी को घोल कर बनाया हुआ रग।
रू भे —हिरमच, हिरमची।

हिडमची–वि —उक्त मिट्टी के अनुरूप लाल रग का।
स पु.—इसी रग का घोडा।

हिचक–स स्त्री —१ किसी कार्य को करते समय होने वाली झिझक, आगा-पीछा सोचने की प्रवृत्ति, सकोच, मन की रुकावट। किसी कार्य से पीछे हटने की क्रिया या भाव।
उ०—कूजडो मोळो पडता कह्यौ—भला, आप ई आ काई बात करी, आपरै साथै वधौ करण मैं कॅडी हिचक।—फुलवाडी
२ भय, डर।
३ अनिच्छा, उदासीनता।
४ लचक।
५ धक्का।

हिचकणौ, हिचकबौ–क्रि स —किसी कार्य को करते समय झिझकना, सकोच करना, आगा-पीछा सोचना।
२ अनिच्छा या उदासीनता दिखाना।
३ पीछे हटना, मुख मोडना।
उ०—बडी हिम्मत री मरद मेहनत रा भार सू हिचकै नही।
—नो. प्र.
४ डरना, भय खाना।
५ लचकना।
६ हिलना डुलना।
हिचकणहार, हारौ (हारी), हिचकणियौ—वि०।
हिचकिओडौ, हिचकियोडौ, हिचक्योडौ —भू० का० कृ०।
हिचकीजणौ, हिचकीजबौ—कर्म वा०।
हचकणौ, हचकबौ, हचक्कणौ हचक्कबौ, हिचकिचाणौ, हिचकिचाबौ—रू० भे०।

हिचकिचाणौ, हिचकिचाबौ—देखो 'हिचकणौ, हिचकबौ' (रू. भे)
हिचकिचाणहार, हारौ (हारी), हिचकिचाणियौ—वि०।
हिचकिचायोडौ—भू० का० कृ०।
हिचकिचाईजणौ, हिचकिचाईजबौ—भाव वा०।

हिचकिचाट, हिचकिचाहट—देखो 'हिचक'।

हिचकिचायोडौ देखो 'हिचकियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री हिचकिचायोडी)

हिचकियोडौ–भू का कृ.—१ किसी कार्य को करते हुऐ झिझका हुआ, सकोच किया हुआ, आगा-पीछा सोचा हुआ. २ अनिच्छा या उदासीनता दिखाया हुआ ३ पीछे हटा हुआ, मुख मोडा हुआ. ४ डरा हुआ, भय खाया हुआ ५ लचका हुआ. ६ हिला-डुला हुआ।
(स्त्री हिचकियोडी)

हिचकी–स. स्त्री. [सं हिक्का] १ पेट मे स्थित एक विशेष प्रकार की

वायु जो मुह से निकलते समय कण्ठ में आघात करती है तथा इसके निकलने से कुछ आवाज होती है।

उ०—१ उठता-बैठतां खावता-पीवतां हरदम उणरी आंख्यां रै आगै वा काळी अंधारी मौत सूं ई डरावणी रात फिरण लागती, जिण रात पांनियै दिनूगा ताईं खून थूकती अर रोवट हिचकी लाग नै गावड़ एक कांनी लटकाय नांखी हो।—अमरचूंनड़ी

उ०—२ मरती हिचकी लेवै टाबर, तूटै नभ रौ तारौ। वेचै राणी लाज, धानरौ कण पड़ग्यौ चवा री—चेतमांनखौ

उ०—३ जीव जोती पड़ै सास हिचकी गड़ै, सैन ही सैन समझाय हारचौ। दास हरजी कहै जीव थाँसै रहै, धीम सू धकौ ऊन कांम मारचौ।—जाभौ

वि० वि०—छींक की तरह इसमे भी वात गुल्म बनता है। यह मुह से निकलते समय गले मे झटका देकर आवाज करता है।

२ एक प्रकार का वात रोग जिसमे उक्त क्रिया बार-बार होती है।

३ ठोडी, चिबुक।

उ०—१ निनाण करती उणनै गा आयगी अर करती रै हिचकी टेक नै ऊभी व्हैगी।—रातवासौ

उ०—२ पछै डोकरी हिचकी रा काळा मस्सा नै खिंवाती कैवण लागी—थे दोनू मिळ परा नै बूढी डोकरी सू कोमता ती नी करी हौ।—फुलवाड़ी

४ रह रह कर सिसकने का शब्द।

५ रहट को उल्टा घूमने से रोकने के लिये लगाई जाने वाली लकड़ी।

६ ऊंट का एक रोग जिसमे वह खाना पीना बंद कर देता है।

क्रि प्र.—आवणी, चालणी, हालणी।

हिचकौ-सं. पु.—१ धक्का।

२ लचका।

३ कष्ट, पीड़ा, तकलीफ।

४ परिश्रम, जोर।

क्रि. प्र.—आवणौ, खावणौ, दैणौ, लागणौ।

रू. भे.—हुचकौ।

हिचक्कौ-स. पु.—बड़ी-बड़ी टांगो वाला कीड़ा जो मदगति से चलता है। (शेखावटी)

हिचण-स. पु.—१ युद्ध, लडाई।

उ०—धण बोलै जोधार, हिचण तोलै नभ हाथै। रण प्रारभ रूपरा, मंडै आरंभ किण माथै।—मे. म.

२ देखो 'हींचण' (रू. भे.)

रू. भे.—हुचण, हिचावण, हिचि, हीचण।

हिचणौ, हिचबौ-कि. स.—१ युद्ध करना, लडाई करना।

उ०—१ वहू दळ बाधक आण दुबाह, हिचै खग कूंत मचै हथवाह। करै निरमाळ वहै तिण काळ, कटै भडपाळक भाळ कपाळ।

—रा. रू.

उ०—२ आ।। इण बादक और अनेक, हिचै रण ठेकण हुँ बढि ठेक। सेना बाग ओपम कोप कराए, जाळै नभ पडव खडव जाए।—मे. म.

उ०—३ सगोभम 'केहरि' पाण समाथ, हिचै 'किरमाळ' भटा 'हरनाथ'। 'धनायत' 'अगर' कोप धियाग, खळा घट भूक करै भट खाग।—सू प्र.

उ०—४ सभौ खग झाट हुणै खळ साथ, हिचै 'भगवांन' तणौ 'हरनाथ'। लठै 'करमोत' लड़ै खग लाह, घटा गभि सामत अगद थाह।—सू प्र.

२ टक्कर लेना, सामना करना, भिडना।

उ०—१ काळ हुकाफि जिम काळ रा, किकर कहूरारै। होय टाटा-चहूं हिचै, विकटा बाकारै।—सू प्र

उ०— २ गमियै कायळ गवत री, बीर न वगै बाट। एक अनेकां सूं हिचै, ढाली वजर कपाट।—बां. दा

३ युद्ध मे वीर गति प्राप्त होना।

उ०—१ जगच्चाख शाळस कौतुक जुद्ध, गाळा काज संकर ठाळस गुद्ध। बिचै बहु हूर किया गळबाह। मिया रजपूत हिचै रण माह।

—मे म.

उ०—२ निहसै लाळा 'नवरंग' री, भगै दळां दुकाळ। हिच पडियौ रज रज हुवै, सांदू सूरजमाल।—रा रू.

उ०—३ ईसरौ अरक कदळ अतुळ, गजां कमाळ कोधा गरा। खळ प्रबळ मीर झांझ्या खगै, हिचि पड़िया 'चांपा' हरा।

—रा रू.

हिचणहार, हारौ (हारी), हिचणियौ—वि०।

हिचिओड़ौ, हिचियोड़ौ, हिचयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हिचीजणौ, हिचीजबौ—कर्म वा०।

हुचणौ, हुंचबौ, हुचणौ, हुचबौ, हिचणौ, हिचबौ, हींचणौ, हींचबौ, हीचणौ, हीचबौ—रू० भे०।

हिचरमिचर-सं. पु. यौ.—१ किसी कार्य मे आगा-पीछा सोचने की अवस्था या भाव, झिझक, हिचकिचाहट।

२ टालमटूल।

हिचावण—देखो 'हिचण' (रू. भे.)

उ०—जणणी किणी न खाधी जापै, खारण खाटौ खारो। हेवै वळां हिचावण हीदू, हेको तेड़ण हारौ।—वीरभाण रतनू

हिचि—देखो 'हिचण' (रू. भे.)

हिचियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ युद्ध या लडाई किया हुआ. २ टक्कर लिया हुआ, सामना किया हुआ, भिडा हुआ. ३ वीर गति प्राप्त किया हुआ।

(स्त्री. हिचियोड़ी)

हिचोळणौ, हिचोळबौ–क्रि. स —१ झूला झुलाना, झूले के धक्का देना, हिंडाना ।
उ०—माता धोता ग्रमल झुलरायौ झोली, हालरि हुलरावियौ, हीडोळ हिचोळी ।—ध. व. ग्र.
२ पकड कर हिलाना ।
हिचोळणहार, हारौ (हारी), हिचोळणियौ—वि० ।
हिचोळियोडौ, हिचोळिग्रोडौ, हिचोळचोडौ—भू० का० कृ० ।
हिचोळीजणौ, हिचोळीजबौ—कर्म वा० ।
हचोळणौ, हचोळबौ, हिंचोळणौ, हिंचोळबौ—रू० भे० ।
हिचोळियोडौ—भू. का कृ —१ झूला झूलाया हुग्रा, झूले मे धक्का दिया हुग्रा २ पकडकर हिलाया हुग्रा ।
(स्त्री हिचोळियोडी)
हिचोळौ–स पु —१ धक्का, झोका ।
२ झटका ।
हिज—देखो 'हीज' (रू. भे)
उ०—१ बाधव पूरब ग्ररध एण बिध, यम हिज जाण जगण उत्तरारध । काय छठै थळ यक लघु कीजै, दुसट विखम थळ जगण न दीजै ।—र ज प्र.
उ०—२ ग्रम्ह विसटाळै ग्रावियौ, लगि ज्या हिज लारै । कटक सुणि ग्रगद कहे, पित तुझ प्रकारै ।—सू. प्र.
उ०—३ साधु पणौ लेइ चोखौ पालै तै मोटा पुरुख । कइ कहै पाच मैं ग्रारा मैं साधु पणौ पूरौ पलै नही, इसौ हिज ग्रबारू निभै ।—भि द्र
हिजरी–स स्त्री. [ग्र हिज्री] १ मुहम्मद साहब के मदीने भागने की तारीख ।
२ इस्लामी सवत्सर जो हजरत मुहम्मद की हिज्रत से ग्रारभ होता है ।
वि वि —इसका प्रारम्भ १५ जुलाई ६२२ ई. या श्रावण, शुक्ला द्वितीया विक्रम सवत ६७९ से माना जाता है ।
हिजारौ–स पु —कमर तक की ऊचाई तक दीवार मे लगाया जाने वाला पत्थर ।
हिजूर—देखो 'हुजूर' (रू. भे)
उ०—हाथी तुरग सबै लै हालौ । साह हिजूर सताबी चालौ ।
—रा रू.
हिज्जै–स. पु. [ग्र. हिज्ज] किसी शब्द के वर्णो, वर्णो की ठीक ग्रवस्था व किसी शब्द के मात्रा सहित ग्रक्षर ।
वि. वि.—किसी शब्द में ग्राने वाले वे वर्ण जो निर्धारित ढग से रखे जाने पर ठीक ग्रर्थ व्यक्त करते है । इस मे स्वर तथा व्यजनो की ठीक योजना की जाती है ।
हिठाकर–वि —युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर ।
हिडंब—देखो 'हिडिंब' (रू. भे)
हिडबा—देखो 'हिडिंबा' (रू. भे)
उ०—चलण निहाइ जागिउ सहू पणमी बोलइ हिडबा वहू । माइ माइ ऊठाडउ राउ ए रूठउ ग्रम्हारउ ताउ ।—सालिभद्र सूरि
हिडबी–स. स्त्री [स हिडबक] १ भैंस, महिषा । (डि. को.)
२ एक प्रकार का ग्राइना, काच ।
रू. भे —हडबी, हडूबी ।
४ देखो 'हिडिंबा' (रू भे.)
हिडबु—देखो 'हिडिब' (रू. भे)
उ०—विस खप्पर कीचका बकु हिडंबु कमीर मारिउ । लहु बधवि ग्ररजुनि दुन्नि वार तुहु जीउ ऊगारिउ ।—सालिभद्र सूरि
हिडायलौ–स. पु.—कुए के ग्रन्दर की ग्रोर लटकती हुई लकडी (मालटियौ) को बाधने वाली रस्सी ।
हिडिंब–स. पु [स] १ एक राक्षस जो पाडवो के वनवास के समय भीम द्वारा मारा गया था ।
२ भैंसा, महिष ।
रू भे.—हिडब, हिडबु ।
हिडिंबा–स स्त्री [स,] हिडिंब राक्षस की बहन ग्रौर भीम (पाडव) की पत्नी । इसका पुत्र घटोत्कच बडा वीर व पराक्रमी था ।
रू भे —हिडबा, हिडबी ।
हिडोकै–क्रि वि —इस बार, ग्रब की ।
उ०—इण च्यारा ही ग्राय ग्राप री माता नू सवण कहीया, माता, सवण तौ हिडोकै वारूसा छै ।—वरसै तिलोकसी भाटी री वात
हिण—देखो 'हण' (रू भे)
उ०—दादू हिण दरियाव, माणिक मझेई । दुबी डेई पाण मैं डिठो हभेई ।—दादूबाणी
हिणणाट, हिणणाहट—देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे.)
उ०—भवती हिणणाट करै भवरी ।—पा प्र
हिंणणौ, हिणबौ—देखो 'हणणौ, हणबौ' (रू भे)
उ०—चढियौ जस-कळस ग्रादि लग 'चूडा', पै गज घाट गिळण गोपाळ । दाणव, देव, मानव कोय दावौ, पग सू गज हिणतौ प्रित माळ ।—गोपाळदास चूडावत रौ गीत
हिणणहार, हारौ (हारी), हिणणियौ—वि० ।
हिणिग्रोडौ, हिणियोडौ, हिण्योडौ—भू० का० कृ० ।
हिणीजणौ, हिणीजबौ—कर्म वा० ।
हिणहिण—देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे)
हिणहिणणौ, हिणहिणबौ–क्रि. स —१ घोडे का बोलना, हिनहिनाना ।
२ जोर-जोर से हसना ।
हिणहिणणहार, हारौ (हारी), हिणहिणणियौ—वि० ।
हिणहिणिग्रोडौ, हिणहिणियोडौ, हिणहिण्योडौ—भू० का० कृ० ।
हिणहिणीजणौ, हिणहिणीजबौ—कर्म वा० ।
हणहणणौ, हणहणबौ, हनकणौ, हनकबौ—रू० भे० ।

हिणहिणाट, हिणहिणाहट–सं. स्त्री.—१ घोडे के बोलने की आवाज।

उ०—चारेक घड़ी रात ढळियां मासी री गवाड़ी हिणहिणाट करतो घोड़ो हींसियो।—फुलवाड़ी

रू. भे.— हणणाट, हणणाहट, हिणणाट, हिणणाहट, हिणहिण।

हिणहिणाणौ, हिणहिणाबौ–क्रि अ. -१ घोडे का बोलना, आवाज करना, हिनहिनाना।

२ हसना।

हिणहिणायोड़ौ–भू का कृ.—१ बोला हुआ, हींसा हुआ २ हसा हुआ। (स्त्री. हिणहिणायोडी)

हिणा–क्रि. वि [स अधुना] इस समय, इस वक्त।

उ०—फेर साह विचारी जे कदाचित तू हाथ पकडियो तो तू तो एकलो छू अर म घणा छां। मनै मारि पछै नै परही ल जासी। तो आणियां बुद्धि करनै हिणा तो चुप रह जावणी।

—पलक दरियाव री बात

हिणियोड़ौ—देखो 'हणियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. हणियोडी)

हिणोड़ी–सं. स्त्री.—वह गाय या भैंस जो दूध न देती हो। (माडाणी)

हित–स. पु [सं] १ लाभ, फायदा, मुनाफा।

उ०—दया गया को गाडलो, जीव जनेती साथि। हुरीया तोरण तल का, हित लै चढ्यु हाथि।– अनुभववाणी

२ भला, कल्याण, मंगल।

३ आनन्द, सुख।

उ०—लखि तन प्रभा नयण सुख लीधो। कनियां वहू मिळै हित कीधो।—सू प्र.

४ शुभ कार्य, उपयुक्त कार्य।

उ०—गुरु गेहि गयो, गुरु चूक जाणि गुरु, नाम लियो दमघोख नर। हेक वडो हित हुवै पुरोहित, वरै मुझा सिसुपाळ वर।

—वेलि

५ उपकार, भलाई, हित।

६ शुभ कामना।

७ तन्दुरस्ती, स्वस्थता।

८ देखो 'हेत' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ देवाळै पैसि अंबिका दरसे, घणै भाव हित प्रीति घणी। हाथै पूजि कियो हाथालगि, मन वंछित फळ दायमणी। वेलि

उ०—२ हित तिण प्यारा सज्जणां, छळ करि छेतरियाह। पहिली लाड लडाइ कई, पाछइ परहरियाह।—ढो. मा.

९ देखो हितु' (रू. भे.)

१० देखो 'हेतु' (रू. भे.)

उ०—१ हित पत धरम कैद वस हूवो, दियो साह पूछण को दूवो।

—रा. रू.

उ०—२ आलम छाण रो रघुनाथ अवतारज, अवध भूप असक। जिण गढ़र बीधी रारण हित वत, लाहुर लेकण लक।—र. ज. प्र.

रू. भे.—हेत।

हितकर–वि. [स.] १ हित करने वाला, हितकारी।

२ लाभप्रद, फायदेमंद, फलदायक।

३ अनुकूल, उपयोगी।

४ स्वास्थ्यप्रद, स्वास्थ्य के लिए लाभकारी।

५ माफिक पड़ने वाला।

हितकाम–स. पु.—१ भलाई की इच्छा या भाव।

२ भलाई का कार्य।

वि.—१ भलाई करने वाला।

२ शुभेच्छु, हितेच्छु।

रू. भ —हितकाम, हितकामी।

हितकामी– देखो 'हितकाम' (रू. भे.)

उ० - 'सीमधर' गुण मंदिर स्वामी, माहूजी सुबाहुजी हितकामी।

—जयवांणी

हितकार, हितकारक, हितकारी–वि [सं हित—कार, कारक] १ हित करने वाला, भला करने वाला, उपकार करने वाला, उपकारी, शुभेच्छु।

उ०—१ मेरा सो हरिजन हितकारी, वाही मेम भगति अधिकारी। समकि बुझि देवै नर भाई, मनवा एक बोध फठवाई।

—अनुभववाणी

उ०—२ हितूआ हितकारी हुवै, वांको ही कोइ वेण। पारिख रसम परीखला, निरखे वांको नैण। - ध. व ग्र.

उ०—३ वळ गहलोत वडा व्रत धारी, करमो घणी तणा हितकारी। वीरमदै पत धरम सवायो, जोत भुजै दूणो जाणायो।

—रा. रू.

उ०—४ कहि दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी। कर सुकृत भज राम पलोती आई भारी।—सगरामदास

२ लाभ पहुँचाने वाला, फलदायक।

३ गुणकारी, फायदेमंद।

४ कल्याणकारी।

उ०—उत्पतिया बुद्धि आगला, भिक्षु गुण भंडार। हितकारी दृष्टंत लघु, सांभळता सुखकार।—भि. द्र

५ प्रेमी, स्नेही।

६ दया करने वाला, कृपालु।

७ आनन्ददायक, सुखप्रद।

रू. भे.— हितकारो, हितिकारी, हेतिकारण।

हितकारो—देखो 'हितकारी' (रू. भे.)

उ०—खाज खणी, गांठी छोडी नै, ताला कूंची घर वाट वाड़ोजी। लाधी वस्तु नटू नही, ए कराय दो हितकारो जी।—जयवांणी

हितचकोर–स पु [स चकोर+हित] चद्रमा, चांद ।
हितचिंतक–स. पु [स] शुभचिंतक, शुभेच्छु ।
हितचिंतन–स पु [स] १ हित करने की इच्छा ।
२ हित व भलाई के लिये की जाने वाली कामना, शुभकामना ।
हितव–स पु —चारण कवि ।
उ०—हितवां स बीटियां अळग न होवै, छाए ऊपरि घर छाल । मणिधर तेथि जेथि मळयातर, 'पाचौ' जेथि तेथि कवि पात ।
—नादण बारहट
हितवादी–वि —हित की बात कहने वाला ।
हितवारज–स पु [स वारज+हित] सूर्य, रवि ।
हितापन–वि —जिससे अपना हित हो ।
उ०—छोड गुमान कान दै सजनी, सौत लगाय रही है घतिया । रामलला सिखमान हितापन हरि हिय लाय जुडावै छतिया ।
—रामलला
हितारथ–क्रि वि [स हितार्थ] हित के लिये, भलाई हेतु, कल्याणार्थ ।
उ०—हरि कौ हितारथ ऐसौ लखै न कोई । दादू जे पीव पावै अमर होई ।—दादूबाणी
स पु —प्रेम, स्नेह ।
उ०—सुख सेभ रमता ढोलौ मारवणी हितारथ सु धापै न छै ।
—ढो मा
रू भे —हेतारथ, हैतारत, हैतारथ ।
हिति —१ देखो 'हित' (रू भे.)
२ देखो 'हितू' (रू. भे) (ह ना मा)
उ०—अनत देवकी अभ उपना, हिति देवा देता ग्रति हाणि ।
—ह ना मा
हितिकारी—देखो 'हितकारी' (रू भे.)
उ०—हितिकारी हिरदै वसै, यु गुडीयन की डोरि । जनहरीया तन अतरै, मन मिळायो ता ओरि ।—अनुभववाणी
हितिया—देखो 'हत्या' (रू भे)
हितियारौ—देखो 'हत्यारौ' (रू भे)
उ०—जीव मारया हितियारै रे, पाप लागा लारै रे ।—जयवाणी
(स्त्री हितियारण, हितियारी)
हितु, हितू–वि —१ हित करने वाला, भला करने वाला, हितेच्छु, शुभेच्छु हितैषी ।
उ०—१ आपै मारै आप कौ, यहु जीव विचारा । साहिब राखण-हार है, सो हितू हमारा ।—दादूबाणी
उ०—२ लेख हितू राजी थयो, देख अकब्बर साह । दक्खी ताम 'दुरग' नू, सोच तमाम सलाह ।—रा रू
उ०—३ आगळ अपती वात उच्चारी, समै पाय निज अस्त सु विचारी । मुकनदास कर अरज मिळाया, लेख हितू अप पाय लगाया ।—रा. रू.
२ काम मे आने वाला, उपयोगी ।
३ अपने पक्ष वाला, पक्षधर ।
उ०—विगत सुणी सारी विपर, आया हितू हजूर । अरि भमरांणी आवियो, दळा न वै था दूर ।—रा. रू
४ दयालु, कृपालु, खैरख्वाह ।
५ प्रेमी प्रिय ।
स पु —१ मित्र, दोस्त, प्रेमी ।
२ भाई, सहोदर ।
३ नातेदार, रिश्तेदार, सम्बन्धी ।
रू. भे —हित, हिति, हेतव, हेतु, हेतू ।
हितेच्छु–वि [स] १ हित चाहने वाला, भला चाहने वाला, शुभ-चिन्तक ।
२ कृपालु, दयालु ।
३ सहयोगी ।
हितैसी—देखो 'हितेच्छु' ।
रू भे.—हिएसी, हिऐसी ।
हितोपदेस–स पु [स हितोपदेश] १ सस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमे व्यवहार नीति की बहुत सी अच्छी बाते कहानियो के रूप मे कही गई हैं ।
२ किसी का हित करने या भलाई करने के उद्देश्य से दिया जाने वाला उपदेश, अच्छी नसीहत ।
हित्या—देखो 'हत्या' (रू भे)
उ०—१ वीरहदेव अस कीन्ह विचारा, छोड देवौ सब राज दवारा । इनकै हित्या कर सतसगी, इह सब लोगन करै कुसगी ।
—वीलहोजी
उ०—२ तद आसकरण जाणियो, 'जो भाई हित्या लागी, अर राज पण मिळियो नही ।' तिण सू लाज खाय नै तीरथा गयो ।
—द. दा
हित्यारौ—देखो 'हत्यारौ' (रू. भे)
उ०—१ राजकवर नै देखता ई दीवाणजी अर लक्खी बिणजारा माथै तो जाणै वाण वैगो । दानू जणा आधा होय न्हाटण लागा कै राजकवर आदेस करयो—आ हित्यारा नै पकडो, जावण मत दो ।—फुलवाडी
उ०—२ खाधी चवै तो ई उण हित्यारा नै दया नी आवै । पूछ मरोड मरोडनै आटा कर दिया —फुलवाडी
(स्त्री हित्यारण, हित्यारी)
हिदायत–स स्त्री [अ] १ आदेश, हुक्म, निदश ।
२ सन्मार्ग, पथ-प्रदर्शन ।
३ गुरुमत्र ।
४ चेतावनी ।

हिवै, हिवौ—देखो 'हिरवौ' (रू भे.)

उ०—१ तजे नाम हिवै हु जो राम्, नही तजे तो मारि हुं आपू । काहे प्रह्लाद त्रिलोक म भावै, राज पाट को कोन चलावै ।
—नि स. सा.

उ०—२ हुथळेयडे हरि जाणज्यो, आणज्यो हीमडइ माह । मोरो हिवौ आजइ गयण गाजई, मेघ जिगि आसाढ । —रुकमणी मगळ

हिना-स. स्त्री [अ] मेहदी, रक्तगर्भा ।

हिफाजत-सं. स्त्री. [अ. हिफाजत] १ सुरक्षा, रक्षा, बचाव ।

२ किसी वस्तु की ऐसी व्यवस्था जिसमे उस वस्तु की क्षति या नाश न हो, उचित प्रबन्ध, माकूल इन्तजाम ।

उ०—पछै नोट उठायनै कोट री मायली जेब मैं हिफाजत सूं घालतौ बोल्यौ ।—अमरचूनडी

३ देखरेख, देखभाल ।

४ निरीक्षण, जाच ।

५ होशियारी, सतर्कता, सावधानी ।

हिबड़ौ—देखो 'हिवड़ौ' (रू. भे.)

हिबोळौ, हिबोळौ—देखो 'हबोळौ' (रू में)

उ०—१ उरण एक बात रै पांण तौ जाणै हंसी रौ अथाग समदर ई हिबोळा मारण लागौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ एक ठोड हिबोळा खावतौ सरवर देखनै वा उठै ढबगी । पांणी देखता ई उणनै तिरस लखाई ।—फुलवाड़ी

हिमचळ—देखो 'हिमाचळ' (रू. भे.)

हिमंत—देखो 'हेमत' (रू. भे.)

हिमंस—देखो 'हिमांसु' (रू. भे.)

हिम-स. पु. [स. हिमम्] १ बर्फ, पाला, तुषार ।

उ०—अब हिम विध सुख्त अचवावे, पूरण हुय चूरण सुध पावे ।
—सू प्र

[स. हिमः] २ ठड्क, जाड़ा, सर्दी, शीत ।

उ०—१ पिव चालै पवगण कहै, आयो मिगसर मास । चहू दिसा हिम चमकियौ, बालम हियै विसास ।—गग्यास

उ०—२ हिम बाधि हिम रित निसा हरणौं, दिवस किस गुणि देखियै । चित मोद निस प्रति मिटै चकवा, सुख चकोर विसेखियै ।
—रा. रू.

३ सर्दी का मौसम, शीतकाल, जाडे की ऋतु ।

४ हिमालय पर्वत ।

उ०—वामण चरण प्रताप विध, हिम पित गोरी विहन ।
—रा. रा.

५ चद्रमा, चांद ।

६ चदन ।

७ मोती ।

८ कमल ।

९ कपूर ।

१० माखन ।

११ औषधि बनाने की एक प्रक्रिया विशेष जिसमे औषध को रात भर ठडे पानी मे भिगोकर सवेरे मल कर छान लिया जाता है ।

१२ उक्त प्रकार से बनाई जाने वाली दवा, ठढा पदार्थ ।

वि [स. हिम] १ श्वेत, सफेद । *

२ शीतल, ठण्डा । *

३ देखो 'हेम' (रू. भे)

उ०—१ सर गिरवर तारै पथर अठारै, सेन उतारै जगत सखै । भिड रावण भजै गढ हिम गजै, अमरां रजै अहग अखै ।
—र. ज प्र.

उ०—२ ऊंची गढ लागी आकास, हर भूल्यौ आप्यौ कविलास । हर रायौ तब कीधौ हास, हिम गढ बढीयौ हेमाचळ पास ।
—प च चौ.

रू भे.- हिव, हिव ।

हिमउपल-स. पु. [स.] वर्षा की बूंदो के साथ कभी कभी पड़ने वाले बर्फ के छोटे छोटे खण्ड, ओला, हिम-खण्ड ।

हिमकण-स पु [सं. हिमकणः] १ बर्फ का छोटा कण ।

२ ओस की बूद ।

हिमकर, हिमकरि-स पु. [स. हिमकरः] चद्रमा, शशि ।

उ०—१ है नभ जिसौ अहिमकर हिमकर, नरपुर अतै रहण री नीम । महत सुजस विसतार न मावै, भरत खड भख राणा 'भीम' ।
—महाराजा मानसिह

उ०– २ नयण कज राग निपट, सुभग आनण हिमकर सम । जप सम 'गीवह' जठ र, सयत सग हीर डसण तिग ।—र. ज. प्र.

उ०—३ गजरा नवग्रही पोंचिया पोचै, वळै वळै विधि विधि वळिस । हाथ नखित्र बेधियौ हिमकरि, अरध कमळ अलि आव-रित ।—वेलि

२ कपूर ।

रू. भे – हमगार ।

हिमकिर, हिमकिरण-स पु. [स] चन्द्रमा, शशि ।

हिमखड-स. पु. [सं.] १ बर्फ का टुकड़ा ।

२ हिमालय पर्वत ।

हिमगर, हिमगिर—देखो 'हिमगिरि' (रू. भे)

उ०—अत थारो जस ऊजळो, जेहडा दिस दिस जोय । हिमकर तो घटवध हुवै, हिमगिर गळ जळ होय ।—बां. दा.

हिमगिरसुता-स स्त्री. [सं. हिमगिरि+सुता] पार्वती, उमा ।

हिमगिरि, हिमगिरी-सं. पु [स हिमगिरि] हिमालय पर्वत ।

उ०—यौवन ! जा रे पापीया, तू हिमगिरि पारि । भूडा ! तूफनइ भोग विसि, भवि बीजइ भरथारि ।—मा. कां. प्र.

रू. भे.—हिमगर, हिमगिर ।

वि —श्वेत, सफेद। (डिं. को) *
हिमगु-स. पु [स.] चन्द्रमा, शशि।
हिमचळ—देखो 'हिमाचळ' (रू. भे)
हिमचो—देखो 'हमचो' (रू भे)
हिमजा-स. स्त्री [स] १ पार्वती, उमा।
२ गगा नदी।
३ हरड, हर्र, हरितकि। (अ. मा, ह ना. मा)
४ आवा हल्दी का पौधा।
हिमत—देखो 'हिम्मत' (रू. भे.)
हिमतण-स स्त्री.—वह स्त्री जो साहसी हो, निर्भीक हो।
हिमतभरियौ-वि.—१ साहसी, निर्भीक।
२ बहादुर, पराक्रमी।
रू भे.—हिम्मतभरियौ।
हिमताळू-वि —साहसी, हिम्मतवान।
उ०—मारग री अवळी वेळा मैं जे ईनक जिसा हिमताळू चलार नही हुवता तौ आज ठिकाणै लागणौ मुमकल हो।
—एक बीनणी दौ बीन
हिमद्रजा-स स्त्री [स हिम+अद्रि+जा] पार्वती, उमा।
उ०—रमै हिमद्रजा तुही अनेक रूपनी, अबै 'समुद्रजा' स्वरूप मद्र ऊपनी।—मे म.
हिमप्रकास-स पु [स हिमप्रकाश] १ शीतल प्रकाश।
२ चादनी।
हिमभान, हिमभानु-स. पु. [स हिमभानु] चन्द्रमा, शशि।
हिममयूख-स. पु [स] चन्द्रमा, चाँद।
हिमरकै, हिमरकै-क्रि वि —इस बार, अब की।
उ०—तरै ईडर रै धणी कह्यौ—हिमरकै आपै ही खेडा री बाधण करस्या। पछै ऐ मेवाड आया।—नैणसी
हिमरस्मि-सं. पु [स हिमरश्मि] चन्द्रमा, शशि।
हिमरा-स स्त्री —तरफदारी, पक्षपात।
उ०—जीया जितै पूरी सारी पख पाळी अर हियाळी सू राख्यौ। हर बात मैं हिमरा चळ्या अर भीर बोल्या।—दसदोख
हिमरित, हिमरितु-स स्त्री [स हिम+ऋतु] हेमन्त ऋतु।
उ०—सोळसै साक चत्रवीस तास, मधि हिमरित बर अघण मास।
—सू प्र
रू भे —हिमरुत।
हिमरुचि-स पु. [स] चन्द्रमा, चाँद।
हिमरुत—देखो 'हिमरितु' (रू भे)
उ०—यौ वरखा रित बीळवी, बीती सरद अद्वंद। हिमरुत आधी बीच रयौ, फेर प्रगट्यौ फद।—रा रू
हिमवत, हिमवत-वि —१ हिम के समान, बर्फ जैसा।
२ शीतल, ठडा।

स. पु. [स हिमवत्] हिमालय।
रू भे.—हैमवत।
हिमवंतपरवति-स पु [स हिमवत्+पर्वत] हिमालय पर्वत।
उ०—एतला प्रदेस माहरी वास भूमि, पुण हिमवत-परवति पद्म-द्रहि एक कोडि वीस लाख साधिक पखि परिवरिउ तिहा माहरउ वास।—व स
हिमवान-स पु [हिमवत्] १ हिमालय पवत।
२ चन्द्रमा।
वि —१ जिसमे हिम हो, बर्फीला
२ ठडा, शीतल।
हिमवार-स स्त्री —हेमन्त ऋतु का समय, शीतकाल।
उ०—समत मेक सपत्त, मिळै गुणसठौ छमच्छर। सरद पार हिमवार, सकळ रित हू रित सुदर।—रा. रू
हिमसैलजा-स स्त्री [स हिमशैलजा] पार्वती, उमा।
हिमसुत-स पु [स] चद्रमा।
हिमहित-स पु —चद्रमा।
हिमाचळ—देखो हिमाचळ' (रू. भे)
उ०—नदी जु पूर वहती थी सु घटि होण लागी। अर हिमाचळ परवत्त का सिंग वधण लागा। जैसैं जोवन के आयैं नायिका की कटि खीण होय। त्यौं नदी खीण हुई।—वेलि टी
हिमांणी, हिमानी—देखो 'हेमाणी' (रू भे)
हिमामदस्तौ—देखो 'हमामदस्तौ' (रू भे)
हिमासु हिमासू, हिमांसु-स पु [स हिमांशु] १ चन्द्रमा।
उ०—कनध्वसी विस्णु कमळ भव जिस्णु स्तुति करै। हिमासू उरणासू पदम पद पासू सिरधरै।—मे म
२ कपूर।
३ रजत, रूपा, चादी। (ह. ना मा)
रू भे.—हिमस, हेमसु, हेमसू।
हिमाइयत—देखो 'हिमायत' (रू. भे.)
उ०—बहराम नू इणरी हिमाइयत पसद आई। घोडौ तौ लीन्हौ नही आपर घर पाछौ आयौ।—नी प्र
हिमाकत-स स्त्री [अ] मूर्खता, बेवकूफी।
हिमाचळ-स पु [स हिम+अचल] १ हिमालय पर्वत।
उ०—१ वेख तपती ताव सू, मुरधर अख रै भाण। हियौ हिमाचळ अूभळचौ, बह चाल्यौ बरफाण।—लू
उ० —२ सबळ जळ सभिन्न सुगध भेट सजि, डिगमिग पाउ वाउ क्रोध डर। हालियौ मळयाचळ हूत हिमाचळ कामदून हर प्रसन कर।—वेलि
२ शिव के श्वसुर का नाम जो हिमप्रदेश का शासक था, पार्वती का पिता।

रू. भे — हिमचळ, हिमाचळ, हिमाजळ, हीमाचळ, हेमाचळ, हेमा-चल, हेमाछळ, हेमाजळ ।

हेमाजळ—देखो 'हिमाचळ' (रू. भे)

हिमाद्रि—स. पु. [सं.] हिमालय पर्वत ।

रू. भे.—हेमाद्रि, हेमाद्री ।

हिमायत—स. स्त्री. [अ.] १ पक्षपात, तरफदारी, समर्थन ।

२ सहायता, मदद ।

उ०—हिमायत अदल री जे नहीं होवै तो सबळा निबळां नू मार खूंखार करै ।—नी प्र.

३ संरक्षण, रक्षा ।

उ०—फेर उण री वचन इण भांति छै जिको हिमायत जीव री भाजणां मैं देखै छै सो विचार झूंठो छै ।—नी प्र.

४ दोस्ती, मित्रता ।

उ०—जै तू लड़णां री मतो राखै छै तो थांनूं दस तरह री हिमायत करणी ।—नी प्र.

५ प्रोत्साहन, थपकी ।

रू. भे.—हिमाइत, हीमायत, हेमायत ।

हिमायती—वि.—१ हिमायत करने वाला ।

उ०—चोधरी रा सिखायोड़ा लोग छैलकी-बैलकी लगावणां जुटग्या । सागै-सागै बूढली रे हिमायत्यां नै गाळ भी ठोकणां लागग्या ।

—दसदोख

२ सहायक, मददगार ।

३ पक्षपाती, समर्थक, तरफदारी करने वाला ।

४ रक्षक, संरक्षक ।

५ मित्र, दोस्त ।

रू भे.—हीमायती ।

हिमार—देखो 'हमार' (रू. भे)

उ०—सीहै कह्यो—हिमार बात परगट करणी नहीं । हु रिण-छोड़जी री जात कर आऊं । पछै लाखा ऊपर जासां ।—नैणसी

हिमाराति—सं. स्त्री. [सं. हिम+अराति] १ अग्नि, आग ।

२ सूर्य, सूरज ।

हिमारू', हिमारू—देखो 'हमार' (रू भे)

उ०—१ अर कह्यो—मोनूं रावळजी देस भळायो छै, जो हूं हिमारू' परणीजण आऊं तो हेमो तुरत महेवै आवै । हू आय न सकू ।—नैणसी

उ०—२ जसवत नु कही इसड़ीक बात छै । तरै जसवत कह्यो—हु हिमारू भूखो थको अठै आयो छु ।—राव मालदेव री वात

हिमाळय, हिमालय, हिमाळिय, हिमाळे, हिमाळै, हिमाळो—स पु. [सं. हिमालय] भारत की उत्तरी सीमा पर फैला हुआ एक बहुत बड़ा पर्वत जिसकी माउट एवरेस्ट नामक चोटी विश्व की समस्त पर्वत चोटियो से ऊची है ।

उ०—१ सतवादी हरिचंद सी राजा, नीच घर नीर भरै । पांच पांडु अर कुंती द्रोपदी, हाड हिमाळय गरै ।—मीरां

उ० २ पोम झरै नित धारां पाळो, हरा परहरै विलग हिमाळो । रोज टरै एकण रिपाळो, चकण विदेसां छोडी चाळो ।

—अग्यात

रू. भे —हीमाळइ, हीमालउ, हीमाळै, हीमाळो, हेमाळ, हेमाळइ, हेमाळई, हेमाळय, हेमाळे, हेमाळै, हेमाळो, हैमाळै, हैमाळो ।

हिमैं, हिमे देखो 'हमैं' (रू. भे.)

उ०—१ ऐ गाम छै हिमे बास जीवण सांवळ रा नै हरदास राघो-दास रा छै ।—नैणसी

उ०—२ दुय मिलाप मझ येम इळ आखै कविता आग । जरूं हिमे गो मत जथा, सियवर कथा प्रसंग ।—र रू.

हिमेण—स पु —प्रथम गुरु के सामण का नाम । (र. ज प्र)

हिमेस—सं पु [सं हिमेश] १ हिमालय पर्वत ।

२ देखो 'हमेस' (रू भे)

हिमै, हिमैं—देखो 'हमैं' (रू भे.)

उ०—१ तरै डूंगर रावळ सामरो नै राणिगो सु डूंगर भील मारनै लंभ, हिमै डूंगरपुर वसायो छै तठै रहता । —नैणसी

उ०—२ हिमै दिन च्यार आगा घाल नै उमादे भावरा भरतार सो कहियो पै जुवाब था तव मैं बोलणो बोलायो थो ।

—पन्नडी री वारता

हिम्मत—सं स्त्री [अ.] १ साहस, हौसला, उत्साह, जोश ।

उ०—१ मूळी भूजी-बळै । पेमजी धूजै-बळै । चोधरी अर उलाळी सांबै नी आवै । पेमजी दबग्यो, मारौ गी हिम्मत नहीं पड़ै । मूळी सिर चढगी ।—दसदोख

उ०—२ धैरांण वतन हिम्मत अथाह, सिर मिलत तुज्ज मिरखा सिपाह । सामह्यो न हाले सह सार, भुग री न झालै सेस भार ।

—वि. सं

२ बल शौर्य, पराक्रम ।

उ०—१ भागड़ी अचकै जमरो चेरो, कालेजा चोणी कीड़ियां रै ज्यूं आगली काकड़ माथै चढनै आया है । आपणा जवांन हिम्मत अर बहादरी सूं वांरै मुकाबला मैं अड़ियोड़ा है ।—अमर चूनड़ी

उ०—२ मांमो-भाणेज दोन्यूं डील रा सैतान अर छाती रा बज्जर । काळजो इसो कै दोन्यूं मिळनै हजारां मिनखां री सांमनो करण री हिम्मत राखै ।—अमर चूनड़ी

३ कठिन व दुस्साध्य कार्यों के लिये रखी जाने वाली मानसिक दृढ़ता ।

उ०—म्हारी पिता नै म्हू सहन कर सकूं हू, पण टाबरियां रा दुख नै सहन करणो म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है ।

—अमर चूनड़ी

रू. भे.—हिमत, हीमत, हीमत, हीमत्त ।

हिम्मतभरियौ—देखो 'हिंगतभरियौ' (रू भे)

हिम्मति, हिम्मती—देखो 'हीमती' (रू भे.)

उ०—वड विना कामति न को बीरति, पिंड हुई मत जाय सपति। इमैं इण भति धरी हिम्मति, पुळो पर खिति रहो नरपति।
—रा रू

हिय—देखो 'हिरदौ' (रू भे.)

उ०—१ बाररी बात बालाबकस बिए रै, हियै रै माहिं तकलीफ हूगी। जरा हू याद पोहकरी जिम करी जद, पयादा हूरी ज्यौ इद्र पुगी।—मे म

उ०—२ साल्ह चलतइ परठिया, आगण बीखडियाह। सो मइ हियइ लगाडिया, भरि भरि मूठडियाह।—ढो मा

हियडलु, हियड़लौ—देखो 'हिरदौ' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ हियडलु राति नइ दिवस हीसै।—स कु

उ०—२ अरध मडित नारी नागिला रे, खटकइ म्हारा हियडला बारि रे।—स. कु.

हियडो—देखो 'हिरदौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ सदेसडै न जिवाय, जा नयणे दिन दीस। नेडो नीर न तिस हरै, जा हियडै नही पीस।—पचदडी री वारता

उ०—२ प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि। हियडा भीतर प्रिय बसइ, दाभणती डरपाहि।—ढो मा

उ०—३ दादू इस हियडै यह साल, पिव बिन क्योहि न जाइसी। जब देखू मेरा लाल, तब रोम-रोम सुख आइसी।—दादूबाणी

हियड, हियडउ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—१ हियडइ ताहरइ हे सखी, यण हरनु थड वक। अलग धरइ आलिगता, रायगणि जिम रक।—मा का प्र.

उ०—२ जगडइ ए जासक जूहिय, मू हियडउ निरधार। देखउ केवडी केवडी, जेवडी करवत धारि।—जयसेखर सूरि

हियडलइ, हियडलउ, हियडलौ—देखो 'हिरदौ' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ नेम नगीनउ मइ पायउ, सखिजी, एह अमूलिक नग। गुण गुफी प्रेम कुदन जडी जी, राखिसि हियडलइ रग।—स कु

उ०—२ हु तउ मूरख ए अतिजाण ए असरीखउ किम घटइ ए। वली विमासिइ हियडला माहि, दैवचिता नवि जाणीइ ए।
—हीरणद सूरि

हियडो—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—चोली नीला नेत्रनी, कणयर वन्नु चीर। आभरणै उद्योत अति, हरती हियडा हीर।—मा का प्र

हियरथ-स पु.—हितार्थ, मोक्ष। (जैन)

हियरौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे)

हियाँ-अव्यय —यहा, इस जगह।

हियाखाई-स स्त्री [स हृदय-खाति] १ किसी बात या कार्य के प्रति होने वाली हिचक, सकोच।

२ भय, डर।

३ शका, सदेह।

हियाफूट, हियाफूटोडौ, हियाफूटौ-वि. (स्त्री हियाफूटी, हियाफूटोडी)

१ मूर्ख, नासमझ, बेवकूफ शिर-फिरा।

उ०—१ अकबर कूट अजाँण, हियाफूट छोडै न हठ। पगा न लागण पाण, पणधर राण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

उ०—२ मात पिता मैं दोसण मोटो, प्रथम मिळ्या सुख पाई नै। नग दोना मिळ आो निपजायो, हियाफूट हरखाई नै।—ऊ का.

२ खिन्नचित्त, उदास।

रू. भे —हीयाफूटो, हीयाफूट, हीयाफूटोडो, हीयाफूटो।

हियाळी, हियाली-स स्त्री.—१ वात्सल्य, प्रेम, स्नेह।

उ०—हुस्यार करचो, मुनीम बणायो, ब्याह माड्यो, अर घर पक्को करायो। जीया जितै पूरी सारी पल पाळी अर हियाळी सू राख्यो।—दसदोख

२ तसल्ली, धैर्य, ढाढस।

३ हसी, मजाक।

४ बदतमीजी, अभद्र व्यवहार।

रू भे.—हीयाळी, हीयाळि, हीयाळी, हीयाली।

हियाव-स पु.—लगाव।

उ०—लोह अकोड करै अनियाव, चाडी चुगली सू घणी हियाव।
—वील्होजी

हियाहीण, हियाहीन-वि [स हृदय+हीन] १ मूर्ख, अज्ञानी।

२ कायर, डरपोक।

३ क्रूर, दयाहीन, हृदयहीन।

रू भे —हीयाहीण।

हियु, हियु, हियू, हियौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—१ दव जिम दोठइ करुणए, करणइ ए हियु निकामु। मरूउ वरूउ दमनकि मन, किहि नही य विस्रामु।—जयसेखर सूरि

उ०—२ रही कटि फौज गई अधरात, बेई तद तेण हियै मझ बात।—मे म.

उ०—३ नित समरू एहनो नाम रे, सहु वातै समरथ स्वाम रे। हिव पुगी हिया नी हाम रे, ओहिज मुझ आतम राम रे।
—ध. व ग्र.

उ०—४ जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी। ज्यौ हियै पीर तीर सम लागत, कसक कसक कसकानी।—मीरां

उ०—५ हियैं तहव्वर खान रै, व्यापी यौ विपरीत। दाह अकब्बर भोगवौ, 'नौरग' साह नचीत।—रा. रू

हिरणख—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे)

हिरणखी—देखो 'हरिणाक्षी' (रू भे.)

उ०—जिम नौ गुण अवनी अमर, जिम हिरणखी हार। इम गढवा बाधा गळै, जेहल राजकुवार।—बा. दा.

हिरण-सं. पु. [सं. हिरण्यं] १ स्वर्ण, सोना ।

उ०—या सत किया अनेक, हिरण दे दे विप्रां हथ । ज्यां साधिया अठ जोग, त्यां किया कोटक तीरथ ।—र. ज प्र

२ द्रव्य, धन, दौलत, संपत्ति । (ह नां मा)

उ०—तीरथ जात समस्त, सकळ साधां मिळ संगा । रास तमासा रमै, हुलस नाचै हुडदंगा । साजी मेळा साग वेष राखी पचोळी । मिंदर मडी मताण, होळिका फाग हुरोळी । भागवत कथा भूतावळी हिरण दरस हिंडोरसा, परवीण होय जांणै पुरस, मालजादा रा मोरचा ।—ऊ का

३ देखो 'हरिण' (रू. भे.) (ह. नां. मा)

उ०—१ इतरै बीच हिरणां रा डार आय नीसरै छै । तिकै किण भात रा हिरण छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ तीतर, सूवटां री बोली सुणियां अबै उणा नै ऊबका आवता । अबै नीं हिरण आछा लागता अर नी खिरगोस ।

—फुलवाडी

४ देखो 'हरण' (रू भे)

उ०—जग रा रूप वाघ रा जुधठिल इळ रा थभ कुळ रा अजु-आळ । दुग रा हिरण वेव रा हिरसण पग रा प्रविस्त छै प्रंन रा पाळ ।—स. पि

रू. भे.—हरण, हरन, हिरिण ।

हिरण-उपवन-सं. पु. यौ —ब्रह्मा । (डिं. नां. मा.)

हिरणक, हिरणकस—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे.)

उ०—हुय सूअर हिरणक हणौ, धरती उर धारै । चव रवी चलैं, धूतै थिर सारै ।—भगतमाळ

२ देखो 'हिरणाकस्यप' (रू भे.)

उ०—हिरणक राकस तू ही नर सिंघ निवांणा ।

—किसोदास गाडण

हिरणकसप हिरणकसिपु, हिरणाकस्यप—स पु [स. हिरण्यकशिपु] १ एक दानव जिसने शिव के वरदान से एक अर्बुद वर्षो के लिए सारे देवताओं का ऐश्वर्य प्राप्त किया था । इसने मेरुपर्वत को भी हिलाया था ।

२ कश्यप एवं दिति की दैत्य सन्तानों में से एक सुविख्यात असुर, जो दैत्यवश का आदिपुरुष माना जाता है ।

उ०—१ नरहर कर प्रहलाद निवारै, हिरणाकसप वप नखां प्रहारै । ईखै दुरयोधन अनियाई, सकळ पाडवां चीर सभाई ।—रा रू.

उ०—२ हिरणाकस्यप जिसा प्रथमी साल प्रचड । —अ. मा.

वि. वि —दैत्यवश मे उत्पन्न तीन इन्द्रो मे से यह एक था । शेष दो इन्द्रो के नाम थे—प्रह्लाद व बलि । यह एव इसका भाई हिरण्याक्ष वंशकर दैत्य माने जाते हैं क्यो कि अधिकाश दैत्यकुल इन्ही के पुत्र-पौत्रो के द्वारा चलाये गये थे । मगध नरेश जरासध भी इसी के अश से उत्पन्न हुआ था ।

कश्यप ऋषि द्वारा किये गये अश्वमेध यज्ञ के समय कश्यप-पत्नी दिति गर्भवती थी और दस हजार वर्षो से उक्त गर्भ को पेट मे ही पाल रही थी । जब दिति यज्ञ मण्डप मे होतृ के लिए रखे मुख्य सुवर्णासन पर जा बैठी तब उसी सुवर्णासन मे प्रसूत हुई, एवं उसका नवजात शिशु वही सुवर्णासन पर अधिष्ठित हुआ । इस प्रकार जन्म से ही सुवर्णासन पर अधिष्ठित होने के कारण इसे 'हिरण्यकशिपु' कहा गया ।

इसने अपने भाई हिरण्याक्ष के वध का बदला विष्णु से लेने हेतु ब्रह्मा की कठोर तपस्या की । तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने इसे वर दिया कि घर मे या बाहर, दिन मे या रात मे, मनुष्य से या पशु से, शस्त्र से या अस्त्र से, सजीव से या निर्जीव से, शुष्क से या आर्द्र से, यह अवध्य रहेगा । इस वर के कारण इसने घोर अत्याचार शुरु कर दिये ।

इसकी तपस्या-काल में इसकी पत्नी कयाधु गर्भवती थी । इसकी अनुपस्थिति मे नारद ने उसे विष्णु-भक्ति का उपदेश दिया, जिसका प्रभाव उसके गर्भ मे स्थित बालक प्रह्लाद पर भी पडा । इससे वह जन्म से पूर्व ही विष्णुभक्त हो गया । हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद की विष्णुभक्ति नष्ट करने के अनेकानेक प्रयत्न किये पर इसे असफलता ही मिली । अत. तग आकर इसने प्रह्लाद से कहा, 'सारे चराचर मे भरा हुआ तुम्हारा विष्णु इस खम्भे मे भी होना चाहिये । तुम इसे बाहर आने के लिए क्यो नहीं कहते ?' इतना कहते ही खम्भ से श्रीविष्णु का रौद्र नृसिंहावतार प्रकट हुआ एव नाखुनो से सायंकाल के समय इसका वध किया ।

पूर्वजन्म मे यह व इसका भाई हिरण्याक्ष भगवान् विष्णु के जय व विजय नामक द्वारपाल थे । पुनर्जन्म में यह रावण बना ।

रू. भे —हणकंस, हरणांक, हरणाख, हरणाखुर, हरणाकस्यप, हरणा-कुस, हरणकुस, हरणाक्ख, हरणाख, हरणाकस, हरणाकुश, हरणाख, हिरणाक्ख, हरिणाईल, हरिणाख, हरिणाकुस, हरिणाकस, हरिणा-कुस, हरिणाख, हिरणाक, हिरणाकस, हिरणाक, हिरणाकस, हिरणा-कुश, हिरणाख, हरिण्यकसिपु, हिरण्यकस्यप, हिरनकस्यप ।

हिरणाखुरी-सं. स्त्री.—१ वर्षा ऋतु मे उगने वाली एक लता विशेष, जिसके पत्ते हिरन के खुर से मिलते जुलते होते हैं ।

२ रात्रि मे हरिन के बैठने का स्थान ।

उ०-हिरणखुरी दो आंगळी, धरती लाख पसाय । लिखिया भखिया नां टळै, जहा पासा तहा दाव ।—अज्ञात

रू. भे.—हिरनखुरी ।

हिरणाखि—देखो 'हिरणाक्षी' (रू. भे.)

उ०—लागा कुसुम सरीख वप, ज्यांरै पडै खरोट । इद नाजक हिरणाखियां, है मांभळ हमरोट ।—बां. दा.

हिरणगरभ—देखो 'हिरण्यगरभ' (रू. भे.)

(अ. मा; ना. मा; ह. नां. मा.)

उ०—विमळानन विबुधेस विहारी, सख चक्र धारी सुमरण। भव तारण भूधर भय भजण, हिरणगरभ त्रय ताप हण।—र ज प्र

हिरणचबौ–स पु—एक प्रकार का घास।

हिरणजप, हिरणभप–स पु—१ डिंगल का एक छद (गीत) विशेष जिसके प्रथम चरण मे १६ मात्रा, द्वितीय मे १४ मात्रा, तृतीत चरण मे २४, चतुथ और पचम चरण मे १४-१४ तथा छठे चरण मे २४ मात्राऐ होती है। इसके पहली, दूजी, चोथी व पाचवी तुक के अत मे भगण तथा नगण और अत मे लघु होता है। तीसरी व छठी तुक के अत मे जगण होता है।

२ मृग की छलाग।

हिरणदा–स स्त्री [स हिरण्यदा] पृथ्वी। (डिं को)

हिरणरेत–स पु [स हिरण्यरेतस्] १ अग्नि, आग।

२ शिव, महादेव।

३ सूर्य, रवि।

४ बारह आदित्यो मे से एक।

रू भे—हिरण्यरेत, हिरण्यरेता।

हिरणलौ—देखो 'हरिण' (अल्पा, रू भे)

उ०—किहा गया कुवरजी प्रभात का, किण ठामै किण ठोर बे। राणी कहै रे हिरणला, ताहरी बाहर जोय बे।—रीसालू री बात

हिरणाखी—देखो 'हिरणखी' (रू भे)

हिरणाक, हिरणाकस, हिरणाकुस—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

२ देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे)

उ०—१ करकै तरवार ग्रहै हिरणाकुस, मूढ निरोस निवार मुडै। सुत कै बळ एक मुरार तणौ सज, थभ विडार गिलार थडै।—भगतमाळ

उ०—२ करचौ रूप नरसिंघ कौ, सुण्यौ सत कौ साद। हिरणाकुस फाडचौ उदर, राख लियौ पहळाद।—गज-उद्धार

उ०—३ हिरणाकुस प्रह्लाद सतायौ, जार अगन बिच डाल दियौ री। राज छाड दियौ नाव न छाडचौ, खभ फाड प्रभु दरस दियौ री।—मीरा

उ०—४ पुत्र हिरणाकुस २०, पुत्र पहिलाद २१ पुत्र वैरोचन २२, पुत्र बलिराजा २६।—रा वसावळी

उ०—५ जेण कसासुर मारियौ, मध कीचक समदर मथै। मुर हिरणाकुस हिरणाख, अगज गज उनथ नथै।—वि स सा

हिरणाख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

उ०—१ जेण कसासुर मारियौ, मध कीचक समदर मथै। मुर हिरणाकुस हिरणाख, अगज गज उनथ नथै।—वि स सा

उ०—२ प्रथम्मी जाती रेस पयाळ, दाढा विच राखी दीन-दयाल। रायी धरबार किला तैं राम, सभै हिरणाख बिखै सग्राम।

—ह र

हिरणाखि, हिरणाखी—१ देखो 'हरिणाक्षी' (रू भे)

उ०—१ हिरणाखी रुखमणीजी त्याका कठ कै विखै। अतरि जु सरसती थी। सु मानौ बाहरि लाल रूप करि प्रगट हुई छै।

—वेलि टी

उ०—२ हिरणाखी हस हाली चरजा उचारै। सेवक पढत सलूती देवळ निज द्वारै।—मे म

उ०—३ माळवणी तू मन समी, जाणइ सहू विवेक। हिरणाखी हसिनइ कहइ, करउ दिसाउर एक।—ढो मा

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

उ०—लकापति रावण कहा, कुभ करण कहा वस। हिरणाकुस हिरणाखि कहा, महकासुर कहा कस।—ह पु वा

हिरणायख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

उ०—हिरणायख हाणौ सख सभाणौ, हयग्रीवा खळ हता है। हरणाकुस हत्तै महण सु मथ्थै छित लै बळि छळता है।

—र ज प्र

हिरणावटियौ–स पु—कच्चे झोपडे के मध्य मे स्तम्भ रूप खडे किये हुए काष्ठ के ऊपरी हिस्से पर चारो ओर लगाई जाने वाली लकडी।

हिरणावटी–स स्त्री—मोट के खाली होने वाले स्थान पर लगे पत्थर मे सीधी खडी लगाई हुई लकडी।

हिरणियौ–स पु—१ गरीब व्यक्ति।

२ देखो 'हरिण' (अल्पा, रू भे)

हिरणी–स स्त्री—१ मादा हरिन, मृगी।

उ०—१ जिणि दीहै तिल्ली त्रिडइ, हिरणी झालइ गाभ। ताह दिहा री गोरडी, पडतउ झालइ आभ।—ढो मा

उ०—२ बिडरी हिरणीं सी फिरणी बिजकाती, मुखडौ मुसकाती जोरौ जतळाती। आलै भक आटा कोलै जिम कुयिगो, हाबर भामणिया सामणिया हुयगी।—ऊ का

२ सोन जुही। (अ मा, ना मा)

३ स्वर्ण की चमक।

४ मृगशिरा नक्षत्र।

५ देखो 'हिरणीखूटौ'।

रू भे—हरणी।

हिरणीखूटौ–स पु—गाडी मे लगाया जाने वाला लकडी का डडा जो बोझा ढोने के निमित्त माकडे मे सीधा खडा किया जाता है। ऐसे चार डडे लगाये जाते है।

हिरण्ण—देखो 'हिरण्य' (रू भे)

हिरण्मय–स पु [स] १ ब्रह्मा।

२ जबू द्वीप के नौ खण्डो मे से एक खण्ड जो कि श्वेत व शृ गवान पर्वतो से घिरा हुआ है।

३ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वि—१ सोने का।

२ सुनहला।

हिरण्य-सं. पु. [सं.] १ ब्रह्मा।

२ एक प्राचीन ऋषि।

३ जम्बू द्वीप के नौ खण्डों में से एक।

४ सोना, स्वर्ण। (ह. ना. मा.)

५ ज्योति, प्रकाश।

६ वीर्य, शुक्र।

७ अमृत।

८ धतूरा।

९ धन, दौलत। (ह. ना. मा.)

रू. भे. हरण, हरन, हरिण, हरिन, हिरण।

हिरण्यकसिप, हिरण्यकसिपु, हिरण्यकस्यप- देखो 'हिरणाकसिपु' (रू. भे.)

हिरण्यकामधेन, हिरण्यकामधेनु सं. स्त्री. [सं. हिरण्य + कामधेनु] सोने की बनाई गई कामधेनु गाय जो दान देने के निमित्त बनाई जाय।

हिरण्यकार-सं. पु. [सं. हिरण्य + कृ] स्वर्णकार, सुनार।

हिरण्यकेस सं. पु. [सं. हिरण्यकेश] भगवान् विष्णु का एक नाम।

हिरण्यगरभ-सं. पु. [सं. हिरण्यगर्भ] १ वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा एवं सृष्टि की उत्पत्ति हुई।

२ ब्रह्मा, विरंचि।

३ विष्णु।

४ आत्मा, जीव।

५ ईश्वर।

६ शुक्र ग्रह।

७ शुक्राचार्य।

रू. भे.—हरणगरभ, हिरणगरभ।

हिरण्यधन, हिरण्यधनु—सं. पु.—एकलव्य के पिता निषादराज।

हिरण्यनाभ, हिरण्यनाभि-सं. पु. [सं. हिरण्यनाभ] १ भगवान् विष्णु।

२ मैनाक पर्वत का एक नाम।

हिरण्यपुर, हिरण्यपुरी, हिरण्यपुरी-सं. पु. [सं.] समुद्र के पार वायुमण्डल में स्थिर असुरों का एक नगर।

हिरण्यबाह, हिरण्यबाहु—सं. पु. [सं. हिरण्यबाहु] १ शिव का एक नाम।

२ सोन नदी का एक नाम।

३ वासुकि नाग वंशोत्पन्न एक नाग।

रू. भे.—हिरण्यवाहु।

हिरण्यबिंद, हिरण्यबिंदु—सं. पु. [सं. हिरण्य + बिन्दु] हिमालय पर्वत के निकटस्थ एक तीर्थ का नाम।

हिरण्यरेत, हिरण्यरेता—देखो 'हिरणरेत' (रू. भे.)

हिरण्यरोमा—सं. पु. [सं. हिरण्यरोमन्] १ मरिचि के पुत्र एक लोकपाल का नाम।

२ विदर्भ नरेश भीष्मक का एक नाम।

हिरण्यव सं. पु. [सं.] १ वह धन जो किसी देवता या मन्दिर पर चढाया गया हो।

२ स्वर्ण का गहना।

हिरण्यवती सं. स्त्री. [सं.] कुरुक्षेत्र में बहने वाली एक नदी।

हिरण्यवरमा सं. पु. [सं. हिरण्यवर्मा] दशार्ण देशाधिपति जो पाञ्चाल राजकुमार शिखण्डी का श्वसुर था।

हिरण्यवसतर, हिरण्यवस्तर, हिरण्यवस्त्र सं. पु. [सं. हिरण्यवस्त्र] सुनहले तारों का बना एक प्रकार का कपड़ा विशेष।

हिरण्यवाह - देखो 'हिरण्यबाह' (रू. भे.)

हिरण्यवीरय सं. पु. [सं. हिरण्यवीर्य] १ अग्नि, आग।

२ सूर्य, सूरज।

हिरण्यस्रंग सं. पु. [सं. हिरण्यश्रृंग] कैलाश पर्वत के समीपस्थ एक पर्वत जिसमें रत्न माने हैं।

हिरण्याक्ष, हिरण्याख सं. पु. [सं. हिरण्याक्ष] १ दक्ष प्रजापति की पुत्री दिति एवं कश्यप ऋषि के संसर्ग से उत्पन्न एक दानव जो हिरण्यकशिपु का भाई था।

उ० - हिरण्याक्ष रा अंग ज्यों महानराह दंत सुभाभास-सोभित।

—व. भा.

वि. वि. पूर्वजन्म में यह विष्णु का विजय नामक द्वारपाल था। सनकादिक ऋषि के शाप के कारण असुर हो गया। इसका विवाह वृषपर्वा की पुत्री उपदानवी से हुआ था। ब्रह्मा के वर के कारण यह अत्यन्त बलशाली व पराक्रमी हो गया था अतः यह पृथ्वी को उठा कर पाताल ले गया। विष्णु भगवान ने वाराह अवतार लेकर इसको मारा था। पुनर्जन्म में यह रावण का भाई कुम्भकर्ण हुआ।

२ श्यामक एवं शूरभूमि के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रों में से एक पुत्र जो वसुदेव का भतीजा था।

रू. भे. हरणाख, हरणाखस, हरणाख, हरणाखुर, हरणानख, हरणाख, हरणाख्य, हरणाखु, हरणाकुस, हरणाकस, हरणाक्ष, हरणाख, हरणायस, हरिणाक्ष, हरिणाख, हरिणाकुस, हरिणाकस, हरिणाकुस, हरिनाक्ष, हिरणाक, हिरणाकस, हिरणाख, हिरणाकस, हिरणाकुस, हिरणाख, हिरणाखि, हिरणाखी, हिरणायख।

हिरण्यासव, हिरण्यास्व—सं. पु. [सं. हिरण्याश्व] घोड़े की सोने की मूर्ति जो दान देने के लिये बनाई जाय।

हिरव, हिरवध - देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

हिरवावळ—सं. पु. [सं. हृदावर्त] घोड़े की छाती पर होने वाली भौंरी (दोष)। (शा. हो.)

हिरवेगम-सं. पु. [सं. हृदयंगम] १ किसी विषय या बात को चित्त में अच्छी तरह बैठा लेने की अवस्था या भाव।

२ किसी विषय या विद्या को इस तरह सीख-समझ कर हृदय में

धारण कर लेना कि वह कभी भुलाई नहीं जा सके।
वि—हृदय या चित्त मे समाहित।
रू भे—हीयागम।

हिरदै, हिरदौ—स पु [स हृदय] १ प्रत्येक प्राणी के शरीर मे वक्षस्थल के नीचे स्थित वह शारीरिक अवयव जो समस्त शरीर मे रक्त सचालन करता है तथा जिसके स्पदन से श्वास प्रक्रिया चलती है। (Heart)
उ०—१ **हिरदै** रोग स्वास अरू खास, डभ क्रिया तिहा पच प्रकास। हुदै लीक अरु वरत्तुल च्यार, दभ अस्थि कै मध्य विचार।
—ध व ग्र
उ०—२ रसना प्रथम मत सबद कु दिढ करि, दूसरै कठ लिव पेम आया। तीसरै सास उसास **हिरदै** उठै, चतुरथै नाभ घट खेल लाया।—अनुभववाणी
उ०—३ राम राम रसना लीया, मास दोय विसराम। हरीया **हिरदै** कठ मैं, सागर वरस मुकाम।—अनुभववाणी
२ मस्तिष्क या चित्त की वह चेतना शक्ति जिसके द्वारा प्राणी के मन मे रागद्वेप, हर्प-शोक, प्रेम आदि की अनुभूतिया होती है तथा जिसके द्वारा वह प्रत्येक बात के औचित्य पर विचार करता है। अन्त करण, चित्त, मन।
उ०—१ साधु मिळै तब ऊपजै, **हिरदै** हरि का भाव। दादू सगति साधु की, जब हरि करै पसाव।—दादूबाणी
उ०—२ **हिरदै** ऊणा होत, सिर धूणा अकबर सदा। दिन दूणा टैंसोत, पूणा व्है न प्रतापसी।—दुरसौ आढौ
उ०—३ द्रढ हिंगळाज दान **हिरदा** मै, ढाबी कवि ढूढाडै। गति अदभूत रमत गिरजा नै, चिरजा अम्रत चखाडै।—मे म
३ ज्ञानेन्द्रिय।
उ०—१ पहली स्रवण द्वितीय रसना, त्रितीय **हिरदै** रमइ। चतुरथी चितन भया, तब रोम-रोम ल्यौ लाइ।—दादूबाणी
उ०—२ प्रथम राम रसना सवरि, दुतीयै कठ लगाय। त्रितीयु **हिरदै** ध्यान धरि, चौथै नाभ मिलाय।—अनुभववाणी
४ वक्षस्थल, छाती, सीना।
५ मुख, जबान।
उ०—छोटै वडै नीच कुल ऊचा, राम कहत सबही नर सूचा। कहा भयौ जै ऊँच कहायौ, राम नाम **हिरदै** नही गायौ।
—अनुभववाणी
६ किसी वस्तु का सार या मर्म, मूल तत्व।
७ अत्यन्त प्रिय-जन, अत्यन्त प्रिय वस्तु।
८ जीवन, प्राण।
९ प्रेम, प्यार।
१० स्मरण-शक्ति।
रू भे—रदि, रदी, रदे, रदै, रदौ, रिदय, रिदि, रिदौ, हृईड, हृईडइ, हृईढौ, हृडदै, हृडदौ, हृरदय, हृरदौ, हिग्र, हिग्रौ, हिडदौ, हिदे, हिदै, हिदौ, हिय, हियडइ, हियडलु, हियडलौ, हियडौ, हियडइ, हियडउ, हियडलइ, हियडलौ, हियडौ, हियरौ, हिरद, हिरदय, हीयौ, हीग्र, हीइ, हीग्रौ, हीय, हीयइ, हीयइ, हीयउ, हीयऊ, हीयडई, हीयडलौ, हीयडौ, हीयडइ, हीयडउ, हीयडौ, हीयरौ, हीयौ, हीरद, हीरदौ, हेये, हयै।

हिरन—१ देखो 'हरिण' (रू भे)
२ देखो 'हिरण्य' (रू भे) (अ मा)

हिरनकस्यप—देखो 'हिरणाकस्यप' (रू भे)
उ०—भक्त कारण रूप नर हरि, धरयौ आप सरीर। **हिरनकस्यप** मार लीनौ, धरयौ नाहिन धीर।—मीरा

हिरनखुरी—देखो 'हिरणखुरी' (रू भे)

हीरनहीरनाछी—स पु—वह घोडा जिसका आधा शरीर हरे रग का तथा आधा शरीर सफेद रग का हो। (अशुभ) (शा हो)

हिरनाख्य—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)
उ०—उस विरयौ वज्जीर दौल कू कहै कुतब्बी। जानिक सुरगै लेन कौ, **हिरनाख्य** मुरब्बी।—ला रा

हिरमच, हिरमची—देखो 'हिडमच' (रू भे)
उ०—हरीया **हिरमच** लायकै, बैठै विरकत होय। विरकत सोई जाणीयै, विखै विरता सोय।—अनुभववाणी

हिरळवत—स पु [स हिरण्यवत्] सूर्य, रवि। (अ मा)

हिरस—स स्त्री [स हिर्स] १ तृष्णा, वासना, लोभ, लालच।
उ०—१ नफस गालिब किब्र काविज, गुस्स मनी एस्त। दुई दरोग **हिरस** हुज्जत, नाम नेकी नेस्त।—दादूबाणी
उ०—२ लोका रजन होत है, मनुख जनम का भग। **हिरस** धका दै जात है, गहेस काचा रग।—ह पु वा
२ ईर्ष्या, द्वेप, विद्वेष।
उ०—जिकौ क्रोध वास्तै **हिरस** रै नै लालच नै अहकार आय दिखाई रा मू होय सौ भुडो छै।—नी प्र
३ डर, भय, खतरा।
उ०—अफरासियाव लमकर आपरा नू फरमायौ मरणै री **हिरस** मैं रहौ तौ उमर घणी पावौ अर मरणै नू तयार रहौ तौ दौलत इजत पावौ।—नी प्र
४ हविस, ख्वाहिस।
उ०—है **हिरस** जोधपुर हरन हाल, खालसौ करन खाली खयाल। किल मारवारि बस करहिं कोय, हम हुस-बस निरबस होय।
—ऊ का
५ कार्य करने की स्पर्धा।

हिराती—स पु—औसत दर्जे के डील-डौल वाला तथा दोहरे हाथ-पैर वाला एक विशेष जाति का घोडा जो गरमी मे नही थकता।

हिराबोल—स पु—एक पौधा विशेष।

हिराळी -देखो 'हरियाळी' (रू भे)

उ० परवत रै सागर मोनै पर, अणगी ही रूप हिराळी गी। ही हिगी गुळाबी वरसाती, घरौ घरौ भर आळी गी। मानाळा

हिरावड़ौ वि (स्त्री हिरावड़ी) हरावल।

उ०- बिलवाळा भर मतवाला गी सगत, सारै देश में ना गी। गारजा री सा भोजर आड़'र **हिरावडे** पड़ूगो गी ... गळे ग नैर वाग लिगी है। वगतोग

हिरावळ देखो 'हरावळ' (रू भे)

हिरासत स स्त्री [अ] १ कैद, हवालात।

२ निगरानी, चौकीदारी, पहरा।

३ नजरबंदी, नजर कैद।

४ निरीक्षण, जांच।

५ देख-रेख, चौकसी।

६ गिरफ्त, कब्जा।

हिरिण १ देखो 'हरण' (रू भे)

२ देखो 'हिरण' (रू भे)

३ देखो 'हरिण' (रू भे) (ह ना मा)

हिरियौ देखो 'हरियौ' (रू भे)

उ० हरीया रूंखड़ा गी भिरू, पेग पीपारा मित। ता हिरिये री वालवू, मेट हमारी चित। अनुभववाणी

हिरिम--वि [स ह्रीमान्] १ लज्जावान, लज्जाशील।

२ शिष्ट, सभ्य।

हिरौळ---देखो 'हरावळ' (रू भे)

हिलणौ, हिलबौ क्रि अ [स हिल्] १ चस्का लगना, लगाव होना, लगना।

उ०- -१ हरि सुख सागर पर हरखा, कीच रह्या लपटाय। जन हरिदास ता जीव कूं, **हिलीयौ** हाडी खाय। ह पु वा

उ० २ हिळता हिळना हाग मिळी मत सुख सू आई। मिळ मुरधा मनवार करौ मन बुरी कमाई। ऊ का

उ० ३ भाव अधर न आवै घणा नगेरी, ग्रोगणि आवै नहीं दळै। करगा तुफ कटारी कटका, गज्का हिळी पठाण मिळै।

– करणसिंघ चहुवाण रौ गीत

२ आदी होना, निर्भर होना, प्रवृत्ति का झुकाव एक ही तरफ होना।

उ०—१ वूठा बरसै मेह अर दीठा रावै चोर। **हिळ्योड़ौ** वळै हवेली आवैला।—फुलवाडी

उ०- २ साचरा लागा कै कोकर कुचमादी नै पकडै। डोफरी नै तौ धारै कोनी। **हिळ्योडौ** घडी-घडी अठी हज गावै।

—फुलवाडी

३ अनुरक्त होना, आशक्त होना, आकर्षित होना।

४ घुसना, पैठना।

हिळणहार, हारौ (हारी), हिळणियौ वि०।

हिळिओड़ौ, हिळियोड़ौ, हिळ्योड़ौ भू० का० कृ०।

हिळीजणौ, हिळीजबौ भाव वा०।

हेळणौ, हेळबौ रू० भे०।

हिलणौ, हिलबौ क्रि अ [स हिल्] १ चलायमान होना, चलना।

उ० गनाहै भमती, हिरै पौन हली। गडगै अतेरी, हिली रमाल देरी। रा रू

२ स्थिर न रहना, हिलना, डुलना।

उ० लहणा चलारगा वाळो गी। मोरा गाभै पाणी री कोरी मट की। उभाजो डील। पग नै लिगरी री गळाई हिल्या नी कोई टुगा। फुलवाडी

३ चलना, आना, सरकना, अपने स्थान से हटना, इधर उधर होना, खिसकना।

उ० गाडा जाणी गुडवा ज्यूं, उण रा नी भागी नारै हिली-जियौ ई कोनी। फुलवाडी

४ कांपना, धूजना।

उ० नाणचा भाळा परिक्रमा रा ही गुमाण-गाणी हा जठै रा जठै ई छूटग्या। नारी कुरळाट सुणनै आभौ हिलण लागी। फुलवाडी

५ झूलना, लहराना।

उ० 'रतना' नै मिलाई प्रगट हुई लाज भी सू भागी, पायल बिछिया बीन लेवी कटि मेखला बाजी। छिब नै हिलिया, हार हमेल हिलिया। छतिया थहरै गैरा छूट छहरै। कुचा पर फाबी अलकारी बोकरा, नाभसा कुवा जाणी मदन महावत रा हौज जाकरा। र हमीर

६ अगकर न रहना, विचलित होना, डिगना, चचल होना।

७ कोई हरकत होना, डिगना।

८ चचल होना।

९ फिरना, घूमना।

हिलणहार, हारौ (हारी), हिलणियौ वि०।

हिलिओड़ौ, हिलियोड़ौ, हिल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हिलीजणौ, हिलीजबौ—भाव वा०।

हुलणौ, हुलबौ रू० भे०।

हिलब-स स्त्री —एक गुफा विशेष।

उ०—मुसलमाना रै किताबा मै लिखै है—अगरेजा रै आगै रूम रौ पातसाह भाजि **हिलब** मै जावसी, पछै इमाम महदी हुसी, कित्ताहीक वरस पातसाही करसी, पछै अगरेजा रै हाथ औ सहीद पछै कयामत हुसी। बा दा ख्यात

हिलबी—देखो 'हिलवी'।

हिलम-स स्त्री [स हिल्म] १ भल मनसाहत, भलाई।

उ०- काई छै घणी **हिलम** नरमी जिको जहर दै तोनू तिण नू मिस्त्री देय धाम मत ना रहै।—नी प्र

२ गंभीरता, धीरता, शान्ति।
३ सहिष्णुता, सहनशीलता।
४ विवेक।

हिळमिळ-स स्त्री—१ मिलने-जुलने की अवस्था या भाव।
२ परस्पर सहयोग, किसी उद्देश्य या कार्य के लिये एक साथ होने की दशा।
उ०—१ सत् की नाव सतगुरु खेवटिया, सतसग सुगरा पाई। निरमळ सत समभ कौ मारग, **हिळमिळ** नाव चलाई।
—श्री हरिराम जी महाराज
उ०—२ तन की ताप मिटी सुख पाया, **हिळमिळ** मगळ गाया जी।—मीरा
३ प्रेम और मित्रता से एक साथ रहने की अवस्था।
उ०—१ सात सहेलिया रै भूलरै औ पणिहारी ए लौ। **हिळमिळ** गई रै ताळाव वालाजी औ।—लो गी
उ०—२ मिनखा जन्म अमोलक मूरख पामर फेर न पावै। **हिळमिळ** हसणौ बेवळ बसणौ ओ मौसर कद आवै।—ऊ का
४ स्नेह, प्रेम।
उ०—मजस अँजन करै करै, करै पोसाक सुरगी। कुटुब स् **हिळमिळ** करै, दुनि दिस दोय दुरगी।—अरजुनजी बारहठ
५ घुल-मिल जाने की स्थिति, अवस्था या भा भाव।

हिळमिळणौ, हिळमिळबौ-क्रि अ—१ प्रेम से हिल-मिल जाना, भेद-भाव रहित प्रेम होना, एकाकार होना।
उ०—१ हिवडै री कळिया खिलगी, काया नै ममता मिळगी। मनमधु री सरस हिलोरा, बै इकरस मैं **हिळमिळगी**।—सकुतळा
उ०—२ महात्मा आत्मा ए परम परमात्मा **हिळँमिळँ**। भिरौ जीवौ ज्योती भगमगत ज्योती भिळमिळै।—ऊ का
२ मित्रता या दोस्ती होना।
३ परस्पर सहयोग के लिये एकत्र होना।
उ०—आखती-पाखती रै सै वना रा जीव-जिनावर इण जगळ मै आय बसग्या। वौ नाहर वारौ साचैलौ राजा बण्यौ। जगळ रा सै कायदा-कानून बदळ दिया। सगळा जिनावर **हिळमिळ** नै रेवण लागा।—फुलवाडी
४ मिल-जुलकर चलना।

हिळमिळियोडौ-भू का कृ—१ भेदभाव रहित प्रेम हुवा हुआ, प्रेम से हिल-मिल गया हुआ, एकाकार हुवा हुआ। २ मित्रता या दोस्ती हुवी हुई। ३ परस्पर सहयोग के लिये एकत्र हुवा हुआ। ४ मिल-जुल कर चला हुआ।
(स्त्री हिळमिळियोडी)

हिलमोचिका, हिलमोची-स पु [स हिलमोचिका] १ एक प्रकार का पौधा विशेष।
२ एक प्रकार का शाक।

हिलराणौ, हिलराबौ—देखो 'हुलराणौ, हुलराबौ' (रू भे)
हिलराणहार, हारौ (हारी), हिलराणियौ—वि०।
हिलरायोडौ—भू० का० कृ०।
हिलराईजणौ, हिलराईजबौ—कर्म वा०।

हिलरायोडौ—देखो 'हुलरायोडौ' (रू भे)

हिळवळणौ, हिळवळबौ—देखो 'हळवळणौ, हळवळबौ' (रू भे)
उ०—पदमिणि रखवाळ पाइदळ पाइक, **हिळवळिया** हलिया हसति। गमै गमै मदगळित गुडता, गात्र गिरोवर नाग गति।
—वेलि

हिळवळियोडौ—देखो 'हळवळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हिलवलियोडी)

हिळवाळियौ-वि—१ उत्तेजित, उतावला।
२ घबडाया हुआ, भयभीत।
३ हडबडाया हुआ, जल्दी किया हुआ।

हिलवी-स पु—१ हलब जाति का मुसलमान।
२ हलब देश का निवासी।
३ एक प्रकार का दर्पण विशेष।
वि—१ हलब देश का, हलब देश सम्बन्धी।
२ हलब का।
रू भे—हिलबी।

हिळा—देखो 'इळा' (रू भे)
उ०—जग जळध जरमन जहर, **हिळा** प्रजाळण हार। सुत 'तखतेस' महेस रौ, इळ पातळ अवतार।—किसोरदान बारहठ

हिळाणौ, हिळाबौ-क्रि स [हिळणौ' क्रि का प्रे रू] १ चस्का लगाना, लगाव पैदा करना, लगाना।
२ आदी करना, निर्भर करना।
३ अनुरक्त करना, आशक्त करना, आकर्षित करना।
४ घुसाना, पैठाना।
हिळाणहार, हारौ (हारी), हिळाणियौ—वि०।
हिळायोडौ—भू० का० कृ०।
हिळाईजणौ, हिळाईजबौ—कर्म वा०।
हिळावणौ, हिळावबौ—रू० भे०।

हिलाणौ, हिलाबौ-क्रि स ['हिलणौ' क्रि का प्रे० रू०] १ चलायमान करना, चलाना।
२ स्थिर न रहने देना, हिलाना-डुलाना।
उ०—मोट्यार अर पोठा थापती छोरिया सगळौ गाम एक साथै इज माथा **हिलाय नै** गुणगुणावण लाग जावै।—अमरचूनडी
३ चलाना, भेजना, सरकाना, अपने स्थान से टालना, इधर-उधर करना, खिसकाना।
४ कपाना, धूजाना।
५ झूमने व लहराने के लिये प्रेरित करना।

६ जागकर न रहने देना, विचलित करना, डिगाना, चंचल करना।
७ कोई हरकत करना, हिलाना।
८ चचल करना।
९ फिराना, घुमाना।
हिलाणहार, हारौ (हारी), हिलाणियौ—वि०।
हिलायोड़ौ— भू० का० कृ०।
हिलाईजणौ, हिलाईजबौ—कर्म वा०।
हलाणौ, हलाबौ, हलावणौ, हलावबौ, हिलावणौ, हिलायबौ, हीलाणौ, हीलाबौ रू० भे०।

हिळायोड़ौ भू का कृ १ परचा लगाया हुआ, लगाव पैदा किया हुआ, लगाया हुआ २ आदी किया हुआ, निर्भर किया हुआ ३ अनुरक्त किया हुआ, आसक्त किया हुआ, आकर्षित किया हुआ ४ घुराया हुआ, पैठाया हुआ।
(स्त्री हिळायोड़ी)

हिलायोड़ौ भू का कृ १ चलायमान किया हुआ, चलाया हुआ २ नचाया हुआ, भेजा हुआ, सरकाया हुआ, अपने स्थान से टाला हुआ, इधर-उधर किया हुआ, खिसकाया हुआ ३ कपायमान किया हुआ, धुजाया हुआ ४ झूलना व लहराने के लिये प्रेरित किया हुआ ५ जागकर न रहने दिया हुआ, विचलित किया हुआ, डिगाया हुआ, चंचल किया हुआ ७ कोई हरकत किया हुआ, हिलाया हुआ ८ चचल किया हुआ ९ फिराया हुआ, घुमाया हुआ।
(स्त्री हिलायोड़ी)

हिलारियौ- स पु- बबूल की फली।

हिलारी—स स्त्री – देखो 'हिलारियौ' (पु)
उ०— बीदणी रै सागै पाच डावडिया ही। वै तौ सगळी डण रोजडी री छीया मैं जाजम ढाळ बैठगी। पाखती ई अेक ताठी बावळियौ हौ। पीळै लूगा लूगोडौ। रूपा रै उनमान धोळी हिलारिया। दूजोड़ा जानी उण बावळिया री छीया ढाबती।
फुलवाड़ी

हिलारौ स पु—१ किसी वस्तु, पदार्थ या बोझ की वह मात्रा जो एक बार मे ढोई जाती है।
२ उक्त प्रकार से ढोवाई का क्रम।
३ उक्त ढोवाई के प्रत्येक क्रम मे लगने वाला समय।
४ उक्त प्रकार से ढोवाई के लिये दिया जाने वाला पारिश्रमिक।

हिळावणौ, हिळावबौ— देखो 'हिळाणौ, हिळाबौ' (रू भे)
हिळावणहार, हारौ (हारी), हिळावणियौ—वि०।
हिळाविओड़ौ, हिळावियोड़ौ, हिळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हिळावीजणौ, हिळावीजबौ—कर्म वा०।

हिलावणौ, हिलावबौ—देखो 'हिलाणौ, हिलाबौ' (रू भे)
उ०—१ म्हारी बात उणारै हीयै ढूकगी—घाटकी हिलावतौ नागी अबै राज सिनाम करूला कागज ई नवा लिखूला।
अमरचूनडी
उ० २ सात करतै तूटगी कुण रो है? चोकरियो माटी **हिलावतौ** बोल्यौ धोलौ री बेद। फुलवाड़ी
उ० ३ थोडी ताळ ताई वी घरवाळी री देह माथै मूंड **हिलावतौ** रह्यौ। पछै उठा रा तूटता तागा रै नेग म्हाली। फुलवाडी
उ० ४ बींदणी माटी **हिलावतौ** कैवण लागौ - थारी आ बात रही मान्या ईं नी मानूला। फुलवाडी
हिलावणहार, हारौ (हारी), हिलावणियौ—वि०।
हिलाविओड़ौ, हिलावियोड़ौ, हिलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हिलावीजणौ, हिलावीजबौ—कर्म वा०।

हिळावियोड़ौ देखो 'हिळायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हिळावियोड़ी)

हिलावियोड़ौ देखो 'हिलायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हिलावियोड़ी)

हिळियोड़ौ भू का कृ १ परचा लगा हुआ, लगाव हुवा हुआ, लगा हुआ २ आदी हुवा हुआ, निर्भर हुवा हुआ ३ अनुरक्त, आसक्त या आकर्षित हुवा हुआ ४ घुसा हुआ, पैठा हुआ।
(स्त्री हिळियोड़ी)

हिलियोड़ौ भू का कृ १ चलायमान हुवा हुआ, चला हुआ २ स्थिर न रहा हुआ, हिला हुआ, झूला हुआ ३ नाचा हुआ, गया हुआ, सरका हुआ, अपने स्थान से टला हुआ, इधर-उधर हुवा हुआ, खिसका हुआ ४ कापा हुआ, धूजा हुआ ५ झूला हुआ, लहराया हुआ ६ जागकर न रहा हुआ, विचलित हुवा हुआ, डिगा हुआ, चचल हुवा हुआ ७ हरकत हुवा हुआ, हिला हुआ ८ चचल हुवा हुआ ९ फिरा हुआ, घूमा हुआ।
(स्त्री हिलियोड़ी)

हिळियौ-मिळियौ वि घनिष्ठ परिचित।

हिळीमिळी, हिळीमीळी—वि स्त्री घनिष्ठ प्रेम से बनी हुई, स्नेह युक्त, प्रेम युक्त।
उ० इम मारवणी कुमरी प्रतै, समभावी सुभ बाण। हिळी-मीळी हित हेजसु, कीधी सुख सुजाण। ढो मा
स स्त्री स्नेह या प्रेम युक्त होने की अवस्था या भाव।

हिलूर— देखो 'हिलोर' (रू भे)
उ०— १ है गै हिलूर आसुर हुनै पूर बगत्तर पक्खरा। वन अगन सवायै सग विध बळ उतग गीरा वरा। —रा रू
उ०—२ चापावत करनोत साहरा कै गुर। एक ओर अदा जोर सागर हिलूर।— रा रू

हिलूसणौ, हिलूसबौ— देखो 'हुलसणौ, हुलसबौ' (रू भे)
उ०— आडा डूगर, दूरि घर, वराइ न जाणइ भत्त। सज्जण-सवई कारणइ, हियउ हिलूसइ नित्त।—ढो मा

हिलोडणौ, हिलोडबौ–क्रि स [स उल्लोलनम्, उल्लोडनम्] १ जल या किसी द्रव पदार्थ को हाथ, लकडी या किसी वस्तु से हिलाना, तरंगित करना, विलोडित करना ।
२ द्रव पदार्थ को मथना, विलोडित करना ।
३ लहराना, डुलाना ।
४ विचलित करना, तितर-बितर करना । (सेना)
५ तरंगित करना ।
६ चलायमान करना, चलाना ।
हिलोडणहार, हारौ (हारी), हिलोडणियौ—वि० ।
हिलोडिग्रोडौ, हिलोडियोडौ, हिलोड्योडौ—भू० का० कृ० ।
हिलोडीजणौ, हिलोडीजबौ—कर्म वा० ।
हलोरणौ, हलोरबौ, हिलोरणौ, हिलोरबौ, हिलोलणौ, हिलोलबौ, हिलोहणौ, हिलोहबौ, हिलौळणौ, हिलौळबौ, हीलोळणौ, हीलोळबौ, हीलौळणौ, हीलौळबौ, हौलोळणौ, हौलोळबौ—रू० भे० ।

हिलोडियोडौ–भू का कृ—१ हाथ, लकडी या किसी वस्तु से तरंगित किया हुग्रा (द्रव पदार्थ) २ मथा हुग्रा ३ लहराया हुग्रा, डुला हुग्रा ४ तरंगित किया हुग्रा ५ चलायमान किया हुग्रा ६ विचलित या तितर-बितर किया हुग्रा । (सेना)
(स्त्री हिलोडियोडी)

हिलोडौ—देखो 'हिलोळौ' (रू भे)
उ०—पग धूजण लागा, माथौ घूमण लागौ । हीयै में हिलोडौ उठियौ ग्रर ग्राख्या ग्राडी रात ग्रायगी ।—वरसगाठ

हिलोर–स स्त्री—१ उमग, ग्रानन्द की लहर ।
उ०—१ वालभ एक हिलोर दै, ग्राइ सकइ तउ ग्राइ । बाहडिया बै थक्किया, काग उडाइ उडाइ ।—ढो मा
उ०—२ हिवडै री कळिया खिलगी, काया नै ममता मिळगी । मनमधु री सरस हिलोरा, बै इकरस मैं हिळ मिळगी ।—सकुतळा
२ तरग, लहर ।
उ०– घेर-घुमेर खेजडी री जाडी छीया । साम्ही हब्बा-होळ हिलोरा भरती नाडी । कमोद री जात निरमळ पाणी ।
—फुलवाडी
३ झौका, झौला ।
४ प्रवाह ।
५ कल्लोल, क्रीडा ।
रू भे—हलोर, हिलूर, हिलोळ, हिलोल, हिल्लोण, हिल्लोल, हीलोळ, हीलोळ ।

हिलोरणौ, हिलोरबौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडबौ' (रू भे)
हिलोरणहार, हारौ (हारी), हिलोरणियौ—वि० ।
हिलोरिग्रोडौ, हिलोरियोडौ, हिलोरचोडौ—भू० का० कृ० ।
हिलोरीजणौ, हिलोरीजबौ—कर्म वा० ।

हिलोरव–स पु—१ डोलने, झूलने या झोका खाने की क्रिया या भाव ।
उ०—सात मै पाताल वासग नागरै मायै टपूकडा खाइ नै रहिग्रा छै । त्यारी सौरभ री वास्तै तेत्रीस कोडि देवता सरग सू हेलूस नै उतरै देवासुरा रा विवाण हिलोरव खाइ नै रहिग्रा छै ।
—रा सा स
२ चक्कर, भावर ।
३ तरग, लहर ।
४ समुद्र ।

हिलोरियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हिलोरियोडी)

हिलोळ, हिलोल—देखो 'हिलोर' (रू भे) (डिं को)
उ०—१ ग्रनग न ग्रग उमग इलोल, हरी पद सगम गग हिलोल । निराळिय नीति उदगळ नाय, मुनी किय मगळ जगळ माय ।
—ऊ का
उ०—२ भला ग्रगराज चढी छळ भूप, रच्यौ रण तीरथ राज सरूप । हाथ्या मवताहळ गग हिलोळ, छिलै रत्रधार सरस्वति छोळ ।—मे म
उ०—३ घडाळ नौवती घुरत, जैदराज नागर । हिलोळ मैं किलोळ होत, सद्द जेम सागर ।—सू प्र
उ०—४ म्हारा जीवण मैं सुख री ग्रा एक ई हिलोळ ग्राई, इणनै ई थू सुखावणी चावै ।—फुलवाडी
उ०—५ सरसा सरोवर विमल जल सै भरै हैं भरपूर । लख लोल वरत हिलोल हरसित हस पक्षि पडूर ।—वि कु

हिलोळणौ, हिलोळबौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडबौ' (रू भे)
उ०—१ मैंगळ कुटब सहत उनमत्त रै, ग्राब हिलोळ चोळ की ग्रतरै । धूम सुणै चख ग्राग धकतरै, जाजुळ ग्राहु जागीयौ जतरै ।
—र ज प्र
उ०—२ हिलोळि छडाळ ग्रहै चद्रहास । तछै घण मीर कलम्म तरास ।—सू प्र
उ०—३ चद्रमानै कुण सीतल करइ, ग्रग्निनै कुण दाह करइ । दूध नै कुण छोळै छै, समुद्र नै कुण हिलोळै छै ।—रा मा स
उ०—४ हेजमा हिलोळ हथा तेगा उछाटीलौ हलै, साथ वीरा चरौ चडी चाटीलौ सबध । वेध धकी जगा मेळै बारगा वाटीलौ बीद, केकाणा कोमखी बागौ ग्राटीलौ कमध ।
—हुकमीचद खिडियौ
उ०—५ रावण साह तणा दळ रोळै, जोध हिलोळै जुवाजूग्रौ । हालियौ 'सिंग्रौ' झापा भरि हणमत, हेक डगाळ बगाळ हुग्रौ ।
—जोगीदास चारण
हिलोळणहार, हारौ (हारी), हिलोळणियौ—वि० ।
हिलोळिग्रोडौ, हिलोळियोडौ, हिलोळ्योडौ—भू० का० कृ० ।

हिलोळीजणौ, हिलोळीजबौ कर्म वा० ।
हिलोळियोड़ौ देखो 'हिलोळियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. हिलोळियोड़ी)
हिलोळौ सं पु [सं हिल्लोल] १ आनन्द की लहर, उमंग ।
उ० १ जिन राग रंगु रंग राजनी, हीयौ हिलोळा लेत । आवौ आज अजोनी मेरै, अबळा अरज करेत । अनुभववाणी
उ० २ पपिहा बोलत पीव कहै गहै के कियौ, मारी नै मति मार हिलोळा लै हियौ । लागै दाभै दूणा जळता हुव जीव री, वैरी बोल न बोल पपीहा पीव री । गिनवतरा पान्हावत
२ लहर, तरंग ।
उ० - १ नवकारी नियोडा खरडिया री असल कसूंबी केसर रै उनमान हिलोळा खाय रह्यौ । - अमरचूनड़ी
उ० २ मावदरसारण सू भी आ बात पक्की व्है के मारवाड़ री ठौड़ कदै ई सागर हिलोळा लेवतौ हौ । वाणियां रै पागनी रेतुड़ रै धोरा मार्थ रमतै टाबरा नै अजु ताई कदैई गुळगुलिया तौ कदैई सीप अर संख मिळै है । चितरांम
३ उमंग, जोश, उत्साह ।
४ झोका, भौंका ।
५ गति, चाल, प्रवाह ।
६ आक्रमण हेतु तैनात होने की अवस्था ।
उ०—१ सूवर सूतौ नींद मैं भुडंग पहरा देत । उठौ सूवर नीवा ळका फौज हिलोळा देत ।
उ०—२ फोजा लै हिलोळा ओळा दोळा अव्व सिंधू फूटा । महा गफ्फ गोळा बक्क तूटा जक्क माग ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
७ घबराहट का दौरा, भय का संचार ।
उ०—'चांपै' परतक कटक चलाया, ऊपरि खान तरौ फिर आया । दमगळ मचै निवाबा दोळा, हुवा खळा फिर प्राण हिलोळा ।
—रा रू
८ धक्का, आघात ।
९ प्रहार, चोट ।
उ०—सारा मार परखवै सची, खांन तहव्वर वागां खची । हेमाण विस था मारै हिलोळौ, आहाडौ कीधौ दळ ओळौ ।—रा. रू
रू भे - हलोळौ, हिलोडौ, हीलेडौ, हीलोळौ ।
हिळोहणौ, हिळोहबौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडबौ' (रू भे)
उ०—पुळिंद प्रीति खअवट पारिखतै, जीति जौति सम्रहर जस जीति । सोहै तोहि हिळोहि गोडा सरव, चढियौ रूख सारग रधि चीति ।—वीरमदै गौड़ रौ गीत
हिळोहणहार, हारौ (हारी), हिळोहणियौ— वि० ।
हिळोहिओडौ, हिळोहियोडौ, हिळोह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हिळोहीजणौ, हीळोहीजबौ—कर्म वा० ।
हिलोहळ—स पु [स हिल्लोधर] १ समुद्र, सागर । (ना डिं को)
उ० १ भमग भचळ मिल 'जोध' भभिरमा, सावज कुळ पैतीस सीर । हरि सागरी हवै हिलोहळ गाजियौ गनाग गेरगिर ।
किसानौ आढौ
उ० २ मेर गिर हूल गिरवर किसौ गीळजै । हिलोहळ गीठ सरवर किसौ होग । अज्ञात
२ गगन, त्रिलोचन ।
उ० 'जसै' भलि कोप भरै जगजाळ, तठै गिज काठिय खाग उताळ । हिलोहळ रोद चहनळ होय । दळा खग दूक करै दोय दोय । सू प
३ लहर, तरंग ।
उ० मेरी कविराज जिग बगत महाराजा की राजसभा कै बीच भाति भाति गुण गावती है । विद्यानागरी के हिलोहळ दरियाव का सा हिलोहळ करमावतै है । सू प्र
वि पूर्ण, परिपूर्ण ।
उ० माईदान दीपगा सबै, पालन जामा ठोम पर । ओ दरबार सिरै हिलोहळ, चाकर रहै चळ विचळ मिरा । कपूत री गीत
रू भे हिलोहिरा, हीळाहल ।
हिलोहियोड़ौ देखो 'हिलोळियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हिलोहियोड़ी)
हिलोहिळ देखो 'हिलोहळ' (रू भे)
उ० बादळ छाया देस में, पूनी, नदियां नीर हिलोहिळ रे । बादल चमकै बीजळी, चमक चमक भड़ लाय । रा गी
हिलौ देखो 'हीलौ' (रू भे)
हिलोळणौ, हिलोळबौ देखो 'हिलोडणौ, हिलोडबौ' (रू भे)
उ० बौळी चमगमा मजीठ रौळी नखमी धूम रै बागां, पैना तीर गोळी सांग लागा आरपार । हीळी फागा जेम खागा उनमी 'पीथळै' हाथै, हिलोळी फिरगी सेना पैतीस हजार । - जसौ आढौ
हिलौळियोड़ौ -देखो 'हिलोळियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हिलौळियोड़ी)
हिल्लोर देखो 'हिलोर' (रू भे)
हिल्लोळ देखो 'हिलोर' (रू भे)
ऊ० - वधै सूर सातूर फोजा अथागौ, जळानिद्र उच्छेदियौ वध जागौ । महाराज सेन्या तहै राज मग्गै, वधै बाजुवा लोल हिल्लौळ वग्गै । रा रू
हिव—१ देखो 'हिय' (रू भे)
२ देखो 'हिव' (रू भे)
हिव- क्रि वि [सं अधुना] १ अब, अभी ।
उ०—१ कासन राखि हिव हू तू करतौ, धरणीधर ममता मन धरतौ । तूभ बिनै मत दै धू तारण, भूप ससार काढ सब कारण ।—ह र
उ०—२ एक वीनती हिव अम्हतणी, संभळि तू सोवनगिरि-धणी ।

कुअरि तुम्हारी अपछर जिसी, पिंगळराय-तरणइ मनि बसी ।
—ढो मा

उ०—३ वदनारविंद गोविंद वीखियै, आलोचै आपौ-आप सू । हिव रुखमणी कतारथ हुइस्यै, हुओ कतारथ पहिलौ हू ।—वेलि

२ इसके बाद, तदन्तर ।

उ०—१ रीरोया करता गउत हथियार हलइ, घाइ घूमिया सुभट ढळइ । पडिया पाइक न ऊमसीयइ । हिव हाथिया आस्वासीयइ ।
—ग सा स

उ०—२ कोई न त्रिहु जगि हुईय नारि हिव पछी कोइ न होइमि ए । एक महेलीय पच भग्तार सतीय सिरोमरणी गाई ए ।
—सालिभद्र सूरि

रू भे—हिव, हिवइ, हिवा, हिवि, हिवें, हिवे, हिवं, हिवै ।

हिवइ—देखो 'हिव' (रू भे)

उ०—१ वळतउ चाचिगदै वीनवइ, रखै कटक लै अखउ हिवइ । नही सोनगिरि केहनइ पाडि, जास्यइ आपरण ही गढ छाडि ।
—का दे प्र

उ०—२ हिवइ रितिराउ कहता वसत रिति सरूपियौ जोवन मु आपणा नाना प्रकार गुणगतिमति सहित यौ परिगह लै आयौ ।
—वेलि टी

हिवकै—क्रि वि—अब की, इस बार ।

उ०—मोनु परणीया वरस २ हूआ । पिण म्हारी मा मोनु मेल्हती नहो । हिवकै इण रजपूत आइ नै गाढ कीयौ, ताहरा मोनु मेल्ही ।
—तीडी खरळ री वात

हिवडउ—देखो 'हिवडौ' (रू भे)

उ०—मारू-मारू कळाइया, उज्जळ-दती नारि । हमनउ दै हुकार-डउ, हिवडउ फूटणहारि ।—ढो मा

हिवडलौ—देखो 'हिवडौ' (रू भे)

उ०—पेटडलौ मूमल रौ पीथळियै रौ पान ज्यू हाजी रे । हिवडलौ हतीयारी री सचै ढाळीयौ, मारी नाजुकडी मूमल ।—लो गी

हिवडा, हिवडा, हिवडै-क्रि वि—अभी, इस समय ।

उ०—१ हिवडा तौ जीव पचै रे घणौ, कोई पार नही रे दुखा तणौ । तेर तिण गाठी लागै लारौ ।—जयवाणी

उ०—२ कह्यौ—हिवडा री घडी माहै जिकू मागीस सू पावीस ।
—मयणी चारणी री वात

रू भे—हिवडा, हिवडा ।

हिवडौ—स पु [स हृदय] १ मन, दिल, चित्त, हृदय, अन्त करण ।

उ०—१ वीसारिया न वीसरइ, चितारिया नावत । मारू सायर लहर जू हिवडै द्रव काढत ।—ढो मा

उ०—२ ओ जी म्हारै हिवडै रा जीवडा । मत ना सिधारौ पूरब री चाकरी जी ।—लो गी

उ०—३ थारी माता कौ हिवडौ ऊकळै, बा तौ नैणा नीर ढरकावै यै म्हारै हरियै वन री कोयली ।—लो गी

उ०—४ म्हानै गुर मिळिया अविनासी दई ग्यान की गुटकी । लगी चोट निज नाव धणी की, म्हारै हिवडै खटकी ।—मीरा

२ वक्षस्थल, छाती, सीना ।

उ०—१ थारौ हाथ म्हारै हिवडै ऊपर राख । पेम रस महदी राचणी ।—लो गी

उ०—२ लीनी हजा मारू हिवडै लगाय । आसुडा तौ पूछ्या हरियै रूमाल सू जी म्हारा राज ।—लो गी

उ०—३ हिवडै हास घडाय भवर म्हारै हिवडै नै हास घडाय, हौ जी म्हारौ तिमण्यौ हीरा जडाय भवर म्हानै खेलण दौ गणगोर ।
—लो गी

उ०—४ दूजै दिन ई धणी सू छानै-ओलै आपरै हिवडा रौ हार अेक सुनार नै बेच दियौ ।—फुलवाडी

उ०—५ हिवडै ऊपर हार, म्हारै गळै मे डोरौ रै । कसूबडै री कासळी नै डील गोरौ रै । लूअर लेवरण दै ।—भवरलाल सुथार

३ वक्षस्थल के नीचे, शरीर के अन्दर स्थित अवयव, जो शरीर मे रक्त सचार करता है ।

उ०—हा हा करू हिवै कासू रे, माहरौ हिवडौ फटै मास ।
—जयवाणी

रू भे—हवडौ, हिबडौ, हिवडउ, हिवडलौ, हिवडौ ।

हिवडा, हिवडा—देखो 'हिवडा' (रू भे)

उ०—१ आगउ अह्म वरासउ वीतउ, हिवडा छळ नवि छाडू । असपतिना दळ साम्हउ चालयउ, लेई ऊधाडउ खाडू ।
—का दे प्र

उ०—२ राउ भणइ तेहनी तम्है हिवडा काई जाणउ सार । भेठि भणइ कइ तू ह जि जाणइ कइ जाणइ करतार ।
—हीराणद सूरि

हिवडौ—देखो 'हिवडौ' (रू भे)

हिवार, हिवारु, हिवारु, हिवारू, हिवारू-क्रि वि—अभी, इस समय, अबार ।

उ०—१ ताहरा बीजाणद कहियौ—भला । हिवार री वरिया वही जावै छै सू छै मास माहै भरि लेयीस ।—सयणी री वात

उ०—२ हुकम हुवै तौ काई खारौ मीठौ गावा, हुकम हुवै तौ परमेस्वर-रौ जस गावा । आप कह्यौ—हिवारू परमेस्वर-रौ काई छै ।—प्रतापमल देवडा री वात

उ०—३ म्हारै बाप री छाह म्हारौ वचन छै, हिवारू मागै सू पावै ।—सयणी री वात

उ०—४ सीह हिवारू काची व्याधि छै । परहौ मरौ म्हानु कोई दुख न सुख ।—देवजी बगडावता री वात

हिवा, हिवि, हिवें, हिवे, हिवे, हिवै—देखो 'हिव' (रू भे)

उ०—१ पडिया पाइक न ऊसासीइ, हिवा हाथिया आ[illegible]सायइ,

उधा मउड पडइ, रेवत रडवडइ, पडिगा पचागरणी परि हाकारइ''''''''' । व स

उ०— २ हिथि गुणलिमानां गुण साभगउ । व स

उ०- ३ मोरा ती बोरवा गुनै, जग री राख्यो मान । हियैं परगु सरणी पदमणी, मारु तुज्झ गुमान । प. च चौ

उ० ४ हा हा करइ हियै कासु रे । माहरी हिवडी फाटै पा सू । जगमाणी

उ० - ५ इहि विचि की संधि सु वयसंधि कहावै । जैसैं सुगिणी । न सोवै छै न जागै छै । आगै परा पल चालती होरी । पिणि हियै बैसंधि को इसी प्रथम स्थान ताकी इसी परिखै ।- वेलि टी

उ०—६ हियै जगदेवजी हवेली आडै लेनै पाछा घोडा री ठीड आवै तो चावडी, घोडा दीसै नहीं नै रथ रा खोज दीसै ।
-जगदेव पंवार री बात

उ० ७ गुजा वलै आलिंग सु घ्रम, बोलै बादल मारी जग । बिली सु चढि आयो सांह हियै, भिड़तो भागै मति जाय । - प च चौ

हिस स स्त्री [स हिस्] १ पशु पक्षी या किसी जानवर को हांकने, डुत्कारने की क्रिया या भाव ।

२ उक्त क्रिया के लिये मुह से श्वास को दबाकर निकालते हुए किया जाने वाला शब्द, ध्वनि, हुरट ।

उ०—जवार रा बाणुका मूठी सू खूनता ई हरानी । पछै कबूत्रा चुगता जगा हगती । वांनै हिस हिस करनै उडावती । किल-कारिया करती । कूदती-फांदती रमती । —फुलवाडी

[अ हिस] ३ संवेदन, एहसास, अनुभव ।

४ संवेदन शक्ति, अनुभव शक्ति ।

हिसाट, हिसाटि—देखो 'हीस' (रू भे)

उ० —ढोल तरणै ढमढिमाट, गरह तरणै गुमगुमाटि, रणसुर तरणै रण रणाटि, घोडा तरणै हिसाटि, गजेंद्र नै गडगडाटि, राजा श्रीदसारणभद्र चालउ ।- व स

हिसाब—स पु. [अ] १ वह विद्या जिसमे, विभिन्न प्रकार की संख्याओ की जोड, बाकी, गुणा, भाग करके कुछ निश्चित परिणाम निकाला जाता है, गणित विद्या ।

ज्यू—म्हनै हिसाब आवै, थू म्हनै ठग नी सकै ।

२ उक्त विद्या के अनुसार किसी वस्तु की कीमत का निर्धारण ।

उ०—कामदारा ! सईसा रा तौ हीया फूटगा । आटा मैं लूग जित्ती खोट तौ खटै । वै तौ साव धाडा ई मारण लागग्या । तबेला रौ आधा सू बत्तौ दाणौ डकार जावै । म्है लीद जोखन सब हिसाब कर लियौ ।—फुलवाडी

३ व्यापार मे आय-व्यय का रखा जाने वाला विवरण, ब्यौरा, लेखा ।

उ०—१ पचास बरसा मैं कदैई भूल-चूक सू ई हिसाब रै मेळ मैं भूल नी व्ही ।—फुलवाडी

उ०- २ बीस बरस री कवारी जिव्या मोडी री ज्यू आगली घूगी, पोथी पानी री निगार करी । हिसाब रा आखर ती अधारा मैं ई आवसी, पण लीलकी री आखै रूपाळी जोबन धानै निजर ई नीं आवै । फुलवाडी

४ लेन-देन का विवरण, खाता ।

उ० बांणियै री बेटी ह्वार-दगा बा'री, हिसाब किताब री कामण गारी । धरमादै रै पीरिया सू घर रा काम काजती ही नी सकै । फुलवाडी

५ बकाया देनदारी ।

उ०- १ मू'ता रै आवणी दाळ-चावळ मारया । बळतै मे पूळी पडगी, चोटी री नहवी नोठगी अर फेंगी आगली हिसाब कर'र पीसा चुकावी, पछै पानी माडी । दसदोख

उ० २ मा'रजा गर पत'र पान सौ रा नोट जोड्या, अर घर-वाळा री हिसाब करणौ लातर आगरै गाव नै भीजभा ।
दसदोख

६ गणना शुमार, गिनती ।

उ० सतन अर तिथ रा हिसाब गणणा जाण व्हौ कै बादळ गूगी री बेनी स फगत पाळीस दिन मोटी ही । फुलवाडी

७ किसी वस्तु का मान, परिभाषा या मात्रा का निर्धारण करने की क्रिया ।

८ दर, मूल्य, भाव ।

९ नियम, कायदा, परिपाटी ।

उ०—टाबर जितरा पढ़गा नै आवै, तारै हिसाब रा बारी बाध दी जावैं । - अमरचूनडी

१० चाल, ढग, तरीका, रीति, युक्ति ।

उ० —सेठ गगळा नै ई आपरै हिसाब मूं कूतै । - फुलवाड़ी

११ व्यवस्था, प्रबन्ध ।

उ० —कांमली गणगारी मेळा ठिकाणा रै हिसाब मैं रुल्योडी रैवती । फुलवाडी

१२ हृदय की प्रकृति की परस्पर अनुकूलता ।

१३ मितव्ययता की अवस्था या भाव ।

१४ मत-सम्मति, विचार ।

१५ आमदनी या जायदाद का निरीक्षण, जाच ।

उ०—तिण दिन पातसाहजी रै कचेडी दीवान लोजौ अवलहुसेन छै सौ राजाजी सु खुणस राखै छै । सुजरौ जागीरी रौ हिसाब कीयौ ।— नैणसी

१६ मूल्याकन ।

उ०—''''''' जिका आपरी जिदगी देस सू ऊँची मानता हुवै वानै देस रौ गद्दार रै अलावा काई मानणौ चाईजै । वीरता अर बहादरी नै लोग आप-आप रै विचार सू कई तरिया कूतै अर हिसाब लगावै ।—तिरसकू

रू भे—हसाब, हेसाव, हैसाब।

हिसाब-बही—स स्त्री—वह पुस्तक, पजिका या बही जिसमे आय-व्यय या लेन-देन का विवरण रखा जाता हो।

हिसार—स पु—एक प्रदेश का नाम।

उ०—परगनै जैतारण रा गाव ७ मेरा रै दाखल छै। तिकै जैतारण री फिरसत माहे अगै न छै नै **हिसार** मेरा रा गाव माडीया तरै मेरा रा ऐ गाव जैतारण दाखल माडीया छै।—नैणसी

हिस्ट—वि [स हृष्ट] हृष्ट पुष्ट, मोटा-ताजा, स्वस्थ।

क्रि वि—हट, धत्।

हिस्ट-पुस्ट—वि [हृष्ट-पुष्ट] स्वस्थ, मोटा-ताजा।

हिस्टीरिया—स पु—एक प्रकार का मूर्छा रोग जो प्रधानत स्त्रियो को होता है।

हिस्सादार—देखो 'हिस्सेदार' (रू भे)

हिस्सादारी—स स्त्री—किसी मे हिस्सेदार, भागीदार या साझेदार होने की अवस्था या भाव, साझेदारी।

उ०—मोटौडौ बेटौ मिडिल फेल हौ, वौ जिला मे एक सेठ री **हिस्सादारी** मैं सिमट रौ होल-सेल डीलर बणग्यौ अर छोटोडौ इजिनियरिंग कालेज जोधपुर मैं पढण लाग्यौ।—अमरचूदडी

रू भे—हिस्सेदारी।

हिस्सेदार—स पु—किसी कार्य, व्यापार, लेन-देन सम्पति आदि मे कुछ अधिकार या हक रखने वाला, भागीदार, साझेदार।

रू भे—हिस्सादार।

हिस्सेदारी—देखो 'हिस्सादारी' (रू भे)

हिस्सौ—स पु [अ हिस्स] १ उतनी वस्तु जो किसी अधिक वस्तु से अलग हो गई हो, अश, भाग।

२ विभक्तिकरण या विभाजन के कारण होने वाला खण्ड, टुकडा, विभाग।

३ बटवारे मे मिलने वाला अश, भाग।

४ किसी का अश, छोर, भाग।

उ०—मूडौ पिलकावतौ समदर गिडगिडायौ कै अमकुटय नाव रौ म्हारौ अेक **हिस्सौ** वोराऊ दिख मैं है। उठै रौ पाणी पी अर मलेच्छ पाप करै अर मनै ई पाप री भागी बिणावै। औ बाण जै उठै ठोकीज जावै तौ म्हारा पाप ई भसम पण व्है।—चितराम

५ किसी कार्य मे दिया जाने वाला योग-दान।

६ साझेदारी।

७ किसी कार्य मे विशेषता रखने का गुण।

८ मिश्रित वस्तुओ मे प्रत्येक वस्तु का एक निश्चित अश।

९ वर्गीकरण या फैलाव के कारण होने वाला कोई उपविभाग, शाखा।

१० किसान से कृषि उपज मे से जागीरदार द्वारा लिया जाने वाला अनाज का निश्चित भाग या अश।

रू भे—हेसौ, हैसौ, हैसौ।

हींकणी—स स्त्री—एक वनस्पती विशेष।

उ०—हनुमती नड हडबडी, हीराउलि हर मज्जि। हाथा जोडी **हींकणी**, हेला आबड़ कज्जि।—मा का प्र

हीकार, हींकारी—स स्त्री [स हृकार] बीज मत्र की ध्वनि।

हींग—स पु [स हिंगु] १ अफगानिस्तान और फारस मे उत्पत होने वाला एक पौधा विशेष।

२ उक्त पौधे से निकलने वाला गोद, दूध या तरल पदार्थ, जिसे जमाकर औषध या शाकादि मे मसाले के रूप मे काम लिया जाता है। (डिं को)

उ०—१ तिलोर तीतर करचानक मुरगाबी होसनाक वणावै छै। पोटा चीरजै छै। पेटाळजौ चीरजै छै। मुहडै मै **हींग** भरजै जै। पेट मैं जीरौ भरजै छै।—रा सा स

उ०—२ तावौ, कासी, पीतळ, जसद, सीसौ, कथीर, गरी, नाळेर, मिरच, पीपळ, मजीठ, **हींग**, सुखडो, तेल, मिसरी, गुळी, इतरा, वसतै दुगाणी ८ मण १ लागै।—नैणसी

३ बास की वह लम्बी तीली या खपची जो पतग के बीचोबीच सीधी लगती है।

४ देखो 'सीग' (रू भे)

रू भे—हिगू, हीगू।

हींगड—देखो 'सीग' (मह, रू भे)

हींगडौ—देखो 'सीग' (अल्पा, रू भे)

हींगण—देखो 'हिंगूण' (रू भे)

हीगणौ, हीगबौ—क्रि स—१ लालयित होना, ललचाना।

२ दीनता दिखलाना।

हींगळू, हींगलू—स पु [स हिगुल] एक प्रकार का खनिज, जो सप्त उप धातुओ मे से एक माना जाता है। यह चीन आदि देशो मे पाया जाता है। स्त्रिया इसे बिंदी लगाने या माग भरने के काम मे लाती है। ईंगुर, सिंदूर। (अ मा, डिं को)

उ०—१ मोतिया री माग भरजै छ। ललाड ऊपर अरधचद्र विराज रह्यौ छै। केसर सी खोळा कीजै। **हीगळू** री बदी दीजै छै।—रा सा स

उ०—२ ग्रिह ग्रिह प्रति भीति सुगारि **हींगळू**, ईंट फिटक मै चुणी अचभ। चदण पाट कपाट ई चदण, खुभी पना प्रवाळी खभ।
—वेलि

हीगळू-ढोलियौ—स पु यौ—वह पलग, चारपाई या खाट जिसके पाये सिंदूर से रगे हुए हो।

हीगवघार—स पु—१ पुष्करणा ब्राह्मणो की एक प्रथा जिसके अनुसार बारात व वर जब भोजन के लिये आते है तब हीग को जलते अगारे पर डाल कर उनका स्वागत किया जाता है।

२ हीग का वघार, छौका।

हींगवरण -देखो 'हींगोट' ।

उ० सू किरण भाल रा बाफरा छै, गातडियै रिण रा, उजळा थळा रा, मगी मगुवण **हींगवरण** रा भरणहार । रा रा स

हींगाठेरा वि बहुत, काफी, पर्याप्त । (बा दा ख्यात)

हींगापाई स स्त्री — गलबली, हलचल, परेशानी ।

उ० पण राज री परणी अर भलवलिया रै तो **हींगापाई** लागी पण लागी । श्री फुलगादो तो आपरी फुचगान सू राज री सगळी नींदा हिलाय दी । - फुलवाडी

हींगु- -देखो 'हींग' (रू भे)

उ० - सूयर कदाचित् वालीयइ, गेरावण कदाचित् दामीयइ, चिंतामणि कदाचित् पामीइ, कामगवी कदाचित् वाहीइ, **हींगु** कदाचित् वघारीइ,''''' ' '' । - व स

हींगोट, हींगोटौ स पु [स इगुदी] इगुदी नामक वृक्ष विशेष ।

वि० वि० इसके बडे बडे वृक्ष जगल मे पाये जाते है । इसके फल-फूल नीबू के समान कुछ लम्बे व गोल होते है । इसके काटे भी होते है । यह कफ, रक्तपित्त, ग्रन्थि और अर्शविनाशक है । इसका फल स्वादिष्ट, कडवा, स्निग्ध, गरम तथा कफ व वात विनाशक होता है ।

हींगोरौ— देखो 'हींगोटौ' ।

उ०—**हींगोरै** हैइउ धरिउं, जौ राह्तिकार गवाद । मध्य न मीठउ माटि तह, मूंचि चढि उनमाद ।—मा का प्र

हींच—स पु —१ युद्ध, लडाई ।

उ०—**हींच** गही घायल हुआ, जोधा जखमी जेताह । फिर श्रीमुख फुरमावियौ, रैवत बाधर ताह ।—पा प्र

२ प्रहार, चोट, आघात ।

उ०—**हींच** उडै हाथेह, लग गांगौ वोलौ लडै । मचियै जुध माथेह, कमधज ग्रोरी काळवी ।—पा प्र

रू भे — हीच ।

हींचकौ—स पु —१ झूला, हिडोला ।

उ०—हेलि बधावह **हींचका**, सुरतर केरी साख । माधव-माधि हीचसिउ, लीला लटकइ लाख ।—मा का प्र

२ देखो 'हिचकौ' (रू भे)

उ०—तूल तलाई ढोलिया, पछेडा चोली चग । हीर अछोडइ **हींचका**, हीडोलाटि सुचग ।—मा का प्र

रू भे —हीचौ ।

हींचरण—स स्त्री — १ मकडी की जाति का एक जतु जिसकी बनावट केंकडे के समान होती है ।

२ देखो 'हिचरण' ।

हींचरणी—स पु —एक प्रकार का अशुभ घोडा । (शा हो)

हींचरणु, हींचरणौ—स पु —झूला, हिडोला, पालना । (डि को)

हींचरणौ, हींचबौ—क्रि स —१ झूला झूलना ।

उ० १ पनि नाचिउ फूल चुन्उ, धका लागा पल्लव तूटइ । हिडोळइ **हींचइ**, भीलता चालिउ जालिइ रीचइ । र रा स

उ० २ हेलि बधावइ हींचका, सुरतर-केरी साख । माधव माधि **हींचसिउ**, लीला लटकइ लाख । मा का प्र

२ हिलना डुलना, लटकना, लटकते हुए झूलना ।

उ० मालिक मूडा जगड्, तिगाइ कि **हींचइ** हार । कामिनि कीजइ श्रोढ्णइ, श्रलगा-थिका जुहार । मा का प्र

३ भ्रमण करना, विचरण करना ।

उ० विरहर ! न निरविग जरी, मरी न श्रावइ मलि । सरिहर गिर-ऊपरि रहइ, तु हीठली **हींचलि** । मा का प्र

४ गूटे से बधे बछडे का मुक्त होने के लिये तडफना, श्रातुर होना ।

उ० **हींचता** वाछडिया लावाइ, मिळै जद गागा अखवड जाम । टाळा भूल श्रापरी माय, हठीला टाबरिया तब आग । साभ

५ शुरू नामक घास की भाति कालकार प्रकट करना ।

६ उपलब्ध होना, मिलना ।

उ० पीतम ता रागि पालिरइ, जा नह **हींचइ** लेग । जा गूं-मिळ मिलती नथी, तां मामल-मिळ प्रेम । मा का प्र

७ देखो 'हिचणौ, हिचबौ' (रू भे)

उ० मेळ हुवा पण घणी वेळा हुई थी । गाहोगाही **हींचिया** था । नैणसी

हींचरणहार, हारो (हारी), हींचरिणयौ वि० ।

हींचिश्रोड़ौ, हींचियोड़ौ, हींच्योड़ौ भू० का० कृ० ।

हींचीजरणौ, हींचीजबौ—कर्म वा० ।

हींचरणौ, हींचबौ, हीचवरणौ, हींचवरणौ—रू० भे० ।

हींचाहींच स स्त्री लीला गाल, लूट खसोट ।

उ० मन काल एक जीव की, कैसी **हींचाहींच** । जनहरीया नर देह मै, कृण ऊच कृण नीच । अनुभववाणी

रू भे हीचाहीच ।

हींचियोड़ौ भू का कृ १ झूला-झूला हुआ २ हिला हुआ, भूला हुआ, लटका हुआ, लटकते हुए झूला हुआ ३ भ्रमण किया हुआ, विचरण किया हुआ ४ मुक्त होने के लिये तडफा हुआ, आतुर हुआ हुआ ५ कालकार प्रकट किया हुआ ६ उपलब्ध हुआ हुआ, मिला हुआ ७ देखो 'हिचियोड़ौ' (रू भे) ।

(स्त्री हींचियोड़ी)

हींचोल, हींचोळौ, हींचोलौ स पु भूले या पालने के दिया जाने वाला धक्का हिलोरा ।

उ०—१ गुण जोइ नितु टेपरी, माता दइ **हींचोल** । नितु नितु मानि घूघरी, श्रेम वारी रग रोल ।- -मा का प्र

उ०- २ हीडी मै टाबर हीडै हो, मा दै रही **हींचोळा** । हालरिया रै सागै सागै, टाबर कर रह्यौ किलोळा ।—लालिलाल वैवैरा

हींचौ —१ देखो 'हींचकौ' (रू भे)

२ देखो 'हिचकौ' (रू भे)

हीजडौ—न पु —१ मनुष्य जाति का वह विकृत हुआ प्राणी जो न स्त्री होता है न पुरुष होता है, अर्थात् जिसके न तो पुरुषेन्द्रिय का विकास होता है और न उसमे स्त्रियोचित चिन्ह होते है, नपुसक।

वि० वि०—हीजडे का सीधा एव प्रत्यक्ष अर्थ नपुसक होता है गर्थात् मनुष्य जाति का वह प्राणी जो न पुरुष श्रेणी मे आता है न स्त्रियो की श्रेणी मे गिना जाता है। यह बीच की स्थिति का होता है। पहिचान के तौर पर इसके पुरुष चिन्ह का कुछ अश होता है।

जो प्राणी इसी अवस्था मे पैदा होते है वे प्राकृतिक हीजडे होते है। लेकिन बच्चो के पुरुष चिन्ह को क्षत करके बनावटी हीजडे भी तैयार किये जाते है।

इन प्राणियो की बोली का स्वर मर्दाना होता है तथा हाथ, पाव, नाक-नक्शे मे भी स्त्रियो की सी कोमलता न होकर मर्दानापन ही झलकता है। लेकिन ये वस्त्र स्त्रियो के पहनते है, नाम भी स्त्रियो के ही रखते है और हाव-भाव भी स्त्रियो के से ही दिखाते है। हीजडे हिन्दू-मुस्लिम दोनो वर्गो मे है और समाज मे हसी-खुशी के मौको पर नाचना-गाना इनका पेशा है।

चूकि शारीरिक बनावट मे मर्दानापन अधिक होता है इसलिये इनके डाढी-मूछ भी आती है और स्त्री वेष मे रहने के कारण ये डाढी-मूछ रख नही रख सकते, इसलिये इनका डाढी मूछ मुडाई का खर्चा अधिक होता है।

स्त्री एव पुरुष वर्ग की तरह हीजडो का भी एक बहुत बडा वर्ग है, परन्तु इसमे नाजर, फातडा, खोजा आदि कुछ उप वर्ग भी है और उनमे कुछ भिन्नता भी होती है। यथा —

(१) **फातडा या पवैया**—गुजरात मे हीजडे को फातडा या पवैया कहते है। लेकिन वास्तव मे पवैया हीजडे न होकर उनका एक सहवर्ग है। ये लोग हीजडा के साथ रहकर नाचने गाने मे सहयोग करते है तथा हीजडो के ही अन्य छोटे-मोटे कार्य करते है।

२ **नाजिर या खोजा**—नाजिरो के इतिहास की शुरुआत चीन की तवारीखो से मानी है। इन तवारीखो मे ऐसा उल्लेख है कि जो व्यक्ति चोरी छुपे व्यभिचार करते पाये जाते थे उन्हे नपुसक बना कर राज महलो या शाही महलो मे टहलबदगी करने के लिये रख दिया जाता था। कभी कभी बागियो को भी यही सजा दी जाती थी। नाजिरो का मुख्य कार्य शाही महलो मे जनानखानो की चोकीदारी करना था। लेकिन मुस्लिम शासन काल मे इनका महत्व बहुत बढ गया और शाही महलो मे नाजिर रखना एक आम रिवाज हो गया। इससे इनका वर्ग भी बहुत बढ गया और इनको बडे बडे पद या औहदे दिये जाने लगे। सुलतान अलाउद्दीन ने अपने ख्वाजासरा मालिक कपूर (नाजिर) को जो सम्मान दिया वह इतिहास प्रसिद्ध है।

हीजडो एव नाजिरो मे इतना फर्क है कि नाजिरो के हीजडो की तरह डाढी मूछे नही आती, वे मर्दाने वेष मे रहते और शाही महलो मे ही कार्य करते। हीजडो की तरह नाचने गाने का पेशा नही करते।

इतिहास—इन प्राणियो की उत्पत्ति आदि सृष्टि से ही मानी जाती है। पुराणो मे भी इनका उल्लेख मिलता है महाभारत युद्ध मे राजा द्रुपद के पुत्र शिखडी को भीष्म पितामह ने नपुसक की श्रेणी मे मानकर उस पर शस्त्र नही उठाया था। अज्ञातवास के समय अर्जुन ने भी वृहन्नला नामक हीजडे का वेष धारण किया था और विराट की पुत्री को नाच-गान सिखाने का कार्य किया था। मध्य युगीन मुस्लिम हीजडो की उत्पत्ति मक्का-मदीना से मानी जाती है।

सोजत व जैतारण के पास एक गोरम नामक पहाड है जिसके नीचे प्रति वर्ष फागुण कृष्ण १४ को एक मेला लगता है वहाँ बहुत से हीजडे एकत्र होते है। और नाच-गान करते है।

ऐसे प्राणी मनुष्य जाति मे ही हो ऐसी बात नही है वरन्—चोपाये जानवरो मे भी ऐसे प्राणी होते है।

२ वह व्यक्ति जो अपना पुरुषत्व खो चुका हो, नामर्द।

उ०—लालचिया सतोस ज्यू, मन **हीजडा** मनोज। ऊपर मै नह उपजे, इम मावडियाँ मोज।—बा दा

३ कायर व डरपोक व्यक्ति।

वि —१ नपुसक, नामर्द।

२ कायर, डरपोक।

उ०—अर फेर ज्यू किसन भगवान अरजुन नै नपुसक, **हींजडौ**, नामरद कह'र जिण तरिया 'महाभारत' री लडाई करवाई उणी तरियाँ म्हनै बुजदिल कह'र म्हारै कनै सू पूरौ आतम समरपण करवाय लियौ।—तिरसकु

३ अशक्त, कमजोर।

४ उत्साहहीन।

रू भे —हिजडो, हीजरौ।

हीजडापण, हीजडापणौ—स पु —नपुसक, नामर्द या क्लीव होने की दशा या भाव, क्लीवता।

हींजरणौ, हींजरबौ—देखो 'हिजरणौ, हिंजरबो' (रू भे)

उ०—गजराजा अग्राज, गाज हुवै नाबागळा। फौजा धज नेजा फररि, वहता **हीजरि** वाज।—वचनिका

हीजरियोडौ—देखो 'हिजरियोडो' (रू भे)

(स्त्री हीजरियोडी)

हीजरौ—स पु —१ वियोग जनित दुख, विछोह की पीडा।

२ देखो 'हीजडौ' (रू भे)

हीट, हीठ—स पु —१ अगूठा।

२ लिंग या योनि के पास के बाल, केश।

डु सं स्त्री १ झूले में झुलाने की क्रिया या भाव ।
२ एक किंवदन्ती के अनुसार, वीरगति प्राप्त किसी प्रसिद्ध योद्धा की आत्मा का, रात्रि के समय, मशाल लेकर सवार वाला चक्कर या गश्त ।
उ०—गिलख भौंकता रह्या, कुत्ता ऊंची गूंडी कर कर नै कूकता रह्या अर धानपुर री काकड मैं रात भर मामाजी री हीड री गळाई भाणभण करती लारोटेंणी फिरती री । —अमरचूनड़ी
३ देखो 'हींड' (रू भे)
४ देखो 'हींडो' (मह, रू भे)
उ०—१ सो गाव रै निकाळै एक बडी खेजडी छै जठै हींड बाधी छै ।—कुंवरसी साखला री वारता
उ०—२ लचकै गोडी लागता, गनकै हींड मचोळ । तन दमकै दामणि तरह, झमकै पग रमझोळ । —सिवबगस पाल्हावत
हींडण-सं स्त्री [सं हिण्डनम्] १ झूला झूलने की अवस्था या भाव ।
२ लाबे पैरो वाला एक प्रकार का जन्तु ।
वि—झूलने वाला । (डि को)
हींडणियौ—वि—१ झूलने वाला ।
२ लटकने वाला ।
हींडणौ, हींडबौ क्रि स [सं हिण्डनम्] १ झूला झूलना, हीडना ।
उ०—१ गाव री लुगाई छोकरी खडी छै गीत गावै छै । गोरिंयार हीड हींडै छै ।—कुंवरसी साखला री वारता
उ०—२ नीबूडै री छइया हीडो घालो हे म्हो धणवारी रे लगा । छैलो नै मारवण दोइ हीडो हींडसी म्हो राज ।—लो गी
२ छोटे बच्चो का पालने मे झूलना ।
उ०—१ आगै गाहे पैस देखै तो पालणै मैं बालक हींडै छै ।
—वेवजी बगडावता री बात
उ०—२ जठै एक कन्या कही राजा री छै । तिका राखस री आयी छै । सु पालणै मैं बैठी हींडै छै ।—चौबोली
३ मस्ती मे झूमना ।
उ०—१ माथै हाथी ज्यूं हींड रह्या छै । तीन भांत री पवन वाज रही छै - सीतल मद सुगध । गरमी मिटायजै छै ।
—रा सा स
उ०—२ तरां आप उठिया छै । माथै गजराज ज्यू हींडता थका खवास-पासै वाणा रै हाथ ऊपर हाथ दिया घूमता थका मोडै पधारै छै ।—रा सा स
४ लहरे लेना, हिलोरे खाना ।
उ०—अर तीन पाडुवा रै बिचाळै मारग वेवती काळी नागी रै सळा पडघा जूना खोळियां मैं जाणै अेकर पाछौ बाळपणौ हींडण लागौ ।—फुलवाड़ी
५ लटकना ।
उ०—बाजूबंध बधै गोर बाहु बिहु, स्याम पाट सोहत सिरी । मणिमै हींडि हीडती मालिगर, किरि माणा भीरा इ री । —वेलि
६ विचरण करना, भ्रमण करना ।
उ० १ इस घडी हींडइ सदा, नीसा पुरत पालि । निगम निरतर आनवद, घारतार गलि नालि । —मा का प्र
उ० २ मन ती उमग री हला रै साथै उडती, उजास रै गेळी पळकती, चादणी साथै ओळा गावती अर बादळा रै साथै हींडती ।
—फुलवाड़ी
७ भटकते हुए फिरना, भटकना ।
उ० आगु एक म्ग झडी गया, नी-गिर गडिउ माह । नाहनडली-नइ सोधती, वनि-वनि हींडसि नाह । —मा का प्र
८ गमन करना, जाना ।
उ० कुणनी कोणी नार, 'कुठै' नै 'जीवै' कह । चोडै चुप चकार, हगनी नत नै हींडिया । —पा प्र
९ चलना, दौड़ना । (डि को)
हींडणहार, हारौ (हारी), हिंडणियौ वि० ।
हींडिओड़ौ, हींडियोड़ौ, हींडयोड़ौ भू० का० कृ० ।
हींडीजणौ, हींडीजबौ कर्म वा० ।
हिडणौ, हिडबौ, हींडळणौ, हींडळबौ, हीडणौ, हीडबौ रू० भे० ।
हींडळ सं पु —झूला, पालना ।
हींडळणौ, हींडळबौ देखो 'हीडणौ, हीडबौ' (रू भे)
उ० १ हाथी घणा घरा हींडळसी, सूर हरा आगा सभाव । झूमा पटा वधारा वेसी, आप जगा करणी अणराव । —तजनी निसाणी
उ०—२ जाणै नागगा हींडळै, लगा गोनार । अोपत आडी ऊमदा तब्बाणां तैयार । —मयाराम दरजी री बात
उ० ३ है थाटा बीच हींडळै हाथी, छगपत जिसा खानिया खडै । गजबध तणा आवता गळवां, गढपत जडै निवाड़ गडै ।
—किसनौ आढौ
हींडळणहार, हारौ (हारी), हींडळणियौ—वि० ।
हींडळिओड़ौ, हींडळियोड़ौ, हींडळयोड़ौ भू० का० कृ० ।
हींडळीजणौ, हींडळीजबौ कर्म वा० ।
हींडळियोड़ौ देखो 'हीडियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हीडळियोड़ी)
हींडाणौ, हींडाबौ क्रि स ['हीडणौ' कि का प्रे रू] १ झूला झूलाना, हीडाना ।
२ छोटे बच्चो को पालने मे झूलाना ।
३ मस्ती मे झूमाना ।
४ लहरे खिलाना, हिलोरे दिलाना ।
५ लटकाना ।
६ विचरण कराना, भ्रमण कराना ।
७ भटकाना, भटकते हुए फिराना ।
८ जाने या गमन करने के लिए प्रेरित करना ।

६ चलाना, दौडाना ।
हींडाणहार, हारौ (हारी), हींडाणियौ—वि० ।
हींडायोडौ—भू० का० कृ० ।
हींडाईजणौ, हींडाईजबौ—कर्म वा० ।

हींडायोडौ–भू का कृ —१ झूला झूलाया हुआ, हींडाया हुआ २ पालने मे झूलाया हुआ ३ मस्ती मे झुमाया हुआ ४ लहूरे लिराया हुआ, हिलोरे खिलाया हुआ ५ लटकाया हुआ ६ विचरण कराया हुआ, भ्रमण कराया हुआ ७ भटकाया हुआ, भटकते हुए फिराया हुआ ८ जाने या गमन करने हेतु प्रेरित किया हुआ ९ चलाया या दौडाया हुआ ।
(स्त्री हींडायोडी)

हींडियोडौ–भू का कृ —१ झूला झूला हुआ, हींडा हुआ २ पालने मे झूला हुआ ३ मस्ती मे झूमा हुआ ४ लहरे लिया हुआ, हिलोरे खाया हुआ ५ लटका हुआ ६ विचरण किया हुआ, भ्रमण किया हुआ ७ भटका हुआ, भटकते हुए फिरा हुआ ८ गमन किया हुआ, गया हुआ ९ चला हुआ, दौडा हुआ ।
(स्त्री हींडियोडी)

हींडी–स स्त्री —बच्चो का झुलाने का झूला ।
उ०—**हींडी** मैं पडियौ टाबर गट्टा-पट्टा सू रमै जद मावड उणनै रम्मत मैं लागोडौ गिणै ।—चितराम

हींडोळ, हींडोल—देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)
उ०—१ 'माता धोता त्रमल झुलरायौ झोनी, हालरि हूलरावियौ **हींडोल** हिचोली । वलि रमीयौ अठ दस वरस नु वालक टोली, परणावौ तु नइ पछै दयिता हुइ दोली ।—ध व ग्र
उ०—२ कइरी **हींडोलइ** चढी, कोकिल किहा कुहुकाय । कामकदला तू चढी, माहारा हियडा माहि ।—मा का प्र

हींडोलणौ—देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)
उ०—हरख **हीडोलणइ** झूलइ नेमिप्रभ जिनराय । जिहा सुद्ध ग्रासय भूमि पटली, लोहियइ थिरवाय ।—वि कु

हींडोळणौ, हीडोळबौ, हीडोलणौ, हींडोलबौ—देखो 'हिंडोळणौ, हिंडोळबौ' (रू भे)
उ०—१ **हींडोळै** झरोखा हेटै, खुभाला झाटका देता ।
—माधोसिंह सीसोदिया रौ गीत
उ०—२ पालणाडइ पउढपउ रमइ म्हारउ बालुयडउ, **हींडोलइ** अचिरा माय म्हारउ नान्हडियउ ।—स कु
उ०—३ भूपति विनौ आखै धनि भूरा, सह पूरा खत्रवाट साराह । थरि मह गळै **हींडोळै** थारै, वळै बीर बदीयौ वाराह ।
— भगतसिंघ हाडा री गीत

हींडोळाखाट–स स्त्री —चारपाईनुमा झूला या पालना ।

हींडोनाट, हींडोलाटि–स पु —१ झूला, धक्का ।
२ देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)
उ०—तूल तलाई ढोलीया, पछेडा चोली चग । हीर अछोडइ हीचका, **हीडोलाटि** सुचग ।—मा का प्र
रू भे —हीडोलाट ।

हींडोळि, हींडोळी—देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)
उ०—मयण कला मदोदरी, उन्नत उयर पवित्र । कइरी-सरिखु कुच-युगल, चडी **हींडोलि** चइत्रि ।—मा का प्र

हींडोळियोडौ—देखो 'हिंडोळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीडोळियोडी)

हींडोळौ, हींडोलौ—१ देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)
उ०—१ जा वसै तेतीसू कोडि छत्या कचौळा ग्रमी का । वै गुर परसाद पीवाहि **हींडोळै** पणि बैसि कै ।—वि स सा
उ०—२ गजेंद्र कुभस्थल सीस ढोलइ । कोई **हींडोला** जिय सीस डोलइ ।—सालिसूरि
उ०—३ चापली ना सद्रिस भ्रलता, विकसित लोचन बदन कपोल, चैत्रमासि **हींडोला** समान स्त्रवण, द्वितीया ससि सद्रिसविसाल भाल, एव विध बाला ।—व स
२ देखो 'झूलौ' ।

हींडौ–स पु [स हिंडनम्, हिंदोल] १ किसी पेड की मोटी डाल के लम्बी रस्सिया बाध कर बनाया जाने वाला झूला, जो प्राय श्रावण मास में बाँधा जाता है तथा जिस पर नव युवतिया व नव वधूएँ झूलती है, झूला । (डि को)
उ०—१ ए मा, चपा वाग मैं **हींडौ** घला दै, तीज नुहेली आई । ए मा, औैर सहेल्या रे घर रौ **हींडौ**, म्हारै हीडौ नाही ।
—लो गी
उ०—२ गुड्डी वालै, **हींडा** हीडै है अर खेलै कूदै पण म्हाकाळी चिडकली री बिछोवौ करौ हौ, जकौ ठीक नी है ।—दसदोख
उ०—३ कुवरसी दीठौ वडौ जावतौ **हींडा** बाधिया ।
—कुवरसी साखला री वारता
उ०—४ माघ री पूनम नै धणिया रोपणी रोपाई रै । आवळकी इग्यारस नै **हींडौ** मडियौ रै । बडलै री साखा मे, कै हीडा लेवण दै ।—भवरलाल सुथार
२ पालना ।
३ पालने मै झुलाने की क्रिया ।
उ०—एक वीर सुया सती आपरा पुत्र नै **हींडा** देती घर री रीत सिखावै है ।—वी स टी
४ वह चारपाई जो झूले के समान झूलती हो, चारपाईनुमा झूला ।
रू भे—हिंडौ ।
मह,—हींड ।

हींग—देखो 'हीण' (रू भे)
उ०—**हीण** दोख सौ हुवै, जात पित मुदौ न जाहर । मिनग जेण नै निरख, विकळ बरणण बिन ठाहर ।—र रू

हींणो - देखो 'हीणो' (रू भे)
हींद- देखो 'हिंद' (रू भे)
हींदवाणी - देखो 'हिंदवाणी' (रू भे)
हींदव देखो 'हिंदू' (रू भे)
उ०—१ गिरा मैं सुमेर आपै सुरताण राहा गणा, जस्या मैं मारूत प्रजापति रिखा जाण। जाप मैं अजपा जाहि सांची बळी राजा जिसौ, महाराजा तपै लीया **हींदवां** चो गांण।
भगतराम झाडा रो गीत
उ०— २ अर रांणी नैं भावरसी भगाया हुता तिका पठाण उवा नू आदमी मेलीया—यारो पाछा आवै। **हींदवां** चूक कीयौ।
—राजा नरसिंघ री वात
हींदवाण —देखो 'हिंदवाण' (रू भे)
उ०— **हींदवांण** छात हीदवांग सूर, अजमेर जोधपुर गाण पूर। आजवाळ बस अस गांव अरोड, ढीलडी बीच गहिगल्या गोड।
— रा सा स
हींदवाछात, हींदवोछात स पु- हिंदू राजा, हिंदुओं का राजा।
उ० काठठ काठळ कटक रौस चामाग फार, जवन पत **हींदवांछास** जूटा। अभग जसराज सर कळोगर ऊपरा, खाग वादळ वरस नार खूटा।—अरजुण जी बारहठ
हींदवी, हींदवौ—देखो 'हीडवी, हीडवौ' (रू भे)
उ०—सावण आया घरै यारै हींदा जिको घालेरा। **हींदिया** छै तौ परिया धोकै परिया खाच जावेला।—रा सा स
हींदियोडौ—देखो 'हीडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीदियोडी)
हींदु—देखो 'हिंदू' (रू भे)
उ०—अकबर गरब न आण, **हींदु** सह चाकर हुवा। दीठौ कोई दिवाण, करतौ लटका कटहडै।— अग्यात
हींदुसथान, हींदुस्तान—देखो 'हिंदुस्तान' (रू भे)
उ०—१ संमत १६८४ काती बद १३ माहै पातसाह जाहांगीर फौत हुआ। जुनेर था साहआदा माहाबतखान **हींदुसथान** नु आया।—नैणसी
उ०—२ सिवलाल जरा की रूप देखनै मन मै उदास हुओ-- जसां री जोड री आदमी **हींदुसथान** मै एक ही नजर न आवै।
—मयाराम दरजी री वात
हींदू—देखो 'हिंदू' (रू भे) (डिं को)
उ०—१ सुर असुरा हुए आहुडै, आही एक अवक्क। पिंड़ि जितरा **हींदू** दडै, तेता राहस तुरक्क।—रा सा स
उ०— २ **हींदू** पूजै देहरा, मुसलमान मसीत। हरीयै चेतन चेतीया, क्या अचेतन प्रीत।—अनुभववाणी
हींदूवांणी—देखो 'हिंदवाणी' (रू भे)
हींदूकार—देखो 'हिंदूकार' (रू भे)
उ० १ हीदू हींदूकार, राणा जी राणत नही। अकबर तो एकार, पौ रौ भरत प्रतापसी। अग्यात
उ० २ **हींदूकार** तणा हणकारै, घणी कटक अध गेल घणा। एडर वळै वेध प्रथराया, ताडै दळ सुरताण तणा।
महाराणा सागा रौ गीत
हींदूपत, हींदूपति देखो 'हिंदूपति' (रू भे)
हींदूसथान, हींदूस्थान देखो 'हिंदुस्तान' (रू भे)
उ० राधु सवालख, ऊंच मलतांन **हींदूस्थान**, देवगढ़ पाटण, चीण माहाचीण भोट माहाभोट रामेश्वर, एतला राजिगत अम्हारा देस-देसाउर ..... । व रा
हींवोल, हींवोलइ देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)
उ० १ माधव मन माहरा माहि, तइ बधिउ **हींवोल**। हटकी हटकी हींचता, हईडइ हरख कलोळ।—मा का प्र
उ० -२ गिर बधी किण साललह पगटारा दीवा मारि। हीचरि **हींवोलइ** चढी उल्लासरी आकासि। —मा कां प्र
हींवोलाट देखो 'हिंडोळाट' (रू भे)
उ० १ खणु मागसि खणु कोगिइ, की **हींवोलाट**। सुण सलाई पाथरी, अतिसराना ऊछाट।—मा कां प्र.
उ० २ घम घम वाजइ घूघरी, हींचइ **हींवोलाट**। कांमिनि सिउ कीडा करइ, नीराज वेश्या नाट।—मा कां प्र.
हींवोलि, हींवोलु देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)
उ०—१ **हींवोलि** हरखई चढी, हींचण लागी हेलि। उल्लासइ अबर भवनि, माधव दीठइ ठेलि। मा का प्र
उ० २ घट माहरू घर ताहरू, सास तै दोरी सार। मनि **हींवोलु** बाधिउ, माधव हीचणहार।— मा का प्र
हींवौ देखो 'हीडौ' (रू भे)
उ० जावसी न आग माथै चहूरा नै चूथ जायसी। सावण आया घरै थारै **हींवा** जिको घालेला। रा सा सं
हींफ, हींफ स स्त्री -शीतल वायु।
उ० माथौ सीतळ पांणी रा सीचिआ थका बीभाणा वाइफांया सू **हींफा** खाइ रहीआ छै। —रा सा सं
रू भे हीप।
हींबाण स पु एक जाति विशेष का घोडा।
उ०—आरिज सीधूया **हींबांणा**, पहिठांणां उत्तराही। घोडा ऊदिरा कनूज देराना, कुलथ हासला गच्याही।— का दे प्र
हींमजी-स पु— एक वृक्ष विशेष।
उ०- हरडू हरडि **हींमजी**, हरडा हलग्रह बेर। हरबी हाथुडी हरी, हुफद हुरि हसर।—मा का प्र
हींमत —देखो 'हिम्मत' (रू भे)
उ०—हीमत मत छाडौ नरां, मुख तैं कहता राम। हरीया **हींमत** सु कीया, ध्रू का अटल धाम।—अनुभववाणी

हींमती—देखो 'हीमती' (रू भे)

उ०—हीमति बहादर **हींमती** कळि भडा घोडा कीमती। देसपति सभ्रम दमरा ऊदम अगम गम हीवुआ ओपम।—ल पि

हींयाफूटौ—देखो 'हियाफूटौ' (रू भे)

हींयाळी—देखो 'हियाळी' (रू भे)

हींयोडी—देखो 'हिग्रोडी' (रू भे)

हींयोडौ—देखो 'हिग्रोडी' (रू भे)

उ०—तीन बरस व्हेता व्हैता वौ म्हानै गायै देय दाएा काढ़ै, पछै **हींयोडौ** फेरै, हळ जोतै अर गाडी खडै।—फुलवाडी

हींयौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—**हींयै** खटूकौ लागगौ, विरहन सेती आय। का घरि आवौ सजना, का मोकू लै जाय।—अनुभववाणी

हींस—स स्त्री [स हेष, हेष] १ घोडे के बोलने का शब्द, हिनहिनाहट। (डि को)

उ०—१ वप तीर छरा छरा रध्रवरा, हय **हींस** हरा हरा मचग हुरा। तरवार खरा खरा तूट तरा, परा मत्र भरा भग रसरा पगा।—र रू

उ०—२ होवै भड हाकळ हैवर **हींस**। चढै मारका भड पाबुग्र सीस।—पा प्र

रू भे—हीस।

२ देखो 'हूस' (रू भे)

रू भे—हिस, हिसाट।

हींसणौ—स पु [स हेषण] घोडे के बोलने की क्रिया, शब्द या आवाज।

उ०—कै इत्ता मै बादळ रै घोडा री **हींसणौ** सुणीजियौ।

—फुलवाडी

हींसणौ, हींसबौ—क्रि अ [स हेषण] १ घोडे का बोलना, हिनहिनाना।

उ०—१ मसत हमत बहु मोल द्वार घूमै खळदाहग। वाळा **हींसै** वाज वर्ण जाणै रविवाहरा।—बा दा

उ०—२ घोडौ तौ बादळ री मसा परवाणै हुकम बजावतौ। गवाडी मूडागै हिणहिणाट करतौ **हींसतौ** जरा आगरौ मोत्या री भड लागती।—फुलवाडी

२ उमगित होना, उत्साहित होना, प्रसन्न होना।

उ०—१ ज्यानै वाद्या हिवडौ **हींसौ**, स्री विहरमान वदू वीसौ।

—जयवाणी

उ०—२ सुदर मूरति प्रभु तरणी, निरखता सुख थायौ जी। हियडौ **हींसइ** माहरौ, पातिक दूर पुलायौ जी।—स कु

३ तरसना, लालायित होना।

उ०—केवल जिम दूर थकी दीसै, हीयडौ जिन देखरा नै **हींसै**। वाखाणै सहु विस्वा विसै, यात्रा दीधी ए जगदीसै।—ध व ग्र

हींसणहार, हारौ (हारी), हींसणियौ—वि०।

हींसिग्रोडौ, हींसियोडौ, हींस्योडौ—भू० का० कृ०।

हींसीजणौ, हींसीजबौ—भाव वा०।

हींसवणौ, हींसववौ, हीसणौ, हीसबौ—रू० भे०।

हींसळ, हींसल—स पु [स हेषिन्] घोडा, अश्व।

उ०—१ बाजिंद गज वाकर मानव बळ, पोहौ अनि हाम हुवा बोहौ पूर। हाडा रिण तीरथ करि **हींसळ**, मरियौ राज मेथ जगि सूर।—राव सूरजमल हाडा रौ गीत

हींसवणौ, हींसववौ—देखो 'हीसणौ, हीसबौ' (रू भे)

उ०—बोल नक्कीबरा **हींसवै** हैमरा, धज धँधीगरा ऊपरा उछळै।

—सू प्र

हींसवणहार, हारौ (हारी), हींसवणियौ—वि०।

हींसविग्रोडौ, हींसवियोडौ, हींसव्योडौ—भू० का० कृ०।

हींसवीजणौ, हींसवीजबौ—कर्म वा०।

हींसवाटा—स स्त्री—सोलकी राजपूत वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

हींसवियोडौ—देखो 'हीसियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हीसवियोडी)

हींसाण—स स्त्री—घोडे के हीसने या हिनहिनाने की क्रिया या आवाज।

उ०—निहसत नीसाण हुवै बाज **हींसाण**। मभ्फ काज घमसाण अपाण भड ओघ।—र ज प्र

हींसार, हींसारव—स स्त्री—हिनहिनाहट।

उ०—१ जाक्या जाता ऊचरइ, हयवर मुखि **हींसार**। चियार छत्र चामर ढळइ, भूप चढिउ गज भारि।—मा का प्र

उ०—२ हय **हींसारव** गज घमक, बळीया सुहड बहूत। क्रमि क्रमि मारग मूकता, कामावती पहूत्त।—मा का प्र

रू भे—हीसाल।

हींसियोडौ—भू का कृ—१ हिनहिनाया हुआ बोला हुआ २ उमगित, उत्साहित व प्रसन्न हुवा हुआ ३ तरसा हुआ, लालायित हुवा हुआ।

(स्त्री हींसियोडी)

हींसी—स पु—घोडा, अश्व। (डि को)

हींसू—स पु—भूमि खोदने का एक औजार विशेष।

उ०—भारी सत्र कवाडा भाजै, अगिया भेडै भात असी। हैंसळ हून वडा अर **हींसू**, कूट 'लालियै' किया कसी।

—लालसिंह राठौड रौ गीत

रू भे—हैंसु, हेसू।

हींसोडी—स स्त्री—१ जुलाहो का एक कैंचीनुमा औजार जिस पर ताना फैला कर पाई करते है।

२ देखो 'हिंग्रोडी' (रू भे)

हीं-हीं—स स्त्री [अनु] १ हँसी, खिलखिलाहट।

२ हँसी की आवाज।

रू भे — ही ही।

ही-अव्यय [सं.] १ भी।

उ०— जिणि मेस सहुरा पसा फाणि फाणि जि जि जीह, जीह जीह लग गयौ जस। तिणि ही पार न पायौ जीकस, जदगा जेम्हीं किसौ जस। —वेलि

२ एक मात्र, केवल।

उ०—१ सबल ही रहै साध नू, आळगि कदू न जाय। हरीया जब तब राम कु, आया भीर्द पाय। —अनुभववाणी

उ०—२ जिणि देरै सज्जण वराड, तिणि दिसि नज्जउ वाउ। उणा लगै मौ लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ। —ढो मा

३ निश्चयात्मक या निश्चय सूचक अव्यय।

उ० - १ बैधा री बेटी, पल्लीवाळा री परणायोडी। राजी नाव राता राजी ही रैवे है। —वरसगांठ

उ० २ जै जीवण जिन्दा तणा, तन ही गाहि नसत। धारउ दूध पयोहरे बाळका बिन ताइत। —ढो मा

४ आश्चर्य, प्रकाराज, शोक आदि का सूचित करने के लिये प्रयुक्त होने वाला अव्यय।

भू का कृ —ही।

उ०—१ उणरी हाजरी साजण सारू पगत एक ह्रावडी ही। बावणी स्याणी, सालग अर सामभागी ही। —फुलवाड़ी

उ०—२ इण वास्तै आज वांनै पूरा जावता सूं लम्बा नाखनै पटकण री राजवीज ही। —अमरचूनड़ी

स पु [स हृदय] चित्त, हृदय, मन।

उ०—अखड अरहवख्ज के मिखड खड अग्ग्ज कै। सधीर ही हमीर री गंभीर भीर गज्जले। —रू का

रू भे - हि, हि, हीज।

हीअ, हीअउ देखो 'हिरदौ' (रू भे) (उ र)

हीआहीण, हीआहीन —देखो 'हियाहीण' (रू भे)

उ० कायर किरविरइ, साधर धारगिगा हीइ धरम्यान धरइ, देव देयी रहइ इच्छ पड़ीवइ मारउ, ताऊ नारिवा साबधान हुआ, हीआहीण अरणबूडई गाहणि मूआ। — व स

हीइ, हीऔ - देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ० -धवळ कुसुम मिगागार, धवळ बहु वस्त्र सुहावै। मोताहळ मणि रयण, हार हीइ ऊपरि भावै। - न च चौ

हीक—स स्त्री [स हिक्क] १ क्रोध की ज्वाला, क्रोध का आवेग।

उ०—१ चढै खळ हीक तुरी उर चोट, कालाहळ भूम हुवै अज कोट। रेलाळ जरद्द मरद्द समाज, वैसे न अभ भाखर पाखर वाज।

—सू प्र

उ०—२ हीकां भरे साहसी वैरियां भू चलाया हाथ, आहणी नत्रीठां कांठी मळाया अभाग। पाव ज्यूं अरम्मी खग वमन् चांडियों पाणी, यूं पड़े ऊमठा नाथ पाडियो आराण।

—सूरजमल मीसण

२ तीव्र मानसिक व्यथा, कसक।

उ० पर्नै सग पावणा, मधन बाळक मसकीनंा। सुगा समकै सुरताणा, हियै भारी पुरा हीकां। —रा प

३ किसी प्रकार का तीखापन दर्द, टीस, चीस।

४ किसी पदार्थ से उठने वाली सड़ी हुई व तीव्र गंध।

५ किसी तीक्ष्ण पदार्थ या औषधि के सेवन से या शरीर पर लगाने से होने वाली जलन या दाह।

हीकणौ, हीकबौ क्रि स [स हिक्क] १ छाती ठोक कर ललकारना, चुनौती देना।

उ० कुताहा ने कुताही तणा, हथळेर जाडाया। 'हासू' छाती हीकतो, कज गय कहाया, हणी मारे गोमार्दे, गन कीया चाया।

—वी मा

२ मारना, वध करना, नष्ट करना।

उ० अगम पाथ हाता 'जसा' मछीछ् आंगारण, मळहर नर का जळे मडै मायू। आज ही नगारा नाम हेकण उघड हीक धर लै गयी लिया हायू। —राव जसवंतसिंह चूंडावत रो गीत

३ चोट करना, आघात करना, प्रहार करना।

हीकणहार, हारौ (हारी), हीकणियौ — वि०।

हीकिओड़ो, हीकियोड़ो, हीक्योड़ो— भू० का० कृ०।

हीकीजणौ, हीकीजबौ — कर्म वा०

हीकियोड़ौ भू का कृ १ छाती ठोक कर ललकारा हुआ, चुनौति दिया हुआ २ मारा हुआ, वध किया हुआ, नष्ट किया हुआ ३ चोट किया हुआ, आघात किया हुआ, प्रहार किया हुआ।

(स्त्री हीकियोड़ी)

हीगमत - देखो 'हिंगमत' (रू भे)

उ० वद्राकरी जुनै चद्र गत रहै नहीं फामनी जू गोती आगी गवर घणा री नी भीम री हीगमत कीवी। —रा हमीर

हीड़ स पु दीपावली की संध्या को बालिका बच्चों द्वारा मनाया जाने वाला एक उत्सव जिसमें एक मिट्टी के पात्र के नाकड़ी का उपड़ा बाला जाता है, पात्र म घर घर में मांग कर तेल डाला जाता है व रूई के बिनौले डाल कर जलाया जाता है।

रू भे — हींड।

हीड़कियोबाव देखो 'हिड़कवा' (रू भे)

हीड़कियौ—देखो 'हिड़कियौ' (रू भे)

हीड़ाऊ देखो 'हडाऊ' (रू भे)

उ० - हाथिया तणो ऊमेद बड हीडाऊ, पडाऊ नियगा री व्यसन पडियौ। —उम्मेदसिंह सिसोदिया रो गीत

हीड़ाकढ, हीड़ागर—स पु —१ सदा चाकरी करने वाला, सेवक, चाकर।

उ०—निराकार निरमै रे सतौ, जौ अकार मजावै। हीडागर हीडा कू दौडै, सौ भी धणी कहावै।—ह पु वा

२ बेगार मे काम करने वाला वर्ग, बेगारी लोग।

उ०—१ तरै जोधपुर सु वरसिंघ साथै चाकर बावर हीडागर परज लोग आया था सु सारा परा जाण लागा।—नैणसी

उ०—२ तरै गुढा री लोग महाजन, छोकगी, हीडागर, घाची-मोची सिकौ महेसजी रौ गिलौ करै—जै बीजौ साथ रावजी रा तौ घाची मोची हीडागर कस करै छै।—राव चद्रसेन री बात

हीडौ-स पु—१ सेवा, सुश्रुषा, टहल, बदगी।

उ०—१ ताहरा वीरमदैजी कह्यो—राजमलजी! थै म्हारै वडा सगा, था माहरा वडा हीडा किया। पछै वीरमदैजी उठासू सीख कीवी।—नैणसी

उ०—२ अवै म्है ई थनै सुभट ओळख लियौ। थारा नी नी व्है जैडा हीडा करिया जका रौ यू म्हनै औ फळ दियौ।—फुलवाडी

उ०—३ सवत १६२८ राव काणू जै वसियौ। रावत पचायण घणा हीडा कीया।—राव चद्रसेन री बात

२ चाकरी, नौकरी।

उ०—तरै जैतेजी नु वीरमदै कहाडीयौ—राव सु वीणती करौ नै म्हा कन्हा राव रा हीडा करावौ। ज्यु थै चाकरी करौ छौ त्यु म्है ही राव री चाकरी करा।—राव मालदेव री बात

३ रोगी या अस्वस्थ की सेवा, तीमारदारी, इलाज।

उ०—१ तद एकै दिन वीदणी बोली, म्हारै धणी रौ डील चाक नही छै, तौ पण म्हानु एकै कोटडी माहै राखौ ज्यौ हीडा करती जावा।—ठाकुरै साह री वात

उ०—२ बापडा नासतिक मिनख साची कैया करै है कै—दायजौ देय'र बेटी री मौत मोल लेवणी है। धन रा ठोकाकड लोभी लोग मरज-मादगी रै समै भी बहू रौ हीडौ क्यू करै?—दसदोख

उ०—३ कहसी—औ मुवौ, इण रा हीडा न किया। पछै आपनु तपाया, सेकिया, चेतौ बाहुडै नही। तरै गाव मैं स्याणा था त्यानू पूछियौ, कह्यौ—कोई उपाव करौ जिणसू औ जीवै।—नैणसी

४ आदर, सत्कार, खातरी।

उ०—१ परगनै मेडतै रौ गाव रायण पटै थौ। पातावता रौ भाणेज हुतौ। केईक दिन चोटीलै रह्यौ थौ, तद पातावतै घणा हीडा किया।—नैणसी

उ०—२ इण भाति दिन पाच राणा कनै रहा। राणौ बडा हीडा हरख किया।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ प्रभात हुवौ। जान नु भगति हुई। दिन ४ राखीया। हीडा कीया। जानी बोलीया हलाणौ करौ।

—तीडी खरळ री वात

उ०—४ राव स १६३५ डूगरपुर था पाछा आया तद तणा ठाकुरा रै गुढै आया। भला कीया, पछै रतनसी रै बेटै घणा धरती रै छळ राव चद्रसेन रा हीडा कीया।

—राव चद्रसेन री बात

५ इज्जत, सम्मान।

उ०—ताहरा औ भोकाई बोलियौ, 'थै इण माटी सु ठरिस्यौ नही। इण सोहाग मै लक्षण कोई नही। हू रजपूत छु। जै म्हारै साथै हालौ तौ हु थाहरा हीडा करु।

—तीडी खरळ री वात

६ मनो-विनोद, क्रीडा।

७ ऐसा कार्य जो किसी की चापलूसी करने के उद्देश्य से बेगार मे किया जाता है।

उ०—सूवा अर भोळा नै भरमावै है। स्याणा, चतर अर हुस-नाका रौ हीडौ चाकरी तथा गरज करतौ रेवै।—दसदोख

८ काम-काज, कार्य।

उ०—१ ठाकर नैडा वैठ परा'र पूछै है—हे महाराज! माग-जाग'र लेवौ, हुकम रा चाकर हा अबला नै क्यू पीडौ। म्हा लायक हीडौ ओळावौ।—दसदोख

उ०—२ लोक भेळौ हुवौ। ताहरा राबत सामै आपरा आदमीया नू कहीयौ, 'अजमेर रौ धणी परणायौ, तिकै रौ हीडौ काढणौ।

—राजा नरसिंघ री बात

हीच—देखो 'हीच' (रू भे)

उ०—असुर सर विलद भागी पडै आवळा, खग खहण हीच चत्र पौहर खहिया। आठ मौ उदध लियौ 'अभौ' अधपति, रीद हौदा सहित डूब रहिया।—अभैसिह राठौड रौ गीत

हीचडणौ, हीचडबौ—देखो 'हिचणौ, हिचवौ' (रू भे)

उ०—जेतइ दल आधा खिसइ तेतइ कायर खुणै खिसइ, जेतइ वै दल हीचडइ तेतइ तत्काल कायर तापडइ।—व स

हीचण—१ देखो 'हीचण' (रू भे)

२ देखो 'हिचण' (रू भे)

हीचणौ, हीचबौ—देखो 'हिचबौ, हिचबौ' (रू भे)

उ०—रावळ रै साथ दीठौ—जु राव जीवै छै। वेढ हुता पण घणी वेळा हुई थी। माहोमाही हीचिया था।—नणसी

हीचणहार, हारौ (हारी), हीचणियौ—वि०।

हीचिओडौ, हीचियोडौ, हीच्योडौ—कर्म वा०।

हीचीजणौ, हीचीजबौ—कर्म वा०।

हीचवणौ, हीचवबौ—१ देखो 'हिचणौ, हिचबौ' (रू भे)

उ०—'रुघपत्ती' सोढ' री, विढै वढियौ व्रतधारी। हीचवियौ हरदास, 'जगौ' 'सगतौ' 'गिरधारी'।—रा रू

२ देखो 'हीचणौ, हीचबौ' (रू भे)

हीचवियोडौ—देखो 'हिचवियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हीचवियोडी)

हीचाहीच—देखो 'हीचाहीच' (रू भे)

हीचियोड़ौ देखो 'हिचियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हीचियोड़ी)

हीज- अव्यय—१ केवल, मात्र ।

उ० १ म्हारे पण कन्या नहीं जिण थी म्हारौ मन अगाह थाह जसराज री पुत्रिया रा कन्यादान री फळ लेण री म्है हीज विचारी है । - द दा

उ० २ हरीया पीजै पेमरस, रसना लीजै राम । अन राम जुग मै जीव जै, कीजै यौ हीज काम ।- अनुभववाणी

उ०- ३ राजान कुमार घणै हरख सू आणद सू उछाह स नवल रग, नवल नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम सुख राम वात उहा हीज जाणी तिण बीजौ उण सुख अग बाता कुण जाणे ।— र सा स

उ०—४ सोभत था कोस ११ परवाणा कुण माहै । मत हीज रहे छै । धरती हळवा ३० सधा ३५, बाजरी माठ, सि१ हुवै । नैणसी

२ तैयार, तत्पर, सन्नद्ध ।

उ०—रजपूत रै घर माथै आवता माथौ साथै नहीं री आवणौ सम्‌ कि इसा रजपूत केसरिया करियोड़ा हीज बैठा है जिकै माथौ पाछौ लाणा देवै नही उरौ हीज देवै ।—वी स टी

३ लगभग, करीब, प्राय ।

उ०—१ अर फेर ही म्है तौ थांरा ही चाकर छा । था बिना म्हारी आ दसा हुई सो आप दीठी हीज हुसी ।
—पलक दरियाव री बात

उ०—२ यू कहि थ्यारजी मोड बाध ऊभा रहिया, तद सारा चुप रहिया । इतरै मैं फौज आई हीज । अमरसिघ री बात

४ एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी बात पर जोर देने के लिये किया जाता है ।

उ०—१ चतुरग फौजा बौहरग वाला मिलिय भानि सू विराजमान वीसै । जाणी अढार भार वनसपती रित वरास मिलि फूलि रही । दीठा हीज वणि आवै । न आवे काही । वचनिका

उ०—२ बजि थाळ सकाळ वाजित्र बजै, कुमरा सघणा सुरियद किया । बखिया हीज आवै वणी, उण दिन सगी अजोधिया ।
- सू प्र

५ निश्चय या दृढता सूचक अव्यय ।

उ०—१ साहरा पहिली तौ नटि गयौ पछै कहियौ जी बसतराय औ हीज छै ।—द वि

उ० २ धाड़ी आंणियौ वासी रासणौ नही, साढीया तुरत वैच दीनौ, उण हीज वेला ।—र सा. स

६ अन्ततोगत्वा, आखिरकार ।

उ०—१ अनै रुघनाथजी रा गुरु बुदरजी तौ घर मैं थका ऊट हीज मारयौ ।—भि द्र

उ० - २ तारा वीरमदे गूती ठौड देराण नू गया नाहरा खीवौ मुहती आयौ हीज तरियौ अर वीरमदे नू कह्यौ - मरण रो ठौड़ दी देवतै हुती । द दा

उ०—३ आसरसी आनीवास री । चौराई पटै । समत १६७७ बीह पटै । समत १६६३ अमरसिघजी रै गयौ, उठै हीज मुवौ ।
—नैणसी

७ अनन्यता सूचक अव्यय ।

८ अल्पता या परिमिती सूचक अव्यय ।

९ देखो 'ही' (रू भे)

उ० थारी गाळती जेठवा केठवे रहै छै, सू त्याग मारजौ । उण हुकम दियौ हीज थौ, तै जेठवै काठिया भेळा हुयने कह्यौ—'थौ आपणी धरती माहै माऊ आय पैठौ । नैणसी

रू भे हिज ।

हीजर स पु [अ हिजार] पाषाण, पत्तर, पत्थर ।

उ० —हीरपणौ हीजर करै, अकल तणा अजीब । गुर हीणा गळ काढणा, न जाणै पर पीड । नि र सा

हीजरणौ, हीजरबौ देखो 'हिजरणौ, हिजरबौ' (रू भे)

हीजरियोड़ौ देखो 'हिजरियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हीजरियोड़ी)

हीजरौ- स पु वियोग का दुःख ।

हीडौ वि — १ बधन मुक्त, स्वतन्त्र, आजाद ।

उ० हू बळिहारी राणिया, थाळ बजाणै दीह । बीर जणी रा जै वणी, सांकळ हीडा सीह । वी स

२ रहित, बिना ।

३ ढीठ, धृष्ट ।

हीड—स पु— समूह, भीड ।

उ० छुटै तीर रा जोम त्या ज्योम छायौ, उडै चील कै हीड कै सीड आयौ ।—रा रू

हीडणौ, हीडबौ -देखो 'हीडणौ, हीडबौ' (रू भे)

उ० माथै भीडै हीडड़ पलसु द्रव वाहणि झमि जई ऊपजति । गजह रूप सउ करि रै आज तीह नह थांराह पडह देवराज ।
—वरितग

हीडणहार, हारौ (हारी), हीडणियौ—वि० ।
हीडिओड़ौ, हिडियोड़ौ, हीडयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हीडीजणौ, हीडीजबौ—कर्म वा० ।

हीड़वण स स्त्री—एक प्रकार की मिश्री विशेष ।

उ० - तिकौ आरणा माहै घणौ व्यारा पकाय, पछै अवल घ्रत सेर ७ मगरै री नीपनौ आणियौ । आणा सेर ७ गुळ हीड़वण मिसरी हुवै तिसड़ौ सेर ७ गुळ आंणीयौ नै रोटा घ्रत माहै जोजर छिट-काय जिसड़ा पई तिसड़ा पछै, घ्रत गुळ मांहै घणौ काठा मसळ चूरमै रा पीडा सात करीया ।—तिमरलिंग पातसाह री बात

हीडाऊ—देखो 'हेडाऊ' (रू भे)
हीडियोडौ—देखो 'हीडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीडियोडी)
हीडोलणौ, हीडोलबौ—देखो 'हिंडोळणौ, हिंटोळबौ' (रू भे)
उ०—सारग चाप चडाविय डाविय बाहु नइ प्राणि। हरि हेला **हीडोलिय** तोलिय तसु बलु प्राणि।—जयसेखर सूरि
हीडोलाखाट, हीडोलाखाटणी-स पु — छत के कडो मे रस्सी के सहारे झूले की तरह लटकाई हुई खाट, चारपाई।
उ०—नितु नवा अलकार वावरइ, उत्फुल्ल पुष्पसिय्या आदरइ, **हीडोलाखाटणी** लीला धरई, भोग पुरदर, होठ फुरइ।—न स
हीडोलाट—देखो 'हीडोलाट' (रू भे)
उ०—कवि कहइ रतिपति तगु विचार आछा अबर पहिरणि सार। वावनिचदन सिर लाइइ, **हीडोलाट** खाट पुठीइ।
—प्राचीन फागु सग्रह
हीडोलियोडौ—देखो 'हिडोळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीडोलियोडी)
हीण-वि [स हीन] १ निम्न स्तरीय, न्यून, घटकर, घटिया, हल्का, ओछा।
उ०—१ द्रोण सोण तुरगै रथ दीसइ, जेउ युद्धि कुण **हीण** कलीसइ। युद्धसत्रि जिम राउ जि मत्रइ, एक दीहि भड कोडि निमत्रइ।—सालिसूरि
उ०—२ भाई अर माइता रै उठै ढबनै दिन तोडणा उणनै सपनै ई कबूल नी हा, पण बाण रौ औ **हीण** अर ओछौ बरताव देखनै उणरी सारी सुध-बुध मायै जाणै पाळौ पडग्यौ।—फुलवाडी
२ कायरता पूर्ण।
उ०—सौ सपूत जै पीछौ राखै, दुरजन **हीण** कदै ना भाखै। वैरा तिणा विसारै वेहा, सौ जाया ही अणजाया जेहा।
—डाढाळा सूर री बात
३ रहित, बिना, हीन, अभाव ग्रस्त।
उ०—१ अकसमात मिळियौ इदोखै, नैण **हीण** इक नाई। दोनौ हाथ जोड दुग्गा नै, दुरबळ दसा दिखाई।—मे म
उ०—२ प्रथी करण थिर वेद पुराणा, करम जिका बळ **हीण** कुराणा।—रा रू
४ अशक्त, कमजोर, क्षीण।
उ०—१ महिपति अमीर तन **हीण** मान, पाना दिस कोई धर न पाण। तद तेज बाण नरसिंघ ताय, 'अभमाल' पान लीन्हौ उठाय।—वि स
उ०—२ भडिया सनाह तन तुरग जीण, हुय गया मुगळ दुख दहळ **हीण**।—रा रू
५ क्षीणकाय, पतला, दुबला।
उ०—चपा वरनी, नाक सळ, उर सुचग विचि **हीण**। मदिर बोली मारवी, जाणि भणक्की वीण।—ढो मा
६ तुच्छ, नगण्य, निरर्थक, महत्वहीन।
७ लघु, छोटा।
८ रिक्त, खाली।
९ छोडा हुआ, त्यागा हुआ, त्यक्त।
१० दोषयुक्त, त्रुटियुक्त, अशुद्ध।
११ अल्पतर, कम।
१२ वर्जित।
१३ नष्ट।
१४ कायर, डरपोक।
१५ साहित्य मे खलनायक, अधम नायक।
१६ धर्म शास्त्र के अनुसार ऐसा साथी जो विश्वसनीय न हो।
१७ काव्य सम्बन्धी एक दोष।
१८ मूर्ख। (ह ना मा)
१९ नीच, पामर।
रू भे—हीण।
अल्पा,—हीणु, हीणौ, हीन।
हीणअग— देखो 'हीनाग' (रू भे,)
हीणउ—देखो 'हीणौ' (रू भे)
उ०—वालभ दीपक पवन भय, अचळ सरण पयट्ट। कर **हीणउ** धूणइ कमळ, जाण पयोहर दिट्ठ।—ढो मा
हीणउपमा—देखो 'हीनोपमा' (रू भे)
हीणकरम-स पु [स हीन+कर्म] १ नीच कार्य, कुकृत्य।
२ बुरे कर्म, बुरे भाग्य।
हीणकरमी, हीणकरमौ-वि [स हीन+कर्मिन्] १ भाग्यहीन, हत-भाग्य।
२ बुरे कर्म करने वाला, कुकर्मी।
३ अन्यायी, दुष्ट।
हीणचरित्त-वि [स हीन+चरित्र] दुश्चरित्र, चरित्रहीन।
हीणता-स स्त्री [स हीनता] १ हीन होने की दशा या भाव।
२ अभाव, कमी।
उ०—सरी नौसरै हार मोती सजोया, पडै स्रेणता, **हीणता** सुक्र पोया। परीखै सरीकठ मैं हीर पूरौ, सुभै सूर आकास जाणै सनूरौ।
—रा रू
३ तुच्छता, ओछापन।
उ०—बुदी कोटौ बीकपुर, सारा भूप अबक। राज दिखावै **हीणता**, ज्या धन खावै रक।—रा रू
४ कमजोरी, दुर्बलता।
उ०—'हैमत' हिम्मत ऊधरौ, 'सगतावत' उण वेर। विवै वरज्जै **हीणता**, ऊठ गरज्जै फेर।—रा रू
५ बुराई, नीचता, निकृष्टता।

६ बुरे कर्म ।
७ राघुता, अल्पता ।
८ कायरता ।
९ मूर्खता ।
रू भे हीनता ।

हीणवंत, हीणवती, हीणवतौ स पु एक प्रकार का अशुभ चिन्हों वाला घोडा । (शा हो)
रू भे हीनवत ।

हीणवोस–स पु –डिंगल साहित्य मे (विशेषकर गीतो मे) नायक के माता-पिता व जाति का अर्थ ठीक न होने पर, होने वाला एक साहित्यिक दोष ।

हीणपक्ख, हीणपक्ष, हीणपख–स पु [स हीन + पक्ष] १ कमजोर या दुर्बल पक्ष ।
२ वह बात जो दलील या तर्क से प्रमाणित न की जा सके ।
३ किसी विषय का कमजोर पक्ष । (Weak Poin)
रू भे हीनपक्ख, हीनपक्ष, हीनपख ।

हीणपण, हीणपणौ स पु १ हीन होने की दशा या भाव ।
२ लघुता, अल्पता ।
३ दुर्बलता, कमजोरी ।
४ नीचता, धृष्टता ।
५ कायरता ।
उ०—वीरा उबारण बाहुबळ, जण जण मुख जस जाप । पण नह धारण **हीणपण**, पौरस इण परताप ।—जैतदान बारहठ

हीणपद–वि —पदच्युत, पद से हटा हुआ, पद से गिरा हुआ ।
उ०—'अभो' कहै रीझै अमर, वैगी कीजै वात । मिच्छ सिधावै **हीणपद**, ग्रह आवै गुजरात ।—रा रू

हीणपुण्य, हीणपुण्या, हीणपुण्यौ, हीणपुन्या–वि [स हीन + पुण्य] १ भाग्यहीन, हतभाग्य ।
उ०–१ आप नै मरायती वेळा जैड़ी काठी छाती करी, वैडी छाती इण **हीणपुण्या** राजकवर नै छिटकावता नीं कर सकै । – फुलवाडी
उ०—२ पछै वांरा स्वारथ माथै धूकती काढी—आपडा **हीणपुन्या** जादू मंतरा सू ईं सगळी बाता सारणी चावै ।— फुलवाडी
२ जिसके पुन्य क्षीण हो ।

हीणमांण, हीणमांन-वि [स मान + हीन] १ जिसका मान घट गया हो, बेइज्जत, अप्रतिष्ठित, हतवीर्य्य ।
उ०—राज राव अनै राण, पिनाक पै धरै पाण । हिलै होय **हीणमांन** वईवांण वईवांण ।— र रू
२ हताश, निराश ।

हीणमेध–वि [स मेधा + हीन] १ मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी । (ह नां. मा)
२ जिसकी बुद्धि कमजोर हो, अल्प बुद्धि ।

हीणरस देखो 'हीनरस' (रू भे)

हीणी [स स्त्री] ओछी, हल्की, न्यून ।
उ० ठेठ गिर अग्गिवाण थट, गाजै न हीणी गाथ । वहै भरोसै बाहुबळ, 'पाताळ' पहै प्रभात । जैतदान बारहठ
२ छोटी, लघु ।
३ नीची, हीन, निम्न ।

हीणू, हीणौ देखो 'हीण' (अल्पा, रू भे)
उ० –१ वाम्बा बहुली द्रव्य हुवै अधिकी कुल **हीणौ** । बल पामी अति बहुल प्रबल हुए सरवै पीणौ । ध न ग्र
उ० २ थान **हीणा** जिका थान थिर थापिया, थांन धारी दिया नवा उथाप । अणी साधार ना विजय हद पाळिया, प्रकट इण हणुमत जसी प्रताप । रतनसिंघ राठौड़ री वेलि
उ०—३ तिलपति देस हुवौ तिम रीणौ, हाथी जम महामद **हीणौ** । सू प्र
उ० ४ पाप तणा फल भैंरो रे प्राणी, पाप सब दुख होई रे । **हीणा** दीणा दीसै दुखिया, सार न पूछै कोई रे । जयवाणी
उ० ५ नर **हीणौ** आपणौ भावौ है, कोढी कुस्टी कोई । जाकै सग सीधारता है, भला कहै सब लोइ । मीरां
रू भे हीणो, हीणउ ।

हीणौवाय स पु १ कायरता, भीरुता ।
उ० पग पग काटा पाथरै, वाडीजी वन राय । होणौ ज्यू ही होवसी, दियै न **हीणौवाय** । बां दा
२ कमजोर पक्ष ।
३ दीन वचन ।

हीतळ हीतल–स पु [स हृदय + तल] हृदय तल, अन्तःकरण, अन्तस्थल ।
उ० –१ मीठै मुख मीठै **हीतळ** हलवाळी, पीतळ पैरण नै सीतळ गलवाळी । पुरखा पालनारी सारथ धिन सारी, लोकण जळ लोवण सोवण सिणगारी । ऊ का
उ० २ ताप संताप मिटै भवकौ सब, यह दसा कबहू नहि देखी । सीतल की गुण देवन ही गुण, **हीतल** सीतल होत विसेखी । ध व ग्र

हीन -देखो 'हीण' (रू भे)
उ०—किसु पहुतउ द्वापरि प्रगउ, ईह लगइ मह अम्ह घरि विलउ । अरजुन बोलइ रे अकुलीन, अरजुन भूझिसी मइ सु हीन ।
—सालिभद्र सूरि

हीनक्रम–स पु [स] काव्य मे होने वाला दोष जो, गुण गिनाने के क्रम मे गुणी न गिनाने पर होता है ।

हीनता—देखो 'हीणता' (रू भे)
उ०—नारद कै मन भया अनेसा, फिर बूज्या गुरु कू उपदेसा ।

नारद आप हीनता भाखी, गुरु कु गुभि हिरदै की दाखी।
—अनुभववाणी

हीनदत—देखो 'हीणदत (रू भे)

हीनपक्ख, हीनपक्ष, हीनपख—देखो 'हीणपख' (रू भे)

हीनबळ–वि [स बल+हीन] जिसका बल क्षीण हो गया हो, अशक्त, कमजोर।

हीनयान–स पु [स हीनयान] बौद्धो की एक प्राचीन शाखा जिसके ग्रन्थ पाली भाषा मे है।

हीनयोग–स पु [स] औषधियो का ऐसा योग जो उचित परिमाण से कम हो।

हीनयोन, हीनयोनि–स स्त्री [स] १ नीच जाति, नीच कुल।
२ नीच योनि, अधम योनि।
वि—नीच योनि का, नीच जाति या कुल का।

हीनरस–स पु [स] काव्य रचना का एक दोष जो प्रसग के विपरीत रस की योजना करने पर होता है।

हीनवाद–स पु [स] १ मिथ्या तर्क, भूठा या निरर्थक वाद।
२ भूठी गवाही।

हीनवादी–वि [स हीनवादिन्] १ मिथ्या तर्क देने वाला, भूठा या निरर्थक वाद प्रस्तुत करने वाला।
२ परस्पर विरोधी कथन कहने वाला।
३ भूठी गवाही देने वाला।

हीनवीरज, हीनवीरय–वि [स हीन+वीर्य्य] १ कमजोर, अशक्त, दुर्बल।
२ कायर, डरपोक।
३ निस्तेज, मद।

हीनाग–वि [स अग+हीन] १ जिसके कोई अग न हो, अग-भग, अग-हीन।
२ खण्डित, अधूरा।
रू भे—हीणअग।

हीनोपमा–स स्त्री [स] उपमा अलकार का एक भेद जो, किसी बडे उपमेय के लिये छोटे उपमान की योजना करने पर होता है।
रू भे—हीणउपमा।

हीप—देखो 'हीप' (रू भे)

हीबणौ, हीबबौ–क्रि स—१ युद्ध करना, लडाई करना।
२ मारना, पीटना, कूटना।
३ सहार करना, वध करना।
४ पछाडना, पटकना।

हीबर—देखो 'हयवर' (रू भे)
उ०—**हीबर** बोह हळबळ सुडि सळवळ, पदमा पुवगा कोई पार नही। अवतार असा दस आप तणा, जुध जीपण जाणि विसन सही।—वि स सा

हीबियोडौ–भू का कृ—१ युद्ध किया हुआ, लडाई किया हुआ २ मारा हुआ, पीटा हुआ, कूटा हुआ ३ सहार किया हुआ, वध किया हुआ ४ पछाडा हुआ, पटका हुआ।
(स्त्री हीबियोडी)

हीमसु–स पु [स हिमाशु] १ चन्द्रमा, शशि।
२ रूपा, चादी।

हीमत—देखो 'हिम्मत' (रू भे)
उ०—१ आयौ 'करन' 'मुकन्न' तण, भड मेळै चद्रभाण। 'हैमत' **हीमत** अग्गळौ, 'पीथौ' पत्थ प्रमाण।—रा रू
उ०—२ किणी री **हीमत** नी ही कै राजाजी रै ऊबी पज्योडी बात नै सावळ सवी करनै केवटै। सगळा रा मूडा उतरियोडा हा।
—फुलवाडी
उ०—३ **हीमत** मत छाडौ नरा, मुख तै कहता राम। हरीया हीमत सु कीया, धू का अटळ धाम।—अनुभववाणी
उ०—४ माळी रा है जठै ई पग चिपग्या। थोडी ताळ पछै नीठ **हीमत** करनै धकै हालियौ।—फुलवाडी

हीमतण–वि स्त्री—हिम्मत वाली, साहसी।

हीमतभरियौ–वि—१ जिसम हिम्मत हो, साहस हो, हिम्मती, साहसी।
२ वल, पौरुष वाला।

हीमतवर–वि—हिम्मती, साहसी।
उ०—कवर अणू नौ समभवान, निडर अर **हीमतवर** हौ।
—फुलवाडी

हीमति, हीमती–वि (स्त्री हीमतण) साहसी, निडर, बहादुर।
उ०—हाथाळ हेल हमीर हूतल आप कुळ अजुआळ। **हीमति** बहादर **हीमती** कलि भडा धोडा कीमती।—ल पि
रू भे—हिम्मति, हिम्मती, हीमती।

हीमत्त—देखो 'हिम्मत' (रू भे)
उ०—येटू वर सबर ऊडा सर थागै, आ रै माळागर मूडा रै आगै। सारी कीमत है करियोडा सारै, हीमत्त भरियाडा **हीमत्त** नह हारै।—ऊ का

हीमाचळ—देखो 'हिमाचळ' (रू भे)
उ०—**हीमाचळ** नारद सू हसिया, कुवरि आविया गोदकियइ। वर कोइ एक साखइत बतावउ, दही जियइ रइ भ्रगुटि दियइ।
—महादेव पारवती री वेलि

हीमायत—देखो 'हिमायत' (रू भे)
उ०—तठै मेडतौ जागीर माहे मडियौ नही, कह्यौ—औ माहाबतखान थानु **हीमायत** कर दीरायौ थौ, दरगाही मनसप माहे दीयौ नही।—नैणसी

हीमायती—देखो 'हिमायती' (रू भे)

हीमाळ, हीमाळ–स स्त्री—ठण्डी लहर, शीतलहर।
उ०—काती छातिमाहि तइ, हलफारिउ **हीमाळ**। धूजइ अग

आग्हारचु, ए ताहरी भाभाळ । मा का प्र

२ देखो 'हिमाळय' (रू भे)

हीमाळइ, हिमाळउ, हीमाळै, हीमाळो देखो 'हिमाळय' (रू भे)

उ० १ महा अपमह आगइ, जै नर आग ईसा महत्व आइ । श्रावण का साया पच्छै, जाणि हीमाळइ गजा गळीया हो जाई ।

वी दे

उ० २ हीमाळउ हाथी गळइ, हुई हाल कमाल । इगाळा चोटी पहिरीइ, मुगि भरीइ लबोल । मा का प्र

हीय, हीयइ, हीयइ, हीयउ, हीयऊ, हीयडइ, हीयडलो, हीयडौ देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ० १ रामि रमाउन् मनीउ धुणीअइ, किम रमाणायरू हीयइं लरीजइ । सानिधि सागमा तिनि नमइ । सानिगद्र सूरि

उ० २ नाह उत्तरीयौ नहींग बनाग । नारि का नाथि तू, हीयउ नै रास । वी दे

उ० ३ मारवणी लै अति चतुर, हीयइ चेत विचार । जउ भला तू कागदउ, करहउ नावै भार । ढो मा

उ० ४ बारगह नरना गीरगी मन-लाह । हीयऊ नइ हाथि गला गही बांह । वी दे

उ० ५ ताजइ नाकारउ नवि काम्यउ, दीक्षा लीधी भाई बहु मानि रे । बार बरस व्रत पाळि रह्याउ, हीयडइ भरतउ नागिला नउ ध्यान रे ।—रा कु

उ०—६ अरध मण्डित नारी नागिला रे, खटकइ म्हारा हीयडला बारि रे ।—रा कु

उ०—७ केवल जिम दूर थकी दीसै, हीयडौ जिन देखण नै हीसै । वाखाणी साहु बिरवा विसें, याणा दीधी ए जगदीसें । ग व ग

हीयडु, हीयडइ, हीयडउ, हीयडलू, हीयडलो, हीयडौ, हीयरौ देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ० १ तु रगि रमवा गयु, जिहा श्रयरनी शाग । छोडी हीयडइ माहरइ, कीधी कत सुजांण । मा का प्र

उ० २ धीरी रही धन हीयडउ रागाई । आणिया बाळ्ह ही मेल्ही गाई । वी दे

उ०—३ वाली डाढिम आपणी र, रजि मुझ म मार । छनाणगाइ छानउ रहधु रे, हीयडउ करी कठोर । हीराणद सूरि

उ०—४ हीयडु हेजइ उल्हसइ । ग कु

उ०—५ हीयडलूं घणू गहिबरिउ, तु सुणि न आग्हारा नाथ जी । तु अमरापुरि संचरघउ, हु मरणि न मेल्हु साथ जी ।

का दे प्र

उ०—६ करि कागळ लेखिणि कारी, माधव हीयडा माहि । बाई बेहू बलि गया, नीसासा नइ दाहि ।—मा का प्र

हीयणाइ—क्रि वि [स अधुना] अभी, अब ।

उ०—जाणें हीयणाइ हरणी हणी । ओवी गन उघाडियो जोबन पूर । वी दे

हीयतल स पु [स हृदय + तल] अन्तस्थल, हृदयतल ।

उ० आर करै सीतन हीयतल, अग नै नहठगाग । जो ठीक आपाली तो कही, कोड मिले अब ती भाग । भ ग म

हीयाराम देखो 'हिरदेराम' (रू भे)

उ० हीयाराम आगम उदार पग डारै । गाय री कुर देगै कुलटा शुभ सारै । ऊ का

हीयाफूट, हीयाफूटोडौ, हीयाफूटौ देखो 'हीयाफूटौ' (रू भे)

(स्त्री हीयाफूटी, हीयाफूटोडी)

उ० सदेसउ जिन पाठवइ, मोरउगउ हीयाफूटि । पारखाना भूल जिऊ पडिवइ आगमि भूलि ।—ढो मा

हीयालि, हीयाली देखो 'हियाळी' (रू भे)

उ० १ भूलि भूलिग महिलनि गोरी । कालिका चरान कीध हीयाली, अन्तरालि थई लाखरी रागी । हीमाइ हुई हिव होअत भागी । शानिसूरि

उ० २ वाल पाजल गई कुम्भाळि, राग कुरजन पवित्र आलि देहि । ए पुरित बन न पाजल लागी, फुन काजि आत एक हीयाली ।

सानिसूरि

उ० ३ कही पडित ए हीयाली, गत कारिजगी बात निचाली रे । निरखी नै सुन्दर नारी, भरणी आदर कोर धारी रे ।—ध व प्र

उ० ४ अरथ कही मुग वलियो, गहगो सरस हीयाली रे सार । चतुर नर एक पुरष अग माहे गरवो, सहु जाणी संसार ।

ध व प्र

हीयाळै देखो 'हिमाळय' (रू भे)

उ० १ काली कायत गिर गळी, गळै हीयाळै देह । हरीया निज पलट दूरि है, नागो एत वनह । अनुभववाणी

उ० २ जाग हीयाळै गळन जिद, अनादि रागत नाद विद । कोटि गऊ दिज दान देत, गगा कासी मुगति गेत । अनुभववाणी

हीयौ देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ० १ राम तेडजी गोरखा, राजन रमी सखी । अगरी देखण नै हीयौ, वैरण लाजा बुरी । पना

उ० २ धी की मानजू गानीगी बाग, काई न गानी राजा पाई बचन । काई कहेरी सामरथ, गाव न उतरथी हीया थी एक ।

वी दे

उ०—३ सूरजना किरणा पच्छिम ढल्या, पखी सगा नइ गिरया । विरहीना हीया बल्या, गावाळ धरै वल्या । रा सा स

उ० ४ गगताइ सुरगणा दनि ढोल बाजइ । जाणै गागळू किरि मेह गाजइ । हीया छ सूकइ सर सेरा सूकइ, भय बीहता कायर जीव मूकइ ।—सानिसूरि

उ०—५ साप राखिपाल जाणी अतीसार रागहारिग, पीढी विध गाल पाडु गोला सूल खैरा है । हीया रोग सारा खास रुधिर प्रवाह

रूप, सीस पीड रोग अरू जेतै रोग नैन है ।—ध व ग्र
उ०—६ वौ आपरी घरवाळी नै समझावण सारू बात करी कै वा तडकनै कह्यौ—म्हनै समझावण नै आया है, पैला थारा हीया माथै हाथ धरनै सोचौ कै एकाएक बेटा नै दिसावर भेजण सारू थे राजी व्हिया इज कीकर ।—फुलवाडी

मुहा०—१ हीया गाव जाणा = अक्ल व समझ चली जाना, नासमझी की दशा होना, बेवकूफी के काम करना । २ हीया फूटणा = बुद्धि समाप्त हो जाना, समझ चली जाना, सूझ-बूझ न रहना । ३ हीया माथै हाथ धरणौ = तसल्ली एव धैर्य के साथ किसी बात पर विचार करना, विवेकपूर्ण बात करना । ४ हीया माथै हाथ होणौ = जोखम या जिम्मेदारी वहन करना, जोखमपूर्ण कार्य की चिंता होना । ५ हीया मै कागसी फेरणौ = किसी बात पर व्यावहारिक बुद्धि से विचार करना, सोच विचार कर काम करना, अपने कार्यों का पुनरावलोकन करना । ६ हीया मै गोटौ ऊठणौ = हृदय मे उत्साह भरना, उमगित व उत्साहित होना, शोक पूर्ण बात पर मन मे घुटन होना । ७ हीया मैं बसणौ = किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु की याद दिल मे हर वक्त रहना, अत्यन्त प्रिय होना । ८ हीया मै बैठणौ = कोई बात या कार्य समझ मे आ जाना, कोई बात दिल मे घर कर जाना । ९ हीया मै लाय लागणी = अत्यन्त दुख या शोक के कारण मन मे पीडा होना, दिल मे आग लगना, शोक सतप्त होना, दुख मे तडफना । १० हीया री दाझ या हीया री दाह = दुख की आग, मन की तडफन, वेदना, दुख, शोक, पीडा । ११ हीया री पीर = देखो 'हीया री दाझ' । १२ हीया री हाम = हृदय की उत्कण्ठा, इच्छा, तीव्र आकाक्षा । १३ हीया सू उतरणौ = किसी के प्रति अनिच्छा या अरुचि होना, किसी व्यक्ति के प्रति अच्छे खयाल न रहना, इम्प्रेशन बिगडना । १४ हीयै ऊकळणौ = मस्तिष्क से कोई बात उपजना, कुछ याद आना, युक्ति निकलना । १५ हीयै झरणौ = किसी बात या परिस्थिति को सहन करना, बरदाश्त करना, मन से मान लेना । १६ हीयै बतूळिया ऊठणा = मन मे कई तरह के विचार उठना, तरह-तरह के तीव्र भावो का सचार होना । १७ हीयै बात ढूकणी = बात समझ मे आना, बात मान लेना, जचना, उचित लगना । १८ हीयै बैठणौ = समझ मे आना, सीख मे आना, हृदय मे बसना । १९ हीयै भाटो होणौ = पत्थर दिल होना, दया, ममता, प्रेम, क्षमा आदि कोमल भावो का हृदय मे अभाव होना । २० हीयै राम बापरणौ = किसी के मन मे भलाई की बात आना, भला कार्य या भली बात करना । २१ हीयै रोग होणौ = मानसिक व्यथा होना, मानसिक व्यथा के कारण शारीरिक एव बौद्धिक क्षति होना, उत्साह व उमग न रहना । २२ हीयै रा हूम = मन की तमन्ना, लालसा । २३ हीयौ उळसणौ = हृदय उत्साहित होना, उमगित होना, लालायित होना, खुश होना, प्रसन्न होना । २४ हीयौ खुलणौ = बुद्धि का विकास होना, सकोच मिटना, बौद्धिक विकास होना । २५ हीयौ गोटीजणौ = मन के अन्दर घुटन होना, मन कुण्ठित होना, अन्दर ही अन्दर घुटना । २६ हीयौ ठडौ करणौ = दिल को तसल्ली देना, सतोष करना, आशा पूरी करना । २७ हीयौ दबकणौ = आतकित होना, भयभीत होना, घबराना, प्रभावित होना । २८ हीयौ देणौ = किसी के प्रेम मे फस जाना, दिल दे देना । २९ हीयौ फूटणौ = बुद्धि या समझ समाप्त हो जाना । ३० हीयौ बैठणौ = घबराहट होना, अनिष्ठ की आशका से चिंतित होना, परेशान होना, भयातुर होना । ३१ हीयौ सालणौ = मानसिक व्यथा के कारण अन्दर ही अन्दर कष्ट पाना, दुखी होना, मन मे कोई टीस लगना । ३२ हीयौ हथाळी लैणौ = साहसिक कार्य हेतु तत्पर होना । ३३ हीयौ हीयौ दळीजणौ = घुटन होना, पिसना, दम घुटना ।

हीर—स पु [स] १ हीरा नामक रत्न ।

उ०—१ सग तेण विराजति याळ सगी, रमणी अलकावलि सोभ हरी । सुभ सोभत पकज हीर सिरै, क्रति नौ ससि हस्ति असोभ करै ।—ऊ का

उ०—२ ऊपरि पद पलव पुनरभव ओपति, त्रिमळ कमळ दळ ऊपरि नीर । तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरिहस सावक ससि हर हीर ।—वेलि

उ०—३ नयण कज सम निपट, सुभग आणण हिमकर सम । जप सम 'ग्रीवह' जळज, दसत सम हीर डसण तिम ।—र ज प्र

२ मोतियो की माला, हार ।

उ०—मानहु रूप मनोज अधिक बाकी अदा, जर पवसाखा जोख सोभ भूखण सदा । पहरि पना पुखराज मुकताहळा, ऊगै फजर अदीत किना चढती कळा ।—सिवबख्स पाल्हावत

३ सूर्य, भानु । (ना डि को)

४ विद्युत, बिजली ।

५ इन्द्र का वज्र ।

६ शक्ति, बल ।

७ सर्प, साप ।

८ शेर, सिंह ।

९ लाक्षणिक अर्थ मे किसी अमूल्य वस्तु के लिये उपमा ।

उ०—इयै रै वनै गै क्या जोवसौ रे, औ तौ हाटा माय रौ हीर, बिलाली रै जोवसा म्हारा राज ।—लो गी

१० किसी वस्तु के भोतर का मूल तत्व, सार भाग, सत, गूदा ।

११ लकडी के नीचे का सार भाग ।

१२ धातु, वीर्य्य ।

१३ रेशम ।

उ०—१ सुचि कीजै स्नान सवाडा, सहु पहिरै नवि नवि साडा । हीर चीर पाटबर हेम, पहिरौ, सहु भूखण प्रेम ।—ध व ग्र

उ० २ निरहन गारी निरह की, सुणि सुणि सिरगी मार । हरीया सिर सु न्ह्रीया, हीर चीर सिणगार ।—अनुभ[illegible]

उ० —३ विछायत सामियान तागा तई जं [illegible] हीर [illegible] । मिध आसण छत्र सोहे महा जगमग हम माहे । सू प

१४ रेशम का डोरा ।

१५ रेशम का वस्त्र ।

१६ जैसाम चरित्रकार मोहर्त के पिता का नाम ।

१७ शिव का एक नामान्तर ।

१८ छप्पय छन्द का ६४ वां भेद जिसमे, ७ गुरु, १३८ लघु के अनुसार १५२ मात्राएं तथा १४५ वर्ण होते है ।

१९ २३ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण के अन्त मे रगण होता है । रघुनर जस प्रकास मे इसे २१ मात्राओं का माना है ।

२० ठगण की पांच मात्राओं में से चौथे भेद का नाम ।

२१ प्राय सारे भारत मे पाई जाने वाली एक प्रकार की लता ।

२२ रंजा की प्रेमिका हीर जो रंजा रांझा की मुख्य नायिका है ।

हीरइ, हीरउ देखो 'हीरो' (रू भे)

उ० १ सीहद नानिइ गीह, पान गुणे, गुणे पान, सीलउ **हीरइ** हीरउ मानइ, मामालम्बु राउत राजगद् आगाल सोभइ ।—व स

उ० २ पदक प्रियु तउ हू मोतिन माला, हीरउ तउ हू मृदरडी रे बहिनी । चद्र प्रियु तउ हू रोहिणी थाऊ, चन्दन गगन कुमरडी रे बहिनी । स कु

हीरक, हीरकण स पु [स] १ हीरा नामक रत्न । (डि को)

उ०—नीरभर माहरा गीर लखलग नद । हीरकण साह तौ पती त्रण हेम ।—जुगतीदान देथौ

२ वज्र ।

रू भे हीरकि, हीरकौ ।

हीरकणी स स्त्री — १ हीरे का छोटा कण, टुकड़ा ।

उ० सवा सेर रौ खायनै रहै थिगियां सगा, चूण गिणिया जबर चाव चीठा । दांत लौ **हीरकणियां** जिसा झिलाबै, पिटक गिणिया जिसा सहज कीटा । उदैराम बारहठ

२ कांच काटने का वह औजार जिसमें हीरे का कण लगा होता है ।

रू भे —हीराकणी, हीराकणी ।

हीरकि, हीरकौ— देखो 'हीरक' (रू भे)

उ०— निपुण निवेसइ मेवडी, केवडी आलउ रूप । हीसउ मुकुट कटीरकि, **हीरकि** नव नवउ रूप । जयशेखर सूरि

हीरडु, हीरडौ —१ देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—अहै **हीरडा** तद हरि पुजीउ कि जागु सिवराति । गोरी मठ न ऊतरि, सारी दीह नि राति ।— गुणचन्द सूरि

२ देखो 'हीरौ' (अल्पा, रू भे)

हीरणौ, हीरबो देखो 'हेरणौ, हरबौ' (रू भे)

हीरद, हीरद्दौ देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ० प्राणा मित्र **हीरद्दा** जै अी माजै न तुक माल, जणाणी काठीर रखाजै लाजै ओपा धार । जैतसिंह राठौड़ री गीत

हीरपट, हीरपट्ट स पु रेशमी वस्त्र ।

उ० अथ नर । देव दुग्ग नीलागुरु गोपी नीलांग रातोगा पाट-गीया **हीरपट्ट** साउला चिति निलिगा नरम नणी ।...... व स

हीरबुद स पु पारसी धर्म का पुजारी । (मा म)

हीरवडि स पु —एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०— पहूगूल, **हीरवडि** गजवडि नीलवडि सेवन्तीवडि सोवनवडि जादर पोती पट साउली आगहन ' ' व स

हीरवणी स स्त्री कपास का पौधा । (शेखावाटी)

हीराकणी देखो 'हीरकणी' (रू भे)

उ० वसुधा मनज बनात विछायत ज्यों बणी । जिलह ओसकण जेम जोति जिम **हीराकणी** । रिनबक्स पाल्हावत

हीराउलि, हीराउली स स्त्री वनस्पति विशेष ।

उ० हनुमति वई हशनी, **हीराउलि** हर गजिज । हाथाजोडी हीवमी, हेमा आवइ काजिज । मा का प्र

हीराकणी देखो 'हीरकणी' (रू भे)

उ० दुई निहारै दतझर, मावळ वागसिणगार । अति ऊजळ ज्यां आगळी, की **हीराकणियांह** । अज्ञात

हीराकसी, हीराकसीस स पु १ गंधक के रासायनिक योग से होने वाला लोहे का विकार जो देखने मे कुछ हरापन लिये मटमैले रंग का होता है ।

२ विधवाओं के वस्त्र रगने का एक प्रकार का रग विशेष ।

हीरागर, हीरागरउ स पु १ एक वस्त्र विशेष ।

उ० –१ वडरागरउ **हीरागरउ** फूलमथागरउ पुलगीउ बहूगूल धूणोलिग मीणीग मान फूलडउ रानउ फूलडउ सूगउली मेघावलि मघडंबर पचावलि पचोसर इत्यादि गम्भालि । –व स

उ० २ अगरागरा **हीरागरा** पुरगागर जादर मेगाडंबर नेत्रपट्ट धोलपट्ट राजपट्ट गजवडि हसवडि ''''''। व स

२ एक जाति विशेष ।

३ उक्त जाति का व्यक्ति ।

हीरानांनीचोपण- स पु —१ सोने, चांदी के आभूषणो पर खुदाई करने का स्वर्णकारो का एक औजार ।

हीरानामी १ चांदी का एक आभूषण विशेष जिसे स्त्रियां पैरो मे पहनती है ।

२ सोने-चांदी के आभूषणों पर खुदाई करने का स्वर्णकारो का एक औजार ।

३ आभूषणो पर की गई एक प्रकार की खुदाई ।

हीराबेधी—स पु —राजस्थानी छप्पय छन्द का एक भेद विशेष जिसमे एक शब्द के दो अर्थ होते है ।

हीरामण, हीरामन—स पु —१ तोते की एक जाति ।

२ उक्त जाति का तोता जिसका रग सोने के समान माना जाता है । (कल्पित)

उ०—विखम क्रिया विखमी साधन वक्र । चौकै पचभेदवै खट-चक्र । वकीनाळ चढावै वाटा, घण अटकै **हीरामण** घाटा ।

—सू प्र,

हीराळ—स पु —तेज गति से चलने वाला एक प्रकार का घोडा ।

उ०—चमराळ लखी फुलमाळ चकवीयै, केहर लाल प्रवाळ किसै । अकडाळ चगी बोहौ राळ अजवीयै, जोजव बाज **हीराळ** जीसै, वसनाग सीगाळटी ताजी यै वैगड, माणक रूप मलाळ कीयै ।

—किसनजी दधवाडियौ

हीरालूलि—स पु —एक प्रदेश का नाम ।

उ०—देस सख्या, आदिइ अयोध्या नगरी, 'कामरु ७० सहस्र डाहला नवलक्ष, लोहर ६ लक्ष, लाड नव लक्ष, **हीरालूलि** ७२ सहस्र । '' —व स

हीरावणी—स स्त्री —१ ससुराल मे नव वधु को प्रतिदिन प्रात काल कलेवे के रूप मे दिया जाने वाला खाद्य पदार्थ, नाश्ता ।

२ देखो 'सिरावण' (रू भे)

हीरावळ, हीरावळी—स पु —१ ओढने का एक बहुमूल्य वस्त्र विशेष जिसके बीच मे काली काली धारिया होती है ।

उ०—तू **हीरावळ** हीर, (म्हनै) मोहराता मिळसी घणा । पाटण रौ पटचीर, नवौ ओढाग्यौ नागजी ।— अग्यात

स स्त्री —हीरो की पक्ति, कतार या माला । (व स)

३ एक प्रकार की ऊन की कम्बल विशेष ।

हीरावोल—देखो 'हीराबोल' (रू भे)

हीरू—स स्त्री —वापद की पुत्री व बहुचराय की बहन जो देवी का अवतार मानी जाती हे ।

हीरौ—स पु [स हीर.] १ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर या रत्न जो खानो मे पाया जाता है और अपनी कडाई एव चमक के लिये प्रसिद्ध है, हीरा नामक रत्न । (अ मा)

उ०—१ वारू मोवनमि वीटी घडावु, जु लोभ हुइ तु भडार रखावु ।—व स

उ०—२ केसरी अगिया, घणौ विराणपुरै री कोर पटै लागा थका, सीस ऊपर **हीरा** रौ सीस फूल बणायजै छै ।—रा सा स

उ०—३ हरि **हीरा** पाया, विणज हुलाया, तोल न मोल लहदा है । हरि **हीरा** होती, पारिख कोती, खोट न चोट चडदा है ।

—अनुभववाणी

२ महत्वपूर्ण वस्तु ।

उ०—१ हरिजन **हीरा** पेमरस, सौदा राम सनेह । जब इनका गाहक मिलै, हरीया गाठि खुलेह ।—अनुभववाणी

उ०—२ गरीब, निबळा अर अभ्यागता सारू सोना रौ वौ सूरज राम जाणै ऊगतौ ऊगतौ कद ऊगैला । पण वारै ऊग्योडा **हीरा**-मोत्या वाला सूरज नै बस पूगता कीकर बडौ होवण दै ।

—फुलवाडी

३ बहुत अच्छा व्यक्ति ।

उ०—चाय री चुस्किया अर चिलमा री फूका रै बिचाळै माखा मलूकदास री तारीफा रा पुळ वाधता-वाह रे मास्तर वाह ! है पूरौ खानदानी आदमी । दूजोडौ कैवतौ—बस्ती रा भाग हे जरै इसौ **हीरौ** मिळयौ है ।—अमरचूनडी

वि —कठोर । ❀ (डिं को)

रू भे —हीरइ, हीरउ ।

हीळ, हील—स स्त्री —१ बधन ।

उ०—तूटी वूढी सू तरा, हेतारथ री **हील** । कालू सामा क्रदमई, भूप भरै नह भील ।—पा प्र

२ रोक, निषेध, प्रतिबन्ध ।

३ डर, भय, आतक ।

उ०—धूत बजारी धरम री, हिए न मानै **हील** । मन चलाय खापण मही, काढै नकौ कुचील ।—बा दा

४ शका, सदेह ।

५ शीतलवायु, ठण्डी हवा ।

६ वात रोग, वायु ।

उ०—१ यै जायनै कैदी कै सेठा री पेट घणौ दूखै । **हील** री उठाव व्हियौ दीसै । कालै आयनै मिळज्यौ । म्हारै तौ जीव री पडी है नै थानै सीदौ भावै ।—फुलवाडी

उ०- -२ **हील** रौ पेट दूखणा री बात सुणी जद पडै कह्यौ—उण मै डरण जैडी की बात नी । म्है **हील रै** दरद रौ नामी ओखद जाणू' । – फुलवाडी

७ वृत्तान्त, हाल ।

रू भे – हेळ, हेल ।

हीलणौ, हीलबौ—क्रि स —१ बधन मे लेना, बाधना ।

२ बन्द करना, रोक लगाना, प्रतिबन्ध लगाना ।

३ सीलबन्द करना, मुहरबन्द करना ।

४ ठण्डी हवा खाना, ठण्डी हवा लगना ।

५ ठण्डा होना, शीतल पडना ।

६ डरना, भय खाना ।

हीलणहार, हारौ (हारी), हीलणियौ—वि० ।

हीलिओडौ, हीलियोडौ, हील्योडौ—भू० का० कृ० ।

हीलीजणौ, हीलीजबौ—कर्म वा० ।

हीलहुज्जत—स स्त्री —आनाकानी, बहस, प्रतिवाद ।

उ०—छोटकियौ भाई तौ पछै की **हील-हुज्जत** करी नी । दोनू

जणा चौपड़-पासा रमता बैठा । सेठ रमता ई तीन बार हारग्या ।
फु. बा. ठी

हीलाणौ, हीलाबौ क्रि. स. ['हीलणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ बन्धन में दिलाना, बंधवाना ।

२ बन्द कराना, रोक लगवाना, प्रतिबन्ध लगवाना ।

४ ठण्डी हवा खाने के लिये प्रेरित करना, ठण्डी हवा लगवाना ।

५ डराना, भय पैदा करना ।

६ ठण्डा करना, शीतल करना ।

७ देखो 'हिलाणौ, हिलाबौ' (रू. भे.)

हीलाणहार, हारौ (हारी), हीलाणियौ वि० ।

हीलायोड़ौ भू० का० कृ० ।

हीलाईजणौ, हीलाईजबौ कर्म वा० ।

हीलावणौ, हीलावबौ रू० भे० ।

हीलायोड़ौ भू. का. कृ. १ बन्धन में दिलाया हुआ, बंधवाया हुआ २ बन्द कराया हुआ, रोक लगवाया हुआ, प्रतिबन्ध लगवाया हुआ ३ सीलबन्द कराया हुआ, मुहरबन्द कराया हुआ ४ ठण्डी हवा खाने के लिये प्रेरित किया हुआ, ठण्डी हवा लगवाया हुआ ५ डराया हुआ, भय पैदा किया हुआ ६ ठण्डा किया हुआ, शीतल किया हुआ ७ देखो 'हिलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हीलायोड़ी)

हीलावणौ, हीलावबौ १ देखो 'हीलाणौ, हीलाबौ' (रू. भे.)

उ० - रावत लै मौ उर-रगत, हथ-छाता हीलाय । मठक्या ऊंनी मसळ पग, पाई पड़िया धाव । रैवतसिंह भाटी

२ देखो 'हिलाणौ, हिलाबौ' (रू. भे.)

हीलावियोड़ौ १ देखो 'हीलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'हिलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हीलावियोड़ी)

हीलियोड़ौ-भू. का. कृ. — १ बन्धन में लिया हुआ, बांधा हुआ २ बन्द किया हुआ, रोक लगाया हुआ, प्रतिबन्ध लगाया हुआ ३ सीलबन्द किया हुआ, मुहरबन्द किया हुआ ४ ठण्डी हवा खाया हुआ, ठण्डी हवा लगा हुआ ५ ठण्डा या शीतल हुवा हुआ ६ भय खाया हुआ डरा हुआ ।

(स्त्री हीलियोड़ी)

हीलेड़ौ- -देखो 'हिलोळौ' (रू. भे.)

उ०—दिल्ली सर बादस्या फौजां तौ दीनी हकाय, हीलेड़ौ बादस्या ऊपर चढ आयौ रै डावरा देवरा ।—लो. गी.

हीलोळ—१ देखो 'हिलोर' (रू. भे.)

उ०— १ बिना अजाव हालतौ, बहतौ, बधतौ क्रोध हीलोळ बण । नीर बिना कीधौ अमनेरौ, ताहरौ सोखा बीर तण ।
—राव सुरजनसाल हाडा री गीत

उ०—२ जळा बोळ हीलोळ हालत जाडा । अणी आरवा पुरबा धार घाडा । सू. प्र.

२ देखो 'हिलोळौ' (रू. भे.)

हीलोळणौ, हीलोळबौ देखो 'हिलोळणौ, हिलोळबौ' (रू. भे.)

उ० १ कर गर प्रबळ्ळर सात मू, मेरा जोम नहीं शक । सुरताण महमा हीलोळियौ, मुरधरा आरागरू । — रा. रू.

उ० २ तिहि गंग हीलोळेह जाग मनमुर भीजे साहेजै न्हाय ।
वि. स. रा.

हीलोळियोड़ौ देखो 'हिलोळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हीलोळियोड़ी)

हीलोळौ देखो 'हिलोळौ' (रू. भे.)

उ० १ काम नाग भाळिया, कढे हकौ कलोळा । घण केसर घालिया, छोह दवै हीलोळा । ग. रू.

उ० २ मा, राजम तळाबा में मैं नहीं जी मा, भरिया हीलोळा खाय, हमा तुमसा नेर न्हाम जी । लो. गी.

हीलोहळ देखो 'हिलोहळ' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ० १ हळहळ नळ निरखै जाण हीलोहळ पड़ी । पवन राग पेरिया प्रबळ पर पत्र पगड़ी । र. रू.

उ० २ धुनि वेद सुमति कहु सुमति मन धुनि, नव भक्ति नीराम नद । हेक कळ हेक हीलोहल, सागर नागर सरीख सद ।
वेलि

उ० ३ हेवळ पैंवळ हणत, हनै दळ दळ हीलोहळ । उदध रात उफणिया, जाणि नाग्ह मथण चहूळ । सू. प्र.

उ० ४ लक नगर हीलोहळौ रूप। जारण पाण । नि. स. रा.

हीलौ स. पु. १ किसी कार्य की सिद्धि के लिये सोचा हुआ मार्ग, उपाय, रास्ता ।

२ काम, कार्य ।

उ० राजश्रीकार जुहार, मागिया गेल रहीसा । छोड़ कुबड़ी करे, हरामी रासा हीला । वसदेव

३ उद्यवसाय, रोजी ।

४ द्वार, दरवाजा ।

५ ब्याज ।

६ बच्चों को सुलाने के लिये गाया जाने वाला गीत, लोरी ।

उ० हीलौ नै हालरियौ म्हारा लाड़ला नै गाऊं । लो. गी.

क्रि. वि. - मिलाजुल कर, शामिल ।

उ०— तद राजा कह्यौ, धाहरौ दरबार छ आठै ही रोजगार मिळसी, घर तौ छता ही छ, तिण सुं पांच दिन अठै हीला रहा ।
— जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

रू. भे.—हिलौ ।

हीलौळ—देखो 'हिलोर' (रू. भे.)

उ०—थाट तणा विसन ऊगाट रजवट अथग, जगत हीलौळ बळेबळ जोस ।—राव सुरजणसाल हाडा री गीत

हीलौळणौ, हीलौळबौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडबौ' (रू भे)
उ०—हेळा आगथी सिंध ज्यू श्रेकै आच हूत हीलौळिया, धीस खगा श्रेकै ज्यू वोळिया नाग धीग ।—हुकमीचद खिडियौ

हीलौळियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीलौळियोडी)

हीव—देखो 'हिरवौ' (रू भे)
उ०—वेलण वेली बाह, लाल होठा रग भीनौ। साचै ढळियौ हीव, कवळ चुण कर मैं लीनौ ।—नारी सईकडौ

हीवर—देखो 'हयवर' (रू भे)
उ०—हीवर बौह हळवळ सुडि सळवळ, पदमा पुवगा कोई पार नही। अवतार असा दस आप तणा, जुध जीपण जाणि विसन सही।—वि स सा

हीस—देखो 'हींस' (रू भे)
उ०—किसतूरी आसी उसाथ, वार वार मैं वाही वात। आल आवै ओलगणारी, वा घोडा री हीस पियारी ।—पना

हीसणौ, हीसबौ—देखो 'हींसणौ, हींसबौ' (रू भे)
उ०—१ सघालानि मन भावी, पहिलु फलहल प्रीसइ, सघलाना हीया हीसइ, पाका आबा नी कातली ।—व स
उ०—२ लोक सगला कन्है जीजीया लिजियै, देहरा ठाम महिजीद दीसै। थरहरै गाय इण राव इद्रसी थका, हियौ इण राज सु केम हीसै।—व व ग्र

हीसाळ—स पु—१ घोडा, अश्व।
२ देखो 'हीसार' (रू भे)

हीसियोडौ—देखो 'हींसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीसियोडी)

हीसू—स स्त्री —हसने की क्रिया।
उ०—न कुण हीसू हसइ, सदा नीससइ, बोलावि खीजइ, दिहाडइ दिहाडइ देह खीजइ ।—रा सा स

ही ही—देखो 'ही ही' (रू भे)

हु—अव्यय [स. हु, हुम्] १ स्वीकृति सूचक, अव्यय, हा।
२ किसी बात, आवाज या प्रश्न के प्रत्युत्तर मे बोला जाने वाला शब्द, हा, जी, हुकारा आदि, प्रश्नद्योतक अव्यय।
३ स्मृति, याद।
४ सदेह, शक।
५ क्रोध, गुस्सा।
६ घृणा, अरुचि।
७ भरसर्ना, निदा।
वि० वि०—उपर्युक्त सभी भावो की अभिव्यक्ति 'हु' शब्द से होती है। जैसा भाव व्यक्त करना होता है वैसी ही आकृति बना कर यह शब्द 'हु' कहा जाता है।
८ देखो 'हू' (रू भे)
उ०—१ आगइ द्वापर माहि जु वीतौ, पचह पडव तणउ चरीतौ। हरखि हिया नइ हु भणउ ।—सालिभद्र सूरि
उ०—२ कर जोडि हु पणमउ पाय, मइ तुम्हि परणउ पाडवराय। तुम्ह उपकार करिसु हु घणा दूख दलिसु वण वासह तणा।
—सालिभद्र सूरि
उ०—३ उचै चित्रसाळी माळिआ, या हु चतुरा नार। साहिब चतुर सुजाण रस, नित विलसौ भरतार।—ढो मा
उ०—४ ताहरा जीजी कह्यौ, 'हु घरै जाऊ छु। यै कह्या, घरै गई।' ताहरा जीजी घरै गई।—जीजी डाभी री वात
उ०—५ ताहरा माताजी बीडौ भालियौ। हु ईयानु छेतरीस। पिण ईया रो वैर कुण लेसी। ताहरा ठाकुरा फुरमायौ हु लेईस।
—देवजी बगडावत री बात
उ०—६ रे कलियुग गज मत गरज, हु हिज आज अबीह। तुझ मद उत्तारण तणै, सकजौ जिन भ्रमसीह।—व व ग्र
उ०—७ कामण काई सीखिउ नही, कामकदळा नारि। बळद थई हु बाभनु, वभण ताहरइ बारि।—मा का प्र

हुकळ—देखो 'हूकळ' (रू भे)
उ०—आप बळ पाण जै सीगहर आभरणा, दाखवै उसीला वसै दूजा। करै हीदु तुरक जोड दोहु हुकळा, 'पाळ' रा तणी कीरमाळ पुजा।—बळुजी रौ गीत

हुकळकळळ—देखो 'हूकळकळळ' (रू भे)

हुकार—स स्त्री [स हुकार] १ सिंह, व्याघ्र या किसी वीर पुरुष की जोशपूर्ण आवाज, गर्जना।
उ०—प्रतापसिंह पडता ई जोर री हाकौ न्हियौ अर भीमडा नै च्यारू मेर सू घेर लियौ। त्राटक बाजण लाग्यौ। तडाक-तडाक करता माथा उडण लाग्या। जोर री हुकार हुई।—अमरचूनडी
२ जोर का शब्द, ध्वनि, घोष, टकार।
उ०—चिलैरी ताणी, हुकार करती, बडै पठाण री बेटी ज्यू तूही तूही करती, इण भाति री कबाणा री चकारौ उतरै छै सु उआ-हीज वडा नै पीपला री आ साखा सू नागळीजै छै।—रा सा स
३ लडने-भिडने, ललकारने या चुनौति देने का शब्द।
४ डाटने या फटकारने का शब्द।
५ चिल्लाहट, चीत्कार, चीघाड।
उ०—सीह ज्यू लका चढिया थका, भागा गाडा ज्यू बठठाठ करता थका, वैस्या ज्यू भाला करता थका, मातै हाथी ज्यू हुकारौ करता थका। इसा ऊठ भेकजै छै।—रा सा स
६ करुण क्रन्दन, रुदन, हाहाकार।
उ०—१ जु उमादै मडळ माडियौ थौ तिण माहै विघ्न हुवौ, सह बाळक मारिया सू घर घर हुकार पडियौ छै।—पचदडी री वारता
उ०—२ विद्यारथिया नू कही थाहरै घरै जावौ, सु उण रै घर रोवै पीटै छै, घणी हुकार पडियौ छै।—पचदडी री वारता

रू भे — हुंकार, हाकार, हुंकारव, हूंकर, हुंकार ।

हुंकारकड़ उ — देखो 'हुंकारी' (रू भे)

उ०- गाड़-गाड़ कळाइया, उज्जळ दंतो नारि । ढसतड़ हैं हुंकारकड़ उ हिवड़ उ फूल्यमहारि । ढो मा

हुंकारणौ, हुंकारबौ क्रि स [स हुंकार] १ हुंकार करना, गर्जना, गुर्राना, जोशपूर्ण आवाज करना ।

२ जोर का शब्द या ध्वनि करना घोष या टंकार करना ।

३ चिल्लाना, चीत्कारना, चीखना ।

४ ललकारना, चुनौति देना ।

५ डांटना, फटकारना ।

६ बुलाना, पुकारना, आवाज देना ।

उ० राई कुंवरि बोलाई ईक चित । बीप्र हुंकारै वेग तुरत । आवियो प्रोहित रावळ पौ, पाउधा हु धारै गुणवारा । बी दे

७ रोना, करुण क्रन्दन करना, हा हा कार करना ।

८ किसी बात के साथ में 'हुं-हुं' शब्द कहना । (इसलिये कि वह बात को सुन रहा है और समझ रहा है)

हुंकारणहार, हारौ (हारी), हुंकारणियौ -वि० ।

हुंकारिग्रोड़ौ, हुंकारियोड़ौ, हुंकारयोड़ौ — भू० का० कृ० ।

हुंकारीजणौ, हुंकारीजबौ —कर्म वा० ।

हुंकारव— १ देखो 'हुंकार' (रू भे)

२ देखो 'हुंकारौ' (रू भे.)

हुंकारियोड़ौ-भू का कृ —१ हुंकार या गर्जना किया हुआ, जोशपूर्ण आवाज किया हुआ, गुर्राया हुआ २ जोर का शब्द या ध्वनि किया हुआ, घोष या टंकार किया हुआ ३ चिल्लाया हुआ, चीत्कारा हुआ, चोघाड़ा हुआ ४ ललकारा हुआ, चुनौति दिया हुआ ५ डांटा हुआ, फटकारा हुआ. ६ बुलाया हुआ, पुकारा हुआ, आवाज दिया हुआ ७ करुण क्रन्दन किया हुआ, रोया हुआ, हा-हा किया हुआ ८ किसी बात के साथ में 'हु हु' शब्द कहा हुआ ।

(स्त्री हुंकारियोड़ी)

हुंकारियौ-स पु —बात के साथ 'हुंकारा' देने वाला, 'हां' या 'हु' कहने वाला ।

उ०—म्हारी बात रा हुंकारिया थैं अबै उमर हुयग्यी, थारै काना मैं इमरत घुळै ।—फुलवाडी

हुंकारौ–सं पु [स हुंकार, आमकार] १ 'हुं' कहने की की क्रिया या भाव ।

२ किसी चलती हुई बात के साथ म 'हु हु' करते चलना जो इस बात का सूचक होता है कि वक्ता की बात सुनी व समझी जा रही है ।

उ०—१ किसी हुंकारा बिन बात, किसौ मित्र मिस विहूणी साथ । किसी चंद विहूणी रात, किसौ कड़ूबा बिन भात ।— फुलवाड़ी

उ० २ सुनि सुनि सारसी भणी, हुंकारे मन मांहा हणी । अर बोल्या ई उत्तर करै, ती नौल्या कही कांई गति करै । भि व्र

उ० ३ गुरु री अडाल मांगी उठारै साथै जगा देवती बोली नाम लारला बात रै । नाळै हुंकारौ ती दियां कर । बिना हुंका बात री सगळी गठ ई मर जावै । फुलवाड़ी

३ स्वीकृति, इजाजत, अनुमति, स्वीकारोक्ति ।

उ० १ आकरा मोडा मुलक मैं हुंकारौ दै दियो । पटेल री जोः धोयळै चावी ही तो रावळो मोड़ो पण हजारा मैं एक हो ।

—अगरचूनः

उ० २ भरजाळी पगाति पै ऊभी मोंवण लागी -पूरी इवकी रात उगरात काढी ई वी पाछा बानडिया अर भाभरकै ई चौधर बाबा रै बेटा री जान री जावण री हुंकारौ भर लियौ । -फुलवाड़

उ० ३ चार साइया रा आज मनौज, वाबै जमाई, रोय रोय प मना था, भगत ई नेतरा करवा, पण एक ई हुंकारौ नी भरयौ ।

फुलवा

४ सहमति, हां ।

उ० किरमार हुंकारौ भरता नोल्या सुणी रो रहा ई हां, प निजरा नो कही । फुलवाड़ी

रू भे — हुंकारी, हुंकारकड़ उ, हुंकारव, हूंकारौ ।

हुंकाळ — देखो 'हुंकाळ' (रू भे)

उ० सूर्य मंगळ-सूर हुंकाळा घोळ करतां । फळिया सूतर अ सुहागती नाग वळता । गम

हुंड, हुंडउ — देखो 'हूंड' (रू भे) (उ र)

हुंड — देखो 'हुंड' (रू भे)

हुंडन स पु [स] शिव के एक गण का नाम ।

हुंडी स स्त्री १ पुराने जमाने में सेठ साहूकारों या व्यापारियों द्वा लिखा जाने वाला एक भुगतान पत्र जिसके आधार पर एक स्थ के व्यापारी को रुपये देकर दूसरे स्थान के व्यापारी से रुपये ले जाते थे । यही प्रणाली आजकल बैंक ड्राफ्ट द्वारा चलती है, इ लान पत्र में इसका प्रतिहस्तान्तरण या बेचान भी होता है ।

उ० तै बोल्या —है थोर हा । थैं हुंडी बदलावै हजार रुपय री पैली गांव मैं मेली, सौ म्है देखता हा । - भि व्र

२ किसी साहूकार या महाजन द्वारा लिखा जाने वाला वह जिसको किसी भी स्थान पर दिखाकर उसमें अंकित रुपये या उ रुपये की वस्तु प्राप्त की जा सकती थी । यही दशा वर्तमान स मे रिजर्व बैंक आफ इण्डिया द्वारा जारी किये गये नोट या अ रिकन डालर की है, नोट ।

३ ऋण लेते समय ऋण लेने वाले द्वारा लिखा जाने वाला जिसमे रुपयों के साथ भुगतान की अवधि व ब्याज की दर लिखी होती है, प्रोमेजरी नोट ।

४ हुक ।

उ०—घोडा रै उपरै पाखरा पडै छै। स्हौड जरद भीडिया हुडीया जडै छै उण वेळा कवर कनै सिदवी ग्रासावरी गाइजै, दूमरा डका लागत, मागळ गरहरै छै।—पना

रू भे—हूडी।

हुडीपुरजौ—देखो 'हुडी'।

हुडीबही—स स्त्री—वह बही या किताब जिसमे हुडी की नकल रखी जाती है।

हुडीवाळ—स पु—वह महाजन जिसकी लिखी हुडी से आसानी से रुपया प्राप्त हो जाता हो या जिसकी हुडी आसानी से पटती हो।

रू भे—हूडीवाळ।

हुणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)

उ०—जात्यग मा सब कुछच लीखा। ह मब जोतिग माहि। हुणहार होत्यव की। आगति लखी न जाय।—वि स सा

हुत—देखो 'हूत' (रू भे)

हुतउ—देखो 'हूता' (रू भे)

उ०—१ सातलसीह हुतउ भूभार, तिणइ कटक करिउ मिधार। कान्हड देवउ किसउ वखाण, हुठि चडीउ हाकइ सुरताण।

—का दे प्र

उ०—२ एक भणइ ए हुतउ भरूसउ, जै छोड वमट कान्ह। कीधउ मेळ मिल्या दळि आवी, तेह तणा परवान।—का दे प्र

उ०—३ आखि हुतउ काजल हरइ, कोमि बाधी मिल ग्रन्ड, जीणइ बोलतइ माथाना केस ऊभा थाइ।—व स

हुतासण, हुतासन—देखो 'हुतासन' (रू भे)

उ०—१ गज ग्रस ग्रवि नागौर गढ, दै बहु कुरब दिलेस। ताव हुतासण देखि तन, राव कहै 'ग्रमरेस'।—मू प्र

हुति, हुती—देखो 'हूती' (रू भे)

उ०—१ सरमती हुति विद्या मिरै विमळ ग्रकळ कहिजै विसन। सूर सा तेज विणियौ सरस कोडि काडि वधतौ किसन।

—पी ग्र

उ०—२ वाइ वाजइ प्रवल, उडइ धुन्निना पटल। सीयालइ हुति मोटी रात्र तै नान्ही थई रात्रि।—ग सा स

उ०—३ तावदिद मकलजगज्जीवनि ईम्वरै विम्व वर त्रित्वमामननि मनीखिण, एकि ससारनी सृष्टि ईम्वर हुति कहइ एकि व्रह्मा, वैस्णवी, एकि माव माया।—व स

उ०—४ राजि उठा हुती भलै मुहूरत सादिया छै, पातिसाहजी म घणौ सुख हुयौ छै, भला सुकन हुया छै, राजि न पधारै।

—द वि

उ०—५ दुरजण-केरा बोलडा, मत पातरजउ कोय। अणहुनी हुति कहइ, सगळी साच न होय।—ढो मा

उ०—६ जइ रूखा मारू हुई, छवडउ पडियउ नाम। नइ हुती चदउ कियइ, लइ रचियउ आकास।—ढो मा

हुतु—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—चिहु पुरुष देखता वाट उठाडिइ, वगति करति आवालुबि तोडइ पगछेहि गाठि छोडइ, आखि हुत काजल हरइ, केसबधी सिला ग्रन्इ।—व स

हुतौ—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—१ चीनारती चुगतिया, कुभी रोवणियाह। दुरा हुता नउ पलइ, जऊ न मेल्ह हियाह।—ढो मा

उ०—२ चदमडल हुता किमिउ ग्रग्निस्फुलिग उच्छलइ, किम करपूरजल विगधाइ, किम मयूराश्रुजल कलुस थाई।—व स

उ०—३ राजान जान मगि हुता जु राजा कहे सु दीव ललाटि कर। इरा नयर कि कोरण दीसै, धवळागिरि किन धवळहर।

—वेलि

उ०—४ कसबौ ग्रातरी वडौ सहर छै, नै सहर माहे वडो महाजन हुतौ। सी कसबा माहे चोर भरणा लागै।—नैणसी

उ०—५ पडिया राणी री फेट, सदक महला हेट। सुकोमल साथ, ग्सो हुतौ मुज बखबौ प।—जयवाणी

हुवउ—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—ढोलइ चित्त विमामियउ, मारू देस ग्रळगग। आपणा जाए जाइयउ, करहा-हुवउ वग।—ढो मा

हुफट—स स्त्री—एक प्रकार की वनस्पति।

उ०—हरडू हरडि हीमजी, हरडा हलद्रह वेर। हरवी हाथुडी हरी, हुफट हुसि हमेर।—मा का प्र

हुबड—म पु—पवार राजपूत वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

हुरम—देखो 'हरम' (रू भे)

हुमायु, हुमायू—देखो 'हुमायू' (रू भे)

हुम—देखो 'हूम' (रू भे)

उ०—१ माह मै माहट माझ्यौ मेह तै ग्राहट रूम। नो पिण माहरै नाहू न पूरी माहरी हुस।—ब ब ग्र

उ०—२ राय वीहतइ तीणइ ग्रवमरि दीवी तास चपेट। मफ घरि म रहिसि रे तू लपट पुरु हुस पूरिउ पेट।—हीरणानद सूरि

हुसरडौ—स पु—वह ऊट जो चलते समय नकेल खीचने पर भी नही रुकता और ग्रागे बढ जाता है, अडियल ऊट।

हुसि—स स्त्री—एक पकार की वनस्पति।

उ०—हरडू हरडि हीमजी, हरडा हलद्रह वेर। हरवी हाथुडी हरी, हुफट हुसि हमेर।—मा का प्र

हुसियार—देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—१ भाग सू उणरी ऊधूटी बी० डी० ग्रो० सा'व रै घरै इज लागी। वौ जितरौ नाचरा-गावरा मै हुसियार हौ, उतराई हाजरी साजरा मै परा पाटक हौ।—ग्रमरचूनडी

उ०—२ लडका नै महर मै भेज्यौ तौ दरा वास्तै हो कै पढ

मिल'र हुसियार बणैला अर कुळ री नाम बधावैला ।

अमरचूनड़ी

हुंसियारी देखो 'होंसियारी' (रू भे)

हुंसेर सं स्त्री उत्कण्ठा, अभिलाषा । (अज्ञ भारती)

हुस्यार, हुश्यार देखो 'होसियार' (रू भे)

उ० १ राजाजी नै बळै हरी भावगी । आ रातभर सिरदारां अर नगर सेठां सागै देखनै हरती हरती पूछ्यो म्हनै ठा' नी पड़ी कै थै लोग ई इत्ता हुस्यार होग जीकर ठगीजग्या ।—फुलवाड़ी

उ० २ भोजाई हुस्यार ही । धणी नै कह्यो कै वो गाडियां रै पाखती जाय ऊभ जावै तो भाई नै ई थोड़ो घणो राखो आवैला ।

—फुलवाड़ी

उ० ३ धरती सा' निरखण नै आयो, रामड बडो हुस्यार । भळ भळ तो माथी फारै, नैणा जळै मसाळ ।

डूगजी जवारजी री झ्रावळी

हुस्यारी देखो 'होसियारी' (रू भे)

उ०— मुखियो हुस्यारी करनै भाइयां री ठीक ग्रागला रै गाड़ देना नै सुथारण, माली राम, झायला रै घर स गोळड मनाई ।

फुलवाड़ी

उ० २ बेटा री हुस्यारी देखनै सेठ ग्रणता राजी व्हिया । कह्यो—म्है काय थारै माथै चिड़ू हू । म्है तो अठै बैठो ई सब रामभरयो हो । —फुलवाड़ी

उ०—३ सठा उपरांत दीवाणजी हाजरिया नै भेज आपरै विस्वास रा आदमियां नै बुलाया । जगा जगा नै आग आपरै काग री भुळावण दैवी । थैडी हुस्यारी बरतणी कै पीढ्यां ताईं कोई कुच-मादी माथो ऊंचो नी करै । —फुलवाड़ी

हु सं पु [स] १ नृप, राजा । (एका)

२ निंदा, आलोचना । (")

३ निश्चय, निर्णय । (")

४ सभारण । (")

५ अतिरेक ।

६ निवेदन ।

७ भेंट ।

८ यज्ञ ।

९ खाना ।

हुग्रण—देखो 'होणी' (रू भे)

हुग्रणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)

उ०—पिए भावी अति प्रबळ सकळ बस प्राण अरोखा । हुग्रणहार सिध करै, वार न धरै विध रेखा ।—रा रू

हुग्रणी—देखो 'होणी' (रू भे)

२ देखो 'हुवा' (रू भे)

हुग्रा—वि—१ पर्याप्त, बहुत ।

हुग्रासण, हुग्रासन देखो 'हुतासन' (रू भे) (जैन)

हुउ अव्यय नकारात्मक, नहीं, इन्कार ।

हुक सं पु १ अंकुश की तरह मुड़ी हुई काटेदार मोटी कील जो किसी चीज को फसाने या दीवार में लगा कर किसी चीज को लटकाने के काम आती है, कांटा ।

२ देखो 'हूक' (रू भे)

हुकम सं पु [अ हुक्म] १ राज्य या शासन की ओर से जारी की जाने वाली किसी प्रकार की राजाज्ञा जिसका पालन करना अनिवार्य हो आदेश, फरमान । (ना मा, डि को, ह ना मा)

उ० श्री सूरजसिंघजी साहजादा कवरजी री गजसिंघजी नै हुकम दीयो कै पातसाह रावा श्राया नै जाळोर सांचोर इनायत कीया है सू थे सारो साथ ले जाळोर जाईजो । नैणसी

२ किसी कार्य विशेष या व्यक्ति विशेष के लिये दिया जाने वाला आदेश ।

उ० १ वै लोग जमा ती आज जोर फाली गयोड़ा है, कुण जाणै पाछा कदै आवड़ै अर आपनै तो हुकम पर लागो तुरत किलै पूगणो चाहिजै । अमरचूनड़ी

उ० २ गुणधार सुत अगजीत रो, रिण गळा अतक रीत रो मिलि अरज कीमुक हुकम सांभि गोरखी फुरमाण । रा रू

उ० —३ पाय हुकम पावडै पान बीड़ो छणलसी । भैरव दोनो भेजि साकति लेडी निकळसी । पा प्र

उ० ४ नगर मैं बैठ'र जीमै, कतार मैं बाजणा बाजै, तू वा डरता रैवै मोचा रो भी बाजै । अफसर रै हुकमां हालै जको मौज सू मारै । दसदोख

उ०—५ रैता-रिसाला री तुवी हुवो छै, माई अमराव साहणिया नै हुकम हुवो छै । रा सा स

३ निर्देश, मार्ग-दर्शन ।

४ अधिकार, शासन ।

उ० १ हुकम हाकम सारो गमी रो । मुळका आगै मुत्सद्दी बैठ सारो काम करै । भोम बोपाड़ादास री वारता

उ० २ कीरा ही बांगा वालै, कीरा ही हुकम हालै ! काई धुरा वाबै, काई न्हाज स आवै । दसदोख

५ स्वीकृति, अनुमति, इजाजत ।

उ०—जद ब्राह्मण बाबेचा नै जाय कह्यो: बापूजी पाच रूपइया रो हुकम कियो है । -बि प्र

६ प्रभुत्व, प्रभाव ।

७ नियम, विधान, विधि ।

८ शिक्षा ।

९ व्यवस्था, प्रबंध ।

१० बड़ो का या गुरुजनों का वचन जिसका पालन करना कर्त्तव्य होता है ।

उ०— रवा मे आया तौ आयण ही पीरा री धोक हिवडै हालै हूक, परा'र सोवूली जै सदा दाई सपनै मै आया तौ आपरी बूझ नाखूली । जिसौ हुकम देवैला विसौ ही आपने भुगता नौ काम —दस ।

११ बडे व्यक्ति की बात के उत्तर मे बोला जाने वाला आदरयुक्त शब्द । यथा—हाँ जी, जी, हुकम आदि ।

उ०—ठाकरा फरमायौ—गुलाब री मा नै कै. दिया—हू खुद(ठाकर) सिझ्या वेळा धूप दीप कर परा'र चडावौ-परसाद लिया आरैयौ हू । जोत करावूला, कळस मडावूला । दोनू वा हुकम स हकारौ दियौ अर ढाढचा रै घर रौ गैलौ लियौ ।—दसदोख

१२ किसी पर चलाया जाने वाला व्यर्थ का रौब ।

उ०—मूळी सिर चढगी हुकम ओढावै अर घर रौ काम करावै है ।
—दसदोख

१३ तास का एक रग, काला ।

रू भे—हुक्माण, हुकमेण, हुकमौ, हुकम्म, हुकम्मा, हुक्म ।

हुकमखरच—स पु —महाराणा साहब के निजी खर्च का हिसाब रखने वाला महकमा । (वी वि)

हुकमणी—वि —आज्ञा या हुकम देने वाला ।

हुकमत— देखो 'हकूमत' (रू भे)

हुकमदार—वि —१ अधिकार रखने वाला ।

उ०—पैला रौ पटवारी, हाल मैं पूगळ–पट्टै रौ आधतौ **हुकमदार** । जात रौ दरोगौ, हजूर रौ धा भाई दादौ ! डरतौ सौ सिव निखै, मरनौ सौ आपरी नावौ माडै ।—दसदोख

२ हुकम देने वाला ।

हुकमनामौ, हुकमनावौ—स पु [अ हुकमनाम] १ वह पत्र जिसमे कोई आदेश जारी किया गया हो, आदेशपत्र ।

२ आदेश ।

३ किसी राजा के उत्तराधिकारी को उत्तराधिकार सौपने का आदेश जो बादशाह द्वारा जारी किया जाता था ।

उ०—सवत १६७६ सगतसिह नू सोजत हुई **हुकमनावौ** नालकौ राठौड भाण जैतमाल लै आयौ ।
—महाराज सूरजसिह रै राज री वात

वि० वि०—परम्परा के अनुसार किसी राजा के मरने पर उसकी जागीर या राज्य जब्त समझा जाता था और उस राज्य पर बादशाह का सीधा अधिकार हो जाता था । मृत्यु के बारहवे दिन मातमपुरसी के अवसर पर बादशाह एक हुक्म जारी करके राजा के उत्तराधिकारी को उस राज्य का पट्टा इनायत करता था, उसके बदले मे इस नवीन राजा के राज्य की एक वर्ष की आय जो पट्टे मे ही लिखी होती थी, बादशाह के नजर करनी पडती थी । छोटे ठाकुरो की जागीर के विषय मे यही प्रथा राजाओ द्वारा पूरी की जाती थी ।

अमलिया हत इधका अपत, **हूकाधारी** हेरिया ।—ऊ का

हूकारौ—देखो 'हुकारौ' (रू भे)

हूकियोडौ—भू का कृ —१ छाती या सीने मे तीव्र पीडा हुवी हुई, दर्द हुवा हुआ २ हृदय मे रह-रह कर दद या कसक उठा हुआ, मानसिक पीडा हुवा हुआ, वेदना युक्त ३ आह भरा हुआ, तडफा हुआ, कराहा हुआ ४ धडका हुआ ५ पश्चाताप हुवा हुआ, दुख हुवा हुआ ।

(स्त्री हूकियोडी)

उ० देखो 'होकौ' (रू भे)

कर कप... **हूकौ** लेता हाथ मैं, चेतौ गयौ चुठाय । पडै धमाधम

उ०—२ क... रमाधम अकुळाय ।—ऊ का

हुकमी रावळा ... माहि अवगुण सग्व, ज्यू हूकौ हि सामळ हालसी ।

उ०—३ जै नामी ...
—ऊ का

कीधौ अमर जानुकी कत...

युद्ध, समर, लडाई ।

उ० —४ सकत रा **हुकमी** धिन... एक गाह तणौ आटै, महाबाहु बिहू पित मात जणियौ । कहै कवि गिरध... का हूचका खडग धारा, बीर दरा अळग आखाण सुणियौ ।—गिरवरध... राणा जयसिंह रौ गीत

उ०—५ उजर करै ना हम कछु, **हुकमी**

है करडा बहुत, सुणलै साह पठाण ।—गौड गोप.

हुकमेण, हुकमौ—देखो 'हुकम' (रू भे)

हुकम्म, हुकम्मा—देखो 'हुकम' (रू भे) ... हूर रहै ।

उ०—१ कारण अरजणसिघ न्, भूप निबारण भ्रम्म । भे... चापावता सिर धारियौ **हुकम्म** ।—रा रू

उ०—२ ज्वाळानळ जाळण काळ जबन्न, कियौ मुचकुद **हुकम्म** किसन्न ।—ह र

उ०—३ हाजर **हुकम्म** फुरमाण होय । दूदौ उमेद चहुवाण दोय ।
—वि स

हुकहुकी—स स्त्री — बोलने की उत्कण्ठा ।

ज्यू नन्नै हुकहुकी आवै तौ मन्नै लुटलुटी आवै ।

हुकाधारी— देखो 'होकाधारी' (रू भे)

हुकी—स स्त्री —श्रृगाल की बोली या बोली की आवाज ।

हुकुम—देखो 'हुकम' (रू भे)

हुकुमनामौ—देखो 'हुकमनामौ' (रू भे)

हुकूमत—देखो 'हकूमत' (रू भे)

हुकौ—देखो 'होकौ' (रू भे)

उ०—तठा उपरायत हुका री होस कीजै छै । चाकरा नै हुकम हुवो छै । हुका तयार कीजै छै ।—र सा स

हुक्काम—स पु [अ हुक्काम] हाकिम आदि उच्च पदाधिकारी वर्ग ।

उ०—**हुक्काम** हुकम हाजिर हजूर, करियै न तदारुक बेकसूर ।
—ऊ का

हुक्कौ—देखो 'होकौ' (रू भे)

उ०—कुरणी बाज रही छै। गोखा तान निरणी हुता छै। भाकमी ठिठक रही छै। घघरै घघरै हुकर्मा रा जमारू लागजै छै।
—रा सा स

हुकम देखो 'हुकम' (रू भे)

उ० १ दुगन दूर है, सब दुनी गी हुकम मजूर है। मगरूरा की मगरूरी दूर करते हैं, छत्रधारी की भी रीस धरते है।
—रा सा स

उ० २ म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण रो हुकम मिळ्यौ है। —अमरचूनडी

हुकमनामौ, हुकमनाबौ— देखो 'हुकमनामौ' (रू भे)

हुकमबरदार स पु [अ हुकम। फा बरदार] १ हुकम उठाने वाला व्यक्ति, अनुचर, सेवक, आज्ञाकारी।

२ शासन चलाने वाला, हुकम चलाने वाला।

३ शासक।

४ हाकिम।

रू भे हुकमबरदार।

हुकमबरदारी स स्त्री [अ] १ 'हुकम बरदार' होने की अवस्था या भाव।

२ आज्ञाकारिता, अनुपालना, सेवा, चाकरी।

३ शासन या हुकम चलाने की क्रिया।

४ शासन, हुकूमत।

हुकमी —देखो 'हुकमी' (रू भे)

उ०—१ ज्यो राखै त्यो रहूंगे, मेरा मया सारा। हुकमी सेवक राम का, बदा बेचारा।—दादूवाणी

उ० २ तौ जिको सुणै तौ विचार बिचारै जौ इणा न कूबत सामरथ्य छै नै लोक जेर वस्त इण रा हुकमी छै।—नी प्र

हुड स स्त्री—१ आशा, अभिलाषा, इच्छा।

२ जोश, आवेश।

३ उमग, उत्साह।

४ देखो 'हुड' (रू भे)

उ०—१ खाग प्रहार छाग हुड राडत, मुड रुड लोहित भड गडत। पान रुधिर करि लहह्या त्रिपती, धी करनी जय जयति राकसी।
—मे म

उ०—२ वगा बीचाळै काळिगा, हुड जिम पग भलै। ऊभी मेली साहबी, गढ गोख महलै।—केसोदास गाडण

उ०—३ फिट वीका फिट काधळा, फिट जगळधर लेडाह। दळपत हुड ज्यू बाधियौ, भाज गई भेडाह।—अग्यात

हुडक—स पु [स हुडुक्क] एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल।

रू भे—हुडक्क।

हुडकणौ, हुडकबौ—क्रि स—१ उमग, साहस और उत्साह के साथ कूदना, उछलना।

२ जोश के साथ भाग कर आना।

३ हमला करना।

हुडकणहार, हारौ (हारी), हुडकणियौ वि०।

हुडकिओडौ, हुडकियोडौ, हुडकयोडौ भू० का० कृ०।

हुडकीजणौ, हुडकीजबौ कर्म वा०।

हुडक्कणौ, हुडक्कबौ रू० भे०।

हुडकळ स स्त्री १ एक प्रकार की चिड़िया।

२ भीलो की एक याचक जाति।

हुडकळी स स्त्री एक चिड़िया विशेष।

हुडकियोडौ भू का कृ १ उमग, साहस और उत्साह के साथ कूदा हुआ, उछला हुआ २ जोश के साथ भाग कर आया हुआ ३ हमला किया हुआ।

(स्त्री हुडकियोडी)

हुडकौ स पु १ 'हुडकळ' जाति का व्यक्ति।

२ पशु का आक्रामक भाव।

हुडक्क देखो 'हुडक' (रू भे)

हुडक्कणौ, हुडक्कबौ देखो 'हुडकणौ, हुडकबौ' (रू भे)

उ० गढी चो भडक्कै तठ सडक्कै सेसरा माथा, खडक्कै हुडक्कै काळी कडक्कै सामारा। —प्रभुदान गोदीसर

हुडक्कियोडौ देखो 'हुडकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुडक्कियोडी)

हुडखौ स पु सोच, विचार, चिन्ता, फिक्र।

हुडतवौ स पु १ तेज धूप की गर्मी के कारण घर की दीवारे तपने से अन्दर महसूस होने वाली गर्मी, उमस।

२ किसी मकान या कक्ष का द्वार सूरज के रुख की ओर होने के कारण सीधी किरण पडने से होने वाली गर्मी।

हुडवग वि १ मजबूत।

२ मस्त, मोटा-ताजा।

३ देखो 'हुडवगौ' (रू भे)

हुडवगी स स्त्री १ मजबूत स्त्री।

२ मोटी ताजी, हृष्ट पुष्ट स्त्री।

३ बेचाल, छिनाल।

उ०—रामा अभिरामा कामातुर रोवै, हडगाल हुडवगी सेजा मैं सोवै। ललना लालरिया खातरिया खारी, भडवी भगतणिया पातरिया प्यारी। —ऊ का

हुडवगौ—स पु (स्त्री हुडवगी) १ उत्पात, उपद्रव।

२ मस्त आदमी।

वि—१ उपद्रवी, उत्पाती।

उ०—मुर मैं फोग महेस, रेत भसमी पर राचै। चाद आगिया माथ, जटा लासूडा जाचै। गाठ गठीली माळ, महक फूलीरी मगा, आक धतूरे पास, कैर भूता हुडवगा।— दमदेव

२ मस्त, मतवाला, मौजी।

उ०—तीरथ जात समस्त सकळ साधा मिळ सगा, रास तमासा रमैं हुलस नाचै हुड़दगा।—ऊ का

३ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।

रू भे —हुडदग, हुरदगौ।

हुडदाबिगम, हुडदाबेगरण, हुडदाबेगम, हुडशबेगम—स स्त्री [तु उर्दू + बेगम] १ मर्दानी पोशाक एव शस्त्रों से सुसज्जित वह स्त्री जो मुसलमानी बादशाहों के जनानाखानो की रक्षार्थ नियुक्त रहती थी।

२ शैतान या उद्दण्ड स्त्री।

हुड़बौ—स पु—घाणी की लाठ को आगे सरकने से रोकने के लिये लगाई जाने वाली लकडी।

हुडियार—स पु [स हुड] नर मेष, भेड़ा।

हुडियौ—देखो 'हुड' (अल्पा, रू भे)

उ०—कुभौ बाहुडियौ, ताहरा बासै रजपूत हसण लागा। 'जाणा छा कूभौजी नानाणै जाइ हुडिया रै माथै कटारी भाजसी।' आ कूभै नू खबर हुई।—नैणसी

हुडी—स स्त्री—१ तेजगति, तीव्रता, दौड।

२ शीघ्रता, जल्दी।

उ०—बाबल आता पेख, बालिया हुडी न करसी। बाला होडा होड फेर नी कडिया चडसी।—सक्तिदान कवियौ

३ आक्रमण, हमला।

उ०—तद इण रै भला भला रजपूत वास हुता, तिकै आगै हुवा, कै पाछै हुवा, कै दोनू बाजुवा हुवा, गरट करनै हुडी कीवी, इण नु लै नीसरिया।—नैणसी

४ देखो 'हुडी' (रू भे)

हुडौ—देखो 'होडौ' (रू भे)

हुचक—देखो 'हूचक' (रू भे)

हुचकणौ, हुचकबौ—क्रि स [स उच्चकनम्] १ युद्ध करना, लडाई करना।

उ०—१ जोगणी ऊबकै जत्र हुबकै हराई जत्र, लोथ लचा धुबकै लटकै गजा लोय। भटकै अकारौ सोन बेडीगारौ क्रोधा भाय, 'जोधा' हरौ हुचकै 'अजा' रौ माहा जोध।—पहाडखा आढौ

उ०—२ महाक्रोधगी गनीमा हूत हुचकै नरिंद 'माधौ' भू लोक भूचकै वाधौ चकै कोम भार। वोमगी अराबा झाळ वेताळ वभकै बकै, वाजद्रा 'बहादरेस' हूकै तेण वार।—हुकमीचद खिडियौ

२ भिडना, टक्कर लेना।

उ०—रोक रोक तुरी भाण आराण विलोकै रीझै, विभ मोक त्रिलोक त्रबक धोक आज। वेध वेध सोक झोक तोक बाण सेत खाग, सीसोद गनीमा तणा थोक हुचकै मकाज।

—बद्रीदास खिडियौ

३ वीरगति प्राप्त करना।

हुचकणहार, हारौ (हारी), हुचकणियौ—वि०।

हुचकिओडौ, हुचकियोडौ, हुचक्योडौ—भू० का० कृ०।

हुचकीजणौ, हुचकीजबौ—कर्म वा०।

हुचक्कणौ, हुचक्कबौ, हूचकणौ, हूचकबौ, हूचक्कणौ, हूचक्कबौ —रू० भे०।

हुचकाणौ, हुचकाबौ—क्रि स ['हुचकणौ' क्रिया का प्रे रू] १ कराना, लडाई कराना।

२ भिडाना, टक्कर लिराना।

३ वीरगति प्राप्त करने के लिये प्रेरित करना।

४ पीटना, मारना।

५ धक्का देना।

६ धमकाना, डराना।

हुचकाणहार, हारौ (हारी), हुचकाणियौ—वि०।

हुचकायोडौ—भू० का० कृ०।

हुचकाईणौ, हुचकाईजबौ—कर्म वा०।

हुचकायोड़ौ—भू का कृ—१ युद्ध या लडाई कराया हुआ २ भिडाया हुआ, टक्कर लिराया हुआ ३ वीरगति प्राप्त करने के लिये प्रेरित किया हुआ ४ पीटा हुआ, मारा हुआ ५ धक्का दिया हुआ ६ धमकाया हुआ, डराया हुआ।

(स्त्री हुचकायोडी)

हुचकियोडौ—भू का कृ—१ युद्ध या लडाई किया हुआ २ भिडा हुआ, टक्कर लिया हुआ ३ वीरगति प्राप्त किया हुआ।

(स्त्री हुचकियोडी)

हुचकौ—स पु—१ झटका, धक्का।

२ रोने का भाव, सुबकने की क्रिया।

३ रुक-रुक कर सास आने की क्रिया या भाव।

४ लकडी का एक उपकरण जिस पर पतग की डोर लपेटी जाती है, गिडगिडी।

५ आघात, चोट।

रू भे —हूचकौ।

हुचक्क—स स्त्री—१ चोट, आघात, प्रहार।

उ०—बोहौ सीस उडक्क हिचक्क उचासक, अधक केट हुचक्क उडै। फुकि जीह मफल्लर नारग झल्लर, रल्लर बासग जेम लडै।

—सू प्र

२ धक्का, झटका।

३ युद्ध, लडाई।

हुचक्कणौ, हुचक्कबौ—देखो 'हुचकणौ, हुचकबौ' (रू भे)

उ०—१ झुकै झूल बारगा थरक्कै गजा पीठ झडा। केहरी हुचक्कै जठै ऊबक्कै कोधार।—किरपाराम कवियौ

उ०—२ बाघळा हुचक्कै बै कजाका सेन बादौ-बदां, तोपा झाळ

[illegible] हुबक [illegible] की गीत

[illegible] हिवडू [illegible] हुबकियार । [illegible]

[illegible] बार [illegible]

[illegible] हुबकियाड़ो (रू भे)

([illegible] हुबकियाड़ो)

[illegible] (रू भे)

[illegible] हुबकी क्रि अ १ सबकना, [illegible], [illegible], [illegible] ।

[illegible]

[illegible]

हुबकणहार, हारो (हारी), हुबकियौ — वि० ।

हुबकाड़ो, हुबकियाड़ो, हुबकीड़ो — भू० का० कृ० ।

हुबकीजणौ, हुबकीजबौ — कर्म वा० ।

हुबणौ हुबबौ हुबणौ हुबबौ, हुबकणौ, हुबबौ — रू० भे० ।

हुबकणौ हुबकबौ — देखो 'हुबकणौ' (रू भे)

[illegible] गज्या [illegible] अहुरा, कीसी 'श्री हुबरथी मटकी । [illegible]

[illegible], [illegible] मूंछ लटकै । — श्रोळू री श्रोळगा

हुबकियोड़ो भू का कृ —१ सबका हुश्रा, [illegible] हुश्रा, [illegible] हुश्रा, [illegible] हुश्रा २ बीज [illegible] हुश्रा ।

(स्त्री हुबकियोड़ी)

हुबियौ, हुबयौ स पु — कुत्ते का छोटा बच्चा ।

रू भे.—हुबारियौ, हुबरयौ ।

हुजवार-स पु.—१ हाथी का महावत, फीलवान ।

उ०—१ बढ़ै गजराज नि रण चलाय, धरै उन्मत्त घन् मद पाय । चढ़ै भ्रुग्राले हुजवार कजाक, मनौ हनमत चढ़यौ गयनाक ।

—ला रा

उ० २ झलकित झल्लिय भलनि सार, मनौ बरसागम-बुल्लिय मार । चलाचल अंकुसतै हुजवार, मनौ गिरिके सिर बज्ज प्रहार ।

—ला रा

२ नौकर, अनुचर, कर्मचारी ।

उ०- हुजवारां आगरा वेग ताकीद कराया । दक्खिण गुजरात दिसा, पसखाना पधराया ।—सू प्र

३ पदाधिकारी, प्रमुख कर्मचारी ।

उ० —१ तरै बीरम रावळै भला माणसा हाकम हुजवारां सांभळता श्रा कही—सौ हो ठाकुरे । ऐम रो मांणस छै । इण नूं सूंपै जाऊ छूं । - कल्याणसिंघ वाढेल नगराजोत री बात

उ०—२ पछै रामजी तिरवाडी, भगोतीदास पटणी हुजवार हुता सो यानू कैद किया, श्रापरी तरफ रा नव हुजवार खड़ा किया ।

—बा दा ख्यात

उ०—३ भोपत वांसै नागौर रहियौ । सु वांसै घोड़ा खजीनू राहु रावळै लेसी, श्रर हुजवार बांधिसी, श्रर काका नू साथि लै श्रर पातिसाही कन्है श्रावसी ।—द वि

उ० ४ नै देवराज रा हुजवार जिण गढा मांणस हुता, तिण माली सारी जीव नै पाल रा गुढा नू राजळ रा मिळांणी ।

नैणसी

४ सामंत ।

उ०— तरै भगवानजी कहौ उगा नाँ रावजी री योस कोई नहीं । श्री तेजसी री योस । जैतारण री धणी राव दुगाणी रै वास्तै रावजी रा हुजवार श्रबा तरीला नै मत् रोकै ? थाळी राव री घयु रै ? मारा बात कही । — राव मालदेव री बात

५ प्रतिनिधि ।

उ० मामळीमी बीरम एक हुजवार रावळो मेड़तै मांहे रहेसी । नरे काढ पड़सी । नैणसी

६ सेना के व्यवस्थापक ।

उ० पुण मनात कर 'श्रर्ग' हुकम दीघा हुजवारां । करो वेग [illegible], जम सा जिण जोधारा । सू प्र

७ [illegible] हुजवारी ।

हुजवारी स पु १ हुजवार होने की अवस्था या भाव ।

२ प्रमुख पद, ओहदा, अधिकार ।

उ० हुजवारी रूघनाथ सू, लेस कियौ दीवाण । धरपत 'भजन' जमाणियौ दीपावत प्रमाण । रा रू

३ देखो 'हजवार' (रू भे)

उ० कर हूतो हाकम हुजवारां रे, बणि दफ्तर खान तटारी रे । एणी बात नै श्रमीनी रे, हेतमर दरोगी कीनी रे । - जयवाणी

हुजूर स पु [श] १ बादशाह, सम्राट ।

२ हाकिम, न्यायाधीश ।

३ बादशाह, राजा या हाकिम का दरबार, कचहरी, सभा ।

४ ईश्वर, मालिक ।

५ सेवा, टहल, बंदगी, नौकरी ।

६ उपस्थिति, हाजिरी ।

७ मौजूदगी, विद्यमानता ।

८ राज्य, शासन ।

९ बड़े लोगो को सम्बोधन करने का एक आदर सूचक शब्द ।

क्रि वि.—१ सेवा मे, नौकरी मे, चाकरी मे, हाजिरी मे ।

२ सामने, समक्ष ।

३ दरबार मे, कचहरी मे ।

उ०— उज्जैण नगर महाराज वीर विक्रमादित्य राज करै । उण रै हुजूर एक कळावंत श्रायो । ती कै साथ एक परम रूपवती स्त्री श्रर एक पुरुष थौ । सिंघासण बत्तीसी

रू भे —हजुर, हजूर, हजूरिय, हजूरियौ, हजूरी, हिजुर ।

हुजूरण—स स्त्री — अन्त पुर की खास दासी ।

उ० —बारै गायण थळै थळै, नव पद्धा वेगण । हाथळ चेरी उभी, उभी दौ जणी हुजूरण ।—रा रू

हुजूरी-स स्त्री [अ] १ नौकरी, चाकरी, सेवा, टहल ।
२ किसी बडे आदमी का सामीप्य ।
३ किसी की हाजरी मे रहने की अवस्था या भाव ।
४ खुशामद ।
वि—१ हुजूर मे रहने वाला ।
२ खास सेवा मे रहने वाला ।
रू भे—हजूरी ।

हुजूरीवान-स पु—अर्दली, सेवक, चाकर ।
रू भे—हजूरीवान ।

हुज्जत-स स्त्री [अ] १ तर्क, प्रतिवाद, दलील ।
२ विवाद, बहस, वाद-विवाद, तकरार ।
३ प्रमाण, सबूत ।
४ कलह, झगडा, बखेडा ।
उ०—नफ्स गालिब, किन्न काबिज, गुस्स मनी एस्त । हुई दरोग हिर्स हुज्जत, नाम नेकी नेस्त ।—दादूबाणी
५ तू-तू, मैं-मै ।
६ जिद्द, हठधर्मी ।
रू भे—हूजत ।

हुज्जती-वि [अ] १ हुज्जत करने वाला ।
२ बहस करने वाला, प्रतिवाद करने वाला ।
३ हर बात मे तकरार करने वाला, झगडालू ।
४ तर्क या दलील देने वाला ।
५ प्रमाण या सबूत पेश करने वाला ।

हुटकारणौ, हुटकारबौ-क्रि स—फटकारना, दुत्कारना ।
उ०—पण मुनीम रोब दिखाळै अर हुटकारै । कैवै—सेठा सू मिळौ, म्हानै ठा' नी ।—दसदोख

हुटकारियोडौ-भू का कृ—फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ ।
(स्त्री हुटकारियोडी)

हुटणौ, हुटबौ-क्रि अ—१ रुकना, ठहरना ।
२ दम घुटना, घबराहट होना ।

हुटियोडौ-भू का कृ—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ ।
२ दम घुटा हुआ, घबराया हुआ ।
(स्त्री हुटियोडी)

हुड्हुडाट—देखो 'हडबडाट' (रू भे)
उ०—दडद्दडो द्रमकी द्रमक्या अरी, हुड्हुडाट हुउ हुडकी करी । कलकलइ जिम वारि निधि प्रलइ, किसिउ भूधर कोपि टलटलइ ।
—सालिसूरि

हुडबी-स पु—गणेश, गजानन । (डिं को)

हुडबेस-स पु [स हिडिंबा+ईश] पाडुपुत्र भीम ।

हुड-स पु [स] (स्त्री हुडी) १ नर-मेष, मेढा, भेडा । (डिं को)
२ ग्रामशूकर ।
३ एक प्रकार का अस्त्र ।
४ लोहे का डडा या गदा ।
५ लोहे का खम्भा या मेख जो चोरो से बचने के काम आती है ।
६ एक प्रकार का हाता ।
७ मूढ, मूर्ख ।
८ दैत्य, राक्षस ।
रू भे—हुड, हुड, हूड ।
अल्पा,—हुडियौ ।

हुडक, हुडकी-स स्त्री—शब्द, आवाज, शोरगुल ।
उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या अरी, हुदुहुडाट हुउ हुडकी करी । कलकलइ जिम वारिनिधि प्रलइ, किसिउ भूधर कोपि टलटलइ ।
—सालिसूरि

हुडक्कणौ, हुडक्कबौ—देखो 'हुडकणौ, हुडकबौ' (रू भे)

हुडक्कियोडौ—देखो 'हुडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हुडक्कियोडी)

हुडरकौ-स पु—चिंता, फिक्र ।
उ०—त्रीवीणी म्हायौ म्ही त्रीकै मैं जप्यौ न तप (कीया) । कहि केसौ सुवीच्यारि करि हुडरकौ न करि रे हीया ।—वि स सा

हुडियार-स पु—नर-मेष, भेडा ।
उ०—और मुसळमान सूअर खावौ । नाजै हुडियार नाजै ऐन खावौ तौ हुडियार कडाहि विचि वाहौ अर राधौ, जै हुडियार हुता सूअर होइ तौ हिंदू मुसळमान रळि खावौ ।—द वि

हुडी-स स्त्री—भेड, मेषी । (डिं को)

हुडीजणौ, हुडीजबौ-क्रि अ—भेड का गर्भवती होना ।

हुडीजियोडी-वि स्त्री—गर्भवती । (भेड)

हुडुक, हुडुक्क-स पु [स हुडुक्क] १ एक विशेष प्रकार का ढोल ।
२ किवाडो मे लगी चटखनी ।
३ नशे मे चूर व्यक्ति ।
४ दात्यूह पक्षी ।

हुण-क्रि वि—अब ।
उ०—हुण दिल लागा हिकसा, मैं कू येहा तालि । दादू कम्म खुदाय कै, बैठा दीहै रालि ।—दादूबाणी

हुणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)
उ०—१ दूहवण राय धरइ तिणिवार, व्यास भणइ नवि टलइ हुणहार । श्रीमालीनी चाडइ मूआ, देवलोकि तै राउत हूआ ।
—का दे प्र
उ०—२ माहौ माहै मीटै मिल्या ए, मान महातम खोय । पछा-ताप तै अति करै ए, हुणहार जिम होय ।—ध व ग्र

हुणौ, हुबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू भे)
उ०—१ हुई अप्रमाण अचाणक हल्ल । कु भी हय सैयद सेख कतल्ल ।—मे म

उ० २ बिहुर कुळा भरि अंजलिया, ज्याँ नि पार गया हुआ गोपाळ । वांरे दूमाई वसुदेव की, फेर लियो गोपाळ । मीरां

उ० ३ गाम अर नगरी आकाश देखै अमळ, माडजहा सूता पलकै पगां रीस । रीस सूज हुसी मन 'सीम' हर ऊगरत, रीस रीवर गरम काळजी रीस ।- सबळी सांदू

उ० ४ किसु न हुइ गुरु भगति नगर माहि नउ किम्हु । आह निरि गुरु आराधउ एकल्ड हुउ सिष्यु ।—सालिभद्रसूरि

उ० ५ इण सू गाम री नी कार्ई गण पोगळा नी ई हा हु मनगी । पुलिस री कारवाई सरू हुई अर सूता नीरा भेळाउज वळण लागा । अमरचूनडी

उ० ६ एहु भुगति अति अनोपम भैगम नेह राग । जु जिव्हा अरात ज हुवि तु तअना गुण कहिवाग । नळाख्यान

हुतकर देखो 'हुताशन' ।

हुत स पु [स] शिव का एक नामान्तर ।

२ नैवेद्य, चढ़ावा, प्रसाद ।

३ हवन सामग्री ।

वि १ हवन किया हुआ, होमा हुआ ।

२ पीड़ित, त्रस्त ।

३ नष्ट किया हुआ, हस्त ।

४ विध्वंस किया हुआ ।

उ०- हाँरा नबाब जालोर कियो हुत ।—व भा

क्रि वि - होना क्रिया का भूतकालिक रूप, था ।

हुतब - देखो 'हौतब' (रू भे)

हुतभक्ख, हुतभक्ष, हुतभख, हुतभुक, हुतभुख, हुतभुज—स पु [स हुतभक्ष, हुतभुज्] अग्नि, आग ।

(अ मा, डिं को, ना डिं को, ह ना मा)

उ० - १ हुतभुक सरग धनुख धर हाथै, हसग पचास पायवळ साथै । सू प्र

उ० -२ पग पग जम डाका पड़ै, 'बाका' धार विवेक । हुतभुक बिच जळ वाव ह्वै, उडणौ है दिन हेक । बां दा

हुतळ -स स्त्री —पृथ्वी, धरती, भूमि ।

रू भे — हुतळ, हुतल ।

हुतवह–स स्त्री [स] अग्नि, आग । (डिं को)

हुतसेस–स स्त्री [स हुतशेष] हवन करने से अवशिष्ट बची हुई सामग्री ।

हुतां, हुता–क्रि वि — १ 'होना' का भूत कालिक रूप, था, थे ।

उ०—१ सखी सु राज्जण आविया, हुता सु मभ्ह हियाह । सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह ।—ढो मा

उ०—२ कह्यौ—आसकरण सतावत रौ वैर रह्यौ, नरबदजी सुपियारदे ल्याया हुता तिको वैर रह्यौ ।—दूदै जोधावत री वात

उ०—३ पीछै या सिरदारा रवनै घोड़ा एक हजार पाचसौ हुता सू सिरदार पृथीराज नू सगभाग पाछा मारवाड़ नू वहीर हुवा । नं वेढ़ हीनी नही । द दा

२ होते हुए, होकर के ।

उ० पाछा चळता तळाव हुता आइजी ।

३ से ।

उ० तब आहागण बोल्यी । कुदणपुर हुता आयौ । वसु पणि कुंदणपुरि । मौ नाहि ठाकुरजी कै हाथि कागळ दीयौ ।

वेलि टी

हुताग्नि स स्त्री [स] १ यज्ञ या हवन की अग्नि ।

२ जिसने हवन किया हो, अग्निहोत्री ।

हुतास, हुतासण, हुतासणि, हुतासणी स स्त्री [स हुत । अशन] अग्नि, आग ।

(अ मा, डिं को, ना डिं को, ह ना मा)

उ० १ गधरब सगा न जावण री हरी नु हुतासण री निभम नु भस्म करिसी । व भा

उ० २ अजै सूर भळहळै, अजै प्राजळै हुतासण । अजै गग जळ हळै, अजै गावत्र उग्रागण । करमो नाई

उ० ३ रमा हुतासणि सरगि रहाए । हणि सागरा त्रिय छाह हराए । सू प्र

उ०—४ सत भरीनइ सावझउ, हेठलि मेहलि हुतास । सली सली सुरहनइ बीउ, तस सुभागन मास । मा का प्र

२ तीन प्रकार की अग्नियों मे से एक ।

३ शिव की एक उपाधि ।

४ फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि एव वार सबन्धी पच योगो म से पाचवा योग ।

रू भे — हुतासग, हुतासन, हुआसण, हुआसन, हुतासन, हुतासनि, हुतासनी, होतासण ।

हुतासणी-पूनम स स्त्री यौ फाल्गुण मास की पूर्णिमा ।

हुतासन, हुतासनि, हुतासनी देखो 'हुतासण' (रू भे)

उ० १ हीम हुतासन जु सरइ, छहू भरइ अगार । तिलिया पणि निरावट-नणा, नहू गोपाइ दातार । मा का प्र

उ०—२ विरह-हुतासनि हु ग्रही, धन, धस, सरीर । आगि नदि जळि ऊपजइ, तु किम नामु नीर ।—मा का प्र

उ०—३ हरखि रमइ हुतासनी, निरखी निरमळ चद । साधइ सुरत-सणा सुवच, वाधइ अति आनद ।— मा का प्र

हुती- क्रि वि — १ थी ।

उ०— १ सु आगै लखण सेन रै वैर सोढी ऊमरकोट री हुती, सु निपट जोरावर हुती ।—नैणसी

उ०—२ वरिखा रित हुती सु गई । सरद रित आवी । कवि कहै छै । तै कौ वरणन करो छौ ।—वेलि टी

२ से ।

उ०—वरापुर महसेर वेहू खेत नेतबध, बरावरि लागै सुजस रा बोल। काची बात महा पात मुखा हुती मता काढी, तिसा दीठा विसा कहौ विहु एकै तोल।—मारवाड रा अमरावा री वारता

३ होते हुऐ।

उ०—समुद्र अजी मार्यादा न लोपइ, सूर्य अजी उदय वेलिइ उदयउ छइ, अजी मेघनी व्रस्टि हुती जोईइ, प्रथ्वी रसातलि नही जाइ।—व स

हुतोज, हुतौ–क्रि वि—१ 'है' का भूत कालिक, था।

उ०—१ 'जवौ' सीगरोत, सीगट जगराम, जगराम जवणसीश्रोत। तिण 'जवै' वीदैजी नू नारेळ मेलियौ, बेटी परणाई। सु 'जवौ' मायाधारी ठाकुर हुतौ नै भाया सू वडौ वैर। ताहरा राव वीदै नू परणायौ।—नैणसी

उ०—२ सपत पयाळ न सात समद, दसै द्रगपाळ न चद दुंडिद। सुमेर न मेम पहल्ला सोज, हुतोज हुतोज हुतोज हुतोज।—ह र

उ०—३ सीधळ राणा री चाकरी करतौ। चाकर थकौ नै कायलाणै बसतौ। सु नरवद रूण रा साखळा रै परणीयौ हुतौ। सु सुपीयारी नरसिंघ री बैर तिण री बहन नु नरबद परणीजै।
—नैणसी

उ०—४ पिता रौ हुकम सुन चौगुणा पाळियौ, बजाया धरा लै खरा वाजा। हुतौ राजी तरै हेक राजा हुतौ, रीमीयौ साहतौ विनै राजा।—द दा

हुल्कच–स पु [स] एक दैत्य का नाम।

हुदहुद–स स्त्री [अ हुदहुद] भारत व बर्मा मे प्राय सर्वत्र पाई जाने वाली एक कलगीदार चिडिया।

हुवावरत–स पु—एक प्रकार का अशुभ घोडा। (शा हो)

हुवौ, हुद्दौ—देखो 'हौदौ' (रू भे)

उ०—१ हरीया हसती कै हुदै, निरपत बैठे ग्राय। दूजी दुनिया पग तळै, तैस मैस हुय जाय।—अनुभववाणी

उ०—२ धाम गाम दै दै केता हुद्दा पर धरिया। चद भट्ट पौत्रवा नै जौ पोळपत किलादार करिया।—केहर प्रकास

हुनर–स पु [फा] १ कारीगरी, दस्तकारी, निर्माण-कला, फन।

उ०—तद कारीगर कह्यौ—अन्नदाता, म्हारौ हुनर अमोलक है, म्है उण रौ मोल नी कूतणी चावू। आप फरमायौ कै म्हारी कारीगरी तौ मूडै वोलै, सौ औ ढोलियौ मतै ई मूडै बोल आप रौ मोल बताय देवैला।—फुलवाडी

२ विद्या, इल्म।

उ०—१ उठै एक रोही हती तठै रोही माहै एक सूथार घर वासीदार रहै। सु उडण खटोलणी री हुनर जाणै।—चौबोली

उ०—२ नाई नरमाई सू जबाब दियौ—धणिया नै राजी राखण सारू हुनर सीखणा पडै।—फुलवाडी

२ हाथ की सफाई, कौशल।

४ विशेषता, खूबी, गुण।

उ०—पैदा कीया घाट घड, आपै आप उपाय। हिकमत हुनर कारीगरी, दादू लखी न जाय।—दादूबाणी

५ चालाकी, चतुराई।

६ युक्ति, सूझ-बूझ।

रू भे—हुन्नर, हूनर, हून्नर।

हुनरबध, हुनरमद–वि [फा] १ किसी प्रकार का 'हुनर' जानने वाला, कारीगर, शिल्पी।

२ चतुर, चालाक।

रू भे—हुन्नरबध।

हुन्नर—देखो 'हुनर' (रू भे)

उ०—१ आगम् कै जाणगर सब हुन्नर खबरदार, राजकाजू कै करत्ता इक हुकम कै इकतार।—र रू

उ०—२ सिरै साह परवेज, रूमपति ग्रहै बहादर। गौहरि पारज ग्रेह, हठी फिरगी बहु हुन्नर।—सू प्र

हुन्नरबध—देखो 'हुनरमद' (रू भे)

उ०—जिस बखत मैं और भी हुन्नरबधु नै सब हुन्नर का तमासा दिखाया।—सू प्र

हुब–स पु [अ] १ प्रेम, स्नेह, मुहब्बत।

२ मुसलमान।

३ शोर, हल्ला।

उ०—ऐ ती जणियास ऐकटी आई आपाणी, साहौ भुजबळ सामता, किम जैज कराणी। तुरगा चाढी तीजणिया हुब कूक होवाणी, साम्रत बेटी साह री, जगमालह जाणी।—वी मा

हुबकणौ, हुबकबौ—देखो 'ऊबकणौ, ऊबकबौ' (रू भे)

उ०—ए मरद एकणी वाजी या रा हवा, एक गढ छोडियां पाण आयाण। हीयै राव माल रै ऊपरै हुबक, सबळ सखया पखी सिला सुरताण।—ठाकुर जेतसी री वारता

हुबकियोडौ—देखो 'ऊबकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुबकियोडी)

हुबक्कणौ, हुबक्कबौ—देखो 'ऊबकणौ, ऊबकबौ' (रू भे)

उ०—१ जतनै घणौ केइ बैसे जिहाजै, अथगै जलै आइ कुब्बाइ बाजै। घटा टोप मेघा गडडुत गाजै, हुबक्कै तरगा विरगाहु बाजै।
-ध व ग्र

उ०—२ जोगणी उबक्कै पत्र हुबक्कै हवाई जत्र, लोथि छक्कै धुबक्कै लटक्कै गजा लोथ। भुटक्कै अकारौ सेन बैढेगारौ क्रोधा भाय, जोधारौ हुचक्कै अजारौ महाजोध।—बखतसिंघ रौ गीत

हुबक्कियोडौ—देखो 'ऊबकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुबक्कियोडी)

हुबचळ–स पु—समर, युद्ध।

हुबणौ, हुबबौ–क्रि स [स उभ्] १ क्रोधित होना, गुस्सा करना।

[illegible] हुवी, [illegible]

[illegible]

[illegible] बांध में [illegible]

[illegible]

[illegible] मजर [illegible] हुब [illegible] करै [illegible] धार ।

सू प्र

[illegible]

उ० हुवै [illegible]

[illegible] माळ ।

—सू. प्र

४ [illegible] होना ।

उ० [illegible] करता बार, [illegible] सेवार [illegible] ।

[illegible] हुबली [illegible] ।

[illegible]

६ प्रकाशित होना, जगमगाना ।

७ मारना, वध करना ।

८ भिड़ना, टक्कर लेना ।

उ० —पोथी 'टीकाम' 'पीथळ' गाडे, [illegible] आया [illegible] ।

पूरे [illegible] आया पंचोळी, हुबिया [illegible] होळी । -रा रू

९ कुढ़ना, जलना ।

१० उत्साहित होना ।

हुबणहार, हारौ (हारी), हुबणियौ　वि० ।

हुबिग्रोड़ौ, हुबियोड़ौ, हुबयोड़ौ — भू० का० कृ० ।

हुबीजणौ, हुबीजबौ　कर्म वा० ।

हुब्बणौ, हुब्बबौ, हुबणौ, हुबबौ - रू० भे० ।

हुबास- देखो 'होवास' (रू भे)

उ०—१ [illegible] जोम छेकरी बीजरी [illegible] आवा चीज री [illegible] । अबै [illegible] चीज री [illegible] ऐड़ी, हजार हेक री [illegible] री हुबास । -चमनजी [illegible]

उ० —२ [illegible] हुबास । [illegible] जीवणवास । - सू प्र

हुबासि, हुबासी—देखो 'होवास' (रू भे)

उ०—नुरियण जिसा [illegible] आपताप, [illegible] बळ प्रमाण । [illegible] अनै [illegible] रूप बळवत हुबासि ।

—सू प्र

हुबियोड़ो—भू का —१ गुस्सा किया हुआ, क्रोधित २ जोश मे या जोर से बोला हुआ ३ युद्ध या लड़ाई किया हुआ ४ आवेश या जोश भरा हुआ ५ उत्साहित हुआ हुवा ६ जला हुआ, प्रज्वलित हुवा हुआ ७ प्रकाशित हुवा हुआ, जगमगाया हुआ ८ मारा हुआ, वध किया हुआ ९ भिड़ा हुआ, टक्कर लिया हुआ १० कुढ़ा हुआ, [illegible] ।

(स्त्री हुबियोड़ी)

हुबोहुब, हुबौहुब　देखो 'हूबहू' (रू भे)

हुब्बकणौ, हुब्बकबौ　देखो 'ऊबकणौ, [illegible]' (रू भे)

उ० [illegible] हुब्बके रग कै [illegible] चलाया । [illegible]

हुब्बकियोड़ौ—देखो '[illegible]' (रू भे)

(स्त्री हुब्बकियोड़ी)

हुब्बणौ, हुब्बबौ　देखो 'हुबणौ, हुबबौ' (रू भे,)

उ० [illegible] ज्यौ [illegible] हुब्बी । [illegible]

हुब्बियोड़ौ　देखो 'हुबियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री हुब्बियोड़ी)

हुमकणौ, हुमकबौ　क्रि स　१ उछलना, कूदना ।

२ पैरों से धक्के लगाना, ठेला मारना ।

३ जोर से दबाना, दबाव डालना ।

हुमकणहार, हारौ (हारी), हुमकणियौ　वि० ।

हुमकिग्रोड़ौ, हुमकियोड़ौ, हुमकयोड़ौ　भू० का० कृ० ।

हुमकीजणौ, हुमकीजबौ　कर्म वा० ।

हुमगणौ, हुमगबौ　रू० भे० ।

हुमकियोड़ौ भू का　१ उछला हुआ, कूदा हुआ　२ पैरों से धक्का लगाया हुआ, ठेला मारा हुआ ३ जोर से दबाव डाला हुआ ।

(स्त्री हुमकियोड़ी)

हुमगणौ, हुमगबौ　देखो 'हुमकणौ, हुमकबौ' (रू भे)

(स्त्री हुमगियोड़ी)

हुमणी सर्व　आपनी, हमारी ।

उ० [illegible] उमग भरी [illegible] री, [illegible] रखो [illegible] री । त्रिजड़ा [illegible] हुमणी, [illegible] सुणी हुमणी ।

- पा प्र

हुमस --देखो 'उमस' (रू भे)

हुमणौ --देखो 'हुमणी' (रू भे)

(स्त्री हुमणी)

हुमा-स स्त्री [फा] एक प्रकार का कल्पित पक्षी, जिसके बारे मे एक किंवदंती है कि जिस किसी व्यक्ति पर इसकी छाया पड़ जाय वह बादशाह बन जाता है ।

हुमाऊ, हुमायु, हुमायू—स पु [फा हुमायू] एक मुगल बादशाह जो बाबर का पुत्र व अकबर महान का पिता था ।

उ०—राय राणा सु अरिजन साधी, बरसावी निज आरा । बरबर बस हुमाऊ नवम, अकबर साहि सुजाण ।—ऐ. जै का सं

रू भे—हुमाऊ, हगायू, हुमायु, हुमायू ।

हुमेल—देखो 'हमेल' (रू भे)
हुयोडौ—भू का कृ—जो हो चुका हो।
हुरम—देखो 'हरम' (रू भे)
उ०—तठै मुलतान मैं पातसाह पातसाही करै। तैरै एक हुरम तिका हिंदवाणी, नाम गगा।—देपाळ धध री बात
हुरकणियौ—स पु—वेश्याओ का दलाल।
हुरकणी, हुरकनी—स स्त्री [स हुडुकिनी] हिन्दू वेश्याओ का एक वर्ग या इस वर्ग की वेश्या।
उ०—१ जूनी ख्याता मैं अलाउदीन आयौ जद चहुवाण सात निकळस ग्राम बैठौ हुरकणिया री नाच करायौ हौ।
—बा दा ख्यात
उ०—२ दीठा भाव दिखावणा, हुरकणिया रा हाथ। हाथ नही मन किम हिचै, भेळै अस भाराथ।—वा दा
हुरकिया—स पु—गाने-बजाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति।
हुरकियौ—स पु—उक्त जाति का व्यक्ति।
हुरखणौ, हुरखबौ—देखो 'हरसणौ, हरसबौ' (रू भे)
उ०—लगै दिली फळसा अठी द्वारका समद लग। दळा सनकारती धरा हुरखी। जोर बर जोय भरतार अगजीत तू, पत कणा तज एक पुरखी।—द्वारकादास दधवाडियौ
हुरखणहार, हारौ (हारी), हुरखणियौ—वि०।
हुरखिओडौ, हुरखियोडौ, हुरख्योडौ—भू० का० कृ०।
हुरखीजणौ, हुरखीजबौ—भाव वा०।
हुरखियोडौ—देखो 'हरसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हुरखियोडी)
हुरडा—स पु—चौहान क्षत्रियो की एक शाखा।
हुरडाई—स स्त्री—उत्कण्ठा, लालसा।
उ०—पछै कह्यौ—थारा सू मिळण री कोडायौ हीया री हुरडाई सू म्हे नीठ इत्ती भाय ठिरडीजतौ आयौ।—फुलवाडी
हुरडी—स स्त्री—टक्कर, धक्का।
उ०—१ पछै वयू पूछौ! जाणौ मौन रै म्यार लागी। दोनू ई काना होय हुरडिया देवता फौज नै फिरोळण लागा।—फुलवाडी
उ०—२ छाता मायै कोयरिया री डिगतिया खिडकली। देखता ई बणावट बोलाजौ। ऐडी नी व्है कै हुरडी देय रावळा मै वड जावै।
— फुलवाडी
हुरदगौ—देखो 'हुडदगौ' (रू भे)
उ०—जीव आयौ हुवौ कदै वोलौ रे, आव मैं फूलौ डबक डोलौ रे। हुवौ बागौ मुगौ नै गूगौ रे, कद डबक डील हुरदगौ रे।—जयवाणी
हुरभुज—स पु—एक प्राचीन देश का नाम।
उ०—दीठौ सगळउ दक्षण देस, चतुर नारि तनि चचळ वेस। माळव नैइ काबिल, मुकराण, कासमीर, हुरभुज खुरसाण।
—डो मा
हुरम—देखो 'हरम' (रू भे)
उ०—१ हुरमा हाथिया चढी पछाडी नू खडी थी सौ लूट लीवी चलता रहिया।—पदमसिंह री बात
उ०—२ हुरम कबीला रिद्ध तर साथै मीर प्रचड। इण वासै कर चलियौ, आसा खड विखड।—रा रू
हुरमखानौ—देखो 'हरमखानौ' (रू भे)
उ०—फौज हजार असी सु, अठ विच मैं पातसाह आलमगीर है। तवा पछाडी हुरमखाना है।—द दा
हुरमटी—स स्त्री—गाय की छोटी बछिया।
हुरमत, हुरमति—स स्त्री [अ हुर्मत] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा।
उ०—विदग री हुरमत वाधारण, वेळा चढियौ समद वरै। दुआ 'उम्मेद' तूझ विन दूजौ, कवियण नै कुण बखव करै।
—मानजी लाळस
२ ईमान, धर्म।
३ सतीत्व, इस्मत।
४ धार्मिक दृष्टि से किसी वस्तु के खान-पान या किसी कार्य की मनाही, निषेध, परहेज।
५ स्त्री, पत्नी।
उ०—१ मूमना विसेस समझदार नही छ, तिणसू आ बादसाह अगतमायची नू देवौ। तिण रै तीन सौ साठ हुरमत छ, पण मोटी सगौ छै।—जलाल बूबना री बात
उ०—२ जुरा पहुती जाण्य, माण घर छाडि पधारची। ताण तज्यौ तिणवार हेत हुरमती सह हार्यौ।—देवौजी
हुररा, हुर्रं—स स्त्री [अ हुर्रा] १ एक प्रकार की हर्ष ध्वनि।
२ बेइज्जती, हसी।
हुरळ—स स्त्री—किसी पैनी वस्तु या शस्त्र द्वारा किया जाने वाला प्रहार या आघात।
उ०—हुरळा खहका ओझडी, झणरक्का फट्टै। वीर वीरवर सूर धीर, रथ चौरग चट्टै।—द दा
हुरळणौ, हुरळबौ—क्रि स—किसी पैनी वस्तु या शस्त्र से प्रहार करना, आघात करना।
हुरळियोडौ—भू का कृ—पैनी वस्तु या शस्त्र से प्रहार किया हुआ, आघात किया हुआ।
(स्त्री हुरळियोडी)
हुरहुर, हुरहुल—देखो 'हुलहुल' (रू भे)
हुरहुक—स पु—हाथी का अकुश।
हुरुमयी—स स्त्री—एक प्रकार का नृत्य।
हुलब—वि—लम्बा-चौडा, विस्तृत।
उ०—हुलब काच तौ देह कौ माच तौ हदौ हद, साच तौ राग बागा सजीलौ। आज री वार सभ साल धन आच तौ, नाचतौ दीयौ गुलदार नीलौ।—महादान महडू

हुल [illegible] पु [सं] १ [illegible] ।
उ० [illegible] हुळ [illegible]
[illegible] ।
—नैणीमाल [illegible] रा गीत
२ [illegible] ।
३ [illegible]
[illegible] ।
उ०—१ हुल [illegible] बैठ मैं [illegible] ।
—[illegible]
उ० २ [illegible] हुल
[illegible] ।
—सू प्र
रू भे० हुरल, हुळ, हुल ।
[illegible]ी, हुलकी सं स्त्री [illegible] ।
[illegible] ।
उ० [illegible] ! ऊँचा बिराजी । हुळकी, गीठी, [illegible] मुरळी बलाक नै [illegible] आप गुर्यू माथै बैठयौ । —बसतोल

रू० - देखो 'हुल्लड़' (रू भे)
उ० हुलो और [illegible], हीली हुलड बाज सा । वरसाळे बै'-रूणिया रा फोग [illegible] सिर ताज रा । —बरसेव

[illegible]लणी—स स्त्री —शीशोदिया क्षत्रिय वंश की 'हुल' शाखा की स्त्री ।
उ०—राव [illegible] नै अलेवर नागी वीरा हुलणी । तैरौ बेटौ तीडौ । —नैणसी

[illegible]ळणौ, हुळबौ क्रि अ [स हुल्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना ।
उ० तै सी लाख [illegible], रावळ [illegible] । [illegible] जिगा, जेथ हुळै [illegible] । —[illegible]
२ उमंगित होना, उत्साहित होना ।
उ०—ओळगुवा पण हुळमै गावै छै । रवाब-सारंगी, ढोल-मजारी बाजै छै । इसौ ही कठ री गावणौ छै ।—पलक दरियाव री बात
हुळणहार, हारौ (हारी), हुळणियौ—वि० ।
हुळिओड़ौ, हुळियोड़ौ, हुळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हुळीजणौ, हुळीजबौ—भाव वा० ।

हुलणौ, हुलबौ—क्रि अ —छोटे बच्चे का हुलराना ।
उ०—हुल रे नैन्या हुल रे, थू पालणिया मैं झुल रे ।
—अमरचूंनडी
हुलणहार, हारौ (हारी), हुलणियौ—वि० ।
हुलिओड़ौ, हुलियोड़ौ, हुल्योड़ौ भू० का० कृ० ।
हुलीजणौ, हुलीजबौ—भाव वा० ।

हुलबग—सं स्त्री —चर्चा, खबर ।
उ०—चौधरचा [illegible] रपोट कर दी, पचा मुळजमा री परचौ कटा [illegible] । [illegible] हुलबग [illegible] । —[illegible]

हुलम, हुलम सं पु [illegible] का [illegible] ।
उ० [illegible], [illegible] । [illegible] हुळम [illegible] । —मे म

हुलरणौ, हुलरबौ क्रि अ [स उल्लालनम्] हुलराया जाना, लोरी गाया जाना ।
उ० बाबू बध्या ध्यावै हुलर हुलरावै हरखती । आई हुवू अबा जयति जगदंबा भगवती । —मे म

हुलराणौ, हुलराबौ क्रि स [स उल्लालनम्] १ बच्चे को खिलाने या सुलाने के लिये लोरी गाना ।
उ० १ म्हारी ए, नाव हमीर, थी सुदर म्हारी ए नाव हमीर, [illegible] हुलरायौ राणी [illegible], जी म्हारा राज ।
—लो गी
उ० २ आगा मैं [illegible] कन्हैया, [illegible] रात रे । [illegible] नै हुलरायौ नही कन्हैया, गोद न खिलायौ रात रात रे ।
—जयवंत गी
उ० ३ पालणी हीडै नैना बाळ, गावती हालरियै हुलराय । कठ मैं छळकै नेह अपार, हियै रा हार हिलोळा खाय ।—सांफ
२ बच्चो को प्यार करना, स्नेह या ममत्व दिखलाना ।
उ० वीरै सू निज कवर देगियौ, हियै लिगो हुलराई नै । [illegible] बाजणा नै बळिणी-मुळी, थौ अळिगो सुत जाईनै । —ऊ का
३ गायन करना, गाना ।
उ० बिधि एणि वधावै वसत वधा ए, भाखिया दिन दिन चढि भरण । हुलरावणौ पाग हुलरायौ । तन महबरिया थिय तरण ।
—वेलि
४ बच्चे को पालने मे झूला देना, झुलाना, झुलाते हुऐ लोरी गाना ।
५ झुलाना ।
६ रैंगना ।
हुलराणहार, हारौ (हारी), हुलराणियौ —वि० ।
हुलरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हुलराईजणौ, हुलराईबौ—कर्म वा० ।
हिलराणौ, हिलराबौ, हुलरावणौ, हुलरावबौ, हुल्लराणौ, हुल्लराबौ
—रू० भे० ।

हुलरायोड़ौ—भू का कृ —१ बच्चे को सुलाने या खिलाने के लिये लोरी गाया हुआ २ बच्चे को प्यार किया हुआ, स्नेह या ममत्व दिखाया हुआ ३ गायन किया हुआ, गाया हुआ. ४ बच्चे को पालने मे झूला दिया हुआ, झुलाया हुआ, झुलाते हुए लोरी गाया हुआ ६ रैंगा हुआ ।
(स्त्री हुलरायोड़ी)

हुलरावणौ, हुलरावबौ—हुलराणौ, हुलराबौ' (रू भे)

उ०—१ चन्नण रा पालणा मै हुलरावती वेळा वा खरखरा सुर मैं कोड सू गावती-जसोदा हरि पालनै झुलावै ।—फुलवाडी

उ०—२ घरि घरि बसत राग हुलरावीजै छै। कामदेव री दुहाई देता फिरै छै। पचम राग गाईजै छै।—रा सा स

उ०—३ सजन चल्या हे सखी हु दीना पूठ। हीया ऊपर हुलरावती कदै न कहती ऊठ।—ढो मा

उ०—४ काचबियै री जात कुजात, बाई जी म्हारा ओ, काछबियै री जात कुजात। काछबियौ ज्वा ज्यू हुलरावै, हुलरावै जी म्हा रा राज।—लो गी

उ०—५ बधू बन्या ध्याव हुलर हुलरावै हरखती। अई 'दद्र' अवा जयति जगदबा भगवती।—मे म

उ०—६ सोभागी सहु नइ तू वाल्हउ, हरखइमा हुलरावइ रे रिखभदेव तगा मन रगइ, समयसुदर गुण गावइ रे।—स कु

हुलरावणहार, हारौ (हारी), हुलरावणियौ—वि०।

हुलराविग्रोडौ, हुलरावियोडौ, हुलराव्योडौ—भू० का० कृ०।

हुलरावीजणौ, हुलरावीजबौ—कर्म वा०।

हुलरावियोडौ—देखो 'हुलरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुलरावियोडी)

हुलस—देखो 'हुलास' (रू भे)

उ०—पान तणी ए महिमा जाणौ, तिणथी सूत्र लिखाणौ जी। उत्तम मन मैं हुलस ज आणौ, सका मूल न जाणौ जी।—जयवाणी

हुळसण, हुलसण—स स्त्री [स उल्लास] हुलसने, प्रसन्न होने, उमगित या उत्साहित होने की क्रिया या भाव।

उ०—१ सयण हुलसण दुयण सकुचण। ग्रहण मोखण धरण सुरगण। जपण कविजण सुजस जणजण, जैत राम अगज।

—र ज प्र

उ०—२ उरधण हुळसण हरख मन, रीझण खीजण रूप। लाज सुरगा लोयणा, राजै अरा अनूप।—अग्यात

हुळसणौ, हुळसबौ, हुलसणौ, हुलसबौ—क्रि अ [स उल्लसनम्] १ हर्षित होना, प्रसन्न होना, आनन्दित होना, आल्हादित होना।

उ०—मिलावै थू वाळा दिन रैण, हुलसता हिवडा नेह लगाय। भला कद होसी कह परभात, कळपती चकवी रै चित माय।

—साफ

२ उमगित होना, उत्साहित होना।

उ०—१.वीर पतनी फौज देख नै पती नै कह रही है—हे पती आप जुद्ध सारू झूटौ ही हाकौ सुण नै हुलसता हा सौ हे पती आज हुईज वधाई पार हू तथा बधाईदार रै झूटै हाकै ही जुद्ध सारू हुळसता राजी होवता हा तौ ऊठौ आज सिव महादेव साचौ कर दियौ है।—वी स टी

३ उमड पडना, उमड कर आना।

उ०—१ वनी रौ जिण दिसडी मैं देस, उणी दिस हिवडौ हुलस्यौ जाय। फिरै वा आख्या मैं वै रूख। अचपळी ओरू कर रह जाय।

—सांफ

उ०—२ पण दीवाणजी रै आया पै'ली मूडौ उघाड्यां जै आखौ मानखौ अडवड नै माथै हुलस गियौ तौ पछै किणी रै बस री बात नी रैवैला।—फुलवाडी

४ उत्कण्ठित होना, लालायित होना, उत्सुक होना।

उ०—१ पूत तौ असक फौज मै जुद्ध कर मरण नै जावै छै नै वहू बळण (सतकरण) सारू हुळस रही छै।—वी स टी

उ०—२ वहु बळैवा हुळसै, पूत मरैवा जाय।—जी स

५ चमकना, दीप्तिमान होना, जगमगाना।

६ मडराना, फैलना।

उ०—वीद-वीदणी रा रगमैल मै एक नवौ ई आभौ हुलस्यौ हौ। नवाई तारा अर नवौई चाद। कुदरत रा जुगा जूना आभा सू औ आभौ इदक सुहावणौ हौ।—फुलवाडी

७ झुकना।

उ०—नानी-मा रूख री वडयोडी डाळ ज्यू उणरै माथै हुळसी दौ तीन वळा बादळ रौ नाव लेय जोर म बतळायौ।—फुलवाडी

८ उतावला होना, आकुल होना।

९ प्रवृत्त होना, झुकना।

उ०—दीवाणजी री अकल अर वारा रुतबा माथै अणू तौ भरोसौ हौ जकौ एक छिण मै लोप व्हैगौ। गवै किण रौ भरोसौ। निरास मामापत्तिया रौ मन भगवान माथै हुळसियौ। ठौड ठौड मिदरा री नीवा दिरीजण लागी। जूना मिदरा मैं अखरणौर पूजा होवण लागी।—फुलवाडी

१० टूट पडना, झपटना।

उ०—केहर टळ जावै कठै, तन सू ओलौ ताक। हाकै सागी हुलसणौ, है सूबर हुसनाक।—ऊ का

हुळसणहार, हारौ (हारी); हुळसणियौ—वि०।

हुळसिग्रोडौ, हुळसियोडौ, हुळस्योडौ—भू० का० कृ०।

हुळसीजणौ, हुळसीजबौ—भाव वा०।

हुळसाणौ, हुळसाबौ—रू० भे०।

हुळसाणौ, हुळसाबौ, हुलसाणौ, हुलसाबौ—क्रि स ['हुळसणौ' क्रि का प्रे रू] १ प्रसन्न करना, आनन्दित करना, हर्षित करना, आल्हादित करना। २ उमडाना, उमडा कर लाना।

३ उत्कण्ठित करना, उत्कण्ठा, लालसा व उत्सुकता जाग्रत करना।

४ चमकाना, दीप्तिमान करना।

५ झुकाना।

६ उत्साहित करना, उमगित करना।

उ०—मै मद भागण करम अभागिण, कीरत कैसै गाऊ ए माय। बिरह-पिजर की बाड साखी री, उठ कर जी हुलसाऊ ए माय।

—मीरा

७ देखो 'हुळसणी, हुळसबौ' (रू भे)

उ०—१ एक गोरीजी सिणगार करीदयौ, औगण जिगा राज मुजाए । जिण हुळसाणी री जिणा री सू श्रावै । —गी रा

उ०—२ फेर उण री पत री बीजी मन हुलसाय तीगू भागी श्राप महा रू जतन री पर नाय । गारमाड रा श्रमरावां री वारता

उ०—३ हुआ गजि गज गहै हुलसाय, घण रस गुमळ पीत गागाय ।—सू प्र

हुळसाणहार, हारौ (हारी), हुळसाणियौ—वि० ।

हुळसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हुळसाईजणौ, हुळसाईजबौ—कर्म वा० ।

हुळसायोड़ौ—भू का कृ —१ प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित व आल्हादित किया हुआ २ उत्साहित व उमंगित किया हुआ ३ उमड़ाया हुआ. ४ उत्कण्ठित, लालसा व उत्सुकता आतुर किया हुआ ५ चमकाया हुआ, दीप्तिमान किया हुआ ६ झुकाया हुआ ७ देखो 'हुळसियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री हुळसायोड़ी)

हुळसियोड़ौ—भू का कृ —१ हर्षित, प्रसन्न, आनन्दित व आल्हादित हुआ हुआ २ उमंगित व उत्साहित हुवा हुआ ३ उमड़ा हुआ, उमड़ कर आया हुआ ४ उत्कण्ठित व लालायित हुवा हुआ चमका हुआ, दीप्तिमान हुवा हुआ ६ झुका हुआ ७ मडराया हुआ, फैलाया हुआ. ८ उतावला हुवा हुआ, आकुल हुवा हुआ ९ प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ १० टूट पड़ा हुआ, झपटा हुआ ।

(स्त्री हुळसियोड़ी)

हुळहुळ—सं पु—१ एक छोटा बरसाती पौधा जिसकी पत्तियों का रस कान के दर्द में लाभकारी होता है ।

२ देखो 'सुळगुळ' (रू भे)

रू भे हुरहुर, हुरहुल ।

हुलाउ—स पु—शोर गुल, कोलाहल ।

उ०—किलबां सयांमि विवनउ करस, धरहरिय सवै मरुमाझि धस । हुइ कपि वेस हुम्रउ हुलाउ, राठउड़ विगसउ करन राउ ।—रा ज सी

हुलास—स पु [स उल्लास] १ हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द, आल्हाद ।

उ०—१ हुकम हुवौ तन सुख हुवा, हुवा नगारा सद्द कूच । हुवौ जैपुर दिसा, हुवौ हुलास विहद्द ।—रा रू

उ०—२ इसी जबाण उच्चरै, किलोळ कोकिला करै । प्रफुल्ल प्रकासय, हसत कै हुलासय ।—सू प्र

उ०—३ सादूळौ वन सचरै, करण गयदा नास । प्रबळ सोच भमरा पड़ै, हसा हुवै हुलास ।—बां दा

उ०—४ नैणा निहारौ म्हानै नेह सू हो । हाजी म्हांरा हिवड़ा मै भरोनी हुलास ।—गी रा

२ उत्साह, उमग ।

उ०—निस वासरी गुण गैह निज, चाहै रसणि विलास । अरज करै गुण औरता, हित रिति गरम हुलास ।—रा रू

३ उत्कण्ठा, लालसा ।

४ रोमाच ।

५ चमक, आभा, दीप्ति ।

६ एक अलकार विशेष जिसमे एक के गुण-दोष से दूसरे के गुण-दोष दिखलाये जाते है । इस के चार भेद माने गये है ।

७ किसी ग्रथ का एक भाग, अश, खण्ड, पर्व या अध्याय ।

८ एक छद जो चौपाई और त्रिभगी के मेल से बनता है ।

रू भे हुलारा, हल्लास ।

हुलासी—वि [स उल्लासित] १ प्रसन्न चित्त, आनन्दित, हर्षित, मुदित-मन ।

२ कान्तिमान, दीप्तिमान, तेजस्वी ।

३ चमकदार, दमकदार ।

४ उत्साहित, उमगित ।

५ उत्कण्ठित, लालायित ।

हुळियार—सं पु होली के अवसर पर रग खेलने वाला, होली खेलने वाला ।

उ०—सप धार रमी गिळियार तेम । जोधार मीर हुळियार जेम ।—वि सं

हुळियोड़ौ—भू का कृ —१ उत्पन्न या पैदा हुवा हुआ २ उमगित, उत्साहित ३ हुलसाया हुआ ।

(स्त्री हुळियोड़ी)

हुलियौ—देखो 'हूलियौ' (रू भे)

हुल्ल—देखो 'हुल' (रू भे)

हुल्लड़—सं पु [स हुड हुड] १ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला, कोलाहल ।

२ उपद्रव, दगा । ३ विद्रोह ।

४ हलचल ।

क्रि प्र—करणी, कराणी, मचणी, होणी ।

रू भे—हुलड़ ।

हुल्लरावणौ, हुल्लरावौ—देखो 'हुलरावणौ, हुलरावौ' (रू भे)

उ०—अराहे सराहै धणू अव्वणोकै, दमै नाग लोका सरौ राज लोकै । इणी भांगणी कोण जौ कूख जायौ, हिडोरै धलायौ धरै हुल्लरायौ ।—नागदमण

हुल्लरायोड़ौ—देखो 'हुलरायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री हुल्लरायोड़ी)

हुल्लास—देखो 'हुलास' (रू भे)

हुवणौ, हुवबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू भे)

उ०—१ पाल सुजस अखियात पयपै, वातव असमर वात दुवै । जग मै राम तुहालै जोडै, हुवौ न कोइ फेर हुवै ।—र रू

उ०—२ फरण इक गह पतसाह खसियौ कितौ, प्रथी जोगणपुरी

दाखवै पाण । धरम खट वरन रौ जितौ हुवतौ धरा, करण सुव राहतौ साहि केवाण ।—द दा

उ०—३ दळा गहमह कीव डबर, चौसरा सिर हुवा चम्मर गाजता गजमेघ गाजा, वाजता मगळीक वाजा ।—सू प्र ।

हुवणहार—देखो 'होण हार' (रू भे)

उ०—बीजौ पण हुवणहार लार मारवाड रौ थौ, वखतसिंघजी री ओडी कोई ठावौ सरदार काम आइयौ ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

हुवणी—देखो 'होणी' ।

हुवर—देखो 'हूर' (रू भे)

हुवा–वि —१ बस, काफी ।

२ अलभ्य, दुर्लभ्य ।

३ समाप्त, खत्म ।

४ पर्याप्त ।

५ अधिक, बहुत ।

रू भे —हुआ ।

हूवारियौ–सं पु —१ आवाज देने की क्रिया या भाव ।

२ लम्बी आवाज ।

वि वि —देखो 'टहुकौ' ।

हुवाल—देखो 'हवाल' (रू भे)

उ०—पछै घडी दोय सू कलमदान कागद लै लिखण बैठी । सौ धणी मोज मनुहार लिखी । वचन लियौ थौ तैरी अरज लिखी । पछै आपरा हुवाल रा दूहा लिखिया ।

— कुवरसी साखला री वारता

हुवाले, हुवालै—देखो 'हवालै' (रू भे)

उ०—नोट अर नगदी कोट री जेव रै हुवालै करचा तथा डागळै री पेडचा सू हैठ उतरचा । —दसदोख

हुवालौ—देखो 'हवालौ' (रू भे)

हुवास—देखो 'होवास' (रू भे)

उ०—छिलै छाकिया किया छछोहा छूटा छोगाळा छबीला छैल, आटै'ग सछोहा जिलै जाकिया अमीर । भातीला सुवासा मढै जोसेत ढाकिया स्नेहा, हुवासा अछैहा चढै हाकिया हमीर ।—र हमीर

हुविए, हुविऐ–क्रि वि --अब, अभी ।

हुवोडौ—देखो 'होयोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुवोडी)

हुवौ-स पु —कुए से मोट खाली करते समय बोला जाने वाला शब्द ।

क्रि वि —बस, काफी, पर्याप्त ।

हुसड–वि —१ जो शरीर से मोटा-ताजा हो, प्रचण्ड शरीर वाला, हृष्ट-पुष्ट ।

उ०—बैराड देस रा कै वरास, हालता भाप भरता दुबास । पीडास चाक अर तन प्रचड, हरडा सा बाज ताजी हुसड ।

—पे. रू.

२ शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—हुसड हुकळै बांधळा प्रचड गज हिंडुळै, वळै दळ बाज अबाळ बाजा । गढपती पोकरण लीध लागै गजां, राज रौ ताप 'जसू' राज राजा ।—महराजा जसवतसिंहजी रौ गीत

३ स्वस्थ ।

स पु —घोडा, अश्व ।

उ०—परचड हुसड किया तहि पक्खर, अबर सामा ऊछळता ।

—गु रू ब

रू भे.—हुस्तड ।

हुस–अव्यय—किसी अनुचित बात या कार्य के निषेध मे प्रयुक्त होने वाला एक अव्यय जो कभी कभी प्रताडना मे काम आता है ।

रू भे —हुस्त ।

हुसन–स पु [अ हुस्न] १ सुन्दरता, खूबसूरती, सौंदर्य ।

उ०—प्यारी तेरै हुसन पर, म्है हो रह्या लवलीन । तुझ बिन मैं ऐसा दुखी, जैसै जळ बिन मीन ।—लो गी

२ आभा, कान्ती, नूर, लावण्य ।

३ शोभा, छटा, रौनक ।

४ यौवन का उभार ।

५ सतीत्व ।

६ भलाई, अच्छाई ।

७ उत्तमता श्रेष्ठता ।

वि —१ उत्तम, श्रेष्ठ ।

२ अच्छा भला ।

उ०—पातिसाह मुहमद मुसतफाखान रा उमाराउ हुसन हुसेनखा अलीखान सारीखा गोरी ।—रा सा स

रू भे —हुस्न ।

हुसनाक, हुसनायक–वि —जिसमे हुस्न हो, सौंदर्य हो, खूबसूरत, सुन्दर ।

उ०—१ आलीजा अलबेलिया, हो हसा हुसनाक । भीनोडा रसिया भमर, छैल पियौ मद छाक ।—बा दा

उ०—२ तठा उपराति करि नै भोगिआ भमर लआ छयल हुसनाक । जुवान निजरबाज बाजार माहै ऊभा जोहा खाए छै ।

—रा सा स.

२ कान्तीमान, दीप्तिमान, ओजस्वी ।

३ प्रभावशाली, प्रतिभाशाली ।

उ०—आळी दोळौ हाथ रो पोलौ । सूवा अर भोळा नै भरमावै है । स्याणा, चतरा अर हुसनाका रौ हीडौ-चाकरी तथा गरज करतौ रैवै ।—दसदोख

४ अच्छा, भला ।

५ उत्तम श्रेष्ठ ।

६ साहसी, हिम्मतवर।

७ चुस्त, तत्पर।

उ० मेहर नहीं जाई को, मन में आवी लाक। झाबी मामी हुसरायी, तै सूरत हुसनाक। —अ मा

८ चतुर, होशियार।

सं पु —साहसवाला।

रू भे —होसनाइक, होसनाक, हुसनायक, हौसनाइक, हौसनाक, हौसनायक।

हुसमद —देखो 'हसमंद' (रू भे)

उ० हुसमद सारै भा रै, उछवाबैराण वृद। हाजर विजमान भारती, भूप नाजर **हुसमद**। —रा रू

हुसिआर —देखो 'होसियार' (रू भे)

उ० इण विध 'मानै' अ... गुमानी राणाळै साथ। **हुसिआरा** मछ मळी, मी मारै नाराथ। —रा रू

हुसिक सं पु —१ होसला, होश।

उ० —अरजी आवै नै **हुसिक** मांहि रासु जिय जरै। महावैरी मेरो भाग्य भर मेरो मन मरै। —अ मा

२ इच्छा, अभिलाषा, कामना।

हुसियार —देखो 'होसियार' (रू भे)

उ० १ नकीब फेरनै सारी लसकर भेळी करायनै आप चढनै चाढ़ी फेरी। हुआजोडी थारी, नै कह्यौ—सकौ **हुसियार** हुजो। जिण मांहि हुय जैसी जासी तिण नू हू मारीस। —नैणसी

उ०—२ पीवै मिलावै राग रस, माता है **हुसियार**। दादू रस पीवै घणा, औरौं को उपगार। —दादूवाणी

हुसियारकास पु —द्वारपाल, प्रतिहार, दरबान, छड़ीदार। (ह नां मा)

हुसियारगी, हुसियारी —देखो 'होसियारी' (रू भे)

उ० सू इणारै बीच मैं मालदेजी री तरफ सू जैतसी ऊवावत नै सेसौ ऊवावत सला करण आया। नै समचार सारा कैया। तद जूपै नै जैतै बडी **हुसियारगी** बधायी। —व दा

हुसियारौ —देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—अला इह जुगि तीजै मोमिणां, होय चालौ **हुसियारौ**। अला इह जुगि चौथै मोमिणां, अब जीवा की वारौ। —दीन सुदरदी

हुसीयार —देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—१ घर घर लगौ लायणौ, घर घर धाह पुकार। जनहरीया घर आपणौ, रखैतौ **हुसीयार**। —अनुभववाणी

उ०—२ भला तु आवियो मुझ मन भावीयो, धूत रजपूत मूकी कहायी। हू हिजै साहि **हुसीयार** हिवै जाह मत, भला सिंघल थकी भाजि आयौ। —प च चौ

हुसीयारौ —देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—साहि कहै सुभटा भणी, होज्यौ हिवै **हुसीयारौ** रे। मरदानी लागी, देखीजे इण वारी रे। —प च चौ

हुसैन सं पु [अ] मोहम्मद साहब के दौहित्र तथा हजरत अली व फातिमा का द्वितीय पुत्र, जो कर्बला के युद्ध मे मारे गये थे। ये शिया मुसलमानो के पूज्य है।

वि० वि० मुहम्मद साहब की वफात के पश्चात् उनके पाचवे उत्तराधिकारी अमीर मुआविया खलीफा बने। अब तक किसी खलीफा का उत्तराधिकारी उसका पुत्र नही बना था। खलीफा उसी को बनाया जाता था जिसकी सर्वाधिक बैयत (धार्मिक लोकप्रियता) होती थी। इसलिये मुहम्मद साहब के दोहित्र इमाम हसन को अमीर मुआविया का उत्तराधिकारी बनाना निश्चित हुआ, लेकिन अमीर मुआविया के पुत्र यजीद ने षडयन्त्र करके इमाम हसन को मरवा दिया और फौज के बल पर खुद खलीफा बन बैठा। इमाम हसन की हत्या के बाद 'हुसैन' की बैयत सर्वाधिक हो गई, तब यजीद ने हुसैन पर जुल्म करने शुरु कर दिये। अन्त मे कूफा नगरवासियो की प्रार्थना पर 'हुसैन' अपने साथी एवं सम्बन्धियो के साथ कर्बला से कूफा के लिये रवाना हो गया। ७२ व्यक्तियो का यह काफिला अब इराक के गजरिया नामक गाव के निकट फरात नदी के किनारे डेरा डाले हुऐ था तब यजीद की ८४००० सिपाहियो की सेना ने आकर इन पर हमला कर दिया। 'हुसैन' सत्य के लिये लडता हुआ शहीद हो गया और सत्य पर असत्य की जीत हो गई।

यह घटना ६१ वे हिजरी संवत के प्रथम मास की दस तारीख की है। मुसलमान प्रतिवर्ष इसी तारीख को इस दुखद घटना की याद मोहर्रम के रूप मे करते है।

अनुश्रुतियो मे, ईसा की चौदहवी शताब्दी के अन्तिम दशाब्द मे तैमूरलग के भारत पर आक्रमण के समय से ताजियो का प्रचलन माना जाता है। तैमूर ने कर्बला मे इमाम हुसैन के रोजे पर प्रतिवर्ष जाने की मिन्नत मानी थी। लेकिन विस्तृत साम्राज्य व आवागमन के साधन सीमित होने तथा पीछे से राजधानी मे विद्रोह होने की सम्भावना के कारण प्रतिवर्ष जाना सभव नही हो सका। अत तैमूर ने रोजे की हूबहू नकल तैयार करवाई और मिन्नत मान कर उसी दिन नष्ट करवा दिया। सुल्तान तैमूर के अनुकरण मे जनता भी इसे वास्तविक रोजा समझ कर पूजने लगी और यह प्रचलन आज भी जारी है।

ताजियो का निर्माण भारत, पाकिस्तान, बगलादेश, अफगानिस्तान और ईरान के अतिरिक्त अन्य देशो मे नही होता है।

हुसैनी —वि हुसैन का, हुसैन सम्बन्धी।

स. स्त्री. —१ मुसलमानो की एक भाषा।

२ यवन भाषा। (अ मा)

३ एक प्रकार की तलवार।

हुसैनी-कान्हड़ा —सं पु.—सब शुद्ध स्वरो मे गाया जाने वाला एक राग।

हुस्तड—हुसड' (रू भे)
उ०—च्यारू रेढा रा डील ई ऊमर परवाण अणू ता। हुस्तड व्हियोडा हा।—फुलवाडी
हुस्त—देखो 'हुस' (रू भे)
उ०—'मोटर वाळा भागवाना! साल जीव भूखा हे। कुई किरपा करावौ। हुस्त भाग जावौ।'—वरसगाठ
हुस्न—देखो 'हुसन' (रू भे)
हुस्यार—देखो 'होसियार' (रू भे)
उ०—अरजन रा साथी उजडण नै त्यार, घर हाळा भगडण नै हुस्यार।—दसदोख
हुस्यारी—देखो 'होसियारी' (रू भे)
उ०—टाबरा रा साच आगै बडेरा री हुस्यारी ढोळै बैठ जावै।
—फुलवाडी
हुहव—स पु—एक नरक का नाम।
हुहु, हुहू—स पु—१ देवता। २ एक गधर्व।
३ देखो 'हूहू' (रू भे)
हू—सर्व [स अहम्] मैं, मैने, मुझे।
उ०—१ वदनारविंद गोविंद वीखियै, आतोचै आपौ आप सू। हिव रुखमणी कतारथ हुइस्यै, हुऔ, कतारथ पहिलौ हू।—वेलि
उ०—२ ऐला चीत्तौड सहै घर आसी, हू थारा देखिया हरू। जगणी इसौ कहू नह जायौ, कहवै देवी धीज करू।—वारूजी सोदा
उ०—३ कायथ त्याग विचारै काया, केसरिसिंघ राम का जाया। इण विध अरज दई लिख आगै, भाखव हू तिण थी भ्रम भागै।
—रा रू
उ०—४ भारती भगवती एक मागू, चित्त पाडव तणौ गुणि लागउ। आपि मू वचन तू रसवाणी, हू करउ जिसि प्राकृतवाणी।
—सालिसूरी
उ०—५ अजमेर आवता पेहली महावतखान पातसाह सु मालम कीयौ—जु राजा गजसिंघ म्हारौ माथौ वाढण रै वास्तै नागौर लियौ हुतौ सु हू पाऊ।—नैणसी
अव्यय (विभक्ति चिन्ह) १ से।
उ०—१ हरि हुए वराह हए हरिणाकस, हू ऊधरी पताळ हू। कहौ तई करुणा मै केसव, मीख दाध किण तुम्हा सू।—वेलि
उ०—२ उठा हू नागणेच्चा भमण आविया, लाविया सरब रणवास लारै। गती गजराज हसा गवण गामणी, इद्र पर कामणी लवण वारै।—मे म
उ०—३ कहियौ नृप सिध हू जोडै कर, आयस हसै चौक किण ऊपर।—सू प्र
उ०—४ पनरह दिन हू जागती, प्रीसू प्रेम करत। एक दिवस निद्रा सबळ, सूती जाणि निचत।—ढो मा
२ से, द्वारा, मार्फत।
उ०—लहै आगवौ खाग हू छाग तोडै, चडी कालिका मातरै ओण चोडै।—मे म
३ से, अपेक्षाकृत, तुलना मे।
उ०—आदीता हू ऊजळौ, मारवणी-मुख-ब्रन्न। भीणा कप्पड पहिरणई, जाणि भखइ सोव्रन्न।—ढो मा
४ को।
उ०—चरखा गडि चक्र मगा मचलै, चर हू थिर "थाप" पगा न चलै। जड हू करि जगम देत जिका, तन अद्र मतगज रग तिकां।
—मे म
५ के।
उ०—वागरवाळ विचारियउ, ए मति उत्तिम कीय। सोल्ह महल हू ढूकडा, ढाढी डेरउ लीय।—ढो मा
६ वर्तमान कालिक क्रिया 'है' का उत्तम पुरुष एक-वचन का रूप।
उ०—आरभ मै कियौ जेणि उपायौ, गावण गुण निधि हू निगुण। किरि कठ चीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण।—वेलि
७ स्वीकृति या समर्थन सूचक शब्द, 'हा'।
रू भे—हु।
हूकणी—स स्त्री—१ किसी जानवर की बोली, आवाज।
२ उमग, प्रबल इच्छा।
उ०—उणारा मन मैं इतौ गुमेज व्हियौ कै उणानै हूकणी छूटी। वौ जोर सू भूकियौ।—फुलवाडी
हूकणौ, हूकबौ—क्रि स—१ हुकार भरना, हुकारना।
२ गर्जना, गर्जन करना।
३ सिसकना, रोना।
४ वोलना, आवाज करना। (जानवर)
हूकणहार, हारौ (हारी), हूकणियौ—वि०।
हूकिओडौ, हूकियोडौ, हूक्योडौ—भू० का० कृ०।
हूकीजणौ, हूकीजबौ—कर्म वा०।
हूकर—देखो 'हुकार' (रू भे)
हूकळ—स [स उत्कललनह] १ कोलाहल, शोर-गुल।
उ०—१ हैदळ कळळ पायदळ हूकळ, सीसोदे खडतै सनद। गैहकै हो बीजागढ पतिया, गजै अगजी त्रिकुट गढ।
—महाराणा लाखा रौ गीत
उ०—२ रोज सिकारा खेलणौ, देखै बाग तडाग। हूकळ दळ गज हैवरा, अमरख नरा अथाग।—रा रू
२ गर्जना, हुकार।
उ०—१ ऊठि अढगा बोलणा, कामणि आवै कत। अै हरला तौ उपरा, हूकळ कळळ हुवत।—हा भा
उ०—२ अर हूकळ मत ऊछळै, बिग्रह बुरी बलाह। जोया पिव तौ जावसी, ओयण चिपक इलाह।—रेवतसिंह भाटी
३ घोडो की हिनहिनाहट।

उ० १ [illegible]

[illegible]

उ० २ [illegible]

[illegible]

[illegible]

उ० १ [illegible]

[illegible] हुकळ [illegible]

[illegible] री गीत

उ० [illegible] हुकळ [illegible]

५ गजा, गरजाई।

उ० [illegible] हुंकळ [illegible]

६ सिधु राग का गायन।

७ गायन की ध्वनि।

८ गायन, गाना।

रू० भे० हुकळ, हुकाळ, हूकळ, हुकाळ।

हुकळणाळो—स० पु० उपद्रव, बखेड़ा, दंगा।

हुकळणी, हुंकळबौ—क्रि० अ० १ कोलाहल या शोरगुल होना।

२ गरजना, हुकार होना।

३ हिनहिनाना।

४ शब्द, आवाज या ध्वनि होना।

५ सिंधु राग गाया जाना।

उ० —हुकळै सींधवी वीर कळहळ हुवै। घरणा काजि अपछरा सुरिमा वहु घुबै। —हा० झा०

हुकळणहार, हारौ (हारी), हुकळणियौ—वि०।

हुंकळिओड़ौ, हुकळियोड़ौ, हुकळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हुकळीजणौ, हुकळीजबौ—भाव वा०।

हुकळणौ, हुकळबौ—रू० भे०।

हुकळियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कोलाहल या शोरगुल हुवा हुआ २ गर्जा हुआ, हुकार हुवा हुआ ३ हिनहिनाया हुआ ४ शब्द, ध्वनि या आवाज हुवा हुआ, ५ सिधु राग गाया हुआ।

(स्त्री हुकळियोड़ी)

हुकार—स० स्त्री—१ स्वीकृति, सहमति, हां।

२ देखो 'हुकार' (रू० भे०)

उ०—नामियौ अनमधौ तीठ कीवौ नही, समर भर पियौ पतिसाह साथै। सार ऐराक 'धीका' हरै साहिया, माड हुकार ता वीध माथै।

—राव जैतसी री गीत

हुकारौ—देखो 'हुकारौ' (रू० भे०)

उ०—१ मुनि मून पारसी भरयौ, हुंकारै खट काया हरयौ। अरा बोरयाई उदम करै, तौ बोल्या कहौ काइ गति करै। —भि० द्र०

उ० २ [illegible] हुकारौ दियौ अर [illegible] रै पछै [illegible] री [illegible] निकाळवी। [illegible]

उ० ३ [illegible] हुकारौ भर लियौ। [illegible]

उ० ४ [illegible] हुकारा न भराव।

—महाराणा कुभा री गीत

हुकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ हुकारा भरा हुआ, हुकारा हुआ २ गर्जा हुआ, गर्जन किया हुआ ३ [illegible] हुआ, रोया हुआ ४ बोला हुआ आवाज किया हुआ। (जानवर)

(स्त्री हुकियोड़ी)

हुचकणौ, हुचकबौ—देखो 'हुचकणौ, हुचकबौ' (रू० भे०)

हुचकियोड़ौ—देखो 'हुचकियोड़ौ' (रू० भे०)

(स्त्री हुचकियोड़ी)

हुचणौ, हुचबौ—देखो 'हुचणौ, हुचबौ' (रू० भे०)

हुचियोड़ौ—देखो 'हुचियोड़ौ' (रू० भे०)

(स्त्री हुचियोड़ी)

हुचौ—स० पु० मुरट नामक घास की काटेदार बाल से बीज निकालने की क्रिया।

उ० [illegible] हुचा [illegible]। ऊपर दिन ओछा [illegible], पछी [illegible]। —मळवट बत्तीसी

हुछ—स० पु० मुरट नामक घास का बीज।

उ० जिण मुद पत्तग पीवगा, मगर-काटाळा रूख। आकै-फोगै छाइडी हुछा भाजइ भूख। —ढो० मा०

रू० भे०—हुछ।

हुंठ—स० पु० [स० अर्द्ध चतुष्क] साढे तीन की संख्या।

वि०—साढे तीन।

हुंठा—स० पु० साढे तीन का पहाड़ा।

रू० भे०—अऊठा।

हुड—वि० लगड़ा।

उ० देव माहि कुणा हू न स्वामी, न दास, न मूक, न अतसूक, न बधिर, न बिधर, न कुबड़, न वांमण, न हुड, न छोटा, न पागुला, न आंधला, तिहा डास मुगा माकुण धू प्रमुख न उपजइ' ।

—व० स०

हुडा—स० पु०—चौपड़ के खेल मे तीन पक्के पासे लगातार आने पर पासों के निरस्त हो जाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

हुडी—स० स्त्री—१ नाभि।

२ देखो 'हुडी' (रू० भे०)

उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या—थारै बाप हुड्या लीखी, थारै दादै हुड्या लीखी, पाटा पाटी पेढ सखेल्या कोइ नही। —भि० द्र०

उ०—२ ए पिए वदगा भेलै नही, घर मे माल बिना हूडी मीकारनी आवै नही। अनै साधा नै वदना करै।— भि द्र

हूडीवाळ—देखो 'हुडीवाळ' (रू भे)

उ०—ऐ दलाल ऐ खुडदिया, हूडीवाळ बजाज। ऐहिज करै पसारटौ, केवळ धन रै काज।—बा दा

हूडौ–स पु—एक प्रकार की डलिया जो गोल छबडीनुमा होती है। यह पशुओ को चारा खिलाने के काम आती है।

हूणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)

उ०—लाखै घणौ पछतावौ कीयौ, जाणियौ, परमेस्वर आ किसी उपाय की, मोनू किसी कुबुध आई, हूणहार जोर कौ नही।
—नैणसी

हूणी—देखो 'होणी' (रू भे)

उ०—झड झड पत्ता झडता हा, ही पतझड री रीतु आई। बै एक एक पडता हा, हूणी री मनस्या आही।—सकुतला

हूत–अव्य—१ तृतीया विभक्ति चिन्ह, 'से'।

उ०—१ पाताळ लोक आतप पडै, अडै आभ भाला अणी। जा हूत भिडै 'जैतो' जठै, तनै लाज मेहातणी।—मे म

उ०—२ सोर आग सपरस्स, किना वडवाग अकारी। माग हूत सामद्र, त्याग वरतण उर धारी।—रा रू

उ०—३ रे अधम समझ मुख नाम रट, सीत-वर समराथ कौ। कह जीह हूत 'किसना' कवी, निज प्रत जस रघुनाथ कौ।
—र ज प्र

उ०—४ आजू हीलोहळ धू अटल, देव धरम बाणारसी। पतसाह हूत चीतोडपत, राण मिळै किम राजसी।—कम्मौ नाई

२ तुलना मे, से।

उ०—रच्यौ फेर प्रासाद वाहादरा रौ, धनौ भाग भू भाग भाठी धरा रौ। हुवौ ना इसौ थान आन हूणो, दियै इदरा मदिरा हूत दूणू।—मे म

३ सहित, समेत, युक्त, से।

उ०—अरि चारी जड हूत ऊपाडै, साकुर धीरि हाक सर। टहास करै फौजा बड लगर, क्रोध तिनाणी हमल कर।
—लालसिंह राठौड रौ गीत

४ का, के, की।

उ०—सप्तपुरी सिरताज, क्रत अपवरग हूत समकारण। उत्तम धाम अजोध्या, ओपै नाम ग्राम पुर ऊपर।—रा रू

५ द्वारा, मार्फत।

उ०—पधरावियौ सुभ प्रात, छळ हूत मुरधर छात। दळ कमध साह दवार, अन रहै साम उबार।—रा रू

६ होना क्रिया।

रू भे—हुत, हुता, हुत, हूता, हूता, हूत, हुता, हूता।

हूतउ—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—१ आखि हूतउ काजज हरइ, केसि बाधी सल धरइ, बोलता मस्तकना केस ऊरद्ध थाइ, दाघनी बेटी''।—व स

उ०—२ पोलइ हूतउ पोलीउ, राइ हकारिउ तेह। ए मदिर कहि रे किहि-तणा, किसिउ लीह छइ ग्रेह।—मा का प्र

हूतळ–क्रि वि—शामिल, साथ।

उ०—चक्रवत कन्हे वरा लख चाळौ, टाणौ तिण न दियै पळ टाळौ। तज साचोर 'पाल' हर तेजल, छित्रपति-काज रिणमलै हूतळ।—रा रू

रू भे—हूतळ, हूतल।

हुता, हूता—देखो 'हूत' (रू भे)

उ०—१ वडै प्रात स्रीमात मजीर वागै, जरा गात जभात जमात जागै। सुणीजै अलकार झकार सूता, हुवै नीद विक्षेप ताकीद हूता।
—मे म

उ०—२ पूगळ हुता पुहकरइ, ढाढी कीध प्रयाण। माळवणी का माणसा, आए मिळ्या अजाण।—ढो मा

उ०—३ वरणी धर गिरधार वनौ, सीवर वू धारण। हाथी ग्रह निज हाथ, ताय हूता झट तारण।—मीरा

उ०—४ जिण राणी चवदै सुत जाए, सौ पित हूता तेज सवाए। दखिवण लीध जीपि लग दावै, कपाळिया भड तिकै कहावै।
—सू प्र

उ०—५ सगि सति सखीजण गुरुजण स्यामा, मनसि विचारि ए कही महति। कुसमथळी हूता कुदणपुरि, किसन पधारचा लोक कहति।—वेलि

हूति, हूती–अव्यय—१ से।

उ०—१ हसै दीध आसीस आणद हूती। अखै भाग सोभाग हौ पुत्रवती।—सू प्र

उ०—२ अम्रत हूती किसिउ कालकूटच्छटा उच्छलइ, चद्रमडल हुता किसिउ अग्निस्फुलिग उल्ललइ, ।—व स

२ की।

उ०—नेसालीया तै देखी मूरख मूरख चट्ट कहति। तिम तिम तै मनि दूहवीइ अनराय फल हूति।—हीराणद सूरि

३ थी।

उ०—१ सखिए साहिब आविया, जाहकी हूती चाइ। हियडउ हेमागिर भयउ, तन-पजरै न माइ।—ढो मा

उ०—२ हिमानी सखा माहरै एक हूती। अणहूत सौ उद्धरी भागवती।—सू प्र

रू भे—हुती, हुती, हुती, हूति, हूती।

हूतू–सर्व—मैं व तू।

उ०—कसन राखि हिव हूतू करतौ, धरणी धर ममता मन धरतौ।
—ह र

हूतै–क्रि वि—१ से, द्वारा।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हूलो [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रू भे [illegible]ओ, हलौ, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], हलौ ।

हूकणौ, हूकबौ देखो 'होकणौ [illegible]' (रू भे)

उ० [illegible] **हूकह** [illegible] बाकर [illegible], [illegible] पति रौकु ऊगाह । [illegible] जगजग बयण ।

शालिभद्र सूरि

हूकियोड़ौ देखो 'होकियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री हूकियोड़ी)

हूक्का स पु [illegible] का **हूस** पाख्या [illegible] ।

हूकणौ, हूकबौ देखो 'होमणौ, होमबौ' (रू भे)

उ० [illegible] सी [illegible] संग्राम साक, बखसूर [illegible] ।

हूमे [illegible] **हूमे**, घणा साधणा [illegible] ।

[illegible]

हूमियोड़ौ देखो 'होमियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री हूमियोड़ी)

हूस-स स्त्री [सं उल्ल] १ प्रबल इच्छा, अभिलाषा, उत्कण्ठा ।

उ०—१ **बयकूट** निरासान थी तजि कै बध कौन चहै जगपासन की । **अगराज** पळागन त्यागत कै चित **हूंस** धरौ नहि धारान की ।

—र ज प्र

उ० --२ हरखी न दीघो हालरो जी, बहू नहीं पाछी [illegible] । एक ही पुत्र न जनमियौ जी, **हूस** रही मन माय रे जा[illegible] ।

—जयवाणी

उ०—३ जो गयल जिम तिम करी, पकडीजै है तौ पहुचै मन **हूस** कि । आलोची मन आपणा, धीरज धरि है मन पूरै **हूस** कि ।

—प च चौ

उ०—४ म्हारी आ अमर नौ ताळी रै फटकारै खूटै । सगळी कुदरत नै जीतण री **हूस** राखू । थळ, पाणी अर हवा मै म्हारी मैणत सू फूल उगावणी चावू ।—फुलवाडी

२ उमग, उत्साह, जोश ।

उ०—१ 'हठी' सुत 'जीवण' पौरस **हूस** । रमै रण भाट उछेहड रूस ।—सू प्र

उ०—२ ज्यू ज्यू लोग बनायो अर बरजियौ त्यू त्यू उण रा मन मै घणी घणी **हूंस** बधी ।—फुलवाडी

३ हर्ष, खुशी, आनन्द ।

उ० [illegible] **हूस** [illegible] । [illegible] मळकता [illegible] मोती [illegible] की बोलता [illegible], [illegible] । फुलवाडी

४ [illegible], [illegible], [illegible] ।

उ० [illegible] काया, [illegible] **हूस** । [illegible] जैसी [illegible] । जगवाणी

५ [illegible], [illegible] ।

उ० [illegible] पीडी [illegible] रा जीवण [illegible]—थारी [illegible] **हूस** [illegible] आकास नी रह्यौ । सगळी दुनिया [illegible] । फुलवाडी

६ प्र[illegible] ।

उ० [illegible] **हूस** [illegible] । [illegible] राम [illegible] । जगवाणी

७ [illegible], [illegible] ।

८ आशा, [illegible], [illegible], [illegible] ।

उ० [illegible], [illegible] । [illegible] भारी [illegible] **हूस**, जवाहर [illegible] । [illegible]

रू भे हौस, हुस, हौस ।

हूसनायक, हूसियौ देखो 'हूसनाक' (रू भे)

उ०-१ [illegible], **हूसनायक** [illegible] हरियौ । '[illegible]' [illegible] जीवन [illegible], [illegible] रगियौ । - महाराजा बहादर सिंघ री गीत

उ० २ दडी ज्यू [illegible] (तरवार स कूटनै) आगिरा [illegible] **हूसिया** [illegible] मे [illegible] । (दडी नै हटता लै जावै ज्यू) । [illegible]

हूसा स्त्री [illegible] की बोली ।

उ०- [illegible], [illegible] । [illegible] **हू हू** रव करै, सूनी [illegible] । [illegible]

हूक-स स्त्री १ छाती या सीने मे होने वाली तीव्र पीड़ा, दर्द ।

२ हृदय मे रह रह कर उठने वाली कसक, दिल का दर्द, मानसिक पीड़ा, वेदना, दुख ।

उ० --१ मोटघार पणा मैं घणा बरसा सू [illegible] भाग्यौ ही कै घर भागयौ । कोई आठ दस बरस नीठ चूडी हाथ रह्यौ व्हैता कै रडापौ आयग्यौ । पडता दुकाळ अर व्हैली राड री **हूक** बडी जोर री व्है पण करम री गति नै कुण टाळै ? अमरचूनडी

उ०—२ हियडै हालै **हूक** जग मैं मिळै न जेठवौ । जेठवौ

उ०—३ कार्प अनुकापा रापौ कर रीना, दाना दानापरा हानै धर दीना । किरा छिंग हूका रहै किरा छिंग रहै कूका, हरदम हिया मैं ऊठै हरि **हूका** ।—ऊ का

३ तडफन, कराह, आह ।

उ०—काग पटकिया मरै, उनाळौ काळौ काती', हिवडै हालै हूक, जळै किरसाण छाती ।—दसदेव

४ करुणा भरी बात, शोक समाचार ।

उ०—ताहरा रजपूत कहियौ—थारौ साबतौ ही गयौ । हू तौ काम आईस । ताहरा ऊ रजपूत वासै जाय नै काम आयौ । हूक फूटी । —नैणसी

५ धडकन ।

६ पश्चाताप, दुख ।

उ०—समय न चूकै चतुर नर, कहत कविजन कूक । चतुरन कै खटकत हियै, समय चूक की हूक ।—अग्यात

रू भे—हुक ।

हूकणौ, हूकबौ—क्रि अ—१ छाती या सीने मे तीव्र पीडा होना, दद होना, २ हृदय मे रह रह कर कसक उठना, दिल मे दर्द होना, मानसिक पीडा होना, वेदना या दुख होना ।

३ कराहना, आहे भरना, तडफना ।

४ करुणा या दुख भरी बात होना, शोक समाचार आना ।

५ धडकना ।

६ पश्चाताप होना, दुख होना ।

हूकणहार, हारौ (हारी), हूकणियौ—वि० ।

हूकिओडौ, हूकियोडौ, हूक्योडौ—भू० का० कृ० ।

हूकीजणौ, हूकीजबौ—भाव वा० ।

हूकळ, हूकल—देखो 'हूकळ' (रू भे)

उ०—१ बड जीव जळ थळ विकळ वळ, सघ मेर सळसळ हुए सकळ । दुहु ओर हूकळ कळळ दळ, वव वहै वीजूजळ विमळ । —र रू

उ०—२ हुय हूकळ कळहळा, हलै दळ प्रघळ जळाहळ । धर सळकै अहि धुकै, मरट वजि कमठ कळम्मळ ।—सू प्र

उ०—३ बीजौ दिसि राजा चल्यौ, मारग छोडी जाम रा० । कोढी अ दै निरखीयौ, हूकल करता ताम रा० ।—स्रीपाळ रास

हूकळणौ, हूकळबौ—देखो 'हूकळणौ, हूकळबौ' (रू भे)

उ०—१ जागडिआरी जोडी आडिआर बाज झालिआ थका हूकळि नै रही छै । —स्त, सा स

उ०—२ मन मोद अलकत सू मढिया, सब साथ वणाव करै चढिया । रग पेज कुआ रखवा रुळता, हूळ आगळ जागड हूकळता । —पा प्र

हूकळियोडौ—देखो 'हूकळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हूकळियोडी)

हूकलियौ—देखो 'होकौ' (अल्पा, रू भे)

हूकळी—स स्त्री—फौज के चलने पर उत्पन्न ध्वनि, शोर, कोलाहल ।

हूकाधारी—देखौ 'होकाधारी' (रू भे)

उ०—नरक नै कमर बाधी निठुर, घिरै न किण रा घेरिया । अमलिया हूत इधका अपत, हूकाधारी हेरिया ।—ऊ का

हूकारौ—देखो 'हुकारौ' (रू भे)

हूकियोडौ—भू का कृ—१ छाती या सीने मे तीव्र पीडा हुवी हुई, दद हुवा हुआ २ हृदय मे रह-रह कर दर्द या कसक उठा हुआ, मानसिक पीडा हुवा हुआ, वेदना युक्त ३ आह भरा हुआ, तडफा हुआ, कराहा हुआ ४ धडका हुआ ५ पश्चाताप हुवा हुआ, दुख हुवा हुआ ।

(स्त्री हूकियोडी)

हूकौ—देखो 'होकौ' (रू भे)

उ०—१ हूकौ लेता हाथ मैं, चेतौ गयौ चुळाय । पडै धमाधम पदमणा, अधमाधम अकुळाय ।—ऊ का

उ०—२ ससार माहि अवगुण सग्ब, ज्यू हूकौ हि सामळ हालसी । —ऊ का

हूडौ—देखो 'होडौ' (रू भे)

हूचक—स पु [स उच्चकन] १ युद्ध, समर, लडाई ।

उ०—ऊठ्यौ दिली हु औरगसाह एक राह तणै आटै, महाबाह बिहू राहा मेटवा मजाद । धका धका चका हूचका खडग धारा, बीर हक्का हीदवा तुरक्का भिडै बाद ।—महाराणा जयसिंह रौ गीत

२ भिडत, टक्कर ।

३ वीरगति ।

४ प्रहार, टक्कर ।

उ०—हायिया घड हूचक झूल अकज्झक रग तकत्तक हूर रहै । करि केयक कनक उभ्भक अनक वीद विमाणक धारि बहै । —सू प्र

हूचकणौ, हूचकबौ—देखो 'हुचकणौ, हुचकबौ' (रू भे)

उ०—१ थै कहौ हौ कै म्हे राजपूता नै पोरस चढाय दकाळण वाळा हा-तौ साथ रहौ—भड हूचकै लडै तठै हत मरौ मारौ । —वी स टी

उ०—२ कपि कटक हूचक कटक दैतक, उरक वेधक सरक ऐनक । —सू प्र

उ०—३ जाण रिण गेरिया, डडौडह हायै, मद्द वीरम मडिया, मज आमा सामा । हायो जाणाक हूचकै, मदमत अमामा, दोनू तरफा रा दिसा, दिग पूर दमामा ।—वी मा

हूचकणहार, हारौ (हारी), हूचकणियौ—वि० ।

हूचकिओडौ, हूचकियोडौ, हूचक्योडौ—भू० का० कृ० ।

हूचकीजणौ, हूचकीजबौ—कर्म वा० ।

हूचकियोडौ—देखो 'हुचकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हूचकियोडी)

हूचकौ—देखो 'हुचकौ' (रू भे)

उ०—वौ आती आय नै रोवण लागग्यौ । म्हू उण न छाती रै चेप नै बुचकारण लागग्यौ तौ हूचकै भरीजग्यौ ।—अमरचूनडी

...णौ स पु — १ [illegible] ।

उ० — १ [illegible] ।
[illegible] । हुबलो देस [illegible]
[illegible] ।

उ० — २ [illegible] हुबळा देस [illegible] ।
— फु...वाड़ी

२ [illegible] ।

उ० — [illegible] हुबळो देस [illegible] ।
— फुलवाड़ी

३ भे हुबळो ।

...णी, हुबळी — देखो 'हुबाणी, हुबळी' (रू भे)

...वोड़ी — देखो 'हुलियोड़ी' (रू भे)

...णी, हुलळी — देखो 'हुलाणी, हुलळी' (रू भे)

उ० — मारवाणी सु मनी कवि गुमान । भूडी है मुरद पळिगा रा माळवाणी हुलळा जी । — मारवणी मेवाड़ी संवाद

...योड़ी — देखो 'हुलियोड़ी' (रू भे)
(स्त्री हुलियोड़ी)

...ल — देखो 'हुज्जल' (रू भे)

...— देखो 'हुड़' (रू भे)

उ० — प्रतिहारिह पगलो भगिया, कांहिउ सवेग गह । हुड सभा थंभण साहइ, बाहरि बइठउ तेह । — मा का प्र

...णा — स पु — १ एक प्राचीन मगोल जाति (मनुष्य) जो पहले चीन की पूर्वी सीमा पर लूट-मार करती थी और कालान्तर मे अत्यन्त क्रूर एवं प्रबल हो गई तथा ऐशिया व योरप के सभ्य देशो मे फैल गई। अब यह अन्य सभ्य जातियो मे मिल कर समाप्त प्राय हो चुकी है।

उ० — जोणग चीण हूण भरहट्ट्य कोकग दुविलय कुलखय सरमुख तुरगमुख सिंहमुख हयकरणा गजकरणा प्रभृति अनार्यदेश मनुष्य। — व स

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

३ एक राजवश।

उ० — सोलकी राठउड प्रमार जाणी झलहलमटल झूझार। बलवता बारइ नइ हूण, तेह तणाइ मुखि माडइ कूण।
— का दे प्र

४ पवार राजपूत वश की एक शाखा।

५ देखो 'होणी' (रू भे)

हुणाहार — देखो 'होणाहार' (रू भे)

उ० — १ राजा धीरज देन लागौ हुणाहार मिटै नही। पूरा दिन हुवा। राजा री पेटी फाटी। टाबर नीसरीयौ। राजा री मृत्यु हुई। — चौबोली

उ० — २ तरै म्है कह्यौ — यू तौ मोनू दीखण लागै, नै मोनू इसडी बातो ही परमात्मा नी इ प्रकारे [illegible], [illegible] छै ईज, जो [illegible] माहरो भाग, [illegible] हुणहार छै, [illegible] हुसी।
— नैणसी

हुणी, हुबौ — देखो 'होणी, होबौ' (रू भे)

उ० — १ सूती पनी रमीजै, जोमउ [illegible] तणी। जागी हाथ मळेजै, [illegible] हुई [illegible]। — ढो मा

उ० — २ साथ सरै मिळ सुगुर है, पूछि पूछि धलकै पाव। सयणौ घाटा बउळिया, बइरिजु हुआ वाव। — ढो मा

उ० — ३ बार री बात बालावकरा बिए रे, हिए रे माहि तकलीफ हुवी। जरी हू याद पीहळरी जिण करी अद, पयादा हरी ज्यौ छुद्र पुणी। — गे म

उ० — ४ हाथिमाउरि पुरि क्रूर [illegible] मडगु। तहजिहि संतु मुहागगीठु हुउ नरवरू मगणु। — शालिभद्रसूरी

हुत — देखो 'हुत' (रू भे)

हुतउ — देखो 'हुतौ' (रू भे)

उ० — घर हुतउ नीव धयाइई जाई, गयणा गुडव ऊभीउउ थाइ।
— धरितग

हुतद्रव्य स पु [स] वह पदार्थ जिसे होमा जाता है, हवन सामग्री।

उ० — प्रथम निसा अजापा जपइ, होम दीइ हुतद्रव्य। तरयण तिस तुतरी तणा, अमृतोद्दह सब्बाराज्य। — मा का प्र

हुतळ, हुतल — देखो 'हुतळ' (रू भे)

उ० — सावळी किण ही सगै, साहिगी ताधसियोह। तौ पिण नह सावण सकै, हुतल पर हसियौह। — बा दा

हुता, हुतां — देखो 'हुत' (रू भे)

उ० — ताहरा नरै रा वाणीया हुता तिका उठ कणई रा भरया पार नू वालीया हुता। — जगमाल पमार री बात

हुति, हुती — देखो 'हुती' (रू भे)

हुतौ — देखो 'हुतौ' (रू भे)

हुनर, हुन्नर — देखो 'हुनर' (रू भे)

उ० — कलाकुल का हुनर गाईयानू का काम। जरकस की बगीचै लगी ठोम ठाम। — सू प्र

हुपड़ौ — स पु — बैलगाड़ी के धाटे के आगे लगा हुआ वह त्रिभुजाकार तख्ता जिस पर गाड़ीवान बैठकर गाड़ी हांकता है।

हुबकणौ, हुबकबौ — देखो 'ऊबकणौ, ऊबकबौ' (रू भे)

उ० — १ उबकै अराबा आग, हुबकै जोधार आग। (जठै) ताता जगा पमगा मेलिया निराताळ। — बुधसिंह सिढायच

उ० — २ कैता सह केकाण अटै रत ऊबकै। घट अतर गळ घाव हजारां हुबकै। — किसोरदान बारहठ

उ० — ३ आरबा वाजिया अनल मिळ एकठा। एखसा आखिया पाण आपाण। हियै राच माल रै ऊपरै हुबकी। सबळ असमाण धप् सिला सुलताण। — द दा

हूबकणहार, हारौ (हारी), हूबकणियौ—वि० ।
हूबकिग्रोडौ, हूबकियोडौ, हूबक्योडौ—भू० का० कृ० ।
हूबकीजणौ, हूबकीजबौ—कर्म वा० ।

हूबकियोडौ—देखो 'ऊबकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हूबकियोडी)

हूबणौ, हूबबौ—देखो 'हुबणो, हुबबौ' (रू भे)
उ०—१ हुवै हीद् घडासेन हूबै हुवै, मुझ उपकठ सगराम मातौ । घणौ सीसोदियै बहै ग्राई घडा, रुवर घण मिळै तण नीर रातौ ।
—महाराणा रायमल्ल रौ गीत
उ०—२ धनि धनि सुत चद वाहता वजवड, हूबता ग्ररि मारै उर हूत । ऊकसता रसता ग्रोल्हसता, कसता विकसता कृत ।
— मालौ साद्दू
उ०—३ हुवै चम्मरा झाटका जोनि हूबै । सदा ऊतरै ग्रारती माझ सूबै ।—मे म
हूबणहार, हारौ (हारी), हूबणियौ—वि० ।
हूबिग्रोडौ, हूबियोडौ, हूब्योडौ—भू० का० कृ० ।
हूबीजणौ, हूबीजबौ—कम वा० ।

हूबहू—वि [फा] १ बिल्कुल एक सा, समान, सदृश, एक जैसा ।
२ बराबर, तुल्य ।
३ ज्यो का त्यो, जैसा का जैसा ।
रू भे—हुबौहुव, हूबौहूब, हूबोहूब, हूबौहूब ।

हूबियोडौ—देखो 'हुबियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हूबियोडी)

हूबी—स स्त्री—ऊट के तालू मे होने वाला एक ग्रन्थि-रोग ।
(शेखावाटी)

हूबोहूब, हूबौहूब—देखो 'हूबहू' (रू भे)
उ०—वौ ग्रापरी घरवाळी नै केई वळा कैवतौ कै बिरमाजी नै एकर इण दुनिया रा जीव जिनावर, पछी ग्रर मिनख घडता देखलू तौ वौ दूजै दिन ई वागै हूबौहूब साचौ उतार दै ।—फुलवाडी

हूमस—देखो 'ऊमस' (रू भे)

हूयोडौ—देखो 'होयोडौ' (रू भे)

हूर—स स्त्री—१ मुसलमानो के वहिश्त की परी ।
उ०—१ लोठी थकी कोसि नह लेस्यौ, दाखै हूरा ग्रछर दिसी । मायै सिखा न काना मोती, कहौ कमळ बिण खबर किसी ।
—हठीसिंघ राठौड रौ गीत
उ०—२ हूरा कह तुरक ग्रछर कह हिंदू, बरण काज दोय वरग बढै । हठीसिंघ ऊपरि लागौ हठ, चौकस होय न रथा चढै ।
—हठीसिंघ राठौड रौ गीत
उ०—३ खित हूर ग्रपच्छर वीद खटै, किरमाळ वहै वरमाळ कटै ।
—रा रू
उ०—४ ग्रछरा स्रगार धरि ऊमही, हूरा हरखि उचारियौ । महि गयण सग खेळा मिळै, ग्रागम जग विसारियौ ।—रा रू
२ स्वर्ग की ग्रप्सरा, परी ।
उ०—१ भडा वड सागि छटै ग्रद्भुत, धतावन भागि नटै ग्रवधूत । हुग्रा वरमाळ उमाहत हूर, सुरा हथवाह सराहत सूर ।
—मे म
उ०—२ सामठा लडै धड पडै सूर, हरखत वरै वह रभ हूर ।
—सू प्र
उ०—३ निरत करवै मै हूर जग जगू मै गरीत सालोतरू में पूर चामीकर की सागत ।—र रू
३ वेश्या, रडी, नगर वधू ।
४ सुन्दर स्त्री ।

हूरळ—स पु—१ पैने शस्त्र द्वारा जोर से किया जाने वाला प्रहार, ग्राघात ।
२ शूल, हूक ।

हूरव—स पु [स हूरव] शृगाल, गीदड ।

हूरवर, हूरावर—स पु—युद्ध मे वीरगति प्राप्त करने वाला योद्धा । ऐसी किवदन्ती है कि ऐसे योद्धा को स्वर्ग की ग्रप्सरा वरण करती है ।
उ०—धिन धिन रवि उचरै वाड वाड, राठौड मुगळ इम करत राड । वर ग्रचर विमै वर जैण वार, हूरावर वरिया सर हजार ।
—वि स

हूरीचद, हूरीचदक—देखो 'हरीचद' (रू भे)

हूळ, हूल—स स्त्री [स शूल] १ प्रहार, ग्राघात, वार ।
उ०—१ सावळा हूला हू ग्रणी कैवरा सू मदगरा, बीजळा ऊजळा वारा चोळ गोळा ग्रन्न । ऊभै राम पातसाही हाथि ग्रायी नही, ग्रालम चै 'राम' कामि ग्राया ग्रायी दूसरै 'रतन्न' ।
—रामसिंघ रौ गीत
उ०—२ तीर सूळ हूळ भर खफर रत । तइ पीद सगत गडगडा तत ।—रामदान लाळस
२ भय, त्रास ।
उ०—पयोधर पार पय ऊतरै ग्रवध पन, पाजवध चारसै कोस पैरा । हूल ग्रसुराड पड भूल सुध माण हट, फिरै चित्त डूल जिम चाक फेरा ।—र रू
३ कोई भयकर पीडा, दद ।
४ दुख, कसक, वेदना ।
स पु—५ चौदहवी वार उलटाकर बनाया हुग्रा शराब ।
उ०—सौ किण भाति रौ दारू, उलटै रौ पलटै, पलटै रौ ग्रैराक, ग्रैराक रौ वैराक, वैराक रौ सदली, सदली रौ मोद, मोद रौ कमोद, कमोद रौ हूल ।—रा सा स
६ देखो 'हुल' (रू भे)

हूलाहूल—स पु—वेदना, पीडा या कसक जो निरन्तर उठती रहती हो ।

उ० [illegible] मिळ [illegible] । [illegible]

[illegible]

हियौ स पु [अ हुलिया] १ आकृति, [illegible] ।

२ [illegible] ।

३ किसी मनुष्य की [illegible] सूरत का ब्यौरा ।

४ [illegible] हीयाणी, [illegible] ।

[illegible], हुवणौ देखो 'होणौ, [illegible]' (रू भे)

उ० १ [illegible] । [illegible] हुवा, जगमात करणी ।

[illegible]

उ० २ [illegible] जैसा, [illegible] हाजर हुवा है । रा सा स

उ० ३ [illegible] हुवौ, [illegible] पूरण [illegible] । [illegible]

हुवियोड़ौ देखो 'होयोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री हुवियोड़ी)

हुवेली देखो 'हवेली' (रू भे)

हुस वि १ अड़िग ।

उ० प्रारब्ध असिय्या ब्रह्म असील, पुरुसारथ अग्या परग अील । रजमका ध्वज धज धुर रह्मन, है कौन हुस रह्मौर हन । ऊ का

२ अशिष्ट, असभ्य ।

३ बेहूदा, उज्जड, मूर्ख ।

हुसनाइक, हुसनायक—देखो 'हुसनाक' (रू भे)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजान सिरामति जिकै छोगाळा छयळ छबीला जुआंन हुसनाइक फूला रा छोगा नाखीआ थका फूलां रा चौसर पेहरीआ थका ''''।—रा सा स

हु-हुल्लौ—सं पु —शोरगुल, कोलाहल ।

उ०—भेळा मिनखां मैं रावा सू हु-हुल्लौ हुतौ आयौ है, पण कीं तौ आंख मैं घाल्या नी रड़कै । वरसगांठ

हुहू—स पु [सं] १ गन्धर्व विशेष । (अ मा)

२ देवता ।

३ अग्नि के जलने का शब्द, धू-धू, धाय-धाय ।

रू भे—हुहु, हुहू ।

हूंकड़ी—देखो 'हेकड़ी' (रू भे)

हूंकड़ीबाज—देखो 'हेकड़ीबाज' (रू भे)

उ०—पण की तौ राज रै खातर रै लाराच अर की नटणौ सू घाणी पिलीजण रै डर सू हा करदी । राज री हाथ माथै रैवैला-हज सौ अखड़ू'र हेकड़ीबाज हा जिणा साळा री आंतड़िया काढ नाखाला, पांसळिया रा भचका बौलायदाला'''।—चितराम

हेंड—स पु [अ] १ हाथ, हस्त ।

२ [illegible] व्यक्ति या मुख्य [illegible] ।

उ० [illegible] हेड [illegible] साधारण घर धणी आदमी [illegible] । [illegible]

हेवर देखो 'हयवर' (रू भे)

उ० [illegible] । गय, हेवर [illegible] । [illegible]

हेस, हेसौ देखो 'हिरसौ' (रू भे)

उ० [illegible] । पछै [illegible] री हेस [illegible] । [illegible] री हेस रा हणी बारैट [illegible] है । नैणसी

उ० २ [illegible] बरायी छै । देहरी १ कुली १ [illegible] छै । [illegible] । [illegible] सुबरत [illegible], हेसा [illegible] । नैणसी

उ० ३ [illegible] १ [illegible] । हेसौ ४ [illegible] छै । —नैणसी

हेहे स [अनु] [illegible] हंसी की आवाज, शब्द ।

हे अव्यय [सं] १ सम्बोधनात्मक अव्यय जो किसी को सम्बोधन करते समय या पुकारते समय उसके नाम के पहले बोला जाता है, अरे, आ ।

उ०—१ हे [illegible] किमिउ कीउ, अतिहि असंभव एह । अण विमासिउ अचीतविउ, कीधउ कांई जेह । हीराणंद सूरि

उ० २ हे महाई तानै आई [illegible] वेगी भाव ।—मे म

२ दर्प, ईर्ष्या, द्वेष या [illegible] आतक अव्यय ।

३ देखो 'है' (रू भे)

उ०—तरै मीया बुड़ण कयौ ऐसा तुमारा भाइ है तौ हमारी साडीयां रोवेगा ? तरै महेची कयौ —हमारा भाइ ऐसा ही है सौ तुमारी साडीया रोवेगा । - रा सा स

रू भे है ।

हेआर-स. पु.—हय, घोड़ा, अश्व ।

उ०—पडै आर पार जुधांण जुधार । हकारै हेआर, पीवरी पयार ।
- कल्याणसिंह नाढेरा नगराजोत री वात

हेउ—देखो 'हेतु' (रू भे)

हेककार—वि —समान, एक समान, तुल्य, बराबर ।

हेकखण, हेकखियौ—वि —विपुल, अथाह ।

हेकड—वि --जबरदस्त, जोरदार ।

उ० —गैली ऊपरै गाळियां, गणगाटा लै गैल । हेकड़ काठीनै हालिया, डबी खतीगण डैल ।—ऊ का

हेकपणौ, हेकपवौ—क्रि अ —१ कम्पायमान होना, कांपना, थर्राना, धूजना ।

२ भयभीत होना, डरना ।

उ०— यहा तौ नर दीसै छै कोई, सती तहां हेकपै होई । राखै सील

भागेला भोई, हेठी बैठी अग गुपोई ।—जयवाणी

३ आश्चर्यचकित होना ।

हेकपियोडौ–भू का कृ—१ कपायमान हुवा हुआ, कापा हुआ, थर्राया हुआ, धूजा हुआ २ भयभीन हुवा हुआ, डरा हुआ ३ आश्चय-चकित हुवा हुआ ।

(स्त्री हेकपियोडी)

हेक–वि [स एक]—१ एक, एक मात्र ।

उ०—१ हरीया करता हेक हे, दूजा करता नाहिं । सोई करता सिसट का, न्यारा घट घट माहि ।—अनुभववाणी

उ०—२ गुरु गेहि गयौ गुरु चूक जाणि गुरु, नाम लियो दमघोख नर । हेक वडौ हित हुवै पुरोहित, वरै सुसा सिसुपाळ वर ।

—वेलि

उ०—३ अवै बीनती हेक हिंगोळ वाळी, जिका ध्यान दै कान कीजै धजाळी । लहैरी महेराण भूपाळ 'लच्छौ', 'अखौ' दूसरौ रीझ खीजाळ अच्छौ ।—मे म

उ०—४ हेक धकौ चौडै हुवा, असमर कराआ देस । डेरा डेरा वराडी, डेरा डेरा जोस ।—रा रू

२ करीबन, अदाजिया, अनुमानित ।

उ०—१ पूरब गयौ देवजी क पासि, चहचौ सनेसौ करि अरदासि । हेक ऊठ कीता हेक दाम, देव देस्यौ तौ रहिसी माम ।

—वि म सा

उ०—२ बीजा ही सगडि दपेसैं समेत सहि लावा भला आदमी साठि हेक उठा खडि अर राजडवाळै आइ ऊनरिया ।—द वि

स स्त्री—एक की सख्या । (डिं को)

उ०—१ पूरब गयौ दवजी क पासि, कहचौ सनेसौ करि अरदासि । हेक ऊठ कीना हेक दाम, देव देस्यौ तौ रहिसी माम ।

—वि स सा

उ०—२ सीगाळौ अवखत्तलणौ, जिण कुळ हेक न थाय । जास पुराणी वाड जिम, जिण जिण मत्थै पाय ।—हा झा

क्रि वि—१ एक तरफ, एक ओर, एक तो ।

उ०—हेक पराया जव चरौ, हालौ ऊगा सूर । दाढाळा भडण भणौ, भागौ भाखर दूर ।—हा झा

२ कई, कुछ ।

उ०—जळ जाळ स्रवति जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल । आधौ फरै मेघ ऊधसता, महाराज राजै महल ।—वेलि

हेकड–वि [सं हृत्कटु] १ एक ।

उ०—सय हेकड सीरावणी, हूकौ बीजै हात । माथा ऊपर मीगणा, (ऐ) लाखबगीम लसात ।—किसोरसिंह बारहस्पत्य

२ अडियल, उद्दण्ड ।

३ देखो 'एकड' ।

हेकडी–स स्त्री—१ उद्दण्डता, अडियलपना ।

२ बल प्रयोग से किया जाने वाला कार्य, जबरदस्ती, जोरावरी, बलात् ।

३ शेखी, शान, अकड ।

उ०—फूलचदजी रौ एक पोतौ गोरधन भाई, डूगर कालेज सू फैल हुय'र आयौ । देस सू भाज्यौ, दिसावर रौ काम सभाळचौ । ग्वाला पत्तर खोल्या, हेकडी छाटी ।—दसदोख

४ गर्व, अभिमान, मान ।

उ०—१ लुगाई रौ जमारौ पाय र् जापा री पीड नी भुगती तौ बाकी सगळा सुख झूठा है । थोथी हेकडी रौ भरम छोड अर इणी पगा पाधरी-पाधरी बीकाणै ढळजा ।—फुलवाडी

उ०—२ पण घणा दिना तक कोसिस करता थकाई हाजरिया नै रभा री हेकडी तोडण रौ मोकौ नही मिळचौ ।—रातवासौ

५ हठ ।

उ०—औ खागौ अवियाट, तुरका ही नू तेवडै । झाला ही नू झाट, हाला ही नू हेकडी ।—नैणसी

रू भे—हेकडी ।

हेकडीबाज–वि—१ शेखी मारने वाला ।

२ गर्वीला, घमण्डी ।

३ शक्तिशाली, बलवान ।

रू भे—हेकडीबाज ।

हेकडौ-वि—अकेला ।

उ०—रूक बहादर राउ मैं भुज आभ लगाई, हिंद विलायत हेकडौ तू वीर कहाई । एकै 'पातल' ऊजळा छत्रपत साराई, एकै अदै ऊजळा नव लाख लखाई ।—मोडजी आसियौ

हेकठ, हेकठा, हेकडा–क्रि वि—१ इकट्ठा, एकत्र ।

उ०—धर न गम पछी पाटौ धर, हेकठ जुग युग घणा हुआ । दळ फळ डाळा पछी दूबावै, ग्रमुग म ग्वावै रतन दुवा ।

—छत्तरसिंघ हाडा रौ गीत

२ एक साथ, साथ-साथ ।

उ०—१ वीकमसी रावळ वदै, करदै जौ करतार । हू जेसळगिर हेकठा, वाळं प्रधानै वार ।—नैणसी

उ०—२ सबद बतावै हेकडा तब होय करयाणा ।

—केसोदास गाडण

३ मिल-जुल कर, सम्मिलित होकर ।

४ एक ही जगह, एक ही स्थान पर ।

हेकण—देखो 'एकण' (रू भे)

उ०—१ चरख्या चटीठ अगीठ चख, पीठ समोवड पातणा । पाकेट सज्या सौ कोस पथ, हेकण चाटी हालणा ।—मे म

उ०—२ मूवौ न कोई मीर छल, च्यार खूट कानै चडी । हेरान आठ हेकण समै, हुआ ज मुरधर बापडी ।—वि स सा

उ०—३ आलम हाथ रौ रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असफ ।

[illegible] हेकाग [illegible] र ज प्र

उ० [illegible] हेकाग [illegible]

ग प

कगाजर्भ वि [illegible]

उ० [illegible] हेकरणार्भ [illegible] -जगजी भारो

हेकाणि, हेकाणी देखो 'एकाणी' (रू भे)

उ० १ हेकाणि [illegible] ग प

उ० २ [illegible] हेकाणि [illegible] वेलि

उ० ३ [illegible] हेकाणि [illegible] हा भा

हेकमन सं पु १ मन मिलने की अवस्था या भाव ।

२ एक मन, एक राय, मतैक्य, सहमत ।

३ एक मत, ऐक्य ।

४ एकाग्रता ।

उ० [illegible] हेकमन, [illegible] वेलि

५ प्रेम, प्यार, स्नेह, अनुराग । (अ मा, ह ना मा)

हेकमहेक देखो 'एकमेक' (रू भे)

हेकर—देखो 'एकर' (रू भे)

हेकरसां, हेकरसूं, हेकरसे, हेकरसै— देखो 'एकरसूं' (रू भे)

उ०—१ ताहरां दरबारी फेर आय अर कही, 'माहाराज, चारण कहै छै, हेकरसां मोनै हजूर आवण देवौ ।

-मूळवै सागावत री वात

उ०— २ ताहरां सांगमराय ऊठ अर नगारौ करायौ । सांगमराय कूहळ ऊपर चढियौ । ताहरां भाईयां कह्यौ —'जी, हेकरसूं तौ वैर रौ वैर लेओ । - नैणसी

उ०—३ तद हेकरसै दिन च्यार हुइ गया सौ बळ री ढंग नहीं बैठौ तद कही—रे औ इसौ दारिद्र री भाटौ छै, सौ परौ काढौ ।

सुंदरदास भाटी बीकूपुरी री वारता

उ०—४ तद कुंवरसी कही फेर बुलास्यौ जद हाजर छा पण ईंव हेकरसै सीख दिरायजै ।— कुंवरसी साखला री वारता

हेकल—देखो 'एकल' (रू भे)

उ०—१ सूदरि विना न सारतै, निसदिन करतै नेह । सै जगळ मैं पौढीया, हरीया, हेकल देह ।—अनुभववाणी

उ०—२ किता तै बार बिर्खं कटपत, बांधी लै मग प्रथी बळवत । हुलायी केता बार हमलन, मयै महराणव हेकल मल्ल ।—ह र

उ० [illegible] हेकल [illegible]

र ज प्र

उ० [illegible] हेकल [illegible]

वि स

हेकलगिड़ देखो 'एकलगिड़' (रू भे)

हेकलि हेकली वि स्त्री अकेली ।

उ० [illegible] हेकली, [illegible] हा मा

हेकले, हेकलै क्रि वि अकेला ।

हेकलौ, हेकल्लौ देखो 'एकलौ' (रू भे)

उ० १ [illegible] हेकलौ [illegible]

उ० २ [illegible] हेकलौ [illegible]

(स्त्री हेकली, हेकल्ली)

हेकहेकोज वि एक ही, अकेला ही, अकेले में एक ।

उ० [illegible] हेकहेकोज [illegible] मा व

हेकहेकौ वि अकेला, केवल अकेला ।

उ०—[illegible] हेकहेकौ [illegible] मे म

हेकाणी वि—१ एक ।

२ अकेला ।

३ एक बार ।

हेकाणवइ वि सबसे [illegible], इक्यानवे ।

उ० [illegible] हेकाणवइ [illegible] ।- अ वचनिका

सं स्त्री — इक्यानवे की संख्या व उक्त संख्या का अंक ९१ ।

हेका—वि —१ एक ही ।

उ० प्रमेसर गाभळ देव पुकार, बिलैया सज्ज हुवौ सिरा बार । बिहा सू हेका गीधी बाथ, नरोवर मारु कियौ जुध नाथ । —ह र

२ अकेला ।

क्रि वि —१ एक ओर, एक तरफ ।

उ० —धुनि वेद सुणति कहु सुणति सख धुनि, मद भारनरि नीसाण नद । हेका कहू हेका हीलोहळ, सायर नयर सरीख सद ।—वेलि

२ इधर-उधर ।

३ देखो 'एका' (रू भे)

हेकार—देखो 'हकार' (रू भे)
हेकारु, हेकारू—देखो 'एकारू' (रू भे)
हेकाहेक, हेकाहेकी—देखो 'एकाएक' (रू भे)
उ०—१ खडन मडन सूरत मेवा, आपौ आपी अलख अभेवा। मात पिना सुत भात न कोई, हेकाहेक निरजन होई।
—अनुभववाणी

उ०—२ ताहरा राव रिणमलजी हेकाहेक पगडाडी चढिया। वासै फौज चढी। ताहरा सीहणी री वह बराबर गया।—नैणसी
हेके, हेकै—देखो 'एकै' (रू भे)
उ०—१ सूरौ सोई साम बिन, गहै न दूजी ओट। हरीया हेकै चोट सू, मारै मन का खोट।—अनुभववाणी
उ०—२ ताहरा हेकै रजपूत नू भुवाळा हू झालि झोकि करि नीचौ नाखियौ।—द वि
हेकोहिक, हेकोहेक—क्रि वि—एक-एक करके, बारी-बारी से।
उ०—पत्रा भरि रत्र हेकोहिक पाण। आगा कर कठ कढावत आण।—मे म
हेकौ—स पु—१ एक की सख्या का अक, '१'।
क्रि वि—एक बार।
उ०—हमाऊ परा तीकरा छाह हेकौ, न कौ पार ओतार याग अनेकौ।—मे म
२ देखो 'एकौ' (रू भे)
उ०—१ सीहणि हेकौ सीह जणि, छायर मडै आळि। दूध विटाळण कापुरस, बौहळा जणै सियाळि।—हा झा
उ०—२ जती बोलियौ बालिनू राम जारै। महाबाह हेकौ बह बाण मारै।—सू प्र
उ०—३ हरीया सीप समद मे, हेकौ बूद सनेह। पनिवरता सौ पीव विन, करै नि किन सू नेह।—अनुभववाणी
हेखारव—स पु [स ह्लस या ह्लेप] शब्द या आवाज।
उ०—पछै वाणी फारक तणी पद्धति, तती हस्तीघटा सीत्कार करती, पाखरीयानी श्रेणी हेखारव मेल्हती, पच सब्द तणा निरघोख जमला उच्छलइ।—व स
हेखि—स पु [स हर्ष] खुशी, प्रसन्नता, हर्ष।
उ०—भूझता ग्रप सवै जउ वारउ, जइ किमइ ग्रप सुयोधन मारउ। तउ युधिस्टिर पराभव पेखी, काइ वात करसिइ अति हेखि।
—सालिसूरि
हेग्रिव, हेग्रीव—देखो 'हयग्रीव' (रू भे)
उ०—देवी रूप हेग्रीव रै निगम सूख्या, देवी हेग्रिव रूप हेग्रीव धू स्या। देवी राहु रै रूप तै अमी हूरिया, देवी विस्णु रै रूप तै चक्र फरिया।—देवि
हेड—स स्त्री—१ चौपायै जानवरो की भीड, समूह, वर्ग।
उ०—पावस हुया व्यतीत, टिकै ना टीब ठिकाणै। द्रुत गत भागा दौड, हेड रमवा हल माणै।—दसदेव
२ भीड, समूह।
उ०—लोगा री हेड आवती देखी नी सेठ हळफळायो होय पाछा नाडी मे वडग्या।—फुलवाडी
३ जानवर या मनुष्य जाति के किसी एक ही वर्ग के समवयस्क प्राणियो का समूह, टोली, वर्ग।
उ०—दीवाण रै सागै राजाजी ध्यान देय एक-एक उणियारा री छाणबीण करता हा। आखी हेड माय सू फगत पाच लुगाया टाळणी।—फुलवाडी
रू भे—हेडि, हेडी।
हेडणौ, हेडबौ—क्रि स—१ हाक कर ले जाना, हाकना।
उ०—१ 'हेमत्त' सत्र हेडतौ, अठी मेडतियौ आयौ। असुरा दळ ऊपर, सार वाजियौ सवायौ।—रा रू
उ०—२ तेडिया बागह लोह छोडिया भमग तिसा, खेडिया अजागि जाणै राम सखा छद। हेडिया पिनाकी वाच गगा रा समूह हलै, नेडिया सुभट्टा राखै 'भगवत' नद।
—सतमानसिंघ हाडा री गीत
उ०—३ वडछती कूरमा गजा देतौ धका, हेडतौ रिमापति समौ हाथै।—वीरभाण रतनू
२ एकत्रित करना, इकट्ठा करना, घेरे मे लाना।
उ०—हैदळ गैदळ प्रबळ हेडते नीजोडतै किता नर नाहू। समरथ कही न सकू सूरावत, गुण म्हारा थारा 'गजगाह'।
—केसोदास गाडण
३ भगाना, पीछा मोडना, डराना।
उ०—चातुरगी वरोळणा थाटकै आवळा चमू, मुकाजवा वळा खळा दाटकै भनेब। आराण छेडीया चखा झाटकै अजाग आग, भा-कै वचाळै अबा हेडीया जनेब।—जवानजी आढौ
४ ललकारना, चुनौती देना।
५ उत्साहित करना, प्रोत्साहन देना।
६ छोडना, बधन मुक्त करना।
उ०—आयौ उरेडियो जोम रौ पटेल मायै धारै आट, रवत्तेस दूर हू तेडियौ कायै राग। साकळा हू लाधणीक हेडियौ बीहतौ गेर, पूछ चाप सूतौ फेर छेडियौ पैनाग।—बद्रीदास खिडियौ
७ चलाना, फैकना।
उ०—पथ खतग हेडबौ यद ससत्र पाछटा, अखग परि खेडबौ मगळसिग तम।—सहसमल राठौड रै भाला री गीत
८ रखना, डालना, पटकना।
९ खदेडना।
१० देखो 'हेरणौ, हेरबौ' (रू भे)

हेड़णहार, हारौ (हारी), हेड़णियौ — वि० ।
हेड़िओड़ौ, हेड़ियोड़ौ, हेड़्योड़ौ — भू० का० कृ० ।
हेड़ीजणौ, हेड़ीजबौ — कर्म वा० ।
हेड़वणौ, हेड़वबौ, हेड़वाणौ, हेड़वाबौ — रू० भे० ।
...णौ, हेड़वबौ — देखो 'हेड़णौ, हेड़बौ' (रू० भे०)
...रीस [illegible] — ... के समूह का ... करने वाला ... ।
उ० — ... हेड़वरीस ... । ... ... ।
— ... री ...
...री सिणगार [illegible] — ... ।
...व — देखो 'हेड़ाऊ' (रू० भे०)
...वणौ, हेड़वबौ — १ देखो 'हरणौ, हरबौ' (रू० भे०)
उ० — ... हेड़व ... हुई ... मारगी री ... री ... है ... रो ... है । — ...
२ देखो 'हेड़णौ, हेड़बौ' (रू० भे०)
उ० — १ ... हेड़वण ... । — रा० रू०
उ० — २ धरियौ ... हैवै दळ हेड़वण हजारी । — वचनिका
उ० — ३ ... हेड़वै ... करै हाथिया हाथ ... । ... धुजै सिध ... । — रा० रू०
हेड़वणहार, हारौ (हारी), हेड़वणियौ — वि० ।
हेड़विओड़ौ, हेड़वियोड़ौ, हेड़व्योड़ौ — भू० का० कृ० ।
हेड़वीजणौ, हेड़वीजबौ — कर्म वा० ।
हेड़वियोड़ौ — १ देखो 'हेड़ियोड़ौ' (रू० भे०)
२ देखो 'हेरियोड़ौ' (रू० भे०)
(स्त्री हेड़वियोड़ी)
हेड़वियौ, हेड़वीयौ — वि० — १ 'हेड़ने' वाला ।
२ वीर ।
उ० — पाळां ऊपर पात, बाव झलै वीजूझळा । हेड़विया वड हाथ, धुरजाळां धोरा धकै । — पा० प्र०
हेड़ाउ, हेड़ाऊ — स० पु० [स० हेड़ावुक] १ घोडों का व्यापारी सौदागर ।
उ० — १ श्री ऊनड लाखा अहिनाणैं, वसुह उवारण वारां । घोडा वै घमडोह घातिया, हेड़ाऊ हेकारा । — नैणसी
उ० — २ हेड़ाऊ का तुरीय ज्यु । तुयै दिन बिन हाथ फेरनइ सौ वार । — बी० दे०
२ पशुओं का व्यापारी ।
३ पशुओं को घेरने वाला, ढूढने या तलाश करने वाला ग्वाला ।
वि० — जाने वाला ।

उ० — ... हेड़ाऊ ... । — नैणसी
रू० भे० — ... हेड़ाउ, हेड़ाऊ ।
हेड़ि [illegible] — १ '...' वाला ।
२ ... करने वाला, ... वाला ।
३ देखो '...' (रू० भे०)
हेड़ियोड़ौ — भू० का० कृ० — १ ... हुआ, हांका हुआ २ ... किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ, घेरे में लिया हुआ ३ भगाया हुआ, पीछा किया हुआ, डराया हुआ ४ ललकारा हुआ, चुनौती दिया हुआ ५ उत्साहित किया हुआ, प्रोत्साहन दिया हुआ ६ ... हुआ, फैला हुआ ७ ... हुआ ... हुआ, पटका हुआ ८ ... हुआ ।
९ देखो 'हेरियोड़ौ' (रू० भे०)
(स्त्री हेड़ियोड़ी)
हेड़ी — १ देखो 'हेड़' (रू० भे०)
उ० — ... हाथ पकड़ ... काई बी ... की हेड़ी । — ... री ...
२ देखो 'हड़' (रू० भे०)
हेड़ौ — स० पु० — वह बड़ा भोज जिसमें हर जाति के, हर प्रान्त व हर आगन्तुक व्यक्ति को भोजन कराया जाता है और किसी के लिये कोई प्रतिबन्ध नहीं होता ।
हेच — वि० [फा०] १ तुच्छ, नाचीज, छोटा ।
२ व्यर्थ, बेकार ।
हेचणौ, हेचबौ — देखो 'हिचणौ, हिचबौ' (रू० भे०)
उ० — हेचै दळ सोभा हरी, जूटी जोगीवास । कुसाळावन उजवाळ कुळ, वरियौ सुरपुर वास । — रा० रू०
हेचणहार, हारौ (हारी), हेचणियौ — वि० ।
हेचिओड़ौ, हेचियोड़ौ, हेच्योड़ौ — भू० का० कृ० ।
हेचीजणौ, हेचीजबौ — कर्म वा० ।
हेचियोड़ौ — देखो 'हिचियोड़ौ' (रू० भे०)
(स्त्री हेचियोड़ी)
हेज — स० पु० [स० हृदयज, प्रा० हिगज] १ दाम्पत्य प्रेम, प्यार ।
उ० — भावण तुरत जवाब दियौ — दुग मैं विचार करै गैडी काई बात, धणी लुगाया रै हेज सौ व्हैणौ ई चाहीजै, बिरथा लडणा मैं काई सार । — फुलवाडी
२ मन, दिल, चित्त ।
उ० — सेजा आवै सुदरी, जद सोभा दै सेज । सौ बिन सेज बिरगिया, कही न लागै हेज । — कुंवरसी साखला री वारता
३ इश्क, लगाव ।
उ० — हरिश्रा तणउ रंग, पांणी तणउ तरंग, वासि तणउं हेज,

आधा तणउ मउर कालालनउ लेखउ ।—व स

४ स्नेह, ममता, प्रेम, लाड, दुलार ।

उ०—१ जिण कुवर सू राजा रै हेज, वलै 'केसी' नाम भाणेज ।

—जयवाणी

उ०—२ मही अरीया-नइ मानीइ, भली परि भाणेज । आसा पूगइ बहिनिनी, हरखि आणइ हेज ।—मा का प्र

५ वात्सल्य प्रेम ।

६ दोस्ती की भावना, दोस्ती, प्रेम, हेत ।

उ०—गगा पाखइ जळ नही, बधु पाखइ बळ नही । मित्र पाखइ हेज नही, रवि पाखइ तेज नही ।—रा सा स

७ मेल-मिलाप ।

उ०—फूस नी आग, जमाइ नौ भाग, कस्वौ ताग पाणी नौ साग । दीवा नौ तेज, दुरजन नो हेज, उधारा नौ बैपार गड नौ सिणगार ।

—रा सा स

८ श्रद्धा ।

उ०—सहज सुरगा हो चगा जिनजी साभलो, विनय तणा ज वयण । हु तुम्ह चरणै हो आयौ ध्यायौ हेज सु, साचौ जाणी सइण ।—वि कु

९ आदर, सम्मान ।

उ०—डाढाळी की पडूतर देवै उण पै'ला चीत्हरा हेज छळकावता कैवण लागा—जलम देय पगा आपौ सभळाया पछै आप दोना री फरजन तौ पूरी व्हियौ । —फुलवाडी

१० स्वाद रस ।

उ०—अनइ द्वितीय रीत्या, मेघ पाखइ जळ नही, बाह पाखइ बल नही, अन्न पाखइ हेज नही चक्षु पाखइ तेज नही ।—व स

रू भे —हेजि, हेज ।

हेजइ—क्रि. वि —'हेज' से प्रेम से, प्यार स ।

उ०—चद चकोर तणी, परइ, निरखता सुख थाय । हीयडु हेजइ उल्हसइ, आणद अगि न माय ।—स कु

हेजणौ, हेजबौ—क्रि स —१ प्रेम करना, प्यार करना, मुहब्बत करना ।

उ०—यै चारो पद पलिंग कै, साई की सुख सेज । दादू इन पर बैस कर, साई सेती हेज ।—दादूबाणी

२ लाड करना, दुलारना या दुलराना ।

३ वात्सल्य भाव से द्रवित होना ।

उ०—वा कुत्ती म्हारै सू तौ लाख गुणा वत्ती वड भागण है । कूकरियाँ नै हेज, बोबा तौ चुघाया ।—फुलवाडी

४ उल्लसित होना, उमगित होना ।

उ०—हस गमणि हेजइ हीइ, राति दिवस सुख सग । राणी लीण हुआै तुरत, जिम चदन तरुहि भुजग ।—प च चौ

५ दोस्ती या मित्रता करना ।

६ मेलमिलाप करना ।

७ श्रद्धा होना, आदर करना ।

८ रस लेना, स्वाद लेना ।

९ इश्क या लगाव होना ।

हेजणहार, हारो (हारी), हेजणियौ—वि० ।

हेजिओडौ, हेजियोडौ, हेज्योडौ—भू० का० कृ० ।

हेजीजणौ, हेजीजबौ—कर्म वा० ।

हेजम—देखो 'हजम' (रू भे)

हेजाळु, हेजाळू, हेजालू—वि —१ जिसके मन मे प्रेम हो, स्नेह हो, प्रेमी, स्नेही ।

उ०—आज हो हेजइ रे हेजालू *हियडै हरखियइजी* ।—वि कु

२ जिसमे वात्सल्य हो ।

हेजि—क्रि वि —१ 'हेज' से, प्रेम से, प्यार से ।

उ०—सबल पणइ सघली अबल, ऊजाइ असि वेगि । जोइ माधव आवतु, हरखइ हीयडा-हेजि ।—मा का प्र

२ देखो 'हेज' (रू भे)

ऊ०—इम जाणी गति अलवइ, आपइ रति फल सार । कपट-हेजि हलती करइ, लोभ न गणइ लगार ।—मा का प्र

हेजियोडौ—भू का कृ —१ प्रेम, प्यार या मुहब्बत किया हुआ ।

२ लाड किया हुआ, दुलारा हुआ, ममत्व युक्त ३ उल्लसित या उमगित हुवा हुआ ४ दोस्ती या मित्रता किया हुआ ५ मेल मिलाप किया हुआ ६ आदर किया हुआ, श्रद्धा युक्त ७ रस या स्वाद लिया हुआ ८ इश्क या लगाव हुवा हुआ ९ वात्सल्ययुक्त ।

(स्त्री हेजियोडी)

हेजी-मोगर—स पु —आग पर पकाई हुई निम्न जलाशीय चने की दाल, 'फरकी' चने की दाल ।

उ०—अमल खावै, चूटियौ चूरमौ चाटै । ऊपर सू हेजीमोगर अर प्याज पापडा रा साग लहसण रै लाल झोळ मै फलका री मोळ मेटण जीमै है ।—दसदोख

हेजे, हेजैं, हेजै—क्रि वि —प्रेम से, प्यार से, श्रद्धा से ।

उ०—१ (विद्या) पदमणी सेजै पोढु नही रे, हेजै न करू रे, सग । पदमणी ऊपरि कीजै उवारणा रे, राज रमणी सरवग ।

—प च चौ

उ०—२ आज रा मीत बहुला इसा, कोई गिणै नही हित कियौ । कही इसै मित्र धरमसीह कहै, हेजै किम विकसै हियौ ।

—ध व ग्र

उ०—३ दादू तौ पिव पाइयै, भावै प्रीति लगाइ । हेजै हरी बुलाइयै, मोहन मदिर आइ ।—दादूबाणी

हेजौ—देखो 'हैजौ' (रू भे)

हेट—वि —१ निम्न स्तर का, नीचा ।

उ०—पछै स १६५२ राजा सूरजसिंघ लवेरा वासै गाव २५ दिया, तठा पछै परधानगी दी । पछै स १६६३ लवेरा रै पटै ऊपर आसोप

गो पणी । पारणाती माथै हेत गो केतार [illegible] । [illegible]
२ [illegible] ढीठ, नालायक ।
[illegible]
३ देखो '[illegible]' (रू भे)
उ० १ [illegible] हेट [illegible]
[illegible]
उ० २ [illegible] हेट [illegible] । [illegible]

[illegible]टपी देखो '[illegible]' (रू भे)
उ० [illegible] हेटपी, [illegible] । [illegible]
जब [illegible] । [illegible]

[illegible]टणौ, हेटबौ—क्रि स—नीचा दिखाना, तिरस्कृत करना ।
उ० [illegible] 'हमा' [illegible] हेटिया [illegible] । [illegible] री गीत

[illegible]टलौ—वि (स्त्री हेटली) नीचे का, नीचे वाला ।
उ० १ [illegible] वाबै पकालिया [illegible] सूं बांध भोजन सात्ता हेटली [illegible] मैं [illegible] । —बां दा ख्यात
उ० २ [illegible] री हेटलौ गाम हेटै भर ऊपरलौ सारा ऊपर । हळफळाई हाथ बोरी—धू मा रै साथै ई धोळी कारेला काई । —फुलवाडी
उ०—३ तिवरा रा हेटला पगोतिया माथै एक कोठरा बैठी गाविया उडावती ही ।—फुलवाडी
रू भे—हेठलौ, हेंठलौ ।

हेटवाळियौ—वि (स्त्री हेटवाळण) १ मातहत, अधीनस्थ ।
२ नीचे का, नीचे वाला ।
३ जो दबता हो, दबाव मे आकर रहने वाला, अपमान सहन करने वाला ।

हेटा—क्रि वि —नीचे, नीचे की ओर ।
उ०—आडा (बालड़ी) सू सूरवीरा नै ओफाड़िया भटको दे हेटा न्हाकिया ।—वी स टी
वि —नीचा, निम्न, न्यून ।
रू भे —हेठा ।

हेटि, हेटी—क्रि वि —१ नीचे जमीन पर ।
उ०—भागा चढी चरी बेटी रै हाथा हेटी पडगी .... । —फुलवाडी
२ नीचे की ओर, अव्यवस्थित, नीचे स्थित ।
३ नीचे ।
४ देखो 'हेठी' (रू भे)
रू भे —हेठि ।

हेटिया—क्रि वि —नीचे से । (गगानगर)

[illegible] हेटिया ।

हेटे, हेटै—क्रि वि —१ नीचे की ओर, नीचे, ऊंचाई से नीचे की ओर ।
उ० १ [illegible] पगोतिया हेटै [illegible] लागी । —फुलवाडी
उ० २ [illegible] हेटै ऊपर आडी [illegible] । —फुलवाडी
उ० ३ [illegible] हेटै ऊपर बेटा नै सवाळियों तो बा [illegible] । —फुलवाडी
२ जमीन पर, धरातल पर ।
उ० १ [illegible] हेटै [illegible] । —फुलवाडी
उ० २ [illegible] हेटै [illegible] । —फुलवाडी
३ किसी के नीचे, अधीन, अधिकार मे ।
उ० १ [illegible] हेटै [illegible] । —बां दा ख्यात
४ [illegible] ।
उ० १ [illegible] हेटै [illegible] । —[illegible] गीत
उ० २ लोग-ठोड [illegible], आगणा रा नीवडा हेटै बीटा रा गोखड़ा, [illegible] पाणी री भर भरणाट करती गालिया । सगळा घर माथै [illegible] उतारी, एक आग बोरी दिया । —अमरचूनडी
४ नीचे ।
उ० १ कानजी माथै तो आगी बिजळी पडगी । पगा हेटै सू धरती खिसकगी । —अमरचूनडी
उ० २ सूळी चाढणी, सिर रा बीजरा मैं न्हाकणी, हाथी रा पग हेटै [illegible], मायै चाव अभाव मारणी""। —फुलवाडी
उ० ३ उडता विमाण री पाणी भाग हेटै [illegible] । —फुलवाडी
५ ऊचाई से नीचे ।
उ०—१ कै हुता मैं पुटियौ हेटै उतरतौ कीवग लागौ — —फुलवाडी
उ०—२ ओक दिन सोनल-बरणी कावरांगी भिरोखा मै बैठी सोना री काघसी सू केस सुळभावती ही । टूटयोडा केसा री कोयौ हेटै फेंकयौ तौ ओक उडती चील उणनै भाल लियौ ।—फुलवाडी
६ अधोभाग मे ।
उ०—तोवा-पोळ हेटै गोळ री घाटी काली गुरजा ३ कराई । तिके अधूरी रही ।—मारवाड री ख्यात

हेटौ—वि (स्त्री हेटी) १ नीचा, निम्न, निम्न स्तर का ।

उ०—गया पाप परदेस, पहौम जित धुरतै थेठा। गग चढी ब्रह्म ड, अटया हर करता हेटा। —ह पु वा

२ नीच, तुच्छ, हीन।

३ जिसकी ऊचाई कम हो।

४ नीचा, नीचे।

५ शान्त।

उ०—विगर मदत नरमी रै क्रोध किणी बादसाह री हेटौ न बैठै। —नी प्र

रू भे—हेठौ, हटौ।

हेट्ठिम, हेट्ठिम–वि [स अधोवर्ती] जघन्य सयमधारी, केवल वेषधारी, 'अधोवर्ती' (जैन)

हेठ–वि—१ नीचा।

२ कम, घटकर।

रू भे—हैठ।

३ देखो 'हेटै' (रू भे)

उ०—१ दिन येना रही वरै नह दूजौ, जुध केता बीता जम जाळ। साही चाल अच्छर तिय सहति, बाही हत्तरि हेठ वरमाळ। —उदैभाण राठौड री गीत

उ०—२ यादव कुळ ना सेठ नै, जेठ कही समझाय। नाणी द्रेठ नै हेठ तै, मौ मै कवण अन्याय। —ह पु वा

उ०—३ सुर नर मुनिवर बस किये, ब्रह्मा विस्णु महेस। सकळ लोक कै सिर खडी, साधू कै पग हेठ। —दादूबाणी

हेठलौ–देखो 'हेटलौ' (रू भे)

उ०—१ एक उसीसइ तडफडइ, पागलि पडीया एक। मिज्या हेठलि सायरइ, सूता रहइ अनेक। —मा का प्र

उ०—२ सरप कही–म्हारै छाती हेठली मूठी दोय धूळ लेय जा। तोनू जिकौ विरोध भाव जोवै तिका ऊपर एक चुटकी धूळ गेरजै सौ भसम होय जासै। —साईं री पलक मै खलक री बात

उ०—२ गळा हेठला केस, कक्षादिक गुह्य प्रदेस। तै सवारै नही ए विरेचन लेवै नही ए। —जयवाणी

(स्त्री हेठली)

हेठा—देखा 'हेटा' (रू भे)

हेठि—१ देखो 'हेटि' (रू भे)

उ०—१ कान हेठि कर करिउ जु सूतउ तउ अम्हि कहीयइ करग निरूत्तउ, इमीय बात मन भीतरि जाणी गूझू न कहीउ कूनी राणी•। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ एक परवत ऊपरि चढइ, एक ऊतरइ हेठि। काम क्रोध मद मारतु, जिम राउ रमइ आखेटि। —मा का प्र

२ देखो 'हेठी' (रू भे)

हेठिया—देखो 'हेटिया' (रू भे)

हेठिलौ—देखो 'हेटलौ' (रू भे)

उ०—विसहर ! तू निरविस जरी, खरी न आवइ खति समिहर सिर ऊपरि रहइ, तू हेठिली हीचति। —मा का प्र

(स्त्री हेठिली)

हेठी–स स्त्री—१ अप्रतिष्ठा, अपकीर्त्ति।

२ बेइज्जती, अपमान।

३ हीनता, न्यूनता, तुच्छता।

रू भे—हेठि।

४ देखो 'हेटी' (रू भे)

५ देखो 'हेटै' (रू भे)

उ०—१ मुलताण उतपति, कुरदाण रहति, बारै बारै वरस दरिआवा माहे जेहाजा हेठी चली आवी। —रा सा स

उ०—२ इहा तौ नर दीसै छै कोई, सती तिहा हेकपै होई। राखै सील भागेला मोई, हेठी वेठा अग गुपोई। —जयवाणी

उ०—३ मोनै सूप्यौ कवण जजाल ए। फरसी दीधी हेठी राल ए। —जयवाणी

हेठै, हेठै—देखो 'हेटै' (रू भे)

उ०—१ वरसै नू गयपाल कह्यौ—'तू घरै जा। सावण री तीज छै।' ताहरा वरसै कह्यौ—'आपणौ जावणौ तरवारिया हेठै छै।' —वरसै तिलोकसी री बात

उ०—२ दिनै ऊचा रहे। रात्रि हेठै दुकान मैं वखाण देवै, पर-खदा घणी होवै। —भि द्र

उ०—३ देवळी रा तळाव वासै बाहळौ छै। तिण परै खेडी छै। सी० दुरगा रौ बसायौ। खेत देवळीया सै खडीजै छै, नै लाडपुरा हेठै खेत आया छै। —नैणसी

उ०—४ राव जोधै धरती लेनै कुवर बीदै नू दीधी हुती। सु आज धरती बीदैजी रा पोत्रा बीदावता हेठै छै। —नैणसी

उ०—५ दखिण मैं साह रै तथा इण रा तीजा कुपुत्र रै साथ केही जुद्ध जीति केही पुर, दुरग दाबि पचहत्तरि लाख ७५०००० रौ मुलक दिल्ली हेठै पटकियौ। —व भा

उ०—६ आय नै उतरियौ ही ढोला अखीवड रै हेठै। मेहडलौ वूठौ हौ म्हारा गाढा मारू हीरा मोतीया रे। —लो गी

हेठौ—देखो 'हेटौ' (रू भे)

उ०—१ सौ जाणौ आपरी ओटि मैं पनग नू पोय पखा रौ प्रसार करतौ गरुड रौ बाळक आकास मारग सू हेठौ थियौ। —व भा

उ०—२ ताहरा इयां ठाकुरा वीरमदै नू पकड बाह अर गळ सू हेठौ उतारियौ, नै गागै नू टीकौ दियौ। —नैणसी

उ०—३ सखी री जल सीतल पीजै जेठौ, पीउ नायौ अजहु धेठौ। जाण्यौ कुण करिहै वेठौ, नाणी मुझ नजरा हेठौ हो लाल। —ध व ग

उ०—४ पछै गजराज मस्तक सगेत दाहिमौ बाहण बिहूणा हेठौ आय पडियौ। —व भा

हेड सं पु [अं] १ मस्तक, सिर।
२ प्रधान, मुख्य।
३ उच्चाधिकारी।
४ दे० हेड।

हेडक्वार्टर सं पु [अं] १ मुख्य कार्यालय, प्रधान कार्यालय।
२ सेना का सदर मुकाम।
३ वह कार्यालय जहां तैनाती हो, जहां पोस्टिंग हो।

हेडणौ, हेडबौ - देखो 'हेरणौ, हेरबौ' (रू भे)
उ० मुळतांणी पर मन बसी, महला नह संसार। हिरणाखी, हंस नह मलह, श्रांणउ हेडि तुखार। —ढो मा
हेडणहार, हारौ (हारी), हेडणियौ — वि०।
हेडियोड़ौ, हेडियोड़ौ, हेड्योड़ौ — भू० का० कृ०।
हेडीजणौ, हेडीजबौ — कर्म वा०।

हेडवणौ, हेडवबौ क्रि स — देखो 'हेडणौ, हेडबौ' (रू भे)
उ० —सरिया मुहरि आंण दिरवाणी। हवै वळ हेडवण हजारी।
—वचनिका

हेडवणहार, हारौ, (हारी), हेडवणियौ - वि०।
हेडवियोड़ौ, हेडवियोड़ौ, हेडव्योड़ौ भू० का० कृ०।
हेडवीजणौ, हेडवीजबौ कर्म वा०।

हेडवियोड़ौ - देखो 'हेडियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हेडवियोडी)

हेडाउ, हेडाऊ—देखो 'हेडाऊ' (रू भे)
उ०—जिम हेडाऊ तुरगम पालइ, जिम वणिक हथेली नउ फोडउ पालइ, जिम तंबोली पान सभारइ, तीणइ परि पुत्र पालइ ....।
—व रा.

हेडिंग—स पु [अं] शीर्षक।

हेडियोड़ौ —देखो 'हेडियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हेडियोडी)

हेडी—सं स्त्री —रोही नामक जतु विशेष। (डिं. को)

हेडोकी, हेडोकै, हेडौकै- क्रि वि —इस बार, अब की बार।
उ०— १ पेहलोकै तौ म्हारौ ऊपर सोळकीया कायौ छै। हेडोकी आजी थां सारू छै।— राजा नरसिंघ री वात
उ०— २ बाहरै कहीया भाखरसी, रांणी आगै तौ हेडोकै नीसरौ।
—राजा नरसिंघ री वात
उ०—३ बीजै फेरै हमीर आप नू सलाम कर कहै छै, हेडौकै म्हारा हाथ देखौ।—अरजन हमीर भीमोत री वात

हेणां, हेणा— देखो 'हणा' (रू भे)
उ०—१ ताहरा नरसघ कहीयौ, अजमेर आवै तद सासरै जासू, हेणां तौ सासरै जावू नही।— राजा नरसिंघ री वात
उ०—२ हेणा भा भाई करम छै। विद्या खेल अर रावळै मानीयौ छै। आठ पोहर हजूर रहै।— ठाकुरै साह री वात

हेत स पु १ प्रेम, प्रीति, स्नेह, प्यार। (अ मा)
उ० १ उमा नी हेत माहै वंश छाकाणो ओरयो फेर ऊरै आया।
भाणा / दास गोड़ री वारता
उ० २ कुमळार पुरइ प्रम हेत कीध, देवी रसाळ जवहार दीध।
वि स
उ० ३ वदै हेत 'श्रीरंग' वतळावै, नाम महम्मदराय कहावै।
रा रू
उ० ४ अगा निन्यारी आवणी, थींमै बन्दर स्याह। धन की थिर स्थाया नहीं, हरीया हेत न वाह। अनुभववाणी
२ वात्सल्य, ममता, लाड, दुलार।
उ० १ दस मास उदर धार वळै बरस दस, जो इहा परिपाळै जिनड़ी। पण हेत परता बिना प्रीत, वळी विरोगै मात वडी।
वेलि
उ० २ अमत मारा भला, सखा मारा भला, हेत मा रा भला, भ्रात मारा भला, हाथ वहला भला, मात मरनता भला, ।
रा रा स

३ लगाव, मोह।
उ० १ मात गर्भ अर मद पीगै, आगि मधुरा हेत। हरीया ऊलटि जावसी, ज्यु मुळै का खेत। अनुभववाणी
उ० २ हरीया मायी मन मुनी, माया मांही हेत। मयुईक माडै रेत मैं, चोर वींगाजू खेत। अनुभववाणी
४ श्रद्धा, भक्ति।
उ० १ ज्यू या कुगुरां रै जोग सू खोटा मत मैं पडयो हौ। तिण नै उत्तम गुरुवां चोखौ मारग बतायौ। अबै तै वली कुगुरां सू हेत राखै तौ बडो मूरख। भि द्र
उ० - २ ऊजा कुळ नीचा करमन का, भगति बिना भाडा भरमन का। हेत प्रीत भजन नै राखै, नाव निरजन का नही दाखै।
अनुभववाणी
उ०—३ लोभी मोरा और मागी, पूल्हू भजन विचार। ऊवौ अतरी हेत रासी, भूलै जग बसार। -वि सं रा
५ मेल-मिलाप, सम्पर्क।
६ इश्क, मोहब्बत, यौन सम्बन्ध।
७ आनन्द, हर्ष।
उ० —मधु प्यार पगलिया सै तीन्या, पायलिया भणकै जगा जगा। नैण मगलिया भुबळका भुबळक, हा हेत खिडावै मगा मगा।
सकुतला

८ देखो हेतु' (रू भे)
उ०—१ तिण राव दुरगै कसबौ नवौ वसायौ नै स्री रामचन्द्रजी रै नाम सू रामपुरौ ठाकुरां रै हेत नाम दियौ। नैणसी
उ०—२ तिका हिज हेल दगी नह तोप, रही यंज रीठ बिहू बळ रोप। जिका सणणाकि भणाकिय जेह, सुवा भड भुम्मि हुवा धड

सेह।—मे म

उ०—३ सखेपै तै सकल ग्रथन् लई केटलू हेत। कहीस कथा हू नल राजा नी थोडा माहे सकेत।—नळाख्यान

उ०—४ सिख गुर कु सिर धरत है, हरीया हरि कै हेत। विण वूझ्या गुर ग्यान कु, सौ काहे कु देत।—अनुभववाणी

उ०—५ धूपिया धकै चिटका चिरत धकधकै, वारूनी डकडकै तरफ वामी। बकबकै बीर जोगरण छकै दौ वखत, भकभकै हुतासरण हेत भामी।—मे म

११ देखो 'हित' (रू भे)

रू, भे—हेता, हेतौ, हेतौ।

हेतइ—देखो 'हेतु' (रू भे)

उ०-तिरण हेतइ भाखौ मुझ कि, गुझ हिरदै तरणौ रे। कीजै तसु उपरि काज कि, विचारी आपरणौ रे।—प च चौ

हेतभाव—स पु—प्रेमभाव।

उ०—हा, हा री हसी बिखरै ही, जाणै मस्ती री रग उडै। जगळ री हिसा थमगी ही, श्रौ हेतभाव निखरयौ सगळै।—सकुतला

हेतव—स पु—१ चारण कवि। (डिं को)

उ०—द्रब न्याय नीर करखत दुरस, बरखत दुरस उदार वळ। कळावर कमुद अविकारा कर, किय विकास हेतव कमळ।

—केहर प्रकास

२ कवि।

उ०—रतन पव स्रवत उमड घ रात रिम्र, जळ कळा मघन ध्रुव बरद उजवाळ। हम रज प्रिया रिखपाळ जग हेतवा, अतर ससि मेर यद बियौ 'ऊाताळ'।—सनमानसिंघ हाडा रौ गीत

३ देखो 'हितु' (रू भे)

उ०—तेज भूप देख ताम, निमै पाय सीम नाम। हेतवा सपर हाम, वरमाळ लिया नाम।—र रू

हेता—देखो 'हेत' (रू भे)

उ०—दुनीया दुख सुख भुगतै केता, राम नाम सु नाही हेता। नाव सनेह न जानै कोई, मैं सतन कहि याका सोई।

—अनुभववाणी

हेतारथ—देखो 'हितारथ' (रू भे)

उ०—१ श्रौसर श्रायै वोलिबौ, हरीया हरि कै हेत। हरि हेतारथ बाहिरौ, ता मुख पडसी रेत।—अनुभववाणी

उ०—२ वाच्या गूझ भोज जै गाव्या, कुग्ररी ना लेख। हेत सकेत हेत हेतारथ, माहइ घणा विसेख।—रुखमणी मगळ

हेताळ, हेताळु, हेताळू—वि—१ हित चाहने वाला, हितैषी।

उ०—१ माडधरा सै ऊन मगाई, ताजी कराई तयार। चार गजा कै फेर मै हुती श्रोढ लेतौ अवसार। जिका गोधी 'रैवतै' लीन्ही जी कारीगर कीमियै कीन्ही जी, हेताळू हेत सू दीन्ही जी।—अग्यात

उ०—२ गताधम मैं दिन काडता श्रेकर आपौ आप नै राजस्थानी रौ हेताळु बतावणियै गेक भलै मिनख नै कैवता सुणियौ कै राजस्थानी तो कोरी सामती भासा ई रैई। भलै मिनखा नै कुण समभावै, पाच बडेरा रा नाव जीसा सू सुणिया जिका तो ऊट खडता कै घुडस्सवार हा। पछै म्हारै घर मैं आ वरनौ फीकर दियौ।—चितराम

२ प्रेमी, स्नेही।

उ०—१ पधारो घणा हेताळ साहिबा, ऊभीं जोऊ वाटडली।

—लो गी

उ०—२ चोटी चौथै मास, गूथी गुणा सजाय नै। हेताळू री गाठ, जाभै दुख मै नी खुलै।—अग्यात

३ मित्र, दोस्त।

हेति—स स्त्री [स] १ अस्त्र, हथियार।

२ वज्र।

३ भाला।

४ आघात, चोट, प्रहार।

५ प्रकाश, चमक।

६ शोला, अगारा।

उ०—धुरीन तोप की गलात, धोर सोर पै धरै। प्रदीपमान हेति अच्छ, स्वच्छ अच्छ मै परै।—ऊ का

७ मधु मास या चैत्र मास मे सूर्य्य के रथ पर रहने वाला प्रथम राक्षस राजा।

वि० वि०—यह प्रहेति नामक असुर का भाई था, इसकी पत्नी का नाम कालकन्या भया था। इसके विद्युत्केश नामक पुत्र तथा सुकेशी नामक कन्या थी।

हेतिकरण—देखो 'हितकारी' (रू भे)

उ०—सोह दिनकर कुभ सिर, पच्छिम पवन प्रकास। हेतिकरण वरिणयौ हुवा, श्राया फागण मास।—रा रू

हेती—१ देखो 'हेत' (रू भे)

उ०—१ तन मन करि हेती रसना सेती, रामोराम रटदा है।

—अनुभववाणी

उ०—२ अहिनिस राम नाम अवगाहे, ऐकै तन मन हेती। जन हरिराम तिरै सोई तारै, आपा सेनग सेती।—अनुभववाणी

२ देखो हेतु' (रू भे)

हेतु—स पु [स] १ कारण, वजह, सबब, उद्देश्य।

उ०—१ बभण मिसि वदै हेतु सु बीजौ, कही स्रवणि सभळी कन्न। लिखमी श्राप नमै पाइ लागी, अचरिज कौ लाधै अरथ।

—वेलि

उ०—२ इत्यादिक प्रस्नोत्तर करता, हेतु जुगति हिया माहि धरता। परदेसी राजा प्रति बोध्यउ, केसी गुरु स्रावक कियौ सूधउ।

—स कु

उ०—३ माहो माहि वाता कर हेतु युक्ति सीख सुमति आछी तरै

दरसन देवे पाखू क्लामिमें पगार गाता । —भि द्र
२ तर्क, दलील, विवाद, अनुमान ।
३ साधन, जरिया ।
४ अभिप्राय, उद्देश्य, तात्पर्य या अलावा विषय ।
५ वह व्यक्ति या वस्तु जिसके होने से कोई बात हो, प्रमाणित करने वाली बात ।
६ आधार, निमित्त ।
७ तर्क विज्ञान व न्याय दर्शन में अनुमान प्रमाणों में से कोई प्रमाण ।
८ एक अलंकार विशेष, जिसमें कारण का कार्य सहित वर्णन होता है ।
उ० हेतु मनरा जब हुवै, कारज कारण राम । जो कारज कारण जहे, मत एक ही राम । —वि वि
क्रि वि —१ लिये, वास्ते, निमित्त ।
२ देखो 'हितु' (रू भे)
उ० मनका मिनिया पड़ै हेतु ठळ ठळ नै जावै ।
—अरजुनजी बारहठ
रू भे —हित, हेत, हेत, हेतड, हेती, हेतू, हेतै ।
हेतुभेद स पु [स] ज्योतिष में ग्रह-युद्ध का एक भेद ।
हेतुमंत वि [स हेतुमत्] जिसका कुछ कारण हो, हेतु हो ।
हेतुवाद स पु [स] १ तर्क विद्या, तर्क शास्त्र ।
२ कुतर्क ।
३ नास्तिकता ।
हेतुवादी वि [स] १ 'हेतुवाद' के सिद्धान्त को मानने वाला ।
२ तार्किक ।
३ नास्तिक ।
हेतुविद्या स स्त्री [स] तर्कशास्त्र ।
हेतुहेतुमद्भाव-स पु [स] कारण और कार्य का सम्बन्ध ।
हेतुहेतुमद्भूतकाल- स पु [स] क्रिया के भूतकाल का एक भेद । (व्याकरण)
हेतू - १ देखो 'हितु' (रू भे)
उ०—१ पिड नै घणी ज प्यार, मिळता मन हरखित मिळै । वै हेतू लखबार, मिळजौ दिन मैं मोतिया ।—रायसिंह सांदू
उ०—२ दीपचंद मुणोत मन मैं धरी देई आपरा हेतू मित्रा नै कह्यौ —भीखणजी री वचन इसो निकळ्यौ सो पाटा-पाटी समेटती दीसै है ।—भि द्र
२ देखो 'हेतु' (रू भे)
हेतै –देखो 'हेतु' (रू भे)
उ०—तिण हेतै लराकर तुमै, विदा करावो साहि । सहस पच राखो नखैं, जो डर आणो मन माहि ।—प च चौ
हेतौ—वि —१ हतप्रभ, निराश, हतोत्साह ।
उ० जिण समय मालिया मारा कर ग्री नजी, हरिया गिध दळ हास हेता । वीर धमा वीर सारी घ हे मारिया, आरिया अवगळ जुड़े आ । —महाराज बारहठ
२ देखो 'हेत' (रू भे)
उ० आया भाया मासी मासि मै, पोषी हाथी हेतौ रे । धणी ताई नै ऊँसरी, नमसो उस भरत सेती रे । —जयवाणी
हेनाळ स स्त्री —घोड़े के सुम की नाल, खुरताल ।
हेप, हेफ —देखो 'हेफ' (रू भे)
हेमकूट स पु —हिमालय पर्वत ।
उ० पण चिहुंवर माळी सवार हेमकूट पहुंचै, नीच काळकूट गणभारा गणगार । सूरा दान जिन राम गाहु बाळ मोटा धणी, वीर वाता एक तणी मोवरी वधार । —र रू
हेमण स पु [स] १ हिम ।
२ अग्नि ।
३ माघ ।
४ मोर, मिह ।
५ सुमेरु पर्वत ।
६ हिमालय पर्वत ।
७ नाग, हिम ।
उ० १ जळै अगर तो ठा वही लिखर भाळा, वहूंनी सहरस वध अगोत आळा । धरा रत गोतम हेमण वाळा, जरी फूल आगै भरे रूप काळा । —ना द
उ० २ वनी पागरा वागरा जूह काळा, वणी जारिण पाहाड़ हेमण वाळा । नजा फाबि नेजा गजा सीस दन्ता, मानौ उद्विग जागि गुड़ी महन्त । —वचनिका
८ स्वर्ण, सोना, कंचन ।
९ चम्पक वृक्ष ।
वि १ सुनहला ।
२ ठंडा, शीतल ।
रू भ —हेमाण ।
हेमत, हेमतरित, हेमतरितु स स्त्री [स हेमन्त, हेमन्त-ऋतु] १ छह् ऋतुओं में से एक ऋतु जिसमें मार्गशीर्ष व पोष मास आते हैं । मतान्तर से इसमें पोष व माघ मास भी माने गये हैं ।
उ० १ रितु हेमत पोस नै माह । फागुण चैत बसत आराह । —जगवाणी
उ०—२ हेमतरित लागी । शिशिर रित जागी । रूक रहिळ वागी । कादरा नू ठंडि लागी । हाथ पग धूजै भड़ धड़ । —वचनिका
उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजान सितामति उणि हेमतरित गाहै बाळी मूंध मुहब गोरी गया तना री रस छाती री रस अधरा री सवाद अधरा राखिखौ लागै छै । —रा सा स
२ शीतकाल ।

उ०—हेमत जु महा सीत तै कै डरि कोई निसि कहता रात्रि कै पैंड नही चालै छै।—वेलि टी

३ एक छन्द विशेष।

उ०—अतेय दो दिव आदि दुवेज कार। हेमत सेम कथीयौ कवि कठ हार।—पिं सि

रू भे—हिमत, हेमता, हेमति, हेमतु, हेवत, हैमत।

हेमता—देखो 'हेमत' (रू भे)

हेमति, हेमतु—देखो 'हेमत' (रू भे)

उ०—१ भजति सुग्रह हेमति सीत मैं, मिळि निसि तु न कोई वहै मगि। कोई कोमळ वसत्रै कोइ कबळि, जरण भारियौ रहति जगि।—वेलि

उ०—२ अति वसतु आवियौ रितु हेमतु। जिहा सीय ना भर, सेवइ, निरवात घर।—रा सा स

हेमसु, हेमसू—देखो 'हिमासु' (रू भे) (अ मा)

हेम—स पु [स हेमिन] १ स्वर्ण, सोना, कचन।

(अ मा, ह ना मा)

उ०—१ किहा ऐरावरण किहा अजा? किहा पीतल किहा हेम। अवर सहू अ अधीउ, माधव जोता तेम।—मा का प्र

उ०—२ गौ-कोटि-दान ग्रहणैं तु कासी, मकरै प्रयागै निज कल्प-वासी। सुमेरु तुल्य दै हेम दान, नहि तुल्य नहि तुल्य गोविद नाम।—ह र

उ०—३ साह ताम समसेर, जडत जवहरा जमधर। मुलक वधागै समपि, हेम तौडा गज हैमर।—सू प्र

२ वह वस्त्र जिस पर सोने का कार्य किया हुआ हो।

उ०—१ कनक काया घट कूकू लोल, कटीरण पयोहर हेम कचोळ।—बी दे

उ०—२ सुचि कीजै रनान सपाडा, सहु पहिरै नवि नवि साडा। हीर चीर पाटबर हेम, पहिरौ सहु भूखरण प्रेम।—ध व ग्र

३ हेमत ऋतु।

उ०—१ हेम सिसर रित मेडतै, रहियौ बमणा राव। सभ विहाणौ ऊगणौं, दिन दिन दूरणौ चाव।—रा रू

उ०—२ सरद हेम नै सिसर रित, रिति वसत ग्रीखम्म। वरखा दान बखारिण तू, ए खट रित ओपम्म।—रा सा स

उ०—३ रवि बैठौ कळसि थियौ पालट रितु, ठरेजु डहकियौ हेम ठठ। ऊडरण पख समारि रहै अलि, कठ समारि रहै कळकठ।—वेलि

४ सुमेरु पर्वत।

५ पानी, जल।

६ धतुरा।

७ केसर का फूल।

८ गौतम बुद्ध का नाम।

९ बादामी रग का घोडा। (शा हो)

वि—१ शीतल, ठण्डा।

उ०—१ प्रीतम रो मुख पेखना, हिवडौ हावै हेम। लूआ परण रोकै मिळरण, भलौ निभावै नेम।—लू

उ०—२ साग सारा मळियागरी, वळि नाळेर निदाम। सोपारी खिरणी सरम, हेम हुवा तिहि ठाम।—गज-उद्धार

२ श्वेत, सफेद। ⊛ (डि को)

३ पीत, पीला। ⊛ (डि को)

४ देखो 'हिम' (रू भे)

उ०—१ उदधि मुजळ ऊफळै, हेम प्रघळै जळ हल्लै। दहत लाग नर देव, दसै द्रगपाळ दहल्लै।—सू प्र

उ०—२ हुवइ घटि नदी हेम हेमाळै, निमळ सग लागा वाधरण। जावनागमि कटि कस थायै जिम, थायै थूळ नितब थरण।—वेलि

उ०—३ मागु तुझनइ मागसिर, जउ मुझ आरिण प्रेमि। हृदय कमलि रामा रही, त्याह म पाडिसि हेम।—मा का प्र

उ०—४ असाराण राजेस कमठाण कीधा अकळ, कोड जुग लगा जस कळिया। पाळ जोय हेम रा गरब टळिया पहळ, टाळ जोय समद रा गरब टळिया।—जोगीदास कवियौ

उ०—५ अब बिवर तन, सीत सुनौ सब तीरथ न्हावै। कासी छाड देह, हेम बसि हाड गमावै।—ह पु वा

उ०—६ मै तो दासी राज री, दुख दै कीनी नेस। अब तो गळणा हेम मै, आह घर री रेस।—स्री हरिरामजी महाराज

हेमअद्र—स पु [स हेम-अद्रि] १ हिमालय पर्वत।

उ०—गरब सत्रा गजरणा, रमा सुचित रजरणा। भुजा सजोर भजरणा, चढाय सिंभ चाप। गळै दुजेस गाव रा, सधीर जैं सभाव रा। अभग हेमअद्र सा, अडोळ नग आप।—र ज प्र

२ सुमेरु पर्वत।

हेमअनड—स पु—१ सुमेरू पर्वत।

२ हिमालय पर्वत।

उ०—कहर करामत 'जसा' हीदवारण चा सहसकर, जुभ कुरण छातधर अवर झालै। तेज सुजडा तरणौ ताप मत्र 'गजरण' तरण, हेमअनडा जुई गळै हालै।—नाथौ साद्

हेमअरि—स पु [स] स्वर्ण का शत्रु, सीसा।

हेमकार—स पु [स] १ स्वर्णकार, सुनार।

उ०—सरवगि सीस मुडित बिहाल, मग लोपि जात बामाग व्याल। क्षत पात्र रोम चरमा निहार, क्रम हीन रजक द्विज हेमकार।—ला रा

२ सोना, स्वर्ण।

हेमकूट—स पु [स] हिमालय के उत्तर मे स्थित एक पर्वत।

(पौराणिक)

हेमकेरा सं पु [सं हेमकेश] शिव का एक नाम। [illegible]

हेमगढ सं पु [सं] १ सोने का गढ।

२ [illegible]।

उ० [illegible] हेमगढ [illegible]

[illegible] 'जसराज' [illegible]

[illegible]

हेमगर, हेमगिर, हेमगिरि सं पु [सं हेमगिरि] १ सुमेरु पर्वत जो सोने का माना जाता है। (डि को)

उ० हेमगिर [illegible] रघुनाथ। र ज प्र

२ हिमालय पर्वत।

उ० [illegible] हेमगिरि।

[illegible]

पीर

रू भे हेमागिर, हेमांगिर, हेमागिर, हेमागिरि।

हेमचंद्र, हेमचंदर, हेमचन्द्र सं पु [सं हेमचन्द्र] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो विशाल राजा का पुत्र था।

२ कलिकाल सर्वज्ञ के नाम से प्रसिद्ध एक जैनाचार्य जो सन् १०८९ व ११७३ मे हुए थे। इन्होंने व्याकरण एवं अन्य कई ग्रन्थ लिखे थे।

हेमजा–सं स्त्री [सं हिमजा] १ हरीतकी, हड़।

२ पार्वती, उमा।

हेमजाळ, हेमजालक सं पु—एक आभूषण विशेष।

उ०—दस मुद्रिका अगुलीयक अगूठला हेमजालक मणिजालक रत्नजालक भनिया —व स

हेमता–वि —सोने का।

उ० —कनक थार भारिया गडई कटोरी भारीया। रूपाय हेमता चब रसोईवार सरखरू। --वि स सा

हेमतुला सं० स्त्री [सं] १ सोने का तुलादान, तराजू।

२ वह तराजू या तुला जिसमे सोना तोला जाता है।

हेमदंता–सं स्त्री [सं] एक अप्सरा विशेष।

हेमदिस, हेमदिसा, हेमदिसि–सं स्त्री [सं हिम = हिमालय+दिशा] उत्तर दिशा का नाम।

उ०—आकुळ थ्या लोक केहवौ अचिरज, वधित छाया ए विहित। सरण हेमदिसि लीधौ सूरिज, सूरिज ही त्रिय आसरित।—वेलि

हेमपथ, हेमपंथ–सं पु [सं हेम-पथ] १ हिमालय पर्वत।

उ०—काळु माय हेमपथ ओहता स भद्रकाळी, मेहाळी सोहता नेग जाळी खळा नाम।—नवलजी लाळस

२ उत्तर दिशा का मार्ग।

हेमपरवत–सं पु [सं हेमपर्वत] १ सुमेरु पर्वत।

२ स्वर्ण की वह राशि जो दान मे दी जाय। (महादान)

३ हिमालय पर्वत।

हेमपुसप, हेमपुहप सं पु [सं हेम पुष्प] १ [illegible] का पुष्प। (डि को)

२ गुलाब का पुष्प। [illegible]।

हेमफुल, हेमफुलिका सं स्त्री [illegible] सोनजुही का पौधा (डि को)

हेममाळ, हेममाळा सं पु [सं हेममालिन्] १ सूर्य, रवि।

२ खर की सेना का सेनापति एक राक्षस।

हेमर सं पु देखो 'हमीर' (रू भे) (अ मा)

उ० [illegible] सिलामति असवारा री वाग [illegible] हेमरां नालीजै छै। भूखणा [illegible] रा सा स

हेमलंब सं पु [illegible] वर्ष। (ज्योतिष)

हेमळ सं पु [सं हेमल] १ स्वर्णकार, सुनार।

२ कसौटी।

३ गिरगिट।

हेमवंत सं पु हिमालय पर्वत।

उ० [illegible] हेमवंत [illegible]

हेमवती, हेमवती सं स्त्री [सं हैमवती] १ पार्वती, गौरी। (अ मा)

२ गगा नदी। (अ मा, ह ना मा)

३ हरितकी, हर्रे, हड़। (अ मा, ह ना मा)

रू भे हैमवती।

हेमवरण- वि —१ कनक वर्ण, स्वर्णमय, स्वर्णिम।

उ०—देही पांच सौ धनुष तणी, हेमवरण उपमा धणी। साहस आठ लक्षण नामी, सुगरौ सीमंधर स्वामी। —जयवाणी

२ पीला। (डि को)

३ श्वेत, सफेद। (डि को)

सं पु —१ पीला रंग।

२ सफेद रंग।

हेमवळ सं पु [सं हेमवल] मुक्ता, मोती।

हेमसुता सं स्त्री [सं] १ पार्वती, गिरिजा।

२ दुर्गा।

हेम हेड़ाऊ सं पु यौ [सं हेम + हेड़ाबुक] १ एक चारण जो घोडों का प्रसिद्ध व्यापारी था व महान दातार था।

२ इसके नाम पर गाया जाने वाला एक लोक गीत।

हेमांग—देखो 'हेमंग' (रू भे)

हेमांगद–सं पु [सं हेम-अगद] सोने का बाजूबंध।

हेमांगिर, हेमांगिरि – देखो 'हेमगर' (रू भे)

उ०—सखिए साहिब आविया, जांह की हुती चाह। हियडउ हेमांगिर भयउ, तन पजरै न माह।—ढो मा

हेमांणि, हेमाणी–सं स्त्री [सं हेम-खानी] १ स्वर्ण का खजाना।

उ०—थारै माय मास अटक्योडौ है तौ थू नी जावै जित्तौ डोकरडी जीवनी तौ रैवैला । अबै रोवै तौ पैला मादी छोड नानेरै क्यू उखलियौ । उठै काई हेमाणी गडचोडी ही ?—फुलवाडी

२ धन, दौलत, लक्ष्मी ।

३ प्राचीन काल की रुपये-पैसे रखने की एक शैली विशेष ।

रू भे —हिमाणी, हिमानी ।

हेमा—स स्त्री [स] १ पृथ्वी, धरती ।

२ मदोदरी की माता एक अप्सरा ।

हेमागिर, हेमागिरि—देखो 'हिमगिरि' (रू भे)

उ०—१ अहल्या पद रज तरै, पडव **हेमागर** चाढै । भारत भीखम मरै, जठै सिखडी जीवाडै ।—अरजुणजी बारहठ

उ०—२ हेमागिरि थी हायिणी, आवइ पवन परागि । ऊमाडी ऊपरि चढी, मारइ मन्मथ-बाण ।—मा का प्र

हेमाचळ, हेमाचल, हेमाछळ—देखो 'हिमाचळ' (रू भे)

उ०—१ चढिया 'दमतय' ऊपरा **हेमाचळ** हाकी । घैसाहर पाखर रवद थरहर धर थाकी ।—मालौ साद्रू

उ०—२ नदी अर दिन वधण लागा, तळावा रो पाणी अर राति घटण लागी । धरा कहता प्रिथी गाढ पकडचौ, कठोर हुई । **हेमाचळ** परबत परघळचौ ।—वेलि टी

उ०—३ फौजा ऊपरा ऊजळा भाला रा डबर भळलाट करि जगाजोति जागी । जाणै बरफ रा टूक **हेमाचळ** पहाड माथै विराजमान हुआ ।—वचनिका

हेमाजळ—देखो 'हिमाचळ' (रू भे)

हेमाद्रि, हेमाद्री—देखो 'हिमाद्रि' (रू भे)

हेमायत—देखो 'हिमायत' (रू भे)

उ०—केइ भूप पखायत बधकरणी । धुर मुज्ज **हेमायत** 'पाल' धणी ।—पा प्र

हेमाळ, हेमाळइ, हेमाळई, हेमाळय—वि [स हेमन्] स्वर्णिम, सुनहरा ।

स पु—१ दीपक का पुत्र एक राग । (सगीत)

२ देखो 'हिमाळय' (रू भे)

उ०—सिधामाळ सु वीटीयौ ज **हेमाळ** सदा लहै सौभा, वहे चद्रभाळ तारा वीटीयौ वखाण । वीटियौ अमरा माळ मेर वदै, रहे पाता माळ सु वीटीयौ 'भीमौ' राण ।—कविराजा बाकीदास

हेमाळे, हेमाळै—देखो 'हिमाळय' (रू भे)

उ०—१ ढोला सायधण माणजै, झीणी पासलियाह । कइ लाभै हर पूजिया, **हेमाळै** गळियाह ।—ढो मा

उ०—२ हुवइ घटि नदी हेम **हेमाळै**, विमळ स्निग लागा वधण । जीवनागमि कटि कस थायै जिम, थायै थूळ नितब थण ।—वेलि

हेमाळौ—देखो 'हिमाळय' (रू भे)

उ०—१ पाया रौ फिळौ आडौ काई ऊभौ हौ, जाणै **हेमाळौ** भाभर आडौ ऊभौ है । घर बाळा वास्त औ हेमाळो लाघणौ दूभर व्हैगौ ।—फुलवाडी

उ०—२ वा खुद जलम सू ई पागळी हे तौ पछै उणरा अतम मे बसियोडो साच कीकर दुखा रौ **हेमाळौ** लाघेला ।—फुलवाडी

हेय—वि, [स] १ त्यागने या छोडने योग्य, त्याज्य ।

२ निकृष्ट, घृणित, बुरा ।

रू भे—हेय ।

हेरब, हेरबी, हेरभ [स हेरम्ब] गजानन । (ह ना मा)

उ०—पाण रा करन्न महा माणण रा गदापाणी, नागरी पूडाण रा प्रम्माण रा निवान । मामान रा इद्र लोका जाणरा **हेरबी** सदा, माण रा दुजोण झोका 'गुमान' रा 'मान' ।—उमेदसिंघ सादू

२ हाथी, गज ।

उ०—तिका अग्ग **हेरब** क छलै तूटै । छकाया सुरा रौ धरै वेल छूटै ।—व भा

३ भैसा ।

उ०—चक्की-पीवणा पाय माई बचायौ, क्षुधाळी हणै हेक **हेरब** खायौ ।—मे म

४ शेखीबाज वीर ।

रू भे—हेरम, हेरम, हेरब ।

हेरभ-माता—स स्त्री [स हेरब+माता] गणेश की माता, पार्वती, दुर्गा ।

उ०—भवानी नमौ सत्य आलाप बाला, भवानी नमौ अ द विद्या विसाला । भवानी नमौ देव **हेरभ-माता**, भवानी नमौ तन्नमौ सत त्राता ।—मे म

हेरम—देखो 'हेरब' (रू भे,)

हेरमकारी, हेरमा—स पु—घोडो की एक जाति या इस जाति का घोडा ।

उ०—अरब छइ जै घोडा, **हेरमा** हरीअडा नील नीलडा कालूआ काजला किहाडा कोसीरा अहिठाणा पइठाणा ऊजला जहिडा सीहतग टारतेजी तोखार तोरका **हेरमकारी** गगाजला खुरसाणी सीधूआ कासमीर कुकणा ऊदिरा, अनेक वानि नव नवा, नीला काला स्वेत राता पीला एहवा एक अस्व पागगि सोभता छइ ।—व स

हेर—स स्त्री—१ छानबीन, खोज या पीछा करने की क्रिया या भाव ।

२ छानबीन, तलाश, खोज ।

उ०—उण ठाम आय अवसाण पाय, आसुर अनीत तिण हरी सीत । बन जिकण नेर हम करन हेर, बनकै विहार अजन कवार ।—र रू

३ गश्त, फेरी ।

उ०—मरदा मैं थू मरद आगळौ, हेरचा थू लाट । रामगढ़ की **हेर** लगादै, जद जाणू तोय जाट ।—डूगजी जवारजी री छावली

[illegible] हैरान, व्याकुल।

उ० [illegible] हेर [illegible]। [illegible] आवी। [illegible]

[illegible] सं पु [illegible] (भा [illegible])

[illegible] देखो '[illegible]' (रू भे)

उ० [illegible] हेरव [illegible] करइ, [illegible] करइ, [illegible]

[illegible] सं स्त्री १ [illegible] तलाश करने की क्रिया।

२ तलाश, खोज, [illegible]।

रू भे [illegible]।

[illegible], हेरबौ क्रि स १ ढूंढना, तलाश करना, खोजना।

उ० १ [illegible] तलाश [illegible] हेरता [illegible] — [illegible]

उ० २ राज री काजी [illegible] हेर [illegible] साथै प्रीत करै। — फुलवाड़ी

उ० ३ [illegible] हेरता हेरसी, हेरता ही [illegible] अर। [illegible] हेरो [illegible]। — अनुभववाणी

उ० ४ उण राज री धारी के [illegible] रात थका [illegible] राजमहल [illegible]। [illegible] सूरज हेरै तौ ई नी लाधै। — फुलवाड़ी

२ पता लगाना, सुराग लगाना, जासूसी करना, खबर करना, जांच पड़ताल करना।

उ० १ गोगादेजी दबौ मार बैठा हुता। इतरै हेरी आयौ। कह्यौ जी, 'दलो' हेरियौ छै, धीरदै हेरियौ छै। — नैणसी

उ० — २ सु मूळवै चारण नेरावटै नू राजा बीरानदे रै गेलीयो अर कहै, 'जु राजा रै घोडी कोड़ीमज छै। सु हेर श्रावजो।

मूळवै सागावत री वात

उ० — ३ पछै गोगाजी तौ हुलाणौ गेनै आपरै ठिकाणै गया। थागै पाबूजी हरियै थोरी नू कहीं-रे हरिया दोदै री साढिया हेर आव, ज्यु बाई नू साढिया श्राण देवा। — नैणसी

३ पीछा करना।

४ फेरी लगाना, चक्कर लगाना, गश्त लगाना।

५ देखना, अवलोकन करना।

उ० — १ नमि आगै सिहा श्री नमिनाथ, इकवीसम आपै सिव आथि। हासौ जीव जयणाए हेर, वदौ जिनवर बीकानेर। — ध व ग्र

उ० — २ छिन छिन वाट हेरता छाया, होय कळळ घोडा हीसाया। अणवीत्या बैरी खड आया, ऊठी पीव पाहुणा आया। — बरजूबाई

उ० — ३ एक एक तारा नै हेर लियौ पण उणारी चापळियोडी नीद रो पतौ नी पड्यौ। — फुलवाड़ी

६ [illegible] देखना, [illegible] लगाना, ताकना।

७ [illegible] करना, [illegible] करना।

हेरणहार, हारौ (हारी), हेरणियौ — वि०।

हेरिवाड़ी, हेरियोड़ी, हेरयोड़ी — भू० का० कृ०

हेरीजणौ, हेरीजबौ — कर्म वा०।

हेरणौ, हेरबौ, हेरणौ, हेरबौ, हेरवणौ, हेरवबौ — रू भे।

हेरत १ देखो 'हिरण' (रू भे) (ड ना मा)

२ देखो '[illegible]' (रू भे)

हेरफेर स पु १ इधर-उधर करने की क्रिया या भाव।

२ परिवर्तन, फेर बदल।

३ [illegible], [illegible]।

४ [illegible] [illegible] करना।

५ घुमाव, चक्कर।

६ [illegible], [illegible]।

७ कुटिल युक्ति, [illegible], चाल।

८ अन्तर, फर्क।

९ [illegible]।

रू भे हेराफेरी।

हेरम — देखो 'हरम्ब' (रू भे)

हेरां क्रि वि जासूसी करने के लिये, गुप्तचरी के लिये।

उ० [illegible] गी नाडे हेरा ऊभी हुती, तै साळ रै सहनाण किया। — नैणसी

हेरान — देखो 'हैरान' (रू भे)

हेराउ, हेराऊ वि १ तलाश करने वाला, ढूंढने वाला, खोज करने वाला।

२ जासूसी करने वाला, जासूस।

३ पीछा करने वाला।

४ देखने वाला।

५ संदेश वाहक, दूत, चर।

रू भे हेरु, हेरअ, हेरू, हेरअ।

हेराफेरी — देखो 'हेरफेर' (रू भे)

हेरायत स पु १ गुप्तचर, जासूस।

उ० — तद रायमल हेरा लगाया कै गाव धोळहरै राव गागै री वरसी छै। सु आज गोठा करसी पण गागौजी घरै जावै तद मनै खबर देज्यौ।" पीछै हेरायत धोळहरै गया नै जाय आरा पास हेरी लगायौ। — द दा

२ सदेश वाहक, दूत।

वि — १ खोजने वाला, ढूंढने वाला, तलाश करने वाला।

२ जासूसी करने वाला।

३ पीछा करने वाला।

४ देखने वाला।

रू भे—हरायत।

हेरिक-स पु [स] १ गुप्तचर, जासूस।
२ संदेश वाहक, दूत, चर।

हेरियोडौ-भू का कृ—ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ, खोजा हुआ २ पता लगाया हुआ, सूराख लगाया हुआ जासूसी किया हुआ, खबर किया हुआ, जाच-पड़ताल किया हुआ ३ पीछा किया हुआ ४ फेरी लगाया हुआ, चक्कर लगाया हुआ, गश्त लगाया हुआ ५ देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ ६ गौर से देखा हुआ, टकटकी लगाया हुआ, ताका हुआ ७ विचार किया हुआ, पुनरावलोकन किया हुआ।
(स्त्री हेरियोडी)

हेरु, हेरुग्र—देखो 'हराउ' (रू भ)
उ०—१ सो कागद वाचनै रामदासजी तिण हीज वीरीया हेरु मलिया, अनै कयौ अन ता थाढोया लीया वसा।—रा पा स
उ०—२ अखजै धन हेरुग्र फेर ग्रठै। कही तरण बनायोय 'पाल' कठै।—पा प्र

हेरुक-स पु [स] १ गणेश, गजानन।
२ महाकाल शिव का एक गण।

हेरू, हेरूग्र—देखो 'हेराउ' (रू भे)
उ०—१ नरौ पोकरण लेण री मन घणी हर गावै छै। सु नग रा हेरू पोकरण नु लाग रह्या छै।—नैणसी
उ०—२ तरै ग्ररडकमल हेरू मेलिया, नै ग्राप २०० सू चढ खडिया। बीच नाहरा ४ चार रौ सवग हुवौ।—नैणसी
उ०—३ बीजा हेरू ग्राव्या राति, मारवणी जीवी ग वात। ढोलउ लियै जाइ एकलौ, हिव धाडउ कीजइ तउ भलउ।—ढो मा

हेरौ-स पु—१ खोजने, ढूंढने या तलाश करने की क्रिया या भाव।
२ खोज, तलाश, छान-बीन, जाच-पड़ताल, खबर, पता।
उ०—१ नाहरा दूदौ डकरियौ-भोज नू मारू। पातसाह रै दरबार विचै मारू। ताहरा वासै सू दूदौ ही सीकरी फतैहपुर गयौ। जायनै हेरौ करायौ।—नैणसी
उ०—२ बरजाग सुचनो हुवो, सु ग्रोग्ही वेगी छै। ईग राव नु कह्यो—हू कटक रौ हेरौ करण जाऊ छू मुगळा रौ डेरौ कुसारण हुवौ छै।—नैणसी
३ पीछा।
उ०—बेटौ ऊमरकोट परणीजण मेलियौ थौ सु साथ सोह बेटा सायै मेलियौ थौ। ग्राप छडवडै हीज साथ थौ, सु रावळ हेरौ करायौ।—नैणसी
४ गुप्तचरी, जासूसी।
उ०—ताहरा नरै ग्रापरै प्रोहित नू कह्यौ—तू जौ एक बात करै तौ ग्रापा पोकरण ल्या। ताहरा प्रोहित कहियौ—हू हेरौ करीस।
—नैणसी

५ खबर, सन्देशा।
उ०—हिव सूमरै हेरा हुवइ, मारू भूवणहार। पिंगळ बोळावा दिया, सोहड सौ असवार।—ढो मा
६ जासूस, गुप्तचर, भेदिया।
उ०—१ रावत भीवो बीजा ही असवार ४०० भेळा हुई ग्राया। कटक नु हेरा लगाया। हेरै कहायौ घात छै।—नैणसी
उ०—२ ग्रठै एक क्तार रेसम सौ भरी ग्राय घाटी उतरीया, च्यार पहर रात खडीया थाका ग्राय उतरीया। सु मोढा रौ हेरौ वासै ग्रावै छै।—बरसै तिलोकसी री वात
उ०—३ ग्रठै पठाणा रो हेरौ ग्रायौ हुतौ, तिको पाछौ गयौ। जाय कहीयौ—'दिन उगता ताई साथ कोई नही। ग्रादमी २०० तथा ३०० छै।—राजा नरसिंघ री वात
७ दूत, सदेश वाहक।
उ०—नै रात पोहर एक गई तद नकोदर हेरै नू मळकी खनै मलियो जू नवे लेण नू गाया है। पीछै हेरै जाय मळकी नू कयौ।
—द दा
८ ढूंढने वाला, खोजने या तलाश करने वाला।
उ०—साह तणा हेरा सगळाई, ऊपर रयण जरा मिळ ग्राई। दिस दिक्खरण 'दुरगौ' वरदाई, कमध खडता सोच न काई।
—रा रू

रू भे—हेरउ।

हेळ, हेल-स पु [स हेलन] १ क्रीडा, खेल, तमाशा।
उ०—दिली तखत दइवाण, हेल माही करि हिंम्मति। ऊथळ पथळ ग्रनेक, पात जिम किया ग्रसप्पति।—सू प्र
२ खलबली, हलचल।
उ०—खेडधणी सिरि खीजिया, हुई मुगल्ला हेल। ज्यौं गज वारि विहारता, वीचै वारिज वेल।—रा रू
३ अपराध, गल्ती, भूल।
उ०—खाली कदै न जाणीयै, ग्रापा ऊपरि खेल। हरीया ग्रापा बाहिरौ' जोयज होसी हेल।—ग्रनुभववाणी।
४ ग्रनिष्ठ, बुरा।
उ०—हरीया पैडा भगति का, ग्रधर इणी का खेल। उलटि पडै तौ ऊबरै, नही तौ होसी हेल।—ग्रनुभववाणी
५ उमग, उत्साह, जोश।
उ०—समु ग्यान मै वहीर रौ प्रमाद भाग पायौ सता, जहानवी नीर रौ क सापडैबौ जहान। डोरी ब्रज कुज कासमीर रौ क ग्राज दीठौ, वीरमदै हेळ मै हमीर री बदन।—साहिबो सुरताणियौ
६ लहर, तरग, हिलौर।
उ०—हेळा ग्रगस्त सथ ज्यु हेकै हाल हुत हीलोळीया, धीस खगा हेकै ज्यू बोळीया नाग वीग। सुरापती हेक बज्र रोळीया पाहाड सारा, सारा खळा हेकै ऊतोळीया चाद सीग।—हुकमीचद खिडियौ

७ सागर, सागर।
८ [illegible] [illegible], [illegible]।
९ आक्रमण, [illegible], [illegible]।
उ० [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] हेत। [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]
उ० [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] री हेत। जी [illegible] [illegible] बाईसा री करीजे जोर। [illegible]
१० [illegible] जोर, घनिष्ठता।
११ [illegible], [illegible], [illegible]।
उ०- [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], बीजी तीजी हेत। [illegible]
वि १ समान, तुल्य, बराबर।
उ० [illegible] [illegible] [illegible] हेत। [illegible] 'जीत' [illegible] सेत। [illegible]
२ सहज, आसान।
उ० १ सुभ हेत [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] नाथ [illegible] रहै, हेत [illegible] [illegible]। र ज प्र.
उ० २ 'जगा' [illegible] राज सागर जग जाणियौ, [illegible] [illegible] हेत [illegible]। '[illegible]' [illegible] [illegible] [illegible], सूरजमल [illegible] [illegible]। महाराणा [illegible] री गीत
उ०—३ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] बोध भाळी। [illegible] [illegible] बोलबौ हेळ बीजा 'आजा', बेळ [illegible] [illegible] उदयवाळी।— र ज प्र
३ किंचित, थोड़ा।
४ नगण्य।
उ० हू कहू हू कहू करै भाळा टेढा कांय हालौ, मिरेखा री माडा टेढा करै दीनानाथ। मेवनी आकारा बीच काल तणा ढाळा माहै, हेळ मात्र मदी काया साढै तीन हाथ।— ओपी आढौ
५ जिसमे लगे हो, लहरदार।
६ देखो 'हीत' (रू भे)
हेलड, हेलउ—देखो 'हेली' (रू. भे)
उ०—१ अवसर आयइ नवि सभारइ, केम थवौदधि हेलइ वारइ। —वि कु
उ०—२ सज्जणिया वउळाइ कइ, मदिर वइठी आइ। मदिर काळउ नाग जिउ, हेलउ दै दै खाइ।—ढो मा
हेळणौ, हेळबौ— १ देखो 'हिळणौ, हिळबौ' (रू भे)
उ०—काची कळी न हेळियै, गुणै न रीभवियोह। हेली थारौ करहलौ, गहमाती गमियोह।—जलाल बूबना री बात
२ देखो 'हिळाणौ, हिळाबौ' (रू भे)
हेलन—स पु—१ दोष, अपराध, कसूर, भूल।
२ पाप।

हेळमेळ स पु १ [illegible], दोस्ती।
२ [illegible]।
हेळवणौ, हेळवबौ देखो 'हिळाणौ, हिळाबौ' (रू भे)
उ० १ [illegible] हेळवी [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। —[illegible] [illegible]
उ० २ [illegible] हेळवी [illegible] री [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] टाळा। [illegible] '[illegible]' [illegible] '[illegible]' [illegible], [illegible] [illegible] रही 'गजन' वाळा। —नरहरदास बारहठ
उ० ३ हेळवी '[illegible]' री करी [illegible]। 'जगा' [illegible] रही वाट जोती। —नरहरदास बारहठ
२ देखो 'हिळाणौ, हिळाबौ' (रू भे)
हेळवियोड़ौ १ देखो 'हिळायोड़ौ' (रू भे)
२ देखो 'हिळ[illegible]' (रू भे)
([illegible])
हेळहमीर, हेळांहमीर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]।
उ० १ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] आगि अखूट। [illegible] आगि [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] हेलहमीर। [illegible]
उ० २ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] हमीर। आपसा 'बदू' 'दुरग' [illegible] [illegible], [illegible] '[illegible]' हेलहमीर। —कुशजी आसियौ
हेळा, हेला स स्त्री [स हेला, हेल] १ पुकार, आवाज, धूम। (ना मा)
उ० १ सबळ दळ आरिद्रा [illegible] [illegible], बाजता [illegible] कहर वेळा। 'पतौ' [illegible] [illegible] [illegible], हुवौ दळ छिणिया छक हेळा। —जुगतीदान दधी
उ० २ सबल दान बहुमान [illegible] [illegible] [illegible], हेळा हयवर फोडि जोडि [illegible] [illegible] [illegible]। —ध स
२ तरग, लहर, उमग।
उ० १ हेळा 'अमणी' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हीलोळिया, धीग [illegible] [illegible] [illegible] बीळिया [illegible] [illegible]। सूरजरी [illegible] [illegible] रोळिया पहाड सारा, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। —हुकमीचद खिड़ियौ
उ०—२ हेळा उदार [illegible] हुवी, [illegible] [illegible] रै। —व भा
३ क्रीड़ा, खेल।
उ०—राज [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] विवाद। हेली परवल [illegible] [illegible] रचि जयवाद। —प्राचीन फागु सग्रह
४ नायक से मिलते समय नायिका की विनोद सूचक प्रेमपूर्ण क्रीडा की मुद्रा।
५ कुल।
उ०—सूकी रोजरा री हेळा उरहाई, मैंदी देवरा री बेळा मुरभाई। खावरा हूवौ धन ऊरा मन खूरौ, धामरा तामरा बिन जामरा सिर

धूएौं ।—ऊ का

६ चित्लाहट, हल्ला ।

७ चढाई ।

८ धावा, हमला, ग्राक्रमण ।

९ डाट-फटकार ।

१० कठिनाई ।

११ हीन भावना, तिरस्कार, अपमान ।

१२ सरलता, भोलापन ।

उ०—हेला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रग्या व्रहस्पति तणी, प्रतिग्या फरसराम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दान बलि तणउ, ग्रवस्टभ मेरुतणउ ।—व स

क्रि वि—सरलता से, सुगमता से, ग्रासानी से, सहज ही ।

उ०—१ सारग चाप चडाविय डाविय वाहु नइ प्राणि । हरि हेला ही डोलिय तोलिय तसु बलु प्राणि ।—जयसेखर सूरि

उ०—२ तुरगमि चडिउ, लोकि तरवरिउ, सत्तरि सहस्स गुजरातनु धणी, जुनुगढ चापानेर प्रमुख विसमगढ लीधा, मन वछित काज हेला सीधा, सघला राजा ग्राण मनाव्या । ।—व स

वि—१ दानी, दातार ।

उ०—१ देवाव्रत लिछमण जग दाता, हेळा 'करण' विनाय हुवौ । भिडजा भडा चारणा भाटा, मुहगा वरतणहार मुवौ ।—वा दा

उ०—२ हेला भगवान भोज कन हाता, दान करण कव हरण दुख । छत्रधर कवर ग्रान नह छाजै, राज कवार जवान रुख ।

—जवानजी ग्राढौ

२ काम का पाबन्द ।

३ मैला उठाने वाला ।

हेलारिया—देखो 'हिलारिया' (रू भे)

हेलि—देखो 'हेली' (रू भे)

उ०—१ भारि ग्रढारै वन भरिउ, राभलि नागरवेलि । ग्रलगी रहि ग्ररडि तु, चपि चढी दिइ हेलि ।—मा का प्र

उ०—२ हेलि भणि सुणि रे हरया, माहरू कीवउ जोई । कलि चपावउ जै समइ, सुद्धि न जाणइ कोई ।—मा का प्र

उ०—३ कालि मेलावसि कामिनी, हीइ म हारिसि हेलि । तू तनया ग्रम्ह ग्राज थी, माधव माहरी वेलि ।—मा का प्र

उ०—४ हेलि बधावइ हीचका, सुरतरु केरी साख । माधव साथि हीचसिउ, लीला लटकइ लाख ।—मा का प्र

हेळियोडौ—१ देखो 'हिळियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'हिळायोडौ' (रू भे)

(स्त्री हेळियोडी)

हेली—स स्त्री [स सहकेलि] १ सखी, सहेली ।

उ०—१ सखी ग्रमीणौ साहिबौ, सूर धीर समरत्थ । जुध मे वामण ज्यू जिम, हेली बाधै हत्थ ।—बा दा

उ०—२ हे हेली पती रा प्राक्रम री इचरज जैडी वात है थनै काही कहू तौ ग्रौ पौरस देख वलिहारी जाऊ ।—वी स टी

उ०—३ हेली थारी करहलौ, मोही विलगौ बार । कै काटा री बाड कर, कै घर वाधो चार ।—ग्रग्यात

२ देखो 'हवेली' (रू भे)

उ०—१ नगरवाला ग्रापरी हेली मे मा'रजा री बेटी री जानने एक जीमणवार देवणरौ जोस देखाळचौ ।—दसदोख

उ०—२ गबकै तौ बै लटी कतारा, ग्रब लूटैगौ हेली । ग्रामामी ठस पडगी, होगी रुपिया की थेली ।—डूगजी जवारजी री छावली

रू भे—हेलि ।

हेलु, हेलू—देखो 'हेलौ' (रू भे)

उ०—दूतै कठ झैळू, थयौ दुहेळू, ग्रज्जा मेळू, ग्रत वेळू । करतै पुत्र हेलू नाम कहेलू, सब क्रमठेलू, छू टेलू ।—भगतमाळ

हेलूर—स पु—घोडो का समूह ।

हेलूसणौ, हेलूसबौ—देखो 'हुलसणौ, हुलसबौ' (रू भे)

उ०—सात मैं पाताळ बासग नागरै माथै टपूकडा खाइ नै रहिया छै । त्यागी सौरभ री वास्तै तेत्रीस कोडि देवता सरग सू हेलूस नै उतरै छै देवासुरा रा विवाण हिलोरव खाइ नै रहिग्रा छै ।

—रा सा स

हेलूसियोडौ—देखो 'हुलसियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हेलूसियोडी)

हेलौ—स पु—१ सहायतार्थ किसी को बुलाने के लिये दी जाने वाली ग्रावाज, दर्द भरी पुकार, ग्रार्त्त-पुकार ।

उ०—१ वीस भुजाळ स्यायक पाता वळ, हुवै हाजर सुण हेलौ ।

—जसकरण जी लाळस

उ०—२ लाळापै पागडै लागा, खोस खोस पैला धन खाय । हू कगाळ करू तौ हेलौ, दुरबळ भगत न ग्राऊ दाय ।—टीकमदास

उ०—३ वरणीतळ व्याकुळ छेलो सिर धुणियौ, सरणागत वच्छळ हेलौ नह सुणियौ । लिछमी बर छानू कानू लै लीनू, दीनन बधू हुय दीनन दुख दीनू ।—ऊ का

२ किसी को कुछ कहने या सम्बोधन करने के लिये दी जाने वाली ग्रावाज, पुकार, सम्बोधन ।

उ०—१ तिण सगत सीहजी मार राणाजी नै हेलौ पाड कह्यौ धोडो तीना पगा है तद देख जीण उतारता ही घोडौ छूटौ राणैजी महा विलाप कियौ ।—वी स टी

उ०—२ मा रै मूडै ग्रौ नाव म्हारै काना इमरत ज्यू लागतौ । हेलौ मारता उणरौ गळौ माखण सू भरयौ ज्यू लखावतौ ।

—फुलवाडी

उ०—३ जद स्वामीजी बोल्या रे मूरख हेलौ पाड्या पिण पाछौ बोलै नही । वणीरामजी स्वामी नरमाइ करनै बोल्या महाराज मैं सुणियौ नही ।—भि द्र

३ [illegible] आसान [illegible], [illegible] ।

उ० १ [illegible] 'कूनामी' [illegible] ।

[illegible]

उ० २ [illegible] ।

[illegible]

४ [illegible], [illegible] ।

उ० [illegible] (भारत) [illegible] ।

५ [illegible] ।

उ० [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ।

[illegible]

५ [illegible] (स्वर) [illegible] १६, [illegible] १४-१४ [illegible] १० [illegible] लघु होकर [illegible] जाता है ।

उ० [illegible] चबदै [illegible], [illegible] । [illegible] लघु [illegible], ठीक [illegible] । [illegible] पद तीन [illegible], [illegible] । [illegible], गीत [illegible] । रा रू

रू भे हेताव, हेताउ, हेतु, हेलू ।

हेलथ-रा स्त्री [अ] तन्दुरुस्ती, स्वास्थ्य ।

हेवस देखो 'हवस' (रू भे)

हेव क्रि वि [रा. एव] १ अब, वस्तुत ।

उ०—१ जगपति हउं जि मनाविसु भाव सुहावउ हेव । राणीय रखाणीय देवर देव रखइ तुज्झ सेव । जयशेखर सूरि

उ०—२ सूवया नव नव [illegible] सालणा, सूवया [illegible] धागा । सूकी माडी [illegible] भव, सूकी खीर [illegible] हेव ।

हीराणंद सूरि

उ०—३ हाय रतन आयो छै हेव रे, काच तणी पाच नही परखेव रे ।—ध व ग्र

२ स्वीकृति, सूचक शब्द, हाँ ।

हेवन वि अति, बहुत ?

उ०—जमानी उण वरस चोखी पाकयोडो ही । माग सू उगमणा आयोडा डूगर नीला हुवन व्हैग्या हा अरवारै ढाळ मैं आयोडा कोसा लांबा खेत, इसा लागता हा जाणै हरियल जाजम बिछियोडी व्है ।—अमरचूनडी

हेवा [illegible], [illegible], [illegible] ।

उ० १ [illegible] ।

फुलवाडी

उ० २ [illegible] ।

फुलवाडी

उ० ३ [illegible] हेवा [illegible] । [illegible] हेवा [illegible] ।

[illegible]

[illegible], [illegible] ।

उ० [illegible] हेवा [illegible] ।

फुलवाडी

हेवै [illegible] [illegible], [illegible] १ [illegible], [illegible]

उ० १ [illegible] हेवै [illegible] । [illegible]

उ० २ हेवै [illegible], [illegible] । [illegible] ।

रा रू

उ० ३ [illegible] । हेवै [illegible] । [illegible]

४ [illegible] ।

उ० [illegible] हेवै [illegible] ।

रा रू

२ [illegible] ।

३ [illegible], [illegible] ।

क्रि वि अब ।

उ० [illegible] ऐवै [illegible] । [illegible]

रू भे हेव, हैव, हैवै ।

हेवैपत हेवैपति रा पु बादशाह, सम्राट

उ०—१ [illegible], अबदुल्ला खां आग । हेवैपत आया हुवै, [illegible] । रा रू

उ०—२ बै [illegible], औरंगसाह [illegible] । हेवैपति भेळा हुवा, जुध मडण जगजाळ । वचनिका

रू भे हैवेपत, हैवेपति, हेवैपत, हैवैपति ।

हेवैपुर—रा पु—दिल्ली नगर का नाम ।

उ०—ससनाथ साय भागो सुणी' दिल्लीनाथ वहल्लियो । करि एम

फतै पहली कुवर, हेवैपुर सिर हल्लियौ ।—रा रू
रू भे—हैवेपुर ।

हेसमी—स पु—एक प्रकार का व्यजन विशेष ।
उ०—दहीथरा तिलसाकली फीणा वरमोदा, साकरीग्रा चणा, कोहलापाक, दूधपाक, सेलडीपाक, खरगा पाजा, जलेबी **हेसमी** वारू पडसूदी तगा ग्राछा माडा ।—व स

हेसा—स स्त्री—हिनहिनाने की ध्वनि आवाज, हीस ।

हेसारी—वि—हिमार प्रदेश का ।
उ०—गुजराती, मुरनी, खभाइची, भुजनगरी, **हेसारी**, उज्जीण रा, बणिया वर्ण सीसूरा, पीतल लोह दान रा जडिया ।—रा सा स

हेसियत—देखो 'हैसियत' (रू भे)

हेहेकार—देखो 'हाहाकार' (रू भे)
उ०—**हेहेकार** पुकार हुइ, राम राम भणि राम । घणू कहर नीतो घडी, जहर लहर विधि जाम ।—वचनिका

हे—अव्यय—१ एक अव्यय शब्द जो आश्चर्य, भय, हतप्रभ होने की दशा मे मुह से अनायास ही उच्चरित होता है ।
२ किसी बात पर असहमति या इन्कारी सूचक अव्यय ।
३ 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक बहुवचनीय रूप ।

हैंकप—देखो 'हेकप' (रू भे)
उ०—**हैंकप** हूग्रा नाग वासिक ईस ब्रह्मा रुप । मुख करै ऊचौ वेलि रै मिस देखि डरइ अकूप ।—प च चौ

हैंजम, हैंज्जम—देखो 'हेजम' (रू भे)
उ०—लै बनवास हराय महालछ, कप **हेज्जम** अरणपार कस । काटा हिव झालै किरमाळा, दस मिखाळा सीसदळा ।—र रू

हैंडबेग—स पु [अ] सफर या यात्रा मे सामान डाल कर ले जाने का थैला, हाथ मे रखने का थैला ।

हैंडल, हेंडिल—स पु [अ] १ साईकिल, मोटर आदि वाहनो या मशीनो को चलाने या सचालन करने का हत्था ।
२ किसी उपकरण का मुठिया या दस्ता ।

हैंदू—देखो 'हिंदू' (रू भे)
उ०—हरीया अपनै ख्याल मैं, खलक फिरै खुसियाळ । होसी खालिक बाहिरो, हेदू तुरक बेहाळ ।—अनुभववाणी

हैबर, हैवर—देखो 'हयवर' (रू भे)
उ०—१ सक चोवनउ सौ सोम, हाकि सका बिण **हैंबर** । पाणी पथ लग पूगी, वणी बणियौ ग्रारज धर ।—व मा
उ०—२ दिग्रा वधारा देस दै, **हैंवर** द्रव्व हसत्ति । पतिसाही था ऊपरा, यू कहिग्रौ असपत्ति ।—वचनिका
उ०—३ मच धामधूम सर सेल मार, पड नाम ग्रास ग्राठू पुकार । दिन लाख घटै हेवर दरवक, जवनान पटै निस दिवस जक्क ।
—रा रू

हेसत—देखो 'हैसियत' (रू भे)
उ०—छोट् मारजा एक मामुली **हैसत** रा नौकरियौ मिनख ग्रापरौ ग्राधौ धिकावै ।—दसदोख

हैंसु, हसू—देखो 'हीसू' (रू भे)

हसौ—देखो 'हिस्सो' (रू भे)
उ०—१ हाम काम लोचणी उलाळी ग्राकास जावै । चावळ री चौथौ **हेसौ** खावै ।—रा सा स
उ०—२ रावजी रौ चाकर कोई गिगर हुकम न राखै । माहाजन पाछौ ग्रावै तिण रौ धान गडीयौ छ, तिण रौ **हेंसौ** ३ रावळै **हैसौ** १ धान रौ धणीया रौ छै ।—नैणसी
उ०—३ टकसाळ ब्याज म हेसौ ८, मुदत उप्रत हुवा **हेंसौ** ८ निग रा रु० २०००) री ठोड ।—नैणसी

हे—स पु—जल, पानी । (ना डि को)
क्रि—१ 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एक वचन रूप ।
उ०—१ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कै पाव । सयणै घाटा वउळिया, वइरि जु हूवा वाव ।—ढो मा
उ०—२ सूरा सकजा सापरसि, कलि म होय ग्रनेक । हरीया मन इद्री जिता, जुग मै हे कोई एक ।—ग्रनुभववाणी
२ देखो 'हय, (रू भे) (डि को)
उ०—१ ग्राछहियौ ईखवा साह दरगह सक्रबधी । है गै दळ हल्लिया, मिळै गणकळ ग्रनिमधी ।—रा रू
उ०—२ है थाटा विच हीडळ हाथी, छत्रपत जिसा चालिया चढै । 'गज-बध' तणा ग्रावता गढवा, गज-पत जडै किंवाड गढै ।
—किसनौ ग्राढौ
३ देखो 'हे' (रू भे)
उ०—ग्राहवी वेला कुहुनि न पडि मानुखनि भवि ग्रावी । है रे विधाता इम का पीडि उत्तम देहडी लावी ।—नळाख्यान
रू भे—हइ, हई ।

हेकड—स पु—१ योद्धा, वीर । २ शक्तिशाली, बलवान
३ दीर्घकाय, मोटा-ताजा ।
४ बडा अफीमची ।
५ ग्रश्व, घोडा ।
रू भे—हकड ।

हैकप—स पु—भय, डर, त्रास, ग्रातक ।
उ०—१ कसि वाक वाळा काढि वैराइया सिर बाढि । **हैकप** भौ महलार, त्या दीध द्रव्य तोखार ।—रा रू
उ०—२ धर सारी पडि धाक, पुरतुर गिर कीजै पहट । **हेकप** उर नागिंद्र हुग्र, चक च्यारू चढि चाक ।—वचनिका
वि—भयातुर, कपित, ग्रातकित ।
उ०—वाधै तूझ पवग 'लूणावत' घड ग्ररि भाजतौ घण घाय । वमस तैण **हैकप** थए धरती, निमध कध थरहरै निहाय ।
—गेहौ मीसण

२ रूभे — [illegible], हैकर, हैकणण।

[illegible]णौ, हैकवौ क्रि अ — [illegible], भयभीत होना, घबराना, भयातंकित होना।

उ० — १ हैकवै कूरड राजा [illegible] ज्यूं [illegible] [illegible]। आगो मार [illegible] राजा [illegible] ज्यूं [illegible]। — [illegible]

उ० — २ [illegible] गाता [illegible] पाछो [illegible], [illegible] राधा सार [illegible] आयाम। हैकवै [illegible] पोम [illegible] वीरमा [illegible], [illegible] रूप [illegible] [illegible] भायु।

— बादरदान दधवाड़ियौ

[illegible] होना, घबराना

उ० — [illegible] हैकविया, [illegible] पाळ [illegible] पाळ। [illegible] जनत हैकविया, [illegible] जळ। — [illegible]

[illegible]पियोड़ौ — भू का कृ १ डरा हुआ, भयभीत हुआ हुआ, घबराया हुआ, आतंकित हुआ हुआ २ [illegible] हुआ हुआ, घबराया हुआ। (स्त्री हैकपियोड़ी)

[illegible] — देखो 'हैकंप' (रू भे)

उ० — [illegible] हैकंपरण, उलट [illegible] [illegible] उथळ। [illegible] मयो-[illegible] [illegible], [illegible] महान। — [illegible]

[illegible]ळ, हैकल स पु — घोड़े के गले में पहनाया जाने वाला एक गहना।

वि — तोल में कुछ ज्यादा, अधिक।

[illegible]र स पु — हाहाकार।

उ० — सहसा दौ हल लेता [illegible], चिड़ लोके हैकार सबै। बीता पहर च्यारि खाग बहसा, रावत पड़ै न सकै रिवै।

— जगतसिंह रागतावत

[illegible]रव — स पु — शब्द, आवाज।

उ० — आगेवाणी सीगड़िया लगी सूंसणी, पछै नागी फारक लागी पलाति। तठौ हुरसी घट सीत्कार करती, पाखरियानी सूंसणी हैकारव गेलहसी। पच सबद सागा निरघोरा, अमला उच्छाड रणसूरी बाजइ। — रा सा स

[illegible]ळ, हैगेम स पु — घोड़ों का समूह, अश्ववरा, घुड़सेना।

उ० — हुगणाक हीस हैगाम हय जय कराणकं बदिजरा। — व भा

[illegible]ग्रीव — देखो 'हयग्रीव' (रू भे)

उ० — ऋखभ कपिळ हैग्रीव विसभर, दत्तात्रेय हरा दामोदर। राव बैकुंठ धनतर रिखभ, गरुडारूढ विसान प्रराणीगभ। — ह र

[illegible]ड़ौ — सर्व — ऐसा।

उ० — हैडौ सैर सीकारि मैं सुधा रौ नाम कीना। हाथू हाथि साबक नै रुपैया करि दीना। — शि व

[illegible]ज — स पु [अ] १ स्त्री का मासिक धर्म।

उ० — खाग कठौ कू देख कै, धड़ धड़ी खावै। औरत कै हैज कै लोही सू तमाळ आवै। — दुरगादत्त बाहरठ

२ देखो 'हेज' (रू भे)

हैजम स पु — १ सैन्य दल, सेना, फौज।

उ० — १ [illegible] हैजम [illegible], [illegible]। [illegible] मझ-[illegible], [illegible]। — सू प्र

उ० — २ [illegible] हैजम [illegible]। [illegible] वाली रा [illegible]

— पि सं

२ [illegible]। (डि को)

३ दल, समूह।

४ [illegible]। (डि को)

रू भे — हैजाम, हैजम, हैज्जम, हैज्जाम।

हैजमप, हैजमपत, हैजमपति स पु — सेनापति, सेनानायक।

हैजौ स पु [अ हैज] आम पानी की मौसम में होने वाला एक घातक रोग जिसके कारण रोगी को के व दस्त अत्यधिक मात्रा में होने लगते हैं। यह अत्यन्त घातक एवं संक्रामक रोग होता है, विसूचिका।

उ० — [illegible] मैं हैजा रो [illegible] [illegible] के [illegible] मालिकां री [illegible] [illegible] गया। — [illegible]

हैज्जम — देखो 'हैजम' (रू भे)

हैट स पु [अ] १ एक प्रकार की अंग्रेजी टोप।

२ देखो 'हेट' (रू भे)

हैटलौ वि [रा हेटली] नीचे वाला।

१ निम्न, दबा हुआ, शोषित।

उ० — पता घुजकाई रो कोई [illegible] कोई [illegible]। समाज रै हैटलै तबकै रै [illegible] री [illegible] किसी ही अर फीकार रचीजती [illegible]। — [illegible]

२ देखो 'हेटी' (रू भे)

३ देखो 'हेटलौ' (रू भे)

हैठ — देखो 'हेठ' (रू भे)

हैठै, हैठं — देखो 'हेठै' (रू भे)

उ० — १ [illegible] सू [illegible] ने आवौ हैठै आयौ नै छत्री रो [illegible] [illegible] आयौ।

— [illegible] री बात

उ० — २ [illegible] री [illegible] रै हुवाले करघा तथा डागळै री पैड्या रा हैठै ऊतरघा। — [illegible]

उ० — ३ अरसिंह दल भी साथ ही हैठै [illegible] खेतह [illegible] महा-प्रळग री महानद री आशा धरी। — व भा

हैड — देखो 'हेड' (रू भे)

हैडड, हैडई — देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ० — पावस बरराइ पराजई, नयणै वाली नीर। हैडड गाळड हु वीऊ, ढीलू करवा [illegible]। — मा कां प्र

हैडउ — देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ० — क्षण राता क्षण पीअरा, क्षण नीला क्षण रोत। चोली

चरणा पालटइ, हैडउ पूछी हेत ।—मा का प्र

हैडर-स पु —सुरक्षित घास का मैदान ।

उ०—बीकमपुर कनै लूडी री हैडर कहीजै है। ऊ विक्रमादित्य गाया, भैसा, साढा, छाळिया रा भिळायी ।—बा दा ख्यात

हैडु, हैडौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—१ नीसासइ नीठइ नही, सासतणउ ऊसास । फाटक नही फिटकारीउ, हैडु धरतू आस ।—मा का प्र

उ०—२ तीव्र स्वर तिमरी करइ, भरइ वाहुला वाद। स्रावण तउ परिण माहरइ, हैडा भीतरि दाह ।—मा का प्र

हैणौ, हेबौ—देखो 'होणौ, होवौ' (रू भे)

हैतारत, हैतारथ—देखो 'हितारथ' (रू भे)

उ०—आप मरत मरण न दहं, हर हैतारत तडै सही। एह धरम विस्णोइया तणौ, विस्ण भक्त 'उधौ' कही ।—वि स सा

हैताळ-स स्त्री—१ घोडे के सुमो की ठोकर ।

उ०—मेवास तूटगा मगज मेट । फूटगा गिरद हैताळ फेट ।
—वि स

२ देखो 'हेताळु' (रू भे)

हैथड, हैथट, हैथट्ट, हैथाट-स पु —१ अश्व दल, अश्वारोही-दल, घुडसेना ।

उ०—१ वेरहती गजा हैथाट लागा अटल, रीठ वागा खगा दुवै राहा । जोध 'जसराज' पूगौ भलौ जूजवौ, सेल रोळै दुहू पातिसाहा ।
—महाराजा जसवतसिंह रौ गीत

उ०—२ हिलै सप हैथाट, चलै वाना बहरगी, इळ जळनिध उल्लटै, जाण बडवानळ सगी ।—रा रू

उ०—३ हैथाटा वीच हीडळै हाथी, चक्रवत जिम चालिया चढै । 'गजबध' तणा आवता गढवा, गढपत जडै किवाड गढै ।
—किसनौ आढौ

२ सेना, फौज । (ह ना मा)

हैवर-स पु —दीवारो मे लगाये जाने वाले बडे व भारी पत्थर ।

हैवरा-वादी-सिधी-स पु —एक प्रकार का मुसलमानी सैनिक दल जो रुपयो के लोभ से युद्ध करता था । यह दल मीरखा पीडारी के पास था ।

हैदळ—देखो 'हयदल' (रू भे)

उ०—१ त्रेपन तुड कछवाह, साख साखरा सुभट्टा । हैदळ पैदल मिळ, यवन हिंदु गज थट्टा ।—ला रा

उ०—२ हैदळ कळळ पाथदळ हूकळ, सीसीदै खडतै सनढ । गहकै ही बीजागढ पतिया, गजै अगजी त्रिकूट गढ ।
—महाराणा लाखा रौ रीत

हैप, हैफ-स पु [अ] १ आश्चर्य, विस्मय, ताअज्जुब ।

उ०—१ 'पातल' वरस पिचतरा, सतरा नृपत 'सुमेर'। जुडिया जाता जरमणा, हैप हुवै बळ हेर ।—किसोरदान बारहठ

उ०—२ जोजै हठमल जेम, करै कुण नेम करग्गे । सिर पडिया साभियौ, खेफ विळ हैफ खडग्गै ।—रा रू

२ अफसोस, खेद ।

रू भे—हैप, हेफ ।

हैबर, हैवर—देखो 'हयवर' (रू भे) (डिं को)

हैबौ स पु —हल्ला, शोर ।

उ०—तरै आप नै पोरस हुवौ । आप हकारिआ । सखरा राजपूत नू वाढिओ । तरै महा हैबौ हुओ । महा वेढ हुई ।
—कल्याणसिंध वाढेल नगराजोत री वात

हैमत-स पु —१ घोडे द्वारा पानी मे मुख रखकर नासिका से किया जाने वाला शब्द ।

२ देखो 'हेमत' (रू भे)

हैमर—देखो 'हयवर' (रू भे,) (ह ना मा)

उ०—उभै सहस अठसठ धुज ऊतग, वीस सहस हैमर धुज वैछग ।
—सू प्र

उ०—२ होमिया नाग 'अजा' नर हैमर, गढपतीयै होमिया गयद । 'करण' तणा जेम होम न कीधा, कूटा चहूएँ तणा कुरद ।
—राणा जगतसिंह रौ गीत

हैमवत-वि [स हेमवत्] १ बर्फ के समान, हिम जसा ।

२ हिमालय जैसा, हिमालय के समान ।

३ हिमालय का, हिमालय, सम्बन्धी ।

४ हिमालय पर होने वाला ।

५ देखो 'हिमवत' (रू भे)

हैमवती—देखो 'हेमवती' (रू भे)

हैमार—देखो 'हमार' (रू भे.)

उ०—कतराक दीहाडा गिऐ सेणा हुआ । तरै वचारिओज हैमार एहडौ सतुक नही जौ आटौ लीजै । पण कमाय खाणौ, पछै रामजी भली करसी ।—करयाणसिंह वाढेल नगराजोत री बात

हैमाळ, हेमाळौ— देखो 'हिमाळय' (रू भे)

हेमुख-स पु]स हयमुख[१ बडवानल का एक नाम । यह और्व ऋषि का क्रोध रूपी तेज जो बडवानल के रूप मे समुद्र मे स्थिति माना गया है।

२ हयग्रीव ।

उ०—हरणाकस्यप हैमुख हरणायख, खावा नै फिर खासी । तौ पण भूख न गी तिण तावौ, बाबौ खाय उबासी ।—र ज प्र

हैय— १ देखो 'हे' (रू भे)

उ०—१ हैय देवह हेय दैवह, दुट्ठ परिणामु । पिग पचह पेखता, द्रुपद धीय कड्डिचीर कड्डीय ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ हैय देव कुण दुरमति दीधी । एउ ओलग अह्मे काई लीधी ।—सालिसूरि

हैये, हैयै—१ देखो 'हैहय' (रू भे)

२ देखो 'हिरणी' (रू भे)

उ० [illegible] जैसे [illegible]

[illegible]

देखो 'हैरत' (रू भे) (श्र मा)

[illegible] १ [illegible]

२ देखो 'हैर' (रू भे)

[illegible], हैरान [illegible] [श्र हैरान] १ परेशान, [illegible]

उ० १ [illegible]

[illegible]

[illegible] हैरान [illegible]

उ० २ [illegible] हैरान । अनुभव वांणी

उ० ३ [illegible]

[illegible]

[illegible]

उ० ४ [illegible] हैरान [illegible]

[illegible]

[illegible]

२ निराश, हताश, भ्रांत ।

उ० १ [illegible] बीरमदे [illegible]

[illegible] फिर-फिर नै हैरान व्हैग्या । अमरत्नाडी

उ० २ [illegible] ती गुडै नीचे । पुलिस मार-मार नै हैरान व्हैगी । अमरचूनडी

३ आश्चर्य चकित, निस्तब्ध, हक्का-बक्का, विस्मित ।

उ०—१ मरफदीन आगोळाई ऊतरीयो । रा० बीठलदास अजायब-कारी दरबार जैमल बठी थी । तठै आय ऊभी रह्यो, पण लागो । जैमल देख नै हैरान हुवो । नैणसी

उ० -२ दूजै दिन बीरबल री सोरम रा भाऊ [illegible] मार नगराळा फूटण लागी । लोग-बाग देखता जको ई हैरान । ओडो अनूठो रूप ती आज पैली कोई देख्यो ई नी । फुलवाडी

रू भे— हयरांन, हुरान, हेरान ।

[illegible]नी-स स्त्री [श्र हैरानी] १ परेसानी, अशान्ति, कष्ट, दुख, तकलीफ ।

उ०—जेठ री महीणो, थान री कोरा नेहै, पग बळ जासी, घणी हैरानी हुयसी, पण महाराज री परची ती पूरी करणी ही पडसी ।
—वसवोन

२ निराशा, थकान ।

३ आश्चर्य, विस्मय ।

[illegible]व—देखो 'हयवर' । (डि को)

उ०—प्रथम बगसि सिरपाव, जमदढ खग जवहरत जड़ित । हाथी [illegible] हैराव, [illegible]

हैवत [illegible] [illegible], [illegible] ।

हैव [illegible] १ [illegible] ।

उ० [illegible]

[illegible]

[illegible]

२ देखो 'हैव' (रू भे)

उ० हैवह [illegible]

[illegible]

[illegible] री गीत

हैवर, हैवरो देखो 'हयवर' (रू भे)

([illegible])

उ० १ [illegible] हैवरी

[illegible]

उ० २ [illegible] हैवरी [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] री गीत

हैवांन स पु [श्र हैवान] १ पशु, जानवर, चौपाया ।

उ० १ [illegible] हैवानां [illegible]

[illegible]

उ० २ हैवांन [illegible] दादूबांणी

२ उज्जड, असभ्य या गंवार व्यक्ति ।

हैवानी स स्त्री [श्र हैवानी] १ 'हैवान' होने की अवस्था या भाव ।

२ पशुत्व ।

३ उज्जडपन, असभ्यता ।

वि पशुओं का, पशु संबंधी ।

हैवे- देखो 'हवै' (रू भे)

हैवेपत, हैवेपति देखो 'हैवैपति' (रू भे)

हैवेपुर देखो 'हैवपुर' (रू भे)

हैवेराइ, हैवेराज, हैवेराय देखो 'हैवैपति' ।

हैवै देखो 'हैव' (रू भे)

उ० १ धरिणी अणी मुहार गिरधारी, हैवै बळ हेडवण हजारी । विपदां तणो गौड सिर बाधो, सारण मरण करण रण 'साधो' ।
—वचनिका

उ० २ दुल्लाह 'रयण' दुझाळ, सुरा पुरा जान साहि । हैवै घड दुलहणी हुई, धज तोरण गज ढाल । वचनिका

हैवैपत, हैवैपति, हैवैपती – देखो 'हैवैपति' (रू भे)

उ०—वै भाई बिरदाळ, ओरंगसाहि गुरादवै । वै भाई भेळा हुआ, जुध मडण जमजाळ ।—वचनिका

हैसलौ, हैसल्लौ—देखो 'होसलौ' (रू भे)
उ०—हुंग रथ पायक हैसल्ला, मिळिया दळ जोधा रिडमल्ला। महि मेडतै सभाळै मारू, मझि खडिया दिल्लीपुर सारू।
—रा रू

हैसाब, हैसाव—वि —१ उचित, ठीक।
उ०—ताहरा वीरमदे कहे—जोधपुर रा आवा वाडीस। ताहरा लोकै कह्यौ—आ आपनूं हेसाब नही। ताहरा छुरी लेनै काबडी वास्तै अम्बारी एक डाहळी वाढी।—नैणसी
२ देखो 'हिसाब' (रू भे)

हैसियत—स स्त्री [अ] १ शक्ति, सामर्थ्य, हौसला।
२ दशा, अवस्था, स्थिति, ढग।
३ आर्थिक स्थिति, वित्तीय अवस्था।
४ योग्यता, पात्रता।
५ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।
६ मूल्य, कीमत।
७ श्रेणी, दर्जा।
रू भे—हेसियत, हैसत।

हैसूडौ—देखो 'हीसू' (रू भे)

हैसौ—देखो 'हिम्सो' (रू भे)
उ०—चौकीदारा अटकळीयौ नही। (उण दीठौ) भली बात हुई। उपरा तौ उतरीयौ। म्हाहरौ हैसौ होसी।—चौबोली

हैहय—स पु [स] १ यदु से उत्पन्न एक क्षत्रिय वश।
२ सहस्त्र बाहु का एक नाम। (डि को)
रू भे—हैये, हैयै,

हैहयराज, हैहयाधिराज—स पु—हेहय वश मे उत्पन्न कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन।

है, है—अव्यय—खेद, शोक, दुख आदि की अवस्था मे मुह से उच्चरित होने वाला एक अव्यय शब्द, हाय।

हैहैकार—देखो 'हाहाकार' (रू भे)
उ०—राजा नु खबरि हुई। एकरण सहर का च्यारे सह भेळा हूवा। सारै ही हैहैकार हूवौ। राजा अन खाइ नही।—चौबोली

हैहैबोल—स पु—वीर ध्वनि।

हो—अव्यय—१ 'होना' क्रिया का सभाव्य रूप, होना।
२ देखो 'हौ' (रू भे)
रू भे—हुवा।

होपरडीह, होफॅरडीह—देखो 'हौफरडीह' (रू भे)

होस—१ देखो 'हूस' (रू भे)
उ०—१ जाणै साहिजादै रा ताइत, बभूत लगायोडा जोगीसा छै। तिण री होस माणजै छै। मधरौ-मधरौ खाचजै छै।
—रा सा स
उ०—२ दादू जैसा नाम था, तैसा लीया नाय। काती करस्या खेत ज्यू, होस रही मन माय।——दादूवाणी
२ देखो 'होस' (रू भे)
उ०—बडारण घणी बीरज दीवी ओर छाकरिया पवन करणै लागी होस करायौ। कुंवरसी साखला री वारता

होसलौ—देखो 'हौसलौ' (रू भे)
उ०—एक तौ उणा कन्हे फौज हजार बीस छै फेर मुलक जीत होसलौ बढ गयौ छै सौ लडिया पार पडै नही।
—गोपाळदास गौड री वारता

होसियौ—वि —कायर, डरपोक।
उ०—मूडग-चीन्हरा स मुकाबलौ हुवौ। आदमी दस-पद्रह मारिया। आदमी साठ-सत्तर घायल हुआ। घोडा बीस तीस घायल हुआ। होसियौ लोग यौ गौ नाठौ आयौ। सहर माही खबर हुई।—डाढाळा सूर री बात

होसौ—स पु—अशुभ माना जाने वाला एक प्रकार का बैल।
उ०—होसो धोरी हळ वैवै, कवळी दुजै गाय। कथ कहे रे बाळका, जडा मूळ सू जाय।—अग्यात

हो—स पु [स] पुकारने या सबोधन करने का शब्द।
उ०—१ वेगि वालि रथ हो अहुनडा, कउण सैन्य फिरइ कौरव बापुडा। ताम हस्ति मदिमातउ गाजइ, जाम केसरि निनाद न वाजइ।—सालिसूरि
उ०—२ बाप बाप हो। थारा गारभ पारभ लागि गढ लेयण हार, किना बाप बाप हो। थारा सत तेज अहकार, राइ दुग रायण हार।—अ वचनिका
अव्यय—१ हे, अरे, ओ।
उ०—तुझ रणागणि कारणि कउण हुउ, नृपति तेडी आगलि हू रहिउ। कहि कि द्रोण कि भीस्म कि करण कइ, समरि हो हिव लेडउ कइ मवइ।- सालिसूरि
२ देखो 'हौ' (रू भे)

होक—स स्त्री—१ सिंह की क्रोधपूर्ण दहाड।
२ हुक्का।
उ०—कूडी कूतकौ होक चीपियौ कमरकस उठ बूवौ रे। झोळी झडा और पीजरी, जिण माही एक सूवौ रे।—वि स सा

होकडौ—देखो 'होकौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—रीछलै तमाखू दामदै रोकडा। हेकड भूडा लगै हाथ मैं होकडा।—ऊ का

होकबौ—स पु—उत्सव, जळसा, समारोह, आयोजन।
उ०—१ असा चढण आखेट होकबा गोठ हगामा। प्रात नीत कथ पढण करण इसाफ सकामा।—केहर प्रकास
उ०—२ हगामा होकबा राग रग रा हमेस हुवै। अठी जानवाळी सोभा बणावै आजान।—बादरदान दधवाडियौ
वि—बाहुल्य, अधिक, प्राचुर्य।

उ० भाड़ मा सी दरीखाने आगी चाखिणी रहै पछै आवे, राज री होकलो चालतो रहै। —ठाकुर जोधसी री वारता

र देखो 'होकार' (रू भे)

उ० आणंदि सू गावतर, आग आग पणी घूं घूं। गोंवार होकळजो रोमानव, होकर करै [illegible]। —नेणसी

रणो, होकरवौ देखो 'होकरणी, होकरवौ' (रू भे)

उ० [illegible] मारवाड़ी, [illegible] पणी आवरे। मायां सोम री तौरां, पत्ती जाग रै गावरे। होकरसौ हूं पी साम [illegible], मा [illegible] डो आपीणो, ममर सोठा अपणार। साम धाम [illegible] 'जवार' सुत, भगत काम सगा सा री। भामोगो मा जोगो सहर, [illegible] बारह री। —नरसी [illegible]

रवियोड़ौ देखो 'होकरियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री होकरियोड़ी)

त्ताळ वि [illegible] पानी [illegible] दिया गया हो, आगी आदि या मसाले से बोहरकुल।

ग्वारी वि हुक्का पीने वाला, हुक्के का आदी।

उ० [illegible] हुक्का, पोवर सासी परलिया। अमलिया हेरा भारी प्रभग, होकाधारी हरलिया। —ऊ का

रू भे—हुकाधारी।

आपाणी, होकापानी स पु १ साथ-साथ उठने बैठने व मिलजुल कर खाने पीने की दशा या व्यवस्था या भाव।

२ हुक्का-पानी।

कार देखो 'होकार' (रू भे)

उ० हरि कीन्ही होकार, राग वैराग निवारै। रावी रेख गलेल, सेन गोह हय पसारै। —वि स सा

कारौ स पु—१ किसी को डराने, चौकाने, प्रताड़ने या सावधान करने के लिये मुंह से की जाने वाली कोई आवाज या शब्द।

उ० चडती सूर री सिकार पधारी छै। गेर धाउ वळिओ छै। होकारे होकारौ होय री रहिगो छै। —रा सा स

२ आवाज, शब्द, नाद।

उ० बहुलां री बारा पड़गा री लडबडाट हुय नै रह्यौ छै। होकारा हुमनै रह्या छै। —रा सा स

३ बैल, गाय आदि पशुओं को रोकने का संकेतात्मक शब्द।

उ०—सौ घोडी उछळती, लाहां भरती आवै छै, सौ जाणै आकास नृ ही ठोकरा मारती आवै छै। सौ चाकर आय उणरी भोगडी कन्है होकारौ कियौ। च्यारू पग घोडी इसा रोपिया जाणजै मेखां गाडी।—सूरै खीवै काधळोत री बात

४ घोडे की हिनहिनाहट, हींस।

उ०—खुरिया करता खुद, हुवै तुरिया होकारा। धिरया दुसमन घडा, तिकण वेळा तेजारा।—ऊ का

५ हुकार।

६ मौज, मस्ती, [illegible]।

७ [illegible], [illegible]।

८ देखो 'हुकारौ' (रू भे)

रू भे होकारौ।

होकौ स पु [अ हुक्का] धूम्रपान करने का एक प्रकार का उपकरण, जो पान के प्रकार की नाल का होता है।

उ० १ होकौ राज री राम रमौ ही, 'गै' हे बूगादार। सिराग सायगा म [illegible], रहै पैर भरौ सिरदार। —गो री

उ० २ [illegible] राग भजन रावै [illegible], उळझ आगरा होका गठै। एक सास मन पूर री [illegible] कोई महार मिळणु कठै। —ऊ का

उ० ३ [illegible] होको पीयण माफ [illegible] सिगरेटौ री पत्तारिया है, [illegible] होको पाण रमौ है। —द दा

२ [illegible] 'पासर' (मृत्युभोज) मे दिया जाने वाला [illegible]। (मा म)

रू भे हुको, हुकौ, [illegible]।

अल्पा, हुकळियौ, होकडौ।

होक्ष देखो 'होड' (रू भे)

उ० १ [illegible] शादि[illegible], [illegible] पडी [illegible]। [illegible] [illegible] हिंदू करै हम तणी होक्ष। —प प री

उ० २ [illegible] हो। [illegible] हाथ जुड़या, रहै गीगला [illegible]। [illegible] रो होक्ष कुण कर सकै। —फुलवाडी

उ० ३ [illegible] गीरा [illegible]। [illegible] गुलाब री ऊज कळियां। राम री उगार [illegible] री सौगन। [illegible] री डौळ जाणौ दी [illegible]। [illegible] जाणौ किणी सू होक्ष करनी वा पूतळी रमी। —फुलवाडी

होड़ाचकर, होड़ाचक्र स पु ज्योतिष के अन्तर्गत राशि, नक्षत्र, राशि, नाम, नक्षत्र, आदि [illegible] स्पष्टीकरण कराने वाला चक्र।

रू भे होड़ाचक्र।

होड़ाहोड़ि, होड़ाहोडी देखो 'होड़ाहोड़ी' (रू भे)

उ० १ गिरारी गोरीपाक, गुरू री छतरी भाडी। रसगुलिया रै रूप, मधुर है होड़ाहोडी। —दसदेव

उ० २ रात दिवस तू तण तण सूतौ, तण ऊठी थारी भोडी रे। पाडोसी नी धन देखी नै तू तडफै होड़ाहोडी रे। —जयवाणी

होड़ौ स पु १ दरवाजे को मजबूती से बन्द करने के लिये या किसी दीवार को बचाने के लिये मोटी लकडी या पत्थर का दिया जाने वाला सहारा।

उ०—लोह रा किवाडां रै रैठौ होड़ौ लगाय वौ मिन्नी रै लारै फिरियौ।—फुलवाडी

२ वह मानसिक दशा जिसमे अत्यन्त घबराहट होती है और प्राणी कुछ कहने, अपने भाव प्रगट करने मे असमर्थ रहता है। मानसिक अस्थिरता की दशा। कई बार ऐसा वात विकार के कारण भी होता है।

उ०—बारणै ऊभा भा, बेटा दोनू डुसुड डुसुड रोवता हा। थोडी ताळ तौ सेठजी ई भेळमभेळ रोवता रह्या। रोवणा सू मन खासौ हळकौ व्हियौ। काळजा री होडौ मिटचौ।—फुलवाडी

३ सहारा, रोक।

रू भे—हुडौ, हूडौ।

होट—स पु [स ओष्ठ] प्राणियो के मुख विवर का वह किनारा जिससे दात ढके रहते है और मुह को खोला व वन्द किया जाता है, ओष्ठ, दन्तच्छद।

उ०—१ पण पेटा री बात **होटा** कदै ई नी आवती, क्यू कै ठिकाणा मै जरवा रा सरजाम माकूल हा।—फुलवाडी

उ०—२ जळ मतीरा अम्रत जठै, मानै मेवा मद। होटा सू पीवै हरख, कैर कुसुम मकरद।—थळवट बत्तीसी

उ०—३ काकवत स्वर, मार्जार नेत्र, उन्द्रवत् लब होट, मुखकवत् लघु करण्ण, मुक रा दखनिरगर त तं बहिव। —व म

मुहा०—१ होट खावणा=होठो को दातो से पकडना २ होट खुलणा=कुछ कहने का प्रयास करना, कहना, बोलना, बात प्रगट करना ३ होट चाबणा=देखो 'होट खावणा' ४ होट ढोफळा होणा=किसी कारण से होठ सूज जाना ५ होट फरूकणा=गुस्से के कारण होठो मे फडकन होना ६ होट सूकणा=परेशानी या घबराहट के कारण होठो पर शुष्की आना ७ होट हिलणा=कुछ कहने की क्रिया होना ८ होटा आयोडी बात=ऐसी दशा जब कोई बात मुह से प्रगट होने को ही हो ९ होटा ई होटा मै=अत्यन्त धीरे बोलने की क्रिया, जिससे स्पष्ट आवाज सुनना सभव न हो १० होटा नी निकाळणौ-भेद की बात प्रगट न करना, अपनी बात प्रगट न करना ११ होटा लागणौ=चश्का लगना, आदत पडना १२ होटा सू हरफ नी काढणौ=कुछ न बोलना।

रू भे—होठ, हौठ।

अल्पा,—होटटौ, होठडलौ, होठडौ।

होटडौ—देखो 'होट' (अल्पा, रू भे)

उ०—चुगली करता चुगल रा, जुग **होटडा** जुडत। मळ नाखण जाणै मिळै, दोय ठीकरा दत।—बा दा

होटल—स पु [अ] १ वह दुकान, मकान या स्थान जहाँ मूल्य चुका कर भोजन किया जाता हो, भोजनालय, ढावा।

उ०—पढै फारसी प्रथम, म्लेच्छ कुळ मै मिळ जावै। अगरेजी पढ अवल, **होटला** मै हिळ जावै।—ऊ. का

वि वि—कही कही ऐसी जगह कुछ दिन ठहरने की व्यवस्था होती है।

२ वह दुकान जहा पर बैठ कर मीठाई, नमकीन, चाट व चाय-पानी आदि खाया पीया जाता हो, रेस्टोरेण्ट।

उ०—चिलम-बीडी चौसै, चमडा चूचावै है। मास-मिट्टी खावै अर **होटला** मै जावै है।—दसदोख

होठ—देखो 'होट' (रू भे)

उ०—१ उपरलौ **होठ** नाक री सोय तणियोडौ अर हेठलौ ठोडी कानी लुळियोडौ। दात बिना हसिया ई दीखै। **होठ** धुराधुर सावळा।—फुलवाडी

उ०—२ नवहथी झाकरा, बाथि मै कथरा, छत्र धारी मायै रा, कोरि मे कान रा, साइमै वानरा, नजिमै **होठा** रा, कसतूरिआ पटारा।—रा सा स

होठडलौ होठडौ—देखो 'होट' (अल्पा, रू भे)

उ०—**होठडला** मूमल रा रेसमीयै रा तार ज्या हाजी रे दातडला ऊजळ दती ग दाडम बीज ज्यू।—लो गी

होड—स स्त्री (स होड्) १ बराबरी, समानता।

उ०—१ पारखी **होड** त स करि रे प्राणिया, पुण्य पारबह म करि हूसि खोटी। बापडा जीव बापी तइजउ बाजगी कहि किम लूणिगि तु मालि मोटी।—स कु

उ०—२ पण सेठ (फूलचद जी)। बारळै कामारी **होड** कदेही नही हुवै। बेटा पोता रै परलै भूख नी, अमर जस नाव है।

—दसदोख

उ०—३ चौधरी मायौ धूणतौ कैवण लागौ—र्ना अ दाता नी, एडी कमाई राम टाळै। म्हे जिनावर आप बड भागिया री **होड** कीकर कर सका।—फुलवाडी

२ प्रतिस्पर्द्धा, स्पर्धा।

उ०—१ सिणगार करै मन कीधी स्यामा, देवि तणा देहुरा दिसि। **होड** छडि चरणै लागा हस, मोती लागि पाणही मिसि।—वेलि

उ०—२ आज सखी हम यु सुण्यौ, पौ फाटत पिय गौण। पौ अर हियडै **होड** हे, पहली फाटै कौण।—अग्यात

३ शर्त, बाजी।

उ०—१ चोट री रीझ पर गाठ री **होड** लगावै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ ताहरा सीरोहीयौ बोलीयौ '**होड** मारू', 'अग्या' री आवै तौ। तु निचीत। हू 'अखै' नु हु पालीस।

—कावळा जोइया नै तीडी खरळ री वात

उ०—३ माहोमाह **होड** आया कै जीतणियौ हारयोडा री बैन परणीजैला। राजकवर नै आपरी जीत मायै अडिग विस्वास हो इज। पछै **होड** करणा मैं क्यू पाछौ सिरकतौ।—फुलवाडी

४ ईर्ष्या, द्वेष।

५ मुकाबला, सामना।

क्रि प्र—करणी, मारणी, लगाणी।

रू भे [illegible]।

होहाक [illegible]।

होहहोड [illegible] 'होणहार' (रू भे)

उ० [illegible] होहहोड [illegible] [illegible]

होहाबाबी— देखो '[illegible]'।

होडाहोड [illegible] १ [illegible], दूसरे को [illegible]।

उ० १ [illegible] होडाहोड। [illegible]

उ० २ [illegible] होडाहोड [illegible] [illegible]

२ [illegible], [illegible] के [illegible]।

३ [illegible]।

४ बराबरी में, समता में, [illegible] में।

५ [illegible], [illegible]।

६ मुकाबले में, सामने।

रू भे होडाहोडा, होडाहोडी, होडाहोड।

होडाहोडा, होडाहोडी देखो 'होडाहोड' (रू भे)

उ०—१ भगा [illegible] ऊंचा घोड़ा, डर हीरो होडाहोडा। तेजी ऊछाँ [illegible], उसारा [illegible]। —ध व ग्रं.

उ०—२ नैणा बरसे सेज पर, आगण बरसे मेह। होडाहोडी मंड लगी, उत सावण इत नेह।—अग्यात

होडि—देखो 'होड' (रू भे)

उ०—नेह जगि देवरा देवा कोडि, हुवै नही कोई इयै री होडि। नमैं नर नारी सको नितमेव, दियै सुख वछित रिखभदेव।

—ध व ग्र

होण-क्रि वि—१ होने के लिये।

उ०—धड़ पीलड़ौ प्रीथमां, मगळ संकर उपगारू। हूंस परघा पति होण, खोण धडी नग साऊ।—रे म

२ देखो 'होणी' (रू भे)

उ०—हू म्हारी मजूरी कर दिन काढरयू। पछै होण होय सौ ही हुवौ। मोनू था राजी होय सीख देवौ।—साह रामदत्त री वारता

होणपवारथ—देखो 'होणहार'।

उ०—सगती देवळ सारखी, था सरखौ परधान। ढालेती ढेबै जिसौ, होणपवारथ जान।—पा प्र

होणहार, होणहारी, होणार—स्त्री—ऐसी घटना या बात जो होकर ही रहे, जिसे टाला नही जा सके, होनहार, भवितव्यता, भावी।

उ०—१ होणहार अहडी हती, मारवाड़ री आज। बखतसिंह रै पक्ष री, कोई न आयौ काज।—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ तद बीबी कही होणहार होय सौ मिटै नही—होकर ही रहै। [illegible] सूरै मोतै [illegible] री वात

उ० ३ [illegible] जाणी [illegible] 'फिटरी' [illegible] होणहार [illegible] —किसनदास [illegible]

उ० ४ [illegible] होणहारी [illegible] बीजी हीज [illegible] —नैणसी

[illegible] सुयोग्य हो, जिसके [illegible] —विशिष्ट लक्षणों वाला।

उ० १ [illegible] होणहार [illegible] सोळा [illegible] एक [illegible]

उ० २ [illegible] होणहार [illegible] लडाई मैं [illegible]

रू भे [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], हुवणहार, [illegible], [illegible], [illegible]।

होणी स स्त्री [illegible], भवितव्यता, भावी।

उ० १ होणी [illegible], [illegible] सुत्र। [illegible] जरा [illegible], [illegible]।—[illegible] री वारता

उ० २ इदरापुरी [illegible] जैडी शयौर अर अलुद रूप अर [illegible] काळिदर री जोग। होणी री माया अर होणी रा [illegible] नी पुगै।—फुलवाडी

रू भे हुणग, हुणी, हुण हुणी, होण, होअण, होग, होण।

होणेहार—देखो 'होणहार' (रू भे)

उ०—सूरौ [illegible] वीर [illegible], सोभाळी दातार। [illegible] होणेहार। —सूरै [illegible] री वात

होणौ, होबौ [क्रि अ] [स भू, प्रा होइ] १ स्वयमेव कुछ घटित होना, पुरा होना, हो जाना, होना।

उ०—१ सठा उपरांति कठै राजान सिलामति जिण भात लैणायत दीठा दैणायत घटै तिम तिम भांति दिन दिन निरा दीठै सूरज री तेज घटण लागौ नै सूरज रौ तेज घटियौ रति मोटी होण लागी। बडाई पाई।—रा गा रा

उ० -२ सुपनइ प्रीतम मुझ मिळया, हू लागि गळि रोइ। डरपता पलक न खोलही, मति हि विछोहर होइ।—ढो मा

२ अस्तित्व रखना, अस्तित्व मे रहना।

उ०—तिण काले नैं तिण सांईजी, 'जबू' द्वीप मझार। 'भरत क्षेत्र 'स्वेताबिका' जी, नयरी होती विस्तार हौ।—जयवाणी

३ उपस्थित रहना, मौजूद रहना, हाजर रहना।

उ०—हुपवी रहइ आंतग कीजइ, तू कन्हइ हिव वीह गमीजइ।

जा न राज सह पाडव होइ, मू हरइ अवर ठाम न कोई ।
—सालिसूरि
४ निर्मित होना, बनना ।
उ०—यहु तन जारी मसि करू, धूआ जाहि सरग्गि । मुझ प्रिय बद्दळ होइ करि, वरसि बुझावइ अग्गि ।—ढो मा
उ०—२ झूला मखतूळ जमा जळ झाग, पगप्पग होत उद्योत प्रयाग । मदाकण भाण-नदा बह मद, बहै सरसुत्ति प्रवाह बलद ।—मे म
५ काम निकलना, कार्य सिद्धि होना ।
ऊ०—१ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती । प्रापत होत भोत सुख सपत्ति, व्यापत नाहि विपत्ती ।—मे म
उ०—२ प्रेमिका सू मिळणै रा मीठा मनमूवा बावै अर मतर सीधा होणे री अवधी नै आख्या फाडघा अडीकै हं ।—दसदोख
६ कार्य का पूर्णता की स्थिति मे आना, पूर्ण या पूरा होना ।
७ निवृत्ति की अवस्था मे आना ।
८ बीतना, गुजरना ।
९ परिणाम या नतीजा निकलना ।
१० असर दिखाई देना, प्रभाव पडना ।
उ०—बाबा, वाळू देसडउ, जिहा डूगर नहिं कोइ । तिणि चढि मूकउ धाहडी, हीयउ उरळउ होइ ।—ढो मा
११ हानि या क्षति पहुचना ।
१२ भुगतना, वहन करना ।
१३ उचित क्रम या नियम से चलते रहना ।
उ०—प्रति दिन होत वेद विधि पूजन, घुरियत तत आनद्ध सिमर घन । धूप दीप नैवेद पुस्प फळ, कस्मीरज मलयज नागज कळ ।
— मे म
१४ परिवर्तित अवस्था मे पहुचना ।
ज्यू—छोरी जवान होगी है ।
उ०—१ सैंसव तनि सुखपति जावग न जाग्रति, वेस सधि सुहिणा सु वरि । हिव पळ पळ चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यान एहवी परि ।
—वलि
उ०—२ सो किण भाति री मेलवणी, लवग, डोडा, जायफळ, जावत्री, नागकेसर, तज, तमालपत्र सीगीमुहरा, धतूरौ, मूटटी एक खान, इहमदावादी खान, हाथा छूटौ रायागण में पडै तौ सात सात टुकडा होइ जावै इण भाति री बत्रीसी काढीजै छै ।
—रा सा स
१५ जन्म, उत्पत्ति या सृजन के कारण सामने आना, प्रगट होना, देखने मे आना, दीखना, जन्मना ।
उ० पैत्रीसै रा चैत वद, चउथ अनै बुधवार । पुत्र हुवौ जसराज रै, भाजण दुख ससार ।—रा रू
१६ कोई विशेष अवस्था या स्थिति प्राप्त होना ।
उ०—१ या सूता म्हे चालिस्या, एह निचिंती होइ । रइबारी ढोलउ कहइ, करहउ आछउ जोइ —ढो मा
उ०—२ धरती रो इदु होअे तिण भाति जग छेल कर नै धणै सोनै रूपै रौ मेह होइ नै तूठौ छै ।—रा सा स
उ०—३ पाणी सू धुडु होवनै वा एक बडला री छीया मे बैठ मस्ताई सू वागोलण लागी ।—फुलवाडी
१७ आना, जाना, पहुचना ।
उ०—१ राजा कउ जण पाठवइ, ढोलइ निरति न होइ । माळवणी मारइ तियउ पूगळ पथ जिकोइ ।—ढो मा
उ०—२ सूग जमदाढ लई उण सग, लई रवि रेवत माड मलग । हुवौ असताचळ ओट ग्रहेस, सक्यौ नह देख कतूहळ सेस ।—मे म
१८ चमकना, प्रकाशित होना ।
उ०—१ भयकर सोर सिवा अग्रभाग, चोळे मुख होत उदोत चराग । जिका जगि जोति छिपा छिपजात । द्रगा मग भोत सपस्ट दिसात ।—मे म
उ०—२ रातिज बादळ सघण घण, वीज-चमकउ होइ । इण समईयइ हे सखी, सारइ जगाई मोइ ।—ढो मा
१९ मिलना, प्राप्त होना ।
उ०—देस सुहावउ जळ सजळ, मीठा बोला लोइ । मारू कामण भुइ दखिण, जइ हरि दियइ त होइ ।—ढो मा
२० व्यापना, आना, छाना ।
उ०—जिण दीहे पावस झरइ, समनेहा सुख होइ । तिणि दिन वयरी वल्लहा, सेज न मुकइ कोइ ।—ढो मा
२१ किसी रोग, व्याधि या प्रेत बाधा आदि का आना फैलना ।
२२ निकलना, प्रगट होना ।
उ०—एकउ बोल हुवै आपाणौ, जुध मेवाड जुदौ मत जाणौ ।
—रा रू
२३ मिलना, भेटना ।
उ०—पिडत-पिडत अर साधू-साधू, सागै हुवै जद सागीडा लडै-झगडै ।—दसदोख
२४ अवतरित होना ।
उ०—१ धर हरि अस हुवै धरपत्ती । सस्त्रबध सामरथ सकती ।
—रा रू
उ०—२ मामड रै मारिहया, नाव आवड नै आई । आई री अवतार, हुवा करनळ मेहाई ।—मे म.
२५ विकार सूचक क्रिया किया जाना ।
२६ गरज सरना, काम चलना ।
२७ नाते, रिश्ते या मोह-ममता मे बधना, निकटवर्ती या घनिष्ठ बनना ।
उ०—जगागम मोड दहू व्रळ जोत । हूरा गठ जोड दहू बळ होत ।
—मे म

होणहार, हारो (हारी), होणियौ वि० ।
होयोड़ौ भू० का० कृ० ।
होईजणौ, होईजबौ भा० वा० ।
वेहणौ, वेहबौ, वै'णौ, वै'बौ, वैणौ, वैबौ, व्हैणौ, व्हैबौ, हउणौ, हउबौ, हऊणौ, हऊबौ, हवणौ, हवबौ, हुणौ, हुबौ, हुवणौ, हुवबौ, हूणौ, हूबौ, हूवणौ, हूवबौ, हैणौ, हैबौ, होवणौ, होवबौ, होणौ, होबौ, हौवणौ, हौवबौ, हुं'णौ, हुं'बौ रू० भे० ।

होत स पु [स होत्र] यज्ञ, हवन ।
उ०—पात परोस पूरैस जगमगै जाता । मगळ धमळ होगा जौ पूजन होता । गी गा
रू भे होता ।

होलब, होलब्ब, होलव, होलवता, होलब्य, होलब्यता स स्त्री [स भोलव्यता] होनहार, होनी, भावी ।
उ० १ समति दान न हवीजै, लिखत कठा जावा । ज्यु समति मू लिखत है, जो होलब जावा । अनुभववाणी
उ० २ गुरुजोगन आविगो, पाव हलगाणु रैहू । गहरी मन भागली, आगअळ भीतर पैठू । सग कौरव री साथ, किरो भारत मुदा यू । मन री मन मैं रही, मुगी भीम री मदा सू । समतोकनाथ होलब तणा, भला करै कुण भ्रकवरा, कवि भोप अमाली नर कहै, नीवा री तरह करा । आगो आढी
उ० ४ जैसी हो होलब्यता, तैसी उपजै बुद्ध । होणहार हिरदै बसी, बिसर जाय सब सुद्ध । अग्यात
रू भे हुलब, हालिब ।

होता वि [स होतृ] १ यज्ञ करने वाला, यज्ञ म आहुति देने वाला ।
२ देखो 'हात' (रू भे,)

होतासण देखो 'हुतासण' (रू भे)
उ० १ काया होतासण होमिया, तब धाव नकस्स सिध जाय । जन हरिदास निरमळ भया, निरमळ माहि समाय । ह पु वा
उ०—२ हरीया उर सीतळ भया, पाया तत अतूल । जै होतासण जुग जळया, मेरै उदग सरूप । अनुभववाणी

होतिब—देखो 'होलब' (रू भे)
उ०— होतिब काजि हठवाद करि निज विरोध विन्ताखिया । एका एक तन तीनि करि, तिणि सराप सुर लिखिया ।— जाभौ

होती—क्रि —'है' का भूत कालिक स्त्रीलिंग रूप । थी ।
स स्त्री —किसी कार्य के प्रति व्यक्त की जाने वाली सभावना ।
उ०—१ हरि हीरा होती, पारिख कीती, खोट न चोट चडदा है ।
—अनुभववाणी
उ०—२ होती हुगी या वेला रालकार कोई, लडतौ तौ होगौ 'पाल' सबर री डायरौ, ए मोरी सइया ।—पाबूजी री छाबली

होतौ—क्रि —'है' का भूतकालिक रूप, था ।

होव—१ देखो 'हौज' (रू भे)
उ० १ गजना गुफी पाणो री पाणिगार, होव नवाबौ, ए पणि गारमा हलेगा री । लो गी
उ० २ आग नाग भावियग, कई कमळै कचोळा । परा केसर घोळिया, होव चल हीळोया । मैं म
२ देखो 'ओंदौ' (रू भे)

होवळ [ ] कलिपत ।
उ० राळ कर ससार उत्त राम, हरग करै वै हाथ । सावित भर पर घर रा ही, होवळ करण हाथ । रैवतसिंह भाटी

होवाय देखो 'ओंदौ' ।
उ० हुउ साद न होव सिताप हुआ, इण होवाय जीण वणौ स ा ा । मिळ श्राप जगतर म, राज सारे राज जात उकाराणौ ।
रा रू

होवौ देखो 'ओंदौ' (रू भे)
उ० हजारा मुखै नीकुरे मुख होवौ, सहनाणक माली छूटै तायक गोटा । मिसाणी सिरै मार चाज मनाळी, मधै जोगणी सो भरणी मुप नाळी । ग रू

होनहार देखो 'होणहार' (रू भे)
उ० - हमनै कहा आविन कर देगा, सुण काची सुनि सोम राम । मीरा कै प्रभु गिरधरनागर, होनहार सो होय राम । मीरां

होफ, होफर स स्त्री १ सिंह की दहाड़ गर्जना ।
उ० १ नवेगा कुभ कुद्दाळ वल्य, गाजविक गत्य न हल्य गयत्थ । आरोहत होफर तोफ अपार, अभीनम आगे जुरे असवार ।
मे म
उ० २ गांधी नोहत्था रूप होफरां किया मै मारै । सारली पुकारै बीबी अल्ला नू सताम । महादान सामोर
उ० ३ वजर्ड कुभेर नर्ड बीर जग् अनाप नाल । अनाप नै भाजै वगी होफना उठाय । अनाळा करनी होफ जगा गाम नम ओप । मोर तोप भाळा तोप आयो महाकाम । बख्तिदास खिडियो
२ जोशपूर्ण आवाज, तीव्र ध्वनि ।
३ आवाज, ध्वनि ।
उ० १ लग भार खनखिकरा तीर छलविकय ओध रानविकय होफ हय । इण घट ठनविकाय नद्द रनविकाय, गोरै भनविकाय सद्द भय ।
-रा रा
उ० -२ घूघरमाळ घोड़ा री बाज रही छ, हीरा काळळ होफ हुयनै रही छै । रा सा, स
रू भे —हौफ, हौफ, होफर ।

होफरडीह—वि [स्त्री होफरडीह] सिंह के समान गर्जनापूर्ण आवाज करने वाला ।
उ० —वहै सिंघ होफरडीह, पतसाहा परचा दिया । डरपी डोकरडीह, मा आती मेवान मैं ।—रामनाथ कवियौ
रू भे—हौफरडीह, होफरड़ीह ।

होफरणौ, होफरबौ—क्रि स —१ गर्जना, दहाडना।
२ जोशपूर्ण ग्रावाज करना, जोश मे बोलना।
३ क्रोध करना, रोष करना।
होफरणहार, हारौ (हारी), होफरणियौ—वि०।
होफरिग्रोडौ, होफरियोडौ, होफरचोडौ—भू० का० कृ०।
होफरीजणौ, होफरीजबौ—कर्म वा०।
हौफरणौ, हौफरबौ—रू० भे०।

होफरियोडौ—भू का कृ —१ दहाडा हुग्रा, गर्जा हुग्रा २ जोशपूर्ण ग्रावाज किया हुग्रा ३ क्रोध किया हुग्रा, रोष किया हुग्रा। (स्त्री होफरियोडी)

होफरैळ—स पु —सिंह, शेर।
उ०—पैग धारा खरै सौ जरै सौ काळकूट प्याला, ग्राकास बास री हूस गरै सौ ग्रघात। बना ग्राई मरै सौ फरै सौ करला दोळा बैरी, होफरैळ काठळै करै सौ ग्राधा हात।—महादान महडू

होबड स स्त्री —१ ठोडी, हिचकी।
२ मुह, मुख।
३ ग्रोष्ठ, ग्रधर, होठ।
४ देखो 'थोबडौ'।

होबरडौ—स पु —बात-विकार या किसी ग्रन्य कारण से जी मे घबराहट होने के कारण ग्राने वाली खाली उबकाई। इसमे कै नही होती पर कै होने जैसी चेष्टाएं होती है, उबकाई।
उ०—१ पाचवै महीनै टाबर पेट मै टळवळण लागौ। माय हुरडिया देवतौ सौ लखायौ। जच्चा राणी नै **होबरडा** हालण लागा।—फुलवाडी
उ०—२ डाकण नै ग्रोळचा सू **होबरडा** ग्रावण ढूका। गुलगुला वाळा छोरा नै नी खावै जित्तै काळजा री बळत नी मिटेला।
—फुलवाडी

होबास—देखो 'होवास' (रू भे)

होम—स पु [स] १ हवन, यज्ञ। (ग्र मा)
वि वि —देखो 'हवन'
उ०—साह की बातै सुणै त्यौ त्यौ उमग प्रकासै। चिरत का कुभ सीचै **होम** ज्या उजासै।—रा रू
उ०—२ हण ताडका निज ठाहरा, जिग माड ग्रारभ जाहरा। उत **होम** धूम विलोक ग्राया, निडर राकस नीच। जिग ग्रर सुवाहू जाणनै, तन हतै सायक ताणनै, सर पवन परसौ च्यार कोसा रह्यौ थभ मरीच।—र रू
२ यज्ञ मे ग्राहुति देने की क्रिया।
रू भे —हौम।

होमग्राटम, होमग्राठम—देखो 'होमास्टमी' (रू भे)

होमकाट, होमकाठ—स पु [स होम+काष्ठ] १ यज्ञ की लकडिया, समीधा।
२ देखो 'होमकास्ठी' (रू भे)

होमकास्ठी—स स्त्री [स होम+काष्ठी] यज्ञ की ग्रग्नि दहाकाने की फूकनी।
रू. भे —होमकाठ।

होमकुड—स पु [स] वह गड्ढा या कुड जिसमे ग्रग्नि जला कर यज्ञ किया जाता है, हवन-कुण्ड।

होमछाळणा—स स्त्री —विश्नोई जाति की एक रश्म विशेष जिसके ग्रन्तर्गत कोई झगडा या वाद तय किया जाता है। इसके ग्रन्तर्गत कोई एक पक्ष जाभौजी की कसम खाता है। कसम खिलाने वाला घी लेकर ग्राता है ग्रौर कसम खाने वाला हवन करता है।

होमणौ—वि (स्त्री होमणी) १ होमने वाला, ग्राहुति देने वाला।
उ०—सावत्री सरसत्ती, गवरि गगा गोमत्ती। मिळ सतिया धरि महरि, करै इण परि कीरत्ती। त्रिहुए पख तारणी, सोभ जुग च्यार सुवाणी, पाच तत्त **होमणी**, रीत मोटी खट राणी। धिन मात पिता कुळ जात धिन, सत ग्रवदात महासती। साहाय थकी निज सामि सग, वसी ग्राय ग्रमरावती।—रा रू
२ नष्ट करने वाला, बरबाद करने वाला।
३ बलिदान करने वाला।

होमणौ, होमबौ—क्रि स [स होमम्] १ हवन करना, यज्ञ करना।
उ०—चामरियाळ धडा चूडाक्रम, ग्रधपति काठ जळै ग्रहकार। हरराजउत ग्रब **होमता**, 'पैंजसाउत' पौहतौ पार।
—प्रथीराज राठौड रौ गीत
२ यज्ञ की ग्रग्नि मे किसी वस्तु की ग्राहुति देना, होमना।
उ०—१ **होमिया** नाग ग्रजा नर हैमर, गढपतीयै **होमिया** गयद। 'करण' तणा जेम होम न कीधा, कूटा चहुएँ तणा कुरद।
—राणा जगतसिंह रौ गीत
उ०—२ देवा कीध न कीधा दाणव, सारौ जै निरमैं सुकर। हसत ज्याग जग प्रसध **होमता**, हुवा बिधाता हेक हर।
—महाराणा सागा रौ गीत
उ०—३ कास्टमयी ततकाळ ग्रगनि काढी छै सु ग्रगनि। लाकडी ग्रगर की छै। ग्राहुति देण नै घी ग्रर कपूर घणौ **होमज्यै** छै।
३ बलिदान करना।
उ०—१ चित्तोडगढ नाव र इण ग्रसर रा कारण वै हजारा लाखा भिडमल हे जिणा रीत-पात री ख्याळ सारू बिना नाक मै सळ घाल्या घाटकिया दै काडी ग्रर ग्रापौग्राप नै **होम** दिया।
—जहूरखा मेहर
उ०—२ मध्यकाल रै राजस्थान रै इतिहास री ग्रणू ती मालदारी नै सगळाई इतिहास लिखारा ग्रगेजै। मावड भौम री ख्याल खातर सै की मुळकता **होम** देणौ इण खेतर रै इतिहास री घणी महताउ बात गिणीजै।—चितराम
४ जलाना।

उ० — [illegible] पाणी [illegible], [illegible] ओम । उजळा री बाळग जठै, मिनखा नै मत होम । — पू

४ नष्ट करना, बरबाद करना, समाप्त करना ।

५ शामिल करना ।

होमणहार, हारौ (हारी), होमणियौ — वि० ।

होमिओड़ौ, होमियोड़ौ, होम्योड़ौ — भू० का० कृ० ।

होमीजणौ, होमीजबौ — कर्म वा० ।

हूमणौ, हूमबौ — रू० भे० ।

होमधूप — स पु — आहुति दिया जाने वाला धूप ।

होमपाठ — स पु — हवन करते समय या हवन के लिये पढ़ा जाने वाला मंत्र या किसी मंत्र का जाप ।

उ० — परयन्त मंत्र कर होम पाठ, अमठारा दिया चतमाह आठ ।
— रा रू

होमाष्टमी, होमाराठमी — स स्त्री [स होमाष्टमी] चैत्र व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी जिस दिन देवी के निमित्त हवन किया जाता है ।

रू भे — होमआठम होमआठम ।

होमि — स पु, [सं] १ अग्नि ।

२ घी, घृत ।

होमियोड़ौ-भू का कृ — १ हवन किया हुआ, यज्ञ किया हुआ २. अर्पण किया हुआ ३ आहुति दिया हुआ, होमा हुआ ४ बलिदान दिया हुआ ५ जलाया हुआ. ६ नष्ट किया हुआ, बरबाद किया हुआ ।

(स्त्री होमियोड़ी)

होमियोपैथिक-वि [अ] होमियोपैथी चिकित्सा का, होमियोपैथी चिकित्सा के अनुसार ।

होमियोपैथी- स पु [अ] पाश्चात्य चिकित्सा का एक सिद्धान्त विशेष या चिकित्सा विधि जिसके अन्तर्गत विषों की अल्प से अल्प मात्रा द्वारा रोग-निदान किया जाता है ।

होमीजणौ, होमीजबौ-क्रि अ.—१ अत्यन्त गर्मी या उमस के कारण असित होना, कष्ट पाना, बेचैन होना ।

२ दु खी होना, परेशान होना ।

३ नष्ट होना या किया जाना, बरबाद होना या किया जाना ।

४ आहुति दिया जाना, होमा जाना ।

५ अर्पित होना । ६ बलिदान किया जाना ।

होमीजियोड़ौ–भू का कृ —१ अत्यधिक गर्मी या उमस से असित हुवा हुआ, कष्ट पाया हुआ, बेचैन हुवा हुआ २ अर्पित हुवा हुआ ३ दुखी, परेशान हुवा हुआ ४ बलिदान हुवा हुआ ५ नष्ट या बरबाद हुवा हुआ ६ आहुति दिया हुआ, होमा हुआ ।

(स्त्री होमीजियोड़ी)

होयोड़ौ–भू. का कृ —१ स्वयमेव कुछ घटित हुवा हुआ. कुछ हुवा हुआ २ परिवर्तन लाया हुआ, परिवर्तित या रूपान्तरित हुआ ३ उपस्थित, मौजूद या हाजिर रहा हुआ ४ निर्मित या बना हुआ ५ काम निकला हुआ, कार्य सिद्ध हुआ हुआ ६ पूर्णता की स्थिति में आया हुआ, पूरा या पूर्ण हुवा हुआ (काम) ७ निर्धारित की अवस्था में आया हुआ ८ बीता हुआ गुजरा हुआ ९ परिणाम या नतीजा निकला हुआ १० असर या प्रभाव पड़ा हुआ ११ हानि या क्षति पहुंचा हुआ १२ भुगता हुआ सहन किया हुआ १३ उचित क्रम या नियम से चला हुआ १४ परिवर्तित अवस्था में पहुंचा हुआ १५ जन्म, उत्पत्ति या सृजन के कारण सामने आया हुआ, प्रकट हुवा हुआ, देखने में आया हुआ, जन्मा हुआ १६ कोई विशेष अवस्था या स्थिति प्राप्त किया हुआ १७ आया हुआ, गया हुआ, पहुंचा हुआ १८ चमका हुआ, प्रकाशित हुवा हुआ १९ मिला हुआ, पास हुवा हुआ २० आस या आशा हुआ २१ निकला हुआ पालन हुवा हुआ २२ मिला हुआ, भेंट हुआ २३ अवतरित २४ विचार सूचक क्रिया किया हुआ २५ गरज सरा हुआ, काम चला हुआ २६ नाते रिश्ते या मोह ममता में बंधा हुआ, निकटवर्ती या घनिष्ठ बना हुआ ।

(स्त्री होयोड़ी)

होर — सं स्त्री — इच्छा, अभिलाषा ।

होरा — स्त्री [स] १ राशि का उदय ।

२ राशि का आधा भाग ।

होरी—देखो 'होळी' (रू भे)

उ०—रात गुरू ऐसी होरी खेलाई । होरी खेलाई मेरे मन भाई । जोग दिया हर राई । — हरिरामजी महाराज

होरीलौ–वि (स्त्री होरीली) हठ करने वाला, हठी । (बालक)

होरौ- स पु — १ हठ, जिद्द ।

२ बालक का हठ, बाल-हठ ।

होल — स स्त्री — १ आयड़ देवी की बहिन, एक देवी ।

उ० — सिधाळी सुही सीमिका होल सैणी, अवाळी सुही सूगिका नाग बैणी । खगाळी सुही निब्वड़ा चम्मड़ाई, मुआळी सुही आवड़ा मामड़ाई । — मे म

२ चित्त, मन, दिल ।

उ०—मूळी रौ हियौ फूटण लागग्यौ, उभाळ गयौ, होल उगड़ग्यौ अर चित्त भरम हुयग्यौ ।—दसदोख

होळका—१ देखो 'होलाष्टका' ।

२ देखो 'होळी' (रू, भे) ।

होलड़–स स्त्री –—छोटी पंडुकी ।

होळां–क्रि वि — धीरे, आहिस्ता ।

उ०—आप तुरत ऊठ महल भीतर नू पधारिया, गुजाई वाळा नू होळां सी कह गयौ । जै पहर रात पाछली सू उठ कर भुजाई तइयार करज्यौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता

होळा–स पु [ब व]—गेहूं या चने के कच्चे दाने जिनको पौधो सहित आग मे भूनकर खाया जाता है।

होला–स स्त्री—गप्प।

होलात—देखो 'हवालात' (रू भे)

उ०—लूगाडा टापरौ चाटग्या, च्यारू बेटा **होलात** मैं दाटग्या। जमानत देवणियौ ही कोई लाधै नही।—दसदोख

होळावौ–स पु—एक शिकारी पक्षी विशेष।

होळास्टक, होलास्टक–स पु [स होलाष्टक] १ फाल्गुन शुक्ला अष्ठमी से होलिका पर्यन्त की अवधि।

२ उक्त अवधि मे लगने वाला नक्षत्र विशेष जिसके कारण इस अवधि मे शुभकार्य वर्जित माने जाते हैं।

होलाहडो–स पु—एक प्रकार का घोडा विशेष। (शा हो)

होळि—१ जलाशय का वह भाग जहा नावें व जहाजे बधी रहती हे?

उ०—ऊपरि वडा नै पीपळा री घटा वधिजितै रही छै। नै तळाव नै तै छाया री हास तरस माणण नू हजार असवारा सू राज न आइ पागडा छाडिया छै। **होलि** मै जिहाजा पायरीजै छै। —रा सा स

२ देखो 'होळी' (रू भे)

होळिका, होलिका—देखो 'होळी' (रू भे)

उ०—पकवानै पानै फळै सुपुहपै, सुरगै वसत्रै दरब सब। पूजियै कमटि भगि वनसपती प्रसूतिका **होळिका** प्रब।—वेलि

उ०—२ तठा उपरांति करिनै राजान सिलामति **होळिका** प्रब पूजिजै छै। आगै बखाणिया तिण भातिरा अमळ माणीजै छै। हमै ग्रीखम रित रा वरणाव कीजै छै।—रा सा स

उ०—३ वणि **होळिका** अभ जुध वेरा, सिर पर बह झेलू सम-सेरा। धार विहार अणी घट धौरग, चुख-चुख होय पडू रिण चौरग।—सू प्र

उ०—४ अब **होळिका** नर नारि पूजित माघ पूरण मगळी। जोधाण प्रतपै छात जोधा, 'अभौ' कीरति ऊजळी।—रा रू

होळिय—देखो 'होळी' (रू भे)

उ०—सिरहे घट वेधत वाहत सेल। खेलै जिम **होळिय** फागण खेल।—सू प्र

होळियार–स पु—१ होली के त्यौहार पर चरचरी नृत्य करने वाला।

उ०—१ करै नृप वीर जय जय कार, हका, करि जाणि रमै **होळियार**।—सू प्र

उ०—२ 'अमर' री 'मोहकम' रा असूरा, बह हणै धड वेहडा। खग भाट जुधि **होळियार** खेलै, हरखि जाणि डडेहडा।—सू प्र

२ होली के अवसर पर रग खेलने वाला, होली खेलने वाला।

होलियौ—देखो 'हूलियौ' (रू भे

होलीवौ–स पु—ज्वार का लबा डठल जिसके सिरे को दीपावली के दिन जलाते है।

होळी–स स्त्री [स होली] १ फाल्गुन की पूर्णिमा (कभी कभी चतुर्दशी) को मनाया जाने वाला हिंदुओ का एक बडा त्यौहार या पर्व।

उ०—१ **होळी** अर दीवाळीया, घर घर दीपग माहि। हरीया दीपग ओर दिन, कोई क चं कोई नाहि।—अनुभववाणी

उ०—२ जवडउ अतर बहिन नइ साली, जेवडउ अतर दीवाली [नइ **होली**], जवडउ अतर पुण्यवत नइ हाली।—व स

२ उक्त त्यौहार के दिन मुहल्ले के चौक या किसी स्थान विशेष पर छोटा गड्ढा खोद कर रोपी जाने वाली झाडी की डाली—जिसे घास-फूस व ऊपले डाल कर रात मे जलाया जाता है। इसे ही होली कहते है।

उ०—१ करि ढाला झट ओट कजाका। **होळी** थभ जेम करि हाका। जग्द धरा ऊडळ बध जकडै, पह रुद्रसेन जीवतौ पकडै। —सू प्र

उ०—२ फागुण मास वसत रुत, आयउ जइ न सुणेसि। चाच-रिकइ मिस खेलती, **हाळी** झपावेसी।—ढो मा

३ उक्त त्यौहार के दूसरे दिन (रामा-सामा के दिन) खेला जाने वाला रग का खेल—जिसमे समवयस्क स्त्री पुरुष एक दूसरे पर रग गुलाल, अबीर आदि डालकर खूब मनोविनोद, आनन्द, उत्साह करते है, इसे फाग खेलना भी कहते है।

उ०—१ **होळी** खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे। मीरा कै प्रभु गिरधर नागर, चरण कमळ बळिहार रे। —मीरा

उ०—२ लज्जा जोजन लक्ष करि, तनि मनि ताळी देसि। अनहत चग सुणी सुणी, हू **होळी** खेलेसि।—मा का प्र

४ फाल्गुन मास व होली के आसपास के दिनो मे गाये जाने वाले शृंगार रस प्रधान गीत, फाग। ये गीत अधिकतर चग (डफ) पर गाये जाते है।

५ लाक्षणिक अर्थ मे अग्नि, आग।

उ०—एक धाक अर धक पळी, एक मिनख री राख करी। बैरीडा छळ-कपट सू ठगै, काळज्या **होळी** जगै है। अरजन रा साथी उज-डणनै त्यार, घर हाळा झगडणनै हुस्यार।—दसदोख

६ आग की लपट, लौ।

७ चिंगारी।

उ०—छेड हुई काठायता, आया खेड अपार। झड लागौ सर गोळिया, हुय **होळिया** दुधार।—रा रू

८ फाख्ता नामक पक्षी।

[स होलिका] ९ एक प्रसिद्ध राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की बहन व भक्त प्रहलाद की बूवा थी।

वि स्त्री—अशक्त, कमजोर, कम प्रभावशाली, हल्की।

उ०—मारवाड रा भला भला सिरदार काम आया जिण सू

माधवजी री सागनी फाळी पकी । यू थाणा काम आया तो नळे जोधपुर री सायबी होळी हुसी । प दा

रू भे होरी, होळका, होलि, होळिका, होळिगा, होळीका, होळी ।

होलउ सं पु —एक प्रकार का नृत्य विशेष ।

उ० राजउ वगराजीउ महिदउरउ होलानामिउ कमीयउ पीठ सामुरी पीठ वैवाणि मरीत होलीउ तालकाउ नरम हरीफ प्रभाति वहण जाति । व रा

होळीका देखो 'होळी' (रू भे)

होळीभकाडो सं स्त्री एक राग विशेष ।

होलेड़ी — देखो 'होळी' (अल्पा, रू भे)

उ० बाजत बाजत बौ गयो, काई गयो होलेड़ी र बाज ग, रमीजो थारा बाजणा । लो गी

होळेसीक देखो 'होळेसीक' (रू. भे)

होळै क्रि वि १ धीरे, धीमे, आहिस्ता ।

उ० १ एके घाट उतरतो एक चोकीदार कही जे पूछ नहीं सो फूलाँ सियां है । होळै सी बेली नु कही ।

जगसिंह आगेर रा धणी री वारता

उ० २ किरताजी कंगीअरा, पाग करै तो कै करै । आवै फुलो तारै खाइ । अबळो आयी थाअ' र फालणो । होळै री झुनारो भरयो । दसदोख

२ मंद गति से ।

उ० — अहि मत जावै सुकिवै मत जावै तो रोमी म्हारै डैरा आवै बादळी होळै मत बरसै ठंडा मन बरसै रीती मत आवै । काठी भरलावै । लो गी

रू भे. — होळु होळे, होळै ।

होळैसीक, होळैसै — क्रि. वि धीरे से, आहिस्ता से ।

उ० — १ नाव गुणनै आडी बिना ओरयाँ डावड़ी कमरा मैं आई । होळैसीक बोली लगर सठजी पधारया । फुलवाडी

उ० — २ एक दिन आधी बळियाँ रै पछै कुमारी आवरा धणी नै जगायो । होळैसीक उणरा कान मैं कैवण लागी । — फुलवाडी

२ चुपके-चुपके ।

उ० — घर म्हारै ही मढाया अर मैं'ती आय'र होळैसै मेल आया ।

— दसदोख

रू भे — होळेसीक ।

होळौहळ — देखो 'हिलोहळ' (रू भे)

होल्डर — स पु [अ] १ किसी धातु, लकड़ी या प्लास्टिक का बना कलम जिसके मुह मे निब फसा रहता है और स्याहि मे डुबोकर लिखा जाता है, कलम ।

२ पीतल, लोहे आदि का बना एक उपकरण जिसमे बिजली का बल्ब फिट किया जाता है ।

३ धारक ।

होवण देखो 'होणौ' (रू भे.)

होवणहार देखो 'होणहार' (रू भे.)

उ० १ आप विचार उपाव, होवणहार वात पर हल्थी । आसा धार न पार, लिख लिखा जासा भयी परवस्सी । रा रू

उ० २ नवा वीर वाजा घरा, राजपूत सरदार । फळा हुनर जाणे अजब, है यह होवणहार । ठाकुर जैतसी री वारता

होवणौ, होवबौ देखो 'होणौ, होबौ' (रू भे)

उ० —१ जोगा साथ नाथ छळ जोवण, हरवळ दळा खळा सिर होवण । — रा रू

उ० २ हरोवर कलिका बणना, करम करै किरतान । कातो होवै साजणी, सेवै महा मसान । अनुभववाणी

उ० — ३ गाम कुगाविगी होवण सू गाँव पाळा नै कपट लूग गीत गावणी पड़ै । अमरचूनडी

उ० ४ दादूराम राज दरबार री पूली बली निपजण चोगरी होवतो थकां भी भूल फकीर, डोरा धागा, देई देवता, अर डाकण स्यारी नै पछै ही पूजा नी बतावै । दसदोख

होवणहार, हारो (हारी), होवणियो वि० ।

होविओड़ो, होवियोड़ो, होयोड़ो भू० का० कृ० ।

होवीजणो, होवीजबो भाव वा० ।

होवणगार देखो 'होणहार' (रू भे)

उ० छोटू मा'रजा रै तोन बरस्या, जका में सू बडी री साख क्ूणरवाह रै एक पामर हाउस रै मिरतरी रै दरानी पारा बेटे सू मळ्यो है । टाबर होवणगार है । — दसदोख

होवास स पु घोड़ा, अश्व । (डि को)

रू भे — हुआस, हुआसि, हुआसी, हुवास, हाबास ।

होवियोड़ो देखो 'होयोड़ो' (रू भे)

(स्त्री होवियोड़ी)

होस स पु [फा होश] १ बोध, ज्ञान की वृत्ति, बुद्धि, समझ, अक्ल ।

२ सज्ञा, चेतना, ज्ञान ।

उ० १ कुजड़ी तो एक घड़ी पछै होस मैं आयी । सेठ कह्यो — ऐ तो भथा है । थू मैं'ना ठैका मैं ई काई गुमग्या । फुलवाडी

उ० २ केसर, केवड़ाजळ सू सपाडो करायो । अतर फुलेल री सौरम सू राजगरु होस मैं आया । पलका उघाडी तो साम्ही वां उणियारा रा भावळा दीखण लागा । — फुलवाडी

३ विवेक ।

४ शिष्टता, तमीज ।

५ सावधानी, सतर्कता ।

६ किसी प्रकार के नशे या बीमारी आदि के कारण होने वाली मानसिक अचेतनतायुक्त सामान्य अवस्था ।

उ० — बेटा रै पाखती आया कैवसी — देख बेटा अबै थारा भायजी नै चेतो व्हियो है । ऐ होस मैं सांतरी बातां करै । — फुलवाडी

७ स्मरण शक्ति, याददाश्त।

८ मौज, मस्ती।

उ०—सिकार सरब एक ठोकर रहकला ऊठा ऊपर घातजै छै। होस माणण तळाव आया छै।—रा सा स

९ किसी प्रकार का उत्तरदायित्व सम्भालने की अवस्था, परिपक्वावस्था।

१० इच्छा, कामना।

उ०—मास रक्त तैरी खसबोय फूटनै रही छै। त्यारी खसबोय लेवण नू तैतीस कोड देवतागण गधव होसा साय रह्या छ।

—रा सा स

११ उत्साह, उमग।

रू भे—होस, हौस, हौंस।

होसनाइक, होसनाक, होसनायक— देखो 'हुसनाक' (रू भे)

उ०—१ इण भात रा मृग हाथा सू रळकावजै छै। चुरण-वीरण काकरा काढजै छै। सू मृग होसनाक वणावै छै।—रा सा स

उ०—२ इण भात री भाग काढ तयार कीजै छै, कसूबा नू होसनाक पवन करै छै।—रा सा स

उ०—३ तठै भला भला भोगी भवर होसनाक खसबोई लेणनै ऊभा रहै। तठै रूप सुगधाई काळी मैरू जाडेची रै महल हमेसा आवै।—जगदेव पवार री वात

उ०—४ जिस बखत विहार सूरति पाक होसनायका नै नजर गुजराए।—सू प्र

होसमद, होसलामद-वि—१ होश वाला, मानवान।

२ समझदार, बुद्धिमान।

रू भे--हुसमद, हौसलामद।

होसलौ-स पु [अ हौसल] १ किसी कार्य के लिये होने वाली सामर्थ्य शक्ति।

२ साहस, उत्साह, हिम्मत।

३ सहन शक्ति।

४ जरूरत, आवश्यकता।

५ धृष्टता, ढीठाई।

६ उत्तरदायित्व सभालने या कष्ट सहन करने की अवस्था।

रू भे—हैसलौ, हैसलौ, होसलौ, होसलौ।

होसियार-वि [फा होशियार] १ चतुर, निपुण, दक्ष, कुशल।

२ समझदार, बुद्धिमान, व्यवहारकुशल।

३ सचेत, सावधान, सतर्क, खबरदार।

४ धूर्त्त, चालाक, ठग, छलिया।

रू भे—हुसियार, हुस्यार, हुस्वार, हुसिआर, हुसियार, हुसीयार, हुस्यार।

अल्पा,—हुसियारौ, हुसीयारौ।

होसियारी-स स्त्री [फा होशियारी] १ चतुरता, निपुणता, दक्षता, कौशल।

२ समझदारी, बुद्धिमानी, व्यवहार कुशलता।

३ सतर्कता, सावधानी।

४ चालाकी, धूर्त्तता, छल, ठगी।

रू भे—हुसियारी, हुस्यारी, हुसियारगी, हुसियारी, हुस्यारी।

होस्टल, होस्टेल-स स्त्री [अ] छात्रावास, बोर्डिंग हाऊस।

उ०—वौ बळदेव रै लारै लारै उणरै होस्टल ताई गयौ अर पोटाय-पुटायनै उणनै घरै चालणनै राजी कर लियौ।—अमरचूनडी

होहा-स स्त्री—१ हल्ला-गुल्ला, शोरगुल।

उ०—नागहारी मोहा सच्चै, वेताल समोहां नच्चै। महाकाळ होहा तच्चै, कोहा मच्चै मीच।—हुकमीचद खिडियौ

२ हाहाकार।

होहौ-स पु [अनु] पशुओ को ठहराने के लिये कहा जाने वाला एक सकेतात्मक शब्द।

होहोकार-स स्त्री—हाहाकार।

उ०—हारै बीर नाच केई होहोकार करै हाका, बेढ बाका 'लाडाणी' न थाका बाका बीर।—सुखदान कवियौ

हौ-सर्व—मै, हम।

उ०—१ सखिया मिळि दुइचारी, बावरी सी भई न्यारी। हौं तौ वाकी नीकै जानौ, कुज कौ विहारी है।—मीरा

उ०—२ घुमाय लट्ठ अट्ठ जाम हौ फिरौ घमा घमा।—ऊ का

रू भे—हो।

हौंकार—देखो 'हौकार' (रू भे)

हौंण—देखो 'होणी' (रू भे)

उ०—हौंण मतै सौ हाण दै, राखि एक मन ठाय। दाणा पाणी जेथ का, हरीया जासी गाय।—अनुभववाणी

हौणौ, हौबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू भे)

उ०—हौण मतै सौ हौण दै, राखि एक मन ठाय। दाणा पाणी जेथ का, हरीया जासी गाय।—अनुभववाणी

हौस—देखो 'होस' (रू भे)

उ०—१ राजा नू दैत्य दमनी री हौंस हुई छै।

—पचदडी री वारता

उ०—२ दादू जैसा नाम था, तैसा लीया नाहि। हौंस रही यहु जीव मैं, पछितावा मन माहि।—दादूबाणी

उ०—३ सुनि वाला सतीयन खिनै, करत कुवारी हौंस। हरीया पीव विन परसीया, होय नियारी रौस।--अनुभववाणी

हौ-भू का कृ.—१ था।

उ०—१ राजा खुद तौ ग्यानी नी हौ, पण ग्यानिया रौ आदर अवस करतौ।—फुलवाडी

उ०—२ पण जोगी हुर्यं अडिग हौ वौ अतर जगत रमै हौ। इकलग नरतन रमणी रौ, पग पग कठैहि न थमै हौ।—सकुतला

२ देखो 'हो' (रू भे)

उ० २ मारवाड़ मधुकरशाह नीसरी माग मर नीची फीत हो। नाग वैनगाव मे ढब मरवगी मर मा ग्रमु री नाड़ सरणी [illegible] सू पूत मरवारगा। अमरचूनी

होग्रा देखो 'होवा' (रू भे)

होक स स्त्री १ ध्वनि, आवाज, शब्द।

२ भय, आतंक।

होकबौ देखो 'हाकबी' (रू भे)

उ० १ होकबा मग लिधु, हुवा दगी तीग भळ वाकवा। आरत मारहा रीठ या तो उठे, मारू मर गाज मारवा। सू प्र

उ० २ हुवा माग होकबा, मधु आग दरपती। ताम गजा ऊपरे, गीहमि हिव चढे मगस्ती। सू. प्र

होकर देखो 'होकार' (रू भे)

उ० प्यादा री दुगी रै रिते री मालदेगम चोखै अमवार पुगी होकर करै है। द दा

होकरणौ, होकरबौ क्रि स जोशपूर्ण आवाज करना, क्रोधपूर्ण आवाज करना, दहाड़ना, गरजना।

होकरणहार, हारो (हारी), होकरणियौ वि०।

होकरिग्रोड़ो, होकरियोड़ो, होकरयोड़ो भू० का० कृ०।

होकरीजणौ, होकरीजबौ कर्म वा०।

होकरणौ, होकरबौ - रू० भे०।

होकरियोड़ो- भू का कृ- जोशपूर्ण आवाज किया हुआ, क्रोधपूर्ण आवाज किया हुआ, दहाड़ा हुआ, गरजा हुआ।

(स्त्री होकरियोड़ी)

होकार—स स्त्री —१ दहाड़, गर्जना।

उ० १ पग बेटी रा माथा मैं जागैं अणगिणत सिंघ **होकारा** करण लागा। फुलवाड़ी

उ०—२ सिंघ री **होकार** सुणतां ई हिरणां रा ध्यारू पग है जठै ई चिप जावै। —फुलवाड़ी

२ जोशपूर्ण आवाज।

उ०—सूरज री किरणा रै सागै दैतराज **होकारा** करतौ टापू माथै आयौ। वारा जैड़ौ ई पतळी अर चोय वास आवौ।

फुलवाड़ी

२ जोर की आवाज, जोर का शब्द, हल्ला, शोर।

उ० —हळबळ **होकारा** रै सागै फौज आगै बधती गी। —फुलवाड़ी

३ चुनौती, ललकार।

४ पुकार, आवाज।

रू भे —होकर, होकार, हौकार, हौकर।

होकारौ—१ देखो 'होकारौ' (रू भे)

२ देखो 'हुकारौ' (रू भे)

होड—देखो 'होड' (रू भे)

हौज स पु [अ] पानी जमा रखने के लिये बनाया हुआ कुंड, पानी का कुंड, कोठा।

उ० १ दादू हौज हजूरी दिल ही भीतर, गुसल हमारा सार। उजु साजि अलह के आगै, तहा नमाज गुजार। दादूवाणी

उ० २ नावर **हौज** फुहार नीर सलिल, असल नदी आय किर ऊमळि। सू प

उ० ३ मनी अमल की देरा काळ देरा ढरै। (जहा) भरा प्रेम का **हौज**, हरा दिली कर। मीरा

उ० ४ गुण कंचन रा हौ लगी, तरणी ह वागा मौज। कनक महल कुंदन कळस, वागी फुहारा **हौज**। गज-उद्धार

रू भे हौद, हवद, हौद, हौज।

हौठ देखो 'होठ' (रू भे)

हौड देखो 'होड' (रू भे)

उ० १ नागी लुक मालम सकति 'दुरग' अनखा नगरा, दिवां दे भाव भगत राखै। **हौड** करता जिकै रावण हाथ किधी, जिकै आगर सखा सान जोवै। दुरगादास राठौड़ री गीत

उ० २ भाखत श्रवरंगीसा करन सूबेदार, हारा नही वार लै हूर **हौड**। श्राप किवी उणमति आगै, कर भी कर दीभी कार कोड।

मोहबत बारहठ

हौडाहौड - देखो 'होड़ाहोड़' (रू भे)

उ० कसरिया पहर गीड नाणे करा, लगे बहसगा **होडाहोड**। कीधा भला बैकुंठ कारण, कार्ण थगे भाषीजै कोड।

- सुजाणसिंघ नै भवानीसिंघ सेखावत री गीत

हौव देखो 'हौज' (रू भे)

उ०— धार सूंड भरा रा **हौव** बिचि, उडि पड़ै पांख ऊछळै। जनमेज जाग जागै भुजग, अगनि कुंड मधि आकुळै। सू प्र

२ देखो 'हौवौ' (रू भे)

उ० गजरूप **हौव** जगियो मझार। धुर चढै अरब हथिनाळ धार।

सू प्र

हौवळ स पु भरी का एक आभूषण विशेष।

हौवौ स पु [अ हौदज] १ हाथी पर सवारी करने के लिए उसकी पीठ पर रख कर कसा जाने वाला एक आसन विशेष जो आगे से खुला तथा ऊपर-नीचे तीनों ओर से बन्द रहता है। सवार बैठने व पीठ टिकाने की गद्दी बनी होती है, अमारी, अम्मारी।

उ० १ जडि कपोळ जगवाळ, ठीक जिण कर ठहराये। दतूसळां पग दिये, जगी **हौवा** चढ़ि जाए। —सू. प्र

उ०—२ हूरीया **हौवै** ऊपरै रावत वाई रीठ। मारयौ राजा मोह कु, पकयौ सळकै पीठ। —अनुभववाणी

उ०—३ **हौवा** करिया हाथिया, मीधरिया नीसांण। भारै रंभ रसिया लिया, ऊसरिया अप्रमाण। —सिवबक्स पाल्हावत

२ तांगे मे आगे और पीछे की ओर बना हुआ वह स्थान जहा

[illegible] है ।

३ [illegible] जो दीवारों से बाहर निकला रहता है, [illegible] ।

४ देखो 'हौद' (रू भे)

उ० — [illegible] हौवा [illegible] गुलाला री, हौवै साहव हमाम [illegible] री । — [illegible] हावत

रू भे — [illegible], हुदी, हुद्दी, [illegible], हौदी ।

हौप, हौफ, हौफर — देखो 'हौफ' (रू भे)

उ० — [illegible], हौफरा धर [illegible] — सू प्र

हौफरणौ, हौफरबौ — देखो 'हौफरणौ, हौफरबौ' (रू भे)

उ० — [illegible], [illegible] । बीजरता बाबरा [illegible] हौफरता । — सू प्र

हौफरिहौ — देखो '[illegible]' (रू भे)

([illegible])

हौम — देखो 'होम' (रू भे)

हौर — स पु — १ [illegible] ।

उ० — [illegible] हौर, [illegible] कुरानिन कै । अरित कुरानिन [illegible] । — किसोरदान बारहठ

२ [illegible], अभिलाषा, कामना ।

हौल — स पु [अ] — १ [illegible], धाक ।

उ० — १ [illegible], गाढ़ौ बळवन । वन [illegible] मारग [illegible] हौल [illegible] । — [illegible]

उ० — २ [illegible], बाघ तणी [illegible] । हौल पडै [illegible], [illegible] 'पतौ' [illegible] । — किसोरदान बारहठ

२ [illegible] ।

उ० — १ [illegible] फौज रै [illegible] पली जावता ही दुसमणा री [illegible] हौल [illegible] जावै । — वी स टी

उ० — २ [illegible] री अवाज [illegible] धरती ऊपरै [illegible] हौल पडै [illegible] गोळा री [illegible] लूट [illegible] पडै । — वी स टी

३ [illegible] ।

हौलदिल — स पु — १ दिल धड़कने का रोग विशेष ।

२ उन्माद रोग ।

३ देखो 'हौलदिलौ' (रू भे)

हौलदिलौ — वि — १ बुजदिल, डरपोक, कायर ।

२ डरा हुआ, घबराया हुआ, भयातुर ।

रू भे — हौलदिल ।

हौळी — देखो 'होळी' (रू भे)

उ० — हौळी फागां जेम खाग उनगी 'पीथळै' हाडै, हिलोळी फिरगी सेना पैंतीस हजार । — जसौ आढौ

हौळू — देखो 'होळै' (रू भे)

हौळे, हौळै — देखो 'होळै' (रू भे)

हौळै — देखो 'होळै' (रू भे)

उ० — १ अगवार ताब एक री जोडि करि तुरा जुदा जुदा कीवा नै कह्यौ, कोई बूझै तौ कहिज्यौ, अनतराय साखळा रा चाकर छा, भाई-भतीजा रा छा । इसौ कहिनै करि हौळे-हौळै कोई कठी कोई कठी होय जेहाजा वैस नै कोई सोबत रौ मिस करि चारण होयनै बेगा आय भेळा होज्यौ । — कहवाट सरवहिय री वात

उ० — २ पण मा आधी ऊभी-ई आगली फेरी, जकैनै देख'र सैरा सै चुप हुयग्या अर हौळै-हौळै एक-बीजै-नै सैन-सू कैयौ — मा देखै है भला, मा देखै है भला । — वरसगाठ

हौळोळणौ, हौलोळबौ — देखो 'हिलोडणौ, हिलोडबौ' (रू भे)

उ० — तठै गहावेळ खाडी रै कनारै जळ रौ हौलोळियो सदरै लेख महावीर मोटौ मछ आय पडियौ।

— कल्याणसिंघ वाढेल नगराजोत री बात

हौवणौ, हौवबौ — देखो 'होणौ, होबौ' (रू भे)

उ० — कहीया माया सपजै, मन सु जाण्या ब्रह्म । हरीया हौवै मुख तै, उदग्या सेती भ्र म । — अनुभववाणी

हौवणहार, हारौ (हारी), हौवणियौ — वि० ।

हौविश्रोडौ, हौवियोडौ, हौव्योडौ — भू० का० कृ० ।

हौवीजणौ, हौवीजबौ — भाव वा० ।

हौवा — स स्त्री — १ वह पहली स्त्री जो पृथ्वी पर आदम (आदिमानव) के साथ उत्पन्न की गई, जो मनुष्य जाति की आदि माता मानी जाती है । (मुसलमान)

स पु — २ एक काल्पनिक भयकर जतु जिसका उल्लेख बच्चो को डराने-धमकाने व नियन्त्रण मे लाने के लिया जाता है ।

रू भे — हौआ ।

हौस — देखो 'होस' (रू भे)

उ० — उण दिन साची बात कह्या राज रा काई हवाल व्हेता अर काई नी व्हेता, पण सोळै बरसा पछै आ बात सुण्या राजाजी रा तौ हौस उडग्या । — फुलवाडी

हौसनाइक हौसनाक, हौसनायक — देखो 'हुसनाक' (रू भे)

उ० — जोप नोख गुलजार, कलाबूता वणि कम्मळ । तरह काम तारीफ, हौसनायक झाळाहळ । — सू प्र

हौसलामद — देखो 'होसमद' (रू भे)

हौसलौ — देखो 'होसलौ' (रू भे)

उ० — पण धनवती सेठ-साहूकारा रा तौ उण परवाणा पछै हौसला इज गुम व्हेग्या हा । — फुलवाडी

ह्या — अव्यय — यहा, यहा पर ।

उ० — तुम ह्या ही रहौ राम रसिया, थारी सुरति (मैं) मन बसिया । — मीरा

ह्यांकी — सर्व — १ मेरी । (अमरत)

२ इनकी ।

[illegible] २ [illegible] ।

पु [illegible] ।

[illegible] ।

पु [न] १ [illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] । (डि को)

[स [illegible]] ५ हृदय, दिल, मन ।

उ० [illegible] । हृदय [illegible] [illegible] । [illegible]

ह्लवै, ह्लवौ देखो 'हिरदौ' (रू भे)

(डि को, ह ना मा)

उ० [illegible] । [illegible] हृदय [illegible] । [illegible]

वि [स] १ छोटा, लघु । (डि को)

२ तुच्छ, थोडा ।

३ बौना, वामन ।

[illegible] पु [illegible] स्वर या मात्रा जिसके उच्चारण में कम जोर लगे ।

रू भे हस्व ।

[illegible] स पु [स ह्लाद] १ शब्द, ध्वनि । (डि को)

२ शोरगुल, हल्ला ।

[illegible]नी, ह्लादिनी स स्त्री [स ह्लादिनी] १ बिजली, विद्युत ।

२ इन्द्र का वज्र, वज्र । (अ मा, ह ना मा)

३ [illegible] वृक्ष ।

४ नदी, सरिता ।

रू भे ह्लादिणी, ह्लादिनी ।

[illegible]-स पु [स] १ क्षय, कमी, घटत ।

२ विनाश, ध्वंस ।

उ० —परन्तु मीणां रै ठाकुरपणी रहिया तां रजोगुण रा ह्लास री ह्लास ऊपजियो ।—व भा

३ क्षीणता ।

४ छोटी संख्या ।

५ घाटा ।

६ शब्द, ध्वनि ।

७ शोर, हल्ला ।

रू भे —हरास ।

[illegible]स-स पु [स] राजा हरिश्चन्द्र के पौत्र व रोहिताश्व के पुत्र एक सूर्यवंशी राजा ।

उ० [illegible] ।

[illegible] । [illegible]

ह्लिवम, ह्लिवै, ह्लिवौ देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ० १ [illegible] ह्लिवम [illegible] जांणी [illegible] । [illegible]

उ० २ [illegible] ह्लिवा, [illegible] । [illegible] जाणै नहीं, [illegible] । [illegible]

उ० ३ [illegible] ह्लिवे [illegible], मरै मारै जाणै जिकै अभिमान । [illegible]

ह्लींकार स पु [स] बीजाक्षर ।

उ० जिम अक्षर माहि [illegible], [illegible] माहि ह्लींकार, [illegible] माहि [illegible] । [illegible]

ह्ली सं स्त्री [स] १ लज्जा, लाज, शर्म ।

२ नम्रता, [illegible] ।

३ [illegible] । (अ मा)

४ दक्ष प्रजापति की कन्या व धर्म की पत्नी ।

ह्लीबेर वि [illegible] । (डि को)

ह्लीहस, ह्लीह्लस वि [स [illegible]] निर्लज्ज, बेशर्म ।

उ० [illegible] ह्लीहस, [illegible] ।

ऊ का

ह्लादिणी, ह्लादिनी वि स्त्री (स ह्लादिन्) १ प्रसन्नकारक, हर्षप्रद ।

२ देखो 'ह्लादनी' (रू भे)

ह्लां अव्यय वहां ।

ह्लास देखो 'हवास' (रू भे)

उ०—हरीया अपने ह्लास मैं, [illegible] फिरै खुसीयाल । होसी खालिक चाहिसी, हैदू तुरक बेहाल ।—अनुभयवाणी

ह्लुंसणियापाप सं पु —समुद्र देश का एक पाप विशेष ।

ह्लुं अव्यय १ स्वीकृतिसूचक अव्यय, हां ।

२ है ।

ह्लुंणौ, ह्लुंवौ देखो 'होणौ, हुवौ' (रू भे)

उ० १ नवो जन्म नै गुरु कबीर न्हावे, महासुद्ध ह्लुं गुरु मा नू नमावे ।—गो म

उ० २ नवै मध्य कवि ह्लुं तिकै दवावैत विध दोग । एक सुद्ध बध होत है, एक गद्दबध होय ।—रा रू

उ० ३ सुणजो पछै ह्लुकीकत सारी । ह्लुं है पति बवनी हमारी ।

—रा रू

ह्लुंयौबौ—देखो 'होयोबौ' (रू भे)

(स्त्री हैयोबी)